साप्ताहिक

विश्वमित्र

THE WEEKLY VISHWAMITRA

२८—१ कलकत्ता जनवरी १, १९४५, Calcutta, JAN. 1. 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

...जी राजत्वमें पेरिसका फैशन

...एक अमेरिकन साप्ताहिक पत्रमें प्रका-...त रिपोर्टके अनुसार पेरिसने फैशन-संबंधी ...ती परम्पराको नाजी राजत्वमें भी नहीं ...ा। युद्ध कालीन साधन अभावमें भी
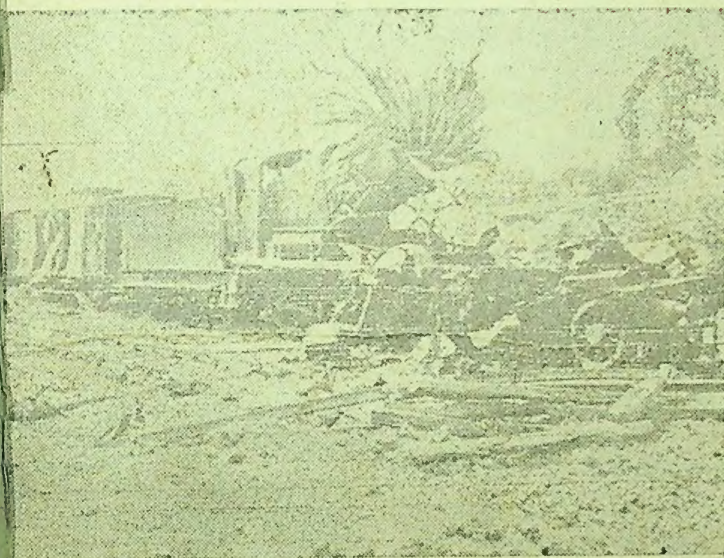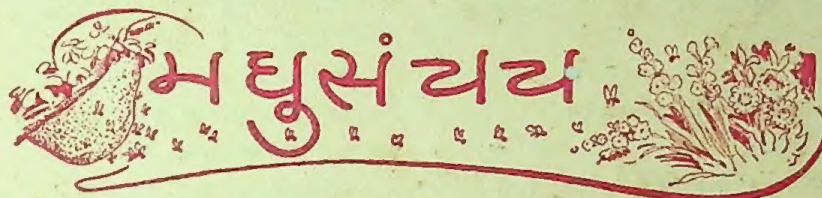
फ्रांसमें अमेरिकन बमवाजों द्वारा छिन्न-भिन्न किया गया नाज़ी यातायात। ट्रेनके टूटे इंजिनसे आगकी लपट निकल रही है।

...के फैशनमें किसी प्रकारका अन्तर नहीं ...या है। चमड़ेकी कमीके कारण जूतोंका ...र्माण रुकने नहीं पाया। चमड़ेकी जगह ...ठका ही तल्ला क्यों न बनाना पड़ा हो। ...त्रयोंके कानोंके कर्णफूल क्या हैं, मानो ...रंगिया झूल रही हैं।

जर्मनोंने चष्टा तो बहुत की कि फैशन-...बाजार तोड़ दिया जायें। लेकिन फैशन-...स्तोंकी ओरसे एक ऐसी दलील दी गयी ...सके सामने नाजी अफसरोंको झुक जाना ...ा। कहा गया कि अगर फैशनका बाजार ...ड़ दिया जायगा तो युद्धोत्तर-कालमें अमे-...कन बाजी मार ले जायेंगे। इसलिये ...कालमें भी६० परिधान निर्माताओंके अंत-...प्रत्यक्षतः १९ हजार कलाकार और ...त्यक्ष-रूपमें दस लाख उपयुक्त साधन ...हकर्त्ता बराबर अपना काम स्वतंत्रता-...क कर रहे हैं। खून खराबीमें दिन-रात ...स रहनेवाले नाजी अफसरोंका ललित-कलाके प्रति यह अनुराग रेगिस्तानमें नख-लिस्तान ही मालूम होता है।

गोताखोरोंकी रक्षाके लिये

जर्मनोंका दावा है कि गोताखोरोंकी हवाई आक्रमणोंसे रक्षा करनेके लिये एक नया आविष्कार किया गया है। इस आविष्कारके द्वारा अब गोताखोर जहाज आवश्यकता पड़ने पर २०-३० दिन या उससे भी अधिक समय तक जलके अन्दर रह सकते हैं। इस कारण हवाई आक्रमणसे अब खतरा पहुंचना बहुत अधिक अंशोंमें कम हो गया है। गोताखोर जहाजोंको आक्सीजनके लिये जलकी सतहपर आना पड़ता है। नये आविष्कारके द्वारा उनमें इतनी अधीक मात्रामें आक्सीजन की व्यवस्था कर दी जायगी, जो बहुत दिनों तक गोताखोर चलानेवालोंके सांस लेनेके लिये काफी होगी।

जेलमें वकालत पास की

स्कूलों और कालेजोंमें प्रति दिन अध्यापकों और प्रोफेसरोंके लेक्चर सुननेके बाद भी बहुतसे लड़के वार्षिक परीक्षामें चारोखाने चित पड़ जाते हैं और बहुतसे जेलकी कोठरी के संकीर्ण वातावरणमें रहकर स्वाध्यायनकी बदौलत बड़ी-बड़ी डिगरियां प्राप्त कर लेते हैं। इससे स्वाध्ययनका महत्व कह लीजिये अथवा प्रतिभाकी विशेषता। मिस्रके अब्दुल फतह इनायत नामक व्यक्ति, जिस समय हत्याके अभियोगमें २० वर्षकी लम्बी कैदकी मियाद भुगतनेके लिये जेल भेजा गयाथा, उस समय वह कानून पढ़ रहा था। जेलमें ही उसने वकालत पास की। और अभी तक उसकी कैदकी सजा चल रही है। लेकिन १९२४ ई० में ही उसका नाम कैरोके वकील मंडलमें दर्ज कर लिया गया।

फुहररके लिये सन्तान पैदा करो

अमेरिकाकी 'कोलियर' नामक मासिक पत्रिकाके अनुसार समस्त जर्मनीमें बचोंका लालन-पालन करनेवाली संस्थाएं स्थापित की गयी हैं और जर्मन नव-युवतियोंसे आग्रह किया जाता है कि वे फुहररके लिये सन्तानोत्पादन करें। ऐसे बच्चोंके पिता नाजी पार्टियोंमेंसे चुनेगये हैं। कोनराड वर्नर नामक एक लेखकने बताया है कि राइनलैंडमें जहां कैथोलिक आबादीका बाहुल्य है, इस नाजी आन्दोलनकी घृणाकी दृष्टिसेदेखा जाता है। लेकिन जर्मनीके अन्य भागोंमें लड़किया खुले आम इन संस्थाओंमें जाती हैं। उन्हें प्रत्येक प्रसवके लिये ४०८ मार्क (४९० रुपये) दिये जाते हैं और जो सन्तान उत्पन्न होती है, उसका लालन-पालन सरकारकी ओरसे होता है।

रूजवेल्टके कुत्तेका विवाह

खबर है कि प्रेसीडेंट रूजवेल्टके कुत्ते फालाकी शादी मित्र राष्ट्रीय सेनाओंके प्रधान सेनापति जेनरल आइसेन होवरकी कुतिया टेलेककी लड़की रूबीसे होनेवाली है। टेलक को मि० चर्चिलने जेनरल आइसेन होवरको भेंट किया था। रूबीका जन्म उत्तर अफ्रीकाके अलजियर्समें हुआ था। अन्य अनेक सैनिकों की तरह जेनरल आइसेन होवर भी उसे वाशिंगटन वापस लेते गये थे और वहीं उसे छोड़कर यूरोपके मोर्चेपर वापस चले आये थे। इस विवाहको लेकर काफी चहल-पहल है।
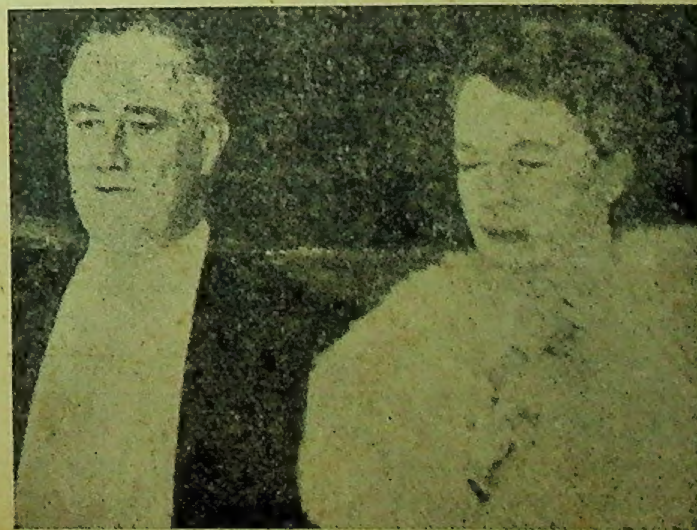
सपत्नीक प्रेसीडेंट रूजवेल्ट जिनके कुत्तेकी शादी होने वाली है!

चलती चक्की

ब्रिटिश फौजियोंके लिये पानीपर तैरने वाले शराबखाने बनाये गये हैं।

चुल्लूभर पानीमें डूबनेसे मदिरामें डूब जाना तो उमरखैयामका पुराना सिद्धान्त है।

* * *

एम० एन० रायने स्वतन्त्र भारतका विधान रच डाला है।

पता नहीं कि इस विधानकी मददके लिये कितने हजार रुपये मासिक सहायता सरकारसे प्राप्त होगी।

* * *

दिल्लीके मौलवियोंने सत्यार्थ-प्रकाशके विरुद्ध फतवा दे दिया है। उनका यह कहना है कि सत्यार्थ-प्रकाश कुरानशरीफके विरुद्ध फतवा था।

लीजिये लेन-देन बराबर हो गया।

* * *

'सर' न कहनेपर एक मजिस्ट्रेटने एक वकीलको अदालतकी मानहानिमें सजा दे दी।

लोग यह न पूछे कि मजिस्ट्रेटका सर ठीक है अथवा नहीं।

* * *

पेन्शनरोंकी पेन्शनमें तरक्की हो गयी है।

अब देखना है कि अल्ला मियां उम्रमें भी तरक्की करते हैं अथवा नहीं।

* * *

ब्रिटेनकी मजदूर पार्टीका कहना है कि राजबन्दियोंके कैदखानेके दरवाजे अवश्य खुलने चाहिये।

चर्चिलके दरबारमें ऐसी बातोंको अरण्यरोदन कहा जाता रहा है।

\+ \+ ×

पोस्टमैनों और सरकारमें झगड़ा हो गया है।

अच्छा हो दोनों चिट्ठी डालकर फैसला कर लें।

\+ \+ \+

केन्द्रीय सरकारका कहना है कि अन्न की बड़ी कमी अब भी है।

यह भी जाहिर हो कि केन्द्रीय सरकार को घबरानेकी कोई जरूरत नहीं, क्योंकि मरनेवालोंकी भी कोई कमी इस देशमें नहीं है।

\+ \+ \+

नयी दिल्लीमें संतति-निग्रहपर भाषण हो गया।

लेकिन फैशन कण्ट्रोलके बिना कहीं बर्थ कण्ट्रोल सम्भव है?

\+ × \+

संयुक्त प्रान्तमें राजबन्दियोंकी रिहाई-की खबर अफवाह निकली।

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चेका नारा है—अफवाहों पर विश्वास न करो।

* * *

कायदा कमिश्नर इस्तीफा दे रहे हैं।

आखिर, कोई बेचारा कोयलेकी दलाली में जिन्दगीभर काले हाथ नहीं कर सकता।

* * *

एक साहबका कहना है कि उनका डाक्टरोंमें विश्वास नहीं है।

पर अबतक डाक्टर यमराजके विश्वास पात्र हैं, उनका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

× \+ ×

पेशावरमें बर्फ जम गयी।

पर इससे यह अनुमान न करना चाहिये कि सरदार औरंगजेबकी मिनिस्ट्री पिघलकर गल जायगी।

\+ \+ *

प्रोफेसर यूतानने सन्देश दिया है कि भारतीय छात्रोंको पैरोंपर खड़े होना चाहिये।

कोई प्रोफेसर साहबसे पूछे कि अभी तक वे लोग किसपर खड़े थे।

× \+ ×

अल्लामा मशरिकी सलाह दे रहे हैं कि गांधी-जिन्ना फिर मिलें।

यदि हिटलर स्टालिन मिल सकते हैं, तो इन दोनोंका मिलन भी असम्भव नहीं।

× × ×

कहते हैं कि मित्रराष्ट्रोंमें फूट पड़ गयी है।

फूटको अधिक बढ़नेसे रोकनेके लिये सरकारको ककड़ी और 'फूट' की बिक्री तत्काल रोक देनी चाहिये नहीं तो वार-एफर्टपर चोट पड़ेगी।

× × ×

चर्चिल, स्टालिन और रूजवेल्टने यूरोपके लोगोंकी मर्जीके बिना यूरोपका बंटवारा कर लिया है।

इसे जिन्नोंका प्रभाव कहा जाय या जिन्ना का।

* * *

कहते हैं कि विभाजनकी ये योजनाएं तेहरानमें रची गयी थीं।

मुसलमानोंके ही जेरसाये विभाजन अच्छा भी लगता है।

* * *

नाइयोंने बेगारका विरोध किया है।

लेकिन चतुर नाई हों, तो बेगारमें भी बेगार करानेवालेकी हजामत कर सकते हैं।

* * *

ज्यादा किराया लेनेपर तांगेवालोंको जुर्माना हुआ है।

आशा है कि तांगेवाले जुर्मानेकी रकम ज्यादा किराया लेकर वसूल कर लेंगे।

× \+ \+

प्रयागके शहर मजिस्ट्रेटके घर चोरी हो गयी।

अब मजिस्ट्रेट भी इतबार करेंगे कि प्रयागमें पण्डोंके अलावा चोर भी बसते हैं।

* * *

एक पक्षका कहना है कि यूरोपमें मित्र-राष्ट्रोंके नाटकका पर्दा उठ रहा है

पर्दा तो उठ ही गया, वरन अब तो पहला दृश्य दिखाया जा रहा है—'ग्रीसमें'।

* * *

११॥ वर्ष तक पर्यटनके पश्चात एक पत्र काशीसे मंसूरी पहुंचा।

काशीमें लोग लौटनेको नहीं आते। इसी अफसोसमें बेचारी चिट्ठीको यह देरी लग गयी होगी।

* * *

पटरीसे उतरते हुए दिमाग वाले एक साहब उस दिन झांसीमें कमिश्नरसे चार्ज मांगने लगे और उसकी कुर्सीपर डट गये।

खैर, उन्होंने कमिश्नरको अपनी बराबरीका तो समझा!

* * *

रायपुरमें मङ्गलामुखी समाजका एक नया नगर बसानेकी योजना बन रही है।

उसके ही साथ यदि मङ्गलामुखी भक्तों-की बस्ती बसा दी जाय, तो सोनेमें सुहागा हो जाय!

* * *

परिभाषायें—

आशावादी—(आधे खाली ग्लासको देखकर) शुक्र है कि मेरा ग्लास आधा तो भरा है!

निराशावादी—अफसोस! मेरा ग्लास सिर्फ आधा ही भरा है।

नयी सीखें—

अभिनेत्रियोंके लगे नेह और फूसके गेह पर कभी भरोसा न करो!

दोनों ही अधिक टिकाऊ नहीं होते।

* * *

संसारमें आपको दो प्रकारके व्यक्ति मिलेंगे। कुछ आपको सभापति बनानेकी फिराकमें होंगे और कुछ बेवकूफ!

* * *

संसारमें आपको दो ही किस्मके मित्र मिलेंगे। कुछ जेब कटवानेकी तलाशमें व और कुछ जेब काटनेकी तलाशमें!

* * *

बाबुओंकी बस्तीमें इत्र बेचनेवाला और महाजनोंकी बस्तीमें लिपस्टिक बेचनेवाला, बीरबलकी फेहरिस्तमें दर्ज करने योग्य हैं।

* * *

प्रतिभा, यौवन और बम, जब तीनों फटते हैं, तो धड़ाका होता है। तब पास पड़ोस वालोंका ध्यान आकर्षित अवश्य होता है!

* * *

संसार एक दुख सागर है। इसे 'सुखसागर'की पोथी खरीदकर काफी परिवर्तित नहीं किया जा सकता।

* * *

कभी कभी कुएं या तालाबमें डूबनेवाले ऐसे व्यक्ति होते हैं, जिनके डूबनेके लिये चुल्लू भर पानी काफी था परन्तु फिजूल उतने जलको खराब करते हैं!

* * *

दूसरोंको मिठाई न खिलाकर खटाई खिलाइये। इससे आप आसानीसे दूसरोंके दांत खट्टे कर सकते हैं।

* * *

आत्म परिचय

मैं अन्धनमें कनवां राजा,
मेरी मधुरी बानी;
मुखमें राम बगलमें छूरी,
चलूं चाल शैतानी।

मैं थोथ चना मैं बजूं
मैं राई को पर्वत क
जब भेज बैठ जाया क
मैं कुम्हड़ेकी खेती का

मैं काली कमली ओढ़-ओढ़कर,
कलछुलसे घी पीता हूं;
मैंने केवल लेना सीखा,
सो ऋण लेकर ही जीता हूं।

मैं ऊंट पोसता हूं
चुटकी भर जीरा खिला-
मैं सुखकी नींद पड़ा
हर रोज हवामें बना कि

लगती जब आग पड़ोसी घर,
मैं हाथ सेंकने जाता हूं;
बहती गंगामें हाथ धुला,
कुछ लेकरके ही आता हूं।

मैं दिल्लीवाला लड्डू
ऊंची रहती मेरी दु
मांछीसे घी कैसे निक
.इस अन्वेषणका सदा ध्या

मैं दाल भातमें मूसल बन,
सब ठौर रहाहूं देता टांग अड़ा;
मैं बून्द-बून्दसे भर लेता,
बाबा आदमका बड़ा घड़ा।

मैं वैद्यराजका घोड़ा
बे-मतलब कहीं नहीं ज
मैं दान 'तीन' तब करत
जब 'तेरह' है फलमें आ

मैं चूहे सत्तर मार मार भी,
हजको कभी नहीं जाता,
मुझको है लाज लिहाज नहीं
सब जगह विजय मैं हूं पाता।

जिस थालीमें मैं खा
उसमें ही छेद बनाता
मैं जलमें रहकर बैर म
करते नहीं लजाता

मैं निकल भांड़से घुराईमें,
आनन्द मनाया करता हूं,
फुंसी जो देखी कहीं, तुरत बस,
उसे भकंदर कहता हूं।

मैं गुड़ खाकर गुलगुल
परहेज हमेशा करता
मैं छांछ फूंकर पीता
मैं फूंक-फूंक पग धरता

अब लगा नाचने जब हूं तो,
यह घूंघट मुंहपर है कैसा?
मैं रम्भा ही नाचूंगा,
बाबू साहब अपना भैंसा।

—खुश

आये दिन विरोधियोंसे सावधा... यह मत ख्याल रखें कि अभी आस्तीन समेट रहे हैं, तो क्या लड़ेंगे। यह हाफ (आधी बांहोंकी कमीज) का युग है। इस युगमें आस्तीन समेटनेका मौका आपको मिलेगा।

—रमतेर

हत बस जनक मनमाह।
न कहं जग दुलंभ कछु नाही ॥

विश्वमित्र

र्चिलकी नाटकीय यात्रा

——:०:——

वर्तमान महासमर कालमें ७० वर्षीय श प्रधान मंत्री मि० चर्चिलने नाट- ढंगसे यात्रा करनेमें काफी ख्याति प्राप्त ली है। अमेरिका, रूस, अफ्रीका, फारस मिस्त्रकी नाटकीय यात्राओंकी स्मृति ोंके मस्तिष्कमें अभी बिल्कुल ताजी ी। गत २६ दिसम्बरको रायटर संवाद तिने ब्रिटिश प्रीमियरकी एक और नाट- यात्राका रहस्योद्घाटन किया है और है यूनानकी यात्रा। इस संवादको पढ़कर ोंको कम आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि ो उस दिन यूनानकी वर्तमान समस्यापर टश पार्लमेंटमें बहस होते समय मि० लने अपनी सरकारके हस्तक्षेप सम्बन्धी- ोंका समर्थन करते हुए कहा था कि ा ई०ए०एम० (यूनानके राष्ट्रवादी दलों संगठित मोर्चा) और 'एलास' (ई० ए० संगठनकी सेना) को गणतंत्रात्मक प्रणा- का मित्र कहा जा सकता है? कदापि ।" इन्हीं तथाकथित बागी दलोंसे सम- ो करनेके लिये वे स्वयं यूनानकी राज- ी एथेंसके लिये उस महान त्योहारके ब्रिटेनसे रवाना हो गये, जो ईसाई तमें अपना सानी नहीं रखता। इस सिल- लेमें हम अपने पाठकोंका ध्यान एक ानी घटनाकी ओर आकृष्ट करना चाहते ो १९३१ में हुई थी। भारतके तत्का- वायसराय लार्ड इर्विन (वर्तमान लार्ड ोफैक्स) को जब महात्मा गांधीसे सम- तिकी बातचीत करते हुए मि० चर्चिलने ा था, तो वे जलभुन-सा गये थे। लेकिन ज ऐसा समय आ गया है कि स्वयं मि० र्चिलको अपने परराष्ट्र मंत्री मि० एंटनी डेनके साथ कई हजार मील दूरस्थ यूनानकी जधानी एथेंसमें उसी कामके लिये आना ा है, जिसपर १९३१ में वे आगबबूला हो थे। काश, ऐसा भी समय उपस्थित ता जब मि० चर्चिलको भारतके 'अर्द्ध- राजद्रोही फकीर' से बातचीत करनेके लिये बाध्य होकर उसके पास सेवाग्राम ाना पड़ता!

बड़े दिनके हर्ष एवं उल्लास मनानेके त्यो- ारके दिन ब्रिटिश प्रधानमन्त्री अपने घरसे ल पड़े, इसका कारण क्या है? हमारा याल है कि यूनानकी गत कुछ सप्ताहोंकी वस्था तथा उसके सम्बन्धमें ब्रिटेन और मेरिकामें होनेवाली प्रतिक्रियाओंको ष्टिगत रखनेवाले पाठकोंको यह समझनेमें ठिनाई नहीं होगी कि ये घटनाएं चर्चिल कारकी आन्तरिक राजनीतिपर अत्यन्त ुव डाल रही हैं। ब्रिटेनकी लेबर पार्टीने गत अधिवेशनमें जहांतक सम्भव हो ा है, चर्चिल सरकारके इस कार्यकी कड़ीसे कड़ी निन्दा की है और उसपर यहां- तक दोषारोपण किया है कि ब्रिटेनकी सेनाका उपयोग प्रधानमन्त्री द्वारा यूनानके गणतन्त्रवादके उन समर्थकोंके विरुद्ध किया जा रहा है, जिन्होंने मित्रराष्ट्रीय सैनिकोंके कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर जर्मन फासिस्टोंसे संघर्ष किया और यूनानकी आजादीको उनके फौलादी पंजोंसे छीना है। लन्दनके टोरी पत्र 'टाइम्स' तकने इस काण्डकी कड़ी आलोचना की है और अपने अग्रलेखमें लिखा है कि ब्रिटिश जनताकी हार्दिक इच्छा है कि यूनानके सङ्कटको शीघ्र समाप्त किया जाये और वहां एक ऐसी जनवादी सरकार स्थापित की जाये, जो वहांकी जनताका विश्वास प्राप्त कर सके और इस सङ्कटको समाप्त कर दे। कहनेका तात्पर्य यह है कि ब्रिटिश प्रधानमन्त्रीका डाउनिङ्ग स्ट्रीटमें जब नाकोदम हो गया है तब वे यूनानकी ओर चल पड़े हैं, ब्रिटिश जनताको यह दिखलानेके लिये हम यूनानकी समस्याको हल करनेके लिये कि कितने उत्सुक और चिंतित हैं। लेकिन काम करनेकी वास्तविक और आडम्बरी इच्छाओंमें वैसा ही अन्तर हुआ करता है जैसा हाथीके खाने और दिखानेके दांतोंमें। चर्चिलने एथेन्समें भूमध्यसागरी ब्रिटिश सेनाधिकारियों, वर्तमान यूनानी सरकार तथा देशभक्त यूनानी प्रतिनिधियोंका संयुक्त सम्मेलन किया और यूनानकी अपनी यात्राका कारण बताया। उन्होंने देशभक्त यूनानी प्रतिनिधियोंको आश्वासन दिया कि हम यूनानसे कोई भौतिक लाभ उठाना नहीं चाहते, बल्कि प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट और मार्शल स्टालिनकी स्वीकृति लेकर हम यूनानके सङ्कटको हृदयसे समाप्त कर देना चाहते हैं।'

परन्तु कहीं ठठेरे-ठठेरे बदलौअल भी होती है। यूनानी देशभक्तोंकी जो सबसे ब[illegible]ी मांग है, उसको जबतक चर्चिलकी सरकार स्वीकार नहीं करले, तबतक समझौता क्योंकर हो और लड़ाई कैसे रुके! देशभक्त यूनानी दलोंका कहना है कि ब्रिटेनके हाथोंकी कठपुतली सरकारके स्थानपर नयी राष्ट्रीय सरकार स्थापित की जाये और उसका प्र[illegible] यूनानकेबहुसंख्यक दलोंका विश्वासपात्र व्यक्ति हो। यूनानकी फासिस्टवादी सरकार द्वारा नियुक्त पुलिस और सेनाका शुद्धिकरण एवं नयी राष्ट्रीय सेना और पुलिसकी नियुक्ति हो। और भी कई मांगें राष्ट्रवादी यूनानियोंकी ओरसे पेश की गयी हैं, जिनको स्वीकार कर लेनेपर यूनानमें वास्तविक राष्ट्रवादी दलोंको प्रभाव स्थापित हो जायगा। लेकिन इस मांगोंको चर्चिलकी कठपुतली सरकारके प्रतिनिधि भला क्यों स्वीकार करने लगे और स्वयं मि० चर्चिलको ही ये बातें कैसे अच्छी लग सकती हैं। अपनी कार्यवाहियों और आचरणोंसे मि० चर्चिल यूनानमें काफी अप्रिय हो चुके हैं। इसका प्रमाण उस समय साफ मिला, जब गत बुधवारको ब्रिटिश राजदूतावासके पास ही उनपर गोलीसे वार किया गया; किन्तु सौभाग्यसे वे बच गये और एक महिला जो उनसे ३ सौ गजकी दूरीपर थी, मर गयी। इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रकारके आक्रमण कायरतापूर्ण प्रयास ही कहे जायेंगे। लेकिन निराश व्यक्तियोंको इन बातोंपर सोच विचार करनेका समय ही कहां? परन्तु यह अवांछनीय कांड, यदि मि० चर्चिल विवेकसे काम लें और अपनी पूर्व घोषणाओंपर ध्यान दें तो, अपनी नीतिमें पर्याप्त सुधार करनेके लिये एक चेतावनी है।

बुधवारकी ही शामको मि० चर्चिलने पत्रकारोंकी एक कान्फरेंसमें यूनानकी अवस्था सुधारनेके प्रश्नपर अपने जो विचार व्यक्त किये, उनसे साफ जाहिर होता है कि स्थिति सुधरनेकी अपेक्षा अधिक खराब हो सकती है। उन्होंने कहा है कि "इस मामलेमें पड़ चुकनेके बाद हमने अनेक उत्तरदायित्व अपने कन्धोंपर ले लिये हैं। इसलिये जिन शक्तियोंका उपयोग आवश्यक है, हम उन्हें काममें लायेंगे। जिन हजारों यूनानियोंने हमारे साथ मित्रता प्रदर्शित की है, वे विजेताओं द्वारा दण्डित किये जायेंगे।" अगर मि० चर्चिलके उक्त बातोंका अर्थ यही हो कि वे पापांडूके इस्तीफा दे देनेपर भी, उसकी सरकारकी सत्ता कायम रखनेको कृत संकल्प हैं तो कोई भी विवेकशील व्यक्ति उनके इस कार्यकी निन्दा ही करेगा। यूनानके घरेलू मामलेमें ब्रिटिश सरकारका शस्त्र और शक्तिका प्रयोग बिलकुल अनुचित और अवांछनीय है और यह स्पष्ट तौरपर बतलाता है कि मि० चर्चिलकी यूनान यात्रा ब्रिटेन वासियोंको भुलावेमें रखनेके लिये हुई है। देखना है भविष्य चर्चिलकी यूनान नीतिका कितना पर्दाफाश करता है!

हिन्दू कोडका विरोध क्यों?

हमारा मातृ समाज अस्मरणीय कालसे तरह तरहकी अयोग्यताओंका शिकार बनता आया है। यही कारण है कि आज भी हमारा महिला समाज स्वतंत्र वातावरणसे वंचित रह पंगु और अकर्मण्य-सा बना हुआ 'अबला' शब्दको सार्थक कर रहा है। लेकिन जमानेकी चेतावनी है कि अपनेको सर्वांगीण पूर्ण बनाये बिना आगे बढ़ना असंभव है। स्त्री और पुरुष समाज-शकटके दो पहिये हैं। जबतक दोनों पहिये बराबर और एक सामान मजबूत नहीं होंगे तबतक समाजका शकट सुचारु रूपेण नहीं चल सकेगा। आज समाजमें तरह तरहकी बुराइयां इसीलिये घर कर गयी हैं क्योंकि हम इतनी उदारतासे भी काम लेनेको तैयार नहीं हैं कि अपने अर्धाङ्ग महिला समाजको अपने समकक्ष खड़ा होने योग्य बना सकें। हिन्दू कोडका आविर्भाव महिलावर्गके प्रति पुरुष समाज द्वारा अस्मरणीय कालसे किये जानेवाले अन्याय पूर्ण कार्योंका कुछ अंशोंमें प्रतिकार करनेके लिये ही हुआ है। हम मानते हैं कि इसमें अनेक दोष भी फूलमें कांटेकी तरह छिपे हुए हैं, लेकिन कांटोंके डरसे ही कोई फूलका परित्याग कर दे ऐसा व्यक्ति तो हमने देखा ही नहीं। फिर यह बात हमारी समझमें नहीं आती कि इसका विरोध करनेके लिये व्यर्थका बावेला क्यों उठाया जा रहा है। इसमें वास्तवमें जो दोष हैं, उनको दूर करनेकी चेष्टाका स्वागत तो सभी विवेकशील व्यक्ति करेंगे। लेकिन किसी अच्छी वस्तुको स्वार्थपरताके वशीभूत होकर त्याज्य ठहरानेवाले प्रयासको तो सभी घृणाकी ही दृष्टिसे देखेंगे और वैसी आवाज उठानेवाले व्यक्ति अपनेको हास्यास्पद बनानेके सिवा और कुछ लाभ नहीं उठा सकते। अब समय बहुत आगे बढ़ गया है। अतएव धर्मके नामपर समाज घातक रूढ़ियोंकी रक्षाके लिये उदार चेता व्यक्तियोंकी आंखोंमें धूल नहीं झोंकी जा सकती। जो लोग केवल संकीर्णताके आधारपर अपने रक्त-कण, पुत्र-पुत्रीको समान अधिकार देनेमें नाक-भौं सिकोड़ते हैं, अनमेल विवाहोंका बाजार गर्म कर बेमेल दम्पत्तियोंके वैवाहिक सम्बन्ध विच्छेदको धर्मका गला घोंटू करार दे देते हैं, बाल-विवाहको प्रत्यक्ष नहीं, तो परोक्ष रूपसे प्रोत्साहन देकर विधवा विवाहका नाम सुनकर ही कानमें अंगुली डालते हैं, उनकी बातोंका कोई वजन नहीं। ऐसे भले आदमियोंके लिये 'विश्वमित्र' संचालककी ये सामयिक बातें चेतावनी स्वरूप हैं कि "प्रस्तुत हिन्दू कोड जैसे प्रस्ताव हिन्दू समाजमें इसीलिये आते हैं क्योंकि लोग वर्णाश्रमको पगपगपर ठुकराते हुए देखे जाते हैं। लड़कियोंको सम्पत्ति देनेपर लोग आज भयभीत तो हो रहे हैं, परन्तु जमाना तो ऐसा आ रहा है कि व्यक्तिगत सम्पत्ति नामकी कोई चीज ही नहीं रह जायेगी। रूसकी विजय उस दिशाका इशारा कर रही है। इस लिये लड़कियोंको अपनी चीज समझ कर उन्हें आर्थिक नीतिका सर्वदाके लिये शिकार नहीं बनाये रखना चाहिये। जिस हिन्दू संस्कृतिकी हम रक्षा करना चाहते हैं, महिला समाजसे उसका सर्वाधिक घनिष्ठ सम्बन्ध है।"

सामयिक सुझाव—

संस्कृति एवं सभ्यताकी प्राचीन भूमि—चीन आज जिस दयनीय अवस्थाको पहुंचाया गया है, उससे मुक्तिका एकमात्र मार्ग राष्ट्रीय एकताकी स्थापना ही है। यही कारण है कि चीन हितैषी समस्त लोगों एवं मित्रराष्ट्रोंकी सर्वाधिक चेष्टा इसदिशामें हो रही की चुङ्किंग सरकार और चीनी कम्यूनिस्टपार्टीमें समझौता होजाये। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि चीनके कम्यूनिस्ट और चुङ्किंग सरकार राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य रक्षाके लिये हृदयसे कामना करते हैं और उसके लिये विभिन्न अभावोंके बावजूद उन्होंने जो श्लाघनीय चेष्टा की है उसीका यह परिणाम है कि निहत्था चीन गत ७ वर्षों से आधुनिकतम वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रोंसे सुसम्पन्न जापानी सेनाओंसे अबतक वीरतापूर्वक लोहा लेता आया है और स्वप्नमें भी कभी अपनेसे अधिक साधन शक्ति सम्पन्न आक्रमणकारियोंके सामने घुटने टेकनेका विचार तक मनमें नहीं लाया। लेकिन वास्तवमें यह बड़े परितापका विषय है कि अभीतक चीनके इन दोनों प्रधान राजनीतिक अंगोंमें एकता स्थापित नहीं हो सकी। जहांतक चीनी कम्यूनिस्ट पार्टीका सम्बन्ध है, उसके समझौता सम्बन्धी प्रयासोंसे यह स्पष्ट मालूम होता है कि वह जापानके विरुद्ध चीनकी सारी-शक्ति और साधनोंको प्रयुक्त करनेके लिये हृदयसे उत्सुक और चिंतित है, किन्तु चीनके सबसे अधिक प्रभावशाली कोमिंग-

तांगके सेनानायक मार्शलचांग कैशकके कम्यूनिस्टोंके प्रति पुराने कुसंस्कार अभीतक पूर्ण रूपसे मिट नहीं सके हैं, उनमें शिथिलता आयी भले ही कही जा सकती है। इतनेपर भी कम्यूनिस्ट पार्टी अभीतक निराश नहीं है और समझौतेके लिये बारम्बार प्रयत्न करती जा रही है। अमेरिकाके यूनाइटेड प्रेसकी हालकी रिपोर्टसे पता चला है कि चीनी कम्यूनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय समितिके चेयरमैनने चीनकी जनतासे अपील की है कि एक गणतन्त्रात्मक संयुक्त सरकार स्थापित करनेके लिये सर्वदलीय राष्ट्रीय सभाका आयोजन किया जाये। इसमें सन्देह नहीं कि कम्यूनिस्टोंका यह सुझाव सर्वथा सामयिक है और अगर राष्ट्रीय सभाको संयुक्त गणतन्त्रात्मक सरकारको संस्थापित करनेमें सफलता मिल जाये तो चीनका सर्वाधिक कल्याण होगा। लेकिन सवाल तो यह है कि चीन सरकारके सर्वेसर्वा मार्शल चांग क्या इस सामयिक सुझावपर ध्यान देंगे? यदि मार्शल बदलती हुई अवस्थाके साथ अपनेको भी बदलनेकी चेष्टा न कर पुराने विचारोंपर ही अडिग बने रहेंगे तो चीनकी अवस्था उत्तरोत्तर बदतर होती जायेगी और आक्रमणकारियोंको बिना विशेष कष्टके ही सफलता मिलती जायेगी। इसलिये समय और स्थितिका तकाजा तो यही है कि चीनके वास्तविक हितैषी उसकी वर्तमान हीनावस्थासे किसी वश अन्य कारणसे उदासीन न रहें और उपयुक्त कार्यवाही अविलम्ब करें।

डा० मुकर्जीका भाषण—

मध्य-प्रदेशके अन्तर्गत बिलासपुरमें अखिल भारतीय हिन्दू महासभाके २६ वें अधिवेशनका सभापतित्व करते हुए डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीने उस दिन जो भाषण किया है, वह उनके उस भाषणसे काफी अन्तर रखता है, जो उन्होंने अमृतसर अधिवेशनका सभापतित्व करते हुए दिया था। इसका प्रधान कारण इसके सिवा और क्या हो सकता है कि हिन्दू महासभा भी देशकी एक मात्र प्रतिनिधि राष्ट्रीय महासभा कांग्रेसको गाली देनेमें मुसलिम-लीगसे प्रतिद्वन्द्विता करना चाहती है। रचनात्मक कार्य क्षेत्रमें प्रतिद्वन्द्विता अथवा प्रतियोगिता व्यक्ति विशेष अथवा संस्था विशेषको ऊंचा उठाती है और ऐसी होड़ निश्चय ही श्लाघनीय और स्वागतकी पात्र है, लेकिन बिना किसी आधारके कुंजड़िनोंका पार्ट अदा करना सर्वथा निन्दनीय कहा और समझा जाता है। इसलिये अपने इस भाषणमें जहां डा० मुकर्जीने कई पतेकी उचित बातें कही हैं, वहां कांग्रेस जैसी लोकमान्य संस्थापर कीचड़ उछालकर उन्होंने यह साबित कर दिया है कि हिन्दू महासभाके सभापतिपदको अनेक वर्षों तक सुशोभित करनेवाले श्री वी० डी० सावरकरके अराष्ट्रीय उत्तराधिकारको ये भी ग्रहण करनेकी चेष्टा कर रहे हैं। डा० मुकर्जीको मालूम होना चाहिये कि कांग्रेसने अपने अपूर्व त्यागों और बलिदानोंके द्वारा कोटि-कोटि भारत वासियोंके हृदयस्थलमें जो उच्चासन प्राप्त किया है उससे वह साम्प्रदायिक नेताओंकी छींटा कशीसे नीचे नहीं गिरायी जा सकती। भगवान भास्करपर थूकनेकी अदूरदर्शिता दिखानेवाले लोगोंकी जो हास्यास्पद गति होती है, वही दशा कांग्रेसको गाली बकनेवालोंकी होगी इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। हम तो समझते थे कि डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीके सभापतित्वमें हिन्दू महासभा अ न रानी परम्पराको छोड़कर भारतके बहुसंख्यक हिन्दू समाजके वास्तविक विचारोंका प्रतिनिधित्व करेगी। लेकिन ऐसा जान पड़ता है कि जिस प्रकार मुसलिम लीग उच्च श्रेणीके थोड़े-से मुसलिम नवाबों और जमींदारोंकी स्वार्थभरी नीतिका शिकार बनकर राष्ट्रवादी मुसलमानोंका विश्वास नहीं पा सकी, उसी प्रकार हिंदू महासभा भी राष्ट्रवादी हिन्दू समुदायका अविश्वास भाजन बननेकी चेष्टा कर रही है। डा. मुकर्जीके अपने सङ्कीर्ण दृष्टिकोणके कारण उनकी राष्ट्रीय एकता सम्बन्धी वह अपील बिलकुल निरर्थक बन जाती है जिसके द्वारा उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय स्वाधीनताके विरोधियोंसे अपना जन्मसिद्ध अधिकार छीननेके लिये विभिन्न राजनीतिक दलोंको एक साथ मिलकर अपनी राष्ट्रीय मांग पेश करने पर विशेष जोर दिया है। विभिन्न राजनीतिक दलोंकी एकताके लिये सर्वाधिक आवश्यक यह है कि उनके नेता अपने साम्प्रदायिक और वर्गगत सङ्कीर्ण दृष्टिकोणका परित्याग कर सार्वदेशिक दृष्टिकोण अख्तियार करें और पारस्परिक एकताके प्रश्नपर उदार हृदयसे विचार करें। भारतमें अपना स्वार्थ सिद्ध करनेके लिये ब्रिटिश शासक जिन हथकंडोंका उपयोग गत १५० वर्षोंसे करते आ रहे हैं, उनका काफी पर्दाफाश हो चुका है। एक ही बातको बार बार दुहरानेसे कोई फायदा नहीं। डा० मुकर्जी जिस आधारपर राष्ट्रीय अखण्डताकी दुहाई देकर हिन्दू राष्ट्रको गुमराह बनाना चाहते हैं, वह इस प्रगतिके युगमें कोई महत्व नहीं रखता और उसके द्वारा वे कदापि एकता नहीं स्थापित कर सकते। साम्प्रदायिक एकताके मसलेपर जिस फार्मूलेको महात्मा गांधीका समर्थन प्राप्त हो चुका है उसके सम्बन्धमें डा० मुकर्जीका ख्याल बिलकुल गलत है और समयकी गतिको दृष्टिमें रखकर उसपर विचार करनेकी आवश्यकता है। राष्ट्रीय समस्याका समाधान हिन्दू अथवा मुसलमान बनकर नहीं, प्रत्युत भारतीय बनकर ही किया जा सकता है। इस सत्यको जबतक हृदयङ्गम नहीं किया जायेगा तबतक देशमें एक 'शामिल मोर्चा' कायम करना आकाश कुसुम तोड़नेके समान असम्भव है।

ये भारतीय जेलखाने—

भारतके अन्दर ब्रिटिश जेलखानोंकी अवस्था अन्य देशोंकी अपेक्षा कितनी दयनीय है, इसपर समय समयपर विशेषज्ञ डाक्टरोंकी आत्मा अनुभूति प्रकाश डालती रहती है। जब हम विदेशी जेलखानोंकी अवस्थाका वर्णन विदेशी पत्र-पत्रिकाओंमें पढ़ते हैं और उनका मिलान अपने देशके कारागृहोंसे करते हैं, तो इसी निष्कर्षपर पहुंचते हैं कि वास्तवमें ये मानव निवासके उपयुक्त हैं ही नहीं। लेकिन आज देशकी अधिकांश विभूतियां गत दो-ढ़ाई वर्षोंसे इसी जीवनको बितानेके लिये बाध्य की जा रही हैं। उस दिन कानपुरमें होनेवाली आल इंडिया मेडिकल कानफरेंसमें बम्बईके सुप्रसिद्ध डा० जीवराज मेहताने जेल-सम्बन्धी अपने व्यक्तिगत अनुभवोंका जो विवरण पेश किया, उससे यह साफ होगया कि अधिकांश जेलोंके बड़ेसे बड़े अधिकारी भी मानवतत्वोंसे बिलकुल शून्य हैं। पता नहीं, इन पदोंके लिये उम्मेदवारोंका चुनाव करते समय मानवतत्वोंकी शून्यताको विशेषता दी जाती है क्या? पूनाके आगाखां महलमें जिस समय राष्ट्रमाता कस्तूरबा गांधी रुग्ण थीं, बम्बई जेलके इन्स्पेक्टर जेनरल डा० जीवराज मेहताको उनकी जांच करनेके लिये ले गये थे। डा० मेहता भी उस समय यरवदा जेलमें नजरबन्द थे। जब मेहता रुग्ण कस्तूरबाको देख रहे थे, तब महात्मा गांधीने इन्स्पेक्टर जेनरलसे यह इजाजत चाही कि डा० मेहतासे थोड़ी देर बातचीत कर सकें। लेकिन उन्हें यह कहकर इजाजत नहीं दी गयी कि डा० मेहताको बिना सरकारकी अनुमति लिये ही मैं अपनी जिम्मेदारीपर ले आया हूं। कस्तूरबाकी अवस्था जब चिन्ताजनक हो गयी थी, तब डा० मेहताको इन्स्पेक्टर जेनरल ले गये थे। ऐसे समयमें महात्मा गांधी उनसे राजनीतिक समस्याओंपर थोड़े ही वादविवाद करते कि जेलके इन्स्पेक्टर जेनरलको किसी प्रकारके खतरेकी आशङ्का हुई। अधिकसे अधिक महात्मा गांधी यही पूछते कि कस्तूरबाकी हालत कैसी है। उस समय महात्माजीकी क्या मानसिक अवस्था होगी, यह एक साधारण आदमी भी अनुभव कर सकता है। जेल इन्स्पेक्टर जेनरलको अगर कुछ आशंका थी तो इस शर्तपर तो महात्माजीको इजाजत दे ही देनी चाहिये थी कि वे सिर्फ कस्तूरबाके सम्बन्धमेंही बातचीत कर सकते हैं, अन्य कोई विषय नहीं उठा सकते। लेकिन उनके मुंहसे ऐसी बात निकली हीं नहीं। जब इतनी हृदय-शून्यता है बड़े मियांमें, तो छोटे मियां फिर शुभान अल्ला क्यों न हों। डा० मेहताने बन्दियोंको दिये जानेवाले खाद्य पदार्थों और वस्त्रोंकी अपर्याप्तताकी भी शिकायत की और कहा कि १४ मई १९४३ को मैंने बम्बई सरकारके गृह विभागको एक पत्र लिखा था, जिसमें यह बताया था कि 'जो दूध रोगी बन्दियोंको दिया जाता है, उसमें ५० से ७० फी सदी तक जल रहता है।' भला दूधके नामपर इस गर्मजलको पीकर रोगी अपने स्वास्थ्यमें उन्नति क्या कर सकता है, यह सोचनेकी बात है। अन्य खाद्य पदार्थोंकी भी अवस्था करीब ऐसी ही होती है। बम्बईके अलावा अन्य कई प्रांतोंमें तो बन्दियोंको काफी वस्त्र भी नहीं मिलता। ऐसी दशामें जेलसे निकलनेवाले बन्दियोंका स्वास्थ्य काफी गिरा हुआ अथवा रुग्ण न हो तो और क्या हो। इतनेपर भी भारत सचिव जब कभी लोक प्रिय भारतीय नजरबन्द नेताओंके स्वास्थ्यका वर्णन करने लगते हैं, तो जेल-व्यवस्थाकी प्रशंसाके पुल बांधने लगते हैं। इसे सत्यका गला घोंटनेके सिवा और क्या कहा जायेगा?

महात्माजी शीघ्र स्वस्थ हों

आज देशके सामने जो अनेक
प्रस्तुत हैं, उनमें एक देशके प्राण म
गांधीकी अस्वस्थता भी है। महात्म
स्वास्थ्यके सम्बन्धमें इधर जो समाचा
हो रहे हैं, वे स्पष्ट बतलाते हैं कि
लगभग १ महीने तक कार्योपवास
बाद भी महात्माजी स्वस्थ नहीं हो
इधर जुकाम और मामूली ज्वरसे
थकावट और बढ़ गयी है और स्वास
भी कुछ कठिनाई महसूस हो रही है।
तका यह दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि
मौकेपर जब कि देशके सामने अनेक
समस्याएं समाधानके लिये खड़
महात्माजी स्वस्थ नहीं हैं और
देशके कार्योंसे विश्राम लेनेकी आवश
पड़ रही है। यद्यपि महात्माजी प्रत्यक्ष
देशकी समस्याओंसे अपनेको अलग र
चेष्टा करते हैं, तथापि उनका सन्त
देशवासियोंकी दयनीय अवस्था देख
सुनकर दुखित होता जा रहा है। यही
है कि जिस मानसिक विश्रामको
करनेके उद्देश्यसे उन्होंने एक महीने
सार्वजनिक कार्यवाहियोंसे अपनेको
रखा है, वह विश्राम निश्चित
समाप्त हो जानेपर भी अबतक नहीं
सका। गत सप्ताह बम्बईके डा० गिल्डर
डा० गज्जारने महात्माजीके स्वास्
जांच की और बतलाया कि पूर्ण विश्रा
अभी और आवश्यकता है। उन्होंने स्वा
पूर्ण सुधार होने तक महात्माजीको अ
बोलनेसे भी मना किया है। इसलिये
सहकर्मियों और पत्र संवाददाताओंसे उ
अपील की है कि वे महात्माजीके विश्र
बाधक न हों और उन्हें शीघ्र आरोग्य
करनेमें सहायता प्रदान करें। महात्
शीघ्र पूर्ण स्वस्थ बन जायें, हमारी
हार्दिक प्रार्थना और कामना है।

भूल सुधार—

प्रेस भूतोंकी असावधानीसे पृष्ठ ९
प्रकाशित 'भारतमें नारी जागृतिकी प्र
शीर्षक लेखका बीचका कुछ अंश छूट
है, जो पृष्ठ १५ पर इसी शीर्षकके
प्रकाशित किया जाता है। पृष्ट ९ के
कालममें ३० वीं पंक्तिके बादका मैटर पा
१५ वें पृष्ठपर समाप्त करनेके बाद फिर
पृष्ठपर नये पैराग्राफसे पढ़ें।—सं०

फिलस्तीनका भविष्य

——:o:——

(लेखक—श्री महेशकुमार वाजपेयी, एम० ए०,)

विश्वके विभिन्न देशोंके राजनीतिज्ञ चारक, पर्यपेक्षक और कूटनीतिज्ञ जब फिलस्तीनके राजनीनिक भविष्यके बारेमें विचार विमर्श और आलोचनाएं कर रहे हैं, ह देश स्वयं अपने भविष्य चिन्तनमें पूर्ण- पसे संलग्न है और स्वाभाविक ढङ्गसे अपने विष्यका निर्माण कर रहा है। हमारा ऐसा याल है कि एक दिन हम फिलस्तीनको नये रूपमें देखेंगे। उस समय इस प्राचीन देशका ीवन काफी परिवर्तित हो गया होगा और स स्थानपर नयी सामाजिक प्रथाएं, नया ानव सम्बन्ध, जो कृषि और औद्योगिक र्थवादपर कायम होगा, अपना स्थान ग्रहण रेगा ! उसकी सीमा रेखाको पहचानना भी ्किल हो जायगा। इस नये समाजसे संसारका बहुत बड़ा उपकार होगा और म्भवतः वह मानव जातिके लिये आदर्श भी ाबित होगा। फिलस्तीनके निवासी भी पनी नयी सामाजिक व्यवस्थासे बड़े लाभा- न्वित और समृद्ध हो सकेंगे।

नया फिलस्तीन अधिकांशमें यहूदी वर्ण ौर परम्परापर ही निर्मित होगा। उसकी विचार धारा और उद्देश्यमें भी यहूदी सिद्धा- ंतोंका प्राधान्य रहेगा, किन्तु उससे अन्य र्ण और जातिकी जनता भी लाभ उठायेगी ौर महसूस करेगी कि आज प्राप्त होनेवाली मृद्धि कलकी राजनीतिक योजनासे विशेष हत्व रखती है। यह छोटा-सा देश, जिसके स अधिक भूमि भी नहीं है और खनिज ार्थोंमें तेलके सिवा अन्य कोई वस्तु वहां पलब्ध नहीं, किस प्रकार अपनी उन्नतिकर ा है, यह सचमुच ही विचारणीय है। ़लस्तीनने अत्यधिक परिश्रम और अर्थव्यय के मृतकसागरकी खानोंका पता लगाया फिर भी उसकी खुदाईमें बहुत अधिक श्रम र व्ययकी आवश्यकता है। तेल भी विशेष रिमाणमें नहीं निकाला जाता और उसके ि अभी और उद्योग तथा व्यय करना ़ेगा। यह देश अपने युवकों और युव- योंके परिश्रम, लगन और चातुर्य्यसे उन्न- की ओर अग्रसर हो रहा है। फिल- ीनकी यहूदी आबादीमें से आधीसे धिककी उम्र २० सालके लगभग है। यहां- कुल आबादी अपने लिये अथवा अपने ामीके लिये नहीं, वरन एक आदर्शके लिये ना परिश्रम कर रही है, और इसी कारण कार्य अन्य स्थानोंमें असम्भवसा प्रतीत ता है, वह यहां सम्भव और पूर्ण सफल ा है। इसको उन लोगोंने ही सम्भव ाया है, जो सदियोंसे गृहविहीन रहे हैं र अनेक देशोंमें कुछ विशिष्ट कार्योंको ते रहे हैं तथा कुछको छोड़कर बाकी सभी ोंका अपनी मातृभूमिसे सम्बन्ध टूट ुका है।

किन्तु अब फिलस्तीनमें 'स्वदेश वापस ो' आन्दोलन आरम्भ हो चुका है और के साथ ही 'साधारण कार्य आरम्भ ो' आन्दोलन जारी है। क्योंकि यहूदी मकोंके बिना फिलस्तीनमें यहूदी संस्कृति ़ायम नहीं हो सकती। पिछले २९ वर्षोंके ंमें फिलस्तीनके गांवोंकी जन संख्या कुछ से बढ़कर दो लाखके आसपास पहुंच गयी इस समय वहां २५० से अधिक गांव हैं और उस यहूदी आबादीका चतुर्थांश गांवोंमें रहता हैं। यह ठीक है कि गांवोंमें रहनेवाले सभी यहूदी खेती बारी नहीं करते, किन्तु सबके अपने घर हैं और उसके साथ कुछ जमीन जायदाद भी है।

फिलस्तीनमें इस समय तीस लाख एकड़से अधिक खेती करने योग्य भूमि है करीब ५ लाख एकड़ भूमिपर यहूदियोंका अधिकार है। अधिक लोगोंका कहना है कि फिलस्तीनमें बाहरसे आनेवाले यहू- दियोंके लिये स्थान नहीं है। उनको यह भली भांति जान लेना चाहिये कि अब भी २५ लाख एकड़से अधिक भूमि दूसरोंके अधिकारमें है और वह भूमि वापस मिल जानेपर विशाल यहूदी जनसंख्याका उससे गुजारा हो सकेगा। यहूदियोंके अधिकारकी ५ लाख एकड़ भूमि भी कठिन परिश्रमके बिना प्राप्त नहीं हुई है। उसके लिये बहुत अधिक आंसू, पसीना और खून बहाना पड़ा है। दलदल साफ किये गये हैं, पड़ती जमीन को उपजाऊ बनाया गया है और भूमिपर अधिकार कायम रखनेके लिये खून भी बहाया गया है। यहूदी श्रमिकोंने कुछ कार्य बड़े ही उल्लेखनीय ढंगसे किये हैं और खास- कर खेती करनेमें तो उन्होंने बड़ी ही अद्भुत कुशलताका परिचय दिया है।

जिन खेतोंमें पहले बहुत ही खराब फसल होती थी, आज वहीं प्रति वर्ष साग-सब्जि- योंकी तीन फसलें काटी जाती हैं। एक एकड़ जमीनमें ९०० किलोग्राम (१ किलोग्राम प्रायः १ सेर होता है) पैदा होने वाले गेहूं की मात्रा बढ़कर ४००० किलोग्राम हो गयी है। पहले एक गाय जितना दूध देती थी, अब उससे दसगुना अधिक देती है। १९१९में एक लाख नारङ्गीकी पेटियां बाहर भेजी गयीं थीं, किन्तु १९३९ में उनकी संख्या १५ लाख थी।

फिलस्तीनके धार्मिक और सामाजिक प्रधान नेता।

अमेरिकन कृषि-विभागके प्रोफेसर मि० लाउडर मिल्कने फिलस्तीनके यहूदियोंकी कृषि सम्बन्धी लगनपर अपनी राय प्रकट करते हुए कहा है कि "जैसी लगनसे यहू- दियोंने जमीनको उर्वरा तथा कृषि योग्य बनाया है, वैसा उदाहरण विश्वके इति- हासमें अन्यत्र दुर्लभ है।" यहां यह ध्यान देनेकी बात है कि करीब आधी जमीनपर राष्ट्रका अधिकार है और राष्ट्र उसको व्य- क्तियोंके सहकार संघों तथा सामूहिक ढङ्ग- पर खेती करनेवालोंको ४९ वर्षके पट्टे पर देता है और लगान कुल उपजका २ प्रति सैकड़ा वसूल करता है। फिलस्तीनमें जमीन को उन्नत बनानेके आन्दोलनमें युवक संघका प्रमुख हाथ है। इस संघकी स्थापना १९३४ में हुई थी। १४ वर्षसे अधिक आयुकी तमाम नवयुवक-नवयुवतियां उस संघके सदस्य सदस्याएं बन सकती हैं। अब उस संघकी सदस्य संख्या दस हजारसे अधिक हो गयी है। इन सदस्योंमें कम उम्रके बच्चोंको गांवमें रखा जाता है। लेकिन अधिकांशको सामू- हिक गांवोंमें रखकर विशेष प्रकारकी शिक्षा दी जाती है। कुछ लोग यह प्रश्न पूछ सकते हैं कि क्या यह सब अरबोंका शोषण करके नहीं किया जा रहा है। उत्तर सीधासादा है 'नहीं'। क्योंकि अरबोंकी आबादी सन् १९३ तक ३० सैकड़ा बढ़ी थी। सन् १९२० से फलोंकी खेती अब ६ गुनी अधिक बढ़ गयी है। फिलस्तीनके अरब लोगोंकी तनख्वाह पड़ोसी देशोंसे दुगुनी हो गयी है। यहूदियोंके अनुभव और परीक्षणोंसे जो चाहे, फायदा उठा सकता है। अधिकांश अरबोंने भी फायदा उठाया है। अक्सर यह कहा जाता है कि फिलस्तीनमें दोनों जातियोंके जीवन-यापन के लिये पर्याप्त जमीन नहीं है। लेकिन इतना कह देना ही यथेष्ट होगा कि अभी कमसे कम दोनों जातियोंको बहुत दिनोंतक जमीनके विषयमें चिन्ता करनेकी आवश्यकता न पड़ेगी। क्योंकि दक्षिणी हिस्सेमें, जहां अभी पानीकी खोज की जा रही है, प्रस्तुत उपजाऊ भूमिसे बहुत अधिक जमीन योंही पड़ी हुई है।

अब जरा उद्योगधन्धोंपर विचार किया जाय। यहूदियोंके पास प्राथमिक तथा कुछ ऊंचे दर्जेके कल-कारखाने भी हैं। निजी उद्योग धन्धोंमें व्यक्तिगत लाभको दूसरा स्थान दिया जाता है। अमेरिका तथा ग्रेट ब्रिटेनमें बड़े-बड़े पूंजीपतियोंने मिलकर कितने ही 'सहायता कोष' खोले हैं जिनका उद्देश्य फिलस्तीनके विभिन्न उद्योग-धन्धोंको मदद देना है, उदाहरणार्थ फिलस्तीन इले- क्ट्रिक कारपोरेशन, कपड़ेकी मिलें आदि। इन सब संस्थाओंकी पूंजी यहूदियोंकी है और पहले उनको ही काम दिया जाता है। लेकिन मजदूर अधिकतर अरब लोग ही हैं। जाफाके पास तेल-आवेब नामक एक छोटा- सा गांव था। बढ़ते-बढ़ते अब वह एक बड़ा औद्योगिक शहर हो गया है और उसकी आबादी दो लाखसे अधिक हो गयी है। इसी तरह हैफा एक अति आधुनिक औद्यो- गिक एवं व्यापारिक बन्दरगाह बन गया है। कल-कारखानोंकी संख्या तथा उत्पादनके मूल्यमें वृद्धि होती जा रही है। १९४२ में विभिन्न उद्योगोंमें काम करनेवालोंकी संख्या ९० हजारके लगभग थी। इसमें मकान बनानेवाले दस हजार व्यक्ति शामिल नहीं हैं। उस समय उनके उत्पादनका कुल मूल्य ४९ करोड़ रुपये था। इनमें कुछ कारखानोंके नागरिक उपयोगी वस्तुएं बनानेके अतिरिक्त सब अन्य युद्ध सामग्री बना रहे हैं। इन उद्योग धन्धोंकी उन्नतिका प्रबन्ध तथा मजदूरोंकी व्यवस्था यहूदियोंकी एक संस्था द्वारा होता है। यहां यहूदी मज- दूरोंकीभी एक संस्था है। औद्योगिक प्रगतिमें इस संस्थाका प्रमुख हाथ है। यहूदियोंकी पांच लाखकी आबादीमेंसे इस संस्थाकी सदस्य संख्या लगभग १ लाख ३० हजार १९४२ में थी उसके बाद इधर काफी सदस्य बढ़े हैं। यह संस्था अपने मजदूरोंको

नये सालका गीत

——:o:*:o:——

नये सालका नया गीत लो
युग आता जाता रहता है
जग झोंके खाता रहता है
सम्भव और असम्भव दोनों
आगन्तुक लाता रहता है
ओ नवीन की पूजा करनेवाले आओ नये मीत लो।
क्रम का अन्त नहीं हो पाता
यह निजको दुहराता जाता
घड़ी, पहर, दिन, मास, वर्ष
इसके आगे है चक्कर खाता
यह जड़ नियम पुनः आया है नये रूप में नयी रीत लो।
जग आगे बढ़ता जाता है
नये पाठ पढ़ता जाता है
अक्षमता की लज्जा उसको
जय गिरि पर चढ़ता जाता है
आशा के इस नये फूल की लगन डालसे—नयी प्रीत लो
नये साल का नया गीत लो

—पन्नालाल महतो 'हृदय'

चीनकी दुर्दशाका रहस्य

——:०:——

(लेखक—श्री इन्द्रदत्त शर्मा)

वस्तुतः यह बड़े आश्चर्यकी बात मालूम होती है कि प्राचीन सभ्यता और संस्कृतिका आदि स्थान चीन; जिसका एक समय लगभग एक तिहाई एशियापर साम्राज्य था, लगातार विनाशके गर्तकी ओर अग्रसर होता जा रहा है। गत डेढ़ सौ वर्षोंके अन्दर चीनको जिन अपार कष्टों और विपत्तियोंका सामना करना पड़ा है, दुर्भिक्ष, महामारियों एवं विनाशकारी बाढ़ोंसे संघर्ष करना पड़ा है, उनका ठीक ठीक वर्णन करनेकी शक्ति लेखकोंकी लेखनी, अथवा वक्ताओंके भाषणोंमें नहीं है। चीन जैसा शांति प्रिय, सर्वाधिक घना आबाद तथा परिश्रमी राष्ट्र अभूतपूर्व शृंखलाबद्ध विदेशी आक्रमणोंका शिकार बने, ब्रिटेन और जापान द्वारा तीन-तीन बार तूफानी हमले किये जायें, ब्रिटेनके प्रधान मन्त्री संसारके विनाशोन्मुख राष्ट्रोंमें उसकी खुलेआम गणना करें आखिर इन सारे दयनीय काण्डोंका मूलकारण है क्या?

१८९८ की ४ मईको अपने एक भाषण के सिलसिलेमें लार्ड सेलिस्वरीने कहा था कि इन सारी खुराफातोंका एकमात्र कारण चीनकी अकर्मण्य नीति है। इस अकर्मण्यता के परिणाम स्वरूप चीन साम्राज्यकी नीति अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें सर्वदा हाथ जोड़कर सन्तुष्ट करनेकी रही है। घरेलू मामलोंमें साम्राज्यके विभिन्न अंगोंको ऐसी अनियन्त्रित स्वाधीनता दे दी है गयी कि जिसके मनमें जो आया, छूटकर खूब हाथ पैर पटका! जिस राष्ट्रका शासन ऐसे शासकों द्वारा किया जाये, जिनकी नियुक्ति न तो कोई परम्परागत आधारपर हो अथवा न तो सार्वजनिक मताधिकारके द्वारा हो, बल्कि जो प्रखर बुद्धिको देखकर ही चुन लिया जाता था, जहां यह सिद्धांतके रूपमें मान लिया गया हो कि सब लोग अच्छे ही उत्पन्न होते हैं, जिस राज्यमें संघर्ष की भावना इतनी कम हो कि कभी भूलकर भी क्रियात्मक संघर्षका वह नाम न ले, भला इस संघर्ष :शील विश्वमें वह कैसे अपना अस्तित्व बनाये रख सकता है।

चीनके जिस पुरातन विधानकी इतिश्री १९१२ में इसलिये की गयी थी कि उससे वह एक गणतन्त्रवादी राष्ट्र नहीं बनाया जायगा, वह वस्तुतः कोई विधान नहीं, बल्कि धर्म शास्त्रका उपदेश मात्र था। कानूनकी अपेक्षा वह एक विश्वासकी चीज था। जिसके मनमें आया उसका पालन किया, जिसके मनमें नहीं आया उसने ठुकरा दिया। उसकी धार्मिक पुस्तक 'ताव-ते चिंग' है, जिसमें सन्त ताव ओ-जू जैसे महात्माके सिद्धान्त निहित हैं। उनके सम्बन्धमें कहा जाता था कि वे ईसा मसीह के जन्मसे ६०० वर्ष पहले हुए थे। लेकिन आजका विद्वत्समाज उनको ऐतिहासिक व्यक्ति ठहराता ही नहीं। ऐसे ऐरे-गैरे लोगोंके सिद्धान्तोंके आधारपर बनाये गये विधानपर यदि राष्ट्र जीवित रहे तो आठवां आश्चर्य ही है। यहां 'ताव ओ-जू' के दो एक वाक्योंको उद्धृत करना अप्रासंगिक नहीं होगा। 'काम करनेका प्रस्ताव न करो' 'बहुत अधिक कार्य न करना हो', साम्राज्य तो सर्वदा अपने आप आता है,' जो हमेशा सचेष्ट रहता है वह कभी साम्राज्य नहीं प्राप्त कर सकता।' इत्यादि। 'ताव-ते चिंग' नामक पुस्तकमें ऐसी ही अनाप शनाप बातें लिखी हुई हैं।

उपर्युक्त तथा-कथित दर्शन शास्त्रके आधारपर चीनने दो सिद्धान्त ग्रहण किये—सन्तुष्ट करनेका सिद्धान्त और स्वाधीनता। प्रथम सिद्धान्तका अवलम्बन करनेके कारण चीन कभी अपनेको आक्रमणकारी राष्ट्रकी स्थितिमें लानेमें समर्थ नहीं हो सका। हाल में मार्शल चांगकाई शेकने भी अपने एक भाषणके सिलसिलेमें कहा था कि चीन और भारतकी सीमा एक दूसरेसे मिली हुई है। २ हजार वर्षोंसे दोनों राष्ट्रोंके बीच सांस्कृतिक और व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित है लेकिन कभी भी इन दोनों राष्ट्रोंके बीच सशस्त्र संघर्ष नहीं हुआ। यह इस बातका प्रत्यक्ष प्रमाण है कि दोनों देशोंके लोग स्वभावसे ही शांति-प्रिय हैं।" समाजमें सैनिक कार्यको सबसे निम्न कोटिका समझा जाता था। चीनी अदालती क्षेत्रोंमें इस बात की सख्त मुमानियत थी कि कोई सैनिक पोशाक पहने। एक अंग्रेज लेखकके शब्दोंमें चीनी राष्ट्रकी नसनसमें शान्ति प्रियताका समावेश हो गया है। उसने यहां तक कहा है कि चीनके काव्य साहित्यमें हमने एक भी कविता वीर-रसकी नहीं पढ़ी हैं।

चीन साम्राज्यकी स्वाधीनताके सिद्धान्तको उस सीमापर पहुचा दिया गया है, जहां भूत या वर्तमानमें कोई भी गणतन्त्र राष्ट्र न तो पहुचा है और न पहुंच सकता है। शांतिका अधिकार चीनी विधानमें स्वीकार किया गया है जरूर, लेकिन बकौल टामस टी० मेडोजके इसका वैधानिक अर्थ और उपयोग स्वेच्छाचारिता और बुराई फैलाने वाले कानून अथवा शासन बन्द कर देना है। इतनीसी सुविधा इसलिये दी गयी थी क्योंकि चीनका प्रत्येक परि... प्रत्येक ग्राम, प्रत्येक जिला और प्रत्येक प्र... स्वतन्त्र इकाई समझा जाता था। ...अपना शासन आप करते थे और कुछ सी... दायरेमें वे इसका सुन्दर ढंगसे निर्वाह कर... थे। वहां केन्द्रीय चीन सरकारसे अधि... रियोंका कमसे कम भार जनताके कन्धे... लादा जाता था।

इस प्रकार चीनमें इस समय ... समस्याएं उपस्थित हैं, वे ठीक यूरोपके ... हैं। यूरोपमें सरकारका अत्यधिक भार प... वारपर डाला जाता है। चीनमें सरकार ... वारके अवांछनीय भारसे पीड़ित है। यू... आज स्वाधीनताके अभावसे तड़प रहा ... चीनमें स्वाधीनता आवश्यकतासे अधिक ... रही है। कुछ भी हो अगर चीनकी ... इतनी है कि आवश्यकतासे अधिक स्वाधी... नता दे रखी गयी है तो, यूरोपकी अ... उसकी मुक्तिके लिये अधिक आशा है ... इस अधिक स्वाधीनतापर आसानीसे नि... स्थापित हो सकेगा।

——

यथेष्ट सुख-सुविधा प्रदान करनेकी चेष्टामें रहती है, ताकि मजदूरोंकी उन्नति हो और उनमें असन्तोष न पनपने पाये। मजदूर संस्थाकी देखरेखमें कई यूनियनें भी चल रही हैं जिनका काम केवल मजदूरोंकी तनख्वाहमें वृद्धि कराना तथा उनके जीवनको आर्थिक दृष्टिसे उन्नत बनाना ही नहीं, वरन् वह मजदूरोंकी सब तरहकी उन्नतिपर ध्यान रखना है। मजदूरोंकी उन्नतिके लिये इस संस्थाने कितने ही विभाग और काम खोल रखे हैं। यह संस्था ठेका लेती है, इसके हाथमें बाजार भी है। मजदूरोंके लिये रहनेके घर; अस्पताल, बीमारोंकी आर्थिक सहायता इत्यादि न जाने कितने कामोंका प्रबन्ध वह करती है। जनता इस संस्थाको बहुत आदरकी दृष्टिसे देखती है। मजदूरोंकी शिक्षा तथा शारीरिक उन्नतिका तो बहुत ही अच्छा इन्तजाम है। इङ्गलैण्ड तथा दूसरे देशोंकी पूंजीवादी बुराइयोंसे बचनेके लिये बहुत कुछ किया गया है। उन देशोंकी तरह यहां बुराइयां नहीं हैं। फिलस्तीनका मजदूर खुश और अपने देशकी उन्नतिमें सहायक है। वहां मजदूरको मानव ही समझा जाता है। वह बगीचेमें रहता है। वह लाभके लिये काम नहीं करता बल्कि वह आदर्शके लिये काम करता है। इन सब बातोंका यह अर्थ कदापि नहीं है कि फिलस्तीनमें सोवियट रूसकी भांति मजदूरोंका राज्य है। असल बात यह है कि इङ्गलैण्ड आदि पूंजीवादी देशोंसे फिलस्तीनका मजदूर अच्छी हालतमें है। फिलस्तीनमें शिक्षाका प्रचार भी बड़े जोरसे हो रहा है। कई किंडरगार्टन, सेकेंडरी स्कूल और एक विश्वविद्यालय है।

आज फिलस्तीनमें जो हो रहा है, उससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि उसका भविष्य उज्वल है। थोड़े दिनों बाद इसकी औद्योगिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक उन्नति अच्छी हो जायगी इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। फिलस्तीनमें 'नेशनल होम (राष्ट्रीय गृह) की स्थापनाका प्रमुख उद्देश्य यहूदियोंका पुनर्जन्म करना है। लेकिन इससे केवल यहूदियोंको ही लाभ होगा ऐसी बात नहीं है, अन्य लोगोंको भी काफी लाभ पहुंचेगा।

——

कहानी

हैं, जीजाजी आप!

—:*:—

(लेखक—श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल')

सुरेन्द्र यद्यपि कायस्थ था और राजेन्द्र ...ण, तथापि दोनोंका चौका एक ही ...। राजेन्द्रकी मा को यह बात पसन्द न ...। वह नहीं चाहती थी कि राजेन्द्र और ...न्द्र एक ही चौकेमें और एक ही थालीमें ...ये'। यह बात नहीं कि वह सुरेन्द्रसे कुछ ...न रखती हो, किन्तु गांवके इतिहासमें ...ी बातें एक विचित्र क्रान्तिके रूपमें देखी ...ती हैं। शहरमें चाहे कोई मेहतरके ...थ भी खाले, तो चर्चा नहीं होती; परन्तु ...ातमें यदि कोई किसी अछूतकी लुटियाका ...ी भी पीले तो उसकी आफत आ जाती ... पंच बैठते हैं—पञ्चायत होती हैं और ...राधी (?) को कड़ा दण्ड दिया जाता है ...र शायद यही कारण था, जो राजेन्द्रकी ...को बेचैन किये रहता था। बहुत दिनों ... तो राजेन्द्रकी मा ने खिलाफतका झण्डा ...ाया—अपनी दोनों लड़कियों—चञ्चला ...र चपलाको तो राजेन्द्रसे भी परहेज ...नेको कह दिया। ये दोनों लड़कियां माके ...मने तो राजेन्द्रके देनेपर भी उसकी कोई ...ज स्वीकार न करती थीं; किन्तु माके ...छे चारों—राजेन्द्र, सुरेन्द्र, चञ्चला और ...ला-एक साथ ही थालीमें खाया करते ...। इस प्रकार उन चारोंमें बड़ा प्रेम था, ...ला और चपला तो सुरेन्द्रको बिलकुल ...ला सगा भाई सा समझती थी। सुरेन्द्र ... उन्हें अपनी सगी बहनोंके समान ही ...नता था। चञ्चलाका विवाह हो चुका ...। उसका पति एक बड़ा जमींदार था। ... तो देहातमें जिसके पास १००) होते हैं, ... नम्बदार कहलाता है; परन्तु चञ्चलाका ...ति बनवीरलाल इसका अपवाद था। वह ...धारण जमींदार न था। उसके घरमें दो ...दूकें थीं। महीनेमें एक बार दारोगाजीको ... अपने घर बुलाकर उनकी खातिरदारी ... दिया करता था। यों तो गांवके सभी ...गोंपर उसकी धाक थी, पर ठाकुर बाबा- ...नजरमें उसकी कोई इज्जत न थी। ठाकुर ...बाके सामने जाते वह स्वयं भी झेंपता ...। परसाल बड़ी बरगदियाके नीचे ठाकुर ...बाने उसे गांवके किसी ठाकुरकी लड़कीसे ...छेड़छाड़ करते पकड़ा था। यदि ठाकुर बाबा ...हते, तो ब्राह्मणों और ठाकुरोंमें लाठी ...चला देते। परन्तु नहीं, उन्होंने व्यर्थका ...रक्तपात कराना पसन्द न किया। उन्होंने ...बनवीरलालको डांट दिया और लड़कीको भी ...समझा दिया। परन्तु ठाकुर बाबाने बनवीर ... यों ही नहीं जाने दिया। दस बार बन- ...रने पैरों पड़कर ठाकुर बाबासे मांफी ...मांगी और ठाकुर बाबाके आज्ञानुसार तीन ...र उस ठाकुरकी लड़कीको बहन कहकर ...कारा। बस, उसी दिनसे ठाकुर बाबाकी ...ष्टिमें बनवीर गिर गया। वैसे गांवमें उसकी ...फी इज्जत थी। गांवका प्रत्येक जन उसको ...चलन समझता था। इसका कारण एक ...ह भी था कि ठाकुर बाबाकी डांटके बादसे ...सने गांवकी लड़कियोंको ताकना बिलकुल ... छोड़ दिया था। यह बात नहीं कि वह ...हात्मा हो गया हो। परन्तु तबसे वह अपना ...आमोद-प्रमोद दूसरे गांवों या शहरोंमें जाकर ...किया करता था जिसकी गांववालोंको ...कानो-कान खबर न होती थी।

चञ्चलाको बुलानेके लिये बनवीरलाल राजेन्द्रके घर रक्षाबन्धनके दिन ही पहुंच गया। सुरेन्द्र और राजेन्द्रको इतनी घनिष्ठता देखकर वह जलभुन गया। अपनी सासकी बातें सुनकर तो वह और भी आपेसे बाहर हो गया।

चञ्चला बड़ी होनेके कारण सुरेन्द्रका नाम लेती थी किन्तु चपला जब उसे 'दद्दा' कहकर पुकारती तो उसका खून खौल उठता।

रक्षाबन्धनके दिन जब चपलाने सुरेन्द्रके हाथमें राखी बांधी तो वह अपनी स्त्री चञ्चलापर बड़ा ही गुस्सा हुआ। बोला—"आजकलके लड़कोंकी नस मैं खूब पहचानता हूँ। आजकलकी लड़कियां भी खूब हैं। ऊपर से भाई-बहनका स्वांग रचते हैं और अन्दर जो कुछ है वह तो है ही। खबरदार! जो तूने सुरेन्द्रको राखी बांधी!"

"नाथ! यदि आपकी ऐसी आज्ञा है तो मैं भाई सुरेन्द्रके राखी नहीं बांधूंगी, परन्तु वह तो लड़का नहीं देवता है। आप उसके सम्बन्धमें यह क्या सोचते हैं? उसका चाल-चलन बहुत अच्छा है।"

"ऐसे मैंने बहुत-से देवते इन आंखोंसे देखे हैं। आजकलके लड़के और चालचलन—दो विपरीत वस्तुएं। चञ्चले, मैं उड़ती चिड़िया पहचानता हूं। यह तेरा सुरेन्द्र तेरी बहन चपलाको भी ले डूबेगा। मुंहमें कालिख न लग जाये, तो कहना। यह तेरा भाई राजेन्द्र बड़ा ही निकम्मा साबित हुआ। चाचाजी थे तब तो यह डरता भी था। अब तो यह शेर हो गया है शेर। किसीको अपने आगे कुछ समझता ही नहीं। खैर, मुझे क्या! जो जैसा करेगा, वैसा भरेगा।"

"आप न मालूम ऐसा क्यों सोचते हैं?"—चञ्चलाने दुखी होकर कहा। "मैं इसीलिये ऐसा सोचता हूं कि मुझे उस गरीब चपलापर तरस आता है। वह कहींकी भी न रहेगी। उससे कोई भी खान्दानी ब्राह्मण विवाह न करेगा। चाचीजी भी कुछ नहीं सोचतीं। जवान तो हो गयी है, फिर भी विवाहकी कोई बात नहीं। अब उसका बाहर पढ़ने जाना भी मुझे खतरेसे खाली नहीं दिखता। आखिर इन्हें सूझा क्या है?"

"चपलाको पढ़नेका बड़ा शौक है—मालूम भी है कुछ—क्लासमें सबसे अच्छी चलती है। हमेशा प्रथम आती है।"

"भाड़में जाय यह प्रथम आना। यहां इज्जत बचाना मुश्किल है और यहां प्रथम आना सूझ रहा है। न मालूम यह दुष्ट राजेन्द्र उसकी क्या गति करेगा?"

"यदि आप ऐसा समझते हैं, तो राजेन्द्र भाईको बुलाकर समझा दीजिये। शायद वे इसे अपनी भूल न समझते हों।"

"लला है न बड़ा वह, जो भूल नहीं समझता है! उस रोज तो मुझसे यों ही अकड़ गया। बेटीकी आंखें तो तब खुलेंगी, जब ब्राह्मण लोग उन्हें जाति-बाहर कर देंगे। यदि मैं चाहूं तो चपलाकी शादी ब्राह्मणोंमें कहीं भी न होने दूं। मेरे मुंहसे सुरेन्द्र और चपलाकी कुछ बात निकलने भरकी देर है।"

"आप ये कैसी बातें करते हैं। क्या आपको ये बातें शोभा देती हैं?"

चञ्चलाके मुंहसे इतना निकला ही था कि राजेन्द्र खिलखिलाता हुआ वहां आ पहुंचा और बोला—"भाई साहब! अब चुप क्यों हो गये? न होने दीजिये चपलाकी शादी ब्राह्मणोंमें—देखूं, कितनी दम है आपमें। बहनको क्या सुना रहे हैं? मुझसे कहिये जो बात कहनी हो।"

"राजेन्द्र, इन बातोंका नतीजा सदैव बुरा होता है। मैं कहता हूं अभी कुछ नहीं बिगड़ा है। चपलाको भी मेरे साथ कर दो, थोड़े दिन वहीं रहेगी।"—बनबीरलालने गम्भीर होकर कहा।

"हरगिज नहीं। चपला अपनी पढ़ाई छोड़कर कहीं नहीं जा सकती। आपसे जो कुछ करते बने, कीजिये। राजेन्द्रको इसकी परवा नहीं।" यह कहकर राजेन्द्र घृणाकी हंसी हंसता हुआ बाहर चला गया।

(२)

सचमुच राजेन्द्रके बहनोई बनवीरलालने चपला और सुरेन्द्रको बदनाम करनेमें कुछ उठा नहीं रखा। थोड़े ही दिनमें राजेन्द्रको गांव-अनगांवके लोग बुरी नजरसे देखने लगे। राजेन्द्रको भी अपने गांवसे घृणा हो गयी। माके मर जानेके बाद तो उसे उस गांवसे विरक्ति हो गयी। उसकी दुनिया केवल दो में सीमित थी—और वे दो थे—सुरेन्द्र और चपला। वे ही दोनों थे उसके जीवनके आधार। यदि वे न होते तो अब तक गांववालोंकी बातें सुनकर पागल हो गया होता। किन्तु नहीं, उन दोनोंके ही कारण उसने बड़ी शान्तिसे काम लिया। दूरदर्शिता उसने अपनी सङ्गिनी बनायी। उसने बिना किसी को बतलाये सुरेन्द्र और चपलाको लेकर उस गांव तकको छोड़ दिया। सुरेन्द्रने भी अपने राजेन्द्रके कारण अपने घरबारको छोड़ा। सुरेन्द्रके मा-बाप तो बचपनमें ही मर गये थे। अपने चाचाकी रोटियोंपर फटकार सुन-सुनकर वह रहता था। उसने भी राजेन्द्र के साथ जाकर झञ्झटोंसे त्राण पायी।

अपने गांवसे लगभग २०० मीलकी दूरी पर रूपनगरमें उन दोनोंने चपलाका विवाह एक सम्भ्रान्त विप्रकुलमें कर दिया। चपला का पति वास्तवमें देवता था। कुछ दिन वहां ठहरकर राजेन्द्र तथा सुरेन्द्रने बम्बईके लिये प्रस्थान किया।

बम्बईमें पहले तो उन लोगोंको बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ीं। लेकिन पढ़े-लिखे और परिश्रमशील होनेके कारण शीघ्र ही उन्होंने उनपर विजय पा ली। वे शीघ्र ही फौजमें उच्च पदोंको पा गये। तीन सालमें उन दोनोंने बड़ी उन्नति की। राजेन्द्र अब लेफ्टिनेण्ट हो गया और सुरेन्द्र सेकेण्ड लेफ्टिनेण्ट। दोनों एक ही बङ्गलेमें रहते

जीवन-गीत

—:०:*:०:—

मेरे अतीतकी ज्वालाने ही बना दिया है धवल मुझे!
मुझको इस दुनियामें केवल मिल सके शत्रु, कब मिले मीत?
जगके संघर्षोंमें मुझको बस मिली हार, कब मिली जीत?
सुखका अंचल तो रहा दूर सिरपर आया दुखका पहाड़।
जगके कोलाहलमें मैंने बस सुना रुदन, कब सुने गीत?
सीधे सच्चे पथपर भी तो ठोकर खायी है पग-पग पर।
मेरी इन असफलताओंने ही बना दिया है सफल मुझे!
मेरे अतीतकी ज्वालाने ही बना दिया है धवल मुझे!!
खुलकर खेला इस दुनियामें जो किये कर्म वे बने पाप।
वरदानोंके दर्शन न मिले घर बैठे ही मिल गये शाप॥
वासना-सिन्धुमें डूब-डूब जलका व्याकुल बन गया मीन।
जितना पीता था उतना ही बढ़ता जाता था हृदय-ताप॥
नत मस्तक पर था लगा हुआ झुक जानेका काला टीका।
मेरे इन शापोंके फलने ही बना दिया है अमल मुझे!
मेरे अतीतकी ज्वालाने ही बना दिया है धवल मुझे!!
जगके निष्ठुर आघातोंको मजबूरी कह सह लेता था।
दुखका निर्झर बेबस होकर इन आंखोंसे बह लेता था॥
दुनियाकी पशुताके आगे मेरी आंखें जाती थीं झुक।
मैं था अशक्त, थी लाचारी जैसे बनता रह लेता था॥
व्यंगोंके कठिन थपेड़ोंको सहनेकी थी मुझमें न शक्ति।
मेरी इन दुर्बलताओंने ही बना दिया है सबल मुझे!
मेरे अतीतकी ज्वालाने ही बना दिया है धवल मुझे!!

—श्री विनोद रस्तोगी बी० ए०

बङ्गला बड़ा ही आलीशान था। दोनों अभी तक अविवाहित थे।

सुरेन्द्र राजेन्द्रसे बहुत कहता—"भाई साहब! अब शादी कर लो, भाभी देखनेकी इच्छा होती है।"

परन्तु राजेन्द्र उस बातको हंसकर टाल देता और कहता—"फिर शायद सुरेन्द्र भैयाका मैं इतना ध्यान न रख सकूं।"

ठीक सवा तीन साल बाद राजेन्द्र और सुरेन्द्र दो महीनेकी छुट्टी लेकर चपला और चंचलाको देखनेके लिए बम्बईसे चल दिये। … दिनमें वे दोनों बम्बईसे रूपनगर पहुंचे। चपला अपने बिछुड़े भाइयोंको देखकर फूली न समायी। वह तो अपने भाइयोंसे बिलकुल निराश हो बैठी थी। किसीने यह भी कह दिया था कि राजेन्द्र और सुरेन्द्र लड़ाईमें मारे गये। यदि उसे यह मालूम होता कि उसके दोनों भाई जीवित हैं और आज उसके घर आ भी जायेंगे तो वह कल आनगांवके जमींदारसे, जिसने हालमेंही वह गांव खरीदा था, डर क्यों जाती? वह अपने पतिको बेगारपर नहीं जाने देती।

वह सोचती—"अब जमींदारको सबेरे ही बतला दूंगी कि मैं कितने बड़े अफसरोंकी बहन हूं। कम्बख्त! मेरी इज्जत अपने चांदीके हाथोंसे खरीदना चाहता है। 'उन्हें' न मालूम आज रातको किस काम पर कहां भेज दिया। मैं डरसे मरी जा रही थी—ओह कितनी अंधेरी रात है! अच्छा हुआ, भैया आ गये। ओह, भैयाके पास तो पिस्तौलें भी हैं। अब जमींदार देखें, हमारा क्या कर लेगा?"

उस रातको यद्यपि चपलाने बहुत चाहा के भाइयोंको कुछ ताजा ताजा बनाकर खिलाये, किन्तु राजेन्द्र और सुरेन्द्रने उसे कुछ न बनाने दिया। काफी मिठाइयां साथ लाये थे—तीनोंने मिलकर उन्हींको खाया। दोनोंको अपने बहनोईकी अनुपस्थिति बहुत खली। सुरेन्द्र को गुस्सा भी हुआ। बोला—"रातबिरात उन्हें घर अकेला नहीं छोड़ना चाहिये।"

खाना खा-पीकर फिर वे तीनों सोने गये। राजेन्द्र और चपलाको तो गहरी नींद आ गयी। लेकिन सुरेन्द्र किसी उधेड़बुनमें आंखें मींचे चुपचाप पड़ा रहा। जरा देरमें ही उसने मकानकी छतपर धम–धमकी आवाज सुनी। वह चौकन्ना हो गया, उसने पिस्तौल निकाली—परन्तु चुपचाप रहा। उन मनुष्योंमें से एककी आवाज स्पष्टतया सुनायी दी—"हाय राम! आज मैं अपनी इच्छा पूरी करूंगा। अरे रामसिंहाकी मेहरुआ उठ, देख तेरी किस्मत कितनी अच्छी है। गांवका जमींदार खुद मैं ही तेरे यहां आया हूं। अब तो तू रानी बन जायगी रानी। डाकू समझकर कहीं शोर मत मचइयो।"

अब तो सुरेन्द्र जल भुन गया। एकाएक बिजलीकी तरह तड़पकर खड़ा हो गया और बोला—"कुत्तों! उतरो। एकको भी जिन्दा नहीं जाने दूंगा। हरामजादे।……"

जमींदारने गरजकर कहा—"अबे तू कौन है?"

दूसरा बोल उठा—'मार दो सालेको होगा कोई इसीका यार।'

'ठांय'—पिस्तौल चली।

पिस्तौल आगेवाले आदमीकी जांघमें लगी—वह धड़ामसे गिर पड़ा। भगदड़ मच गयी। इधर पिस्तौलकी आवाजने राजेन्द्र और चपलाको भी जगा दिया। वे दौड़े हुए छतपर गये। देखा—"सुरेन्द्र पिस्तौल लिये मस्त हाथीकी तरह झूमता हुआ टहल रहा है। एक आदमी भी छतपर पड़ा कराह रहा है।"

राजेन्द्रने उस आदमीको टार्चसे देखा—मुंहपर कपड़ा बंधा था। घावसे खून बह रहा था।

सुरेन्द्रने राजेन्द्र और चपलाको बातें संक्षेपमें समझा दीं। चपला बोली—"भाई! आजकल यही तो गांवका जमींदार है। पुराने जमींदार बड़े अच्छे थे। गांवकी हर एक स्त्रीको अपनी बहन-बिटियाके सामान मानते थे। जबसे इसने यह गांव खरीदा, तबसे भली स्त्रियोंकी इज्जत खतरेमें है। भाई! इसी दुष्टने आज छलसे उनको कहीं भेज दिया। मुझे कितने ही दिनसे तरह तरह के प्रलोभन दे रहा है। भाई साहब! यह बदमाश तो मार डालने योग्य है।"

राजेन्द्रने कहा,—"क्यों बे उल्लूके पट्ठे! जमींदार होकर गांववालोंपर ज्यादती करता है। अबे साले! अपना मुंहतो दिखा।'

"हरामजादेने मुंह भी खूब बांधा है। मनमें आता है कि एक पिस्तौल इसके सीनेपर और दाग दूं। बता उल्लू, तेरे वे साथी कहां गये? भाग गये, नहीं तो उन्हें भी भूनकर रख देता। कल थानेमें उनका नाम ठीक ठीक बतलायेगा या नहीं? बोल………" सुरेन्द्रने कहा।

"सुरेन्द्र मेरी राय है कि इस सालेका खात्मा ही कर दिया जाय। डकैतीमें केस चलेगा। घर आये डाकुओंके मार देनेमें श्रेय है।"—राजेन्द्रने कहा।

"तो क्या चला दूं पिस्तौल इसके सीने पर?"—सुरेन्द्रने पूछा।

राजेन्द्रके 'हां' या 'न' कहनेसे पहले ही वह घायल व्यक्ति चिल्ला उठा—"भाई राजेन्द्र! अब पिस्तौल मत चलावना। अपनी बहन चंचलाको अपने ही हाथों विधवा मत बनाओ। मुझे माफ करो—देखो, मैं तुम्हारा जीजा बनवीरलाल हूं। बहन चपला! आज मेरी आंखें खुलीं—मैं अब तक तुझे न पहचान सका। भाई सुरेन्द्र! भाई राजेन्द्र! अब तुम दोनों मेरी छातीसे लग जाओ और जूते लेकर मेरा सिर कूट डालो। बहन! मुझे माफ करना। मुझसे गल्ती हुई।

बस, फिर बनवीरने दाढ़ी परका वस्त्र उतार कर फेंक दिया।

"हैं! जीजाजी आप!!"—राजेन्द्र चौंक पड़ा। सुरेन्द्र और चपलाके भी आश्चर्यका ठिकाना न रहा।

——

बिहारके कुछ प्रगतिशील कवि

——:x:——

(लेखक---श्री नगेन्द्र, एम० ए०)

हिन्दी-साहित्यमें आजकल जिस नवीन युगका सूत्रपात हो रहा है, वह भावनामय अगम्य और कल्पना विलासी साहित्यके प्रति एक प्रबल विद्रोह है। आजका साहित्य केवल उच्चवर्गमें ही सीमित होकर नहीं रहना चाहता; वह किसानों और मजदूरोंकी विशाल दुनियामें व्याप्त होनेके लिये उतावला हो उठा है। पूंजीवाद और साम्यवादके संघर्षने आज इस गरीब दुनियाको अन्धकार कालीन युगसे हटाकर वर्तमान नवीन प्रकाशमय युगमें ला खड़ा किया है। वह शोषितवर्ग, जिसकी संख्या संसारमें सबसे अधिक है और जो थोड़ेसे स्वार्थी पूंजीवादियों द्वारा शोषित होता रहा है, अपने वास्तविक रूपको पहचान रहा है। आज उसकी कुचली आत्मा, निराशावादी हृदय, जर्जरित शरीर युग-युगके अत्याचारों की परम्पराको चुनौती दे रहे हैं। पूंजीवादके शोषक-यन्त्र, छल, दमन, कुचक्र आदि उसे आज धोखा देनेमें असफल हैं। ये उसके नैतिक बलके तूफानी बवंडरका सामना नहीं कर सकते। वर्तमान दलित मानव अपनी आत्माकी आवाजको पहचान रहा है। वह ईश्वरकी सृष्टिमें, मानवके रूपमें मानव ही बनकर रहना चाहता है; पशु बनकर नहीं। उसकी साम्यकी स्वाभाविक भावना कुचली नहीं जा सकती; उसका आशावाद और प्रगतिशीलता किसी भी रुकावटसे रोकी नहीं जा सकती। मानव द्वारा मानवका अपमान मानवीय सृष्टिमें सहन करनेकी वस्तु नहीं है।

यों तो हिन्दी साहित्यमें इस युगका सूत्रपात स्वर्गीय प्रेमचन्दकी कहानियों और उपन्यासों तथा श्री मैथिली-शरण गुप्तकी कविताओंसे होता है; पर हिन्दी कवितामें प्रगतिशीलताका स्पष्ट विकास श्री सुमित्रानन्द पंतकी "युगवाणी" और "ग्राम्या" पुस्तकोंमें दिखलायी दिया और इस प्रकार हिन्दी कविताकी प्रगतिशीलतामें पंतजीको अपने युगके प्रधान और आदर्श कविके रूपमें पाया गया। उनका प्रकृतिवाद प्रगति-पथमें आगे बढ़कर अपने परिवर्तित यथार्थ रूपके कारण हिन्दी कवितामें नवयुगका सन्देशवाहक सिद्ध हुआ। अपनी "युगवाणी" में कवि लिखता है:—

> आत्मा ही बन जाय देह नव,
> ज्ञान-ज्योति ही विश्व-स्नेह नव;
> हास अश्रु, आशाऽकांक्षा,
> बन जायं खाद्य, मधु पानी।
> युगकी वाणी!
> स्वप्न वस्तु बन जाय सत्य नव,
> स्वर्ग मानसी ही भौतिक भव,
> अन्तर्जग ही बहिर्जगत,
> बन जायें वीणा पाणि हे!
> युगकी वाणी!

कविकी प्रस्तुत पुस्तकमें वर्तमान मानव को हम वास्तविकताकी ओर अग्रसर होते देखते हैं। पंतजीकी कविता रूढ़ियोंसे विकासकी ओर, पुरातनसे नवीनताकी ओर, बन्धनोंसे मुक्तिकी ओर संकीर्णतासे वि… की ओर, और सन्ध्यासे प्रभातकी ओर … न्तर विद्रोह करती आगे बढ़ रही है। … इस रूपमें भी पंतजी अपने युगके प्रति… और युगान्तरकारी कवि हैं। पंतजीके … चलनेवाले कवियोंने भी अपना मार्ग … दिया है और इसमें संदेह नहीं कि वे ज… ज्यों वर्तमान दलित मानवके अधिक स… आते जायंगे, वैसेही उनकी कवित… उत्तरोत्तर प्रगति-पथपर अग्रसर हो जायंगी।

पंतजीके बाद प्रगतिशील कवि… 'दिनकर' तथा शिवमंगलसिंह 'सुम… नरेन्द्र, भगवती चरण वर्मा विशेष उल्ले… नीय हैं। 'नवीन' और 'भारतीय आत… की राष्ट्रीय कविताएं भी इसी नवीन-… की पोषक हैं; पर इनके सम्बन्धमें विशेष… हरण देनेकी आवश्यकता अपने इस ले… हम नहीं समझते; क्योंकि हिन्दीके पा… इनसे पूर्ण परिचित हैं। हमारी समझमें… दिशामें अग्रसर होनेवाले, हिन्दीके … आनेवाले युगके होनहार कवियोंके उल्ले… आवश्यक हैं। ऐसे कवियोंमें इधर बि… के दो-एक नवयुवक कवि हमें होनहार दी… हैं जिनकी रचनाएं प्रायः हिन्दीकी पत्रप… काओंपर चमकती रहती हैं। वे हैं श्री जय… प्रसाद अम्बष्ठ 'मधुकर', श्री नर्मदेश्वरप्र… सहाय बी० ए०, बी० एल०, जितेन्द्रकु… आदि। प्रसन्नताका विषय है कि अ… श्रृङ्गारिक रचनाओंको छोड़ 'मधुकर' … अब प्रगतिवादकी ओर बढ़े, तो एक-… उनकी लेखनीने आग उगलनी आरम्भ क… प्रगतिशील नवीन कवियोंमें अपनी … शैलीके कारण "मधुकर" जी उल्लेख… हैं। आजकल वे इस क्षेत्रमें काफी … रचनाओंकी सृष्टिकर रहे हैं। उनकी कवि… ओंमें दलित-समाजका वास्तविक सफल चि… रहता है। उनकी भाषा ओजस्विनी … भाव हृदय-स्पर्शी होते हैं। अपनी "हिं… महासागरसे" कवितामें कवि लिखता है…

> मानवताको आज यहां पर,
> दानव ही कहलाना भाया।
> एक बन गया स्वर्ग, एकपर,
> हंसता कंकालोंकी छाया।
> जगतीके आंगनमें देखो, आज,
> एक चुप मौन खड़ी है।
> और उसीके रक्त चूसने,
> दानवताको प्यास बड़ी है।
> पशुताके बन्धनमें बंधकर,
> नाच रहा मानव-मतवाला,
> उधर खेलते हास अधरपर,
> इधर धधकती जीवन ज्वाला।

और भी आगे देखिये; अपनी "चिनगा… शीर्षक कविताएं वर्तमान पूंजीवा… शोषणसे क्षुब्ध होकर कविकी लेखनी … उगल देना चाहती है। वह लिखता है—

> सकता आज विश्व देखो,
> पापों से, अत्याचारों से;

वह मानवता जलती देखो,
दानवता के व्यापारों से।
तू फूट आज सोये प्राणों से,
ओ जलती-सी चिनगारी,
हो जाय धरा यह ध्वस्त-ग्रस्त
जल जाये दानवता सारी।
आज नहीं अधरोंपर हंसना,
इन प्राणोंमें आग लगा दे;
"धू-धू" लपटें छायें नभमें,
जगमें वह ज्वाला सुलगा दे।

और फिर अपने हृदयकी जलती चिन-...को भारतमें आने वाले भावी-संघर्षसे ...ना करनेके लिये ललकार कर कहता

"हिम्मत है तो अरी दिवानी,
आज प्रलय-सा आकर देखो,
वह तूफान चला आता है,
लो उससे टकरा कर देखो!"

कविने इन कविताओंमें पूंजीवादी ...वकी मानवताके प्रति अत्याचारका ...उन अत्याचारोंके विरोधका हृदयस्पर्शी ...नग्न चित्र खींचा है। इनमें पूंजीवादके ...कविका विरोध स्पष्ट रूपसे प्रकट है। ...कर' जीकी इन कविताओंका प्रारम्भ ...यवादकी भावनाको लेकर हुआ है। ...जब सारा विश्व सचेत हो उठा है, ...दशामें वह सारे भारतवासियोंको भी ...आपको पहचान लेने तथा पूर्ण रूपेण ...जानेके लिये आवाज उठाता है—

तू जाग रे, नव-प्रात!
आज कण-कणमें प्रवाहित–
मधुर - मलयज - वात!
जाग, जीवन-ज्योति उज्ज्वल,
आज निविड़- निशीथ तज-
विहंसते ये सुप्त-शतदल।
खोल तू भी सुप्त-लोचन,
अब न निष्ठुर-रात! तू०—

'मधुकर'जी की कवितामें युगकी परि-...वाणीका स्वर सुनायी पड़ता है। हिन्दी ...हित्यको आपसे इस क्षेत्रमें बड़ी आशाएं ...नर्मदेश्वर सहायजीकी कविताएं भी ...वादके उत्तम नमूने हैं। लेकिन साथ ...तीतका उनमें मोह भी है। 'सहाय'जीकी "हिं...डकी संध्या' शीर्षक एक कविताकी चन्द ...यां पाठकोंके समक्ष पेश की जा रही हैं। ...ी समयके उन्नत मेवाड़की आज दयनीय देखकर उनके आंसू नहीं रुकते। कवि हृदय क्रन्दन कर उठता है—

भर देता था दिशा-दिशाका
आंखोंमें जो शत अंगार।
सोच रही, कैसा था वह,
पौरुषका तेज शौर्यका ज्वार।
चलनेसे हिलती थी पृथ्वी,
जिनके उन रणधीरों का।
हिलते थे गिरिवन जिनके,
गर्जनसे उन बलवीरों का।
सोच रही, अब लिये करोंमें,
खाली जीवनका प्याला।
आज सघन एकांत प्रान्त में,
नीरव संध्या बाला। —अस्तु!

भारतीय साहित्यमें प्रगतिवादका अभी ...त ही हुआ है; उसका पूर्ण विकास ...और परिणाम उसकी गति और व्या-पकतापर निर्भर है। भविष्यमें उसका क्या रूप हो सकता है, यह भी देश और समाजकी स्थितिपर निर्भर करता है; पर इतना तो अवश्य दीखता है कि इसका भविष्य उज्ज्वल है। ऐसे साहित्यको अवश्य प्रोत्साहन मिलना चाहिये।

———

भारतमें नारी-जागृतिकी प्रगति

——**——

(लेखिका—श्रीमती द्रौपदी देवी ओझा)

जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें आज जागृतिकी प्रबल तरंगें उद्वेलित हो रही हैं। परिवर्तन के इस प्रवाहका जैसा विस्मयजनक प्रभाव भारतके नारी-समाजके जीवनपर पड़ा है, वह अभूतपूर्व है। नारी युगोंसे पराधीनताके पाशमें बंधी आयी है और वह पुरुषसे सदैव क्षुद्र समझी जाती रही है। उसकी योग्यता सन्देहकी दृष्टिसे देखी गयी है और इसका परिणाम यह हुआ कि किसी भी क्षेत्रमें उसके विकासके साधनोंका बहुत बड़ा अभाव रहा है। सदियोंसे भारतका नारी समाज निदारुण दुख-दुर्दशाके बीच जीवनका दुःसह भार वहन करते हुए आ रहा था। चारों ओर विश्वव्यापी जीवन-प्रवाह बह रहा था जिससे मानो उसका कोई योग ही नहीं हो। अपने जीवनको वह निर्जीववत् शान्तिके बीच धारण कर रहा था और उसकी सहिष्णुताकी मानो कोई सीमा ही नहीं थी। अपने इस जीवनके प्रति उसके हृदयमें किसी प्रकारका कोई विद्रोह-भाव हो, इसका कोई आभास ही नहीं मिलता था। किन्तु किसी भी जातिके नारी-समाज का इस प्रकारका मनोभाव उस जातिके लिये मङ्गल-मय नहीं हो सकता, क्योंकि किसी जातिके जागरणका यदि परिचय प्राप्त करना है तो यह देखना होगा कि उसके नारी-समाजकी प्रगतिका रूप क्या है।

भारतके आधुनिक नारी-जागरणका सूत्रपात अबसे लगभग सौ वर्ष पूर्व बङ्गालमें हुआ था। सर्व प्रथम हमारी नवीन राष्ट्रीय, धार्मिक और सामाजिक जागृतिका आरम्भ राजा राममोहन रायने किया था। युगोंके अन्धकारके बाद उन्होंने पहले-पहल भारतके पीड़ित और मूक मानव-शक्ति नारियोंके उत्थानकी प्रभावशाली सक्रिय चेष्टा की। उनके अनवरत सद् प्रयत्नोंके फलस्वरूप ही अमानवीय और अन्ध परम्परागत सती-प्रथाका अन्त हुआ था। राजा राममोहन रायके बाद ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ने बङ्गालकी हिन्दू विधवाओंकी हृदय-द्रावक करुण पुकार सुनी और हिन्दू विधवाओंके पुनर्विवाहकी आवश्यकताका प्रभावपूर्ण आंदोलन किया। इसपर उत्तेजित कट्टर-पंथियों द्वारा उनको न जाने कितना लांछित और अपमानित होना पड़ा था, किन्तु विद्यासागर अपने निर्दिष्ट मार्गसे विचलित नहीं हुए और उनके अथक परिश्रमसे हिन्दू विधवाओंका विवाह वैधानिक रूपसे मान्य हुआ।

महिला जागरणके आदि प्रवर्तक

स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्व० राजाराम मोहनराय

भारतीय नारी-जागृतिके आन्दोलनमें बङ्गालका ब्रह्म-समाज सबसे आगे रहा है। ब्रह्म-समाजके संस्थापक राजा राममोहन-रायके बाद ब्रह्म-समाजमें दो दल हो गये थे। एक दलके नेता केशवचन्द्र सेन थे। उन्होंने ब्रह्म मन्दिरमें महिलाओंको भी स्थान दिया था। उन्हें मन्दिरमें अलग स्थान निश्चित था, जिसपर पर्देके लिये चिकें पड़ी रहती थीं। किन्तु स्त्रियोंको पुरुषोंके समान एकदम बराबरीका अधिकार देनेका श्रेय ब्रह्म-समाजके दूसरे दल अर्थात् साधारण ब्रह्म-समाजको है। इस दलके नेताओंने साधारण ब्रह्म-समाजके नियमोंमें स्त्री-पुरुष का कोई भेद नहीं रखा था। इन नियमोंके अनुसार स्त्रियां समाजके पुरोहितका पद भी प्राप्त कर सकती थीं। साधारण ब्रह्म-समाज के मन्दिरमें परदा छोड़कर स्त्रियां पुरुषोंके बराबर या बीचमें जहां चाहें बैठ सकती थीं।

राष्ट्रीय क्षेत्रमें सर्वप्रथम सक्रिय भाग लेनेवाली महिला स्वर्गीया कुमुदिनी गंगोली थीं। कांग्रेस मञ्चसे भी सबसे पहले भाषण देनेवाली महिला वही थीं। सम्भवतः वही हिन्दू महिलाओंमें सबसे पहली ग्रेजुएट और सर्वप्रथम लेडी डाक्टर भी थीं। कांग्रेस के अनेक अधिवेशनोंमें कार्य प्रारम्भ होनेसे पहले 'वन्देमातरम' राष्ट्रीय गान गानेका सम्मान श्रीमती सरलादेवी चौधरानीको मिलता रहा। स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुरकी बड़ी बहिन स्वर्णकुमारी देवी ही पहली भारतीय महिला थीं, जिन्होंने किसी पत्रका सम्पादन किया। वे 'भारती' नामक मासिक पत्रकी सम्पादिका थीं। उन्होंने भूगर्भ-विद्या पर बङ्गलामें एक पुस्तक भी लिखी थी। वैज्ञानिक विषयपर पुस्तक लिखनेवाली सर्व प्रथम भारतीय महिला भी वही थीं। हिन्दी भाषा-भाषी महिलाओंमें सम्भवतः श्रीमती रामेश्वरी देवी नेहरू ही प्रथम पत्र सम्पादिका हैं, उन्होंने कई वर्षोंतक 'गृह-लक्ष्मी' का सम्पादन किया था।

उत्तर भारतमें महिला-जागृतिके जन्मदाता स्वामी दयानन्द सरस्वती थे। निस्सन्देह आर्यसमाजने उत्तर भारतकी महिलाओं में—विशेषकर पञ्जाबमें—जागृति उत्पन्न करनेमें जितना कार्य किया है, उतना अन्य किसी संस्थाने नहीं किया। उत्तर भारतमें विधवा विवाहका प्रचार भी आर्यसमाजने ही किया। हिंदीकी प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती हेमन्त कुमारी चौधरानीके पिता स्वर्गीय नवीनचन्द्र रायने पञ्जाबमें स्त्री-शिक्षा-प्रचार का बड़ा प्रयत्न किया था; किन्तु इस दिशामें सबसे बढ़कर काम जिन्होंने किया, वे थे

बिहार भारतके सबसे पिछड़े प्रांतोंमें है। वहां परदा भी बहुत कड़ा है। बिहारमें पर्दा-प्रथाके विरुद्ध संगठित प्रयत्न पिछले सत्याग्रह आन्दोलनमें हुआ था। उच्च श्रेणीकी स्त्रियोंमें तो कुछ-कुछ जागृति हो गयी थी, किन्तु जन-साधारणमें परदा दूर करनेमें श्री रामनन्दन मिश्रने विशेष प्रयत्न किया है। आजकल 'बिहार महिला विद्यापीठ' द्वारा शिक्षा तथा सामाजिक सुधारका कार्य प्रशंसनीय ढंगसे हो रहा है। यह स्त्रियोंके उत्थान तथा उनमें शिक्षा प्रचार करनेकी बिहारमें अपने ढंगकी एक ही संस्था है।

महिलाओंकी नवीन जागृतिमें भारतकी मुसलमान बहनें बहुत पिछड़ी हुई हैं। एक बात तो यह है कि मध्य और उच्च श्रेणियों की मुसलमान स्त्रियोंमें परदा बहुत कड़ा था, और अब तक है। दूसरे राजनीतिक कारणों धार्मिक कट्टरपन और साम्प्रदायिक विद्वेषके कारण न तो मुसलमान इस दिशामें हिन्दुओं का साथ दे सके और न उनसे शिक्षा ही ग्रहण कर सके। इस समय यद्यपि बेगमशाह नवाज, अतिया बेगम आदि जैसी दो-चार पढ़ी-लिखी सुसंस्कृत महिलाओंके नाम सुन पड़ते हैं और जहां-तहां लड़कियोंके लिये कुछ स्कूल भी देख पड़ते हैं एवं ढाका, कलकत्ता, लाहौर आदिमें ही ऐसे स्कूल हैं; किन्तु ये सब सरकारी ढंगपर शिक्षा देनेके लिये हैं! 'जालन्धर महाविद्यालय', 'सेवा-सदन', कर्वे यूनिवर्सिटी अथवा महिला विद्यालय जैसी संस्थाओंका उनमें एकदम अभाव है।

कुछ ही वर्षोंके अन्दर भारतमें नारी-आन्दोलनकी जो प्रगति देखी गयी है वह सर्वथा अभूत-पूर्व कही जायगी। विशेषतः

महात्मागांधी द्वारा प्रवर्तित असहयोग-आन्दोलनके बादसे तो भारतीय ललनाओंके जीवनमें युगान्तर-सा उपस्थित हो गया है और यही कारण है कि आज हम देशके स्वतंत्र आन्दोलनमें बहुसंख्यक महिलाओंको व्यापक रूपसे कार्य करते तथा अपने पुरुष सहकर्मियोंके साथ सब प्रकारके सुख त्याग कारागार एवं अपमान-लांछनायें सहन करते पाते हैं।

जीवनके अन्यान्य क्षेत्रोंमें भारतीय महिलाओंने अपनी जागृति और क्रियाशीलताका प्रशंसनीय परिचय दिया है और दे रही हैं। आजसे लगभग दसवर्ष पूर्व कुछ शिक्षित महिलाओं द्वारा "अखिल-भारतीय महिला-सम्मेलन" नामक एक संस्था की स्थापना हुई थी। यद्यपि इस संस्थाका प्रधान उद्देश्य महिलाओंका बौद्धिक विकास ही है तथापि महिलाओंके लिये व्यायामशाला तथा क्लब आदि खोलकर इस संस्थाने नवीन दिशामें कार्य किया है। दिल्लीमें लेडी इरविन कालेजकी स्थापना इसी संस्थाके उद्योग का परिणाम है। पूनाका भारतीय महिला-विद्यापीठ, आर्यकन्या महाविद्यालय, बड़ौदा, कन्या गुरुकुल देहरादून, कन्या महा विद्यालय जालंधर मैसूरका भगिनी समाज, प्रयाग महिला विद्यापीठ, विहार महिलाविद्यापीठ वनस्थली विद्यापीठ, जयपुर आदि संस्थाएं महिला समाजमें शिक्षाका प्रचार करने तथा महिलाओंमें जीवन और जागृति उत्पन्न करनेके लिये प्रयत्नशील हैं। इन संस्थाओंके अस्तित्वसे इस बातका पता चलता है कि भारतमें भी इस समय महिलाओंकी शिक्षा की ओर विशेष-रूपसे ध्यान दिया जाने लगा है। भारतकी लड़कियां उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके लिये पाश्चात्य देशोंमें भी काफी संख्यामें जाने लगी हैं।

इस प्रकार आज भारतके महिला-समाजकी सर्वाङ्गिक उन्नति हो रही है। इस युगने नारीको एक नया सन्देश दिया है और नारीने अपने विकास के उपकरणोंको एकत्र करनेका कार्य आरम्भ कर दिया है।

सिनेमा संसार

सफल अभिनेत्री बननेका नुस्खा

——०*:*०——

लेखक—श्री नटराज

सितारोंकी दुनियाका नागरिक कैसे [बना] जाय, इस सम्बन्धमें कई लेखकों एवं [सिनेमा]-संसारके विशेपज्ञोंने अपने विचार [प्रक]ट किये हैं। नागरिक बननेके उपायोंके [अति]रिक्त बहुतोंने 'तारिका' बननेके लिये कुछ तरीके बताये हैं। उन तरीकोंके अनु[सार] कुछ नवयुवकों और नवयुवतियोंने सि[ता]रोंकी दुनियामें प्रवेश पानेकी चेष्टा की या [नहीं] इसका विवरण प्राप्य नहीं। लेकिन [ऐ]से सितारोंकी दुनियाका एक तुच्छ [ना]गरिक होनेके नाते (मैं इन विषयोंसे [उदा]सीन-सा रहा हूं) मैंने इस दुनियामें [प्रवे]श करने या प्रवेश करनेके बाद किस भांति [सफ]ल तरिका बना जा सकता है, इस सम्बन्ध [में] रामवाण औपधिका पता लगा लिया है। [जि]न्हें सितारोंकी दुनियाका स्वर्गिक सुख [अप्रा]प्य है और प्रवेश न पा सकनेसे जीवनसे [नि]राश हैं वे शायद इन रामवाण गोलियोंसे [पुन]: आशा प्राप्त कर दुनियाका आनन्द पा [सकें]गे, ऐसा मेरा यकीन है।

लीला चिटनीस

सुन्दरी नीना

स्वर्गिक सुख पानेकी किसे अभिलापा [न]हीं है। लेकिन सबको वह थोड़े ही मिलता [है]। इस लोकका नागरिक बननेके पहले [नि]रन्तर चेष्टा द्वारा अपनेको उसके अनुकूल [ब]ना लेना पड़ता है। यदि आप सितारोंकी [दु]नियामें प्रवेशाधिकार प्राप्त कर सफल [अभि]नेत्री बनना चाहती हैं, तो सबसे पहले [आ]प अपना चेहरा बड़े शीशेमें देखिये और [उ]से किसी सफल अभिनेत्रीके चेहरेसे मिला[इ]ये, यदि कोई कमी हो तो दूर कीजिये। [पो]शाकके विपयमें होशियार रहिये, वह [बि]लकुल अपटूडेट होनी चाहिये। फिर [आ]पका फिल्म निर्माता, निर्देशक, मशहूर [अ]भिनेता-अभिनेत्रियों, रेडियोकी गायक-[गा]यिकाओंके साथ परिचय—घनिष्ट परिचय [हो]ना चाहिये। 'फिल्म इण्डिया' जैसे पत्रके [स]म्पादक या फिल्म समालोचकसे परिचय [हो]ना भी अच्छी बात है। यदि इन लोगोंमेंसे [कि]सीसे भी आपका परिचय नहीं है, तो सफल [ता]रिका बनना तो दूर की बात है, आप [उ]नकी दुनियामें प्रवेश भी नहीं पा सकतीं। [श]रीर सुष्ठ-सुन्दर और संगीतकी जानकारी होनेपर आप सितारोंकी दुनियामें प्रवेश पा जायेंगी एवं अभिनेत्री भी हो जायेंगी। लेकिन ज्यादा दिनों तक वहां रह सकेंगी या नहीं इसमें संदेह है। सम्पादक, लेखक और फिल्म डिस्ट्रीब्यूटरसे परिचय पत्र लेकर अभिनेत्री बननेकी कभी कोशिश मत कीजिये, वर्ना आपका भविष्य अन्धकारमय हो सकता है।

अगर किसी तरीकेसे आपने प्रवेशाधिकार प्राप्त कर लिया और स्टूडियो आने-जाने लगीं। स्टूडियोका चपरासी आपको खड़े होकर लम्बी सलाम अदा करने लगे तब अगर आप नीचे लिखे तरीके काममें लायें तो सितारोंकी दुनियामें आपका आसन ऊंचा उठ सकता है।

बम्बई या कलकत्तेमें जहां भी हों, आप को स्टूडियोके नजदीक एक मकानका इन्तजाम करना चाहिये। अगर आपका विवाह नहीं हुआ हो तो विवाह उत्सव कीजिये। उस में सितारोंकी दुनियमें छोटे-बड़े सब लोगों को निमंत्रण दीजिये। अगर आपका विवाह हुआ है तो अपने पतिको तलाक दे दीजिये और प्रचार कीजिये कि मेरा भूतपूर्व पतिके साथ कानूनी सम्बन्ध-विच्छेद होनेपर भी हार्दिक प्रेम कम नहीं हुआ, बल्कि पहलेसे और भी बढ़ा है। स्टूडियोके मेकपमेन, लाइटमेन तथा अन्य कर्मचारियोंपर अपना कृपा कटाक्ष सदैव रखिये। वे आपके इस उपकारसे कृतार्थ रहेंगे। फैशनमें जरा भी कमी न आने दीजिये। प्रत्येक नये चित्रमें नयी पोशाक तो पहनिये ही, दैनिक जीवनमें भी फैशनकी कृपणता न दिखाइये। स्टूडियो और उसके बाहर जिनसे आपका मतलब निकलता हो उनको मौका पाते ही मुंह मीठा कीजिये। स्टूडियो के बड़े अधिकारियोंसे हंसकर नजाकतके साथ बातचीत कीजिये नम्रता और मुस्कराहट को जीवनसंगी बनाइये। स्टूडियोके उन कर्मचारियोंको जो आपको नुकसान पहुंचा सकते हैं, देखतेही मुस्करा दीजिये और वहां बिना ठहरे आगे बढ़ जाइये। आप अपनेको फैशन की पुतली बनाये रखिये, लेकिन गृहस्थ

…वनके हावभाव छोड़िये । संसारकी …तुली छद्र … … पसंद करती …, मौका पातेही उ का प्रचार करनेसे मत …किये । आपको जिन फिल्मकी भूमिका दी …यी है उसकी कहानीकी सदैव आलोचना …जिये कि कहानी ऐसी होती तो मेरा …भिनय और भी सफल होता । किसी …भिनेता अभिनेत्रीकी मृत्यु, बीमारी और …भिनय सफलताके अवसरपर समयोपयोगी …पना विचार प्रकट करनेमें कभी …स्ती न कीजिये । अपने कलाके सम्बन्धमें …र्पभर बातें कीजिये । अपना बाहरी और …तरी जीवन साथ-साथ न चलाइये ।

यदि आपने मेरी इस रामवाण दवाका …छ या घूंट पिया, तो इसमें संदेह नहीं कि …पको सितारोंकी दुनियामें मान, प्रतिष्ठा …र धन तो मिलेगा ही आप सदाके लिये …मर बन जायेंगी । विश्वास न हो तो …फल अभिनेत्रियोंके जीवनका अध्ययन …जिये । मेरा नुस्खा साफ दिखाई देगा ।

सितारोंकी दुनियामें—

पाटनकी प्रभुता

गुजरातीके प्रसिद्ध उपन्यासकार श्री० …०एम० मुन्शीके ऐतिहासिक उपन्यास 'पाटनकी प्रभुता' के आधारपर श्री चिम्मन-…लाल त्रिवेदी एक नयी फिल्म बनाने जा रहे … । आरम्भिक तैयारियां की जा चुकी हैं । …धान भूमिकाके लिये दुर्गा खोटे, लीला …साई, जगदीश, डेविड और अरुणको अभी-…क चुना गया है ।

तलाक देनेवाली अभिनेत्रियां

लीला चिटनीस, रोज, स्नेहप्रभा, मीना, सितारा आदि प्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्रियोंने प्रथम पतिके जीवित रहते हुए भी दूसरे विवाह किये हैं। इन भूतपूर्व दम्पतियोंकी सूची निम्नानुसार हैं :—

स्नेहप्रभा	—	किशोर शाहू
मीना	—	जहूर राजा
लीला चिटनीस	—	ग्वालानी
सितारा	—	नजीर
अमीर कर्णाटकी	—	हिमालयवाला

शान्ता आप्टे मुसीबतमें

कुछ दिन पहले मिस शान्ता आप्टेने बम्बईके 'सण्डे स्टैण्डर्ड' में एक लेख प्रकाशित करवाया था कि "मैं किससे विवाह करूंगी" । इस लेखको पढ़कर सैकड़ों नव युवकोंने अपनेको शान्ता आप्टेके उपयुक्त पाया । लिहाजा उसके पास सैकड़ों पत्र पहुंचे । अब बेचारी बड़ी मुसीबतमें है कि अपना वर किसे निर्वाचित करे ।

चल चल रे नौ जवान

चल चल रे नौ जवानका निश्चित तारी-खको प्रदर्शन न करनेके कारण बम्बईका 'राक्सी' दो सप्ताह तक बन्द रहा और फिल्मिस्तानवालोंको ठीक समयपर चित्र न देनेके लिये २००००) प्रति सप्ताहके हिसाबसे राक्सीके संचालकोंको ४००००) क्षतिपूर्तिके तौरपर देने पड़े ।

बम्बई टाकीजमें परिवर्तन

बम्बईके समाचारोंसे पता चला है कि बम्बई टाकीजमें शीघ्र ही कुछ परिवर्तन होने-वाले हैं। अभिनेता शाहनवाज फिर इस कम्पनीमें वापस आ गये हैं । मृदुलाकी सफ-लताके कारण जयराज निर्देशित चित्रकी प्रधान भूमिका भी शायद मृदुलाको ही दी जाये ।

जागीरदार

'राम शास्त्री' के ख्याति प्राप्त निर्देशक और अभिनेताने स्टैण्डर्ड पिक्चर्सके लिये 'बहराम खां' बनानेके लिये लिखा पढ़ीकर ली है ।

पहले आप

कारदार प्रोडक्शन आजकल 'पहले आप' बनानेमें व्यस्त है । शमीम, वास्ती, दीक्षित और जीवन मुख्य भूमिकामें रहेंगे । श्री कार-दार इस चित्रका निर्देशन करेंगे ।

कौन किसका.......?

भाई	बहन
ए० हुसेन	नरगिस
मोहसिन अब्दुल्ला	रेणुका देवी
जहूर	सुरैया
अनिल विश्वास	पारुल घोष
पिता	**पुत्र**
पृथ्वीराज कपूर	राजकपूर
विट्ठलदास पंचोटिया	जयशंकर पंचोटि…
पाण्डे	कानु पाण्डे
चिमनलाल देसाई	वीरेन्द्र सुरेन्द्र दे…
माता	**पुत्री**
जद्दन बाई	नरगिस
शरीफा	हुस्नबानू
शमशाद बेगम	नसीम
पुतलीबाई	गौहर
दयादेवी	कौशल्या
फातमा	जुबेदा
साली	**बहनोई**
सरदार अख्तर	कारदार
जोहरा	रफीक गजन…
नाजशान्ति	अली साहब
हुस्नआरा	शौकत हुसे…
चन्द्रप्रभा	नायमपल्ली
रंजना	वसन्त थेंगडी…
रेखा पवार	पवार
सुमति गुप्ते	मधुकर गुप्ते
सुलोचना चटर्जी	केदार शर्मा
रोमिला	कुमार (मिश्र…)

कौन क्या कहता है

भारतका तीसरा दल

ब्रिटिश पार्लमेण्टके स्वतन्त्र मजदूर राजनीति मन्त्री मि० फेनर ब्राकवेने पत्रप्रतिनिधिको बताया है कि स्वतन्त्र दूर दल मि० चर्चिलको न केवल यूरोन नीति,बल्कि भारतीय प्रश्नोंपर उनके ष्टकोणको चुनौती देगा। भारत एक म देश है इसलिये उसके सरकार ोधी आन्दोलनका हम उसी तरहसे समकरते हैं जैसे ग्रीक सरकार विरोधी दोलनका। आगामी पार्लमेंटके निर्वाचन ारतकी स्वतन्त्रताका प्रश्न हमारे दलकी से उपस्थित किया जायगा। अगर सप्रू ौता कमेटीसे डा० अम्बेडकर और ना सहयोग करनेको राजी नहीं होते हैं इसपर मुझे जरा भी आश्चर्य नहीं होता योंकि ये बातें तो तबतक होती रहेंगी क भारतसे तीसरा दल दूर नहीं हो ा।

टण्डनजीकी खरी बातें

संयुक्तप्रांतके प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्री ेात्तमदास टण्डने लार्ड वावेलके भाषणकी ोचना करते हुए कहा कि लार्ड वावेल वक्तव्य उन अनेक वक्तव्योंकी भांति है उनके पूर्वजोंने या उनके ब्रिटेनके लकोंने दिये हैं। ये सब वक्तव्य एक ही में ढले हुए हैं। हम अब ब्रिटिश राजाओंके वचनोंमें कोई विश्वास नहीं । उनके वचनोंने हमें सदा धोखा दिया उनके सद्विचारोंमें विश्वास करनेके हमें प्रेरित करनेमें कोई लाभ नहीं है। उन्हें केवल उनके कार्योंसे जांच सकते और उनके कार्योंने उनके वचनोंको सिद्ध किया है। वर्तमान सरकार जिसे लार्ड वावेल राष्ट्रीय सरकार कहने ाहस करते हैं, जानमें या अनजानमें अनैतिकता, घूसखोरी और अमानवता लनेमें सहायक हो रही है। केवल सरके कर्मचारी और सरकारके दलाल तथा ारके ठेकेदार ही ऐसे व्यक्ति हैं, जिनको की स्थितिमें प्रसन्नता होनेका अवसर सरकारी नौकरोंकी अयोग्यतासे गांवमें ान और शहरमें व्यापारी दोनों समान कष्ट पा रहे हैं। जो चीजें आज हो हैं, वे राष्ट्रीय सरकारमें असम्भव होतीं दुर्भिक्षसे मौतें हुई हैं, उनका होना वश्यक होता। लार्ड घावेलकी राष्ट्रीय र हमारी राष्ट्रीय सरकार कदापि नहीं क्ती। जब हमारी राष्ट्रीय सरकार तो उसमें लार्ड वावेल और उनके थियोंका ऐसा कोई स्थान नहीं होगा। क हम शक्तिहीन तब तक वे लम्बी नख्वाहें तथा लाभ उठाते रहें। लेकिन में अब शब्दोंसे भुलावेमें नहीं डाल । राष्ट्रीय सरकार अवश्य स्थापित हम इसी आशाके बलपर जीवित ।

सम्पत्ति जब्त की जाय

कलकत्तेकी पंजाब सेवा समितिके एक समारोहमें भाषण करते हुए पंजाबी समाजके प्रसिद्ध धनी श्री कर्मचन्द थापड़ने कहा कि यह अक्षरशः सत्य है कि लक्षाधीश, कोट्याधीश समाजके ट्रस्टी मात्र हैं और उन्हें समाज हितमें अपने धनको अवश्य लगाना चाहिये। मैं तो यहांतक कहनेको तैयार हूं कि जो धनी अपने धनका दुरुपयोग करे, उसकी सम्पत्ति सरकार द्वारा जब्तकर जनताके हितमें लगा दी जाये।

विश्वशांति कैसे हो ?

सोवियट रूसकी 'युद्ध और मजदूर वर्ग' नामक पत्रिकामें 'विश्वशान्ति' के सम्बन्धमें एक लेख प्रकाशित हुआ है। जिसमें कहा गया है कि भावी शान्ति व्यवस्थाके लिये विश्वको चार क्षेत्रोंमें विभाजित किया जाय—यूरोप, अमेरिकन क्षेत्र, एशिया—प्रशान्त तथा अफ्रीका। डम्बर्टन ओक्समें जो योजना बनायी गयी है उससे संघर्षकी सम्भावना बनी रहती है। सुरक्षा क्षेत्रोंका गठन इस प्रकार हो कि एक क्षेत्रकी सरकारें एक दूसरेको हानि न पहुंचा सकें और अन्तर्राष्ट्रीय विवादसे बचनेके लिये जो सीमा निर्धारित की जाये या दो सरकारोंके बीच जो सीमा सम्बन्धी समझौता हो वह उस क्षेत्रके बड़े-बड़े राष्ट्रोंके परामर्शसे हों।

जमानेकी पुकार

कलकत्तेके कुछ धनीमानी समाज सेवकोंकी ओरसे प्रस्तावित हिन्दू कोड़का विरोध करने के लिये एक बिराट सभा हुई। जिसमें विश्वमित्र-संचालक श्री मूलचन्द अग्रवालने कहा कि लड़कियोंको सम्पत्ति देनेपर लोग आज बड़े भयभीत हो रहे हैं। लेकिन जमाना तो वह आ रहा है कि व्यक्तिगत सम्पत्ति नामकी भी कोई वस्तु समाजके नवीन निर्माणमें शायद ही रहे। सोवियट रूसकी विजय उस दिशाका इशारा कर रही है और इंगलैण्डमें आज समाजवाद काफी जोर पकड़ता चला जा रहा है। लोगोंको लड़कियोंको अपनी चीज समझकर केवल विरोधमें हाथ उठाकर सन्तुष्ट न होना चाहिये। हिन्दू समाजकी बहन बेटियां आर्थिक विषय नीतिकी शिकार न हों। जिस हिन्दू संस्कृतिकी हम रक्षा करना चाहते हैं, वह महिला समाजसे सबसे ज्यादा सम्बन्ध रखती है। तलाकका नाम आते ही लोग व्यभिचार वृद्धिका भूत सवार कर लेते हैं। लेकिन यह नहीं सोचते कि खास हालतोंमें हमारे स्मृतिकारोंने भी पति-त्यागकी व्यवस्था निर्धारित की है। पुरुष समाजकी उद्दण्डता और अनाचारके नियन्त्रणके लिये महिलाओंको कुछ तो सहायता चाहिये। कोड़में यदि महिलाओंको वैकल्पिक अधिकार मिल जाता है तो सती साध्वियोंके आदर्श पतिव्रत धर्मपर कैसे चोट पहुंचती है।

दानवीरकी अपील

प्रस्तावित कोड विरोधी सभामें भाषण करते हुए दानवीर श्री युगल किशोर बिड़लाने कहा कि हिन्दू समाजसे मैं यह अपील करूंगा कि वह रूढ़ियोंका दास न बना रह कर अपने घरको यथाशीघ्र सुधारे। हिन्दू समाजके अनाथ बालक और बालिकाओं तथा विधवाओंकी रक्षा की जाये और समाज अपनी कमाईका बहुत बड़ा अंश हिन्दू हितोंके लिये अर्पित करे। मैं सुधारोंके विरोधमें नहीं, लेकिन सुधारके नामपर अपने घरको छिन्न-भिन्न न किया जाय।

प्राचीन युग समाप्त

निर्दल नेता श्री एम० आर० जयकरने एक सभामें भाषण करते हुए कहा कि शिक्षा का प्राचीन युग समाप्त हो गया। प्राचीन युगमें जनताको इसलिये शिक्षित किया जाता था कि ब्रिटिश शासनमें सहायता प्राप्त हो। अब शासनका भार हम लेंगे। विज्ञान वह युग लानेमें सहायक होगा, जिसमें स्वातंत्र्य और सहयोगकी महानता रहेगी।

भयंकर संघर्ष

हिन्दू महासभाके वार्षिक अधिवेशनमें भाषण करते हुए डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा कि आगामी दो-तीन वर्षोंमें कुछ महान परिवर्तन होंगे, जिनसे भारतका भविष्य प्रभावित होगा। अपनी कमजोरियोंके लिये अब दूसरोंपर दोषारोपण करना बेकार है। यदि शान्ति पूर्वक भारत और ब्रिटेनमें समझौता हो जायगा तो भारतका भावी शासन विधान तैयार करनेकी तत्परता दिखलायी जायेगी। और यदि कोई शान्तिपूर्ण समझौता नहीं होता है तो एक ऐसा भयंकर संघर्ष अनिवार्य होगा, जिसमें लाखों भारतीयोंका भाग्य सम्मिलित रहेगा। हम एक सामूहिक मोर्चा बनाकर भारतकी स्वाधीनता एवं पुनर्निर्माणकी मांग करें जो आज हमारे सामने महत्वपूर्ण प्रश्न है।

अमानवीय व्यवहार

महात्मा गांधीकी सेवामें रहनेवाले डाक्टर जीवराज मेहताने अखिल भारतीय मेडिकल कानफ्रेंसके अध्यक्ष पदसे भाषण करते हुए कहा कि माता कस्तूरबाके देहावसानके कुछ दिन पूर्व मुझसे उनके स्वास्थ्य के सम्बन्धमें परामर्श देनेका अनुरोध किया गया। यह अनुरोध करनेके ८ घंटे उपरांत जेलोंके इंस्पेक्टर जेनरल मुझे यरवदा जेलसे महात्मा गांधीके पास आगा खां महलमें ले गये। जिस समय मैं माता कस्तूरबाके स्वास्थ्यकी परीक्षा कर रहा था तो गान्धीजीने इंस्पेक्टर जेनरलसे पूछा कि क्या मैं डाक्टर मेहतासे बात-चीतकर सकता हूं। उस अफसरने मना कर दिया और कहा कि इन्हें मैं अपनी जिम्मेदारीपर इसलिये लाया हूं कि हालत नाजुक है और प्रान्तीय सरकारकी अनुमति नहीं ली गयी है। इसीलिये मैं यह जिम्मेवारी नहीं लेना चाहता कि आप इनसे बातें करें। लेकिन अफसरके मुंहसे जब यह भी नहीं निकला कि आप केवल माता कस्तूरबा के स्वास्थ्यके सम्बन्धमें बातचीतकर सकते हैं :तो मैं शोकातुर हो आगा खां महलसे वापस चला आया।

रूस भारतकी आजादी चाहता है

'रूस और शान्ति' नामक पुस्तकके लेखक सर बर्नार्ड पियर्सने लिखा है कि इस बातमें लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि सोवियट रूस भारत तथा चीनकी स्वतंत्रताका हिमायती है। सोवियट रूस सदैवसे भारतीय स्वाधीनताका समर्थक रहा है। अंग्रेज होनेके नाते मैं रूसी अधिकारियोंका कृतज्ञ हूं कि उन्होंने भारत सम्बन्धी समस्याके सुलझानेमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप नहीं किया और उसको हल करनेका पूरा भार हमारे ऊपर छोड़ दिया यद्यपि प्रचार करनेका सर्वोत्तम अवसर भारत और ब्रिटेनकी वर्तमान जिच है।

चर्चिलकी बातें

यूनानकी राजधानी एथेन्समें राजनीतिक दलोंके प्रतिनिधियोंके सामने बोलते हुए ब्रिटेनके प्रधान मंत्री मि० चर्चिलने कहा आज हमारे समक्ष अनेक महत्वपूर्ण समस्याएं विचारार्थ उपस्थित हैं। आज यूनान मित्रराष्ट्र बनकर विजयकी ओर विश्वके अन्य राष्ट्रोंकी तरह कन्धेसे कन्धा भिड़ाकर अग्रसर हो सकता है। नाजी अत्याचारियोंके विरुद्ध इस संघर्षमें हम आशा रखते हैं कि कोई न कोई संकट निकलनेका रास्ता निकाल ही लेंगे। मैं आशा करता हूं कि ग्रीक देशभक्त दलके लोग यह गलत धारणा न रखेंगे कि हम उनके दृष्टिकोण तथा उनकी कठिनाइयां समझते ही नहीं। प्रेसीडेंट रूजवेल्ट तथा मार्शल स्टालिनकी जानकारी तथा स्वीकृति से हम लोगोंका यहां आना हुआ है। हम यूनानसे तभी वापस हो सकते हैं जब कि जनरल स्कोबीकी शर्तें मान ली जायं तथा यूनानमें जनताकी सरकार स्थापित हो जाय।

बाधाएं और कठिनाइयां

केन्द्रीय असेम्बली कांग्रेस पार्टीके नेता श्री भूलाभाई देसाईने बम्बईकी एक सभामें मित्रराष्ट्रोंके सहयोगके अस्तित्वमें सन्देह प्रकट करते हुए कहा कि तथाकथित सहयोग जारी रखनेकी हमारी इच्छा नहीं है। तीन बड़े राष्ट्र विश्वपर शासन करनेकी जो योजनाएं प्रेषितकर रहे हैं। उसमें भी मतभेद हैं। सर्व प्रथम सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक सम्बन्धका ध्यान रखकर हमें अपने मित्रका चुनाव करना होगा। हमारे देशमें सर्व-प्रथम एक अथवा अनेक सत्तात्मक राष्ट्रका सवाल उठता है। नरेन्द्र अपने हितोंके रक्षार्थ संगठित हो रहे हैं जिसका मतलब तीसरे सत्ताशाली राज्यका श्री गणेश है। इसके बाद भारतमें स्वतंत्र राज्यकी रचनाका प्रश्न आता है। भारतमें संघीय सरकार होगी। चाहे भारत एक राष्ट्र हो अथवा अनेक राष्ट्रोंका समूह हो। संघके सभी राज्योंको पूर्ण अधिकार रहेंगे। परन्तु बाकी अधिकार किसके होंगे यह एक टेढ़ा मसला है। अन्तमें समाजके निश्चित आर्थिक स्वरूपका भी प्रश्न है।

युद्धका सिंहावलोकन

—:o:—
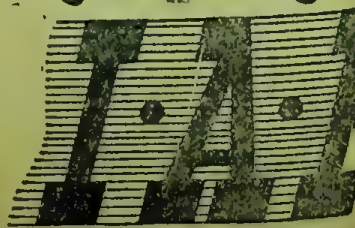
गत सप्ताह बड़े दिनके अवसरपर युद्ध- विभिन्न देशोंके कर्णधारों एवं सेना- ोंने राष्ट्र एवं जनताके नाम जो शुभ- ना सूचक सन्देश ब्राडकास्ट किये, उनमें मान महासमरकी स्थितिपर प्रकाश ते हुए सर्वदाकी भांति अपनी तैयारियों दर्पोक्ति और अन्तमें विजयी होनेकी कांक्षा स्पष्ट की गयी। सर्वाधिक उल्लेख- जर्मनीके प्रचार मन्त्री डा० गोबेल्यका ण रहा। उन्होंने बताया कि गत कुछ यसे जर्मनीके सामने अभूतपूर्व संकट उप- त हो गया है और अनेक अवसरों पर ऐसा मालूम होता था कि आक्रमणकारी का असह्य दबाव हमारे कन्धोंपर आ ; लेकिन हमने कभी हार स्वीकार नहीं बल्कि साहस और धैर्यके साथ सारी ीबतोंका मुकाबला करते रहे। अब हमने र अपनी सामरिक तैयारियां पूरी करली और कठिनाइयोंको पार कर गये हैं। गत ाह जब मैं फुहररसे मिला था तो उन्हें ूतपूर्व ढङ्गसे कार्य व्यस्त पाया था।" जैसा ाङ्कमें लिखा जा चुका है, हिटलरने पश्चिमी मोर्चे पर जर्मन अभियानकी री योजनाएं तैयार की हैं, ऐसा युद्ध ोपज्ञोंका दावा भी है। इतना तो मानना पड़ेगा कि सब कुछ होते हुए भी अबतक और पश्चिमसे एक साथ धुआंधार क्रमण जर्मनी पर नहीं हुआ है। रूसी र्चे पर सोवियट सैनिकोंका जमाव जरूर रहा है। इसलिये हिटलरने पश्चिमी र्चे पर आक्रमण आरम्भ कर मित्रोंको न सीमासे दूर भगा देनेकी बात सोची तो कोई आश्चर्य नहीं; क्योंकि दोनों र्चों पर एक साथ युद्ध करनेका पक्षपाती र्मनी कभी भी नहीं रहा है। गत दो ाह पहले जर्मन सेनापति वान रुण्डस्टेट- जो आक्रमण प्रथम अमेरिकन सेनाके बलमें किया था, उसमें जर्मन सेनाको फी सफलता मिली है। यद्यपि सैनिक नि दोनों ही पक्षकी बहुत अधिक हुई है, ापि अमेरिकाकी क्षति बहुत अधिक लूम होती है। क्योंकि इस युद्धको लेकर ेरिकामें बहुत अधिक हलचल है।

कहा जाता है कि वहां युद्ध मन्त्री ० स्टिमसनने जेनरल आइसन होवरसे पोर्ट मांगी है कि जर्मन प्रत्याक्रमणका विवरण पेश किया जाये और जिन गोंने, चाहे कितने ही बड़े पदपर स्थित हों, र कोई गलती की हो, तो उनका नाम बताया जाये। वाशिंगटनमें यह लोगों- आम धारणा हो रही है कि उक्त रिपोर्ट बाद पश्चिमी मोर्चेके अमेरिकन हाई- माण्डमें हेर फेर किया जायगा। गत ाहकी सबसे बादकी रिपोर्टके अनुसार र्शल वान रुंडस्टेटने लक्सेम बर्ग और बेल- यममें अपने १२ दिनके धुआंधार प्रत्या- मणमें २ हजार वर्ग मील भूमिपर अधि- र स्थापित किया है और ६० मीलके ाभग आगे बढ़े हैं। लेकिन अब रुंडस्टेट ा आक्रमण पराकाष्ठापर पहुंच गया है और कई स्थानों पर उसे रक्षात्मक अवस्था- में आनेकी आवश्यकता महसूस होने लगी है। बुधवारकी रातमें म्यूज नदीके पूर्व मार्शल रुण्डस्टेटकी प्रगति बिलकुल रुक-सी गयी। अमेरिकन युद्ध विभागकी रिपोर्टके अनुसार फ्रांस पर मित्र अभियानसे लेकर बड़े दिनके पहले तक ८ लाख जर्मन सैनिक पश्चिमी मोर्चे पर बन्दी बनाये गये हैं। कहते हैं कि जर्मन अपने पश्चिमी मोर्चे के नये प्रत्या- क्रमणके सिलसिलेमें एक प्रकारकी नयी तोप का उपयोग कर रहे हैं जिसके ४ मुंह हैं। इससे विमानों पर भी गोली दागी जाती है और जमीनपर भी आक्रमण किया जाता है।

सोवियट मोर्चे पर हंगरीकी राजधानी बुडापेस्टकी लड़ाईका अन्त अब शीघ्र ही होने वाला है। सारा नगर चारों ओरसे रूसी सेनाओंने घेर लिया है और नगरके अन्दर ५० हजार जर्मन सैनिक घिर गये हैं। उन्हें नाजी हाई कमाण्डका आदेश है कि अपने स्थान पर अटल रह कर कट मरो और इस आदेशका वे भी अक्षरशः पालन कर रहे हैं। शहरमें लङ्का काण्डका बिकराल दृश्य उपस्थित है। सोवियट सेना एक-एक पगके हिसाबसे शहरके केन्द्र स्थलकी ओर बढ़ रही है। शहरकी किलेबन्दीको, जेनरल ताल- बुखिनकी सेनाएं चूहेकी तरह बराबर कुत- रती जा रही हैं। मास्कोकी एक घोषणाके अनुसार बुडापेस्टके लिये होने वाले युद्धमें पिछले तीन दिनोंके अन्दर १२ हजार जर्मन मारे गये और ९ हजार ४६८ सैनिकोंको युद्ध बन्दी बनाया गया। आस्ट्रियाकी राज धानी वियनाकी दिशामें लालसेना ९० मील लम्बे मोर्चे पर बढ़ती जा रही है। ब्राटि- स्लावा दरारसे करीब ६० मीलकी दूरी पर सोवियट सेनायें पहुंच गयी हैं। रूमानिया- के तेल अञ्चलोंकी कुछ मशीने सोवियट रूसमें उठा ले जायी गयी हैं जिसका प्रतिवाद ब्रिटेन और अमेरिकाकी सरकारोंने सोवियट सरकारके समक्ष की हैं! उत्तरमें रूसी सर- कारकी ओरसे कहा गया है कि रूमानियामें ब्रिटिश और अमेरिकन स्वार्थोंकी रक्षा करनेके लिये सोवियट सरकार तैयार है। रूसके ध्वस्त तेल अञ्चलोंमें मशीनोंकी जरू- रत थी, इसलिये रूमानिया तेल अञ्चल स्थित जर्मन मशीनोंको उठा लिया गया है।

इटलीकी लड़ाई और यूनानका गृहयुद्ध अभी पूर्ववत चल रहा है। मि० चर्चिलके यूनान आनेसे अबतक अवस्थामें कोई विशेष सुधार नहीं दृष्टिगोचर होता। आशा की जाती है कि यूनानकी समस्यापर शीघ्र ही ब्रिटेन, अमेरिका और रूसके परराष्ट्र मंत्रियों की कानफरेन्समें विचार किया जायेगा। यूनानी देशभक्तोंकी मांग है कि समस्त सेनाओंको एक साथ भंग कर दिया जाये।

सुदूरपूर्वमें प्रशांत मोर्चेकी स्थिति जा- पानी दृष्टिकोणसे नाजुक होती जाती है। उस दिन जापानके सम्राटने पार्लमेण्टके ८६ वें अधिवेशनमें बताया कि युद्ध स्थिति अत्यन्त शोचनीय बन गयी है। इस लिये जापानकी जनताको अधिक प्रयत्नशील होने की आवश्यकता है। फिलिपाइन्सके अन्त- र्गत लेयटी द्वीपकी दीर्घकालीन लड़ाई समाप्त हो गयी। जेनरल मेकार्थरके फौजी सदर मुकामसे प्रकाशित विज्ञप्तिके अनुसार लेयटी द्वीपके युद्धमें ११ हजारसे अधिक अमेरिकन और १ लाख १३ हजारके लगभग जापानी सैनिक हताहत हुए हैं। अक्तूबरके बादसे अबतक ४१ जापानी सैन्यवाहक जहाज तथा ७७ युद्धपोत जलमग्न किये गये हैं। अमेरि- कन विशालकाय बमबाजोंने फिलिपाइन्सकी राजधानी मेनिलापर तीसरी बार आक्रमण किया और ३९ विमानोंको धराशायी कर दिया। चीनमें मार्शल चांगकेशक और कम्यूनिस्ट चीनका मतभेद अभी चल रहा है। चीनके भारतीय सूचना विभागके मंत्री मि० सी० एच० लोने कहा है कि जेनरलि स्सिमोने अनेक बार समझौता करने सम्बन्धी अपने इरादेकी घोषणा की है, लेकिन कुछ ऐसी अड़चने आ जाती हैं, जिनसे अबतक समझौता नहीं हो सका है। यद्यपि जापान के औद्योगिक अंचलोंपर अमेरिकन हवाई हमले बराबर हो रहे हैं, तथापि चीनके अनै- क्यसे जापानको चीनमें कई सस्ती सफल- ताएं प्राप्त हो गयी हैं। बर्मामें मित्र सेना मायूके पूर्व आगे बढ़ रही है। गत सप्ताह बड़े दिनके अवसर पर पूर्वी बंगाल पर जा- पानी हवाई हमला हुआ जिसमें दो शत्रु विमान धराशायी किये गये और अन्य दो क्षतिग्रस्त हुए।

भारतमें नारी-जागृतिको प्रगति

(पृष्ठ ९ की ३० वीं पंक्तिके बाद)

जालन्धर-कन्या महाविद्यालयके संस्थापक लाला देवराज। प्रारम्भिक दिनोंमें लाला देवराजको भी कट्टर-पंथियोंके हाथों न जाने कितनी ही तकलीफें उठानी पड़ी थीं, किन्तु ये महापुरुष अपने उद्योगमें लगे रहे, और अन्तमें इन्होंने एक ऐसी संस्था बनाकर खड़ी कर दी, जो पञ्जाबमें स्त्री-शिक्षाका सबसे बड़ा केन्द्र है। भारतीय विधवाओंके सबसे बड़े बन्धु पञ्जाबके स्वर्गीय सर गङ्गाराम थे, जिन्होंने विधवा विवाहके लिये कई लाख रुपये दान दिये। उनके दानसे कन्याओंके अनेक स्कूल, अस्पताल आदि चल रहे हैं। उनकी विधवा-विवाह-सहायक सभा की शाखाएं भारत भरमें फैली हुई हैं।

महाराष्ट्र प्रान्तमें प्रसिद्ध सुधारक तथा साहित्यकार स्वर्गीय विष्णु शास्त्री चिपलूण- करने पहले-पहल विधवा विवाहका प्रश्न उठाया था। महाराष्ट्रीय महिलाओंकी जागृतिमें फर्ग्युसन कालेज पूनाके प्रिन्सिपल स्वर्गीय आगरकर तथा बम्बई हाईकोर्टके जज स्व० महादेव गोविन्द रानाडे और उनकी धर्मपत्नी रमाबाई रानाडेने बहुत काम किया। पण्डिता रमाबाईने हिन्दू विधवाओं की दुर्दशा दूर करनेका बहुत बड़ा प्रयत्न किया। इस शताब्दीमें भारतीय स्त्रियोंके लिये सबसे बढ़कर काम पूनाकी 'भारत-सेवक समिति'के सभापति स्व० देवधरने किया है। उनका सेवा-सदन स्त्रियोंकी एक महान संस्था है। महाराष्ट्रमें स्त्री-शिक्षाके लिये बहुत बड़ा प्रयत्न करनेवालोंमें प्रोफेसर कर्वेका नाम अमर रहेगा। उन्होंने पूनामें महिला-विश्वविद्यालयकी स्थापना की, जो भारतमें महिलाओंका एकमात्र विश्वविद्या- लय है। इस विश्वविद्यालयके लिये दानवीर सर विट्ठलदास दामोदर ठाकरसीने पन्द्रह लाख रुपये अपनी माता स्वर्गीया नाथीबाईके नामपर दान दिये थे।

गुजरातमें नारी जागरणका प्रारम्भ अह- मदाबादके सर रमण भाई नीलकण्ठकी धर्म- पत्नी लेडी विद्यागौरी नीलकण्ठने किया। गुजराती महिलाओंमें लेडी विद्यागौरी ही सबसे पहली ग्रेजुएट हैं। आज जब महिलाएं बहुत आगे बढ़ चुकी हैं, तब भी लेडी विद्या- गौरी पूर्ववत् कार्य करती जाती हैं। अहम- दाबादकी कोई ऐसी प्रमुख सार्वजनिक संस्था नहीं है, जिसमें लेडी विद्यागौरीका हाथ न हो। श्रीमती हंसा मेहता, जो इसी साल अखिल भारतीय महिला-सम्मेलनकी अध्यक्षा चुनी गयी हैं, महिलाओंकी उन्नति में विशेष भाग लेती हैं। इनके अतिरिक्त श्री- मती लीलावती मुंशी, सुमति मेहता आदि महिलाएं भी गुजरातके महिला-समाजमें शिक्षाका प्रचार करने तथा उनमें जीवन और जागृति उत्पन्न करनेके लिये सतत प्रयत्न-शील रहती हैं। गुजरातके नारी- समाजमें जो विशेष जागृति पायी जाती है, उसका कारण वहां परदा-प्रथाका न होना भी है। महात्मागांधी द्वारा राष्ट्रीय आन्दो- लनमें भाग लेनेकी प्रेरणासे भी यहांकी महि- लाओंमें यथेष्ट जागृति हुई है।

आंध्र-प्रदेशमें महिलाओंकी जागृतिके जन्मदाता बेजवाड़ाके स्वर्गीय वीरेशलिंगम पन्तुलू थे। पन्तुलू महाशय एक बड़े समाज- सुधारक और साहित्यकार थे। उन्होंने महिलाओंकी शिक्षा उनके समान अधिकार, विधवा विवाह आदिके लिये बड़ा प्रयत्न किया था। सुदूर दक्षिणमें स्वर्गीय रघुनाथ रायने पहले पहल विधवा-विवाह और स्त्री-शिक्षाके लिये आवाज उठायी थी। आजकल मैसूरकी 'भगिनी-समाज' नामक संस्था स्त्रियोंकी उन्नति तथा शिक्षा-प्रचार में विशेष भाग ले रही है। इसके द्वारा स्त्रियोंमें सामाजिक सुधारोंका कार्य भी हो रहा है।

संयुक्त प्रांतमें स्त्री-शिक्षाका एक बहुत बड़ा प्रयत्न प्रयागके महिला-विद्यापीठने किया है, जिसके जन्म देनेका श्रेय श्री पुरुषो- त्तमदास टण्डनको है। इसकी प्रिंसिपल हिंदीकी लोकप्रिय कवयित्री श्रीमती महा- देवी वर्माकी लगन, साधना और योग्यताके फलस्वरूप आज यह संस्था युक्तप्रांतमें स्त्री- शिक्षा तथा नारी जागृतिकी दृष्टिसे बहुत उन्नति अवस्थामें है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

मि० चर्चिल बच गये

कहते हैं कि ग्रीसके एक देश भक्त छापा ारने ब्रिटिश प्रधान मंत्री मि० चर्चिल पर ब्रिटिश राजदूतके निवास स्थानके बाह्य ंचलमें गोली चलायी। उक्त स्थानसे तीन ज दूरस्थ एक ग्रीक युवतीको गोली लगी।

बुडापेस्टमें कर्फ्यूकी घोषणा

मास्को रेडियोने घोषित किया है कि डापेस्टमें कर्फ्यूकी घोषणा की गयी है था सैन्य दलोंको घटनास्थल पर संदेहात्मक यक्तियोंको गोलीके घाट उतारनेका आदेश दिया गया है।

वी-बममें बन्दियोंके पत्र

लन्दनमें घोषित किया गया है कि जर्मन स्थित ब्रिटिश युद्ध बन्दियोंके पत्र वी टू बम- रख कर ब्रिटेन भेजे जा रहे हैं। उत्तरी गलैण्ड पर अभी हालके हमलेके समय एक नमें एक परचा और युद्ध बन्दियोंके तीन र बरामद हुए। परचोंमें पत्रोंको गन्तव्य ान तक भेजनेकी अपील की गयी है।

अंग्रेज ग्रीस नहीं छोड़ेंगे ?

लन्दनके संवादसे ज्ञात हुआ है कि टिश प्रधान मंत्री मि० चर्चिलने ऐलान या है कि अंग्रेज तबतक ग्रीस नहीं छोड़ कते हैं जबतक कि सुदृढ़ और निःस्वार्थ ग्रीस कारकी स्थापना न हो जाये, जो किसी पक्षका समर्थन नहीं करेगी। यदि ग्रीक य समस्याका समाधान करनेमें सफल हीं होंगे तो इण्टर नेशनल ट्रस्ट कायम करने आवश्यकता उपस्थित हो सकती है।

हालैण्डको लूटका माल

हालैण्डकी सरकारने आयरलेण्ड,स्वीडन न, पोर्तुगाल, स्वीजरलैण्ड तथा तुर्कि- ानकी सरकारोंसे अनुरोध किया है कि के देशसे शत्रु जो सामान सोना या य सम्पत्ति, लूट कर ले गया है उसके अथवा छिपानेपर रोक लगा दी जाये। उक्त कारोंसे यह भी अनुरोध किया गया है कि लूटे हुये मालका पता लगाये और मिलने उसे युद्धोत्तर कालीन सरकारको जिसका नकल देश पर अधिकार है वापस करने लिये सुविधा प्रदान करें।

मि० लायड जार्जका सन्यास

ब्रिटिश पार्लमेण्ट की कामन सभाके वा' मि० लायड जार्जने यह निश्चय या है कि पार्लमेण्टके आगामी चुनावमें ाग न लेंगे। इन्हींके नेतृत्वमें ब्रिटेन त महायुद्धमें विजय प्राप्त की थी। यह के पार्लमेण्ट द्वारा ५४वर्षकी अनवरत सेवा बाद सन्यास ले रहा है। आपका स्वा- ठीक नहीं रहता हैं इसी लिये सन्यास हे हैं आपकी आयु इस समय ८२ वर्षकी सन १९१० से आप बराबर पार्लमेण्ट- सदस्य रहे हैं।

जर्मन जासूसोंको प्राण दण्ड

जर्मन खुफिया पुलिसके जिन ९ फ्रेंच सदस्यों पर शत्रु की सहायता करनेके आरोप में मामला चल रहा था उसमें ८ व्यक्तियों- को पेरिसके पास मोंट्रोग किलेमें गोली मार दी गयी। इस दलके नेता हेनरी चेम्बर- लेनके अन्तिम शब्द थे—"इस प्रकार की मृत्यु मुझे वांछित नहीं थी तथापि 'फ्रांस जिन्दाबाद'।

मि० चर्चिल
·········मौतके मुंहसे बचे।

जिप्सी औरतें देशभक्तोंके साथ

एक अमेरिकन संवाददाताने सूचित किया है कि जिप्सी औरतें सिरके बालोंमें सुनहला फीता लगाये हुए एवं नंगे पांव ग्रीसकी सरकार विरोधी सेनाको मदद दे रही है तथा ग्रीक एवं ब्रिटिश सेनाओंके विरुद्ध लड़ रही हैं।

इराक और सीरियामें समझौता

समाचार मिला है कि ईराक सरकार- की सीरियालेबनान सरकारोंके बीच व्या- पार सम्बन्धी जो वार्ता चल रही थी वह समाप्त हो गयी और ईराककी ओरसे एक व्यापारिक मिशन भेजनेका निश्चय किया गया हैं।

२७ जापानी जहाज जलमग्न

वाशिंगटन नौसेना विभाग द्वारा घोषित किया गया है कि सुदूरपूर्वमें २७ जापानी जहाज जलमग्न किये गये हैं।

चीनमें महंगाईका राज्य

युद्ध कालीन मंहगाईका नमूना देखना हो तो चुंगकिंगके इस समाचारपर ध्यान दीजिये कि अगर आप चुंगकिंगमें एक हैट खरीदना चाहें तो वह आपको ९० पौण्डमें मिलेगा। वहां एकजोड़े जूतेका दाम २० पौंड, एक सूटके लिये कपड़ेका मूल्य २०० पौण्ड, एक बोतल शराब १९० पौण्ड, होठोंकी लाली १० पौण्ड और आध सेर मक्खनका दाम १० पौण्ड है।

गोरी स्त्रियोंका भारत प्रेम

लन्दनका संवाद है कि भारत स्थित सेनाओंकी मांगके सम्बन्धमें जो रिपोर्ट लार्ड मंस्टरने पेशकी है उसके अनुसार हजारों स्त्रियां भारत आनेको लालायित हो उठी हैं और विभिन्न अधिकारियोंको आवेदन कर रही हैं। युद्ध तथा भारत कार्यालयोंकी ओर से इन आवेदनके प्रति आवश्यक कार्र- वाई करनेकी चेष्टा हो रही है।

बैलकी कीमत ८ हजार गिन्नी

लन्दनमें एक स्काट नस्लका दो वर्षीय अवडीन आंगस बैल जो गत फरवरीमें पथमें निर्यातके लिये ५५० गिन्नीमें बिका था, ८ हजार गिन्नियोंमें खरीदा गया है। खरी- दार जोसफियों एण्ड सन्सने ब्यूनोए अरीजके नीलाममें उसे खरीदा। अब डीन आंगस बैलोंके जितने दाम अबतक चढ़े हैं, उनमें यह बैल द्वितीय है।

नवीन उधार पट्टा

वाशिंगटनका संवाद है कि स्टेट सेक्रे- टरी मि० जे० स्टेटिनियसने पत्र प्रतिनि- धियोंसे कहा कि अमेरिका, ब्रिटेन, रूस और कनाड़ामें एक नये प्रकारके उधार पट्टा नियमपर विचार किया जा रहा है। आपने एक पत्रके इस समाचारका खण्डन किया कि वर्तमान शर्तोंकी समाप्तिपर उधार-पट्टा विनिमयसे अपनेको अलगकर लेगा। आपने कहा कि उधार पट्टाके नियमानुकूल जुलाई १९४४ से रूसको माल भेजा जा रहा है। यद्यपि आवश्यक कागजातपर हस्ताक्षर अभी तक नहीं हुए हैं।

'चर्चिल घड़ियाल'

ब्रिटेनकी सेनाएं पश्चिमी मोर्चे पर नये ढङ्गके अग्निवर्षकोंका व्यवहार कर रही हैं। विशेष उल्लेख योग्य अग्निवर्षक 'चर्चिल घड़ियाल है जो संसारका सबसे शक्तिशाली अग्निवर्षक माना जाता है। १९४० में ब्रिटेनके सागर तट पर जर्मनीके सम्भावित अभियानसे रक्षाके लिये तेलसे लपटें उठानेके जो प्रयोग किये गये थे, उन्हींके फलस्वरूप अग्निवर्षकोंका जन्म हुआ है। ब्रिटेनके दो अन्य अग्निवर्षक 'वास्प' तथा 'लाइफ ब्वाय' हैं। वे जर्मनीके किसी भी अग्नि- वर्षकसे अच्छे हैं। अनेक कारखानोंने इनके बनानेमें सहायता दी। मजदूरोंसे प्रतिज्ञा करायी गयी थी कि वे इसे गुप्त रखेंगे। ब्रिटेनका पेट्रोलियम युद्ध विभाग अग्नि- वर्षकोंको उन्नत करनेमें लगा हैं। उसे आशा है कि वह इस प्रकारके युद्ध द्वारा जर्मनों- को चकित कर देगा।

ब्रिटेनमें स्वाधीनता-दिवस

ब्रिटेन स्थित भारतीय कांग्रेस कर्मियों ने आगामी २६जनवरीको स्वाधीनता दिवस मनानेका निश्चय किया है। ब्रिटिश पार्ल- मेण्टके ५ सदस्य, जिनमें लार्ड स्ट्राबोल्गी भी है, सभामें भाषण देंगे।

कम्युनिस्ट साहित्य पर रोक

लन्दनके संवादसे ज्ञात हुआ है कि कार्लमाक्र्स द्वारा लिखित 'फ्रांसमें गृह-युद्ध' तथा लेनिन द्वारा लिखित 'पेरिस कम्यून' नामक पुस्तकोंके भारतमें आने पर जो प्रति- बन्ध अभी हालमें भारत सरकारने लागू किया है उसकी आलोचना करते हुए एक मजदूरदली लेखकने कहा है कि यह प्रतिबन्ध 'अजीब' हैं। क्या भारत सरकारका यह ख्याल है कि मार्क्स और लेनिनने फ्रांसकी वर्तमान अवस्थाके विषयमें लिखा है या कि यह जनताको विचारोंसे वंचित रखनेका पुराना रवैया है।

स्वदेश-वार्ता

वर्धा-समाचार—

बापूका स्वास्थ्य सुधार

महात्मा गांधी पूर्वापेक्षा कुछ स्वस्थ दिखायी पड़ रहे हैं। मालूम हुआ है कि आप आगामी १० जनवरी तक किसी भी कार्यमें भाग नहीं लेंगे। यूनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधिके मिलनेपर डा० सुशीला नायरने बताया कि एक सप्ताहमें खांसीकी शिकायत दूर होनेकी आशा की जाती है। आगामी ११ जनवरीको महात्माजी बुनियादी शिक्षा सम्मेलनका सेवाग्राममें उद्घाटन करेंगे।

कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी बैठक

कस्तूरबा स्मारक कोषकी कार्यकारिणी समितिकी बैठक जो महात्माजीकी बीमारी के कारण स्थगित कर दी गयी है, आगामी १७ और १८ फरवरीको सेवाग्राममें होगी। १० जनवरीको हिन्दुस्तानी तालीमी संघ की बैठक संघके विधानमें परिवर्तन सम्बन्धी समस्याओं तथा उपसमितिकी रिपोर्टपर विचारार्थ होगी। संचालक खादी विद्यालय (सेवाग्राम) की पुस्तकोंकी सूची तैयारकी जा रही है। लेकिन अभी तक यह विदित नहीं हुआ है कि नया कार्य कब आरम्भ होगा।

ग्रामसेवक शिविरके शिक्षार्थी

सेवा ग्राम सेवा शिविरके लिये ५०० आवेदकोंमें से १५० चुने गये हैं। शिविर आगामी ११ जनवरीसे आरम्भ होगा। जिसमें ग्रामोंद्धारकी व्यवहारक रीतियोंकी शिक्षा दी जायेगी।

देव भाषा परिषद्

काशी टाउन हालमें अ० भा० देवभाषा परिषद्का पन्द्रहवां महा अधिवेशन पण्डित कालीप्रसाद मिश्र की अध्यक्षतामेंइसीसप्ताह के अन्तमें होने जा रहा है। इस अवसर पर संस्कृत भाषाके देश कालानुसार संगठन तथा प्रचार पर विचार किया जायगा। सभी प्रान्तोंसे प्रतिनिधियोंके पधारनेकी आशा है।

डा० प्रफुल्ल घोष कमजोर

कांग्रेस कार्य समितिके सदस्य डाक्टर प्रफुल्ल घोषने अपनी बहन श्रीमती जमुना घोष के नाम १६ दिसम्बरको एक पत्र लिखा है जिसमें लिखा है कि मुझे बुखार आने लगा है। मुझे हल्के भोजनपर रखा गया है। मेरे शरीरका वजन तो योंही घटता जा रहा है। इस बीमारीसे और कमजोर होनेकी आशंका है। ईश्वरमें विश्वास रखो।

भीषण विमान दुर्घटना

नयी दिल्लीकी एक सरकारी विज्ञप्तिमें बताया गया है कि भारत सरकारने सखेद घोषित किया है कि गत २७ दिसम्बरको नागपुरमें एक विमान दुर्घटनाके फलस्वरूप तीन नागरिक मरे तथा तीन अन्य घायल हुए। एक इमारतमें आग लग गयी जिससे कुछ मवेशी भी मर गये। नागरिक और सैनिक अधिकारियोंने शीघ्रतासे घायलोंको आवश्यक सहायता पहुंचायी। दुर्घटनाके कारणका पता लगानेके लिये सरकारी जांच होगी।

महात्मा गांधी
—जिनकी बीमारीसे समस्त राष्ट्र बेचैन है।

श्रीअनूप शर्माको पुरस्कार

इस वर्ष १९४३-४४ का दो हजार रुपयेका देव पुरस्कार श्री अनूप शर्मा एम०ए० एल०टी० को व्रज भाषाके उनके पद्य काव्य 'फेरिमिलिवो' पर दिया गया है। प्रतियोगितामें ६ पुस्तकें प्राप्त हुई थीं।

कलकत्तेकी बातें—

अखिल भारतीय छात्र संघ

श्रीमती सरोजनी नायडूका भाषण

गत २८ दिसम्बरको स्थानीय मोहम्मदअली पार्कमें निर्मित कस्तूरबा नगरमें अखिल भारतीय छात्र सङ्घका ८ वां वार्षिक अधिवेशन प्रो० धुर्जटीप्रसाद मुखर्जीकी अध्यक्षतामें शुरू हुआ। पण्डाल राष्ट्रीय नेताओंके चित्रोंसे सजाया गया था। देशके कोने कोनेसे आये हुए १ हजार प्रतिनिधि तथा दर्शकोंकी अपार भीड़ थी। डा० विधानचन्द्र रायने अधिवेशनका उद्घाटन किया। स्वागत समितिका और अन्य छात्र नेता श्री साधनगुप्तने प्रतिनिधियों और दर्शकोंका स्वागत किया। भारत कोकिला श्री सरोजनी-नायडूने भाषण करते हुए कहा कि मैं भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्वके युवकोंकी अमर जननी हूं। मैं विश्वके युवकोंसे स्नेह करती हूं। मैं उनके मुंह पर यह भी कह सकती हूं कि 'जहन्नुममें जाओ'। मुझे विश्वकी नयी पीढ़ीके प्रति प्रेम है चाहे वे किसीभी किस्मके राजनीतिक ख्याल रखते हों। छात्र आपसके झगड़े मिटाकर भारतको स्वतन्त्र करानेमें प्रयत्नशील हों ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनमें भारतको उचित स्थान प्राप्त हो।

दूसरे दिन छात्र प्रदर्शनी हुई है जिसमें विभिन्न कलाकारोंके चित्र पोस्टर आदि रखे गये थे। सम्मेलनमेंकांग्रेसी नेताओंकी रिहाई, हिन्दू-मुसलिम एकताके प्रस्ताव पास हुए। शामको सांस्कृतिक प्रोग्राम शुरू हुआ 'नागानृत्य' तथा विभिन्न प्रान्तोंसे आये हुए सांस्कृतिक नृत्योंने अपने अपने प्रांतोंकी सांस्कृतिक प्रदर्शन किये। छात्रोंके इस कार्य-क्रमकी सबोंने भूरि भूरि प्रशंसा की। श्री नायडू भी उपस्थित थीं। अन्तिम दिनका कार्य-क्रम शनिवारको यथा समय शुरू हुआ। छात्रोंका वाद-विवाद और भाषण हुए। उपस्थिति बहुत अधिक थी। बङ्गालके बाद सबसे अधिक प्रतिनिधि संयुक्तप्रान्तके थे।

नारी सेवा संघ—प्रदर्शनी

श्रीमती सरोजनी नायडूने स्थानीय प्रेसीडेन्सी कालेजमें नारी सेवा-सङ्घ द्वारा अयोजित शिल्पकला प्रदर्शनीका उद्घाटन किया, श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जीने सभापति का आसन ग्रहण किया था। सङ्घ तथा कालेजकी ओरसे प्रिन्सपल श्री ए० के० चन्द्राने श्रीमती नायडूका स्वागत किया। इस प्रदर्शनीमें विभिन्न नारी संस्थाओंकी ओरसे पीड़ित नारियों द्वारा प्रस्तुत चीजें एकत्र की गयी हैं। दुर्भिक्ष सम्बन्धी कलापूर्ण पोस्टरोंसे प्रदर्शनीका महत्व और भी अधिक बढ़ गया है। प्रदर्शनी कई दिनों तक खुली रहेगी। हजारों नर-नारी नित्य प्रदर्शनी देखने जाते हैं।

डिमोक्रेटिक पार्टी

वेलिङ्गटन पार्कमें कांग्रेस मुर्दावाद और राष्ट्रीय सरकार नहीं चाहिये आदि नारोंके बीच जनताके प्रिय तथा कथिक नेता मि० एम० एन० रायके सभापतित्वमें अखिल भारतीय डेमोक्रेटिक पार्टीका सालाना जल्सा हुआ। सड़कोंपर राष्ट्रीय विरोधी नारे लगानेके कारण कुछ युवकोंके साथ मार-पीट हुई और एक दिन पण्डालमें आग लगते लगते बची। सम्मेलनमें वक्ताओंने महात्मा गांधी और कांग्रेसी नेताओंको फासिस्ट बताया। कांग्रेस और राष्ट्रीय नेताओंको कोस लेनेके बाद सर्वसम्मतिसे मि० एम० एन० राय द्वारा निर्मित विधान पास किया गया है। बङ्गालके कुछ प्रतिक्रिया-वादी तथा सरकार-परस्त लोग सम्मेलनमें शरीक हुए थे।

व्यापार समाचार

सोना चांदी

सोना पाटला ७३।) गिन्नी ४९॥) सोना इबीब ७३॥।) सोना तारा ७३॥) चांदी सील १३१॥) चांदी टुकड़ा १३३।)

चपड़ा

केमन छपरफाइन ७७) आर्डिनरी छपरफाइन ७५),स्टण्डर्ड बन ७३), टी० एन० रेडी ७१), १२ परसेण्ट टी० एन० ७०) आई० टी० एन० ७०), नं० २ कुसमी ६४) बैशाखी ५३), लाक न्यू आसाम ४४॥)

रफ्तनी २१-१२-४४ तक १००९७ पेटी।

हैसियन

४०"—८ औंस वी० नव० २२=) जन० मार्च २२=) अप्रैल जून २२=) ४०"—७॥ औंस 'बी०' दिस० २१।) जन० मार्च २१।) अप्रैल जून २१।) ४०"-१० औंस 'वी' दिस. २८), जनवरी मार्च २८) अप्रैल जून २७॥=)बी०ट्विल्स पौण्ड २।पौण्ड दिसम्बर ६३॥) जन० मार्च ६२=) अप्रैल जून ६१=) लिवरपुल दिसम्बर ७१॥) जन० मार्च ७०॥) अप्रैल जून७०) पट्वील्स दिसम्बर ७८), जनवरी मार्च ७८) अप्रैल जून ७८) डी० डब्ल्यू. फ्लावर्स दिसम्बर ७९) जनवरी मार्च ७७) अप्रैल जून ७९)

सूत

ग्रे यार्न १०॥) एस. ४=) २० एस. ६॥-), २२ एस० ६॥-), ३२ एस० ८≡), ४० एस० ९॥-)।

गल्ला

सिन्ध राई १४॥) सिन्ध पीला स १६) सिन्ध तोड़िया १५॥) सिन्ध गजर यू० पी० राई तोड़िया १५॥।) सी० कजली १६) सरसों पीली यू० पी० लाही बड़ा दाना यू० पी० १६) लो यू० पी० १७) लोटनी पञ्जाब तोड़िया पंजाब १६) कजली यू० १६) महुआ बीची ९॥=) पोस्ता २३) तिल सफेद २०) अरहर १०॥) ११) बङ्गाल ९) चना मो १०॥) से ११), चना बङ्गाल ७॥) ८) पंजाब १०) से १०॥) तक सफेद ८॥) हरा १०) पैरा मटर कालीमुखी १२) उर्दकाला उर्दहरा ८) मूंग कानपुर १ मूंगभिवानी १३॥) मूंग दाल धोआ मूंगपंजाब १३॥) अरहर दालनं० १ अरहर दाल नं०२ १७) १७॥) रेड़ी बी डब्ल्यु० १२) रेड़ी भागलपुर मसूर पटना १९) मसूर छांटो

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१५, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक

विश्वामित्र

THE WEEKLY VISHWAMITRA

२८—२ कलकत्ता जनवरी ८, १९४५, Calcutta,: JAN.:8. 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

जापानका गुप्तास्त्र

कहते हैं कि जापानने भी नये गुप्तास्त्रों-
। सृष्टिकी है, लेकिन अबतक यह नहीं
ालूम हो सका है कि वे कितने घातक हैं।
ापान निर्मित एक २३॥ फुट लम्बा गुब्बारा
ेरिकाके मौण्टानाकी पहाड़ियोंमें पाया
ा है। १८ हजार घन फुट गैस उसमें भरी
थी और उसका वजन १० मन था।
ारा नीचे गिरा, लेकिन पलीतेने काम
ीं किया। फलतः यह बेकार हो गया।

अमेरिकाके युद्ध सम्बन्धी उद्योगोंको विद्युत शक्ति प्रदान करनेके लिये बनाया गया विश्वमें सबसे ऊंचा कृत्रिम जल-प्रपात।

...चिल हजामके कर्जदार हैं

दक्षिण अफ्रीकाके प्रिटोरिया नगरमें एक
ईकी दुकान है, जिसमें वर्तमान ब्रिटिश
ान मंत्री मि० चर्चिलने किसी समय
ामत बनवायी थी, लेकिन हजामतकी
ादूरी ९ शिलिंग अबतक उसको नहीं मिल
ी। उसने फील्ड मार्शल जेनरल स्मट्ससे
अनेक बार अनुरोध किया कि जब कभी वे लन्दन जायें, हजामतके पैसेकी सुधि प्रधान मंत्रीको दिला दें। कहते हैं कि ये पैसे उस समयके हैं, जब मि० चर्चिल दक्षिण अफ्रीकाके 'बोर युद्ध' में बन्दी बनाये गये थे। दुकानके मालिकके भाईने मि० चर्चिलके बाल काटे थे। एक दिन रातको मि० चर्चिल बोर बन्दीखानेकी दीवार फांदकर भाग निकले थे। फलतः हजामतकी मजदूरी बकाया रह गयी थी। नाईका कहना है कि मुझे पैसे भले ही न मिले, लेकिन ब्रिटिश प्रीमियरका नाम हजामतकी दुकानके देनदारोंमें लिखा है। इसीपर सन्तोष कर लूंगा।

चूहोंकी फौज !

पुर्तगालकी राजधानी लिस्बन स्थित ब्रिटिश राजदूतके सामने हिटलरको परास्त करनेके लिये एक बिलकुल नया सुझाव रखा गया है। सुझाव देनेवालेने कहा है कि अंग्रेजोंको चाहिये कि सैकड़ों बड़े आकारवाले चूहे पकड़वाये जायें और उनकी पूंछोंमें आटोमेटिक सिगरेट लाइटर (बिना सलाईके सिगरेट जलानेका एक साधन) बांध दिये जायें। चूहोंको बोरोंमें बन्दकर शाही विमान वाहिनीके चालकों द्वारा जर्मनीके फसलवाले खेतोंपर पहुंचाया जाय और बोरे सहित पकी हुई फसल वाले खेतमें छोड़ दिया जाये। चूहे फसलमें छिपकर आग बुझानेकी चेष्टा करेंगे और इस प्रकार खेतोंमें खड़ी सारी फसल नष्ट हो जायेगी।

चोरका हाथ काट लिया गया

ब्रिटिश शासनमें रहनेवाले लोगोंको उपर्युक्त शीर्षक कुछ आश्चर्य जनक अवश्य मालूम होगा, लेकिन इस्लामी रिवाजके अनुसार ऐसा कड़ा दण्ड जायज है। मक्कामें एक ऐसी ही सजा दी गयी है। अपराधीका कटा हुआ हाथ सरकारी इमारतके सामने लटका दिया गया है।

हरहिटलरकी यह रिजर्व सेना !

बुडापेस्टमें अग्निकांडसे लंकादहका दृश्य
रूसी पंक्ति भंग करनेकी जर्मन चेष्टा बेकार
मांटगोमरीकी सेनाकी ५ मील सफल अग्रगति
पश्चिमी मोर्चेपर मित्र योजना खटाईमें

मास्को, ७ जनवरी। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है—जर्मन बुडापेस्टके उत्तर-पश्चिम नगर केन्द्रके बाहर निकलनेकी अनवरत चेष्टामें लगातार भयंकर आक्रमण कररहे हैं। किन्तु पिछले २४ घण्टोंसे सभी मोर्चोंपर जर्मन टैंकोंकी प्रगति अवरुद्ध कर दी गयी है। बुडापेस्टके अन्दर रूसी रणबांकुरोंके एकके बाद दूसरे नाजी सुदृढ़ केन्द्रोंपर अधिकारके फलस्वरूप लड़ाई द्रुतगतिसे मध्य भागकी ओर केन्द्रित हो रही है। जर्मन सेनाके घिरे हुए सैनिकोंकी सहायता की चेष्टा बिलकुल बेकार सिद्ध हुई है। युद्ध मोर्चेकी खबरोंसे पता चलता है कि सम्भावित जर्मन खतरा दूर हो गया है। यह सम्भव जान पड़ता है कि जर्मन अधिक भयंकर प्रत्याक्रमणकी तैयारी कर रहे हैं। यदि यह सच है तो वे आस्ट्रियाकी भावी लड़ाईमें अपनी शक्तिका परिचय दे सकते हैं। नगर स्थित शाही ओपेरा हाउसके निकट खूंखार लड़ाई जारी है। जर्मन सैनिकनगरके मध्यमें रूसी बढ़ाव रोकनेके लिये रक्षापंक्तिके पूर्वी भागके चतुर्दिक आग लगाकर सभी सड़कें जला डालनेका प्रयत्न कर रहे हैं।

मित्रसेनाका सदर दफ्तर, ७ जनवरी। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है—जर्मनोंने सम्पूर्ण पश्चिमी मोर्चेपर मित्रराष्ट्रोंकी योजनाको अस्त-व्यस्त कर दिया है। प्लाटिनेट अंचलके जर्मन प्रदेशसे अमेरिकन सातवीं बाहर कर दी गयी है। सारगुमिन्स और हगेन्यूको मिलानेवाली सड़क काट दी गयी है। जर्मनोंने ब्रिटिश सेनाके पश्चिमी छोरपर आक्रमण कर ब्योरपर अधिकार कर लिया है जो ...शफोर्टसे चार मील दक्षिण है। अमेरिकन सेनाका तीसवां डिवीजन स्टेपलाटके ...क्षिण एमब्लेव नदी पार कर साधारण प्रतिरोधके मुकाबले एक मील अग्रसर हुआ है। जर्मन नये सैनिकोंको तैनात करते हुए अपनी शक्ति उत्तरोत्तर सङ्कठित करते ...ा रहे हैं।

लक्जेमबर्ग स्थित १० वें डिवीजनने ...क मीलतक अग्रसर होकर ब्रिसडोर्फपर ...धिकार कर लिया है। स्टेपलाटके निकट ...मेरिकन तीन हजार गज अग्रसर हुए ...। लियरवाक्सपरभी अधिकार कर लिया ...। राइनके मोर्चेपरस्थित रायटरका विशेष ...वाददाता लिखता है—जर्मन सनिक जो ...स्वगके उत्तर राइन पार कर भीतरी ...गिमें प्रवेश कर गये थे, पांच गांवोंसे ...गा दिये गये हैं, जो पश्चिमी तटसे डेढ़ ...ल दूर है। फील्ड मार्शल माण्टगोमरी ...सदर दफ्तरकी विज्ञप्तिमें बताया गया ...कि अमेरिकन सनिक आर्डेन्स मोर्चे ...दो मील अग्रसर हुए हैं। इस प्रकार ...या आक्रमण आरम्भ होनेके दिनसे अब ...क ५ मील अग्रसर हो चुके। प्रथम सेना ...ऐडायन्स, लेफ्टेलेस तथा डेवनटेवपर ...धिकार कर स्टेवलाटके दक्षिण लेनब्लेम ...पार पूरब तरफ अग्रसर हुई है। कलकी ...प्रगतिसे यह स्पष्ट है कि समस्त उत्तरी ...र्चा संकुचित बनता जा रहा है और ...तरमें माण्टगोमरी तथा दक्षिणमें जनरल ...डलीकी सेनाओंके बीच १५ मीलसे भी ...म फासला रह गया है।

जर्मनीके रेलवे पर बमवर्षा

लन्दन, ७ जनवरी। सरकारी तौर ...घोषणा की गयी है कि आज ६ ...डाकू जहाजोंके साथ एक हजारसे ...धिक बमवर्षकोंने जर्मनीके रेलवेके ...पक क्षेत्र पर बम बरसाये। रायटर

जापानी सैनिक केन्द्रोंपर बमवर्षा

वाशिंगटन, ७ जनवरी। अमेरिकन युद्ध विभागकी विज्ञप्तिमें बताया गया है कि ओमूराकी विमान उत्पादक फैक्टरीपर अमेरिकन विशालकाय बमवर्षकोंने आज प्रचण्ड हमला किया। एक मित्र विमान हमलेसे वापस नहीं लौट सका। लुजोन रेलवेके सौ मालके डब्बोंको नष्ट तथा तीन पुलोंको क्षतिग्रस्त कर दिया।

दो बचोंकी शोचनीय मृत्यु

लखनऊ, ५ जनवरी। एक छः वर्षकी छोटी लड़कीने अपने बच्चे भाईके जीवनकी आगसे रक्षा करनेकी साहसिक चेष्टामें अपनी जिन्दगी खो बैठी। यह दुर्घटना कल एक स्थानीय एक बंगलेमें हो गयी। घरकी मालकिन अपने ६ महीने के बच्चेको खाट पर सुलाकर एक अंगीठी पासमें रखकर रसोई घरमें चली गयी अंगीठीकी आगसे चारपाई जल उठी। पास ही खेलती हुई बच्चेकी ६ वर्षीया बहनने उसे उठानेकी साहसिक चेष्टा की लेकिन उसके कपड़ोंमें भी आग लग गयी। जब तक माता रसोई घरसे लौट कर आयी दोनों बच्चे बची बुरी तरह जल गये थे। अस्पताल पहुंचाये जाने पर दोनोंकी शामको मृत्यु हो गयी। ए० प्र०

१९४५ में यूरोपमें नाजीशासनका अन्त संभ...
विजयके लिये प्रचण्ड अभियानका आश्वास...
अमेरिका मित्रराष्ट्रोंकी सहायताको पूर्ण प्रस्तु...
कांग्रेसको प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टका सन्दे...

वाशिंगटन, ६ जनवरी। प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने अमरीकन कांग्रेसको अप... वार्षिक सन्देशके सिलसिलेमें ऐलान किया कि मानव इतिहासमें यह नव वर्ष महान... सफलताका साल साबित हो सकता है। नव वर्षमें योरपमें नाजी फासिस्टोंक... अत्याचार पूर्ण शासनका अन्त होगा और साम्राज्यवादी जापानके मर्म स्थल प... उद्धारक सेनाएं केन्द्रीभूत होंगी।

१९४५ में अवश्य ही विश्व शान्तिके संगठनका कार्य कुछ ठोस रूपमें प्रारम्भ हो जायेगा। जहां तक हमारे परराष्ट्र नीतिका सम्बन्ध है, हम युद्ध तथा जीत दोनों हालतमें संयुक्त राष्ट्रोंके साथ हैं। हमें केवल समान खतरा ही एक होनेको मजबूर नहीं कर रहा है बल्कि हम लोगोंकी आशाएं भी तो समान हैं। हमारा संगठन कई सरकारोंका नहीं है बल्कि जनताका संगठन है। और शान्ति जनताकी आशा है। बहुत जोरोंसे यह लड़ाई लड़ी जानी चाहिये। जो कुछ भी हमारे पास है, युद्धके दांव पर रख दिया है। जो कुछ हमारे पास है इस लड़ाईमें लगा दिया जायेगा। हमारे सामने अन्तिम विजयका प्रश्न नहीं है। माना कि हमारा बहुत कुछ नुकसान होगा किन्तु हम अपने मित्रोंके साथ पूर्ण विजयके लिये बराबर लड़ते रहेंगे। हम लोगोंने वह वर्ष देखा है जिसमें विजयकी दिशाकी ओर हम लोग काफी अग्रसर हुए हैं। फिर भी हमारी सेनाकी हारसे उस वर्षका अन्त हुआ है। हमारे जर्मन शत्रुको भी काफी क्षति पहुंची तथा उनके उद्देश्यकी पूर्ति भी नहीं हो सकी। हम उस भीषण आक्रमणसे उत्पन्न अवस्थाका सुधार सेनापति आइसन हावर जैसे योग्य व्यक्ति के कारण कर सके। उन्होंने प्रशंसनीय साहस एवं दृढ़तासे इस परीक्षा कालका मुकाबिला किया। मुझे उनका पूरा विश्वास है। हमारी प्रगति रोकने तथा हमारी सेना तितर बितर करनेके लिये और भी भयंकर आक्रमण हो सकते हैं। जब तक अखिरी नाजी आत्मसमर्पण न कर दे तब तक हमें यह समझनेकी गलती न करनी चाहिये कि जर्मनी हार गया। मैं दुश्मनके प्रचारके विषैले प्रभावसे मैं आपको सावधान करना चाहता हूं। पश्चिमी यूरोपमें जो युद्ध पंक्ति जर्मनोंने बनानेकी चेष्टा की थी वह इस युद्ध पंक्तिसे कम खतरनाक थी जो वे आज हमारे और हमारे साथियोंके बीच बराबर बनानेकी चेष्टा करते जा रहे हैं। रूसी, ब्रिटिश तथा अमेरिकन कमांडरके प्रति दुष्टता पूर्ण नीच अफवाहें उड़ायी जा रही हैं।

आप लोग देखेंगे कि इन सब अप... वाहों पर जर्मनीका मुहर लगा हुआ है... हम लोग योरप पर आक्रमण करने... प्रारम्भ करेंगे और जहां तहांके अस्थाय... पराजयके बावजूद तबतक आक्रमण कर... रहेंगे जबतक जर्मनी पूर्ण रूपसे परा... जित नहीं हो जायगा। वर्तमान युद्ध... अत्यन्त संकटपूर्ण अध्यायमें हम पहुं... गये हैं। हम लोगोंने प्रशान्तमें वर्तमा... युद्धके इतिहासमें द्रुतगतिसे आक्रमण... संचालन किया है तथा शत्रुओंको ३००... मील पीछे खदेड़ दिया है। रायटर

अमेरिकामें अनिवार्य सैनि... योजना

वाशिंगटन ६ जनवरी। सेनामें आद... मियोंकी कमी होने सम्बन्धी प्रेसिडेण... रूजवेल्टकी चेतावनीके कारण आज अमे... रिकन सरकारने उन लोगोंको अनिवार्य... सैनिक भर्ती योजनामें सम्मिलित कर... की आज्ञा दी जो युद्ध सम्बन्धी कार्य... से बिना सरकारी अनुमतिके अलग ह... जायें। इसके परिणाम स्वरूप १२ ... ३७ वर्षके ५० लाख आदमी सेनामें भर्ती... किये जा सकेंगे। यह आज्ञा किसानों... पर नहीं लागू होगी। रायटर

छात्रोंका सहायता।

राशन भरनेकी नयी योजना

अजमेर, ५ जनवरी। स्थानीय राश... निंग अफसरोंने स्कूल एवं कालेजके... विद्यार्थियोंसे राशन कार्ड भरवाना शुरू... कर दिया है। वे विद्यार्थियोंको डेढ़ रुपय... सौ राशन कार्डके हिसाबसे देते हैं। स्वयं... राशनिंग अफसरोंको उनकी यह योजना... असफल होती मालूम हो रही है।

सर ज्वाला प्रसाद कलकत्ते में

कलकत्ता, ६ जनवरी। भारत सर... कारके खाद्य सदस्य सर ज्वाला श्रीवास्त... खाद्य सेक्रेटरी मि० आर० एच० हचिंग्स... तथा मि० बी० आर० सेन (डाइरेक्टर... जेनरल) के साथ आज कलकत्ता पहुंच... गये। सर ज्वाला प्रसाद और मि०... हचिंग्स गवर्नमेण्ट हाउसमें ठहरे हैं।

फिलिपाइनकी लिंगयेन खाड़ीमें मित्र-प्रवेश

मित्र युद्धपोतोंसे तटवर्ती केन्द्रोंपर गोलाबारी

चीनियोंका बर्मास्थित मानविंगपर अधिकार

मित्र अग्रगामी सैनिक नामखमसे तीन मील

टोकियो, ७ जनवरी। आज प्रकाशित जापानी शाही सदर मुकामकी विज्ञप्तिमें बताया गया कि मित्रराष्ट्रीय लड़ाकू जहाज सेनाके संरक्षणमें फिलिपाइन स्थित प्रमुख द्वीप लुजोनके पश्चिमी तटवर्ती लिंगायेनकी खाड़ीमें प्रवेश कर भयङ्कर गोलाबारी कर रहे हैं। विज्ञप्तिमें आगे बताया गया है कि एक शक्तिशाली मित्र जहाजी बेड़ा मिण्डोरोके पश्चिम और दक्षिण अग्रसर होता हुआ दिखायी पड़ा। आज प्रशान्तके कमाण्डर एडमिरल चेस्टर निमिट्जने घोषित किया कि फारमोसा, ओकीनावा तथा जीमापर पिछले दो दिनके हवाई हमलेमें डुबाये गये या क्षतिग्रस्त ९५ जापानी जहाजोंमें विध्वंसक, रक्षक, तोपवाही और सेनावाहक जहाज सम्मिलित हैं।

दक्षिण-पूर्वी एशिया कमाण्डसे आज प्रकाशित एक विज्ञप्तिमें बताया गया है कि ३० वें चीनी डिवीजनने भामो-नामखम रोडकी दिशामें अग्रसर होते हुए मानविंगपर अधिकार कर लिया। यह स्थान भामोसे ६३ मील तथा नामखमसे ठीक पांच मील पश्चिम अवस्थित है। पंगकमसे दक्षिण-पूरब अग्रसर होनेवाले मित्र सैन्य दस्ते इवेलीके अधिकोधिक निकट पहुंचते जा रहे हैं और अब नामखमसे केवल तीन मील दूर रह गये हैं। रायटर

हत्यावविध्वंसकार्यकीनाजीयोजना

ब्रुसेल्स, ७ जनवरी रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है:—जर्मनीसे प्राप्त विश्वस्त संवादोंके अनुसार जर्मन खुफिया पुलिसके प्रधान और नाजी गृह-मोर्चेके नेता हिमलर हत्या और ध्वंसात्मक कार्यके लिये जर्मन गुप्त दल और स्पेशल पुलिसके अफसरोंको, जिनकी सेनामें आवश्यकता है, अलग कर रहे हैं। युद्धारम्भसे ही यह दल ध्वंसात्मक कार्यमें संलग्न है। विश्वास किया जाता है कि इन्हीं अफसरोंने १९४४ में वेल्गो स्थित दो ब्रिटिश अफसरोंका अपहरण, मित्र बन्दी-गृहसे मुसोलिनीका उद्धार तथा हंगेरियन रिजेण्ट एडमिरल होरोथीका भी सम्भवतः अपहरण किया था। जर्मन मोर्चेपर हिमलरके बढ़ते हुए प्रभावके कारण ही यह नयी नीति कार्यान्वित की जा रही है। ये हत्यारे दस्ते सैनिक कार्य-कलाप और ध्वंसात्मक कार्योंमें निकट सम्पर्क कायम करनेके लिये जर्मन सेनाको सहयोग प्रदान करेंगे। युद्धमोर्चेके पृष्ठ भागमें मित्र नेताओंकी हत्याके लिये विध्वंसकारियोंको तैनात करने सम्बन्धी जर्मन योजनासे केवल एक नये दलके संगठनका ही नहीं, बल्कि खुफिया अफसरों और सेनाकी इस दिशामें सफलता का पता चलता है। रायटर

चिमूर व अष्ठी काण्ड

डा० मुंजेको वायसरायका उत्तर

नागपुर, ७ जनवरी। वायसरायके सेक्रेटरी मि० आर्नका निम्न पत्र डा०बी० एस० मुंजेको मिला है:—

आपके २२-१२-४४ के उस पत्रके, जिसमें यह प्रार्थना की गयी थी कि अष्ठी और चिमूर काण्डोंके दण्डित अभियुक्तोंकी ओरसे एक डेपुटेशनको वायसरायसे मिलने दिया जाये। उत्तर में मुझे यह कहना है कि इन अभियुक्तोंके मामले इस समय वायसरायके सम्मुख नहीं, बल्कि यह प्रान्तीय सरकार के अन्तर्गत हैं। बादमें यदि विचारार्थ ये मामले वायसरायके पास आयेंगे, तो उनके लिये यह सम्भव न होगा कि वे प्राणदंडका फैसला पाये हुए अभियुक्तोंकी ओरसे जिनकी दरख्वास्तपर वे विचार कर रहे हों, आये हुए डेपुटेशनसे मिलनेकी अनुमति न देनेका जो कायदा है, उसमें परिवर्तन करें।

फिर भी मैं इतना कहता हूं कि आपके उक्त पत्रके साथ जो नोट संलग्न है, उसमें जो विशेष बातें लिखी गयी हैं, उनपर पूर्णतया विचार किया जायेगा और उन बातोंकी एक प्रतिलिपि मध्यप्रान्तीय सरकारको भेजी जा रही है। ए० प्रेस

खाकसारोंकाभावी शासनविधान सम्बन्धी कार्य

लखनऊ, ५ जनवरी। खाकसार नेताओंका एक दल, जिसके प्रधान अल्ला-बख्श शाह। लखनऊ पहुंचा है। यह विभिन्न सम्प्रदायोंकी वर्गसे वम मांगका विचार संग्रहीत करता हैं।

मालूम हुआ है कि खाकसार दलकी ओरसे जो प्रस्ताव शासन विधान भारत सरकारके समक्ष पेश करनेका निश्चय किया गया है उसीके लिये आवश्यक विचारोंका संग्रह किया जा रहा हैं।

देशोन्नतिमें जिच बाधक

गांधीजीऔरश्रीदेशाईमें वार्तालाप

नागपुर, ७ जनवरी। 'हितवाद'का वर्धास्थित विशेष संवाददाता लिखता है कि श्री भूलाभाई देशाईने सेवग्राममें निवासके समय महात्मा गांधीसे अभी हालमें वायसरायसे हुए वार्तालाप तथा भारतीय गतिरोधके समाधान सम्बन्धी प्रस्तावोंपर विचार-विमर्श किया। संवाददाताका कहना है कि ऐसा समझा जाता है कि श्री देशाईका ख्याल है कि वर्तमान गतिरोध और सात प्रान्तोंमें कांग्रेस मंत्रिमण्डल नहीं होनेके कारण देशोन्नतिके मार्गमें बाधा उपस्थित हो रही है। यह भी विदित हुआ है कि श्री देशाईने महात्माजीको बताया कि वायसरायके कलकत्तेवाले भाषण और महात्माजीके राष्ट्रीय सरकार सम्बन्धी विचारोंको दृष्टिगत कर समझौतेका मार्ग खोज निकाला जा सकता है। इस उद्देश्यकी पूर्ति ब्रिटेन-स्थित कोलीशन सरकारकी स्थापना तथा गत १९३७-३८ में कांग्रेस मन्त्रिमण्डलके पद-ग्रहणके समय आयोजित कानफरेन्सकी व्यवस्थाकर की जासकती है। कहाजाता है कि महात्मागांधीजी इन बातोंको ध्यानपूर्वक सुननेके उपरान्त विचार कर रहे हैं। इसकी सम्भावना है कि महात्माजी अपना विचार प्रकट करते हुए श्री देशाई को पत्र लिख सकते हैं। ए० प्रेस

वार्तालापका विषयबतानेसे इन्कार

नागपुर, ६ जनवरी। दिल्ली जाते हुए श्री भूलाभाई देशाई नागपुरसे गुजरे। संवाददातासे आपने कहा कि महात्मा गांधी पहलेसे अधिक स्वस्थ मालूम पड़े और उनके स्वास्थ्यमें सुधारकी प्रगति जारी है। आपने महात्मा गांधीसे दो दिन जो बातचीत की, उसके सम्बन्धमें प्रश्न करनेपर उसका विषय बताना आपने अस्वीकार कर दिया।

अहमदनगर जेलमें सरदार वल्लभभाई पटेलसे जब मिलने गये थे, उस समय पण्डित जवाहरलाल नेहरूसे मिले या नहीं, यह पूछनेपर श्री देशाईने कहा कि मैंने दूरसे नेहरूजीको देखा, लेकिन कोई बातचीत न कर सका। आपने कहा कि सरदार पटेलका स्वास्थ्य काफी ठीक है। आपने और बताया कि अहमदनगर जेलमें कांग्रेस कार्य-समितिके जितने सदस्य हैं, उनमें डा० प्रफुल्ल घोषको छोड़ कर शेष सभी स्वस्थ हैं।

यह प्रश्न करनेपर कि जो अफवाहें हैं, उनसे क्या यह आशा है कि वैधानिक जिचका अन्त हो जायेगा, श्री देशाईने कहा—'केवल परमात्मा ही जानता है।'

दिल्लीसे श्री भूलाभाई देशाई कानपुर वकालत सम्बन्धी कार्यसे जायेंगे, जहांसे उनके फिर वर्धा जानेकी सम्भावना है। यू० प्रेस

पौण्ड ऋणका प्रश्न

मिश्रकी भांति भारतसेसमझौता

लन्दन ६ जनवरी। युनाइटेड प्रेस का संवाददाता लिखता है कि ब्रिटेन तथा मिश्रमें व्यवसायिक एवं आर्थिक समझौतेकी घोषणा कुछ दिन हुए की गयी थी तथा जिसकी लन्दनमे शीघ्रही पुष्टि होनेवाली है वह भारतके लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है। लन्दनमें भारतकी तरह मिश्रका भी स्टर्लिंग वैलेन्स है। इस सम्बन्धमें जो भी समझौता ब्रिटेन तथा मिश्रमें हुआ है उससे भारत और ब्रिटेनमें स्टर्लिंग बैलेन्स सम्बन्धी भावी व्यवस्थाका पद प्रदर्शन होगा। पहली बात तो यह है कि मिश्र तथा अन्य भूमध्य पूर्वी देशोंके आयातमें बहुत काफी वृद्धि होगी। मिश्रको हार्ड करेन्सी का कोटा मिलेगा। हार्ड करेन्सीसे डालर स्विस फ्रैन्क तथा स्वीडिश क्राउन अर्थ है। यू० प्रेस

सीमान्त प्रवेश परसे प्रतिबन्ध

रावलपिण्डी ६ जनवरी। सीमान्त सरकारने अखिल भारतीय किसान सभाके अध्यक्ष स्वामी सहजानन्द सरस्वती को सीमान्त प्रदेशमें जानेकी अनुमति प्रदान की है किन्तु उन्हें यह गारंटी देना होगा कि वे १९३९ के किसान आन्दोलनकी यहां चर्चा न करें। सीमान्त किसान सभाके सभापति ... फारुके इस प्रश्नके उत्तरमें कि हाजरा जिलेके शापकियारी नमक थानेमें होने वाली सीमान्त जन सभाके अधिवेशनमें स्वामी सहजानन्द भाग ले सकते हैं अथवा नहीं, सीमान्तके प्रधान मन्त्रीने उपर्युक्त आशयका पत्र भेजा है। ए० प्रेस

सिलोन विधानमें परिवर्तनजरूरी

लन्दन, ५ जनवरी। आज लन्दनके 'टाइम्स' समाचार पत्रके अग्रलेखमें सीलोनके भविष्यकी चर्चा करते हुए मत प्रकट किया गया है कि इस द्वीपके मौजूदा विधानमें 'कुछ परिवर्तन' करना आवश्यक है। इस विधानसे वहांके राजनीतिक नेताओंको शासन प्रबंधसंबंधी व्यवहारिक ज्ञानका अनुभव प्राप्त करनेका सुयोग मिलेगा। वर्तमान विधानसे के अल्पसंख्यकोंकी समस्याका समाधान न हो सका। इसे तो स्वीकार कर लेना चाहिये कि इस द्वीपको और स्वतन्त्रता शीघ्र ही मिलेगी। इस स्वतन्त्रताके आरम्भके दिनोंमें गम्भीर आर्थिक कठिनाइयां उत्पन्न हो सकती हैं। युद्धके बाद सीलोनमें जो सरकार कायम होगी उसे बड़े-बड़े कार्य करने होंगे। अतएव यह आवश्यक है कि इस विधानका ऐसा निर्माण हो कि द्वीपके इमानदार योग्य परिश्रमी व्यक्ति तथा बड़ी और छोटी सभी जातियोंका सहयोग प्राप्त हो।

...न अंतिम विजयतक लड़नेको कृतसङ्कल्प

...नी देशके रक्षार्थ महान बलिदानको तैयार

...त्रराष्ट्रोंमें पूर्ण मतैक्यपर विजय निश्चित

...नीजनताकोमार्शलचांगकाई शेकका सन्देश

चुङ्किङ्ग, ७ जनवरी। जनरलिस्सिमो मार्शल चांगकाई शेकने ७० से भी ...अधिक मित्र सैन्य अफसरोंके सम्मानमें आयोजित एक भोजके समय नववर्षके अपने ...सन्देशमें कहा कि—स्थायी विश्वशांतिकी सुदृढ़ नींव राष्ट्रोंके बीच मैत्रीपूर्ण सह-...क्रियाके आधारपर ही पड़ेगी। चांगकाई शेकने आगन्तुक अतिथियोंको सफलता ...और सुख शांतिके प्रति हार्दिक सन्तोष प्रगट करते हुए कहा कि चीनी जनताके ...साथ मैत्री सम्बन्ध ही सभी सम्प्रदायोंसे श्रेयस्कर है। जापानके विरुद्ध युद्धमें चीनको ...मित्र अफसरोंकी सहायताकी प्रशंसा करते हुए चांग काई शेकने कहा कि आप लोगों... अधिकाश अफसरोंने हमारे युद्ध प्रयासमें क्रियात्मक भाग लेकर समान उद्देश्यकी ...पूर्तिमें बहुमूल्य सहायता प्रदान की है और महान सङ्कटकालमें भी कभी विचलित ...नहीं हुए।

...१९४४ को सम्पूर्ण युद्ध मोर्चोंके लिये ...निर्णयात्मक साल बताते हुए ...चांगकाईशेकने विभिन्न युद्ध मोर्चोंपर ...सफलताका संक्षेपमें वर्णन किया। आपने ...चेतावनी दी कि मित्रराष्ट्रोंके समक्ष पहले ...की भांति ही महान और कठिन उत्तरदा-...यित्व उपस्थित है। हमें अपने युद्ध प्रयास ...में अवश्य ही जरा भी ढिलाई नहीं करनी ...चाहिये। चीनमें हालके जापानी आक्रमण ...तथा पश्चिमी मोर्चेपर व्यापक जर्मन ...आक्रमणसे पता चलता है कि अभी ...अन्तम पराजयके पूर्व पूर्वापेक्षा और ...अधिक बलिदानकी मांग का जायगी। ...यद्यपि चीन अन्य राष्ट्रोंसे काफी अर्सेके ...से लिप्त है फिर भी वह क्षणभरके लिये ...अपने उत्तरदायित्वसे वंचित होना नहीं ...चाहता। इसके प्रतिकूल वह समान ...उद्देश्यकी जिसके लिये हम सभी लोग लड़ ...रहे हैं पूर्तिके लिये सबकुछ न्योछावर ...करनेको कृत-संकल्प हैं। रायटर

...फिल्म डायरेक्टरोंपर हत्याकाजुर्म

मद्रास ६ जनवरी। आज यहां पुलिस ...कमिश्नरकी अदालतमें एक तामिल साप्ता-...हिकके सम्पादक श्री लक्ष्मी कान्तमके ...हत्याका मुकदमा पेश हुआ जिसके संबंध-...में कोयम्बटूरके पुलिस द्वारा एक फिल्म ...कम्पनीके डायरेक्टर श्री एम० श्रीरामाल ...नायडू कल गिरफ्तार किये गये। ...मजिस्ट्रेटने अभियुक्तकी जमानतकी दर-...ख्वास्त खारिज कर दी तथा उसे १० ...जनवरी तक पुलिसकी हिरासतमें रखने ...की आज्ञा जारी की। मि० ह्यूमने कहा ...कि श्री नायडू पर पुलिसने हत्या एवं ...षडयन्त्रका जुर्म लगाया है। ये दोनों ...जुर्म ऐसे हैं जिनमें अभियुक्तोंको जमा-...नत नहीं स्वीकार की जाती। इसी ...मुकदमेके सिलसिलेमें दो और फिल्म ...डायरेक्टरोंकी गरफ्तारी हो चुकी हैं ...किन्तु इनकी जमानत हो गयी है। इस ...मुकदमे अबतक कुल १२ गिरफ्तारियां ...हुई हैं। ए० प्रेस

ब्रिटेन और अमेरिका

मतभेदके रहस्योद्घाटनकी जांच

वाशिंगटन ६ जनवरी। इन दिनों अमेरिकन सरकारके उस सूत्रका पता लगाया जा रहा हैकि जिसने इलटी स्थित अमेरिकन राजदूतसे मि० चर्चिलका जनरल स्कोवीको आदेश सम्बन्धी संवादको प्राप्त किया तथा जिसे ड्रियुपियरसनने हालहीमें प्रकाशित किया था। इस सम्बन्धमें डेलीमिररके विरुद्ध सख्त कार्रवाई करनेका अन्दाज लगाया जा रहा है। ड्रियुपियरसनने सरकारी कागजका उद्धरण देते हुए यह घोषणा की थी कि यदि अमेरिकन सरकारको इटली को सामान भेजनेकी योजनामें और बृद्धि करनी पड़ी तो मित्र राष्ट्रोंमें मत-भेद पैदा हो जायेगा। "सटरडेइवनिङ्ग पोस्ट" का यह कथन है कि इंगलैण्डमें 'आफिशियल सिक्रेट्स एक्ट्स' है जिसके अनुसार सरकारी नौकरोंको सरकारी भेद बतानेके लिये वर्जित किया गया है तथा इस आदेशके उल्लंघनमें दण्डका भागी होना पड़ता है। अमेरिकामें भी इसी तरहके कानून बननेकी चर्चा है। रा०

रोमारोलाकी मृत्युपर शोकप्रस्ताव

बम्बई ७ जनवरी। कल शहरके सभी कांग्रेस संस्थाओंकी केन्द्रीय समितिकी मीटिंग हुई जिसमें एक प्रस्ताव द्वारा रोमारोलाकी मृत्यु पर घोर दुःख प्रकट किया गया तथा कहा गया कि रोमारोला पीड़ित मानवताके सच्चे साथी थे वह अन्तर्राष्ट्रीय शांति एवं सद्भावनाके क्षेत्रमें परिश्रमी कार्यकर्ता थे। एक दूसरे प्रस्ताव द्वारा मध्यप्रांतीय तथा भारत सरकारसे अनुरोध किया गया कि चिमूर अष्टी काण्डके अभि-युक्तोंके जीवन दानके मामले पर सहानु-भूति पूर्वक विचार किया जाये। ए०प्रेस

पोलिश सरकार

रूसकी स्वीकृतिकी प्रतिक्रिया

लन्दन, ७ जनवरी। गत रात्रिको लन्दनस्थ पोलिश टेलीग्राफ एजेन्सीने पोलिश सरकारकी ओरसे साधिकार ऐलान किया कि लुबलिनस्थ सोवियट समर्थक अस्थायी पोलिश सरकारकी रूस द्वारा सरकारी तौरपर स्वीकृतिका अर्थ पोलिश राष्ट्रके मौलिक अधिकारको प्रत्यक्ष रूपसे भङ्ग करना, पोलैण्डको विदेशी हस्तक्षेपके परे स्वतन्त्र स्टेटकी भांति अपना अस्तित्व कायम रखने और परिस्थितिके अनुकूल आन्तरिक स्थिति सङ्गठित करने सम्बन्धी जनताके अधि-कारको हड़पना है। रायटर

ग्रीसपर गम्भीर बहसकीसंभावना

लन्दन, ६ जनवरी। ब्रिटिश राज-नीतिक क्षेत्रोंकी भविष्यवाणी है कि आगामी १६ जनवरीको पार्लियामेण्टका अधिवेशन पुनः तूफानी वातावरणमें प्रारम्भ होगा तथा ग्रीसकी समस्या वाद विवादका मुख्य विषय होगी। वामपन्थी मजदूर दलीय सदस्योंसे यह आशा की जा रही है कि वे ग्रीसकी नई सरकारकी आलोचना करेंगे तथा कुछ सदस्य तो उसे 'जनरल प्लैस्टिरसकी वास्तविक तानाशाही' कह रहे हैं। आशा की जाती है कि सरकारका उत्तर भी उसी स्पष्ट ढंग पर होगा जिसका पूर्वा-भास सरकारी वक्ताओं द्वारा गत वाद-विवाद में प्राप्त हो चुका है। मि० चर्चिल के विषयमें भी यहां आशा की जाती है कि चाहे जो कुछ भी परिणाम हो वे सर-कारी नीति पर अटल रहेंगे। साधार-णतः इस वादविवादसे निश्चय ही ब्रिटिश जनताकी ग्रीसकी समस्या पर घोर चिन्ता, घबड़ाहट तथा सन्देहका आभास मिलेगा। रायटर

कोयलेका मितव्यय

पञ्जाबमें अनुसंधान कार्य आरम्भ

लाहौर, ५ जनवरी। मालूम हुआ है कि पञ्जाबके गवर्नरने लाहौर गवर्नमेंट लेबोरेटरीमें सरकारी कोयलेका किफायत सारीके साथ उपयोग करने सम्बन्धी योजनाके प्रथम भागको कार्यान्वित करने की स्वीकृति दे दी है। पञ्जाबमें व्यव-सायोंकी अवस्था पर विचार करनेके लिये सर मनोहरलालके सभापतित्वमें जो विशेष समिति नियुक्त की गयी थी, उसीने उक्त योजनाकी सिफारिश की है। पञ्जाब सरकारके व्यवसायिक रसायन वेत्ता डा० एस० डा० मुजफ्फर और डा० जे० एल० सारेनके निरीक्षणमें योजना कार्यान्वितकी जायेगी। दो वर्ष तक अनुसन्धान कार्य करनेके लिये १ लाख रुपया स्वीकार किया गया है। ए०

प्रशांत संबंधी समस्या

विशेषज्ञों द्वारा उसपर विचार

हाटस्प्रिङ्गस वर्जिनिया, ६ जनवरी। आज इन्स्टी ट्यूट आव पैसिफिक रिले-शन्सके ९ वें त्रिवार्षिक सम्मेलनमें जापान का राजनीतिक भविष्य, प्रशान्तका युद्धो-त्तर सुरक्षा संगठन, सामरिक अड्डोंका बटवारा आदि मुख्य विषयों पर विचार विमर्श हुआ। सरकारी वक्ताने कहा कि प्रशान्तके १२ राष्ट्रोंके प्रतिनिधियों द्वारा सुदूर पूर्वके उपनिवेशोंका भविष्य संबंधी प्रश्नका अध्ययन किया जायगा। तथा अर्थ शास्त्रके विशेषज्ञ जो प्रशान्तके आव-श्यक राजनीतिक समस्याओं पर विचार कर रहे हैं निम्नलिखित हैः—अमेरिका के आस्ट्रेलियन मंत्री सर फ्रेडरिक इग-लेस्टन, हू शीह (चीन) हेनरी डेयांग (कोरिया) होटेश बेलेशा (न्यूजीलैंड) सेनीप्लेमेज (स्याम) सर फ्रेडरिक व्हा-इट (ब्रिटिश सूचना विभाग) फिलिफ डरेसस:(अमेरिकाका स्टेट विभाग) फ्रैन्स विजमैन (नेदरलैण्ड) तथा श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित (भारत)।

सीमान्त मंत्रिमण्डलकी निन्दा

लाहौर, ६ जनवरी। केन्द्रीय असे-म्बलीकी कांग्रेस पार्टीके डिप्टी लीडर मि० अब्दुल कयूमने एक वक्तव्यमें कहा कि जिस ढंगसे गवर्नर द्वारा सीमान्तमें मौजूदा मंत्रिमण्डलकी स्थापना की गयी तथा जिस तरह उसे कायम रखा जा रहा है उससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि प्रान्तीय स्वराज्य सिर्फ तमाशा है। सीमान्त असेम्बलीका शीत कालीन अधिवेशन बुलानेसे इन्कार करने तथा पांच एम० एल० ए० को जेलोंमें बन्द कर रखनेकी मंत्रिमण्डलकी नीति का समर्थन करके गवर्नरने विधानके मुख्य आदेशका उल्लंघन किया है। जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि बिना किसी आरोपके गवर्नरके समर्थन से जेलोंमें बन्द रखे जा रहे हैं। निय-मित शीत कालीन अधिवेशन बुलानेसे इन्कार करके गवर्नरने मंत्रिमण्डलको एक मौका और दिया है कि वह विरोधी दलके सदस्योंको अपने साथ मिला सके। सीमान्त एक छोटासा प्रान्त है जिसकी आर्थिक स्थिति यहां तक खराब है कि उसे केन्द्रीय सरकारका हमेशा मुंह देखना पड़ता है किन्तु ऐसे प्रान्तमें मुझे मालूम हुआ है कि प्रधान मंत्री छठवें मंत्री पदका भेंट लेकर कतिपय सदस्यों का खोजमें निकल पड़े हैं। सीमान्तकी जनता वर्तमान मंत्रिमण्डलसे तंग आ गयी है। कांग्रेस दल अग्नि परीक्षामें उत्तीर्ण हो, चुका है जनता कांग्रेस दलसे बहुत आशा रखती है। ए० प्रेस

रूसकी तीव्रआलोचना

...यी पोलिशसरकारकीस्वीकृतिपर

मैंचेस्टर, ५ जनवरी । नरमदली पत्र 'मैंचेस्टर गार्जियन'ने लुबलिनस्थ अस्थायी पोलिश सरकारपर रूसी सरकारकी स्वीकृतिकी आलोचना की है। पत्रमें कहा गया है कि यह कार्य अटलांटिक चार्टर घोषणाके सिद्धांतोंके प्रतिकूल है। यह एक अपरिवर्तनीय कार्य है और पश्चिमीय मित्रराष्ट्र जहांतक हो सकेगा सहन करेंगे। लेकिन इससे महान मैत्रीमें अन्तर पड़ता नजर आता है।

आगे चलकर लिखा गया है कि रूस लुबलिनस्थ सरकारको और ब्रिटेन एवं अमरीका लन्दनस्थ सरकारको मानते हैं। यह तो निश्चित है कि लुबलिन ही विजयी रहेगा क्योंकि रूसी पोलैण्डमें है और हम वहां नहीं हैं। लेकिन हमें अपना यह विचार प्रकट कर देना चाहिये कि यह नीति रूसकी अदूरदर्शिता है, अटलांटिक चार्टरके, जिसका वह पालन करता आया है, प्रतिकूल तथा उसकी राजनीतिज्ञताके अयोग्य है। कुछ भी हो, ब्रिटेनको यह दावा करना ही होगा कि जब पोलैण्डका पुनरुद्धार हो जाये तो जिस प्रकार यूनानी जनताको अपना सरकार चुननेका मौका दिया गया है उसी प्रकार पोलिश जनताको भी मिले बशर्ते कि वह सरकार फासिस्ट न हो और वे स्वयं वास्तवमें स्वाधीन रहें। रायटर

माता कस्तूरबाका जीवन चरित्र

सेवाग्राम, ६ जनवरी। स्व० कस्तूरबा गांधीके जिस जीवन चरित्रका संपादन कुमारी पारिख और डा०सुशीलानायर कर रही हैं वह समाप्तप्राय है, जिसमें विशेषरूपसे आगाखां महलमें उनके अन्तिम दिनोंकी कहानी है। इसका प्रकाशन उनकी प्रथम निधन तिथि २२ फरवरीको होगा। ए०प्रेस

गजदर-गुलाम मतभेदका कारण

कराची, ६ जनवरी। मालूम हुआ है कि खान बहादुर खूरोके इस्तीफेके बादसे ही मि० गजदर तथा प्रीमियर सर गुलाम हुसेनमें मतभेद उत्पन्न हुआ। यह मतभेद उग्र हो गया जब कुछ विभागोंकी अदलाबदली की गयी और मि० गजदरसे कानून और व्यवस्था विभाग लेकर दूसरे को दे दिया गया।

प्रीमियर सर गुलाम हुसेनने इसके प्रति कोई वक्तव्य देना स्वीकार नहीं किया। यह मालूम हुआ है कि वे मि० जिन्नासे सम्पर्कमें हैं। जो पत्र इस्तीफा सम्बन्धी मि० गजदरको लिखा गया है उसमें यह आशा की गयी है कि उत्तर आज शामको देना होगा। ए०प्रेस

युद्धके बन्दियोंके छुटकारेका मांग

लन्दन, ५ जनवरी। ब्रिटिश मंत्री मि० ईडेनने कहा कि युद्धके आहत एवं रुग्ण बन्दियोंको भेजनेसे जापान सरकारने अभीतक इनकार ही किया है। मि० ईडेनको पार्लमेंटके सदस्य सर ल्योनार्ड लाइलने एक पत्र लिखकर यह मांग की थी कि जर्मन और जापानियोंके अधीन जितने युद्धबन्दी हैं सबके छुटकारेकी व्यवस्था की जाये, जिसका उपर्युक्त उत्तर कि० ईडेनने दिया। आपने और कहा कि गत अप्रैल मासमें ही बन्दियोंके आदान-प्रदान सम्बन्धी पत्र लिखे गये थे लेकिन कोई उत्तर प्राप्त न हो सका। रायटर

अक्यावपर कब्जेकी प्रतिक्रिया

चुंगकिंग, ५ जनवरी। ब्रिटिश सेनाओंके अक्याबपर कब्जा कर लेनेका समाचार चीनी जनताके लिये उत्साहवर्द्धक रहा जोकि गत कई महीनेसे दक्षिण-पूर्वीय एशिया मोर्चेपर ब्रिटिश नीतिकी आलोचना करते रहे हैं।

एक उच्च चीनी अधिकारीने संवाददातासे कहा कि यह उत्तम समाचार है। हम इसका नववर्षमें प्रथम विजयके रूपमें स्वागत करते हैं। रायटर

लन्दन, ६ जनवरी। बर्माके मोर्चेके सम्बन्धमें जो लेख 'टाइम्स' में प्रकाशित हुआ है उसमें कहा गया है कि यदि दूर-तक नजर दौड़ायी जाये तो मालूम होगा कि बर्मामें दुश्मनकी अरक्षित अवस्था है। लेकिन इससे उसके शीघ्र पराजय होनेका पूरा विश्वास न कर लेना चाहिये। दुश्मनकी सेनाएं अभीतक दृढ़ निश्चय से लड़ रही थीं और यह सोचनेका कोई कारण नहीं है कि वे अब बर्माको छोड़ जाना चाहती हैं। अधिक सम्भावना यही है कि दुश्मन जोरदार लड़ाई करेगा। रा०

भाईकी मृत्युका परिणाम

कलकत्ता, ६ जनवरी। अलीपुरके अतिरिक्त सेशन जजकी अदालतमें खूनके उस मुकद्दमेकी सुनवाई समाप्त हो गयी जिसमेंकस्बाके रनबीर मल उर्फ नादा (२० वर्ष) तथा उसके भाई बनबीर उर्फ मन्ता (१४ वर्ष) के विरुद्ध यह जुर्म लगाया गया था कि इन अभियुक्तोंने अपने बड़े भाई ताराशंकर मल उर्फ नायडूकी हत्या की। सबूत पक्षका यह आरोप था कि गत २४ जूनकी शामको नायडूकी मां और पत्नीमें झगड़ा हुआ। भाइयोंके बीच भी झगड़ा होने लगा। नादाने नायडूको पकड़ लिया इतनेमें मन्ताने उसे छूरा भोंक दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि उसकी मृत्यु हो गयी। ३ के मुकाबले ६ जूरियोंने दोनों अभियुक्तों पर हत्याका जुर्म साबित होने की राय दी। फैसला किसी दूसरे दिन सुनाया जायेगा।

चिमूर व अष्टीकेअभियुक्तोंकेलिये

बम्बई, ६ जनवरी। भारतीय व्यापारी चेम्बरकी कमेटीने वायसरायको तार भेजकर अनुरोध किया है कि वे अपने विशेषाधिकारोंका प्रयोगकर चिमूर और अष्टी कांडोंके १६ अभियुक्तोंके प्राणदण्डको रद्द कर दें। यह भी बताया गया है कि इस दयाके कार्यसे भारतीय जनता प्रभावित होगी। सभी अभियुक्त युवक हैं और अवसर पाकर विचार-परिवर्तन हो सकता है, और फिर जेलसे निकल उत्तम नागरिक बन सकते हैं। यूट

ब्रिटेनमें मजदूरोंका अभाव

मैंचेस्टर, ५ जनवरी। श्रम सचिव मि० बेविनने रुईके व्यवसाय सम्बन्धी कमेटीके सदस्योंसे इस व्यवसायमें श्रमिकोंके अभावके सम्बन्धमें विचार-विमर्श किया। आपने कहा कि श्रमाभावके कारण इस व्यवसायमें बाधा उत्पन्न है। इस समय १७ हजार मजदूरोंकी आवश्यकता है। आपने संवाददातासे कहा कि सरकार ट्रेनिंगको अधिक व्यवस्था करेगी। जबसे युद्ध आरम्भ हुआ है १७५,००० श्रमिकोंने काम छोड़ा और युद्धोत्तरकालीन योजनानुसार कार्य विस्तारकी बाधाएं भीषण हैं। रायटर

सीलोनमें भावी शासन सुधार

लन्दन, ५ जनवरी। सीलोनके भविष्यके सम्बन्धमें 'टाइम्स' पत्रने लिखा है कि वहांके वर्तमान शासन विधानमें परिवर्तन आवश्यक है। वहांके राजनीतिक नेताओंको शासन सञ्चालनकी ट्रेनिंग देनेके लिये उक्त विधान उपयोगी सिद्ध हुआ, लेकिन अल्पसंख्यकोंका प्रश्न इससे हल नहीं हुआ।

अब इस द्वीपको अधिक शासनाधिकार दिया जायेगा यह निश्चित है, यद्यपि आरम्भमें आर्थिक बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं। नये शासन विधानकी रचना ऐसी होनी चाहिये कि सभी छोटी बड़ी जातियोंकी ईमानदारी, योग्यता और शक्तिका पूर्ण प्रयोग हो। रायटर

रोम्यांरोलां अमर हैं

वर्धा, ५ जनवरी। फ्रेंच साहित्यिक रोम्यांरोलांकी मृत्युपर वक्तव्य देते हुए श्री भूलाभाई देसाईने कहा कि रोम्यांरोलांकी मृत्युसे अन्तर्राष्ट्रीय एवं बौद्धिक जगतको अपार क्षति हुई है। उन्हें मानव जातिकी शांति एवं सद्भावना बड़ी प्रिय थी। महात्माजी और उनमें अपार स्नेह था। रोम्यांरोलां जैसे व्यक्ति किसी खास समय और परिस्थितिमें नहीं होते हैं। वे अपनी रचनाओं द्वारा संसारमें तबतक जीवित रहेंगे जबतक मानव समाज मौजूद है, क्योंकि वे और उनकी रचनाएं अमर हैं। यू०प्रेस

...हित बस जिनक मनमाहीं।
...न कहं जग दुलभ कछु नाहीं॥

...मयिक सत्परामर्श।

—(*:*)—

...कांग्रेसके अगस्त प्रस्तावके बाद समस्त ...व कांग्रेस नेताओंकी अवांछनीय ... असामयिक गिरफ्तारीके परिणाम-...रूप जो देशव्यापी अशांतियां फैल ... थीं, और कांग्रेसके नामपर उत्ते-... जनताने जो अनुचित कार्य कर ...के थे, उसकी जिम्मेदारी देशकी एक-... राजनीतिक प्रतिनिधि संस्था ...ग्रेस और कांग्रेस नेताओंके कन्धोंपर ...सी भी प्रकार नहीं डाली जा सकती। ... सम्बन्धमें सरकार द्वारा लगाये गये ...तिरपैरके आरोपोंका मुंहतोड़ उत्तर ...त्मा गांधी और जेलके सींकचोंके ...हर बन्द राष्ट्रपति मौलाना अबुल-...म आजाद एकाधिक बार दे चुके हैं ... ब्रिटिश सरकारको खुलेआम यह ...ती भी दी जा चुकी है कि अगर ...को अपनी बातोंपर विश्वास है तो ... अपनी ही अदालतोंमें खुलेआम ...ला चला कर अपनी सचाईका इज-... पेश करे। लेकिन सरकारने अब-... उन चुनौतियोंकी ओर अपना कान ...नहीं दिया। इन बातोंपर पहले काफी ...श डाला जा चुका है। प्रस्तुत लेखमें ...हम उन अवांछनीय बातोंपर ह... करेंगे, जो जेलोंसे मुक्त ...र कांग्रेस-जनोंके वापस ...पर देशमें छायी हुई निष्क्रि-... और मुर्दनीको दूर करनेके ख्यालसे ...भिन्न प्रांतोंमें होनेवाले कांग्रेसकर्मी ...ठनोंके सम्बन्धमें उत्पन्न हुई हैं। ...क प्रांतोंमें कांग्रेसकर्मियोंने कम्यू-...टोंको अपने संगठनसे अलग कर ...का फतवा दे डाला है और इस प्रकार ...की वादविवाद चल पड़ा है। कांग्रेस-... और गर-कांग्रेसजनकी भिन्न-भिन्न ...भाषाएं होने लगी हैं; इन वितण्डा-...ओंमें वास्तविक प्रश्न ही खटाईमें पड़ ... है। जहां कांग्रेसकर्मी संगठनों ... देशवासियोंमें उत्साह और क्रिया-...शताकी लहर उत्पन्न की जानी ...हिये थी, वहां तू-तू मैं-मैं, का बाजार ... हो चला है। जबतक कांग्रेसके ...प्रिय नेता जेलोंके सींकचोंके अन्दर ... हैं, तबतक इस विषयमें किसीको ...वा देनेका अधिकार नहीं है और जो ... करनेकी अनधिकार चेष्टा करते ...वे समस्त राष्ट्रका अहित करते हैं।

महात्मा गांधीकी स्थिति कांग्रेसमें कुछ विलक्षण-सी है। इसलिये वे भी इस विषयपर कुछ आदेश देने योग्य अपनेको नहीं समझते। फिर भी उन्होंने बिल्कुल उचित और ठीक कहा है कि कांग्रेस गणतान्त्रिक संस्था है। इसलिये जो कोई भी व्यक्ति इसके घोषित ध्येयको स्वीकार करते हुए ४ आने देकर उसकी सदस्यताके फार्मपर हस्ताक्षर करता है वह कांग्रेसमैन है। इसमें सन्देह नहीं कि कांग्रेसमें भी अनुशासन बहुत कड़ा है और उसकी अवज्ञा करनेपर बड़ेसे-बड़े व्यक्तिको भी दण्डित होना पड़ा है; लेकिन अनुशासनके नाम व्यक्तिगत मत-भेदके कारण किसी व्यक्तिको निकाल बाहर करना अखिल भारतीय संस्थाके साथ अन्याय करना है। इसलिये कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी सदस्या श्रीमती सरोजिनी नायडूने बिल्कुल ठीक कहा है कि "कांग्रेसकी प्रतिज्ञामें आस्था रखने वाले सभी व्यक्ति कांग्रेसमैन हैं। इसकी प्रतिज्ञा है सभी शांतिपूर्ण वैध तरीकोंसे भारतकी स्वाधीनता प्राप्त करना। जब तक कोई व्यक्ति इस प्रतिज्ञा और कांग्रेस द्वारा समय समयपर जारी किये गये आदेशों-निर्देशोंको मानता है, तबतक उसपर किसी प्रकारका प्रतिबन्ध नहीं लगाया जा सकता। साथ ही कांग्रेसके लिये यह भी उचित नहीं होगा कि वह इसी आदर्शका पालन करने वाली अन्य संस्थाओंसे, जो अपना कार्यक्रम अलग रखती हैं, असहयोग करे।" मुख्य बात तो मातृभूमिकी स्वाधीनता है और कांग्रेस उन संस्थाओंको न केवल अपना सहयोग देनेके लिये तैयार हैं, जो भारतकी स्वाधीनता प्राप्तकरने केलिये संघर्षशील हैं, बल्कि उनका सहयोग प्राप्त करना भी चाहती है।"

अगर ऐसी बात न होती तो महात्मा गांधी मुसलिम लीगके अध्यक्ष मि० जिन्नासे समझौता करनेके लिये बार-बार इतनी अधिक चेष्टा नहीं करते। गत गांधी-जिन्ना सम्मेलनमें असफलता और निराशा हाथ लगने परभी वे भविष्यमें फिर कायदे आजमसे मिलनेके लिये तैयार हैं और स्थिति अनुकूल होनेपर मिलेंगे भी। सर तेज बहादुर सप्रूको इस दिशामें प्रयत्नशील होनेके लिये उन्होंने केवल इसी एक मात्र आशापर अनुमति और आशीर्वाद प्रदान किया है कि किसी भी प्रयाससे देशमें भारतकी स्वाधीनताके विरोधियोंके विरुद्ध सामूहिक मोर्चा कायम किया जासके। कांग्रेस राष्ट्रीय स्वाधीनता इसलिये प्राप्त करनेवाली है, ताकि इसके द्वारा वह विश्वमानवताकी सेवा कर सके। ऐसी दशामें पीड़ित मानवताकी सेवा करने वाली संस्थाओंको सहयोग प्रदान करनेमें कोई आपत्ति होनी नहीं चाहिये। हां इतना ख्याल अवश्य रखना चाहिये कि उनमें सहयोग देनेके लिये अपने दृष्टिकोणसे आना चाहिये और उनके कार्योंपर अपनी छाप लगानी चाहिये।

हम श्रीमती नायडूकी इस बातसे पूर्णरूपेण सहमत कि वर्तमान युद्ध ब्रिटेन, फ्रांस रूस और चीनके लिये लोक युद्ध भलेही है, लेकिन भारतके लिये तो यह साम्राज्यवादी युद्ध है और इसी आधार र कांग्रेसका अगस्त प्रस्ताव गृहीत हुआ था। उसमें कोई ऐसी बात नहीं है जिसपर उन व्यक्तियोंको आपत्ति हो सके, जो वास्तवमें मानव स्वाधीनताके हिमायती हैं। कांग्रेसने मित्र राष्ट्रोंके विवेकसे अपील करते हुए यह स्पष्ट कर दिया था कि भारतकी स्वाधीनता भारतीय जनता और मित्र-राष्ट्र दोनोंके दृष्टिकोणसे आवश्यक है। लेकिन झूठे वायदे करनेवालोंको ये बातें क्योंकर पसन्द आये। इसमें सन्देहनहीं कि श्रीमती नायडूने बड़े मौकेपर देशके पथ-प्रदर्शनका प्रयत्न किया है और उनके इस प्रयाससे, जो कांग्रेसकी ओरसे एक अधिकृत निर्देश माना जा सकता है, राष्ट्रवादी कार्यकर्ताओंको प्रकाश प्राप्त कर पारस्परिक मतभेद दूरकरके अपनेस्वातंत्र्य विरोधियोंके विरुद्ध सामूहिक मोर्चा स्थापित करना चाहिये।

हमारा दयनीय स्वास्थ्य

शताब्दियोंसे पराधीन और दारुण दारिद्र्यका शिकार भारत योंही अन्य देशोंकी अपेक्षा स्वास्थ्य और जीवन शक्तिमें संसारके सभ्य राष्ट्रोंमें पिछड़ा हुआ था, लेकिन वर्तमान युद्ध जन्य अवस्थाने तो उसके कोढ़में खाज पैदा कर दिया। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि खाद्य पदार्थोंका मूल्य अत्यधिक ऊंचा हो जाने तथा उनके अतिशय प्रभावके कारण वेवल बंगालकी शस्य श्यामला भूमिमें ३५ लाखसे अधिक जनता असमय कालकवलित हो गयी। दक्षिण भारतके कई प्रान्तोंमें अभूतपूर्व अकालका ताण्डव आरम्भ हो गया। अखाद्य पदार्थोंके खानेसे बिहार भयंकर महामारियोंका विशाल क्रीडास्थल बन गया। तिसपर भी हमारे वर्तमान शासक वर्ग यह कहते तनिक भी नहीं हिचकिचाते कि युद्ध जन्य स्थितिने भारतको काफी लाभ पहुंचाया है। भारतीयोंके दिन-दिन गिरते हुए स्वास्थ्यको देखते हुए भी वे यह कहकर अपनी जिम्मेवारीसे मुक्त होना चाहते हैं कि भारतकी आबादी पहलेसे बहुत अधिक बढ़ गयी है। यह है हमारे देशके ट्रस्टी कहलानेवाले ब्रिटिश राज नेताओं और उनके भारत स्थित प्रतिनिधियोंका दृष्टिकोण। भारतके प्रकृतिक और मानवी साधनोंसे चर्बीला होने वाला शासक समुदाय इतने पर भी हमें अपने सद्भावमें विश्वास करानेका उपदेश दे रहा है और कहता है कि 'भारत छोड़ो' काढ़े और असहयोगकी टिकियासे रोग दूर नहीं हो सकता।

कुछ समय समय पूर्व ब्रिटिश सरकारके खाद्य विभागके प्रधान अफसर भारतमें खाद्य पदार्थोंकी अवस्थाका निरीक्षण करने आये थे। कई स्थानोंपर उन्होंने सरकार द्वारा नियंत्रित खाद्यान्न वितरणकी दुकानोंकी चीजोंके नमूने देखनेके बाद स्पष्ट तौरपर कहा था कि "ये अन्न पौष्टिक तत्वोंसे शून्य ।" उनके कथनानुसार ब्रिटेनमें जहां रेशनकी वस्तुओंमें पर्याप्त पौष्टिक तत्व मौजूद हैं और उनको खाकर जहां ब्रिटिश नागरिकोंका स्वस्थ्य पहलेसे कुछ अच्छा ही हुआ है, वहां भारतमें सड़े गले पदार्थोंको खिलाकर देशवासियोंके स्वास्थ्यके साथ खेलवाड़ करनेकी जिम्मेदारी किस पर है? क्या हमारे शासक वर्ग दावेके साथ यह कह सकते हैं कि भारतवासियोंको पर्याप्त मात्रामें खाने लायक चीजें भी नहीं मिलती है?

उस दिन कानपुरमें अखिल भारतीय डाक्टर सम्मेलनमें भारतके वर्तमान दयनीय स्वास्थ्यपर डा० जीवराज मेहताने जो विस्तृत प्रकाश डाला, वह किसी भी सहृदय राष्ट्रका दिल दहलानेके लिये काफी है। लेकिन ब्रिटिश राजनेताओंकी दृष्टिमें उनका कोई महत्व नहीं है। उन्होंने देशके स्वास्थ्यका दिग्दर्शन कराते हुए दो बातोंपर विशेषरूपसे जोर दिया— एक तो प्रतिरोधात्मक है और दूसरी उपचारात्मक। पहली योजनाके लिये आवश्यकता है विशुद्ध खाद्य पदार्थोंकी पर्याप्त मात्रामें सुलभ मूल्यमें उपलब्धि और दूसरीके लिये जरूरी है रोगोंसे निवृत्त करानेवाली औषधियोंका उचित वितरण। आज अर्सेसे दोनों ही चीजोंके लिये अधिकारियोंसे हमारी शिकायत है, लेकिन अबतक इन शिकायतोंको दूर नहीं किया गया। उचित औषधोपचारके अभावमें देशकी बहुत बड़ी आबादी तरहतरहके रोगोंसे बुरी तरह ग्रस्त है और बड़ी संख्यामें लोग असमयमें ही यहां प्रस्थान भी कर गये। ब्रिटेन आदि देशों की अपेक्षा हमारे यहां योग्य चिकित्सकोंका भी अभाव है और जो थोड़े बहुत औषधोपचारके साधन उपलब्ध हैं भी, वे केवल शहरों तक ही सीमित हैं। देहात तो इन सुविधाओंसे सर्वथा वंचित हैं। इसलिये डा० मेहताने यह बिलकुल उचित परामर्श दिया है कि डाक्टर और चिकित्सक अपनी सेवाका क्षेत्र देहातोंको बनायें और अपने कार्यमें मानवताको सर्व प्रथम स्थान दें। सरकारसे इस दिशामें तो अभी कोई आशा की जा सकती है, जब देशमें राष्ट्रीय सरकार स्थापित हो जाये।

साप्ताहिक सिंहावलोकन ।

इस सप्ताह भी पाश्चात्य युद्धक्षेत्रपर घनघोर घमासान मचा रहा और जर्मन सेनापति रुंडस्टेटकी गर्मीमें तनिक भी कमी नहीं आयी है। वह अपने और अधिक डिवीजन लाकर लड़ाईमें झोंक रहा है और उसका परिणाम यह हुआ है कि उसकी सेना इस समय आक्रमणवाले क्षेत्रमें पहलेसे दूनी हो गयी है। प्रथम अमेरिकन सेनाके साथ रहनेवाले रायटर-से रूास संवाददाताका शनिवारकी रात-का तार है कि, "जर्मनोंने ब्रिटिश सेनाके पश्चिमी सिरेपर बड़ी भयंकरतासे प्रत्याक्रमण किया और ब्यूरेपर अधिकार कर लिया, जो राकफर्टसे चार मील दक्षिण है। कहनेकी आवश्यकता नहीं कि इसी राकफोर्ट स्थानके पश्चिम रुंडस्टेटकी सेना आक्रमणके पहले ही दौरमें उस म्यूज नदीसे चार मील दूरके स्थानतक पहुंच गयी थी, जिसके किनारे पहुंचना जर्मन सेनापतिका प्रधान लक्ष्य बताया जाता है। जर्मनोंका सबसे अधिक जोर तीसरी अमेरिकन सेनाके विरुद्ध सार क्षेत्रमें लग रहा है और संवाददाताका कहना है कि रुंडस्टेटने अपनी सेनाके तीस डिवीजन लगा दिये हैं। पहले उन्होंने पन्द्रह डिवीजनसे ही आक्रमण किया था, इसका ध्यान रखनेसे इस सैन्य वृद्धिका महत्व भलीभांति समझमें आ सकता है। पेरिसके तारमें मित्रसेनाओंके सदरके रायटरके संवाददाताने गत शनिवारकी ही रातमें यह कहा था कि, "जर्मनोंने सम्पूर्ण पश्चिमी युद्धक्षेत्रपर मित्रसेनाओं-की योजनाओंको अस्तव्यस्त कर दिया है। उन्होंने सातवीं अमेरिकन सेनाको पेलाटिनेटमें जर्मन भूमिसे हट जानेको लाचार कर दिया है और सारगूमाइन्स—हेजिनाऊ सड़कको काट दिया है जो बड़े महत्वकी है।" अन्तमें संवाददाताका कहना है कि "आज जर्मन सैनिक ऐसी बल पायी हुई आशाके साथ लड़ रहे हैं, जो निराशावादियोंको और 'बड़े दिनके पहले ही विजय' वाले आशावादियोंको स्वप्नमें भी उस समय संभव नहीं मालूम होती थी, जब जर्मन सेना गर्मीके दिनोंमें फ्रांससे भगा दी गयी थी।" सार घाटीमें जर्मनोंका प्रत्याक्रमण पूरे आक्रमणका रूप ग्रहण कर चुका है और यह संभव मालूम हो रहा है कि वे अलसस-लोरेनके मैदान-में टूट पड़ें। लन्दनके ६ जनवरीके तार-में कहा गया है कि, "जर्मनोंके आक्रमण पश्चिमी युद्धक्षेत्रके दक्षिणी भागके मित्र-सेनाओंके स्थानोंकी रक्षाको भारी खतरे-में डाल रहे हैं। सारगूमाइन्स-हेजिनाऊ सड़कको काटकर जर्मन स्ट्रासबर्गपर भी खतरा उपस्थित कर सकते हैं। आर्डेनीज़में जर्मन सफलताओंसे ही रुंडस्टेट-की सेना का युद्धोत्साह इस समय बहुत ऊंचा है और यदि स्ट्रासबर्गका पतन हो गया, तब तो वह और भी ऊंचा हो जायेगा। अलसेसमें मित्रसेनाओंका पूर्वी भागका अन्तिम सिरा, जो जर्मन सीमा-के पास है, हेजिनाऊ जंगलके उत्तर कई मील पीछे हटाया जा चुका है, स्वयं रा० रूजवेल्टने ६ जनवरीको अमेरिकन कांग्रेसको दिये हुए अपने संदेशमें जहां यह कहा है कि गत वर्ष विजयकी ओर काफी प्रगति हुई है, वहां यह भी स्वीकार किया है कि वर्षके अन्तमें हमारी सेनाओं-की गति अवरुद्ध हो गयी है। उन्होंने यह चेतावनी देनेकी भी आवश्यकता समझी है कि, "हमें यह मान लेनेकी गलती कदापि नहीं करनी चाहिये कि जर्मन हरा दिये गये हैं, जबतक कि अन्तिम नाजी-का आत्मसमर्पण न हो चुके।" इसीसे रा० रूजवेल्टने इस युद्धको जीतनेके लिये सर्वस्वकी बाजी लगा देनेपर जोर देते हुए कहा है कि, "हमें क्या कीमत चुकानी पड़ेगी, इसका कोई प्रश्न नहीं है। हमारी हानियां बहुत भारी होंगी। हम और हमारे मित्र तबतक मिलकर लड़ते चलेंगे, जबतक अन्तिम और पूर्ण विजय न प्राप्त हो ले।"

राष्ट्रपति रूजवेल्टने जो संदेश कांग्रेसको दिया है, उसकी जैसी उत्सुकता-पूर्ण प्रतीक्षा था, उसके अनुसार ही उसमें बातें भी हैं। अत्यन्त गंभीर चेतावनी उन्होंने शत्रुके प्रचारके विषैले प्रभावके विरुद्ध दी है और कहा है कि, "जर्मनोंने पश्चिमी यूरोपमें हमारी पांतको चीरने-फाड़नेके लिये जो प्रयत्न किया है, वह युद्धमें विजय पानेके विचारसे उस प्रयत्न-से वस्तुतः कम भयंकर है, जो हमारे और हमारे मित्रोंके बीच फूट पैदा करनेके लिये वे निरन्तर कर रहे हैं।" किस तरह ब्रिटेश, रूसी और अमेरिकन कमांडरोंके विरुद्ध निराधार अफवाहें जर्मनीमें गढ़ी जाकर फैलायी गयी हैं, इसकी चर्चा करते हुए तबतक धुआंधार लड़ाई जारी रखने-का निश्चय रा० रूजवेल्टने प्रकट किया है, जबतक जर्मनी पूर्ण रूपसे पराजित न कर दिया जायेगा। उनका कहना है कि, "हम ऐसे साथियोंको रखनेकी आवश्य-कता है, जो शान्तिके समय हमारे साथ मिलकर वैसे ही काम करें, जैसे इस लड़ाईमें हमारे साथ मिलकर लड़ते रहे हैं।" वैदेशिक नीतिको स्पष्ट करते हुए राष्ट्रपतिने कहा है कि, "हम और हमारे मित्र घोषित कर चुके हैं कि सभी देशोंके निवासियोंको अपने लिये यह चुननेका अधिकार है कि वे किस प्रकारकी गवर्न-मेंट चाहते हैं। इसके लिये हम अपने भाव अन्ततक काममें लाते रहेंगे कि उद्धार किये हुए भू-भागोंमें कोई अस्थायी गवर्नमेंट अन्तमें जनता द्वारा अपनी गव-र्नमेंट चुननेके मार्गमें बाधा नहीं उपस्थित करती।" रूजवेल्टकी इस घोषणाका प्रयोग जब लुबलिनमें स्थापित हुई और सोवियट रूस द्वारा स्वीकृति-प्राप्त अस्थायी पोलिश सरकारके सम्बन्धमें किया जाता है तो स्पष्ट है कि अमेरिका इस आशा-पर उसका विरोध न करेगा कि युद्धके बाद जब पोलिश जनता स्वतंत्रतापूर्वक मत देनेकी स्थितिमें होगी, तब वह मत संग्रह द्वारा अपनी गवर्नमेंट स्वयं चुनेगी और लुबलिनकी अस्थायी सरकार उसके मार्गमें बाधा न खड़ी करेगी। परन्तु इस तरहकी आशा और इस तरहके भावका जो कुछ मूल्य हो सकता है, उसे सभी समझ सकते हैं। यदि रूजवेल्ट और चर्चिल ऐसा ही भाव लेकर स्टेलिनसे मिलेंगे और इसी समय लुबलिन सर-कारको स्वीकार करनेको तयार न होंगे, तो वर्त्तमान युद्धको जीतनेके लिये वे कोई संयुक्त और संगठित योजना बनानेमें भले ही सफल हो जायें, पर शान्तिकालकी उनकी सारी योजनाएं जहांकी तहां ही रह जायेंगी, हमारा यह दृढ़ विश्वास है।

इस समय यूनान और पोलैंडकी समस्याएं इतने विकट रूपमें मित्रराष्ट्रोंके सामने उपस्थित हो रही हैं कि रा० रूज-वेल्टको भी इनकी चर्चा उदाहरणके रूपमें अपने संदेशमें करनी पड़ी है और आगामी त्रिराष्ट्र कानफरेंसमें, जिसके २० जन-वरीके बाद होनेकी आशा की जाती है, तो इनको प्रमुख स्थान प्राप्त ही होगा। यूनानमें पूर्ववत् अशांति बनी हुई है और वहांके लाट पादरी डमास्किनोजके रीजेंट नियुक्त किये जाने और प्लास्टिराजकी नयी सरकार बन जानेपर भी सभी दलों-का कोई समझौता नहीं हो सका है। परन्तु जैसे कि रोमके पोपने अभीतक नाजियोंके विरुद्ध एक शब्द भी नहीं कहा, बल्कि उनकी बातोंसे नाजियों और फेसिस्टोंको ही सहायता मिलती रही है, वैसे ही अब एथेंसके लाट पादरीका झुकाव भी स्पष्ट ही प्रगति-विरोधियोंकी ओर देखा जा रहा है। शायद ये पोप लोग अपनी परम्परासे लाचार हैं और प्रगति-की शक्तियोंकी ओर झुकनेको कभी तैयार नहीं हो सकते। परन्तु जैसा कि लन्दन 'टाइम्स' ने अभी ५ जन-वरीके अपने अग्रलेखमें लिखा है, अब भी ब्रिटिश सेना कुछ यूनानी सहायता-के साथ उस राष्ट्रोद्धार मोर्चेकी भागी सेनाओंके विरुद्ध लड़ रही है, "जिसका एथेंसके बाहर सर्वत्र नियन्त्रण है। यह लड़ाई जारी रहते कोई गवर्नमेंट सन्तोष-जनक समझौता नहीं प्राप्त कर सकती, वास्तवमें यूनानमें कोई समझौता, नहीं हो सकता और कोई काम चलाने योग्य सर-कार नहीं बन सकती जब तक राष्ट्रो-द्धार मोर्चेका सहयोग और स्वीकृति न प्राप्त हो।" प्लास्टिराजने गवर्नमेंट बनाने-के बाद ही जो वक्तव्य दिया है, वह ब्रिटिश जनताके लिये भारी धक्का[illegible] वाला है, यह कहते हुए 'टाइम्स' [illegible] है कि, "जहां कल समझौतेकी आशा थी, वहां अब इस शोकप्र[illegible] के दीर्घकालीन होनेकी संभाव[illegible] प्लास्टिराजके ऐसे भावके बाद [illegible] ए० एस० के लिये केवल दोमेंसे [illegible] रास्ता पकड़नेको रह जाता है— वे जेनरल स्कोबीकी शर्तोंके आगे टेक दें या और भी जोरोंकी भया[illegible] से लड़ें। यदि ब्रिटिश सेनाएं नयी [illegible] शाहीकी सहायताके काममें लायी [illegible] तो ब्रिटेनमें हल्ला मचेगा। तब हम[illegible] रूपसे ऐसा मार्ग स्वीकार किये हु[illegible] जिसके लिये कोई संभव औचित्य[illegible]

इस सप्ताहके अन्तमें बर्माके [illegible] कान टापूमें मित्रसेनाओंका उतर[illegible] एक बड़े मार्केका काम हुआ है। जैसा कि स्टुअर्टकी स्टेट्समैनको [illegible] हुई रिपोर्टमें कहा गया है, "मंगल[illegible] सवेरे कप्तान जैरेट एक छोटेसे [illegible] यानमें उड़कर जब टापूके ऊपर [illegible] तब वे यह समझते थे कि उनपर [illegible] शत्रुकी ओरसे होगी। जब वे नहीं [illegible] तो अपना विमान और नीचे ले [illegible] तब कुछ बर्मियोंने उनको नीचे [illegible] के लिये रास्ता दिया और वे [illegible] पड़े। उनसे रंगूनके एक [illegible] कहा कि एक जापानी अफसर औ[illegible] आदमी जो यहां रह गये थे, [illegible] रातको ही यहांसे चले गये हैं।" [illegible] मित्रसेना वहां जब उतरी, तब [illegible] विरोध करनेके लिये एक भी जापानी [illegible] रह गया था। खबर है कि वहां [illegible] मजबूत मोर्चे तैयार किये गये थे [illegible] मित्रसेनाको वे सब आदमियोंसे [illegible] किये हुए मिले हैं। इस तरह ज[illegible] एक ऐसे महत्वके स्थानको क्यों [illegible] कर गये, इस सम्बन्धमें इस सप्ताह [illegible] तरहकी अटकलें लगायी जायेंगी। [illegible] तो इससे यह समझेगा कि जैसे ज[illegible] बिना लड़े भिड़े ही फ्रांस, बेलजियम [illegible] खालीकर दिया था, वैसे ही अब [illegible] भी शायद बर्माको खाली करके [illegible] जानेका निश्चय कर चुके हैं और [illegible] उनकी स्थिति वहांपर अत्यन्त [illegible] बतायेगा। परंतु इस प्रकारकी कोरी [illegible] कल्पोंसे तबतक कोई लाभ नहीं, [illegible] निश्चित और प्रमाणित रूपसे जापा[illegible] का इरादा न मालूम हो सके। वह [illegible] करना अभी संभव नहीं, इसलिये [illegible] सेनाओंको जापानियोंसे वैसी ही [illegible] लड़ाई लड़नेके लिये तयार रहनेहीमें [illegible] मानी समझी जायेगी, जिसके [illegible] काफी प्रसिद्ध लाभ कर चुके हैं। [illegible] जापानियोंने चीनमें सैकड़ों मील [illegible] यातायात मार्ग अपने लिये सही [illegible] लड़ाईके बाद सुरक्षित बनाया [illegible] बिना लड़े ही बर्मा या अन्य भूभाग [illegible] कर चले जायेंगे, इसकी आशा [illegible] पायी जाती है।

अमेरिकाकी समाचार पत्र-स्वाधीनता

——:०:*:०:——

(लेखक—श्री सुरेश बी० ए०)

मानव कायाको स्वस्थ और शक्ति-सम्पन्न रखनेके लिये जिस प्रकार विशुद्ध भोजन, पेय और खुली हवामें नियमित व्यायामकी आवश्यकता है, उसी तरह अपटूडेट अभिज्ञताके लिये प्रतिदिन नियमित रूपसे समाचार पत्रोंका अध्ययन भी जरूरी है। इस बीसवीं सदीमें समाचार पत्रोंसे दूर रहनेका अर्थ है संसारके सब ताजा घटना क्रमसे अनभिज्ञ रह कूप मण्डूककी लोकोक्ति चरितार्थ करना। कोई ऐसा भी जमाना था जब समाचार पत्र मनोरंजनकी वस्तु समझा जाता था यही कारण है कि वहांकी तरह करोड़से कुछ अधिक आबादीके लिये ४॥ करोड़के लगभग केवल दैनिक पत्र निकलते हैं। कहनेका तात्पर्य यह है कि प्रत्येक ३ अमेरिकन १ समाचार पत्र अवश्य खरीदते और पढ़ते हैं। अमेरिकामें प्रातःकाल और अपराह्नमें दो बार दैनिक पत्र प्रकाशित होते हैं। तीसरे पहरके पत्रोंके ग्राहक प्रातःकालीन पत्रोंकी अपेक्षा दूने हैं। इसका कारण यह है कि आफिससे लौटते समय लोग रास्तेका सम्बल और घर पहुंचनेपर चायके साथका नमकीन, समाचार पत्रों

विशालकाय रोटरी प्रेसमें छपे हुए दैनिक समाचार पत्रकी प्रतियां पाठकोंमें वितरणके लिये प्रस्तुत हैं। (यू० एस० ओ० डबल्यू० आई०)

अमेरिकाके एक प्रमुख दैनिक पत्रके आफिसका दृश्य। सम्पादक मंडल प्रेसके लिये मसाला तैयार कर रहा है। (यू० एस० ओ० डबल्यू० आई०)

उसमें अधिकांशतः मनगढ़न्त गप्पें पाती थीं। इसीलिये स्वामी रामतीर्थने एक बार कहा था कि वे लोग कच्ची दुनियामें निवास करते हैं जो समाचार पत्रोंसे अलग रहते हैं। क्योंकि आजकी दुनियामें समाचार पत्रों का नियमित पाठ इतना आवश्यक है कि बिना उसके हम संसार-सागरको सफलतापूर्वक पार ही नहीं कर सकते। यही कारण है कि सवेरे आंख खुलते ही सबसे पहले हमारा ध्यान टेबुलपर पड़े दैनिक समाचार पत्रकी ओर आकृष्ट होता है और अगर किसी दिन उठते-उठते टेबुलपर पत्र नहीं मिलता, तो ऐसा मालूम होता मानो कोई चीज खो गयी है। अब तो लोग यहां तक कहने लगे हैं कि सवेरेकी चाय, धारोष्ण दूध और ताजे समाचार पत्र ये तीनों जबतक प्रत्येक घरमें नहीं पहुंचेंगे, तबतक घरके प्राणी वास्तविक अर्थमें स्वस्थ नहीं रह सकते।

अमेरिका वासी समाचार पत्रोंके बहुत शौकीन हैं। जबतक प्रत्येक व्यक्ति समाचार पत्र नहीं पढ़ लेता, उसकी नवीन-अभिज्ञताकी भूख मिटती ही नहीं। को ही बनाते हैं। आजसे एक शताब्दी पहले संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामें सिर्फ २५० दैनिक समाचार पत्र प्रकाशित होते थे और उनकी कुल प्रतियां ७ लाख छपती थीं। लेकिन १९०० ई० तक समाचारपत्रों की संख्या २ हजार और उनकी सम्मिलित कुल प्रतियोंकी संख्या १॥ करोड़ तक पहुंच गयी थी। अमेरिकन समाचार पत्र उद्योगके अधिकृत पत्र 'एडीटर एण्ड पब्लिशर' के अनुसार कुल दैनिक पत्र १,७८७ हैं, जिनमें ३४५ प्रातःकालीन और १,४४२ संध्याकालीन। इनके अलावा ४७४ रविवारी पत्र हैं जिनकी ३॥ करोड़ से अधिक प्रतियां प्रकाशित होती हैं। रविवारी पत्रोंके व्यापक प्रचलनका कारण है उनमें जानकारी और मनोरंजनके उपयुक्त सामग्री-वैचित्र्यका प्रधान। जिन रविवारी पत्रोंका कलेवर मोटा होता है, उनमें सिनेमा, बैंकिंग, अर्थ शास्त्र, खेल, व्यंग विनोद आदिके लिये एक दर्जनसे अधिक पृष्ठ व्यवहृत होते हैं।

साप्ताहिक पत्रोंमें कमी

इधर ज्यों-ज्यों दैनिक समाचार पत्रोंकी संख्यामें वृद्धि हुई है, साप्ताहिक पत्रोंकी, जो किसी समय देशके कोने-कोनेमें समाचार विस्तारित करनेके लिये सर्वाधिक उपयुक्त साधन समझे जाते थे, काफी कमी हो गयी है। साप्ताहिक पत्रों की कमीके कई कारण हैं, जिनमें आवागमनके साधन—रेल, वायुयान, तीव्रगामी जहाज और तार विशेष रूपसे उल्लेखनीय हैं। इन साधनोंके द्वारा दैनिक समाचार पत्र अपने प्रकाशन स्थानसे दूर अवस्थित नगरोंमें भी शीघ्रातिशीघ्र पहुंच जाते हैं। दैनिक समाचार पत्रोंमें ताजासे ताजा समाचार अधिक मात्रामें रहनेके कारण पाठकोंकी अभिरुचि साप्ताहिककी अपेक्षा दैनिककी ओर अधिक होती है। यद्यपि इधर साप्ताहिक पत्रोंकी संख्या काफी कम हो गयी है, तथापि आज भी अमेरिकामें ६ हजारसे अधिक ऐसे पत्र प्रकाशित होते हैं और स्थानीय समाचारोंको निम्न समाजके करोड़ों व्यक्तियोंके पास पहुंचाते हैं। सभी प्रकाशित साप्ताहिकोंकी संयुक्त संख्या १ करोड़ ३० लाखके लगभग है।

विदेशी भाषाके पत्र

यों तो हरएक देशमें विदेशी भाषाके पत्र वहांकी विदेशी जनताके लिये प्रकाशित होते हैं, लेकिन अमेरिका इस मामलेमें सब देशोंसे एक कदम आगे है। वहां विदेशी भाषाके पत्रोंकी संख्या १३ सौसे भी अधिक है और इनमें अधिक अंश है साप्ताहिक पत्रोंका। दक्षिणी राज्योंमें स्पेनिश भाषाके पत्रोंकी अधिकता है जिनकी संख्या २५० है। उसके बाद फ्रेंचका नम्बर आता और वे हैं २००।

अमेरिकाके अधिकांश पत्र व्यक्तिगत मालिकोंके ही हैं। लेकिन गत पचीस वर्षोंके अन्दर कई समाचारपत्र दलोंका संगठन हुआ है। सबसे अधिक विख्यात दल स्क्रिपा-होवार्ड और हार्स्ट ग्रूप हैं। स्क्रिपा-होवार्डके अन्तर्गत १८ शहरोंसे २१ समाचार पत्र १९४३ में निकलते थे और हार्स्ट संस्थाके अन्तर्गत १४ शहरों से १६ दैनिक, अन्य दलोंके अन्तर्गत २ लेकर १ दर्जन तक समाचार पत्र प्रकाशित होते हैं।

प्रतिद्वंद्विताका बाजार गर्म

समाचार पत्र व्यवसायमें जोरदार

(शेष चौदहवें पृष्ठपर)

समाचार पत्रोंमें भेजनेके लिये युद्धमोर्चेपर तैयार किये गये फोटोका वितरण। (यू० एस० ओ० डबल्यू० आई०)

बिहारमें फिल्मके प्रदर्शन पर रोक

पटना ६जनवरी। बिहारके सरकारी गजटमें एक विज्ञप्ति द्वारा यह घोषणा की गयी है कि मेसर्स ट्वेनटियेथ सेन्चुरी फाक्स कारपोरेशन द्वारा निर्मित "यूथ इन क्राइसिस" नामक सिनेमा चित्र का प्रदर्शन बिहार प्रान्तके सिनेमा गृहोंमें न किया जाये। ए० प्रेस

२६५०) रुपये जुर्माना

मद्रास, ५ जनवरी। स्थानीय चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेटने ए० एम० गुलाम अली एण्ड कम्पनीके हुसेनअली, गुलाम अली तथा तीन हिस्सेदारोंपर बेजा मुनाफा लेकर लोहेकी चीजें बेचनेके कारण तीन मुकदमोंमें २६५०) जुर्माना किया है। यू०प्रेस

मेरी ऐतिहासिक सांचीकी यात्रा

ले०—श्री सच्चिदानन्द तिवारी बी० ए०

ब्राह्मण धर्मकी अवनत अवस्थाने हात्मा बुद्धको प्रगतिशील होनेका अव-र प्रदान किया। उन्होंने प्रस्तुतः धर्मके रुद्ध विद्रोहका झंडा खड़ा किया और नताके लिये एक सर्व-सुलभ धर्मकी व डाली। बुद्धके अनुयायियोंने घोर नों और अगम्य पर्वतोंकी चिन्ता न रके भूमंडल पर फैल गये। चिन्ता भी क्यों करते, उनके सम्मुख तो पवित्र दर्श उपस्थित था, उन महर्षियोंका सके लिये दुर्गम जंगल और पर्वत-ण्ड ही घर थे। बड़े-बड़े पार्थिव शोंने इसे अपना धर्म बनाया और नके प्रचारार्थ अनेक प्रयत्न किये। हाराज अशोकने तो अपना सारा जीवन उसके लिये समर्पित कर दिया। ऐसे नीपियोंके अदम्य उत्साह और निस्सीम ानके प्रमाण हमें पर्वत-खण्डोंके ऊपर या उनकी कन्दराओंमें स्तूप, चैत्य बिहारोंके रूपमें आज भी उपलब्ध ।

सांची ऐसी कलाओंका एक भग्न न्द्र है, जो आज भी हमें अपनी प्राचीन ानता एवं गौरवकी याद दिलाया करती । यह स्थान एक ऐसे शान्त वातावरणमें , अथवा यों कहिये कि बौद्ध मताव-म्बी साधुओंने अपने निवास तथा उपा-नाके लिये ऐसा स्थान चुना था जिसे ई भी न जान सके। यही कारण है हमें अधिकांश यात्रियोंके यात्रा-वर्णनों अनेक साहित्यिक ग्रन्थोंमें इस ानकी चर्चा तक नहीं मिलती। फह-न तथा हूवेन सांग-जैसे उत्साही चीनी द्ध बौद्ध यात्रियोंने भी, जिनकी भारत-त्राका एक मुख्य उद्देश्य बौद्ध तीर्थ ानों एवं बुद्ध सेवित बन तथा उपत्य-काओंका दर्शन करना ही था, उसका कोई लेख नहीं किया है। शायद इसका रण यह है कि सांचीकी बोधि गया, सार-थ तथा कुशी नगरकी भांति महात्मा द्धके जीवनकी किसी महान घटनासे म्बन्ध नहीं था।

सांचीका इतिहास यद्यपि प्राचीन है यापि उसके कोई प्रमाण नहीं मिलते। सका असली इतिहास महाराज अशोक ही शासन कालसे प्रकाशमें आता है र प्रायः अशोकके पश्चात् हजारों का इतिहास यहांपर उपलब्ध साम-ग्रियोंके आधार पर ज्ञात किया जा सकता । प्राचीन कालमें इसे सांचीके नामसे हीं पुकारते थे, क्योंकि यहांके उत्कीर्ण लेखोंमें हमें सांचीके स्थान पर 'काकनाद' लिखा हुआ मिलता है। सबसे प्राचीन ग्रन्थ जिसमें हमें इसका उल्लेख मिलता है, है 'महावंश'। किंतु इसमें भी सांची शब्दका व्यवहार न करके 'चेतियगिरि' का प्रयोग किया गया है। उक्त ग्रन्थमें लिखा है कि जब अशोक उज्जयिनीके शासक होकर आ रहे थे, तो उन्होंने विदिशा (आधुनिक-भेलसा) के एक सौदागरकी पुत्रीके साथ जिसका नाम 'देवी' था विवाह किया। इस रानीसे दो बच्चे पैदा हुए एक पुत्र और दूसरी पुत्री। पुत्रका नाम था महेन्द्र और पुत्रीका संघमित्रा। कहा जाता है कि जब पिताकी आज्ञासे महेन्द्र बौद्ध-धर्मका प्रचार करनेके लिये लंका जा रहे थे, तो उन्होंने चेतियगिरि पर अपनी मातासे भेंट की थी यह चेतिय-गिरि' आधुनिक सांची ही हो सकती है। चाहे ग्रन्थोंकी वर्णित कहानीमें सत्य-का अंश भले ही नगण्य हो। क्योंकि विदिशाके आस-पास जितने भी प्राचीन अवशेष हैं केवल इसी स्थानपर मौर्य-कालीन सामग्रियां प्राप्त हुई हैं और यहीं पर महाराज अशोकका एक स्तम्भ भी है। इस प्रकार सांचीकी प्राचीनतामें अब शंकाका कोई स्थान नहीं रह जाता है और यह भी सिद्ध हो जाता है कि अशोक को सांचीसे अत्यन्त प्रेम था।

आज कल सांची भूपाल राज्यमें अवस्थित है। सांचीकी पहाड़ी जिस पर प्राचीन अवशेष प्राप्त हुए हैं, ३०० फीटसे अधिक ऊंची नहीं है जिसके सबसे निम्न भाग पर सांचीका छोटा-सा ग्राम अव-स्थित है। पहाड़ी पर चढ़नेके लिये एक वक्र मार्ग जाता है जिसके किनारे लग-भग ५० फीटकी ऊंचाई पर एक जला-शय है। पहाड़ीके ऊपर एक बहुत बड़ा स्तूप है, जिसके चारों ओर चार प्रवेश द्वार हैं। पहाड़ी परकी सभी दर्शनीय चीजोंमें यह उत्कृष्टतम स्तूप है। इसके अतिरिक्त दो और भी स्तूप हैं जिनकी महत्ता इसके सम्मुख नगण्य हैं। केवल इतिहास और तत्कालीन कलाकी ही दृष्टि से वे महत्वपूर्ण हैं। यह स्तूप एक औंधे हुए कटोरेके आकारका है। दार्शनिक भाषामें इसका अर्थ यह है कि संसार औंधा हुआ है। स्तूपके ऊपर प्राचीनताके कारण प्रकृतिके प्रभावसे एक मोटी छाप पड़ गयी है किन्तु दक्षिण-पश्चिमकी ओर यह छाप हटा दी गयी है। इन १८२३ में कप्तान जान्सनने भीतरकी वस्तुओंका निरीक्षण करनेके लिये खोला था। स्तूप के चारों ओर एक ऊंची वहार दीवारी खड़ी की गयी है। जो कलाकी दृष्टिसे अनुपम है। इसी दीवालके चारों ओर ब्राह्मीलिपिमें इसके निर्माताओंके नाम अंकित हैं। ये नाम विभिन्न हैं जिससे ज्ञात होता है कि यह दीवाल विभिन्न समयमें विभिन्न व्यक्तियों द्वारा निर्मित की गयी होगा। इसी दीवालपर पूर्व प्रवेशद्वारके दक्षिणकी ओर महाराज चन्द्र-गुप्त 'विक्रमादित्य' का एक लेख भी अभिकीर्ण है।

स्तूपके निर्माणकालके सम्बंधमें अनेक विचार शलियां हैं। पहले अधिकांश विद्वानोंका यह मत था कि इसे महाराज अशोकने बनवाया था किन्तु अब यह विचार अमान्य घोषित हो चुका है। आज कल विद्वानोंका ऐसा मत है कि अशोकने जिस स्तूपको बनवाया था वह आकारमें प्रायः इसका आधार था और उनकी मृत्यु के प्रायः एक शताब्दी पश्चात् यह स्तूप वर्तमान आकारमें आया। इसके चारों ओर स्थित प्रवेशद्वार तो प्रायः अशोक की मृत्युके ३ शताब्दी पश्चात ही निर्मित हुए। क्योंकि दक्षिणके द्वारपर श्री सात-कर्णीका एक लेख हैं।

प्रथम प्रवेशद्वार उत्तर है—यह द्वार अन्य द्वारोंसे अधिक 'सुन्दर और विशिष्ट है। इसके ऊपर मध्यमें चार हाथियोंके ऊपर एक वृताकार पत्थर खड़ा किया गया है जो बीचमें खुला हुआ है। मध्ययुगमें धर्मान्ध मुस-लमानोंने इसे तोड़ डाला था जिसके फल-स्वरूप अब यह अर्द्ध वृतके ही रूपमें खड़ा है। यह महात्मा बुद्धके 'धर्म-चक्रप्रवर्तन' का प्रतीक है। इसके दायीं ओर एक आदमीकी प्रतिमा खड़ी की गयी है। बायीं ओर भी ऐसी ही एक [illegible] खड़ी की गयी होगी जिसे मुसलमानोंने तोड़ डाला है। इस फाटकके सर्वोच्च पटरीके दोनों किनारोंपर विपरीत दिशामें मुख हुए दो सिंह बिठलाये गये हैं। इस पटरी पर सामनेकी ओरसे महात्मा बुद्धके पिछले सात अवतार ५ स्तूप तथा दो शालवृक्षों द्वारा अंकित किये गये हैं।

पूर्वद्वार-सबसे ऊंची पटरीपर पिछले ७ बुद्ध अवतारोंको दिखाया गया है। पहले और सातवें बुद्धको बोधिवृक्ष द्वारा जिसके नीचे राजगद्दी बनायी गयी हैं, अङ्कित किया गया है। शेष पांच बुद्धको स्तूपों द्वारा दिखाया गया है। बीचकी पटरीपर "महाभिनिष्क्रमण" का चित्र उपस्थित किया गया है। गौतम कपिलवस्तुके राज-महलके मुख्य द्वारसे निकल रहे हैं। सबसे प्रथम उनका प्रिय अश्व 'कठक' निकलता हुआ दिखाया गया है। देवता-गण भी साथ-साथ दिखाये गये हैं। तीसरी पटरीपर 'सम्बोधिवृक्ष' के पास अशोककी यात्राका चित्र खींचा गया है। केन्द्रमें बुद्ध गयाका मन्दिर तथा बोधि-वृक्ष हैं, बायीं ओर उपासकों तथा गायकों का दल तथा दायीं ओर राज्यकर्मचारी और हाथीसे नीचे उतरते हुए महाराज अशोक और उनकी रानी तिष्परक्षिता को दिखलाया गया है। इस पटरीके दोनों किनारेपर मयूरके चित्र हैं जो प्रायः मौर्य साम्राज्यके राज्यचिन्हके द्योतक हैं।

दक्षिण द्वार—इसे १८८२-८३ ई० मेजर कोलनेजीर्णोद्धारके उपरान्त खड़ा कि था। उस समय कुछ असावधानीके कार इसकी पटरियोंका क्रम बिगड़ गया। स्तू मध्य भागपर चढ़कर इस द्वारकी कारी-गरीका अध्ययन भली भांति किया जा सकता है। सबसे ऊपरकी पटरी पर चार वृक्षोंके अग्रभागमें राजगद्दियां बन-वायी गयी है। इन चित्रोंसे पिछले ६ बुद्ध तथा महर्षि गौतम बुद्धका भान कराया गया है। दायीं ओरसे प्रथम वृक्ष पीपलका तथा द्वितीय बरगदका ज्ञात होता है, किन्तु अन्य कौनसे वृक्ष हैं, इसका ज्ञान अभी तक नहीं हो सका है। इसी पटरीपर श्री सातकर्णीका एक अभिकीर्ण लेख है।

पाश्चमद्वार, स्तूपके मध्य भागसे देखने परसबसे ऊंची पटरीपर कुशीनगरका [illegible] दि [illegible]। कुशीनगरका मल्ल सरदार महात्मा बुद्धका शव लेकर हाथी पर जा रहा। महलके सम्मुखका वृक्षकालका प्रतीत होता [illegible] शायद उसे दिखानेसे कलाकारका यह तात्पर्य है कि इसी सालके बागमें महात्मा बुद्धका देहान्त हुआ था। मध्यकी पटरीपर युद्ध का चित्रण है। सात अन्य मल्ल सरदार जिनके सिरोंपर छत्र दिखाया गया है, कुशीनगरके प्रवेश द्वार पर चढ़ते जा रहे भी। घेका अ श्री गणेश नहीं हुआ है

यों तो यह पहाड़ी प्रायः स्तूपों, तथा विहारोंसे भरी पड़ी हैं तथापि सर्वोत्कृष्ट चत्य जो आज भी दर्शकोंका मन मुग्ध कर लेतीं है, बड़े स्तूपके पूर्व और अवस्थित है। यहांपर एक मन्दिर अबभी भग्नावस्थामें खड़ा है जिसके भीतर छतमें कमलके चिन्ह अङ्कित किये गये हैं। मन्दिरमें महात्मा बुद्धकी विशाल मूर्ति अब भी खड़ी है। मूर्तिकी बनावटसे इसको हम गुप्त काल-का निर्माण कह सकते हैं। मन्दिरके बाहर एक छोटा-सा रम्य आंगन है। आंगनके दोनों ओर रहने योग्य घर रहे होंगे। क्योंकि यद्यपि सारी दीवाल गिर गयी है, तथापि उसकी नींव अबभी मौजूद है। ऐसा प्रतीत होता है कि अनेक बौद्ध भिक्षु पहले इसीमें निवास करते रहे होंगे।

इसी पहाड़ीपर प्राचीन भग्न मन्दिरों तथा स्तूपोंके बीच भूपाल राज्यने एक संग्रहालयका भवन बनवा रखा है जिससे वहांकी प्राप्त साम-ग्रियां सुरक्षित हैं किन्तु संग्रहालयका भवन सन्तोषजनक नहीं है। बहुत सी अमूल्य मूर्तियां बाहर पड़ी हुई हैं जिनका बरसात तथा आंधीसे कोई बचाव नहीं हो सका है। यह वह स्थान है जहां पर प्राचीन हिन्दू संस्कृतिके अव-शेष निहित हैं जिनके ऊपर परतन्त्रभारत अपनी गिरी हुई राजनीतिक अवस्थासे भी गर्व कर सकता है।

(ग्यारहवें पृष्ठका शेषांश)

वढ़ती चलनेके कारण अमेरिकन समाचारपत्र अपने पाठकोंका ध्यान आकृष्ट करनेके लिये अधिकसे अधिक आकर्षण प्रस्तुत करनेकी चेष्टा करते हैं। अपने संवाददाताओं तथा समाचार समितियों द्वारा प्रस्तुत ताजा समाचारोंको देनेकी चेष्टा तो करते ही हैं, साथ ही पाठकोंके मनोरंजन और ज्ञान वृद्धिका भी प्रयत्न करते हैं। समाचार और परम्परागत सम्पादकीय लेखोंके अलावा सम्पादक महोदय राजनीतिसे लेकर कुत्तेकी दौड़ तक पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। सामाजिक चित्र, व्यंग चित्र, हास-परिहास पाठकके सम्पादकके नामपत्र, व्यापार समाचार, स्त्रियों उपयोगी बातें, विशेषज्ञोंके कालमलेख आदि अन्य पाठ्य सामग्रियां एकत्र कर पत्रोंको खासा अजायबघर बना देनेकी चेष्टा की जाती है।

मुख पृष्ठका मसाला

अमेरिकन पत्राके मुखपृष्ठकीसजावट ब्रिटिश पत्रोंसे भिन्न होती है। इङ्गलैंडके टाइम्स और मैंचेस्टर गार्जियनके मुख पृष्ठपर विज्ञापन रहता है। लेकिन अमेरिकन पत्र सर्वाधिक महत्व पूर्ण समाचारोंको पूरे आठकालमके शीर्षकके साथ मुखपृष्ठपर प्रकाशित करते हैं। पूरे पृष्ठका शीर्षक प्रायः युद्ध सम्बन्धी सनसनीदार घटनाका होता है, तीन कालमका एक चित्र भी दिया जाता है, जिसमें यूरोपके पश्चिमी मोर्चे की किसी घटनाका दिग्दर्शन होता है। न्यूयार्क टाइम्स अमेरिकाके उन थोड़ेसे प्रमुख पत्रोंमें है, जो विविध विषयक स्तंभ बहुत कम देता है और अधिकांश स्थानोंकी पूर्ति केवल समाचारोंके द्वारा करता है। अन्य पत्र विविध स्तंभोंके मसाले अधिक देते हैं। कुछ पत्रोंके प्रमुख व्यक्तियों और घटना उनकी मनोरंजक ढंगसे सजावट होती है।

आजकल करीब-करीब सभी अमेरिकन समाचार पत्र युद्ध सम्बन्धी समाचारोंको अधिकसे अधिक स्थान देते हैं। 'युद्ध समाचार पहले' उनका 'मोटो' हो रहा है। प्रथम पृष्ठ तो उनका पूर्णतः युद्ध समाचारोंसे ही भरा रहता है। 'प्लेन-डीलर' नामक क्लीवलैंड-ओहियोका पत्र इसका खास उदाहरण है। साप्ताहिक समाचार पत्र युद्ध-सम्बन्धी समाचारोंको कमसे कम स्थान देते हैं। स्थानीय समाचारोंका प्राधान्य रहता है।

विज्ञापनका स्थान

समाचारपत्रोंके स्वावलम्बी होनेके लिये विज्ञापनकी आवश्यकता सर्वाधिक है। पाठकोंको आश्चर्य होगा कि ढाई आने मूल्यवाले पत्रकी ५ लाख कापियां बिकजाने परभी सम्पादन, छपाई आदि व्ययकी पूर्ति नहीं हो पाती। इसलिये सच पूछा जाय तो समाचार पत्रोंका अस्तित्व उनमें प्रकाशित विज्ञापनोंपर ही आश्रित है।

अमेरिकन पत्रोंका विकास भाषण स्वातंत्र्यके राष्ट्रीय परम्परापर बिना सरकारी सहायता, निर्देशन अथवा अन्य नियंत्रणोंके हुआ है। लेकिन शिष्टाचार सत्यता और सुरुचिका परित्याग नहीं किया जाता है। जानबूझकर अपने पाठकोंको गल्तफहमीमें रखनेवाले, दैनिक घटनाओंकी पूरी, सच्ची और सही रिपोर्ट देनेमें असमर्थ पत्र शीघ्र ही बदनामीका सेहरा बांध लेते हैं। अमेरिकन समाचार पत्र पाठक अपनी स्वतंत्र इच्छासे पत्रोंका चुनाव करते हैं। वे एक पत्रमें प्रकाशित संवादोंकी दूसरे पत्रके संवादोंसे तुलना करते हैं और इस बातका पता लगा लेते हैं कि सचाईका कहां गला घोंटा जाता है। पाठकोंके इस चुनाव-स्वातंत्र्यके परिणाम स्वरूप अमेरिकामें समाचारपत्र व्यवसाय अमेरिकन स्वातंत्र्य परम्परामें एक महत्त्व पूर्ण स्थान रखता हैं।

युद्ध प्रयासमें सहायता

विभिन्न युद्ध मोर्चों के घटना-विस्तार से सर्व साधारण जनताको अवगत रखनेके अलावा अमेरिकन समाचार पत्रोंका हाथ गृह मोर्चेकी कार्यवाहीको प्रोत्साहन देनेमें भी बहुत अधिक है। यह कार्य उन्होंने समाचारोंकी सही और शुद्ध रिपोर्ट प्रकाशित कर तथा युद्ध सम्बन्धी बांडोंकी बिक्रीके आन्दोलनमें लाखों डालर कीमतका स्थान देकर सम्पन्न किया है। रबड़ टायरों तथा पेट्रोलके उपयोगमें मितव्ययी बननेकी अपील करके भी वे युद्ध प्रयासमें बहुत अधिक सहायक हुए हैं और सशस्त्र सेनाओंमें भर्ती होनेके लिये रंगरूटोंको एकत्र करनेमें भी बहुत बड़ा काम किया है। इनके अलावा खाद्य रेशनिंग तेल और चर्बीके मितव्यय तथा रेडक्रासके रक्त बैंकमें भी बड़ी सहायता प्रदान की है। इन सारे कार्योंका एक मात्र उद्देश्य मित्र राष्ट्रोंको शीघ्र विजयी बनानेका है। सरकारी कार्यों और आंकड़ोंकी आलोचना करनेमें वे युद्ध कालमें भी स्वाधीन हैं। लेकिन जहां शत्रुसे सीधा सम्बन्ध रखने वाली बातें उपस्थित होती हैं, वहां प्रत्येक पत्र सम्पादक अपना सेंसर आप बन जाता।

व्यक्तिगत स्वार्थोंका बलिदान

युद्ध सम्बन्धी पूरी जानकारी अपने पाठकोंको प्राप्त करानेके ख्यालसे अमेरिकनपत्रोंने कुछ कालके लिये व्यक्तिगत उद्योगमें कुछ अंश तक बलिदान करनेकी प्रशंसनीय चेष्टा प्रदर्शित की है। युद्ध मोर्चेपर समाचार, फोटोग्राफ तथा अन्य मनोरंजक बातोंका संचय करने वाले संवाददाता सबको एक जगह संचित करते और सभी छोटे बड़े पत्रोंको बराबर-बराबर बांट देते हैं ताकि कोई अपनी आर्थिक असमर्थताके कारण घाटेमें नहीं रहे। भारतमें तो ऐसी उदार भावना शायद इस युगमें नहीं आ सकती यहांके अधिकांश पत्रोंका ध्येय केवल मात्र व्यापार है और एक पत्र अपने व्यक्तिगत उद्योगसे दूसरेको भूल कर भी लाभान्वित होने देनेकी बात नहीं सोचता। अमेरिकन समाचार पत्रोंने आपसमें ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि छोटेसे छोटे पत्रको भी कमसे कम वे युद्ध समाचार और फोटो प्राप्त हो सकें, जो बड़े पत्रोंको मिलते हैं। उनके ३५० संवाददाता आर्कटिक अंचलसे लेकर विषुवत अंचल तक समस्त युद्ध मोर्चोंपर फैले हुए हैं और अपनी आंखों देखी रिपोर्ट प्रकाशित कराते हैं। पराधीन भारतमें तो आंख और कानसे काम लेना बिल्कुल मुमानियत है। हम सब कुछ देख रहे हैं, लेकिन तब तक नहीं छाप सकते जब तक सेंसर न हो जाये। अमेरिकामें भी युद्ध कालमें सेंसर होता है, लेकिन साधारणतया वहांके समाचार पत्र असीम स्वाधीनताका उपभोग करते हैं और स्वाधीनता प्राप्त अमेरिकन समाचार पत्र विजयी होनेके लिये किये जाने युद्धको सहायता पहुंचानेमें महत्व पूर्ण भाग लेते हैं।

यूनियनोंका संगठन

अमेरिकन समाचार पत्र आफिसोंमें काम करने वाले लोग अपनी यूनियनें संगठित करने लगे हैं। सबसे पहले १९३० में यूनियन गठित की गयी। पहले श्रमजीवी पत्रकारोंका गिल्ड बनाया और बादमें औद्योगिक संस्था कांग्रेसमें शामिल कर दिया गया। गि का काम अपने सदस्योंके स्वार्थों स्थापना करना है। गिल्डका स बनना स्वेच्छा पर निर्भर है। फिर भी स्थानों पर यह नियम है कि नये चारी एक निश्चित समयके अन्दर सदस्य बन जायें। युद्धके पहले, कर्मचारियोंको ४० घण्टे काम पड़ता था। इसके अलावा काम पर निश्चित वेतनसे ड्योढ़े के हिस अतिरिक्त वेतन दिया जाता है। गिल्ड और पत्र सम्पादकों एवं संचा में कुछ दुराव उत्पन्न हुआ था अब बहुत अंशोंमें वह दुराव कम हो बहुतसे स्थानोंपर तो अभी गिल्ड नहीं हैं।

पत्रकारिता एक पेशा

अमेरिकामें पत्रकारिता एक पे विचारसे अपनायी जाती है। इस पत्रकारोंकी अवस्थामें काफी सुधार है। अनेक कालेजों और विश्व वि लयोंमें पत्रकार कलाकी शिक्षा दी है। पत्रकार कलामें बी० ए० और ए० तककी डिगरियां दी जाती हैं। सम्पन्न पत्रकारोंको पुरस्कार जाते हैं। इन पुरस्कारोंके कारण पत्र कला दिन दिन उन्नति करती जाती राजनीति, साहित्य आदि क्षेत्रोंमें काफी प्रगति की है।

कौन क्या कहता है

मानव धर्मकी पूजा करो

अखिल भारतीय सङ्गीत सम्मेलनके द्वितीय अधिवेशनमें सभापतिपदसे बोलते हुए सर सर्वपल्ली राधाकृष्णनने कहा कि प्रत्येक जाति, प्रत्येक राष्ट्र और प्रत्येक सम्प्रदायमें कलाकी अभिव्यक्तिके भिन्न-भिन्न तरीके हैं। कलाकी ये अभिव्यक्तियां हमें बराबर उन मोटी बातोंको भूल जानेका आदेश देती हैं जो जाति और वर्गके घेरेमें सीमित हैं। हमें जातियोंके रूपमें जीवित रहनेकी याद दिलायी जाती है किन्तु हम मनुष्य बने रहें यह भुलाया जाने लगा है। गीता भी सङ्गीतके ही रूपमें हमारे सामने आया हैं किन्तु उसमें भगवान कृष्णने हमें यह आदेश दिया है कि हम सदैव अपनी ओर देखें। हमें जातिका नहीं वरन अखण्ड मानवताका पुजारी होना चाहिये।

रूस साम्राज्यवादी राष्ट्र नहीं है

अमेरिकाके यूल विश्वविद्यालयके प्रोफेसर डेविसने, जो इस समय सेवाग्राममें हैं एक पत्रप्रतिनिधिके मुलाकातके सिलसिले में बताया कि यह समझना बिलकुल सही है कि नये आर्थिक साम्राज्यवादमें नेतृत्व-ग्रहण करनेके लिये अमेरिकन प्रयत्नशील हैं और चीन तथा विश्वके अन्य देशोंमें अपना बाजार कायम करना चाहते हैं। यह प्रश्न करनेपर कि क्या वर्तमान युद्धने सोवियट रूसको भी पूंजीवादी और साम्राज्यवादी मनोवृत्तिका पोषक बनाया है। मि० डेविसने कहा कि रूसने अपने अनेक पड़ोसियोंको साम्राज्यवादी कार्यवाहीमें सम्मिलित होनेसे इनकार कर दिया है। इसलिये हृदयसे उसे साम्राज्यवादी राष्ट्र नहीं कहा जा सकता।

विज्ञान मानव हितका साधन है

भारतीय विज्ञान कांग्रेस संघके ३२ वें अधिवेशनमें अध्यक्ष पदसे बोलते हुए श्री एम० एन० बोसने कहा कि विज्ञान मानव समुन्नतिके मार्गमें अत्यन्त महत्वपूर्ण पार्ट अदा कर सकता है और करेगा भी। जबतक विज्ञानको मानव कल्याणके लिये नयी सम्भावनाओं और नये मार्गों के ढूंढ़नेका अवसर नहीं प्रदान किया जायेगा, तबतक आजकी अपेक्षा अधिक उन्नत और समृद्ध विश्व नहीं बन सकता। आज तो विज्ञानका उपयोग मानव कल्याण और राष्ट्रीय उत्थानके लिये होना चाहिये था। किन्तु वर्तमान कालमें इससे उसका सर्वथा प्रतिकूल उपयोग किया जा रहा है। विज्ञानने न केवल शस्त्रास्त्रों और औद्योगिक औजारोंको उन्नत बनानेमें ही सहयोग प्रदान किया है बलिक सङ्कटके दिनोंमें उद्योग और कृषिको सहायता प्रदान कर मौलिक मानव आवश्यकताओंकी पूर्ति भी की है।

समान बन्धुत्वकी मांग

ब्रिटिश सरकारके विमान उत्पादन विभागके मन्त्री सर स्टफर्ड क्रिप्सने एक सभामें भाषण करते हुए कहा कि युद्ध बाद जर्मन जनताके साथ मानव समाज के बन्धुत्वका व्यवहार होना चाहिये। ईसाई सिद्धान्तोंके प्रति अपने विचार बताते हुए सर स्टैफर्ड क्रिप्सने कहा कि जर्मन जनतासे प्रतिशोध नहीं लेना चाहिये लेकिन पड़ोसके देशोंके रक्षार्थ उनकी युद्ध सम्बन्धी महत्वपूर्ण वस्तुओं एवं शस्त्रादि पर नियन्त्रण युरोपमें सीमाओंका पुनः निर्धारण तथा युद्धके अपराधियोंको पुनः दण्डित करना चाहिये।

एकके विरुद्ध दूसरेको लड़ाना

अमेरिकाकी इण्डिया लीग द्वारा आयोजित सभामें भाषण देते हुए श्रीमती विजयलक्ष्मी पाण्डितने कहा कि भारतकी विभिन्न जातियोंके बीच चाहे जो भी मतभेद क्यों न हो वह तबतक दूर नहीं हो सकता जबतक कि भारतमें ब्रिटिश शासन कायम है। अपने भाषणके दौरान में आपने आगे चलकर कहा कि अभीतक ब्रिटिश एकको विरुद्ध दूसरी जातिको लड़ानेमें सफल हुए हैं। अब हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच मतभेदमें वृद्धिके प्रति सन्तोष प्रकट करते हुए वे दलित जातियोंकी ओर ध्यान आकृष्ट कर देशमें मतभेद और फूट पैदा कर रही है।

भारत और ब्रिटेनमें समानता

भूतपूर्व कांग्रेसी मिनिस्टर तथा मजदूर नेता श्री वी० वी०गिरिने एक वक्तव्य प्रकाशित कर यह विचार प्रकट किया है कि समानताके आधारपर की गयी ब्रिटेन और भारतकी सन्धिसे भारतकी सच्ची मैत्री ब्रिटेन प्राप्त कर सकता है। आपने आगे कहा कि भारतीयोंको राजनीति सिखानेकी नीति और प्रधान प्रश्नको टालनेके कार्यसे भारतीय धोखा नहीं खा सकते और अब ब्रिटिश अधिकारी उसे आशाओंपर सन्तुष्ट नहीं रख सकते। कांग्रेस कार्य समितिके सदस्योंकी बिना शर्त अविलम्ब मुक्ति ही भारतकी समस्या को हल कर सकता है क्योंकि वे ही इस ओर सहायक हो सकते हैं।

महिलाएं सङ्गठित हो जायं

अखिल भारतीय महिला सम्मेलनके सदस्योंकी सभामें भाषण देते हुए श्रीमती सरोजनी नायडूने कहा कि आप लोगोंको रोमांरोलाका यह स्मरणीय कथन कि "मानवा एक है" सर्वदा याद रखना चाहिये। तभी आप यह कहनेके काबिल हो सकती हैं कि मैं सच्ची कार्यकत्री हूं। जीवनके सभी क्षेत्रोंमें यह देखा गया है कि अवसर जल्दी हाथ नहीं आता और यह बात कम या अधिक विश्वके प्रत्येक देशमें पायी जाती है कि महिलाओंको अवसर नहीं मिल पाता। यह हमारी लापरवाहीका नतीजा है कि हमसे हमारे अधिकार छीन लिये गये हैं। निरक्षरताके सम्बन्धमें बोलते हुए श्रीमती नायडूने कहा कहा कि निरक्षरता निवारण अत्यन्त आवश्यक है। व्यक्तिगत रूपसे हमें पांच या छः स्त्री और बच्चोंको पढ़ानेकी प्रतिज्ञा करनी चाहिये। भाषणमें अन्तमें आपने कहा कि हमें उदार होना चाहिये। हमारी सामाजिक चेतनाका जहांतक प्रश्न है मरते दुरकी मदद करनेकी कोई सीमा नहीं होनी चाहिये। अपने जीवनमें व्यापक दृष्टिकोण रखनेपर ही यह सम्भव होगा कि आपका सङ्गठन भारतीय महिला मात्रकी वास्तवमें प्रतिनिधि संस्था हो। अब वह समय आ गया है जब कि वर्ग सङ्गठनका खातमा हो जाना चाहिये तथा अपनी संस्थाको सच्चे भावमें लोक संगठनका रूप देना चाहिये।

जापानी अन्ततक लड़ेंगे

प्रशान्तके मित्र कमाण्डर इन-चीफ एडमिरल चेस्टर निमिट्सने ऐलान किया कि मैं जापानके विरुद्ध युद्धमें रूसके भाग लेनेका सहर्ष स्वागत करूंगा। हमें शांति स्थापनाके लिये जापानके अधिकांश भाग पर अधिकार करना पड़ेगा। एडमिरल निमिट्सने भविष्यवाणी करते हुए कहा कि जापानके लिये १९४५ दुःखद और हानिप्रद होगा। जहाजोंकी क्षति और हवाई हमलेमें वृद्धि होगी। फिर भी जापानी अपने अन्तिम दमतक युद्ध करेंगे।

युद्ध और जर्मन राष्ट्र

जर्मन जनताके नाम नये वर्षके उपलक्षमें सन्देश ब्राडकास्ट करते हुए डा० गोयबेल्सने कहा कि १९४४ में मानव एक वास्तविक दुःखद घटनामें अपनेको पाता है। इसी वर्ष जर्मनीपर महान संकट आया जो कि अन्य किसी भी राष्ट्रको गिरा सकता था। यदि उस वर्ष ने हमें हतोत्साहित नहीं किया तो अब वह हमें क्या हिला सकता है।

मि० एम० एन०रायको साठ हजार

दिल्ली 'रियासत' में प्रकाशित समाचारसे मालूम हुआ है कि मि०एम० एन० रायने दो दैनिक पत्र निकालनेका निश्चय किया है। कहा जाता है कि सरकार उन दोनों नये पत्रोंको २५हजार वार्षिक देगी। अभी मि०एम०एन०रायके पत्र 'वेन गार्ड' को सरकारकी ओरसे वार्षिक ३५ हजार मिलता है। अब कुल मिलाकर ६० हजार वार्षिक मिलेगा।

साहित्यिकोंका कर्तव्य

श्रीमती सरोजिनी नायडूने लेखकों के नाम नये वर्षका सन्देश देते हुए कहा कि मैं साहित्यिकोंको स्मरण दिलाती हूं कि वस्तुतः लेखनी कई सेनाओंके सैनिकों की तलवारसे भी अधिक शक्तिशाली है। मैंने एक सप्ताह पूर्व शांतिनिकेतनके एक समारोहमें कहा था कि कुछ वर्ष पूर्व न्यूयार्कमें सीरिया निवासी कवि खलील जिब्रानने एक प्राचीन अरब उपदेशका उद्धरण देते हुए मुझसे कहा था कि "कवि भगवानके बनाते हुए विश्वका आधार है। कवि शब्दसे मेरा अभिप्राय उन सब लोगों से है जो अभिव्यक्तसे मध्यमसे चलते हैं। हमें नये वर्षका स्वागत सर्वव्यापी और प्रिय भावोंके द्वारा संसारकी सेवासे करना चाहिये।

किसान सभा व कांग्रेस

अखिल भारतीय किसान सभाके अध्यक्ष स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने कांग्रेस तथा किसान सभा सम्बन्धी प्रश्नपर अपने विचार प्रकट किये हैं। आपने इस कथनका खण्डन किया है कि किसान सभा साम्यवादी नेताओंके सहारे है अथवा कांग्रेस या राष्ट्रीयताका विरोधी है। किसानोंके हितार्थ किसान सभामें शामिल होकर कार्य करनेके किसी भी दलके निश्चयका स्वागत किया गया है लेकिन साथही किसी प्रतिद्वन्द्वी किसान सभाके गठनके विचारका प्रतिवाद किया गया है।

विजयके लिये संगठन

लन्दनके मजदूर संघमें भाषण करते हुए श्री डांगे कहा कि जापानके विरुद्ध लड़नेके लिये सुदूरपूर्वीय देशोंकी जनता जनता तथा साधनोंका पूरा उपयोग होना चाहिये। यह कार्य भावी विश्वयोजनाकी ओर पहला कदम होगा। आपने और कहा कि सुदूरपूर्वमें यदि इस प्रकारकी नीतिपर अमल किया जाय तो जापानको अधिक शीघ्रतासे पराजित किया जा सकता है। गुलाम देशकी जनतासे प्रजातन्त्रके आधारपर समझौता होना चाहिये तथा उन देशोंका पुनर्सङ्गठन करना चाहिये। इसीसे विजय और विश्व-समृद्धि प्राप्त होगी।

चीनमें राजनीतिक परिवर्तन

युनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधिके मिलनेपर मि० आई० एप्सटीनने जो एक पत्रकार हैं और अभी चीनसे भारत आये हैं कहा कि वर्तमान चीनी सरकारपर कोमितांगका पूर्ण नियन्त्रण है और गणतन्त्रका जो भी अर्थ लगाया जाय— वहांकी सरकार गणतन्त्रात्मक नहीं बतायी जा सकती। सभी पहलुओंसे विचार करनेसे यह पता चलता है कि जिस रूपमें वर्तमान सरकार गठित हुई है उससे स्थितिमें सुधारकी कोई आशा नहीं है।

स्वदेश-वार्ता

राष्ट्रीय मुसलिम सम्मेलन

लाहौरके संवादसे ज्ञात हुआ है कि जनवरीके मध्यमें पंजाबके सभी राष्ट्रीय मुसलमानोंकी एक परामर्श सभा होने वाली है जिसमें कांग्रसी मुसलमान, जमायत उलेमाके सदस्य तथा नजरबन्द मौलाना हबीबुर्रहमानके नेतृत्वको माननेवाले कांग्रेस पक्षका समर्थन मजलिस अहरारका एक दल शामिल होगा। हिन्दू-मुसलिम एकता तथा स्वतन्त्रता प्राप्त करने पर विचार किया जायगा। इस सम्मेलन के बाद फरवरीमें पंजाबके सभी राष्ट्रीय मुसलमानोंका एक सम्मेलन बुलाया जायेगा।

उत्कलमें राष्ट्रभाषा प्रचार

उत्कल प्रांतीय राष्ट्रभाषा प्रचार भाषा का १२ वां वार्षिकोत्सव कलकत्तेके मेयर श्री आनन्दीलाल पोद्दारकी अध्यक्षतामें आगामी १३ जनवरीको कटकमें होगा।

भेंट नहीं करेंगे

अखिल भारतीय फार्वर्डब्लाकके मंत्री लाला शंकरलालने अपनी पत्नी श्रीमती मश्रोको तार द्वारा सूचित किया है कि वह उनसे मिलने न आये क्योंकि जबतक के मुल्लाकातियोंकी तलाशी लेनेकी पाबन्दी नहीं हटेगी वे किसीसे भी भेंट नहीं करेंगे। लाल शंकरलाल आजकल श्री शरतचन्द्रबोसके साथ कुर्गमें नजरबन्द हैं।

महिला विद्यापीठका दान

प्रयाग महिला विद्यापीठकी आचार्या तथा प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्माने 'बङ्ग दर्शन' नामक जो पुस्तक बंगालके सहायतार्थ सम्पादित की है, उसकी बिक्री तथा 'बंगाल दिवस' पर अध्यापिकाओं एवं छात्राओं द्वारा संग्रहीत धन बंगाल भेजा गया है।

रिश्वतखोर अफसर बर्खास्त

गत अक्तूबर मासमें जनरल कोर्ट मार्शलका जो विचार कार्य आरम्भ हुआ था उसमें मेजर ई० ई० एस० ह -न० फौजी अफसरोंसे रिश्वत लेनेके १३ विभिन्न अपराधोंके लिये २ वर्षका कठिन कारावासका दण्ड दिया। मेजर हनेटको बर्खास्त भी कर दिया गया है।

कहा जाता है कि विभिन्न मातहत अफसरों और कर्मचारियोंसे उनकी पदोन्नति कर या भारतमें अनुकूल स्थानपर बदली कर देनेके पुरस्कार स्वरूप मेजर हनेट रिश्वत लिया करते थे।

हिन्दुस्तान' को आज्ञा

लखनऊके विश्वस्त सूत्रसे ज्ञात हुआ है कि भारत सरकारने अंग्रेजीसाप्ताहिक हिन्दुस्तान'के प्रकाशनकी आज्ञा देदी है। यह पत्र प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता श्रीगोपीनाथ श्रीवास्तवका है।

युक्तप्रांतीय मुसलिम लीगमें फूट

कानपुर शहर मुसलिमके अध्यक्ष मि० मोहम्मद याकूबने मि०जिन्नासे अपील की है कि वे युक्तप्रांतीय मुसलिम लीगके मामलेमें हस्तक्षेप करें और उसमें फूट पैदा होनेसे रोकनेके लिये एक जांचकमेटी नियुक्त करें।

समुद्री कर्मचारियोंकी सभा

नयी दिल्लीसे समाचार मिला है कि संसारमें जहाजी बेड़ामें काम करने वाले भारतीयोंकी संख्या तृतीय है और अपेक्षाकृत उनका वेतन सबसे कम है। इस सम्बन्धमें अभी हालमें जो दो सम्मेलन हुये उनकी सिफारिशोंको व्यवहारमें लाने के प्रश्नपर भारत सरकार विचार कर रही है।

३५ हजारटन गेहूं विदेशसेआया

नयी दिल्लीके संवादसे विदित हुआ है कि गत ३० दिसम्बरको समाप्त होने वाले सप्ताहमें ३५हजार टन गेहूं विदेशसे भारत पहुंचा है।

अकयाब द्वीपपर कब्जा

मायू प्रामोप सागरसे जापानी हटे

गत शुक्रवारको दक्षिण पूर्व एशिया कमाण्डके सदर मुकामसे जारी की गयी विज्ञप्ति इस प्रकार है ३ जनवरीको प्रातःकाल हमारे सैनिक अकयाब द्वीप पर उतर पड़े। तीन तरफसे उतारी गयी सेनासे मुकाबला करनेवाला कोई नहीं था। द्वीप हमारे अधिकारमें है। सम्पूर्ण मायू प्रामोपसागर जापानियोंसे खाली हो गया।

सप्रू कमेटीके नये सदस्य

दीवान बहादुर रामस्वामी सी० आई० ई० वायसचांसलर अनामलाया विश्व विद्यालयने सप्रू कमेटीकी सदस्यता स्वीकार करली है वे सप्रू कमेटीके २७ वें सदस्य हैं।

नये वायस चांसलर

पटनाका समाचार है कि विहार नेशनल वार फ्रण्टके नेता श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद नारायण सिंहने पहली जनवरी १९४५ से पटना विश्वविद्यालयके वायस चेयरमैनका पद ग्रहण कर लिया। भूतपूर्व वायस चांसलर डाक्टर सच्चिदानन्द सिन्हा एक्समसकी छुट्टियोंमें प्रयाग चले गये थे। कहते हैं कि आपने वहींसे तार द्वारा चार्ज दे दिया।

गर्भ नियंत्रण आवश्यक

दिल्ली गर्भ नियन्त्रण लीगके मंत्री ने मिडिल स्कूलमें एक व्याख्यान देते हुए कहा कि आबादीकी वृद्धि ही लड़ाईका कारण है। इन्होंने कहा कि गरीबीसे छुटकारा पानेके हरेक उद्योग असफल रहे। गर्भ नियण्त्रण ही दरिद्रतासे छुटकारा दिला सकता है। आधुनिक युगमें परिवारोंकी संख्या कम होनी चाहिये और इसके लिये गर्भ नियन्त्रण आवश्यक है।

अनुग्रह बाबू वर्धा जायेंगे

पटनाके संवादसे ज्ञात हुआ है इसी महीनेके तीसरे सप्ताहमें बिहार भूतपूर्व अर्थ मन्त्री श्री अनुग्रहनारायण सिंह रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी ... पर महात्मा गांधीसे परामर्शके लिये जायेंगे।

श्री भूलाभाई बापूसे मिले

श्री भूलाभाईने महात्मा गांधीसे मुलाकात की और एक घण्टेतक बातचीत करते रहे। कहते हैं कि बातचात ... थी।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

लुबलिन सरकार बन गयी

पोलैंडको मुक्त करनेके लिये लुबलिनमें
लिश देश भक्तोंकी जो कमेटी थी और
० मोरावस्की जिसके सभापति थे उसे
ब मुक्त और स्वतन्त्र पोलैंडकी अस्थायी
रकार घोषित कर दिया गया है। सोवियट
रकारने मो० मोरावस्कीकी इस अस्थायी
लिश सरकारको ही पोलैंडकी कानूनी
रकार मान लिया है। लुबलिन सरकार-
घोषित की है कि लन्दन स्थित भगोड़ी
लिशको दी गयी आर्थिक सहायता अथवा
न्य प्रकारके आर्थिक उत्तरदायित्व न
वीकार किये जायेंगे।

यूनानकी नयी सरकार

यूनानके शाह जार्ज द्वारा नियुक्त राज-
तिनिधि (एजेण्ट) आर्क विशप डमास्किनो
अधिकार पाकर जेनरल प्लेस्टिराने यूनान
ी नयी सरकार बनायी है। इस नवीन
न्त्रिमण्डलमें सात मिनिस्टर हैं। इसे निर्दल
मासिजी मन्त्रिमण्डल कहा जा सकता है

ापानसे तुर्कीका सम्बन्ध विच्छेद

कहा जाता है कि संयुक्तराज्य अमेरिका
सुझाव और ब्रिटेनके समर्थनके अनुसार
की सरकारने जापानसे अपना कूटनीतिक
स्बन्ध विच्छेद कर लिया है। इसी आधार
यह कहा जाता है कि यह सम्बन्ध-
च्छेद युद्धकी स्थितिमें परिणत होगा या
ीं यह उक्त दोनों मित्रराष्ट्रोंकी इच्छा पर
निर्भर करता है।

ंगरीसे युद्धविराम सन्धि

युद्ध विराम सन्धिकी शर्तें प्राप्त करनेकी
िसे एक हङ्गेरियन डेपुटेशन मास्को गया
ब्रिटिश और अमेरिकन प्रतिनिधियोंके साथ
तोंपर विचार हो रहा है।

४५ लाख नाजी हताहत

मास्को रेडियोने बतलाया है कि गत वर्ष
में जर्मन ४५ लाख हताहत और बन्दी हुए
। बताया है कि ३० लाख मरे अथवा
ाहत हुए और १५६३००० आदमी बन्दी
नाये गये हैं। गत वर्ष जर्मनीसे ६ गुना
धिक भू-प्रदेश जर्मन अधिकारसे बाहर
िकल गया।

हिटलर सचमुच एक रहस्य

लन्दनके 'डेलीएक्सप्रेस' नामक समाचार
त्रने २० जुलाईके पहले जिस दिन हिटलरकी
त्याकी चेष्टा की गयी थी और बादमें लिये
ये हिटलरके चित्रोंमें हिटलरके एक कानका
ार्थक्य दिखाते हुए यह साबित किया है
क हिटलर मर गया है। वही पत्र अब कहता
कि यदि जर्मनोंने मनुष्य विहीन हिटलरकी
ावाज पैदा की हो तो यह उसी तरह कोई
ाश्चर्यकी बात नहीं है जिस तरह मनुष्य
विहीन उड़न बम।

रूजवेल्ट-चर्चिल पहले

मालूम हुआ है कि स्टालिनसे मिलनेके पहले प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट और मि० चर्चिल मिलेंगे।

ब्रिटेनमें चोर बाजार

आतङ्कवादी आन्दोलनका दमन करनेमें प्रसिद्धि पाये हुए कलकत्तेके पुलिस कमिश्नर सर चार्ल्स टेगार्टको ब्रिटेनमें चोर बाजारका अन्त करनेका भार सौंपा गया है। लन्दन 'डेलीमेल' पत्र कहता है कि ब्रिटेनमें चोर बाजार राष्ट्रीय कलङ्क हो रहा है। चोर बाजार चलानेवाले बड़े-बड़े सदोरोंमें पुराने शेयरका काम करनेवाले लोग हैं। सरकारने १० पौण्डसे ऊपरके बैंक नोटोंको कानूनी टेण्डर न माननेकी घोषणा कर दी है। फल-स्वरूप इस कठिनाईको दूर करनेके लिये चोर बाजारवालोंने अपनी 'नयी करेंसी' खोल दी है। उनका सब काम हीरोंके माध्यमसे होता है। डेलीमेलका कहना है कि प्रत्येक चोर-बाजारवाला हीरे लेकर चलता है ये हीरे अधिकतर चोरीके हैं।

लार्ड लिस्टोवेलकी चेष्टा

भारतके नये उपमन्त्री लार्ड लिस्टोवेल कांग्रेसके नेताओंकी मुक्तिके लिये जबर्दस्त कोशिश कर रहे हैं। वे समझते हैं कि भारतीय राजनीतिक गति अवरोध मिटानेकी पहली सीढ़ी कांग्रेस नेताओंकी मुक्ति है।

५० महिलाओंकी हत्या

नीली चिड़ियाके नामसे मशहूर फ्रेञ्च-मार्शल पेटियटने पेरिसकी अदालतमें यह इकबाल किया है कि मैंने अपने घरमें ५० स्त्रियों की हत्या करके उनकी लाशोंको भट्टीमें डाल कर जला डाला।

३५७२७२ हवाई हमले

अमेरिकन विमान वाहिनीके विमानोंने १९४४ में जर्मनीपर आकाशसे हमला करनेके लिये ३ लाख ५७ हजार २७२ उड़ानें भरीं। इन उड़ानोंमें प्रायः ९ अरब पौण्ड बम जर्मन उद्योग क्षेत्रों, सेनाओं और यातायातके मार्गों और साधनों पर फेंके गये। ७ हजारसे अधिक जर्मन विमान नष्ट किये गये। इनमें उन विमानोंकी संख्या नहीं है जो हवाई अड्डोंपर नष्ट हुए हैं। लड़ाके विमानोंके चालकोंने ३८९९ जर्मन विमानों को धराशायी किया और जमीन पर १०४४ विमानोंको नष्ट किया। बमबाजोंके तोपचियोंने २२३४ को धराशायी बनाया। अमेरिका विमान वाहिनीके २६३२ बमबाज और १४४६ लड़ाके विमान नष्ट हुए।

लीटमें ११७९९७ जापानी मरे

जेनरल मेकार्थरके सदर मुकामसे यह विज्ञप्ति निकली है कि लीटमें १ लाख १७ हजार ९९७ जापानी मरे हैं।

वांग चिंगका उत्तराधिकारी

वांग चिंग वीका उत्तराधिकारी उत्तर चीनमें जापान द्वारा प्रवर्त्तित सरकारमें परिवर्तनकी अफवाह है। संभावना है कि सरकारके प्रधान वांग केन मिन स्वर्गीय वांग-चिंग वीके स्थान पर 'राष्ट्रपति' बनें।

पत्र जगतमें फिर दो विस्फोट

अमेरिकाके मशहूर पत्रकार ड्रू पियर्सनने गत सप्ताह फिर दो सनसनी खेज भण्डाफोड़ किये हैं। पहला तो ब्रिटिश राजदूत लार्ड हेलिफेक्स द्वारा अमेरिकन सरकारके स्टेट-डिपार्टमेंटकोसके पास भेजा गया वह पत्र है जिसमें इटलीको अधिक मदद देनेके लिये अमेरिकन प्रस्तावका ब्रिटिश सरकारका विरोध है। दूसरा विस्फोट यह है कि यूनान के मामलेमें ब्रिटिश नीतिके सम्बन्धमें प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने मि० चर्चिलसे कैफियत तलब की है। कहते हैं कि इस सम्बन्धमें रूजवेल्ट-का एक केबुल इतना सख्त था कि चर्चिलने उसका उत्तर तक नहीं दिया। सुना जाता है कि इस तरहके प्रथम कोटिके कूटनीतिक भण्डाफोड़ करते रहनेके कारण ड्रू पियर्सनके खिलाफ अनुशासनकी कार्यवाही करनेकी बात सोची जा रही है।

लोयड जार्ज लार्ड हुए

गत विश्वयुद्ध विजेता ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्जने, जो ४५ वर्ष तक निरन्तर पार्लमेंटके सदस्य रहे, अब राजनीतिसे अवसर ग्रहण किया है। सम्राटने उनको अर्ल बना दिया है।

१ लाख ८० हजार सैनिक

मालूम हुआ है कि जर्मन सेनापति फील्ड मार्शल वान रु स्टेडने पश्चिमी मोर्चेपर जो प्रचण्ड आक्रमण किया है उसका सामना करनेके लिये बेलजियममें आरडेनीस रणञ्चलका सर्वाधिकार फील्ड मार्शल माण्ट गोमरीको सौंपा गया है। इस अञ्चलमें अमेरिकन जेनरल पैटनकी थर्ड आर्मीकी शक्ति ८ डिवीजन से बढ़ाकर १२ कर दी गयी है। अमेरिकन डिवीजन १५ हजारका होता है।

रोम्यां रोलांका स्वर्गवास

भारत हितैषी सुप्रसिद्ध फ्रेञ्च साहित्यकार और दार्शनिक मो० रोम्यां रोलांका देहान्त हो गया। आप महात्मा गांधी और रामकृष्ण परमहंसके जीवन पर प्रकाश डालने वाली पुस्तकें लिखकर भारतका सन्देश पाश्चात्य जगतके पास पहुंचाया है।

मध्यपूर्वको निर्यात

मालूम हुआ है कि मध्यपूर्वको निर्यात के सम्बन्धमें लगाये गये युद्ध कालीन नियन्त्रण ढीले करनेके महत्वपूर्ण प्रश्नपर लन्दन और वाशिंगटनमें विचार हो रहा है।

रूसकी मददका स्वागत

प्रशान्त जलसेनाके अमेरिकन कमाण्डर इनचीफ एडमिरल चेस्टर निमिजने एक प्रेस कानफरेंसमें कहा कि प्रशान्त अञ्चलमें जापानके खिलाफ युद्धमें यदि रूस शामिल हो तो मैं रूसके इस सहयोगका हृदयसे स्वागत करूंगा।

अमेरिकामें नाजी एजेण्ट गिरफ्तार

फीडरल ब्यूरो इनवेस्टिगेशनके चीफ मि० एडगर हूवरने घोषित किया है कि दो व्यक्ति, जो जर्मन एजेण्ट बताये जाते हैं और २९ नवम्बरको यू-बोटसे मेइनके तटपर उतरे थे, गिरफ्तार कर लिये गये। गिरफ्तार व्यक्तियोंके पास ५७ हजार डालर, एक एक रेडियो, खास तरहकी स्याही और कई जाली कागजात मिले। एक अमेरिकन नागरिक है, जिसके पास कनेक्टीकटका जन्म प्रमाण-पत्र है। दूसरा जर्मन है। दोनों यू बोटसे एक रबड़ बोट द्वारा उतरे और बोस्टनमें कुछ दिन रह कर न्यूयार्क पहुंचे। दोनों के पास भरा पिस्तौल था। मि० हूवरने कहा कि १९४२ में आठ नाजी एजेण्टों-के प्रयत्नके बाद हमारी भीतरी किलेबन्दीके भीतर घुसनेके अन्य प्रयास नाजियों द्वारा हुए हैं।

हिटलरके निवासमें आग लगी

जर्मनोंके नाम नव वर्षका सन्देश हिटलरके दे चुकनेके थोड़ी देर बाद ही बरशेसगाडेन स्थित हिटलरके पार्वत्य निवास स्थान में जबर्दस्त आग लग गयी। यह नहीं मालूम हुआ कि उस समय हिटलर वहां थे या नहीं।

लेबर डेपुटेशन मास्को जायेगा

ब्रिटिश लेबर पार्टीका एक डेपुटेशन सोवियट यूनियनकी यात्राके लिये फरवरीके अन्तिम सप्ताहमें लन्दनसे प्रस्थान करेगा।

सर स्टैफोर्ड क्रिप्सका आदर्श

एक सभामें भाषण देते हुए सर स्टैफोर्ड क्रिप्सने कहा कि युद्धके बाद जर्मनोंके साथ 'मानव परिवारमें भाइयोंके समान' व्यवहार किया जाना चाहिये। प्रतिशोधकी भावना नहीं रहनी चाहिये। किन्तु निरस्त्रीकरण और युद्ध मन्त्रपर पूर्ण नियन्त्रण पड़ोसी राज्योंकी रक्षाके लिये नितान्त आवश्यक है।

अमेरिकाकी सेना एक करोड़

अमेरिकाकी सैनिक भर्तीके डाइरेक्टर मि० जेम्स बिरनीने घोषणा की है कि १ नवम्बर १९४४ को स्वतन्त्र अमेरिकन सैनिकोंकी संख्या १ करोड़ १९ लाख थी।

Regd No. C. 2229

नवकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १३।१९, कम्बू कर्मी स्ट्रीट, सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—३ कलकत्ता जनवरी १५, १९४५, Calcutta, JAN. 15, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ८)

मधुसंचय

औरतोंका राज्य !

एशियाके उत्तरी भाग साइबेरियामें एक गर है, जिसका नाम है—स्टाकम। कहते , वहां औरतोंका ही राज्य है। वहां मर्दों- ो कोई भी बाहरी काम नहीं करने दिया
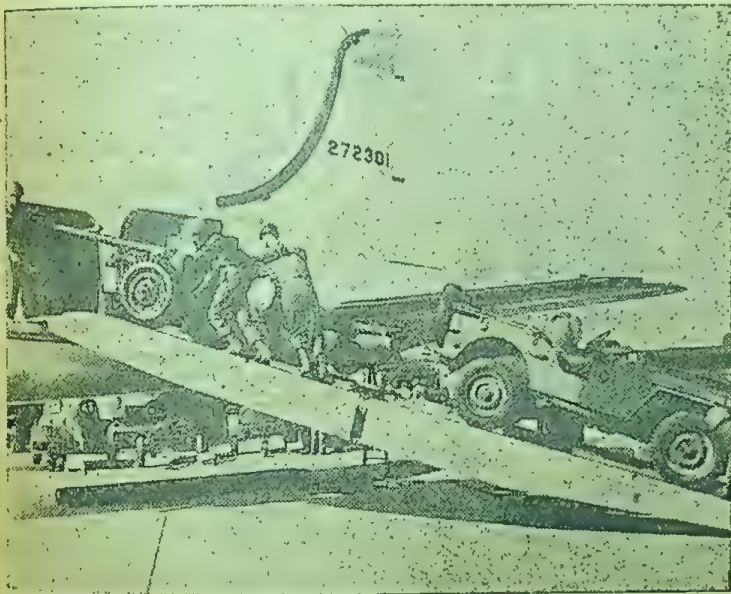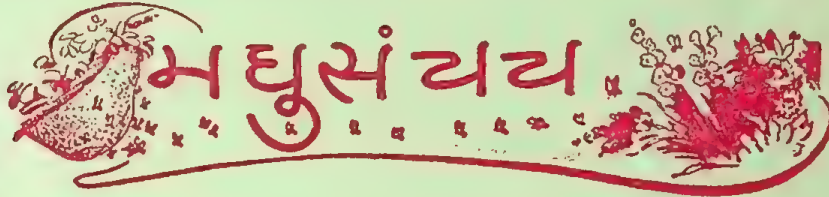
प्रशांत तथा अन्य सुदूर युद्ध मोर्चोंपर सैनिक सामग्री पहुंचाने वाला दैत्याकार अमेरिकन विमान। वाशिंगटनमें विमानपर युद्ध सामग्री लादी जा रही है।

ाता। न तो बिना इजाजत वे घरके बाहर हीं जा सकते और न दूसरे नगरके मर्द हां आ सकते हैं। नगरमें आने-जानेका क पहाड़ी द्वार है, जहां औरतोंका पहरा हता है। नगरोंकी दुकानों, दफ्तरों, कार- ानों आदिमें औरतें ही काम करती हैं। हां तक कि पुलिस और फौजमें भी वे ही । नगरके सम्बन्धमें कहा जाता है कि पहले पराधियोंको जब निष्कासन की सजा ोती थी, तो वे यहीं आकर रहते थे। उन निष्कासितोंमें स्त्रियोंकी संख्या अधिक ोती थी, अतः वहां उन्हींका साम्राज्य है !

बच्चोंका गाड़ी या ठेला गाड़ी

युद्धके आह्वानके कारण अमेरिकाके सैकड़ों नर-नारियोंको अपना घर छोड़कर विदेशोंमें जाना पड़ा और जो महिलाएं गृहोंमें रह गयी हैं, उनके सामने दो ऐसे काम रह गये हैं जिनकी उपेक्षा सम्भव नहीं। छोटे लड़के-लड़कियोंको सुबह शाम-बाहर घुमाना और साथ ही साथ बाजारसे सौदा कर लाना, ये दोनों कार्य एक साथ आसानीसे हो जायें इसके लिये बच्चोंकी 'प्राम्बलेटर' (घुमानेकी गाड़ी) में एक काठका बक्स लगा दिया गया है। गाड़ी छोटी सी होती है एवं बाजारमें और गली कूचोंमें आसानीसे चलायी जा सकती है। अतएव बच्चोंको रास्तेमें छोड़कर दुकानपर नहीं जाना पड़ता है। बच्चोंके घुमानेके साथ साथ कितने ही और भी काम आसानी किये जा सकते हैं। गाड़ीका वजन लगभग ८ सेर होता है, किन्तु उसमें लगा बक्स ४ मन सामान भर लेता है। ऐसा सामान लानेमें महिलाओंको कोई कष्ट नहीं होता।

जापानी सैनिकोंका लोहेका कवच

कासलिन द्वीपमें अमेरिकन सेनाको जापानी सेनाकी कई लोहेकी बनी पोशाकें हस्तगत हुई है। ये पोशाकें ठीक उसी तरह की है जैसी कि ब्रिटेनके 'नाइट' तथा भारतके 'जज' लोग पहना करते हैं। आपादमस्तक इस लोहावरणसे अपने शरीरको ढंककर जापानी सैनिक रणकौशलका परिचय देते हैं। इस पोशाकसे उनके शरीरमें चोट लगने की आशंका नहीं रहती।

चोर पकड़नेका नया तरीका

ब्रिटेनकी पुलिस इस समय एक हथकंडा चोरोंको पकड़नेके लिये काममें ला रही है। यह एक प्रकारका बारीक पाउडर है, जो साधारण प्रकाशमें अदृश्य-सा रहता है लेकिन गाढ़े नीले प्रकाशमें दृष्टिगोचर होता है। अगर किसी आदमीके कपड़ेपर इसे छिड़क दिया जाये तो साधारण प्रकाशमें कुछ नहीं दिखलायी पड़ेगा, लेकिन अगर गाढ़ा नीला प्रकाश उसपर डाला जाये, तो मालूम होगा कि वह अभी आटा पीसनेवाली चक्की चलाकर बाहर आया है। ब्रिटेन की पुलिसका विश्वास है कि यह पाउडर कई रंगका बनाया जा सकता है और अपराधियोंको पकड़नेमें इससे आशातीत सहायता प्राप्त होगी।

पैराशूटसे बैलेट पेपर गिराये गये

अमेरिकाके राष्ट्रपति निर्वाचनके लिये युद्धमोर्चोंपर संघर्षशील सैनिकोंसे वोट लेते समय अनेक अमेरिकन सैनिक अफसरोंको अपनी जान तक गवां देनी पड़ी है। कहते हैं कि वोट लेनेवाले इन अफसरोंने इस बात की अलौकिक चेष्टा की कि प्रत्येक सैनिक मतदाता अपना वोट दे सके। एक आदमीको पैराशूट द्वारा वोट लेनेके पर्चोंके साथ सैनिकोंके बीच उतारा भी गया था।

युद्ध दानव अब जापानके दरवाजेपर !

्रिश्चुलामें ४० मील-मोर्चेपर विकराल टैंक-युद्ध

ोवियट सेनाकी २५ मील सफल अग्रगति

ुडापेस्टमें जर्मन सेनाका पूर्ण सफाया सन्निकट

ार्डैन्समें ८० वर्ग मीलसे जर्मन पलायन

मास्को, १४ जनवरी। गत रात्रिको मास्को रेडियोने जर्मन युद्ध संवाददाताने ये रूसी आक्रमण सम्बन्धी खरीतेका उद्धरण देते हुए घोषित किया कि विश्चुला ेतुमुखके अञ्चलमें सर्वप्रथम भयङ्कर टैंक युद्ध जारी है। जर्मन पंक्तिमें बहुसंख्यक ाक्रमण शील रूसी फौज दूरतक घुस गयी हैं। संवाददाताका कहना है कि बीससे च्चीस मील लम्बे मोर्चेपर रूसियोंने कई सौ टैंकोंको युद्धमें झोंक दिया है। पिछली ातकी सोवियट विज्ञप्तिमें बताया गया है कि लालसेनाने केमलनिकपर ही नहीं बल्कि ज़ेडलोयपर भी अधिकार कर लिया है। सोवियट सेना तथा जनताको एक विशेष न्देशमें बताया गया है कि लालसेना विश्चुला अंचलमें कासिमर्जके पश्चिम नये भियानके दौरानमें लगभग चालीस मील लम्बे मोर्चेपर २५ मीलतक अग्रसर हुई ई। मार्शल कोनिव और प्रथम यूक्रेनियन सेनाने, जो स्टेलिनग्राडसे युद्ध करती ुई पोलैण्डके मर्मस्थलमें घुस गयी और विशाल नगर कीवपर अधिकार स्थापित रनेमें पूर्ण सफल हुई, करीब ६ महीनेकी शांतिके उपरांत अभियान आरम्भ किया । बुडापेस्टमें घिरी हुई जर्मन सेनाके भाग्य निर्द्धारणका अन्तिम समय सन्निकट ान पड़ता है। रूसी द्रुतगतिसे नगरके मध्य भागमें पहुंचते जा रहे हैं।

लन्दन, १४ जनवरी। गत रात्रिको र्मन रेडियोने हाईकमाण्डकी एक रिपोर्ट ाडकास्ट करते हुए घोषित किया कि स्टोग्नके दक्षिण-पूर्व अमेरिकन डिवी-ननें, जिसमें लगभग चालीस हजार ैनिक हैं, उत्तरी और दक्षिणी भागमें ाक्रमण शुरू किया है। आर्डैन्स मोर्चेके ० वर्ग मील भूभागमें मित्र:गश्ती दस्तों ी गतिविधि जारी है। अभीतक इन्हें र्मनोंसे कहींपर भी भिड़न्त नहीं हुई । इस विस्तृत क्षेत्रसे जर्मनोंके पलायन ा यह अर्थ है कि गत १६ दिसम्बरको न्सटेडने जिन क्षेत्रोंमें आक्रमण किया ा,वे क्रमशः मध्यभागमें काट दिये गये हैं र उनका दायरा संकुचित बनता जा हा है। रायटर

फ्रांसमें रेलगाड़ियोंमें कमी

पेरिस, १४ जनवरी। फ्रांसमें स्टीम े चलनेवाली सभी पैसेञ्जर रेलगाड़ियों ा चलना अगले मंगलवारसे प्रायः थगित कर दिया जायगा। केवल बिजली े चलनेवाली रेलगाड़ियों और कम दूरी क चलनेवाली सभी ट्रेनें बन्द न होंगी।

्रीस-थीब्समें विद्रोहियोंका सफाया

लन्दन, १४ जनवरी। ब्रिटिश बख्त-दार फौजें आज भी एथेंस एवं थीब्सके र्द-गिर्द पहाड़ी प्रदेशोंमें युद्ध सामानों वं युद्ध बन्दियोंकी खोजमें गश्त लगाती ही। थीब्सके दक्षिण-पश्चिममें बल-ाइयोंकी छोटी-मोटी भिड़न्त होनेकी भी बर मिली है। इसके पहले जो गैर-रकारी रिपोर्ट यहां मिली है उसमें कहा या है कि एथेन्स, पिरेयूज एवं सभी ेलोंमें तथा कीटको छोड़कर पोस्टल म्बन्ध स्थापित हो चुका है। रायटर

स्पेनकी विस्तृत सुरक्षा योजना

मेड्रिड १४ जनवरी। कल स्पेनके लिये एक विस्तृत सामाजिक सुरक्षा योजनाका ऐलान किया गया है। ऐसा जान पड़ता है कि सर विलियम बेवरिज ने ब्रिटिश प्रस्तावका जो मसविदा तैयार किया था, यह उससे भी यह बढ़ चढ़ कर है। रायटर

मित्र सेनापतियोंकी हत्याकी चेष्टा

बेलिजयमस्थित संयुक्त राष्ट्र फौजी मुकाम १४ जनवरी। सेनापतियोंकी हत्या करने एवं यातायात भंग करनेके लिये जो जर्मन मित्र राष्ट्रोंके युद्ध मोर्चे में प्रवेश पा चुके थे उनमेंसे अधिकांश घेरेमें आ गये हैं, या बेकार कर दिये गये हैं। रायटर

स्वेडेनके पार उड़न-बम फेंके गये

स्टाकहोम, १४ जनवरी। स्वेडिश रक्षा विभाग द्वारा सरकारी तौरपर ऐलान किया गया है कि उत्तर-पश्चिमसे आने वाले कई उड़न-बम स्वेडेनके दक्षिण-पश्चिमी अञ्चल होकर पार हुए हैं। स्वेडनमें एक भी बम नहीं गिरा। उक्त दिशामें बम फेंकनेका जर्मनोंका क्या लक्ष्य है इसका पता नहीं चला है। रायटर

'संघर्ष' के सम्पादककी रिहाई

लखनऊ, १४ जनवरी। संघर्षके सम्पादक एवं समाजवादी नेता श्री रमाकान्त शास्त्री जो १९४२ से ही नजरबंद थे, स्थानीय सेण्ट्रल जेलसे रिहा कर दिये गये। स्थानीय खादी भण्डारके मैनेजर श्री महेशचन्द्र भी, जो अगस्त आन्दोलन के सिलसिलेमें नजरबन्द किये गये थे, उक्त जेलसे हालहीमें रिहा हुए हैं। यू०प्रस

प्रशान्त युद्धकी तैयारी

मित्र युद्धोत्पादन योजनामें वृद्धि

न्यूयार्क, १३ जनवरी। मि० चर्चिल और राष्ट्रपति रूजवेल्ट शीघ्र ही ऐलान करनेवाले हैं कि उन्होंने जर्मनीके पतनके बाद प्रशांतके युद्धोंके अन्त होनेतककी अवधिके लिये एक संयुक्त उत्पादन एवं साधन सम्बन्धी बोर्ड कायम करनेका निश्चय किया है। इस संस्थाकी ही देखरेखमें अगला अमेरिकन संयुक्त उत्पादन आन्दोलन चलेगा। इससे भी महत्वका प्रस्ताव यह है कि जापानके खिलाफ युद्ध समाप्तिके बाद भी अनिश्चित कालतकके लिये बोर्डका काम जारी रखा जायगा। अर्थशास्त्रके विशषज्ञ बोर्डकी नयी जिन्दगीकी पूर्वावस्थाकी योजना बना रहे हैं। यह आजकी तरह ही संयुक्त उत्पादन समितिके नियंत्रणमें रहेगा, या विश्व सुरक्षा संगठनमें इसे मिला दिया जायगा जिसके कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट बड़े जोरदार प्रतिपादक हैं और जिसे उन्होंने तीन महाप्रभुओंके सम्मेलनमें विचारार्थ तैयार किया है। बोर्डको स्थायी रूपसे कायम रखनेवालोंकी दलील है कि इससे कच्चा माल जरूरतसे ज्यादा न जमा होने पायगा और आर्थिक प्रतियोगिता भी मिट जायगी, जिससे ब्रिटेन और अमेरिकाके उद्योग धन्धोंपर असर न पड़ेगा। रायटर

पाठ्य पुस्तक प्रकाशकोंको सुविधा

नयी दिल्ली १३ जनवरी। प्रकाशकोंको जो अखबारी कागज पाठ्य पुस्तकोंके प्रकाशनके लिये दिया गया है वे उस कागजके अतिरिक्त उन पुस्तकोंके जिल्दके लिये दफ्ती या कवर पेपरका उपयोग कर सकते हैं। कागज नियंत्रण आज्ञाके अन्तर्गत जो जिल्दका कागज या दफ्ती की संख्या निर्द्धारित की गयी है उसमें उपर्युक्त ढंगसे उपयोग करने पर जिल्द का कागज या दफ्तीका हिसाब नहीं जोड़ा जायेगा। किन्तु जो त्रैमासिक विवरण वे कागजके सम्बन्धमें भेजते हैं उसमें तो उस अतिरिक्त कागजका हिसाब दिखा देना होगा। ए० प्रेस

१ ईखके टुकड़ेके लिये हत्या

देहरादून १२ जनवरी। आज यहां इस तरहका एक सम्वाद प्राप्त हुआ है कि गन्नेके एक टुकड़ेके पीछे देहातके एक किसानने दूसरे किसानको टुकड़े टुकड़े करके मार डाला। समाचार मिला है कि बात यह हुई कि एक किसानके गन्नेके खेतसे बिना उसके मालिकसे पूछे एक ईख तोड़ लिया। कहा जाता है कि इस पर उस खेतका मालिक बिगड़ खड़ा हुआ फलतः उसने अपने विपक्षी किसान पर गड़ासासे आक्रमण किया तथा उसे टुकड़े टुकड़े कर डाला। मामलेकी जांच हो रही है। यू० प्रेस

वर्धा शिक्षा सम्मेलन

बुनियादी शिक्षापर विचारविमर्श

सेवाग्राम १३ जनवरी। आज डाक्टर जाकिर हुसेनकी अध्यक्षतामें बुनियादी शिक्षा सम्मेलनकी बैठक प्रारम्भ हुई। बिहारके बाबू बद्रीनाथ वर्माने एक योजना पेश की जिसमें बुनियादी शिक्षाके बादकी अवस्थामें शिक्षाक्रमके रूपरेखाका उल्लेख किया गया था। बुनियादी शिक्षालयकी स्थापना, उसके विभिन्न कार्यक्रम शिक्षाका माध्यम, पढ़ाईकी अवधि तथा संस्कृति एवं उद्योगधन्धा सम्बन्धी अध्ययनके एकीकरणकी आवश्यकता पर सभामें विचार विमर्श हुआ। कस्तूरबा ट्रस्टके अन्तर्गत महिलाओंके शिक्षणके सम्बन्धमें जो पाठ्यक्रमका मसविदा श्रीमती आशादेवीने तैयार किया है उस पर हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी गत रात्रिकी बैठकमें विचार हुआ जिसके सभापति डा० जाकिर हुसेन थे। छः सप्ताह में शिक्षित बनानेका जो कार्यक्रम बनाया गया हैं वह कुछ संशोधनोंके साथ स्वीकृत हुआ तथा वह कस्तूर बा ट्रस्टको भेज दिया जायगा। प्रस्तावित शिक्षाक्रम की प्रतिलिपि जब सदस्य देख लेंगे तब पांच महीनेवाली शिक्षा योजनापर विचार किया जायेगा। विधानके नवीन संशोधनके अनुसार कमिटीमें १० सदस्य और लिये जायेंगे। ज्ञात हुआ है कि हरिजन सेवक संघकी उपाध्यक्षा श्रीमती रामेश्वरी, दिल्ली जामियामिलियाके शेख रहमान साहिब, युक्त प्रान्तके धीरेन मजूमदार तथा बम्बईके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री बी० जी० खेर आदि चार महानुभाव तालीमी संघके नवीन सदस्य होने वाले हैं। कल पूर्व बुनियादी शिक्षा तथा प्रौढ़ शिक्षा योजना पर विचार विमर्श होगा। महात्मा गांधीका मौनव्रत अभी जारी है। आज और पाठ्यक्रम निर्द्धारित करनेकी योजना बनानेके लिये खादी विद्यालयके शिक्षा उपसमितिकी बैठक हुई। ए० प्रेस

श्रीमती नायडूको १हजारकी थैली भेंट

कलकत्ता १४ जनवरी। मारवाड़ी रिलीफ सोसायटीके बंगीय सहाय्य विभागने श्रीमती सरोजनी नायडूको १००१) रु० की थैली भेंट की है। बंगाल से छात्राको वर्धा जाकर महात्मा गान्धी के ग्रामोद्योग योजनाके अन्तर्गत शिक्षण प्राप्त करनेमें इस धनका उपयोग किया जायेगा। इसके अतिरिक्त अखिल भारतीय महिला सम्मेलनके तत्वावधानमें शिशु गृहका संगठन किया जानेवाला है उसमें भी इस धनसे सहायता दी जायेगी। इन्हीं दो महान कार्योंके लिये उपर्युक्त थैली भेंट की गयी है। यू०प्रेस

लुजोनके दक्षिण-पश्चिम ८ मील मित्र प्रगति

द्वीपके मध्य स्थित दो प्रमुख केन्द्रोंपर कब्जा

चौदहवीं सेनाका मोनिवाके दरवाजेतक प्रवेश

मेटकीना-मांडले रेलवेपर १५ मील मित्रबढाव

लेयटी स्थित जनरल मैकार्थरका फौजी सदर मुकाम, १४ जनवरी। अमेरिकन फौजें जो लिंगयेन खाड़ीमें उतर गयी हैं, लुजोन प्रदेशमें दक्षिण तरफ शीघ्रतासे आठ मील अग्रसर हुई हैं। अमेरिकन आग्नो नदीके उत्तरी तटतक पहुंच गये हैं। अन्य मालवाही दस्ते तटसे केवल २० मील दूर रह गये हैं। मध्य भागमें सान्तारिम्पेरापर अधिकार कर लिया गया है। अमेरिकन विमानोंने तटीय अञ्चलस्थित जहाजोंके समूहपर आक्रमण कर ५० रक्षक जहाजोंको नष्ट कर दिया। जापानी समाचार समितिने बताया है कि अमेरिकन विमान लिंगयेन खाड़ी स्थित लुजोनके हवाई अण्डोंसे उड़कर आक्रमणमें भाग ले रहे हैं। जनरल मैकार्थरकी विज्ञप्तिमें बताया गया है कि शत्रु सेना मध्य लुजोनमें हमारे आक्रमणको चुनौती देनेमें असमर्थ या अनिच्छुक है।

काण्डी (सीलोन), १४ जनवरी। एसोसियेटेड प्रेसका विशेष संवाददाता लिखता है—जापानी सेनाके उत्तरोत्तर जबर्दस्त प्रतिरोधके बावजूद भी सभी मित्र सैनिक मिटकीना-माण्डले रेलवेपर श्वेबोसे १५ मीलतक अग्रसर हुए हैं। ये सैनिक अब अपने लक्ष्यसे केवल ३० हवाई मील दूर रह गये हैं। यदि इसी प्रकार मित्र सेनाकी सफल प्रगति निरन्तर जारी रही तो अगले कुछ दिनोंमें ही इरावदी पार मांडलेकी दिशामें अग्रसर होती दिखायी पड़ेगी। चिंदवीन प्रदेशमें चौदहवीं सेनाके रणबांकुरे ये-माण्डले रेलवेसे होकर अग्रसर होते हुए दक्षिणी चिन्दवीन स्थित जापानी अड्डे मोनिवाके दरवाजेतक पहुंच गये हैं, जहांपर यह रेलवे माण्डलेकी दिशामें पूरबकी ओर जाती है।

द्रुतगामी सप्लाई-जलयान

वाशिंगटन, १४ जनवरी। संयुक्त राष्ट्रके सामरिक विभागने घोषणा की है कि वेयर हाउसेज या छोटे-छोटे शीघ्रगामी सप्लाई जलयान जिनके द्वारा ५ हजारसे ज्यादा हवाई जहाजके पार्ट, जिनमें नटसे लगायत 'केमशेफ्ट'तक शामिल हैं, हजारों मील दूर समुद्रके पार ले जाये जाते थे, वे अब युद्धमें संयुक्तराष्ट्रकी ७ वीं हवाई फौजी दस्तेको हाथ बटा रहे हैं। रायटर

ब्रिटिश बेड़ा प्रशांतयुद्धमें भाग लेगा

लेयटी १४ जनवरी। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है—प्रशान्तके ब्रिटिश जहाजी बेड़ेके कमाण्डर एडमिरल सर ब्रुस फ्रेजरने आज बताया कि उक्त बेड़ा अमेरिकन नौसेनाके सहयोगमें निकट भविष्यमें प्रशान्तके महत्वपूर्ण युद्धमें भाग लेगा। रायटर

खादीका कोटा निश्चित करनेकी योजना

बारदोली १३ जनवरी। इस वर्ष सूरत जिलेमें कितनी खादीकी आवश्यकता होगी इसका अन्दाज लगानेके लिये जिले भरमें सदैव खादी पहिननेवालोंकी गणना की जा रही है। मार्च तक गणना कार्य समाप्त होनेके पश्चात अखिल भारतीय चर्खा संघकी गुजरातकी शाखा द्वारा इस जिलेके लिये खादीका कोटा निश्चित किया जायेगा। यू०प्रेस

फारमोसा और नागोयापर बमवर्षा

वाशिंगटन, १४ जनवरी। बीसवीं हवाई सेनाके सदर मुकामकी घोषणामें बताया गया है कि आज अमेरिकन बमवर्षकोंने फारमोसा द्वीप स्थित सामरिक महत्वके लक्ष्य क्षेत्रोंपर हमला किया। जापानी समाचार समितिने खास जापान पर मित्र हमलेका उल्लेख करते हुए ऐलान किया कि मेरियाना द्वीपसमूह स्थित कमसे कम ६० विमानोंने कई दलोंमें किन्की तथा चलू जिलोंपर गश्त लगाते समय टोकियोसे १५० मील दक्षिण-पश्चिम नागोयाके अंचलपर बमवर्षा की। रायटर

महीने भरमें ८ पौंड वजन घटा

मुजफ्फरपुर १० जनवरी। श्री अवधेश्वर प्रसाद सिनहा जो हजारीबाग जेल में सेक्यूरिटी प्रिजनर हैं, उनका स्वास्थ्य बहुत गिर गया है, इसलिये उनके लिये लोगोंको बड़ी चिन्ता हो रही है। विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि उनका वजन २० पौण्ड घट गया है—केवल पिछले एक महीनेमें उनका वजन ८ पौण्ड घटा। कहते हैं कि उन्हें पेटकी गड़बड़ी और सिरमें चक्कर आनेकी शिकायत है। प्लुरेसीके वे पुराने रोगी हैं। जेलमें भी उनको सिरमें चक्कर आदिका दौरा होता है। वह अगस्तके उपद्रवोंके छः महीने पहले ही गिरफ्तार भी किये गये थे। इस उपद्रवसे उनका किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं बताया जा सकता।

नेपालमें भीषण सर्दी

काठमाण्डू बर्फसे आच्छादित

रक्सौल, १४ जनवरी। खबर मिली है कि नेपालकी राजधानी काठमाण्डू गत ६ जनवरीके सुबहसे ही बर्फसे बिलकुल आच्छादित है। ३ इंच बर्फ पड़नेसे मकानोंकी छतें, वृक्षोंके सिरे एवं सड़कें ढकी हुई हैं। शहरमें भयानक शीतका प्रकोप है, साथ ही बिजलीकी सप्लाई भी बन्द हो गयी है, जिसके फलस्वरूप रातमें बिलकुल अंधेरा रहता है। नेपालकी तराई काठमाण्डूतक माल असबाब ढोनेका एकमात्र सुविधाजनक मार्ग भी अव्यवस्थित हो गया है। अनेकों मालकी गांठें बर्फके गिरनेके कारण रास्तेमें पड़ी हुई हैं। भयानक शीतके कारण काठमण्डूके सरकारी दफ्तर बन्द कर दिये गये हैं। शहरकी सड़कें आने-जाने लायक नहीं रह गयी हैं और उसपर बहुत कम आदमी दिखाई पड़ते हैं। शहरके निकटस्थ महत्वपूर्ण स्थान भीमफेरीकी भी वही अवस्था है। वहां भी भयानक शीतके कारण ३ व्यक्तियोंके मर जानेकी खबर मिली है। ए०

हाईकोर्ट द्वारा न्यायसंगत घोषित

नागपुर १३ जनवरी। नागपुर हाईकोर्टके मि० जस्टिस एल० बी० नियोगीने यावली काण्डके ३८ अभियुक्तोंको अपीलमें रिहा कर दिया। अभियुक्तोंके विरुद्ध यह आरोप था कि इन्होंने सरकारी अफसर पर आक्रमण किया। फैसलेमें अभियुक्तोंकी शेष सजा माफ करते हुए मि० जस्टिस नियोगीने निम्नाशयका उल्लेख किया है:—मामलेके सबूतसे इस बातको सिद्ध मानही लेना पड़ेगा कि जो आदमी चौकमें एकत्रित हुए थे उन्हें झण्डा हटानेकी चेष्टा करनेवालोंका पूर्ण विरोध करनेका अधिकार था। वह झंडा तो सरकार द्वारा जब्त घोषित किया गया नहीं है अतः झण्डा फहराना कोई गैर कानूनी काम नहीं था। यदि झण्डेको हटानेकी चेष्टा कानूनके विरुद्ध है तो भलेही अधिकारियोंकी दृष्टिसे उसका हटाना आवश्यक रहा हो लेकिन सरकारी अफसर इस बातका दावा नहीं कर सकते कि उन्होंने यह कार्य अपना कर्तव्य पालन करते हुए किया। स्मरण रहे कि अमरावती जिलाके यावली नामक ग्राममें अगस्त आन्दोलनके सिलसिलेमें उस समयके जिला मजिस्ट्रेट तथा उनके दल पर एक भीड़ने आक्रमण किया था। जिसके परिणाम स्वरूप उपर्युक्त मुकदमा ४८ व्यक्तियोंके विरुद्ध चलाया गया जिसके कुछ अभियुक्त अभी तक फरार है। स्पेशल अदालत द्वारा ५० व्यक्ति रिहा कर दिये गये थे तथा अन्य अभियुक्तोंको दोसे सात वर्ष तकका सजा दी गयी थी। यू० प्रेस

उपनिवेशोंका शास[न]

प्रशान्त विषयक कान्फ्रेंसमें म[तभेद]

हाटस्प्रिंग, १३ जनवरी। आज प्रशान्त सम्मेलनमें सुदूरपूर्वके यूरो[पीय] उपनिवेशों सम्बन्धी अत्यन्त विवाद[ग्रस्त] विषयपर वाद-विवाद समाप्त होते स्पष्ट रूपसे संघर्षकी स्थिति उत्पन्न [हो] गयी। यूनाइटेड किङ्गडम, नेदरलैण्ड, फ्रेंच, आस्ट्रेलियन तथा न्यूजीलैंड प्रतिनिधियोंके संगठित दल द्वारा प्रस्तावका घोर विरोध किया गया कि अन्तर्राष्ट्रीय उपनिवेशिक शक्तिकी स्था[प]ना की जाये जिसे उपनिवेशोंपर ... एवं शासन प्रबन्ध सम्बन्धी अधिकार हों। उनकी दलील थी कि ऐसी औ[पनि]वेशिक 'विशेष सरकार' के हाथमें बहुतके अधिकार होंगे जिनपर अ[भी] तक औपनिवेशिक शक्तियोंका अधिक[ार है।] किन्तु ऐसी संस्थाके उचित कार्य शासन प्रबन्ध सम्बन्धी विवरण स[ही] रूपमें बताया। औपनिवेशिक शक्ति[यों के] प्रतिनिधियोंने अपने बहसमें यह कहा इन प्रतिनिधि मण्डलोंमेंसे एकके अध्य[क्ष]के कथनानुसार यदि इन उपनिवे[शोंका] शासन प्रबन्ध उठा लिया गया तो इ[स] अन्तर्राष्ट्रीय क्षत्रमें अर्थसंकट उप[स्थित] हो जायगा तथा इस स्थितिका मुका[बला] अन्तर्राष्ट्रीय सरकार किसी भी हाल[त में] न कर सकेगी। फिर भी किसी हद [तक] औपनिवेशिक तथा अन्य राष्ट्रोंके [बीच] यह समझौता हुआ कि यदि अधी[न] देशके शासन प्रबन्धमें किसी तृतीय [पक्ष]का यथेष्ट स्वार्थ हो तो इस माम[ले] विचार विमर्श कर लिया जाये। प्रति[नि]धियोंने मित्रराष्ट्रीय कमीशनसे मिल[ती] जुलती अधिकारपूर्ण परामर्शदातृ [अन्तर]राष्ट्रीय सरकार स्थापित करने सम्ब[न्धी] क्रियात्मक प्रस्ताव तैयार किया है। [इस] प्रश्नपर अभी सम्पूर्ण समझौता [वि]णीय है। इन्स्टीट्यूट आव पैसि[फिक] रिलेशनके अधिकारी इस बातका जो[र]से आश्वासन दे रहे हैं कि सम्मेलन [उक्त] विषयोंपर प्रतिनिधियोंको एकमत क[रनेमें] प्रयत्नशील नहीं है। रायटर

श्री विश्वनाथदास रिहा

बरहमपुर, १४ जनवरी। उड़ीसाके भूतपूर्व प्रधानमंत्री श्री विश्वनाथदास शामको स्थानीय जेलसे रिहा कर [दिये] गये। ए० प्रेस

कांग्रेस कार्यकर्त्ताका गिरफ्[तारी]

पुरी १३ जनवरी। सत्यवा[दी] कांग्रेस कार्यकर्त्ता श्री कृष्णचन्द्र जो हालमें नजरबन्दीसे मुक्त हुए थे जिनपर सरकारी प्रतिबन्ध लगा था, इस जुर्ममें गिरफ्तार किये गये [कि] उन्होंने प्रतिबन्ध सम्बन्धी सर[कारी] आज्ञाका उल्लंघन किया। ए० प्रेस

भारतकी परिस्थिति

ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल क्या करे

मद्रास, १४ जनवरी। ब्रिटिश पार्लमेंटके प्रतिनिधि मण्डलके भारत आनेका जो समाचार मिल रहा है उसके सम्बन्धमें माननीय श्रीनिवास शास्त्रीने कहा कि हमे कुछ छिपाना नहीं है और वे अपनी आंखोंसे अवस्था देखें इसके लिये हम पालमेंटके उन सदस्योंका स्वागत करते हैं। वे विभिन्न क्षेत्रोंमें सत्यकी तलाश करें। जापानानुकूल भावनाकी शिकायत अब हवाहो गयी। फिर भी महात्माजीसे स्वयं प्रश्न करना ठीक है। जापानके अतीतकी प्रशंसाका यह अर्थ नहीं लगाना चाहिये हम उसकी वर्तमान आक्रमणात्मक नीतिका समर्थन करते हैं। यदि इस प्रतिनिधि मण्डलका उद्देश्य इस बातका पता लगाना है तो यह अनावश्यक है। हम यह पसन्द करेंगे कि वे अधिकारियोंकी सन्देहात्मक भावना और इंगलैंडपर बंधी पट्टीको दूर कर उनमें समयानुकूल नयी भावना उत्पन्न करें। भारतीय समस्याके प्रति उनका कार्य भावी विश्व योजनाके अनुसार होना चाहिये।

यदि युद्ध तथा उसके कारणोंका नामोनिशान मिटा देना ही उद्देश्य हो तो यह अनिवार्य है कि भारतकी समस्याका हल करना उसका प्रारम्भिक कार्य होना चाहिये। यही सिद्धान्त लेकर प्रतिनिधि मण्डल सफलता प्राप्त कर सकता है। यू०प्रेस

पहलवान छूट गया

भागलपुर, बृहस्पतिवार। कहते हैं अयोध्या महतो नामका एक पहलवान अपने शार्गिद मधु चौधरीको पहलवानी सिखला रहा था, इसीमें किसी दुर्घटनाके कारण अखाड़ेमें शिक्षा पानेके सिलसिले में मधुकी मृत्यु हो गयी। अब इसी बातके अभियोगमें अयोध्या महतो पहलवानपर मामला चलाया गया। जजने अयोध्या महतोके बयानको सही मानकर इसे शोचनीय दुर्घटना बताकर पहलवानको छोड़ दिया। पहलवानपर जाब्ता फौजदारीकी ३०४ धाराके अनुसार मामला चलाया गया था।

बोर्ड-कर्मचारियोंको भत्ता

पटना, बुधवार। खबर है कि बिहार सरकारने सभी जिला बोर्डोंके पास एक सरक्यूलर पत्र भेजा है कि बोर्डके सभी कर्मचारियोंको औसत ढङ्गसे ६ रु० मासिकका भत्ता दिया जाय। यदि कोई बोर्ड अधिक देना चाहे, तो सरकार को इसमें कोई आपत्ति न होगी, लेकिन बोर्डके अधीन स्कूलोंके अध्यापकोंको सरकारके हिसाबसे ही भत्ता दिया जाय, सरकारका ऐसा कहना है।

कांग्रेस और मुसलिम

मि० सज्जाद जहीरका वक्तव्य

बम्बई, डाकसे। साम्यवादी नेता मि० सज्जाद जहीरने निम्न वक्तव्य प्रकाशित कराया है।

उत्तरी भारत एवं अन्य अंचलोंके किन्हीं हिन्दी एवं अंग्रेजी पत्रोंने अभी हालमें लिखा है कि मैं और मेरे मित्र डाक्टर जे० ए० अहमद तथा डाक्टर अशरफ युक्तप्रांतमें घूम-घूमकर यह प्रचार कर रहे हैं कि कांग्रेसी मुसलमान कांग्रेसको छोड़कर लीगमें शामिल हो जायें। यह और कुछ नहीं कांग्रेसजनों को साम्यवादियोंका विरोध करनेका साम्यवादी विरोधी प्रचारमात्र है।

हम साम्यवादी यह चेष्टा करते रहते हैं कि राष्ट्रीय सरकारके लिये कांग्रेस और लीगमें बंधुत्व एवं एकता स्थापित हो जाये। फलत: कांग्रेसी मुसलमानों को कांग्रेस छोड़कर लीगमें शामिल होने का कार्य दोनों संस्थाओंमें मेल नहीं करायेगा वरन् दोनोंको और भी पृथक करता रहेगा।

वास्तवमें कांग्रेसी मुसलमानोंको हम यह समझाते रहे हैं कि वे कांग्रेसमें रहकर अपने कांग्रेसी सहयोगियोंको लीगकी मांगोंको समझाकर दोनोंमें मेलका जरिया बने रहें।

साथही साथ लीगी मुसलमानोंको हम बतलाते रहते हैं कि कांग्रेससे एकता करके ही तथा नेताओंकी मुक्तिकी मांग कर वे पाकिस्तान पा सकते हैं, अन्यथा नहीं। युक्त प्रांतमें हम जिन कांग्रेसी मुसलमानोंसे मिले हैं उनसे, जो कि मौलाना हाफिज रहमान मि० मुजफ्फर हुसेन तथा मौलाना शाहिद फाखरी हैं, पूछकर हमारे इस वक्तव्यकी पुष्टि कर सकते हैं।

नवाबजादा लियाकतसे प्रश्नोत्तर

वर्धागंज, १३ जनवरी। मद्रास जाते हुए अखिल भारतीय मुसलिम लीगके जेनरल सेक्रटरी नवाबजादा लियाकत अली सदलबल वर्धा गुजरे। ये लोग लीग कार्यका निरीक्षण तथा कार्यकर्ताओं से सम्पर्क स्थापनाके लिये मद्रासका दौरा करेंगे।

पत्र-प्रतिनिधिके वैधानिक निष्क्रियता दूर करनेके सम्बन्धमें प्रश्न करनेपर आपने उत्तर दिया कि मैं कुछ नहीं जानता। कांग्रेस नेताओंकी मुक्तिकी मांग के सम्बन्धमें प्रश्न करनेपर आपने कहा कि केन्द्रीय असेम्बलीके लोकहितार्थ होनेवाले कार्योंमें कांग्रेस और लीग एक रहती है। श्री भूलाभाई देसाईसे बातचीतके सम्बन्धमें प्रश्न करनेपर नवाबजादाने कहा कि जब कभी अवसर मिलता है हम मिलते रहते हैं, उसको कोई राजनीतिक महत्व नहीं देना चाहिये। ए० प्रेस

पाकिस्तान संबंधी जिन्नाका दावा

हैदराबाद, १४ जनवरी। जिन्नादिवस समारोहमें मि० एम० ए० जिन्नाका जो भाषणमें पढ़ा गया उसमें भाषणकर्ताने दावा किया है कि संसारमें ऐसी कोई ताकत नहीं जो हमारे लक्ष्य पाकिस्तानको पानेसे हमें रोक सके, बशर्ते कि हम एक हैं और हमारा निश्चय अटल है। मि० जिन्नाने यह विश्वास प्रकट किया है कि जैसी कि कुछ लोग आशा करते हैं उससे अधिक तीव्रतासे हमे सफलता प्राप्त होगी। यदि मुसलमान सर्वत्र मिलकर अपनी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक एवं शिक्षा सम्बन्धी उन्नतिके लिये स्वार्थरहित हो कर कार्य करें तो उससे जो मुझे आनन्द मिलेगा उससे अधिक और किसी चीजमें नहीं। मेरा सर्वोत्तम पुरस्कार यही है कि मुझे यह देखनेको मिल रहा है कि हमारे प्रयास सफलीभूत हो रहे हैं और गत शताब्दियोंमें मुसलमानोंकी जो अवस्था थी उसकी अपेक्षा आज इस देशोंमें उनमें अधिक एकता और सम्मान है। यू० प्रेस

लीग-यूनियनिस्ट पार्टीमें सुलह?

लाहौर, १३ जनवरी। विभिन्न क्षेत्रोंमें यह चेष्टाएं जारी हैं कि मुसलिम लीग और यूनियनिस्ट पार्टीमें सुलह हो जाना चाहिये। पता चला है कि मंत्रिमण्डलके शिक्षामंत्री मियां अब्दुल हय इसकी विशेषरूपसे चेष्टा कर रहे हैं।

इसीलिये मुसलिम पत्रोंसे अपील की गयी है कि वे सद्भावनापूर्ण वातावरण तैयार करनेमें सहायता करें। यू०प्र०

जाली नोट बनानेमें पतिपत्नी दण्डित

कृष्णनगर (नदिया) १२ जनवरी। असिस्टेण्ट सेशन जज मि० तसद्दुक हुसेनने हेरम्बचन्द्र बागची एवं राजलक्ष्मी (पति पत्नी) तथा साधुसाहको सरकारी नोट बनाने के जुर्म में सात वर्षकी सख्त कैदकी सजा दी। सरकारी पक्षका यह कथन था कि इन तीनों अभियुक्तोंने, जो यहांके लिये अजनबी थे, शहरकी बहुतही घनी बस्तीमें एक मकान भाड़े पर लिया तथा उसमें दो साल तक रहे। उनकी गतिविधि कुछ ऐसी थी किउनकेपड़ोसियों को सन्देह होने लगा। फलतः गत २३ फरवरीको पुलिसने अर्द्ध रात्रिके समय उनके मकान पर छापा मारा तथा मकान मेंसे कुछ जाली एक रुपयेके नोट तथा जाली नोट बनानेके औजार तथा सामान बरामद किये। ए० प्रेस

हिन्दू कोड और महिला सम्मेलन

पूना, १३ जनवरी। अखिल भारतीय महिला सम्मेलनने प्रस्तावित हिन्दू कोडके सम्बन्धमें राव कमेटीके समक्ष

'सत्यार्थप्रकाश' पर प्रतिबंध

सिंध सरकार द्वारा हटानेकी आशा

(निज संवाददाता द्वारा)

बम्बई,डाक द्वारा। सिंधसे जो हिन्दू राजनीतिज्ञ यहां आये हैं उन्होंने सिंध मन्त्रिमण्डलके विवादके सम्बन्धमें बताया कि मि० एच० एम० गजदर सिंधके लीगी प्रधानमन्त्री बननेकी आशा रखते थे और उसकी चेष्टाएं ही उन्हें मन्त्रिपदसे हटनेका कारण बनीं। यह भी बताया जाता है कि 'सत्यार्थ प्रकाश' के चौदहवें समुल्लासपर मि० गजदरने ही बगैर हिन्दू मिनिस्टरोंसे विचार-विमर्श किये प्रतिबन्ध लगा दिया था।

मि० गजदरके सम्पर्कमें रहनेवालोंका कथन है कि उन्होंने कट्टर मुसलमानों तथा विशेषतया लीगी नेताओंमें अपनी धाक जमानेके ख्यालसे ही यह नया प्रतिबन्ध लगाया था। उनका विश्वास है कि अधिक कट्टर मुसलमान होनेमात्रसे ही वे लीगी नेताओंके प्रिय बन सकते हैं।

कुछ लोगोंका ख्याल है कि सिंध मन्त्रिमण्डलमेंसे उनके निकल जानेसे 'सत्यार्थ प्रकाश' पर लगाये गये प्रतिबंधके सम्बन्धमें कोई कार्रवाई निकट भविष्यमें होगी। आशावादियोंका विश्वास है कि एकता बनाये रखनेके विचारसे यह भी सम्भव है कि प्रधानमन्त्री सर गुलाम हुसेनने उसे रद्द कर दें।

पालिश ज्यादोदाम में

ढाका, १२ जनवरी। अब्दुलमन्नाक मियां, इलियसचन्द मियांको ७५) रुपये जुर्माना या उसके बदलेमें तीन महीनेकी सजा दी गयी है। सजाका कारण यह है कि अभियुक्तोंने कोबरा बूट पालिशकी दो छोटी डिबिया ६ आने प्रति डिब्बीके हिसाबके बेची जब कि उनका कण्ट्रोल मूल्य ३ आना प्रति डिब्बी है।

गूंगे व बहरे छात्रोंको वृत्ति

पटना, १० जनवरी। बिहार सरकार की ओरसे प्रांतके गूंगे व बहरे छात्रोंको पढ़नेके लिये छात्रवृत्ति देनेकी घोषणा की गयी है। छात्रवृत्ति पानेके लिये ३१ जनवरी तक प्रार्थनापत्र देनेकी तारीख है। छात्रवृत्तिका फारम "डम्ब एण्ड डफ स्कूल" कदमकुआके आफिससे प्राप्त हो सकता है।

अपना विचार प्रकट करनेके लिये निम्न सदस्याओंको मनोनीत किया है:—

श्रीमती लक्ष्मीबाई राजवाड़े, श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्रीमती रेणुका राय, श्रीमती सौदामिनी मेहता, श्रीमती चन्द्रलेखा सहाय तथा श्रीमती इन्दिराबाई देवधर। ए० प्रेस

...रमा ब्रिटिश साम्राज्यसे पृथक नहीं होगा ?

...हांगकांगसंबंधी ब्रिटिशनीतिकी घोषणाकी मांग

...अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनमें सुदूरपूर्वका विषय

...सुरक्षा सम्बन्धी गोलमेज परिषदकी श्रीमती पण्डित अध्यक्षा

हाटस्प्रिंग,१३ जनवरी । प्रशांत विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनमें सुदूरपूर्वकी सुरक्षा समस्यापर जो गोलमेज परिषद विचार करेगी उसकी अध्यक्षता श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडितने स्वीकार कर ली है ।

हाटस्प्रिंग, १३ जनवरी । प्रशांत विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनके एक भारतीय प्रतिनिधि श्री बी० शिवराव आज यहां पहुंचे । श्री शिवराव 'हिन्दू' (मद्रास) के नयी दिल्लीस्थित संवाददाता हैं । भारतसे समुद्री यात्रामें आपको विलम्ब लगी ।

हाटस्प्रिंग, १३ जनवरी । प्रशांत विषयक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनके बरमाके प्रतिनिधि सर टुङ्ग यांग ग्यावने जोकि शिमलास्थित शरणार्थी बरमा सरकारके राजदूत हैं और जोकि ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डलके सदस्यकी हैसियतसे सम्मेलनमें शामिल हैं, कहा कि बरमाकी जनताका विचार ब्रिटिश साम्राज्यसे पृथक होनेका नहीं है क्योंकि बरमाके लम्बे तथा आक्रमणके खतरोंसे युक्त समुद्र तटोंकी रक्षा करनेके लिये वह ब्रिटिश सैन्य संचालन रीतिपर निर्भर करता है । यह वक्तव्य उसने एक पत्र प्रतिनिधिके प्रश्नके उत्तरमें दिया । उसने आगे चलकर कहा कि बरमा अभी ब्रिटिश साम्राज्यका ही एक अभिन्न अंश है और हमारे देशकी रक्षाका पूर्ण दायित्व ब्रिटेनपर है ।

'वर्तमान युद्धकी समाप्तिके बाद औपनिवेशिक स्वराजकी प्राप्ति बरमा वासियोंका दूसरा लक्ष्य है । लेकिन औपनिवेशिक स्वराज पा लेनेपर भी बरमा ब्रिटिश साम्राज्यसे अलग नहीं रह सकता । इसकी सीमाएं एवं समुद्रतट अत्यधिक लम्बे हैं और बरमाकी जनता उसकी रक्षा करने योग्य संख्यामें नहीं है ।'

हाटस्प्रिंग, १३ जनवरी । चीनी प्रतिनिधिने सभीको आश्चर्यचकित करनेवाली ब्रिटिश प्रतिनिधि मंडलसे यह मांग की कि वे हांगकांग सम्बन्धी ब्रिटिश नीतिकी घोषणा करें क्योंकि हमें यह आशङ्का है कि हांगकांगको बगैर इस दावे का खण्डन किये कि ब्रिटिश साम्राज्यमें सूर्यास्त नहीं होता चीनको दे दिया जायेगा। ब्रिटिश प्रतिनिधिने हांगकांगकी उन्नतिका स्मरण कराया और बताया कि उनके अधिकार करनेके पूर्व उसकी दशा वैसी नथी ।

एक कनाडियन प्रतिनिधिने यह सुझाव दिया कि सुदूरपूर्वीय उपनिवेशोंके मसलों को अनेक राष्ट्र मिलकर तै करें,जिसपर भारतीय प्रतिनिधियोंने यहांतक स्पष्ट कहा कि केवल ३-४ बड़े राष्ट्र ही हस्तक्षेप न करें बल्कि व्यापक रूपसे अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था होनी चाहिये ।

ब्रिटिश प्रतिनिधियोंने इस सुझावका स्वागत करते हुए कहा कि सम्बन्धित जनताओंकी एक अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था करना अच्छा होगा ।

आस्ट्रेलियन प्रतिनिधि मण्डलने बताया कि हमारी सरकारकी उपनिवेशों सम्बन्धी यह नीति है कि नियन्त्रक सरकारके हितानुकूल उनका शासन सम्भव हो ।

अन्तमें चेयरमैनने यह कहकर बइस समाप्त कर दी कि प्रतिनिधिगण अभीतक पूर्ण समझौतेपर नहीं पहुंच सके । रायटर

x≡x≡x≡x≡x≡x≡x

त्रिराष्ट्रवार्ता सम्बन्धी व्यवस्था

वाशिंगटन, १३ जनवरी । आगामी २०जनवरीके बाद जो त्रिराष्ट्र वार्ता होनेवाली है उसमें विचारार्थ रखे जानेवाले विषयके विवरण संबंधी बातचीत करनेके लिये मि० हेरी हापकिन्सके लन्दन आने की सम्भावना है ।

प्रसीडेण्ट रूजवेल्टके सेक्रेटरी मि० स्टीफेन अर्लीके फरवरीके आरम्भमें लन्दन आनेकी आशा है ताकि प्रेसीडेंटकी सम्भावित फ्रांस यात्रा सम्बन्धी व्यवस्था कर सकें । ग्लोब

x≡x≡x≡x≡x≡x≡x

यूनानी प्रीमियरका वक्तव्य

एथेन्स, १२ जनवरी । यूनानके प्राइम मिनिस्टर जेनरल प्लास्टिरासने एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर बतलाया है कि जेनरल स्कोबी और ई० एल० ए० एस० के बीच जो समझौता हुआ है उससे यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिये कि सरकार अपनी उस नीतिको कार्यान्वित नहीं करेगी जिसकी घोषणा अभी हालमें की है तथा जिसके अनुसार कानूनके अनुसार कार्य करनेकी चेष्टा होगी ।

सरकारी अधिकारी वक्तव्यको स्पष्ट न कर सका था । यह वक्तव्य मन्त्रिमण्डलकी बैठकके बाद दिया गया था जिसमें नरम दल वालोंने सन्धिकी आलोचना की थी । रायटर

आंखोंपर पट्टी बांधी

वकील साहबकी वापसी

आगरा, १० जनवरी । बाह तहसील के वकील बाबू वंशीधर, जिन्हें कुछ दिन पूर्व डाकुओंने दिन-दहाड़े अपहृत कर लिया था, अपने घर सुरक्षित लौट आये । कहाजाता है कि डाकुओंने उनकी आंखों पर पट्टी बांधकर उन्हें बेहोशीकी हालतमें एक जङ्गलमें छोड़ दिया था, जहांसे होश आनेपर वे घर आये । यह उल्लेखनीय है कि प्रायः दो सप्ताहपूर्व बाबू वंशीधरको एक इक्केपर अपने मुंशी और मुवक्किलों के साथ एक मामलेकी पैरवीके लिये जाते समय कुछ डाकू जबर्दस्ती पकड़ ले गये थे और रिवाल्वरकी नोकपर उनके साथियोंको उनकी मदद करनेसे रोक दिया था ।

भारत सरकार

सप्लाइ डिपार्टमेण्ट

टेण्डर की सूचना

टेण्डर नं० सी०.डी० डी०।एम०एस०सी०। ता० ३१ जनवरी १९४५

कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स) कलकत्ता निम्नलिखित मालको खरीदने और स्थानान्तरित करनेके लिये मुहरबन्द टेण्डर मांगते हैं:—

माल	परि...
सफेद सूती होजियरी वस्त्र	४९९...
रंगीन सूती ,, ,,	६६०
सफेद सूती कनवास	२२३१...
पारासोल कवर (रङ्गीन)	२४००
महिलाओंके सूती मोजे	८४००
पारासोल कवर (काला)	३६००
पारासोल फ्रेम फिटिंग सहित	६०००
सूती मशहरी	७९०
कैंची	३...
सूती खद्दर	४०...
सफेद फाइवर हैट	२१६...
महाजंग बक्स	...

(२) उक्त सभी वस्तुएं नं०६, इस... ईस्ट कलकत्तेमें पड़ी हैं और डिप्टी डा... क्टर आव डिस्पोजल्स, २ फेयरली... कलकत्ताको आवेदन कर उनसे प्राप्त पा... को पेश कर सभी चीजें देखी जा सकती... आफर देनेके पूर्व टेण्डर दाताओंको मा... वास्तविक स्थितिसे पूर्णतया सन्तुष्ट हो... चाहिये । 'कण्ट्राक्टकी शर्तों' के मुता... टेण्डरोंपर विचार किया जायगा । ... प्रतियां डायरेक्टर आव डिस्पोजल्ससे... की जा सकती हैं ।

बेचे जानेवाले सभी माल अथवा किसी अंशके लिये टेण्डर देनेका... दाताओंको अधिकार है । कण्ट्रोलर... सप्लाइज (डिस्पोजल्स) टेण्डरके... अंशको स्वीकार करनेका अधिकार... हैं जबतक कि उसके विपरीत कोई... स्पष्ट न लिखी गयी हो ।

टेण्डरोंको अवश्य ही मुहरबन्द लि... में भेजना और उसके ऊपर टेण्डर... तथा तारीख लिख देना चाहिये । टेण्डर... कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स)... दफ्तरमें ३१ जनवरी १९४५ की... ४ बजे तक पहुंच जाना चाहिये ।

सफल टेण्डरदाताओंको उपर्युक्त... उनके आफर स्वीकृत होनेके १९... अन्दर हटा ले जाना होगा ।

भारत सरकार

सप्लाई डिपार्टमेण्ट

नीलाम बिक्रीकी सूचना

कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स) नं० २, फेयरली प्लेस, कलकत्ताके अनुसार मेसर्स मैकेंजी लाल एण्ड... ९ मिशनरो, कलकत्ता (गवर्नमेण्ट... नर्स) आम नीलाम द्वारा आर्मी... डीपो, शिवपुर, हवड़ामें बुधवार १... १९४५ के प्रातः काल ९ बजे विभा... गाणमें उद्धार किये हुए सरकारी... बिक्री करेंगे । इच्छुक खरीदार... काम काजके दिन प्रातः काल १०... बजे तक और दो बजेसे ९ बजे... वस्तुओंका निरीक्षण कर सकते हैं ।

पर हित बस जिनके मनमाहीं।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

गतिरोध मिटानेकी चेष्टा

—)*:*(—

भारतका वैधानिक गतिरोध मिटानेके लिये इस समय कई व्यक्तियों द्वारा प्रयास किया जा रहा है। उनको अपने इस प्रयासको कितनी और कब सफलता मिलेगी यह तो भविष्य ही बतलायेगा। इस दिशामें जो चेष्टाएं की गयी हैं, अबतकवे स्वार्थियोंके दांव-पेंचके द्वारा सदा खटाई डाली जाती रही हैं और महात्मा गांधी जैसे आशावादी व्यक्तिको भी गत गांधी-जिन्ना सम्मेलनके बाद जो निराशा हुई है, वह स्पष्ट बताती है कि यह काम आसान नहीं है। फिर भी सर तेजबहादुर सप्रू जैसे उत्साही वयोवृद्ध सज्जन अपनी समितिके साथ इस दिशामें सचेष्ट हैं और साम्प्रदायिक समझौतेके लिये उन्हें मध्यस्थ माननेसे मि० जिन्नाने जो इन्कार किया है, उसके बावजूद उनकी समिति अपना कार्य जारी रख रही है। केन्द्रीय असेम्बली कांग्रेस पार्टीके नेता श्री भूलाभाई देसाई भी इस दिशामें प्रयत्नशील दिखायी पड़ रहे हैं। वे कई बार लार्ड वावेल, महात्मा गांधी और अहमद नगरमें कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्योंसे मिले हैं और अभी फिर मिलेंगे, ऐसी भी रिपोर्टें समाचारपत्रोंमें पढ़नेको प्राप्त हुई हैं। यह भी कहा जाता है कि श्री भूलाभाई देसाईने केन्द्रीय असेम्बलीमें मुसलिम लीग पार्टीके उपाध्यक्ष नवाबजादा लियाकत अलीखांसे मुलाकात की है और वे इस चेष्टामें हैं कि वायसरायकी एक्जीक्यूटिव कौन्सिलपर केन्द्रीय असेम्बलीमें वार किया जाये तथा उसपर अधिकार जमानेकी चेष्टा की जाय। समाचारमें यह भी बताया गया है कि केन्द्र और प्रान्तोंमें लीग कांग्रेस कोलीशन सरकारें स्थापित की जायेंगी।

अगर कोलीशन सरकारें स्थापित हों और उनमें ऐसे देशसेवक प्रतिनिधि लिये जायें जो देशकी वर्तमान आर्थिक दुरवस्थाको मिटानेकी सफल चेष्टा कर सकें, तो वर्तमान गैर-जिम्मेदार गवर्नर शासन अथवा गवर्नरोंकी मर्जीपर नाचनेवाली तथाकथित स्वायत-शासन प्राप्त सरकारोंकीअपेक्षा जनताकी अधिक सेवाकर सकती हैं। लेकिन जहां मुसलिम लीगके प्रेसीडेंट मि० जिन्नाका ऐसा रुख बना हुआ है, वहां इस सम्बन्धमें विशेष आशाको स्थान नहीं दिया जा सकता। परन्तु साम्राज्यवादियोंके पेटमें इतने हीसे चूहे कूदने लगे हैं। लार्ड हेलीफैक्स और भारत सचिव मि० एमरी अपने चट्टे-बट्टोंके साथ व्यग्र हो उठे हैं। उनकी कुचेष्टाओंका ही यह प्रभाव है कि साम्प्रदायिक अनैक्य डेढ़ सौ वर्षों तक ब्रिटिश शासन रहनेपर भी दूर नहीं किया जा सका। ऐसी एकता स्थापित होने ही क्यों दी जाये, क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्यशाहीका तख्त इसी अनैक्यके आधारपर ठहरा है। ब्रिटेन और भारतकी सरकारोंने जनताके पैसे साम्राज्यवादी स्वार्थको सिद्ध करनेके लिये किस तरह पानीकी भांति बहाये हैं और मित्रराष्ट्रोंमें भारतीयों और कांग्रेसको गुमराह करनेकी कैसी चेष्टा की है। इसपर काफी प्रकाश डाला जा चुका है।

महात्मा गांधीने श्री भूलाभाई देसाईको मुसलिम लीग पार्टीसे समझौतेकी चर्चा चलानेकी अनुमति दी है जरूर, लेकिन कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके नजरबंद सदस्योंसे श्री भूला भाई देसाईकी क्या बातचीत हुई है, यह अबतक अज्ञात है। कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्योंका जबतक सरकारके साथ कांग्रेसका कोई सम्मानपूर्ण समझौता कैसे होगा, यह हरएक व्यक्ति समझ सकता है। इसलिये सर तेजबहादुर सप्रू अथवा श्री भूलाभाई देसाईका प्रथम और सर्वाधिक आवश्यक कर्तव्य यह होना चाहिये कि वे कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्योंको मुक्त करनेकी चेष्टा करें। इधर विभिन्न प्रांतोंमें कुछ अधिक संख्यामें कांग्रेस नजरबन्द अवश्य मुक्त किये गये हैं और इससे कुछ लोग यहां तक अटकलें लगाने लगे हैं कि वर्किङ्ग कमेटीके सदस्य भी यथासम्भव शीघ्र ही मुक्त किये जायेंगे। लेकिन अभी उस दिन यूनाइटेड प्रेसके दिल्लीके एक संवादमें स्पष्ट तौरपर बता दिया गया कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्योंको सरकारकी ओरसे नोटिस दिया गया है कि उनकी नजरबन्दीकी जो मियाद १६ जनवरीको समाप्त होती है, वह उस समय तकके लिये बढ़ा दी गयी, जबतक उक्त नोटिसके उत्तरमें आये हुए नजरबन्दोंके उत्तरपर विचार करनेके बाद सरकार उन्हें मुक्त करनेके लिये आवश्यकता न महसूस करने लगे। राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद अपने वक्तव्यमें, जो डा० सैयद महमूद द्वारा प्रकाशित कराया गया था, स्पष्ट तौर कह चुके हैं कि कांग्रेस नेता सरकारके नोटिका न उत्तर देंगे और न प्रतिवाद करेंगे। ऐसी दशामें सरकारको कोई उत्तर प्राप्त होना असम्भव है और जबतक स्वयं सरकार इस दिशामें पहले कदम न उठाये, तबतक कमसे कम ६ महीनेके लिये नजरबन्दोंकी मियाद बढ़ गयी ही समझनी चाहिये।

हम यह नहीं कहते हैं कि जबतक कांग्रेसके कर्णधार जेलोंसे मुक्त न कर दिये जायें तबतक वर्तमान वैधानिक सङ्कट को टालने अथवा साम्प्रदायिक एकता स्थापित करनेके लिये कोई चेष्टा न की जाये और हाथपर हाथ धरे बैठा रहा जाये। बल्कि हमारे कहनेका तात्पर्य यह है कि सारी चेष्टाएं एक तरफ रहें और कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्यों एवं अन्य कांग्रेसजनोंको मुक्त करानेका कार्य सामने रखा जाये। लोकप्रिय नेताओंको जबतक जनताके बीचमें नहीं लाया जायेगा तबतक किसी भी दिशामें पूर्ण उत्साहसे कार्य नहीं किया जा सकेगा। इसलिये वर्तमानमें वैधानिक गतिरोध दूरकरनेका सर्वोत्तम उपाय यह है कि सरकारको अपने लोकप्रिय नेताओंको अविलम्ब मुक्त करनेकी चेष्टा की जाये।

साम्प्रदायिक एकता स्थापित करनेके मार्गमें एक तो यों ही कठिनाइयोंके पहाड़ उपस्थित हैं। अगर किसी तरह उनको लांघ भी लिया जाये और हिन्दू-मुसलिम एकता स्थापित हो भी जाये, तब भी हमें पूरा विश्वास है कि साम्राज्यवादी जादूगरके पिटारेसे अनेक ऐसी जादूकी चीजें निकाली जायेंगी जो साम्राज्यवादी सत्ताके शिकंजोंको मजबूत बनानेमें काफी सहायता पहुंचायेंगी। इसलिये हिन्दू-मुसलिम एकता स्थापित करनेके बाद भी अगर हम सोचने लगें कि ब्रिटिश साम्राज्यवादी अपना बोरिया-बिस्तर बांधनेकी तैयारी करने लगेगा, तब यह हमारी भूल ही होगी। नवाबजादा लियाकत अली नेख वर्धागञ्जसे गुजरते हुए हालमें एसोशियेटेड प्रेसको जो वक्तव्य दिया है, उसमें इतना अवश्य स्वीकार किया है कि हम लोग असेम्बलीमें की जानेवाली लोकप्रिय नेताओंकी मुक्तिकी मांग तथा लोकोपयोगी कार्योंका समर्थन करनेमें एकताबद्ध हैं, लेकिन श्री भूलाभाई देसाईसे मेरी मुलाकातका कोई राजनीतिक महत्व नहीं है। ऐसी दशामें जो लोग श्री भूलाभाई देसाईकी दौड़-धूपसे विशेष आशावादी दिखायी पड़ते हैं, उनकी आशावादिताका कोई जबर्दस्त आधार नहीं मालूम होता। हम श्री देसाईके प्रयासकी सफलताकी कामना अवश्य करते हैं, लेकिन उससे कोई विशेष आशा हम नहीं रखते। हमें आशा है तो सिर्फ अपने हाथोंकी मजबूती की ओर यह मजबूती तभी आ सकती जब हम भारतीय दृष्टिकोणसे सारी समस्याओंका समाधान निकालनेकी चेष्टा करें, जब मि० जिन्ना अपने लोगों (थोड़ी-सी मुसलिम लीगी जनता) के स्वार्थोंकी रक्षाके लिये भारतको हिन्दुस्तान और पाकिस्तानमें बांटनेवाली अपनी योजनाको भारतकी स्वाधीनता प्राप्त कर लेनेके बाद उठायें।

गांव कैसे स्वावलंबी बनेंगे ?

गत सप्ताह सेवाग्राम कई हलचलोंका
केन्द्र था। बुनियादी शिक्षा-सम्मेलनका
उद्घाटन स्वयं महात्मा गांधीने किया।
विभिन्न प्रांतोंमें गत ६ वर्षोंके अन्दर
इस शिक्षा योजनाकी जो प्रगति हुई है
उसकी रिपोर्टें यद्यपि विशेष उत्साहवर्द्ध
नहीं कही जा सकतीं तथापि इतना संतो
तो होता ही है कि जहां हमारी भार
सरकारकी ओरसे अभी राष्ट्रीय शिक्षा
की योजना तैयार हो रही है वहां महा
त्मा गांधीकी प्रेरणासे बनी हुई वर्धा
शिक्षा योजना कई वर्षोंसे कार्यान्वित
रहा है और अधिक नहीं तो कुछ अंशों
देशको लाभान्वित तो इसने किया
है। इतना तो मानना ही पड़ेगा कि भा
जैसे गरीब देशमें ७ लाख गांवोंको स्व
वलम्बी बनानेके लिये इससे अधि
अच्छी योजना नहीं हो सकती। महात्
गांधीने अपने भाषणमें स्पष्ट कर दिया
कि गांवोंको स्वावलम्बी बनानेके लिये
बाहरसे सहायताकी आशा नहीं रख
होगी। गांवोंकी समृद्धि शहरों अ
अन्य देशोंसे नहीं आयेगी, बल्कि गां
में ही उत्पन्न की जायगी और उ
स्रष्टा होंगे कार्यकर्ता और गांवका प्रत्
व्यक्ति। महात्माजीने बिलकुल ठीक
है कि विशुद्ध सेवाभावसे प्रेरित हो
ही इसकेविस्तारमेंउपयोगी कार्य किया
सकता है और इसलिये ग्रामसेवक तै
करनेकी अत्यन्त आवश्यकता है।
सप्ताह सेवाग्राममें ग्राम सेवा शिक्षण शि
भी श्री कनू गांधीके संरक्षणमें एक मा
के लिये खोला गया, जिसमें डेढ़ स
अधिक स्वयंसेवकोंको खादी, ग्रामो
और बुनियादी तालीमकी सैद्धांतिक
व्यावहारिक शिक्षा दी जायेगी। बुनि
तालीम केवल बच्चों तक ही सीमि
रखकर प्रौढ़ोंमें भी प्रसारित करनेकी
श्यकता बतायी गयी। इसमें सन्देह
है कि इतना बड़ा काम हाथमें लेना सं
साधनोंके साथ अपार समुद्रमें कूदने
साहसिक नहीं। किंतु लगनवान ले
लिये कोई काम असम्भव नहीं।
यादी तालीमके लिये महात्माजीने
नागरी और उर्दू दोनों ही लिपि
श्यक बतायी है और ग्रामसेवकोंको
ही लिपियोंका ज्ञान होना चाहिये।
राष्ट्रीय सरकार होती तो इस योज
बहुत आगे बढ़ाया गया होता और
की अवस्थामें आज अधिक उत्ति
जागृति उत्पन्न हुई होती है।
अपने यहां तो साम्राज्यवादी सर
जो साम्राज्यका हितचिन्तन पहले
प्रजाजनका बादमें करती है।
ऐसी सरकारसे हमें इस दिशामें
आशा नहीं रखनी होगी बल्कि
बाहुबलसे हीइसे जोर-शोरसे आ
चलना होगा।

साप्ताहिक सिंहावलोकन ।

गत १६ दिसम्बरको जमन सेनापति रुण्डस्टेटने जो आक्रमण आरम्भ किया था, उसकी प्रगति आगे चलकर मित्र सेनाओं द्वारा किस तरह रोक दी गयी, यह पाठकोंको मालूम हो चुका है। इस सप्ताह रुंडस्टेटकी सेना पीछे हटती रही है, पर वह व्यवस्थित ढंगसे हटाय जा रही है और यद्यपि जितनी भूमिपर आक्रमणके आरम्भमें जर्मनोंमें अधिकार कर लिया था, उसका प्रायः आधा भाग वह छोड़ चुकी है, तो भी कहीं उसका कोई अंश मित्र सेनाओंके घेरेमें नहीं पड़ सका और पहल करनेकी क्षमता अबतक जर्मनोंहीके हाथमें हैं। रुंडस्टेट अपनी चुनी हुई सेना द्वारा पीछे हटनेवाली सेनाकी रक्षाके लिये लड़ाई करता हुआ अपनी सेनाको हटा रहा है। मित्र सेनाओंकी ओरसे मौसमकी खराबीके कारण हवाई जहाजोंको काममें लाना सम्भव नहीं होनेके कारण जर्मन सेनाकी हानि बीस प्रतिशतसे अधिक नहीं समझी जाती। सबसे मार्केकी बात इस सम्बन्धमें यह है कि रुंडस्टेटकी यह सेना जर्मनोंके भीतर रक्षित जर्मन सेनासे नहीं बल्कि नार्वे और डेनमार्कसे हटाये हुए डिवीजनोंसे लायी गयी है, जिससे यदि यहां या अन्य किसी भागमें वह आक्रमणका निश्चय करे, तो उसके लिये कुमुककी कमी नहीं हो सकती। अब इस अंचलमें होनेवाले युद्धको जर्मन आक्रमणका नाम न देकर आर्डेनेजकी भारी लड़ाई कहना अधिक उपयुक्त होगा। रूसी युद्धक्षेत्रमें ख्याति लाभ किये हुए फील्ड मार्शल माडेल द्वारा आर्डेनेजकी जर्मन सेनाका काम किया जा रहा है। गहरी बर्फके कारण उनके इस काममें सहायता पहुंच रही है और जैसा कि इटालीमें किया गया है, वैसे ही यहां भी जर्मन सेनाको पीछे हटानेमें प्रत्येक पहाड़ी, जंगल, नदी और सड़कसे लाभ उठाया जा रहा है। माडेल वैज्ञानिक ढंगके युद्धमें निष्णात समझा जाता है। गत दिसम्बर महीनेमें वह वारसाके रणक्षेत्रसे पश्चिमको भेजा गया और सीगफ्रीडकी पांतके पीछे जर्मनीके अन्तिम मोर्चेकी लड़ाई जब छिड़े, तब जर्मन सेनाओंका नायकत्व करनेका भार उसे सौंपा गया है। इस समय ऐसा प्रतीत होता है कि पीछे हटती हुई जर्मन सेनाके मुकाबलेमें लड़नेवाली ब्रिटिश और अमरीकन सेनाओंकी प्रगति मौसमकी भयंकरताके कारण धीमी हो रही है, खासकर उत्तर मध्य भागके मोर्चेमें और दक्षिणी भागमें कम प्रगति हो रही है। यह स्पष्ट है कि जर्मन सेनाके मुकाबलेमें इस मोर्चेपर मित्र सेनाओंको अभी गहरी लड़ाइयां लड़नी पड़ेंगी। अब यद्यपि आर्डेनेज क्षेत्रमें मित्र सेनाओंको सफलता मिल रही है, क्योंकि जर्मन सेना पीछे हट रही है, किन्तु उनकी यह सफलता दक्षिणमें अलसेस और लोरेनके रणक्षेत्रको कमजोर बनाकर ही प्राप्त की जा सकी है। मालूम हुआ है कि उत्तरमें जर्मनोंका आगे बढ़ना रोकनेके लिये दक्षिणके मोर्चेपरसे मित्रसेनाके एक अंशको हटाकर उसे निर्बल बनाना पड़ा है। स्पष्ट है कि जर्मन सेनापतिको इसका पता लग गया, इसलिये उसने इस दक्षिणी मोर्चेपर भी तत्काल आक्रमण आरम्भ कर दिया। फल यह हुआ कि वहां जर्मन सेना काफी सफलता प्राप्त कर सकी और अब स्ट्रासबर्गपर संकट उपस्थित करती जान पड़ती है। यह युद्धकी दृष्टिसे बड़े महत्वका स्थान और उत्तरसे बढ़नेवाली जर्मन सेना उससे ग्यारह मीलपर हो रह गयी है। इस तरह फ्रेंच आक्रमण आरम्भमें बहुत आशाजनक जान पड़ता था, वह समाप्त हो गया और अपूर्ण ही रह गया। इसका कुछ कारण तो काफी सेनाका न होना और कुछ भयंकर मौसम है। रुंडस्टेटकी पहल करनेकी क्षमता नष्ट नहीं हुई है, इसलिये हो सकता है कि वह आर्डेनेज क्षेत्रसे अपनी यान्त्रिक सेनाको कहीं अन्यत्र जोरदार आक्रमण करनेके उद्देश्यसे ही हटा रहा हो—यह नया जर्मन आक्रमण २१वीं मित्र सेनाके विरुद्ध हालैण्डमें ही हो सकता है और अलसेस-लोरेनमें भी। यदि रुंडस्टेटको पोलैण्डमें रूसी आक्रमण आरम्भ होनेमें देर होनेसे सहायता पहुंचती रही होगी, तो उसे यह जानकर अवश्य निराशा होगी कि रूसी सेनाने उधर भी आक्रमण आरम्भ कर दिया है। लेकिन दूसरे मोर्चेकी जो आवश्यकता है सो तो है ही, जबतक जेनरल आइजेन हावरके पास युद्धकौशल दिखानेके लिये भारी रिजर्व सेना न जमा हो जायेगी, पश्चिमीय रणक्षेत्रपर मित्र सेनाओंकी विजय होनेकी सम्भावना कम ही जान पड़ती है, जैसा कि स्टेट्समैनको मिली हुई लन्दनकी ११ जनवरीकी खास रिपोर्टमें प्रकट किया गया है। मित्रसेनाओंके लिये और अधिक सैनिक भेजनेकी आवश्यकता ब्रिटिश और अमरीकन सरकारोंको मालूम पड़ते ही वे लाखोंकी संख्यामें नये आदमियोंको सैनिक सेवाके लिये बुलानेकी व्यवस्था बड़ी शीघ्रतासे कर रही हैं।

अमरीकाके युद्धसचिव मि० स्टिमसने पहलेके निश्चयोंसे कई लाख अधिक सैनिकोंको बुलानेकी मांग करते हुए कहा है कि "यह स्पष्ट है कि यूरोपीय और प्रशान्तकी—दोनोंही लड़ाइयोंकी प्रचण्डता इतनी बढ़ रही है कि अधिक सैनिकोंकी मांग करना आवश्यक होगया है।" साथही उन्होंने यह भी कहा है कि, "स्पष्ट कि जर्मन अन्ततक लड़ बिना यह स्वीकार करनेको तयार नहीं, जो अनिवार्य है। जापानके लिये लड़ाई निश्चित प्रोग्रामसे आगे बढ़ा दी गयी है। प्रभावपूर्णताके गजसे नापनेसे अमरीकाकी सेना जितनी होनी चाहिये उससे कम ही है अधिक नहीं।" सच तो यह है कि गत एक महीनेमें अमरीकन सेनाकी रुंडस्टेटके आकस्मिक अक्रमणके कारण अत्यधिक हानि हुई है और इसीसे ब्रिटिश जेनरल माण्टगोमरीको उत्तरी भागके मोर्चेको संभालना पड़ा है और कितनेही अमरीकन कमांडर अपनी सरकार द्वारा हटाये और पदच्युत किये गये हैं। जर्मनी सेनाओंकी भी कम हानि नहीं हुई होगी। तब यह प्रश्न उठना स्वाभाविक हैकि रुंडस्टेटको आर्डेनेज और अलसेसके मोर्चोंके लिये आदमी कहांसे मिलते हैं? 'यार्कशायरपोस्ट' के सैनिक संवाददाताका कहना है कि, "इस प्रश्नका उत्तर उस निश्चयमें मिलेगा, जो पूर्वके शांत रणक्षेत्रपर अभी और सेना न भेजनेके लिये किया गया है, जिससे रुंडस्टेटको पश्चिमी मोर्चेपर एक सेना बनाने योग्य किया जा सके। सेना बनानेका यह काम कितने ही सप्ताहोंसे हो रहा था।" हंगरीकी लड़ाई जितनी ही अधिक देर तक चलेगी पूर्वी रणक्षत्रपर भारी पैमानेपर रूसी सेनाके अक्रमणमें उतनी ही देर लगेगी जैसे जेनरल आइजेन होवर तबतक जर्मनीके विरुद्ध आक्रमणकी कोई कारवाई नहीं कर सकते जबतक आर्डेनेजमें ठोके हुये रुंडस्टेटके खूंटेको वे न दूर करलें। जिस नार्वेसे हटाये हुये सैनिकों द्वारा रुंडस्टेटने यह आक्रमण आरम्भ किया था, वहांसे और भी आठ-दस जर्मन डिवीजन हटाये जा रहे हैं और इटालीसे भी जर्मन डिवीजनोंके हटानेका विचार हिटलरने किया है, ऐसा कहा जाता है। इधर अटलांटिकमें जर्मन गोताखोरोंका उपद्रव फिर बहुत बढ़ गया है और इस सम्बन्धमें ब्रिटेन और अमरीकाके एक संयुक्त वक्तव्यमें कहा गया है कि दिसम्बरके महीनेमें जर्मन गोताखोरोंने नये जोशके साथ तत्परता दिखाई है। मित्रराष्ट्रोंके अधिक व्यापारिक जहाज डुबाये जानेकी खबर मिली है, यद्यपि अटलांटिकके विभिन्न भागोंमें मित्र भी गोताखोरोंको डुबाते रहे हैं। महासागरको अमरीकन जंगी बेड़ेके प्रधान सेनापति जेनरल इनग्रामने तो यहांतक कहा है कि महीने दो महीनेमें ही अमरीकापर उड़न बमोंका हमला हो सकता है। लम्बी उड़ानके विमानों, जहाजों तथा गोताखोरों द्वारा जर्मन उड़नबमोंका आक्रमण कर सकते हैं। अटलान्टिकमें कम तीनसौ जर्मन गोताखोर हैं।

पूर्वमें अकयाबमें सेना उतरने गत शनिवारको वहांसे बत्तीस मील माइबेन स्थानपर भी मित्रसेना गयी है। इस तरह बर्माके उद्धारके मित्रसेनाओंने कार्यारम्भ कर दि उधर फिलिप्पाइन द्वीपपुंजके महत्वके भाग लुजेनमें भी मित्र रीकन सेना उतर गयी है और का यह समय इस भागके लिये सर्वोत्तम समझा जाता है। सैनिक रिपोर्टर कहता है कि प्पाइन द्वीपपुंजके इस सबसे प्रा टापूपर अधिकार करने और कमसे कम ढाई लाख ज घेरनेमें शीघ्रताकी आशा मुश्किल जा सकती है, क्योंकि लुजोनका भाग पहाड़ी है। इटालीने दिखा कि रक्षात्मक लड़ाईके लिये पहाड़ सुभीतेके होते हैं।" ऐडमिरल नि १२ जनवरीको अमरीकन मजूरों रेडियोसे ब्राडकास्ट करते हुए कहा "जापानियोंपर विजय शीघ्र प्राप्त न हमें आशा करनी चाहिये कि हमा अपनी हार बचानेके लिये जी लड़ेगा।" इसीसे उन्होंने मजूरोंसे के लिये अधिकसे अधिक सामग्री करनेकी अपील की है।

त्रिराष्ट्र कानफरेन्सके समय स्थानका निश्चय मार्शल स्टेलिन रूजवेल्ट और मि० चर्चिलके बी चुका है, इस तरहका समाचार आया है। अमरीकाकी खबर है रूजवेल्ट अपने मित्र मि० चर्चिल मार्शल स्टेलिनसे शीघ्र मिलनेके लि शीघ्रतासे तैयारी कर रहे हैं। फि फरवरीमें ही तीनों नेताओंकी कान होनेकी आशा की जाती है। रा रूजवेल्टने अभी कई दिन पहले कहा है, जर्मनीकी अन्तिम आशा राष्ट्रोंमें फूट और गड़बड़ पैदा अपने प्रयत्नोंपर ही है। अमरीकाके सेक्रेटरी मि० स्टेटिनियसने संयुक्त की घोषणाके तृतीय वर्ष दिवसके सरपर रा० रूजवेल्टका जो सन्देश है, उसमें कहा है कि "हमें अब भी दूर चलना है। हम जानते हैं कि केवल संयुक्तराष्ट्रकी हैसियतसे युद्धमें अन्तिम विजय प्राप्त करने उसके बाद शांति जीतनेकी अपनेमें देखते है। हम जानते हैं कि सभी राष्ट्रोंको संयुक्त बनाये रखकर और मित्रतापर दृढ़कर दोनों ही विजय करेंगे।" मित्रराष्ट्रोंमें मतभेद है, सभी स्वीकार करते हैं। पर गोयबेल्स ओरसे बोलते हुए डा० कार्ल स्वार्ट ने ८ जनवरीकी रातमें जर्मन चेतावनी दी है कि वह ब्रिटेन और

रीकामें फूट पड़नेके ऊपर आशाएं न बांधे। 'डेलीमेल' के अनुसार उन्होंने यह कहा—"हमें नष्ट कर डालनेकी योजनाके ऊपर शत्रुमें मतभेद नहीं है। इस समयके लिये ब्रिटेन और अमरीकाकी मित्रता अटूट है। वे आपसमें झगड़ें, तो भी भले या बुरेके लिये संयुक्त हैं। वे एकही नावके मुसाफिर हैं और तीसरे साझीदार रूसके मतसे सहमत हैं।" जर्मन प्रचारकका ऐसा सोचना अनुचित नहीं। कारण, जब मित्रराष्ट्रोंका विश्वास है कि आपसमें मिले रहकर ही वे अपने शत्रुओंको हरा सकते हैं और उन्हें हराना अभीष्ट है ही, तब वे किसी मतभदके कारण आपसमें फूटनेको कसे तैयार हो सकते है? अब-तक अमरीकाका यह आग्रह था और ब्रिटेन भी उसके सुरमें सुर मिलाता था कि जर्मनोंसे उद्धार किये जानेवाले भू-भागोंकी सीमा आदिके निर्णयका प्रश्न युद्धकी समाप्तिके बाद निबटाया जाये। परन्तु लुबलिनकी पोलिश सरकारको स्वीकार कर रूसने उसे यह आग्रह त्याग करनेको लाचार कर दिया है और खबर है कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट जब अपने मित्र स्टेलिन और चर्चिलसे मिलेंगे, तो अमरीकाके भावपरिवर्तनके देशोंके साथ मिलेंगे और कहेंगे कि अमेरिका अब अन्तिम रूपमें अत्यन्त आवश्यक प्रश्नोंका निबटारा युद्ध की समाप्तितक स्थगित रखकर इसी समय कर लेना चाहता है।" यहां तो स्टेलिनकी टेक थी और जब वह पूरी कर दी जायेगी, तो कमसे कम इस समय तो तीनों प्रधान मित्रराष्ट्रोंका सहयोग और सुदृढ़ ही हो जाना चाहिये, यद्यपि इटली, यूनान और तेलके प्रश्न कम बाधक नहीं हैं। जब इच्छा है तो उसके लिये मार्ग भी निकल ही सकता है। यूनानमें जेनरल स्कोबी और भक्तोंके संगठन ई०एल० ए० एस० बीच लड़ाई बन्द करनेके लिये समझौता हो गया है और १५ जनवरीसे बन्द हो जायेगी। इससे भी तीनों नेताओंकी कानफरेंसका काम सरल जायेगा, इसमें संदेह नहीं है।

महिलाओंको श्री० नायडूकी सलाह

बेजवाड़ा, १३ जनवरी। श्रीमती सरोजिनी नायडू जिस ट्रेनसे मद्रास जा रही थीं वह जब बेजवाड़ामें रुकी तो हजारों स्त्री-पुरुष दर्शनार्थ स्टेशनपर एकत्रित थे। जिला महिला संघ, आन्ध्र प्रान्तीय किसान संघ तथा साम्यवादी पार्टीके कार्यकर्ता भी उपस्थित थे। नगर महिला संघकी ओरसे श्रीमती ...ने अपने संघका कार्य बतलाया। श्रीमती नायडूने उन्हें सलाह दी कि वे हरिजनोद्धार तथा रचनात्मक कार्य और निरक्षरता दूर करनेका प्रयास करती रहें। ए० प्रेस

हूरोंके प्रति सरकारी नीति

कराची, १३ जनवरी। एक सरकारी अधिकारीने कहा कि हूरोंके विरुद्ध जो कारवाई सरकार कर रही है उसमें देरी लगना अनिवार्य है। मशहूर बदमाशोंको पकड़नेकी चेष्टा सरकारकी ओरसे हो रही और पुरस्कारोंकी घोषणा की गयी है। उसने और बताया कि सरकारकी योजना दीर्घकालीन इसलिये होगी कि वह हूरोंकी विचारधारा बदलकर उन्हें सर्वसाधारणकी भांति जीवन निर्वाह करनेको प्रेरित करेगी।

नज० बन्दोंकी सहानुभूतिमें उपवास

कानपुर, ६ जनवरी। आज उन कांग्रेस कार्यकर्ताओंके प्रति सहानुभूति प्रकाशनार्थ, जो जेलोंमें बन्द हैं, नगर पीड़ित सहायता समितिके सदस्योंने उपवास रखा। समितिके सदस्योंने जेलोंमें बन्द कार्यकर्ताओंके परिवारोंके सहायतार्थ और अधिक प्रयत्नपूर्वक धन संग्रह करनेका निश्चय किया।

भारत सरकार

सप्लाई डिपार्टमेण्ट

टेण्डर की सूचना

कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स) द्वारा इच्छापुर स्थित मेटल और स्टील फैक्टरीमें पड़े हुए फेरस स्क्रेपको खरीदने और स्थानान्तरित करनेके लिये टेण्डर मांगा जाता है:—

१. स्टील बोरिंग्स और टर्निंग्स—३१२९.८६ टन टेण्डर देनेके पूर्व टेण्डरदाताओंको मालकी वास्तविक हालतसे अपनेको पूर्ण सन्तुष्ट कर लेना चाहिये। 'कण्ट्राक्टकी शर्तों' के मुताबिक टेण्डर पर विचार किया जायगा। इसकी कापियां कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स) २, फेयरली प्लेस, कलकत्तासे प्राप्त की जा सकती हैं।

टेण्डरदाताओंको सभी माल अथवा उसके किसी अंशके लिये टेण्डर देनेका पूरा अधिकार है। कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स) को टेण्डरके किसी अंशको स्वीकार करनेका अधिकार है, जबतक उसके विपरीत कोई बात स्पष्टतया जाहिर नहीं की गयी है।

टेण्डरोंको अवश्य ही मुहरबन्द लिफाफों में बन्द होना और उसके ऊपर "टेण्डर न० सी० डी० डी० / एफ० आर० एस० ३१।१९६ ता० २२ जनवरी १९४५ वास्ते खरीदने व हटाने "फेरस स्क्रैप" लिखा होना चाहिये। टेण्डरोंको कण्ट्रोलर आव सप्लाइज (डिस्पोजल्स) २, फेयरली प्लेस, कलकत्ताके पास २२ जनवरी १९४५ की शाम के ४ बजे तक पहुंच जाना चाहिये। टेण्डरोंमें बताये गये मूल्य १९ दिनों तक लागू समझे जायेंगे।

सफल टेण्डरदाताओंको आफर स्वीकृत होनेकी तारीखसे ३० दिनोंके अन्दर उपर्युक्त स्क्रेपको हटा लेना होगा।

कौन क्या कहता है

हिन्दू-मुस्लिम एकता

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने होट-
समें पत्र प्रतिनिधियोंसे कहा कि
स तरह अमेरिकाने फिलिपाइन्सकी
तन्त्रताके तिथि निश्चित कर दी है
सी तरह ब्रिटेन यद्यपि भारतकी स्वत-
ता प्रदान करनेकी एक निश्चित तिथि
ी घोषणा कर दे तो भारतीय अशांति
ीघ्र दूर की जा सकती है। आपने यह
ी कहा कि हिन्दू मुस्लिम मतभेद पैदा
रनेवाले अंग्रेज जबतक भारतमें रहेंगे
बतक हिन्दू-मुस्लिम एकता असम्भव
। गांधी-जिन्ना वार्तालापको कठिन
नानेका ब्रिटिश प्रयत्न इस नीतिका एक
दाहरण है।

क्रांति क्या है?

कलकत्ता विश्वविद्यालयके अध्यापकों
ौर छात्रोंकी एक सभामें भाषण करते
ए श्रीमती सरोजिनी नायडूने कहा कि
ैं आपसे इस बातको मालूम करनेको
कहती हूं कि हमें अपनी स्वतन्त्रताके
सम्बन्धमें इस तरहकी स्थिति और वाता-
रणकी सृष्टि करनी चाहिये कि संसारके
भविष्य निर्माणमें हमारी आवाज सुनी
जाये। आज अवस्था यह है कि हमलोगों
में ऐक्य नहीं है और अभीतक हम लोगों
को किसी तरहकी भी स्वतन्त्रता नहीं
हासिल की। मैं आप लोगोंको इनकिलाब
जिन्दाबादका नारा लगाते सुनती हूं।
क्या वस्तुतः आप चाहते हैं कि क्रांति चिर
जीवित रहे? आप यह भी जानते कि
ांति क्या है? क्रान्तिको स्वतन्त्रता और
ुक्तिको, जो हम सब लोगोंके लिये काम्य
स्तु है, प्राप्त करनेका एक ढंग है। किंतु
आप यह क्रान्ति किस तरह पैदा करें?
नारे लगाकर, केवल इच्छा प्रकट करके
और एक दूसरेपर सन्देह करके क्रान्ति
नहीं पैदा की जा सकती। यह तभी हो
सकता है जब भारतका प्रत्येक मनुष्य
यह महसूस करेगा कि इस देशको स्वतंत्र
करके उपयुक्त स्थिति उत्पन्न करनेका
कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व मुझपर है।
यह तभी हो सकता हैं जब राष्ट्रीयताके
आधारपर आप खड़े होंगे और यह मह-
सूस करेंगे कि नवीन संसारके निर्माणमें
हमारा भी अधिकारपूर्ण हिस्सा है। हिंदु-
स्तानकी स्वतन्त्रताके लिये कांग्रेस लड़
रही है जबतक आप लोग एक सेनाका
स्वरूप ग्रहण न करेंगे और अपने बलि-
दानों द्वारा स्वतन्त्रताके आदर्शोंको अपनी
शक्ति न प्रदान करेंगे तो अकेली कांग्रेस
बहुत दूर आगे नहीं बढ़ सकती अथवा
आपको लक्ष्यतक नहीं ले जा सकती।

नयी तालीमपर महात्माजी

सेवाग्राममें खादी विद्यालय भवनमें शिक्षाव्रती, अध्यापकों और शिक्षकोंका एक सम्मेलन डा० जाकिरहुसेनकी अध्यक्षता और प्रायः २०० प्रतिनिधियोंकी उपस्थितिमें गत शुक्रवारको आरम्भ हुआ। महात्माजी द्वारा चलायी गयी नयी शिक्षा प्रणालीकी प्रगति ६ वर्षोंमें कहांतक हुई है यह बताया गया। सम्मेलनका उद्घाटन महात्माजीने किया। मौन दिवस होनेके कारण उनकी लिखित वक्तृता डा० जाकिरहुसेनने पढ़कर सुनायी। गांधीजीने कहा—यद्यपि नयी तालीमके लिये ६ वर्षसे हम काम कर रहे हैं फिर भी अभी तक हमारा काम एक सीमित दायरेके भीतर ही रहा है। अब हम इस दायरेको लांघकर विस्तृत मैदानमें आयेंगे। तालीमी सङ्घका तलपट मैंने देखा है। उचित व्यय सही दिशामें हुआ है। आगे चलकर गांधीजीने कहा—'भाषाका प्रश्न नयी तालीमके क्षेत्रके अन्तर्गत नहीं आता किन्तु तालीम देनेके माध्यमका प्रश्न आता है। माध्यम सदा मातृभाषाके सिवा अन्य नहीं हो सकता। इसके समानही महत्वपूर्ण प्रश्न राष्ट्रीय अथवा एक अखिल भारतीय भाषाका है। अङ्गरेजोंको यह स्थान नहीं मिल सकता। निस्सन्देह यह विदेशियों और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसायकी भाषा है। हमारी राष्ट्रभाषा हिंदुस्तानी ही हो सकती है। राष्ट्रीय भाषाके दोनों स्वरूप हिन्दी और उर्दूको समझानेके लिये और दोनोंमें मन्तव्य स्थापित करनेके लिये हमें देवनागरी और फारसी लिपियोंको सीखना चाहिये। अपने अत्यन्त निकट उपस्थित रहनेवालोंमें भी मैं इस बातका अभाव पाता हूं। साइनबोर्ड दोनों लिपियोंमें हों और हममेंसे एक भी ऐसा व्यक्ति न हो जो दोनों लिपियोंको सहज ही पढ़ और लिख न सकता हो।

गांधीजीने अन्तमें नयी तालीमके केन्द्रीय प्रयोगके लिये सेवाग्रामको आदर्श केन्द्र बताया।

महात्माजी और नेहरू

मद्रासमें एक सार्वजनिक सभामें माननीय श्री श्रीनिवास शास्त्रीने बताया कि शांति सम्मेलनमें हिन्दुस्तानको किस तरहका हिस्सा लेना चाहिये और संसारमें नवीन समाज व्यवस्था लानेके लिये किन बातोंपर उसे जोर देना चाहिये। आपने कहा कि भारतका भाग्य घनिष्ट रूपसे संसारके साथ बंधा हुआ है। अतः हिन्दुस्तानको भावी संसारका ध्यान रखकर इस बातका चिन्तन करना चाहिये कि उस संसारमें वह अपना स्थान कैसा बनायेगा। यह अत्यन्त आवश्यक है कि हमारे कुछ महानतम आदर्शवादी शांति सम्मेलनमें भाग लें, जहां भावी महत्वकी बातें तय की जायेंगी। हिंदुस्तानका प्रतिनिधित्व वायसरायके मनोनीय व्यक्तियों द्वारा नहीं, उन लोगोंके द्वारा होना चाहिये जिनपर देशके लोगोंका पूर्ण विश्वास है। हिन्दुस्तानके हितार्थ उसके निवासियोंकी मुक्तिके लिये, वर्णविशेषताका अन्त करनेके लिये जोरदार आवाज कौन उठा सकता है? कौन निर्भीकतापूर्वक यह मांग पेश कर सकता है? मैं समझता हूं कि वे व्यक्ति हैं महात्मा गांधी और पण्डित जवाहरलाल नेहरू। यदि शांति सम्मेलनमें वे नहीं भेजे जायें तो उस सम्मेलनमें भारतके प्रतिनिधित्व की कोई आवश्यकता नहीं है।

रोम्यां रोलां मरे नहीं

रोम्यां रोलांके निधनपर वक्तव्य देते हुए महात्मा गांधीने कहाकि मेरे और ऐसे लाखों व्यक्तियोंके लिये रोम्यां रोलां मरे नहीं वे अपनी सुप्रसिद्ध रचनाओं और सम्भवतः इससे अधिक अपने नाम विहीन कार्यों द्वारा वे सचमुच जीवित है। अपने विश्वासके अनुकूल सत्य और अहिंसामें ही उनका जीवन था। दूसरोंके कष्ट और यातनासे उनका हृदय रो उठता था। युद्धके नामसे चलाये जानेवाले मानवी हत्याकाण्डके खिलाफ उन्होंने विद्रोह किया था।

भारतकी नारियां

इस्लामिया कालेज, कलकत्ताके छात्रसंघमें भाषण करते हुए श्रीमती सरोजिनी नायडूने कहा—भारतीय नारियां, तुम्हारी माताएं, तुम्हारी बहनें, तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारी पुत्रियां,—राष्ट्रका महत्वपूर्ण अंग हैं और तुम्हारे राष्ट्रकी योग्यताको मापा जायेगा। उन सुविधाओं और अधिकारोंको देखकर, जो राष्ट्रके उच्चतम आदर्शोंको पूरा करनेमें नारियोंको प्राप्त होंगे। महिलाओंको केवल गृहरक्षक बनाकर, महिलाओंको मात्र पारिवारिक उपयोगके अनुकूल बन कर हम अपनी नारी जातिका सम्मान नहीं बढ़ाते। घरमें हो या समाजमें अथवा देशमें उनको उनके अधिकारका उपयुक्त स्थान देकर ही हम नारीका और अपना सम्मान बढ़ा सकते हैं और अपने घर और परिवारोंके प्रति अपना कर्तव्य करनेके बाद अपने पड़ोसीकी आवश्यकताओंकी सेवा करनेका अवसर भी उनको मिलना चाहिये।"

स्वदेश वार्ता

रोम्यांरोलांके प्रति सम्मान

बम्बई कारपोरेशनकी एक बैठकमें सुप्रसिद्ध साहित्यकार रोमांरोलांके प्रति सम्मान प्रदर्शन किया गया और बैठक स्थगित कर दी गयी।

प्रगतिशील लेखकोंका विरोध

प्रगतिशील लेखक संघकी लखनऊ शाखाने रेडियोकी भाषा सम्बन्धी नीति की आलोचना करते हुये प्रस्ताव पास किया है कि रेडियोपर जिस हिन्दुस्तानी का प्रयोग होता है वह कठिन उर्दू है।

भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस

अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसका ११ वां अधिवेशन आगामी १६, २० तथा २१ जनवरीको मद्रासमें होगा। ट्रेड यूनियन कांग्रेसके सभापति श्री एस०ए० डांगे इन दिनों इंगलैंडमें हैं इसलिये उप सभापतियोंमें कोई इस अधिवेशनका सभापतित्व करेगा। देशकी विभिन्न सम्बन्धित ३२० यूनियनोंके प्रतिनिधि पधारेंगे। अधिवेशनमें कई महत्वपूर्ण प्रस्तावोंपर विचार किया जायेगा।

युद्ध प्रयासके सहायक कांग्रेसी

सीमाप्रान्तके प्रसिद्ध कांग्रेसी कर्मी श्री भगवतदत्त वधावाने महात्मा गांधीके पास एक पत्र भेजकर पूछा है कि इस समय जो कांग्रेस सदस्य युद्ध प्रयासमें सहायता कर रहे हैं वे क्या कांग्रेसके सदस्य रह सकते हैं?

आदि निवासियोंको शिक्षा

पता चला है कि सेठ घनश्यामदास बिड़ला तथा अन्य धनी व्यक्तियोंकी सहायतासे मांडला जिलेमें आदि निवासियों की शिक्षाके लिये कई पाठशालाएं स्थापित की जायेंगी। स्मरण रहे कि श्री ए० बी० ठक्कर तथा डा० वेरिया एलविनने उक्त जिलेमें मिशनरियों द्वारा गोंड जाति में किये जाने वाले कार्योंकी शिकायत की थी।

मल्लाबख्शके भाई सदस्य चुने गये

स्वर्गीय मि० अल्लाबख्शके भाई खान बहादुर मौलाबख्श सिन्ध असेम्बलीके सदस्य निर्वाचित किये गये हैं।

मानहानिका मुकदमा स्थगित

कम्युनिस्ट पार्टीके साप्ताहिक पत्र 'पिपुल्सवार' के विरुद्ध मि० फजलुलहक ने जो मुकदमा चलाया था, वह २५ जनवरी तक स्थगित कर दिया गया है।

नजरबन्दोंने सहायता दी

दमदम (कलकत्ता) सेण्ट्रल जेलसे नजरबन्दोंने बंगाल सरकारके द्वारा बंगाल मेडीकलको आरडिनेशन रिलीफ' कमेटीको १६४ रुपये,४ आने बंगालकी जनताके सहायतार्थ भेजे हैं।

पांचवें दस्तेका सदस्य गिरफ्तार

कहते हैं कि नवाबशाह (सिंध) के सिनजोर निवासी चंचलदास पांचवे दस्तेसे सम्बन्धित होनेके कारण गिरफ्तार किया गया है।

योगीका चमत्कार

दिल्लीमें स्वामी रामरखन योगीने डालमियाभवनके मैदानमें जमीनके अन्दर एक वर्गाकार गढ़ेमें समाधि लगायी थी। १६ घन्टेके बाद वे समाधिस्थलसे बाहर निकाले गये तो वे बिलकुल बेहोश थे तथा जिस अवस्थामें समाधिस्थ हुये थे उसी अवस्थामें बैठ पाये गये। उनकी आज्ञानुसार सिरपर बरफ रखा। कुछ देर के बाद उनकी बेहोशी दूर हो गयी। योग के चमत्कारोंका प्रदर्शन करनेके लिये योगी अमेरिका तथा इंगलैंड तथा अमेरिका जाना चाहते हैं।

७० हजार जुर्माना

कलकत्तेमें कागज व्यवसायी श्रीअमर नाथ बोस तथा श्री केवलचन्द्र डागाको क्रमशः २५ तथा ५० हजार रुपये जुर्माना किया गया है। इन लोगोंपर नियन्त्रण मूल्यसे अधिक भूल्यमें कागज बेचनेका अभियोग लगाया गया था।

भागलपुर जिलाबोर्डको धोखा

कहते है कि भागलपुर जिला बोर्डके नाम किसीने जाली चेकोंसे १८ हजार रुपये इम्पीरियल बैंकसे ले लिये हैं। इस तरहके आठ चेक जिला बोर्डके नामसे जारी किये गये हैं जो सभी नकली हैं। जब हिसाब किताब किया जाने लगा तब चोरीका भण्डाफोड़ हुआ है।

सीलोनमेंमजदूरनेताओंका स्वागत

कोलम्बोसे संवाद मिला है कि एक सभामें सीलोन ट्रेड युनियनके अधिवेशन में भारतीय प्रतिनिधि डा० पी० सुब्बरायण, श्री बंकिम मुकर्जी, श्रीमिराजकर का स्वागत किया गया। सीलोन सरकारके स्वास्थ्य विभागके मन्त्री मि०जार्ज डी सिल्वा सभाके अध्यक्ष थे। श्रीबंकिम मुकर्जीने भारतीयोंको सलाह दी कि वे अपनेको सीलोन निवासियोंमें मिला दें और अपना भेदभाव हटानेके लिये बिटिश सरकारको न बुलाये। सीलोनमें भारतीयोंको नागरिक अधिकार अवश्य मिलने चाहिये।

श्रीमती नायडूसे रोक हटी

गत वर्ष श्रीमती सरोजिनी नायडू पर पंजाब प्रवेशपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया था। वह अब उठा लिया गया है। श्रीमती नायडूको जब यह संवाद बताया तो उन्होंने कहा मैं तो इस प्रतिबन्धको भूल ही गयी थी।

मंसूरीमें १५ इञ्च मोटी बरफ

भयानक जाड़ा पड़नेके कारण मंसूरी में १५ इंच मोटी बर्फकी तह जम गयी जो वहांके इतिहासमें अभूतपूर्व घटना हैं। अन्य स्थानोंसे भी जाड़ेकी खबरें मिली हैं।

सर छोटूराम चल बसे

गत ६ जनवरीको प्रातःकाल ११ बजे पंजाबके रेवेन्यू मन्त्री सर छोटूरामकी हृद्रोगके कारण मृत्यु हो गयी। वे बहुत दिनोंसे बीमार थे।

जेलसे कैदी भाग गये

बेतियाके संवादसे पता चला है कि चारगाधीन कैदी जिनमें एक बम सम्बन्धित था, सब जेलसे भाग गये।

जंगली हाथीने तीनके प्राण

रक्सौलका संवाद है कि बाग गंजमें एक मकानमें तीन आदमी थे कि पासके जंगलसे एक जंगली घुस आया और उसने तीनों आदमियों को मार डाला।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झाँकी

यूगोस्लावियाका संकट

यूगोस्लावियाकी लन्दन स्थिति सर-
रके प्रीमियर छबेजिक और मार्शल टिटो
साथ जो समझौता हुआ है उसे यूगो-
वियाके शाह पीटर माननेको तैयार
हैं। समझौतेके अनुसार मार्शल टिटो
मियर और मो० छबेजिक परराष्ट्र सचिव
। राज प्रतिनिधिकी नियुक्तिके प्रश्न
मतभेद है। शाह चाहते हैं कि रीजेण्ट
राज प्रतिनिधि) तीन हों और मार्शल
एक चाहते हैं। छबेजिक—टिटो सम-
तेको स्वीकार करनेमें शाह देर लगा रहे
ऐसा समझा जाता है कि यदि उक्त
झौतेको शाहने स्वीकार न किया तो
र्शल टिटो लन्दनस्थ किसी यूगोस्लाव
नीतिज्ञसे बातचीत करनेको तैयार न
। इस सम्बन्धमें मालूम हुआ है कि
० चर्चिलने शाह पीटरको टिटो-छबेजिक
झौतेको स्वीकार कर लेनेकी सलाह दी

...रियाका नया मन्त्रिमण्डल

अब्दुल हमीद करमेहने नया मन्त्रि-
ल बनाया है। प्रधान मन्त्रित्व और
सचिवका पद स्वयं लिया है। सेलेम
किया परराष्ट्र सचिव हैं।

मिस्रमें निर्वाचन

मिस्रका साधारण निर्वाचन हो गया।
निर्वाचनमें भूतपूर्व प्रधान मन्त्री नहास
की राष्ट्रवादी वफ्दपार्टीने भाग नहीं
। वर्तमान प्रधान मन्त्री मेहेर पाशा-
सादिस्ट पार्टी इस निर्वाचनमें विजयी
। लिबरलोंके मुकाबले अबतक १९०
में ८२ सीटें सादिस्टोंको मिली हैं।
मानतः एक करोड़ ६०लाख मतदाताओंमें
४० लाखने निर्वाचनमें भाग लिया।

...का अन्त अभी बहुत दूर है

प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट और मि० चर्चिलके
काक्षरसे प्रकाशित विज्ञप्तिमें यह स्वी-
किया गया है कि दिसम्बर महीनेमें
बोटोंकी प्रचण्डताने फिर भयङ्कर रूप
ण किया। फल स्वरूप मित्रराष्ट्रोंके
वाही जहाज अधिक डूबे। विज्ञप्तिमें
गया है कि "यूरोपियन युद्ध
गसे अभी बहुत दूर हैं, यू बोटोंकी
डता उसका एक दूसरा उदाहरण है।"

अमेरिकापर रोबट हमलेकी सम्भावना

अमेरिकाके अटलांटिक जहाजी बेड़ेके
ण्डर इन चीफ एडमिरल जोनस्स इन-
ने कहा है कि न्यूयार्क पर रोबट हवाई
की पूरी सम्भावना है और सम्भवतः
गामी ३० अथवा ६० दिनोंके भीतर
ये हमले होंगे। इस खतरेका सामना
की पूरी व्यवस्था की जा रही है।

टोकियोपर दिनदहाड़े हवाईहमला

गत ९ जनवरीको सुपर फोर्ट्रेस टाइप के अमेरिकन बम वर्षकोंने दिनमें ठीक दोपहर के समय टोकियोपर बमबाजी की।

यूनानकी हालत बदतर

लन्दनमें 'टाइम्स' पत्रने अपने सम्पादकीयमें लिखा है यद्यपि एथेन्समें लड़ाई समाप्त हो गयी है किन्तु राजनीतिक दृष्टिसे यूनान की वर्तमान स्थिति एथेन्स कानफरेंस और आर्क बिशप डैमसिनोंकी नियुक्तिके बाद सुधारनेके बजाय अधिक खराब हो गयी है। पत्रने लिखा है कि समझौतेका एकमात्र मार्ग-परस्पर विचार विनिमय ही है;

मालूम हुआ है कि राज्य और समाज के हितके विरुद्ध आचरण करनेके अभियोग में यूनानके देशभक्त दलों ई० ए० एम० और ई० एल० ए० एस०के राजनीतिक और फौजी नेताओंकी गिरफ्तारीका वारण्ट निकाला गया है।

लुबलिन कमेटी

अमेरिका स्थित पोलैण्ड वासियोंका कहना है कि लुबलिन कमेटी तो रूसी एजेंसी है। लन्दनस्थ सरकार ही पोलैण्डकी वैध-सरकार है।

हंगरीकी नयी सरकार

हङ्गरीकी नयी अस्थायी सरकार, जो हालमें बनी है, ठीक उसी ढंगकी है जैसी बलगेरिया और रूमानियामें सोवियट रूसने स्थापित की है। इसको सर्व प्रथम कार्य जर्मनीके खिलाफ युद्ध घोषणा करना है। इसके प्रधान मन्त्री मि० ब्रेस हैं। मन्त्रिमण्डलमें नेशनलिस्ट, किसान, समाजवादी लोकतन्त्रीय और कम्यूनिस्ट पार्टियोंके अलावा काउण्टटेलेकी जैसे स्वतन्त्रदली लोग भी हैं। इसके कार्यक्रमको कम्यूनिस्ट नहीं कहा जा सकता लेकिन बलगेरिया और रूमानियाकी भांति भू-सुधार कार्य तत्काल शुरू होगा।

स्वागत नहीं हुआ

बर्मा और मध्यपूर्वके मोर्चोंसे छुट्टी पर वापस गये हुए व्यक्तियोंका लन्दनमें स्वागत करनेवाला कोई नहीं था।

अमेरिकाके सम्पदक

अमेरिकन पत्र सम्पादक समितिने अपने तीन प्रतिनिधियोंकी जो भ्रमणकारी कमेटी नियुक्त की है। उसके कार्य-क्रममें भारत और चीनकी यात्रा भी है, अब यह निश्चित रूपसे मालूम हो गया है। ये प्रतिनिधि पहले ब्रिटेन जायेंगे। वहांसे फ्रांस, बेलजियम, इटली और शायद स्वीडेन, स्विजरलैण्ड, स्पेन और यूनान होकर कैरो और वहांसे सम्भवतः तुर्की और ईरान होकर तब पूर्वकी यात्रा करेंगे।

स्वीडेन-जर्मन सम्पर्क

मालूम हुआ है कि स्वीडेन जर्मनीसे व्यापार-सम्पर्क तोड़ने ही वाला है। सम्भवतः इसका जवाब जर्मनी कूटनीतिक सम्बन्ध-विच्छेदसे देगा।

मास्कोका समर्थन

रूसके मुख्य पत्र 'प्रवदा' ने सम्पादकीय अग्रलेखमें कहा है कि पोलण्डकी अस्थायी सरकार (लुबलिन सरकार) तमाम लोकतन्त्रवादी सरकारोंका समर्थन प्राप्त करनेकी पूर्ण अधिकारिणी है।

लन्दनकी पोलिश सरकारने लुबलिन सरकारको पोलैण्डकी वैधसरकार मान लेनेके मास्कोके कार्यका प्रतिवाद किया है।

तेहरान योजनापर असर

रायटरका फौजी संवाददाता कहता है कि पश्चिमी मोर्चेपर प्रत्यावर्तन और बुडापेस्ट में पहुंच कर रूसकी प्रगतिके मन्द पड़नेसे उस योजनाके ठीक तरहसे कार्यान्वित होनेमें कठिनाई आ गयी है जो पूर्व और पश्चिम यूरोपके दोनों मोर्चोंके सम्बन्धमें तेहरान-कान्फ्रेंसमें स्टालिन, चर्चिल और रूजवेल्टकी उपस्थितिमें बनी थी। अब उस योजनामें समयानुकूल आवश्यक संशोधन जरूरी है।

विश्व व्यापार और जापान

संयुक्त राज्य अमेरिकामें वरजिनिया राज्यान्तर्गत होट स्प्रिङ्ग नामक स्थानमें प्रशान्त अञ्चल सम्बन्धी समस्याओंपर विचार करनेके लिये एक सम्मेलन हुआ है। भारतकी ओरसे श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित और मि० अब्दुर रहमान सिद्दीकी भी इसमें शामिल हुए। जापानके आर्थिक भविष्यपर विचार हुआ। एक दलका मत है कि जापानी व्यवसायी हृदयसे शान्ति प्रेमी हैं और जापानके प्रति निर्माणमें ऐसे जापानियोंपर विश्वास करना चाहिये। जापान और मित्रों के बीच व्यवहारमें भी ये कामके सिद्ध होंगे दूसरा मत यह है कि इस पथपर चलनेमें खतरा हैं, क्योंकि उस हालतमें पर्देके पीछेसे सेनावादी जापानी नियन्त्रण अपने हाथमें रख सकते हैं।

जापानकी पराजयके बाद उसके प्रति कैसा व्यवहार करना चाहिये, इस सम्बन्ध में भी नहीं हो सके। बहुमत जापानी सम्राट को हटानेका समर्थक है किन्तु जापानके साथ स्थायी शान्ति सम्बन्ध रखनेके लिये किन राजनीतिक उपायोंसे काम लिया जाये, इस प्रश्न पर मतविभिन्नता है।

अमेरिकन मिशनरियोंका मत

चीन, जापान, फिलिपाइन्स, कोरिया और भारतमें रहे हुए २३ अमेरिकन मिशनरियोंने एक वक्तव्य निकाल कर "जापानकी राष्ट्रीयताको खण्ड खण्ड करनेकी नीतिका विरोध किया है।

स्टालिन, रूजवेल्ट, चर्चिल,

मालूम हुआ है कि स्टालिन, रूजवेल्ट और चर्चिल सम्मेलन कब और कहां हो, इस सम्बन्धमें तीनों नेता सहमत हैं। ये तीनों जब मिलेंगे तो सर्वप्रथम इस प्रश्नपर विचार होगा कि जेनरल डि गालको भी आमन्त्रित किया जाये या नहीं।

पेरिसमें जीवन निर्वाह कठिन

पेरिसमें जीवनोपयोगी वस्तुओंके मूल्यमें अतिवृद्धि हो गयी है। १९३९ की तुलना में आज वहां चीजोंकी मूल्यमें ७०० प्रति सैकड़ा बढ़ गया है। उदाहरणार्थ मक्खनका मूल्य प्रायः ४०) सेर है। छल स्वच्छन्दता पूर्वक जीवन बितानेके लिये १७ वर्ष से ऊपर के एक श्रमिकको कमसे कम महीनेमें तीन हजार फ्रैङ्क (६० डालर) चाहिये। चार व्यक्तियोंके परिवारके लिये आज पेरिसमें १९ हजारसे २० हजार फ्रैङ्क महीनेमें चाहिये।

चीनमें ४८५ गुना अधिक

युद्धके पूर्वसे आज चीनमें आवश्यक चीजोंका मूल्य ४८५ गुना अधिक बढ़ गया है।

रूजवेल्टको मालूम नहीं

एक प्रेस कानफरेंसमें प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट ने कहा कि मुझे यहमालूम नहीं है कि यूनान में एलास सेनाको दी गयी युद्ध विरामकी शर्तें ब्रिटिश सरकारने वापस ले ली है। यह पूछनेपर कि क्या इस मामलेमें ब्रिटेन और संयुक्त राष्ट्र दोनों मिल जुलकर काम कर रहे हैं प्रेसिडेण्ड रूजवेल्टने इसका जवाब देनेसे इनकार कर दिया।

बिजलीका राष्ट्रीयकरण

ब्रुसेल्सके रेडियोने ब्राडकास्ट किया है कि बेलजियम चैम्बरने इस सोशलिस्टप्रस्ताव को मान लिया है कि बिजलीके व्यवसायको राष्ट्रीय नियन्त्रणमें लाया जाये।

चीनकी राष्ट्रीय महासभा

चीनके लिये वैधानिक सरकार बनानेके लिये आगामी ५ मई को राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन करनेका आयोजन कियोमिनतांग कर रहा है। दस सालके भीतर यह अधिवेशन प्रथम बार हो रहा है।

मेजर जेनरल पैट्रिक हर्ली, चीनमें अमेरिकाके नये राजदूतने प्रेसिडेण्टके सामने उपस्थित होकर अपना अधिकार पत्र पेश किया।

कम्यूनिस्ट विरोधी फ्रेञ्चको प्राणदंड

कम्यूनिस्ट विरोधी फ्रेञ्च दलके प्रेसिडेण्ट और सुप्रसिद्ध लेखक कैप्टैन पाल चैक जर्मनोंके साथ सहयोग करने और इससे लड़नेके लिये फ्रेञ्च स्वयं सेवक भ... करनेके अभियोगमें फोर्ट मोण्ट्र... जेलमें गोली से उड़ा दिये गये।

Regd No. C. 2229

नेशनल सेविंग्स पखवारा

१४ दिन में आप आने वाले १४ वर्षों की योजना बना सकते हैं

८ जनवरी से २२ जनवरी तक सेविंग्स (रुपया बचाने का) पखवारा है। इन १४ दिनों में आप भविष्य के लिए, अपने व्यापार के लिए, अपने बच्चों तथा उनकी पढ़ाई-लिखाई और शादी-विवाह के लिए अपनी योजना प्रारम्भ कर सकते हैं। आजकल रुपया लगाने की सब से अच्छी मदें ये हैं, जो पूर्णतया सुरक्षित हैं और जिनमें अच्छा ब्याज मिलता है।

नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट्स

- × ५००० रुपये तक के सर्टीफिकेट्स आप ख़रीद सकते हैं और यदि आपकी इच्छा हो तो तीन वर्ष बाद इन्हें भुना सकते हैं।
- × आपको १० रुपये के बदले १२ वर्ष बाद १५ रुपये मिलेंगे। यह ४½ प्रति शत ब्याज के बराबर पड़ता है।
- × इनकम-टैक्स माफ़।
- × सरकार द्वारा नियुक्त एजेण्टों, सेविंग्स ब्यूरो या डाकख़ाने से मिल सकते हैं।

ट्रिज़री लोन

- × इनमें रुपया लगाने की कोई सीमा निश्चित नहीं है।
- × १९५७ में असल रक़म वापस कर दी जायगी।
- × ३ प्रति शत ब्याज मिलता है।
- × आवश्यकता पड़ने पर इन्हें किसी भी समय सरलतापूर्वक बेचा जा सकता है।
- × इम्पीरियल बैंक आफ इण्डिया या रिज़र्व बैंक आफ इण्डिया की किसी शाखा से या किसी बड़े या छोटे सरकारी खज़ाने (ट्रेज़री या सब-ट्रेज़री) से इन्हें ख़रीदा जा सकता है।

रुपया बचाने का यही समय है

AAA 1247

भाव अब भी गिर रहे हैं
गिरते भावों के फंदे में न फँस जाइए

जैसा कि पिछले वर्ष के अनुभव से सिद्ध हो चुका है, माल, जायदाद, ज़मीन आदि में रुपया लगाने से लोगों को घाटा उठाना पड़ा। क़ीमतें गिर रही हैं और यह साफ़ ज़ाहिर है कि इन चीज़ों में लगाई गई रक़म भी कम हो गई है।

वास्तव में भाग्यवान निकले वे बुद्धिमान लोग, जिन्होंने सुरक्षित मदों में अपना रुपया लगा रक्खा है। उनकी पूँजी बढ़ गई है। उनके रुपये का अधिक मूल्य हो गया है। क़ीमतों के कंट्रोल और तैयारी माल की वृद्धि से सहायता पाकर ये लोग मुनाफ़ाख़ोरों और संग्रह करने वालों को परास्त कर रहे हैं। इन लोगों ने हिन्दुस्तान की और स्वयं अपनी बहुत बड़ी सेवा की है।

इस अच्छे काम को जारी रखिए। क़ीमतें गिर रही हैं, और अगर लोगों ने पैसा कम ख़र्च किया और ज़्यादा बचाया तो और भी घट जायँगी। जैसा कि बहुतेरों को अनुभव हो चुका है, नक़दी मदों में रुपया लगाना सब से अच्छा है।

ये मदें पूर्णतया सुरक्षित हैं:—सहकारिता समितियाँ, बीमा, बैंक का सेविंग खाता, पोस्ट आफिस सेविंग बैंक, सरकारी ऋण, नेशनल सेविंग सर्टीफिकेट।

रुपया बचाइए और समझदारी से लगाइए

कपड़ा, फर्नीचर, बर्तन-भाँड़ा, साइकिल, मोटर गाड़ी और दूसरी चीज़ों पर, जिन्हें आप लड़ाई के बाद बहुत सस्ते दामों पर ख़रीद सकेंगे, अभी अनावश्यक ख़र्च न कीजिए। व्यक्तिगत और राष्ट्रीय उन्नति का सच्चा मार्ग यही है।

राष्ट्र के नाम राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे की अपील

AAA 1113 Hindi

नवकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १२।१९, कम्बू बर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता से सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—४ कलकत्ता जनवरी २२, १९४५, Calcutta, JAN. 22. 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

यह भी सम्भव है !

चलती मोटर बसों और ट्राम गाड़ियों-
दौड़कर यात्रियोंका चढ़ना तो अब दैनिक
र्य-सा हो गया है और निर्भीक यात्री
ना किसी हिचकिचाहटके ऐसा करनेको

सेवाग्राममें महात्मा गांधी सर्दीसे बचनेके लिये शरीरको अच्छी तरह ढांककर चम्मचसे दूध पी रहे हैं।

र रहते हैं। लेकिन एक दिन वह भी
गा, जब उड़ते हुए हवाई जहाजपर भी
के जमीनके निकट पहुंचते यात्री सवार
जायेंगे। अमेरिकाके सैनिक विमानोंने
दिशामें जो प्रयास किया है उससे अब
आश्चर्यजनक कार्य सम्भव दीखने लगा
अमेरिकाके पश्चिमी वर्जीनियामें देहातों
हवाई डाकको इसी प्रकार जमीनसे
नेका सफल प्रयास प्रदर्शितकर वैमानि-
विशेषज्ञोंका ध्यान इस ओर आकृष्ट
था और उन्होंने अपने आविष्कारसे यह
कर दिया है कि आदमीको भी इस प्रकार
ई जहाजमें उठाया जा सकता है।

त्तेने हत्यारेकी शिनाख्त की

फ्रांसकी एक अदालतमें कुत्तेकी सहायता
एक ऐसे मामलेका फैसला किया गया है,
अपनी तरहका शायद अकेला ही मामला
ा जा सकता है। मो० डि मांट डिडियर
नामक एक फ्रेंचमैनकी हत्या कर दी गयी
और हत्यारा भाग निकला। मृत व्यक्तिका
कुत्ता शवके पास बैठा पाया गया। पुलिस-
ने हत्याके संदेहमें मेकायर नामक एक व्यक्ति-
को गिरफ्तार कर अदालतके सामने पेश
किया। कुत्तेने ऐसी मुद्रा अदालतके सामने
प्रदर्शित की, जिससे स्पष्टतः मालूम हुआ कि
वह अपने स्वामीके हत्यारेको पहचानता है।
जजने अन्तमें निर्णय किया कि संदिग्ध
व्यक्ति और कुत्तेमें द्वंद्व युद्ध हो। जिसकी
हार होगी, वही वास्तविक हत्यारा है।
एक स्क्वायरमें बड़ी भीड़के सामने कुत्ते और
मेकायरका द्वंद्व युद्ध हुआ। यद्यपि मेकायरके
हाथमें एक मजबूत डंडा था, तथापि कुत्तेने
अपनी चुस्ती और तेजीसे अपने प्रतिद्वंद्वी-
को हरा दिया। मेकायरने स्वीकार किया
कि मैंने मोंट डिडियरकी हत्या की है और
इस प्रकार वास्तविक अभियुक्तको उचित
दण्ड दिया गया।

समुद्र जलमें मैगनिशियम

हालमें लन्दनमें बड़े-बड़े विचारकोंने
वार्षिक भोजके अवसरपर समुद्रके पानीसे
मैगनिशियमके निकालने और इस धातुके
उत्तरोत्तर बढ़ते हुए उपयोगको १९४४ की
वैज्ञानिक क्षेत्रमें महानतम प्रगति बताया है।
लड़ाई छिड़नेसे कुछ समय पूर्व तक मैगनि-
शियम अन्धेरेमें फोटो उतारने लिये फीते
अथवा चूर्णके रूपमें काममें आता था।
इसकी कीमत उस समय ९ पौण्ड प्रति पौण्ड
होती थी, लेकिन अब इसकी कीमत १
शिलिंग ६ पेंस ही रह गयी है। क्योंकि
समुद्रसे अब हजारों टन मैगनिशियम निकाला
जाने लगा है। इसका वजन अल्यूमिनियम
के वजनके आधेसे कुछ ही अधिक होता है
इस लिये एक पौण्ड वजनमें यह बहुत-सा
चढ़ जाता है। विशेषज्ञोंका ख्याल है कि
जब इस धातुकी आवश्यकता हवाई जहाजों
के इंजिनों, अग्नि-बमों, आतिशबाजी
अथवा युद्धके लिये नहीं रहेगी, तो इसकी
कीमत ३ पेंस प्रति पौण्ड हो जायगी।
समुद्रके पानीके प्रत्येक घन मीलमें २,८००
टन मैगनिशियम रहता है।

मर्ज जिसकी दवा ही नहीं

आसाममें अस्पतालके अधिकारियोंको
एक निराली बीमारीसे मुकाबला करना पड़
रहा है, जिसका इलाज उनके लिये अस-
म्भव-सा हो गया है। वह बीमारी दो शब्दों-
की है यानी 'भूत'। अनीयचोंगके सरकारी
अस्पतालमें पचास मरीजोंकी शिकायत है
कि उन्हें हर रोज रातको एक भूत सताता
है और कुछ मरीजोंने डरके मारे अस्पतालसे
विदा ले ली है। शिलांग रिलीफ कमेटीके
सदस्योंने बहुत दिमाग लड़ाया कि आखिर
यह भूत क्या बला है। लेकिन वे कुछ भी
निर्णय नहीं कर सके। कमेटीने अधिकारियों
को सलाह दी है कि यह स्थान स्वास्थ्यके
लिये हानिकारक है। अतः वहांसे अस्पताल
हटा दिया जाये।

महात्मा गांधी शामको टहलने जा रहे हैं। इनकी दायीं ओर अन्तमें श्रीकनु गांधी और बायीं ओर पंजाबी पोशाकमें श्रीमती कनु गांधी हैं।

नवकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १३।१८, कन्नू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

सप्ताह पूर्वी युद्धक्षेत्रपर रूसी का आक्रमण बड़ी प्रचण्डतासे हो गया और अबतक उसकी बहुत अधिक हुई है। पोलैण्डकी ानी वारसापर आक्रमणके प्रथम १७ जनवरीको ही रूसियोंका ार हो गया। यह कार्य उन मार्शल की सेनाने किया है, जो रूसके ियोंमें अपना एक खास स्थान है। लन्दनके २० जनवरीके तारमें या है कि वारसासे एक सौ दस श्चिमके किलो स्थानपर अधिकार मार्शल जुकोव तीन दिनोंके भीतर रसासे बर्लिनका प्रायः एक तिहाई समाप्त कर लिया है। रूसी सेना के पूर्वी प्रांत साइलेशियाके भीतर ीको है, जो जर्मनोंका एक प्रधान गिक केन्द्र है और खबर है कि साइलेशियाके खास केन्द्रोंसे हटाने लग गये हैं। मास्को की रिपोर्ट है कि साइलेशियाकी पांतके पीछे हिमलर वहांकी होम सेनाका निरीक्षण करनेको आया र उसके आनेके समयसे ही साइ- ाके सभी लड़ने योग्य शरीरके रणक्षेत्रको भेजे जा रहे हैं। शनि- जर्मन संवाद-समितिके सैनिक दाताने कहा है कि, "पूर्वी युद्धक्षेत्र क ऐसा संग्राम कई दिनोंके भीतर ी आशा की जा सकती है, जो टके शीतकालीन आक्रमण सम्ब- युद्धकौशलके प्रश्नका अन्तिम रूपसे करनेवाला होगा। जर्मन प्रधान ति जिस पांतके ऊपर सोवियट ेंका बढ़ाव रोक देनेकी आशा वह क्रैको—जेस्टोचोवा-लोज- ोस्क-स्लावा-कासनो-क्रीस और लेंकाके भीतर होकर जाती है।" संवाददाताने यह भी कहा था कि, जर्मन सेनाएं पड़ी हुई थीं, रूसी उन स्थानोंको छोड़ दूसरी ही ोंसे आगे बढ़कर उन्हें पीछे छोड़ और अब वे जर्मन सेनाएं या तो भूभागमें पहुंच चुकी हैं या अब पहुं- ीको हैं, जहां रूसियोंका आक्रमण दिया जानेको है।" परन्तु देखते हैं जर्मन संवाददाताने जिन स्थानोंके गिनाये हैं, उनमेंसे अन्तिम दोको कर बाकी सबोंपर रूसी सेनाओंका कार हो चुका है और कई स्थानोंसे और पश्चिमकी ओर बढ़ गयी हैं। देखना है कि जर्मन सेनाओंके पैर जाकर टिकते हैं और यदि वे रूसी ओंका बढ़ना रोकनेमें समर्थ होती ी कहांपर। 'ग्लोब' के सैनिक संवा- ाका कहना है कि सम्भव है कि नदीतक पहुंचकर रूसी अपनी धीमी कर दें, जिसमें अपने पीछेके भूभागमें अपने लिये यातायातके

महायुद्धका सिंहावलोकन।

मार्ग ठीक कर सकें और बर्लिनपर अन्तिम आक्रमण आरम्भ करनेके पहले रूसी सेनाएं फिरसे गठित की जा सकें। जो हो, पोलैण्डकी राजधानीका उद्धार होते ही रूस द्वारा स्वीकृत लुब- लिनकी अस्थायी सरकार वारसामें पहुंच गयी है और उसने शासन व्यवस्था संभाल ली है। लन्दनकी पोलिश सर- कार सात समुद्र पार बैठी कागजी घोड़े ही दौड़ा रही है और अपने पृष्ठपोषक ब्रिटेन तथा अमरीकाके साथ ही रूसकी ओर भी दृष्टि लगाये हुए है। अबतक पोलैण्डके सबसे बड़े नगर लोज और प्राचीन राजधानी और सुप्रसिद्ध सड़क और रेलके केन्द्र क्रैकोपर भी रूसी अधिकार कर चुके। इनके सिवा और भी कितने ही युद्धकी दृष्टिसे महत्वके स्थान जर्मनोंको छोड़ जाने पड़े हैं। वारसावाला रास्ता ही जर्मनीकी राज- धानी बर्लिनके लिये सबसे छोटा है, जो एक तिहाईके लगभग पार किया जा चुका है, प्रायः दो तिहाई और तय करने- को है। इसके उत्तरमें एक सेना जर्मनीके पूर्वी प्रशियाके भीतर घुसकर आगे बढ़ रही है और जिस डनजिगके लिये वर्त्त- मान युद्ध छिड़नेका कारण उपस्थित हुआ था, उसकी तथा पूर्वी प्रशियाकी राज- धानी कोनिगसबर्गकी ओर भी रूसी सेना बढ़ने लगी है। दक्षिणी मार्गका आक्रमण साइलेशियाको लक्ष्य करके हो रहा है।

रूसी सेनाएं जैसी विद्युत् गतिसे वारसापर अधिकार जमाकर पश्चिमकी ओर बढ़ी हैं, उनसे संसारको भारी आश्चर्य होना स्वाभाविक है। इसीसे हमने दो दिन पहले लिखा था कि यदि जर्मन वारसाको लड़े-भिड़े बिना ही इस तरह खाली कर जानेको तैयार थे, तो रूसी सेना इतने दिनोंतक वारसाके बाहर ही क्यों पड़ी रही और उसके भीतर उसी समय घुसनेका प्रयत्न क्यों नहीं किया जब उसकी पूर्वी बस्ती प्रागापर उसने महीनों पहले अधिकार जमा लिया था? उस समय रूसी सेनाएं विश्चुला नदीके पूर्वतक पहुंच कर ही रुक गयीं, इससे खासकर अमरीकामें स्पष्ट रूपसे यह सन्देह प्रकट किया जाने लगा था कि दूरके राजनीतिक कारणोंसे वे ऐसा कर रही हैं—लन्दनस्थ पोलिश सरकारने रूससे समझौतेकी बातचीत बन्द कर दी थी, इसलिये ऐसा सन्देह करनेके लिये गुंजाइश भी थी। पर अब कहा जाता है कि अमरीकाके सैनिक नेताओं और अधिकारियोंको ऐसा कोई सन्देह नहीं था और वे सैनिक कारणोंसे ही सोवियट सेनाओंका रुकना ठीक सम- झते थे, क्योंकि तब जर्मन सेना वहां अगस्त महीनेमें रूसके प्रति भी वैसा करनेकी क्षमता रखती थी, जैसा रुंड- स्टेटने पश्चिममें गत महीनेमें अमरीकनों और अंग्रेजोंके विरुद्ध किया है। परन्तु एक बात तो स्पष्ट है और वह यह कि जिस समय कई अमरीकन पत्रोंमें यह लिखा जा रहा था कि रूसी सेना पूर्वमें शान्त बैठी हुई है, इसीसे पश्चिममें रुंड- स्टेटको आक्रमणका मौका मिल सका है। वे रूसको दोष देते थे, तो भी जहां- तक हमें पता अमरीकन सैनिक अधि- कारियोंने कभी उनकी बातोंका खण्डन नहीं किया।

पश्चिमी युद्ध क्षेत्रपर मार्शल रुंड- स्टेटने हालके आक्रमणमें बेलजियमका जो भूभाग छीन लिया था, वह उससे फिर छुड़ा लेनेमें ब्रिटिश और अमरीकन सेनाओंको सफलता तो प्राप्त हो गयी है, पर प्राप्त समाचारोंसे स्पष्ट है कि रुंड- स्टेट पहल करनेकी सुविधा अपने ही हाथमें रखना चाहता है। इसका कारण स्पष्ट है। यदि वह स्वयं पहल नहीं करता रहेगा और पहल करनेकी सुविधा मित्रसेनाओंके हाथ चली जायेगी, तो पश्चिमी युद्ध क्षेत्रसे पूर्वी युद्ध क्षेत्रको जर्मन सेनाके डिवीजन न भेजे जा सकेंगे और जर्मनीको पूर्व और पश्चिम- में एक साथ दो दो आक्रमणोंका सामना करना पड़ेगा, जिससे बचनेके विचारसेही चतुर सेनापति रुंडस्टेटने पश्चिममें इस तरह आक्रमण आरम्भ किया था। अब पूर्वमें युद्धके लिये जो अनुकूल मौसम आया है, यह वर्षके इन दिनों प्रायः दस सप्ताहतक रहता है, जिसके बाद बर्फ गलने लग जाती है और सेनाओंके गमनागमन आदिमें रुकावट खड़ी हो जाती है। इन दस हफ्तोंतक यदि जर्मन सेनापति पूर्वमें रूसियोंका प्रभाव रोक रखनेमें समर्थ हो सकें, तो हिटलरको फिर एकबार पश्चिमी युद्ध क्षेत्रपर अपनी पूरी शक्ति लगानेका अवसर मिल सकता है, क्योंकि पूर्वमें रूसी सेनाओंके लिये युद्ध जारी रखना कुछ समयके लिये तब असंभव सा हो जायगा। सम- स्त पूर्वी युद्ध क्षेत्रपर जर्मन सेनाका प्रधान नायक सुप्रसिद्ध जेनरल गुडेरियन है, जो जर्मन जेनरल स्टाफका प्रधान भी है। इसे हिटलरने गत शरत् काल- मेंही इस क्षेत्रपर नियुक्त किया है। यह बड़े मजेकी बात है कि यही गुडेरि- यन है, जिसने गत महायुद्धके बाद रूसमें जाकर रूसके उस युद्ध-यंत्रका निर्माण करनेमें पूरी सहायता दी थी, जो आज उसकी जर्मन सेनाको इस तरह चूर-चूर कर रहा है। गुडेरियनको जर्मनीने गत महायुद्धके बाद अपना प्रति- निधि बनाकर तुकाशेवस्कीको रूस सेनाओंको ट्रेनिंगमें सहायता देनेको काजान भेजा था। १९४० ई० इसी गुडेरियनके सेनापतित्वमें जर्मन सेना फ्रांसके भीतर इतनी तेजीसे टूट पड़ी थी। किन्तु जिन रूसी सेनाओंको युद्ध- कलाकी शिक्षा देनेमें उसने इतनी सहा- यता दी थी, उनसे उसे सदा भय होता रहा है और इसीसे वह सदा ही जर्मनी और रूसमें समझौतेके लिये जोर देता रहा है। रूसकी लड़ाईमें गुडेरियनको कई क्षेत्रोंमें मार्केकी सफलताएं प्राप्त हुई थीं, पर जब मास्कोकी लड़ाईमें वह अ- सफल हुआ, तब हिटलरने उसे पदच्युत कर दिया था। लेकिन रूसियोंके इस आक्रमणमें जेनरल गुडेरियनको जिस तेजीसे पीछे हटना पड़ा है, उससे तो यही प्रकट होता है कि या तो रूसियोंने पूर्वकी जर्मन सेनाओंकी शक्ति वास्त- विकसे बहुत अधिक समझ रखी थी और या तो फिर यह कहा जा सकता है कि सर्वोत्तम जर्मन सेनाएं अभीतक आगे बढ़नेवाले रूसियोंके मुकाबलेके लिये खड़ी ही नहीं की गयी हैं। हंगरीकी राजधानी बुडापेस्टके लिये जो विकराल युद्ध हफ्तोंसे चल रहा था, उसका अन्त हो गया जान पड़ता है, क्योंकि जर्मन सूचना है वहांसे जर्मन सेना हटा ली गयी है। यदि यह समाचार सच हो तो रूसियोंको उसे मिटा देनेके अपने उद्दे- श्यमें सफलता नहीं मिल सकी, यह स्पष्ट है।

जो हो, इस समय तो पश्चिमी युद्ध- क्षेत्रकी अवस्थापर ही पूर्वकी लड़ाईका भी परिणाम बहुत कुछ निर्भर होगा। पर २० जनवरीके पश्चिमी सदरके एक तारमें कहा गया है कि "आज उत्तरी अलसेसमें सबसे अधिक चहल-पहल देखी गयी, जहां नये जर्मन आक्रमण गैमसीम स्थानसे सात मील उत्तर हूसेन होमकी चारों ओर हुए हैं और जो हैजेनौ जङ्गलकी मित्र सेनाओंको घेरनेके उद्देश्यसे किये जान पड़ते हैं। जर्मन पांच मील पश्चिम बढ़े हैं। यदि मित्र सेनाएं जर्मनोंपर पहल करने योग्य शीघ्र ही न हो सकीं तो रूसियोंके सामने जर्मन कुमुक पहुंच जानेसे कठिनाई उपस्थित हो सकती है। गत अगले सप्ताहोंकी दोनों युद्धक्षेत्रोंकी घटनाओंकी ओर लोगोंका ध्यान लगना स्वाभाविक है। रूसियोंकी सफलतासे पश्चिमी युद्धक्षेत्र- पर फिर जल्दी युद्ध समाप्त होनेकी चर्चा चलने लगी है और बर्लिनमें रूसियोंसे मिलनेके लिये मनसूबे गांठे जाने लगे हैं। उस दिन मि० चर्चिलने एक बार फिर कामन सभामें कहा है कि युद्ध तब- तक जारी रहेगा, जबतक शत्रु बिना किसी शर्तके आत्मसमर्पण न कर दे।

जर्मनप्रदेशमें २० मीलसोवियट सेनाका प्रवेश
९ दिनमेंआक्रमणकेन्द्रसे १७० मीलअग्रगति
५ मोर्चोंपरढाई हजारस्थानोंका जर्मनोंसेउद्धार
सेण्ट-विथपरकब्जाकेलियेमित्रसेनाकीघुड़दौड़

मास्को, २१ जनवरी। गत रात्रिकी सोवियट विज्ञप्तिमें बताया गया है कि मार्शल रोकोसोवस्की, जुकोव और कोनिवकी फौजोंने १२ और १६ जनवरीके बीच २५ हजार जर्मनोंको युद्धबन्दी बनाया है। २५ हजार जर्मन मृत्युके घाट उतारे गये हैं। पांच मोर्चोंपर रूसियोंने ढाई हजारसे भी अधिक स्थानोंपर अधिकार स्थापित किया है। वारसासे ११० मील पश्चिम किलोपर अधिकार कर मार्शल जुकोवने तीन दिनके अन्दर वारसासे बर्लिनके बीच तिहाई दूरीको प्रायः तय कर लिया है। मार्शल कोनिवके टक दस्ते दक्षिण-पूर्वी जर्मनीके सबसे बड़े शहर ड्रेसलाऊसे अब केवल दो मील दूर रह गये हैं। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है:—युद्ध स्थितिमें गम्भीर परिवर्तनके फलस्वरूप युद्धका स्वरूप बिलकुल परिवर्तित हो सकता है। पोलण्डके पार जर्मन सीमाकी ओर भागने वालों छिन्न-भिन्न जर्मनोंको संकटका मुकाबला करना पड़ रहा है।

मार्शल स्टेलिनने आज रातको एक विशेष सन्देशमें ऐलान किया कि रूसी सैनिक जर्मन प्रदेशमें ३० कीलोमीटर (करीब २० मील) तक घुस गये हैं। लाल सेनाने क्रुजबर्ग, रोसेनबर्ग, पिट्सचेन, गुसटेन तथा लैण्डबर्ग पर अधिकार कर लिया है। जर्मन समाचार समितिका सामरिक संवाददाता लिखता है:—पूर्वी मोर्चे पर भयंकर संघर्ष आरम्भ होनेकी आशा की जाती है। इसके अनुसार ही कुछ दिनमें शरदकालीन सोवियट आक्रमणके सम्बन्धमें भी निर्णयकी आशाकी जाती है। रूसियोंने तिलसितपर अधिकार कर लिया है। मध्य भाग स्थित तिलसित इन्सटरबर्ग रेलवे लाइन काट दी गयी है। रा०

लन्दन, २१ जनवरी। संयुक्त राष्ट्रकी प्रथम सेनाके मोर्चेकी खबर है कि अमेरिकन बख्तरदार एवं पैदल सेना उत्तरसे सेंटवियके महत्वपूर्ण सड़क केन्द्रसे बढ़ती हुई ३॥ मीलकी दूरीपर स्थित बोर्न शहरमें रविवारके सबेरे प्रवेश कर गया। जर्मन सुरंगों एवं गोली वर्षाके बावजूद भी अमेरिकन फौजें बर्फसे ढकी सड़कोंपर आगे बढ़ीं। तीसरी फौजने डिकर्चके ३ मील उत्तर-पूर्वमेंस्थित लोन्सडोफ एवं २ मील उत्तर-पश्चिममेंस्थित टंडोलपर कब्जा कर लिया है। ये लोग जर्मनीमें ३ मील अन्दर दाखिल हुए हैं।

फ्रांस-स्पेन व्यापारिक सन्धि-चर्चा

पेरिस, २१ जनवरी। फ्रेंच समाचार समितिकी खबर है कि फ्रांस एवं स्पेनके बीच व्यापारिक सन्धि चर्चाकी बातें अगले महीने मेड्रिडमें होंगी। रा०

यूनानकी ब्रिटिश नीतिको लेकर पार्लमेंटमें जो वादविवाद हुआ, उसके अन्तमें मि० चर्चिलकी सरकारमें जिस तरह अत्यधिक बहुमतसे विश्वास प्रकट किया गया है, उससे मि० चर्चिल अगली त्रि-राष्ट्र कानफरेन्समें पूरे अधिकारके साथ बोल सकेंगे, इसमें सन्देह नहीं, पर वसे ही इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि समझनेवाले यही समझेंगे कि कि यह सब उस कानफरेंसके लिये तैयारीकी भांति ही है। वह कानफरेंस अब तो रूसमें ही कहीं होती जान पड़ती है, क्योंकि स्टेलिन जब पहले ही लन्दन आनेको तैयार नहीं किये जा सके थे, तो पूर्वमें इतनी बड़ी लड़ाई चलनेके समय क्योंकर रूस छोड़नेको राजी किये जा सकते हैं? इटलीमें लड़ाई बर्फके कारण रुकी हुई है। पूर्वमें युद्ध पूर्ववत् चल रहा है और अन्तिम समाचार यह है कि फिलिप्पाईनकी राजधानी मनिलाको जापानी हवाई जहाजों द्वारा खाली कर रहे हैं।

बर्लिन दो सौ मील दूर
जर्मनीकीदिशामेंसफलरूसीप्रगति

मास्को २१ जनवरी। गत रात्रिको ऐलान किया गया कि रूसी सेनाको नये व्यापक आक्रमणके दौरानमें जो सफलता मिली है, उसके अनुसार बर्लिनसे दो सौ मीलके घेरेके भीतर पहुंच गयी है। लाल सेना सिलेसियन सीमान्त पार कर जर्मनीके भीतर ५मील दूर तथा ब्रेसलाऊसे केवल २६ मील पूरब नामस्लाऊमें प्रवेश कर गयी है। इसका अर्थ यह है कि मार्शलकोनिवकी सेनाएं ६ दिन पूर्व आक्रमण होनेके बादसे १० मील अग्रसर हुई हैं। पिछली रातकी सोवियट विज्ञप्तिमें बताया गया है कि ६६ वें जर्मन स्थल डिवीजनके कमाण्डर लेफ्टिनेण्ट जनरल रेल बिलसितकी चढ़ाईमें मारे गये हैं। रायटर

पूर्वी-एशियामें युद्धसे जापानकी स्थिति
प्रशांत युद्धमें प्रगतिसे नया संकट उ
जापानियोंसे देशरक्षार्थ महान त्यागका आ
प्रधान मन्त्रीकी निराशाजनक स्वीकार

लन्दन, २१ जनवरी। जापानी समाचार समितिने ऐलान किया है कि जापानी प्रधान मन्त्री जनरल कुनीको कुइसोने पार्लमेंटमें भाषण देते हुए युद्धकी स्थितिमें बड़ी शीघ्रतासे रद्दोबदल हो रहा है। लुजोन द्वीपमें अमेरि उतरनेके फलस्वरूप वृहत्तर पूर्वी एशियामें युद्ध शुरू होनेके बादसे आज ही ह को गम्भीर परिस्थितिसे होकर गुजरना पड़ रहा है। दुश्मनोंने हमारी रा एवं स्वदेशके दूसरे महत्वपूर्ण नगरोंपर हवाई हमले शुरू कर दिये हैं।

प्रधान मन्त्रीने आगे कहा कि सामरिक महत्वकी प्रगतिसे आशावादिताकी कम ही गुंजाइश रह जाती है। किन्तु शत्रुओंके रसद-मार्गोंका समस्त मोर्चों पर दूर तक विस्तार हुआ है, जो हमारे आक्रमणके लक्ष्य हो सकते हैं। मेरा विश्वास है कि विजय हासिल करनेमें यही हमारे लिये स्वर्णसुयोग है। हमें दृढ़ताके साथ अपनी साम्राज्य नीति कायम रखनी है और दिक्कतों एवं बाधाओंपर विजय प्राप्त कर हमें लड़नेकी ताकतको बढ़ाना और जन्मभूमिकी रक्षा करनी है। इस प्रकार इस पुनीत युद्धमें शीघ्र ही अपने लक्ष्यकी पूर्ति कर हमें अपने सम्राटके चित्तमें शांति लानी है। उपयुक्त समय आ गया है जब हम करोड़ों जापानियोंको उत्पादन-क्षेत्रमें निश्चित विजयका प्रदर्शन करना। रायटर

जापानमें सामूहिक सैन्य संगठन

लन्दन, २१ जनवरी। जर्मन समाचार समितिके टोकियोके एक खरीतेमें बताया गया है कि सैन्य संगठन सम्बन्धी नये आदेशानुसार भविष्यमें सैनिक सेवासे लिये उपयुक्त प्रत्येक जापानीको केवल युद्ध सम्बन्धी कार्यमें ही योगदान देना पड़ेगा। खरीतेमें कहा गया है कि महिलाओं और बच्चोंके विषयमें भी यह आदेश लागू हुआ है जिन्हें उनकी आयुके मुताबिक विभिन्न कामोंपर तैनात किया जायगा। रा०

नजरबन्द नेता मुक्त होंगे ?

नयी दिल्ली २० जनवरी। जानकार क्षेत्रोंमें कहा जा रहा है कि श्री भूलाभाई देसाईने लीगके जेनरल सेक्रेटरीसे बातचीत करनेके बादही वायसरायसे जो बातचीत की है उसके सम्बन्धमें दोनों नेताओंने अपने-अपने नायक महात्मा गांधी तथा मि० जिन्नासे परामर्श कर लिया था। यह भी कहा जा रहा है कि कांग्रेस नेताओंके नजरबन्दीसे शीघ्र मुक्त होनेकी आशा है। लीग क्षेत्रोंमें इस परिस्थितिको विशेष महत्व दिया जा रहा है।

मित्रराष्ट्रोंकी नी
भारतकेविषयमें बिलकुलसा

हाटस्प्रिंग, २१ जनवरी। भा प्रतिनिधि मण्डलकी अध्यक्षा विजयलक्ष्मी पंडितने प्रशान्तके अ ष्ट्रीय सम्मेलनके परिणामपर अस प्रकट किया है। आपने रायटरको कि अब भी और देशोंने बद्धमूल को छोड़ नहीं दिया है और न बदल रिस्थितिको ख्यालमें रखते हुए निकालनेको वे तैयार हैं। समस्या तक पहुंचनेमें सदस्य टालमटोल ही रहे वे तो सैद्धान्तिक वादविवादों फंसे रह गये। श्रीमती पंडितने मित्र राष्ट्रोंको शांतिप्रिय एवं न्याय बजाय मैं अधिकार धारी राष्ट्र संज्ञा देना पसन्द करती हूं। आज के अवसरपर अपनी शक्ति वृद्धि बात सोचनेकी स्पर्द्धा करते हैं। युद्धकी सन्धि मानवताके बुनियादी कारोंका द्योतक नहीं हो सकती लिये युद्धकी ऐसी समाप्तिके लि बहुत उत्साह नहीं प्रकट कर सकती

महात्माजीके स्वास्थ्यमें सु

वर्धा, २१ जनवरी। महात्मा का स्वास्थ्य धीरे-धीरे सुधर रहा आप पहले जैसे ही सबल हो रहे हैं वजनमें भी वृद्धि हुई है। ए० प्रेस

'प्राण जाय बरु वचन न जा

अहमदाबाद, २० जनवरी। अदा करनेके अपने वचनको पूरा न सकनेके कारण कैरा जिलेके एक प्र ने कुएंमें कूदकर आत्महत्या कर निश्चित योजनानुसार उसके बाद पत्नी तथा दो बच्चोंने भी उसीका करण किया। पुलिसने चारों लाशें से निकालीं और उन्हें एक पत्र मिला जिसमें बताया गया कि चूंकि अदा करनेके वचनका पालन मैं न इसलिये हम सपरिवार अपने प्राण रहे ताकि ईश्वर हमें क्षमा कर दे।

मारवाड़ी बालिका विद्यालयका उत्सव
समाजको श्री बिड़ला जीकी चेतावनी
आधा अंग अशिक्षित रखना भूल है
मारवाड़ी समाज जमानेके साथ चले

कलकत्ता २१ जनवरी। आज रविवारको स्थानीय युनिवर्सिटी इन्स्टीच्यूटमें स्थानीय मारवाड़ी वालिका विद्यालयका वार्षिकोत्सव चार वर्षके वाद बड़े समारोहसे मनाया गया। सभापतिका आसन प्रसिद्ध दानशील व्यवसायी सेठ ब्रजमोहन जी बिड़लाने ग्रहण किया था और उनकी स्त्री-शिक्षाप्रेमी धर्मपत्नी सौभाग्यवती रुक्मिणीदेवी बिड़लाने बालिकाओंको उत्साहित करनेके लिये पुरस्कार वितरण करना स्वीकार किया था। वे ठीक समय पर अपने पतिके साथ उत्सवमें पधारीं और उन्हें घूंघटका परित्याग किये हुए देख कर स्थानीय मारवाड़ी महिला समाज काफी प्रभावित हुआ। महिलाएं काफी संख्यामें आयी थीं और वे सभी घूंघटका बहिष्कार किये हुए थीं। बालिका विद्यालयके प्राण श्री सीतारामजी सेखसरिया सुव्यवस्थामें दत्तचित्त हो रहे थे। विद्यालयके वर्तमान मंत्री श्री भागीरथजी कानोड़िया प्रधान द्वार पर खड़े हुए समागतोंका स्वागत कर रहे थे और सभापति श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका भीतरकी व्यवस्थामें लीन थे। सर्वश्री रामकुमार जी भुवालका, वसन्तलालजी मुरारका, मोतीलाल लाठ और श्री विहारीलाल लाठ कार्यमें लगे हुए थे। विद्यालयकी अध्यापिकाएं महिलाओंके लिये प्रबन्ध कर रही थीं। सभापतिके आगमन पर दो अल्प वयस्क वालिकाओंने उन्हें और उनकी धर्मपत्नीको मालाएं पहनायीं। इसके वाद वन्देमातरम् गानसे कार्यवाही आरम्भ हुई।

विद्यालयकी छात्राओंने अपनेसंगीत, कविता पाठ, वाल-नृत्य आदिसे सबको परम सन्तुष्ट किया। जिस समय बालिकाएं पुष्प बन कर मालीसे प्रार्थना करने लगीं कि हमें मत तोड़ो, उस समय सहृदय मनुष्योंकी आंखोंसे अश्रुपात होने लगा। जो इस प्रार्थनाका राजनीतिक महत्व समझते थे, वे तो और भी अधिक विह्वल हुए। छात्राओंने हाथमें मोमबत्तियां लेकर जिस समय ड्रिल की, उपस्थित दर्शकोंने उसकी यथेष्ठ सराहना की। बालिकाओंने अशोक कालीन नाटक भी खेला जिसमें कई बालिकाओंने बड़ा सुन्दर पार्ट किया और उन्हें अनेक पुरस्कार मिले। एक छोटी बालिकाने इतना सुन्दर गान गाया कि उसे भी कई पुरस्कार मिले।

श्री भागीरथ जी कानोड़ियाने वार्षिक रिपोर्ट उपस्थित करते हुए कहा कि इसे आप लोग ध्यान पूर्वक पढ़िये। इससे आपको विद्यालयकी प्रगतिका पूरा पता चल जायेगा। हम लोग विद्यालयके लिये यथेष्ठ स्थान नहीं पा रहे हैं, यह हमारी सबसे बड़ी कठिनाई है।समाजका हमारी इस आवश्यकताकी ओर ध्यान देना चाहिये। रिपोर्टको आदिसे अन्ततक पढ़ कर मैं ज्यादा समय नहीं लेना चाहता। इसे आप लोग पढ़नेकी कृपा करें। यही कह कर अपना कथन समाप्त करता हूं।

(श्रीयुत ब्रजमोहनजी बिड़ला और श्रीमती रुक्मिणी देवी बिड़ला)

सभापतिका भाषण

सम्मान प्रदर्शनके लिये धन्यवाद देते हुए श्री ब्रजमोहन जी बिड़लाने इस अवसर पर स्त्री शिक्षाकी महान् आवश्यकता पर काफी जोर दिया और समाजको इस बातका उलहना दिया कि अपने आधे अंगको अशिक्षित रख कर हम संसारकी दौड़में किस प्रकार सबके साथ रह सकते हैं। हमारा एक कन्या हाई स्कूल है, उसमें भी मारवाड़ी बालिकाओंकी संख्या संतोष जनक नहीं और उच्च श्रेणियोंमें तो वे नाम मात्रको ही हैं। हमारे शिक्षित युवक जब अपनी संगिनी चाहेंगे, तो उन्हें हम अशिक्षित संगिनी देकर किस प्रकार घरेलू जीवनको सुखमय बना सकते हैं।

हम लोग रात दिन रुपया कमानेमें ही पागल न बने रहें, रुपया कमानेका जो उद्देश्य होता है, उसकी ओर भी ध्यान दें। रुपया एकत्र करनेके लिये ही रुपया न कमाते रह जायं, रुपयेसे जो गार्हस्थिक सुख और आनन्द प्राप्त हो सकता है, उसकी ओर भी ध्यान दें। अपनी बालिकाओंको चौदह वर्षके पूर्व विवाहित न करें और इस आयुतक उन्हें शिक्षा दिलायें। रूसकी स्त्रियोंको देखिये। उन्होंने इस महायुद्धमें क्या चमत्कार कर दिखाया। एक हम लोग हैं कि बमवर्षाके भयसे अपनी स्त्रियोंको इधर-उधर भेजने लगे। इसका कारण यही है कि वे हमारे लिये भार बनी हुई हैं, उन्हें हमने अपना ठीक साथी बनाया ही नहीं। पश्चिमी देशोंमें भी लोग व्यापार करते और हम लोगोंसे कहीं ज्यादा रुपया कमाते हैं, परन्तु क्या वे शिक्षासे दूर रहते हैं। पुरुष और स्त्री दोनोंकी शिक्षा आजके जमानेमें परम आवश्यक हो गयी है और मारवाड़ी समाजको जमानेके साथ चलना होगा। यदि वह ऐसा न करेगा, तो आगेके लिये काफी खतरा है। आज हमारे स्त्री समाजकी कितनी शोचनीय अवस्था है। वे देश जाकर जडूला उतारती और नाना प्रकारसे समय, शक्ति और धनका अपव्यय करती हैं। इसके लिये पुरुष समाज ही दोषी है, जिसने शिक्षाके अभावमें स्त्री समाजको पंगु बना रखा है। हम लोग यह बात नहीं सोचते कि यदि कल यह सट्टा-फाटका या व्यापार हमारे पास न रहे, तो हम किस तरह गुजर कर सकेंगे। यदि हमारे पास शिक्षाका बल हो, तो हम नयी दिशामें काम कर सकते हैं। इसलिये दूरदर्शितापूर्वक स्त्री-पुरुष सभीको शिक्षित बनाना परम आवश्यक हो गया है। जहां हम बड़े बड़े रोजगार चलाते हैं, वहां हमें अपने घरेलू पारिवारिक जीवनको सुव्यवस्थित और उच्च बनाना होगा। इसके लिये बालिकाओंकी शिक्षा अनिवार्य है। जब शारदा कानून बन चुका है और १४ वर्षसे कम उम्रकी बालिकाका विवाह अपराध है, तो हमारे मारवाड़ी भाई इस अपराधको क्यों करें। उन्हें चौदह वर्षतक अपनी पुत्रियोंको शिक्षा दिलानी चाहिये। मारवाड़ी बालिका विद्यालयके वर्तमान आंकड़े मेरे लिये सन्तोषजनक नहीं। समाजकी बालिकाओंको बहुत बड़ी संख्यामें विद्यालयमें देखना चाहता हूं और वे उच्च श्रेणियोंमें भी काफी संख्यामें दिखायी दें, तभी तो शिक्षित युवक शिक्षित संगिनी पाकर सुन्दर गृहस्थ-जीवन व्यतीत कर सकेंगे। समाजका ध्यान इस महान् प्रश्नकी ओर आकृष्ट कर अब मैं आप लोगोंको फिर धन्यवाद देकर अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

श्रीमती बिड़लाने विभिन्न श्रेणियोंकी छात्राओंको पुरस्कार वितरित किया और 'देश स्वतंत्र होगा' इस प्रकारके सामूहिक गानसे उत्सव सानन्द समाप्त हुआ। विद्यालयके वर्तमान सभापति श्री प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहकाने सभापति और श्रीमती बिड़लाको विद्यालयकी ओरसे धन्यवाद दिया। आपने कहा कि वे विद्यालयकी उन्नतिमें सदा ही पूरी दिलचस्पी रखते हैं, परन्तु आज अपना समय देकर उन्होंने हम लोगोंको और भी अधिक उत्साहित किया।

श्री रामकुमारजी भुवालकाने आजके विभिन्न पुरस्कारोंका सारा व्यय अपनी ओरसे विद्यालयको प्रदान किया, इसके लिये उन्हें भी धन्यवाद दिया। बालिकाओंको उपस्थित सज्जनोंने अनेक पुरस्कार दिये जिनका तालिका इस प्रकार है:—

सर्वश्री सेठ मंगतूरामजी जयपुरिया इन्द्रचन्दजी केजड़ीवाल और आनन्दीलालजी पोद्दारने इक्कीस-इक्कीस रुपयेकी इच्छित वस्तुओंका पुरस्कार कृष्णाभिनय, अशोक, सम्राज्ञी, चारुमित्रा, भिक्षुक, कविता पाठ करने वाली और दो छोटी बालिकाओंको प्रदान करनेकी घोषणा की। बसन्तलालजी मुरारकाने सम्राट अशोकका कार्य करने वाली बालिकाको इक्कावन रुपयेकी इच्छित वस्तु प्रदान करनेकी घोषणा की। मदनलालजी भावसिंहकाने एक छोटी बालिकाको इक्कावन रुपयेकी इच्छित वस्तु प्रदान करनेकी घोषणा की। सेठ दीपचन्दजी पोद्दारने भिक्षुक और चारुमित्राके अभिनयपर पचास-पचास रुपयेकी इच्छित वस्तु प्रदान करनेकी घोषणा की। श्री तुलसीरामजी सरावगीने चारुमित्राका सुन्दर अभिनय करनेपर उर्मिला खत्रीको पचीस रुपये, रायसाहब खुशीरामजी छारियाने पांच बालिकाओंको इक्कीस-इक्कीस रुपयेका पुरस्कार और पांच रौप्यपदक, श्रीमती उर्मिला कानोड़ियाने चारुमित्रा और मेघमल्हारके प्रदर्शनपर इक्कावन-इक्कावन रुपये, भगवतीप्रसादजी हिम्मतसिंहकाने इक्कीस रुपयेका पुरस्कार छोटी बालिकाको, श्री प्रेमसुखदासजी भगतने चारुमित्रा, और मल्हार गानेवाली बालिकाको इक्कीस-इक्कीस रुपयेका पुरस्कार प्रदान करनेकी घोषणा की। कुमारी प्राणकुमारी मेहराने दो रौप्य पदक भिक्षुक और चारुमित्राको प्रदान किया। श्री ओंकारमल सराफने जिन बालिकाओंको पुरस्कार नहीं मिला उनके लिये एक सौ रुपयेका पुरस्कार दिया।

अ० भा० हिंदू महासभा

सप्रू समझौता कमेटीके प्रति रुख

नयी दिल्ली, २० जनवरी। मालूम हुआ है कि अ० भा० हिन्दू महासभाकी कार्यकारिणीने यद्यपि अधिक समय देश व्यापी पुर्णसंगठनके प्रश्नपर ही विचार करनेमें लगा दिया तो भी सप्रू समझौता कमेटीके प्रति महासभाका क्या रुख होना चाहि इस प्रश्नपर गम्भीरतापूर्वक विचार किया गया। मालूम होता है अधिकांशमें यही मत प्रकट किया गया कि चूंकि मुसलिम लीग तथा दलितवर्गके अम्बेदकर दलने कमेटीके कार्यके प्रति उदासीनता दिखलायी है उन्हें भी अधिक महत्व उसे देना नहीं चाहिये।

यह भी पता चला है कि कार्यकारणीने यह म निश्चय किया है कि डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी समझौता कमेटीसे अपना नाम हटा लें। कार्यकारिणीने तीन उपसमितियां नियुक्त की हैं जो कांग्रेस और लीगकी समस्याका विशेष ध्यान रखते हुए महासभाके राजनीतिक दृष्टिकोण सम्बन्धी तथा महासभाका कार्यक्रम तैयार करें।

यह भी पता चला है कि कार्यकारिणी ने यह निश्चय किया है कि महासभाकी शाखाएं लन्दन और न्यूयार्कमें खोली जायें और ब्रिटेन, अमरीका चीन और रूसमें जनमत तैयार करनेके लिये उन देशोंमें एक मिशन भेजा जाये। अध्यक्षको अधिकार दिया गया है कि वे मिशनके सदस्यकी नामावलि तैयार करें। यू०प्रेस

सप्रू समझौता कमेटी कार्यव्यस्त

लाहौर, २० जनवरी। सप्रू समझौता कमेटीके सदस्यगण आज दिन हिन्दू, सिख तथा दलित वर्गके नेताओंसे मिलनेमें व्यस्त रहे।

शामको कमेटीके अध्यक्ष सर तेजबहादुर सप्रू सरदार हरनाम सिंहके साथ, जो कि समझौता कमेटीके सिख प्रतिनिधि हैं, खाकसार नेता अल्लामा मशरिकीसे मिलनेके लिये उनके वासस्थान पर गये और कमेटीकी प्रश्नमाला पर विचार-विमर्श किया। पञ्जाब सनातन धर्म प्रतिनिधि सभाके अध्यक्ष तथा स्टेट आव कौंसिलके सदस्य रायबहादुर रामशरणदाससे मिले।

पत्र प्रतिनिधिसे सर तेजने कहा कि हिन्दू और सिख नेताओंसे हमारी देर तक बातें हुईं। बातें सन्तोषजनक हुईं। साधारण प्रश्नोंपर विचार-विमर्श हुआ। कमेटीको विस्तृत स्मृति पत्र भेजनेका वादा उन्होंने किया है।

पञ्जाब प्रान्तीय दलितवर्ग असोसियेशनके अध्यक्ष चौधरी सुखलाल तथा जेनरल सेक्रेटरी चौधरी मोहनलाल समझौता कमेटीके सदस्योंसे मिले।

सूती मिलोंके मजदूर

मिलमालिकोंसे सुलह वार्ता भंग

अहमदाबाद, २० जनवरी। सूती मिल मजदूर असोसियेशनके सेक्रेटरी श्री गुलजारीलाल नन्दाने बोनस देनेके प्रश्नपर मजदूर अधिकारियों एवं मिल मालिकोंकी सुलह वार्ता भंग हो जानेके विषयपर प्रेस कानफरेन्समें एक वक्तव्य दिया है। पत्र प्रतिनिधियोंसे आपने कहा कि मैं नहीं चाहता कि इस शहरमें मजदूर और मिल मालिक पृथक मार्गोंका अवलम्बन कर, बल्कि मैं यह चाहता हूं कि उन दोनोंके झगड़ेमें पञ्चायत द्वारा निर्णय करानेके नियमका पालन किया जाये। आपने और कहा कि यह संस्था इस समय महात्मा गांधीके नियंत्रणमें कार्य कर रही है और उनके सामाजिक एवं आर्थिक विचारोंको कार्यान्वित करने की चेष्टा हो रही है। हम कोई गलती नहीं कर सकते क्योंकि इसका प्रभाव तमाम भारतपर पड़ेगा।

आगे चलकर श्री नन्दाने कहा कि सुलह-वार्ता बोनस देनेके प्रश्नपर ही भङ्ग हो गयी और पञ्चायत द्वारा निर्णय करनेकी मांग भी मिल मालिकोंने बगैर उचित विचार किये ही अस्वीकार कर दी है। मैं यह स्वीकार करता हूं कि मिल मालिकोंको यह सुझाव देनेका अधिकार है कि मजदूर अपने धनका उपयोग कैसे करें लेकिन किसी प्रकारके समझौता करनेकी यह शर्तके रूप यह स्वीकार नहीं किया जा सकता।

अन्तमें आपने कहा कि हम पञ्चायत सम्बन्धी नियमका पालन करना और न्याय चाहते थे लेकिन मिल मालिकोंने हमारा यह अनुरोध भी अस्वीकार कर दिया। यदि समझौता न होनेके कारण कोई परिस्थिति भविष्यमें उत्पन्न होती है तो उसका दोष कोई हमपर न लगायेगा। यू०प्रेस

अखिल भारतीय किसान सभा

अखिल भारतीय किसान सभाका ६ वां वार्षिकोत्सव बंगालके मैमनसिंह जिले में करनेका आयोजन धूमधामसे शुरू हो गया है। प्रसिद्ध किसान नेता मन्सूरहबीब के नेतृत्वमें अस्थायी स्वागत समिति गठित की गयी है जिसने अधिवेशनके व्ययके लिये ५० हजार रुपयोंकी अपील की है।

मालूम हुआ है कि दलितवर्गके प्रतिनिधियोंने यह मांग की है कि जमीन खरीदनेके अधिकार, नौकरियोंमें अधिक प्रतिनिधित्व, मैट्रिकुलेशन तक उनके बच्चोंकी मुफ्त शिक्षा और देशकी व्यवस्थापिका सभाओंमें अधिक प्रतिनिधित्व दिया जाये। ए० प्रेस

भारतमें रूसी चिकित्सक

सोवियट रूसके प्रसिद्ध चिकित्सक डाक्टर ओगनेव भारतकी स्वास्थ्य स्थिति का अध्ययन करनेकेलिये भारत पधारे हैं।

हमारा संकटग्रस्त पड़ोसी-चीन

——:*:०:*:——

(लेखिका—श्रीमती कृष्णादेवी)

साम्यवादी सेनाके सेनापति चू तेह

आज पड़ोसी चीन अपने इतिहासमें ...र्वाधिक संकटापन्न अवस्थासे गुजर रहा है। ...का प्रधान कारण वह साम्राज्यवादी ...ण्डव है जो गत ८ वर्षोंसे वर्बर जापानियों ...रा उसके धरातलपर किया जा रहा है। ...धुनिक वैज्ञानिक शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित ...पानी सेनाओंसे शौर्य और सहिष्णुताकी ...क्षात् मूर्ति देशभक्त चीनी जिस प्रकार ...हा लेते आ रहे हैं, वह विश्वके देशभक्तों- ...आत्मबलिदानके इतिहासमें एक उल्लेख- ...य घटना हो रही है। लेकिन इतनेपर भी ...शभक्त चीनी जनता अपनी मातृ भूमिकी ...ा बर्बर आक्रमणकारियोंसे करनेमें अपनेको ...समर्थ पा रही है, यह कम आश्चर्य और ...रितापका विषय नहीं है। १९४४ में चीनके ...रातलपर पाशविक साम्राज्यवादियोंने जो ...फलताएं प्राप्त की हैं, वे मानव स्वातंत्र्य ...य लोगोंको व्यग्र और उद्विग्न करनेवाली ...टनाएं हैं। कहते हैं कि जापानी सेनाओंने ...ने ४४ दिनके आक्रमणके सिलसिलेमें ...के ४९ नगरोंपर अधिकार किया है। ...हें नगरोंपर अधिकार करते समय उन्हें एक ...ोली तक भी नहीं चलानी पड़ी है और ...तकी बातमें चीनकी युद्ध कालीन राजधानी ...गकिंग और बर्मा रोडके संरक्षक कुनमिङ्ग ...रके लिये भारी खतरा उपस्थित हो गया ...। चीनको दो हिस्सोंमें विभाजित करते ...ए हुनान तथा क्वांगसी प्रांतोंके अनेक अमेरिकन अधिकृत अड्डोंपर अधिकार जमा लिया गया है। इतना ही नहीं आक्रमण-कारियोंने चीनको प्रधान यातायातोंपरभी अधिकार कर लिया है। बर्मामें मित्रराष्ट्रोंको जो सस्ती सफलताएं मिल रही हैं—बिना किसी खूनखराबीके अक्याब जैसे सुप्रसिद्ध बन्दरगाह और टापूपर उनका अधिकार हो गया है, इसका प्रधान कारण द्रष्टाओंके विचारानुसार जापानकी पूर्व निर्धारित योजना बतायी जाती है। उनका कहना है कि जापानी प्रशांतमें मित्रराष्ट्रोंका सबसे कमजोर मोर्चा चीनमें ही पाते हैं और चीनसे ही जापानके प्रधान शहरों और आबादीपर हवाई तथा सामुद्रिक अभियानकी आशंका है। इसलिये जापान अपने मित्र जर्मनीकी देखादेखी अपनी बिखरी हुई शक्तिको संगठित करनेके लिये चीनमें एकत्रकर रहा है। मंचूरियामें भी सोवियट रूसका मुकाबला करनेके लिये जो जापानी सेना एकत्र की गयी थी, वह भी दक्षिण चीनमें बुला ली गयी है और इस समय उसकी सारी शक्ति चीन और फिलिपाइन द्वीप पुंजमें ही लग रही है।

आर्थिक ढांचा पस्त हो रहा है

यह तो है चीनकी सामरिक स्थिति। अब जरा उसकी आर्थिक स्थितिपर एक विहंगम दृष्टि डालिये। रायटरके १ जूनके तारमें बताया गया है कि चीनमें वस्तुओंके मूल्य १९३७की अपेक्षा ४१७गुना बढ़ गये हैं। हैटकादाम ६९०), एक जोड़ा जूतेका २६०) और एक गज कपड़ेका २९०) है। जहां हिन्दुस्तानसे चीजोंके दाम ५-६ गुने हो जानेसे करोड़ोंकी संख्यामें असमर्थ लोग अकाल काल-कवलित हो गये और तरह तरहकी महामारियां सुरसाकी तरह मुंह फैलाये हुए मानव मात्रको निगल जानेको तैयार खड़ी हैं, वहां पड़ोसी चीनमें चीजोंका दाम ४१७ गुना हो गया और फिर भी रण बांकुरे चीनी सैनिक अपने हथियार डालनेको तैयार नहीं। इस साहस और शौर्यको सुन कर कलेजा बांसों उछल उठता है और इच्छा होती है कि ऐसे शूरवीरोंके हाथ चूम लिये जायें। लेकिन प्रश्न तो यह है कि ऐसी आर्थिक दुरवस्था चीन जैसे समृद्धि शाली देशमें क्यों उत्पन्न हुई? इसमें सन्देह नहीं कि जापानके साम्राज्यवादी युद्धने चीनके सामने ऐसा दुर्दिन उपस्थित करनेमें बहुत अधिक सहायक हुआ है। लेकिन यह तो कपासके बाहरकी चीज मालूम होती है कि ७-८ वर्षोंके युद्धके कारण वस्तुओंका इतना अधिक अभाव हो जाये कि उनका मूल्य आकाशसे बातें करने लगे।

गत मईमें कोमिंतांग सरकारकी केन्द्रीय समितिके अधिवेशनमें चीनके पांच बड़े उद्योगपतियोंके संघोंने अपने घोषणापत्र पेश करते हुए कहा था कि हमारे देशके युद्धोद्योगोंको संचालित करनेके लिये हमारे पास यूरोपके कई देशोंकी अपेक्षा बहुत अधिक साधन है। विदेशी सहायतासे हम इन उद्योगोंको बड़ी सफलता पूर्वक संचालित कर सकते और वर्तमान आर्थिक संकटको टाल सकते हैं। लेकिन इन साधनोंका उचित उपयोग नहीं हो रहा है, जिससे वर्तमान संकट उपस्थित हो गया है। गत वर्ष चीनके युद्ध उद्योगोंकी अवस्था सुधारनेके विचारसे अमेरिकाकी सरकारने नेलसन मिशन भेजा था। मार्शल चांगकी सरकारने उसे पूर्ण रूपेण सहायोग प्रदान करनेका वचन दिया था। मिशनके प्रयाससे युद्धोद्योगोंकी देख रेख करनेके लिये एक बोर्डकी स्थापना भी की गयी थी। लेकिन बोर्डको देशकी पूंजी और यातायातपर कोई अधिकार नहीं था। वह इतना भी नहीं कर सकता था कि जो कारखानें बंद हैं, उनकी सारी उपयोगी सामग्री लेकर चालू कारखानोंको दे दी जाये। इस लिये नेलसन मिशन अपने प्रयासमें बिलकुल असफल रहा।

चीन खेतिहर देश है। भारतकी तरह वहां भी ८० प्रतिशत लोग खेतीके द्वारा ही अपनी जीविका उपार्जन करते हैं। पैदावार भी अच्छी हुई बतायी जाती है। फिर भी किसान और मजदूर दाने दानेके लिये तरस रहे हैं। इसका प्रधान कारण पूंजीपतियोंकी अन्न चोरी और मुनाफाखोरी है। मुनाफाखोर कई फसलोंका अन्न दाबे बैठे हैं, सरकारके गोदामोंमें सैनिक कार्यके लिये संचित अन्न वर्षोंसे सड़ रहा है और गरीब देशवासी दाने-दानेको लाले पड़ रहे हैं। पूंजीपति जमींदार अपनी जमीन किसानोंको जोतने बोनेके लिये देते हैं और जब फसल पैदा होती है तो उसका बहुत बड़ा हिस्सा वे लगानमें ले लेते हैं। इस तरह किसानोंकी कमाईका अधिक भाग तो जमींदारोंके गोदा-

मार्शल चांगकैशक

दक्षिण चीनपर धुंआधार जापानी आक्रमणके आतंकसे भागनेवाले चीनी नागरिक ट्रेनकी प्रतीक्षामें पड़े हैं।

कम्यूनिस्ट सरकारके प्रधान
माओ-त्से-तुङ्ग

(शेष १४ वें पृष्ठपर)

कहानी

कलाकार !

—:*:—

लेo—श्रीफणीश्वर नाथ 'रेणु'

काशीके बंगाली टोलेकी एक गन्दी गलीमें वह कुछ दिनोंसे रहने लगा था। दुबला-पतला, लम्बा-सा युवक, जिसका गोरा रंग अब उतर रहा था, आंखोंके नीचेकी हड्डियां बाहर निकल रही थीं और चप्पलके फीते टूटे जा रहे थे। गलीमें कदम रखते ही दूकानदारोंकी आंखें उसपर बर-बस अटक जाती थीं और कविराज अमूल्य भूषण अपनी दूकानमें बैठे दोस्तोंसे, 'गुप्त यौन-व्याधियोंको राष्ट्रीय प्रश्न बनानेपर बहस करने लग जाते थे।

यों तो वह किसीसे बोलता बहुत कम था, पर उसकी चाल-ढाल, रहन-सहन, और वेश-भूषा देखकर, उसके पड़ोसी किरायेदारोंने अपनी अपनी बुद्धि और इच्छानुसार उसका नाम-करण कर लिया था। घरकी बुढ़िया मालकिन उसे मास्टर समझती थी और 'मास्टर जी' कह कर पुकारती भी थी। बुढ़ियाकी दृष्टिमें वह सीधा-सादा और गरीब किरायेदार था। इसीलिये 'अकेला' रहते हुए भी, उसे बुढ़ियाने एक गंदी कोठरी किरायेपर दे दी थी।

दोतल्लेपर रहने वाले मद्रासी सज्जन उसे 'मिस्टर' कह कर सम्बोधित करते थे। नीचे 'पाइप' खोल कर पानी बर्बाद करने वाली औरतें जब मद्रासी सज्जनकी बातें नहीं समझ सकती थीं, तब लाचार होकर उन्हें नीचे की कोठरीमें रहने वाले 'मिस्टर' की सहायता लेनी पड़ती थी। मिस्टरकी धारा-प्रवाह अंगेजी समझकर सबको दुरुस्त कर देते थे।

विधवा युवती बंगालिनकी 'बंगला-मिश्रित हिन्दी प्रश्नका उत्तर शुद्ध बंगलामें देकर वह उसका 'देशेर-लोक' हो गया था। किन्तु जिस दिन उस दुखियाने उससे, देशमें रहने वाले भाई-भौजाईके पास पत्र लिख देनेके लिये कहा था; पत्रका मजमून सुनकर पत्र लेखक 'देशेर लोक' की आंखें डबडबा गयी थीं। उस दिनसे वह बड़े प्यारसे 'दादा' कहने लगी थी।

हस्तरेखाविद् वृद्ध पण्डित पीताम्बर त्रिवेदीने—हथेली देखनेकी कौन कहे—सिर्फ उसकी उम्र और सूरत देख कर जान लिया था कि वह 'फटीचर' है। प्रतिदिन, ९ बजे खा-पीकर, चित्र-विचित्र हथेलियोंकी छाप, मेगनीफाइङ्ग ग्लास, और पञ्जिका इत्यादि लेकर, दशाश्वमेघ रोडके फुटपाथ पर बैठने जानेके पहले घण्टों खड़ा होकर वे अपनी षोड़शी पत्नीको उस 'फटीचर' की निगाहसे बचे रहनेकी चेतावनी और उपदेश दे जाते थे।

इसी तरह घर भरके लोग उसके सम्बन्ध में विभिन्न राय रखते थे। बाहरके लोगोंमें—चायवाला बूढ़ा पुलिन, उसे किसी भद्र परिवारका विपद् - ग्रस्त युवक, घाट होटलका मैनेजर 'निराशा-प्रेमी' और अब्दुल बीड़ी वाला 'खुफिया' समझता था। वह तो थी, उससे किसी न किसी तरहका सम्पर्क रखने वालोंकी धारणाएं।

उसी गन्दी गलीकी एक उपगली—कुकुर गलीमें—'छपमा-निकुञ्ज' के झरोखेपर बठ कर भीड़की ओर दयनीय मुद्रा बनाकर देखने वाली बीमार, पीली युवती उसे कवि समझे बैठी थी, और स्कूलकी लारीपरसे उतर कर, नीची निगाह किये, छातीसे पुस्तक चिपका कर मन्थर गतिसे घर लौटने वाली रूप-गर्विता,—सिर्फ एक दिन धक्का खाकर 'गुण्डा नम्बर एक' की उपाधि दे चुकी थी और अपनी सहेलियोंको उससे सावधान करा चकी थी।

'वह क्या था, क्यों था, कौन था और किस लिये मशहूर था इत्यादि यदि पूर्णरूप-रूपसे जानता था तो स्वयं वही अथवा मदनपुरेकी 'सिल्क-कोठी'का बुड्ढा मालिक महम्मद हैदर, जो उससे नित्य नयी साड़ियोंके—बोर्डरोंके नमूने लेकर रंगों और फूलोंकी आधुनिकता, उपयोगिता, दुनियांकी बदलती हुई 'रुचि-अरुचि' का पूर्ण ज्ञान लाभ कर भी, महीनेमें उसे सिर्फ चालीस रुपये देनेके समय पचास बार दाढ़ी खुजलाता था। मुहम्मद हैदर साहबकी नजरमें वह एक 'शरीफ गधा' था। गधेको दिन भर बोझ ढोनेके बाद कुछ खानेको मिल जाता है और उसको भी महीना भर खटनेके बाद कुछ खाने और रहने भरको मिल जाता था। हैदर साहब उसकी बदौलत तिजोरियां भर रहे हैं—यह जानते हुए भी उसने चालीसके बदले पचासकी मांग नहीं की थी। मांगकी कौन कहे प्रार्थना भी नहीं की थी कभी। एक दिन जब वह हठात् अपने डिजाइनोंकी खपतके आंकड़ोंको जाननेके लिये व्याकुल हो उठा था तो हैदर साहबका माथा ठनका था। 'गधेको किसीने बहकाया'—यह सोच कर वे टालमटोल करने लगे थे, किन्तु जब उसने साफ शब्दोंमें अपनी उत्कण्ठाका कारण महज यह बतलाया था कि उसका 'स्पेकुलेशन', उसकी 'स्टडी' कितने अंशोंमें सफल रही; वह इसीके बलपर वर्तमान संसारका भविष्य जान सकेगा आदि···तो उन्होंने कुछ छिपकर भी सच कह दिया था। 'मैंने कहा था न, देखा आपने? हां देख लिया।' कहकर वह जब उछलने लगा था तो हैदर साहब बड़ी मुश्किलसे अपनी हंसी रोक सके थे। एक बार हैदर साहबके दामाद, जो इस्लामिया-युनिवर्सिटीमें इतिहासके रिसर्च स्कालर तशरीफ लाये थे। उन्होंने तो लुटिया ही डुबानी चाही थी। घंटों न जाने क्या क्या 'डिमडाम-गिटपिट-सिटपिट' भाषामें बहस करनेके बाद दामाद साहबने शुद्ध उर्दू में फरमाया था—'अमां आप तो खुदकुशी-कर रहे हैं खुदकुशी। युनिवर्सिटियां तो आपकी कदम बोसी करके आंखोंमें बिठायेंगी, मगर उन्हें आप जैसोंका पता भी तो हो।' उस रातको हैदर साहब ख्वाबमें भी अपने दामाद-को कोसते रहे थे। लेकिन अपने गधेको रोजकी तरह ग्यारह बजे हाजिर पाकर उन्होंने मन ही मन खुश होकर उसे 'शरीफ गधे' की टायटिल दे दी थी।

(२)

कामसे या बिनाकाम वह रोज प्रायः ग्यारह बजे अपनी कोठरीसे निकलकर गलीकी भीड़में छिप जाता था और चार बजे शामको लौट आता था। अपनी कोठरीमें थोड़ी देर बैठकर फिर निकल पड़ता था। पुलिनके यहां चाय पीवह घाटोंकी ओर चल देता था।

दशाश्वमेघ घाटपर उसने कई स्थानोंको चुन लिया था, उनमेंसे किसी एकको खाली देखकर वह बैठ जाता और उसकी आंखें, घाटपर बैठी कीर्तन सुनने वालियोंमें किसी-को खोजने लगतीं। पा जानेपर आंखें जरा चमक उठतीं, नहीं पानेपर किसी दूसरी सूरत-की खोज होती।···'ओ! वहां रही···! छीः छीः यह क्या गति बना डाली है उसने अपनी।···कापी···कापी···सिर्फ कापी। इस गहरे रंगकी लाल साड़ी पहननेके पहले, वह कानमें 'पाशा' झुलानेके पहले उसने जरा यह भी सोचा कि कहां तक इससे शोभा बढ़ेगी। 'हत्या···हत्या···!'—वह मन ही मन, बड़बड़ा उठता—'सममुच हत्या है यह।···एकदम सहुआइन मौसी बनी बैठी है आज।'—वह मन ही मन ठठाकर हंस भी पड़ता, उधर कीर्तन सुननेवालियोंकी मण्डली भी 'राधा कृष्ण और गोपियोंकी रसभरी ठिठोलियां सुनकर खिलखिला पड़तीं।'

कीर्तन समाप्त होनेके बाद, गंगाके उस पार रामनगर किलेका चिराग जल उठता, बालूकी सफेदी और खेतोंकी हरियाली अंधकारमें घुलमिलकर एक हो जाती। राजघाट पुलपर आने जानेवाली गाड़ियोंकी रोशनी पंक्ति बांधकर भागती जाती······और वह देखता ही रहता।

इस पार मणिकर्णिका घाटमें चितायें कभी जोरसे धधक उठतीं, कभी धुओंका गुब्बारा निकलता। अहिल्या घाटपर शहनाईसे 'श्यामकल्याण' की करुण रागिनी फूटकर निकल पड़ती और वह चुटकियोंपर ताल देते देते सुध-बुध खो बैठता था।

गीत समाप्त होते ही—मानो किसी: आवश्यक कामकी बात याद हो आयी हो—वह एकाएक उठकर चल देता और उसकी चाल विश्वनाथ गलीमें जाकर ही धीमी पड़ती। पंजाबीके दोनों पाकेटमें हाथ डालकर, चप्पल घसीटता हुआ, बगलकी दुकानोंपर सरसरी निगाह फेंकता वह धीरे धीरे चलता रहता। साड़ियोंकी दुकानोंमें शोकेशों को देखता हुआ बढ़ चलता। बच्चोंके खिलौने, सिन्दूर, आलता, रेशमके डोरोंकी छोटी-बड़ी दूकानोंके पास, अथवा किसी 'ब्लाउज स्टोर' के पास खड़ा होकर नयी ब्लाउजकी पट्टीको ध्यानसे देखने लगता। क्या चाहिये बाबू? क्या दूं बाबू? आदि प्रश्नोंका निराशापूर्ण उत्तर देकर वह चुपचाप चल देता। सबसे अन्तमें चूड़ियोंकी दूकानोंपर एक हल्की दृष्टि डालकर, कभी-कभी ठिठककर खड़ा भी हो जाता था। "···हुंह···ये कौलेजकी लड़कियां हैं। पतली-पतली चूड़ियोंका खब्त सवार है। पहने कौन समझाये तुम्हें। किसी सिनेमा नेत्रीने इन चूड़ियोंको पहन लिया, में अच्छी लगी, बस इन लोगोंके पागलपन सवार हुआ। जरा भी सो झनेकी······" सीढ़ीसे टक्कर लेते लेते जाता। फिर लायब्रेरीमें घुसकर मासिक पत्रिकामें छपेभूत, भविष्य वर्तमान कालीन कलासे सम्बन्धित लेखको पढ़ता, लेखककी अनभिज्ञतापर खाकर उठ जाता। फिर उसी गलीसे तेज चालमें निकल जाता। बार कच्ची-पक्की रोटियों और बासी तरका पेट भरकर अपने घोसलेमें लौट जाता। नेपर अपनेको लुढ़का देता। बिछौने पड़े दिन भरका लेखा-जोखा आरम्भ जाता। बीड़ियोंपर बीड़ियां सुलगे बूझने लगतीं····'लेकिन उस ब्लाउजको कौन करेगा? किसी मोटी औरतको गयी तो सब गुड़ गोबर। ···और सेट इस बार कुछ अच्छे आये हैं। इस बार मैं जरूर खरीदूंगा। दो सेट योंका, तीन ब्लाउज और पतली-प्लेन कोरवाली साड़ी। जरूरसे जरूर।'··· किसके लिये प्रश्न उठते ही वह नीचे माचिस टटोलने लगता, बीड़ीका फेंककर वह एक बार हंस देता। रानी चुपकेसे आकर न जाने आंखोंसे घुलमिल जाती।

यही उसका दैनिक-कार्यक्रम था। तूफान अथवा वर्षाकी झड़ी ही उसके जीवन-क्रममें बाधा डाल सकती थी।

(३)

एक दिन जब वह चूड़ियोंकी दूकानपर निगाह फेंक कर सीढ़ीपर रहा था कि दूकानपर किसी परिचित को देखकर रुक गया। दूरसे अच्छी देख कर उसने पहचान लिया, पास बोला—'माधव?

'अरे! शरदेन्दु?' कह कर उसने लगा लिया। चूड़ीवाला हाथमें एक कुछ कहते-कहते रुक गया।

शरदने माधवकी कमीजके एक कालरको कोटके अन्दर घुसाते हुए 'अच्छे तो हो?'

'मैं जो था सो तो हूं ही, पर यह क्या हालत है?'

'सब ठीक है, खरीदो, क्या रहे थे!'

माधवने पासमें ही खड़ी स्वस्थ युवतीकी ओर—जो अब तक थर्ड-पा तरह खड़ी मुस्कुरा रही थी—मुड़ -'मधु? आओ परिचय करा दूं! मेरे मुंहसे न जाने कितनी बार सुन हो। आज साक्षात देवताका दर्शन क यही हैं मेरे परम मित्र शरदेन्दु हिन्दू विश्वविद्यालयके अमूल्य रत्न, चित्रपर चीनके कला-मर्मज्ञोंने प्रसन्न पुरस्कार भेजा था और हजरतने, पुरस्कारकी रकमको दान कर दिया था, केन्द्रके लिये। देख लिया न ...!'

फिर शरदकी ओर देख कर जरा

हुए बोला—'और शरद ! यह है श्री मधुलिका माधव।'

'नमस्ते।' मधुलिकाने आदर पूर्वक जोड़ कर कहा।

शरदने आश्चर्य प्रकट करते हुए माधवसे —'तुमने शादी करली ?

'तो कौन बड़ा पाप कर बैठा ?' माध-हंस कर कहा !

शरद मधुलिकाकी ओर देख कर बच्चोंकी बोल उठा-'नही, नहीं, मैंने कहा कि...

'बाबू कौनसा सेट... ?' चूड़ी वालेने ीर हो कर टोका !

किसीके कुछ कहनेके पहले ही, शरदने बढ़ कर उन सेटोंको नापसन्द करते हुए —'आजसे करीब पन्द्रह दिन पहले जो आये थे, वेसब बिक गये क्या ? वह नीली ली मोटी मोटी···'

चूड़ीवालेने याद करते हुए कहा—'ओ ! हां, है तो···मगर वह क्या···' मधुलिका ओर इशारा करते हुए बोला—हुजूर न्द करेंगी ? युनिवर्सिटीकी लड़कियोंने सन्द···

'पसन्द करेंगी या नहीं यह तुमने पहले कैसे जान लिया। यदि नहीं भी पसन्द गी, तोभी वह सेट खरीदा जायगा।—

दने जरा मुंह विकृत करते हुए कहा— निवर्सिटीकी लड़कियां···

चूड़ीवाला जिज्ञासु दृष्टिसे मधु और धवकी ओर देखने लगा। शरदने जोरसे निकालो !

मधु और माधवने भी निकालनेका ारा किया। चूड़ीवालेने निकालकर दिख-ते हुए कहा—'यह देखिये ! मैंने पहले ही दिया था कि हुजूर को··· ?

'चुप रहो—' सेटसे एक चूड़ी निकाल-शरदने मधुलिकाको समझाना शुरू ा—'देखिये ! मोटी है, भोंड़ी है और द सस्ती भी। मगर है आपकी ही) एक बार पहन तो लें, चूड़ियां आपही कि वे क्या हैं।' उसने चूड़ीवालेसे —'पहनाओ।'

मधु और माधवने एक दूसरेको देखा र मुस्कुरा दिया। चूड़ियां पहनायी गयीं मधु आश्चर्यकी पुतली हो गयी। उसके से निकल पड़ा—'सच !'

माधव मुस्कुराने लगा। चूड़ीवालेकी े विस्मयसे बाहर निकल आयीं।

शरदकी पसन्दके दो-तीन सेट और ाले गये। सबोंपर शरदने एक छोटा-मोटा ण दिया। वह इस तरह बक रहा था अन्य खरीदारोंने उसे चूड़ीवालेका दलाल समझ लिया।

सभी सेट खरीदे गये। एक सेटको संभा-हुए शरदने कहा—'चलो ! और चीजें नी हैं।' वह आगे आगे चल पड़ा। धवने पूछा—'सुनो शरद ! तुम यहीं हो। सोचा था कि तुम···'

'क्या ?'—शरद रुका।

'यही कि तुम किसी युनिवर्सिटीमें कला गका वोंट रहे हो।'

शरद 'हो-ही' कर हंस पड़ा। उसकी ीको 'विचित्र हंसी' कही जा सकती है। धवने फिर पूछा—'अच्छा ! मां और लखा दीदी और तुम्हारे छोटे भाईका नाम भूल रहा हूँ···सब सकुशल तो हैं ?'

'सब शेष···सब शेष···' शरदने चलते चलते ही कहा—'इसी दुर्भिक्षमें···'

'अरे।' माधवने चीख मारकर कहा और तुम क्या करते रहे ?'

'कलकत्तेमें दुर्भिक्ष पीड़ित सहायता कमेटीके लिये कारुणिक पोस्टर रंगता रहा। पेट भरनेको मिल जाता था।'—शरदने लापरवाहीसे उत्तर दिया।

'यहां कब आये···क्या करते हो ?'

'बहुत अच्छा लगता है बनारस। यहीं हूं।'

'क्या करते हो··· ?'

'अजी ! वह लाल पट्टीवाला ब्लाउज निकालना तो।'—दूकानवालेसे शरद कह रहा था।

वह अपने पसन्दकी चीजें खरीदता जा रहा था, माधव दाम चुकाता जाता था। उसे इच्छानुसार सभी चीजें खरीदी गयीं। शरदके पांव-खुशीके मारे-धरतीपर नहीं पड़ रहे थे। माधवने उसमें ऐसी स्फूर्ति पहले कभी नहीं देखी थी।

गलीसे बाहर होकर तीनों शरबतकी दूकानपर बैठे। माधवने फिर पूछा—'यहां क्या करते हो ?'

'मेरे शरबतमें बूटी डालना महाराज ! बूटी !'—शरदने प्रश्नको फिर टाल दिया। माधवने समझ लिया, उसे इस प्रसंगसे कष्ट हो रहा है। वह चुप हो रहा। शरदने भंग समाप्त करते हुए कहा—'अच्छा ठहरे हो कहां ?'

'ब्रह्माघाटपर, मौसीके यहां।'

'तब तो नावसे जाओगे ! चलो मैं भी घाटतक चलूं।'

तीनोंजने घाटकी ओर चल पड़े। घाटपर माधवने साहस करके फिर पूछा—'शरद ! बताओ भाई ! यहां क्यों हो ? कहनेकी हिम्मत तो नहीं हो रही है, फिर भी कहता हूं, तुम चलो मेरे यहां···कश्मीर ! वहां रह-कर तुम···'

शरदने लम्बी सांस ली। मधुलिकाने भी आंखोंसे माधवकी बातोंका समर्थन किया। शरदने मधुलिकाके प्यारे मुखड़ेकी ओर देखा, फिर उसकी चूड़ियोंपर आंख गड़ाकर चुप रहा।

'बोलो शरद !' माधवका गला भर आया था और मधुलिकाकी आंखोंमें आंसू।

'तुम यह सब क्या कह रहे हो ? जाओ नावपर बैठो।' शरदने उसे एक प्रकारसे धकेलते हुए नावमें बैठा दिया।

मधुलिका भी बैठी।

'शरद ! सुनो...'

'ब्रह्माघाट बाबू ?—'पूछता हुआ मल्लाह ने डांड़ चला दी कर्र्र्र-छपा-छपे, कर्र्र्र-छपा-छप्।

'पत्र लिखना शरद !'

नाव घाट छोड़ चुकी थी।

पूरब आकाशमें पूर्णिमाका चांद निकलकर हंस रहा था। नाव चली जा रही थी। उस पार बालू और खेतकी हरियालीपर चांदनी नाच रही थी। किलेका चिराग जल रहा था। राजघाट-पुलपर गाड़ीकी रोशनी पंक्ति बांध कर भागी जाती थी, मणि-कर्णिकामें चिताएं धधक रही थीं। अहिल्या घाटपर शहनाईसे कोई करुण रागिनी फूट कर निकल रही थी, गंगाकी बहती हुई धारापर चांदकी किरणें, जाती हुई नाव, और नावपर मनमारे आपने-सामने चुपचाप बैठी दो मूर्तियां···।

नाव आंखोंसे ओझल हो गयी, शहनाई-की रागिनी भी जब शेष हुई तो उसकेमुंहसे अपने आप निकल पड़ा—'सुन्दर।' वह लौट पड़ा।

* * *

गंदी कोठरीमें बिछौनेपर पड़ा पड़ा वह दिन भरका लेखा-जोखा कर रहा था। बीड़ियां चूक गयी थीं, फेंकी हुई बीड़ियोंके टुकड़ोंको पुनः बटोरकर काममें लाया जा रहा था। "अब घाटपर कोई आकर्षण नहीं, विश्वनाथ गली तो श्रीहीन हो गयी, सब मैंने खरीद लिया। अब किधर ?—ओ हो ? विक्टोरिया पार्कमें छोटे छोटे बच्चे बहुत सुन्दर खेल खेलते हैं। कलसे वहीं—।"

उस दिन मकानके किरायेदारोंने पहले पहल आश्चर्यित होकर सुना—'वह आधी रातको आनन्द-विभोर होकर विहाग अलाप रहा था।

———

मर्म वस्तु ... आजाता है, जहां मनमाना दाम लेकर वह बिकता है। अन्नकी महंगीके फलस्वरूप दैनिक उपयोगकी और भी चीजें महंगी हो गयी हैं। बेचारे गरीब किसान उनको खरीदनेमें असमर्थ हैं। जमींदारोंके अलावा किसानोंको सरकारको भी कुछ अन्न देना पड़ता है, जिससे सरकारी कर्म चारी मनमाने भावसे खरीदते हैं। वस्त्रका अभाव चीनमें इस लिये हो रहा है कि लड़ाई वाले अंचलोंमें जो रूई पैदा की जाती है, वह जापानियोंके हाथ बेच दी जाती है और देशकी मिलें कच्चे मालके अभावमें बंद पड़ी हैं। एक तरफ तो आवश्यक पण्य पदार्थोंके अभावमें कारखाने बंद हैं और दूसरी तरफ सैनिकोंको आवश्यक सामग्री सप्लाई करनेके लिये नये-नये सरकारी कारखा रहे हैं। नागरिकोंकी देख रेख करने वाला ईश्वर ही है। चीनमें लोहेके कुल १८ कारखाने थे। गत नवम्बरमें १४ बंद हो गये। सन १९४३ के पहले छः महीनोंमें सिगक्वाई माइनिंग फेक्टरीने १९३७ टन माल पैदा किया था। लेकिन उसमेंसे सिर्फ ३०१ टन मालकी खपत हुई। नेशनल रिसोर्सेज कमीशनको इस लिये बंद कर देना पड़ा क्योंकि मालकी खपत नहीं होती थी। मशीन तैयार करने वाले कारखानों तथा कोयला उत्पादन करने वाले व्यवसायोंकी भी ऐसी ही दशा है। चुंगकिंगमें मशीन बनाने वाले ३६४ कारखानोंमेंसे ८९ का दिवाला हो गया और १९ कारखाने बंद हो गये। कोयलेके उत्पादन और मूल्य नियंत्रणके सम्बन्धमें अव्यवस्थित नीतिके कारण १९४३ में १८६ खानोंमेंसे ४४ एक दम बंद हो गये और १०० खानोंमें उत्पादन बहुत कम कर दिया गया है।

कोमितांग और जनता

चीनके सर्वाधिक प्रभावशाली नेता मार्शल चांग केशक द्वारा सङ्गठित कोमितांग पार्टीकी सरकारमें आज ऐसे स्वार्थी पूंजीपतियों और उद्योग पतियोंकी भरमार है जिनकी अव्यवस्थित नीतिका दुष्परिणाम सामने उपस्थित है। कोमितांगका इतिहास पूंजीपतियों और उद्योग पतियोंके स्वार्थ-पूर्ण कारनामोंका इतिहास कहा जाय, तो विशेष गलती नहीं होगी। नानकिंगकी जापानी कठपुतली सरकारका प्रधान वांग-चीं-वी कोमितांग पार्टीका एक स्तम्भ था। जब वह खुले आम जापानसे जा मिला तो जापानका समर्थन करनेका भार कोमितांग सरकारके युद्ध मन्त्री हो-यिंग-चिनके सिर पर आया। जब जनताने इस फासिस्ट समर्थक नेताका घोर विरोध किया तो उसे मन्त्री पदसे हटाकर सेनापति बना दिया गया। चेन-ली-फ्यू सोवियट विरोधी तथा जापान समर्थक चीनकी गुटका दूसरे नम्बरका सबसे बड़ा नेता हैं। चेन-ली-फ्यू और उसके भाईका कोमितांगपर इतना अधिक प्रभाव है कि स्वयं मार्शल चांग केशकको भी इतनी हिम्मत नहीं है कि उसका विरोधकर सकें। चेन अभी तक कोमितांग सरकारमें शिक्षा मन्त्री था, लेकिन जन आन्दोलनको शांत करनेके लिये हालमें मन्त्रिमण्डलमें जो परिवर्तन हुए हैं, उनमें उसे संगठन मन्त्रीका पद दिया गया है। कांग-सी-चेंह भी चेन गुटका एक सदस्य है और आजकल वह सूचना विभागका मन्त्री है। कहनेका तात्पर्य यह है कि आज चीनकी जो राष्ट्रीय सरकार समझी जाती है, वह सर्वदलीय नहीं वरन एक दल-कोमितांग पार्टीकी सरकार है, जिसमें मुनाफाखोर पूंजीपतियों और स्वार्थी व्यावसायिकोंका बोलबाला है, तथा उसके प्रधान मार्शल चांगकेशक चीनके कम्युनिस्टोंसे आरम्भसे ही खार खाये बैठे हैं। उनकी दृष्टिमें चीनके कम्यूनिस्ट जापानी फासिस्टोंसे कम देशके दुश्मन नहीं हैं और इसीलिये अपनी बहुत बड़ी शक्ति उन्होंने कम्यूनिस्ट चीनपर घेरा डाल रखनेके लिये तैनात कर रखी है। मार्शल चांगकी कम्यूनिस्ट विरोधी नीति उनकी देश भक्तिका नहीं स्वार्थ साधन की ही परिचायक कही जायेगी। क्योंकि जापानके विरुद्ध चीनके सैनिकोंने जो शौर्य-प्रदर्शित किया है, उसका अधिक श्रेय कम्यूनिस्ट चीनको ही दिया जायगा। लड़ाईमें अधिकांश कम्यूनिस्ट ही मारे गये हैं। सुप्रसिद्ध अमेरिकन लेखक एडगर स्नो और आई०एप्स्टीन तथा मि०स्टुआर्ट गेल्डर के लेखों और वक्तव्योंसे साफ मालूम होता है कि चीनमें कम्यूनिस्ट सेनाओं और नेताओंको सर्वसाधारणका जो सहयोग और समर्थन प्राप्त हो रहा है, वह कोमितांगकी राष्ट्रीय सेनाको नहीं मिल रहा है।

सुप्रसिद्ध कम्यूनिस्ट नेता माओ-त्सेतुंगने अपने भाषणोंमें एकाधिक बार यह स्पष्ट किया है, कि वर्तमान चीनके जन्मदाता डा० सनयातसेनके जगत-प्रसिद्ध राष्ट्रीयता प्रजातंत्र और जनताकी समान शक्ति उपार्जनके सिद्धान्तोंपर ही वर्तमान चीनका शासन प्रबंध संगठित करनेका ध्येय कम्यूनिस्ट सरकारका है। वह उदार और सहिष्णु हैं एवं राष्ट्रीय साम्यवाद स्थापित करनेकी ओर विशेष तत्पर और सचेष्ट है। साम्यवादी सिद्धान्त दुनियाकी अधिकांश आबादीकी जीवन समस्या हल करनेका दावा रखता है। इसलिये उसकी ओर आम जनताका आकर्षण स्वाभाविक है। हाल में चुंगकिंग में चू-इन लाईने जो भाषण किया है, उसमें यह स्पष्ट कर दिया है, कि चीनकी कम्यूनिस्ट सरकार साम्यवादके अन्तर्राष्ट्रीय पहलूको छोड़कर उसको राष्ट्रीय बाना पहनाना चाहती है। इसीलिये कम्यूनिस्टोंकी मांग है, कि 'एक पार्टीकी सरकारके स्थानपर सभी राजनीतिक दलोंके प्रतिनिधियोंको मिलाकर एक सर्वदलीय सरकार बनायी जाये। सभी जापान विरोधी सैनिक संगठनोंको मिलाकर एक फौजी कमाण्ड नियुक्त किया जाये, जो समस्त फासिस्ट विरोधी सेनाओंका नेतृत्व करे।" इसमें सन्देह नहीं कि आजकी स्थितिमें जापानको पछाड़नेके लिये समस्त देश की एकता अनिवार्य हो गयी है, और उसमें किसी अन्य स्वार्थकी सिद्धिके लिये यदि बाधा पहुंचायी जाती है, तो वह समस्त देशके लिये अनुचित है।

साम्यवादी सरकारकी शक्ति

चीनकी कम्यूनिस्ट सरकारके अन्तर्गत उत्तर चीनके शेंसी, कांसू और निगसिया प्रांत तथा अन्य वे अंचल हैं, जहां अर्द्ध साम्यवादी गुरिल्ला सरकारें कायम हैं। राजधानी येनान है। साम्यवादी सरकारके अन्तर्गत समस्त चीनका एक षष्ठांश भाग निहित है। वहां साम्यवादी ढंगसे राजनीतिक, आर्थिक तथा शैक्षिक प्रचारकी व्यवस्था है। उसकी अपनी अलग सेना है, जिसमें लगभग ५॥ लाख सैनिक हैं, और जेनरल चू-तेह सेनापति हैं; जिनके मातहत २२ लाख गुरिल्ले सैनिक भी जापानसे लोहा ले रहे हैं। अट्टारहवें, सैनिक डिवीजन और न्यूफोर्थ आर्मीका स्थान चीनके स्वातन्त्र्य इतिहासमें गौरव पूर्ण समझा जायेगा। असाधारण प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति माओ-त्से-तुङ्ग कम्यूनिस्ट चीनके नेता और कम्युनिस्ट पार्टीकी केन्द्रीय समितिके चेयरमैन हैं। जेनरल चू-तेह इतने उच्च कोटिके सैनिक विशेषज्ञ है, जिनको हरानेमें मार्शल चांग केशकने भी अपनी असमर्थता महसूस की हैं।

मार्शल चांगका व्यक्तित्व

मार्शल चांग केशककी राष्ट्रीयतामें किसीको भी सन्देह नहीं चाहे, उनका कट्टर विरोधी ही क्यों न हो। लेकिन उनकी यह धारणा गलत है कि अमेरिका और ब्रिटेन जब प्रशान्त मोर्चेपर जोरशोरसे अभियान आरम्भ करेंगे, तो जापानको अनायास ही घुटना टेक देना पड़ेगा और चीनकी रक्षा अपने आप हो जायगी। कमसे कम इस समय चीनके सामने जो आर्थिक, राजनीतिक और सामरिक संकट उपस्थित है, वह उसके इतिहासमें यदि अभूत पूर्व नहीं, तो अत्यन्त गम्भीर अवश्य है और उसको कोई एक दल अकेले नहीं टाल सकता। हालमें उन्होंने अपनी सरकारमें जो थोड़ेसे रद्दोबदल किये हैं, वे इतने काफी नहीं हैं कि वर्तमान संकटको टालनेके लिये सरकारको पर्याप्त साधन और शक्ति सम्पन्न बना सके। कम्यूनिस्ट नेताओंका तो कहना है कि इसके द्वारा चीनकी जनताको धोखा देनेकी चेष्टा की गयी है। खैर, हम यह स्वीकार करनेको तैयार नहीं हैं कि मार्शल चांग जैसे देशभक्त सर्वोत्कृष्ट नेता अपने देशवासियोंको धोखेमें रखकर उनका अहित करनेकी बात सोचगे; लेकिन इतना तो स्वयं मार्शल चांगके ही उस संदेशसे स्पष्ट हो जाता है, जिसे उन्होंने नववर्षके अवसरपर देशकी जनताके नाम ब्राडकास्ट किया है, कि चीनकी सामरिक अवस्था दिनोदिन खराब हो रही है। उन्होंने यह आश्वासन अवश्य दिया है कि सामरिक स्थिति दृढ़ होते ही लड़ाईके दर्मियान ही जनताको अधिकार प्रदान करनेकी चेष्टा की जायेगी। लेकिन इस आश्वासनसे उन लोगोंमें आशा और उत्साहका संचार होता नहीं नजर आता, जो वर्तमान आर्थिक दुरवस्थासे बुरी तरह प्रताड़ित हो रहे हैं। उनके लिये चीनके अर्थ मन्त्रीके इस दिलासाबाजीमें कोई आकर्षण नहीं कि नये बजटमें और अधिक टैक्स नहीं लगाये जायेंगे और वस्तुओंके बढ़ते हुए मूल्यको सरकार प्रभावोत्पादक ढङ्गसे नियन्त्रित करेगी। क्योंकि इन सरकारी आश्वासनोंके बावजूद वे अपनी अवस्था अधिकाधिक खराब होती जाती देखते हैं।

जापानकी वर्तमान सामरिक विधिसे ऐसा लगता है कि अमेरिका ब्रिटेनके जोरशोरसे आक्रमण करते ही वह अपनी सारी शक्ति चीनको करलने गायेगा। इसलिये उनके भरोसे मुक्तिका स्वप्न देखने वालोंको सम चाहिये, खूब अच्छी तरह हृदयङ्गम क चाहिये कि बिना अपने पैरोंपर ख दूसरेकी आशा और भरोसापर रहना आत्म-वञ्चना है। चीनका सेना पतित्व अमेरिकन सेनापति स्टिलवेलको नहीं दिया गया, औ मतभेदको लेकर जेनरलको अपने देश जाना पड़ा, तो यह उचित ही है। सार्वदेशिक सेनापतित्व और प्रश्न तो अनिवार्य है, उसको टाला सकता और यह पद उसी व्यक्ति करना चाहिये कि जो सर्वाधिक प्रभा हो। हमारे ख्यालमें मार्शल चांगका इस मामलेमें सर्वोच्च माना जायगा इस ख्यालसे चीनके भारत स्थित विभागके मन्त्री मि० लो की इस चीनके कम्यूनिस्टोंको ध्यान देना चा मार्शल कम्यूनिस्ट सरकारसे स करनेके लिये तैयार हैं, लेकिन कम्यू दल चीनकी सेनाका नेतृत्व अपने लेना चाहता है। इस समय सबका एक मात्र चीनको उबारनेकी ओर चाहिये और इस कार्यमें अगर किसी अपने स्वार्थका बलिदान करना पड़ता उसके लिये सर्वदा तैयार रहना चाहि

नेताओंकी नजरबन्दी

ब्रिटिश पार्लमेण्टमें भारत सचिव एमरीने कहा कि १९४२ के कांग्रेस ...लनके सिलसिलेमें नजरबन्द किये व्यक्तियोंको क्रमश, आवश्यक सुरक्षा ...का ध्यान रखते हुए रिहा किया जा है। इस दृष्टिकोणसे प्रत्येक व्यक्तिके उसकी अवस्था देखकर ही विचार ना चाहिये।

उपनिवेशोंकी स्वाधीनता

प्रशांत विषयक सम्मेलनकी ओरसे वक्तव्य प्रकाशित हुआ उसमें बताय है कि उक्त चार्टरमें यह स्पष्ट घोषणा ...ी कि अधीन उपनिवेशोंमें शासनका ...त्व जिन राष्ट्रोंपर है वे उनके साथ ...व नागरिकताका व्यवहार करें और ...ी बीचमें उनका सामाजिक एवं आर्थिक निर्माण भी करते रहें।

गांवोंका उद्धार

राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलनमें गांवोंके ...र विषयमें बुनियादी शिक्षा ही एक-...लक्ष्य माना गया। श्री जी० राम-...द्रनने प्रौढ़ शिक्षा उपसमितिका वृतांत ...करते हुए कहा कि यह निश्चय किया ...ा है कि जहां आवश्यकता प्रतीत हो ...उ वहीं शिल्प-विद्या एवं मौखिक ...क्षणके माध्यम द्वारा प्रौढ़ शिक्षा दी ...य।

कांग्रेसका कार्य

आंध्र महिला सभाकी ओरसे आयो-...त प्रेस कान्फ्रेंसमें भाषण करते हुए ...मती सरोजिनी नायडूने कहा कि कां-...का उद्देश्य समस्त भारतीयोंकी सामू-...क मांगका प्रतिनिधित्व करना तथा ...का लक्ष्य समस्त सम्प्रदायों और दलों ...स्वाधीनता संग्राममें कन्धेसे कन्धा ...कर लाना है। वही दिन विजयका ...न होगा जब कांग्रेस सभी दलोंको ...कर भारतको स्वाधीन कर लेती है। ...ऐसा कोई कार्य न करें जिससे देश ...जनतामें फूट उत्पन्न हो वरन ऐसी ...तें कहें और प्रकाशित करें जिससे ...ता और सद्भावना पैदा हो। भार-...य जनतामें एकता स्थापित करनेके ...यमें जरा भी विलम्ब न लगाया जाय ...र सभीको इस दिशामें प्रयत्नशील होना ...हिये।

जीवनदानकी प्रार्थना

अखिल बङ्गाल महिला आत्म-रक्षा ...मितिकी ४३ हजार सदस्याओंकी ओर श्रीमती नेलीसेन गुप्त तथा श्रीमती ...ने वायसराय तथा मध्यप्रान्तके गवर्नर ...नाम तार देकर अनुरोध किया है कि ...मूर अष्टी कांडमें मृत्युदण्डकी सजा ...े हुए अभियुक्तोंको जीवनदान दिया ...य। कलकत्तेकी अनेक संस्थाओंकी ...रसे भी उपर्युक्त आशयका तार भेजा ...ा है।

कौन क्या कहता है

मि० चर्चिलका भाषण

यूनान तथा साधारण सामरिक अ-स्थापर कामन सभामें मि० चर्चिलने भाषणके सिलसिलेमें विभिन्न मोर्चोंका हवाला देते हुए कहा कि पश्चिमी मोर्चेपर १६ दिसम्बरसे होनेवाली लड़ाई और कष्टोंको एकमात्र अमेरिकनोंने ही सहा है। इसमें सन्देह नहीं कि पश्चिमी मोर्चे पर आनेवाले भयङ्कर तूफानका जर्मनीके प्रथम आक्रमणकर कुछ देरके लिये रोक लिया है। यह निश्चित था कि पूरब-पश्चिम और इटलीके सभी मोर्चोंसे वह आक्रमण होता जो जर्मनोंने सामरिक शक्तिको नष्ट कर डालता। जर्मनोंके लिये केवल मात्र पूर्ण आत्म-समर्पणमें अन्य कोई उपाय नहीं है। आगे चलकर आपने कहा कि ब्रिटेनपर दोषारोपण करनेवाले व्यक्तियोंको इस बातका जवाब मिल गया है कि ब्रिटेन तथा ब्रिटिश साम्राज्य स्वार्थी, लालची, जमीन हड़पनेवाली जाति नहीं है।

मि० चर्चिल

बन्दी नेताओंका स्वास्थ्य

कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य डा० प्रफुल्लचन्द्र घोषने अहमदनगर किलेसे मुक्त होकर एक वक्तव्यमें कहा कि सरदार वल्लभभाई पटेल आंतोंकी बीमारीसे पीड़ित थे। उनकी बीमारी अब बढ़ गयी है। तीन दिनपूर्व वे फिर आंत रोगसे पीड़ित हो गये थे। मौलाना अबुल कलाम आजादका वजन ४२ पौण्ड घट गया है। उन्हें जल्दी-जल्दी जुकाम हो जाया करता है। गत वर्ष वे जुकाम और ज्वरसे कईबार पीड़ित हो चुके हैं। पण्डित गोविन्दवल्लभ पन्तको सर चकरकी बीमारी है तथा रीढ़में पीड़ा बनी रहती है। इन्हें हार्नियाकी बीमारी भी नजर-बन्दीके कुछ ही महीने बादसे बढ़ गयी है। पण्डित जवाहरलाल नेहरूका वजन १५ पौण्ड घट गया है और उनमें बुढ़ावस्थाके लक्षण नजर आने लग गये हैं। डा० पट्टाभि सीतारमैया मधुमेहसे पीड़ित थे किन्तु अब अच्छे हो गये हैं। मि० आशफ अली, आचार्य कृपलानी तथा आचार्य नरेन्द्रदेव पहलेसे अब स्वस्थ हैं यद्यपि मि० आशफ अलीका वजन ११ पौण्ड घट गया है। डा० घोषने आगे कहा कि सभी नजरबन्द अपने तो अध्ययन एवं लेखनमें व्यस्त रहते हैं।

ग्रीस, इटलीका प्रश्न

ग्रीस और इटलीके अधिकारके प्रश्न पर कामन सभामें बोलते हुए मि० इडेनने कहा कि लीबिया एवं ट्रिपोलीके युद्धके पूर्वके इटालियन अधिकृत भूभागके भविष्यके सम्बन्धमें शांति स्थापित हो जानेके बाद संयुक्त राष्ट्रों द्वारा निर्णय किया जायगा। वर्तमान समयमें स्थिति यह है कि इटालियन सरकारको किसी भी उपनिवेशके वापस मिलनेका दावा नहीं है।

कामन सभामें बहस

कामन सभामें प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलके भाषणके बाद प्रमुख उदारदली वक्ता सर परसी हेरिसने वाद-विवादका श्री गणेश करते हुए कहा कि मुझे पूर्ण सन्तोष नहीं है कि पापाण्ड्रूकी जगह प्लेस्टिरसके प्रधानमन्त्री होनेका अर्थ ग्रीसमें प्रजातन्त्री सरकारकी अभिवृद्धि है। जबतक आम चुनाव नहीं हो जाता, प्रधानमन्त्रीकी ठोस वैधानिक स्थितिसे इन्कार नहीं किया जा सकता। मजदूर दली उपनेता मि० आर्थर ग्रीनउडने कहा कि राजनीतिक सिद्धान्तको लेकर जहां युद्धकी नौबत आया हो, उसका संतोष पूर्ण हल तो अब क्षमादान ही है। हम लोग ग्रीस या कहींके भी स्थायी पुलिसमैन नहीं हो सकते। अनुदार दली सर नुथरेट हेडलमने कहा कि ब्रिटेनको यह स्पष्ट कर देना चाहिये कि पोलिश जनता की मंजूरीके बिना पोलैण्डकी राजनीतिक पद्धतिमें कोई परिवर्तन नहीं किया जा सकता। डिपसनने कहा कि ग्रीसमें जो नीति काममें लायी गयी, वह परिणामको देखते हुए गलत थी। ब्रिटिश फौजोंका वहांसे दूसरे मोर्चेपर हटा ले जाना चाहिये जहां उसकी उपयोगिता है। मि० स्टोक्सने कहा कि भूमध्य सागरके लोगोंका ख्याल है कि ब्रिटेन भूमध्य प्रान्तमें रूस के पांव जमनेमें बाधा देनेके लिये ही ग्रीस पहुंचा। उप-प्रधान मन्त्री मि० एटलीने कहा कि ब्रिटिश परराष्ट्र नीति न तो प्रधानमन्त्रीकी भावुकतापर निर्भर है और न वैदेशिक सचिवकी स्वेच्छाचारितापर। यह तो ग्रीसवाले जानें कि कौन-सी शासन व्यवस्था राजतन्त्र या प्रजातन्त्र उनके लिये उपयुक्त होगी।

दो सालके लिये लीडरी

अहमदाबादकी एक सभामें भाषण करते हुए मि० जिन्नाने कहा कि महात्मा गांधी तो २५ वर्षोंसे अपने ढंगसे स्वराज्य प्राप्त करनेके लिये आन्दोलन करते रहे पर कुछ भी न हो सका। पर यदि वे दो ही वर्ष पीछे चलनेको तैयार हों तो देख लें कि किस तरह उद्देश्य सिद्धि हो जाती है।

हताहतोंकी संख्या

प्रधानमन्त्री मि० चर्चिलके वक्तव्यानुसार हताहतोंकी संख्या इस प्रकार है:—कनाडा—७८ हजार ९८५, आस्ट्रेलिया—८४ हजार ८६१, न्यूजीलैंड—३४ हजार ११५, दक्षिण अफ्रीका—२८ हजार ९०३, उपनिवेश—६ हजार ६५२, साम्राज्य—२ लाख ६४ हजार ४३८।

प्रशांतके द्वीपपुंज

प्रशांत सम्मेलनमें विश्व सुरक्षा सम्बन्धी वादविवादके अवसरपर संयुक्त राष्ट्रके प्रतिनिधिने अमेरिका एवं फिलिपाइनके बीच स्थित द्वीपोंपर निश्चित दावा प्रकट किया। इन द्वीपोंमें केरोलाइन्स, मेरियाना, एवं मार्शल द्वीपपुंज शामिल हैं जो पहले जापानियोंके संरक्षणमें थे। उक्त पदाधिकारीने यह भी कहा कि भविष्यमें कुछ दिनोंतक फिलिपाइनकी आक्रमणकारियोंसे रक्षा की जा सकेगी।

समझौता समितिके विचार

समझौता समितिके अध्यक्ष सर तेज बहादुर सप्रूने समझौता समितिके कार्योंपर प्रकाश डालते हुए कहा कि हम लोग भावी विधानकी बुनियादतक पहुंचनेके लिये कोई प्रयास उठा न रखेंगे। हमारे प्रस्तावोंके पीछे हमारी सद्भावना दृढ़ताके साथ डटी है।

यू० पी०में ४३४ नजरबन्द

संयुक्तप्रांतके गवर्नरके सलाहकार सर टॅगार आरलनने प्रेस कानफरेन्समें बताया कि संयुक्तप्रांतमें लगभग ४३४ नजरबन्द हैं जिनमें ३४२ कांग्रेसी नजरबन्द हैं। जो लोग रिहा हो चुके हैं वे इसमें शामिल नहीं हैं, कुछ लोगोंकी रिहाईपर अभी विचार किया जा रहा है।

ब्रिटेनको चेतावनी

लन्दनकी रायल एम्पायर सोसाइटीमें भाषण देते हुए मेजर जनरल सर एडवर्ड स्पीयर्सने ग्रेट ब्रिटेनको चेतावनी देते हुए कहा कि अगर ब्रिटेनने सावधानीसे काम नहीं लिया तो मध्यपूर्वमें वह अपनी प्रतिष्ठा खो देगा। सचमुचमें यदि हमारी लोकप्रियता खतम हुई तो इसका परिणाम बहुत ही भयङ्कर होगा।

स्वदेश-वार्ता

श्री हरिभाऊ उपाध्याय रिहा

अजमेरसे प्राप्त संवादसे पता चला है कि अजमेर मेवाड़ प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के भूतपूर्व अध्यक्ष और हिन्दीके प्रसिद्ध लेखक पण्डित हरिभाऊ उपाध्याय अजमेर सेण्ट्रल जेलसे बिना शर्त रिहा कर दिये गये हैं।

माघ मेलाके स्नानार्थी

प्रयागके माघ मेलाके विषयमें सरकारी अनुमान यह है कि अमावस्याके अवसरपर संगमपर १६ लाख व्यक्तियोंने स्नान किया। कोई दुर्घटना नहीं हुई केवल एक नाव अवश्य उलट गयी थी लेकिन डूबनेसे बचा ली गयी।

बाबा राघवदासको बापूका पत्र

युक्तप्रांतके प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता बाबा राघवदास आजकल गोरखपुर जेलमें बन्द हैं। जेलमें बाबाजीपर पागलपनका दौरा होगया है। अपने निश्चयानुसार बाबाजी दवा आदि नहीं खाते हैं। इसलिये महात्मागांधी बाबाजीको पत्र भेजकर दवा खानेका आग्रह किया है।

इतिहास कांग्रेसको दान

मैसूर सरकारने भारतीय इतिहास कांग्रेसको भारतका इतिहास पूरा करनेके लिये १० हजार रुपये दान दिये हैं।

शौकत उस्मान रिहा

कानपुर तथा मेरठ कम्युनिस्ट मामलों के नेता श्री शौकत उस्मान ४॥ वर्ष की नजरबन्दीके बाद बरेली जेलसे छोड़ दिये गये हैं। एकबार श्रीशौकतउस्मान इंगलैंड में हाउस आव कामन्सकी मेम्बरीके लिये खड़े हुये थे।

४४मील सायकिल रेस

देवास (जुनिअर) में अखिल भारतीय सायकिल रेसका ७ वां जलसा हुआ ४४ मीलकी सायकिल रेसमें दक्षिण भारत के धनवासप्पा प्रथम आये।

उन्हें ४४ मीलकी सायकिल चलानेमें ३घण्टे ५ मिनट लगे। द्वितीय आनेवालेने सिर्फ ३५ मील तक सायकिल चलायी।

मि० बी०बी० इंगलैंड जायेंगे

युक्त प्रांतके स्वायत्त शासन विभागके मन्त्री मि० बी० बी० सिंह आई० सी० एस० जो बिलसिया हत्याकांडके अभियुक्त हैं, इंगलैंड जायेंगे। प्रांतीय सरकारने पासपोर्ट दे दिया है। प्रीवी कौंसिलमें अपील करनेके सिलसिलेमें वे जा रहे हैं। जानेके पहले सरसप्रूसे इलाहाबादमें मिलेंगे।

तूफानमें मवेशी लापता

गोहाटी जिलेके कई बकीं ले तूफानके परिणामस्वरूप कितने ही मवेशियोंके लापता हो जानेकी खबर मिली है।

पतंग उड़ानेका बुरा फल

अहमदाबादकी एक मकानकी छतसे गिर पड़नेसे पतङ्ग उड़ाने वाले १२ आदमी बुरी तरह घायल हो गये और एक मर मर गया। घायलोंको अस्पताल भेजा गया है।

एक आनेके नमकमें ६ महीने

सिराजगंजके एक दुकानदार साधु चरण साहाको डेढ़ छटांक नमक १ आनेमें बारह आनेकी दरसे बेचनेके अभियोगमें ६ महीनेका कठोर कारावासका दण्ड और ५ सौ रुपये जुर्माना किया गया है।

विश्व भारतीको दान

चीनी प्रजातन्त्रके वायस प्रेसीडेंट डाक्टर एच० एच० कुङ्गने विश्व भारतीके 'चीना भवन' को १०हजार रुपये भेजे हैं।

त्रिपुरा महाराजने भी विश्व भारती में संगीत भवनके निर्माणार्थ २० हजार रुपये प्रदान किये हैं।

ब्रज-भाषा साहित्य मण्डल

आगामी २,३ फरवरीको दिल्लीमें होने वाले अखिल भारतीय ब्रज साहित्य मण्डल के अधिवेशनके लिये रायबहादुरश्रीनारायण चतुर्वेदीको सभापति मनोनीत किया गया है। श्री दुलारे लाल भार्गव और अमरनाथ झा कवि सम्मेलन और ब्रज साहित्य परिषद्के सभापति चुने गये हैं।

रिश्वतखोर डाक्टर गिरफ्तार

लखनऊ रेलवे अस्पतालसे सम्बन्धित एक डाक्टर रिश्वत लेने और नकली मेडीकल सार्टीफिकट देनेके अपराधमें गिरफ्तार कर लिया गया है।

युक्त प्रान्तमें कुल ४३४ नजरबन्द

पता चला है कि संयुक्त प्रान्तमें लगभग ४३४ नजरबन्द हैं, जिनमें ३४२ कांग्रेसी नजरबन्द हैं। जो लोग रिहा हो चुके हैं वे इसमें शामिल नहीं हैं, कुछ लोगोंकी रिहाईपर अभी विचार किया जा रहा है।

श्री सुभाषचन्द्र बोसके भतीजे

श्री सुभाषचन्द्र बोसके भतीजे श्री अरविन्द बोस और श्री द्विजेन्द्र बोसकी ओरसे श्री मालिक बरकत अली एडवोकेटने लाहौर हाईकोर्टमें 'हेबिस कर्पस' दरख्वास्त पेश की है।

अग्रगामी दलकेसदस्योकागांधीजी में विश्वास

ज्ञात हुआ है कि सिवनी जेलसे फारवर्ड ब्लाकके बन्दियोंने सरकारको एक मेमोरेण्डम भेजा है कि हम धुरी राष्ट्रोंके विपक्षी हैं और महात्मा गांधीके छूटनेके बादसे उनकी नीतिके पक्षमें हैं। मेमोरेण्डम भेजनेवालोंमें अग्रगामी दलके अध्यक्ष श्री आर० एस० रूइकर, मन्त्री श्री एच० बी० कामथ और खजांची श्री सत्यनारायण बजाज हैं।

डा० घोषका स्वास्थ्य

अहमदनगर दुर्गसे रिहा होनेके बाद कांग्रेस कार्यसमितिके सदस्य डा० प्रफुल्ल चन्द्र घोष बम्बई पहुंचे। वहां डाक्टर गिल्डरने आपकी परीक्षा की। डा०घोष का स्वास्थ्य अच्छा है। डा० घोष शीघ्र ही महात्माजीसे मिलेंगे।

तीन लाखका माल पकड़ा गया

कलकत्तेके बड़े बाजारमें दो स्थानों की तलाशी लेनेपर पुलिसने लगभग तीन लाख रुपयेका माल बरामद किया। एक व्यक्तिको गिरफ्तार भी किया गया है।

देशभक्तकी भावना

चिमूर केसके फांसीकी सजा... वाले एक अभियुक्त श्री वामनराव... जो एक अच्छे जमींदार हैं, अपने... मित्रको लिखा है कि 'यदि मुझे फांसी... दी जाय तो मेरी सब जायदाद बेच... जाय और उसकी सारी रकम रा... पुनर्निर्माण कार्यमें लगा दी जाय।'

सेनापति बापटपर मुकदमा

सेनापति बापटके विरुद्ध आप... जनक भाषण देनेके कारण अको... अदालतमें मुकदमा चल रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

एक नया चार्टर

प्रशान्त अंचलकी समस्योंपर विचार करनेके लिये संयुक्तराज्य अमेरिकाकी वर-जीनिया राज्यान्तर्गत होटस्प्रिंग नामक स्थानमें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनमें सुदूर पूर्वके लिये एक नया चार्टर बना है। इसका नाम प्रशान्त चार्टर है। उक्त सम्मेलनमें १२ देशोंके प्रायः १६० प्रतिनिधि शामिल हुए थे। ० दिनके अधिवेशनके बाद स्वीकृत प्रशांत चार्टरमें पूर्वीय राष्ट्रोंको पूर्ण स्वतन्त्रता और समानताका दर्जा देनेका सिद्धान्त स्वीकार किया गया है। इस सम्मेलनमें निमन्त्रित होनेपर भी रूस नहीं शामिल हुआ। चार्टर ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, फ्रांस और हालैंडके हस्ताक्षर हैं। चार्टरका कार्य यह है। संयुक्तराष्ट्र जोरदार शब्दोंमें उक्त सिद्धांतोंको अस्वीकार करते हैं जिनके अनुसार एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र पर मालिकाना ढङ्गसे अथवा बतौर संरक्षक (ट्रस्टी) शासन करनेके अपने दावेको यह कह कर प्रमाणित करना चाहता है कि उच्च योग्यता और गुणोंके कारण दूसरेपर शासन करनेका उसे पैदाइशी अधिकार है। संयुक्तराष्ट्र घोषणा करते हैं कि सभी राष्ट्र समानताके अधिकारी हैं। वचन देते हैं कि सब राष्ट्रोंको समानताके लाभोंका उपभोग कर सकने योग्य बनानेमें अपनी निरन्तर चेष्टामें ज़रा भी त्रुटि न करेंगे। औपनिवेशिक और मातहत देशों एवं प्रत्येक देशमें रहनेवाली उक्त जातियों और दलोंके लिये, जो समाजिक और राजनैतिक अधिकारोंको पूर्णरूपसे भोग नहीं करते उनकी सुरक्षाके लिये संयुक्तराष्ट्र विश्वव्यापी अन्तर्राष्ट्रीय उत्तरदायित्वके सिद्धांतकी घोषणा करते हैं। संयुक्तराष्ट्र एक जेनरल असेम्बलीके उत्तरदायित्वके अन्तर्गत स्थापित की जाने वाली प्रादेशिक नियन्त्रण समिति की स्थापनाको, जो डमबर्टन ओक्स शांति-रक्षा सम्मेलनमें प्राप्त हुआ है, समर्थक हैं।

४० वर्षकी कड़ी कैद

फ्रांसमें सेनाकी सिगरेटें और अन्य राशन चुरा कर चोर बाजारमें पहुंचाने वाले तीन अमेरिकन फौजी पकड़े गये। इन तीनों को पेरिसमें अमेरिकन कोर्ट मार्शल हुआ और क्रमसे ४० वर्ष, ३९ और २५ वर्षकी कड़ी कैदकी सजा दी गयी।

जर्मनीकी जीहुजूर सरकार

सोवियट पत्र "सोवियट वार न्यूस" ने लन्दनस्थ पोलिस सरकारको जर्मनकी जीहुजूर सरकार लिखा है। कि पार्लमेंटमें इस तरफ सरकारका ध्यान आकृष्ट किया जानेपर मि० ईडेनने कहा कि जिस सरकार को हम लोग मानते हैं उसके खिलाफ इस तरहके अभियोग लगाने पर हम खेद प्रकट करते हैं।

चर्चिलकी चाल

लन्दनके विश्वस्त जानकार व्यक्तियोंका कहना है कि प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट पर मि० चर्चिल यह दबाव डाल रहे हैं कि त्रिराष्ट्र सम्मेलन होनेके पूर्व एक बार द्विराष्ट्र सम्मेलन (ब्रिटेन और अमेरिका) हो जाना आवश्यक है। यह भी कहा जाता है कि प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने मि० चर्चिलके इस अनुरोध को अस्वीकार कर दिया है क्योंकि वे नहीं चाहते कि अब और अधिक सन्देह पैदा किया जाये और स्टैलिनकी यह धारणा हो कि ऐंगलों-अमेरिकन ब्लाक बनानेका भीतर ही भीतर चक्र चल रहा हैं। अब यह बात किसीसे छिपी नहीं है कि मि० चर्चिल फ्रांसके साथ मिल कर यूरोपमें एक पश्चिमी गुट बनाना चाहते थे किन्तु उनका प्रयास विफल हुआ। बहुत सम्भव है कि अब वही चाल अमेरिकाके साथ भी चली जा रही हो।

नाजी कमाण्डर गिरफ्तार

अमेरिकाकी सातवीं सेनाने १७ वें एसएस पैनजर डिवीजनके कमाण्डर जेनरल हैन्स लिंगवरको गिरफ्तार कर लिया है। पश्चिमी मोर्चेमें यह पहले एसएस डिवीजनल कमाण्डरकी गिरफ्तारी है।

साधारण निर्वाचन

ब्रिटिश पार्लमेंटमें डिप्टी प्रीमियर मि० एटलीने मि० चर्चिलकी ओरसे यह आश्वासन दिया कि साधारण निर्वाचनकी तारीखकी घोषणा जिस दिन वोटिंग होगी उससे कमसे कम ३८ दिन पहले की जायेगी।

सिसिलीमें विद्रोह

इटालियन सरकारकी विज्ञप्ति है कि सैनिक भर्तीकी घोषणाके खिलाफ विद्रोह प्रदर्शन करने वाले व्यक्तियोंमें ४ जनवरीसे १३ जनवरी तक ८६ व्यक्ति हताहत हुए हैं।

वार्सा और क्रेकोपर रूसका कब्जा

मार्शल स्टालिनने घोषणा की है कि पोलैण्डकी राजधानी वार्सापर अधिकार हो गया। जर्मन अनुमानके अनुसार मार्शल स्टालिन २५० डिवीजन सेना लेकर इस अञ्चलमें आगे बढ़ रहे हैं। पोलैण्डकी लुबलिन सरकारने घोषणा की है कि लालसेनाने क्रेकोको शत्रुओंसे मुक्त कर दिया।

भारतीय समस्या

इंस्टीच्यूट आफ पैसिफिक रिलेशन्सने भारतीय समस्यासे दिलचस्पी रखने वाले अमेरिकनोंसे मिलने और बातचीतकी सुविधा देनेके ख्यालसे श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित और पण्डित हृदयनाथ कुंजरूके दौरे की व्यवस्था कर दी है।

अमेरिकाको रूससे लड़ना होगा

वाशिंगटनका समाचार है कि सिनेटर ह्वीलरने कहा है कि यदि संयुक्त राज्य अमेरिकाका यूरोपकी गुटबन्दी नीतिमें शामिल हुआ तो इसका परिणाम यह होगा कि उसे अन्तमें रूससे लड़ना पड़ेगा।

अमेरिकन शहरोंपर बम-वर्षा

जर्मनीके विमान वाहक जहाज ग्रैंण्ड जैपलिन और ड्यूशलैण्डकी गतिविधि अज्ञात है। ऐसा समझा जाता है कि अटलांटिकके तटस्थ अमेरिकन शहरोंपर इन जहाजोंसे रोबोट बम उड़ाये जायेंगे। अमेरिकन जहाजी बेड़ाके कमाण्डर इनचीफ इनग्रामने शायद इसीसे कहा है कि ३० से ६० दिनके भीतर न्यूयार्क पर रोबोट बम गिरेंगे।

युद्ध बन्द नहीं हो सकता

मि० चर्चिलने पार्लमेंटमें फिर यह घोषणा दुहरायी कि जब तक धुरीराष्ट्र बिना किसी शर्तके पूर्ण आत्म समर्पण न करेंगे। तब तक युद्ध बन्द नहीं हो सकता। उन्होंने यह भी कहा कि मैं यह नहीं समझता कि इस मांगकी वजहसे युद्ध लम्बा होता जा रहा है।

मिस्रमें नया मन्त्रि-मण्डल

सादिस्ट पार्टीके लीडर और वर्तमान प्रधान मन्त्री महार पाशाने नया साधारण निर्वाचनके बाद, जिसमें राष्ट्रवादी वफिस्टोंने भाग नहीं लिया था, अपना नया मन्त्रिमंडल बनाया है।

भारतीयोंका बलिदान

पार्लमेंटमें एक प्रश्नके उत्तरमें मि० चर्चिलने कहा कि युद्धारम्भसे ३० नवम्बर १९४४ तक १५२५९७ भारतीय हताहत हुए हैं। इनमें १७४०५ मरे, १३९३५ लापता हैं, ४४२२४ आहत हुए हैं, और ७६०२३ बन्दी हुए हैं।

श्रीमती पण्डित ब्रिटेन जायेंगी

इण्डिया लीगके लन्दन आफिसको मालूम हुआ है कि श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित का बहुत शीघ्र ब्रिटेन जानेका विचार है। यह भी मालूम हुआ है कि ब्रिटेन यात्राके मार्गमें पासपोर्टका सवाल बाधक न होगा।

हांग कांगपर बम वर्षा

अमेरिकन जहाजी बेड़ासे संलग्न बम वर्षकोंने हांग कांग पर वर्षा की।

पहले प्रशान्त युद्ध समाप्त होगा

जापान साम्राज्यकी स्थिति १९४० में ब्रिटेनकी हालतसे भी बदतर है। जेनरल मैकार्थरके सैनिक जिस द्रुतगतिसे फिलिपाइनमें बढ़ रहे हैं उसे देखते ऐसा समझा जाता है कि यूरोपियन युद्धसे पहले प्रशान्त युद्ध की ही समाप्ति होगी।

डि गाल नहीं बुलाये गये

मास्को रेडियोने साधिकार इस समाचारको मिथ्या बताया है कि रूसने, ऐंगलो-अमेरिकन रूसी वार्त्तालापमें जेनरल डि गाल को आमन्त्रित करनेको कहा है।

यूनानमें अस्थायी संधि

कहा जाता है कि यूनानकी वर्तमान व्यवस्थाको अस्थायी सन्धि काल समझना चाहिये, स्थायी शान्ति नहीं। मि० चर्चिल का कहना है कि यूनानकी वर्तमान प्लास्टिरा सरकार पूर्णतया लोकतन्त्रीय सरकार है।

महाजनसे कर्जदार

वैदेशिक व्यापार विभागके मन्त्री मि० हरकोर्ट जान्स्टन एम० पी०का कहना है कि युद्धान्तमें ब्रिटेन महाजनसे कर्जदार राष्ट्र हो जायेगा। विदेशोंमें लगी हुई पूंजी, प्रायः १० खरब पौण्ड उसके हाथसे निकल जायेगी कहनेका मतलब यह है कि विदेशोंकी यह पूंजी युद्धकालमें जिन देशोंसे उधार माल आया है उसके भुगतानमें खप जायेगी। मि० जान्स्टन कहते हैं कि मेरा विश्वास है कि इसपर हम अपना निर्यात (एक्सपोर्ट) वाणिज्य ५० प्रतिशत बढ़ाकर रहन-सहन की वर्तमान रीति नीति परम्पराको कायम रख सकेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि युद्धकाल में संसार भरमें सर्वत्र उद्योग धन्धोंमें विराट उन्नति हुई है फिर भी मुझे विश्वास है कि रहन-सहनका मौजूदा हिसाब किताब बनाये रखा जा सकता है, अगर हम पहलेसे बढ़िया माल बनाकर उसे दूसरे देशोंके मुकाबले बराबर कीमत पर दे सकेंगे तो।

सम्मिलित उत्पादन

मि० चर्चिल और प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट निकट भविष्यमें यह घोषणा करेंगे कि ब्रिटेन और अमेरिका मिलकर एक संयुक्त उत्पादन बोर्ड कायम करेंगे। यह बोर्डअपना काम जर्मनी और जापानकी पराजयके बाद अनिश्चित काल तक करता रहेगा। आर्थिक विशेषज्ञ बोर्डके आरम्भिक नवीन जीवनके स्वरूपकी रूपरेखा तैयार करनेमें लगे हैं। बोर्डको स्थायी रूपसे कायम रखनेके समर्थक कहते हैं कि इसका परिणाम यह होगा कि अभी कच्चा माल आवश्यकतासे कहीं अधिक बच रहता है अतएव इस अतिवृद्धिको रोकने और आर्थिक प्रतियोगिताका अन्त करनेमें बोर्ड परम सहायक होगा।

सर जेम्स ग्रिग

भारतके भूतपूर्व अर्थ सदस्य और इस समय ब्रिटेनके अस्थायी युद्ध सचिव अपना वर्तमान काम छोड़कर मिडलैण्ड बैंककी चेयरमैनी लेनेका विचार कर रहे है। इंगलैण्डकी प्रमुख पांच बैंकोंमें एक मिडलैण्ड बैंक भी है।

२० हजार टन खाद्य छीन लिया

रायटरका संवाददाता कहता है कि यूनानके गृह युद्धके समय यूनान निवासियों के लिये यूनानी बन्दरगाहोंमें उतरा हुआ २० हजार टन खाद्य पदार्थ एलएस दलने या तो नष्ट कर डाला या अपने अधिकारमें कर लिया। २ जहाज, जिनमें प्रायः ८ हजार टन खाद्य पदार्थ था, वापस कर दिये गये।

लुबलिन सरकार वार्सा

गत बृहस्पतिवारको लुबलिनकी पोलैण्डकी अस्थायी सरकारने वार्सामें प्रवेश किया।

विश्वमित्र
THE VISHWAMITRA
२८—५ कलकत्ता जनवरी २९, १९४५, Calcutta, JAN. 29, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

रूसका जोसेफ स्टालिन टैंक

रूसके 'जोसेफ स्टालिन' नामक नये बड़े ... जो पोलैण्डकी जर्मन सैनिक पंक्तिपर ... रहा है, ४.६ इञ्च व्यासकी तोपें ... हैं। जर्मनीके पास जो सबसे बड़ा टैंक ... 'टाइगर' है, उसमें मात्र ३.४ इञ्च ...की और अमेरिकाके शेरमैन टैंकमें ...की तोपें लगी हैं। जोसेफ स्टालिनका ... सौ टन है। अनुमान है कि यह टैंक ... टाइगरको तथा पोलैण्डमें जर्मनों ... बनायी किलेबन्दियोंको भेद करनेमें ... है। ऐसा ख्याल किया जाता है कि ... पोलैण्डकी किलेबन्दियोंको तोड़नेके ... विशेष रूपसे मोर्चेपर लाया गया है। ...काम पूरा होनेके बाद इसकी जगहपर तेज ...वाले, मझोले टैंक लाये जायेंगे।

यूरोपीय मोर्चेपर अमेरिकन सेनापति, अगली पंक्तिमें (बायेंसे दाहिने) जेनरल जार्ज पैटन, ब्रेडले, आइसेन होवर, दोजेग, विलियम सिम्पसन है।

...लगी गोली कलेजेमें पहुंची

...तुर्कीके गैलीपोली नामक स्थानपर ...में भाग लेते समय ब्रिटेनके टामस ...के ३० वर्ष पूर्व पैरमें गोली लगी थी और ...समय उसके कलेजेके पाससे उस गोलीको ...कनेके लिये पेंशन अस्पतालमें उसका ...ज हो रहा है। १९१५ ई० में जिस ... पीटर नौसेनामें लड़ रहा था, वह ...त होकर अलेकजेण्ड्रियाके अस्पतालमें ...या गया था। लेकिन डाक्टरोंको गोली ...ता नहीं लगा सका था। १९१९ तक ...सेनामें काम किया और उसके बाद घर वापस चला गया था। अवकाश प्राप्त इस सैनिकको बार-बार दर्द रहा करता और इसके लिये उसने काफी इलाज किया। किसीने उसे शूल बताया और कुछने गठिया। लगभग ४ मास पूर्व उसके दर्दवाले अङ्गका एक्सरे फोटो लिया गया, तो मालूम हुआ कि गोली उसके कलेजेके नीचे छिपी हुई है। विशेषज्ञोंका कहना है कि हम लोग देखभाल कर रहे हैं और उसे शीघ्र ही निकाल लेंगे।

खर्राटा लेनेवाला सैनिक

दक्षिण इङ्गलैण्डमें एक जगहके दो सौ अमेरिकन सैनिकोंने अपने कमाण्डिंग अफसर के पास अर्जी दी है कि फौजी पुलिसमैन रैमन राड्रिग इतने जोरसे खर्राटे लेता है कि हम सो नहीं सकते। अब राड्रिगको एक झोपड़ी सबसे अलग दी गयी है जिसमें वह अकेला सोयेगा। राड्रिगके सार्जेण्टका कहना कि राड्रिग अच्छा सैनिक है, और उसे सब चाहते भी हैं। मैंने उससे कहा कि जब तक सब न सो जायं और मैं भी न सो जाऊं, तुम जागते रहो। परन्तु इससे भी कुछ लाभ नहीं उसके खर्राटेसे बहरा भी जाग पड़ेगा। वह बैरक हिला देता है।

रेडियो द्वारा रोग परीक्षा

प्रशान्त महासागरमें जानेवाले एक व्यापारिक जहाजमें एक युवक रेडियो आपरेटरके कमरेके बाहर बेहोश होकर गिर पड़ा। उसे आपरेटरके कमरेमें बिस्तर पर लिटा दिया गया। कैप्टनने उसकी नाड़ी देखी और कहा कि बहुत मन्द होती जा रही है। जहाजमें कोई उसकी रोग-परीक्षा नहीं कर सकता था। सभी परेशान थे कि आखिर क्या करें।

रेडियो आपरेटरको एक बात सूझी। उसने होनोलुलू स्थित नौविभागसे सम्बद्ध डाक्टरको रेडियो द्वारा सूचना दी और उससे सलाह मांगी। होनोलुलू ही जहाजसे निकटतम दूरीपर था। डाक्टरने रेडियोसे ही पूछा, "आपके यहां स्टेथस्कोप है?" जहाजसे स्वीकारात्मक उत्तर दिया गया। "अच्छा, स्टेथस्कोप जहाजीकी छातीपर लगाइये और कानोंमें लगाये जानेवाले भाग अपने माइक्रोफोनके निकट रखिये। मैं उसके फेफड़ोंकी परीक्षा करूंगा।" डाक्टरने फिर कहा। डाक्टर रेडियोपर फेफड़ोंकी गति सुनता रहा, बीच-बीचमें स्टेथस्कोप इधर-उधर लगानेका आदेश दिया और दूरपर बैठे-बैठे ही उसने कहा—"इसे दमाकी बीमारी है। गरम कम्बलोंमें लपेट दीजिये और अड्रेनलिन दीजिये।" उपचारके बाद बीमार अच्छा हो गया।

विवाहोंसे विवाह विच्छेद अधिक

लन्दनके ७३ वर्षीय 'कुमार' जज सर अर्नेस्ट चार्ल्सने डरहमकी सेशन अदालतमें कहा है कि ब्रिटेनमें "कुछ ही दिनोंके भीतर विवाहितोंसे विवाह विच्छिन्नोंकी संख्या बढ़ जायगी। मैं नहीं कह सकता कि इससे देशका हित होगा या अहित।" १९४३ में १० हजारको तलाक देनेका अधिकार दिया गया था, परन्तु १९४४ में इससे अधिकको अधिकार मिला है।

इस सप्ताह रूसी सेनाएं पूर्वी युद्ध-... अविराम गतिसे आगे बढ़ती रही और इन पंक्तियोंको लिखते समय तक ... समाचारों से स्पष्ट है कि मार्शल ...कोवकी सेना जिस स्थानपर है, वहांसे ...र्मनीकी राजधानी बर्लिन कुल एक सौ ...लीस मीलही है। और कोई रूसी ...ना इससे अधिक बर्लिनके निकट नहीं ...च सकी है। पर जब हम यह सोचते ...कि महीनों पहले बर्लिनके लिये पूर्व ...र पश्चिमसे होनेवाली दौड़ोंका जब ...खा लगाया जाता था, तब भी यद्यपि ...सियोंका दावा यह था कि वे पूर्वमें ...लिनसे जितनी दूरीपर हैं,उनके पश्चिमी ... उससे कहीं अधिक दूरीपर हैं, किन्तु ...दूरी तीन सौ मीलके लगभग थी। ...तरह स्पष्ट है कि अपने आक्रमणके ...सप्ताहही बाद रूसी सेनाएं जहांसे ...ी थीं, वहांसे बर्लिनका आधसे अधिक ... पार कर चुकी हैं। उनकी यह सफ-...ा कोई साधारण नहीं है। रूसियोंकी ...ी भारी सफलतासे रूसके पश्चिमी ...लोचक आश्चर्य स्तब्धसे हो रहे हैं। ...ीमेल' कहता है कि, "रूसी आक्रमण ...ा और कोई आक्रमण सैनिक इति-...समें नहीं मिलता। जब जर्मनीकी ...कि अपनी पराकाष्ठाको पहुंची हुई ..., तब भी जर्मनोंने इतने भारी उद्योग ...लिये कभी प्रयत्न नहीं किया था। ...इम्स' लिखता है कि "विजय सूचक ...पोंकी सलामी प्रत्येक रात्रि मास्कोमें ...ाई पड़ रही है। उसके लिये काफी ...मी है। कारण, युद्धके इतिहासमें ...ी जाड़ेके दिनोंमें इतना विशाल आक्र-...ा नहीं आरम्भ किया गया, जैसा यह ...ो विजयपर विजय प्राप्त करता इतनी ... आगे बढ़ रहा है।" जैसे बर्लिन ...लिये होनेवाली दौड़में पश्चिम और ...की मित्र सेनाओंकी दूरी नापनेका ...न किया जाता था, वैसे ही अब ...ते हैं कि पूर्वमें रूसियोंकी इस असा-...ण सफलताके साथ पश्चिमकी मित्र ...नाओंकी प्रगतिकी भी तुलना की ...ने लगी है। 'ग्लोब'की रिपोर्टके ...नुसार फील्ड मार्शल माटगोमरीके सदर ...जरूरी तार भेजनेवाले संवाददाताने ... जनवरीको अपने तारमें कहा है, कि ...ा पूछते हैं कि हम लोग भी रूसियों-... भांति क्यों आगे नहीं बढ़ सकते? ...ावमें संवाददाताका कहना है कि ...ीमें हमारा बढ़ाव पांच सौ मील और ...रमण्डीसे राइन नदी तक चार सौ ...ा हुआ है। इस तरह मित्र सेनाएं ...सियासे अधिक आगे बढ़ी हैं। अफ्रीका ...ारा जिस तरह बढ़ी थीं, वैसा बढ़ाव ...सी सेनाका कहीं नहीं हुआ है। लेकिन ...सियोंकी भांति मित्र सेनाएं सभी ...ेश नहीं बढ़ सकतीं, क्योंकि यद्यपि ...ियोंके मुकाबले कहीं अधिक जबर्दस्त

महायुद्धका सिंहावलोकन।

जर्मन सेनाएं हैं, तो भी उन्हें केवल स्थल-युद्धही करना पड़ता जब कि ब्रिटिश और अमरीकन मित्रोंको जहां रूसके पास उधार पट्टेकी व्यवस्थाके भीतर सामग्री पहुंचानी पड़ी हैं, वहां साथही तीन प्रकारसे लड़ना पड़ा है। समुद्रमें और आकाशके ऊपर उन्होंने जितना कुछ किया है, वह पूर्वमें हुए कार्यसे अत्यधिक है। साथही यह भी स्मरण रखना चाहिये कि रूसने भारी यातनाएं झेली हैं और भारी जेनरल और सैनिक पैदा किये हैं। किन्तु पूर्वमें रूसी सेनाओंको पुनः संगठित होनेके लिये अवश्य रुकना पड़ेगा और तब पूर्व और पश्चिम दोनों ओरसे बर्लिनके लिये आक्रमण सम्मिलित रूपमें आरम्भ होगा। हमने इस संवाददाताकी बातें इतने विस्तार में इसलिये दे दी है, जिससे पाठकोंको पता चल सके कि रूसियोंकी इसे असाधारण सफलता अंग्रेजों और अमरीकनोंको कैसा सोचनेको लाचार कर दिया है। नहीं तो संवाददाताका उत्तर सरीहन गलत है, क्योंकि पश्चिममें और इटालीमें ब्रिटिश और अमरीकन सेनाओंके बढ़नेकी जो बात कही है वह रूसियोंकी वर्त्तमान अग्रगतिसे तुलना योग्य नहीं है, क्यों कि रूसी हफ्ते डेढ़ हफ्तेमें ही इतनी दूर बढ़े हैं, जब कि पश्चिमी मित्र सेनाओंके बढ़नेमें महीनों का समय लगा था।

ऐसा प्रतीत होता है कि इतनी दूर इतनी द्रुतगतिसे आगे बढ़नेके बाद रूसी सेनाओंको अब रुक जानेकी आवश्यकता प्रतीत हुई है। जैसा कि पहले समझा जाता था, जान पड़ता है कि जर्मन सेनाएं ओडर नदीपर डटकर रूसियोंकी अग्रगति रोकनेकी योजना बनाये हुए हैं। दक्षिणी भागमें बढ़नेवाली मार्शल कोनीवकी सेना ओडर नदीतक पहुंचकर रुक गयी है। इस नदीकी धारा बड़ी तेज है और इसका पानी भी जमा नहीं है और इसके पश्चिमी तटपर जर्मनोंने मोर्चेकी तेहरी पांतें बहुत ही मजबूत तैयार कर रखी है। जैसा कि मास्को स्थित 'न्यूज क्रानिकल' के संवाददाता पाल विंटर्टनका कहना है, "यद्यपि ये जर्मन पांतें ठीक सीगफ्रीडकी पांतकी तरह ही नहीं हैं, तो भी रूसियोंके लिये डेढ़ सौ मीलकी विजय-यात्राके अन्तमें उन्हें तोड़नेका काम सरल नहीं है।" जो मार्शल जुकोव बर्लिनका सबसे छोटा रास्ता पकड़कर मध्य भागमें बढ़ रहे हैं, उनकी भी गति पोजननके पास पहुंचकर मन्द पड़ गयी है और उन्हें पोजनन स्थानको लेनेके लिये काफी गहरी लड़ाई लड़नी पड़ेगी, ऐसी आशा की जाती है। उत्तरी भागमें एक रूसी सेनाके बाल्टिक तटतक पहुंच जानेसे पूर्वी प्रशियाका सम्बन्ध खास जर्मनीसे कट गया है और वहांपर डेढ़ दो लाख जर्मन सैनिक हैं, वे एक प्रकारसे घिर गये हैं। परन्तु यद्यपि पूर्वी प्रशियाके अधिकांशपर रूसियोंका अधिकार हो चुका है, तो भी शेष अंशपर अधिकार करनेमें रूसियोंको अब काफी जोरदार लड़ाइयां लड़नी पड़ेंगी। वहांकी अपनी सेनाको हटानेके लिये जर्मनीके पास डेनजिगका समुद्री मार्ग ही रह गया है, यद्यपि डेनजिगपर भी रूसी बढ़े जा रहे हैं, पर वहां गहरी लड़ाई होनी निश्चित है। जर्मन कुमुक पहुंच चुकी है और रूसियोंकी अग्रगति भी अपेक्षाकृत मन्द हो गयी है, पर यह अभीसे नहीं कहा जा सकता कि जाड़ेभर रूसी अपने वर्त्तमान स्थानोंपर ही पड़ाव डालेंगे या और आगे बढ़नेका प्रयत्न करेंगे—यह अगले सप्ताह स्पष्ट हो जायेगा, ऐसी आशा करनी चाहिये। फिर भी यह तो निश्चित ही है कि यदि जर्मन उन्हें ओडर नदीपर ही रोकनेमें सफल न हो सके और रूसी सेनापति अपनी सेनाओंको फिरसे गठित करके नदीके पार बर्लिनकी ओर बढ़ने लगेंगे तो जर्मनीकी अवस्था एकदम आशारहित हो जा सकती है। रूसी पत्र 'इजवेशिया' में एक लेखकने तो २६ जनवरीको ही यह लिख दिया है कि, 'हिटलरके जर्मनी का भाग्य धागेसे लटक रहा है।" परन्तु इतनेपर भी २६ जनवरीकी रातमें जर्मन संवाद-समितिने यह कहा था कि, अब जबकि रूसी करीब-करीब ब्रैंडेनबर्गकी सीमापर पहुंच गये हैं, तो भी बर्लिनमें कोई आकस्मिक भय नहीं है। वहां लोगोंमें एक प्रकारकी उदासीनता है, पर साथ ही है उनका दृढ़ संकल्प। जर्मन समाचारपत्र-विभागके उपप्रधान सुण्डरमैनने कई दिन पहले लिखा था कि, "वे पूर्वमें हमारे शहरोंको नष्ट कर दें और हमारे खेतोंको उजाड़ दें, किन्तु सब बर्बादियोंसे ऊपर जर्मन जातिका आत्मरक्षाका दृढ़ निश्चय है।" जर्मन रेडियोके राजनीतिक डाइरेक्टर हांस-फ्रिशेने तो २१ जनवरीकी रातमें जर्मन जनताको यह संदेश दिया था कि, जर्मनीके पूर्वी मोर्चेकी दरारमें रूसी सेना तेजीसे घुस रही है, किंतु रूसियोंका वर्तमान प्रवेश हमारी मुख्य भूमिके अत्यधिक निकट है, अतः शत्रु हमारे शक्ति-केन्द्रके जितना ही निकट आ रहा है, उतना ही अधिक वह खतरेमें पड़ रहा है। यातायातकी कमीसे शत्रुको और भी अधिक सरलतासे भूखों मारनेकी संभावना है। सब कुछ देखते हुए हम एक ही बात कह सकते हैं कि पश्चिमी मोर्चेकी भांति पूर्वी प्रशा तथा पूर्वी जर्मनीके अन्य संकटापन्न क्षेत्रोंमें शत्रुके बढ़नेके साथ हमारी प्रतिरोध शक्ति भी बढ़ती जायेगी।" जब हम यह सोचते हैं कि बर्लिनकी ओर बढ़नेके लिये रूसने अपने पैंतीस लाख जवान लगा रखे हैं, तब जर्मनी केवल अपने बलपर कबतक मैदानमें डटा रह सकेगा यह सभी समझ सकते हैं। यहीं या कुछ और आगे बढ़कर रूसी सेनाओंको अपना पुनर्गठन करनेके लिये रुकना पड़ेगा। तब यदि पश्चिम और पूर्वमें एक साथ धावा बोलनेका निश्चय करनेमें मित्रराष्ट्र सफल हुए तो जर्मनीके लिये कौनसी आशा रह जायेगी?

परन्तु अभीतक प्रस्तावित त्रिराष्ट्र कानफरेंसमें कुछ देर ही जान पड़ती है, क्योंकि २७ जनवरीकी रातमें मि० चर्चिल लन्दन हीमें थे। इसी समय लंदनसे यह खबर आयी है कि लंदन और वाशिंगटनके रूसी राजदूत मास्को वापस बुलाये गये हैं। यह समाचार गुरुवारकी रात्रिमें मिला है। इस तरह लन्दनके रूसी राजदूत मो० फियोडोर गुस्सेव और अमरीकाके रूसी राजदूत मो० ऐंड्रेइ ग्रामिको दोनों ही मास्कोमें मो० स्टेलिनसे प्रत्यक्ष परामर्श करनेके लिये होंगे जिसके लिये वो वे बुलाये गये हैं। सोवियट रूसकी वदेशिक नीतिपर ब्रिटिश और अमरीकन पत्रोंमें जो कटु आक्षेप होते हैं, उनसे रूसको इतना बुरा लग रहा है कि अब उसके पत्रोंमें भी उन आक्षेपोंके उत्तर निकलने लगे हैं। अगली कानफरेन्समें उन्हें लेकर तीनों बड़े मित्रोंमें काफी बातचीत हो सकती है। उस कानफरेन्सका अब तो रूसमें ही होना एकदम निश्चित जान पड़ता है, पर जनवरी समाप्त होनेको है तोभी उसका कोई निश्चित समाचार अभीतक नहीं आया है। अगले सप्ताह आशा करनी चाहिये कि सैनिककी अपेक्षा राजनीतिक बातें अधिक महत्वपूर्ण होंगी और उनके लक्षण अभीसे दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अत्यन्त कड़े सेंसरके कारण ठीक-ठीक कुछ कहना तो सम्भव नहीं,क्योंकि ठीक-ठीक जानकारी ही नहीं प्राप्त होती, पर इधर कई दिनोंसे जर्मनीकी ओरसे संधिके सम्बन्धमें मित्रराष्ट्रोंके विचार जाननेके लिये प्रयत्न होनेके समाचार आते ही रहे हैं। पूर्वसे तो यहांतक खबर आयी है कि सोवियट सरकारने सन्धिके प्रस्तावको ठुकरा दिया है,जबकि ब्रिटिश सरकारकी ओरसे यह प्रकट किया गया है कि वान पपेन या अन्य किसी जर्मनीकी ओरसे सन्धिका कोई प्रस्ताव नहीं आया है। पश्चिमी युद्ध क्षेत्रपर और वैसही पूर्वके युद्ध क्षेत्रोंपर भी पूर्ववत् सफलताके साथ मित्र सेनाओंके लड़नेके समाचार आते हैं। हां यह एक मार्केकी बात है कि

जर्मन सीमातक पहुंचनेके लिये रूसी घुड़दौड़
कोनिग्सवर्गके नगरोपांतमें घमासान आरम्भ
सैकड़ों मील लम्बे मोर्चेपर नाजी पंक्ति भंग
अमेरिकन प्रथम सेना जर्मन सीमासे २ मील

मास्को, २८ जनवरी। गत रात्रिको जर्मन वैदेशिक समाचार समितिने ऐलान किया कि जर्मनीने उत्तरी सिलेसियाकी औद्योगिक घाटीके हाथसे निकल जानेको स्वीकार कर लिया है। रायटरका विशेष संवाददाता सूचित करता है कि जनरल जुकोवके द्रुतगामी दस्ते बख्तरदार गाड़ियां और साइकिलपर सवार तूफानी सैनिकोंके संरक्षणमें जर्मन सरहदतक पहुंचनेके लिये घुड़दौड़ कर रहे हैं। रूसी सेना पोलिश नगर पोजनन पार कर आगे बढ़ गयी है। बर्लिनके मार्गपर विस्तृत क्षेत्रमें रक्षापंक्तिके भेदनका खतरा बढ़ता जा रहा है। रूसी सेना कोनिग्सवर्गसे चार मील उत्तर पश्चिम रह गयी है। पोजनन चतुर्दिकसे घेर लिया गया है। जर्मन फौजोंका सफाया कर डालनेके लिये घमासान युद्ध जारी है।

जर्मन समाचार समितिके सामरिक आलोचक अर्नेस्ट वान हैमरने आज ऐलान किया कि सोवियट टैंक पोलिश अपर सिलेसियाके एक महत्वपूर्ण केन्द्र क्रटोविसमें प्रवेश कर गये हैं। जर्मनी स्थित विशाल औद्योगिक नगर ब्यूथेनमें भी रूसी घुस गये हैं। ५ रूसी स्थल डिवीज़न दक्षिण-पूरबसे कोनिग्सवर्गकी दिशामें दबाव डालते हुए अग्रसर हो रहे हैं। नगरके उत्तर जर्मन पंक्ति कई जगहोंमें भंग कर दी गयी है। रूसी कई मील दूरतक अग्रसर हुए हैं। युद्ध मोर्चेके एक खरीतेमें बताया गया है कि एन्जलपर अधिकार कर लिया गया है। गत रात्रिको मार्शल स्टेलिनने एक विशेष सन्देशमें ऐलान किया कि रूसी सेनाने रास्टेनवर्ग, सोसनोविक, वाडोविसपर अधिकार कर लिया है। संवाददाताका कहना है कि पोजननके दक्षिण-पश्चिम छलांग मारते हुए मार्शल जुकोवके टक पोजनन-बर्लिन रेडियोके निकट पहुंच गये हैं।

संवाददाताका कहना है कि कोनिग्सवर्गके नगरोपांतमें प्रत्येक घरके लिये घमासान लड़ाई हो रही है। विशाल रूसी सेना नगरके दक्षिण और दक्षिण-पश्चिमसे अग्रसर होकर गैरीजनको घेर लेनेकी चेष्टा कर रही है। रायटर

लन्दन २८ जनवरी। अमरीकन प्रथम सेनाके टैंक आज जर्मन सीमाके २ मील भीतर पहुंच गये हैं। तीसरी सेनाने भी सारे मोर्चे पर अपनी स्थिति सुदृढ़ कर ली है। दोनों सैन्य दलोंने अबतक लगभग ५० हजार दुश्मनोंको कैद किया है। लक्षणसे ऐसा जान पड़ता है आर्डेन्स क्षेत्रसे शत्रुओंका पूरा सफाया हो गया है। जुलिचके दोनों ओरकी जर्मन मोर्चेबन्दी पर ९ वीं अमरीकन फौजें आक्रमण कर रही हैं। रोरके दक्षिण पूर्वमें कुछही बढ़ावके बाद शत्रुओंको रोक दिया गया है। एलसेनबोर्न एवं स्योर नदीके बीच अमरीकन दबाव कुछ कम हो गया है। सेंटविथके उत्तर पश्चिममें साधारण प्रतिरोधका सामना करते हुए मित्र फौजोंने मरफील्ड, अम्बलेव, मिथेरोड पर कब्जा कर लिया है। सेंटविथके उत्तर पूर्वमें वालेरोड शहर पर भीषण प्रतिरोधके बावजूद भी कब्जा कर लिया गया है। दक्षिणमें मित्र फौजें क्लरवकसके दक्षिण किशवच के समीप पहुंच गई हैं। उत्तरी अलसेसमें शत्रुओंको फिर पीछे खदेड़ दिया गया है। कोलमरके उत्तर पूर्वमें मलहौसेन एवं बेसहोलज पर मित्र फौजोंने फिरसे कब्जा कर लिया है। रायटर

जर्मनीने पूर्वमें रूसियों की अग्रगति रोकनेके लिये पश्चिमी युद्ध क्षेत्रसे सेना वहां नहीं भेजी है और न इटाली हीसे जर्मन सेनाओंको हटाये जानेकी कोई खबर है कई दिन पहले इटालियन युद्ध क्षेत्रके भयंकर विस्फोट सुनाई पड़ते थे, जिससे यह अनुमान किया जाने लगा था कि जर्मन सेनाएं वहांसे हटायी जा रही हैं, इसलिये जानेके पहले वे सब कुछ नष्ट भ्रष्ट करनेमें लगी हुई हैं, पर पीछे यह मालूम हुआ कि सत्य ठीक उसके विपरीत है, क्योंकि विस्फोटकी आवाज बर्फ तोड़नेके कारण है, जो मोर्चे तैयार करनेको तोड़ी जा रही है।

जर्मन जनताकी हालत नाजुक

लन्दन, २८ जनवरी। गत रात्रिको जर्मन रेडियोके प्रधान राजनीतिक संवाददाता हान्स क्रिन्शने, जो बहुधा गोवेल्सके वक्ताका काम करते हैं, बताया कि आज हम अपने बच्चों और स्त्रियोंको युद्धके भयके कारण भागते देख रहे हैं। हमारे राजपथ शरणार्थियोंकी लगातार कतारोंसे पूर्ण रूपमे आच्छादित हैं। किन्तु हम प्रत्येक व्यक्तिसे यह अवश्य कह सकते हैं कि जर्मन हाई कमाण्डकी योजनाओंके अनुसार हमारे समक्ष उपस्थित दुर्दिनके बाद व्यक्ति विशेषके विरुद्ध इस खतरेको सम्भवतः दूर नहीं किया जा सकता है। सुप्रीम कमाण्ड केवल संकटपर ही विचार कर सकता है जिससे देश खतरेमें पड़ गया है। रायटर

बिहारसरकारको सामूहिक आन्दोलनका [illegible]
श्रीबाबू, अनुग्रह बाबू और दो अन्यपर प्रति[बन्ध]
गांवोंको छोड़कर अन्यत्र जानेकी सख्त मनाही

पटना, २८ जनवरी। बिहार सरकारने प्रतिबन्ध और नजरबन्दी आर्डिनेन्स १९४४ के अन्तर्गत एक आदेश जारी कर निम्नलिखित व्यक्तियोंको अपने गांवकी सरहदके भीतर रहनेका आदेश दिया है:—भूतपूर्व प्रधानमंत्री बा० श्रीकृष्ण सिंह, भूतपूर्व अर्थमंत्री बा० अनुग्रह नारायण सिंह, बिहार असेम्बलीके डिप्टी स्पीकर प्रोफेसर अब्दुलबारी, अंग्रेजी दैनिक 'सर्चलाइट' के सम्पादक बा० मुरलीमनोहर प्रसाद तथा पं० प्रजापति मिश्र। सरकारी विज्ञप्तिमें उपर्युक्त आदेशका ऐलान करते हुए हालमें आयोजित प्रान्तीय कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी एक सभाका जिक्र किया गया है जब कि पण्डित प्रजापति मिश्रने एक प्रस्ताव पेश कर रचनात्मक कार्यमें वृद्धिके लिये एक परामर्शदात्री समिति गठित करनेका सुझाव दिया था।

विज्ञप्तिमें आगे बताया गया है कि मिश्रजीने प्रस्ताव पेश करते हुए १९४२ की अशांतिका उल्लेख किया और कहा कि—वर्तमान युद्ध साम्राज्यवादी युद्ध है। जनयुद्ध कतई नहीं है। उन्होंने आज कहा कि महात्मा गांधीका प्रस्तावित सामूहिक आन्दोलन अभी आरम्भ होनेके लिये बाकी है तथा संक्षिप्त, और शीघ्रता की गयी थी।

किन्तु अहिंसात्मक आन्दोलनके लिये अभी अपीलकी जायगी। यह अनुमान और सभामें एक अन्य वक्ताके भाषणसे सरकारको उलट देनेके निमित्त इसी आन्दोलनका आभास मिलता है। अतः सरकार दूसरे आन्दोलनके लिये तयारी बर्दाश्त नहीं कर सकती और भविष्यमें भी नहीं करेगी। अहिंसात्मक रूप देनेके अभिप्रायके बावजूद भी हिंसा और रक्तपात वृद्धि अवश्यंभावी है। सरकार ऐसी स्थिति उत्पन्न होने देना नहीं चाहती है जिससे विश्वव्यापी युद्धके वर्तमान नाजुक अध्यायमें युद्धके सफल सञ्चालनको फिर खतरा पैदा हो सके। ए० [प्रेस]

श्रीकृष्ण बाबूकी पत्नीका देहांत

पटना, २८ जनवरी। सरकारी प्रेस विज्ञप्तिमे कहा गया है कि श्री श्रीकृष्ण सिंहकी धर्मपत्नीकी कठिन बीमारीका ख्याल करते हुये सरकारने निश्चय किया है कि अभी उनके प्रति प्रतिबन्ध एवं नजरबन्दी आर्डीनेन्सका आदेश जारी नहीं किया जायगा।

इस विज्ञप्तिके निकलनेके बाद ही आज श्री बाबूकी स्त्रीका ३ बजे तीसरे पहरमें देहान्त हो गया। आपको लकवेकी बीमारी हो गयी थी और कई दिनोंसे पटना जेनरल अस्पतालमें थीं। फोनसे स्त्रीकी नाजुक अवस्थाकी खबर पाकर श्री बाबू लहेरियसरायके दौरेसे आज सबेरे वापस आ गये थे और मृत्युके समय स्त्रीके पास ही मौजूद थे। यू० प्रेस

प्रो० बारी गिरफ्तार

पटना, २८ जनवरी। बिहार व्यवस्थापिका असेम्बलीके डिप्टी स्पीकर प्रो० अब्दुलबारी आज सुबह स्थानीय अपने निवास स्थानपर गिरफ्तार कर लिये गये। खबर है कि आपकी गिरफ्तारी नजरबन्दी आर्डिनेन्सके अन्तर्गत हुई है। ए० प्रेस

प्रो० बारीको लारीके द्वारा, [illegible] वाद जिलेके अपने गांव कोइलवरमें [illegible] दिया गया। वहीं आप नजरबन्द रहेंगे।

लहेरियासरायकी खबर है कि [illegible] प्रजापति मिश्रको आज सवेरे यहां [illegible] दामादके निवास स्थानपर गिरफ्तार [कर लिया] गया और नजरबन्द रखनेके लिये [चम्पा]रण जिलेके अपने गांवमें पहुंचा [दिया] गया। यू० प्रेस

बन्दियोंके जीवनदानकी अ[पील]

अहमदाबाद, २८ जनवरी। स्थानीय [illegible] कालेजोंके लगभग १२ सौ छात्रोंने [एक] दरखास्तपर हस्ताक्षर कर चिमूर [और] आष्ठी केसके बन्दियोंको जीवनदान [देनेकी] प्रार्थना की है। वायसराय और [illegible] प्रान्तीय गवर्नरके पास दरखास्त भेजी गयी है। ए० प्रेस

सरकारपर हरजानेका दा[वा]

अहमदाबाद, २७ जनवरी। म[हात्मा] गांधीके नवजीवन ट्रस्टके मैनेजर [और] सेक्रेटरी श्री जीवनजी देशाईने नि[illegible] कूछ वकीलके जरिये बम्बई सरकार[को] अहमदाबादके जिला मजिस्ट्रेटके [द्वारा] नोटिस देकर ५४ हजार ५ सौ [रुपये] हरजानेका दावा किया है। उक्त हर[जाना] पत्रों एवं दूसरे कागजातोंकी ब[रबादीके] लिये है, जो सरकारके प्रेसपर कब्जा [कर] मुहर लगा देनेके फलस्वरूप हुई। [नोटिस]में यह भी कहा गया है कि यदि [नोटिस] मिलनेके दो महीनेके भीतर उक्त [रकम] अदा न की जायगी, तो रुपयेकी [वसूलीके] लिये सरकारके ऊपर मुकदमा दायर [किया] जायगा। यू० प्रेस

ओंसे प्रतिबन्ध अविलम्ब उठाया जाय

द्धोद्योगमेंबाधानडालनेकानिश्चितआश्वासन

त्र सम्पादक सम्मेलनके महत्वपूर्ण प्रस्ताव

कलकत्ता २८ जनवरी। आज रवि-रको सिनेट हालमें ११ बज कर ४५ मिनटसे मि० सैयद अब्दुल्ला ब्रेलवीकी ध्यक्षतामें अखिल भारतीय पत्र सम्पा-क सम्मेलनके खुले अधिवेशनकी कार-वाई शुरू हुई। इसके पहले लगभग १॥ ण्टेतक सम्मेलनकी स्थायी समितिके र्वाचनमें बड़ी सरगर्मी रही। तत्प-चात विषय निर्वाचन समितिके पास ए प्रस्तावोंको विचार विमर्श के लिये श किया गया। सम्मेलनके खुले अधि-शनमें निम्नाशयके प्रस्ताव पास हुए:—

(१) सम्मेलनने यह मांग पेश की भारतके पत्र सम्बन्धी कानूनोंको टेन एवं संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाका मकक्ष बना दिया जाय और यहांके त्रोंके ऊपर लगे वर्तमान प्रतिबन्धोंको रत रद्द कर दिया जाय। उक्त प्रस्ताव ी तुषारकांति घोषने पेश किया और ी जे० एन० साहनीने उसका समर्थन किया।

(२) सम्मेलनने संयुक्त राष्ट्रके त्रकारोंकी मांगका समर्थन किया कि र्तमान युद्धकी समाप्तिके बाद जो शांति न्धि होगी, उसमें सभी राष्ट्रोंके मतैक्य कुछ ऐसी विशष धाराएं हों, जिनसे भी दायित्वपूर्ण पत्र प्रतिनिधियोंको म.चार सूत्रोंतक पहुंचने, बिना सेंसरके माचार भेजनेकी सहूलियत हो, याता-की एक सी सुविधाएं हों एवं याता-के दरमें विभेद न हो।

(३) सम्मेलनने अखबारी कागज वितरण सम्बन्धी सरकारी नीतिके ति विरोध प्रकट किया, क्यों कि यह पत्र, पत्रिकाओंकी वृद्धि एवं विस्तार रुकावट डालनेका केवल बहाना है नके राजनीतिक विचार सरकारको खटकते हैं। एतदर्थ कागज स्थितके सुधारको ध्यानमें रखते हुए मेलनने सरकार पर जोर डाला कि नियंत्रणको कुछ ढीला करें और गजके कोटेमें भी इतनी वृद्धि करे, ससे उन साप्ताहिक पत्रोंको दैनिक जानेमें अड़चन न हो।

(४) सम्मेलनने मि० ब्रेलवीकी ध्यक्षतामें ५ सदस्योंकी एक कमेटी युक्त की, जो डा० ए० जी० टन्डुलकर रिहाईके लिये बम्बई सरकारके सामने ा पेश करे। सम्मेलनने इस पर खेद ट किया कि डा० टेन्डुलकर ११ जून ४० से ही बिना न्याय-विचारके जेल न्द रखे गये हैं।

(५) सम्मेलनने इस बात पर चिंता प्रकट की कि सर्वश्री देशबन्धु गुप्त एम० एल०ए०, वीरेन्द्र, माखनलाल सेन, मनोरंजन गुप्त, मणीन्द्रराय, अश्विनी गुहा, खगेन्द्रसेन, केशवगुहा,सुरेन्द्रनाथ नियोगी मधुसूदन महापात्र, कमलापति त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा एवं श्री जयन्त आदि नजरबन्द पत्रकारोंके स्वास्थ्यमें जेलमें कुछ भी सुधार नहीं हो रहा हैं, इस लिये सम्मेलन सरकारके ऊपर जोर डालती है कि उन्हें तुरन्त रिहा कर दिया जाय, साथही और भी जो नजरबन्द अभी बिना मामला चलाये जेलमें बन्द रखे गये हैं, उन्हें भी शीघ्रही रिहा कर दिया जाय। उक्त प्रस्ताव श्री देवदास गांधीने पेश किया और श्री एस० एन० भटनागरने समर्थन किया।

(६) पत्र सम्पादक सम्मेलनकी स्थायी समितिका ध्यान इस बातकी ओर आकर्षित किया गया है, कुछ पत्रोंने जो जमानतकी रकम जमा की थी, उसे सरकारने अनिश्चित कालतकके लिये रोक रखा है. यद्यपि उक्त पत्रके विरुद्ध कोई काररवाई करनेका अवसर न उपस्थित हुआ। नए पत्रोंकी जमानतके सम्बन्धमें तो नियमकी पाबन्दी है कि यदि ३ महीनेकी अवधिमें उक्त पत्रके विरुद्ध कोई काररवाई न की गई हो, तो उसके बाद पत्रको जमानतकी रकम वापस मिल जायगी। सम्मेलनने सरकार को सलाह दी है कि पुराने पत्रोंके सम्बन्धमें भी यही नीति बर्ती जाय।

(७) सम्मेलनने कुछ पत्रोंकी इस मनोवृति पर खेद प्रकट किया कि वे व्यक्तिगत आक्षेपोंको प्रश्रय देते हैं, क्योंकि इससे पत्रकारिताकी मर्यादामें बट्टा लगता है साथही जनताकी रुचि दूषित हो जाती है। पत्रकारिताकी ही भलाईके लिये ऐसी रचनाओंका विरोध किया जाना चाहिये।

सम्मेलनने 'नेशनल हिराल्ड' एवं नए पत्रोंके प्रकाशनकी सुविधाके सम्बन्ध में भी प्रस्ताव पास किये।

सम्मेलनकी समाप्तिके अवसर पर पत्र सम्पादक सम्मेलनके अध्यक्ष मि० सैयद अब्दुला ब्रेलवीने अपने भाषणमें बताया कि हम लोगोंने फिरसे अपने इस दृढ़ निश्चय पर जोर दिया है कि भारतके पत्रोंको भी ब्रिटेन एवं अमेरिकाके पत्रोंसी ही स्वतंत्रता होनी चाहिये। सरकारके द्वारा पत्रोंकी स्वतन्त्रता या रचनाकी स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध न लगाए जायं। मैं इसे मानता हूं कि जिस समाजमें हम रहते हैं, उसकी अवस्थाके फलस्वरूप भी कुछ दूसरे प्रतिबन्धोंकी सृष्टि होती है, और इसे दूर करनेकी जिम्मेवारी हम पत्रकारों परही हैं। मि०ब्रेलवीने कहाकि जहां तक सरकार द्वारा लगाए प्रतिबन्धोंका सवाल है, हम उनका कानूनके रूपमें और एक दिन भी रहना पसन्द नहीं करते।

युद्धकी अवधिमें अपना काम चलाने को, भारत रक्षा कानून एवं प्रेस हिदायतें ही सरकारके लिये काफी हैं। उनका ताल्लुक तो यहीं तक है कि पत्रोंमें ऐसा कुछ नहीं प्रकाशित हो, जिससे शत्रुको फायदा पहुंचे, या युद्धोयोगमें बाधा हो। मि० ब्रेलवीने आगे चल कर बताया कि सम्मेलनमें हमने निश्चय किया है कि युद्धोद्योगमें बाधा न डाली जायगी और इस सम्बन्धमें तो हमारा भद्रोचित समझौता वर्तमानही है। किन्तु हमने इसे भी स्पष्ट कर दिया है कि हम साधारण राजनीतिक कार्यकलापोंके दबानेमें सहायक नहीं हो सकते। आपने कहाकि पत्रों पर लगे इन प्रतिबन्धोंके रद्द किये जानेमें व्यवस्थापिकाओंको भी पत्र संपादक सम्मेलनके साथ सहयोग करना चाहिये। बंगालके पत्रोंके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मि० ब्रेलवीने कहा कि भारतके पत्रोंको आज सा शक्ति सम्पन्न बनानेमें इनका कम गौरव पूर्ण भाग नहीं रहा हैं। अंतमें आपने सम्मेलनको सफल बनानेके लिये स्वागत समितिको और विशेषतः सारी सुविधाएं प्रदान करनेके लिये कलकत्ता युनिवर्सिटीको धन्यवाद दिये श्री निवासन एवं सर फ्रांसिस लोने भी आतिथ्यके लिये स्वागत समितिको धन्यवाद दिया। स्वागत समितिके अध्यक्ष श्री हेमेन्द्रप्रसाद घोषने उन सबको धन्यवाद दिया. जो सम्मेलनको सफल बनानेमें सहायक हुए।

श्री तुषारकांति घोषने अखिल भारतीय पत्र सम्पादक सम्मेलनका अगला अधिवेशन युक्त प्रांतमें होनेको आमन्त्रित किया। इस सम्बन्धमें अन्तिम निर्णय बादमें घोषित किया जायगा।

कलकत्ता, २८ जनवरी। अखिल भारतीय पत्र सम्पादक सम्मेलनकी नई निर्वाचितसमितिकी स्थायी बैठक आज शामको मि०एस० ए०ब्रेलवीकी अध्यक्षतामें हुई। श्री जे० एन० साहनी एवं श्री के० श्री निवासन फिरसे सेक्रेटरी चुने गये। कोषाध्यक्षका चुनाव अगली बैठकके लिये स्थगित रहा, तबतक श्री साहनी उक्त कार्य सम्भालेंगे। कमेटीकी आगामी बैठक नयी दिल्लीमें २४एवं २५ मार्चको होगी। कमेटीने एक डेपुटेशन जिसमें मि० स्टीफेन्स एवं श्री तुषारकांति घोष रहेंगे, आसाम भेजनेका निश्चय किया जो वहां भी शीघ्र ही प्रेस एडवाइजरी कमेटीकी स्थापनाके सवालपर स्थानीय पत्रों एवं सरकारी अधिकारियोंसे विचार-विमर्श करेगा। ए० प्रेस

खादीका उत्पादन

चर्खासंघके लिये १०करोड़की मांग

अहमदाबाद, २७ जनवरी। यू०प्रेस को विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि बहुत हाल हीमें बम्बईमें जो टेक्सटाइल कंट्रोल-बोर्ड के तत्सम्बन्धित सदस्योंकी बैठक हुई थी उसमें निर्णय किया गया था कि भारत सरकारसे सिफारिश की जाये कि वह अखिल भारतीय चर्खासंघको १० करोड़ रु०सहायतामें दे, जिससे और भी खादीके उत्पादनमें प्रोत्साहन मिले और इस तरह मिलके बने कपड़ोंकी वर्तमान विकट कमीकी पूर्ति हो जाय।

त्रिराष्ट्र-सम्मेलनमें कुछ विलम्ब

लन्दन, २८ जनवरी। विदित हुआ है कि भावी त्रिराष्ट्र-सम्मेलनमें स्पष्टतः अभी कुछ विलम्ब है; क्योंकि प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल अभी तक लन्दनसे रवाना नहीं हुए हैं। गत रात्रिको मि० चर्चिल थियेटर देखने गये हुए थे। रा०

दो सौ जेक नाजीगोलीके शिकार

जूरिच, २८ जनवरी। एक प्रत्यक्षदर्शीके कथनानुसार, जो अभी हालमें यहां पहुंचा है, जर्मनोंने दो सौ जेक नागरिकोंको प्रेगके एक सार्वजनिक स्थानमें गोलीके घाट उतार दिया। कहा जाता है कि एक संगठित प्रदर्शनके बदलेमें इनकी हत्याकी गयी है, क्योंकि इससे अनाचार की वृद्धि हुई थी। रायटर

कामरोको प्रस्तावकी सूचना

नयी दिल्ली, २७ जनवरी। केन्द्रीय असेम्बलीके बजट अधिवेशनमें सरदार मंगलसिंहने एक कामरोको प्रस्ताव पेश करनेकी सूचना दी है जिसमें सिन्ध सरकार द्वारा भारतरक्षा कानूनकी धारा ५६ के अन्तर्गत आर्डर जारी कर २६ जनवरीको स्वाधीनता दिवसके उपलक्षमें हैदराबाद तथा अन्य जिलोंमें सभाके आयोजनपर लगाये गये प्रतिबन्धपर वादविवादकी मांगकी गयी है। ए० प्रेस

बेल्जियमकी कोयला खानोंमें हड़ताल

ब्रुसेल्स, २८ जनवरी। उत्तर-पूर्वी बेल्जियम स्थित लिम्बर्ग जिलेकी कोयले की खानोंमें गत शुक्रवारसे हड़ताल आरम्भ हुई है। हड़तालके कारण कोयलेके उत्पादनमें प्रति दिन १० हजार टनकी कमी होगी। इस प्रकार तीन दिनमें तीस हजार टन कोयलाका कम उत्पादन होगा। रायटर

नजरबन्दीका कारण

सरकार बतानेको बाध्य है

इलाहाबाद २७ जनवरी। आगराके रमेश दत्त पालीवालके हेवियस कारपस वाली दरखास्तपर विचार कल इलाहाबाद हाईकोर्टके चीफ जस्टिसकी अदालतमें आरम्भ हुआ। यू० पी० सरकारके होम सेक्रेटरीका एक हलफनामा सरकारी एडवोकेट मि० शंकर शरणने पेश किया। हलफनामेमें कहा गया है कि २० अक्तूबर १९४२ को मि० पालीवालकी नजरबन्दी का एक हुक्म डी० आई० आर० की दफा २६ (१) के अनुसार प्रान्तीय सी० आई० डी० की मार्फत जिला मजिस्ट्रेटके पास भेजा गया था। इसके बाद १२ जुलाई १९४३ को नजरबन्दीकी मियाद १४ जुलाई १९४४ से और ६ महीनेतक बढ़ानेका दूसरा हुक्म प्रतिबन्ध और नजरबन्दी आर्डिनेन्स १९४४ की दफा ६ के अनुसार मि० पालीवालपर तामील किया गया।

श्री पालीवालकी तरफसे डा० कैलाश नाथ काटजूने अदालतसे कहा कि १९४४ के तीसरे आर्डिनेन्सकी दफा ७ के अनुसार इस मामलेमें, काम नहीं किया गया। मेरी रायमें जब नया आर्डिनेन्स ६ जनवरीको पास हो गया तो कानूनन प्रांतीय सरकार मि० पालीवालको यह बतानेको बाध्य है कि क्यों वे फिर ६ महीनेके लिये नजरबन्द रखे जा रहे हैं।

विचार सोमवारके लिये स्थगित हो गया। ए० प्रेस

जिलाबोर्डोंकी सहायता

कलकत्ता, २७ जनवरी। बंगाल सरकारने म्युनिसपैलटियों तथा जिला बोर्डों को १ दिसम्बर १९४४ से तीन माह तक के लिये फिर विशेष सहायता देना स्वीकार किया है। टीका लगाने वाले जिनका वेतन १०० रुपये माहसे कम है उन्हें भी १ जून १९४४ से महंगाईका भत्ता दिया जायगा।

रेलयात्रामें सूतीकपड़ोंपर प्रतिबंध

कानपुर, २७ जनवरी। जिला सप्लाई अफसरने प्रेस विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया है कि बिहार, बङ्गाल और पंजाबको छोड़कर अन्य किसी प्रान्तको रेलवेसे सफर करने वाला व्यक्ति अपने साथ बतौर निजी सामानके २० पौण्ड (१० सेर) से अधिक सूती कपड़े नहीं ले जा सकता।

मुनाफाखोरोंमें सजा

कलकत्ता, २७ जनवरी। अवैध संचय एवं मुनाफा खोरीके अपराधमें २५ जनवरीको कलकत्तेमें २० व्यक्तियोंपर एक रुपयासे लेकर ३० रुपये तक जुर्माना किया गया उनपर निर्द्धारित मूल्यसे अधिक दामपर चीजोंके बेचने तथा मूल्य तालिका आदि न दिखानेके अभियोग थे।

यह जनयुद्ध नहीं है

रूसने जापानके विरुद्ध युद्ध क्यों नहीं छेड़ा

मद्रास, २७ जनवरी। भारतीय छात्र कांग्रेसका उद्घटन करते हुए श्री वी०वी० गिरिने कहा कि छात्रोंको सिर्फ नारोंकी भावुकतामें ही नहीं बह जाना चाहिये। छात्रोंको सत्य और अहिंसाके आधार पर खड़े होकर अपना काम करना चाहिये।

मि० गिरिने कहा कि जहांतक हिंदुस्तानका सम्बन्ध है मैं इस युद्धको जनयुद्ध नहीं मानता। यदि सचमुच युद्ध नाजी और फासिस्ट विरोधी आधारपर लड़ा जा रहा है तो रूसने अबतक जापान के विरुद्ध युद्ध घोषणा क्यों नहीं की?

युद्धोत्तरकालीन आर्थिक योजनाओं से सम्बन्धमें मि० गिरिने कहा कि जब तक भारत स्वतन्त्र न होगा कोई आर्थिक योजना सफल नहीं हो सकती। ए०प्रेस

पार्सलमें कारतूस निकले

कानपुर, २७ जनवरी। नाथ बैंक नयागञ्जके मैनेजरके नाम दिये गये एक रजिस्टर्ड लिफाफेके भीतर पांच कारतूस निकले। यह रजिस्ट्री किसी अज्ञात व्यक्तिने लाबनऊमें लगायी थी। पुलिस जांच कर रही है। ए०

शाह फारुख

मदीना २७ जनवरी। मिस्रके शाह फारुख शुक्रवारका दिन यहां बिना और मसजिदमें नमाज पढ़कर अपने शाही डेरेको, जो यामियो यामूनोके समीप पड़ा है, वापस गये। रायटर

एस० सी० जोशी लेबर कमिश्नर

नयी दिल्ली २८ जनवरी। मालूम हुआ है कि आल इण्डिया रेलवे मेन्स फेडरेशनके प्रेसिडेंट मि० एस० सी० जोशी भारत सरकारके लेबर कमिश्नरका पद १ फरवरीसे ग्रहण कर रहे हैं। यू०

जबलपुरमें हड़ताल

जबलपुर २८ जनवरी। स्वतन्त्रता दिवस सम्बन्धी प्रदर्शनों, जुलूसों और सभाओंपर जिला मजिस्ट्रेट द्वारा लगाये गये प्रतिबन्धके प्रतिवाद स्वरूप स्थानीय व्यापारियोंने अपना कारबार बन्द कर रखा और छात्र स्कूलों तथा कालेजोंसे गैर हाजिर रहे। गांधीजीके निर्देशके कारण स्थानीय कांग्रेसजनोंने सरकारी आदेशकी अवज्ञा नहीं की। कांग्रेसके तिरंगे झण्डे और बैज बेचे गये जो मकानोंपर फहराते और लोगोंके शरीरपर लगे हुए दिखायी दिये। यू० प्रेस

कोयलेकी खानोंमें हड़ताल

ब्रुसेल्स २७ जनवरी। उत्तर बेलजियमके लिमबोर्ग जिलेमें, गत शुक्रवारसे कोयलेकी खानोंमें हड़ताल शुरू हो गयी है। इस हड़तालसे प्रतिदिन १० हजार टन कोयलेकी क्षति हो रही है। रायटर

उपनिवेशकी मांग

युद्धसे वापस आये पञ्जाबी सैनिकों के लिये

लाहौर, २७ जनवरी। जमीन्दार लीग कानफरेंसमें भाषण करते हुए पञ्जाब प्रीमियर मलिक खिजर हयात खांने जापानियोंसे जीते हुए द्वीपोंमेंसे एक द्वीप में युद्धसे लौटे हुए पञ्जाबी सैनिकोंके लिये एक स्वतन्त्र उपनिवेश बनानेकी मांग पेश की।

प्रीमियरको लाहौर तहसीलके जमीन्दारोंकी ओरसे ३० हजारकी थैली भेंट की गयी। यह रकम जमीन्दार लीगको संगठन करनेमें खर्च की जायेगी। ए०

रूजवेल्टने फिर मुंहकी खायी

न्यूयार्क २७ जनवरी। आज शनिवारको १८ घण्टेके भीतर ही फिर प्रेसिडेंट रूजवेल्टको मुंहकी खानी पड़ी। शिकागोके फीडरल जजने प्रेसीडेंट रूजवेल्टके आदेशानुसार माण्टगोमरी वार्ड-चेन स्टोरकी सम्पत्तिको सेना द्वारा जब्त कर लिये जानेके कार्यको गैर-कानूनी घोषित कर दिया है।

इसके १८ घण्टे पहले मि० जेसी जोन्सके स्थानपर डा० हेनरी वालेसको वाणिज्य सचिव पदपर नियुक्त करनेकी घोषणाको सिनेटोरियल कमेटीने बहुमतसे अस्वीकार कर दिया था। रायटर

सर सी० वी० रमन

लखनऊ २७ जनवरी। नोबेल पुरस्कार प्राप्त सर सी० वी० रमनको डाक्टर आफ सायन्सकी उपाधि देनेकी सिफारिश लखनऊ विश्व विद्यालयकी कार्यसमितिने अपनी आजकी विशेष बैठकमें की है। ए० प्रेस

होलीमें रंगूनमें होंगे

सर जे० पी० श्रीवास्तवका वक्तव्य

नयी दिल्ली २७ जनवरी। सर जे० पी० श्रीवास्तवने अपनी इम्फाल यात्राके अनुभव बताते हुए कहा कि होलीके पहले हम लोग रंगून पहुंच जायेंगे, ऐसी आशा है। आपने यह भी कहा कि जापानपर अन्तिम घातक वार चाहे जो मित्र सेना करे, भारतीय सेनाने इम्फालके मोर्चेमें शत्रुकी शक्तिको ही नहीं बल्कि उसके दर्पको भी चूर चूर कर दिया है। इन लोगोंको कोई व्यक्ति कम सम्मान और श्रद्धाके साथ नहीं देख सकता। आनेवाले भारतमें ये लोग बड़ा महत्वपूर्ण भाग लेंगे, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। ए० प्रेस

गेहूंका दाम घटा

जबलपुर २८ जनवरी। प्रान्तीय सरकारने गेहूंका भाव रुपयेमें पौने चार से सवा चार सेर कर दिया है। यू०

हित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कहं जग दुलभ कछु नाहीं ॥

नताके ये सलाहकार!

—*:*—

अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेनके चतुर्थ वार्षिक अधिवेशनमें उस दिन वागताध्यक्षकी हैसियतसे सहयोगी वसुमतीके सम्पादक श्री हेमेन्द्रघोषने बिलकुल सत्य कहा कि पत्रकार जनताके सच्चे सलाहकार, बिना किसी अतिरंजनके विशुद्ध समाचार देनेवाले पत्रवाहक और स्तुत सार्वजनिक नीतिके सम्बन्धमें अपना पक्षपात रहित मत प्रकट करनेवाले नके पथ प्रदर्शक हैं। इस ख्यालसे समाचारपत्रोंके संवाददाता जनताके सच्चे दूत हैं। दूतकी प्रतिष्ठा भारतकी प्राचीन राजनीतिमें कितनी अधिक थी, हमारे ाचीन ग्रन्थके पन्ने उलटकर मालूम किया जा सकता है। लेकिन भारतके समाचार पत्रों और उनके कलेवरको सजानेवाले पत्रकारोंको आज जिन कठिन परिस्थितियोंमें, जिन विघ्नबाधाओंका सामना करते हुए अपनी दुस्तर जिम्मेदारीको निभाना पड़ रहा है, शायद यूरोप और अमेरिकाके स्वाधीन देशोंमें वे अश्रुत अथवा अपूर्व ही हैं। इतनी अधिक कठिनाइयों, प्रतिबन्धों और प्रताड़नाओंके होते हुए भी भारतीय समाचारपत्रोंने जो सफलताएं प्राप्त की हैं, उनके लिये पि यह दावा नहीं किया जा सकता हमारी विजय हुई है, तथापि वे इतनी गौरवपूर्ण तो हैं ही कि किसी भी देशकी पत्रकारकला उनपर गर्व अनुभव कर सकती है।

यदि कहा जाये कि बच्चा जन्म लेते ही लड़ाईके मैदानके लिये रवाना हो गया तो शायद पाठकोंको आश्चर्य होगा। लेकिन भारतीय पत्रकार कलाके सम्बन्धमें बिलकुल यही बात है। जन्म लेते ही इसको सरकारसे जो लोहा उठाना पड़ा, वह अबतक बराबर जारी है। आजकल तो युद्धजन्य स्थितिने पहलेके प्रतिबन्धोंके अलावा इतने अधिक आर्डिनेन्सोंको जारी कर दिया है कि बेचारे पत्रकारोंका गला घुंटाता जाता है। एक तरफ दिमाग चाट जानेवाला अखबार नवीसीका पेशा, जनताको वास्तविकतासे परिचित करानेकी भारी जिम्मेदारी और दूसरी तरफ साम्राज्यवादी सत्ताकी चढ़ी त्योरी, सिरके ऊपर लटकती हुई भयकी भयङ्कर तलवार! ऐसी दोधारी तलवारपर पैर रखकर चलना कोई आसान काम नहीं। श्रमजीवी पत्रकारोंके लिये अपना कार्य सम्पादन करनेमें एक और सङ्कट पूंजीवादी संचालकोंके रूपमें उपस्थित है, जिस कारण उनकी अवस्था अत्यधिक निर्बल होती जाती है। इसका इलाज 'बम्बे क्रानिकल' के सफल सम्पादक मि० अब्दुल्ला बरेलवीने ट्रेड यूनियनोंके आधार पर श्रमजीवी पत्रकारोंको अपना सङ्गठन करना बताया है। समाचारपत्रोंसे सरकारके संघर्षकी कहानियां बड़ी ही उत्तेजक, शोचनीय और साथ ही दिलचस्प भी हैं। दिलचस्प इस मामलेमें हैं कि सरकारके अनेक अफसरोंने अपनी अदूरदर्शिता और संकीर्णताका परिचय देते हुए ऐसे कार्य कर दिये हैं, जिनके द्वारा सरकारकी ओरसे ही की गयी प्रतिज्ञाएं भङ्ग हुई हैं, जिनका पूर्णरूपेण पालन होना भद्रता और शिष्टताका तकाजा समझा जाता था।

जैसा ऊपर बताया गया है, युद्धकालीन स्थितिका मुकाबला करनेके लिये नौकरशाहीने अनेक भयङ्कर कानून बनाये, जिनके मुंहका दायरा सुरसाकी मुंह तरह बढ़ता है। हम मानते हैं कि समाचार पत्रोंकी इतनी स्वाधीनता अधिकारी युद्ध कालमें छिन सकते हैं जिसके द्वारा शत्रुको लाभ उठानेका मौका न मिले। लेकिन युद्धका नाम लेकर देशके अन्दर जो राजनीतिक अनाचार हुए और हो रहे हैं, उनका औचित्य सिद्ध करनेके लिये अधिकारी कौनसा उचित तर्क रखते हैं? मि० ब्रेलवीने स्पष्ट शब्दोंमें उन घटनाओंका जिक्र किया है और पहले भी अनेक अवसरों पर किया जा चुका है, न केवल देशके जिम्मेदार नेताओं और विचारकों द्वारा, बल्कि ब्रिटिश भारतमें सम्राटकी सरकार द्वारा स्थापित न्यायालयोंके जजों और सर्वोच्च न्यायाधीशों द्वारा भी नौकरशाहीके अफसरोंके अनेक कार्योंको अनुचित और अवैध बताया गया है, लेकिन उनका समर्थन करनेकी हठधर्मी दिखानेके सिवा अबतक अधिकारियोंने किसी भी मामलेमें क्या अपनी न्याय प्रियताका तनिक भी परिचय दिया है? हमारा ख्याल है कि कदापि नहीं। गत वर्ष जनवरीमें दिल्लीके 'नेशनल कॉल' और 'हिन्दुस्तान टाइम्स' ने कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी सदस्या श्रीमती सरोजिनी नायडूके एक वक्तव्यको प्रकाशित किया था। उसमें कोई ऐसी बात नहीं थी जो दिल्ली समझौते अथवा सम्पादक सम्मेलनके बम्बईवाले प्रस्तावके विरुद्ध हो। जब केन्द्रीय पत्र परामर्श दायिनी समितिसे पूछा गया, तो उसने भी यही राय दी कि उन पत्रोंके विरुद्ध कोई कारवाई जायज नहीं। लेकिन परामर्श पर कुछ भी ध्यान नहीं दिया गया, बल्कि अधिकारियोंने आज्ञा जारी कर दी कि दोनों पत्र छपनेवाली चीजोंका पहले सेंसर करा लें। नव जीवन प्रेस, 'नागपुर टाइम्स' और 'हितवाद आदिके सम्बन्धमें की गयी सरकारी कार्यवाहियां भी कुछ इसी ढंगकी हैं। 'नागपुर टाइम्स'के सहकारी सम्पादकोंको दंडित करना जब कि पत्रमें प्रकाशित सारी चीजोंके लिये प्रधान सम्पादक, मुद्रक और प्रकाशक कानूनन जिम्मेदार हैं, कहांका न्याय है? लेकिन इस बारेमें इसके सिवा और क्या कहा जा सकता है कि 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं।' लखनऊके विशुद्ध राष्ट्रवादी पत्र नेशनल 'हेराल्ड' के सम्बन्धमें युक्तप्रांतीय गवर्नर सर मारिस हैलेटकी कार्यवाही अत्यन्त स्वेच्छाचारिता पूर्ण और भारत रक्षा नियमावलीके अन्तर्गत एक्जीक्यूटिव अफसरोंको दिये गये अधिकारोंके दुरुपयोगका सजीव उदाहरण है।

पत्रकार कलाका भविष्य देखनेमें बहुत अधिक उज्ज्वल मालूम होता है और युद्ध समाप्त होतेही जब साधारण शांतकालीन अवस्था उत्पन्न होगी तब देशमें समाचार पत्रोंकी बाढ़-सी आयेगी, लेकिन इसके साथही समाचार पत्रोंपर पूंजीपतियोंमें एकाधिकार स्थापित करनेकी मनोवृत्ति भी देखी जाती है और ऐसा जान पड़ता है कि युद्धकालमें लाख करोड़की अर्जित सम्पति युद्धोत्तर कालमें पत्र संचालक बनने और देशका नेतृत्व करनेकी साध पूरी करनेमेंही खर्च की जायेगी। हम मानते हैं कि देशवासियोंकी आवाजको प्रभावोत्पादक ढंगसे बुलंद करने और अपने स्वार्थोंकी रक्षा करनेके लिये पत्रोंकी आर्थिक अवस्था सुदृढ़ और सुव्यवस्थित होना अत्यावश्यक है, लेकिन पूंजीवादी मनोवृत्ति समाचार पत्रोंको देशवासियोंका पूर्ण और उचित रूपेण प्रतिनिधित्व करने देगी, इसमें काफी सन्देह है। इस लिये मि० सैयद अब्दुल्ला बरेलवीकी इस दिशामें चिन्ता और व्यग्रता बिलकुल उचित मालूम होती है। समाचार पत्र निस्संदेह एक शक्तिशाली इंजिनकी भांति हैं। लेकिन जब पत्रकारोंके अधिकारोंपर ही तरह तरहके प्रतिबन्ध और निषेधाज्ञाएं लगाकर उनके विचार व्यक्त करनेवाली लेखनीकी गति रोक दी गयी है अथवा आवश्यकतासे अधिक सीमित कर दी गयी है तब इंजिन चलेगा कैसे और उसकी शक्तिका उपयोग किया जा सकेगा कैसे। इस लिये समाचार पत्रोंकी स्वाधीनताको प्राप्त करनेके लिये सर्वाधिक प्रयास अत्यधिक आवश्यक है। प्रसन्नताका विषय है कि अमेरिकाकी सम्पादक समितिने शांति कालमें समाचार प्राप्त करनेवाले विभिन्न सूत्रोंको राजनीतिक, आर्थिक, और सामरिक प्रतिबंधोंसे मुक्त करनेकी मांग पेश की है और वहांके सेक्रेटरी आव स्टेट मि० स्टेटिनियसके पास स्वाधीनता सम्बन्धी अधिकार पत्रके लिये अपना प्रस्ताव पेश किया है। अमेरिकन सम्पादक समितिके इस प्रस्तावका समस्त विश्वके समाचार पत्र समर्थन करेंगे इसमें तनिक भी सन्देह नहीं।

श्रमजीवी पत्रकारोंकी अवस्था भारतीय पत्रकार कलाकी प्रगतिमें बड़ी बाधक है। इसलिये अगर समाचार पत्रोंको ऊंचा उठाना वांछनीय है, तो उच्च आदर्श और ध्येयको लेकर इस क्षेत्रमें पैर रखने वाले संचालकों और नेताओंको अपने दृष्टिकोणमें काफी परिवर्तन करनेकी आवश्यकता होगी। प्राचीन महान पत्रकारोंकी परम्पराको फिरसे पुनरुज्जीवित करनेके लिये पत्रकार कलामें नया जीवन लाना होगा। इस बातको तो कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि आज समाचार पत्रोंकी आर्थिक स्थिति बहुत अधिक दृढ़ होगयी है और इस दृढ़ीकरणमें जितना संचालकोंके उद्योगको श्रेय प्राप्त है, उससे किसीभी अवस्थामें कम श्रेय श्रमजीवी पत्रकारोंके परिश्रम, लगन और सेवाको नहीं दिया जायेगा। इसलिये वर्तमान युद्धजन्य स्थितिमें समाचार पत्रोंने जो धन अर्जन किया है, उसमें श्रमिक पत्रकारोंका भी बराबरका हिस्सा है। लेकिन श्रमजीवी पत्रकार तो हिस्सा न मांग कर उतनेसे ही सन्तुष्ट होते जान पड़ते हैं कि उनका वेतन और कार्य सम्बन्धी अवस्थाएं इस ढगकी बना दी जायें जिससे वर्तमानमें समुचित ढंगसे अपना उत्तरदायित्व निभा सकें और भविष्यके लिये, जब वे अपने उत्तरदायित्वसे अवकाश ले लें, चिन्ता न करनी पड़े।

करु बांहिया बल आपुनी—

युद्धोत्तर भारतके सम्बन्धमें इन दिनों सरकारी और गैर सरकारी अंचलोंमें जितनी चर्चाएं हैं और योजनाएं बन रही हैं, उतनी शायद कभी न तो चर्चा ही थी और न योजनाही। लेकिन मुख्य प्रश्नपर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। लम्बी चौड़ी योजनाओंसे देशको समृद्धिशाली बनानेकी आशा रखनेवालोंकी बुद्धिका या तो दिवाला निकल गया है, या वे भी हमारे दकियानूसी ब्रिटिश राजनेताओंकी तरह हमें बेवकूफ बनाकर सदाके लिये पराधीन रखना चाहते हैं। क्योंकि जब तक देश स्वाधीन नहीं हो जाता अपनी लोकप्रिय सरकार नहीं कायम हो जाती, तब तक लम्बी चौड़ी योजनाओंके साम्राज्यवादी सरकार द्वारा कार्यान्वित किये जानेका स्वप्न देखना अर्थहीन है। प्रसिद्ध दार्शनिक डा० श्रीधरानीकी इस बातसे भी हम सहमत नहीं कि एशिया अमेरिकासे आशा रखता है। एशियाको अपनी स्वाधीनता और समृद्धिके लिये अपने ही पैरोंपर खड़ा होना होगा।

अमेरिकन सेना मनिलासे केवल ४० मील
सान-मैनुएल रोड जंक्शन पर अधिकार
रामरी द्वीपके अर्द्ध भागपर मित्र कब्जा
भारतीय सैनिक यानवाङ्गचाक तकपहुंच गये

वाशिंगटन, २८ जनवरी। कल अमेरिकन विशालकाय बमवर्षकोंके दो समूह ने फ्रेंच इण्डोचीन स्थित सैगोन और टोकियोपर बमवर्षा की। जनरल मैकार्थरके फौजी सदर मुकामकी विज्ञप्ति है कि अमेरिकन अग्रगामी दस्ते मनिलासे ४० मील दूरस्थ एक स्थानपर पहुंच गये हैं। सानमैनुएल रोड जंक्शनपर अधिकार कर लिया गया है। जापानी तोपखानेकी सहायतासे क्लार्क फील्डके हवाई अड्डेपर घुआंधार गोलाबारी कर रहे हैं। अमेरिकन चतुर्थ सेना मनिलासे करीब ५० मील उत्तर एञ्जल तक पहुंच गये हैं। उत्तरमें अमेरिकनोंने तीव्र जापानी प्रतिरोधके मुकाबले अगाट नामक एक छोटे नगरपर अधिकार कर लिया है।

मित्र राष्ट्रीय स्थल सेनाका फौजी सदर मुकाम, २८ जनवरी। एसोसियेटेड प्रेस आफ इण्डियाका युद्ध संवाददाता लिखता है:—१५ वें भारतीय दस्तेने रामरी द्वीपके अर्द्ध भागपर अधिकार कर लिया है। सरकारी तौरपर घोषित किया गया है कि २६ वें भारतीय डिवीजनके अग्रगामी सैनिक यानवाकचांग नामक जलस्रोत तक पहुंच गये हैं। दक्षिण पूर्वी एशिया कमाण्डकी आजकी विज्ञप्ति है कि मोनिवाके दक्षिण-पूरब चौदहवीं सेनाको अग्रगमनमें सहायता मिली है। सात मील तक सड़क साफ कर दी गयी है। इरावदीके पश्चिमी तटपर कालवेटके नगरोपान्तके एक छोटे सेतुमुखपर अधिकार कर लिया गया है। पश्चिमी अफ्रीकन सेनाने मोहांगपर पूणरूपसे अधिकार स्थापित कर लिया है। रामरी में जापानी अवरोधके मुकाबले मित्र प्रगति जारी है। ए० प्रेस

जर्मन पूर्वी मोर्चेपर प्रहार

लन्दन २८ जनवरी। जर्मन रेडियो की खबर है कि ३५ सोवियट डिवीजन एवं ५ बख्तरदार फौजी दस्ते अपर साइलेसियाकी जर्मन मोर्चेबंदी पर प्रहार कर रहे हैं। ६५ मी०के मोर्चे पर शत्रुओंने ओडर नदी पार करनेका कई बार प्रयत्न किया। कई स्थानों पर नदीका जल पूरा जम गया है। डेनजिग रेडियोने ऐलान किया है ऐसे सैनिक, जिनका अपने दस्तेसे सम्बन्ध टूट गया है। वे सार्वजनिक सूचना द्वारा ऐलान किये केन्द्रोंमें अपनी हाजिरी दें।

श्री विश्वनाथदास कलकत्ते में

कलकत्ता, २६ जनवरी। उड़ीसाके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथदास मद्रास मेलसे कटकसे आज यहां पहुंचे। आप शनिवार तक ठहरेंगे और वापस लौटनेके पूर्व कांग्रेस कार्य समितिके सदस्य डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष तथा डा० विधानचन्द्र रायसे मिलेंगे। ए० प्रेस

मित्र सदर दफ्तरका स्थानान्तर

न्यूयार्क, २८ नवम्बर। प्रशान्तस्थित जहाजी बेड़ाके सदर मुकामसे कोलम्बिया ब्राडक स्टिङ्ग सिस्टमके संवाददाताने आज बताया कि प्रशान्तके मित्र कमाण्डर इन-चीफ एडमिरल चेस्टर निमिट्जके नये सदर मुकामके विषयमें अभी कुछ भी प्रगट नहीं किया गया है। फिर भी विश्वास किया जाता है कि इसका केन्द्र पर्लहार्बरके ठीक पश्चिम तथा सम्भवतः गुआममें होगा। रायटरका कहना है कि सर्वप्रथम यह आभास मिला है कि प्रशांतके कमांडर इन चीफका सदर मुकाम वर्तमान युद्ध-क्षेत्रके बिलकुल समीप स्थानान्तरित किया किया गया है। रायटर

ब्रिटिश औरग्रीकबंदियोंकारिहाई

एथेन्स, २८ जनवरी। मालूम हुआ है कि सन्धिकी शर्तोंके अनुसार ग्रीक देशभक्तों द्वारा मुक्त १ हजार अंग्रेज और ६१३ ग्रीक नागरिक पिरेयूज पहुंचे हैं। रा०

ट्रेन लड़नेमें ६ महीने

कृष्णनगर (नदिया), २६ जनवरी। बी० एण्ड० ए० रेलवेपर स्थित चुआडाङ्गके भूतपूर्व सहायक स्टेशन मास्टर श्री निताइपद मजुमदार एवं ब्लाकमैन श्री सत्यदेव तिवारीमेंसे प्रत्येकको सदर सब-डिवीजनल माजिस्ट्रेट राय बहादुर एन० एम० हल्दरने भारत रेलवे कानूनके अन्तर्गत ६ महीनेकी कड़ी कैदकी सजा दी। मामला यों कहा जाता है कि १६४३ के अप्रैल महीनेमें जब स्टेशनके प्लेटफार्मपर एक मालगाड़ी खड़ी थी, उसी समय उन्होंने एक स्पेशल ट्रेनके पार होनेके लिये सिगनल गिरा दिया, जिससे दोनों गाड़ियां आपसमें लड़ गईं और फलस्वरूप मालगाड़ीके गार्ड श्रीगुरुदासअधिकारीकी मृत्यु होगयी और कई डब्बे चूर हो गये। अभियुक्तकी ओरसे आरोपका प्रतिवाद करते हुये कहा गया कि स्पेशल ट्रेनने खतरेकी सिगनलकी अवहेलना की थी। प

अमेरिका कांग्रेस नेताओंकी रिहाईकी चेष्टा
भारतीय प्रश्नपर अमेरिकाकी चुप्पीसे निराश
श्रीमती पण्डित द्वारा अमेरिकन नीतिकीनिं[illegible]

वाशिंगटन, २८ जनवरी। न्यूयार्कसे यहां पहुंचनेपर श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने भारतके सम्बन्धमें अपना विचार स्पष्ट करनेमें असफल रहनेके लिये संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाकी तीव्र आलोचना की। आपने रायटरको बताया कि भारतको अमेरिकासे बड़ी निराशा हुई है। भारतकी दृष्टि संयुक्तराष्ट्रपर लगी हुई थी कि भारतकी स्थितिके सम्बन्धमें कुछ न कुछ वक्तव्यके साथ अमेरिका अवश्य आगेबढ़ेगा। श्रीमती पंडितने ऐलानकिया कि राष्ट्रपति रूजवेल्टकी चुप्पी अविश्वसनीय सी लगती है। अमेरिकाको यह तो निश्चित रूपसे कह देना चाहिये कि कांग्रेस पार्टीकी कार्यकारिणीको तुरत रिहा कर देना चाहिये।

कुछ दिन यहां ठहरनेके बाद श्रीमती पण्डित न्यूयार्क एवं बोस्टन जायंगी और लगभग ६ सप्ताह तक विस्तृत दौरा करेंगी। आज तीसरे पहर 'नेशनल कमेटी फार इण्डियाज फ्रीडम' संस्थाकी ओरसे आपका स्वागत किया जायगा और सोमवारकी रातको यहां भारतीय स्वाधीनता दिवसकी बैठकमें आपके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया जायगा। रायटर

टीका सम्बन्धी योजना

कलकत्ता, २८ जनवरी। कलकत्ता कारपोरेशनकी अगली बैठकमें बंगाल सरकारके नागरिक स्वास्थ्य एवं स्वायत्त-शासन विभागके सेक्रेटरी मि० डब्ल्यू० नोलैण्डके पत्र-व्यवहारपर विचार किया जायगा। उक्त पत्रमें मि० नोलैण्डने चीफ एक्जेक्यूटिव अफसरको, कारपोरेशनके टीका सम्बन्धी विभागके सारे महकमेके कर्मचारियोंकी नियुक्ति, सजा एवं बर्खास्तगीका पूर्ण अधिकार सौंपनेके सरकारी प्रस्तावकी बातें बताई हैं, जिससे प्रत्येक टीका देने वाला १५० व्यक्तियोंको प्रति दिन टीका लगा सके एवं टीकेकी दवा अधिक परिमाणमें तैयारकी जा सके।

चीफ एक्जीक्यूटिव अफसरने सरकारकी भावनाकी प्रशंसा करते हुए, सरकारको सूचित किया है कि यदि स्टाफकी नियुक्तिके साथ ही यथोचित फंड उनके हाथमें रहे, तो टीकेकी दवाका परिमाण बढ़ाया जा सकता है। टीका लगानेके सम्बन्धमें आपने कहा है कि ११ से २० जनवरीतक जहां कारपोरेशनने करीब ५ लाख लोगोंको टीके लगाये हैं, वहां सरकारकी ओरसे ८ लाख लोगोंको टीके लगाये गये। आपने विश्वास दिलाया है कि यदि आवश्यक सुविधाएं मिल जायं तो सार्वजनिक टीका लगानेकी योज[illegible] को सफल बनानेकी दिशामें वह [illegible] साध्य चेष्टा करेंगे। यू० प्रेस

फ्रैंकोंका रूस विरोध[illegible] रुख
मि० चर्चिल द्वारा पत्रका उ[illegible]

लन्दन, २८ जनवरी। 'सण्डे [illegible] वजर्वरका विशेष संवाददाता सूचित क[illegible] है कि अब यह प्रगट किया गया है [illegible] पिछले कुछ दिनोंमें प्रधान मन्त्री [illegible] चर्चिलने गत नवम्बरमें प्राप्त पत्रका [illegible] जनरल फ्रैंकोको भेज दिया है।

संवाददाता लिखता है कि जेन[illegible] फ्रैंकोने स्पष्टत. सम्भावित पश्चिमी [illegible] का गलत अर्थ लगाया है जिस [illegible] स्पेनके सम्बन्धकी दयालुतापूर्ण बातों [illegible] भी सही अर्थमें वह नहीं लें सके। ब[illegible] सम्भव है कि उन्होंने इसे प्रजातन्त्रियों [illegible] सोवियट विरोधी समझौता समझ लि[illegible] हो और अपनी अयाचित सेवाएं [illegible] करनेको झट आगे बढ़ गये। यह निश्[illegible] सा जान पड़ता हैं कि मि० चर्चिल फे[illegible] जिस्ट स्पेनके प्रति ब्रिटेनके रुखके सम्[illegible] न्धमें फ्रैंकोको सन्देहमें न रखनेके [illegible] अवसरको कभी न हाथसे जाने दे[illegible] रायटरने आगे चलकर बताया है [illegible] लन्दनके अधिकारी क्षेत्रमें इस बात [illegible] पुष्ट हो रही है कि जेनरल फ्रैंकोने वि[illegible] नवम्बर महीनेमें मि० चर्चिलको चि[illegible] लिखी थी, जिसका उन्होंने जवाब दि[illegible] था। उक्त पत्र व्यवहारके सम्बन्धमें कु[illegible] भी नहीं कहा जा सकता। रायटर

सर सेमुएल रंगनाथन भारत[illegible]

लन्दन, २८ जनवरी। लन्दन[illegible] भारतके हाई कमिश्नर सर सेमु[illegible] रंगनाथन भारतके संक्षिप्त दौरेपर र[illegible] हो गये हैं। इनकी अनुपस्थितिमें डि[illegible] हाई कमिश्नर सर डविड मिड दफ्तर [illegible] कार्यभार सम्भालेंगे। रायटर

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित[illegible]

वाशिंगटन, २८ जनवरी। [illegible] सोमवारको श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्[illegible] भारतीय स्वाधीनता-दिवसकी स[illegible] सर्वप्रधान माननीया अतिथिकी हैसिय[illegible] सम्मिलित होंगी। भारतीय स्वाध[illegible] राष्ट्रीय समितिके तत्वावधानमें सभ[illegible] आयोजन किया जायगा। रायटर

कहानी

उलझी लड़ियां

——:*:——

लेखक—श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

दिनभरके अविराम परिश्रमके बाद न्ध्या वेलामें जब सुन्दरलाल अपने घरमें दम रखता, तब वह किसी न किसी पहे- लीमें अपने आपको उलझा हुआ पाता। उतरे ए चेहरेपर उसकी धंसी हुई आंखे, जाने किस अतीतकी उलझी लड़ियां देखकर एक म शरबती हो जातीं।

उसे अपनी वर्त्तमान स्थितिपर एक अव्यक्त ी खिन्न होने लगती। लेकिन यह खीझ सकी आंखोंमें ही एक झलक दिखलाने तक ीमित रहती—आंखोंसे बाहर यह खीझ जतक कभी उतर न सकी। यों कह लीजिये सुन्दरलालने अपने वर्त्तमानको एकदम न्दर पाकर भी, अपनेपर इतना नियन्त्रण ा कि उसकी यह खीझ सदा दबी रही। ह तो मन ही मन—भीतर ही भीतर ठीक बादलोंकी तरह मंड़राया करता, जो नीकी भाफसे ओतप्रोत रहने पर भी बरस ीं पाते अर्थात् उमड़ते घुमड़ते ही रह जाते । अगर कभी बरस भी सके, तो सिर्फ रिम- म-रिमझिम—यह कभी नहीं हुआ कि खूब ठकर झमझम बरस जायं।

२९ दिनोंसे इसी प्रकार सुन्दरलाल अपने पमें उलझा और खोया-सा रहा आया उसकी यह उलझन-सी बेचैनी अब शायद के प्रयत्नोंके बावजूद उसकी पत्नीसे ी नहीं है। यह सब देख कर रीताको भी कम खीझ नहीं होती। लेकिन विवशता र मर्यादाकी जंजीरोंने उसे जकड़ जो रखा कहे भी, तो क्या कहे?

रीताको लगता कि इससे तो कहीं यह छा होता कि यह अपनी खीझ किसी दिन ट कर देते। लेकिन यह सब क्या अपने की बात है? यदि ऐसा होता, तो फिर समानमें बादल कई दिनों तक, इधर उधर ही क्यों मंड़राया करते और धरती गर्मीसे बेचैनीका अनुभव ही क्यों ?

ज भी जब सुन्दरलाल दफ्तरसे लौट र आया, तो सदाकी भांति रीताने पीनेकी तैयारी कर रखी थी। हाथ धोकर चाय पीते-पीते सुन्दरलालने कहा बहुत गर्म ? गर्मी है, रीता

ये बादल बरस जो नहीं रहे हैं।' रीताने खिड़कीमेंसे आसमानकी तरफ झांकते कहा।

तो क्या बादलोंका बरसाना अपने ी बात है?

सो तो मैं भी जानती हूं। रीताने —'लेकिन गर्मीका कारण तो यही है फिर एक क्षण रुककर रीताने अपनी तपन मिटानेके लिये शायद भूमिका बांधी —इधर आप भी तो कई भरे-भरे से दिख रहे हैं। मैं देखती फ्तरसे लौटनेपर न तो आप स्वयं कोई किसीसे करते हैं और न कभी दिखते हैं। भीतर ही भीतर इस उमड़ने घुमड़नेसे स्वास्थ्यपर बुरा पड़ सकता है।'

सके लिये कोई चारा नहीं रीता!' लालने चायका प्याला खाली करते —'अब एक रुपयेका दो सेर गेहूं, र चावल, चार छटाक घी और तीन पंसेरी लकड़ी मिलती हो, और कभी मेरे लिये तो कभी तुम्हारे लिये डाक्टरी दवाकी जरूरत भी बनी रहती हो, तब भला, भीतर ही भीतर उमड़ता घुमड़ता न रहूं, तो और क्या करूं?,

'लेकिन इस प्रकार उमड़ने घुमड़नेसे तो समस्या हल न हो जायेगी।'

'सो तो मैं खूब समझता, हूं—शायद उससे भी अधिक रीता, सुन्दरलालने कहा —'लेकिन सोचता हूं, महंगाईके नामपर जब इस नौकरीमें हमें पर्याप्त पैसा नहीं मिलता, तब चौगुने-पांचगुने दाम देकर कितने दिनों तक गृहस्थीका यह भार मैं ढो सकूंगा।,

रीता एक कौतूहलके साथ अपने पतिका मुंह ताक रही थी। आज वह समझ सकी कि इनकी बेचैनीका यथार्थ कारण क्या था। और इतने दिनों तक इन्होंने जो यथार्थ कारण छिपा रखा था, उसे लेकर यह रीता स्वयं जाने क्या क्या सोचने लगी थी।

दफ्तरसे लौट कर जब लगातार कई दिनों तक सुन्दरलाल किसी गहरी चिन्तामें डूबा रहता और न रीतासे, न बच्चेसे खुलकर कोई बात करता, तब भला, यह रीता तरह- तरहकी बातें अपने मनमें न लाती, तो और करती ही क्या? वह तो धीरे-धीरे यही समझने लगी थी कि सुन्दरलालको अब इस घरमें शायद कोई आकर्षण नहीं रह गया है। रीताके प्रति उनके दिलमें माया नहीं और बच्चेके प्रति ममता नहीं। प्रारम्भमें उसने सुन्दरलालसे जो प्यार पाया था, उसकी रंगीनियां धीरे-धीरे शायद धूमिल होने लगी थीं अब।

पुरुषकी इस एकांगी और स्वार्थसनी प्रवृत्तिपर वह आजकल कितनी खीझने लगी थी। लेकिन आज सुन्दरलालके मुखमण्डलपर उठती-गिरती विचार धाराओंको जब वह ध्यानपूर्वक पढ़ सकी, तब उसने जाना कि वह अब तक भटक रही थी।

सुन्दरलाल एक मिनट तक चुप रहा, फिर अपनी आकुलता प्रकट कर बैठा— 'बुरा मत मानना रीता, मैं अब समझ सका हूं कि मानव जाने कितनी ही जञ्जीरोंसे जकड़ा हुआ है। कोई पारिवारिक जञ्जीरोंसे कसा हुआ है तो कोई राजनीतिक जञ्जीरों- से। किसीके हाथोंमें लोहेकी दृश्य जञ्जीरें कसी हुई हैं, तो किसीके हाथ-पैरोंमें अदृश्य।'

'जञ्जीरें!' रीताने दोहराया और सर्द सांस लेकर चुप रह जाना चाहा; लेकिन चुप रह नहीं सकी, कहा—'यह सब अपने मनकी कमजोरी है—भूल-भुलैया।'

'इसे तुम भूल-भुलैया कहती हो?' सुन्दरलालने प्रश्न किया।

'और नहीं तो क्या?' रीता बोली— 'जीवनके विषम धरातलपर जो ऊंची-नीची और पथरीली घाटियां पड़ती हैं, कोई उन्हें देखकर ही घबड़ा जाता है और कोई साहस- पूर्वक उन्हें पार कर आगे बढ़ जाता है।'

'लेकिन मैं आगे नहीं बढ़ सका, रीता!' सुन्दरलालने कहा—'मैं जानता हूं मेरे कितने ही साथी आज मुझसे बहुत आगे बढ़ गये हैं। उनके हाथ-पैरोंमें लोहेकी जञ्जीरें झनझना रही हैं; जेलकी चहार- दीवारीके भीतर उनकी सांसोंका स्वर गूंज रहा है, और देशका बच्चा-बच्चा उनके त्यागसे एक नवीन दिशामें बढ़ जानेकी प्रेरणा पा रहा है। लेकिन मैं...मैं...?' सुन्दरलाल आगे कुछ न कह सका। उसका कण्ठ जैसे अवरुद्ध हो गया।

'यह भी तो एक भ्रम है।' रीताने फिर अपनी बात दृढ़तासे कह डाली।

'फिर तुमने नहीं कहा, रीता!' सुन्दर- लालने इस बार शायद मार्मिकतासे अपनी बात समझानेका यत्न किया—'इसमें भ्रमकी तो कोई बात ही नहीं है, रीता! दिनके प्रकाशकी तरह यह स्पष्ट है कि मैं कुछ नहीं कर सका। अपने परिवारको लिये ही बैठा रहा। महज व्यक्तिगत स्वार्थोंके लिये— तुम लोगोंकी आवश्यकताएं पूरी करनेके लिये मैं अपनी मातृभूमिके लिये कुछ भी तो नहीं कर सका। और आज देखता हूं कि तुम लोगोंकी आवश्यकताएं भी तो पूरी नहीं कर पाता हूं!'

'तो क्या आप समझते हैं—रीताने कहा—'कि सिर्फ जेलमें जाकर बन्द हो जानेसे ही व्यक्तिगत स्वार्थोंका हनन हो जाता है और देशके लिये सबकुछ करनेका अर्थ पूरा हो जाता है? मैं फिर कहती हूं कि यही आप भूल करते हैं। जो अपने परिवारका भरण-पोषण करनेसे जी चुराते हैं, जिनके जेल जानेके बाद उनके आश्रित दाने-दानेके लिये मुंहताज होकर दूसरोंकी दयाके पात्र हो जाते हैं, उनसे कहीं आप सौ बार त्यागी हैं और देशभक्त भी। हां, यह बात मैं उनके लिये नहीं कह रही हूं, जिनका सारा जीवन ही मातृभूमिकी बलिवेदीपर घुल-घुलकर चढ़ रहा है।'

'मेरा त्याग कभी त्याग नहीं कहा जा सकता। इसे देश-भक्ति भी नहीं कह सकते, रीता! मेरा त्याग अपने परिवारके लिये ही है, अतः यह नगण्य है।'

'यह देखिये, है न यह भूल भुलैया।' रीता बोली—'जिस त्यागकी गणना नहीं, उसे आप त्याग नहीं कहना चाहते। मैं कहती हूं अपने परिवारका भरण-पोषण कर, उसे दूसरोंका मुंहताज न होने देना बहुत बड़ा त्याग है। अपनी सन्तानको स्वतन्त्रता पूर्वक रहने और स्वाभिमानी होकर चलनेका अवसर दीजिये ताकि जीवनमें वह किसीसे दबकर रहना न जाने। धीरे-धीरे आप देखेंगे कि अनुकूल वातावरण पाकर यही भावना राष्ट्रीयताका बाना ले लेंगी और देश जञ्जीरें काट फेकेंगी।'

'हम लोगोंके लिये यह सब आकाश कुसुम है रीता!' सुन्दरलालने मर्माहत स्वर में कहा—'जो अपनी सीमित-सी आय अपने परिवारका उदर-पोषण कर सकने ही हजार झंझटों और परेशानियोंसे रात दिन अपना सर टकराया करे, पर अपनी सन्तानको स्वतन्त्रतापूर्वक रहने और स्वाभिमानी बननेका वातावरण ही कैसे उत्पन्न कर सकता है?'

रीता इसका कुछ उत्तर दे कि इसी बीच बाहरसे रमेश दौड़ता हुआ आया और सुन्दरलालकी तरफ देखते हुए बोला—'तार आया है, बाबूजी!'

'तार!' सुन्दरलालने दोहराया और रमेशसे पूछा—'कहां है तार?'

इसी बीचमें, बाहर खड़े हुए तारवाले डाकियेने साइकिलकी घण्टी टनटनायी।

सुन्दरलाल तार लेने बाहर चला गया। तार लेकर जब वह भीतर आया तो रीताने पूछा—'कहांका तार है?'

'घरसे आया है। पिताजी चल बसे!' और सुन्दरलालकी शरबती आंखे टप-टपकर बरस पड़ीं।

रीता अपना सिर थामकर वहीं बैठी रही। रमेशसे उसने कहा—'जाओ बेटा! तुम खेलो!'

रमेशने अनुकूल वातावरण न देख, वहांसे खसक जाना ही ठीक समझा।

रीताकी आंखें रिमझिम-रिमझिम कर बरस रही थीं। हतबुद्धि-सी वह बैठी रही। वह समझ न सकी कि अपने पतिकी इस दुखमें किन शब्दोंसे सान्त्वना दे।

सुन्दरलालके हृदयपर जैसे वज्र टूट पड़ा। इस दुनियामें रहकर उसके पिताने कभी आराम नहीं देखा। आराम शायद उनकी किस्मतमें बदा ही नहीं। उन्हें कभी विराम नहीं मिला। कितनी आशाओं और उमङ्गोंके साथ उन्होंने सुन्दरलालको पढ़ाया-लिखाया; लेकिन सुन्दरलाल कभी उन्हें आराम नहीं पहुंचा सका।

वह उन्हें आराम पहुंचाता ही कैसे? बी० ए० हो जानेपर भी जब लाख प्रयत्नोंके बावजूद उसे कहीं चालीस रुपये मासिक से अधिककी नौकरी प्राप्त नहीं हुई, तो उसकी सारी आशाओंपर तुषारपात हो गया। चालीस रुपये शहरमें रहकर अपना ही खर्च चलाना उसके लिये टेढ़ी खीर थी। ऐसी दशामें पिताजी स्वयं सुन्दरलालके साथ शहरमें रहना ठीक नहीं समझते थे। गांवमें ही वह रहते आये और जमींदारकी नौकरी कर अपना खर्च चलाते रहे। अन्तिम श्वास तक दूसरोंकी गुलामी करते रहे वह।

और आज जब पिताजी अचानक चल बसे, तो सुन्दरलालका हृदय जैसे बैठने लगा। शहरमें रह कर आजकलकी महंगीमें पत्नी और बच्चेके साथ अपना खर्च चलाना ही उसके लिये एक विकट समस्या थी। ऐसी दशामें उस कर्जकी चिन्ताका उद्रेक होना सहज स्वाभाविक हो गया, जो पिताजीने उसकी पढ़ाईके लिये ले रक्खा था और एक

पाई भी अभी चुकता नहीं की जा सकी थी। घर खर्चकी यह हालत थी कि महीने पहले सप्ताहके बाद पांच रुपये भी उसके पास नगद नहीं बच पाते थे।

अब वह पिताजीके संस्कारोंको पूरा करनेके लिये क्या करेगा, कैसे गांव जायगा, किससे कर्ज मांगेगा। फिर उस वैधव्य-कातर मां को भी वह अपने साथ रखकर शहरके खर्च कैसे चलायगा ? छन्दरलाल परेशान था, हैरान था। निर्धनताको विषम परिस्थितियोंके इस घटाटोपमें समस्याका कोई हल उसे सूझ नहीं रहा था। उसकी लड़ियां उत्तरोत्तर उलझ रही थीं। उसकी बेचैनी प्रतिक्षण बढ़ती जा रही थी।

कमरेकी खिड़कीमेंसे झांककर छन्दरलाल अपनी गीली आंखोंसे देखरहा था अतृप्त बादलोंके टुकड़े, जो आसमानमें इधर उधर मड़रा रहे थे और शायद जोरोंसे बरस पड़नेके लिये छटपटा रहे थे।

—०—

— नारी —

चांदनी चौकका घण्टा घर,
कुछ रंग बिरंगी
चंचल परियां
चली जा रहीं थिरक-थिरककर
गतिमें है मादकता
पड़ते पैर अदाके नपे-तुले हैं;
जाती लचक लंक प्रति पगपर
यौवन सिहर सिहरकर
लेता है कम्पित अंगड़ाई,
सिरसे सरक-सरक साड़ी जाती है
नृत्य कर रहीं वेणी कटिपर
एक खुलीलट चूम रही है
गोल गुलाबी लोल कपोल,
बड़ी बड़ी कजरारी आंखोंमें मदिराके-
घड़े भरे हैं,
पीना छूना दूर
उन्हें बस देखेसे ही एक नशासा आ जाता है।
पतले होंठ
सुधा-सिंचित से
मस्तकपर बिन्दी छोटी सी,
और गालपर एक मसनवी तिल काला-सा
सोचा कभी यही नारी तो करती थी आखेट
पुरुषके साथ
बनोंमें घूम।
सोचा कभी इसी नारीका था यह कहना
जीत उसे लेगा जो कोई
पुरुष शास्त्रके धर्म-युद्धमें,
होगा वही प्राण-प्रिय उसका।
सोचा कभी इसी नारीने
युद्ध-क्षेत्रमें छुड़ा दिये थे छक्के डटकर
बड़े बड़े वीरोंके।
सोचा कभी इसी नारीने
खप्पर लेकर नृत्य किया था
कम्पित की थीं सभी दिशाएं हुंकारोंसे
लपटोंसे शृंगार किया था,
डोल उठे थे दिग्गज
अचला चला हुई थी।
सोचा कभी इसी नारीने
जीत लिया था महाकालको;
और आज—
चांदनी चौककी चहल पहलमें
यही कर रही है अपना सौन्दर्य-प्रदर्शन,
दबी जा रही कुच-कचके हल्के भारोंसे;
वस्त्र रेशमी तनपर
मनपर है रेशमका प्यार।
कहां वह शक्ति ?
कहां वह भक्ति ?
कि जिसके कारण नारी बनी
कभी दुर्गा-काली इत्यादि
क्या अपनी बोझिल पलकोंके
स्वप्न लुटाकर
फिर जागेगी ?
बोल पद्मिनी
बोल कभी लेगी अंगड़ाई ?

—विनोद रस्तोगी, बी०ए०,

—:०:—

युद्धकालीन सोवियट कविता

—:*:o:*:—

(लेखक—श्री गौरीशंकर ओझा)

वर्तमान महायुद्धमें सोवियट रूसकी शक्तिने अपने जिस अजेय साहस और धैर्यका परिचय दिया है, वह साम्यवादी संगठनकी अभूत पूर्व ऐतिहासिक घटना है। यही कारण है कि आज मित्र-राष्ट्रोंमें सोवियट रूसका ही प्रभाव सर्वाधिक है, क्यों कि जर्मनीकी फासिस्ट शक्तिको रूसने ही इस प्रकार आहत किया है कि वह अन्तिम सांस ले रही है और रूसके महान् शक्तिशाली प्रत्याक्रमणके ही फलस्वरूप ब्रिटेन और अमेरिकाकी जर्मनीको अनिवार्य पराजयमें विश्वास हुआ है।

सोवियट रूसकी इस शक्तिका आधार जहां सैनिक-बल,-युद्ध-सामग्री-उत्पादन,शस्त्र-निर्माण और संगठन है, वहां साहित्यका नैतिक तथा प्रेरणा-बल भी है। यह बल भौतिक साधनोंसे अधिक नहीं तो कम महत्वपूर्ण भी नहीं माना जा सकता। सोवियट सैनिकों, मजदूरों और कृषकोंकी साहित्यके विविध अंग—उपन्यासों, कहानियों, नाटकों, कविताओं, निबन्धों, लेखों और वक्तव्यों द्वारा साहस, धैर्य, देशभक्ति और प्रतिशोधकी जिस भावनाको जाग्रत रखा जारहा वह अनुपम है। इस युद्धकालमें साहित्यके सबसे अधिक मर्मस्पर्शी और सरस अंग-कविता और गीतों द्वारा रूसमें ऐसा साहित्य-सृजन हुआ है, कि जो युग-धर्मकी पुकारके अनुकूल ही है। युद्धकालीन कविताओं और गीतोंमें रूसी जीवन और हृदयके वास्तविक चित्र कलापूर्ण मर्मस्पर्शी शैलीमें व्यक्त हुए हैं।

प्रसिद्ध सोवियट कवि एलेक्जेण्डर जहारफने, जिसने युद्धके प्रारम्भसे ही कभी सोवियट सेनाओंके साथ और कभी समुद्री बेड़ेके साथ रहकर अपने प्रत्यक्ष अनुभवके आधारपर अनेक ओजस्वी कविताएं लिखी कहता है कि २० वर्षके कवि-जीवनमें कभी इतनी क्रियात्मक प्रेरणा प्राप्त नहीं हुई, जितनी युद्धके दिनोंमें हो रही है। दूसरे कवि एलियासे लोन्सकोने, जिसने युद्धमें भी भाग लिया है, अनेक प्रभावशाली कविताएं लिखी हैं। उसकी एक लोकप्रिय कवितामें, जिसका शीर्षक है—"मैंने अपनी आंखों देखा है", नाजियोंके अत्याचारोंका हृदय द्रावक चित्र प्रस्तुत किया गया है। सोवियटकी अन्य रूसी जातियोंके कवि भी इससे प्रभावित होकर कविताएं लिख रहे हैं। प्रसिद्ध कज़ाक कवि जम्बूलकी कविता "स्टालिनकी आवाज" एक महान् साहित्यिक रचना मानी जाती है।

फासिस्ट आक्रमणके पहले ही दिनोंसे सोवियट कवियों और संगीतकारोंने ओजस्वी गीत लिखने प्रारम्भ किये, जिनका ध्येय सोवियट सेनाओं और सोवियट जातियोंकी देशभक्तिको प्रोत्साहन देकर विजयके लिये त्याग और बलिदान करनेकी प्रेरणा शक्ति देना था। कुछ लोकप्रिय गीतोंके शीर्षक इस प्रकार हैं:—'हिटलर खतम हो गया'"—यह गीत फासिस्ट आक्रमणके दूसरे दिन लिखा गया। 'लेनिनग्राडके कवि चातोफने 'हम शपथ लेते हैं' के शीर्षकसे गीत लिखा, जिसे विख्यात संगीतज्ञ शास्ताकोविचने स्वर दिया। सोवियटके एक और गीत लिखनेवाले मुरादअलीके, जो संगीतज्ञ भी हैं, एक गीतका शीर्षक है— 'देश और स्टालिनके नामपर;" उनका एक दूसरा प्रसिद्ध गीत है:—'हम समुद्र यात्रापर चलें।'

युद्धके पहले दिनोंमें जब सोवियट जनतामें देश-रक्षाकी शपथें प्रोत्साहन पूर्ण शब्दोंमें फैल रही थीं। विजयके विश्वाससे भरी हुई कवितामें अजेरबेजानके जनप्रिय कवि मार्मद रगीयने निम्न भाव व्यक्त किये थे:—

"हम अपने देश और मित्रोंकी शपथ रखते हैं,
इन सोवियट पताकाकी ज्वलन्त विरताकी
शपथ लेते हैं,
हम अपने नेता और हे देश, तेरी शपथ
लेते हैं,
कि हम पवित्र युद्धमें विजयके लिये लड़ेंगे,
हम गन्दे जर्मन तत्वका कोई चिन्ह न
छोड़ेंगे,
हम वापस आयेंगे, हम वापस आयेंगे,
और वह दिन आया भी।

एक बहुत जनप्रिय गीत है, जिसमें सोवियट समुद्री बेड़ेके मल्लाहोंकी अपने घरोंसे विदाईका वर्णन किया गया है:—उसके शब्द हैं:—

"भाइयो, आओ हम खूब ऊंचे स्वरोंमें गायें,
जब ऐसी सन्ध्या हो तो गाना ही चाहिए,
अब चाहनेवालोंके और सागरके विषयमें,
और अपने उस घरके विषमें जिसकी याद
हमे सदा सतायेगी।"

जब यूक्रेनको जर्मन सेनाओंने रौंद डाला उस समय यूक्रेन वासियोंने जो कष्ट सहे, वे वर्णनातीत हैं। उजबेक कवियूगेनने कहा था-

"जहां पहले बुलबुलें बोलती थीं,
वहां यूक्रेनके जंगलों और हरे भरे खेतोंमें
गोलियां सनसनाती जाती हैं,
और रक्तकी नदियां आगे बढ़ती जाती हैं,
उस रक्तकी जो स्त्रियों और बच्चोंका रक्त है,
जो तुम्हारे भाईका रक्त है, जो तुम्हारे पिता
का रक्त है।"

आगे कवि, कवितामें रूसी सैनिकोंको बदला लेनेके लिए आह्वान करता है:—

"किन्तु यदि तुम भूमिका रक्त छुड़ाना
चाहते हो,
यदि तुम चारागाहोंको फिर हरा भरा
देखना चाहते हो,
तो अपने शस्त्र हाथोंमें लो, आगे बढ़ो,
और शत्रुपर अपनी पूरी शक्तिसे प्रहार
करो।"

इसी प्रकार तातार कवि नूर बयानने कहा था—"हम अपने बेलोरशिया और यूक्रेनको गुलामीकी जंजीरोंसे मुक्त करेंगे। कवि शेयऊी कुवाशने यूक्रेनके सम्बन्धमें कहा था—'जनता कभी गुलाम नहीं होगी।' युद्धमें लड़नेवाले रूसियोंके लिये तो ये शब्द कानून हो गये।

उजबेक कवि मक्सूत शेखजादेने सोवियट रूसकी उन बहिनोंके सम्बन्धमें एक कविता लिखी, जो घायल सैनिकोंको अपना रक्त देती हैं और उनके प्राण बचाती हैं। कवि लिखता है:—

"हमारे हृदय एक आवाजमें धड़कते हैं,
हमारे लोग भ्रातृत्वमें बंधे हुए हैं,
रूसीके हृदयमें जार्जियनका रक्त धड़कता है,
यूक्रेनके पुत्रकी नसोंमें—
आर्मेनियन और करेलियनका रक्त बहता है,
बेलो रशियनकी धमनियोंमें उष्ण ताज रक्त
शराबकी भांति उबलता है, उजबेकका रक्त
लैटवियनको जीवन और शक्ति देता है,
बन्धुत्वकी भावनासे हमारे देशने हमें संयुक्त-
कर दिया है।"

इस कवितामें व्यक्त किया गया है कि सोवियट जातियोंकी एकता इस युद्धमें और दृढ़ हो गयी है, रक्तसे जुड़ गयी है और सुदृढ़ भ्रातृत्वके रूपमें परिणत हो गयी है।

रूसी, उजबेक, कजाक और तातार—सब सेनाओंने अपने मुक्त किये हुए बन्धुओंको गले लगाया और दुःख तथा कष्टोंको उनके घरोंसे हटा दिया। कजाक जातिके एक युवकने नीपरकी मिट्टीपर झुककर अपने होंठ आदर भावसे लगा दिये, कजाक कवि जम्बूलने इस घटनापर अपनी एक कवितामें निम्न भाव व्यक्त किये:—

"पवित्र किनारेसे शत्रुको हटा दिया गया,
वह घुटनोंके बल बैठ गया और भूमिको
चूमने लगा,
उसने यूक्रेनकी धूलको चूमा,ऐसा लोग कहते हैं,
नदीके किनारेपर भारी बर्फके नीचे
उसने भूमिको अपने पिताकी हथेलीकी
भांति चूमा।"

इसी प्रकार रूसकी सभी जातियोंके कवियों और गीत-लेखकोंने असंख्य कविताएं और गीत लिखे हैं। इनमें रूसी जनताकी आशाएं और आकांक्षाएं प्रकट की गयी हैं और युद्धमें विजयपर विश्वास व्यक्त किया गया है। आर्मीनियाका सैनिक कवि गुर्गेन बोरयान एक कवितामें कहता है:—"खेतों और चरागाहोंमें बाल-सूर्य फिर पूरी चमकके साथ उदित होगा।" इस कवितामें कविने विजयके बादके शान्तिके दिनका चित्र खींचा है।

चतुर्मुखी प्रतिभाके साहित्यिक और महान् कवि तथा कहानीकार निकोलाई तिखोनोव, जबतक लेनिनग्राडके चारों ओर जर्मनोंका घेरा रहा, एक मिनटके लिए भी बाहर नहीं गये। रणभूमि हो या मोर्चेसे दूर कोई कारखाना, हर जगह उनकी कविताएं पढ़ी जाती हैं। उनकी "किरोव हमारे साथ है!" और "अट्ठाईस सैनिक" नामक कविताओंसे लाल सैनिक लड़नेकी और मजदूर डटकर काम करनेकी प्रेरणा प्राप्त करते हैं। तिखोनोवने शत्रुके प्रति सोवियट जनताकी घृणा जाग्रत की है। उन्हें युद्धकालीन सोवियट साहित्यका सच्चा प्रतिनिधि समझा जाता है।

इसी प्रकार युद्धकालीन सोवियट काव्य साहित्यमें सार्वालोवकी 'मल्लाहकी आत्मा' और कौन्स्तेन्तिन सिमोनोफकी "तुम मेरी राह देखती रहना" शीर्षक कविताएं भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। इन कवियोंकी रचनाएं भी सोवियट जनताको युद्धका दर्शन कराती हैं, जिससे वह जाने कि सोवियट मानवकी आत्मामें कितनी महान् शक्ति भरी हुई है।

युद्धकालीन काव्य-क्षेत्रमें महिला कवयित्रियां भी पीछे नहीं हैं। कवयित्री ओल्गा बरगोल्ज और वेरा इनबेरकी कविताएं भी अत्यन्त ओजस्वी और हृदय-स्पर्शी होती हैं। अपने उद्गारोंको व्यक्त करते हुए वेरा इनबेर कहती है:—"मैं कवि हूं। इस युद्धमें हम क्या चाहती हैं? हम चाहती हैं कि यूक्रेनकी माताएं फिर बच्चोंको गोदमें लेकर मादक गीत गायें, बाइलो रूसकी तरुणियां जातीय उत्सवमें नाचें, यहूदी माताओंको धर्षिता कन्याओंकी मृत देहको देखकर फिर आंसू बहानेके दिन न देखने पड़ें, रूसकी सन्तान फिर पुश्किनकी कविताओंको पढ़े और गुर्जीवाले पढ़ें रुस्तुवेलीको। हम अपने देशमें शान्तिसे अनाज उपजाएं, नगरोंका निर्माण करें। मधुर जातीय भाषामें जी खोलकर वार्तालाप करें, किन्तु इन सबके पहले मैं चाहती हूं, नाजियोंकी पराजय।"

इस प्रकार आजकल उपन्यासकारों, कहानीकारों, नाटककारों और लेखकोंके साथ-साथ कवि और गीत-लेखक भी सोवियट भूमि और सोवियट जातियोंके एकसूत्र आग्नेय जीवनसे अनुप्राणित होकर एक ऐसे काव्य-साहित्यकी रचनाकर रहे हैं, जो सोवियट राष्ट्रके बीस करोड़ नर-नारियोंकी तात्कालिक मानसिक आवश्यकताओंको पूर्ण करके उन्हें ध्येयपूर्ति और विजयका मार्ग दिखा रहा है। आजकी सोवियट रचनाओंमें जीवनकी छाया नहीं, बल्कि सोवियट जीवनको स्वयं देखा जा रहा है। इसके पूर्व जनता और काव्य-साहित्यमें ऐसा अटूट सम्बन्ध नहीं देखा गया, इसीलिये सोवियट काव्य-साहित्यका भविष्य उज्ज्वल है।

—

कौन क्या कहता है

सहाइके नहीं

नेता रिहा किये जायं

लन्दनमें स्वराज्य भवनके तत्वाव-
नमें जो स्वतन्त्रता दिवस मनाया गया
में कामनवेल्थ पार्टीकी सदस्या मिसेज
टरिगमने अपने भाषणमें कहा कि उक्त
ने भारतीय स्वाधीनताकी मांगका
मर्थन किया है। डा० एम० गांगुलीने
हा कि मि० जिन्ना राजनीतिक गति-
ध पैदाकर पाकिस्तानकी स्थापना
रना चाहते हैं। लन्दनस्थ भारतीय
विक यूनियनके नेता सूरत अलीने कहा
 भारतीय गतिरोधका समाधान तबतक
म्भव नहीं हो सकता जबतक पण्डित
वाहरलाल नेहरू और सरदार बल्लभ-
ाई पटेल तथा अन्य भारतीय नेता रिहा
हीं किये जायेंगे।

युरोपकी भावी नीति

ब्रिटिश पार्लमेण्टकी लार्ड सभामें
ार्ड टेम्पुरवुडने कहा कि युरोपके अनेक
श्नोंका निर्णय अधूरा और वहांकी
नताके परामर्श किये बिना ही दिया जा
हा है। आशा है कि आगामी त्रिनायक
ानफरेन्समें इन अधूरे निर्णयोंपर विचार
िया जायेगा और उनके स्थानपर ऐसी
्यवस्था की जायेगी जो युरोपकी स्थायी
्यवस्था हो। आपने अपील की कि अट-
लाण्टिक चार्टरके सिद्धान्तोंका पालन
फिरसे किया जाय।

राष्ट्रीय सरकार संभव

भारत सरकारके युद्धोत्तर योजनाके
सदस्य सर आर्देसिर दलाळने मद्रास
सेक्रेटरियेटके इस कानफरेन्समें बोलते
हुए कहा कि जहांतक मेरा अपना सम्बन्ध
है मैं निश्चय यह उम्मीद करता हूं कि
युद्ध समाप्तिके बहुत पहले ही भारतमें
राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हो जायेगी।
यह कब और कैसे सम्भव होगी, यह मैं
नहीं बता सकता। सर आर्देसिरने यह
स्पष्ट कर दिया कि इससे मेरा अर्थ केवल
कांग्रेसी सरकारसे नहीं है बल्कि ऐसी
सरकारसे है जिसमें सभी दलोंके प्रति-
निधि होंगे।

अगर लालसेना न रुकी तो

'डास रीश' नामक पत्रमें जर्मन
प्रचार सचिव डा० गोयबल्सने जर्मनोंसे
सवाल किया है कि "अगर हम रूसियोंको
न रोक सके तो क्या होगा? कभी इस
बरमी विचार किया है। यदि जर्मन सेना
विराट रूसी आक्रमणको न रोक सकी
सकी तो क्या होगा? यूरोप महादेशमें
आज प्रत्येक देशने जर्मनीका साथ छोड़
दिया है और जर्मन अकेले लड़ रहे हैं।
हमें किसी प्रकारका भ्रम या भ्रान्ति नहीं
है। हमारी गति और मुक्ति अपनी ताकत
पर निर्भर है। आज हमारी शक्तिकी
अग्नि परीक्षा है और हमें विश्वास है कि
हम उसमें उत्तीर्ण होंगे क्योंकि इसके
सिवा दूसरा कोई मार्ग नहीं है। हमें
उत्तीर्ण होना ही पड़ेगा।

पत्रकारोंका संगठन कैसे

अखिल भारतीय सम्पादक सम्मेलन
में बोलते हुए मि० सैयद अब्दुल्ला बरेल्वी
ने कहा कि कर्मचारी पत्रकारोंको अपने
कठोर कार्यको सुयोग्यतापूर्वक संचालित
करने योग्य बनानेके लिये उन्हें पर्याप्त
वेतन, काम करनेकी संतोषजनक अवस्था,
साप्ताहिक छुट्टी, प्राविडेंण्ट फण्ड, वेकारी
के लिये बीमा आदिकी सुविधाएं मिलनी
चाहिये। श्रमजीवी पत्रकार उचित वेतन
और सुविधाएं क्यों नहीं पाते, इसका
कारण यह है कि उनकी कोई प्रभावोत्पा-
दक संस्था नहीं है। पत्रकारोंका संगठन
ट्रेड यूनियनके आधारपर होना चाहिये।

आत्म शुद्धिका प्रतीक

भागलपुरके भारतीय चर्खा संघका
उद्घाटन करते हुए सर सर्वपल्ली राधा-
कृष्णनने कहा कि शरीरको जीवित रखने
के लिये भोजनके अतिरिक्त मनुष्यको
अपनी आत्माके लिये भी भोजन चाहिये।
चर्खा आत्माकी शुद्धिका प्रतीक है। सात
लाख गांवोंका देश हिन्दुस्तान विशाल-
काय उद्योगधन्धोंपर ही अविलम्बित नहीं
रह सकता। बड़े उद्योगधन्धे निस्सन्देह
आवश्यक है किन्तु हिन्दुस्तानमें गृहशिल्प
को अधिक लोकप्रिय बनानेकी परम आव-
श्यकता है।

पूर्ण स्वायत शासन

ब्रिटिश औपनिवेशिक सचिव मि०
ओलिवर स्टेनलीने ऐलान किया कि ब्रिटेन
की औपनिवेशिक नीतिका लक्ष्य यथा
शीघ्र साम्राज्यके अन्तगत पूर्ण स्वायत
शासनकी व्यवस्था करना है।

जेलमें साहित्य सृजन

युनाइटेड प्रेसको मुलाकातमें डा०
प्रफुल्लचन्द्र घोषने कहा कि मौलाना
अबुलकलाम आजादने उर्दूमें तीन पुस्तकें
लिखी हैं, पण्डित नेहरूने भी बहुत कुछ
लिखा है पर नेहरूजी इस सम्बन्धमें कुछ
कहना नहीं चाहते। आचार्य नरेन्द्रदेवने
बौद्ध दर्शनकी पुस्तक वसुबन्धुके 'अभि-
धर्म कोष'का फ्रेंचसे हिंदीमें अनुवाद किया
है। आचार्य कृपलानी गांधी दर्शनके ऊपर
अंग्रेजीमें एक पुस्तक लिख रहे हैं। श्री
हरेकृष्ण मेहताबने उड़ीसाके इतिहासपर
अंग्रेजी और उड़िया दोनों ही भाषाओं
में लिख चुके हैं तथा मि० आशफ अलीने
उर्दूमें कविताएं की हैं।

चर्चिलकी चेतावनी

ब्रिटिस पार्लमेण्टमें मि० चर्चिलने
ऐलान किया कि यदि जर्मनी इंगलैण्डपर
आक्रमणमें गैसका व्यवहार करेगा तो
ब्रिटेन शीघ्रतापूर्वक जर्मनीपर दस गुना
अधिक गैसका प्रयोग करेगा।

देशका साथ दो

बम्बई प्रांतीय जमायत उल
सम्मेलनके अधिवेशनमें बोलते
मौलाना मुहम्मद तईदने कहा कि जम
उल उलेमाका लक्ष्य स्वतन्त्र भारतमें
विजन इस्लामकी स्थापना है। पारस
सद्भाव एवं उदारताकी अभिवृद्धिके
एक ही भाषा आवश्यक है। मुसलमान
चेतावनी देते हुए आपने कहा कि मुस
मान राष्ट्रीय तटस्थताकी बढ़ती
भावनाके चक्करमें न पड़े। वे आजादी
लिये युद्ध करने वालोंके प्रति सहानुभूति
रखें और उनका साथ दें।

फ्रांसका मार्ग निर्विघ्न

गृह सुरक्षा मन्त्रिमण्डलकी पार्लमेण्टरी
सेक्रेटरी मिस एलेन विलकिन्सनने
कामन सभामें ऐलान किया कि यातायात
की स्थितिमें सुधार होनेके कारण
ब्रिटिश पार्लमेण्टके सदस्य फ्रांसकी यात्रा
सकेंगे किन्तु युद्धमें तो उक्त सुविधा
न होगी।

मार्शल चांग कैशककी घोषणा

मार्शल चांगकैशकने एक मुलाकातके दौरानमें यह भविष्यवाणी की है कि चीन के कम्युनिस्टोंके साथ सरकारके मतभेद शान्तिपूर्वक मिट जायेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि चीन सरकारका जबतक मैं प्रधान हूं तबतक चीनमें गृह-युद्ध न होने पायेगा।

जापानियोंके प्रति कैसा व्यवहार किया जायेगा, इस सम्बन्धमें मार्शल चांग ने कहा कि युद्ध पीड़ितोंको पूर्ण न्याय तथा भविष्यमें आततायीपनेसे मुक्ति मिले इस बातका ध्यान रखा जायेगा किन्तु जापानियोंसे बदला लेनेकी नीतिका मैं समर्थन नहीं करता। जेनरल लिस्समोंने यह भी कहा कि चीनकी युद्धोत्तर कालीन प्रमुख समस्याओंमें पूर्ण लोकतन्त्रकी स्थापनाको शीघ्रातिशीघ्र कार्यान्वित करना भी एक प्रधान विषय होगा। अन्य समस्या यह है कि चीन उद्योग-धन्धोंको समुन्नत करके राष्ट्रीय आर्थिक स्थिति इस दर्जेपर पहुंचा दी जाये कि कोटि-कोटि चीनियोंके रहन सहनका स्तर ऊंचा उठ जाये।

चीनी एकताकी अपील

मैंचेस्टर गार्जियन और टाइम्सने चीनकी चुंगकिंग सरकार और कम्यूनिस्टोंमें समझौता कर लनेकी अपील की है। गार्जियनने लिखा है कि जहांतक वर्तमान युद्धका सम्बन्ध है, मार्शल चांग ऐसे नेता हैं जिनके बिना काम नहीं चल सकता। देशकी अत्यधिक निराशाजनक अवस्था बदले बिना मित्रराष्ट्र चुंगकिंगसे विश्वासको येनान नहीं बदल सकते। अगर समझौता नहीं हो सकता तो चीन केवल ... में नगण्य ही भाग नहीं लेगा बल्कि ... युद्ध आरम्भ हो जायगा और केन्द्रीय सरकार इतनी सुदृढ़ नहीं रह जायगी जो मंगोलिया, मंचूरिया और कोरियाकी समस्यापर बोल सके।

भारतीय सीमा सुरक्षा

फेडरलकोर्टके जज सर मोहम्मद जफरुल्ला खांने लन्दन जाते हुए पत्र-प्रतिनिधियोंसे कहा कि सम्मेलनके विचारणीय विषयमें भारत तथा उपनिवेशोंकी युद्धोत्तरकालीन सुरक्षानीति तथा आर्थिक समस्यायें हैं। भारतीय प्रतिनिधियोंका चुनाव ऐसा हुआ है कि देशकी विभिन्न विचार धाराओंका उसमें समावेश हो। उन्हें विचार प्रकट करनेकी पूरी स्वतन्त्रता रहेगी तथा किसी भी विशेष प्रकारका विचार प्रकट करनेको वे बाध्य न होंगे।

सीरियन फौजोंका भविष्य

सीरियाकी फौजों एवं सीरियाकी स्वाधीनताके सम्बन्धमें एक प्रश्नके उत्तर में वैदेशिक सचिव मि० इडेनने बताया कि फ्रेंच एवं सीरियन सरकारके बीच पिछले कुछ समयसे सीरियाकी फौजोंके सम्बन्धमें विचार विमर्श चल रहा है। ब्रिटिश सरकार इस सन्धि चर्चामें दोनों दलोंसे मित्रतापूर्ण एवं निकट सम्पर्क रखे हुए है क्योंकि इससे ऐसी फौजोंके भविष्यका सम्बन्ध है जो मित्रराष्ट्रोंकी ओरसे युद्ध कर रही है।

गोरे दोषी

केपटाउन साउथ अफ्रीकन इन्स्टिट्यूट आव रेस रिलेसन्समें बोलते हुए इंडियन कांग्रेसके अध्यक्ष मि० ए० आई० काजीने कहा कि हिन्दुस्तानियोंके प्रति यूरोपियनोंकी घृणा और यूरोपियनोंके प्रति हिन्दुस्तानियोंकी घृणाका कारण यदि सच कहा जाय तो यह है कि गणतन्त्रवादके सिद्धान्तसे काम नहीं लिया जाता। भेदकी यह भावना गैर यूरोपियनों के दिमागकी नहीं वरन यूरोपियनोंके दिमागकी उपज है। इस असमानताका प्रधान कारण यह है कि यूरोपियनोंकी धारणा है कि गोरे यूरोपियन सभ्य होते हैं और काले हिन्दुस्तानी असभ्य।

ब्रिटिश आर्थिक योजना

सर जान एंडर्सनने कामन सभामें बतलाया कि व्यापारिक वर्ग द्वारा बैंक, इन्स्योरेंस तथा पूंजी लगानेके दूसरे जरियोंके आधारपर दो कम्पनियोंका निर्माण हुआ है जो सरकारकी रायमें उद्योगकी पश्चातप्रद आर्थिक व्यवस्था एवं बेकारी हल करनेकी सरकारी नीति में बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी, कम्पनीकी नीति सरकारकी साधारण आर्थिक नीति मिलती जुलती होगी।

प्रगतिशीलताका पाठ पढ़ो

मद्रासमें हिन्दी प्रचार सभाके मैदान में भाषण देती हुई श्रीमती सरोजिनी नायडूने कहा कि हमें एकता और स्वतन्त्रताके आदर्शोंका पाठ पढ़ना चाहिये चाहे वह रूस, इंगलैण्ड तथा चीन कहीं से भी मिले। हमारी विचार धारा अन्तर्राष्ट्रीय होनी चाहिये। स्वतन्त्रताकी राष्ट्रीय या जातीय परिभाषासे हमें संतुष्ट नहीं होना चाहिये। स्वराष्ट्र हितवाद की नीतिसे हमे स्वतन्त्रता नहीं मिलेगी विश्वके प्रगतिशील देशोंसे हमें सम्पर्क रखना चाहिये।

जर्मनीका दृढ़ सङ्कल्प

जर्मन समाचार समितिने डिप्टी प्रेस चीफ हेलमट सुण्डरमैनका वह उद्धरण ऐलान किया जिसमें कहा गया है कि हम जानते हैं कि वर्तमान घड़ीमें हमें पता चल जायगा कि हम लालसेनाके आक्रमण के समक्ष नतमस्तक होंगे या उज्ज्वल भविष्य देखनेके लिये अग्नि परीक्षामें उत्तीर्ण होंगे। हम तबतक मोर्चेबन्दीसे मुख नहीं मोड़ेंगे जबतक कि जर्मन राष्ट्र की रक्षा और पितृ भूमिको सभी तरहके खतरेसे सुरक्षित न कर लेंगे।

स्पेन तटस्थ रहेगा

जेनरल फ्रैंकोने एक वक्तव्यके सिलसिलेमें कहा कि कुछ भी और कोई भी आदमी हमलोगोंमें चिन्ता उत्पन्न करने का कारण नहीं बन सकता। स्पेनके विरुद्ध उसके शत्रु युद्धमें बचे हुए धनकी सहायतासे प्रचार कर रहे हैं। उनकी यह आशा थी कि स्पेन युद्धमें भाग लेगा किंतु यह धारणा व्यर्थ और कपोल-कल्पित साबित होनेपर उन्होंने सभी इलाकोंसे उसे बदनाम करनेकी चेष्टा की है।

हिन्दी पत्रोंको अपनाइये

युक्त प्रान्तीय प्रेस सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए डाक्टर अमरनाथ झाने कहा हिन्दुस्तानमें अङ्गरेजी समाचार पत्रोंके दिन लद गये हैं और इसपर किसीको दुखी न होना चाहिये। भारतीय भाषाके समाचार पत्रोंके अब अच्छे दिन आ गये हैं अतः यथा सम्भव जनता को चाहिये कि भारतीय भाषाके समाचार पत्रोंको अधिकसे अधिक प्रोत्साहन प्रदान करें।

स्वदेश-वार्ता

कांग्रेसके सदस्य

अभी बनानेकी जरूरत नहीं

अहमदाबादके कांग्रेसी क्षेत्रोंसे ज्ञात ा है कि महात्मागांधीने एक प्रमुख ग्रेसी कार्यकर्ताको एक पत्रमें लिखा है इस समय कांग्रेसके सदस्य बनानेकी आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता बातकी है कि हर स्थानपर एक सूची नात्मक कार्यक्रममें सक्रिय भाग लेने के कांग्रेसजनोंकी रखी जाये।

ांग्रेस संपत्ति दीमकोंके सुपुद

दीमकोंके सुपुर्द

गत सप्ताह अखिल भारतीय कांग्रेस मेटीके दफ्तर (स्वराज्य भवन) की हरें तोड़ी गयीं। यह इसलिये नहीं आ कि दफ्तरकी सफाई की जाये बल्कि सलिये कि नगर कांग्रेसकमेटीकी चीजों ो भी दीमकोंके लिये वहां इकट्ठा कर या जाय। जनताकी यह बहुत दिनसे ांग है कि उक्त दफ्तरको खोलकर सामान ी देख भाल की जाय परन्तु इस मांगका भी प्रान्तीय सरकारके ऊपर कोई असर हीं हुआ है।

शिक्षक और शिक्षकाओंकी हड़ताल

लाहौरकी अंजुमन हिमायते इस्लाम के अन्तर्गत शिक्षा संस्थाके लगभग ३०० शिक्षक तथा अन्य कर्मचारियोंने मंहगी भत्ता न दिये जानेके विरोधमें तथा उनके यूनियनको स्वीकार न करनेके कारण हड़ताल कर दी है। अंजुमनके अन्तर्गत कुछ महिला संस्थाएं भी हैं उनकी शिक्षि-काओंने भी हड़ताल कर दी है।

सत्यार्थ प्रकाशको मोमला

लाहौरकी अजुमन खुद्दामुल बलिया ने सत्यार्थ प्रकाशके प्रकाशकके विरुद्ध अदालतमें मामला दायर किया है। इस मुकदमे सत्यार्थ प्रकाशके १४ वें समुल्लास को हटानेकी मांग की गयी है।

सिनेमाके लिये बलिदान

दिल्लीके जुबली सिनेमामें टिकट खरी-दते समय भीड़में दबकर एक १४ वर्षीय बालककी मृत्यु हो गयी। कहते हैं कि टिकटें खरीदकर ऊंचे दामोंमें बेचनेवाले गुण्डोंने टिकट घरकी खिड़कीपर भीड़ लगा रखीथी, लिहाजा बालक टिकट खरी-दनेके प्रयासमें नीचे गिर पड़ा और दब गया।

ांग्रेसका अस्तित्व गरीबोंकेलिये

मद्रासमें मजदूरोंकी विराट सभामें भाषण देते हुए श्रीमती सरोजिनी नायडू इस बातपर जोर दिया कि कांग्रेसका अस्तित्व गरीबोंके लिये है और उन्हींके हितार्थ वह कार्य करती है और गरीब अधिकांश किसान तथा कारखानोंके मजदूर हैं।

ट्रेड यूनियन कांग्रेसके मूल प्रस्ताव के बारेमें श्री नायडूने कहा कि पारस्प-रिक मतभेदको भुलानेका यह आदर्श उसने देशके सामने रखा है। आपने मज-दूरोंको आगाह किया कि कोई व्यक्ति उनसे नाजायज फायदा न उठाने पाये और यह ध्यान रखना चाहिये कि वे मजदूर है चाहे वे हिन्दू हों या मुसलमान भारतीय राष्ट्रका मजदूर एक मजबूत अङ्ग है और सामूहिक मोर्चे द्वारा वे भारतकी स्वाधीनताके लिये प्रमुख मांग लेंगे।

बापूका स्वास्थ्य

सेवाग्रामसे हमारा विशिष्ट प्रतिनिधि सूचित करता है कि महात्मा गांधीके स्वास्थ्यमें अब धीरे-धीरे सुधार हो रहा है। खांसी अब बन्द है। शक्ति बढ़ती जा रही है तथा शारीरिक वजन प्राप्त कर रहे हैं। दिन भर मौन रहते हैं। बापू प्रसन्न दीख पड़ते हैं।

डा० प्रफुल्ल घोषसे भेंट

विश्वमित्र प्रतिनिधिने की

कांग्रेस कार्य समितिके सदस्य डा० प्रफुल्ल घोष जब अहमद नगर दुर्गसे रिहा होकर बम्बई पहुंचे तो 'विश्वमित्र' के प्रतिनिधिको उन्होंने बताया कि अहमद नगर दुर्गमें एक कालेजके विद्यार्थीसे भी अधिक लिखने पढ़नेके बाद वर्किंग कमेटी के सभी सदस्य चर्खा नियन्त्रित रूपसे चलाते हैं।

कांग्रेससे कम्युनिस्टोंको बहिष्कृत करनेमें श्रीमती सरोजिनी नायडू द्वारा कलकत्ता और मद्रासमें दिये भाषणोंपर विश्वमित्र प्रतिनिधिने जब उनको राय प्रकट करनेके लिये कहा तो उन्होंने बताया कि वे गांधीसे मिलनेके पूर्व राजनीतिक समस्याओंपर कोई राय प्रकट नहीं करेंगे। उन्होंने यह भी कहा कि जबतक वे श्री-मती नायडूसे न मिलें तब तक इस प्रश्न का उत्तर देनेमें असमर्थ हैं।

डा० घोषने यह भी बतलाया कि अह-मद नगरमें अंगरेजी तथा विदेशी पत्र पढ़नेको दिये जाते हैं। हिन्दी भाषाका कोई पत्र पढ़ने नहीं दिया जाता।

हमारे प्रतिनिधिके अन्तिम प्रश्न पूछनेपर डा० घोषने बताया कि अहमद नगर दुर्गमें टहलनेके लिये लगभग ५० गज चाड़ा मैदान है जिसके चारो ओर ऊंची दिवालें हैं।

स्वर्गीय बजाजकी पुण्यतिथि

आगामी ११ फरवरीका सेठ जमुना लाल बजाजकी पुण्यतिथि पड़ती है। देश के कोने-कोनेमें उस दिन लोग त्यागवीर बजाजजीकी पुण्यतिथि मनाये इसके लिये कलकत्तेके प्रसिद्ध समाजसे ही श्री वसंत-लाल मुरारका प्रयास कर रहे हैं।

कांग्रेसपर डा० मुकर्जीका रोष

अ० भा० हिन्दू महासभाके अध्यक्ष डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जीने दिल्लीके एक पत्रकार सम्मेलनमें कांग्रेस और मह-सभाके बीच बुनियादी अन्तरके सम्ब-न्धमें बोलते हुए कहा कि हम भारतकी अखण्डताके प्रारम्भिक सिद्धांत नहीं खोते हैं।

श्री भूलाभाई देसाई द्वारा नये कांग्रेस लीग समझौतेके प्रयत्नपर आपने कहा कि कांग्रेस द्वारा हिन्दुओंके अधि-कारोंकी हत्या तथा मुसलमानोंको अधिक प्रतिनिधित्व देनेसे हिन्दू मुसलिम प्रश्नका हल नहीं हो सकता।

सत्यार्थ प्रकाशको रोक हटेगी

नयी दिल्लीमें विश्वस्तसूत्रसे पता चला है कि सिन्ध सरकारने सत्यार्थ प्रकाशके १४ वें समुल्लासपर जो प्रतिबन्ध लगाया है वह पन्द्रह दिनके भीतर उठा लिया जायेगा, आर्य सार्वदेशिक सभाने इस सम्बन्धमें एक कमेटी नियुक्तकी थी जिसे अपने उद्देश्यमें वैधानिक कार्य प्रणालीसे यह सफलता मिली है।

चोर बाजारकी होली

मुसलमान कांग्रेस कार्य कर्ताओंने एक सार्वजनिक सभाका आयोजन किया जिसमें 'चोर बाजार' की निन्दा करनेके उद्देश्यसे उसकी 'होली जलायी गयी। वक्ताओंने अपने अपने भाषणमें वर्तमान गतिरोध मिटानेका आग्रह किया और देशकी खाद्य समस्या हल करनेमें असमर्थ सरकारकी आलोचनाकी।

जेलमें शहीद

बरेली जेलमें इटावा जिलेके कांग्रेसी नजरबन्द श्री बाबू रामका हृदयकी गति रुक जानेसे स्वर्गवास हो गया। वे गत १९४२ से ही नजर बन्द थे। उनका शव बरेलीके कांग्रेस कर्मियोंको दे दिया गया और गंगाजीके तटपर उनका दाह संस्कार किया गया।

डा० अम्बेडकरके विचार बदले

पता चला है कि डाक्टर अम्बेडकर की पुस्तक 'पाकिस्तानपर कुछ विचार' दूसरा संस्करण होने जा रहा है जो शीघ्र ही प्रकाशित होगी।

मालूम हुआ है कि डाक्टर अम्बेडकर-ने अपने रुखमें कुछ रद्दोबदल किया है और सम्भवतः नये संस्करणमें साम्प्रदायिक और धार्मिक विवाद के प्रति नया राज-नीतिक रुख अख्तियार करेंगे। अभीतक वे हिन्दू धर्मपर प्रहार किया करते थे, पर इन्होंने इसपर ठण्डे दिमागसे विचार किया है। काशीमें महामना मदनमोहन मालवीय और डा० भगवान दाससे हार्दिक चर्चा करनेके बाद सम्भवतः डाक्टर साहबने सबसे पुराने धर्मपर अपने विचार कुछ उदार बनाये हैं।

सर्व धर्म सम्मेलन

बम्बईमें ६ से ११ फरवरी तक स धर्म सम्मेलन होने जा रहा है। उस प्रत्येक दिवसका सभापतित्व श्री जय करेंगे और शेष दो दिनों सर सर्वप राधा कृष्णन्। इस सम्मेलनमें भा तके प्रायः सभी धर्मोंके मान्य व्यक्ति योंके शरीक होनेकी आशा है।

बम्बई सरकार न्याय

डा० पट्टाभिको पुस्तक नहीं दी

पता चला है कि हिन्दुस्तान टाइ दिल्लीसे प्रकाशित इण्डिया अनकिवाइ इल्ड (असन्तुष्ट भारत) नामक पुस्तक एक प्रति बम्बई सरकारने डा० पट्टा सितारमैयाको देनेसे इन्कार कर दिया

श्रीजयप्रकाश व डा० लोहि

हाईकोर्टमें पेश होंगे

लाहौर किलेमें नजरबन्द सो लिस्ट नेता श्रीजयप्रकाश नारायण त डा० रायमनोहर लोहियाकी हेबि कार्पसकी दरख्वास्तें लाहौर हाईको जस्टिस मुहम्मद मुनीरने मंजूर कर और सुनाईके लिये ता० ३० जन निश्चित की गयी है। हाईकोर्टके आ नुसार एडवोकेट जेनरलने दोनों व्यक्ति योंको उक्त तारीखपर अदालतमें करनेके लिये कहा गया है।

कलयुगमें सती

खबर मिली है कि सिन्ध और बलू स्तानकी सीमाके एक गांव शीबीमें सिन्धी स्त्री अपने पतिके मृत्युके सती हो गयी। उसने अपने पतिके को अपनी गोदमें रखा और मिट्टीका डालकर आग लगा ली।

राजबन्दी मुक्त हों

केन्द्रीय असेम्बलीके लिये प्रस्ताव

पता चला है कि केन्द्रीय असेम्बली व जट अधिवेशनके लिये प्रेसिडेंटने अ तक आठ प्रस्ताव स्वीकार किये हैं सरदार मंगल सिंहके प्रस्तावमें यह रिस की गयी है कि जो राजनी नेता अदालतोंमें बिना मामला च नजरबन्द रखे गये हैं, उनको किया जाय।

पिपुल्सवारका मोमला

बम्बईसे प्रकाशित होने वाले भार कम्यूनिस्ट पार्टीके साप्ताहिक 'पिपुल्स के सम्पादकपर मि० ए० के० फज हकने जो मानहानिका मामला च है उसकी पेशी गत बृहस्पतिको और सुनवाई ३१ जनवरीके स्थगित हो गया।

रायवादियोंपर मुकदमा

रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टीके प्रमुख कार्यकर्ता श्री सत्य बनर्जी के० एम० रायवापर श्रीविमेलेन्दु सि को अपमानित करने और जबरद पण्डालमें खींचकर ले जाने और रखनेके कारण मुकदमा चल रहा है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

हिन्दुस्तानमें मोटर उद्योगधंधा

लन्दनके न्यूफील्ड संगठनने घोषणा की कि कलकत्ताके बिड़ला ब्रादर्सके साथ हिन्दुस्तान मोटर्स नामसे मोटरके उद्योग धंधेका श्रीगणेश किया है, कण्ट्राक्ट हुआ है, न्यूफील्ड बिड़ला ब्रादर्सको मोटर बनानेमें …नी कल सहायता देंगे और शीघ्र ही मोटर निर्माण विशेषज्ञोंका एक दल भारतके लिये प्रस्थान करेगा। भारतमें बनी पृथक मोटरकारका नाम होगा 'हिन्दुस्तान …ना'।

हैरी होपकिन्स

मार्शल स्टालिन, प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट और मि० चर्चिलके सम्मेलनकी तैयारियां हो रही हैं। प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके व्यक्तिगत प्रतिनिधि इसी सम्बन्धमें मि० चर्चिलसे बातचीत करने लन्दन जा रहे हैं। बहुत सम्भव है कि राष्ट्र सचिव मि० स्टेटीनस भी इस अवसरपर उपस्थित रहें।

बिना शर्त आत्म समर्पण

जापानके प्रधान मन्त्री जेनरल कोइसो ने जापानी पार्लमेण्टमें कहा कि स्थितिकी गम्भीरताका हम सबको, सरकार और जनता, दोनोंको अच्छी तरह सामना करना होगा। वर्तमान युद्ध जीवन अथवा मृत्युका युद्ध है। किन्तु सम्पूर्ण आत्म-समर्पण करनेकी जो बात कही जा रही है उसे दिवास्वप्नसे अधिक मैं नहीं समझता। इस तरहके दिवा-स्वप्नोंपर हंसी आती है।

बेनेसकी सरकार स्वदेश जायेगी

इस बातकी सम्भावना है कि लन्दन स्थित जेकोस्लवाकियन सरकार शीघ्र ही स्वदेश वापस जायेगी। ऐसा समझा जाता है कि सम्पूर्ण सरकारके जानेके पहले जेकोस्लवाक नेता डा० बेनेस जायेंगे। जर्मनोंके चंगुलसे मुक्त होनेवाला प्रथम बड़ा शहर कोसाइस सम्भवतः उस समय तक सरकारका स्थान रहेगा जब तक प्राग मुक्त होगा। यह समझा जाता है कि डा० बेनेस अपनी सरकारमें परिवर्तन करना चाहते हैं ताकि प्रतिरोध आन्दोलनके प्रतिनिधियोंको भी स्थान मिले। यह कहा जाता है कि स्लोवाक नेशनल कौंसिल और प्रतिरोध आन्दोलनकारी फौरन मुक्त प्रदेशमें सरकार स्थापित करना चाहते हैं। रूसके साथ समझौतेके अनुसार मुक्त प्रदेश नवीन सरकारको सौंप दिया जायेगा। सब कार-पेथियन रूमेनियाका शासन बेनेस सरकारके प्रतिनिधि द्वारा होने भी लग गया है।

शाह लियोपोल्ड

खबर है कि बेलजियमके शाहलियोपोल्ड जर्मनोंके बन्दी हैं, डोड्सबर्ग भेजे गये हैं।

मोइने हत्याकाण्ड

मध्य पूर्वस्थित ब्रिटिश रेजिडेण्ट मिनिस्टर लार्ड मोइनेकी केरोमें हत्या करनेवाले दोनों यहूदी युवकोंको प्राणदण्ड दिया गया है। हत्याकारियोंकी कमसिनीका ख्याल करके उनको जीनको जीवनदान देनेकी प्रार्थना सम्राटकी सरकारसे की गयी है।

डा० वालेसकी नयी नियुक्ति

उपराष्ट्रपतित्व अवसर ग्रहण करनेवाले डा० वालेसको वाणिज्य सचिवके पदपर नियुक्त करनेके लिये प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने वर्तमान वाणिज्य सचिव मि० जेसी जोंससे इस्तीफा दे देनेको कहा है। मि० जोन्सको राजदूतोंके रिक्त कितने ही स्थानोंमेंसे किसी एक पर नियुक्त करनेकी प्रेसिडेण्टकी बात माननेसे मि० जोन्सने इनकार कर दिया है। डा० वालेसने मि० जोन्सका फीडाल लोन एडमिनिस्ट्रेटरका स्थान भी ग्रहण करेंगे।

प्रत्येक जापानी युद्धकार्यमें

नयी सैनिक भर्तीकी घोषणाके अनुसार प्रत्येक जापानीको युद्धकार्य करना पड़ेगा। यह घोषणा स्त्रियों और लड़कियोंपर भी लागू है, जिनकी उनकी आयु और स्वास्थ्यके अनुकूल कार्यमें लगाया जायेगा।

फिनलैण्डमें ब्रिटिश खदानें

फिनलैण्डमें जितनी ब्रिटिश खदानें हैं उनको खरीदनेके कण्ट्राक्टपर हस्ताक्षर हो गये हैं। ब्रिटिश और कनाडियन खदानें जितनी हैं उन सबपर अब रूसका अधिकार होगा किन्तु मारेकाने इसकी क्षतिपूर्तिस्वरूप दोनों देशोंकी कम्पनियोंको ४० लाख पौंड देना स्वीकार किया है। यह रकम ६ सालमें अदा की जायेगी।

बर्लिन १०० मील रह गया

जर्मन वैदेशिक संवाद समितिकी रिपोर्ट है कि ब्राण्डेनबर्ग प्रान्तकी सरहदके समीप रूसी लालसेना पहुंच गयी है। बर्लिन इसी प्रान्तका एक नगर है। रूसकी टैंक वाहिनी वेण्टशेन और ड्रीजेनकी ओर बढ़ रही है। ये दोनों स्थान बर्लिनसे १०० मीलपर है। पूर्वी प्रशाको बर्लिनसे मिलानेवाले रेलवे स्टेशन शीडन म्यूलकी ओर भी रूसीसेना अग्रसर हो रही है।

रूससे संधिकी चेष्टा

यूनाइटेड प्रेस आफ इंडियाका लन्दनस्थ संवाददाता कहता है कि सदर मुकाममें हिटलरके साथ विचार परामर्श करनेके बाद, ऐसा समझा जाता है कि, नाजी हाई कमाण्डने रूसी सरकारकी नब्ज टटोलनेके इरादेसे संधि करनेका संकेत प्रकट किया है। इस संकेतके उत्तरमें सरकारी सोवियट पत्र 'प्रवदा' ने कहा है कि संधि संकेतोंके झुकावेमें हम न आयेंगे। हम तो बर्लिन पहुंच कर ही रुकेंगे। कहा जाता है कि नाजी हाई कमाण्ड संधिकी सब शर्तें माननेको तैयार हैं बशर्ते कि लालसेना अपनी अग्रगति बन्द करके, जहां जहां वह पहुंच चुकी है, वहीं रुक जाये।

हिन्दुस्तानका क्या हाल है?

ब्रिटेनकी डचेस आफ एथोल और उनकी 'यूरोपियन स्वतंत्रता संघ' की रूसके सरकारी पत्र 'प्रवदा' में अच्छी खबर ली गयी है। वैदेशिक मामलोंमें 'मान न मान मैं तेरा मेहमान' कहावत चरितार्थ करनेवाली उचेस तथा उनकी लीगकी मिजाज पुर्सी करते हुए 'प्रवदा' का राजनीतिक व्याख्याकार मो० जासलावस्कीने उचेससे पूछा है कि जब एशिया और अफ्रीकाके कोटि कोटि देशवासी मुक्ति और स्वतंत्रताके लिये तरस रहे हैं तब उनकी स्वतंत्रताकी चर्चा न करके यूरोपियन स्वतंत्रताके लिये लीग बनानेकी आवश्यकता क्यों हुई। मो० जासलावस्कीने खास तौरसे डचेस साहबासे पूछा है कि 'हिन्दुस्तानके सम्बन्धमें आपकी रायशरीफ क्या है। सप्ताहमें यह दूसरी बार है जब सोवियट समाचार पत्रने, सोवियट वैदेशिक नीतिकी ब्रिटिश समालोचनासे झुंझलाकर, भारतका सवाल उठाया है।

जापानी सरकारमें परिवर्तन

टोकियोसे यह घोषणाकी गयी है कि प्रधान मन्त्री कोइसो इस बातपर सहमत हैं कि नयी 'सर्व शक्तिशाली पार्टी बनायी जाये जो विजयके लिये राष्ट्रीय योजना बना सके।' इससे ऐसी आशा की जाती है कि जापानी सरकारमें शीघ्र ही कुछ परिवर्तन होंगे। सरकारमें परिवर्तनसे इस बातकी सम्भावना नहीं है कि जापानकी वैदेशिक नीतिमें कोई परिवर्तन होगा। इधर कुछ दिनोंसे, फिलिपाइन्स, बर्मामें मित्र विजयों और जापान पर होनेवाले हवाई हमलोंकी वृद्धिसे कोइसोकी जो कटु समालोचना हो रही है उसे देखते हुए इस बातकी पूरी सम्भावना है कि जेनरल कोइसोको सरकारमें कुछ परिवर्तन करना ही पड़ेगा। यूरोपमें जर्मन सेनाकी असफलताओंसे जापानके नागरिकोंमें भी बेचैनी और व्यग्रता दिखायी पड़ रही है।

सम्पूर्ण जर्मन आबादीकी सैनिक भर्ती

लन्दनसे खबर आयी है कि हिटलर सम्पूर्ण जर्मन आबादीको सेनामें भर्ती करनेका आदेश करेंगे।

लालसेना डानजिगमें घुस गयी

मार्शल स्टालिनने घोषणा की है कि लाल सेना जर्मन रक्षापंक्तिको तोड़ डानजिगमें घुस गयी है। इस घोषणामें यह भी कहा गया है कि पूर्व प्रशाकी जर्मन सेना जर्मनीसे कट गयी है।

३५ लाख रूसी सैनिक लड़ रहे हैं

जर्मन संवाद समितिका कहना है कि ३०० से अधिक सोवियट पैदल डिविजन, २९ आरमर्ड कोर और कई विशाल अश्ववाहिनियां, जिसका अर्थ यह हुआ कि कमसे कम ३५ लाख पैदल सैनिक जर्मनीके खिलाफ पूर्वी मोर्चेमें कारपेथियन्स और बाल्टिकके बीच लड़ रहे हैं। इस संख्याका आधा हिस्सा पूर्व प्रशामें लड़ रहा है।

त्रिराष्ट्र सम्मेलन

क्या फिर ईरानमें होगा ?

...म हुआ है कि ईरानके शाहने अपने ...सचिव द्वारा ब्रिटिश, सोवियट और ...रिकन राजदूतोंको सूचित किया है कि शाह "तीन महान" अर्थात स्टालिन, रूज़वेल्ट और चर्चिलका पुनः तेहरानमें स्वागत करनेको सहर्ष प्रस्तुत हैं। यदि तीनों नेता तेहरानमें ही त्रिराष्ट्र-सम्मेलन करनेको तैयार हों तो उनकी सुविधाके लिये ईरानके तमाम राजप्रासाद खालीकर दिये जायेंगे।

वारसा सरकारके नेता मास्कोमें

वार्सा स्थित पोलिश सरकारके नेता मास्को गये हैं। इस यात्राको बहुत महत्व दिया जा रहा है और ऐसी आशा की जाती है कि सोवियट-पोलिश सम्बन्धमें महत्वपूर्ण उन्नति होगी।

राशविहारी बोसका देहान्त

नागपुरसे प्रकाशित होनेवाले साप्ताहिक पत्र 'इंडिपेण्डेण्ट' में रायटर द्वारा २१ जनवरीको प्रेषित इस आशयका समाचार निकला है : "जापानियोंने टोकियोमें एक ऐसे व्यक्तिकी मृत्युकी घोषणा की है जिसे वे स्वतंत्र भारतकी अस्थायी सरकारका सर्वोच्च सलाहकार बताते हैं। उनका नाम राशविहारी बोस है जो ६० वर्ष पहले बंगालमें पैदा हुए थे और एक आन्दोलनकी प्रसिद्धि जिन्होंने प्राप्त की थी। हिन्दुस्तानके तत्कालीन वायसराय लार्ड हार्डिञ्जपर बम फेंकनेके प्रयत्नसे सम्बन्ध होनेके कारण वे भारत छोड़कर जापान चले गये थे जहां २८ वर्ष तक वे रहे। वे एक जापानी पत्रिकाके सम्पादक थे।

बर्मारोड फिर खुल गया

लार्डसभाके बहसके दौरानमें उपनिवेश सचिव लार्ड क्रेनबोर्नने कहा कि बड़े हर्षका यह समाचार है कि बर्मारोड फिरसे खुल गया है और स्थल मार्गसे चीन अब शेष भूमण्डलसे अब कटा हुआ नहीं है।

जेनरल स्टिलवेल

अमेरिकन युद्ध सचिव मि० स्टिमसनने आज घोषणा की है कि जेनरल स्टिवेल अमेरिकन स्थल सेनाके कमाण्डिंग जेनरल नियुक्त किये गये हैं।

शाहपीटरके आदेशकी अवज्ञा

मार्शल टीटो और डा० सुबेसिकके बीच जो समझौता हुआ है उसे माननेसे इनकार कर यूगोस्लावियाके भगोड़े शाहने लन्दनस्थ अपनी सरकारकी बरखास्तगीका हुक्म जारी कर दिया। डा० सुबेसिकटस सरकारके प्रधानमन्त्री हैं। शाहके हुक्मपर विचार करनेके लिये डा० सुबेसिककी सरकारकी बैठक हुई और निश्चय हुआ कि शाहके हुक्मके अनुसार कार्यवाही करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है।

ब्रिटेनका दैनिक युद्ध व्यय

ब्रिटिश अर्थ सचिव सर जानएण्डर्सनने बताया कि इस समय ब्रिटेनके युद्ध व्ययकी दैनिक औसत प्रायः १ करोड़ ९० लाख पौण्ड है।

हिमलर पूर्वी मोर्चेमें

जर्मन रेडियोने घोषणा की है कि हिमलर और हिटलरके चुनींदा आदमियोंको पूर्णाधिकार देकर पूर्वी मोर्चेपर भेजा गया है।

चीनमें भीषण अग्निकाण्ड

चीन युद्धाञ्चलके अमेरिकन सदर मुकाम स्थित एक आफिस और भण्डार भवन जलकर भस्मसात हो गया है। आग कैसे लगी, इसका पता नहीं चला। दो दिन पहले अमेरिकन दूतावासका नया मकान जलकर नष्ट हो चुका था।

प्रागमें हड़ताल

मास्कोस्थित 'ग्लोब' संवाददाताने ब्राडकास्ट किया है कि जेकोस्लावियाकी राजधानीमें घेरेकी स्थिति है जहां, कहा जाता है कि कारखानोंमें काम करने वालोंने हड़ताल कर दी है।

व्यर्थ प्रयास

लन्दनस्थ भगोड़ी पोलिश सरकारने ब्रिटिश और अमेरिकन सरकारसे अपील की है कि अबसे युद्ध बन्द हो जानेके बाद जबतक पोलैण्डमें साधारण निर्वाचन न हो जाये तबतक पोलैण्डकी शासन-व्यवस्था एक मित्र-राष्ट्रीय बोर्डके हाथमें रहे। वही फौजी और आसामरिक शासन व्यवस्था करे। इस अपीलमें वार्सास्थित अस्थायी पोलिश सरकारकी उपस्थितिका जिक्र तक नहीं है। भगोड़ी सरकार भूल जाती है कि पोलैण्डकी खास राजधानीमें बैठी हुई पोलिश सरकार, जिसे रूसने पोलैण्ड की कानूनी सरकार मान लिया है, दरअसल अब असली पोलिश सरकार है और उसकी जगह अन्य किसीको बैठानेकी चेष्टा करनेका साहस करनेका अर्थ है रूससे झगड़ा मोल लेना। भगोड़ोंके लिये इतना बड़ा मोल लेना ब्रिटेन और अमेरिकाका नहीं है।

—०—

किसी ने असावधानी से बातें कीं...

DRUGS

...और बहुत ज़रूरी दवाइयाँ समुद्र के गर्भ में जा पहुँचीं

कल्पना कीजिए, बंगाल और आसाम में मलेरिया फैल रहा है; हजारों आदमी इस घातक रोग के शिकार हो रहे हैं। लोगों की जान बचाने के लिए टनों दवाइयाँ जल्दी से हिन्दुस्तान भेजने का खास प्रबन्ध किया गया है। मगर वह जहाज़ जो इन्हें ला रहा था टारपीडो से डुबो दिया गया। तीस-चालीस बहादुर जहाज़ी डूब गये। मलेरिया ग्रसित क्षेत्र के हज़ारों स्त्री-पुरुषों पर संकट का पहाड़ टूट पड़ा।

किसी ने असावधानी से बातें कीं

किसी ने, संभवतः किसी माननीय नागरिक ने भूले से ऐसी बात कह दी जिसके आधार पर दुश्मन ने एक पनडुब्बी इस जहाज़ को डुबोने के लिए रवाना कर दी। यह सिर्फ़ एक ज़रा सी बात थी जो असावधानी में मुँह से निकल गई और भुला भी दी गई।

इसी तरह विपत्तियाँ आती हैं।

सिर्फ़ कम बोलने का ही नहीं, बल्कि चुप रहने का निश्चय कर लीजिए। दुश्मन को कोई खबर न लगने दीजिए। चिट्ठियों और टेलीफोन पर बात करने में विशेष सावधानी से काम लीजिए। दुश्मन हमेशा आँख-कान लगाये रहता है। उसके खुफिया ज़रिये रद्दी की टोकरियाँ और टेलीफोनों के तार हैं।

अपने देखे हुए जहाज़ों, हथियार व गोला-बारूद, फ़ौजों की हरकत या फ़ौजी सामान बनाने वाले कारखानों के बारे में कुछ लिखने या बोलने में विशेष सावधानी रखिए। जानें बचाने और आम जरूरत के सामान की सुरक्षित पहुँच के लिए एक शब्द [illegible] से न [illegible] करें।

देखिए कहीं आप तो नहीं चूक रहे

[illegible]तीय युद्ध मोर्चे द्वारा [illegible]

1738 Hindi

ब्रजकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१ए, कम्भू चटर्जी स्ट्रीट, [illegible]

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—६ कलकत्ता फरवरी ५, १९४५, Calcutta, FEB. 5. 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

...के लिये मौसमकी जानकारी

मौसमकी जानकारी युद्धकालमें किसी ...मरिक यन्त्रसे कम महत्व नहीं रखती। ...मेरिकन सेनाएं शत्रु के विरुद्ध प्रभावोत्पा... ढंगसे कार्यवाही करनेके लिये मौसमकी ...जानकारी बहुत आवश्यक समझती है और ...के लिये विश्वके विभिन्न भागोंमें मौसम-रिपोर्ट एकत्र करनेके लिये परीक्षणालय खोले गये हैं। विभिन्न केन्द्रोंसे मौसमकी रिपोर्ट तार द्वारा वाशिंगटन भेजी जाती है, जहां इनसे नकशे तैयार किये जाते हैं तथा मित्रराष्ट्रीय मोर्चोंपर, जो भूमण्डलके सुदूर कोनोंमें स्थित हैं, भेजे जाते हैं। हवाकी अवस्था और गतिकी जांच करनेके लिये संसारमें सबसे ऊंचा परीक्षणालय जापानके फ्यूजी चोमापर है। यह समुद्रकी सतहसे लगभग ढाई मीलकी ऊंचाईपर है। अमेरिकन हवाई सेनाके मौसम विशेषज्ञ गैससे भरा हुआ एक गुब्बारा उड़ाते हैं और उनका सहकारी एक यन्त्रकी सहायतासे गुब्बारेकी दिशा और चालका प्रति मिनिट अवलोकन करता है और हवा सम्बन्धी आवश्यक आंकड़े तैयार करता है। संलग्न चित्रमें एक गुब्बारा उड़ाया जा रहा है।

संसारमें पतियोंकी कमी

सम्भवतः भारतको छोड़कर समस्त संसारमें पतियोंकी कमी हो गयी है। अनुमान लगाया गया है कि ब्रिटेनमें विवाह योग्य अवस्थाकी पांच लड़कियोंमेंसे एक कुमारी रहनेके लिये बाध्य है। यह समस्या समस्त सभ्य संसारके सामने है। यहां तक कि संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामें भी, जहां एक समय पतियोंकी भरमार थी, आजके आंकड़ोंके अनुसार सातमेंसे एक लड़की समस्त जीवन एकाकी रहेगी। अमेरिकाकी यह अवस्था बहुत ही आश्चर्यजनक है। पहलेकी जन गणनासे पता चलता है कि पुरुषोंकी संख्या स्त्रियोंसे सदैव अधिक रही है। इसका एक कारण यह था कि १८२१ से १९४२ तक यूरोपसे प्रवास करनेवालोंके आनेके कारण पुरुषोंकी संख्या अधिक थी। इस बीच ३ करोड़ ९० लाख व्यक्ति अमेरिका आये, जिनमेंसे पुरुषोंकी संख्या बहुत अधिक थी। १९३० में १०० स्त्रियां तथा १०२.९ पुरुष थे। १९४० में स्त्रियों और पुरुषोंकी संख्या बराबर हो गयी है। अमेरिकाके एक वंश विद्याविद्ने अनुसन्धान करके बतलाया है कि यह सम्भावना है कि अमेरिकामें ६० से ८० लाख तक स्त्रियां बराबर पति-हीना रहेंगी। इनमें चिर कुमारिकाएं, परित्यक्ताएं और युवती विधवाएं तीनों होंगी। उसका कहना है कि स्वीडनमें सब देशोंसे कम बच्चे पैदा होते हैं, क्योंकि पुरुष अधिक आयु होनेपर विवाह करते हैं।

प्रेतोंका फोटो लेनेवाला कैमरा

अमेरिकामें एक ऐसे कैमरेका आविष्कार किया गया है, जो अदृश्य वस्तुओंका फोटो खींच सकता है। इसके आविष्कारकका दावा है कि इस यन्त्रके द्वार प्रेतात्माओंके भी फोटो तैयार किये जा सकते हैं। आविष्कारकका कथन है कि बिजलीके अणुओंके द्वारा इस कैमरेसे सेकण्डके दस लाखवें भागमें चित्र तैयार किया जा सकता है।

सबसे प्राचीन व्यवस्था सभा

ब्रिटेनकी पार्लमेंटकी गत ९ शताब्दियोंसे बराबर अपना अस्तित्व कायम रखे हुए विश्वकी प्राचीनतम व्यवस्था सभा होनेका दावा करती है। पार्लमेंटकी बड़ी सभा—हाउस आव लार्ड्स ब्रिटिश साम्राज्यमें न्याय सम्बन्धी मामलोंके लिये सर्वोच्च अदालत समझी जाती है। इसके ८ सौ सदस्य हैं, जो धार्मिक लार्डों, पादड़ियों, और धनतंत्र वादी सरदारों एवं जमींदारोंके वर्गोंसे चुने जाते हैं। १९११ के पार्लमेंटरी एक्टके समय तक कोई बिल तबतक कानून नहीं बन सकता था, जबतक हाउस आव लार्ड्सकी स्वीकृति न प्राप्त हो जाये। किन्तु अब उसमें थोड़ा संशोधन कर दिया गया है, और अब सार्वजनिक कोषसे सम्बन्ध रखनेवाले किसी बिलको, यदि वह कामन सभासे पास हो गया हो, लार्ड सभा अस्वीकार नहीं कर सकती। इंगलैण्डके लार्ड चांसलर इसके अध्यक्ष होते हैं और जब हाउसका कोर्ट किसी अपीलपर विचार करनेके लिये बैठता है तब उसका भी सभापतित्व करते हैं। निम्नचित्रमें लार्ड सभाके एक कमरेका मनोहर चित्र अंकित है। बीचमें पार्लमेंटरी टेबल और गद्दे हैं। उनके पीछे दूरीपर दो सिंहासन सम्राट और सम्राज्ञीके लिये हैं। जबसे कामन सभाका भवन जर्मन हवाई हमलोंके कारण नष्ट हो गया है, तबसे कामन सभाकी बैठक यहीं होती है और लार्ड सभा एक अन्य छोटे कमरेमें अपनी बैठक करती है।

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१५, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, [कलकत्ता] में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित ।

महायुद्धका सिंहावलोकन ।

—०—

'न्यूज क्रानिकल' के मास्को-स्थित [संवा]ददाताने अपने २ फरवरीके तारमें [बर्लि]नकी ओर बढ़नेवाली मार्शल जुकोव-[की] रूसी सेनाकी स्थितिके सम्बन्धमें [लिखा] है कि, "अब जर्मनी फिर युद्धके [मोर्चों]के सम्बन्धमें यह कहना शुरू किया [है] कि उसमें स्थिरता आ गयी है, मानों [यह] उसकी सफलताके फलस्वरूप है। [पर] सच तो यह है कि लाल सेना अपने [अधि]कांश लक्ष्योंको प्राप्त कर चुकी है [और] उन्हें प्राप्त कर चुकनेपर उसे फिरसे [अप]ना गठन करना है, वह ओडर नदी-[की] ढाई सौ मील लम्बी पांतसे अधिक [अच्]छी कोई पांत इस कामके लिये नहीं [पा] सकती थी। अब वह इसी नदीकी [पांत]पर कार्पेथियनसे फ्रैंकफर्टके निकट [तक] अपनी स्थिति दृढ़ बना रही है। [यह] लड़ाई दो तीन भारी काम पूरा करने-[के] लिये हो रही है—बर्लिनके पूर्व ओडर [नदी]पर पहुंचना है, पूर्वी प्रशियासे जर्मनोंका [सफा]या करना है और ओडर नदी-[के] पोमरेनिया प्रान्तपर अधिकार जमाना [है]।" सभी संवाददाता इस बातपर सह-[मत] हैं कि बर्लिनपर अन्तिम धावा [बोल]नेके पहले रूसियोंको कितने ही काम [करने]को हैं। पाल विंटरटनका कहना है [कि], "अपने दलोंको फिरसे गठित करनेके [लि]ये मार्शल जुकोवको अपने सैनिकों-[को] सुसताने के लिये समय देना है। [उन्]हें ढाई सौ मीलसे अधिक दूरीपर [साम]ग्री पोलैंडकी रेलों और सड़कोंके [रा]स्ते ले आना है।" 'डेली टेलीग्राफ' के [सैन्]निक संवाददाता ले० जेनरल मार्टिनने [२] फरवरीको जहां यह कहा है कि, [बर्]लिनकी लड़ाई आरम्भ हो गयी है और [ओ]डर नदीपर लड़ी जा रही है, वहां [य]ह लिखा है—"तब प्रश्न यह है कि [ओ]डर नदीपर क्या होने जा रहा है? [फ्रैं]कफर्ट या कूस्ट्रिन स्थानपर जुकोव [वा]रसासे दो सौ सत्तर मीलकी दूरीपर [हैं], जहांसे उन्होंने मार्च किया था। [इत]नी दूरी उन्होंने १४ जनवरीसे अब-[तक] पार की है। उनके पीछे जर्मन अभी [भी] पोजनान, श्नीडमुहेल और सम्भवतः [अन्]य छोटे केन्द्रोंपर भी अधिकार बनाये [हुए] हैं। यह झाड़का मध्य है। इसलिये [य]ह अनिवार्य-सा है कि ओडर नदीतक [पहुं]चनेवाली अग्रभागकी रूसी सेनाकी [साम]ग्री समाप्त हो गयी होगी। इस तरह [जु]कोवको अपने सैनिकों और सामग्रीका [सिल]सिला ठीक करनेके लिये रुकना पड़ [स]कता है। पर दूसरी ओर यह भी [सं]भव है कि जर्मन सेना इतनी [अस्त]व्यस्त हो गयी हो कि बर्लिनके सामने [को]ई संगठित प्रतिरोध करनेमें समर्थ न [हो]। उस अवस्थामें हो सकता है कि जुकोव [इ]स अवसरसे लाभ उठानेके लिये सीधे [बर्]लिन पहुंचनेका निश्चय करके इसी [सम]य ओडरको लांघ जा सकते हैं। इस तरह इस समय या तो यह हो सकता है कि कई दिनोंके भीतर ही रूसी बर्लिन पहुंच जायें और यदि ओडरपर वे रुक गये, तो यह प्रश्न हफ्तोंका हो सकता है। सब कुछ जर्मन सेनाकी प्रतिरोध शक्तिपर ही निर्भर करता है।"

जिस ओडर नदीपर रूसियोंके विश्रामके लिये कुछ देर ठहरनेकी आशा की जाती है, वहां रूसियोंका पड़ाव रुकने-की अटकल महीनों पहले लगायी जाती थी। यह स्पष्ट नहीं है कि मार्शल जुकोव-की सेना इस नदीपर कहां पहुंच चुकी है, पर जिस कूस्ट्रिनके उत्तर-पश्चिममें वह एक स्थलपर ओडर नदीके किनारे पहुंची बतायी जाती है, वह बर्लिनसे कुल इकतालीस मील ही दूर है। मास्कोकी गैर-सरकारी रिपोर्टोंमें कहा गया है कि रूसी तोपें ओडरके पूर्वी तटकी दिशासे नदीके पश्चिमी तटकी जर्मन बटरियों द्वारा होनेवाली अग्निवर्षाका जवाब दे रही हैं। मालूम हुआ है कि प्रधान जर्मन सेना नायकने जर्मन सैनिकोंसे जोर देकर कहा है कि रूसियोंको आगे बढ़ना ओडर नदीपर रोक देना अत्यावश्यक है और बर्लिनकी लड़ाईके पहले ओडरकी लड़ाई होनी ही चाहिये। 'ग्लोब' के स्टाकहोमके संवाददाताने भी अपने तारमें यह कहा है कि, "मार्शल जुकोवकी सेना ओडर नदीपर शेलगोले और बम गोले बरसा कर जमकर जमे हुए पानीकी बर्फको तोड़ रहे हैं, जिसमें रूसियोंके लिये नदी पार करना सरल न हो। जर्मन फ्रैंकफर्टके सामनेकी अपनी इस रक्षा पांतकी रक्षाके लिये अपनी सारी शक्ति लगाये दे रहे हैं और जर्मन रेडियोने बताया है कि केन्द्रीय रिजर्व सेनासे प्रबद्ध न सैनिक दल बड़ी शीघ्रतासे इस लड़ाईके लिये पहुंचाये गये हैं।" ओडर नदीपर ही मोर्चा जम सकता है और यह नदी ढाई सौ गज चौड़ी है, इसलिये वर्तमान मौसममें उसे पार करना सैनिक दृष्टिसे सरल नहीं है। जिस बर्लिनपर रूसियोंकी खास दृष्टि है और जिसकी रक्षा सर्वस्व होमकर करनेके लिये जर्मन भी तयार बताये जाते हैं, वह गत बुधवारसे खाली किया जा रहा है। एक संवाददाताकी रिपोर्ट है कि, "अच्छा पता रखनेवाले हल्कोंमें यह विश्वास किया जाता है कि जब रूसी बर्लिनके पास पहुंचेंगे, जर्मन राजधानी-को जला देंगे और बहुसंख्यक कट्टर नाजी इस कार्यके करनेमें अपनेको भी भी जला देनेकी प्रतिज्ञा कर रहे हैं।" हिटलरने एक बार फिर अपने भाषणमें जोर देकर कहा है कि जर्मनी कभी आत्मसमर्पण न करेगा और अन्तिम विजय उसीकी होगी। उसने कहा है कि, "इस महान सङ्घर्षमें एक बार फिर विजय एशियाई ऊपरवाले देश रूसको न मिल-कर यूरोपको ही मिलेगी और उसका नेतृत्व एक ऐसे राष्ट्रके हाथमें होगा, जो पन्द्रह सौ वर्षोंसे पूर्वके विरुद्ध यूरोपकी सबसे बलवान् शक्ति रहा है और रहेगा। वह राष्ट्र हमारा वृहत्तर जर्मन राष्ट्र ही है।"

उधर रूसके भीतर अपनी सेनाओं-की विजयसे जैसी प्रसन्नता हो रही है, उसका भी कुछ आभास वहांके समाचारों-से मिलता है। रूसी सेनाके पत्र 'रेड-स्टार' ने स्टेलिनग्राडकी विजयके वार्षि-कोत्सवके अवसरपर लिखा है कि, "हम शत्रुको स्टेलिनग्राडमें बहे हुए रक्त और बरबादीका जवाब देनेको लाचार करेंगे।" यह मार्केकी बात है कि स्टेलिनग्राडमें भी विजय प्राप्त करनेवाले रूसी वीर, यही मार्शल जुकोव हैं, जो अपनी सेनाओंको पन्द्रह सौ मीलकी दूरीमें लाकर ओडर नदीके तटपर पहुंचे हैं और जर्मनीकी राजधानी बर्लिनको प्रधान लक्ष्य बनाये हुए हैं। रूसमें विजय निकट समझी जा रही है और अब रूसी बड़ी दिलचस्पी और आशासे देख रहे हैं कि पश्चिमकी ओरसे क्या कुछ किया जाता है। उधर पश्चिमी युद्ध क्षेत्रपर अमेरिकन सेना फिर सफलताके साथ आक्रमण करने लगी है और सीगफ्रीड पांतमें लड़ाई हो रही है। फील्ड मार्शल माण्टगोमरीके सदरसे 'डेली हेरल्ड' का संवाददाता कहता है कि रूसियोंकी भांति इस युद्ध क्षेत्रपर भी मित्र सेनाएं क्यों नहीं तेजीसे बढ़ पाती हैं? इस प्रश्नका उत्तर वह स्वयं इस तरह देता है—यहां मित्र सेनाएं एक ऐसे जबर्दस्त मोर्चेको तोड़नेमें लग रही हैं, जो संसार-में सबसे मजबूत है। सीगफ्रीडके एक छोटेसे स्थलको तोड़ना भारी रक्तपात-पूर्ण और श्रमका काम है और ऐसे स्थल इस पांतमें हजारों ही हैं। सीगफ्रीड पांतको तोड़नेका अर्थ उसे तोड़कर पार कर जाना नहीं है, क्योंकि यह पांत जैसे मजबूत की गयी है, वैसे ही गहरी भी बनायी गयी है। संवाददाताने यह भी कहा है कि रूसी युद्धक्षेत्रपर जर्मनीके नीचे सुरंगे लगा रखी गयी थी, जिनको नष्ट करनेमें बहुत समय लगानेके बाद ही रूसी सेनाएं तेजीसे आगे बढ़ पायी हैं, लेकिन उनकी तुलना सीगफ्रीड पांत-से इनेगिने टुकड़ोंमें ही की जाने योग्य है।

अब सर्वत्र बड़ी उत्सुकतासे आगेकी घटनाओंकी प्रतीक्षा की जा रही है। किसी क्षण कुछ भी हो जा सकता है, ऐसा सभी सोच रहे हैं। मिस्रकी राजधानी कैरोमें तो ३ फरवरीको जोरोंकी अफवाह फैल गयी थी कि जर्मनों-ने आत्म समर्पण कर दिया और मित्र राष्ट्रोंके साथ युद्ध विरामकी संधिपर उनके हस्ताक्षर भी हो गये। परन्तु जान-कारोंको और खास रूसियोंको भी यह विश्वास नहीं होता कि यदि बर्लिन-का भी पतन हो जाये, तो भी जर्मनीकी लड़ाई समाप्त हो जायेगी। इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं है कि जर्मनीपर रूसियोंका कब्जा हो जायेगा, तो जर्मनों के उत्साहको भारी धक्का पहुंचेगा, किन्तु हिटलरने बैवरियाके पहाड़ोंमें अन्तिम संग्रामके लिये जो तैयारी कर रखी है, उसके विचारसे लड़ाई बर्लिनके बाद भी काफी दिनोंतक चल सकती है। जिस तरह मास्कोके निकट जर्मन सेनाओंके पहुंचनेपर रूसियोंने अपनी राजधानी को उड़ा देनेतककी तैयारी कर ली थी, अब रूसी सेनाओंके बर्लिनके पास पहुंचनेपर जर्मन भी वैसीही तैयारी करते जान पड़ते हैं। इस लिये कोई भविष्य कथन करना भारी दुस्साहसका काम होगा। फिर भी एक बात तो स्पष्ट ही है कि जर्मनी अब एकदम अकेला है और उसके विरुद्ध सारे संसारकी शक्ति लग रही है। साथही यह भी स्पष्ट है कि जैसे उसके पास अपने शत्रुओंके मुकाबलेमें जनबलकी भारी कमी हो सकती है, वैसेही अब लड़ाईके लिये क्षेत्र भी बहुत सीमित हो रह गया है। तब इसके सिवा और समझाही क्या जा सकता है कि हिटलर ऐसी स्थितिको प्राप्त होनेपर भी जो लड़ाई जारी रखने को तुला हुआ और अन्तिम विजयकी आशा किये हुए है, इसका एक मात्र कारण यही है कि वह यह समझ रहा है कि युद्ध जितनाही लम्बा किया जा सकेगा, उसके शत्रुओंमें फूट पैदा होनेका उतना ही अधिक अवसर सामने होगा। ब्रिटेन अमेरिका और रूस भी इस बातको अच्छी तरह समझते हैं, इसीसे तीनों मित्र राष्ट्रोंके नेता सम्भवतः रूसके भीतर ही किसी स्थानपर आपसमें बातचीत करनेमें लगे हुए हैं। तीनों बड़े नेताओं की इस कानफरेन्सका स्थान तथा सभी बातें अभीतक गुप्त रखी गयी हैं, पर जर्मन रेडियोकी यह रिपोर्ट ठीक भी हो सकती है कि यह कानफरेन्स १ फर-वरीसे शुरू हो गयी है। इस कानफरेंसमें मार्शल स्टेलिन, राष्ट्रपति रूजवेल्ट और मि० चर्चिलको सबसे अधिक यही प्रयत्न करना होगा कि आपसके मतभेद मिट जायें, जिससे जर्मनोंकी आशा पूरी न हो सके। मतभेदकी कितनी ही बातें हैं—सच पूछिये तो सभी बातोंमें उनमें मत-भेदही दिखाई पड़ते हैं, केवल अन्तिम लक्ष्य यानी जर्मनीको पूर्णतया पराजित करनेके विषयमेंही अबतक तीनोंमें मतैक्य

...रेकनसैनिक मनिलासे केवल १५ मील दूर

१३ मील दूरस्थ कायल्यूगनपर अधिकार

मित्र टैंक क्याकम्याङ्गमें इरावदीके पार

कैङ्गावमें युद्ध-बर्मा रोडकी एक पहाड़ीपर कब्जा

लुजोन स्थित जनरल मैकार्थरका फौजी सदर मुकाम, ४ फरवरी। अमेरिकि सैनिक फिलिपाइन की राजधानी मनिलासे केवल १५ मील दूर रह गये हैं। प्रथम मोहटरवाही स्थल डिवीजन उत्तर-पूर्वी दिशासे नगरके समक्ष अन्तिम प्रकृतिक रुकावट आगट नदीको पार कर गया है। मित्रसेनाके वम-पार्श्वने अरवला पहाड़से अग्रसर होकर सानजोससे दो मील दक्षिण टुमानापर गोलाबारी की। आठवीं सेनाके हवाई डिवीजनने भीतरी प्रदेश स्थित कायलुगनपर अधिकार कर लिया है। ये सैनिक मनिलाके दक्षिण-पश्चिम वटानगासमें पहले ही उतर गये थे।

आज प्रकाशित पूर्वी एशिया कमांडकी विज्ञप्तिमें ऐलान किया गया है कि मित्र टैंक क्याकम्याङ्ग सेतु मुखपर आध मील चौड़ा इरावदी तटको पार कर गये हैं। ये मित्र सैन्य दस्ते जापानियोंका सफाया करनेमें सहयोग पहुंचा रहे हैं। नदीसे माण्डलेके छोरपर टैंकोंके पहुंचनेके कारण जापानियोंको भारी आघात पहुंचा है। कल दो दिनकी लड़ाईके उपरांत सैनिकोंने बर्मा रोडके पश्चिमी भागमें पूर्ण रूपसे रक्षित एक पहाड़ीपर अधिकार कर लिया। जापानियोंको भारी क्षति उठानी पड़ी। पन्द्रहवें चीनी डिवीजनके गश्ती दस्ते श्वेलीके मिलो अञ्चलमें क्रियाशील दिखायी पड़ रहे हैं। मिटसनके पड़ोसमें पश्चिम तरफ अन्य ब्रिटिश गश्ती दस्ते श्वेलीके दक्षिणी मुहानेके उभय तटपर अग्रसर हो रहे हैं। कङ्गवमें घमासान युद्ध जारी है। हमारे सैनिकोंने पन्द्रहवीं सेनाके मोर्चेपर पर मिन्गूके पश्चिम इरावदीके उत्तरी तटपर साटपांगोनकी रक्षामें संलग्न जापानी गैरीजनको घेर लिया है। इरावदीके पूरब हमारे दक्षिणी सेतुमुखपर दो अन्य जापानी हमले बेकार बना दिये गये। रामरी द्वीपके दक्षिणी छोरसे कुछ दूर सागू-क्यून द्वीपपर मित्र सेनाके सफल प्रत्याक्रमणके फलस्वरूप भारतीय दस्ता बर्मास्थित अराकान तटसे १३० मील दूरतक युद्ध कर रहा है। ए०प्रेस

मालूम पड़ता है। लेकिन जर्मनीने कभी ब्रिटेन और अमेरिकासे और कभी रूससे संधिकी बातचीतके लिये प्रयत्न करके इस विषयमें भी अपने शत्रुओंको फोड़नेका कुछ कम प्रयत्न नहीं किया है, यह दूसरी बात है कि उसमें उसे सफलता नहीं मिल सकी है। इस तरह अगले सप्ताह त्रिराष्ट्र कानफरेन्सके विषयमें ही सर्वत्र चर्चा रहेगी और उसके परिणाम परही युद्धका भविष्य बहुत कुछ निर्भर होना निश्चित है। रूसस भिन्न अन्य युद्ध क्षेत्रोंपर विस्तृत रूपसे विचारने योग्य घटनाएं इस सप्ताहमें नहीं हुई है और सर्वत्र पूर्ववत सफलताके साथ मित्र सेनाओंकी लड़ाई जारी है।

रूसी मांग अस्वीकृत

ब्रिटिश सरकारसे कर्जके लिये

लन्दन, फरवरी। 'सण्डे टाइम्स' का कूटनीतिक संवाददाता एक विश्वसनीय अधिकारीका हवाला देते हुये लिखता है कि रूसी सरकारने करीब ७५ करोड़ स्टर्लिङ्ग मूल्यके विशाल औद्योगिक सामान खरीदनेके लिये लम्बी अवधिके लिये ब्रिटिश कोषको स्वीकृति दी है।

संवाददाता आगे लिखता है कि रूसके युद्ध जर्जरित उद्योगोंको पुनर्गठित करनेके लिये आवश्यक मशीनों, विद्युत-यन्त्रों और अन्य वस्तुओंके आडर इसमें शामिल होंगे। रूसी सरकारने इसके लिये २० वर्षकी अवधिका कर्ज देनेको कहा है। आगे संवाददाता लिखता है कि ब्रिटिश सरकारको रूसियोंका वह अनुरोध बिलकुल अव्यवहारिक प्रतीत हुआ।

संवाददाता लिखता है कि रूसको बहुत कम परिमाणमें सामान देनेका ब्रिटिश सरकारकी ओरसे प्रस्ताव किया गया था। किन्तु रूसियोंने इतने मालको पर्याप्त नहीं समझा। मार्शल स्टालिनके साथ बातचीतके दौरानमें राष्ट्रपति रूजवेल्ट द्वारा इस सिलसिलेमें उधारपट्टेके अपने अधिकारोंका उपयोग किये जानेकी सम्भावना है जो सम्भवतः राष्ट्रपति रूजवेल्टके लिये अच्छा लाभदायक साबित होगा। रायटर

लाखों जर्मन शरणार्थी

बर्लिनकी सड़कोंपर भटक रहे हैं

लन्दन, ४ फरवरी। गत रात्रिको बर्लिनके हमलेमें भाग लेनेवाले एक अमेरिकन सनिकने बताया कि नगरकी सड़कें मुसाफिरोंसे पूर्णरूपसे आच्छादित है। नागरिक शरणार्थियोंको ढोनेवाली बहुसंख्यक गाड़ियां तथा साधारण जनता पैदल चलते दिखायी पड़ती है। एक अन्य संवादके अनुसार तीस लाख शरणार्थी लालसेनाकी अग्रगतिके सामने पश्चिम तरफ भागते हुए बर्लिन पहुंचे हैं। उनके राजधानी पहुंचनेके पूर्व अमेरिकन बमवर्षक विमानोंके झुण्डके झुण्डने नगरके मध्य भागके लक्ष्य क्षेत्रोंपर हमला किया।

राष्ट्रीय झण्डा फहराने पर सजा

मीरपुर खास ३ फरवरी। स्वाधीनता दिवसके अवसर पर जिन चार कांग्रेसजनोंकी गिरफ्तारी हुई थी उनमेंसे तीनको राष्ट्रीय झण्डा फहरानेके कारण दो महीनेके लिये कैदकी सजा दी गयी है। एकको स्वाधीनताका प्रतिज्ञा-पत्र पढ़नेके कारण एक मासकी कैदकी सजा मिली है।

कलकत्तेमें गोलाबारीका अभ्यास

कलकत्ता ४ फरवरी। कलकत्तेमें सोमवार ता० ५ फरवरी १९४५ दिनके ३ बजेसे रातके ८ बजे तक विमानवेधी तोपोंकी गोलाबारीका अभ्यास होगा। इसके लिये जनताको कोई सूचना नहीं दी जायगी। ए० प्रेस

३ ग्रीक विद्रोहियोंको मृत्यु दण्ड

एथेन्स, ४ फरवरी। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है—ग्रीक देशभक्त दलके तीन अन्य प्रमुख युवक समर्थकोंको जो सुरक्षा दलके सदस्य बताये जाते हैं, फौजी सहायता द्वारा भीषण षड़यन्त्र और हत्याके अभियोगमें फांसीकी सजा सुना दी गयी। इनपर यह अभियोग था कि उन्होंने सरकारी ग्रीक सेना तथा मित्र राष्ट्रोंके विरुद्ध अस्त्र ग्रहण किया था। रायटर

१० लाख नागरिक शांघाईसे हटेंगे

न्यूयार्क, ४ फरवरी। अमेरिकन युद्ध सूचना विभागको प्राप्त जापानी समाचार सामतिक संवादमें बताया गया है कि शांघाई म्युनिसिपल सरकार नगरकी खाद्य और ईंधनकी स्थिति तथा हवाई हमलेको दृष्टिगत कर १० लाख नागरिकोंको अन्यत्र स्थानान्तर करनेकी योजना तैयार कर रही है। सरकार मुनाफाखोरोंके विरुद्ध भी मार्शल-ला घोषित करनेकी योजनापर विचार कर रही है। रायटर

ग्रीक सरकारसे समझौतेकी आशा

लन्दन, ४ फरवरी। रायटरका कूटनीतिक संवाददाता सूचित करता है—जिन लोगोंने ग्रीक सरकार और ई० ए० एम० के प्रतिनिधियोंसे मुलाकात की है उनमें आशाका सञ्चार दिखायी पड़ता है। यद्यपि अभी वर्तमान वार्ताओंके फलस्वरूप कोई निश्चित फल नहीं निकला है। तथापि आपसमें पूर्ण समझौता हो भी जाय तो शर्तोंका व्यावहारिक रूप देना अत्यन्त कठिन और कटुतापूर्ण कार्य होगा। रायटर

भारतके प्रति...

नेहरू परिवारके कार्यकी...

न्यूयार्क, ४ फरवरी। कल श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितके ... मानहाट्टनके फशनेबुल वाल्डोर्फ ... रिया होटलमें आयोजित भोजमें ... गिने अतिथि, जिनमें राजनीतिक, ... रिक और औद्योगिक क्षेत्रके ... नेता भी थे, सम्मिलित हुए। ... क्लेयर लुस और मि० हेनरी लुस ... का आयोजन किया था।

भारतीय राष्ट्रीय झण्डाका तिरंगा भोजनके साथ श्रीमती प... जीवन चरित्रका संक्षिप्त परिचय ... मिस लुसाने श्रीमती पण्डित और ... के लिये नेहरू परिवारकी सेवा ... प्रशंसा की। श्रीमती पण्डितने ... हुए ... कि यद्यपि अमेरिकन ... भारतीय स्वाधीनताकी मांगके प्रति ... नुभूति प्रदर्शित करती है फिर भी ... इस विषयको अधिक महत्त्व नहीं ... अगले सप्ताह अमेरिका भरमें ... उद्देश्यसे दौरेपर रवाना होनेके पूर्व ... पण्डित दो सभाओंमें भाषण देंगी ... बोस्टनको रवाना होंगी। रायटर

टेलीफोन ६॥ घंटे तक ...

स्टाकहोम, ४ फरवरी। विश्वस्त ... से विदित हुआ है कि गत रात्रि ... बजेतक ६॥ घण्टेके लगभग बर्लिन ... हेमके बीच टेलीफोन सम्बन्ध ... गया था। रायटर

मशहूर डूर गिरफ्तार

हैदराबाद (सिंध), ३ फरवरी। ... शाह गांवके पास पुलिस वालोंने ... खसखेली नामक एक प्रसिद्ध गुण्डे ... जिसको मार डालनेके लिये सरकारी ... तौरपर १० हजार रु० और २... जमीन पुरस्कारमें देनेकी घोषणा ... गयी थी, पकड़ लिया। उसने पुलिस ... पांच बार गोलियां दागी, पर कोई ... नहीं हुआ। दूसरी खबर यह है कि ... के एक दलने एक ग्रामीणको मार ... सात आदमियोंको घायल किया ... सभी उनका सामान छीनकर ... गये।

विवाहके दिन गोलीसे हत्या

हुबली, ३ फरवरी। बीजापुर ... प्रमुख वकील श्री एस० टी० पाटिल ... एल० ए० की सत्रह वर्षीया कन्या ... बाईकी अत्यन्त दुःखद स्थितिमें ... होनेकी खबर मिली है। कल ... उस लड़कीका शरीर उसके कमरेमें ... ल्वरके आघातसे रक्तरञ्जित प्राणहीन ... स्थामें पाया गया। आजही उसके ... की तिथि निर्धारित थी।

शंल जुकोवकी सेना बर्लिनसे४६मील दूर

स्टरिनके नगरोपांतमें प्रत्येक घरकेलिये युद्ध

वियट सेनाका कस्टर्नबर्गपर अधिकार

मरानियामोर्चेपर उभयपक्षमेंघमासानजारी

मास्को ४ फरवरी। रायटरका संवाददाता लखता कि सरकारी पर घ पित किया गया है कि मार्शल जुकोव बर्लिनसे अब केवल माल दूर रह गये हैं। अनुमान किया जाता है कि वह इस दिशामें १० मील स(हुए हैं। कुस्टरिनके नगरोपान्तमें प्रत्येक घरक लिये घमासान लड़ाई हो रही बाल्टिककी दिशामें सोवियट अग्रगतिके कारण उत्तरी भागके जर्मन बन्दरगाह र्गं और स्टेटिन क्रमशः लक्ष्य क्षेत्रमें पड़ते जा रहे हैं। इसका परिणाम होगा कि जर्मनोंको बहुसंख्यक सेनाएं इस ओर केन्द्रित करनी पड़ेंगी।

आज प्रकाशित जर्मन विज्ञप्तिमें घोषित किया गया है कि सोवियट सेना पोमयामें विस्तृत पमानेपर अग्रसर हो रही है। इस मोर्चेपर पियरिट्जमें घमासान ई हुई। मध्य मोर्चेपर सोवियट तोपखानेको सरगर्मीमें वृद्ध दिखायी पड़ रही है सं इस मोर्चेपर भी शीघ्र ही व्यापक मित्र आक्रमणका अनुमान किया जा ता है।

गत रात्रिकी सोवियट विज्ञप्तिमें कहा है कि फ्रैंकफर्ट के पूरब स्टर्नबर्गपर कार कर लिया गया है। जर्मन योक युद्ध संवददाताके कुस्टरिनके तिमें बताया गया है कि रूसी बर्लिनसे करीब४१ माल पूरब आडर ओं दुर्ग कुस्टरिनमें प्रवेश कर गये कल पूर्वी प्रशा ी लड़ाईमें ६ हजार न मृत्युके घाट उतारे गये। रायटरके र संवाददाताका कहना है कि लाल- बर्लिनपर अभियानके लिये अन्तिम की प्रतीक्षा कर रही है। जर्मन राज- ासे केवल ४० मील दूरस्थ स्थानमें ी सैन्य शक्ति सङ्गठित कर रहे हैं। लिनग्राडपर अन्तिम विजयसे ठीक र्ष और एक दिनके बाद यूरोप पार ी मीलतक अपनी सेनाएं लाकर ट डिप्टी कमाण्डर-इन-चीफ क्रमणकी तैयारी कर रहे हैं। कल प्रशामें रूसी सेनाने तीन सौसे अधिक द प्रदेशोंपर अधिकार कर लिया।

ायाके पुनर्निर्माणपर विचार

न्यूयार्क, ४ फरवरी। एशियाके पुनर्ग ीसमस्याओंपरविचारार्थएककान्फ्रेंस यहां हुई जिसमें भारत, अरबराज्यों, तीन, फारस, चीन, कोरिया, टर्की, ाइन तथा डच ईस्ट इण्डीजके प्रतिधियोंने भाग लिया। अर्थ विशेषज्ञ चन्द्रशेखरने भारतका प्रतिनिधित्व । रायटर

नके औद्योगिकक्षेत्रपरहमला

वाशिङ्गटन, ४ फरवरी। सरकारी र घोषित किया गया है कि मेरि- के हवाई अड्डेसे उड़कर विशालकाय र बमवर्षकोंने जापान स्थित के औद्योगिक क्षेत्रपर आज बमवर्षा रायटर

जर्मनीमें अमेरिकन सेनाकी ५॥ मील प्रगति

सिगफ्रीडपंक्तिकेनिकटजनरलहोजकाप्रतिरोध

हैमर और हार्पेरशीड आदि नगरोंपर अधिकार

अमेरिकन तृतीय सेनाका सदर मुकाम, ४ फरवरी। अमेरिकन तृतीय सेना ३ मील दूरतक अग्रसर होकर एकसमीपवर्ती जंगलमें प्रवेश करगयी है। जर्मनीमें मित्र सेनाकी यह सबसे अधिक विस्तृत प्रगति बतायी जाती है। यह जङ्गल जर्मनीके भीतर साढ़े पांच मील तथा सेण्टविथसे ६॥ मील दक्षिण-पूरब है। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है कि कल शनिवारको अन्य कई जर्मन नगरोंपर मित्रसेनाने अधिकार कर लिया। यद्यपि५६हजार गज दूरतक मित्र सेनाको अग्रसर होनेमें सफलता मिली फिरभी उभयपक्षकी सेनाएं केवल गश्ती कार्यवाहीसे संलग्न रहीं। और प्रमुख सिगफ्रीड पंक्तिके निकट भर्ती स्थानमें युद्धरत जनरल होजकी सेनाको जबर्दस्त प्रतिरोधका मुकाबला करना पड़ रहा है।

आज प्रकाशित मित्र विज्ञप्तिमें घोषित किया गया है कि मोन्सचाऊ अञ्चल स्थित मित्र सेनाएं हैमर, हार्पेरशीडपर अधिकार स्थापित करनेके लिये तीन मील दूरतक जर्मनीमें घुस गयी हैं। सभी केन्द्रों भयङ्कर प्रतिरोध जारी है। मित्र सैनिकोंने घमासान युद्धके उपरांत हार्पेरशीड नगरसे जर्मनोंका सफाया कर दिया है। सरहदी अञ्चलमें सेण्टविथ से ११ मील उत्तर-पूरब हमारी सेनाने लेशेलम तथा मैण्डरफेल्डपर अधिकार कर लिया है। सेण्टविथके दक्षिण-पूरब जबदस्त प्रतिरोध भंगकर वेस्नेलीपर अधिकार कर लिया है। कलकी जर्मन विज्ञप्तिमें बताया गया कि डच और रोएर क्षेत्रोंसे हवाई युद्ध और तोपखानों की सरगर्मीकी खबर मिली है। मोन्सचाऊ इलाकेमें उत्तरी अलसेसके जर्मन मोर्चेके दक्षिणी और उत्तरी पार्श्वोंपर मित्र सेनाका दबाव जारी है।

बर्मामें नयी युद्ध सरकार गठित

लन्दन, ४ फरवरी। जापानी समाचार समितिने घोषित किया है कि वर्तमान सरकारके स्थानमें बर्मामें एक नयी युद्ध सरकार गठित की गयी है। रायटर

युद्धोत्तर प्रश्नपर सर स्टैफर्ड

लन्दन, ४ फरवरी। ब्रिटिश विमान उत्पादक विभागके मन्त्री सर स्टैफर्ड क्रिप्सने भाषण देते हुए कहा कि मुझे विश्वास है कि व्यक्तिगत प्रयासके फलस्वरूप हमारी युद्धोत्तरकालीन कठिनाइयां दूर कर सकनेमें सफलता नहीं मिलेगी। सर स्टेफर्डने आगे कहा कि मैं विश्वास नहीं कर सकता कि युद्धके बाद अचानक क्रांतिकारी परिवर्तनको जनता स्वीकार करेगी या वह स्वयं व्यवहारिक सिद्ध होगा। इस महान परिवर्तनकी सुदृढ़ नींव अवश्य डालनी होगी। रायटर

बाबा राघवदास

दो वर्षके सश्रम कारावासकी सजा

गोरखपुर, ४ फरवरी। गोरखपुर जिला कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व अध्यक्ष और अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य बाबा राघवदासको १६४४ के प्रतिबन्ध और नजरबन्दी आर्डीनेन्स तृतीयकी धारा ३ के अन्तर्गत फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेट मि० जे० ए० पी मणिने दो वर्षकी कड़ी कैदकी सजा दी है। आपको द्वितीय श्रेणीमें रखनेका आदेश हुआ है। मामला यह था कि गत ४ अगस्त १६४२ को बाबा राघवदास अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके बम्बई अधिवेशनमें भाग लेने वरहजसे रवाना हुए। किन्तु आश्रम पर, जहांकि गत १६१० से रहते थे, पुनः वापस नहीं लौटे। युक्तप्रांतीय सरकारने भारत रक्षा विधानकी १२६ वीं धाराके अन्तर्गत उन्हें नजरबन्द करनेका आदेश जारी किया जिससे बचनेके लिये वहगायब हो गये। तदुपरांत यह आदेश जिला मजिस्ट्रेट (गोरखपुर)के पास भेज दिया। आप दो वर्षतक फरार रहनेके बाद गत ४ अगस्त १६४४ को लखनऊ रेलवे स्टेशनपर गिरफ्तार हुए। इनके पूर्व जिला मजिस्ट्रेटने जाब्ता फौजदारी कानूनकी धारा ८७ और ८८ के अन्तर्गत सरकारी गजटमें एक आदेश प्रकाशितकर १४ दिनके भीतर अधिकारियोंके समक्ष हाजिर होनेको कहा, किन्तु वह हाजिर नहीं हुए। ए० प्रेस

दो कांग्रेस कार्यकर्ता रिहा

भागलपुर, ४ फरवरी। सर्वश्री शिवनारायण मिश्र तथा ललन चौधरी सजा पूरी होनेपर भागलपुर कैम्प जेलसे रिहा कर दिये गये। यू० प्रेस

रचनात्मक कार्यक्रम

गुजरातकेछात्रोंकी प्रशंसनीयचेष्टा

सूरत, ४ फरवरी। गुजरातके छात्रोंने महात्मा गांधीके रचनात्मक कार्यक्रमको जोर-शोरसे कार्यान्वितकर देशके छात्रोंमें प्रसिद्धि प्राप्त करनेका निश्चय किया है। ज्ञात हुआ है कि आगामी गर्मीकी छुट्टीमें गुजरात व काठियावाड़ कार्यकर्ता संघके तत्वावधानमें एक छात्र दल प्रांतके भीतरी भागोंमें जाकर उन जगहोंमें वयस्क शिक्षा और निरक्षरता निवारणका प्रचार करेगा जहां प्राइमरी स्कूल नहीं हैं। ये लोग ग्रामीणोंमें सफाई और साक्षरताका प्रचार तथा समाचारपत्र पढ़नेकी प्रवृत्ति और राजनीतिक चेतना पैदा करनेकी चेष्टा करेंगे। छात्र संघ इससम्बन्धमेंसंगठन मन्त्री द्वारा प्रस्तुत विशेष योजनापर विचार कर रहा है। इस योजनाके अनुसार अहमदाबाद भड़ोंच, सूरत, बड़ौदा तथा काठियावाड़में ग्रामोद्धार केन्द्र स्थापित किये जायेंगे।

मनीलाके नगरोपरांतमेंअमेरिकन

लन्दन, ४ फरवरी। न्यूयार्क रेडियोने आज घोषित किया कि अमेरिकन सैनिक फिलिपाइनकी राजधानी मनिलाके नगरोपांतमें पहुंच गये हैं। रायटर

दुण्डलामें स्वाधीनता दिवस

दुण्डला (आगरा), ३ फरवरी (देरसे प्राप्त)। विगत स्वाधीनता दिवसके अवसरपर स्थानीय सभी दूकानोंपर राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया। तिरंगा झण्डा बिक्री किया गया जिसको नागरिक अपने कपड़ेपर लगाये हुये हुए दिखायी पड़ते थे।

धुरी देशोंके निरस्त्रीकरणकी मांग

न्यूयार्क, ४ फरवरी। अमेरिकन सीनेटके दो तिहाईसे भी अधिक सिनेटरोंने 'न्यूयार्क टाइम्स' में प्रकाशित एक पत्रके उत्तरमें बताया है कि वे प्रमुख मित्रराष्ट्रोंके बीच जर्मनी और जापानको स्थायी तौरपर शस्त्रहीन रखने सम्बन्धी संधिकी शर्तें लागू करनेकासमर्थन करेंगे।

...का भावी संकट

रूस, ब्रिटेन और अमरीकाको चेतावनी

लन्दन, ३ फरवरी। लिबरल पार्टी सम्मेलनमें भाषण देते हुए पार्टीके नेता तथा हवाई विभागके मंत्री सर आर्किवाल्ड सिक्लेयरने चेतावनी दी कि यदि बड़े राष्ट्रोंमें फूट हो जायेगी तो दूसरा विश्वव्यापी युद्ध निश्चित है।

यदि ब्रिटेन, रूस और अमरीका एक दूसरेको समझने, विश्वास करने तथा मिलकर काम करनेकी चेष्टा करें तभी बड़े युद्धकी सम्भावना हट सकती है। किसी विशेष समस्याको हल करनेके लिये अपनी सहानुभूतिकी भावनाओंके आवेशमें हमें इस महत्वपूर्ण बातको नहीं भूल जाना चाहिये। युद्धके बाद विश्वशांति और सुरक्षाकी बुनियाद डालनेका पूरा दायित्व इन तीन बड़े राष्ट्रोंपर है, जो कि मानव समाजके पंच हैं, यद्यपि सभी राष्ट्रोंको उसमें भाग लेना चाहिये।

सर आर्किवाल्डने और कहा कि पहला कार्य अटलांटिक चार्टरके सिद्धान्तोंके अनुसार नयी विश्वव्यवस्थाका निर्माण तथा डम्बार्टन ओक्समें सम्पन्न शान्ति सम्मेलनमें विचारित योजनानुसार विश्व संगठनका उत्पत्ति करना है। रायटर

युवक कार्यकर्ता ४ वर्ष बाद मुक्त

इलाहाबाद, ४ फरवरी। इलाहाबाद युवक संघके एक प्रमुख कार्यकर्ता मि० अवसार अहमद ४ वर्षकी नजरबन्दीके बाद परतापगढ़ जेलसे मुक्त किये गये। परतापगढ़ जेलमें आनेके पूर्व मि० अहमद देवली कैम्पमें नजरबन्द थे। यू० प्रेस

लाहौरके छात्रोंकी मांगें

लाहौर, ३ फरवरी। लाहौर छात्र यूनियनकी जो कानफरेंस डा० जेड०ए० अहमदकी अध्यक्षतामें हुई उसमें प्रस्तावों द्वारा कांग्रेस कार्य समितिके सदस्योंकी अविलम्ब मुक्ति, महात्मा गांधीके नेतृत्वमें विश्वास तथा महात्माजीकी एकता तथा वधानिक जिचको दूर करनेके सम्बन्धके कार्योंकी प्रशंसा की गयी। अगस्तवाले प्रस्तावके सम्बन्धमें महात्मा गांधीने जो स्पष्टीकरण किया तथा राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना सम्बन्धी जो रुख दिखलाया उसका समर्थन छात्रोंने किया, और यह विचार प्रकट किया कि केवल राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनासे ही भारतीय जनता फासिज्म विरोधी युद्धमें पूर्ण सहयोग दे सकती है।

अपने भाषणमें डा० अहमदने कहा कि छात्रोंको नेताओंकी मुक्ति, कांग्रेस-लीग एकता तथा विश्वके छात्रों एकताके लिये अनवरत संघर्ष करते रहना चाहिये। यू० प्रेस

पंजाबमें रेशनिंग

प्रान्तीय सरकारको आपत्ति

लाहौर, ३ फरवरी। पत्र प्रतिनिधियोंको सरदार बलदेवसिंहने बताया कि दिल्लीमें अभी हालमें जो खाद्य सम्बन्धी कानफरेन्स हुई उसमें मैंने कहा कि पंजाब सरकारको प्रान्तमें रेशनिंगपर आपत्ति है क्योंकि हमारा ख्याल कि पंजाब जैसे प्रान्तमें नियन्त्रित खाद्य वितरणकी व्यवस्था अनावश्यक है, यद्यपि केन्द्रीय सरकारकी देशव्यापी नीतिको मानना भी मैंने स्वीकार कर लिया है।

यह भी बतलाया गया कि आगामी मार्च मासमें शिमलामें रेशनिंग लागू कर दी जायेगी। यू० प्रेस

लाशके साथ २०००) के जेवर और नकद

सड़कपर हिन्दू पुरुषकी लाश पायी गयी

भागलपुर, २ फरवरी। एक लाशके साथ जो कि सम्भवतः किसी हिन्दू पुरुषकी है, २०००) की लागतके सोनेके जेवर तथा नकदी पाया गया है। यह लाश मुफस्सिल कोतवालीके अन्तर्गत वैजानी गांवके पास भागलपुर-दुमका-रोडपर पायी गयी है। लाशकी जांच करनेके लिये उसे सदर अस्पताल लाया गया है। यू० प्रेस

मजदूर कार्यकर्ताओंको कड़ीसजा

धनबाद, फरवरी। कोयलेकी खानोंके मजदूरोंकी यूनियनके सेक्रेटरी श्री चित्तरंजन मुकर्जी तथा २ अन्य व्यक्तियोंको एक-एक वर्षकी कड़ी कैदकी सजा दी गयी है। उनपर यह आरोप लगाया गया था कि वे मजदूरोंको एक खानमें काम करनेसे रोक रहे थे तथा उन्हें उत्तेजित कर रहे थे जिससे युद्ध सामग्रीके उत्पादनार्थ आवश्यक पदार्थकी सप्लाईमें बाधा दी गयी।

यह मामला उस हड़तालके परिणामस्वरूप उत्पन्न हुआ जो कि एक खानके मजदूरोंको बोनस, बीमारीको मजदूरी तथा अन्य सुविधाओंकी मांगके प्रति प्रबन्धकोंकी उदासीनताकी परिणामस्वरूप हुई थी। लगभग १२ व्यक्ति गिरफ्तार किये गये थे जनमें उपर्युक्त ३ दंडित व्यक्ति तथा आशुतोष बर्मनपर मुकदमा चलाया गया था। बादमें बर्मन को छोड़ दिया गया।

मामलेपर विचार करने वाले मजिस्ट्रेटने यह विचार प्रकट किया कि खान के प्रबन्धकर्ता मजदूरोंको सुविधाएं प्रदान कर रहे थे और चूंकि अभियुक्त बंगाल से आये इस लिये इस प्रश्नपर उन्हें हस्तक्षेप करनेका कोई अधिकार नहीं है। ए० प्रेस

यूनानमें भारतीय सेना

केन्द्रीय असेम्बलीमें कामरोको प्रस्ताव

नयी दिल्ली, ४ फरवरी। केन्द्रीय असेम्बलीके आगामी बजट अधिवेशनमें ३ कामरोको प्रस्तावोंकी सूचना श्री के० एम० गुप्तने दी है। एक प्रस्ताव द्वारा यूनानमें ई० एल० ए० एम० दलों द्वारा छेड़े गये स्वतंत्रता आन्दोलनको दबानेमें भारतीय सेनाके प्रयोगको रोक न सकनेकी सरकारकी असफलतापर बहस करने की मांग की गयी है।

दूसरा प्रस्ताव फौजी यानायातके कारण विशेषतया कलकत्तेमें लारी दुर्घटनाओंको रोक न सकनेकी सरकारकी असफलता है तथा तीसरा प्रस्ताव विभिन्न प्रान्तोंके और विशेषतया बंगाल प्रान्तके बांकुड़ा जिलेके बुनकरोंको पर्याप्त सूत न दे सकनेकी असफलतापर विचार करनेकी मांग है। यू० प्रेस

गर्मीमें गांधीजी कहां रहेंगे?

वर्धा २६ फरवरी। विश्वस्तसूत्रसे पता चला है कि गर्मीके मौसममें गांधीजीको किसी ठण्डी जगह जाना पड़ेगा क्योंकि वर्धाकी गर्मी वे बर्दास्त नहीं कर सकेंगे। शायद महात्मा गांधी पंचगनी जायेंगे। लेकिन कहा जाता है कि महात्मा गांधी सेवाग्राममें ही रहना पसन्द करेंगे और उनकी कुटियाको ठण्डा रखने व्यवस्था की जायगी।

सर अकबर हैदरी लन्दनमें

लन्दन, ३ फरवरी। भारत सरकार की सप्लाई कौंसिलके पूर्वीय भागके प्रतिनिधि सर अकबर हैदरी विमान द्वारा लन्दन आ गये। आप यहां एक ऐसे मिशनके नेताकी हैसियतसे आये हैं जो यहांसे भारतको कोयलेकी खानोंकी मशीनें, पैराफीन तथा अन्य सामग्रीकी व्यवस्था करने आया है। रा०

बुन्देलखण्ड पत्रकार सम्मेलन

झांसी: डाक से। बुन्देलखण्ड प्रांतीय पत्रकार सम्मेलनके अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए डा० राम विलास शर्माने कहा—"यद्यपि इधर ५० वर्षोंमें भारतीय पत्रोंकी स्थितिमें बहुत कुछ सुधार हुआ है तथा आर्थिक दृष्टिसे पत्रोंके मासिक भी घाटेमें नहीं चल रहे हैं, किन्तु अभी पत्रकारोंकी आर्थिक अवस्थामें सुधारकी ओर संचालकोंका ध्यान नहीं गया है। पत्रके रीढ़ पत्रकार हैं इसलिये जबतक पत्रकारोंका स्तर ऊंचा नहीं उठेगा, तब तक पत्रोंका स्टेण्डर्ड भी ऊंचा नहीं उठ सकता।"

सिंध मंत्रिमण्ड...

बजट अधिवेशनमें परिव...

कराची, ३ फरवरी। सिंध [illegible] प्रान्तीय असेम्बलीका बजट [illegible] आगामी २१ फरवरीसे आरम्भ [illegible] घोषणा की है। कार्यक्रमसे यह [illegible] जाती है कि अधिवेशन आगामी मासके मध्यतक चलता रहेगा और सरकारी कार्योंके लिये तारीख नि[illegible] नहीं की गयी है।

विभिन्न मंजूरियोंपर वोटिंग ६ मार्चतक लेनेका समय निर्धारित गया है। प्रायः इसी कालमें सिंध मण्डलोंमें परिवर्तन होता रहा है इस अवसरकी तयारीमें प्रधानमंत्री गुलाम हसेन हिदायतुल्लाके मि० ग[illegible] इस्तीफेसे रिक्त स्थानकी पूर्तिके किसी व्यक्तिका चुनाव करनेकी है। शीघ्र ही लीग पार्लमेंटरी बैठक करनेकी तैयारी भी सर कर रहे हैं ताकि अधिवेशनके पूर्व चित निश्चय कर लिये जायें।

पत्र प्रतिनिधियोंसे सर गुलाम ने कहा कि बजट सरप्लस है और वर्षमें नये टेक्स नहीं लगेंगे। वर्षमें सिंध प्रान्तकी आर्थिक दशाके षजनक होनेका विश्वास प्रधान को है।

आपने यह आशा प्रकट की सुदृढ़ मंत्रिमण्डल गठित करनेमें उनकी सहायता करेगी जो कि [illegible] पाकर जनता तथा प्रान्तके हितार्थ कर सके।

कराची, ३ फरवरी। मि० मुहम्मद ईसाने, जिन्हें अ० भा० [illegible] उच्चाधिकारियोंकी ओरसे सिंधकी नीतिक समस्याको हल करनेके लिये गया है, लीगमें मतभेदको दूर क[illegible] लिये प्रधानमंत्री सर गुलाम हुसेन प्रान्तीय मुस्लिम लीगके अध्यक्ष जी० एम० सईदको मिलानेकी चेष्टा और दोनोंको एक साथ लेकर करनेकी योजना की। मि० सईद गुलाम हुसेनकी उपस्थितिमें मि० मिलना स्वीकार नहीं किया यद्यपि अकेले मिलनेकी तत्परता दि[illegible] है। ए० प्रेस

प्राणदानके लिये अपील

इलाहाबाद, २ फरवरी। श्रीम[illegible] आर० जुत्शीने वायसरायको एक भेजकर अस्टी और चिमूरके ७ नवयुवकोंको प्राणदान देनेकी की है। अ० भा० हिन्दू मुस्लिम [illegible] सम्मेलनके सभापति स्वामी कमल[illegible] यण मालवीयने वायसरायको प्रा[illegible] लिये तार भेजा है कि इलाह[illegible] जनताकी जोरदार मांग है कि इन नवयुवकोंको अवश्य प्राणदान दि[illegible]

र हित बस जिनके मनमाहीं।
न कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

वांछनीय व असह्य !

आज जब ब्रिटिश प्रधान मन्त्री युद्ध विजयी होने और उसके बाद मानव-धीनताकी रक्षा करते हुए संसारमें न्ति स्थापित करनेके लिये एक कदम रिकामें और दूसरा सोवियट रूसमें हुए हैं, यह आश्चर्य ही मालूम होता कि उनकी छत्र-छायामें १५० वर्षोंसे ने वाले भारतमें लोगोंको इतनी भी जादी नहीं दी जाती कि वे खुले नमें सार्वजनिक स्थानोंपर एकत्र र यह संकल्प करें कि हम अपनी य स्वाधीनता सभी वध और शांति-उपायोंसे प्राप्त करेंगे। गत २६ वरीकी सभाओंपर विभिन्न प्रांतीय कारोंके आदेशानुसार लगाये गये बन्धोंको इसके सिवा और क्या जा सकता है? मि० चर्चिल और के सहकारी ब्रिटिश राजनेता जिस नी राष्ट्रीय स्वाधीनताकी रक्षाके विश्वमें भयंकर दावाग्नि प्रज्वलित सकते हैं, भारत जैसे पराधीन देश निवासी उस राष्ट्रीय स्वाधीनताको करनेके लिये सत्य और अहिंसाकी दा रखते हुए उसके अनुकूल वैध यों से अपनी आजादी हासिल करने ण भी जोरसे नहीं कर सकते, यह ी विधि-विडम्बना है।

इधर जबसे महात्मा गांधी नजर-की अवस्थासे मुक्त हुए हैं, उन्होंने पत्र-व्यवहारों एवं वक्तव्योंसे स्पष्ट दिया है कि अगस्त प्रस्ताव ारतकी मांग स्वीकार न करनेपर नके साथ क्रियात्मक संघर्ष करनेके जो अधिकार मुझे दिय गया था, वह अधिकार अब जाता रहा। ४२ से ४४ की (और अब ४५ की) अवस्था बहुत बदल गयी है। इस अब भद्रअवज्ञा आन्दोलन किसी रूपमें छेड़नेका कोई सवाल ही नहीं ा है। कहनेका तात्पर्य यह है कि सके कर्णधार इस समयकी सामा-क, आर्थिक और राजनीतिक दुरव-देखकर संघर्षकी नहीं, समझौतेकी ामें दत्तचित्त हैं और वे चाहते हैं कि ब्रिटिश राजनेता और उनके भारत त प्रतिनिधि यदि विवेक और न्यायसे लेते हुए भारतके साथ समझौता नेको उद्यत हों तो वे 'महात्माजी' उनसे मिलानेके लिये तयार हैं। लेकिन न शर्त यह कि समझौता भले-मानसों जैसा होना चाहिये; किसीको लांछित और अपमानित कर नहीं। इसी के लिये श्री राजगोपालाचार्यका साम्प्रदायिक एकता सम्बन्धी प्रयास और सर तेज बहादुर सप्रूकी समझौता समितिका प्रयत्न जारी है। श्री भूलाभाई देसाई भी लार्ड वावेलके कलकत्ते वाले भाषणसे प्रभावित होकर उनसे वार्तालाप करते हुए देखे जाते हैं। देश और विदेशोंमें भारतको स्वतन्त्र बना देनेके लिये जोरशोरसे मांग की जा रही । अमेरिकन जनताके न्यायशील प्रतिनिधि इमैनुएल सेलर कह रहे हैं कि "भारतमें युद्ध प्रयास को बाधा पहुंचाने वाला वास्तविक कारण भारतको ब्रिटेनके घेरेमें रखना है। भारतीय कांग्रेसके नेता और हजारों सदस्य बिना मामला चलाये दो से अधिक वर्षों से जेलमें नजरबन्द रखे गये हैं। वास्तव में यह जन-स्वाधीनताको अभियोग पूर्ण ढंगसे अस्वीकार करना है।"

जहां भारत और विदेशोंमें ऐसा वातावरण उपस्थित है, वहां बिहार सरकारने हालमें जो अनुचित और अवांछनीय आदेश जारी कर बिहारके ५ प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं सर्वश्री श्री कृष्णसिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, प्रो० अब्दुलबारी, मुरलीमनोहरप्रसाद एवं प्रजापति मिश्रको उनके गांवोंमें नजरबंद कर दिया है, उससे सारा बिहार प्रांत ही देशके तमाम न्याय प्रिय व्यक्ति मर्माहत हो उठे हैं। सरकारने अपने आदेशको जारी करते हुए जो वक्तव्य प्रकाशित कराया है, उसमें यह अभियोग लगाया गया है कि अगस्त प्रस्तावका समर्थन किया गया है। अगस्त प्रस्तावका भद्र अवज्ञा आन्दोलनवाला निकाल देनेपर उसमें कौन ऐसी बात रह जाती है जो नाकरशाहीके कान खड़ा कर देती है। उसमें तो सभी बातें ब्रिटेनके पक्षकी हैं। प्रस्तावमें साफ शब्दोंमें फासिस्टवाद और भारतमें होनेवाले किसी भी जापानी आक्रमणका मुकाबला करनेकी बात लिखी ग है। इसमें शर्तोंके साथ युद्ध प्रयास सहायता देनेक बात भी कही गयी है यदि मंजूर कर ली जायें। इसके अलावा इस प्रस्तावपर तो अन्य प्रान्तोंमें पहले ही आस्था प्रकट की जा चुकी है, लेकिन किसी अन्य प्रान्तकी सरकारको ऐसी कार्यवाही करनेकी आवश्यकता नहीं महसूस हुई।

वर्तमान युद्धको हम लोक युद्ध कैसे कह सकते हैं, जब हम देखते हैं कि हमारी दीनावस्थाको इसके द्वारा सुधारनेकी कोई भी चेष्टा नहीं करता। जिस अटलांटिक चार्टरका जनाजा युद्ध समाप्त होनेके पहले ही उन्हीं सज्जनों द्वारा निकाल दिया गया जिन्होंने उसकी सृष्टि की थी, उसकी सुविधाओंसे भी तो मि० चर्चिलने पहले ही भारतको वंचित कर दिया था। हम युद्धसे तटस्थ हैं सही, लेकिन कभी हमने कोई ऐसी बात नहीं कही जो इसमें बाधा पहुंचा सके। इसका कारण यह है कि भले ही वह हमारे लिये लाभकर नहीं है, लेकिन लड़ा तो जा रहा है फासिस्टवादका नामोनिशान मिटानेके लिये। हम इस युद्धके सूत्रधार देशोंके बहुत पहलेसे फासिस्टवादके कट्टर विरोधी हैं और अपनी सहानुभूति पीड़ित अबीसीनिया, स्पेन, चीन, आदिके साथ बहुत पहले प्रकट चुके हैं। वर्तमान साम्राज्यवादी युद्धसे हमारे तटस्थ रहनेका अर्थ अगर यह अनोखा सिद्धान्त लगा लिया जाये कि 'जो हमारे साथ नहीं हैं, वे हमारे विरोधी हैं' तब तो यह टीकाकार की सूझकी खूबी ही कही जायेगी, लेकिन साधारण अर्थ इसका बिलकुल साफ है और वह यह है कि अगर हमारा सहयोग चाहते हो तो पहले घरमें दीपक जलाओ। यह कहांका न्याय कि दुनियाको आजादी दिलानेका ठेका लेते फिरो और अपने साम्राज्यके देशोंमें इतनी भी स्वाधीनता न दो कि लोग अपनी आजादीकी आवाज उठा सकें। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि भारतने अपना एक मात्र कर्तव्य और धर्म स्वाधीनताकी प्राप्ति बना रखा है और उसी दृष्टिकोणसे वह सारी सृष्टिको देखना चाहता है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने बिलकुल ठीक कहा है कि 'आपने बहुत दिन तक अश्वेतोंका भार वहन किया। ईश्वरके नामपर उस बोझ को पटक दीजिये और हमें स्वतंत्र वातावरणमें सांस लेने दीजिये।'

महात्मा गांधीके १४ रचनात्मक प्रोग्रामका ध्येय देशकी जनताकी आर्थिक और सामाजिक अवस्थाको उन्नत करके उसमें अपनी वास्तविक स्थितिको पहचाननेकी माद्दा पैदा करना है। ऐसे दूषण-रहित लोक हितकारी कार्यके प्रसारमें तो सरकारको पूर्ण रूपसे सहायता करनी चाहिये न कि उल्टा अडङ्गा लगाना चाहिये। बिहार इस समय विशेष रूपसे संकट-ग्रस्त और त्रस्त है और उसकी सहायता अगर सरकार स्वयं नहीं कर रही है तो उसे उन लोगोंको सहायता तो देनी ही चाहिये थी जो उसकी अवस्थाको सुधारनेकी चेष्टा कर रहे हैं। बिहार सरकारका प्रस्तुत आदेश ठीक इसके विपरीत है और इसलिये बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके प्रधान मन्त्री तथा केन्द्रीय असेम्बलीके व्यवस्थापक श्री सत्यनारायण सिंहको इस आदेशपर कुछ आश्चर्य हुआ है तो वह बिलकुल स्वाभाविक है। उनका यह कहना उचित है कि जिस सभाकी कार्यवाहीपर आपत्ति करते हुए बिहार गवनरने अपनी निषेधाज्ञा जारी की है, उसमें प्रान्तके विभिन्न भागोंसे ५ सौके लगभग कार्यकर्ता एकत्र थे और सबने सर्व सम्मतिसे जो ... किया, उसके लिये केवल पांच ही आ... को जिम्मेदार चुनकर क्यों उन्हें दण्डित किया जा रहा है। शायद इसलिये कि इन्हीं पांचों सज्जनोंकी परामर्श समिति बनी है। लेकिन उन्होंने यह बात भी स्पष्ट कर दी है कि इस समितिको और २५ या ३० सदस्योंको कोआप्ट करनेका अधिकार दिया गया था और अगर यह आदेश जारी नहीं किया गया होता, तो फरवरीके प्रथम सप्ताहसे प्रान्त व्यापी रचनात्मक कार्य आरम्भ कर दिया गया होता। इस समितिको दैनिक राजनीतिसे कोई मतलब नहीं है। उसके सबूतमें उन्होंने बताया है कि गत २० जनवरीको मैंने स्वाधीनता दिवस मनानेके सम्बन्धमें इस समितिका मत जानना चाहा था, लेकिन उसने साफ कह दिया था कि इस सम्बन्धमें हमें कुछ कहनेका अधिकार नहीं है। इस लिये मैंने कांग्रेस सेक्रेटरीके नाते अपने व्यक्तिगत निर्णय से उस दिनका प्रोग्राम घोषित किया था।

श्री सिंहके उपर्युक्त वक्तव्यके प्रकाशमें बिहार गवर्नरका वर्तमान आदेश, जिसने प्रांतके ५ प्रभावशाली नेताओंको जनताका दुख दूर करनेके प्रयाससे वंचित कर दिया है, बिलकुल अवांछनीय, असामयिक और इस लिये असह्य मालूम होता है। बुद्धिमानी समयके साथ चलने में समझी जाती है। १९४२ की देशव्यापी अशांतियोंका सूत्रपात अधिकारियोंके ऐसेही उत्तेजक कार्यों द्वारा हुआ, जिसकी जिम्मेदारी उन्होंने स्वयं अपने शिरपर न लेकर कांग्रेसके मत्थे मढ़ा था। हम तो समझते थे कि उस समयके दिल दहलानेवाले काण्डोंसे हमारे शासक सबक सीखेंगे। लेकिन बिहार सरकारकी मौजूदा कार्यवाही हमारी आशापर पानी फेर रही है। क्या हम आशा करें कि गवर्नर अपनी इस कार्यवाहीपर पुनः विचार करेंगे?

आखिर फाटक खुला—

पाठक जानते हैं कि श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित इस समय अमेरिकामें हैं, और भारतकी वास्तविक स्थितिपर अनेक सार्वजनिक सभाओंमें विस्तृत प्रकाश डाल कर साम्राज्यवादी किरायेके प्रचारकोंके गर्हित प्रयासका अमेरिकन जनताके सामने खूब छीछा लेदर की है और करती जाती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि आपका अमेरिकन जनताने जिस शानदार ढंगसे स्वागत किया है, वह भारत जैसे पराधीन देशके लिये कम गर्वकी चीज नहीं है। श्रीमती पण्डित भारत सरकारकी नहीं, भारतीय जनताकी प्रतिनिधि हैं, इस लिये अमेरिकाके सरकारी भवनमें आपका स्वागत-सत्कार करना अमेरिकन सरकारको-ब्रिटिश सरकारके दाहिने हाथ प्रेसीडेंट रूज-

नाजी यूरोपपर हमला

जहाजों अड्डों व कारखानोंको क्षति

लन्दन, ३ फरवरी। सरकारी तौरपर ऐलान किया गया है कि हालैंडके पामलुईके निकटस्थ पोर्टसेवेनके जापानी अड्डों और इजमूदेनके सबमेरिन अड्डोंपर शाही बमबाजोंने शनिवारके तीसरे पहर प्रचण्ड बमबाजी की।

शाही बमबाजोंने हालैंडके मौसममें सुधार होनेके कारण रॉकेट अड्डोंपर आज पुनः आक्रमण आरम्भ किया और जर्मन 'वी' अस्त्रको ईंधन पहुंचाने वाले एक आक्सीजन कारखानेको अपना प्रधान लक्ष्य बनाया। नगरके पड़ोसमें आक्सीजनका कारखाना था जो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हुआ। शाही हवाई सेना विभागने ऐलान किया है कि कारखानेपर बमोंके ८ सीधे आघात लगे। सभी शाही विमान सकुशल लौट आये।

शाही विमान वाहिनीके बमबाजोंने शुक्रवारकी रातमें नार्वेजियन समुद्री तट पर पोरविक बन्दरगाहके निकट लंगर डाले हुये ६ शत्रु व्यापारिक जहाजोंपर बमबाजी की। इसका परिणाम नहीं देखा जा सका।

अमेरिकन हवाई सेनाके सदर मुकाम से ऐलान किया गया है कि जर्मनीपर आक्रमण करनेके दौरानमें अमेरिकन बमबाजोंने पांच नाजी लड़ाकू विमानोंको मार गिराया। रायटर

वेल्टको स्वीकार नहीं हुआ। लेकिन समाचारोंसे अब पता चला है कि श्रीमती पण्डितके प्रश्नको लेकर प्रेसीडेंट रूजवेल्ट और श्रीमती रूजवेल्ट काफी संघर्ष चला है और अन्तमें प्रेसीडेण्टको अपनी श्रीमतीके सामने झुकना पड़ा है। तभी तो श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित को जलपान करानेके लिये ह्वाइट हाउसका फाटक खुला है और श्रीमती रूजवेल्टने स्वयं उनके स्वागतका सारा प्रबंध अपने हाथमें रखा है। उल्लेखनीय बात यह है कि इस स्वागत समारोहके एकही दो दिन पहले श्रीमती पण्डितने भारतके सम्बन्धमें प्रेसीडेंट रूजवेल्टके मौनावलम्बनकी कड़ी आलोचना की थी। श्रीमती पण्डितने प्रेसीडेंटके मौनावलम्बनका प्रतिवाद भोजके बाद श्रीमती रूजवेल्टसे बात न कर किया है। प्रेसीडेंट रूजवेल्ट भी समझेंगे कि कैसे प्रतिद्वन्द्वीसे सामना करना पड़ गया। ह्वाइट हाउसका फाटक प्रेसीडेण्टको अन्तमें खोलना पड़ा, अब देखना है कि चर्चिल साहब इसपर अपना कैसा रुख प्रकट करते हैं!

जापानी जहाजोंकी भीषण क्षति

वाशिंगटन, १ फरवरी। सरकारी तौरपर ऐलान किया गया है कि पिछले जून महीनेसे अमेरिकन नौसेना प्रति सप्ताह ५० जापानी जहाजोंको जलमग्न या क्षतिग्रस्त कर रही है। एडमिरल निमिजकी विज्ञप्तियों और नौसेना विभाग की रिपोर्टोंके आधारपर संग्रहीत सरकारी रिपोर्ट द्वारा ज्ञात हुआ है कि सभी समयकी अपेक्षा फिलिपाइन्सकी प्रथम लड़ाईसे अबतक प्रशांतमें अधिक जापानी जहाजोंको नष्ट या क्षतिग्रस्त किया गया है। घोषणामें आगे कहा गया है कि इस अवधिमें कुल मिलाकर ३ हजार १०८ जहाज जलमग्न, सम्भवतः जलमग्न या क्षतिग्रस्त हुए हैं। इसमें युद्धपोत और व्यापारिक जहाज दोनों शामिल हैं। रा०

उड़ीसामें चेचक रोकनेकी कार्रवाई

कटक, ४ फरवरी। उड़ीसा सरकारने स्वास्थ्य विभागके प्रचार अफसर ने एक प्रेस कानफरेन्समें चेचककी महामारीको रोकनेकी व्यवस्थाओं की व्याख्या की। उड़ीसामें गत जनवरी महीनेसे चेचक महामारीके रूपमें फैली हुई है। उन्होंने बताया कि ३१ जनवरीसे रोकने की कार्रवाई शुरू कर दी गयी है और अबतक करीब २० हजार व्यक्तियोंको टीका लगाया जा चुका है। यू० प्रेस

मोहेन्द्रोजारोके संग्रहकी रक्षा

नयी दिल्ली, ३ फरवरी। ऐसा समझा जाता है सिन्धके मोहेन्दोजारो और हड़प्पासे निकाली गयी वस्तुओंके जनसाधारणके देखनेके लिये अलभ्य होनेके कारण तथा उस स्थानकी स्थितिके इतने अरक्षितके होने कारण कि वहांकी सारी बहुमूल्य वस्तुएं अनेक मील दूर एक बैंकमें सुरक्षित रखी गयी हैं। भारत सरकारने अब पंजाब सरकारके साथ व्यवस्था कर उभय स्थानोंकी दर्शनीय वस्तुओंको लाहौरके प्रांतीय संग्रहालयमें रखनेका निश्चय किया है। लाहौरमें सिंधघाटीकी सभ्यताका दिग्दर्शन कराने वाली वे वस्तुएं किसी भी दर्शक अथवा छात्रको दिखायी जा सकेंगी। यू० प्रेस

ब्रिटिश विरोधिनी नागायुवतीकी सजा

गौहाटी, ४ फरवरी। पता चला है कि प्रख्यात ब्रिटिश विरोधिनी नागा युवती रानी गुइडोलोके मामलेपर आसाम सरकारने पुनः विचार किया और उन्हें कारामुक्त करना राजाकार्यके लिए संकटयुक्त समझा, यह उल्लेखनीय है कि रानी गुइडोलो ब्रिटिश सरकारके विरुद्ध सशस्त्र विद्रोहका नेतृत्व करनेके अपराधमें सन् १९३२ से आसामके किसी स्थानमें नजरबन्द है और उनकी सजाकी अवधि १९४८ में समाप्त होगी।

इटलीकी युद्धस्थिति

प्रतिकूल मौसमके कारण शिथिल

लन्दन, २ फरवरी। भूमध्य सागरीय मित्र फौजी मुकामसे आज प्रकाशित विज्ञप्तिमें कहा गया है कि प्रतिकूल मौसमके बावजूद पंद्रहवीं सेनाके गश्ती दस्तेकी ५वीं और आठवीं सेनाके मोर्चेपर शत्रुके साथ भिड़न्त जारी रही। बालकन हवाई सेना के बमबाजोंने कुछ युगोस्लावियाके शत्रु सामरिक स्थानों, सड़कों तथा रेलपथोंपर सफल आक्रमण किया। पश्चिमी इटलीके सामरिक स्थानोंपर भी बमबाजी की गयी। मित्र लड़ाकू बमबाजोंने उत्तरी इटलीके एक रेलवे जङ्क्शनपर सफल आक्रमण किया। प्रतिकूल मौसमके कारण आक्रमणके अन्य सभी कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये। इन सभी आक्रमणोंके दौरानमें एक विमान लापता हो गया। र

यूरोपमें सीरियाके दूतावास रहेंगे

दमिश्क २ फरवरी। मालूम हुआ है है कि ज्योंही युद्ध समाप्त हो जायगा, बेलजियम, जेकोस्लोवाकिया तथा पोलैंडमें सीरियाके दूतावास स्थापित हो जायंगे।

आयर और अमेरिकामें समझौता

वाशिंगटन ४ फरवरी। युक्त राष्ट्रके स्टेट विभागने आज रविवारके दिन ऐलान किया कि आयरके साथ हवाई यातायात सम्बन्धी एक समझौता हो गया है, जिसके अनुसार स्वीकृत अमेरिकन हवाई यातायात प्रतिष्ठानोंको आयरिश भूमि पर विमानोंको उतारने और आवागमन करनेका अधिकार प्राप्त होगा। रायटर

भागलपुर कस्तूरबा स्मारक कोष

भागलपुर, ३ फरवरी। भागलपुर कस्तूरबा स्मारक कोषकी एक बैठकमें कोषकी जिला समितिकी स्थापना की गयी। इस समितिमें दो हरिजन सदस्यों और नगर तथा चार सबडिवीजनोंके प्रतिनिधियोंके साथ २५ सदस्य सम्मिलित किये गये। इस समितिका उद्देश्य महिलाओं और शिशुओंकी हालतमें सुधार करना होगा। राय बहादुर कमलेश्वरी सहायको समितिका अध्यक्ष और श्रीमती मुनेश्वरी देवी तथा श्री हरेकृष्ण प्रसादको मन्त्री और संयुक्त मन्त्री चुना गया। यू०

व्यापारीके मकानमें अग्निकांड

शोलापुर, ४ फरवरी। शोलापुरके एक प्रमुख सूत व्यापारीके मकानमें अचानक प्रचण्ड आग लग गयी, जिसे बुझाने में म्युनिसपल दमकल वालोंको दो घण्टों तक कठिन परिश्रम करना पड़ा। मकान की ऊपरी मंजिल पूर्णतया ध्वस्त होगयी और इसके परिणामस्वरूप करीब दो हजार की क्षतिका अन्दाज लगाया जारहा है।

बिहार सरकारकी आ...

कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा कड़ी...

पटना, १ फरवरी। हिन्दुस्तान कम्युनिस्ट पार्टीकी बिहार प्रांतीय समिति ने अपनी एक बैठकमें बिहारके प्रमुख कांग्रेस नेताओं—सर्वश्री श्रीकृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, प्रो० अब्दुलबारी, मुरली मनोहर प्रसाद तथा प्रजापति मिश्रको उनके ... नजरबन्द रखने सम्बन्धी बिहार सरकारके आदेशका जोरदार शब्दोंमें प्रतिवाद किया और सरकारसे मांगकी कि आदेशको अविलम्ब वापस ले लिया जाये। समितिने अपने प्रस्तावमें ... शब्दोंमें व्यक्त किया श्री प्रजापति ... भाषणकी व्याख्या सरकार द्वारा ... नीय और आपत्तिजनक ढंगसे की गयी है। प्रांतके कांग्रेस जनोंसे यह भी अनुरोध किया गया कि वे रचनात्मक कार्यक्रम को पूर्ण उत्साहके साथ कार्यान्वित करना आरम्भ कर दें ताकि देशमें जो राजनैतिक और आर्थिक संकट उपस्थित है उससे प्रांतकी जनताको बचाया जा सके। ए० प्रेस

परीक्षाके लिये पेरोलकी को...

इलाहाबाद ३ फरवरी। मालूम हुआ है कि इलाहाबाद विश्वविद्यालयके वाइस चांसलरने नैनी सेण्ट्रल जेलमें ... उपद्रवके दिनोंसे ही नजरबन्द रखे गये श्री यदुवीरसिंह नामक छात्रको बी० ... अन्तिम परीक्षामें उपस्थित होनेकी अनुमति देदी है। इसके फलस्वरूप जज ... के पिताने युक्तप्रान्तीय सरकारके गृह ... के पास तार भेजकर १५ मार्चसे ... अप्रैल तकके लिए पेरोलपर छोड़ने का अनुरोध किया है।

सत्यार्थ-प्रकाश आन्दोलन

८ फरवरीको निश्चय होगा।

वर्धा ३ फरवरी। मध्यप्रांतीय ... स्थापिका सभाके अध्यक्ष और आर्य ... निधि सभाके प्रधान श्री घनश्याम ... गुप्तने सूचना दी है कि आगामी ८ फ... वरीको दिल्लीमें कार्यसमितिकी ... सत्यार्थ-प्रकाशके १४ वें समुल्लास ... सिंध सरकार द्वारा लगाये गये प्रति... दूर करनेके लिये किये गये ... विचार करनेके लिये होगी। रोक ... के अन्य उपायोंके विफल होनेके ... कुछ आर्यसमाजी सत्याग्रह करने को तयार हैं।

हाईकोर्टमें अपील होगी

कानपुर ३ फरवरी। मालूम ... है कि जुग्गीलाल कमलापति कोयला ... में जिन अभियुक्तोंको सजाएं मिली ... उनकी ओरसे हाईकोर्टमें अपील ... की जानेवाली है।

[सर]कारी मकानोंसे धुआं

[बर्]लिनके जरूरी कागजात भस्म

[स्]टाकहोम, ४ फरवरी। बर्लिनकी [सर]कारी इमारतोंकी चिमनियोंसे रात-[दिन] इसलिये धुआं निकलता नजर आता [है] कि अधिकारीवर्ग ऐसे जरूरी कागजात [जला] रहे हैं जिन्हें संकटग्रस्त राज-[धानी]से हटाया नहीं जा सकता।

कहा जाता है कि गोयबेलसही एक [मात्र] नेता बर्लिनमें रह गया है और [.....]के संवाददाता इस आशामें हैं कि [किसी] भी समय भी ऐसी घोषणा की जा [सक]ती है कि दक्षिण जर्मनीको सरकार-[का] प्रधान कार्यालय चला गया।

बर्लिनकी सार्वजनिक इमारतोंमें [सुरंगें] बिछानेका काम जारी है। ग्लोब

[गि]लगिटको ब्रिटीश भारतमें मिलानेका प्रयत्न

नई दिल्ली, ४ फरवरी। गिलगिटको [कश्मी]रसे हड़पनेका षड्यन्त्र किया जा [रहा] है। यह उल्लेखनीय है कि गिलगिटमें [.....] चीन तथा सोवियट रूसकी सीमायें [मिल]ती हैं और सैनिक दृष्टिसे यह क्षेत्र [महत्]वपूर्ण है। यह स्थान प्रारम्भ ही से [काश]मीरके अधिकारमें चला आता है, [परन्]तु विगत शताब्द में भारत सरकारने [काश्]मीरके साथ एक गुप्त सन्धि की, [जिस]के अनुसार काश्मीरने यह प्रदेश, ['पट्टे] ठेके' अंग्रेजोंको दे दिया। [अंग्रेजों]ने यहां अपना शक्तिशाली फौजी [छाव]नी स्थापितकी और उसे काश्मीर [.....] अपने पोलिटिकल एजेण्टके [अधी]न कर दिया। कलकत्तेकी पत्रिकाने [.....]ता एक रिपोर्टर वायसरायकी कोठीमें [.....]ष्टीके पदपर रख कर उस समय [सन्]धिपत्रका मसविदा तथा उससे [सम्ब]न्धित गुप्त पत्रव्यवहार हस्तगत [कर] प्रकाशित कर दिया था, जिससे [तत्]कालीन ब्रिटिश मंसूबोंके सम्बन्धमें [भा]रतमें बड़ी हलचल मच गयी थी। [त]बसे यह प्रदेश अंग्रेजोंके ही अधि-[कार]में रहा, यद्यपि राजनीतिक तथा [.....]लिक दृष्टिसे उसे काश्मीरसे ही [.....] समझा जाता रहा, अंग्रेजोंका [.....] वहां फौजी अधिकार हो था। [अब] पता चला है कि अब गिलगिटके [.....]प्रांतसे मिलाकर ब्रिटिश शासनके [अधी]न करने [.....]न। प्रारम्भ [कर] दिया गया। इस विषयमें कुछ [.....]ह उसी समय दृष्टिगोचर हुए थे, [जब] सन १९४१ की जनगणनाके बाद [गिल]गिटकी गणना तालिकाएं काश्मीरसे [अल]ग सीमाप्रान्त भेज दी गयी। पर [.....]लो कुछ संस्थाएं सम्भवतः दिल्लीके [.....] पर खुल्लमखुल्ला यह आन्दोलन कर [रही] हैं कि गिलगिटको काश्मीरसे छीन [कर] सीमाप्रांतमें मिला दिया जाय। रिया-

पश्चिमी मोर्चेपर

मित्रराष्ट्रोंके बृहत् आक्रमणकी आशा

लन्दन, ४ फरवरी। मोर्चेपर अम-रीकन तथा ब्रिटिश सेनाओंके साथ रहने वाले संवाददाताका कहना है कि यह स्पष्ट है कि मित्र राष्ट्रोंने पश्चिमीय मोर्चेपर बृहत आक्रमण करनेका निश्चय कर लिया है और सीगफ्रिडलाइनको भंग कर राइन पहुंचनेकी कोशिशकी जायेगी।

यह देखा गया है कि सीगफ्रिडला-इनमें जो जर्मन सैनिक बन्दी बनाये जाते हैं वे प्रायः 'राइनलाइन' का जिक्र करते हैं।

यद्यपि यह दावा करना असामयिक है कि राइनके पश्चिमके कारखानोंको छोड़कर पूर्वीय जर्मनीमें सेना एकत्रित करनेका जर्मन स्वाधिकारियोंने निश्चित कर लिया है तथापि ऐसा करनेको उन्हें विवश किया जायेगा।

ऐसी अवस्थामें जर्मनीको पश्चिमीय उत्पादन केन्द्रोंको मित्रराष्ट्रोंको अधि-कारमें दे देना पड़ेगा जिस प्रकार उसे साइलेशियाको रूसियोंको दे देना पड़ा है। ग्लोब

चीनमें मित्रअभियानकी आशंका

चुंकिंग १ फरवरी। चीनमें जापान की गति विधिसे पता चलता कि शत्रु-को चीनी [.....] पर कहीं न कहीं मित्र सेनाओंके उतरनेकी आशङ्का [है]। मेजर जनरल वेडेमियरका उत्तर है कि हम बराबर मजबूत हो रहे हैं और हम शत्रु-को निराश न करेंगे।

एक मन अफीम बरामद

कलकत्ता, ३ फरवरी। आज आब-कारी विभागके अफसरोंने हवड़ा स्टेशन पर ८ डाउन तूफान एक्स प्रेसके एक मुसाफिरके पास १२ हजार रुपये मूल्य की एक मन अफीम बरामद की। मुसा-फिर गिरफ्तार कर लिया गया। रा०

मि०वेलेसकी नियुक्तिकी पुष्टि संभव

वाशिंगटन, ३ फरवरी। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है—कांग्रेस क्षेत्रोंमें सीनेट द्वारा मि० वेलेसकी अर्थ-मन्त्रीके पदपर नियुक्तिकी पुष्टि बिलकुल निश्चित समझी जाती है। आगामी मार्च महीनेतक नामजदगीपर विचार इसका खास कारण बताया जाता है। रायटर

सती मुस्लिम लीग भी इस आन्दोलनमें सहयोग कर रही है। यह उल्लेखनीय है कि गिलगिटकी जनसंख्या प्रायः २२हजार ५०० है तथा भौगोलिक, कसांस्कृति सभ्यतातथा भाषाकी दृष्टिसे वह काश्मीर-का हीअंग है।

न्यूजीलैण्डमें वाणिज्यको हालत

वेलिंगटन (न्यूजीलैण्ड) ४ फरव-री। न्यूजीलैण्डकी पार्लमेण्टके विपक्षी दलके नेता मि० एस० जी० हालैण्डने गत शनिवारके दिन कहा कि आस्ट्रेलिया के साथ करीब ५० लाख स्टर्लिंगके न्यूजीलैण्डके असन्तोष जनक व्यापार-को न्यूजीलैण्डके बाजारोंके लिये सामान बनानेवाले आस्ट्रेलियन उत्पादकोंको न्यूजीलैण्डमें कारखाना खोलने लिये उत्साहित कर घटाया जा सकता है। रा०

औषधियोंके मूल्यमें कमी

नयी दिल्ली ३ फरवरी। एक प्रेस विज्ञप्तिमें कहा गया है कि गजट आव इण्डियाके एक असाधारण अंकमें ३ फरवरी १९४५ को औषधि नियन्त्रण आदेशमें एक संशोधन प्रकाशित कर विख्यात औषधियोंके अधिकतम थोक और खुदरा मूल्यमें कमी कर दी गयी है। अबसे सभी औषधियोंके लिये निश्चित अधिकतम थोक मूल्यमें पैकिंग, भाड़ा और अन्य सभी खर्च भी शामिल रहेंगे। औषधियोंके अधिकतम मूल्यकी सूची शीघ्रही वितरित करदी जायगी।ए०

देशी नरेशोंकी समितिकी बैठक

बम्बई ४ फरवरी। नरेन्द्र मण्डलकी स्थायी समितिके सभी सदस्योंके पद-त्यागके पश्चात संगठित नरेशोंकी स्पे-शल कमेटीकी बैठक आज बम्बईमें हुई। नरेन्द्रमण्डलके चांसलर भोपालके नवाब-ने सभापतित्व किया। इस बैठकमें निम्न लिखित नरेश उपस्थित थे। नवानगरके जाम साहब, ग्वालियर, बीकानेर और रामपुरके महाराजा तथा धौलपुरके महा-राणा। इन्दौरके महाराजा भी आज बम्बई पहुंच गये, किन्तु अस्वस्थताके कारण आजकी बैठकमें भाग नहीं ले सके। ऐसा समझा जाता है कि विभिन्न विषयोंकी व्याख्याके रूपमें आज विचार विमर्श हुआ। ए० प्रेस

ग्रीक समझौता चर्चामें मतभेद

लन्दन ४ फरवरी। रायटरका विशेष संवाददाता एथेन्ससे लिखता है कि शांति स्थापनाके प्रश्नपर कलकी समझौता चर्चाके दौरानमें वामपक्षीयओर सरकारी प्रतिनिधियोंके बीच मतभेद पैदाहोजानेकी संभावना प्रतीत होती है। ऐसाकहाजाता है कि वाम पक्षीय प्रतिनिधियोंने अपने सैनिकोंको निरस्त्र कर देनेके प्रस्तावको स्वीकार कर लिया, किन्तु फौजदारी मामलेमें उनको सजा दिलानेके सरकारी सुझावोंकी तीव्र निंदा की। प्रतिनिधिमंड-लके प्रधान मो० सियानतोसने कहा कि हम लोग स्पष्ट रूपसे घोषणा करते हैं कि ग्रीक जनस्वातंत्र्य सेनाके निरस्त्रीकरण को हम स्वीकार करते हैं। रायटर

मालगाड़ी पटरीसे उतर गयी

बम्बई ४ फरवरी। पकालाके डिस्ट्रि-क्ट ट्राफिक सुपरिण्टेण्डेण्टने तार द्वारा सूचना दी है कि गत २ फरवरीको दिनमें ४ बज कर १८ मिनट पर नं० २५१ अतिरिक्त मालगाड़ी पकाला धर्मावरम ब्रांच लाइनके कादिरी और मलकावे-माला स्टेशनोंके बीच पटरीसे उतर गयी। पटरीसे उतरे हुए ११ डब्बोंमें ६ उलट गये। यात्रियोंको दूसरी गाड़ी पर चढ़ाना आवश्यक हुआ। दुर्घटनाके कारणकी तहकीकात हो रही है। गत ३ फरवरीकी शामको ४ बज कर १५ मिनट पर गाड़ियोंका आवागमन फिरसे आरम्भ हो गया। ए० प्रेस

गांधीजीसे स्वामी सत्यदेव मिलेंगे

वर्धा ४ फरवरी। आर्यसमाजी नेता स्वामी सत्यदेव हैदराबाद दक्षिणसे महात्मा गान्धीसे मुलाकात करनेके लिये यहां पहुंचे हैं। ऐसा समझा जाता है कि कस्तूरबा राष्ट्रीय स्मारक कोषके कार्य-क्रमके अंगके रूपमें भारतीय रियासतों-में ग्रामोत्थान कार्यका संगठन करनेके प्रश्न पर वह महात्मा गांधीसे विचार विनिमय करेंगे। आसामके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री गोपीनाथ बारदोलोई भी शीघ्रही यहां महात्मा गान्धीसे मुलाकात करनेके लिये पहुंच रहे हैं। ए० प्रेस

लेडो सड़कसे प्रथम काफिला चीन पहुंचा

लन्दन ४ फरवरी। पश्चिमी चीनसे रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है कि हालहीमें खोली गयी लेडो बर्मा सड़क होकर चीनको जानेवाली युद्ध सामग्रियों का प्रथम काफिला चीनके कुमिंग नामक स्थान पर पहुंच गया है। दक्षिण पूर्व एशियाके सर्वोच्च सेनापति एडमिरल माउण्ट बैटनने गत २३ जनवरीको एक विशेष विज्ञप्ति द्वारा बर्मा सड़कके फिरसे खुलनेकी घोषणा की थी। रायटर

श्री प्रामाणिक कैरो पहुंचे

कैरो, ३ फरवरी। विश्वट्रेड यूनियन सम्मेलनके लन्दनमें ६ फरवरीको आरम्भ होनेवाले अधिवेशनके लिये अखिल भार-तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेसके प्रतिनिधि श्री सुधीन्द्र प्रमाणिक आज कराचीसे कैरो पहुंच गये। रायटर

आन्ध्र कांग्रेस समितिकी बैठक

एलोर, ४ फरवरी। आन्ध्र प्रान्तीय कांग्रेस समितिकी बैठक आज दिनके तीसरे पहर गांधी राष्ट्रीय स्कूलमें हुई। आन्ध्रदेशके सभी भागोंके कांग्रेस कार्य-कर्ता इसमें शामिल हुए। इस समितिकी स्थापना कांग्रेसकी नीतिको फिरसे कार्यान्वित करने और महात्मा गांधीके रचनात्मक कार्यक्रमको पूरा करनेके उद्देश्यसे की गयी है। ए० प्रेस

चीनी सैनिकोंके वेतन

सुधार सम्बन्धी नये आदेश

चुंगकिंग, ३ फरवरी। चीनी मंत्रिमण्डलके एक विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि इस महीने चीनके युद्ध मंत्रिमण्डल के अनावश्यक अंशको साफ करने तथा चीनी सेनाकी अवस्था सुधारनेके लिये बहुत कड़े नियम काममें लाये जायेंगे। मंत्रिमण्डलने आदेश दिया है कि अनावश्यक विभाग तोड़ दिये जायें तथा विभागीय अधिकारियोंको आदेश मिला है कि उन सभीको अलग कर दें जो युद्धोद्योगमें सहायक नहीं हैं। ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि हटाये जानेवालोंकी संख्या १५ लाख होगी।

इन सुधारोंका उद्देश्य मंत्रिमण्डलके कार्य तथा क्षमतामें उन्नति करना, धनकी बचत और लड़नेवाले सैनिकोंका वेतन तथा राशन बढ़ाना है।

चीनी सैनिक ५० युआन (चीनी सिक्का) मासिक वेतन तथा दिनमें दो बार एक एक कटोरा भात पाता है। सुधारोंके अनुसार उसे ३०० युआन वेतन तथा मांस, तरकारियां, तेल, शक्कर और चावल मिलेगा। अफसरों तथा सैनिकोंके वेतनमें २५ से ५०० प्रतिशत तक वृद्धि की गयी है।

चीनमें जिस रूपमें मुद्रा स्फीति हुई है, उसे देखते हुए चीनी सैनिकके ५० युआनकी क्रय शक्ति ५ आनेके बराबर है। ग्लोब

रिजेण्टऔरपूर्व मन्त्रियोंको फांसी

लन्दन, ३ फरवरी। फ्रेंच रेडियोने आज अंकाराके एक संवादका उद्धरण देते हुए बताया कि सोफियाके संवादके मुताबिक विदित हुआ है कि तीन रिजेण्ट और २२ भूतपूर्व मन्त्रियोंको, जिन्हें युद्ध अपराधीके तौरपर मृत्युकी सजा दी गयी थी, फांसी दे दी गयी। रायटर

सर स्टफर्ड क्रिप्स मजदूर दलमें

लन्दन, ४ फरवरी। राजनीतिक संवाददाताका कथन है कि सर स्टफर्ड क्रिप्सके पुनः मजदूर दलमें शामिल होने की पूरी आशा है और निकट भविष्यमें इसकी निश्चित सूचना मिल जायेगी।

कहा जाता है कि मजदूर दलमें सर स्टफर्डके आजानेसे आगामी चुनावकी दृष्टिसे दलकी शक्ति बढ़ेगी और इसी लिये समाजवादी उनका स्वागत करते हैं।

बर्लिनमें सतर्कतामूलक योजना

लन्दन, ३ फरवरी। गत रात्रिको जर्मन गृह रेडियोने बताया कि बर्लिनमें खाइयां खोदी जा रही हैं और टैंक तथा मोटरवाही दस्ते सड़कोंमें निरन्तर गश्त लगा रहे हैं। राजधानीके दरवाजेके समक्ष कुशल जनरलोंके नेतृत्वमें अनेक सैन्य दस्ते बिल्कुल तयार रखे गये हैं। रायटर

मारीशसमें तूफान

सारे उपनिवेशकी भीषण क्षति

कलकत्ता ३ फरवरी। मारीशसकी स्टेट कौन्सिलके सदस्य श्री अकबर गजाधरसे उनके भाई श्री डी० गजाधरको आज यहां प्राप्त एक समुद्री तार द्वारा ज्ञात हुआ है कि गत १५ और १६ फरवरीको मारीशस उपनिवेशमें अत्यन्त प्रचण्ड तूफान आया।

तारमें आगे कहा गया है कि तूफान के परिणामस्वरूप अत्यन्त भीषण क्षति पहुंची और खासकर अनेक मकान और बहुसंख्यक झोपड़े पूर्णतया नष्ट हो गये। इस दैवी प्रकोपके परिणामस्वरूप अबतक २१ व्यक्तियोंकी मृत्युकी सूचना मिली है। हजारों व्यक्ति गृहविहीन हो गये हैं और उनको सरकारी मकानों और स्कूलोंमें आश्रय दिया गया है। इस तूफानके कारण करीब-करीब सारे उपनिवेशको नुकसान पहुंचा और क्षतिके परिमाणका पता लगाया जा रहा है। ए०

सीरियालेबनानकी स्थितिपरविचार

पेरिस, ३ फरवरी। आज जनरल डीगालेकी अध्यक्षतामें मंत्रिमण्डलकी बैठक हुई जिसमें सीरिया और लेबनान का प्रश्न सर्वाधिक महत्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न था। परराष्ट्र मन्त्री मो० जार्ज बिडाल्टने विशद स्थिति सीरिया और लेबनानके फ्रेंच हाई कमिश्नर जनरल बेनेटकी रिपोर्टको विचारार्थ उपस्थित किया। सूचना मन्त्रिमण्डलकी एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि इस संबंध में सरकारने मो० बिडाल्टकी ओरसे जनरल बेनेटको प्रदत्त आदेशपर स्वीकृति प्रदान कर दी है। मन्त्रिमण्डलकी बैठक के परिणामपर सरकारी आलोचनामें कहा गया है कि लेवाण्टमें फ्रांस शांति स्थापित करनेके लिये पूर्ण उत्तरदायी है और अपना अधिकार कायम रखनेके लिये पूर्णतया दृढ़-प्रतिज्ञ है। रायटर

जर्मनीपर ३३ हजार टन बम

लन्दन, ३ फरवरी। आज सरकारी तौरपर घोषित किया गया कि गत जनवरी महीनेमें शाही विमानोंने जर्मनीपर हमलेके समय ३२ हजार ८ सौ टन बम बरसाये। रात्रिकालीन हमलेके लिये विपरीत मौसमके कारण यह सबसे खराब महीना था। रायटर

मोटर दुर्घटनामें दो घायल

कलकत्ता, ३ जनवरी। खबर है कि आज विजयेन्द्र बोस (२२) तथा गोविन्द (४५) प्राइवेट मोटरसे टकरा जानेके कारण बुरी तरह घायल हुए। पहली दुर्घटनापूर्ण एम्पायर थियेटर तथा दूसरी जगुबाबू बाजारके निकट हुई। दोनों घायल अवस्थामें शम्भूनाथ पण्डित अस्पताल पहुंचाये गये। यू० प्रेस

मजदूरोंकी मांग

मिल मालिकों द्वारा अस्वीकृत

अहमदाबाद ४ फरवरी। पता चला है कि स्थानीय मिलमालिक संघने मजदूरोंको उन चार दिनोंका वेतन देनेसे इनकार कर दिया है, जब कोयलेकी कमी के कारण उन्हें अपनी मिलें बन्द रखने के लिए बाध्य होना पड़ा था। स्थानीय मजदूर संघने मांग की थी कि मजदूरों को उन दिनोंका वेतन अथवा उस वेतनके बराबर हरजाना दिया जाय, क्योंकि मजदूर स्वेच्छासे बेकार नहीं रहे थे। मिलमालिकोंका कहना है कि उन्होंने भी स्वेच्छासे मिलें नहीं बन्द की थीं और मजदूरोंकी इस बेकारीका दायित्व अधिकारियोंकी लापरवाही पर है, जिन्हें मिल मालिक कोयलेकी कमीसे आगत संकटकी सूचना पूर्वसे ही देते रहे; परन्तु वे कोयला मंगानेकी कोई उचित व्यवस्था न कर पाये।

अभियुक्तोंकी अपील खारिज

इलाहाबाद ४ फरवरी। इलाहाबाद हाईकोर्टमें जस्टिस ब्राउनने बलियाके श्री महन्तराय तथा उनके छ साथियोंकी अपील खारिज करके उनका आठ आठ वर्षकी सख्त कैदकी सजा बहाल रखी। बलियाके सेशन्स जजने अगस्त १९४२ के आन्दोलनमें हिंसात्मक भाग लेनेके अपराधमें उन्हें उपर्युक्त सजा दी थी। बताया जाता है कि गत १७ अगस्त १९४२ को अभियुक्त गत ३० हजार व्यक्तियोंकी एक फौज लेकर बलिया जिलेके सहतवार थाने पर चढ़ गये और उसे लूट कर उसके कागजात जला दिये। थानेके अधिकारियोंकी निजी वस्तुएं भी लूट ली गयीं तथा उन्हें १४ घण्टेके अन्दर थाना छोड़ कर चले जानेकी आज्ञा दी गयी।

लखनऊमें गुप्त अड्डा पकड़ा गया

लखनऊ ४ फरवरी। ब्रिटिश, अमेरिकन तथा भारतीय फौजी पुलिसने युक्त प्रान्तीय पुलिसकी सहायतासे स्थानीय लाटूश रोड तथा एवट रोडके पार्श्व में स्थित कुछ मार्गों पर धावा किया और वहांसे बहुतेरे अमेरिकन, अंग्रेज तथा हिन्दुस्तानी सिपाहियों, आधी दर्जन वेश्याओं एवं उनके दलालोंको पकड़ा। बताया जाता है कि इन दलालोंने जिनमें एक कथित नवाब तथा उनकी बेगम भी हैं, यहां व्यभिचारका गुप्त अड्डा बना रखा था और सैनिकोंका यह स्थान सैनिक प्रवेशके लिये निषिद्ध होते हुए भी वहां स्त्रियोंको लालच देकर ले जाते थे। फौजी पुलिसने सैनिकोंको तथा नवाब और उनकी बेगम तथा सहयोगियों और अन्य वेश्याओंके साथ सिविल पुलिसके हवाले कर दिया गया है।

देसाई-वायसराय

राष्ट्रीय सरकारसम्बन्धी म[illegible]

नयी दिल्ली, तारसे। राज[illegible] क्षेत्रोंमें जोरदार चर्चा है कि श्री[illegible] भाई देसाईने लीग नेता नवाबजा[illegible] कत अली तथा वायसराय लार्ड[illegible] जो बातचीत की उसके परि[illegible] आगामी सप्ताहतकमें पता लग जा[illegible] अब इस बातका समर्थन किया जा[illegible] है कि श्री देसाई तथा नवाबजादा[illegible] कत अलीमें केन्द्रमें राष्ट्रीय [illegible] सम्बन्धी योजनापर समझौता हो[illegible] और मसविदा तथा लीग नेताकी[illegible] स्वीकृतिसे वायसरायको अवग[illegible] दिया गया है।

यह भी कहा जा रहा है कि[illegible] इस मसविदेपर गम्भीरतापूर्वक[illegible] कर रहे हैं और इसके बाद श्री[illegible] और बातचीत विस्तारके लिये[illegible] यह भी मालूम हुआ है कि इस[illegible] पता शीघ्र लग जाये ऐसी कार[illegible] वार्ता है।

अमेरिकन सरकारकी ओर[illegible]

लखनऊ ४ फरवरी। प्रेसीडेण्[illegible] वेल्टके दिल्लीमें स्थित निजी प्रति[illegible] अमेरिकन सरकारकी ओरसे[illegible] विश्वविद्यालयको अमेरिकन[illegible] साहित्य, दर्शन, इतिहास आदि[illegible] पर लिखे गये बहुमूल्य ग्रन्थों[illegible] संग्रह भेंट किया है।

दो आदमियोंको छुरेका[illegible]

कलकत्ता, ३ जनवरी। आज[illegible] काल १९ वर्षीय पंजाबी युवक[illegible] सिंह तथा हुदु मियां नामक एक[illegible] को हाजरा रोडपर छुरा भों[illegible] गया। दोनों घायल शम्भूनाथ[illegible] अस्पताल पहुंचाये गये। इनकी[illegible] चिन्तनीय बतायी जाती है। यू०[illegible]

...डो-बर्मा रोड--चीनका नया स्थलमार्ग

———::o::o::———

(लेखक—श्री विनोदशंकर)

दक्षिण-पूर्व एशिया कमाण्डके सदर-
...से गत २३ फरवरीको जो अधिकृत
...प्रकाशित की गयी, उससे उन लोगों-
...शांति और आश्वासन मिला जो
चीनकी बराबर बदतर होती हुई अव-
...समाचारोंको सुनकर चिन्तित और
हुआ करते थे। बर्मा रोडको जब
...२ में जापानियोंने अपने अधिकारमें
...लिया, तो चीनका समुद्रसे बिलकुल
...भङ्ग हो गया था। क्योंकि उसके
सारे सामुद्रिक अञ्चलोंपर जापानका
...ही अधिकार स्थापित हो चुका था।
अवस्थामें चीनको मित्रराष्ट्रोंकी सहा-
मिलना एक प्रकारसे कठिन हो गया।
चीनकी दुरवस्थाका प्रधान कारण
विदेशोंसे पर्याप्त मात्रामें न मिलने-
सामरिक सहायता ही है। हां, तो
२३ जनवरीको दक्षिण पूर्वएशिया
...के सर्वोच्च सेनाधिकारी लार्डलुई
...टबैटनने प्रेसीडेंट रूजवेल्ट और मि०
...को यह तार भेजा कि क्वीबेक कान-
...में जो आदेश हमें दिया गया था,
उसका प्रथम भाग पूरा कर दिया
...चीनका सम्बन्ध अवशिष्ट संसारसे
...। वर्षों बाद स्थापित हो गया।
चीनी सेनाके लेफ्टिनेण्ट जेनरल सन:लो
और चीनी आक्रमणकारी सेनाओंने
...बर्माकी लड़ाई समाप्त करते हुए समस्त
...नी फौजोंको उस अञ्चलसे मार
...। यह लीडो बर्मा रोड संघर्षशील
...और अमेरिकन सेनाओंके सम्मिलित
...का सुपरिणाम है। लीडो रोडके
...का श्रेय अमेरिकन सेनाओंको ही है
इसका खाका तैयार करनेवाले हैं
...न सेनानी जेनरल जोसेफ स्टिलवेल।
...डो-बर्मा रोडको शत्रुसे मुक्त करनेकी
...का श्रीगणेश १९४३ में उस समय
जब चीनी सैनिकोंने तगप नामक
...र अधिकार स्थापित किया। जेनरल
...वेलकी सेनाने नवम्बरमें ३८ वें अमेरि-
...सैनिक डिवीजनके साथ तगपसे आक्र-
...आरम्भ किया और दिसम्बरमें यूपबांग
...धिकार स्थापितकर लिया। तत्पश्चात
...महीनेतक अत्यधिक वर्षा और उष्णताके
...विश्वके सबसे अधिक दुर्गम पार्वतीय
...में लड़ाई होती रही और अन्तमें भारत
...चीनी सेनाने ३६ वें ब्रिटिश सैनिक
...जन, कोचरन हवाई सेना और कच्छिन
...के साथ तगपसे ४०० मीलकी दूरी तय-
चीनका भारतसे स्थल मार्ग खोल
...। एक पत्र प्रतिनिधिने, जो युद्ध मोर्चेपर
...संग्रह करता है, गत २८ जनवरीको
समाचार भेजा कि मोटर गाड़ियोंका
...काफला इस रोडसे आज तीसरे पहर
...की सीमामें दाखिल हो गया। संवाद-
...ने चीनके अन्दर सामरिक शस्त्रायुध-
...गाड़ियोंके प्रथम काफलेकी पहुंचको एक
...पूर्व ऐतिहासिक घटना बताया है और

वास्तव है भी। क्योंकि इस काफलेने दो प्राचीन पड़ोसी देशोंके बीच यातायातका सूत्रपात किया है। बर्माको फासिस्टवादी फौलादी चंगुलसे मुक्त करनेके बाद जबतक उसकी रेलवे लाइनों और अन्य सड़कोंका निर्माण नहीं हो जायेगा, तबतक लीडो बर्मा रोड ही चीनको अवशिष्ट संसारकी सामग्री भारतके मार्गसे पहुंचानेका प्रधान साधन रहेगी इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

जापानके प्रधान द्वार पर मित्रोंका फौलादी मुष्टि-प्रहार।

चीन और बर्मा पर्वतों और पहाड़ियां तथा उनपर उगे हुए सघन जंगलोंके ऐसे दुर्गम देश हैं, जिनसे रेलवे लाइनें और सड़कें बनाना मामूली काम नहीं है; लेकिन जहां चाह होती है वहां राह निकल ही आती है। इसलिये चीनको बाहरी शस्त्रास्त्र तथा अन्य सामग्री पहुंचानेके ख्यालसे इस बातकी अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गयी कि जबतक असली बर्मा रोडको स्वतंत्र नहीं कर लिया जाता है, तबतक के लिये एक नया मार्ग निकालना होगा ही। इस उत्कट आकांक्षा और अनिवार्य आवश्यकता को पूरा करनेके लिये लीडो-बर्मा रोडकी सृष्टि हुई जिसके प्रेरक हैं, जैसा ऊपर बताया जा चुका है, जेनरल जोसेफ स्टिलवेल और स्रष्टा हैं ब्रिटिश, भारतीय, अफ्रीकन, बर्मी, चीनी और अमेरिकन सैनिक, जिन्होंने वर्षा, शीत एवं घने जंगलोंकी भयंकर बीमारियोंका मुकाबला करते हुए, तथा भारतकी सरहदसे मित्कीना तक घेरे हुए जापानी सैनिकोंसे लड़कर इस नये मार्गका निर्माण किया है। इसके पूर्व मित्कीनाका पूर्वी मार्ग ही चीन और बर्माके बीच प्रधान मार्ग था। लेकिन १९३८ के सितम्बर मासमें दुर्गम पहाड़ियोंके बीचसे एक मार्ग खोला गया, जिसके सम्बन्धमें एक अमेरिकन इंजीनियरने कहा था कि "चीनियोंने इस सड़कको पहाड़ोंको नाखूनसे खरचकर बनाया है।"

बर्मा पुनर्विजयकी महत्वाकांक्षा लेकर १९४२ में जब अमेरिकन सेनापति जेनरल जोसेफ स्टिलवेल इस मोर्चेपर पहुंचे तो सबसे पहली आवश्यकता उन्हें एक ऐसे मार्ग की हुई जिसके द्वारा चीन स्थित सेनाओंको सहायता पहुंच यी जाये और उनसे सहायता प्राप्त की जाये। बर्मा और चीनके बीचमें एक मात्र आवागमनका साधन बर्मा रोड थी, जो कबकी जापानी अधिकारमें है शत्रु की सड़कके दक्षिणी सिरेका केन्द्र रंगून जापानी सेनाका और जापान अधिकृत बर्मा सरकारका हेडक्वार्टर बन चुका था। इसलिये उन्होंने सिवा भारत होकर चीनका सम्बन्ध स्थापित करनेके और कोई सूरत नहीं देखी। भारतसे चीनका आवागमनका सम्बन्ध स्थलके जिस भागसे होकर स्थापित करनेकी बात सोची गयी, वह अति दुर्गम और बीहड़ था, लेकिन जब सिर ओखलमें पड़ गया तो चोटोंकी क्या गिनती। अमेरिकन और चीनी इञ्जीनियरोंने इस दुर्गम स्थल भागकी पैमाइश करके नयी सड़कका खाका अगम पहाड़ियां और सघन जङ्गलोंसे होकर तैयार कर दिया। सड़कके लिये निर्धारित स्थलकी सफाईका काम १९४२ के दिसम्बरसे आरम्भ हुआ, लेकिन कार्यकी गति कछुएकी गति जैसी मंथर थी और एक वर्षके लगभग समय निकल गया, किन्तु काम कुछ नहीं हुआ। वास्तवमें कार्यारम्भ १९४३ के अक्तूबरसे हुआ; जब जेनरल स्टिलवेल आसाम प्रांतसे दो चीनी सैन्यदस्तोंको लेकर कार्य-क्षेत्रमें पहुंचे। ब्रिगेडियर जेनरल फ्रैंक मेरिलके नायकत्वमें जङ्गल युद्धमें सुदक्ष अमेरिकन लड़ाकोंने हल्के और मध्य आकारवाले टैंकोंके साथ इन चीनी सड़क निर्माताओंको ४ हजार ८९९ फीट ऊंची पहाड़ियोंके बीच स्थित घाटियोंमें हुकांगसे मोगांग तक सहायता पहुंचायी। आगे अमेरिकन सैनिक शत्रुको मारकार भगा ले जाते थे और पीछेसे सड़क निर्माता अपना निर्माण कार्य करते जाते थे।

जेनरल पिक जिन सैनिक इञ्जीनियरों और कारीगरोंके अमेरिकामें आलास्का और संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके बीच कनाडाके घोर-जङ्गलों और पहाड़ोंसे होकर ऐतिहासिक सड़कका निर्माण किया था, उन्हींका हाथ इस लेडो-बर्मा रोडमें भी था। सड़कके निर्माणमें कहीं कहीं ७॥ लाख टनकी चट्टानोंको तोड़फोड़कर अस्तित्वहीन कर दिया गया, तो कहीं ३ सौ गजके पुल बनाने पड़े। मौसमी और प्रादेशिक बाधाओंके अतिरिक्त कभी-कभी जापानी हवाई हमलोंमें बरसाये गये गोलों और बमोंकी बौछार भी सहनी पड़ी, लेकिन काम बराबर होता गया। १९४४ में जापानियोंने चाहा कि आसाममें ब्रह्मपुत्र नदी तक पहुंच कर लीडो रोड निर्माणके लिये पहुंचनेवाली मित्रोंकी सहायताको रोक दिया जाय लेकिन; इस कार्यमें भी उनको सफलता नहीं मिली और मित्र-सेनाओंने अन्तमें उन्हें न केवल आसामसे, बल्कि उत्तरी बर्मासे मार भगाया और लीडो-बर्मा रोड निर्विघ्न समाप्त होकर मित्र सहायता चीन पहुंचानेके लिये एक प्रशस्त मार्ग बन गयी।

केश

——:※:——

(लेखक—श्री 'पवन')

सौन्दर्य वर्णनमें कवियोंने केश और आंखको अपना सबसे प्रधान लक्ष्य माना है और यह दलील लचर है कि, यह बात केवल भारतीय साहित्यपर ही लागू होती है। शायद ही कोई ऐसा होगा जिसके कवि आंख और केशके शिकार न हुए हों। उर्दू साहित्यने तो नजर-नजरकी ऐसी आवाज लगायी कि, उसे पीछे पीछे भरकी नजर लग गयी। कौड़ी भरकी आंख क्या हुई सात समुद्र की नानी, और शायर शेर बनकर शेर पढ़ने लगे—"यह समन्दर नहीं मेरे आंसूका एक कतरा है।"

और केशसे ब्रज साहित्य बुरी तरह उलझा—"उत श्याम घटा इत हैं अलकें।" प्रेयसीके केशकी तुलना श्याम घटासे कर दी गयी। सिर्फ तुलना ही नहीं की गयी, बल्कि केश देखकर श्याम घटा लजाने लग गयी।

कवि विद्यापतिकी लेखनीने भी सद्यः-स्नाताके चिकुरका मुक्त हस्तसे गुणगान किया और यह हवा आज भी उसी रूपसे बह रही हैं। कवि आरसीकी एक पंक्ति देखिये—"यह घटा तुम्हारे बालों सी छायी है।"

कवि देखता है कि घटा उसकी प्रेमिका-के बालों-सी छायी हुई है। और तब यहां पर पाठक अनायास ही सोचने लगता है कि जिसके बालोंकी उपमा घटा है वह उप-मेय, कविकी प्रेयसी कैसी रही होगी। इतने बड़े आकाशकी घटाको जब कवि अपनी प्रेमिकाके चिकुर भर ही देख रहा है तब तो निश्चय ही आकार-प्रकारमें उसकी वह प्रेमिका छरसाकी भी परदादी रही होगी। किन्तु; केवल घटा ही नहीं केशको काली नागिन भी बताया गया है। नागिन ऐसी नावदां प्रेमिका जिसके लिये कफन भी हलकी होनी चाहिये उसके सिरपर काली नागिन! लेकिन यह काटती नहीं, गुदगुदी पैदा करती है और कलेजेपर कोदों दला करती है। सौतोंका केश तो नागिनसे भी बढ़कर हुआ करता है और वह किसीके साजनको फांसनेके लिये चिड़ियां फांसने-वाले जालसे भी भयङ्कर हुआ करता है।

चोटी और दाढ़ीकी लड़ाई प्रसिद्ध है ही। एक एकड़में चोटीकी झब्बूदार फसलकी वही शान है जो नौ एकड़में लटकती हुई दाढ़ीकी पाकिस्तानी शान है। हालांकि दोनोंकी उपज एक ही ओत-कोड़में होती है। दोनोंकी बहार एक ही है। दोनों एक ही कंघेसे सटोरे जाते हैं।

सिरके केशोंको जिस प्रकार सुन्दर बनाने या दिखानेका प्रयत्न किया जाता है उसी प्रकार मूंछों और दाढ़ीके केशोंसे भी सौन्दर्य बर्द्धन किया जाता है। सिर्फ इनके सौन्दर्य वर्द्धनके लिये ही संसारमें कई करोड़ हजाम जी रहे हैं। फ्रेंच कट, फलाई 'कट' तलवार कट, हिटलर कट आदि मूछोंके कट प्रसिद्ध हैं ही। दाढ़ीमें भी औरंगजेब कट, बाबर कट, जहांगीर कट, फूदना कट, बकरा कट, आदि खूब प्रसिद्ध हैं। ये कट केशोंकी हिफाजत और सौन्दर्य वर्द्धनके लिये ही होते हैं।

केवल नारियोंने ही केशको अपना आभूषण नहीं समझा है; केशोंका सम्मान बड़े-बड़े कवियोंने किया है। कवीन्द्र-रवीन्द्र, सुमित्रानन्दन पन्त और सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। उत्तम केश उन्नत मस्तिष्कके परिचायक समझे गये हैं।

केश न हों तो सौन्दर्य बोधमें आक-र्षणका हिस्सा बहुत कम हो जाता है। मुलायम और चमकीले केश सौन्दर्यकी अभि-वृद्धि करते हैं। देखा गया है, केशवालोंकी अपेक्षा गंजा सिरका मनुष्य अधिक म्लान और निस्तेज रहा करता है। उसी प्रकार स्त्रियां जिनके केश छोटे और मुलायम नहीं हैं वे नाना प्रकारके बजारू तैलोंका उपयोग करनेमें व्यस्त-सी रहती हैं।

सिरमें केशकी पैदावार एक वर्ग इञ्चमें लगभग एक हजारकी संख्यामें होती है और बीस वर्ग इञ्चमें लगभग एक लाख बीस हजार केश होते हैं। पुष्ट केशोंका साधारण जीवन दोसे छः वर्ष तक होता है और वे एक मासमें चौथाईसे लेकर आध इञ्च तक बढ़ते हैं। स्वभावतया केश अपना जीवन समाप्त कर झड़ जाते हैं। पुनः उस रिक्त स्थानमें दूसरे केश उग आते हैं जिनकी अवधि भी पहले केशोंकी तरह ही रहती है।

केशमें एक अद्भुत विद्युत शक्ति होती है जो सूर्य-चन्द्रकी जीवनदायिनी किरणोंको खींचकर मस्तिष्कमें पहुंचानेमें समर्थ होती है।

बौद्धिक श्रमजीवियोंके केश औरोंकी अपेक्षा मोटे और रुखड़े हुआ करते हैं।

केशोंका सबसे भयङ्कर रोग है उनका झड़ना। इसके कई कारण हैं। दिमागी काम अधिक करनेसे, सिरमें अधिक प्यास (रूसी) रहनेसे, कम दामोंमें मिलनेवाले बाजारू तैलके व्यवहारसे, टायफाइड आदि भयङ्कर ज्वरसे तथा वीर्य क्षीणताके कारण केश झड़ जाते हैं।

केशोंकी सुरक्षाके लिये कुछ ऐसे नुस्खा हैं जिनका व्यवहार करनेसे निश्चय ही केशोंमें लाभ पहुंचता है।

बिना दूध-चीनीकी चायसे माथा मल-नेसे केशका झड़ना बन्द होता है।

दहीसे सिर मलनेसे प्यास जाती रहती और केश मुलायम तथा चमकीले होते हैं।

अदरखके रसको चम्मचमें गरम करके तीन-चार दिनों तक उस स्थानपर जहां केश पकना आरम्भ हुआ है, लगानेसे लाभ होता है।

केशोंके समयके पूर्व पकनेके कारणोंमें सबसे प्रधान कारण बाजारू केश तैलका व्यवहार है। रक्तके दूषित हो जानेपर भी पोषक तत्व न पाकर केश असमय ही पकने लग जाते हैं। ऐसी अवस्थामें शीर्षासन करना लाभदायक है।

जावाकुसुम, महाभृङ्गराज तैल, हिम-कल्याण केश तैल, बङ्गाल केमिकल और मारवाड़ी रिलीफ सोसायटीका आमला तैल केशोंके लिये हितकारी हैं।

गुलाबजल आठ औंस, टिंक्चर केन्थे-रिडिस चार ड्राम, स्पिरिट रोजमेरिनी एक ड्राम, रेक्टीफाइड स्पिरिट एक ड्राम, हाइ-ड्रोज परक्लोर दो ग्रेन और पिलोकारपीन नाइट्रेट आधा ड्राम।

यह हुआ हेयर टानिक। इसके व्यव-हारसे केशोंमें नव-जीवन आता है।

अनुत्कृष्ट साबुनसे सिर मलना हानि-कर है। बेसन, खरी, राईका उबटन, काली मिट्टी (छोटानागपुरमें इसे गुड़मैसनी माटी कहते हैं। स्वभावतया यह पवित्र और चिकनी होती है तथा इसमें केशों और सिरके त्वचाको साफ कर देनेका गुण होता है। इसके लगानेके पश्चात् केश चमकीले और मुलायम निकल आते हैं। आदिसे सिर साफ करना श्रेयस्कर है।

शरीरके अन्य भागोंको जिस प्रकार आकर्षक बनानेका प्रयत्न किया जाता है उसी प्रकार केशोंके घुंघराले, चमकीले और मुलायम बनानेके लिये इन उपायोंको काममें लाया जा सकता है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि आजके युगमें केशोंका एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मनुष्य इसकी महानता और उपयोगिताकी रक्षा करना ही सौन्दर्य—श्रीका बसन्त समझते हैं।

——:o:——

कौन क्या कहता है

हिटलर संकल्पपर दृढ़

हिटलरके अधिकारमें आनेके १२ वें [वार्]षिक समारोहके अवसरपर ब्राडकास्ट [कर]ते हुए हिटलरने जर्मनीके भविष्यके [सम्ब]न्धमें मित्र राजनीतिज्ञोंके वक्तव्योंका [उल्]लेख करते हुए कहा कि मैं राजनेताओं [को] बता देना चाहता हूं कि वे हमेशाके [लि]ये यह बात गांठ बांध लें कि नाजी [जर्]मनीको अब विलसन द्वारा व्यवहृत [चा]लोंसे आज प्रभावित नहीं किया जा [स]कता क्योंकि आजका जर्मनी उतना [कम]जोर नहीं है। बोलशेविक षड़यन्त्रकारियों [की] विजयके बाद जिसे दारुण दुस्सह कष्ट [औ]र दुर्दशाका सामना करना पड़ेगा उनके [साम]ने आज जर्मन नगरों और देहातों [क]ा खासकर हमारे आदमियों को जो कष्ट [सह]न करना पड़ रहा है वह कुछ भी नहीं [है।] अन्त तक, उस समय तक जब तक [हमा]रे प्रयत्न विजयमें परिणत हो जायें [अ]टल रहनेके अपने पवित्र संकल्पको मज़[बूत] बनाने आज सर्वाधिक आवश्यकता [है।] असह्य कष्ट, यन्त्रणाओं और पीड़ाओं [को] बर्दाश्त करके भी हम अपना कर्त्तव्य [पूरा] करेंगे, पूर्ण करेंगे। ये हमारी पीठ [में] छूरा भोंकनेवाला, वह कोई हो, निन्द[नी]य मौत मरेगा। मैं सम्पूर्ण राष्ट्र और [सर्व]ोपरि अपने पुराने साथियों और [आ]ज सैनिकोंसे अपील करता हूं कि [आ]ज अपनेको पहलेसे कहीं अधिक प्रति[रोध]की भावनाके साथ सुसज्जित करो। [प्रत्]येक जर्मनसे मैं इस बातकी आशा [क]रता हूं कि वह अपना कर्त्तव्य करेगा। [मैं] चाहता हूं कि बड़ासे बड़ा त्याग और [बलिदान] सहर्ष स्वीकार करेंगे। प्रत्येक स्वस्थ [औ]र सबल व्यक्ति अपने जीवन और देह [की] बाजी लगा दे। रोगी और अपंगके [अतिरिक्त] अन्य सब लोग बिना किसी भेद [के] अन्तिम जीवन रक्त बिन्दू तक [परि]श्रमसे मुख न मोड़े। वर्तमान सङ्कट [चा]हे जितना भयानक क्योंन हो अन्त [में] हम उसपर विजय प्राप्त करके ही रहेंगे। [नि]यतिपर विजय हम अपनी अडिग [सं]कल्प सहर्ष बलिदान और अपने निजी [श्र]म द्वारा ही प्राप्त कर सकते हैं। आज [युद्ध]में कठोर नियति ग्रामों और कस्बों, [नग]रों और देशोंके सहस्रों व्यक्तियोंका [अ]स्तित्व मिटाये दे रही है। किन्तु अपने [प्रच]ण्ड अध्यवसायके बलपर इन तमाम [वि]परीत स्थितियों और कठिन परीक्षाओं [के] बावजूद हम इस कठिन भाग्यका अन्त [कर]के उसपर विजय प्राप्त करेंगे। आज [य]दि यह सम्भव है इसका एक मात्र कारण [यह] है कि १९३३ से जर्मन राष्ट्रका आ[न्]तरिक स्वरूप एकदम बदल गया है। [यदि] आजका जर्मनी वार्सा[ई] सन्धिवाला [जर्]मनी होता तो न जाने कब यूरोप [एशि]यासे आयी हुई तूफानी बाढ़में बह [गय]ा होता। ३० जनवरी १९३३ से हमारे राष्ट्रकी प्रतिरोध शक्ति इस प्रचण्ड रूपमें बढ़ गयी है कि पहलेके समयसे आजकी कोई तुलना हो नहीं हो सकती। हमारी प्रतिरोधकी भीतरी शक्ति अन्तिम विजय की सुनिश्चित गारण्टी है। यूरोप आज भयानक रोगसे आक्रान्त है और जो राज्य इस व्याधिमें पीड़ित हैं वे या तो प्रतिरोधकी आपनीपूर्ण शक्ति लगाकर उसपर विजय पायेंगे या वे मृत्युको प्राप्त होंगे। इस तरहकी व्यक्तिसे बचकर वही जीवित रह सकता है जो इस संकटका सामना करनेके लिये सर्वस्वान्त कर देने वाली प्रचण्ड शक्ति और अध्यवसायसे काम करेगा। इसीसे यह नितान्त अनिवार्य आवश्यक है कि हम अपने राष्ट्रको नभूतो न भविष्यति जैसी प्रचण्ड कठिन नियतिसे बचानेके लिये इस युद्धके दौरान में कहीं रुकें नहीं और कायमन वाक्यसे आदेशानुसार काम करते चले जायें।

जिस सर्वशक्तिशाली भगवानने हमें बनाया है, हम अपने अस्तित्वकी रक्षा करके उसकी कृतिकी रक्षा कर रहे हैं। इसकी रक्षामें हमें यदि अभूतपूव कठिनाइयों और बेजोड़ दुर्दशाओं और पीड़ाओंको वर्दाश्त करना पड़ है तो वही प्रेरणा हमें इनसे प्रेम करनेका बल भी दे रही है। अपने कठोर कर्तव्यका पालन करनेके लिये, सकटके अतिघोर कालमें भी, वही प्रेरणा हमें अत्यन्त कठिनता धारण करनेका भी बल देती है ताकि हम समाजनीत और सनातन जर्मनीके प्रति ही नहीं बल्कि अपनी राष्ट्रीयता त्याग देनेवाले कतिपय सम्मान हीनोंके प्रति भी अपने कर्त्तव्यका पालन कर सकें। अतः इस भाग्य बदलनेवाले कठिन संघर्ष में सिर्फ एक ही कमाण्ड, एक ही आदेश है और वह यह है कि जो इस युद्धमें अपनेको गौरव मण्डित करेगा वह सिर्फ अपना ही जीवन नहीं बल्कि अपने सजातीयेका जीवन भी बचा सकेगा। जो हीनता और कायरतापूर्वक हमारी पीठपर छूरा भोंकेगा उसकी असम्मानजनक मृत्यु अनिवार्य है।

इन शब्दोंके साथ हिटलरने अपनी वक्तृता समाप्त की। एक बार फिर इस संघर्षमें विजय एशियायी खूंखारोंकी नहीं बल्कि यूरोपको प्राप्त देशो और उसके शीर्षक स्थानपर वह राष्ट्र होगा जो १५०० वर्षसे पूर्वके विरुद्ध यूरोपकी सर्वाग्रणी शक्ति रहा है और रहेगा. वह है हमारा बृहत्तर जर्मन राष्ट्र।

रचनात्मक कार्यक्रम सबसे बड़ा

स्वाधीनता दिवसके दिन सेवाग्रामकी एक सभामें भाषण देते हुए महात्मा गांधी ने कहा कि रचनात्मक कार्य भद्र अवज्ञासे भी बढ़कर है। एक वर्ष पहले मैंने देशके सामने रचनात्मक कार्यक्रम रखा था। सत्य अहिंसाके द्वारा स्वराज्यपूर्ण स्वाधीनता प्राप्त करनेका केवल यही उचित तरीका है। भारतके इस प्रकार स्वाधीनता प्राप्त करनेका अर्थ है समस्त विश्वमें शोषित समाजोंके लिये स्वाधीनताकी प्राप्ति। महात्माजीने स्मरण दिलाया कि मैंने कहा था कि मैं कोई संघर्षशील कार्यक्रम नहीं चाहता, लेकिन रचनात्मक कार्यक्रमको कार्यान्वित करनेमें अगर कोई हस्तक्षेप न करे तो मैं आशा करता हूं कि लोग मर मिटनेके लिये तैयार हो जायेंगे लेकिन पीछे न हटगे।

हिन्दी उर्दू का संघर्ष

अभी पिछले दिनों लखनऊ विश्वविद्यालयकी उर्दू सोसाइटीमें भाषण देते हुए काजी अब्दुल गफ्फार खांने कहा कि हिन्दी उर्दू का संघर्ष तभी मिट सकता है जब कि दोनों भाषाओंके लोग कठिन शब्दोंका प्रयोग करना बन्द कर दें। वक्ताने इस बातपर जोर दिया कि भारत-फिल्म व्यवसाय भारतीय साहित्यको बड़ी हानि पहुंचा रहा है।

नेताओंपर प्रतिबन्ध क्यों ?

हालहीमें लगाये गये बिहारके नेताओं पर सरकारी प्रतिबन्धकी आलोचना करते हुए स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने कहा कि महात्मा गांधी यह सूचित कर चुके हैं कि कांग्रेस या व्यक्तिगत रूपसे सत्याग्रह आरम्भ करनेका यह उचित समय नहीं है। अतः सरकारने २७ जनवरीकी कार्यवाहीका यह अर्थ लगाकर बहुत ही अनुचित कार्य किया है कि कांग्रेसकर्मी युद्धकी स्थितमें सत्याग्रह आरम्भ करनेके लिये पूर्णरूपसे उतारू हैं। बिहार सरकार द्वारा पांच प्रमुख कांग्रेस नेताओंपर अभी हाल में जो प्रतिबन्ध लगाया गया है प्रत्येक स्वतन्त्रता प्रेमी व्यक्ति उसकी निन्दा अवश्य करेगी।

बिहारके दमनका रूप

बिहार प्रांतमें सरकारकी ओरसे होने वाली दमन नीतिपर वक्तव्य देते हुए उड़ीसाके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ दासने अधिकारियोंकी आलोचना करते हुए कहा कि मालूम पड़ता है कि बिहारके अधिकारी द्वितीय वर्गके हैं। वे ऐसे व्यक्ति नहीं हैं कि समयके रुखका खयाल करनेकी परवाह करें। उन्हें सभी जगह भूल ही दीखती है और आजके भीषण संकट कालमें बिहारके सच्चे सपूतोंकी सेवायें भी वे बर्दाश्त नहीं कर पाते।

जर्मन सेनाको चेतावनी

जर्मन सैनिक रेडियो द्वारा जर्मन सैनिकोंको यह चेतावनी दी गयी है कि अब पीछे हटनेका रास्ता नहीं रहा और परिस्थितिके अनुसार उनमें जोशका अभाव तथा जर्मनीके प्राणसे अधिक अपने प्राणको प्यारा समझकर कोई बच नहीं सकता। यह आदेश सभी सैनिकों एवं सभी अफसरोंपर लागू है।

४॥ करोड़ सेना चाहिये

त्रिवेदमकी एक सार्वजनिक सभामें भाषण देते हुए डा० मुंजेने कहा कि हिन्दुओंके ऐक्यके पक्षमें युद्धोत्तर कालमें सामाजिक पुनर्गठनकी योजनापर हिन्दुओंको अमल करना ही पड़ेगा। राष्ट्रीय सुरक्षाके क्षेत्रमें भारतको ३ करोड़ राष्ट्रीय फौज एवं १॥ करोड़ गृह रक्षक दलकी आवश्यकता होगी। इस तरह स्वाधीनता प्राप्तके बाद अपनी रक्षाके लिये हमें ४॥ करोड़ सेना चाहिये।

उड़ीसाको नाजुक स्थिति

अपने कलकत्ता आगमनका उद्देश्य बतलाते हुए उड़ीसाके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ दासने बतलाया कि मेरा कलकत्ता आगमनका उद्देश्य डा० प्रफुल्ल घोषसे मुलाकात करना तथा भारतीय पत्रों और जन साधारणको उड़ीसा की संकटपूर्ण स्थितिसे प्रभावित करना है जो बंगालकी अवस्थासे किसी भी रूपमें कम चिन्तनीय नहीं है।

धुरी नेताओंका भविष्य

अमेरिकाके स्टेट डिपार्टमेंटके उपमंत्री मि० जोसेफ ग्रिवने कहा कि अमेरिकन सरकारकी यह नीति है कि वह इस बात का खयाल रक्खे कि धुरी राष्ट्रोंके नेताओं तथा उनके सहायकोंका जो कि युद्ध तथा नृशंसताके अपराधी हैं अदालतमें पेश किये जायें। अमेरिकन सरकार इस विषयपर अपना कर्त्तव्य खूब जानती है। यह एक ऐसा कार्यक्रम है जिसमें सभी विषयोंपर उचित विचार किया गया है।

शिक्षाका उद्देश्य क्या हो ?

जयपुर महाराज कालेजमें भाषण देते हुए सर सी० वी० रमणने ज्ञानकी एकता पर कहा कि भारतकी वर्तमान शिक्षाप्रणालीमें आमूल परिवर्तनकी आवश्यकता है। शिक्षाका उद्देश्य सांस्कृतिक और साधारण होना चाहिये। टेकनिकल शिक्षा और [illegible] के मूल्यकी उपेक्षा नहीं की जा सकती लेकिन मुख्य उद्देश्य तो सांस्कृतिक अध्ययन ही होना चाहिये। वैज्ञानिक बिना सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और कलाकार बिना विज्ञानकी जानकारीके बहुत कुछ नहीं कर सकते।

कहानी

सनबो

—:*:—

(लेखक—श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल')

मैं अस्तबलमें घूम-घूमकर अपने घोड़ों को अपने हाथसे लूसन खिला रहा था। यों तो मैं अपने सभी घोड़ोंको एक-सा प्यार करता हूं, किन्तु 'सनबो'पर मेरा स्नेह औरों-से अधिक है। सनबो ही मेरा पुराना साथी है। इसने मेरे भले और बुरे सभी दिन देखे हैं। बुरीसे बुरी हालतमें भी सनबोका दूध कभी बन्द न हुआ। सनबो सात सेर गाय का दूध रोज पीता था। मैं ग्वालेसे अपने सामने दूध दुहवाता था! मेरी आंखोंके सामने ही सईस दूधकी बाल्टी सनबोके सामने रखता और वह अपनी गर्दन दो बार झुकाकर दूध साफ कर जाता। अपने सामने चार घन्टे सनबोकी मालिश करवाता था। रेसके घोड़ोंके लिये मालिश दाने और चोकरसे अधिक आवश्यक है। सनबो 'इङ्ग-लिश-ब्रीड' था। मैंने स्वयं मण्डी जाकर आठ हजारमें उसे खरीदा था। उन दिनों सनबो बचा था। लोगोंको स्वप्नमें भी यह ख्याल न था कि सनबो कभी बड़ी मीटिङ्गमें लार्ड विलिङ्गडनके घोड़ेको मारकर चमचम चमकता हुआ 'विलिङ्गडन कप' जीतेगा। उस रोजसे सनबोका एक-एक बाल लोगों-की नजरोंमें सोनेका हो गया। मैं उस दिन मालामाल हो गया। मेरी खुशीका ठिकाना न रहा। मैं तभीसे अन्य घोड़ोंकी अपेक्षा सनबोको हरेक चीज अधिक देता हूं। आज यद्यपि सनबो वह सनबो नहीं, जो दस साल पहले था—अब तो वह वृद्ध हो गया है। तथापि वृद्ध होना कोई पाप नहीं। दुनिया अपना मतलब देखती है। यकीन मानिये अगर दुनियाका उल्लू एक जवानकी अपेक्षा एक बूढ़ेसे अधिक सीधा हो, तो वह जवान और उसकी जवानीको ताकपर बिठा देगी। हाथ कङ्गनको आरसी क्या? कितने ही ऐसे बाप हैं, जिन्होंने अपनी सुन्दरसे सुन्दर, योग्य और विदुषी कन्याएं युवकोंका 'बायकाट' कर बुड्ढोंसे ब्याह दीं। उन:बूढ़े खबीसोंसे उनका उल्लू सीधा हुआ—वे मालामाल हो गये। बुढ़ापेने जवानीपर खिलखिलाकर विजय पायी। इसके अति-रिक्त दुनियाने सदैव ही वृद्धावस्थाका तिर-स्कार किया। यद्यपि यह सब जानते हैं कि उस रास्तेसे एकदिन गुजरना है, फिर भी परवाह कौन करता है! जब सिर पड़ती है, तो हाय-तोबा मचती है। अस्तु।

यों तो मेरे बहुतसे दोस्तोंने कहा कि झमेला क्या पाले। अब सनबोका जमाना चला गया, भारी घोड़ा है—दो घोड़ोंके बराबर खाता है—बेचकर अलग करो; लेकिन मैं उन हृदय-हीनोंको कैसे समझाता कि सनबो हमारा प्राण है। वह हमारे दुख-सुख का साथी है। इसे रेसवाले तो खरीदनेसे रहे, फिर क्या इसे मैं तांगेमें जोते जानेके लिये दे दूं। मेरा फूल-सा, नाज़ोंका पला सनबो तांगा खींचे—छिः यह ख्याल आते ही मैं आपेसे बाहर हो जाता। कभी उनसे बिगड़ जाता और कभी चुप रहकर 'एक चुप सौ को हरावे' वाली कहावत चरितार्थ करता। कभी अपने ही ऊपर झुंझला उठता। मेरी श्रीमतीजी भी मेरे ही तरह घोड़ेको जी-जानसे चाहती थीं। मेरी अनुपस्थितिमें वेही उसकी देखभाल करतीं। सामने खड़े होकर वे सनबोके दानेमें कसोलियन मिलवातीं और अपने सामने ही मालिश भी खत्म करा देती थीं। प्रायः लोग अपने सईसपर विश्वास करते हैं और गलती करते हैं। सईस घोड़ेके दानेमेंसे कितना ही दाना चुरा लेते और सस्ते दामोंमें इधर उधर बेच देते हैं। इसका फल बड़ा ही भयङ्कर होता है। इसकी कीमत उसके मालिकको रेसमें मिटकर चुकानी पड़ती है। कितनी बार मैंने ऐसे सईसोंको दाना और कसोलियन बेचते पकड़ा है।

हां, तो मैं सनबोको लूसन खिला ही रहा था कि एकाएक मेरा भतीजा राजेन्द्र दौड़ता हुआ आया और बोला—"चाचा-जी! चाचीजी आज रीजेण्ट पार्कमें लेक्चर देते समय पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर ली गयीं। बहन बिमला, चाची चपला और बुआजी भी गिरफ्तार हो गयीं। पुलिसने कांग्रेसके झण्डोंको भी छीननेकी कोशिश की। इस पर कार्यकर्त्ताओंको गुस्सा आया, किन्तु सत्याग्रह संग्राममें गुस्सा होना भी पाप है। पुलिसकी लाठियोंके वार भी सहे और गिरफ्तार भी हुए।"

यह सुनकर घबराया नहीं। मेरी सहधर्मिणीके लिये जेल जाना तो एक साधारण सी बात थी। जिले भरमें उन जैसी निर्भीक देशसेविका न थी। एकबार तो उनके सीनेके पास एक गोली भी लगी थी। कांग्रेसमें उनके कारण मेरा नाम था, पर सच पूछिये तो मेरी लाइन ही दूसरी थी। कांग्रेसके लिये जो मेरे हृदयमें अनु-राग था, उसका श्रेय मेरी श्रीमतीजीको ही था। मैं विचार प्रवाहमें बहा जा रहा था कि राजेन्द्रने फिर मेरा हाथ झकझोरते हुए कहा—"चाचाजी, चलो न? चाचीजी गिरफ्तार हो गयीं।"

मैंने कहा—"हां, हां, चलो।"

सनबोकी ओर मैंने देखा—सनबो हिन-हिना उठा। मुझे गुस्सा आया—दुःखमें भी हिनहिनाता है। फिर सोचा—"चलो भी, यह क्या जाने किसीका दुख-सुख। काश! यह भी हमारे ही जैसा आदमी होता! अधिक सोचनेके लिये समय न था। मैं जल्दी-से राजेन्द्रके साथ हो लिया। घूमकर देखा--सनबो हम दोनोंको बड़े गौरसे चुपचाप ताक रहा था।

(२)

भद्र-अवज्ञा-आन्दोलनके सिलसिलेमें मेरी श्रीमतीजीको ३ सालके कठोर कारा-वासकी सजा मिली। उनकी गिरफ्तारीसे रेससे मेरा मन उचट-सा गया। मैं घोड़ोंकी तरफ उतना ध्यान न देता, लेकिन हां, अपने बंगलेसे दिनमें एकबार सनबोको अवश्य देख आता था। यों तो सनबोको मैं केवल, सईसोंपर न छोड़ता, लेकिन मेरे भतीजे राजेन्द्रने मुझे पूरा विश्वास दिलाया कि वह पूर्णरूपेण उसकी देख भाल करेगा। मेरा भी घरमें मन न लगा। मैं भी अपनी सहधर्मिणी के पथका पथिक बना। गिरफ्तार होनेसे पहले मैंने राजेन्द्रको घण्टों तोतेकी तरह पढ़ाया और सनबोको सब प्रकारसे सुखी रख-नेको कहा। यहां तक कह दिया कि सनबो-को अपना सगा भाई ही समझना और उसकी खिदमतमें किसी बातकी कमी न करना। जेल जानेसे पहले मैंने अपने सनबोका सिर अपनी बगलमें ले लिया और कितने ही चुम्बन उसपर बरसा डाले।

इधर मैं घोड़ेसे अन्तिम बिदाई ले रहा था और उधर पुलिस इन्स्पेक्टर अस्तबलके बाहर मेरी बाट जोह रहा था। यों तो बहुत से मैजिस्ट्रेटों, बैरिस्टरों और पुलिस-अफ-सरोंको मैंने रेसमें अपने घोड़ोंपर कितने ही रुपये जितवाये थे; किन्तु इस समय उनकी सहायता होते हुए भी मुझे उससे लाभ उठाना स्वीकार न था। वे मुझे गिरफ्तार तो करा रहे थे, परन्तु उनका दिल बैठा जाता था। कहते—"भाई साहब! माफ़ी मांग लो। क्या बिगड़ जायगा? आपके पास रेसके इतने अच्छे-अच्छे घोड़े हैं। आपकी गैर—हाजिरीमें इन घोड़ोंकी देख भाल कौन करेगा। यह काम आपके भतीजे-के बूतेका नहीं।"

मैं केवल हंस देता।

समय अधिक न था। सब-इन्स्पेक्टर नया बदलकर आया था। वह रेस और रेसके घोड़ोंसे अनभिज्ञ था। देर होते देख वह तमतमाया हुआ सीधा अन्दर चला गया। सिपाहियोंने मुझे घेर लिया। शायद वे मुझे अब एक रेसियरसे क्रान्तिकारी समझने लगे थे। इन्स्पेक्टर बोला—"चलिये, साहब! देर हो रही है।"

मैंने कहा—"अच्छा जनाब! अभी चला।"

बस फिर मैं आगे बढ़ा! सनबो जोर-ज़ोरसे हिन-हिनाने लगा। उसकी हिन-हिनाहटमें मुझे कातरता और वेदनाका आभास मिला। मुझे लाल पगड़ियोंसे घिरा देखकर न जाने वह क्या समझ रहा था। वह अस्तबलमें चक्कर काटने लगा। मैं उसकी बेचैनी और वेदनाका प्रत्यक्ष अनुभव कर रहा था। मैं सनबोको उसी हालतमें छोड़-कर अपने अन्य घोड़ोंसे अन्तिम बार मिलने गया। किन्तु वे कमबख्त सब दाना खानेमें इतने व्यस्त थे कि उन्हें पता ही न चला कि कौन कब उनके पास आया और गया। मैं फिर 'सनबो' को एक नज़र देखने चला गया।

सनबो अबतक टकटकी लगाये, अपनी गर्दन ऊंची उठाये, बराबर मेरी गतिविधि-का निरीक्षण कर रहा था। मुझे अपनी ओर आता देख एकबार फिर उसका चेहरा खुशीसे खिल उठा। वह हिनहिनाया। मैंने उसके सिरपर हाथ रखा और "बेटा सनबो! मैं अब जेल जाता हूं। भाई राजेन्द्र सब तरहसे तुम्हारी करेगा!"

मैं चलनेको हुआ— सनबोने की आस्तीन अपने दांतोंसे दबा ली।

मैंने कहा—"छोड़ दो, बेटा! चाहा, तो जल्दी ही आऊंगा।"

बस फिर सिपाहियोंके साथ दिया। फाटकपर पहुंचकर मैंने फिर घूमकर पीछे देखा।—देखा, सनबो मेष दृष्टिसे मेरी ओर देख रहा है। चेहरा देखते ही वह फिर एकबार हिनहिना उठा। मेरे मनमें आया फिर बार फिर लौट चलूं और सनबोसे परन्तु पुलिसका रुख कुछ दूसरा चला था। अतः मन मारकर मैं चुपचाप बढ़ता गया।

(३)

दुनियामें खुशियोंकी भी कितनी जातियां हैं—दौलतकी खुशी, स्त्रीकी खुशी, नौकरीकी खुशी, खानेकी खुशी, बच्चेकी खुशी, बाग की खुशी, पदवीकी खुशी, तन्दु खुशी, आये-गयेकी खुशी, शत्रु खुशी, रेसमें जीतनेकी खुशी, किसी लेनेकी खुशी, किसीकी कविता छपवानेकी खुशी, पतंगबाजीकी खुशी बाजीकी खुशी, और भी कई कई खुशी आदि-आदि।

दुनियाकी तमाम खुशियां मैंने लिये छोड़ रखी हैं। मुझे आज खुशी है, तो अपने प्यारे सनबोकी। श्रीमतीजी तो अब भी जेलमें मेरे २ साल आज पूरे हो गये और यदा जेलके फाटकसे बाहर कर दिया मैं बरेली सेण्ट्रल जेलसे तांगा कर स्टेशन पहुंचा।

शामको चार बजे हमारी गाड़ी बाग स्टेशन पर रुकी। मैं खुशीसे सोचने लगा। आज ठीक सवा दो मैं अपने प्यारे सनबोको देखूंगा। भी मुझे एकाएक आया देखकर करेगा। मुझे देखकर वह कितनी हिनहिनाकर दौड़ेगा। सनबोको मैं लूंगा और पूछूंगा कि सनबो कभी भी याद की थी। शायनिङ्ग, साइप्रस जाने भी दो, ऐसे नालायक, बेमुरव्वत मेरे जेल जाते समय भी दाना छोड़ प्रति अपनी कुछ सहानुभूति न दिखाई न जाने राजेन्द्रने सनबोको कैसे रखा मैं सब पूछ लूंगा। सनबो मुझे देगा। पर हां, सनबोके लिये क्या चलूं। ठीक, याद आया—रास्ते अस्पताल पड़ता ही है। डाक्टर लूसन उन्होंने तमाम लगा रखा थोड़ा-सा लूसन ही अपने सनबोके चलूंगा—कितने शौकसे खाता है सनबो।"

मैं आगे बढ़ा। तांगेवालेको आ कितने ही तांगे आये, पर मैंने न लिया। मैं ऐसा तेज तांगा जो मुझे बातकी बातमें दिलकुशा

मैं फिर विचार-प्रवाहमें बहने लगा। …ड़ी देर बाद मेरे सामने एक तेज तांगा …ता हुआ दिखाई दिया। मैंने उधरको ही …ह करके आवाज दी—"ओ मियां …गेवाले।"

"खाली नहीं है, हुजूर!" तांगेवालेने …सरी ओर तांगा घुमाते हुए चिल्लाकर …हा। लेकिन यह क्या? घोड़ा इतने जोरसे …यों हिनहिनाने लगा? अरे! वह तो …गा खींचे मेरी ही ओर भागा चला आ …हा है। हैं! वह अपने मालिकके आज्ञानु…र उधर क्यों नहीं मुड़ा! अरे उसका …लिक भी बड़ा बेरहम है। ऐसे अच्छे घोड़े …र ताबड़तोड़ कोड़े बरसा रहा है।

मैं इतना सोच ही पाया था कि तांगा …लकुल मेरे समीप आ गया। मैं भयभीत …ो उठा। मैंने सोचा यदि इसी तरह खड़ा …हा तो यह बदमाश बिगड़ा हुआ घोड़ा …रे ऊपर चढ़ आयेगा और तांगे तथा टापोंसे …रा कचूमर ही निकाल डालेगा, किन्तु नहीं …ब मैं घोड़ेसे लगभग दस कदम रह गया, तो …सने अपनी चाल धीमी कर दी। अपने …लिकसे कोड़ा मारनेका बदला तो उसने …चमें ही गिराकर ले लिया था।

मुझे आश्चर्य हुआ। घोड़ा आगे बढ़ा। …ने उसे ध्यानसे देखा—मैं रो पड़ा। आह! …नबो था! घोड़ेने आते ही अपना मुहसेरे …इसे लगा दिया।

मैं चिल्ला उठा—"मेरे सनबो! तुम्हारी …ह हालत किसने की? मैं उसे मार डालूंगा …उसे जीवित ही जला दूंगा। क्या उस …मीने राजेन्द्रने तुम्हारी यह हालत की? …सने समझा कि मैं मर गया। सनबो! …रा बेटा! मैं यह क्या देख रहा हूं? क्या …न आंखोंसे यह भी देखना बदा था?

मैंने आगे बढ़कर उसका मुख चूमा और …सके तंग खोल दिये। सनबो मारे खुशीके …ल रहा था। इस समय उसकी हिनहि…ट मेरे कानोंमें अमृतवर्षा-सी कर रही …।

मैंने सनबोको थपथपाते हुए कहा— …सनबो! तुम बहुत ही कमजोर हो गये! …ह! तुम्हारी पीठपर कितने ही घातक …व हो गये हैं—फिर भी यह तांगे…ला तुम्हें जोते ही जा रहा है।"

सनबोने हिनहिनाकर अपना मुंह मेरे …धेपर रख लिया।

मैंने कहा—"बेटा, इतना हांफो मत। …तुम्हें फिरसे तगड़ा बना लूंगा। खूब दूध …लाऊंगा—लूसनकी भी कमी न होगी। सनबो फिर हिनहिनाया और जोर-जोर …हांफते-हांफते अपना मुंह मेरे कानके पास …या।

मैंने फिर कहा—"सनबो! क्या कहते …? मैं समझ गया। मैं राजेन्द्रको बहुत …ी सजा दूंगा। उसने तुम्हें दाना भी कम …या होगा। हुकसोलियन तो शायद दी भी …हो। अब चिन्ता मत करो।"

"हैं! यह क्या, सनबो तुम गिरे जा रहे …! हैं! गिर पड़े! अरे लोगो दौड़ो!! …रा बबा मरा जा रहा है!!! तुम देख रहे …—तुम्हें शर्म भी नहीं आती? ऐं सनबो! …दम तोड़ रहे हो—ठहरो मैं अभी पानी लाता हूं—मेरे बच्चे तुम मुझसे यों अलग मत हो।"

मैं दौड़ा हुआ गया। एक लोटा पानी लाया—सनबोके मुंहमें डाला। उसने आंखें खोल दीं—मैंने उसका सिर अपनी गोदमें ले लिया। देखा—उसकी बड़ी-बड़ी आंखोंसे आंसू बह रहे हैं। मैंने अपना रूमाल निकाला और उसके गरम-गरम आंसू पोंछ डाले। जरा देर बाद फिर उसके नेत्र सजल हो गये। वह अश्रुपूर्ण नेत्रोंसे मेरी ओर देखने लगा।

मेरे आंसू टपटप सनबोके मुंहपर गिर रहे थे।

थोड़ी देर बाद उसने दो हिचकियां लीं और फिर वह किसी वेदनासे छटपटा उठा। उसकी आंखें मुंद गयीं—मैं घबड़ा उठा और धीरे-धीरे उसका सिर सहलाने लगा। उसने एक बार फिर आंखें खोलीं—मुझे देखा और फिर?

और फिर उसने अपनी अश्रुपूर्ण आंखें सदाके लिये बन्द कर लीं।

'भारत छोड़ो' का अर्थ

यूनाइटेड पार्टी आव इण्डियाके मन्त्री जे० एम० सी० डोवरने महात्मा गांधीको एक पत्र लिखकर अनुरोध किया था कि 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव वापस ले लीजिये। पर महात्माजीने मन्त्रीको लिखा कि इस प्रस्तावका यह अर्थ नहीं है कि अंग्रेज भारत छोड़कर चले जायं, बल्कि यह है कि वे भारतमें शासकके रूपमें न रहें।

ससुराल नहीं जेलमें

स्वाधीनता दिवसके शामको बनारस की पुलिसने सदानन्द नामक एक डोम दुल्हेको गिरफ्तार कर लिया। कहा जाता है कि वह फौजी भगोड़ा था। जिस वक्त बारात रवाना होनेकी तैयारी कर रही थी। उसी समय पुलिसको खबर मिली। दुल्हेने जैसे ही पालकीमें पैर रखा उसे पुलिसने गिरफ्तार कर लिया। ससुराल पहुंचनेकी बजाय दुल्हा जेल गया।

स्वदेश-वार्ता

विश्वनाथदासकी ललकार

उड़ीसाके भूतपूर्व मन्त्री श्री विश्व-दास गत सप्ताह कलकत्ते पधारे थे। समय एक सभामें भाषण देते हुए होंने कहा है कि कांग्रेस फासिस्ट ी औरसाम्राज्यवाद विरोधी संस्था है। रा आज एक ही नारा हो, 'आजादी करो' बिना उसके देशमें अकाल र भूखमरी नहीं नहीं मिट सकती।

भूखा क्या नहीं करता

देहरादूनसे खबर मिली है कि एक र औरतने अपने एक साथी भिखारी केको रोटी खाते देखकर उससे स्वयं लकर खाना चाहा। बच्चेने रोटी नहीं जिससे क्रुद्ध होकर औरत बच्चेके कुतरकर खा गयी।

कस्तूर बा फण्ड कितना ?

कस्तूर बा गांधी राष्ट्रीय स्मारक के मन्त्री सूचित करते हैं कि अबतक करोड़ चौबीस लाख रुपये एकत्र हैं।

डाकेसे दमन बुरा

वर्धा, (डाकसे)। महात्मा गांधीने ारके भूतपूर्व मन्त्री श्री अनुग्रह नारा-सिंहके साथ बातचीत करते हुए कि रचनात्मक कार्यक्रमकी तीन ीटयां हैं, नियमित कताई, गांवोंमें हुई वस्तुओंका प्रयोग और अहिंसा अमली विश्वास।

श्री अनुग्रह नारायण सिंहने गांधी बातचीतके बाद कहा—महात्मा को डाकेको बुरा मानते हैं, किन्तु भी अधिक बुरा सरकारी दमन याचारको समझते हैं जिसमें निर-ष व्यक्तियोंकोपर जेलोंमें या बाहर याय होता है। वे ध्वंसकी भी निन्दा हैं। एक अहिंसकका डाके, सर-ी दमन और ध्वंसकी भी निन्दा ी चाहिये। इस बातका खण्डन हुए कि उन्होंने अहिंसामें परिवर्तन दिया है, उन्होंने श्री अनुग्रहनारायण को कहा कि ऐसा कुछ नहीं हुआ डाकुओंके स्वराज्यकी आवश्यकता है। सच्चे अहिंसकको अधिका-के जीवनपर डाका डालनेकी भी ी करनी चाहिये।

ठेकेदारके हौसला पस्त

युक्तप्रांतीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष कृष्णदत्त पालीवालकी भतीजीकी कानपुरके फौजी ठेकेदार पं० नारा-लाल पालीवालके पुत्रके साथ तय हुई परन्तु ठेकेदार साहबने ऐन मौकेपर करनेसे यह कह कर इन्कार कर म सत्याग्रहीके परिवारकी कन्यासे पुत्रकी शादी नहीं करेंगे।

महात्माजी प्रसन्नचित्त

वर्धा (डाकसे) आजकल संध्या-प्रार्थनाके पश्चात् बापू अपनी कुटियाके चादर ओढ़ चन्द्रमाकी शीतल चांदनीमें बैठकर आश्रम वासियोंके साथ विचार-विनिमय किया करते हैं। उक्त अवसरपर प्रायः सर्व श्री मशरूवाला, प्यारेलाल जाजूजी, नरहरि भाई पारिख, डा० सुशीला नायरण आदि रहते हैं।

बापूका स्वास्थ्य अब पूर्णतः ठीक हो गया है। खांसी तो करीब पन्द्रह दिनोंसे नहीं है। फिर भी अपनी शक्ति कायम रखनेके लिये डाक्टरोंकी सलाहसे दिन-भर मौन रखते हैं। वजन भी धीरे-धीरे बढ़ रहा है। महात्माजी प्रसन्नचीत दिखाई देते हैं।

सरकार १० करोड़ दे

विश्वस्त सूत्रसे ज्ञात हुआ है कि बाजारमें कपड़ेकी भारी कमी होनेके कारण टेक्सटाइल कन्ट्रोल बोर्डने सर-कारके सम्मुख यह सुझाव पेश किया है कि खादीके उत्पादनको प्रोत्साहन देनेके लिये सरकार अखिल भारतीय चर्खा संघको १० करोड़ रुपयेकी सहायता दे ताकि हाथसे बना कपड़ा ही लोगोंकी लज्जा निवारण करनेके काम आये।

सरकार पर दावा

'नव जीवन' ट्रस्टके व्यवस्थापक और मन्त्री श्री ज्ञानजी देसाईने अपने वकीलके मार्फत अहमदाबादके कलेक्टरके जरिये बम्बई सरकारको नोटिस दिया है जिसमें ५४५०० रुपयेके मालकी हानिका दावा किया है। सरकारके प्रेसपर कब्जा करनेके बाद उक्त माल नष्ट हो गया था।

ब्राह्मण नंगे पैर आगपर चला

लाहौरमें विहारके एक दुबले-पतले ब्राह्मणने एक आश्चर्यजनक प्रदर्शन किया। उसने १२ फीट तक फैले हुए धधकते कोयलोंपर नंगे पैरोंसे चल कर दिखलाया। यह कैसे सम्भव हुआ इसका वैज्ञानिकोंको भी उत्तर नहीं सूझ पड़ता। उसने इससे भी अधिक आश्चर्यका काम यह किया कि उसने एक पत्रकार और तीन लड़कियोंको भी उसी धधकती आग परसे नंगे पैरों सुरक्षित निकाल दिया और उनमेंसे किसीने भी यह अनुभव नहीं किया कि उनके तलवोंके नीचे आग है। आग २ फीटकी चौड़ाईमें १२ फीट तक फैलाई गयी थी। कोयलेके इतने तेज जल रहे थे कि सर्दी होनेपर भी पास खड़े हुए लोग आगकी तेजी अनु-भव कर रहे थे।

ब्राह्मण मथुरानाथ झा मिथिलापुरी बिहारका है और अब तारा मन्दिर बना-रसमें रहता है। वह अभी पंजाबमें आया था। उसे आगपर चलनेसे पूर्व अपने पैर पानीसे धोये जो पासके नलसे बाल्टी में लिया गया था। तब उसने एक बार आगकी परिक्रमा की। एक पत्रकारने उसके पैरोंको भलिभांति जांचा उसके पैरोंसे जो धूल लगी हुई थी उसे अलग करके देखा। तब वह आगमें घुसा और ८ या १० कदमोंमें उसे पार कर गया। यह काफी आश्चर्यकी बात थी। किन्तु जब उसने कहा कि वह अपने साथ किसी को भी आगपर हो कर ले जा सकता है तो पहिले तो इसके लिये किसीकी भी साहस नहीं हुआ, किन्तु फिर एक पत्र-कार ही इसकी सत्यताकी परीक्षाके उद्देश्यसे यह अप्रिय प्रयोग करनेके लिये तैयार हो गया। ब्राह्मण उसे अपने साथ आगपरसे ले गया। उससे उसे कोई हानि नहीं पहुंची। उसके बाद रा० ब० जानकी-दासाक पुत्रीयां और एक पुत्रबधु उसके लिये तैयार हुई। उनमेंसे दो उसके ऊपरसे साहसके साथ प्रसन्नतापूर्वक निकलगयी किन्तु एक आधी दूरीसे बाहर निकल गयी।

परचित बनकर ठग ले गया

जयपुरके दीवानकी पत्नी लेडी मिर्जा इस्माइलका अपनेको परिचित बताकर एक ठगने उनके करीब १ लाख रुपये मूल्यके जवाहरात उड़ा लिये। कहते हैं लेडी मिर्जा इस्माइल जब बंगलोरसे बम्बई पहुंची तो अपना बेग एक विश्वासी नौकरको देकर अपने मित्रोंसे बातें करने लगी कि इतनेमें ही एक ठग जो बहुत शरीफ मालूम होता था, आया और अपनेको लेडी इस्माइलका परिचित बताकर दादर स्टेशनपर नौकरोंके डब्बेमें चढ़ आया था, उस नौकरके पास पहुंचा और उसने उससे यह कहकर बेग ले लिया कि लेडी इस्माइल उसे मांग रही हैं। नौकरको यह मालूम नहीं था कि उस बेगमें कीमती जवाहरात हैं अतः उसने बिना किसी सन्देहके वह बेग उस ठगको दे दिया। बेग लेकर ठग चम्पत हो गया। अब पुलिस सरगर्मीसे पता लगा रही है।

बेसिर पैरकी बातें

अ० भा० हिन्दू महासभाके अध्यक्ष डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीने बंगलोरकी एक सभामें भाषण देते हुए राष्ट्रीय महासभा कांग्रेसको जी भरकर कोसा। उन्होंने पाकिस्तानकी आलोचना करते हुए कहा कि पाकिस्तानको श्री राज गोपालाचार्यकी योजना और महात्मा गांधीके आशीर्वादसे अधिक बल मिला हैं।

छात्रोंको साम्प्रदायिकताका पाठ पढ़ाते हुए डा० मुकर्जीने कहा कि आपने को पहले हिन्दू समझें और उसके बाद भारतीय समझें।

पोलिशसरकारकीराजधानीवारसो

लन्दन, ३ फरवरी। लुबलिन रेडियो ने घोषित किया है कि लुबलिनस्थ पोलिश सरकारने वारसाको अपनी राजधानी बना ली है। रायटर

'सत्यार्थ प्रकाश' पर प्रतिबन्ध

हिन्दू मिनिस्टरको अल्टिमेटम

कराची, ४ फरवरी। सिन्ध मन्त्रि-मण्डलके हिन्दू मन्त्री डाक्टर हेमनदास वधवानीको श्री घनश्यामसिंह गुप्तने अ-ल्टिमेटम दिया है उसमें कहा गया है कि सिन्धके हिन्दू मन्त्री सत्यार्थ प्रकाशके १४ वें समुल्लासपर लगाये गये प्रति-बन्धको हटानेमें असमर्थ रहे। अतएव अब सिवाय सत्याग्रह करनेके और कोई रास्ता नहीं रह गया है।

डा० वधवानीने कहाकि सिन्धका वर्त-मान वातावरण सत्याग्रहके अनुकूल नहीं है आपने अपीलकी है कि सत्याग्रह करके परिस्थितिऔर विषम बनायी जायेगी और उससे दूरस्थ गांवोंके हिन्दुओंके जीवन तथा सम्पत्तिपर खतरा पा जायेगा।

इस सम्बन्धमें यह भी कहा जाता है मुसलिम लीगमें ही दलबन्दी और मतभेद उत्पन्न है और एक दूसरेको बुरा बनानेकी कोशिश हो रही है। सिंध का इतिहास बतलाता है कि मन्त्रिमण्डल को बुरा बतानेके लिये विरोधी दलने सदैव प्रान्तमें अराजकता फैलानेकी चेष्टा की है, इस प्रकारके वातावरणमें सत्या-ग्रह करनेसे हिन्दू हितोंपर आघात होगा।

अन्तमें डाक्टर वधवानीने अनुरोध किया है कि जब तक इस अवस्थामें सुधार न आ जाये सत्याग्रह न किया जाये। यू० प्रेस

काहिरामें युद्ध समाप्त होनेकी अफवाह

काहिरा, ३ फरवरी। काहिरामें इस अफवाहने जोर पकड़ा कि जर्मनोंने युद्ध समाप्त कर दिया और मित्र राष्ट्रोंके साथ युद्धविराम सन्धि कर ली तो समा-चार पत्रोंके कार्यालयोंमें टेलीफोन द्वारा तहकीकातकी भरमार हो गयी। बिजली के प्रकाश द्वारा समाचार देने वाले यंत्रके सामने जनता इस आशासे एकत्रित हो गयी कि इस सम्बन्धमें उन्हें समा-चार बताया जायेगा। रायटर

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

[प]राजित जर्मनीके भाग्यमें क्या है ?

प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट और मि० चर्चिलके अज्ञातवाससे यह अटकल कि कहींपर त्रिराष्ट्र सम्मेलन हो रहा है। ठीक ही जान पड़ती है। यह अनुभव भी किया जाता है कि इस सम्मेलनके समाप्त होते ही जर्मनीके सम्बन्धमें एक सनसनीखेज वक्तव्य प्रकाशित होगा। प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट और मि० चर्चिल दोनोंही जर्मनीके बिनाशर्त आत्मसमर्पणसे कम सन्तुष्ट न होनेके अपने संकल्पपर दृढ़ हैं। यह समझा जाता है कि जैसे इटलीके मामलेमें किया गया था वैसे ही जर्मनीके मामलेमें भी बिनाशर्त समर्पणकी आवश्यक शर्तोंको प्रभावित कर दिया जायेगा।

प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टके व्यक्तिगत सलाहकार मि० हैरीहोपकिन्सने यह बात जोरके साथ कही है कि इस बारके 'महान तीन' सम्मेलनमें सैनिक समस्याओं और प्रश्नोंकी अपेक्षा राजनीतिक मामलोंको प्रधानता दी जायेगी। उनका वक्तव्य लन्दनके इस जोरदार अनुमानको और जोरदार बनाता है कि प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने मि० चर्चिल और स्टालिनके पास विभिन्न प्रकारकी खास खास प्रस्तावनाएं भेजी हैं। मालूम हुआ है कि यूरोपमें स्वतंत्र किये गये देशोंपर दक्षिण पंथी अथवा वामपंथी सरकार गढ़नेका जोरदार विरोध करेंगे। जर्मनीके मामलेमें उनका निर्णायक मत होगा, ऐसा भी समझा जाता है। कहा जाता है कि भविष्यमें मित्रोंकी अमेरिका द्वारा उधारपट्टा और उधार देनेकी सहायताकी शर्तें दबाव डालनेके माध्यमका काम करेंगी।

लन्दनके राजनीतिक अञ्चलोंमें यह कहा जा रहा है कि रूसी प्रगतिकी तेज रफ्तारने जर्मनीकी समस्या सर्वोपरि कर दी है। चिन्ता तो इस बातसे हो रही है कि पराजित जर्मनीके साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाना चाहिये इस सम्बन्धमें ब्रिटेन और अमेरिका दोनोंके पास कोई कार्यक्रम तयार नहीं है। साधारणतया बहुतसे राजनीतिक प्रस्तावनाएं सामने आ चुकी हैं किन्तु उनको कार्यमें परिणत करनेके लिये कोई पर्याप्त प्रणाली नहीं है। इसके सिवा लन्दनको इस बात का पता भी तो नहीं है कि रूसी अधिकारमें आये हुए जर्मनीकी शासन व्यवस्था सम्बन्धी रूसी योजनाएं क्या हैं ?

कमरकसकर बर्लिन तैयार

जर्मन संवाद समितिने इस समाचारका खण्डन किया कि बर्लिन खाली किया जा रहा है और अधिकारी शहरको छोड़कर भाग गये हैं। यह प्रत्यक्ष है कि शत्रुका आगामी लक्ष्य बर्लिन ही है और बर्लिन मुंह तोड़ जवाब देनेके लिये सम्पूर्णरूपसे सुसज्जित हो रहा है।

हाल हीमें इस आशयकी अफवाह उड़ाई गयी थी कि जर्मन सरकार बर्लिनसे म्युनिक चली गयी है किन्तु लन्दनमें भी साधिकार यह बात कही गयी है कि बर्लिन स्थित स्विस राजदूतको जर्मन सरकारने म्यूनिक ले जानेकी कोई सूचना नहीं है बर्लिन स्थित निर्पेक्ष द्रष्टाओंका कहना है कि म्यूनिककी अपेक्षा हिटलरके ग्रीष्मकालीन निवास ओबरसाल्जबर्गमें जर्मन सरकारके जानेकी अधिक सम्भावना प्रतीत होती हैं।

प्रायः १२००० हंगेरियन यहूदी पैदल ही स्विटजर लैण्डकी ओर, भीषण जाड़ेमें चल पड़े हैं। उनके पास भोजन और वस्त्रकी कोई व्यस्था न होनेकी वजहसे रास्तेमें सैकड़ों भूखकी पीड़ा और शीतसे मर रहे हैं।

ईरानमें तैल-नीति

ब्रिटिश पार्लमेण्टमें उपपरराष्ट्र सचिव मि० जार्ज हिलने बताया कि मुझे इस बातकी आशा है कि उपयुक्त समय आनेपर तैल नीतिके सम्बन्धमें ब्रिटेन, रूस और अमेरिका तथा ईरान सरकारके विचार मुख्यतः एक दूसरेके अनुकूल दिखाई देंगे अभी इस सम्बन्धमें कोई विस्तृत आलोचना नहीं हुई।

डा० गोयबल्स सेनापतिके रूपमें

ग्लोब संवाद समितिका कहना है कि बर्लिनकी रक्षाके लिये अन्तिम मोर्चेका सेनापति जर्मनीके प्रचार मंत्री डा० गोयबल्सको नियुक्त किया गया है। कहते हैं कि इस नियुक्तिकी घोषणा उस समय तक न की जायगी जबतक रूसी सेना बर्लिनके इर्दगिर्द न पहुंच जायेगी।

खास बर्लिनपर खतरेका समय आनेपर हिटलर तथा नाजी हाई कमाण्डके अन्य सब अधिकारी दक्षिण जर्मनीको चले जायेंगे। बर्लिनमें कमाण्डर गोयबल अन्त तक लड़ेंगे और जब वे देखेंगे कि अब उनके गिरफ्तार हो जानेकी आशङ्का है उसी समय तीव्र जहर खाकर वे प्राणान्त कर देंगे। यह तीव्र जहरकी शीशी हर समय उनके पास रहेगी। कहते हैं कि उन्होंने घोषणा की है कि मैं किसी हालतमें जर्मनीसे भागूंगा नहीं; किन्तु प्रचारको जोर देनेके लिये झूठ बोलना उनका पेशा है कि उनका यह वक्तव्य भी सन्देहसे परे नहीं है। कहते हैं कि प्रति घण्टे ४०० मीलकी रफ्तारसे उड़नेवाले ६ हवाई जहाज हर दम तैयार खड़े रहते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर उनके नाजी स्वामियोंको जर्मनीसे अन्यत्र भेजा जा सके। इनमेंसे दो विमान मध्य जर्मनीमें हिटलरके निवास स्थानमें दो बवेरिया स्थित गुप्त स्थानमें और बर्लिनमें हैं। रहस्य गोयरिंगका नाम नहीं सुना जा रहा है।

रहस्यपूर्ण विमान तैयार

लन्दनके डेलीमेलके जूरिकस्थित संवाददाताका कहना है कि बर्लिनसे प्राप्त समाचारोंसे मालूम हुआ है कि बवेरिया प्रान्तान्तर्गत आग्सबर नामक स्थानके निकट लाकफील्डमें लम्बी उड़ानके सम्पूर्ण सरंजामसे लैस दो जर्मन सैनिक ट्रांसपोर्ट विमान तैयार कर रखे गये हैं। प्रत्येक विमानमें आठ यात्री बैठ सकते हैं तथा ४० घण्टे उड़ते रहनेके लिये पर्याप्त पेट्रोल है। विमानोंकी रक्षाके लिये ईर्दगिर्द मजबूत पहरा बैठा है किन्तु यह पता नहीं चला कि यात्री कौन हैं और उनका मन्तव्य स्थान क्या है।

यूनानके मामलेमें चर्चिलका बेईमानी

ब्रिटिश पार्लमेण्टकी कामन सभाकी बैठकमें गत ३० जनवरीकी रातको बिना किसी पूर्वलक्षणोंके अचानक तूफानसा उठ खड़ा हुआ जब वामपक्षी कामनवेल्थ पार्टीके लीडर सर रिचार्ड आकलैण्डने यह आक्षेप किया कि यूनानपर अपने अन्तिम भाषणोंमें मि० चर्चिल और मि० ईडेनने बेईमानी की है। कई सदस्योंने सर आकलैण्डके इस कथनको मिथ्या बताया।

बहसके जवाबमें उप-परराष्ट्रसचिव मि० जार्ज हालकी वक्तृताके बाद, जिन्होंने इस अभियोगको अस्वीकार किया कि मि० चर्चिल यूनानके सम्बन्धमें बाहर गुप्त समझौता कर चुके हैं, सर रिचार्ड आकलैण्ड बोले। मि० हाल नियमानुसार सर आकलैण्डकी वक्तृताके जवाबमें बोलने नहीं पाये। वे इतना ही कह सके कि ऐसी कोई बात नहीं हुई है जिससे यह समझा जाये कि प्राइम मिनिस्टर और परराष्ट्र-सचिव द्वारा कही गयी बातें सन्देहास्पद हैं। सर रिचार्ड आकलैण्डने कहा कि मैं इस मामलेको फिर उठाऊंगा।

यू० बोटका खतरा नये ...

ऐसा समझा जाता है कि जर्मन ... बोटोंके आक्रमणोंका पूरा असर ... मालूम होगा। अभी यू० बोट संघर्ष ... प्रचण्डताको नहीं पहुंचा किन्तु इसमें ... नहीं कि संघर्ष शीघ्र ही उस पैमानेपर ... चेगा जिससे दोनों पक्षोंको भारी ... उठानी पड़ेगी। यू० बोटके खतरेको ... उपाय द्वारा अधिक भयङ्कर बनाया ... है। इस उपाय द्वारा पानीके नीचे ... रहनेपर लोग श्वांस ले सकेंगे। ... स्वरूप सब मेशीनें बहुत देर तक ... नीचे रह सकेंगी। कहते हैं कि जबतक ... पास खाद्य और तेल रहेगा तबतक वे ... भीतर रह सकती हैं इसके सिवा आ... बिना ही वे अपनी बैटरियोंको भी ... सकती हैं।

हिन्दू कोडके फायदे

अखिल भारतीय महिला स... की प्रतिनिधि श्रीमती के० शिवा... जो हिन्दू कानून समितिकी इनचा... अपनी एक मुलाकातमें बताया कि ... लनने हिन्दू कोडके मसविदेपर ... ओरसे एक 'मेमोरेण्डम' राव को ... सेवामें भेज दिया है। अगले ... सम्मेलनके कुछ सदस्य अपने बयान ... देंगे। सच पूछा जाय तो हिन्दू ... महिला समाजके लिये प्रगतिशील ... है। इससे कोई यह न समझे कि ... सुधारक चाहते हैं, इसीलिये ये ... नवीन व्यवस्था की जा रही ... यह महिलाओंकी उन्नतिका एक ज... है। इसे अपना लेनेसे भारतकी ... तालोंक ... की महिलाओंक ...

Allenburys
FAMOUS PRODUCTS

एलन एण्ड हैनबरीज की बहुत-सी वस्तुएं भारतवर्ष के मित्रोंको अभी भी मिल रही हैं और वे उनसे उसी प्रकार सन्तुष्ट हैं जिस प्रकार पहले। कुछ ऐसी चीजें हैं जिनपर प्रतिबन्ध है और कुछ ऐसी चीजें हैं जो युद्धकाल में मिल ही नहीं सकतीं, पर फिर भी ज्यों ही अवस्था सुधरेगी माल पुनः सप्लाई करनेकी यथासम्भव चेष्टा की जायगी।

Allenburys

FOODS • FEEDERS • RUSKS
HALIBORANGE • BYNIN AMARA
PASTILLES • LIXEN • CASTOR OIL

Allen & Hanburys, Ltd.
(Incorporated in England)
CLIVE BUILDINGS, CALCUTTA

हमेशा मनमुग्धकारी सेण्ट

ओटो दिलबहार (रजिस्टर्ड)

व्यवहार कीजिये

रूमालमें दो चार बूंद डाल देनेसे ४८ घंटे बाद भी ताजी सुगन्धि मिलेगी। एकत्रित फूलोंका सार सुविधाजनक शीशियोंमें आपको मिलता है।

इसकी सुगन्धि कड़ी नहीं, बल्कि मीठी और भीनी है। आज ही एक शीशी खरीदिये और फिर तो आप इसे ही पसन्द करेंगे। नमूनेकी शीशीके लिये दो आनेका पोस्टेज भेजकर परीक्षा कीजिये।

सभी साइज की शीशियां हैं—
सोल एजेण्ट्स :
दंगलो इण्डियन ड्रग एण्ड केमिकल कम्पनी, बम्बई २

किसी भी औषधिकी बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम

रोगका घर

खांसी

इस औषधिसे नई व पुरानीसे पुरानी खांसी, दमा, श्वासको तीन दिनमें पूरा फायदा होता है। एक रोगीको पूरी आरोग्य लायक एक ...की औषधिका मूल्य २) रुपया।

मासिक धर्म

इस औषधिसे मासिक धर्मकी गड़बड़ी मासिक धर्म अधिक या कम दिनोंमें होना ऋतुकालमें पेट कमर पेडू और शिरमें दर्द होना मासिक धर्मके रंगमें फर्क होना या एकदम बन्द हो जानाको आराम कर गर्भ धारण हो जाता है। गर्भवती स्त्रियां इसे व्यवहार न करें। गर्भ धारणके बाद इसे व्यवहार करनेसे गर्भपात हो जाता है। मूल्य २) रुपया। (८४)

पुत्रदा

इस औषधिसे निश्चय गर्भ रहकर पुत्ररत्नकी प्राप्ति होती है। पूर्ण विवरण के साथ लिखें। मूल्य २) रु०

पता--श्रीकृष्णचन्द्र
नं० २ कतरीसराय, (गया)

गर्भावस्था में निषिद्ध

किसी भी कारणसे बन्ध ऋतुको एवरवरजिन (गव० रजि०) की एक मात्रा निश्चित रूपसे खोल देती और यही बाधक का ब्रह्मास्त्र है। मूल्य ३॥)।

कविराज पी० भट्टाचार्य।
सिद्धान्तशास्त्री, मार्डन आयुर्वेदिक वर्क्स, नवद्वीप, बंगाल। कलकत्ता—राइमर एण्ड कम्पनी, नं० ११४, आशुतोष मुखर्जी रोड और शाखाएं।

मदनमंजरी गोलियां

स्वप्नदोष, धातुविकार, कब्जियत, सुस्ती, कमजोरी नामर्दी वगैरहको दूर करके बल व वीर्य बढ़ाती है। की० डि० रु० १)

मदनमंजरी फार्मेसी-जामनगर

कलकत्ता ब्रांच : १७७, हरिसन रोड, बनारस एजेन्ट—राधेलाल एण्ड सन्स, चौक रायगढ़ एजेन्ट—एन. माला एण्ड सन्स

सफेद बाल काले!

खिजाबसे नहीं, हमारे आयुर्वेदिक केशसञ्जीवनी (सुगन्धित) तैलसे बालोंका पकना रुककर सफेद बाल जड़से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आंखोंकी रोशनीको बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापसकी शर्त लिखा लें। मूल्य २), बाल बहुत अधिक पक गया हो तो ४) का तैल मंगावें।

श्री सदानन्दराम सञ्जीवनी औषधालय नं० २०, पो० बारसलीगंज, (गया)

गुड़ (शक्कर) खांड़, चावल, अनाज, दाल, तेल, बीज और रुई आदि के

व्यापार के लिये

लिखिये :—
मेसर्स पूरनमल हरस्वरूप
चावल-आयात के चीफ एजेंण्ट, स्टाकिस्ट, सप्लायर और कमीशन एजेण्ट
हापुड़ (यू० पी०)
ई० आई० रेलवे
तार—SHREE, फोन ९४

श्वेतकुष्ठकी अ...
जड़ी

औरोंकी भांति झूठी प्रशंसा ... यदि तीन ही दिनकी दवासे रोग ... न हो तो दूना दाम वापस। ... लिस्ट मेव प्रतिज्ञापत्र लिखा ... पता—महावीर औषधालय नं० २० ...

बवासीरका ...

क्या इससे रहते भी आप ... यदि २१ दिनमें खूनी या बादी दूर न हो तो दूना दाम वापस। मूल्य ... श्री वनस्पति भंडार, ...

आपकी किस्मतमें क्या लिखा है

अगर आप एक सालके अन्दर पेश आने वाले अच्छे बुरे हालातोंका ... पहले जानना चाहते तो आज ही हमको सिर्फ एक पोस्टकार्ड पर अपना पता और किसी फूलका नाम लिख कर भेज दीजिये। बस फिर हम ज्योतिष ... हिसाबके आपके आनेवाले १२ मासका नफा नुकसान, किस तिजारतमें ... होगा किस जरियेसे रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमतमें तरक्की, ... दला, तनज्जुली, औरत और औलादका सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूरका ... मुकदमा और इम्तिहानमें सफलता, सगाई, शादी, जमीन व जायदादका सुख, ... से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारणसे धनका मि... सारांश तारीख कार्डसे लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातोंका ... यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आनेमें वी० पी० पी० द्वारा देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथमें बदकिस्मतीको खुश किस्मतीमें ... का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आने वाली मुश्किलोंको दूर किया जाय। एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्याके कितने ... हैं। गलत साबित होनेपर कीमत वापिस

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम (V. C.) जालन्धर सिटी।

बड़े दुःख की बात

कि कोटा और अन्य प्रतिबन्धों के कारण Angier's Emulsion एञ्जीयर्स एमल्सन का स्टाक रोगियों और सर्वसाधारण की मांग से बहुत कम है।

हमलोगों को इस बातका विश्वास है कि हमारे संरक्षक महाशय ... रहे हैं कि हमलोग सप्लाई करनेका पूरा यत्न कर रहे हैं, पर परिस्थितिके कारण समय-समयपर सप्लाई निश्चित परिमाणमें ... विक्रेताओंपर दोषारोपण न करें। वर्तमान कमी केवल अस्थायी है।

ANGIER'S Emulsion

शीत ऋतु में शक्ति संचय कीजिए

सिद्ध मकरध्वज

स्वर्ण, मोती, कस्तूरी आदि बहुमूल्य चीजोंसे तैयार किया गया यह रसायन बल व पुरुषार्थ बढ़ाता है। सब प्रकार की निर्बलता को दूर करता है।

मूल्य ३॥।) माशा, ४५) तोला

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट अवलेह है दिल को विशेष ताकत देता है। पुरानी खांसी, दिल की धड़कन, दुर्बलता में लाभदायक है।

मूल्य १॥ ≡) पाव, ...

आजकल इनका सेवन अवश्य कीजिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी (हरद्वार)

एजेंसी { पटना-मछुआटोली बांकीपुर। गया-स्नातक फार्मेसी, टीकारी ... आरा-सुधा आयुर्वेदिक फार्मेसी। मुजफ्फरपुर-कल्याणी चौक ...

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—७ कलकत्ता फरवरी १२, १९४५, Calcutta, FEB. 12, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

शायद आप नहीं जानते।

गत वर्ष एक समय ऐसा भी आया, जब ...के केन्द्रीय तारघरसे प्रतिदिन ३०,००० ...धिक तारोंका आदान-प्रदान हुआ। ...फोन एक्सचेंजमें अधिकसे अधिक व्य-

...लैण्डमें गल्लेको सुरक्षित रखनेके लिये आजकल ऐसी ही कोठियां बन रही हैं। प्रत्येक कोठीमें ९ हजार टन गल्ला रखा जा सकता है।

...का समय दिनमें ११ बजेसे ४ बजे तक- ...ता है और स्थानीय बातचीतके लिये ...कम व्यस्तता तीसरे पहरको १ बजेसे ...तक और फिर इसके बाद ६ बजे सायं-...के बाद होती है। ट्रंक कालके लिये ...अधिक सुभीतेका और शीघ्रतासे मिलने ...समय प्रातःकाल ९ बजेसे पहले और ...सायंकालसे बादका होता है।

...रेलवे बोर्ड तथा रेलवेकी शासन व्यवस्था ...कुल स्वतन्त्र एक और ऐसा संगठन है ...र हजार मील लम्बी भारतीय रेलोंपर ...करने वाली जनताकी केवल सुरक्षाका ...रखता है। इसका नाम सरकारी रेलवे ...स्पेक्टरेट (निरीक्षण संगठन) है। इसके ...ोंमें ये कार्य सम्मिलत हैं—नयी बनने ...समस्त रेलवे लाइनोंको तथा पुरानी लाइनोंपर नये बनाये गये कामको जनताके लिये चालू करनेसे पहले निरीक्षण करना, समस्त चालू लाइनोंका समय-समयपर निरीक्षण और दुर्घटनाओंकी जांच।

गंगाके मैदानमें गर्मीके दिनोंमें तीसरे पहर सूर्यकी जो पीली चमक दिखाई पड़ती है, उसका कारण यह है कि तेज पश्चिमी हवाओंके कारण सारे निचले वायुमण्डलमें धूल भरी होती है।

युद्धके पहले भारतके अन्तरिक्ष विशेषज्ञोंके पास प्रतिदिन केवल दो खाके होते थे, जिनके आधारपर वे अपनी मौसम सम्बन्धी भविष्य-वाणियां वायुयानके चालकोंके लिये अंकित करते थे। लेकिन आजकल इनके अतिरिक्त प्रतिघंटेके बाद उनके पास मौसम सम्बन्धी नये खाके होते हैं।

पत्थरके कोयलेसे पेट्रोल

विहार सरकारके डाइरेक्टर आव इण्डस्ट्रीजने एक नया आविष्कार किया है जो विहारके कोयला उद्योगमें एक युगान्तरकारी परिवर्तन लायेगा। अभीतक पत्थरके कोयलेको आगमें जलाकर कोलतार निकाला जाता है; लेकिन अब एक ऐसी मशीन तैयार की गयी है, जिसके द्वारा बिना आग लगाये ही कोलतार निकल आयेगा। कलकत्तेकी विश्वकर्मा कम्पनीने इस मशीनको बनानेकी जिम्मेदारी ले ली है और वह शीघ्र ही तैयार हो जायेगी, ऐसी आशा की जाती है। आगामी १ मार्चसे विहार सरकार झरियामें इस नये उद्योगको प्रारम्भ कर देनेका विचार कर रही है। काम चालू हो जानेपर एक टन कोयलेसे कोलतारके अतिरिक्त ३ गैलन पेट्रोल भी निकल सकेगा।

नाजी युद्धबन्दी शिविरमें बनी हुई एक भट्ठीका चित्र। गैस-चेम्बरमें मृत्युदण्ड कार्यान्वित करनेके बाद लाशें इसी भट्ठीमें जलाकर खाक कर दी जाती थीं।

नवकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१५, कल्लू घटकी स्ट्रीट, कलकत्तामें सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

वैसे तो अब गत १२ जनवरीको ल कोनीवने अपना शीतकालीन महान आक्रमण विश्चुला नदीके ऊपरी के क्षेत्रमें आरम्भ किया था, नाजी ओंने तभी जर्मन जनताको यह चेता- दे दी थी कि बर्लिनके लिये लड़ाई भ हो गयी है, परन्तु इस समय नके पूव ओडर नदीपर बर्लिनके छोटे रास्तेपर सुप्रसिद्ध रूसी जेन- मार्शल जुकोवकी प्रचंड सेना जो कुछ रही है, उसपर सचमुच जर्मनीकी नीका भाग्य निर्भर होगा। जर्मन वक्ता लेफ्टनेंट जेनरल डिटमारने वरीकी रातको रेडियोपर भाषण हुए कहा है कि, "अब ओडर नदी हो गयी है कि उसीके तटपर जर्म- भाग्यका निर्णय होगा।" पहले जो मझा जाता था कि मार्शल जुकोव सेनाको फिरसे ठीक करने और ोंको सुस्तानेका समय देनेके लिये नदीके तटपर पहुंचकर कुछ सप्ताह पर अब तो लक्षण कुछ और ही हे हैं। ८ फरवरीको मास्को-स्थित के खास संवाददाताने जो तार ा, उसमें कहा है कि, "यद्यपि यह कथन करना असंभव है कि रूसी र्लिनमें प्रवेश करेंगे, तथापि संभवतः ा २३ फरवरीतक वहा पहुंच लिये भारी उद्योग करेंगे, यह उस सेनाका सत्ताईसवां जन्म- है।" उस तारीखतक मार्शल जुकोव र नदीका लगभग पचास मील ने अधिकारमें कर लिया था, बर्लिनके पड़ोसकी बस्तीकी दूरी चालीस मील है। अब मास्कोसे क उसी संवाददाताने अपने १० के तारमें यह कहा है कि, "बर्लिन- लड़ाई चल रही है। कई दिनोंकी के बाद मार्शल जुकोवके एकत्र टैंक बर्लिनके सबसे छोटे रास्ते- र नदीके रणक्षेत्रसे पश्चिमकी रहे हैं। मास्कोमें महत्वके समा- प्रतीक्षा की जा रही है। किसी सोवियटके प्रधान सेनानायक घोषणा की जानेकी आशा की कि लाल सेनाका सबसे बड़ा आरंभ हो गया।" अबतक मालूम है कि मार्शल जुकोवकी ाथ रहनेवाले एक सोवियट पत्र- ाको यह रिपोर्ट भेजनेकी इजा- गयी है कि, "हमारे टैंक एक पर ओडर नदी पार करनेको है, जहांसे बर्लिनको एक छोटा ा रास्ता जाता है।" वैसे जर्मन तो यहांतक कहा गया है कि जुकोवकी सेनाने बर्लिनके पूर्व ीके पार अपने लिये स्थान बना र यहां ओडर पार करनेके की पुष्टि मास्कोसे नहीं हुई है।

महायुद्धका सिंहावलोकन।

हां, दक्षिणकी ओर मार्शल कोनीवकी जो सेना ओडर पार कर चुकी है, उसने ब्रेसलौके उत्तर-पश्चिम आक्रमण आरंभ कर दिया है। फिर भी समाचारोंसे अभीतक यह निश्चित रूपसे नहीं मालूम होता कि मार्शल जुकोवकी सेनाने ओडर नदी बर्लिनके सामने पार की है या अभी नहीं। बर्लिनके सामने इस ओडर नदीपर ही जबर्दस्त मोर्चा बंध सकता है, इसलिये इसमें तो कोई संदेह ही नहीं कि जर्मन सेनापति यहां रूसी सेनाओंसे जी होमकर लड़ेंगे और उनका आगे बढ़ना रोकनेके लिये अपनी शक्तिभर कुछ भी उठा न रखेंगे। यहां यदि उन्हें सफलता नहीं मिली, तो वे ओडरसे बर्लिनकी ओर बढ़नेवाली रूसी सेनाको बीचमें और कहीं न रोक सकेंगे।

जर्मनीसे जो समाचार आते हैं, उनसे यही प्रकट होता है कि ओडर नदीपर रूसियोंको रोकनेके लिये जर्मन सेनाएं अपनी सारी शक्तिसे उद्योग करेंगी। मालूम हुआ है कि "जर्मनोंने अपने सारे वायुयान लड़ाईमें झोंक दिये हैं, जो ओडर नदीके तटोंपर उन सभी स्थलोंके ऊपर उड़कर बमवर्षा करेंगे, जहां रूसी पलटनोंको व्यवस्थित करनेका काम हो रहा है। वे कूस्ट्रिनसे फ्रैंकफर्टतकके समूचे साठ मीलके युद्धक्षेत्रपर आक्रमण कर रहे हैं।" ८ फरवरीसे ओडर तटपर धुआंधार लड़ाई चल रही है और मास्कोसे पाल विंटरनकी भेजी हुई ६ फरवरीकी रिपोर्ट में यह कहा गया है कि, "इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि शत्रु बड़ी जबर्दस्त लड़ाई लड़ रहा है। इसीकी आशा भी थी, क्योंकि यदि वह रूसियोंको ओडरपर ही नहीं रोक सकता, तो उन्हें और कहीं नहीं रोक सकता।" बर्लिन शहरके पूर्वी सिरेकी बस्ती 'युद्ध क्षेत्र' घोषित कर दी गयी है और वहांके लोग हटा दिये गये हैं तथा असैनिक सवारियोंका चलना बन्द कर दिया गया है। बड़ी इमारतों और युद्धकी दृष्टिसे महत्वके सभी स्थलोंपर जर्मन सेनाने अधिकार कर लिया है।" जर्मन अपनी वर्त्तमान अवस्थाकी निर्बलताको तो स्वीकार करते हैं, पर आत्मसमर्पणको आत्महत्या समझ उससे बचनेका दृढ़ निश्चय अभीतक किये हुए हैं। उन्होंने आशा नहीं त्यागी है, पर अब कब और कहां वे रूसी सेनाओंका बढ़ना रोकने और उन्हें हटा देनेकी आशा करते हैं, यह स्पष्ट शब्दोंमें कहनेका साहस उन्हें नहीं होता है। डा० गोएबेल्सने भी अपने इस सप्ताहके पत्र 'डास रीख' में यह गोलमटोल बात लिखी है—"ऊसर और मैदानसे (रूससे) उठनेवाली लहर ठीक उसी क्षण रोक दी जायेगी, जब खतरा अपनी पराकाष्ठाको पहुंच जायेगा और वह सबोंको दिखाई पड़ेगा। उस समयतक हमें अपने दिमाग ठंढे और पर मजबूत रखने चाहिये, चाहे हमारे हजारों घावोंमेंसे रक्त प्रवाहित होता रहे और चाहे शरीरमें अगणित घाव क्यों न हो जायें।" बर्लिनकी रक्षाका भार स्वयं गोएबेल्सने संभाला है और उसकी रक्षाके लिये सभी संभव उपाय और तैयारियां की जा रही हैं। परन्तु जैसा कि ग्लोबके संवाददाताका कहना है और स्वयं जर्मन नेताओंकी बातोंसे मालूम पड़ता है, बर्लिनका पतन हो जानेपर भी युद्धका अन्त नहीं हो जायेगा। 'इवनिंग न्यूज' के सैनिक रिपोर्टरका कहना है कि, "यह निश्चय ही बुद्धिमानीकी बात नहीं कि यह समझ लिया जाये कि बर्लिनपर अधिकार हो जानेसेही युद्ध समाप्त हो जायेगा। जबतक समस्त जर्मनीपर अधिकार न कर लिया जायेगा, खुली हुई लड़ाई तबतक समाप्त नहीं होगी और गुप्त रूपसे छिपकर जो लड़ाई जारी की जायेगी, उसके विचारसे विभिन्न भागोंमें विभिन्न मित्रराष्ट्रोंको बहुत वर्षोंतक अधिकार करनेवाली भारी सेना रखनेकी आवश्यकता होगी।" कहनेकी आवश्यकता नहीं कि यदि पूर्वसे बढ़ते हुए रूसी बर्लिनपर अधिकार करनेमें सफल हो जायेंगे, तो भी जर्मनीका पश्चिमका अधिक भाग बचा ही रहेगा, यदि उसपर अधिकार जमाने योग्य पश्चिमकी मित्र सेनाएं न हो सकीं। यद्यपि मित्रसेनाएं भी पूरा जोर लगा रही हैं, किन्तु जर्मनीकी सुदृढ़ सीगफ्रीडकी दुर्गपंक्तियोंको तोड़ना सहज संभव नहीं और ६ फरवरीको तो मित्रसेनाओंके सदर दफ्तरसे रायटरके संवाददाताने निश्चित रूपसे बताया था कि अमेरिकन सेनाने किसी भी स्थानपर सीगफ्रीड पांतमें प्रवेश नहीं किया है। इस पांतमें प्रवेश करनेका यह अर्थ कदापि नहीं कि वह पार कर ली गयी, क्योंकि उसकी गहराई तीस-चालीस मीलतक बतायी जाती है। इस तरह यदि बर्लिनपर प्रथम झण्डा फहरानेका श्रेय किसीको प्राप्त होगा, तो वह रूसियोंको ही होगा और इसलिये रूसकी ही बातोंका उस व्यवस्थाके सम्बन्धमें सबसे अधिक प्रभाव भी होना चाहिये, जो जर्मनीके सम्बन्धमें मित्रराष्ट्र उसकी हारके बादके लिये करेंगे।

मार्शल स्टेलिन, रा० रूजवेल्ट और मि० चर्चिलकी कानफरेंस कहांपर और किस तारीखसे हो रही है, यह अबतक निश्चित रूपसे नहीं मालूम हो सका है। अनुमान ही किया जा सकता है और तुर्कीके समाचारोंके आधारपर उसके कालासागरके क्षेत्रमें ही कहीं होनेका अनुमान है। जर्मन रेडियोने जो १ फरवरीसे उसके आरंभ होनेकी बात कही थी, वह बहुत कुछ ठीक जान पड़ती है। ७ फरवरीकी रातको ब्रिटिश आकाश सेना विभागकी ओरसे यह प्रकाशित किया गया है कि "त्रिनेताओंके सम्मेलनके स्थानके रास्तेमें एक वायुयानके नष्ट होकर गिर पड़नेसे दस आदमी मर गये। उसपर मि० चर्चिलके स्टाफके कुछ सदस्य थे। पांच आदमी लापता थे, जिन्हें मरा ही समझा गया है और पांच जख्मी हुए थे, जिनमें एक एयर कमांडर सैंडर्सन भी हैं। मरे हुओंमें छः तो परराष्ट्र विभागके स्टाफके थे, जिनमें एक स्त्री थी, दो युद्ध विभागके फौजी अफसर और एक कप्तान तथा एक हवाई जहाजका मिस्त्री था। यह दुर्घटना १ फरवरीको हुई, इससे भी पता चलता है कि त्रिराष्ट्र कानफरेंस उसी तारीखसे या उसके लगभग किसी तारीखसे हो रही है और अबतक वह चल ही रही है। हां, १० फरवरीके रायटरके तार में यह कहा गया है कि, "आज मंगलवारके बाद जो मार्शल स्टेलिनकी पहली विज्ञप्ति निकली है, उसमें रूसियोंका एलबिंगपर अधिकार होनेकी खबर है", इससे यह अनुमान होता है कि स्टेलिन मास्को लौट गये हैं। परन्तु जब हम यह सोचते हैं कि मंगलके पहले भी नित्य उनकी विज्ञप्तियां निकला करती थीं और इधर युद्धके समाचारोंका देना रूसी सेनापतिने बन्द कर रखा था, तब यह भी अनुमान संभव है कि कानफरेंस खास मास्कोमें या उसके निकट ही किसी स्थानपर हो रही हो, जहांसे मार्शल स्टेलिनको विज्ञप्ति निकालनेमें कोई कठिनाई न होती हो। जो हो, कानफरेंसको कितने ही अत्यन्त विवादग्रस्त और पेचीले प्रश्नोंको सुलझाना है, इसलिये संभव है कि अभी और कई दिनोंतक वह चलती रहे। शनिवारकी रातमें पेरिस रेडियोके कूटनीतिक संवाददाताने यह घोषणा की है—"आजकी सबसे बड़ी खबर यह है कि फ्रांसको भी तीन बड़ोंकी कानफरेंसमें भाग लेनेका निमंत्रण दिया गया है, जो इस तरह चारकी कानफरेंस हो जायेगी।" रायटरको उस समयतक अन्य किसी सूत्रसे यह समाचार नहीं मिला था, किन्तु यदि यह सच है, तो इसका अर्थ यह होता है कि कानफरेंस कमसे कम इस सप्ताहतक तो अवश्य जारी रहेगी।

परन्तु लोगोंमें तो यह अटकल लगायी जा रही है कि युद्ध कबतक समाप्त होगा। लन्दनमें कुछ लोग तो आशा करते हैं कि मार्चके अन्ततक जर्मनीमें संगठित प्रतिरोध समाप्त हो जायेगा और दूसरे लोग जो सतर्क हैं, यह समझते हैं कि संभव है कि जर्मनी अगस्त तक टिका रहे। अवश्य, ये अट-

गोरखपुरमें बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डन गिरफ्तार

कलें ब्रिटिश पार्लमेण्टके चुनावके सिलसिलेमें लगायी जाती हैं और अधिकारियोंकी ओरसे इधर कोई नयी भविष्यवाणी नहीं सुननेमें आयी है। हिटलरने तो १९४६ तक यूरोपकी लड़ाई चलनेकी बात निश्चित रूपसे कही थी और मि० चर्चिलको समझसे भी गर्मियोंतक उसका चलना निश्चितसा था। परन्तु जिस तरह सभी युद्ध क्षेत्रोंपर जर्मनी अभीतक जोरोंके साथ लड़ाई जारी रखे हुए हैं और उसकी ओरसे प्रायः नित्यप्रति इंगलैंडपर चौबीसो घंट गोला गिराये जाते हैं तथा जिस तरह नये यंत्रोंसे सुसज्जित हो, उसके गोताखोर जहाज अटलांटिकमें मित्रराष्ट्रोंके जहाजोंको डुबानेमें इधर अधिक तत्परता दिखा रहे हैं, इन सारी बातोंसे यूरोपमें ही युद्धका अन्त शीघ्र होता नहीं जान पड़ता। हां, किसी देशकी राजधानीका पतन हो जानेसे उस देशके निवासियोंका सारा उत्साह मारा जाता है, इस लिये यदि शीघ्र बर्लिनपर रूसियोंका अधिकार होनेकी नौबत आये तो यूरोपीय युद्धकी अवधिपर उसका बहुत कुछ प्रभाव होना संभव है, परन्तु यह कभी न भूलना चाहिये कि यूरोपकी लड़ाई समाप्त हो जानेके बाद ब्रिटेन और अमेरिकाको अपनी सारी शक्ति पूर्वमें जापानके विरुद्ध लगानी पड़ेगी। जापानके विरुद्ध फिलिपाइनमें इधर अमेरिकन सेनाओंको बड़े मार्केकी सफलताएं प्राप्त हुई हैं और खास राजधानी मनिलापर उनका अधिकार हो चुका है, पर मार्शल चांगकैशेकके सीनियर सेक्रेटरी शोयूलनने राष्ट्रके नाम प्रचारित किये हुए अपने संदेशोंमें कई दिन पहले यह कहा है कि "जापानी यदि बर्मा, मलाया, फिलिपाइन और दक्षिणी चीनसे निकाल बाहर किये गये, तो वे एशियाके भीतरी भागमें लड़ाई जारी रखनेके लिये दृढ़ निश्चय किये हुए हैं। उन्होंने लड़नेके लिये पचास लाखसे अधिक सैनिक तैयार कर रखे हैं लेकिन साथ ही जापानी अपने देशकी ऊंची स्थिति बनाये रखनेके लिये संधिकी वार्त्ता छेड़नेके लिये अवसर भी नहीं खोयेंगे।" इस तरह वर्त्तमान विश्वव्यापी महायुद्धका अन्त तो अब भी दूर ही जान पड़ता है।

दक्षिणी इङ्गलैण्डपर बमवर्षा

लन्दन, ११ फरवरी। एक सरकारी विज्ञप्तिमें कहा गया है कि गत शुक्रवारके सवेरे और शनिवारको दुश्मनके हवाई जहाजोंने इङ्गलैण्डके दक्षिणी अञ्चलपर बम बरसाये, जिससे जानमालकी बर्बादी हुई। रायटर

त्रिनायक-सम्मेलन

फ्रांसकेनिमंत्रितकियेजानेकाखंडन

लन्दन, ११ फरवरी। पेरिस रेडियोके कूटनीतिक संवाददाताने पिछली रात बताया कि आजका सबसे महत्वपूर्ण संवाद यह है कि त्रिनायक-सम्मेलनमें भाग लेनेके लिये फ्रांस भी निमन्त्रित किया गया है। इसका अर्थ यह है कि अब यह चतुर्राष्ट्र कान्फ्रेंसमें परिणत होगी। यह सुझाव दिया गया है कि सार्वजनिक तौरपर फ्रांसको निमन्त्रित किया गया है। किन्तु अभी तक रायटरको किसी भी सूत्रसे इस आशयका संवाद प्राप्त नहीं हुआ है। कल सुबह पेरिसके सरकारी क्षेत्रोंमें स्पष्ट तौरपर खण्डन किया गया कि फ्रांस कान्फ्रेंसमें सम्मिलित होनेके लिये निमंत्रित किया गया है। गत रात्रिको फ्रेंच समाचार समितिने भी बताया कि समाचारकी पुष्टिका कोई सूत्र अभी तक मालूम नहीं हुआ है। रायटर

इटालियन सरकारकी स्वीकृति

पेरिस, ११ फरवरी। फ्रांसकी सरकारने इटालियन सरकारको मंजूर करनेकी दिशामें कोई कदम नहीं उठाया है। फ्रेंच सरकारके सूचना विभागकी एक विज्ञप्तिमें इसका उल्लेख किया गया है। इससे रोम रेडियोके उस समाचारको खण्डन होता है जिसमें कहा गया था कि इटलीकी सरकारने फ्रेंच सरकार द्वारा पेश उस प्रस्तावको मंजूर कर लिया है जिसमें राजनीतिक सम्बन्ध पुनः स्थापित करनेको कहा गया है। रायटर

विमान दुर्घटनामें दो मुसाफिर लापता

लन्दन, ११ फरवरी। मि० एटलीने कल ब्रिटिश पार्लमेंटमें घोषित किया कि मेरी ऐसी धारणा है कि एक विमान जिसमें पार्लमेंटके दो सदस्य राबर्ट बर्निज और जान कम्पबेल थे और जो पन्द्रह दिनसे लापता बताया जाता है, सम्भवतः समुद्रमें गिर पड़ा। रायटर

ग्रीक प्रतिनिधियोंमें वार्ता भंग

एथेन्स, ११ फरवरी। आज सुबहमें ग्रीक सरकार और ई० ए० एम० दलके प्रतिनिधियोंकी बातचीत खतम होनेके बाद निम्नाशयकी विज्ञप्ति प्रकाशित हुई। सरकारी प्रतिनिधियोंने अपने विचार उपस्थित किये हैं और ई० ए० एम० के प्रतिनिधि अपना उत्तर कल देंगे। इस बीचमें सैनिक विशेषज्ञोंने अपना वाद-विवाद समाप्त कर लिया है। रायटर

गोरखपुर में टण्डन जी की गिरफ्तारी

भारतरक्षा कानूनकी धारा १२९ के अनुसार

बुद्ध हाईस्कूलके प्रधानाध्यापक भी गिरफ्तार

गोरखपुर, ११ फरवरी। युक्त प्रान्तीय असेम्बलीके स्पीकर और कांग्रेसजनोंकी प्रतिनिधि सभाके अध्यक्ष बाबू पुरुषोत्तमदासजी टण्डन, जिन्होंने गोरखपुर जिला हिन्दी साहित्य सम्मेलनका सभापतित्व किया, भारतरक्षा की धारा १२९ के अन्तर्गत शहरसे करीब २४ मील दूरस्थ कसियामें आप गिरफ्तार कर लिये गये। आपको पुलिसकी गाड़ीमें गोरखपुर लाया। बुद्ध हाईस्कूलके प्रधानाध्यापक तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी स्वागत मन्त्री श्री डी० एन० मणि त्रिपाठीभी गिरफ्तार किये गये हैं। गत रात्रिको इस जिलेके कांग्रेस कार्यकर्ताओंकी एक सभामें सम्मिलित हुए थे। ए० प्रेस

रंगून अंचलपर बमवर्षा

वाशिंगटन ११ फरवरी। युद्ध विभागने घोषणाकी है कि अमेरिकन विशालकाय बमवर्षकोंने नाकजिमाके हवाई जहाजके कारखानेपर गोलाबारी की। क्षति काफी हुई। हमारे तीन विमान नष्ट हुए। बीस जापानी विमान नष्ट कर दिये गये। उन्नीस विमानोंके विषयमें भी यही अनुमान है। अन्य सत्ताइस क्षतिग्रस्त हुए। लगभग सौ हवाई जहाजोंने इस हमलेमें भाग लिया।

गत शनिवारकी रातको न्यूयार्क रेडियोने मेरियानाके हवाई अड्डेकी एक रिपोर्टको उद्धृत करते हुए बताया कि विशालकाय बमबाजोंने होन्सूपर हमलेके सिलसिलेमें स्वयं टोकियोपर भी बम बरसाये।

भारत स्थित अमेरिकन विशालकाय उड़ाकू जहाजोंने रंगूनपर दिन दहाड़े बम बरसाये। विस्तृत खबरें अभी तक नहीं प्राप्त हुई हैं। रायटर

स्व० माता कस्तूरबाकी व

सेवाग्राम, ११ फरवरी। स्वर्गीया राष्ट्रमाता कस्तूरबा निधन-तिथि मनायी गयी। अलावा चौबीस घण्ट तक चरखा प्रदर्शनका सफल आयो गया था।

आज ही यहां एक शिशु का उद्घाटन हुआ। ए० प्रेस

हिटलर-गोयरिंगके दफ्तर

लन्दन, ११ फरवरी। एक सरकारी विज्ञप्तिमें इस घोषणा की गयी है कि गत हमारे बमबाजोंने बर्लिनपर ह क्षतिग्रस्त इमारतोंमें हिटलर रिंगके दफ्तर भी हैं। आगे बताया गया है कि ब्रिटिश कारपोरेशनके संवाददाता जो करनेके लिये कुछ रेकार्ड निकाले थे, इस हमलेसे लाप

जमनालाल बजाज पुण्य तिथि कलकत्तेने समारोह पूर्वक मनायी

डा० घोषका मर्मस्पर्शी भाषण

कलकत्ता ११ फरवरी। आज यहां ...व रात्रिके दिन आल इण्डिया कांग्रेस ...ंग कमेटीके सदस्य डा० प्रफुल्लचन्द्र ...की अध्यक्षतामें स्वर्गीय सेठ जमना-...ल जी बजाजकी पुण्य निधन तिथि ...समारोहसे मनायी गयी। श्री विशु-...नन्द विद्यालयका विशाल हाल खचा-...भरा हुआ था। बाहर बरामदेमें ...लोग खड़े हुए थे। डा० घोष अस्व-...स्थताके कारण थोड़े ही समय बाद चले ...और 'विश्वमित्र' संचालक श्री मूल-...अग्रवालने सभापति कार्य सम्पा-...दन किया।

...मारवाड़ी बालिका विद्यालयकी छात्रा-...ओंने बन्देमातरम् गान गाया। श्री बस-...न्तलाल जी मुरारकाने सभापतिके लिये ...प्रस्ताव किया। श्री राधाकृष्णजी नेव-...टियाने सन्देश पढ़ कर सुनाये, जो बाहर ...के विशिष्ट सज्जनोंने इस प्रकार भेजे ...महात्मा गांधी—जमनालाल बजाज-...की निधन तिथि पर मेरा आशीर्वाद तो ...है। कुछ करो और करवाओ। श्री ...(भूतपूर्व प्रधान मन्त्री बम्बई) जम-...नालालजीने मुझे राजनीतिक कार्य-...की प्रेरणा दी, इस लिये मैं उन्हें अपना ...गुरु मानता हूं। श्री किशोरीलाल मशरू-...वालाने महात्माजीके सच्चे पुत्र सिद्ध ...हुए। धनसे अधिक उन्होंने अपना तन ...मन देशको दिया।

...श्री पद्मपति सिंघानिया—उन पर ...सारे देशको गर्व है।

...श्री जानकीदेवी बजाज—गोरक्षाका ...काम उन्होंने अन्तिम दिनोंमें उठाया था, ...उसे पूरा करना है। देशकी गोशा-...लाएं सच्ची गोरक्षक संस्थाएं बनानी ...हैं।

...इस प्रकारके बहुतसे संवाद प्राप्त ...हुए। श्री मैथिलीशरण गुप्तने कविता ...द्वारा सन्देश भेजा। सर्वश्री रण-...जीत, नटवर, चिन्तामणिराय, भाल-...चन्द्र सेठिया, बाबूलाल सुल्तानियां, ...आदिने कविता पाठ किया। श्री ...सीताराम... ...नन्दन कानोड़ियाने कहा कि सेठ ...जीमें अभिमान जरा भी न था और ...व्यय रोक कर गरीबोंकी सेवामें ...लगानेका उपदेश देते रहते थे। ...उन्होंने हिन्दुस्तानीमें भाषण करते ...हुए कहा कि जमनालालजीसे हमें यह ...शिक्षा लेनी चाहिये कि देशमें धन कमा ...कर अधिकसे अधिक देश-सेवामें ...लगाना चाहिये। लाख दो लाख कमा ...कर पांच हजार देनेमें सन्तुष्ट न हो जाना चाहिये, परन्तु जो कुछ नहीं देते, उनसे तो इतना देना ही अच्छा है। उनसे व्यापारी समाजको यह शिक्षा लेनी चाहिये कि संकट आने पर वे देशवासियोंका साथ दें। बंगालके दुर्भिक्षके दिनोंमें व्यापारियोंने अन्न संग्रह कर लाभ उठानेकी बुरी भावनाको स्थान दिया। देशवासियोंकी सेवाका सदा ध्यान रखना जमनालालने हमें सिखाया है।

पण्डित पुरुषोत्तम रायने कहा कि जमनालाल जी देशके गौरव स्वरूप थे। उन्होंने अपने सुकार्योंसे सिद्ध कर दिया कि वे देशके व्यापक क्षेत्रके प्रधान अंग बन गये थे। राष्ट्रकर्मियोंको सहायता देना और उन्हें उत्साहित करना वे खूब जानते थे। श्री ईश्वरदास जी जालानने कहा कि आज मारवाड़ी समाजको स्वर्गीय सेठ जमनालाल जी बजाज पर गर्व है। समाजमें ऐसे ही रत्न उत्पन्न हों, यही ईश्वरसे प्रार्थना है।

श्री सीताराम जी सेखसरियाने स्वर्गीय सेठ जीकी विभिन्न सेवा प्रवृत्तियों पर बड़े मार्मिक ढंगसे प्रकाश डालते हुए कहा कि यदि हम लोग कुछ नहीं करते तो इन समारोहोंसे कोई लाभ नहीं। हिन्दी प्रचारका उनका प्रिय कार्य हम आसानीसे पूरा कर सकते हैं। इसके लिये धन एकत्र कर हमें यह कार्य आगे बढ़ाना चाहिये। जमनालाल जी देशके महान् नेताका उच्च स्थान ग्रहण कर सदा विनम्र सेवक ही रहे, उनका यह गुण हमें कभी न भूलना चाहिये।

सभापति श्री अग्रवाल जीने अपने भाषणमें कहा कि जमनालाल जीको यह सौभाग्य था कि वे राष्ट्रमें उच्च स्थान पाकर अन्तत: उस पर आसीन रहे। सम्मान प्रदर्शनके ढंग समयानुसार बदल सकते हैं, परन्तु सेवक तो कर्तव्य पालन कर कूच कर जाते हैं, इस बातकी परवा नहीं करते कि क्या सम्मान मिलेगा। जमनालालजी सम्पन्न अवस्थामें भी इतने विनयी और पर दुखकातर रहे, यह उनका सबसे बड़ा गुण है। वे जो कुछ सेवा कार्य कर गये, उसे हम सबको और आगे बढ़ाना चाहिये।

मारवाड़ी बालिका विद्यालयकी छात्राओंने 'आजाद होंगे' नामक सम्मिलित गान गाया और श्री बसन्तलाल जी मुरारकाने सभापतिको धन्यवाद प्रदान किया। इसके बाद कार्य समाप्त हुआ।

सभामें हिन्दी प्रचारके लिये धन संग्रहकी चर्चा हुई और श्री भागीरथ जी कानोड़ियाको इस कार्यको आगे बढ़ानेका भार दिया गया। शीघ्रही इस सम्बन्धमें परामर्श सभा कर वे भावी व्यवस्था ठीक करेंगे।

चीनमें कोलीशन सरकार

मार्शल चांगसे गठनकी अपील

न्यूयार्क, ११ फरवरी। उत्तरी और दक्षिणी अमेरिकाके दस चीनी समाचार पत्रोंने कोमिनताङ्ग दलकी तानाशाहीको नष्ट कर साम्यवादी तथा अन्य सभी राजनीतिक दलोंकी एक कोलीशन सरकार बनानेकी मांगकी है। इस आशय का तार मार्शल चांगकाईशेक, राजनीतिक दलोंके कुछ नेताओं तथा चीनके सभी पत्रोंके पास भेजा गया है। इसमें चुङ्किङ्ग सरकार द्वारा सेनाके उपयोग तथा राष्ट्रके आर्थिक जीवन पर प्रभावशून्य नियन्त्रणकी निन्दाकी गयी है। रायटर

खाद्य सदस्यका उत्तर

खाद्य स्थिति सुधर रही है

नयी दिल्ली ६ फरवरी। (देरसे प्राप्त) आज केन्द्रीय असेम्बलीमें श्री अदिनाशलिंगम् चेट्टीको उत्तर देते हुए खाद्य सदस्य सर जे० पी० श्री वास्तवने बंगाल, मालाबार, कोचिन ट्रावनकोर और विजयगपट्टमकी खाद्य स्थिति पर एक वक्तव्य दिया कि गत वर्षकी अपेक्षा इस वर्ष बंगालमें अमन धानकी फसल कम है। मालाबारमें पंजाब और सिन्धसे कोटा आनेके परिणाम स्वरूप पर्याप्त मात्रामें खाद्य स्टाक कर रखा गया है। ट्रावनकोर राज्य और कोचिनमें खाद्य स्थिति सन्तोष जनक है। वहां अप्रल तक चलने लायक गेहूंका स्टाक है। ट्रावनकोरमें काफी चावल जमा हो गया है इस लिये उसने कोचिनके लिये १५ हजार टन चावल निर्यात करना स्वीकार कर लिया है। विजयागपट्टमकी खाद्य स्थितिमें सुधर रही है क्यों कि वहां उड़ीसा और मध्य प्रांतसे खाद्य सामग्री पहुंचायी गयी। तमाम जिलोंमें स्वेच्छासे रेशनिंग लागू की गयी है। यू० प्रेस

जापानियोंका सफाया

मनिलाकी सड़कोंपर घमासान

मनिला स्थित जेनरल मैकार्थरका सदर मुकाम, ११ फरवरी। फिलिपाइनकी राजधानी मनिलाकी सड़कोंपर घमासान युद्धके दौरानमें जापानियोंने सुदृढ़ केन्द्रों तथा दक्षिणी हिस्सेकी सार्वजनिक इमारतोंको नष्ट कर दिया है। रायटर

प्रशांतका भावी युद्ध

प्रधान कमांडरकी नियुक्तिका प्रश्न

वाशिंगटन, ११ फरवरी। 'आर्मी एण्ड नेवी जर्नल' ने सूचित किया है कि जापानपर आक्रमणकी जो योजना तैयार हुई है उसमें आक्रमणकारी सेना का नायकत्व जनरल मैकार्थरके सिवा किसी अन्य व्यक्तिके जिम्मे सौंपनेका निश्चय किया गया है। इसके अनुसार जनरल मैकार्थरको फिलिपाइन्समें बचे जापानियोंका पूर्ण सफायाका ही काम रहेगा। किन्तु अमेरिकामें इन दिनों इन्हीं को प्रधान कमाण्डर बनानेका राष्ट्रव्यापी आंदोलन जारी है। रायटर

हिन्दू ला कमेटीके सामने

महिला सम्मेलनका मेमोरेण्डम

नयी दिल्ली, १० फरवरी। श्रीमती रामेश्वरी नेहरू, श्रीमती रेणुका राय और श्रीमती चन्द्रकलाने हिन्दू ला कमेटीके समक्ष गवाहियां दीं और अखिल भारतीय महिला सम्मेलनकी ओरसे एक मेमोरेण्डम पेश किया। आपलोगोंने स्त्री पुरुषोंके समान कानूनी अधिकारपर बड़ा जोर दिया है और सुझाव पेश किया है कि पुत्र और पुत्रीको सम्पतिमें बराबर हिस्सा मिलना चाहिये। अन्य सब जातियां भी बराबरीसे चलती है। आप लोगोंने स्त्रियोंकी स्वतंत्रताका पूर्ण समर्थन किया और बताया कि नारी आज शासित सम्पति है। वह पुरुषसे कई मामलोंमें अधिक योग्य है।

बनारसमें प्लेगका प्रकोप

श्री सम्पूर्णानन्दका वक्तव्य

बनारस ६ फरवरी। युक्त प्रांतके भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री श्री सम्पूर्णानन्द बनारस तहसीलका दौरा समाप्त कर वापस आये हैं। बनारस तहसीलमें प्लेग महामारीके रूपमें फैल गयी थी।

अपने एक वक्तव्यमें उन्होंने कहा है कि मैंने कुछ गांवोंका दौरा किया है। वहां जिला हेल्थ अधिकारी तथा कांग्रेस कर्मी प्लेग क्षेत्रमें कार्य कर रहे हैं। बहुत आदमी मर चुके हैं और महामारीका प्रकोप अभी तक जारी है। यू०

समस्त परिवार बीमार

दो बच्चोंका देहांत, नौ अस्पतालमें

नोआखाली १० फरवरी। नोआखाली जिलेके रेजाकपुर ग्रामके एक मुस्लिम परिवारके दो बच्चोंकी मृत्यु हो गयी और बाकी नौ व्यक्ति बुरी तरह बीमार हैं। इसका कारण बताया जाता है कि उन्होंने खजूरकी ताड़ीके साथ चाव पका कर खाया था।

मृतकोंकी लाशोंको पोस्ट मार्टमके लिये भेज दिया गया है, और बिमार व्यक्तियोंको खसदर अस्पताल पहुंचाया गया है जहां उनकी हालत धीरे २ सुधर रही है। ए० प्रेस

दिल्-लगी

(दिल लगा दीवारसे तो परी क्या करे ?)

मनुष्य दुबले पड़ते जा रहे हैं और चावल उत्तरोत्तर मोटा।

×

रेलके डब्बोंसे लटके हुए मुसाफिरोंको देखनेसे डारविनकी थ्योरीकी सत्यताका आभास मिलता है ।

+

वर्ष-कंट्रोल का कंट्रोल विभाग वालोंके जिम्मेका काम होना चाहिये।

×

दूधका दर्शन तो अब विशेष रूपसे पुस्तकों और अखबारोंके द्वारा ही हुआ करता है।

+

दही खानेकी इच्छा हो तो प्रेमसे यह सिनेमाका गीत गाकर मनको समझा लेना बुद्धिमानी है कि 'दहीवाली हमारी गली अइहोंकसम तोहें रामजीकी !,

×

'लव-लेटर' लिखनेके लिये बाजारमें साइरिंग पैड नहीं मिलता !

×

ब्लैक-आउटके कारण कनखी-मटकीका बाजार मंदा पड़ गया है।

+

शाहजादेको भी "सतुआपर शंख" बजाना पड़ रहा है।

×

आत्मश्लाघा बुरी चीज नहीं है ।— अपना काम अपने हाथों ही बढ़िया होता है ।

×

हुस्नकी परीको भी मलेरियाकी चोली में सन्तोष करना पड़ रहा है।

×

बनारसी गिलौरीमें कसेलीके स्थानपर छुहारेके बीजका प्रयोग पाया गया है !

×

ब्रह्मोपासनासे भी कठिन तपस्या छटाक भर साबूदानेके लिये करनी पड़ती है ।

×

पाव भर मछली जिन्हें आसानीसे मिल जाती है उनकी छाती शेरशाहको भी मात करने लगती है।

×

हिन्दुस्तानीके हिमायती सरस्वतीको बेगम बनानेकी धुनमें लगे ही हुए हैं, कमला भी कागजका रूप धारण कर चुकी।— आकाशमें विष्णु भगवान पड़े-पड़े विरहा गायें।

+

यदि आर कवि हैं तो "यात्रा कम करो' वाला आन्दोलन आपपर लागू नहीं होता।

—'खुशदिल'

---

८६ वर्षकी उम्रमें १२ वीं शादी

४६-५० वर्षकी उम्रमें शादीके मर्जसे मुब्तिला लोगोंकी संख्या तो काफी मिल सकती है, लेकिन ८६ और ९० वर्षकी आयु-में भी कामके बाणोंसे विद्ध होनेकी रिपोर्ट अभी हालमें लाहौरसे प्राप्त हुई है। कहते हैं कि एक मौलवी साहबकी उम्र इस समय ८६ वर्ष की है। ११ शादियोंमें प्रणय-आनन्द वे उठा चुके हैं; लेकिन अब भी मौलवी साहबका नौजवानीपन बारहवीं बार नौशा बननेके लिये मचल रहा है। मौलवी साहबकी बेटे-बेटियों और पोते-पोतियोंकी संख्या अधिक नहीं, केवल ५६ हैं। बड़े लड़केकी उम्र ६० वर्ष और सबसे छोटेकी ३ वर्ष है।

युद्ध व्ययमें आधा अमेरिका

अमेरिकाके अर्थ विभागकी गणनाके आधारपर वर्तमान विश्व-व्यापी युद्धमें मित्रराष्ट्रोंके ५ खरब डालर खर्च हुए हैं, जिनमें आधा अमेरिकाका हिस्सा है। रूसने १९४० से अब तक १ खरब तथा ब्रिटेनने ९६ अरब डालर खर्च किये हैं। अमेरिकाको अकेले २ खरब ३४ अरब ५० करोड़ डालर व्यय करने पड़े हैं। अनुमानतः जर्मनीको अबतक १ खरब ३० अरब डालर खर्च करने पड़े हैं।

चूहोंपर चढ़ाई

सिन्ध सरकार और कानपुरकी म्युनि-सिपैल्टी आजकल 'गणेश वाहनों'से युद्ध छेड़े हुई हैं। कहते हैं कि कानपुरमें वर्तमान युद्धकालमें जिस प्रकार उद्योगोंके प्रसारसे आबादीमें वृद्धि हुई है, उसी प्रकार चूहोंकी आबादी भी बहुत बढ़ गयी है और नागरिकोंके अनुनय विनयपर म्यूनिसिपैल्टीने उनके विरुद्ध 'युद्ध' घोषणा कर दी है। इस चूहा युद्धमें प्रतिमास २२०) खर्च करनेका बजट पास किया गया है। रोज दो सौ चूहोंको आक्रमणकारी दलके घेरेमें फंसकर अपनी जान गंवानी पड़ती है। कहा जाता है कि अबतक ४॥ हजारसे अधिक चूहे इस युद्धमें काम आ चुके हैं।

र हित बस जिनके मनमाहीं।
न कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

ंचवर्षीय योजना।

गत वर्ष पूनाके आगाखां महलसे मुक्त नेपर देशकी आर्थिक, राजनीतिक र सामाजिक दुरवस्थाका अपनी खों अवलोकन करनेके पश्चात् देशके महात्मा गांधीने यही निश्चय किया सारी बुराइयोंका अन्त केवल रचनाक प्रोग्रामके द्वारा ही किया जा सकता यों तो महात्माजीका विश्वास बहुत लेसे ही अहिंसात्मक रचनात्मक ामकी अपूर्व उपादेयतामें है और विचारको उन्होंने अनेक वार देशके ने स्पष्ट शब्दोंमें रखा है। लेकिन वार तो उन्होंने रचनात्मक कार्यक्रम- शीघ्र सच्चे हृदयसे अपनानेकी अतीव वश्यकता महसूस की एवं कस्तूर बा रक कोषके ट्रस्टियोंकी सभामें इसे द् रूपमें रखनेकी चेष्टा की। उसके अपने वक्तव्यों और प्रो० एन० ० रंगा आदिसे बात चीतके सिल- लेमें भी उन्होंने जोरदार शब्दोंमें क किया कि भारत किसानों और दूरोंका देश है। छात्र देशकी भावी ा और पिता हैं। इसलिये जबतक का सुचारु रूपेण संगठन नहीं होगा, बताया नहीं जायेगा कि उनके अन्दर ट शक्ति निहित है, जिसका सदुप- देशकी काया पलट देनेके लिये पूर्ण म है, तबतक वर्तमान दुरवस्थाका नहीं होगा और हमारी पराधीनता- बेड़ियां नहीं कट सकेंगी। लेकिन के लिये सबसे बड़ी आवश्यकता सच्चे दृढ़ संकल्पवाले कार्यकर्ताओं—ग्राम कोंकी है। अध्यवसायी, सत्यनिष्ठ सेवक क्या कर सकते हैं, का उज्ज्वल उदाहरण रूस उपस्थित रहा है।

इसमें सन्देह नहीं कि महात्माजीके शों-उपदेशोंका मूल्य देश खूब अच्छी समझता है, लेकिन उसकी मौजूदा स्थितियां उसे आगे बढ़नेमें बहुत क बाधक होती हैं। १९३५के नव ानके अन्तर्गत संगठित कांग्रेसी सर- ोंने अपने प्रांतोंमें जो नव जीवन न्न किया था, वह आज भी आंखोंके ने नाचता है, लेकिन इसी दर्मियान व्यापी युद्धका दानव आया और धियोंने मनमाने ढंगसे देशकी शक्ति साधनोंका उपयोग करना आरंभ ा। वाध्य होकर लोकप्रिय देश सेवकों- प्रांतोंकी शासन सम्बन्धी जिम्मे- दारीसे अपना हाथ खींच लेना पड़ा। क्योंकि इस बातकी भारी आशंका थी कि उनके नामपर भारतीयोंका शोषण व्यापक पैमानेपर किया जा सकता है। शासन विभागसे उनके अपना उत्तरदायित्व समेटते ही प्रतिक्रियावादी हाथोंको छूटकर अपनी करामात दिखानेका जो मौका मिला, उससे देशकी दुर्दशा आज आंखोंके सामने है। बंगालकी शस्य श्यामला स्वर्ण भूमि ऐसे विनाशकारी दुर्भिक्ष से आक्रांत हो चुकी है, जिसका नाम लेते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। बिहार प्रांतकी महामारियां मानव-संहार कार्यके लिये लोकोक्ति बन रही है। यदि कांग्रेसी सरकारोंके शासन कालमें संचालित की गयी रचनात्मक योजनाएं बराबर कार्यान्वित होती रहतीं और लोक प्रिय नेताओंको अचानक जेलय-त्री न बना दिया गया होता, तो इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि ये दुर्दिन देशको कदापि नहीं देखने होते।

इधर जबसे कांग्रेस जन जेलमुक्त होकर आये हैं, उन्होंने देशवासियोंकी निष्क्रियता दूर करनेके लिये विभिन्न प्रान्तोंमें रचनात्मक योजनाएं महात्मा गांधीके सुझावोंके प्रकाशमें तैयार करना आरम्भ किया है। लेकिन ऐसा ज्ञात पड़ता है कि नौकरशाही उनकी इन लोकोपयोगी योजनाओंको भी संदेहभरी दृष्टिसे देखने लगी है और रचनात्मक कार्यक्रमोंको कार्यान्वित होने देनेमें रुकावटें उपस्थित की जाने लगी हैं। बिहारके पांच लोकप्रिय नेताओंपर लगाया गया प्रतिबन्ध और सेवाग्रामके श्री बनूदेसाईके ग्रामसेवी शिक्षण शिविर और हिन्दुस्तानी तालीमी संघकी संस्थाओंके सम्बन्धमें जारी की गयी हालकी सरकारी विज्ञप्ति उदाहरणके लिये मौजूद है। ग्रामसेवी शिक्षण शिविरमें कोई फौज थोड़े खड़ी की जा रही है। उनको शिक्षा तो इसलिये दी जा रही है, ताकि वे स्वयं शांत,स्वावलम्बी एवं शक्ति सम्पन्न नागरिक बन अपने पड़ोसियोंको भी वैसा बनाने की चष्टा करें। तभी भारतके सात लाख गांवोंकी आर्थिक और सामाजिक दुरवस्थाको दूर किया जा सकता है। बिहारके लोकप्रिय नेताओंके सम्बन्धमें भी यही बात कही जायेगी। उन्होंने कांग्रेस प्रस्तावमें अपनी आस्था प्रकट की—कांग्रेस प्रस्ताव हमें देशको स्वाधीन बनाकर मानवोचित जीवन व्यतीत करने का निर्देश देता है। क्रियात्मक संघर्षवाला अंश तो आरम्भमें ही बाद दे दिया गया था। फिर आपत्तिका कारण क्या उपस्थित हुआ? कुछ नहीं। नौकरशाहीकी असली मंशा तो यह है कि देश अज्ञानता और अशिक्षाके निबिड़ अन्धकारमें झपकी लेता रहे, उसको अपनी शक्ति और प्रस्तुत साधनोंकी उपादेयताका ज्ञान न हो, तथा अधिकारी उसकी इस शोचनीय अवस्थासे अनुचित ढंगसे अपना उल्लू सीधा करते रहें और दुनियाके सामने असभ्योंको सभ्य बनानेकी लम्बी चौड़ी हांकते रहें।

युक्तप्रान्त राष्ट्रीयताके क्षेत्रमें सर्वदा आगे रहा है, इस बातको शायद कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। बंगाल, बिहार, गुजरात आदिकी प्रान्तीय भावनाओंसे कुण्ठित प्रतिभाको यदि कहीं उचित स्थान मिलता है तो युक्तप्रान्तमें ही। युक्तप्रान्तके कांग्रेसजनोंकी रचनात्मक कार्य विषयक विशेष प्रतिनिधि समितिने प्रान्तमें रचनात्मक कार्यको कार्यान्वित करनेके लिये अभी एक विस्तृत योजना प्रकाशित करायी है। जो योजना तैयार करनेवालोंकी व्यापक व्यवहार-पटुता और परिपक्व अनुभवका द्योतक है। हमारा ख्याल है कि इसमें न केवल कांग्रेसी स्त्री-पुरुष ही दिलचस्पी लेंगे, बल्कि उन सभी लोगोंका हार्दिक सहयोग और समर्थन यह योजना प्राप्त कर सकेगी जो सच्चे दिलसे देशके स्वार्थोंकी सुरक्षा के हिमायती हैं। समितिने जो बातें अपनी योजनामें बतायी हैं, उनमें कोई नवीनता नहीं है। महात्माजी बहुत पहले उनको व्यक्त कर चुके हैं। हां, उनके पृथक विचार-रत्नोंको समितिने अपनी योजनाके धागेमें पिरोकर एक माला तयार कर ली है, जिसको सभी राष्ट्र हितैषी खुशी-खुशी धारण कर सकते हैं। रचनात्मक कार्यक्रम महात्मा गांधीका है, इसलिये इसे उन्हींके बताये हुए ढंगोंपर कार्यान्वित करना होगा, समय-समयपर उनकी ओरसे इस सम्बन्धमें जो प्रकाश प्राप्त होगा, उसके अनुसार इसमें संशोधन और परिवर्द्धन भी करना होगा, यह बिल्कुल सत्य है। आज तरह तरहकी युद्धोत्तर योजनाओंकी बाढ़-सी आयी हुई है, विदेशी भारतको अपना विस्तृत युद्धोत्तर बाजार बनाये रखने अथवा बनानेके लिये एंड़ी-चोटीका पसीना एक कर रहे हैं, देशके बड़े बड़े औद्योगिक भी योजनाओंकी आड़में अपने व्यक्तिगत स्वार्थोंकी रक्षा करते हुए अपने प्राधान्य के लिये व्यस्त हैं, ऐसे समय भारतके गांवोंमें निवास करनेवाली करोड़ों जनता के स्वार्थोंकी रक्षा कांग्रेस कर्णधारों और उनके सहयोगियोंके सिवा और कौन कर सकता है?

समितिने ग्रामोद्योगको पुनर्जीवित करने और उसे प्रोत्साहन प्रदान करनेके लिये युक्त प्रांतको तीन भागों—पश्चिमी, मध्य और पूर्वी—में विभक्त किया है और हरएकके लिये एक एक केन्द्र स्थान निर्धारित किया। प्रांतीय रचनात्मक कार्यक्रमको नियंत्रित करनेके लिये एक केन्द्रीय आफिस इलाहाबाद, कानपुर या मेरठमें स्थापित करनेके निमित्त सिफारिश की है। पांच गांवोंके लिये एक रचनात्मक केन्द्र स्थापित करनेसे प्रांतमें कुल २० हजार केन्द्रोंकी आवश्यकता होगी। प्रथम वर्षमें जिलेमें और तहसीलोंमें दो केन्द्रोंके हिसाबसे ६ सौ केन्द्र खुलेंगे और प्रतिवर्ष उनकी संख्या जैसे-जैसे कार्यकर्त्ता तयार होते जायेंगे, दूनी बढ़ती जायेगी—इस प्रकार राष्ट्रीय जीवनके ५ वर्षके अल्पकालमें कुल १८ हजार केन्द्रोंका जाल सारे प्रांतमें फैल जायेगा। प्रथम वर्षमें केन्द्रोंकी स्थापना होनेके बाद कार्यकर्ता अपने कार्य-अंचलकी जनगणना कर लेंगे—जनगणना हिन्दुओं, मुसलमानों या दलितवर्गोंकी संख्या जाननेके लिये नहीं होगी, बल्कि उससे यह पता लगाया जायेगा कि कितने बुनकर खादी नहीं बुननेवाले हैं, कितने मादक द्रव्योंके आदी हैं और कितने अपढ़ हैं। कार्यकर्ताओंकी चेष्टा यह होगी कि इनकी संख्या दिनोंदिन कम होती जाये। समितिका मत है कि चुने हुए कार्यकर्ताओंको किसी उद्योग विशेषकी शिक्षा न देकर उन्हें व्यवस्थाकी शिक्षा देना अधिक उपयोगी होगा, ताकि वे शिक्षित होनेके बाद अपने इलाकेमें पहुंच कर ग्राम्य केन्द्रोंकी स्थापना कर वहांके अपढ़ और अपटु कारीगरों एवं श्रमिकोंको संगठित कर समिति द्वारा निर्धारित उद्योगोंको अग्रसर कर सकें। समितिने पृथक उद्योगके लिये केन्द्र स्थापित करनेके बजाय एक केन्द्रमें बहुतसे उद्योगों—खादी बुनना, चमड़ेका काम बनाना,दरीं-कालीन बुनना, मधुमक्खी पालना आदि को स्थान देना अधिक उपयुक्त और लाभकारी समझा है।

समितिके गणितके अनुसार इस योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये एक लाख रुपयेकी आवश्यकता होगी। लेकिन जो देश बिना मांगे महात्मा गांधीपर १।। करोड़की रकम न्योछावर कर सकता है, वह उनके आदेशानुसार निर्धारित की गयी योजनाको मात्र १ लाख रुपयेके लिये बिना कार्यान्वित हुए पड़े रहने देगा, ऐसा विचार तक भी नहीं किया जा सकता। इसलिये देशकी दरिद्रता और बेकारीसे दिन-रात उद्विग्न रहनेवाले लोग इस योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये फण्डकी व्यवस्था अवश्य कर लेंगे। यह गयी बात केन्द्रीय दफ्तरक खर्चके लिये। उसको स्थानीय केन्द्र अपनी आयसे १०) प्रतिमास देंगे और उसका काम होगा उद्योग केन्द्रोंका प्रान्त व्यापी सुचारु संगठन। वह समय-समयपर आवश्यक आदेश-निर्देश, सुझाव-परामर्श देता रहेगा, महात्माजी के 'हरिजन' की भांति साप्ताहिक पत्र तथा अन्य औद्योगिक साहित्य सप्लाई कर अपने मातहत केन्द्रोंका पथप्रदर्शन करता रहेगा।

ग्रामोद्योग उत्थानके लिये उपर्युक्त सामयिक योजना प्रकाशित कराकर युक्तप्रांतने देशके अन्य प्रांतोंका नेतृत्व करते हुए अपने परम्परागत नेतृ-पदको बर

सिगफ्रीड पंक्तिमें घोर युद्ध बर्लिन नगरके लिये यु

सभी मोर्चोंमें जर्मन फौजोंका जोरदार प्रतिरोध

माण्टगोमरीके हमलेसे जर्मनोंके समक्ष संकट

लन्दन, ११ फरवरी। उत्तरी अक्सेस स्थित सातवीं सेनाके साथ रहनेवाला रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है—सातवीं सेना भयंकर जर्मन प्रतिरोधके बावजूद भी ओडर नदीके तटपर आक्रमण करती हुई सुदृढ़ जर्मन मोर्चेमें प्रवेश कर गयी है। एक रेलवे स्टेशनपर भी अधिकार कर लिया है। राइनकी दिशामें सिगफ्रीड पंक्तिके प्रमुख दुर्ग ऐतिहासिक क्लीवके पड़ोसमें घमासाम युद्ध जारी है। जर्मन सेनाके जोरदार प्रतिरोध और दुर्गम मार्गके कारण जनरल क्रेररकी अग्रगति मन्द पड़ गयी है।

संवाददाता आगे लिखता है कि इस सप्ताहके अन्तमें फील्ड मार्शल माण्टगोमरीके विशाल आक्रमणके कारण जर्मन हाई कमांडको अभूतपूर्व संकटका सामना करना पड़ा रहा है। इसका सारांश केवल चार शब्दों—बर्लिन या रूसमें ही समझा जा सकता है। कोलार अञ्चलमें १६ वीं जर्मन सेनाका सफाया कर दिया गया है। आठमेंसे छः डिवीजन नष्ट कर दिये गये हैं। २० हजारसे भी अधिक जर्मन हताहत हुए। ५५ टैंक और अन्य बहुसंख्यक युद्ध सामग्री नष्ट कर दी गयी है। रायटर

निगमेगनके पूर्व दक्षिणी राइनतटपर घमा

रूसी फौजोंका एल्विङ्ग व अन्य नगरोंपर

नये व्यापक आक्रमणकी शीघ्र सम्भा

मास्को, ११ फरवरी। गत रात्रिको मार्शल स्टेलिनने रूसी जनता सेनाको एक सन्देशमें बताया कि एल्विङ्गपर अधिकार कर लिया गया है। जर्मनोंको घेरकर साफ कर दिया गया। पूर्वीप्रशाके पश्चिमी भागमें एल्विङ्ग का एक प्रमुख बन्दरगाह है। मार्शल स्टेलिनने द्वितीय सन्देशमें बताया कि फौजोंने प्रिफुसिश-एलाऊपर अधिकार कर लिया है। मास्को रेडियोसे ऐलान गया है कि एल्विङ्गमें लाखों शरणार्थी आश्रयके अभावमें खले मैदानमें शिविर कर छिपे हुए थे।

जर्मन समाचार समितिने घोषित किया है कि जर्मनोंने ब्रसलाऊसे उत्तर-पश्चिम एक विशाल यातायात केन्द्र लिगनिट्जको खाली कर दिया है पर घमासान युद्धके बाद रूसियोंको अधिकार स्थापित करनेमें कामयाबी हुई। दक्षिणी पोमेरेनियामें सोवियट सैनिकोंके हमले स्टारगार्डके दक्षिणी बेकार बना दिये गये। ड्यूट्स-क्रोनके उभय छोर तथा श्वेट्जके उत्तर भी सोवियट सैनिक घुस गये हैं। कोनिग्सबर्गके दक्षिण-पश्चिम तटवर्ती की दिशामें मित्र सेनाका दबाव उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। ग्लोगूके दक्षिण अञ्चलमें भी कुछ भूभागपर रूसियोंका अधिकार हो गया है। लैण्डसबर्ग क्रुजबर्गमें सोवियट सैनिक कुछ दूरतक हमारे मोर्चेमें प्रवेश कर गये हैं। तरफ निजमेगनके पूरब दक्षिणी राइन और गेनपके निकटवर्ती रेलवे लाइन खूंखार रक्षात्मक युद्ध जारी है।

जर्मन समाचार समितिके सामरिक आलोचक कर्नल अर्नेस्ट वान हैमरने पिछली रात ऐलान कियाकि रूसी सैनिक पूर्वी भागसे ब्रेलस्कीमें प्रवेश कर गये हैं, जो जेक सीमांतवर्ती मोरवस्का कोस्ट्रोव नामक नगरसे ३० मील दूर है। रायटरका विशेष संवाददाता लिखता है कि बर्लिनकी लड़ाई आरम्भ हो गयी है। कई दिनोंकी जोरदार तैयारीके उपरांत मार्शल जुकोव की सेना और टैंकवाहिनी सबसे निकटवर्ती सड़कसे होकर ओडरके पार पश्चिम की ओर द्रुतगतिसे अग्रसर हो रही है। किसी भी समय सुप्रीम कमाण्ड द्वारा विस्तृत पैमानेपर आक्रमण आरम्भ किये जानेकी घोषणाकी जा सकती है। रायटर

सभा-जुलूसपर प्रतिबन्ध

पुरी, १० फरवरी। खुर्दाके सब-डिवीजनल अफसरने श्री प्राणनाथ पटनायक एम० एल० ए० तथा अन्य ग्यारह व्यक्तियोंके विरुद्ध एक आर्डर जारीकर मनाही की है कि वे इस सब-डिवीजनके अन्दर सभा या जुलूसका आयोजन न करें। साम्यवादी दल द्वारा खुर्दा रोड में खोले गये एक नये दफ्तरके उद्घाटनके उपलक्षमें सभा बुलायी गयी थी। पर उपर्युक्त आदेशके कारण सभा नहीं बुलायी जा सकी। ए०प्रेस

अमेरिकन सदस्यकी नामजदगी

वाशिंगटन, ११ फरवरी। एक गैर सरकारी फौजी पत्रका कहना है कि प्रेसीडेंट रूजवेल्टने युद्ध उप-सचिव, मि० पैटर्सनको युद्धोत्तरकालीन जर्मनीके लिये मित्रराष्ट्रीय कमीशनका अमेरिकन सदस्य निर्वाचित किया है। रायटर

करार रखा है, इसमें किसीको तनिक भी सन्देह नहीं है और यह पूर्ण आशा और विश्वास है कि ऐसी उपयोगी योजनाको कार्यान्वित करनेमें प्रांतके समस्त लोक हितैषी राष्ट्रवादी तन-मन-धनसे अग्रसर होंगे। मौजूदा नौकरशाहीसे तो इसदिशामें हम सहायताकी कोई आशा नहीं रख सकते, अगर वह इस मामलेमें हमारे पथका शूल न बने तो हम उसकी सबसे बड़ी सहायता समझेंगे और अगर हमारे लोकप्रिय नेताओंपरसे प्रतिबंधोंको हटाकर उनके हाथ इस कार्यमें मदद देनेके लिये वह मुक्त करदे तब तो हम समझेंगे कीवास्तवमें वह हमारा कल्याण चाहती है। क्या वर्तमान शासकवृन्द हमें इतनी भी सुविधा पानेसे वंचित रखेंगे ?

पुर्णियामें अग्निकांड

हजारों घर जलकर राख

पुर्णिया ६ फरवरी। स्थानीय दीवानी और फौजदारी अदालतों खजांची हाटथानके नजदीक मधुबनी महल्लेमें भयानक आग लग गयी। कहते हैं कि ग्वालटोलीके एक खपरैल वाले मकानमें आग लगी और जोरदार पछैया हवाके साथ आस पासके घरोंमें फैल गयी। लगभग एक हजार घर जल कर खाक हो गये हैं। धोबीटोलीके पूरी तरहसे बर्बाद होने के कारण अधिकांश लोगोंके कपड़े जल गये। उस महल्लाके कई वकील, क्लर्क तथा अन्य जनता लामकान हो गयी है। पछैया हवा बड़ जोरकी थी इस लिये बहुत देर तक आगको काबूमें नहीं लाया जा सका। अनवरत परिश्रमके बाद आगको काबूमें लाया जा सका। नगरमें पानीके नल नहीं है इस लिये आगको काबूमें करनेमें बड़ी परेशानी उठानी पड़ी। सम्पत्तिके नुकसानका अनुमान सैकड़ों रुपया लगाया गया है। बहुत धोबियोंके मकान बर्बाद हो जानेके परिणाम स्वरूप कपड़ेकी समस्या बड़ी दुःखदायी साबित होगी। यू० प्रस

ब्रिटेनमें निमन्त्रणकी पुष्टि नहीं

लन्दन, ११ फरवरी। पेरिस रेडियो के राजनीतिक संवाददाताके इस कथनका कि फ्रांसको त्रिनायक सम्मेलनमें भाग लेनेको आमंत्रित किया गया है, न तो ब्रिटिश परराष्ट्र कार्यालय और न लंदन स्थित फ्रांसीसी दूतावासकी ओरसे पुष्टि की गयी है। रायटर

आधे मूल्यपर वस्त्र

शान्तिनिकेतन ६ फरवरी। विश्वभारती कष्ट निवारिणी योजनाके अनुसार यहां लोगोंको आधे मूल्य पर वस्त्र दिया जा रहा है। अबतक आसपासके १३ गांवके लोगोंको इस योजनासे लाभ पहुंचा है। बोलपुर, समरे, सरपल होगा, नालतोर, तथा भ्रमण कोलके यूनियनोंमें औषधि वितरणकी व्यवस्था की जा चुकी है। इन यूनियनोंमें जितने गांव आते हैं उनके निवासियोंको मलेरिया की औषधि और और औषधियां भी मुफ्तमें दी जा रही हैं। दरिद्र रोगियोंको मुफ्तमें भोजन भी दिया जाता है।

पूर्वी बर्लिन अं

रक्षाव्यवस्थाकेलियेयुद्धक्षेत्र

पेरिस, ११ फरवरी। गत पेरिस रेडियोने ऐलान किया कि पूर्वी नगरोपांतके विभिन्न क्षेत्र अञ्चल' घोषित किये गये हैं। आगे बताया कि सभी नागरिक न्तरित किये गये हैं और भीतर सभी असैनिकोंका बन्द कर दिया गया है। सभी विशाल इमारतों और महत्वके केन्द्रोंपर अधिकार नगरकी रक्षा और अवशिष्ट सम्भावित विद्रोह रोकनेका कर रही है। रायटर

राव कमेटीके सामने

नयी दिल्ली, ६ फरवरी। ने आज प्रस्तावित हिन्दू ला कोड में दिल्ली प्रान्तीय हिन्दू सभाके और अन्य प्रमुख व्यक्तियोंके बयान अखिल भारतीय महिला सम्मेलन अखिल भारतीय दिगम्बर जैन के प्रतिनिधियोंकी राय : जान कमेटीके सदस्य आगामी १५ इलाहाबादके लिये प्रस्थान करेंगे हार बि होते हुए कलकत्ता पहुंचेंगे

गामी ब्रिटिशचुनाव

के विरुद्ध महिला उम्मेदवार

लन्दन, ११ फरवरी। आगामी आम वमें वर्तमान विदेश मंत्री मि० इडेनके द्व उनकी निर्वाचन सीमासे एक ला उम्मेदवार होगी। यह महिला ज सी० आर० टेलर हैं जो कि क्रा हैं एवं यातायातका उन्हें :विशेष है।

यह निर्वाचन सीमा वारदिक और गटन हैं जहांसे सन् १९२३ ई० से ईडेन पार्लमेंटके चुनावमें विजयी रहे हैं और गत चुनाव १९३५ में ३५७४६ वोट अपने सोशलिस्ट द्वन्दी मि० जे० पेरीके विरुद्ध मिले

मिसेज टेलरको इस सीमासे को कामन वेल्थ पार्टीने मनोनीत है। आपने संवाददातासे कहा कि रा भी घबड़ाती नहीं। सारे दुर्गको करना चाहिये और इसके लिये नवेल्थ पार्टी सर्वोपयुक्त है। ग्लोब

ी डांगे फ्रांससे निमंत्रित

लन्दन, ११ फरवरी। ब्रिटिश मज- अब बहुत दिनों तक यह नहीं कह गे कि वे भारतके मजदूर आन्दो- के बारे कुछ नहीं जानते हैं। लन्दनमें वाले विश्व मजदूर सम्मेलनके अखिल तीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस प्रतिनिधि लके नेता श्री एस० ए० डांगेने अपने णों द्वारा सब बातें स्पष्ट कर दी है। में अपने निवास कालमें ५० सभाओंमें भाषण देंगे। ये र ब्रिटेनके ३० लाख मजदूरोंका निधित्व करेगी। फ्रांससे प्राप्त एक णके उत्तरमें श्री डांगेने कहा कि आशा है कि मैं फ्रांसका दौरा कर- आशा करता हूं। लेकिन मैं जाऊंगा। हीं यह मेरे ब्रिटेनसे फ्रांस जानेके न पत्रपर निर्भर है।

विश्व मजदूर सम्मेलन समाप्त होते उत्तरी आयर्लैण्ड जानेकी भी रखते हैं। बेलफास्टसे उन्हें निमं त्र मिला है और जिला मजदूर लसे भी कुछ सप्ताह पहले नियंत्रण मा है। ग्लोब

ापुरके प्रति भविष्य वाणी

वेलिंगटन, १० फरवरी प्रशांत साग- ब्रिटिश जहाजी बेड़के प्रधान अफ- सर बूसफ्रेजरने आज वृहस्पति- ी एक प्रेस कानफरेंसमें कहा कि पुर पुनः विशाल ब्रिटिश जहाजी के रूपमें अपनी पुरानी जगह प्राप्त । प्रशांत महासागरके युद्धकी प्रग- सम्बन्धमें आपने कहा "इसकी र उम्मीदसे कहीं ज्यादा है और काफी सन्तोष है रायटर

कलकत्ता ट्राम कम्पनी

हिस्सेदारोंके नाम सूचना

कलकत्ता, १० फरवरी। कलकत्ता ट्रामवे कम्पनीके बोर्डने अपने हिस्सेदारों के नाम दी गयी एक सूचनामें प्रस्ताविक अधिकार स्थापन योजनासे सम्बन्धित घटनाओंका उल्लेख किया है।

बोर्डने बताया है कि कारपोरेशनके साथ उसकी बातचीत जारी है। बोर्डने स्पष्ट कर दिया है कि यदि हमारे हालके प्रस्तावको कारपोरेशनने स्वीकृत न किया तो कम्पनी कारपोरेशनद्वारा दी गयी ता० २७ जनवरीकी सूचनाको माननेके लिये अपनेको बाध्य नहीं समझेगी।

बोर्डने कारपोरेशनके पास इस बात की सूचना भेज दी है कि यदि प्रस्ताव मंजूर कर लिया गया और इस बातका आश्वासन मिल गया कि अधिकार स्था- पनाकी बातें कार्यान्वित की जायगी, उस हालतमें ही हम प्रस्तावित ट्रान्सपोर्टेशनके सम्बन्धमें बातचीत करनेको तैयार रहेंगे।

गो-हत्याके अपराधमें

मुस्लिम ग्रामीणको सजा

चिंचुड़ा १० फरवरी। पराडुआके खिरकुण्डी ग्रामके तारनी मण्डलकी एक गर्भवती गौको चुरा ले जाने और उसकी हत्या करनेके अपराधमें चिंचुड़ाके वकील मैजिस्ट्रेटने अब्दुल बारिक और एक और मुसलमानको २-२ वर्षोंकी सजा दी।

रिजेंसकौंसिलकेसदस्यकीनियुक्ति

जेनरल सिमोविचसे टीटोका विरोध नहीं

बेलग्रेड, १० फरवरी। बेलग्रेडके ज्ञान- कार क्षेत्रोंका कहना है कि मार्शल टीटो ने, रिजेन्सी कौंसिलमें जेनरल सिमोविच के सदस्य नियुक्त किये जानेका विरोध नहीं किया है। मार्शलने केवल शूनेकके सम्बन्धमें अपनी अस्वीकृति जाहिर की है जो जेतकोविच सरकारके सदस्य रह चुके हैं, जिस सरकारने १९४१में जर्मनी के साथ त्रिगुट सन्धि की थी। रायटर

पाट गोदाममें आग

कलकत्ता, ११ फरवरी। फरवरी १० को काशीपुरमें पाटके एक दो तल्ले गोदाममें आग लग गयी। कलकत्ता फायर ब्रिगेड की दस मशीनोंने उसे कब्जेमें कर लिया। आग लगनेके कारणका ठीकठीक पता नहीं लग पाया है।

अग्निकांडसे पांच जलमरे

बंगलोर, १० फरवरी। पासके एक स्थानमें आग लगनेसे ४० बच्चे और एक स्त्री जलकर मर गयी। मालूम हुआ है कि खाना बनाते समय चूल्हेसे चिनगारी उठकर छप्परमें लगी। जिससे समस्त घरमें आग लग गयी। कुछ घायलोंका उपचार अस्पतालमें किया गया। यू० प्रेस

लीगसे असन्तोष

मजलिसके संगठनकी अपील

लाहौर, १० फरवरी। अखिल भार- तीय मुसलिम मजलिसकी कार्यकारिणी समितिके सदस्य मि० मुफ्ती जैयुल हुसेन ने एक अपील प्रकाशित कर मुसलमानों से अपील की है कि मुसलमानोंको अधिक से अधिक संख्यामें मजलिसमें सम्मिलित होना चाहिये।

आपने कहा कि पञ्जाबमें मुसलिम मजलिसका संगठन शुरू हो गया है। पञ्जाबके मुसलमान मजलिसके सङ्गठन को प्रान्त भरमें फैलानेके पक्षमें हैं। आ- जादी-पसन्द मुसलमान इस आन्दोलनका स्वागत कर रहे हैं। वे लोग मुसलिम लीग और उसके नेताकी नीतिसे विशेष असन्तुष्ट हैं। पञ्जाब असेम्बली मुसलिम लीग पार्टीके नेताके चुनावमें पूंजीवादकी जीत इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। कायदे आजमके व्यवहारसे जनताको परम अस- न्तोष है। बम्बई मुसलिम लीगके अध्यक्ष के चुनावमें तथा सिन्धकी समस्याओंमें उनकी चुप्पी अप्रजातन्त्रवादी है। मुस- लमान को प्रजातन्त्रके सिद्धान्तोंके अ- नुसार संगठित कर उनकी समस्याओं- को सुलझानेके लिये मुसलिम मजलिस जैसी संस्थाकी आवश्यकता है। ए० प्रेस

भूकम्पके हल्के धक्के

बम्बई, ११ फरवरी। बम्बईकी को- लाबा वेधशालाने लगभग ४ हजार ३२० मीलकी दूरीपर १० फरवरीको भूकम्पके हल्के धक्के लगनेकी सूचना दी है।

होन्सूके आसपास चालीस अक्षांश और १ पूर्वी देशान्तरपर भूकम्पकी दूसरी खबर बतायी जाती है। ए० प्रेस

एम० एल० ए० पर रोक

कराची १० फरवरी। श्री ईश्वर- दास वरादमल एम० एल० ए० को रिहा होते ही यह आदेश दिया गया है कि किसी सार्वजनिक सभामें शरीक होना और भाषण देना या समाचार पत्रोंसे सम्बन्ध रखना निषिद्ध है। यह रोक तीन महीने तक लगी रहेगी। ए० प्रेस

जर्मन पनडुब्बियोंके उपद्रव

लन्दन, १० फरवरी। प्रसिडेण्ट रूजवेल्ट और और प्रधानमंत्री मि० चर्चिलके अधिकृत वक्तव्यमें यह कहा गया है कि "जनवरी महीनेमें दुश्मनके पन- डुब्बियोंकी कार्यवाही दिसम्बरकी अपेक्षा अधिक रही। पर तिजारती जहाजोंकी क्षतिमें कोई विशेष अन्तर नहीं था। ये पनडुब्बियोंने नये तरीके अख्तियार कर किनारेके जहाजोंके अति निकट पहुंच जाती थी। हमारी प्रतिकरात्मक कार्रवा- इयोंका नतीजा उत्साह जनक साबित हुआ है। रायटर

पंजाब छात्र सम्मेलन

महात्मा गांधीमें पूर्ण विश्वास

लाहौर, १० फरवरी। आज पञ्जाब राष्ट्रीय छात्र सम्मेलन शुरू हुआ। वि- शाल पंडाल बनाया गया है, जिसमें रा- ष्ट्रीय झण्डे फहरा रहे हैं, प्रान्तके कोने कोनेसे आये हुए प्रतिनिधियों तथा दर्शकों की अपार भीड़ है। महिला प्रतिनिधि भी प्रर्याप्त संख्यामें उपस्थित है।

पञ्जाब कांग्रेस कर्मी असेम्बलीके अध्यक्ष मौलाना मोहम्मद यासिनने आज का सभापतित्व किया। आपने अपने भाषणमें कहा कि गत साठ वर्षोंसे कांग्रेस देशकी आजादीके लिये संघर्ष कर रही है। हजारों शहीदोंके बलिदानसे राष्ट्रीय प्रतिरोधकी शक्ति संचित हुई है। महात्मा गांधीके नेतृत्वमें पूर्ण विश्वास रखो, हमारा स्वतन्त्रता संग्राम अहिंसाके आ- धारपर है। महात्मा गांधीने संसारको महान नेतृत्व प्रदान किया है। उन्होंने यह स्पष्ट बता दिया है कि कोई भी राष्ट्र हिंसासे अपनी स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र का निर्माण नहीं कर सकते हैं।

वक्ताने आगे कहा कि कांग्रेसका रच- नात्मक कार्यक्रमको लेकर सरकारको आतंकित नहीं होना चाहिये। महात्मा गांधीने वर्तमान अवस्थामें सविनय अवज्ञा आन्दोलन बन्द कर दिया है।

'तुम लोग आजादीके अग्रदूत हो'— इन शब्दोंके साथ श्रीमती सत्यवतीने पञ्जाब राष्ट्रीय छात्र सम्मेलनको बधाई दी है। श्रीमती सत्यवती लाहौरमें, जो आजकल गुलाब देवी अस्पतालमें हैं, नजरबन्द हैं। वे सम्मेलनमें स्वयं पधारीं और भविष्यके नेताओंके सम्मेलनको बधाई दी। ए० तथा यू प्रेस

सीमाप्रांतीय असेम्बली

पेशावर, ११ फरवरी। सरकारी तौरपर सूचित किया गया है कि आगामी ६ मार्चको सीमाप्रान्ती असेम्बलीका आगामी अधिवेशन आरम्भ करनेका निश्चय किया गया है यू० प्रेस

ग्रीक सरकारसे समझौता

एथेन्स, १० फरवरी। रायटरके विशेष संवाददाताका कहना है कि ग्रीक सरकार और ई० ए० एम० दलके प्रति- निधियोंके बीच सभी अवशिष्ट प्रश्नोंपर जिसमें ग्रीक देशभक्त सेनाका निरस्त्री- करण तथा वर्तमान मार्शलके नियमों में सुधार सम्बन्धी प्रश्न सम्मिलित है, समझौता हो गया है। ग्रीक प्रतिनिधि राजधानी, वापस लौटकर प्रधानमन्त्री और अन्य मन्त्रियोंसे आज मुलाकात करेंगे। अनुमान किया जाता है कि आज तीसरे पहरकी बैठकमें समझौतेपर हस्ता- क्षर होगा। रायटर

फिलिपाइन द्वीपका स्वातन्त्र्य-प्रयास

---:०:---

(लेखिका—श्रीमती कृष्णादेवी)

पांचवीं फरवरी फिलिपाइन द्वीप समूह-स्वतन्त्रताके इतिहासमें चिरकालतक बड़ी ...ा और भक्तिके साथ याद की जायेगी। ...ी पुनीत दिवसको दक्षिण प्रशांत मोर्चेकी ...त्रराष्ट्रीय सेनाके सुप्रसिद्ध सेनापति जेन... डगलास मैकार्थरने अमेरिकन तथा ...लिपाइन्सके जानपर खेलने वाले रणबांकुरों-... सहायता एवं सहयोगसे वह उल्लेखनीय ...जय प्राप्त की, जो उनके सैनिक जीवनकी ...क अति उज्ज्वल घटना समझी जायेगी। ...ांत मोर्चेपर मित्र राष्ट्रीय सेनाओंके साथ ...ने वाले रायटरके विशेष संवाददाताने ...ा है कि 'जेनरल मैकार्थरके फिलिपाइन्स ...यह दिन सबसे महान समझा जायेगा, ...अमेरिकन तीन वर्षों बाद फिर मैनिला ...में विद्यमान हैं। १९४२के प्रारंभमें जब ...ल मैकार्थरको फिलिपाइन द्वीप पुंज ...कर आस्ट्रेलियाकी ओर हट जानेको ...होना पड़ा था, तो उन्होंने बड़े ही ...और निर्भीक शब्दोंमें फिलिपाइन ...ोंसे प्रतिज्ञा की थी कि मैं फिर ...ा और आपके लिये आजादी लाऊंगा। ...फरवरीको अपनी उस प्रतिज्ञाको पूर्ण ...हुए फिलिपाइन्सके अन्तर्गत लूज़ोन ...वस्थित मैनिला शहरमें एक व्यापक ...रूपमें प्रवेश करते समय जेनरल मैकार्थर ...कितना आनन्द और उल्लास हुआ होगा ...कौन वर्णन कर सकता है? इस युद्धमें ...का और फिलिपाइनवासी सैनिकोंने ...महान् धैर्य और कष्ट-साहिष्णुताका ...दिया है, वह भी मानव स्वातंत्र्य ...के इतिहासमें स्वर्णाक्षरोंसे लिखा ...। बाटान और कोरिजीडोरमें अमेरि-...र फिलिपाइनवासी सैनिक जापानी ...ोंकी समुद्रके ज्वारकी तरह बढ़ती ...गतिको रोकनेमें जिस वीरतासे हंसते-...मर मिटे हैं, अपने उद्देश्यको पूरा करने ...को विभिन्न संस्कृतियों और सभ्य-...के अन्दर विकसितहुए दो राष्ट्रोंने जिस ...एकता और बंधुत्वका प्रदर्शन किया है, ...अपनी मातृभूमिकी परतंत्रताकी बेड़ियां ...के लिये उत्साह देशोंके लिये उज्ज्वल और अनुकरणीय वस्तु है। इन वीर सैनिकोंने अपने परस्परिक विश्वास और निर्भरताका जो उच्चतम परिचय दिया है, वह फिलिपाइन और अमेरिकाके गत ४० वर्षोंके पारस्परिक सत-सम्बन्धका परिणाम है। स्पेनिश-अमेरिकन युद्धकी समाप्तिके समय अमेरिकाने सर्वप्रथम फिलिपाइन द्वीप पुंजपर पैर रखते हुए गणतंत्रके सम्बन्ध-में जो प्रतिज्ञा की थी, शायद अपने राजत्वमें उससे वह कभी पीछे नहीं हटा। यही कारण है कि फिलिपाइनवासी अमेरिकाकी बातोंमें सदा विश्वास रखते आये हैं और वही विश्वास वर्तमान सुपरिणामका सबसे बड़ा कारण है। काश, हमारे ब्रिटिश राज नेता इस दिशामें अपने सबसे बड़े मित्र अमेरिकासे प्रेरणा प्राप्त करते!

मैनिला शहरके बीचसे बहनेवाली पासिग नदीका मनोरम दृश्य। व्यापारिक दृष्टिसे यह नदी बहुत ही महत्वपूर्ण समझी जाती है।

फिलिपाइनमें अमेरिकाका लक्ष्य

अमेरिकन सरकार, आरंभसे ही ऐसा लगता है कि, फिलिपाइनको अपना स्थायी उपनिवेश बनानेके पक्षमें नहीं है। स्पेनिशों-से संघर्ष करती हुई अमेरिकन सेनाओंने फिलिपाइन द्वीप पुंजपर इसलिये अपना अधिकार जमाया ताकि पूर्वके अन्य देशोंमें अपना पूर्ण व्यापारिक प्रभाव जमाया जा सके। दूसरी बात यह थी कि वे यह चाहती थी कि स्पेनवालोंका जो प्रभाव बढ़ता जाता है, उससे वहांकी जनताको मुक्त किया जा सके। उस समयकी १ करोड १० लाख जनतापर स्पेनवासियोंका प्रभाव अधिक बढ़ रहा था। अमेरिकनोंको यह विश्वास था कि यदि फिलिफाइनवासियोंपर बुद्धिमता-पूर्ण ढङ्गसे शासन किया जाये, तो उन्हें आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्रमें आगे बढ़ाकर स्व-शासन और स्वाधीनता प्राप्त कराया जा सकता है। इसी ध्येयको लेकर इस द्वीप-पर अमेरिकन सरकारने शासन कार्य प्रारंभ किया और शायद कभी अपने ध्येयसे पीछे नहीं हटी। अमेरिकाके प्रथम प्रेसीडेंट विलि-यम मेककिनलेने १८९९ में ही प्रथम फिलि-पाइन कमीशन नियुक्त कर यह अध्ययन करनेके लिये भेजा कि इस द्वीप समूहके ७ हजार ८३ द्वीपोंमें निवास करनेवाले लोगोंकी सामाजिक तथा राजनीतिक अव-स्था कैसी है। उसके बाद ही दूसरा कमी-शन विलियम होवार्ड टैफ्टके नेतृत्वमें फिलि-पाइन पहुंचा। प्रथम कमीशनकी अपेक्षा होवार्ड कमीशनको यह विशेष अधिकारथा कि फिलिपाइन अवस्थित लोगोंकी राष्ट्रीय सर-कार स्थापना सम्बन्धी इच्छाको वह कार्या-न्वित कर सके। प्रेसीडेण्ट मेककिनलेने उक्त कमीशनको जो आदेश दिया था उसका एक अंश इस प्रकार है—'कमीशन सरकार या शासन सम्बन्धी जो भी व्यवस्था करे; उसमें इस बातका ख्याल अवश्य रखा जाये कि वह शासन प्रणाली हमारे सन्तोषके लिये नहीं, बल्कि फिलिपाइन द्वीपपुञ्ज निवा-सियोंके सन्तोष और समृद्धिके लिये होगी।'

उपर्युक्त नीतिको कार्यान्वित करनेके लिये इस बातकी अत्यधिक आवश्यकता थी कि संस्थापित सरकारकी एक्जीक्यूटिवमें बहुतसे ऐसे सुयोग्य फिलिपाइनवासियोंको स्थान दिया जाये जो हर प्रकारसे फिलि-पाइनवासियोंको सन्तोष प्रदान कर सकें। सुयोग्य फिलिपाइनवासियोंको उच्च सर-कारी पदोंपर नियुक्त करनेके लिये सिविल सरविसकी भी व्यवस्था की गयी। १९०१ में विलियम होवार्ड टैफ्टही फिलिपाइनमें गवर्नर बने और कमीशनकी अनुकूल रिपोर्ट-पर अमेरिकन कांग्रेसने 'फिलिपाइनबिल' नामसे इस द्वीपपुञ्जके लिये प्रथम कानून पास किया। इस कानूनके अनुसार फिलिपाइनमें छोटी व्यवस्थापिका परिषदकी स्थापना की गयी, जिसमें फिलिपाइनके प्रतिनिधियोंको स्थान दिया गया और ऐसी व्यवस्था की गयी कि उक्त परिषदसे दो सदस्य चुनकर अमेरिका भेजे जायें, जो वहांकी प्रतिनिधि परिषदमें बैठकर फिलिपाइनके सम्बन्धमें वाद विवाद कर सकें। फिलिपाइन द्वीप-पुञ्जकेकानूनमें एक ऐसी धारा भी जोड़ी गयी थी जिसमें यह व्यवस्था थी कि द्वीपके प्राकृतिक साधनोंका शोषण विदेशियों द्वारा न किया जाये।

व्यवस्था परिषदकी बैठक

फिलिपाइन व्यवस्था परिषदकी स्थापना यद्यपि १९०२ में ही हो गयी, तथापि उसकी बैठक १९०७ के पहले नहीं हो सकी। इसका कारण यह था कि फिलिपाइनके लिये जो कानून बनाया गया, उसमें यह शर्त थी कि समस्त फिलिपाइन द्वीप समूहकी जनगणना कर उसे प्रकाशित करनेके २ वर्ष बाद परिषदकी बैठक हो सकती है। जन-गणना १९०३ में हुई, लेकिन रिपोर्ट प्रका-

फिलिपाइनके प्रेसीडेंटके साथ अमेरिकन सेना नायक। जेनरल डगलास मैकार्थर (दाहिने) और उनके चीफ आव स्टाफ (बायें) प्रेसीडेण्ट ओसमेना (बीचमें) से युद्धकी प्रगतिपर विचार-विमर्श कर रहे हैं।

मैनिलामें फिलिपाइनका विश्वविद्यालय— उच्चतम शिक्षाका आगार। छात्र-छात्राओंको निःशुल्क लौकिक शिक्षा दी जाती है।

शित हुई १९०६ में। इसलिये १९०७ के पहले परिषद्‌की बैठकका होना किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका। परिषद्‌के प्रथम अध्यक्ष सरजियो ओसमेना हुए, जो अब फिलिपाइनके राष्ट्रपति हैं। फिलिपाइनके प्रथम प्रेसीडेंट मैनुएल एल० क्वीजोन, जो फिलिपाइन कामनवेल्थके प्रथम राष्ट्रपति थे, उस परिषद्‌के नेता बने थे। द्वीपपुञ्जकी शासन व्यवस्थाको इन दोनों नेताओंने बड़े सुन्दर ढङ्गसे संचालित किया और अन्य फिलिपाइन राजनेताओंको इतना आगे बढ़ाया कि उनकी योग्यताको अमेरिकन सरकार भी स्वीकार करने लगी। १९१३ में अमेरिकन प्रेसीडेण्ट उडरो विलसनने फिलिपाइनवासियोंकी शासनःसम्बन्धी योग्यता-पर अपनी स्वीकृतिकी छाप लगाते हुए यह व्यवस्था की कि अखिल फिलिपिनो-अमेरिकन कमीशनमें बहुमत फिलिपाइनवासियोंका रहे। जनताकी स्वशासन सम्बन्धी महत्वाकांक्षा बराबर आगे बढ़ती गयी और अमेरिकन कांग्रेसको १९१६ में 'फिलिपाइन स्वायत्त शासन विधान' पास करना पड़ा। इस विधानने १९०२ के फिलिपाइन बिलको रद्द करते हुए फिलिपाइनके स्वाधीनता-अधिकारकी दिशामें काफी प्रगति की। इस विधानमें अमेरिकन सरकारकी आकांक्षा-को दुहराते हुए कहा गया कि अमेरिकाकी इच्छा है कि ज्योंही फिलिपाइनमें स्थायी राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना हो जायेगी, अमेरिकन सरकार अपनी सत्ता द्वीपपुञ्जसे समेट लेगी और फिलिपाइनकी राष्ट्रीय स्वाधीनताको स्वीकार कर लेगी। इस विधानके अनुसार फिलिपाइनवासियोंको शासन सम्बन्धी कुछ अतिरिक्त अधिकार भी प्रदान किये गये, जिनके द्वारा वे पूर्ण स्वाधीनता सम्बन्धी अपनी जिम्मेदारियोंका निर्वाह करने और उनसे उचित लाभ उठानेके निमित्त अधिक तैयार हो सकें।

नये विधानको 'जोन्स विधान'की संज्ञा दी गयी थी। इस विधानने सिनेट और प्रतिनिधि परिषद् नामसे दो व्यवस्था सभाओंकी स्थापना की और इनके सदस्यों-को निर्वाचित करनेके लिये जनताको अधिकार दिया गया। मैनुएल क्वीजोन सिनेटके अध्यक्ष और सरजियो ओसमेना प्रतिनिधि परिषद्‌के अध्यक्ष हुए। तत्पश्चात लम्बे अरसे तक—१९१६ से ३४ तक—फिलिपाइनवासी सम्मिलित रूपसे वैधानिक प्रगति-पथपर अग्रसर होते रहे। इसमें सन्देह नहीं कि उनमें कभी-कभी भयंकर मतभेद भी उत्पन्न हो जाता था, लेकिन अपने लोकप्रिय नेताओं-की फटकार और झिड़कियां खाकर वे सम्मिलित प्रयासमें सर्वदा तल्लीन रहे। उनकी एकता और सहयोगिताका वर्णन करते हुए राष्ट्रपति ओसमेनाने हालमें ही वाशिंगटनमें कहा था कि "फिलिपाइन वासियोंका पूर्ण मतैक्य इस बातका उज्ज्वल उदाहरण है कि हमने अमेरिकाके ४० वर्षके शासन कालमें उसके सहायता मूलक दृष्टिकोणको अच्छी तरह समझा है। आरंभसे ही हमने अमेरिकन मित्रोंमें पूर्ण विश्वास किया है और उसके लिये पर्याप्त आधार भी मिलते गये हैं। हमें विश्वास था कि जिस स्वधीनताकी उन्होंने प्रतिज्ञा की है, वह अवश्य प्राप्त होगी और इसी लिये उस दिशामें कृतसंकल्प होकर मित्रराष्ट्रोंकी भांति बढ़ते गये। जबकभी मतभेद उत्पन्न हुए, उनको दूर करनेके लिये हृदयसे प्रयत्नशील रहे और यह देखते गये कि अमेरिकनोंमें हमारा जो विश्वास है उसको आधार प्राप्त होता जाता है या नहीं। गणतंत्र और स्वाधीनताके लिये यही हमारा प्रयास है। हमने अपने कार्योंसे यह साबित कर दिया कि स्वशासनके लिये हम पूर्ण उपयुक्त पात्र हैं। विश्वके अन्य राष्ट्र यदि स्वाधीन होनेकी कामना करते हैं तो उनके लिये हमारा आचरण आदर्श होना चाहिये।"

पहाड़ोंकी चट्टानोंको काटकर बनाये गये धानके सुन्दर खेत। चावल द्वीपकी प्रधान फसलोंमें समझा जाता है। चीनी, पाट, नारियल और तम्बाकू अन्य आवश्यक फसलें हैं।

१९३४ में अमेरिकाने फिलिपाइन द्वीपपुंजके लिये पूर्ण स्वाधीनताका विधान तैयार किया, जिसके अनुसार अमेरिका १९४६ के अन्तमें अपना राजत्व फिलिपाइन द्वीपपुंजसे पूर्ण रूपेण हटा लेगा। प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने इसकी घोषणा भी उस समयदुबारा कर दी जब फिलिपाइन द्वीपपुञ्जपर जापानी आक्रमण आरम्भ हुआ था।

सर्वजनिक शिक्षा और स्वास्थ्य

शिक्षाके क्षेत्रमें फिलिपाइनवासियोंने अपनी अभूतपूर्व ज्ञान-पिपासाको प्रकट करते हुए अमेरिकन पूंजीसे नवनिर्मित स्कूलों और कालेजोंमें जो अपनी प्रगति दिखलायी है, वह प्रशंसनीय है। उत्तर लूज़ोनसे लेकर मिण्डानाव और सूलूके छोटे द्वीप समूहके ठेठ कोनेतक स्कूलोंकी शृंखला सी फैली है। उच्च शिक्षाको प्रोत्साहन देनेके लिये फिलिपाइनकी अपनी युनिवर्सिटी और कालेज भी हैं। स्कूलों और कालेजोंका क्रम अमेरिकन ढङ्गपर बनाया गया है। आरम्भमें शिक्षकों-का कार्य अमेरिकन ही करते थे। लेकिन अब सुयोग्य फिलिपाइनवासी अध्यापकों एवं शिक्षा-विशेषज्ञोंकी संख्या बहुत [illegible]

हो गयी है। सार्वजनिक स्वास्थ्यकी [illegible] भी काफी ध्यान दिया दिया है। अनेक [illegible] अस्पताल खोले गये हैं जिनमें पहले अमेरि[illegible] डाक्टर थे, लेकिन अब करीब-करीब [illegible] अस्पतालोंमें डाक्टर और नर्सें फिलि[illegible] वासी हैं। १९३९ में शिक्षा और सार्व[illegible] स्वास्थ्य विभाग फिलिपाइन वासि[illegible] अन्तर्गत आ गये। फिलिपाइनकी का[illegible] सरकारके व्ययकी १९३८ की वार्षिक [illegible] से पता चलता है कि सार्वजनिक स्वा[illegible] लिये कितना खर्च किया जाता है। [illegible] वर्क्स, बाजारों और कुओं आदिके नि[illegible] के लिये ९० लाख डालर खर्च [illegible] तखमीना है। प्रान्तोंमें मेडिकल लेबो[illegible] रोगोंके सम्बन्धमें अनुसंधान करने[illegible] स्थापित। स्थायी अस्पतालोंके [illegible] जिनकी संख्या इस समय १२ हैं, नगरों [illegible] शहरोंमें अतिरिक्त दवाखानोंको स[illegible] और संचालित करनेके लिये १० लाख [illegible] खर्च किये जाते हैं। 'नेशनलचैरिटी [illegible] खोलनेकी भी व्यवस्था की गयी है, [illegible] जिस जापानका आक्रमण आरम्भ [illegible] उस समय बहुतसे ऐसे क्लिनिक [illegible] रहे थे। सार्वजनिक स्वास्थ्यकी [illegible] व्यवस्थाएं फिलिपाइनके सामाजिक [illegible] का एक प्रधान कारण हैं।

व्यावसायिक प्रगति

उद्योग और व्यापारमें फिलि[illegible] वासियोंने जो उन्नति की है, उसका [illegible] १९४० की कस्टम्स कलक्टरकी रिपोर्ट [illegible] कुछ मालूम होता है। जापानके फिलि[illegible] द्वीपपुञ्जपर आक्रमण करनेके पहले य[illegible] अन्तिम रिपोर्ट है। गन्ना फिलिपाइ[illegible] पुञ्जकी सबसे बड़ी फसल है और [illegible] अधिक राष्ट्रीय आय इसके चीनीके [illegible] होती है। १९४० के जूनमें ३ करो[illegible] लाख ९४ हजार डालरकी चीनी बाहर [illegible] गयी। फिलिपाइनमें उत्पादित उक्त [illegible] ९९ प्रतिशत अमेरिका मंगाता था। [illegible] बाद फिलिपाइनसे निर्यात करनेकी [illegible] वस्तु नारियलका तेल और गरी है। [illegible] वर्षमें ये सामान १ करोड़ ३४ ल[illegible] हजार डालर कीमतके बाहर भेजे गये [illegible] उत्पादनका ८४ प्रतिशत संयुक्त राष्ट्र[illegible]

(शेष १४ वें पृष्ठपर देखिये)

फिलिपाइनका एक किसान भैंससे खेत जोत रहा है।

रे आश्चर्यकी सीमा न रही। वे संन्या-
और ऊपरसे नीचेतक गेरुए कपड़ेसे लदे
मुण्डित शिर, गौर वर्ण। अत्यन्त सुन्दर
ति थी। उन्होंने कहा—'मैं काम करना
ता हूं। कृपा पूर्वक सिफारिश कर
ये।'

मैंने पूछा—महाराजजी! आपने त्याग-
त ले लिया है। आप संन्यासी हैं।
को कौन नौकरी करने देगा? स्वामियों-
चरण पूजे जाते हैं। उनके स्पर्श मात्रसे
परलोकके सुखकी आशा की जाती है।
ऐसे पुरुषको काम करने की आज्ञा कौन
?

भाई! मैं क्या कहूं? कुछ कहा नहीं
। वास्तवमें मेरा स्वरूप तो वैसा ही
जा तुम कह रहे हो। इस वेशके द्वारा
पूजित हूं। अबतक मेरा जीवन किसी
व्यतीत हो गया है। परन्तु अब मैं
रहना नहीं चाहता। स्वामीजीने कहा।
दयामय प्रभुने आपको जननीके उदर-
वायुका प्रवेश न हो, बचाया है,
होते ही, अनुपमेय माताने प्यार और
दूध पिलाया। क्या वह भविष्यमें आप-
जायगा?

स्वामीजी कहने लगे—तुम मेरी बातों
ान न देकर मुझे बुरी तरह छेड़ते जारहे
अतः तुमसे मनकी सारी बातें बता देता
तुम मुझसे प्रेम रखते हो और मैं अच्छी
जानता हूं कि तुम सरल और सज्जन
। तुमसे मनकी सच्ची बात कह कर
ई क्षति नहीं हो सकेगी। बल्कि उस
तुम मेरी बातोंपर पूर्णतया विचार
होगे।

मेरी कहानी बड़ी लम्बी है। किन्तु मैं
अत्यन्त संक्षेपमें सुना रहा हूं।

मैंने जिस समय जन्म लिया, उसके दो
पूर्व ही मेरे पिताका परलोकवास हो
था। मेरे दो बड़े भाई थे। घरमें कोई
सम्पत्ति नहीं थी जिससे वे लोग जीवन
कर सकते। किसी प्रकार भाइयोंकी
ासे ममतामयी जन्मदात्री जननीने
पालन-पोषण किया।

बाल्यकाल कितना मनोरम होता है?
रहा हूं। मुझे न
सी पिताकी स्मृति दुखी कर सकती
न परिवारकी दरिद्रतासे विकल
ा। भाईको कितने समय भोजन किये
ा या माताके स्तन सूखे क्यों हैं,
कारणोंपर विचार करनेकी आवश्यकता
मुझे तो ठीक समयपर, यानी जब क्षुधा
होती, माताका दूध और भोज्य पदार्थ
चाहिये। वे चाहे कुछभी हों। मेरे लिये
कुछ तैयार रहता। मैं निश्चिन्त,
न और मस्त रहता। इस प्रकार आठ
मेरी आनन्द मन्दाकिनीका अजस्र
ाह रहा।

स्कूलमें भेज दिया गया। प्राइमरी
करके संस्कृत पढ़ने लगा। लघुकौमुदी
हो गयी। अब मुझे भले-बुरेका ज्ञान
या। मैं सब कुछ समझने लग गया
। मुझे कभी-कभी दोनों समय उप-
करना पड़ जाता। एक समयका क्रम
क समयसे चल रहा था।

कहानी

"शान्ति कहां?"

—:*:—

(ले०—श्री शिवनाथ दुबे 'साहित्यरत्न')

मैंने देखा, मेरे घरमें पैसेके नामपर एक कानी कौड़ी भी नहीं थी, और अनाजका एक दाना भी कहीं नहीं दीखता था। भाई लोग यदि किसी प्रकार एकाध सीधा ले आते, तो उससे आग जलती, नहीं तो वैसे ही रहना होता। दो-दो तीन-तीन दिनपर कभी भरपेट अन्न मिल जाता।

मैं सोलहका हो गया था। पासके दूसरे प्रसिद्ध संस्कृत स्कूलमें भर्ती हो गया। वहां भोजन भी मिलता था। वहां मेरा पेट तो भरने लगा, परन्तु माता और भाइयोंकी चिन्ता से मैं व्यथित हो जाता, पर करता ही क्या? कोई वश नहीं था। चुपचाप अध्ययन करता रहा। उस समय एक ऐसी घटना घटी, जिसे कहते अत्यन्त लज्जा आती है, पर मैं तुमसे सब कह डालूंगा। कुछ भी नहीं छिपाऊंगा।

कुछ देर रुककर स्वामीजीने फिर कहना शुरू किया—यह बात सत्य है कि यह पेट बड़ा अधम है। जब खाली रहता है, तब जमीन हिलती और आकाश कांपता दीखता है; उस समय मानापमानका तनिक भी ध्यान नहीं रहता, उसकी पूर्तिके लिये प्रतिष्ठित व्यक्ति भी अपनी प्रतिष्ठा गंवा देते हैं, और जब यह भरा रहता है तो मनुष्यको मनुष्यताकी श्रेणीसे गिरा देता है। पशु, नहीं-नहीं पिशाच बना देता है। मनुष्य महान अनर्थ करने लगता है, उद्दाम प्रकृतिका हो जाता है। राक्षसी ताण्डव करता है, तनिक भी संकोच नहीं करता, लज्जित नहीं होता। वह पशुसे भी नीचे गिर जाता है। ऐसे अवसरपर संभल संभलकर सावधानीसे चलनेवाले त्यागी ही अपनी रक्षा कर पाते हैं और वास्तवमें वे ही पुरुष कहाने योग्य हैं।

मेरे रग-रगमें यौवनका प्रवेश हो गया था। पोषक सामग्रियोंका अभाव नहीं था, कभी-कभी पौष्टिक पदार्थ भी मिल जाते थे। मुझे उन्माद-सा छाता जा रहा था।

सन्ध्या समय मैं प्रति दिन रावीके तट-पर टहलने जाया करता। वहीं सन्ध्योपासन किया करता। टहलना भी हो जाता। रास्तेमें एक कुआं पड़ता, जहां आस-पासकी सभी स्त्रियां पानी भरने आतीं। मेरा रास्ता कुएंके पाससे ही होकर निकलता था।

एक दिनकी बात है। मैं टहलने जा रहा था कि कुएंपरसे एक षोडशी जलकी भरी कलशी लिये उतर रही थी। मुझे समझते देर न लगी, वह कहारिन है। कई घरोंका पानी भर दिया करती थी। यही उसकी जीविका थी।

वह नव यौवन-सम्पन्न नारी थी। उसके अङ्ग-अङ्गसे जवानी छलक रही थी; सौन्दर्य मुस्कुरा रहा था। मेरे नेत्र उसकी आंखोंसे मिल गये। मुझे रोमाञ्च हो आया। लज्जासे नतमस्तक हो जल लिये वह चली गयी।

तबसे मैं प्रातःकाल भी उस ओर जाने लगा। वैसे देखनेका नशा हो गया। रात आती, मैं सोचता, कब प्रातःकाल आयेगा। प्रातःकाल होते ही पनघटकी राह लेता। दोपहर होता, सोचने लगता कब सन्ध्या होगी। दिन युग सरीखा हो जाता। सन्ध्या आती, फिर वही क्रम। जैसे चकोर चन्द्र-दर्शनके लिये आकुल रहता है, मेरी भी वही दशा थी।

'तासीरे इश्क होती है दोनों तरफ़ ज़रूर,
मुमकिन नहीं कि दर्द इधर हो उधर न हो॥'

—के अनुसार सम्भवतः उसका दिल भी मेरी ओर आकर्षित हो गया था। मुझे देखते ही वह मेरी ओर देखने लगती। कभी-कभी मुस्कुरा भी देती।

सुना है, दरिद्र आदमीको सहसा अगाध सम्पत्ति प्राप्त हो जानेपर वह पागल हो जाता है। उसकी बुद्धि काम नहीं करती। ठीक उसी तरह मैं उस सौन्दर्यकी प्रतिमाका प्यार पाकर उन्मत्त हो गया था। वह बात छिपा न सका मैंने एक अन्तरङ्ग मित्रसे कह दिया। उसने दूसरेपर प्रकट कर दिया। इसी प्रकार यह बात पाठशालामें फैल गयी। गुरुजीने भी सुना।

कुमारीकी गोदमें शिशु

—:*:—

[श्री रघुनाथ सिंह चौहान बी० ए०, विशारद]

अरे! सुकुमारि कहांसे मिला? तुम्हें घरकी रानीका ताज,
कहो यौवन-काननका पुष्प कहांसे ले आयी हो आज?
अभी तो तुमने किया प्रवेश नहीं उपवनसे कुछ पहिचान,
देखती चकित वसन्त-बहार, नहीं इसके पथका कुछ ज्ञान।
नहीं परिचय कुञ्जोंसे अभी, न पाटलके कांटोंसे प्यार,
न मालीसे ही परिचय, भला पुष्प पानेका क्या अधिकार।
बताओ तो फिर पाया कहां? ललित मधु-स्मित गुलाबका फूल,
युगल कमलोंसे जिसे उछाल अङ्कमें लगा रही सब भूल!
तुम्हारे सस्मित मुखको देख, गोदमें हंसता शिशु मृदु गात,
देखकर उदित सूर्यको समुद खिला मानसमें ज्यों जलजात।
कभी सहलाती कुञ्चित केश मृदुल हाथोंसे सहज सम्भाल,
चन्द्र धोता हो मानो स्वयं करोंसे घना तिमिरका जाल।
कभी हाथोंमें समुद सम्भाल, झुलाने लगती हो कर प्यार,
रात होते ज्यों हिलता कमल, लहरियोंके सह मृदुल प्रहार।
भरे ईंगुरसे सुन्दर मांग, सजाकर बालारुणसे क्रोड़,
उषा भी स्वर्ण-सजीली आज, न कर पायेगी तुझसे होड़।

* * *

खड़ी जीवन सागरके तीर, भला तुम क्या जानो मंझधार,
कहो तो किस सीपीने दिया? तुम्हें यह अपना रत्न उधार।
कि जिसको लिये गोदमें झूम-झूम, झुक चूम रही प्रतिबार,
भला क्या भावी-दर्पण बीच, देखती हो अपना संसार?
रंगीला, कुसुमित, सुरभित, सजा, स्वर्ण-स्वप्नोंका नव संसार,
भरी आशासे लेकर गोद, चली बिखराती स्नेह दुलार।
कि जिसमें हृदय-रक्तसे सींच लगाओगी जीवनकी बेल,
पालनेमें जिसके कर्त्तव्य प्रेमके साथ सकोगी खेल।
भला-सा, छोटा-सा संसार, शान्ति सुखमय सुन्दर संसार,
कि जिसकी तुम रानी, वह राज्य सफल शासित मोहक परिवार।
खिले यौवन उपवनमें सुमन, सुमनमें गंध, गंधमें स्नेह,
स्नेहसे प्रेरित त्याग अनूप, त्याग, अनुराग निमज्जित गेह।
विरोधों-समझौतोंसे पूर्ण, नाट्य अभिनय, पर सदा सुखान्त,
दो हृदय-कूलोंके मध्यस्थ, प्रेमकी धारा बहती शान्त।
शान्त धारामें जीवन, सरल हासमय शिशुका सुन्दर चित्र,
झलक जाता विद्युत-सा चपल, खुले नयनोंमें स्वप्न विचित्र।

* * *

या कि आता है तुमको याद, गया बीता वह शैशव काल,
विहंस खेली थी, आशा सदृश किसी गोदीमें बनकर लाल।
नहीं, वह भोला शैशव आज न आ सकता है तुमको याद,
भावनाओंका स्वर्णिम जगत कर रही जब अपना आबाद।
अभी तो वर्तमान पर गर्व और भावीकी उत्कट चाह,
चपलता जीवनको कर रही सरस, भर रही अमर उत्साह।
किन्तु कैसे भूलोगी कभी, मदिर-वयका वह मृदु सङ्गीत।
सदा आयेगी रह-रह याद, आजका दिन बन सुखद अतीत।

मैं लज्जित था। मुझे कर्तव्याकर्त्तव्यका ज्ञान नहीं रहा। सीधे काशी चला आया। वहां एक संन्यासीसे मिला। मैंने साधु होनेकी इच्छा प्रकट की। स्वामीजीने संन्यासकी महिमाका वर्णन किया। बस मैंने संन्यास ले लिया।

रङ्गीन कपड़े पहना, स्वामीजीके पास रहने लगा। वहांसे निकला तो मुझे भिक्षा मांगते बड़ी लज्जा आती थी। फिर भी धीरे-धीरे अभ्यस्त हो,गया। मैं यहांसे वहां घूमता रहता। भूख लगती मांगकर खा लेता। और तो कोई काम था ही नहीं।

ऐसी दशामें भी मेरा शरीर मदनाग्निसे झुलसता रहता था। उसे शान्त करनेके लिये मेरे पास कोई साधन नहीं था। किसी प्रकार पैसे बचाकर चुपकेसे रात्रिमें वेश्यालय चला जाता। फिर मुंह छिपाये वहांसे भाग आता।

इस प्रकार क्रोध, लोभ, मोह सभी मेरे शत्रु बने हुए हैं। मेरे मनमें उद्विग्नता है, हलचल है। मुझे शान्ति नहीं है। मैंने पुरुषार्थसे मुंह मोड़ा है। कर्त्तव्य पालनको तिलाञ्जलि दी है और मानवताको ठुकराकर जीवनसे क्रूर क्रीड़ा की है। मैं अत्यन्त पतित हूं। मेरा जीवन पतनके गर्हित गर्तमें तीव्र गतिसे जा रहा है। मेरे हृदय सागरमें अशान्तिकी लोल लहरें उठ रही हैं। अब मैं इसी निष्कर्षपर पहुंचा हूं कि वेश परिवर्तनसे कभी भी शान्ति-लाभ नहीं हो सकता। शान्ति तो मनकी वस्तु है, जो मनको वशमें करनेसे ही मिलती है। और जबतक आदमीके पास समय रहेगा, तबतक मनकी गति रुक नहीं सकेगी।"

स्वामीजीकी सारी बातें मैं बड़े ध्यानसे सुन रहा था, पर था चुप।

अब बोलो क्या कहते हो? मुझे झकझोरते हुए स्वामीजीने कहा।

मैं प्रयत्न करूंगा। मैंने उत्तर दिया।

\+ × ×

अब स्वामीजी बड़े प्रसन्न थे। उनके कार्यको देखकर हम लोग चकित हो जाते थे।

'अब तो स्वामीजी बन्धनमें पड़ गये।' एक दिन स्वामीजीको सुनाकर मैंने कहा।

स्वामीजी तुरन्त बोल उठे—नहीं भाई! अब तो मैं त्यागी बन गया। सारा दिन काममें लगा रहता हूँ। प्रातः सन्ध्या उठकर भजन करता हूं। अब मनको बगैर नकेलके ऊंटकी तरह इधर-उधर जानेका अवकाश नहीं मिलता, अब मुझे पूर्ण शान्ति है।

फिलिपाइन द्वीपकास्वातन्त्र्य-प्रयास

(१२ वें पृष्ठसे आगे)

अमेरिका अकेले मंगाता था। मैनिला पाट विश्वविख्यात हैं। इसकी अत्यन्त उच्चकोटिकी रस्सियां बटी जाती हैं। १९४४ में जब जेनरल मैकार्थर लायटी द्वीपमें सर्वप्रथम उतरे तो रस्सी बनाने वाली कम्पनीके अमेरिकन अफसरोंसे उनकी कानफरेंस हुई और यह निश्चय हुआ कि जितनी जल्दी पाटका उत्पादन बढ़ाना संभव हो, उसे बढ़ाया जाय और अमेरिका भेजनेकी व्यवस्था की जाये

जहांतक खानिज पदार्थों और लकड़ीका सम्बन्ध है, फिलिपाइन बहुत धनी देश है। क्रोम दुनिया भरमें सबसे अधिक निकलता है। जापानी अधिकारियोंने अपने थोड़े समयके प्रवासमें यहांकी खानोंके उत्पादनसे अपनी योग्यताके अनुसार अधिकसे अधिक लाभ उठानेकी चेष्टा की है। फिलिपाइनकी सख्त:लकड़ी इसकी राष्ट्रीय आयके साधनोंमें एक महत्वपूर्ण:स्थान रखती है

१९३४के स्वाधीनता कानूनके अनुसार फिलिपाइनमें कर मुक्त व्यापारका अन्त कर दिया गया। प्रथम पांच वर्षों तक तो इस प्रतिबंधका व्यापारपर विशेष प्रभाव नहीं पड़ा, लेकिन १९४१की जनवरीसे अमेरिकन बाजारोंके लिये भेजे जानेवाले मालपर ५ प्रतिशत ड्यूटी लगने:लगी। अमेरिकासे भी जो सामान आते, उनपर ड्यूटी लगायी जाती। इस करबन्दीका उद्देश्य फिलिपाइनके उद्योगको व्यापक बनाना बताया गया। करमुक्त व्यापारके कारण फिलिपाइनवासी निर्यात २७ थोड़ीसी चीजोंको अधिक उत्पन्न करते थे और अन्य आवश्यक चीजें बाजारसे खरीद लेते थे! उपर्युक्त प्रतिबन्धोंकेद्वारा वास्तवमें फिलिपाइनकी निर्यात शक्ति अधिक दृढ़ बनायी जा सकती थी, यह एक विवाद ग्रस्त विषय है, और इन प्रतिन्धोंको कार्यान्वित करनेके लिये काफी समय भी नहीं मिला, क्योंकि १९४२में ही जापानका आक्रमण हो गया। यह जापानी आक्रमण संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाके साम्राज्यपर किये जाने वाले आक्रमणका अंग था। अमेरिका और फिलिपाइन निवासियोंकी सेनाओंने, जिनमें १९ हजार अमेरिकन और १२ हजार फिलिपाइनके शिक्षा प्राप्त सैनिक और १ लाख रूपसे शिक्षत फिलिपिनो रगरूट थे, विशालकाय सेनाओंका मुकाबिला कर किया और काफी लम्बे असे रोके रहीं। उनकी यह विलम्बकारी मित्रोंकीभावी विजयके लिये कार्य रखती है

भारतमें सामाजिक सुरक्षा

———:o:———

(लेखक—ब्रह्मचारी ओमप्रकाश)

वर्तमान समयमें सामाजिक सुधारों- विषयमें काफी ध्यान दिया जा रहा है। न्तु जहां आर्थिक और वैधानिक सुधार ये जा रहे थे, वहां इस सामाजिक सुधार- ओर आजसे कुछ समय पूर्व तक उचित ान न दिया गया था। निस्सन्देह बाल- वाह रोकनेके लिये और विधवाओंके पुन- वाह आदिके लिये कुछ प्रयत्न अवश्य ये गये थे। किन्तु वह तो सामाजिक ारोंकी पृष्ठ भूमिको छूना ही था। ोंकि मुख्य प्रश्नपर अभी विचार भी नहीं ्या गया था।

अब निम्न श्रेणियोंके मनुष्योंकी दय- य अवस्थाओंके प्रति कुछ सामाजिक- र्यकर्ताओंमें सहानुभूति अवश्य उत्पन्न है। इस सामाजिक उन्नतिसे उच्च- णियोंकी अवस्थाओंके सुधारकी भी वश्यकता अनुभव हो रही है। इससे भी धिक विश्वव्यापी युद्धने सामाजिक संग- ें इसकी महत्ताको विशेषरूपसे सिद्ध ा है। इस तरह अनेक उपयोगी योज- ्एं भी सूझ रही हैं।

'सामाजिक-सुरक्षा' का प्रश्न इन्हीं जनाओंमें है। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी र राष्ट्रीय उन्नतिके लिये हृदयसे प्रयत्न ना चाहे तो हमें अवश्य ही उसे नौकरी आजीविका देनी होगी। यदि वह जीविकाके संघर्षमें ही लग जाता है तो राष्ट्र-सुधारके लिये कोई भी वस्तु प्रेरित कर सकती। यह भी सम्भव है कि उसे ी अभाव-पूर्तिके संघर्षमें लगे रहनेके ण जीवनके अन्य पहलुओंपर दृष्टिपात का समय भी न मिले।

सामाजिक सुधारोंके प्रति हमारा जो ाह है उसके लिये एक और भी युक्ति दी ी है। मनुष्य आज सभ्यताकी एक ऐसी थामें आ गया है, जिसमें यह सम्भव वह अपने कुछ समयको जीवनकी उप- य क्रियाओंको भी दे सके; जो कि दैनिक आवश्यकताओंसे सम्बन्धित है। मनुष्य जातिके विकासने उसे एक और भव्य जीवन बितानेका समय प्रदान है। यदि हम अपनी और अपने ारकी तुच्छ आवश्यकताओंकी पूर्तिमें पने जीवनका सारा समय बिता दें, पाषाणयुगके और इस यान्त्रिक युगके ्में भेद क्या रह जाता है? इस तरह ाके विकासके साथ मनुष्यके पास ी कुछ समय बच जाता है, जिसका विज्ञानके वे आविष्कार हैं जिनसे बड़े-बड़े कार्योंको थोड़े ही समयमें ी सुविधाएं प्राप्त हो रही हैं।

हमारी इस सामाजिक सुरक्षाकी योज- उद्देश्य प्रति व्यक्तिको आजीविका ै अर्थात् कोई भी व्यक्ति किसी भी ें बेकार न रह सके। यह उद्देश्य सच- बहुत ऊंचा और प्रशंसनीय है। इस ीके दूर हो जानेपर हमारे जीवनको बनानेवाले अनेक कष्ट दूर हो ं। जिस तरह उन्नतिका कारण ोष है, उसी तरह हमारे अनेक कष्टोंका वह बेकारी है। हम यहां असन्तोष बेकारीके सूक्ष्म भेदोंको स्पष्ट करनेके वाद-विवादमें न पड़ेंगे। अस्तु।

हमारे प्रस्तावका उद्देश्य मनुष्य जातिको बेकारीसे बचाना है। जो निम्न ३ कारणोंसे होती है—

१—आजीविकाके न मिलनेसे।

२—आजीविकाके सामयिक प्रतिरोधसे

३—मनुष्यकी आजीविकाके अपने और अपने परिवारके पालन-पोषण न कर सकनेसे।

इस प्रकार हमारे सामने ३ समस्याएं उपस्थित होती हैं। पहले हम प्रथम समस्याके बारेमें विचार करेंगे, जिसके ३ कारण हैं—(१) उचित आयवाली नौकरीके अभाव से। (२) परिवारमें कमानेवालोंकी कमी से। (३) पर्याप्त वेतन मिलनेपर भी कार्य करनेमें अशक्त होने से। प्रथम कारणका निवारण करना अपने आपही एक कठिन कार्य है। क्या यह सम्भव है कि प्रत्येक कार्याभिलाषीको कार्य दिया जा सके? दूसरे शब्दोंमें क्या हम संसारसे बेकारीको दूर कर सकते हैं? चाहे कुछ भी हो। परन्तु सामाजिक सुरक्षाके लिये यह आवश्यक है। इसलिये हमें प्रत्येक कार्य-समर्थ व्यक्तिको आजीविका अवश्य ही देनी होगी।

पुनः यदि यह मान भी लिया जाय कि हम दूसरे कारणकी निवृत्तिके लिये प्रत्येक व्यक्तिको आजीविका भी दे सकें, तो भी कुछ परिवार ऐसे होंगे ही, जिनमें कमाने-वाले व्यक्ति न हों। सम्भव है, इन परिवारोंमें कुछ वृद्ध जन और कुछ स्त्रियां तथा अनाथ हों। स्त्रियोंका प्रश्न भारतमें जितना जटिल है उतना कहीं नहीं। क्योंकि यहांकी प्रथाएं स्त्रियोंको कार्य करनेसे रोकती हैं, विशेषतः बड़े घरानेकी स्त्रियों को। इसलिये सामाजिक सुरक्षाकी योजनामें उनके लिये कोई न कोई विशिष्ट प्रबन्ध अवश्य करना होगा।

तीसरे कारणको दूर करनेके लिये हमें विशेष ध्यान देना होगा। क्योंकि भिखारियोंके कष्ट-निवारणका सवाल आज कल महत्वपूर्ण हो रहा है। इसमें सभी व्यक्तियोंका परिगणन होगा, यथा—लंगड़े-लूले, बूढ़े-बच्चे, विद्यार्थी-अनाथ, इत्यादि।

दूसरी समस्यापर विचार करते हुए हमें कार्यके सामयिक प्रतिबन्धकी कठिनाईपर विचार करना होगा, जो कि कार्यको विशेष समयपर बन्द होनेसे होती है। पर व्यापार और व्यवहारके इस परिवर्तनको रोकना अत्यन्त कठिन है। इसलिये सामाजिक सुरक्षाकी योजनामें इसे दूर करना अत्यन्त कठिन होगा। किन्तु फिर भी हम इसके दोषोंको कम अवश्य कर सकते हैं। इसके लिये हमें परिवर्तनके समय उनका उचित प्रबन्ध करना होगा। इस प्रकार असहाय व्यक्तियोंकी संख्या घट जायेगी।

तीसरी समस्यापर विचार करते हुए हमें यह ज्ञात होता है कि हमारी अधिकांश जनता इसी कमी के कारण बेकार है। भारत में प्रति व्यक्तिकी आय बहुत कम है और कमाने वालोंकी संख्यासे उपजीवी अनुपातमें अधिक हैं। परिवारोंके मिलकर रहनेसे यह संख्या और भी बढ़ गयी है। इन सब बातों से भारतकी अधिकांश जनता निर्धन है। वह बहुत मुश्किलसे अपनी आजीविका कमाती है। यही नहीं, अपितु उन देशोंमें भी, जहां कि प्रति व्यक्तिकी आय भारतसे कई गुनी है बेकारीकी समस्याउपस्थित न हो, यह बात नहीं। यद्यपि यह सत्य है कि यहां उच्च और निम्न श्रेणियोंका भेद तीव्र गतिसे नहीं बढ़ रहा है तो भी इस प्रकार हमारे सामाजिक माध्यमके बढ़नेसे बेकारीकी समस्या बढ़ ही रही है। इस अवस्थामें भारतकी शोचनीय दशा है।

अतः प्रकरण वश हम भारतकी जन-संख्यापर विचार करेंगे। क्योंकि इससे सामाजिक जीवन और बेकारीका निकटतम सम्बन्ध है। हम भारतकी जनसंख्याकी अधिकता और कमीके वाद-विवादमें न पड़ेंगे और हम यह अनुरोध करेंगे कि हमें अपनी बढ़ती हुई जनसंख्याको रोकना चाहिये और इस तरह हमें बचे हुए धनको हमें अपने जीवनके माध्यमको उच्च करनेमें लगाना चाहिये। इस दिशामें किया गया प्रचार उन व्यक्तियोंमें नहीं हुआ है, जिनमें इसकी अत्यन्त आवश्यकता है। परन्तु इससे उन श्रेणियोंकी जनसंख्या बढ़ रही है, जिनकी नहीं बढ़नी चाहिये। इस तरह हमारे देशकी सामाजिक स्थितिका माध्यम घट रहा है। निम्न श्रेणियोंके परिवारोंको अपनी जनसंख्या कम करनी चाहिये। क्योंकि उन्हें जीवनका माध्यम उच्च करना है। अतः भारतकी इस सामाजिक सुरक्षाकी योजनामें व्यवस्थित और उचित जन-वृद्धिका महत्वपूर्ण स्थान होगा।

संक्षेपतः इस सामाजिक सुरक्षाकी योजनाके स्थायी और सामयिक बेकारीको हटाना, भिखारियोंकी व्यवस्था करना, वृद्धों को पेन्शन देना, व्यवस्थित और उचित जनवृद्धि होना इत्यादि मुख्य अङ्ग हैं। यद्यपि अभी तक कोई भी सामाजिक सुरक्षा की योजना हमारे सम्मुख उपस्थित नहीं की गयी है; तो भी हमने सामाजिक सुरक्षा सम्बन्धी सभी विषयोंपर किसी न किसी रूपमें विचार अवश्य कर लिया है, जिन्हें युद्धके बाद सुधार-समितियोंके प्रयोगमें लाना है।

हम प्रसिद्ध बैवेरिज योजनासे परिचित हैं। इस योजनाके उद्देश्य और विधियोंके बारेमें कुछ कहना अनुचित न होगा। इसका उद्देश्य आवश्यक बीमेके द्वारा मनुष्योंको आय दिलाना है, जिससे हमारी जनताके ६ विभाग हो जाते हैं। जो कुछ अंशोंमें ऊपर कहे गये विभागोंके समान हैं। इसके द्वारा हमारी साधारण आवश्यकताओंके लिये यथा—चिकित्सा अन्त्येष्ठि-कर्म इत्यादिके लिये हमें सामान्य रूपसे व्यय दिया जायेगा। निस्सन्देह कुछ अंशोंमें यह योजना भारतके लिये उपयोगी है।

भारतकी आर्थिक व्यवस्थाका यह प्रमुख दोष है कि यहां राष्ट्रकी सम्पत्तिका विभाजन असामान्य-रूपसे भिन्न-भिन्न श्रेणियोंमें किया जाता है। क्योंकि भारतमें प्रति व्यक्तिकी आय बहुत कम है, इसलिये यह आवश्यक है कि सम्पत्तिका विभाजन अत्यधिक समानरूपसे किया जाय। हमें भारतकी सामाजिक सुरक्षाकी योजनाको बनाते हुए इस बातका सदा ध्यान रखना होगा। अन्यथा यह योजना शीघ्र ही विफल हो जायेगी।

— राही —

——:*:——

जीवनकी मंजिलपर क्रमशः
पग मेरे बढ़ते जाते हैं।
प्राणोंके दीपकमें जलती
आशाकी वर्तिका मनोहर
मधुर स्नेहकी शीतल छाया
नव उमंगकी साथें लेकर
यह पंछी भी उड़ा जा रहा
जिधर सभी पंछी जाते हैं।
विश्व-विटपकी टहनी विस्तृत
जहां ठहरते पंछी अगणित
दो क्षण जीवन-बीन बजाकर
आगे फिर बढ़ जाते प्रमुदित
हिलमिल उनके ही संग मेरे
अरमां भी गाते जाते हैं।
ज्ञात न सरिता चली कहां से
किधर, कहां तक जायेगी अब
युग-उपकूलों में जकड़ी-सी
नयी जवानी पायेगी कब
अरुण किरणके संग-संग
मृदु मुकुल-अधर खिलते जाते हैं।

—श्री मदनमोहन गुप्त, "मदन"

हिन्दी फिल्मोंमें 'सखुन तकिये'

———:*:———

(एक सिने-पत्रकार)

मूक फिल्मोंके बाद सवाक् चित्रपटोंका युग आया, तो संवाद, संगीत और अन्य अभि-व्यंजनाओंके साथ हिन्दी फिल्मोंमें 'सखुन तकिये' का प्रयोग भी धड़ल्लेके साथ प्रारम्भ हुआ। 'सखुन तकिये' का मतलब पाठक जानते होंगे--फिर भी इसे ऐसा समझा जा सकता है कि किसी पात्रके मुंह से एक ऐसे शब्दकी बार-बार पुनरावृति, जो जान बूझकर या आदतसे उसे करना पड़े। साधारणतः सभी तरहके लोगोंमें इसका प्रयोग किसी न किसी रूपमें पाया जाता है; परन्तु फिल्मोंमें इसका स्थान खासकर हास्यस्थलके लिए रखा गया है। हालांकि इसका समावेश अब भी पूर्ण रूपसे न हो सका—फिर भी यह ऐसी चीज है जिसकी दर्शक काफी पसन्द करते हैं और जबतक चित्र देखते रहते हैं, उन्हें एक प्रकारका मजा मिलता रहता है। अक्सर निर्माता इन स्थलोंकी ओर सचेष्ट रहते हैं और अधिकांश चित्रोंमें इसका कोई न कोई रूप दिखाई पड़ता है। यह जरूरी है कि इस स्थलकी ओर जरा और ध्यान दिया जाये है जिससे चित्रके निर्दोष मनोरञ्जनमें वृद्धि हो—और साथ ही वह श्लील हो—अश्लील नहीं। कभी-कभी इसमें लेखक या निर्माता गलती कर जाते हैं, और उसका रूप बीभत्स हो जाता है। इस सम्बन्धमें थोड़ा प्रकाश डालनेसे इसकी विशेषता प्रगट हो जायगी।

'सखुन तकिये' का प्रयोग स्टण्ट चित्रोंके समयसे ही प्रारम्भ हो गया था। 'सायकिलवाली' में इसका रूप दो पात्रोंके बीच इस तरह रखा गया था कि दोनों हास्य अभिनेता उपयुक्त परिस्थितिमें कह उठते---

अजब तेरी कुदरत, अजब तेरा खेल।
छुछुन्दरके सरमें चमेलीका तेल।

लोग हंसते और लोट पोट हो जाते। फिर क्रम बदला और फिर उसका रूप बदला। 'कंगन'में एक मुन्शीजी हैं और वे अक्सर 'जी हां' का प्रयोग करते हैं। जमीन्दार साहबकी भी कुछ ऐसी आदत है। वे कहते हैं—'रमेश तुम बुद्धू हो और बेचारे रमेश (मुंशीजी) फरमाते हैं—'जी हां। इसकी पुनरावृति खूब रंग लाती है। दर्शक हंसने लगते हैं। 'नवमा'में विचित्र ढंगसे इसे पेश किया गया है मि० याकूब आवाराके रूपमें अक्सर गाते हैं —:

'मुझको दुआएं दो तुझे कातिल बना दिया'— और सभी मस्त हो जाते हैं। पर इस तरहकी चीजोंका भी जमाना चला गया और धीरे धीरे असली रूपकी ओर बढ़ा। 'राम राज्य' में भावनासे कर्त्तव्य ऊंचा है, की कई आवृति हुई, किन्तु उसे 'सखुन तकिया' कहना ठीक न होगा। इसी तरह 'खजांची में एक कामेडियन पोत्रसे सिर हिलानेकी आदतसे इस कमीकी पूर्ति की गयी है---और 'खान्दान'में आंखोंकी हरकत से। 'पत्थरोंका सौदागर'में इसका प्रयोग खूब अच्छा रहा---जब ग्रामीणके अभिनयमें परेश बनर्जी फरमाते हैं—'(अमुकसे) तो मेरा याराना है याराना' और शीला कहती है—'देवीकीकी कसम'अमुक काम तो मैं भूल ही गयी। प्रयोग और पात्रका मेल जबतक ठीक रूपसे न हो तबतक मजा नहीं आता। अबतो हिन्दी फिल्मोंमें इसके लिये खासकर हास्य अभिनेता ही चुने जाते हैं और इसी लिये उसमें स्वाभाविकता आने लगी है। अक्सर यह कार्य चार्ली, याकूब, कन्हैयालाल, जीवन और मिर्जा मुसर्रफ आदि हास्य अभिनेताओंका दिया जाने लगा है।

'तकदीर'में मि० चार्ली द्वारा बारबार कहना कि—'घनश्याम अब क्या होगा'—-उतना सुन्दर नहीं रहा जितना कि 'रौनक' में—'लिव इट टूमी—लिव इट टूमी' जब हम हैं तो क्या गम है।'—ने दर्शकोंका मनोरंजन किया। लोग हाउसमें हंसते रहे और घर आकर महीनों तक दुहराते रहे। 'पुलिस'में जीवनसे पूछा जाना कि—'अमा, पूछोगे तो जरूर' और उनका फरमाना—'यार' पूछूंगा तो जरूर' को इस ओर सफलता मिली और इसलिये---' मैं एक होनहार ग्रेजुएट हूं' ---फीका रहा। 'फैशन'में भूडो अडवानीका 'सखुन तकिया' भी एक चीज था---'मरनेवाले मर गये औलाद छोड़ गये—पर, बापको जो कुछ कहना हो कह लो, मांको कुछ मत कहो'---का जरा सभ्य रूप नहीं रहा। इसी तरहकी गलती हुई "लाल हवेली' में जिसने मनोरंजन तो खूब किया, पर उसका रूप एकदम अश्लील रहा। कन्हैयालालका एक युवती देखकर बोलना कि 'जनेऊ कसम' मैं बाल ब्रह्मचारी हूं" और याकूबका जवाब 'चाचा पसीना आरहा है,—एक दम सस्ता हास्य हो गया और 'सखुन तकिये'का दुरुपयोग भी। 'मां बाप' में मिर्जा मुशर्रफका 'ओ आई सी' भी अपने ढंगका सुन्दर था। 'बदलती दुनियां' में—'आई मीन टू से'की अभिव्यक्ति अच्छी हुई है। इसी तरह वर्जनों चित्रोंमें 'सखुन तकिये'का प्रयोग हुआ है और होगा—जिसे कुछ सावधानीसे करके मनोरंजनके सुन्दर स्थल उपस्थित किया जा सकता है।

———

इस लेखमें उन विचारोंको संकेतरूपमें दिया गया है, जिनके आधारपर सामाजिक सुरक्षाकी योजनाका निर्माण करना है। हमें प्रत्येक विचारका सम्यक् प्रकारेण अनुशीलन और विवेचन करना होगा। अन्तमें इस लेखको समाप्त करते हुए हम यह कहेंगे कि यह कार्य युद्धके बाद अनेक समितियोंके सहयोग और संगठनके द्वारा किया जा सकता है, जिसके लिये उन्हें पर्याप्त प्रयत्न करना होगा।

———

चित्रलोककी खबरें

सितारा लापता

सिनेमाकी दुनिया भी एक विचित्र दुनिया है। इश्क और मुहब्बतके चोचले यहां दिन रात चला करते हैं तथा इस दुनियाके रहने वाले इसीमें जिन्दगीकी पूर्णता और सफलता समझते हैं। इस दुनियाका सबसे बड़ा शब्द रोमांस है जिसके भीतर सूर्योदयसे लेकर सूर्यास्त और जन्मसे लेकर मृत्युतककी सारी बातें बुरी तरह ठूंसकर भरी हुई हैं। बम्बई, जिसे सिनेमाबाज 'हालीवड' कहते हैं, इस बीमारीका जोरोंसे शिकार है। अभी कुछ दिन पहले ही यह समाचार सुननेमें आया था कि प्रेम संगीतवाली लावण्य नीना कहीं गुम हो गयी है। सारे सिनेमा जगतमें इस समाचारसे तहलका मच गया। सिनेमा शौकीनोंके दिलपर सांप लोटने लग गया था, पर अब यह समाचार सुननेमें आ रहा है कि सिनेमा जगतकी प्रसिद्ध अभिनेत्री सितारा भी गुम हो गयी है। "स्क्रीन वर्ल्ड" और "फ्री इंडिया"ने इस समाचारको अत्यधिक महत्व दिया है। अत्यधिक खोज ढूंढ़के बाद भी सिताराका कोई पता अबतक नहीं लग सका है। सिताराके इस तरह लापता हो जानेका कारण उसका रुग्ण स्वास्थ्य बतलाया गया है; किन्तु इस स्वास्थ्य सम्बन्धी बुलेटिनसे कुछ भी होने जानेको नहीं है। फेमस फिल्मके "फूल" और अत्रेका खेल सिताराके लापता हो जानेसे एकदम रुक-सा गया है।

देविकारानी पर्देपर

देविका रानी अभिनीत एक पुराना अंग्रेजी फिल्म निकट भविष्यमें ही बम्बईके राक्सी सिनेमा घरमें प्रदर्शित होने जा रहा है। इस चित्रमें बर्दवानके राजकुमार और हिमांशुरायने भी काम किया है। देविकारानी के जीवनका यह सर्वप्रथम अंग्रेजी चित्र है।

निर्देशक व्यास कलकत्ते में

"मां-बाप" चित्रके सफल निर्देशक मि० वी० एम० व्यास कुछ अभिनेता और अभिनेत्रियोंके साथ कलकत्ता आये हुए हैं और यहीं रहकर अब वे चित्र बनायेंगे। भविष्यमें उनका क्या कार्यक्रम होगा यह अज्ञात है।

क्या आप जानते हैं ?

युद्धके समयमें भारतीय फिल्मोंकी आमदनी और खर्चको देखकर कुछ लोग भारतके सिने-व्यवसायकी तुलना हालीवुडसे करने लग गये थे। उनकी यह तुलना एकदम बेकार और असामयिक है। भारतमें आजका उन्नत सिने-व्यवसाय हालीवुडकी एक पाई भी समता नहीं कर सकता। हालीवुडका प्रसिद्ध अभिनेता बिंगक्रासबीक २ लाख ५० हजार रुपये मासिक वेतन पाता है जब कि यहांके हिन्दी या बंगलाका कोई भी अभिनेता एक सालमें भी इतनी मोटी रकम नहीं कमा पाता।

शार्लीटम्पुलको ७० हजार पौंड तथा जीनहार्लोको ९ लाख ७५ हजार रुपया प्रति वर्ष मिलता था। प्रसिद्ध हास्य अभिनेता चार्ली अपना मकान दस लाख रुपये खर्च करके बनवाया था जबकि हमारे भारतवर्षके चार्ली अपने जीवनभरके परिश्रमके बाद भी अपने लिये कुछ नहीं कर सके।

अङ्ग हीनोंके लिये अङ्ग

——:o:——

[लगड़े-लूले हो जानेवाले सैनिकोंका भावी जीवन किस प्रकार कठिनाईहीन और सुखद [बन]या जा सकता है इसका एक अनूठा आदर्श रोहेम्पटनके क्वीन मेरी अस्पतालने उपस्थित [कि]या है। अस्पतालमें शल्य चिकित्साके उपरान्त नकली अङ्ग लगाये जाते हैं, जिसके परि[णा]म स्वरूप लंगड़े-लूले भी पूर्ववत जीविका निर्वाह करनेमें समर्थ हो जाते हैं।]

युद्धके उपरान्त ऐसे सैनिकोंका जीवन [जिन्]हें अपने हाथ, पैर अथवा अन्य किसी [अङ्ग]से हाथ धोना पड़ा है, बड़ा दुःखमय बन [जा]ता है, क्योंकि अन्य कठिनाइयोंके अति-[रिक्त] नयी अवस्थामें वे अपने तथा परिवार [के] भरण-पोषण करनेमें असमर्थ रह जाते हैं। [इस] कठिनाईको अधिकसे अधिक सीमा तक [दूर] करनेके उद्देश्यसे क्वीन मेरी अस्पताल गत [महा]युद्धके समयसे प्रशंसनीय सेवा कर रहा [है।] अस्पतालमें अङ्गहीन लोगोंकी आवश्यक [चिकि]त्सा की जाती है और फिर वैज्ञानिक [ढङ्गसे] इनके नकली अङ्ग उनके शरीरमें लगा [दिये] जाते हैं।

इस अस्पतालकी स्थापना हुए अभी ३० [वर्ष] नहीं हुए, किन्तु यह अपने ढङ्गकी प्रमुख [संस्था] हो गयी है और उसका अपना अन्त-[र्राष्ट्री]य महत्व है। वास्तवमें अङ्ग—निर्माण [के का]यमें ब्रिटेन अन्य:सभी देशोंसे बाजी ले [गया] है। ब्रिटेनने इस दिशामें जो ज्ञान प्राप्त [किया] है उसे सभी मित्रराष्ट्रोंके लिये उप-[लब्ध] किया जा रहा है। अभी हालमें उप-[र्युक्त] अस्पतालके अङ्ग—निर्माण -केन्द्रका [विस्त]ार हुआ है और इसमें अन्य मित्रराष्ट्रों[के लि]ये भी सुविधाएं उपलब्ध की जा रही [हैं।] अङ्ग-निर्माण कारखानेमें कई पोलैंडवासी [तथा इ]सी प्रकार मिस्र, हालैंड, फ्रांस और [अन्य देशो]के कितने ही कार्यकर्त्ता यहां कार्य कर [रहे हैं] और शल्य चिकित्सा तथा निर्माण [कार्य]की ट्रेनिङ्ग प्राप्त कर रहे हैं।

[यह] अस्पताल लन्दनके निकट एक ग्राम्य [प्रदे]शमें लगभग २५ एकड़की भूमिमें बसा [हुआ] है। इसकी स्थापना १९१५ में की गयी [थी और] आरम्भमें केवल ५० पंगुओंके रहने-[का प्रब]न्ध था। परन्तु साल भरके भीतर उसमें ५५० और दो सालमें ९०० पंगुओंको रखनेका प्रबन्ध हो गया।

गत युद्धके मध्य इस अस्पतालमें ४१००० व्यक्ति इलाजके लिये आये और इनमें से ६५ प्रतिशतको उसने आवश्यक अङ्गोंसे सुसज्जित किया। तबसे अस्पतालमें नकली अङ्गोंके परिवर्तन और मरम्मतके लिये आनेवालोंका तांता लगा रहता है। गत महा युद्धके उपरान्त जब लंगड़े-लूले सैनिकोंके उपचार और अङ्ग-निर्माणका कार्य समाप्त हो गया तो इस कार्यको आगे भी जारी रखनेका निश्चय किया गया। यह भी निर्णय किया गया:कि सैनिकोंके समान ही नागरिकोंको भी इसमें सुविधाएं उपलब्ध की जायें और तबसे उसमें गैर-सैनिक व्यक्तियोंकी शल्य चिकित्सा और अङ्ग-निर्माणका कार्य होने लगा। फिर भी अङ्गहीन सैनिककी चिकित्सामें कोई कमी नहीं हो पायी। १९३९ से इसमें ब्रिटिश तथा मित्रराष्ट्रीय सेनाओंके घायल सैनिक भारी संख्यामें आ रहे हैं और [उनकी चिकित्सा भी हो रही है।

प्रश्न उठता है कि घायल सैनिक नकली अङ्ग लगाये जाने और उनसे काम लेनेकी ट्रेनिंग मिलनेपर कैसे भविष्यका सामना करते हैं? ब्रिटिश श्रम विभाग उन्हें अनुकूल काम देता है। कुछ युद्धसे पूर्वके अपने कामों पर चले जाते हैं। कुछ नकली अङ्गोंके उपयोग में इतनी प्रवीणता प्राप्त कर लेते हैं कि उन्हें फिर सेनामें ले लिया जाता है। दो उल्लेखनीय उदाहरण ब्रिटिश वायुसेनाके विंग कमांडर वेडर और स्क्वाड्रन नेता मैकलेकलनके हैं। पहले उड़ाकेके दोनों पैर शत्रुकी कार्रवाईके परिणाम स्वरूप बिलकुल उड़ गये थे। दूसरे उड़ाकेकी बांह कट गयी थी। दोनों ही क्वीन मेरी अस्पतालमें इलाज करा चुके हैं और अब दोनों ही शत्रुके विरुद्ध आक्रमणकी कार्रवाईमें पूर्ववत् भाग ले रहे हैं।

अंगहीन लोगोको कार्यक्षम बनानेके लिये कृत्रिम अवयव तैयार किये जा रहे हैं।

जिन लोगोंके दोनों हाथ काट दिये जाते हैं उनको कार्य करने योग्य बनानेके लिये ये औजार दिये जाते हैं।

ये अंगहीन व्यक्ति कृत्रिम अगोंके द्वारा बागवानी करनेमें तत्पर हैं।

————

भावी युद्धोंका निर्णायक

विलायतके नफील्ड संगठनके वाइस चेयरमैन सर माइल्स टामसका विचार है कि भावी युद्धोंका निर्णय ऐसे बमों द्वारा होगा जो उड़ते समय तनिक भी आवाज नहीं करेंगे। वैज्ञानिक अनुसंधानमें प्रगति इतनी हो रही है कि वह मनुष्योंको कहां पहुंचा देगा यह कहना कठिन है। उड़न बमोंमें आवश्यक सुधार करके उनके इंजिन और पंखोंको ऐसा बनाया जा सकता है, जिनसे उड़ते समय तनिक भी शब्द न हो। इसलिये जो राष्ट्र अपनी स्वाधीनताको बनाये रखना चाहते हैं, उन्हें चाहिये कि वे अपने वैज्ञानिक अनुसंधानको सर्वाधिक महत्व दें।

————

कौन क्या कहता है

उधार पट्टाकी करामात

अमेरिकन सरकारके वैदेशिक अर्थ विभागके अधिकारी लियोक्रोलने बताया कि उधार पट्टाके नियमानुसार मालके बदलेमें अमेरिकाको ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत राष्ट्रों की ओरसे ५० करोड़ डालरकी लागतका माल प्रतिवर्ष मिलता है। ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत राष्ट्रोंसे प्राप्त रकमका जो उल्लेख किया गया है वह गत जून १९४४से मिलती है। उस समय उधरसे ३ अरब ३ करोड़ डालर की लागतका माल अमेरिकाको मिल चुका था। ब्रिटेनने अमेरीकाको माल एवं सेवाके रूपमें २ अरब ४० करोड़ डालर तथा ९० करोड़ डालरसे अधिक लागतकी अतिरिक्त सहायता भारत आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड को दी है।

एकमात्र पूर्ण समर्पण

मन्त्री मण्डलके सूचना विभागकी ओरसे ऐलान किया गया है कि त्रिराष्ट्र नेतृ सम्मेलन काला सागरके अञ्चलमें हो रहा है। विश्वमें स्थायी और पूर्ण सुरक्षित शांति-स्थापनाके प्रश्नपर भी वादविवाद आरम्भ हो गया है। इस वादविवादके सिलसिलेमें जर्मनीपर संयुक्त रूपसे अधिकार करने, सुदूर पूर्वके सम्बन्धमें उचित प्रस्ताव तथा विश्वमें शांति स्थापित करनेकेलिये स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय संगठन आदिके प्रश्नोंपर विचार एवं निर्णय किये जायेंगे तथा जर्मनीके लिये एकमात्र-समर्पण ही अन्तिम बात मानी जायगी।

पूर्ण स्वतन्त्रताकी मांग

लन्दन स्थित लेबनानके मन्त्री मि० सालाऊने लेबनानकी समस्यापर बोलते हुए कहा कि—मै लेबनान और सीरियाके मामले में फ्रांसके हस्तक्षेपको बर्दाश्त नहीं कर सकता। यह केवलमात्र लेबनान और सीरिया के भविष्यका ही प्रश्न नहीं है वरन यहां तो अरबका प्रश्न है। इस समय सारा अरब आंखें फाड़कर यह देख रहा है कि उसकी इच्छाओंको पूर्ण किया जाता है या नृशंसतासे दलन किया जाता है। हमें चाहे जिस तरहकी भी कुर्बानियां करना पड़े हम उससे मुंह न मोड़ेंगे और पूर्ण स्वतन्त्र होकर ही दम लेंगे।

समाजवाद और पूंजीवाद

अभी हालमें मि० बर्नार्डशासे समाजवाद के सम्बन्धमें कुछ प्रश्न किये गये थे जिनका उत्तर देते हुए शाने कहा कि—समाजवाद का प्रचार व्यर्थकी चीज है। वे जो समाजवादीके नामपर स्वर्गकी तसवीर दुनियाके सामने रखना चाहते हैं लड़कपनका परिचय दे रहे हैं। कुछ ही दिनोंमें दुनियाका स्वरूप बदला नहीं जा सकता और पूंजीवादसे उसे छुटकारा नहीं दिलाया जा सकता।

टोकियो एकमात्र लक्ष्य

फिलिपाइनकी राजधानी मनिलाके पतन हो जानेके बाद विजयकी खुशीमें अपना वक्तव्य देते हुए जेनरल मैकआर्थरने कहा कि मनिलाका पतन प्रशान्तके इस युद्धके प्रथम अध्यायकी समाप्ति है और दूसरे अध्याय के प्रारम्भकी सूचना है। जापान हमारा अन्तिम लक्ष्य है और हम टोकियो पहुंचकर ही दम लेंगे।

समानता और सम्मति

फ्रांससे सम्बन्धित अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय जेनरल समस्याओंपर भाषण ब्राडकास्ट करते हुए डी० गाल ने कहा कि स्वतन्त्रता प्राप्तिके बाद इन थोड़े-दिनोंमें ही हमारी सैन्य शक्ति दुगुनी हो गयी है और हम दुश्मनके सामने दुगुने उत्साह से खड़े हैं। भावी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंपर बोलते हुए आपने कहा कि—हमने अपने मित्रोंको यह स्पष्टतया बतला दिया है कि फ्रांस उन व्यवस्थाओंको माननेके लिये कभी तैयार नहीं है जिसे हमारे मित्रराष्ट्र बगैर उसकी सम्मति और समानताके आधारपर उसके ऊपर लादनेकी चेष्टा करेंगे। हमें आशा है कि मित्र राष्ट्र भविष्यके सम्बन्धमें कुछ भी करनेके पहले हमारी इन बातोंको अवश्य मद्देनजर रक्खेंगे।

तीसरे विश्वयुद्धकी आशङ्का

लन्दनकी लिबरल पार्टीके सामने बोलते हुए हवाई मन्त्री सर आर्चिबाल्ड सिंक्लेयर ने कहा कि यदि ब्रिटेन, रूस और अमेरिका एक दूसरे पर विश्वास करते हुए सम्मिलित रायसे अपनी भावी उद्देश्यके लिये कार्य करेंगे तो लम्बे अर्से तक युद्ध नहीं चल सकेगा और इसकी समाप्ति शीघ्र हो जायगी किन्तु यदि वे एक दूसरेपर चालाकीसे कुछ भार लादना चाहेंगे तो तृतीय विश्वयुद्धको कोई नहीं रोक सकता।

पूर्व और पश्चिम असमान

विज्ञान सम्मेलनकी समाप्ति पर अमेरिकासे वापस आते समय सर शांतिस्वरूप भटनागरने प्रेसवालोंको वक्तव्य देते हुए कहा कि मैं यह जानकर विचलित हो उठा हूं कि भारत औद्योगीकरणमें अमेरिका और ब्रिटेनकी सहायता नहीं पा सकता यद्यपि अमेरिकाके औद्योगिकों और वैज्ञानिकोंने हमारा साथ देनेका आश्वासन दिया है और यह कहा कि मै भारतके औद्योगीकरणकी योजनाको कार्यान्वित करानेमें दिलचस्पी रखता हूँ। अमेरिकाके औद्योगिकोंने स्पष्ट रूपमें मुझसे कहा कि भारतके भावी औद्योगीकरणकी सारी जवाबदेही वहांकी सरकार और भारतीयोंके हाथमें है। फिर भी हम उन्हें इस बातकी याद बराबर दिलायेंगे कि वे भारतको संसारके अन्य देशोंके मुकाबले एक समुन्नत राष्ट्र बनायें।

सांस्कृतिक उन्नति आवश्यक

रायल एशियाटिक सोसाइटीमें भाषण देते हुए डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जीने भारतकी भविष्यत् उन्नतिको लक्ष्य कर कहा कि हम नये युगके दरवाजेपर उसके स्वागतके लिये खड़े हैं। जब कि हम अपने राष्ट्रीय जीवनके पुनर्निर्माणके लिये जोर शोरसे बातें कर रहे हैं हमें एक बार अवश्य अपनी सांस्कृतिक अनुभूतियोंको सत्यका जामा पहनाना होगा। प्रत्येक पुनर्निर्माण चाहे, वह आर्थिक वैज्ञानिक या औद्योगिक ही क्यों न हो, राष्ट्र के सांस्कृतिक पुनर्निर्माणके हाथोंसे ही हो

दो राष्ट्रोंका मत

आर्थिक सम्मेलनमें भाषण देते हुए डा० धीरेन सेनने कहा कि भारतकी समस्या केवल अल्प मतवालोंकी ही समस्या नहीं है। वरन् यहां तो राष्ट्रीयताका जटिल प्रश्न है। यद्यपि मैं जिन्ना साहबके दो राष्ट्रों वाली समस्या को माननेके लिये तैयार नहीं हूं तथापि वह समय आ गया है, जब आपको अपने विवेकी बुद्धिसे यह पूछना होगा कि क्या जिन्ना साहब इस मामलेमें सही रास्तेपर हैं?

एक जान हजार आफत

जर्मन प्रचाराध्यक्ष डा० गोबेल्सने जर्मन जनताके नाम ब्राडकास्ट करते हुए अपने एक भाषणमें कहा कि आक्रमणकारी दस्युओंका नृशंस आक्रमणकारी बढ़ाव उसी क्षण रुक जायगा, जिस क्षण प्रत्येक जर्मन जनता यह बात जान जायगी कि उसकी पितृभूमि गुलाम होने जा रही है। इस समय यद्यपि हमारे सामने एक जान और हजार आफत है तथापि हमें प्रत्येक कदम सम्हल कर उठाना और रखना चाहिये तथा दिमागी उद्वेगसे काम न लेना चाहिये।

मुस्लिम स्त्रियोंको शिक्षा

बम्बईकी "वयस्क शिक्षा समिति" में भाषण देती हुई श्रीमती सरोजिनी नायडूने कहा कि—तमाम कठिनाइयोंके साथ संघर्ष करते हुए भी हमें शिक्षाकी दिशामें आगे बढ़ते रहना चाहिये। मुस्लिम स्त्रियां इस दिशामें अभी बहुत पीछे हैं जबकि अन्य मुसलिम देशोंकी स्त्रियां उनसे बहुत आगे हैं। मुस्लिम स्त्रियोंको यह याद रखना चाहिये कि मुहम्मद साहबने शिक्षा प्राप्त करनेके लिये कुछमुसलमानोंको चीन भेजाथा।

अटलांटिक चार्टरके नामपर

अटलांटिक चार्टरके सम्बन्धमें पूछे गये मि० सोरेनसेनके एक प्रश्नका उत्तर देते हुए रिचार्डलाने बतलाया—यह स्पष्ट है ... सभी संयुक्त राष्ट्रोंको बतला दिया गया है ... ब्रिटिश सरकारकी वर्तमान सभी कार्रवाइयां अटलांटिक चार्टरसे ही सम्बन्ध रखती हैं ... इन सभी कार्योंका आधार एकमात्र अटलांटिक चार्टर ही है। ब्रिटिश सरकार इस की कल्पना भी नहीं करती कि ... देशोंकी सीमा सम्बन्धी प्रश्नोंको वह आप हल कर लेगी जब कि चार्टरके अनुसार सभी मित्र राष्ट्रोंके विचारसे ही ... सकेगा।

आपके स्रोतोंको उन्नत बनाइये

पटना युनिवर्सिटीमें "युद्धोत्तर भारत" और "आर्थिक व्यवस्थाकी ..." पर बोलते हुए श्रीयत नलिनीरञ्जन सरकारने कहा—अपने रहन सहनकी व्यवस्था समुन्नत बनानेके लिये हमें अपने उन आमदनीके स्रोतोंको बढ़ाना पड़ेगा ... से हम अभी तक कम पा रहे हैं। ... जमीनको आप इस योग्य बनाइये ... उसमें अधिकसे अधिक फसल पैदा हो ... हमारे देशवासी यद्यपि अभीतक ... अन्य देशोंके मुकाबले अपढ़ और अन... फिर भी उनके भीतर वह क्षमता है ... द्वारा वे अन्य देशोंके मुकाबले काम ... सकते हैं। पहले हमारी बचत स्वल्प ... अपर्याप्त थी; किन्तु अब वह अधिक और ... हो गयी है। अब इन तीनोंका उचित ... से एक जगह सक्रिय प्रयोग होना ... जिससे हमारी आवश्यकताएं और ... नाएं आदर्शवादकी उस जानकारीसे ... जाय जिसकी हमें आवश्यकता है।

केन्द्रीय असेम्बलीका बजट अधिवेशन

—:*:—

गत बृहस्पतिवारको केन्द्रीय असेम्बली-
बजट अधिवेशन आरम्भ हो गया। युद्ध
न्धी विभिन्न प्रान्तीय सरकारोंके अन्धा-
व्ययके सम्बन्ध काफी सजीव वाद-
द हुए और आडिटर जेनरलकी शिका-
की ओर सरकारका ध्यान आकृष्ट करते
ह पूछा गया कि सरकारने इनके संबंध
तक कौन-सी कार्रवाई की है। श्री
नाम लिम् चेट्टियरने बङ्गाल सरकारके
ा जिक्र करते हुए बताया कि आडिटर
की रिपोर्टके अनुसार अकेले बङ्गाल
रकारने भारत सरकारका एजेण्ट बनकर
ड़ रुपयेका दुरुपयोग किया है। अभार-
रणार्थियोंपर होनेवाले खर्चेकी जिम्मे-
ब्रिटेनकी सरकारने अपने ऊपर लेनेका
किया था; लेकिन अब ऐसा मालूम
है कि वह यह कर मुकरना चाहती है
न शरणार्थियोंपर रकम खर्च की गयी
की राष्ट्रीयताका कोई उल्लेख नहीं है।
योगीने बङ्गाल सरकारकी 'वञ्चना
का उल्लेख करते हुए कहा कि सर-
साइकिलसे लेकर हाथी और देशीनाव
जनतासे लिया, लेकिन बादमें यह
हीं चला कि ये चीजें क्या हो गयीं।
महुओंको बचानेके लिये जो जमीन
ली गयी, उसका मुआवजा देनेके
में कोई नियमित कार्यवाही की गयी
लूम होती। प्रान्तीय सरकारने अपने
ानोंको मुआवजाकी रकम दे देनेके
ाएं जारी कीं, लेकिन किनको
येगये, यह बात मालूमही नहीं होती।
कारण यह है कि न तो पानेवालोंकी
गयी है और न उसकी शिनाख्तके
य कोई कागजी सबूत है। आडिटर
साफ लिखा है कि लाखों रुपये
ये और उनके लिये कोई सही या
कागजात नहीं रखे गये। यह बिलकुल
हीन बात है। मुसलिम लीगी सदस्य
म्मद नौमनने कहा कि आसामके
यह भी कहा गया है कि लाखों
कर पुल बनाया गया और बादमें
हष्टिसे नष्ट कर दिया गया; क्यों-
नी आक्रमणका खतरा बढ़ता आ
। लेकिन बादमें पता चला है कि पुल
नहीं। सर जियाउद्दीनने कहा कि
देखनेमें आया कि पब्लिक वर्क्स
से अधिक रुपये ऐसे स्थानोंपर ऐसे
मकानोंके बनानेमें खर्च किये हैं,
युद्धके बाद कोई उपयोग नहीं, और
इवानेमें भी काफी रुपये खर्च होंगे।

इंजिन यहीं बनेंगे

त सरकारके यातायात सदस्य सर
सने प्रश्नोत्तर कालमें बताया कि
म्भ होनेके समयसे अब तक ३०
लाख रुपयेकी कीमतके बड़ी लाइन
४ करोड़ ५४ लाख रुपयेके छोटी
जिनोंके लिये आर्डर दिये गये हैं।
इंजिन तो कार्यमें लगाये जा
र कुछ अब लगाये जायेंगे। मेसर्स
संस लि० से समझौता करीब-
चुका है कि युद्धकालमें वह इञ्जिनों
और बादमें पूरे इंजिन तैयार करे। वह सिंहभूमके रेलवे वर्कशापको ले लेगी। अजमेरमें युद्धकालमें छोटी लाइनके १९ इंजिन तैयार किये गये हैं। युद्धके बाद कांचरापाड़ा (बंगाल) में भी इञ्जिन तैयार करनेकी व्यवस्था हो रही है।

कलकत्तेको भोजन सप्लाई करनेके प्रश्नसे भारत सरकारने जो हाथ खींच लिया है, उससे उत्पन्न स्थितिपर बहस करनेके लिये श्री अखिल चन्द्र दत्तने एक काम रोको प्रस्ताव पेश किया और उसपर बहस भी हुई। खाद्य विभागके सदस्य सर जे० पी० श्रीवास्तवके यह आश्वासन देनेपर कि भारत सरकार कलकत्तेके महत्वको अच्छी तरह समझती है और इसलिये भविष्यमें यदि कोई आवश्यकता उपस्थित होगी तो भारत सरकार उसकी सहायता करनेके लिये तैयार है, प्रस्तावकने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया।

वजीरिस्तानपर हवाई आक्रमण

कांग्रेसपार्टीके सदस्य सर अब्दुल कयूमने उत्तर वजीरिस्तानके पठान गांवोंपर हवाई आक्रमण कर निरीह जनताको बमोंका शिकार बनाने सम्बन्धी सरकारकी कार्यवाही पर बहस करनेके लिये एक कामरोको प्रस्ताव पेश करनेकी सूचना दी थी, लेकिन वायसरायने उसपर बहस करनेकी इजाजत नहीं दी।

मेडागास्करसे निर्वासन

भारत सरकारके परराष्ट्र विभागके सेक्रेटरी सर ओलफकैरोने हाउसको सूचित किया कि मेडागास्करसे ९ भारतीयोंको फ्रेंच गवर्नर जेनरलने निर्वासित कर दिया है। इनपर ब्लेकमार्केट चलाने, सरकारी टैक्स न देने, शराब खोरी, जालसाजी, बेईमानी आदिके कई अभियोग लगाये गये बताये जाते हैं। इनमेंसे एकने जहाजसे ही कूद कर आत्महत्या कर ली है। उन्होंने यह भी कहा कि मेडागास्कर स्थित सम्राटकी सरकारके कंसल जेनरलको सूचित किया गया है कि वे मेडागास्करके फ्रेंच अधिकारियोंसे मिल कर इन निर्वासित भारतीयोंके लिये पुनः वहां जानेकी आज्ञा प्राप्त करें क्योंकि इनके परिवार मेडागास्करमें ही हैं। सर ओलाफ कैरोकी उक्त रिपोर्टपर सरदार सन्तसिंहने एक बड़ा ही दिलचस्प प्रश्न किया, जिस पर सारा भवन ठहाकेसे गूंज उठा। उन्होंने कहा कि मेडागास्करकी सरकारने जब शराबखोरीके अपराधको इतना काफी गम्भीर समझ लिया है कि उसको देश निकालेका दण्ड देना पड़ा। तो क्या मैं भारत सरकारसे यह पूछ सकता हूं कि दिल्लीकी सड़कोंपर नशेमें चूर जो विदेशीरातके अंधेरेमें घूमते मिलते हैं, उनको भारतसे निकाला जा सकता?

शुक्रवारको कार्यवाही

केन्द्रीय असेम्बलीकी दूसरे दिनकी बैठक आरंभ होनेपर प्रश्नोत्तर कालमें श्रमिक विभागके सदस्य डा० अम्बेडकरने कहा कि १९४३में कोयलेकी खानोंमें काम करनेवाले २९० मजदूर मरे और ३२० घायल हुए तथा १९४४में मृतकोंकी संख्या ३३२ और हताहतोंकी १ हजार ९३६ रही। सरदार मंगल सिंहके प्रश्नका उत्तर देते हुए सर सुलतान अहमदने कहा कि व्यवस्थापिका परिषदोंके चुनावके प्रश्नपर अभीतक विचार नहीं किया गया और न भारत सरकार तथा सम्राटकी सरकारके बीच कोई पत्र व्यवहार ही हुआ है।

प्रश्नोत्तरके बाद 'राष्ट्रीय युद्ध मोर्चा' सम्बन्धी सर यामीनखांका प्रस्ताव विचारार्थ पेश किया गया। इसमें इस युद्ध मोर्चेको भंग करनेकी मांग की गयी। सर सुलतान अहमदने कहा कि निर्णयकी घोषणा मार्च महीनेके प्रथम सप्ताहमें कर दी जायेगी। इसपर प्रस्तावकने अपना प्रस्ताव वापस लेना चाहा लेकिन श्री भूलाभाई देसाईने विरोध करते हुए कहा कि इस मोर्चेपर बहुत अधिक धनका दुरुपयोग हुआ है। इसलिये हाउसको चाहिये कि इस प्रस्तावको वापस न लेने दें और इसपर विचार करे। इसलिये सर यामीन खांके प्रस्तावपर खूब सजीव बहस हुई और बहस समाप्त होनेके पहले ही इसपर विचार करना गैर सरकारी दिनके लिये स्थगितकर दिया गया।

तीसरे दिनकी कार्यवाही

असेम्बलीकी तीसरे दिनकी कार्यवाहीमें लेबर फेडरेशनकी १२ हजारका ग्रांटके सम्बन्धमें जब प्रश्न किया गया, तो हाउसमें काफी चहल पहल देखी गयी। श्री लालचन्दनवलरायने पूछा कि क्या श्रमिक सदस्य यह बतायेंगे कि यह रुपया किसको और किस कार्यके लिये दिया जाता है, एवं इसका उपयोग किस प्रकार होता है। श्रमिक सदस्यने उत्तर देते हाउसका ध्यान एक पहलेके वक्तव्यकी ओर आकृष्ट किया। श्री बदरीदत्त पांडेयने प्रश्नोंकी लड़ी बराबर जारी रखी और कहा कि क्या सरकारको यह सन्तोष है कि जिस कामके लिये रुपया दिया जाता है, उसीमें वह खर्च होता है। श्रमिक सदस्यने कहा कि ग्रांट बढ़ायी तो नहीं गयी है, लेकिन जिस लिये दी जाती है, उसी काममें खर्च की जाती है। यह प्रश्न करनेपर कि रुपया किसको दिया जाता है—मि० एम० एन० रायको या श्री जमनादास मेहताको अथवा लेबर फेडरेशनके मन्त्रीको, उत्तर मिला कि लेबर फेडरेशनके मन्त्री को ।

दक्षिणी अफ्रीकाके सम्बन्धमें

यह प्रश्न करनेपर कि दक्षिण अफ्रीका पर आर्थिक दबाव डालनेके लिये इस असेम्बलीने जो स्वीकृति दी थी, उसके सम्बन्धमें क्या हुआ, डा० खरेने कहा कि अभी मामला विचाराधीन है। उसके लिये अन्तिम रूपसे निर्णय नहीं किया जा सका है।

श्री लालचन्द नवलरायने दक्षिण अफ्रीका के सम्बन्धमें सरकारकी निष्क्रियताके लिये निन्दाका प्रस्ताव उपस्थित करते हुए कहा कि गत अधिवेशनमें जब इस प्रश्नपर विचार किया गया था तो बहुतसी बातें कही गयी थीं और देशको बड़ी बड़ी आशाएं बंधी थीं लेकिन सरकारने कुछ किया नहीं। यदि इसपर भी उसके कार्योंका निन्दा न की जाये, तो यही समझा जायगा कि यह हाउस अपना अस्तित्व रखने काबिल नहीं है। श्री देशमुखने कहा कि भारत सरकारने आश्वासन दिया था कि वह प्रतिशोध मूलक कार्यवाहीको कड़ाईके साथ अफ्रीकाके विरुद्ध कार्यान्वित करेगी। लेकिन, अब ऐसा लगता है कि वह यूनियन सरकारको यह भी प्रकट होने देना नहीं चाहती कि वह संघर्ष करनेका विचार रखती है। साफ मालूम होता है कि सरकार लड़ना नहीं चाहती। भारत सरकारको यदि डर हो कि युद्धप्रयासमें बाधा उपस्थित होगी, तो मैं कहता हूं कि वह पहले अखाड़ामें उतरे, हम विश्वास दिलाते हैं कि सारा देश उसको सहयोग देनेको तैयार है। उन्होंने अफ्रीका स्थित अपने हाई कमिश्नरको बुला लेनेके लिये अनुरोध किया। मि० अब्दुल कयूमने कहा कि सरकार निन्दाका पात्र इसलिये समझी जाती है क्योंकि वह उस कार्यको करनेके लिये तैयार नहीं मालूम होती जिसके लिये सारा देश मांग पेश कर रहा है।

वायसराय अनुपस्थित

केन्द्रीय असेम्बलीके बजट अधिवेशन के अवसरपर वायसरायके १२ दिनके लिये सुदूर दक्षिण चले जानेसे लोगोंको कम आश्चर्य नहीं है। लेकिन शायद वायसरायने यह समझा है कि ऐसे समयपर राजधानीमें उपस्थित रहना उनके लिये आवश्यक नहीं है। परन्तु देसाई लियाकत समझौतेसे दिलचस्पी रखनेवाले लोग उनकी अनुपस्थितिसे कुछ विशेष परेशान हैं।

~~~~~~~

बटवारेकी आस्था

भूतपूर्व एडवोकेट जनरल श्री एम० सी० सेतलवाडने हिन्दू ला कमेटीके सामने बोलते हुए कहा कि—मै अपने पिता सर चिम्मनलाल सेतलवाडके उन विचारोंके विरुद्ध हूं जिसमें उन्होंने कहा है कि किसी भी सम्मिलित हिन्दू परिवारमें बटवारा नहीं हो सकता। मैं सहकारिकताको पसन्द करता हूं, पर हिन्दुओंके उन पुराने विचारोंका कायल नहीं हूं जो रूढ़िवत हमारे ऊपर लाद दिये गये हैं। अब तो ये संस्कार नानीकी कहानी मात्र हैं। आज दुनियामें सच्चे अर्थमें किसीको कोई सम्मिलित परिवार देखनेको मिला भी है क्या?

कृत्रिम हीरे सुलभ होंगे

ब्रिटिश वैज्ञानिकोंके प्रयत्नसे, जिन्होंने असली हीरोंकी कमी पूरी करनेके लिये रसायनोंके द्वारा हीरे बनानेके मार्गमें काफी प्रगति की है, शीघ्रही व्यावसायिक उपयोग के लिये बने हुए हीरे सर्व साधारणको सुलभ होंगे। हीरोंका निर्माण संसारके बड़े कामका होगा, क्योंकि छोटे बड़े दोनों प्रकारके उद्योगधन्धोंमें किसी भी रत्नसे हीरा बहुत उपयोगी होता है।
~~~~~~~

स्वदेश-वार्ता

डा० राजेन्द्र प्रसाद अस्वस्थ

पटनाकी रिपोर्टसे मालूम हुआ है कि डा० राजेन्द्र प्रसादका स्वास्थ्य इस समय अच्छा नहीं है। एक सप्ताहसे उनको बुखार रहता है। खांसी भी आ रही है। यह बात श्री फूलन प्रसाद वर्माने बतायी है जो तीन महीनेतक नजरबन्द रहनेके बाद मुक्त किये गये हैं। उन्होंने बताया है कि डा० राजेन्द्र प्रसाद द्वारा लिखित पाकिस्तानपुस्तकके ३ भाग हैं। प्रथम दो भाग करीब समाप्त हो चुके हैं। प्रथम भागमें दो राष्ट्रोंके प्रश्नपर विचार किया है, दूसरेमें मुसलिम लीगके लाहौर प्रस्तावकी रूपरेखाकी जांच की गयी है। तीसरे भागमें राजेन्द्र बाबू इस समस्या के सुलझावके प्रश्नपर विचार करेंगे और अपना सुझाव पेश करेंगे। अपनी आत्मकथा उन्होंने प्रायः समाप्त कर दी है।

बम्बई सरकारकी आज्ञा रद्द

बम्बई हाईकोर्टके फूल बेंचने सरकारकी उस आज्ञाको रद कर दिया, जिसके अनुसार 'फोरम' नामक साप्ताहिकसे दो हजार रुपयेकी जमानत तलब की गयी थी। विद्वान जजने अपने फैसलेमें लिखा है कि सम्पादकने चिमूर-अष्टीके बन्दियोंकी मुक्तिके लिये जो अपील की थी, उसमें उन्होंने उनके कार्योंका न तो समर्थन किया और न सराहना की।

नरेशोंका जोश ठण्डा

नरेन्द्र मण्डलकी जन सम्पर्क समितिने एक वक्तव्य प्रकाशित कराकर सूचित किया है कि देशी नरेश देशके सम्मान और स्वतन्त्र राष्ट्रोंमें उसके सम्माननीय स्थान प्राप्त करनेके प्रश्नपर किसीसे पीछे नहीं रहना चाहते। लेकिन भारतके लिये जो वैधानिक व्यवस्था की जाये, उसमें नरेशों अधिकार रक्षाके लिये उचित व्यवस्था अवश्य की जाये। किसी प्रकारका संशोधन एक पक्षीय न हो। भारतके नरेश देशकी राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक उन्नतिमें बाधक नहीं होना चाहते और यह आश्वासन देते हैं कि जब कभी आवश्यकता होगी, अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेके लिये तैयार हैं।

देशी राज्यों और सम्राटकी सरकारके सम्बन्धमें यह कहा गया है कि १९४० के प्रस्तावमें यह स्पष्ट कर दिया गया है कि इनके सम्बन्ध परिवर्तनमें समझौतेका द्वार सर्वदा खुला हुआ है। जहांतक औद्योगिक विकासका सम्बन्ध है देशी नरेशोंने ब्रिटिश भारतके व्ययसे लाभ उठानेका कभी विचार नहीं किया। बल्कि देशी नरेश ब्रिटिश भारतके साथ मिलकर देशके उत्थानमें भाग लेनेको तैयार हैं।

नरेशोंकी कमेटीने स्वीकार किया है कि जहां भी शासनमें सुधारकी गुंजाइश हो, वहां करनेके लिये वे तैयार हैं। हर्ष है कि विभिन्न देशी राज्योंमें रचनात्मक कार्यपर ध्यान दिया जा रहा है। महाराजा बीकानेर के सभापतित्वमें समितिने शासन प्रबन्धमें सुधार करनेके लिये जो निश्चय किया है उसकी सूचना विभिन्न रियासतोंको दे दी जायेगी।

अन्तमें कहा गया है कि देशी नरेश समयकी गतिसे अपरिचित । न्याय और ईमानदारीके नामपर वे केवल यही मांग करना चाहते हैं कि उनके अधिकार और सन्धिमें एक पक्षीय परिवर्तन या सुधार न हो। जहां मतभेद उपस्थित हो, मामला निष्पक्ष पञ्चायतके सामने पेश किया जाये।

कम्यूनिस्टोंसे भयभीत

कम्यूनिस्ट मुस्लिम लीगमें प्रवेश करनेके लिये जो प्रयत्न कर रहे हैं, उससे लीग अंचलोंमें काफी चिन्ता देखी जा रही है। चूंकि विभिन्न प्रांतीय कांग्रेस संगठनोंने अपना द्वारा बन्द कर लिया हैं, इसलिये ये मुसलिम लीगमें प्रवेश करनेके लिये विशेष सचेष्ट हैं। दिल्लीके लीगके प्रमुख पत्र मंसूर ने कहा है कि मुसलमान परिवारोंमें साम्यवादी भी हैं जो इस्लामके अनुकूल धारणाएं नहीं रखते। वे खुले तौरपर यह घोषित करना नहीं चाहते कि वे मुसलमान नहीं हैं। उन्हें लीगकी सदस्यतासे अलग ही रखना चाहिये। प्रान्तीय और जिला मुस्लिम लीग संगठनोंमें मतभेद अवश्य हैं, लेकिन इस मतभेदको श्रेणी सङ्घर्षका रूप देना ठीक नहीं है। प्रत्येक लोकतन्त्रात्मक सङ्गठनमें सत्ता प्राप्त करनेके लिये सङ्घर्ष होता ही है, लेकिन साम्यवादी असन्तुष्ट वर्गकी ओटमें अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

छात्रोंकीवर्दी और कवायदपररोक

वर्धाके अधिकारियोंने मध्य प्रान्तीय सरकारकी ओरसे एक चिट्ठी खादी विद्यालयके प्रबन्धकएवं हिन्दुस्तानी तालीमी सङ्घके उपमन्त्री श्रीरामचन्द्रन और ग्राम सेवा-शिविरके संयोजक श्री कनू गांधीके पास भेजी है, जिसमें लिखा गया है कि शिक्षार्थियों और छात्रोंकी वर्दी और कवायद, जुलूस और परेडकी अनुमति नहीं दी जायेगी महात्मा गांधीको इसकी सूचना दे दी गयी है। इस आदेशसे वर्धा और सेवाग्रामसे काफी सनसनी फैल रही है।

मालूम हुआ है कि श्री कनू गांधीने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्टको उत्तर दिया है कि ग्राम सेवा:शिविरकी कवायद फौजी ढङ्गकी कवायद नहीं है। यह शारीरिक व्यायाम है।

राष्ट्रीय झण्डाका अपमान

नयी दिल्ली कांग्रेस कमेटीके जेनरल सेक्रेटरी मि० मुस्ताक अहमदने एक वक्तव्य के सिलसिलेमें यह बताया है कि यहांकी कई अदालतोंमें राष्ट्रीय झण्डेसे झाड़नका काम लिया जाता है। मैंने एक पत्र दिल्लीके चीफ कमिश्नर और वायसरायके पास इस सम्बन्धमें भेजकर उनका ध्यान इधर आकृष्ट किया है।

युक्तप्रांतमें रचनात्मक कार्य

युक्त प्रांतीय कांग्रेस प्रतिनिधि असेम्बली द्वारा नियुक्त उपसमितिने रचनात्मक कार्यक्रम सम्बन्धी अपनी रिपोर्ट तैयार कर दी है। उसका सुझाव है कि प्रयाग, कानपुर या मेरठमें रचनात्मक कार्यका प्रांतीय केन्द्रीय दफ्तर खोला जाये और प्रान्तके तीन भाग किये जायें—पूर्वीय, मध्य और पश्चिमीय। इन तीनों विभागोंके लिये क्रमशः हरिजन गुरुकुल (आजम गढ़), सेवाकुंज (उन्नाव) और गांधी आश्रम (मेरठ) में दफ्तर खोले जायें। प्रति पांच गांवोंके लिये एक केन्द्र स्थापित किया जाये। इस प्रकार प्रांत भरमें २० हजार केन्द्र स्थापित होंगे। पहले साल जिलेमें एक और तहसीलोंमें दो केन्द्र, कुल ६०० केंद्र खोले जायें। ये केंद्र नये कार्यकर्त्ताओंको तैयार करनेके लिये और नये केंद्र खोलेंगे। प्रतिवर्ष केंद्रोंकी संख्या दूनी होती जायेगी और ५ सालमें १८ हजार केंद्र खुल जायेंगे।

रचनात्मक कार्यक्रममें एकके बजाय अनेक धन्धे खादी, चमड़ेका काम, दरी, गलीचा, कोल्हू आदि शामिल किये गये हैं। ग्रामसेवकको किसी एक उद्योगकी शिक्षा देनेके बजाय व्यवस्था सिखाना अधिक उपयुक्त समझा गया है। क्योंकि व्यवस्थाकी शिक्षा प्राप्तकर वह गांवोंमें कारीगरोंके संगठन कार्यमें विशेष योग देगा। प्रत्येक केंद्रमें एक मैनेजर, एक मुनीम तथा दो सहायक रहेंगे। मैनेजरका वेतन २५-५० तक, मुनीमका २४-४० तक और भण्डारीका २०-३५ तक रहेगा। आवश्यकता होनेपर कुछ अधिक भी दिया जा सकता है। कार्यकर्त्ताओंके लिये हाई और मिडिल स्कूलके बड़ी संख्यामें छात्र मिल सकते हैं। आरम्भमें इस योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये १ लाख रुपयेकी आवश्यकता है। स्थानीय केंद्र सदर दफ्तरके खर्चके लिये १०) देंगे। कार्यकर्त्ताओंको शिक्षा देनेके बादमें उनसे धीरे-धीरे वसूल कर जायेगा। आयोजकोंने आशा प्रकट कि जो देश बिना मांगे महात्मा गांधी करोड़ रुपया न्योछावर कर सकता है सामने उन्हींकी योजना १ लाख लिये खटाईमें नहीं पड़ी रह सकती।

शाहाबाद जिला दलितवर्ग स…

अगामी १८ फरवरीको … जिला दलितवर्ग सम्मेलन होगा … उद्घाटन बिहारके दलितवर्गके प्रमुख श्रीजगजीवनराम (भूतपूर्व पार्लमेण्टरी … बिहार सरकार) करेंगे। अध्यक्षता … रामगुलाम चौधरी ग्रहण करेंगे। … सर्वश्री पृथ्वीसिंह आजाद, एच० … कर एम० एल० ए०, रामप्रसाद एम० ए०, चन्द्रिकाराम आदि दलितवर्गके … के पधारनेकी आशा है। भाइयोंको … संख्यामें उपस्थित होना चाहिये।

दुलारचन्दराम सभापति जिला दलि… संघ, शाहाबाद।

जेनरल गुडेरियन गिरफ्तार

खबर है कि पूर्वी मोर्चेके कमांडर चीफ और जर्मन जेनरल स्टाफके जेनरल गुडेरियन इसलिये गिरफ्तार किये गये हैं कि बर्लिनकी ओर बढ़नेवाली … सेनाका मुकाबला करनेमें जेनरल … कर्तव्य पालनमें उपेक्षा की।

कृष्णसागरमें नेता सम्मेलन

मालूम हुआ है कि चर्चिल, रूजवेल्ट और स्टालिनका सम्मेलन कृष्ण सागरमें हो रहा है। इन कर्णधारोंके साथ उनके परराष्ट्र सचिव और चीफ आफ स्टाफ भी हैं। नाजी जर्मनीके खिलाफ युद्धके अन्तिम अध्यायमें सम्मिलित सैनिक कार्यवाहीके सम्बन्धमें मतैक्य है। युद्धके बाद स्थायी शान्ति स्थापनकी चर्चा चल रही है। इस चर्चाके विषयमें जर्मनीपर अधिकार और नियन्त्रण रखनेकी संयुक्त योजना, मुक्त यूरोपकी राजनीतिक एवं आर्थिक समस्यायें तथा शान्ति कायम रखनेके लिये शीघ्रातिशीघ्र स्थायी अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन स्थापित करनेपर विचार होगा। इस बातकी सम्भावना है कि जर्मन सैनिक स्थितिकी गम्भीरता एवं जर्मन नागरिक जीवनकी बढ़ती हुई विशृङ्खलताको देखते हुए तीनों राष्ट्रोंकी तरफसे सीधे और अंतिम घोषणाएं जर्मन राष्ट्रके नामसे की जायें। अनुमान है कि इस दिशामें जर्मनोंकी प्रतिक्रिया तत्काल और सम्भवतः एकबारा करनेवाली होगी।

रास्तेमें विमान दुर्घटना

त्रिराष्ट्र सम्मेलनके स्थानको उड़नेवाले विमानके मार्गमें ही धराशायी होनेके फलस्वरूप १२ मुसाफिर मरे। इस विमानमें प्राइम मिनिस्टर मि० चर्चिलके स्टाफके कुछ लोग थे। हवाई मन्त्रीमण्डलकी ओरसे गिरफ्तारोंके सम्बन्धमें प्रकाशित की गयी सूचनासे मालूम होता है कि १० व्यक्ति और पांच लापता हैं जिनके मरनेका ही अनुमान किया जाता है और पांच आहत हुए हैं। मरनेवालोंमें ६ व्यक्ति परराष्ट्र विभागके थे हैं जिनमें एक महिला हैं। यह दुर्घटना १ फरवरीको हुई है।

युद्ध कब अन्त होगा ?

यूरोपमें अमेरिकाके यूनाइटेड प्रेसके जो संवाददाता तटस्थ और मित्र देशीय राजधानियोंमें हैं उनका अनुमान है कि जर्मनीके पराजित होनेमें ६ महीनेसे अधिक समय नहीं लगेगा। किन्तु मित्र शक्तियोंको तीव्र प्रतिरोध और गुरिल्ला युद्ध भी जिसमें शामिल है, महीनों तक सामना करना पड़ेगा।

मनीलापर पूर्ण अधिकार

फिलिपाइन्सकी राजधानी मनीलापर जेनरल मैकार्थरकी सेनाका सम्पूर्ण अधिकार हो गया। इस तरह फिलिपाइन्स द्वीपपुञ्जसे जापानियोंके पैर बिलकुल उखड़ गये। मेनीला में अमेरिकन सेनाके समर्पण करनेके समय १९४२ को जेनरल मैकार्थरने प्रतिज्ञा की थी कि हम फिर वापस आयेंगे, उस समय जापानियोंसे हम समझेंगे। जेनरल मैकार्थरकी वह प्रतिज्ञा पूरी हुई।

भाग खड़े हुए

जर्मन सिंहासनके दावेदार बननेवाले प्रिंस विलहेल्म, जो कैसरके पौत्र हैं, पूर्वी प्रशियामें रूसियोंके पहुंचनेके पहले ही वेस्टफालियाको भाग गये। १९२३ तक निर्वासित अवस्थामें वे डच द्वीप वीरिनगेनमें थे। इसके बाद वे जर्मनी वापस बुला लिये गये। जर्मन प्रजातन्त्र सरकारने उनको

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

जाइलोनियामें २५ हजार एकड़की ओएलकी सायदाद दी। अपने वेस्टफालिया चले गये हैं।

जर्मनी मरणासन्न अवस्था में

लन्दनकी सरकारी अञ्चलोंमें जो समाचार आ रहे हैं उनसे नाजी शासनके समाप्त होनेके महत्वपूर्ण लक्षण दिखायी दे रहे हैं। नये लक्षणोंमें पहली बात यह है कि बैंक नोट अब पानीकी दामवाले कागजोंपर नहीं छपते। दूसरा लक्षण यह है कि जर्मनीके प्रचारकी रेडियो सर्विस अस्त-व्यस्त हो गयी है। समाचार १२ घण्टों देरसे ब्राकास्ट होते हैं और एक देशके प्रोग्राम दूसरे देशको ब्राडकास्ट होता है। उदाहरणार्थ अभी हालमें जापानी श्रोताओंको अंग्रेजीका प्रोग्राम सुनाया जा रहा था। टैक्स नहीं वसूल किये जाते। जर्मनीको आज घिरा हुआ देश कहा जाता है। अव्यवस्था फैली हुई है और देश के जीवनपर किसी तरहका नियन्त्रण नहीं रह गया।

नया एशियाई संग्राम चीनतटपर

अमेरिकाके युद्ध सचिव हेनरी स्टिमसनने

साइलेसिया और पूर्वप्रशिया

लुबलिन नेशनल कौंसिलके प्रेसीडेंट मो० बोलेस्ला बीरटने घोषणा की है कि पोलैंड और पूर्वप्रशियाकी नागरिक शासन व्यवस्था का भार में फौरन ग्रहण कर रहा हूं। उन्होंने यह भी कहा कि लन्दन और वारसाके पोलों के बीच समझौतेकी कोई गुञ्जाइश नहीं है।

साथ बैठनेसे इनकार

लन्दनमें विश्व ट्रेड्यूनियन कांग्रेसकी जेनरल कौंसिलमें अमेरिकन फेडरेशन आफ लेबरके प्रतिनिधि मि० रावर्टवाटने यह बात खुलासा कह दी है कि मेरा फेडरेशन ऐसी किसी संस्थामें शामिल न होगा जिसके सदस्योंमें रूसी भी रहेंगे। मि० वाटने कहा कि मेरी संस्था वैयक्तिक उद्योगपर विश्वास करती है और समाजवादसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं। यद्यपि अन्य प्रतिनिधियोंने मि० वाटकी इस स्थितिको सर्वथा अवांछनीय बताया तथापि वाटका फेडरेशन टससे मस न होनेका निश्चय कर चुका है। अमेरिका

रखनेके लिये वहां स्थायी रूपसे अन्य सेना रखी जायगी। वे कहते हैं कि मुझे जरा भी सन्देह नहीं है कि जर्मनी और जापानमें ऐसी जबर्दस्त शक्तियां हैं जो इस समय भी हमपर विजय प्राप्त करनेके लिये दूसरे युद्धकी आयोजना कर रही हैं।

आयर्लैंडसे अमेरिकाका समझौता

गत ३ फरवरीको अमेरिकाकेस्टेट डिपार्टमेंटने घोषणा की कि आयर्लैण्डके साथ एक एयर ट्रांसपोर्ट समझौता हो गया है, जिसके अनुसार अमेरिकन विमानोंके आयरिश प्रदेशसे जाने और वहां रुकनेका अधिकार न लिया गया है।

शांघाई खाली करनेकी योजना

एक जापानी संवाद समिति द्वारा ब्राडकास्ट किये गये समाचारसे मालूम हुआ है कि शांघाई म्यूनिसिपल सरकार खाद्य, ईंधन के अभाव और हवाई हमलोंके कारण शहरके १० लाख आदमियोंको अन्यत्र हटानेकी योजना बना रही है।

जापानके विरुद्ध रूसकी युद्ध घोषणा होगी ?

चुङ्किंगसे इस आशयका समाचार लन्दन पहुंचा है कि टोकियोकी रिपोर्टके अनुसार जापानी यह समझते हैं कि इस बार मित्रराष्ट्र सम्मेलनमें स्टालिन, मि० चर्चिल और रूजवेल्टको जापानके खिलाफ युद्धमें उतरनेकी सूचना देंगे। टोकियो इस बारका मित्रराष्ट्रीय सम्मेलन जापानके लिये भयङ्कर [illegible]नेवाला समझ रहा है। टोकियोके

काला सागरीय अंचलमें तीनों मित्रराष्ट्रीय कर्णधार युद्धकी वतमान अवस्थापर विचार करते हुए भविष्यके लिये योजना तैयार करनेमें व्यस्त हैं।

प्रेस कानफरेंसमें गत बृहस्पतिवारको यह कहा है कि आगामी एशियाई संग्राम चीन तटपर होगी।

यूनानकी स्थिति

यूनानकी वर्तमान सरकार और ई० ए० एम०के प्रतिनिधियोंके बीचमें समझौतेकी बात-चीत चल रही है। एलाप सेनाके निःशस्त्रीकरणको लेकर कुछ कठिनाइयां सामने आ रही हैं। ई० ए० एम०ने निरशस्त्रीकरणके मूल सिद्धान्तको मान लिया है। किन्तु कैसे किया जाय, इस बातको लेकर मत भेद है। फौजी कानूनको फौरन उठा लेनेका अनुरोध ई० ए० एम० ने किया है अभी इस प्रश्न पर भी समझौता नहीं हुआ।

के अन्य श्रमिक संगठन सी० आई० ओ०को, जिसके ६० लाख सदस्य हैं, रूसके प्रतिनिधियोंके साथ मिल कर काम करनेमें कोई आपत्ति नहीं है।

सर स्टैफर्ड क्रिप्स

लेबर पार्टीमें सर स्टैफर्ड क्रिप्सका पुनरागमन निश्चित-सा ही है। ग्लोबका राजनीतिक संवाददाता कहता है कि निर्वाचनमें प्रधान शक्ति समझ कर उनके वापस आनेका सोशलिस्ट स्वागत करेंगे।

दूसरे युद्धकी योजना

प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके दाहिने हाथ समझे जानेवाले मि० हैरी होपकिन्सका यह दृढ़ विश्वास है कि विश्व शांति तभी हो सकती है, जब जर्मनी और जापानपर नियन्त्रण

कूटनीतिक अञ्चलोंका ख्याल है कि चर्चिल और रूजवेल्टको स्टालिन यह आश्वासन देंगे कि कमसे कम लालसेनाका एक हिस्सा युद्धमें जापानके खिलाफ उतरेगा। कहते हैं कि जापानी सांस रोके त्रिराष्ट्र सम्मेलनका नतीजा जाननेका इन्तजार कर रहे हैं।

शाह फारुखको नजराना

ब्रिटिश शाही विमान वाहिनीने शाह फारुखके जन्म दिवसके उपलक्षमें उनको एक दो एंजिनवाला एवरो एनसन विमान बतौर नजराना दिया है।

युगोस्लाव सरकार

लन्दनस्थ युगोस्लाव सरकार डा० इन० सुवेसिकके नेतृत्वमें शीघ्र ही युगोस्लाविया-के लिये प्रस्थान करेगी। माळूम हुआ है कि

…आके नामोंको लेकर शाह पीटर, डा० छवेसिक और मार्शल टीटोके बीचमें मतैक्य नहीं हुआ।

बर्लिन २७ मील रह गया

लन्दनका ७ फरवरीका समाचार है कि मास्को रेडियोका कहना है कि रूसी फौजें बर्लिनसे २७ मील दूर हैं।

भाग्यका निर्णय ओडरपर

जर्मन सैनिक प्रचार अधिकारी ले० जेनरल वान डिटमारने जर्मन जनताके नाम ब्राडकास्ट करते हुए कहा कि हमें प्रतीक्षा और प्रतिपदपर आनेवाले विनाशको ध्यान में रखना चाहिये। यदि हमारा एक कदम भी गलत अथवा अगर मगरका बिना विचारे उठा तो हमें पतनके गर्तमें जानेसे कोई नहीं बचा सकता। अन्तमें उन्होंने कहा कि जर्मनीके भाग्यका निर्णय ओडरपर हो जायेगा।

पूर्व बंगालमें जापानी बमवर्षा

७ फरवरीको प्रातःकाल शत्रुके अकेले एक विमानने पूर्व बङ्गालमें दो बम गिराये तथा तोपसे गोला बरसाया। हताहत कोई नहीं हुआ। सामान भौतिक क्षति हुई।

नेताओंका शीघ्र रिहाई

यूनाइटेड प्रेस अमेरिकाका संवाददाता कहता है कि यद्यपि अभीतक कोई स्पष्ट बात नहीं है तथापि पार्लमेंटके कुछ सदस्यों-का यह अनुमान है कि जेलोंमें पड़े भारतीय कांग्रेसके नेता शीघ्र ही छोड़े जायेंगे।

आदतसे लाचार हैं

लन्दनमें जो विश्व ट्रेड यूनियन कांग्रेस हो रही है उसमें भारतके आल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस तथा इण्डियन फेडरेशन आव लेबरके प्रतिनिधि भी शामिल हुए हैं।

जब क्रिडेंशियल कमेटीके सदस्योंकी नियुक्तका समय आया तो फेडरेशनके प्रति-निधि मि० ए० के० मुखर्जीने ट्रेड यूनियन कांग्रेसके प्रतिनिधि मि० डांगेके नामकरण पर घोर आपत्ति की। अन्तमें मि० डांगेने स्वयं अपना नाम वापस ले लिया।

लार्ड लिस्टोवेल

भारत सचिव मि० एमरीके साथ मतभेद होनेके कारण उप सचिवके पदसे लार्ड लिस्टो वेलके इस्तीफा दे देनेकी अफवाह उड़ी थी। लार्ड लिस्टोवेलने इसे सरासर मिथ्या और निराधार बताया है।

स्टालिनकी तीसरी शादी

डेलीमेलके न्यूयार्क स्थित संवाददाता डोन इडानके कथनानुसार स्टालिनने कौंसिल आफ पिपुल्स कमिसेरियेटके उपाध्यक्षकी बहन रोजा कागानोविचके साथ तृतीय बार विवाह किया है। रोजा स्टालिनकी तीसरी स्त्री है किन्तु विवाह अबतक रूस और विदेशमें गुप्त रखा गया है।

पिमरलोट सरकारका इस्तीफा

बेलजियन संवाद समितिकी रिपोर्ट है कि गत बुधवारको तीसरे पहर बेलजियन प्रीमि-यर मो० पियर लोटने प्रिंस रिजेण्टको अपना इस्तीफा दे दिया। ऐसा मालूम होता है कि नये प्रीमियर सभी दलोंके योग्य व्य-क्तियोंको अपने मंत्रिमण्डलमें रखेंगे। कम्यु-निस्ट भी मन्त्रिमण्डलमें आयेंगे।

लन्दनके पोल क्या सोचते हैं?

लन्दनस्थ पोलिश सरकारके प्रचार मन्त्री डा० आदम प्रेगियरने बुधवारको भारत और सीलोनके पत्र-प्रतिनिधियोंको एक विशेष भोज दिया। आपसी बात-चीत के सिलसिलेमें डा० प्रेगियरने कहा कि युद्धके पहले भारतके मामलेसे हम लोगोंको कोई दिलचस्पी न थी, किन्तु अब भारतके प्रत्येक मामलेमें पोल पूरी दिलचस्पी लेने लगे हैं। पोलिश स्थितिसे सम्बन्धमें मैं यह कह सकता हूं कि हम पोलैण्डको अभी मुक्त नहीं समझते। पहले वह जर्मन सैनिक अधिकारमें था अब रूसके अधिकारमें है। लुबलिन कमेटी जो कर रही है उससे हम लोग सहमत नहीं हो सकते। हम उसे मात्र एक कठपुतली सरकार मानते हैं जो स्वेच्छा-नुसार कुछ भी नहीं कर सकती है।

जर्मनीकी सन्धि शर्तें

गत शनिवारसे लन्दनके राजनीतिक अंचलोंमें यह प्रश्न पूछा जा रहा है कि क्या जर्मनी आत्म समर्पण करनेवाला है। जर्मन हाई कमाण्डके प्रतिनिधि प्रचारक-वक्ता जेनरल डिटमारने गत शुक्रवारकी रातको बड़ा 'सनसनीखेज ब्राडकास्ट किया है। उनके ब्राडकास्टका आशय यह निकलता है कि सम्पूर्ण आत्म समर्पणकी शर्तके सिवा जर्मनी अन्य शर्तें माननेको तैयार है। उन्होंने यह भी कहा कि जर्मनी युद्ध चलाते रहनेके लिये अपने शत्रुओं द्वारा बाध्य किया जा रहा है। अपने इस ब्राडकास्टके दौरानमें उन्होंने इस बातको दुहराया कि "आज हमें जो युद्ध कष्ट और कठिनाइयां सहनी पड़ रही हैं वे उस दुर्भाग्यके सामने नगण्य हैं जो हथियार डाल देनेके बाद आने वाला है।"

सम्राटका निमन्त्रण अस्वीकार

विश्वस्तसूत्रसे पता चला है कि मि० चर्चिलकी मार्फत किंगजार्ज और क्वीन एलि-जबेथने प्रेसीडेंट रूजवेल्ट और श्रीमती रूज-वेल्टको त्रिराष्ट्र सम्मेलनके बाद बकिङ्घम राजप्रासादमें आतिथ्य स्वीकार करनेको निमं-त्रण दिया था किन्तु निमन्त्रण सखेद यह कह कर अस्वीकार कर दिया गया कि घरेलू समस्याएं ऐसी हैं कि प्रेसीडेंटको वाशिंगटन में रहना आवश्यक है।

बर्मामें नया फौजी सरकार

'जापानी संवाद समितिने घोषणा की है कि वर्तमान सरकारके स्थानपर बर्मामें एक नयी फौजी सरकार युद्ध सञ्चालनार्थ कायम की गयी है।

बर्लिनका पूर्व भाग खाली

ग्लोबका स्टाकहोम स्थित संवाददाता कहता है कि मास्कोका यह विश्वास है कि जर्मन बर्लिन नगरको बिल्कुल छोड़ निकल नगरआयेंगे और एक दुर्गका रूप धारण करेगा। उसी सूत्रसे यह भी मालूम हुआ है कि बर्लिनका पूर्व भाग बिलकुल खाली कर दिया गया है और वह सैनिक अञ्चलमें परि-णत कर दिया गया है, जहां नगरकी रक्षा सम्बन्धी कार्य होते हैं।

रूमानियाके शाह माइकेल

कहा जाता है कि रूमानियाके शाह माइकेल लन्दन जाना चाहते हैं और इस सम्बन्धकी आवश्यक व्यवस्थामें लगे हैं। रूमानियाको अपने पैरोंपर खड़ा करने लायक कई योजनाएं उनके पास… सम्भव है कि शीघ्र ही रूमानिया… पर वे मार्शल स्टालिनसे विचार… सोवियटके उपराष्ट्र सचिव मो. मि… बार शाहसे उनके राजप्रासादमें…

विश्वामित्र

THE VISHWAMITRA

२८—८ | कलकत्ता फरवरी १९, १९४५, Calcutta, FEB. 19, 1945. | मूल्य दो आना : वार्षिक ३)

मधुसंचय

बच्चोंसे जेनरल हारे

…भी-कभी देखने-सुननेमें छोटी-छोटी …एं बड़ी विचित्र होती हैं। आपको आश्चर्य होगा कि पिछले महायुद्धका …नरल जिसने बड़ी लड़ाइयोंमें विजय …कि थी। छोटे-छोटे बच्चोंसे हाथ …-मिलाते वह इस बुरी तरह थक गया …अन्तमें उसने लड़कोंको डांटकर भगा … पिछले महायुद्धकी समाप्तिके बाद …पर्शिगने पश्चिमी मोर्चेका निरीक्षण …लिये एक दौरा किया। इस दौड़ेमें …क दिन एक स्थानपर तीन हजार स्कूल …से हाथ मिलाना पड़ा। हाथ मिलाते …वे बुरी तरह थक गये थे फिर भी …मिलानेका क्रम शेष नहीं हो पा रहा …तनेमें एक लड़की उनसेहाथ मिलाने …किन्तु अति खिन्न होकर वह अपनी मांके पास लौटी। लड़कीकी मांने जब उससे उसकी खिन्नताका समाचार जानना चाहा तो उसने रोकर कहा-जैसे ही मैं जेनरल हाथ मिलाने आगे बढ़ी कि उन्होंने डांटकर मुझे भगा दिया। पीछे पता चला कि जेनरल साहब हाथ मिलाते-मिलाते थककर इतने खिन्न हो गये थे कि उन्होंने लड़कीको डांट कर भगा दिया।

…ट्पालका गिर्जा विश्वके सर्वश्रेष्ठ गिर्जोंमें एक है। इसके अन्दर ड्यूक आफ विलिङ्गटनकी यह कब्र सबसे अधिक सुन्दर और आकर्षक है।

मुर्दा जिलानेवाले डाक्टर

कई ऐसी घटनाएं हो चुकी हैं, जिनमें मुर्दे, अन्त्येष्ठि क्रिया सम्पन्न करनेके लिये ले जाते समय बीच रास्तेमें ही अर्थीपर उठकर बैठ गये हैं और कईबार तो चितापर सुलायी गयी लाश आग लगानेके पहले ही आंख मींचती हुई इस प्रकार उठ बैठी है, मानों अभी प्रगाढ़ निद्रासे जागी है। लेकिन ये घटनाएं दैवयोगसे कभी-कभी अनायास ही हो जाती हैं। अब कई रूसी डाक्टरोंने, ऐसा जान पड़ता है कि, निश्चित रूपसे मुर्दोंको जिलानेका संकल्प कर लिया है। 'केमिकल प्रोडक्ट्स' नामक पत्रिकामें 'क्या हम लोग मौतको जीत सकते हैं' शीर्षकसे एक लेखके सिलसिलेमें ब्लाडीमीर नेगोवास्की और वर्काडी मैकाराइच नामक दो रूसी डाक्टरोंने लिखा है कि 'हम लोगोंने ५१ मुर्दोंकी चिकित्सा की। लाशें बिलकुल ठंढी हो गयी थीं। ५१ मेंसे तो १२ बिल्कुल जी उठे और उनको नियमित रूपसे औषधोपचारके लिये सैनिक अड्डेके अस्पतालमें भर्ती कर दिया गया। २२ मुर्दे जिलानेके बाद ३ दिन तक बिलकुल ठीक रहे, लेकिन बादमें मर गये। कहते हैं कि इन्होंने मुर्दोंकी नसोंमें कृत्रिम ढङ्गसे रक्तका संचार किया, जब उनके हृदयमें स्पन्दन होने लगा, तो रक्त-संचार करनेवाले यन्त्र हटा लिये गये एवं रक्तका प्रवाह धमनियोंमें आरम्भ हो गया।

पुरुषोंसे स्त्रियां दीर्घायु होती हैं

लोगोंकी धारणा है कि विवाह जीवन को क्षीण करनेमें सहायक होता है लेकिन अनुभवने बताया है कि तथ्य इसके बिलकुल उल्टा है। विवाहित स्त्री पुरुष क्वारोंकी अपेक्षा दीर्घजीवी होती हैं। स्त्रियां तो पुरुषोंसे भी अधिक दिन जीती हैं। इंगलैंड में ९० वर्षकी आयुवाले स्त्री पुरुषोंकी संख्या की जब तुलनाकी गयी है तो मालूम हुआ कि ९० वर्षीया स्त्रियोंकी संख्या पुरुषोंकी अपेक्षा दूनी है।

बृहस्पतिसे भी बड़ा ग्रह

किसीने अभी तक देखा नहीं है; फिर भी ज्योतिर्विदोंने युद्ध आरम्भ होनेके बाद से दो नये ग्रहोंका पता लगाया है। ये दोनों ग्रह सूर्यके उपग्रह हैं तथा सूर्यके कक्षमें कुछ यंत्रों द्वारा इनकी उपस्थितिका पता चला है। इनमेंसे एक तो अब तकके सबसे बड़े बृहस्पतिसे भी बड़ा है, ऐसा अनुमान किया जाता है। दूसरा छोटा है।

फ्रांसकी ध्वस्त रेलवे लाइनको अमेरिकन सैनिक इंजीनियर पुनः तीव्रगतिसे तयार कर रहे हैं।

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १५।१९, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट से सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

महायुद्धका सिंहावलोकन ।

रूसियोंका शीतकालीन आक्रमण आर-
होनेके बाद एक महीनेसे अधिक समय
चुका है। इस समयके भीतर रूसी
नाएं बर्लिनकी ओर जितनी भी अधिक
गे बढ़ी हैं, वह आक्रमणके प्रारम्भिक
ाहमें ही हुआ है। जिन मार्शल जुकोव-
सेना जर्मन राजधानी बर्लिनका
से छोटा और सीधा रास्ता पकड़े हुए
वह सुप्रसिद्ध ओडर नदीतक पहुंच
रुक गयी जान पड़ती है, क्योंकि
फरवरीको मास्को-स्थित रायटरके
स संवाददाताने जो तार भेजा है, उसमें
कहा गया है कि, "जिस समय मार्शल
ोवकी सेना बर्लिनके पीछेके दरवाजेसे
त मोर्चोंको चूर्ण-विचूर्ण करनेमें
र है, मार्शल जुकोवका तोपखाना
रके पश्चिमी तटपर धुआंधार गोले
ानेमें लग रहा है, जो 'सामनेके प्रवेश
पर भारी गोलाबारी है।" दोनों
ोंकी सेनाओंके किसी स्थलपर मिल
की भी अफवाहें हैं, किन्तु मास्कोसे
ी पुष्टि नहीं हुई है। और, सच
जाये तो मार्शल जुकोवके युद्धक्षेत्रके
ारोंपर अभीतक पर्दा डाल रखा
है। हां, गत सप्ताह मार्शल कोनीव-
सेना बड़ी तेजीसे आगे बढ़ी है और
र्लिनसे साठ मील दक्षिण पूर्वके
तक पहुंच गयी है। अब वह फ्रैंक-
छत्तीस मील दक्षिणके प्रसिद्ध स्थान
की बाहरी किलेबन्दीको तोड़नेमें
रही है। एक सप्ताह पहले मार्शल
व जहां थे, वहांसे बर्लिनकी दूरी
ानकी अपेक्षा दूनीसे अधिक थी,
का अर्थ यह होता है कि एक सप्ताहके
वे साठ मीलसे अधिक आगे बढ़े
ध्यके मोर्चेपर मार्शल जुकोवकी
र्लिनसे तीस-चालीस मीलपर ठीक
और है और उसे ओडर नदीपर
क देनेके हिटलरके आदेशका पालन
हुत जबर्दस्त जर्मन सेनाने अभीतक
तापूर्वक किया है। किन्तु राजधानी-
ण पूर्व 'टैंक' नामसे प्रसिद्ध रूसी
ल मार्शल जुकोव अपनी प्रबल सेना-
थ साठ मीलकी दूरीतक पहुंच गये
लिये कितने ही लोग ऐसा अनुमान
लगे हैं कि आश्चर्य नहीं कि
व जुकोवसे भी पहले बर्लिनके फाटक
ा धमकें। लेकिन अब वहांपर भी
बहुत जबर्दस्त प्रतिरोध करने लग
। रायटरके उक्त संवाददाताका
है कि "स्प्री नदीके किनारे एक
लड़ाई चल रही है, इस समाचारसे
में उत्तेजना पैदा हो गयी है।
। इसतरह युद्धक्षेत्रके अन्य
में जर्मनोंका प्रतिरोध बहुत ही
कड़ा बना हुआ है। लाल सेना एक-
क भूमिके लिये लड़ रही है और
की परेडकी मस्तानी चालसे नहीं
चल रही है।" साइलेशियामें लाल सेनाके आदमियोंको मिली रिपोर्टके अनुसार लाल सेनाके जर्मनीकी सीमाके भीतर घुसनेके दो दिन पहले हिटलर सीमावर्त्ती एक नगरमें स्वयं उपस्थित हुआ था और नाजी पार्टीकी एक सभामें भाषण भी किया था। उस सभाका उद्देश्य सभी सरकारी आदमियों और पार्टीके सदस्योंसे जोर देकर यह कहना था कि जब रूसी जर्मनीपर आक्रमण करें, तो उनकी पांतोंके पीछे गुरिल्ला ढंगकी लड़ाई शुरू कर दी जाय। रूसी जैसे ही जैसे जर्मनीके भीतर अधिकाधिक घुसते जा रहे हैं, जर्मन सेनाका प्रतिरोध तो उत्तरोत्तर बढ़ रहा है, किन्तु रूसियोंका कहना है कि गुरिल्ला लड़ाई कहीं नहीं छेड़ी गयी। रूसी तो यहां तक कहते हैं कि जर्मन जनता रूसियोंकी आज्ञाका पालन बड़ी नम्रतासे करती देखी जाती है और नाजियोंको दोष देनेमें भी वह कभी नहीं हिचकिचाती है।

इस सप्ताह पश्चिमी युद्धक्षेत्रपर मित्र सेनाओंने खासी तत्परता दिखायी है और खासकर ब्रिटिश और कनाडियन सेनाओंने तो सीगफ्रीड लाइनके भीतर घुसनेके प्रयत्नमें अच्छी सफलता प्राप्त की है। परन्तु वैसे ही अब जर्मनोंका प्रतिरोध भी इतना कड़ा हो गया है कि राइन नदीके मोर्चेपर फील्ड मार्शल मांटगोमरीकी सेनाकी प्रगति धीमी पड़ गयी है। प्रत्येक भागमें ब्रिटिश सेनाको प्रचण्ड प्रतिरोधका सामना करना पड़ रहा है और रीक्सवाल्ड जंगलके बाहरी हिस्सेमें जर्मन प्रत्याक्रमण भी करने लगे हैं। जर्मन सेनापति जेनरल स्टुडंटने उत्तरमें ब्रिटिश सेनासे लोहा लेनेके लिये पूरी पैंजर सेना झोंक दी और यहां स्टुडेंट अनिश्चित समय तक डटे रहनेका विचार करता जान पड़ता है। उसने सात डिवीजन यहांपर कनाडियन कमांडर जेनरल क्रेरारके मुकाबलेमें खड़े कर रखे हैं। बर्लिनकी रिपोर्टोंसे मालूम हुआ है कि जर्मन गत कई माससे ब्रिटेनसे लड़नेकी योजना तैयार करते रहे हैं। अब जर्मन राजधानीको युद्धका एक सबसे मजबूत किला बना देनेकी तैयारियां पूरी की जा रही हैं, बर्लिनके नवनियुक्त कमांडर जेनरल रिटर वोन होनशिल्टने रेडियो द्वारा यह घोषणा की है कि "बर्लिनकी नागरिक रक्षाकी पूरी योजना नाजी पार्टीके संगठनके आधारपर है। बर्लिनके कमांडरकी हैसियतसे गोएबेल्सने बर्लिनवासियोंको आदेश दिया है कि, वे "खेतोंमें, पड़ोसकी बस्तियोंमें, शहरकी गलियोंमें और कांटेदार तारोंके घेरोंके भीतर" शत्रु सेनाओंसे जी होमकर लड़नेको तैयार रहें। उधर याल्टा कानफरेंससे लौटनेके कुछ घण्टे बाद अमेरिकन युद्ध लाम बन्दी कार्यालयके डाइरेक्टर मि० जेम्स बाइर्नेसने पत्र-प्रतिनिधियोंसे यह कहा है कि, "मित्र देशोंके सैनिक नेता मार्चके महीनेमें भयानक युद्ध करनेकी योजनाएं बना रहे हैं और इसके लिये अधिकाधिक सेना और युद्ध-सामग्री एकत्र की जा रही है।" इस तरह उभय पक्षकी तैयारियोंसे यह निश्चित प्रतीत होता है कि मार्च महीनेमें पूर्व और पश्चिम दोनों दिशाओंसे बर्लिन पहुंचनेके लिये और यदि किसी ओरकी सेना वहां पहुंच गयी तो खास बर्लिनमें ऐसा घोर घमासान मच सकता है, जिसके विषयमें इतिहासमें शायद यह लिखा जाये कि ऐसा युद्ध 'न भूतो न भविष्यति'। जर्मन प्रचारक जब जर्मनोंको यह आश्वासन देते देखे जाते हैं कि घबड़ानेकी कोई जरूरत नहीं है, रूसी आक्रमण जब अपनी पराकाष्ठाको पहुंच जायेगा, तभी वह रोक दिया जायेगा, तब संसारको भारी आश्चर्य होना स्वाभाविक है। किन्तु आश्चर्योंकी कोई सीमा नहीं निश्चित की जा सकती। इसलिये कौन कितने गहरे पानीमें है, इसका पता शायद इसी मार्चमें लग जायेगा। यह स्मरण रखना चाहिये कि मार्चमें लड़ने योग्य ऋतु पश्चिमके ही लिये हुआ करता है और उसी समय पूर्वमें लड़ाई योग्य समय हफ्तोंतक नहीं रह जाता है, इटालियन युद्धक्षेत्रपर भी जर्मनोंने जोर बांधा है और उनके मुकाबलेमें मित्रसेना कुछ पीछे हटनेको लाचार होना पड़ा है।

पूर्वमें फिलिपाइनकी लड़ाई सफलतापूर्वक जारी है और सप्ताहांतमें दो दिनतक अमेरिकाके हवाई जहाजोंने जापानकी राजधानीपर अभूतपूर्व बमवर्षा करनेमें सफलता पायी है। जापानियोंने तो यहांतक रिपोर्ट दी है कि मित्रसेनाओंने इवोजियामें उतरनेका प्रयत्न भी किया, पर मित्रसेनाकी ओरसे इसकी पुष्टि नहीं हुई है। हां, १७ फरवरीको जापानी संवाद-समितिने यह कहा है कि कल नये प्रकारका लड़ाकू विमान अमेरिकन हवाई जहाजका रास्ता रोकनेके काममें लाया गया था। परन्तु ऐसे समाचारोंसे कोई यह समझनेकी भूल कदापि न कर बैठे कि जापानकी लड़ाई ऐसे ही कांटों द्वारा शीघ्र जीत ली जायेगी। सभी जानकार इस बातसे सहमत हैं कि वह बड़ी कठिन होगी और जापानी अन्ततक जी होमकर लड़ते रहेंगे। अमेरिकाकी आर्मी सर्विस फोर्सेजके कमांडिंग जेनरल सोमरवेलने कहा है कि जापानियोंको परास्त करना भारी व्ययसाध्य होगा। उनका अनुमान है कि केवल अमेरिकाको ही [illegible] मिनट चौंतीस हजार दो सौ सैता[illegible] पौंडके हिसाबसे खर्च करना पड़ेगा। सभी मित्रराष्ट्रोंकी कानफरेंस २५ अप्रेलको करनेका निश्चय याल्टा कानफरेंसने किया है, इससे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि तीनों बड़े नेता तबतक जर्मनीकी लड़ाईकी समाप्तिकी आशा कर रहे हैं। १६ फरवरीको कामनवेल्थ ब्राडकास्टिंग कानफरसमें ब्रिटिश सूचना-विभागके मंत्री मि० ब्रेंडन ब्रैकेनने अपने भाषणमें दो बार यूरोपके युद्धके शीघ्र समाप्त होनेकी संभावना प्रकट की है। उन्होंने कहा कि मि० चर्चिलने याल्टा कानफरेंसमें जानेके पहले मुझसे यह कहा था—"मैं वस्तुतः यह गारंटी नहीं कर सकता कि यह युद्ध बहुत अधिक दिनोंतक चलेगा।" परन्तु जब हम यह सोचते हैं कि युद्धकी स्थिति काफी अनुकूल होनेपर इस तरहकी आशावादिता येही मि० चर्चिल अबसे पहले भी कई बार प्रकट कर चुके हैं, तब उनके इस कथनको कोई असाधारण महत्व देनेकी आवश्यकता नहीं जान पड़ती। किन्तु यह तो निश्चितसा प्रतीत होता है कि यदि याल्टा कानफरेंसमें मार्शल स्टेलिन, मि० चर्चिल और रा० रूजवेल्ट एक साथ ही पूर्व और पश्चिमसे प्रचंड आक्रमण करनेकी कोई योजना शुद्ध हृदयसे बना चुके हैं, जैसा कि वे अपने संयुक्त वक्तव्यमें प्रकट करते देखे गये हैं और उस योजनाको कार्यान्वित करनेमें बीचमें कोई विघ्न नहीं उपस्थित होता, तो जर्मनीका युद्ध उससे कहीं पहले ही समाप्त हो सकता है, जब उसके समाप्त होनेका अनुमान कितने ही लोग करते रहे हैं। जो हो, इसमें तो कोई सन्देह ही नहीं कि मार्चमें रणचंडी बड़ा विकराल रूप धारण करने जा रही है और उस महीनेकी लड़ाईपर ही यूरोपीय युद्धका भविष्य बहुत कुछ निर्भर होगा। इस बीच मित्रराष्ट्रोंमें फूट पैदा करनेके लिये उनके शत्रुओंके प्रयत्न भी काफी जोरोंपर होंगे। पोलैंडके प्रश्नपर अपने मित्र मार्शल स्टेलिनकी इच्छाके आगे सिर झुका देनेके बाद यदि मेसर्स चर्चिल और रूजवेल्ट यह समझते हों कि वह प्रश्न सदाके लिये हल हो चुका, तो हमारी समझसे यह ठीक नहीं। उनके निर्णयको उन्हींकी छत्रछायामें पलनेवाली लन्दनस्थ पोलिश सरकारने इतने जोरोंके साथ अस्वीकार किया है मानो उसके लिये संसारमें और भी कहीं ठौर है। मो० मोलोटोव और मास्को-स्थित अमेरिकन राजदूत मि० हेरीमैन तथा ब्रिटिश राजदूत सर आर्चीबाल्ड क्लार्ककरको जो कमीशन खास पोलैंडके भीतरी और बाहरी देशोंमें रहनेवाले लोकतंत्रवादी पोलोंसे बात करने और वारसाकी वर्तमान अस्थायी पोलिश सरकारको अधिक

टोकियो,काण्टो व वोजिमाआक्रमणकालक्ष्य
६सौ विमानोंद्वाराछ:घंटेतकभीषणगोलाबारी
रामरी द्वीप जापानी सैनिकोंसे बिलकुलसाफ

बर्लिन, ड्रेसडेन तथा मध्य जर्मनीको खतरा
लालसेनाका वार्मडिट और मेलसैकपरकब्जा
जर्मन केन्द्र गोरवतक मित्र सेनाकी अग्रगति

गुआम स्थित एडमिरल चेस्टर निमिटजका सदर मुकाम १८ फरवरी। पांचवें जहाजी बेड़ेके युद्धपोत और क्रूजर वोजिमा पर अविरामगतिसे धुआंधार बमवर्षा कर रहे हैं। आज प्रकाशित मित्र विज्ञप्तिमें वोजिमा पर आक्रमण सम्बन्धी जापानी संवादका उल्लेख नहीं किया गया है। एक जापानी ब्राडकास्टके अनुसार अमेरिकन विमानोंने टोकियो पर आज तीसरे दिन पुनः बमवर्षा की। कल शनिवारको १७१ तथा आज २८ विमान धराशायी कर दिये गये।

गत्त रात्रिको जापानी समाचार समितिने ऐलान किया कि विमान वाहक जहाजों से उड़ कर वाइस एडमिरल मिटशरके विमानोंने टोकियोके निकटस्थ काण्टो डिस्ट्रिक्ट पर कल लगातार दूसरी बार हमला किया। ६ सौ विमानोंने करीब ६ घण्टे तक हमला किया। टोकियोके समीपवर्ती हवाई अड्डे भी लक्ष्य बनाये गये।

मित्र सेनाका अग्रगामी सदर मुकाम १८ फरवरी। आज प्रकाशित दक्षिण पूर्वी एशिया कमाण्डकी विज्ञप्तिमें घोषित किया गया है कि रामरी द्वीप जापानियों से बिलकुल साफ हो गया है। कुछ जापानी सैनिक भटकते फिरते दिखायी पड़ते है। कैङ्गावके पूरब और उत्तर एक ऊंचे स्थान पर अभी भी जापानी भयंकर प्रतिरोध कर रहे हैं। मित्र विमान स्थल सेनाको आक्रमणके दौरानमें सहायता पहुंचा रहे हैं। चौदहवीं सेना- के मोर्चे पर इरावदीके पूर्वी तट पर सिन्मू अंचलकी युद्ध स्थितिमें कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ। ए०प्रेस

चार सुन्नी नेता निर्वासित

लखनऊ, १८ फरवरी। स्थानीय चार सुन्नी नेताओंको निर्वासनका आदेश दिया गया है। यह आदेश जिला अधि- कारियोंने बारावफात शान्ति पूर्वक मनाये जानेके ख्यालसे जारी किया है। चार नेता निम्न प्रकार है तहफ्फुजे-मामूस साहाबाके मंत्री मौलाना कलिमुल्लाह, मधे साहाबा कमेटीके मंत्री मौलाना जफारुल मुल्क म्युनिसिपल कमिश्नर मि० नजीर अहमद और मि० मुसरफ हुसेन। आप लोगोंसे कहा गया है कि शीघ्र नगर छोड़ दे और अवधके किसी हिस्से और कान- पुरमें एक महीने तक न रहें। ए० प्रेस

विस्तृत बनानेके उद्देश्यसे नियुक्त किया गया है, उसके कार्योंकी ओर ध्यान रखना आवश्यक है। किसी भी अवस्था- में जब पोलैंडकी पूर्वी सीमा कर्जन लाइन को तीनों बड़े नेता स्वीकार कर चुके हैं, तब यह आशा करनी व्यर्थ है कि सैन- फ्रांसिस्को कानफरेंस याल्टाके निश्चयों- में कोई संशोधन कर सकेगी, यदि वह कुछ करनेका विचार करेगी, तो सब गुड़- गोबर हो जायेगा और जिन मार्शल स्टे- लिनके हाथमें विजयका इतना अधिक अवसर आज है, वे निश्चय ही नाराज हो जायेंगे।

जापानी मंत्रिमंडलका पतन संभव

न्यूयार्क १८ फरवरी। एडमिरल निमिजके धुआंधार हमलोंके फल स्व- रूप जापानी मन्त्रिमण्डलके पतनका आभास टोकियो रेडियोके एक समाचार से मिलता है। ऐसा कहा जाता है कि शक्तिशाली इम्पीरियल रूल असिस्टेण्ट कमेटी प्रधान मन्त्री जेनरल कोइसोसे मिल कर एक नये राजनीतिक दलके निर्माण पर विचार करेगी। रूटर

भारतीय अर्थ मिशन

लन्दनमें विचार विमर्श जारी

लन्दन १८ फरवरी। मालूम हुआ है कि जो भारतीय आर्थिक मिशन सर अकबर हैदरीके नेतृत्वमें इंगलैण्ड आया हुआ था,उसे ब्रिटिश सरकारसे सम्बन्धित विभाग पूर्ण सहयोग प्रदान कर रहे हैं। मिशनका जो विस्तृत कार्यक्षेत्र है उसके सम्बन्धमें दो सप्ताहमें अनेक सम्बन्धित अधिकारियोंसे विचार विमर्श किया गया है और किन्हीं प्रश्नों पर निर्णय भी कर लिये गये हैं। अभी तक मिशन को जो सफलता मिली है उससे उसे यह विश्वास हो गया है कि आगामी २ या ३ सप्ताहमें उसका कार्य समाप्त हो जायेगा।

सर एम० विश्वेश्वरैया जयपुरमें

जयपुर १८ फरवरी। सर मिर्जा इस्माइल द्वारा आमंत्रित होकर एम० विश्वेश्वरैया जयपुर आये हैं। उनके साथ पूनाकी लेडी ठाकरसी है। आप लोग कल शामको जयपुर पहुंच और प्राइम मिनिस्टरने स्वयं उनका स्वागत किया। ये लोग राज्यके अतिथिशालामें ठहराये गये हैं।

जयपुर शहरमें इनके आगमन पर बड़ा हर्ष प्रकट किया जा रहा है और सर एम० विश्वेश्वरयाके इच्छानुसार अनेक सार्वजनिक कार्यक्रम स्थगित कर दिये गये हैं।

मास्को, १८ फरवरी। गत रात्रिको मार्शल स्टेलिनने एक विशेष संदेशमें बताया कि रूसियोंने कोनिग्सवर्गसे ४२ मील दक्षिण वार्मडिटपर अधिकार कर लिया है। मार्शल कोनिवके दो सौ मील लम्बे मोर्चेपर वर्तमान युद्धकी सबसे भयंकर लड़ाई हो रही है जिससे बर्लिन, ड्रेसडेन तथा जर्मनीके मर्मस्थलको खतरा बढ़ता जा रहा है। मार्शल कोनिवकी सेना बर्लिनसे ६० मीलके भीतर पहुंच गयी है। रूसी [illegible] की वाह्य रक्षापंक्तिमें अविराम आक्रमण कर रहे हैं।

आज जर्मन समाचार समितिके युद्ध मोर्चेके एक खरीतेमें घोषित किया गया है कि ग्रेसलाऊ दुर्गके समीपवर्ती अंचलको खाली करना पड़ेगा। प्रथम कनाडियन सेनाके ब्रिटिश सैनिक क्लीवके दक्षिण एक सुदृढ़ जर्मन केन्द्र गोरवके उत्तर-पूरब पहुंच गये हैं। रायटर

त्रिनायक सम्मेलन और पोप

रोम १८ फरवरी। पोपकी ओरसे वोरकन पत्रको यह समाचार प्रकाशित करनेका अधिकार दिया गया है कि मास्को रेडियोकी यह सूचना गलत है कि पोपने गत त्रिनायक सम्मेलनमें शामिल होनेकी इच्छा प्रकट की थी।

पत्रमें लिखा है हमें यह घोषित करने का अधिकार दिया गया है पोपने कभी भी इस सम्मेलनमें शामिल होनेका विचार तक नहीं किया था। यह शुद्ध और सरल अपवाद लगाना है। रायटर

शुभागमन

मध्यप्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषद्के स्पीकर तथा 'सत्यार्थ प्रकाश' रक्षा समिति के अधिनायक श्री घनश्याम सिंह गुप्त बम्बई मेलसे आज प्रातः ११ बजे हवड़ा पधारेंगे। स्टेशनपर उनका शानदार स्वागत किया जायेगा।

कांग्रेस कर्मिणी बीमार

नयी दिल्ली, १७ फरवरी। दिल्लीके प्रसिद्ध कांग्रेस कार्यकर्त्री श्रीमती सत्य- वती देवीको, जो दिल्ली जिला अस्पतालमें पड़ी थीं, आज सिल्वर जुबली टी० बी० अस्पतालमें स्थानान्तरित किया गया है। ए० प्रेस

अर्जेण्टाइन सरकारका जर्मनीसे प्रतिवाद

न्यूनोरायर १७ फरवरी। अर्जे- टाइन सरकारने स्वीडनके जरिये जर्मनी में अर्जेण्टाइन राजदूतावासके अधि- कारियोंको विनिमयार्थ रोक रखने- की कारवाईका जर्मन सरकारसे तीव्र प्रतिवाद किया। इस बातकी घोषणा आज सरकारी तौरपर की गयी है। रा०

जागीरका अंत अनि[illegible]

अहिंसात्मक सत्याग्रहके [illegible]

सेवाग्राम १७ फरवरी। मध्य [illegible] राज्य प्रजा सम्मेलनका एक डेपु[illegible] आज महात्मा गान्धीसे मिला [illegible] समझा जाता है कि, अलवर रा[illegible] जागीरकी समस्या तथा एक अन्य [illegible] से जो उनके विचारानुसार प्रायः गु[illegible] ही समझी जाती है, परिचित [illegible] मालूम हुआ है कि महात्मा जीने [illegible] निधियोंको बताया कि जागीर सम[illegible] अत्याचारका अहिंसात्मक सत्या[illegible] विरोध किया जा सकता है [illegible] इसके लिये अन्य मार्ग सुलभ न[illegible] महात्मा जीने 'गुलामी'के सम्बन्धमें [illegible] कि इसका अन्त अवश्य होना [illegible] तथा यह अवश्यमेव होकर ही [illegible] किन्तु यदि प्रजा इसका शिकार [illegible] नहीं चाहती तो अन्यत्र जा [illegible] है। ए० प्रेस

श्री अणेको पुरस्कार

खाद्य आन्दोलनके केवल बीस [illegible]

कोलम्बो, १७ फरवरी। भारत [illegible] कारके लंका स्थित प्रतिनिधि मि० [illegible] एस० अणेको गत शनिवारको [illegible] खाद्य आन्दोलनके सिलसिलेमें अप[illegible] के बगीचेमें कुछ चीजें उपजानेके [illegible] बीस रुपयेका पुरस्कार दिया गया [illegible]

फारस सरकार द्वारा मांगना[illegible]

तेहरान, १७ फरवरी। [illegible] सरकारने अमेरिकन एडवाइजरी [illegible] शनके प्रधान डा० आर्थर मिल[illegible] मांगोंको नामंजूर कर दिया है। [illegible] ह्यातने कहा कि उनकी सरकारने [illegible] इस निर्णयको डा० मिलस्पाफ द्वा[illegible] के लिये फारसकी पार्लमेण्टकी [illegible] के बिना की गयी मांगके अनुकूल [illegible] है। ऐसा समझा जाता है कि डा० [illegible] स्पाफ शीघ्र ही यहांसे प्रस्थान [illegible] हैं और फारसके अखबारोंकी [illegible] कि एक अन्य अमेरिकन, [illegible] उनका कोई सहकारी नया अर्थ[illegible] मर्शदाता नियुक्त किया जायगा।

धीनता प्राप्ति रचनात्मक कार्यका लक्ष्य
हारके नेताओंपर प्रतिबंध बिलकुल अनुचित
हात्माजी सरकारकी घातक नीतिसे विक्षुब्ध

वर्धा, १८ फरवरी। महात्मा गांधीने निम्नाशयका वक्तव्य प्रकाशित किया
विहार सरकारने कांग्रेस कार्यकर्ताओंको चुनौती दी है। मैंने इसपर अपनी
य देनेमें देर की; क्योंकि मुझ आशा थी कि यह तूफान सिर्फ गलती है और
का आप ही अन्त हो जायगा। घटनाचक्रने मेरे विचारको गलत साबित कर दिया।
विहारकी घटनाके उपरान्त श्री पुरुषोत्तमदास टण्डनके पुनःगिरफ्तार होनेकी खबर
ी। विहारके कांग्रेस कार्यकर्ताओंमें जो सुप्रसिद्ध हैं। उनमें एक भूतपूर्व प्रधानमंत्री
और दूसरे भूतपूर्व अर्थ सचिव। टण्डनजी युक्तप्रान्तीय असेम्बलीके स्पीकर हैं।
यह खबर मिली है कि उड़ीसाके श्री गोपबन्धु चौधरी भी पुनः गिरफ्तार कर
ये गये हैं।

महात्माजीने आगे कहा कि एक
क तो यह हालत है और दूसरी तरफ
भूलाभाई देसाईसे वायसराय वार्तालाप
रहे हैं। महान् परिवर्त्तन की अफवाहों
आकाश गूंज उठा है। ये अफवाहें
कलसे उन खबरोंसे मिलती जुलती हैं
का मैंने जिक्र किया है और जिन्हें
ता भी अच्छी तरह जानती है।
रके कांग्रेसकर्मी मेरे सुझावोंनुसार
नात्मक कार्यक्रमको कार्यान्वित करने-
जरिया ढूढ़ निकालनेमें अस्तव्यस्त थे
कि उनमेंसे प्रमुख कर्मियोंको गिर-
र कर लिया गया, हालांकि इस योज-
राजनीति की बू तक नहीं है। 'राज-
ति' को प्रचलित अर्थमें व्यवहृत करते
मैंने साफ-साफ कह दिया है कि यदि
तवासी इस योजनापर सच्चे दिलसे
ल करें तो बिना भद्र अवज्ञा आन्दोलन
पार्लमेण्टरी योजनाओंके ही पूर्ण स्व-
ता प्राप्त हो सकती है। इन दोनोंमें
की भी आवश्यकता न पड़ेगी। अंग-
को यहां रहकर शासन करना बाहि-
मालूम होगा। वे रहेंगे भी तो पक्के
रिक बनकर। गत अगस्त १९४२ की
में वे शासकका दावा हटा लेंगे
कि उनकी फौजका यहां अधिकार न
ा और उनके विशाल कारखाने बेकार
जायंगे। हो सकता है, वे दिन आयें
नहीं। पर अहिंसाके सैनिकोंको बरा-
यह स्वप्न देखते रहना है। उन्हें हर-
इसकी प्राप्तिकी कोशिश करनी है
र यदि इस कोशिशमें वह सफल नहीं
तो भद्र अवज्ञा आन्दोलन और
हयोगका रास्ता रह जाता है। सामू-
सत्याग्रहका उत्तरदायित्व अबतक
ही ऊपर रहा है। सन् १९४२ में यह
छेड़ा गया। वह व्यक्ति जो जनतासे
कै कायम नहीं कर सका है, इस
को ग्रहण नहीं कर सकता। सीधी-
ी बात तो यह है कि स्वयं जनता हो
प्रभावित न होगी। मेरा यह विश्वास
क प्रास मेरे अनुभवोंके आधारपर
है। विहारकी कार्यवाहीका समर्थन श्री
प्रजापति मिश्रके एक वक्तव्यसे किया जाता
है। वक्तव्यके विवरणपर पर्दा डाल दिया
गया है। रचनात्मक कार्यको कार्यान्वित
करनेके लिये किसी ओजस्वी भाषणका
प्रश्न ही नहीं उठता। मैंने अपने वक्तव्यों
में साफ कर दिया है कि वर्त्तमान परि-
स्थितिमें सत्याग्रह करनेका कोई योजना
नहीं है और समूचे देशमें लोग मेरी
सलाहके मुताबिक ही काम कर रहे हैं।
पर कार्यक्रमको अग्रसर करनेवालोंपर
सत्याग्रहकी सैद्धान्तिक संभावनाओं या
इसी तरहकी अन्य चीजोंके प्रसंग छेड़ने-
की न तो मनाही ही की जा सकती और
न उनपर ऐसी शर्त ही लादी जा सकती
है।

इसका ध्येयही राजनीतिक, सामा-
जिक और आर्थिक आजादी है। यह एक
राष्ट्रके जीवनके प्रत्येक विभागमें नैतिक और
शांतिपूर्ण क्रान्ति है, जिसके बाद जाति-
प्रथा, अस्पृश्यता तथा इसी तरहके अन्य
सभी अन्ध विश्वासोंका सर्वनाश
निश्चित है। हिन्दू मुसलमानोंका मत-
भेद भूतकालकी घटना रह जायगी।
अंग्रजोंके प्रति शत्रुताका भावनाको
भी दिलसे निकाल देना होगा। नरेश
और पूंजीपति भी अपनेको जनताकी
सम्पत्तिका वास्तविक और कानूनी ट्रस्टी
समझ उनके साथ सच्चे मित्रकी तरह
रहें। ऐसी कोशिशोंमें कौन-सा दोष
छिपा है? क्या उसे अपनी असीम
शक्तिसे सन्तोष नहीं? भारतके छोटे
बड़े सभीको जेलमें बन्द करना ही जरूरी
है, नहीं तो वे देशके कौने-कोनेमें स्वा-
धीनताकी लहर फैलाकर उसकी प्राप्तिके
लिये अहिंसात्मक आन्दोलन प्रारम्भ
कर देंगे। क्या जेलसे वापस लौटे
हुए लोगोंको गिरफ्तार करना ही चाहिये
यदि उनकी वाणी और कार्यवाही अधि-
कारियोंको खुश न कर सके।

बन्दियोंकी स्वीकृति प्राप्त करनेके
लिये मारने पीटने तथा जोर-जबर्दस्ती
करनेकी खबरोंको सुन २ कर कष्ट
अनुभव हो रहा है, जिसे सारी जनताके
साथ मुझे भी झलना है। इनमेंसे कुछ
उदाहरण तो जनताके सामने हैं जैसे
कोल्हापुरकी घटना। इससे भी हालकी
कुछ घटनाओंकी खबरें मेरे पास पहुंची
हैं। खास कर एक जो मेरे दिमागमें है,
वह उस बालकके सम्बन्धमें है जिसने
मेरी सलाह मान कर अपनेको पुलिसके
हवाले कर दिया। हालांकि इन समा-
चारोंमेंसे कुछका आधार ठोस नहीं है
फिर भी मुझे पूर्ण विश्वास है कि अधि-
कांश पूर्णतया सत्य हैं। क्या अब भी
ऐसा मौका नहीं आया है कि ऐसी लज्जा-
जनक घटनाओंका सरकार अन्त करदे।

गत अगस्त १९४२ में जनतासे
व्यर्थ संघर्ष करनेके बजाय यदि सरकार
कांग्रेसकी दलीलों पर ध्यान देती
तो भारत स्वतंत्र हो गया होता तथा
मित्र राष्ट्रोंकी प्रतिष्ठा और पृथ्वीके
पददलित राष्ट्रोंकी सुख-समृद्धिके साथ
इस युद्धका अन्त भी हो जाता। यह
मेरा पश्चाद् दर्शन । यदि भारतकी
हालत आज सी ही बनी रही तो मित्र-
राष्ट्रोंकी विजय नाममात्रका ही समझिये
क्योंकि भारत और अन्य राष्ट्रोंको
वे अपनी दयाका भिखारी बनाये रखेंगे।
इस तरहकी जीतसे निकट भविष्यमें
इससे भी भयंकर, यदि संभव हो, भीषण
महायुद्ध टपक पड़ेगा। क्योंकि मैं दूसरी
जगह ऐसा कह चुका हूं कि भारतकी
कुर्बानीसे जो विजय प्राप्त होगी उसका
अर्थ यही होगा कि फासिज्म, नाजीवाद
और जापानी सैनिक शक्तिकी राखपर
एक नया दानव पैदा होगा जो एक २
कर सभी चीजको निगल जानेकी कोशिश
करेगा और अन्तमें स्वयं उसकी भी
यही हालत होगी।

इस वक्तव्यके लिखनेसे मुझे कोई
आनन्द नहीं हो रहा है। कहनेको तो
बहुत कुछ है। पर अभी इतनाही। यू०

अल्लाबक्सकी हत्याका मामला

कराची, १८ फरवरी। ऐसा समझा
जाता है कि सिन्ध सरकार खां बहादुर
खुरो, उनके भाई तथा तीन अन्य व्य-
क्तियोंके खिलाफ सेशन अदालतमें चलने
वाले स्वर्गीय मि० अल्लाबख्शकी हत्याके
षड्यन्त्रके मामलेकी सम्राटकी ओरसे
पैरवी करनेके लिये मि० कार्डन नोडको
नियुक्त करनेका विचार कर रही है। इस
रिपोर्टके सिलसिलेमें कहा गया है कि यह
मामला सिन्धके बाहरकी किसी अदालतमें
भेज दिया जा सकता है आज यहां कहा जा
रहा है कि सिन्ध सरकारको ऐसा करने
का कोई अधिकार नहीं है। दोनों पक्षसे
इसके लिये चीफ कोर्टमें अर्जी दी जा
सकती है, क्यों कि सभी सेशन अदालत
इसके अन्तर्गत हैं। ए० प्रेस

कस्तूरबा स्मारक कोष
प्रांतीय मंत्रियोंकी बैठकमें आठ प्रस्ताव पास

वर्धा, १८ फरवरी। श्री कस्तूरबा
राष्ट्रीय स्मारक कोषके प्रान्तीय मंत्रियों
की जो बैठक सेवाग्राममें हुई उसमें निम्न
लिखित आठ प्रस्ताव पास किये गये हैं:—
(१) उन संस्थाओंको आर्थिक सहा-
यता दी जाय जो कस्तूरबा कोषके उद्देश्य
और लक्ष्योंके अनुसार कार्य करें और
उन संस्थाओंको जिनके कोषकी प्रान्तीय
तथा जिला कमेटियां सिफारिश करेंगी
आर्थिक सहायता दी जायेगी। (२)
साधारणतः जिलोंमें ऐसा काय होना
चाहिये ताकि उनको केन्द्रीय कमेटी
से सहायताके लिये मांग न करनी पड़े।
(३) कस्तूरबा कोषके अन्तर्गत महि-
लाओंको समान वेतन मिलेगा। (४)
कस्तूरबा कोषके केन्द्रीय दफ्तरसे कार्य
कर्त्ताओंकी शिक्षाके सम्बन्धमें जो योजना
प्रकाशित की गयी है उसके लिये कोषसे
आर्थिक सहायता नहीं की जायेगी।
(५) कस्तूरबा कोषसे सम्बन्धित प्रत्येक
कार्य स्त्रियोंकी भलाईका होगा जो इसका
मुख्य उद्देश्य है। (६) स्वास्थ्य संबंधी
कार्योंके सिलसिलेमें बच्चोंकी स्वच्छता
और माताका स्वास्थ्य आवश्यक चीज
है। (७) कोषका कार्य केवल दिक्कतोंमें
सहायता करना नहीं है बल्कि उनपर
दिक्कतोंके कारण खोजकर उन्हें दूर
करना है। (८) साधारणतः कोषका
धन मकान, जमीन खरीदनेमें खर्च नहीं
कया जायेगा। कस्तूरबा कोषकी कार्य
कारिणीकी आजकी बठक स्वर्गीय श्री
महादेव देसाईकी कुटियामें प्रातः और
दोपहरको हुई। दोपहरकी बैठककी अध्य-
क्षता गांधीजीने की। कार्य कारिणीके
६ सदस्य उपस्थित थे जिनमें महात्मा
गांधी, श्रीकृष्णदास जाजू, श्रीमती आशा
देवी, आर्य नायकम, श्री मावलंकर, श्री
देवदास गांधी और ठक्कर बाप्पा और
तीन ट्रस्टी उपस्थित थे श्री शान्ति कुमार
मुरारजी, श्री लक्ष्मी बाबू, और श्री
मंगलदास पकवासा। बैठक कल भी
होगी। यू० प्रेस

मंत्रिमंडलमें हरिजनकी मांग

लाहौर, १७ फरवरी। अखिल भार-
तीय दलितवर्ग फेडरेशनके जेनरल सेक्रे-
टरी श्री पी० एन० राजभोज पंजाबके
प्रधानमन्त्री मलिक खिजिरहयातखांसे मिले
और पंजाबकी दलित जातियोंके कष्टके
सम्बन्धमें उनसे विचार-विमर्श किया।

मालूम हुआ है कि राजभोजने प्रधा-
नमन्त्रीसे यह मांगकी कि दलित जातियोंके
अधिकारोंकी रक्षाके लिये मन्त्रिमण्डलमें
एक हरिजन मंत्री नियुक्त किया
जाये। ए० प्रेस

दुओंके प्रति सर गुलामहुसेनका अन्याय

सिंधमें मुसलिम लीग दलोंमें मतभेद जारी

लीगके नेताओं द्वारा समझौतेका प्रयास

कराची, १७ फरवरी। सिंध असेम्बलीकी स्वतन्त्र हिन्दू पार्टीके नेता श्री निचलदास वजीरानीने एक वक्तव्यमें यह मांग की है कि यदि लीग असेम्बली पार्टी हिन्दू सदस्योंका सहयोग चाहती है तो मंत्रिमंडलमें अपने प्रतिनिधि भेजनेका स्वाधीनता हिन्दू पार्टीको मिले। यह मांग मेरी पार्टीकी ओरसे सदैव की गयी है और सिवाय सर गुलाम हुसेनके और सबोंने इसे स्वीकार भी किया है। सर गुलाम हुसेनने आरम्भमें यह सिद्धान्त स्वीकार किया था लेकिन बादमें मुसलिम बहुमतको अपने पक्षमें या वह इसे भुला बैठे। अल्लाबख्शके जमानेमें हिन्दू पार्टीको हिन्दू मंत्री चुननेका अधिकार था।

श्री वजीरानीने आगे चलकर कहा कि जब अल्लाबख्श बर्खास्त कर दिये गये और रायसाहिब गोकुलदासने इस्तीफा दे दिया तो भी हिन्दू पार्टी मुसलिम लीग पार्टीसे सुलह करना चाहती थी। लेकिन सुलहकी बातचीतके बीचमें ही सर गुलाम हुसेनने वर्तमान दोनों हिन्दू मंत्रियोंको शामिल कर लिया, फलतः दोनोंने हिन्दू पार्टीसे इस्तीफा दे दिया।

मि० जिन्नाने स्वयं यह स्वीकार किया है कि हिन्दू पार्टीको यह अधिकार मिलना चाहिये। सिन्ध प्रांतीय मुसलिम लीगने भी अपने अध्यक्ष द्वारा सर गुलाम हुसेनसे यह मांग स्वीकार करनेको कहा है। लेकिन सर गुलाम हठ पकड़े हुए हैं और उसपर तबतक डटे रहेंगे जबतक उन्हें हिन्दू पार्टीको मिलानेकी आवश्यकता महसूस न होगी। और व्यक्तिगत विचारों के आधारपर वह पार्टीके और सदस्यों को भी फोड़नेकी चेष्टा करगे।

श्री वजीरारानीने और कहा कि लोकतन्त्रके सिद्धान्त पार्टीके इस अधिकारको स्वीकार करते हैं और कोई न्यायप्रिय व्यक्ति इसे अस्वीकार नहीं कर सकता।

स्वतन्त्र हिन्दू पार्टीकी एक बैठक आगामी २० फरवरीको होगी और आगामी बजट अधिवेशन सम्बन्धी विषयोंपर विचार किया जायेगा।

कराची, १७ फरवरी। सिन्ध मंत्रिमंडलके गृह सदस्य खान बहादुर मीर गुलाम अली खानने एक वक्तव्य द्वारा अखिल भारतीय मुसलिम लीगकी कार्यकारिणी कमेटी तथा केन्द्रीय पार्लमेंटरी बोर्डके इस निश्चयका स्वागत किया है कि चौधरी खालिकुज्जमन, नवाब मुहम्मद इस्माइल तथा काजी ईसा सिंध जाकर वहांके लीगी विवादका अन्त करे और दोनों दलोंमें समझौता करा दें।

आपने और बताया कि प्रान्तीय लीग के अध्यक्ष मि० जी० एम० सईद तथा सर गुलाम हुसेनकी बातचीत अभी समाप्त नहीं हुई है और आज फिर बैठक होगी। आपने यह आशा प्रकट की कि सभी दलों में जिसमें हिन्दू पार्टी भी शामिल है, समझौता हो जायेगा।

चौधरी खालिकुज्जमन, नवाब मुहम्मद इस्माइल तथा काजी ईसाके कल आनेकी धारणा है। ए० प्रेस

भयंकर नाव दुर्घटना

२५ छात्रोंकी जल समाधि

मद्रास, १५ फरवरी। कहते हैं कि पश्चिमी गोदावरीमें २५ छात्र एक नाव दुर्घटनाके शिकार हो गये। इस सिलसिलेमें कहा जाता है कि भीमवरम् हाई स्कूलके कोई ४० छात्र जो छुट्टीके कारण घर लौट रहे थे, मंगलवारको एक नावपर सवार हुए। इन्हें येन्यूदरा नहर पार करना था। जब नाव किनारेसे कुछ दूरपर थी कि वह टेढ़ी हो गयी और कुछ लड़के पानीमें जा गिरे और डूब गये। कुछ लड़के तैरकर निकल बाहर हुए और इन्होंने कुछ और लड़कोंको बचाया भी।

सारे नहरमें जाल डाला गया पर केवल ६ छात्रोंकी लाशका पता चल सका। अभी और भी १९ छात्रोंकी लाश पानीमें है ऐसा विश्वास किया जा रहा है, कहते हैं कि यह तीसरी दुर्घटना है जो इसी घाटपर हुई है।

अरजेण्टाइन सरकारकी घोषणा

मांटवीडियो, १७ फरवरी। ब्यूनो-एयरसे जो रिपोर्टें मिल रही हैं उनसे मालूम होता है कि अरजेण्टाइन सरकार जर्मनी और जापानके विरुद्ध युद्धकी घोषणा करेगी। आज रात्रिमें संवाददाताओंको विदेश कार्यालयमें महत्वपूर्ण घोषणा सुननेके लिये बुलाया गया है। रायटर

बंगाल प्रांतीय हिन्दू सम्मेलन

डा० मुंजे अध्यक्ष निर्वाचित

जलपाईगुड़ी १८ फरवरी। बंगाल प्रान्तीय हिन्दू महासभा कानफरेंसकी स्वागत समितिने सूचित किया है कि जलपाई गुड़ीमें होनेवाली कानफरेंसमें आनेके सम्बन्धमें डा० नारंग असमर्थता प्रकट की है जिसके कारण डा० बी० एस० मुंजे अध्यक्ष निर्वाचित किये गये हैं। श्री खापरडे, राजा महेश्वर दयाल सेठ और अन्य प्रमुख हिंदू नेता कानफरेंसमें आयेंगे। यू० प्रेस

रेडियोकी भाषा नीति

हिन्दू और उर्दूका अलग प्रयोग

बम्बई, १७ फरवरी। वर्धा स्थित राष्ट्रभाषा प्रचार समितिके मंत्री श्री आनन्द कौशल्यायनने आलइंडिया रेडियो के भाषा नीति सम्बन्धी निश्चयके संबंधमें जो वक्तव्य प्रकाशित किया है उसमें आपने यह सुझाव दिया है कि सभीको सन्तुष्ट करनेका उपाय यही है कि उर्दू और हिन्दीमें अलग-अलग ब्राडकास्ट किया जाये। श्री कौशल्यायन हिन्दी साहित्य सम्मेलनके उस प्रतिनिधि मंडल के सदस्य थे जो कि भारत सरकारके प्रकाशन और ब्राडकास्टिंग विभागके सदस्यसे मिला था।

आपने और कहा कि हिन्दुस्तानीमें ब्राडकास्ट करनेका निश्चय ऊपरसे चाहे जितना भला मालूम दे लेकिन हिन्दी एवं उर्दू भाषाभाषी दोनों प्रकारकी जनताके लिये एक भाषा तैयार करना आल इंडिया रेडियोके लिये सम्भव नहीं है। मेरी रायमें दोनों उर्दू और हिन्दी भाषाओंको स्वाभाविक रूपसे प्रगति करने देना चाहिये। ए० प्रेस

भारतीय विमान अफसरकी मृत्यु

लाहौरमें प्रदर्शनमें विमान दुर्घटना

नयी दिल्ली, १७ फरवरी। प्रधान हवाई कार्यालयकी ओरसे खेदके साथ सूचित किया गया है कि लाहौरमें आज तीसरे पहर प्रदर्शन करते समय विंग कमांडर मजुमदारकी विमान दुर्घटनामें मृत्यु हो गयी। ए० प्रेस

सीमाप्रान्तीय कां[ग्रेसी]

नेताओंका दल वर्धा प[हुंचा]

वर्धा, १७ फरवरी। बम्बईके प्रधानमंत्री श्री बी० जी० खेर सेवाग्राममें रहकर आज बम्बई रवाना हो गये। यहां रहकर आप गांधीसे रचनात्मक कार्यक्रमके विचार विमर्श किया।

सीमाप्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके खान अलीगुल खां, कांग्रेस पार्टीके उपनेता अरबाब अब्दुल तथा पार्टीके सेक्रेटरी रायबहादुर चन्द खन्ना वर्धा आ गये।

आप लोग कल महात्मा मिलेंगे और सीमाप्रान्तकी अवस्था अवगत करेंगे। ए० प्रेस

नेताओंका तबा[दला]

केन्द्रीय असेम्बलीमें सु[...]

नयी दिल्ली, १७ फरवरी। चर्चासे मालूम होता है कि केन्द्रीय [असे]म्बलीमें कांग्रेस पार्टीके चीफ [...] अल्पकालीन प्रश्न यह जानने [का प्रयत्न] करेंगे कि जैसा कि दिल्लीके पत्रमें प्रकाशित हुआ है क्या पंडित जवा[हरलाल] नेहरू तथा पंडित गोविन्दवल्लभ प[न्त] भेज दिये गये हैं और क्या सर[कार] उचित समझती है कि आचार्य न[रेन्द्रदेव] तथा आचार्य कृपलानीको भी यु[क्त प्रान्त] भेज दिया जाये तथा अहमदनगरमें [नजर]बन्द अन्य नेताओंको उनके [प्रान्तोंमें] भेजनेकी व्यवस्था होगी। यू० प्रेस

हित बस जिनके मनमाहीं ।
कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

ाल्टाका निर्णय ।

मित्र त्रिराष्ट्र नायकोंका वह बहु-
क्षित सम्मेलन भी समाप्त हो गया,
के लिये विभिन्न देशोंके राजनीतिक
सामरिक हल्कोंमें काफी हलचल
हो गयी थी और सम्मेलन होनेके
तक बराबर अटकलें लगायी जा रही
कि यह कहां और कब होगा । संबंधित
राष्ट्रोंके कर्णधारोंको तो सम्मेलन
न्धी बातें पहलेसे मालूम होंगी इसमें
ह नहीं, लेकिन उन्होंने इस संबंधमें
विश्वको इतने अन्धकारमें रखा था
जब सम्मेलनवाले स्थानपर लोग
गये, तबतक भी लोग कुछ नहीं
सके। लेकिन जिससे गुप्त रखनेके
ये सारी कार्यवाहियां मित्रराष्ट्र-
कोंने की उसको तो पता लग ही गया
१ फरवरीको, जिस दिन काला
गरीय अंचलमें क्रीमियाके अन्तर्गत
ामें त्रिराष्ट्र नायकोंका सम्मेलन
म हुआ, जर्मन रेडियोने अपने एक
ाडकास्टमें बता दिया कि त्रिराष्ट्र सम्मे-
कहीं हो रहा है। ब्रिटिश प्रधानमंत्री
चर्चिलके स्टाफको सम्मेलनमें पहुं-
वाले विमानकी दुर्घटनामें भी शत्रु-
हाथ रहा हो तो क्या आश्चर्य है ?
न सारी विघ्न-बाधाओंका अति-
ण करते हुए सम्मेलन हुआ और
पके सम्बन्धमें अन्तिम रूपसे निर्णय
डाला ही गया। किन्तु सुदूरपूर्वके
के सम्बन्धमें एक शब्द भी विज्ञप्तिमें
कहा गया, आश्चर्य तो यही है और
का प्रधान कारण शायद यही है कि
और जापानमें पांच वर्षके लिये जो
ाक्रमणकी सन्धि हुई है, वह अभीतक
ोंकी त्यों है।

सम्मेलनका जो निर्णय अधिकृत
रपर प्रकाशित कराया गया है, वह
त्र प्रकाशित है। उससे साफ मालूम
ता है कि यूरोपके राष्ट्र रूसको जैसी
ाकी दृष्टिसे देखते थे, वर्तमान महा-
ने उसकी स्थिति ऐसी दृढ़ बना दी कि
वह यूरोपकी शक्ति सन्तुलनका
ख्य सूत्रधार बन गया है, और जो कुछ
हता है, पूंजीवादी तथा-कथित गण-
राष्ट्र उसको माननेके लिये बाध्य होते
। जर्मनीको अन्तिम रूपसे घुटने टेक-
नेके प्रश्नपर त्रिराष्ट्रोंके पूर्ण सहमत
नेकी रिपोर्टको रायटरने बड़े तपाकके
ाथ दिया है। इसका कारण यह है
क तीनों प्रधान देशोंमें फूट डालनेके
लिये जर्मनीकी ओरसे काफी हथकण्डे
काममें लाये गये हैं। लेकिन इस सम्मे-
लनमें ब्रिटनको कोई ऐसी सफलता नहीं
मिली, जिसपर उसको गर्व करनेका
मौका मिले। सारा निर्णय रूसकी इच्छा
के अनुसार किया गया। पोलैंडकी पूर्वी
सीमा कर्जन लाइन ही मानी गयी है,
जिसके लिये रूस बहुत पहलेसे कहता
आ रहा था। लन्दनस्थ पोलिश सरकार-
को मरी हुई घोषित कर दिया गया। लुब-
लिनकी पोलिश राष्ट्रोद्धार समिति
पोलैंडकी अस्थायी सरकार बन गयी
थी, उसको पुनर्संङ्गठन इस ख्यालसे
करनेके लिये बात तय पायी है, ताकि
पोलडके बाहरके भी गणतांत्रिक पोल
नेताओंको इसमें स्थान दिया जा सके।
यूगोस्लावियाके शाह पीटर चर्चिल साहब-
की शरणमें ही रह गये। वहां मार्शल
टीटो और प्रधानमन्त्री सुवासिकमें जो
समझौता हुआ है, वह अविलम्ब कार्या-
न्वित कर दिया जायेगा। सबसे बड़ा
निर्णय जर्मनीके सम्बन्धमें हुआ और
वह है उसका तीनों राष्ट्रों द्वारा बंटवारा
और अपने-अपने अंचलोंमें तीनों
राष्ट्रोंका अलग स्वतन्त्र शासन। तीनों-
को सम्बद्ध करनेके लिये एक संघीय
शासन बर्लिनमें कायम होगा। निर्णयमें
यह भी व्यवस्था रखी गयी है कि यदि
फ्रांस चाहे तो इसमें हिस्सा ले सकता
है और बादकी रिपोर्टोंसे पता चला है
कि इस गिरी हुई अवस्थामें भी साम्राज्य-
का लोभ संवरण न करनेवाला फ्रांस
भला इस सुविधासे लाभ उठानेमें क्यों
पीछे रहे? जेनरल डि गालेकी सरकार
तो त्रिराष्ट्र सम्मेलनमें भी चौथा सवार
बनना चाहती थी, लेकिन पुराने मित्रोंने
उसे इस मौकेसे वंचित रखा।

यूरोपके देश अतीतकालसे स्वाधीन
वायुमण्डलमें विचरण करते आ रहे हैं,
कभी उनको परतंत्रताके जुएमें नहीं नाधा
गया है। गत महासमरमें पराजित जर्मनी-
के कुछ अंगोंको भंग करनेके फलस्वरूप
वर्तमान महायुद्धकी अग्नि शिखामें सारे
विश्वको जलना-भुनना पड़ रहा है।
फिर भी विश्वशांतिकी स्थापनाके बीड़ा
उठानेवाले राष्ट्रोंके दिमागमें पुरानी गलती
गलती नहीं मालूम होती और उसीकी
पुनरावृत्ति उससे भी बड़े पैमानेपर वे करने
जा रहे हैं। हिटलरको मानव स्वाधीनता-
का कितनाही बड़ा शत्रु क्यों न माना जाये,
लेकिन जर्मन जनताका तो वह अबतक
फुहरर ही बना है और अपने एक युगसे
अधिकके राजतंत्रमें जर्मन जनतामें स्वा-
धीनता और स्वदेश प्रेमकी जो उत्कट
आकांक्षा और इच्छा उसने उत्पन्न की
है, उसके बावजूद मित्रराष्ट्र जर्मनीका
अङ्गच्छेदकर उसपर शांतिपूर्वक शासन
कर सकेंगे और अपने इस आचरणके
द्वारा विश्वमें शांतिकी स्थापना कर सकेंगे,
इसमें महान सन्देह मालूम होता है।
भारतमें साम्राज्यशाहीको जो धांधली
चल रही है और कई शताब्दियोंकी परा-
धीन भारतीय जनता उसको बराबर
मनमसोसकर सहती जाती है. उस मन-
मानीको विश्वपर शासन करनेका स्वप्न
देखनेवाली जर्मन जनता बर्दाश्त कर
सकेगी, यह असंभव-सा मालूम होता है।
जर्मन फासिस्टवादका समूल विनाश तो
होना ही चाहिये लेकिन स्वाधीन गणतंत्र
जर्मनीके स्थानपर पराधीन जर्मनी
विश्वशांतिमें सहायक होगा, मित्रराष्ट्रों-
के कर्णधार अगर ऐसी आशा रखते हों
तो यह उनकी खामख्याली होगी और
इस साम्राज्यवादी लोभसे उनके घोषित
उद्देश्यको भीषण धक्का लगेगा।

हम मानते हैं कि फासिस्ट जर्मनीके
विरुद्ध सफलतापूर्वक युद्ध सञ्चालित
करनेके लिये तीनों मित्र कर्णधारोंमें पूर्ण
मतैक्य है, लेकिन अन्य बातोंमें उनके
विचार एक दूसरेसे बराबर टकर खाते
रहते हैं और इसके कई उदाहरण समा-
चार पत्रोंके पाठकोंके सामने आ चुके हैं।
मिट्टीके जब दो घड़े पास-पास रखे जाते
हैं, तो बहुत सतर्कता रखनेपर भी उनमें
परस्पर टक्कर लग ही जाती है। तब
ये महत्वाकांक्षी राष्ट्र, जो अपने-अपने
सिद्धांतों और शासन-प्रणालियोंकी
सुरक्षाके लिये संसारको महायुद्धकी अग्नि-
की समिधा बनानेसे नहीं हिचकते,
एक ही देशमें विभिन्न अञ्चलोंमें शासन
करते हुए परस्पर सद्भावपूर्ण सम्बन्ध
रख सकेंगे ऐसा सोचना अपनी अक्लका
दिवालियापन घोषित करना है। एक
म्यानमें एक ही तलवार रहती है, यह
सत्य अस्मरणीयकालसे आ रहा है जब
कभी दो तलवारें घुसेड़नेकी चेष्टा हुई है,
अशांतियोंका बाजार गर्म हो उठा है।

सम्मेलनमें यह भी निश्चय किया
गया है कि आगामी २५ अप्रेलको अमे-
रिकाके सैन फ्रांसिसकोमें मित्रराष्ट्रोंका
दूसरा सम्मेलन होगा और उस समय-
तक मित्रोंके अनुमानके अनुसार यूरोप-
की लड़ाई समाप्त हो रही होगी। इसलिये
जापानके विरुद्ध व्यापक पैमानेपर अभि-
यानका निर्णय किया जायेगा। उस समय
रूस और जापानकी वर्तमान संधिको
समाप्त करनेके लिये नोटिस देनेका
समय भी बीत चुका रहेगा। इसलिये
मार्शल स्टालिन अगर उक्त सम्मेलनमें
शामिल होंगे, जैसा कि ब्रिटन और
अमेरिकाका ख्याल है, तो जापानको
संधिभंगका नोटिस दे चुके रहेंगे। लेकिन
इस समय जापान और रूसके बीचमें
जो स्थिति उत्पन्न है, उससे तो यह
समझनेका कोई कारण नहीं मालूम होता
कि जापानके विरुद्ध रूस लड़ाईमें पड़ेगा।
रूसके बुरे दिनोंमें जब जर्मनीके बारबार
प्रोत्साहन देनेपर भी जापानने पूर्व रूसमें
दूसरा मोर्चा नहीं खोला, तब रूस
उसके बुरे दिनोंमें उसकी पीठपर सवार
होनेकी कोशिश करेगा यह न्यायकी दृष्टिसे
उचित नहीं कहा जायेगा। लेकिन राज-
नीतिक लड़ाई और प्रेममें जो कर दिया
जाये सब न्याय ही समझा जाता है। इस-
लिये रूस और जापानकी नहीं खटकेगी
ऐसी भविष्यवाणी करना ज्योतिषियों-
की तरह अपना उपहास करानेके सिवा
और कुछ नहीं। हां, इतना अवश्य है कि
जापानके साथ निबटनेमें रूसके सामने
एशिया और यूरोपका सवाल--काले और
गोरेका सवाल अवश्य उपस्थित होगा।
यूरोपमें रूसका अस्तित्व रहनेपर भी
यूरोपके राष्ट्र उसे एशियायी देश समझते
हैं और एशियावालोंके प्रति यूरोपीय
राष्ट्रोंका जो हेय दृष्टिकोण है, उसका
शिकार रूस भी हो चुका है। आज भले
ही उसको यूरोपके राष्ट्र अपना शिरमौर
समझें। लेकिन आज भी जहां चर्चिल
रूसमें पहुंचकर स्टालिनसे हाथ मिलाते
हैं, वहां इंगलैंडके ग्लासेस्टरके विशप
और बेडफोर्डके ड्यूक जैसे श्वेतांग
यूरोपके प्रतिनिधि रूसपर कीचड़ उछा-
लने और जर्मनीके समान ही आक्रमण-
कारी राष्ट्र घोषित करनेमें तनिक नहीं
हिचकिचाते, यह बात क्या रूसके
दिमागमें कोई प्रतिक्रिया नहीं उत्पन्न
करती होगी ? लेकिन इन महानुभावोंकी
आलोचनाएं पढ़कर तो यही सवाल
मनमें उठता है कि 'सूप हंसे तो हंसे,
छलनी क्यों हंसे जिसके छिद्रोंकी कोई
गणना नहीं।'

कलकत्तेका भीषण विस्फोट—

गत शुक्रवारको कलकत्तेके बड़े
बाजार अंचलमें एक ऐसा भीषण विस्फोट
और अग्निकाण्ड हुआ जो इस शहरकी
दुर्घटनाओंके इतिहासमें अभूतपूर्व ही
कहा जायेगा। मुंशी सदरुद्दीनलेनका
विशाल चार तल्ला मकान जिसमें पौने दोसे
से अधिक कमरे थे, भीषण विस्फोटके
बाद बुरी तरह बैठ गया। विस्फोट इतना
भीषण था कि आसपासके मकान काफी
क्षतिग्रस्त हो गये और एक मीलके दायरेके
अन्दरके मकान हिल गये। निकटवर्ती
लोगोंने उसे बम विस्फोट और दूर
वालोंने भूकम्पका धक्का समझा। इन
पंक्तियोंके लिखी जानेके समय तक
मलवेको सफाईका काम लगातार जारी है
और ५ व्यक्तियोंकी लाशें बरामद की जा
चुकी हैं। आहतोंको तो तत्काल स्थानीय
सार्वजनिक सेवा संस्थाओं, ए० आर०
पी० और पुलिसवालों द्वारा सहायता
पहुंचायी गयी और मरहम पट्टीके बाद
उन्हें जाने दिया गया अथवा जो बुरी
तरह घायल थे, उन्हें अस्पताल पहुंचाया
गया। कलकत्तेकी आजकी आबादीको
देखते हुए १८३ कमरेवाले मकानमें दुर्घ-

२ लाख पौण्डकी ठगी विदेशोंमें

भारतीय व्यापारीको ठगनेमें कैद

लन्दन, १६ फरवरी। शाही विमान सेनाके भूतपूर्व फसर मि० जान पी० हैलेटको इङ्गलैण्डमें १२ वर्षकी कैदकी सजा एक भारतीय व्यापारीसे २ लाख पौण्ड ठगनेके जुर्ममें दी गयी है।

बताया जाता है कि मि० हैलेट २ दक्षिणपूर्वीय एशिया मोर्चेपर जब खुफिया विभागमें था उसने भारतीय धनिकसे कहा कि मैं लार्ड माउण्टबैटेन द्वारा प्रदत्त अधिकारसे काम कर रहा हूं। उसने सम्पत्ति सम्बन्धी झूठी सुविधाएं देनेके लिये उक्त रकम ठग ली थी। जो लिखा पढ़ी की गयी उसमें उसने उच्चाधिकारियोंके जाली हस्ताक्षर बना लिया।

उसपर सन्देह तब हुआ उसने अपव्यय तथा स्वदेश रुपये भेजना आरम्भ किया। जिस समय वह गिरफ्तार किया गया उसके पाससे १ लाख ३० हजार पौण्ड निकले जो ले लिये गये।

टना होनेपर सिर्फ ५ आदमी मरे, यह विश्वसनीय रिपोर्ट नहीं मालूम होती, लेकिन अभी तो छानबीन हो रही है। इसलिये तथ्यका पता आगे अच्छी तरह चल सकेगा ऐसी आशा तो करनी ही चाहिये। इसमें सन्देह नहीं कि अनेक परिवारोंके जीवन भरकी कमाई नष्ट हो गयी और बहुतोंको अपने आत्मीय जनोंसे वंचित होना पड़ा है। इनपीड़ित परिवारोंसे हम हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए एक बातकी ओर कारपोरेशन और मकान मालिकोंका ध्यान आकृष्ट करना चाहते हैं। उक्त दुर्घटनामें विस्फोट का कारण गंधक और शोरा है, जो उक्त मकानके सबसे नीचेके तल्लेके गोदाममें बोरोंमें भर कर रखे गये थे। कलकत्तेके अधिकांश पुराने मकानोंमें जमीन वाले तल्लेमें गोदाम बने हैं और उनमें मकान मालिक बिना सोचे-समझे ऐसी चीजें रखवा देते हैं जो गत शुक्रवारकी भीषण दुर्घटनाका साकारण बन सकती है कुछ मकानोंमें जहां भाड़ेके कमरोंमें परिवारवाले भड़ैत रहते हैं, बगलके कमरेमें मोमबत्ती आदिके कारखाने खोले जाते हैं, जनमें जरासी असावधानी होनेपर भी प्रायः आग लग जानेकी संभावना रहती है। मकान मालिकोंको अपने थोड़ से लाभके लिये जनताके जीवनको इस प्रकार खतरेमें कदापि नहीं डालना चाहिये और निवास स्थानवाले मकानोंमें विस्फोटक तथा आग लगने वाली चीजोंके कारखाने नहीं चलने देना चाहिये। कारपोरेशन अधिकारियोंको भी इस सम्बन्धमें बने हुए सुरक्षा सम्बन्धी कानूनोंको कड़ाईके साथ कार्यान्वित करना चाहिये, जिससे भविष्यमें ऐसी दुर्घटनाओंकी पुनरावृत्ति न हो।

प्रचारकार्य

हिन्दूमहासभाके केन्द्र स्थापित होंगे

पूना, १७ फरवरी। हिन्दू महासभाकी ओरसे प्रचार करनेके लिये विदेशोंमें केन्द्र स्थापित करनेकी तैयारी हो रही है। विदेशोंमें प्रचार केन्द्र स्थापित करनेका निश्चय महासभाकी कार्यकारिणीकी दिल्लीमें सम्पन्न बैठकमें किया गया था और महासभाके सेक्रेटरी श्री एल० बी० भोपतकरको यह कार्य भार दिया गया था।

यह भी पता चला है कि 'मराठा'के सहकारी सम्पादक श्री वी० एस० टाटाने, जो आजकल न्यूयार्कमें हैं, वहांपर महासभाका कार्यालय खोल दिया है और लेखों एवं भाषणों द्वारा प्रचार कार्य भी उन्होंने आरम्भ कर दिया है।

ऐसी आशा है कि शीघ्रही लन्दनमें भी यूरोपके हिन्दू एसोसियेशनके डा० भट्ट तथा श्री बांगड़े कार्यारम्भ कर देंगे। ए० प्रेस

भिखारीने बन्दूक छीन ली

पहरेदारोंने गोली मार दी

नयी दिल्ली, १७ फरवरी। लाल किले के बाहर एक पहरेदार द्वारा गत रात्रि एक भिखारीको गोली मार दी गयी। उसकी शिनाख्त नहीं हो सकी है लेकिन ऐसा समझा जाता है कि वह एक भिखारी था।

बताया जाता है कि भिखारी एकाएक किलेके बाहर पहरेदारके सामने उपस्थित हुआ और उसकी बन्दूक छीनकर चांदनी चौककी ओर भागा। अन्य सन्तरियोंने उसका पीछा किया और गोली मार दी गयी।

अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट आवश्यक तहकीकात कर रहे हैं। ए० प्रेस

प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता मुक्त

कराची, १७ फरवरी चूंकि सिंध सरकारने प्रतिबन्ध हटा लिये हैं कराची कांग्रेस कमेटीके एक प्रमुख सदस्य श्री घनश्याम मीरचन्दानीको जेलसे रिहा किया गया जहां आप अगस्त सन् १६४२ से नजरबन्द थे। कल उन्होंने किसी शर्तपर मुक्त होने और शर्तनामापर हस्ताक्षर करना अस्वीकार किया था। आज आपको बिला शर्त रिहा किया गया।

सिंध प्रान्तकी विभिन्न जेलोंमें इस समय १७ नजरबन्द हैं जिनमें ३ एम० एल० ए० हैं। ए० प्रेस

भारतीय हाईकमिश्नर दिल्लीमें

नयीदिल्ली, १७ फरवरी। लन्दन स्थित भारतीय हाई कमिश्नर सर सैमुएल रंगनाथन आज नयीदिल्ली पहुंच गये। ऐसा समझा गया है कि सर सैमुएल मईके अन्ततक भारतमें रहेंगे। आप भारत सरकारके विभिन्न विभागोंसे सम्पर्क रखेंगे और वर्तमान एवं युद्धोत्तर कालमें शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नपर विचार-विमर्श करेंगे। ए० प्रेस

मजिस्ट्रेटपर मामला

कैदीको अधिकसमय क्यों बंद रखा

कटक, १५ फरवरी। कल हराम-राजनीतिक मामलेमें हाईकोर्टमें फैसला सुना दिया। इस मामलेमें कहा गया कि बालाशोरके जिला मजिस्ट्रेट और पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्टने कैदियोंको उनके सजा की अवधिसे ६ महीने अधिक बन्द रखा। पटना हाईकोर्टके कटक सर्किलके डिवीजन बेंचके सामने यह मामला पेश हुआ। मि० जस्टिस चटर्जी और मि० जस्टिस बीवर के इजलासमें अपीलका मामला यह बताया गया कि २२ अभियुक्तोंको उपर्युक्त मामले में ११ सालकी सजा हुई। इनमें दोपर और धाराओंके अभियोग भी थे। इनको ५।६ वर्षकी और सजा दी गयी। हाईकोर्टमें इन दोनों अभियुक्तोंकी ओरसे अपील की गयी। वे और अभियोगोंसे बरी कर दिये गये केवल वही एक साल की सजा बहाल रही।

अब अभियुक्तोंकी वकील मि० दीन बन्धु साहूका कहना है कि गत १६-४-४३ को इन २२ व्यक्तियोंको एक सालकी सजा दी गयी। इन्हें १५-४-४४ को छूट जाना चाहिये था पर १३-१२-४४ तक कैद रखा। अन्तमें इन अपराधियोंको अपनी रिहाईके लिये हाईकोर्टके सामने दर्खास्त पेश करनी पड़ी। इसपर हाईकोर्टके जजोंने खेद प्रकट किया कि अधिक अवधि तक ये जेलमें हाईकोर्टके आफिसकी भूलसे रह गये। चूंकि हाईकोर्टके दफ्तरसे जिला मजिस्ट्रेटको कोई सूचना नहीं दी गयी थी। इसलिये इस मामलेमें जिला मजिस्ट्रेट निर्दोष समझे गये।

पर एक और फौजदारी मामलेमें जिसमें कमलाका अक्तर नायक एक अपराधी १५ दिनों तक अधिक जलमें बन्द रखा गया था। इसमें अभीजन्टका दावा है कि उपद्रवके सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट १५ दिनों तक हमें अधिक जेलमें रखा, यद्यपि जेलमें ठीक समयपर सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेटको मिल चुका था। इस मामलेमें हाईकोर्टके जजोंने मजिस्ट्रेटके इस तरहके आचरणको अदालतका अपसमझा और सब-डिवीजनल मजिस्ट्रेट पर नोटिस जारी किया कि वह बतायें कि उन्होंने अपराधीको ठीक समयपर क्यों नहीं रिहाई किया। यदि वह कोई सफाई न दे सकें तो उनपर अदालतके अपमानका मामला क्यों न चलाया जाय।

रङ्ग और जाति भेद

लन्दनस्थ भारतीयोंका प्रति...

लन्दन, १७ फरवरी। स्वराज ... तत्वावधानमें भारतीयोंकी जो सभा ... उसमें निम्नाशयका प्रस्ताव पास ... गया।

अफ्रीका तथा एशिया और ... तया दक्षिण अफ्रीकाकी जातियोंके प्रत्येक प्रकारके रङ्ग भेदकी नीतिकी तीव्र निन्दा करती है तथा दक्षिण ... कामें व्यापार तथा संपत्ति सम... प्रस्तावित कानूनका प्रतिवाद करती ... जो इससे प्रवासी भारतीयोंको नागरिक अधिकारोंसे वंचित ... योजना है।

सभा यह मांग करता है कि ... और जाति सम्बन्धी समस्त कानून ... लम्ब रद्द कर दिये जायें।

डरबन, १७ फरवरी। डर... भारतीय डाक्टरोंने, जो कि रंग ... जाति भेदकी व्यापकताके कारण संस्थाओं और सम्मेलनोंमें नहीं थे जहां उनको स्वागत न होनेका ... हो, मेडिकल एसोसियेशनकी सदस्... प्राप्त सुविधाओंका पूर्ण उपयोग ... निश्चय किया है।

डाक्टरोंकी ओरसे डा० के० मुगयने जो कि एक भारतीय महिला ... कहा कि अस्पताल सम्बन्धी सुवि... होनेके कारण अभी तक भारतीय ... को अपनी उन्नतिका मौका नहीं ... था: लेकिन मेडिकल एसोसियेश... सदस्यतासे काफी सुविधाएं प्राप्त ... जाती हैं। सदस्य होनेसे भारतीय ... विशिष्ट विद्वानोंके सम्पर्कमें आयेंगे ... भाषणोंके अतिरिक्त सामाजिक समा... में भी शामिल हो सकेंगे।

आपने और कहा कि सदस्यता ... नताके आधारपर है और कोई ... नहीं कि भारतीय उसका पूरा उ... न करें।

केवल डरबनमें ही १ दर्जन भा... चिकित्सक हैं। रायटर

रिहा और नजरबन्द

जलन्धर, १६ फरवरी। तीन वर्ष नजरबन्द रहनेके बाद सरदार सुजन सिंह गुजरात स्पेशल जेलसे रिहा कर दिये गये। आपको अपने गांव पण्डोरी निर्जनमें रहनेकी आज्ञा दी गयी है। ए०

एलिट रोज़ाना— ३, ६ और ६ बजे
अपने टिकिट कृपया अग्रिम खरीदें

मनोरंजन के सभी साधन—उद्वेग, शालीनता, आश्चर्य और रोमांचकारी अभिनयसे युक्त—वर्षका सर्वश्रेष्ठ चित्र नित नूतन अनुभवकी झांकी

'दि एडवेंचर्स आफ मार्क ट्वेन'

कलाकार :—
फ्रेडरिक मार्च-अलेक्सिस स्मिथ
* वार्नर्स की अनूठी कृति *

मूनलाइट
आज गोलीबार
मुख्यांशमें—नवीनचन्द्र, मिस मोती
स्टेजपर शानदार ड्रामा

कालिका फोन :— साउथ २३४३
आज सोमवार १९ फरवरी सन्ध्या ६ बजे गिरीश-शत-वार्षिकीके उपलक्षमें महाकवि का स्मृति पूजा व संगमर्मर मूर्ति प्रतिष्ठा साथही
विल्व मंगल
वनिक-धीरज, भिक्षुक-रंजित, साधक फनी विल्व मंगल ? राखाल बालक-तपन, चिन्ता-मलिना, पागलिनी-इन्दुबाला, थाक-बेला अहिल्या-रमा
प्रति बुधवार व बृहस्पतिवार संध्या ६॥ बजे कुमार धीरेन्द्र नारायण कृत
अचल प्रेम
टिकिटें अग्रिम खरीदिये
अभिनयके बाद ट्राम व बस मिलते हैं

सामाजिक समस्याका सुन्दर दर्शन
कीर्ति पिक्चर्स की
बारात
मुख्य में—शोभना समर्थ - हरीश
१२ वां सप्ताह आज ३, ६, ६ बजे
—गणेश—

'मां बाप' आपके दैनिक जीवनकी चित्रकथा जिसकी असंख्य लोगों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की है
सिल्वर रजत जयन्ती उत्सवके समीप पहुंचता—सनराइज कृत श्रेष्ठ सामाजिक

मां-बाप
कलाकार :
वीणा, नजीर, याकूब, दीक्षित, जगदीश, मिर्जा मुशर्रफ, कल्याणी आदि
२४ वां सप्ताह
सिटी और पैरामाउण्ट
रोजाना—३, ६ और ६ बजे
A Basanti Release

१४ वां सप्ताह !
वह असाधारण चित्र जिसने अपनी आकर्षक खूबियोंके बल दर्शकोंके दिलमें चिरस्थायी स्थान बना लिया है।
बाम्बे टाकीज कृत
नयनाभिराम छाया चित्र
ज्वार-भाटा
भूमिका—मृदुला - शमीम - दिलीप आगाजान - मुमताज अली
ज्योति रोज :— २॥, ५॥, ८॥

कलकत्ते में कुहकुहाती कदरदान कोयल
—रमोला—
(ललकारके सौजन्यसे)
जयन्त देसाई शैली
ललकार
साथमें—ईश्वरलाल - मुबारक
५ वां सप्ताह—आज ३, ६, ६ बजे
मिनर्वा
वितरक—विलिमोरिया लालजी

७४ वां सप्ताह !
किस्मत
राक्सी प्रतिदिन २, ५ व ८ बजे

नूरमहल पी० के० ... पार्क स...
रोज—३, ६ और ६ बजे।
"बांके-सांवरिया"
कलाकार—नवीनचन्द्र और ...

आज उनसे जरूर मिलिये
वह आ गये हैं—आपका इलाज करने !
दर्द दिलका नहीं—समाज के रोग का
उसमें घुसी हुई बुराइयों का—कुरीतियों का
दवा कड़वी नहीं—मीठी है।
दिल भी बहलेगा और इलाज भी हो जायगा
—मिनर्वा कृत—डा० कुमार
बलवन्त सिंह, परेश बनर्जी, खुरशीद (छोटी) संकठा प्रसाद, ललिता, नजमा, ...
आज — जी हां — आज
एम्पायर टाकी रिलीज
रोजाना ३, ६, ६ बजे
सेण्ट्रल
सीट बुक कराइये

इसके मधुर गाने आपके कानोंमें गूंजते र...
प्रेम और आनन्दका मस्ती भरा चित्र
११ वां सप्ताह ||| मुमताज शान्ति अभिनीत
बदलती दुनिया
प्रतिदिन २॥, ५॥ और ८॥ बजे
न्यू सिनेमा

बड़े नवाब साहब
चन्द्रमोहन, कुमार, बिब्बो, प्रमिला, पहाड़ी सान्याल,
कल आप नहीं आये—बेचारे नवाब साहब इन्तजार कर रहे थे
आज तो जरूर आइयेगा न !
आज जी हां, भूलियेगा नहीं ! आज
आने से पहले सीट रिजर्व करा लीजियेगा।
प्रभात रोजाना ३, ६, ६ बजे मैजेस्टिक
—रेडियण्ट रिलीज—

मित्र-राष्ट्र किधर ?

—:*:—

लेखक—प्रो० रञ्जन

विपत्ति और दुख मनुष्यकी भावना ...अधिक व्यापक और उदार बना देते हैं। ...से आती हुई सम्पत्तिको लोग दानके ...योगमें लगानेकी बात सोचने लगते हैं। ...न्तु मनुष्यकी यह उदारता उसकी स्वभाव-...प्रवृत्तिकी सूचक नहीं होती। एक ...ानी छोटेपनमें सुनी थी कि एक आदमी ...के पेड़पर चढ़ गया, मगर उतर न सका। ...ार उसने भगवानके नाम १) का प्रसाद ...ानेकी कल्पना की—हे ईश्वर मैं किसी ...ार नीचे उतर जाऊं। जब वह उतरते-

स्टालिन

...आधी दूर आ गया, तो बोला १)का ...)का तो जरूर ही बांटूंगा। ...की उस चोटीसे नीचे उतरते-उतरते ...भक्तिकी भावना भी नीचे उतरती जा ...थी। अन्तमें बिलकुल नीचे उतर कर ...अपने आप ही कहा, 'प्रसाद चाहे न ...ं पर नाम तो लेःही लूंगा।' इस छोटे ...टुकड़ेमें बड़ी गम्भीर बात छिपी है। ...की रीति ही ऐसी है। कल्पनामें हमारे ...आजसे ३-४ वर्ष पहलेका यूरोप आता ...और उसके साथ ही 'मित्र राष्ट्रों' के ऊपर ...भारतीय स्वाधीनताके कट्टर विरोधी

मि० एमरी

छाये बादलोंके घनघोर घटाटोपकी बात भी याद आती है। जीवन और मृत्यु, स्वतंत्र और परतन्त्र, हार और जीतमें उन दिनों कितना निकट संबन्ध था। इङ्गलैंड और अमेरिकाकी सारी जनता और शासन-शक्ति एक बार थर्रा उठी थी। उस समय मित्र राष्टोंको धन-जनकी आवश्यकताके साथ ही साथ एक जगतके नैतिक बलको अपने पक्षमें कर लेनेकी जरूरत भी थी, क्योंकि बिना हार्दिक उत्साहके हाड़-मांसके पुतले केवल नाचा करते हैं, विजय नहीं करते। प्रारम्भिक दिनोंकी उस निराशाके बीच जब कि नाजी आक्रमणोंकी विजय बिजलीकी गतिसे आगे

मार्शल चांग कैशक

बढ़ रही थी, मानव-समानता और सङ्गठन, सभी देशोंकी आजादी एवं रक्षाके सुन्दर-सुन्दर वायदोंसे भरी हुई मित्र राष्ट्रोंकी घोषणाएं अक्सर समाचार पत्रोंमें प्रकाशित होती थीं; लेकिन जैसे ही क्षितिजपर विजय की:आशा-किरण छिटकते दिखलायी पड़ी, उन वायदों और वचनोंको भुलाकर फिर उन्हीं साम्राज्यवादी शोषक ख्यालोंके नमूने हमारे सामने आने लगे। मि० चर्चिलने 'हम अपनी चीज अपनेपास रखेंगे' दुहराकर आशा से:लहराते हुए दिल और दिमागको एकबार फिर निर्दयतासे झकझोर डालउस वक्त तो वह परेशानी हद दर्जेतक पहुंचती नजर आने लगी, जब उनके श्रीमुखसे नीचे लिखे उद्गार प्रकट हुए थे :-"मैं बादशाहका प्रधान मन्त्री इसलिये नहीं बना कि साम्राज्यको छिन्न-भिन्न करनेवाली किसी सभाका सभापतित्व करूं।" शायद उन्हें पता नहीं होगा कि हिन्दुस्तानियोंने उनकी इस घोषणामें अङ्ग्रेजोंकी किस तुच्छ और घृणित मनोवृत्तिकी तस्वीर देखी।

आज जब हम लोग इस भयङ्कर रक्तरञ्जित युद्धके बीचसे गुजर रहे हैं; जब हमारे सामने असंख्य बलिदानों और मौतोंके करुण रूप आते जाते हैं तब हमारे विचार कुछ ऊपर उठते हैं। ऐसी दशामें पीड़ित मानव शान्ति और रक्षाकी बात सोचता है। केवल अपने लिये नहीं, वरन् सारे संसारके देशोंके लिये, जिनके आधारपर दुनियामें विश्व-

प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट

मि० चर्चिल

संघकी स्थापना हो सके। पारस्परिक समवेदनाकी यह सत्प्रेरणा हमारे हृदयोंको प्रायः उन्नत विचारोंसे भरदेती है। हम अपने स्वार्थ को एकवार तो भूल जाते हैं। नेताओंके मुख से ऐसे वाक्य निकलते हुए सुने जाते हैं—'अगर कोई जाति या देश दूसरी जाति या देशको चूसनेकी या लूटनेकी कोशिश करता है तो ऐसी जाति या देशका पतन निश्चित है।' वे यह भी अनुभव करते हैं कि किसी दूसरे देशके सुख-साधनोंकी राखपर खड़ी की गयी किसी भी राष्ट्रकी अर्थ-व्यवस्था अधिक दिनतक टिक नहीं सकती। युद्ध-पीड़ित संसार ऐसे समयमें आरामकी सांस लेना चाहता है, वह अपने सामने एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन और मेलके युगकी कल्पना करता है। परन्तु युद्ध जहां एक ओर लोगोंके ख्यालोंमें अन्तर्राष्ट्रीय भावनाका संचार करता है, वहीं वह दूसरी ओर व्यक्तिके हृदयमें देश-भक्ति या संकीर्ण :राष्ट्रीयताके विषैले कीटाणु भी पैदा करता है। इस देश-भक्तिको हम स्वार्थका ही परिष्कृतरूप कह सकते हैं और जो राजनीतिक जगतकी सबसे अधिक प्रबल और भयङ्कर मनोवृत्ति है। अतः जैसे ही जीवन और सम्पत्तिका मद दूर होता जाता है, विजय और सुलहकी घड़ियां निकट आ जाती हैं वैसे ही स्वार्थ-लोलुप मानवकी:नीच वृत्तियां फिरसे सामने आने लगती हैं। जनता और वर्गोंको राष्ट्रीयताकी यह संकीर्ण भावना बड़ी जल्दी बहा

ले जाती है। आदर्शोंसे उनके पैर उखड़ जाते हैं। और तब समता और स्वतन्त्रताकी बातें रद्दीकी टोकरीमें पड़ जाती हैं। गत महायुद्धके बाद हमें ऐसी संकुचित मनोवृत्तियोंके नज़ारे राष्ट्र-संघके मञ्चपर देखनेको खूब मिले थे, जिनमें राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा, समृद्धि, और बड़प्पनके ज़हरीले बीज छिपे थे। आज इस दुर्द्धर्ष ताण्डवके बीच कुछ वैसी ही मनोवृत्तियां फिर काम करने लग गयी हैं। मि० चर्चिलकी उदारताके रङ्गमें रंगी हुई अटलांटिक-चार्टरकी वे मधुर योजनाएं आज कहां गयीं ? प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टकी चतुर्मुखी-स्वाधीनताकी वे आकर्षक विश्व-निर्माण की कल्पनाएं कहां उड़ गयीं ? जब एक ओर मित्रराष्ट्रोंकी सेनाएं जीवन-मरणके संघर्षमें व्यस्त थीं तब दूसरी ओर 'बड़े तीन' उदारताका दान मुक्त-हस्तसे बांट रहे थे।

ऐसा कहा जाता था कि अटलांटिक-घोषणा सभी कौमों और देशोंके लिये मुक्तिका संदेश लेकर आयी थी, लेकिन मि० चर्चिलके बादके प्रसंगोंसे ऐसा प्रकट हुआ कि उसका व्यवहार ज्योंका त्यों हिन्दुस्तानपर नहीं होगा। इसी बीचमें मि० एमरीको यह कहते हुए सुना गया कि 'यह घोषणा' भारतवर्षपर भी लागू होती है। एक दूसरे मौकेपर मि० चर्चिल ऐसा कहते हुए सुने गये कि यह योजना जर्मनीपर लागू नहीं होती।' उनके इस कथनका ब्रिटिश-पार्लमेंटमें ७० समाजवादियों और कुछ

विश्वशांतिके सच्चे उपासक---जिनके सत्परामर्श ठुकरा दिये जाते हैं

मिस पर्लबक

हेनरी वालेस

दल और स्वतन्त्रदलवाले सदस्यों द्वारा ाफी विरोध किया गया। यहां तक कि न्होंने एक प्रस्ताव पेश किया, जिसमें इस ातका उल्लेख था कि इस प्रकारकी घोषणा- सदिच्छाको बहुत बड़ा धक्का पहुंचा है और सले वह आम आलोचनाकी वस्तु बन गयी है; इस कारणसे युद्धकी समाप्तिकी ावना और आगे हट गयी है तथा सने 'सुलह' की बातको और अधिक ठिन कर दिया है।

गत महायुद्धके बाद सबसे बड़ी भूल यह हुई ी कि सुलहके अन्दर क्षत-विक्षत जर्मनीको पनी आर्थिक एवं राजनीतिक स्थिति धारनेका कोई अवसर नहीं दिया गया ा। मित्रराष्ट्रोंकी भयङ्कर भूलका परिणाम ारी दुनियाको भुगतना पड़ रहा है। क्या मेत्र-राष्ट्र आज फिर उसी भूलको दुहराना ाहते हैं? क्या वे यह भूल जाते हैं क युद्ध क्षेत्रमें लड़नेवाला प्रत्येक सिपाही ड़ाईके लिये उत्सुक नहीं रहता। उसे तो ड़नेके लिये कानून द्वारा मजबूर किया ाता है। फिर ऐसी दशामें व्यक्ति-विशेषकी द लोलुप-वृत्तिका फल सारे राष्ट्रको क्यों ोगना पड़े? ऐसी दशामें इन कटु वक्तव्यों ौर घोषणाओं द्वारा 'सुलह' की आशाको ौर अधिक दूर ढकेलनेकी कोशिश की जाती । मानव-संबन्ध और राजनीतिकी यह ांग है कि पराजित देशको अव्यवस्था और रीबीके समुद्रमें निस्सहाय बहनेको न छोड़ दिया जाय। बहुत सम्भव था कि पिछली न्धिमें पराजित जर्मनीके प्रति यदि सद्- ावना और सम्मानपूर्ण व्यवहार हुआ होता ौर यदि एकबार उसे अपने हाथ और मन ो साफ करनेका मौका दिया जाता, जिससे क वह अपने अन्दर एक शान्ति-प्रिय जन- तात्मक सत्ताकी स्थापना कर सकता, तो ायद आज जर्मनीके भीतर 'हिटलर' का ाम सुननेकी बात ही न होती और न इस कपातकी आज जरूरत होती। लेकिन जो र्तें उसके सामने पेश की गयी थीं, वे इतनी पमानजनक एवं प्रतिहिंसात्मक थीं कि नके परिणामस्वरूप शीघ्र ही मित्र राष्ट्रोंके िरुद्ध जर्मनीके अन्दर एक नयी ताकत खड़ी ो गयी जो अन्यथा न होती। जिन लोगोंने पेछले युद्धके ठीक बाद जर्मनीको देखा है, नका कथन है कि उस समय जर्मनीकी ार्थिक दशा इतनी गिर गयी थी कि लोगों- ो अच्छी तरह भोजन और वस्त्रतक न िलता था। इस प्रकारकी अवस्थाके बीच, रीबीके इस नग्न-नृत्यके बीच मित्र-राष्ट्र पनी शांति और समर्थकोंको कहां पा कते थे। वहांकी इस दुरवस्थाके अन्दरसे म्पत्ति और शक्ति'का आश्वासन देनेवाले हटलरने थोड़े ही दिनोंमें अपने समर्थकोंकी तनी बड़ी संख्या प्राप्तकर ली। अगर उदा- ा पूर्वक जर्मनीकी आर्थिक कठिनाईको र करके उनमें 'जनतन्त्रात्मक भावना' के ति आदरभाव पैदा करनेका श्रेय ये मित्र- ष्ट्र ले लेते, तो शायद दुनिया आज सभ्यता- ी दौड़में कहीं अधिक आगे होती!

कुछ समय पूर्व अमेरिकाके कुछ पत्रोंने प्पणी करते हुए कहा था कि 'अटलांटिक ार्टर' मर चुकी है। मि० चर्चिलके असं- तोषजनक वक्तव्य, जनरल 'स्मट्सआदि जैसे अन्य राजनीतिज्ञोंके उपेक्षापूर्ण भाषण, अफ्रीकाका तत्कालीन पक्षपात पूर्ण विधान एवं ऐसे ही अन्य साम्राज्यवादी ख्यालोंके इजहारने हमारे इस संदेहको और अधिक मजबूत कर दिया है। इस घोर प्रतिक्रियाके परिणाम स्वरूप ही शायद मि० चर्चिलको एकबार ब्रिटिश पार्लमेंटमें फिर दुहराना पड़ा—'अटलांटिक चार्टर और उसके सिद्धा- न्त आज भी हमारे सामने उद्देश्य और लक्ष्यके रूपमें मौजूद हैं।' प्रधान मन्त्रीको यह भली प्रकार मालूम है कि पार्लमेंटके मञ्चसे कहे गये वे शब्द न तो आसानीसे भुलाये ही जा सकते हैं और न उनमें कोई परिवर्तन ही किया जा सकता है। हमें विश्वास है कि पार्लमेंटके प्रति अपने कर्तव्य- की गम्भीरता और पवित्रताको प्रधान मन्त्री भली प्रकार समझते हैं। युद्धकी समाप्तिके साथ लोग भले ही अपने आदर्शों को भूलकर अधिक व्यवहारिक बन जायं, लेकिन एक प्रधान मन्त्रीकी लोक-सभाके प्रति विश्वास और सचाईकी भावना तो ज्योंकी त्यों पवित्र रहनी चाहिये।

मानव स्वाधीनताको रौंदनेवाले हिटलर आज किंकर्तव्यविमूढ़ हैं

फिर भी यह खतरा है कि कहीं एक दूसरेसे अपने विचारोंका सामंजस्य बिठाते- बिठाते 'त्रिराष्ट्र' अपने उस जोरदार आ- श्वासनको न भूल जायं, जो कि सम्मिलित रूपसे अमेरिकाके प्रेसीडेण्ट, ग्रेट ब्रिटेनके प्रधान मन्त्री एवं सोवियटरूसके प्रधानद्वारा तेहरानसे उद्घोषित किया गया था। उसके अन्दर यह स्पष्टतया स्वीकार किया गया था कि विश्व-शांतिका दारोमदार पूर्णतया उनके और मित्रराष्ट्रोंके ऊपर है और यह शांति विश्वके अधिकसे अधिक लोगोंकी सदेच्छा- को प्राप्त करेगी। ऐसा कहते हुए उन्होंने कहा था :—

"हम ऐसे सभी छोटे बड़े राष्ट्रोंके अन्याय एवं दासताके उच्छेदनमें, अत्या- चार एवं असहिष्णुताके दूर करनेमें सक्रिय सहयोग एवं सहायता चाहेंगे।"

संयुक्त-राष्ट्र अमेरिकाकी वैदेशिक नीति- की चर्चा करते हुए इसी आश्वासनको एक- बार स्वराष्ट्र-सचिव मि० कार्डेल हलने भी अपने वक्तव्यमें दुहराया था :—"अटलां- टिक चार्टरकी प्रतिज्ञाका सम्बन्ध एक ऐसी पद्धति या प्रणालीसे है, जो सभी छोटे बड़े राष्ट्रोंको अधिकसे अधिक स्थायी शांति, अधिकसे अधिक स्वतन्त्रता प्राप्तिके अवसर एवं अधिकसे अधिक भौतिक प्रगति- की सुविधाओंका सुयोग प्रदान करेगी।"

कैसा सुयोग! कितनी गम्भीर जिम्मे- वारी! सुयोग तो अभी आनेवाला है लेकिन उस सुयोग और सुअवसरको प्रदान करनेकी जिम्मेवारी तो फीकी पड़ती नज़र आ रही है। यह जिम्मेवारी आज भी इन महा- शक्तियोंको छोटे-छोटे देशोंके सामने अपनी अपनी स्वार्थपूर्ण मांगें और शर्तें रखनेसे न रोक सकी। ईरानमें तेल-क्षेत्र प्राप्त करनेके निमित्त उठाये गये रूसके कदम इस बातके दृढ़ प्रमाण हैं। हो या न हो, परन्तु यहांसे मित्रराष्ट्रोंके उस पारस्परिक अर्थ-सम्बन्धका संकेत अवश्य मिलता है, जिसका दृश्य हमें पिछले युद्धके बाद देखनेको मिला था। यह कहना उचित ही होगा कि अटलांटिक- चार्टरके साथ ही साथ 'तेहरान' का आश्वा- सन भी मर गया। आर्थिक-सुविधाओंके बारेमें इस प्रकार रूसके ईरानमें अचानक- प्रवेशका क्या अर्थ है? क्या दक्षिण अफ्रीका रङ्गभेद और जातीयताके आधारपर पासमें किया गया विधान बन्धुत्व और न्यायोचित अधिकारका रक्षक है?

युद्धके बीच एक शांत और मंगलमय लोकके निर्माणकी सुनहली आशाओंसे लोगोंका हृदय भर रहा था। मेल और सह- योगके आधारपर अवलम्बित एक सुसम्पन्न और समृद्ध विश्वको देखनेकी उमंगें लोगोंके दिलोंको बेताब कर रही थीं, लेकिन जैसे- जैसे अन्त नजदीक आता जाता है, वे आशा- एं, वे उमंगें मृग-मरीचिकाके समान आगे हटती दिखलायी पड़ती हैं। इस बातको मि० विंडेल विल्कीने अपनी पुस्तक 'एक संसार'में बड़े जोरदार शब्दोंमें कहा था लेकिन आज भी हमारा दृढ़ विश्वास है; ऐसा विश्वास, जिसका आधार मानव विकासकी दृढ़ शिलापर खड़ा है, कि भाग्य- दौड़में हमें बाधाओं और निराशाके बीचसे विश्व-मैत्री एवं सहयोगके उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये दृढ़तासे आगे बढ़ना है। अभी सब कुछ खत्म नहीं हो गया है। राजनीतिके ज्ञाता और देशोंके कर्णधार आखिर इन्सान ही हैं, शायद वे अपने देशकी रक्षा और वृद्धिके सम्मुख ऊंचे सिद्धान्तोंको भूल जायं जिनकी प्राप्तिके लिये ही जातियां और राष्ट्र फलते फूलते हैं। एडमंडवर्कका यह कथन याद हो आता है कि आज तो यह जनताका प्रथम कर्तव्य है कि वह जहां भी मित्र-राष्ट्रोंको इंच भर भी अपने रास्तेसे हटते हुए देखे वहां अपने आलोचना रूपी अंकुशसे उन्हें सीधा करनेकी कोशिश करे। अभीसे आव- श्यकता इस बातकी है, कि इनव्यापक सिद्धांतों के आधारपर हम अपने स्थानपर लोक-मत बनाना शुरू कर दें। यदि हमारे लोक-मतमें सचाई और निर्भीकताका बल है तो इस लोक तंत्रके युगमें चन्द राजनीतिक नेता हमारे भाग्यकाफैसला नहीं कर सकते। हमारा कर्त- व्य है कि उठते बैठते अपने चारों ओर सह योग और साथीके भावोंसे भरे हुए विश्व- नागरिकताके सिद्धांतोंका प्रचार करें।

विश्व राजनीतिके क्षेत्रमें मित्र-राष्ट्रोंके दलके बीच एकही निष्पक्ष और निर्भीक व्यक्ति था—'विण्डेल-विल्की'। उनके अभावने विचार निर्माणकी एक सबल शक्तिको हमसे अलग कर दिया है। वे समय समय मित्र-राष्ट्रोंकी संकीर्ण नीतिपर अंकुश रहते थे और उनके अनुचित कार्योंकी आलो- चना स्पष्ट शब्दोंमें करते रहते थे। उसी प्रकारकी आलोचनाकी जरूरत है। वैसे ही विचारोंका प्रचार करना आज कर्तव्य है ताकि देशकी स्वार्थ सीमाके उठ अपने सिद्धांतों और उद्देश्योंके सभी सच्चे रहसके। लेकिन यह विचार-प्र केवल थोड़े व्यक्तियोंके द्वारा आगे बढ़ाया जा सकता। अभीतक लोगोंने विजयके लिये सभी प्रकारके साधन जुटा अपनेको खपाया। आज उन्हें चाहिये कि इस बातका जोरके साथ प्रचार करें असंख्य लोगोंकी लाशोंके ऊपरसे प्राप्त गयी विजयसे हमें कोई खुशी नहीं है इसके साथ संरक्षण, न्याय और उपका घूंघटमें दिये हुए साम्राज्य एवं प्रभाववा क्षेत्रोंको हड़पनेकी दूषित चालें चली रहेंगी। समय आगया है कि हम सब मि कर मित्र-राष्ट्रोंको सचेत कर दें कि नीतिका जहाज फिर उसी चट्टानकी ओर रहा है, जिससे टकराकर पिछलीबार अपने आदर्शों और उद्देश्योंको स डुबो चुके हैं। क्या इसबार भी वे हाथसे निकल जाने देंगे?

कहानी

यात्राकी तैयारी

——::०::——

(ले० —श्री ज्वालाप्रसाद ज्योतिषी, एम०ए०)

...मी, इसी अट्ठाईस दिसम्बरकी बात ...र आया। निनीके बाबा सख्त बीमार ... निनीके बाबा ?—वही, जिन्होंने ...को उसके माता-पिताकी मृत्युके पश्चात ...ड़ प्यारसे पाला था। तार पढ़ा कि ...की आंखें बरस पड़ीं—बोली, "चलो। ...बाबाजी अकेले हैं। कौन है उनके पास ? ...मेरे बाबा जी! कितना प्यार करते हैं ...!"

...ाना सचमुच जरूरी था। लेकिन निनी-... जो चौथाई दर्जन बच्चोंकी एक बटा-...है! रेलकी खट-खट, चख-चखके बीच ...ब अपनी मुसकानकी मिठास उड़ेलकर ...ी थकान मिटानेवाली पत्नीका साथ ...हीं; पर बच्चे इस भीड़ भड़क्कमके ...में, जब कि पेटकी चपेटसे मुक्ति पाने-...के हजारों भक्त आसाम फ्रण्टपर भागे ...े हैं, बड़ी परेशानीकी चीज होते हैं।

...ने कहा—लेकिन इतने बच्चोंको ले ... सम्भव न होगा। तुम्हें मालूम है ...आजकल कैसी परेशानी होती है ?

...ी परेशानी तो जिन्दगी भर है। ...के लिये उठायी गयी परेशानी भी कहीं ...नी होती है ? निनीने कहा।

...लेकिन तुम्हें मालूम है कि किस तरहकी ...नी होती है ? कल आगरा स्टेशनपर ...बा भीड़में दबकर मर गया। मैंने ...व दिया।

...निनी एक क्षण मौन थी। उसके बाद ...हा—क्या रेल विभागको यह पता ...कि हम माताएं अपने बच्चोंको नहीं ...सकतीं ? न भई! बच्चोंको छोड़कर तो ...जा सकूंगी।

...च्छा है तब मैं अकेला ही जाता हूं। ...लेकिन कौन है काकाजीका अपना ...? निनीने सोचा। उफ्, वे मुझे ...ना चाहते हैं। नहीं-नहीं जी, मैं चलूंगी ...चुन्नी और मुन्नीको छोड़कर चलूंगी ...ी तो ले चल सकूंगी न ? उसने ...के स्वरमें कहा, और इतनेपर सम-...हो गया।

...गाड़ी साढ़े तीन बजे नागपुरके लिये ...ा होती है। दो बज चुका था। डेढ़ ही ...ी देरी थी। झटपट तैयारी होने ...। साड़ियां, ब्लाउज, जम्फर, पेटीकोट, ...सेफ्टीपिन, पोमेड, घनघुना, गेंद, ...ा, न जाने क्या-क्या बटोरा जाने ...। महाराजिनको हुक्म हो गया—...ी तैयार कर दो। मेरे सूटकेसमें अलग ...पड़े जाने लगे—चार कोट, पांच ...यां, छः कुर्ते।

...कहती हूं तुम अपने प्रति बड़े कठोर ...कभी ऐसा न हुआ कि एक दर्जन ...बनवा लेते। देखो न एक भी कोट ठीक ...—निनी कह रही थी।

...हम औरतोंको सिवा बनने ठननेके और ...ा आता है ? मैंने कहा। आखिर ...ै दूल्हा बनकर जा रहा हूँ क्या ?

...्यों नहीं ? बुढ़ापेमें यह शौक भी पूरा ...ा। निनीका जवाब था। दो कपड़े ...मतिब नहीं हैं। घरसे निकले, क्या ...कितना समय लग जाय ? क्या कपड़े भी पास न हों ? और इसी बड़-बड़ाहटके बीच महाराजिनपर डांट पड़ी—देखो कहीं आलू जल न जाये। जरा पूरियोंके लिये और मौन दो। कहती हूं खस्ता सेको। क्या तुम्हें मालूम नहीं कि बाबूजीको खस्ता चीज पसन्द होती है। बूढ़ी हुई लेकिन इतना भी न जानी ?

घड़ी टिक-टिक करती दौड़ी जा रही थी। मैंने कहा—आज शायद गाड़ी घर ही निकालनेका इरादा है।

तुम्हारी गाड़ी रोज आधे घण्टा पहले छूट जाती है; और दूर काम करती हुई कहा-रिनको निनीने डांटा—अरी ओ कहारकी बची, देखती नहीं कि लिलीका काजल फैल रहा है। धुला देना उसका मुंह। अरी, बसकर, बसकर। छींट न डाल उसका मुंह। हां, अब जरा तेल डालकर कंघी कर दे उसके बालोंमें। उफ् छीले डालती हैं बेचारीकी चमड़ी। अरी कम्बख्त, जरा धीरे-धीरे। निनीने सूटकेसकी ताली बन्द करते हुए लिलीके बालोंकी ओर देखकर कहा—ठीक है री अब, ठीक है। बस कर।

मैं कहता हूं, आज हमको गाड़ी नहीं मिल सकेगी।

कैसी बात करते हो ? गाड़ी ढाई बजे ही नहीं भाग जाने वाली है तुम मर्दोंमें दूरदर्शिता नामकी तो कोई चीज होती नहीं। निनीने तानेके स्वरमें कहा।

हां, यह सब तो तुम लोगोंके इजारेकी वस्तु है। अकलकी दुनियापर तो चूड़ीवाले हाथोंका ही शासन है। मैं बोला।

क्यों नहीं—निनीने कहा। यही देखो न तुम्हें यह भी पता नहीं कि आजकल स्टेशनों-पर सड़े गेहुंओंकी पूरियां मिलती हैं। इन हलवाइयोंको किसीकी तन्दुरुस्तीका कितना ख्याल है ? वे तो लोगोंकी जानसे खेल रहे हैं। किसीका कुछ भी हो—उनकी पांचों घीमें रहे। फिर इस लिली... जानते। घरसे निकली कि ... चिल्ला-येगी। मैं हलवाईके घरका जहर खिलाकर अपनी बेटीको न मारूंगी। और हां जी, लम्बी यात्रा भी तो है। कमसे कम २४ घण्टे तो लगेंगे ही। ...दशी तो मानती नहीं है। लो यह हुई दो अदद—अपनी पेटी खटाकसे बन्द करते हुए उसने कहा।

जी, दो अदद अब और कितनी बाकी हैं। तीन बज चुके थे। मैंने नौकरको पुकारते हुए कहा—घनसुआ, अबे ओ घनसुआ! जा जरा एक तांगा तो पकड़ ला।

कहां जायेंगे बाबू जी ?

अबे जाता है कि खुफिया पुलिसका पार्ट कर रहा है। मैंने कहा। कम्बख्त! देख जल्दी कर। अच्छा-सा घोड़ा लाना। कहीं ऐसा न हो कि गाड़ी रास्तेमें ही निकल जाय।

घनसू चल पड़ा अपनी रोजसे तेज चालसे और मैंने कहा—ये नौकरके बच्चे कितने आलसी होते हैं। कमबख्तोंको फांसीपर टांग दिया जाय। मुफ्तका खाना चाहते हैं।

क्यों परेशान हो रहे हो ? जा तो रहा है बेचारा। निनीने कहा। और देखती भी हो सारा घी जला जा रहा है। बस, इसीलिये तो कहती हूं, इन नौकरोंको अलग कर दो। इनके जीमें कभी मालिकके लिये दर्द न होगा। तुम सिर काटकर इनके सामने क्यों न रख दो। तैशमें आकर कड़ाही उतारते हुए निनीने कहा।

बस करो, बस करो बहिन, तुम्हारी पूरियां। कुछ मीठा भी तैयार न कर सकी। इतनी देरमें मैं तो दस चीजें तैयार कर देती। अरे बस भी करो। वे अभी भूखे स्कूलसे आयेंगे।

तांगा द्वारपर आ लगा था। लाइन क्लीयरकी घंटी हो चुकी थी। मैंने गरजते हुए कहा—क्या बकवादोंमें उलझी हो। देखो, गाड़ी स्टेशनपर आ गयी। घनसू! सामान रखो। चुन्नी-मुन्नीको समझाये रखना। कहना अम्मा और बाबूजी तुमको खिलौने और कपड़े लेने गये हैं। शामको सिनेमा दिखा लाना। मौसीजीके घर घुमा लाना। देखो ख्यालसे रखोगे। समझ गये न ? जल्दी जल्दी सामान रखो। गदहा कहीं का। क्या खाना नहीं खाया ?

शामको खाता हूं बाबूजी!

शामको खाता हूं बाबूजी। काम करता है या बातें बनाता है। मैंने कहा। घनसुआ चुपचाप सामान लाद चुका—फलों-की पिटारी। नाश्तेका डिब्बा। निनीका श्रृंगारदान, अटेची, सूटकेस, होल्डआल और कुछ। क्या देर कर रही हो ? जल्दी चलो न। गाड़ी आ गयी है। मैंने कहा — और मैंने सुना कि निनी साड़ी बदलते-बद-लते महाराजिनसे कह रही है—जशोदा—जशोदा—मैंने कब तुझे नौकरानी माना है ? तू तो मेरी बहिन है—उस जन्मकी बहिन।

एकान्त-गीत

——:*:——

मैं अपनी बात कहूं किससे
कोई न मिला सुननेवाला।

मैं एकाकी सन्ध्या-तारा
अपना सूना संसार लिये
एकान्त डगरपर श्रांत पथिक
एकाकी जीवन-भार लिये
रे शून्य गगनके कोनेमें
मैं बादलका नन्हा टुकड़ा
आंसूका पारावार लिये
मरुथलपर अब उमड़ा-उमड़ा!

सूने सागरकी छातीपर
आकुल अंतरका ज्वार लिये
दीपक मेरा बहता जाता
अपना छोटा उपहार लिये।
मैं उजड़ी चन्दन-बगियामें
सूखी डालीपर मौन विहग
रे गान हमारा कौन सुने
सबकी अपनी है तान अलग!

मैं निर्जन वनका फूल, जिसे
कोई न मिला चुननेवाला!

तिनके-सा बहकर भी पाते
हम पार नहीं जग-जीवनका
सब अपने धुनका मतवाला
मेरा रोना, हंसना उनका
किसका होता है कौन यहां
पूछो न सखे! अनुभव तीखा
आंसूके घूंटोंको पीकर
चुपके-चुपके रोना सीखा

सुखके दिनमें जिन हाथोंसे
मेरी बस्ती आबाद हुई
दुर्दिनमें उन हाथोंसे ही
वीरान हुई बर्बाद हुई
तहतक डुबकी देकर देखी
सब स्नेह-भरी सरिता छिछली
मैं तड़प-तड़प रहता जैसे
तटपर रे मचल-मचल मछली!

सुखका ताना, दुखका बाना
कोई न मिला बुननेवाला!

इस जलते जीवनमें न मिली
जगकी शीतल-शीतल छाया
दो दिनके मेलेमें मुझको
कोई पहचान नहीं पाया
पोछेगा आंसू कौन यहां
वह तो आंखोंका पानी है
करुणाकी एक सजल कविता
कवि, तेरी राम कहानी है!

कोई दिलदार अगर मिलता
कहता उससे दिलकी बातें
तो सोनेका दिन कट जाता
कट जातीं चांदीकी रातें
कोई बेदर्दी दुनियामें
यदि मेरा अपना हो पाता
तो वह गाता मीठे-मीठे
मैं धीरे-धीरे सो जाता!

रे, गले लगाकर रो लेता
यदि मिलता सिर धुननेवाला!

—बद्रीदास 'विधुर'

क्षमा करना। मैं तुझपर योंही बिगड़ पड़ती हूं। तेरी छोटी दीदी हूं न!

मैं कब क्या कहती हूं बहिन? मेरा कौन अपना है? तुम्हीं तो हो। उन्होंने जिस दिनसे आंखें मींची है, तुम्हारी ही छायामें मुझे आश्रय मिला है। गम्भीर जशोदाकी आंखें तरल हो आयी।

दिनी कह रही थी—देख, मैं अपने दिलके टुकड़े तेरे पास छोड़ रही हूं। चुन्नी मुन्नी तेरी गोद हैं। तू ही तो सचमुच उनकी मां है। मुझसे कब उनकी सार-संभार होती है। देख, उन्हें किसी बातकी तकलीफ न हो। उसकी आंखें छलछला पड़ीं। जशोदाने कहा—फिक्र न करो दीदी। उन्हें मैं अपना ही बचा तो मानती हूं।

लिली तांगेपर जा डटी थी। उसे नागपुर देखनेका शौक था। वह कह रही थी—हम महालाज बाग देखेंगे। छेल देखेंगे—छेल। हाथीके बलाबल छेल।

जल्दी आओ भई। देरी न करो गाड़ी आनेको हुई। झुंझलाता हुआ मैं जीनेसे उतरा। इन औरतोंके साथ यात्रापर निकलना आफत मोल लेना है। मैं कह रहा था।

और मैंने देखा लिली मजेसे तांगेमें बैठी थी। वह फूल नोंच-नोंचकर फेंक रही थी। घनछआ उन्हें बगीचेसे चुनकर लाया था। वह कह रहा था—जल्दी आना लिली रानी।

और लिली कह रही थी—तुम भी तलो न घनछू काका। हम छेल देखेंगे, छेल! घड़ीमें साढ़े तीन बज रहा था। मैंने तांगेवालेसे कहा—क्यों उस्ताद पहुंचा देगा न तुम्हारा टट्टू स्टेशन तक?

कैसी बात कहते हैं सरकार—उसने कहा। जण्डेल साहबको रानीमहल दिखाने ले गया था। वही रानीमहल जिसके छज्जे पर बैठे अनारकली रोती थी तो मोतियोंका ढेर लग जाता था उसके आंसुओंसे। गढ़पैरा में जो मोतीताल है न हुजूर, वह अनारकली के आंसुओंका है। कैसी मुहब्बत थी अनारकलीके कलेजेमें?—बूढ़े उस्तादकी आंखोंमें मुहब्बतकी सुर्खी दौड़ गयी।

जण्डेल साहब बहुत खुश हुए थे हुजूर। गढ़पैराकी पहाड़ियोंपर भी मेरा अबलख हवासे बातें करता था। उन्होंने किरायेके अलावा ९) रुपये इनाममें दिये थे। लेकिन तब जमाना और था सरकार। खुराक थी तब। पुलसे स्टेशन तक मैंने इसे डाक गाड़ीके साथ दौड़ाया था हुजूर। ओह अहमद था तब—अहमद! और इसके आगे तांगेवाला मानों स्वगत ही कह रहा हो। चले गये बेटा अहमद! भरी जवानीमें चले गये। तुम्हारे अबलखको मैं पेट काटकर खिलाता हूं बेटा। तुम्हारी ही सूरत देखता हूं मैं इसमें।

और तब मानों उसकी तन्द्रा टूट गयी हो—बड़ा बुरा जमाना है यह हुजूर। अब तो मानो ये पल्टनिये घासको खा जाते हों, इतनी मंहगी हो गयी है। बूढ़ेकी आंखोंसे आंसू बह रहे थे। जिन्हें वह अपने सैकड़ों पैबन्द लगे कोटकी अस्तीनसे पोंछने का व्यर्थ प्रयास कर रहा था।

कौन था वह अहमद? बूढ़े तांगेवालेका बेटा? मैं सोच रहा था। और एक ठण्डी विश्वास निकल पड़ी मेरी छातीसे। बूढ़ा घोड़ेकी गर्दनसे लिपटकर आंसू बहा रहा था। इतनेमें ऊपरसे आवाज आयी—घनसू, सामान उतार लो। आवाज आंसुओंसे बेहद गीली थी। मैं न जा सकूंगी मुन्नी और चुन्नीको छोड़कर। चाचाजीकी तबियत? आ जाइये!

घनघन करके स्टेशनकी घण्टी बजी। गाड़ी आ गयी थी। घनसू सामान उतार रहा था। लिली मचल रही थी—दल्दी तलो। दल्दी तलो। गाली छूत दावेगी।

और बूढ़े तांगेवालेने निराश आंखें उठाकर मुझसे पूछा—तब क्या आज न जायेंगे बाबूजी।

मैं स्तब्ध खड़ा जेबमें दो गोल-गोल सिक्के टटोल रहा था। कुछ संकल्प-सा कर रहा था—कुछ हट-सा रहा था और इतनेमें भक-भक करके गाड़ी स्टेशन छोड़कर चल पड़ी।

———

राष्ट्र-भाषाका स्वरूप कैसा हो ?

श्री पुरुषोत्तम दास टण्डनके विचार

राष्ट्र-भाषाका प्रश्न हमारे सामने भारी जटिलता उपस्थित किये हुए है। इस प्रश्नपर 'मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्ना' की लोकोक्ति जोरोंसे चरितार्थ हो रही है। श्री पुरुषोत्तमदासजी टण्डन हिन्दी जगत्के महान स्तम्भ समझे जाते हैं। इस प्रश्नपर उनका क्या मत है, नीचे प्रकाशित किया जाता है।—सं०

गोरखपुर जिला हिन्दी साहित्य-
[सम्मे]लनके तृतीय अधिवेशनके सभापति पद
[से भा]षण देते हुए माननीय श्री पुरुषोत्तम
[दास] टण्डनने जनताके सामने हिन्दी भाषाके
[उज्ज्व]ल भविष्यका एक अनुपम चित्र उप-
[स्थित] किया। आपने बताया कि हिन्दी
[राष्ट्री]यताका प्रतीक है और यदि हमको अपने
[देशमें] राष्ट्रीयताका सृजन करना है तो हम
[हिन्दी]से भाग नहीं सकते।

[इ]सी नगरकी प्राचीन तथा पवित्र भूमि
[हमारे सा]मने भगवान बुद्धके उस युगका चित्र
[उपस्थित] कर रही है जब उन्होंने जनताकी भाषा
[अप]नाकर लोगों तक अपना सन्देश पहुं-
[चाया थ]ा। भाषाका प्रश्न देशों तथा जाति-
[योंके स]ामने हमेशा आता है और आता
[रहेगा।] जो जाति इस शक्तिको छोड़ देती है
[उसका] नाश हो जाता है। हिन्दीके द्वारा
[...]को नया समाज, नया संसार बनाना
[...हि]न्दीके बनते हुए सैकड़ों वर्ष बीत गये
[...] प्राकृतिक रूपसे बनी है और इसका
[स्प]ष्ट है। १६ वीं सदीमें हिन्दीका
[प्रा]रम्भ हो गया था। इसका दूसरा
[रूप] जिसका नाम उर्दू पड़ा, दक्षिणमें
[...] सदीमें शुरू हुआ। कुछ मुसलमान
[कवियों]ने भी इसी भाषामें कविता की।
[इस भा]षामें फारसी तथा अरबीके शब्दोंका
[...] था, उसे उर्दू कहते थे। ऐतिहासिक
[दृष्टिसे] देखा जाय तो इस भाषामें हिन्दीके
[शब्द ब]राबर चले आ रहे हैं। उर्दू दक्षिणसे
[दिल्ली] और फिर वहांसे लखनऊ पहुंची।
[लखनऊ]में नासिख कविने एक सिद्धान्त
[बनाय]ा, जिसके अनुसार उन्होंने हिन्दीके
[श]ब्दोंको गंवारू कहकर निकाल देनेके
[...]ाया। हिन्दी और उर्दूके झगड़ेकी
[नींव य]हीं पड़ी। मुसलमानी राज्यमें अदालती
[भाषा फ]ारसी थी। नासिखने प्रयत्न किया
[कि हिन्]दीके शब्दोंको निकालकर उर्दूको
[फा]रसीके अधिक निकट ला दें। यह
[...] देशके उत्थानके लिये कहांतक हित-
[कर है] यह भाषा विज्ञान जाननेवाले ही
[...]गे। मेरी रायमें इससे देशको बहुत
[हा]नि पहुंची और हिन्दू-मुसलमानोंकी
[...] नीव यहीं पड़ गयी।

[भा]षा जन-सेवाका एक साधन

[भाषा]का महत्व यह है कि वह जनताकी
[सेवाका] एक साधन हो। जो भाषा रूढ़िवाद
[...]ती हो और लड़ानेवाली हो उससे
[हमारा क]ोई वास्ता नहीं हो सकता। मैं
[...]को मनुष्यके जीवनके ऊपर फेंक देता
[...] मतलब मनुष्यके जीवनसे है। जो
[...]ोंकी विलासितामें फंस जाती है
[वह जनत]ाकी सेवा योग्य नहीं हो सकती।
[...] उर्दूके कवि जो भाषा प्रयोगमें
[...] उसमें विलासिता भरी थी। ऐसे
[...] वाकचातुरी तो होती है; किन्तु
[स]ाहित्य ऊंचा नहीं होता। अपने
[...]विसे हम केवल वाकचातुरीकी ही
[आशा न]हीं करते, वह तो हमें दिव्य सन्देश
[देता ह]ै। ऐसी वस्तुओंकी कल्पना करता
[जहां सू]र्य और चन्द्र भी नहीं पहुंच सकते।
[...आ]त्माकी शक्तिसे बोलता है। उस
[...खु]सरो, रसखान, रहीम खां और

मलिक मुहम्मद जायसीने वाणीका प्रयोग दूसरी निगाहसे कियाथा। इनलोगोंने भाषा में जनताकी बाणीको अपनाया। इसके बाद ही समाजमें गिरावट आया—वह गिरावट जिसके कारण अवधका दरबार पल मारते ही नष्ट हो गया। रसखान आदि ऊंचे कवि थे। उनका उद्देश्य समाजको सुधारना था। उन्होंने जो काम किया उससे मजहबका कोई सम्बन्ध नहीं था। उनकी इज्जत हिन्दू तथा मुसलमान दोनों करते थे।

राष्ट्रभाषा का स्वरूप क्या होगा ?

हमारे सामने आज बहुतसे प्रश्न हैं जिनमें एक मुख्य प्रश्न राष्ट्रभाषाका है। जब इस प्रश्नको हम सोचते हैं तो यह प्रश्न स्वतः हमारे सामने आता है कि हमारी जनताका लाभ किसमें है ? हम किस भाषाको लेकर चलें कि भारतकी जनताको सङ्गठित कर सकें। एक चिन्ता हमारे सामने यह है। एक चित्र मुसलमान भाइयोंने खड़ा किया है, जिसमें दूर देशसे प्रेमकी एक तस्वीर खड़ी की गयी है, जिसमें अरबी, फारसीके शब्दोंको लाकर इसलामी संस्कृतिके प्रति उस प्रेमको प्रदर्शित करनेका प्रयत्न किया गया है। चीन, बङ्गाल, (भारत) तुर्की आदिमें भी मुसलमान हैं; किन्तु वहांके लोग अपनी राष्ट्र भाषाका प्रयोग करते हैं। अरबी केवल धार्मिक भाषा है। उन देशोंके सामने देशका मुख्य स्थान है धर्मका या अरबीके प्रेम नहीं। यह दुर्भाग्य तो केवल हमारे देशमें ही है। यह परिस्थिति उत्तरी भारतमें नासिखने पैदा की। वहांसे सूरत बदली और अब भी बदलती जा रही है। उर्दूके हिमायती लोग यह कहते हैं कि यदि हमने अरबी और फारसीको अपनाया है तो तुमने भी तो संस्कृतको अपनाया है। यह प्रश्न महत्वका है। आल इण्डिया रेडियोने हमारे सामने तीन शब्द रखे थे जिनके सम्बन्धमें यह पूछा गया था कि इनमें किन शब्दोंका प्रयोग हिन्दीवाले करना चाहेंगे। उनमेंसे दोशब्ददिये जाते हैं। 'इस्तकबाल'और उसका पर्यायवाची'स्वागत' तथा 'एक्तशाही' और उसका पर्यायवाची 'आर्थिक'। यहां सिद्धान्तका प्रश्न उठता है कि किस सिद्धान्तको लेकर हमें राष्ट्र-भाषाका निर्माण करना है। शब्दोंके प्रयोगमें हमको यह ध्यान रखना पड़ेगा कि कौन-सा शब्द ऐसा है जिसको अधिकसे अधिक लोग समझ सकते हैं। हमारे देशमें नौ या दस जो मुख्य-मुख्य भाषाएं हैं (बोलियां नहीं) वे अधिकांशतः प्राकृतका ही अपभ्रंश रूप हैं। इस दृष्टिकोणको सामने रखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि 'इस्तकबाल' की अपेक्षा 'स्वागत' को अधिक भारतीय समझते हैं। 'आर्थिक' शब्द यद्यपि कठिन है फिर भी 'एक्तशाही' को समझनेवाले भारतीयोंकी संख्यासे 'आर्थिक' को समझनेवालोंकी संख्या कईलाख अधिक है। इस प्रकार देखनेसे हिन्दी ही भारतवर्षकी राष्ट्र-भाषा हो सकती और वह प्राकृतसे बनी हुई है तथा संस्कृतके बहुत ही निकट है। संस्कृत और प्राकृतसे हमलोग भाग नहीं सकते। हिन्दीको राष्ट्र-भाषा बनानेके लिये संस्कृतकी शरण लेनी पड़ेगी।

श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन

महाराष्ट्रका मेरा एक अनुभव है। एक बार महाराष्ट्र (पूना) में राष्ट्र-भाषा प्रचारिणी सभाकी ओरसे कुछ प्रमाण-पत्र बांटनेका अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। उस समय जो मैंने भाषण किया था, उसकी टीका करते हुए महाराष्ट्रके प्रमुख विद्वान श्रीवैशम्पायनने एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात कही थी। उस अवसरके कुछ ही दिन पूर्व कांग्रेसके दो अन्य नेताओंने पूनामें हिन्दीमें भाषण कियाथ था। उन लोगोंने जिस भाषाका प्रयोग किया था, उसमें अरबी और फारसीके शब्दोंका इतना प्रयोग हुआ था कि हिंदी सीखनेवाले महाराष्ट्रीयोंने वैशम्पायनजीसे तुरत यह आपत्ति करते हुए कहा था कि यदि राष्ट्रभाषाका स्वरूप यही है तो हम ऐसी राष्ट्रभाषा सीखनेसे बाज आये। महाराष्ट्रका यह उदाहरण स्पष्ट कहता है कि बिना संस्कृत की शरण लिये हिन्दीको हम राष्ट्रभाषा नहीं बना सकते। हमारे उर्दूके हिमायती भाई अरबीको लेकर जनताके पास नहीं जा सकते। फारसीसे हमारा बहुत कुछ काम चल सकता है। फारसी आर्योंकी भाषा थी। कुछ दिन पूर्व मैंने जेलमें अवकाशके समय फारसी का अध्ययन किया था और देखा था कि ८० प्रतिशत शब्द फारसीके संस्कृतसे ही निकले हैं। मेरी यह निश्चित धारणा है कि संस्कृत और फारसीका बड़ा सुन्दर समन्वय हो सकता है, किन्तु इसके लिये समय चाहिये। हिन्दीका इस समय जो विरोध हो रहा है उसके पीछे राजनीतिक प्रश्न है किन्तु समय बदलेगा। वह अवसर भी आयेगा, जब हमारे मुसलमान भाई भी भारतवर्षको अपना देश समझेंगे और हिन्दी का विरोध इस प्रकार नहीं करेंगे। हिन्दी राष्ट्रीयताका प्रतीक है और इसके बिना हम इस देशमें सच्ची राष्ट्रीयताका निर्माण नहीं कर सकते।

भाषाओंकी प्रांतीयतासे सावधान

भाषाओंकी प्रान्तीयतासे हमको सतर्क रहना चाहिये। कई प्रांतोंसे उदाहरणार्थ राजस्थान बुन्देलखण्ड आदिसे यह आवाज आ रही है कि शिक्षाका मध्यम मातृभाषा हो। हम इसके विरोधी कदापि नहीं हैं। किन्तु भाषाओंका इस रूपमें प्रांतीयकरण हमारे राष्ट्रको टुकड़े टुकड़े कर देगा। हमको इस प्रवृत्तिसे सतर्क रहना चाहिये। राजस्थानी तथा बुन्देलखण्डी एवं हिन्दीमें इतना अंतर नहीं कि हिन्दीकी अपेक्षा इन प्रान्तीय भाषाओंको शिक्षाका माध्यम बनानेसे बालकोंको कोई विशेष सुविधा होगी। शताब्दियोंके परिश्रमके बाद हिन्दी एकीकरण की भाषा बनी है। हिन्दी,अवधी,राजस्थानी ब्रजभाषा, हिन्दीके स्तम्भ हैं। हमारे साहित्यका निर्माण स्तम्भोंपर हुआ है। इस अवस्थातक पहुंचनेके बाद अब वह समय

(शेष १८ वें पृष्ठपर)

सिनेमा-संसार

वर्तमान फिल्मोंमें नारीका चित्रण

—:*:—

(लेखिका—श्रीमती द्रौपदीदेवी ओझा)

सिनेमा आजके युगमें विज्ञानकी वह देन है, जिसके द्वारा जहां रूस जैसे देशोंमें जीवनस्तरको उन्नत बनानेमें उसकी उपयोगिता समझी जाती है, वहां हमारे देशमें उसके द्वारा अधिकांशमें भारतीय समाजकी नैतिक हानि करके जीवनको पतनकी ओर अग्रसर करनेकी चेष्टा हो रही है।

वर्तमान फिल्मोंमें जो वातावरण दिखाया जाता है, वह पाश्चात्य सभ्यताका असफल अनुकरण मात्र होता है। फिल्म-कहानीके पात्रोंका जीवन हमारे वास्तविक भारतीय जीवनके धरातलसे ऊंचा और हमारे सांस्कृतिक वातावरण जैसा नहीं दिखलाया जाता। इससे समाजमें भारतीय संस्कृतिको हीन समझनेकी प्रवृत्तिको प्रोत्साहन मिलता है और पाश्चात्य आडम्बरपूर्ण सभ्यताका प्रचार होता है। इन फिल्मोंमें भारतीय जीवनको हमारी संस्कृतिके आदर्शोंके विरुद्ध विद्रोह करते हुए दिखलाकर पाश्चात्य जीवनके उस हल्के तथा उच्छृंखल वासनापूर्ण प्रेमको व्यक्त किया जाता है, जो समाजको नैतिकताकी दृष्टिसे हीन बनानेवाला सिद्ध हो रहा है।

वर्तमान फिल्मोंमें सबसे अधिक विशेषता भारतीय नारीके चित्रणको दी गयी है। आजकलकी एक भी फिल्म ऐसी नहीं जिसमें प्रेम-प्रदर्शनका उच्छृंखल और कुरुचिपूर्ण रूप न दिखलाया जाता हो। इन फिल्मोंमें अभिनेता और अभिनेत्रीमें प्रेमका उत्पन्न होना ऐसे ढंगसे प्रदर्शित किया जाता है, जो हमारे भारतीय समाजमें कहीं देखनेमें भी नहीं आता और जो पाश्चात्य समाजका विकृत अनुकरणमात्र होता है। हमारे समाजमें अब भी लड़के और लड़कीमें रास्ते चलते इस प्रकार प्रेम उत्पन्न नहीं हो जाता जिससे वे एक दूसरेको बिना अपने भविष्यका पूर्ण विचार किये ही जीवन-समर्पण कर दें। इसका तात्पर्य यह नहीं कि भारतीय समाजमें इस प्रकारका सम्बन्ध होना कल्पनातीत है। हमारे यहां सीता, शकुन्तला, दमयन्ती आदि अनेक प्राचीन महिलाओंके ऐसे उदाहरण हैं, जो वर्तमान समाजके लिये आदर्श रखते हैं, किन्तु उनमें इस प्रकारका उच्छृंखल प्रेम-प्रदर्शन, कुरुचिपूर्ण वासनामय वातावरण, ऊपरी आडम्बरका आकर्षण और संस्कृति हीन मनोवृत्तिका हल्कापन मिलना दुष्प्राप्य है। भारतीय समाजमें केवल बाह्य-आडम्बर, रूप और सम्पन्नताको ही नहीं देखा जाता, बल्कि वर या कन्याके गुणों, वंश, उनके जीवन तथा स्वभाव आदिका भी ध्यान रखा जाता है और इन्हें विशेषता दी जाती है।

आजकी फिल्मोंमें नारी-चित्रण ऐसे रूपमें प्रदर्शित किया जा रहा है, जिससे भारतीय समाजके बच्चे-बच्चे आज गलियोंमें प्रेमके तराने गाते हुए देखे जाते हैं। सिनेमा-अभिनेत्रियोंके चित्र केवल निम्नश्रेणीके नवयुवकों और तरुणोंके पास ही नहीं, बल्कि कालेज और हाईस्कूलोंके उन विद्यार्थियोंके पास भी पाये जाते हैं, जिनपर हमारे राष्ट्रकी भावी आशाएं अवलम्बित हैं। हमारे इन होनहार विद्यार्थियोंके जीवन-पर इन फिल्मोंका ऐसा दूषित प्रभाव पड़ रहा है कि उससे उनके जीवनका आदर्श और ध्येय ही आज खतरेमें पड़ गया है। ठीक यही दशा उन लड़कियोंकी भी हो तो आश्चर्य नहीं, जो सिनेमा देखना अपना आवश्यक कार्यक्रम समझकर उससे अपनेको प्रभावित रखती हैं।

प्रश्न यह है कि हमारे समाजको यह नैतिक क्षति पहुंचानेका जिम्मेदार कौन है और उससे बचनेके उपाय क्या हैं? यद्यपि इस नैतिक क्षतिके अधिकांशमें जिम्मेदार फिल्म-निर्माता हैं जो अपनी फिल्मोंमें भारतीय नारीके प्रेमको बाजारू प्रेमके रूपमें प्रदर्शित करके भारतीय आदर्श जीवन और भारतीय संस्कृतिको पतनकी ओर गिरानेकी चेष्टा कर रहे हैं, तथापि इस कुरुचिपूर्ण और नैतिक ह्रास करनेवाले प्रचारको होने देनेकी जिम्मेदारी हमारे समाज और देशके नेताओं और कर्णधारोंपर भी है, जो भारतीय फिल्मों द्वारा एक आदर्शहीन जीवनवाले समाजके निर्माण करनेके कुप्रयत्नको रोकने अथवा उसे आदर्श भारतीय जीवनको चित्रण करनेकी ओर प्रेरित करनेका प्रयत्न नहीं करते। इस ओर हमारे लोक-सेवकों और नेताओंका ध्यान यदि शीघ्र ही नहीं गया, तो इसमें सन्देह नहीं कि भारतीय जीवनपर इसका गहरा असर होगा और हमारी सांस्कृतिक तथा सामाजिक नींवको यह खोखला कर देनेवाला सिद्ध होगा।

वर्तमान फिल्मोंने हमारे सामाजिक जीवनमें यथेष्ट विषाक्त-वायु संचारितकी है' जिससे बचनेका केवल यही उपाय है कि देशके नेता, और नारी-समाजकी प्रभावशालिनी प्रमुख महिलाएं तथा हमारे राष्ट्रीय पत्र अपने प्रभावके द्वारा फिल्म-निर्माताओंको बाध्य करें कि वे अब उच्छृंखलतापूर्ण प्रेम-कहानियोंको छोड़कर जीवनके व्यापक हर्ष-विषाद, सुख-दुख और संघर्षके ऐसे यथार्थ चित्रोंका निर्माण कर जो आदर्शहीन और समाजकी नैतिक अवनति करनेवाले न हों। उनमें भारतीय नारीका चित्रण भारतीय संस्कृतिके [अनुकूल] हो, पाश्चात्य विषाक्त सभ्यताके अनुकरणपर नहीं, तभी उनसे हमारे समाज, संस्कृति और भावी सन्तति [का] उपकार तथा उन्नति हो सकेगी।

विज्ञानके बिना उन्नति असम्भव

—*:*:*—

(लेखक—श्री बी० ए० स्वामीनाथन)

एक वर्ष पूर्व भारतमें रायल सोसा-इटीकी पहली बैठक होनेके अवसरपर मि० [च]र्चिलने जो संदेश भेजा था, उसमें कहा [गया था] कि "विज्ञानने इस पीढ़ीको असीम [वि]नाश अथवा असीम उन्नतिके साधन [प्रदा]न कर दिये हैं। इस युद्धमें विजय हो[ने]पर हम विश्वको विनाशसे बचा लेंगे। शान्ति और मानव-हितके लिये स्थायी [वि]ज्ञानका उपयोग करनेका महान कार्य [हो] जायेगा। इस कार्यमें जाति, भाषा [के] बन्धनोंसे मुक्त विश्वके वैज्ञानिक [औ]र उत्साहपूर्ण भाग ले सकेंगे।"

तीन वर्ष पहले ब्रिटेनके रसद विभागके मन्त्रिमण्डलने १७ वर्षसे अधिक अवस्था की लड़कियोंको विज्ञानकी शिक्षा देनेके लिये एक योजना बनायी थी। चित्रमें दक्षिण वेल्सकी एक लड़की विस्फोटक पदार्थोंका उपयोग सीख रही है।

[वि]ज्ञानके जिन क्षेत्रोंका युद्धके सञ्चालन-[से] सम्बन्ध है, उनमें क्रान्तिमूलक [उन्नति] हुई है जो शान्ति होनेपर बड़ी लाभ-[दायक] सिद्ध होगी। युद्धके बाद यातायातके [क्षेत्र]में युग परिवर्तनकारी उन्नति हो[गी]। कृमि, कीट और उनके द्वारा फैलने[वाले रो]गोंके नियन्त्रणके उपाय भी बहुत [सफल] हो जायंगे। वर्षोंके युद्धमें हुई दुःखद [क्षति] और बलिदानसे हमें जो कुछ मिलेगा, [उनमें]ये कुछ उल्लेखनीय वस्तुएं हैं। पता [लगाने वा]ले रेडियो यन्त्र, इलेक्ट्रनिक, मले-[रिया]की गुणकारी औषधि एटाब्रीन और [जीव]नजनक औषधि पेनिसिलिन युद्धके [बाद] उद्योगों और मानव समाजके लिये [बड़ी] हितकारी सिद्ध होगी।

उन्नतिका भारी मूल्य

[यु]द्ध कालमें हुई वैज्ञानिक उन्नतिके विषय[में] यह नहीं भूल जाना चाहिये कि इसके [लिये भा]री मूल्य चुकाना पड़ा है। अधिकांश [आधा]रभूत अनुसन्धान कार्यको स्थगित [कर]ना पड़ा है अथवा अपर्याप्त साधनोंसे [चलाना] पड़ा है। विभिन्न देशोंके वैज्ञानिकों[के पा]रस्परिक सम्पर्कसे शान्ति कालमें ज्ञान [और] विचारको विनिमय तथा रचनात्मक विचारोंमें बड़ी सहायता मिलती थी। युद्धके कारण यह सम्पर्क असम्भव होगया है जिसमें विज्ञानकी साधारण प्रगतिमें बाधा पड़ गयी है। यह बाधा दूर करनेके लिये वाशिंगटनमें ब्रिटिश केन्द्रीय वैज्ञानिक विभाग, लन्दनमें अमेरिकन वैज्ञानिक विभाग, ब्रिटेनमें विभिन्न उपनिवेशोंके वैज्ञानिक सम्पर्क अफसर, एंग्लो सोवियट वैज्ञानिक सहयोग समिति और चीनमें ब्रिटिश परिषद्‌का वैज्ञानिक सहयोग विभाग जैसी संस्थाओंकी स्थापना की गयी है।

अमेरिकन वैज्ञानिक प्रतिभाका सबसे ताजा नमूना—अमेरिकन एम०-३६ नामक टैंक, जो भीषण गोलाबारी करता है।

१६४४ के आरम्भमें एक सोसाइटीके प्रधान सर हेनरी डेलने भारतीय विज्ञान कांग्रेस एसोसियेशनके प्रधानको भेजे गये एक सन्देशमें कहा था कि ब्रिटेनके वैज्ञानिक क्षेत्र में काम करनेवाले लोगोंके हृदयमें उसी क्षेत्र में भारतमें काम करनेवाले लोगोंके साथ सहयोग करनेकी इच्छा है। अक्तूबर और नवम्बरमें रायल सोसाइटीके निमन्त्रणपर जो भारतीय वैज्ञानिक मिशन ब्रिटेन गया था, उसे ब्रिटेनमें वैज्ञानिक, औद्योगिक और कृषि संस्थाओं, प्रमुख विश्वविद्यालयोंको अनुसन्धान प्रयोगशालाओं और महत्वपूर्ण औद्योगिक संस्थाओंके साथ लाभप्रद सम्पर्क स्थापित करनेका सुयोग प्राप्त हुआ है। दिसम्बरके अन्तमें इस मिशनने इसी उद्देश्य-से अमेरिकाके लिये प्रस्थान किया। भार-तीय वैज्ञानिकोंको ओटावामें होनेवाले ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके वैज्ञानिकोंके सम्मेलनमें उपस्थित होनेका अवसर मिला।

विज्ञान सहयोग समिति

१६४४ में ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल विज्ञान समिति द्वारा प्रकाशित रिपोर्टमें प्रकट हुआ था कि साम्राज्यके अन्तर्गत हुए अनुसन्धान की जानकारी एकत्रित एवं प्रसारित करने और प्रारम्भिक सहयोग उत्पन्न करनेके लिये अभी बहुत कुछ करना शेष है। अमेरिका, रूस, चीन और अन्य देशोंके साथ सहयोग करना भी आवश्यक हो गया है। रिपोर्टमें यह भी सिफारिश कीगयी थीकि उपनिवेशों, भारत और ब्रिटेनके प्रतिनिधियोंकी एक ब्रिटिश राष्ट्रमंडल विज्ञान सहयोग समिति लन्दनमें बनायी जानी चाहिये जो सामान्य हितोंके मामलोंमें रायल सोसाइटीसे मिल कर कार्य करे। समितिने अमेरिका तथा साम्राज्यके बाहरके अन्य देशोंके लन्दन स्थित ऐसेही प्रतिनिधियोंका सहयोग प्राप्त करनेकी भी सिफारिश की थी। न्यूजीलैंडकी वैज्ञानिक और औद्योगिक परिषद कनाडाकी राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद, दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रीय अनुसंधान बोर्डने ऐसे सहयोगका समर्थन करना स्वीकार किया है। भारत सरकारने भी लन्दन और वाशिंगटनमें ऐसे ही दफ्तर खोलनेकी योजना बनायी है। इन सब प्रयत्नोंसे शान्ति कालमें जो लाभ होगा उसे भी स्वीकार किया गया है। यह अनुभव किया जा रहा है कि वैज्ञानिक सहयोग का दफ्तर औद्योगिक दृष्टिसे आगे बढ़े हुए पाश्चात्य देशोंसे आधुनिकतम वैज्ञानिक एवं टेक्निकल ज्ञानको पूर्वके पिछड़े हुए देशों, विशेषतः भारत और चीनमें पहुंचानेमें समर्थ हो सकेगा।

अमेरिकाके प्रो० बर्लकी लेबोरेटरी, जिसमें वनस्पतियोंसे पत्थरका कोयला और पेट्रोल तैयार किया है।

टोकियोपर हमलेकी पूर्व सूचना

प्रशान्त अञ्चलमें जापान साम्राज्यको हिला देनेवाली जबर्दस्त तैयारी शुरू हो गयी है। जल मार्गकी जिस तरह नाकेबन्दी और नेकबन्दी की जा रही है उससे जापान खासपर आक्रमण करनेकी तैयारी अथवा हवाई आक्रमणोंसे लगातार बम वर्षा करके शहरोंके कारखानोंको ध्वस्त कर देनेकी पूर्व सूचना मालूम हो रही है। एडमिरल निमिजने घोषणा की है कि प्रशान्त जहाजी बेड़ाके बम वर्षक विमान टोकियो अञ्चलके सैनिक हवाई अड्डों और उद्योग स्थलों पर आक्रमण कर रहे हैं।

ब्रिटेनमें चोर बाजार

ब्रिटेनमें चोर बाजार (ब्लैक मारकेट) की गति विधिके खिलाफ पुलिसने अभी हालमें बड़ी सरगर्मी दिखायी है। इसके फलस्वरूप कुछ सनसनीखेज रहस्योंका उद्घाटन होनेवाला है जिससे कुछ भारतीयोंका भी सम्पर्क है। इस सम्बन्धमें कहा जाता है कि एक भारतीय व्यापारी कई अभियोगोंपर गिरफ्तार होकर हिरासतमें ले लिया गया था, किन्तु वह किसी तरह वहांसे निकल भागा है। ऐसा समझा जाता है कि वह ब्रिटेनसे अन्यत्र कहीं निकल गया। कहा जाता है कि यह व्यक्ति ब्रिटेनमें भारतीय राजनीतिक कार्य कलापोंमें आर्थिक सहायता दिया करता था।

क्रीमिया सम्मेलनपर चर्चिल बोलेंगे

१६ फरवरीका समाचार है कि ब्रिटेन वापस आते ही प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल ब्रिटिशपार्लमेण्टमें क्रीमिया सम्मेलनपर अपना वक्तव्य देंगे। राजनीतिक विशेषज्ञों-का मत है कि संसारकी समस्याओंपर प्रकाश डालनेवाली प्रीमियरकी यह वक्तृता, उनके द्वारा अबतक दी गयी वक्तृताओंसे, सर्वाधिक महत्वकी होगी। प्रायः दो घण्टे तक वे भाषण करेंगे, ऐसा समझा जाता है।

श्री पुरुषोत्तमदास टण्डनके विचार

(१९ वें पृष्ठसे आगे)

नहीं है कि फिर हम अरबी तथा अन्य बाहरी भाषाओंको अपनानेका प्रश्न उठायें।

लिपिका भी प्रश्न एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। राष्ट्रभाषा समितिने इस सम्बन्धमें 'टाइप' के प्रश्नोंको सामने रखकर लिपिमें कुछ परिवर्तन करनेका प्रस्ताव किया था, जिसको साहित्य सम्मेलनने भी मान लियाहै कुछ लोग 'रोमन' के पक्षमें हैं किन्तु हमारी समझमें नहीं आता कि नागरी ऐसी लिपि को छोड़कर हम और किसी लिपिपर विचार ही क्यों करें। सर आइजक पिटमैन (अंग्रेजी शार्टहैंडके आविष्कारक) ने नागरिक लिपि-के बारेमें कहा था "कि यही संसारमें सर्वांगपूर्ण लिपि है।" यही विचार सर सैयदअली बेलग्रामी, श्री शारदाचरण मित्र तथा दूसरे कतिपय विद्वानोंने भी प्रकट किया था। लिपिके विषयमें हमको रूढ़िवादकी शरण नहीं लेनी चाहिये। हिन्दीका भविष्य बहुतही उज्ज्वल है और इसको राष्ट्रभाषा बनानेके लिये यदि हमको लिपिमें कोई परिवर्तन करना पड़ता है, तो हमें हिचकना नहीं चाहिये।

संस्कृत राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती और न संस्कृतको लेकर हम जनताके सामने ही जा सकते। हमारी तो अब यह धारणा है कि संस्कृतको अब धर्मके कामोंमें भी स्थान नहीं रहेगा। धर्मका सम्बन्ध भावना और ज्ञानसे। जनतामें अपनी भावना और ज्ञान हम हिन्दीकेही द्वारा प्रकट कर सकते हैं न कि संस्कृतसे। संस्कृत इसमें हमारी सहायक बन सकती है किन्तु साधक नहीं। हमको अपने संस्कार हिन्दीमें ही करने चाहिये। इस प्रकार देखते हैं कि हिन्दी राष्ट्रीयताकी ही नहीं परन्तु धर्मकी भी प्रतीक है।

हिन्दीका राष्ट्रव्यापी प्रचार

राष्ट्रभाषाका प्रचार इस समय सारे देशमें वेगसे हो रहा है। प्रतिवर्ष सारे भारतवर्षमें कमसे कम ८० हजार व्यक्ति जिनकी मातृभाषा हिन्दी नहीं है, हिन्दी भाषा सीखरहे हैं। जिस समय मैंने राष्ट्रभाषा प्रचारकी योजना बनायी थी, मैंने स्वप्नमें भी नहीं सोचा था कि हिन्दीके लोग इस तरह अपनायेंगे। यह आशातीत उन्नति इस बातका द्योतक है कि हिन्दी ही भारतवर्ष-की राष्ट्रभाषा हो सकती है। मैं तो बड़े गर्वके साथ यह स्वप्न देखता हूं कि वह दिन दूर नहीं है, जब हिन्दी द्वारा हम देशमें सची राष्ट्रीयताका निर्माण करेंगे। जो लोग कचहरियोंमें किसी न किसी बहाने उर्दू भाषा तथा लिपिका उपयोग करते हैं, वे राष्ट्रीयताके लिये घातक हैं। ऐसे लोग जनता तथा देशके साथ विश्वासघात करते हैं। मेरा हृदय तो यह देखकर रोता है। यदि ध्यान पूर्वक देखा जाय तो वकीलोंका यह कार्य हिन्दी सीखनेवालोंको हिन्दीसे दूर ले जाता है। जनताको चाहिये कि वह वकीलोंको बाध्य करें कि वे कचहरियोंमें हिन्दीका प्रयोग करें।

चीनी और तांबेका पैसा

—:*:—

(लेखक—श्री सुबोध मिश्र)

"अधिक नहीं बाबूजी, सिर्फ एक पैसा; तांबेका पैसा, तांबेका!"

वस्तुतः वह तांबेके एक पैसेके लिये ही लोगोंके सामने हाथ पसारा करता था। भिखारी भला अशर्फीके लिये हाथ क्यों पसारने लगे?—और अशर्फी देगा भी उसे कौन?—अशर्फी लेकर वह कर भी क्या सकता है?—उसे तो चाहिये, तांबेका एक पैसा!—तांबेके एकपैसेसे ही जब वह अशर्फीके जैसा सन्तोष और सुख प्राप्त करता है तो रखाही क्या है उसके लिये आकर्षण अशर्फी में? तांबेका एक पैसा ही उसके लिये सब कुछ है।

लेकिन आज बेचारोंकी हिम्मत बैठ चुकी है।—तांबेका पैसा नहीं मिलता, वे हाथ पसारे-पसारे रह जाते हैं। वे चाहते हैं, सिर्फ एक पसा मगर उत्तर 'टका'सा मिलता है—"अबे पैसा मिलता कहां है, जो वङ्ग किये है? ला, देता है पौने सोलह आने वापस?"

टका-सा क्या, अशर्फी-साही जवाब क्यों न मिले, इससे बेचारेका क्या होता है?—उसे तो चाहिये, बस, एक पैसा!

और, तब भिखारी गहरी सांस ले लेता है—"अशर्फी-सा दुर्लभ हो गया, तांबेका पैसा!—तांबेका पैसा नहीं मिलता तो रेशनके कारण नपा-तुला होनेके कारण एक मुट्ठी अनाज भी तो नहीं देते हैं, लोग!

यह तो हुई भुखमरोंके समाजकी कहानी। इन्हें छोड़कर, चार कदम आगे बढ़िये तो पता चलता है कि कुछ ऐसे भी वर्ग हैं जिनके लिये तांबेके पैसेका अभाव क्या हुआ मानो 'बिल्लीके भाग्यसे छींका टूटा' वाली कहावत चरितार्थ हो गयी और उन्हें तांबेका एक पैसा अशर्फीका फल प्रदान कर रहा है। अर्थात् उनके लिये तांबेका एक पैसा बनाम अशर्फी है आज!

एक ताजी घटना है—एक पानवाला दियासलाईका दाम एक आने लेनेके कारण गिरफ्तार हो गया। कण्ट्रोल-रेटके अनुसार उसे तीन पैसेपर ही सन्तोष करना चाहिये था। उसे कड़ीसजा होगी। और बगलका एक दूकानदार मुझे यह कहता हुआ मिला कि, 'बेटा नाचने ही नहीं जानता था तो आंगन टेढ़ा न होगा!' हम तो कण्ट्रोल रेटकी दुहाई भी देते हैं और फी दियासलाई इकन्नी भी लेते हैं। ग्राहकके सामने सलाई फेंककर ठाठ से कहते हैं, तीन पैसे!—और तांबेके पैसेके अभावमें, बाबूजी चुपचाप इकन्नी रखकर रास्ता नापते हैं। कोई इकन्नीके फिरते एक पैसेका सिगरेट मांग बैठते हैं तो कह देता हूं कि एक पैसावाला सिगरेट तो है नहीं मेरे पास! और बस, इस तरह रोज, चार-छः आने मुफ्तमें बन आते हैं। सांप भी मर जाता है और लाठी भी दुरुस्त रह जाती है।

*　　*　　*

चीनी

प्रायः सभी जगह सरकारी नियंत्रण विभागकी ओरसे चीनी रजिस्ट्रीशुदा कर दी गयी है। इस व्यवस्थासे जो कोई भी प्रान्त शेष रह गया है, वहां भी चीनीके लिये शीघ्र ही कार्डकी व्यवस्था होनेवाली है। चींटीको चीनी खिलाकर स्वर्गका रास्ता साफ करने का समय अब नहीं रहा। अबतो यह चिन्ता रहती है कि अपने लिये चायमें चीनी एक चम्मच कमही सही; जलखावेकी रोटीमें बच्चे नहीं मानेंगे। सवेरेही घरमें रोना-धोना मच जायेगा। सो, आज लोग कैश-बाक्समें ताला लगानेसे भी अधिक चीनीके डब्बेको रखनेमें सतर्क रहने लगे हैं। रजिस्ट्रीशुदाहो जानेके कारण चीनीमें ठसक भी कम नहीं आयी है। और गुड़ जो देहाती चीजके नामसे युग-युगसे उपेक्षित था, आज खासा 'पोपुलर' हो रहा है। उसे बड़े-बड़े होटलों और पार्टियों में शुद्ध-स्वदेशी-पेय-चायको अपमानित या सम्मानित करनेका स्वर्णावसर प्राप्त हुआ है।

चीनीको लेकर बाजारमें अन्धेर भी तो खूब मचा हुआ था जहां चार आने सेरमें कोई पूछ नहीं होती थी अब एक रुपया सेर देनेपर भी छंटाक भरका दर्शन, ब्रह्म दर्शन समझिये।

और 'हाय चीनी' हाय चीनीकी इस बहती गंगामें चीनी चोरोंने पैठ-पैठकर मन वांछित फल पाया। तीनकी लागत और पूरे तेरहका मुनाफा। फलतः रेशनकी व्यवस्था हुई। कार्ड दिखलाइये तब, चीनी मिलेगी। सो भी रोज नहीं, एक एक निश्चित तिथि पर। और वह तिथि त्योहारकी तिथिसे भी अधिक आकर्षक और स्मरणीय होने लग गयी है।

चीनीकी रेशन व्यवस्थाका अर्थ यह हुआ कि लोगोंको आवश्यकताभर चीनी मिलती रहे और चीनी चोरकी दाल गलने न पाये। लेकिन दाल गलानेवाले भी कोई मामूली उस्ताद ठहरे नहीं, चोर बाजारमें अब भी चीनी बिकही जाया करती है। फर्क इतनाही हुआ है कि कार्डकी वजहसे इस बिक्रीके सुहागमें थोड़ी उदासी आ गयी है। लेकिन इससे क्या होता है बहती गंगामें जो कुछ भी हाथ लग जाये वही बहुत है

चीनीके इस चोर-बाजारके खरीददार विशेषतया हलवाईही होते हैं। वे हलवाई भी होते हैं और सेठजीके पास पहुंचते समय उनकी सूरत भी हलवाई-सी ही होती है।

व्यवस्था होनेके पूर्व जब लोगोंके घरके चीनीके माहवार खर्चका-जोखा तैयार किया जाने लगा तो कुछ लोगोंने मतलबही नहीं समझा फलतः कुछका कुछ लिखाया और कुछ लोगोंने अपनी आवश्यकता दूनी कर दी। बताये गये आंकड़ोंके अनुसारही लोगों को चीनीका कार्ड मिला। रोज-रोज खरीद का सवाल जाता रहा। कार्डके अनुसार हमें जो चीनीदी गई उसके लिये यह आवश्यक हो गया कि हम एक महीनेकी कुल चीनी एक मुश्त ले लें या मुश्तको दो किश्तमें बांट-कर पखवारेके हिसाबसे खरीदें। चीनीके कितनेही नम्बरवार सेंटर खोले गये और फी सेंटरमें जितने कार्ड पड़े उसके अनुसार उस सेंटरके दुकानदारको मिली।

अब मामला यह हुआ कि कार्डमें ७५ प्रतिशत मध्य वित्तवाले महीनेके पहले हफ्तेतक ही बाबू बने हैं। मुश्किलसे सात तारीख होते तनखाह साफ और शेष तीन सप्ताह भींगी बिल्ली?

पहले कभी एक पैसे, कभी दो पैसे कभी एक आने—जब जैसी जरूरत पैसोंकी लगमता होती थी—चीनी जाती थी और काम चल जाया करता मगर अब, हालांकि लाभ हमाराही है, एक मुश्त पैसा निकालना हमारे कुछ टेढ़ी खीरसी बातहो गया है। हम पखवारे राम भरोसेपर, आठ स्थानपर चार सेर चीनी लेकर चले पन्द्रह तारीख तक फिर न पैसा और न हम चीनी सेंटरका मुंह देखते हैं, इसलियेचार सेर चीनी मजेमे दूकान निकल आयी।

इस तरह कार्डवालोंमें ३० व्यक्ति मुश्त खरीद व्यवस्थाको लेकर गई आवश्यकताको भी आधे आधक हैं। शेषमें १० ऐसे हैं जो अपनी आव को बढ़ाकर कार्डमें आंकड़ा बनवाने एक बार एक मुश्त चीनी खरीद ले फिर अगले महीनेकी उनकी जरूरत पड़ती और दुकानदारको चीनीकी निकल आती है।

नोटिस

२३ मौजा (१८ भागलपु अन्तर्गत बनगांव और किशनगञ्ज गञ्ज थानामें और १ पूर्णिया जिला घुरना थानामें और ४ मुंगेर जिला परिवयारपुर थानामें) जो नौ आ आरी वार्ड्स् स्टेटका है बिक्री ग्राहकोंको सूचित किया जाता है अपना २ डाक (ऑफर) जनाब डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट साहेब, सहरसा लिखकर २८ फरवरी १९४५ या उ भेजें। विशेष विवरणके लिए पत्र व्यवहार करें :—

हस्ताक्षर—
मैनेजर

नो: आना बबआ
स्टेट

केंद्रीय व्यवस्थापिका सभा

———:०::०:———

असेम्बलीमें नया रेलवे बजट पेश—कई करोड़की बचत—यात्री और माल भाड़ेमें कोई वृद्धि नहीं—अमेरिकामें भारत विरोधी प्रचार—भारत रक्षा कानूनके अन्तर्गत १ लाख २० हजार आदमी बन्दी बनाये गये।

सोमवारकी बैठक

आज केन्द्रीय असेम्बलीमें बिहियाके ...स पंजाब मेल दुर्घटनाकी गूंज सुनायी ...ी। श्री टी० एस० ए० चेट्टियरने पूछा कि ...या यह ठीक है कि रेलवे जलपान गृहके ...र्मचारियोंने सम्माननीय असैनिक यात्रियों ...की भी उस समयतक पूछताछ नहीं की ...क सैनिकोंकी खातिरदारी समाप्त नहीं ...ो गयी और जितनी जल्दी यात्रियोंको ...हायता प्राप्त होनी चाहिये थी, उससे बहुत ...धिक देरसे उनको सहायता पहुंचायी गयी। ...त्तर देते हुए सर एडवर्ड बेंथलने कहा कि ...रकारकी ओरसे डाक और तार विभागके ...स्पेक्टरने इस सम्बन्धमें जो जांच पड़ताल ...की है उससे मालूम हुआ है कि दोनों ही ...भियोग जो अधिकारियोंपर लगाये गये हैं, ...लत है। एक दूसरे प्रश्नके उत्तरमें सर ...डवर्डने कहा कि कराचीके मेयर श्री सिधवा ...का कथन है कि मुझे रिलीफ ट्रेनसे जलपान ...का यह स्पष्ट बता रहा है कि केवल ...सैनिकोंको चायपानी सप्लाई किया गया ...गलत है।

बुधवारके प्रश्नोत्तर

आज सुबह युद्धमन्त्री श्री सी० एम० ...त्रिवेदीने एक लिखित उत्तरमें राष्ट्रीय युद्ध ...मोर्चा सम्बन्धी व्ययका उल्लेख करते हुए ...बताया कि १९४२-४३ में २४ लाख ७२ ...हजार (६७) तथा १९४३-४४ में ४४ लाख ४ ...हजार (२६८) व्यय हुआ। भारतीय महिला ...आक्जिलियरी कोरमें १० हजार ४६ युव...तियां भर्ती हुई हैं, जिनमें १ हजार ४११ ...भारतीय, २ हजार २१० ब्रिटिश, २ हजार ...९ एंग्लो इण्डियन और २ हजार ७९ ...भारतीय ईसाई हैं।

गृह सदस्य सर फ्रेन्सिस मुडीने कहा कि ...सरकारको विभिन्न प्रान्तोंमें नजरबन्द ...ढाकाके कुछ सदस्योंकी संख्याके ...सम्बन्धमें कोई खबर नहीं है। केन्द्रीय सरकार ...के आदेशानुसार नजरबन्द ९ व्यक्ति फार्वर्ड ...ब्लाकके सदस्य हैं जिनमेंसे किसीके परिवार ...को भत्ता नहीं दिया जाता है। छमाही जांच ...के परिणामस्वरूप उनमेंसे एक आदमी रिहा ...हुआ है। सरदार शार्दूल सिंह कवीश्वर ...अन्य नजरबन्दोंके साथ धर्मशाला सब-जेल ...के स्पेशल वार्डमें रखे गये हैं जिसमें तीन ...कमरे और एक रसोई घर है। उनका स्वास्थ्य ...अच्छा है। केवल बायें पैरमें कुछ चोट है। ...भर्ती होनेके बाद उनका वजन १४ ...पौंड घट गया है। गत २९ जनवरीको एक ...सिविल सर्जनने उनकी जांच की। पुलिस ...अस्पतालका सब-असिस्टेण्ट सर्जन रोज उनकी ...जांच करता है। पिछले दिसम्बर महीनेमें ...उनके मामलेपर विचार कर नजरबन्दीके ...आदेशकी सूचना दी गयी।

भारत रक्षा कानूनके अन्तर्गत सभी ...में फांसीकी सजा पाये हुए बन्दियोंकी ...संख्याके सम्बन्धमें श्री अविनाश लिंगम् ...चेट्टीके एक प्रश्नके उत्तरमें गृह सदस्यने ...कहा कि युद्धकालमें आंकड़े एकत्र करनेके ...लिए परिश्रम और अन्यान्य तरहका प्रयत्न ...उचित नहीं होगा। युद्धारम्भके बादसे अब ...तक भारत रक्षा कानूनके अन्तर्गत १ लाख २० हजार ४२६ व्यक्ति दण्डित किये गये हैं। गृह सदस्यने मि० अब्दुल कयूमको बताया कि १ फरवरी तक केन्द्रीय सरकारके प्रतिबन्ध और नजरबन्दी आर्डरके अनुसार ५६ व्यक्ति नजरबन्द किये गये हैं जिनमेंसे नवम्बर महीनेसे अब तक ९ रिहा हुए हैं।

एक दूसरे प्रश्नके उत्तरमें होम मेम्बरने कहा कि १९४२-४३ और ४४में भारतकी नागरिक आबादीके साथ अपराध करनेके अभियोगमें १२९ अमेरिकनोंपर फौजी अदालतमें मामले चलाये गये और १०४को दंडित किया गया। बाकी २५ निर्दोष साबित हुए। एक दूसरे प्रश्नके उत्तरमें उन्होंने कहा कि इनकी पेशी फौजी अदालतमें हुई और भारत सरकारके प्रतिनिधि मामलेकी निगरानी करते थे।

सूचना और ब्राडकास्टिङ्ग विभागके सदस्य सर सुलतान अहमदने कहा कि भारत सरकार रूसमें 'इंडियन क्रानिकल, और दुनिया, तथा 'मीजान न्यूजलेटर' कोरूसी संस्करण प्रकाशित कराती है। चीनमें 'इंडिया नामक पत्रिका प्रकाशित होती है। इंडिया १९४४ और 'मीजान न्यूजलेटर' की भी प्रतियां वितरित की जाती हैं।

युद्ध विभागके मंत्री श्री त्रिवेदीने एक प्रश्नका उत्तर देते हुए हाउसको सूचित किया कि लगभग १ लाख १२ हजार ४५० असैनिक व्यक्ति युद्धके प्रारंभसे गत ३१ दिसम्बर तक हिन्दुस्तानसे बाहर ले जाये गये जिनमें लगभग ४४ हजार ५ सौ अब भी विदेशोंमें कार्यकर रहे हैं। बाकी या तो वापस आये या घायल हुए।

श्री के० सी० नियोगीके यह प्रश्न करनेपर कि क्या बर्माके उस हिस्सेके नागरिकोंके लिये जहां पुनः अधिकार स्थापित हो रहा है, हिन्दुस्तानसे खाद्य सामग्री तथा वस्त्रादि जीवनोपयोगी सामान दिये जायंगे, युद्धमंत्री श्री त्रिवेदीने एक लिखित उत्तरमें बताया कि:भारत सरकार उन सामानोंको छोड़कर जो सिर्फ हिन्दुस्तानमें ही पैदा होते हैं औरोंके सम्बन्धमें बर्माके नागरिकोंको सहायता पहुंचानेकी नीतिसे काम लेना नहीं चाहती। यदि ऐसी आवश्यकता आ पड़ेगी कि हिन्दुस्तानके सिवा और चारा नहीं तब भारत सरकारकी मंजूरीसे वहां वालोंको मदद पहुंचायी जायेगी, लेकिन साथही हमारा ध्येय रहेगा कि हिन्दुस्तानको बदलेमें दूसरी चीजोंकी सहायता मिल सके।

श्री चेट्टियरके प्रश्नका जवाब देते हुएअर्थ सदस्यने ब्रेटनवुडके विश्व मुद्रा कोष संबंधी प्रस्तावका जिक्र करते हुए कहा कि अमेरिका और ब्रिटेनकी व्यवस्था परिषदों द्वारा इस पर विचार होनेके पूर्व किसी निश्चयपर पहुंचना ठीक नहीं। यदि इन दोनों देशोंने इसे मंजूर कर लिया तो हाउसको हिन्दुस्तान द्वारा इस अन्तर्राष्ट्रीय स्वीकृतिके मानने न माननेके प्रश्नपर बहस करनेका मौका अवश्य दिया जायगा।

रेलवे बजट पेश

बृहस्पतिवारकी केन्द्रीय असेम्बलीकी बैठकमें पेश करते हुए युद्ध यातायातके सदस्य सर एडवर्ड बेंथलने कहा कि रेलवेके वर्तमान यात्री भाड़े और मालके भाड़ेकी दरमें वृद्धि करनेका विचार नहीं है। १९४४-४५ में रेलवे बजटमें २ अरब १४ करोड़ ३० लाखकी आय और १ अरब ४७ करोड़ ४९ लाखके व्ययकी आशा की जाती है। इस प्रकार ६६ करोड़की बचतमेंसे २४ करोड़ रुपया युद्धकालमें इंजिनों, मालगाड़ीके डब्बों और मुसाफिर गाड़ियोंके अत्यधिक खर्चको कम करनेमें लगाया जायगा। इस प्रकार वास्तविक बचत ४२ करोड़ ८१ लाख रुपयेकी होगी।

आगामी वर्षके आनुमानिक बजटमें २ अरब २० करोड़की आय और १ अरब ५९ करोड़ ८७ लाख व्ययका अनुमान है।

सर एडवर्ड बेंथलने कहा कि जैसा कि पहले घोषित किया गया था कि एक बन्दरगाहसे दूसरे बन्दरगाहको ले जानेवाले माल के भाड़ेकी दामें १ फरवरीसे वृद्धि की जायेगी, उसके अलावा रेलवेके भाड़ेकी दरमें आम तौरपर कोई वृद्धि करनेका निश्चय नहीं किया गया है। एक बन्दरगाहसे दूसरे बन्दरगाहको भेजे जानेवाले मालके भाड़ेमें जो वृद्धि की गयी है, यह विशुद्ध युद्धकालीन कार्यवाही है और इसे इसलिये कार्यान्वित किया गया है, ताकि जहाजोंसे भेजी जानेवाली चीजोंको रेलसेन भेजा जाय औरवर्तमान सङ्कटकालमें यातायातके साधनोंका उपयुक्त उपयोग किया जाय। इसलिये रेलवेके माल भाड़ेकी दरमें जो यह वृद्धि की गयी है, उसका मंतव्य यदि पूरा हो गया तोयह मानना पड़ेगा कि रेलवेकी आयमें वृद्धिमेंके बजाय कमी हो जायगी।

युद्धमें रेलवेकी सेवाओंका उल्लेख करते हुए सर एडवर्ड बेंथलने कहा है कि सैनिक कार्यवाहियोंके सम्बन्धमें सेनाधिकारियोंकी मांगें सन्तोषजनक ढङ्गसे पूरी की गयी हैं। आसाम मोर्चेपर पहुंचनेके लिये जो कार्यक्रम तैयार किया गया था, उसमें रेलवे निर्धारित लक्ष्यसे बहुत आगे बढ़ गयी है। युद्धकालमें हवाई अड्डों तक पहुंचनेके लिये नयी साइड लाइनें भी काफी लम्बाईमें खोली गयी हैं। सैनिक कार्यके लिये कुल १४०० मील लम्बी नयी लाइनें खोली गयी हैं, जिनमें एयरोड्रोमोंमें पहुंचनेके लिये ७० मील स्थायी और १६३ मील अस्थायी तौरपर बनायी गयी है। असैनिक नागरिकोंकी आवश्यकताएं—जैसे खाद्यान्न चीनी, वस्त्र आदि का आवागमन भी सफलतापूर्वक जारी रखा गया है। जहां तक खाद्यान्नके आमदरफ्तका सवाल है रेलवेका दावा है कि १९४५ में रेलवेके कारण किसीको अपनी आवश्यकता ओंसे वंचित नहीं होना पड़ा है।

अत्यधिक भीड़-भड़क्कवाले अंचलोंमें सरकार रेलवे कोआर्डिनेशन (मोटर बसों और लारियों) की व्यवस्था करनेवाली है। युद्धोत्तर रेलवेकी योजनापर प्रकाश डालते हुए सर एडवर्डने कहा कि अब भारतीय रेलवे करीब-करीब सोलह आने भारतीयों अथवा एंग्लो-इण्डियनोंके अधिकारमें हैं। ये भारतकी ऐसी पूंजी हैं, जिसके लिये उन्हें गर्व होना चाहिये लेकिन भूतकालका अनुभव यह बतलाता है कि हमें रेलवेके आर्थिक प्रश्नोंको हल करनेमें विशेष सतर्कताकी आवश्यकता है।

अधिक खर्च और अधिक कष्ट

रेलवे बजटपर टीका-टीप्पणी करते हुए श्री के० सी० नियोगीने कहा कि जहांतक रेलसे यात्राका सम्बन्ध है, रेलोंकी भूतकालीन अवस्थामें कोई परिवर्तन नहीं, वर्तमानमें असैनिक यात्रियोंकी पूछ होनेकी कोई सम्भावना नहीं और भविष्यपर हमारी आंखें लगी हुई हैं।

श्री जमनादास मेहताने कहा कि रेलवे बजट बतलाता है कि रेलयात्रामें अधिक खर्च करो और अधिक कष्ट झेलनेके लिये तैयार रहो।

प्रो०एन० जी० रङ्गाने कहा कि मुझे ऐसा लगता है कि रेलवे बजट सैनिक बजटका एक बड़ा हुआ भाग मात्र है। सरकारके सैनिक बजटकी कई मदें रेलवे बजटके रूपमें प्रकट हैं।

अमेरिकामें विरोधी प्रचार

सरदार मङ्गल सिंहने परराष्ट्र विभागके मन्त्रीसे पूछा कि क्या अमेरिकामें भारत राष्ट्रीय आन्दोलनके विरुद्ध प्रचार करनेके निमित्त ब्रिटिश प्रचार यन्त्रके अलावा लाखों रुपये खर्च किये गये हैं और क्या अमेरिकामें भारतके एजेण्ट जेनरल यहांसे जानेवाले भारतीय यात्रियों और छात्रोंकी गतिविधि और कार्योंकी देखरेख करनेमें ही अधिक दिलचस्पी लेते हैं, उनको मदद करनेमें नहीं।

सर ओलाफ कैरोने नकारात्मक उत्तर देते हुए कहा कि एजेण्ट जेनरलके यहांसे जो सूचनाएं जारी की जाती हैं वे तथ्यपर आधारित होती हैं। जो वक्तव्य यहां प्रकाशित होते हैं, वे अमेरिकामें एक साथ ही या पहले कापी भेजकर प्रकाशित किये जाते हैं। प्रकाशनके सम्बन्धमें एजेण्ट जेनरलको अपना व्यक्तिगत विचार करनेका अधिकार नहीं है।

अब्दुल कयूमने पूछा कि क्या यह सच है कि वहां प्रचार करनेके लिये प्रतिवर्ष २९ लाख रुपया खर्च किया जाता है। सर ओलाफने वर्तमान वर्षका आंकड़ा ४ लाख ५१ हजार २४५ बताया। एक दूसरे प्रश्नके उत्तरमें सर ओलाफने कहा कि एजेण्ट जेनरलने अमेरिकामें कोई ऐसी चीज नहीं प्रकाशित करायी, जो भारतमें न हुई है।

———

हम जापानको कुचलदें

बोस्टनमें प्रेस प्रतिनिधियोंके मुलाकात करनेपर एक वक्तव्य देते हुए श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडितने कहा—यदि भारतको स्वतंत्र होनेका आश्वासन दे दिया जाय और १८ हजार जेलवासी मुक्तकर दिये जांय तो हम अपनी सारी शक्ति जापानको कुचलनेमें लगा देंगे। अपनेको सभ्य कहनेवाले अंग्रेजोंपर हमें आश्चर्य होता है। उस प्रशांत सम्मेलन क्या मूल्य हो सकता है जबतक भारत स्वतंत्र न हो और उसकी स्वतंत्रताका प्रश्न हल नहो जाय।

गाँवोंमें लौट चलो

कस्तूरबाकी निधन तिथिके दिन कार्यकर्त्ताओंको आदेश देते हुए महात्मा गांधीने कहा—आप गावोंकी ओर लौट चलें और सेवककी तरह गांव वालोंकी सेवा करें। गांवमें सबसे पहले आप सफाईका काम करें। अहम भावके साथ आप गांवोंमें न जांय बल्कि उन्नत ज्ञान और शुद्ध हृदयसे वहां जांय तभी आपने यहां जो कुछ भी ज्ञान प्राप्त किया है उसका वहां अक्षरशः प्रयोगकर सकेंगे। यदि अभीतक आपने अपनी आत्माको उन्नत नहीं बनाया है तो ज्ञानार्जनकी लालसा व्यर्थ है। आत्मोन्नतिके बिना आप गांवोंके लिये उपयुक्त नहीं हो सकते। क्योंकि वहां हमारी देवितुल्या मा और बहनें निवास करती हैं।

कंधेसे कंधाभिड़ा दो

क्रीमिया कांफ्रेंससे लौटते मि० चर्चिलने एथेंसकी २० हजार जनताके सामने भाषण देते हुए कहा कि- आज हम महान दिवसके बीच गुजर रहे हैं। ये दिन ऐसे हैं जिसका प्रभात स्वर्गीय प्रकाश लेकर आता है और अन्धकार मुंह छिपाये फिर रहा है। ऐसे समय आपके सामने आपके देशका भविष्य खुला पड़ा है। एथेंसमें हमारे और आपके बीचमें हुई लड़ाईसे संसारमें गलतफहमियां फैल चुकी हैं क्योंकि लड़ाईके कारणोंका गलत कारण दोनों तरफसे बतलाया गया है। अब हमारे और आपके बीचका रास्ता साफ हो गया है। अब हमें साथ साथ विनय और न्यायकी चोटीपर शान्तिका झंडा फहराना है।

सुझाव नहीं बंदूक

युद्धोत्तर कालकी समस्याओंपर विचार करते हुए इंगलैंडके वयोवृद्ध लेखक बर्नार्ड शा लिखते हैं—युद्ध उत्पत्तिका पिता है। मनुष्य तो पशुकी संतान हैं अतएव अन्तिम निर्णयके लिये उसे युद्धका सहारा लेनाही पड़ेगा। इस युद्धने यह प्रमाणितकर दिया है कि जो काम सैकड़ों सालके विचारसे भी नहीं किया जा सकता था उसे इस समय तत्क्षण किया जा रहा है। इसका प्रधान कारण है? तुम मनुष्यकी गर्दनपर तलवार रख दो फिर देखो कि वह क्या क्याकर सकता है।

जीवनका मूल आधार

कलचरल इन्सटीच्यूटके सामने भाषण देते हुए स्वामी सरवनानन्दने कहा—एकताकी दृढ़ भित्ति आनन्द परही खड़ीकी गयी है। दैविक दिमागकी कृति संगीत और चित्रसे

कौन क्या कहता है

सारी दुनियां आज भी उसी रूपमें प्रभावित है। हम जानते हैं कि एकताकी आन्तरिक दृढ़ताका प्रदर्शन भिन्न भिन्न रूपोंमें किया गया है। चित्रों और रंगों द्वारा एकताकी स्थापनाका जो प्रयत्न किया गया है वह कलाकारोंकी मस्तिष्ककी खूबी है। चित्र हमारे हृदयकी कर्मठताको सीधे स्पर्श करते हैं और हमें जीवन और एकताकी झांकी करा देते हैं।

जापानसे सावधान

न्यूयार्कके स्टेट डिपार्टमेंटमें जापानियोंकी गतिविधिपर दृष्टि रखनेवाले प्रधान मि० अर्ल डिकोवरने अपने एक भाषणमें कहा कि जैसे जैसे प्रशांतमें हमारी स्थिति सुदृढ़ होती जाती है वैसे वैसे इस बातकी सम्भावनाभी बढ़ती जा रही है कि अपने अंग भंग होनेवाले साम्राज्यके रक्षार्थ जापानी हमारे सामने संधिकी शर्तें रखें। किन्तु हमें याद रखना चाहिये हम तबतक जापानके विरुद्ध होनेवाले युद्धको समाप्त नहींकर सकते जबतक हम जापानकी सामरिक शक्तिको इस बुरी तरह नष्ट न कर डालें कि वह फिरसे पनप न सकें और भविष्यसे निश्चिंत न हो जाय।

पाकिस्तानकी गलत मांग है

एसोसियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिको एक भेंटमें सर हरीसिंह गौड़ने कहा कि पाकिस्तान सम्बन्धी मुसलमानोंकी मांग पूर्णतः अवैधानिक है। मुस्लिम भारत या पाकिस्तानको उन लोगोंने पवित्र स्थान समझा है और शेषको अपवित्र स्थान। हिन्दू मुसलिम समस्याके समाधानके विषयमें आपने कहा कि कहीं भी किसी भी खास वर्ग या जातिका चुनाव नहीं होना चाहिये। संयुक्त निर्वाचन चुने हुए अधिकारियों द्वाराही शासन होना चाहिये और इसी तरह प्रजातंत्रात्मक सत्ताको कायम किया जा सकता है।

रेडियोका भाषा नीति

एक प्रेस विज्ञप्तिमें आल इंडिया रेडियोकी भाषा सम्बन्धी नीतिपर भारत सरकारके निर्णयकी घोषणाकी गयी है। समाचार और उसकी आलोचनाओंके सम्बन्धमें कहा गया है कि हिन्दी और उर्दूमें पृथक पृथक ब्राडकास्टकी आवश्यकता नहीं है क्योंकि जिस भाषाका प्रयोग होता है वह सबसे सरल है जिसे बहु-संख्यक लोग समझते हैं। ब्राडकास्ट करनेवालेके चुनावकी चर्चा करते हुए बताया गया है है कि ऐसा प्रयत्न होना चाहिये ताकि सभी वर्ग और सम्प्रदायके विद्वानोंका समुचित प्रतिनिधित्व सम्भव हो और प्रत्येक रेडियो स्टेशनके क्षेत्रोंकी सांस्कृतिक और सामाजिक आवश्यकताओं तथा स्वास्थ्यपर प्रकाश डाला जा सके।

त्रिनायक सम्मेलनपर मत

याल्टामें होनेवाले त्रिनायक सम्मेलनकी सार्थकतापर मत प्रकाश करते हुए लन्दनके डेली मेलका कहना है कि त्रिनायक सम्मेलनकी घोषणासे संसारको जितना मिला है उससे बहुत कमकी आशाकी जाती थी। त्रिनायकोंका सम्मिलित वक्तव्य बहुतही जटिल समस्याओंपर बिल्कुल साफ साफ और पूरा प्रकाश डाला है। वक्तव्यने विश्वशांतिरक्षाके संगठन करनेका केवल नकशाही पेश नहीं किया बल्कि त्रिनायकोंने ऐसे संगठनकी पहली बैठक की है। उन्होंने यह सिद्धकर दिया है कि उनकी प्रस्तावना बारबार होगी।

युनानी जिचका अन्त

एक वैज्ञानिक आदेशके द्वारा युनानमें फौजी कानूनका अन्तकर दिया गया। आदेशपत्रपर यूनानी मंत्रिमंडलका हस्ताक्षर है और यह वादा किया गया है कि दिसम्बरकी घटनाओंके सम्बन्धमें सभी अपराधी राजनीतिक बंदियोंको सामूहिक रूपसे मुक्तकर दिया जायगा। जो साधारण शासन विधानके अपराधी हैं उनकी अथवा ई० ए० एम. एलासके उन सदस्योंको जो आगामी [illegible] तक अपने शस्त्रास्त्र वापस नहीं करेंगे आदेशकी सुविधासे लाभ नहीं उठाने [illegible] जायगा।

चर्चिल फ्रैंको पत्र व्यवहार

अभी हालमें हुए ब्रिटिश प्रधान चर्चिल और जेनरल फ्रैंकोके बीच हुए व्यवहारके सम्बन्धमें वक्तव्य देते हुए सभामें मि० एटलीने बताया कि इस व्यवहारके सम्बन्धमें यह पूछाजा रहा [illegible] इसका पता सर्व साधारणको कैसे [illegible] हुआ। प्रधान पत्रोंके पत्रोत्तरमें कोई [illegible] ऐसी नहीं कही है जिसे छिपानेका [illegible] किया जाय। यह पत्र व्यवहार तो सम[illegible] पर प्रकाशितकर दिया जायगा किन्तु वह दिन बहुत दूर है।

स्वदेश-वार्ता

सीमांत मन्त्रिमण्डल खतरेमें

लाहौरमें गरमागरम चर्चा है कि निकट [भविष्य]में सीमाप्रान्तमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल [की] स्थापना हो सकती है, अगर महात्माजी [इसके] लिये अनुमति दे दें। सीमा प्रांतीय [असे]म्बलीके कांग्रेसी दलके प्रधान नेता [...] लाहौर आये और केन्द्रीय असेम्बली [के कां]ग्रेसी दलके नेता श्री भूलाभाई देशाईसे [विचा]र विमर्श किया कि अगले अधिवेशन [में सी]माप्रांतकी लीगी मिनिस्ट्रीके विरुद्ध [अ]विश्वासका प्रस्ताव पास हो जाय, [...] कि सोलह आना आशा है, तो क्या [सीमा]प्रांतके कांग्रेसी सदस्य मन्त्रिमण्डल [...]का भार ग्रहण करें।

श्री देशाईका मत जाननेके बाद सदस्य [...] रहे हैं, जहांपर इस संवन्धमें अन्तिम कोई निर्णय होगा। याद रहे कि सीमा [...] लीगी मन्त्रिमण्डल कायम है किन्तु [...] मन्त्रिमण्डलके साथ ही साथ इसका [...] भी डोल रहा है। मुस्लिम लीगके [...]री नवावजादा लियाकत अली खांके [...] अनुरोध करनेपर मुहम्मद ईशाकने सिंध [या]त्रा की थी और 'इस्लाम खतरेमें है' [ना]रा लगाकर सिन्धके प्रधान मन्त्री [और] लीगके प्रेसीडेण्टमें मनमुटाव दूर करने [की ए]ड़ीचोटी कोशिश की। नयी दिल्लीके [...] क्षेत्रमें गहरी चिन्ता व्याप्त हो रही है।

[...]श भारतमें पचास लाख मरे

[ग]त शुक्रवारको असेम्बलीकी बैठकमें [स्वास्]थ्य विभागके मन्त्री मि० जे० डी० [...]ने भारतके स्वास्थ्यपर प्रकाश डालते [ब]ताया कि ब्रिटिश भारतमें ३० सित- [म्बर] १९४४ तक कुल ५० लाख ७१ हजार आदमी मरे। १९४३-४२में मृत व्यक्तियों [की संख्]या क्रमशः ७० लाख ७३ हजार और [...] ७६ हजार थी। बङ्गालके सबसे [अधिक] लोग मरे और उनकी संख्या १८ [...]९ तक पहुंच गयी है। युक्त प्रांतमें [...] ७ हजार, बिहारमें ४ लाख ८८ [...] पञ्जाबमें ९ लाख १६ हजार, बम्बई [...] लाख ४५ हजार, मद्रासमें ८ लाख ६६ [...] और आसाममें १ लाख ३६ हजार [आदमी] मरे।

बंगालका नया बजट

[ग]त शुक्रवारको बङ्गाल असेम्बलीमें [अर्थमन्]त्री श्री तुलसीचरण गोस्वामीने बङ्गाल [सरकार]का आनुमानिक घाटेका बजट पेश [किया]। १९४४-४२ के संशोधित बजटमें ११ [करोड़]का घाटा रहा और आगामी वर्षके [...] ८ करोड़ ९६ लाख रुपयेके घाटेका [अनुमा]न है। नये बजटकी आनुमानिक आय [...करो]ड़ ७८ लाख ७९ हजार रुपयेकी और व्यय ३७ करोड़ ३८ लाख ४७ [हजार] रुपयेकी होगा। १९४४-४९ की संशो- [धित] आय ३९ करोड़ ६९ लाख ८९ हजार [और] व्यय ४७ करोड़ ६७ हजारका रहा। [अर्थ]मन्त्रीने बताया कि ३१ मार्च १९४६ [तक] [...] ऋण १०९ करोड़ रुपयेका हो [जायगा]। लेकिन पूंजीके रूपमें अन्न, नीमक, चीनी, स्टैण्डर्ड कपड़ा, नौका आदि ८६ करोड़ रुपये कीमतके सामान रहेंगे। इस प्रकार १९ करोड़ वास्तविकका कर्ज रह जायेगा।

१९४३-४४ और १९४४–४९ में १० करोड़ रुपयेकी सहायता भारत सरकारसे प्राप्त हुई। और सहायताके लिये बातचीत की जा रही है। बजटमें किसी नये टैक्सके लगाये जानेकी व्यवस्था नहीं है। अर्थ मन्त्री बताया कि इससे यह न समझ लेना चाहिये कि सरकार अपनी आमदनी बढ़ानेके लिये किसी सम्भावनापर :नहीं विचार :कर रही है। यदि गत वर्षका बजट दुर्भिक्षका रहा तो इस वर्षके बजटको पुनर्स्थापनाका बजट कह सकते हैं। इस प्रांतकी जनताको फिर कारोबारमें लगानेकी चेष्टा कर रहे हैं।

═×═×═×═×═×═×═×

कलकत्तेमें विस्फोट

गत शुक्रवारके तीसरे पहर ४ बजेके करीब स्थानीय मुंशी सदरुद्दीन लेनके एक दो चौकके दो तल्ले मकानमें जिसमें गंधक और शोरा रखा गया था, आग लग गयी जिसके फलस्वरूप इतना भीषण विस्फोटक हुआ कि शहरमें एक मील तकके मकान हिल गये और लोगोंको सन्देह हुआ कि भीषण भूकम्प हुआ। निकटवर्ती लोगोंको बम विस्फोटका और दूरवालोंको भूकम्पका संदेह हुआ और निकटवर्ती मकानें बन्द होने लगीं। जिस मकानमें विस्फोट हुआ वह तो बैठ ही गया, उसके आसपाके दुकानोंको भी भीषण क्षति पहुंची। बहुत आदमी हताहत हो गये, जिनमें अधिक संख्या स्त्रियों-की है। अग्निकांडकी खबर पाते ही दमकले दुर्घटनास्थलपर पहुंचीं और दो घण्टेके अथक परिश्रमके बाद आगको काबूमें लाया जा सका। धड़ाकेकी आवाजके बाद तुरन्त ही स्थानीय कई सेवाव्रती संस्थाएं, पुलिस और ए० आर० पी० वाले घटनास्थलपर पहुंच कर आहतोंकी सेवा सुश्रूषा करने लगे। बादमें कलकत्तेके मेयर डिप्टी पुलिस कमिश्नर, असिस्टेंट पुलिस कमिश्नर आदि भी पहुंचे और ऐसी चेष्टा की गयी कि धनजनकी सुरक्षाके लिये अधिकसे अधिक व्यवस्था की जा सके। कहते हैं कि मकानमें एक स्त्री चेचकसे बीमार थी, वह और उसकी लड़की दब कर मर गयी। बाकी लोग जो बचाये जा सके हैं और जिनकी मरहमपट्टी की गयी है, अन्यत्र रहते हैं। ध्वस्त मकानपर पुलिस और ए० आर० पी० का पहरा है। मलवा साफ हो रहा है। कई सौ मन तोला सोना और बहुत सा सामान मलवेसे निकाला गया है। अबतक ९ आदमियोंके मरनेकी रिपोर्ट है।

×═×═×═×═×═×═×═

गेहूं संचयकी योजना

पंजाब सरकारने विभिन्न रेलवे स्टेशनों के निकट गेहूं संचय करनेकी योजना तैयार की है, जिसके अनुसार २० हजार टन गेहूं सरकारके पास जमा रहेगा और वह जल्दी-से जल्दी किसी भी स्थानपर भेजा जा सकेगा। पंजाब सरकारके फुड कमिश्नर बीस ऐसे स्टेशनोंको चुन रहे हैं, जहांके गुदामोंमें गेहूं रखनेकी व्यवस्था की जा सके

कस्तूर बा स्मारक कोष

कस्तूर :बा स्मारक कोषकी प्रांतीय समितियोंके मन्त्रियोंकी बैठक गत सप्ताह सेवाग्राममें हुई और विभिन्न प्रांतोंमें होने-वाले कार्यकी प्रगतिपर विचार किया गया सभामें ग्रामोत्थान और ग्रामीण स्त्रियों तथा बच्चोंकी सेवा सुश्रूषा करनेके लिये कार्य-कर्त्ता और कर्त्री तैयार करनेके लिये तीन प्रकारकी शिक्षाएं देनेकी सिफारिश ट्रस्टकी कार्य समितिके की गयी। अगर ये सिफा-रिशें स्वीकार कर ली जायेंगी, तो सेवाग्राम में शिक्षा केन्द्र खोला जायेगा। ट्रस्ट और कार्य समितिकी आगामी बैठक बम्बईमें १ अप्रैलको होगी।

भारतके जंगीलाटका भाषण

गत १९ फरवरीको स्टेट कौंसिल पूर्वके युद्धकी स्थितिका वर्णन करते हुए भारतके जंगी लाटने इस बातपर गर्व प्रकट किया कि भारत हमारे शत्रुओंपर विजय प्राप्त करनेके लिये महत्वपूर्ण भाग ले रहा है। गत कुछ सप्ताहोंके अन्दर एशियामें कई महत्वपूर्ण घटनाएं हुई हैं। तीन वर्षोंके बाद लेडो-बर्मा रोड खोलकर चीनका सम्बन्ध अवशिष्ट संसारसे स्थापित किया गया है। भारतीय श्रमिकों और इंजीनियरोंने ही इसको बनाया है। बर्माके युद्धमें हमारे सैनिकोंने अपने शौर्यके द्वारा यह साबित कर दिया है कि शस्त्रास्त्रकी कमी न रहनेपर ये कहीं भी जापानियोंको पीछे हटाये बिना नहीं रह सकते। दिल्ली पहुंचनेकी जापानियोंकी दम्भपूर्ण बातें आपको याद होंगी। आज उन्हें किस बुरी तरह बर्मामें पीछे हटना पड़ रहा है यह वे ही जानते होंगे।

डंडेसे चीता मारा

नागपुरकी एक रिपोर्टसे मालूम हुआ है कि एक हरिजनने एक डंडेके सहारे चीतेसे संघर्ष किया और उसको मारकर ही दम लिया। हरिजन आहत होकर अस्पतालमें पड़ा है।

गवर्नरोंका विरोध

मालूम हुआ है कि बिहार एवं युक्तप्रांतके गवर्नरोंने कांग्रेसके साथ समझौता करने और कांग्रेस नेताओंकी मुक्तिका विरोध किया है। उनका मत है कि इस समय शासनके राष्ट्रीयणरकसे प्रांतोंकी व्यवस्थामें गड़बड़ी मच जायेगी। कहते हैं कि भारत मन्त्री एमरीने हालमें प्रांतीय गवर्नरोंसे राय मांगी थी कि भारतीय वैधानिक गतिरोधका अन्त करनेके लिये क्या किया जाये। उपर्युक्त निर्णय उसीका उत्तर है।

कम्यूनिस्ट और कांग्रेस

युक्तप्रांतके कांग्रेस एम० एल० ए० श्री गोविन्द सहायने जब कम्यूनिस्टोंके सम्बन्ध में महात्मा गांधीका दृष्टिकोण फिर जानने-के लिये उनसे प्रश्न किया, तो महात्माजी-ने कहा कि कम्यूनिस्टोंपर लगाये गये अभि-योगका अच्छी तरह छानबीन किये बिना मैं व्यक्तिगत तौरपर कोई राय नहीं दे सकता। इस सम्बन्धमें कांग्रेस संस्थाएं अपने व्यक्ति-गत निर्णयके अनुसार कार्य कर सकती है। इससे थोड़ी अस्तव्यस्तता तो अवश्य फैलेगी, लेकिन विशेष हानि नहीं होगी।

टण्डनजीकी गिरफ्तारीके बाद

गोरखपुरके अधिकारी अंचलोंमें मालूम हुआ है कि श्री पुरुषोत्तम दास टण्डनको इसलिये गिरफ्तार किया गया है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें दिये गये उनके भाषणका कुछ अंश आपत्तिजनक समझा गया है। अधिकारियोंका विश्वास है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन ध्वंसकारी कार्यवाहियों और प्रचारोंका आवरणमात्र है। उन्हें 'ए' क्लासमें रखा गया है। उनके भाषणपर विचार हो रहा है और अगर मुकद्दमा चलाने की सलाह दी गयी तो उनपर मामला चलाया जायेगा।

टण्डनजीकी रिहाई

गोरखपुर, १७ फरवरी। युक्तप्रांतीय असेम्बलीके स्पीकर तथा कांग्रेसजन प्रतिनिधि सभाके अध्यक्ष बाबू पुरुषोत्तम दास टण्डन आज सायंकाल ६॥ बजे रिहा कर दिये गये। टण्डनजीने अपनी गिरफ्तारीके कारण तथा रिहाईपर कोई वक्तव्य देनेसे इन्कार कर दिया। कल सन्ध्या समय आप इलाहाबादको रवाना होंगे। ए० प्रेस

बिहार कांग्रेसके कागजात नष्ट

मालूम हुआ है कि बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके आफिस सदाकत आश्रममें जो कांग्रेस कागजात और डा० राजेन्द्रके पत्र इत्यादि १९४२ के अगस्तमें जब्त कर लिये गये थे और पुलिसकी सील-मोहरके अन्दर उन्हें बन्द कर रखा गया था, उनमेंसे अधिकांशको दीमक चाट गये हैं और इस प्रकार कई ऐसे आवश्यक कागजात नष्ट हो गये हैं, जिनकी क्षतिपूर्ति नहीं की जा सकती। डा० राजेन्द्र प्रसादके सेक्रेटरी श्री चक्रधरशरणने लिखा है कि जिस समय डा० अब्दुल लतीफ तथा अन्य मुसलमान नेताओंके पत्रोंकी फाइलोंको उलटना शुरू किया तो फाइलोंकी रूपरेखा देखकर मेरी आंखोंमें आंसू आ गये। यह दुर्भाग्य है कि इतिहास कारोंके ऐसे महत्वके चीजोंको दीमकोंने चाट लिया।

बिहारके नेताओंका प्रतिबन्ध

मालूम हुआ है कि बिहारके कांग्रेस नेताओंपर लगाये गये प्रतिबन्धको बिहारसरकार स्थायी तौरपर उठा लेगी, ताकि सभी नेता मिल सकें और बिहार कांग्रेस कर्मी परा-मर्शदात्री समितिकी बैठक बुलायी जा सके।

बिहारका राष्ट्रीय युद्ध मोर्चा

पटनेके 'सर्चलाइट' को मालूम हुआ है कि बिहार सरकारने आगामी ३१ मार्चसे बिहार प्रांतीय राष्ट्रीय युद्ध मोर्चेके नेताओं-की सेवाओंको स्वीकार न करनेका निश्चय किया है। इस मोर्चेपर कई प्रांतीय नेता काम कर रहे हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

जर्मनीका बटवारा

क्रीमियाके याल्टा नामक स्थानमें ब्रिटेन, अमेरिका और रूसके कर्णधारोंका सम्मेलन हो गया। मि० चर्चिल प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट और मार्शल स्टालिनके अतिरिक्त तीनों देशोंके परराष्ट्र सचिव, राजदूत और सैनिक अधिकारी भी इस सम्मेलनमें उपस्थित थे। सम्मेलनके बाद चर्चिल, रूजवेल्ट और स्टालिनके हस्ताक्षरोंसे एक वक्तव्य निकला है जिसका आशय इस प्रकार है--- बिना किसी शर्तके नाजी जर्मनीके पूर्ण आत्मसमर्पण सम्बन्धी शर्तों की नीति और योजनापर पूर्ण मतैक्य है। जर्मनी तीनों राष्ट्रों में बंट जायेगा। प्रत्येक राष्ट्रका अपने अपने अंचलपर अधिकार होगा। एक केन्द्रीय संघठन कमीशन होगा, जिसका काम तीनों अंचलोंमें सहयोग और सामंजस्य बनाये रहनेका होगा। इस कमीशनका सदर मुकाम बर्लिनमें रहेगा। यदि फ्रांस चाहेगा तो उसे भी एक अंचलपर अधिकार करनेको आमंत्रित किया जायेगा और इस हालतमें केन्द्रीय कमीशनमें उसका भी प्रतिनिधित्व रहेगा।

पोलैण्डके सम्बन्धमें यह सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि लुबलिन सरकारको पुनर्संङ्गठित किया जायेगा ताकि सभी लोकतन्त्रीय पोलिश दलोंके प्रतिनिधि, पोलैण्डसे बाहरके भी लिये जा सकें। लन्दनस्थ पोलिश सरकारको दफना देनेकी नोटिस तीनों नेताओंके नामसे जारी कर दी गयी है। पोलैण्डकी सीमा पूर्वमें कर्जन लाइन तक ही मानी गयी है। पूर्वीय भूभागकी क्षतिकी पूर्ति अन्यत्र पोलैण्डको भू-प्रदेश देकर कर दी जायगी। यूगोस्लावियाके सम्बन्धमें तय हुआ कि मार्शल टीटो और डा० सुबासिकके साथ जो समझौता हो चुका है उसे फौरन कार्यमें परिणत किया जायेगा। अन्य बालकन देशोंके प्रश्नपर भी विचार हुआ। यह भी निश्चय हुआ कि शान्तिका एक व्यवस्थापत्र तैयार करने तथा डमबर्टन ओक्स सम्मेलनमें स्थिर हुए सिद्धान्तके अनुसार विश्व-शान्तिरक्षार्थ एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन निर्माण करनेके लिये आगामी २५ अप्रेलको संयुक्तराज्य अमेरिकान्तर्गत सैन-फ्रैंसिस्को नामक स्थानमें संयुक्त राष्ट्रोंका एक सम्मेलन किया जाये।

रूस जापान युद्धकी चर्चा

अमेरिकनोंका यह विश्वास है कि चर्चिल और रूजवेल्टने मिलकर स्टालिनको जापानके खिलाफ लड़नेको राजी कर लिया है। इस अनुमानका कारण सेन फ्रैंसिस्को सम्मेलन बताया जा रहा है। सम्मेलनकी तारीख २५ अप्रेल है और रूस और जापानके बीचमें जो पञ्चवर्षीय सन्धि हुई थी, उसे रखने और न रखनेकी एक वर्ष पूर्व सूचना देनेकी तारीख भी वही है। अतः सैन-फ्रैंसिस्को सम्मेलनमें मार्शल स्टालिन तभी शामिल होंगे जब वे उक्त सन्धिको भङ्ग कर देनेकी सूचना जापानको देंगे। इस बातकी सम्भावना इसलिये समझी जाती है कि तीनों नेताओं द्वारा निकाले गये वक्तव्यमें जापानका उल्लेख नहीं है!

याल्टा (क्रीमिया) में त्रिराष्ट्र नायक सम्मेलन

(दाहिने ऊपर) प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, (बायें ऊपर) मार्शल स्टालिन। मि० चर्चिलका पृष्ठ भाग (बायें नीचे)—यू० एस० रेडियोफोटो

बुडापेस्टपर रूसका अधिकार

जर्मन सेनाने हंगरीकी राजधानी बुडापेस्टको खाली कर दिया। लाल सेनाने राजधानीपर अधिकार कर लिया है।

जर्मन प्रतिक्रिया

क्रीमिया कानफरेन्सकी प्रथम प्रतिक्रिया जर्मन संवाद समिति द्वारा इन शीर्षकोंके साथ ब्राडकास्ट की गयी है:—जर्मनीका विनाश किया जायेगा," "याल्टाकी घृणापूर्ण योजना," "युद्धके प्रधान अपराधी चर्चिल, रूजवेल्ट और स्टालिन मानवतापर नया जुल्म ढानेमें एकमत हैं।" "जर्मनी शत्रुओंकी योजनाओंको ध्वस्त कर देगा।"

यूनानी गृहयुद्धका अन्त

यूनान सरकार और ई० ए० एम० के प्रतिनिधियोंके बीचमें जो समझौता हुआ है उसके अनुसार १४ दिनके भीतर देश भरके जितने एलास दलके सशस्त्र व्यक्ति हैं वे सब निरस्त्र कर दिये जायेंगे। इस तरह झगड़ेकी जड़ मिट जायेगी।

बेलजियममें नयी सरकार

मो० पियरलोटके स्थानपर प्राइममिनिस्टर मो० एशिलीवान ऐकरके नेतृत्वमें बनी नयी बेलजियन सरकारने शाही महलमें प्रिंस रीजेण्टके सामने शपथ ली। नयी सरकारमें छः कैथलिक, पांच सोशलिस्ट, चार लिबरल, दो कम्यूनिस्ट और एक स्वतन्त्र दलका मिनिस्टर है।

इटली और फ्रांस

रोम रेडियोका कहना है कि फ्रांस और इटलीके बीच पुनः कूटनीतिक सम्बन्ध स्थापित होगा।

रूसके साथ युद्धका भय

लन्दनमें एक सभामें वक्तृता देते हुए धनकुबेर ड्यूक आफ बेडफोर्डने जो शान्तिवादी और कट्टर रूस विरोधी हैं, यह कहा कि "एशिया और यूरोपमें सर्वप्रधानता स्थापित करनेवाले क्रूरतानाशाही रूसके साथ भावी युद्धका भयानक खतरा है।"

रूससे भय

त्रिराष्ट्र नायक सम्मेलनके सम्बन्धमें लन्दनके व्यापारी और पूंजीवादी उद्योगपति आतङ्क तथा निराशाका भाव फैलानेका संगठित प्रयत्न कर रहे हैं। यूनाइटेड प्रेस आफ इण्डियाका लन्दनस्थ संवाददाता कहता है कि लन्दनके एक समाचार पत्र कार्यालयको उसके संचालकोंसे सम्मेलनके विरुद्ध लिखनेका निर्देश मिला है। इस तरहकी प्रतिक्रियाओंसे यह स्पष्ट है कि इङ्गलैंण्डमें एक बहुत बड़ा भाग ऐसा है जो रूसके साथ सहयोगको पसन्द नहीं करता।

बर्लिन अथवा रूर

फील्डमार्शल माण्टगोमरीके जबर्दस्त धावकी बढ़ती हुई भयङ्करतासे जर्मन हाई कमाण्ड घबरा उठा है। रूरकी रक्षा की जाये अथवा लाल सेनाके बड़े प्रचण्ड आक्रमणसे बर्लिनकी रक्षा की जाये, यह विकट संकट पूर्ण समस्या सामने है।

पेरिसवाले बिल्ली खाते [हैं]

पेरिसका समाचार है कि पुलिस [...] के अनुसार जर्मनोंसे मुक्त होनेके बादसे [...] पेरिसमें ३० हजार बिल्लियां लापता [हो] गयी हैं। कहते हैं कि भुक्खड़ पेरिसनि[वासी] उनको खा गये। खाद्य पदार्थोंका [...] जबर्दस्त अभाव है कि पेरिसमें लोग [बिल्लि]योंकी तलाशमें घूमते रहते हैं। एक [बिल्लीकी] कीमत ३० शिलिंग है। १५ शिलिंग [...] लिये और १५ शिलिंग उसके लोमके [लिये]।

युद्ध [बन्]दियोंपर अग्निव[र्षा]

लन्दन वार आफिससे यह सम[ाचार] मिला है कि उत्तर-पश्चिम इङ्गलैंण्डके [...] युद्ध बन्दी कैम्पसे सात जर्मन बंदियोंके [भाग] जानेपर कैम्पमें कुछ गड़बड़ मची। प[...] चेतावनी देनेके बाद गोली चलानी [पड़ी।] एक मरा, चार घायल हुए।

जापानपर आक्रमणकी यो[जना]

कहा जाता है कि जापानपर आ[क्रमण] करनेकी योजना बन गयी है। आक्र[मणकारी] सेनाके कमाण्डर इन चीफ जेनरल मै[कआर्थर] ही होंगे।

हिटलरके आफिसपर ब[म]

अमेरिकन बम वर्षकों द्वारा ब[र्लिनपर] गिराये गये बमोंसे हिटलर और गोय[बल्सके] आफिस भी आक्रान्त हुए।

मध्यपूर्वकी समस्या

गत वर्ष चर्चिल जब मास्को [...] तभी ऐसा प्रतीत होता है, यह नि[...] गया था कि यूनान ब्रिटनके प्रभाव[...] आयेगा। मध्यपूर्वका प्रश्न बाकी [...] और ब्रिटेन दोनोंके स्वार्थ है। ऐसा [...] जाता है कि प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट म[...] करेंगे।

जर्मनी अकेला रह जाय[गा]

एक्सप्रेस सर्विसका संवाददाता [...] है कि ऐसी सम्भावना है कि [...] जर्मनीकी यह अवस्था हो जायगी [...] दुनियाका एक भी राष्ट्र उसका मि[त्र] [...] साधारण कूटनीतिक बन्धनोंसे बन्[धा] [न] रह जायगा।

ऐसे लक्षण हैं कि कई तटस्थ रा[ष्ट्र] जर्मनीके विरुद्ध युद्ध घोषणा न करें [तो] भी उससे राजनीतिक सम्बन्ध तोड़ [...]

याल्टाका ऐतिहासिक महल, जिसमें त्रिराष्ट्र नायक सम्मेलन हुआ है। इसे रूसके जारने बनवाया था।

Regd No. C. 2229

श्वेतकुष्ठकी अद्भुत जड़ी

औरोंकी भांति झूठी प्रशंसा नहीं करता यदि तीन ही दिनकी लेपसे रोग जड़से दूर न हो तो दूना दाम वापस । चाहे -) का टिकट भेज प्रतिज्ञापत्र लिखा लें। मूल्य ३) पता—महावीर औषधालय नं० २० हरकंगा ।

बवासीरका काल

क्या इसके रहते भी आप कष्ट उठाते ही रहेंगे ? यदि २१ दिनमें खूनी या बादी जड़से दूर न हो तो दूना दाम वापस। मूल्य २) पता—श्री वनस्पति भंडार, बेरियासराय, हरकंगा।

मुफ्त

गीता डायरी कलेण्डर सन् १९४५

मेट्रो न्यू गोल्डके सुन्दर आभूषणोंका प्रचार करनेके लिए गीता डायरी कलेण्डर १९४५ का मुफ्त देनेका निश्चय किया गया है। जिन्हें जरूरत हो वे आभूषणोंके नमूने वगैरहके लिए शीघ्र लिखें :—

क्रिस्टल कमर्सियल कं०

के० सी० अमृतसर

सफेद बाल काला !

खिजाबसे नहीं, हमारे आयुर्वेदिक केशसञ्जीवनी (सुगन्धित) तैलसे बालोंका पकना रुककर सफेद बाल जड़से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आंखोंकी रोशनीको बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापसकी शर्त लिखा लें। मूल्य २), बाल बहुत अधिक पक गया हो तो ४) का तैल मंगावें।

श्री सदानन्दराम सञ्जीवनी औषधालय नं० २०, पो० वारसलीगंज, (गया)

स्त्रीरोग

सर्व प्रकारके स्त्रीरोग की अचूक व अमूल्य दवा। मासिक धर्म की गड़बड़ी, यहां तक कि बंध्या स्त्री को भी नियमित मासिक होने लगता है। प्रदर, प्रसूत आदि स्त्रीरोग में रामबाण साबित हुई। मूल्य २) रु० डाक खर्च अलग।

देवबन्धु आरोग्य सदन एकतल्ला ५४ बड़तल्ला स्ट्रीट बड़ाबाजार, कलकत्ता

मदनमंजरी गोलियां

स्वप्नदोष, धातुविकार, कब्जियत, सुस्ती, कमजोरी नामर्दी वगैरहको दूर करके बल व वीर्य बढ़ाती है। कीं० डि० रु० १)

मदनमंजरी फार्मेसी-जामनगर

कलकत्ता ब्रांच : १७७, हरिसन रोड, बनारस एजेन्ट—रामेश्वर एण्ड सन्स, चौक [illegible] एजेन्ट—एम. भाखा एण्ड सन्स

वाइनिन अमारा लेने के पहले

और उसके बाद

दुर्बलता, शक्तिहीनता, थकान, कमजोरी तथा इसी प्रकारके अन्य रोगोंके लिये वाइनिन अमारासे बढ़कर कोई टानिक नहीं है। यह शरीरमें स्फूर्ति, स्वास्थ्य तथा शक्ति लाता है और रोगीको पूर्णस्वस्थ एवं सजीव बना देता है।

प्रस्तुतकर्त्ता

एलेन एण्ड हैनबरीज लि०

(इङ्गलैण्डमें संगठित)

क्लाइव बिल्डिङ्ग, कलकत्ता

BYNIN AMARA

वाइनिन अमारा दुर्बलता के लिये

किसी भी औषधिको बेफायदा साबित करने पर १००) इनाम

रोगका घर

खांसी

इस औषधिसे नई व पुरानीसे पुरानी खांसी, दमा, श्वासको तीन दिनमें पूरा फायदा होता है। एक रोगीको पूरी आरोग्य लायक एक मासकी औषधिका मूल्य २) रुपया।

मासिक धर्म

इस औषधिसे मासिक धर्मकी गड़बड़ी मासिक धर्म अधिक या कम दिनोंमें होना ऋतुकालमें पेट कमर पेड़ू और शिरमें दर्द होना मासिक धर्मके रंगमें फर्क होना या एकदम बन्द हो जानाको आराम कर गर्भ धारण हो जाता है। गर्भवती स्त्रियां इसे व्यवहार न करें। गर्भ धारणके बाद इसे व्यवहार करनेसे गर्भपात हो जाता है। मूल्य २) रुपया। (८४)

पुत्रदा

इस औषधिसे निश्चय गर्भ रहकर पुत्ररत्नकी प्राप्ति होती है। पूर्ण विवरण के साथ लिखें। मूल्य २) रु०

पता--श्रीकृष्णचन्द्र नं० २ कसतीसराय, (गया)

'पुडलो'

ब्राण्ड सीमेंट वाटर प्रूफर

बर्न एण्ड कं०, लि

लाहौर | हवड़ा | नई दि[illegible]

एजेण्टस् :—

मद्रास :— विल्सन एण्ड कं० जार्ज टाउन, ई, आसाम रेलवेज एण्ड ट्रेडिंग कं० लि०, पो.आ. मार्घेरिटा आसाम

करांची :— बी. आर. हर्मन एण्ड मोहता लि० प्राप्त करनेका अन्य पता :-- एहरमैंस अरावन राइस एण्ड ट्रेडिङ्ग कं०, लि०, रंगून

सीलोन :— हण्टर एण्ड कं० कोलम्बो इसई रिचर्डसन एण्ड

मुफ्त

१९४५ की डायरी कैलेण्डर

अपने मेट्रो न्यू गोल्ड आभूषणोंको लोकप्रिय बनानेके लिये हमने १९४५ का एक डायरी कैलेण्डर मुफ्त देनेका निश्चय किया है। आजही आभूषणों के नमूने और डायरी कैलेण्डर के लिये लिख।

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी

हलका नं० २२ (V. M. C.) अमृतसर

स्थापना १९२१] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर इलाज [र० नं० १८६६

आरोंदा १८६६ नीलगिरि तेल — वापरो —

खाण्डालेकर बंधु, बम्बई ४.

[illegible], मलेरिया, इन्फ्लुएन्जा, प्लेग, टायफायड आदि, बीमारियोंमें बचानेवाला। १ औंस शीशी ८ आना, दर्जन ५।।=), डा० ख० अलग।

मुकलिप पेन, बाम तथा दादका मरहम हमारे कारखानेमें बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

मलेरिया और बुखारों [illegible] अक्सीर और सस्ती [illegible]

फीवरफे[illegible]

४२ टिकियाकी शीशी मूल्य [illegible]

परशुराम ट्रेडिंग कम्प[illegible]

प्रार्थना समाज, बम्बई नं० [illegible]

बुखार व पेट दर्द के लि[illegible]

स्टीमर छाप

शाफ[illegible]

REGD. मिक्श्चर [illegible]

सब जगह मिलता है. नकलसे [illegible]

—: बनाने वाले :—

धी शाफी इन्डस्ट्रीयल वर्क्स

प्रोप्रायटर :- पी. टी. पटेल

पायधुनी नाका, बंबई नं. [illegible]

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—९ कलकत्ता फरवरी २६, १९४५, Calcutta, FEB. 26, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ३)

मधुसंचय
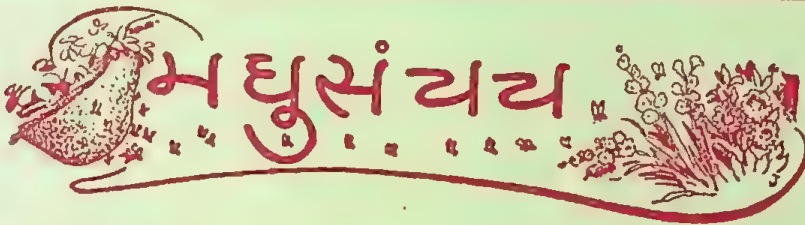
अमेरिकाका वासार कालेज

अमेरिकाका वासार कालेज गत २० ...से माता-पिताओं और शिशुओंको एक ...शिक्षा प्रदान करनेका कार्य सम्पन्न ...जा रहा है। इसके ग्रीष्म कालीन

स्कूल में बच्चोंका आमोद-प्रमोद

...में बच्चोंकी संभारकी विशेष व्यव... है और माता-पिता और बच्चे दोनों ...र्थी या शिक्षार्थीकी हैसियतसे इसमें ...स्थित होते हैं। १९४४ के ग्रीष्म कालमें ...२९ प्रौढ़ और ९६ बच्चे थे। प्रौढ़ोंमें ...धिकतर केवल माताएं थीं जो अपनी ...के गृह-जीवनको अधिक सुसंस्कृत ...सुखमय बनानेके लिये शिक्षा प्राप्त करने ...थीं। इस कालेजका ध्येय सामूहिक ...जीवनको ऐसा समुन्नत बनाना है ...बच्चे आदर्श और सुसंस्कृत बन ...पढ़नेके समय बच्चों और माता-पिताओं ...अलग रखा जाता है लेकिन खेल-कूद ...बाजार जानेके समय उन्हें मिलने ...जाता है। वयस्कके लिये पृथक पाठ्य ...और विशेषज्ञों द्वारा उनके विषयोंके ...ज्ञान कराये जाते हैं। बच्चोंको ट्रेनिङ्ग ...शिक्षा देनेवाले विषयोंकी पुस्तकें ...जाती हैं। अत्यन्त छोटे बच्चोंके लिये ...माओं द्वारा शिक्षाकी व्यवस्था है।

बच्चोंके विद्यालयके कमरेमें उनके खिलौने इस प्रकार सजाये जाते हैं कि उन्हें मालूम भी नहीं होता कि वे स्कूलमें हैं। क्योंकि 'स्कूल' शब्द बच्चोंके लिये बड़ा कटु होता है। खाने-पीनेके मामलोंमें बच्चोंको पूरी स्वाधीनता दी जाती और उनके अध्यापक जानते हैं कि बच्चोंको कब भूख लगती है। बच्चे अपनी पसन्दकी जगहपर खाना खाने बैठते और भोजन समाप्त करते ही उठ खड़े होते हैं।

शायद आप नहीं जानते !

अमेरिकामें स्त्रियां अपने बनाव-सिंगार पर लगभग २ करोड़ रुपया प्रतिवर्ष खर्च करती हैं।

आस्ट्रियाके वीलहेल्म कोसार नामक एक युवकने आस्ट्रियाके सब कायदे कानून एक पोस्टकार्डमें लिखे हैं। इसमें ९० हजार शब्द हैं और यह डेढ़ वर्षमें लिखा गया है। अक्षर इतने छोटे हैं कि बिना अणुवीक्षण यन्त्र के उनको पढ़ा नहीं जा सकता।

अमेरिकामें १९३७में ९ लाख २० हजार मकानोंमें आग लगी और ८७ करोड़ रुपयेकी हानि हुई। इनमेंसे ९६ हजार ६ सौ स्थानों पर सिगरेट, बीड़ी पीनेसे आग लगी और ९१ करोड़की क्षति हुई।

लन्दनके अजायब घरके पुस्तकालयमें ३० लाख पुस्तकोंका संग्रह है। यदि उनको जमीनपर एक पंक्तिमें बिछा दिया जाये, तो ३९ मील लम्बी पगडण्डी तैयार हो जायेगी।

युद्धमें रूसी रेडियोका भाग

लेनिनने ब्राडकास्टिंगको एक ऐसा समाचारपत्र बताया था जिसमें कागजकी आवश्यकता नहीं होती और जिसने दूरीको दूर कर दिया है। युद्धकालमें विस्तृत रूसी प्रदेशोंमें जनताका साहस बढ़ाये रखनेमें रेडियोसे ब्राडकास्ट किये जानेवाले समाचारोंने बड़ा काम किया है। मास्को, लेनिनग्राड, स्वेलविस्क और व्लाडीवोस्टकके प्रधान रेडियो केन्द्रोंके अतिरिक्त रूसमें सहस्रोंप्रादेशिक रेडियो केन्द्र भी हैं। मास्कोसे १४ बार समाचार ब्राडकास्ट किये जाते हैं। सोवियट राष्ट्रकी ७० बोलियोंके अतिरिक्त २८ विदेशी भाषाओंमें भी ये ब्राडकास्ट होते हैं। सबसे प्रभाव शाली ओजपूर्ण ब्राडकास्ट उस दिन हुआ था ब मास्को माताने अपने बच्चोंको उद्बोधन करते हुए कहा था, "हिम्मत न हारना मेरे बच्चों!' लेनिनग्राडमें, शत्रुके पीछे अथवा स्टालिनग्राडमें तुम चाहे जहां हो, हिम्मत न हारना। मैं तुम्हारे लिये प्रतिशोध लेने आती हूं।" लेनिनग्राड बिल्कुल घिर गया था और प्रतिदिनकी बमवर्षा और गोलाबारीसे उसके यातायातके साधन नष्ट हो गये थे तब भी रेडियो टेलीफोनके विशेष केन्द्रोंका प्रयोग किया गया था।

यक्ष्माकी दवा शहद

मंचूरियाकी सीमापर स्थित जंगलोंमें वहांके कार्कके पेड़ों या फूलोंसे एक प्रकारका शहद निकाला जाता है, जिसके सम्बन्धमें अब खबर मिली है कि वहांके निवासी अनेक वर्षोंसे उसे यक्ष्माकी औषधिके काममें लाते हैं। यक्ष्मा असाध्य रोगोंमें समझा जाता है और अभी तक इससे मुक्त होनेके लिये कोई रामबाण औषधि मेडिकल साइंस में आविष्कृत नहीं हुई है। हालमें ही मास्को रेडियोने बताया है कि सोवियट रूसकी ज्योग्राफिकल सोसाइटी आव दि एकेडेमी आव साइंसने उक्त वृक्षके रासायनिक गुणोंकी छानबीन करनेके बाद एक विशेषज्ञ दल उक्त जंगलोंमें भेजनेका निश्चय किया है। यह दल जंगलमें पहुंचकर अपना केन्द्र स्थापित करेगा और उन पेड़ोंके गुणोंसे विश्वको लाभान्वित करनेकी चेष्टा करेगा।

चलती चक्की

फिलस्तीनके एक यहूदी क्षेत्रमें मातृत्वके प्रति श्रद्धा प्रदर्शनार्थ 'माता वन' लगाया जायगा। उसी वनके एक भागका नाम होगा होगा—अज्ञात माता।

—आधुनिक सभ्यताके परिणाम स्वरूप अविवाहित माताओंकी बराबर वृद्धि हो रही है। इस लिये उसके एक भागको अज्ञात पिता भी तो नाम देना चाहिये।

* * *

फैशन विरोधी सम्मेलनमें भाषण देते हुए श्रीमती लेखावती जैनने वस्त्रों और जीवनकी सादगीपर जोर दिया।

—यह उलटी गंगा क्यों—स्त्रियोंने यदि सादगीको अपनाया तो फैशन कहां जायगा।

* * *

श्री मौलिचन्द्र शर्माका कहना है कि उर्दू राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती।

—पण्डितजी थोड़ा सम्भल कर बोलिये। आजकल सैनिकोंका जमाना है और उर्दू का जन्म भी सैनिक पड़ावकी भाषाके रूपमें हुआ था। अतः अबतक सैनिक राज्य रहेगा तबतक तो है ही।

* * *

बाबू पुरुषोत्तम दास जी टण्डन कहते हैं कि राष्ट्रीय एकता हिन्दी भाषाके द्वारा ही संभव है।

—और जिन लोगोंको न:राष्ट्रीयतासे कोई मतलब है और न एकतासे उनके लिये आप क्या कहते हैं?

* * *

उस दिन दिल्लीके सिटी मजिस्ट्रेटने एक नकली सेठ और मुनीमको सजा दे दी।

—अगर नकली नेताओंको सजा देना आरम्भ हो जाय तो मजिस्ट्रेट महोदयको देते-देते नाकमें दम हो जाय।

* * *

खाद्य विभाग के एक प्रकाशनमें कहा गया है कि जिस चतुराईसे चूहा मृत्युके फंदेसे बचकर निकल जाता है, उसकी प्राणी जगतमें मिसाल ही नहीं।

—सरकारको जानना चाहिये कि गणेश वाहन बननेका सौभाग्य उसे इसी प्रकारकी किसी योग्यतासे मिला होगा।

केन्द्रीय असेम्बलीमें श्री देशमुखने बताया कि पहले 'गोत्र' का अर्थ चारागाह था। लेकिन आजकल बदल गया है।

—हमें डर है इसी तरह कहीं भविष्यमें लोग देशमुखका अर्थ इण्डिया-गेट न समझाने लग जायें।

* * *

एक साहब बोले यूनियन शब्दकी तो अब कोई शान ही नहीं रही।

—कारण, तांगेवालोंकी भी यूनियन जो बनने लगी।

* * *

काश्मीरसे पण्डित जवाहरलाल नेहरूने महात्माजीको तारसे सूचित किया है कि विषैली औषधियां रोगको दूर न करके उसमें और उलझन पैदा कर देती हैं।

—इस तारकी एक प्रति अगर मि० जिन्नाके पास और भेज दी जाती तो अच्छा होता।

* * *

सर सुल्तान अहमदने उस दिन केन्द्रीय असेम्बलीमें एक प्रश्नके उत्तरमें कहा कि मि० बेवरली निकोल्सकी पुस्तक इस कारण नहीं जब्त की जायगी क्योंकि उसमें लेखकके व्यक्तिगत विचार हैं।

—सत्यार्थ प्रकाशके लेखकके विचार शायद व्यक्तिगत नहीं।

* * *

पेरिसकी जनता बिल्लियां खा रही है।

—पेरिसके चूहे तो आजकल खूब ही नाच-गानमें मस्त होंगे।

* * *

देशी नरेशोंने बम्बईके भव्य ताजमहल होटलमें बैठकर एक वक्तव्य तैयार किया है जिसमें ताजसे केवल इन्साफ और न्यायकी मांग की गयी है।

—यह कुदरतका खेल देखिये, जिन्होंने इन्साफका जिन्दगीभर सिफाया किया और न्यायको ठुकराया वे ही आज उनकी मांग करते हैं।

* * *

त्रिनेता सम्मेलनमें अटलांटिक घोषणाके सिद्धान्तोंमें अपने दृढ़ विश्वासको पुष्ट किया गया।

—अटलांटिक घोषणाकी तरह यह पुष्टि भी कहीं जाली न साबित हो।

* * *

कण्ट्रोल आज्ञाके द्वारा भारतमें जूतोंका भाव भी निश्चित हो गया है।

—भला करे कण्ट्रोल का! भारतमें तो ये सदैवसे ही जिसको मिले बेभाव ही मिलते रहे हैं।

* * *

एक साहबका कहना है कि सम्पादकोंके पास सम्पत्ति जमा नहीं हो सकती।

—संचालक जानते हैं कि सम्पादकको कागजकी रद्दीसे अधिक कोई वस्तु प्रिय नहीं

* * *

मैडागास्कर (अफ्रीका) की सरकारने ९ भारतीयोंको इस कारण निर्वासित कर दिया कि वे शराबी थे।

अपने राम अगर इस प्रकार निकालने लगें तो शायद आधेसे अधिक नयी दिल्ली खाली हो जाय।

—रमते राम

बुरा न मानिये होली है?

——:o:——

नमस्ते चचा सम्पादकजी! होली—मुबारक लेने-देनेके पहले कानपर जनेऊ चढ़ाकर कसम तो खाइये कि आज सचमुच होली है और यह दीवानोंकी टोली है!

कहिये चचा, गुम क्यों होगये?—ठीक तो है, जवाब आपके पास आयेगा कहां से? आप समालोचक तो हैं नहीं जो खम्भा नोचनेकी आदत पड़ी होगी।

दिल तो तवा बनकर ऐसा तप रहा है, कि मजेमें उस डबल रोटी सेंक ली जा सकती है; मगर चले हैं चचा होली मनाने!

बिना भांग पिये ही भकुआ गये चचा? होली तो बाबा आदमके जमानेमें हो ली। अबतो होलीके नामपर होती है होलीकी ठिठोली। और यह झांझ, डफ, ढोल लिये धमार गाती हुई ढोली, निकाल कर चली है वसन्तकी मस्ती की खटोली।—फिर होली कैसे हुई?

और तिसपर आज?—भजगोविंदम्, भजगोविंदम्! आजकी होली बाहरसे ही है अन्दरसे तो है एक दम पोली! किस्मतमें लगी है गिरानीकी गोली!—चोर बाजारकी चालें हैं बकलोली और जमाना है कंट्रोली!

न रही वह लहगा और न रही वह शांतिपुरी साड़ी!—वृषभानुकिशोरीको भी आज धारण करना पड़ रहा है, मार्कीनकी मोटी साड़ी! आटामें लगा हुआ है, घाटा। घीके स्थानपर विजिटेबिलका साम्राज्य और रजिष्ट्री शुदा चीनी—मालपुआ कैसे उड़ायेंगे चचा होली में?

सम्पादकीय लिखनेके लिये चारबूंद बढ़िया स्याहीका रोना लगा रहता है और चिल्ला रहे हैं रंग ले, रंग ले!

सगाईके लिये पावभर बढ़ियां सेन्दूर ही नहीं; फिर कैसे रंग डाला जायेगा होलीमें?

"अपने-अपने घरसे निकली, कोई सांवरि, कोई गोरी!"

बिलकुल खयाली पुलाव है यह सब! बेलके पकनेसे कौएके बापका कुछ लाभ थोड़े होता है, चचा? दूसरेकी शाल तो चचा बस ललचाने भरके लिये ही होती है, माघका जाड़ा अपनी ही गुदड़ीके नीचे कटती है, यह मोटो काबिले नोट हैं अन्यथा कनचपत और कनमिठाईके सिवा और कुछ हाथ नहीं आयी।

जमाना है चचा वारका। आज हमें जो कुछ भी मिलता है वह वार क्वालिटीकी चीज होती है।—वार क्वालिटीकी तनख्वाह, वार क्वालिटीका कपड़ा, वार क्वालिटीका अन्न—वार क्वालिटीकी सवारी। वार क्वालिटीका सिनेमा! वार क्वालिटी की हवा!—यहीं तक नहीं कहीं-कहीं तो अब बच्चे......खैर जाने दो! मतलब तुम्हारे इस मुंहफट भतीजेका यह है कि सब कुछ जब वार क्वालिटीका है तो पर्व-त्योहार भी वार क्वालिटीके ही होने चाहिये। मेहमान लोग आते होंगे। चलो हम दोनों चचा-भतीजा मेहमानोंकी खातिरदारीमें टाट बिछायें और बीच टाटपर, जलखायेके लिये, दफ्तरीयें, सावर, सप्रेम, रेखन-कार्ड परोस दें।—आपका भतीजा 'मुंहफट।'

होली की ठिठो

——:o:——

"वृन्दावन मोहन दधि लूटे, वृन्दा

—थाने में फोन कीजिये, थाने

×

"भर फागुन बुढ़ऊ देवर लागे, भर

—और अगर रंगीला बु

महीने को फागुन समझा करे तब!

×

"नकबेसर कागा ले भागा, नक

—टटोल कर देखिये कि

सही-सलामत बच गयी न, या

दूसरा संस्करण प्रकाशित हो गया!

"फागुनकी बुंदिया बरसे रे, फागुन

—कोई परवाह नहीं, राधा

पहन कर घर से निकलेंगी!

×

"करवो मैं कौन बहाना,

गवन हमरो नगि

—ठीक है। आप शहरी

आपके पास हिस्टीरिया नामक अ

\+

"श्याम कुब्जा संग खेले होरी..."

—आप अपने अधिकारका

क्यों नहीं पेश कर देती?

×

"नीको न लागे मोहें फाग रे,

पिया छाये विदे

—क्यों, मनीआर्डर ठीक सम

आता क्या?

×

"डगर मोसे श्याम करे बरजोरी...

—मर्दाना औरत बनकर

चित्त कर डालिये न!

×

"कबहूं न खेली ऐसी होरी..."

—अच्छा, अब तो गधा का

गया न?

\+

"फागुन के रस ले ले रे, फागुन के

—खाली रस ही या रसगुल्ल

×

"बुढ़वा के गौना करा देहु हो, फा

—उकता क्यों रहे हैं,

विरोधी एक्ट नहीं!

\+

"कोई ले-ले मटरकी छेमियां..."

—मगर कैश मेमो भी देना

×

"भर फागुन रह ससुरार रे, भर

—मगर जरा सम्हलके, कि

नहीं मिलनेके कारण गोलमाल हो

\+

"ब्रज मण्डल देश दिखादे रसिया,

—बेकार परेशान क्यों होना

हैं। स्टूडियोंकी सैरकरें तो कुछ का

×

"मैं तो न खेलूंगी, ना खेलूंगी,

ना खेलूंगी

—ठीक है, छूंछे छूंछे भला

खेली जाती है। न लंहगा और

खाली पिचकारी।

×

"फागुनवा बीता जाय सोनरवा

मोरि

—कोई परवाह नहीं, कोदो दल

रीति भी आपको मालूम है!

\+

"फागुनमें बिछिया लादे रे, फा

—पागल तो नहीं हो गयी हैं,

नेशनल सर्टिफिकेट मंगवाइये

भी हो!

—'मुं

...हित बस जिनके मनमाहीं ।
...कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

हम कैसे मनायें होली ?

——:०:०:——

आनन्द और उल्लासका फौवारा तो ...ता है स्वाधीन वायुमण्डलमें स्वच्छन्द विच-...लोगोंके करनेवाले अन्तःकरणमें । मानव ...न क्या वस्तु है यह वे ही अच्छा तरह ...सते हैं। उनकी जिन्दगीमें जिन्दादिली ... विकराल महायुद्धकी लपलपाती हुई ...ओंके बीच घिरे रहनेपर भी यूरोपके देशोंने ...ने जातीय त्योहार--बड़े दिनको जिस ...ह और उल्लासके साथ अभी ...में मनाया है, पराधीनताके पाशमें ...दियोंसे तन और मनसे जकड़े भारत-...ही उसका लेश भी अनुभव नहीं कर ...ते। सदियोंकी हमारी राजनीतिक ...धीनताने हमारी जीवन-स्फूर्ति को ही ...चुरा लिया है। हमारी जिन्दगी ...न्दगी रही नहीं गयी। क्योंकि जिन्दा-...दिलीको खोजनेके लिये अगर हम अपनी ...री शक्ति भी खर्च कर दें, तो भी उसे कहीं ...ना यदि असम्भव नहीं, तो अत्यन्त कठिन ...अवश्य है। आज हमारे सामने होली—...स-परिहासका युग-परिवर्तनकारी त्योहार ...स्थित है। लेकिन ऐसे आह्लादकारी मह-...के आनेपर भी क्या हमारे अन्तःकरणमें ...न और जागृतिका तनिक भी सचारहोता ... चारों ओर दृष्टि दौड़ानेपर भी किसीके ...पर हास-परिहासकी धुंधली रेखा ... दिखायी पड़ती। दिखायी पड़े तो ...! शताब्दियोंके शोषणने हमारे अन्दर ...नामकी कोई वस्तु छोड़ा ही नहीं। ...ी दीनता, दुर्बलता और बेबसी ...कि बनने जा रही है। हमारे महान ...आते, लेकिन हमारे अन्दर ...उद्दाम उत्साह और अजस्र उल्लास ...भरते, जिनका उद्रेक करनेके लिये ...त्रिकालदर्शी ऋषि-महर्षियोंने उनका ...र्माण किया था।

...भारतका ही एक ऐसा दिन था, जब ...मण्डलमें दही और केसरसे लोग इस ...र दिल खोलकर होली खेलते थे कि ... और गलियोंकी धर्ती पंकमय हो जाती ...गोपाल कृष्ण और राजा वृषभानुकी पुत्री ...काकी फागपर बड़े-बड़े काव्यग्रन्थ लिख ...गये हैं। फाग खेलनेके लिये पीतवस्त्र-... नरनारी जब हाथोंमें सोने-चांदीकी ...कारियोंमें रंग लेकर आमने सामने डट ...थे, तो देवता भी उस मनोहर दृश्यपर ...न-विभोर हो जाया करते थे। वे दिन ...स्वाधीन भारतके अतुल उत्कर्ष और ...मित समृद्धिके। किन्तु आज हम अप-...ी पराकाष्ठापर पहुंच गये हैं। होली ...के लिये कौन कहे, दही-दूध अधिकांश ...ोंको दर्शन करनेके लिये भी नहीं ...। बड़े-बड़े शहरोंमें दही और दूधके नामपर कोई सफेद चीज सवा और एक रुपये सेरके हिसाबसे बिक रही है। केसरका तो पूछना ही क्या है? रेशमी पीताम्बरका अब नाम ही सुना जाता है। पहननेको मोटा कपड़ा भी पूरा-पूरा नहीं मिलता। समाचार पत्रोंके पाठक अच्छी तरह जानते हैं कि आज बंगाल, बिहार और युक्त प्रांतके देहातोंमें कपड़ेका इतना अभाव हो गया है कि बड़े-बड़े परिवारोंकी गृह देवियां पर्याप्त वस्त्राच्छादन न पानेके कारण 'असूर्य-पश्या' बनने लगी हैं। लखनऊकी एक खबर के अनुसार कई कब्रें इसलिये खोद डाली गयी हैं ताकि उनमें गाड़े गये मुर्दोंके कफन निकाल लिये जायें। वस्त्रकी समस्या इस सीमा तक पहुंच गयी कि यह निश्चय करने की आवश्यकता आ उपस्थित हुई है कि मुर्दोंका शरीर ढंका जाय या जिन्दोंका।

अन्नाभावके कारण भारतके अधिकांश शहरों और प्रान्तोंमें खाद्यान्न और चीनीकी रेशनिङ्ग व्यवस्था सरकार द्वारा चालू की गयी है और प्रत्येक व्यक्तिको एक सप्ताह या एक पक्षके लिये अन्न सरकार द्वारा नियुक्त दुकानोंसे मिलता है। अन्न खाने योग्य है या नहीं इसकी कोई गारण्टी नहीं। चावल, दाल, आटा और चीनीके नामपर अच्छी या बुरी चीजें रेशन कार्डमें लिखे परिमाणके अनुसार मिल जायेंगी। लाहौरके दुर्गामोटे जैसे भोजनभट्ट सुबह-शाम भगवानका नाम जपनेके बजाय खानखाना रहीमके निम्न दोहे को जपने लगे हैं—कह रहीम या पेटसे क्यों न भयो तू पीठ। पेटमें जब चूहे दण्ड पेलने लगते हैं तो भगवानका भजन करनेकी फुरसत किसे रहतीहैं। इतनाही नहीं समस्त लोकप्रिय नेता गत दो वर्षोंसे अनिश्चित कालके लिये जेलोंकी चहारदीवारीके अन्दर बन्द कर रखे गये हैं। इसलिये आंख होते हुए भी अन्धा और सिर होते हुए भी दिमाग रहित होकर सारा देश निष्काम और निष्प्राण हो रहा है। साम्प्रदायिक अनैक्यके बहाने हमारे शासक हमें अपने जन्मसिद्ध अधिकारोंसे वंचित किये रहना चाहते हैं। हमारे ही क्यों सारे संसारके न्यायप्रिय लोगोंकि सिफारिश करनेपर भी हमारे तथा-कथित मालिक हमें स्वभाग्य निर्णयका अधिकार देना तबतक नहीं चाहते, जब तक हम परस्पर एकताबद्ध न हो जायें। हम अपनी स्वभावगत उदारताके आधारपर जब आपसमें मेल-मिलाप करनेकी चेष्टा करते हैं; देशकी निष्क्रियताको मिटानेके लिये अपने रचनात्मक कार्यक्रमको आगे बढ़ानेकी चेष्टा करते हैं, तो हमारे शासकोंका दिल दहलने लगता है और तथा-कथित भारत रक्षाके नामपर हमें उस दिशामें आगे बढ़नेसे रोक दिया जाता है। अपनी दारुण निस्सहावस्थामें होलीके महान त्योहारको अपने सामने उपस्थित देखकर हम किंकर्त्तव्यविमूढ़-से हो रहे हैं कि आखिर इसका स्वागत-सत्कार करनेके लिये हम आवश्यक साधन कहांसे जुटायें।

होलीका सूत्रपात भारतकी जिस राजनीतिक अवस्थामें हुआ था, आजकी अवस्था उससे बहुत भिन्न नहीं है। मदान्ध पाशविकताने एक सत्यवादी वीर बालकको अपने पथसे विचलित करनेके लिये न जाने क्या-क्या अन्याय और अत्याचार उसके साथ किये, लेकिन वीर सत्याग्रही प्रह्लाद अपनी धुनमें मस्त रह बराबर आगे बढ़ता गया और एक दिन वह आया, जब तत्कालीन सर्व-शक्ति सम्पन्न सत्ताको उसके सामने श्रीहत होना पड़ा था। आजकी होली हमें प्रेरणा दे रही है कि हम अपने राष्ट्रके कर्णधार द्वारा निर्देशित सत्य और अहिंसाके मार्ग पर अपने मजबूत कदमोंको बराबर बढ़ाते चलें। विजयश्रीकी प्राप्ति बिलकुल असंदिग्ध है। रचनात्मक कार्यक्रमकी चौदह शर्तें जिस दिन पूरी होजायेंगी। उसी दिन भारतकी स्वाधीनता निश्चित है। लेकिन यह मार्ग है बड़ा बीहड़ और दुर्गम और जबतक हम वीर बालक प्रह्लादके समान कृत-संकल्प होकर इसपर अग्रसर होना नहीं सीखेंगे तब-तक बाधाओंका कुहरा हमारी आंखोंके सामने छाया रहेगा; भक्तों के भगवानकी समाधि टूटेगी ही नहीं और हमारी दुरवस्था दिन-दिन अधिकाधिक होती जायगी।

इस युद्धकालीन होलीमें हुरदंगसे तो हमें कतई बाज आना चाहिये। जहां हमारे लोकप्रिय नेता जेलोंका कोठरियोंको आबाद किये हुए हैं, यदि हम अपने अभद्रतापूर्ण आचरणोंपर नियन्त्रण नहीं रख सके, तो यह हमारी अयोग्यता और कृतघ्नताका सर्टिफिकेट होगा। युद्धके कारण सभी आवश्यक चीजोंका अकाल है। एक जोड़ी धोती और एक कुर्ता खरीदनेके लिये साधारण श्रमिकको हाथी खरीदने जैसी तैयारी करनी पड़ती है। हुरदङ्गमें अधिकतर शिकार निम्न श्रेणीके लोग ही बनाये जाते हैं। जिन रङ्गों को दूसरे आदमीपर फेंककर हम अपने हृदयमें आनन्दका उद्रेक करना चाहते हैं, वे भी अप्राप्य हैं। इसलिये उनके स्थानकी पूर्ति ऐसी भयङ्कर चीजें करेंगीजो वस्त्रोंके अस्तित्व के साथ ही अपनी समाप्ति करनेको तैयार होंगी। इस भयङ्कर अन्न-वस्त्राभावमें यह कार्य कहांतक उचित होगा, यह सब लोग अच्छी तरह समझ सकते हैं। इसलिये रङ्गोंका उपयोग तो कदापि होना ही नहीं चाहिये जब तक कि हम उनके द्वारा हुई क्षतिको पूरा करनेके लिये तैयार न हों। अपने प्रेम और सद्भावको प्रकट करनेके लिये हम अधिकसे अधिक इतना कर सकते हैं कि शुष्क अबीर-गुलालसे अपने लक्ष्यको रंजित करके अथवा बिलकुल साफ पानीका उपयोग करके हम अपने आनन्दका बर्द्धन करें। कहनेका तात्पर्य यह है कि हमारा परिहास भद्रोचित और वास्तविक आनन्दका उद्गम बने, जिससे एकता और सदिच्छाकी वृद्धि हो। तभी हमारी होलीकी हंसी सार्थक होगी, अन्यथा हमारी होली मुहर्रम बनने लगेगी।

यह मनमानी क्यों ?

भारतमें नौकरशाहीकी दुरङ्गी चाल कोई नयी चीज नहीं है। अपनी इसी नीतिकी बदौलत, वह अपना शासन भारतपर कायम किये हुई है। नहीं तो ४ करोड़ और ४० करोड़में बहुत बड़ा अन्तर होता है। बैरगिया नालाके तीन चोर तेरह नर्तकोंको नचा रहे थे, सिर्फ इसीलिये कि सर्वदा सावधानी और सतर्कतासे इस तरह काम लिया करते थे, जिससे आने-जानेवाले यात्री सर्वदा अपनेको किंकर्तव्यविमूढ़ावस्थामें पाते और अपनी शक्तिकी ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता। आज भी नौकरशाहीकी दुधारी तलवार चल रही है और उसको सफलता भी मिल रही है। लेकिन अब उसकी यह चाल सब लोग समझ गये हैं और इसका प्रतिरोध शीघ्र अनुकूल अवस्था उत्पन्न होते ही किया जायेगा। एक तरफ ही श्री भूलाभाई देसाईका वायसरायसे सन्धिवार्तालाप हो रहा था और जहां यह अटकलें लगायी जा रही थी कि फरवरी समाप्त होते अथवा मार्चके आरम्भमें नजरबन्द नेताओंको मुक्त कर दिया जायेगा, वहां दूसरी तरफ जो कांग्रेस नेता किसी प्रकार अपने जेल-जीवनसे मुक्ति पा चुके हैं, उनकी गतिविधिपर, योंही भारतरक्षा कानून का राग अलापकर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है। बिहार उड़ीसा और युक्तप्रान्त ऐसी मनमानी कार्यवाहियोंके रङ्ग-मंच बन रहे हैं। भारत रक्षाकानूनका दुरुपयोग इसदेशमें आज जिस मनमाने ढङ्गसे हो रहा है, अगर कोई स्वतंत्र देश होता तो सरकारका आसन हिला दिया गया होता, लेकिन हतभाग्य भारत! अधिकारी कांग्रेसकी लोकप्रियतासे इतने सतर्क रहने लगे हैं कि वे किसी भी उपायसे कांग्रेसजनोंको जनताके सम्पर्कमें आने देना नहीं चाहते। कांग्रेसके रचनात्मक कार्योंकी प्रणाली विशुद्ध सत्य और अहिंसापर आधारित रहनेपर भी उन्हें हिंसा की बू मिलने लगती है। भयका यह हौआ उन्हें ऐसे अनुचित कार्य करनेके लिये बाध्य कर देता है, जिनको विकृत दिमागवाले लोग ही कर सकते हैं। बिहारके नेताओंपर लगाये गये प्रतिबन्ध और युक्तप्रान्तीय असेम्बलीके स्पीकर श्री पुरुषोत्तमदास टण्डनकी गोरखपुरमें गिरफ्तारीका कोई भी उचित आधार नहीं, लेकिन नौकरशाहीको अपने ढङ्गसे काम करते जाना है। औचित्यानौचित्य से उसे कोई सरोकार नहीं।

गत स्वाधीनता दिवसके अवसरपर जनताने जिस उत्साहके साथ कांग्रेसके प्रति अपनी कृतज्ञताका प्रकाश किया है, उससे अधिकारी खिसियानी बिल्ली बन रहे हैं। और कुछ न सही, तो गतिविधिपर प्रतिबन्ध और गिरफ्तारी तो उनका मौरूसी अधिकार है ही। और उसका समर्थन करनेके लिये भारतरक्षा कानून भी है। युक्त प्रांतके गवर्नर और गोरखपुरके अधिकारी तो पण्डित जवाहरलाल जैसे प्रभावशाली नेताको गिरफ्तार कर अपनी मनमानीके लिये ऐतिहासिक व्यक्ति बनने जा रहे हैं। टण्डनजी के प्रभावको बढ़ते देखकर उन्हें घबड़ाहट इतनी अधिक हुई कि गोरखपुर पहुंचनेके बाद ही उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया किस आधारपर, यह गिरफ्तार करनेवालोंको भी निश्चित रूपसे मालूम नहीं हुआ। टण्डनजीने साफ कहा है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलनमें जो भाषण मैंने किया था, उसके कुछ अंशोंपर सन्देह किया गया और उनकी वैधानिकतापर विचार करने तक मुझे भारत रक्षा नियमावलीके १२९ वें नियमके अनुसार नजरबन्द कर दिया गया। अब उन्हें मालूम हो गया कि मुझपर मुकदमा

नहीं चलाया जा सकता, तब एक सप्ताह बाद मुझे रिहा किया गया। ऐसी एक नहीं अनेक घटनाएं हो चुकी हैं और उस समय तक होती रहेंगी जबतक देशमें अपनी प्रतिनिधि लोक प्रिय राष्ट्रीय सरकार नहीं बनेगी।

युद्धका अन्त कब होगा?—

शीर्षक पढ़कर पाठक यह न समझ बैठें कि हम ज्योतिषियों जैसी कोई भविष्य-वाणी करनेका दुस्साहस करने जा रहे हैं। स्वयं मि० चर्चिल, प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट और मार्शल स्टालिन भी निश्चित रूपसे इस प्रश्नपर कोई बात नहीं कह सकते। चर्चिलकी तो अनेक भविष्यवाणियां अबतक गलत हो चुकी हैं। हम यहां दक्षिण अफ्रीका स्थित प्रवासी भारतीयोंकी ओर पाठकोंका ध्यान आकृष्ट कर यह बतलाना चाहते हैं, कि जबतक काले गोरेका भेदभाव बना रहेगा, निर्बल राष्ट्रोंका सबल राष्ट्रों द्वारा शोषण जारी रहेगा, साम्राज्यवादी लिप्सासे शक्तिसम्पन्न राष्ट्र अपनेको मुक्त करनेकी सच्चे हृदयसे चेष्टा नहीं करेंगे, तबतक युद्ध संसारमें होते रहेंगे और एक युद्धकी समाप्तिमें ही दूसरे युद्धका बीज वपन होता रहेगा। मित्र राष्ट्रोंके कर्णधारोंकी वर्तमान कार्यप्रणा-लियोंको देख कर लोग अभीसे, जब कि वर्तमान युद्धका अन्त भी नहीं हुआ, तीसरे युद्धकी भविष्यवाणी करने लगे हैं। दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार प्रमुख मित्रराष्ट्रोंमें अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है और वहांके प्रधान मन्त्री जेनरल स्मट्स यह महसूस करते हैं कि वहांके प्रवासी भारतीयोंके साथ सरासर अन्याय हो रहा है; लेकिन उसके प्रतिकारका कोई रास्ता वे नहीं निकालना चाहते, केवल इसलिये कि रंगभेदका भूत उनके सिरपर सवार होकर बोल रहा है। पेगिंग एक्ट सरासर अन्यायपूर्ण है। इस बात-को महसूस करके दक्षिण अफ्रीकाके गोरोंने अब अपना पैतरा भी बदल दया है और अब यह चेष्टा होने लगी है कि प्रवासी भारतीय स्वयं यह स्वीकारकर लें कि वे गोरी बस्तियोंमें नहीं रहेंगे। इनकी इस कुचे-ष्टाका प्रतिवाद करते हुए ट्रांसवालकी भार-तीय कांग्रेसकी कार्य समितिने प्रवासी भार-तीयोंको चेतावनी दी है कि वे गोरोंके प्रलोभनोंमें न आकर अपने उचित अधि-कारोंकी मांग बराबर जारी रखें। फौजमें जो काम सफरमैना दल करता है, वही काम भारतीयोंने दक्षिण अफ्रीकामें किया है। वहांके झाड़ झंखाड़को साफ करके जब उसे मानव निवासके उपयुक्त बनाया गया तो अब वहांके गोरे, जो दुनियामें सभ्यताका प्रसार करनेके लिये पृथ्वीतलपर भेजे गये अपने-को बताते हैं भारतीयोंके सारे अधिकारोंको हड़प लेना चाहते हैं।

हमारी भारत सरकारने, जो उसी थैलीके चट्टे-बट्टोंमें हैं, केन्द्रीय असेम्बलीके गत अधिवेशनमें अफ्रीकावासी गोरोंके साथ प्रतिशोध मूलक कार्यवाही करनेका वादा किया था, लेकिन अब यह साफ मालूम होता है कि 'रक्त पानीसे गाढ़ा होता है।' आज यदि हमारी राष्ट्रीय सरकार होती, अपनी लोक प्रियताके प्रभावसे उसमें मुस-लिम प्रतिनिधियोंकी ही प्रधानता क्यों न होती, यह निश्चित था कि दक्षिण अफ्रीका-से संघर्ष छेड़ दिया गया होता। लेकिन जिस सरकारपर जनताकी आवाजका कोई असर नहीं, जिसमें ईमानदारीकी इतनी भी भावना नहीं कि कमसे कम जिसका नमक खाते हैं; उसके मानापमानकी ओर तो पूरा पूरा ध्यान रखा जाये, उससे किसी प्रकारकी आशा रखना बालूसे तेल निकाल-नेकी चेष्टाके समान निष्फल है। महात्मा गांधीने बिलकुल ठीक कहा है कि भारतमें (भारतीयोंके साथ) जिस प्रकारकी कार्य-वाही हो रही है, अगर वह इसी तरह होती रही तो मित्रराष्ट्रोंको तथा-कथित ही विजय प्राप्त होगी। क्योंकि भारतकी तरह अन्य समस्त राष्ट्रोंका रक्तपात होता रहेगा और निकट भविष्यमें इससे भी अधिक विक-राल युद्ध छिड़ेगा। फासिस्टवाद, मार्क्सवाद और जापानके सैनिकवादकी चितासे एक ऐसा दानव उत्पन्न होगा, जो जिस किसी को पायेगा खा डालेगा। कौन बचेगा, कहना कठिन है।

लोकमतकी एक और अवज्ञा—

आल इण्डिया रेडियोकी हिन्दी विरोधी नीतिसे क्रुद्ध होकर अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनने हिन्दी जगतसे उसका विरोध करनेका जो अनुरोध किया, उसका सन्तोषजनक उत्तर मिला और विरोधके बढ़ते हुए वातावरणको देखकर भारत सर-कारके रेडियो विभागके सदस्यने चाहा कि असन्तोषके इस प्रवाहको रोक दिया जाये। उन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन और अंजुमन तरक्किये उर्दूके प्रतिनिधियोंकी कानफरेंस बुलायी एवं उनसे बातचीत की। लेकिन हालमें इस सम्बन्धमें सरकारका जो निर्णय प्रकाशित हुआ है, उससे यही मालूम होता है कि सरकारने एकबार फिर भारतीय लोकमतकी अवहेलना की है। रेडियोका प्रोग्राम ब्राडकास्ट करनेके लिये उसने एक ही भाषा स्वीकार की है और वह हिन्दु-स्तानी। हिन्दुस्तानीकी जो व्याख्या वर्धामें की गयी है, अगर वास्तवमें वही भाषा रहे तो किसीको विशेष आपत्ति नहीं हो सकती। लेकिन यहां तो हिन्दुस्तानीकी आड़में फारसी और अरबी भाषा रेडियो श्रोताओंको सुनायी जाती है और उन्हें जानबूझकर बाध्य किया जाता है कि या तो वे अरबी-फारसीका ज्ञान प्राप्त करें या रेडियो जन्य लाभोंसे अपनेको वंचित रखें। युक्त प्रान्त, राजपुताना, मध्य प्रदेश और बिहारमें हिन्दी भाषी लोगोंकी संख्या २० करोड़से कम नहीं होगी। इसलिये अगर हिन्दी (संस्कृतकी दुहिता हिन्दी) को राष्ट्रभाषाका स्थान नहीं दिया जा सकता, तो कमसे कम बहुमतकी भाषा तो उसे स्वी-कार करनी ही चाहिये और जब रेडियो प्रोग्राम प्रान्तीय भाषाओंमें ब्राडकास्ट किये जा सकते हैं, तो कोई कारण नहीं मालूम होता कि क्यों न हिन्दीको भी कमसे कम अन्यप्रान्तीय भाषाओंके समान स्थान दिया जाये। शायद इसका एक कारण रेडियोवाले यह समझते हैं कि हिन्दी भाषी जनता शिक्षा से अभी बहुत दूर है और अपने हककी मांग करनेके लिये बुलन्द आवाज नहीं उठा सकेगी। ऐसी दशामें हमारा एकमात्र कर्तव्य यही मालूम होता है कि हम रेडियोका बहिष्कार बराबर जारी रखें और अपनी निरक्षर जनताको साक्षर बनानेकी चेष्टा करें। इसमें सन्देह नहीं कि अन्य प्रांतोंकी अपेक्षा हिन्दी भाषी प्रांत शिक्षाकी दिशामें बहुत पिछड़े हुए हैं। नब्बे प्रतिशतसे कम लोग शिक्षित नहीं होंगे। अगर कुछ वर्षोंसे हम उनके अन्दर शिक्षाके द्वारा ज्ञानकी ज्योति जगा सकें, तो हमारा विश्वास है कि झख मारकर भारत सरकारको हिन्दीमें ब्राड कास्ट कराना होगा और रेडियोवाले भी हिन्दीमें प्रोग्राम रखना आर्थिक दृष्टिसे लाभ दायक समझेंगे। सरकारकी इस नीतिका-प्रतिवाद करनेके लिये रेडियोकी प्रतिद्वन्द्विता भी की जा सकती है, लेकिन इसमें सन्देह है कि वर्तमान सरकार किसी नयी कम्पनीके ऐसे प्रयासको उचित समझ सकेगी। नयी कम्पनीके मार्गमें युद्ध जन्य अवस्थाकी अनेक कठिनाइयां भी उपस्थित होंगी। इसलिये अभी यह बात मौजूदा समयसे कुछ आगे की मालूम होती है। लेकिन युद्धोत्तर योजनामें ऐसे प्रयासको अवश्य स्थान देना चाहिये।

डिगालेका इन्कार—

याल्टा सम्मेलनके बाद जब प्रेसी-डेंट रूजवेल्ट वापस लौटने लगे थे तो रास्तेमें कई अन्य कामोंसे भी उन्होंने निबटनेकी चेष्टा की और याल्टाका पूरक सम्मेलन ४ घण्टे तक मिस्रके अलेकजेण्ड्रियामें हुआ इस सम्मेलनमें खबर है, कि ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलने प्रेसीडेण्टको स्पष्ट तौरपर आश्वासन दिया है कि जर्मनीकी लड़ाई समाप्त होते ही ब्रिटेन अपनी सारी शक्ति और साधन जापानके विरुद्ध लगा देगा। याल्टा कानफरेंसमें प्रशांतके युद्धकी चर्चा तक, मार्शल स्टालिनकी जापानकेसाथ अना-क्रमण सन्धिके कारण नहीं की गयी। यूरोपकी समस्याओंपर चाहे वे युद्ध सम्बन्धी हों या राजनीति सम्बन्धी, विचार करनेवाली [illegible] भी अपनी उपस्थिति अनि-वार्य समझता है। इधर जर्मनीके फासिस्ट चंगुलसे मुक्त होनेके बाद उसने अपनी शक्ति पूर्ववत बनानेके लिये फिर प्रयास आरम्भ कर दिया है। याल्टा सम्मेलनमें जेनरल डी-गालेने सम्मिलित होनेके लिये बहुत चेष्टा की, लेकिन उसे नहीं शामिल किया गया, क्यों? इसका उत्तर प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट और चर्चिल अच्छी तरह दे सकते हैं। प्रेसीडेण्टने याल्टा कानफरेंस समाप्त करनेके बादकः दिन पहले अपने राजदूतके द्वारा डीगालेको अलजि यर्समें मुलाकात करनेके लिये बुलाया। ऐसा लगता है कि याल्टा कानफरेन्समें सम्मिलित न करनेसे डीगालेको जो असन्तोष हुआ है, उसको प्रेसीडेंट शांत करना चाहते थे। लेकिन जेनरलने फ्रांसके बाहर प्रेसीडेंटसे रूजवेल्टसे मुलाकात करना शायद अपना अपमान समझा। इसलिये प्रेसीडेंटके निमन्त्रणको उन्होंने यह कहकर अस्वीकार कर दिया कि फ्रांसमें अत्यधिक कार्यव्यस्त होनेके कारण मैं बाहर जानेमें असमर्थ हूं। गत नवम्बरमें डीगालेने प्रेसीडेंट रूजवेल्टको पेरिस आने और फ्रांसकी समस्याओंको सुलझानेमें सहयोग देनेके लिये आमन्त्रित किया था; लेकिन उस समय वे नहीं [illegible] थे। अबकी बार जब प्रेसीडेंट याल्टा का[illegible] फरेंसमें शामिल होनेके लिये यूरोपके [illegible] तलपर पधारे, तब जेनरल डीगालेको [illegible] आशा स्वाभाविक थी कि प्रेसीडेंट [illegible] जरूर पहुंचेंगे। लेकिन उन्होंने डीगा[illegible] ही अलजियर्समें बुलाया। इससे जेन[illegible] नाराजगी है तो बिलकुल स्वाभाविक, [illegible] निर्बलोंकी नाराजगीका ख्याल ही [illegible] करते हैं? अमेरिकाकी चढ़ी त्योरीको [illegible] चर्चिल भी सहनेकी क्षमता नहीं रखते [illegible] जेनरल डीगालेके इस सत्साहस या दु[illegible] पर मित्र राष्ट्रोंको आश्चर्य अवश्य [illegible] खासकर ऐसी हालतमें, जब सब [illegible] साहूकार अमेरिका बना हुआ है और [illegible] में भी पुनर्निर्माण कार्यमें उसीकी ओर [illegible] की दृष्टि रहेगी। लोग तो इसे डीग[illegible] गुस्ताखी ही समझेंगे लेकिन इसमें उन[illegible] दोष ही क्या है जिसकी अवस्था उस [illegible] तरह हो रही है जो असाध्य रोगसे [illegible] अर्से तक पीड़ित रहनेके बाद भग्न म[illegible] लेकर उठा है और जल्दी-जल्दी अपने [illegible] स्वास्थ्यको प्राप्त करनेकी धुनमें पाग[illegible] रहा है। देखना है, डीगालेका यह [illegible] भविष्यमें क्या गुल खिलाता है।

इसकी क्या दवा है?—

इसमें सन्देह नहीं कि वर्तमान [illegible] निक गतिरोधसे सारा देश—कुछ [illegible] लोगोंको छोड़कर—ऊब गया है और [illegible] न किसी प्रकार इस सम्बन्धमें स[illegible] सम्मान पूर्ण समझौता करनेके लि[illegible] तैयार है। लेकिन ब्रिटिश सरकारका [illegible] है कि मैं सब कुछ करनेको तैयार [illegible] पहले सम्प्रदायिक एकता स्थापित हो [illegible] साम्प्रदायिक एकताकी स्थापना [illegible] द्वारा तभी स्वीकृत होगी, जब मि० [illegible] राजी हो जायेंगे। मि० जिन्ना पा[illegible] से कम किसी चीजको लेना नहीं [illegible] हालांकि अधिकांश मुसलमान देशके [illegible] लिये बिलकुल तयार नहीं हैं। [illegible] सरकार भी खूब अच्छी तरह सम[illegible] कि भारतके दस करोड़ मुसलमानोंका [illegible] मि. जिन्ना प्रतिनिधित्व नहीं करते [illegible] वह तो मि. जिन्नाको ही मुसलमानोंका [illegible] मात्र नेता माने हुए बैठी है। स[illegible] को अबतकके अनुभवके आधार [illegible] मालूम हो सका है कि राष्ट्रीय स्वा[illegible] समर्थक सभी राजनीतिक दल बहुत [illegible] एक दूसरेसे सहमत हैं और वह जो [illegible] वैधानिक गतिरोध दूर करनेके लि[illegible] येगी वह अधिकांश राजनीतिक द[illegible] स्वीकार की जायेगी। साम्प्रदायिक [illegible] जुएमें बड़ीसे बड़ी बाजी लगाने[illegible] राजगोपालाचार्य काफी ख्या[illegible] कर चुके हैं। राजाजीने देशसे स[illegible] निर्णयको स्वीकार करनेके लिये [illegible] है और कहा है कि अगर इसे [illegible] करनेपर कोई त्रुटि मालूम होगी तो [illegible] मार्जन बादमें किया जा सकेगा। [illegible] बिलकुल ठीक है, लेकिन मि० [illegible] जो सप्रू कमेटीको महात्माजीकी [illegible] की हुई कमेटी बताते हैं, इसके [illegible] मनवानेके लिये वे क्या उपाय [illegible]

हि ट ल री हो लि का द ह न

अर-र-र..............कबीर !

—:*:—

अर-र-र, सुन लो, भैया मोर कबीर !

(१)

हिन्दुस्तानी बसे बेचारे, दखिन अफ्रिका-बीच !
'फील्ड मार्शल स्मट्स' भिड़े, उनसे आंखें:मींच !
चाह रहे जड़ मूल खोद कर, उन्हें मंगायें खींच !
(कैसे साथ बसेंगे गोरोंके ये काले नीच !)
हांक लगाते गोरे, पीठ दिखा मत मेरे बीर !
अर-र-र........भैया मोर कबीर !

(२)

दिल्ली एसेम्बलीमें गूंजा—'होता यह अन्याय।'
खरे और बेलाग 'खरे' ने कहा—'हुआ क्या, हाय !'
'ठहरो मैं गांधीसे लड़ता,' स्मट्स' तो हैं 'बाय !'
युद्ध अफ्रिकासे छेड़ूंगा, मुझसे रहा न जाय !
नहीं छुड़ा दूं छक्के तो मैं 'खरे' नहीं खोगीर !
अर-र-र........भैया मोर कबीर !

(३)

लगे उछलने, शोर मचाने, हुआ बड़ा भूचाल !
छिड़ी लड़ाई दखिन अफ्रिका-भारत में तत्काल !
कितने उठे, बैठ गये कितने, मूक बने बाचाल !
पंगु कहें, 'हम गिरिवर लांघें !' फिर क्या पूछो हाल !
गोले-गालीकी क्या गिनती, चले तीर शमशीर !
अर-र-र........भैया मोर कबीर !

(४)

दिग्विजयी श्वेतांग जातिसे मचा युद्ध घनघोर !
'जान बचाओ, मरे गुसैयां !'-मचा चतुर्दिक शोर !
'फील्ड मार्शल' गिरे 'फील्ड' में भगी सैन्य चहुं ओर !
'वीर खरे की जय !' चिल्लाया भारतने कर जोर !
नींद खुल गयी रेंक रहा था गदहा एक बेपोर !
अर-र-र-........भैया मोर कबीर !

—मनमोदक

मित्रराष्ट्रोंका होली-हुरदङ्ग

होली—हँसीका त्योहार

—:*:—

(लेखक—श्री तेजनारायण लाल)

हमारे समाजमें प्रायः सभी त्योहार क विशेष प्रकारके भोजन-भोदन, आदान-दान एवं आनंद उल्लासके निमित्त मनाये ाते हैं। युग-युगसे त्योहारकी यह प्रथा ली आ रही है। इसके पीछे कितनी ही थाएं तथा किम्वदन्तियां प्रचलित हैं। आज ी मौजूदा समाजमें इसका रूप किसी न केसी तरह कहीं न कहीं हम पाते हैं। आप केसी भी उत्सव अथवा त्योहारके बारेमें मासानीसे यह बात जान सकते हैं कि ये ऋतु-ओंके परिवर्तनानुकूल ही क्रमशः हुआ करते हैं। उस समय उसी तरहकी कई फसलें भी किसान और मजदूर तैयार करते हैं और उन्हें सर्वप्रथम त्योहारके दिन अच्छी-अच्छी चीजें पकाकर खाते-पीते तथा खुशियां मनाते हैं। इससे जरा जीका स्वादका भी बदल जाता है। अपनी मेहनत-मशक्कतका मीठा फल भी चख लेते हैं। एक उल्लास होता है, मस्ती रहती है और बड़ी खुशी होती है। एक साथ मिलजुलकर प्रेमालाप, प्रदर्शन एवं विचार-विनिमय करते हैं। परस्परकी मनो-मालिन्यता, कटुता दूर हो जाती है—गले-गलेसे, हृदय-हृदयसे मिलतेहैं। आपसमें कितना सामञ्जस्य रहता है। कितना आकर्षक, कितना मनोमुग्धकारी होता है वह सुहावना त्योहारका दिन! और प्रकृति? प्रकृतिमें भी नयी छटाएं, नयी चमक-दमक, नयी चेतनाके दर्शन हम एक साथ ही करते हैं। हमारा जीवन इससे अनुप्राणित हो उठता है, संजीवित एवं विकसित हो जाता है। एक नयी स्फूर्ति एवं कान्तिकी लहर उमड़ती है। हमारा उद्दाम यौवन उमङ्गमें उत्फुल्ल हो उठता है, कशमकश करता है।

प्रकृतिके नियमोंके अनुसार ही हमारे नित्यके आहार-बिहारमें कुछ हेर-फेर, अदल-बदल होते रहते हैं। त्योहारके अवसरपर मीठा, खट्टा, कड़ुआ, तिक्त, कषाय और आम्ल रसोंकी नाना प्रकारकी भोजन-सामग्रियां बनायी जाती हैं। खीर, पुआ, मालपुआ, पकौड़ी, दालमोट, आलूदम, दही कीकढ़ी, पापड़, अंचार आदि मीठा और चटपटी चीजें बड़ी लगनसे बनती हैं और हम अपने स्वाद एवं इच्छानुकूल बन्धु-बान्धवोंके साथ खाते-पीते और मौज उड़ाते हैं। थोड़ी देरके लिये अपनी गरीबीको भी भूल जाते हैं। पीड़ाएं, चिन्ताएं प्रसन्नतामें परिणत हो जाती हैं। हमें कुछ आत्मसन्तोष मिलता है और—'वसुधैव कुटुम्बकम्' का उच्चादर्श सामने आ खड़ा होता है।

हां, तो आज होलीका त्योहार आ गया है। कितने दिनोंके बाद आयी है यह होली। चारों तरफ हसी बिखेरती हुई, नाच-गानोंकी धूमधाममें अबीर-अबरख-चन्दन-कपूरसे सनी हुई, सराबोर यह होली अपना प्रत्यक्ष रूप लेकर आ गयी है। इसी होलीमें हम 'अग्नि-देव' की पूजा करते हैं पत्र पुष्प। पुआ-पकवान आदि होममें डालकर स्वास्थ्यवर्द्धक धुएंको अङ्गोंमें मलते हैं। वातावरण कुछ देर के लिये विशुद्ध बना देते हैं। प्रचण्ड ज्वाला से भूमण्डल आलोकित एवं प्रदीप्त हो जाता है। हमारी परवशताकी सीमाएं कुछ क्षणके लिये असीममें विलीन हो जाती हैं और हम अपनेको उस समय निर्बन्ध, स्वच्छन्द महसूस करते हैं। इसीसे हमें आनन्द भी होता है। चूंकि हम अपनेको थोड़ी देरके लिये बिलकुल भूल जाते हैं। इसलिये हमारी अहम्मन्यता एक अनिर्वचनीय आनन्दमें बिखरकर चूर्ण-चूर्ण हो जाती है। हमारी मानवता प्रेम के देशमें पहुंचकर सबोंमें—जर्रे-जर्रेमें अपना ही रूप देखती है। हमारा जीवन कितना मधुमय एवं सरस हो जाता है!

और, इधर रङ्ग-विरङ्गके पीले-पीले परिधानोंसे वेष्ठित एवं सुसज्जित सङ्गी-साथियोंकी टोलीमें होलीके अल्हड़ गीतों-गालियोंके लय-तालमें डफ, ढोल, मृदङ्ग, झाल पखाउजकी झङ्कारोंसे गलियां झंकृत एवं गुञ्जित हो जाती हैं। छिपी हुई सुख-वासनाएं, कामनाएं एक उच्छृंखलताके कलेवरमें उभड़ तथा निखरकर सजीव समा ला देती हैं, जिन्हें हम एक अस्वस्थ मनका प्रतिरूप कहते हैं। जैसे-जैसे हमारा समाज शिक्षित, सांस्कृतिक, सभ्य एवं धार्मिक बनता जायेगा—इन कुप्रवृत्तियोंका निराकरण भी संयमित ढङ्गसे होता जायेगा। यद्यपि आज भी इन उत्तम आदर्शोंके स्वरूप हम कई जगह पाते हैं। वे लोग होली खेलते हैं अवश्य, किन्तु एक स्वस्थ एवं कल्याणकारी रूप देकर ही। अण्टशण्ट, अलाय-बलाय, मदकीकी तरह बकबककर होली के सुन्दर रूपको, उसके उत्तम आदर्शोंको विकृत एवं कुरूप नहीं करते हैं। प्रकृति-देवी तो सहयोग चाहती है, संघर्ष नहीं। अप्राकृतिक ढङ्गसे होली कदापि श्रेयस्कर सिद्ध नहीं हो सकती। इसका दण्ड तो स्वयं प्रकृति देवी ही है; किन्तु मनुष्य या समाज भी।

अगर बराबर वर्षा या गर्मी या सर्दी ही पड़ती रहती, आंधी और तूफान ही चला करता, ऊपर आसमानसे ओला और वज्रपात ही होता। तो क्या हम आज इस अवस्थामें विद्यमान रह सकते? कदापि नहीं। क्योंकि प्रकृतिमें एक अवगुण्ठन है, पर्दा है, वह नग्न नहीं है। उसका प्रत्येक कार्य नियमके संकेत पर ही सञ्चालित होता रहता है। देखिये न होली में ही—

चर्चिलका एक राग

आमों, सहिजनों आदिकी मंजुल मञ्जरियां किस भांति मनको मोह रही हैं। मटर, गेहूं, अरहरकी फलियां कितनी भरी हुईं और पुष्ट हैं। फूलोंकी पंखुरियोंमें हमारी मुस्कियां दौड़ रही हैं, नाच रही हैं। तरुणाईकी अरुणिमाने गुलाबों, उड़हुलों, पलासों और सेमरके फूलोंको लाल-लाल अबीरोंसे भींगी हुई चादरकी तरह अपने अनुपम प्रेमके रङ्गोंसे कितना अच्छा रंगा है?

सरसोंके फूलों-सी पीत बदना ऊषा नीले आकाशकी पगडण्डीमें मुस्कुराती हुई श्यामली यवनिकामें छिपी हुई रजनीसे मिली। होली की अरुणाइयोंसे रञ्जित बाल अरुणने आंख-मिचौनी खेली और टिमटिमाते हुए तारों को कुन्द कलियोंने हंसनेके लिये मोतियोंकी माला पहनायी। उमड़ती हुई गङ्गाकी वेगवती धाराने अरुण आकाशको अ[...] सीमामें खींचकर दर्पण दिखलाया। [...] आकाश अट्टहास करने लगा—इस होली[...] प्रतिछायामें और मानवकी जर्जर काया[...] और खिली हुई कुमुदिनी सकुचकर र[...] साथ चली गयी। कमलिनी हंसी-[...] आयी, होली!

ऊपर भी और नीचे भी होली है। आकाशमें और नीचे मिट्टीके वक्षपर [...] मची हुई है। यौवनकी विदग्ध कामना[...] ज्वालाओंकी सजीवरूप होली आज [...] है। हंस-हंसकर, किलक-किलककर जी[...] समासीन होनेवाली होलीने कितनोंकी [...] अपने गर्भमें छिपा डाली है।

'आज' कलमें मिल जायगा—[...] णत हो जायगा। क्योंकि 'आज' के आ[...] पर 'कल' है। 'आज' से डरकर, रुककर [...] भाग जायेगा वह आखिर 'कल' से [...] कैसे मिलायेगा। 'आज' यदि छूट गया [...] 'कल' को पकड़ना असम्भव है। अतः [...] हम हंस लें, गा लें, होली मना लें और [...] दें अपनी-अपनी राह। कुछ कर लें—[...] जीवनमें कुछ तो कर लें।

होली आती है—आयेगी ही। [...] अपने हृदयकी गुदगुदी आंखोंके कोने[...] बनकर चमकती है। एक चित्र [...] होली चली जाती है। हमसे खुशियां [...] कर ले जाती है और इस तरह [...] नियमित अवधिमें आकर राग-रंगमें [...] चली जाती है। आहत पीड़ित [...] क्षवित प्राणोंका आलिङ्गन वह [...] हुई करती है। चूंकि उसके पास [...] पुञ्ज है। पता नहीं—उसे इस विनि[...] क्या हाथ लगता है—शूल या फूल?

हममें जो अभाव था होलीने [...] भावदेकर उसे खरीद लिया—ठग गयी[...] और उसने अपना अनुरंजित अनुराग अ[...] वित करा दिया—रंजित कर दिया। प्रेमका छींटा हमारे अङ्ग-अंगमें अंकि[...] कितना सुन्दर—कितना मोहक!

दुनिया हंसती है। सभी हंसते हैं [...] पौधे—अणु-अणु तृण-तृण, और क[...] हम भी हंसते हैं—और सिंह, बाघ, [...] कुत्ता, बिल्ली, चूहे, आदि सभी [...] हंसते हैं। अपनी आंखोंमें उमड़ा [...] हृदयकी किलनको कोई व्यक्त कर [...] है—लेकिन वही जिसमें अधिक चेतन[...] और चेतना भी अधिक हममें ही है [...] मानव हैं। और कोई उस अनूठी हंसी[...] स्पष्टतया व्यक्त नहीं कर पाता है। सब कोई हंसते हैं ऐसा क्यों? [...] उनमें जीवन है, यौवन है, गति है, [...] गतिमें प्राणोंका स्पन्दन। और, होलीमें जीवनकी हंसी है—हंसी।

———

कहानी

रंगीली होली

—:*:—

(लेखक—श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त')

इस व्यवस्थित दीखनेवाले जीवनमें कितनी अस्तव्यस्तता, विदग्धता और व्याकुलता भरी रहती है। अप्रकट और अत्यक्त-सी।'

'शेखर, आज तुम्हारी बातें मैं बिलकुल नहीं समझ रही हूं।'

'जेलखाना महसूस करूंगी—और मैं—मैं अपनी जिन्दगीको?' छधाने दोहराया और फिर गर्वोक्ति की—'नहीं शेखर, तुम यह कभी न छन सकोगे कि डाक्टर छधाकी जिन्दगी एक जेलखाना है। तुम कोशिश

होली

—:*:—

साजन ! होली आयी है !
छख से हंसना,
जी भर गाना
मस्ती से मन को बहलाना
पर्व हो गया आज !
साजन होली आयी है !
हंसाने हम को आयी !

साजन ! होली आयी है !
इसी बहाने
क्षण भर गालें
दुखमय जीवनको बहलालें,
ले मस्ती की आग—
साजन होली आयी है !
जलाने जग को आयी है !

साजन होली आयी है !
रंग उड़ाती
मधु बरसाती
कण कण में यौवन बिखराती,
ऋतु बसन्त का राज—
लेकर होली आयी है !
जिलाने हम को आयी है !

साजन होली आयी है !
अश्रु पोछ लो
आज न रोओ
इस अमूल्य क्षण को मत खोओ ;
"गाओ मधुमय राग'
कूकती कोयल आयी है,
साजन होली आयी है !

साजन होली आयी है !
खूनी-बर्बर
लड़कर मरकर—
मथ कर नर शोणित का सागर
पा न सका है आज—
छधा वह हमने पायी है
साजन होली आयी है !

साजन होली आयी है !
यौवन की जय !
जीवन का लय
गूंज रहा है मोहक मधुमय
उड़ते रंग गुलाल
मस्ती जगमें छायी है
साजन होली आयी है !—

—फणीश्वरनाथ 'रेणु'

'यह सब तुम आज नहीं समझ सकती छधा ! लेकिन एक दिन ऐसा जरूर आयेगा, जब तुम मेरी एक-एक बातका अर्थ बखूबी समझ सकोगी और तुम अपनी इस छखद जिन्दगीको एक जेलखाना महसूस करोगी।'

करनेपर भी यह न जान सकोगे कि मैं दुःखी हूं। आजादीसे जिन्दगी बितानेवाली डाक्टर छधाको तुम सदा हंसती हुई पाओगे; उसकी जिन्दगीमें तुम कभी किसी कमीको न देख सकोगे और दुनियादारीमें सड़नेवाली औसत दर्जे की नारीसे सदा मुझे प्रसन्न पाओगे।'

यहीं तो मैं तुमसे सहमत नहीं हो पाता छधा! तुम डाक्टरी करोगी, दूसरोंको जीवन-दान दोगी, लेकिन तुम स्वयं किसी ऐसे अभावको महसूस करोगी कि एक मूक हाहाकार तुम्हें कभी चैन नहीं लेने देगा। एक जबर्दस्त अभाव तुम्हें तिलमिला देगा। मुझे तो भय है कि जिस हठको आजीवन निबाह ले जानेकी आज डींग हांक रही हो, वही हठ तुम्हें यह सिखा देगा कि नारीकी गति क्या है, नारी-जीवनकी पूर्णता कहां है—कब है?'

शेखरके धारावाहिक लेक्चरकी रफ्तार शायद अभी बढ़ती ही जाती; लेकिन इसी बीच चपरासीने आकर खबर दी कि कोई व्यक्ति डाक्टर छधासे मिलने आया है।

छधा अभी शेखरसे और बातचीत करना चाहती थी; लेकिन कर्त्तव्यके सामने उसे अपनी इस इच्छाका दमन कर देना पड़ा और शेखरसे विदा मांगनी पड़ी—'अच्छा शेखर, तैयारी किये जाओ। मैं देखूं, कौन आया है!'

'हां-हां, शेखरने अपना बण्डल बांधते हुए कहा—'जरूर देखिये। कोई मरीज आया होगा या फिर मरीज देखनेके लिये कोई सन्देशा लाया होगा।'

'मेरे यहां और आ ही कौन सकता है!' एक मन्द हंसी अपने ओठोंपर लाते हुए छधा चलने लगी। लेकिन शेखरके इस कथन ने उसे एक मिनिटके लिये फिर रोक लिया—'लेकिन मैं तो मरीज नहीं हूं छधा! और आपके यहां इतने दिनोंसे पड़ा हुआ हूं।'

'यह कौन कह सकता है कि आप किसी भी मर्जके मरीज नहीं हैं!' और दोनों ही खिलखिला पड़े। हंसी शान्त भी नहीं हुई कि छधा उस कमरेसे बाहर चली गयी।

(२)

शेखर अपना बण्डल बांधकर ड्राइङ्ग-रूम में आराम-कुर्सीपर बैठ गया। सिगरेट पीते हुए वह छधाके चित्रको ध्यानपूर्वक देखने लगा। दीवारपर टंगे उस चित्रको देखते-देखते, सिगरेटकी उड़ती हुई रूपहली धूम्र-रेखाओंके बीच उसका हृदय जीवनकी उन अतीत स्मृतियोंके निकुञ्जमें जा पहुंचा, जहां छधा और शेखर साथ-साथ खेलते; कितने ही नये-नये घरौंदोंकी रचना करते और उसी दम उनका विनाश भी कर डालते। होली जब आयी, तब रङ्ग गुलालसे एक-दूसरेको शराबोर कर देते और रङ्ग-भरी पिचकारियां चला-चलाकर एक-दूसरेको तरबतर कर देते थे।

तब छधा कितनी भोली थी! शेखरको वह कितना चाहती थी! आज यह सब कोई नहीं जानता। जाने ही कैसे? आज तो छधाका जीवन ही बदल चुका है। वह अब दार्शनिक-जैसी बात करती, अपने कुछ निराले आदर्शोंकी धुनमें मस्त रहती और जीवनमें किसीका सहारा नहीं चाहती।

शेखरको याद आया, जब वह छोटी थी और वह इससे कभी रूठकर जाता, तब छधा रूठे शेखरको फौरन मना लेती, उसका हाथ पकड़कर उसे अपने साथ ले जाती। मानो शेखरके बिना किसी जबर्दस्त अभावसे वह बेचैन हो जाती। लेकिन आज जब शेखर

सुधाका हाथ पकड़ने आया, सुधाको मनाने आया और अपना अभाव मिटा देनेके लिये एक अनुरोध लाया, तब सुधाने कितनी रुखाईसे उसके दिलको तोड़ दिया। माना कि सुधा उस समय छोटी थी और अब है वयस्क। लेकिन मानव-संस्कारोंकी नींव तो नहीं बदलती ? फिर क्यों सुधा इतनी परिवर्तित दीख रही है ?

नारी-जीवनकी पूर्णता और अपूर्णताको आज सुधा एक ढोंग समझती है। शेखरको लगा कि सुधा वयस्क हो गयी है, इससे क्या। उसका विवेक शायद सो रहा है आज कल। वह डाक्टर हो गयी, इससे भी क्या ! शायद डाक्टर हो जानेसे ही वह वैवाहिक बन्धनमें बंधकर अपनी आजादी नष्ट नहीं करना चाहती। लेकिन यह सम्भव नहीं कि जीवन-साथीके बिना उसका जीवन सुखमय बन सके और उसे किसी अभावका कोई भान ही न हो।

इसी बीच सुधाने ड्राइङ्ग रूममें प्रवेश किया और कहा—'अच्छा शेखर, मरीज देखने मैं शहर जा रही हूं।'

शेखरकी समाधि जैसे भंग हो गयी। उसने कहा—'तुम्हें रोकता ही कौन है ? जब देखो तब मरीज-मरीज ! इन मरीजोंसे तो मैं तङ्ग आ चुका हूं सुधा !'

'मरीजोंसे आप तङ्ग आ चुके होंगे; लेकिन मुझसे तो नहीं ?' एक हल्की हंसीके साथ सुधाने पूछा।

'अब तो तुमसे भी तङ्ग आ चुका हूं।' शेखरने खड़े होते हुए कहा—'इसीलिये आज भाग जाना चाहता हूं।'

'यह बात है शेखर !' एक तिरछी चितवनसे कुमारी सुधाने शेखरको देखा—'और इसीलिये शायद नौकरोंके होते हुए भी आपने स्वयं अपने हाथोंसे बण्डल बांधा और सूटकेस भी मूली-गाजरकी तरह जैसा-तैसा भर लिया।'

'नहीं सुधा !' एक याचनाके स्वरमें शेखर बोला—'यह बात तुम गलत समझ रही हो। मैं तो अपने हाथों सारे काम किया करता हूं। तुम नहीं जानतीं, मेरी ऐसी हैसियत नहीं कि नौकरोंको रख सकूं और अमीरों जैसा ठाठ-बाट कायम रख सकूं। फिर क्यों किसीके यहां मेहमानीमें यह सब भूलनेकी कोशिश करूं ? इसे तुम और कुछ समझनेकी कोशिश मत करो !'

और ठीक इसी बीच चायकी 'ट्रे' लेकर नौकर वहां आ पहुंचा और सुधाके सामने एक छोटी-सी टेबिलपर चाय रखकर चला गया। शेखर पुनः सुधाका चित्र देखने लगा था। सुधाने उठकर शेखरके कन्धेपर एक थप जमाते हुए कहा—'जब मैं स्वयं यहां हाजिर हूं, तब चित्र क्या देखते हो ? आओ, नाश्ता कर लो। मुझे देर हो रही है।'

'ओह ! मैं तो भूल ही गया कि आप मरीज देखने जा रही हैं,' और तब दोनों चाय पीने लगे।

(२)

डाक्टर सुधाके बंगलेके मनोहर उपवनमें सन्ध्या समय शेखर एक लम्बी-सी बेंचपर पैर फैलाये लेटा हुआ पंछियोंकी चहचहाहट सुन रहा था और बीच-बीचमें कलाईपर बंधी सुनहरी रिस्टवाचको देख रहा था। धीरे-धीरे कलाईकी सुनहरी घड़ीमें छोटी सुई सातपर और बड़ी सुई ठीक बारहपर दौड़ आयी; लेकिन सुधा अभी तक वापस नहीं आयी।

शेखरको लगा कि वह एक तांगा मंगवा ले और उसीमें बैठकर स्टेशन चला जाय। लेकिन सुधासे मिले बिना इस प्रकार उसका चला जाना ठीक न होगा। यों ही सुधा उससे उचटी-उचटी-सी रही आती है, और इस प्रकार चुपचाप चले जानेपर तो पता नहीं, वह क्या समझ बैठेगी।

शेखरकी मनोदशा इस समय बड़ी अजीब व गरीब हो रही थी। वह समझ नहीं सकता था कि क्या करे ? सुधाकी बातोंको लेकर वह अपने-आपमें उलझने लगा उसे लगा कि जब इस जीवनमें सुधा किसी पुरुषके सहारे की बातको एक ढोंग कहती हैं, तब क्या इसका स्पष्ट अर्थ यह नहीं है कि वह मेरा सहारा नहीं लेना चाहतीं ? जरूर यही बात होनी चाहिये। और तब मैं ही क्यों सुधाके स्नेहांचलमें स्थान पा जानेका स्वप्न देखता रहूं ? क्यों न जीवनकी मञ्जिलपर मैं भी अपना कदम आगे बढ़ा दूं ? जब एक नारी किसी पुरुषके सहारेके बिना जीवन बिता सकती है, तब मैं एक पुरुष होकर क्यों नहीं ऐसा कर सकता ? नहीं, अब यह सब नहीं होगा। मैं अब सुधाके माया जालमें नहीं फंस सकता। मुझे अब जाना ही होगा।

और शेखर जब इस मानसिक ऊहापोहमें गिरता हुआ कुछ अपनेपर और कुछ सुधा पर खीझ रहा था, ठीक इसी बीच डाक्टर सुधाकी शेवरलेट कार हार्न बजाती हुई बंगलेके अहातेमें प्रविष्ट हुई।

मोटरसे उतर कर वह सीधी शेखरके पास पहुंची और बोली—'क्षमा करना शेखर ! मैं बहुत ही देरसे आ सकी। क्या करूं, एकके बाद एक कितने ही मरीजोंको देखना पड़ा !' एकही सांसमें जैसे उसने सारी कैफियत दे देनी चाही।

'यह सब तो हो चुका डाक्टर सुधा !' शेखरने खड़े होते हुए कहा—'लेकिन यदि मैं चला जाता तो ?'

'तो मैं आपका कर ही क्या लेती ?' सुधाने मुस्कुराते हुए कहा—'लेकिन मैं जानती थी कि तुम ऐसा कर नहीं सकते; मुझे तुम अप्रसन्न नहीं कर सकते।' और पास ही खड़े गुलाबके पौधेसे एक फूल तोड़कर सुधा उसे गौरसे देखने लगी।

'समझा ! और शायद इसीलिये आप इतनी देर करके आयी हैं, ताकि मैं जा न सकूं ?'

'यदि यह बात है' सुधाके कपोलोंपर एक अरुणाभा दीप्त हो उठी—'तो चलिये, अब भी समय बाकी है। मैं स्वयं कार लेकर आपको स्टेशन पहुंचाये देती हूं। आपकी इच्छाका दमन करनेवाली मैं होती कौन हूं ?'

शेखर अब चुप था। वह कहता ही क्या ? पल-भरमें ही शेखरका सामान, सुधाके नौकरोंने कारपर रख दिया। शेखरको बिठाकर सुधा स्वयं कारको ड्राइव करने लगी।

डाक्टर सुधाकी कार तीव्र गतिसे स्टेशनकी तरफ भागी जा रही थी और शेखरका मन उतनी ही तीव्रतासे सुधाके उपवनकी तरफ पिछड़ा जा रहा था। अभी-अभी सुधाकी बातोंको सुन और उसकी चकित-सी भावभङ्गीको देख शेखरकी जबानपर जैसे ताला पड़ गया था।

कार ड्राइव करते-करते सुधाने फिर एकबार शेखरसे पूछा—'तो शेखर बाबू, आज आप रुकेंगे नहीं ?'

'ऊंहूं !' शेखरने सिर नीचा लटकाये ही कह दिया।

'और यदि मैं यह कह सकूं' सुधाने अत्यन्त धीमे स्वरमें कहा—'कि मेरे जीवनमें भी एक अभाव है शेखर ! तब भी तुम चले जाओगे ?'

'क्यों नहीं !' शेखरने इस बार सुधाकी तरफ एक क्षणके लिये देखते हुए कहा—'जब तुम उस अभावको मानती ही नहीं और उस अभावकी पूर्त्ति भी नहीं करना चाहतीं, तब मैं रुककर भी यहां करूंगा क्या ? फिर जिस अभावकी बात अब—मेरे रवाना हो चुकने पर—तुम अपनी जबानपर ला सकी हो, वह सत्य है या नहीं, इसका सबूत ही क्या ?'

कार अब तक स्टेशन-आर्चके नीचे जाकर खड़ी हो चुकी थी। शेखरका सामान एक कुली उतारने लगा था और सुधा तथा शेखर—दोनों ही टिकट-घरकी तरफ बढ़े जा रहे थे कि सुधाने शेखरकी बातका उत्तर देते हुए कहा—'अभावकी बात सत्य है या नहीं, इसका शाब्दिक प्रमाण देनेकी जरूरत नहीं, शेखर !' और सुधाने अपना मनी-पर्स खोलते हुए फिर कहा—'यह तो तुम्हें अब तक स्वयं देख लेना था और समझ भी लेना था !'

और सुधाकी यह बात सुन, शेखरने जब इस बार उसकी ओर गौरसे देखा, तो पाया कि उसकी दोनों आंखें गीली हैं। वह क्षण-भरके लिये सहम-सा गया। जिस अभावको कोशिश करनेपर भी वह अब तक खोज नहीं सका था, उसे ये गीली स्वयं प्रकट कर रही थीं। शेखर फिर लित हो उठा। उसी क्षण शेखरने आवाज दी—'कुली, ओ कुली ! कारपर वापस रख दो।'

गाड़ीका समय हो चुका था। एक सीटी देकर वह भी इसी बीच भक्-भक् करती हुई स्टेशनसे चल पड़ी। रूमालसे सुधाने अपनी गीली आंखें और शेखरके साथ अपनी कारमें जा

शेखर और सुधा दोनों ही चुप मैं बैठे बङ्गलेकी तरफ बढ़े जा रहे थे। खड़े हुए वृक्षोंपर दिन-भरके थके-मांदे चहचहा रहे थे और रैनबसेरा करनेकी कर रहे थे। शेखरका हृदय जैसे इस कह देना चाहता था कि सुधा तुम्हारी गीली आंखें अब सब कुछ कह चुकी हैं व्यर्थ ही अबतक अपने दिलकी बात छिपाये रहीं। पर तुम नारी जो ठहरीं कैसे ?

लेकिन कोशिश करनेपर भी शेखर बात सुधासे कह नहीं सका। अपने पीड़ा वह व्यक्त नहीं कर सका। हां, मन वह सुधाके गहन एवं गम्भीर नारीत्वकी वन्दना अवश्य कर उठा।

और दूसरे दिन जब दुनियामें होलीके कबीर गाये जा रहे थे एवं पिचकारियोंसे नर-नारी फाग खेल तब सुधा और शेखर भी रङ्ग-भरी पिचकारियोंसे एक-दूसरेको तर-बतर कर रहे मना रहे थे रङ्गीली होली। युग-युगके अपने अरमानोंको आज ये दोनों कर रहे थे। दूर किसी अमराईसे मंजीरोंके स्वरपर तिरती हुई होली की एक धीमी-धीमी, किन्तु ध्वनि इन दोनोंके हृदयोंको किसी सूत्रमें सदाके लिये पिरो देनेमें रही थी।

बिहारीकी होली

—:*:—

(लेखक—श्री रणवीरसिंह)

'बिहारीकी होली'से लहेरियासराय ... भण्डारके 'आचार्य' रामलोचन ... बिहारी अथवा किसी बिहारवासीकी ... मतलब नहीं है। मेरा मतलब ... बिहारीलालकी होलीसे है। सुकवि ... अपनी सतसईके लिये हिन्दी- ... सुप्रसिद्ध हैं। सात सौ दोहोंने ... अमर ही नहीं, अपितु महाकविकी ... ला दिया है। श्रृङ्गार शिरोमणि ... रसभरी होली खेलनेसे बाज आते यह ... सम्भव था ? आज पाठक वृन्द कविवर ... लालके साथ होली खेलने चलें। पर सावधान होकर, क्योंकि उनकी ... अपनी मुट्ठीसे अबीर क्या मलती ... जादू करती है। देखिये :—

... दियैं ही नैंकु मुरि कर घूंघट-पटु डारि;
... गुलालकी मूठि सौं, गई मूठि-सी मारि।

ऐसा मालूम होता है कि नयी नायिका ... काढ़े नायककी ओर पीठ करके ... थी। नायक महाशय उसपर ताबड़- ... रंग अबीर डाल रहे थे। तब वेचारी ... से भी न रहा गया। आखिर कबतक ... करती ? उसने तमक कर घूंघट हटाकर ... भरी मुट्ठी नायकपर मार ही दी और ... मार क्या थी—वशीकरणका प्रयोग ... 'गयी मूठि-सी मारि' कितनी अच्छी ... है!

होलीके दिन अपने केशों (बाल) और ... गालोंमें किसीका गुलाल मलना बर्दाश्त ... जा सकता है, पर यह सम्भव नहीं है ... हमारी आंखोंमें अबीर भर दी जाय और ... 'उफ' भी न करें। पर सुकवि बिहारीकी ... नायिका कितनी शिष्ट है, जो ऐसी पीड़ामें ... से गुलाल काढ़ते नहीं बनता :—

"... हु पिय लखि चखनु मैं,
खेलत फागु खियालु ;
... हू अति पीरहु, न
काढ़त बनत गुलाल !!"

होलीके अवसरपर जहां—'भर फागुन ... देवर लागिहैं' और 'यहि पाले पति- ... वाले परो' का नारा बुलन्द किया ... है, वहां कुछ मनहूस नायक यह भी ... हैं कि संसार लक्ष्मण-सा देवर बन ... जो रोज जंगलमें साथ रहनेपर भी ... भाभीके नुपुर ही देख सके। संसार ... लक्ष्मण न भी बने, पर वे यह जरूर ... हैं कि उनकी नायिका दूसरे नायकके ... रंग-अबीर न खेले क्योंकि इस खेलका ... अच्छा नहीं होता है। सुकवि ... बिहारीको इस खेलका परिणाम विदित ... वे कहते हैं कि गैरपुरुषोंके गालोंपर ... भरी मुट्ठी देनेसे मुट्ठीभर अबीरके ... साथ लोक-लाज और कुलकी मर्यादाका ... भी हो जाता है। इतना ही नहीं, इस ... एक साथ ही, दोनोंके हृदय और नेत्र ... हो जाते हैं। देखिये :—
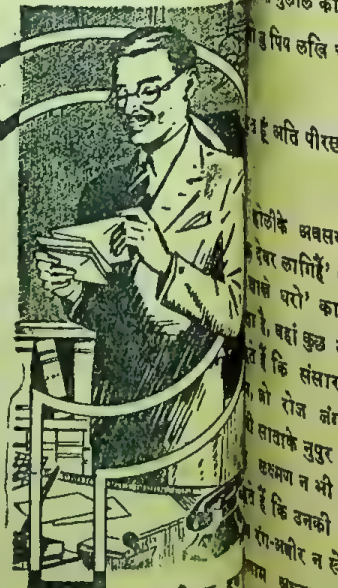
"छुटत मुठिनु संग ही छुटी,
लोक-लाज, कुल-चाल ;
लगे दुहुंन इक बेर ही,
चलि चित-नैन, गुलाल।"

क्या खूब ! अबीर की मुट्ठी चले और मन और नयन न चलें। अफसोस, परदेशमें रहनेवाले नायकको तो यह खतरा उठाना ही पड़ेगा।

जहां कुछ नायक चाहते हैं कि उनकी नायिका रंग-अबीरसे परहेज रखें, वहां कुछ नायिका इससे स्वतः भयभीत रहती हैं। वे रंग-अबीरसे, यहां तक कि खाली (रंग-रहित) पिचकारीसे ही इस प्रकार पलायमान हो जाती हैं जिस तरह 'साइरन' बजने पर कलकत्तेके बहादुर नागरिक! लड़ाई और महंगीके जमानेमें इस मुफ्त मनोरंजनका प्रयोग प्रचुरताके साथ होगा, इसमें सन्देह नहीं। देखिये, जैसे-जैसे नायिका कपड़ा संभालती, हंसती, झुकती, उलझती भागती जाती है, वैसे वैसे नायक महोदय उसे झूठी मुट्ठी—अबीर रहित मुट्ठीका भय दिखाते जा रहे हैं :—

"ज्यौं ज्यौं उलझि झांपत बदनु,
झुकति बिहंसि सतराइ,
तत्यौं गुलाल झूठी-मुठी,
झझकावत प्यौ जाइ !!"

अब आगे देखिये। दोनों रस-रंगसे सराबोर हैं तो भी कपड़ा बदलनेके लिये भी, नहीं हट रहे हैं। अब वे नैन-रूपी प्रेम-रंग पड़ी खूबीसे छिड़क रहे हैं। कितना सुन्दर चित्रण है !

"रस भिजए दोऊ दुहुनु,
तउ टिकि रहे टरैं न ;
छवि सौं छिरकत प्रेम-रंग,
भरि पिचकारी नैन !!"

कविवर बिहारीलाल हम लोगोंके लिये आंखोंकी अच्छी पिचकारीका आविष्कार कर गये। बचत-आन्दोलनके व्यवस्थापकोंको बिहारीलालजीको बधाई देनी चाहिये।

अब जरा असली अबीरकी करामात देखिये और नायिकाकी बेबसी। नायिकाके प्रेमावेशमें (हाथ) कंप जानेसे कुछ अबीर गिर पड़ता है और कुछ हाथके पसीनेमें सन जाता है। बेचारी भर मुट्ठी अबीर लेती भी है तो व्यर्थ जाती है :—

"गिरै कंपि कछु, कछु रहै
कर-पसीजि लपटाइ ,
लैयौ मुठी गुलाल भरि, छुटत झुठी ह्वै जाइ।'

और क्या ; नायिका ज्यों-ज्यों अञ्चल (पट) को झटकती है, जिद करती है, हंसती है और नेत्रोंको नचाती है, त्यों-त्यों एकदम उदार होनेपर भी उससे 'फगुआ' (गाली ?) देते नहीं बनता है :—

"ज्यों-ज्यों पटु झटकति,
हठति, हंसति, नचावति नैन ;
त्यों-त्यों निपट उदार हूं,
फगुआ देत बनै न।"

आशा है, सरस पाठक बेचारी नायिका पर अब रहम करेंगे। बोलिये—सुकवि बिहारीलालकी जय !'

—

-: गीत :-

—*:०:*—

तुम्हारी छांह छूकर क्षीण ध्वनि आती प्रतिध्वनि बन।
निशा आती, डगरपर तिमिरका अञ्चल बिछा जाती
हृदयमें अनल, नयनोंसे उदधिका जल बहा जाती
निशा आती, तिमिर आता, अतिथि बनकर सभी आते
मगर देने न आते तुम नयनको ज्योतिके अञ्जन।
तुम्हारी छांह छूकर क्षीण ध्वनि आती प्रतिध्वनि बन॥

अगरुका धूम उठता है तुम्हारे चरणको छूने
हृदयकी पीर जगती है तुम्हारे नयनको छूने
तिमिर-पट चीर कर उठती गगनमें वर्तिका की लौ
अरे ! पर लौट आते हैं सभी बन नयनमें जल-कण।
तुम्हारी छांह छूकर क्षीण ध्वनि आती प्रतिध्वनि बन॥

तुम्हारी छांहका ही वर विजनमें मांगता पन्थी
तुम्हारी बीणका ही स्वर विजनमें मांगता पंथी
न मिलता किन्तु वह था स्वर, प्रतीक्षा-कल्प ही मिलते
पथिक पाता विरहके क्षण, न पाता नूपुरोंके स्वन।
तुम्हारी छांह छू कर क्षीण ध्वनि आती प्रतिध्वनि बन॥

—कुंवर बहादुर सिंह

उसकी होली

—:×:—

(लेखक—श्री हलधर चौधरी 'दीन')

'पिउ-पिउ बोल, प्राण पपीहे,
पिउ-पिउ बोल......!'

रिकार्ड गा रहा था। होलीके दिन मदमाती सन्ध्यामें बिलासके अनेक सामानोंसे विद्युत प्रकाशमें वह सुसज्जित कमरा खिल रहा था। तरह तरहकी मिठाइयां, गिलासोंमें शर्बत और एक सुन्दर पात्रमें गुलाल रखा था। वह सुन्दरी युवती रिकार्डका अनुसरण करती हुई मस्तीमें गुनगुना रही थी—प्राण पपीहे...पिउ-पिउ बोल ! और उस अपूर्व लावण्यमयीके मधुर कण्ठसे निकलती गुनगुनाहटको वह युवक उसके मुखकी ओर प्रेममय अतृप्त दृष्टिसे पी रहा था।

बाहर खड़ी झरोखेसे वह मजदूरनी धड़कते हृदयसे कभी सुन्दरी और कभी युवककी ओर देख रही थी।

प्रेम-रञ्जित उन दो तरुण हृदयोंको किसी की तृषित आंखोंकी उपस्थितिका ज्ञान न था।

रिकार्डका गाना चल रहा था—'मोरे जीवनकी यमुनामें जाग उठे मंजुल कलोल...'

और बाहर झरोखेसे वह मजदूरनी देख रही थी। आज होलीके दिन मालिकसे—कुछ खानेके लिये मांगने आयी थी। उसके घरमें बूढ़ी मांके सिवा और कोई नहीं था। उसकी अवस्था अठारह-बीसकी ही थी। यौवनका प्रखर मध्याह्न था। बड़ी-बड़ी सरल आंखोंसे अज्ञात प्रान्तकी एक अस्पष्ट चिन्ताकी छाया प्रगट होती थी। उसके भोले मुखपर एक अव्यक्त विषाद मिश्रित था। इस छोटेसे जीवनमें असीम वेदना थी। न जाने, कितनी शुभ्र ज्योत्स्नामयी सुन्दर नीरव रातें उसने सुदूर प्रदेशसे आते हुए करुण सङ्गीतको टूटे हृदयसे सुन-सुन कर काटी थीं। न जाने, कितने सुनहले रम्य प्रातःकाल कितनी आलस्यमयी शान्त दुपहरिया, कितनी सुखद सन्ध्याएं विषादमयी नेत्रोंसे देख कर निश्वास छोड़-छोड़ कर बितायी थी। दुनियांके सारे सुखमय व्यापार चलते ही रहते; किन्तु उसके मुखपर तो वही वेदना, वही जलन, वही पीड़न अंकित थी।

और आज जो उसने यह सब देखा तो उसका मन जाने कैसा-कैसा हो उठा। उसने देखा—युवक पतिके हाथ आगे बढ़े—युवती पत्नीकी पुष्प-सम देह सामने झुकी, मृणाल-सम भुजदण्डोंने प्रियतमके कण्ठको आवेष्टित कर लिया। रसाल अधर पतिके ओठोंसे मिल गये।

यौवन और प्रेमका इतना मधुर सङ्गम, ऐसा स्पष्ट चित्र वह सहन न कर सकी। हृदय तीव्र स्पन्दनसे हाहाकार कर उठा... उसने आंखें नीची कर लीं। सुन्दरी युवतीकी अचानक उचटती दृष्टि इसपर पड़ी। वह लज्जित हो गयी। कृत्रिम क्रोध प्रगट करती बोली—यहां क्यों खड़ी है ? होठोंपर लज्जा मिश्रित मुस्कुराहट दौड़ गयी।

मजदूरनी चौंक उठी—धीरेसे सकपकाती बोली—भूखी हूं मालकिन ! युवती माल-

किनने बहुतसी मिठाइयां, फल, मेवे, पकवान उसके आंचलमें छोड़ दिये। पर उसका ध्यान इधर नहीं था। वह तो मन्त्र-मुग्धकी तरह युवककी ओर निहार रही थी, मानो उसका वास्तविक भोजन उसीके पास हो।

युवती मालकिनने भर्त्सना भरे कठोर स्वरमें कहा—अब क्यों खड़ी है?

मजदूरनी मानो तन्द्रासे जागी। बड़ीही करुण दृष्टिसे उसकी ओर देखती हुई वह लौट पड़ी।

पूर्णिमाका पूर्ण चांद गहरे नीले आकाशमें बढ़ा जा रहा था। और वह मन्दगतिसे झोपड़ीकी ओर बढ़ी जा रही थी।

किन्तु रिकार्डका वह गाना अब भी उसके कर्ण कुहरोंमें गूंजता—साप्रतीत होता था—प्राण पपीहे पिउ-पिउ बोल...!

किसी ने असावधानी से बातें कीं...

DRUGS

...और बहुत ज़रूरी दवाइयाँ समुद्र के गर्भ में जा पहुँचीं

कल्पना कीजिए, बंगाल और आसाम में मलेरिया फैल रहा है; हज़ारों आदमी इस घातक रोग के शिकार हो रहे हैं। लोगों की जान बचाने के लिए टनों दवाइयाँ जल्दी से हिन्दुस्तान भेजने का ख़ास प्रबन्ध किया गया है। मगर वह जहाज़ जो इन्हें ला रहा था टारपीडो से डुबो दिया गया। तीस-चालीस बहादुर जहाज़ी डूब गये। मलेरिया ग्रसित क्षेत्र के हज़ारों स्त्री-पुरुषों पर संकट का पहाड़ टूट पड़ा।

किसी ने असावधानी से बातें कीं

किसी ने, संभवतः किसी माननीय नागरिक ने भूले से ऐसी बात कह दी जिसके आधार पर दुश्मन ने एक पनडुब्बी इस जहाज़ को डुबोने के लिए रवाना कर दी। यह सिर्फ़ एक ज़रा सी बात थी जो असावधानी में मुँह से निकल गई और भुला भी दी गई।

इसी तरह विपत्तियाँ आती हैं।

सिर्फ़ कम बोलने का ही नहीं, बल्कि चुप रहने का निश्चय कर लीजिए। दुश्मन को कोई ख़बर न लगने दीजिए। चिट्ठियों और टेलीफोन पर बात करने में विशेष सावधानी से काम लीजिए। दुश्मन हमेशा आँख-कान लगाये रहता है। उसके ख़ुफ़िया ज़रिये रद्दी की टोकरियाँ और टेलीफोनों के तार हैं।

अपने देखे हुए जहाज़ों, हथियार व गोला-बारूद, फ़ौजों की हरकत या फ़ौजी सामान बनाने वाले कारख़ानों के बारे में कुछ लिखने या बोलने में विशेष सावधानी रखिए। जानें बचाने और आम ज़रूरत के सामान की सुरक्षित पहुँच के लिए एक शब्द भी मुँह से न निकालिए।

देखिए कहीं आप तो नहीं चूक रहे।

राष्ट्रीय युद्ध मोर्चे द्वारा प्रकाशित

VA 1338 Hindi

हिमालयके ऊपरसे चीनको हवाई मार्ग

उत्ताल हिमालयके बीचमें आजानेसे हिन्दुस्तान और चीनके बीच यातायातका कोई [मार्ग] नहीं था। दोनों सीमावर्ती देश एक दूसरेसे बहुत दूर थे। दोनों देशोंका अधिकांश [व्या]पार पाश्चात्य देशों तथा जापानके साथ होता था। इसलिये युद्धके पहले सड़क द्वारा [एक] दूसरेको मिलानेकी कभी आवश्यकता समझी भी नहीं गयी। लेकिन अमेरिका और [जा]पानके बीच युद्ध छिड़ जानेपर अमेरिकाने चीनको सहायता देना जरूरी समझा। परन्तु

विमान २० हजार फीटकी ऊंचाई पार कर चीन जा रहा है।

[चीन]को रसद, कुमुक कैसे पहुंचाया जाय प्रश्न यह था। प्रशान्तपर जापानका प्रभुत्व था [इसलिये] समुद्री रास्ते बन्द थे। बर्मासे चीन जानेवाली सड़क भी जापानियोंने काट दी थी, [इस]लिए रसद और कुमुकके लिये हवाई साधनके अतिरिक्त कोई दूसरा उपाय न था।

लेकिन चीन और भारतके बीच हवाई मार्ग स्थापित करना भी कम कठिन काम [न] था। इसके लिये हिमालयकी गगनचुम्बी और हिमाच्छादित चोटियोंको पार करना [आ]वश्यक था। परन्तु ठीक ही कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कारकी जननी है दुर्द्धर्ष [हि]मालयको भी मनुष्यकी आवश्यकता पूरी करनेके लिये अपने मस्तको झुका लेना पड़ा।

जिस मार्गकी बात हम लिख रहे हैं उसे पार करनेके लिये वायुयानोंको समुद्रतलसे [२०] हजार फीटकी ऊंचाईसे उड़ना पड़ता है और आक्सिजनके नकाबका प्रयोग करना [प]ड़ता है। क्षितिज तक फैली हिमालकी असंख्य चोटियां मानो अपने मुंह फैलाये उन्हें [नि]गल जानेके लिये तैयार रहती हैं। इस तरह शून्य गगनके बीच भयानक खतरोंको पार

[...]के मोर्चेपर सैनिकोंके सहायतार्थ भेजनेके लिये एक भारतीय बन्दरगाहमें माल उतारा जा रहा है।

७५ :गैलनवाले तेलके पीपे, चीन भेजनेके लिये तैयार हैं।

[कर]ते हुए आज वायुयान चीनको निरन्तर युद्ध सामग्री पहुंचाया करते हैं। युद्धके पहले [अमे]रिकामें जितने वायुयान और चालक हवाई :सर्विसमें लगे थे उससे भी अधिक इस [मार्ग]में गमनागमनके कार्यमें लगे हैं।

इस मार्गका पहले पहल ८ अप्रैल ४२ में उपयोग किया गया जब कैप्टेन डूलिटिलने [...] जापानपर हवाई हमला किया था। उस समय कैप्टेन डूलिटिलके बमबाजोंके [लिये] इस मार्गसे कुछ आवश्यक वस्तुएं भेजी गयी थीं।

इसके बाद बहुत दिनों तक मार्ग अविकसित अवस्थामें पड़ा था, यद्यपि चीनमें [इसके] द्वारा निरन्तर युद्धकी आवश्यक वस्तुएं पहुंचायी जाती थीं। १९४३ के आरम्भमें

इस मार्गसे पूरा लाभ उठानेके लिये नये तरहके विमानोंको भेजा गया। यद्यपि पहलेकी अपेक्षा उनके द्वारा चीनको अधिक माल भेजा गया तथापि उनके आनेके साथ बहुत-सी नयी समस्या खड़ी हो गयी जिनमें सबसे महत्वकी समस्या उनके मरम्मतकी थी।

लेकिन हर तरहकी कठिनाइयोंको दूर करता हुआ अब यह मार्ग पूर्णसत्ताको प्राप्त हो चुका है और दुनियाके अत्यण्त आश्चर्यजनक मार्गोंमें सबसे बढ़-चढ़कर है। इस मार्गसे एयर ट्रान्सपोर्ट कमाण्डने हर तरहकी सम्भव चीजें चीनको पहुंचायी हैं—यथा सड़क बनानेकी मशीने, भारी बम, वायुयानके एंजिन, ट्रक इत्यादि। इसके अतिरिक्त हजारोंकी

एक आहत चीनी सैनिक हवाई जहाजपर चढ़ाया जा रहा है।

संख्यामें सैनिकगण चीनसे बर्मा और बर्मासे चीन ले जाये गये हैं। अनेको बार घिरेहुए सैनिकोंके लिये इसी मार्गसे रसद तथा अस्त्र-शस्त्र पहुंचाये गये हैं। इस तरह इस मार्गने जापानियोंके विरुद्ध बहुत-सीलड़ाइयां जीतने और असंख्य सैनिकोंके प्राण बचानेमें सहायता दी है।

सबसे आश्चर्यजनक बात यह है कि:इस एयर सर्विसने खोज और बचावका एक अलग विभाग कर दिया है। यह विभाग खोये हुए विमानों तथा उनके यात्रियोंका पता लगाता है और जरूरत पड़नेपर:उनको भोजन, वस्त्र दवाइयां इत्यादि पहुंचाता रहता है। इस तरह इस क्षेत्रमें खोये हुए यात्रियों और वैज्ञानिकोंकी ७५फी सदी लोगोंकी जाने बचायी जा चुकी है:। इसके अतिरिक्त इस लम्बी उड़ानको जानेवाले यात्रियोंके आरामके लिये नाश्ता, कपड़े की धुलाई, दवाखाना इत्यादिका भी प्रबन्ध किया गया है। केवल एक महीनेमें २,२७,९९४ भोजनकी थालियां लोगोंको दी गयी हैं।

इस मार्गने चीनको भारी सहायता पहुंचायी है। यद्यपि जापानने चीनको उसके मित्रोंसे अलग करनेका भगीरथ प्रयत्न किया, फिर भी वह असफल रहा। बुद्धिमान पाठक समझ सकते हैं कि जापानियोंकी असफलताका प्रधान कारण चीन जानेवाला यही हवाई मार्ग है।

❀ याचना ❀

—०:❀:०—

मत पराग दो, फूल नहीं हूं
ईंधन हूं बस देदो आग
क्या होगा जल जाऊंगा
पर सोये हुए उठेंगे जाग

मत सौरभ दो, धूल भरे
इस तनको नहीं सजाऊंगा
मिट्टी मुझे पुकार रही
मैं चला उधरहीं जाऊंगा

मत दो ज्योति, ज्योति जो दोगे
वह तो तमकी रेखा है
मैंने अपनेमें ही चिर—
निर्मल प्रकाशको देखा है।

श्वांस-श्वांस से फूट रही
जिसकी अव्यक्त अनन्त पुकार,
दे सकते हो तो दे दो, बस
उसी आगके कण दो-चार।

—पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय

कोई भी सम्प्रदाय क्यों न हो, आनन्दोत्सवके अर्थमें उसके त्योहारोंकी सफलता मुख्यतया दो बातोंपर निर्भर करती है—'परिधान' तथा 'पक्वान्न !' त्योहारका सम्बन्ध एक-न-एक ऐसे पकान्नसे अनिवार्य होता है जो उस त्योहारका 'विशेष-भोजन' हुआ करता है।

त्योहार यदि अपने वास्तविक रूप और उद्देश्यसे मनाया जाय, तो उससे कोई भी राष्ट्र और समाज, पर्याप्त मात्रामें जीवनी-शक्ति प्राप्त कर सकता है। किन्तु अब त्योहारका अर्थ एक शगल—एक नुमायश समझा जाने लगा। और यह भयङ्कर भूल किसी एकके द्वारा नहीं, सम्प्रदायमात्रसे, परिधान तथा पकान्नकी संक्रामक व्याधिसे कोई भी त्योहार वञ्चित नहीं रह पाया और त्योहारोंके उद्देश्यको पंगु होते समय न लगा जिन्हें परिधान तथा पकान्नकी योग्यता थी—वे खाने-पीने और मौज उड़ानेमें ऐसे रमे कि रमे ही रह गये! और जो प्रयत्न करनेपर भी, परिधान तथा पक्वान्नकी व्यवस्था नहीं, कर पाये, उनकी मानसिक व्यथा तो खैर उनकी अपनी चीज ठहरी—गृहमें कलह भी उत्पन्न हो गया! अस्तु, त्योहार क्या, त्योहारके स्मरणसे भी उन्हें विरक्ति होने लगी! इस तरह धनी तथा निर्धन, समर्थ एवं असमर्थ दोनोंकी ही ओरसे त्योहारके वास्तविक अभिप्रायकी अवहेलना हुई। हां, यह उल्लेखनीय अवश्य है कि 'भगवान्‌की संतान'को ज्यों-ज्यों सारी चीजोंकी व्यवस्था होती जाती है—त्योहारके दिन मन्दिर जानेकी याद भी नहीं होती या समय ही नहीं मिलता और 'खुदाके बंदे' कहते हैं, बलासे बकरीदके दिन सेवई नहीं पक सकी, तो न सही, मस्जिद नहीं छोड़ी जा सकती!

त्योहारोंके विशेष-भोजन (पकवान) केवल विविध गरिष्ट पदार्थ ही हुआ करते हैं, ऐसी बात नहीं। सत्तू, चिपटान्न, शाक, ओल, शकरकन्द, छथनी, भूंजा, खिचड़ी आदि भी—अपने-अपने त्योहारोंके साथ विशेष-भोजनका रूप धारण किया करते हैं।

त्योहारोंका एक ऐसा मनोवैज्ञानिक अर्थ भी है जो वस्तुतः मधुर है। हम देखते हैं कि प्रत्येक त्योहार किसी-न-किसी ऋतुसे कोई-न-कोई सम्बन्ध निश्चय ही रखता है और उक्त त्योहारके अवसरके विशेष-भोजनमें उन्हीं भोज्य वस्तुओंकी आवश्यकता होती है, जो उस समयकी नयी फसल होती है। इस तरह त्योहारोंको ऋतु-उत्सव, फस्ले बहार—कहना युक्ति असंगत नहीं। और इस अर्थकी सार्थकता गार्हस्थ्य और खासकर ग्रामीण जीवनपर पूरी मात्रामें बैठती है। उन्हें बड़ी क्या, छोटीसे छोटी वस्तुके लिये भी पैसे जुटाने पड़ते हैं, तपस्या करनी पड़ती है। अस्तु कपड़े खरीदना उनके लिये किसी विशेष अवसरपर ही सम्भव होता है। हां, जिस दिन वे कपड़े खरीद सकते हैं, उसी दिन उनका त्योहार होता है! कहावत भी है, "जिस दिन तेल उसी दिन दिवाली और जिस दिन कठौतेमें पानी उसी दिन कुम्भ!"

'मालपुआ'—होलीका प्रेमोपहार !

—:*:—

(लेखक—श्री सुबोध मिश्र)

प्रत्येक त्योहारके अनुकूल विशेष भोजन होता है। परिश्रम करनेपर त्योहारोंके अनुकूल परिधानोंके नाम भी निकल आ सकते हैं। किन्तु इसके लिये माथापच्चीकी आवश्यकता है। प्रस्तुत चर्चा पक्वान्नसे सम्बन्धित है :—

फागुनके गुलाबी त्योहार, होलीके अवसरपर, विशेष भोजनके रूपमें 'मालपुआका, विशेष स्थान है। हम जानते हैं कि मालपुआके अर्थ अनेक हैं; किन्तु यहांपर कुछ वैसे समझनेवाले छकेंगे। अभिप्राय असली मालपुआसे है। (बुरा न मानें होली है!)

और होली है, तो मालपुआ भी है! लड़ाईका हवाला दे-देकर भी जिस तरह संसारका सब काम किसी-न-किसी रूपसे हुआ ही करता है। उसी तरह होलीके अवसरपर मालपुए भी पकेंगे ही और छनेगी भी।

एक होता है पुआ और एक होता है मालपुआ। दोनोंकी हस्तीमें आसमान-जमीनका अन्तर है। मालपुआको हाकिम समझिये और पुआको एक अदना-सा किरानी! एक देहातीके शब्दोंमें—"पुआ तो फेंट फांटवाला साहब है और मालपुआ बिल्कुल असली और ताजा मेम!"

मालपुआका सामान नहीं जुट सकनेके कारण पुआ वही काम करता है जो तसल्लीके लिये गुड़का मलीदा किया करता है!

मालपुआ एक ऐसी चीज है जिसकी जातिका कोई ठिकानाही नहीं! आपने गलत समझा क्या? मतलब यह है कि मालपुआकी विविधता है।

किन्तु, पाकशास्त्र प्रणाली और वस्तुओंकी मात्राका उचित विवेक नहीं रहनेके कारण, मालपुआ पकानेका अर्थ 'गोयठे'में घी खपानेवाली बात हो जाती है। और खर्च बिल्कुल नाजायज होता है। अस्तु, यह निबन्ध, होलिकोपहार स्वरूप कुछ सर्वोत्तम, सुलभ तथा सार्थक एवं नवीनतम मालपुए (का नुस्खा) भेंट करेगा। बचने कि दरिद्रता? !

मालपुए दो प्रकारके होते हैं—एकमें चीनी डालकर पाक किया जाता है और दूसरेमें चीनी नहीं डाली जाती; उसे योंही छानकर चासनीमें डुबाया जाता है। स्वादकी दृष्टिसे दोनोंमें अन्तर होता है। एक ही साधनमें थोड़ा-सा परिवर्तन—उन्नीस-बीस कर देनेसे कई तरहके मालपुए तयार किये जा सकते हैं। यहां दो-चार जो सर्वोत्कृष्ट और कम खर्चवाले हैं; उन्हींका परिचय कराया जाता है—

मालपुएको अधिकसे अधिक सुस्वादु बनानेके लिये यह स्मरणीय है फिर आंच धीमी और स्थिर होनी चाहिये। पाकपात्रके लिये छिछली कड़ाही या ताई आवश्यक है। पाक परिचयके लिये यह देखते रहना आवश्यक है कि घीमें तलकर मालपुआ जबतक हल्का बादामी रंग नहीं पकड़े, तब तक उसे कड़ाहीसे निकालना नहीं चाहिये। और चूंकि चीज जरा ऊब जानेकी है, इसलिये एक कठौतमें मैदा सानकर बैठनेकी अपेक्षा, प्रति व्यक्ति एक मालपुआ ही उत्तम है; यदि वह उचित प्रणालीसे प्रस्तुत किया जाये।

दहीका मालपुआ

मैदा—एक सेर। दही-आध सेर (मिष्ठ) चीनी डेढ़ पाव। छोटी इलायचीके दाने—इच्छानुसार

सब कुछ आपसमें मिलाकर मथिये, जबतक खूब मिल न जायें। फिर थोड़ा-थोड़ा करके, पानी डालिये। लेईकी तरह हो जानेपर छोटी कटोरी या चायकी प्यालीसे, गर्म घीमें, थोड़ा-सा डालिये। यदि ठीक रहे अर्थात् सिकुड़े नहीं तो 'मैदानी' ठीक समझिये। अन्यथा कुछ और पानी डालिये। घीमें, एक दफे, आध पाव या तीन छटांकके हिसाबसे मैदानीकी मात्रा जानिये। यदि मैदानी कड़ाहीमें सटजाये तो घीको कामके लायक गर्म न मानिये।

केलेका मालपुआ

मैदा—एक सेर। चीनी—डेढ़ पाव। सुपक्व केला—आधा दर्जन। इलायचीके दाने गाड़ी-छुहारेकी कतरन। पाक-विधि उपर्युक्त।

पोस्तेका मालपुआ

मैदा—एक सेर। चीनी—डेढ़ पाव। पोस्ता दाना—आध पाव। जावित्री या दारुचीनीका चूर्ण—आध तोला।

पोस्तेको पहले अच्छी तरह धोकर सुखा लीजिये और घीमें बादामी रंगका भून लीजिये। एक छटांक गर्म घीमें डालकर मिला लीजिये तब चीनी मिलाइये और आवश्यकता अनुसार पानी डालिये। फिर उसमें भूना पोस्ता दाने और जावित्री या दारुचीनीका चूर्ण डाल कर पाक कीजिये।

नारियलका मालपुआ

मैदा—एक सेर। चीनी—आध सेर। नारियल—एक पाव। सूखा मेवा—इच्छानुसार।

गरी या नारियल दोनोंसे ही काम चल सकता है। नारियलको बारीक करनेवाले ओजारकी आवश्यकता है। सिलवट्टेपर पर परिश्रमकी परवाह न करके पीस लेनसे भी काम होता है। पाक-विधि उपर्युक्त ही है। किन्तु स्वादमें अन्यापेक्षा उत्कृष्ट होता है।

किसमिसका मालपुआ

मैदा और चीनीकी वजन उपर्युक्त। किसमिस—एक पाव। किसमिस साफ सिलबट्टेपर पीसकर—उपर्युक्त रीतिसे पाक कीजिये। इसी तरह पिस्ता और बादामका मालपुआ भी बनाया जाता है।

छेनेका मालपुआ

गो-दुग्धका छेना—एक सेर। मै[दा—]
एक पाव। चीनी—दो सेर। दूध—
सेर। इलायचीदाना चूर्ण—एक

सर्व प्रथम दो सेर चीनीमें तीन पानी डालकर चासनी तैयार कीजिये चासनीसे 'एकतार' निकलने लगे दस छटाक पानी बच जाये—चासनी समझकर उतार लीजिये। अब छेना डालिये और तबतक मिलाते रहिये, एक दिल न हो जाये। तदनन्तर दूध और इलायची भी छोड़ दीजिये मिलाइये तथा छान-छान कर डुबाते चलिये। चासनीमें एक तभी तक डूबा रहे, जबतक, उसके दखल जमानेके लिये, दूसरा न हो जाये।

दूधका मालपुआ

मैदा—एक सेर। चीनी आध
दूध—एक सेर। फेंट-फांट कर
इसे चीनी न मिलायें। योंही छान
नीमें डुबाया जाता है। दोनोंके
फर्क होता है।

शेष मालपुआ

शेष मालपुआ ही सबसे वि[शेष]
होलीके अवसरपर—वार क्वालि[टी]
क्यों न हो—मालपुआ अवश्य पका[इये]
जो शेष बच जाये उसे सम्पादक
हिस्सेके साथ, सम्पादक भैयाकी मा[र्फत]
तार-पार्सलसे भेज दें और मालपुए
कड़ाही या ताईकी कालिख भरी पें
ऐरी-बैरी, चुगलखोर, भेदिया आदि
में लपेट दें ताकि होलिकाके साथ
सारी अला-बला जलकर राख हो
मंगलमय : हो आपका, नववत्सर
संवत्!

—

धनकुबेर—निजाम हैदराबाद

—:*:—

(लेखक—श्री पूर्णचन्द्र शर्मा)

दुनियामें ऐसे भी कुछ लोग हैं, जो भी नहीं चाहते, फिर भी 'सबकुछ' उनके सामने हाथ बांधे खड़ा रहता है। भाग्यवान ही कहा जाता है और भाग्यवादी यहीं कर तर्कसे मुंह मोड़ लेते हैं। हमें जरूरत और हम कुछ भी नहीं पाते। किंतु जिन्हें कुछ जरूरत नहीं है, ईश्वरने उन्हें सब कुछ दे दिया यह है वह फिलासफी जिसे आज तक भी समझ नहीं सका है। जिनके सामने कुछ हाथ बांधे खड़ा रहता है, उन व्यक्तियोंके प्रधान हैं भारतके ९ करोड़ मुसलमानोंके गर्वके प्रतीक हिजहाइनेस निजाम उसमान। निजामके हैदराबादका क्षेत्रफल देशके बराबर है, जो आज भारत-शासन कर रहा है। इङ्गलैंड और स्काटलैंड दोनोंको मिलानेसे जितना क्षेत्रफल होता, निजाम राज्यका भी क्षेत्रफल उतना है। निजामके शासनमें १ करोड़ ७० लाख प्रजाजन हैं। अरबों खरबोंकी सम्पति है। जवाहरातसे भरे बड़े बड़े बक्स पावदानकी शोभा बढ़ाते हैं; फिर भी इनका साप्ताहिक निजी खर्च है मात्र १९ रुपये।

किलेके एक पुराने एकान्त बरामदेमें ये निवास करते हैं और इनका सबसे प्रिय एक बकरा इन्हींके साथ उस बरामदेमें रहता है। अपने ३९ सालके शासनकालमें निजाम हैदराबादने मात्र दो मुकदमोंको सुना और उनका फैसला किया। हैदराबाद राज्यके सर्वेसर्वा निजाम उसमानकी अपनी कर-व्यवस्था है, अपनी सेना है, पोस्टकार्ड-लिफाफे सभी राज्यमें ही छपते हैं, राज्यमें रेल और हवाई जहाजके मार्गपर राज्य का ही पूर्ण अधिकार है। आपको यह सुनकर आश्चर्य होगा कि ब्रिटिश साम्राज्यके अन्दर एक रुपयेके चलनेवाले नोटोंका प्रचलन निजाम उसमानके ही राज्यमें है। फिर भी स्वयं निजाम उसमानका निजी साप्ताहिक पाकेट खर्च मात्र १९ रुपये हैं जो कि किसी भी शहरके रहनेवाले सौ रुपये मासिक वेतन पानेवाले किसी किरानी से अधिक नहीं है। अवसर-विशेषपर निजाम उसमान हीरोंसे जगमगाती हुई पगड़ी, किमखावकी शेरवानी, जिसमें मोतियोंके बटन लगे होतेहैं, पहनकर दरबारमें आते हैं। वरना इनके पसन्दके पहिरावेमें सस्ते दामके कपड़ेका साधारणसे साधारण कोट, देशी जूते और चीकट पगड़ी है। जहां तक काम का प्रश्न है निजाम उसमान अपने ढङ्ग के अनोखा व्यक्ति हैं। इनकी बुद्धिके दायरे के भीतर अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय समस्याएं चक्कर काटती हैं। इनकी कार्य करने की शक्तिके आगे इनके अपने स्टाफके लोग थके रहते हैं। ये कभी-कभी २४ घण्टे लगातार काम करते हैं।

अपने पिताकी मृत्युके बाद जब ये राज्य के अधिकारी हुए तब इन्होंने हैदराबाद राज्य के प्रसिद्ध किला 'फालकनुमा' पैलेसमें ताला लगवा दिया और स्वयं हैदराबादमें रहने लगे। अपने लिये इन्होंने १२ लाखका एक मकान बनवाया है, जिसे चहारदीवारीसे घेरवा दिया है। सवार होते समय इनकी सवारीके लिये पीले रङ्गकी 'रालटायर्स' गाड़ी तथा जो हाथी मंगवाये गये थे वे आज तक ज्योंके त्यों गैरेज और फीलखानेमें पड़े हुए हैं। निजामकी नजर इन दोनोंपर आज तक कभी नहीं पड़ सकी है। निजाम जब कभी किसी कामसे बाहर निकलते हैं तो इनकी सवारीमें एक टूटी हुई सदियों पुरानी फोर्ड मोटर गाड़ी रहती है। सबसे बड़ी खूबी तो इनमें यह है कि उन्हें गाना सुननेका शौक ही नहीं है। इनके बदनके कपड़े तभी बदले जाते हैं जब वे जगह-जगह फट जाते हैं अन्यथा वे उन्हीं कपड़ोंको पहना करते हैं, एकबार निजाम उसमानकी सदियों पुरानी छड़ी टूट गयी। उस छड़ीको बनवानेके लिये उसे कारीगरके

निजाम उसमान

पास भेजा। शैतान कारीगरने मरम्मतके बाद उस छड़ीके साथ दर्जनों अन्य छड़ियां निजामके पास पसन्दके लिये भेज दीं। किन्तु निजाम उसमानने अपनी छड़ी लेकर अन्य छड़ियोंको कारीगरके पास वापस भेज दिया। वायसराय लार्ड लिनलिथगो जब हैदराबाद आगये तो निजाम ओसमान उनके स्वागतको स्वयं स्टेशनपर गये थे और हाथमें वही पुरानी छड़ी थी।

गाड़ी आयी और ट्रेनसे उतरते ही गोरे वायसरायने छड़ी लक्ष्य कर लिया। निजाम उसमानसे हाथ मिलाते ही वायसरायने छड़ीकी ओर इशारा करते हुए कहा—यह तो बहुत खतरनाक छड़ी है। तुरन्त ही निजामने वायसरायको छड़ी दिखलाते हुए कहा—लोहेकी इस अंगूठीने छड़ीको बहुत ही मजबूत बना दिया है। अब यह खतरनाक नहीं है। निजाम उसमानकी सालाना आमदनी ३ करोड़ ६० लाख रुपया है। १ करोड़ रुपया साल इन्हें केवल दरबारसे प्राप्त होता है। तौजीके अवसर नजराने के रूपमें निजाम उसमानको सम्माननीय प्रजाजनोंकी ओरसे १ अशर्फी और चार रुपये दिये जाते हैं। वर्तमान उसमानके पिता इन रुपयोंको केवल छूकर उन्हें देनेवालोंको वापस कर देते थे। किन्तु इसके विपरीत ये उन सभी रुपयोंको अपने पाकेटमें डाल लेते हैं। कायदेके अनुसार दरबारके दिन सम्माननीय प्रजा हाथमें १-१ अशर्फी और चार रुपये लेकर खड़ी रहती है। निजाम जब इनके सामनेसे गुजरते हैं; उस समय उनके साथ दो नौकर हाथमें थैला लिये पीछे चलते हैं। निजाम लोगोंके सामनेसे गुजरते हैं और प्रत्येक व्यक्तिकी हथेलीपरसे नजरानेकी अशर्फी और रुपया उठा-उठाकर थैलेमें डालते जाते हैं। अशर्फी एक थैलेमें और रुपया एक थैलेमें विभाजित रूपसे इसलिये निजाम डालते जाते हैं ताकि फिर पीछे उन्हें अन्य कोई न छू ले। इसके अलावे ९० लाख रुपये उन्हें उन आदमियोंसे नजरानेके तौरपर मिलते हैं, जो असमयमें निजामसे मुलाकात करना चाहते हैं।

निजाम अपने रहन-सहनको गुप्त रखकर उसे आश्चर्यकी वस्तु बना देना नहीं चाहते। वे स्पष्ट रूपसे अपने रहन-सहनकी सारी बातें अपने मुलाकातियोंको बतला देनेमें भी नहीं हिचकते। एक बार उन्होंने अपने एक प्रतिष्ठित अतिथिसे बातें करते हुए बतलाया कि मेरा मासिक व्यय केवल ६० रुपये हैं। किलेका खर्च और मेरे भोजनका खर्च प्रायः सभी पब्लिक फण्डसे आता है।

निजामके लिये कपड़ा, साबुन, शौकके अन्य सामान तथा सिगरेट हैदराबादमें बनाने वाले कारखानोंसे उनके मालिकों द्वारा नजरानाके रूपमें भेज दिये जाते हैं। इस तरह ३३ सालके अपने शासनकालमें निजाम ने डेढ़ अरब रुपया बचाया है। निजाम उसमानके पास जवाहरातकी अपरिमित संख्या है। एकबार एक जौहरीको कुछ जवाहरात मरम्मतके लिये दिये गये थे। जबवह उन्हें मरम्मतके बाद वापस करने आया,तो निजाम ने उसे आज्ञा दी कि वह खजानेमें ही जाकर एकबार सभी जवाहरातको देखले और जिनमें कुछ मरम्मतकी जरूरत हो उन्हें वह ले जाये। खजानेमें जाकर उसने जो कुछ भी देखा, उसका वर्णन करनेमें वह एकदम असमर्थ रहा। फिर भी उसने बतलाया कि जितने जवाहरातको मैं देख आया हूं। साढ़े चार अरबसे कमकी सम्पति नहीं हैं उन जवाहरातमें जैकोब जातिका एक बड़ा हीरा था जिससे वर्तमान निजामके पिता पेपरवेटका काम लिया करते थे। ऊंटकी शक्लका एक बहुत बड़ा हीरा, अण्डा जितने बड़े तीन मोती तथा और कई जातिके बड़ी संख्यामें बेजोड़ हीरे थे। जवाहरातमें जहांतक मोतियों का सम्बन्ध है, उसमान इस मामलेमें उनका सबसे बड़ा संग्रहकर्त्ता हैं। एक बार उसमानने मोतियोंको साफ करवानेकी बात सोची। खजानेसे मोती निकाले गये और धुलायी होने लगी। मोतियोंकी संख्या बहुत अधिक थी। संख्याकी अधिकताका अनुमान इसीसे लगाया जा सकता है कि भींगे हुए मोतियोंको सुखानेके लिये किलेकी प्रत्येक छतपर कालीन बिछवाये गये और तमाम धूपमें सूखनेके लिये मोती बिछा दिये गये। किलेकी प्रत्येक इञ्च खुली जमीन इन मोतियोंसे भर गयी। खजानेसे मोतियोंको बाहर निकालने और फिर ले जानेमें तीन दिनका समय लगा था। निजाम उसमान को सोनेका भी शौक है। उनके भोजन करने का प्रत्येक बर्तन ठोस सोनेका बना है। भोजनके कमरेमें ६० आदमियोंके भोजन करने लायक ठोस सोनेकी टेबिल है और ६० व्यक्तियोंके खानेमें विविध व्यञ्जनोंके लिये जितने पात्रोंकी आवश्यकता होती है सभी सोनेके हैं। बकिंघम पैलेसमें जहां उदयाचलसे अस्ताचलतक शासन करनेवाला सम्राट रहता है, २४ व्यक्तियोंके एक साथ भोजन करने भरके सामान हैं किन्तु निजाम उसपूरे साठ अतिथियोंको सोनेकी कुर्सीपर बैठाकर सोनेकी टेबिलपर सोनेके पात्रमें भोजन कराते हैं।

आपको सुनकर आश्चर्य होगा कि निजामने इतने धनको रखनेके लिये कोई खजाना नहीं बनवाया है। सोना, सिक्के, छड़ और सिलके रूपमें निजामके रहने और सोनेके कमरोंकी दीवारोंमें चुन दिये गये हैं तथा परिवारके बैठकखानोंकी जमीनमें गाड़ दिये गये हैं।

किलेके आंगनमें तहखाना बनाकर उसके भीतर नकदी, जवाहरात तथा अन्य चीजें बन्दकर दी गयी हैं जिन्हें एक निश्चित समय खोलकर देख लिया जाता है कि वे खराब तो नहीं हो रही हैं। इन स्थानोंमें निजामके विश्वसनीय व्यक्ति पहरा देते हैं जिनपर निजामकी आंखें सदैव लगी रहती हैं।

ऐसी बात नहीं है कि निजामके पास सिवाय हैदराबाद राज्यको छोड़कर अन्य कोई निजी सम्पत्ति नहीं है। निजामकी अपनी भी व्यक्तिगत सम्पति है। व्यक्तिगत सम्पति केवल निजामके पास ८३ हजार वर्गमील जमीन और१९लाख प्रजा हैं। नकदी और जायदाद मिलाकर निजाम ६ अरबके स्वामी हैं। राज्यकी ओरसे इन्हें एक कलक्टरका वेतन मिलता है। इतनी सम्पत्ति होते हुए भी निजामकी रुचि व्यापारकी ओर नहीं है। इसका प्रधान कारण यह है कि निजाम अपनी सम्पत्तिको सदैव अपनी आंखोंके सामने देखना पसन्द करते हैं और व्यापारमें ऐसा हो नहीं सकता। निजामको समझानेवाले समझाते-समझाते हार गये पर इस मामलेमें वे अपना विचार बदलनेको तैयार नहीं। राज्यके कामोंसे फुरसत पाने पर वे अपना अधिकसे अधिक समय खजांचियोंको देते हैं। धन कहां रखा जाय, किस रूपमें रखा जाय कि वह बर्बाद न हो निजाम दिन रात यही सोचते हैं और अपने खजांचियोंसे सोचवाते हैं।

निजाम कमरेमें या बन्द जगहमें नहीं सोते। बरामदेमें एक दीवाल खींच दी गयी है जिसके एक ओर उनके पढ़ने-लिखनेका कमरा है दूसरी ओर सोनेका स्थान। जिस स्थानपर निजाम सोते हैं, वहां छेदोंमें रहनेवाले कबूतरोंके गन्दे अण्डोंका ढेर लगा रहता। दिन-रात कबूतरोंका द्वन्द्व होता रहता है। बीट गिरती रहती है और कबूतरों

के महायुद्धके फलस्वरूप रोंआ और पंखका ढेर लगा रहता है। निजाम इस उपद्रवसे एकदम नहीं ऊबते। निजाम काम करनेमें मजदूरको मात कर देनेकी क्षमता रखते हैं। सुबहसे शाम तक निजामके लिये एक मिनट की भी छुट्टी नहीं है। वे न तो स्वयं आराम करते हैं, और न अपने कर्मचारियोंको आराम करनेका समय देते हैं। प्रातः कहवा पी लेनेके बाद निजाम लिखने और पढ़नेमें लग जाते हैं। ठीक ९ बजे निजामके नाश्तेका समय है। लिखना-पढ़ना नाश्तेके समय बन्द नहीं होता, वरन चप और विस्कुटके साथ-साथ वह भी चलता रहता है। ठीक उसी समय निजामके पालतू बकरेका भोजन आता है। यह पालतू बकरा निजामकी देख-रेखमें ही भोजन करता है। निजाम स्वयं इसे अपने हाथोंसे भी कभी-कभी अत्यधिक प्रेमातिरेकमें खिलाते हैं। इसी समय राज्यके आफिस खुल जाते हैं और किलेके बरामदेमें चहल-पहल शुरू हो जाती है। भड़कदार वर्दियोंमें चापरासी और खुशनुमा पोशाकमें सेक्रेटरियटके बाबू लोग चलते-फिरते दिखलायी देने लग जाते हैं। ठीक १० बजे शहरके पुलिस कमिश्नर नगरकी सुव्यवस्थाका समाचार देने आ जाते हैं और उसी समय किलेके डाक्टर आकर हालका शुभ समाचार सुना जाते हैं। इन कामोंसे छुट्टी पाते ही निजाम अपने कमरेसे निकल कर बाहर बरामदेकी शानदार सीढ़ियोंके पास खड़े हो जाते हैं। जैसे ही निजाम सीढ़ियोंके पास खड़े हुए कि तुरत राज्यके मन्त्री और सभ्य कर्मचारी उन्हें अदबके साथ अर्द्धचन्द्राकारमें घेरकर खड़े हो जाते हैं और राज्यके समाचारोंसे उन्हें अवगत कराने लगते हैं। इन समाचारोंमें चोरी, प्रेम, लूटमारके सभी समाचार होते हैं। निजाम सब तरहके समाचार सुननेके लायक हैं। इन कामोंसे फुरसत पाते ही निजाम भोजन करने चले जाते हैं। निजामके भोजनके समयका यह नियम है कि वे कार्यालयमें अपने साथ काम करनेवाले सभी व्यक्तियोंकी टेबिलपर वे जो कुछ भी खाते हैं, भेज देते हैं। रोटी और फलके कुछ टुकड़े तथा मक्खन सभीकी टेबिलपर आपसे आप पहुंच जाता और कर्मचारी उसे शौकसे भोजन करते हैं। भिन्न-भिन्न दफ्तरोंमें खानेका यह सामान मोटर द्वारा भेजा जाता है। निजामकी यह उदारता निरर्थक नहीं है। भोजनके बदलेमें कर्मचारियोंको इसके मूल्य रूपमें कुछ देना पड़ता है। निजाम इस भेंटको शौकसे स्वीकार कर लेते हैं, क्योंकि यह उनकी व्यक्तिगत आय है जिससे वे अपने ६ अरबको बढ़ाते रहते हैं। भोजनोपरान्त निजाम बगैर विश्रामके अपने कार्यालयमें पहुंच जाते हैं और राज्यके बड़े-बड़े कामोंको देखना शुरू देते हैं। इस काममें उन्हें दो घण्टेसे अधिक नहीं लगता। जैसे ही निजामको फाइलोंसे फुर्सत मिली वैसे ही वे अपनी धूलि-धूसरित कोई कारपर सवार होकर अपनी मासे मुलाकात करनेके लिये चल पड़ते हैं। रास्तेमें पहरादेते हुए सिपाहियोंको पहलेसे ही यह बतला दिया जाता है कि निजाम किस समय अपनी मासे मुलाकात करने किस रास्तेमें जायेंगे। जैसे ही निजामकी मोटर सड़कपर आती है, पुलिस सिटी बजाकर तमाम गाड़ियोंको सड़कपर रोक लेती है और निजामकी गाड़ी बेरोकटोक चली जाती है।

पढ़ने-लिखनेमें भी निजामको विशेष दिलचस्पी है। सन्ध्या समय उनका काम केवल पढ़ना लिखना ही रहता है। कोरान और पर्सियन गीत निजामको विशेष प्रिय हैं। समाचारपत्रोंसे भी निजामको विशेष दिलचस्पी है। हैदराबादसे निकलनेवाले 'माइडे' नामक पत्रमें 'राउण्ड दी वर्ल्ड' कालम निजामके लिये सुरक्षित है। इस शीर्षक के लिये सभी तरहके विषयोंपर लिखा करते हैं। विवाहसे लेकर तलाक और जन्मसे लेकर मृत्यु तकके मामले वे मनोरञ्जक रूपसे लिखते हैं। अभी पिछले दिनों निजामने इस कालमसे 'हनीमून' पर एक बहुत ही सुन्दर लेख लिखा था जिसकी सब क्षेत्रोंमें बहुत प्रशंसा की गयी है।

मनुष्योचित सजीवताका एक ही चिन्ह निजामके भीतर है और वह यह कि वे परिहास-प्रिय व्यक्ति हैं। अपने विषयके हैदराबादमें फैले हुए अफवाहोंको वे नित्य सुनते हैं और जी-खोलकर हंसते हैं। इसे कभी बुरा नहीं मानते।

महाकवि अकबरकी चुटकियां

——:×:——

(श्रीमती गंगादेवी वर्मा)

...र्णीय महाकवि अकबर हास्य रसके ...र थे। परन्तु उनका हंसना-हंसाना ...मनोरंजनके लिये ही नहीं था। अक... ...श्चिमी सभ्यताके आंख मूंदकर अनु-...करनेके बड़े विरोधी थे। भारतीयोंका ...की रोशनीपर, आंख मूंदकर कुर्बान ...उन्हें थोड़ा भी पसन्द नहीं था। वे ...कविता द्वारा इनका सुधार करना ...थे। परन्तु जब उन्होंने देखा कि ...द और प्रार्थनासे कौमकी हालत नहीं ...सकती और आंसू बहानेका कोई असर ...ोगा, तो नसीहतके लिये उन्होंने परि-...र यह हृदयग्राही ढंग अख्तियार ...और इसमें उन्हें बहुत कुछ सफलता ...ई। 'जराफत' (परिहास) की चास-...बा हुआ उनका एक-एक शेर शुष्क ...पर भी ऐसा प्रभाव डालता है कि बड़े ...ताओंकी लम्बी लम्बी वक्तृताएं वैसा ...ल सकतीं। हास्य रसका आवरण ...अकबर कड़वी-से-कड़वी बात इस ...हते हैं कि सुनने वालोंको कटु मालूम ...बजाय मीठी मालूम होती है। उनकी ...छोटी उक्तियोंमें अद्भुत भाव भरे हुए ...साधारण शब्दोंमें उन्होंने ऐसी बातें ...कि सुननेवाला दंग रह जाता है। ...वि बिहारीलालकी 'देखतको छोटे लगे ...करे गंभीर' उक्ति उनकी कवितापर ...से चरितार्थ होती है।

...अकबर हास्य रसके आचार्य होनेके ...रिक हाजिर जवाब भी अव्वल दर्जेके ...र्दू कवियोंमें गालिबकी हाजिर जवाबी ...प्रसिद्ध है, लेकिन इस विषयमें अकबर ...भी बढ़े-चढ़े थे। उनकी हास्यरसकी ...ताओं और हाजिर जवाबीके लतीफोंमें ...पूर्व चमत्कार और इतना अनूठापन ...सुननेवाला लोटपोट हो जाता है। ...के हास्य और हाजिर जवाबीकी कुछ ...एं पाठकोंके मनोरंजनार्थ यहां दी ...

...१९२० की बात है। उस समय देशमें ...गकी आंधी बड़े जोरसे चल रही थी। ...सरकार इस आन्दोलनके दबानेके ...तरह तरहकी युक्तियोंसे काम ले रही ...हजारों भारतीयोंको जेलखानेमें डाल ...गया था। 'अमन सभाओं' के नामसे ...-परस्तोंकी सभाएं कायम की गयी ...नका उद्देश्य इस आन्दोलनके विरुद्ध ...करना था। संयुक्त प्रान्तमें मि० जे० ...न, आई० सी० एस० नामक सज्जन ...सिटी आफिसर थे। असहयोग आन्दो-...विरुद्ध प्रचार करना इस महकमेका ...काम था। मिस्टर गौज महाकवि ... और उनकी भावपूर्ण कविताओंसे ...भांति परिचित थे। देशोंके उत्थान ...में कवियोंका बहुत बड़ा हाथ ...है, इस बातको वे अच्छी तरह जानते ...अतः मि० गौजने सोचा कि कवि अक-...से ऐसी कविताएं लिखायी जावें, ...असहयोग आन्दोलनके विरुद्ध प्रचार ...सहायता मिल सके। ...बर राजनीतिपर जो कुछ लिखते, ...प्रकाशित न कराते, बल्कि बहुत छिपा-कर रखते थे। मि० गौजको मालूम न था कि हजरत अकबर दिलसे असहयोगके समर्थक बन चुके हैं। हालांकि इस घटनासे बहुत दिन पहले उन्होंने इस आन्दोलनके सम्बन्धमें स्पष्ट रूपसे कह दिया था—

उधर है जेलकी जहमत,
　　　इधर है कौमकी लानत।
उधर आराम जाता है,
　　　इधर ईमान जाता है।
बमजबूरी मआज़ूरी शरीके—
　　　कैम्प है 'अकबर'।
मगर जिसको बसीरत है,
　　　उसे पहचान जाता है।

महाकवि अकबरको सरकारसे पेंशन मिलती थी, इसीलिये मि० गौजको पूरी आशा थी कि वे उनकी बातको टाल न सकेंगे। अतः उन्होंने अपना एक मुख्य कर्मचारी हजरत अकबरके पास भेजा। इन दिनों बुढ़ापेकी कमजोरीके कारण अकबरका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता था। जिस वक्त उक्त सरकारी कर्मचारी उनके पास पहुंचा, वे चारपाईपर लेटे हुए थे। मि०गौजकी फरमाइश का हाल सुनकर इन्होंने उस कर्मचारीकी ओर आश्चर्यसे देखा और कहा—

कहांके गौज कहांके गांधी!
आ गयी अब तो मौतकी आंधी।

महाकवि अकबरका शेर सुनकर पास बैठे हुए लोग हंसने लगे और वह सज्जन झेंप कर वहांसे चले गये।

एक और लतीफा सुनिये। एकबार प्रयाग में कृषि प्रदर्शिनी हुई थी। खान बहादुर मि० मोहम्मद हादी डिप्टी कमिश्नर उक्त प्रदर्शिनीके मुख्य प्रबन्धक थे। वे महाकवि अकबरकी पहचानके थे। जब एक दिन उनके साहबजादे मौलवी इशरत हुसेन साहब नुमाइश देखने जाने लगे और अपने पिताजीसे इसके लिये इजाजत चाही, तो कुछ सोचकर वे मुस्कराये और कहा—अच्छा वहां तुम्हें हादी साहब मिलेंगे, मैंने एक शेर कहा है, उन्हें सुना देना—

हादिये दीं तो नुमायशमें
　　　कोई था ही नहीं।
हादिये दुनिया थे वह
　　　हल जोतना सिखला गये।

जब उनके साहबजादेने हादी साहबको यह शेर सुनाया, तो वे बहुत हंसे और इसे पढ़-पढ़कर बड़ी देर तक मजा लेते रहे।

*　　　*　　　*

अकबर वास्तविक आशु कवि थे। मौके मौकेपर हसबहाल शेर कहने और चमत्कारपूर्ण उत्तर देनेमें उन्हें कमाल हासिल था।

उर्दू भाषाके धुरन्धर लेखक और हजरत अकबरके घनिष्ट मित्र ख्वाजाहसन निजामी साहब अपने एक मित्रसे कहते थे कि—एक बार हजरत अकबर मेरे मकानमें बैठे हुए थे। मेरी बच्ची हूरबानू आलुओंसे खेल रही थी। हजरत अकबरने पूछा—'हूर यह आलू कौन लाया था?' हूरबानूने जवाब दिया—'मेरे खालू लाये थे।' हजरत अकबरने कहा—

लाये हैं खरीद कर बाजारसे आलू अच्छे।
इसमें शक नहीं कि हूरके खालू अच्छे।

*　　　*　　　*

सन १८११ में प्रयागकी नुमायशमें कलत्तेकी प्रसिद्ध नर्तकी गौहर जानको भी बुलाया गया था। उन दिनों बोलते फिल्म और रेडियो नहीं थे। लेकिन गौहर जानकी शोहरत सारे हिन्दुस्तानमें फैली हुई थी। जब हजरत अकबरके एक दोस्तने उनसे गौहर जानकी नृत्य-कला और गायन-विद्याकी तारीफ की, तो हजरत अकबरने फरमाया—

खुश नसीब आज यहां,
　　　कौन है गौहरके सिवा।
सब कुछ अल्लाहने—
　　　दे रखा है शौहरके सिवा।

जरा शौहर शब्दपर गौर कीजिये। कितना हास्य, व्यङ्ग और चमत्कार भरा हुआ है।

*　　　*　　　*

लार्ड कर्जनने अपनी एक स्पीचमें हिन्दुस्तानियोंको झूठा बतलाया था। अकबर उस समय लखनऊमें थे। जब उन्होंने यह स्पीच सुनी, तो बोले—'भाई क्या बात है। तुम भी लार्ड कर्जनसे जाकर कह दो—
'झूठे हैं हम तो आप हैं झूठोंके बादशाह।'

*　　　*　　　*

अलीगढ़के नवाब अब्दुल गफूर खां साहब बड़े प्रसिद्ध रईस हो गये हैं। अब तो कर्जन फैशन रखना एक साधारण बात हो गयी है, लेकिन अबसे ३०-४० वर्ष पहले कोई बिरलाही दाढ़ी-मूंछें मुड़वानेकी हिम्मत करता था। नवाब अब्दुल गफूर खां ऐसे ही मनचले नौजवानोंमें थे। हजरत अकबरकी इनसे घनिष्ठता थी; लेकिन एक धार्मिक मुसलमान होनेके कारण अकबरको उनका यह आचरण पसन्द नहीं था। मजहबी मामलोंमें वे कैसे हू चूकनेवाले नहीं थे। अतः उन्हें एक दिन विवश होकर कहना पड़ा—

देख अब्दुल गफूर खांकी तरफ—
　　　मर्द खुश हाल इसको कहते हैं।
चार अबरूवा या सफाया है,
　　　फारिग-उल्-बाल इसको कहते हैं।

जरा 'फारिग-उल-बाल' शब्दपर गौर कीजिये। उर्दू भाषामें 'फारिग-उल-बाल' उस मनुष्यको कहते हैं, जिसे किसी प्रकारका फिक्र न हो। लेकिन इस शब्दका लफ्जी तर्जुमा है, जिसके बाल न हों।

*　　　*　　　*

महाकवि अकबरने अपनी कवितामें उर्दू लफ्जोंके साथ अङ्गरेजी शब्दोंका प्रयोग इस खूबसूरतीसे किया है कि कवितामें अपूर्व माधुर्य पैदा हो गया है। इस कलामें उन्हें ऐसा कमाल हासिल था कि आज तक दूसरे कविको नसीब नहीं हुआ। इस तरहके उनके अनेक शेर हैं। एक बड़ी मनोरञ्जक घटना है। अवधके एक मशहूर मुसलमान पहले शिया अकीदा रखते थे, उसके बाद वे सुन्नी हो गये और फिर थोड़े दिनों बाद अपनेको शिया कहने लगे। इन हजरतके सम्बन्धमें अकबरने कहा था—

'मुजक्करके लिये ही (he) है, मुअन्नसके लिये शी (she) है; मगर हजरत मुखन्नस हैं, न हीयोंमें न शीयोंमें।'

अकबर साहब कहते हैं कि मुजक्कर (पुल्लिंग, पुरुष) के लिये 'ही' (he) शब्दका प्रयोग होता है और मुअन्नस (स्त्रीलिंग) के लिये 'शी' (she) लफ्ज इस्तेमाल होता है। लेकिन यह हजरत स्त्री या पुरुषमेंसे किसी भी श्रेणीमें नहीं आते, बल्कि मुखन्नस (नपुंसक) हैं।

*　　　*　　　*

बनारस कालेजसे 'ओल्ड बाय' नामक एक मासिक पत्र अंग्रेजीमें निकला था। जब अकबर साहबकी सेवामें इसका एक अङ्क भेजा गया, तो आपने शुक्रियाके तौरपर निम्नलिखित शेर उसको लिख भेजा। देखिये कैसी मीठी चुटकी है—

निकला बआबोताब 'ओल्ड बाय';
खुदा उसको 'गोल्ड' भी दे और 'पर्ल' भी।
ख्वाहिश है अब ये बाज—
　　　मोहब्बाने कौमकी;
निकले किसी तरफसे योंही ओल्ड पर्ल भी।

——:*:——

स्य-विज्ञान

भोजनमें पोषणका प्रभाव

———:०:———

(लेखक—श्री रामस्वरूप व्यास)

अक्सर हम लोग भोजन इसलिये करते भूखे नहीं रहा जा सकता है, परन्तु पेटमें भोजन सामग्री डाल लेनाही शरीरके को चलानेके लिये पर्याप्त नहीं होता। यह भी देखना चाहिये कि जो भोजन हम हैं, उसमेंसे कितना पोषतत्व प्राप्त कर हैं। उसमें पोषणतत्व कितने हैं? विज्ञान वृद्धिके साथही पोषण शास्त्रका अभ्यास किया गया है। इसके द्वारा बहुतसी ऐसी ज्ञात हुई हैं, जो सर्वसाधारणको ज्ञात और इस अज्ञानके कारण भोजनमें न कुछ कमी रह जाती है, जिससे या तो निर्बल रहते हैं या किसी न किसी के रोगका शिकार हो जाते हैं।

हमारे देशमें इस प्रकारका अज्ञानही नमें पोषक तत्वोंके अभावका कारण नहीं गरीबी भी है। डा०एकरायडका, जिन्होंने के भोजनकी समस्याका पोषणकी से अध्ययन किया है, मत है कि ३० शत लोगोंको पूरा भोजन नहीं मिलता पोषक भोजनकी बात तो अलगही रही। यह वर्तमान समयमें नहीं, वरन युद्धके की बात है। युद्धके समयमें तो बढ़ी हुई तोंके कारण यह संख्या और भी बढ़ है।

भोजन तथा पोषण शास्त्रके पंडितोंने नकी शरीरको शक्ति देनेकी उपयोगिता एक नाप मानी है, जिसे अंग्रेजी में लोरी' कहते हैं। शारीरिक मेहनत-मजूरी वाले व्यक्तिको एक दिनमें २,६००केलो- लगभग शक्ति देनेवाला भोजन चाहिये। में अक्सर गरीब व नीचेके मध्यम वर्ग- भोजन मिलता है उससे उन्हें १,८०० रीके करीब शक्ति मिल जाती है। यह रीका परिमाण शायद बहुत लोगोंकी में न आये। इसलिये इसे दूसरी तरह भी सकते हैं। एक व्यक्तिके लिये प्रतिदिन रण, परन्तु पोषक भोजनमें निम्न परि- में चीजें होनी चाहिये—८ औंस दूध,३ दाल, शाक ६ औंस, हरे पत्तोंका साग औंस, फल २ औंस, तेल या घी २ औंस लगभग आधा सेर आटा या चावल। अक्सर हमारे गरीब तथा मध्यम वर्गके नमें दूध तथा हरी तरकारियोंका अभाव । वे तो अक्सर चावल, आटा, दाल नाम मात्रका घी या तेल पाते हैं।

हरी तरकारियां, दूध, अंडे, मास, को एक विशेष प्रकारका भोजन माना है जो केवल शरीरको शक्तिही नहीं देता कुछ दूसरे तत्व भी देता है। इन्हें पोषक भोजनके नामसे पुकारा जाता इनका काम शरीरमें विटामिन तथा पोषण तत्वोंकी कमीको पूरा करना है के कारण भोजनके मुख्य तत्व प्राप्त होने- भी वह पूराकाम नहीं करता। शरीरको मुख्यतः 'प्रोटीन' 'फैट' 'कार्बोहाइड्रेट एवं 'स्टार्च' की जरूरत होती है। शरीरमें कार्य द्वारा जो नाशकी क्रिया चलती रहती उसकी कमीको 'प्रोटीन' पूरा करता है तथा वृद्धिके लिये उपयोगी होता है। यह मांस तथा दालमें बहुतायतसे पाया जाता है। फैट तो घी या तेलके रूप मिलती हैं, परन्तु इनमें भी भेद रहता है। जो 'फैट' वनस्पति-से मिलती है जैसे तेल, और जो जानवरोंसे मिलती है जैसे घी, इनमें भिन्नता रहती है और शरीरको दोनों प्रकारकी 'फैट' की जरूरत रहती है। 'कार्बोहाइड्रेट एवं 'स्टार्च' शरीरके अन्दर जलते हैं और गर्मी पैदा करते हैं। घी व तेलका भी काम यही होता है। गुड़ चीनी, चावल व आटेमें ये तत्व अक्सर पाये जाते हैं। परन्तु इन सबके होते हुए भी रक्षणात्मक भोजन द्वारा घी व विटामिन न मिले, तो इनका पूरा व ठीक उपयोग नहीं हो पाता। इन 'विटामिन' तत्वोंके अभावमें कुछ रोग भी पैदा हो जाते हैं।

वर्तमान समयमें गरीब तथा मध्यमवर्गके भोजनमें सुधार करना मुश्किल ही नहीं असम्भव है। जब भोजनकी मुख्य चीजोंमें जैसे चावल व गेहूं इनमें भारी कमी है, तब दूसरे भोजनकी तो आशा करना ही व्यर्थ है। घी, दूध, शाक-भाजी मामूली लोगोंके वशके बाहरकी बात हो गयी है। परन्तु फिर भी कुछ अंशोंमें थोड़ा प्रयत्न तो किया जा सकता है। भोजनमें जहांतक बन पड़े तो चावल एवं आटेका प्रमाण कम करके, शाक भाजी, दूध या दूधके दूसरे पदार्थ, और जो मांस खाते हैं, उन्हें मछली, अण्डा खाना चाहिये। दालका परिमाण भी बढ़ाने की जरूरत है।

कुछ लोगोंने फैशनके प्रभावमें आकर भोजनकी बहुत सी उपयोगी चीजोंको छोड़ दिया है। गुड़में चीनीसे अधिक पोषक तत्व हैं, पालिश किये हुए चावलमें, अधकुटे हुए चावलसे कहीं कम पोषक तत्व होते हैं, वरन इसके कारण तो बेरी-बेरी जैसे रोग भी होते हैं। हाथके कुटे हुए चावलोंका उपयोग बढ़ानेकी जरूरत है। सोयाबीना जिसका प्रचार देश नहींके बराबर है अधिक प्रचार करना चाहिये। चने, मटर वगैरहको पानीमें दो तीन दिन भिगाकर रखनेसे जब उनमें अंकुर फूट आये, तब उप-योग करनेसे उनमें पोषण शक्ति बढ़ जाती है। इस प्रकार भिगाकर चने--मटर खानेका प्रचार बढ़ाना चाहिये। फलोंके अभावमें नींबूका उपयोग भी बहुत लाभदायक होगा। इस प्रकार थोड़ा परिवर्तन करके भोजनकी पोषक मात्रामें वृद्धि की जा सकती है।

———

बन्दिनी माका रहा न ख्याल

——:*:——

हमें होली कुछ भायी नहीं
१ हमें जलवा-सा लगा गुलाल!

खेलने को वह खेली गयी
हमारे घर में उड़ा अबीर,
मला भाबी ने लाल गुलाल
गालमें मेरे हो बेपीर। २

और उनकी सखियोंने पकड़
रंग दिये मेरे सारे वस्त्र;
मूक-सा खड़ा रहा मैं मौन
न उनपर चला हमारा अस्त्र। ३

देख राधाकी मृदु मुस्कान
और वे सुन्दर गोल कपोल
नयनमें नशा, नशेमें चूर
कर रहा था यौवन कल्लोल।

४
चित्त मेरा कुछ चंचल हुआ
लिया मुठीमें लाल गुलाल,
और सोचा, राधाका आज
लाल करदूं मैं गोरा गाल। ५

किन्तु वह हाथ उठा ही नहीं
फिर गयी आंखोंमें तस्वीर,
बंदिनी मा को देखा हाय,
बहाते निज नयनोंसे नीर। ६

वेदनासे बिह्वल वह हुई
पटकती थी सिर बारंबार,
और रह-रह कर होती रही
वहां जंजीरोंकी झनकार।

७
सामने देखा दानव एक
पासमें राधा-सी नव बाल!
कह रहा था वह मा से गरज
कहां है तेरे वे सब लाल? ८

कि जिनपर तुझको था अभिमान
अरे! वे मरे डूब क्या आज?
बता तेरी तनयाकी कौन
बचायेगा अब आकर लाज?

९
कह रही थी तू-मेरे लाल
गये थे सात सिन्धुके पार,
कांप जाता था थर-थर काल
चमक जाती थी जब तलवार।

१०
विश्वमें उड़ा विजयका केतु
क्रान्तिके रचे गये नव गान,
और उनके पौरुष से हुआ
शान्तिका फिर जगमें सम्मान। ११

बता फिर विश्वविजयिनी आज
कहां गयी वह तेरी ललकार
और तेरे बक्षोंको आज
बता क्या गया काठ है मार? १२

बंदिनी मा फिर गरजी वहां
कहा-"चुप हो जा पापी! मौन'
किसे मैं आज पुकारूं यहां
और सुनता है मेरी कौन?

१३
कौन से क्रूर करों ने हाय
मोहिनी की बचों पर डाल,
हुए सब रंगरलियों में मस्त
बंदिनी मा का रहा न ख्याल।

—श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

FIGURE WITHOUT LIFE

सावधान, कुत्सित रक्तसे भयानक बीमारियां यथा स्पर्श ज्ञान हीनता चर्मरोग, प्रमेह व कुष्टादि रोग प्रायः उत्पन्न हो जाते हैं।

'अमृत वल्ली कषाय' के सेवनसे जीवनमें चमत्कारिक परिवर्तन हो जाते हैं। पुनर्जीवन और नव यौवनकी प्राप्ति

AMRITABALLI KASAYA
restores vitality & strength

KAVIRAJ N. N. SEN & CO., LTD CALCUTTA.

रोगको जड़से हमेशाके लिए दूर करते हैं

नपुंसकता, स्वप्नदोष, इन्द्रिय-निर्बलता, सुजाक, गर्मी एवं वीर्य-सम्बन्धी समस्त रोग गारंटी के साथ दूर किये जाते हैं। हिन्दुस्तानके प्रसिद्ध डाक्टर सहोत्तरा (यौन-विशेषज्ञ) से स्वयं मिलकर परामर्श कीजिये।

स्वदेशी मेडिकल हाल

१२३, चित्तरंजन एवेन्यु कलकत्ता (महम्मद अली पार्क के सामने) मिलनेका समय :— प्रातः ८ से १२ तक, शाम ४ से ८ तक

मुफ्त
१९४५ की डायरी कैलेण्डर

अपने मेट्रो न्यू गोल्ड आभूषणोंको लोकप्रिय बनानेके लिये हमने १९४५ का एक डायरी कैलेण्डर मुफ्त देनेका निश्चय किया है। आजही आभूषणों के नमूने और डायरी केलेण्डर के लिये लिख।

न्यू गोल्ड सप्लाई कम्पनी
हल्का नं० २२ (V. M. C.) अमृतसर

बुखार व पेट दर्द के लिये
स्टीमर छाप
शाफी
REGD. **मिक्श्चर** सेवन करें
सब जगह मिलता है. नकलसे सावधान रहें
—: बनाने वाले :—
धी शाफी इन्डस्ट्रीयल वर्क्स. (स्था. १९०७)
प्रोप्रायटर :- पी. टी. पटेल
पायधुनी नाका. मुंबई. नं. 3

मुफ्त—असली हाथ घड़ी

अपने फ्रेंच न्यु गोल्डके प्रचारार्थ हमने कुछ समय तक—जो रियायतकी अवधि समाप्त होनेके पहले आवेदन करेंगे—उन्हें एक जोड़ा फन्सी कंगन, बम्बई फैशनकी दो अंगूठियां, लाकेट सहित एक चेन और एक जोड़ा इयरिंग आदिका एक सेट सभी अति आकर्षक डिजाइनकी देनेका निश्चय किया है। यह सोना कसौटीपर परखनेपर असली सोनेकी भांति चमक देता है और असली सोनेके स्थानमें उपयुक्त किया जा सकता है। सचित्र सूची और पूरा विवरण मुफ्त। अभी आवेदन कीजिए, अन्यथा आपको कहीं निराश न होना पड़े। स्विस मेड, १० वर्षकी गारण्टी समेत एक असली हाथ घड़ी हमारे एजेन्सी नियमोंके अनुकूल बने एजेण्टोंको दी जाती है। शीघ्र लिखें—इण्डो ब्रिटिश कमर्शियल कं०, हल्का नं० २२ अमृतसर।

संसार का सबसे बड़ा संघटन...

1532
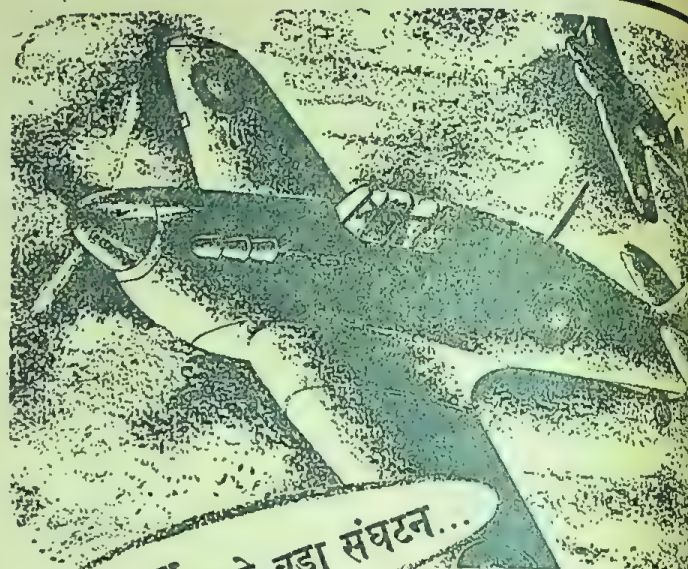
महान अखिल भारतीय संघटन ...
हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में सम्मिलित होकर आप ... पर तेज़ी से भीषण प्रहार करेंगे। आपको ऐसे विमानों में बैठकर उड़ने और ... का अवसर मिलेगा जो आकाश में फर्राटे भर कर दुश्मन के दिल को कँपा देते ... आप अपने सीने पर दो "पंख" (हवाई बेड़े का निशान) लगायेंगे और ये पंख ... करने के लिए आपको अपने अन्दर कुछ खूबियां भी पैदा करनी होंगी। यदि ... इस समय उठ खड़े हों, तो आप वह शिक्षा एवम् योग्यता प्राप्त कर सकते हैं, ... अपने व्यक्तित्व को शक्तिशाली बनाने के लिए आवश्यक होती है। हिन्दुस्तानी ... बेड़े के विमान-चालक हिन्दुस्तान के चुने हुए नौजवान होते हैं। इनके दल ... सम्मिलित होकर अपने व्यक्तित्व को शक्तिशाली एवम् अपने चरित्र को उच्च बनाइ...

अपने युद्धोत्तर कार्य-क्रम पर विचार करने का यही समय है!

* इसमें कोई सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े में अफ़सरों को जो ट्रेनिंग दी जायगी और उन्हें जो अनुभव प्राप्त होगा, उसके कारण बहुतसे जवानोंमें ऐसी योग्यता उत्पन्न हो जायगी जो शहरी क्षेत्र में सफल जीवन-वृत्ति के लिए बहुत आवश्यक होती है।
* सरकार ने इस बात की गारंटी दी है कि लड़ाई के दौरान में सरकारी नौकरियों का एक भाग खाली रखा जायगा और बाद में इन जगहों पर वे लोग रखे जायेंगे जो अभी फ़ौजी नौकरी में हैं।
* ऐसी योजनायें बनाई जा रही हैं जिनके द्वारा फ़ौजी नौकरी से आये हुए जवान सरकारी खर्च पर कोई निर्वाचित हुनर या पेशा सीख सकते हैं।
* जो उम्मीदवार अभी विश्वविद्यालयों में पढ़ रहे हैं, उन्हें लड़ाई के बाद शिक्षा संबंधी विशेष रियायतें मिलेंगी जिनके द्वारा वे युद्ध के बाद अपना अध्ययन जारी रख सकते हैं। अपने विश्वविद्यालय के अध्यक्ष से इनके संबंध में वास्तविक विवरण प्राप्त हो सकता है।

इस कूपन को काट कर आ... निकटवर्ती जी० डी० (पाइलाट) रिक्रूटिंग आफ़ीसर के पास भेज दीजि... जो आपको हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े ... पाइलाट (विमान चालक) की नौक... के संबंध में पूरा विवरण और प्रार्थना पत्र का फार्म भेज देंगे।

नाम ____________

पता ____________

____

____

हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े

को ऐसे जवानों की ज़रूरत है जि... तन्दुरुस्ती अच्छी हो, नज़र और सुनने... ताकत ठीक हो और उम्र १७½ और ... साल के बीच हो; विमान चलाने ... परिश्रम को सहन कर सकते हों ... अच्छी शिक्षा पाई हो तथा अच्छी अं... बोल और लिख लेते हों।

अपना कूपन निकटवर्ती जी. डी. रिक्रूटिंग आफ़िस को भेज दीजिए।
आई० ए० एफ० जी० डी० (पायलट) रिक्रूटिंग आफिसर, ४८, ओल्ड कोर्ट हाउस स्ट्रीट, कलकत्ता।
आई० ए० एफ० जी० डी० (पायलट) रिक्रूटिंग आफिसर, मार्फत आर० ए० एफ० स्टेशन, ढाका।

आपकी किस्मतमें क्या लिखा है ?

अगर आप एक सालके अन्दर पेश आने वाले अच्छे बुरे हालातोंका समयसे पहले जानना चाहते तो आज ही हमको सिर्फ एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूलका नाम लिख कर भेज दी जिये। बस फिर हम ज्योतिष विद्याके हिसाबके आपके आनेवाले १२-मासका नफा नुकसान, किस तिजारतमें फायदा होगा किस तरीकेसे रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमतमें तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलादका सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूरका सफर, मुकदमा और इम्तिहानमें सफलता, सगाई, शादी, जमीन व जायदादका सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारणसे धनका मिलना। सारांश तारीख कार्डसे लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातोंका खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आनेमें वी० पी०पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथमें बदकिस्मतीको खुश किस्मतीमें बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आने वाली मुश्किलोंको दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्याके कितने कामकार हैं। गलत साबित होनेपर कीमत वापिस

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम (V. C.) जालन्धर सिटी।

ाथी जब दलदलमें फंस जाता है तब भी उसे लात मार आते हैं। आज पर शासन करनेका स्वप्न देखनेवाले की यही दशा हो रही है। अमेरिकन ब्रिटिश सेनाएं पश्चिमसे और सोवियट ल सेना पूर्व और दक्षिणसे उसे इस दबाती आ रही हैं कि अब बर्लिनकी करनेका विकट प्रश्न हिटलर और नाजी ओंके सामने उपस्थित हो गया है। ऐसे

सोवियट सेनापति मार्शल जुकोव

दक्षिण अमेरिकाके अर्जेण्टाइन और ने उसके विरुद्ध युद्ध घोषणा मेढ़कके मारने वाली घटनाकी ही याद दिलाती लेकिन अपने देशके युद्ध मोर्चेपर जर्मनी प्रतिरोध कम तगड़ा नहीं हो रहा है। कारण है कि सोवियट सेनाकी जो गति ग्रीष्मकालीन आक्रमणके प्रथम सप्ताह , वह अब नहीं रह गयी है। पूर्व प्रशि- सोवियट सेनाका आक्रमण बड़े पैमाने रहा है और मेहलसाकके निकट लाल क इस्य विघ्न बाधाओं और भयङ्कर ओंका ख्याल न करते हुए आगे बढ़कर सैनिक पंक्तिमें घुसे सही, लेकिन जर्मन सेनाने उनका मार्ग अवरुद्ध कर नेकोल्डांवेकियामें भी डेन्यूब नदी सोवियट सैनिकोंको जर्मन प्रतिरोध रण रुक जाना पड़ा है और ब्राटि- ा तथा वियनाके अंचलोंमें भी रूसी अस्थायी तौरपर रोक दी गयी है। और बोबर नदियोंके अंचलोंमें तो का दावा है कि:प्रत्याक्रमणके सिलसिलेमें कोल्ड और सोराऊ नामक स्थानोंपर अधिकार जमा लिया गया है। लेकिन क्षणिक सफलतासे सोवियट सेनाका समस्त रूसी मोर्चेपर रोक लेना कोई ी बात नहीं है। रायटरके विशेष संवा- ाका कहना है कि:फ्रैंकफर्टके दक्षिण नदीकी मोड़में लालसेना दक्षिण पूर्वसे पर नया खतरा उपस्थित करने लगी मार्शल जुकोव और मार्शल कोनीवकी ओंके जर्मन राजधानीके लिये किये जाने- सम्मिलित युद्ध उत्तरसे दक्षिण तक एक परिणत हो गये हैं जिसका केन्द्र फ्रैंकफर्ट य ही गुबेन नगरके दक्षिण-पूर्वी जर्मन स्थितियोंको भी पस्त करनेकी चेष्टा सोवि- याएं कर रही हैं क्योंकि इनपर विजय र लेनेपर सीधा बर्लिनपर पिसर दन्ते के लिये मार्ग खुल जायेगा। ब्रेसलोकमें सोवियट सेना दक्षिणसे प्रविष्ट हुई लेकिन

युद्धका सिंहावलोकन

——:*:*:*:——

जर्मन संवाद समितिके आलोचकका दावा है कि जो सेना प्रविष्ट हुई, उसको बिलकुल काट डाला गया। ब्रेसलो मोर्चेके पश्चिमी पार्श्वमें रूसियोंको क्लेटन डोर्फ तक पीछे हटानेका दावा जर्मन कर रहे हैं। लेकिन कोनिग्सबर्गके दक्षिण-पश्चिम सोवियट सेना ने जिन्टेन-फ्रीस्चशेप रेलवे लाइनको पार कर लिया है। मार्शल कोनीवने नीशे नदीके तटपर ६० मीलकी दूरीके अन्दर अनेक स्थानोंपर भयङ्कर रूपसे आक्रमण आरम्भ किया है। उसकी भीमकाय तोपें नदीके पश्चिम तटस्थित सड़कों पर जर्मनोंकी सफाई कर रही है। नीशे लाइनको मार्शल कोनीव साफ कर लेते हैं तो बर्लिन और ड्रेस्डन उनकी सेनाकी मार के अंचलमें आ जाते हैं। गत २३ फरवरीके अपने सबसे अन्तिम सन्देशमें मार्शल स्टालिन ने पोजनानपर मार्शल जुकोवके अधिकार करनेकी घोषणा की है। उन्होंने यह भी कहा कि ४० दिनोंके अन्दर ८ लाख जर्मन मारे गये और ३॥ लाख बन्दी बनाये गये हैं। अभी

एक सैनिक वक्ताके अनुसार जेनरल सिम्पसन के सैनिक रोर नदीको पारकर ड्यूरेन तक पहुंच गये हैं। रोर अंचलमें अमेरिकन नवी और तथा ब्रिटिश दूसरी सेना है। रायटरके विशेष सम्वाददाताके अनुसार तीसरी अमे- रिकन सेनाने सार नदीको पारकर सारबर्ग पर अधिकार किया है। सेरिगमें घर-घर लड़ाई हो रही है। अमेरिकन सैनिक सीग- फ्रीडका किलेबन्दियोंपर भीषण आक्रमणकरने लगे हैं। अगर फील्ड मार्शल मांट गोमरीने उत्तरी युद्ध मोर्चेपर सफलता प्राप्त कर ली तो महत्वपूर्ण घटनाएं घटित होनेकी जोरदार आशा की जाती है। इस समय जर्मन सेना- पति मार्शल वान रुंस्टेडके नायकत्वमें ५० बटालियन—२५ हजार सैनिक फील्ड मार्शल मांट गोमरीकी प्रगति रोकनेके लिये संलग्न हैं। जर्मन अपने स्थानपर डटे रहनेके लिये ही नहीं लड़ रहे हैं। उन्होंने इस भयङ्कर युद्धमें अपने तीन पैंजर, ४ पैराशूटी और ८ पैदल सैनिक डिवीजन लगाये हैं। गोश नगरके

लिनिचनगरमें जर्मनीकी खुफिया पुलिसका हेडक्वाटर। गत ४ दिसम्बरको इस नगरपर मित्रोंका अधिकार हो गया था।

अन्दर और उसके चारों ओर लड़ाई हो रही है।

इटलीके मोर्चेपर मोंटे बेलवेडियरके चारों ओर पांचवी ब्रिटिश सेनाने अपनी गत: सप्ताहकी स्थितिमें सुधार कर लिया है और कोई उल्लेखनीय बात इस मोर्चेपर नहीं हुई है।

सुदूर पूर्वके युद्धके सम्बन्धमें यद्यपि याल्टा कानफरेंसमें कुछ नहीं किया गया तथापि ब्रिटेन और अमेरिकाकी व्यग्रता इस बातसे साफ झलकती है कि क्रीमियासे लौटते समय प्रेसीडेंट रूजवेल्ट और मि० चर्चिलने ४ घंटे तक कैरोमें इस सम्बन्धमें विचार- विमर्श किया और मि. चर्चिलने राष्ट्रपतिको पूर्ण आश्वासन दिया कि जर्मनीकी लड़ाई समाप्त होते ही ब्रिटेनकी सारी जन शक्ति और साधन जापानके विरुद्ध लगा दिये जायेंगे। ब्रिटेनके सम्बन्धमें कुछ लोग अटकलबाजी करने लगे थे कि सुदूर पूर्व में वह पूर्ण शक्तिके साथ युद्ध नहीं करेगा और जापानसे लोहा लेनेका सारा उत्तर दायित्व अमेरीकाको अकेले उठाना पड़ेगा गत सप्ताह अमेरीकन सेनाने प्रशांत मोर्चेपर

वर्तमान युद्धकी समाप्तिका प्रश्न खटाईमें ही पड़ा हुआ है तब तक जर्मन प्रधान मन्त्री डा. गोबेल्स भविष्यवाणी लगे हैं कि तीसरा युद्ध १९४८ में आरम्भ हो जायेगा। पहले उक्त युद्धमें सोवियट और ब्रिटनकी भिडन्त होगी, तत्पश्चात अमेरिकापर आक्रमण होगा। क्यों, पहले अपनी राजधानी और देशको वर्तमान सङ्कटसे उबारो तब ज्योतिष शास्त्रके ज्ञानका पिटारा खोलना!

जर्मनीके पश्चिमी मोर्चेपर जिस अमेरि- कन आक्रमणकी आशा बहुत दिनोंसे की जाती थी। वह रोर नदीके अंचलमें गत २३ फरवरीके प्रातः काल आरम्भ हो गया। लिनिच नगरके उत्तर अमेरिकन टैंक वाहिनी ने और दक्षिण पैदल सेनाने रोर नदीको पार करनेकी चेष्टा की। जर्मनोंने अमेरिकन आक्रमण रोकनेके लिये अविलम्ब बहुत बड़ी संख्यामें सैनिकोंको उक्त मोर्चेपर झोंक दिया और भयङ्कर युद्ध इन पंक्तियोंके लिखे जाने तक जारी है। मांटगोमरीने मास और लोअर राइनके बीचमें जर्मन सैनिक-पंक्ति भङ्ग करने के लिये नये सिरेसे चेष्टा की है। बर्लिनके

काफी उल्लेखनीय सरगर्मी दिखलायी और ३६-३६ घंटे तक जापानके टोकियो तथा अन्य व्यावसायिक नगरोंपर अनेक बार आक्रमण किये। इवोजिमाके द्वीप पर नयी अमेरिकन सेना उतार कर उन्होंने टोकियो पर लगातार आक्रमण करनेका रास्ता साफ करनेकी चेष्टा पूर्ण रूपसे की है। फिलिमा- इनका युद्ध भी पूरे जोर शोरसे चल रहा है। यद्यपि जापानी सैनिकोंका जबर्दस्त प्रतिरोध हो रहा है, तथापि अमेरिकन फौजें लूजोन और उत्तरी सान बरनार्डिनो जल डमरू मध्यके बीचस्थित कापुल द्वीप पर उतार दी गयीं हैं। इवोजिमाकी लड़ाईमें अबतक ५ हजार ३७२अमेरिकन सैनिक हताहत हुए हैं। बारहवां अमेरिकन सैनिक डिवीजन मुण्टी लुल्प नगरमें पहुंच गया है। चीनके दक्षिण पश्चिमकी भागमें जापानी फौजोंपर बड़े पैमाने पर आक्रमण करनेकी मित्रसैनिक तैयारी जोर-शोरसे हो रही है। कहा जाता है कि यून्नन प्रांन्तमें ९० चीनी डिवीजन और ४० हजार अमेरिकन सैनिक मौजूद हैं। बर्मामें अन्तर्गत मित्र सेनाओंका प्रयास मांडले की दिशामें लगातार जारी है। पचासवें चीनी डिवीजनने नामतू नदीको पार उक्त नामके नगरपर अधिकार कर लिया है। तुर्कीके विरुद्ध जापान युद्ध घोषणा करने ही वाला है।

प्रशांत मोर्चेका अमेरिकन सेनापति जेनरल मैकार्थर

नाजी नेताओंको हिटलर कासंदेश

लन्दन, २४ फरवरी। जर्मन समा- चार समितिने बताया है कि आज म्यू- निखमें नाजी पार्टीके पुराने सदस्योंकी बठकमें हर हिटलरका एक सन्देश पढ़कर सुनाया गया। सभामें नाजी पार्टीके गठनका २५ वां वार्षिकोत्सव मनाया गया। हिटलरने सन्देशमें बताया है कि—'मेरा कर्त्तव्य पालन और कार्य सम्पादनका भार ही खास कारण है जो मुझे एक क्षणके लिये भी सदर मुकाम छोड़नेसे रोकता है। रायटर

केन्द्रीय असेम्बली

——:×:——

श्री टी० एस० ए० चेट्टियरके एक प्रश्न का उत्तर देते हुए गृह सदस्यने बतलाया कि जनवरी मासमें कांग्रेस कार्य समितिके सदस्योंकी स्थितिकी जांच पड़ताल की गयी और उनकी नजरबन्दीके लिये नयी आज्ञा निकाली गयी। श्री बद्रीदत्त पांडेयने पूछा, क्या पं० नेहरू और पन्तजीको उनके प्रांतमें भेज दिया दिया गया है। होम मेम्बरने जवाब दियानहीं। परन्तु इसपर विचार किया जा रहा है।

श्री श्रीप्रकाशने पूछा कि पिछले ६ महीनों के अन्दर कांग्रेस कार्य समितिके सदस्योंने क्या कोई ऐसा काम किया, जिसके कारण अवधि बढ़ा दी गयी। होम मेम्बरने उत्तरदिया नहीं। फिर उनकी जेलअवधि ६ महीनेके लिये क्यों बढ़ा दी गयी? इसके उत्तरमें होम-मेम्बरने कहा कि नेताओंके लिये जो आज्ञा निकाली गयी है, उसका मतलब यह है कि इस समय नेताओंको जेलसे बाहर नहीं किया जा सकता; यह मतलब नहीं कि उनकी जेल अवधि ६ महीने बढ़ाई गयी है।

श्रीमनु सूबेदारके एक प्रश्नका उत्तर देते हुए ब्राडकास्टिंग सदस्य सर सुल्तान अहमदने कहा कि गंटकमें एक ब्राडकास्टिंग स्टेशन कायम किया गया है जहांसे तिब्बती भाषामें ब्राडकास्ट किया जायेगा।

मि. अब्दुल कयूमके साथ प्रश्नका उत्तर हुए सर सुल्तान अहमदने कहा कि अमेरिका-में भारतीय प्रचार कार्यमें सन् १९४४-९४ में कुल १३४७०० डालर खर्च हुए। 'भारतीय समाचार' के अतिरिक्त थोड़ी ही संख्यामें दूसरे पत्र बांट गये थे। कोई दूसरी पत्रि-कायें वहां नहीं बांटी गयीं।

प्रो० रङ्गाने पूछा क्या सर सुल्तान अहमदका ध्यान हिन्दुस्तान टाइम्सके उस लेखकी ओर गया है जिसमें यह बतलाया गया है कि अमेरिकाकी कोई संस्था भारत के विरुद्ध प्रचार कर रही है। सर सुल्तानने कहा 'हां' लेकिन इस बातमें १० ९ हिस्सा झूठ है।

मि० चैंपमैन मर्टिमोरने पूछा कि सरकार इस झूठे प्रचारके विरुद्ध क्या करने जा रही है। सर सुल्तानने जवाब दिया कि इसके विरुद्ध केवल यह कहना पर्याप्त है कि यह बात गलत है।

श्री कृष्णमाचारीने कहा, चूं कि इसका दशांश ठीक है अतः इसके विरुद्ध सरकारकी कौनसी कार्यवाही होगी। सर सुल्तानने उत्तर कहा कि दशांश सत्यके लिये मैं कोई कार्यवाही करना ठीक नहीं समझता।

इस सम्बन्धके दूसरे प्रश्नोंके उत्तरमें सर सुल्तान अहमदने कहा कि वे जल्दीसे जल्दी इस विषयपर फिर प्रकाश डालेंगे।

लेफ्टिनेण्ट जेनरल किंग

युद्ध सचिवने सर्दार मङ्गल सिंहको बत-लाया कि प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलके प्रति-निधि लेफ्टनेंट जेनरल किंग भारतकी युद्ध-सम्पदाका स्टैंडर्ड नियत करने नहीं आये हैं बल्कि उस कार्य अथवा नीतिके सम्पादन में भारत सरकारकी सहायता करने आये हैं जिसे सरकार कार्यान्वित करनेकी कोशिश कर रही है। स्टोरकी सामग्री तथा दूसरी वस्तुओंके आयातके सम्बन्धमें वे भारत सर-कारकी मदद करते हैं। वे ब्रिटिश प्रधान मन्त्रीके पास रिपोर्ट भेजते हैं लेकिन भारत सरकारको तत्सम्बन्धी सूचना दे देते हैं। उनका वेतन और भत्तेका खर्चा ब्रिटिश सरकार देती है।

कम्यूनिस्ट किताब पर प्रतिबन्ध

अब्दुल कयूमके एक प्रश्नका उत्तर देते हुए गृह सदस्यने कहा कि दो कम्यूनिस्ट किताबोंपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है क्योंकि ऐसा ख्याल किया जाता कि वे देश में विद्रोह फैलानेमें सहायक होंगी।

प्रो० रंगाके एक प्रश्नके उत्तरमें योजना सदस्य सर आर्देशिर दलालने बतलाया कि युद्धके बाद वस्त्रकी मांगके अत्यधिक बढ़ जानेकी सम्भावना है अतः बुनाईकी मशीन-को देशमें संस्थापित करनेके बाद भी जुलाहों पर इसका बुरा-असर नहीं पड़ेगा। उन्होंने कहा कि मैंने कताईकी मशीन बैठानेकी सि-फारिश कर दी है, जिससे कि देशी जुलाहों को सुभीता हो।

जापानियोंके कब्जेमें

युद्ध सचिवने श्रीमती सुब्बरैयाको बत-लाया कि ३०१ अफसर (भारतीय) और ४२०७३ सैनिक निश्चित रूपसे जापानियों केकब्जेमें हैं। इनके अतिरिक्त ३७ अफसरों और २१९९९ सैनिकोंका उनके कब्जे होना सम्भावित समझा जाता है।

मुसलिम लीगका प्रस्ताव पास

केन्द्रीय असेम्बलीने ४६ के विरुद्ध ५८ वोटसे मुसलिम लीगके उस कटौतीके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया जिससे रेलवे कम्पनी का सड़क मोटर सर्विसकी स्कीमका विरोध किया गया है। प्रस्तावको उपस्थित करते हुए सर मुहम्मद यमीन खांने कहा है कि सड़कोंपर मोटर चलाकर फायदा उठाना रेलवे के लिये एक नयी बात होगी। अतः सरकार द्वारा इस ओर कोई कदम उठानेके पहले यह उचित होगा कि इस बातपर सभामें पूर्ण रूपसे विचार कर लिया जाय। यदि रेलवेने इस नीतिको बरता तो इसका परिणाम उन मोटर चलानेवालोंके लिये घातक होगा जिनके पास अधिक पूंजी नहीं है। वे सहस्रों व्यक्ति जो मोटर सर्विसमें लगे हुए हैं अपनी जीविकासे हाथ धो बैठेंगे। सरकारने जिन लारियोंको हथिया लिया था, उनके बदलेमें नयी लारी वहदेनेमें आनाकानी कर रही है। इसके लिये सर मोहम्मदने सरकारका घोर विरोध किया।

सर केनेथने बतलाया कि सरकारकी यह मंशा नहीं है कि छोटे पैमानेमें लारीका काम करनेवाले अपनी रोजीसे हाथ धोएं। रेलवे उन लोगोंके साथ सहयोग करनेके लिये तैयार है यदि वे ऐसा सम्बन्ध स्थापित करने के लिये राजी हों, जिससे कि काम चलाऊ योजना बन सके। सुसम्बद्ध मेलसे देशको अच्छी और सुव्यवस्थित सेवा प्राप्त हो सकती है। असम्बद्ध प्रतियोगितासे नहीं। सम्मि-लित प्रयासमें छोटे लोग हिस्सेदार बन सकते हैं।

जापानकी नकल

श्री स्वामी वेंकटचलमने बतलाया कि सम्पूर्ण नीति सम्मिलित प्रयास तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जापानमें प्रचलित सम्मिलित लाभकी ओर संकेत करती है। गैर सरकारी लारी मालिकोंकी गाड़ियां ए. आर. पी. के लिये मांग ली गयी और बदलेमें उन्हें कोई गाड़ी नहीं मिली। इसके साथ-साथ स्थानीय अधिकारियोंको हिदायत दी गयी कि वे मोटर सर्विसके लिये आज्ञा न जारी करें।

श्री चेट्टिने कहा कि रेल और मोटरके सम्मिलित सहयोगकी सारी शर्तें प्रकाशित करनी चाहिये।।

मुसलिम लीग पार्टीके डिपुटी लीडर नवाबजादा लियाकत अली खांने कहा कि यदि मेम्बर लोग बगैर विस्तृत स्कीम समझे इतनी भारी रकमको खर्च करनेके लिये अपनी स्वीकृति देते हैं तो वे अपने कर्तव्यसे विमुख होते हैं। यदि सरकार सभामें इस रकमके खर्चकी स्कीम उपस्थित करे और सभा उचित समझे तो उसे पास किया जा सकता है। गैर सरकारी सदस्य इस रकमके खर्चकी रूपरेखा बिना समझे सरकारके ऊपर इसकी जिम्मे[illegible] छोड़ सकते।

देहाती जीवनपर रेलोंका [illegible]

श्री भूलाभाई देसाईके प्रस्ताव[illegible] करते हुए कहा कि मोटर वेहिकि[illegible] बहसके समय रेलको अवांछनीय प्र[illegible] से बचानेकी फिक्रमें हमथे। लेकिन [illegible] की रक्षाके साथ-साथ रेलको अनु[illegible] नहीं दिया जा सकता। रेलवेके [illegible] आर्थिक जीवनपर कैसा प्रभाव [illegible] इसका भी हमें विचार करना चाहि[illegible] बैली रेलवेके बन जानेका परि[illegible] हुआ कि बारदोली और सू[illegible] चलने वाली बैलगाड़ियोंकी आमद[illegible] हो गया। अतः देशके आर्थिक [illegible] जितनी सावधानी रखी गयी है [illegible] अधिक सावधानीकी आवश्यक[illegible] देशमें विदेशी लारीके अत्यधिक [illegible] आयातके विरुद्ध हम लोगोंको [illegible] चाहिये और देशकी औद्योगि[illegible] तथा यन्त्रीकरण पर अत्याधिक [illegible] देना चाहिये।

आगे उन्होंने बतलाया कि [illegible] चाहियेकि पहिले की गयी भूलोंको [illegible] न करे। उन्होंने याद दिलायी कि [illegible] कारी सदस्योंकी इस मांग को कि [illegible] रेलवे इंजिन बनना चाहिये, सरका[illegible] कारण ठुकरा दिया था कि दूसरे [illegible] सैकड़ा कम दाम पर इंजिन आ [illegible] वे ही लोग अब यह कह र[illegible] रेलवे इञ्जिन भारतमें बनना चाहि[illegible] बनी हुई रेल लाइनों और डिब्बों [illegible] रहनेकी सम्भावना न रहे। सरका[illegible] के इस दृष्टिकोणपर गौरसे विचार [illegible]

——

स्वदेश-वार्ता

...न्य मंत्रिमंडल में गतिरोध

...कहा जाता है कि सिंधके शिक्षा मंत्री ...इलाही बक्सने अपने पद इस्तीफा दे दिया ...यह भी मालूम हुआ है कि मुस्लिम ...असेम्बली पार्टीकी आवश्यक बैठक ...विमें हालके परिवर्तन पर विचारके ...बुलायी गयी है।

उड़ीसाकी दयनीय दशा

उड़ीसाके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री विश्व... ...दासने उड़ीसाकी दुर्दशाका दयनीय ...खींचा है। गंजाम जिलेके कुछ लोगों ...पास खानेका बर्तन तक नहीं है। कुछ ...गांवोंमें दरिद्रता इतनी उग्र हो उठी है कि ...अभावमें लोग घरके बाहर नहीं निकलते।

कोयलेकी भयंकर कमी

अहमदाबादके मिल मालिकोंने टेक्स-...कमिश्नरसे मिलमें तेलके उपयोग ...की आज्ञा मांगी है। कारण यह है कि ...कोयलेके अभावसे मिलका चलाना मुश्किल ...हो रहा है।

बङ्गालमें वस्त्र संकट

बङ्गाल असेम्बलीमें भाषण करते हुए ...श्वरदास जी जालानने कहा कि इस ...में कपड़ेकी समस्या अत्यन्त जटिल हो ...है। १९४३ के अन्नाभावकी तरह इस ...में कपड़ेका भी अभाव हो जानेकी ...सम्भावना है।

सिन्ध में बचत का बजट

सर गुलाम हुसेन हिदायतुल्लाने सिन्ध असेम्बलीमें बचत का बजट पेश किया ...उन्होंने बताया कि १९४५-४६ सालमें ९ ...हजार रुपयेकी बचत होगी। बजटके ...मुताबिक छः अन्य तालुकोंमें अनिवार्य ...प्रारम्भिक शिक्षा आरम्भ की जायेगी।

भारतीय नजर बन्द

...राजनीतिक क्षेत्रोंमें पूर्ण विश्वास ...किया जाता है कि पं० जवाहरलाल नेहरू ...आचार्य कृपलानी और पण्डित गोविन्द ...वल्लभ पन्तको अहमद नगरसे बरेली भेजने-...का आदेश भारत सरकारने दे दिया है। ...ऐसी भी खबर है कि यदि पन्तजी चाहेंगे तो ...लखनऊ मेडिकल कालेजके अस्पताल ...में हार्नियाका आपरेशन करानेके लिये भर्ती ...किया जायेगा। आपरेशनके समय पन्तजीके ...सम्बन्धी सम्भवतः उपस्थित रह सकेंगे। ...लोगोंका ऐसा भी विश्वास है कि पन्तजी-...की बीमारीके कारण उन्हें रिहा भी किया ...जा सकता है।

...अमेरिकामें भारत विरोधी प्रचार

...अमेरिकासे लौटकर आये हुए पत्र-...प्रतिनिधि श्री चमनलालका कहना है कि अमेरिका...में भारतके सम्बन्धमें उलटा प्रचार किया ...जाता है। इस बातका प्रतिपादन करनेके लिये वे अपने साथ बोझके बोझ ऐसे इश्तहार, पुस्तकें और बुलेटिन लाये हैं जिनके द्वारा अमेरिकामें विपरीत प्रचारका काम किया जा रहा है।

पत्र प्रतिनिधिसे आपने कहा कि सैन-फ्रांसिस्कोमें जो सम्मेलन होनेवाला है उसमें भारतकी समस्याको पेश करनेके लिये भारतीय व्यवस्थापिका सभाके विशिष्ट प्रतिनिधियोंका एक दल भेजा जाय जो भारतकी समस्याको मित्र राष्ट्रोंके समक्ष पेश करे।

कौन क्या कहता है

भारत स्वराज्य लेकर रहेगा

कामनवेल्थ रिलेशन्स कानफरेन्समें भारतीय प्रतिनिधि मण्डलके नेता पदसे सर जफरुल्ला खांने एक ओजस्वी भाषण देते हुए कहा कि भारतको औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त करनेका पूर्ण अधिकार है और कोई उसके मार्गमें रोड़े नहीं अटका सकता। इस युद्धके साथ-साथ भारतको अपने सामरिक महत्वका ज्ञान हो गया और सुदूर पूर्वके युद्ध में अपने अनन्त साधनके कारण वह एक महान शस्त्रागार बन गया है और विजय बहुत कुछ उसीके ऊपर अवलम्बित है। अपनी पराधीनतासे वह उकता गया है! अतः उसकी राजनीतिक स्थिति किसी समय गम्भीर हो सकती है।

भारतको भय है कि युद्धके उपरान्त उसे मामूली देशोंकी तरह एक कोनेमें डाल दिया जायेगा। यदि आज चीनकी गिन्ती दुनियांके ४ महान राष्ट्रोंमें की जाती है तो क्या कारण है कि भारतको जो चीनसे हर दशामेंबढ़कर हैवही सम्मान नहीं दिया जाता यदि हिन्दुस्तानमें फूट हैतो चीनकी भी यही अवस्था है।

कस्तूरबा स्मारक कोष

कस्तूरबा फण्डके वितरणकी व्यवस्था बतलाते हुए महात्मा गांधीने कहा कि फण्ड में जो १ करोड़ २४ लाख रुपया एकत्रित हुआ है वह इस बातको ध्यानमें रखते हुए बहुत बड़ी रकम नहीं कहा जा सकता कि हिन्दुस्तान १ करोड़से अधिक रुपये युद्धमें खर्च कर रहा है।

इस १ करोड़ रुपयेकी न्यूनता इसीसे है कि इसे भारतके सात लाख गांवोंमें रहनेवाले असंख्य स्त्री और बच्चोंकी सेवामें लगाना है। गांधीजीने खर्चके लिये रुपयोंको ३ मदमें बांट दिया है। पहले हिस्सेको देहातीऔरतोंके इलाजमें लगायाजायेगा।

लेकिन किस प्रकारकी औषधियोंका देशी या विलायतीका प्रयोग किया जायेगा इस पर वे निश्चित रूपसे कुछ नहीं कह सके। उन्होंने कहा कि इस विषयपर लोग स्वयं विचार करके कोई निश्चित राय कायम करें। महात्माजीने कहा कि हमारे देहाती जनोंकोअपने स्वास्थ्यका विशेष ख्याल रखना चाहिये। स्वास्थ्य नाशका मुख्य कारण अज्ञानता और दरिद्रता है। अविद्याके नाशके लिये 'नयी तालीम' लेना आवश्यक है। और दरिद्रताको दूर करने लिये खादी और तरह तरहके देहाती उद्यमोंका सहारालेना चाहिये। यदि देहातमें छोटे छोटे बच्चोंके लिये शिक्षाका प्रबन्ध किया जाये तो बड़े होनेपर स्वतन्त्र रूपसे कोई न कोई उद्योग कर सकते हैं और इस तरहसे अपने पैरोंपर स्वयं होना साख सकते हैं।

अखिलभारतीयहिन्दूधर्म सम्मेलन

आबू पर्वतपर होनेवाला अखिल भारतीय हिन्दू धर्म सम्मेलन सानन्द सम्पादित हुआ। सभापति श्री जगदगुरु शंकराचार्यने अपने भाषणमें इस बातपर जोर दिया कि हिन्दू धर्मके विभिन्न सम्प्रदायोंका समीकरण हो। भारतके जिन प्रसिद्ध प्रसिद्ध हिन्दू नेताओंने सम्मेलनको अपने सन्देश भेजे थे उनमें श्री मदनमोहन मालवीय, सर सर्व पल्ली राधाकृष्णन, सेठ युगलकिशोर बिरला तथा वीर सावरकरका नाम विशेष रूपसे उल्लेखनीय है।

जहाजके निर्माणमें बाधा

बम्बईके इण्डियन मर्चेण्ट चेम्बरके अध्यक्ष मि० एम० ए० मास्टरने बतलाया है कि भारतीय जहाज निर्माणमें जो बाधा उपस्थित हैं उसे प्रयत्न करके दूर किया जा सकता है। भारतमें जहाज निर्माण क्यों पिछड़ा हुआ है इसका कारण बतलाते हुए आपने कहा कि भारत सरकार इस ओर उदासीन है। यूनान एक बहुत छोटा देश है है पर उसने इस व्यापारमें काफी तरक्की कर ली है। भारत सरकारसे किसी प्रकारकी सहायताके न मिलपेसे यह व्यवसाय अभी पिछड़ा हुआ है और उसका परिणाम आज यह हो रहा है कि उचित परिमाणमें खाद्य सामग्री लानेके लिये कोई साधन नहीं है जिसके कारण इस देशके असंख्य लोगोंको अन्नाभावसे कष्ट उठाना पड़ रहा है।

भारतपर मि०वेल्सका आशावाद

अमेरिकाके सम्मर वेल्सने अपनी नयी पुस्तकमें कहा है कि ब्रिटेनके कट्टर पन्थी तथा भारतके कुछ स्वार्थमय वर्गके लोग जिनमें कुछ भारतीय शासक भीहैंचाहे जितना भी विरोध करे, लेकिन भारत स्वायत्त शासनके जन्मसिद्ध अधिकारको शीघ्र प्राप्त करनेमें समर्थ होगा और विरोधी लोगोंकी विलम्ब करने वाली नीति सफल न हो सकेगी। मि० वेल्सने भारतीय कृषि और शिक्षाके लिये विशेष जोर दिया। सम्प्रदायिक मतभेदके विषयमें आपने कहा कि जब तक उसे मिटानेकी कोशिश नहीं की जायेगी, उसके गम्भीरताका यथार्थ ज्ञान नहीं हो सकेगा। आपने अन्तमें कहा है कि स्वतन्त्र भारत स्वतन्त्र चीनके साथ मिलकर एशियामें नवयुग लायगा।

भारतके प्रति अङ्गरेजोंका प्रेम

वर्ल्ड ट्रेड यूनियन कानफरेन्स के प्रतिनिधिके सम्मानमें इण्डिया लीगने जो सभा की थी उसमें मि० पेथिक लारेंसने कहा कि ब्रिटेनकी साधारण जनता संसारकी प्रत्येक जातिसे प्रेम व्यवहार बढ़ानेके लिये उद्यत है। अपने भारतीय मित्रोंको हृदयसे स्वतन्त्र होते देखना चाहते हैं।

गतिरोध दूर करो

मद्रासके प्रेसीडेन्सी कालेजके विद्यार्थियोंको सम्बोधित करते हुए श्री राजगोपालाचारीने कहा कि युद्धोत्तर निर्माणकी योजना बनानेसे अधिक आवश्यकता इस बातकी है कि हम वर्तमान राजनीतिक स्थितिको सुधारनेके लिये कोई उपाय करें। उन्होंने कहा कि सप्रू कमेटी जिस योजनाको बना रही है उसे बुद्धिमान जनताको स्वीकार कर लेना चाहिये। यदि उस योजनामें कोई व्यवहारिक दोष निकले तो बादमें उसका सुधार किया जा सकता हैं।

टालसटायकी मृत्यु

लन्दन, २४ फरवरी। मास्को रेडियोने आज ऐलान किया कि सुप्रसिद्ध सोवियट लेखक और सोवियट रूसकी सुप्रीम सोवियटके सदस्य अलेक्सी टालसटायकी मृत्यु हो गयी। सोवियट सरकारने उनकी अन्त्येष्टिकी व्यवस्थाके लिये एक कमीशन नियुक्त किया है। रा०

शक्ति संचय आवश्यक

२४ परगना जिलेमें होनेवाले हिन्दू सम्मेलनमें सभापतिके पदसे बोलते हुए श्री आशुतोष लाहिड़ीने कहा कि स्वराज्य प्राप्त करनेके लिये हम लोगोंको अधिकसे अधिक शक्ति पैदा करनी चाहिये जो एक दूसरेके सहयोगसे ही उपलब्ध हो सकती है। भारतीय कानून, विधान और नौकरीसे जो कुछ भी हक और शक्ति हमें प्राप्त है उन सभी शक्तियोंको बटोर कर हमें स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये लगाना चाहिये। हिन्दू मुसलिम एकताके सम्बन्धमें आपने कहा कि हम भी हिन्दू मुसलिम एकताके समर्थक हैं लेकिन इसके लिये दोनों जातिकी धार्मिकता को नष्ट करना अपेक्षित नहीं है।

भारतीय नजरबन्द

राजनैतिक क्षेत्रोंमें पूर्ण विश्वास किया जाता है कि जवाहरलाल नेहरू, आचार्य कृपलानी और पण्डित गोविन्द वल्लभ पंतको अहमद नगरसे बरेली भेजनेका आदेश भारत सरकारने दे दिया है। ऐसी भी खबर है कि यदि पंत जी चाहेंगे तो उन्हें लखनऊ मेडिकल कालेजके अस्पतालमें हार्नियाका आपरेशन करनेके लिये भर्ती किया जायेगा। आपरेशनके समय पंतजीके सम्बन्धी सम्भवतः उपस्थित रह सकेंगे। लोगोंका ऐसा भी विश्वास है कि पंतजी की बिमारीके कारण उन्हें रिहा भी किया जा सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

बर्लिनकी वर्तमान स्थिति

विभिन्न समाचार सूत्रोंसे जो खबरें मिल रही हैं उनसे स्पष्टतः व्यक्त होता है कि बर्लिनकी अवस्था चिन्ताजनक हो रही है और वहांके निवासियोंमें मृत्यु सी उदासी और नैराश्य छा रहा है, तथा धीरे धीरे वे युद्धसे उदासीन होते जा रहे हैं। लेकिन इससे यह न समझना चाहिये कि बर्लिनके निवासी युद्धसे विमुख हो गये हैं और अपने शत्रुओंसे लोहा लेनेके लिये तैयार नहीं हैं। ज्यूरिचके एक पत्रने बर्लिनकी अवस्थाका इस तरह वर्णन किया है—भग्न प्राय बर्लिन के बचावके लिये अब भी बड़ी तैयारी की जा रही है। विभिन्न संस्थाओंके लोग युद्ध बन्दियोंके साथ मिल कर राजधानीमें मोर्चेबन्दी कर रहे हैं। लेकिन उनके चेहरे पर नैराश्यकी काली रेखाएं अङ्कित हैं। शत्रुओंके सम्भावित बढ़ावको रोकनेके लिये गलियों और चौराहोंमें जगह जगह रुकावटें खड़ी की गयी हैं। इन रुकावटोंको तैयार करनेके लिये पुराने गाटर, भग्नावशेष इमारतोंके ढोंके टूटी हुई सन्दूक और सेफ, ट्राम गाड़ियां काममें लायी जाती हैं। इत्यादि लम्बे अर्से तककी घेरेकी अवस्था सामना करनेके लिये बड़े बड़े अन्नागारोंने भोजनकी वस्तुएं भर दी गयी हैं। वहांकी नारियोंने अपना पेट काट कर आटा इत्यादि बहुत सी खाद्य सामग्रियोंको इकट्ठा कर लिया है। कहनेका तात्पर्य यह है कि नैराश्य की इस भयङ्कर अवस्थामें भी बर्लिन निवासी शत्रुका सामना करनेके लिये भरसक प्रयत्न कर रहे हैं।

ईरानकी आशा

त्रिनायक सम्मेलन द्वारा जो घोषणा निकाली गयी है उससे ईरान निवासियोंको यह आशा हो गयी है कि मित्रसेना जल्दी ही ईरानसे वापस बुला ली जायेगी और ईरान की अखण्डता और स्वतन्त्रता कायम रहेगी।

जापानियोंको हरानेका खर्च

अमेरिकन सेनाके कमांडिंग जेनरल मि० सोमरवेलने बतलाया है कि जापानियोंको पराजित करनेके लिये अमेरिकाके संयुक्त राष्ट्रको ३४२४७ पौं० प्रति मिनट खर्च करने पड़ेंगे।

ट्रेड यूनियन फेडरेशन

लन्दनमें होनेवाले वर्ल्ड ट्रेड यूनियन सम्मेलनने एक शक्तिशाली वर्ल्ड ट्रेड यूनियन फेडरेशनके संस्थापनार्थ योजनाको स्वीकार कर लिया है। उस संस्थाका प्रधान दफ्तर पेरिससे होगा। युद्धोत्तर निर्माण की रिपोर्टमें मुख्य बातें यह हैं—स्वतन्त्र किये हुए देशोंकी अधिकाधिक सहायता करना सभी योग्य स्त्री पुरुषोंके लिये उचित कार्य तथा वेतनकी व्यवस्था करना सप्ताह की कार्य अवधिको घटा कर ४०घण्टे करना, वर्षमें १९ दिनकी वेतन सहित छुट्टीकी व्यवस्था करना और दुनियामें व्याप्त जाति और सम्प्रदायको मिटाना।

वाल्र्ड ट्रेड यूनियन कानफरेंस (लन्दन) में सम्मिलित ब्रिटेन, रूस और अमेरिकाके प्रतिनिधि

लन्दन स्थित पोल सरकार नाखुश

लन्दन स्थित पोलैण्डके प्रधान मन्त्री मि० आर्सिजेवस्कीने एक वक्तव्य देते हुए कहा है कि क्रीमियाकी घोषणाने पोल राष्ट्रपर पर कठिन कुठाराघात किया है। पोलैण्डको भङ्ग कर जो सीमा हमारे मित्रोंने हम लोगों के लिये बनायी है वह कभी मान्य नहीं हो सकती।

दक्षिणी अफ्रीकाके मुंहपर तमाचा

यूनियन असेम्बलीके विरोधी दलके नेता डा० डी० एफ० मलानने याल्टाकी घोषणाके सम्बन्धमें कहा कि पोलैण्डके प्रश्न पर हमसे सम्मति न लेना हमारे मुंहपर तमाचा मारनेके समान है। उक्त घोषणामें जो उद्देश्य निहित है, क्या उसीके लिये दक्षिणी अफ्रीकाने शस्त्र ग्रहण किया था।

मिस्रपर ब्रिटिश प्रतिबन्ध

मिस्रके प्रधान मन्त्री अहमद माहर पाशाने प्रतिनिधि सभामें कहा कि हमारी नीति उन प्रतिबन्धोंको हटा देने की है जिन्हें हमारे देशपर ब्रिटेनने १९३६ की सन्धिके समय लगाया था। जब तक वे प्रतिबन्ध कायम हैं तबतक हम लोग पूर्ण रूपसे स्वतन्त्र नहीं कहे जा सकते।

चूंकि हम लोगोंने ब्रिटेनके प्रति अपनी मित्रताको पूर्ण रूपसे निबाहा है और बृटेन के पक्के दोस्त साबित हो चुके हैं। अतः हमारे ऊपर लगे हुए प्रतिबन्धोंका रहना अनुचित है।

जापानमें नकली पेट्रोल

जापानके लेफ्टिनेंट जेनरल मि० रीबी तादाने बतलाया कि यदि फिलीपाइन इत्यादि के तेल क्षेत्र जापानियोंके हाथसे निकल जायंगे तो भी उन्हें पेट्रोलकी कमी न होगी क्योंकि वे कोयले, आलू और तरह तरहकी लकड़ियोंसे नकली पेट्रोल निकाल लेंगे और इस तरह कमीको पूरा कर लेंगे।

फ्रांकोपर प्रवदा द्वारा दोषारोप

रूसके प्रसिद्ध पत्र प्रवदाने जेनरल फ्रांको के ऊपर ५ गम्भीर दोष लगाये हैं। (१) स्पेनके सभी आर्थिक और राजनीतिक साधनोंको उन्होंने हिटलरके सुपुर्द कर दिया। (२) अपने सैनिकोंको पूर्वमें युद्धके लिये भेजा। (३) उन्होंने स्पेनिश श्रमिकोंको बलपूर्वक जर्मनीमें भेजा। (४) उन्होंने जर्मन पनडुब्बियोंके लिये स्पेनिश अड्डे दिये। (५) स्पेनिश दूतोंने जर्मनीके गुप्तचरका काम किया।

मध्यपूर्वकी समस्याएं

ऐसा विश्वास किया जाता है कि ब्रिटिश सरकारने अरब स्टेटके प्रमुख लोगोंके पास एक प्रस्ताव भेजा है जिसमें वहांकी समस्त समस्याओंको सुलझानेके लिये सुझाव रक्खा गया है। ऐसा समझा जाता है कि प्रस्तावपर अमेरिकाकी स्वीकृति ले ली गयी है। प्रस्तावमें मुख्य ३ बातें हैं। (१) अरब फेडरेशनको ब्रिटिश और अमेरिकन सरकार स्वीकार करती है। (२) ट्रान्स जार्डनके अमीर अब्दुल्लाके शासन क्षेत्रमें ईराक, सीरिया, ट्रान्स जार्डन, फिलस्तीन इत्यादिको सम्मिलित कर दिया जायगा। (३) यहूदी स्टेट जिसके साथ लेबनान शामिल रहेगा, यहूदी क्रिश्चियन स्टेटमें बदल दिया जायेगा जो अरब फेडरेशनके [illegible] न्थ स्थापित करनेके लिये स्वतन्त्र [illegible]

याल्टा कानफरेंसका एक दृश्य

रूस और जापान

रायटरके सैनिक सम्वाददाता [illegible] सूचना भेजी है कि रूसके सबसे [illegible] मंचूरियामें अपनीकुल सेनाका तिहाई [illegible] रख छोड़ा है। इस समय मंचूरिया [illegible] पानकी २० डिवीजन पैदल सेना, [illegible] गामी दस्तेऔर ७ सर्वोत्तमयन्त्र सज्ज [illegible]

मित्रराष्ट्रोंकी सैनिक क्षति

एक ताजी रिपोर्टसे ज्ञात होता [illegible] तक रूसके ५३,००,००० सैनिक हता [illegible] चुके हैं। ब्रिटेनके हताहतोंकी [illegible] ६,२५,७०० हैं। साम्राज्यके ४,००,[illegible] पाही हताहत हुए हैं। उपरोक्त [illegible] उन लाखों नागरिकोंकी गणना [illegible] गयी हैं जो नाजियोंके अत्याचार [illegible] बाजीके शिकार हुए हैं। इसके [illegible] चीनमें न मालूम कितने लाख [illegible] और घायल हुए हैं।

अलेक्जेंड्रियामें कानफ्रेंस

अमेरिकाके ह्वाइट हाउससे [illegible] चार निकाला गया है कि याल्टा [illegible] समाप्त होनेके बाद मि० चर्चिल और [illegible] डेण्ट रूजवेल्टका अलेक्जेंड्रियामें मिलन हुआ और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री [illegible] युद्ध समाप्तिके बाद अमेरिकाको [illegible] विरुद्ध पूर्ण सहयोग देनेका वचन [illegible] समाचारमें यह भी बतलाया गया [illegible] प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने जेनरल डी [illegible] अल्जियर्समें इसी सम्बन्धमें बुलाया [illegible] डी गालेने अस्वीकारकर दिया है। [illegible] सम्मेलनसे लौटते समय राष्ट्रपति [illegible] अबीसीनियाके सम्राट हेल सिलासी, [illegible] शाह फारुक और साउदी अरबके [illegible] सउदको जहाजपर बुलाया और [illegible] मित्रतापूर्ण वार्तालाप किया।

अमेरिकाकी नौ शक्ति

अमेरिकाके नौ सचिव मि० [illegible] ने बतलाया कि ३० जून १९४४ [illegible] रिकाके पास १०,१०८ युद्धपोत और [illegible] म्बन्धित ६०,१९१ विमान थे। इस [illegible] रिक्त नौ सेनामें ३४००० विमान [illegible] थे। इन सबपर चढ़ी हुई तोपोंकी [illegible] २,२०,००० थी। नौसेनाके कुल [illegible] संख्या ३६,२३,००० पहुंच चुकी थी।

Regd No. C. 2229

आपके प्रिय प्रतिष्ठान

डाबर (डा. एस. के. बर्म्मन) लि० कलकत्ता

के

सञ्चालकगण सन् १८८४ ई० से लेकर सन् १९४४ ई० पर्यन्त ६० वर्षों के सफल जीवन में उच्चकोटि की आयुर्वेदिक तथा पेटेण्ट दवा और शृङ्गार सामग्रियों के निर्माण के द्वारा जनता जनार्दन की यथाशक्ति सेवाओं के बाद

डाबर हीरक जयन्ती

के

स्मरणीय अवसर पर कार्यालय के प्रत्येक हितैषी ग्राहक तथा अनुग्राहक एवं गुणग्राही जनता से शुभकामनायुक्त शुभाशीर्वाद की कामना करते हैं।

...किशोर सिंह द्वारा मित्रमित्र प्रेस, १२।१९, ... स्ट्रीट, ... सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र
THE VISHWAMITRA

२८—१० | कलकत्ता मार्च ५, १९४५, Calcutta, MARCH, 5, 1945. | मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

'मानवीय टारपीडो'

वर्तमान युद्ध का एक रोमांचकारी आ-
...कार ब्रिटिश नौ सेनाका मानवीय टार-
...हो है। इसकी विस्तृत बातें अभी प्रकाशित
...हुई हैं, रन्तु कुछ पत्रोंमें इसके चित्र

...अमेरिकन नौसेनाका नया आक्रमणकारी बम वर्षक 'हेलडाइवर।' इसने १६ फरवरीके टोकियो-आक्रमणमें भाग लिया था। इसके डैनोंमें २० मीली मीटरकी तोप और ५ इञ्च के आठ राकेट रहते हैं। (यू० एस० रेडियोफोटो)

...शित हुए हैं। जहां तक ब्रिटिश नौ सेना ...न्य है इसके उपयोगकी पहली घोषणा ...री, १९४३ में हुई थी, जब पालर्मोमें ...इटालियन क्रूजरको डुबोया गया था। ...वीय टारपीडो एक साधारण टारपीडोकी ... होता है। उसका संचालन पन- ...की पोशाक पहने हुए दो व्यक्ति ...ते हैं। ये लोग दोनों तरफ पैर लटकाये रहते हैं और अपने शिकारकी ओर बढ़ते ... केवल उनके सिर ही पानीके ऊपर ...हैं। अपने लक्ष्यके निकट पहुंच कर ...लोग पानीके नीचे चले जाते हैं और ...पीडोका अगला विस्फोटक भाग अलग ... शत्रुके जहाजके पेंदेमें लगा देते हैं। ... उपरान्त बारूदवाले सिरेपर निश्चित ...बाद चलनेवाला पलीता लगा कर मृत्यु- ...नेवाले ये वीर भाग निकलते हैं। ...वीय टारपीडो' मिजेट पनडुब्बीसे भिन्न ...है, जिसका प्रयोग 'तिर्पिज'के विरुद्ध ... गया है। परन्तु दोनोंमें ही असा- ...म और तथा कौशलके नाविकोंकी ...श्यकता है।

एवरेस्टसे भी ऊंची चोटी

यद्यपि स्कूलोंके छात्रोंको पीढ़ी दर पीढ़ी यही पढ़ाया गया है कि २९००२ फीट ऊंचा एवोरेस्ट पहाड़ संसारमें उच्चतम है, तथापि इसकी बहुत अधिक सम्भावना पायी जाती है कि यह सर्वोच्च न हो। भारतसे चीनको उड़नेवाले उड़ाकोंने, उत्तर पूर्वी तिब्बतके ऊपर ३२ हजार या ३४ हजार फीटकी ऊंचाईपर उड़ते हुए किसी 'रहस्यपूर्ण शिखर' को देखा है, जिसका अभी तक किसी भौगोलिकने उल्लेख नहीं किया है। भारतमें सेवा करने-वाले एक सैनिकने अपने पिताके पास इसका विवरण इस प्रकार भेजा है—"चीनसे भारत-के लिये तिब्बतके ऊपरसे आते समय एक चालकने ३२,००० फीटकी ऊंचाई तक उड़-नेका निश्चय किया। वह उत्तर पूर्वी तिब्बत में कहींपर था। एकाएक उसने एक पहाड़ देखा। उसने विमानमें लगे ऊंचाई प्रकट करनेवाले यन्त्रको देखा और उसे निश्चय हो गया कि मैं ३२ हजार फीटसे लेकर ३४ हजार फीट तककी ऊंचाईपर उड़ रहा हूं। उसे यह भी निश्चय हुआ कि वह एवरेस्ट पहाड़ नहीं है।

अन्धा बम—विशेषज्ञ

पाठकोंको आश्चर्य होगा कि जर्मनीपर गजब ढानेवाले ८ हजार पौंडके बमोंके निर्माता एक अन्धा हैं जिनका नाम है एयर कमोडोर पैट्रिक इस्किसन सी. बी. ई., एम. सी.। ये हवाई शस्त्रास्त्र विभागके प्रधान हैं। इनका लन्दनमें टेम्स नदी स्थित दफ्तर ऐसे वैज्ञानिकों और विस्फोटक पदार्थ विशेषज्ञोंका केन्द्र है जो प्रायः 'नित्य नये-नये प्रकारके बमोंका निर्माण किया करते हैं। १९४१ के अप्रेलमें, जिस समय लन्दनवासि-योंको आतङ्कित करनेके लिये जर्मन विमा-नोंके धुआंधार हमले हो रहे थे, इस्किसन विमानवेधी तोपों एवं बम—विस्फोटोंके बीच बराबर अपने कामपर मुस्तैद थे १३ अप्रेलको अचानक लोगोंने देखा कि एक भीषण धड़ा-केसे पृथ्वी फट गयी और इस्किसनके चेहरेसे रक्तका फौवारा छूटने लगा। ये महाशय केवल तीन दिन तक अस्पतालमें रहे और चेहरेपर पट्टी बंधे रहनेपर भी बम निर्माणके कार्यमें अपने सहकारियोंको बराबर आदेश-निर्देश देते रहे। एयर कमोडोर इस्किसन संसारमें हवाई शस्त्रास्त्रके सबसे बड़े विशे-षज्ञ समझे जाते हैं। इन्हें हवाई शस्त्रास्त्र विभागका प्रधान नियुक्त कर शस्त्रास्त्रोंमें आवश्यक सुधारका कार्यभार सौंपा गया है।

गीली न होनेवाली मिट्टी

लन्दनके 'जानबुल' में प्रकाशित एक रिपोर्टके अनुसार ब्रिटेनके रसायनवेत्ताओंके एक दलने ऐसा तरीका खोज निकाला है जिससे मिट्टी कीचड़के रूपमें परिणत नहीं हो सकेगी और देहातकी कच्ची सड़कोंपर भी बरसातमें लोग वैसे ही यात्रा कर सकेंगे जैसे शहरकी पक्की सड़कोंपर करते हैं। विशेषज्ञों-ने एक नये चूर्णका आविष्कार किया है जिसको मिट्टीमें मिला देनेसे पानीका तनिक भी असर नहीं होता और मूसलधार वर्षाके बाद भी कच्ची सड़कपर धूल छायी रहती है। इस चूर्णका नाम उन्होंने स्टेबिनोल' रखा है, जो साधारण मिट्टीमें उसका एक प्रतिशत मिला देनेसे अपना प्रभाव प्रकट कर देता है। युद्धके मैदानों और हवाई अड्डोंके निर्माणमें इस नवाविष्कृत कार्यसे बहुत लाभ उठाया गया है।

बेलजियममें अमेरिकन सैनिक अस्पतालमें एक आहत सैनिकमें जेनरल आइसेन होवरका रक्त संचार किया जा रहा है। इसी बोतलमें आइसेन होवर का रक्त लिया गया था। (यू. एस. रेडियोफोटो)

चलती चक्की

बरेलीमें महिलाओंने जब कवि सम्मेलन किया तो पुरुषोंको पर्देके बाहर बिठा गया था या।

—अपने रामके लिये यह समझना कठिन है कि पर्दे के बाहर कौन था पुरुष या महिलाएं ?

* * *

श्री० जी बी० सुब्बारावने सर जफरुल्लाके पास समुद्रीतार भेजा है जिसमें उनसे अनुरोध किया गया है कि ब्रिटिश राष्ट्र मण्डल सम्पर्क सम्मेलनमें इस बातपर जोर दें कि युद्धके बाद बर्मा, सीलोन और पाण्डीचेरी आदि स्थान भारतको मिल जायें।

—भाई खूब उछले, देखो कहीं सिर न टूट जाय। यहां भारत ही मि० चर्चिलकी जेबसे नहीं निकल रहा—यह और भी आगे बढ़े।

* * *

संसारमें कटु परन्तु हितकर वचनके सुनानेवाले और सुननेवाले दोनोंका ही मिलना दुर्लभ है।—पञ्चतन्त्र

—यह नियम तो पुराना पड़ गया। आजकल केन्द्रीय असेम्बलीके अधिवेशनमें विरोधी पक्षमें सुनानेवालों और सरकारी पक्षमें सुननेवालोंकी कमी नहीं।

* * *

एक मित्रने कहा कि होलीके कारण ५ दिन असेम्बली अधिवेशन न होगा।

—वैसे ही विरोधी दलने उनकी पहले ही होली मना दी। क्या बेचारा सरकारी पक्ष होलीमें और अधिक अपनी गति बिगड़वा कर लोक हंसाई कराता ?

* * *

गांधीजीका कहना है कि भारतवासी अङ्गरेजीका प्रयोग करनेमें अभिमान न करें। राष्ट्रभाषाका प्रयोग किया जाय।

—पर अपने रामको मालूम है कि अभी तक उनकी आवाज नयी दिल्लीकी कांग्रेस कमेटीके मन्त्री तक नहीं आ पहुंची है। यह भी हो सकता है कि वह आवाज वहांवालों के विभागके बन्द दरवाजेको देख लौट गयी हो।

* * *

अमेरिका स्थित एजेण्ट जनरल गिरिजा शङ्कर बाजपेयीको ५ हजार ५०० पौंड वेतन मिलता है।—सर ओल्फ

—अपने रामका यह विचार है कि इस महंगाईके समय और उनकी ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति की गयी महंगी सेवाओंके लिये यह कुछ भी नहीं है।

* * *

आगामी हिन्दी साहित्य सम्मेलन उदयपुरमें होगा।—एक समाचार

—जयपुरमें हिन्दुस्तानीपर जय प्राप्त करनेका बीड़ा उठाया गया। अब क्या उदयपुरमें सुलतानीको उखाड़ फेंकनेके आन्दोलनका उदय होगा।

* * *

केन्द्रीय असेम्बलीमें सर सुलतान अहमदने सूचित किया है कि आगामी १ अप्रैलसे श्री एम. एन. रायके पत्र 'वेनगार्ड' की सरकारी खरीद बन्द हो जायगी और सम्भवतः तथा-कथित युद्ध मोर्चेका भी अन्त हो जायगा।

—अंग्रेजी सभ्यतामें १ अप्रैलको दिल्लगी करनेकी प्रथा है। परन्तु सर सुलतानका ऐसा भी मजाक क्या अच्छा है जिससे श्री राय और राष्ट्रीय मोर्चेके बहादुरोंकी रोटी छिने।

* * *

याल्टासे लौटकर मि० चर्चिलने अटलांटिक घोषणा पत्रके सम्बन्धमें कहा कि वह तो मार्ग दर्शक है, नियम नहीं।

—अगर वह नियम भी हो, तो आपके लिये बात बनानेको यह सहारा है ही कि हर एक नियमका अपवाद होता है।

* * *

एक संपादक महोदयने प्रश्न किया है कि कस्तूरबा कोषका रुपया ठीक तरह कैसे व्यय किया जाये।

—अपने रामकी तो सलाह है कि गांधी जीके चेले-चाटे रुपया व्यय करना क्या जानें, इसलिये श्री एम० एन० रायको व्यय करनेका भार सौंप दिया जाय। कारण, वे १३ हजार को उचित रूपसे खर्च करते करते—अनुभवी हो गये हैं।

× + ०

बम्बईके देहात वरसोवाके मछुहारोंने पुलिसके कुछ सिपाहियोंपर स्वतंत्रता दिवस की रातको उनके मकानोंसे राष्ट्रीय पताकाएं चुरानेका अभियोग लगाया है।

—मछुहारे बड़े ही बुद्धू मालूम होते हैं। राष्ट्रीय पताका चुराना चोरीका नहीं रोजीका प्रश्न है।

० * ०

मेरी गिरफ्तारीका कारण निराधार है। युद्ध संचालनके लिये गिरफ्तारी हास्यास्पद है। —श्रीपुरुषोत्तमदास टण्डन,

यही तो तारीफ है कि भारत सरकारकी नौका निराधार ही धारमें बही चली जा रही है।

* * *

सिलेसियामें रूसी सेनाकी प्रगतिके फलस्वरूप २५ करोड़पति कौड़ीपति हो गये।

—समाजवाद और पूंजीवादमें जो ३६ का नाता है।

* * *

मि० चर्चिल भारतके सबसे बड़े शत्रु हैं। डा० प्रेम

—आपने यह कहकर अपनी जबान खराब की। यह तो जग-जाहिर है।

* + *

पंजाब प्रान्तीय असेम्बलीका बजट अधिवेशन आरम्भ होनेपर काला बुर्का पहने हुई मुसलमान महिलाओंने मंत्रि-मंडलके विरुद्ध शान्ति पूर्ण प्रदर्शन किया।

—गांधी जीको धन्यवाद अपने राम नहीं चूकेंगे। मुस्लि[म महिलाओं पर भी] उनका रंग चढ़ रहा है।

—

हित बस जिनके मनमाहीं।
न कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

मितव्ययकी पराकाष्ठा

—:०:०:—

केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाके वर्तमान नमें भारत सरकारका नया बजट पेशकर सदस्य सर जेरमी रेजमैनने स्पष्टतः यह दिया है कि जिम्मेदार राष्ट्रीय सर- और गैर जिम्मेदार अराष्ट्रीय सरकारमें ना अन्तर होता है। जब हम किसी को अपनी आयसे अधिक व्यय करते खते हैं तो झट कह बैठते हैं कि यह रा हो गया, एक दिन बुरी तरह ठोकर र पछतायेगा। लेकिन उससरकारको क्या चाहिये, जिसका खर्च आयसे अरबों हो रहा है और फिर उसका खर्चीला एक मिनिटके लिये भी नहीं रुक । प्रस्तुत बजट सर जेरमी रेजमैनका युद्ध-बजट है। इसमें १९३८-३९ के बजट पेक्षा दस गुना व्यय करनेका अनुमान गया है। गत तीन वर्षोंसे घाटेकी में बराबर बढ़ती दृष्टिगोचर हो रही है। -४४ में ९२ करोड़ ६३ लाखका घाटा था, १९४४-४५ में १५५ करोड़का और -४६ में १६३ करोड़ ८९ लाखके घाटे अनुमान है। इनकी पूर्ति कर्ज लेकर है। इस प्रकार युद्धके आरम्भसे जनवरी तक भारत सरकार ८३३ रुपयेका कर्जदार हो चुकी है। सरकार 'यावज्जीवेत् सुखं जीवेत्, ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्' की नीतिको भला कौन न्याय- युक्ति उचित ठहरायेगा। सर्व साधन सम्पन्न अमेरिका और ब्रिटेन मितव्ययकी ऊंचीसे ऊंची दीवारको र जानेकी चेष्टा करते हैं, तो एक बात समें आती है। लेकिन लङ्गड़ी भारत किस आशा और भरोसापर दीवार लिये सचेष्ट दिखायी देती है यह बहुत सोचने-विचारनेपर भी खाक नहीं आती। अगर सरकारकी :इस दिके फलस्वरूप सर्वसाधारणकी खुश- ओंमें वृद्धि होती तो सन्तोष अथवा शान्त करनेका एक साधन भी , लेकिन यहां बात तो बिलकुल उल्टी सरकारका ज्यों-ज्यों खर्च बढ़ता गया, ी मुसीबतोंका वजन भी बढ़ता गया ज यह हालत है कि जहां सर जेरमी साथ यह फरमाते सुने जाते वस्तुओंके मूल्यमें स्थायित्व प्रदान उनकी सरकारको उल्लेखनीय सफ- मिली है, वहां करोड़ोंकी संख्यामें गरीब भारतवासी आधपेट खाकर अर्धनग्न रहकर जीवन-यापन कर और लाखोंकी तादादमें कुत्ते-बिल्लीकी मर रहे हैं। इसका कारण यह है कि मूल्य नियन्त्रणके द्वारा वस्तुओंकी निश्चित तो कर दी, लेकिन चीजें उस मूल्यमें मिल नहीं रही हैं और 'ब्लेक-मार्केट'का दाम देनेकी क्षमता अधिकांश गरीब भारतीयोंमें है नहीं। दूसरी बात यह कि मुद्रा स्फीतिके कारण वस्तुओंके मूल्य जिस तेजीसे आकाशकी ओर उड़े, उस तेजी से सर्वसाधारणकी आय तो बढ़ी नहीं। जहां वस्तुओंके मूल्यमें चार गुनी, पांच गुनी और कहीं कहीं ६ गुनी वृद्धि हुई, वहां लोगोंकी आयमें अधिकसे अधिक दुगुनी वृद्धि हुई। खेतिहर लोगोंको अन्न बेचकर कुछ रुपये प्राप्त अवश्य हुए, लेकिन उनका अधिकांश सरकारी चन्दों और सरकारके मुलाजिमोंकी नाजबरदारीमें ही खर्च हो गया। ब्लेक-मार्केट करने वाले लक्ष और कोट्याधीशोंके पास अरब-खरब तक द्रव्य भले ही हो गया, लेकिन उससे सर्वसाधारणको क्या लाभ? इसलिये अर्थ सदस्यको जो यह गर्व हो रहा है कि जनताकी आय बढ़ गयी है, उसका कोई अर्थ नहीं है। उस बढ़ी हुई आयसे उसके बढ़े हुए खर्चोंका कोई सामञ्जस्य नहीं। इसलिये सर्वसाधारणके सुख और समृद्धिकी बात करना अपनी अनभिज्ञता प्रकट करने अथवा अपने श्रोताओंको धोखा देनेके सिवा और कुछ नहीं कहा जा सकता।

इसमें सन्देह नहीं कि सरकारका जो व्यय इधर इतना अधिक बढ़ गया है, उसका मूल कारण युद्ध जन्य आवश्यकताएं हैं। लेकिन इन आवश्यकताओंकी ओटमें अधिकारियोंने बहती हुई गङ्गामें हाथ धोनेकी भी कम चेष्टा नहीं की है, जिसके प्रमाण आडीटर जेनरलकी रिपोर्टमें भरे पड़े हैं। करोड़ोंकी रकम ऐसे कार्योंमें खर्चकी गयी हैं जिनसे कोई स्थायी लाभ नहीं या जिनमें रुपया खर्च करना उसका दुरुपयोगके सिवा और कुछ नहीं कहला सकता। आगामी आनुमानिक बजटमें अर्थ सदस्यने जो १६३ करोड़ ८९ लाखके घाटेका अनुमान लगाया है, उसकी पूर्ति कैसे की जायेगी, इसपर प्रकाश डालते हुए उन्होंने पुराना ही तरीका बतलाया है—कर्ज लेना, नये टैक्स लगाया जाना अथवा पहलेके टक्सोंमें वृद्धि। ऊपर कहा जा चुका है कि भारत सरकार गत जनवरी तक ८३३ करोड़ रुपयेका कर्जदार हो चुकी है और नये बजटमें भी एक अरबसे अधिक रुपये कर्ज लेने पड़ेंगे। यदि कर्जका बोझ इसी तरह बढ़ता गया, तो क्या एक दिन यह सरकारकी कमर तोड़ देनेमें समर्थ नहीं होगा? गरीब जनतापर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष करोंका बोझ इतना अधिक हो गया है कि उसमें और वृद्धि ऊंटकी पीठपर अन्तिम तिनकाका ही काम करेगी। नये वर्षमें अर्थ सदस्यने पोस्ट आफिसके तारों, तम्बाकू आदिपर ड्यूटी बढ़ायी है और १९ हजारसे अधिक आयपर प्रति रुपया ३ पाई सरचार्ज लगाया है। इस प्रकारके करोंसे ८ करोड़ ६० लाखकी आय हो सकेगी। बाकी रकमके लिये धनी लोगों और विदेशी मित्र सरकारोंकी ही आशा है। क्योंकि भारत सरकार कोई नया कदम इस दिशामें उठाना नहीं चाहती और अबतकका उसका इतिहास ऋण लेकर मौज उड़ानेका ही रहा है। काश, आज कोई उत्तरदायी राष्ट्रीय सरकार होती तो आमदनीके नये साधनोंको ढूंढ़ निकालनेमें एंडी-चोटीका पसीना एक कर देती। लेकिन जो मौज उड़ानेके लिये ट्रस्टी बने हुए हैं, मरनेके बाद दोजख :मिले या बहिश्त कोई चिन्ता, जिन्दगीभर हलवा पूड़ी मिलती रहे, उनके लिये इन परेशानियों में पड़नेसे क्या वास्ता?

भारतका जो कई अरब पौंड पावना इङ्गलैंडके जिम्मे एकत्र हो गया है, उसके सम्बन्धमें अर्थ सदस्यने कुछ निराशा जनक रुख ही दिखलाया है। उन्होंने कहा है कि जब तक लड़ाई चल रही है तब तक उसके चुकाये जानेके सम्बन्धमें बातचीत चलाना बिलकुल असामयिक है। इसलिये यह प्रश्न युद्धोत्तर कालके लिये ही छोड़ रखना ठीक है। उन्होंने यह आश्वासन दिया है कि युद्ध समाप्त होनेपर इस सम्बन्धमें भारतीय स्वार्थको धक्का नहीं लगने दिया जायेगा। लेकिन ब्रिटिश राजनीतिज्ञ अपने वादोंके कितने पक्के होते हैं, इसके अनेक उदाहरण भारतके सामने आ चुके हैं और वर्तमान वैधानिक सङ्कट तथा ब्रिटेन और भारतके बीच दुरावकी बढ़ती हुई खाईके कारण ये वादे ही हैं। युद्धोत्तर योजनाओंके सम्बन्धमें भी उनकी बातोंमें मनमानी करनेके लिये काफी गुंजायश है। उन्होंने पुनर्निर्माण सम्बन्धी व्यय भार वहन करनेके लिये कर-आन्दोलनकी शरण लेनेका सुझाव पेश किया है। लेकिन शायद उस समय वे अपने देशके स्वतन्त्र वातावरणमें विचरण करते रहेंगे। उनके उत्तराधिकारीका क्या दृष्टिगोचर होगा, यह भविष्य बतायेगा। वर्तमान अर्थ सदस्यने चलते-चलाते भारत सरकारकी तिजोरी खाली कर उसे एक ओर लुढ़का दिया है यह तो कहना ही पड़ेगा। यदि इस ऋणपाशसे देशको मुक्ति मिल सकी, तो उसका सौभाग्य ही कहा जायेगा।

अमेरिकामें विरोधी प्रचार—

अमेरिकामें ब्रिटिश सरकारकी ओरसे जो भारत विरोधी प्रचार काफी लम्बे अर्सेसे हो रहा है, उसकी अनेक रिपोर्टोंद्वारा पुष्टि तो हो ही चुकी है। केन्द्रीय असेम्बलीमें स्वयं अर्थ सदस्य और ब्रिटिश पार्लमेंटमें भारत सचिव मि० एमरी तक उसके औचित्यका समर्थन करते हुए कह चुके हैं कि जब श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित जैसा सम्भ्रान्त व्यक्ति यह कह सकता है कि भारत में धार्मिक मतभेद नहीं है और स्वाधीनताके प्रश्नपर सभी राजनीतिक दल एकमत हैं, तब ब्रिटेनकी ओरसे किये जानेवाले प्रचारको शक्तिशाली बनानेकी आवश्यकता वांछनीय है। भारतसे वैज्ञानिकोंका जो शिष्टमण्डल इङ्गलैण्ड गया था, उसने संयुक्त राष्ट्र अमेरिका का विस्तृत दौरा किया है और अब मण्डलके सदस्य स्वदेश वापस आ चुके हैं। इस मण्डलके नेता सर शान्तिस्वरूप भटनागर ने भी अपने अमेरिका-अनुभवमें सबसे अधिक जोर इस भारत विरोधी प्रचारपर ही दिया है। उन्होंने बताया है कि ब्रिटिश प्रचारकों और वाशिंगटन स्थित भारत सरकारके एजेण्ट जेनरलके दफ्तरकी मार्फत अमेरिकन समाचार पत्रों और सभाओंमें भारत विरोधी मिथ्या प्रचार किये जाते हैं। जब मैं भारत सरकारके एजेण्ट जेनरल सर गिरिजाशङ्कर बाजपेयीसे मिलकर उनसे इसमामलेमें हस्तक्षेप करनेके लिये अनुरोध किया तो उन्होंने अपने को बिलकुल विवश बताया। मालूम होता है कि सर गिरिजा शङ्कर भारत सरकार की ओरसे जारी किये गये बिलोंपर हस्ताक्षर कर अपना वेतन लेने तक ही अपना कर्तव्य समझते हैं। पाठकोंको मालूम होना चाहिये कि भारतके एजेण्ट जेनरल अपने इतने 'जिम्मेदार' कार्यके लिये प्रेसीडेंट रूजवेल्टसे भी अधिक वेतन भारतकी ओरसे पाते हैं। सर शांति स्वरूपने विरोधी प्रचारों के कई उदाहरण भी दिये हैं, जिनसे यह साफ मालूम होता है कि स्वार्थी किरायेके प्रचारक किस प्रकार बेसिर-पैरकी बातें प्रतिदिन हवामें उड़ा रहे हैं। उन्होंने कहा है कि एक वैज्ञानिक दम्पति, जिसने मलेरियाके सम्बंध में बहुत ही महत्वपूर्ण आविष्कार किया है, भारतीय वैज्ञानिक शिष्टमण्डलसे मिला और इस बातपर अत्यन्त खेद प्रकट किया कि भारतवासी इतने बड़े अहिंसक हैं कि हानिकारक कीड़े-मकोड़ोंको भी मारना पसन्द नहीं करते और इसीलिये हमारे वैज्ञानिक आविष्कारोंसे वे समुचित लाभ नहीं उठा रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि भारत सत्य और अहिंसाका आदि गुरु हैं लेकिन हमारी अहिंसा कायरोंकी नहीं। इनका प्रचार जिस ढङ्गसे अमेरिकन वैज्ञानिक दम्पतिके सामने किया गया है, वह वास्तविकतासे बिलकुल दूर है।

निराकरण वांछनीय—

मित्र त्रिराष्ट्र-नायकोंकी याल्टा कानफरेन्स के अन्तमें यह निश्चय किया गया है कि मित्र राष्ट्रोंका आगामी सम्मेलन अमेरिकाके प्रशांत महासागर तटीय बन्दरगाह सैन फ्रांसिस्कोमें हो। इसी सम्मेलनमें प्रशांत तटवर्ती प्रदेशों और जापानके विरुद्ध किये जानेवाले युद्धके सम्बन्धमें अन्तिम निर्णय किया जायेगा। जहां अमेरिकामें भारतकी स्वाधीनताके विरुद्ध इतने अधिक प्रचार हो रहे हैं, वहां यह आशा करना कि भारतके सम्बन्ध में निष्पक्ष निर्णय किया जा सकेगा मूर्खोंके स्वर्गमें रहनेके समान है। इसलिये भारतके अनुकूल वातावरण तैयार करनेके लिये देश भक्त राजनीतिक नेताओं और प्रचार कार्यमें पटु लोगोंका यह प्रथम कर्तव्य है कि वे अमेरिका तथा ब्रिटेनके अन्य मित्र राष्ट्रोंमें जनताके सामने भारतकी सच्ची अवस्थाका पर्दाफाश कर भारतके राष्ट्रीय स्वार्थोंके अनुकूल वातावरण तैयार करें। हम जानते हैं कि हमारी नौकरशाही सरकार देशभक्तोंके ऐसे कार्यके मार्गको कण्टकाकीर्ण बनानेसे बाज नहीं आयेगी, लेकिन जिन्होंने कांटोंपर चलना ही अपना जीवन-ध्येय बना रखा है, उनको नौकरशाहीकी हरकतोंपर दृष्टिपात करनेकी आवश्यकता ही क्यों महसूस होगी। सचाई को झूठे उसूलोंसे बहुत समय तक नहीं छिपाया जा सकता। इसीलिये एक सत्यवक्ता सैकड़ों मिथ्या भाषियोंके कान काटने की क्षमता रखता है। यदि ऐसा नहीं होता तो एक श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित हजारों किरायेके प्रचारकोंकी वर्षोंकी कार्यवाहियों पर पानी फेरनेमें कदापि समर्थ नहीं होतीं।

श्रीमती पंडितकी स्पष्टवादितासे स्वार्थी साम्राज्यवादी बुरी तरह व्यग्र हो उठे हैं और ऐसा लगता है कि प्रचारकोंके दलको अधिक मजबूत बनानेकी बात सम्बन्धित सरकारी अञ्चलोंमें बड़े गौरके साथ सोची जा रही है। इसमें संदेह नहीं है कि साम्राज्यवादी राजनेता बहुत शीघ्र अपने प्रचारकोंकी संख्यामें बहुत अधिक वृद्धि करेंगे। लेकिन हमारा विश्वास है कि भारतीय स्वाधीनता का समर्थन करनेके लिये अमेरिकामें इण्डिया लीगके तत्वावधानमें जो समिति बनायी गयी है, उसका प्रयास इन स्वार्थी मिथ्याभाषियोंके सारे प्रयासोंको व्यर्थ बनानेमें पूर्ण समर्थ होगा। उस समितिके सेक्रेटरी श्री अनूप सिंहने श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित को भी सचाईका पर्दाफाश करनेके कार्यमें भाग लेनेके लिये आमन्त्रित है। सैनफ्रांसिस्को कानफरेन्सके पहलेही श्रीमतीपं० कैलीफोर्निया पहुंच जायेंगी। समितिके इस सत्प्रयासका हम हृदयसे स्वागत करते हैं। निविड़ अन्धकारको चीर डालनेमें जिस प्रकार सूर्यकी एक किरण भी पूर्ण सक्षम होती है, उसी प्रकार यह समिति सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन के पहले काफी जोरदार लोकमत भारतके पक्षमें तैयार करनेमें समर्थ हो सकेगी ऐसी आशा है। मि० विलियम फिलिप्स और मि० लुईफिशर जैसे न्यायप्रिय अमेरिकन सज्जनोंका सहयोग इस कार्यमें प्राप्त हो सकेगा इसकी आशा तो करनी ही चाहिये।

युद्धके पहले ही पर्दाफाश—

यह संयोग ही कहा जायगा कि वर्तमान युद्ध समाप्त होनेके पहले ही मित्र-राष्ट्रोंकी युद्धोद्देश्य सम्बन्धी लम्बी-चौड़ी घोषणाओंका पर्दाफाश हो गया। मि० चर्चिल और प्रेसीडेंट रूजवेल्टने अपने शब्दों एवं कार्यों द्वारा बिलकुल स्पष्ट कर दिया कि अटलांटिक चार्टरका उपयोग केवल उसी स्थानपर किया जायेगा, जहां त्रिराष्ट्रोंका स्वार्थ उससे संघर्ष नहीं करेगा।। याल्टा कानफरेंसके निर्णयपर उस दिन ब्रिटिश पार्लमेंटमें जो बहस हुई, उसमें दिये गये मि० चर्चिलके वक्तव्यसे यह बिलकुल साफ हो गया कि युद्धोत्तर विश्वमें तीनों बड़े मित्र राष्ट्र समस्त विश्वके स्रष्टा और संहारक रहेंगे एवं गत महासमरके बाद बने राष्ट्रसंघका स्थान इस बार ये तीनों बड़े मित्रराष्ट्र ही लेंगे हालांकि चर्चिल साहबने विश्व संघका भी नाम लिया है। पोलैण्डके सम्बन्धमें त्रिराष्ट्रोंके निर्णयसे इस बार मि० चर्चिलके अनुदार दल वाले सदस्यभी असन्तुष्ट होगये और अपनी सरकारमें विश्वासका जो प्रस्ताव मि० चर्चिलने हाउसके सामने रखा उसमें अनुदार दली सदस्योंने ही इसलिये संशोधन पेश :कर दिया, ताकि चर्चिल साहबकी खबर ली जा सके। ब्रिटिश पार्लामेण्टके सदस्योंकी नीति कुछ अजीब सी मालूम होती है। जहां तक गाली देनेका सम्बन्ध है वे अपने प्रधान मन्त्रीको भी खोटी खरी सुनानेमें नहीं हिचकते, लेकिन जब सरकारमें विश्वास और अविश्वासका प्रश्न उठता है तो बहुमत सदा सरकारके पक्षमें ही रहता है। इस बार भी चर्चिल सरकार में विश्वासका प्रस्ताव सर्व सम्मतिसे पास किया गया है और अनुदार दलीय सदस्योंका संशोधन बहुत बड़े बहुमतसे गिर गया है, लेकिन प्रस्तावक एवं उनके समर्थकोंने चर्चिलको धोखाबाज और विश्वासघाती आदि कहनेमें भी तनिक हिचकिचाहट नहीं महसूस की है। सारी कटूक्तियां पोलैंड का पूर्वीय भाग रूसके कब्जेमें रहने देनेके लिये कही गयी हैं और स्पष्ट शब्दोंमें यह व्यक्त कर दिया गया है कि मित्र-राष्ट्रोंने पोलैण्डके साथ की गयी संधि और अटलाण्टिक चार्टरकी ढक्का बजाकर अवहेलना की है। इसमें सन्देह नहीं कि निर्णयकी आलोचनाके सम्बन्धमें अधिकांश बातें बिलकुल उचित कही गयीं हैं।

लघुराष्ट्रोंपर प्रभाव—

याल्टा कानफरेंसमें त्रिराष्ट्र नायकोंने जर्मनीको परास्त करने और युद्धोत्तर कालमें यूरोपकी शासन व्यवस्था आदिके सम्बन्ध में ही निर्णय किया है। सुदूरपूर्वके युद्धके सम्बन्धमें चर्चा तक नहीं चलायी गयी। यह बात अमेरिकन प्रेसीडेण्टने अपने एक वक्तव्य के सिलसिलेमें उस दिन वाशिंगटनमें बतलायी। जर्मनीका बटवारा करनेपर पूर्वका भाग रूसको, पश्चिम तथा उत्तर पश्चिमका ब्रिटेनको और दक्षिणी भाग अमेरिकाको मिलेगा। चूंकि, अब फ्रांस भी इसमें हिस्सा बंटानेका दावादार बन गया है। इसलिये ब्रिटेन और अमेरिकाके हिस्सोंमें कुछ संशोधन करना पड़ेगा यह बिलकुल सम्भव है। युद्धके दौरानमें जो यूरोपीय राष्ट्र जर्मनीके फौलादी पंजेसे मुक्त किये गये हैं, उनकी शासन-व्यवस्थाके लिये क्या प्रबन्ध होगा, इस सम्बन्धमें मित्र राष्ट्रोंके निर्णयको बतलाते हुए मि० चर्चिलने पार्लमेंटके सदस्योंको सूचित किया है कि युद्धोत्तरकालमें विभिन्न देशोंमें जो साधारण निर्वाचन होंगे, उनकी कार्यवाही त्रिराष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंकी देखरेखमें सम्पन्न होगी। क्यों कि ऐसा न होने पर विभिन्न राजनीतिक दलोंमें काफी संघर्ष होगा और बहुत संभव है कि यूनान जैसी अवांछनीय अवस्था उत्पन्न हो जाये। मि० चर्चिलके इस कथनका जो उद्देश्य है, वह उनकी कूटनीतिक भाषाके आवरणके अन्दरसे साफ झलकता है। जिन यूरोपीय लघु राष्ट्रोंको उन्होंने जर्मनीके जुएसे मुक्त किया है, उनको युद्धके बाद भी स्वतन्त्र स्वभाग्य निर्णयका अधिकार नहीं दिया जायेगा। त्रिराष्ट्र मित्र उनकी सरकारोंको अपने प्रभावमें रखनेकी चेष्टा करेंगे। इटली बेलजियम और यूनानमें तो यह बात पहले ही स्पष्ट हो चुकी है। कहनेका तात्पर्य यह है कि सारा आदर्शवाद एक तरफ खटाईमें साफ होनेके लिये डाल दिया जायेगा और 'समरथको नहिं दोष गुसाईं' वाली गोस्वामीजी की उक्तिको चरितार्थ किया जायगा। भारत पर ब्रिटेनका ट्रस्टीशिप भी तो यही बतलाता है। मित्रोंकी इन हरकतोंसे उन्हीं गलतियोंकी पुनरावृत्तिका आभास मिलता है, जिनके कारण वर्तमान विश्वमें अशांति फैली हुई है। इसलिये तीसरे विश्वयुद्धकी जो भविष्य वाणियां अभीसे होने लगी हैं वे निराधार नहीं हैं। मित्रोंका वर्तमान मतैक्य जब तक स्थिर है तब तक तो सब ठीक है। लेकिन ज्योंही उसमें फूट पड़ेगी, विश्वयुद्धका श्रीगणेश अनिवार्य होगा।

कपड़ेका दुर्भिक्ष—

अन्नके दुर्भिक्षसे तो वर्षों पहले ही बहुत बड़ी संख्यामें लोग पीड़ित हो चुके हैं और अब भी अत्यधिक ऊंचे मूल्यके कारण तबाही देहातोंमें जारी है, लेकिन देशके विभिन्न शहरों, नगरों और अञ्चलोंमें खाद्य रेशनिङ्ग व्यवस्था जारी हो जानेके फल स्वरूप सर्वसाधारणको काफी राहत मिल गयी है। सरकारी दुकानोंसे मिलनेवाले अन्नकी क्वालिटीके सम्बन्धमें भले ही लोगोंको शिकायत हो। लेकिन इधर दूसरी परेशानी कपड़ेके सम्बन्धमें बहुत अधिक बढ़ गयी है। अन्न और वस्त्र मानव जीवनकी अनिवार्य आवश्यकताएं हैं। यह भारत जैसे पराधीन देशकी विशेषता ही है कि देशकी सीमामें कहीं युद्ध दानवका प्रवेश भी नहीं हुआ और दोनों आवश्यक वस्तुओंके लिये लाले पड़ रहे हैं। बहुत बड़ी संख्यामें लोग आधे पेट भोजन खाकर और अर्द्धनग्न रहकर जीवन यापन कर रहे हैं। इङ्गलैंड गत ६ वर्षोंसे अपनी सारी शक्ति लगाकर बहुत बड़े पैमानेपर युद्धमें संलग्न है। वहांके अधिकांश कल कारखाने युद्धजन्य आवश्यक सामग्रियोंके उत्पादनमें लगे हुए हैं, फिर भी क्या मजाल कि कोई नङ्गा और भूखा रहे। अगर ऐसी समस्या वहां उपस्थित हो तो चर्चिल साहबकी सरकारका आसन डगमगाने लगे। ब्रिटिश शासनके अन्तर्गत भारतमें ये अभाव बहुत पहलेसे विद्यमान हैं, लेकिन आज तो ये अपनी पराकाष्ठापर पहुंच रहे हैं। इसका प्रधान कारण शासन विभागको निष्क्रियता और मुट्ठीभर स्वार्थी लोगोंकी अर्थ-लोलुपता है। इधर कुछ अर्सेसे यह परिपाटीसी चल पड़ी है कि जिस किसी वस्तुका मूल्य-नियन्त्रण सरकार करती है, वह वस्तु ही बाजारसे लुप्त हो जाती है और उस बाजारकी शोभा बढ़ाने लगती है, जिसका नाम अब 'ब्लैक मार्केट' हो गया है। इन ब्लैक मार्केटोंके संचालक थोड़ेसे बड़े-बड़े व्यापारी हैं, जो सारी वस्तुओंका संग्रह कर रखते हैं और सर्वसाधारणके सामने नहीं आने देते। परिणाम यह होता है कि वस्तुएं जनताकी आंखोंसे लुप्त हो जाती हैं। लेकिन उन वस्तुओंके बिना लोगोंका काम तो चल सकता नहीं। इसलिये लाचार होकर ब्लैक मार्केटोंसे उन्हें ड्योढ़े-दुगुने दामोंपर खरीदते हैं। ब्लैक मार्केटके दुकानदारोंकी बिक्री कम होती है सही, लेकिन एक ही चीजसे वे दस चीजोंका नफा उठा लेते हैं। ज्यादा बिक्री की जरूरत ही क्या है? इन चोर बाजारोंके कारण आज कपड़े की समस्या विशेष रूपसे जटिल हो गयी है। आज कपड़ेके अभावके कारण अनेक शादियों के रुके रहने, बहुतसे सम्भ्रांत परिवारोंकी गृहदेवियोंके शरीरपर पर्याप्त वस्त्राच्छादन न होनेकी रिपोर्टें बहुत बड़ी संख्यामें मिल रही हैं। ऐसी दशामें समाजसेवकों और देशभक्तोंका कर्तव्य है कि वे अधिकारियोंकी निष्क्रियता तथा मुट्ठी भर लोगोंके अनाचार के विरुद्ध जोरदार आवाज उठा
दिन कलकत्तेकी एक सार्वजनिक स
मांग पेश की गयी कि अन्नकी तरह
भी रेशनिंग जारी हो और इस
सरकार ईमानदार व्यक्तियोंको
क्योंकि अधिकांश वस्तुओंके सम्बन्ध
जो जटिल समस्याएं उत्पन्न हो
उनका प्रधान कारण सम्बन्धित
लोलुपता और अर्थ कर्तव्यसे
है। अगर इस दिशामें अधिकारी
ध्यान नहीं देंगे तो स्थिति इतनी
हो जायेगी कि समस्या समाधान
सूरत ही बाकी नहीं रह जायेगी।
आशा करें कि हमारे शासक और
की बेबसीसे अनुचित लाभ उठा
व्यापारी समाज समयोचित कार्य
अग्रसर होंगे?

रूमानियामें अशांति—

रूमानियामें इधर कुछ समयसे
चख चल रही थी, उसके बारेमें
यह अनुमान लगाया गया था कि
सरकार इस तूफानमें टिक नहीं
आखिर वह अनुमान गत बृहस्पति
सिद्ध हुआ और परिस्थितिने रेडेस्कु
को इस्तीफा दे देनेके लिये बाध्य कर
वर्तमान गणतन्त्रका जमाना है,
जिस देशकी भी सरकार इसकी
करेगी, उसे अन्तमें नतमस्तक
पड़ेगा। रूमानियाकी रेडेस्कु
इस्तीफेने इस सत्यको पुष्ट कर दि
दिन पहले यूनानमें भी रूमानिया
घटना घटित हुई थी। लेकिन ब्रिटि
के पक्षपातपूर्ण आचरणने वहांका
वातावरण इतना अधिक क्षुब्ध कर
कि तमाम देश भक्तोंने यूनानकी
बादी सरकार और उसके समर्थकों
लोहा उठा लिया था और गृहयुद्ध
रूप धारण करता जा रहा था।
ब्रिटिश जनताके दबावने साम्रा
चर्चिलके मस्तकपर जबर्दस्त अंकुश
और उन्हें बड़े दिनके अवसरपर
मोश दूरस्थ एथेन्स आना पड़ा।
राष्ट्र होते हुए भी चर्चिलकी साम्राज्य
का शिकार बनाया जा रहा था
वामपक्षी देशभक्तोंको नाजी समर्थक
दिया गया था। यही है साम्राज्यवाद
जिसके सम्बन्धमें यह नहीं बताया
कि कब कहां धूप और कहां छाया
रूमानियाकी रेडेस्कु सरकार
मत वामपक्षीय मोर्चेसे संघर्ष कर
ध्वहीन कर देना चाहती थी,
मनमानीमें कोई दखल देनेवाला
लेकिन स्वतन्त्र देशके जाग्रत बहुमत
करना कोई खेल नहीं है।
सोवियट समर्थन प्राप्त होनेके
बिना खून खराबीके ही मामला
हो गया। लोकमत विरोधी रेडे
कारको झखमार कर सरकारी
कर देना पड़ा। आज रूमानिया
सोवियट कमीशनके मातहत है
की जाती है कि सोवियटके कड़े
रूमानियाका मामला शीघ्रही निब

सोवियटकी लाल सेना

—————o:*:o—————

(लेखिका—श्रीमती कृष्णादेवी)

मार्शल जुकोफ

"हम शान्तिके समर्थक हैं, लेकिन काहारी नहीं, न शान्ति दूत हैं और न सायके सिद्धान्तोंके अनुयायी ही। शत्रु-प्रत्येक सशस्त्र प्रयासका उचित उत्तर देने लिये हमें सदैव कटिबद्ध रहना होगा और ऐसा करनेकी पूर्ण शक्ति रखते हैं। हमें की जरूरत नहीं, प्रत्युत् डाकेजनी, प्रादे-क लाभ और मानव स्वाधीनताका अप-न करनेवाले युद्धसे हम घृणा करते हैं। न सोवियट मातृ-भूमि, अक्तूबरकी ताओं तथा सोवियट जनताकी:प्रतिष्ठा, धीनता और स्वच्छन्दताकी रक्षा करना रा कर्तव्य है और इनकी रक्षा हम अपनी री शक्तियों और साधनोंको लगाकर भी गी।" ये शब्द वर्तमान सोवियटके पिता लाल सेनाके सङ्गठनकर्ता महात्मा नके हैं।

सोवियटकी सर्वशक्ति सम्पन्न लालसेना विर्भाव और सङ्गठनके उपर्युक्त उद्देश्य सन्देह बड़े उदात्त और श्लाघनीय है और सेनाके शूरवीरोंने अपने अभूतपूर्व शौर्य, और बलिदानके द्वारा यह स्पष्ट रूपसे र दिया है कि उन्होंने स्व० महात्मा घोषित उद्देश्योंका अक्षरशः पालन है और किया जा रहा है। लाल जनक और नेता लेनिन और स्टालिन म इस महान सैन्य सङ्गठनसे इस प्रकार गये हैं कि जब तक सोवियट भूमिपर सेनाका अस्तित्व रहेगा, उनके नाम व रहेंगे।

क्तूबरकी समाजवादी क्रान्तिके बाद रूसमें घरेलू युद्ध छिड़ गये थे और अराजकता तथा अशांतियोंके बाजार गर्म हो चले थे। ऐसे कठिन समयमें लाल सेना जैसी महान सेनाका संगठन मामूली योग्यता और अनुभवका द्योतक नहीं। प्रस्तुत सारी कठिनाइयों और बाधाओंको लांघते और परास्त करते हुए महात्मा लेनिन और जोसेफ स्टालिनने लाल सेनाके रूपमें एक बिलकुल नये ढंग के सैनिक सङ्गठनकी सृष्टि की। अक्तूबरकी क्रान्तिको समाप्त कर लेनेके बाद लेनिनने कहा था कि 'हमने एक नया शांतिकामी राज्य स्थापित किया है। समस्त पुराने और विरोधी दावे और अधिकार-लोलुपता हमारे लिये घृणाकी वस्तु हैं। हमारी घरेलू और राष्ट्रीय नीति है सोवियटके अन्तर्गत निवास करने वाली सारी जातियों और राष्ट्रोंमें समानता और बंधुत्वके आधारपर पारस्परिक सहयोगकी भावना उत्पन्न करना। हमारी परराष्ट्रनीति अन्य देशोंकी स्वाधीनता, सम्मान और सरकारोंकी महत्ताको स्वीकार करते हुए जनताके साथ सद्भाव पूर्ण पड़ोसीका सा सम्बन्ध बनाये रखनेकी है। सोवियटने महात्मा लेनिनके उद्घोषित उद्देश्योंकी कहां तक पूर्ति की है, यहएक आलोचनात्मक विषय है और विभिन्न देशोंके लोग इस प्रश्नपर अपने अपने दृष्टिकोणसे विचार करेंगे। यह विषय प्रस्तुत लेखके दायरेसे बाहरकी चीज है। हमें यहां सोवियटकी लालसेनाकी वर्तमान स्थितिपर दो चार बातें बतानी हैं।

मार्शल कोनीफ

मार्शल रोकोसोवस्की

किसान—मजदूरोंकी सेना

लालसेना सोवियट रूसके उन किसान-मजदूरोंकी महान सेना है, जिनको १९१७ में लाल क्रांति उत्पन्न करने और सफलता पूर्वक समाप्त करने तथा उक्त क्रांतिमें प्राप्त अपने स्वत्वों और स्वार्थोंकी रक्षा करनेका श्रेय प्राप्त है। इसलिये वर्तमान लालसेना और सोवियट जनतामें कोई पार्थक्य नहीं। सोवियट जनताके सिवा लालसेनाका कोई और स्वार्थ अथवा सिद्धान्त नहीं। सेनाके बड़ेसे बड़े अफसरसे लेकर साधारण सैनिक तक सोवियट जनताके अविभाज्य अंग है। लालसेना सर्वसाधारणकी इच्छा अथवा अनुमतिके विरुद्ध कोई काम करे, यह मुमकिन नहीं। इसीलिये सोवियट जनता अपनी सेनाको प्यार करती है और उसके प्रति किसी प्रकारकी मलीनताको हृदयमें स्थान नहीं देती। लेनिन और :स्टालिनने लालसेना
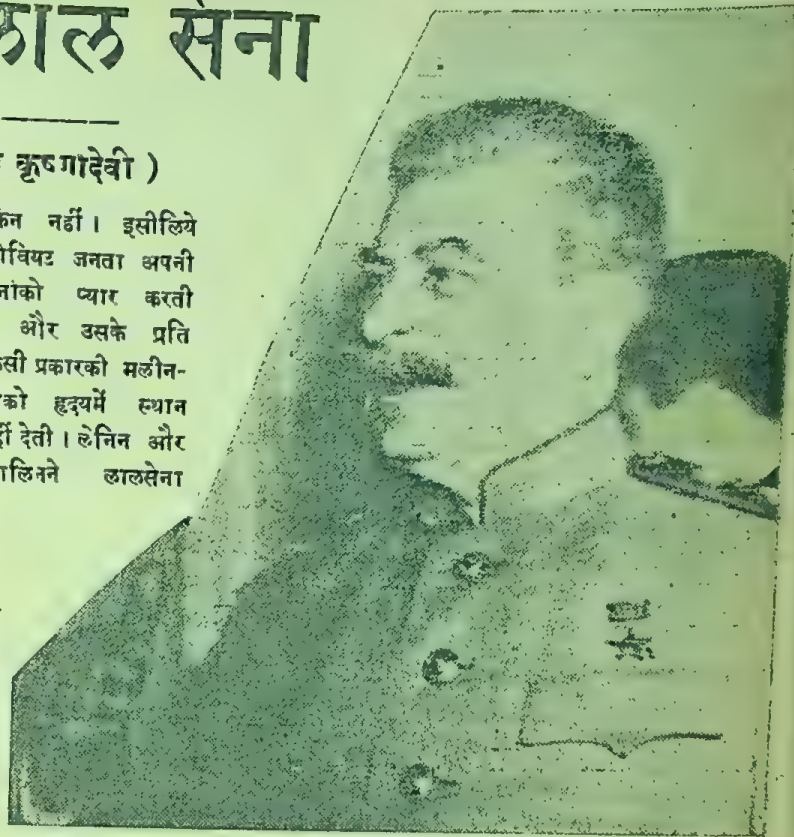
लाल सेनाके आदि संगठनकर्त्ता मार्शल स्टालिन

को शिक्षा दीक्षा इस ढंगसे नहीं दिलायी है कि वह केवल सोवियट किसानों और मजदूरोंके स्वार्थोंकी ही रक्षा करें; बल्कि उन्होंने इसे सोवियट जनमात्रका मित्र और बंधु बना दिया है। लोग समझते हैं कि लालसेना समस्त सोवियट गणतंत्रका त्राता और मुक्तिदाता है। सर्वसाधारणकी यह भावना लालसेनाके लिये सर्वाधिक श्रेय और उसके सेनापतियोंके लिये प्रशंसाकी चीज है।

लालसेनाके सम्बन्धमें लेफ्टिनेण्ट जनरल ए० इग्नाटोफके शब्दोंको यहां उद्धृत करना अप्रासंगिक नहीं होगा। उनका कहना है रूसकी उस सेनाको मैं सदा अजेय मानता रहा हूं, जिसका संचालन पीटर महान्, सुवोरोफ और कुटूजोफ जैसे सेनानी कर चुके हैं और जिसकी विजय-वैजयन्ती बर्लिन और पेरिस तक फहरा चुकी है। पुरानी सेनामें अपने प्रवेशके उन प्रारम्भिक दिनोंसे ही मैं अफसरोंकी निष्क्रियतासे क्षुब्ध रहता था। परन्तु मुझे विश्वास था कि एक दिन यह अवश्य दूर होकर रहेगी। आजसे ४० वर्ष पहलेकी बात है, मैं जापानी युद्ध मोर्चेपर लड़ने गया था। हमारी हार हो रही थी और हमें इसका कटु अनुभव हो रहा था। सिपाहियों और अफसरोंकी वीरता जारशाही और उच्च सैनिक अधिकारियोंकी दिवालियापूर्ण व्यवस्थासे होनेवाली क्षतिकी पूर्ति करनेमें असमर्थ हो रही थी। प्रथम महायुद्धमें अफसरोंका महत्व बहुत बढ़ा हुआ था। अफसरोंके भारी संख्यामें हताहत होनेपर प्रजातन्त्रवादी फ्रांसीसी सेनामें अफसरोंकी समस्या तो हल हो गयी; पर रूसी सेनाके सामने इसने भीषण रूप धारण कर लिया। इसमें सन्देह नहीं; कि बहुतसी रूढ़ियां उस समय अवश्य टूटीं परन्तु जनताका सांस्कृतिक मान इतना नीचा हो गया था कि काफी संख्यामें अफसर तैयार करनेकी समस्या जटिल बन गयी।

सेनाका नया निर्माण

रूसकी वह पुरानी सेना आज नहीं रही; परन्तु उसके उपयोगी अङ्ग आज भी विद्यमान हैं। पुरानी सेनाके बहुतसे योग्य गैर कमीशन प्राप्त अफसर—जो आज जेनरल हैं—तथा अन्य अफसरोंने सेनाका नेतृत्व अपने हाथमें लिया। उन्होंने ऐसी नवीन परम्पराकी नींव डाली, जिसे देखकर सारा संसार चकित है। उन्होंने सैनिकों और अफसरोंके

जेनरल वतूतिन

सालबुखीन

गोवरोफ

मध्यकी दीवार तोड़ डाली और प्रत्येक प्रतिभाशाली सैनिकके लिये सेनामें ऊंचे पद पर पहुंचनेके लिये द्वार खोल दिया है।

आज रूसी सेनामें कठोर अनुशासन है। जारशाहीके साथ ही पुरानी ढिलाई दूर हो गयी तथा दिनोंदिन बढ़नेवाली सोवियट शासनकी दृढ़ता और जनताकी उन्नतिके साथ-साथ सेनाकी भी उन्नति होने लगी है। उच्च शिक्षामें टेकनिकल प्रवृत्तिके बढ़नेसे ऊंची श्रेणीके अफसरोंके लिये वर्तमान युद्ध-कलाका ज्ञान प्राप्त करना सरल हो गया। आज २० वर्षका लेफ्टिनेण्ट उसी योग्यतासे जटिलसे जटिल युद्धका नेतृत्व हाथमें ले सकता है जिस योग्यतासे पुरानी सेनाका कोई जेनरल।

पदके प्रति सम्मानके भावने सैनिकोंके हृदयसे आत्मसम्मानका लोप नहीं किया है। जहां पहले किसी रेजिमेण्टके अफसर या किसी कम्पनीके सिपाही एक दूसरेको 'कामरेड' कह कर पुकारते थे, वहीं आज एक मार्शल और सामान्य सैनिक आपसमें एक दूसरेको 'कामरेड' कह कर पुकारते हैं! छोटे बड़ेका भेद केवल विजयके मूलमन्त्र कठोर अनुशासनके रूपमें है। आज रेजिमेंटका सम्मान ही सेनाका सम्मान है और देश और सेनाके प्रति पालन किये जानेवाले कर्तव्योंमें कोई अन्तर नहीं रह गया है। जब कभी उच्च अधिकारी सैनिकोंकी प्रशंसा करते हैं तो उनका यही उत्तर होता है, "हम सोवियट जनताकी सेवा कर रहे हैं।"

लाल सेनाके अफसर अपने ज्ञानको बढ़ानेमें सदा तत्पर रहते हैं। आज लाल सेना एक महान् विद्यालय है और स्टालिन उसके शिक्षक। वर्तमान युद्धके अनुभवकी वहां शिक्षा दी जाती है। लाल सेनाके अफसरोंने अपने परिश्रमसे नये प्रकारके जीवनका निर्माण किया है और वे सर्वस्व खोकर भी उसकी रक्षा करेंगे। उनके लिये 'विजय' नया शब्द नहीं है। २७ वर्षोंसे उनकी जीभपर यह शब्द नाच रहा है। स्कूलमें दूसरी श्रेणियोंपर उन्होंने विजय पानेकी चेष्टा की है, कारखानोंमें कार्यकी प्रतियोगितामें आगे रहनेमें वे सचेष्ट रहे हैं और खेतोंमें अधिकसे अधिक अन्न उपजानेका उन्होंने यत्न किया है—और वे सफल हुए भी हैं।

लाल सेनाके पांच विजयी योद्धा

जर्मनीका पूर्वीय मोर्चा लाल सेनाके जिन पांच सेनापतियोंने ध्वस्त कर डाला है उनका विवरण भी इस लेखमें दिया जाता है। यह विवरण इनके मोर्चोंके अनुसार क्रमशः उत्तरसे दक्षिणकी ओर जाते हुए दिया गया है। इनमेंसे अधिकांश किसानों, कारखानोंके मजदूरों, रेल कर्मचारियोंके लड़के और सोवियट रूसकी विभिन्न जातियोंके वीर हैं। इस युद्धमें इन सबकी अग्नि-परीक्षा हो चुकी है और कुछ गत महायुद्धमें वे जर्मनीके विरुद्ध और अधिकांश रूसी गृहयुद्धमें भाग ले चुके हैं।

रोकोसोवस्की—मार्शल कान्स्टेंटाइन रोकोसोवस्की पूर्वी प्रशापर दक्षिण दिशासे आक्रमण कर रहे हैं। आपकी आयु ४७ वर्षकी है। परन्तु आप ४२ वर्षीय कविके समान प्रतीत होते हैं। आप निर्भीक नेत्रोंवाले पूरे ६ फीट लम्बे जवान हैं। आप मास्कोकी रक्षा करते हुए घायल हो गये थे, परन्तु अस्पताल छोड़ कर शीघ्र सेनामें वापस चले जानेके लिये आपने स्टालिनसे अनुरोध किया था। आपने गत वर्ष ग्रीष्म ऋतुमें कोनीफके साथ लुबलिनपर चढ़ाई की थी, स्टालिनग्राडमें जर्मन कमांडर वान पालसको घेरा, कुर्स्कपर जर्मन आक्रमण रोका और ओरेलपर पुनः अधिकार किया है। गत महायुद्धमें आप जारकी सेनामें सैनिक थे।

जुकोफ—मार्शल ग्रेगरी जुकोफकी अवस्था ५० वर्षकी है। वारसापर अधिकार करके अब आप बर्लिनकी ओर बढ़ रहे हैं। आप चौड़े कन्धे, भरे हुए चौड़े तथा दृढ़ संकल्पकी भावनासे ओतप्रोत मुख-मण्डल और घनी भौंओंके नीचे गहरी आंखोंवाले जवान हैं। आपके विषयमें किसी आलोचकने कहा था, "आप शीघ्र विचार नहीं कर पाते।" इसपर स्टालिनने कहा था, "परन्तु उन्हें दुबारा विचार नहीं करना पड़ता।"

न्यूयार्कमें लाल सेनाके २७ वें वर्ष दिवस समारोहमें अमेरिकन जेनरल कोनाली भाषण कर रहे हैं। इन्हें फारस कमाण्डके सिलसिलेमें सोवियट सम्मान प्राप्त हो चुका है

गाड़ियोंको लेकर युद्ध करनेमें आप प्रवीण हैं। अपनी पैदल सेनाको लारियोंमें और तोपोंको रखके पहियोंपर रखनेका श्रेय प्राप्त कर चुके हैं। यातायात और रसद-प्रणालीमें बड़े प्रवीण हैं। स्पेनके गृहयुद्धका आप गहरा अध्ययन कर चुके हैं। मास्कोकी आपने रक्षा की थी। मार्शल टिमोशेन्कोके उत्तराधिकारी और मार्शल स्टालिनके बाद समस्त सोवियट सेनाओंके आप डिप्टी कमांडर-इन-चीफ हैं। जारकी सेनामें अनिवार्य रूपसे भरती किये जानेसे पूर्व आप एक कारखानेमें काम करते थे। गृहयुद्धमें आप अफसर बन गये। मंचूरियामें आप जापानियोंके विरुद्ध लड़ चुके हैं और बख्तरबन्द सेनाका प्रयोग करनेवाले पहले सोवियट कमांडर हैं।

जब नाजी सेना मास्कोसे ३० मीलसे भी कम दूर रह गयी थी तो आपको मास्कोका कमाण्ड सौंपा गया था। आपने बड़ी चतुराईसे नगरकी रक्षा की और फिर जो प्रत्याक्रमण किया उससे जर्मनोंकी विजयकी आशा मिट्टीमें मिल गयी। स्टालिनग्राड और लेनिनग्राडकी रक्षाकी योजनाएं भी आपने ही बनायी थीं।

कोनीफ—मार्शल स्टेपोनोविच कोनीफ साइलेशियामें प्रवेश करनेवाली रूसी सेनाके सेनापति हैं। आपने क्रेकाउ जीता है। आपने मध्य रूसके एक किसान परिवारमें जन्म लिया है और इस समय ४८ वर्षके हैं। गृहयुद्धमें आप और आपकी पत्नीने साइबेरियामें युद्ध किया था। आपका पुत्र लड़ाकू वायुयानका चालक है और पुत्री सोवियट वायुसेनाके शिक्षालयमें अध्ययन कर रही है।

आपको "टैंकोंके लिये पागल" कहा जाता है और कोई-कोई तो केवल "टैंक" के नामसे ही सम्बोधित करते हैं। टैंकोंका पूर्ण ज्ञान प्राप्त करनेके लिये आपने जर्मन और अंगरेजी भाषाएं विशेषतः सीखी हैं। मार्ग बन्द करके नगरपर अधिकार करनेकी प्रणालीके आप विशेषज्ञ हैं।

आप जापानियोंके विरुद्ध लड़ चुके हैं और युद्धके आरम्भमें टिमोशेन्कोके जनरल थे। कालिनिनपर आपने ही अधिकार किया और स्टालिनग्राडमें एक नयी सेनाका संगठन किया। १९४३ के बसन्तमें डान नदीका युद्ध...

पेट्रोफ—जनरल इवान पट्रोविच जेकोस्लोवाकियामें लड़ रहे हैं और सेनाके सबसे छोटे जनरलोंमेंसे हैं। पहले आपने उत्तरी काकेशसके मोर्चेको लिया प्रसेवस्टोपोलकी रक्षा की और १९४२ में जब उसे खाली करना पड़ा वहांसे प्रस्थान करनेवाले सबसे ... अफसर आप ही थे। १९४३ कर्चका ... मध्य पार करके क्राइमियामें ... गये। कारपेथियन पर्वतोंमें लड़ाई ... हंगेरीको खतरेमें डाल दिया। स्मोलेन्स्ककी लड़ाईमें जर्मनोंने इन्हें पकड़ लेनेका ... किया था। आप सुयोग्य इञ्जीनियर ... पहाड़ी लड़ाइयोंमें बड़े प्रवीण हैं।

मेलीनोव्स्की—मार्शल रोडियन फलेविच मेलीनोवस्की जेकोस्लोवाकिया मोर्चेपर लड़ रहे हैं। आप यूक्रेनके ... वंशके हैं। परन्तु आपका जन्म ओडेसामें है। आपकी आयु ४९ वर्षकी है। महायुद्धमें आप फ्रांसीसी ब्रटिश और ... रिकन सैनिकोंके साथ रहकर लड़ ... जारकी सेनामें आप सिपाही थे। ... और स्वेज होकर आपको पश्चिमी ... भेजा गया था। आप सैनिक ... तत्काल समझ लेते हैं। गृहयुद्धमें आप ... चकसे लड़े थे। खारकोफको एक बार ... भी जीता है। गत वर्ष फरवरी मास ... निकोपोलपर अधिकार करके ओडेसा ... पड़े थे।

कहानी

प्राणोंमें घुले हुए रंग

---:o:---

(लेखक—श्री फणीश्वर नाथ 'रेणु')

शैशवकी सुनहली स्मृति, नील गगन ...ते हुए रंग-बिरंगे पतङ्गों और मन-...के रङ्गीन खिलौनोंके आकर्षणको मैं ...बूझकर छोड़े देता। उन दिनों मैं स्वयं ...ोंकी रङ्गीन आशाओं और कल्पनाओं ...न्द था!

...मेडिकल कालेजमें दाखिल होकर जिस ...शरीर-विज्ञानका पहला 'लेक्चर' सुन-...लौटा था मेरी आंखोंके आगे सातो रङ्ग ...े लगे थे! और जिस दिन एम. बी. बा. ...की डिग्री मिल गयी थी, 'सर्जिकल-...' का हाउस-सर्जन बनकर अपने ड्यूटी-...चार्ज लेने जा रहा था, फुदकती हुई ...परिचिता अनिन्द्य सुन्दरी नर्स मिस ...ने आकर पहली बार सम्बोधित किया —'हैलो! डाक्टर...!!' तो मैं अभ्यास स्वभाववश उसकी एक मीठी चुटकी ...लाकर हंसनेकी चेष्टामें भी गम्भीर हो ...था। मैं तब एक लापरवाह स्टुडेण्ट नहीं ...गया था, डाक्टरका उत्तरदायित्वपूर्ण ...जो मिल गया था! मेरे ओठोंपर ...ीर मुस्कुराहट देखकर वह मेरे दिलकी ...ाई तक पहुंच गयी थी और उसके बाद ...उसके सदाप्रसन्न मुखमण्डलपर कभी भी ...ताजगी, वह रङ्ग नहीं देख। धीरे-...वह सूखती और काली पड़ती गयी। ...सब कुछ याद कर, सब कुछ समझकर भी ...को भुलाता रहा। हृद्रोगसे पीड़ित ...र वीमेन हास्पिटलके बेड नं० १२ पर ...पड़ी, नर्सोंके द्वारा 'बस एक बार' देख ...का संवाद वह भेजती रही; किंतु मैंने ...की उत्सुकता भी कभी प्रकट नहीं की। ...हीं गया, किन्तु निराश होकर दम तोड़ने ...समय उसके ओठोंपर जो घृणाकी रेखा ...आयी होगी, उस घृणापूर्ण मुस्कुराहट ...कल्पना मैं अवश्य कर लेता हूं। जब-जब ...की कल्पना करता हूं, मेरे चेहरेपर ...ग्लानिकी काली तूलिका फिर ...ी है।

'हाउस सर्जन' की अवधि समाप्त करके ...पहुंचते-पहुंचते मेरी पूज्य माता अपनी ...वन-यात्रा शेष कर चुकी थीं। उनके मुंह ...दवाको कौन कहे, एक चुल्लू पानी भी ...टपका पाया था। पिताजी तो मुझे डेढ़ ...की उम्रमें मांकी गोदमें छोड़कर चल ...े। अगम, अगोचर भगवानको लोग जिस ...और भक्तिसे पूजते हैं, उसी श्रद्धा और ...से मैं उनकी पूजा किया करता था। ...उनके लिये कभी गला फाड़कर रोया ...था। मातृहीन होनेके बाद मुझे मालूम ...ा कि मांके स्नेहाञ्चलकी ओरसे सारी ...या रङ्गीन जान पड़ती थी और अब ...याका सारा रङ्ग मरुभूमिकी सफेदीमें ...ितित हो गया है!

अपने गांव को, अपने घरको छोड़ने ...कल्पना करते ही मेरा हृदय फटने ...ा था। गांवमें ही जिन्दगी कट रही ...और मेरा 'मातृ औषधालय' भी चल ...था। मलेरिया और हैजेके समयमें ...हुए प्राणियोंमेंसे थोड़े व्यक्तियोंको ...के मुंहसे बचाकर मैं अपनी शिक्षा ...सफल समझता था। गांवके प्रतिष्ठित ...ार श्री केदारनाथ ठाकुर मुझसे बहुत प्रसन्न रहते, उनकी गृहिणी मुझे अपने पुत्र घनश्यामसे भी बढ़कर प्यार करने लगी थी। औषधालयका आकर्षण, जमींदार दम्पत्तिका स्नेह और गांववालोंका प्रेम पाकर मेरे हृदयके घाव भर रहे थे। एक दिन, शामको जमींदार दम्पत्तिने मुझे बड़े लाड़-प्यारसे खिला-पिला कर, एकान्त कोठरीमें अपने दिलकी ख्वाहिश जाहिर की, तो मेरा शिर चक्कर खाकर रह गया। जमींदार साहब मुझसे कह रहे थे कि मैं उनकी विधवा भाभीके एक मात्र प्यारे पुत्र भोलानाथको जहर देकर मार डालूं। उसे मामूली ज्वर हुआ है, यही मौका है। जमींदार साहबके छोटे भाई बद्रीनाथ ठाकुर थे, जिनकी मृत्युका रहस्य भी उन्होंने कहा। 'माफ कीजिये, छीः छीः।' मैं पागलों की तरह चीख कर उनकी कोठरीसे भाग आया था! उस दिनसे लगातार कई रातोंको —रात रात भर जाग कर—मैं जमींदार साहबके दुमंजिले मकानकी खिड़कीके रंगीन कांचोंको देखता रहा। उस कोठरी में रोशनी जलती रहती और मुझे लगता—'असहाय भोलाकी जिन्दगीका चिराग जल रहा है।' जिस दिन विधवा अपने प्यारे बीमार पुत्रको लेकर मायके चली गयी। उस रातको मैं आनन्द-विभोर होकर सोया, किन्तु स्वप्नमें भी उन रंगीन कांचोंसे छन कर आते हुए प्रकाशको देखता रहा।

जमींदार साहब मुझे और मेरे मातृ-औषधालयको मिटानेके लिये कमर कस चुके थे। गरीब रोगी भला कैसे औषधालय में आनेकी हिम्मत करते। रोगियोंका आवागमन एक दम बन्द हो गया था। लेकिन रधियाकी मां जमींदार साहबकी परवाह न करके, रधियाको सुई दिलानेके लिये अवश्य पहुंच जाती थी। रधियाकी मांको मैं होश सम्हालनेके बादसे ही जानता था। इस रंगीन दुनियामें आकर, मांकी गोदके पहले उसी-की गोदमें मुझे आश्रय मिला था—वह सैकड़ों बार सुना चुकी थी। रधियाकी मां मेरे परिवारकी महरी थी, पर मैं उसे चाची कहता था। कालेजमें मुझे जब-जब घरकी याद आती थी, आंखोंके आगे दो मूर्तियां नाच जाती थीं, एक मांकी और दूसरी चाची (रधियाकी मां) की। वह दुखिया विधवा हो गयी थी, उसकी एक-मात्र पुत्री रधिया भी जवान होते-होते विधवा हो गयी थी, लेकिन मेरे लिये तो वह वही चाची थी। रधियाको 'तिल्हा' हो गया था। चिकित्साले जब पूर्णरूपेण स्वस्थ हो गयी, तो एकदिन उसकी मां छातीपीटती हुई दौड़ आयी थी—'देखो लल्ला! वे सब पानीमें आग लगा रहे हैं। बिरादरी और गांववालोंकी पञ्चायत बैठी थी, पञ्चायतने रधियापर दोषारोपण किया था कि तुम्हारे और रधियाके अनुचित सम्बन्धके फलस्वरूप रधियाको गर्भ रह गया था और तुम सुई देकर गर्भपात...।' सुनकर मैं अवाक हो गया। रधिया मेरा भोजन बनाती थी, बर्तन भांड़े मांजती थी, घरकी चाबी भी उसीके पास रहती थी। मेरे खाने-पीने, सोने-बैठनेकी फिक्र मुझसे ज्यादा उसको रहती थी। मैं उसका भैया जो था। लेकिन...! ...मैंने रधियाकी मांसे गिड़गिड़ाकर कहा था—'चाची, तुम भी क्या इस बातको सच समझती हो?' वह रोती हुई बोली थी—'तुम क्या कह रहे हो लल्ला! ऐसा भी भला हो सकता है? मैं सब जानती हूं। बड़ी बहू (जमींदार साहबकी भाभी)को मैंने मायके जानेके लिये कहा था, जमींदार साहबको यह बात मालूम हो गयी। इसीसे यह सब हुआ है।' वह रोती हुई चली गयी थी।

दूसरे दिन प्रातःकाल बिछौनेपर पड़े-पड़े ही मैंने सुना था—रधियाकी मां रधियाको लेकर न जाने कहां भाग गयी। पूर्व आकाश में ऊषाकी लाली फैल रही थी और मुझे सारी दुनिया पीली दिखायी दे रही थी!

* * *

'मगहिया डोम, एक खानाबदोश कौम। यह जाति औरत-मर्द-बच्चोंके साथ जमात बांधकर एक गांवसे दूसरेमें गांवमें डेरा डालतो फिरती है। यह बड़ी निडर जाति होती है। मर्द दिनमें जङ्गलोंमें जाकर गीदड़ोंकी बोली बोलकर उनका शिकार करते हैं और रातमें चोरी; कभी-कभी दल बांधकर डाका भी डालते हैं। औरतें और बच्चे गांवमें भीख मांगते हैं। जवान औरतें बुरा पेशा भी करती हैं! बूढ़े और बुढ़ियां पड़ावपर बैठकर गधों की रखवाली करती हैं।'

उपर्युक्त रिपोर्ट मैंने एक मित्र—पुलिस इन्स्पेक्टरकी डायरीमें पढी थी।

फागुनका महीना। मगहिया डोमोंकी एक टुकड़ीने गांवसे बाहर एक मैदानमें डेरा डाला। दूसरे ही दिन गांवमें गन्दी घांघरीवाली औरतें भीख मांगती हुई दिखाई पड़ीं। 'भीख मांगती हुई' कहना उपयुक्त नहीं होगा, क्यों कि वे जिस तरह भीख मांगती थीं उसे 'भीख-मांगना' नहीं खुराकी वसूल करना कह सकते हैं। लोग चुपचाप भीख देते थे, उनसे बोलनेमें या तो लोग डरते थे अथवा अपनी हेठी समझते थे।

'ओ...य...ए...य मोटकी मलकि-नियां...यां...यां! बुढ़ारिमें तोहे सिंगार-से छुट्टी नाहि मिलत...अ...अ! हम्में भीख दय दो, चलि जायि...।

दूसरी उधर चिल्ला रही थी—'भीख देवा कि यहीं दरवज्जे पर पेशाब कय दीं?'

तीसरी किसीके घृणापूर्ण प्रश्न अथवा व्यंगपूर्ण कटाक्षका उत्तर दे रही थी—'अरी हां, हां! गीदड़ खाति हैं हम सब। तें...हू खाले मन्दकी बहुरनियां तो दिन भरमें...!'

मैं अपनी कोठरीमें लेटे-लेटे स्लोकोब-की 'क्वायट फ्लोज दी डान' पढ़ रहा था कि दरवाजेके पास आकर किसीने हांक लगायी—'अरी ओ...य...य......य मल-किनियां...यां...'

'अरे यहां कोई मालकिन-वालकिन नहीं है!' मैंने अन्दरसे ही डांट कर कहा—वह मेरे बरामदेपर—खुली किवाड़ीके सामने—आकर कुछ कहते-कहते रुक गयी। मैंने देखा—बड़ी-बड़ी प्यारी आंखोंवाली, कानों-में झूमक, गलेमें पीतल और कांसेके गहने पहने एक स्वस्थ किन्तु गंदी सुन्दर युवती, बगलमें भीखकी झोली लटकाये खड़ी है। मुझे ग़ौरसे देख कर, नीची निगाह किये वह बोली—'मालकिन नहि है त तँहि दे दा!

'क्या दे दूं?'

'अरे मालिकके दरबार है, सोना-रूपा पहने लाग, रेशम मलमल ओढ़े लाग, खाये लाग जूठा-कूठा......' कहते कहते वह मुस्कुरायी।

मैं भी अपनी हंसी नहीं रोक सका। मैंने कहा—'यहां तो बोतलोंमें सिर्फ दवा-इयां हैं। कहो तो दे दूं!'

उसने मुझे फिर एकबार गौरसे देखा। मेरी आंखोंमें आंखें गड़ाती हुई वह बोली—'तूं बैद हुआ?'

'हां।'

वह बैठते-बैठते स्वरको जरा कर्कश बना कर बोली—'बज्जर गिरे तोरे दवायन पर, हम्में दवाय नाहि चाहिय, एक मुट्ठी कुछ दे दा, चलि जायि!'

मैं एकटकसे उसकी ओर देख रहा था। उसकी सूरत, उसकी आंखें और उसकी बोली कह रही थी कि वह सभ्य समाजकी देन है। वह अपनी मीठी बोलीको जबर्दस्ती कर्कश बनानेकी चेष्टा करती, किन्तु असफल रहती थी। मुझे अपनी ओर आंखें गड़ाकर देखते हुए देख कर वह बोली—'आंखि फारिके देखत का हुआ हम्में, बड़े-बड़े हाकिम-दरोगन-के आंखिके लाली झारि देलि-हां!'

मैंने मनीबेगसे एक अठन्नी निकाल कर फेंक दी। अठन्नीको जमीनपरसे उठाकर हंसती हुई बोली—'अरे रम्मां! यह अठ-नियां बचे ना पायि, देखहिसे मारिके जबनवा हमार काढ़ि लेयि, दारू पिये लाग। कुछो एक मुट्ठी खाये लाग दे दा राजा!'

उसने अन्तिम शब्दोंमें जो दर्द डाला, मुझे बड़ा स्वाभाविक-सा लगा। मैंने उठकर थोड़ा चावल ला दिया। जाते-जाते उसने मेरी ओर देखकर, किञ्चित मुस्कुराकर कहा—'अब त हम्म रोजो आब।'

वह चली गयी तो मैं घण्टों बैठकर उस असभ्य और बर्बर जातिकी युवतीके सम्बन्ध-में सोचता रहा।

वह दूसरे दिन भी आयी, तीसरे दिन भी आयी और रोज आने लगी। एक दिन मैंने हंस कर कहा—तुम लोग इस तरह लोगोंको डराकर, गालियां देकर क्यों भीख मांगती हो?'

'तूं काहे दवामें पानी मिलाके लोगनके ठगात हुआ?'

'दवामें पानी मिलाना ही पड़ता है, बिना पानीके दवा नहीं बनती।'

'त बेगर डांटे-डपटे-गाली दिये कुछ नाहि मिले—जान रखा।'—वह हंस पड़ी थी। मैं स्वीकार करता हूं उसकी हंसीने मुझे मोह लिया था। उसकी मुस्कुराहटमें जादू था। एक दिन मैंने पूछ ही दिया—तुम लोग जादू भी जानती हो?'

वह खिलखिलाकर हंस पड़ी थी—'अरे राजा! तोंहके कैसे मालूम?'

'यों ही पूछता हूं।'

वह हंसी रोकते हुए बोली थी—'हम्म नाहि जानि जादू-वादू! वै है बुढ़ियन सबके पांछा देखत नांहि, गांवके सगरो जवनवां लागल रहत—'ऐ बुढ़िया बताय दे, ऐ बुढ़िया बताय दे!' चावल-दाल-आटा तरकारी ढेरके ढेर पहुंचायि आवत।'

'सो क्यों?'

'मन उचाटेवाला जादू सीखे लाग।' वह हंस रही थी।

मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा था—'क्या बुढ़ियां सचमुचमें वशीकरण मन्त्र जानती हैं?'

मुझे आश्चर्यित होते देखकर वह ठठाकर हंस पड़ी थी—'तेंहू सीख आवा बैद राजा!''

* * *

होलीके दिन। गांव भरमें हुरदङ्ग मचा हुआ था। बूढ़े और बच्चोंमें भी जवानीकी लहर आयी हुई थी। अश्लील और श्लील गीतोंके तराने मस्ती भरी हवाके झकोरोंपर हिलकोरे खाकर मेरी कोठरीमें पहुंच जाते थे। मैं भी रह-रह कर होलीके बहाने रसिया गुनगुना लेता था—'का के संग खेलूं फाग।'

'अरे तूं काहे ना खेलत होरी बैद राजा?' वह हठात् आकर खड़ी हो गयी थी। एक अलमुनियमकी बड़ी कटोरीमें मालपुए मांग लायी थी। एक मालपुएको वह दांतोंसे काट कर खा रही थी।

मुझे आश्चर्य हुआ। होलीके दिन, भले घरकी औरतें बाहर पांव रखनेकी हिम्मत नहीं करती हैं, और यह निडर होकर गांवमें फिर रही है!

उसने फिर पूछा—'तूं काहे ना खेलत होरी?' मेरे मुंहसे रसियाकी 'भाषा-टीका' निकल पड़ी थी—'किसके साथ खेलूं?'

मालपुएको दांतोंसे काटते काटते वह गम्भीर हो गयी थी। मैंने फिर पूछा था—'तुम लोग आज कैसे आयी?'

'पुआ मांगे लाग!'

'लोगोंने कुछ कहा नहीं?'

अपने नथुनेको गर्वसे फुलाते हुए वह बोली थी—'केकर मजाल हुए कुछ कहे के। !'—वह बैठ गयी थी।

'किसीने रंग नहीं डाला?'

उसने खाते खाते लापरवाहीसे कहा था—'तू डाल दा। डालके देखा।'

'यदि डाल दूं तो?''

'डाल दा।'

मैं 'रेड-इंक'की दावात लेकर उठा, वह मुस्कुराकर घुटनोंसे ठुड्डी मिलाकर बोली थी—पीठ पे डाल।'

मैंने उसकी पीठपर दावात उड़ेल दी थी। उसकी गंदी चोलीपर लाल रोशनाई चमक उठी थी, उसकी मुस्कुराहट और भी रंगीन हो गयी थी। वह मुस्कुराते हुए चली गयी थी, मुझे याद है—मेरी आंखोंमें भी गुलाबी लाली दौड़ गयी थी।

उसी दिन, पिछले पहर, वह दौड़ी आयी थी। भर्राये स्वरमें बोली थी—'बैद राजा! जरा चलके देख। हम्मर जवनवाके का हो गवा! उल्टी आर पेट चलत हुए! जड़ी बूटी देत देत हारि—कुछ काट नहीं मानत। चल बैद राजा!'

'क्या हुआ?'—मैंने अकचकाका पूछा था।

'हम्मर जवनवांके—उल्टी आर पेट चलत हुए।'—वह हांफ रही थी। 'इमरजेन्सी बेग' लेकर मैं उसके साथ चल पड़ा। वह आगे आगे भागी जा रही थी और देवी-देवताओंको रो रोकर मनौतियां मना रहा थी।

गांवसे बाहर मैदानमें उन लोगोंका पड़ाव था। जाकर देखा, एक बलिष्ठ नौजवान धरतीपर पड़ा छटपटा रहा है। मैंने परीक्षा की—'च्योर कालरा!'

वह मेरे पास खड़ी थर-थर कांप रही थी। मैंने कहा—'इसे मेरे यहां ले चलो। वहीं सुई दूंगा।' सेलाइन देते ही ठीक हो जायगा—मैंने मन ही मन कहा।

'सब त जात है!'—वह करुण स्वरमें बोली थी।

मैंने देखा—पड़ावमें खलबली मची हुई है। सब अपना डेरा तोड़ रहे हैं, गधोंपर सामान बोझ रहे हैं।

'तो ये लोग तुम्हें छोड़ कर चले जायेंगे?

'हूं!'—वह रो पड़ी थी।

'तुन इसे ले चलो, अभी तुरत आराम हो जायगा।'

पासमें ही गधा चर रहा था, वह हांक लायी। एक नौजवानने आकर दूरसे ही कुछ कहा। प्रत्युत्तरमें इसने भी कुछ कहा। नौजवानने एकबार मेरी ओर देखा और चला गया। गधे पर सामान लादकर उसने जोर लगाकर बीमारको उठाया और गधेपर बोझ दिया। एक दुबले पतले काले बुड्ढेने भी आकर कुछ कहा, पर वह मौन रही। रास्तेमें मैंने पूछा—'वह छोकड़ा क्या कह रहा था?'

'का कहि अरु! चल हम्मरे साथ चल, वहिके कौन भरोसा।'

'और वह बुड्ढा...?'

'बुढ़वा एहिके (बीमार नौजवानका) बाप रहल। कहत रहल चल हमरे साथ रानी बनायके राखब।'

मैं उसे अपने बरामदेपर लिटा कर 'सेलाइन' देने जा रहा था कि जमींदार साहब, गांवके कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके साथ आ धमके। उन्होंने घृणासे मुंह विकृत करके दूरसे ही कहा—'तुमने तो हदकर दिया। छीः-छीः जरा शर्म भी तो हो! एक भद्र परिवारकी सन्तान होकर इस नीच छोकड़ीपर मर रहे हो। तुम्हें अपनी इज्जतकी परवाह न हो, लेकिन गांववालोंकी इज्जतकी भी तो फिक्र की होती। छीः छीः।

'छीः छीः क्यों?...इसे हैजा हो गया है, मैं डाक्टर हूँ, दवा...' मेरी बात पूरी भी न होने पायी थी कि सबोंने एक साथ चिल्लाकर कहा—'क्या! हैजा?'

'हे भगवान! यह तो अपने साथ गांव भरको ले डूबेगा। देख

जमींदार साहबने गांववालोंकी ओर मुड़कर कहा। फिर क्या था, मुझपर गालियोंकी बौछारें होने लगीं। मैं हतबुद्धि-सा हाथमें सीरींज लेकर खड़ा रहा। उस दीन युवतीने परिस्थिति ताड़ली। उसने मेरी ओर एकबार देखा, फिर जोर लगाकर उस अर्द्धमृत युवकको उठाकर गधेपर बोझ दिया। उठानेके समय युवकने मुंह बाकर पानी मांगा, असहाय युवतीकी आंखें बरस पड़ीं। उसने मेरी ओर जाते-जाते एकबार देखा और गधेको हांकने लगी।

'छीः छीः वेश्या! निर्लज्ज!! गांव भरका सत्यानाश करेगा।' कहकर गांवके प्रतिष्ठित व्यक्तियोंने भी प्रस्थान किया। मैं हाथमें सीरींज लेकर चुपचाप देखता रहा—गोधूलिकी वेला, दूर—बहुत दूर—उसकी जमात रंगीन धूल उड़ाती जा रही थी। गधेपर अपने प्रियतमको लादे, घांघरीके छोरसे आंसू पोंछते हुए वह भी उधर ही जा रही थी। ज्यों-ज्यों वह आगे बढ़ रही थी, उसकी पीठपर लाल रोशनाईका रंग और भी गहरा दिखलाई पड़ रहा था। धीरे-धीरे वह लाली आगकी लपट-सी मेरी धमनियोंमें समा गयी और उसी दिनसे मैं आगसे खेलने लगा।

* * *

कठोर कारावाससे मुक्त होकर—सौभाग्यवश—सेनेटोरियममें जगह मिल गयी है। दीवाल पर 'टेम्परेचर चार्ट' लटक रहा है। चार्टपर एक लम्बी लाल रेखा खींची हुई है, उसके ऊपर नीचे चढ़ने और उतरनेवाली बुखारकी गति रोशनाईसे अङ्कित की गयी है। मैं चार्टको देखता रहता हूं उसे देखकर तरह तरहकी कल्पनाएं किया करता हूं:—

'काशीकी गंगाके किनारे-किनारे छोटे-बड़े मन्दिरोंका गुम्बज...और नीचे...गंगाके निर्मल जलमें उनकी प्रति छाया...!!

दूसरे चार्टपर मेरी हिस्टरी लिखी हुई है। डेट आफ डेथ (मृत्युकी तिथि) के सामने अभी जगह खाली है। उस स्थानको भरते हुए मैं नहीं देख सकूंगा।

बुखार! खांसी!! रक्त-वमन!! उफ?

मुंहपर सफेद नकाब डालकर डाक्टर आते हैं, नर्सें आतीं हैं। मेरी हालत देखकर उन लोगोंके चेहरेपर जो रंग चढ़ता-उतरता है,—उसको भी लक्ष्य करता हूं।

कोयलकी कूक, मस्ती भरी फागुनकी हवा और वार्ड कुलीके 'रंग दे चुनरी हमारी...! गीतको सुनकर अन्दाज लगाता हूं—'होली आ रही है।'

आंखोंके आगे; प्राणोंमें घुले हुए सभी रङ्ग एक-एक करके दौड़ जाते हैं—काला...नीला...पीला...हरा...लाल...सफेद... !!

——

चीनकी कृषि-व्यवस्था

—:*:—

(कृषि प्रधान देश भारतके लिये एक सबक)

भारत दुनियाके महत्वपूर्ण कृषि न देशोंमें विशेष स्थान रखता है। यहां- धिकांश जनताको अपनी रोटीके लिये पर अवलम्बित रहना पड़ता है। लेकिन देशमें कृषि और कृषकोंकी जैसी शोच- स्थिति है, वैसी दुनियाके किसी भी देशमें नहीं। भारत सरकारकी उदासी- कृषकोंकी निरक्षरता और कृषि जन्य का दोषपूर्ण वर्गी- और विभागीकरण प्रधान कारण हैं। परिणाम यह हो

ब्रिटेनके अन्तर्गत डेव· शायरमें एक खेतका सुदृश्य। पकी फसल कट रही है।

कि सिन्ध और गङ्गा नदीकी जगत उर्वरा भूमिकी उत्पादन शक्ति क्रमशः होती आ रही है और भारतमें खाद्य की समस्या यहांकी जनसंख्याकी उत्त- वृद्धिके साथ अधिकाधिक गम्भीर जा रही है। पाठकोंको यह ज्ञानकर होगा कि विश्वके प्रगतिशील देशों भारतकी एक एकड़ भूमिकी औसत कम अथवा सबसे कम है।

की उन्नतिके लिये कृषि और कृषि विभागकी स्थापना भारतसरकार कर चुकी है। लेकिन ये विभाग अवस्थामें कोई उल्लेखनीय उन्नति प्रगति नहीं दिखला सकें हैं।

भारतीय कृषि शिष्टमण्डलके सदस्यकी डा० बी. पी. पाल चीन गये थे हांसे हालमें ही लौटे हैं। उनके कथना- चीनकी कृषि व्यवस्था भारतकी अपेक्षा उन्नत है। इस उन्नतिके कारण एक लेखमें दर्शाये हैं, जिसके महत्व- हम यहां उपस्थित कर रहे हैं। लिखते हैं :—

चीनमें चावलकी उत्पत्ति प्रति एकड़ पौंड है जब कि भारतमें इसकी उपज ६१४ पौंड है। यद्यपि इन आंकड़ों अत्युक्ति हो सकती है। फिर भी यह तथ्य है कि चीनमें प्रति एकड़ उत्पादन भारतसे कहीं बहुत अधिक प्रकार वहां दूसरे भी कृषि-पदार्थों एकड़ उपज इस देशसे अपेक्षाकृत है।

अनुमान कर सकते हैं कि चीनमें इस उन्नतिका कारण यह हो सकता है कि वहांके लोग कृषि-सम्बन्धी आधुनिक अनुसन्धानोंका उपयोग करते होंगे। लेकिन ऐसी बात नहीं। वहां अधिक उपजके कारण ये हैं—(१) वहांकी जमीनकी उर्वरा शक्ति भारतकी तरह क्षीण नहीं हुई हैं; (२) वहां प्रचुर मात्रामें खाद विशेषकर पुरीषका प्रयोग किया जाता है; (३) उस देशमें पानीकी आमद अच्छी है, और (४) चीनी कृषक अत्यन्त सावधानीसे खेतकी सफाई करते हैं। इसके अतिरिक्त वहांकी खेतीके सम्बन्धमें और विशेष बातें हैं जिनका उल्लेख नीचे किया जाता है।

चीनमें भूमिका चप्पा-चप्पा जिस तरह खेतीके लिये प्रयोग किया जाता है उसे देख- कर लोगोंको आश्चर्य होता है। अत्यन्त ढालू और दुरूह पहाड़ियोंपर फसलतैयार की जाती है और धानके खेतके बीच जो मेड़ें होती हैं, उनपर सोयाबीन, मटर, मका इत्यादि बोये जाते हैं। दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि एक ही खेतके विभिन्न भूमि खण्डोंमें कई तरहकी फसल बोयी जाती हैं जिससे खेतमें काम करनेवाले श्रमिकोंके कार्यका विभाजन ठीक तौरसे होता है और भूमि कभी फसलसे खाली नहीं रहती। आरोग्यके सिद्धान्तके प्रतिकूल होते हुए भी चीनके कृषक खादके लिये पुरीषका विस्तृत उपयोग करते हैं। नहरों द्वारा सिंचाईकी वहां ऐसी विशद व्यवस्था नहीं है जैसी हमारे देशमें है। इसलिये चीनमें धानके खेत तथा तालाबोंके पानीको सुरक्षित रखनेकी पूरी चेष्टा की जाती है और आवश्यकताके समय उसे अत्यन्त चतुरता और कौशलसे ऊंची जमीनपर ले जाया जाता है।

चीनका वैज्ञानिक स्टाफ कृषि सम्बन्धी अनुसन्धानोंसे अधिक ध्यान इस बातपर देता है कि खेतीके लिये अधिकसे अधिक भूमि निकाली जाय। वहां एक ही खेतमें देर और जल्दीसे पकनेवाले बीज बोये जाते हैं और यह दावा किया जाता है कि इस तरह ४० फी सदी उपज बढ़ जाती है।

पौधोंको रोगों तथा संक्रामक बीमा- रियोंसे बचानेके लिये चीनमें लेबोरेटरी बनायी गयी है, जहां पौधोंके रोग निवारक तथा जन्तु संहारक देशी औषधियोंका निर्माण होता है। सरकारी कृषि विभागोंके अति- रिक्त वहां कई कृषि विद्यापीठ भी हैं, जो अनुसन्धानके कार्यमें रत रहते हैं। अच्छी नस्लके बीजोंका प्रचार करनेके लिये विशेष उद्योग किया जा रहा है और ऐसी आशा की जाती है कि इसके प्रचारसे चीनकी प्रति एकड़ उपज और भी बढ़ जायेगी।

चीनमें विदेशी बीजोंके व्यवहारमें अच्छी सफलता मिली है। भारतमें भी विदेशी बीजोंकी जांचके लिये विशद व्यवस्था होनी चाहिये। इस कार्यसे भारतमें फसल बढ़ जाने- की पूरी सम्भावना है। चीनमें चावलकी फसलपर दो बातोंका बहुत अच्छा परिणाम हुआ है। एक तो वहां बीहनको पुनः रोपणके पहले राख, मिट्टी और पूरीषके मिश्रणमें डुबा लेते हैं; दूसरे जड़के साथ मिट्टीका एक छोटा ढेला लगा रहने देते हैं।

आलूकी उपज बढ़ानेके लिये चीनमें अमे- रिकाके किस्म९२ के आलू मंगाये गये थे; जिनमें ४ किस्मके बीजोंको चीनमें सफलता मिली। चीनमें विविध तरहकी तरकारियां विशेषकर सेमें अधिक पैदा होती हैं। भारत को चाहिये उन तरकारियोंकी खेती सम्बन्धी प्रयोग अपनेयहां करे। चीनमें ईखकी खेती की ओर हालमेंही ध्यान दिया जाने लगा है और वहांके लिये हिन्दुस्तानी ईखें अच्छी साबित हुई हैं।

डा० पालकी सम्मति है कि भारत और चीनके बीच पौधोंका आदान-प्रदान दोनों देशोंके लिये उपकारी सिद्ध होगा। अनेक विचारसे चीन और भारतके सरकारी विभागों से कृषि सम्बन्धी जो खोजपूर्ण साहित्य निकाले जाते हैं, उनसे दोनों देशोंको लाभ उठाना चाहिये। उनका यह भी मत है कि चीनमें किये गये प्रयोगोंकी आजमाइश इस देशमें भी करनी चाहिये।

कैरोके निकट 'ग्रेट बिटर' झीलमें लंगर डाले अमेरिकन युद्धपोतपर शाहफारूक और प्रेसीडेंट रूजवेल्ट बातचीत कर रहे हैं। याल्टा कानफरेन्सके बाद प्रेसीडेंट शाहसे मिले थे। उनके वार्तालापसे युद्धोत्तर कालमें मिस्र और अमेरिकामें अधिक दृढ़ व्यापार सम्बन्ध स्थापित होनेकी सम्भावना है।

विविध-वार्त्ता

जहां सन्धि शर्तें तय होती हैं ?

युद्ध मनुष्यके जीवनका एक अङ्ग बन गया है। निन्दा और शिकायतोंसे परे युद्धकी स्थिति सदैव जीवित रही है। युद्ध समाप्त होनेके बाद सदैव इस बातका प्रयत्न किया गया है कि भविष्यमें युद्ध न हो। किन्तु युद्ध-समाप्तिकी संधि शर्तोंमें ही भावी युद्धकी आशा अंकुरित होती रहती है और समय आते ही उसका विष वृक्ष फूट पड़ता है। युद्ध होता है जिसमें एक हारता है और दूसरा पक्ष विजेताकी हैसियतसे अपनी ओरसे सन्धिकी शर्तें पेश करता है। हारा हुआ दल लाचारीकी अवस्थामें उन सभी शर्तोंको स्वीकार करता है जो उसके विरोधी पक्षकी ओरसे तैयार की जाती हैं। संक्षेपमें यही थोड़ी-सी बात है जो हर युद्धके अन्तमें आती है और फिर दूसरे युद्धकी तैयारी होने लगती है। यह हुई युद्ध और सन्धि की बात, पर हम जिस बातकी ओर पाठकों का ध्यान ले जाना चाहते हैं वह है यूरोपका वह स्थान जहां यूरोपीय युद्धके प्रायः अधिकांश सन्धि पत्रोंपर हस्ताक्षर हुए हैं। भौगोलिक रूपमें या प्राकृतिक रूपमें अधिकांश यूरोपीय युद्धोंकी समाप्तिके बाद फ्रांस ही वह स्थान रहा है जहां प्रायः लड़नेवाले सभी देशोंने एकत्रित होकर सन्धि पत्रपर हस्ताक्षर किया है। वर्तमान कालमें पेरिस ही वह स्थान रहा है जहां अधिकतर युद्धोंकी समाप्ति हुई है। १२९ साल पहले वाटरलू की विजयने अकस्मात दुनियाको हिला दिया था। संसार विजयकी इच्छा रखने वाला और उसके अनुरूप कार्य करनेवाला संसार प्रसिद्ध वीर नेपोलियनने यहीं रूस, प्रशा और ब्रिटेनके सम्मिलित मारके सामने घुटने टेक दिये थे। उस समय पिटे हुए फ्रांसका भाग्य निर्णय पेरिसमें रूस, प्रशा और ब्रिटेनके द्वारा हुआ था। हारे हुए फ्रांसके भाग्यका निर्णय विजेता राष्ट्रों द्वारा पेरिसमें ही हुआ था। दुर्भाग्यका वह दिन पेरिस को देखना था और उसने पेबलो पिकासो-आधुनिक कलाके संसार प्रसिद्ध प्रतिनिधि और व्याख्याता अपने १७ वीं शताब्दीवाले मकानकी खिड़कीसे, मित्रराष्ट्रीय सेना द्वारा पेरिसका उद्धार देख रहे हैं। आप स्पेनियार्ड हैं। १८८१ में मलागामें जन्म हुआ था। संसार भरमें सर्वत्र कलासंग्रहालयोंमें आपकी कृतियां आदरके स्थान पर रखी मिलेंगी। जर्मन अधिकारके समय आपको अपनी कृतियोंका प्रदर्शन करनेसे रोक दिया गया था। वीरकी तरह उस दिनका सामना किया। दुर्भाग्यके सामने किसके सिर नत नहीं हुए? बुरे दिन किसे नहीं देखना पड़ता। यह तो भाग्यका खेल है जिसका बेबूझ साझीदार मनुष्य हो रहा है। इस सन्धि शर्तमें फ्रांसकी हिम्मत तोड़ देनेका प्रयत्न उन राष्ट्रोंकी ओरसे किया गया था जो विजेताके रूपमें उसके सम्मुख आकर अपनी विजय मुस्कानसे उसके आंसू पोंछने आये थे। सन्धि शर्तोंका इतिहास इस बातका मौन साक्षी है। यह सन्धि शर्त फ्रांसके लिये अतीव भयंकर और बर्बरतापूर्ण थी।

इस सन्धि शर्तके अनुसार फ्रांसको क्षतिपूर्तिके रूपमें २८०००००० पौंड देना पड़ा था। सन्धिकी शर्तोंके अन्य नियमोंके अनुसार वेलिंग्टनके नेतृत्वमें मित्र सेनाओंको यह आदेश दिया गया था कि वे सम्पूर्ण फ्रांसको इस छोरसे उस छोर तक नाप दे और फ्रांसमें फैली हुई गुलामी प्रथाका अन्त कर दें। दूसरी बार ४९ सालके बाद नेपोलियन तृतीयने फ्रांको-प्रशियन युद्धके सिलसिलेमें लड़ता हुआ अपने सिपाहियोंके रक्षार्थ सेडानमें हथियार डाल दिया। इस बार फिर पेरिसमें ही सन्धि शर्तोंपर विचार किया गया और यहीं इसपर दोनों पक्षके हस्ताक्षर हुए। इस बार विजय जर्मनोंको मिली और जर्मनीने ब्रिटेनसे भी अधिक बर्बरतापूर्ण सन्धि पत्रका मसविदा फ्रांसके लिये तैयार किया। जर्मनीने ऐसे अवसरों पर सदैव अपनी सीमा बढ़ाने की बात सोची है और इसके अनुसार उसने अलसास और लारेनका उपजाऊ भाग फ्रांससे ले लिया। अलसास और लारेनको जर्मन नक्शेमें मिलाते समय जर्मनोंने वहांके नागरिकोंसे यह पूछनेकी परवाह भी न की कि तुम लोग अपने लिये कैसी शासन-व्यवस्था चाहते हो। जर्मनीने विजेताके रूपमें फ्रांससे इतना ही लेकर सन्तोष नहीं किया वरन उसने क्षतिपूर्तिके रूपमें फ्रांससे २० करोड़ पौंड लिया और साथ ही साथ इस बातका आश्वासन भी लियाकि फ्रांसकी सीमाके भीतर रहनेवाले जर्मन सिपाहियोंके पोषण-का भार तब तक फ्रांस पर रहेगा जब तक क्षतिपूर्तिके २० करोड़ पौण्ड वसूल न हो जांय। इस बार जर्मनीने फ्रांसका बुरी तरह दोहन किया। तीन सालके भीतर ही भीतर क्षतिपूर्तिका पाई पाई फ्रांससे जबर्दस्ती वसूल किया गया और फ्रांसके निवासियोंके सुख दुखकी जर्मनोंने कोई भी चिन्ता न की। इसने सभी सन्धि शर्तों को मात कर दिया। फ्रांसके लिये यह उस समय की सभी शर्तोंसे बदतर और अपमान जनक थी। इस सन्धि शर्तके अनुसार सभी सरकारी जहाजोंका चलना बन्द होगया था, हर व्यापारी जहाजपर तटस्थ देशोंका झण्डा उड़ा दिया गया था और ऐसे सामान फ्रांस नहीं आने दिये जाते थे जिनसे युद्धकी तैयारी हो सके। इस सन्धि द्वारा फ्रांसके नैतिक बलको ही नष्ट करनेकी ठान ली गयी थी किन्तु फिर भी फ्रांस मरा नहीं, जिन्दा रहा। अमेरिकाके स्वतन्त्रता युद्धकी सन्धि शर्तें भी पेरिसमें ही तय हुई थीं। किन्तु इस बार ब्रिटेनकी समझमें यह बात आयी कि युद्धमें लड़ने वालोंके साथ की जानेवाली हमारी चालाकीने हमारे पड़ोसी और सहयोगी राष्ट्रोंको हमारा विरोधी बना दिया है। अमेरिकनों की विजयने अंग्रेजोंके हौसले पस्त कर दिये। इस बार अमेरिकनोंकी ओरसे जो शर्तें आयीं वे अत्यधिक भयङ्कर थीं। अमेरिकनोंने सन्धिशर्त में तत्क्षण २० लाख पौंडकी मांग की थी और होनेवाली हानिके फलस्वरूप तब तकके लिये लाख २० १ हजार पौंड प्रति वर्षकी मांग पेशकी गयी जब तक कि वह पूर्ण न हो जाय। किन्तु इस बार दुश्मनके लिये जो शर्तें सामने आयंगी वह और भी कड़ी होंगी। इस बार शत्रुसे दण्डस्वरूप युद्धमें होनेवाली प्रत्येक वस्तुकी हानिका मूल्य लिया जायगा और क्षतिग्रस्त यूरोपकी मरम्मतके लिये मजदूर लिये जायंगे।

हिटलरका शांति प्रस्ताव

अभी कुछ दिनों पहले अखबारोंमें यह समाचार जोर पकड़ रहा था कि हिटलर तटस्थ देशों द्वारा मित्रराष्ट्रोंके सामने सन्धि-शर्त रखनेको तैयार हैं बशर्ते कि मित्रराष्ट्र उसे स्वीकार कर लें। किन्तु मित्रराष्ट्रोंकी ओरसे बिना शर्त आत्म-समर्पणकी जो आवाज उठी वह फिर बैठ न सकी और नतीजा यह हुआ कि कुछ दिनोंके लिये जर्मनीकी ओरसे किस तरहका शान्ति प्रस्ताव आने वाला था वह मालूम न हो सका। अब इधर जो समाचार आ रहे हैं उनसे इस विषयपर बहुत अधिक प्रकाश पड़ा है। एक समाचारके अनुसार हिटलर पोपको यह अधिकार देनेको तैयार थे कि वे १९४४ के क्रिसमसके पहले मित्रराष्ट्रोंसे जर्मनीकी ओरसे सन्धि कर सकते हैं। सन्धिके लिये जो चार शर्तें हिटलरने पोपको दी थीं वे ये हैं—

१—जर्मनीकी स्थलसेना, जहाजरानी और हवाईजहाज निरस्त्रकर दिये जांय और राज्यकी सुव्यवस्थाको कुशलपूर्वक सञ्चालित करनेके लिये केवल मात्र पुलिसके साथ १ लाख सिपाही हों।

२—जर्मनीपर पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण हो ताकि वह गुप्त रूपसे सशस्त्र न हो सके।

३—आस्ट्रिया, जेकोस्लावाकिया और पोलैंड स्वतन्त्र कर दिये जाय तथा जर्मना द्वारा अधिकृत अन्य सीमाओंसे जर्मन सिपाही तुरत हटा दिये जांय।

४—नेशनल सोशलिस्ट पार्टीका अन्त कर दिया जाय और उसके बजाय जर्मनीमें प्रजातन्त्रकी स्थापना कर दी जाय।

कुछ अजीब गरीब आंकड़े

बुद्धि स्वेच्छाचारिणी होती है। यह कभी स्थिर नहीं रहती। इसका काम है कुछ न कुछ करते रहना। अच्छी बातें यदि न हो सकी तो यह कुछ न कुछ बुरा करके ही दम लेगी। यह चुपचाप स्थिर कभी नहीं रहती। अपनी चञ्चलताके कारण यह काफी बदनाम हो चुकी है फिर इसके बिना किसी का कामभी तो नहीं चलता इसीसे यह अब तक आदरणीया बनी हुई है युद्ध आरम्भ हो जानेके बाद बुद्धिकी गतिमें क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। जो जिस विषयको जानता है उसने उसी दृष्टिकोणसेभ ... देखना शुरू कर दिया है। अमेरिकाके ... टन यूनीवर्सिटीके "पोपुलेशन ... आफिसके फ्रैंकनोटेस्टन नामक सज्जन जनवृद्धिकी गणना कर आकुल-व्याकुल रहे हैं। उनके मतसे २६ साल बाद ... नियोंकी जनसंख्यामें २ करोड़की ... होगी। १८७० में जापानकी आबादी करोड़ ५० लाखथी जो बढ़ते-बढ़ते ... में ७ करोड़ ३० लाख हो गयी और ... हिसाबसे नोटेस्टन महोदयका मत ... १९७० में वह ९ करोड़ ५० लाख ... जायगी। अमेरिकाके विषयमें आपका ... है कि १९७० में अमेरिकाकी जन... बढ़ती हुई १६ करोड़ तक पहुंच जायगी फिर धीरे धीरे घटने लगेगी। अगली ... ब्दीके प्रारम्भतक आस्ट्रेलिया और ... लैंडकी जनसंख्या २ करोड़ १० लाख ... तथा अफ्रीकाकी जनसंख्या २००० ... बढ़कर २९ करोड़ हो जायगी। ... विषयमें नोटेस्टन महोदयका मत है कि ... १ अरब ९ करोड़ हो जायगी। उत्तर ... और मध्य यूरोपकी जनसंख्या इस ... आपके मतसे पूर्णता पर पहुंच चुकी ... उसका बढ़ाव १९९० के बाद एक ... बन्द हो जायगा।

मनीला—फिलिपाइन द्वीप समूहकी [रा]जधानीके पतनपर अमेरिकन सेनानायक [जन]रल मैक अ थंरने उसदिन कहा—'प्रशांत [महा]सागरके युद्धकी एक लड़ाई समाप्त हो [गयी]। दूसरे टोकियोके लिये होगी और हम [उस]के लिये तैयार हैं।' जापानी पार्लमेंटमें [जा]पानके प्रधान मन्त्रीने भी स्थितिकी [गम्]भीरताको स्वीकार किया है और कहा

[म]नीलामें प्रवेश करनेवाली अमेरिकन [से]नाके कमाण्डर जेनरल राबर्ट बाइटलर

कि प्रशान्त महासागरकी लड़ाईकी निर्णा[यक] लड़ाई लूज़ोन द्वीपमें होगी। मैक आर्थरके [वक्त]व्यसे यह भी मालूम होता है कि मनीला [वि]जयके बाद अमेरिकन सेना आगे बढ़ेगी [औ]र शेष फिलीपाइनको स्वाधीन करनेका [भा]र फिलिपनोपर छोड़ दिया जायगा। [य]ह स्पष्ट है कि फिलिपाइन द्वीप समूहके [औ]र लूज़ोन द्वीपकी लड़ाई सामरिक और [राज]नैतिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण है। क्योंकि [इस] विजयके बाद जापानसे लड़ाई लड़नेके [लिये] अमेरिकाका सैनिक अड्डा लूज़ोन द्वीप [होगा]। पर्ल हारबरसे अमेरिकन जङ्गी बेड़ा [बढ़]कर कोरेजीडरमें लङ्गर डालेगा [औ]र अमेरिकन हवाई सेना भी लूज़ोनके [अड्]डोंसे जापान और जापान विजित [द्वी]पोंपर अहर्निशि बम-वर्षा कर सकेगी, [जैसे] कि आज वह जर्मनीपर कर रही है। [मनी]लासे कुछ स्थानोंकी दूरी देखनेसे इस [बात]की सत्यता सहजमें स्पष्ट हो जायगी। [नीचे] कुछ स्थानोंकी मनीलासे दूरी दी [जाती] है:—

हांगकांग	६४० मील
सिंगापुर	१३४३ ,,
ऐबुआन (बोर्नियो)	६७२ ,,
कुशिंग ,,	१०९२ ,,
एम्बोयाना	१२९२ ,,
कैण्टन	६३० ,,
याकोहामा	१९६० ,,
टेनान (फारमूसा)	९४० ,,

मनीला नवयुगकी देहलीपर

[स्पेन]की मुट्ठीसे निकलकर मनीला फिर [नवयु]गकी देहलीपर खड़ा है। यह जनता [...]ा है। इस तक पहुंचनेमें उसको ३७४ [वर्ष ल]गे हैं। १५७१ में लेगाजपीने इस नगर [की स्था]पना की थी। १८९८ तक ३२७ साल

लूज़ोन-प्रशांतयुद्धका निर्णायक रणक्षेत्र

——:*:——

(लेखक—श्री अवनीन्द्र कुमार विद्यालङ्कार)

इस भूभागमें स्पेनिश अधिकृत प्रदेशोंकी (अक्तूबर १७६२ से फरवरी १७६३ तकको छोड़कर जब कि यह अङ्गरेजोंके पास था) यह राजधानी थी। स्पेनने यहां सामाजिक राजनीतिक और धार्मिक अनेक परीक्षण किये। मई १८९८ में अमेरिकन एडमिरल डीवे इसके बन्दरगाहमें स्पेनिश बेड़ेका नाश कर दिया। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा फिलिपाइनपर पुनः अधिकारकर लेनेसे मनीला के इतिहासमें नये अध्यायका आरम्भ हुआ।

लेयटीमें उतरनेके तीन मासके अन्दर मैक आर्थरने अपना प्रण पूरा किया और लूज़ोन द्वीपमें लिंगायन खाड़ी बम्बार्डमेंटसे गूंज उठी। लिंगायन खाड़ीमें उतरकर अमेरिकन सेनाने जापानका पिछला दरवाजा बन्द कर दिया। एक साल पहले जनरल मैक आर्थर न्यूगिनीमें लूज़ोन समुद्रतटसे लगभग १५०० मीलपर लड़ रहे थे। फिलिपाइनपर हमला उस समय दूरका एक स्वप्न मालूम होता था। पर द्वीपोंको बगल करके फिलिपाइनपर सालके अन्दर ही आक्रमण सम्भव

लिंगायन खाड़ीके तटकी ओर बढ़नेवाली अमेरिकन सेनाका एक भाग

हो गया। लूज़ोनपर आक्रमण करनेके लिये ८०० से अधिक जहाजोंकी मदद ली गयी। अमेरिकन बेड़ेके साथ आस्ट्रेलियन नौ सेना भी आयी। जापानी इससे विस्मित रह गये। मिनडानोपर अमेरिकन सेनाके उतरने की जब जापानी आशङ्का करते थे, तब मैक आर्थरकी सेना लेयटी द्वीपमें उतरी। मिनडोरो और मैरिनड्यूक्वेपर अधिकार करनेसे जापानी बारांग-मनीलाके सामनेके—द्वारके पड़ोसमें अमेरिकन सेनाके उतरनेकी सम्भावना करते थे। १९४२ में जापानी यहींसे दाखिल हुए थे। जनरल मैक आर्थर इस बातको भूले नहीं और उन्होंने जापानकी चालसे ही जापानको पराजित कर दिया। लूज़ोन द्वीपकी लड़ाई केवल मनीलाके वास्ते नहीं है, प्रत्युत नैऋत्य प्रशान्तके द्वीप समूह और चीन सागरके नियन्त्रणके लिये भी है। इसीसे लूज़ोन द्वीपकी लड़ाईका सामरिक और राजनीतिक दृष्टिसे महत्व है। भारतसे २९७२ मील दूर इस लड़ाईके द्वारा एक नये और स्वाधीन राष्ट्रका उदय हो रहा है। भारतीय स्वाधीनता संग्रामकी दृष्टिसे [...] फिलिपाइन

की स्वाधीनताकी लड़ाई भारतीय स्वाधीनताकी लड़ाईको उत्तेजना देगी जैसे कि पोर्ट आर्थरके संग्रामने दी थी। इस दृष्टिसे भी लूज़ोनका संग्राम महत्वपूर्ण है। मनीला की स्वाधीनता एशियाकी स्वाधीनताका शुभ चिह्न है या एशियापर अमेरिकन आर्थिक साम्राज्यकी स्थापनाका सूचक है, यह आज कहना कठिन है। यह तो भविष्य बतायेगा। पर इतना तो निश्चित है कि स्वाधीन फिलिपाइनका उदय एशियाको स्वाधीन होने के लिये प्रेरणा देता रहेगा।

लूज़ोनके पश्चिमी तटपर लिंगायन खाड़ी अत्यधिक महत्वपूर्ण सामुद्रिक मार्ग है। खाड़ी जमीनके अन्दर वायव्यसे आग्नेय में चली गयी है। इसका मुंह २९ मील चौड़ा है और खाड़ी ३९ मील [...]। प्रायः सारी खाड़ी रेत और चट्टानोंसे पूर्ण है।

सबसे बड़ा द्वीप

फिलिपाइन द्वीप समूहके अन्दर लूज़ोन सबसे बड़ा और अत्यधिक महत्वपूर्ण द्वीप है। ७०००द्वीपोंमेंसे लूज़ोनका क्षेत्रफल ४०८१[...] वर्गमील है। उत्तरसे दक्षिण यह ११५२ मील लम्बा है। फिलिपाइनकी राजधानी मनीला इस द्वीपमें पासिग नदीके मुहानेपर है। इसके सामने विस्तृत और उथली मनीला खाड़ी है। बरानेज और बाबुइनेज द्वीपोंको छोड़कर यह सबसे अधिक उत्तरीय द्वीप है। यह सबसे अधिक समृद्ध भी है। लड़ाईसे पहले इसकी आबादी ३७ लाख ९९ हजार थी। उत्तरमें बाशी खाड़ी है, जो प्रशान्त सागर को चीन समुद्रसे मिलाती है, एशियामें सन बरनाइडिनो समुद्र धुनी है जो कि इसको विसायस सागर और तायाबस खाड़ीकी प्रणालिकाओंसे अलग करती है। दक्षिणकी अपेक्षा उत्तरमें यह द्वीप अधिक चौड़ा है। उत्तरसे दक्षिणकी ओर आग्नेयमें कम चौड़ा होता जाता है। मनीलाके उत्तरीय तटसे लूज़ोनकी लम्बाई २८३ मील है और वहांसे बाबुलेगम प्वाइण्टके आग्नेयमें २२९ मील है। उत्तरीय लूज़ोनके केन्द्रमें सबसे चौड़े स्थानपर यह १३८ मील है। सबसे संकीर्ण जगहपर यह ८ मील चौड़ा है। इसका अपना क्षेत्रफल ४० हजार ८१४ वर्गमील है, पर अपने आश्रित द्वीपोंके साथ इसका क्षेत्रफल ४२,१९६ वर्गमील है। लूज़ोन की पर्वतमाला तीन विभागोंमें हैं जिसका नेयूवा एसीजा प्रान्तमें कापाबालो डीबालेर है। उत्तरीय लूज़ोनके तटसे काराबालोस आक्सीडेण्टल शुरू होता है और यह पहाड़ पश्चिमी तटके साथ १५० मील तक समानान्तर चला गया है। सीरा मैडरे पर्वतमाला काराबालो डीबालेरसे प्रारम्भ होकर ईशानकी ओर फैलती है और केप एनागनो तक चली गयी है। काराबालोस सूर भी यहींसे शुरू होती है और बानाहाओ तक दक्षिणमें जाती है, फिर आग्नेयकी ओर मुड़कर सान बरनारडीनो समुद्रधुनीके समीप समाप्त होती है। ये पर्वतमालाएं और यह भौगोलिक परिस्थिति जापानके अनुकूल है और अराकान और चिन्दविनमें जापानियों :ने जैसी लड़ाई लड़ी है वैसी ही वे यहां भी

लेयटीमें अमेरिकन सेनापति मैकआर्थर (बायें) और

लेयटी द्वीपके एक दलदलमें अमेरिकन सफरमैना पुल बना रहे हैं।

गे। इन पहाड़ोंमें बनाये गये दुर्गोंसे वे ांको लम्बी करनेमें समर्थ होंगे।

लूजोन सुसिंचित प्रदेश है। इसकी सबसे नदी रिओ ग्राण्डे डीकागायन, लगभग र्ण उत्तरीय लूजोनमें बहती है। इसके तिरिक्त तीन और बड़ी नदियां और अन्य क नाले इस प्रदेशको सींचते हैं। पासिग सबसे छोटी केवल १९ मील लम्बी है। मानवीय हित और उपयोगकी दृष्टिसे से अधिक महत्वपूर्ण है। द्वीपकी सबसे झील लैगूनाडीबे और मनीला खाड़ीके व यह नदी यातायातका सबसे बड़ा रता है। इस नदीका महत्व इसीमें है कि के मुहानेपर इस द्वीपकी राजधानी है, र इसके द्वारा बड़े परिमाणमें व्यापार ता है। द्वीपके तटवर्ती मैदान बहुत सङ्कीर्ण अधिकतम चौड़ाई १० मील है। पहाड़ र जगह समुद्रकी ओर झुके हैं। इस के अन्य द्वीपोंके समान लूजोनका बहुत बड़ा है और इसका भीतरी अधिकतर पर्वतमय है।

फिलिपाइनका जिब्राल्टर

मनीलाकी खाड़ीमें पासिग नदीके मुहाने मनीला स्थित है। मनीला शहरसे २७ दूर चीन सागर खाड़ीमें प्रवेश करता र वहाँ शिलामय कोरेजीडर द्वीप स्थित यहाँ जापानियोंसे १९४२ में मैक आर्थरके में अमेरिकन सेना अन्तमें लड़ी थी। बाटन प्रायद्वीपसे जो कि खाड़ीका य तट बनाता है; दो मील दूर है। ल्टरके समान कोरेजीडरकी किलेबन्दी जमीनके नीचे की गयी है। जमीनके निवास स्थान है। रक्षक सेनाके लिये पूरा इन्तजाम है। फोर्ट मिल्स सेनाकी चारों ओर द्वीपको घेर रखा है। कोरेजीडर किलेबन्दीको बाहरके तीन किलोंने मज- बूत कर रखा है। बड़े द्वीपके दक्षिणमें १ मील कैबालोपर फोर्ट ह्यूगेज है, एलफेलेपर फोर्ट ड्रम और काराबाओपर फोर्ट फ्रैंक है। मनीलाके दक्षिणमें १० मील दूर केवीटे सामुद्रिक नौ-स्टेशन है। यहां जहाजोंके मरम्मतके कारखाने, वर्कशाप, नौ अस्पताल, और नौ सैनिकोंके लिये बैंक है, सामु- द्रिक विमानोंका अड्डा और एक शक्तिशाली रेडियो स्टेशन है। २२ मील लम्बा एक समुद्र तटवर्ती मार्ग कैवीटेको मनीलासे मिलाता है।

—: गीत :—

—:*:—

हंसनेका अधिकार कहां है?

क्या बतलाये क्यों रोते हैं,
मानव अपने मनसे पूछो।
जीवन-सा बन्धन, अवनीसा;
दुखमय कारागार कहां है?

तुम कहते हो यह कर डाले,
वे कहते हैं वह कर डाले।
किन्तु हमारी इच्छाओंपर;
निर्भर यह संसार कहां है?

—लालाराम श्रीवास्तव 'लाला'

मनीला खाड़ीके प्रवेश द्वारसे ३५ मील (५६ किलोमीटर) दूर लूजोनके पश्चिमी तटपर सुबिक खाड़ीपर एक दूसरा नौस्टेशन है। यहां जहाज मरम्मत करनेका कारखाना और ड्राईडाक है। ये इतने बड़े हैं कि बड़े जहाज ठहर सकते हैं। मनीलाके आग्नेयमें कुछ मील दूर पासिग नदीपर फोर्ट विलियम मकिनले में सैनिक चौकी है। मनीलाके ठेठ दक्षिणमें सेनाका निकोलस हवाई क्षेत्र है। मनीलाके उत्तरमें ६० मील (९६ किलोमीटर) पर फोर्ट स्टाटसन वर्गमें सेनाकी दूसरी चौकी और क्लार्क हवाई क्षेत्र है।

६७० मील रेलवे

मनीलाको केन्द्र बनाकर चारों ओर जानेवाली—सुदूर स्थानों तक जानेवाली लूजोनमें अनेक अच्छी सड़कें हैं। लगभग ६७० मील रेलवे है। यहां अन्न बहुतायतसे उत्पन्न होता है। मुख्य उद्योग खेती है। लूजोन जङ्गलोंसे समृद्ध है। इमारतों लायक लकड़ी बहुत होती है।

नेयवा एसीजामें सोना उत्पन्न होता है। पहाड़ी जिले मानेकोनआन-इइओकमें ताम्बेकी खाने हैं! पूर्वीयतटपर कैथराइनसे लेकर अन्तरीप भाग तकमें लोहेकी खानकी पट्टी है। बुलाकन प्रान्तमें एङ्गरके पास सबसे ज्यादा है। जाटवल्स प्रान्तमें कोमाइटकी बड़ी खान है। बाटन द्वीपके अन्दर एलवे प्रान्तमें कोयलेकी खान है। माण्डोन प्राविन्समें नमकीन झरने हैं। खेतीकी पैदावारमें कोको, काफी, कपास, तम्बाकू, सन, अनानास, केला, सुपारी, आम, चावल गन्ना, शकरकन्द आदि प्रचुरतासे होता है। भौगोलिक दृष्टिसे लूजोन अत्यधिक वृष्टि और प्रचण्ड तूफान आनेके भूभागमें है। फिलिपाइनकी कुल पशु-संख्याके दो तिहाई पशु लूजोनमें हैं। अमेरिकाका सर्व प्रथम अधिकार लूजोन द्वीपपर हुआ था। इसीको लड़ाईका अड्डा बनाकर अमेरिकाने फिलिपाइनको स्पेनसे जीता था।

परिवर्तन बिन्दु

लूजोनपर अमेरिकन सेनाओंका आक्रमण द्वितीय विश्व-युद्धमें परिवर्तन-बिन्दुकी सूचना देता है। इसका अर्थ है कि मित्रराष्ट्रों और विशेषतः अमेरिकाने अपनी सुरक्षित सेनाका एक बड़ा भाग प्रशान्तकी लड़ाईमें लगा दिया है। प्रशान्तमें इतनी सेना अन्यत्र काममें न लायी जा सकेगी। यूरोपकी लड़ाई समाप्त होनेपर प्रशान्तकी लड़ाई आरम्भ होगी, जापानकी यह आशा मिथ्या सिद्ध हुई। जापान थोड़ीसी सेनाके बलपर अमेरिकाकी बड़ी सेनाको ठेठ जापानसे दूर रखनेकी आशा करता था। यूरोपमें लड़ाई लम्बी चलनेसे प्रशान्त और यूरोपकी लड़ाईके बीच सम्बन्ध पुनः नये सिरेसे स्थापित करना होगा। मि० रिचार्ड लाके वाशिंगटन-मिशन का यही उद्देश्य है। प्रशान्तको दिये गये जहाज अभी यूरोपके लिये आवश्यक हैं। लूजोनकी लड़ाईको अन्त तक पहुंचाना जरूरी है। यूरोपमें एक डिवीजन पहुंचानेके लिये ५०००० टन जहाजकी जरूरत है और इसमें दो सप्ताह लगते हैं। दूसरी ओर लूजोन पहुंचानेके लिये २ लाख टन जहाज और पांच मास लगते हैं। अतः यूरोपकी लड़ाईकी प्रणालीके अनुसार ही प्रशान्त-सागरकी लड़ाईकी योजना बनानी पड़ेगी।

आगे किधर

मनीला-विजयसे जापानके यातायातमें बाधा पड़ेगी। मंचूरियासे चीन सागर होकर सिंगापुरसे सुमात्रा तक जानेवाले जहाज अब अप्रतिहत न जा सकेंगे। डच-ईस्ट इण्डीजसे भी उसका सम्बन्ध कट जायगा। पर प्रश्न यह है कि अमेरिकन सेना अब किधर मुख मुड़ेगी? सैपानके अड्डेसे निरन्तर जापानपर हमला करनेके लिये यह उपयुक्त स्थान है। आजकल बोनिन द्वीपपर बम-वर्षा की जा रही है। फारमूसापर भी बम-वर्षा की जा रही है। जापान और फारमूसाके बीचके द्वीपों रियुकीयूकी द्वीपपर भी अमेरिकन बम-वर्षाकोंकी नजर है। चीनका दक्षिणी तट जापानके अधिकारमें है। यहांके जापानी अमेरिकन सेनाके उतरनेकी आशंका करते हैं। अमेरिकाको सुरक्षित स्थल-अड्डा मिल गया है। यहांसे अमेरिकन सेना किसी ओर भी इस समय जानेकी स्थितिमें है। अमेरिकन सेना चीनकी ओर बढ़ना पसन्द करती है या ठेठ जापानकी ओर यह अगले कुछ दिनोंमें मालूम हो जायगा।

—

लेयटीके एक [illegible]

त्रिराष्ट्र नायकोंके निर्णयकी आलोचना

ब्रिटिश पार्लमेंटमें गर्मागर्म बहस

गत सप्ताह ब्रिटिश पार्लमेंटमें याल्टा [...]रेंसके निर्णय पर प्रधान मन्त्री मि० [...]लने एक लम्बा भाषण किया, जिसका अन्यत्र प्रकाशित है और उसके बाद [...] हुई। उक्त निर्णयपर विश्वास प्रकट [...] लिये मि० चर्चिलने विश्वासका एक [...]व पेश किया। लेकिन पोलैण्डके सम्ब- [...] उक्त सम्मेलनने जो निर्णय किया है, [...] अनुदार दलके भी अनेक सदस्य अस- [...] हैं। इसलिये अनुदार दली सदस्योंकी [...]से एक संशोधन रखा गया ताकि ब्रिटिश [...]रकी असफलता पर कटु टीकाटिप्पणी [...]जा सके।

[...]मेजर पेथ्रिक अनुदारने कहा कि यदि [...]टा सम्मेलनके समझौतेको निबाहा जा- [...] तो पोलैण्ड अपने आधे राज्य, एक [...]ई आवादी, ८९ प्रतिशत तैल और आधे [...]भाग कारखानोंसे हाथ धो बैठेगा। [...]का प्राचीन नगर भी उसके हाथसे नि- [...] जायेगा। यह समझौता रूस और पो- [...]में हुई सन्धि तथा अटलांटिक चार्टरके [...]द्ध है। १९३९ में की हुई इङ्गलैंड और [...]लैंडकी परस्पर सहायता सन्धिके भी [...]द्ध यह समझौता किया गया है। डा० [...]न गेस्ट (मजदूर) ने मेजर पेथ्रिकका [...]रोध करते हुए कहा है कि उनका आक्षेप [...]सियोंके विरुद्ध भावना भड़कानेके लिये [...]या गया है।

मि० डब्ल्यू० जे० ब्राउन स्वतन्त्रने मि० [...]थ्रिकके विरोधमें कहा कि याल्टा सम्मे- [...]नमें जो समझौता हुआ है वह न समझौता [...]से कहीं अच्छा है।

मि० ग्रीनउडने प्रधान मन्त्रीकी वक्तृता [...] सराहना करते हुए कहा कि किसी राष्ट्र [...] सड़े हुए गन्दे विचारोंको नष्ट करनेके [...]ने यह नहीं है कि उस राष्ट्रको ही नष्ट [...]या जा रहा है। जर्मनीका दूसरा दांत [...]नेका यह मतलब कदापि नहीं है कि [...]न्ति समय की उसकी आवश्यकताके लिये [...]की उत्पादन शक्ति कम कर दी जायेगी, [...] जर्मनीको यह बात अच्छी तरह [...]झा देना चाहिये कि युद्धोपरान्त किसी [...] परिस्थितिमें उसे ऐसे साधनका त्याग [...]रना पड़ेगा जो युद्धमें काम आ सकता हो। [...] पोलैण्डके सम्बन्धमें मि० ग्रीनउडने कहा [...] यह बात ब्रिटिश सिद्धान्तके खिलाफ है [...] किसी राष्ट्रकी अनुपस्थितिमें और उसके [...] पीछे उसके भाग्यका निर्णय किया [...]य। यूरोपके पूर्वमें स्वतन्त्र पोलैंडका होना [...]विष्यमें होनेवाले सम्भाव्य जर्मन आक्रमण [...] लिये चेतावनीका काम करेगा। मि० [...]उडने कहा कि मेरा ख्याल है कि ब्रिटिश [...]कारने पोलैंडके साथ अच्छा वर्ताव नहीं [...]या।

मि० चर्चिल—सारा उद्देश्य यह था कि [...] ऐसी पोल सरकार बनायी जाये जो [...]सके साथ अपने भविष्य पर विचार [...]।

मि० ग्रीनउड—पोल लोगोंको इस बात [...] बोलनेका मौका नहीं दिया गया कि [...] देशको किस प्रकार विभक्त किया जा [...] है।

मि० चर्चिल—पोलोंसे अब इस बातपर परामर्श किया जा रहा है। लन्दन स्थित पोल सरकार तथा पोलैंड स्थित पोल सरकारको भिन्न भिन्न दो महाशक्तियां मानती थीं, अतः किसी भी पोल सरकारको याल्टा सम्मेलनमें बुलाना असम्भव था। अब एक ऐसी पोल सरकार बनायी जा रही है जो सभी राष्ट्रों के लिये मान्य हो और जिसमें पोलैंडकी राष्ट्रीयता निहित हो। पोलैंडकी यही सरकार उस देशके भविष्यके लिये उचित पथ ग्रहण करेगी और संयुक्त सरकारों द्वारा उस समय तक मान्य रहेगी जब तक कि उसकी स्थिति स्वतन्त्र प्रतिबन्ध रहित और आम चुनाव की नींवपर सुदृढ़ न हो जाये।

मि० ग्रीनउड—मैं प्रधान मन्त्रीकी कठिनाइयोंसे अवगत हूं फिर भी मेरा हृदय कहता है कि पोल लोगोंके लिये इतना महत्वपूर्ण और व्यापक निर्णय उनके पीठके पीछे नहीं होना चाहिये था।

पोलैंड सम्बन्धी सरकारी नीतिकी आलोचना करते हुए लार्ड डगलस अनुदारने कहा कि रूस और पोलैंडके सम्बन्ध पर चिन्ताका यही विषय है कि यह एक अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्रका अपनेसे छोटे और निर्बल राष्ट्रके साथ किये हुए व्यवहारका उदाहरण रहेगा। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था अटलांटिक चार्टरके विरुद्ध है जिसकी एक धारामें कहा गया है कि किसी प्रकारका प्रादेशिक परिवर्तन तद्देशीय जनता की इच्छा बिना नहीं किया जा सकता। इस प्रश्न पर रूसियोंका दृष्टिकोण यही रहा है कि वे स्वयं इस मामलेके निर्णायक हैं और जिस पर उनका अधिकार हो गया है उसपर वे अपना प्रभुत्व कायम रखेंगे। यदि कर्जन पंक्तिको न्यायोचित समझ कर स्वीकार भी कर लिया जाय तो पश्चिममें इस हानिको पूर्ण करनेके लिये पोलोंको यथोचित भूमि नहीं मिली। सर विलियम वेवरिज उदारने कहा कि पक्षपात हीन तहकीकात कर्जन पंक्ति को ही पोलैंडकी स्वाभाविक सीमा निर्धारित करता है। १९३९ की सीमा इतिहासमें पशु शक्तिकी भित्ति पर खड़ी की गयी थी। अतः वे निस्सङ्कोच रूपसे कर्जन पंक्तिको पोलैंडकी सीमा मानने के लिये तैयार हैं। जर्मनीसे डैन्जिग और पूर्वी प्रशा ले लेना न्यायोचित ही होगा। उनके ख्यालसे अटलांटिक चार्टरकी किसी धाराके विरुद्ध यह बात नहीं होगी।

आगे चलकर आपने कहा कि हमें सरकारसे यह आश्वासन मिलना चाहिये कि (१) वह ऐसे कार्यमें सहायक न होगी जो पोलैंडकी स्वाधीनताके विपरीत हो, (२) ब्रिटेन बिना पूर्व परामर्शके जर्मनीके ऊपर अनिश्चित काल तक शासन करने और उसे निर्धन बनाने की कोई बेजा नीति नहीं अख्तियार करेगा और (३) कोई ऐसा कार्य नहीं किया जायगा जिससे कि विश्व सङ्गठन बड़ी बड़ी शक्तियोंके तानाशाहीके रूपमें बदल जाये।

कैप्टेन मैकइवान (अनुदार) ने कहा कि यदि इङ्गलैण्ड याल्टा कानफरेन्समें पोलैंड के अङ्ग भङ्गको स्वीकार न करता और लन्दनस्थित पोलैंडका पक्ष कायम रखता तो उसे आज लज्जित होनेका कोई कारण न होता, अधिकसे अधिक इसका यह परिणाम होता कि कूटनीतिक क्षेत्रमें ब्रिटेन अकेला रह गया होता। लेकिन दुःख है कि उसने १९४० के इस शिक्षाको ग्रहण नहीं किया कि न्यायके लिये अकेले ही लड़ना कोई भारी बात नहीं है। अतः मैं सरकारकी पोलैंड-सम्बन्धी नीतिका विरोध करता हूं।

मि० प्राइस (मजदूर) ने कहा, जाति और धर्मकी बुनियादपर यदि पोलैंडकी सीमा निर्धारित करनेके लिये कोई पक्षपात हीन छानबीन की गयी होती तो कर्जन पंक्ति ही स्वाभाविक सीमा मानी गयी होती।

कैप्टेन ग्राहम (अनुदार) के पूछा कि तीनों महाशक्तियोंने पोलैंडकी सरकारके उस मेमोरेण्डमकी बातको क्यों नहीं स्वीकार किया जिसमें यह कहा गया था कि पोल सरकारके लिये अन्तर्राष्ट्रीय कानून सन्निहित कोई भी ऐसा न्यायपूर्ण तरीका मान्य होगा जिसे दोनों पार्टी मिलकर निश्चित करें। आपने कहा कि लन्दनस्थित पोल सरकार यद्यपि वैध थी जिसके प्रति दो लाख पोल सैनिक तथा दूसरी सेनाओंने शपथ ग्रहण की थी, तथापि उससे किसी प्रकारका परामर्श नहीं लिया गया—न सम्मेलनके पहले और न उसके बाद ही। कैप्टेन ग्राहमने कहा कि इस युद्धमें सबसे

स्वदेश-वार्ता

केन्द्रीय सरकारका बजट

केन्द्रीय असेम्बलीमें १९४२-४६ का छठा युद्धकालीन बजट उपस्थित करते हुए अर्थ सदस्य सर रेजमी रेमैनने बताया कि चालू आर्थिक वर्षमें १९९ करोड़ ७७ लाख और आगामी सालके आनुमानिक बजटमें १६३ करोड़ ८९ लाखका घाटा रहेगा। १९४४-४५ में रक्षा व्ययकी संशोधित रकम ४५६ करोड़ ६४ लाख रुपया होगी जब कि प्रारम्भिक अनुमान ३०१ करोड़ २१ लाख रुपये खर्चा का था।

अर्थ सदस्यने घोषित किया कि इन्कम टैक्सपर सर चार्जमें रुपये पीछे ३ पाईकी वृद्धि की जायगी। यह स्लैब प्रणालीके अनुसार १५००० रु० के ऊपरकी आमदनीपर लागू होगा। देशान्तर्गत डाकपार्सलकी दरमें फी चालीस तोलापर ६ आनेकी वृद्धि की जायगी। टेलीफोनके सरचार्जके करमें तिहाईसे आधे तक बढ़ जायेगी और ट्रंक कालकी फीस २० से ४० प्रतिशत बढ़ जायेगी आर्डिनरी और एक्प्रेस टेलीग्रामोंपर सरचार्ज क्रमशः एक आना और दो आना बढ़ेगा। सर्तोंपर ड्यूटी साढ़े सात रुपये प्रति पौंड बढ़ जायेगी। सिगरेटमें भिन्न-भिन्न अनुपातसे प्रयोग की जानेवाली तम्बाकूको ३ श्रेणीमें विभाजित किया जायेगा और उनपर क्रमशः साढ़े सात रुपया ५ रु० और साढ़े ३ रु० ड्यूटी लगेगी। अतिरिक्त मुनाफा कर १ सालके लिये और जारी रहेगा। इन करोंसे ८ करोड़ ६० लाख की आमदनी अधिक होगी और इस तरहसे १६३ करोड़ ८९ लाख की आनुमानिक कमी घट कर १५२ करोड़ २९ लाख रह जायगी। अर्थ सदस्यने बतलाया कि मुद्रा-वृद्धि निरोधक उपाय बहुत अशोंमें सफल हुए और देश की आर्थिक दशा स्थिर रही। १९४४-४५ में विविध कर्जोंसे २८६ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। युद्धके आरम्भसे अब तक कर्ज खाते में ८३३ करोड़ रुपये हो चुके। अर्थ सदस्यने यह भी कहा कि इस वर्ष वे स्टेट ड्यूटी बिलका प्रस्ताव करेंगे।

कोयलेकी खान में स्त्रियां

देशके विभिन्न स्थानोंमें महिलाओं द्वारा सरकार के इस कार्यका विरोध किया जा रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रथाके विरुद्धउसने स्त्रियोंकोकोयलेकी खानमें काम करनेको फिरसे भेजनेके लिये आज्ञा जारी की है। बम्बई, दिल्ली और पूनामें इसके विरोधमें सभायें हो रही हैं।

फांसीकी सजा बहाल

अगस्त आन्दोलनके सिल-सिलेमेंआ-बकारी दारोगा की हत्या करनेके अभियोग में जिन दो नवयुवकों को तिन्नेवलीके दौरा जजने फांसी की सजा दी थी उसे मद्रास हाई कोर्टने बहाल रक्खी। इस सम्बन्धमें प्रीवी कांउसिलने अपीलकी दर्खास्त ना मन्जूर कर दिया।

भारतको राष्ट्र भाषा

वार्धागंजमें होने वाले अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी, प्रचार सभा सम्मेलनमें माहत्मा गांधीने कहा कि वही मनुष्य जो किसी समय एक थे आज दो भागो में बट गये हैं और उनकी भाषामें भी विन्नता आने लगी है यद्यपि वे अभी पूर्ण रूपसे भिन्न नहीं हो सकी हैं। मेरे ख्याल से ऐसा कोई कारण नहीं है कि जोभाषा हिन्दू और मुसलमानों दोनोंके द्वारा बोली जाती थी उसे राष्ट्र भाषा न बनाया जाय'

डा० सैयद महम्मदने कहा कि उर्दू हिन्दी और हिन्दुस्तानी तीनो एकही भाषा का नाम था। हिन्दी और उर्दूको एक करने में ६ महीनेके समय की आवश्यकता है। इस एकीकरणसे हिन्दू मुस्लिम एकता भी स्थापित होगी।

सम्मेलनमें और भी कई वक्ताओंने हिन्दी उर्दू समीकरणके लिये जोर दिया और कहा कि भारतमें एक राष्ट्र भाषा न होने के कारण उसकी उन्नति रुकी हुई है।

सम्मेलनमें दो महत्वके प्रस्ताव पास हुए। (१) हिन्दी जानने वाले उर्दू लिपिको सीखें और उर्दू जानने वाले हिन्दी लिपि सीखें। (२) १९ मेम्बरों की एक कमेटी बनाई जाये जो कोष का संकलन करे व्याकरणका निर्माण करे और भाषाको सुगठित करे।

भारतमें औद्योगिक शिक्षा

ऐसा समझा जाता है कि युद्धके बाद बढ़े हुए उद्योग धन्धाके कारण औद्योगिक विशेषज्ञोंकी मांग बढ़ जायेगी। अतः ऐसी सूचना मिली है कि भारत सरकारने एक ऐसी कमेटी नियुक्त किया है जो देशमें औद्योगिक शिक्षालय खोलनेपर विचार करेगी। कमेटी मि० एन० आर० सरकारके सभापतित्वमें काम करेगी।

सरकार पर मुकदमा

श्री श्रीप्रकाशके एक प्रश्नके लिखित उत्तरमें गृह सचिव मि० मूडीने यह स्वीकार किया है कि पुलिसके दुर्व्यवहारके लिये श्री जयप्रकाश नारायण सरकारपर मुकदमा चलाना चाहते हैं अतः वकीलसे मिलनेके लिये उन्होंने दरखास्त दिया है जिसे मंजूर कर लिया गया है।

तुंगभद्रा नदी सम्बन्धी योजना

मद्रासके गवर्नर सर आर्थर होपने तुङ्गभद्रा - प्रोजेक्टका उद्घाटन किया। इस योजनामें अनुमानतः बीस करोड़ रुपया लगेगा। तुंगभद्रा नदीपर एक बांध बांधा जायगा और मैसूर तथा हैदराबाद प्रत्येक रियासतको इससे आरम्भमें ६५ अरब घन फूट पानी मिलेगा। इस योजनाके अनुसार ४४० मील लम्बी नहर बनेगी तथा विद्युत शक्तिको भी उत्पन्न किया जायेगा। सम्पूर्ण योजनाके समाप्त होनेमें ८ वर्ष लगेंगे।

सप्रू-वायसराय मिलन

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितके मतानुसार सप्रू-वायसराय मिलनसे बहुत अधिक आशा नहीं की जा सकती। फिर भी उम्मेद है कि भारतकी राजनैतिक स्थिति सरल हो सकती है।

देशमें वस्त्र कष्ट

आसनसोलकी खबर है कि वहां कफनके लिये भी वस्त्र नहीं मिल रहा है। इसी प्रकार मुजफ्फरपुरकी खबर है कि वस्त्र न मिलनेसे वहां कई शादियां स्थगित कर दी गयीं।

जिन्ना की घुड़की

मि० जिन्नाने सिन्ध प्रान्तीय मुसलिम लीगके प्रेसिडेण्ट मि० जी० एम० सैयदके पास एक तार भेजा है जिसमें उन्होंने कहा है कि मि० सैयदने ऐसे काम किये जिससे उनकी पार्टी और नेताकी शानमें फरक पड़ा है।

श्रीमती रूजवेल्टका भा[illegible]

एक मास पहले श्रीमती प[illegible] श्रीमती रूजवेल्टका जो मिलाप [illegible] उसके सम्बन्धमें यह सूचना मिली [illegible] श्रीमती रूजवेल्टने भारतके सम्बन्धमें [illegible] दिलचस्पी लिया। लेकिन उन्होंने [illegible] विशेष परिस्थितिमें होनेके कारण [illegible] समय भारतकी कोई वास्तविक [illegible] नहीं कर सकतीं।

बंगाल किसान सभा मु[illegible]

अखिल भारतीय किसान सभाके [illegible] स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने सभाके [illegible] सेक्रेटरी, किसान सभा, बम्बईकी [illegible] आफिस, सम्पूर्ण बंगाल प्रान्तीय [illegible] सभा तथा बंगालकी कुछ जिलेकी [illegible] सभाके विरुद्ध अनुशासनकी कार[illegible] और उन्हें दो महीनेके लिये मुअ[illegible] दिया। स्वामीजीका कहना है कि [illegible] आज्ञाओं तथा निश्चयोंका इन[illegible] जान-बूझकर उल्लंघन किया।

त्रिराष्ट्र नायकोंके निर्णयकी आलोचना

ब्रिटिश पार्लमेंटमें गर्मागर्म बहस

गत सप्ताह ब्रिटिश पार्लमेंटमें याल्टा [कान्फ]रेंसके निर्णय पर प्रधान मन्त्री मि० [च]र्चिलने एक लम्बा भाषण किया, जिसका [साराश] अन्यत्र प्रकाशित है और उसके बाद [बह]स हुई। उक्त निर्णयपर विश्वास प्रकट [करने]के लिये मि० चर्चिलने विश्वासका एक [प्रस्]ताव पेश किया। लेकिन पोलैण्डके सम्ब-[न्ध]में उक्त सम्मेलनने जो निर्णय किया है, [उस]से अनुदार दलके भी अनेक सदस्य अस-[न्तु]ष्ट हैं। इसलिये अनुदार दली सदस्योंकी [ओ]रसे एक संशोधन रखा गया ताकि ब्रिटिश [सर]कारकी असफलता पर कटु टीकाटिप्पणी [की] जा सके।

मेजर पेथ्रिक अनुदारने कहा कि यदि [या]ल्टा सम्मेलनके समझौतेको निबाहा जा-[ये]गा तो पोलैण्ड अपने आधे राज्य, एक [तिह]ाई आबादी,८५ प्रतिशत तैल और आधे [लग]भग कारखानोंसे हाथ धो बैठेगा। [...]का प्राचीन नगर भी उसके हाथसे नि-[कल] जायेगा। यह समझौता रूस और पो-[लैंड]में हुई सन्धि तथा अटलांटिक चार्टरके [विरु]द्ध है। १९३९ में की हुई इङ्गलैंड और [पो]लैंडकी परस्पर सहायता सन्धिके भी [विरु]द्ध यह समझौता किया गया है। डा० [हे]न गेस्ट (मजदूर) ने मेजर पेथ्रिकका [वि]रोध करते हुए कहा है कि उनका आक्षेप [रू]सियोंके विरुद्ध भावना भड़कानेके लिये [कि]या गया है।

मि० डब्ल्यू० जे० ब्राउन स्वतन्त्रने मि० [पेथ्]रिकके विरोधमें कहा कि याल्टा सम्मे-[लन]में जो समझौता हुआ है वह न समझौता [होने]से कहीं अच्छा है।

मि० ग्रीनउडने प्रधान मन्त्रीकी वक्तृता [की] सराहना करते हुए कहा कि किसी राष्ट्र [के] सड़े हुए गन्दे विचारोंको नष्ट करनेके [मा]ने यह नहीं हैं कि उस राष्ट्रको ही नष्ट [कि]या जा रहा है। जर्मनीका दूसरा दांत [तो]ड़नेका यह मतलब कदापि नहीं है कि [शान्]ति समय की उसकी आवश्यकताके लिये [उस]की उत्पादन शक्ति कम कर दी जायेगी, [...] जर्मनीको यह बात अच्छी तरह [समझ]ा देना चाहिये कि युद्धोपरान्त किसी [भी] परिस्थितिमें उसे ऐसे साधनका त्याग [कर]ना पड़ेगा जो युद्धमें काम आ सकता हो। पोलैण्डके सम्बन्धमें मि० ग्रीनउडने कहा [कि] यह बात ब्रिटिश सिद्धान्तके खिलाफ है [कि] किसी राष्ट्रकी अनुपस्थितिमें और उसके [पी]ठ पीछे उसके भाग्यका निर्णय किया [जा]य। यूरोपके पूर्वमें स्वतन्त्र पोलैंडका होना [भवि]ष्यमें होनेवाले सम्भाव्य जर्मन आक्रमण [के] लिये चेतावनीका काम करेगा। मि० [ग्रीनउ]डने कहा कि मेरा ख्याल है कि ब्रिटिश [सर]कारने पोलैंडके साथ अच्छा बर्ताव नहीं [कि]या।

मि० चर्चिल—सारा उद्देश्य यह था कि [...] ऐसी पोल सरकार बनायी जाये जो [...]के साथ अपने भविष्य पर विचार [करे]।

मि० ग्रीनउड—पोल लोगोंको इस बात [पर बो]लनेका मौका नहीं दिया गया कि [उनके] देशको किस प्रकार विभक्त किया जा [रहा है]।

मि० चर्चिल—पोलोंसे अब इस बातपर परामर्श किया जा रहा है। लन्दन स्थित पोल सरकार तथा पोलैंड स्थित पोल सरकारको भिन्न भिन्न दो महाशक्तियां मानती थीं, अतः किसी भी पोल सरकारको याल्टा सम्मेलनमें बुलाना असम्भव था। अब एक ऐसी पोल सरकार बनायी जा रही है जो सभी राष्ट्रों के लिये मान्य हो और जिसमें पोलैंडकी राष्ट्रीयता निहित हो। पोलैंडकी यही सरकार उस देशके भविष्यके लिये उचित पथ ग्रहण करेगी और संयुक्त सरकारों द्वारा उस समय तक मान्य रहेगी जब तक कि उसकी स्थिति स्वतन्त्र प्रतिबन्ध रहित और आम चुनाव की नींवपर सुदृढ़ न हो जाये।

मि० ग्रीनउड—मैं प्रधान मन्त्रीकी कठिनाइयोंसे अवगत हूं फिर भी मेरा हृदय कहता है कि पोल लोगोंके लिये इतना महत्वपूर्ण और व्यापक निर्णय उनके पीठके पीछे नहीं होना चाहिये था।

पोलैंड सम्बन्धी सरकारी नीतिकी आलोचना करते हुए लार्ड डगलस अनुदारने कहा कि रूस और पोलैंडके सम्बन्ध पर चिन्ताका यही विषय है कि यह एक अत्यन्त शक्तिशाली राष्ट्रका अपनेसे छोटे और निर्बल राष्ट्रके साथ किये हुए व्यवहारका उदाहरण रहेगा। उन्होंने कहा कि ऐसी व्यवस्था अटलांटिक चार्टरके विरुद्ध है जिसकी एक धारामें कहा गया है कि किसी प्रकारका प्रादेशिक परिवर्तन तद्देशीय जनता की इच्छा बिना नहीं किया जा सकता। इस प्रश्न पर रूसियोंका दृष्टिकोण यही रहा है कि वे स्वयं इस मामलेके निर्णायक हैं और जिस पर उनका अधिकार हो गया है उसपर वे अपना प्रभुत्व कायम रखेंगे। यदि कर्जन पंक्तिको न्यायोचित समझ कर स्वीकार भी कर लिया जाय तो पश्चिममें इस हानिको पूर्ण करनेके लिये पोलोंको यथोचित भूमि नहीं मिली। सर विलियम वेवरिज उदारने कहा कि पक्षपात हीन तहकीकात कर्जन पंक्ति को ही पोलैंडकी स्वाभाविक सीमा निर्धारित करता है। १९३९ की सीमा इतिहासमें पशु शक्तिकी भित्ति पर खड़ी की गयी थी। अतः वे निस्सङ्कोच रूपसे कर्जन पंक्तिको पोलैंडकी सीमा मानने के लिये तैयार हैं। जर्मनीसे डैन्जिग और पूर्वी प्रशा ले लेना न्यायोचित ही होगा। उनके ख्यालसे अटलांटिक चार्टरकी किसी धाराके विरुद्ध यह बात नहीं होगी।

आगे चलकर आपने कहा कि हमें सरकारसे यह आश्वासन मिलना चाहिये कि (१) वह ऐसे कार्यमें सहायक न होगी जो पोलैंडकी स्वाधीनताके विपरीत हो, (२) ब्रिटेन बिना पूर्व परामर्शके जर्मनीके ऊपर अनिश्चित काल तक शासन करने और उसे निर्धन बनाने की कोई ऐसी नीति नहीं अख्तियार करेगा और (३) कोई ऐसा कार्य नहीं किया जायगा जिससे कि विश्व सङ्गठन बड़ी बड़ी शक्तियोंके तानाशाहीके रूपमें बदल जाये।

कैप्टेन मैकइवान (अनुदार) ने कहा कि यदि इङ्गलैण्ड याल्टा कानफरेन्समें पोलैंड के अङ्ग भङ्गको स्वीकार न करता और लन्दनस्थित पोलैंडका पक्ष कायम रखता तो उसे आज लज्जित होनेका कोई कारण न होता, अधिकसे अधिक इसका यह परिणाम होता कि कूटनीतिक क्षेत्रमें ब्रिटेन अकेला रह गया होता। लेकिन दुःख है कि उसने १९४० के इस शिक्षाको ग्रहण नहीं किया कि न्यायके लिये अकेले ही लड़ना कोई भारी बात नहीं है। अतः मैं सरकारकी पोलैंड-सम्बन्धी नीतिका विरोध करता हूं।

मि० प्राइस (मजदूर) ने कहा, जाति और धर्मकी बुनियादपर यदि पोलैंडकी सीमा निर्धारित करनेके लिये कोई पक्षपात हीन छानबीन की गयी होती तो कर्जन पंक्ति ही स्वाभाविक सीमा मानी गयी होती।

कैप्टेन ग्राहम (अनुदार) ने पूछा कि तीनों महाशक्तियोंने पोलैंडकी सरकारके उस मेमोरेण्डमकी बातको क्यों नहीं स्वीकार किया जिसमें यह कहा गया था कि पोल सरकारके लिये अन्तर्राष्ट्रीय कानून सन्निहित कोई भी ऐसा न्यायपूर्ण तरीका मान्य होगा जिसे दोनों पार्टी मिलकर निश्चित करें। आपने कहा कि लन्दनस्थित पोल सरकार यद्यपि वैध थी जिसके प्रति दो लाख पोल सैनिक तथा दूसरी सेनाओंने शपथ ग्रहण की थी, तथापि उससे किसी प्रकारका परामर्श नहीं लिया गया—न सम्मेलनके पहले और न उसके बाद ही। कैप्टेन ग्राहमने कहा कि इस युद्धमें सबसे

स्वदेश-वार्ता

केन्द्रीय सरकारका बजट

केन्द्रीय असेम्बलीमें १९४२-४६ का छठा युद्धकालीन बजट उपस्थित करते हुए अर्थ सदस्य सर रेजमी रेमैनने बताया कि चालू आर्थिक वर्षमें १९९ करोड़ ७७ लाख और आगामी सालके आनुमानिक बजटमें १६३ करोड़ ८९ लाखका घाटा रहेगा। १९४४-४५ में रक्षा व्ययकी संशोधित रकम ४५६ करोड़ ६४ लाख रुपया होगी जब कि प्रारम्भिक अनुमान ३०१ करोड़ २१ लाख रुपये खर्च का था।

अर्थ सदस्यने घोषित किया कि इन्कम टैक्सपर सर चार्जमें रुपये पीछे ३ पाईकी वृद्धि की जायगी। यह स्लैब प्रणालीके अनुसार १५००० रु० के ऊपरकी आमदनीपर लागू होगा। देशान्तर्गत डाकपार्सलकी दरमें फी चालीस तोलापर ६ आनेकी वृद्धि की जायगी। टेलीफोनके सरचार्जके करमें तिहाईसे आधे तक बढ़ जायेगी और ट्रंक कालकी फीस २० से ४० प्रतिशत बढ़ जायेगी आर्डिनरी और एक्प्रेस टेलीग्रामोंपर सरचार्ज क्रमशः एक आना और दो आना बढ़ेगा। छर्रोपर ड्यूटी साढ़े सात रुपये प्रति पौंड बढ़ जायेगी। सिगरेटमें भिन्न-भिन्न अनुपातसे प्रयोग की जानेवाली तम्बाकूको ३ श्रेणीमें विभाजित किया जायेगा और उनपर क्रमशः साढ़े सात रुपया ९ रु० और साढ़े ३ रु० ड्यूटी लगेगी। अतिरिक्त मुनाफा कर १ सालके लिये और जारी रहेगा। इन करोंसे ८ करोड़ ६० लाख की आमदनी अधिक होगी और इस तरहसे १६३ करोड़ ८९ लाख की आनुमानिक कमी घट कर १५२ करोड़ २९ लाख रह जायगी। अर्थ सदस्यने बतलाया कि मुद्रा-वृद्धि निरोधक उपाय बहुत अशोंमें सफल हुए और देश की आर्थिक दशा स्थिर रही। १९४४-४५ में विविध कर्जोंसे २८९ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ। युद्धके आरम्भसे अब तक कर्ज खाते में ८३३ करोड़ रुपये हो चुके। अर्थ सदस्यने यह भी कहा कि इस वर्ष वे स्टेट ड्यूटी बिलका प्रस्ताव करेंगे।

कोयलेकी खान में स्त्रियां

देशके विभिन्न स्थानोंमें महिलाओं द्वारा सरकार के इस कार्यका विरोध किया जा रहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय प्रथाके विरुद्धउसने स्त्रियोंकोकोयलेकी खानमें काम करनेको फिरसे भेजनेके लिये आज्ञा जारी की है। बम्बई, दिल्ली और पूनामें इसके विरोधमें सभायें हो रही हैं।

फांसीकी सजा बहाल

अगस्त आन्दोलनके सिल-सिलेमेंआबकारी दारोगा की हत्या करनेके अभियोग में जिन दो नवयुवकों को तिन्नेवलीके दौरा जजने फांसी की सजा दी थी उसे मद्रास हाई कोर्टने बहाल रक्खी। इस सम्बन्धमें प्रीवी कौंसिलने अपीलकी दर्खास्त ना मजूंर कर

भारतकी राष्ट्र भाषा

वार्धागंजमें होने वाले अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी, प्रचार सभा सम्मेलनमें महात्मा गांधीने कहा कि वही मनुष्य जो किसी समय एक थे आज दो भागो में बट गये हैं और उनकी भाषामें भी विन्नता आने लगी है यद्यपि वे अभी पूर्ण रूपसे भिन्न नहीं हो सकी हैं। मेरे ख्याल से ऐसा कोई कारण नहीं है कि जोभाषा हिन्दू और मुसलमानों दोनोंके द्वारा बोली जाती थी उसे राष्ट्र भाषा न बनाया जाय'

डा० सैयद महम्मदने कहा कि उर्दू हिन्दी और हिन्दुस्तानी तीनो एकही भाषा का नाम था। हिन्दी और उर्दूको एक करने में ६ महीनेके समय की आवश्यकता है। इस एकीकरणसे हिन्दू मुस्लिम एकता भी स्थापित होगी।

सम्मेलनमें और भी कई वक्ताओंने हिन्दी उर्दू समीकरणके लिये जोर दिया और कहा कि भारतमें एक राष्ट्र भाषा न होने के कारण उसकी उन्नति रुकी हुई है।

सम्मेलनमें दो महत्वके प्रस्ताव पास हुए। (१) हिन्दी जानने वाले उर्दू लिपिको सीखें और उर्दू जानने वाले हिन्दी लिपि सीखें। (२) १९ मेम्बरों की एक कमेटी बनाई जाये जो कोष का संकलन करे व्याकरणका निर्माण करे और भाषाको सुगठित करे।

भारतमें औद्योगिक शिक्षा

ऐसा समझा जाता है कि युद्धके बाद बढ़े हुए उद्योग धन्धाके कारण औद्योगिक विशेषज्ञोंकी मांग बढ़ जायेगी। अतः ऐसी सूचना मिली है कि भारत सरकारने एक ऐसी कमेटी नियुक्त किया है जो देशमें औद्योगिक शिक्षालय खोलनेपर विचार करेगी। कमेटी मि० एन० आर० सरकारके सभापतित्वमें काम करेगी।

सरकार पर मुकदमा

श्री श्रीप्रकाशके एक प्रश्नके लिखित उत्तरमें गृह सचिव मि० मूडीने यह स्वीकार किया है कि पुलिसके दुर्व्यवहारके लिये श्री जयप्रकाश नारायण सरकारपर मुकदमा चलाना चाहते हैं अतः वकीलसे मिलनेके लिये उन्होंने दरखास्त दिया है जिसे मंजूर कर लिया गया है।

तुंगभद्रा नदी सम्बन्धी योजना

मद्रासके गवर्नर सर आर्थर होपने तुङ्गभद्रा - प्रोजेक्टका उद्घाटन किया। इस योजनामें अनुमानतः बीस करोड़ रुपया लगेगा। तुंगभद्रा नदीपर एक बांध बांधा जायगा और मैसूर तथा हैदराबाद प्रत्येक रियासतको इससे आरम्भमें ६९ अरब घन फूट पानी मिलेगा। इस योजनाके अनुसार ४४० मील लम्बी नहर बनेगी तथा विद्युत शक्तिको भी उत्पन्न किया जायेगा। सम्पूर्ण योजनाके समाप्त होनेमें ८ वर्ष लगेंगे।

सप्रू-वायसराय मिलन

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितके मतानुसार सप्रू-वायसराय मिलनसे बहुत अधिक आशा नहीं की जा सकती। फिर भी उम्मेद है कि भारतकी राजनैतिक स्थिति सरल हो सकती है।

देशमें वस्त्र कष्ट

आसनसोलकी खबर है कि वहां कफनके लिये भी वस्त्र नहीं मिल रहा है। इसी प्रकार मुजफ्फरपुरकी खबर है कि वस्त्र न मिलनेसे वहां कई शादियां स्थगित कर दी गयीं।

जिन्ना की घुड़की

मि० जिन्नाने सिन्ध प्रान्तीय मुसलिम लीगके प्रेसिडेण्ट मि० जी० एम० सैयदके पास एक तार भेजा है जिसमें उन्होंने कहा है कि मि० सैयदने ऐसे काम किये जिससे उनकी पार्टी और नेताकी शानमें फरक पड़ा है।

श्रीमती रूजवेल्टका भा[illegible]

एक मास पहले श्रीमती पं[illegible] श्रीमती रूजवेल्टका जो मिलाप [illegible] उसके सम्बन्धमें यह सूचना मिली [illegible] श्रीमती रूजवेल्टने भारतके सम्बन्धमें [illegible] दिलचस्पी लिया। लेकिन उन्होंने [illegible] विशेष परिस्थितिमें होनेके कारण [illegible] समय भारतकी कोई वास्तविक [illegible] नहीं कर सकतीं।

बंगाल किसान सभा मु[illegible]

अखिल भारतीय किसान सभाके [illegible] स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने सभाके [illegible] सेक्रेटरी, किसान सभा, बम्बईकी [illegible] आफिस, सम्पूर्ण बंगाल प्रान्तीय [illegible] सभा तथा बंगालकी कुछ जिलेकी [illegible] सभाके विरुद्ध अनुशासनकी कार्र[illegible] और उन्हें दो महीनेके लिये मुअ[illegible] दिया। स्वामीजीका कहना है कि [illegible] आज्ञाओं तथा निश्चययोंका इन [illegible] जान-बूझकर उल्लंघन किया।

Regd No. C. 2229

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१ए, जम्मू बस्ती स्ट्रीट... सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—११ कलकत्ता मार्च १२, १९४५, Calcutta, MARCH, 12, 1945 मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

टोकियोपर हवाई आक्रमण

[प्र]शान्त महासागरमें सबसे प्रवीण अमे-[रिकन] एडमिरल मार्क ए० मिशर अमेरिकन [नौ]सेनाके प्रसिद्ध दल ५८ को लेकर टोकियो-[प]र आक्रमण कर रहे हैं। अमेरिकन बेड़ेके [भिन्न-]भिन्न दलोंमें जहाजोंकी संख्या भिन्न-भिन्न होती है, परन्तु मिशरके जिस दलने [फि]लिपाइन द्वीपों और फारमोसाकी हवाई [लड़]ाइयोंमें भाग लिया है, उसमें २७ हजार [ट]नके तेज चालवाले वायुयानवाहक जहाज थे। युद्ध आरम्भ होनेके समयसे अमेरिका [क]मसे कम १४ जहाज बना चुका है। [ये] ब्रिटिश वायुयानवाहक जहाज इलस्ट्रि-[य]ससे बड़े और तेज चालके हैं। प्रत्येक वायु-[या]नवाहकपर प्रायः सौ वायुयान हाते हैं। [जा]पानकी रक्षा करनेवाले लड़ाकू वायु-[या]नोंकी कुल संख्या अब शायद पन्द्रह [ह]जार वायुयानोंसे अधिक नहीं है। इसलिये [अ]मेरिकन स्थायी रूपसे प्रबल आक्रमण कर [स]केंगे। इसके उत्तरमें जापानी अवश्य ही [प्र]त्याक्रमण करेंगे; जो केवल वायुयानोंसे [ही] होगा और मिशरके पास इनका सामना [क]रनेके साधन भी हैं।

मोर्चेपर भारतीय रमणियां

एक भारतीय सैनिक प्रेक्षक लिखता है कि इस युद्धमें पहली बार भारतीय रम-णियां हमारे सैनिकोंका मनोरंजन करनेके लिये इटलीके अगले मोर्चेपर पहुंची हैं। ये सातवीं फौजी दिलखुश सभाकी सदस्याएं हैं। इस संगीत दलमें ९ सदस्याएं हैं, जिनमें मिस माइकेल, मिस बिस्मिल्ला, मिस अमीना, मिस सरदार अख्तर लाहौरवाली और मिस मीना तथा मिस महमूदा जो प्रसिद्ध रेडियो गायिका मिस जोहराकी बहनें हैं, उल्लेखनीय हैं। युद्धके खतरे और इटलीमें कड़ाकेका जाड़ा होनेपर भी यह संगीत दल दूर-दूर तक पड़े हुए भारतीय सैनिकोंके दलोंमें जा पहुंचता है और उनके लिये एक दो घंटे उनके परिचित भारतीय नाटक, गाने और नृत्यका आयोजन करता है। ये रमणियां अभी तक सहस्रों पंजाबी, सिख, पठान और अन्य भारतीय सैनिकोंका मनोरंजन कर चुकी हैं।

हड्डी जोड़नेवाली पुल्टिस

लन्दनके मिडलसेक्स अस्पतालके डा० ब्लुमने एक नयी पुल्टिसका आविष्कार कर चिकित्सा शास्त्रमें एक नया अध्याय जोड़ दिया है। नवयुवकों और बच्चोंकी टूटी हड्डियां प्राकृतिक रूपसे भी जुड़ जाती हैं, लेकिन उसमें समय अधिक लगता है। बमों तथा शस्त्रास्त्रोंसे आहत लोगोंकी संख्या जब अस्पतालमें बढ़ने लगी, तो ऐसी औषधि-का पता लगाना अनिवार्य हो गया, जो टूटी हड्डियोंको शीघ्र जोड़ दे और रोगीको अस्प-तालसे शीघ्र मुक्त किया जा सके। डा० ब्लुमने १४ खरगोशोंपर अपना प्रयोग शुरू किया और उन्हें एक ऐसी पुल्टिसका पता लग गया जो साधारण अवस्थामें जितने दिन में हड्डी जुड़ सकती है उससे बहुत पहले ही टूटी हड्डी जोड़ सकती है। इस पुल्टिसके द्वारा डा० ब्लुम भंग अस्थिपर सीधा फास्फोरसका योग पहुंचाते हैं और हड्डी शीघ्रतासे जुड़ जाती है। फास्फोरसका योग डा० ब्लुमने बिल्लियोंकी हड्डियों और गुर्दों से प्राप्त किया है। डा० ब्लुम अब हड्डियोंको मजबूत बनानेके लिये पलस्तर तैयार कर रहे हैं।

आदमीको उड़ानेवाले पतंग

धुरीराष्ट्रोंके गोताखोर जहाज शत्रुके जहाजी काफलेका पता लगानेके लिये अपने द्रष्टाओंको पतङ्गोंके द्वारा हवामें उड़ा देते हैं। इन उड़ाकोंका सम्बन्ध टेलीफोन द्वारा गोताखोरों जहाजोंसे रहता है और वे शत्रुके काफलेका पता लगाकर टेलीफोनसे अपने गोताखोर जहाजको सूचना दे देते हैं तथा गोताखोर शीघ्र अपने लक्ष्यपर आक्रमण कर देता है। इतिहासमें यह पहला अवसर है कि पतङ्गों द्वारा आदमी हवामें उड़ाये जाते हैं और इस प्रणालीका उपयोग युद्धकार्यमें होता है। 'एयरोप्लेन' नामक पत्रिकामें इसका विस्तृत विवरण प्रकाशित किया गया है। पतङ्ग एक हल्के धातुके तागेके सहारे उड़ाये जाते हैं और जब जरूरत होती है तो खींच लिये जाते हैं। इन पतङ्गों पर उड़नेवाले व्यक्ति किसी शत्रु विमानके आनेकी सूचना देते हैं, तो गोताखोर जहाज डूबकर भाग निकलते हैं और ये लोग अपनी छोटी नौका और पैराशूटके द्वारा अपनी जीवन-रक्षाकी चेष्टा करते हैं। उत्तर अटलांटिक महासागरमें हवाओंकी अवस्था स्थिर नहीं रहती। इसलिये इन पतङ्गोंसे काम नहीं लिया जा सकता। लेकिन अन्य महासागरोंमें ये बड़े उपयोगी साबित हुए हैं।

हैनोवर स्टेडियममें हिटलर जर्मन राजकुमार और वान पापेनके साथ फ्रांस और ब्रिटेनकी ललकारको स्वीकार कर रहे हैं।

चलती चक्की

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल सम्पर्क सम्मेलनके भारतीय प्रतिनिधियोंने समस्त ब्रिटिश साम्राज्यसे रंग-भेदकी भावना हटानेकी जोरदार अपील की।

—यह खूब रहा इस अपीलको चर्चिल की सरकार कैसे स्वीकार कर सकती है। रंगभेदके हट हो जानेसे साम्राज्य वादको जो धक्का पहुंचेगा।

* ० *

हिन्दू कोड कमेटीके सामने अपना बयान देते हुए सर्व श्री ब्रह्म और चौधरी आदिने कहा कि हिन्दू लड़कियोंके वयस्क होनेकी उम्र २० से २५ वर्ष कर दी जाय जिसे कम्युनिस्ट उनकी आजकी उम्रसे लाभ न उठा सकें।

—कम्यूनिस्टोंपर प्रहार करनेकी सूझ तो ऊंची है, कि ४ वर्ष बाद कम्यूनिस्टोंसे वे शादी न करेंगी। जनाब गधा पचीसी तो मशहूर ही है।

* ० *

काशीकी ललिता बाई नामक एक वेश्याने वसीयतनामा लिखकर २०००) नागरी प्रचारिणी सभाको दिया है।

—अपनेराम वेश्याको साधुवाद देते हैं कि उन्होंने भारतके हिन्दी भाषी विलासी पूंजीपतियोंके सामने एक अच्छा उदाहरण रखा।

* ० *

एक समाचारसे विदित हुआ है कि काशीमें कफनका अकाल है। एक महोदयने सरकारसे अपील की है कि कफनके लिये एक दूकान खोली जाय, जो रात-दिन खुली रहे।

—जनाब, जिन्दोंको तो कपड़ा मिलता नहीं, बेचारी सरकार मुर्दोंके लिये कहां से प्रबन्ध करे। फिर परलोक जानेके लिये भी क्या कपड़ेकी जरूरत है?

* ० *

अरब, ईरान, तुर्की आदि देशोंने धुरी-राष्ट्रोंके विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दी।

—बहती गंगामें हाथ धोनेकी कहावत तो मशहूर ही है।

* ० *

सर जेरमी रेसमैनने अपने बजट भाषणमें कहा है कि भारत सरकारको लगभग १६४ करोड़का घाटा रहेगा।

—वाह, भई चलते समय सर रेसमैन देशको इससे अच्छा सब्जबाग और क्या दिखाते।

* * *

सर मोहर लालने अपने बजट भाषणमें बतलाया कि पंजाब प्रान्त में किसानोंके लिये स्कूल खोले जायेंगे।

—अपने रामके कान यह सुनते ही किसी अज्ञात आशंकासे खड़े, होगये। क्यों कि क्लब नाम आज दिन सभ्य संसारमें नाम पाते-पाते बदनाम-सा हो गया है।

* ० *

अपने विचारोंको सुनकर एक क्लब भक्त बिचक उठे और लगे प्रश्नोंकी बौछार करने।

—अपने राम भी बौछारोंसे कब डरते हैं, जवाब देने लगे। जनाब आप इतने नाराज क्यों होते हैं। क्लब वह स्थान है जहां और कहीं न हो सकने वाले कर्म, अकर्म, सुकर्म और विकर्म सब अपना लहारस खेलनेमें व्यस्त रहते हैं। आज कल के बड़े-बड़ोंके असली दर्शन करने हों, उनके मुंहके दांत गिनने हों और 'हाथीके दांत दिखानेके और और खानेके और' वाली कहावतका असली उदाहरण दिखाना हो तो क्लबको छोड़ कर एक मात्र पवित्र स्थान और कहीं नहीं मिलेगा।

* * *

जलपाई गुडी की जनता सड़े हुए गेहूंका आटा खा रही है।

—एक समाचार

—भारत वासियोंको ब्रिटिश सरकारको धन्यवाद देना चाहिये कि उनके राज्यमें देशवासियोंकी जठराग्नि इतनी विलक्षण हो गयी है कि सड़ागला अन्न भी भस्म हो जाता है।

* * *

एक भारतीय अमेरिकामें जब अपने देशकी दुर्दशापर सोचता है तो उसे आत्मघात कर मरनेकी बात सूझती है।

—सर शान्ति स्वरूप भटनागर

—और जो भारतकी दुर्दशापर सोचता होगा उसे तो छातीपर घाव मारने की ही सूझती रहती होगी।

* * *

एक समाचारसे ज्ञात हुआ कि खां बहादुर हाजी मौला बख्शने सिंध मन्त्रिमण्डलमें स्थान प्राप्त कर लिया।

—अपने राम भी बहुत कहा करते थे कि लीगी मंत्रिमण्डलमें किसी प्रकार शामिल न होंगे। परन्तु सर गुलामका जाल कुछ ऐसा वैसा थोड़े ही होगा। अगर अपने भी फंसना चाहें तो फंस सकते हैं।

* ० *

लाहौरका समाचार है कि पंजाब असेम्बलीके विरोधी दलके नेता लाला भीमसेन सच्चरको गिरफ्तार कर लिया गया।

—ठीक ही है, जो सिंधने नहीं किया वह पंजाबने पूरा कर दिया।

मार्ग आदिकी कठिनाइयोंके कारण पार्लमेण्ट सदस्योंका शिष्ट मण्डल भारत न भेजा जा सकेगा।

—मि० एमरी

—यह क्यों नहीं कहते कि कठनाई तो यह है कि झूठे सचाई पर परदा पड़ा है उसके भी तो डर है।

...हित बस जिनके मनमाहीं।
...कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

...राष्ट्र भाषाका स्वरूप।

—:x:—

...समें अब कोई विवाद नहीं रह गया है ...स्वाधीन भारतकी राष्ट्र भाषा हिन्दु-...ी होगी। समस्त देशकी एकमात्र प्रति-...संस्था अखिल भारतीय कांग्रेसने इसे ...ार कर लिया है और यथा साध्य ...की कार्यवाही भी हिन्दुस्तानीमें, ...की लिपियां देवनागरी और उर्दू, अभी ...मानी गयी हैं, करनेका निश्चय किया ...महात्मा गांधीने अहिन्दीभाषी प्रान्तीय ...ोंको यहां तक चेतावनी दे दी थी कि ...में कांग्रेसके सालाना जलसोंमें कांग्रेस ...भाषण भी हिन्दुस्तानीमें ही दिये ...। इसलिये हिन्दुस्तानी समझना और ...पढ़ सकना अहिन्दी प्रान्तवालोंको ...ार्य विषय समझ लेना चाहिये। प्रांतों ...कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल स्थापित हुए थे, ...राष्ट्रभाषाका प्रचार कार्य विशेष जोर-...से चलाया गया था और प्रान्तीय सर-...ोंका उसमें बहुत बड़ा हाथ था। आज भी ...स-जैसे अहिन्दी प्रान्तमें राष्ट्रभाषा प्रचार ...ति जिस ढङ्गसे कार्य कर रही है, वह ...ी सन्तोषजनक है। यदि बीचमें वर्त-...महायुद्ध दाल-भातमें मूसलचन्दकी तरह ...आ धमका होता, तो निश्चित था कि ...हिन्दुस्तानी प्रचारका कार्य इतना ...क हुआ होता कि देखनेवाले आश्चर्य ...। लेकिन जब प्रचार कार्यके सूत्रधारपर ...नौकरशाहीकी शनिदृष्टि पड़ गयी, और ...गैरकानूनी संस्था करार दे दी गयी तब ...ार्यका संचालन कौन करे। इसलिये ...ने इस सम्बन्धमें जो कुछ भी योज-...तैयार की थीं, वे अधिकांशतः खटाईमें ...ी और अब तक पड़ी ही हुई हैं। ...प्रान्तोंमें हिन्दुस्तानीके प्रचारके नामपर ...विशेष व्यक्तियों द्वारा, जो कांग्रेसका ...ाम प्राप्त कर अधिकारी पदपर आरूढ़ ...थे, मनमानी करनेकी चेष्टा की गयी ...और राजा दशरथके स्थानपर छोटे-छोटे ...ोंको बादशाह दशरथ पढ़ाया जाने लगा ...इन लोगोंके प्रयास यदि खटाईमें पड़ ...तो एक प्रकारसे फायदा ही रहा क्योंकि ...की मनोवृत्तिका परिणाम मुसलिम लीग ...किस्तानसे कम सांघातिक नहीं होता। ...गत सप्ताह वर्धामें हिन्दुस्तानी प्रचार ...तिका वार्षिकोत्सव, जो १९४२ में अचा-...कांग्रेस नेताओंके जेल चले जानेसे अनि-...कालके लिये स्थगित हो गया था, ...त्मा गांधीके सभापतित्वमें हुआ और ...त्मा गांधीने अपने लिखित भाषणमें ...तिके ध्येय और मन्तव्योंपर प्रकाश ...और बताया कि ग्राम शिक्षकों एवं ...को हिन्दुस्तानीका पूर्ण ज्ञान प्राप्त ...लिये हिन्दी और उर्दू दोनों लिपियां सीखनी चाहिये। उनके मतानुसार हिंदुस्तानी लिखनेकी दो शैलियां देवनागरी और उर्दू हैं। प्रचार समितिमें दिये गये अन्य लोगोंके भाषणों और प्रस्तावोंको लेकर कुछ लोगोंमें, जो हिन्दुस्तानीके बहुत बड़े समर्थक समझे जाते हैं, इधर इसलिये असन्तोष दृष्टिगोचर हो रहा है कि अखिल भारतीय रेडियोकी तरह कुछ उर्दूके हिमायती महात्माजीके प्रभावको प्राप्त कर हिन्दुस्तानीके नामपर उर्दूका प्रसार चाहते हैं और समितिके सामने उन्होंने जो भाषण किये, उनमें वे उसने उद्देश्य को प्रकट करनेसे अपनेको रोक नहीं सके। उनके भाषणोंपर की गयी टीकाटिप्पणियोंको कुछ पत्रोंने प्रकाशित कर हिन्दुस्तानी प्रचार समितिके अधिकारियोंका ध्यान इस दिशामें आकृष्ट किया है और समितिके अवैतनिक प्रधान मन्त्रीको अपना वक्तव्य प्रकाशित कर स्थितिको स्पष्ट करनेकी आवश्यकता महसूस हुई है। प्रधान मन्त्री प्रिंसिपल अग्रवालने कहा है कि 'हिन्दुस्तानी वही है जो उत्तरी हिन्दुस्तानके देहातोंमें सर्वसाधारण जनता—हिन्दुओं और मुसलमानों द्वारा बोली जाती है। हिन्दी और उर्दू उसकी साहित्यिक शैली हैं। हिन्दुस्तानी प्रचारका उद्देश्य राष्ट्रभाषाका सङ्कलन करना है न कि हिन्दी अथवा उर्दूके विरुद्ध आन्दोलन उठाना। हिन्दी और उर्दूके सुलेखक सरल भाषाको अपनायें।'

सरल भाषाको अपनाना आवश्यक है, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, लेकिन सरल भाषाकी ओटमें देशकी भाषाको मक्का शरीफ की ओर ले जाना किसी भी प्रकार वांछनीय नहीं और जो लोग ऐसी चेष्टा करनेकी इच्छा रखते हैं वे देशके लिये खतरनाक हैं। हिन्दुस्तानीके नामपर अखिल भारतीय रेडियोने अरबी और फारसी शब्दोंसे परिपूर्ण जिस भाषाका प्रचार आरम्भ किया है, वह भारतकी संस्कृति और सभ्यताको गहरे गर्तमें गिरानेवाला है। इसीलिये अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलनकी प्रेरणा से हिन्दी भाषी जनता एवं विद्वानोंने उसका तीव्र बहिष्कार किया है। लेकिन जब तक स्वार्थी नौकरशाहीका सहयोग उसे प्राप्त है, और उसकी प्रतिद्वन्द्विता करनेवाली कोई दूसरी राष्ट्रीय संस्था उसके सामने नहीं आती, तब तक 'सैयां भये कोतवाल अब डर काहेका।' की लोकोक्ति ही वह चरितार्थ करती रहेगी। नौकरशाहीको तो ऐसे ही वितण्डावादोंमें मजा आता है, वह इन्हें हतोत्साह क्यों करे? उसका अस्तित्व, सच पूछा जाय, तो इन्हीं झगड़ोंपर ही निर्भर है। इसलिये उसकी सतत चेष्टा अनैक्यकी बेलिको हरी-भरी रखनेके लिये रहती है।

प्रारम्भमें उर्दू कोई अलग भाषा नहीं थी, बल्कि अवधी, मागधी, पाली आदिकी तरह यह भी हिन्दीकी ही एक स्थानीय बोली थी, जिसका आविर्भाव मुसलमान बादशाहोंके दरबारमें हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच विचारोंका आदान-प्रदान करनेके लिये हुआ था। अतएव अन्य बोलियोंकी तरह उसमें भी संस्कृत, प्राकृत आदिके काफी शब्द थे, और फारसीके भी थे। फारसी और संस्कृत भाषाओंके समन्वय से उसकी सृष्टि हुई थी और बाजार अथवा लश्करकी बोली कही जाती थी। साम्प्रदायिकताका विचार उस समय लेश भी उसमें नहीं था। लेकिन जब भाषामें राजनीतिज्ञोंका स्वार्थ प्राधान्य हुआ, तो उर्दूको एक अलग भाषा मान लिया गया और उसका सम्पर्क विशेष रूपसे मुसलमानोंसे ठहराया गया। हिन्दी हिन्दुओंसे सम्बन्धित होनेके कारण उससे अलग हो गयी। फरहंगे आसफियाके अनुसार, जो उर्दू भाषाका प्रामाणिक कोष माना जाता है, आज उर्दूमें ७९८४ शब्द अरबीसे, ६०४१ फारसीसे और केवल ५५४ संस्कृतसे लिये गये हैं और उर्दू भाषा खासी विदेशी अथवा विजातीय भाषा बन गयी है। हिन्दू संस्कृतिसे उसको कोई सम्बन्ध नहीं। ऐसी दशामें डा० ताराचन्द, मौलवी सुलेमान नदवी और श्री चन्द्रलाल जी की यह सिफारिश, कि उर्दूको ही हिन्दुस्तानीका स्थान दिया जाये, देशको कदापि मान्य नहीं हो सकती। इस सम्बन्ध में श्री सम्पूर्णानन्दजीने बिलकुल ठीक कहा है कि हमारे सामने हाटबाट और तीर्थस्थानकी भाषा बनानेका प्रश्न नहीं है, बल्कि हमको एक ऐसी भाषाकी आवश्यकता है जो राष्ट्र का सारा कार्य सुचारुरूपेण संचालित करनेकी क्षमता रखती हो; जिसका साहित्यिक कोष, शब्द भाण्डार पूर्ण हो और देशकी प्राचीन संस्कृति एवं सभ्यतासे पूर्ण सामंजस्य रखता हो एवं लिपि इतनी सरल और बोधगम्य हो कि अन्य प्रांतवालोंको उसे सीखनेमें विशेष कठिनाई अथवा अड़चन न हो। देवनागरी लिपिकी पूर्णता और वैज्ञानिकताको न केवल भारतीय, प्रत्युत् पाश्चात्य विद्वानों तकने स्वीकार किया और यह मुक्त कण्ठसे व्यक्त किया है कि यही एक ऐसी लिपि है, जिसमें हम जो कुछ लिखते हैं, वही पढ़ते हैं। उर्दू लिपि यह दावा नहीं कर सकती क्योंकि अंजुमन तरक्किये उर्दूके संचालक महोदय पं० ब्रजमोहन दत्तात्रेयके नामको भी जब तथाकथित हिन्दुस्तानी रेडियो ब्राडकास्टमें 'बिरिजमोहन दत्ताविरिया' का रूप दिया जाता है और 'किश्तियों' को नुक्तोंके हेरफेर से 'कसबियों' पढ़ा जाता है तो और की बात ही क्या है?

ऐसा लिखकर हमारा विचार उर्दूकी अवहेलना करनेका कदापि नहीं है। हम तो उसको वर्तमान अंग्रेजीसे भी अधिक उच्च और महत्वपूर्ण आसन देना चाहते हैं और सर्वसाधारणसे उस लिपिको सीखने तथा उर्दू साहित्यका अध्ययन करनेका अनुरोध करते हैं। लेकिन राष्ट्र भाषाके नामपर उर्दू लिपिका सीखना अनिवार्य बनाना हमें उचित नहीं जंचता। इस विषयमें हम युक्तप्रान्तीय असेम्बलीके अध्यक्ष तथा हिन्दी जगतके महान स्तम्भ श्री पुरुषोत्तम दासजी टण्डनके इस विचारसे पूर्ण सहमत हैं कि भाषा सरल सुबोधगम्य, हिन्दी और उर्दू शब्दोंके समन्वयसे बनी हो, लेकिन उर्दू लिपिकी अनिवार्यता न रखी जाये। क्योंकि सैद्धान्तिक दृष्टिकोणके अलावा इसमें अनेक व्यावहारिक कठिनाइयां भी आ जाती हैं। देवनागरी लिपिसे करीब-करीब सभी प्रांतीय भाषाओंकी लिपियोंका सामंजस्य-सा है, और उसको सीखनेमें लोगोंको विशेष कष्ट नहीं होगा। लेकिन उर्दू लिपिको, जो दाहिनेसे बायें टेढ़ी-मेढ़ी लिखी जाती है, औरोंको दूर रखिये, बंगाली मुसलमान भी स्वीकार नहीं करेंगे।

महात्मा गांधीने उर्दू लिपि जाननेके लिये सुझाव मुसलमान बन्धुओंकी सुविधा का ख्याल करके ही दिया है, ऐसा जान पड़ता है। हम महसूस करते हैं कि फारसी और अरबीके पण्डितों और पंजाब, सिन्ध आदिके मुसलमानोंको जो अधिकांशतः उर्दू लिपिका ही प्रयोग करते हैं, थोड़ी कठिनाई अवश्य होगी, लेकिन अन्य प्रान्तीय बंधुओं की कठिनाइयोंको दृष्टिगत रखते हुए उन्हें इतनी कठिनाई तो सह्य होनी ही चाहिये। हम यहां बिलकुल खुलेदिलसे साफ कर देना चाहते हैं कि इन सारी बातोंमें हम साम्प्रदायिक विचारोंको तनिक भी स्थान नहीं देते और उर्दू भाषा और लिपिको उसी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखते हैं जिससे हिन्दीको। सौभाग्यसे उर्दू भाषा और लिपिसे परिचय भी है। लेकिन यहां हमको सारे राष्ट्रकी सुविधाओंका ख्याल करना है। अखिल भारतीय मुसलिम लीगके प्रेसीडेंट मि० मुहम्मद अली जिन्ना भी उर्दू लिपि और उर्दू जबान से परिचित नहीं हैं। गुजराती और अंग्रेजी के आदी कायदे आजमको उर्दू लिपि सीखने में कम कठिनाई नहीं होगी, भले ही उर्दू जबान बोल लें। हमारा ख्याल है कि वे उर्दू बोलना भी नहीं जानते। कहनेका तात्पर्य यह है कि राष्ट्रभाषाके पदपर आसीन होनेवाली हिन्दुस्तानीका स्वरूप वही भाषा हो, जिसमें युक्तप्रांत, दिल्ली, मारवाड़, मध्य प्रान्त और बिहारके ९० प्रतिशत लोग बोलते हैं और उसकी लिपि देवनागरी रहे। टाइप राइटिंग, टेलीप्रिंटर आदिके सुविधानुसार कुछ संशोधन, परिवर्तन और परिवर्द्धन भले ही किये जायें। उर्दू लिपि भी लोग सीखें और उर्दू साहित्यके शायरोंकी कृतियोंका रसास्वादन शौकसे करें, लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी लिखनेकी शैली उर्दू लिपि न बनायी जाये।

कपड़ेका यह दुर्भिक्ष क्यों?—

अन्न-कष्ट तो था ही। वस्त्र दुर्भिक्षने कोढ़में खाज पैदाकर दिया। मात्र एक साड़ीके लिये कलकत्ते जैसी कुबेर नगरीमें संभ्रांत परिवारोंकी महिलाओंको रेशन कार्ड लेकर कई घण्टे तक कड़कड़ाती धूपमें तपस्या करनी पड़े, यह सुननेमें आठवें आश्चर्यसे कम कौतूहलप्रद्र्क बात लोगोंके लिये नहीं है। लेकिन बात बिलकुल सत्य है। यों तो सारा भारत ही अन्न और वस्त्रके अभावसे बुरी तरह व्यग्र और त्रस्त है और कई स्थानोंपर धोती साड़ी तथा अन्य आवश्यक कपड़े न मिलनेके कारण शादियां रुकी पड़ी हैं। लेकिन बङ्गाल प्रांत इस विषयमें भी सब प्रांतोंसे आगे निकलना चाहता है। तुर्रा यह है कि भारत सरकारने अपनी विज्ञप्तिमें हिसाब किताब जोड़कर बताया है कि बङ्गालको ३० नवम्बरको समाप्त होनेवाले गत ९ महीनोंमें भारतके अन्य प्रान्तोंकी अपेक्षा प्रति व्यक्ति अधिक कपड़ा सप्लाई किया गया है। यदि बात ठीक है तो आखिर यह कपड़ा गया कहां, जो सारेके-सारे प्रांतमें वस्त्रके लिये

त्राहि-त्राहि मची है। इसके लिये बङ्गाल सरकारकी नियन्त्रण : व्यवस्थाकी तारीफ की जाये या ब्लैक मार्केटके संचालकोंकी, जो जनताकी बेबसीसे अनुचित लाभ उठाकर दूना-तिगुना लाभ उठानेकी कुचेष्टा करते हैं। बङ्गालके लिये प्रति व्यक्ति १० गज कपड़ा एक वर्षमें सप्लाई करनेका जो कोटा निर्धारित किया गया है, वह अपर्याप्त है। इसलिये आवश्यकता इस बात की है कि व्यक्ति गत कोटेकी मात्रा बढ़ायी जाये और अन्नकी तरह कपड़ेका भी शीघ्र रेशनिङ्ग जारी किया जाये, जिससे पीड़ित जनताको थोड़ी राहत मिल सके और व्यर्थ उसे इधर उधरकी खाक छाननी न पड़े। क्या अधिकार जनताकी इस मांगको स्वीकारी करनेका विवेक दिखायेंगे ?

तकदीर भी कोई चीज है !—

'भरत :प्वास पिंजड़ा परे इआ समयके फेर। आदर दै दै बोलियत बायस बलिकी बेर।' कविकी उपर्युक्त उक्ति बावन तोले पाव रत्ती सत्य तब उतरती है जब हम भारत और तुर्कीके सम्बन्धमें किये जानेवाले मित्रराष्ट्रोंके वर्तमान: व्यवहारपर विचार करते हैं। कौन नहीं जानता कि प्रस्तुत महायुद्धके आरम्भसे ही भारत मित्रराष्ट्रोंके सुदृढ़ संगठनके एक प्रभावोत्पादक अङ्गकी हैसियतसे ५॥ वर्षोंसे फासिस्टवाद और नाजीवादसे लोहा लेता और आत्म-बलिदानका अपूर्व उदाहरण उपस्थित करता हुआ ब्रिटेन और समस्त मित्रराष्ट्रोंको गर्वसे शिर ऊंचाकर चलने योग्य बनाता आ रहा है। अधिकांश मोर्चोंपर मित्रोंकी सफलताओंका प्रधान कारण भारतीय लाड़लोंका शौर्य और पराक्रम ही बनता आ रहा है। अन्योंकी कौन कहे, स्वयं ब्रिटिश राज नेताओं और सम्राट तकने भारतीय सैनिकोंके पराक्रम और बलिदानकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। लेकिन आज सैन फ्रांसिस्कोमें होनेवाले मित्र-राष्ट्रोंके सम्मेलनमें साथ बैठकर भावी विश्वशांति समस्यापर विचार करने और विधान बनानेके लिये आमन्त्रित किये जाते हैं तुर्की, सीरिया, लेबनान तथा अन्य-अन्य राष्ट्र, जिनका वर्तमान युद्धमें सिवा निरपेक्ष दर्शकके और कोई काम नहीं रहा है। तुर्की तो अधिकांशमें जर्मनीका, जिसके गर्मरक्तके लिये आज मित्र राष्ट्र भूखे शेर बन रहे हैं, व्यापारिक मित्र रहा है और उस क्रोमकी सप्लाई करता रहा है, जिसका युद्ध-सामग्री तैयार करनेमें विशेष रूपसे उपयोग किया जाता रहा है। लेकिन याल्टा निर्णयके बाद जब १ मार्चके पहले उसने ऐसे समयमें जर्मनीके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी, जब हाथी सदृश विशालकाय और शक्ति सम्पन्न जर्मनी बुरी तरह दल-दलमें फंस गया है, तो वह मित्र पंक्तिमें बैठने योग्य बन गया। संकटमें अपने पुराने मित्रके साथ ऐसा व्यवहार करनेवाले व्यक्तिको, यदि भारत होता, तो मीर जाफर और जयचन्दसे अधिक महत्व नहीं देता; लेकिन जो अपने विरोधीका रक्तपान करनेके लिये बेजार हो रहे हैं, हिंसा जिनकी नस नसमें व्याप्त हो रही है, उनको तो वेही लोग मित्र मालूम होंगे जो विजित पंगु शत्रु का रक्त बहानेके लिये उसपर अन्याय पूर्ण वार करनेको तैयार हैं। इसलिये यदि उनमें इतनी भी शिष्टता न दिखायी पड़े कि अपने सच्चे मित्रकी सेवाओंके लिये उसको पुरस्कृत करें, तो इसमें आश्चर्यकी बातही क्या? लेकिन लन्दनमें हुए कामनवेल्थ रिलेशंस कानफरेंसमें भाग लेनेवाले सर विजयप्रसाद सिंह राय तथा सर मुहम्मद जफरुल्ला आदि तकको ब्रिटेनका यह आचरण बिलकुल अनुचित मालूम हुआ है और उन्होंने इसे भारतके साथ घोर अन्याय बताया है। परन्तु उन्हें याद रहना चाहिये कि ब्रिटिश राजनेता भारतके बहुत पुराने स्वयम्भू ट्रस्टी हैं। इसलिये भारतके विषयमें जो कुछ भी वे सोचते और करते हैं, बकौल भारतके पुराने नमक-ख्वार लार्ड हेलीफैक्सके भारतकी भलाईके लिये ही करते हैं। भूतकालके अनेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनोंमें उन्होंने भारतीय स्वार्थोंकी रक्षाके लिये जो प्रयास किये हैं वे लोक प्रसिद्ध हो चुके हैं। सैन-फ्रांसिस्को सम्मेलनमें भी भारतकी ओर वे सारी 'कार्यवाही' कर डालेंगे, इसमें शक करनेकी गुंजाइश नहीं।

आखिर फायदा क्या ?—

ब्रिटिश पार्लमेंटके अनेक सदस्यों एवं लार्डोंने यह सुझाव रखा है कि भारतकी वास्तविक अवस्थाका पता लगानेके लिये एक सर्वदलीय प्रतिनिधि मण्डल भारत भेजा जाये। लार्ड स्ट्रेबोल्गीने इस सम्बन्धमें एक पत्र भी लन्दनके 'टाइम्स' नामक पत्रमें लिखा है। लेकिन हमारे भारत मन्त्रीने भारतकी ग्रीष्मऋतु तथा आवागमन सम्बन्धी अन्य कठिनाइयोंका पहले ही उल्लेख कर दिया है, जिससे यह साफ मालूम होता है कि मि० एमरी नहीं चाहते कि वह दल भारत आकर ढोलकी पोलका पता लगाये। इसलिये ब्रिटिश लार्डोंके इस प्रयासको सफलता मिल सकेगी इसमें महान संदेह है। यदि सफलता मिल भी जायेगी और प्रतिनिधि-मण्डल भारत आकर यहां की अवस्थाकी जानकारी व्यक्तिगत रूपसे प्राप्त करेगा तो, भी क्या पता कि मेसर्स चर्चिल एमरी एवं को० दलके प्रतिनिधि मि० सोरेंसन एवं लार्ड स्ट्रेबोल्गी दलके प्रतिनिधियोंसे मतैक्य स्थापित कर सकेंगे। मुण्डे-मुण्डे मतिर्भिन्नाका अपवाद यह ब्रिटिश प्रतिनिधि दल ही क्यों बनने लगा ? ऐसी दशामें जो रिपोर्ट पार्लमेंटके सामने पेश की जायेगी, उसमें भी वही शिकायत बनी ही रहेगी कि प्रतिनिधियोंका मत-विभेद भारतको स्वाधीन बनानेमें सहायक नहीं होता। दूसरी बात यह कि जिस ब्रिटिश पार्लमेण्टपर चर्चिल कम्पनीका इतना अधिक प्रभाव है कि उसकी सरकारकी कटु आलोचना करनेके बाद भी उसमें विश्वासका प्रस्ताव सर्वसम्मतिसे पास होता है, वह पार्लमेंट भारतकी स्वाधीनताके लिये कोई क्रियात्मक कार्य कर सकेगी, ऐसी आशा करना दुराशा-मात्र है। इतना फायदा हो सकता है कि अपने ब्रिटिश मित्रोंका स्वागत सत्कार करनेके लिये भारतीयोंको एक अवसर अवश्य प्राप्त होगा। लेकिन यह स्वागत-सत्कार गरीबीमें आटा गीला करनेके समान ही होगा। अपनी आर्थिक कठिनाइयोंको थोड़ी देरके लिये भूलकर भारतीयोंके स्वागत सत्कार करनेका बदला यदि ब्रिटिश प्रतिनिधियोंने अमेरिकामें भारतके सम्बन्धमें प्रचारित ९० बातोंमें एक और बातको जोड़ कर दिया, तब तो जलेपर नमक छिड़कनेके समानही होगा। इसलिये मि० एमरी उक्त मण्डलके कार्यमें कठिनाइयां उपस्थित करनेका जो प्रयास कर रहे हैं, उनकी दृष्टिसे तो वह उचित है ही। हम भी इसे अच्छा ही समझते हैं। क्योंकि चर्चिल कम्पनी वह बनिया नहीं जो अपना भाव किसीके प्रभावमें आकर बढ़ाये।

सैन-फ्रांसिस्को एक कसौटी—

कहनेकी आवश्यकता नहीं कि अमेरिकाके सैन-फ्रांसिस्को नगरमें आगामी २५ अप्रेलसे मित्र राष्ट्रोंका जो सम्मेलन होनेवाला है,वह मित्रोंके बहु-घोषित उच्च आदर्श और ध्येयकी कसौटी होगा। याल्टा सम्मेलनमें युद्धोत्तर यूरोपकी शासन व्यवस्थाका जो निर्णय तीन महान मित्र-राष्ट्रोंके कर्णधारोंने सम्बन्धित देशोंके प्रतिनिधियोंकी अनुपस्थितिमें ही कर डाला है, उससे यूरोपके छोटे राष्ट्रोंमें कम असन्तोष नहीं है। फ्रांसने तो अपना असन्तोष प्रेसीडेंट रूजवेल्टके निमन्त्रणको अस्वीकार कर प्रकट भी कर दिया है। जो भी हो, इस निर्णयके सम्बन्धमें त्रिराष्ट्र नायकोंका कहना है कि युद्धके बाद समस्त लघुराष्ट्रोंको अपने शासनके सम्बन्धमें स्वतन्त्र रूपसे निर्णय करनेका अधिकार दिया जायेगा। अमेरिका और रूसके सम्बन्धमें तो अभी कोई ऐसी बात देखनेमें नहीं आती, जो उनकी घोषणाओंके विरुद्ध हो, लेकिन परतन्त्रताकी घोर यन्त्रणा सहनेके बाद भी फ्रांस अबतक अपने साम्राज्यके लोभको संवरण करनेमें असमर्थ मालूम होता है। लेबनान और सीरियाके सम्बन्धमें जेनरल डीगाले अपने पुराने अधिकारको अब भी छोड़ना नहीं चाहते और ब्रिटिश प्रीमियर उनकी मांगसे सहानुभूति रखते हुए मालूम होते हैं। इसमें चोर चोर मौसेरे भाई जैसी ही बात है। लेकिन अमेरिका और रूसने लेबनानमें फ्रांसके अधिकारको खुले आम अस्वीकार कर दिया है। प्रेसीडेंट रूजवेल्टने फिलिपाइन द्वीपपुञ्जके सम्बन्धमें १९४१ में ही अपनी स्पष्ट घोषणा कर दी थी और आज फिलिपाइनवासी तथा अमेरिकन सैनिक वहां स्वामी-सेवककी भांति नहीं, प्रत्युत दो मित्रकी तरह जापानसे लोहा ले रहे हैं। लेकिन बर्मामें इसके बिलकुल विपरीत अवस्था है। वहां ब्रिटिश, भारतीय, आस्ट्रेलियन और अफ्रीकन सैनिक बराबर जापानी सैनिकोंको भगाते जा रहे हैं और आशा की जाती है कि बर्मासे जापानियोंको साफ करनेमें बहुत दिन नहीं लगेंगे; लेकिन बर्मा सचिव मि० एमरीके दिमागमें अबतक यह बात नहीं आ सकी है कि बर्माको स्वाधीन बनानेकी घोषणा कर दीजाये। कहते हैं कि भावी सैन फ्रांसिस्को कानफरेंसमें सुदूरपूर्वकी समस्याओंपर ही विचार किया जायेगा। देखना यह है कि इस सम्मेलनमें भी त्रिराष्ट्र नायकोंके प्रतिनिधि अकेले ही अपना निर्णय दे डालते हैं या जिनके सम्बन्धमें निर्णय करना है उनके प्रतिनिधियोंकी उपस्थितिमें उनके परामर्शोंको दृष्टिगत रख... देते हैं। भारतको तो अबतक निर्... किया गया है। आगेकी भगवान... यह बिलकुल निस्संदेह है कि... डीगोले सैन-फ्रांसिस्को कानफरेंसमें... भविष्यके सम्बन्धमें मि० चर्चिलकी... ही समर्थन करेंगे। लेकिन... प्रेसीडेंट रूजवेल्ट अपना कैसा... प्रकट करते हैं, यह बात कानफरेंसमें... मालूम होगी। अगर भारत और... भाग्यको झूलेमें ही झूलते रहने दि... तो यह निश्चित है कि स्थायी वि... कभी स्थापित नहीं की जा सकती। स्टालिन जापानसे सन्धि-सूत्रमें आ... कारण जापानके सम्बन्धमें भले ही... कहें, लेकिन भारतके सम्बन्धमें स्प... दृष्टिकोण प्रकट करनेसे अगर वे... तो उनके सिरपर भी फासिस्टवादका... बंधे बिना रह सकेगा, कमसे कम हम... यही विश्वास है।

पदूकोटा राज्यको बधाई—

काफी हिचकिचाहट और... बाद अन्तमें दक्षिणी भारतके... राज्यने सन्मार्गका अवलम्बन किया... हर्षका विषय है और उसके इस... सुनकर मानव समाज सेवक हर्ष... फूले न समायेंगे। पदूकोटाकी व्यव... परिषद्ने अपने गत अधिवेशनमें एक... पासकर मन्दिरोंसे देवदासी प्रथा... देनेकी सिफारिश की थी। समाज... तो इस धार्मिक रूढ़िके विरुद्ध ब... आवाज उठायी थी; लेकिन रियासत... कारियोंके कान अभी तक युगकी... सुननेमें असमर्थ थे। किंतु हर्ष है... कोटाका, निर्णय देरसे जरूर आया... आया दुरुस्त और इसका अनुकरण... भी अविलम्ब किया जायेगा। देव म... इस कुप्रथाका प्रचलन किस अन्धकार... युगकी देन है, यह तो हम न... सकते, लेकिन इससे देवालयोंका... बहुत दूषित हो गया है, इसको... अस्वीकार नहीं कर सकता। गांधीने जब देवालयोंको वेश्या... अत्याचारका स्थान कहा है तो... कुप्रथाओंकी ओर संकेत किया है। और प्रकाशके वर्तमान युगमें... वास्तवमें हिन्दू धर्मके माथेपर... टीका लगानेवाली हैं। इसलिये जो... या जन-समुदाय इनका उन्मूलन... समर्थ हो, वह वास्तवमें समाज सेवा... मानव प्रशंसाका पात्र है। पदूकोटा... स्थापिका परिषद और उसके... देवदासी जैसी कुप्रथा उठा देनेके... पढ़कर हम उन्हें हार्दिक बधाई दि... नहीं रह सकते।

शान्ति संस्थापन या तीसरे युद्धका बीज बपन

(लेखक—श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार)

...कालसागरकी लघु लहरियोंके बीच ...के रमणीक उद्यानोंके मध्यकालीन वैभव ...जारोंके महलके अन्दर त्रिराष्ट्रोंके ...ओं और उनके पार्षदोंका सम्मेलन ...हो गया। इस परिषदकी सफलताके ...बनाये जा रहे हैं। कहा जाता है कि ...राष्ट्रोंके बीच जर्मनी जिस अनैक्य और ...की आशा करता था, वह दुराशा ...हुआ। मित्र राष्ट्रोंकी एकता चट्टानके ...व दृढ़ सिद्ध हुई और जिन बातोंपर उग्र ...तीव्र मतभेदकी आशङ्का थी और जिनके ...मित्र राष्ट्रोंमें फूट पड़नेकी सम्भावना ...न सब बातोंपर एकता हो गयी। यह ...वा किया गया है कि याल्टा कानफरेंस ...व-शान्ति और छल-साम्राज्यकी नींव ...दी है। क्या यह ...? क्या याल्टा ...रेंसने सचमुच ...-शान्ति और ...साम्राज्यकी स्था-...का बीज बपन ...है, या बीसवीं ...के दूसरे महायुद्धसे ...अधिक विनाशक ...संहारक महा-...की नींव डाली है? ...इससे पराधीन, ...और दलित ...ग्रस्त जातियोंमें ...आशा का उदय ...है? क्या उनमें ...यमें उन्नत और ...वीन होनेका वि-...स उत्पन्न हुआ है? ...यह युद्ध जिस ...की रक्षा और ...को दूर ...के लिये लड़ा जा ... उसको पूरा ...लिये कोई कदम ...या गया है? इन ...प्रश्नोंका उत्तर ...ओंकी ओरसे यह ...गया है कि ...कानफरेन्सके ...योंकी त्रिनायकों ...घोषणा जर्मनीके लिये मृत्यु लेख है! ...है। श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितने ...में भाषण करते हुए कहा है कि भार-...स्वाधीनतापर विश्व-शान्ति निर्भर है। ...घोषणा इसको स्वीकार नहीं करती, ...दुनियामें शान्ति स्थापित नहीं कर ...गी।

निर्णयका आधार

...ल्टा कानफरेन्सके निर्णयोंकी घोषणा ...आधार प्रतिहिंसा और प्रतिरोध है। ...इस बातको भुला दिया गया है कि ...परिससे शांत नहीं होती। इसमें आग ...बुझानेकी कोशिश की गयी है। ...का प्रेम-साम्राज्य स्थापित करनेका ...उन्होंने यत्न नहीं किया है। उन्होंने पराजित जर्मनीपर सैनिक शासन स्थापित करनेका विचार किया है। यही नहीं है, वे हिटलरके जर्मनी या नाजीवादका विनाश ही नहीं करना चाहते, बल्कि फ्रेडरिक महान और प्रिन्स बिस्मार्कके जर्मनीका यूरोपके नक्शेसे अस्तित्व मिटा देना चाहते हैं। वे जर्मनीको तीन, और यदि फ्रांस उनको साथ देनेको राजी हो तो उसको चार भागोंमें बांट देना चाहते हैं। क्या जर्मन राष्ट्रको छिन्न-भिन्न करके, जर्मन राष्ट्रकी एकवाकी अनुभूतिको पैरों तले रौंद करके अथवा अपमानजनक फौजीशासन जर्मनीपर स्थापित करके विश्वमें शान्ति स्थापित की जा सकती है? पोलैंडको तीन बड़ी शक्तियों—रूस, आस्ट्रिया और प्रशियाने बांट लिया था। पर क्या वे पोलोंको नष्ट कर सके? इसलिये यह कहना कि याल्टा कानफरेन्सने विश्व-शान्ति और छल साम्राज्यकी स्थापनाकी नींव डाल दी है, शान्तिका उपहास करना है।

पार्श्वभूमि

याल्टा कानफरेन्समें त्रिनायकोंने जर्मनी और यूरोपका जो भाग्य निर्णय किया है, उसपर विचार करनेसे पहले कानफरेन्सकी पार्श्वभूमिका जानना आवश्यक है। तीनों की महत्वाकांक्षा क्या है और उनके उद्देश्य क्या हैं? किन मनोरथोंको लेकर वे इस युद्ध में प्रवृत्त हुए और वे विजय और शांति किस लिये चाहते हैं? संयुक्त राष्ट्र अमेरिका, ब्रिटिश लेखक रिडेलके अनुसार चीनपर अपनी राजनीतिक प्रभुता, (२) जापान और सम्भवतः चीनपर भी स्थायी सैनिक शासन और अधिकार स्थापित करके प्रशांत और छदूर पूर्वपर आर्थिक सार्वभौम सत्ता और (३) विश्वमें—विशेषतः एशियायी बाजारपर आर्थिक प्रभुत्व स्थापित करना चाहता है। इसलिये वह भारत, चीन, हिन्दचीन आदि देशोंकी स्वतन्त्रताका पक्षपाती और ब्रिटिश साम्राज्यवादके अत्याचारोंका निन्दक है। अमेरिकाको जमीन और देश नहीं चाहिये; केवल बाजार चाहिये।

ब्रिटिश साम्राज्यवाद जिन भौतिक अवस्थाओंकी ऐतिहासिक उपज है उनका अब लोप हो गया है या होता जा रहा है। भारत और अफ्रीकाका वह शोषण राजनीतिक और सैनिक आधिपत्यके बिना नहीं कर सकता। विशाल सैनिक शक्तिके द्वारा वह अपनी आमदनी नहीं बढ़ा सकता। रूस और अमेरिका उसके प्रतियोगी उससे अधिक शक्तिशाली हैं। यही नहीं वे अपनी सीमाके बाहर जनताकी सहानुभूति भी प्राप्त करनेमें समर्थ हैं। इसलिये ब्रिटेनका उद्देश्य है कि भारत और उसका साम्राज्य बना रहे, पूर्वीय सामुद्रिक मार्गोंपर सैनिक नियन्त्रण और यूरोपकी पुरानी शासक श्रेणीसे मैत्री करके यूरोपपर अपना प्रभुत्व कायम रखे। इस उद्देश्यकी पूर्तिके लिये दो मोर्चोंपर—रूस और अमेरिका—लड़ाई करना या दोनोंमें सन्तुलन करना, ये दो मार्ग हैं। मि० चर्चिल ने पिछले मार्गका अवलम्बन किया है और यह मार्ग ब्रिटेनका जाना-पहचाना और उसका पहलेका खेला खेल है।

यूरोपपर अधिकार और छदूर पूर्वपर स्वामित्व स्थापित करनेमें स्टालिनका रूस जारकालिक रूसकी अपेक्षा आज विशेष लाभजनक स्थितिमें है। आर्थिक दृष्टिसे रूस आज बलवान है। उसके आर्थिक यन्त्रका ढांचा मजबूत है और यूरोपीय और चीनी जनता की सहानुभूति उसको प्राप्त है। जल्दी या देरमें रूसकी यूरोपमें इङ्गलैंडसे या चीनके अन्दर अमेरिकासे या एक ही साथ दोनोंसे लड़ाई होनी अनिवार्य है। नेपोलियनने भविष्यवाणी की थी कि '२० वीं सदीका यूरोप कज्जाक या रिपब्लिकन होगा'। इसलिये यदि १९६० से पहले यूरोपमें कोई क्रान्ति नहीं होती तो समझना चाहिये कि तीसरा विश्व-युद्ध अनिवार्य है और आज के विश्वका मानचित्र उसकी रूपरेखाको हमारी आंखोंके सामने रख रहा है। इस स्थितिको टालनेके लिये त्रिनायक याल्टामें जमा हुए थे, क्या वे इसमें सफल हुए?

दो सिद्धान्त

त्रिनायकोंके निर्णयका आधार यह सिद्धान्त है कि अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठनके ऊपर लड़ाईके बाद तीनों बड़े राष्ट्रोंके बीच सैनिक मैत्री बनी रहनी चाहिये। पर इतिहासमें इस बातके उदाहरण नहीं मिलते कि सैनिक मैत्री दो देशों की कुछ सालोंसे ज्यादाकी रही हो। राष्ट्रीय नीति और आकांक्षा बदलती रहती है। नेताओंके प्रति जनताकी निष्ठा बदलती रहती है। दो नेताओंके वैयक्तिक मैत्रीके आधारपर राष्ट्रोंकी मैत्री ज्यादा दिन नहीं टिक सकती। चर्चिल-रूजवेल्ट मैत्रीके आधारपर एंग्लो-अमेरिकन मैत्री नहीं रह सकती। पश्चिमी मोर्चेपर फील्ड मार्शल माण्टगोमरीके अधीन अधिक सेना है, इसका ढोल पीटते हुए ब्रिटिश पत्र कभी नहीं थकते। मित्रोंके युद्ध प्रयत्नोंमें अमेरिकाका प्रमुख है, इसकी शिकायत करते हुए ब्रिटिश पत्र कभी नहीं थकते। युद्धोत्तर कालकी हवाई सर्विस-योजनामें अमेरिका और इङ्गलैंड एकमत नहीं हैं। ब्रिटिश साम्राज्यकी प्रतिवादी नीतिकी अमेरिकन आलोचनाका जवाब ब्रिटेनकी ओरसे चीनी लोगोंके साथ अमेरिकनों द्वारा किये गये व्यवहारोंका उल्लेख करके दिया
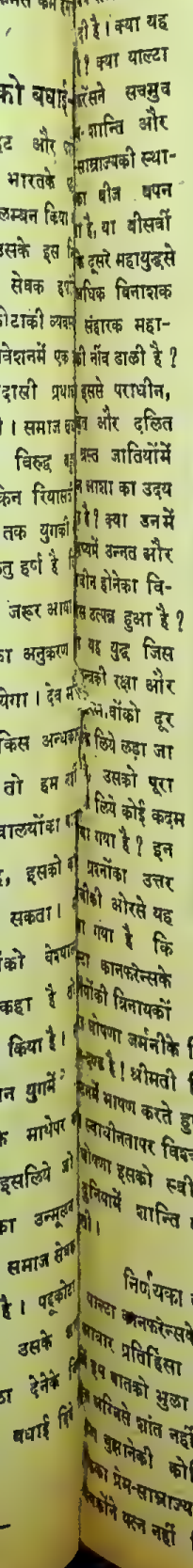
याल्टा निर्णयके अनुसार हिटलरके जर्मनीका बंटवारा। प्रत्येक मित्रराष्ट्र-कर्णधार अपने हिस्सेमें राष्ट्रीय झण्डेको फहरा रहा है

गया है। रूजवेल्टकी चतुराई और उनके कौशल और मि० चर्चिलकी दृढ़ता और संलग्नताके कारण एंग्लो-अमेरिकन सैनिक मैत्री कायम रही है। आग्नेय एशिया और प्रशान्त कमानका सेनानी अमेरिकनको बनाने का अमेरिकामें आन्दोलन चल रहा है, जिसको ब्रिटेन अच्छा नहीं समझता। अनेक गुप्त बातोंको प्रकाशित करनेका अभियोग अमेरिकन परराष्ट्र विभागपर किया गया है। इसलिये जब तक एंग्लो-अमेरिकन मैत्री राजनीतिक स्वार्थकी एकताके आधारपर स्थापित नहीं होती और इस प्रकार दोनोंकी व्यापारिक और आर्थिक प्रतियोगिताकाअन्त नहीं होता, तब तक दोनोंके सम्बन्ध कभी भी टूट सकते हैं। रूजवेल्टके प्रतिनिधि मि. फिलिप्सको लार्ड लिनलिथगोने महात्मा गांधीसे जेलमें मिलने नहीं दिया था। तभी इस सम्बन्धके टूटनेका भय उपस्थित हो गया था। चर्चिल रूजवेल्ट भी इस सम्भावनासे परिचित हैं। यही कारण है वे एंग्लो-अमेरिकन साम्राज्यकी स्थापना करना चाहते हैं और अंग्रेजी भाषा भाषियोंको एक सूत्रमें आवद्ध करना चाहते हैं। ग्लासगोमें रूजवेल्ट के दाहिने हाथ हापकिन्सको सम्बोधन करते हुए मि. चर्चिलने भाषणके सिलसिलेमें इस सम्भावनाकी ओर संकेत किया था। पर इङ्गलैंड अपने उपनिवेशोंमें अमेरिकाको भाग देनेको तैयार नहीं है, यद्यपि उसकी सम्पत्ति चाहता है। दूसरी ओर अमेरिका राजा और लार्डोंके रहते ब्रिटिश साम्राज्यमें सम्मिलित होनेको उद्यत नहीं है। इसलिये बड़े राष्ट्रोंकी सैनिक मैत्रीके आधार पर कोई अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन कायम नहीं रह सकता।

रूससे भय

नाजी सेनाको विनष्ट करते हुए बर्लिन-की ओर तेजीसे बढ़ रही लालसेनाकी प्रशंसा अब भयमें बदल गयी है। ड्यूक ही नहीं अपितु आर्कबिशप भी रूसके प्रति भय प्रकट कर रहे हैं। पोलैंडकी सीमा कर्जन-लाइन नियत की गयी है। रूसी वर्चस्वका प्रभाव इसमें प्रत्यक्ष रूपसे दिखायी देता है। ब्रिटेनने इस लड़ाईमें पोलैंडकी अक्षुण्णताको कायम रखनेके लिये कहा था। पर आज पोलैण्डका एक बड़ा भाग रूसको दे दिया गया है। इस विषयमें रूसके विरुद्ध जानेका साहस भी ब्रिटेन और अमेरिकाको न हुआ। रूसी तलवारने उस भूभागको विजय किया है और रूस तलवारके बलपर ही उसको कायम रखना चाहता है। उस भूभागको श्वेत रूस और पोलिश यूक्रेनकी लड़ाईके समाप्त होने तक भी अपनेसे अलग करनेको वह तैयार नहीं है। माना कि उसमें रूसी प्रभावमें जानेको इच्छुक आवादी अधिक है और वह यूक्रेनकी एकता के लिये आवश्यक है। पर प्रश्न यह है कि इस विश्वासके होते हुए भी जनमत संग्रहसे रूस डरता क्यों है? अगर जनमत संग्रह से हिटलर नहीं डरा था तो फिर पोलिश यूक्रेन में जनमत लेनेसे स्टालिन क्यों भयभीत हैं?

तीन राष्ट्रोंका अधिनायकत्व

तेहरानके बाद याल्टामें पुनः तीन बड़े राष्ट्रोंका अधिनायकत्व स्थापित करनेका यत्न किया गया। प्रश्न यह है क्या छोटे राष्ट्र इन बड़े राष्ट्रोंकी डिक्टेटरीको चुपचाप बर्दाश्त कर लेंगे? फ्रांस और चीनको अपने साथ लेनेका आश्वासन देकर और सैन फ्रांसिस्को कानफरेन्सके वास्ते पांच राष्ट्रोंकी ओरसे निमन्त्रण देनेकी घोषणा करके उन्होंने अपनी डिक्टेटरीकी उग्रताको नरम बनानेकी कोशिश की है। पर पांच बड़े राष्ट्र जो करें, उसको शेष संसार मान ले, क्या यह सम्भव है? कोई भी अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठन उस समय तक नहीं टिका रह सकता, जब तक कि विश्वके समस्त स्वाधीन नर-नारियोंका उसको सक्रिय नैतिक समर्थन प्राप्त न हो। अफ्रीका और एशियाके करोड़ों नर-नारियोंको पराधीन और अर्द्धदास रखकर एवं छोटे राष्ट्रोंपर डिक्टेटरी कायम करके अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठनको सजीव और क्रियाशील नहीं रखा जा सकता। छोटे राष्ट्र स्वेच्छासे डिक्टेटरीको स्वीकार न करेंगे। इसका प्रमाण डीगाले ने अल्जियर्समें प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टसे मिलनेसे इनकार कर दिया है। डीगालेका यह विरोध याल्टा कानफरेन्समें न बुलाये जानेके कारण है। पर अन्य छोटे राष्ट्र भी सम्मिलित न किये जानेके कारण अपनेको अपमानित अनुभव कर सकते हैं, विशेषतः भारत चीनसे हरेक बातमें आगे है। लेकिन त्रिनायकोंने फ्रांस और चीनको अपने साथ-साथ आसन देना स्वीकार किया है, पर भारतको पूछा तक नहीं गया है। ब्रेटनउड कानफरेन्समें चीनको चौथा स्थान और फ्रांसको पांचवा स्थान दिया गया था। पर जब सेन फ्रांसिस्को-कानफरेन्सके निमन्त्रण दाताओंने फ्रांसको चौथा और चीनको पांचवां स्थान दिया है। श्वेताङ्गोंकी प्रभुता कायम रखनेकी भावनाका याल्टा कानफरेन्समें भी अन्त नहीं किया गया है।

महत्वपूर्ण चुप्पी

युगोस्लेवियाके बारेमें त्रिराष्ट्रोंने कहा है—मार्शल टिटो और डा० सुवासिक अपने समझौतेके अनुसार कार्य प्रारम्भ कर दें और उसके आधारपर नयी सरकारका संगठन करें, (२) यह नयी सरकार घोषणा करे कि (क) राष्ट्रीय स्वतन्त्रताकी फासिज्म विरोधी सभामें युगोस्लाव पार्लमेंटमें वे सब सदस्य भी शामिल कर दिये जायें, जिन्होंने शत्रुको सहयोग दान नहीं किया, यह जो कानून बनायेगी उसे मानने या न माननेका अधिकार भविष्यमें होनेवाले विधान सम्मेलनको होगा। इससे अधिक और कुछ नहीं कहा गया। जर्मन नाजी शासनसे मुक्त देशोंके प्रति अटलाण्टिक चार्टरकी पुनः घोषणा की गयी है। उनको विश्वास दिलाया गया है कि राजनीतिक और आर्थिक प्रश्नोंका निपटारा जनतन्त्र प्रणालीसे करने में सहायता दी जायगी। नाजीवादका नाश हो और जनतन्त्रकी स्थापना हो, नियमित जीवन पुनः आरम्भ हो और राष्ट्रीय आर्थिक जीवन पुनः संगठित हो इसके लिये अटलाण्टिक चार्टरका यह सिद्धान्त लागू होगा अपनी रुचिके अनुसार शासकी व्यवस्था करना और आक्रमणकारियों द्वारा अपहृत स्वाधीनता पुनः दिलाना। तीनों देश उनके इस काममें इस प्रकार सहायता करेंगे—(१) शान्तिकी अवस्था उत्पन्न करना, (२) पीड़ित लोगोंको सहायता पहुंचाना, (३) सब जनतन्त्र तत्वोंको मिलाकर विस्तृत आधारपर सामरिक अस्थायी गवर्नमेंटकी स्थापना करना और निष्पक्ष और बाधारहित स्वतन्त्र निर्वाचन द्वारा जनतन्त्र गवर्नमेंटकी स्थापना करना और (४) शीघ्र आम निर्वाचनके अनुकूल परिस्थिति उत्पन्न करनेमें सहायक होना इससे स्पष्ट है कि तीनों बड़े राष्ट्र जो चाहेंगे, वही वे करेंगे। ग्रीक, बेल्जियम और रूमानियाके बारेमें याल्टा कानफरेन्स चुप रहना इसी बातको पुष्ट करता है। इसका अर्थ है कि तीनोंने प्रभाव क्षेत्र बांट लिया है और वे एक दूसरेके क्षेत्रमें हस्तक्षेप न करेंगे वरन चुप रहेंगे। 'चोर-चोर मौसेरे भाई' वाली उक्ति यहां चरितार्थ होती है।

जर्मनीकी भविष्य

याल्टा कानफरेन्सके निर्णयोंका अधिकांश भाग जर्मनोंसे सम्बन्ध रखता है। सैनिक सन्धिकी शर्तें तय हो गयी हैं, पर उनको प्रकाशित नहीं किया गया है। इससे मालूम होता है कि वे अत्यन्त कठोर हैं और उनके प्रकाशित होनेसे भय है कि जर्मन और दृढ़तासे लड़ें। जर्मनीके जीवनके हरेक क्षेत्र और विभागसे नाजीवादका चिन्ह तक मिटा देनेका संकल्प प्रकट किया गया है। जर्मनीको चार भागोंमें यदि फ्रांसने चाहा—बांटकर सैनिक शासन स्थापित किया जायेगा! इन चारोंमें एकीकरण करने के लिये बर्लिनमें तीनों राष्ट्रोंके सेनानायकों की एक कौंसिल होगी। यह सैनिक शासन उस समय तक रहेगा, जब तक प्रतिवादका चिन्ह जर्मनीमें विद्यमान रहेगा। सैनिक-शासनकी कोई मर्यादा और सीमा नहीं बांधी गयी है। यह सैनिक शासन क्षत-विक्षत और छिन्न-विछिन्न अङ्ग जर्मनीपर स्थापित होगा। राइन तकका प्रदेश फ्रांस ले लेगा, या ब्रिटेनकी देख-रेखमें बेल्जियम और हालैंड लेंगे। क्योंकि ब्रिटेन अपनी सीमा राइनको मानता है, और भारत सरकार सिंगापुर और अलेक्जेण्ड्रियाको मानती है। पूर्वमें ओडर नदी तकका प्रदेश पोलैंडको मिल जायगा और आस्ट्रिया अलग होगा और रूस वायनामें अन्तर्राष्ट्रीय परिषदका दफ्तर रखना चाहेगा, और सुडेटन प्रदेश पुनः जेकोको दे दिया जायगा। अलसेस-लोरेन फ्रांस-को पुनः वापस हो जायेंगे। जर्मनीको बवेरिया, राइनलैंड, हैनोवर, सैक्सनी, प्रशिया आदि छोटे-छोटे राज्योंमें विभक्त करनेकी योजना है। मार्गेन्थु योजना जर्मनीको खेतिहर बनाने और उसके उद्योगोंको बन्द करने, हराने या नष्ट करनेकी थी। अब इसका संशोधित रूप स्वीकार किया गया है। शस्त्रास्त्र उत्पन्न करनेवाले या जिन उद्योगों से अप्रत्यक्ष रूपसे भी युद्ध-सामग्री तैयार की जा सकती है, वे उद्योग नष्ट कर दिये जायेंगे। कहा गया है कि त्रिनायक नाजीवादको नष्ट करना चाहते हैं, जर्मन जनताको नहीं। पर यह क्या जर्मन जनताको दण्ड देना नहीं है? अकेले जर्मनीको निःशस्त्र करना और शेष संसारके सशस्त्र रखनेसे क्या विश्व-शान्ति स्थापित हो सकेगी? नियम एक समान सबके साथ लागू होना चाहिये। यह लड़ाई केवल हिटलरके कारण नहीं हुई है। त्रिराष्ट्र अपनेको निर्दोष मानते हैं। वे भूल जाते हैं कि हिटलरको उन्होंने उत्पन्न कि[...] एशिया और अफ्रीकाकी गुलामीने [...] को उत्पन्न किया है और इसको [...] भविष्यमें भी हिटलरको उत्पन्न करे[...]

क्षतिपूर्ति

जर्मनीको अपमानित, लांछित, [...] स्कृति करके ही त्रिनायकोंको सन्तो[ष] हुआ। उसपर क्षतिपूर्ति करनेका [...] डाला गया है। जर्मनी किस मात्रामें [...] हुए नुकसानकी भरपाई करे इसकी [...] मास्को-कौंसिल करेगी। इसका [...] हेलासेलासीने इटलीके प्रति क्षति[...] मांग की है, और चीनने जापानके प्रति[...] पूर्तिका दावा किया है। पहली [...] समान यदि नुकसानका अन्दाजा कि[या] तो जर्मनीको १० खरब स्वर्ण स्वरूप [...] के अनुसार देना होगा। यह जर्मनी[...] प्रकारसे चुकाना होगा (१) लड़ाई[...] विदेशोंमें उसकी जो सम्पति हो [...] देकर, (२) अपनी राष्ट्रीय सम्पत्ति[...] (३) युद्धोत्तर कालकी अपनी राष्ट्रीय [...] दनीमेंसे। जर्मनी केवल मालके [...] सकता है और याल्टा कानफरेन्स[...] इसी रूपमें लेनेका निश्चय किया है। [...] ३८ में जर्मनीने प्रतिवर्ष शस्त्रीकरण[...] अरब मार्क खर्च किया है और इस [...] वह इतना प्रतिवर्ष मित्र राष्ट्रोंको दे [...] है। जर्मन श्रम, दक्षता और कौशलसे [...] यूरोपका पुनर्निर्माण किया जायगा। [...] लड़ाईमें स्वयं भी खराब हो जायगा। [...] यह है कि पराजित जर्मनी किस प्रका[र] पूर्ति कर सकेगा और क्या यह [...] लड़ाईका कारण न होगा?

सुदूरपूर्व

सुदूरपूर्वकी लड़ाईके सम्बन्धमें [...] कहा गया है। २९ अप्रैलको सैनफ्रां[सिस्को] परिषदकी तिथि रखनेसे समझा जा[...] रूस-जापान पैक्ट इससे पहले सम[ाप्त हो] जायगा रूस जापानके विरुद्ध युद्ध [...] कर देगा। यह ठीक है कि स्टालिनने [...] को आक्रान्त राष्ट्र घोषित किया है। [...] भूलना न चाहिये कि रूसने आज सी[...] की सीमापर जापानके ५० डिवीजनों[...] रोक रखा है और मित्रोंके लिये या[...] है। दूसरे वह सुदूर पूर्वमें मित्रोंके [...] वास्ते नहीं आयेगा। चीनमें जब तक [...] स्वार्थ स्वीकार नहीं किया जाता, [...] वह न लड़ेगा। बात यह है कि एशि[या] अफ्रीकाके सवालको जानबूझकर ना[...] गया है! यह मर्मस्थल है। मध्यपूर्व[...] सवाल उत्पन्न होना था। इस प्रश्न[...] से आज प्रकट रूपमें दिखायी दे रही [...] एकता तब न दिखायी देगी। इसलि[ये] कल्पना करना कि रूस २९ अप्रैलको [...] नसे सम्बन्ध विच्छेद कर लेगा ठीक [...]

अपने जालमें

मकड़ी जैसे अपने बनाये जाल[में] फंस जाती है उसी प्रकार मित्र राष्ट्र [...] बनाये जालमें फंस गये हैं। प्रसिद्ध फ्रें[च] नीतिज्ञ केमंशूने कहा था कि विजेता [...] विजयका बन्दी है, विजेता राष्ट्र [...] प्रतिशोध है। त्रिनायक भी प्रति[शोध की] भावनासे इतना अधिक ओतप्रोत [...] आज स्वतः बन्दी होगये हैं।

(र)उके लगभग साढ़े सात बने थे। नये बङ्गलेमें बठे चिमनलाल और वी विजय कुमारी धीरे-धीरे बातें कर थीं।

रका छोटा-बड़ा काम बिजयकुमारी और बाहरकी सारी जिम्मेदारी थी लालके हाथोंमें। उन्होंने निश्चय कर था कि एक दूसरेके काममें दखल न इसलिये जो कुछ बातें होतीं उनमें वे सरे पर अपनी राय नहीं लादते थे, र-विनिमय होता था। यही कारण कि मामूली झगड़ोंसे दम्पतियोंमें जो न होता है, वह कम हो गया था। उनके व्यवहारमें कुछ-कुछ व्यापारिकताकी लगी थी।

आप क्या सोचते हैं, मुझे क्या करना ?' प्रश्न दो बूढ़ी गायोंका था, जिन्हें का भेजनेकी बात थी। चिमनलालका था कि जिससे आर्थिक लाभ नहीं, उसे बांधे रहना बुद्धिमानी नहीं है। विजयकुमारीकी राय थी कि जिसने हमें खिलाया है, उसे वृद्धावस्थामें अलग कर अमानुषिक है।

लेकिन यह तो बराबरके प्राणियोंमें है।' चिमनलालने कहा।

इसका अर्थ तो यह हुआ कि सबल, या बुद्धिवादीको कोई बन्धन ही है।'

तो ऐसा ही समझता हूं।' चिमनलाल और जाते-जाते कहने लगे, 'अरे, तुमने कविता पढ़ी—कविता।'

कौन-सी ?'

यह अपने नरेन्द्र की। बड़ी सुन्दर है। मैंने उसे उद्धृत किया है।'

नरेन्द्र अभी-अभी मैट्रिक पास करके घरमें आया है। लेकिन जब कुछ समय था तो वह कविता लिखता और कविता यदि समय बचता तो कभी-कभी निबन्ध था।

विजयकुमारीने चिमनलालके हाथसे की कवितावाला पत्र लिया। कविता-क था 'मानवता' और अन्तिम दो फिर तो चिमनलालने लाल पेन्सिलसे कर दिया था—

'नीति अथवा विद्याका वैभव है निर्मूल प्रेम सुगंधित करता, मानवजीवन फूल'

बहुत सुन्दर है!' विजयकुमारीने कहा।

ही कारिंदाने आकर कहा—'साहब, ढोरोंको चरानेवाला ग्वाला दो-तीन हुए सांपके काटनेसे मर गया था। विधवा आयी है।'

किसलिये ?' विजयकुमारीने पूछा।

साहब, कुछ आशा लेकर ही आयी अभी-अभी धर्मशाला खोजती हुई भटक थी। मैं उधर जा निकला और इसे ले ।'

इसे क्या देना चाहिये ? रामशङ्कर क्या हो ?'

रामशङ्कर चुप रह गया।

चिमनलालने कहा, ऐसे करो जिससे इसे भी जीवन बितानेका भी मन न हो और बार यहीं आये।'

कल्पना

कविताका देश

—:*:—

(लेखक—श्री पद्मसिंह शर्मा)

'इसका क्या किराया लगा होगा ?'

'होगा कोई एक-डेढ़ रुपया।'

'पांच रुपये दिये जायें। दो रुपये टिकिट से ऊपर भी चाहिये। बेचारी गरीब वैसे तो कुछ मांगेगी ही क्यों ?'

रामशङ्करकी दृष्टि नीचे ही गड़ी रही। वह सलाम करके चला गया। लेकिन विजय-कुमारीने उसे फिर बुलाया।

'पहले उस स्त्रीको खाना खिलाना रामशङ्कर। बेचारी भूखी होगी।'

(२)

'जी !' रामशङ्कर चला गया।

सेठके छोटे लड़केको लेकर मास्टर साहब भीतर आये।

'क्यों बीरेन्द्र आज क्या पढ़ा ?' विजय-कुमारीने पूछा।

तोतेकी भांति बीरेन्द्र बोला—'सत्यके बिना विदवका उद्धार नहीं।'

'अरे! अरे बीरेन्द्र! यह तो तू बड़ी अच्छी बात कहता है।' कहकर विजयकुमारी ने उसे गोदमें उठा लिया। आठ-दस वर्षका लड़का इतना सुन्दर बोल सकता है, यह देखकर उसके हर्षका ठिकाना न रहा।

'कितना अच्छा लड़का है, मास्टर साहब! अपनी आयुके अनुकूल ठीक बोलता है।

'हां, सेठानीजी, मुझे तो ऐसा लगता है कि लड़केमें बड़ी प्रतिभा है।'

'सच कहते हो पोपटलाल।'

'जी हां। मुझे तो ऐसा ही लगता है।'

'और क्या पढ़ा बीरेन्द्र ?'

बीरेन्द्रको कौन-से पैसोंकी जरूरत थी जो ऐसे वाक्य बोलनेसे मना करती। यदि उसे अपनी मांका प्यार मिलता चला जाय, तो वह दिनभर ऐसे सुन्दर वाक्य बोलता चला जाय।

'एक दूसरा वाक्य है, कहूं ?'

'कहो।'

'गुस्सा तो न होगे।'

'मैं तुझपर गुस्सा होऊंगा ! पोपटलाल यह इसके दिमागमें कहांसे आया। हम तो कभी नाराज होते ही नहीं।'

बेचारा पोपटलाल! मोण्टेसरी पद्धतिके अनुसार भय तो दिखा नहीं सकता था, पर बालकके प्राकृतिक विकासके अनुकूल विशेष अवस्थापर उसकी स्वभावजनित जड़ताको दूर करनेके लिये भय भी आवश्यक है। यह सोचकर बोला— यह तो कहा नहीं जा सकता पर कभी कभी बालक अदृश्य वातावरणमेंसे भी कुछ ग्रहण करता है।

'हां,—मुझे भी ऐसा ही लगा था—ऐसा कैसे हुआ होगा ?'

'कल्पना शक्ति तो इसकी तीव्र है।'

'हां, तू क्या कह रहा था, बीरेन्द्र! बोल तो सही, मैं नाराज नहीं हूंगा।'

'अपना जीवन बलिदान करके भी मानव-सेवा करनी चाहिये।'

विजयकुमारी तो कूदने लगी। उसी समय उसके मनमें अचानक यह विचार आ आगया कि यदि समस्त भारतके बालकोंका सम्मेलन करके यह देखा जाय कि उनमें सब-से सुन्दर कौन बोलता है, वो कितना अच्छा हो।

मास्टर तो छुट्टी लेकर चले गये। उनके बाद डाक्टर आया। वह खबर लाया था कि आजकल हैजा फैल रहा है। हैजाके मरीजसे बचते रहना चाहिये।

बीरेन्द्र यह सोचकर कि यह वाक्य विजयकुमारीको बहुत सुन्दर लगा था, बार-बार दुहरा रहा था 'मानवता विश्वका महान सत्य है! मानवता विश्वका महान सत्य है! मानवता विश्वका महान सत्य है!' और उधर बीरेन्द्रसे भी अधिक तीव्र आवाजमें एक तोता 'मानवता! मानवता!' चिल्ला रहा था।

(३)

'साहब! अपने भीखाको दो-तीन के हो गये।' सेक्रेटरीने आकर कहा। 'अब उसे......।'

चिमनलाल भयसे व्याकुल हो गये।

जितनी बुरी तरह प्राचीन कालमें मनुष्यको धर्म किंकर्तव्यविमूढ़ कर देता था, वैसा ही आज विज्ञान भी मनुष्यको किंकर्तव्य विमूढ़ बना रहा है। हैजा था तो उसके लिये कुछ सावधानीकी जरूरत थी। परन्तु चिमनलालको उसने परेशान कर दिया।

'डाक्टर, क्या करना चाहिये ?'

और कुछ फिर, पहले उसे अहातेसे बाहर निकालो।'

'क्या यही करना चाहिये ?' विजय-कुमारीने कहा। 'बहुतोंके हितके लिये एक

❀ गीत ❀

——०——

क्या जानूं कैसे प्यार किया जाता है ?
मैंने तो अबतक दुख ही दुख बस देखा—
सूने प्राणोंपर खिंची दर्द की रेखा।
चाहोंकी बदलीमें, रह-रहकर छिपता—
मेरी आशाका चांद, भाग्यका लेखा।

आहोंकी ज्वालामें जल-जल कर दिल यह,
क्षण-क्षणमें क्षार हुआ जाता है।
क्या जानूं कैसे प्यार किया जाता है ?
मेरी पूजाके फूल आज मुरझाये,
अन्धकारमें मैंने दीप जलाये।
मिट्टीका है मेरे दीपोंकी काया—
सोने-सी किरणोंपर वारे मंडराये।

मेरा तन्द्रिल मनुहार भरा यह जीवन,
हारोंका हार बना जाता है।
क्या जानूं कैसे प्यार किया जाता है ?
सपनोंसे निखरी मेरी नींद विरानी
तारोंपर बिखरी मेरी करुण कहानी
सतरंगे इन्द्र धनुष-सी मेरी पीड़ा
बीते दिवसोंकी मेरी शेष कहानी।

मुझको तो अपना यह एकाकीपन ही—
पल-पलमें भार हुआ जाता है।
क्या जानूं कैसे प्यार किया जाता है ?
उठ रहीं आंधियां, उड़ता पथका तृण-तृण
मेरे जीवन को चले बांधने बन्धन।
लहरें उठती हैं, गिर जाती हैं फिर फिर--
उठना गिरना ही कहलाता है जीवन।

अनजान डगर, फिर भी तो डगमग मेरे—
मनका पन्थी चलता ही जाता है।
क्या जानूं कैसे प्यार किया जाता है ?
है ऊपर नभमें चांद, चांदनी भूपर।
बह रहा विजनमें करुण रागिनीका स्वर।
छविका अलसाया नीराजन बिखरा है—
मेरी उजड़ी-सी स्नेह भरी चितवनपर।

मेरा स्वर्णिल यह हास भरा-सा दीपक—
युग युगसे जलता ही जाता है।
मैं क्या जानूं क्यों प्यार :किया जाता है ?

—कुमारी शैल रस्तोगी

को मर जाना चाहिये, क्यों ?' विजयकुमारी की आदत थी कि वह प्रत्येक वस्तुकी गहराई तक विचार करती। आवश्यक यह था कि वह उसकी प्रकृतिके अनुकूल हो। चिमनलालको विजयकुमारीका वह दार्शनिक ढङ्ग पसन्द न आया। उन्होंने जल्दीसे कहा—'तो तुम क्या कहती हो ?'

'अरे, यह तो मैं भूल ही गयी। भोगीलाल उसे दवाखाने ले जानेके बहाने अलग कर दो और देखो उसके कमरेमें मिट्टीका तेल डालकर सब जगह आग लगा देना।'

'जी अच्छा,—भोगीलाल चला गया।

इतनेमें टेलीफोनकी घण्टी बजी—चिमनलालने उसे घबरा कर पकड़ा।

हल्लो ! हां—कौन—मैं हूं चिमनलाल ! धीरजभाई, हम भी अभी यही बातें कर रहे थे। ठीक है ? अच्छा ? सब, कहते हैं ? हां, बहुत अच्छा जनाब।'

प्रोफेसर धीरजलाल मोतीचन्द नवरखीका टेलीफोन था। नरेन्द्रकी कविताके लिये कह रहे थे, वास्तवमें सुन्दर है।' चिमनलालने बिजयकुमारीसे कहा।

'अच्छा—लेकिन वे आये क्यों नहीं ?'

'आयेंगे,—लेकिन !'

'अच्छा, अच्छा। समझ गयी !'

गांवमें हैजेका जोर था। वहांसे आनेवाला व्यक्ति बेकार कीटाणु फैलाता आये यह चिमनलालको ठीक नहीं लगा। इस लिये उन्होंने तो प्रोफेसरको निमन्त्रित करनेकी बुद्धिमानी ही नहीं की थी। लेकिन शिष्टाचारके नाते धीरजभाई स्वयं बधाई देना न भूल सके। और दस ही मिनटमें उनकी मोटरका हार्न सुनायी दिया।

उसे देखकर चिमनलालको लगा मानों मृत्युका दूत आ गया हो। लेकिन ऊपरी शिष्टाचार-प्रदर्शनके बिना छुटकारा न था।

'अच्छा ? आप आ गये ? मैंने कहा था, जरूर आयेंगे !'

'बहुत सुन्दर है—क्या नरेन्द्रने स्वयं लिखी है ?'

'और क्या ? दूसरा कौन लिखनेवाला है ?' विजयकुमारीने कहा,—'उसके विचार बहुत ऊंचे हैं।'

'विचार करनेपर बहुतसे अंग्रेज कवियोंमें जो विचार - सौंदर्य मिलता है, वही स्पष्ट रूपसे नरेन्द्रमें भी है।'

बिजयकुमारीको यह बात पसन्द तो बहुत थी। लेकिन उसका दिल हैजेकी बात सोचकर परेशान हो रहा था।

और कुछ बात होनेसे पहले भोगीलाल लौटकर आया। विजयकुमारीने उसकी ओर जिज्ञासा भरी दृष्टिसे देखा। आज्ञानुसार काम हो गया है, यह कहनेकी अपेक्षा वह विजयकुमारीसे बातें करने लगा !

'सेठानीजी, वह ग्वालिन तो बहुत रोती है।'

'क्यों इसमें रोनेकी क्या बात है ?'

'वह कहती है कि मैं भी साथ जाऊंगी।'

'ठीक है। उससे कहना कि फिर उसे वहीं रहना होगा, यहां न आयेगी।'

दूसरे दिन प्रातःकाल विजयकुमारी नरेन्द्रकी कविता और वीरेन्द्रके विश्वप्रेमकी प्रशंसा कर रही थी। चिमनलाल दूसरी ओर बैठे सुन रहे थे। मास्टर अनुभवी और वृद्ध थे। वे भी इस कविताको कई प्रकारसे समझा रहे थे। धनवान, राजा या रङ्क हरएकको अपने पुत्रके गौरववान होनेका हर्ष होता है। लेकिन महानता कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, बल्कि उद्देश्यपूर्ण जीवन का विकास-क्रम है। इस अमर सत्यको जबतक नहीं समझ लिया जाता, तबतक बहुतसे छोटे बच्चे भी महान प्रतीत होतेहैं, परन्तु बड़े होकर वे नीच बन जाते हैं।

यह बातचीत हो रही थी कि चिमनलाल दूसरी ओरसे दौड़कर आये।

'अब अपनी बात बन्द करो—बन्द करो—उसने गजब कर दिया।'

'आप किसकी बात कर रहे हैं।' विजयकुमारीने पूछा ! उसे सेठकी बात नहीं रुची।

'यह तुम्हारा वीरेन्द्र—देखो आ रहा है—उस ग्वालिनकी लड़कीके साथ।'

'हां !' मास्टर और विजयकुमारी मानो स्वप्नसे जाग गये हों।

'हैं !' हैं !' कहते ही विजयकुमारी नीचे दौड़ी। इतनेमें वीरेन्द्र सामने मिल गया। उसके साथ थी ७-८ सालकी ग्वालिन छोकरी।

'वीरेन्द्र ! यह तू क्या करता है ?' क्रोधमें होनेपर भी विजयकुमारी अपनी नम्रता न भूली। इसको यहां लाओगे तो इसके मां बाप नाराज न होंगे क्या ?'

उसने कहा— लेकिन इसका बाप तो मर गया, मां !'

'हैं !' विजयकुमारी और भी जड़ बन गयी। 'सच ?'

'सच !'

'इतनेमें रामशङ्कर कारिन्दा भी आ गया।

'रामशङ्कर ! इस लड़कीको इसकी मांके पास पहुंचा देना।'

'लेकिन सेठानीजी इसकी मां तो वहां पड़ी रो रही है। वह ग्वाला तो मर गया।'

चिमनलालकी पग-ध्वनि सुनायी दी। प्रोफेसर धीरजलालकी मोटरका हार्न भी सुनायी दिया।

'रामशङ्कर ! तो इसे अनाथालयमें छोड़ आओ। समझे, यहां क्या—।'

'ऐसा नहीं—ऐसा नहीं, तुम उसे घबराये दे रहे हो। वीरेन्द्र बेटा ! इसे जाने दे !'

'लेकिन अम्मा, इसकी मां तो है हा नहीं। यह किसके पास रहेगी ?'

'प्रोफेसर चुपचाप आकर खड़ा हो गया। विजयकुमारीने मुस्कुराकर उसका स्वागत किया। फिर वीरेन्द्रसे कहा—

'बेटा ! इसे भी हिम्मतवाला होना चाहिये। इसके पढ़नेमें बाधा पड़ेगी। हम लोग इसको किस प्रकार रखेगे ?'

'मास्टरने आकर कहा—'देखो भाई, इसके मां-बाप तो समझते नहीं हैं। इसलिये हमी इसको पढ़ाने भेज रहे हैं।

'कहां ?'

'वहीं, अनाथालयमें।'

'यदि नहीं पढ़े तो ?'

'यहां क्या तेरे बापका—' चिमनलाल कुछ कहने हो वाले थे कि विजयकुमारीने रोक कर कहा—

'ऐसे नहीं, तुम बच्चेके विश्वप्रेमकी भावनाको विगाड़ते हो। वीरेन्द्र ! देख, इसे रखेंगे। लेकिन हम तो झोपड़ीमें रहने जा रहे हैं। तुझे यह बंगला अच्छा लगता है।'

'नहीं !'

'तो फिर यदि हम वहां जायेंगे तो क्या यह आयगी ? यदि नहीं, तो यह शौकीन हो जायगी।'

'तो हम जब वहां पहुंच जायंगे तब तो बुलायेंगे ?'

'हां, वहां पहुंचनेपर बुलायेंगे !'

बगीचेमें पांच आदमी छः महीनेसे एक झोपड़ी बना रहे थे। उसीमें विजयकुमारी सरल जीवन बिताने जानेवाली थी। उसीके विषयमें बातचीत हो रही थी।

उस लड़कीको तो रामशङ्कर लेकर चला गया।

(४)

'आपने वीरेन्द्रको बहुत चिढ़ाया है !'

'मैंने चिढ़ाया है ? क्यों मि० धीरजलाल? क्या जा रहे हो ? मैंने चिढ़ाया है कि इसमें परिवर्तन हो रहा है ?'

'यह मैं कुछ नहीं समझता' लेकिन जो बात हम कर नहीं सकते, उसके विषयमें कुछ कहना वेकार है।'

'अरे भाई, विचार अच्छे हों, ... क्षामें कुछ नम्बर ज्यादा मिल जायें ... जिन्दगीमें इस प्रकारकी बातें ... नहीं है। यों तो मैंने भी नरेन्द्रकी ... प्रशंसा की है। पर जीवनमें ऐसी ... लाभ क्या है ?

यह बात तो तुम अनुचित कहते ...

अनुचित नहीं ? तो ? इस ... तुम कब— ?

लेकिन कहा तो इसी प्रकार ... कहनेका क्या ढंग नहीं है ? मी... भी सीखना चाहिये।

सब हंस पड़े। केवल रामशङ्कर ... लड़कीको ले जाते हुए रास्ते ... रहा था—

'देख' तेरा बाप तो मरते ... रहा था कि मैं तो मर रहा हूं, ... बच्चेको यह सेठ पाल लेगा। वह तो ... मरते समय यह आश्वासन देकर ... लेकिन ये लोग तो कवि हैं। तेरे ... पर भी ये कविता लिखेंगे। ... कहना कि उनसे कोई आशा न रखें।

लड़की इस बातको समझी ... यह तो पता नहीं, लेकिन बेचारी ... रामशङ्करके मुंहकी ओर देखती ...
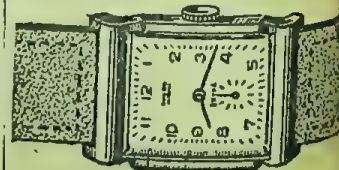
मनुष्य-जीवनमें कलाकी उपयोगिता

———:*:*:*:———

(लेखक—श्री सरयूप्रसाद शर्मा, सौरभ, 'विशारद')

'कला कलाके लिये है, या समाजके' हिन्दी साहित्यमें इस विषय काफी चर्चा रही है। पर कला क्या है? पर बहुत कम लोगोंने ध्यान दिया है। री दृष्टिमें कला कलाकारका एक वृहत है। प्रत्येक आदमीके हृदयमें कुछ-न-कुछ ना उपस्थित रहती है। जब कोई व्यक्ति ना विचार हमारे सामने रखता है, उसी य हमें मालूम हो जाता है कि उसकी ोंमें कुछ तथ्य है या नहीं। जब वह व्यक्ति ना विचार कल्पनाके द्वारा किसी रूपमें रे सामने रखता है तथा वह विचार हमें नी ओर आकर्षित कर आगे बढ़ानेको ता रखता है, तो वह 'कला' है तथा उसको करनेवाले 'कलाकार' कहलाते हैं।

कलाकी परिभाषा निश्चित नहीं की सकती। समय, परिस्थिति और देशके सार इसका परिभाषा बदलती रहती है; य ही कला भी बदलती है। जब कला ती है, तब इसकी परिभाषामें परिवर्तन ा भी स्वाभाविक है। पर कुछ चीजें हैं, जो सदा कलाके साथ रहती हैं। 'सत्यं-शिवं-सुन्दरम्।' वास्तवमें ये ों कलाकी आत्मा हैं। आखिर ये हैं ! सत्य, शिव और सौन्दर्यसे हमारा र्य क्या है? राजनीति, धर्म, साहित्य दिमें सत्यकी विभिन्न परिभाषाएं हैं। सत्य वह है जो सदा एक-सा हो। बाहर र भीतरके रूपमें अन्तर न हो। किसीको ौक न दे, बल्कि कल्याणकारी हो। अपनी स्वार्थ-साधनाके लिये न हो तथा र हो। सत्य चंचलताका नहीं, बल्कि रताका स्वागत करता है। स्थिरता को प्राप्त होती है, जिसने उसकी महान ना की है। महान साधनाके लिये, त चित्त-संयमकी आवश्यकता होती है। भगीरथ प्रयत्न अध्यवसाय एवं लगन-से ही सम्भव है। अतः सत्यको पह-के लिये अपनी आत्मा या अपनेको ना आवश्यक है। ऐसे व्यक्तिको और बाहर अपने सारे विकारोंका र कर देना होगा। अन्यथा सत्यका सहज नहीं। अतः जिस कलाकारमें नेकी जितनी अधिक शक्ति होगी, ी कला उतनी ही उच्च कोटिकी होगी।

शिवका अर्थ है मङ्गलकारी। यह कला समाज करता है, उसे प्रेरणा देता है। ा प्रधान उद्देश्य है कलाको प्रगतिशील । इसके द्वारा कला आगे बढ़ती है, नहीं हटती। अतः यह कलाको आनन्द-निर्माणकारी एवं प्रगतिशील बनाता इसकी आवश्यकता इसलिये है कि कलाका ोप न हो अथवा वह अपने पथ कर कहीं कण्टकाकीर्ण पथकी ओर न र हो। अतः इस 'शिव' की आवश्य-कलाको सदा रही है तथा रहेगी भी। अब सौन्दर्यको लीजिये। इन दिनों लोगोंने सौन्दर्यको गलत ढङ्गसे है। वे सौन्दर्यको वासनाका आधार हैं। पर यह वास्तवमें सच्चा सौन्दर्य सौन्दर्य वह वस्तु है, जो अपनी तरफ य, पर उसका परिणाम सदा सुख-जो सौन्दर्य हमें विलासी बनाये, वासनाकी ओर प्रेरित करे, सौन्दर्यका उसे एक बाह्यरूप या आडम्बर ही समझिये। वासनाका सौन्दर्य तुरत ही हमें कुफल दे देता है; हमारी आत्मा घृणित होने लगती है। हम स्वयं बाह्य सौन्दर्यपर आकर्षित होनेके कारण अपनेको कोसने लगते हैं। इधर सच्चा सौन्दर्य ऐसा कदापि नहीं करता। वह सदा अपनी ओर आकर्षित करता है अवश्य, पर उसका परिणाम सदा सुखदायी एवं आनन्ददायी होता है। उसके लिये हमारे हृदयमें आदर्श उत्पन्न होता है। जिस कलामें यह सौन्दर्य होता है, वही वास्तवमें सच्ची कला कहलाती है तथा हमें जाग्रत कर अपनी ओर ले चलती है। उसी कलाका आदर होता है। जिस कलामें सौन्दर्यका बाह्यरूप है, उसकी अवस्था छोटी होती है। वह शीघ्र नाश होती है। इस तरहकी 'कला' को कलाकी संज्ञा देना उसका अपमान करना है। अतः उसे कलाहीन ही समझिये।

तात्पर्य यह कि सत्यं-शिवं सुन्दरम् कलाकी आत्मा है। इसकी कसौटीपर जो कला उतरे, उसे ही वास्तवमें कला कहना अच्छा होगा। कला सत्य है, सुन्दर है, आनन्दवर्द्धक है, साथ ही प्रगतिशील भी है। वह हमें सत्यकी ओर प्रेरित करती है, अपनी ओर आकर्षित कर सदा आनन्द देती है; साथ ही हमें बढ़ाती है। कला सोये हुएको जगाती है, जगे हुएको बैठाती है, बैठे हुएको उठाती है, उठे हुएको सुपथ दिखाकर आगे बढ़ाती है, और बढ़नेवालेकी प्रगति तीव्र करती है। सच्ची कलाके ये ही लक्षण हैं।

हमारे यहां चौसठ कलायें मानी गयी हैं। पर सबोंका उद्देश्य एक ही है। विषयान्तरके भयसे मैं इसपर विशेष प्रकाश डालना नहीं चाहता। अब देखना यह है कि इस कलाका जीवनके साथ कुछ सम्बन्ध है या नहीं। जो कलाकार अपनी कल्पना द्वारा केवल स्वान्तः सुखाय कलकी रचना करता है' अपने उच्च भावों एवं प्रतिभा द्वारा वह भले ही कलाकार हो जाय; पर उसकी कला एकाङ्गी, क्षणिक एवं निर्जीव होगी। वह कलाकार भी अपने युगमें कुछ कालके लिए भले ही कलाकार कहला ले; पर वह अमर कलाकार एवं महान मानव नहीं कहला सकता। कला और जीवन—दोनोंमें ही निकटतम सम्बन्ध है। न तो कोई कला जीवनसे अलग रह कर जीवित रह सकती है, और न जीवन ही कलाके अभावमें सुखमय, आनन्ददायक एवं सच्चा जीवन कहला सकता है। अतः दोनोंकी उन्नतिके लिये दोनोंका साथ रहना नितान्त आवश्यक है। कला व्यक्तिको नहीं, समुदायको साथ लेकर चलती है। जिस कलामें मानव-समाजके साथ चलनेकी जितनी ही अधिक क्षमता होती है, उसी क्रमसे वह महान एवं अमर होती है। इसके विपरीत जो जीवन जितना ही कलामय होगा, वह उतना ही सफल और आदर्श होगा।

हिन्दी साहित्यके रीति कालीन कवियोंको देखिये। भूषण आदि कुछ कवियोंको छोड़कर अधिकांशने श्रृङ्गारका वर्णन करना ही अपनी कविताकी कसौटी समझा। फलस्वरूप उनकी कविताएं उसी समय तक जीवित रह सकीं। इसी तरह अन्य क्षेत्र के कुछ कलाकारोंने भी कलाका निर्माण किया है। इसके विपरीत महाकवि कालिदास, तुलसीदास, शेक्सपियर आदि साहित्यकारोंको लीजिये। आजसे सैकड़ों वर्ष पूर्व इनकी मृत्यु हुई। फिर भी इनकी कलाएं अभी तक मानव जीवनको उच्च शिखरपर पहुंचाती हैं। अतः अभी तक जीवित हैं। कुछ लोगोंने महाकवि तुलसीदासकी रचनापर भी स्वान्तःसुखायका आरोप लगाया है। पर उनकी यह भूल है। तुलसीदासजी एक महान कलाकार, महान मानव थे। इसके सम्बन्धमें उन्होंने स्वयं 'राम चरितमानस' के एक श्लोक द्वारा यह स्पष्ट अवश्य किया है। पर सोचनेकी बात है कि एक महापुरुष अपने मुखसे कैसे यह सकता है कि उसकी रचना मानव-समाजके कल्याणके लिये होगी। आज भी हिन्दुस्तान के घर-घरमें 'रामचरित-मानस' लोगोंकी जबानपर है। विदेशोंमें भी लोग 'मानस' से जीवन प्राप्त कर रहे हैं। अगर उनकी रचना स्वान्तःसुखाय होती, तो अब तक वह कदापि जीवित नहीं रहती। आखिर ये महान कलाकार अब तक हम लोगोंकी दृष्टिमें पूज्य क्यों हैं? वास्तविक बात यह है कि उन्होंने अपनी कलाओंमें मानवताको जीवित अभिलाषा, चेतना एवं जागरूकता दी। इन्हीं गुणोंके कारण वे अब तक अमर हैं तथा रहेंगे भी।

जार्ज बर्नार्ड शा अंग्रेजीके प्रसिद्ध साहित्यकार हैं। कलाके सम्बन्धमें आपका निम्न विचार हैं:—

'कला कलाके लिये' इस सिद्धान्तको लक्ष्य मानकर मैं एक पंक्ति भी लिखनेका कष्ट नहीं करता। एक महान कलाकारका यह कर्तव्य नहीं है कि वह जनताके मनोरंजन के लिये अथवा स्वान्तःसुखाय रचना करे। कलाकारको जीवनकी व्याख्या करनी चाहिये।' अतः किसी भी सफल कलाकारका यह कर्तव्य है कि किसी कलाका निर्माण करनेके पूर्व यह देख ले कि उसकी कलाका व्यावहारिक जीवनमें प्रयोग होगा या नहीं। उससे मनुष्य समाजको आगे बढ़नेमें कुछ सहायता मिलेगी या नहीं। मनुष्य समाजको आगे बढ़ानेकी क्षमता रखते हुए कला अपने साथ जितना ही भविष्य जाननेकी शक्ति रखेगी, उसकी अमरता उतनी ही अधिक होगी। उसी क्रमसे कलाकार भी सफल होगा। विश्व साहित्यकार रोम्यां रोलांको कौन नहीं जानता। आप फ्रांसके सर्वोत्कृष्ट साहित्यिक माने जाते हैं। कलाके सम्बन्धमें आपका निम्न विचार पठनीय है:—

'संसारमें सर्वश्रेष्ठ कला वही है, जो बुराइयोंके निवारणका ज्ञान उत्पन्न कर सके और सरलताके साथ सद्गुणोंका निर्माण करे। वास्तवमें ऐसी ही कला सत्य, शिव और सुन्दर गुणोंसे अभिषिक्त हो सकती है। मनुष्य अभी तक मनुष्य नहीं बन पाया है। पर वह बनेगा अवश्य। ईश्वर इस समय विश्राम कर रहा है, पर उसने अपनी अति सुन्दर सृष्टि हमारे लिये छोड़ दी है। इस उद्देश्यसे कि हम बन्धनोंसे जकड़ी हुई आत्मा की अव्यक्त शक्तिको उन्मुक्त कर दें, मानवके भीतर महा मानवकी ज्योति जगा दें।' महान कलाकारके इन वाक्योंका प्रत्येक शब्द ध्यान देने योग्य है।

वास्तवमें हमारे जीवनमें कलाकी आवश्यकता प्रति पल मालूम पड़ती है। जरा अपने सामाजिक जीवनपर गौर करें। लोग प्रायः कहा करते हैं कि अमीरोंका जीवन बड़ा ही सुखमय होता है। पर मेरी दृष्टिमें सम्पत्तिशाली होते हुए भी उनका जीवन कलाके अभावमें भार एवं नीरस होता है। मैंने पचासों हजारकी आमदनीवाले एक जमींदारको अत्यन्त निकटसे देखा है। आपके यहां दर्जनों नौकर हैं। दरवाजेपर मास्टर, रसोइया नौकर आदि भी हैं। जरा इनका रहन-सहन तो देखिये। आपका जलपान कभी आठ; कभी नौ और कभी दस बजे होता है। भोजन भी इसी तरह अनिश्चित—कभी बारह कभी दो, और कभी चार बजे होता है। रातमें भी इसी तरह नौसे बारह बजे तक होता है। दरवाजेपरका नौकर दालानपर कभी स्थिर नहीं रहता। अतः शायद ही दरवाजेपर कभी-कभी झाड़ू पड़ता है। एक दासी रहनेके कारण घरकी औरतोंमें रोज लड़ाई होती है। बड़ा परिवार होनेके कारण सभी अपना-अपना काम कराना चाहते हैं। घरके व्यवस्थापकजी तो ऐसे व्यक्ति हैं कि कोई चीज सड़ जायगी, पर घरके ही रोते हुए बच्चोंको देनेका नाम नहीं लेते। कौड़ी-कौड़ी जमा कर किसी सार्वजनिक संस्थामें अपना धन लगाकर यश प्राप्त करना भी उनके लिये सम्भव नहीं। हां, सैकड़ों बीघे जमीन खरीदनेके लिये वे हर घड़ी तैयार रहते हैं। खाना-पीना भी आपका साधारण गृहस्थसा है। अब जरा सोचिये तो उस सम्पत्तिसे उन्हें कौन-सा फायदा है। अनियमित भोजनसे कोई न कोई बीमारी बराबर उनके यहां उपस्थित रहती है। डाक्टरोंको रुपये देकर सन्तोष करते हैं। पर कुसमयमें भला डाक्टरोंकी दवा कहां तक काम कर सकती है? उनके यहां किसी तरहका शौक नहीं। खाने-पीने यानी रहन सहनमें परिवर्तन कर एक आदर्श जीवन बनाया जा सकता है। पर कलाके बिना यह सम्भव नहीं!

बहुत लोगोंको सुन्दर कपड़े पहननेका शौक रहता है। खर्च कर सुन्दर कपड़े खरीदते हैं तथा सप्ताहमें एकबार धुलाते भी हैं। पर बेढङ्गे तरीकेसे रखते हैं। अतः शौक रखते हुए भी उनके कपड़े ऐसे मालूम पड़ते हैं, मानो वर्षोंसे इधर-उधर पड़े हों। उन्हें तहदार रखकर हम सुन्दर कपड़े पहन सकते हैं। देहातमें तो कुछ लोग कहा करते हैं कि कपड़े साफ करनेसे अधिक फटते हैं तथा साफ कपड़े पहननेवालेको बहुत बड़ा

शौकीन कहकर पुकारते हैं। यह हमारी मूर्खताका ही परिचायक है। गन्दे कपड़े ही अधिक फटते हैं। विशेष गन्दे कपड़ेकी सफाईमें पैसे भी अधिक खर्च होते हैं। गन्दे कपड़े पहननेसे चर्म रोग आदि भी हो सकते हैं तथा समाजमें अनादर भी होता है। सप्ताहमें कमसे कम एक बार कपड़े साफ करनेपर उक्त शिकायतें दूर हो जा सकती हैं।

कलाके अभावमें हमारा जीवन बेढङ्गा एवं असभ्य है। इसका ताजा उदाहरण आजकल रेल गाड़ियों और जहाजोंके सफर तथा सिनेमा घरोंमें देखनेको मिलते हैं। टिकट कटानेके समय लोग इतनी हुल्लड़-बाजीसे काम लेते हैं कि न तो टिकट लेने-वाले आसानीसे ले सकते हैं और न देनेवाले-को ही सुविधा होती है। गाड़ी पर चढ़नेके समय चढ़नेवाले चढ़नेके लिये जान देते हैं और उतरनेवाले उतरनेके लिये। यही हालत जहाजपर चढ़ने और उतरनेके समय होती है। सिनेमा घरोंमें टिकट कटानेके समय वही रेल गाड़ीके स्टेशनवाला दृश्य! परिणाम-स्वरूप आजकल ऐसे स्थानोंपर प्रायः लड़ा-इयां तो होती ही हैं; साथ ही गिरहकटोंको चोरी करनेमें मदद मिलती है। मैंने सुना है कि माघी पूर्णिमाके अवसरपर भाग-लपुरके पुराने सिनेमा हौलमें दो बच्चे मर गये। हाय! हाय!! हम लोगोंमें कितनी असभ्यता एवं मूर्खता है! विदेशोंमें ऐसा नहीं होता। इस कामको सभ्यता एवं शान्तिसे किया जा सकता है। कलाके अभावमें हमारा जीवन जीवन नहीं रह गया है।

कालेजों एवं स्कूलोंके छात्रोंको देखिये। अधिकांश लड़के वर्ष भर खेला करेंगे। पर जब परीक्षा निकट आयेगी, चौबीसों घण्टे हाथोंमें पुस्तकें ही देखेंगे। परिणामस्वरूप कुछ तो बीमार पड़ कर असफल होते हैं, कुछ परीक्षा देकर भी असफल होते हैं, और कुछ मुश्किलसे उत्तीर्ण होते भी हैं, तो उनमें वास्तविक योग्यता नहीं होती। अगर विद्यार्थी प्रतिदिन थोड़ा भी मेहनत वर्ष भर करें, तो अच्छी सफलता भी मिले और उक्त नौबत भी दूर जाय। हमारे देशमें शिक्षित कहे जानेवालोंकी यह हालत है तो अशि-क्षितोंके बारेमें क्या कहा जाय।

कहां तक कहा जाय—हमारे जीवनमें हर जगह असभ्यता एवं मूर्खता दिखलायी पड़ती है। जहां पाया वहीं थूक फेंक दिया। पाखाना, पेशाब आदिका तो कोई स्थान ही निश्चित नहीं रहता। गन्दी चीजें जहां पाते हैं, वहीं फेंक देते हैं। अतः वायु दूषित होती है। यही कारण है कि विदेशोंसे प्रति-शत अधिक मौतें हमारे ही देशमें होती हैं। किसीको समय निश्चित कर आने या कोई चीज देनेकी बातें तो कह दिया; पर स्वयं कहीं चले गये, या चीज न देनेका कोई बहाना बना दिया। आवश्यकता तो इसकी है कि हम ऐसे कामोंके लिये अपना अलग-अलग स्थान बना लें। अपनी बातों एवं समयकी पाबन्दी रखें।

इस तरह हम देखते हैं कि कलाके अभावमें हमारा जीवन 'मनुष्य-जीवन' नहीं रह गया है। हर जगह हमने मनुष्यत्वको खो दिया है। यही कारण है विदेशी लोग हमारी गिनती पशुओंकी श्रेणीमें करते हैं। क्या हमारा जीवन कलापूर्ण नहीं हो सकता? क्या हम अपने जीवनसे दूसरेको पुनः उपदेश नहीं दे सकते? अवश्य हम अपने जीवनको आदर्शपूर्ण बना सकते हैं। इसके लिये एकमात्र उपाय यही है कि हम अपने जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें कलाको स्थान दें। कलाको साथ लेकर ही हमारा जीवन उज्ज्वल भविष्यकी आशा कर सकता है।

आज समाज-सुधार, देशभक्ति, स्वराज्य आदिका उपदेश हम नेताओं एवं विद्वानोंके मुखसे सुनते हैं। फिर भी हमारा सुधार नहीं हो रहा है। आखिर क्यों? केवल शब्दोंसे सुधार नहीं हो सकता। यदि सुधार हो सकता है तो हमारी व्यक्तिगत उन्नतिसे ही। कारण व्यक्तिका राष्ट्रके घनिष्ट सम्बन्ध है। दूसरेको बढ़ानेके लिये स्वयं बढ़नेकी आवश्यता होती है। महात्मा गांधीके शब्दोंमें देहातके गांवोंमें रहकर स्वयं अपना जीवनोपयोगी सुधार करना चाहिये। ऐसा करनेसे लोग हमारे कार्योंको देखकर स्वयं उससे सबक लेंगे। इसीलिये आवश्यकता इस बातकी है कि दूसरेको उपदेश देनेके बदले हम स्वयं अपना सुधार करें। राष्ट्र अवश्य सुधरेगा।

हमारे देशमें ९३-९४ व्यक्ति एकदम अशिक्षित हैं। उनसे जीवनमें कला लानेकी आशा रखना व्यर्थ है। वास्तवमें इसकी विशेष जिम्मेवारी तो देशकी सरकारपर होती है। पर दुर्भाग्यवश आज हम पराधीन हैं। साम्राज्यवादी सरकार किसी भी तरह हमारा सुधार नहीं कर सकती। उससे सुधार की आशा करना दुराशा है। अतः इसकी विशेष जिम्मेवारी देशके इने-गिने देशभक्तों, विद्वानों, समाज सुधारकों एवं शिक्षितोंके ही कन्धेपर है। इन्हींके ऊपर देशकी उन्नति या अवनति निर्भर करती है। अतः ऐसे व्यक्तियोंसे हमारा नम्र निवेदन है कि वे अपना जीवन कलामय बनायें। अपने चौबीस घण्टेके कार्योंको उचित तरीकेसे बांट लें। हरेक कामका अलग-अलग समय बना लें। खाने, आराम करने, व्यायाम करने, सोने आदिका निश्चित समय अवश्य रहे। उल्लिखित प्रत्येक कार्य हम कलात्मक ढङ्गसे करें। समयका सदुपयोग कर, अपने जीवनके प्रति सेकण्डको कलाके साथ व्यतीत करें। हमारा प्रत्येक कार्य एवं पूरा रहन-सहन ऐसा हो, जिसे कोई देखते ही आह्लादित हो उठे। तभी हमारे जीवनमें सुरुचि एवं सौन्दर्यका प्रवेश होगा। हमारी कला भी तभी महान एवं अमर होगी तथा हम विश्व कल्याणके लिये आगे बढ़ सकेंगे। पर यह कार्य शीघ्र सम्भव नहीं। कोई आदत जो वर्षोंकी हो, शीघ्र नहीं छूट सकती। हमें इसके लिये कठिना-इयां सहनी होंगी। समाजकी बहुतसी दिक्कतें सहनी होंगी। भगीरथ प्रयत्न करना होगा। दृढ़, हिम्मती एवं अध्यवसायी बनना होगा और जीवनमें सतत:जागरूकता लानी होगी।।

फ्रांसमें मित्र आक्रमण और उसकी मुक्ति

गत वर्ष २५ जूनको फ्रांसके तिल्ली-केन अञ्चलमें अंग्रेजी सेनाओंने इन्हीं 'शेरमन' टैंकोंकी सहायतासे नया आक्रमण आरम्भ किया था।

फील्ड मार्शल मांटगोमरीके साथ मि० चर्चिल नार्मण्डीके मोर्चेपर चढ़ाई करनेवाली ब्रिटिश सेनाओंका निरीक्षण करने जा रहे हैं।

पेरिसपर अधिकार कर लेनेके बाद लड़ाके फ्रेंच सैनिक छिपे हुए जर्मन सैनिकोंकी छानबीन कर रहे हैं।

...के उत्तरी तटपर आहत ब्रिटिश सैनिकोंको लन्दन पहुंचाया जा रहा है।
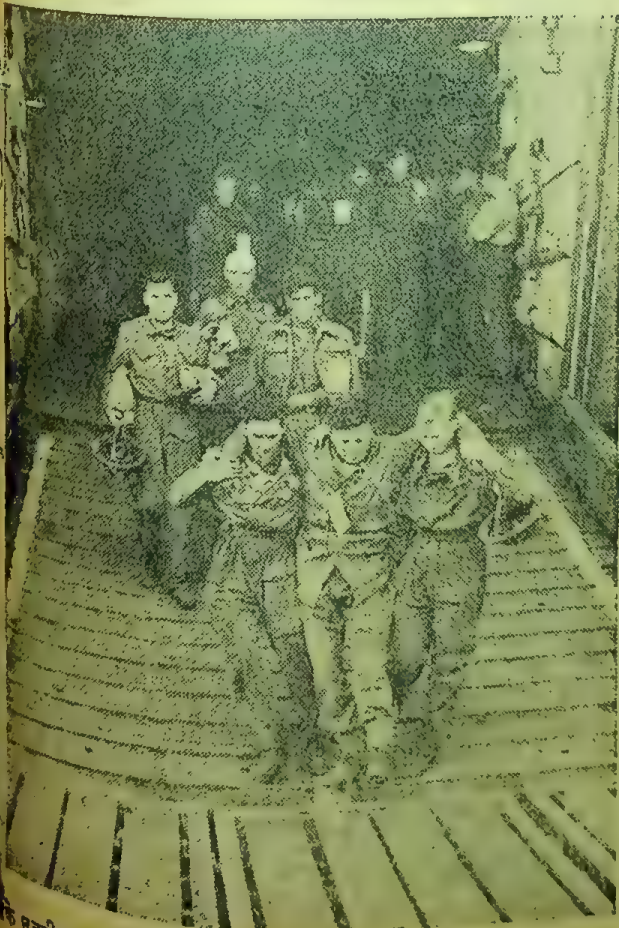
मुक्त पेरिसके नागरिक ब्रिटिश सेनाके एक सैनिकका सोत्साह स्वागत कर रहे

आम और उसका पोषक तत्व

—— :*:*: ——

(लेखक—श्री गंगाप्रसाद गौड़ 'नाहर')

आम केवल भारतवर्षमें पाया जाता है, और यह भारतका सर्वोत्तम एवं सुस्वादु मेवा है। यह जितना देखनेमें चित्ताकर्षक एवं सुन्दर होता है, उतना ही खानेमें भी रोचक तथा प्रिय होता है। इसका दूसरा नाम अमृत-फल है।

आम कई प्रकारका होता है, और सबके नाम अलग-अलग हैं, जैसे तोतापरी, लालदिया, दिलपसंद, सफेदा, लंगड़ा, बम्बई कपुरी, मालदा, सिपिया, कृष्णभोग आदि।

अमेरिकाके अग्रगण्य डाक्टर विलसनने बड़े जोरदार शब्दोंमें स्वीकार किया है कि आममें मक्खनसे सौगुना अधिक पोषक तत्व विद्यमान हैं। उन्होंने परीक्षा करके यह भी सिद्ध किया है कि आमके उचित प्रयोगसे शरीरके स्नायविक जालको शक्ति मिलती है, शुद्ध रक्त बहुतायतसे उत्पन्न होता है, और शौर्य-वीर्य की वृद्धि होती है।

कुछ दिन हुए एम्पायर मार्केटिंग बोर्ड की ओरसे खाद्यमें पोषक तत्वोंके सम्बन्ध में एक विज्ञप्ति निकाली गयी थी, जिसमें बताया गया था कि आममें 'ए' 'सी' और 'डी' विटामिन्स (पोषक तत्व) अत्यधिक पाये जाते हैं। विटामिन 'ए' बाहरी विष एवं रोग-कीटाणुओंके प्रभावको रोकनेवाला है, विटामिन 'सी' समस्त चर्मरोग नाशक है, तथा विटामिन 'डी' दांतों और शरीरकी समस्त हड्डियोंको मजबूत बनाता है।

कितने भी आम कोई क्यों न खाये, यदि वह दो-तीन जामुन उसके बाद खा ले, तो खाया हुआ आम सब-का सब बहुत जल्द जमह हो जाता है। यदि जामुन न मिले, तो सोंठ और नमक पीसकर चुटकीभर खाले, खाये हुए आमका कहीं पता भी न लगेगा। आम खानेके बाद जीरेका पानी पी लेनेसे भी वह शीघ्र पच जाता है। मगर जीरे का पानी बहुत थोड़ा पीना चाहिये। आम खानेकी विधि यह है कि उन्हें रातभर पानी में भीगने दें और सवेरे चूस-चूसकर खायें। कलमी आम शीघ्रपाची नहीं होता। बीजू आम कलमी आमसे अधिक गुणकारी होता है। पके आम, विशेषकर बीजू बड़े पौष्टिक तथा बलवर्द्धक होते हैं। इन्हें दूधके साथ खानेसे इनके ये गुण और भी बढ़ जाते हैं। आममें इतने पौष्टिक तत्व विद्यमान होते हैं कि केवल इनको ही खाकर, मनुष्य बहुत समय तक स्वस्थ रह सकता है। पके आम खानेसे मेदा साफ हो जाता है। जिनको कोष्टबद्धताकी शिकायत रहती हो, या शौच साफ न होता हो, उनके लिये आम पथ्य है। आमाशय सम्बन्धी रोगोंमें पके हुए आमोंका सेवन अधिक लाभदायक सिद्ध होता है। अनिद्रा रोगकी भी यह अचूक औषधि है। थोड़ेसे मीठे बीजू आम खाकरके ऊपरसे कुनकुना दूध पी लीजिये, नींद बिना बुलाये, आपसे आप आजायेगी। भावप्रकाश में लिखा है कि आमसे नया खून पैदा होता है, और तपेदिकके मरीजोंके लिये यह रामबाण औषधि है।

कुछ परीक्षित प्रयोग

नीचे आमके कुछ परीक्षित प्रयोग दिये जाते हैं, जो अत्यन्त लाभकारी हैं :—

१- दो तीन कच्चे आम शामको भून लें और रात भर किसी खुली जगहमें पड़ा रहने दें। सवेरे जलपानके समय, उन्हें मसलकर शरबत बना लें और एक चुटकी भूना हुआ जीरा जरा सा सेंधा नमक और मिर्च डालकर पी जायें। इससे गर्मियोंमें लू कभी असर न करेगी, अनावश्यक प्यास न लगेगी, और दिनभरतबियतमें ताजगी बनी रहेगी।

२- राजयक्ष्मा रोगमें, किसी पत्थर या तामचीनीके पात्रमें ताजे, मीठे, तथा रसपूर्ण आमोंका रस १५-२० तोले भर निचोड़ उसमें छोटी मक्खियोंका शहद ५ तोला मिलाकर प्रातः सायं सेवन करे, तथा दिन-रातमें २-३ बार गाय या बकरीका धारोष्ण दूध मिश्री डालकर पियें। पानीके बजाय यदि दूधका ही सेवन किया जाय, तो अति उत्तम है। इस प्रकार सेवन करनेसे राजयक्ष्मा जैसे असाध्य रोगका रोगी भी स्वास्थ्य लाभ कर सकता है।

३- संग्रहणी या अन्य पेट सम्बन्धी रोगों में प्रातः काल ९ बजे, दो बड़े और पके हुए आमोंके छिलके छील और उनके छोटे-छोटे टुकड़ेकर एक कलईदार कटोरेमें रख दें। बाद में इस कटोरेमें उबालकर ठण्डा किया इतना दूध डालें, जिससे आमके टुकड़े डूब जायं। फिर वह अपने टुकड़ोंको चम्मचसे खाकर वही दूध ऊपरसे पी लें। प्रातः काल इस प्रकार आम खा लेनेके बाद फिर दिनभर तीन-तीन घण्टेपर तीन-तीन छटांक दूध पीना चाहिये। इस बातका खूब ध्यान रखना चाहिये कि आम और दूधके सिवा और कोई चीज खायी-पी न जाय। जब दस्तोंकी संख्या में कमी आ जाय, तो मरीजको दो आम दोपहरके समय भी उसी प्रकार दूधसे साथ देना चाहिये। दो सप्ताह तक इसी तरह विधिवत् आमका सेवन करते रहनेसे संग्रहणी रोग पूरे तौरसे दूर हो जाता है।

४- आम, दूध, गुड़का मिश्रण बड़ा स्वादिष्ट एवं पुष्टिकारक पेय होता है। इसमें इच्छानुसार कुछ खुशबू और थोड़ा जल भी मिलाया जा सकता है। यह पेय दुर्बल लड़कों और युवकोंको बड़ा लाभ करता है। सुबह में हल्के सादे जलपानके बाद एक गिलास, दिनको स्कूलके टिफिनमें एक गिलास, तथा शामके जलपानके समय एक गिलास, यह पेय चायके साथ लिया जा सकता है। इस पेय को दिन और रातके भोजनके साथ व्यवहार नहीं करना चाहिये।

५- पके आमोंका हलुआ भी बनता है, जिसकी तरकीब यह है। पका कलमी गूदेदार आम लेकर उसका गूदा हाथसे मलकर सब रेशा निकाल डालें और कड़ाहीमें घी डालकर उसमें मले हुए आमको डाल दें और खूब भूनें। जब गाढ़ा होने लगे तो थोड़ा-सा गुड़ या चीनी डालकर पकावें। जब हलुआके सदृश हो जाय तो उतार लें।

६- आमोंका गुड़अम्मा, जो एक देहाती पाक है, कम स्वादिष्ट खाद्य नहीं होता। तरकीब यह है कि कच्चे आमोंको छीलकर बारबार फांककर लिया जाता है, फिर बीज निकालकर घी लिया जाता है और जीरेका बघाड़ देकर उसमें थोड़ा गुड़ घोल कर छौंक देते हैं। जब चासनी उबाल खाने-लगती है तो उतारकर कुछ खुश डाल देते हैं। यही गुड़अम्मा है।

इनके अतिरिक्त आमका अमावट, अमचुर, मुरब्बा, तरह-तरहके अंचार, चटनी, आदि प्रसिद्ध ही हैं, जिनका प्रयोग हमारे घरोंमें नित्य होता है।

आमका कल्प

स्वास्थ्य सुधार एवं शरीरको एकदम नया बनानेके लिये आमका कल्प बड़ा लाभकारी सिद्ध होता है। प्रतिवर्ष एक बार आमके दिनोंमें यदि यह कल्प नियमसे कर लिया जाया करे, तो शरीर आजीवन किसी रोग-व्याधिका शिकार बने ही न। आम-कल्पकी विधि नीचे दी जाती है :—

आमका कल्प आरम्भ करनेके लिये सर्व प्रथम शरीरको तय्यार करना पड़ता है। अर्थात् शरीरमें स्थित पहलेके विजातीय द्रव्यों (मलों) से उसे मुक्तकरके निर्मल बनाना पड़ता है। इसके लिये पहले शक्तिके अनुसार दो-तीन दिनोंका उपवास करना चाहिये। उपवास कालमें नित्य सवेरे आध घंटे पेड़ूपर मिट्टीकी पट्टी रखनेके बाद एनिमा लेना न भूलना चाहिये, तथा उन दिनों कागजी नीबूका रस मिला हुआ ताजा जल भी खूब पीना चाहिये। यदि शरीर किसी रोगसे पीड़ित हो तो उपवास कालमें दोनों वक्त एनिमा लेना जरूरी है। तीन दिनके उपवासके बाद पहले दिन रसदार बीजू आमों से रस निकालकर उतना ही पानी मिलाकर पाव-पावभर की मात्रामें सवेरे, दोपहर, शाम को लें। दूसरे दिन इन्हीं तीन समयोंपर रसदार बीजू आम धीरे-धीरे चूसें। तीसरे दिनसे आम चूसनेके बाद पाव-पावभर गायका कच्चा एवं धारोष्ण दूधभी पीना शुरू करदें। दोपहरके लिये दूध एक उफान गरम करके रखा जा सकता है। दूधकी मात्रा डेढ़ पाव अथवा आध सेर तक बढ़ायी जा सकती है। बहुतोंके लिये आम दूधका यह आहार दिनमें दो बार ही करना काफी होगा। जो तीन बार यह आहार करें, उन्हें इस बातका ध्यान रखना चाहिये कि मात्रा अधिक होकर अपच न हो जाय। सवेरे और शामका यह आहार बहुत थोड़ी मात्रामें ही होना चाहिये। इस प्रकार आम दूधपर महीने-डेढ़ महीने अथवा इच्छानुसार अधिक दिनों तक रहकर स्वास्थ्यको उन्नत एवं शरीरको नया बनाया जा सकता है।

यदि इस कल्पके बाद, फिर खाने-पीने में असंयम न किया जाय और सीधे-सादे प्राकृतिक नियमोंपर चला जाय, तथा कसरत, भोजन एवं आरामपर उचित ध्यान दिया जाय तो कोई कारण नहीं कि स्वास्थ्य फिर गिरता दिखायी दे।

भारतमें बैंक व्यवसाय

(लेखक—श्री चन्द्रकुमार वर्मा बी० ए०)

आजकल चारों ओर योजनाओं ...ोपरान्त पुनिर्निर्माणका बोलबाला ...हां तक भारतका सम्बन्ध है हम शिक्षा, ...किक-रक्षा तथा मुद्रा-सम्बन्धी योज... बन चुके हैं और बम्बई योजना तो ...के सभी अङ्गोंकी पुष्टि करके प्रत्येक ...की आमदनीको तिगुना कर देना ...है। परन्तु देखना यह है कि इनमेंसे ...कौनसी योजनाओंपर किस हद तक ...किया जा सकता है। कहना न होगा ...बहुत-सी बातें तो कागज तक ही सीमित ...। बम्बई योजना-निर्माताओंने आरम्भ... कह दिया है कि इसे अमलमें लानेके ...वे यह मान लेते हैं कि देशकी सरकार ...होगी। परन्तु जहांतक हम सोच ...हैं, अब तक इसका कोई भी चिन्ह ...भी नहीं देता। खैर, इस समय हम ...के आर्थिक ढांचेके केवल एक अङ्गपर ...र करेंगे और वह है उद्योगोंको क्रिया... ...बनानेवाली बैंक। अभी तक जो भी ...एं हमारे सामने आयी हैं, किसीने ...इतना प्रकाश नहीं डाला है, जितना ...महत्व देखते हुए आवश्यक मालूम ...है।

...युद्धारम्भसे लेकर अभी तक बहुत-सी ...बैंके चालू हो गयी हैं। शायद उनके ...लक यह भूल गये हैं (जैसा कि वे ...अक्सर भूल जाते हैं) कि युद्धके बाद ...मन्दीका आगमन होगा और उनके ...नीचेकी जमीन खिसकने लगेगी। परन्तु ...मतलब यह नहीं कि हम नयी बैंक ...होनेपर कानूनी प्रतिबन्ध लगा दें। ...हमको बवंडरके उन वर्षोंके लिये ऐसी ...करनी चाहिये ताकि हमारी मौजूदा ...न मुसीबतोंका सामना आसानीसे कर ...इससे पहले कि हम कोई सुधार या ...रखें, हम बैंककी मौजूदा स्थितिपर ...काश डालेंगे। इस समय भारतकी ...संस्थाएं इस प्रकार हैं :—

(...) रिजर्व बैंक आफ इण्डिया— ...केन्द्रीय बैंक होनेके नाते साख तथा ...प्रमुख प्रबन्ध-कर्त्ता है। इसके विषय ...कहनेकी आवश्यकता नहीं। युद्ध ...इसके लाभके आंकड़े काफी लम्बे हैं।

(२) इम्पीरियल बैंकआफ इण्डिया— ...स्थापना १९२१ में हुई थी। भारतके ...बाजारमें यह एक अद्भुत स्थान रखती ...कि केन्द्रीय बैंकके कई काम अभी तक ...करती आ रही है। आजकल इसकी ...शाखाएं भारतमें हैं।

(३) विनिमय बैंक—यह भारतके ...व्यापारके लिये पूंजी तथा साखका ...करती है और अधिकतर विदेशियोंके ...हैं। मुख्य प्रश्न इस समय इनका ...करण है। गतवर्ष ३१ मार्चको ...संख्या १६ थी।

(४) मिश्रित पूंजीवाली बैंक— ...बैंकों दूसरी नामवलीमें जिन बैंकों ...है उन्हें शेड्यूल बैंक कहते हैं। अन्य ...अपेक्षा इनपर कुछ अधिक प्रतिबन्ध ...जिनके कारण ये बाजारमें कुछ प्रभाव... ...स्थान रखती हैं। गत ३१ मार्चको इनकी संख्या ६? थी। शेड्यूलके बाहरवाली मिश्रित पूंजीवाली बैंककी संख्या १५ सौसे अधिक है और इनमेंसे केवल ३ सौ की पूंजी तथा रिजर्व ५ हजार से अधिक है।

(५) देशी महाजन तथा सर्राफ—यह देश भरमें फैले हुए हैं और देशके आंतरिक व्यापारके लिये पूंजीका प्रबन्ध करते हैं। ये भारतके मुद्रा-बाजारके सबसे कम सङ्गठित अङ्ग हैं और इनमें भिन्नता भी काफी है।

(६) मिश्रित संस्थाएं—सहकारी बैंक, भूमि-बन्धक बैंक तथा पोस्ट आफिस सेविंग-बैंक कुछ अन्य संस्थाएं हैं; जिनके क्षेत्र कार्य-विशेष तक ही सीमित हैं।

कलकत्तेके हिन्दुस्तान मोटर्स लि० के जेनरल मैनेजर श्रीमानवंत राय मेहता मोटर व्यवसायके सम्बन्धमें अमेरिकन व्यवसायिकोंसे विचार परामर्श करने न्यूयार्क पहुंचे हैं।

भारतमें कुल शाखाएं १८८५ हैं। विशेषज्ञोंका मत है कि प्रत्येक नगरमें, जिसमें ५०००से अधिक मनुष्य रहते हैं, कमसे कम एक बैंक होनी चाहिये। इस हिसाबसे हमें अभी बैंकोंकी संख्या बढ़ानी चाहिये। परन्तु भारतमें यह प्रश्न इतना आसान नहीं है। बैंक परिचालकोंको हम बैंकोंकी संख्या कम होनेके लिये दोष नहीं दे सकते। मौजूदा स्थितिमें ही सब बैंकें काफी मुनाफा नहीं उठा रही हैं। यदि वे दरिद्र भारतके छोटे नगरोंमें बैंक खोलना आरम्भकर दें तो वर्तमान लाभ भी खतम हो जायं। इसलिये असलमें इस समयकी समस्या बैंकोंकी कमी नहीं, बल्कि उनका गलत सङ्गठन है। छोटी छोटी कई बैंकोंके स्थानपर कुछ बड़ी बैंकें होनी चाहिये, जिनकी कई शाखाएं हों। इस तरह छोटे नगरोंको भी पूंजी तथा साख मिल सकेगी और बैंकोंको भी लाभ बराबर होता रहेगा। होड़को रोकना तथा छोटी बैंकोंका बड़ी बैंकों द्वारा शोषण यह दो कार्य बड़े पैमानेपर होने चाहिये। इन बड़े प्रश्नोंके अलावा ब्योरे, पूंजी, रिजर्व देन, लागत तथा व्यवस्था सम्बन्धी छोटे प्रश्न कानून तथा शिक्षा द्वारा सुलझाये जा सकते हैं। हमारे यहां बैंकिङ्गका प्रचार कम होनेके कारण ये हैं—लोगोंमें विश्वासकी कमी, शिक्षाका अभाव, तथा आमदनीका निम्न स्तर। बिना इनको दूर किये बैंकिङ्ग व्यवसायकी उन्नति नहीं हो सकती। इसलिये उद्देश्य पूर्ण होनेके लिये शिक्षा योजना तथा बम्बई योजनाकी तरह कोई योजना एक साथ कार्यरूपमें परिणत की जानी चाहिये।

देशी महाजनोंका सबसे बड़ा प्रश्न है उन्हें सङ्गठित करना तथा उनके और रिजर्व बैंकके सम्बन्धको दृढ़ करना। सङ्गठित करने के लिये ऐसी चेष्टा होनी चाहिये, जिससे देशी महाजनोंका भी एक शेड्यूल बने, उनकी कार्यवाही भी कानून द्वारा प्रतिबन्धित की जाय, जिससे उनमें सामंजस्य स्थापित हो सके। जब इतना हो जाय तब रिजर्व बैंक उनको उसी भांतिकी सुविधाएं दें जैसी वह शेड्यूल बैंकोंको देती है।

इन सब प्रश्नोंके अलावा एक महान प्रश्न है बैंकोंका उद्योगोंसे सम्बन्ध।

भारतवर्षमें बैङ्कोंका प्रादुर्भाव बहुत बिलम्बसे हुआ। उद्योग उनसे पहले ही काफी उन्नति कर चुके थे और बैंकोंके अभावके कारण अपने निजी ढङ्गोंसे पूंजीका प्रबन्ध कर रहे थे। तत्पश्चात् उन्नतिमें बैंक तथा उद्योग अपने-अपने रास्तोंपर चलते रहे। यूरोप तथा अमेरिकाकी तरह यहां इन दोनोंमें सहायता तथा सहकारिताका व्यवहार नहीं रहा; बल्कि इङ्गलैंडकी तरह ये दोनों पृथक-पृथक रास्ते पकड़े रहे। इङ्गलैंडमें स्थिति दूसरी थी। वहां औद्योगिक उन्नति इस हद तक पहुंच चुकी थी कि जनता उस क्षेत्रमें काफी शिक्षित हो चुकी थी। दूसरे वहां 'इनवेस्टमेण्ट ट्रस्ट' आदि संस्थाएं स्थापित हो चुकी थीं। भारतमें इन सबकी कमी है। इसलिये जहां इङ्गलैंडमें औद्योगिक तथा बैंक सम्बन्धी उन्नति अलग अलग होती रही वहां भारतमें दोनोंकी उन्नति और प्रगति एक दूसरे पर आश्रित होने तथा रास्ते पृथक होनेके कारण रुक गयी। इधर भारतवर्षके उद्योग पूंजीकी कमी अनुभव करने लगे। उधर राष्ट्रीय आय तथा सुरक्षाकी कमी होने के कारण बैंकें भी अपना क्षेत्र न फैला सकीं। अभी हालमें मैनेजिङ्गएजेन्सी प्रथाकी त्रुटियां अनुभव की जाने लगी हैं। कुछ लोग तो इस प्रथाको उठा देना ही चाहते हैं। यह विचार ठीक नहीं है। परन्तु इतना मानना ही पड़ेगा कि यह प्रथा समयसे पुरानी पड़ गयी और हमें उद्योगोंकी पुष्टिके लिये पूंजीके नवीन साधन खोजना अनिवार्य है। यह कमी औद्योगिक बैंक ही पूरी कर सकती हैं।

किसी भी उद्योगकी पूंजी सम्बन्धी आवश्यकताएं दो तरहकी होती हैं। एक कम अवधिके लिये और दूसरी अधिक समयके लिये। आज कल भारतकी बैंकें कम अवधि वाली आवश्यकताओंके लिये तो प्रबन्ध करती हैं (यद्यपि इसमें भी कुछ त्रुटियां हैं) परन्तु लम्बी अवधिवालोंकी आवश्यकताएं मैनेजिङ्गएजेण्ट,शेयर और बांड द्वारा ही पूरी होती हैं। परन्तु कभी-कभी यह साधन अपने कार्यमें हिचकिचाहट महसूस करने लगते हैं (जैसे मन्दी और अविश्वासके समयमें) और उस समय उद्योग भूखे ही रह जाते हैं। कईको तो काल ग्रसित कर लेता है। जर्मनी, आस्ट्रिया, जापान, बेल्जियम आदिकी बैंकें मिश्रित भांतिकी हैं अर्थात वे व्यापारिक बैंकिङ्गके अलावा उद्योगोंकी आवश्यकताओंको भी पूरा करती हैं। कुछ लोग उसी प्रकारके कार्य यहांकी बैंकोंके लिये भी प्रस्तावित करते हैं। परन्तु हमारी बैंकें लाचार हैं। वे छोटी अवधिके लिये जमा किया हुआ धन केवल छोटी अवधिके लिये लगा सकती हैं। सत्य तो यह है कि इन आवश्यकताओंके लिये नवीन संस्था स्थापित की जानी चाहिये, जिसमें सरकार तथा बड़े-बड़े औद्योगिक नेता एक साथ कार्य करें।

यह प्रश्न नया नहीं है और औद्योगिक बैंकोंकी आवश्यकता १९१८ में ही अनुभव कर लीगयी थी, जब कि ताता औद्योगिक बैंकने कार्य करना आरम्भ किया था। उसके बाद पंजाब, संयुक्तप्रान्त तथा पश्चिमी भारतकी बैंकोंने संयुक्त होकर औद्योगिक आवश्यकताओंको पूरा करनेकी चेष्टा की। परन्तु उसमें उन्हें असफलता हुई और अन्य कार्यकर्त्ताओंने फिर उस क्षेत्रमें कदम रखनेका साहस न किया। इधर सरकारके सहयोगसे किसी-किसी प्रान्तमें प्रान्तीय औद्योगिक कार्पोरेशन स्थापित हुए हैं। पर ये छोटे पैमानेपर हैं और अधिक कार्यशील नहीं हैं। दूसरे इनके कार्यक्रमको एक सूत्रमें बांधनेवाली कोई केन्द्रीय संस्था नहीं है। भविष्यमें ऐसी औद्योगिक बैंकें स्थापित होनी चाहिये, जिनकी पूंजी १०-१५ करोड़ रुपये तक की हो। इनके शेयर सरकारको भी खरीदने चाहिये जिससे जनसाधारणका इसमें विश्वास बढ़े तथा इन्हें शक्ति भी मिले। शिक्षित कार्यकर्त्ताओंकी कमी भी पूरी करनेके लिये सरकारको प्रबन्ध करना चाहिये। इसमें औद्योगिक तथा पूंजीवाले नेताओंका सहयोग भी आवश्यक है।

भारतवर्ष कृषि-प्रधान देश है और उसकी कृषि-सम्बन्धी पूंजीके प्रबन्धके विषयमें कुछ वाक्य लिखना आवश्यक है। अन्य उद्योगोंकी भांति कृषिमें भी छोटी तथा लम्बी अवधिकी आवश्यकताएं होती हैं। प्रथमतः बोने काटने, तथा पैदावार बाजारमें ले जानेके प्रश्नोंको हल करनेके लिये और द्वितीयतः, भूमि तथा पशु खरीदने, भूमिको उम्दा बनाने, तथा ऋण चुकाने आदिके लिये। सहकारी संस्थाएं इन दोनों आवश्यकताओंको पूरा करनेकी चेष्टा कर रही हैं; परन्तु उनके साधन क्षीण हैं और उन्होंने

अपना ध्यान अधिकतर ऋणके प्रश्नको सुलझानेमें लगाया है। भविष्यमें उन्हें कृषक के हर प्रश्नको हल करनेकी चेष्टा करनी चाहिये और क्षेत्रमें उनका विकास होना चाहिये। रिजर्व बैंकके बढ़ते हुए लाभ जो सरकारी कोषमें बढ़ते जा रहे हैं कृषि-विभाग में जाने चाहिये। जिससे वह सहकारी विभागको पर्याप्त सहायता पहुंचा सकें। लम्बी अवधिके ऋणके लिये भूमि-बन्धक बैंकोंका प्रयोग होना चाहिये और इन बैंकोंको अपना ध्यान भूमिकी उन्नतिकी ओर अधिक देना चाहिये। एक केन्द्रीय कृषि-पूंजी-प्रबन्ध कार्पोरेशन स्थापित होने चाहिये। इसकी पूंजीमें सरकार, बैंकों (मिश्रित पूंजीवाले तथा सहकारी दोनों) तथा पूंजीपतियों, सभीको भाग लेना चाहिये।

भविष्यमें बैंकोंका पुनर्निर्माण करते समय उपर्युक्त बातोंका ध्यान रखना चाहिये। ऊपर कोई योजना नहीं रखी गयी है; परन्तु निर्माणकर्त्ताओं तथा जनसाधारण-का ध्यान बैंकोंकी ओर आकृष्ट करके यह बतानेकी चेष्टा की गयी है कि बैंकोंके पुनर्निर्माणका प्रश्न एक स्वतन्त्र प्रश्न है जो काफी महत्व रखता है। इस प्रश्नकी क्या क्या आवश्यकताएं हैं तथा वे कैसे पूरी की जा सकती हैं इसपर भी कुछ प्रकाश डाला गया है। इतना फिर दुहराना आवश्यक प्रतीत होता है कि भविष्यमें हमारी सबसे बड़ी आवश्यकताएं हैं—बैंकोंका आपसमें सहयोग, विनियम बैंकोंका भारतीयकरण, समाज सेवा तथा कर्तव्यकी ओर ध्यान, तथा औद्योगिक बैंकोंकी स्थापना। बिना इन विचारोंको स्थान दिये कोई भी योजना जो भारतके उद्योगों तथा कृषिको अग्रसर करना चाहती है, अधूरी एवं शक्तिहीन नींवपर निर्धारित रहेगी।

मानवीय ज्ञान विश्वकोष

ब्रिटिश भौतिक विज्ञानवेत्ता प्रोफेसर पोलाइने हेली स्केचमें लिखा है कि संसार भरके समस्त जानकारीपूर्ण साहित्यको व्यवहार योग्य बनानेके लिये एक सङ्कलन किया जाना चाहिये। संसारके प्रत्येक देशमें जहां वैज्ञानिक अथवा अन्य जानकारीपूर्ण साहित्य की सृष्टि होती, एकराष्ट्रीय सूचनाकी स्थापना की जाये। इसके आदेशानुसार विभिन्न विषयोंके लिये विज्ञान चिकित्सा, कानून इतिहास आदिके लिये एक-एक कार्यालय स्थापित हो।

ध्वस्त लन्दन और उसका पुनर्निर्माण

भयङ्कर जर्मन बमों और अन्य शस्त्रास्त्रोंने ब्रिटेनकी राजधानी लन्दनको बुरी तरह क्षत-विक्षत कर दिया है। आज युद्धके पहलेके लंदनकी केवल प्रेतात्मा विद्यमान है। पुनर्निर्माणका जटिल प्रश्न लन्दनवासियोंके सामने विकाल रूपमें उपस्थित है। तरह-तरहके सुझाव और परामर्श पेश किये जा रहे हैं। लेकिन युद्धमें बुरी तरह व्यस्त लन्दनवासियोंको महत्तर परिवर्तनोंपर विचार करनेकी अभी फुरसत नहीं है। मि० ब्रायनपेण्टनने ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशनसे एक ब्राडकास्ट किया है जिसका मुख्य अंश नीचे प्रकाशित किया जाता है।—सम्पादक।

ब्रिटिश साम्राज्यकी गौरवपूर्ण, दीप्ति- राजधानी लन्दन आजसे छः वर्ष पूर्व सजावट, सुन्दरता, ऐश्वर्य और प्रतिभा ...तुक अतिथियोंऔर यात्रियोंको आश्चर्य ...ता था। गगनचुम्बी अट्टालिकाएं, राजपथ, सुन्दर और विस्तृत उद्यान, ...ये होटल और जलपान गृह, विद्युत- ...से प्रकाशित तथा पियानके मधुर पूरित नाचगृह, सिनेमा और थियेटर ...य लन्दनको एक ईर्षाकी वस्तु बना ...। लेकिन भयङ्कर हवाई युद्ध और बम- ...गत छः वर्षोंने लन्दनको एकदम बदल ...है। जिस प्रकार मदमाते यौवनके ढल ...मनुष्य दीन-हीन और पराश्रित हो

लन्दनकी गगन-चुम्बी ध्वस्त अट्टालिकाओंका एक दृश्य

...ता है, उसी प्रकार आजका लन्दन भी ...स अवस्थाको प्राप्त हो रहा है। आज ...भयङ्कर बमवर्षाके कारण क्षत-विक्षत हो ...है। उसकी चमकती हुई स्वच्छ और ...अट्टालिकाएं छिन्न-भिन्न और मलीन ...भयङ्कर रूप धारण कर रही हैं। आइने ...तरह स्वच्छ और चिकनी सड़कोंपर जगह- ...जगह गड्ढे पड़े हुए हैं। मनुष्योंके हर्ष- ...और कांतिमय मुख अब विषादपूर्ण ...श्री-हीन हो गये हैं।

...युद्धके पूर्व लन्दनकी गलियोंमें सहस्र- ...मनुष्योंके कारण प्रत्येक समय चहल-पहल ...रहती थी। गलीके दोनों ओर स्थित रेस्तरां ...होटल और धूएं-धुकड़से परिपूरित रहते ...तरह-तरहके मनुष्य—वृद्ध, बाल, बनिता ...अपनी अपनी धुनमें मस्त एक दूसरेसे धक्का ...मन्तव्य स्थानोंकी ओर दौड़े चले जाते ...आज वे स्थान सुनसान खण्डहर हो ...गये। कूडूसवरीके जार्जीनिया स्क्वायरकी ...कल्पना कर सकते हैं, जहां युद्धके पूर्व ...डूबते हुए सूर्यकी सुनहली ...लोग बैडमिंटन खेला करते थे और ...कालीन मधुर प्रकाशमें पुस्तकाव- ...लोकन किया करते थे। पिकैडिली और दूसरे ...के आनन्दमय, विनोदपूर्ण जीवनका ...भी आप उसी प्रकार अपने मानस- ...पर अङ्कित कर सकते हैं। लेकिन वे सभी ...आज एक विचित्र प्रकारकी उदासी- ...और मलीनताके वासस्थल बन गये हैं। ...वर्षोंके बाद लन्दन लौटे हुए वहांका एक निवासी लिखता है—'जिस स्क्वायरमें मेरा निवास स्थान था वहां जाकर मैंने देखा कि वहांका सुन्दर और मनोहर बाग अब उजाड़ हो रहा है। लानपर बड़ी-बड़ी घासें उग आयी हैं। आवश्यक देख-रेखके अभावसे अधिकांश पेड़ और पौधे बेडौल और शुष्क हो गये हैं और बम अग्निसे ध्वस्त इमारतें खाली पड़ी हुई हैं। जिस मकानमें मैं रहता था, उसकी केवल एक दीवाल साबित रह गयी है। मेरे बैठकखानेका फर्श बड़ी-बड़ी घासोंसे घिर गया है। चारों ओर श्मशान की-सी शान्ति छायी हुई है। कई इशक मकान जो गिर पड़े हैं उन्हें तो फिरसे उठाया जा सकता है लेकिन—मैं यह सोचकर कांप उठा—वे मनुष्य जिनकी धज्जियां उड़ गयी हैं अब फिरसे कैसे निर्मित किये जा सकेंगे?'

लन्दनमें जिस प्रकार लोग रात्रि-यापन करते हैं उस दृश्यको देखकर हृदय द्रवित हो जाता है। अगणित मनुष्य, बाल और वृद्ध रात्रिके समय तहखानोंमें घुस जाते हैं और भेड़ तथा बकरियोंकी तरह एक दूसरेसे सटे हुए किसी प्रकार रात काटते हैं एवं काम करनेके समय फिर बाहर होते हैं। ये मनुष्य लन्दनके विछिन्न समाजके प्रतीक हैं। बहुत से लोग रेलवे प्लेटफार्मपर अपने जीवनको बिताते हैं। लेकिन ऐसा क्यों? इसलिये कि उनके सामाजिक जीवनका ढांचा भग्न हो चुका है। वेसमाजसे बहिष्कृत-से हो चुके हैं। और इन मनुष्योंके लिये समाज निरानन्द हो गया है। युद्धने न मालूम ऐसे कितने अभागोंको समाजसे पृथक कर उनके जीवन को बिल्कुल सूना बना दिया है।

जिस स्थानमें लोग सकड़ों सालसे रहते चले आये थे, जहां उन्होंने आपसमें मेल मुहब्बत तथा भाईचारेका सम्बन्ध स्थापित कर लिया था और जहां सुदीर्घकालके उनके सतत परिश्रमने एक शान्ति तथा प्रेममय जीवनका सृजन किया था, वहीं एक रोज सर्वनाशी, क्रूर और विध्वंसकारी जर्मन बम गिरा और शताब्दियोंके सङ्गठित जीवनकी धज्जियां उड़ा दी गयीं। कितने अरमान, कितनी योजनाएं जहां की तहां रह गयीं। मनुष्योंके सुख स्वप्न मिट्टीमें मिल गये और वे निराशाके घने अन्धकारमें घिर गये।

ध्वस्त मकानोंके स्थानपर नये और सुन्दर मकान बनाये जा सकते हैं। गलियां प्रशस्त, सुदृश्य सड़कोंमें परिवर्तित की जा सकती हैं और इस तरहसे लन्दनमें नयी सृष्टि का आविर्भाव किया जा सकता है। लेकिन इस समय तो लन्दन, लन्दन नहीं रह गया। हां, उसकी प्रेतात्मा छायाकी भांति अवश्य वर्तमान है। जिन मनुष्योंका नाश हो चुका उनकी पूर्ति होनेमें काफी देर लगेगी और बहुत काल तक लन्दन अपूर्ण ही रहेगा।

पुनर्निर्माणकी समस्या

लन्दनकी यह विछिन्न जीवन-कड़ी कैसे जोड़ी जाय? भग्न इमारतोंकी मरम्मत और पुनर्निर्माणके साथ किस प्रकारकी सामाजिक व्यवस्थाका विकास किया जाय? जीवनको किस प्रकारके ढांचेमें ढाला जाय? ये कुछ ऐसे प्रश्न हैं जो मनुष्यको किंकर्त्तव्य-विमूढ़ बना देते हैं। मनुष्यकी वांछना और वस्तु स्थितिमें प्रायः सामञ्जस्य स्थापित नहीं होता। अतः उसकी कल्पित योजना जहां कि तहां रह जाया करती है। निश्चय ही मनुष्य ऐसी शान्ति चाहता है जो स्थायी हो और जहां युद्ध और उपद्रवकी आशंका न हो। लेकिन इस युगमें मानवने इतनी बार धोखा खाया है कि उसका हृदय हमेशा सशंकित रहता है। मैंने एक ऐसे व्यक्तिसे जिसके दिमागमें अंग्रेजी जीवनको पुनर्सङ्गठित करनेके सम्बन्धमें अनेक योजनाएं विचरण करती हुई बतायी जाती हैं पूछा था। उसने कहा कि 'सामूहिक सुरक्षासे ही विश्वका त्राण सम्भव है। लेकिन अगर सामूहिक सुरक्षाकी प्राप्तिमें हम असफल रहे तो हमें यह भी विचार करना होगा कि भावी युद्धकी रूपरेखा क्या होगी। आज जो उड़ते हुए बम पहुंच रहे हैं, इनमें उस युद्धकी एक झलक आप पा सकते हैं। इसलिये हमें उद्योगधन्धोंके केन्द्रोंको इङ्गलैण्डके दक्षिण-पूर्वीय भागसे सुदूर स्थापित करनेकी योजना बनानी पड़ेगी शीशेके बने हुए मकान युद्धके पहलेके वर्षोंमें जितने वांछनीय और उपयोगी जान पड़ते थे, भावी पुनर्निर्माणमें वे उतने उपयोगी न रह जायेंगे। पृथ्वीके धरातलपर मकानोंकानिर्माण भी व्यवहारिक न जान पड़ेगा। अंग्रेजजाति गोलियों और बमोंकी बौछारें सह रही हैं और युद्धसे अब कुछ श्रांत हो रही है, वहां दर्शकका जीवन इन विभीषिकाओंसे बिलकुल अक्षुण्ण हैं।

अंग्रेज जानते हैं कि जर्मन इस युद्धमें विजयी नहीं हो सकते। इस लिये वे मलवेको साफ करनेके कठोर और व्यस्तकारी कार्योंकी ओर ध्यान देने लगे हैं। कोई भौतिक पुनर्निर्माणमें उनको सहयता दे सकता है, लेकिन इससे उनकी कठिनता ही हल होने नहीं जा रही है। वास्तवमें कठिनकार्य तो सामाजिक पुनर्सङ्गठन और मानव जीवनका खाका तैयार करना है। शताब्दियोंसे शांतिपूर्ण विकासवादी ढंगसे संगठित अपने

बमग्रस्त मकानोंके मलवेमें दबी हुई लाशोंका एक सुशिक्षित कुत्तेकी सहायतासे पता लगाया जा रहा है।

समाजके खण्डहरमें खड़े होकर अगर :आजके कुछ कर्तव्यविमूढ़ हो रहे हैं तो इसके लिये वे क्षम्य हैं। लेकिन मुझे उनके आचरण-दृढ़तामें विश्वास है। वर्तमान युद्धसे खाये हुए धक्केका प्रभाव मिला लेनेपर जब समझा जायेगा। भविस्यमें पातलपुटीके निवासकी बात सोचनाभी कुछ विभिन्न सा है। लेकिन अगर भौतिक निर्माणके सम्बन्धमें जिसपर सामाजिक पुनर्सगठन आश्रित है, अगर लोगोंकी योजना अस्पष्ट और किंकर्त्तव्य-विमूढ़ जैसी हो, तो इसपर आपको आश्चर्य करनेकी कोई बात नहीं। अगर भावी जटिलताओंकी गांठ खोलनेमें उन्हें अब तक सफलता नहीं मिली है तो यह भी आश्चर्यकी बात नहीं। किसी दलोंकी दृष्टिमें जो समस्याएं अधिक महत्व पूर्ण हों और अंग्रेजोंका दृष्टिकोण उससे भिन्न हो तो इसमें अचरजकी बात नहीं, क्योंकि जहां गत ९ वर्षों से वे इह महसूस कराने लगेंगे कि उनके पास साम्राज्य है और अपने समाजका सङ्गठन उससे अधिक व्यापक आधारपर करने लगेंगे, जो अभी तक वे सोच सके हैं तो हम आश्चर्यित नहीं होंगे। ऐसा ख्याल करनेके सामाजिक, आर्थिक और सनिक अनेक कारण हैं। इङ्गलैंडसे अपने सामाजिक जीवनके अधिकांशको उपनिवेशोंमें ले जानेके विचारपर अंग्रेजोंको हार्दिक दुख होता है लेकिन इस प्रादुर्भाव इस सन्देहके कारण हुआ है कि इङ्गलैंडके दक्षिण पूर्व कोनेके खतरेसे भरे अंचलोंमें व्यवसायोंको केन्द्रित करना या उन्हें जमीनके अन्दर सुरङ्गोंमें व्यवस्थित करना बुद्धिमतापूर्ण होगा या नहीं। मेरा ख्याल है कि कुछ लोग यह भी महसूस करने लगे हैं कि दूर-दूर बसे साम्राज्यके देश सैनिक दृष्टिकोणसे यातायातके सम्बन्धमें महत्व ही हैं क्योंकि खतरा उपस्थित होनेपर आवागमनके मार्ग खतरेसे खाली नहीं रह जाते। तब कुछ लोग कह सकते हैं कि साम्राज्यके प्रत्येक देशमें इङ्गलैंडके साधनों का बटवारा इस प्रकार कर दिया जाये कि वे मौका पड़नेपर एक दूसरेका सहायक बन सकें। मेरा ख्याल है कि कुछ अंग्रेज इसको समस्या समाधानका एक आधार स्वीकार कर सकते हैं लेकिन ऐसी योजनापर स्वीकृति देनेवाले लोगोंकी संख्या मुट्ठीभर ही हो सकती है। किसी चीजको स्वीकार करनेमें अंग्रेज यथार्थतः वास्तविकतावादी हैं इसीलिये उनकी दृढ़ता एक खास गुण है। इसलिये वे अपनी समस्याओंके सम्बन्ध स्वयं निर्णय कर लेंगे। उनपर सलाहोंका बोझ लादना इस समय उचित नहीं है। वे वर्तमान युद्धमें बुरी तरह व्यस्त हैं और काफी थक भी गये हैं तथा कठिनाइयों और बाधाओंके कारण वे विचलित भी हो गये हैं। इसलिये अभी तक वे महान परिवर्तनोंके प्रश्नपर विचार करनेके लिये तैयार नहीं हैं।

कौन क्या कहता है

बङ्गालमें वस्त्राभाव

बङ्गाल नेशनल चेम्बर आफ कामर्सके [illegible] मि० आर० पी० सेनने एक वक्तव्यमें [illegible] कि बङ्गालमें वस्त्रका अभाव एक [illegible] बात है। भारतमें मिलोंसे जितना [illegible] उत्पादन होता है वह औसतन ११।। [illegible] प्रति आदमी प्रति वर्ष पड़ता है। लेकिन [illegible] लगाकर यदि देखा जाय, तो बङ्गाल [illegible] हुआ और बना हुआ वस्त्र औस- [illegible] करीब १४ गज प्रति आदमी प्रति वर्ष [illegible] है। लेकिन फिर भी जनताको वस्त्र- [illegible] का कष्ट उठाना पड़ता। इसका रहस्य [illegible] है कि बङ्गाल सरकारका वस्त्र कण्ट्रोल [illegible] है और वह चोर बाजार तथा [illegible] को रोकनेमें असमर्थ रहा है। वस्त्र- [illegible] को दूर करनेके लिये उचित यह होगा [illegible] सम्मानीय सज्जन सरकारको [illegible] दें और जो दुकानदार मुनाफाखोरी [illegible] के अपराधी पाये जायें, उन्हें वस्त्र [illegible] कर दिया जाय।

[illegible] कोडपर श्रीशास्त्रीका मत

[illegible] कमेटीके सामने अपना मत प्रगट [illegible] हुए माननीय श्री श्रीनिवास शास्त्रीने [illegible] कोडका समर्थन किया। उन्होंने [illegible] सम्पत्तिपर स्त्रियोंका अधिकार [illegible] प्रथाको उचित कहा। फिर भी [illegible] मतानुसार कट्टरपन्थी हिन्दुओंकी [illegible] पर उचित ध्यान देना चाहिये।

बीमा कम्पनियोंका भविष्य

भारतीय बीमा एसोसियेशनके सभापतिकी हैसियतसे बोलते हुए मि० एन० दत्त ने कहा कि जीवन बीमा व्यवसायने पिछले वर्षोंमें अप्रत्याशित उन्नति की है। लेकिन इस उन्नतिमें मुद्राप्रसार भी एक कारण रहा है। अतः बीमा कम्पनियोंका यह कर्तव्य है कि वह ऐसे नियमोंका अवलम्बन करेंगी जिससे उसका बढ़ा हुआ व्यवसाय युद्ध के बाद भी स्थिर रहे। यह बड़े सन्तोषकी बात है कि बीमा कम्पनियोंका खर्च कम होता जा रहा है और यदि उनका व्यवसाय उदीयमान अथवा स्थिर रहा तो बीमा खर्चके और भी कम हो जानेकी सम्भावना है। इन्स्योरेंस कानूनके नये प्रस्तावित संशोधनोंकी आलोचना करते हुए मि० दत्तने कहा कि इन्स्योरेन्स कमीशनकी दर घटानेका जो आयोजन किया जा रहा है वह अकारण और भारतीय बीमाके हितके विरुद्ध होगा। इस मंहगीके समयमें इन्स्योरेन्स एजेंट कभी इसे गवारा न करेंगे कि उनका कमीशन बढ़नेके बजाय कम हो जाय। परिणाम स्वरूप उनकी उदासीनताका कुफल भारतीय बीमाको उठाना पड़ेगा, क्योंकि बीमा व्यवसाय बहुत कुछ एजेन्टोंके ऊपर ही निर्भर है। बीमाके औसत खर्चको सीमित करनेके प्रस्तावित संशोधनकी आलोचना करते हुए मि० दत्तने कहा कि यह अव्यवहारिक है और उसकी सीमा बांध देनेका अर्थ यह होगा कि बीमा कम्पनियोंको भारी अड़चनका सामना करना पड़ेगा। कानून द्वारा ऐसी सीमा बांध दी गयी है कि पालिसीकी मदमें जमाकी रकमका ५५ प्रतिशत सरकारी या गिल्ट एण्ड कागजोंमें लगाना पड़ेगा। इसका परिणाम यह होगा बीमा कम्पनियोंका लाभ कम हो जायगा और इस तरह भारतीय बीमा व्यवसायको धक्का लगेगा।

मुसोलिनीकी अपील

जर्मन समाचार समितिने मुसोलिनीका एक भाषण ब्राडकास्ट किया है जिसमें मुसोलिनीने जर्मनोंको पूर्ण सहयोग प्रदान करनेके लिये अपील की है। उन्होंने कहा है कि यदि इटालियन अफसर कट्टरतासे युद्ध करते तो आज मैं कैरोमें भाषण करता होता। अपनेको पूर्ण विनाशसे बचानेके लिये यदि जर्मन सेना आज कोई भी हथियार या आश्रय ग्रहण करती है तो वह ईश्वर और दुनियाकी नजरोंमें न्यायपूर्ण ही समझा जायगा।

सैनिक शिक्षाकी आवश्यकता

भारतीय सीमाकी रक्षाकी आवश्यकताओंपर विचार करनेके लिये भारतके जङ्गी लाटने जिन युद्ध विशेषज्ञोंकी एक कमेटी स्थापित की है, उसके प्रधान सर हेनरी ब्रेडफोर्ड विलकाक्सने अपना यह विचार प्रगट किया है कि भारतीयोंको सेना तथा उसकी आवश्यकताओंका बहुत कम ज्ञान है। सेनाके भारतीयकरणकी मांग बहुत विजाब है लेकिन यह तभी सम्भव हो सकता है कि चरित्रवान, अच्छे व्यक्तित्वके और संगठन कार्यमें सुदक्ष युवक अधिकाधिक संख्यामें सेनामें भाग लें। विश्वशान्तिकी योजनाको सफलीभूत करनेके लिये एक अत्यन्त शक्तिशाली संगठनकी आवश्यकता है जिसमें सभी देशोंके फौजी युवकको स्थान मिलना चाहिये। आवश्यक सैनिक शिक्षाका कार्य भारतीय विश्वविद्यालयोंके द्वारा सम्पन्न किया जा सकता है। जो युद्धोपयोगी उद्योग धन्धा भारतमें कायम हो गया है उसका अस्तित्व युद्धके बाद भी रहेगा।

सिन्ध स्वायत्तशासनके अयोग्य

सिन्धके वर्तमान शासन संकटके सम्बन्धमें श्रीश्यामदास पी० गिडवानीने कहा कि पिछले ६ सालमें सिन्ध मन्त्रिमण्डल को पांच बार हार खानी पड़ी और अभी तक सिन्धका शासन स्थायी रूपसे स्थापित नहीं हुआ है एवं इसकी आशा उस समय तक नहीं की जा सकती जबतक कि कांग्रेस अपने प्रतिनिधिको मन्त्रिमण्डलमें आनेकी अनुमति नहीं देती।

मात्र एक साड़ीके लिये कड़कड़ाती धूपमें महिलाओंकी कठोर तपस्या। कलकत्तेकी एक दुकानके सामने लगी फर्लांगों लम्बी कतारका [illegible] दृश्य।

अमेरिकामें श्रीमती पण्डित

अमेरिकामें श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित आजकल अपने भाषणसे उन गलतफहमियोंको दूर करनेकी कोशिश कर रही हैं जो भारतके प्रति अमेरिकनोंमें फैली हैं। अमेरिकनोंका ख्याल है कि भारतमें साम्प्रदायिक एकता कभी स्थापित नहीं हो सकती। इसके खण्डनमें श्रीमती पण्डितका कहना है कि हिन्दू-मुसलिम समस्या गम्भीर नहीं है। कांग्रेसके वर्तमान राष्ट्रपति मुसलमान हैं और कांग्रेस सभी जातियोंकी संस्था है। हिन्दुओंकी तरह मुसलमानोंका भी ध्येय पूर्ण स्वतन्त्रता है। अतः उनके ध्येयमें कोई मतभेद नहीं है। क्रिप्स वार्ता इसलिये विफल हुई कि समझौतेके लिये पूरे रूपसे प्रयत्न नहीं किया गया।

देशकी आर्थिक अवस्था

फेडरेशन आफ इण्डियन चेम्बर्स आफ कामर्सके अठारवें अधिवेशनमें मि० जे० सी० सेतलवाड़ने देशकी आर्थिक स्थितिपर एक सारगर्भित भाषण दिया। आपने कहा कि भारतका स्टर्लिङ्ग पावना प्रतिदिन बढ़ रहा है। यदि इसको इसी तरह बढ़ने दिया जायेगा तो इस समस्याको हल करना मुश्किल हो जायेगा। अतः सरकारको चाहिये कि इस पावनेको प्राप्त करनेके लिये सम्राटकी सरकारसे अविलम्ब बातचीत शुरू कर दें।

मुद्रावृद्धिको रोकनेका सरकारी प्रयत्न कुछ अंशमें अवश्य सफल हुआ; लेकिन वह चोर बाजार और वस्तु संग्रहको नहीं मिटा सका। वर्तमान समयमें भारतीय साधनोंपर अत्यधिक दबाव डाला जा रहा है। यदि यही अवस्था रही, तो स्थिति नाजुक हो जायगी।

कोयलेकी समस्या

कोयलेकी समस्याने बहुत गम्भीररूप धारण कर लिया है। यदि सरकार कोयलेकी कमी पूरी करनेके लिये विशेष रूपसे प्रयत्नशील नहीं होगी, तो युद्धोत्तर निर्माणकी सारी औद्योगिक योजनाएं खटाईमें पड़ जायेंगी।

राष्ट्रीय सरकार

राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना केवल राजनीतिक आवश्यकता ही, नहीं बल्कि देशकी

आर्थिक स्थितिको सुधारने तथा उसके औद्योगीकरणके लिये अत्यन्त आवश्यक है।

सम्राटकी सरकार और भारत सरकार भारतके विरुद्ध जो प्रचार कर रही है उसकी आपने कड़ी निन्दा की और उसके विरोधमें प्रस्ताव उपस्थित किया कि इस विषाक्त प्रचारको निष्फल करनेके लिये उचित कार्रवाई करनी चाहिये।

युद्धका कारण ब्रिटेन

लन्दनके बिशप लिचफील्डने लिखा है कि एक सच्चे ईसाईके नाते हमें यह विश्वास करना पड़ता है कि यूरोपके दूसरे राष्ट्रोंकी तरह हम लोगोंने भी ईश्वरकी अवज्ञा की है और इस तरह इस महायुद्धके कारण बने हैं।

ब्रिटिश सेनाका कठोर प्रतिरोध

जर्मनीके परराष्ट्र सचिव रिबनट्रपने एक वक्तव्यमें कहा है कि यदि हमें पीछे हटना ही पड़ेगा तो हम स्टालिनके लिये पूर्वमें जगह खाली कर सकते हैं। लेकिन ब्रिटेनको हम कभी अपना प्रसार न करने देंगे। राइनलैंडकी हम मरते दम तक रक्षा करेंगे।

भारतीय जिच दूर करिये

प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक और दार्शनिक मि० रसेलने 'टाइम्स' को एक पत्र लिखा है कि सर मोहम्मद जफरुल्लाकी रायके अनुसार उस भारतीय जिचको दूर करनेके लिये तुरत प्रयास किया जाना चाहिये जो क्रिप्स वार्ताके असफल होनेसे देशमें पैदा हो गयी है। भारतीय स्वतन्त्रताकी एक निश्चित तिथि निर्धारित कर देनी चाहिये।

दलित वर्गोंकी मांग

अखिल भारतीय दलितवर्ग नेताओंके दिल्ली सम्मेलनमें अध्यक्ष पदसे बोलते हुए श्री जगजीवन राम एम० एल० ए० (बिहार) ने दो राष्ट्रके सिद्धान्तका विरोध किया। उन्होंने कहा कि ब्रिटिश सरकार युद्धके बाद तुरन्त ही भारतकी स्वाधीनताके सम्बन्धमें घोषणा करे और यथा शीघ्र राष्ट्रीय सरकार की स्थापनाका आयोजन करे। दलितवर्गकी हीनावस्था और गरीबीका अन्त राष्ट्रीय स्वाधीनतामें ही सम्भव है।

सर विजय प्रसाद सिंह रायने भारतीय विद्यार्थी सङ्घ, लन्दनकी एक सभामें भाषण देते हुए कहा कि भारतमें साम्प्रदायिक कटुता इतनी अधिक नहीं है जितनी घोषित की जा रही है। अधिकांश हिन्दू और मुसलमान प्रेमपूर्वक रहते हैं। हम लोगोंमें आपसी मतभेद जरूर है, लेकिन उतना ही जितना दूसरे देशोंमें भी है। भारत स्वायत्त शासनके योग्य है और इसके लिये पर्लमेंटरी सरकार उपयुक्त होगी। युद्ध छिड़ जानेके कारण १९३५ के गवर्नमेंट आफ इण्डिया एक्टका परिणाम स्पष्ट न हो सका क्योंकि केन्द्रीय सरकार प्रांतके ऊपर अपना शिकञ्जा कसने लगी। साम्प्रदायिकताकी आड़ लेकर भारत की स्वतन्त्रताको नामंजूर करना उचित नहीं। सभी भारतीय दल स्वतन्त्रताकी मांगपर एक मत हैं। भारतमें स्थापना की जायगी जिसमें स्वराज्यका सिद्धान्त निहित हो। लेकिन समझौतेके लिये कांग्रेस नेताओंको जेलसे मुक्त करना आवश्यक है। भावी शान्ति सम्मेलनमें भारतका प्रतिनिधि उसी मनुष्य को बनना चाहिये जो इसके लिये वास्तविक अधिकारी हो।

हिन्दी पत्रोंका भविष्य

स्थानीयश्रमजीवी हिन्दी पत्रकार सङ्घकी ओर अ० भा० ट्रेडयूनियन कांग्रेसके सभापति चुने जानेके उपलक्षमें किये गये अभिनन्दनके उत्तरमें अमृत बाजार पत्रिकाके संयुक्त सम्पादक श्री मृणाल कान्ति वसुने कहा कि भारत अधिक दिनों तक अंग्रेजोंके कब्जेमें नहीं रह सकता। भारतकी स्वाधीनताके साथ साथ अंग्रेजी और अंग्रेजी पत्रोंके अनुचित महत्वका अन्त हो जायेगा। तब अखबारी दुनियामें हिन्दी पत्रोंको प्रमुख स्थान प्राप्त होगा। महात्मा गांधी हिन्दुस्तानी प्रचारके लिये जो प्रयास कर रहे हैं वह प्रशंसनीय है। अ० भारतीय सम्पादक सम्मेलनने अंग्रेजी औरदेशी भाषाओंके पत्रकारोंके वेतनमें जो विभेद किया है वह अनुचित है। इस विभेदको स्थापित करना अपने प्रति हीनताकी भावनाका द्योतक है। पत्रकारोंकी शोचनीय स्थितिपर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि उनके पारस्परिक सहयोग और सङ्गठनकी अधिकाधिक आवश्यकता है।

उदारदलका ध्येय

युक्त प्रान्तीय उदारदलकी कार्य-कारिणी समितिमें भाषण करते हुए श्री पी० एन० सप्रूने कहा कि उदार सङ्घका ध्येय पूर्ण स्वाधीनता है। यह दल हमेशा इस बातका प्रयत्न करता आया है कि कनाडा, आस्ट्रेलिया इत्यादि देशोंके साथ भारत बराबरीका दर्जा प्राप्त करे। श्री सप्रूके मतानुसार केन्द्रमें राष्ट्रीय सरकार होना अनिवार्य है तथा राजनीतिक सङ्कटको दूर करनेके लिये सर्व प्रथम कांग्रेसी नेताओंको मुक्त करना आवश्यक है।

हिन्दू महासभाकी नीति

कलकत्ता युनिवर्सिटी इंस्टिच्युट हालमें भाषण करते हुए डा० बी० एस० मुंजेने कहा कि जिस प्रकार अफगानिस्तानके शासक अफगान हैं और इङ्गलैंडके शासक अंग्रेज और वे अपने देशमें बसनेवाले विभिन्न वर्गों और जातियोंपर शासन करते हैं उसी सिद्धांतके अनुसार हिन्दुस्तानका शासन हिन्दुओं केहाथमें होना चाहिये, जो यहांकी आबादीके ७५ प्रतिशत हैं। लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यहांके अल्प मत वर्गोंका शासन में कोई अधिकार न होगा। हिन्दुस्तानकी सन्तान होनेके नाते भारतको सभी जातिको हम हिन्दू नामसे पुकार सकते हैं। चूंकि कांग्रेस मुसलिम लीगकी अनुचित मांगोंके आगे झुक रही है अतः हम लोगोंके सङ्गठनकी आवश्यकता पड़ी। हिन्दू महासभा सम्प्रदायिक संस्था नहीं है इसने कभी हिन्दुओंके लिये विशेष मांग नहीं उपस्थित की।

...द्धका सिंहावलोकन

—*—

...पिछली बार हमने लिखा था कि यह ...िबसा जान पड़ता है कि युद्धकी ...प्ति उतना निकट नहीं है, जितनेका ...ुमान कुछ लोग करते देखे जाते हैं। ...की गतिसे तो हम आज भी अपने ...कथनको दुहरानेके लिये तैयार हैं, ...ंकि पूर्वमें मार्शल जुकोव और मार्शल ...नेवकी सेनाएं जहांकी तहां पड़ी हैं ...र बर्लिनकी ओर बढ़नेका कोई प्रयत्न ...होंने नहीं किया है और वैसेही पश्चिमी ...क्षेत्रपर राइनकी लड़ाईहीमें सेनाएं ...ा है। अवश्य, इस सप्ताह जर्मनीके ...सिद्ध औद्योगिक नगर कोलोनपर ...रीकनोंने अधिकार कर लिया है, पर

जर्मनीके एक व्यावसायिक केन्द्रपर बम-वर्षासे अग्निकांड।

...जो वहांसे तीन सौ मीलसे भी ...दूरीपर है। इसलिये यदि जर्मनों- ...विरोधकी प्रबलताका एकाएक अन्त ...नेका प्रसंग न उपस्थित हो जाये, ...र्लिनतक पहुंचनेमें मित्र सेनाओंको ...और महीनोंका समय लग सकता ...परन्तु कई दिन पहले जर्मनीके पर- ...ष्ट्रविभाग:रिबेनट्रापने पत्रकारोंसे ...त करते हुए यह कहा है कि, ...न सेना राइनके मोर्चेकी रक्षा सब ...की हानियां सहकर भी करेगी। ...और भूमि छोड़नी ही पड़ेगी, तो ...वमें ही छोड़ी जायगी और इंग- ...नीचा दिखाने और परेशान ...लिये ब्रिटेनकी साम्राज्यवादी ...को व्यर्थ करते हुए स्टेलिनको ...जर्मनीपर अधिकार कर लेने ...देगा। यदि हम युद्धमें हारने ही ...हैं, तो कमसे कम यह तो निश्चय ...सकते हैं कि किससे हम हारने

जा रहे हैं और किसे अपने भीतर घुसने देंगे।" यदि पूर्वमें रूसी सेनाओंको पूर्ववत् सफलताएं होती रहीं, तो बर्लिनसे चालीस मीलसे भी कम दूरी तक पहुंची हुई उन सेनाओंको बर्लिन पहुंचनेमें देर ही क्या लग सकती है? परन्तु क्या कुछ होने जा रहा है, इसका ठीक-ठीक अनुमान करना किसीके लिये संभव नहीं है। हां,६ मार्चको जर्मन संवाद समितिने 'डास रीक' में प्रकाशित गोएबेल्सके लेखकी चर्चा की है, जिसमें यह कहा गया है कि महायुद्ध अपनी चरम सीमाको पार कर चुका है और संभव है कि इसका अचानक अन्त हो जाये।" परन्तु साथ ही उसमें यह भी उल्लेख है कि, अन्तिम क्षणतक मोर्चेपर संघर्षका रुख अनिश्चित रहेगा। प्रत्येक युद्धरत देश विजयकी प्राप्तिके लिये प्रयत्न करेगा। यही अन्तिम दौर निर्णयात्मक :सिद्ध होगा।" अपने इस लेखमें भी गोएबेल्सने यह लिखा है कि, "युद्धकी गतिको उत्साह और आत्मबल कमसे कम अस्त्र-शस्त्रकी शक्तियोंकी तरह अवश्य प्रभावित करता है। जर्मन जनताके पास राष्ट्रीय शक्तिका भंडार है, जो तराजूके :पलड़ेको उसके पक्षमें झुका देता है। यह पूंजी कुछ समयके बाद ही फलीभूत होगी। जनताको उस परिवर्तनकालकी प्रतीक्षा अवश्य करनी पड़ेगी।" और अब तो जर्मन संवाद-समितिने हिटलरके प्रचारक गोएबेल्सके उस भाषणकी रिपोर्ट दी है, जो उसने पश्चिमी साइलेशिया-स्थित मार्शल कोनीवकी पांतके ठीक सामने लोबान-गोरलिज अंचलमें दिया है। इसमें उसने कहा है कि, "वह दिन कभी नहीं आनेका, जब हम आत्मसमर्पण करेंगे। शत्रु पराजित किया जा सकता है, क्योंकि हमलोग उसे बहुधा परास्त कर चुके हैं।" आज जर्मन युद्ध क्षेत्रोंकी अवस्था कहींपर ऐसी नहीं है, जिससे जर्मनोंके लिये इस तरहके आशावादकी सामग्री उपलब्ध हो सके, पर आशा तो बड़ी बलवती होती है न।

आज तो यूरोपका युद्ध अपने अंतिम दौरेमें ही जान पड़ता है और मुसोलिनी तथा हिटलरने विभिन्न स्थानोंपर जो भाषण किये हैं, उनमें उनका युद्धका सिंहावलोकन ही दिखायी देता है। जर्मन संवाद-समितिने ७ मार्चको ब्रेशिया स्थानमें रिपबलिकन नेशनल गार्डके समक्ष किये हुए मुसोलिनीके भाषणकी जो रिपोर्ट दी है, उसमें उसने जर्मनीको ईमानदारीसे और हार्दिक सहयोग देनेकी अपील करते हुए यह कहा है कि, "हमें यह न भूलना चाहिये कि हम एक ही नावपर सवार हैं। जुलाई १९४३ ई० में इटालीमें फेसिजमके पतनका कारण बननेवाले विद्रोहकी कार्यप्रणाली अपनी पूर्णतामें परिपक्व थी। यदि इटालियन सैनिक सदर दफ्तरने तैयारी की होती और उसी प्रकारकी पूर्णताके साथ युद्ध चलाया होता, तो ब्रेशियाके एक उपनगरमें नहीं, आज मैं कैरोके किसी सार्वजनिक स्थानमें भाषण कर रहा होता।" अन्तमें मुसोलिनीने यह कहा है कि, "अस्तित्वके विनाशके खतरेमें पड़ी जर्मन सेना और जनता यदि आज किसी भी ऐसे अस्त्रका आश्रय लेती हैं, जो उनके राष्ट्रको विनाशसे बचा सके, तो भगवान् और संसारके समक्ष उनका वह कार्य पूर्णतः न्यायोचित होगा।' एक स्वीडिश रिपोर्टके अनुसार हिटलरने गत २४ फरवरीको नाजी नेताओंके समक्ष अपने भाषणमें जो कुछ कहा था, उसका सारांश यह बताया जाता है कि जर्मनीको विजयसे वंचित होनेका कारण यह हुआ है कि "उसे इतने घोर विश्वासघातका शिकार बनना पड़ा है,जिसका दृष्टान्त इतिहासमें ढूंढ़नेसे नहीं मिल सकता। जिन प्रगति विरोधी और विश्वासघाती मित्रोंने धोखा दिया, उनमें जापान भी है, 'जिसने सोवियट यूनियनपर जर्मन आक्रमण होनेके साथ ही आक्रमण करनेका वचन दिया था। जापानकी प्रतिक्रियावादी अफसरोंका गुट सम्भवतः जापानको बचानेके लिये तबतक रूसपर आक्रमण न करेगा, जबतक जर्मनीकी लड़ाईका परिणाम न देख लेगा। जापानने एक और प्रतिज्ञा भंग की है। उसने प्रतिज्ञा की थी कि जैसे ही डच ईस्ट इण्डीजमें स्थिति दृढ़ बना ली जायेगी, जापानी भारतपर आक्रमण करेंगे।' हिटलरने यह भी कहा है कि, डनकिर्कसे ब्रिटिश सेनाके पलायन करनेके बाद ही मैं :उसका उनके टापूमें भी :पीछा करना चाहता था, लेकिन हमारे अदूरदर्शी साथियोंने यह कहा कि जहाज, हवाई जहाज और अन्य तैयारियां काफी नहीं हैं। मास्को-स्थित जर्मन राजदूत शूलेनबर्ग, जर्मन सैनिक जासूसी विभागके अध्यक्ष एडमिरल कानारिज और अन्य प्रगति विरोधियोंने सोवियट सेनाओंकी शक्तिके सम्बन्धमें जानबूझकर मुझे धोखा दिया जिससे मैं रूसपर आक्रमण करनेको उत्तेजित हो उठा था। उन लोगोंने सोवियटकी सहायतासे नाजियोंका शासन :उलटनेके लिये ऐसा धोखा दिया था।

परन्तु हिटलर और गोएबेल्स इतने पर भी जर्मनीकी अंतिम विजय अब भी निश्चित समझते और बताते देखे जाते हैं। स्वयं हिटलरने अपनी योग्यता जिन शब्दोंमें प्रकट की है, उससे स्पष्ट है कि

जर्मन युद्ध बन्दियोंको नजर बन्द कैम्प पहुंचाया जा रहा है।

युद्धका अन्त होनेके पहले अभी संसारको न जाने कितनी भयंकरता देखने और सुननेको मिलेगी। याल्टाके सम्बन्धमें हिटलरने कहा है कि, "स्टेलिन, चर्चिल और रूजवेल्टने सोचा है कि वे मौजसे हिस्सा बंटायेंगे, किन्तु जब वे जर्मनीपर चढ़ाई करेंगे, तो देखेंगे कि वहां माल नहीं है, बल्कि खण्डहर, पत्थरोंका ढेर चूहे, महामारियां, भूख और मृत्यु है। यह हमारा पवित्र कर्तव्य है कि बोल्शेविकों, यहूदियों और धनवादियोंके लिये अपने पीछे और कुछ न छोड़ें और इस तरह पश्चिमी सभ्यताका पतन होगा। मैंने हिमलरको सभी जर्मन शहरों और कारखानों आदिको नष्ट कर डालनेके लिये स्पेशल कमिस्सर नियुक्त किया है। आवश्यकता होनेसे जर्मन हवाई जहाज भी विनाशकी योजनाओंकी पूर्तिमें भाग लेंगे और इन योजनाओंमें बंधकके रूपमें पकड़े हुए लोगों और राजनीतिक बंदियों को तलवारके घाट उतार देना भी है।" हिटलरके अनन्य सखा मुसोलिनीने तो कह ही दिया है कि अपने राष्ट्रकी रक्षाके लिये जर्मन चाहे जो भी अस्त्र काममें लायें, परमात्मा और संसारके सामने उनका वह काम न्यायोचित होगा। तब क्या सारी बातोंसे यही नहीं प्रतीत होता कि युद्धके अन्तिम दौरेमें जर्मन सभी प्रकारके अस्त्र काममें लायेंगे और युद्धको अधिकसे अधिक भयंकरता प्रदान करनेमें कुछ भी उठा न रखेंगे। परन्तु उधर स्टेलिन और उनके अफसर भी यह सब समझते हैं और वेखबर नहीं हैं। मार्शल स्टेलिन पहले ही जर्मनीमें लड़नेवाले अपने सैनिकोंको सब समय जागरूक रहनेका आदेश देते हुए यह चेतावनी दे चुके हैं कि शत्रु तुम्हारी पीठमें छुरी भोंक देगा। तुम्हारे भोजन और पानीमें विष मिला देगा और तुम्हारे विरुद्ध धोखेके नीचसे नीच उपाय काममें लानेसे न चूकेगा। लाल सेनाके न्याय विभागके अध्यक्ष कर्नल जेनरल उलरिचने 'रेड स्टार' में एक लेख लिखा है, जिसमें रूसी सैनिकोंको यह चेतावनी सुनायी है कि, "अधिकार किये हुए भूभागोंमें जर्मन आतंकवादी संगठन पहलेसे विद्यमान हैं और अब जर्मन सामूहिक रूपमें गुप्त होकर अपना काम करनेकी तैयारी कर रहे हैं।' उलरिचने उन भूभागोंमें सभी रेडियो और हथियारोंको छीन लेनेका आदेश देते हुए कहा है कि जर्मन जासूस और तोड़फोड़ करनेवाले वहां बड़े जोरोंसे अपने काममें लग रहे हैं। ऐसा भी समझा जाता है कि जर्मन अन्तिम अवस्थामें विषैली गैसोंको भी काममें लानेकी तैयारी कर रहे हैं। 'डेलीमेल'के पेरिस-स्थित संवाददाताको विश्वस्त सूत्रोंसे मालूम हुआ है कि पूर्वी और पश्चिमी मोर्चों पर लड़नेवाले जर्मन सैनिकोंको विशष प्रकारके मुहरबन्द बक्स दिये गये हैं, जिनपर लिखा है कि केवल हिटलरकी आज्ञापर खोले जायें। उधर मित्र सेनाएं भी इसका जवाब देनेके लिये तैयार बतायी जाती हैं।

उधर ब्रिटिश सेनाके प्रधान नायक फील्ड मार्शल मांटगोमरीने १० मार्चको ब्रुसेल्समें कहा है कि, "अन्तिम विजय निश्चित है और उसमें कुछ भी सन्देह करनेकी गुंजाइश नहीं हैं। केवल एकही बातके सम्बन्धमें सन्देह है और वह है उसकी ठीक ठीक तारीख।" अमरीकन प्रथम सेना राइन नदीको भी एक स्थान पर पार कर गयी है और कुछ वर्गमील भूमिका अपना अड्डा भी उसने नदीके पूर्वमें बना लिया है। इसमें संदेह नहीं कि वहांसे पुनः अमरीकन सेनाको नदीके पश्चिमी तटको खदेड़ देनेके लिये जर्मनोंने गहरी लड़ाई छेड़ रखी है। इस सप्ताह राइन नदीपर घनघोर संग्राम होनेकी आशा करनी चाहिये, क्योंकि जर्मन तो नदीके पूर्वी तटको शत्रु सेनाओंसे एकदम साफ रखनेका उद्योग जी होमकर करेंगे और मित्र सेनाएं अधिकसे अधिक शक्तिसे नदीके पूर्वी तट पर उतरनेका प्रयत्न करेंगी, क्योंकि तभी वे बर्लिनकी दिशामें अग्रसर होनेकी आशा कर सकती हैं। कोलोन मित्र सेनाके हाथ आ गया है सही, पर 'डेली हेरल्ड' के सैनिक संवाददाता मेजर शेपर्डका कहना है कि "जर्मनीके भीतर घुसनेके लिये कोलोन अच्छा फाटक नहीं है। यह राइनके पश्चिमी तट पर है, जहां इस नदीकी चौड़ाई प्रायः उतनी है, जितनी लन्दन पुलके पास टेम्स नदी की है। नदीके पूर्व क्षेत्र पहाड़ी, पेचदार और जंगली है और सड़कें भी कम और तंग हैं। यह प्रान्त आर्डेनीजकी भांति है। निश्चय ही यह भूभाग ऐसा नहीं हैं, जहां यंत्र सज्जा तेजी या सुभीतेसे काम कर सकती है।" रूसी सेनायें उत्तरकी ओर बल्टिक तटतक पहुंचकर जर्मनोंका सफाया करनेमें लग रही हैं और वे डेनजिगके उपनगरके भीतर भी घुस पड़ी हैं। कहा जाता है कि बर्लिनकी ओर धावा बोलनेकी भी तैयारी पूरी कर ली गयी है, पर ऐसा तो पिछले कुछ दिनोंसे कहा जा रहा है, इसलिये समय ही बतायेगा कि वह घड़ी कब आती है।

पूर्वमें बर्माके युद्ध क्षेत्रपर भारतीय सेना मांडलेमें घुस पड़ी है, पर जापानी सेना भी वहां गहरी लड़ाई लड़ रही है। जापानकी राजधानी टोकियोपर बमवर्षा होनेसे भारी अग्निकांडका दृश्य उपस्थित हो रहा है और जापानी अधिकारी बार-बार यह चेतावनी देते देखे जा रहे हैं कि अमेरिकन सेना जापान खासमें उतारनेकी ताकमें हैं। इण्डो-चीनमें जापानियोंने फ्रेंच अधिकारियोंके [illegible] कार्रवाई की है क्योंकि उनका [illegible] कि वे संधिकी शर्तोंका पालन [illegible] रहे हैं। इसीसे जापानियोंने सभी महत्वके स्थानों और साधनोंको अधिकारमें कर लिया है।

महात्माजीका कार्यक्रम

महात्मा गांधीने आगामी ३० मार्चसे एक महीने तकके लिये अपना वासस्थान बोरिवलेईमें बनानेका विचार किया है। कस्तूर बा स्मारक-कोषकी उद्देश्य पूर्तिके सहायतार्थ ग्रामीण कार्यकर्त्ताओंकी शिक्षाके लिये शिक्षण केन्द्र स्थापित होगा, जिसके लिये श्री रतिलाल नानवटीका वृहद बङ्गला काममें लाया जायगा। देश भरकी साठ महिला कार्यकर्तृयोंको चुना गया है जिनकी ट्रेनिङ्ग महात्माजीकी देख-रेखमें होगी। ऐसी खबर है कि श्रीमती मृदुला साराभाई पर केन्द्रकी देख-भालका भार रहेगा। कार्यकर्त्ताओंके निवासके लिये बहुत सी झोपड़ियां तैयार की गयी हैं। कार्यकत्रियोंको व्यवहारिक अनुभवके उद्देश्यसे आसपासकी बस्तियोंके निरीक्षणकी सहूलियत दी जायगी

स्वदेश-वार्ता

—केन्द्रीय असेम्बलीमें कांग्रेस सदस्य एस० के० गुप्त सरकारकी खाद्य नीति आलोचना करते हुए गत सप्ताह एकाएक अस्वस्थ हो गये और कुछ ही देर पश्चात् असेम्बलीमें ही उनकी मृत्यु हो गयी।

—बम्बईकी राष्ट्रवादी ईसाई समितिने समझौता समितिको एक स्मृति-पत्र दिया है जिसमें पाकिस्तानका विरोध किया है। स्मृति पत्रमें यह विचार प्रकट किया है कि सङ्घीय व्यवस्थापिकामें हिन्दू और मुसलिम दोनोंको ३२ प्रतिशत स्थान मिलने चाहिये। इसके अतिरिक्त श्रमिकों और काश्तकारोंको ६ प्रतिशत, तथा महिलाओं, ईसाइयों, हरिजनों, सिखों, ऐंग्लो-इण्डियनों, यहूदियों और पारसियोंको पांच प्रतिशत।

—मि० जिन्नाने सिन्धके प्रधान मन्त्री गुलाम हुसेन हिदायतुल्लाको एक तार दिया है, जिसमें खां बहादुर हाजी मौलाबख्शकी गैर मुसलिम लीगी मन्त्रीकी हैसियतसे नियुक्तिका विरोध किया गया है।

—लखनऊकी औद्योगिक प्रदर्शिनीमें एक भयङ्कर अग्निकांडके फलस्वरूप सौ दुकानें जल कर भस्म हो गयीं।

—नागपुरके डिप्टी कमिश्नरने कांग्रेस कार्यकर्ताओंको बुला कर चेतावनी दी है कि सरकार कांग्रेसको एक गैर कानूनी संस्था समझती है, अतः उसे कांग्रेसका कोई भी कार्य स्वीकृत नहीं है।

—स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने अखिल भारतवर्षीय किसान सभाके अध्यक्ष पदसे इस्तीफा दे दिया। आपने बतलाया कि इसका कारण साम्यवादियोंका उत्पात है। इन लोगोंने अपने कार्यका प्रचार करने के लिये सभाको अपना एक अङ्ग बना लिया है।

—भारत सरकारने पं० गोविन्द बल्लभ पन्तको मुक्त कर देनेका निश्चय कर लिया है। इस सम्बन्धमें एक सरकारी विज्ञप्ति शीघ्र ही निकाली जायगी।

—रिपोर्ट है कि फेडरल कोर्टके जज सर एम० वरदाचारियरको इनर टेम्पुल बेंचका सम्मानीय सदस्य मान लिया गया है।

—पञ्जाबकी देशी राज्य कांग्रेसके अध्यक्ष लाला काली चरण शर्माको गांधीजीने परामर्श दिया है कि रचनात्मक कार्यके लिये रियासतोंमें कांग्रेसका स्वतन्त्र रूपसे सङ्गठन होना चाहिये।

—ब्रिटिश पार्लमेंटमें भारत सचिव मि० एमरीने भारत सम्बन्धी ब्रिटिश नीतिके सम्बन्धमें कोई नया वक्तव्य देनेसे इन्कार कर दिया। मजदूर सदस्य मि० कोवने पूछा था कि क्या मि० एमरी अभी हालमें लंदनमें ब्रिटिश कामनवेल्थ रिलेशन्स कांफ्रेंसमें सर मुहम्मद जफरुल्ला खां द्वारा ब्रिटिश सरकारकी ओरसे भारतीय गतिरोध मिटानेके लिये पुनः प्रयत्नके समर्थनमें दिये गये भाषणको दृष्टिगत रख कर वैसी कोई कार्यवाही करेंगे।

—ट्रेनकी पटरी पर खड़े होकर यात्रा करते समय सहारनपुरके निकट तामड़ी रेलवे स्टेशन के करीब सिगनलसे धक्का खाकर ११ यात्री गिर पड़े और बुरी तरह घायल हो गये। उन्हें शीघ्र अस्पतालमें भर्ती किया गया।

—सीमा प्रान्तीय असेम्बलीकी कांग्रेस पार्टीकी बैठकमें यह निर्णय किया गया कि असेम्बलीके आगामी अधिवेशनमें मन्त्रिमण्डलमें अविश्वासका प्रस्ताव पेश किया जाये। महात्मा गांधीने डा० खां साहबको जो गुप्त पत्र भेजा है, उसका कुछ अंश बैठक में पढ़ा गया। शेष गुप्त है।

—राउ कमेटी मद्रासका कार्यक्रम समाप्त करनेके बाद गत सप्ताह नागपुरके लिये रवाना हो गयी।

—किसान सभाकी कार्य समितिने घोषित किया है कि आगामी अधिवेशनके लिये सर्व श्री यदुनन्दन शर्मा, अब्दुल्ला रसूल और मुजफ्फर अहमदके नाम सभापति पदके लिये नामजद किये गये हैं।

कांग्रेसकी हीरक जयन्ती

आगामी दिसम्बरमें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसकी हीरक जयन्ती समूचे देशमें मनायी जायगी। बम्बई प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके मन्त्री श्री एस० के० पाटिलने अपने प्रांतकी ओरसे इस सम्बन्धमें तैयारियां आरम्भ कर दी हैं। उक्त समारोहके रचनात्मक सुझावोंका विश्लेषण करते हुए श्री पाटिलने कहा है कि हमारे राष्ट्रीय नेताओं—कांग्रेस कार्य-कारिणीके सदस्योंके जेलोंमें बन्द रहने तथा मुख्य कांग्रेस सङ्गठनपर प्रतिबन्ध लागू रहनेकी वजहसे राष्ट्र मानसिक वेदनाका अनुभवकर रहा है। इस दुखद परिस्थितियोंके बावजूद हमें हीरक जयन्ती मनानी पड़ेगी और इसके लिये अभीसे प्रयत्न करना उचित है। इस अवसर पर देशने कांग्रेसके नेतृत्वमें इन साठ वर्षोंमें जो प्रगति की है, उसे प्रतिबिम्बित करना चाहिये।

नेताओंका स्थानान्तर

विश्वस्त सूत्रसे विदित हुआ है कि कांग्रेस कार्य समितिके सदस्य पण्डित जवाहरलाल नेहरू, पं० गोविन्द बल्लभ पन्त, आचार्य कृपलानी और आचार्य नरेन्द्र देव मार्चके तीसरे सप्ताहमें युक्तप्रांत भेजे जायेंगे। यह भी मालूम हुआ है कि पण्डित नेहरू, आचार्य कृपलानी और आचार्य नरेन्द्र देव नैनी सेण्ट्रल जेलमें रखे जायेंगे, जब कि पण्डित पन्त हार्नियाके आपरेशनके लिये लखनऊ भेजे जायेंगे। पण्डित पन्तके इच्छानुसार किसी डाक्टर द्वारा आपरेशन होगा।

—ढाकाका समाचार है कि अखिल भारतीय चर्खासङ्घकी रायपुरा शाखाकी सम्पत्ति सरकारने ९००) में बेच दी है।

—सरदार बल्लभभाई पटेलने अपनी पुत्रीके नाम एक पत्र लिखा है, जिसमें यह बताया है कि कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्य अपने कांग्रेस कार्य सञ्चालनसे पूर्ण सन्तुष्ट हैं। यदि उन्हें फिर मौका मिलेगा तो वे अपनी पूर्व नीतिसे ही काम लेंगे।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

हिटलरका भाषण

जर्मन समाचार समितिने 'सैनिक दिवस' के उपलक्षमें जर्मन सेनाके नाम एडोल्फ हिटलरकी निम्नाशयकी घोषणा प्रकाशित की है। पूंजीवाद और बोलशेविज्मके बीच यहूदी सन्धिने जिसने आज यूरोप को खतरा पैदा कर दिया है, विशाल पैमाने पर रूसके शस्त्रीकरणके पर्देको हटा दिया है जिसे रूसने हमारे महादेशके विनाशके लिये समस्त विश्वसे छिपाकर रखा था। तो भी जर्मन रीखने, जिसे अधिकांश मित्रोंने निर्लज्जतापूर्ण ढङ्गसे धोखा दिया है, प्रायः ६ वर्ष तक शत्रुका प्रतिरोध कर महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। यद्यपि भाग्य हमारे प्रतिकूल साबित हो रहा है तथापि इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि दृढ़ता, सहिष्णुता, दृढ़ संकल्प और युद्धकी दृढ़ भावनासे हम इस अस्थायी असफलताको पुनः विजयमें परिणत करेंगे, जैसा कि पहले बहुधा कर चुके हैं।

हमारे शत्रुओंने स्पष्ट तौरपर जर्मन राष्ट्रके पूर्ण विनाशकी घोषणा की है। आज साधारण अनिवार्य सैनिक भर्तीकी घोषणाके दसवें वार्षिकोत्सवके अवसरपर एकमात्र यही आदेश है कि दृढ़ संकल्पकी भावनासे आसन्न खतरा दूर कर भाग्यमें परिवर्तनके लिये हम सब कुछ बलिदान कर दें। इसी प्रकार हमारा दृढ़ और महान संकल्प उन लोगोंका अन्त कर डालनेके लिये होना चाहिये जो इस आदेशका प्रतिरोध करनेकी चेष्टा करें। इतिहास इस बातका प्रमाण है कि सर्वदा साहसहीन और पुरुषार्थ रहित व्यक्तियोंका मटियामेट कर दिया गया है। परमात्मा केवल ऐसे लोगोंकी सहायता करता है जो स्वयं अपनी सहायताके लिये कटिबद्ध हैं।

—श्री जयप्रकाश नारायण लहौर फोर्टसे आगरा जेल भेजे गये।

—सरदार बल्लभभाई पटेल अंतड़ी सम्बन्धी रोगसे पूर्ववत् पीड़ित हैं। आपकी पुत्री कुमारी मणिबेन पटेल दन्त रोगकी चिकित्सा करा रही हैं।

—अंजुमन तरक्किए उर्दू के चलते-फिरते पुस्तकालयके वार्षिकोत्सवमें भाषण करती हुई श्रीमती सरोजिनी नायडूने कहा कि हिंदी उर्दू पर विवाद उठाना खेदजनक है। उन्होंने कहा कि दोनों भाषाओंके मेलसे राष्ट्रभाषाकी सृष्टि होनी चाहिये।

—गत सप्ताह भारत सरकारके खाद्य-सदस्य सर ज्वाला प्रसादने नयी और पुरानी दिल्लीकी सरकारी गल्लेकी दुकानोंका निरीक्षण किया।

—कलकत्तेकी एक विराट सार्वजनिक-सभामें बङ्गालमें व्याप्त दारुण वस्त्र दुर्भिक्ष पर खेद प्रकट किया गया और एक प्रस्तावके द्वारा सरकारसे अनुरोध किया गया कि सैनिकोंकेलिये सुरक्षित कपड़ेका स्टाक कम किया जाये। मिलोंको कोयलेकी सुविधा देकर वस्त्रका अधिक उत्पादन बढ़ाया जाये तथा विदेशोंको भेजे जानेवाले वस्त्रको रोक कर प्रांतके वस्त्र दुर्भिक्षको मिटाया जाये। दूसरे प्रस्ताव द्वारा बङ्गाल वस्त्र परामर्शदात्री समितिसे स्वार्थियोंको दूर हटाकर घूसखोरी, मुनाफाखोरी और चोरबाजारोंको बन्द करनेके लिये कड़ी कार्यवाही करनेकी मांग की गयी। सरकारसे यह भी अपील की गयी कि अन्त मुद्रा वस्त्रको विश्वास पात्र सार्वजनिक संस्थाओं द्वारा बाजारमें सर्वसाधारणके उपयोगके लिये लाया जाये।

जापानी प्रधान मन्त्रीका आदेश

जापानी पार्लमेण्टमें भाषण देते हुए प्रधान मन्त्रीने ऐलान किया है कि मेरियाना द्वीप समूहमें शत्रुने अपनी हवाई ताकतमें अत्यधिक वृद्धि कर ली है, जिसके फलस्वरूप हमारे देशपर वैमानिक आक्रमणमें लगातार अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसके अलावा शत्रु आक्रमणकारी बेड़ा जापानके निकटवर्ती भागोंमें दिखायी पड़ने लगा है। विमानवाहक जहाजोंसे उड़कर जापानपर आक्रमणकी स्थिति भी अत्यन्त गम्भीर रूप धारण करती जा रही है।

युद्धमें भावी परिवर्तनोंकी आसानीसे भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है। वर्तमान युद्धस्थिति अत्यन्त शोचनीय है। अतीतकी शत्रुकी रणनीतिको दृष्टिगत रख निकट भविष्यमें हमारे देशपर सीधा अभियान आरम्भ हो सकता है। जापानकी जनता पूर्वापेक्षा अन्तिम विजयके लिये सब कुछ न्योछावर करनेको सर्वाधिक दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। सामरिक आवश्यकताओंको दृष्टिगतकर फ्रेंच इण्डो चीन स्थित जापानी अधिकारियोंने तदनुकूल कार्यवाही की है।

अमेरिकन विमान फ्रेंच इण्डो चीनपर कई बार बम-वर्षा कर चुके। अब सामरिक स्थिति इस प्रकार गुरुतर बन गयी है कि इसपर सामूहिक आक्रमण आरम्भ किया जा सकता है। नौसेना मन्त्री एडमिरल मित्सुमासा योनाईने कहा कि बहुधा छिटफुट हमलोंके बाद फरवरीके मध्यसे शत्रु विमान जापान लगातार तीन बार जमकर हमला कर चुके। किन्तु यह अत्यन्त दुःखकी बात है कि शत्रु जहाजोंको कुछ भी क्षति नहीं पहुंचायी जा सकी।

—फिनलैण्ड मन्त्रिमण्डलने सर्वसम्मति से घोषणा की है कि जर्मनी और फिनलैण्ड युद्धकी अवस्थामें हैं।

—प्रमाण मिला है कि स्वेडनकी तटस्थताको मित्रराष्ट्रोंने स्वीकार कर लिया है।

—चीनके एक प्रमुख पत्रका कहना है कि चीनकी केन्द्रीय सरकारसे यहांके कम्यूनिस्ट समझौतेकी वार्ता जारी रखेंगे।

—अमेरिकामें स्थानापन्न सेक्रेटरी आफ स्टेट जोसेफ ग्रिउने मार्शल च्यांगके इस वक्तव्यपर कि चीनकी राष्ट्रीय असेम्बलीकी बैठक नये विधानका उद्घाटन करनेके लिये बुलायी जायेगी, कहा है कि हम हृदयसे एक शक्तिशाली और सुसम्बद्ध चीन चाहते हैं।

—अमेरिकाके युद्ध-सामग्री उत्पादन करनेवाले कल कारखानोंमें ३३ हजार श्रमिकोंने हड़ताल कर दी है। इसलिये वहांकी ८ फैक्टरियां बन्द हैं और टैङ्क, लारी, वायुयान, इञ्जन इत्यादिके बननेका काम रुका हुआ है। ऐसा समझा जाता है कि सरकार इसके विरुद्ध कड़ी कारवाई करने वाली है।

—कोरियाकी अस्थायी सरकारने यह मांग की है कि सैनफ्रांसिस्कोमें होनेवाले भावी शान्ति सम्मेलनमें हमारे प्रतिनिधि को भी स्थान मिलना चाहिये।

—अमेरिकाने एक नये उधार पट्टेकी व्यवस्था की है जिसके अनुसार मित्रराष्ट्रोंको युद्धोत्तर निर्माणके लिये अमेरिका सामान देगा और उसका भुगतान ३० सालके भीतर होगा। फ्रांस तथा रूसको विशेष सहूलियतें मिलेंगी।

—लन्दनके 'डेलीमेल' का न्यूयार्क स्थित संवाददाता लिखता है कि अमेरिकामें श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित भारतके पक्षमें प्रचार करनेके लिये ब्रिटेनकी कटुनिन्दा करनेसे बाज नहीं आतीं। इस प्रभावशालिनी महिलाका अमेरिकामें ब्रिटिश विरोधी भाव उत्पन्न करना कम 'खतरनाक' नहीं है।

★ २५३२ ★
हिन्दुस्तानी
★ फ़ौज के ★
बहादुर जवान

V

इस लड़ाई में,
दिसम्बर सन् १९४४ के अन्त तक,
हिन्दुस्तानी फ़ौज के जिन अफसरों और
जवानों को बहादुरी के लिए और अपना
कर्त्तव्य पालन करने के लिए तमग़े दिये गये,
उनकी संख्या २५३२ तक पहुँची है। युद्ध-क्षेत्र
की सरकारी ख़बरों में कई हज़ार बहादुरों की प्रशंसा
की गई और उन्हें वीरता के प्रमाणपत्र दिये गये।
लड़ाई के तमाम मोर्चों पर हिन्दुस्तानी फ़ौजों की
वीरता मित्र-राष्ट्रों के गर्व और शत्रु की निराशा
का कारण रही। इन बहादुर सिपाहियों ने
तमाम दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम
उजला और सिर ऊँचा कर
दिया है।

★ इस लड़ाई में विक्टोरिया क्रास पाने वालों की संख्या के विचार से (जो ब्रिटिश राज्य में बहादुरी का सब से बड़ा इनाम है) हिन्दुस्तान दूसरे नम्बर पर रहा। (अर्थात् ब्रिटेन ७५, हिन्दुस्तान १८, आस्ट्रेलिया ११, न्यूज़ीलैण्ड ७, कनाडा ३; दक्षिणी अफ्रीका १, फीजी १)। इनके अलावा जो तमग़े दिये गये, उनमें १४२ डिस्टिंगविश्ड सर्विस आर्डर, २६१ इण्डियन आर्डर आफ मेरिट, ५८० मिलिटरी क्रास, ६५४ इण्डियन डिस्टिंगविश्ड सर्विस मेडल और ५४६ मिलिटरी मेडल शामिल हैं।

रा ष्ट्री य यु द्ध मो र्चे द्वा रा प्र का शि त

AAA 64 Hind.

जो स्त्रियां ख़ाली हैं

आजकल उनकी आवश्यकता डबल्यू० ए० सी० (आई) में है—

भारतीय महिला सहायक सेना (डबल्यू० ए० सी० आई) में नौकरी करने के लिए आजकल कई हज़ार स्त्रियों की आवश्यकता है। यह काम बहुत ही मनोरंजक है तथा इसमें अच्छा वेतन मिलता है।

निवास-स्थान की सुविधा

डबल्यू० ए० सी० (आई) की सदस्यायें सुखपूर्ण निवास-स्थानों में रहती हैं, जिनकी देखभाल इसी संस्था की ज़िम्मेदार महिलाओं द्वारा की जाती है।

शांति—काल

शांति स्थापित होने पर हिन्दुस्तान की उन स्त्रियों को, जिन्होंने शत्रु को पराजित करने में भाग लिया है, शान्ति उपभोग करने का बहुत बड़ा अधिकार होगा।

युद्ध के पश्चात्

व्यापार-वाणिज्य तथा उद्योग धंधोंमें, हिन्दुस्तान बड़ी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है और यह निश्चित है कि शांति स्थापित होने पर शहरी नौकरियों के लिए अच्छी ट्रेनिंग पाये हुए बहुत से कर्मचारियों (स्त्री-पुरुषों) की आवश्यकता होगी। डबल्यू० ए० सी० (आई) में नौकरी करते हुए बहुत सी स्त्रियां प्रबन्ध-कार्य का बड़ा अच्छा अनुभव प्राप्त कर लेंगी जो शहरी नौकरी में सफलता पाने के लिए बहुत आवश्यक होता है।

पूरा विवरण

नौकरी के नियमों आदि के संबंध में पूरा विवरण बिना किसी बन्धन के, ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० ए० सी० (आई) से प्राप्त किया जा सकता है जो स्वयं इस संस्था की सदस्या होती हैं। डबल्यू० ए० सी० (आई) के बारे में आप जो कुछ भी जानना चाहती हैं, ये महिलायें आपको प्रसन्नतापूर्वक बतला देंगी।

WAC INDIA

ए० टी० आर० ओ०/डबल्यू० ए० सी० आई० के पते

बम्बई—ए० एफ० आई० बिल्डिंग, हास्पिटल लेन, धोबी तलाव। कलकत्ता—मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, २८, थियेटर रोड। लखनऊ—मार्फ़त टी० आर० ओ०, ईस्टर्न, हज़रतगंज। पटना—मार्फ़त डी० टी० आर० ओ०, इग्ज़ीबीशन रोड। रावलपिंडी—ग्विन टामस रोड। बंगलोर—कैण्टूनमेण्ट, कबन रोड। लाहौर—२२, डेविस रोड। पूना—स्टाएटन रोड। मद्रास—३/१८ माउण्ट रोड। अथवा अपने निकटवर्ती डब्ल्यू० ए० सी० (आई) प्लेटून कमाण्डर के पास आवेदन कीजिए।

भारतीय महिला सहायक सेना में भरती हो जाइए

AAA 1594

लिलि ब्रान्ड बार्ल[ी]

LILY BRAND BARLEY — FOR INFANTS & INVALIDS — THE LILY BISCUIT Co. ULTADANGA CALCUTTA

विशुद्धता अच्छी क्वालिटी कारण अस्पतालों और सेना द्वारा व्यवहार किया जा[ता] है। चिकित्सक इसकी सिफारि[श] करते हैं।

बम्बई :: लिलि बिस्कुट कं० :: कल[कत्ता]

पेट्रोमल्सन

PETROMULSION

पेट्रोलियम तैल के इमल्सन के साथ केल्सियम और सोडियमका हाइपोफास्फाइट

और

पेट्रोमल्सन विथ गुयायाकोल

PETROMULSION WITH GUAIACO[L]

— आदर्श औषधि —

- कफ
- सर्दी
- इन्फ्लूएन्ज़ा
- पाचन की गड़बड़ी आदि के लिये
- ब्रांकाइटिज
- न्यूमोनिया
- ट्यूबरक्लोसिस

तैलकणों की समानता के लि[ए] उत्कृष्ट काम करता है

यदि अपने दवाखाने में आपको न मिल सके तो कृपया लिख[ें]

बेंगल इम्युनिटि कं० लि० : कलक[त्ता]

PET/R-1

...किशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१ए, ... स्ट्रीट, कलकत्तामें मुद्रित ... और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—१२ कलकत्ता मार्च १९, १९४५, Calcutta, MARCH, 19, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

रेलें बेतारके तारसे चलेंगी

ब्रिटेनकी चार प्रधान रेलवे लाइनोंपर चलनेवाली रईसी ठाठबाटकी एक्सप्रेस गाड़ियां बेतारके तारसे चलेंगी, यह ब्रिटेनकी युद्धोत्तर कालीन रेलवे योजनाका एक महत्वपूर्ण अङ्ग

विश्वका वृहत्तम विमान 'स्ट्रेटो क्रूजर', जो १०० शस्त्रसज्ज सैनिकोंको स्थान दे सकता है। इसके इञ्जनमें २२ सौ घोड़ोंकी शक्ति है और ३८३ मील प्रति घण्टेकी चालसे उड़ता है।

है। इस प्रकार गाड़ियां चलने लगेंगी तो कुहरेमें भी उनके मार्गमें कोई रुकावट न पड़ेगी और उनकी रवानगी तथा पहुंच में देर होनेकी कम सम्भावना रहेगी। बेतार के तार द्वारा चलनेवाली रेल गाड़ियोंका परीक्षण हो चुका है और विशेषज्ञोंका एक दल आवश्यक कार्य करनेमें व्यस्त है। इञ्जिन ड्राइवर और सिगनल मैनमें निरन्तर सम्पर्क रहनेके लिये चेष्टा की जा रही है। गाड़ी पटरियोंको बर्फसे मुक्त रखनेके लिये उन्हें गर्म रखा जायेगा।

राकेट कैसे चलाये जाते हैं

जर्मनोंकी 'वी २' किस्मके राकेट बम स्थायी रूपसे बने हुए किसी अड्डे अथवा उत्क्षेपण केन्द्रसे नहीं छोड़े जाते। उन्हें बड़ी बड़ी लारियोंसे वाहक जहाजोंसे चलाया जाता है। आरम्भमें बेलजियमके अन्तर्गत हेगसे जो राकेट छोड़े गये थे, उनमेंसे कमसे कम ४० प्रतिशत तो छोड़े जानेके थोड़ी देर बाद ही फट गये थे। हेगके केन्द्रीय भागसे नागरिकोंको पूर्ण रूपसे हटा दिया गया है और अब उसे राकेट बम छोड़नेके एक बड़े अड्डेके रूपमें काम लाया जा रहा है। 'वी-२' जर्मनी से विशेष लारियोंमें यहां पहुंचते हैं। वहांसे उन्हें वाहक जहाजोंपर लादकर सीधे उस स्थानपर पहुंचा दिया जाता है, जहांसे वे छोड़े जाते हैं। राकेट जहाजपर लिटा दिया जाता है और तेलवाहक जहाजसे उसमें तेल भरा जाता है। उसके बाद घूर्णस्थापक यन्त्र को ठीक कर लिया जाता है। लारीके इंजिन से उसमें विद्युत-शक्ति भरी जाती है, और राकेटको ९० अंशके कोणपर खड़ा किया जाता है। जब उसे चलाया जाता है, तो हाइड्रोजन पेरोक्साइडके कारण वह १०० गज दूर उड़ जाता है और फिर उसके बाद बहुत भारी शोर करता हुआ ऊंचा उड़ जाता है। वह सीधा ऊपर नहीं उड़ता। जब वह उड़ता है तब भी उसकी स्थिति ९० अंश में होती है और वह पीछे धुएंकी कतारवा छोड़ जाता है।

१७० विवाहवाले राजा

एशिया महादेशके पास—पड़ोसमें अब भी ऐसे-ऐसे जङ्गली राज्य पड़े हुए हैं जो आबादी और क्षेत्रफलके अनुमानसे आधुनिक युगके शक्तिशाली राज्य हो सकते थे। किन्तु विधिके विधान या शासकोंके दोषके कारण वे विस्तृत विश्वके एक कोनेमें जङ्गलोंके भीतर भयङ्कर पशुओंकी तरह छिपे पड़े हैं। अफ्रीकाके अन्तर्गत नाइजेरिया नामक राज्यका राजा, जो केवल एक जङ्गली राज्य का राजा था, विवाहका बहुत बड़ा शौकीन था। हालांकि राज्यमें भी बहुविवाहकी प्रथा प्रचलित है और उसे कोई दोषपूर्ण नहीं मानता। परयह बूढ़ा राजा शादी करनेमें शायद दुनियाके सभी राजाओंसे अपने जीवन काल में बाजी मार ले गया और अपनी मृत्युके बाद १७० विधवा रानियोंको छोड़ गया।

यह कैसी तपस्या ?

कोलम्बोसे गत ३ मार्चको एक मनोरंजक समाचार प्राप्त हुआ, जिसमें कहा गया है कि चीला ग्रामके निकट एक भारतीय चाकूके साथ एक नारियलके पेड़पर चढ़ गया है और उसके ऊपरी सिरेपर पहुंच कर दिन रात वहीं लटका रहता है। उसके मित्र हितैषी तथा कुटुम्बी बहुत अनुनय-विनय करते हैं कि वह पेड़से उतर आये। लेकिन उसे किसीकी सुननेकी चिन्ता ही क्यों हुई। दिन रात पेड़से लटके लटके नारियलकी गड़ी चाकूसे निकाल-निकालकर खाया करता है। अब अवस्था यहां तक आपहुंची है कि पेड़के तमाम नारियल समाप्त हो रहे हैं और उसके लिये, यदि उसने अपनी हठधर्मी नहीं छोड़ी, खाद्य संकट उपस्थित होने वाला ही है। चाकू लिये रहने से किसी अन्य व्यक्तिको इतना साहस नहीं होता कि वह पेड़पर चढ़कर उसे नीचे लानेकी कोशिश करे। कुछ लोगोंका कहना है कि वह पेड़पर लटके-लटके तपस्या कर रहा है।

बर्माके 'स्टिलवेल' रोडपर म्यूजके निकट चीनसे आनेवाली फौजें बर्माकी चीनी फौजसे मिल रही हैं।

चलती चक्की

लन्दनकी एक सभामें भाषण करते हुए ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके सम्पर्क सम्मेलनके भारतीय प्रतिनिधि सर बी० पी० सिंह राय ने कहा—जब तक कांग्रेस नेता मुक्त नहीं कर दिये जाते तब तक भारतमें राजनीतिक समझौता नहीं हो सकता।

—इन बेचारे सरोंका 'सर' विदेशमें जाकर ही कुछ खुलता है। शायद ब्रिटेनमें भारत-रक्षा कानून लागू नहीं।

* * *

कहते हैं कि श्रीमती विजयालक्ष्मी पंडित ने अमेरिका जानेसे पूर्व पासपोर्ट लेते समय युक्त प्रान्तीय गवर्नरको आश्वासन दिया था कि वे कोई प्रचार न करेंगी। लेकिन उन्होंने वहां पहुंचनेके कुछ दिन बाद ही अपना वायदा तोड़ दिया।

—रमते राम इस वायदेके सम्बन्धमें तो श्रीमती पण्डितसे पत्र-व्यवहार करके ही जानेंगे, परन्तु यह तो अवश्य है कि अगर वे सरकारके पक्षमें भाषण देती, तो वायदा-खिलाफी कभी नहीं होती।

* * *

एक समाचारमें कहागया है कि अब एम० एन० राय दलके कुछ सदस्य अमेरिका भेजे जायेंगे।

—राय दलको भेजते समय उचित शपथ ले लेनेका प्रबन्ध कर दिया जाय तो उचित हो।

* * *

मित्रोंके सिद्धान्तवादकी परीक्षा एशिया में होगी। —श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

—पर क्या श्रीमती पण्डितको यह ज्ञात नहीं कि परीक्षामें सम्मिलित होना और उसका फल निकालना मित्रोंके ही हाथ है।

* * *

वर्तमान भारतीय गतिरोधने ब्रिटेनकी राजनीतिज्ञताका दिवालियापन साबित कर दिया है। —सर बी० पी० सिंह राय

—दिवालिया तो पुराने हैं, इससे तो पक्की मोहर लग गयी है।

× * ×

बनारसके चेतगंज मुहल्लेके मुसलमानों ने हिन्दुओंसे जबर्दस्ती पिचकारी छीनकर होली खेली।

—सम्भवतः काशी नगरी पाकिस्तानके चक्रमें नहीं।

* * *

श्री धीरेन्द्रनाथने बताया है कि बङ्गाल सरकारने केन्द्रीय सरकारसे जितने सांड़ खरीदे थे सबके सब मर गये।

—लार्ड लिनलिथगोके वियोगके कारण हीं तो यह घटना नहीं घटी?

* * *

सिनेटर विलियम लैंगरने चार्ली चैपलिन को अमेरिकासे बाहर निकालनेके लिये एक बिल पेश किया है, ताकि देशकी युवतियों की नैतिकताकी रक्षा की जा सके।

—बेचारे भारतमें तो जाने कितने विदेशी चार्ली देशकी नैतिकतापर पानी फेरनेके लिये पाले-पोसे जा रहे हैं।

* * *

आज स्त्री मर्यादाकी समस्या बड़ी कठिन बन चुकी है। न समाज उसे पर्देमें देखना चाहता है और न पर्देके बाहर।

—एक सम्पादक

—बेचारे सम्पादकजीको बेकार इतना सोच है। जिससे यह समस्या न सुलझती हो वे अपनी स्त्रीके लिये मुख ढंकनेको महीन मलमलका दुपट्टा खरीद लें।

* * *

वर्धामें एक संवाददाताने श्री सियाराम शरणगुप्तसे प्रश्न किया कि क्या सारे देशके लिये उर्दू लिपि सीखना आवश्यक है? उत्तर देते हुए गुप्तजीने कहा कि बिना किसी लिपिके भी हम जीवित रह सकते हैं और आज भी किसी तरह जीवित हैं।

—भाई उत्तर सुन्दर रहा। वेचारे वर्धा में बैठकर उर्दूके लिये नकार करते तो मुश्किल रहती और यदि स्वीकार करते तो वास्तविकताकी हत्या होती।

* * *

कांग्रेस पार्लमेण्टरी राजनीतिको हिन्दू महासभाके हाथ सौंप दे और स्वयं रचनात्मक कार्यमें लग जायें।

—डा० मुंजे

—काम कम और नाम अधिक पैदा करनेका इससे अच्छा नुसखा और क्या हो सकता?

* * *

मृत्युसे पहले केन्द्रीय असेम्बलीमें श्री के० एस० गुप्तने कहा था—अन्न, वस्त्र, चिकित्सक और औषधियोंका प्रबन्ध ही नहीं है।

—यमराजके दूतोंके कानोंमें तो यह शब्द अवश्य गूंजे होंगे, पर क्या ब्रिटिश दूतोंके कानोंमें भी इन शब्दोंसे जूं रेंगना सम्भव है?

* * *

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डल सम्पर्क सम्मेलनके भारतीय प्रतिनिधि श्री ए० के० पिल्लेको कांग्रेसी नेताओंकी मुक्ति पसन्द नहीं। आपके मतसे कांग्रेसका 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव अङ्गरेजों, भारतके अन्य दलों तथा जनतापर पिस्तौल तानना है।

—ब्रिटिश हितैषी मि० पिल्लेको 'भारत छोड़ो' की पिस्तौल दीख गयी, पर ब्रिटिश साम्राज्यकी तोप नहीं दीखती।

* * *

एक मित्रने प्रश्न किया कि आधुनिक हिन्दी कविताका श्रेष्ट मापदण्ड क्या है?

—भाई आधुनिक नवयुवकोंकी श्रेष्ठतम कविताओंको देखनेसे विदित होता है कि जो कविता साधारण रूपसे समझमें न आये वही श्रेष्ठ है।

* * *

अमेरिकामें प्रचार किया जाता है कि भारतीय मच्छर मारना पाप समझते हैं।

—साथ ही साथ उन्हें यह भी बता दिया जाये तो अच्छा हो कि वही भारतीय अब साम्राज्यवादका शिकार करनेपर तुले हुए हैं।

* * *

विहार सरकारका निश्चय है कि प्रांतमें राष्ट्रीय युद्ध मोरचा न तोड़ा जायगा और प्रान्त स्वयं खर्च उठाकर मोरचा कायम रखेगा।

—शायद विहार प्रान्तमें ९३ वीं धारा के अनुसार गवर्नरी शासन है, तब ही मोरचेकी जरूरत जान पड़ती है।

* * *

भारतमें शिक्षाका माध्यम मातृभाषा ही हो। अङ्गरेजीके माध्यमसे कल्याण न होगा।

—पंडित अमरनाथ झा

—यदि अधिकारियोंको भारतके कल्याणकी आवश्यकता ही न हो तो फिर क्या किया जाय।

* * *

आजमगढ़के शिवली कालेजके एक प्रोफेसरको अधिकारियोंने राजनीतिमें भाग लेनेके कारण बर्खास्त कर दिया।

—प्रोफेसर महोदयको चाहिये कि सरकारको अपना मेहमान बना लेनेकी अर्जी और दे दें।

* * *

बरेलीका समाचार है कि एक पोस्टकार्डके शाहजहांपुरसे बरेली, जिनमें ४९ मीलकी दूरी है, पहुंचनेमें ३ वर्षसे अधिक लग गये।

—भारतीय पोस्ट विभागकी ईमानदारी का इससे अधिक प्रमाण और क्या मिल सकता है कि कार्ड मिल तो गया।

* ० *

जिस दिन 'असहयोग' का नारा भारत ने अङ्गीकार किया वह दिन उसके दुर्भाग्य का दिन था।

—सर मारिस हैल्ट

—भारतका तो नहीं, हां, साम्राज्यवाद के हिमायतियोंके लिये वह दिन दुर्भाग्य का अवश्य था।

* ० *

केन्द्रीय असेम्बलीके एक सदस्यने कहा है कि इस समय लीगके हाई कमाण्डकी स्थिति वही है जो किसी समय मुगल बादशाहोंकी हुआ करती थी।

—अगर ऐसी ही बात है तो मि० जिन्नाको अपना नाम किसी मुगल बादशाह जैसा रख लेनेकी राय देना अनुचित न होगा।

* ० *

पता चला है कि युक्त प्रान्तके मजदूरोंमें शराब आदि जैसी चीजें खरीदनेकी शक्ति बढ़ गयी है।

—रमते रामकी राय है कि युक्त प्रांतीय सरकारको इस खुशीमें 'शराब दिवस' मनाने की व्यवस्था करनी चाहिये।

० * *

डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जीका कहना है कि भारतके गुलाम रहते संसारमें स्थायी शांति नहीं रह सकती।

—हमारे प्रभुओंको तो भारतके गुलामीसे मतलब है नकि संसारकी...

* *

पार्लमेंटके सदस्य मि० सोरेन्सन... सचिव मि० एमरीसे पूछा कि क्या मालूम है कि ब्रिटेनसे भारतके लिये प्रकाशनार्थ भेजे जाते हैं वे कभी सप्ताहसे भी अधिक विलम्बसे पहुंचते हैं।

—शायद इस कारणसे देर की... कि लेख पुराने पड़कर अधिक... हो जाते हैं।

* *

याल्टा सम्मेलनके अवसरपर... चर्चिलने रूसी टोपी पहन ली थी... बातको लेकर प्रधान मन्त्रीसे अ... किया गया, जिसका उत्तर देते हुए... बहाना कर आपने प्राण बचाये।

—भई, यह रूस-ब्रिटेनकी तथा... दृढ़तर होती जानेवाली मित्रता है... और यह कितने दिन ठहरेगी जब... पहनने पर भी जवाब तलब!

...हिन बस जिनके मनमाहीं ।
...न कहं जग दुलभ कछु नाहीं ॥

...म्मेदारीका पर्दाफाश !

—::—

...गत दिसम्बरमें कलकत्तेके एसोशियेटेड ...र्स आव कामर्सके वार्षिकोत्सवमें भाषण ... हुए वर्तमान वायसराय लार्ड वावेलने ...गर्वोक्ति की थी कि हमारी वर्तमान ...क्यूटिव कौंसिल ऐसी भारतीय राष्ट्रीय ...र है, जिससे अधिक विशद प्रतिनिधि ... भारतीय राष्ट्रीय सरकार युद्धकाल जैसे ...र्ण समयमें प्रस्तुत विधानके ढांचेके ... नहीं बनायी जा सकती। उन्होंने ...न कौंसिलके कार्यपर भी पूर्ण सन्तोष ... किया था। ये सारी बातें उन्होंने ...न्ततः भारतकी इस मांगके उत्तरमें कही ...कि युद्धमें भारतका पूर्ण और हार्दिक ...ग प्राप्त करनेके लिये आवश्यकता इस ...की है कि मौजूदा लड़ाईके बाद एक ...त अवधिके अन्दर भारतको पूर्ण ...नता प्रदान करनेकी घोषणाके साथ ...इस देशमें पूर्ण प्रतिनिधि मूलक राष्ट्रीय ...रकी स्थापना अविलम्ब कर दे। ब्रिटिश ...के भारत स्थित प्रतिनिधि लार्ड ...की सरकार इस देशके निवासियोंका ...ा प्रतिनिधित्व करती है और जनता ... निर्वाचित प्रतिनिधियोंकी वह ...की विश्वासपात्री है, इसका पर्दाफाश ...ल असेम्बलीके वर्तमान बजट अधि-...में बजट सम्बन्धी बहसके सिलसिलेमें ...गी एककी पौन दर्जन हारोंसे ही हो ...है। इतनेपर भी वायसरायकी एक्जी-...अपनी बेहयाईका इजहार पेश करते ... आसनपर डटी है और अमेरिका ...देशोंमें यह घुआंधार प्रचार किया ... कि भारतमें पूर्ण प्रतिनिधिमूलक ...दात्री समितिके सहयोगसे वायसराय ... बजट संचालित करते हैं।

...तो जितने भी कटौती और कामरोको ...पर प्रतिपक्षी दलोंकी जीत हुई है, वे ...सरकारमें अविश्वास प्रकट करनेके ...ने पर्याप्त हैं कि लोकतंत्रकी दुहाई ...ी कोई भी दूसरी हयादार सरकार ...ाओ करके सार्वजनिक सेवा क्षेत्रसे ...म ग्रहण कर लेती। यदि भारतमें ...ताके प्रति जिम्मेदार सरकार होती, ...े ही कुर्सी खालीकर हट गयी होती। ... यहां तो १९४५ में शासन होता ...के विधानके अनुसार, जिसमें वाय-...को इतने निस्सीम अधिकार प्राप्त हैं कि ...प्रतिनिधियोंकी असेम्बलीका निर्णय ...ोर और वायसरायकी बात एक ओर। ...प्रतिनिधि भूंकते रहते हैं कि ऐसी ...में हमारा विश्वास नहीं है और ...पने विशेषाधिकारके बलपर फांदने-...नकी एक्जीक्यूटिव कौंसिल बराबर ...सीपर कोदों दलती जाती है; 'मान न मान, मैं तेरा मेहमान' की लोकोक्ति चरितार्थ करती जाती है।

कांग्रेस तथा मुसलिम लीग पार्टीके जिन दो प्रस्तावोंपर सरकारकी अन्तिम पराजय हुई है, उनमें एक कटौतीका प्रस्ताव सीमा प्रांतीय कांग्रेसी सदस्य मि० अब्दुल कयूमकी ओरसे इस आशयका पेश किया गया था कि वर्तमान एक्जीक्यूटिव कौंसिल इतनी निकम्मी है कि उसपर किये जानेवाले खर्च-की रकम घटाकर एक रुपया कर दी जाये। प्रस्ताव काफी वाद-विवादके बाद ५३ के मुकाबले ६१ वोटोंसे पास हो गया। कहनेका तात्पर्य यह है कि देशके प्रतिनिधि वर्तमान एक्जीक्यूटिव कौंसिलरोंको वेतन आदि देनेके लिये बजटमें की गयी व्यवस्थाको स्वीकार नहीं करते हैं। इसलिये उक्त मदको स्वीकार करानेके लिये केवल एकही सूरत रह जाती है और वह यह कि वर्तमान एक्जीक्यूटिव कौंसिलके स्थानपर नयी एक्जी-क्यूटिव कौंसिल स्थापित की जाये,जो जनता का विश्वास प्राप्त करे। तब तो बजटमें निर्धारित रकम उक्त कार्यमें खर्च की जाये। अन्यथा बजटसे उक्त रकम बाद दे दी जाय और वायसराय अपनी जेबसे अपने परामर्श दाताओंको वेतन और भत्ता दें एवं देशके माथे यह अनुचित और अवांछनीय खर्च न लादें। यह तो पार्लमेंटरी नियम है। लेकिन दरअसल वायसराय करेंगे क्या ? वे व्यवस्था पकोंके अस्वीकार करनेपर भी अपने विशेषा-धिकारसे बजट ज्योंका त्यों पास कर देंगे और एक्जीक्यूटिव कौंसिलर ठाठसे अपना वेतन-भत्ता महीनेके अन्तमें बराबर पाते रहेंगे। बकौल नवाबजादा लियाकत अलीखां के 'डा० खरे असेम्बलीमें विदूषकका पार्ट अदा करते रहेंगे' और मोटी तनख्वाह लेते रहेंगे। दूसरा कटौतीका प्रस्ताव युद्धोत्तर योजनाओं-सम्बन्धी खर्चके विषयमें मुसलिम लीगी सदस्य मि० इसहाकने पेश किया था। यह प्रस्ताव ४२ के मुकाबले ५९ वोटों से पास किया गया। इसमें प्रस्तावकने स्पष्ट शब्दोंमें बताया कि 'वर्तमान गैरजिम्मेदार सरकारको युद्धोत्तर योजनाएं बनानेका कोई अधिकार नहीं है। इसलिये इस मदमें खर्च करनेके लिये जो एक करोड़ रुपया प्रस्तावित है, वह जनताके धनका बिलकुल अपव्यय कहा जायेगा। इस प्रस्तावसे तो सरकारके युद्धोत्तर योजना विभागकी कोई आवश्यकता ही नहीं रह जाती है। सरकारने कुछ दिन पहले इस नये विभागकी स्थापना कर उस-पर सर आर्देशिर दलाल जैसे एक पूंजीपति की नियुक्ति इसलिये की थी, ताकि देश-वासियोंका ध्यान लम्बी-चौड़ी युद्धोत्तर योजनाएं पेश कर वर्तमानमें उपस्थित राज-नीतिक समस्याकी ओरसे भावी आर्थिक समस्याओंकी ओर आकृष्ट किया जाये। सर आर्देशिर दलालने अपनी योजनाओंकी मृगमरीचिका दिखलाकर प्रतिनिधियोंकी आर्थिक पिपासा शान्त करनेकी बहुत कुछ चेष्टा की। लेकिन जनताके प्रतिनिधि बार-बार छले जानेसे काफी सतर्क हो पांव उठाते रहे और 'इन चिकनी-चुपड़ी बातोंमें मत योगीको भुलवा बाबा' को जपते हुए उनकी एक न सुनी। अन्तमें कटौतीका प्रस्ताव बहु-मतसे पास हो गया और नवाबजादा लियाकत अलीखांने बिलकुल उचित कहा कि क्या संसारमें कोई और भी देश है, जहां सरकार की प्रतिदिन हार होती रहे और फिर भी वह अपने पदपर बनी रहे। लेकिन उनका उत्तर देनेकी क्षमता वर्तमान सरकारमें है ही कहां ?

देशकी तथा-कथित जिम्मेदार सरकार-का यह नमूना एक तरफ रखकर जब हम वास्तवमें जिम्मेदार सरकार कायम करने-वाले लोगोंकी ओर दृष्टिपात करते हैं तो उन्हें ढाई वर्षोंसे जेलके सिकचोंके अन्दर बन्द पाते हैं और उनकी मुक्तिके सम्बन्धमें उसदिन पार्लमेंट किये गये प्रश्नोंका उत्तर भारत सचिवके मुंहसे इस प्रकार सुनते हैं—"भारत सरकार (जिस तथा-कथित जिम्मेदार सर-कारकी ऊपर चर्चा की गयी है) उनकी मुक्ति पर तब विचार करेगी, जब उसे पूर्ण सन्तोष हो जायेगा कि वे शांति-व्यवस्था जारी रखने और युद्ध मोर्चेकी हैसियतसे भारतकी सुरक्षा में बाधक नहीं होंगे। कांग्रेस नेताओंको अनिश्चित काल तक नजरबन्द रखनेकी इच्छा नहीं। अभी वह समय नहीं आया है जब उनकी आम रिहाईके प्रश्नपर विचार किया जाये।" खुली अदालतमें उनपर बिना अभियोग लगाये २॥ वर्षोंसे उनकी वैयक्तिक स्वतन्त्रता छीन रखी गयी है और अभी तक उनकी उक्तिके प्रश्नपर विचार करनेके लिये उपयुक्त अवसर आया ही नहीं। कितनी विचित्र बात है कि जिनकी जिम्मेदारीपर सारे देशको विश्वास है, उनके सम्बन्धमें फैसला ऐसी सरकार करेगी, जिसमें जनता-का एक पाई भी विश्वास नहीं। लन्दनके साम्राज्य विषयक सम्मेलनके लिये सरकार-की ओरसे चुने गये प्रतिनिधि सर मुहम्मद-जफरुल्ला और सर बी० पी० सिंह राय खुले आम कह रहे हैं कि 'भारत पूर्ण औपनिवे-शिक स्वराज्यके द्वारपर पहुंच गया है। सभी भारतीय दल स्वाधीनताकी मांगपर एक मत हैं। भारतसे समझौता करनेके लिये कांग्रेस नेताओंको मुक्त करना आवश्यक है।' लन्दनके टाइम्सपत्रका यह विचार है कि ब्रिटेनको इस परिवर्तनके लिये तैयार होना चाहिये। लेकिन भारतके लिये अपनेको जिम्मे-दार समझने वाले भारत सचिवको जब यह आवश्यकता महसूस हो, तबतो कुछ हो सके। इसमें सन्देह नहीं कि स्थिति भारतके पक्षमें निर्णय करानेके लिये अधिकाधिक निकट आ रही है और ब्रिटेनको आगे कदम बढ़ाने की आवश्यकता शीघ्र ही महसूस होगी, जैसा कि मि० सोरेंसनको एमरीके अन्तिम उत्तरसे आशा हुई है।

सीमाप्रांतमें कांग्रेसमिनिस्ट्री—

जिन प्रान्तोंमें इस समय गवर्नर शासन स्थापित नहीं है, वहां प्रायः मुसलिम लीग प्रधान मन्त्रिमण्डलोंके हाथमें शासनसूत्र सन्निहित है। लेकिन इतने थोड़े समयके अन्दरही प्रान्तवासियों और उनके निर्वाचित प्रतिनिधियोंने खूब अच्छी तरह अनुभव कर लिया कि पाकिस्तानके भावी शासक उनके स्वार्थों और हितोंकी कितनी परवाह करते हैं और लोकका कल्याण इनके हाथोंसे कितना हो सकेगा। बङ्गाल मन्त्रिमण्डलके शासन कालमें अन्न और वस्त्रका वह भीषण दुर्भिक्ष पड़ा, जिसको न भूतो न भविष्यति कहा जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं। सीमाप्रांत की जनता मुसलिम लीगी मंत्रिमंडलके अल्प कालीन शासनसे इतनी बुरी तरह ऊब गयी कि अन्तसे अविश्वासका प्रस्तावपास करना ही पड़ा। प्रसन्नताका विषय है कि अब उक्त प्रांतका शासन देशकी एकमात्र लोकप्रिय प्रतिनिधि संस्था कांग्रेसके हाथोंमें फिर आ गया। डा० खान साहबके प्रधान मंत्रित्वमें वहां कांग्रेसी मंत्रिमण्डल स्थापित हो गया और सरकारने सर्व प्रथम जो काम किया है, वह है प्रांतके राजनीतिक नजरबन्दोंकी मुक्ति। नजरबन्दोंमें सीमांतके गांधी खां अब्दुल गफ्फार खां भी हैं। इनकी रिहाईके लिये आदेश दिया जा चुका है, लेकिन इन्होंने तबतक जेलसे बाहर आना अस्वीकार कर दिया है जबतक अन्य सभी साथी नजरबन्द मुक्त नहीं कर दिये जाते।

सीमांतमें कांग्रेस मंत्रिमण्डल स्थापित होनेसे, और वह भी महात्मा गांधीके मुहर-बन्द पत्र प्राप्त करनेके बाद, प्रश्न यह उठता है कि क्या कांग्रेसने अपनी नीतिमें परिवर्तन किया है और क्या कांग्रेस बहुमत प्राप्त अन्य प्रान्तोंमें भी ऐसी मिनिस्ट्रियां स्थापित की जायेंगी ? इस सम्बन्धमें जब ओरियण्ट प्रेसका प्रतिनिधि महात्मा गांधीसे मिला तो उन्होंने कुछ बतलानेसे इनकार किया। इस समय गवर्नरों तथा उनके हाथोंकी कठ-पुतली मिनिस्ट्रियोंके शासनने देशकी जो दयनीय अवस्था उत्पन्न कर दी है, उससे महात्मा गांधी बहुत ही सन्तप्त और चिन्तित हैं और सम्मानपूर्ण किसी भी ढङ्गसे देश-वासियोंके कष्टोंको दूर करना उनका सर्वा-धिक आवश्यक कार्यक्रम मालूम होता है। जब तक वे अपने कार्यक्रमपर स्वतः कोई प्रकाश नहीं डालते, तबतक इस सम्बन्धमें अटकलबाजी बिलकुल असामयिक है। बम्बई के सहयोगी 'ब्लिट्ज' के नयी दिल्ली स्थित संवाददाताका कहना है कि श्री भूलाभाई देसाई और लार्ड वावेलमें करीब-करीब समझौता हो चुका है और उसपर हुवाइट हालसे स्वीकृति प्राप्त करनेके लिये कार्य-वाही हो चुकी है! इसलिये निकट भविष्यमें अगर कांग्रेस नेताओंको जेल मुक्त करनेकी कार्यवाही सरकारकी ओरसे की जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। सीमाप्रान्तमें तो उक्त संवाददाताकी अटकलबाजी कार्यान्वित होती नजर आती है। अब देखना है अन्य प्रान्तोंमें क्या होता है।

कांग्रेस नेताओंकी नजरबन्दीका सवाल भारत सरकारसे सीधा सम्बन्ध रखनेवाली चीज है। इसलिये अगर कोई प्रान्तीय सर-कार अपने प्रान्तमें उनको मुक्त करनेका आदेश जारी करती है, तो उसकी दोही सूरतें हो सकती हैं—यातो भारत सरकारकी स्वीकृति पहले प्राप्त करली गयी है, अथवा प्रांतीय सरकारने अपनी जिम्मेदारीपर मुक्ति की आज्ञा जारी की है। अगर दूसरी बात वस्तुतः है तो प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारोंमें संघर्षका मौका उपस्थित समझना चाहिये। कुछ भी हो,

१९४२ और १९४५ की देशकी अवस्थामें बहुत अधिक परिवर्तन हो गया है, और अब अगर फिर शासन-सूत्र संभालनेका विचार कांग्रेस करती है तो यह उचित है बशर्ते सभी नजरबन्द कांग्रेस नेता और कार्यकर्ता कारा-मुक्त कर दिये जायें और अधिकारियोंसे सम्मानपूर्ण समझौता हो जाये। इसमें तो सन्देहकी तनिक भी गुञ्जाइश नहीं है कि यदि आज वास्तविक लोकप्रिय सरकारें प्रान्तोंमें स्थापित हो जाती हैं तो जनताके कष्ट बहुत अधिक अंशोंमें बातकी बातमें छूमंतर हो जायेंगे।

विदेशीकपड़ा मंगानेकी चेष्टा—

वर्तमान युद्धजन्य अवस्थाने जब देशमें प्रायः सर्वत्र वस्त्र-सम्बन्धी सङ्कट उपस्थित कर दिया है तो एक बार फिर अधिकारियों के लिये विदेशी कपड़ा मंगानेके निमित्त 'बिल्लीके भाग्यसे छींका टूट पड़ा' है। शासक-वर्ग तो चाहते हैं ही कि देशमें ऐसे सङ्कट उपस्थित होते रहें जिनसे लङ्का शायरकी मिलोंकी पूछ होती रहे। यदि यह बात नहीं होती तो यहांकी मिलोंका तैयार कपड़ा मध्य पूर्वमें ऐसे समयमें क्यों भेजा जाता, जब कि स्वयं अपने इस्तेमालके लिये यह पूरा नहीं पड़ता। भारत सरकार अपने इस कार्यके द्वारा 'चूहा बिल न समात है, पूंछ बांधिये छाज' वाली लोकोक्ति चरितार्थ करती हुई मालूम होती है। इसमें सन्देह नहीं कि युद्ध जन्य आवश्यकताओंकी पूर्तिके जिये देशी सूती मिलोंने नागरिक उपयोगके लिये कपड़ोंका उत्पादन कम कर दिया है और वर्तमान वस्त्र दुर्भिक्षका यह एक प्रधान कारण है। लेकिन यदि सरकार चाहे, तो मिलोंका उत्पादन आज ड्योढ़ा किया जा सकता है। लेकिन सरकारने ऐसा न कर विदेशी कपड़ा फिर देशमें मंगानेका निश्चय किया और उस दिन व्यापार सदस्य सर अजीजुल हकने केन्द्रीय असेम्बली में किये गये एक प्रश्नका उत्तर देते हुए बताया कि भारत सरकारने ब्रिटेनसे १ करोड़ गज महीन कपड़ा मंगानेका आर्डर दे दिया है। देशने विदेशी कपड़ेका बहिष्कार बहुत दिनोंसे किया है और जब स्वदेशी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ, आजसे बीसों वर्ष पहले कई लाख रुपयोंके विदेशी कपड़ोंकी होलिका जलाकर देशवासियोंने स्वदेशी वस्त्र धारण करनेकी प्रतिज्ञा की थी। ऐसी दशामें यह मालूम नहीं होता कि सरकार देशमें वस्त्र उत्पादन न बढ़ाकर विदेशी वस्त्रोंको मंगाने में कौन-सी बुद्धिमानी सोच रही है। क्या वह मुसीबतमें पड़े देशवासियोंको अपनी प्रतिज्ञासे च्युत करना चाहती है? अगर उसकी ऐसी मनोवृत्ति हो, तब तो यह निस्सन्देह अत्यन्त निन्दनीय है और देश-वासी ऐसे कपड़ोंका उपयोग पाप कर्म समझेंगे। इसलिये आवश्यकता इस बातकी है कि जिन रुपयोंको विदेश भेजकर वहांसे बना बनाया कपड़ा मंगानेकी व्यवस्था हो रही है, देशमें ही उन्हें खर्च कर वस्त्र उत्पादन बढ़ाया जाये और देशवासियोंकी गाढ़े पसीनेकी कमाई विदेश न पहुंचायी जाये।

सिंध मन्त्रिमण्डल—

सिंधके प्रधान मंत्री सर गुलाम हुसेन हिदायतुल्ला और प्रांतीय मुसलिम लीगके अध्यक्ष मि० सैयदमें अन्त तक समझौता जब नहीं हो सका तब स्व० अल्लाहबख्शके भाई मौलाबख्शको मंत्रिमंडलसे निकालनेके लिये सर गुलामको अन्तमें इस्तीफा देना पड़ा है और अब उन्होंने फिर नया मंत्रिमंडल बना लिया है। लेकिन ऐसा जान पड़ता है कि अब भी उनके मंत्रिमंडलमें जनताके प्रतिनिधियोंका विश्वास नहीं है। यही कारण है कि नये मंत्रिमण्डलमें भी अविश्वासका प्रस्ताव पेश करनेकी सूचना एक मुसलिम सदस्य मि० मजीदने दी है। इन पंक्तियोंके लिखनेके समय तक यह नहीं मालूम हो सका है कि उक्त प्रस्ताव बहस करनेके लिये स्वीकार कर लिया गया है या नहीं लेकिन इतना बिलकुल सत्य है कि सर गुलाम हुसेन हिदायतुल्लाने प्रधान मन्त्री पदपर बने रहनेके लिये जो कार्य किया है, वह सरासर अन्याय पूर्ण है और एक आत्म-सम्मानवाले व्यक्तिसे ऐसी आशा नहीं की जा सकती। मौलाबख्श को जब उन्होंने अपना पक्ष मजबूत बनानेके लिये अपने मन्त्रिमण्डलमें शामिल किया था, तो उस समय उन्होंने साफ शब्दोंमें कह दिया था कि मैं लीगकी नीतिको स्वीकार करनेके लिये बाध्य नहीं हूं। उस समय तो सर गुलामने उनकी बात मान ली थी, लेकिन जब मुसलिम लीगके अध्यक्ष मि० मुहम्मद अली जिन्नाका दबाव पड़ा तो उन्होंने मौलाबख्शके साथ जो व्यवहार किया है उसके लिये वे वादा खिलाफीके अभियुक्त बड़ी आसानीसे ठहराये जा सकते हैं। सिन्ध में मुसलिम लीग प्रधान मन्त्रिमण्डल फिर बन जानेसे मि० जिन्नाकी व्यग्रता कुछ शांत तो अवश्य हुई होगी, लेकिन यह मन्त्रिमंडल अपना स्थायित्व स्थापित कर सकेगा, इसमें सन्देह मालूम होता है।

कारपोरेशनको अल्टीमेटम—

बंगालके वर्तमान मंत्रिमण्डल और कलकत्ता कारपोरेशनमें बहुत समय पूर्वसे ही चखचख चली आती है और गत सप्ताह उस समय यह दुराव पराकाष्ठापर पहुंच गया जब सरकारके स्वास्थ्य विभागकी ओरसे कारपोरेशनको चेतावनी दी गयी कि स्वास्थ्यके सम्बन्धमें अमुक-अमुक कार्यवाहियां की जायें, वरना सरकार कारपोरेशनको अपने प्रबन्धमें ले लेगी। सरकारने कारपोरेशनके सामने जो सुझाव रखे हैं, वे शहरके स्वास्थ्यको दृष्टिगत रखते हुए अनुचित नहीं कहे जा सकते हैं। लेकिन प्रश्न तो यह है कि क्या कारपोरेशनमें इतनी शक्ति है कि वह इन सुझावोंको कार्यान्वित कर सके? और अगर सरकार वास्तवमें कारपोरेशनको अपने अधिकारमें ले लेती है तो क्या उन सुझावोंको शीघ्र सफलतापूर्वक कार्यान्वित कर सकेगी? हमारा ख्याल है कि नहीं। किसीको उपदेश देना आसान होता है, लेकिन उसको कार्य रूपमें परिणत करना काफी कष्ट साध्य होता है और जो सरकार प्रांतका शासन करनेमें अपनी अयोग्यता दिखला सकी है, वह कारपोरेशनका प्रबन्ध सुयोग्यताके साथ कर सकेगी, इसमें महान सन्देह है। ब्रिटिश साम्राज्यमें दूसरे नम्बरके शहर कलकत्तेकी जिस ढङ्गसे शासन व्यवस्था कारपोरेशन द्वारा हो रही है, वह कम त्रुटिपूर्ण नहीं है। लेकिन युद्धजन्य कठिनाइयों और उसकी जिम्मेदारियोंकी वृद्धिकी ओर हम जब ख्याल करते हैं तो अनुभव यही कहता है कि कारपोरेशनका बहुत अधिक दोष नहीं है। उसके साधनोंमें तो विशेष वृद्धि हुई नहीं, जबकि जिम्मेदारियां बहुत अधिक बढ़ गयी हैं। इन जिम्मेदारियोंके लिये उत्तरदायी हैं प्रान्तीय और केन्द्रीय सरकारें। इसलिये बंगाल सरकार को उचित तो यह था कि वह केन्द्रीय सरकारको अल्टीमेटम देती कि कलकत्तेमें तुम्हारे कारण कारपोरेशन और प्रान्तीय सरकारके सिरपर इतना बोझा अतिरिक्त पड़ा है। इसके लिये आवश्यक व्यवस्था करो, नहीं तो हम इससे अपना हाथ खींचते हैं। कारपोरेशन भारतकी स्वशासन प्राप्त सबसे बड़ी संस्था है। इसलिये उसके विरुद्ध बंगाल सरकारका इतनी जल्दी ऐसी कार्यवाही करना कदापि उचित नहीं कहला सकता। सरकारकी इस कार्यवाहीका प्रभाव स्थानीय नहीं, अखिल भारतीय होगा। इसलिये बहुत सोच समझ कर इस दिशामें कदम उठाना चाहिये। कारपोरेशनने सरकारके अल्टीमेटमपर अपनी बैठकमें जो निश्चय किया है उसे अनुचित नहीं कहा जा सकता। लेकिन इस निर्णयसे दोनोंके बीच समझौतेका द्वार उस समय तकके लिये बंदसा हो गया, जब तक कोई तीसरी शक्ति मध्यस्थका कार्य न सम्पन्न करे। इस कार्यके लिये उचित और क्षमताशील व्यक्ति गवर्नर मालूम होते हैं। क्या आशा कीजाये कि वे इसमें हस्तक्षेप कर सम्मानपूर्ण समझौता करा देंगे?

अन्तमें सुबुद्धि आयी—

बिहारके ९ प्रमुख नेताओंकी गतिविधि पर प्रतिबन्ध लगाकर उन्हें नागरिकताके मूलभूत साधारण अधिकारोंसे वंचित करने की प्रान्तीय सरकारने जो अदूरदर्शिता दिखलायी थी, उससे जनतामें अधिक क्षोभ और उत्तेजनाका प्रसार स्वाभाविक था। महात्मा गांधी द्वारा निर्देशित सत्य और अहिंसापर आधारित रचनात्मक कार्योंमें बाधा पहुंचानेके अलावा कोई और मन्तव्य सरकारका भले ही रहा हो, लेकिन जन-साधारणकी धारणा यही कि सरकार प्रांतकी संकटग्रस्त जनताकी अवस्था न स्वयं सुधारती है और न नेताओंको ही सुधारने देती है। इसलिये बिहार सरकारने अपने इस अवांछनीय और असामयिक आदेशको वापस लेकर प्रांतकी जनताका कल्याण तो किया ही, साथ ही अपने साथ भी कम न्याय नहीं किया। 'मुखमें राम बगलमें छूरी' की लोकोक्ति चरितार्थ करना अपने प्रति अन्याय करना नहीं तो क्या है? लेकिन इसपर बहुत कम लोग ध्यान देते हैं। उस दिन भारत सरकारके होम मेम्बर सर फ्रैंसिस मुडीने केन्द्रीय असेम्बलीमें एक प्रश्नका उत्तर देते हुए कहा था कि सरकारको रचनात्मक कार्योंसे पूर्ण सहानुभूति है। लेकिन गांधीजीके सत्य और अहिंसाकी
लोग हिंसा और सामूहिक
प्रोत्साहन देते हैं। बात तो बिल्कुल
है। लेकिन ये लोग हैं कौन? सरकारी
प्रोत्साहन पाये लोग जनता और
मात्र प्रतिनिधि संस्था राष्ट्रीय
बदनाम करनेके लिये ऐसे गर्हित
अख्तियार करते हैं। महात्माजीके
कभी भूलकर भी हिंसाको प्रोत्साहन
दे सकते। सरकारकी उनके प्रति
श्वास भावना ही शासक और
के बीच खाई चौड़ी बना रही है।
यह है कि महात्मा गांधीके इतने
सम्पर्कमें रहनेपर भी अधिकारियोंको
कार्य-शैलीमें सन्देह रह ही
गोस्वामी तुलसीदासने ठीक ही कहा

अब नेताओंपर जिम्मेदारी

बिहारके कांग्रेस नेता, जो इस
जेलोंसे मुक्त हैं, अब १४ शर्तोंवाले
कार्यक्रमको कार्यान्वित करनेके लिये
स्वाधीन हो गये। इसमें तनिक भी
नहीं कि कार्यक्रमकी चौदहों शर्तें
पूर्ण हो जायेंगी, उसी दिन भारत
स्वतन्त्र पायेगा। लेकिन इन शर्तोंको
करना कोई मामूली कार्य नहीं है।
दिनोंसे रचनात्मक कार्यक्रमका नाम
पड़ रहा है, लेकिन अब तक इस
प्रगति इतनी थोड़ी हुई है कि उसे
समझा जाये तो विशेष गलती नहीं
खादी प्रचार, साम्प्रदायिक एकता,
निवारण आदि क्षेत्रोंमें इतना भी
हो सका है कि उनका कोई उल्लेख
सके। इसका प्रधान कारण अबतक
है कि कांग्रेस कार्यकर्ताओंने इस ओर
प्रधान कर्त्तव्य समझ कर ध्यान
है। बल्कि अन्य कार्योंसे जब कभी
मिल गया है इधर थोड़ा-बहुत
हैं। अब इस प्रकारकी ढिलाईसे
चलेगा। प्रदर्शन और व्याख्यानका
बहुत पहले बीत गया। अब डटकर
करनेकी आवश्यकता है। सबसे बड़ा
हमारे सामने है किसानों और
जो देशके मेरुदण्ड समझे जाते
विद्यार्थियोंमें, जो देशकी भावी आशा
ऐसा सङ्गठन उत्पन्न करना जो
स्वाधीनता प्राप्त करनेके मार्गमें
प्रभावोत्पादक साधन बन सके। इसके
आवश्यकता है पूरे समय तक कार्य
कार्यकर्त्ताओंकी। आज कांग्रेस
सामने रचनात्मक कार्यक्रमके
कोई दूसरा काम भी नहीं है, जिससे
ध्यान अन्य दिशामें बंट सके।
रचनात्मक कार्यकी ओर अपनी
लगानेके लिये यह अवसर उपयुक्त
युक्त प्रान्तीय कांग्रेसजनोंकी
सामने भी यही प्रश्न है। इस
तक वह अग्रणी रही है और अन्य
पथ-प्रदर्शन करती रही है। गत
१८ मार्चकी बैठकमें उसने जो
हैं वे अब तक अज्ञात हैं लेकिन
जाती है कि इस दिशामें उसका
महत्वपूर्ण साबित होगा।

—

गांतरकारी साहित्यकार

——:*:——

[लेखक—श्री गौरीशङ्कर ओझा]

राजनीतिके आधारपर स्वाधीनताका संग्राम चलाया जाता है, उसके पीछे साहित्यकारोंकी सचेष्ट और नीरव ...ना-शक्ति न हो तो वह कभी सफल ...हो सकता। राष्ट्रमें जब नया जीवन, ...चेतना आती है तो वह केवल राज...क क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहती, वह ...जीवनके प्रत्येक अङ्ग, प्रत्येक भाग ...प्रत्येक पहलूपर प्रभाव डालती है। ...राष्ट्रके लिये, राष्ट्रकी स्वतन्त्रता ...और स्वतन्त्रताकी रक्षाके लिये ...प्रकार राजनीतिक नेताकी आवश्यकता ...र्य होती है, उसी प्रकार साहित्यकार ...आवश्यकता होती है, जो राष्ट्रके ...में स्वतन्त्रता प्राप्तिके लिये त्याग, ...और शक्तिका अपने साहित्य-सृजन ...संचार करता है और जनताका नैतिक ...बनाये रखता है। स्वतन्त्रताकी प्राप्तिके ...सांस्कृतिक उच्चताकी भी आवश्यकता ...है और यह कार्य साहित्य तथा कला...द्वारा ही सम्पन्न होता है।

...भारतकी मुक्ति-चेष्टाकी प्रगतिके साथ-...भारतीय साहित्यकी प्रगतिका घनिष्ठ ...सम्बन्ध रहा है। किन्तु हमारे राजनीतिक ...ओंने साहित्यसे जो प्रेरणा, शक्ति और ...सहायता प्राप्त करनी चाहिये, वह प्राप्त करने ...का कभी प्रयत्न ही नहीं किया। यह कटु सत्य ...है कि साहित्यकी शक्तिको उपेक्षाकी दृष्टिसे ...देखे जानेपर भी आजके साहित्यमें जो ...शक्ति पायी जाती है, वह हमारे राष्ट्रीय ...नेताओंके प्रोत्साहनका फल नहीं है। यह ...साहित्यकी स्वनिर्मित जीवन-शक्तिका ही ...है। राजनीतिसे साहित्यका अधिका-...सम्पर्क स्थिर न किये जानेके कारण ...आज भारतके किसी भी बड़ेसे बड़े साहि-...त्यकारका स्थान एक छोटे नेताकेभी बराबर ...नहीं, बल्कि समाजमें उसका स्थान एक ...उपेक्षित-सा तथा गौण बना हुआ है। ...भी राष्ट्रके उत्थानमें आजका साहित्यकार ...साहित्य द्वारा जो भाग ले रहा है, ...उसे चाहे वर्तमान समयमें कोई महत्व न ...दिया जाय, किन्तु भविष्यमें अवश्य ही ...उसका स्थान एक राजनीतिक नेतासे कम न ...माना जायगा। परन्तु साहित्यके प्रति ...राजनीतिज्ञोंकी वर्तमान उपेक्षा एक शोचनीय ...बात तो है ही।

...भारतवर्षकी भांति ही सोवियट रूसको ...मुक्तिके लिये एक अत्यन्त संघर्षपूर्ण ...से गुजरना पड़ा है, किन्तु क्रान्ति-...और उसके बाद अब तक वहांके ...राजनैतिक नेताओंने साहित्यकारोंके महत्व ...की उपेक्षा नहीं की, यही कारण है कि ...तबसे वर्तमान समय तक सोवियट ...ने राष्ट्रके जीवनमें जो प्राण-शक्ति ...रखकर अपने मापदण्डको उच्च बनाये ...वह सोवियट नेताओंके साहित्यकी ...को प्रोत्साहित करनेके फलस्वरूप ही है। भारतमें इससे विपरीत स्थिति रही है। सोवियट रूसके महान नेता लेनिनने महान साहित्यकार मैक्सिम गोर्कीको अपने राष्ट्रकी चेतना-शक्तिके लिये जितना महत्वपूर्ण और आवश्यक समझा, उतना आज तक हमारे किसी भी नेताने बड़ेसे बड़े साहित्यकारका कभी भी महत्व नहीं समझा। साहित्यकारको जिस आत्मगौरवका अनुभव होना चाहिये, उन साधनोंसे उसे वञ्चित ही रखा गया है। स्वर्गीय रवीन्द्रनाथ ठाकुरको अवश्य भारतने सम्मानकी दृष्टिसे देखा, किंतु वह प्रतिष्ठा उनकी विदेशोंमें स्थिर हुई थी और यहां तो वह एक नकलके रूपमें ही विद्यमान रही। नहीं तो उनकी अपनी भारत की एक मात्र सांस्कृतिक संस्था शान्ति-निकेतनको आर्थिक दृष्टिसे स्थायित्व प्राप्त नहीं हो पाता।

युगान्तकारी साहित्यकार मैक्सिम गोर्कीको गोर्की बनानेवाले वर्तमान सोवियटके पिता महात्मा लेनिन

लेनिनका गोर्कीके साथ जो जीवन पर्यन्त सम्बन्ध रहा और सोवियट रूसने उनके साहित्य-सृजन द्वारा अपना जो सांस्कृतिक निर्माण किया, वह भारतके लिये ही नहीं, बल्कि अखिल विश्वके लिये एक आदर्शपूर्ण उदाहरण है। सोवियट रूसके इतिहासमें गोर्कीको जो स्थान पाना था, वह लेनिनने ही सबसे पहले देखा और अनुभव किया। उन्होंने एक गोर्कीमें प्रेरणा यह भी भर दी कि अपने शरीरको नष्ट होने देनेका अधिकार उन्हें नहीं है, उसका उपयोग करनेका अधिकार रूसी जनताको है, उसका महत्व रूसी साहित्य—विशेषकर श्रमिकवर्गीय साहित्य के लिये है—दलित रूसी श्रमिकवर्गमें प्राण-संचार करनेके लिये ही गोर्की उत्पन्न किये गये हैं। यही कारण है कि गोर्कीने केवल साहित्य द्वारा ही क्रान्तिको सहयोग नहीं दिया, बल्कि उसमें क्रियात्मक रूपसे भी भाग लिया और जेल गये। लेनिनके साथ उनका सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ था। रूसी क्रान्तिके बाद रूसमें दुर्भिक्षके साथ-साथ गृह-युद्ध भी जोरोंसे चल रहा था और सैंकड़ों गांव जलाये जा रहे थे। इन समा-

भारतके युगपरिवर्तनकारी साहित्यकार स्व० कवीन्द्र रवीन्द्र

चारोंसे गोर्की चिन्तित और निराश होने लगे। फलस्वरूप वे अस्वस्थ हो गये, तब लेनिनने उन्हें स्वास्थ्य-सुधारके लिये इटली जानेको विवश किया। जब रूसमें एक ओर लोग भूखों मर रहे हों और भरपेट रोटी न मिल सकती हो, उस समय वही मजदूर सरकार गोर्कीको इतना खर्च देकर विदेश भेजे, जहां वे आरामसे जीवन बिता सकें,

नूतन वर्ष !

वर्ष—नूतन वर्ष !
ले बिदा जाता पुरातन,
सिसकता-सा सजल लोचन;
करुण आह-अशान्ति-हलचल—दूर भगते हर्ष !
क्रम लगा आवागमनका,
निशि-दिवा, प्रत्येक क्षणका,
प्रकृति-कण-कणमें निरन्तर—चल रहा संघर्ष !
युद्ध-मुख घन-घोर गर्जन,
थालमें ले रक्त - चन्दन;
विश्व स्वागत कर रहा है—सजग चिर उत्कर्ष !
जन-मरण-त्योहार भव-जग,
शक्ति-छल-शत-दीप जगमग;
सभ्य जग यह आजका—अब मानता आदर्श !
कौन-सा सन्देश लेकर,
कौन-सा उद्देश्य लेकर,
समयका यह दूत आया—आज नूतन वर्ष !

—श्री माणिक

यह उनको अनुचित मालूम हुआ। लेनिन के सामने छलछलायी आंखोंसे उन्होंने अपनी अनिच्छा प्रकट की, किन्तु लेनिनने फिर हंसकर टालते हुए कहा—"आप प्रोलेटेरियन (सर्वहारा) साहित्यके जन्मदाता हैं; सोवियटके सबसे महान साहित्यकार हैं। आपको यह अधिकार नहीं कि आप अपने स्वास्थ्यको बिगाड़ें। सोवियट सरकारके पास पैसा नहीं है, फिर भी आपको खर्च देती है, आप इटली जाकर अपना स्वास्थ्य सुधारें। याद रखिये, आपका शरीर और प्राण सोवियटकी महान निधि हैं, उन्हें किसी प्रकारकी हानि पहुंचानेका अधिकार आपको नहीं।" अन्तमें लाचार होकर गोर्की को इटली जाकर अपना स्वास्थ्य सुधारने के लिये राजी होना पड़ा।

साधारण मजदूर-समाजके भीतर छिपे हुए सौन्दर्य, उसकी प्रगतिशील भावनाएं, सारे मनुष्य-समाजकी कायापलट करनेवाली उसकी शक्तिका चित्र लेखनी द्वारा अंकित करनेवालोंमें सबसे पहला और उच्च स्थान गोर्कीका रहेगा। वे क्रान्तिकारी साहित्यिक थे। रूसी समाजके पुनर्निर्माणकी कलामें प्रवीण होनेके कारण गोर्कीको वह सम्मान मिला, जो शायद ही संसारके अन्य बड़े साहित्यकार को मिला होगा। सन् १९३२ में जब गोर्कीके साहित्यिक जीवनकी चालीसवीं वर्षगांठ मनायी जा रही थी, उस समय मास्कोकी सबसे प्रमुख सड़कका नाम 'गोर्की सड़क' रखा गया और पोस्टआफिस-के टिकटोंपर गोर्कीके चित्र छापे गये। आगे चलकर जिस निजनी नगरमें उन्होंने अनेक कष्ट सहे थे और जिसके साथ उनकी बड़ी घनिष्ठता थी, केवल उसका ही नहीं, बल्कि उस प्रान्त तकका नाम 'गोर्की' रख दिया गया। मास्कोके सबसे विशाल सभा-भवन में सोवियट रूसके महान व्यक्तियोंका शव तीन दिन तक जनताके दर्शनार्थ रखा जाता है। महात्मा लेनिनका अन्तिम भौतिक अस्तित्व जहांपर प्रदर्शनार्थ रखा गया था वहीं गोर्कीको भी वही सम्मान दिया गया। लगभग ९० लाख नर-नारी तीन दिन तक वहां उनके अन्तिम दर्शनके लिये उमड़ पड़े थे। सभा-भवनके समस्त स्तम्भों पर शोक-सूचक काली पट्टियां लिपटी हुई थीं और गोर्कीका शरीर सोवियट झण्डेके लाल रंगवाले कपड़ेसे ढंका हुआ था। रूसके सर्वेसर्वा स्टालिनसे लेकर छोटे से छोटे व्यक्ति तक एकभावसे बड़े-छोटेका भेद भूलकर रूसी जनताके हृदय-सम्राटको अपनी श्रद्धांजलि चढ़ाने आये थे। जिस समय गोर्कीके निर्जीव शरीरको दफनाया गया, उस समय शोक-सूचक गान-बाद्य न होकर वह अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर-बाद्य बजा, जिसकी प्रथम पंक्ति है—"उठो, ऐ

कुसुमाके बन्दियो! उठो, ऐ धरातलके दलितो···।" यह वही आवाज थी, जिसके लिये गोर्की जिये, और जिसको उन्होंने अपने जीवनमें ही चरितार्थ कर दिया। इससे अधिक सम्मान संसारके किस साहित्यिक को उसकी मृत्युके समय मिला होगा? मृत्युके समय (१८ जून, १९३६) गोर्कीकी अवस्था ६८ वर्ष की थी। इस जीवनके कमसे कम पैंतालीस वर्ष उनके साहित्यिक रचना-कार्यमें व्यतीत हुए थे। इन वर्षोंमें गोर्कीने न केवल संसारके साहित्यको अमूल्य रत्न भेंट किये, बल्कि रूसी जनताकी मनोवृत्ति बदलने तथा एक नये युगके निर्माणमें भी भाग लिया।

गोर्कीने नयी मानवताके आदर्शोंका प्रतिपादन किया। उनकी कल्पनाका नया मानव कठोर बन्धनोंसे मुक्त है, साहसी है, सच्चा है, उसमें सामूहिक चेतना है, दृढ़ व्यक्तित्व भी है। वह निगूढ़ चिन्तन तथा विशद ज्ञान-सम्पन्न है। साथही भौतिक जगतमें उसमें महान उत्पादक-शक्ति है। गोर्कीने पुराने मनुष्योंमें इस नवीन मानवता के तत्वको पहचाना, उसे विकास देनेमें उसके रूपके संगठनमें सहायता पहुंचायी। उसने एक नये तत्वसे विदग्ध जनताको लड़ने की शक्ति प्राप्त करनेमें सहयोग दिया, उसे क्रान्तिकारी बनाया और समाजवादके पथ-पर अग्रसर किया।

लेनिनने गोर्कीको साहित्य-क्षेत्रमें प्रोत्साहन केवल एक मित्रताके सम्बन्धको निभाने के लिये ही नहीं दिया, बल्कि इसलिये कि वे समझते थे कि स्वाधीनता-प्राप्तिमें और फिर उसके बाद सोवियट-समाजके सांस्कृतिक उत्थानमें साहित्यकी महान शक्तिका महत्व बहुत अधिक है। वे साहित्यकारके महत्व और उसकी रचनाओं को राष्ट्र-निर्माणके कार्यमें एक अनिवार्य आवश्यकता समझते थे। लेनिनका कार्य जहां रूसी क्रांति और फिर शांति-स्थापनाके बाद समाप्त हो गया था, ठीक वहींसे गोर्कीके वास्तविक कार्यका प्रारम्भ होता है और सोवियट समाजके जीवनको उच्च सांस्कृतिक बनानेका कार्य वे अपनी अन्तिम रचनाओं द्वारा सम्पन्न करते हैं। वास्तवमें जो कार्य साहित्यकार गोर्की नहीं कर सकते थे, वह सोवियट रूसमें लेनिनने किया और जो कार्य लेनिन नहीं कर सकते थे, वह गोर्कीने सम्पन्न करके सोवियट रूसकी शक्तिको नैतिक बल प्रदान कर अजेय बनाया। इस अजेयताका प्रमाण रूस-जर्मन युद्धमें हमें अब तक मिलता जा रहा है।

बीसवीं सदीके दो वैज्ञानिक चमत्कार

——**——

(लेखक—श्री पद्मसिंह शर्मा)

बीसवीं सदी वैज्ञानिक चमत्कारों की सदी है। यों तो उन्नीसवीं सदीसे ही भाफ और बिजलीके आविष्कारोंसे रेलों, जहाजों, टेलीग्राफ और टलीफोनका प्रचलन हो गया था, लेकिन बीसवीं सदीमें आविष्कारोंके विकासमें आशातीत वृद्धि हुई है। यही नहीं अन्य भी कितने ही आविष्कार हुए हैं। आज हम यहां हवाई डाक और बेतारके तार के विषयमें कुछ लिखेंगे।

हवाई डाकका जन्म ब्रिटेनमें सन १९११ में हुआ। उस समय सबसे पहले हेण्डन और विण्डसरके बीच स्वर्गीय पंचमजार्जके अभिषेकके लिये विशेष हवाई डाकका प्रबन्ध किया गया था। लेकिन यह एक व्यक्तिगत प्रबन्ध सा था। उसमें सार्वजनिक भावना न थी। सार्वजनिक रूपमें हवाई डाकका प्रचार सन् १९१४-१८ के युद्धके परिणाम स्वरूप हुआ। युद्धकी समाप्तिपर लोगोंने इसके अध्ययनकी ओर विशेष रूपसे ध्यान दिया और सन् १९१९ में लन्दन और पेरिस के बीच हवाई डाकका प्रबन्ध हुआ, जो शीघ्र ही ब्रुसेल्स और एम्सटर्डम तक बढ़ा दिया गया।

लेकिन अभी तक विस्तृत रूपसे सुदूर देशों तक हवाई डाकका प्रबन्ध नहीं हुआ था। अभी तक यूरोपके ही देशोंमें इसका जाल फैल पाया था। जैसे ही लोगोंने देखा कि विश्वमें शांति और व्यवस्था कायम हो गयी, उनका ध्यान विशालताकी ओर गया और सन् १९२९ में इङ्गलैंडसे भारतको हवाई डाक भेजनेका प्रबन्ध किया गया, जिसमें ६ या ७ दिनका समय लगता था। उस समय कनाडाको छोड़कर ब्रिटिश साम्राज्य का महत्वपूर्ण उपनिवेश भारत ही था। फिर राजनीतिक सम्बन्धोंके अतिरिक्त बहुतसे घरेलू सम्बन्ध भी भारतसे थे। और सबसे अधिक, भारत आस्ट्रेलिया की सीधी लाइनपर पड़ता था। भारतमें सन् १९३२ में और भी विस्तार हुआ और करांचीसे बम्बई तथा मद्रास तक हवाई मेलका प्रबन्ध हो गया। सन् १९३३ में सिंगापुर और आस्ट्रेलियाको भी इस सुविधासे लाभ पहुंचाया गया।

अन्य देशोंके साथ भी हवाई डाकका प्रबन्ध हो रहा था। सन् १९३१ के बड़े दिनपर लन्दनसे केपटाउन तक डाक हवाई जहाज द्वारा जाने लगी। सन् १९३२-३३ में तो सूडान, केन्या, उगाण्डा, टांगान्याका और दक्षिण अफ्रीकाके अन्य देशोंमें भी उसका प्रचार हो गया।

उधर अमेरिकाने अन्तर्राष्ट्रीय हवाई डाक विभागकी स्थापना कर ली थी और १९२९ में मेक्सिकोसे पश्चिमी द्वीप समूह तथा दक्षिणी अमेरिकाको जोड़ा जा चुका था। फ्रांसने १९२६ में मोरक्कोसे पश्चिमी अफ्रीका के डाकार प्रदेश तक हवाई डाक पहुंचानेका प्रबन्ध किया था, जिसे १९२८में ब्राजील तक कर दिया गया। हालैंड वालोंने ९००० मीलकी एक लाइन हालैंड और बटेबियाकेबीच बनायी। आश्चर्य की बात यहहुई किजहां पहले लन्दनसे आस्ट्रेलिया तक एक महीना लगता था वहां अब केवल दस दिन ही लगने लगे। इसी प्रकार भारतमें केवल तीन-चार दिन और दक्षिण अफ्रीकामें पांच-छः दिनमें डाक पहुंचने लगी।

वर्तमान महायुद्धके आरम्भने तो जल-मार्गको बिलकुल रोक दिया। लेकिन फिर भी हवाई डाकके पहुंचनेमें और भी कम समय लगने लगा और हवाई डाककी शक्ति दूनी बढ़ गयी। इसी बीच हवाई तारका, जिसके द्वारा एक व्यक्ति अपनी जेबमें १६०० पत्र ले जा सकता है, भी आविष्कार हुआ।

बेतारके तारका आविष्कार तो इससे भी अद्भुत है। सबसे पहले सन् १९१२ में बेतारके तारको कार्यमें लाया गया। लेकिन प्रथम महायुद्धने उस समय उसकी प्रगतिमें बड़ी बाधा पहुंचायी। उसके बाद रूगबीमें एक स्टेशन बेतारके तारका बनाया गया, जो सारे संसारसे सम्बन्ध रखता था। इसने तीन समाचार-पत्रक समुद्र और स्थलपर खबरें देनेके लिये प्रकाशित किये। फल यह हुआ कि सप्ताहकी समाप्तिपर जहाजोंके मल्लाह बीच समुद्रमें जाते हुए खेलोंके आनन्दका अनुभव करने लगे।

यह बेतारकी ही शक्ति थी कि रायटरकी एजेंसी विश्व भरको खबरें भेजनेमें समर्थ हो सकी। भारतमें न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज की खबर लन्दन होती हुई एक मिनटसे भी कम समयमें आ जाती है। इसका कारण बेतारके तारके अतिरिक्त और कुछ नहीं।

सन् १९२६ में शार्ट वेव्सका पता चला जिनसे इस कार्यमें समयकी और भी बचत होने लगी। टेलीग्राफीके साथ टेलीफोनका आविष्कार भी इसी समय हुआ। ग्राहम बेलके टेलीफोनके आविष्कारकी जुबिलीपर अटलांटिकके उसपारसे इसपार टेलीफोनसे बातें करनेका प्रयोग किया गया। शार्ट वेव्सके ही कारण विश्वके ९० प्रतिशत व्यक्ति लन्दनसे अपना सम्बन्ध एकही समयमें रख सकनेमें समर्थ हो सके हैं।

इसके अतिरिक्त जहाजसे तट तक बेतारके तारका कार्य और भी महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि बेतारके तारका आविष्कार केवल जहाजोंके लिये ही हुआ था और उनसे फिर लड़ाकू जहाजोंसे उसने अपना सम्बन्ध जोड़ लिया। बेतारके तारसे युक्त सबसे पहला जहाज 'फास्ट गुडविन लाइट शिप' था, जो १८९८ में बना था। यह जहाज दूसरे ही साल डूब गया। पर उसके आदमी बेतारके तारकी खबर पानेके कारण बचा लिये गये। जहाजोंको कुहरेमें, समुद्रके मार्गकी कठिनाइयोंमें, समुद्रके बीच कार्य करनेवालोंको डाक्टरी सहायता पहुंचानेमें बेतारके तारसे बड़ी सहायता ली जाती है। किसी भी प्रकारका खतरा हो, इसकी सहायतासे सहज ही उससे छुटकारा मिल जाता है। इसके [illegible] जहाजसे तट तक टेलीग्राफ और [illegible] टेलीफोनका भी प्रबन्ध है। [illegible] कारण समुद्रमें १९१० में जहां [illegible] मियोंमें १ की मृत्यु होती थी, वहां २३०० में १ की मृत्यु हुई है। [illegible] जहां पहले साल भरमें ४३२ मरते [illegible] अब केवल २२ ही मरते हैं। और [illegible] बेतारके तारका जो उपयोग हो [illegible] उसके विषयमें तो कुछ कहना शक्ति [illegible] की बात है। हां, इतना अवश्य है [illegible] के शक्तिशाली राष्ट्रोंकी बड़ीसे बड़ी [illegible] का रहस्य बेतारके तार द्वारा खबरें [illegible] छिपा है।

लोक-मानसका विक्रम

———:*:*:*:———

(लेखक—श्री कृष्ण किशोर द्विवेदी)

विक्रम-संवत्‌की तीसरी शताब्दीमें कदम ते ही एक लम्बे समयकी चुप्पीके बाद हासके पण्डितोंकी मण्डलीमें विक्रमको र फिर एक बार गरमा-गरम लड़ाई छिड़ है। इस बीचकी शिथिलताके कालमें दलोंने नये-नये अस्त्र-शस्त्रोंसे अपनेको ज्जित कर लिया है।

एक दल कहता है—'विक्रमादित्य सच- एक राजा था। यह शब्द किसीका ण नहीं था। इसी राजाने विक्रम संवत- प्रवर्तन किया। कालिदास इसीकी सभाके थे।' इसके प्रमाणमें यह दल शकुन्तला एक प्राचीन पाण्डुलिपि पेश करता है, समें स्पष्ट ही विक्रमादित्यका नाम खित है। दूसरे दलकी मान्यता है कि 'यह सच है कि ई०पू० प्रथम शताब्दीमें विक्रम और वह शकारि भी था, परन्तु उसका ली नाम गौतमी पुत्र शातकर्णि था। क्रम तो विरुद मात्र था।' तीसरा दल ता है—'यदि विरुद ही मानना है तो हम गुप्तवंशीय सम्राट चन्द्रगुप्तका विरुद नते हैं। यही बात अधिक बुद्धि-संगत ' आदि-आदि...।

और भी छोटे-बड़े बहुतसे हैं जो इस क्रमको ले समुद्रगुप्त, स्कन्दगुप्त, यशोधर्मन दि नामोंके साथ जहां-तहां फिट किया ते हैं। रही संवत्‌की बात। सो उसके लिये विरुदवादी दल ऐसे-ऐसे अनुमानोंकी पना किया करता है कि अक्षपाद और म भी एक बार चक्करमें पड़ जायें।

उदाहरणके लिये इनका कहना है कि समय :प्रचलित मालवगणके संवत्‌पर अपने-अपने नामकी मुहर लगाकर बिल्लयेजा काम किया है। ऐसा निर्णय इतिहासके न्यायालयका।

कई ईपालुओंको तो इस संवत्‌को मालवगणकी विजयके स्मारकका गौरव देना एक ज्यादती मालूम होती है। वे इसे उज्जयिनीके ज्योतिषियोंकी शरारत बताते हैं।

इस तरह उस वेचारे सम्राटका अस्तित्व समयके फेरसे फुटबौलकी भांति ई० प्रथम शताब्दीसे लेकर छठवीं सदी लम्बे-चौड़े मैदानमें मारा-मारा फिरा और गेंदकी छायाकी भांति कालिदास भी साथ-साथ।

देशके करोड़ों मामूली आदमी इस खेल इस खींचातानीको, मुंह बाये देख रहे समझ ही नहीं पाते कि सैंकड़ों पीढ़ियों का परिचित प्रिय विक्रम इनमेंसे कौन- है। परन्तु जब भारी-भारी प्रमाणोंकी लेकर इतिहासके अन्धेरे गर्भगृहोंके कोने छानकर ये पण्डित घोषणा करते 'विक्रमादित्य नामका कोई राजा नहीं ' तब लोक-मानसमें सैंकड़ों अद्‌भुत ओंके उच्च सिंहासनपर आसीन सम्राट खिलखिलाकर हंस पड़ते हैं और साथ ही बत्तीस पुतलियोंका अट्टहास चारों ओर मुखर हो उठता है।

कभी-कभी मैं सोचता हूं, यदि सर्वश्री ओलीवर लाज़ और रामदास गौड़ (ईश्वर उनकी आत्माको शान्ति दे) कहीं स्वर्गमें विक्रमसे भेंटकर उनको उनका अस्तित्व अस्वीकार करनेवालोंकी बात बतायें और अपनी प्राण-विद्याके बलसे उन्हें मर्त्यलोक के इन इतिहासोंकी अदालतमें सशरीर भेज सकें तो कैसा मनोरंजक होगा वह दृश्य जब अपनी मेघ-गंभीर वाणीमें वह कहेंगे, "लो म्लेच्छोंका संहारक, देशका त्राता मैं 'विक्रम' सशरीर तुम्हारे सामने उपस्थित हूं, अब भी तुम मेरे अस्तित्वसे इन्कार करोगे भले मानुसो ?" तब ये भारी-भरकम पंडित चौंक पड़ेंगे। अपने मोटे शीशेवाले चश्मेके नीचेसे घूरकर उसे देखेंगे, और कहेंगे, 'तुम विक्रम हो ? तुम विक्रम हो ? क्या प्रमाण है कि तुम थे ?'

'प्रमाण ? मैं स्वयं जो हूं!'

'स्वयं होनेसे क्या होता है ? तुम्हारे सिक्के,दानपत्र, शिलालेख कुछ भी तो नहीं।'

'पर भद्र पुरुषो ! देशका बच्चा-बच्चा मेरा नाम जानता है।'

'हुं ! झूठ है। सब कपोल-कल्पना है ! जानते हो आजकलकी वैज्ञानिक दृष्टिके सामने यह गपोड़पन्थी नहीं चल सकती ? समझे, तुम नहीं थे, यही मत ठीक है।'

और तब विक्रम वेचारा सिर लटका कर रह जायगा। सोचेगा,' हाय रे कालिदास ! तुमने शकुन्तला और मेघदूत लिखा। इससे अच्छा था कि तारीख, महीना, सन्-संवतके साथ मेरा एक खूब-सा प्रामाणिक जीवन चरित्र लिख देते। उससे कोटि-कोटि हृदयों में रसकी धारा चाहे प्रवाहित न होती ; पर आजकी इस दुर्वह लज्जासे तो मैं बच जाता।'

सो यह जो पंडितोंका विक्रमके पीछे हाथ धोकर पड़नेका प्रयास है ! सारा का सारा व्यर्थ मालूम होता है। इन लोगोंसे पूछनेकी इच्छा होती है, हमारे देशके जन-जनके मनमें विक्रमका जो सजीव सप्राण रूप प्रतिष्ठित है, उसे देखना क्यों नहीं चाहते आप ?

मैं जानता हूं वे क्या कहेंगे। वे कहेंगे, 'क्या प्रमाण है। इस थीसिसका औथर तो...'

अरे, फेंकिये इतिहासके इन नीरस पोथों को। पढ़िये कथा सरित् सागर, बैताल-पचीसी, सिंहासन बत्तीसी। यदि आप और अधिक रसज्ञताका दावा करते हैं, तो पढ़िये रघुवंश, कुमार संभव, मेघदूत, शकुन्तला। विक्रमको और उसके हृदयको आप इनमें धमकते हुए पायेंगे। मान लिया कि आपने मोटेमोटे पोथे लिखकर यह सिद्धकर दिया कि विक्रम सचमुच ई० पू० प्रथम शताब्दीमें एक राजा था। क्या लाभ हुआ इससे देशके जीवित करोड़ों मनुष्यों को ? और उसके सिद्ध न होनेसे ही कौन-सी देशकी नैया रसातलको चली जा रही है ?

आप कहेंगे, 'ये किताबें—कथा सरित सागर, वैताल-पचीसी सब गप हैं।' मै कहता हूं, आपही कौन हरिश्चन्द्रके अवतार हैं ? ये कथाएं झूठ हैं। होने दें उन्हें झूठ। पर इन्हीं कथाओंको लेकर देशके हृदयमें विक्रमकी जो जीवित प्रतिमा स्थापित है वह तो झूठ नहीं है। सैंकड़ों वर्षोंसे लोक-मानस में देशके त्राता, म्लेच्छोंके संहारक, भूतों-बैतालोंपर भी शासन करनेवाले, साक्षात शङ्करजीके गण माल्यवानके अवतार सहस्रों रसमय लोकगाथाओंके नायक विक्रमकी जो मूर्ति स्थापित है, क्या उसे अपने स्थानसे तिल भर भी डिगा सके हैं, ये आपके मोटे-मोटे थीसिस ? इतिहासका विक्रम न जाने था या नहीं। यदि रहा भी हो तो कबका मर चुका और उसकी राखपर न जाने मिट्टीकी कितनी तहें जम चुकी हैं। परन्तु लोक-मानस के सिंहासनपर आसीन यह विक्रम, भूतकाल की भांति, अनन्त काल तक कोटि-कोटि जनोंकी श्रद्धा तथा आनन्दके रससे अभि-षिक्त होता रहेगा। न जाने कितने ग्राम-वृद्धोंने इस विक्रमकी अति पुरातन, परन्तु चिरन्तन आख्यायिकाओंको ललकते कण्ठसे सुना-सुनाकर मानव-हृदयके कितने दुख-दर्द धोकर बहा दिये होंगे। कौन जाने कितनी बार इस विक्रमके जन्मके समय पुष्प वर्षाके मिस आकाश हंसा होगा और अन्तरिक्षमें देव-दुन्दुभियोंका निनाद मुखरित हो उठा होगा। संख्यातीत बार इन कथाओंको सुनकर श्रोतासमुदायका अंतश्चेतन विह्वल हो उठा होगा और जाने कितनी बार सिंहलद्वीप के मार्गमें समुद्रके:बीच माया-निर्मित निर्जन पुलिनपर सुवर्णमय, रत्न-जटित किन्तु सजीव हरिण शावकको अपनी किंकणीके क्वणनकी तालपर नाचती हुई प्रियंगुश्यामांगी और चन्द्रामलद्य तिशालिनी दो युवती कन्याओंके अद्‌भुत रूप लावण्यकी बात सोचकर कितने युवकोंकी धमनियोंका रक्त वेगवान हो उठा होगा, इसका आज कोई हिसाब है ?

आप कहते हैं कि इस विक्रमको भूलकर हम सुने आपके कंकाल अवशेष ऐतिहासिक विक्रमके कंकालकी बात। क्या होगा उसको जानकर-सुनकर ? क्या उससे जन-मानसको जरा-सी भी स्फूर्ति, जरा-सी प्रेरणा, जरा भी उष्णता मिलनेकी आशा है ? एक भी म्लान हृदयमें, एक भी निमिषके लिये आनन्दका संचार कर सकेगा, आपका यह सन् संवत्‌वाला विक्रम ? अगर नहीं तो बहा दें उसे गंगाकी धारमें। तोड़ दें कब्रकी चट्टानों जैसी इन किताबोंके घेरेको और बाहर निकलकर निहारें उस विक्रमको, जो करोड़ों हृदयोंके सुख-दुख, आशा-निराशाका साथी है। जरा जन-जीवनके अन्तस्थलमें पैठिये और कहिये उसके स्वरमें स्वर मिलाकर 'लोक-मानसका सम्राट

विक्रम चिरजीवी हो !

आज वर्ष का प्रथम दिवस है !

जग में आयी नयी जवानी
सर निर्झर में नयी रवानी
चहक-चहक कर विहंग बालिका
करती आगत की अगवानी

झूम-झूम कर वृक्ष कह रहे—आज वर्ष का प्रथम दिवस है !

तृण-तृण पर अमृत-कण बिखरे
किस के रूप ओस बन निखरे
या कि टूट कर रत्न-हार ये
किसी परी के आज गिर पड़े

जिसे चुन रही किरण सवेरे आंचलमें अपने हंस-हंस है !

डोल रहा है मलय समीरण
उषा लुटाती आयी कंचन
ललक रहा है मानव कब से
नष्ट-भ्रष्ट करने को बन्धन

कली-कली से आज चू रहा एक नया जीवनका रस है !

मुक्त आज: अवनी-अम्बर तल
मुक्त आज कोकिलके कल स्वर
मुक्त नीड़ के बाल विहंगम
उड़ने को फैलाते हैं पर

मुक्त हृदय, पर यह शरीर जाने क्यों अब तक भी परवश है ?

आओ दिल के तार मिला लें
प्रेम-पुष्पके हार बना लें
स्वतन्त्रता के गीत मनोहर
हिल-मिल एक कंठ से गा लें

साथी ! उच्छृंखल यौवन यह आज नहीं क्यों मेरे वश है ?

—श्री तिलक

समाजका अग्नि-कुण्ड

दहेज

[श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र]

दहेजकी समस्या आज भारतकी प्रमुख सामाजिक समस्याओंमें अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैं यहां उच्चवर्गके व्यक्तियोंकी बात नहीं करता! क्योंकि उच्चवर्गके व्यक्ति काफी सम्पन्न होते हैं। उच्चवर्गके समाजमें घी-दूध की नदियां बहती हैं। परन्तु इसके विपरीत निम्नवर्ग तथा मध्यवर्गका समाज आजके इस उच्चवर्गके पूंजीवादियों द्वारा अधिक मात्रामें शोषित तथा दोहित हैं। आज भारतके ९० फीसदी घरोंकी अवस्था इसी दहेजकी कुप्रथाके कारण बड़ी दयनीय तथा शोचनीय बनी हुई है। खास तौरसे उत्तर भारतमें तो दहेजके कारण सैकड़ों लड़कियां अधिक अवस्थातक कुंआरी रहकर समाजमें गुप्त रूपसे व्यभिचारका शिकार होती देखी गयी हैं। अनेक लड़कियोंने इसी निरंकुश समाजकी छातीपर जहर खाकर अपने प्राणोंको उत्सर्ग तक कर दिया। हजारों निम्नवर्गके माता-पिताओंने धनाभावके कारण दहेज न दे सके और अपनी लड़कियोंको वृद्धोंके गले मढ़ दिया; जिससे अल्पकालमें ही वे विधवाएं बन तथा व्यभिचारके लिये प्रेरित होकर अन्तमें वेश्या तक बन गयीं। यह है हमारे समाजका खोखलापन! यह है हमारी असलियत! जिसपर हमारे राष्ट्र-निर्माणके सुदृढ़ भवनको खड़ा होना है।

हम बातें तो बड़ी-बड़ी करते हैं। बड़ी-बड़ी योजनाएं राष्ट्रकी उन्नतिके सम्बन्धमें सोचते हैं। धारा-सभाओंमें बड़े-बड़े प्रस्ताव पास करके धर लेते हैं। पर क्या उनमेंसे एक भी पूरा होता है। किसी एक भी प्रस्ताव को क्या हमने क्रियात्मक स्वरूप दिया है?

आजका युग बातोंका युग नहीं; कुछ करनेका है। हमने अनेक बार लेक्चर झाड़े, लोकहितकी भावनासे जागरणका संदेश जनताके कानों तक पहुंचाया। परन्तु क्या जनता जाग उठी? जनता तो आज भी पचास वर्ष पहलेकी रूढ़ियोंपर बराबर चली आ रही है।

आज बीसवीं शताब्दी है। सभ्यता का युग है! सभ्यताके प्रकाशकी चकाचौंधसे जनताकी आंखें चौंधिया गयी हैं। परन्तु जनता आज भी आंखें रखती हुई अंधी है। आज इसी निर्मम समाजकी छातीने कितनी निर्बल तथा गौओंकी तरह दीन कन्याओंको बलिदान किया। पर समाजकी छाती— भला कभी पिघली है? नहीं! वह तो पूर्ववत् पाषाण ही बनी हुई है! समाजके कानोंपर जूं तक नहीं रेंगी। समाज तो आंखें रखते 'अन्धा' और कान रहते बधिर बना हुआ है। और दीन गायें दहेज रूपी कसाईके हाथों काटी जा रही हैं। पर कौन सुनता है—"नक्कारखानेमें तूतीकी आवाज को।" आज यदि कोई इस प्रश्नको लेकर उठ खड़ा हो, तो समाज एक बार आश्चर्यपूर्ण नेत्रोंसे जरा देखकर फिर मौन हो जायगा।

परन्तु युगकी पुकार है कि हम मौन न रहें। हमें तो कुछ करना ही होगा। कमसे कम नवयुवकों और नवयुवतियोंको आगे आकर इस दहेजकी कुप्रथाका मूलोच्छेद करनाही होगा। अन्यथा देशके कोने-कोनेमें बंगालका अकाल तथा व्यभिचारका बाजार गर्म होता दृष्टिगोचर होने लगेगा और आये दिन देवताओं तथा ऋषियोंकी यह पुनीत स्वर्गस्थली नरकधाममें बदल जायगी। क्योंकि लड़केवाले तो लड़केकी पढ़ाई-लिखाईका सबका सब खर्च लड़कीवाले से दहेजके रूपमें वसूल करना चाहते हैं। "यदि लड़कीवालेकी स्थिति चार-छः हजार रुपयेका दहेज देनेकी नहीं है, तो वह अपनी लड़की कुंआरी ही घर बैठा रखे।" ऐसा हमारे समाजके कर्णधार 'लड़का-विक्रेता' कहा करते हैं। दहेजके ही कारण हमारे समाजकी अवस्था अधोगतिको प्राप्त हो रही है और राष्ट्रपतनके गर्तमें डूबा जा रहा है।

हम यह मानते हैं, कि आज हमारा राष्ट्र गुलाम है। परन्तु इसके मानी यह तो कदापि नहीं कि हमारा समाज भी गुलाम है। उसे उन्हीं पुरानी लकीरोंका फकीर होना चाहिये। नहीं! उसे तो नवयुगके प्रकाशमें नवीन सुधारोंके दर्शन हो रहे हैं। पुरानी रूढ़ियां धीरे-धीरे नष्ट होकर लुप्तप्राय हो रही हैं। तब दहेज ही क्यों रहे?

अब प्रश्न यह उठता है, कि इस कुप्रथा को कैसे नष्ट किया जाय? आवश्यकता इस बात की है, कि गांव-गांव, नगर-नगरमें "दहेज-निवारक मंडल" स्थापित किये जायं। ये मंडल अपने ग्रामों या नगरोंमें दहेजकी प्रथाको समूल नष्ट करनेके प्रयत्नमें प्रयत्नशील रहें। ग्रामोंमें, जहां कि शिक्षा का अभाव है तथा अज्ञानान्धकार फैला है, ऐसे मंडलोंकी अत्यन्त आवश्यकता है। मंडलोंके कार्य-कर्त्तागण अपढ़ देहातियों को समझायें कि "आखिर आप क्या पुत्र-विक्रय करने चले हैं या लड़केका विवाह?" विवाह तो जीवनका एक पवित्र बंधन है न कि व्यवसाय!"

पर, इस कार्यके लिये हमारे नवयुवकों तथा नवयुवतियोंके इसलिये अग्रसर होनेकी आवश्यकता है, क्योंकि वे राष्ट्र-निर्माण कर्ता हैं और देशका भविष्य उन्हींपर निर्भर है। उन्हें खुलेआम दहेजकी प्रथाका विरोध करना चाहिये और कहना चाहिये—"हमें दहेजकी कोई आवश्यकता नहीं। हम विवाहको जीवनका एक पवित्र प्रेम-सम्बन्ध मानते हैं।"

—**—

…दिनकी छुट्टी चाहती हूं, बाबूजी ?'

…आयेगी ?'

…नहीं ।'

…छुट्टी क्यों चाहती है ?'

…ही ।'

…छुट्टी नहीं मिलेगी ।'

…तो छुट्टी लूंगी और आप ही देंगे …!'

…यह बात है, चम्पा !' देवेन्द्र ठेके-…अपनी लम्बी, काली दाढ़ीपर अपना …सहलाते हुए कहा—'तो फिर मुझ…ही क्यों है ?'

…इसलिये कि आपके यहां काम करती …।' चम्पा बीचमें ही रुक गयी …दृष्टि कर चुप हो गयी ।

…और क्या चम्पा ?' देवेन्द्रने उसके पास …कहा—'तुम रुक क्यों गयी ? कहो …क्या ?'

…कि आप मेरे मालिक हैं ।' कहकर …लज्जवन्ती-सी अपनी फटी धोती और …मैली कंचुकीमें जैसे सिकुड़ने लगी ।

…मालिक है!' देवेन्द्र ठेकेदारने चम्पाके ये …दुहराये और उसके मस्तकपर अपना …फेरते हुए कहा—'मालिक तो कोई …गा चम्पा !'

…जो पैसे देता है, पेट पालता है, क्या …मालिक नहीं ?' निश्छल चम्पाने नीची …किये हुए ही कह दिया ।

…ठीक कहती हो चम्पा !' देवेन्द्रने अब …हाथ उसकी मांसल पीठपर सहलाते …कहा—'लेकिन कितने मजदूर ऐसा …हैं !'

…लेकिन यह आप क्या कर रहे हैं ?' …नारीत्व शायद भड़क उठा और …का हाथ अपनी पीठपरसे झिटकते …कहा—'कोई देख लेगा, तो क्या …!'

…ओह, समझा !' देवेन्द्रने अपनी मूंछों-…फेरते हुए कहा—'तुम ठीक कह रही …अच्छा, यह तो बतलाओ, छुट्टीकी …जरूरत आ पड़ी ?'

…आदमी आ रहा है ।' चम्पाने कह…

…उसे लिवा जानेके लिये ?'

…तो मैं जाऊंगी नहीं ।'

…क्यों भला ?'

…मेरी मां आजकल बीमार है । उसकी …लिये मुझे अभी यहीं रहना होगा । …वहां ले जाकर मेरा आदमी मुझे पालने …ही भुलायेगा । जो मजदूरी यहां …हूं, वही वहां भी करनी होगी । …वहां तो एक और आफत है ।'

…वह क्या ?'

…वहां जमींदारका कारिन्दा सदा मुझे …रहता है । छायाकी तरह मेरे पीछे ही …रहता है ।'

…तुम भूलकर भी वहां मत जाना …!' देवेन्द्रने सहानुभूतिका कृत्रिम रस …हुए कहा—'तुम अपने आदमीको …रोक लो । तुम दोनों ही मेरे यहां …काम कर सकते हो ।'

…मेरी छुट्टी मंजूर है मालिक ?' चम्पा

कहानी
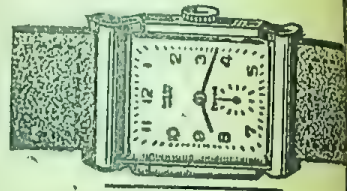
सात आने

—:*:*:—

[श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त']

ने अपनी चञ्चल दृष्टि ठेकेदारकी लम्बी, काली दाढ़ीपर जमाते हुए पूछा ।

'एक बार नहीं, सौ बार चम्पा ।' ठेकेदारने मुस्कराते हुए कहा—'और देखो, तुम्हारी मां बीमार है न ? डाक्टर-वैद्य बुलानेकी जरूरत समझो, तो मुझे खबर देना । मेरा घर तो तुमने देखा है न ?'

'हां, देखा है ।' कहकर चम्पा चुपचाप चल पड़ी । लेकिन दो-चार कदम चलकर वह फिर लौटी और ठेकेदारसे बोली—'एक बात

पूरे दो रुपये अपने हाथपर देख चम्पाने साश्चर्य पूछा—'मजूरी तो सिर्फ एक रुपया नौ आने ही होती है । फिर यह दो रुपये कैसे ?'

'मैं तुम्हारा मालिक जो ठहरा चम्पा !' ठेकेदार बोला—'ले भी जाओ । सात आने यदि तुम्हें जरूरतके वक्त ज्यादा भी दे दिये, तो हर्ज ही क्या है ? हिसाबकी तुम चिन्ता न करो । जरूरत पड़नेपर तुम और रुपये भी ले सकती हो । वह मालिक ही क्या, जो अपने

याल्टा कानफरेंस से लौटते समय प्रेसीडेंट रूजवेल्ट साउदी अरेबिया; मिस्र और अबीसीनिया के बादशाह से मिस्र में मिले थे ।

आपसे और कहनी है । मां बीमार है । हफ्ता पूरा होनेमें सिर्फ दो दिन और बाकी हैं । यदि आप दे सकें, तो इस हफ्तेकी मजूरी मुझे दे दें । मेरा आदमी भी आ रहा है । पैसोंकी बहुत जरूरत है ।'

एक क्षण देवेन्द्रने कुछ सोचा फिर अपने मनी-पर्समेंसे पूरे दो रुपये निकालकर चम्पा के हाथपर रख दिये और कहा—'लो, यह दो रुपये । यदि और जरूरत हो, तो मेरे घर आकर ले जाना ।'

मजदूरोंकी तकलीफमें काम न आये ।'

—: २ :—

दो रुपये लेकर चम्पा अपने घरकी तरफ चल पड़ी । सघन अन्धकारके काले-काले पंखोंमें सारा संसार एक नीड़की तरह सिमट रहा था । लेकिन शहरोंकी सड़कोंपर बिजली का तीव्र प्रकाश जगमगा रहा था ।

इस जगमग प्रकाशको देख, चम्पाको ध्यान आया अपने उस गांवका, जो रात्रिके सन्नाटेमें नीरव और अचेतन-सा एक विकट शून्यमें डूबा रहता है । वहां अन्धकारके आवरणको छिन्न-भिन्न करनेके लिये इस प्रकार बिजली नहीं ; वहां जीवनमें हंसने-हंसानेके शहर-जैसे उपकरण नहीं, जिनसे वह अपने दुख-दर्दोंको कभी कुछ हलका कर सकती । दिनभरकी थकान मिटानेके लिये, अपने मनको बहलानेके लिये वहां हंसने-हंसानेका कोई साधन नहीं ।

हंसने-हंसानेका ख्याल आते ही चम्पा को उस ठेकेदारका ध्यान आ गया, जिसने अभी-अभी उसे उसकी यथार्थ मजदूरीसे सात आने अधिक दे दिये हैं । यही क्यों, जरूरत पड़नेपर मांको देखनेके लिये डाक्टर बुलानेका भी आश्वासन उसने दिया है—रुपये भी देनेकी बात कही है ।

तभी चम्पाको लगा कि यह सब तो ठीक है । लेकिन और रुपये लेनेके लिये उसने मुझे अपने घर क्यों बुलाया है ? फिर उसे अपने आपपर खीझ-सी हो आयी यह सोचकर कि रातको जरूरत पड़नेपर ठेकेदार मुझे अपने घर नहीं, तो क्या उसी मैदानमें बुलायेगा, जहां इमारत बन रही है ? रातको वहां चौकीदारके अतिरिक्त कोई चिड़िया भी तो नहीं रहती । और घरमें वह अकेला तो होगा नहीं । उसके घरमें स्त्री-बच्चे होंगे, नौकर-चाकर भी होंगे ही । फिर भय काहेका ?

परन्तु ठेकेदारके घर जाने और उससे रुपये लानेकी बात उसके दिलमें गहरी उतरती गयी । उसे अपने गांवके कारिन्देकी याद आ गयी ; उसकी भयावनी-सी मूर्ति उसकी आंखोंके सामने नाच उठी ।

एक दिन उसका आदमी इसी तरह बीमार था जिस तरह आज उसकी मां है । रातमें ही उसे कारिन्दाके घर जाना पड़ा था—यह कहनेके लिये कि किसी वैद्यको बुला दें वह । और तब…? तब उसने जो कुछ देखा, सुना और समझा था, आजतक किसीसे कह नहीं सकी । गनीमत यह हुई कि उसी समय किसी कामसे जमींदारका एक बुड्ढा नौकर खांसता-खांसता वहां जा पहुंचा उसे बुलाने, और तब कारिन्दाको अपनी दूषित अभिलाषा दबा लेनी पड़ी ।

जो कहीं उस दिन जमींदारका वह बुड्ढा नौकर वहां अनायास न जा पहुंचता, तो चम्पा कहींकी न रह जाती । तभी वह उल्टे पैरों अपने घर वापस चली आयी थी । वह बात उसने किसीसे नहीं कही । भविष्य में किसीसे कह सकनेका साहस भी उसमें नहीं ।

इन्हीं बीती बातोंके सिलसिलेमें चम्पा की आंखोंके सामने ठेकेदारकी वह मूर्ति नाच उठी, जो अभी-अभी मजदूरी देते समय उसकी पीठपर हाथ फेरकर शायद कारिन्दा जैसा ही भाव व्यक्त करना चाहता था । यदि अन्धकार सघन होता और वहां दूसरे मजदूर न होते, तो कौन कह सकता है कि ठेकेदारके रोम-रोमसे भी कारिन्दाकी तरह ही आसुरी भावना न फूट पड़ती ?

सात आने अधिक देने, चम्पाके आदमी को भी नौकरी देने, डाक्टर बुला देने, आदि सारी बातोंमें चम्पाको एक स्पष्ट छलनेका आभास होने लगा ।

तभी चम्पाको लगा—तो क्या नारी इसीलिये है कि वह सदा दूसरोंकी काम-वासनाका शिकार होती रहे? दूसरोंकी रङ्गीनीके लिये अपना सम्मोहन धन देती फिरे? नहीं, नहीं; हरगिज नहीं। चम्पा यह सब न कर सकेगी। वह तो एक पुरुषसे बंध चकी है। जीवनके अन्तिम क्षणों तक उसीसे बंधी रहेगी। वह पुरुष भले ही दुनियाकी नजरोंमें एक अत्यन्त साधारण-सा मजदूर हो; लेकिन उसके लियें तो किसी वैभव-शाली राजासे वह कम नहीं।

विचारोंकी इसी ऊहापोहपर तिरती हुई चम्पा शहरकी कितनी ही जगमगाती हुई सड़कोंको और कितनी ही अंधेरी गलियोंको पार करती हुई, कब अपनी मांके टूटे-से झोपड़ेके सामने पहुंच गयी, इसका उसे कोई भान नहीं था।

-: ३ :-

झोपड़ीके झुके हुए छप्परपर एक हाथ टेककर तारोंसे भरे उन्मुक्त आकाशको चम्पा चुपचाप निहार रही थी और अपनी ही विचार-धाराओंपर तैर रही थी। इसी बीच उसकी मां बाहर आयी और चम्पाको इस प्रकार ध्यानस्थ देख उसने एक हाथसे उसको हिलाते हुए कहा—'कबसे यहां खड़ी है री?'

'अभी तो आयी हूं मां!' भयभीता हिरणीकी तरह चौंकते हुए चम्पाने कहा—'हां, अभी आयी हूं।'

'मैं कबसे तेरी राह देख रही हूं बेटी! आज बहुत देरसे लौटी हो तुम।'

'हां, देर तो सचमुच हो गयी मां! लेकिन पैसे जो लेने थे। जब पैसे मिल गये, तभी तो आ सकी।'

'पैसे? अरी, अभी तो हफ्ता पूरा भी नहीं हुआ! फिर पैसे कैसे?'

'तुम्हारी तबियत जो खराब है! शायद दवादारूके लिये जरूरत पड़ जाये, और फिर...।'

'समझी बिटिया, और फिर कल दामाद जो मेरा आ रहा है। चलो, ठीक ही किया।'

'आने भी दो किसीको, इससे क्या! मैं तो तुम्हारी दवा-दारूके लिये ही पैसे मांग लायी हूं।' और लजाकर चम्पा झोपड़ीके भीतर चली गयी।

मां अपनी बेटीकी यह लज्जा समझ गयी। उसीके पीछे-पीछे झोपड़ीमें जाकर मां बोली—'चल बेटी, रोटी खाले। मैं बना चुकी हूं।'

'तुम रोटी बना चुकी हो! यह तुमने क्या किया मां? सवेरे तक तो तुम्हें बुखार चढ़ा था, और शामको रोटी बना डाली। यह ठीक नहीं किया मां! अब मैं न रहूं, तब चाहे जो किया करना; लेकिन मेरे रहते यह सब न होगा।'

'मेरी तबियत अब ठीक है चम्पा! तुझे लौटनेमें बहुत देर हो गयी, इसीलिये मैंने रोटी बना डाली बिटिया! और हां, यह चले जानेकी बात क्यों कह रही है! आज ही तो, तू कह रही थी कि अभी हालमें ससुराल न जायगी।'

'कह तो रही थी मां, लेकिन...।'

'लेकिन क्या? सोचती होगी मेरे दामादको तकलीफ होती होगी। ऐसा ही सोचना चाहिये बेटी! मुझे ऐसीबातसे बुरा नहीं लगता, बल्कि खुशी होती है। तुम दोनों हिल-मिलकर रहो, यही चाहती हूं मैं।'

चम्पा इसपर कहती ही क्या? अपने दिलपर लग जानेवाली चोट तो वह अपने मांसे कहनेसे रही। मांने जो कुछ समझ लिया है, उसे काटकर दूसरी समस्या उसके सामने खड़ी कर देना भी तो ठीक नहीं। चम्पाने तय कर लिया कि ठेकेदारकी बात न तो अपनी मांसे वह कहेगी और न अपने आदमीसे ही। ऐसी बातें कहनेसे लाभ ही क्या? लेकिन इतना जरूर है कि अब वह न तो इस शहरमें रहेगी अपनी मांके पास, और न उस गांवमें ही वह रहेगी, जहां उसका आदमी रहता है। वहां—गांवमें—भी तो जमींदारका कारिन्दा चम्पाको सदा घूरता रहता है! कौन जाने कब क्या हो जाये?

रोटी खा लेनेपर चम्पाने मांसे कहा—'मां आज मैं पूरे दो रुपये लायी हूं। सोचा, कहीं तुम्हारे लिये दवा-दारूकी जरूरत पड़ गयी, तो कमसे कम दो रुपये तो रहें पासमें।'

'और ठेकेदारने दे भी दिये तुझे?' मांने साश्चर्य चम्पाको देखते हुए पूछा।

'क्यों सात आने ही तो उसने ज्यादा दिये हैं मां!' चम्पाने शायद कैफियत देते हुए कहा—'सो वह भी, यदि दो दिन और मजूरी कर लूंगी, तो पूरे हो जायंगे, तीन आने मुझे और मिल जायंगे।'

'लेकिन अभी तो तू कह रही थी कि अब तू जा रही है—चली जायगी।'

'चली जाऊंगी, तो यह सात आने वापस कर दूंगी।'

'ह बेटी, यह करना ही होगा। मैं जानती हूं, वह ठेकेदार भलामानुष नहीं। मजदूरोंको एक तो कभी अधिक पैसा वह देता नहीं, और देता है तो बुरी तरह वसूल कर लेता है।'

मांकी बात सुनकर चम्पाने स्वीकार किया कि जरूर वह बुरी तरह पैसे वसूल करता होगा। कदाचित इसीलिये मुझे और भी रुपये देनेकी उदारता वह दिखला रहा था। लेकिन उसकी इस उदारताका रहस्य मैं समझ चुकी हूं। अब वह मुझे छल नहीं सकता, धोखा नहीं दे सकता।

-: ४ :-

दूसरे दिन सन्ध्या समय चम्पा अपनी मां और अपने आदमीके साथ झोपड़ीके सामने बैठी हुई जब सोच रही थी कि अब उसे किस गांवमें जाकर रहना चाहिये—जहां न वह ठेकेदार हो और न जमींदारका वह कारिन्दा, तभी देवेन्द्र ठेकेदार भी कहींसे घूमता-घामता वहां आ पहुंचा और बोला—'कैसी तबियत है चम्पा, तुम्हारी मांकी?'

'ठीक है अब।' कहकर चम्पा उठी, झोपड़ीके भीतर गयी और फौरन बाहर आकर ठेकेदारके हाथपर कुछ रखते हुए बोली—'आपके ये सात आने!'

चम्पाका आदमी और उसकी मां दोनों यह सब चुपचाप देख रहे थे और मन ही मन सोच रहे थे कि देखें, यह ठेकेदार अब क्या कहता है। ठेकेदारने नीची नजरोंसे कहा—'तो क्या अब कामपर न आओगी चम्पा?'

'नहीं!' चम्पाने कहा—'मैं अब यहांसे जा रही हूं।'

और यह सुनते ही ठेकेदारको जैसे काठ मार गया। वह उलटे पैरों वापस चला गया—एक भारी मन लेकर। व्यवहारपर वह किसी लज्जा से जैसे उद्विग्न हो उठता था। जो चम्पा कल तक अपने जानेके लिये तैयार नहीं थी, वह ही गलतीसे अब यह शहर छोड़ लिये कहीं चले जानेका निश्चय कर

हिटलरकी मीरजाफरी रूसी फौज

(लेखिका--श्रमती कृष्णी देवी)

मनुष्य सोचता तो है बहुत कुछ, किन्तु वही है जो मंजूरे-खुदा होता है। ...की संधिमें बुरी तरह छिन्न-भिन्न किये जर्मनीको संगठित कर आधुनिकतम ...निक शस्त्रास्त्रोंसे सुसज्जित करनेमें जब राष्ट्रीय समाजवादके प्रवर्तक हिटलरको सफलता प्राप्त हो गयी, तो उसका ...ग सातवें आसमानपर पहुंच गया और सोचने लगा भूमण्डलपर जर्मनीका ...व स्थापित करनेकी बात। इसी दृष्टि- ...से उसने जर्मन नाजी पार्टीके द्वारा ...के समस्त देशोंमें अपना गुप्त दल तैयार ..., जिससे आवश्यकता पड़नेपर वह ...मनोरथ सिद्ध करनेमें पूर्णतया लाभ ...की आकांक्षा रखता था। हिटलरकी ...सेना (फिफ्थ कालम) किस देशमें ...ी, यह कहना मुश्किल था। यूरोपके ...ांश राष्ट्रोंपर वर्तमान युद्धके प्रारम्भिक ...में उसकी आशु विजयके प्रधान कारणों ...की यह पांचवीं सेना एक जबर्दस्त ...थी। अन्य देशोंकी बात जाने दीजिये, ...जातिःजैसे देशभक्तोंमें, मि० चर्चिलके ...पार्श्ववर्तियों तकमें हिटलरने अपने ...ाओं और जयचन्दोंकी आत्माएं ...करा रखी थीं। ब्रिटेनके शासनकी ...ोर पकड़ते ही यदि मि० चर्चिलने इन ...ाओंकी छानबीन आरम्भ न कर दी ..., तो आज यदि लन्दनमें हिटलर चाय- ...ठा होता तो इसमें कोई आश्चर्य ...था। लेकिन दानव नाजियोंके जुएमें ...समाजको जोतना ईश्वरको स्वीकार ...था,इसलिये हिटलरकी सारी योजनाएं ...तरह विफल हुईं और अति अल्पकालमें यूरोपको अपने पैरों तले रौंद डालने ...हिटलर और उसके पार्षदोंको आक्रांत ...सेनाओंने ऐसी बुरी तरह पछाड़ा ...भागते-भागते उन्हें दम लेना दूभर हो रहा ...रूसको और लन्दनमें विजय समारोह ...की दुर्दशा करनेवाले फासिस्ट और ...पशु आज दलित और कुचलित होकर ...अपने मांदोंमें छिप रहे हैं।

...मार्क्स और लेनिन द्वारा प्रवर्तित ...वादी सोवियट राज्यके अन्तर्गत ...को मीरजाफरोंकी सृष्टि करनेमें ...ता कैसे मिली, यह एक दिलचस्प सवाल ...जा सकता है। सोवियट राज्यमें ...किसान-मजदूर पूर्णतया सुखी और ...हैं इसमें सन्देह नहीं। लेकिन व्यक्तिगत ...लोगोंसे दुनियाका कौन देश खाली ...दूसरी बात यह कि जब आदमीके ...बलिष्ठ रहते हैं तो उसके सहा- ...की कमी नहीं होती। हिटलरकी ...वाहिनियां जिन-जिन देशोंमें पहुंचीं, ...के भयसे, कुछ स्वार्थसे और कुछ ...रताले अधिक अपनी चालाकीके ...उनके स्वागत-सत्कार और प्रशंसक ...में शामिल हो गये। कुछ लोगोंके नाजी ...सेनामें आ मिलनेका प्रधान कारण था डा० गोवेल्स जैसे अत्यन्त पटु नाजी प्रचारकों का प्रचार। कुछ लोग नाजी सैनिकोंमें इस लिये शामिल हो गये कि ऐसा करनेसे विजयी नाजी पशु—गेस्टापो और तूफानी सैन्य दलोंके अत्याचारोंसे उन्हें मुक्ति मिल गयी। मैं अपने व्यक्तिगत अनुभवकी एक बात बतलाती हूं। वर्तमान भारतीय सेनामें नये रंगरूटोंकी जबसे भर्ती आरम्भ हुई है, अनेक अनाचारी आवारे पुलिसकी कठोर निगरानीसे मुक्ति पानेके लिये खुशी-खुशी फौजमें भर्ती हो गये। इसी प्रकार नाजियोंके सहायक भी, आक्रान्त देशोंके बहुतसे लोग उनकी पाशविकतासे मुक्ति पानेके ख्यालसे बन गये। रूसमें मीरजाफरका पार्ट अदा करनेवाले अधिकांशमें ऐसे लोग हिटलरको मिले, जो बोलशेविज्मके विरोधी थे। वे विदेशी हिटलरकी छत्रछायामें रहना पसन्द करते थे, लेकिन अपने देशके बोलशेविक राजत्वमें नहीं। आज अपने देशमें भी तो ऐसे नराधमोंका अभाव नहीं है, जो गुलाम बने रहना पसन्द करते हैं, लेकिन अपने देशके बहुसंख्यक वर्गका शासन नहीं चाहते।

भंवरमें पड़ी नैया कबतक बचेगी ?

१९४४ के मई मासमें जब उत्तरी फ्रांसके नारमंडी अञ्चलमें मित्र राष्ट्रीय सेनाओंका बड़े पैमानेपर जल और आकाश मार्गसे आक्रमण आरम्भ हुआ,तब हिटलरकी अटलांटिक प्राचीरकी रक्षा करनेवाले जवानोंमें विभिन्न देशोंके सैनिकोंका विचित्र मिश्रण पाया गया। जब मैं सोचती हूं कि कहां-कहांसे ईंटें और रोड़े एकत्र करके हिटलरने भानुमतीका यह कुनबा जोड़ा था, तब एक बार उसकी संगठनात्मक योग्यता और शक्ति की प्रशंसा किये बिना दिल नहीं मानता। अटलांटिक प्राचीरके इन रणबांकुरे रक्षकोंमें १९ से २० प्रतिशत तक ऐसे जवान थे, जो जर्मन पितृ-भूमिकी सन्तान नहीं थे। आक्रमणके प्रथम मासमें ही जो ५६ हजार जर्मन युद्ध बन्दी बनाये गये, उनमें ३ हजार ६४० रूस देशवासी थे। पहले तो इन्हें तुर्क और जापानी बताया गया। लेकिन बाद में पता चला कि ये पीत या श्यामवर्ण सैनिक रूसी मध्य एशिया, काकेशश, तुर्किस्तान और बेकाल झील अञ्चलके निवासी हैं।

इटलीमें हिटलरका जो १६२ वां टर्कोमन सैन्य डिवीजन था, उसमें एशियायी रूसके पैदल सैनिक थे। आर्यरक्तको दूषणसे बचाने के लिये जिस हिटलरने जर्मनीसे यहूदियोंका अस्तित्व मिटा दिया, उसी: हिटलरको समय ने अनार्योंसे ऐसी दुरभि सन्धि करनेको बाध्य किया। सर्व शक्तिशाली कालकी महिमा कौन वर्णन कर सकता है ? हिटलरके इस कार्यकी आलोचना करते हुए लन्दनके एक आलोचकने लिखा है—

'हिटलरने पुनः आर्य जातिकी श्रेष्ठताके विचार छोड़ दिये हैं और सहायता प्राप्त करनेकी इच्छासे अनार्य एशियायियोंको खुश करनेका प्रयत्न करने लग गया है।" पर इस सेनासे हिटलरको यथेष्ट सहायता न मिल सकी और सन १९४४ के जून और जुलाईके पराजयके बाद १६२ वां डिवीजन इस मोर्चेसे हटाकर उत्तरी इटलीमें पहुंचाया गया। इटलीके मोर्चेपर पो नदीकी घाटीमें पहुंचनेके लिये मित्र सेनाको इसे डिवीजनके अवशेष भागसे संघर्ष करना पड़ा था।

विभिन्न मोर्चोंपर मित्र सेनाओंको ऐसे रूसियोंसे लड़ना पड़ा है जो हिटलरकी सेना के साथ होकर अपनी जन्मभूमिके खिलाफ युद्ध कर रहे हैं। इनमेंसे अधिकांश तो ऐसे है जिन्हें अपनी इच्छाके विपरीत हिटलरकी सेवा करनी पड़ी है।

रूसी-जर्मन युद्धके प्रथम अध्यायमें ये बन्दी बना लिये गये थे। इन्हें अपने देशके खिलाफ हथियार उठानेको बाध्य किया गया। नाजियों द्वारा बन्दी बनाये गये एक रूसी सैनिकने बताया है—"हम क्या करते। जर्मन सेनामें शामिल हुए बिना वे एक दाना भी देनेको तैयार न थे।" प्रारम्भसे ही लाख

पुतली

नयन से सौन्दर्य छिप-छिप जायगा !
—यह हो न सकता

प्राकृतिक सौन्दर्य सतत सुहावना है
कौन कहता ? देखना भी वासना है
जब तलक यह जगत-जीवन फला फूला
रे नयन मूंदे यहां चलना मना है !
आंख वाले देख ले छवि पांख वाली
रात दिन तेरे लिये जगमग दिवाली
सुरा-प्याला से, न अधरों की सुधा से
नील नयनों में लजीली लगी लाली !
यहां वर अभिशाप कवि ! हो पायगा !
—यह हो न सकता

नयन को रे नयन जब पहचानता है
मज़ा मृदु मुस्कान का तब जानता है
साधना, सौन्दर्य की आराधना ही
नयन का संसार सूना मानता है
नयन में मधुमय मिलन की एक आशा
रूप-रस का पलक-पथ रे सतत प्यासा
भाव कोमल, हृदय श्यामल का सुनाती
नीलिमा से मंजी दृग की मौन भाषा
कवि, प्रकाश-प्रकाश में न समायगा !
—यह हो न सकता

चांद ही बनता न केवल नयन-तारा
वही तारा, प्रेम से जिसको निहारा
बिन्दु में भी सिंधु की हिल्लोल लहरी
चूम लेता नयन का झिलमिल किनारा !
जो नयन चित्रित नहीं वह फूट जाये
रूप अभिमानी कि वह जो रूठ जाये
जो गुलाबी गाल पर ही नहीं निखरी
मंजु मोती की लड़ी वह टूट जाये।
हृदय दृग में अलग जग न बसायगा !
—यह हो न सकता

आरसी की आंख पर है छाप छवि की,
और स्वप्निल तुहिन-कणपर बाल रवि की
रूप रेखा है, बरौनी तूलिका है
हैं तितलियों पर पुतलियां सरस कवि की
चपल लोचन एक इंगित पर मिलेगा
गगन रे घनश्याम से उसका हिलेगा
डूबकर सौन्दर्य-सरिता में सदा भी
कमल लोचन पर यहां हटकर खिलेगा।
रूप नीरव नयन को ललचायगा।
—यह हो न सकता

नयन का तो काम दिल से देखना है
रूप पर प्रतिपल पुतलियां सेंकना है
झांककर निज द्वार से संसार सुन्दर
तीर रे गंभीर गति से फेंकना है।
रूप का यह दोष जो वह बुलाता है
जानकर अनजान को भी भुलाता है
भला वह मन के सलोने कुञ्ज में ही
जब लबालब रस-कलस ही पिलाता है,
कल्पना का कुसुम तब मुरझायगा !
—यह हो न सकता

नयन रखता रूप पुतली-सा संजोकर
नहीं खोता स्वप्न में भी कभी सोकर
पलक प्रतिपल वहां पहरा दिया करती
रूप हंसता आंख का आंचल भिगोकर !
प्यार को भींगी पलक में पीर लेकर
मूल्य उस माधुर्य का बस नीर लेकर
जब सदा के लिये भी दृग बन्द होगा
बन्द होगा तब मधुर तसवीर लेकर
नयन - तारा नीर से तप जायगा !
—यह हो न सकता

—श्री बद्रीदास 'विधुर'

सेनाके बन्दियोंके प्रति जर्मनोंने ऐसी क्रूरतासे व्यवहार किया है जिसकी जानकारीसे ही हृदय कांप जाता है। अमेरिकन और ब्रिटिश युद्धबन्दी रूसियोंकी अपार सहन-शक्ति देख चकित हो जाते हैं। रूसी आंकड़ोंके आधारपर मालूम हुआ है कि स्टालिन ग्राडके युद्ध तक बन्दी बनाये गये ४० लाख लाल सैनिकोंमेंसे २४ लाख या तो गोलीके घाट उतारे गये या भूखों मार डाले गये।

हरेक जेलखानेमें नाजी जेलर इसकी सूचना दे दिया करता है कि उन रूसियोंके साथ अच्छा बर्ताव होगा जो पूर्वीय मोर्चेपर अपने बन्धुओंसे या दक्षिणी और पश्चिमी मोर्चेपर मित्र सेनासे लड़नेको तैयार होंगे। नाजियोंका यह प्रलोभन अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ कि 'यदि प्रभुका साथदेना नहीं चाहते, तो गुलामकी मौत मरो, ऐसे भी कुछ लोग थे जिन्होंने स्वेच्छासे हिटलरका साथ दिया। मास्को स्थित अमेरिकन राजदूत जोसेफ इ. डेविसकी यह गलत घोषणा थी कि हिटलरको कोई भी रूसी जयचन्द नहीं मिला। उनकी धारणा यह थी कि ऐसे सभी गद्दारोंको १८३० में ही खत्म कर दिया गया था। पर हिटलरने तो ऐसे बहुत रूसियों को तैयार पाया जिन्होंने अपने देशपर गोलाबारी करनेमें जरा भी हिचकिचाहट नहीं महसूस की।

सम्भव है कि जिस शुद्धिकरणका मि० डेविसने उल्लेख किया है उसकी कटु स्मृतिने इन लोगोंको नाजी प्रचारकोंके सामने घातक 'हां' कहनेमें सहायता दी हो। इस शुद्धिकरणके समय अनेक साम्यवादियोंके विरुद्ध रूसी प्रजातन्त्रसे अलग होकर स्वतन्त्र पूंजीवादी राष्ट्र कायम करनेका अभियोग लगाया गया था। यह भी सम्भव है कि रूसकी अनेक छोटी-छोटी राष्ट्रीय टुकड़ियोंकी अलग होनेकी भावनाका, शुद्धिकरणसे नाश न हो सका हो। बल्कि सजा और दण्डने प्राणदण्ड पाये हुए अभियुक्तोंके रिश्तेदारोंके दिलमें प्रतिशोधकी भावनाको जोरोंसे जगा दिया हो। और ऐसे विचारवाले बिना दबावके ही हिटलरके साथी बन गये हों।

पर गद्दारीका अध्याय समाप्त हो चुका। इनमेंसे कुछतो मौकेपर दुश्मनको छोड़कर मित्र राष्ट्रोंकी फौजसे मिलनेकी कोशिश करते हैं। बहुतेरे विजय पक्षके हाथोंमें अपनेको सुपुर्द करनेका प्रयत्न करते, पर ऐसा करनेमें तीन कठिनाइयां हैं। सर्व प्रथम तो उन्हें इस बातका भय है कि रूसियोंके गुप्तचर विभाग को उनके कारनामोंका पता चल गया होगा। अतः मित्र राष्ट्रोंके हाथ सुपुर्द करनेमें कोई कल्याण न देख लड़ते जा रहे हैं। दूसरी वजह यह है कि जरा भी सन्देह होते ही नाजी अफसर ऐसे लोगोंको गोलीसे भूनने में हिचकिचाहट नहीं महसूस करते। तीसरी बाधा यह है कि भीषण गोलाबारीके बीच युद्धस्थलको पार कर मित्र सेनाको सफेद झण्डे दिखाकर आत्मसमर्पणका इरादा प्रकट करना भी तो सरल नहीं है। लेकिन पाठक अच्छी तरह देख रहे हैं कि जर्मनीके सम्बन्धमें भी विधना प्रतिकूल जबै तब ऊंट चढ़ेपर कूकर काटत' की लोकोक्ति जोर शोरसे चरितार्थ हो रही है।

——

…निद्रा आधुनिक कालका रोग नहीं …ा सकता, किन्तु उसका प्रचलन …ा अधिक आज है, उतना सभ्यताके …ासमें पहले कभी नहीं था। इस असा- …वृद्धिका कारण आजकलके संघर्षपूर्ण …की चिन्ता है। प्रातः से लेकर संध्या …नुष्य अपने व्यावसायिक, पारिवारिक …अन्य सांसारिक झंझटोंमें फंसा रहता …इसका उसकी स्नायु प्रणालीपर बहुत …असर पड़ता है। इसके अतिरिक्त वह …एवं विश्रामके वास्तविक महत्वको …ल गया है। उसकी आवश्यकताएं …मित हैं। उनकी पूर्तिके साधन न्यून …उसके हृदयमें अभाव और असंतोष की …निरन्तर सुलगा करती है। इससे …चित्तको शांति नहीं मिलती। इसलिये …ग्रक लोग रातके समय, यदि चिन्ता- …मस्तिष्क लेकर विस्तरपर लेटते हों, …आश्चर्यकी बात नहीं। इससे गाढ़ी निद्रा …आती और शरीरको पूर्ण विश्राम नहीं …ा।

…स्वास्थ्य-विज्ञान वेत्ताओंके मतानुसार …का सीधा सम्बन्ध शारीरिक स्नायु- …से माना गया है। शारीरिक क्रियाओं …संचालन मस्तिष्क द्वारा होता है। जब …मस्तिष्कके ऊपर इन क्रियाओंके संचा- …का भार बना रहता है तबतक नींद नहीं …ी। मस्तिष्ककी संचालन क्रियाके अर्द्ध- …अथवा सुषुप्तावस्थामें चले जानेके उप- …ही निद्रा देवीका आगमन होता है। …नींद जितनी ही अधिक गहरी होती है, …रिक शक्ति संचयन भी उतने ही अधिक …णमें होता है और मन एवं मस्तिष्कको …ी ही अधिक स्फूर्ति और प्रफुल्लता प्राप्त …है। इसलिये मस्तिष्कको जितनी ही …क चिन्तारहित रखा जाता है उतनी ही …सेसे नींद आ जाती है।

अनिद्राके दुष्परिणाम

…निद्राके समान दूसरा मानसिक कष्ट …ा। यह शरीर और मस्तिष्क दोनों …और अशांतिमय बना देता है। …के रोगीको रातके समय जब नींद …ती, दुश्चिन्ताओंके घेरेमें पड़ा हुआ …र उधर करवटें बदलता रहता है, उस …उसकी मनोव्यथाका क्या पूछना? …ति कई रात लगातार जागते रहनेसे, …एवं शक्तिमें असाधारण रूपसे ह्रास …ता है। मनोभावोंमें कर्कशता उत्पन्न …ती है। मस्तिष्क बल कुण्ठित हो जाता …दिनमें आलस्य बना रहता है। खाने- …ी इच्छा नहीं होती। भोजन भलीभांति …पचता। शरीरमें कीटाणुओंसे लड़नेकी …क्षम हो जाती है। मन मलीन बना …है और किसी कामके करनेमें जी नहीं …ा।

…अधिकतर भावुकव्यक्ति ही अनिद्रा रोग …शिकार होते हैं। लेखक, विचारक और …नीतिमें भाग लेनेवाले लोगोंको इसकी …यत प्रायः बनी रहती है, क्योंकि रात्रि …निस्तब्धतामें उन्हें देर तक दिमागी श्रम …पड़ता है और गम्भीर चिन्तन अथवा …ड़ी करनेसे फिर नींदका आना …हो जाता है।

स्वास्थ्य विज्ञान

अनिद्रा रोग और उसका उपचार

——**——

(लेखिका—श्रीमती आशा देवी)

नींद क्यों नहीं आती ?

साधारणतः अनिद्राका मुख्य कारण शारीरिक स्वास्थ्यमें व्यतिक्रमका उत्पन्न होना है। यदि शरीर स्वस्थ और मन प्रसन्न है, तो विस्तरपर लेटते ही नींद आ जाती है। वेदना तथा खांसी भी निद्रामें बड़ी बाधक होती है। इसके अतिरिक्त यदि हृदय अथवा सीनेमें कुछ तकलीफ होती है, तो भी नींद नहीं आती। रक्तका चाप अधिक होने अथवा रक्त-शिराओंमें अधिक स्पंदन होनेसे भी नींद हराम हो जाती है। बद-हजमी भी अनिद्राका एक बहुत बड़ा कारण है।

इसके अतिरिक्त कुछ बाहरी कारण भी होते हैं, जिनकी ओर अनिद्राके रोगीका ध्यान बिल्कुल नहीं जाता। भावुक लोगों-की नींद जरा-जरासी बातके कारण नष्ट हो जाती है। नये स्थानमें सोने, कमरेमें

मानसिक तथा स्नायु सम्बन्धी विकारों का अनिद्रासे घनिष्ट सम्बन्ध है। ऐसे रोगमें अनिद्रा बड़ी कष्टदायक हो जाती है। यह रोगकी जटिलता तथा उसके कष्ट एवं कालको बढ़ा देती है। उस समय बीमार कभी-कभी निराश होकर यह सोचने लगता है, कि रातमें उसे छलकर नींद सोनेका फिर कभी छब नहीं मिलेगा। इस विचारसे भी उसकी सारी रात जागते व्यतीत होती है। नैराश्यकी इस भावनाके बजाय बीमारको धैर्य एवं उत्साहसे काम लेना चाहिए।

अनिद्रा दूर करनेके उपाय

अनिद्रा रोगसे पीड़ित व्यक्तियोंको प्रारम्भमें बाहरी कारणोंकी ओर ध्यान अत्यन्त आवश्यक हैं। सोनेका कमरा हवादार हो। सोने समय मुंह ढंकनेके बजाय पैर ढंक कर उन्हें गर्म रखा जाय। पास पड़ोसमें

लूजोनमें मित्र संगीनकी करामात। जापानी शक्ति समेटी जा रही है।

प्रकाश और वायुका उचित प्रबन्ध न होने, एकही स्थानमें अनेक आदमियोंके सांस लेने तथा वायुके दूषित हो जाने अथवा चारपाई और बिछौने आदिमें खटमलोंके होनेसे भी नींद भलीभांति नहीं आती। रातमें देरसे तथा आवश्यकतासे अधिक भोजन कर लेनेसे भी नींद आनेमें बाधा उत्पन्न हो जाती है। इसी भांति किसी प्रकारका शारीरिक श्रम न करने अथवा सोनेसे पूर्व काफी, चाय आदि अधिक मात्रामें पी लेनेसे भी अनिद्रा की शिकायत हो जाती है। कुछ लोग रात को सोते समय मुंह ढंक लेते हैं। इससे भी असमयमें ही नींद टूट जाती है और मन मलीन बना रहता है।

अनावश्यक शोर गुल न हो। उत्तेजक बातों, मौखिक वादविवाद और दिलको बिगाड़ने वाली बातोंसे बचकर सोते समय शरीर और मस्तिष्कको पूर्ण रूपसे विश्राम दिया जाय।

हलका भोजन भी अच्छी नींद लानेमें सहायक होता है। काफी, चाय अथवा नशीली चीजें पीनेकी अपेक्षा सोनेसे पूर्व कुनकुना दूध पीना उपयोगी है। अनिद्राके उपचारमें स्नान तथा मालिश भी बड़ा लाभ पहुंचाती है। अनुभवसे देखा गया है कि छोटे बच्चोंको जब नहलाया जाता है तो उसके बाद उन्हें तुरन्त नींद आजाती है।

अनिद्रा रोगको दूर करनेके लिये अने-कानेक दवाइयोंका भी इस्तेमाल किया जाता है। किन्तु इन दवाइयोंसे स्वभाविक नींद नहीं आती। सभी प्राकृतिक उपाय असफल सिद्ध होने पर उनका प्रयोग करना चाहिए।

कुछ लोगोंका विश्वास है कि उत्तरकी ओर सिर करके लेटनेसे पृथ्वीकी चुंबकीय तरंगें मस्तिष्क तथा स्नायुविक चक्रको थपकी देकर सुलानेमें सहायक होती हैं। पीठ समस्त स्नायुविक चक्रका मूलाधार मानी गयी है। इसलिये सोते समय उसको अधिक टेढ़ा-मेढ़ा करके नहीं लेटना चाहिये। क्यों कि उससे शरीरकी मांस पेशियोंके संचालनमें बाधा पहुंचती है। दाहिनी करवट लेटना सर्वोत्तम है। इससे शरीरके समस्त अंगोंको विश्राम मिलता है। बाईं ओर लेटनेसे हृदय पर दबाव पड़ता है। चित्त लेटनेसे स्नायु नलियां जाग-रूक रहती हैं। तनिक खटकेसे नींद उचट जाती है।

कुछ लोग सोनेसे पूर्व पुस्तक अथवा समाचार पत्र पढ़नेके आदी होते हैं। इससे भी नींद सुगमतासे आजाती है, परन्तु पुस्तक चित्तको प्रफुल्लित और मनको गुदगुदाने वाली होनी चाहिये। अनिद्रा रोगमें नमकका स्नायुतंत्रियोंपर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिये भोजनमें नमककी मात्रा कम कर देनेसे भी नींद आनेमें सहायता मिलती है।

सच बात तो यह है कि गहरी नींद शारीरिक स्वास्थ्य और मस्तिष्ककी उन्नति के लिये अत्यंत आवश्यक है। कितना और कै घंटे सोना चाहिए यह व्यक्तिगत श्रमके ऊपर निर्भर करता है। दिन भर दौड़ धूप और खेलमें लगे रहनेवाले बालकों साधा-रण मनुष्योंकी अपेक्षा देर तक सोते रहते हैं। रात सोने और विश्राम करनेके लिये बनायी गयी है। इसलिये दिनमें सोना ठीक नहीं। आयुर्वेदमें लिखा है कि इससे आयु नाश होती है। इसी भांति प्रातः काल धूप निकलने तक भी सोये रहना उपयुक्त नहीं। रातको नौ दस बजे तक जो लोग सो जाते हैं और सुबह तड़के ही उठ बैठते हैं उनका यह नियम सर्वोत्तम है।

—

उत्कल हिन्दी विद्यालय, पुरी

(लेखक—श्री भैरवलाल नन्दवाना, पत्रकार)

पुरी भारतका प्रसिद्ध तीर्थस्थान है। भारतके सुदूर प्रान्तोंसे प्रतिवर्ष लाखों यात्री यहांपर भगवान जगन्नाथका दर्शन करके अपनेको धन्य समझते हैं। तीर्थधामके साथ-साथ यह विद्यास्थल भी रहा है। यहांपर वेद, वेदान्त, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान आदिके प्रकाण्ड विद्वानोंका सदैव ही जमघट रहा है। शङ्कराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य आदि सम्प्रदायोंके बड़े-बड़े दिग्गज विद्वान यहांसे भारतकी ज्ञान-पिपासी जनताको ज्ञानामृत पिलाते रहे हैं। भूलीभटकी हजारों पथ-भ्रष्ट आत्माएं यहां आकर अपने जीवनको सार्थक करनेमें सफल हुई हैं। पुरी पवित्र धार्मिक क्षेत्र है, इसकी महिमाका वर्णन स्कन्द, कूर्म, पद्म, नृसिंह आदि अनेक पुराणोंमें विस्तारसे किया गया है। ऐसे भारतवर्षके प्रसिद्ध तीर्थधाममें बहुत समयसे लगभग बीस वर्षसे हिन्दी-शिक्षा संस्थाकी स्थापनाके लिये श्री भोलानाथजी शाह आदिका प्रयास चल रहा है। कितनी बार हिन्दी स्कूल खुले और बन्द हुए। किंतु शिक्षा संस्थाकी स्थापनाकी जिस प्रबल भावनाने शाहजी आदिके हृदयमें स्थान कर लिया था, वह अविचल रूपसे कायम रही और सन १९४१ के मईमें पुरीमें फिर हिन्दी संस्थाकी स्थापना हुई।

उड़ीसा प्रान्तीय मारवाड़ी कार्यकर्ता सम्मेलनका दूसरा अधिवेशन १९४० के दिसम्बरमें दैनिक 'विश्वमित्र' संचालक श्री मूलचन्द्रजी अग्रवालके सभापतित्वमें हुआ, जिसमें प्रान्तमें शिक्षा-प्रसारकी विस्तृत योजनाके अनुसार प्रमुख स्थानोंमें शिक्षा संस्थाओंके संचालनका निश्चय किया गया। इस योजनाका श्रीगणेश सर्वप्रथम पुरीसे ही किया गया। उन्हीं दिनों गर्मीमें आबहवा बदलनेके लिये श्री विनायक प्रसादजी हिम्मतसिंहका एटर्नी एटला तथा कलकत्तेके और भी धनीमानी महानुभाव पुरी आये थे। श्री भोलानाथजी शाहने श्री मदनलालजी जाजोदियाका सहयोग पाकर पुरीमें हिन्दी शिक्षा संस्थाके सञ्चालनके सम्बन्धमें हिम्मतसिंहकाजीसे परामर्श किया और कलकत्तेसे आये हुए महानुभावोंसे सहायता प्राप्तिकी चेष्टा की गयी। फलस्वरूप इस संस्थाके प्रारम्भिक व्ययके वास्ते ३६००) रुपये प्राप्त हो गये और कितने ही महानुभावोंने सहायता प्रदान करनेका आश्वासन दिया। ९ मई १९४१ को रायबहादुर सेठ बलदेव दासजी बाजोरिया द्वारा उक्त संस्थाका उद्घाटन समारोह सम्पन्न कराया गया। धीरे-धीरे संस्था प्रगतिशील बनायी गयी और वर्तमानमें हिन्दी, इङ्गलिश मिडिल ग्रेडका विद्यालय हो गया है।

विद्यालयमें सातवीं कक्षा तक हिन्दी माध्यमसे समस्त आवश्यक विषयोंकी शिक्षा दी जाती है। पुस्तकीय शिक्षाका पाठ्यक्रम यद्यपि अभी तक सरकारी स्कूलों जैसा ही है, तथापि इसमें काफी सुधार किया गया है। पुस्तकीय शिक्षाका जहां तक सम्बन्ध है, उसमें हिन्दी, साहित्य, इतिहास, भूगोल, गणित, प्रकृति-निरीक्षण, स्वास्थ्य एवं नागरिक शास्त्रकी शिक्षा सम्मिलित है। इसके सिवाय अंग्रेजी और उड़िया भाषाके साहित्यकी शिक्षाका भी प्रबन्ध है।

पुस्तकीय शिक्षाके अतिरिक्त संस्थाने सङ्गीत और सिलाईकी शिक्षाका भी प्रबन्ध किया है। सङ्गीत सिखानेके लिये हारमोनियमपर गाना-बजाना और नृत्य सिखाया जाता है। नृत्य उन्हीं बालक-बालिकाओंको सिखलाया जाता है जिनके अभिभावक स्वयं इसके लिये इच्छुक होते हैं। उड़ीसामें संगीतके प्रति सर्वसाधारण जनताका अधिक आकर्षण रहता है। अस्तु इस ओर संस्थाका ध्यान आकर्षित होना आवश्यक ही है।

सिलाईके लिये श्री प्रह्लादराय लाठ एम० एल० ए० ने एक मशीन प्रदान कर दी है और साथ ही अध्यापकके एक वर्षका वेतन भी। कितने ही गरीब छात्रोंको दस्तकारी सीखकर अपने परिवारके निर्वाहमें लग जाना होता है। उनके लिये सिलाई शिक्षा अधिक उपयोगी और लाभप्रद सिद्ध हुई है।

अभी हालमें ही सेठ रामगोपालजी पंसारीने विद्यालयको एक बेण्ड बाजा प्रदान किया है। बेण्ड बाजेके मिल जानेसे निकट भविष्यमें उसकी शिक्षाका प्रबन्ध भी किया जानेवाला है। इनके अलावा और भी दस्तकारीकी शिक्षाकी स्कीमें संस्थाके विचाराधीन हैं।

विद्यालयमें वर्तमानमें आठ अध्यापक हैं। लगभग १९० बालक और बालिकाएं पढ़ती हैं। उड़िया, मारवाड़ी, गुजराती, तेलगू, हिन्दुस्तानी, बङ्गाली आदि सब ही वर्गोंके बच्चे पढ़ते हैं। विद्यालयमें जहां साधन-सम्पन्न परिवारोंके बालक शिक्षा प्राप्त करते हैं, वहां अत्यन्त गरीब और अनाथ बालकोंको भी निःशुल्क शिक्षा दी जाती है। इतना ही नहीं गरीब और अनाथ बालकोंकी सहायताके लिये संस्थाके प्राण श्री भोलानाथजी शाह अनवरत परिश्रम करते हैं। उड़ीसाके राष्ट्र भाषा प्रचारमें शाहजीका विशिष्ट स्थान है। वे वर्षोंसे राष्ट्र भाषा प्रचारके अनुष्ठानमें लगे हैं। विश्ववन्द्य महात्मा गांधीके आशीर्वादसे उड़ीसा वासी भी राष्ट्रभाषा हिन्दीकी गुण-गरिमा भले प्रकार अनुभव करने लगे हैं। विद्यालयके सभापति पण्डित रघुनाथ मिश्र हैं। आप पुरीके संस्कृत और उड़िया भाषाके उच्चकोटिके विद्वान हैं तथा राष्ट्रकर्मी भी। आपके सहयोगसे संस्थाने थोड़े ही समयमें अधिक प्रगति की है।

वर्तमानमें यह संस्था एक किरायेके मकानमें है, जिसमें आवश्यकतानुसार पक्के और कच्चे कमरे हैं। लेकिन निकट भविष्यमें ही समुद्र किनारे जमीन प्राप्त करके आधुनिक ढङ्गसे मकानोंका निर्माण किया जानेवाला है; ताकि सादगी और स्वच्छतासे संस्थाका सञ्चालन हो।

यह ऊपर लिखा जा चुका है कि संस्थाका जन्म श्री विनायक प्रसादजी हिम्मतसिंहकाके परिश्रमसे हुआ है और वर्तमानमें अर्थ-सञ्चालनका भार भी आपपर ही है। आप समय-समयपर पुरी जाकर इस संस्थाकी उन्नतिके लिये प्रोत्साहन देते रहते हैं।

पुरीकी यह शिक्षा-संस्था विक[illegible] जा रही है। उड़ीसामें पुरीका वि[illegible] है, तथा वहांपर इस प्रकार [illegible] स्थापनासे जन साधारणमें शिक्षा [illegible] ठोस कार्यका होना अवश्य ही [illegible] है। अभी हालमें ही दैनिक जन्मभू[illegible] के सञ्चालक श्री अमृतलाल सेठ पुरी [illegible] और उन्होंने इस संस्थाका निरी[illegible] किया था। अपने इस संस्थाके [illegible] उद्गार प्रकट किये हैं उससे [illegible] गौरव अधिक बढ़ा है। आपने [illegible] दो साइकिलें और एक बड़ी घड़ी [illegible] तथा भविष्यमें संस्थाकी सहायता[illegible] आश्वासन प्रदान किया। इसी प्रक[illegible] यात्रामें आनेवाले कितने प्रतिष्ठि[illegible] और विद्वान संस्थाके निरीक्षण करते हैं। संस्थाका भविष्य उज्ज्वल [illegible] इसके लिये संस्थाके सञ्चालक उद्योगशील हैं।

एक कली

थी खड़ी कली, अधखिली कली
रस भरी कली।
अब हंस दी वह, तब बिखर पड़ी।
आया कोई मधु का लोभी
गुनगुन करता।
मधु पी पी कर, पागल बनता।
फिर भी प्यासा, फिर भी आशा।
वह हाथ बढ़ाकर, आगे उमड़ा,
कुछ कह छन कर।
फिर मिला ओठ, रस पी पी कर
गुनागुना उठा—
वह पंख उठा।
पंखों के हिल डुल जाने से
कुछ इधर झड़ा, कुछ उधर पड़ा
वह परिमल कण
या आभूषण
हिल उठी कली, वह फिर संभली
वह अब भी कुछ कुछ थहराती
उड़ गया मधुप बहु दूर दूर
पर मौन खड़ी वह रह जाती
कितना निष्ठुर,
कितना निर्मम!
कितनी मस्ती!!
कितनी जल्दी!!!

—अमोघ नारायण झा

तीसरे महायुद्धकी आशंका

अमेरिकाके एक समाजवादी नेता नारमनसने कहा है कि तीसरे महासमरके पुनः बीज बोया जा रहा है। वर्तमान ...अमेरिका जापानके विनाशके लिये ...है और सिर्फ इसलिये कि वह गोरी ...ओंका एशियामें प्रभुत्व कायम करना ...है। जातीय कटुताकी भावनासे प्रेरित ...हम शान्तिके लिये कुछ भी नहीं कर ...। विनायकोंकी योजनाओंसे ऊपर उठ... यदि कुछ अच्छी चीजें नहीं तैयार की ...तो भावी पीढ़ीको एशियामें बगावतों ...का लम्बा क्रम देखनेको मिलेगा।

...न्ति योजनामें भारतकामहत्व

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितके अमेरिका ...और वहां दिये गये भाषणोंने अनेक ...प्रचारोंका खण्डन किया है। उनके ...जवाबने विरोधियोंकी दलीलोंको ...साबित कर दिया है। हमारे भाग्य-...और स्वयंभू ट्रस्टीकी ओरसे बार-...दुहराया जाता है कि यदि भारतको ...कर वे चले जायेंगे तो यहां गृह-युद्ध छिड़ ...। श्रीमती पण्डितने इस दलीलका ...मुंहतोड़ उत्तर देते हुए कहा है कि शस्त्रहीन ...लिये गृह-युद्ध विशेष अर्थ नहीं रखता। ...की संभावना ही कहां है। हिन्दू-...म तो मिलनेके लिये इच्छुक हैं पर ...लिये स्वतन्त्र वातावरणकी आवश्य-...है। मित्र राष्ट्रोंके युद्धोद्देश्यके सम्बन्ध ...ने बताया कि ४० करोड़ भारतीयोंको ...रखकर किसी तरह विश्वशांतिकी ...सफल नहीं बनायी जा सकती। युद्ध ...तक भारतके सम्बन्धमें गोलमोल ...बरतनेसे भी काम नहीं चल सकता! ...आ गया है कि विश्वके उन्नतिशील ...बीच भारतको भी अपना उचित ...प्रदान किया जाय। भारतके सच्चे ...और जनतन्त्रके समर्थकोंको जेलोंके ...बिना मुकदमा चलायेही रखागया है। ...विलम्ब रिहा कर ब्रिटेन अपनी नियत ...का सबूत दे।

...या मरो' का स्पष्टीकरण

...कोलामें होनेवाले कांग्रेस कार्यकर्मी ...नगर रोकका आदेश जारी करते हुए ...मजिस्ट्रेटने कहा है कि मेरी रायमें ...समारोह युद्ध प्रयासमें बाधक सिद्ध ...। उक्त आदेशके सम्बन्धमें महात्माजी ...वक्तव्य प्रकाशित कर अधिकारीकी ...कार्रवाईपर आश्चर्य प्रकट करते हुए ...है कि रचनात्मक कार्यक्रमके कार्यान्वित ...युद्धोद्योगमें किसी तरह बाधा नहीं ...सकती। रचनात्मक कार्यका ऐसा ...नहीं है। इसके जरिये तो हम निर-...साक्षर और सुखी बनाकर उन्हें ...और काम देना चाहते हैं। यदि सरकार ...है कि कांग्रेसजनोंको जनताकी सेवा ...करनेका मौका न दिया, यदि अब भी ...उन्हें सशंकित आंखोंसे देखती है, तो ...लोंसे मुक्त क्यों किया जाता है। ...के ये सेवक जब कभी मौका पायेंगे ...कार्य करते रहेंगे। तरह-तरहकी विघ्न-...बाधाओंका सामना करते हुए अपने कार्यमें ...रहना, यही 'करो या मरो'का वास्तविक ...है।

कौन क्या कहता है

महासमरके अन्तिम आठ दिन

जर्मन रेडियोने कुछ दिन पहले हिटलर के उस कथनका उल्लेख किया है जिसमें हिटलरने कहा है, 'इस युद्धके अन्तिम आठ दिनों तक हम क्या करेंगे इसके लिये ईश्वर मुझे क्षमा प्रदान करें।' जर्मन प्रचारको देखते हुए ऐसा विश्वास करनेका यथेष्ट कारण है कि हिटलर और उसके प्रधान सेवक महत्व प्रदर्शनके ख्यालसे प्रतिशोधात्मक कार्यवाहियोंका सहारा लेंगे।

नाजीवादके इतिश्रीके पूर्व हिटलरके हृदयमें संचित घृणाका अन्तिम विस्फोट होकर ही रहेगा और वह भी संभवतः एक डेढ़ महीनेके अन्दर ही। अधिकतर लोगोंका विश्वास है कि हिटलरकी प्रतिकार सम्बन्धी कार्योंका मजा इङ्गलैंड और विशेषरूपसे लंदनको चखना पड़ेगा।

किसान संगठित हों

वर्तमान जिला कांग्रेस किसान सम्मेलनके अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए बङ्गाल कांग्रेस पार्लियामेण्टरी पार्टीके नेता किरणशंकर रायने देशके किसानोंकी बुरी दशापर प्रकाश डालते हुए इस बातपर जोर डालाकि किसानोंकी दिन-दिन गिरती हुई दशामें राष्ट्रीय सरकार ही सुधार ला सकती है। किसानोंकी बढ़ती हुई गरीबी और उससे उत्पन्न कठिनाइयां युद्धके कारण और भी भीषण हो चली हैं। आपने किसानोंको सलाह दी कि संगठित होकर वे कांग्रेसके आदेशों का पालन करें।

भारतीयसमस्याका समाधान हो

प्रोफेसर ए० वी० हिलने "टाइम्स" में प्रकाशित अपने एक पत्रमें भारतीय गतिरोधके सम्बन्धमें पेश किये गये सर जफरूल्ला खांके सुझावोंका समर्थन किया है। आपका मत है कि भारतके विकासकी कोई भी योजना तभी सफल हो सकती है जब एक मजबूत राष्ट्रीय सरकार हो और राष्ट्रके उद्देश्यके सम्बन्धमें हो सामूहिक लगन। वर्तमान सरकार न शक्तिशाली है और न कभी हो सकती है। ब्रिटेन जब तक अपनेको उत्तरदायित्वसे अलग न कर लेगा, राजनीतिक अविश्वास बराबर उन्नतिके मार्गमें रुकावट पैदा करते रहेंगे और जो भी विपत्ति और दुर्घटनाएं सामने आयेंगी उनकी जिम्मेवारी हमारे सिर पर मढ़ी जायेंगी। अतः हिन्दुस्तानके हाथ शासन-भार सौंपना ही श्रेयस्कर है। वह अपने उलझनोंको सुलझा ले, उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। यदि ऐसा सम्भव न हो सका, तो हमें तो कोई बदनाम न करेगा। समय आ गया है कि उसे औपनिवेशिक स्वराज्य प्रदान किया जाय।

प्रि० अग्रवालका स्पष्टीकरण

कुछ दिन पहले प्रिंसपल श्रीनारायण-अग्रवालने विद्यार्थियोंके लिये एक योजना प्रकाशित की थी, जिसमें कहा था कि विद्यार्थी आपसी झगड़ोंमें अपनी शक्तिका अपव्यय न कर संयुक्त मोर्चेकी सेवा ही करें। इस सम्बन्धमें बहुतसे कार्यकर्त्ताओं द्वारा स्पष्टीकरण की मांग किये जाने पर आपने कहा है कि इस समय विद्यार्थियोंकी मुख्य दो संस्थाएं—स्टूडेण्ट्स फेडरेशन और स्टूडेन्ट्स-कांग्रेस हैं। स्टूडेण्ट्स फेडरेशन पर साम्यवादियोंका प्रभुत्व है और दूसरा राष्ट्रीय कांग्रेसका समर्थक है। यद्यपि गांधीजीका यह दृढ़ विचार है कि विद्यार्थी राजनीतिक दलबन्दिओंमें भाग न लें, तथापि उनकी आन्तरिक इच्छा है कि वे स्वेच्छासे तिरङ्गे झण्डेके नीचे आयें और उनके रचनात्मक कार्योंको अपनायें। यह दुर्भाग्यकी बात है कि साम्यवादियोंने लोक युद्धके प्रचारके लिये छात्र सङ्घका उपयोग किया है।

मानवी अधिकारोंके रक्षक

बम्बईके मेयर, श्री नगीनदास टी० मास्टरने अपने एक भाषणके सिलसिलेमें कहा है कि—मानव अधिकार हर जगह कुचला जा रहा है। पीड़ा बढ़ती जा रही है और सामनेका अन्धकार और भी गहरा होता जा रहा है। पर इस अन्धकारके बीच भी आशाकी दो किरणोंके रूपमें महात्मा गांधी और मार्शल स्टालिन हमारे बीच विद्यमान हैं। चर्चिल अपने ब्रिटिश साम्राज्यके और रूजवेल्ट अमेरिकाके रक्षक हैं, पर जहांतक मानवके सम्पूर्ण मौलिक अधिकारोंका ताल्लुक है, हमारे सामने दो ही नजर आते हैं—महात्मा गांधी और स्टालिन, और इन दोनोंमें भी विश्व-नेतृत्वके लिये महात्माजीका दावा स्टालिनकी अपेक्षा अधिक पुष्ट है।

सर जफरूल्लाका सुझाव

भारत सरकारके प्रतिनिधि सर जफरूल्ला खांने साम्राज्यविषयक सम्मेलनके कुछ दिन पहले भारतीय गतिरोधको दूर करनेके लिये ब्रिटेनके सामने कुछ सुझाव रखे थे, जिनका न्याय प्रिय व्यक्तियोंने एक स्वरसे अनुमोदन किया। "स्पेक्टेटर"में प्रकाशित अपने एक लेखमें उसीका विस्तार करते हुए आपने कहा है कि सरकार इस बातकी घोषणा कर दे कि जापानसे निपट लेनेके एक वर्ष बाद भारतके विभिन्न दलों द्वारा जो भी सम्मिलित योजना उपस्थित की जायगी, उसे कार्यान्वित किया जायगा। यदि हिन्दुस्तानकी राजनीतिक पार्टियां ऐसा न कर सकीं तो स्वयं सम्राटकी सरकार भारतके भावी विधानका निर्माण करेगी जिससे अन्य उपनिवेशोंकी बराबरीका स्थान हिन्दुस्तानको प्राप्त हो सकेगा। उपनिवेशोंकी स्थितिमें पहुंच जानेके बाद इसे अपने विधानमें आवश्यक संशोधनका अधिकार रहेगा। उक्त विधानके निर्माणमें देशी नरेशोंके लिये दरवाजा खुला रखा जाय पर इसका लागू होना उनकी स्वीकृति-अस्वीकृति पर निर्भर नहीं रहे। नये विधानके अन्तर्गत गवर्नर और गवर्नर-जेनरलके विशेषाधिकारोंके लिये कोई स्थान न रहेगा।

युद्धका सिंहावलोकन।

इस सप्ताह पूर्व और पश्चिमके युद्ध-क्षेत्रोंकी अवस्थामें कोई महत्त्वपूर्ण परिवर्त्तन नहीं हुआ है। पश्चिममें राइन नदीके तटपर पहुंचनेके लिये मित्रसेनाएं उन अञ्चलोंमें भी प्रयत्नशील हो रही हैं, जहां वे वहांतक नहीं पहुंच सकी हैं। कोबलेंज नगरपर अधिकार हो जानेके कारण अब कोलोनसे कोबलेंजतक राइन नदीके पश्चिमी तटसे जर्मनोंका अधिकार जाता रहा है। कोबलेंजसे दक्षिण भी कई मीलतक पश्चिमी तटकी सफाई की जा चुकी है। परन्तु राइन नदीके पूर्वी तटपर पहुंचनेमें अमरीकन सेना केवल रीमाजेन स्थानपर ही सफल हो सकी है, जहां राइनका पुल समय रहते नहीं उड़ाया जा सका, इसलिये वह अमरीकन सेनाको अपने कामके लिये प्राप्त हो गया है। इस पुलको उड़ा देनेके लिये जर्मन अत्यन्त प्रयत्नशील हैं, पर अभीतक उन्हें कोई खास सफलता नहीं प्राप्त हो सकी है। १३ मार्चको हंडस्टेटने रीमाजेनके राइनके पूर्वी तटवाले भूभागसे अमरीकनोंको मार भगानेके लिये प्रचण्ड प्रत्याक्रमण आरंभ किया था और अमरीकाके एसोशियेटेड प्रेसकी रिपोर्टके अनुसार उस लुडेनडोर्फ पुलपर जर्मन तोपोंके कई गोले भी ठीक निशानेपर बैठे थे, किन्तु पुलको भारी क्षति पहुंची नहीं जान पड़ती। ऐसोशियेटेड प्रेसके संवाददाताने कहा है कि जो भी जर्मन उड़ाका लुडेनडोर्फ पुलको उड़ा देनेके उद्देश्यसे वहां पहुंचेगा, उसके फिर वहांसे घर लौटनेकी आशा रुपयेमें आठ आना ही है। वहांपर मित्र सेनाओंने इतनी वायुयान विध्वंसिनी तोपें जमा कर रखी हैं कि पांच दिनोंके भीतर पुलको नष्ट करनेको भेजे गये एक सौ पैंतीस हवाई जहाजोंमेंसे छाछठ मार गिराये गये। परन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इस स्थानसे पूर्वकी ओर बढ़ने योग्य जर्मन भूभाग नहीं है। इसलिये राइन नदीपर पहुंची हुई सेना उत्तर और दक्षिणकी ओर ही फैलती दिखायी देती है। 'मैंचेस्टर गार्जियन'ने राइन नदी पार करनेके सम्बन्धमें विचार करते हुए लिखा है कि, "सैनिक दृष्टिसे नदी पार करनेका स्थान आदर्श नहीं है। इसकी विशेषता यही है कि हमें यह सेतमेंत मिल गया। यहां पूर्वका रास्ता अत्यन्त कठिन है और ऊंची-नीची पहाड़ियोंके बीचसे जाता है। उत्तर या दक्षिणकी ओर नदीके किनारे-किनारे फैला जा सकता है और इसमें पहाड़ी स्थानोंकी सहायतासे जर्मन बाधा उपस्थित कर सकते हैं। फिर हमें यह भी स्मरण रखना चाहिये कि राइनके पूर्वी तटके इस भागसे बड़ा लाभ उठानेके लिये हमें अपनी सेनाओंकी स्थितियोंमें भारी परिवर्त्तन करना पड़ेगा और सैनिकों तथा युद्ध सामग्रीका स्थानांतर करना आवश्यक होगा। इसके लिये समयकी अपेक्षा होगी। इस बीच तो इस भूभागको अपने अधिकारमें बनाये रखना ही खास कर्त्तव्य है। यदि सेना उत्तरकी ओर चालीस मील बढ़ तो वह रूहर क्षेत्रमें पहुंच जायेगी, यद्यपि बहुत संभव यह है कि उस क्षेत्रमें हम दूसरी ओरसे पहुंच जायेंगे।" जो हो, १७ मार्चकी रातमें जर्मन संवाद-समितिने जर्मनोंको बताया है कि "मित्रसेनाओंके वसंतकालीन आक्रमणका पहला रूप कोबलेंज और हैजीनाऊके बीच भारी अमरीकन आक्रमण आरंभ होनेसे आ गया है।" इसी जर्मन संवाद-समितिने यह भी कहा है कि, "इसमें कोई सन्देह नहीं है कि पूर्वी और पश्चिमी दोनों ही युद्धक्षेत्रोंपर युद्ध अपने अन्तिम रूपमें पहुंचने ही वाला है। जर्मन नेता ठीक समयपर भारी प्रत्याक्रमण करनेका हुक्म देंगे।"

पूर्वी युद्धक्षेत्रपर इस सप्ताह भी रूसी सेनाएं प्रधान सेनाका दाहना पार्श्व ही साफ करनेके प्रयत्नमें लगी रही हैं। और मार्शल जुकोव तथा मार्शल कोनीवकी मुख्य सेनाओंका आक्रमण आरंभ नहीं हुआ है। कहनेको तो हफ्तोंसे यही कहा जा रहा है कि वे बर्लिनपर चढ़ाई करनेकी सारी तैयारियां पूरी कर चुकी हैं और किसी समय भी उनका भारी आक्रमण आरंभ हो सकता है, पर लक्षणोंसे उसमें अब भी काफी देर मालूम पड़ती है। जेनरल आइजेन होवरने जब यह कहा था कि जर्मनीके मध्यपूर्व और पश्चिमकी मित्रसेनाओंका मिलना जर्मनीको हरानेके लिये आवश्यक है, तब उसका उद्देश्य चाहे जो भी रहा हो, पर दोनों युद्धक्षेत्रोंकी अवस्थासे तो यही प्रकट होता है कि बर्लिन पहुंचनेमें अभी काफी देर है। 'ग्लोब' के संवाददाताने मास्कोसे १६ मार्चको यह खबर दी है कि रूसके बहुतसे भागोंमें बर्फ गलनी शुरू हो गयी है। जर्मनीकी जिस ओडर नदीके पूर्वी तटपर मार्शल जुकोव अपनी विशाल सेना लिये पड़े हैं, उसकी बर्फ जाती रही है और वसन्तके चिह्न प्रकट हो रहे हैं। यह तो नहीं कहा जा सकता कि बर्फके गलनेसे रूसियोंको कौन-सी सुविधा होगी, पर महीना पहले यह अवश्य कहा जाता था कि रूसियोंको दस सप्ताहका ही समय लड़ाईके लिये मिलेगा, क्योंकि मार्चके अन्त या अप्रेलके आरम्भमें बर्फ गलने लगेगी, तो हफ्तोंके लिये पूर्वी युद्ध क्षेत्रपर लड़ाई बन्द हो जायेगी। ठीक यही समय पश्चिमी युद्धक्षेत्रपर लड़ाईके लिये उपयुक्त बताया गया था और अब वहां वसंताक्रमण आरम्भ होनेका भी समाचार आ गया है इसलिये अगले कुछ सप्ताहोंमें पूर्वकी अपेक्षा पश्चिमके युद्धक्षेत्र पर अधिक लड़ाई होनेकी आशा की जा सकती है।

यह बात तो उभयपक्षकी ओरसे ही कही जा रही है कि यह युद्धका अंतिम दौर है और इसीके भीतर निर्णय हो जाना है। परन्तु कोई भी ठीक-ठीक यह नहीं बता सकता कि युद्धका अन्त कबतक होगा। मि० चर्चिलने यद्यपि यह आशा प्रकट की है कि और पहले नहीं तो गर्मियोंका अन्त होनेके पूर्व युद्धका अन्त हो जा सकता है, किन्तु फील्ड मार्शल मांटगोमरीने तो १० मार्चको यह कहा था कि, "अन्तिम विजय निश्चित है और उसमें कुछ भी सन्देह करनेकी गुंजाइश नहीं है। केवल एक ही बातके सम्बन्धमें सन्देह है और वह है, उसकी ठीक-ठीक तारीख।" परन्तु जब हम यह स्मरण करते हैं कि जनवरीके अन्त और फरवरीके आरम्भमें तो ब्रिटेनमें यहांतक विश्वास किया जाता था कि जिस समय मेसर्स चर्चिल-रूजवेल्ट-स्टेलिनकी कानफरेंस हो रही होगी, उसी समय रूसी सेना बर्लिनमें जा धमकेगी, तब तो इस विषयमें किसी अटकल या अनुमानपर विश्वास कर बैठना ठीक नहीं जान पड़ता। वैसे जर्मनोंका विश्वास तो अब भी हिटलरकी ही भांति यह है कि युद्ध १९४६ ई० से पहले समाप्त नहीं होनेका। हां, इधर इस बातकी चर्चा खास तौरपर देखी जाती है कि जर्मनीकी ओरसे गैसका प्रयोग करनेकी तैयारियां की जा रही हैं। स्वयं हिटलरने जो यह कहा है कि, 'युद्धके अन्तिम सप्ताहमें मैं जो कुछ करने जा रहा हूं, परमात्मा उसके लिये मुझे क्षमा करें," इससे भी यह अनुमान होता कि जर्मनोंका अवश्य कुछ ऐसा ही विचार है। परन्तु जर्मनीकी ओरसे स्वयं मित्रसेनाओंके विषयमें यह प्रचार किया जा रहा है कि वे गैसका प्रयोग लड़ाईमें करनेकी तैयारी कर रही हैं। ऐसा भी समझा जा रहा है कि जर्मन घातक गैसों द्वारा बड़े पैमानेपर लड़नेकी जो तैयारी कर रहे हैं, उसके भीतर यह भी संभव है कि वे उड़न बमों द्वारा ही इंगलैण्डपर गैस छोड़ें। वैज्ञानिक कहते हैं कि गैस द्वारा कीटाणुओंका प्रयोग भी संभव हैं। उड़न बम या अग्निवाण राकेटमें गैस भर दी जा सकती है और वे इंगलैंडपर छोड़े जा सकते हैं। यह भी खबर है कि जो विमान मोर्चोंसे लौटा लिये गये थे, उन्हें जर्मनोंने गैस वाहक बना दिया है। आगे जो आयेगा वह तो उसी दम देखा जायेगा, पर अमरीकाके एसोशियेटेड प्रेसका लन्दनका १६ मार्चका तार है कि, "आज ब्रिटिश अधिकारियोंने संवाददाताओंको यह रिपोर्ट भेजनेकी इजाजत दे दी है कि जर्मन राकेट—हिटलरने जिस 'वी-२' की डींग मारी था—लन्दनपर गिरे हैं।

पूर्वमें बर्मा और प्रशांतमें जापानियोंके विरुद्ध लड़ाइयां चल रही हैं और इवोजिमा टापूपर अमरीकनोंका अधिकार हो गया है। परन्तु मांडले [illegible] लड़ाई अभीतक जारी है और [illegible] अपनी स्वाभाविक कट्टरतासे [illegible] जाते हैं।

इधर यह खबर आयी थी कि [illegible] की ओरसे स्टाकहोममें ब्रिटिश [illegible] निधिके सामने एक मध्यस्थ द्वारा [illegible] का प्रस्ताव रखा था, जिसमें [illegible] अधिकार किये हुए देशोंको छोड़ [illegible] अपनेको तैयार बताते हुए जर्मनी [illegible] नाजी शासन बनाये रखनेका [illegible] किया था। जर्मनीकी ओरसे [illegible] खण्डन किया गया है, पर [illegible] ओरसे उसकी पुष्टि करते हुए [illegible] कहा गया है कि कोई हेस नामक [illegible] खास इसी कामके लिये बर्लिनसे [illegible] होमको भेजा गया था। साथ [illegible] भी कहा जाता है कि जिस [illegible] जर्मनीका प्रस्ताव रखा था, उसने [illegible] ही यह भी कह दिया था कि यदि [illegible] स्वीकार नहीं किया गया, तो [illegible] सेनाएं पूर्वमें प्रतिरोध बन्द [illegible] और रूसियोंको समस्त जर्मनीपर [illegible] कार कर लेने देंगी, जिससे देश [illegible] बोलशेविक हो जायेगा और [illegible] ब्रिटिश और अमरीकन हितोंको [illegible] पहुंचेगी। इस तरहकी धमकी [illegible] राष्ट्रोंको सुनायी गयी हो, [illegible] आश्चर्य नहीं, क्योंकि हिटलर [illegible] आरंभसेही इस तरह विचार प्रकट [illegible] आया है। उसकी अब तो [illegible] आशा यही रही है कि मित्र [illegible] फूट हो जाये और जर्मनीका [illegible] बने। परन्तु मित्रराष्ट्र भी उसकी [illegible] को अच्छी तरह समझते हैं, इसी [illegible] तक वे अपनेको संभालते आये हैं [illegible] उनके फंदेमें नहीं फंसा है। मित्रराष्ट्र [illegible] आज भले न जाने कितनी बातोंके [illegible] में बने हुए हैं, किन्तु वे जर्मनोंको [illegible] रूपसे पराजित करके सदाके [illegible] अपङ्ग बना देनेके सम्बन्धमें [illegible] रखते हैं, इसीसे तीन बड़े मित्र [illegible] याल्टाकी कानफरेंसमें इस तरह [illegible] में समझौता कर लिया है। [illegible] फरेंसके बाद भी रूमानियामें [illegible] अवस्था पैदा हो गयी है, जिसके [illegible] में उनमें काफी मतभेद दिख [illegible] प्रधान मन्त्री रैडेस्कूको हटा देने [illegible] तो ब्रिटेन और अमरीका रूसको [illegible] कार देनेको राजी हो गये थे, [illegible] जो वहां प्रधान मन्त्री बनाया गया [illegible] उसने जो सरकार बनायी है, [illegible] रीका और ब्रिटेन पसन्द करते [illegible] जान पड़ते, क्योंकि इनका कहना [illegible] वह सभी दलोंकी नहीं, [illegible] दलकी ही सरकार है। इसीसे इस [illegible] पर विचार करनेके लिये तीन [illegible] राष्ट्रोंकी फिर कानफरेंस [illegible] आवश्यकता समझी जा रही है [illegible] जब हम यह सोचते हैं कि नयी [illegible]

स्वदेश-वार्ता

सीमान्त गांधी रिहा

सीमाप्रान्तमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलके …का कार्य समाप्त करनेके बाद डाक्टर खां …ने सर्वप्रथम खां अब्दुल गफार खां और …कांग्रेसजनोंकी मुक्तिका आदेश जारी …। सीमान्त गांधी नजरबन्दी बन्दियों …थ हरिपुर जेलसे रिहा होकर पेशावर …लिये रवाना हो गये हैं। पेशावरमें आपके …दार स्वागतका इन्तजाम हो रहा है।

सांस्कृतिक मन्दिर

…यूनाइटेड प्रेसको ज्ञात हुआ है कि शीघ्र …मालवीयजी बम्बईके मुख्य-मुख्य आद-…कि पास आर्थिक सहायताकी प्राप्तिके …लये एक डेपुटेशन भेजनेवाले हैं ताकि …स हिन्दू विश्वविद्यालयके अहातेमें एक …तिक मन्दिरके निर्माणकी योजनाको …बनाया जा सके। विश्वविद्यालयके …वान्सलर सर राधाकृष्णन भी डेपुटेशन …क सदस्य होंगे।

…जरबन्द नेता स्थानान्तरित

…सी खबर है कि अहमदनगर फोर्टमें …न्द—कांग्रेस कार्यकारिणी समितिके …ोंका साज सामान बांधकर तैयार है, …रवानगीकी देरी है। सम्भवतः एक-दो …में ही वायुयान द्वारा इन्हें अपने-अपने …ोंको पहुंचाया जायगा।

…मन्त्रिमंडलका भावीसङ्कट

…सिन्धका समाचार है कि इस प्रान्तके …व लीगी मन्त्रिमण्डलके विरुद्ध शेख …मजीदने अविश्वासका प्रस्ताव लानेकी …री है। स्वतन्त्र मुस्लिम दलके नेता …हादुर हाजी मौलाबख्शने सिन्ध असे-…में दिये गये अपने वक्तव्यमें बताया कि …ब हिदायतुल्ला मन्त्रिमण्डलमें …न्त्रीके वायदोंमें विश्वास कर मंत्री …ग्रहण किया। पर पन्द्रह दिनोंके बाद …दा-खिलाफीके फलस्वरूप उन्हें अपना …खाली करना पड़ा।

…को प्रतिष्ठापित करनेके लिये मास्को-…यं विशिस्की भेजे गये थे, जो …य परराष्ट्र विभागके उपाध्यक्ष हैं, …ी रूसके निश्चयमें परिवर्त्तन होने-…ना कम ही जान पड़ती है। उधर …को ब्रिटिश दूतावासमें आश्रय …या है, इसका प्रतिवाद सोवियट …रकी ओरसे होनेवाला है। निय-…में कोई ऐसा प्रतिवाद हो या …पर यह तो स्पष्ट ही है कि स्टे-…ो इससे बहुत बुरा लगा होगा। …नियाको ट्रांसिलेवनिया देनेकी अपनी …ा पूरी कर रूसने अपना प्रभाव …में और भी दृढ़ बना लिया है। …कारण तथा ऐसी अन्य मतभेदकी …भी युद्धकी गतिपर प्रभाव पड़े …नहीं रह सकता, यह स्पष्ट है।

अन्नकी भीषण बर्बादी

केन्द्रीय असेम्बलीमें प्रश्नोत्तरके समय गत १६ मार्चको खाद्य सदस्य श्री जे० पी० श्रीवास्तवने ए० चेट्टियरको सूचित किया कि सरकारी गोदामोंमें जितने खाद्यसामानकी बर्बादी हुई उसका ठीक हिसाब करना मुश्किल है। गत वर्ष सिर्फ बम्बई, कराची और बङ्गालमें क्रमशः २२ हजार, ३ हजार ७९ और ३ हजार, ६६४ टन अन्न नष्ट हुआ।

सीमाप्रान्तीय कांग्रेसी मंत्रिमण्डल

एसोसियेटेड प्रेस द्वारा सरहदी सूबेमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलके गठनके सम्बन्धमें आलोचनाकी मांग करनेपर महात्मा गांधीके निकट सहवासमें रहनेवाले एक नेताने उत्तर दिया--'स्थिर रहकर देखिये'। स्वयं महात्मा जीने यह प्रश्न किये जानेपर कि क्या सरहदी मन्त्रिमण्डलको उनकी आशीर्वाद प्राप्त है, हंसते हुए उसने कहा कि इस सम्बन्धमें मैं हां-ना कुछ न कहूंगा।

एक अन्य कांग्रेसी नेताने भी कुछ कहने से इन्कार किया। आपका कहना है कि अभी कुछ भविष्यवाणी करना कठिन है क्योंकि इसी प्रान्तका अनुकरण कर अन्य प्रान्तोंमें मन्त्रिमण्डल गठित होगा, या यह अपवाद स्वरूप रहेगा, अनिश्चित है।

लीगका सालाना जलसा स्थगित

अखिल भारतीय मुस्लिम लीगके प्रधान मंत्री नवाबजादा लियाकतअली खांने घोषित किया है कि मि० जिन्नाकी अस्वस्थताके कारण स्वागत समितिसे विचार-विमर्श करनेके बाद लीगके सालाना जलसेको स्थगित करनेका निश्चय किया गया है, जो मार्चके अन्तिम सप्ताहमें होने जा रहा था। जलसेकी नयी तिथिके सम्बन्धमें भविष्यमें सूचना प्रकाशित की जायेगी।

आसाम प्रीमियरसे अनुरोध

आसाम प्रांतीय किसान और मजदूर पंचायतकी ओरसे प्रधान मन्त्री सर महम्मद सादुल्लाके पास एक प्रतिनिधि मण्डल भेजकर इस बातपर जोर डाला गया है कि जमीन बन्दोबस्त करनेके पूर्व विभिन्न दलों और संस्थाओंकी सहायतासे परती जमीन तथा बिना जमीन वालोंकी एक प्रामाणिक गणना तैयार करायी जाय।

नजरबन्दी आदेश वापस

बिहार सरकारने इस प्रांतके पांच कांग्रेसी नेताओंपर लगाये गये नजरबन्दीकी आज्ञा वापस ले ली है। उक्त आदेश बाबू श्री कृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, प्रोफेसर अब्दुल बारी, मुरली मनोहर प्रसाद तथा पंडित प्रजापति मिश्रके खिलाफ जारी किया गया था।

कलकत्तेमें हैजेका प्रकोप

इस बातकी आशंका हो रही है कि कलकत्तेमें हैजे महामारीका रूप न कहीं धारण कर ले। हैजासे होनेवाली मृत्युकी संख्यामें इधर वृद्धि नजर आ रही है। गत १० मार्चको समाप्त होनेवाले सप्ताहमें इस बीमारीसे ४७ की मृत्यु हुई जब इसके पूर्व सप्ताहमें कुछ १९ ही मरे थे।

चौधरी खलिकुज्जमांका इस्तीफा

संयुक्त प्रांतीय मुस्लिम लीगके नेता चौधरी खलिकुज्जमानने लीगकी प्रान्तीय कमेटीसे अपना सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। आपने इस्तीफेके सम्बन्धमें बताया है कि प्रान्तीय लीगके अध्यक्ष नवाब इस्माइल खांके इस्तीफाके बाद मैंने भी आवश्यक समझा कि पदत्याग कर नवागन्तुकोंको सहयोगियोंके चुनाव और अन्य कार्योंकी स्वतन्त्रता दी जाय।

कांग्रेस एम० एल० ए० प्रतिबन्धमुक्त

सिन्ध सरकारने असेम्बलीकी बैठकमें अब भाग ले सकेंगे। उक्त निश्चयकी घोषणा करते हुए गृह-सचिवने यह भी कहा है कि नजरबन्दोंकी रिहाईपर सरकार कृपा पूर्वक विचार कर रही है।

नेताओंकी रिहाईसे भय

अखिल भारतीय दलित वर्गके नेताओंके संघके दिल्ली अधिवेशनमें कांग्रेसी नेताओंकी रिहाई सम्बन्धी प्रस्तावको ठुकरा दिया। श्री पृथ्वी सिंह आजादने उक्त प्रस्ताव पेश किया था जिसका श्री हरनाथ एम० एल० ए० और संघके मन्त्री श्री देवीदासने विरोध किया। प्रस्तावपर वोटिंगके समय अधिकांश सदस्य बाहर चले गये। उनका कहना था इन नेताओंकी रिहाईकी हम व्यर्थ क्यों मांग करें जब कि कांग्रेसके हाथमें शासन सूत्र रहनेपर हमारी जातिके लोगोंको सताया गया था।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झाँकी

इन्डोचीन द्वारा आजादीका एलान

टोकियो रेडियोने ऐलान किया है कि फ्रांसीसी जंजीरोंको तोड़कर इन्डो-चीनने स्वतंत्रताकी घोषणाकी है। अनाम और कम्बोडिया मुक्त हो चुके हैं। जेनरल डीगाले के भाषणकी, जिसमें जापानियोंके विरुद्ध युद्ध करनेके लिये इण्डो-चीनके वाशिन्दोंको भड़काया गया था, आलोचना करते हुए इसी रेडियोने कहा है कि फ्रांस अधिकृत इण्डो-चीनकी सरकार जापानके खिलाफ षड्यन्त्र कर रही थी, उसका यह प्रत्यक्ष प्रमाण है।

चुङ्किंग सरकारकी आलोचना

मि० इजरामव्य इप्सटेन, जो सन१९३२ से ही चीनमें युद्ध संवाददाताका कार्य कर रहे हैं, हालमें लन्दनके एक भाषणमें कहा है कि: चांगकैशक की सेनाकी अन्न-वस्त्र सम्बन्धी व्यवस्था भयावह है। सेनाकी भर्ती का ढङ्ग भी अत्यन्त दोषपूर्ण है। बहालीके लिये गोदामों तक लाये जानेवालोंमें ९० प्रतिशत राहमें ही रह जाते हैं। युद्ध संलग्न सेनाका युद्धक्षेत्रके नागरिकोंसे कोई ताल्लुक नहीं दीखता। पर कम्युनिस्ट फौजकी हालत इससे सर्वथा भिन्न है। कम्युनिस्ट सेनामें प्रतिरोधकी बड़ी जबर्दस्त भावना है। ऐसे वायुयान चालकोंकी संख्या भी कम नहीं जो वायुयानके अभावमें बेकार बैठे हैं। कम्युनिस्ट इलाकोंमें कारखाने सरकारी कारखानोंके बनिस्पत तिगुनी तेजीसे चल रहे हैं। यह कहना कि जापानी कम्युनिस्ट सेना के साथ सिर्फ 'खिलवाड़' कर रहे हैं, पूर्ण असत्य है। पर ऐसी हालतमें भी चांगकैशक मित्रों द्वारा दिये गये युद्ध सामानका कुछ विभाग इन फौजोंको देंगे, इसमें सन्देह है।

प्रे० रूजवेल्टका एलान

प्रेसीडेंट रूजवेल्टने एक पत्रकार सम्मेलन में एलान किया है कि उन कारणोंकी उन्हें बिलकुल जानकारी नहीं जिनकी वजहसे इटलीके साथ की गयी सन्धिकी शर्तें अब तक प्रकाशित न की गयी हैं।

रूमानियाकी अशांति

अमेरिकाके परराष्ट्र विभागने घोषणा की है कि रूमानियाकी राजनीतिक स्थिति के सम्बन्धमें याल्टाके निर्णयोंके आधारपर विचार विमर्श हो। रूमानियाकी राजनीतिके कुछ ऐसे पहलू हैं जिनपर मित्रोंके बीच विचार-विनिमय आवश्यक जान पड़ता है। अधिकारी तौरपर यह कहा जाता है कि रूमानियाकी वर्तमान सरकार, जिसके प्रधान मन्त्री साम्यवादी नियन्त्रित राष्ट्रीय प्रजातन्त्रीय मोर्चाके नेता पेट्रोग्रोजा हैं, देशके मुख्य प्रजातन्त्रीय शक्तियोंका प्रतिनिधित्व नहीं करती।

जापानी नगरोंमें भगदड़

जापान सरकारने मित्र हवाई हमले तथा मुख्य द्वीपपर सन्निकट हमलेको दृष्टिगत रखते हुये निश्चय किया है कि प्रमुख पांच नगर—टोकियो, याकोहामा, नागोया, ओसाका तथा कोबेको खाली कर दिया जाय।

राइनका भविष्य

"डेलीमेल" का पेरिस स्थित संवाददाताका कहना है कि इङ्गलैंड और फ्रांसके बीच युद्धोत्तर कालीन पश्चिमी योरोपके सम्बन्धमें जो वार्ता चल रही थी, गतिरोध की स्थितिमें पहुंच गयी है, क्योंकि दोनों राष्ट्र राइनके भविष्यके सम्बन्धमें एकमत न हो सके।

बर्लिन—एक दृढ़ किला

एक जर्मन युद्ध संवाददाताने बर्लिनकी रक्षात्मक तैयारियोंका खाका पेश करते हुये बताया है कि आक्रमणकारी सेनायें इसे मामूली घेरेके रूप नहीं बल्कि नुकीली कांटियोंसे रक्षित विशाल किलेबन्दीके रूपमें पायेंगी। हर तरहके संभावित हमलेका ख्याल रखते हुए यह तैयारी की गयी है।

इवोजिमा पर अमेरिकन कब्जा

एडमिरल निमित्जके सदर मुकामसे प्रकाशित एक विज्ञप्तिमें बताया गया है कि इवोजिमाका युद्ध फतह कर लिया गया। इस संग्राममें कुल ४ हजार १८९ अमेरिकन जहाजी मरे, १९ हजार ३०८ घायल हुये और ४४१ लापता हैं। इन घायलोंमेंसे बहुत अच्छे होकर अपने कामपर हाजिर हो गये।

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तामें सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

Regd No. C. 2229

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

८—१२ कलकत्ता मार्च २६, १९४५, Calcutta, MARCH, 26, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

जूतोंका 'अस्पताल'

युद्धमोर्चों के घायल सैनिकोंकी मरहम-पट्टी और सेवा-शुश्रूषा करनेके लिये मोर्चेके निकट ही सैनिक अस्पताल बनाये जाते हैं, यह बात तो सबको मालूम है। लेकिन मोर्चे

संसारमें सबसे बड़ा अमेरिकन नौसेनाका विमान वाहक जहाज, जिसको गत २० मार्चको समुद्रमें छोड़ा गया। इसका वजन ४५ हजार टन है। (यू० एस० रेडियो फोटो)

पर जूतों और सैनिक पोशाकोंके अस्पताल भी होते हैं, यह सुनकर शायद पाठक आश्चर्य करेंगे। लेकिन ये तथा-कथित अस्पताल बड़े महत्वके होते हैं, क्योंकि इसके बिना संघर्ष करनेवाले सैनिक अपना कार्य अच्छी तरहसे नहीं कर सकते। फटा-पुराना या बेकाम हुआ जूता पहनकर सैनिक न तो परेड कर सकता है और न तेजीसे धावा ही बोल सकता है। जूतेके अस्पतालोंमें सैनिकोंके फटे-पुराने जूतोंका ढेर लगा रहता है और उनके निकट अपने औजारोंके साथ बैठा हुआ 'डाक्टर' मोच काट-छांट, सिलाई आदि किया करता है। प्रत्येक मोची प्रतिदिन ४०-५० 'रोगी' जूतोंकी मरहम-पट्टी कर उन्हें काममें लाने लायक बनाता रहता है। सैनिकोंकी जूता-सम्बन्धी शिकायतोंको सुनता और यथासाध्य उन्हें सन्तुष्ट करता है।

सैनिकोंकेलिये नकलीटांग

युद्धमें आहत सैनिकोंके उपयोगके लिये नकली अङ्ग तैयार करनेवाला एक अस्पताल है, जो भारतमें अपने ढङ्गका अकेला अस्पताल समझा जाता है। जब किसी सैनिकके दोनों अथवा एक पैर कट जाता है, तो उसे इसी अस्पतालमें नये पैरके लिये भेजा जाता है। यहां दो अंग्रेज विशेषज्ञोंके तत्वावधानमें कुशल कारीगर नकली टांगे तैयार करते हैं। इन कृत्रिम टांगोंके लिये काश्मीरके जङ्गलसे एक विशेष प्रकारकी लकड़ी मंगायी जाती है। डाक्टरी शल्य विज्ञानमें अब इतनी अधिक प्रगति हुई है कि बहुत अधिक सैनिकों को अपनी टांगें नहीं कटानी पड़ती हैं। शहरोंमें रहनेवालेलोग विभिन्न कारणोंसे प्रतिवर्ष लगभग ६ हजारकी संख्यामें अपने पैर खो देते हैं और केवल एक प्रतिशतको ही नकली टांगोंसे लाभ उठानेकी सुविधा मिलती है। लेकिन इस अस्पतालसे करीब-करीब सभी आहत सैनिक अपने नकली पैर प्राप्त कर लेते हैं।

४० हजार मीलकी यात्रा

युद्धने प्रगतिके मुंहपर ऐसा तमाचा लगाया है कि वह यदि जीवित प्राणी होती तो अवश्य गलेमें घड़ा बांधकर किसी ताल तलैयामें धड़ाम कूद जाती। दुर्भाग्यवश वह केवल शब्द है। अतएव वह चुप है और उसे बुरी तरह घसीटा जा रहा है। युद्ध प्रारम्भ हो जानेके बाद सबसे बड़े यात्री मि० चर्चिल हुए, जिन्होंने बेथकान यात्रा कर यह सिद्ध कर दिया कि उत्साह और साहस जिसका साथी है वह अजेय और अमर है। चर्चिलकी यात्रा १९४० से प्रारम्भ होती है जो इस प्रकार है--(१) फ्रांस (१९४०) ४५० मील, (२) अमेरिका ६,५०० मील, (३) कनाडा ६,००० मील, (४) कासाब्लांका ४,००० मील, (५) मास्को ९,००० मील, (६) तेहरान १०,००० मील, (७) पेरिस ४५० मील (८) एथेंस ४,००० मील। जोड़ ४०,००० मील।

एक सालमें १४ सौ प्रेमपत्र

अमेरिकन सेनाके लेफ्टिनेन्ट एस० स्टूप साज इस समय बेलजियममें हैं। उनकी पतिपरायणा पत्नीने एक वर्षमें १४०० पत्र लिखे हैं जो उनके पास सुरक्षित हैं। इन प्रेमपत्रोंमें से कितनेका उत्तर उन्होंने दिया और कितनोंको पढ़ा यह नहीं बताया गया है। अगर लेफ्टिनेण्ट साहब सभी पत्रोंको पढ़ने लगे होंगे तो उन्हें लड़ाईके लिये बहुत ही कम फुरसत मिलती होगी। कौन बताये वे प्रेमपत्र पढ़ते हैं या लड़ाई लड़ते हैं?

अमेरिकन अभिनेता और गायक बिंग क्रोसबी, जिसे गतवर्षके सर्वोत्कृष्ट अभिनयके लिये पुरस्कार मिला है।

कोलोनमें राइन नदीपर बना होहेंजोलर्न पुल, जिसे पीछे हटनेवाली जर्मन सेनाने विस्फोटक पदार्थोंसे ध्वस्त कर दिया है। (यू० एस० रेडियो फोटो)

चलती चक्की

भारत सम्बन्धी ब्रिटिश नीतिके सम्बन्ध में मि० एमरीने बोलनेसे इन्कार कर दिया।

—ग्रामोफोनके पुराने रेकर्ड घिसते-घिसते योंही जवाब दे जाते हैं। पर रमते रामकी समझमें यह नहीं आता कि सोरेनसनकी सुई कहांकी बनी है जो प्रश्न करते-करते घिसती नहीं।

* * *

सीमाप्रान्तीय लीगी मन्त्रिमण्डलके स्थानपर कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बन गया।

—मि० जिन्नाके मन्त्रीको चाहिये कि जहांतक हो सके, इन समाचारोंको कायदे आज़मसे छिपाते जायें, नहीं। तो कोई बेकायदेकी बात हो जानेका अन्देशा है।

* * *

सर बी० पी० सिंह रायने श्रीमती पंडितके विरुद्ध प्रचार करने अमेरिका जानेसे इन्कार कर दिया।

—सुना है आखिरी वक्तमें पुतलियां भी फिर जाती हैं।

* * *

एक सेना नायकका कहना है कि एशिया का युद्ध लम्बा होगा।

—क्योंकि इसपर एशियाका ही नहीं, यूरोपका भाग्य भी निर्भर है।

* * *

ब्रिटेनको चाहिये कि वह भारतको सन् १९४९ तक स्वराज्य दे देनेकी स्पष्ट घोषणा कर दे।

—सर जफरुल्ला

—यह खूब रही। अपनी सरकार तो राजनीतिक रहस्यवादमें फली फूली है। जनाब! यह वह गुड़ नहीं जिसे चींटें खायं।

* * *

प्रेसीडेण्ट रूज़वेल्टने फिलिपाइन द्वीप के निवासियोंको आश्वासन दिया है कि १३ अगस्त तक स्वतन्त्र फिलिपाइनकी स्थापना की जायेगी।

—रमते रामने तो यह सुन रखा है कि १३ का अङ्क यूरोपियन सभ्यतामें अशुभ समझा जाता है। देखें कहां तक वचन पूरा होता है।

* * *

एक नौजवानने दहेज मिलनेकी आशाओं पर पानी फिरनेके कारण आत्महत्या करली।

—बेचारेने समझ रखा होगा कि इम्पीरियल बैंककी किसी शाखाके साथ शादी हो रही है।

* ० *

क्या दुनियाके पर्देपर कोई भी ऐसी सरकार है जो धारा सभामें अनेक बार अविश्वासका प्रस्ताव पास होनेपर भी अपनी कार्य खुशीसे करती रहे?

—नवाबजादा लियाकत अली खां

—नवाबजादा साहब दुनियाके परदेपर तलाश करनेके चक्करमें क्यों पड़ते हो, ऐसी सरकार तो भारतमें ही मिल जायगी।

—रमते राम

जानने योग्य बातें

—*—

सबसे पुरातन क्या है?

ईश्वर; क्योंकि वह अनादि है।

*

सबसे सुन्दर वस्तु कौनसी है?

ब्रह्माण्ड, क्योंकि वह ईश्वरकी कृति है।

*

सबसे बड़ी चीज कौनसी है?

आकाश, क्योंकि उसमें सारी निर्मित वस्तुएं समायी हुई हैं।

*

सबसे अधिक बनी रहनेवाली वस्तु कौन-सी है?

आशा, क्योंकि वह और सब कुछ नष्ट हो जानेपर भी बनी रहती है।

*

सबसे अच्छी क्या चीज है?

नेकी, क्योंकि उसके बिना कुछ भी अच्छा नहीं।

०

सबसे तीव्र गति किसकी है?

मनकी, क्योंकि वह एक सेकिण्डसे भी कममें विश्वके दूसरे छोरतक पहुंच सकता है।

०

सबसे बलवान कौन है?

आवश्यकता, क्योंकि उसके कारण मनुष्य जीवनके समस्त कष्टोंको सहन कर लेता है।

०

सबसे सरल वस्तु कौन-सी है?

पर उपदेश।

और सबसे कठिन?

अपनेको जानना।

०

टाइपराइटरका आविष्कारक कौन था?

पीटर मिटर होफर टिरोल्सी नामक एक खातीने सन् १८६४ में टाइपराइटरका आविष्कार किया था। उसका जन्म सन् १८२२ में हुआ और सन् १८९३ में निर्धन अवस्थामें वह मर गया।

—

दिल्लगी

—०—

(दिल लगा सड़ीसे तो परी क्या करे?)

यदि हिटलर सत्तर चूहे खाकर हज करने वाली बिल्ली होते?

—तो मुसोलिनीका नाम बिल्लीको भक्तराज समझकर आफतमें फंसनेवाला चूहा होता!

*

यदि महात्माजी पंडितजी होते?

—तो हिन्दी हिन्दुस्तानी आन्दोलनके दिनोंमें उनका नाम 'मध्यस्थ शर्मा' होता!

*

यदि क्रिप्स हलवाई होते?

—तो उनकी योजनाका नाम दिल्ली का लड्डू होता!

०

यदि महात्मा गांधी भक्त अम्बरीष होते?

—तो लार्ड वावेलका नाम घंटाकरण महाराज होता!

०

यदि भगवान् शंकर वर्तमान होते?

—तो उनकी तीसरी आंख कामदेवपर नहीं, 'शङ्कर-पार्वती' के डाइरेक्टरपर खुली होती!

०

यदि प्रेमिकाकी तसवीर खसकी टट्टी होती?

—तो गर्मीकी दोपहरीमें प्रेमकी आह, कमरेकी गर्म किन्तु सुगन्धित हवा होती!

*

यदि यूरोपीय युद्ध गृहस्थीका झमेला होता?

—तो मिकादोका नाम दाल-भातमें मूसलचंद होता!

०

यदि हिन्दी-लेखक कोई सब्जी होते?

—तो उनका नाम हरंका बैंगन होता?

०

यदि धन नहीं होता?

—तो हिन्दू कोडके विरोधी इसे पापाचार नहीं कहते।

•

यदि समाचार पत्र समाज [illegible] सुहागिनोंका मेला होता?

—तो देशीय भाषा पत्र [illegible] हालत बिना सगाईकी विधवा [illegible]

*

यदि पाकिस्तानकी [illegible] जाता?

—तो हिन्दी जौके साथ [illegible] वाला घुन होती।

*

यदि श्राद्धके शालिग्राम [illegible]

—तो उनके सामने समा[illegible] करनेके लिये निवेदनोंका ढेर [illegible]

*

यदि पृथ्वीके तीन हिस्से [illegible] होकर शराब ही शराब होती!

—तो कवियोंका नाम [illegible] मेढ़क होता!

*

यदि सिनेमा तारिकाएं [illegible] होती?

—तो तमाशबीनोंका दिल [illegible] होता!

*

यदि स्टंट-पिक्चरके निर्माता [illegible] वर होते?

—तो उनका नाम मिट्टीका [illegible] होता!

•

यदि अज़ूरी सचमुच ही हरि[illegible] होती।

—तो पण्डितजी मन्दिर [illegible] नहीं रोकते।

*

यदि मुझे स्नेह-प्रभाकी [illegible] बनानेको कहा जाता?

—तो स्नेह-प्रभाका नाम [illegible] नहीं, छप्पन छुरी होता!

०

यदि फिल्म-स्टूडियो [illegible] आफिस होता?

—तो अभिनेताओंका नाम [illegible] होता और अभिनेत्रियां...!

—[illegible]

—

हाय धोती! हाय साड़ी!!

बाप दादे थे हमारे
जंगलों में रहा करते
प्रेम से थे घास खाकर
मगन मन नंगे विचरते
किंतु चलने बुद्धिके मुंहमें लगादी आज ताड़ी!

चल बसे भूषण बिचारे
औ शिवाजी तर चुके हैं
हाय ढाका के जुलाहे
भी कभीके मर चुके हैं

'मिल' भला क्या जान पाये
कौन कितना चाहता है
यह मुई सरकार, मानव—
दूर जिससे भागता है

फिर भला अटके न क्यों ओ सेठजी! यह बैलगाड़ी? लाज ढंकने को घरैतिन नोचती है अरे दाढ़ी!

पास में पैसे कहां इतने
कि जो मांगे वही दूं
और रानीजी तुम्हारी
लाजको मैं ढांक रक्खूं
दिल तुम्हारे पास है पर वैद्यजीके पास नाड़ी!
हाय धोती! हाय साड़ी!!

—समदर्शी

हित बस जिनके मनमाहीं ।
न कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

भयका भूत भगाओ !

—:x:—

लोकवन्द्य महात्मा गांधीने अपने क्रिया- राजनीतिक जीवनके गत २९ वर्षोंमें सबसे बड़ा काम किया है, वह है देश- सियोंके दिलसे भय भगानेके लिये उनका प्रयास। उन्होंने इस बातको खूब ी तरह महसूस कर लिया है कि संसारमें रोंका सहायक कोई नहीं। हवा आगको प्रज्वलित करती है, कमजोर लपटवाले का काम एक ही झोंकेमें तमाम कर है। और तो और 'मरेको मारे शाह र' की लोकोक्ति बहुत पुरानी है। इसी प्रारम्भसे ही महात्माजीने अपने णों, वक्तव्यों और 'यंग इण्डिया' तथा रिजन' के लेखों द्वारा भारतीयोंको सदा हला परामर्श दिया है कि 'बंधु, का भूत मार भगाओ और अपनी मदद करनेको तैयार रहो। तभी सर्वशक्ति- परमात्मा तुम्हारा सहायक बन सकेगा।' ीय स्वाधीनताके संघर्षमें देखते-देखते लाखों लाल निर्भीकताके साथ सूली झूल गये, हजारोंकी संख्यामें वे आज की कोठरियोंको आबाद कर रहे हैं और ी हद कष्ट-सहिष्णुता एवं आत्म-त्याग- उनको स्वातन्त्र्य संग्रामके पथपर आगे आ रहे हैं। इन सबका श्रेय है महा- जीको निर्भीक बनानेकी सतत चेष्टाको। जगतकी सर्व श्रेष्ठ पुस्तक बाइबिलका यही उपदेश है कि 'डरो मत, मैं तुम्हारे साथ हूं।' यूरोपके विख्यात कार सिसरो और शेक्सपीयरने भी कि 'विश्वास अचलको भी चंचल सकता है और भय कायरोंको मार ता है।' तब स्वाधीनताके लिये संघर्ष वीर सैनिकोंके शब्दकोषमें भयको ही क्यों मिलना चाहिये ?

दक्षिण अफ्रीकामें वर्ण-भेदको प्रश्रय हृदयहीन गोरोंसे संघर्ष कर त्मा गांधीने जो सफलता प्राप्त की थी, का मूल कारण अपने प्रवासी देशवासियों दिलों और दिमागोंमें निर्भयताकी छाप लगाना ही था। वर्तमान राष्ट्रीय संघर्षके दौरानमें १९२०, ३०, और ४० में देशभक्तोंके नौकरशाहीपर बार हुए हैं, उनमें अपने नेताकी पर लाखोंकी संख्यामें देशके नौ- अन्याय और शोषणका अन्त करनेके साथ कंधेसे कन्धा भिड़ाकर कटि- गये। इसका प्रधान कारण उनकी के सिवा और कुछ नहीं। सन् में अधिकारियोंके बिना सोचे-समझे और अवांछनीय कार्यों का प्रति- करनेके लिये देशवासियोंकी निर्भीकता साहसका जो व्यापक प्रदर्शन हुआ, उसकी कहानियां इस छोटे महाद्वीपके ग्रामों, नगरों और शहरोंके वायुमण्डलमें अब भी गूंज रही हैं और उसका विकृत एवं अति रंजित स्वरूप ब्रिटिश सरकारके १० हजार पिट्ठुओं द्वारा अमेरिका तथा अन्य मित्र-राष्ट्रोंकी जनताके सामने उपस्थित किया जाता है। इसमें सन्देह नहीं कि ब्रिटिश नौकरशाहीके लोमहर्षक दमन और अपने देशके कुछ स्वार्थी लोगोंके कुचक्रसे राष्ट्रके इस उफानपर शीतल जल छोड़ दिया गया और उसके बाद लोग पस्त-हिम्मत हो अपने प्रतिरोधात्मक भावोंसे हाथ धो बैठे। लेकिन आजादीके वीरोंकी आत्माको इससे कुचला नहीं जा सका। उनकी आत्मा तो स्वाधीनता प्राप्त कर लेनेके बाद ही शांत हो सकती है।

इस समय देशमें जो निष्क्रियता और मुर्दनी-सी छायी हुई है, उसका प्रधान कारण यही है कि देशकी आत्मा जेलोंके सीकचोंके अन्दर बन्द कर रखी गयी है और यद्यपि भारत सचिव मि० एमरी यह फर्माते हुए सुने जाते हैं कि कांग्रेस नेताओंको अनिश्चित काल तक बन्द रखनेकी नीति सरकारकी नहीं है, तथापि उनको जेलसे मुक्त करने के लिये कोई योजना अभीतक कार्यान्वित होती हुई दृष्टिगोचर नहीं होती, हालांकि उनके नजरबन्द हुए दो वर्षसे अधिक हो गये। सरकारी वक्तव्यके अनुसार १० हजार राजनीतिक बन्दियों और नजरबन्दोंमेंसे अब तक अधिकांश मुक्त किये जा चुके हैं और उन्होंने बाहर आकर ब्रिटिश नौकर-शाहीपर गजब तो ढा नहीं दिया, अथवा इतने देशद्रोही नहीं साबित हुए कि देशकी स्वाधी-नताको, जिसके लिये ब्रिटिश राजनेता गत महासमरके समयसे ही बराबर आश्वासन देते आ रहे हैं, जापानके हाथ बेचनेकी चेष्टा की। वर्तमान युद्ध-प्रयासमें भी उनकी मुक्ति से कोई बाधा नहीं पहुंची। फिर भी अधि-कारी शेष राजनीतिक बन्दियों और नजर-बन्दोंकी मुक्तिके प्रश्नपर सुरक्षा और युद्ध प्रयासमें बाधा पहुंचनेकी दुहाई देकर तर्ककी टांग तोड़नेकी अनुचित चेष्टा कर रहे हैं। बङ्गालके प्रधानमन्त्री सर ख्वाजा नजीमुद्दीन वादा करके भी यह खतरा नहीं उठाना चाहते। ऐसी दशामें इन स्वार्थियोंके सारे षड़यन्त्रोंको निष्फल बनानेका सर्वोत्तम ढङ्ग और मार्ग हमारे विचारसे वही मालूम होता है, जो सीमाप्रान्तके कांग्रेस कार्यकर्ताओंने निर्भीकताके साथ अपनाया है।

सीमाप्रान्तका शासन-सूत्र हाथमें लेते ही डा० खां साहबने भारत सरकारके आदेशसे नजरबन्द रखे गये सीमान्त गांधी खां अब्दुल गफ्फार खांको सर्वप्रथम मुक्त कर यह स्पष्ट कर दिया है कि विभिन्न प्रान्तोंमें जो तथा-कथित लोकप्रिय सरकारें नवविधानके अन्तर्गत प्रदान किये गये स्वायत्त शासन-शकटको ढकेलती जा रही हैं, उनका यह कहना कोई अर्थ नहीं रखता कि यद्यपि हम नजरबन्दोंको मुक्त करनेके लिये तैयार हैं तथापि ऐसा करनेमें हम अपनेको असमर्थ पाते हैं। उनकी यह दलील बिल्कुल लचर साबित हो चुकी। वे ऐसा करनेमें अपनेको असमर्थ इसलिये पाती हैं क्योंकि वे अपमान और अनादरका घूंट पीकर भी अपने पदसे चिपकी रहना चाहती हैं। उनमें नैतिक बल और शिष्टताका इतना अभाव है कि जिस जनताके धनसे अपनी मोटी तनख्वाह लेती हैं, उसकी मांगोंपर ध्यान देना भी नहीं चाहतीं। इस सम्बन्धमें केन्द्रीय व्यवस्थापिका परिषदमें एक प्रश्नके सिलसिलेमें केन्द्रीय सरकारके एक वक्ताने यहां तक बताया है कि प्रान्तीय सरकारें अपनी जिम्मेदारीपर कितने नजर-बन्दोंको छोड़ रही हैं कई बार इसका पता तक केन्द्रीय सरकारको नहीं चल सका है। वक्ताके इस उत्तरके प्रकाशमें तो नजरबन्दों और राजनीतिक बन्दियोंकी मुक्तिकी जिम्मे-दारी अधिकांशमें प्रान्तीय सरकारोंपर ही आती हैं। इसमें सन्देह नहीं कि यदि प्रान्तीय सरकारें वास्तवमें इन देशभक्तोंको मुक्त करनेपर तैयार हो जायें तो एक मिनिटकी भी देर उनकी रिहाईमें न लगे। लेकिन उनको ऐसा करनेमें अपना पद आपदस्थ होनेकी आशङ्का होने लगती है। ऐसी डरपोक, स्वार्थी और पदलोलुप सरकारोंका अस्तित्व जब तक रहेगा, तब तक देश स्वाधीनताकी ओर नहीं बढ़ने पायेगा। इसलिये वर्तमान समयका तकाजा यह है कि निर्भीक देशभक्त आगे बढ़ें और प्रान्तोंमें शासनकी बागडोर सम्भालें तथा अपनी जिम्मेदारीपर जेलमें पड़े लोकप्रिय नेताओंको मुक्तकर देशमें नवजीवनका सञ्चार करें।

यूरोपीय युद्धका अन्त अब निकट आ पहुंचा है, इसलिये ब्रिटेन और अमेरिकाका ध्यान प्रशांतमोर्चेकी लड़ाईकी ओर आकृष्ट होने लगा है। प्रशान्त युद्धमें भारतका महत्व पूर्ण स्थान सब लोग स्वीकार करते हैं, स्वार्थी शासक और ब्रिटिश राजनेता भले ही उसको अपनी जबानसे न कहें। ऐसी दशा में १९३९ जैसी अवस्था अब फिर उत्पन्न होनेकी कोई संभावना नहीं मालूम होती। देशवासियोंकी दुरवस्था पराकाष्ठाको पहुंच रही है, उसको वास्तविक सहायता पहुंचाने के लिये आत्मत्यागी, साहसी व्यक्तियोंकी आवश्यकता है। महात्मा गांधी इस सम्बन्ध में तब तक कुछ करनेके लिये तैयार नहीं हैं जब तक कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्य समष्टि रूपसे मुक्त नहीं कर दिये जाते। यह उचित ही है। लेकिन प्रान्तीय कार्यकर्ताओंको इतनी स्वाधीनता तो दे रखी ही गयी है कि वे अपने प्रान्तकी स्थितिके अनुकूल अपने व्यक्तिगत और समष्टिगत अनुभवके आधारपर कार्य कर सकते हैं। ऐसी दशामें अगर इन्हें गवर्नरोंसे यह आश्वासन मिल सके कि वे उनके आन्तरिक दैनिक कार्योंमें हस्तक्षेप नहीं करेंगे, तो नेताओंको जेल मुक्त करने और महात्मा गांधी द्वारा निर्देशित १९ शर्तोंवाले रचनात्मक कार्यक्रमको कार्यान्वित करनेके ख्यालसे पद-ग्रहण करना अनुचित नहीं कहा जा सकता। १९४२ के सरकारी दमनसे देहातोंकी जनतामें कुछ आतङ्कका समावेश हो गया है, उसको कांग्रेसजनोंकी सरकारें ही निर्भीक बना सकती हैं, जैसा कि गत कांग्रेसी मन्त्रि-मण्डलोंके समयमें हुआ था। आज पुलिस विभागके छोटेसे छोटे कर्मचारी भी देहातमें बड़ेसे बड़े सम्भ्रान्त व्यक्तियोंके साथ ऐसा अशिष्ट व्यवहार कर बैठते हैं, जो कांग्रेसकी सरकारोंके शासन कालमें कभी ख्यालमें भी नहीं आ सकता था। इस अवांछनीय अवस्थाका अन्त एकमात्र जनताके प्रति जिम्मेदार सरकारें ही कर सकती हैं। यह सोचकर देशभक्तोंको आगे आना चाहिये।

लार्ड वावेलकी लन्दन यात्रा

भारतके वायसराय लार्ड वावेलके सदल-बल लन्दन पहुंचने और उनके स्थानपर बम्बई के सीनियर गवर्नर सर कोलविलेके स्थाना-पन्न वायसराय नियुक्त किये जानेसे राज-नीतिक क्षेत्रोंमें काफी जोरशोरसे अटकलें लगने लगी हैं। कुछ लोगोंका कहना है कि यूरोपकी लड़ाईकी समाप्तिके बाद प्रशान्तके युद्धमें जापानको कुचल डालनेके सवालपर मित्र राष्ट्रोंका ध्यान अधिकाधिक आकृष्ट होने लगा है। प्रशान्त युद्ध और प्रशान्त देशोंकी युद्धोत्तर कालीन समस्याओंपर सैन फ्रांसिस्को कानफरेन्समें आगामी २९ अप्रैल से जो विचार होनेवाला है, उसमें जर्मनीके विरुद्ध युद्ध घोषणा करनेके कारण भारतको प्रतिनिधि भेजनेका निमन्त्रण अन्तमें दिया गया और इस कार्यको सम्पन्न करनेके लिये सर रामस्वामी मुदालियर एवं सर फिरोजखां नून भारत सरकार द्वारा प्रतिनिधि चुने गये हैं। ये तथाकथित भारतीय प्रतिनिधि जनता के नहीं, भारतकी ब्रिटिश नौकरशाहीके प्रतिनिधि हैं। चूंकि भारत स्वाधीन नहीं है, इसलिये उसके प्रतिनिधियोंको कानफरेंस में स्वतन्त्र ब्रिटिश उपनिवेशों जैसा स्थान दिया जाये या कुछ अन्य ढङ्गका, इसपर अभी निर्णय कर लेना ब्रिटिश सरकारके लिये आवश्यक है। असन्तुष्ट भारत जापानके विरुद्ध होनेवाले युद्धमें अपनी अस्तव्यस्त आर्थिक अवस्थामें सहायक हो सकेगा या नहीं इस बातको सैनिक और सामरिक विशेषज्ञ खूब अच्छी तरह समझते हैं। भारत स्थित भारतीय तथा अभारतीय सैनिक और उनके कमाण्डर यह महसूस करने लगे हैं कि किस भद्दी स्थितिमें उन्हें रखा गया है। राजनीतिक मोर्चेपर केन्द्रीय असेम्बलीके वर्तमान बजट अधिवेशनमें सरकारकी जो हारपर हार हुई है और कांग्रेस, मुसलिम लीग और अन्य दलोंने कटौतीके प्रस्तावोंपर न केवल वायसरायकी एक्जीक्यूटिव कौंसिल के संगठनकी निन्दा की है, बल्कि सारी वर्तमान शासन प्रणालीकी ही कटु आलोचना की है और ऐसी अवस्था उत्पन्न कर दी है, जिसमें आत्म-सम्मानका तनिक भी ख्याल रखनेवाली कोई सरकार एक मिनिट भी अपने पदपर स्थिर नहीं रह सकती। अतः ऐसा जान पड़ता है कि लार्ड वावेलको और अधिक प्रतीक्षा सहन नहीं हो सकी और अचानक ब्रिटेनकी यात्रापर निकल पड़े हैं।

यों लार्ड वावेल गत सितम्बरमें ही अपने शासनका प्रथम वर्ष समाप्त करनेके बाद सम्राटकी सरकारको भारतकी वास्त-विक अवस्थासे परिचित कराना चाहते थे, लेकिन उस समय सरकार फ्रांसके धरातलपर जर्मनोंसे संघर्ष करनेमें पूरी तरह व्यस्त थी, इसलिये लार्ड वावेलको वसन्तमें मिलनेका परामर्श दिया गया था। नयी दिल्ली की केन्द्रीय व्यवस्थापिका परिषदके अञ्चलमें जो मत प्रकट किया गया है, उससे मालूम

होता है कि वायसराय और श्री भूलाभाई देसाईमें जिस फार्मूलेपर समझौता हुआ था और जो ब्रिटिश सरकारके पास भेजा गया था, उसको मंत्रिमण्डलने चर्चिलके हवाले लगा दिया और प्रधान मन्त्रीने अपने कानून परामर्शदातासे पूछकर यह निश्चय किया कि वर्तमान शासन विधानके अन्तर्गत केन्द्रमें लोकप्रिय सरकारोंकी स्थापना संभव नहीं। अगर यह बात ठीक है तो लार्ड वावेलकी व्यग्रता बिल्कुल स्वाभाविक है, क्योंकि कुछ दिन पहले अपनी जिस एक्जीक्यूटिव कौंसिल को वे युद्धकालमें प्रस्तुत सर्वोत्तम राष्ट्रीय सरकार बताते थे, उसकी जनताके निर्वाचित प्रतिनिधि केन्द्रीय व्यवस्थापिका परिषदमें ऐसी दुर्गति कर रहे हैं, जिसका कोई उदाहरण नहीं। इसलिये इतना तो निश्चय है कि लार्ड वावेल देशकी वास्तविक अवस्थाको ठीक-ठीक ही पेश करेंगे। हमारा ख्याल है कि लार्ड वावेल केन्द्रीय सरकारके संगठनके प्रश्नपर यह सुझाव रखेंगे कि एक्जीक्यूटिव कौंसिलका गठन हिन्दू-मुसलमानोंके ४०-४० प्रतिशत और अन्य दलोंके २० प्रतिशत प्रतिनिधित्वके आधारपर इस प्रकार किया जाये जिसमें किसी विशेष दलकी आवाज अधिक बुलन्द न हो। प्रान्तीय सरकारोंका संगठन साधारण नियमानुसार किया जाये और युद्धोत्तर योजनाके सम्बन्धमें वे कहेंगे कि घोषित प्रस्तावपर अगर विभिन्न सम्प्रदायोंकी सहमति प्राप्त न हो जाय तो ब्रिटिश सरकार क्रिप्स प्रस्तावको कार्यान्वित करनेका उत्तरदायित्व ग्रहण करे।

जब तक लार्ड वावेलकी यात्राका परिणाम अधिकारी तौरपर घोषित नहीं किया जाता, तब तक इस सम्बन्धमें कोई टीका-टिप्पणी असामयिक और अनावश्यक ही होगी। लेकिन इस समय हम इतना तो कहेंगे ही कि युद्धोत्तर कालके विधानके सम्बन्धमें भारत केवल उसी विधानको स्वीकार करेगा, जो बालिग मताधिकारके आधारपर निर्वाचित भारतीय प्रतिनिधियोंकी समिति द्वारा प्रस्तुत होगा। कोई अन्य विधान चाहे, कितना ही उदार क्यों न हो भारतवासियोंको स्वीकार नहीं होगा। वर्तमान महायुद्ध जब समस्त देशोंकी स्वाधीनता और विश्व-शान्तिकी स्थापनाके लिये लड़ा जा रहा है, तब इसके बाद भी यदि भारतको स्वाधीन नहीं किया गया तो निश्चय ही विश्वशांति की स्थापना असंभव होगी और ब्रिटेनकी अवस्था अत्यन्त हास्यास्पद हो जायेगी। भारतको एकदिन अवश्य स्वाधीन होना है, अपने इस जन्मसिद्ध अधिकारसे उसको सदाके लिए वंचित नहीं किया जा सकता। इसलिये बुद्धिमानी और दूरदर्शिताकी बात तो ब्रिटेनके लिये यह होगी कि वह एक निश्चित अवधिके अन्दर भारतको स्वाधीन कर देनेकी शीघ्रातिशीघ्र घोषणा कर दें और लोकप्रिय कांग्रेस नेताओंको मुक्त कर अखिल भारतीय प्रतिनिधि संस्था कांग्रेससे सम्मान पूर्ण समझौता कर ले।' कांग्रेसने सीमाप्रान्तमें अपना मन्त्रिमण्डल स्थापित कर ब्रिटेनके सामने यह प्रस्ताव उपस्थित कर दिया है कि वह समझौतेके लिये तैयार है बशर्ते उसके सम्मानका ख्याल रखते हुए ब्रिटेन आवश्यक कार्यवाही शीघ्र करे।

फिर यह गलती क्यों?

गत दो-ढाई वर्षोंसे भारतमें ब्रिटिश नौकरशाहीका इतिहास भयङ्कर भूलों और उनके मार्जनके अनेक वृत्तान्तोंसे भरा पड़ा है। एक भूल करनेके बाद जब उसको सुधारनेकी चेष्टा की जाती है और ज्योंही उसका मार्जन होता है, दूसरी उसके भी भयङ्कर भूल कर दी जाती है। कांग्रेस जैसी लोकप्रिय और फासिस्टवाद विरोधी संस्थाके साथ नौकरशाहीके व्यवहारको यदि गलतियोंका एक इतिहास कहा जाये तो कोई अतिरंजन नहीं। १९४२ की अगस्तवाली दुर्घटना अधिकारियोंकी सबसे बड़ी भूलका एक सजीव उदाहरण है, जिसका कुपरिणाम सारे भारतको बुरी तरह सहना पड़ा है और अब भी उससे मुक्ति नहीं मिल सकी है। देशवासियोंकी दुरवस्थाको दूर करनेके लिये इधर महात्मा गांधीने १९ शर्तोंवाले जिस कार्यक्रमको कार्यान्वित करनेका परामर्श जेलसे मुक्त होकर आये हुए कांग्रेसजनोंको दिया है, उसका अर्थ अनेक स्थानोंपर वहांके अधिकारियों द्वारा ऐसा लगा लिया जाता है कि उसको सुनकर बुद्धि हैरान रह जाती है। बिहारकी सरकारने अपनी भूलको सुधारनेका जो प्रयास किया है, वह अभी बिल्कुल ताजी घटना है, तबतक वैसी ही भूल उस दिन बनारसमें वहांके जिला मजिस्ट्रेट द्वारा गत १७-१८ मार्चको वहां होने वाली युक्तप्रांतीय कांग्रेसजनोंकी असेम्बलीकी बैठकपर २४ घण्टे पहले प्रतिबन्ध लगाकर की गयी। उक्त अधिवेशनमें प्रांतके कांग्रेसजन यह विचार करनेवाले थे कि कानपुर अधिवेशनमें जो प्रस्ताव पास किया गया है, उसको किस प्रकार कार्यान्वित किया जाये। यह सम्मेलन युक्तप्रांतीय असेम्बलीके अध्यक्ष श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन जैसे जिम्मेदार व्यक्तिके सभापतित्वमें होनेवाला था। सीमाप्रांतमें एक तरफ जहां बङ्गालके गवर्नर प्रांतके लब्ध-प्रतिष्ठ कांग्रेस नेता और भूतपूर्व प्रधान मन्त्रीको अपना मंत्री बनानेके लिये आमन्त्रित करते हैं, वहां युक्तप्रान्तके गवर्नर टंडनजी जैसे व्यक्तिपर विश्वास नहीं करते, यह कुछ अजीब-सी बात मालूम होती है, वह भी ऐसी अवस्थामें जब महात्मा गांधी साफ शब्दोंमें घोषित कर चुके हैं कि रचनात्मक कार्यक्रमका उद्देश्य भविष्यमें सद्अवज्ञा आन्दोलनके लिये तैयारी करना कदापि नहीं है। जब बिहार सरकारने अन्तमें महात्मा गांधीके वक्तव्यको स्वीकार करते हुए यह मान लिया कि कांग्रेसका रचनात्मक प्रोग्राम सरकारसे संघर्ष करनेकी तैयारी नहीं है, तो युक्तप्रांतीय गवर्नरके लिये वैसा न सोचनेका कोई आधार ही नहीं है, क्योंकि युक्तप्रांतीय कांग्रेस जनोंने अबतक कोई ऐसा कार्य नहीं किया है, जिससे हिंसा या आतङ्कवादको प्रोत्साहन मिले। कभी-कभी जिला मजिस्ट्रेट अपनी जिम्मेदारीसे ही ऐसी आज्ञाएं जारी कर दिया करते हैं, क्योंकि वे जिलेका प्रधान शासक जो अपनेको समझते हैं। अगर ऐसी बात हो तो हम आशा करेंगे कि युक्तप्रांतीय गवर्नर इस भूलको शीघ्र सुधार करनेकी बुद्धिमता दिखलायेंगे।

बंगालमें वस्त्र रेशनिंग—

१९४३ में भारतके समस्त प्रान्तोंके सामने जिस प्रकार भोजनकी समस्या विकट रूपमें उपस्थित थी, आज उसी या उससे भी भयङ्कर रूपमें वस्त्रकी समस्या आ खड़ी हुई है। बङ्गालमें तो यह वस्त्राभाव वस्त्र-दुर्भिक्षका रूप धारण कर रहा है और कई जिलोंसे ऐसी खबरें आ रही हैं कि महिलाओंने अपनी लोकलज्जा उचित रूपसे न ढंक सकनेके कारण बाहर निकलना बन्द कर दिया है। बर्दवानकी एक रिपोर्ट है कि दामोदर नदी तटवर्ती शीराग्रामके मछुओंकी स्त्रियोंने जो मछली पकड़कर अपनी जीविका चलाती थीं, वस्त्राभावके कारण अपनी लोकलज्जा निवारण करनेमें असमर्थ हो, मछली मारना ही बन्द दिया है। उनकी रोजी कैसे चलेगी भगवान जानें! वस्त्र उत्पादन और वितरणपर नियन्त्रण रखनेवाले केन्द्रीय सरकारके अधिकारी लेखा-जोखा करके यह समझनेमें हैरान हैं कि बङ्गालको निर्धारित कोटेसे अधिक वस्त्र भेजा गया। फिर वहां वस्त्र दुष्काल क्यों उपस्थित हो गया। यहां हमें उन मुंशीजीकी गणित-पटुताकी याद हो आती है, जिन्होंने नदीकी गहराईके सम्बन्धमें हिसाब-किताब लगाकर अपने शिष्योंको पार कर जानेकी आज्ञा दी थी और जब मझधारमें पहुंचकर उनके सभी शिष्य डूब गये थे, तब वे अपनी गणित क्रियाकी अशुद्धताकी जांच करने लगे थे और अन्तमें इसी निर्णयपर पहुंचे थे कि उनका हिसाब तो बिलकुल ठीक था। पानीमें लड़कोंको डूबना नहीं चाहिये। खैर, बङ्गाल सरकारके नागरिक रसद विभागके मन्त्रीकी इस घोषणासे लोगोंको काफी आराम मालूम हुआ कि ६ सप्ताहके अन्दर बङ्गालमें वस्त्र रेशनिङ्ग जारी हो जायेगी। उन्होंने स्वीकार किया है कि बङ्गालके लिये जो कोटा निर्धारित किया गया है, वह उसकी अस्थायी तौरपर बढ़ी हुई आबादीको दृष्टिगत रखते हुए बिलकुल अपर्याप्त है। फिर भी मैं जितना कुछ भी वस्त्र पा सकूंगा, उचित रूपसे जनतामें बांट दूंगा। बङ्गाल सरकारके अब तकके प्रबन्धोंकी अपर्याप्तताको याद करते हुए सहसा यह विश्वास तो नहीं होता कि सुहरावर्दी साहब इस कार्यको इतनी सफलतापूर्वक सम्पन्न कर सकेंगे। लेकिन अगर दुकानोंके निर्धारित करने और उचित समयपर उन्हें वस्त्र सप्लाई करते रहनेमें निष्पक्ष भावसे उन्होंने काम किया और सरकारी कर्मचारियोंपर चोर बाजार और घूसखोरीको प्रोत्साहन देनेका जो आरोप लगाया जाता है, उसको मिटानेकी चेष्टा की, तो वे निःसन्देह जनताका दुख हल्का करनेमें सहायक होंगे और पीड़ित मानवताकी शुभेच्छा और आशीर्वादके भागी होंगे।

आसाममें संयुक्तमंत्रिमण्डल—

लीग मन्त्रिमण्डलोंकी शासन-सम्बन्धी अयोग्यताका भण्डाफोड़ अब धीरे-धीरे एकके बाद दूसरे प्रांतोंमें होने लगा है और जो यूरोपियन दल असेम्बलीमें लीगी सरकारोंके सच्चे आधार थे, उनको भी खिन्न तथा आसाममें भारी निराशा हुई है। आसाम असेम्बलीमें चाय बागान इलाकेके ... नेता मि० अर्नाल्ड ह्विटकरने साफ ... कहा है कि 'मन्त्रिमण्डलने यह ... कि घूसखोरीका बाजार अत्यधिक ... चला है, उसको मिटानेके लिये ... प्रयास नहीं किया।' खैर यह ... बात है कि अपनी गलतीका पता ... कर मुहम्मद सादुल्लाने एक ... छिपानेके लिये अनेक अपराध ... दूरदर्शिता दिखलायी और विभिन्न ... साथ मिलकर सर्वदलीय सरकार ... निश्चय किया। इनसे आवश्यक ... प्राप्त कर कांग्रेस असेम्बली पार्टीके ... गोपीनाथ बार्दोलोई और स्वतन्त्र ... श्री रोहिणी कुमार चौधरीने उन्हें ... देनेका वचन दे दिया है और इस ... झौता हो जानेसे उनके मन्त्रिमण्डलने ... दे दिया है। नये मन्त्रिमण्डलमें ... कांग्रेस दलने पदग्रहण न करनेका ... हैं, तथापि जबतक सरकार समझौतेके ... का पालन करती रहेगी, तबतक ... पार्टीका सहयोग प्राप्त होता रहेगा ... आशा करनी चाहिये कि आसामका ... मन्त्रिमण्डल जनताके प्रतिनिधियोंका ... भाजन रहकर प्रांत वासियोंकी अधिक ... कर सकेगा।

समवेदना—

यह शोक संवाद बड़े दुःखके साथ ... जायेगा कि युक्तप्रान्तके भूतपूर्व शिक्षा ... और प्रमुख समाजवादी नेता श्री स... नन्दजीके कनिष्ठ पुत्र श्री सोमेश्वरा... देहान्त गत मङ्गलवारको केवल ... अवस्थामें हो गया। गत बार ... वे टाईफायड बुखारसे पीड़ित थे। ... चिकित्साके लिये लखनऊ, कानपुर, ... आदिके करीब-करीब सभी प्रमुख ... और वैद्योंको बुलाया गया था, लेकिन ... कालके सामने किसीकी कुछ नहीं चली ... स्व० सोमेश्वरानन्दसे लोगोंको बड़ी ... थी कि वे योग्य पिताके सुयोग्य पुत्र ... उनकी प्रतिभा अभीसे अपना प्रकाश ... करने लगी थी। इतनी छोटी उम्रमें ... असामयिक महाप्रस्थानसे माता-पि... परिवारके लोगोंको जो दारुण शोक ... वह वर्णनातीत है। लेकिन विधिका ... समझ कर इसे सहन करना ही होगा ... श्री सम्पूर्णानन्दजीके इस शोकमें ... हार्दिक समवेदना प्रकट करते हुए ... कारी शंकरसे यह करबद्ध प्रार्थना ... कि वह दिवंगत आत्माको चिरशांति ... शोक-सन्तप्त परिवारको इतनी शक्ति ... करे कि वह इस दारुण शोकको ... सके।

—

...और जर्मनीमें

समाचारपत्रोंकी अवस्था

—:※:—

[लेखक—श्री विनोद शंकर]

लम्बे-चौड़े आंकड़ोंको देखकर लोग घबड़ाया करते हैं। लेकिन अगर अपने रुपयोंके आंकड़े लम्बे होते जायें, तो लोग प्रसन्न होते हैं और उसे लम्बा करनेके लिये और अधिक प्रयास करते हैं। ...माथा चकरानेवाले जरूर होते हैं, ...न यह निस्सन्देह है कि वे हैं बड़े महत्व ...के। अगर उनका महत्व नहीं होता तो ...न्न देशोंकी सरकारें जनगणना, पशु-...ना और वस्तुगणना आदि करानेमें लम्बी ...नहीं खर्च करतीं। प्रस्तुत लेख सोवियट समाचार पत्रोंके विकाससे सम्बन्धित ...विकासका क्रम प्रकट करनेके लिये सिवा ...ड़ोंकी शरण लेनेके अन्य कोई साधन ...ती नहीं देता।

...कहना न होगा कि आजका युग विज्ञान ...का है और समाचार पत्र विज्ञानकी ...क देन हैं। इसलिये वर्तमान युगमें इनका ...बड़ा महत्व है। यदि हम कहें कि ...के समाचार पत्र मानव अस्तित्व कायम ...के लिये उतने ही आवश्यक हैं, जितने ...अन्न, तो अतिशयोक्ति नहीं समझनी ...। शारीरिक भोजनके लिये जहां ...चावल, दालकी आवश्यकता होती है, ...सिक भोजनके लिये समाचार पत्र-पत्रि-...ओंकी आवश्यकता अनिवार्य है। जिस ...हम अपने छोटे-से परिवार और ग्राम ...सम्बन्धमें सदैव पूरी जानकारी रखनेके ...उत्सुक रहते हैं, उसी प्रकार आज ...समस्त विश्वके सम्बन्धमें अपटूडेट ...री रखनेके लिये लालायित रहते हैं, ...कि विज्ञानने उसे एक विराट परिवार ...में परिणत जो कर दिया है! विश्वके ...घटनाक्रमसे अवगत होनेके लिये ...र पत्रोंका अध्ययन आवश्यक है ठीक ...उसी भांति जिस प्रकार शारीरिक उन्नतिके ...प्रतिदिन नियमित व्यायाम की। समा-...चारोंकी अनिवार्य आवश्यकताके सम्बन्धमें इतना कह चुकनेके बाद यह बतला देना भी अप्रासङ्गिक नहीं होगा कि इनके महत्वको दृष्टिगत रखते हुए विभिन्न देशोंकी सरकारों ने इनपर नियन्त्रण रखनेके लिये तरह-तरहके कायदे-कानून बना डाले हैं, जो राष्ट्रोंकी स्वाधीनता और पराधीनताके अनुसार एक दूसरेसे बिल्कुल भिन्न हैं। यद्यपि सिद्धांततः इस बातको सभी राष्ट्र स्वीकार करते हैं कि समाचारोंका विनियय बिना किसी स्वार्थपूर्ण हस्तक्षेपके, स्वाभाविक ढङ्गसे होना चाहिये, तथापि इसका पालन अधिकांशमें स्वाधीन देशोंमें ही होता है। पराधीन देशोंकी सरकारें समाचार पत्रोंपर ही निय-न्त्रण रखती हैं और अधिकतर वे ही समाचार जनतामें पहुंच पाते हैं जो उनके स्वार्थोंसे संघर्षकरनेवाले नहींहोते या जिनसे उनका कोई रागद्वेष नहीं। इसके अलावा प्रेस इमर्जेन्सी एक्टके भूत भी सदा समाचारपत्रोंके सञ्चा-लकों,सम्पादकों एवं संवाददाताओंके सिरपर सवार रहते हैं जो उनकी लेखनीको स्वाभा-विक अवस्थामें चलनेसे रोकते और कानून की बारीकियोंको समझनेके लिये माथापच्ची करनेको बाध्य करते हैं।

अमेरिकामें अंग्रेजीके अलावा अन्य भाषाओंमें छपनेवाले समाचार पत्र।
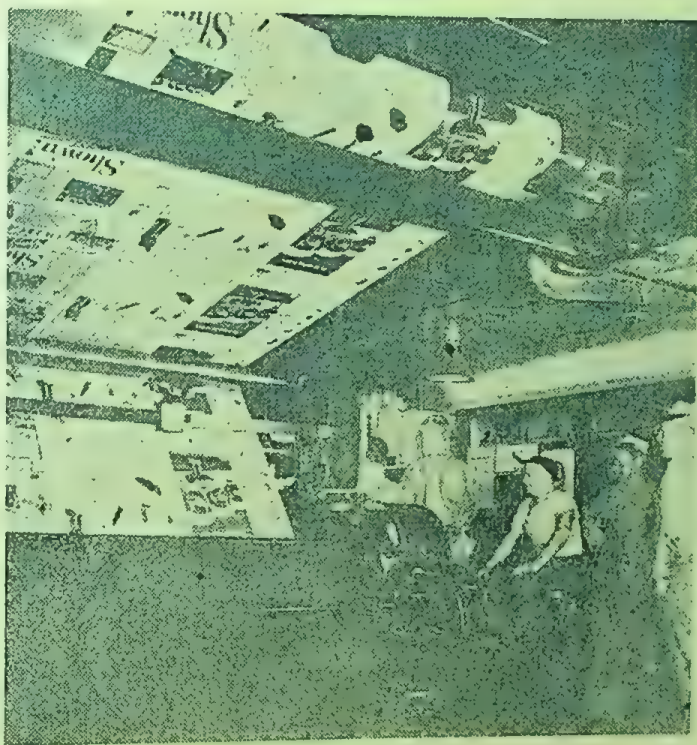
द्रुतगामी रोटरी मशीनपर दैनिक समाचार पत्र छप रहा है।

अमेरिकन समाचार पत्र आफिसमें सम्पादक महोदय जापानी भाषामें छपनेवाली सामग्रीका अन्तिम प्रूफ पढ़ रहे हैं।

सोवियट समाचार पत्रोंका जहांतक इन बातोंसे सम्बन्ध है, हम उन्हें सौभाग्यशाली कह सकते हैं। जबतक सोवियट रूस वर्तमान युद्धमें नहीं घसीटा गया था, तबतक वहां सरकारी प्रचार या सूचना विभागनामी कोई संस्था नहीं थी। सम्पादकोंको लम्बे-चौड़े आदेश सरकारकी ओरसे नहीं मिलते थे कि उन्हें किस प्रकारके समाचारोंको कितना स्थान और कैसा शीर्षक देना चाहिये। सम्पादकीय टिप्पणियोंमें किन विषयोंको लेना चाहिये और किनको छोड़ देना चाहिये। बड़ेसे बड़े पत्रसे लेकर सबसे छोटे पत्रके सम्पादकसे यही आशा रखी जाती थी कि वे सार्वजनिक मामलोंमें क्रियात्मक रूपसे दिलचस्पी लें और बिना किसी भय और पक्षपातके बुराइयोंकी जड़में कुल्हाड़ी मारें तथा उसके परिणामको दृढ़तापूर्वक सहनेके लिये तैयार रहें। सोवियट पत्रोंके सम्पादक अधिकांशतः कम्यूनिस्ट हैं। इसलिये अगर कोई कम्यूनिस्ट पार्टीकी नीतिसे मत-भेद रखता है, तो उसे पार्टीके सामने अपने मतभेदकी कैफियत देनी पड़ती है। लेकिन इस तरहकी कोई पाबन्दी नहीं है कि पार्टीकी नीति अक्षरशः अवश्य मानी ही जाये। हां, इतना अवश्य है कि सम्पादक पूंजीवादका समर्थन अथवा सोवियट प्रणालीका विरोध नहीं कर सकते और सच पूछिये तो सोवियट जनतासे ये बातें अब कोई सम्बन्ध भी रखती नहीं। इनके विषयमें तर्क-वितर्क कर उन्होंने इनके प्रति अपना राग विरागमें परिणत कर लिया है।

जारके रूसमें और अब

१९१३ में जब रूसमें जारकी तूती बोल रही थी, उस समय समाचार पत्रोंकी दशा आजसे बिलकुल भिन्न थी। संख्या थी बहुत ही कम। सारे देशमें प्रकाशित होनेवाले कुल समाचार पत्रोंकी संख्या ८५९ थी और प्रतिदिन उनकी २० लाख ७० हजार प्रतियां छपती थीं। आज सोवियट यूनियनमें ७० विभिन्न भाषाओंके ९ हजार पत्र प्रकाशित होते हैं और प्रतिदिन ३ करोड़ ८० लाख प्रतियां पाठकोंमें वितरण की जाती हैं। इन आंकड़ोंसे ही आप पता लगा सकते हैं कि जार मे और वर्तमान रूसमें जहांतक शिक्षा और साक्षरताका सम्बन्ध है, कितना महान परि-वर्तन हो गया है। मास्कोमें ही सरकारके विभिन्न विभागों द्वारा सम्मिलित रूपसे पत्र प्रकाशित कई होते हैं। इन पत्रोंमें सबसे बड़ा 'प्रावदा' है जिसकी २२ लाख काफियां पाठकों द्वारा पढ़ी जाती हैं। यह कम्यूनिस्ट पार्टीका पत्र है। 'इजवेस्तिया' बिलकुल सरकारी है और इसकी १५ लाख कापियां प्रतिदिन पाठकोंमें वितरित की जाती हैं। युवकोंका पत्र 'काम्सोमोलस्काया प्रावदा' ७ लाख, 'पायोनेरस्काया प्रावदा' (बच्चोंका दैनिक) ८॥ लाख छपते हैं। ट्रेड यूनियनकी केन्द्रीय समितिका पत्र ट्रुड है। रूसमें कोई पत्र व्यक्तिगत तौरपर नहीं सञ्चा-लित होता और न सीमित कम्पनियों द्वारा। मास्कोके बाहर बड़े-बड़े प्रान्तोंमें प्रादेशिक अधिकारियों द्वारा जो दैनिक पत्र प्रकाशित किये जाते हैं, उनकी संख्या १९३९ के मध्यमें ९०० से अधिक थी।

युद्धके पहले रूसमें जितने समाचार पत्र निकलते थे, उनका ७७.५ प्रतिशत रूसी भाषामें प्रकाशित होते थे और अखबारी

कागजका अधिकांश उत्पादनमें खर्च कर डालते थे। ८४ गैर रूसी समाचार पत्र विद्वानोंके विभिन्न दलों द्वारा निकाले जाते थे। जहां रूसी पत्रोंमें सिर्फ ८ गुनी वृद्धि हुई है, वहां गैर रूसी पत्रोंमें २६ गुनी। ये आंकड़े साफ-साफ बता रहे हैं कि सोवियट यूनियनने पहलेके औपनिवेशिक राष्ट्रोंको शिक्षाके क्षेत्रमें कितना आगे बढ़ाया है। सोवियट समाचार पत्रोंकी तुलना जब हम ब्रिटिश समाचार पत्रोंसे करते हैं तो एक और दिलचस्प बात यह मालूम होती है कि १९३७ में ब्रिटेनमें पत्रों-की कुल ३ करोड़ ६० लाख कापियां छपती थीं, उनका दो तिहाई भाग लन्दनके ही समाचार पत्रोंसे पूरा हो जाता था। लेकिन रूस में ऐसी बात नहीं है। उसके अधिकांश पत्र सोवियट राजधानीके बाहरसे निकलते हैं। इसका खास कारण गैर-रूसी पत्रोंकी संख्या में वृद्धि और सोवियटकी नयी सभ्यताको प्रोत्साहन देनेके लिये की गयी उनकी कार्यवाहियां हैं।

अखबारी कागजका उत्पादन

आजसे २५-३० वर्ष पहले सोवियट आज सरीखा शिक्षित और बाकर देश नहीं था। इसलिये कम पत्रोंका प्रकाशन स्वाभाविक था। लेकिन इस कमीका एक कारण यह भी था कि सोवियट सरकार उस समय अखबारी कागज अपने यहां नहीं तैयार करती थी और अधिकांश पत्र बाहरसे मंगाये हुए कागजपर ही छपते थे। लेकिन आज इसके बिलकुल विपरीत अवस्था है। समाचार पत्रोंको प्रकाशित करनेके लिये जितना भी अखबारी कागज आज आवश्यक होता है, सबका सब स्वदेशमें ही तैयार किया जाता है। १९१७ की क्रांतिके ११ वर्ष बाद जहां कुल समाचार पत्रोंकी छपी हुई कापियोंकी संख्या १करोड़से अधिक नहीं थी, वहां दूसरे ११ वर्ष बाद, जिसमें सोवियटकी दो पञ्च वर्षीय योजनाएं सम्मिलित थीं, १ करोड़की संख्या ३ करोड़ ८० लाख तकबढ़ी। इन बातोंसे यह स्पष्ट हो जाता है कि सोवियट समाचार पत्रोंके विकास और वितरणसे वे समस्याएं निकट सम्बन्ध रखती थीं, जिनका सोवियट जनताको आजसे पचीस-छब्बीस वर्ष पहले मुकाबला करना पड़ा था।

कुछ अद्वितीय बातें

सोवियट पत्रकार कलाकी कुछ बातें बिलकुल अद्वितीय कही जा सकती हैं। अन्य देशोंकी पत्रकारितासे उनमें कोई समानता नहीं। सोवियट समाचार पत्रोंके आफिसोंमें काम करनेवाले केवल ५० हजार पत्रकार ही सारे पत्रोंका निकाल लेते यह बात नहीं है। सैकड़ोंकी संख्यामें पत्रकार युद्ध मोर्चोंपर अपने कार्यमें लीन हैं और वहां अपनी महत्वपूर्ण सार्वजनिक सेवाओंके लिये सोवियटकी सम्मानप्रद उच्च उपाधियोंसे विभूषित किये जा चुके हैं। फैक्टरियोंमें काम करनेवाले मजदूरों, देहातोंके सार्वजनिक सेवाकार्यमें लगे हुए कार्यकर्त्ताओं, लाल सेनाके अनेक सैनिकों और नौसेनाके मांझियोंमें ऐसे पत्रकारोंकी संख्या बहुत अधिक मिलेगी, जो समाचार पत्रोंसे कुछ वेतन न पानेपर भी सार्वजनिक सेवाके लिये स्वेच्छासे पत्रकार बने हैं, और जहां वे रहते और काम करते हैं, वहांकी अच्छी और बुरी बातोंको सर्वसाधारणके सामने लाते रहते हैं। इन कार्योंका सम्पादन करनेमें वे अपने को गुप्त नहीं रखना चाहते। आरम्भमें अपनी इस साहसिक सार्वजनिक सेवाके लिये उन्हें बहुत अधिक मूल्य भी चुकाना पड़ा था, लेकिन ऐसे लोगोंकी संख्या मुट्ठीभर तो थी नहीं, जो फैक्टरीडाइरेक्टरों अथवा अन्य लोगोंके दबाव या दमनके चक्करमें आ जाते। इसलिये इनका काम उत्तरोत्तर बढ़ता गया। सार्वजनिक हित और मङ्गलकी प्रेरणासे स्वेच्छासे पत्रकार बननेवाले लोगोंकी संख्या १९३९ में ३० लाख थी।

सोवियट गणतन्त्र और पत्रकार

इन पत्रकारोंके प्रकाशन कम महत्वके नहीं होते। सच पूछिये तो सोवियट गणतन्त्र को व्यावहारिक रूप देनेमें इनकाहीअधिक भाग है। एक बार वर्तमान सोवियटके पिता महात्मा लेनिनने कहा था कि 'हमारे देशके प्रत्येक भोजन बनानेवाले महाराजको भी देशपर शासन करनेकी योग्यता प्राप्त करनी चाहिये।' इन पत्रकारोंने स्वर्गीय लेनिनके उक्त वाक्यको कार्य रूपमें परिणत करनेकी भरपूर चेष्टा की है। इन पत्रकारोंकी शिक्षा किसी खास शिक्षालयमें नहीं हुई है, बल्कि इन्होंने पत्रकारिताका ककहरा जगह-जगह दिवारोंपर चिपकाये गये समाचार पत्रों, राष्ट्रीय समाचर पत्रोंआदिके द्वारा सीखाहै और अपने व्यक्तिगत अनुभवका उपयोग करते हुए साप्ताहिक और पाक्षिक प्रकाशन निकालते हैं। इन प्रकाशनोंका उत्तरदायित्व विशेष स्थानोंपर काम करनेवाले लोगोंके दलपर है और उन दलोंके व्यक्ति अपने अवकाशके समयमें ठीक उसी प्रकार अपने सहकर्मियोंकी सहायतासे समाचार संग्रह करते हैं जिस प्रकार बड़े-बड़े समाचार पत्रोंके रिपोर्टर और सम्वाददाता सरकारी मुहकमों और सार्वजनिक संस्थाओंके सम्पर्कमें आकर करते हैं। वर्तमान युद्धमें सोवियट समाचार पत्रोंकी सेवाएं अत्यन्त प्रार्थनीय है।

जर्मनीके समाचार पत्र

बहुत दिनोंकी बात नहीं है, जब जर्मनी में और देशोंकी अपेक्षा समाचार पत्रोंको बहुत सी सहूलियतें मिली थीं, और कोई प्रतिबन्ध नहीं था। विलियम कैसरके समय में यद्यपि उच्चवर्गके लोगोंका बोलबाला था और आमजनताकी राजनीतिक स्थिति शोचनीय थी, तथापि उस वक्त भी समाचार पत्र पूर्ण स्वतन्त्र थे। उस समय भी जर्मनीमें हर तरहके समाचारपत्रों—छोटे, बड़े, उदार, अनुदार; रोमन कैथोलिक, समाजवादी, इत्यादि का बाहुल्य था। वे अपने-अपने मतको स्वतन्त्र रूपसे व्यक्त कर सकते थे। उनपर सेंसर नहीं था, और न किसीको पत्रकार पेशा अख्तियार करनेसे रोका जाता था। पिछले महायुद्धमें समाचारपत्रोंकी स्वतन्त्रताका अपहरण करनेकी कोशिश की गयी थी, उनपर फौजी सेंसर था, तथापि वहांके पत्र तत्कालीन राजनीति और युद्धोंके विषयपर लेख लिखते थे और अपने विचार व्यक्त करते थे।

वेलमार रिपब्लिकमें समाचार पत्रोंको पुनः पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त हुई; लेकिन यह स्वतन्त्रता चिरस्थायी न हो सकी। क्योंकि जर्मनीके राजनीतिक वातावरणमें उथल-पुथल मची हुई थी और गृह-युद्धसी परिस्थिति उत्पन्न हो रही थी। अतः समाचार पत्रोंपर पुनः प्रतिबन्ध लगाये गये। तत्पश्चात् कुछ ऐसी घटनाएं हुईं जिन्होंने जर्मनीके उन्नत और पवित्र पत्रकार जीवनको विषाक्त बना डाला। बड़े-बड़े औद्योगिक महारथियों ने आत्म-स्वार्थ सिद्ध करनेके लिये पत्र निकालने आरम्भ किये। प्रसिद्ध उद्योगपति ह्यूजेनबर्ग और उसके पृष्टपोषक पत्रोंकी सहायतासे जब हिटलरके हाथमें जर्मनीका भाग्यसूत्र आया,उस समय तक नाजी पार्टीके पत्र महत्वहीन और प्रभावहीन थे। लेकिन नाजियोंके राजसत्ता प्राप्त करते ही उनका प्रचार बढ़ने लगा,इसलिये नहीं कि वे अधिक उपयोगी हो गये, बल्कि इसलिये कि उनका खण्डन और विरोध करनेका परिणाम अपनी रोजीसे हाथ धोना था।

आरम्भमें हिटलरने समाचारपत्रोंकी स्वतन्त्रताको कायम रखनेका वादा किया सही; लेकिन सभी हिटलरी वादोंकी तरह यह वादा भी थोथा साबित हुआ। हिटलरने अपनी पूर्व योजनाको धीरे-धीरे कार्यान्वित करना शुरु कर दिया। 'रीखस्टाग'के अग्निकाण्डने कम्यूनिस्टोंके विरुद्ध आन्दोलन करनेका मौका नाजियोंको दिया। अतः कम्यूनिस्टोंके पत्रोंपर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। जब हिटलर अच्छी तरह अधिकारारूढ़ हो गया, तब कम्यूनिस्ट अथवा समाजवादी पत्रोंका अन्त कर डाला गया। तब हिटलरने लिबरल और कैथोलिक पत्रों की ओर दृष्टि फेरी। कम्यूनिस्ट पत्रोंकी तरह उन्हें तुरन्त ही कुचल नहीं दिया गया; बल्कि उनका अन्त करनेके लिये दूसरे तरीकोंसे काम लिया गया। आरम्भमें उनके दो-एक अङ्क जब्त किये गये और प्रकाशकोंको हिदायत दी गयी कि वे नये सम्पादकोंको नियुक्त करें—निश्चय ही ऐसे सम्पादकोंको जिनकी नाजियोंसे सहानुभूति हो। प्रकाशकोंको नाजियोंकी यह बात माननी पड़ी। इस तरहसे उपर्युक्त पत्र भी अपंग बना दिये गये।

सूचना और प्रचारके नये मन्त्री डाक्टर गोयेल्सने पत्रोंको यह सलाह दी कि उनकी आलोचनायें ऐसी होनी चाहिये, जिनसे नाजी संगठन कार्यको प्रोत्साहन मिले। जिस किसी पत्रने नाजियोंकी नीति तथा सरकारी कार्योंकी आलोचना की, उसने अपने ऊपर भयङ्कर संकट आमंत्रित कर लिया। ऐसे पत्रकार डा० गोबेल्सकी कोप-दृष्टिसे कदापि नहीं बच सकते और अवश्य ही दण्डित होते थे। प्रचार और सूचना मंत्री महाशय केवल इतनेसे ही संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने एक प्रेस कानून बनाकर एक ऐसा नियम स्थापित कर दिया जिसके अनुसार खास-खास व्यक्ति ही समाचारपत्रों में लेख इत्यादि निकाल सकते थे। यहूदी तथा दूसरे 'अवांछनीय'लोगोंका पेशसे सम्बन्ध विच्छेद कर दिया गया।

गोबेल्स विदेशी यात्रियोंके सामने यह डींग हांकते कि जर्मनीमें पत्रोंके ऊपर कोई सेन्सर नहीं है। यह बात ठीक थी। उन्होंने प्रेसपर कायम रखनेके लिये सेन्सरसे अच्छा प्रभावशाली तरीका निकाल रखा प्रतिदिन उनके मन्त्रिमण्डलसे प्रत्येक दकके नाम लिखित गुप्त हिदायतें जाती थीं जिनमें सम्पादकोंको दिन का कार्यक्रम बतलाया जाता था, घटनाको कैसा रूप दिया जाय। अधिक महत्व दिया जाय; किस को न छापना चाहिये तथा किसे हीन बतलाना चाहिये, इत्यादि। को यह भी बतलाया जाता था कि बातपर घृणा व्यक्त करना चाहिये किसपर क्रोध प्रकट करना चाहिये। की आज्ञाओंका निरादर करनेवालों यातना-शिविरका नारकीय जीवन रहता था। इस तरह गोबेल्सने सभी चार पत्रोंको एकही रंगमें रंग दिया उनको एकही पथका पथिक बना दि हां, भाषाकी भिन्नता अब भी 'फ्रांकफर्टर न्यूटिंग' जैसे पत्रोंको शिक्षित वर्गके लोग पढ़ते हैं। अतः भाषा विनम्र और मधुर होती है। पत्रोंको आम जनता पढ़ती है उनकी परिष्कृत नहीं है।

ऊपर कहा जा चुका है कि प्रेस के एक नियमके अनुसार जर्मनीमें विशेष ही समाचार पत्रोंमें लेख भेज हैं; यही नियम प्रकाशकोंके ऊपर भी कर दिया गया जिसके अनुसार प्रकारके व्यक्ति ही प्रकाशक होनेके कारी हैं। यहूदी और 'अवांछनीय' प्रकाशक बननेका अधिकार छीन गया। हिटलरको राजसत्ता दिलाने ह्यूजेनबर्गका इतना बड़ा हाथ था, इस कानूनके शिकंजेसे न बच सका उसकी महानता तथा पत्र-व्यवसाय प्राय हो गया। उसके साथ-साथ और कितने ही प्रकाशकोंको उसी दशाको होना पड़ा।

और तब पत्र व्यवसायपर अन्तिम कठोर प्रहार किया गया। एक आज्ञा घोषित किया गया कि जर्मनीके केवल एक समाचार पत्र ही रह पाठक समझ सकते हैं कि नाजी अलावा वह हो ही क्या सकता है।

फलोंकी टोकरी

——:*:——

(श्री गंगाप्रसाद 'कौशल')

कलकत्ते से चलकर ट्रेन लगभग ११ ग्वालन्दू पहुंची। ग्वालन्दूसे मुझे चांद- लिये जहाज पकड़ना था। एक कुलीसे उठवाकर मैं जहाजकी ओर बढ़ा। सीका ठिकाना न रहा, जब मैंने बिल्कुल खाली देखा। यद्यपि मेरे टिकट इण्टरका था, परन्तु मैंने इण्टरकी अपेक्षा थर्डका डेक ज्यादा अच्छा आरामदेह समझा। मैंनेबड़े इतमीनान- का विस्तर वहां फैला दिया। फिर र इधर-उधर घूमा। चारों तरफ पानी ही दिखायी दिया। मुझे भ्रम हुआकि यह जहाज किसी समुद्रमें खड़ा है। का विद्यार्थी तो था नहीं, जो सब और नदियोंके नाम रटे पड़े हों। तो मैं भूगोलके नामसे घबड़ाता था। गोल कड़ा होता ही है और कुछ मेरे साहबकी सूरतने उसे कड़ा बना दिया मालूम मास्टर साहबकी पैदाइश के दिनोंकी थी क्या? हर वक्त लड़कों खानेको तैयार बैठे रहते और यही था कि लड़के भूगोल छोड़-छोड़कर स ले रहे थे। किस्से-कहानियोंसे इससे ही दिलचस्पी रही है। अब आप सकते हैं, मैं इतिहासका विद्यार्थी— सुद्र और नदियोंसे क्या मतलब? मेरे पर जाननेकी बड़ी इच्छा हुई कि यह सा समुद्र है। मैंने एक सज्जनसे जो ख रहे थे, बड़ी नम्रतासे पूछा—"भाई ! क्या आप यह बतलानेकी कृपा कि हमारा जहाज कौन-से समुद्रमें है?"

बोले—'एटा कोनो महासमुद्र, किन्तु नाम आमी जानी न।'

बंगलाका विद्यार्थी तो कभी नहीं किन्तु मेरे मित्र बङ्गाली जरूर रहे हैं। महिला मित्रोंने मुझपर बङ्गला के लिये बड़ा ही जोर डाला। ईश्वर- विद्यासागर लिखित 'वर्णपरिचय' एक भी, कितनी बार खरीदी—लेकिन मैं मस्त-मौला हूं कोई काम नियमानु- करनेसे शायद खुदा मियाने मुझे कर दिया है। मैंने थोड़ी देर बाद उनके का अर्थ तो लगा लिया। किन्तु फिर बोलनेका साहस न हुआ—लेकिन पीछे रहना मेरे स्वभावके विपरीत वाद-विवाद प्रतियोगितामें कितनी ही विजयी हो चुका हूं। गलेमें तिरछा डाल कितनी बार रङ्गमंचसे नेताओंकी ओंके सामने लेक्चर भी दे चुका हूं , कवि सम्मेलनोंमें तो मैं इस वाक- से ही प्रिंसिपल-प्रोफेसरसे लेकर कालेज कमजोरसे कमजोर छात्र तकको हंसनेके बाध्य कर देता हूं। और तो और तरकारी बेचनेवाली कुजड़िनें भी हैं कि बाबू बहुत बोलनेवाला जीव इसीलिये शायद वे मुझे सब्जी दूसरे अपेक्षा कममें ही दे देती हैं। अतः मैंने आश्चर्य प्रकट करते हुए उन सज्जनसे 'आप यहांके निवासी होते हुए भी इसका नाम नहीं जानते !'

बोले—'आमी एकदम जानी न।'

वहीं ही एक और महाशय, जो अंधेरे में खड़े मेरी फलोंसे भरी टोकरीकी ओर गृद्ध-दृष्टिसे देख रहे थे, आगे आकर बोले— 'भाई ! हाम ईठांका नाम बोलने सकता हाय, यदि आप हमरा मुखको मिष्टी करायेगा।'

बस फिर वे मेरी टोकरीकी ओर लोलुप दृष्टिसे ताकने लगे।

मैंने कहा—'भाई, खानेके लिये वैसे तो मैं आपको कुछ फल दे देता—परन्तु ये फल तो मेरी श्रीमतीजीने अपनी एक सहेलीको देनेके लिये भेजे हैं। उन्होंने मुझसे यह भी कह दिया है कि मैं भी अपने खानेके लिये इसमेंसे फल न निकालूं—यदि खानेकी इच्छा हो तो बाजारसे खरीद लूं। ऐसी हालतमें भाई, मैं ये फल आपको कैसे दे सकता हूं ?'

बस, फिर वे सज्जन न मालूम क्या सोच- कर बिना एक शब्द कहे जहाजके निचले भागमें चले गये। मैं भी नाम जाननेके झगड़े को छोड़ अपने विस्तरपर पैर फैलाकर लेट गया। कुछ सामान मैंने अपने सिरहाने और कुछ पैताने बड़ी होशियारीसे रख लिये।

आंख लगे आध घण्टा भी न हुआ था कि मैं एक स्वप्न देखने लगा। स्वप्नमें वे ही सज्जन, जो मुझसे बात करते-करते मेरी बातका बिना उत्तर दिये ही जहाजके निचले भागमें चले गये थे, मेरी फलोंस भरी टोकरी लिये भागे जा रहे थे। मैं जोरसे चिल्ला पड़ा—'अबे साले चोर, उल्लूके पट्ठे, मेरी चीज तू नहीं ले सकता—ठहर तो साले— अभी तेरा खून करता हूं।'

यह मैं इतने जोरसे चिल्लाया कि मेरी नींद खुल गयी। इधर मैंने देखा—मेरे पाससे एक टिकिट कलक्टर भागा जा रहा है।

जरा देरमें ही वह दो बन्दूकधारी सिपा- हियोंको लेकर लौट आया और मेरी तरफ इशारा कर उनसे बोला—'बरा खटरनाक आदमी हाय। चोर शाले हरामी कहटा और खून करना मांगटा। इसको पकर लो।'

मैं साहबको देखते ही निहायत अदबसे खड़ा हो गया। मैंने कहा—'माफ कीजिये— आपको मेरी तरफसे गलतफहमी हुई। मैं उस वक्त एक स्वप्न देख रहा था।'

'हम एः कुच नहीं जानटा। हम टिकिट मांगटा, टुम खून करना मांगटा। हम अगर नहीं भागटा टो टुम खून कर देटा।'

अब तो मैंने सोचा—यह कमबख्त यों नहीं मानेगा। अब मुझे अंग्रेजी बोलनी ही पड़ेगी। मैंने अपना कुछ ऐसा नियम बना रखा है कि मैं अंग्रेजीका व्यवहार बहुत ही कम किया करता हूं और अंग्रेजोंसे ज्यादा- तर मैं अपनी मातृभाषा हिन्दीमें ही बात- चीत किया करता हूं। कारण, जब अंग्रेज हिन्दुस्तानमें आकर एक हिन्दुस्तानीसे बातचीत करते समय भी अपनी मातृभाषा अंग्रेजी नहीं छोड़ते तो मैं ही क्यों अपनी मातृभाषाको छोड़ने लगा? अगर उन्हें हमें और हमारे ग्रन्थोंको समझना है तो हमारी मातृभाषा सीखें। प्यासा कुएंके पास जाता है, कुआं प्यासेके पास नहीं। परन्तु यहां तो मामला ही टेढ़ा था। अगर मैं जरा भी देर करता तो मुझे जरूर ही वे तीनों पकड़ ले जाते। अतः मैंने साहबसे अंग्रेजीमें गिटपिट करना शुरू कर दिया। बस फिर तो साहब इतना खुश हुआ कि वह मेरा दोस्त हो गया और खूब ही खिलखिलाकर हंसा।

अपनी दोस्तीको स्थायी रूप देनेके लिये मैंने उसी टोकरीसे कुछ फल निकाले और साहबको भेंट किये। साहबने बड़ी खुशीसे उन्हें लिया, फिर तो हम दोनों बहुत देर तक बातें करते रहे।

साहबसे हमें पता चला कि हमारा जहाज समुद्रमें नहीं, बल्कि नदियोंमें खड़ा है। पद्मा, फुलेश्वरी, मेघना, ब्रह्मपुत्र आदि नदियोंके एक साथ मिलकर बहनेसे ऐसा मालूम होता है मानो यह कोई बड़ा समुद्र हो। फिर इन नदियोंका पाट कहीं-कहीं तो ग्यारह-ग्यारह मील तक हो जाता है। मुझे उनसे यह भी मालूम हुआ कि हमारा जहाज यहांसे आठ घण्टे बाद यानी दो बजे खुलेगा और लगभग रातके दसबजे चांदपुर पहुंचेगा।

इस समय प्राचीमें बालअरुण बड़े ही भव्य प्रतीत हो रहे थे। अपनी मनोहर अरुणिमा वे प्रकृतिकी सभी वस्तुओंमें भरकर उन्हें स्वर्ण से भी अधिक सुन्दर, देदीप्यमान और मनोमुग्धकारी बना रहे थे। नदियोंके किनारे किनारे रम्भाके बनके बन बड़े ही सुन्दर दृष्टिगोचर होते थे। ऐसा मालूम पड़ता, मानों रम्भा-सैन्य क्रान्ति करनेपर तुल गया है और सुसज्जित हो आगे बढ़ने के लिये प्रस्तुत है। जब उनके पत्तोंपर भग- वानभुवन-भास्करकी किरणें पड़ती थीं तो मनमें कितने ही प्रकारके भाव उदय होते थे। नदियां हहर-हहर कर बह रही थीं। जल और थल सभी आनन्द-विभोर थे। मालूम पड़ता था नन्दन-निकुञ्जका सौंदर्य यहां बिखर पड़ा है। ताड़, नारियल और सुपारीके वृक्षोंका समूह अपना मस्तक ऊंचा किये किसी स्वाभिमानी प्रहरीके समान खड़ा था। विविध प्रकारके पक्षियोंका कल- कूंजन हृदयमें नयी-नयी भावनाएं और उमंगे भर रहा था। ऐसा प्रतीत होता था मानो यहां प्रकृतिपरी सोलहो शृङ्गार किये थिरक रही है।

मैं प्रकृतिकी शोभा देखनेमें इतना तल्लीन हो गया कि मुझे यह पता ही नहीं चला कि अब तक ११ बज चुके हैं। एक सज्जन, जो मुझे बड़ी देरसे देख रहे थे, बोले—'क्या आप कवि हैं—या फिलासफर? मैं लगभग ६ बजे सवेरेसे आपको ऐसे ही बैठे देख रहा हूं। क्या आप यहां खाना-वाना नहीं खायेंगे? चांदपुर तक आपको भात-माछ नहीं मिलेगा।'

मैंने कहा—'भाई ! मैं भात-माछ तो खाता ही नहीं।'

'तो फिर आप क्या खाते हैं?'— उन्होंने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा।

'आप इतना आश्चर्य क्यों करते हैं? कोई अनोखी चीज मैं खाता हूँ, यह बात नहीं। मैं भात-माछके बजाय रोटी-दाल और साग-तरकारी खाता हूं।'

अग्नि-कण

——:*:——

अग्नि-कण हूं मैं

(१)

यद्यपि बहुत लघु किन्तु, गुरु-गति-तेज-धर हूं मैं
नव-दीप्ति-वीणाका मनोहर प्रथम स्वर हूं मैं
आलोकसे जिसके चमत्कृत हो रहा संसार
उस विभापतिका चिर अकिंचन विवत-चर हूं मैं
मंजु-मन, आलोक-जीवन, अरुण-तन हूं मैं
अग्नि-कण हूं मैं

(२)

निर्झर, सरित, सागर, पवन यद्यपि बहुत गतिमान
पर, सामने मेरे सभी हैं शिथिल और निष्प्राण
तीव्र है अति वेग मेरा प्राण बन्धन-हीन
रहता मुझे बस एक ही भावी जगतका ध्यान
सृजक, पोषक और नाशक तत्व धन हूं मैं
अग्नि-कण हूं मैं

(३)

लघु बीजमें आविष्ट है ज्यों निखिल व्यापक-सार
सुमनमें ज्यों सुरभि है, ज्यों व्योममें विस्तार
जैसे छिपे हैं बीनमें शत छन्द-स्वर-झङ्कार
उस भांति मुझमें मूर्त हैं जगके अखिल व्यापार
साम्य, सुन्दर, सत्यका एकीकरण हूं मैं
अग्नि-कण हूं मैं

—'कन्हैया'

'अरे भाई, ये चीजें तो आपको अब और भी नहीं मिलेंगी। अभी खाना हो तो खा लीजिये—नहीं तो फिर आपको १० बजे रात तक टापना पड़ेगा—परन्तु हां, आपके पास तो फलोंसे भरी टोकरी है। आप अपनी भूख फलोंसे मिटा सकते हैं।

'शुक्रिया भाई! आपने खूब बताया। मैं अभी उतरकर खाना-वाना खाये लेता हूं। फलोंकी टोकरी मेरे पास है जरूर—परंतु मैं इसका रक्षक-मात्र हूं।'

'क्यों भाई! ऐसा क्या?'

'असल बात यह है कि कुमिल्लामें श्रीमती जीकी एक दोस्त रहती हैं—मिसेज चटर्जी। उनके लिये ही मेरी श्रीमतीजीने यह फलोंसे भरी टोकरी भेजी है। इसमेंसे मुझे एक फल खानेका भी हुक्म नहीं।'

'तो क्या मि० चटर्जी आपके मित्र नहीं।'

'अरे भाई! मेरा परिचय तो केवल मिसेज चटर्जी और उनके बच्चोंसे ही है—वह भी उस समय हुआ था, जब मिसेज चटर्जी लखनऊ अपने भाईके घर आयी थीं। 'मि० चटर्जी छुट्टी न पा सकनेके कारण लखनऊ न आ सके थे।'

'तो आपको घरका पता लगानेमें बड़ी दिक्कत होगी।'

'जी नहीं, इस मुश्किलका सामना तो मैं अपने एक कप्तान मित्रकी सहायतासे सहूलियतसे कर लूंगा। पहले मैं कप्तान साहबके यहां जाऊंगा—फिर मिसेज चटर्जीके यहां।'

उनके उत्तरकी प्रतीक्षा किये बिना ही मैंने चायवालेको आवाज दी। चाय और डबल रोटी भरपेट खाकर मैं फिर निश्चिन्त हो गया। चार रसगुल्ले और चार आनेके केले भी मैंने खाये।

उधर दोका घंटा बजा और इधर जहाज भो विचित्र प्रकारकी आवाज कर धीरे-धीरे चला। जहाजके पहिये अपार जलराशिको बड़ी विचित्रतासे काट रहे थे। मैं लगातार घंटों उसे देखता रहा। रास्तेमें एक जगह हमारा जहाज रुका, किन्तु तटपर नहीं, तटसे बहुत दूर। मुझे डोंगियोंपर कुछ आदमी चिल्लाते हुए जहाजकी ओर आते दिखाई दिये। मैंने समझा, शायद डाकुओंका कोई हमला हुआ है। मैं अपनी बेंत उठाने दौड़ा और अपना सब सामान इकट्ठा करने लगा। मैं यह देखकर कि जहाजके सभी सज्जन हो-हल्ला मचा रहे हैं और डोंगियोंकी ओर बड़े गौरसे देख रहे हैं, और भी घबरा गया। मुझे घबराया देख एक साहब बोले—'क्या आपको यहां उतरना है?'

मैंने कहा—'यहां—डाकुओं में?'

वे बोले—'आपकी बात मैंने नहीं समझी फिर वे डोंगियोंकी तरफ उचक उचककर देखने लगे।

मैंने कहा—'क्या आपके पास कोई डण्डा नहीं है?'

उन्होंने पूछा—'डण्डा किस लिये?'

मैं बोला—'वाह! आप भी खूब हैं—डाकुओंका हमला हो रहा है और आप निश्चिन्त बैठे हैं। बड़े भयानक डाकू मालूम पड़ते हैं—इतनी छोटी छोटी डोंगियोंके ही बलपर इतने बड़े समुद्रमें घुस आये। अरे! आप हंसते हैं, होशियार हो जाइये—अपना सामान संभालिये—समुद्री डाकू बड़े खतरनाक होते हैं।'

वे बोले—'आप पागल तो नहीं हैं? ये डोंगियां डाकुओंकी नहीं बल्कि रसगुल्लेवालोंकी हैं।'

'हैं, तो क्या ये डाकू नहीं—रसगुल्लेवाले हैं? नहीं, नहीं, यह कभी नहीं हो सकता। यदि ये रसगुल्लेवाले होते तो जहाजमें इतना हो-हल्ला क्यों मचता? और लोग घबराये-से इधर-उधर क्यों दौड़ते?'

अरे भाई! आप भी अजीब आदमी हैं। यहां जहाज थोड़ी देर ठहरता है। सबको रसगुल्ले लेनेकी जल्दी पड़ी है, इसलिये ऐसा हो रहा है। मालूम पड़ता है, आप यू० पी० की ओरके हैं।'

इतनेमें डोंगियां जहाजसे आकर लग गयीं। मैंने देखा—सचमुच रसगुल्ले ही थे—कुछ संदेश भी थे। मैं अपने ऊपर झल्ला उठा। बोला—आखिर ये कमबख्त इतना चिल्लाते क्यों हैं?—पर सच पूछिये तो मैं वास्तवमें फिर बड़ा झेंपा।

दस बजे रातको मेरा जहाज चांदपुर पहुंचा। मैं जल्दीसे कुलीको बुलाने नीचे गया। जल्दी इसलिये थी कि चांदपुरसे मुझे चटगांव मेल पकड़नी थी और यदि कोई पहले न पहुंचे, तो गाड़ीमें जगह मिलनी बहुत मुश्किल हो जाती है।

मैं आठ आनेमें एक कुलीको तय करके ऊपर लाया। ऊपर आकर देखता हूं कि मेरी फलोंसे भरी टोकरी नदारद। मैं बड़ा परेशान हुआ, इधर-उधर देखा, पर कोई फल नहीं।

इतने ही में एक वंगदेशीय महिला एक टोकरी लिये हुए निकली। मैं आगे बढ़ा—गौरसे उसे देखा—परन्तु वह मेरी टोकरी न निकली। खैर, दुखी होता हुआ ट्रेन पकड़नेके लालचसे जल्दी जल्दी चल पड़ा। खुदाका शुक्र है, जगह तो ऐसी मिल गयी कि मैं आरामसे लेट भी गया। थका तो था ही, लेटते ही नींद आ गयी।

कुमिल्ला पहुंच कर मैं अपने कप्तान मित्रके बंगलेपर गया। कप्तान साहब कहीं दौरेपर गये थे। नौकरने मुझे देखते ही पहचान लिया। बड़ी सेवा-शुश्रूषा की। नहा धोकर और खाना खाकर मैं अपनी श्रीमती जीका पत्र मिसेज चटर्जीको देनेके लिये नौकरके साथ उनके घर गया।

मिसेज चटर्जी बैठकमें कोई उपन्यास पढ़ रही थीं। मुझे देखते ही उछल पड़ीं—'ओह आप, विमला बहन तो अच्छी हैं?'

'जी हां, आपकी बड़ी याद करती हैं। यह पत्र आपके लिये है। हां, मि० चटर्जी कहां हैं?'

'वे तो बाथरूममें हैं। आज बड़ी देरमें सोकर उठे। कल ही रात तो वे भी ग्वालंदूसे वापस आये हैं।'

मैंने कहा—'अच्छा, तो हम और वे दोनों एक ही जहाज और एक ही ट्रेनसे आये?'

'अच्छा, यह बतलाइये, आप सीधे यहां क्यों नहीं आये? यह मैं कभी नहीं सह सकती कि आप दूसरोंके घर ठहरें।'—मिसेज चटर्जी बिगड़ कर बोलीं।

'बहन जी, इसमें गुस्सा होनेकी कोई बात नहीं। मैं अपने एक फौजी दोस्तके घर ठहर गया हूं। यहां वहां सब एकही मामला है। पर हां, एक बातका मुझे बड़ा दुःख रहेगा। विमलाने आपके लिये फलोंसे भरी एक टोकरी भेजी थी। चांदपुर तक तो वह मेरे साथ सुरक्षित रही—चांदपुरमें मैं जल्दी से कुलीको बुलाने गया। लौटकर आकर देखा तो टोकरी गायब। मुझे वास्तवमें बड़ा दुख हुआ। फलोंके अतिरिक्त वह टोकरी विमलाने खास तौरसे आपके लिये बनायी थी। अहा! कितने सुन्दर अक्षरोंमें उन्होंने उसके एक कोनेमें लिखा था—

अपनी अमला को
—विमला।'

'ओह, मैं अपनी विमलाकी भेंट न पा सकी—इसका मुझे दुख रहेगा। जहाजमें भी अब तो चोरियां होने लगी! अच्छा,और तो सब अच्छे हैं?

—मिसेज चटर्जीने कहा।

'जी हां, आप लोगों की कृपा है।'

इतने ही में मि० चटर्जी धोती ओढ़े हुए बैठकमें आ गये। अमला बहनने उनको मेरा परिचय दिया। उन्होंने मुस्कराकर मुझसे हाथ मिलाया और कहा—'मुझे आपसे मिलकर बड़ी खुशी हुई। आपकी श्रीमती जी तो सानन्द हैं?'

मैंने कहा—'सब आपकी कृपा है।'

फिर वे बोले—'मैं भी तो ग्वालंदूसे आया हूं। मैं तो आपको चांदपुरमें बड़ा ढूंढ़ता रहा। न मालूम आप कि[...] बैठे?'

मैंने उनके चेहरेकी ओर गौ[...] सूरत पहचानी-सी लगी। मैंने [...] भी मुझे परिचितसे लगते हैं।'

वे बोले—'परिचित न होता [...] बोझा मैं क्यों ढोता? तुम[...] तुम्हारी श्रीमती जीका फोटो तो [...] में है ही।'

मैं आश्चर्य-चकित था। बहन [...] भी कुछ कम ताज्जुब न था।

फिर मि० चटर्जी अन्दर गये [...] लिपटी कोई चीज बाहर ले आये।

मिसेज चटर्जी बोलीं—'यह [...]

वे बोले—''यह एक चीज है [...] नहीं जानती। मैं इसे रातमें ला[...]

'बस फिर उन्होंने उस क[...] दिया।

मैं चौंक पड़ा—वही फलों[...] थी। वे पढ़ने लगे—

'अपनी अमला[...]
—विमला[...]

मैं फिर चौंका। बहन [...] आश्चर्य करने लगीं।

मि० चटर्जीने टोकरी मेरी त[...] मैंने वह टोकरी बहन अमलाको [...] दी। अमलाने अपने दोनों हाथों[...] लिया। मैं मुस्करा उठा। मि[...] हंस पड़ी।

मि० चटर्जी बोल उठे—'भाई[...] मैंने तुम्हारा बोझ हल्का किया। यहां तककी मुझे बोझकी ढुलाई [...] चाहिये।'

बस फिर हम सब खिलखिला [...] पड़े।

महिलाओंका युद्धमें योग

——:॰:——

(लेखिका—श्रीमती द्रौपदीदेवी ओझा)

आजकल युद्ध व्यक्तियोंमें नहीं, राष्ट्रों [illegible]ता है और एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्रसे [illegible]नी सम्पूर्ण जनशक्ति और साधनोंसे [illegible]ता है। महिलाएं इस जन-शक्तिसे अलग [illegible] हैं और उनके लिये भी यह अनिवार्य [illegible]कि अपने हिस्सेकी देश-सेवा करें। आज [illegible]रमें प्रकाश और अन्धकारकी दो अति[illegible]शालिनी शक्तियोंमें भयङ्कर संघर्ष हो [illegible] है। अमेरिका, रूस, ग्रेट-ब्रिटेन और [illegible] वर्तमान मानवताके रक्षक और जर्मनी [illegible]पान और इटली मानव-सभ्यताके विध्वं-

स्वतन्त्र चीनकी एक सूती मिलमें दिन भर काम करनेके बाद महिलाएं घर जा रही हैं। इस मिलमें सैनिक और असैनिक उपयोगकी वस्तुएं प्रस्तुत की जाती हैं।

[illegible]हे जाते हैं। वर्तमान युद्ध-स्थितिको [illegible]ते हुए अब मित्र राष्ट्रोंकी विजय निश्चित-[illegible] हो गयी है। मित्र राष्ट्रोंकी विजय यात्रा [illegible]सफल बनानेमें जहां पुरुष युद्ध क्षेत्रों और [illegible] सामग्री तथा शस्त्रास्त्र उत्पादनमें अपने [illegible] धैर्य, वीरता और अदम्य साहसका [illegible]य दे रहे हैं, वहां मित्र-राष्ट्रोंकी स्त्रियों[illegible] त्याग, परिश्रम, बलिदान और देशके [illegible]र्तव्य एवं युद्धोत्तर शान्ति संस्थापनके [illegible]प्रयास कम महत्वपूर्ण नहीं है। बल्कि [illegible]सी मित्र राष्ट्रोंकी अर्द्धशक्तिसे भी [illegible] प्रमाणित हो रही हैं। उन्होंने अपनी [illegible]सतासे प्रमाणित कर दिया है कि [illegible]कालमें भी वे पुरुषोंके बराबर ही कार्य [illegible] सकती हैं।

सोवियट रूस

[illegible]सोवियट रूसके पुरुष सैनिकोंने जो महती [illegible]जाएं प्राप्त की हैं, उनमें रूसी नारियोंके [illegible] प्रयास, अतुलनीय साहस, अपूर्व त्याग [illegible] अदम्य शक्ति भी उनके आधार रहे हैं। [illegible] रणबांकुरे युवकोंकी तरह उनकी वीरा-[illegible]ओंने भी शत्रुका दमन करनेमें अपूर्व [illegible]स और आदर्श त्यागका परिचय दिया [illegible] पहले युद्ध छिड़नेपर बच्चों और स्त्रियों[illegible] एक श्रेणीके अन्तर्गत समझकर उन्हें [illegible]ही निरापद स्थानमें रखनेका प्रबन्ध किया [illegible]ता था। युद्ध करना केवल पुरुषोंका [illegible] समझा जाता था, किन्तु आज शस्त्रा-[illegible] होकर स्त्रियां प्रत्यक्ष रूपसे संग्राम [illegible]ले रही हैं। आज रूसी नारी सम-[illegible]के अग्र भागमें खड़ी होकर तोप और [illegible]गन चलाती हुई संसारके प्रसिद्ध [illegible]न-चालकोंके साथ होड़ लगाती हुई, [illegible] देश-भक्तिका परिचय दे रही हैं।

वर्तमान लाल सेनामें नारियां जेनरल भी हैं' नारी प्रत्येक क्षेत्रमें पुरुषोंके साथ सोवियट रूसके शत्रुओंका ध्वस्त कर रही हैं।

रूसकी वायु-सेनामें महिलाओंका विशेष स्थान है। उड़ाके सैनिक तथा हवाई छतरी से उतरने वाली सेनामें अनगिनत रूसी महिलाएं पुरुषोंके समान काम कर रही हैं। इस कार्यमें सोवियट महिलाएं अन्य देशोंके सैनिकोंसे अधिक कुशल कही जाती हैं। मशीनगन आदि चलानेमें भी रूसकी स्त्रियां लाल सेनाके सैनिकोंसे किसी तरह पीछे नहीं हैं। सोवियट रेडक्रास (अस्पताली दल) रूसी महिलाओंके ही अधीन है। युद्धमें बेतार के तारका संचालन, पत्र वाहक, गुप्तचर आदि का अधिकतर काम सोवियट रूसकी युव-तियां ही कर रही हैं। वर्तमान युद्धमें छापा-मार सेनामें भी रूसी महिलाओंके भाग लेनेके कई समाचार मिले हैं।

इस समय रूसमें ऐसा एक भी सङ्गठन नहीं है, जिसमें महिलाएं पुरुषोंके समान ही काम न करती हों। रूसी नगरोंमें अग्नि-काण्डसे रक्षा करनेके लिये जो दल नियुक्त किये गये हैं, उनमें अधिकतर युवतियां ही हैं। फायर ब्रिगेडके इञ्जिनोंमें भी स्त्रियां ही कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त हजारों रूसीनारियां डाक्टर, नर्स, रेडक्रासकी स्वयं-सेविकाएं आदि हैं, जो युद्ध प्रारम्भ होते ही मोर्चोंपर चल पड़ी थीं। देशपर सङ्कट आनेपर स्त्रियां अपनी अग्नि परीक्षा देनेको तैयार हो गयीं। युद्धके तीन वर्ष जानेपर भी स्त्रियोंके उत्साहमें कोई कमी नहीं हुई, बल्कि युद्ध ज्यों-ज्यों बढ़ता जा रहा है, त्यों-त्यों अधिकाधिक उत्साह और धैर्यके साथ वे प्रत्येक क्षेत्रमें कार्य कर रही हैं। वे अधिक परिश्रम करनेसे न तो थकती हैं और न अधिक घण्टे काम करनेसे घबड़ाती ही हैं। कोयलेकी खानों तकमें काम करना उन्होंने स्वीकार कर लिया है।

रूसी महिलाओंने युद्धके आरम्भमें ही सबसे पहले जिस कामको किया, वह यह था कि उन्होंने सैनिक सेवाके लिये अपने-अपने पति, पिता, पुत्र और भाईको अवकाश दे दिया और स्वयं उनके कार्यका भार उठा लिया। उन्होंने सोवियट सरकारसे यह प्रतिज्ञा की थी कि कोई भी कल, मशीन या हल बेकार नहीं रहने दिया जायगा। युद्धके प्रारम्भिक कालमें एक करोड़ ९० लाख स्त्रियां खेतीका काम करने जुट पड़ी थीं। अनेक कारखानोंमें केवल स्त्रियां ही कार्य करती हैं और उन्होंने उत्पादनमें असा-धारण वृद्धि की है। लगभग ९ लाख स्त्रियां ऐसे पदोंपर हैं, जिनके लिये इंजिनियरिंगकी शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक है। ८ हजारसे अधिक स्त्रियां तो केवल इंजिन-ड्राइवरका कार्य कर रही हैं। हजारोंकी संख्यामें मोटर ड्राइवर, स्टेशन मास्टर, और इंजिनियरके महत्वपूर्ण कार्य महिलाएं ही योग्यतापूर्वक कर रही हैं।

सोवियट सरकारकी इच्छा यद्यपि यह नहीं है कि मोरचोंपर तथा युद्ध-क्षेत्रमें स्त्रियों से काम लिया जाय, तथापि हजारों स्त्रियां स्वयं रणक्षेत्रमें जाकर वीरतापूर्वक शत्रुसे लड़ रही हैं। उन्हें वहां जानेसे कोई रोक नहीं सकता। वे युद्ध-भूमिमें अपनेको मृत्युके खतरे में डालती हुई अतुलनीय साहस प्रदर्शित कर रही हैं। उनका अदम्य उत्साह सोवियट रूसके गौरवके अनुरूप ही है।

ग्रेट ब्रिटेन

ब्रिटेनकी स्त्रियां वर्तमान युद्धकालमें अपने देशकी सब तरहसे सेवा कर रही हैं। वे प्रायः प्रत्येक क्षेत्रमें काम कर रही हैं। फैक्टरियों, दफ्तरों, अस्पतालों तथा सेवा-दलोंमें वे बड़ी लगनके साथ काम करती हैं। इसके अतिरिक्त भी बहुसंख्यक स्त्रियां ऐसी हैं जो युद्ध-प्रयास सम्बन्धी अन्य कार्योंमें संलग्न हैं। हजारों स्त्रियां दिन-रात वायु-यानोंकी फैक्टरियोंमें काम कर रही हैं। वे उन वायुयानोंके निर्माणमें सहायता पहुंचा रही हैं, जो जर्मनीके ऊपर जाकर बम-वर्षा करते हैं, जो रूसकी सहायताके लिये भेजे जाते हैं और जो युद्धके विभिन्न मोर्चोंपर जाकर लड़ते हैं। पहले हवाई जहाजोंकी फैक्टरियोंमें काम करनेवाली स्त्रियोंकी संख्या बहुत कम थी। उन्हें उंगलियोंपर गिना जा सकता था। आज अधिकांश फैक्टरियोंके अन्दर काम करनेवालोंमें से ९० प्रतिशत स्त्रियां हैं। यह संख्या भी उत्तरोत्तर बढ़ती ही जा रही है और इस बातकी बहुत संभावना है कि उत्पादनका अधिक विस्तार

युद्ध मोर्चेपर अमेरिकन अभिनेत्री मार्लेनी डीटरिच। सैनिक अस्पतालमें एक रुग्ण सैनिकका मनोरञ्जन कर रही है।

केपटीके सैनजोस शिशु विद्यालयमें एक शिक्षिका बच्चेको पढ़ा रही है। वे

होने तथा फौजमें और अधिक पुरुषोंके भर्ती होनेके फलस्वरूप स्त्रियोंकी यह संख्या बढ़कर ७० प्रतिशत हो जाय। हवाई फैक्टरियोंमें जो स्त्रियां काम करती हैं, उनका काम प्रायः बड़ी निपुणता और कारीगरीका होता है। पहले इस तरहका काम केवल पुरुषोंसे ही लिया जाता था और कहा जाता था कि स्त्रियां इस कामके उपयुक्त नहीं हैं। लेकिन आज ज्यादातर स्त्रियां ही काम कर रही हैं। वे रेडियो, तार, तथा यन्त्रोंपर काम करती हैं। एक संगठनका नाम महिला गृह-रक्षक दल है। इसमें स्त्रियां स्वेच्छासे भरती होती हैं। उन्हें राइफल चलाने, युद्ध का नकशा पढ़ने तथा इस तरहके अन्य कार्य करनेकी शिक्षा दी जाती है। आज कल इस दलमें कई हजार स्त्रियां शामिल हैं। सारे देशमें इस संगठनकी शाखाएं फैली हुई हैं। प्रतिदिन स्त्रियोंकी भर्ती होती रहती है।

ब्रिटेनमें एक भी ऐसा संगठन नहीं है, जहां स्त्रियां पुरुषोंके समान ही काम न करती हों, नगरोंमें अग्निकाण्डसे रक्षा करनेके लिये जो दल नियुक्त किये गये हैं, उनमें साधारणतया युवतियां ही हैं। फायर ब्रिगेड के इञ्जिनोंमें भी युवतियां ही कार्य करती हैं। इसके अतिरिक्त सहस्रों स्त्रियां डाक्टर नर्स रेडक्रासकी स्वयंसेविकाएं आदि हैं। ब्रिटेन की महिलाओंमें जो स्वातन्त्र्य-निष्ठा है, अपने देशके प्रति उनमें जो अटल प्रेम है, उसीने उन्हें शक्ति, त्याग, साहस और वीरता की प्रतिमूर्ति बना दिया है, उनमें असीम धैर्य और कष्टोंका स्वागत करनेकी क्षमता उत्पन्न कर दी है। उन्होंने पुरुषोंको लड़नेके लिये बिलकुल निश्चिन्त कर दिया है और साधारण अवस्थामें पुरुष जिन कार्योंको किया करते थे, उनका दायित्व उठा लिया है।

इस प्रकार नात्सी योजनाओंको विफल बनानेमें प्रत्येक क्षेत्रमें ब्रिटेनकी नारियां धुआंधार काम कर रही हैं। ज्यों-ज्यों युद्ध बढ़ता जा रहा है त्यों-त्यों उनके जोश और उत्साहमें वृद्धि होती जा रही है।

संयुक्त राष्ट्र अमेरिका

मित्र राष्ट्रोंमें युद्ध-सामग्री और शस्त्रास्त्रों के उत्पादनकी दृष्टिसे संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाका प्रमुख स्थान है। आजकल जब कि लाखों अमेरिकन सैनिक संसारके अनेक रण-क्षेत्रोंमें फैले हुए हैं, अमेरिकाके उत्पादन क्षेत्रोंमें पुरुषोंकी अपेक्षा स्त्रियां ही अधिक संख्यामें कार्य कर रही हैं। युद्धके पहले विभिन्न कार्य क्षेत्रोंमें लगभग ८ करोड़ स्त्रियां काम करती थीं, अब तो यह संख्या और भी अधिक बढ़ गयी है। अमेरिकामें आजकल १६ वर्षसे लगाकर ६० वर्षकी आयु तककी स्त्रियां कारखानों, फैक्टरियों, खेतों, दफ्तरों, हवाई और समुद्री सैनिक विभागों, अस्पतालों और स्वयंसेवक दलों, रेडक्रास और इञ्जिनियरिंग आदिमें कार्य कर रही हैं। प्रत्येक स्त्रीको मुख्य चिन्ता इस बातकी है कि पुरुषोंके मोर्चेपर चले जानेसे उत्पादनका काम शिथिल न पड़ने पाये। अपनी सेनाओं के लिये युद्ध-सामग्री तथा स्वदेश और विदेशोंके लिये खाद्य-पदार्थ, शस्त्रास्त्र और अन्यान्य युद्ध-वस्तुएं निरन्तर प्रस्तुत करते रहनेका अधिकांश उत्तरदायित्व उनपर है और वे बड़ी तत्परतासे अपने इस उत्तरदायित्वको निभा रही हैं। विभिन्न मोर्चोंपर लड़नेके लिये गये हुए अपने पतियों, भाइयों तथा पुत्रोंके पास वे सन्देश भेजती हैं कि 'शत्रुओंसे लड़ो और विश्वकी स्वाधीनता तथा प्रजातन्त्रकी रक्षा करो। यदि आवश्यकता होगी तो हम दिन-रात तुम्हारे लिये कार्य करेंगी और आवश्यकता होगी तो तुम्हारी बगलमें खड़ी होकर लड़ेंगी भी।'

चीन

आजकल जब कि चीन शक्तिशाली जापानसे जूझ रहा है, पुरुषोंकी भांति चीन की महिलाएं भी मैडम चांगकैशकके नेतृत्वमें अपने देशकी स्वाधीनताके लिये न केवल साहसके साथ सब कष्टोंका सामना कर रही हैं, बल्कि अपने सङ्गठन, श्रम और सहयोगसे चीनको शक्ति प्रदान कर रही हैं और युद्ध-क्षेत्रमें भी लड़ रही हैं। चीनके उद्योग-धन्धे वर्तमान युद्धसे पहले समुद्र-तटवर्ती नगरोंमें केन्द्रित थे। समुद्र-तटवर्ती क्षेत्रपर जब जापानियोंका अधिकार हो गया तब ये सब धन्धे देशके भीतरी क्षेत्रोंमें हटा दिये गये। चीनी महिलाएं इन उद्योग-धन्धोंको सफल बना रही हैं और वर्तमान विपन्न अवस्थामें भी चीनका आर्थिक ढांचा नष्ट नहीं होने पाया है। इसका बहुत अधिक श्रेय चीनी महिलाओंको है, जिन्होंने संगठित रूपमें गृह-उद्योगको नया जीवन दिया है। चीनकी महिलाएं जापानी वायुयानोंकी गर्जनाके नीचे भी शान्त भावसे अपना कार्य करती रहती हैं। शत्रुका बल जब अधिक हो, तब गुरिल्ला युद्ध-प्रणालीसे क्या किया जा सकता है, यह आज चीनमें देखा जा सकता है। चीनके गुरिल्लोंको अपने देशकी स्त्रियोंका पूर्ण सहयोग प्राप्त है। वास्तवमें कहा जाय तो गुरिल्ला-युद्ध-प्रणाली तब तक सफल नहीं हो सकती जबतक देशके बच्चे-बच्चेका उसमें सहयोग न हो। चीनी गुरिल्लोंकी जननी मैडम चाउके नामसे सभी परिचित हैं।

चीनमें युद्धने कितनी ही संस्थाओंको जन्म दिया है और महिलाएं इन संस्थाओं में बड़ा काम कर रही हैं। वे निरन्तर इस बातका यत्न करती रहती हैं कि पुरुषोंको सेनामें सम्मिलित होनेके लिये छुट्टी मिल जाय। उन्होंने बच्चोंको युद्ध क्षेत्रकी परिधिसे दूर हटानेका कार्य संगठित किया है और अन्य कितने ही कार्योंमें भाग ले रही हैं।

जापानियोंका मुकाबला करनेके लिये चीनी पुरुषोंकी भांति महिलाएं भी बड़ी वीरता प्रदर्शित कर रही हैं। वे सैनिक शिक्षा पानेके बाद शत्रुओंके मुकाबलेमें खाइयोंमें रहतीं और युद्ध करती हैं। कितनी ही चीनी महिलाएं शत्रुका भेद लेकर अपने पक्षको बतलानेका कार्य बड़ी सफलताके साथ कर रही हैं। अनेक साहसपूर्ण कार्य करके चीनी महिलाएं अपने देशसे शत्रुको निकाल बाहर करनेके लिये प्रयत्न कर रही हैं। रेडक्रासकी असंख्य नर्सें युद्ध क्षेत्रमें घायलोंकी सेवा करनेमें दत्तचित्त हैं। जिनसे कुछ नहीं बनता वे अपने घरपर ही बैठकर सैनिकोंके लिये मोजे बुन रही हैं, कपड़े सी रही हैं और गृह-उद्योगों द्वारा राष्ट्रकी सेवा कर रही हैं। इस प्रकार चीनी महिलाएं अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिये जो कुछ कर रही हैं, उससे सब देशोंकी महिलाओंको प्रोत्साहन और बल मिलेगा।

लीग सरकारोंपर एक दृष्टि

——**——

[लेखक—श्री वैद्यनाथ सिंह]

आंखोंपर खास किस्मका चश्मा लगानेसे चीजें अपने असल आकार-प्रकारसे बिल्कुल भिन्न नजर आती हैं। असलियतका उनसे कोई सम्बन्ध नहीं। कुछ लोग शौक या आवश्यकतासे यह कृत्रिम चश्मा धारण करते और वास्तविकताका विकृत रूप देखकर भी अपनेको धोखा देना नहीं चाहते। पर कितने ऐसे हैं जिनके दिल और दिमाग की गर्मी उन्हें सत्यको असत्य कहनेके लिये पहले मजबूर करती और आगे चलकर वे एक प्रवंचकके रूपमें सत्यका गला घोंटना अपना पेशा बना लेते हैं। ऐसा करनेसे उन्हें कौन रोक सकता है। पर वह व्यर्थ अपने सम्बन्धमें औरोंसे समर्थन प्राप्त करनेका प्रयत्न क्यों करते हैं, यह बात समझमें नहीं आती।

राजनीतिक कारणोंसे जब कांग्रेसने प्रान्तोंसे अपने मन्त्रिमण्डलोंको हटा लिया तो कुछ प्रान्तोंमें जहां पहले लीगका अल्पमत था, लीगी मन्त्रिमण्डलोंकी स्थापना सम्भव हो सकी। कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलोंसे ! उसे छुटकारा मिल गया, इससे बढ़कर खुशीकी बात और क्या हो सकती थी उसे मि० जिन्नाका फरमान जारी हुआ और लीगियों ने उद्धार दिवस मनाया। नयी रोशनीकी चमक-दमकने मि० जिन्नाकी आंखोंको चमका दिया—उन्हें दीखने लगा सब्ज बाग। पाकिस्तानका स्वप्न अब वास्तविकताके निकट पहुंचता दीखने लगा। सपनेकी परी सजधज कर 'शेकहैंड'के लिये निकट बढ़ती आ रही थी। सरहदी सूबा, सिन्ध, पञ्जाब, बङ्गाल और आसाम तकमें लीगी सरकारें कायम हो गयीं। तथाकथित प्रभुताके मदने मि० जिन्नाका दिमाग ऊंचा कर दिया। उन्होंने बड़े जोरदार शब्दोंमें पाकिस्तानी नारेको बुलन्द किया और कहा कि लीग भारतके मुसलमानोंकी एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है। क्षणिक सफलताने उन्हें अपने साथियोंके साथ भी धांधली करनेको प्रोत्साहित किया। सर्वप्रथम पञ्जाबमें मुकाबला हुआ और मि० जिन्नाको यूनियनिस्ट प्रधान मन्त्री मलिक खिजर हयात खांसे शिकस्त खाकर होश सम्भालना पड़ा। उक्त घटनाने उनके हृदयपर अवश्य गहरा आघात पहुंचाया होगा। पञ्जाबको लीगी चंगुलसे साफ बचते देखकर मि० जिन्नाकी निराशा अत्यधिक बढ़ गयी होगी। पर बेबसी थी। पाकिस्तान की इस टांगके टूटनेसे इतना फायदा अवश्य हुआ कि जिन्ना साहब सातवें आसमानसे कुछ नीचे खिसक आये। शायद इसीका परिणाम था कि मुंहजली बिल्लीकी तरह कायदे आजम सिन्धके सैयद-हिदायतुल्ला संघर्षसे उत्पन्न विषम स्थितिपर विचार करते समय मठा भी फूंक-फूंककर पीने लगे। सुलहके लिये बाकायदा कमेटी बनायी गयी और लम्बी बहसके बाद अपना आदेश दोनों दलोंके सम्मुख पेश किया।

सिन्धमें मुस्लिम लीगकी शनिका प्रभाव यहां लीगी मन्त्रिमण्डलकी स्थापना से ही नहीं लगाया जा सकता। इसकी रक्षा के लिये बिना जिन्ना साहबको रहती है। कितनी राजनीतिक चालें अब तक लीगका प्रभुत्व कायम रखनेके लिये काममें लायी गयी हैं। प्रान्तीय लीग स्वयं पुरानी गुट-बन्दियोंसे जर्जर है, जिसका स्पष्ट रूप हालकी घटनाओंके पृष्ठ भागसे दीख पड़ता है। जो कटौतीका प्रस्ताव बहुमतसे पास कर हिदायतुल्ला मिनिस्ट्री (लीगी) के प्रति अविश्वास प्रकट किया गयाथा, उसके समर्थन में लीगके दूसरे गुटके लोगोंने महत्वपूर्ण हिस्सा लिया। परन्तु गवर्नरकी मिहरबानी और हिदायतुल्लाकी राजनीतिक चालोंसे इसकी रक्षा की जा सकी। स्वर्गीय अल्लाबख्शके भाई खां बहादुर मौलाबख्श और उनके स्वतन्त्र मुस्लिम दलको मिलाकर थोड़े समय तक हिदायतुल्ला मन्त्रिमण्डलके प्राण बचाये गये। पर लीग हाई कमाण्डको यह कैसे सहन होता कि एक गैर लीगी मुसलमान, जो लाख प्रयत्न करनेपरभी लीग में शामिल होनेको तैयार नहीं हुआ, सिंध का मिनिस्टर रह सके। भीतर-भीतर शतरंजी चाल चली जाने लगी और अन्तमें जब हिदायतुल्लाको पूर्ण विश्वास हो गया कि हाईकमाण्डके हस्तक्षेपके फलस्वरूप सैयद दल का समर्थन मुझे प्राप्त हो सकेगा, तब अपनी गद्दी कायम रखनेकी लालसासे खां बहादुर मौलाबख्शके साथ किये गये इन वायदोंको उन्होंने ताकपर रख दिया—"यदि मि० जिन्ना या लीगके उच्च अधिकारी इस मेलसे सहमत न हुए तो मैं आपसे किसी समय पद त्याग करनेको न कहूंगा और न लीगकी प्रतिज्ञापर सही बनानेको ही लाचार करूंगा। उस अवस्थामें मैं आपके साथ बना रहूंगा और इस मेलपर दृढ़ रहूंगा।'—यह हैं हिदायतुल्लाका लिखित आश्वासन जो उन्होंने मौलाबख्शको गत २६ जनवरीको पद-ग्रहणके पूर्व दिया था और जिसका पालन गत १६ मार्चको सर गुलामने खां बहादुरका साथ छोड़ नयी मिनिस्ट्री बनाकर किया है। इतनी कशमकशके बाद हिदायतुल्ला मन्त्रिमण्डलकी पुनर्स्थापना हो सकी है। पर स्थापित होते ही पुनः आफतके रूपमें शेख अब्दुल मजीदका अविश्वासका प्रस्ताव उपस्थित हो गया है। लोगोंका ख्याल है कि यह प्रस्ताव अकाल मृत्युकी सूचना है। यद्यपि मौत किसीको पहले सूचित कर नहीं आती।

बङ्गालके मन्त्रिमण्डलका जहां तक सम्बन्ध है, इसे विशुद्ध लीगी मन्त्रिमंडल न कह, लीग प्रधान संयुक्त मन्त्रिमण्डल कहना अधिक उपयुक्त और सत्यके निकट होगा। लेकिन इसका अस्तित्व यूरोपियन दलकी सहायतापर ही अवलंबित है। सरकारके विरुद्ध किसी प्रस्तावपर इस दलकी तटस्थता सरकारके पतनके लिये यथेष्ट कारण हो सकती है। इसके कार्योंकी तारीफमें सिर्फ इतना ही कहा जा सकता है कि इसकी आंखोंके सामने कई लाख तो बगैर अन्नके मर चुके और जो बचे हैं, भीषण वस्त्र संकटके शिकार हो रहे हैं। दैनिक जीवनकी आवश्यक वस्तुओंके अभावमें लोगोंमें त्राहि त्राहि मची है और उस पर भी लोगोंसे रुपये लेकर बजटके घाटेकी पूर्ति करनेकी चेष्टा हो रही है। कलकत्ता कारपोरेशन जैसी स्वायत्त शासन प्राप्त महान संस्थाको जब्त करनेकी धमकी दी जा रही है, हालांकि जनताका मत इसके बिल्कुल विपरीत है। चोर बाजार और घूसखोरीका बाजार गर्म हो रहा है।

आसामकी रिपोर्ट है कि एक गैर सरकारी प्रस्तावपर आसाम सरकारके चालू अधिवेशनमें सरकारी पहली हार हुई। एक दूसरे मौकेपर अध्यक्षके निर्णायक मतने सरकारको पराजित होनेसे बचाया। सरकारी और विरोधी दलकी शक्तिका पलड़ा लगभग संतुलित हो गया है और ऐसी स्थितिमें मुस्लिम लीगके नेता और वर्तमान प्रधान मंत्री सर महम्मद सादुल्लाको अपनी हालत सुधारनेकी बड़ी फिक्र पड़ी है। कांग्रेस और नेशनलिस्ट दलोंसे उनकी बातचीत शुरू हो गयी है और संयुक्त मंत्रिमण्डलकी स्थापना करना चाहते हैं, जिसकी सफलता बहुत-कुछ कांग्रेस पार्टीके रुख तथा महात्माजीके परामर्शपर निर्भर है। सर मुहम्मद सादुल्ला के प्रयत्नोंकी असफलताका स्पष्ट अर्थ है—लीग मन्त्रिमण्डलका निश्चित पतन। लक्षणों से पता चलता है कि आसाममें भी लीगका भविष्य अन्धकारमय है।

देशकी एक मात्र प्रतिनिधि संस्था कांग्रेसके गैर कानूनी घोषित किये जाने और लोकप्रिय नेताओंके नजरबन्द कर लिये जाने के फल-स्वरूप विरोधियोंको अपनी योग्यता का परिचय देकर लोकप्रियता प्राप्त करनेका मौका तो बहुत सुन्दर मिला था, लेकिन लोकप्रियताके लिये आत्म बलिदान और त्यागकी आवश्यकता होती है। लम्बी-चौड़ी बातें बनाने और उनके विरुद्ध कार्य करनेसे कोई लोकप्रिय नहीं बन सकता। विभिन्न प्रांतोंमें स्थापित मुस्लिम लीगी मन्त्रिमण्डलोंके सम्बन्धमें पिछली बातें ही लागू हो सकती हैं। अधिकार लोलुपताने इन्हें शासन सूत्र संचालित करनेकी प्रेरणा अवश्य दी, लेकिन उसमें स्वार्थपरताको तिलांजलि दिलानेकी शक्ति नहीं थी। जनताके संकटके समय प्रान्तीय लीगी सरकारोंने अन्नके व्यापारमें लूट कर नफा कमानेकी चेष्टा की है। उनके अफसरों द्वारा रिश्वतखोरीको खूब प्रोत्साहन मिला है, जिसको बङ्गालके गवर्नर तकने स्वीकार किया है। इससे जनताके कष्ट दिन दूने और रात चौगुने बढ़ने लगे हैं। स्वार्थ साधनके लिये बनी ये अधिकार लोलुप सरकारें फिर जनताका अप्रिय भाजन क्यों न बन जायें? पाठक देखेंगे कि सब कहीं आज लीग प्रधान मंत्रिमण्डल डगमगा रहे हैं और मुसलिम लीगके सदस्य भी मन्त्रियोंका विरोध और आलोचना करनेमें प्रतिपक्षी दलोंको सहायता प्रदान कर रहे हैं। ब्रिटिश नौकरशाहीका पूर्ण सहयोग प्राप्त करनेपर भी ये तथा-कथित नेता जनतापर अपनी शासन-सुयोग्यताकी छाप नहीं लगा सके।

इधर ज्यों-ज्यों देशका राजनीतिक वातावरण बदलने लगा है और जनताके सच्चे प्रतिनिधि एक-एक कर जेलोंसे निकलने लगे हैं, बालूकी बुनियादपर आधारित इन सरकारोंकी शक्ति परीक्षाके पहले ही ढहने लगी है। लीगका सरहदी किला इसका

गीत

प्यार से हम गा रहे हों!
प्रेम की गहरी नदी में, नाव पर हम जा रहे हों!
गगन झलमल हो रहा हो,
मधु-निशा फिर आ रही हो,
विजन सुरभित हो रहा हो,
शून्यता भी छा रही हो!!
शांति के वातावरण में, स्वप्न सुन्दर आ रहे हों!
सो रही तुम अंक, मैं जब
देखते हों: चांद तारे,
औ रही हो खेल स्मित—
इन मृदुल अधरों पर तुम्हारे!
पुष्प भी कोमल पखुरियोंसे सुवास लुटा रहे हों!
तारकों का झिलमिलाना,
वायु का यह मन्द बहना,
चांदनी की मुस्कराहट,
नींद में करवट बदलना—
बन रहे हों चित्र दृग में, स्वप्न का रंग पा रहे हों।
प्यार से हम गा रहे हों!

—रमेशचन्द्र निगम

नमूना है। पाकिस्तानी गढ़की पश्चिमी दीवाल ढह चुकी है और लीग लेफ्टिनेण्ट औरङ्गजेब खांको अब पनाहकी आवश्यकता महसूस होती होगी। अपने अनुयायियोंके साथ अब असेम्बली भवनके :विरोधी बेंचों की शोभा बढ़ाते हुए नजर आते हैं। जन सेवाके भावोंसे ओत-प्रोत कांग्रेसी प्रतिनिधियोंने अपनी नयी सरकार स्थापित कर ली है। सरहदी सूबा मुसलिम प्रधान प्रान्त है। औरउपर्युक्त है वहांकी लीगकी शक्ति का संक्षिप्त विवरण। मुसलिम बहुमत प्रांतोंमें जब लीगकी यह दुर्दशा है तब अन्यकी तो बात ही अलग है। हांडीके चावलका पता एकको टटोल कर ही लगाते हैं।

आनेवाले कुछ दिन निर्णयात्मक सिद्ध होंगे। लीगके भाग्यका फैसला करीब है। इसके झूठे दावे बेकार सिद्ध हो चुके हैं। एक बार फिर दुनिया देखेगी कि जिन्ना साहब और उनकी लीग भारतीय मुसलमानोंका कितना प्रतिनिधित्व करती हैं!

मनोरंजक लेख

—: आंखोंकी करामात :—

———:*:———

(लेखक—श्री 'पवन')

हिन्दुस्तानमें चवनिया घाटपर कुर्बान होनेके लिये यारोंकी संख्या नहींके बराबर होती।

आपने सिनेमा जरूर ही देखा होगा। अगर खुर्शीद, लीलाचिटनिस, मुमताज शांति, स्नेहप्रभा आदि सिने-तारिकाएं अपनी आंखोंमें वसन्ती बयारका मादक बोझ न लादे तो कसम, जनताकी धारणा अभिनय कलाके प्रति खट्टी जरूर हो जायगी।

नामी पाकेटमारोंको देखिये। सबका काम आंखोंके मात्र इशारेसे चला करता है। एकने इशारा किया बस उधर कितनोंकी जेब कट गयीं।

आंखें देखकर ही अटकल लगाया जाता है कि आप करुणाकी नालीमें बह रहे हैं अथवा सुखद बयारमें डोल रहे हैं। आप लेखक हैं या निरे पाठक। आप प्रेमी हैं अथवा शुरूसे आखिर तक सहारा मरुस्थल। बुद्धिमान हैं या मूर्ख। सन्निपातकी व्याधिसे पीड़ित हैं अथवा पीलिये और कमला जैसी व्याधियोंके शिकार हैं। आंखें देखकर ही डाक्टर बात-पित्त-कफके रोगोंको पहचान लेते हैं।

यदि आपको किसीकी करुणाको बढ़ा-चढ़ाकर कहना पड़ता है तो अन्तमें कह बठते हैं—रोते-रोते उसकी आंखें फूट गयी थीं। चश्मा लगानेके शौकीन जाड़ेमें भी सनगोगिल्स लगाकर कह बैठते हैं—ओह, आंखोंमें खूब ठंढक है। अगर किसी मनचले युवककी ओर किसी युवतीने भूलसे दृष्टि-विक्षेप किया, तो उसके मुंहस अनायास निकल जाता है—आंखें लड़ गयीं।

आंखोंकी उपयोगिता सब स्वीकार करते हैं। किन्तु, मानव-शरीरका यह अङ्ग जितना उपयोगी है उतना ही रोग ग्रसित है। हमारे यहां चश्मा लगानेका रोग प्रायः घर-घर है। आंखोंकी जलन, आंखोंकी फूली, रतौंधी, आंखोंका दर्द, पलकोंका झड़ना, पानी गिरना, झोला, धुन्ध, जाला, नाखूना आदि आंखोंके प्रधान रोग हैं।

वात, पित्त और कफके विकारमें आंखों की अवस्था बहुत दयनीय हो जाती है। और सच बात तो यह है कि आंखोंके भयानक रोग इन्हीं तीनोंके विकृत हो जानेसे होते हैं।

वातके विकारमें आंखें भीतरसे कृष्ण, रूखी, टेढ़ी और धुंधली-सी हो जाती हैं। पित्तके विकारमें तेज, चमकीली चीजें देख सकनेमें बिल्कुल असमर्थ तथा पीली, नीली लाल या चमकीली दीख पड़ती हैं। कफके उपद्रवमें दृष्टि:शक्ति-क्षीण, भारी, जलसे पूर्ण और सफेद हो जाती हैं।

पीलिये और कमला रोगमें आंखें पीली हो जाती है। मृगीमें आंखें चढ़ जाती हैं और पलकोंमें असाधारण कंपन होता है। पक्षाघातमें आंखोंके तारे शुष्क हो जाते हैं। हिस्टीरियामें आंखोंकी अवस्था विचित्र-सी हो जाती है। वह कभी-कभी बिल्कुल बन्द और कभी-कभी एकदम खुली-सी रहती है। आंखोंसे आंसू चलते रहते हैं। हैजामें आंखें लाल होकर भीतरकी ओर धंस जाती हैं और क्षय रोगमें सफेद हो जाती हैं।

हरड़, बहेड़ा और आंवला आंखोंके लिये उपयोगी दवा हैं। यदि इनका चूर्ण शहद और घीके साथ व्यवहार किया जाय और काढ़ेसे आंखें धोयी जायें तो निस्सन्देह आंखोंकी दृष्टि शक्ति तेज हो जाये और प्रायः तमाम रोग नष्ट हो जायें।

पैरोंमें तेलकी मालिश और भौंहोंके बगलकी कनपटीको दो उंगलियोंसे कुछ देर तक आंखें बन्द कर थपथपानेसे आंखोंमें विचित्र ठंढक आती है। साथ-साथ दृष्टि शक्ति भी तेज हो जाती है।

कवि वैज्ञानिककी तथा अपनी रायमें शरीरका सबसे परमावश्यक और उपयोगी अङ्ग आंखें हैं। यदि शरीरमें आंखों की रचना नहीं होती, तो किसीको प्रकाश ज्ञान नहीं होता, रङ्ग-रूप-आकारका बोध नहीं होता और न जीवनकी यथार्थता महसूस होती। इन्हीं आंखोंकी कृपासे हम ब्लैक मार्केटकी धूलसे बच जाते हैं। कनखी मटकी चलाकर 'लभ' की पहली सीढ़ी तैयार करते हैं। सिनेमा देखते हैं। लुक-छिपकर कोकशास्त्र पढ़ लेते हैं। किसीकी खूबसूरती देख देखकर जीते हैं और जी-जी कर मरते हैं। इसके द्वारा हम बहुत बड़े बड़े काम करते हैं इतने बड़, इतने बड़े कि समझ लीजिये बहुत बड़ा।

—**—

सिनेमा ससार

भारतीय अभिनेताकी अमेरिकामें धूम

——:०:०:——

सिनेमा संसारमें साबूने जो आकस्मिक उन्नति की है वह विचित्र है। १९३७ में हाली वुडमें "एलिफेंट बाय" नामक चलचित्र तैयार किया गया। इसके लिये महावतके लड़केकी आवश्यकता थी और हाली वुडके प्रतिभाशाली व्यक्ति इस महावतके पुत्रको भारतसे अपने साथ अमेरिका ले गये। उस समय साबूकी की अवस्था १२ वर्षकी थी और उसे अङ्गरेजी भाषाका ज्ञान न था। अतः उसे अमेरिकाके एक स्कूलमें भर्ती करा दिया गया।

अपने पहले चित्रमें ही उसे तुरन्त सफलता मिली और अन्य चित्रोंमें वह उत्तरोत्तर ख्याति प्राप्त करता गया। चित्रपटोंपर वीरतापूर्ण कारनामे प्रदर्शित करनेमें वह अभ्यस्त है। अब साबू अमेरिकाका नागरिक है। १९ वर्षकी अवस्थामें ही वह १९४३ में अमेरिकन सेनामें भर्ती हो गया था।

पार्कशायर पोस्टने अपने 'हमारा विश्व' नामक स्तम्भमें साबूकी आकस्मिक उन्नति के सम्बन्धमें निम्नलिखित विवरण प्रकाशित किया है :—

'सिनेमा प्रेमियोंने निश्चय ही कलाकार साबू द्वारा विभिन्न चित्रोंमें प्रदर्शित की गयी कलाकी प्रशंसा की होगी। अब उन्हें यह पढ़कर अत्यन्त हर्ष होगा कि युद्धक्षेत्रमें भी उसने हालमें ही महान सफलता प्राप्त की है।

अमेरिकासे प्राप्त समाचारसे मालूम हुआ है कि उसे केवल २१ वर्षकी अवस्थामें ही 'अमेरिकन डिस्टिंग्विश्ड फ्लाइङ्ग क्रास' पदक प्रदान किया गया है। एक लिबरेटर वायुयानने जिस समय अकेले बोर्नियोसे दूर एक जापानी काफलेपर हमला किया, उस समय वह उस वायुयानमें एक तोपचीका कार्य कर रहा था। वायुयान विध्वंसिनी तोपों की भीषण गोलाबारीके बीच यह वायुयान अपना कार्य करता रहा और शत्रुके दो जहाजोंको डुबा दिया और दो व्यापारिक जहाजोंको क्षति पहुंचायी।

रूसियोंकी रंगमंचकी शिक्षा

सोवियट रूस अपने आपमें जितना अधिक पुष्ट और योग्य है उतना संसारका अन्य कोई देश नहीं है। रूसकी शक्ति और उस शक्तिको तेज बनानेवाले साधनके विषय में पहले चाहे जैसी भी भ्रांतियां रही हैं, युद्ध प्रारम्भ हो जानेके बाद वे ठीक उसी तरह मिट गयीं जैसे जग जानेके बाद सपने। आज दुनियाके सामने रूसकी शक्ति और उसके साधनका जो विकराल और विराट रूप दिखलाई पड़ रहा है, वह उसकी सतत सावधानी और अमेठ योग्यताका प्रतीक है। इस युद्धमें जर्मनोंके पैशाचिक वारको इतने अधिक दिनों तक अकेला सहनेवाला दूसरा कोई राष्ट्र नहीं रहा। धैर्यकी भी सीमा होती है, किन्तु रूसियोंके धैर्यकी कोई सीमा नहीं है। देशकी जनताको रूसी सरकारने मातृभूमिके नामपर बहुत पहले ही जगा दिया था। किन्तु उस जाग्रत अवस्थामें सचेष्ट बनानेके लिये प्रचारके जिन साधनोंसे काम लिया गया उनमें सिनेमा और रंगमंच अत्यधिक सफल हुए। जनसाधारणके मस्तिष्कपर संवाद और दृश्यका जितना प्रभाव पड़ता है उतना शायद अन्य कार्योंका नहीं पड़ता। स्टेजकी शिक्षा देनेके लिये मास्कोमें 'मास्को स्टेट इन्स्टीच्यूट आफ दी थियेटर' नामक एक संस्था है, जहां सोवियट यूनियनके तमाम नौजवान, जिनमें तातार, टर्क, मेनियन्स, उक्रेनियन, मोरडोवियन्स, और चुवाशेस हैं, शिक्षा प्राप्त करते हैं। इन विभिन्न जातियोंमें चुवाशेस और मोरडोवियन्स जातिके विद्यार्थी अन्य सभी जातियोंसे रंगमंच-शिक्षामें प्रवीण होने में बाजी मार ले गये हैं। युद्ध प्रारम्भ होनेके पहले रूसका चुवासिया प्रांत एकदम जंगली था, जहां यातायातके न तो कोई साधन थे और न कोई प्रमुख या अप्रमुख सड़क ही थी। स्टालिनकी पंच वर्षीय योजनाके प्रारम्भ होते ही वहांके निवासियोंके भाग्य खुल गये और देखते-देखते उस प्रान्तमें तीन हजार किलोमीटर लम्बी सड़क बन गयी, औद्योगिक केन्द्र खुल गये, स्कूल और कालेजोंकी स्थापनासे जनताकी निरक्षरता मिट गयी, अच्छे-से अच्छे सांस्कृतिक केन्द्र खुल गये, अनुसंधान शालाएं खुल गयीं और साथ ही साथ ६ थियेटर भी खुल गये। आधुनिक रूसकी सबसे पिछड़ी जाति मोरडेवियंस थी, जो इस पंचवर्षीय योजनाके अन्तर्गत आकर जोरोंसे अपनी सांस्कृतिक सुधार कर रही है। इन दोनों जातियोंकी उन्नति में सुधारवादी थियेट्रिकल व्यक्तियोंका विशेष हाथ रहा है। इन्हीं सुधारवादी थियेट्रिकल कम्पनियोंने इस प्रान्तके अनेकानेक उत्साही नवयुवकोंको मास्को भेजकर इन्स्टीच्यूटके अन्तर्गत शिक्षा लेनेकी प्रेरणा दी है। मास्को के इस इन्स्टीच्यूटके कार्यकर्त्ता आनेवाले प्रत्येक छात्रोंका मनोवैज्ञानिक अध्ययन कर उनके स्वभावानुसार ही उन्हें काम सौंपते हैं और इसका परिणाम यह होता है कि प्रत्येक छात्र अपने विषयमें पूर्ण दक्ष हो जाता है।

रूसके पुराने ड्रैमेटिक स्कूल भी थियेटरों से कम महत्वपूर्ण नहीं हैं। इन स्कूलोंमें अध्ययनके लिये प्रतिवर्ष १२० विद्यार्थी लिये जाते हैं जिन्हें उच्च कोटिकी शिक्षा दी जाती है। शिक्षा प्राप्त कर लेनेके बाद ये अध्यापक के रूपमें रूसके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें भेज दिये जाते हैं जहां ये सरकारी सहायतापर नये-नये केन्द्र खोलकर उद्देश्यका प्रचार करते हैं। ये प्रचारक स्वयं नाटक लिखते हैं और फिर उसे खेलका रूप प्रदान करते हैं। 'मेली थियेटर' के अन्तर्गत शिक्षा प्राप्त करनेवाले विद्यार्थी दूर देशोंमें भेजे जाते हैं और गांव-गांवमें घूमकर ये ड्रामापार्टीका संगठन कर वहीं उसका केन्द्र खोल देते हैं। इनका काम शहरोंमें घूमना नहीं होता, वरन ये देहातोंमें इसका प्रचार करते हैं।

सङ्गीत शिक्षा भी इसी प्रकारका एक बहुत ही शक्तिशाली अङ्ग है। सङ्गीत विद्यालयके शिक्षार्थी स्वयं एक निजका मण्डल स्थापित करते हैं और उसके लिये ओपेरा हाउसकी व्यवस्था करते हैं, जो किसी भी स्टूडियोसे कम सजा-धजा नहीं होता। मास्को से इस तरहके १५० विद्यार्थी प्रति साल तैयार होते हैं जो देशकी निरन्तर सेवा करते हैं। ये राष्ट्रके वे सिपाही होते हैं जो देशकी मिट्टीमें प्राण फूंककर उसे इस तरह सजग बना देते हैं कि वह अपने देशके नाम हर तरहकी कुर्बानियोंके लिये तैयार रहती है।

चित्रलोककी खबरें

अभिनेत्री बननेकी लिप्सा

रजतपटपर अभिनय करनेवाली अभिनेत्रियोंकी शान-शौकत आंखोंसे देख तथा उनके सम्बन्धमें तरह-तरहकी अतिरञ्जित बातें सुनकर लड़कियोंमें अभिनेत्री जीवन व्यतीत करनेकी आकांक्षाका उत्पन्न होना बिल्कुल स्वाभाविक है। लेकिन अभिनेत्री बननेकी यह लिप्सा प्रायः लड़कियोंको मुसीबतमें फंसा देती है। उसदिन बम्बईकी एक अदालतमें एक १७ वर्षीया पञ्जाबी बालिकने अपनी दर्द भरी कहानी सुनाकर इस बातकी पुष्टि की है। लड़की अपनी विमाताके दुर्व्यवहारसे ऊबकर घरसे कई बार भाग चुकी थी। एक दिन लाहौरके एक बागमें मुहम्मद शफी नामक एक मुसलिम व्यक्ति उसे मिला और उसे लम्बी तनख्वाहपर अभिनेत्री बना देनेका सब्ज बाग दिखाया। लड़की उसकी बातोंमें आकर बम्बईके लिये रवाना हो गयी। दिल्लीमें दो और व्यक्ति उनके साथी हो गये। बम्बईके दादरमें वे एक मकानमें ठहरे। वहां मुहम्मद शफीने लड़कीपर बलात्कार किया और उसको एक अच्छी रकमपर बेच डालनेका प्रयास किया। जब लड़कीने इसपर विरोध किया, तब उसपर मार पड़ी। एक दिन लड़की मौका पाकर भाग निकली और प्रिंसेस स्ट्रीट थानेमें अपनी उपर्युक्त कहानी सुनायी। पुलिस इन्स्पेक्टर ने अभियुक्तोंको एक होटलमें गिरफ्तार किया और बादमें वे जमानतपर मुक्त दिये गये।

डाइरेक्टर गिरफ्तार

खबर है कि लखनऊके आल इण्डिया फिल्म्स स्टूडियोके दो डाइरेक्टर गिरफ्तार किये गये हैं। कहते हैं कि सरकारने स्टूडियो की इमारतको सरकारी कामके लिये तलब किया था, लेकिन अभियुक्तोंने निर्धारित अवधिके अन्दर उसे खाली नहीं किया।

फिल्मी दुनियासे छुट्टी लेंगी ?

अफवाह है कि प्रसिद्ध अभिनेत्री स्नेहप्रभा प्रधान फिल्मी दुनियासे अवकाश लेने की बात सोच रही है। इस समय वे 'श्रवण कुमार' में काम कर रही हैं। ऐसा समझा जाता है कि भविष्यमें उन्होंने लाहौरमें निवास करनेका विचार किया है।

न्यू टाकीजमें बरुआ

सुप्रसिद्ध फिल्म डाइरेक्टर बरुआने न्यू टाकीजके हिन्दी चित्रमें डाइरेक्टर बनना स्वीकार कर लिया है। इसलिये उनके भावी कार्यक्रमके सम्बन्धमें जो अटकलें चल रही थीं, वे अब शांत हो जायेंगी।

साहित्य परि

होली विशेषांक

साप्ताहिक संसार—(होली सम्पादक मण्डल सर्वश्री बाबू पराडकर, मुकुन्दीलाल श्रीवा काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर'। ६८, मूल्य ६ आना।

उच्च कोटिकी सुरुचिपूर्ण पाठ्य परिपूर्ण विशेषांक वास्तवमें सं पाठ्य-सामग्रीमें विशेषता यह है नीतिक, सामाजिक, साहित्यि रचनाएं हैं, उनको होलीके सांचे पूर्णतया समयोपयोगी बना दिया व्यङ्ग चित्रों एवं लाल-काली द्वारा अङ्कको नयनाभिराम चेष्टा की गयी है और मिली है।

बिजली (वसन्त अङ्क) श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त', ३६, मूल्य ६ आने।

देशी कागजपर छपनेवाली के सामने कागज सम्बन्धी जो वर्तमान हैं, उसका अतिक्रम सम्पादक महोदयने काफी मोट वसन्तोत्सव और महाराजा बहा भ्राता महाराज कुमार वसन्त पी० एच-डी० के शुभ विवाहोत सरपर प्रकाशित कर 'एक पंथ दो लोकोक्ति चरितार्थ की है। निकलनेवाले पत्रोंमें जो खास उनसे यह अङ्क वंचित नहीं रहा पाठ्य सामग्री सुरुचिपूर्ण और कोटिकी हैं। सम्पादकजी बधाई

प्रभाकर (होलिकांक) सु दक पं० मदनमोहन पाण्डेय एवं सलिल, पृष्ठ संख्या ९६, मूल्य।)

अङ्क अपने नामके अनुरूप है कविताओंका सम्बन्ध है, सहयोग प्राप्त हो सका है। सुलेखकोंसे सामयिक सुरुचि सामग्री प्राप्त करनेमें काफी प्राप्त की है। अङ्कके कलेवरको हुए मूल्य कुछ ऊंचा अवश्य

वीर कुणाल

रासिया प्रोडक्शन्सके वीर की प्रारम्भिक कार्यवाही समाप्त और अब निर्माण कार्य आरम्भ जायगा। किशोर शाहु प्रधान काम करेंगे और शोभना तथा मुबारकका भी सहयोग प्रा

कौन क्या कहता है

युद्ध अपराधी मि० एमरी

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन कमेटीके ... मि० फेनर ब्रोकवे ने इङ्गलैंडकी जनता ... भारतकी वास्तविक स्थितिकी जानकारी ... के लिये नया प्रचार प्रारम्भ किया है। ... मार्गरेट उक्त कमेटीके व्याख्यान विभाग ... अधिकारिणी हैं। अपने व्याख्यानमें ... ने भारतके राष्ट्रीय युद्धमोर्चे को एक ... की टट्टी साबित किया है जो सिर्फ ... लिये खड़ी की गयी है कि विदेशियों ... आंखोंमें धूल झोंका जाय—लोग ऐसा ... कि भारतीय स्वेच्छासे ब्रिटिश साम्राज्य ... रक्षाके लिये सेनामें भर्ती हो रहे हैं। ... वास्तविकता तो यह है कि भूखकी ज्वाला ... के लिये ही वे मोर्चों पर जाते हैं। ... इन टोमियोंसे भारतीयोंकी जर भी प्रेम ... क्योंकि भारतीय इन्हें गुलामीको स्था- ... प्रदान करने वाली सेना समझते हैं। ... समय आ पहुंचा है कि युद्ध अपरा- ... की एक सूची तैयारकी जाय और ब्रिटिश ... उन गवर्नर और सिविल विभागके ... कारियों पर दृष्टिपात करे जिनकी गैर ... दारीके कारण लगभग ३० लाख मनुष्य ... मरे। साधारण अपराधके चलते लोगों ... मुकदमें चलाये जा रहे हैं फिर मि० एमरी ... भारतीय जनताके न्यायालयमें इनके ... रायोंकी सुनवाईके लिये क्यों न भेज ... जाय?

समझौता समितिका उद्देश्य

... पादरी, कलकत्ताके वासस्थानपर ... एक प्रीतिभोजके अवसरपर सरतेज ... सप्रूने समझौता समितिके कार्योंका ... देते हुए बताया कि किसी दल विशेष ... प्रसन्नता-अप्रसन्नताका ख्याल न कर ... हम यह चाहते हैं कि जो कुछ भी ... वह न्याय-संगत, स्पष्ट और देशकी ... व्यापक हितमें हो, ताकि भारतका ... हित हम कर सकें। कमेटीके प्रत्येक ... वर्तमान गतिरोधसे निकलनेका मार्ग ... आवश्यक समझते हैं। हम सभी ... इस बात पर एक मत हैं कि हिन्दुस्तानकी ... आज जैसी बनी नहीं रह सकती, ... परिवर्तन लाजिमी है। सिर्फ प्रश्न ... कि स्वतंत्रता प्राप्त होने पर उसका ... भिन्न स्वार्थोंके बीच समुचित बटवारा ... आधारपर हो। संभव है, हम सबको ... कार्योंमें सफल हो सकें पर यह निश्चित ... हमारा कार्य न किसीके सामने ... करना और न किसीकी कबूल करना ... की परिस्थितिमें किस आधारपर सम- ... हो सकता है, सिर्फ इसे ही व्यक्त ... मेरा उद्देश्य है, न कि किसी विधान ... निर्माण करना। हमारे सुझावोंको ... स्वीकार किया जा सकता है। आज ... भिन्न दल और संस्थायें संगठित ... हैं, पर वह दिन करीब है जब एक ... साथ और बैठकर इन्हें अपने मतभेदों ... दूर करना पड़ेगा।

सरकार हस्तक्षेप करे

सरतेज बहादुर सप्रू और सर जगदीश प्रसादने अपने संयुक्त वक्तव्यमें भारत सरकारसे अनुरोध किया है कि सरकार हस्तक्षेप कर शीघ्रतासे बङ्गालके वस्त्र संकटको कम करनेका प्रयत्न करे। केन्द्रीय सरकारकी इसी हस्तक्षेपकी नीतिने सन १८४३ में दुर्भिक्षके समय खाद्य-व्यवस्थाका इलाज किया था, उसी नीतिसे आज भी कामलेनेपरलाभ होने की आशा है। केन्द्रीय सरकारने ही वस्त्रके नियन्त्रण और वितरणकी व्यवस्था की है और बंगालके लिये अन्य प्रान्तोंसे वस्त्रके आयातके लिये वही प्रबन्ध करती है। फिर यह भी देखना उसीका कर्त्तव्य हो जाता है कि जिनके लिये उसने व्यवस्था की है उन्हें नियन्त्रित मूल्यपर वस्त्र मिलता है या नहीं। प्रभाव शून्य नियन्त्रणसे तो सिर्फ गड़बड़ी और भ्रष्टता ही उत्पन्न होती है।

आशाके विरुद्ध आशा

आशा जिन्दगीका सहारा है। इसीसे बल पाकर इन्सान हर कदम आगे रखता है। वर्तमान अन्धकारमय क्यों न हो पर दूर—बहुत दूर प्रकाश दीखता है। जर्मनीके तानाशाहको भीयही प्रकाश सूझ रहा है। जर्मन रेडियोका समाचार है कि एक दिन हिटलरने अपने तरुण नेताओंसे बातचीत के सिलसिलेमें कहा है, 'समयकी गम्भीरता के बावजूद हम इस संघर्षमें अवश्य विजयी होंगे।' इन श्रोताओंमें एक बारह वर्षीय बालक भी था जिसने युद्धमें अपनी बहादुरीके कारण ख्याति प्राप्ति की है।

हमारा संघर्ष अन्यायसे है

कांग्रेस पार्टीके डिप्टी लीडर श्री अरुण कुमार चन्द्रने प्रान्तके राजबन्दियोंकी रिहाई के सम्बन्धमें लाये गये कटौतीके प्रस्तावका समर्थन करते हुए कहा, कहा जाता है कि हम जापानी परस्त हैं। अतः हमें जेलोंमें रखना आवश्यक है। पर ऐसे आरोप दुष्टतापूर्ण हैं, जो निष्पक्ष जांचके आगे क्षणभर भी नहीं टिक सकते। इन आरोपोंका औचित्य कहांतक है मैं नहीं समझता, पर इतना तो निश्चय है कि इनमें कुटिलता भरी है। हमारी यदि सहानुभूति और प्रेम किसी वस्तुसे है तो सिर्फ आजादीसे और विरोध है तो परतन्त्रता और गुलामीका। आंखें बन्दकर, करबद्ध हो युद्धमें शामिल होनेके बजाय हमने भारतके प्रति ब्रिटिश नीतिका स्पष्टीकरण चाहा। यही हमारा अपराध है। यह कौन-सा जन-युद्ध है जिसे जनताका समर्थन प्राप्त नहीं? यह कैसा जन-युद्ध है जब जिधर आंखें जाती, नागरिकताके अधिकारोंका दमन होता दीखता है, जिसमें विजय हासिल करनेके लिये जनताके नेताओंको जेलोंमें बन्द करना आवश्यक है? हमारा संघर्ष अब किसी दल विशेष द्वारा संचारित संघर्ष नहीं यह तो स्वतन्त्रता और स्वेच्छाचारिता, न्याय और अन्याय, सत्य और असत्यका संघर्ष है।

हम अधीर न हों

तामिलनाड कांग्रेस संघके अध्यक्ष श्री सी. एन. मथुरङ्गा मुदालियरने अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि सरकारके रुखमें कोई ऐसा परिवर्तन नहीं दृष्टिगोचर होता जिससे मद्रास प्रेसिडेन्सीमें कांग्रेस द्वारा मिनिस्ट्री ग्रहण करनेकी संभावना हो। हम अधीर न हों और उस दिनकी प्रतीक्षा करें जब वास्तविक शक्तिको प्राप्त कर हम जनताकी सच्ची सेवा कर सकेंगे। सरकारके रुखमें परिवर्तन हुए बिना पुराने दफ्तरको आबाद करनेसे कोई लाभ न होगा। गवर्नर द्वारा इस प्रान्तके राजबन्दियोंकी रिहाई ही नीति परिवर्तनकी पहली कसौटी।

श्रीमती पण्डितको आश्चर्य

भारतीय प्रवासअधिकारी बिलकेस्थगितकिये जानेके सम्बन्धमें श्रीमती विजयालक्ष्मीपंडितने एक मुलाकातके सिलसिलेमें कहा है कि जिसके लिये न्यायका तकाजा है और जो स्वयं बिल्कुल सीधी-सादी चीज है, ऐसी स्थितिमें पहुंच जानेपर उसका विरोध होना आश्चर्यकीबात है। चीनी प्रवासअधिकारीबिलके पास हो जानेके बाद भारतीयोंके लिये उसी तरहके बिलके पास होनेकी आशा उत्पन्न हुई थी। कितने भारतीय अमेरिका आयेंगे, यह प्रश्न हमारे सामने नहीं है। हमें उसके सिद्धान्तसे वास्ता है। इतनी छोटी-सीचीजका विरोध होते देख आश्चर्य होता है कि उन महत्वपूर्ण विषयोंपर किस दृष्टिकोणसे विचार किया जायगा जो निकट भविष्यमें सामने आनेवाली हैं।

डा. खां साहबका स्पष्टीकरण

कांग्रेस द्वारा सीमान्त प्रान्तमें मन्त्रिमण्डल बनानेके कारणोंपर प्रकाश डालते हुए अर्थ मन्त्री दीवान भांजूरामने असेम्बलीमें भूतपूर्व अर्थ सचिव अब्दुल रब निश्तारके इस आरोपका खण्डन किया कि शासनसूत्र ग्रहण कर कांग्रेसने अपने सिद्धान्तोंका हनन किया है। उन्होंनेकहा, हम हाईकमांडके आदेशानुसार कार्य करते हैं। यदि पुनःहमें १९-३९की तरह पदत्याग करनेको कहा जायगा तो वैसा करनेमें जरा भी हिचकिचाहट न करेंगे। डाक्टर खां साहबने कहा कि हमें प्रान्तकी जनताने ऐसा करनेको मजबूर किया है। यदि उनकी उचित ढङ्गसे सेवा न कर सके तो हम इस्तीफा दे देंगे। हमारी कोशिश होगी कि ऐबोंको दूर किया जाय। यद्यपि मेरा लोगों से सैद्धान्तिक मतभेद है, फिर भी मैं एक निर्दलीकी तरह कार्य करूंगा। सिर्फ इसलिये यहां हूं कि भले-बुरे, ईमानदार और बेईमान पहचान कर सकूं।

बंगालमें वस्त्र रेशनिंग

एक प्रेस कानफरेंसमें सिविल सप्लाई विभागके मन्त्री मि० एच०एस० सुहरावर्दीने ऐलान किया कि ६ सप्ताहके अन्तर्गत समूचे बङ्गालमें वस्त्र-रेशनिंगकी योजना कार्यान्वित हो जायगी। करघेके बुने वस्त्र पर भी यह योजना लागू की जायगी। जो भी वस्त्र हमें मिलेगा बङ्गालकी जनतामें वितरित कर देंगे। पर अभी जितना वस्त्र बङ्गाल सरकार को मिलता है, उसमें यथेष्ट वृद्धि न की गयी तो वस्त्र संकटका दूर करना संभव नहीं हो सकता।

युद्धका सिंहावलोकन

गत सप्ताह दक्षिण अफ्रीकाकी सिनेटमें यूनियन सरकारके प्रधान मन्त्री फील्ड मार्शल स्मट्सने एलान किया कि यूरोपीय युद्धका अन्त निकट पहुंचता जा रहा है और यह अन्त अब बहुत निकट आ गया है। मित्र राष्ट्रोंके कर्णधारोंकी ओरसे ऐसी घोषणाएं अनेक बार हो चुकी हैं और कभी कभी तो उनकी घोषणाओंके भरोसे लोगोंने यहां तक आशावादिता सहारे है कि बर्लिन पतनपर आनन्दोल्लास मनानेकी सारी व्यवस्थाएं तक कर डाली हैं। अभी कुछ दिन पहलेकी बात है कि अमेरिकाके न्यूयार्क नगरमें लोगोंने यह अच्छी तरह समझ लिया था कि अब जर्मन आत्मसमर्पण करने ही वाले हैं और उन्होंने विजय समारोह मनानेकी सारी तैयारी करली थी। याल्टा कानफरेन्सके समय भी लोगोंने यह आशा करली थी कि मित्र सेनाएं किसी भी समय जर्मन राजधानी बर्लिनमें प्रविष्ट हो सकती हैं। इसी आशामें मित्रराष्ट्रोंने यूरोप के मोर्चेसे बहुतसी युद्ध-सामग्री प्रशांतके मोर्चे पर भेज दी थी। लेकिन जब पश्चिमी मोर्चेपर जर्मनोंने अमेरिकन और ब्रिटिश सेनाकी शक्ति कमजोर देखी, तो बेल्जियम अञ्चलमें आक्रमण कर अमेरिकन सेना और युद्ध-सामग्रीको काफी क्षति पहुंचायी। मित्रोंको यह आशा बहुत पहले हो गयी थी कि पश्चिममें अमेरिकन और पूर्वसे रूसी सेनायें तीव्र गतिसे बढ़कर जर्मनीके बीचमें मिलेंगी और जर्मन सेनाको घुटने टेकनेके लिये बाध्य करेंगी। लेकिन कई सप्ताहसे पश्चिम तरफ राइन और पूर्व तरफ ओडर नदी जर्मनीकी अगम्य खाई साबित हो रही है। दोनों नदियोंपर क्रमसे ब्रिटिश और अमेरिकन तथा रूसी सेनाएं नदी पार करनेके लिये जबर्दस्त तैयारियां कर रही हैं। लेकिन अबतक उन्हें सफलता नहीं मिल सकी है। गत सप्ताह के सबसे बादके समाचारसे यही मालूम हुआ है कि लोअर राइननदीको पार करनेकी मित्र सेनाओंकी सारी तैयारियां करीब-करीब समाप्त हो चुकी हैं और ऐसी आशा की जाती है कि जेनरल माण्टगोमरी किसी भी क्षण राइन नदीके दाहिने किनारेपर पहुंचनेके लिये आक्रमण आरम्भ कर सकते हैं। इसमें सन्देह नहीं है कि यह आक्रमण बहुत बड़े पैमानेपर होगा, क्योंकि मित्र सेनाएं डुसेल डोर्फसे आर्नहिम तक ६० मील लम्बे मोर्चेपर बड़े पैमानेपर शस्त्रास्त्र सज्ज होकर खड़ी हैं। मित्र सैनिक कमाण्ड हवाई मार्गसे जर्मनोंके पृष्ठ भागमें सेना उतार कर उनको दो तरफसे नष्ट-भ्रष्ट करनेकी चेष्टामें हैं लेकिन साथही यह भी मालूम हुआ है कि जर्मन हाई कमांड इस बातके लिये पूर्ण तैयार हैं कि जहां कहीं भी उनकी फौज हवाई मार्गसे उतारी जायेगी, अविलम्ब उसका मुकाबला कर उसे साफ कर देनेकी चेष्टा की जायेगी मित्रोंने कई नगरोंको अपने अधिकारमें किया है और रिमाजेनके आक्रमणांचलको जर्मनोंके बहुत अधिक प्रतिरोध करनेपर भी २९ मील लम्बा बना दिया है। राइन स्थित मासलेके निकट जेनरल पैटनकी तीसरी सेनाने कोबलेंजपर तीन तरफा घेरा डाल रखा है। गत २३ फरवरीसे अबतक आगे बढ़ती हुई मित्र सेनाओंने १ लाख ४० हजार जर्मन सैनिकोंको बन्दी बनाया है। कहते हैं कि मार्शल केसलरिंगको पश्चिमी मोर्चेपर जर्मन सेनाका सेनापति बनाया गया।

सोवियट सेनाके मोर्चेपर १२ वीं सोवियट सेनाने बर्लिनके रास्तेमें ओडर नदीके पूर्वी तटपर अवस्थित कूस्टरिनको अपने अधिकारमें कर लिया है लेकिन अभी ओडर नदीको पार करनेका प्रश्न जटिल ही बना हुआ है। कूस्टरिनके आक्रमण अञ्चलमें सोवियट सेनाकी थोड़ी सी सफलताको जर्मन हाई कमाण्डकी विज्ञप्तिमें भी स्वीकार किया गया है। हंगेरियन-युगोस्लाव सीमापर द्रावा नदीके पार सिलोसके दक्षिण पूर्व जर्मन सेना दूसरी बार पीछेकी ओर हटी है। डेनजिगके उत्तर और दक्षिण रूसकी १० सेनाओंने आक्रमण आरम्भ किया है। जेपोटके उत्तर और पश्चिम तथा प्रासमें रूसी आगे बढ़े हैं। मार्शल कोनीवकी सेनायें नीसेनगरके मील उत्तर ओपेलनके पश्चिम ग्लैजरनीसे नदीको पार कर सुडेटनके पहाड़ोंकी ओर भागती हुई जर्मन सेनाओंका पीछा कर रही हैं। अपर साइलेशियाकी राजधानी ओपेलनके दक्षिण और पश्चिम सोवियट सहायक सेनाने जर्मनस्थल सेनाको जर्मन भूमि पर सबसे जबर्दस्त शिकस्त दी है और युद्ध-स्थलको जर्मनोंसे बिलकुल साफ करनेकी चेष्टामें है। पूर्व प्रशियामें सोवियट घेरेमें पड़ी जर्मन सेनाको नष्ट करनेके लिये रूसियोंने एक नयी योजना तैयार की है। चूंकि बालटिक सागरके अञ्चलकी एक लड़ाई की इतिश्री हो रही है। इसलिये लाल सेना के उत्तरी पार्श्वपर एक दूसरी लड़ाईका श्रीगणेश किया जा रहा है।

सुदूर पूर्वके युद्धके सम्बन्धमें गत सप्ताह दक्षिण पूर्व एशिया कमाण्डके सदर मुकामसे जो विज्ञप्ति प्रकाशित की गयी है, उससे मालूम हुआ है कि बर्मामें गत १सप्ताहोंके अन्दर जापानी सेनाओंको जिस बुरी तरह पीटा गया है, उससे उनको बहुत भारी क्षति उठानी पड़ी है। युद्ध क्षेत्रमें काम आये ९॥ हजार शत्रु गिने गये हैं और ७२ तोपें तथा १९ टैंक नष्ट किये गये हैं। गत २२ मार्चको अमेरिकन उड़न किलोंने चौथी बार रंगूनपर आक्रमण किया और महत्वपूर्ण लक्ष्य स्थानोंपर बमवर्षा की। कई स्थानोंपर भीषण बम-विस्फोट होते देखा गया। बर्माके दूसरे नगरके शहर मांडलेमें मित्र सेना प्रवेश कर गयी है और सड़कोंपर युद्ध हो रहा है। यह तो बर्माका वृतान्त है, अब खास जापान के शहरोंमें आइये। वहां अमेरिकन विशाल काय उड़न किलोंका आक्रमण लगातार टोकियो, नागोया और ओसाकापर जारी है। कई हजार टन विस्फोटक पदार्थ बरसाये गये हैं। जापान सागरके अन्दर जापानी जहाजी बेड़ेको जिसमें ४९ हजार टनके युद्ध पोत थे, बुरी तरह क्षतिग्रस्त किया गया है। जापानसे ७९० मीलकी दूरीपर स्थित इवोजिमापर अमेरिकन सेनाका करीब-करीब अधिकार पूरा हो गया है। इस द्वीपके अमेरिकन अधिकारसे आ जानेसे जापानपर सीधा आक्रमण करना अब बहुत आसान हो गया है। अमेरिकन सेनापति जेनरल मेकार्थरकी एक घोषणाके अनुसार जम्बोनगर और मिण्डनावमें अमेरिकन सेना उतारी गयी है। मिण्डानाव फिलीपाइन द्वीपपुञ्जका सबसे दक्षिणी और दूसरे नम्बर का बड़ा द्वीप है। मध्य फिलिपाइन्समें लन और सिमारामें अमेरिकनोंने उतर कर करीब-करीब समस्त फिलीपाइन द्वीपपुञ्जसे जापानियोंको भगा दिया है।

स्वदेश-वार्ता

महात्माजीको परामर्श

आसाम असेम्बलीके कांग्रेस दलके नेता बारदोलोईने प्रान्तकी पार्लमेंटरी स्थिति सम्बन्धमें महात्माजीसे परामर्शकी मांग की। उत्तरमें महात्माजीने निम्नाशयका लिखा है—'सर्वश्रेष्ट कार्य कीजिये, चाहे जो भी कुर्बानी पड़े। घूसखोरीका अन्त कीजिये। वही कीजिये जो समयानुकूल हो। कठिनाइयां अनेक हैं, मैं जानता हूं, पर उन्हें दूर कर मार्ग निकालना होगा।'

राजेन्द्रबाबूकी सम्पत्ति वापस

पटनाके जिला मजिस्ट्रेटने डाक्टर राजेन्द्रप्रसादको जेलमें सूचित किया है कि सरकारने उनकी व्यक्तिगत सम्पत्तिको वापस करने का निश्चय किया है जोगत १९४२ःसे सदाकत आश्रममें जब्त पड़ी थी। इसपर राजेन्द्रबाबूने श्री मथुराप्रसाद और बाल्मीकिको चीजोंकी एक फेहरिश्त तैयार करनेका अधिकार प्रदान किया है।

डा० खां साहबका निश्चय

सीमान्त प्रान्तके प्रधान मन्त्री डाक्टर खां साहबने सप्ताहमें दो दिन इसलिये निश्चित किया है कि जनसाधारण उनसे मिलकर अपनी दिक्कतें पेश कर सके।

किसान अधिवेशनके अध्यक्ष

किसान सभाके मन्त्री मि० एम० ए० ... ने घोषित किया है कि किसान सभाके ... वें अधिवेशनके अध्यक्ष पदके लिये मि० ... अहमद चुने गये हैं। विरोधी उम्मीदवार पण्डित यदुनन्दन शर्माकी बहुत वोटोंसे पराजय हुई। अधिवेशन नेत्रकोणमें होने जा रहा है।

डा० झाकी अमेरिका यात्रा

इलाहाबाद विश्वविद्यालयके वाइसचान्सलर ए० एन० झाको सरकारने व्याख्यान के लिये अमेरिका जानेको कहा गया है। खबर है कि डाक्टर झा भारतीय ... हिन्दी, उर्दू और बङ्गला, चित्रण-कला और सङ्गीतपर व्याख्यान देंगे। उपरान्त कुछ विश्वविद्यालयोंका निरीक्षण कर जुलाई तक स्वदेश वापस आयेंगे।

अफ्रीका पर आर्थिक प्रतिबन्ध

केन्द्रीय कौंसिलमें श्री पी० एन० सप्रूका प्रस्ताव पास हो गया जिसमें दक्षिणी अफ्रीकापर आर्थिक प्रतिबन्ध लागू करने तथा वहांसे हाई कमिश्नरको वापस बुला लेनेका अनुरोध किया गया है।

बङ्गाल कौंसिल

भारत रक्षा कानून या तीसरे रेग्यूलेशन के अन्तर्गत नजरबन्द कैदियोंकी अविलम्ब रिहाईके लिये पेश किये गये एक प्रस्तावको बङ्गाल कौंसिलने अस्वीकृत कर दिया। बहस का उत्तर देते हुए सर नाजीमुद्दीनने कहा कि ऐसी नजरबन्दोंकी संख्या पचाससे ज्यादा नहीं और आतङ्कवादी नजरबन्द १ हजार के भीतर ही हैं। चटगांव शस्त्रागार काण्डके अभियुक्तोंकी मुक्तिसे यद्यपि ... सहायता मिलनेकी आशा है पर ऐसा ... भीषण खतरा है।

वावेलका लन्दन यात्राका रहस्य

लाहौरके एक लीगी अखबारके संवाददाताने दिल्लीसे खबर दी है कि लियाकत देसाई समझौतेको मि० जिन्ना और महात्मा गांधीकी स्वीकृति प्राप्त हो गयी है। लार्ड वावेल कांग्रेस लीग समझौतेपर आधारित एक योजनाको लेकर इङ्गलैंड गये हैं। वायसरायके भारत लौटनेपर केन्द्रमें हेर-फेर होगा और संभव है प्रान्तोंमें आम चुनावके बाद संयुक्त मन्त्रिमण्डलकी स्थापना हो। सनफ्रांसिसको सम्मेलनके लिये भारतीय प्रतिनिधियोंमें रद्दोबदलकर फीरोजखां नून और सर रामस्वामी मुदालियरकी जगह नवाबजादा लियाकत अली और श्री भूलाभाई देसाईके जानेकी आशा है।

भीषण ट्रेन दुर्घटना

सिन्ध प्रान्तके जङ्गशाही स्टेशनपर ड्राइवरकी लापरवाहीसे एक भीषण ट्रेन दुर्घटना हो गयी जिससे २४ की मृत्यु हुई और ३० घायल हुए। दुर्घटनाके फलस्वरूप ड्राइवरकी भी मृत्यु हो गयी और मालगाड़ीके ७ डिब्बे चकनाचूर हो गये।

आसाम मन्त्रिमण्डलका पुनर्गठन

आसामके प्रधान मन्त्री सर सादुल्लाने अपने सहयोगी श्री नवकुमार दत्तके इस्तीफे के बाद गत २२ मार्चको अपना त्यागपत्र दाखिल किया। विरोधी दलके नेता श्री बारदोलोई और रोहिणीकुमार चौधरीके साथ किये गये समझौतेके अनुसार मन्त्रिमंडल का पुनर्गठन किया जा रहा है, जिसमें गैर-मुस्लिमदलोंको ५० प्रतिशत प्रतिनिधित्व प्राप्त रहेगा। कांग्रेस पार्टीने कुछ शर्तोंपर अपनी सहायता देनेका वचन दिया है जिसमें अप्रैल के अन्दर दो-तिहाई नजरबन्दोंकी रिहाई, एम० एल० ए० और प्रमुख कांग्रेस कर्मियों की अविलम्ब रिहाई इत्यादि शामिल हैं। जून तक बाकी नजरबन्द भी रिहा कर दिये जायेंगे। सजा पाये हुए राजनीतिक बन्दियों की उनके मामलोंपर फिर विचारकरनेके बाद रिहाई होगी।

प्राप्ति स्वीकार

संवत् २००२,का श्री कलकत्ता विश्वनाथ पञ्चाङ्ग प्राप्त हुआ। दैनिक लग्न, मास और वर्षफल आदि कई जनोपयोगी बातें बङ्गाल, बिहार और आसामको विशेष रूपसे दृष्टिगत रखते हुए दी गयी हैं। पञ्चाङ्गका मूल्य ४ आना है। पता—पं० जयनारायण शिव कुमार मिश्र, १९९ ए मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

सत्यार्थ प्रकाश

ऐसी खबर है कि महात्मा गांधीने सिंध के प्रधान मन्त्रीके पास एक पत्र भेजा है। यद्यपि पत्रकी बातें गुप्त हैं, फिर भी कहा जाता है कि महात्माजीने धर्मके बुनियादी सिद्धांतोंका जिक्र करते हुए कहा है कि इन पर आक्षेप न होना चाहिये और अन्तमें अनुरोध किया है कि इसपर लगाये गये रोक हटा लिये जायं।

हमारी डाक—

—सिकरिया, जहानाबाद (गया) में आर्यसमाजकी गत १०, ११ और १२ मार्च-को एक महती बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पास कर सिन्ध सरकार द्वारा सत्यार्थ प्रकाश' पर लगाये गये प्रतिबन्धका विरोध कर उसे वापस लेनेकी मांग की गयी। मन्त्री आर्यसमाज, सिकरिया

—अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभाका ४५ वां अधिवेशन जौनपुर (ई. आई. आर.), संयुक्त प्रान्तमें ३१ मार्च तथा १ और २ अप्रैल सन १९४५ को महाराजा बहादुर कामख्या नारायण सिंह, रामगढ़ राज्य, पद्मा (बिहार) के सभापतित्वमें बड़े समारोहके साथ होने जा रहा है।

मन्त्री—स्वागत समिति

मुजफ्फरपुर हिन्दी साहित्यसम्मेलन

आगामी ईस्टरकी छुट्टीमें १ अप्रैलको ९ बजे प्रातः काल वैशाली महोत्सवके अवसर पर साहित्यिक ब्रजभाषाके कवि पंडित जनार्दन झा 'जनसीदन' जीके सभापतित्वमें मुजफ्फरपुर जिला साहित्य सम्मेलनका द्वितीय अधिवेशन प्राचीन वैशालीके भग्नावशेष, बसाढ़में मनाया जायगा। निवेदक—

स्वागत मंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झांकी

मास्को ट्रेड यूनियन

मास्को रेडियोने ऐलान किया है कि मास्को ट्रेड यूनियनने विश्व ट्रेड यूनियनके लन्दनकी बैठकमें किये निर्णयोंका अनुमोदन किया है। एक नये अन्तर्राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन के गठनके निर्णयका हृदयसे स्वागत किया गया है।

चीनमें नया सिक्का

चुङ्किंगमें नये किस्मका सोनेका डालर प्रचलित हुआ है जिसपर मार्शल चांगकैशक और प्रेसीडेंट रूजवेल्टकी तस्वीर है। प्रत्येक का वजन एक औंस है।

लेबर पार्टी प्रतिनिधि मण्डल

लन्दनके एक समाचारमें यह आशा प्रकट की गयी है कि यदि सरकारने जफरुल्ला खांके प्रस्तावके सम्बन्धमें दिये गये लेबर पार्टीके सुझावोंको मंजूर कर लिया तो लेबर पार्टीका एक प्रतिनिधि मण्डल सम्भवतः प्रो. हेराल्ड लास्कीके नायकत्वमें भारत जा सकता है।

अरब लीग

अरब कांग्रेसकी एक बैठकमें गत २२ मार्चको अरब लीगके विधानपर हस्ताक्षर किया गया।

एक राष्ट्र—एक वोट

अमेरिकाके स्टेट विभागके एक वक्ताने बताया है कि आगामी सनफ्रान्सिसको सम्मेलनमें प्रत्येक उपस्थित राष्ट्रको एक वोट देनेका अधिकार रहेगा। पर यह अभी नहीं कहा जा सकता कि खास निर्णयपर पहुंचनेके लिये सिर्फ किसी तरहका बहुमत ही पर्याप्त समझा जायगा या कोई अन्य तरीका अख्तियार किया जायगा।

कागजी पोलिश सरकार

प्रेसीडेण्ट रैंजकीवीजने प्रधान मन्त्री एम. आरसीजेवस्कीके प्रस्तावपर लन्दनकी पोलिश नेशनल कौंसिलको भङ्ग कर दिया है। इसमें ऐसा करनेकी आवश्यकता इसलिये पड़ी ताकि लन्दनके बाहरके पोलों और उद्धार किये गये पोलोंके प्रतिनिधियोंको कौंसिलमें स्थान दिया जाय। इसकी स्थापना सन १८४२ में हुई थी, इसमें कुल २४ सदस्य थे।

लार्ड वावेलकी निर्विघ्न यात्रा

लन्दनके एक समाचारमें बताया गया है कि भारतके वायसराय लार्ड वावेल २४ मार्चको लन्दन पहुंचे।

ब्रिटेनके प्रतिनिधि

कामन सभामें प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल ने एलान किया है कि आगामी सनफ्रांसिसको सम्मेलनमें विदेश मन्त्री ईडेन, कौंसिल के प्रेसीडेण्ट मि० एटली, उपनिवेश विभागके सेक्रेटरी लार्ड क्रेनबार्न और अमेरिका स्थित ब्रिटिश राजदूत लार्ड हेलीफैक्स ब्रिटेनका प्रतिनिधित्व करेंगे।

तृतीय महायुद्ध अनिवार्य

ग्लाउसेस्टरके जान ट्रेज हेमण्ड नामक एक बड़े आविष्कारककी भविष्यवाणी है कि तृतीय महासमर अनिवार्य है। पर वर्षों तक जारी रहनेके बजाय यह कुछ घण्टोंमें ही समाप्त होगा।

रेडियो नियन्त्रित राकेट बम्बईसे जिसका उस समय तक पूर्ण विकास हो चुका रहेगा, सारी यूरोपियन राजधानियोंके सर्वनाशक सतत खतरा उपस्थित रहेगा। इनके निशाने तोपसे भी अधिक अचूक सिद्ध होंगे। यदि मनुष्यकी प्रकृति नहीं बदली तो तृतीय महायुद्ध होकर ही रहेगा।

प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टकी स्पष्टोक्ति

प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने रेडक्रासके नामक की गयी अपनी ब्राडकास्ट अपीलमें कहा है—न अमेरिकन जनता और न मैंने ही कभी सन्निकट शान्तिकी भविष्यवाणीके विनोद का आनन्द उठाया है। मुझे नहीं मालूम विजय कब होगी।

अपशकुन होने लगा

हालकी कुछ रिपोर्टोंसे पता चलता है कि त्रिनायकोंमें याल्टा निर्णयकी शब्दावलियों की व्याख्याके सम्बन्धमें कुछ मतभेद उत्पन्न हो गया है। पहला प्रश्न, जो उपस्थित हुआ समझा जाता है यह है कि पोलैंडकी नयी सरकारके लिये प्रस्तावित सदस्योंके सम्बन्धमें लुबलिनको वीटो करनेका अधिकार है। रूमानियाके प्रश्नपर उत्पन्न मतभेदों की रिपोर्टोंके बाद पोलैंडके झमेलेकी खबर से राजनीतिक क्षेत्रोंमें विशेष चिन्ता व्याप्त है। सनफ्रांसिसको सम्मेलनके पूर्व ये अच्छे शकुन नहीं कहे जा सकते।

जापानके विरुद्ध स्पेनका प्रतिवाद

स्पेनने फिलिपाइन स्थित स्पेनिश प्रजाके साथ जापानियों द्वारा किये गये जोर-जुल्म और अत्याचारके खिलाफ प्रतिवाद कर स्पष्टीकरणकी मांग की है। रायटरकी पहलेकी रिपोर्टोंसे पता चलता है कि राष्ट्रके रोपको फ्रैंको जापानके विरुद्ध युद्ध घोषणाके रूपमें व्यक्त कर सकते हैं।

नया जर्मन कमांड

मास्को रेडियोकी रिपोर्ट है कि हिटलर ने जेनरल गुडेरियनकी बर्खास्तगीके बाद उसकी जगहपर जेनरल फर्डिनेंड स्कोर्नरको पूर्वी मोर्चेका प्रधान सेनानायक नियुक्त किया है। पश्चिमी मोर्चेके नये कमाण्डरका नाम जेनरल कैसेलरींग बताया जाता है।

रूडोल्फ हेसकी मस्तिष्क विकृति

रूडोल्फ हेस, जो किसी समय नाजी पार्टीका डिपुटी फ्यूहरर था और गत १९४१ से ही ब्रिटेनका युद्धबन्दी है, इन दिनों मस्तिष्क विकृतिसे पीड़ित है कहा है कि उसे काबूमें रखनेके लिये ३० रक्षकोंकी आवश्यकता पड़ती है।

रूस टर्किश सन्धिका अन्त

मास्को रेडियोकी रिपोर्ट है कि रूसी सरकारने टर्कीको सूचितकर सन १९-२५ की मित्रता और तटस्थताकी सन्धिका अन्त करनेकी इच्छा प्रगट की है, क्योंकि इस दूसरे महासमरके समय तक दुनिया काफी बदल चुकी है और ऐसी सन्धि समयके अनुकूल नहीं रह गयी। इसमें महत्वपूर्ण परिवर्द्धनकी आवश्यकता है।

रामकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१४, जगमोहन मल्लिक लेन (?) ... सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—१४ कलकत्ता अप्रैल २, १९४५, Calcutta, APRIL, 2, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

न्यूयार्कमें गांधी आश्रम

शायद आपको विश्वास न हो, लेकिन बिलकुल सत्य है कि न्यूयार्क शहरमें आश्रम है और अनेक अमेरिकन और गांधीजीके अनुयायी हैं। अमेरिकन [illegible]का 'पी० एम०' के सम्पादकने इस [आश्र]मका निरीक्षण करनेके बाद इसका विवरण प्रकाशित कराया है। उन्होंने [लिखा] है कि हारलेन आश्रममें दो पादड़ी हैं जो हब्शियोंसे मित्रतापूर्ण व्यवहार [कर]ते हैं, और जातीय संघर्षको दूर करनेके [लि]ये महात्मा ईसा और गांधीजीके [सि]द्धान्तोंका प्रचार करते हैं। आश्रममें [भा]रतीय राष्ट्रीय झण्डा लगा हुआ है और [एक] आदर्श वाक्य लिखा हुआ है कि जो [व्य]क्ति इस आश्रममें आये वह जातीय और [धा]र्मिकको तिलांजलि दे दे।' आश्रका सङ्गठन [धा]र्मिक आधारपर नहीं हुआ है, बल्कि [इस]की सारी कार्यवाहियां अहिंसासे सीधा [सम्ब]न्ध रखती हैं। आश्रमवासी व्यक्तिगत [औ]र समष्टिगत रूपसे अहिंसाका पालन [कर]ते हैं।

दक्षिण पश्चिमी चीनसे भागे हुए जापानी सैनिकोंकी सामग्रियोंसे चीनी और अमेरिकन श्रमिक हवाई अड्डा तैयार करनेमें व्यस्त।

पेनिसिलिन एक वरदान !

[अस्प]ताल्य देशीय डाक्टरोंका दावा है कि [नव]ी आविष्कृत औषधि पेनिसिलिन सौ [र]ोगोंकी एक दवा है। अबतक इसके कितने [प्र]योग कराये जा चुके हैं, उनकी यदि गणना की जाये तो संख्या कमसे कम कोड़ी तक तो पहुंच ही जायगी। हालैण्ड स्थित अमेरिकन सेनाके ४१वें अस्पतालसे इसके एक और उपयोगकी रिपोर्ट एक सैनिक डाक्टरने भेजी है। डाक्टरका कहना है कि चेहरेपर चोट लग जानेसे प्रायः वह विकृत हो जाता है। लेकिन पेनिसिलिनका उपयोग आहत मांसपेशियोंमें ऐसा चमत्कार उत्पन्न कर देता है, जिससे घावके सारे विकार काफूर हो जाते हैं।

हिटलर विरोधी मन्त्रिमण्डल

हिटलरकी सेना अभी पूरी बहादुरीके साथ लड़ रही है और जर्मन तानाशाहके पतनके अभी तक कोई लक्षण स्पष्ट तौरपर दृष्टिगोचर नहीं होते; तथापि लन्दनमें गुप्त सूत्रसे खबर मिली है कि प्रथम नाजी विरोधी मन्त्रिमण्डल बर्लिनमें बनकर तैयार है। गत वर्ष २० जुलाईको हिटलरपर बम छोड़नेका जो षड़यन्त्र किया गया था, कहते हैं कि उसमें इसी सरकारकी प्रेरणा थी। इस मन्त्रिमण्डलकी फेहरिस्तमें लिपजिगके भूतपूर्व लार्ड मेयर डा० कार्ल गोर्डेलरका नाम प्रस्तावित जर्मन चांसलर पदके लिये है। गोर्डेलरके स्वराष्ट्र सचिव सोशल डेमोक्रेट हेसेन विलहेल्म और परराष्ट्र मन्त्री वान हेसेल हैं। वान हेसेल रोममें जर्मन राजदूत रह चुके हैं। अंतमें बर्नर और लेजोनेके नामोंके साथ गोर्डेलरका मन्त्रिमण्डल पूरा किया गया है। अन्तिम दोनों व्यक्ति जर्मनीके बड़े भारी व्यावसायिक है।

भूगर्भमें रेल गाड़ियां

पृथ्वीकी सतहपर दौड़नेवाली रेलगाड़ियां आधुनिक युगमें कोई विशेष आकर्षणकी चीज नहीं रहगयी हैं; लेकिन अगर कहा जाये कि हवामें रेलगाड़ी दौड़ती है या जमीनके नीचे २५० फुटकी गहराईपर रेलवे स्टेशन बना है, तो पाठकोंके लिये कुछ कौतूहलकी सामग्री उपस्थित की जा सकती है। भारतमें जमीनके अन्दर तो नहीं, लेकिन बड़े-बड़े शहरोंमें भीड़-भड़क्कसे बचनेके लिये साधारण यातायातकी सड़कोंके ऊपरसे रेलकी सड़कें अवश्य निकाली गयी हैं। लन्दन ब्रिटिश साम्राज्यका प्रथम नगर है। इसलिये वहां दुनियासे कुछ अधिक विशेषतायें तो होनी ही चाहिये। एक खास विशेषता है, वहां भूगर्भमें दौड़नेवाली रेल गाड़ियां। वहां की रेलें जमीनके अन्दर सुरंग खोदकर बनायी गयी हैं, जो ५० फुटसे लेकर २५० फुट तक गहरी हैं। प्रायः ६० वर्ष पहले लन्दनके एक शाही इञ्जीनियरने भूगर्भमें रेल बनानेका प्रस्ताव उपस्थित किया था और इस कार्यके लिये सुरंग खोदनेके निमित्त दो नये यन्त्रोंका आविष्कार भीकिया, जो उन्हींके नामसेप्रसिद्ध हुये। इन यन्त्रोंकी ख्याति आज भी विश्वविदित है। भूगर्भमें सबसे पहली रेलवेलाइन १८६३ में बनायी गयी। पहले एक नहर खोदी गयी और उसमें रेलवे लाइन बिछाकर ऊपरसे उसे ढंक दिया गया। आज ऐसी रेलोंकी लम्बाई २२० मील है। शायद आपको आश्चर्य होगा कि टेम्स नदीकी तरेटीके नीचे भी रेल गाड़ियां दौड़ती हैं। लेकिन यह बिलकुल सत्य है। सुरंग खोदने और रेलगाड़ियोंके दौड़नेके बीचके समयमें बहुतसे काम करने पड़ते हैं। बिजली, टेलीफोन, सिगनल, स्टेशन आदि बनाने पड़ते हैं। टिकट घरसे रेलवे लाइन तक सम्बन्ध स्थापित करना पड़ता है। पहले बिजलीके लिफ्टसे यह काम लिया जाता था। लेकिन अब नीचे ऊपर जानेवाली सीढ़ियां बनी हैं जिन्हें 'इस्के लेटर' कहते हैं और इनके सहारे यात्री बड़ी आसानीसे चढ़ और उतर सकते हैं। प्लेटफार्मपर गाड़ियोंके आनेकी सूचना विद्युत् संकेतोंसे दी जाती है। सुरंगकी हवा को शुद्ध रखनेके लिये जगह-जगह रोशनदानों की व्यवस्था की गयी है। इन गाड़ियोंमें सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि ये बिजलीके बलसे चलती हैं और इस समय इनके द्वारा १०लाख यात्रियोंका आवागमन होता है।
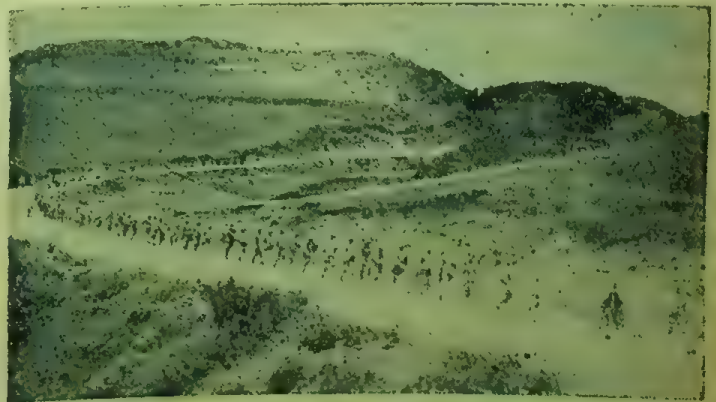
चीनके कुंगलिन शहरकी ओर बढ़नेवाले चीनी सैनिकोंका एक पैदल डिवीजन।

चलती चक्की

खबर है कि बम्बईमें निकट भविष्यमें कपड़ेका अकाल होनेवाला है।

—लेकिन मुनाफाखोर तो कपड़ेके बजाय सोने-चांदीसे ढंक जायंगे।

*

कौंसिल आफ स्टेटके एक सदस्यने कहा कि संसारके अन्य देशोंके सैनिकोंसे कहा जाता है कि देशके लिये अपनी आजादीके लिये लड़ो, लेकिन भारतवासियोंसे हम क्या कहें।

—भारतवासी परमार्थी हैं, इन्हें कहना चाहिये कि वे सारे देशोंके लिये लड़ें।

*

श्री टी० टी० कृष्णमाचारीको डर है कि लड़ाईके बाद भी बहुतसे आर्डिनेन्स भारतपर लागू रहेंगे।

—बुड्ढेकी लकड़ीकी तरह ये तो ब्रिटिश शासनके सहारे हैं। इन्हें कैसे अलग करें वह ?

*

बम्बई कारपोरेशनमें एक सदस्यने कहा कि नगरके जो मकान सरकार द्वारा लिये जा रहे हैं, उनमें शरणार्थियोंको स्थान दिया जा रहा है। लेकिन देशवासियोंको घरसे बाहर किया जा रहा है।

—बहुत दिन घरमें रहनेके बाद अब बाहर की भी हवा लगनी चाहिये।

*

स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने एक वक्तव्य में कहा है कि सम्पूर्ण प्रान्तीय सभाएं मुझसे सीधा पत्र-व्यवहार करें।

—यह खूब रहा! बाबाजी तो छोड़नेको तैयार है, लेकिन कमरी छोड़े तब तो!

*

सैनकांसिस्को सम्मेलनमें सरकारके 'जी हजूरिये भेजनसे कुछ लाभ नहीं।

—श्री तिरुमलराव

——भाई, सरकार अपने विरोधियोंको भेजकर क्या अपने पुराने भरे हुए रेकर्डोंको तुड़वाये ?

*

हम एसियावासियोंको अमेरिकामें नहीं घुसने देंगे।

—लियो नार्ड ऐलन

ढोलमें पोल इसीको कहते हैं।

०

अमेरिकन प्रतिनिधि वाल्टर जुडका कहना है कि अमेरिकन चीनमें लूटमार मचा रहे हैं।

—जापान पहुंचनेसे पहले इसका अभ्यास तो होना ही चाहिये!

०

हमारे सारे शरीरपर सरकारी कन्ट्रोल है, पर कन्ट्रोल अधिकारियोंपर किसीका कन्ट्रोल नहीं!

—इस प्रश्नका उत्तर उनकी पत्नियां ज्यादा अच्छी तरहसे दे सकती हैं।

*

सिंध असेम्बलीमें सरदार उस्मानने कहा कि एक ओर कफनके लिये कपड़ा नहीं मिलता, दूसरी ओर कण्ट्रोल विभागके कर्मचारी नित्य नया सूट बदलते हैं।

—अपना-अपना भाग्य है।

०

मैं सीमाप्रान्तके प्रत्येक मुसलमानसे लीगको संगठित करने और इस धब्बेको मिटा देनेकी अपील करता हूँ।

—मि० जिन्ना

रमते रामके विचारसे आपकी अपीलें अब पीली पड़ती आ रही हैं।

—रमते राम

बागबाजारके रसगुल्ले

मनका बुखार

'मनका बुखार' भयंकर बुखारोंमें से है। यह जूड़ी तापसे भी बढ़कर सर्वव्यापी साबित हुआ है। इसे न आते देर लगती और न जाते। डाक्टर-वैद्यके पास 'मनके बुखार'की दवा नहीं होती। 'मनका बुखार' दवासे नहीं, किसीके सिरपर उतारा जाता है।

लल्लन यदि स्कूलसे घर वापस आतेही अपनेसे छोटी भाई-बहनोंके साथ टग-आफ-वार शुरू कर देता है, तो आपको समझना चाहिए कि लल्लन लड़ाई नहीं कर रहा है, 'मन का बुखार' उतार रहा है, और उसके इस बुखार के कीड़ेका नाम है, मास्टरजीकी छड़ी!

*

नाश्ताका समय हो चुका और मुन्नी चारपाईसे नहीं उठी तो समझना चाहिये कि मुन्नीको, रातसे ही मनका बुखार लगा है, जिसके कीड़ेका नाम है माताजीकी सीख!

गृह-पति यदि घर आते ही अपने माथे-में दर्द बताकर आह-अल्लम आरम्भ कर देते हैं, तो समझना चाहिये कि गृह-पतिको 'मनका बुखार' हुआ है। इस बुखारके कीड़ेका नाम है, दफ्तर की खटपट!

*

बड़ा बाबू यदि किरानीपर बे-मतलब झिड़का-झिड़की करते हैं, तो समझिये कि बड़ा बाबू 'मनका बुखार' उतार रहे हैं, जिस की उत्पत्ति सिनेमाके प्रोग्रामको लेकर नोक-झोंक हो जानेके कारण, पत्नी नामक कीड़ेसे हुई है, और यह बुखार किरानीके सिरपर उतारा जाता है!

*

मुंशीजी यदि घर आते ही लड़से बैठ जायं तो जानना चाहिए कि मुन्शीजी 'मन के बुखार'से पीड़ित हैं। उन्हें आज आमदनी साढ़े बाइस हुई है!

०

वकील साहब यदि दौलतखाने पहुंचतेही, गमलेकी दुरवस्थाके कारण मालीको 'डिसचार्ज' की धमकी देने लगें, तो समझिये कि वकील साहबको 'मनका बुखार' हुआ है, जिसके कीड़ेका नाम है, बार-लाइब्रेरीकी मक्खी!

०

नौकर यदि कुत्तेको, बे-तरह पीट देता है, तो समझिये कि उसे 'मनका बुखार' हुआ है, और इस बुखारकी उत्पत्ति सौदा-सट्टीका हिसाब लेनेसे होती है। यदि घरमें पालतू कुत्ता नहीं है तो प्याला, कांचका गिलास और लालटेनके शीशेमेंसे किसी एकका फूटना निश्चित जानिये। और यह फूटना निदान होगा कि नौकर-बच्चूको 'मनका बुखार' हुआ है!

'वे' यदि घर आते ही साथ ... फाइलोंको जोरसे पटक दें, तो सम... कि उन्हें 'मनका बुखार' हुआ है ... का नाम है, बड़ा बाबू।

*

'वे' यदि आपके सामने सोड़ा ... ठनाकसे रखती हैं या दालमें ... मिलता है, तो समझना चाहिये ... 'मनका बुखार' हुआ है, और इसके ... नाम है, धोबिन, तेलिन, ग्वालिन ... दारिन का तकाजा।

०

और यदि 'वे' खटमल-मच्छरों ... अपने रामकी पीठपर दे, फटाफट ... चटा-चट् करती हैं, तो अपने रा... सोचकर चुपचाप पड़ा रहना चाहि... पति देवताको चपातियां नहीं दे ... अपने मनका बुखार उतार रही ... बुखारकी उत्पत्ति जाननेके लिये ... को अपने मनमें, यह प्रश्न करना ... क्या उनकी ओरसे दिनमें कोई ... हुई थी ?

*

प्रकाशकजी यदि अनायास ... पहुंचकर १०-१९ सालके पुराने ... तुरत मांगने लग जायें, तो सम... जान लेना चाहिये कि प्रकाशकजी... बुखार'हुआ है जिसके कीड़ेका नाम ... पर घाटा!

*

सम्पादकजी यदि मिनट-मिनट ... लिये तकाजा भेजते हैं तो अपने गु... के साथ कम्पोजीटरोंको यह समझ... कि सम्पादकजीको 'मनका बुखार' ... जिसका कीड़ा है घरसे दफ्तरके लि... समय नोन-तेल-लकड़ीकी समस्या... चल-चख हो जानेके कारण अग्रलेख... का अभाव! यह कम्पोजीटरों... ही उतारा जाता है!

०

सो, यदि छूत लग जानेके कारण ... जीटरोंको भी 'मनका बुखार' उतार... जाय तो उतारनेके लिये दफ्तरीकी ... कृपा करनी चाहिये और दफ्तरी... 'मनका बुखार' उतारनेके लिये ... खबर लेनी चाहिये। तब, डाकरों... कि अपने मनका बुखार उतारने... दफ्तरकी ओरसे मिली बायसिकल... दो-चार पटकन लगाकर सन्तोष... ले-लें!

*

यदि धोबी अपने गधेको ... मरम्मत करते नजर आये तो जान... कि धोबीराजाको 'मनका बुखार' ... कपड़ा खो जानेके कारण किसी ... पावनेके पैसे काट लिये!

*

चचाको यदि पसीना आ रहा ... समझिये कि चचा मनका बुखार ... लिये भतीजेको खोज रहे हैं। ... बुखारके कीड़ेका नाम है, ... चाचीके द्वारा तैयारकी ...

बासन्ती प्रभात

ऊपर नभ-मण्डल नील-नील
भूपर यह विलसित विश्व निखिल
उल्लिसित रश्मिका जाल लिये
बालारुण विहंस उठा झिलमिल।
रस-भरी छबीली डालीपर
छविका संसार उतर आया
वन-उपवनमें गिरि-काननमें
यौवनका ज्वार उमड़ आया।
रे इधर-उधर झुरमुटमें छिप
काली कोइलिया बोल उठी
फूलोंके गोरे गाल लजा
हलकी पुरवैया डोल उठी।
अपनी मस्तीमें झूम उठे
सुकुमार सुकोमल नव पल्लव
नभकी परियोंको ललचाने
पंछी करते अभिनव कलरव।
सरिताके विमल वक्षपर तो
है कलकल-छलछल जल-नर्तन
तटपर तरुवरका मधु मरमर
कविकी वंशीका ल्मधुर स्वर।

रे रूप-नगरकी रानी-सी
नीली-पीली तितली उड़ती
भीनी-भीनी मंजरियोंसे
मधुकी बूंदें चू-चू पड़तीं।
दिलकी अधखिली कली मलकर
सौरभ समीरमें इतराता
प्यासे अधरोंमें ललक लिये
भूला-सा भौंरा मंडराता।
विटपीकी बाहोंसे लिपटी
हंसती हरियाली लहराती
नन्दन-निकुञ्जकी छख-छपमा
इस मंजुल भूतलपर भाती।
मधुप्यालाके घूंट पानकर
सौन्दर्य अलस बेहोश पड़ा
है लाल लजाके नयनोंमें
रे यौवनका उन्माद भरा।
सपनोंका नव श्रृङ्गार सजा
मधुबाला लेती अंगड़ाई
अरुणिमा निराली छन-छनकर
उसका आंचल छूने आयी।

—श्री बद्रीदास 'विधुर'

...हित बस प्रेमक मनमाह।
...कहं अग दुर्लभ कछु नाहीं॥

...गी सरकारोंकी हार !

——:ः:——

...लोकप्रिय राष्ट्रीय नेताओंके नजरबन्द ...किये जानेके कारण अवसरवादियोंको ...न प्रान्तोंमें साम्राज्यवादी शासकोंकी ...ली सरकारें बनानेका जो सुयोग मिला ...धर कुछ दिनोंसे उसके सम्बन्धमें 'चार ...की चांदनी, फिर अंधियारी रात' ...कहानी चरितार्थ होती जा रही है। ...प्रांत, आसाम, सिंध और बंगालके ...म लीगी मंत्रिमण्डलोंका मौजूदा भाग्य ...बदला रहा है। इन मंत्रिमण्डलोंने ...ी अपनी तड़क-भड़कसे प्रांतों... ...वस्था इतनी शोचनीय बना दी कि ...बुरी तरह तबाह और परेशान होगयी ...उसके निर्वाचित प्रतिनिधि असे... ...ोंने इनके विरुद्ध अविश्वास और ...के प्रस्ताव पासकर इन्हें पछाड़ रहे हैं। ...प्रांत मुसलिमप्रधान प्रान्त है, इसमें ...को तनिक भी सन्देह नहीं हो सकता। ...वहांके मुसलिम लीगी मंत्रिमण्डलको ...करनेमें ईमानदार मुसलमानोंने प्रति... ...लोंका साथ दिया है और वहां जो ...वालोंका मन्त्रिमण्डल जनताकी सेवा ...के लिये कायम किया गया है, उसका ...ने मुक्तकण्ठसे स्वागत किया है। ...नके मुसलिम लीगी मन्त्रिमण्डलको भी ...लाकर ऐसी सर्वदलीय सरकार संगठित ...पड़ी है, जिसको प्रांतीय कांग्रेस ...और व्यवस्थापकोंकी हार्दिक सहानु... ...प्त है। सिन्धमें सर गुलाम हुसेन ...अपना पुराने मन्त्रिमण्डलको भङ्ग कर ...नया मन्त्रिमण्डल बनानेमें सफल हुए ...पि उसे लीगी मन्त्रिमण्डल नहीं कहा ...सकता, क्योंकि सिंध प्रांतीय मुसलिम ...और सर गुलाम हुसेनकी पटती नहीं। ...का मन्त्रिमण्डल कांग्रेसके समर्थन ...विरोधपर ही निर्भर है। जिस दिन ...पार्टीका तीसरा नेत्र खुला, उसी ...हिदायतुल्ला सरकारकी इति-श्री सम... ...चाहिये। वर्तमान सिंध मन्त्रिमंडलने ...हालमें प्रांतमें १९४२ से नजरबन्द ७ ...कार्यकर्ताओंको मुक्त करनेका आदेश ...कर यह स्पष्ट कर दिया है कि वह ...पार्टीका समर्थन और सहयोग प्राप्त ...की हार्दिक आकांक्षा रखता है।

...ऐसी अनहोनी बात इधर बंगालमें हुई ...बंगालके नजीमुद्दीन मन्त्रिमण्डलका ...सम्बन्धी रिपोर्ट आदिसे अन्त ...शोचनीय ही रही है, और मन्त्रिमंडल ...अयोग्यता एवं स्वार्थपरताके कारण ...अन्न और वस्त्रके सम्बन्धमें जिस ...संकटका सामना किया है और ...है, उसको देखते हुए भी यह संभा... ...नहीं थी कि सर नजीमुद्दीनकी सरकारको अचानक इस प्रकार पछाड़ खानी पड़ेगी। लेकिन अन्यायकी टहनी कभी नहीं फलती और कागजकी नाव बहुत दिन तक नहीं चलती। नजीमुद्दीन मन्त्रिमण्डलकी मनमानी घरजानीकी नीति ही उसके इस हठात् पतनका कारण बन गयी। गत बुधवार को बंगाल असेम्बलीमें सरकारी मांगोंपर विचार किया जानेवाला था। सरकारने इस दिनको अपनी सुविधाके अनुसार चुना था। निर्धारित समयपर अधिवेशन शुरू भी हुआ। अचानक मन्त्रिमण्डल दलके १८ सदस्य ढाकाके नवाबके नेतृत्वमें प्रतिपक्षी दलमें जा मिले और एक अजीब हलचल-सी मच गयी। उस समय पार्लमेंटके इतिहासमें एक अभूतपूर्व घटना घटित हुई और सरकारी पक्षके ही सदस्य मन्त्रियोंसे प्रश्न पूछने लगे। प्रतिपक्षी दलोंमें अपनी शक्ति सुदृढ़ होते देख कर एक विचित्र उत्तेजना उत्पन्न हुई और उन्होंने सरकारको उसके अल्पमत होनेकी चुनौती दे दी। काफी गर्मागर्म बहसके बाद अर्थ मन्त्रीने कृषि-मदमें सरकारी: मांग सम्बन्धी प्रस्तावको उपस्थित किया, जिसपर खूब नोकझोंकके साथ वादविवाद हुआ और वोट लिये जाने पर सारीकी सारी मांग १०६ के मुकाबले ९७ वोटोंसे ठुकरा दी गयी। गत दो वर्षोंके दौरानमें बंगाल सरकारकी यह पहली हार और वह अब सरकारके लिये इतनी संकटपूर्ण साबित हुई है कि नजीमुद्दीन सरकारके भाग्यका निर्णय बंगाल गवर्नरके हाथमें चला गया है।

सर नजीमुद्दीनकी ९ वोटोंसे हार हुई है, लेकिन इतने परभी एक सच्ची खेलाड़ी टीमके विपरीत वर्तमान मंत्रिमण्डल अपने पदपर चिपके रहनेके लिये तैयार है और सरकारकी ओरसे बराबर यह दलील पेश की जा रही है कि 'बुधवारका निर्णय सत्य नहीं माना जाना चाहिये। हाउसने धोखेमें आकर वैसा निर्णय दे दिया है; वास्तवमें बहुमत सरकारी पक्षका ही है। हाउसमें एक और कटौतीका प्रस्ताव उपस्थित किया जाये और उसपर वोट लेनेपर यदि सरकारकी पराजय हो जाये, तो हम इस्तीफा देनेके लिये तैयार हैं।' लेकिन सरकारकी ये दलील बिलकुल लचर और बेशर्मीकी है। इयासे तनिक भी सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति अपनी हेंकड़ी हांकनेके बाद हार जानेपर कभी अपने प्रतिपक्षीको मुंह दिखलाना नहीं चाहेगा। लेकिन सरकारी पक्षकी ओरसे प्रतिपक्षी दलके इस्तीफा देनेकी मांग करनेपर इतनी बौखलाहट दिखलायी गयी, जो शिष्टताकी सीमाको लांघ गयी और यह बात असेम्बलीके अध्यक्ष माननीय सैयद नौशेरअलीको भी पसन्द नहीं आयी।

दूसरे दिन जब फिर असेम्बलीकी बैठक आरम्भ हुई तो प्रतिपक्षी दलकी शक्ति और बढ़ी हुई देखी गयी। सरकारी पक्षके सारे प्रयास निष्फल रहे। असेम्बलीके अध्यक्षने इस स्थितिपर एक बहुत ही महत्वपूर्ण रूलिंग दी, जो पार्लमेंटके इतिहासमें एक महत्वपूर्ण घटनाके रूपमें स्थान पायेगी। उन्होंने कहा कि बजट एक अविभाज्य सरकारी कागज है, जिसकी एक भी मदके पूर्णरूपेण अस्वीकार कर दिये जानेपर समस्त बजटके लिये गतिरोध उपस्थित हो जाता है। ऐसी दशामें सरकारकी गाड़ी आगे बढ़नेमें असमर्थ है। क्योंकि गवर्नर भी विधानके अन्तर्गत इस मदकी ग्रांटको अपने विशेषाधिकारसे स्वीकार नहीं कर सकते। उनका विशेषाधिकार विशेष उत्तरदायित्वपूर्ण कार्योंके सम्बन्धमें ही व्यवहृत हो सकता है। असेम्बलीका बजटअधिवेशन बजटकी मदोंको पास करनेके लिये बुलाया जाता है और जब बजटमें गतिरोध पैदा हो गया, तो अधिवेशनको स्थगित करनेके सिवा और कोई चारा नहीं है।' माननीय स्पीकरने यह भी कहा कि सरकारकी किसी मांगको पूर्ण रूपसे अस्वीकार कर देनेका अर्थ कानूनी और व्यावहारिक दोनोंही दृष्टियोंसे निन्दाके प्रत्यक्ष प्रस्तावसे भी अधिक जोरदार अविश्वासका द्योतक है। अगर सरकार कुत्सित और अनाचारी हो तो वह निन्दाके प्रस्तावकी अवहेलना कर सकती है। लेकिन उसकी किसी मांगके पूर्णरूपेण अस्वीकार कर दिये जानेपर उसके सामने अवैध कार्य करने अथवा इस्तीफा दे देनेके सिवाय और कोई मार्ग नहीं है।

सहयोगी पत्रोंने वैधानिक सङ्कटका बहुत पहलेसे ही आभास पाकर बङ्गाल-गवर्नरको पदग्रहण करते ही यह सुझाव दिया था कि प्रान्तमें सर्वदलीय सरकारकी स्थापना कर, समस्त राजनीतिक दलोंके सहयोग और समर्थनसे प्रांतकी दुरवस्था मिटाने और मित्रोंके फासिस्ट विरोधी प्रयासमें पूर्ण सहायता पहुंचायी जाये। लेकिन गवर्नरने उधर अब तक कान नहीं दिया और उसका दुष्परिणाम उपस्थित है। अब भी यदि समयके अनुकूल कार्य नहीं किया गया तो असन्तोष अधि-काधिक बढ़ता जायेगा। लोग वर्तमान सङ्कटोंसे अपनी मुक्तिका एक मात्र उपाय विश्वासी सर्वदलीय सरकारकी स्थापना समझते हैं; उनको किसी विशेष दलसे कोई रागद्वेष नहीं है। सर ख्वाजा नजीमुद्दीनके व्यक्तित्वसे कोई खास आपत्ति किसीको नहीं है, लेकिन उन्होंने जिस ढङ्गसे अपने साथियोंका चुनाव किया है, वह अत्यन्त आपत्तिजनक है। एकदलीय सरकारमें जनताका विश्वास नहीं है। अगर गवर्नरको इस सुझावमें कोई आपत्ति हो तो वे सर्वदलीय सम्मेलन बुलाकर सामाजिक और प्रान्तीय कल्याणके लिये एक व्यापक योजना तैयार करें और उस योजनाको कार्यान्वित करनेकी प्रतिज्ञा करनेवाले लोगोंको अपना मन्त्री बना लें; चाहे इस प्रकारके चुनावमें कोई भी क्यों न आ जाये।

यह खर्चीला अभिनय बंद हो

केन्द्रीय असेम्बलीके वर्तमान बजट-अधिवेशनमें लार्ड वावेलकी 'लोकप्रिय राष्ट्रीय' सरकारकी इतनी बार हारें हुई हैं कि उनको याद रखना भी मुश्किल हो रहा है। शायद फाइनेंस बिलको अस्वीकार करते हुए भारतीय व्यवस्थापकोंने तथाकथित जिम्मेदार एक्जीक्यूटिव कौंसिलरोंको तेरहवीं बार मुंहकी खिलायी है। लेकिन चूंकि केन्द्रीय सरकारका शासन १९१९ के विधानके अनुसार संचालित होता है, इसलिये जनता के गाढ़े पसीनेके रुपयोंमें से लम्बी रकम वेतनके रूपमें लेनेवाले इन भलेमानसोंको चिन्ता ही क्यों होने लगी, चाहे तेरह नहीं तिरानवे दफे भी वे पछाड़े जायें। केन्द्रीय बजट जनताके प्रतिनिधि ठुकरा दें भले ही, लेकिन वायसरायका विशेषाधिकार तो बराबर बना हुआ है। उसका 'सदुपयोग' ऐसे ही गाढ़े दिनोंमें किया जाता है। जब वायसराय बजटकी समस्त मांगोंको अपने विशेषाधिकारोंसे जायज ठहरा देनेके लिये पूर्ण सक्षम हैं, तो यह नहीं मालूम होता है कि नयी दिल्लीके इस खर्चीले अभिनयकी आवश्यकता ही क्यों समझी जाती है? भारत जैसे गरीब देशकी गाढ़ी कमाईका इस प्रकार अपयोग सरीहन अनुचित है और इस खेलवाड़को या तो बन्द कर देना चाहिये अथवा जनताके प्रतिनिधियोंके सामने वायसरायकी एक्जीक्यूटिव कौंसिल को जिम्मेदार बना देना चाहिये, ताकि भारतीय व्यवस्थापिकाके सदस्योंके निर्णयका कुछ मूल्य हो।

खैर, इन सुझावोंके अनुसार कार्य करने योग्य वर्तमान केंद्रीय सरकार तो तभी हो सकेगी जब उसको परिस्थिति बाध्य करेगी। लेकिन सरकारकी इन लगातार पराजयोंने यह स्पष्ट कर दिया कि लार्ड वावेलकी बातोंमें कोई तथ्य नहीं है और वे लाख कहें, लेकिन भारतीय जनता और उसके प्रतिनिधि खूब अच्छी तरह समझते हैं कि देशकी वास्तविक भलाई करनेवाली लोकप्रिय राष्ट्रीय सरकार ही हो सकती है। राष्ट्रीय सरकारके नामपर नौकरशाही पिट्ठुओंको एकत्र करके जोड़ा गया भानमतीका कुनबा उन्हें कदापि मान्य नहीं हो सकता। इस समय लार्ड वावेल भारतीय समस्याओंपर विचार-परामर्श करने सम्राटकी सरकारके पास गये हुए हैं और निकट भविष्यमें सैनफ्रांसिस्कोमें मित्रराष्ट्रोंके सम्मेलनमें विश्व शांतिकी समस्याका अन्तिम रूपसे समाधान किया जाने वाला है। इस सम्मेलनमें भारतसे भी तीन प्रतिनिधि भेजे जायेंगे जो वास्तवमें भारतके नहीं, भारत सरकारके प्रतिनिधि होंगे, और सरकारी स्वार्थोंको ही भारतके नामसे उपस्थित करेंगे या केवल दर्शक मात्र बने रहेंगे। इन तथाकथित प्रतिनिधियोंका विरोध न केवल हिन्दू सम्प्रदायके द्वारा, बल्कि मुसलिम लीगके द्वारा भी हो रहा है और उस दिन पाकिस्तान दिवसके अवसरपर एक प्रतिष्ठित मुसलिम लीगी नेताने लाहौरमें सरकारके सामने यह सुझाव पेश किया था कि 'पंडित जवाहरलाल नेहरूको जेलमुक्त कर सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें भारतका प्रतिनिधित्व करनेके लिये भेजा जाये।' ये प्रतिनिधि भारतका कोई उपकार नहीं कर सकेंगे, बल्कि इनका यात्रा-व्यय देशके मत्थे औरआ पड़ेगा।

केंद्रीय असेम्बलीमें भी फाइनेन्स बिलको अस्वीकार करते हुए नवाबजादा लियाकत अलीखांने उस दिन कहा कि कांग्रेस और मुसलिम लीगमें मतभेद भले ही है, लेकिन

जब हम व्यवस्थापिका भवनमें पहुंचते हैं तो सारे भारतके हितकी बात सोचते हैं और जो कुछ कार्य करते हैं, समस्त भारतके प्रतिनिधिकी हैसियतसे, हिन्दू या मुसलिम सम्प्रदायकी दृष्टिसे नहीं। जब भारतीय स्वाधीनताके प्रश्नपर विभिन्न राजनीतिक दलोंके प्रतिनिधियोंका ऐसा मत सरकारके सामने खुलेआम घोषित किया जाता है और इसी आधारपर गैरजिम्मेदार सरकारको हारपर हार खिलायी जाती है, तब भी ब्रिटिश सरकारके राजनेता भारतके अनैक्य का पुराना राग अलाप कर उसको अपने जन्मसिद्ध अधिकारोंसे अनिश्चित कालके लिये वंचित रखनेकी कुचेष्टा करते हैं। यह कहांका न्याय है?

भारतके ये प्रतिनिधि !—

आगामी २९ अप्रैलसे होनेवाले सैन-फ्रांसिस्को सम्मेलनमें भारतसे तीन प्रतिनिधियोंको भेजनेके लिये भारत सरकारने चुना है उनमें एक है सर रामस्वामी मुदालियर और दूसरे हैं सर फीरोजखां नून। दोनों ही सज्जन वायसरायकी इस एक्जीक्यूटिव कौंसिलके सदस्य हैं जिसके सम्बन्धमें जनताके निर्वाचित प्रतिनिधियोंने स्पष्ट अविश्वास प्रकट कर दिया है और सरकारी बजटमें उनके वेतनके लिये की गयी व्यवस्था को अस्वीकार कर संसारको स्पष्ट रूपसे व्यक्त कर दिया है कि ये भारतका प्रतिनिधित्व कदापि नहीं कर सकते। यह निर्णय जनताके ऐसे प्रतिनिधियोंकी समिति का है जिसका निर्वाचन आजसे ७-८ वर्ष पहले हुआ था और वायसराय नये व्यवस्थापिका निर्वाचनसे बचनेके लिये उसके कार्यकालको लगातार बढ़ाते गये हैं। यदि आज व्यवस्थापिका सभाओंका चुनाव हो, तो हमारा यह दृढ़ मत है कि जनताके ऐसे प्रतिनिधियोंकी व्यवस्थापिका सभामें भरमार हो, जो वर्तमान गैर-जिम्मेदार शासन प्रणालीका बात-बातमें विरोध करें। ब्रिटिश नौकरशाहोंने अपने मनमाने शासनसे राष्ट्रका जो निर्मम शोषण किया है, उससे देशवासी बुरी तरह व्यग्र और क्षुब्ध हो उठे हैं। उसका ही यह परिणाम है कि केन्द्रीय सरकारकी व्यवस्थापिका सभाके एक-एक अधिवेशनमें तेरह-तेरह बार हार होती है, और सरकार अपनी निर्लज्जताका इजहार पेश करती हुई अपने स्थानपर डटी रहती है। इधर सुननेमें आया है कि सरकार सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसके लिये अपने चुने हुए प्रतिनिधियोंके सम्बन्धमें देशव्यापी विरोधको दृष्टिगत रखते हुए उनमें कुछ परिवर्तन करनेवाली है। यदि सरकारको वास्तवमें ऐसी सद्बुद्धि आयी हो, तो हम उसकी बड़ाई किये बिना नहीं रहेंगे और उससे कहेंगे कि अगर वास्तवमें वह भारतका कल्याण चाहती है, तो भावी सैन फ्रांसिस्को कानफरेंसमें भारतका सच्चा प्रतिनिधित्व करनेवाले लोकप्रिय नेताओंको भेजे, जो देशकी वास्तविक अवस्थाको मित्रराष्ट्रोंके सामने उपस्थित कर उससे देशवासियोंको मुक्त करनेका समाधान निकालनेमें समर्थ हो सकें। इस कार्यके लिये एक सर्वाधिक योग्य प्रतिनिधि पंडित जवाहरलाल नेहरू होंगे। समस्त भारतीयोंको चाहे वे किसी भी राजनीतिक दलके क्यों न हों, नेहरूजीके नेतृत्वमें विश्वास है और ऐसे व्यक्तिको अपना प्रतिनिधि बनाकर भारत सरकार सारे देशकी सच्ची सहानुभूति और सहयोग प्राप्त कर लेती। इसके लिये सबसे पहली आवश्यकता यह है कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके जो नेता अहमदनगरके नजरबन्द शिविरसे इधर-उधर स्थानान्तरित किये गये हैं, उनको शीघ्र मुक्त कर दिया जाये। निरपराध लोकप्रिय नेताओंको नजरबन्द रखनेकी सरकारकी हठधर्मी अब पराकाष्ठापर पहुंच कर असह्य हो रही है।

यह वस्त्र सङ्कट मिटाओ—

बङ्गालके वर्तमान वस्त्र-सङ्कटके सम्बन्ध में जो खबरें मिल रही हैं, वे साफ बतलाती हैं कि स्थिति दिन-दिन बदतर होती जा रही है। इधर बङ्गाल सरकारने रेशनिंग व्यवस्था जारी करनेकी जो घोषणा की है और तदनुसार कलकत्तेमें कपड़ेकी दुकानों और गोदामोंमें पुलिस अफसर और कर्मचारी सील लगा रहे हैं, उससे व्यापारी समाज की हृदयहीनता और सरकारी अफसरोंकी गैर-जिम्मेदारीका एक सनसनीदार रहस्योद्घाटन हुआ है। सरकार द्वारा निर्धारित मूल्यपर धोती और साड़ी वितरण करनेवाली कलकत्तेकी दुकानोंके सामने जहां सम्भ्रान्त परिवारकी हजारों महिलाएं एक साड़ीके लिये दिन-दिन भर कड़ी धूपमें तड़पती और तपस्या करती देखी गयी हैं, वहां पुलिसके अफसरोंने वस्त्र नियन्त्रण आन्दोलन के सिलसिलेमें कपड़ेकी कई हजार ऐसी गांठों को बरामद किया है, जिनके लिये कोई वारिस तक खड़ा नहीं हो सका है और वे सारी गांठें पुलिसने अपने जिम्मे ले ली हैं। चोर बाजारमें गरीब निरीह जनताकी गाढ़ी कमाईपर चर्बीले होनेवाले व्यापारी समुदायके नैतिक पतनका इससे बढ़कर घृणित प्रमाण और क्या हो सकता है। क्या यह स्थिति तथाकथित दानी पूंजीपतियोंके सम्बन्धमें यह लोकोक्ति चरितार्थ नहीं करती कि 'चोरी करे निहाइकी करे सूईको दान?' ये बरामद की गयी गांठें आखिर ब्लैकमार्केट खोलनेवालोंके पास आयी कैसे? यह एक ऐसा प्रश्न है जो शासकवर्गकी गैर-जिम्मेदारी और अनाचारका भंडाफोड़ करता है। अब भारतीय मिलोंमें उत्पादित समस्त वस्त्रोंपर केन्द्रीय सरकारके वस्त्र नियन्त्रणकारी अफसरोंका एक मात्र अधिकार है, तब ये गांठें अधिकारियोंकी अनजानकारीमें ब्लैकमार्केटमें कैसे पहुंच सकती है? दालमें कुछ काला अवश्य है। खैर, बङ्गालकी नजीमुद्दीन सरकार तो अपनी गैर जिम्मेदारीका फल आखिर पा गयी और उसका अस्तित्व जाता रहा है। अब प्रान्तका शासन प्रबन्ध बङ्गालके गवर्नरके सीधे हाथमें पहुंच गया है। मि० केसी जैसे विश्वासपात्र व्यक्तिको सम्राटकी सरकारने इसी आशा और भरोसा से बङ्गालका गवर्नर नियुक्त किया था कि वे अपने सुशासन द्वारा बङ्गालकी क्षुब्ध जनताको शान्त कर जापानके विरुद्ध मित्र राष्ट्रीय मोर्चेको अधिक दृढ़ और सङ्गठित करेंगे। गवर्नरको चाहिये कि प्रान्तमें समस्त राजनीतिक दलीय नेताओंका सहयोग और समर्थन प्राप्त करते हुए अपने सुप्रबन्धसे प्रांत के सङ्कटको टालें और वस्त्राभावकी समस्या को सबसे पहले अविलम्ब हल करनेकी हृदय से चेष्टा करें। आजकल विवाह-शादियोंका मौसम है अनेक वैवाहिक सम्बन्ध वस्त्र न मिलनेके कारण ही रुके हुए हैं। कलकत्तेके कपड़ेके गोदामों और दुकानोंमें सील लग जानेसे वस्त्र-सम्बन्धी समस्या इधर और जटिल हो गयी है। इसलिये जनताके कष्टोंको दृष्टिमें रखते हुए शीघ्र आवश्यक कार्यवाही होनी चाहिये।

साहित्यकार संसदका स्वागत—

हिन्दीके धुरन्धर साहित्यकारोंकी आर्थिक अवस्था जैसी शोचनीय है, उसका वर्णन करते समय लौह लेखनी भी थर्रा उठती है। हिन्दी और उर्दूके उपन्यास-सम्राट प्रेमचन्दजीका जब स्वर्गवास हुआ तो उनकी अन्त्येष्टि क्रियाके लिये मित्रों और अन्य साहित्यिक बन्धुओंसे सहायता ली गयी। चांदके पूर्व सम्पादक मुंशी नवजादिकलाल श्रीवास्तवका देहावसान जिस समय कलकत्ते में हुआ, मुंशीजीके परिवारको घर पहुंचाने के लिये पैसे मांगने पड़े थे। युगान्तरकारी साहित्यकार निरालाजी भयङ्कर आर्थिक सङ्कटमें जीवन-यापन कर रहे हैं। आज इनके समान कोई साहित्यकार विदेशोंमें होता तो किसी बड़े राजासे कम उसकी आर्थिक स्थिति नहीं होती। किन्तु भारत पराधीन और उसपर भी हैं ये हिन्दीके साहित्यकार! आनन्दका विषय है कि श्रीमती महादेवीजी वर्मा तथा अन्य सहृदय साहित्यिकों एवं हिन्दी भाषाके साधकोंके सत्प्रयाससे साहित्यकार संसदकी स्थापना की गयी है जिसके अध्यक्ष हैं राष्ट्र महाकवि मैथिलीशरणजी गुप्त, उपाध्यक्ष श्री माखनलालजी चतुर्वेदी, प्रधान मन्त्रिणी श्रीमती महादेवीजी वर्मा, मन्त्री आचार्य हजारी प्रसादजी चतुर्वेदी और कोषाध्यक्ष श्री रामकृष्णदासजी। इस संस्था का उद्देश्य और ध्येय बिना किसी भेदभाव के साहित्यकारोंकी सहायता करना और अधिक सङ्कटमें फंसे हुए साहित्यिकोंकी अवस्थासे साहित्यिक जगतको परिचित कराना तथा उनकी आर्थिक सहायताके लिये आवश्यक व्यवस्था करना है। यह संस्था एक ऐसी साहित्यिक निधि एकत्र करेगी, जिससे संकटग्रस्त लेखकों और साहित्यिकोंके परिवारोंकी सहायता की जा सके। लेखकोंके स्वार्थ प्रकाशकों द्वारा बहुत सस्ते हड़प लिये जाते हैं। यह संस्था ऐसी चेष्टा करेगी जिससे लेखकोंको अपने परिश्रमका उचित पुरस्कार मिल सके। महादेवीजीने संसदका कार्य आरम्भ करनेके लिये ५०००) और कुल एक लाख रुपयेके लिये अपील की है। संस्थाके पवित्र उद्देश्य और कठिन कार्यको दृष्टिगत रखते हुए उसके सत्साहसकी प्रशंसा सभी साहित्यिक और देशप्रेमी करेंगे। साहित्यकारोंका महत्व राष्ट्रीय स्वातन्त्र्यके लिये कितना अधिक है, रूसके साहित्यकारों ने स्पष्ट रूपसे प्रदर्शित किया है। इसलिये अपनी परतन्त्रतासे मुक्ति पानेके लिये हम जो प्रयास करते हैं, साहित्यिकोंकी यह सेवा भी उसका एक अङ्ग ही मानी जानी चाहिये। हमारा ख्याल है कि इस संस्थाके कोषमें हर व्यक्तिकी पवित्र कमाईका पैसा और प्रत्येक जन इस संस्थाको प्रदान करना एक अपना परम कर्तव्य होगा तथा संस्थाको अपनी योजना न्वित करनेमें आर्थिक कठिनाइयोंका बला नहीं करना पड़ेगा। हम इस हितकारी संस्थाका हार्दिक स्वागत हुए इसकी सफलताके लिये शुभ करते हैं।

शहीदोंकी टोली—

चिमूर-अष्टीकांडके जिन ७ नौज प्राणरक्षा करके दया दिखलानेके सम्राटसे अपील की गयी थी, वह ब पर पड़ी। अतएव मानव-हृदय तक उसको छुआ नहीं जा सका। ब्रिटि के हृदयपर इन नवयुवक देशभक्तों कोई असर नहीं उत्पन्न हो सका इन्होंने अपीलकी दर्खास्तको अस्वी दिया। परिणामतः अब इनकी इहली को समाप्त करके ही शासकगण यूनाइटेड प्रेसकी रिपोर्टके अनुसार आरम्भमें ही किसी दिन रङ्गमें सिरसे पैर तक रङ्गे हुए इन टोली वास्तवमें शहीदकी टोली परिणत कर दी जायेगी और ये शही हंसते फांसीके फन्देको गले लगा अधिकारियोंकी दृष्टिमें इन नौज चाहे जितना भी जघन्य अपराध कि लेकिन इनकी अवस्थापर विचार मानवता सामने आकर खड़ी हो ज यही कारण है कि जिस तहसीलदा का अपराधी इन्हें करार दे दिया उसकी स्त्री तकने अपील की थी कि प्राणदान दिया जाये। लेकिन अन्त हुआ जो ईश्वरको मंजूर था और कुछ करते हैं वह उचित ही समझ यह सोचकर इन शहीदोंके परि एवं इनकी धर्म पत्नियोंको अपने शांत्वना देनी चाहिये। उन्हें इस सन्तोष करना चाहिये कि इन सपूतों महान उद्देश्यको पूरा करनेमें अपना विरत किया है। संसारमें जिसने जन्म है, उसका एक दिन मरना निश्चित लिये किसी महान उद्देश्यको पूरा लिये अपने जीवनका अन्त करना का काम कहा जाता है। ईश्वर इन शान्ति प्रदान करें।

लायड जार्जका निधन—

गत सोमवारको कराल काल लार्ड लायड जार्जके निधनमें सं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त राजनीति वक्ताको उठा लिया। ब्रिटेनने अनुपम राष्ट्रभक्त खो दिया और में बहुत दिनोंके बाद ही उसकी पूर्ति हो सकेगी। आकर्षक व्यक्तित्व वक्तृत्व और विलक्षण मेधा उनकी थीं। गत महासमरमें उन्होंने देशका पद स्वीकार कर ब्रिटेनको विजयी था। उदार दलके अपने समयके ये नेता थे। ब्रिटेन अपने एक सर्वोच्च नेताको खोकर अवश्य दुखी होगा। स्वर्गीय आत्माको चिरशान्ति प्रदान

जर्मनीके राकेट बम

———*———

[श्री भगवती प्रसाद श्रीवास्तव एवं श्री सत्यदेव तिवारी]

इस महायुद्धमें राकेट बमका सर्वप्रथम ... जर्मनी द्वारा रूसके विरुद्ध हुआ है। ... और उन्नत रूपमें उड़नबमका ... १९४४ में इङ्गलैण्डके खिलाफ जर्मनों ... किया था, जो अब तक जारी है। ... उस श्रेणीके बमोंकी गणना जर्मनी-... गुप्तास्त्रोंमें की जाती है, जिनके सहारे ... सेनाओंने मित्रोंको नीचा दिखानेकी ... आशा कर रखी थी। हिटलरकी यह ... कहां तक सफल हुई, इसका अनुमान ... केवल इस बातसे लगा सकते हैं कि ... १९४४ के पहले सप्ताहके अन्त तक ... उड़न तथा राकेट बम लन्दनके ... अन्धाधुन्ध गिराये गये; फिर भी युद्धके दृष्टि-... ब्रिटेनको कुछ विशेष क्षति नहीं ...।

... मोर्चेपर जर्मनीने जो राकेटबम ... किये, उनके उत्तरमें रूसी सैनिकों-... शक्तिशाली राकेट बमोंका प्रयोग कर ... जवाब दिया। रूसी राकेट बमोंका ... वायुयानोंपरसे किया जाता है। ये ... वायुयानके पेंदेमें क्लिप द्वारा लगा दिये ...। अपने लक्ष्यसे काफी फासलेसे ही ... विद्युत प्रवाह द्वारा दाग दिये जाते ... दागते ही उनकी पूंछमें भरे हुए ... पदार्थ विस्फोट करने लग जाते और ... राकेटबम चालकशक्ति हासिल ... आगे अपने लक्ष्यकी ओर आगे बढ़ते ... का कहना है कि रूसके राकेट ... टैंकोंको भारी क्षति पहुंचायी है। ... प्रयोगमें सबसे बड़ी सुविधा ... रहती है कि बम गिरानेवाले ... लक्ष्यके ऊपर पहुंचनेकी आव-... नहीं होती। इस प्रकार वे उस स्थानकी ... विध्वंसिनी तोपोंकी मारसे बच ...।

राकेटबमका मूल सिद्धान्त आतिश-बाजीके अग्निबाण-जैसा है। इस बाणकी पूंछमें बारूद भरी होती है। उस बारूदमें आग लगा देनेपर बारूद विस्फोट करती है और विस्फोटसे बनी हुई गैसें तीव्र वेगसे पूंछके रास्ते बाहर भागती हैं। उनकी प्रति-क्रियासे जो धक्का लगता है, उसीके जोरसे बाण ऊपरको तीव्र वेगसे भागता है। जब तक पूंछकी सारी बारूद खतम नहीं हो जाती, तब तक बाणको आगे बढ़नेके लिये बराबर शक्ति मिलती रहती है।

इञ्जीनियर नेबल द्वारा निर्मित एक जर्मन राकेट बम, जो पेट्रोल और द्रव आक्सिजन द्वारा सञ्चालित होता है।

युद्ध छिड़नेके कई साल पहलेसे ही अमेरिका और जर्मनीमें राकेट सम्बन्धी अनुसन्धान किये जा रहे थे। अमेरिकाके प्रोफेसर गौडार्डका नाम इस सम्बन्धमें विशेष उल्लेखनीय है। आप कई सालसे ऐसा राकेट विमान तैयार करनेका प्रयत्न कर रहे हैं, जो ऊर्ध्वाकाशकी विरल वायुमें भी आसानीसे उड़ सकेगा। आकाशमें छः सात मीलकी ऊंचाईपर हवा इतनी पतली हो जाती है कि वायुयानके पंखकी पकड़में नहीं आती है। अतः वे हवाको काटकर आगे बढ़नेकी शक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। यहांपर राकेटके सिद्धान्त पर ही वायुयानको आगे बढ़नेकी शक्ति मिल सकती है। कुछ मनचले वैज्ञानिकोंने तो इस सम्भावनाकी भी कल्पना की है कि राकेटविमानों द्वारा वे निरे वायुविहीन आकाशको पार करके चन्द्रलोक आदिकी यात्रा कर सकेंगे। वैज्ञानिकोंके ये स्वप्न कभी सच उतरेंगे या नहीं, इस प्रश्नका उत्तर भविष्य ही देगा। किन्तु ब्रिटेनके इञ्जीनियरोंने पंखके बिना वायुयान तैयार कर लिये हैं, जो राकेटके सिद्धान्तपर उड़ते हैं। वायुयानोंके विकासमें इस ढङ्गके वायुयानोंका आविष्कार एक महत्वपूर्ण युगका आविर्भाव करता है। युद्धोत्तरकालमें पंख-विहीन वायुयान व्यापारिक कामोंके लिये बड़े पैमानेपर इस्तेमाल किये जा सकेंगे, इसमें सन्देह नहीं।

लक्ष्य-भेदन उड़ाया गया जर्मन राकेट बम।

सर्चलाइटके प्रकाशमें उड़नबमका मार्ग।

आइये, जर्मन उड़न-बमोंका निरीक्षण करें। जर्मन उड़नबम वास्तवमें एक छोटे वायुयानकी शक्लके होते हैं। इस कारण उन्हें चालक-विहीन विमानके नामसे भी पुकारते हैं। वायुयानकी तरह इसमें भी पंख लगे होते हैं। पंखकी लम्बाई १७॥ फुट होती है। इसके मुख्य ढांचेके ऊपर सिगार की शक्लकी एक मोटी नली लगी रहती है, जिसमें चालन शक्तिका सृजन होता है। इस नलीकी लम्बाई ११ फुटसे कुछ ऊपर होती है। नलीकी पूंछ खुली होती है, किन्तु सामनेवाले भागमें झिलीदार खिड़कियां बनी रहती हैं। खिड़कियोंकी झिल्ली स्प्रिङ्गके सहारे खुलती और बन्द होती है।

उड़नबमके अग्रभागमें लगभग ३० मन तीव्र विस्फोटक भरा होता है। लक्ष्यसे जब बम टकराता है तो यही विस्फोटक पदार्थ धड़ाकेके साथ विस्फोट करता है। विस्फोटक चेम्बरके पीछे ही पेट्रोलकी टङ्की होती है। इसमें १५० गैलन पेट्रोल एक बारमें भरा जा सकता है। उस टङ्कीके पीछे दो विशाल-काय पीपोंमें संकुचित वायु कसकर भरी होती है। सबसे पिछले भागमें जायरस्कोप के सिद्धान्तपर बने अनेक स्वयंक्रिय यन्त्र लगे रहते हैं, जो इस चालकहीन विमान के पतवारको हिला-डुलाकर उसे अपने निर्दिष्ट मार्गपर सीधे रहते हैं।

चालनशक्ति उत्पन्न करनेवाली नलीमें पहले अलगसे एसिटिलीन गैस डालकर उसे विद्युत चिनगारीसे दागते हैं। इस विस्फोटन के जोरसे उड़नबम अपने 'स्टैण्ड' को छोड़ कर १८० मील प्रति घण्टेके वेगसे आगे भागता है। एसिटिलीन गैसके विस्फोटनसे इतनी अधिक गर्मी उत्पन्न होती है कि नली की दीवाल, जो इस्पातकी चादरकी बनी होती है, लाल तप्त हो जाती है। अब उड़न बम जब तीव्र गतिसे आगे बढ़ता है तो हवा के झोंकेसे नलीकी खिड़कीकी झिल्लियां खुल जाती हैं और नलीके अन्दर बाहरकी हवा प्रवेश करती है। ठीक उसी वक्त पेट्रोल

दक्षिणी इङ्गलैंडको वेधनेके लिये एक उड़नबम लगानेके स्थानपर ले जाया जा रहा है।

चेम्बरसे पतली नली द्वारा पेट्रोलका फौवारा भी यहां आता है। चूंकि नलीकी दीवाल लाल तप्त रहती है, इसलिये पेट्रोलकी फुहार और हवाका मिश्रण इसके स्पर्शमें आते ही विस्फोट कर जाता है। विस्फोट करनेपर इतनी अधिक मात्रामें गैसें बनती हैं कि उनके जोरसे सामनेवाली खिड़कीकी झिल्ली और पेट्रोलआनेका रास्ता, दोनों बन्द हो जाते हैं, गैसें पीछेकी ओर भाग सकती हैं। उनके धक्केसे समूचे उड़नबमको आगे बढ़नेके लिये शक्ति मिलती है। विस्फोटनकी गैसोंके एकाएक बाहर निकल जानेपर नली के भीतर दबाव हल्का पड़ जाता है और बाहरकी हवा फिर खिड़कीकी झिल्लीको धक्का देकर भीतर पहुंचती है तथा पेट्रोलका भी रास्ता खुल जाता है। विस्फोटन क्रियाकी इस प्रकार बार-बार पुनरावृत्ति होती रहती है। प्रति मिनिटमें ५५ बार इस नलीमें विस्फोटन होता है—इस तरह एक मिनिटमें ४५ बार उडन बमको आगे बढ़ानेके लिये धक्का मिलता है। हिसाब लगानेपर इस इंजिनकी शक्ति ६०० अश्व-बल ठहरती है।

उड़न बमकी उड़ानपर नियंत्रण रखनेके लिये जायरस्कोप स्वयंक्रिय पायलटका प्रयोग किया जाता है। इस तरहके दो पायलट पीछे लगे होतेहैं। एक उड़नबमको दायें-बायें घुमानेवाले पतवारको साधता है, और दूसरा ऊपर नीचे उठानेवाले 'एलीवेटर' पर नियंत्रण रखता है। विमानके अग्रभागमें मास्टर जायरस्कोप लगा होता है, जो इन दोनों जायरस्कोपपर इस प्रकार नियन्त्रण रखता है कि ये अपने काममें किसी प्रकार की त्रुटि न कर सकें।

बमकी उड़ानकी दूरी निश्चित करना भी आवश्यक होता है ताकि वे अपने लक्ष्य तक अवश्य पहुंच सकें। बमकी नाकपर एक छोटा-सा प्रोपेलर लगाते हैं। प्रोपेलरका सम्बन्ध नाकपर लगे हुए एक 'काउण्टर' से रहता है। काउण्टरको घुमाकर किसी नियत अङ्कपर लगा देते हैं। ज्योंही उड़नबम रवाना होता है, प्रोपेलर हवाके वेगसे घूमने लगता है। प्रोपेलरके ३० बार घूमनेपर काउण्टर एक अङ्क पीछे खिसक जाता है। काउण्टर जिस क्षण शून्यपर पहुंच जाता है, ठीक उसी क्षण विद्युत प्रवाह द्वारा बमकी पूंछके नीचे दो छोटे पटाखे-से फटते हैं और उनके आघातसे पूंछके एलीवेटरको उठानेवाला एक यन्त्र चालू हो जाता है। फलस्वरूप बमकी पूंछ ऊपर उठ जाती है और बमकी नाक नीचेको झुककर अपने लक्ष्यकी ओर गोता लगाती है। ठीक इसी समय पतवार और एलीवेटरको साधनेवाले जायरस्कोप पायलटसे इनका सम्बन्ध विच्छेद करनेके लिये एक नन्हा-सा चाकू उस रबरकी नली को काट देता है, जो उन दोनोंके सम्बन्धको जोड़ती है। बमके गोता लगाते समय टङ्की का पेट्रोल ऊपर उठ जाता है और विस्फोटक चेम्बरमें पेट्रोलका पहुंचना रुक जाता है—अतः इञ्जिन भी अपना काम करना रोक देता है। इङ्गलैंडमें जब ये बम उड़ते हुए पहुंचते हैं, तो नागरिक इनके इञ्जिनकी आवाजके बन्द होते ही सतर्क होकर रक्षा-गृहोंमें शरण लेनेके लिये भाग जाते हैं, क्योंकि उन्हें मालूम हो जाता है कि अब बम नीचे गिरने ही वाला है। इस प्रकार उड़नबम स्वयं अपने गिरनेकी सूचना भी दे देते हैं। साधारणतया उड़नबमोंमें रेडियो यन्त्र नहीं लगे होते, किन्तु इङ्गलैंडपर गिरे उड़नबमोंमें प्रति १०० पीछे ३ बमोंमें रेडियो यन्त्र लगे हुए पाये गये हैं। जब ये बम नीचे गिरते हैं, इनके ट्रान्समीटर यन्त्रसे संकेत ट्रान्समीट होते हैं, जिन्हें जर्मनीके रिसीविंग यन्त्र ग्रहण करके यह पता लगा सकते हैं कि बम कितनी दूर जाकर गिरे हैं।

उड़न बमको फ्रेंच तटसे दागनेके लिये जर्मनोंने फ्रांसमें ब्रिटिश चैनेलके निकटवर्ती प्रदेशोंमें बीसियों डिपो बना रखे हैं। डिपो-पर वृक्षोंके झुरमुटमें भलीभांति कैमूफ्लेज करके शेडनुमा मकान भी उन्होंने बनाये हैं। इन्हीं मकानोंके अन्दर उड़नबमके भिन्न-भिन्न अंगोंके पुर्जे एक दूसरेसे जोड़कर समूचे उड़नबमका शरीर तैयार किया जाता था क्योंकि जर्मनीके कारखानोंसे उड़नबमों के पुर्जे ही यहां वायुयानों द्वारा लाये जाते थे। शेडके बगलमें ही बमको दागनेके लिये रेलकी पटरीका प्लैट फार्म बना हुआ है। इस प्लैटफार्मपर लोहेकी दो पटरियां लकड़ीके स्लीपरोंपर जमायी गयी हैं—ये पटरियां ठीक रेलगाड़ीकी पटरियां जैसी दीखती हैं। इनकी लम्बाई २०० फुट होती है—सामनेकी ओर ये ७ अंशके कोणपर उठी रहती हैं। उड़नबमको निचले सिरेपर रखकर बगलके शेडमें स्विच दबाकर विद्युत करेण्ट द्वारा बमको दागते हैं। इन रेलकी पटरियोंका मुंह ठीक लन्दनकी ओर रहता था। इनकी उड़ानकी दूरीको विभिन्न यन्त्रों द्वारा इस तरह सेट किया जाता था कि ये लन्दनके आसपास १८-२० मीलके घेरेमें गिरे। फायर किये जानेके बाद एक निश्चित ऊंचाई तक आकाशमें उठकर ये धरतीके समानान्तर हो जाते हैं और अपने लक्ष्यकी ओर अग्रसर होते हैं।

उड़न बमके उत्पातको रोकनेके लिये ब्रिटेनके अधिकारियोंने दो उपायोंकी शरण ली है। प्रथम ब्रिटिश बमवर्षक वायुयान नियमित रूपसे एक बड़ी संख्यामें जाकर फ्रांसमें उन स्थानोंपर बमवर्षा करते हैं, जहां उड़न बमके डिपो बने हुए हैं। द्वितीय जब ये बम इङ्गलैंडपर उड़ते हुए दिखलायी देते हैं, तो ब्रिटिश लड़ाकू वायुयान उनपर आक्रमण करके इन्हें आकाशमें ही विस्फोट करा देते हैं। अतः धरतीपर पहुंचकर ये क्षति पहुंचानेमें समर्थ नहीं हो पाते। स्वरक्षा विभागके आफिसमें चौबीसों घण्टे कर्मचारीगण मेजपर बने दक्षिण इङ्गलैंडके नक्शेपर इन उड़न बमों की गतिविधिको अङ्कित करते रहते हैं। इस कण्ट्रोल आफिसका संचालक इन उड़नबमोंपर आक्रमण करनेके लिये सम्बधित क्षेत्रके लड़ाकू वायुयानों तथा ऐण्टीएयरक्राफ्ट तोपों को आदेश देता रहता है।

दक्षिणी-पूर्वी इङ्गलैंडमें बमोंसे बचनेके लिये बनाया गया एक सुदृढ़ आश्रय गृह।

लन्दनके वाह्य क्षेत्रोंमें धरतीसे १०० फुट की गहराईपर अनेक वृहदकाय रक्षागृह जन-साधारणके उपयोगके लिये बनाये गये हैं। उड़नबमोंके आक्रमणके समय जनता इन रक्षागृहोंमें शरण ले सकती है। इन रक्षा-गृहोंमें कई हजार व्यक्ति सो सकते हैं। प्रत्येक रक्षागृहमें प्राथमिक उपचारका आयोजन है। इन तहखानोंमें दिन-सरीखे प्रकाश करनेवाले विद्युत बल्ब जलते रहते हैं। आमोदगृह तथा बच्चोंके खेलने-कूदनेके लिये भी प्रबन्ध यहां रहता है।

रातको उड़नबमके दृष्टिगोचर होते ही सर्चलाइटकी तेज रोशनी आसमानमें फेंकी जाती है—उड़नबमको रास्ते भर [illegible] रोशनीके दायरेमें रखा जाता है [illegible] एण्टीएयरक्राफ्ट तोपें उनपर निशाना [illegible] सकें।

फ्रेंचतटके अनेक उड़नबम-डिपो [illegible] किये जानेपर जर्मनोंने अपने बमवर्षक [illegible] यानोंकी पीठपर इन उड़नबमोंको [illegible] आरम्भ किया है। उड़नबमोंकी उड़ा[illegible] भग १५० मीलतक पहुंचती है। अतः [illegible] १११ श्रेणीके बमवर्षक-वायुयान इन्हें पीठपर लादकर ब्रिटिश चैनेलके मुहाने तक ले आते हैं—वहीं उड़ते हुए बम[illegible] पीठपरसे ये उड़नबम विद्युत कण्ट्रोल[illegible] किये जाते हैं। फायर करनेके [illegible] बमवर्षक अपना मुंह लन्दनकी ओ[illegible] लेता है तथा अपना इञ्जिन बन्द कर [illegible] ज्योंही उड़न बम पीठपर छूटा, [illegible] अपना मुंह फेरकर जर्मनीकी भागता है।

उड़नबम सम्बन्धी प्रयोग [illegible] जर्मनीके स्टेटिन नगरके निकट 'पीने[illegible] किया जा रहा है। यह स्थान [illegible] ७०० मीलकी दूरीपर है। किन्तु [illegible] बमवर्षकोंने पीनेमुण्डीकी प्रयोगशाला [illegible] बमवर्षा करके उसे बेहद क्षति पहुंचा[illegible] इस प्रकार उड़नबमके उत्पादनको [illegible] तक रोकनेमें ये समर्थ हुए हैं।

जर्मनीके उड़न बम एक तरहसे [illegible] उद्देश्यमें निष्फल साबित हुए, क्योंकि [illegible] लैण्डको उतनी क्षति नहीं पहुंचा सके, [illegible] जर्मन ने सोच रखा था। अतः [illegible] इससे भी भयानक अस्त्र राकेट बम [illegible] निर्माण किया है। यह उड़न बमों[illegible] बातोंमें भिन्न होता है। इसकी सबसे [illegible] विशेषता यह है कि इसकी गति [illegible] तीव्र होती है—ध्वनिकी गतिसे भी [illegible] स्मरण रहे कि ध्वनि प्रति घण्टा [illegible] का फासला तय करती है और वी २ [illegible] में ७०० मीलसे अधिक रफ्तारसे उड़[illegible] वी २ की शक्ल वायुयान जैसी नहीं [illegible] इसकी शक्ल सिगार जैसी होती है। [illegible] ४६ फुट तक पहुंचती है। पेटकी मुटाई [illegible] भग १ फुट होती है। इसके शरीरके [illegible] भागमें लगभग २५ मन विस्फोटक पदार्थ रहते हैं। वी २ का कुल बोझ १२ टन [illegible] है। बमकी पूंछपर चार पतवार एक[illegible] साथ समकोण बनाते हुए लगे रहते [illegible] पतवार उड़ते हुए राकेट बमकी [illegible] सामनेकी ओर किये रहते हैं, वरना [illegible] में हवाके धक्केसे बमका अग्रभाग [illegible] पीछेकी ओर भी घूम सकता था। [illegible] अपनी चाल-शक्तिके लिये उड़न बम[illegible] बाहरकी हवाकी जरूरत नहीं पड़ती। [illegible] अन्दर रखी हुई ईंधनकी टङ्कीमें [illegible] इञ्जिनके लिये पूरा सामान भरा र[illegible] इसी कारण अत्यधिक ऊंचाईपर [illegible] हवा नहींके बराबर होती है, इन बमों[illegible] अपना काम करते रहते हैं। फायर [illegible] लिये इन्हें सीमेण्टके बने प्लैटफार्म[illegible] कर दूरसे विद्युत-स्विच दबा [illegible] इंजिनमें विस्फोटन क्रिया आ[illegible] देते हैं। विस्फोटनसे उत्पन्न [illegible]

(शेष १६ वें पृष्ठपर देखिये)

अब माधवपुर श्री-हीन-सा क्यों
इस गांवकी श्री तो यशोधरा थी। यशो-
के घरमें आज आने-जानेवालोंकी भीड़
ी हुई है। यशोधरा अपने एक बहुत पुराने
को बुलाकर बोली—राउत!
राउत सामने आकर बोला—कहिये
आज्ञा है?
कुंअरानी—देखो, मैं बचनेको नहीं।
राउत आंखोंमें आंसू भरकर बोला—
ी, आप ऐसी क्यों कहती हैं। अभी तो
जीनेके दिन हैं।
कुंअरानी—देखो, आना-जाना अपने
का नहीं। जब जिसकी बारी आती है
उसको जाना ही पड़ता है। तुमको छोड़ते
मुझे खुद दुख हो रहा है।
राउत—आपके बिना तो यहां हजारों
थ हो जायंगे।
कुंअरानी—तो मैं क्या करूं। मैं अपने मन
नहीं जा तो रही हूं। तुमसे ये बातें छिपी
हैं। मैंने जीवनको भोगकी निगाहसे
नहीं देखा, यह तो तुम जानते ही हो।
किसीका जीवन दुनियामें सुखका
होता है? यह तो कर्मभूमि है। कर्म
के लिये आदमी आता है। मैं तुमसे
बता देना चाहती हूं राउत, कि जब-
मुझे अपने दुश्मनोंकी याद आती है तब
की बुद्धिपर बड़ी दया आती है। मैंने इसे
भी भोगकी चीज नहीं समझा। मुझपर
क्या कलङ्क नहीं लगाया गया। ऐसे-
कलङ्क लगाये गये जो नारीके लिये
अपमानकी चीज हैं। जिस नारीमें कुछ
स्वाभिमान होगा, वह उन शब्दोंको सुनकर
जीवित रह सकती थी? मगर हां, मैंने यह
था कि यह तो कर्मभूमि है। जो जैसा
आती है, अपना-अपना पार्ट अदा करके
चला जाता है। कौन कैसा खेला, इसे खेलने
कभी नहीं जानते। उसके खेलका निर्णय
के न रहनेपर जीवित जनता करती है।
अन्तिम इच्छा है कि मेरी लाश अब
उन दुश्मनोंके हाथ न दी जाय।
राउत—हाथ जोड़ता हुआ बोला—यह
हो सकता है, कुंअरानीजी! आप
भी तभी तक हैं, जब तक आप जिन्दा
उसके बाद जो कुछ आपका है, वह और
की लाश खुद आपके उन दुश्मनोंके हाथ
ी। हम कुछ नहीं कर सकते।
कुंअरानी—तुम यह नहीं कर सकते।
जानती हूं कि कानून तुम्हें रोकता है।
मेरे पास कुछ न होता तो कानूनकी
न लगी होती। सम्पतिके पीछे मेरी
भी मेरी न रह जायगी। यदुनन्दनसिंह
को बुलाओ। मैं उनके सामने लाशकी
करना चाहती हूं।
राउत—जैसा आपका हुकम।
एक स्वाससे सभी बोल उठे, हां, मां, हम
करनेको तैयार हैं।
कुंअरानी—मैं ऐसी ही आशा रखती
तुम वकीलको बुला लाओ।
वकील चला जाता है। सारे गांवकी
भर रही है।
कुंअरानी सबको बड़े ध्यानसेदेखती हैं।
कुंअरानी—देखो, मेरा काम तो खतम
। मेरे जीवनसे अगर कोई शिक्षा तुम्हें

कहानी

वसीयतनामा

—:*:—

श्रीमती शिवरानी प्रेमचन्द

मिली हो तो मेरा सौभाग्य है और मैं अपने को धन्य मानूंगी। तुम लोग आपसमें द्वेष न करके प्रेम रखना।

राउत—वकील साहब अब खैर कराओ।

कुंअरानी उठनेकी कोशिश करती हैं।

यदुनन्दनसिंह—मां, उठो मत मैं पास ही बैठता हूं। वे बैठते हुए बोले—कैसी तबियत है मां।

कुंअरानी—मैंने आपको तकलीफ दी है इसलिये कि मैं अपनी लाशकी वसीयत करना चाहती हूं।

यदुनन्दन सिंह—इसमें वसीयत क्या करना है?

कुंअरानी—वसीयत इसलिये करनी है कि मैं लाशको अपने इन बेटोंको देना चाहती हूं।

वकील—आखिर जायदादके वारिसों-को क्यों नहीं लाश दी जाती? लाश तो उनकी होती हैं।

कुंअरानी—आप भी ऐसा कहते हैं? और वे लोग लाश पाकर खुश थोड़े ही होंगे? उनकी संपत्ति है जिस वक्त मुझे यहसंपत्ति मिली उस वक्त उके पिताजी थे। उस वक्त संपत्तिके पीछे उन्होंने व्यभिचारकी बातें उड़ायीं। मैं उसी वक्त यह संपत्ति छोड़ देती। मगर नहीं, उन लोगोंने इस प्रकार मुझे चिढ़ाया और अपमानित किया कि मुझे मजबूरन उनको हटा करके काबिज होना पड़ा। तबसे आज तक मुझे इस संपत्तिको लेकर तपना पड़ा। हालांकि मैं इसे तपना नहीं मानती। यह मेरा राउत बहुत पुराना नौकर है।

राउत पास ही बैठा हुआ बड़े करुण शब्दोंमें बोला—इलाका तो हम लोगोंके लिये था। कुंअरानी साहबाने क्या सुख भोगा? कुंअरानी साहबा तो अपनेलिये एक छटांक चावल रखती थीं। वह भी एक जून। हम लोगोंके लिये इन्होंने मछली और गोश्त तक बनाया। उसीके आनन्दमें आकर ये हमेशा हम लोगोंको बेटा कहती थीं। कौन-सा इलाका है, जहां अपने आदमियों को सुख न हो। रामराजका सुख दरअसल यहां था।

वकील—क्या आप इन लोगोंके नाम लाशकी वसीयत करना चाहती हैं?

कुंअरानी—हां, साहब, इसीलिये तो बुलाया है।

वकील—मैं तो सोचता हूं, अन्तिम क्रिया अपने परिवारवालोंके ही हाथ अच्छी होगी।

कुंअरानी—नहीं। परिवारके माने क्या हैं भाई साहब! परिवार तो रुपयेके लिये जायदादके लिये, होता है। जो इज्जत लूटनेपर उतारू हो, वह परिवारका थोड़े ही हो सकता है। जो अपना होता है, उसके लिये दिलमें प्रेम होता है, उसके लिये श्रद्धा होती है। (नौकरोंकी तरफ इशारा करके) अपने तो ये हैं। मैं तो समझती हूं, जिन्होंने सारी जिन्दगी मेरे साथ बितायी उन्हींको मेरी लाश भी मिलनी चाहिये। मेरे पास और है ही क्या है? जायदाद तो है नहीं। मेरे पास जो है, उसे इन्हें लेना चाहिये।

वकील—अगर आपकी यही इच्छा तो यही कीजिये। मैं तो जो मुनासिब समझता हूं, वही राय दूंगा।

कुंअरानी—वसीयत लिखनेका कागज लाये हैं आप।

वकील—मेरे पास सब मौजूद है, बोलिये लिख दूंगा।

कुंअरानी—मेरी वसीयत यही है कि मेरी अन्तिम लाश मेरे धर्म-पुत्रोंको मिले। मेरे परिवार वाले मेरी लाश पानेके अधिकारी नहीं हैं।

वकीलने हस्ताक्षर करनेके लिये कागज बढ़ाया।

कुंअरानी वकीलसे बोली—आप भी अपनी दस्तखत करें।

दस्तखत करनेके बाद राउतके हाथमें देती हुई वह बोली—मेरे पास जो कुछ था, वह सब तुम्हारे नाम वसीयत कर दिया है। इसको अपने पास रखे रहना। बगैर उन लोगोंको खबर दिये मेरी अन्तिम क्रिया कर लेना। मेरे पास जो कुछ भी है, उसे तुम आज ही हटा दो।

राउतके साथ-साथ सबोंकी आंखोंसे आंसू झर पड़े।

राउत बोला—मुझे और कुछ न चाहिये। अन्तिम चीज जो सबसे मूल्यवान थी, हम लोगोंको मिल गयी। प्रेमसे भरे हुए ये शब्द कुंअरानीके चेहरेपर चमक उठे। यह सुख और प्रेम यह अपनावेकी एक लौ थी, जिसके लिये आदमीकी आत्मा हमेशा तड़पती रहती है।

वकीलसे और कुछ न कहने पायी थी कि सदाके लिये कुंअरानी विदा हो गयी।

राउत—आज हम सब अनाथ हो गये।

इसके बाद राउत और अन्य आदमियोंके सिरपर एक बोझसा आ गया। वह बोझ था कर्त्तव्यका।

राउतने उसी वक्त कहा—चलो, हम लोग अपनी मांकी अन्तिम क्रिया करें। उन दुष्टोंका बदला लेंगे। देखें वे लोग हमारा क्या करते हैं?

जब चितापर लाश धरनेका समय आया तो सैकड़ों आदमीके साथ रणधीर सिंहने चिता रोकली—यह क्या?

राउत ललकारता हुआ बोला—खबरदार, आगे कदम न बढ़ाना। इतने दिनों तक कहां गये थे? हम तो लाश फूंकने आये हैं, कोई जायदाद नहीं फूंक रहे हैं।

लाशके साथ कई हजार आदमी थे। आगे बढ़नेकी हिम्मत नहीं पड़ी। फलतः अदालतकी शरणमें गये।

*   *

कचहरीमें बड़ी भीड़ है। ऊंचे खानदानकी स्त्रियां और नीची श्रेणीकी भी स्त्रियां निर्णय सुनने आयीं। आपसमें स्त्रियां कानाफूसी कर रही थीं कि जायदादके लिये तो थे ही, कहांसे लाशके लिये ये गिद्ध यहां पहुंच गये।

उनमें एक बूढ़ी स्त्री भी थी। बोली—इन लोगोंने उन्हें कितना सताया था। कितना अपमानित किया, कितना लज्जित, कुछ समझमें नहीं आता।

आखिर मां, क्यों ऐसा करते थे, ये लोग?

बूढ़ी—बेटी, इसलिये करते थे कि वे बदनाम हो जायं तो उनका राज वगैरह ले सकें। जबसे वे मर गये, तबसे इनका नाम आया है। मगर वे बड़ी देवी थीं। बड़ीही बहादुर। सारे आदमी एक तरफ थे, लेकिन इन्होंने लाख बहादुरोंकी देह खाक करके रख दिया। नहीं देखती थी, हम लोगोंके घर कोई भी काम काज पड़े, वे आती थीं।

दूसरी—मां, अगले जन्ममें वे फिर रानी होंगी। इतना दान-पुण्य करती थीं तो सब व्यर्थ जायगा, मां!

बूढ़ी—आंखोंमें आंसू भर कर बोली—उन्हें कुछ सुख नहीं मिला। सुख तो हम लोगोंने किया। उन्होंने तो तप ही किया। भगवान उनकी आत्माको सुखी रखे। जहां वे रहें, सुखसे रहें।

राउतको वे कितना प्यार करती थीं। राउतने भी अपनी बेटीकी तरह उनके साथ व्यवहार किया।

हाकिमकी कारकी आवाज सुनाई पड़ी। सबोंके दिलके अन्दर धड़कन सुनाई पड़ने लगी—देखें, हाकिम क्या फैसला करता है।

सबकी सब एक मुंहसे मांग रही थीं—भगवान करें, राउत जीत जाय।

एक औरत—क्या कोई अपनी लाश भी किसीको नहीं दे सकता?

बूढ़ी—यह सब अंधेर है। आज उनके घरमें पैसा न होता तो उन्हें कोई न पूछता। उन्हें अपमानित करके निकालना चाहते थे।

हाकिम कुर्सीपर बैठ गया।

सभी स्त्रियां राउतकी विजयकी भीख मांग रही थीं।

इजलासपर राउत और उसके साथी बुलाये गये।

हाकिम परगना—यह लाश तुम लोगोंने जलायी है?

राउत—हां हुजूर, हमने जलायी है।

हाकिम—यह काम तो उनके परिवार वालोंको करना चाहिये था।

राउत—हां हुजूर, करना तो चाहिये था। लेकिन जायदादपर उनका अधिकार है, न कि लाशपर। मैं आपसे अर्ज करना चाहता हूं, ९० बरससे मैं उनके साथ था। इन लोगोंने जायदादके पीछे उन्हें निकालना चाहा था। इन लोगोंके दिलोंमें बड़ी होस दुश्मनी थी। जो बातें कहनी चाहिये थी, उन्हें भी कहा और जो न कहनी चाहिये थीं, उन्हें भी कहा। उन देवीजीकी तरह पाक और पवित्र होना मुश्किल है। इसीलिये उन्होंने अन्तिम समयमें इन लोगोंको लाश छूनेसे मना कर दिया था।

समाज-चर्चा

कार्य-कर्त्ताओंसे दो शब्द

—:*:—

[लेखक—श्री 'रेणु']

दुनियाके हरएक समाजमें ऐसी दशाएं उत्पन्न होती ही रहती हैं, जब दूसरों की मददकी जरूरत आ पड़ती है। पुरुष लगड़े होकर भी अपने पैरों आप नहीं खड़े हो सकते। गरीबी और इससे पैदा हुई मुश्किलें तो आमतौरपर हमेशा ही नजर आती रहती हैं। अलावा कुटुम्बोंमें गड़बड़ें और छोटे-छोटे झगड़े हो ही जाते हैं। यह ऐसी चीज है, जिसकी ओर समाजको ध्यान देना ही पड़ता है। फिर भी बहुतसे लोग ऐसे निकल जाते हैं, जो समाज और कुटुम्बमें उचित ढङ्गसे चल नहीं सकते। उनमें चोरी, गुण्डपन, झगड़े आदि बहुत-सी ऐसी आदतें पड़ जाती हैं, जिनसे समाजको या तो नुकसान सहना पड़ता, नहीं तो उन्हें सुधारनेकी कोशिश करनी पड़ती है। स्कूलके बच्चोंकी कभी-कभी ऐसी हालत हो जाती है कि अगर सहानुभूति रखनेवाले किसी बड़े आदमीकी उन्हें मदद मिल सके, तो ऐसे बच्चोंका आचरण बजाय पतनोन्मुख होनेके, उन्नत होने लगे। लोगोंकी प्रतिदिनकी जिन्दगीमें ऐसी समस्याएं आ जाती हैं, जिनसे दिमाग चकराने लगता है और अगर ऐसे वक्तमें उन्हें किसीकी मदद मिल सके तो उन्हें पागलपन के रास्तेसे बचा लिया जा सकता है। अस्पतालोंमें बहुत दफा ऐसे मरीज देखे जाते हैं, जिन्हें दवाके अलावा सहानुभूतिसे बातचीत करनेवाले व्यक्तिकी ज्यादा जरूरत महसूस होती है। और भी बहुत-सी हालतें हैं, जिनमें लोगों, कुटुम्बों और जातिको बाहर से मददकी जरूरत पड़ती है।

भारतवर्षमें गरीबोंमें रुपये बांटनेके तो कितने ही तरीके चलते आये हैं। फकीरोंको अनाज और पैसा देना परम्परागत परिपाटी है। सदाव्रत और धर्मशालाओंका रिवाज भी चारों ओर है। सेठ और व्यापारी धर्मादे की पेटियां रखते हैं। पर यह सब खर्च या तो पुरातनसे आयी फकीरोंपर होता है या किसी व्यक्तिने किसी वक्त सबसे ज्यादा दिलमें टीस पैदा कर दी, तो उसके लिये हो जाता है। सोच-विचारकर, लोगों की जरूरतोंको ध्यानमें रखकर कोई ऐसा काम नहीं किया जाता। फलतः बहुत-से लोग, जो थोड़ी-सी मददसे भी अपनेको सम्भाल सकते थे, बिना मददके गिरते चले जाते हैं और जो ढोंगी होते हैं, बेकार पड़े-पड़े मजे उड़ाने लगते हैं। रुपयेके अलावा जिन लोगोंको और तरहकी जरूरत होती है उनकी ओर भारतीय समाजने कोई खास ध्यान नहीं दिया है।

इगलैंड और अमेरिकामें भी २०० वर्ष पहले तक यही हालत थी। पर धीरे-धीरे वहांके लोगोंका ध्यान समाजके लिये इस बड़े जरूरी कार्यकी ओर आकर्षित होता गया। समाजका हर एक व्यक्ति समाजको बनाता है। और अगर उन लोगोंको, जो किसी वजहसे आमढर्रेसे बिछुड़कर गिरने लगते हैं शुरूमें ही सम्भालकर अपने पैरोंपर खड़ा कर दिया जाय, तो समाजको बहुतसे कष्टोंसे छुटकारा मिल जाय। यही विचार वहांके सामाजिक कार्यकर्ताओंको नये-नये तरीके ढूंढनेको उत्साहित करता रहा, और कर रहा है। एक बात जो बहुतसे पश्चिमी देशोंने अब अख्तियार कर ली है, वह है ज्यादातर लोगोंको मददके लिये रुपये देनेकी रीतिको छोड़ देना। इसकी जगह अब वहां हरएक आदमीके, हरएक कुटुम्बके मामलेको अलग-अलग देखा जाता है; उसकी जरूरतें समझने की कोशिश की जाती है, और इस निगाह से कि उसे अपने पैरोंपर फिर खड़ाकर दिया जाय—ताकि वह औरोंकी तरह बिना मदद चल सके—तरीके सोचे जाते हैं। इसीको वहां सामाजिक काम कहते हैं। मतलब यह है कि जैसे वकील या डाक्टर अपने मामलों को अलग-अलग जांच पड़ताल करता है और उनके लिये उनकी जरूरतके मुताबिक तरीके निकालता है, ऐसे ही सार्वजनिककार्य करने वाला भी उसके सामने आये हुए हरएक मामलेकी अलग जांच करता और उसकी जरूरतके मुताबिक काम करे।

सामाजिक कामोंमें सबसे पहले यह ख्याल रखा जाता है कि मददके लिये जो मामला सामने आया है, वह किन वजहोंसे मददके लिये सामने आया। यदि वह व्यक्ति आसानीसे समाजमें चल नहीं पाता है, तो सिर्फ रुपये देने या बंधे हुए नियमों-पर काम करनेसे ही उसकी हालत न बदल सकेगी; उन कारणोंको, जिन्होंने उसे विचलित करना शुरू किया है, दूर करना होगा। हरएक मामलेपर विस्तृत रूपसे विचार करना होगा। एक बेकार आदमीको जो सिर्फ रुपयेकी मदद मांगने आया हो, यह जरूरी नहीं है कि रुपया मिलनेसे फिर मददकी जरूरत न पड़े। शायद उसकी बेकारी इस वजहसे हो कि घरपर उसकी औरत बीमार है, उसको खाना ठीकसे नहीं मिलता है, और इसलिये वह काम में दिल नहीं लगा सकता है। ऐसे व्यक्तिको रुपयेकी मददसे फायदा न होगा, बल्कि उसके घरकी हालत बदलनी होगी। एक कुटुम्ब,को जो अपना खर्च न चला सकता हो, महीनों से भाड़ा न दे सका हो, और खानेके लाले पड़े हों, ऊपरसे देखनेमें ऐसा लगेगा कि उसे रुपयेके सिवाय और किसी चीजकी जरूरत नहीं है। पर शायद अगर तहमें पहुंचा जाय, तो पता चलेगा कि स्त्री-पुरुषमें झगड़ा रहने की वजहसे, कुटुम्बमें झूठी शान कायम रखने की आदतसे ऐसी हालत उत्पन्न हुई है, और उस वक्त रुपयेके बजाय पति-पत्नीकी कार्य-प्रणालीमें परिवर्तन करना शायद ज्यादा लाभ-प्रद होगा। एक बच्चा,जो क्लासमें पढ़ न सकता हो, बुद्धू कहकर टाल दिया जाता है। पर शायद पता लगाया जाय, तो मालूम पड़ेगा कि उसका बुद्धूपन इस वजहसे है कि उसकी आंखें कमजोर हैं, और ब्लाकबोर्डकी लिखावटको देख नहीं पाता है; या उसके कानोंमें खराबी है और वह अच्छी तरह सुन नहीं सकता; या उसके घरमें झगड़े चलते हैं, जिनकी वजहसे उसका दिमाग पढ़ने के बजाय घबराहटमें ज्यादा लगा रहता है। इसी तरह इन समस्याओंके और और बहुतसे कारण हो सकते हैं। उनको ढूंढनेकी जरूरत है और यह काम सामाजिक कार्यकर्ताओंका है। पश्चिमी देशोंमें दो अलग-अलग समस्याओंके कार्य करनेवालोंकी अलग-अलग संस्थाएं बनती जा रही हैं; और वे अपने कामोंमें विशेषज्ञ होते जा रहे हैं।

हम भारतवासियोंमें एक अजीब आदत है, चाहे कोई विषय पूरी तरह जानें या न जानें, पर अपने विचारोंको उन विषयोंपर सबसे आगे रख देते हैं। बीमारके पास जो भी ऐरे-गैरे आते हैं, चाहे उन्हें सारे शरीरके अंगोंके नाम भी न मालूम हों, अस्पतालों, लेबोरेटरियों और डाक्टरी कालेजोंकी भलेही सूरत न देखी हो, पर बीमारको कौन-सी दवा लेनी चाहिये इसकी राय देनेमें वे सबसे आगे बढ़ जायेंगे; और उनके ख्यालसे उनकी दवा अक्सीर होती है। मकान बनाने, जो आयेगा, चाहे उसने इञ्जीनियरिंगका नाम भी न सुन हो—आपको कैसे मकान बनाना चाहिये, इसकी पूरी तफसील आपके सामने पेश कर देगा। कोई भी लाइन लीजिये हमलोग अपनेको विशेषज्ञोंके भी विशेषज्ञ समझने लगते हैं। और समाजके काममें तो कुछ कहना ही नहीं। बच्चोंसे कैसा बर्ताव करना चाहिये, बिगड़ोंको कैसे सुधारना चाहिये, पढ़ानेका क्या ढर्रा होना चाहिये गिरते लोगोंसे कैसे बर्ताव करना चाहिये इन सब बातोंमें तो बुद्धूसे बुद्धू और बुद्धिमानसे बुद्धिमान, सब अपनेको विशेषज्ञ समझते हैं। सामाजिक कार्योंकी बुद्धिको कितनी जरूरत है, इसको हम लोग इसी कारणसे पूरी तरह नहीं सके हैं। और जहां कहीं यह काम भी होता है तो सच्चे कार्यकर्ताओंको सारी जानकारीके साथ भी इन अपने बने विशेषज्ञोंकी भी वजहसे बड़ी पड़ती है। हमारे यहां समस्याओंकी कमी नहीं है और अब समय है कि हम अपनी विशेषताको छोड़कर सच्चे साम काम करनेवालोंको अपनायें। हिन्दुस्तानमें भी कुछ संस्थाएं हैं, जो ऐसे करनेवालोंको शिक्षा दे रही हैं, और नम्बर बढ़ता ही जा रहा है। इनमें सर सोहराबजी टाटा ग्रेजुएट स्कूल स्पेशल वर्कर्स ट्रेनिंग सबसे बड़े होती है। इसके अलावा बम्बईमें सर्विस लीग और यूनिवर्सिटी सेटि इलाहाबादकी यूनिवर्सिटी और कुछ संस्थाएं भी छोटे-छोटे ट्रेनिंग कोर्स हैं, जहां इस कामको करनेकी शिक्षा जाती है।

भूलेभटकोंको संभालनेकी रीति

समाजकी रफ्तारमें जहां आदमी अपनेको समाजकी मांगों और रतोंके मुताबिक ढालते हैं, वहां थोड़े भी व्यक्ति निकल आते हैं जो अपनेको लती हालतोंमें अच्छी तरह जमा नहीं ये लोग अपने निराले ढङ्गकी वजहसे को कांटेसे लगने लगते हैं और समाजको लगने लगता है। जीवनके जो थोड़े होते हैं, उनसे ये लोग हट जाते हैं समाजको अपना ढांचा बराबर रखनेके इनके वास्ते कुछ-न-कुछ करना पड़ता है।

समाजकी रफ्तारमें जो ये छोटी अड़चनें आती हैं, उनमें सबसे आगे तो के खिलाफ जानेवाले जुआरी, चोर, के व्यापारी, जालसाज वगैरह हैं, खानाबदोश, भिखारी और ऐसे ही लोगों नम्बर आता है। नारियोंके सवालोंमें पति द्वारा निष्कासन, बाल-विधवा ऐसी ही समस्याएं आती हैं। बच्चोंकी स्याओंमें घरसे भागना, पढ़ने और काम दिलचस्पी न लेना, ज्यादा लड़ना-झगड़ना और किसीके डांटमें न आना, वे मां-का होना, और ऐसे ही कुछ सवाल आ हैं। घरोंसे अनबन, कुटुम्बोंका टूटना, घरोंकी माली हालत गिरती आना— तक कि अपनेको संभाल न सकना सवाल घरोंमें पैदा हो जाते हैं।

आजकलके तरीकेमें किसी भी को सिर्फ एक बुरा नाम देकर टाल दिया जाता—कोशिश की जाती है उसकी तह तक जाकर उसका हल निकाला जाय। हर बातका कोई न कोई कारण है; और अगर किसी भी समस्याको रूपसे न देखकर उसके कारणोंका पता लिया जाय तो उसका हल भी ज्यादा तर हो सकेगा। किसी आदमी या में जब कोई समस्या पैदा होती है उसकी वजहें, उसके व्यक्तित्व, कुटुम्ब समाजमें ढूंढनी पड़ती है। सबसे पहला प्रश्न स्वभावका उठता

(शेष १० वें पृष्ठपर देखिये)

हाकिम—क्या कोई सबूत है कि तुमने उसकी इच्छासे किया।

रावत—जी हां!

मजिस्ट्रेट—अभी दिखलाओ।

रावतने हाकिमके सामने वसीयतनामा रख दिया।

हाकिमने वसीयतनामा देखा। वकील-को बुलवाया।

हाकिम—क्यों, यह आपका लिखा हुआ है।

वकील—जी! यह मेरा लिखा हुआ है।

हाकिम—क्यों रणवीर, आपको कुछ और सफाई देनी है? आप लोगोंमें शर्म नहीं रह गयी। कानून चाहे जो भी हो, लेकिन उस इलाकेके मालिक आप लोग नहीं हैं? जिसकी जायदाद लेना चाहते हैं उसका इस तरह अपमान! यह जायदाद वहांकी जनताकी है। जीत रावतकी है।

एक स्वरसे स्त्रियोंने कहा—बड़ा अच्छा हुआ। खूब जवाब मिला इनको।

ऐतिहासिक लेख

कुशीनगर

—:o:o:o:—

लेखक—श्री सच्चिदानन्द त्रिपाठी बी० ए०

रुपया एकत्र किया और भारतीय पुरातत्व विभागसे कुशीनगरमें खुदाई करनेके लिये प्रार्थना की। उस समय यद्यपि खुदाई सहेत-महेत नामक ग्राममें होने जा रही थी, तथापि सरकार इन उत्साही भिक्षुओंकी बात नहीं टाल सकी। फलस्वरूप सरकारने भी पुरातत्व विभागसे ३००० रुपयेकी स्वीकृति दे दी। खुदाईका भार पं० हीरानन्द शास्त्रीने लिया। प्रायः चार मास तक खुदायी होती रही, जिसके परिणाम स्वरूप अनेक अज्ञात बातें पुरातत्वके विद्यार्थियोंके सम्मुख आ गयीं।

निर्वाण-चैत्य

यह चैत्य अनेक बौद्ध बिहारोंके बीच निर्मित है जिसमें सुविधाके साथ इन बिहारोंमें रहनेवाले भिक्षु पूजा कर सकते थे। आज कल यह चैत्य ऊंचा नहीं है; किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि किसी समयमें यह अवश्य ऊंचा रहा होगा। इसके भीतर महात्मा बुद्धकी 'महापरि निर्वाण' की मुद्रामें एक २० फुटकी विशाल मूर्त्ति पड़ी हुई है। सचमुच इस मूर्त्तिकी सजीवता देखकर मनुष्य धार्मिक भाव से ओत-प्रोत हो जाता है और स्वतः अश्रु प्रवाहित होने लगता है। हृदय बार-बार इस मूर्तिके स्रष्टाकी कलापर मुग्ध हो जाता है। मूर्तिसे स्पष्ट व्यक्त हो जाता है कि कोई योगी मृत्युके कुछ घंटे पूर्व शान्त मुद्रामें पड़ा हुआ। भगवान बुद्धकी मृत्यु बहुत रहस्यमय ढङ्गसे हुई थी। ८० वर्षकी अवस्थामें अपने धर्मका प्रचार करते हुए वे कुशीनगर पहुंचे थे। मधुकरीपर जीवन-निर्वाह करना बौद्ध भिक्षुओंकी विशेषता तो थी ही। एक दिन वे एक वेश्याके घर भिक्षाटनके लिये गये। उस दिन उसके यहां सुअरका मांस बना था। उसने निःसङ्कोच वही मांस महात्मा बुद्धके भिक्षापात्रमें छोड़ दिया। नित्यकी भांति उन्होंने इसीसे भूखकी ज्वाला शान्त की, किन्तु उसकी ज्वाला साधारण ज्वाला न थी; वह तो जीवनके साथ ही शांत होनेवाली थी। ८० वर्षकी जीर्ण काया भला मांस कैसे पचा सकती थी। उदरकी ज्वाला बढ़ती गयी और प्राणके साथ ही समाप्त हुई। बौद्धधर्मके प्रचारार्थ उन्होंने अपने प्रिय शिष्योंको अन्तिम बार आदेश दिया और स्वयं सर्वदाके लिये आंखें मूंद लीं। इस मूर्तिमें इसी कथाको दिखाया गया है। मूर्तिकला तथा इञ्जीनियरिङ्ग दोनों ही दृष्टियोंसे यह मूर्ति प्रशंसनीय है। यह मूर्ति २२ फुटके एक ही पत्थरपर, जो पांच फुट मोटा है, निर्मित की गयी है। भूगर्भ-शास्त्रियोंने इस पत्थरको देखकर बतलाया है कि यह पत्थर चुनारका है जहांसे अशोकने अपने स्तम्भ लेखोंके लिये पत्थर कटवाया था। कई संकेतोंसे यह पता चलता है कि इस मूर्तिको हरिबल नामके एक गृहस्थ बौद्धने बनवाया था। इतिहासकार इसका काल 'गुप्तकाल' बतलाते हैं। जितना आश्चर्य इस मूर्ति-कलाको देखकर नहीं होता उतना तो यह सोचकर होता है कि किस प्रकार उतना बड़ा पत्थर उस युगमें जब कि यातायातके साधन इतने सुलभ नहीं थे, चुनारसे कुशीनगर तक लाया गया होगा। किन्तु गुप्तकालीन दिल्ली-के लौहस्तम्भको देखकर जिसपर चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यकी विजय-प्रशस्ति खुदी हुई है, आश्चर्य दूर हो जाता है। उस कालकी इञ्जीनियरिङ्ग कला बहुत ऊंचे स्तरपर थी। इस चैत्यका मुखद्वार पश्चिमकी ओर है। आजकल मूर्तिके ऊपर एक कषाय वस्त्र डाल दिया गया है, जिससे मालूम होता है कि कोई बौद्ध भिक्षु शयन कर रहा है। ऊपर छतमें चांदनी लगी हुई है। चैत्यसे बाहर निकलनेपर एक आंगन मिलता है, जिसमें अनेक भग्नमूर्तियां संग्रहीत हैं। इन मूर्तियोंमें एक पद्मासन लगाये हुए बुद्ध भगवानकी मूर्ति है, जिसका अर्द्ध भाग भग्न हो गया है।

निर्वाण स्तूप

इस स्तूपका आविष्कार सन १८७६ में मि० ए० सी० एल० कार्लाइलने किया था। उस समय इसका ऊपरी भाग प्रायः सम्पूर्ण गिर गया था। इसके जीर्णोद्धारके पूर्व मि० कार्लाइलने भीतरकी वस्तुओंका निरीक्षण करना आवश्यक समझा। स्तूप जीर्ण तो हो ही गया था, जब उसे गिराया गया तो भीतर अनेक चित्रखचित ईंटे प्राप्त हुईं। ईंटोंके देखनेसे ऐसा भान होता था कि स्तूपके निर्माणमें किसी पुराने भवनके सामान लगे होंगे। भग्नावस्थामें भी इस स्तूपकी ऊंचाई धरातलसे २० फुट थी। ऊपरसे पांच फुटकी गहराईपर ईंटोंकी कतारमें बनी हुई एक स्वस्तिका प्राप्त हुई, जिसका खाली भाग मिट्टीसे भर गया था। १४ फुटकी गहराईपर दो फुटके व्यासका वृत्ताकार एक कमरा मिला, जिसमें एक घड़ा मिला जिसका मुंह एक ताम्र-पत्रसे ढंका हुआ था। इसके भीतर यद्यपि बालू भरी हुई थी, तथापि उसमें अनेक बहुमूल्य रत्न रखे गये थे। ताम्रपत्रपर 'निदान सूत्र' की प्रथम पंक्ति खुदी हुई थी और बाकी 'क्तियां काले अक्षरोंमें लिखी गयी थीं। कई स्थानोंपर अक्षर मिट जानेसे पूरा लेख नहीं पढ़ा जा सका है। इस लेखके अन्तमें लिखा हुआ है कि यह पत्र 'निर्वाण चैत्य' में हरिबलके द्वारा प्रदान किया गया था। हरिबल बौद्धमतावलम्बी एक गृहस्थ थे, जिन्होंने स्तूपके निकट निर्वाण मूर्तिकी स्थापना करायी थी। डाक्टर फ्लीटने इस स्तूपका काल ५ वीं शताब्दी (गुप्तकाल) दिया है, जिसकी सत्यता ताम्र-पत्रमें प्राप्त कुमारगुप्तके चांदीके सिक्केसे प्रमाणित होती है। ऊपरसे ३० फुटकी गहराईपर एक सड़ी हुई लकड़ी मिली, जिसको उठाना भी कठिन था। इसके नीचे खोदना अब असम्भव हो गया था; क्योंकि इस सतहपर पानी बहुतायतसे निकल रहा था। यहांपर गोलाकार एक छोटा-सा स्तूप प्राप्त हुआ, जो नौ फीट ३ इञ्च ऊंचा था। इसके भीतर पश्चिमकी ओर मुंह करके पद्मासन लगाये हुए महात्मा बुद्धकी एक सुन्दर मूर्ति प्राप्त हुई।

बौद्ध-बिहार

सन १९०७-८ में निर्वाण चैत्यके उत्तर या पश्चिमका भाग बहुत कम खोदा गया था। मि. कार्लाइलने इसकी कुछ खुदाई की थी, जिसमें उन्हें दो वस्तुएं प्राप्त हुई थीं जो एकही विशाल आंगनके अन्दर हैं। डा. बोगलने भी शुद्ध अन्वेषणकी दृष्टिसे कुछ स्थानोंको खुदवाया था। इस बिहारकी दिवालें बहुत मोटी हैं, जिनमें प्रयुक्त ईंटोंकी माप २५"×१४"×५" है। यह बिहार बाहरसे मापमें १०२ फुट १ इञ्च लम्बा तथा ६७ फुट १ इञ्च चौड़ा है। उत्तर-दक्षिणकी ओर इसमें चार कमरे तथा पश्चिमकी ओर तीन कमरे हैं। दक्षिणकी ओर एक कमरा भीतरसे २६ फुट ९ इञ्च लम्बा और १३ फुट ९इञ्च चौड़ा है। इसमें अनेक चूल्होंके चिन्ह पाये गये हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि

आज

आज, आजकी बात न पूछो
आज ध्वंसका राग यहां
मानवता चिथड़ोंमें लिपटी
लगी हुई है आग यहां!
आज भूल-सी गयी याद है
बात पुरानी आज नयी,
नया आजका विश्व-रूप
पाश्चात्य हुई सभ्यता नयी!
आज 'सीखकी भीख' विश्वमें
खूनोंका लेती वरदान,
नर-मुण्डोंसे पटा धरातल
रोता है मानवका प्राण!
अनुनय-विनय कोटि कंठोंका
व्यर्थ पेट-भूखकी मांग
खूनोंकी धारामें बहता
मित्र-स्नेह-तरीका स्वांग!

आज स्वार्थका गन्ध मधुर है
मरते इसपर राष्ट्र-भ्रमर,
तरुणाईका अरे तकाजा
उठती रह-रह युद्ध-लहर!
आज सिन्धु उत्ताल लहरमें
महानाश गर्जन - तर्जन,
दिग्दिगन्तमें गूंज रहा है
रणझंझा, ताण्डव नर्तन!
अरे, कहांपर कौन ठिकाना
क्या भूगर्भ, मर्त्य, नभ-स्थल,
कण-कणमें जलती है ज्वाला
रोता जगका प्राण विकल!
युग-युगकी सेवी निधियां सब
मानवताका सञ्चित धन
महानाशकी ज्वालामें, रे,
जलता है भूतलका कण-कण!

—तरुणेश

यह भोजनशाला रहा होगा। उत्तरकी ओर एक छोटासा कमरा है, जिसमें एक गहरा स्थान देखा गया है। मालूम पड़ता है कि इस रिक्त स्थानमें भगवान बुद्धकी मूर्ति स्थापित की गयी होगी और यह कमरा पूजा-गृह रहा होगा। बड़े कमरेके पास ही एक छोटासा कमरा है जो शायद स्नानागार रहा होगा, क्योंकि इसमेंसे पानी बहनेके लिये एक छोटीसी नाली विहारके बाहर तक पायी जाती है। यहींपर पत्थरका बहुत बड़ा बर्तन प्राप्त हुआ है, जिसका व्यास २ फुट १॥ इञ्च और मोटाई २॥ इंच है। इसके अलावा कलचुरी युगके भी विहार हैं, जिनकी अभी पूरी खुदाई नहीं हो सकी है। अभी बहुतसे टीले और खण्डहर खोदनेके लिये बाकी पड़े हैं, जिनमें न जाने कबकी हमारी संस्कृतिका इतिहास दबा हुआ है।

निर्वाण स्तूपसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर भगवान बुद्धका एक अन्य छोटा-सा मन्दिर है, जिसे जनता 'माथा कुंअर' के नामसे पुकारती है। यहां प्रतिवर्ष मेला लगता है। मन्दिरका मुख पूर्वकी ओर है। मूर्तिकी कलासे लोग इसे कलचुरी युगका बतलाते हैं।

रामाभार-स्तूप

देवरिया स्टेशनसे कसया जाते हुए यात्रीको प्रायः तीन मीलसे ही यह स्तूप दिखलायी देने लगता है। रामाभार उस भागका नाम है, जिसे मि० कनिंघमने 'मुकुट बन्धन' बतलाया है। यहींपर भगवान बुद्धकी अस्थियां गाड़ी गयी थीं। इस समय यहांपर एक तालाब है जिसे रामाभार तालाब कहते हैं। स्तूपका निर्माण कसयासे १ मील दक्षिण पश्चिम उक्त तालाबके पश्चिमी तटपर हुआ है। यहांपर पहले एक सरोवर था, जिसे 'मुकुट बन्धन' कहते थे। इस सरोवरका यह नाम इसलिये पड़ा कि मल्लराजाओंके राज्याभिषेकके अवसरपर इसीके किनारे मुकुट बांधा जाता था।

स्तूप आजकल जीर्णावस्थामें है। इसका आकार अण्डाकार है। इसमें अत्यन्त प्राचीन ईंटें लगी हुई हैं। ईंटें वर्गाकार हैं, जैसी मौर्य कालमें ही बना करती थीं। स्तूपमें इन्हीं ईंटोंका प्राधान्य होनेसे ऐसा प्रतीत होता है कि यह स्तूप भी मौर्यकालीन है। बहुत दिन हुए किसी सरकारी कर्मचारीने इस स्तूपको खुदवाया था; किन्तु उसने कोई ऐसा प्रमाण नहीं छोड़ा है जिसके आधारपर यह कहा जा सके कि इसमें कौन-कौन सी वस्तुएं प्राप्त हुईं। यहां तक कि उन महाशयका नाम तक नहीं मिलता है। यह खुदाई स्तूपके मध्यमें की गयी थी जो अब एक अन्धकूपकी तरह पड़ा हुआ है। पं० हीरानन्द शास्त्रीने कसयाकी खुदाईके क्रममें इसकी गहराई नापी थी, जो प्रायः २२ फुट है। शास्त्रीजीने पुनः इसकी खोज की, परन्तु कोई प्रसिद्ध वस्तु इसमेंसे प्राप्त न हो सकी।

इस स्तूपके दक्षिण एक चतुर्भुजाकार भवनका भग्नावशेष है, जो प्रायः घाससे ढंका हुआ है। अब तक यह ज्ञात नहीं हो सका है कि यह भवन किस प्रयोगमें आता था। बाहरकी ओरसे इसका माप ४४ फुट ६ इञ्च×२७ फुट ६ इंच है। इसमें छोटी-छोटी ईंटें प्रयुक्त हुई हैं। इस खुदाईके क्रममें स्तूप पर कुछ ऐसी ईंटें प्राप्त हुई हैं, जिनको एकत्र करनेपर मनुष्यकी आकृति तैयार हो जाती है।

चीनी बाबा

मुकुट बन्धन स्तूपका वर्णन, इससे सम्बद्ध चीनी बाबाके वर्णन बिना अधूरा रह जायेगा। चीनी बाबा एक चीनी बौद्ध भिक्षु हैं जो बहुत दिनोंसे इसी स्तूपपर निवास करते हैं। उन्होंने स्तूपके ऊपर एक झोंपड़ी बनवा रखी है जिसमें कभी कभी आराम करते हैं। इसके अलावा वे स्तूपके मध्यमें स्थित एक जीर्ण वटवृक्षपर भी निवास करते हैं। वहां अपनी सुविधाके लिये उन्होंने दो-तीन बक्से बनवा ली हैं। कभी कभी रात्रिमें वृक्षके ऊपर चीनी बाबाका निवासका चिन्हस्वरूप दीपक दृष्टिगोचर होता है।

चीनी बाबा एक सिद्ध भिक्षु हैं। वे सतत बुद्ध पूजामें निरत रहते हैं। बौद्ध-भिक्षुओंमें दीपक जलाकर पूजा करनेका बड़ा शौक है। चीनी बाबा तो कई बार मोमबत्ती जलाकर हाथपर रख लेते हैं और हाथ जल जानेपर भी नहीं छोड़ते। प्राणिमात्रसे प्रेम करते हैं। स्तूपके निकटवर्ती 'अनुरुधवा' नामक ग्राममें जाकर वे छोटे-छोटे बच्चोंको खेलाया करते हैं। गांवके लोग उन्हें बहुत मानते हैं। कहा जाता है कि चीनी बाबा स्तूपस्थित सांपोंको भी बहुत मानते हैं और उन्हें बुलाकर दूध पिलाते हैं। ये सांप उन्हें काटते नहीं हैं। अगर किसीने काट भी लिया तो इसका बाबाके ऊपर कोई प्रभाव ही नहीं पड़ता। साधारण घावकी भांति वह अच्छा हो जाता है। चीनी बाबाको इस स्तूपसे बड़ा प्रेम है। वे इसे छोड़कर कहीं नहीं जाते हैं। कई बार अधिकारियोंकी ओरसे उन्हें यहांसे हटा देनेका प्रयत्न किया गया, परन्तु उनके दृढ़ हठके कारण अधिकारी उनकी बात मान गये। वे कभी-कभी बाजारोंमें भी चला जाया करते हैं और कभी-कभी बुलानेपर भी दर्शकोंको दर्शन नहीं देते। हम लोग जब उनके दर्शनके लिये वहां पहुंचे तो बुलानेपर भी उन्होंने दर्शन नहीं दिया और हमें निराश लौटना पड़ा।

——

कार्य-कर्त्ताओंसे दो शब्द

(८वें पृष्ठका शेष)

चरित्र कितना गठ सका है, आदतें कैसी बन सकी हैं, स्वभाव बचपनकी हालतसे निकल कर समाजको अपनानेके लिये कितना परिपक्व हो सका है, दिमाग कमजोर है या तेज, बेसलामतीकी भावना, एवंनये अनुभव प्राप्त करनेकी इच्छा कितनी तेज है और कितनी नहीं, कुटुम्बमें या घरमें एक दूसरेसे कितनी बनती है, घरका कामकाज कितनी होशियारीसे चलाया जाता है, बहुत ज्यादा आदमी तो नहीं हैं, बीमारी तो ज्यादा-ज्यादा नहीं रहती, बेकारी तो ज्यादा नहीं है, नाजायज रिश्ते तो नहीं हैं, मां-बापका बच्चोंकी ओर कैसा रुख है वगैरह सवाल देखने लायक होते हैं। समाजके ढांचेकी वजहसे जो सवाल पैदा होते हैं उनमें रहनेके लिये मकानोंकी हालत, खेलकूद और दिल-बहलावकी सहूलियतों की कमी, बदचलन और जुर्मी लोगोंकी बस्तीका होना, विदेशोंमें जाकर बसना वगैरह गिने जा सकते हैं।

सामाजिक मामलोंमें हर समस्याको उसकी अपनी निगाहसे देखा जाता है और उसके हल के तरीके भी अलग-अलग अख्तियार किये जाते हैं। कुटुम्बोंके मामलोंका काम करनेके लिये अलग संस्थाओंको काम करना पड़ता है, जिनका काम सारे कुटुम्ब को स्वस्थ बनाकर अपने पैरोंपर खड़े कर देना होता है। बच्चोंके कामके लिये स्कूलोंमें ऐसी शिक्षिकाएं रखनेकी रीति चलने लगी है, जो उनकी मुश्किलोंको हल करनेकी कोशिश करती हैं। लावारिस और बिना देखरेखके बच्चोंका काम अलग संस्थाएं करती हैं, जिनमें नये ढंगके यतीमखाने, औद्योगिक स्कूल और बच्चोंको मदद करनेवाली संस्थाएं हैं। जो बच्चे चोरी वगैरह करने लगते हैं, उनके लिये जिन खास तरीकोंकी जरूरत होती है, वे काम कचहरियोंसे सम्बन्ध रखने वाली खास संस्थाएं करती हैं। हिन्दुस्तान में ये शिशुसहायक समिति कहलाती हैं। जिन बच्चोंका दिमाग कमजोर है या जो अपाहिज हैं, उनके लिये खास स्कूल होते हैं जैसा कि बम्बईके पास चेम्बूरमें चेम्... मेंटल डिफेक्टिव चिल्ड्रेन है। जैसे बीमारियां होती हैं, वैसे ही दिमाग स्वभावमें भी गड़बड़ी पैदा हो जाती है उनका इलाज बच्चों और बड़ोंके लिये अलग खास तरीकोंपर किया जाता है।

सामाजिक कामोंके लिये उतनी ही और उतने ही संवोंकी जरूरत है जितने और किसी कामके लिये ... उतना ही उनका दायरा भी जितना ... दूसरे देशोंमें लोग फायदा उठा ... उनको हमारे अपनानेका वक्त आ गया ...

——

ताजकी रानी

[लेखक—वाहिद अजाज]

सन १६३१ की बात है। आगराके खासमें मुगलवंशके सर्वाधिक शान-पसन्द बादशाह शाहजहां, एक दिन मन, मलीन कातर बदन हो विचार- दिखलायी पड़े। उनकी पत्नी मुमताज, बादशाहकी महत्वाकांक्षाओंकी अनुपम समझी जाती थी, शाहको एकाकी छोड़ संसार लीला समाप्त कर चुकी थी। सोच रहे थे कि जिस किसीने दुनियासे प्रस्थान करनेका टिकट खरीद , वह अब फिर वापस आनेको नहीं। लिये तो अल्लाहकी गोदमें सर्वदाके सीट रिजर्व हो गयी। लेकिन उसके शरीरको ढंकनेके लिये कोई ऐसा बनवाना जरूरी है, जो मुगलवंशकी स्मारकके अनुकूल हो और साथ ही जैसे शानशौकतपसन्द बादशाहकी कांक्षाका प्रतीक भी। कहनेका यह कि उस समयतक मानवी हाथों ललित वास्तुकलाका जो सृजन हो था, वह मेरी भावी सौन्दर्य पुस्तककी का मात्र हो।

मेरे पिताने कुछ नयनाभिराम कार्य । पितामहकी तो बात ही नहीं पूछनी। पितामहोंमें तैमूरने भी लूटके मालसे कन्दमें महलों और मसजिदोंकी पंक्ति कर दी थी। लेकिन ये सारे स्मारक मेरी नामें पूर्ण नहीं उतरते। कुछमें तो अधिक नीरसता है कि उन्हें देखकर ललितका उद्रेक ही नहीं होता। ललितकलाका इतना कम पुट है कि स्रष्टाकी इस विस्तृत सृष्टिमें का कोई स्थान ही नहीं है। फारसवालों सौन्दर्यके महत्वको समझा अवश्य, लेकिन को प्रकट करनेकी माद्दा उनमें नहीं थी।

न और बगदादके अरबोंने सौन्दर्यको शौकतमें निहित करनेकी चेष्टा की, न किस प्रकारके उपादानोंका उपयोग होगा, इसको समझनेमें उन्होंने अधिक स्पी नहीं की। यदि कहा जाय कि मामलेमें वे बिलकुल उदासीन रहे, तो नहीं होगी। उनका सौन्दर्य-सृष्टि कुछ आततायियों और कट्टर पंथियों नष्ट भी कर दी गयी।

ऐसी दशामें बादशाह शाहजहांके मनमें यह सवाल उठा कि अगर मुमताजका रक खड़ा किया जाये तो उसमें कौनसा उपयोगमें लाया जाये—नीला और अथवा लाल! नीला और सुनहला फारसके आकाश और अग्निउपासकों आकांक्षाके द्योतक हैं, और लाल रंग तो -रक्तका ही प्रतीक है। लेकिन इनमें कोई आत्माको असीममें प्रविष्ट करानेकी क्षमता रखता। तब उनके मस्तिष्कमें श्वेत रंगका आया और उसके साथ ही यह विचार भी आया कि मुझे एक ऐसा मकबरा वाना चाहिये, जो इस्लामकी कीर्तिको के लिये जाज्वल्यमान रखे। इस ध्येय कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये मुझे का आकार-प्रकार ऐसा चुनना , जो इस्लाम धर्म और उसके प्रवर्तक मुहम्मदकी आत्माको रुचे। रङ्गका अविलम्ब हो गया।

• • •

कहते हैं कि बादशाह शाहजहां एक दिन शामको जनाना बागमें टहल रहे थे। रङ्ग-बिरंगे फूलोंकी मनमोहक सुगन्ध चारों ओर फैल रही थी। घूमते-घामते शाह एक कनक छड़ी-सी कामिनीके रूबरू आ पहुंचे। रमणी की लम्बी पतली उंगलियां फूलोंके चुननेमें व्यस्त थीं। जवाहरातके नामपर एक भी मणि उसके अङ्गपर किसी आभूषणके रूपमें नहीं थी। फूलोंके बीचमें वह शुभ्र मलमल-वसना रमणी बिलकुल सादी पोशाकमें खड़ी थी। बादशाह उसके प्राकृतिक सौंदर्य पर मन्त्रमुग्ध हो एकटक उसके पुष्प-चयनको देख रहे थे। अचानक हृदयने छलांग भरी और बादशाहने आगे बढ़कर उसके सुकोमल पाणिपल्लवको पकड़ लिया। युवतीने बिना तनिक लज्जित हुए सस्मित वदन एक चमेली का हार बादशाहके गलेमें डाल दिया। मुगल बादशाह पराजित थे।

हाथ मिलाये, परस्पर मधुर वार्तालाप करते हुए, वे बागमें टहलने लगे। रमणीको नहीं मालूम था कि ये महाशय हैं कौन और यह जाननेकी उसने चेष्टा भी नहीं की। उसने उनके चेहरेपर लड़कपनकी आभा देखी, और इसलिये भयभीत नहीं हुई। दरबारी आये, और रमणीकी इस धृष्टतापर उन्हें आश्चर्य हुआ, लेकिन बादशाहने संकेत करके उन्हें हटा दिया।

'क्या तुम सम्राट हो? कौन जानता होगा कि शाहजहांमें इतना लड़कपन है?'—उसने बिलकुल शांतिपूर्वक पूछा।

'सम्राट, नहीं।'—शाहजहांने कहा और दोनों ठठाकर हंस पड़े।

कुछ ही दिनोंमें मोती (फूल तोड़नेवाली रमणी) मुगल बादशाहकी मावीबेगम बन गयी। इतना सुखी दम्पति शायद ही कभी देखा गया हो। वे आदर्श दम्पति थे। लेकिन यह स्वर्गोपम सुख थोड़े ही दिनके लिये था। इसका अन्त बहुत जल्द आया और मोती बेगम इहलोककी लीला समाप्त कर चल बसीं। शाहजहांका सर्वस्व जाता रहा—शान-शौकत, अर्थ-धर्म और विजय-श्री सब खाकमें मिल गये।

बादशाहको इतना अधिक शोक हुआ कि एक महीने तक तो उन्होंने अपने मंत्रियों से मिलना तक बन्द कर दिया और राज-काजसे तो कोई सरोकार ही नहीं रहा। दो वर्षोंतक दरबारमें मातम मनाया गया। नृत्यगानका कभी भूलकर भी आयोजन नहीं हुआ। मणि-मुक्ताओंका व्यवहार, भोग-विलासकी सामग्रियोंका उपयोग कड़ाईके साथ निषिद्ध था। मुमताजका शव आगरा पहुंचाया गया और बादमें उस स्थानपर दफनाया गया, जहां आज विश्वका आश्चर्य साकार खड़ा है।

• • ×

आगरेका ताज संगमरमरके अक्षरोंमें सांकेतिक भाषामें लिखा प्रेम महाकाव्य है, जो प्रेम-विज्ञानके साक्षरोंसे लेकर पंडितों तकके अध्ययन और मननकी चीज है। इसके निर्माणके लिये यमुना तटका वही स्थान चुना गया, जहां दोनों प्रेमीजन प्रायः घूमा करते थे।

पुरानी प्रथाओंका निर्वाह कई बातोंमें किया गया। इसमें सात्त्विक प्रवृत्तियोंसे ही काम लिया गया। ताजमहलवाला बाग राजा जयसिंहका था। उनको काफी मुआवजा देकर उसे खरीदा गया, जमीन लेनेमें जोर-जुल्म या छल-कपटको स्थान नहीं दिया गया। यद्यपि बादशाहका हृदय शोक-कातर था, तथापि उन्होंने राज्यके सर्वोत्कृष्ट वास्तु कला-विशारदों और कलाकारोंको अपनी हार्दिक आकांक्षाको कार्यरूप देनेके लिये आमन्त्रित किया। विशेषज्ञ भवननिर्माता विभिन्न भागोंसे आये, राजमिस्त्री बगदाद, दिल्ली और मुलतानसे, गुम्बज बनानेवाले एशियायी तुर्की एवं समरकन्दसे, अन्दरूनी काम करनेवाले कन्नौज तथा बगदादसे और पत्थरोंपर खुदाईका काम करनेवाले कलाकार शीराजसे आये। भारतके प्रत्येक भाग तथा मध्य एशियासे समस्त साजो-सामान जुटाये गये। जयपुरसे संगमरमर, फतेहपुर सिकरीसे लाल पत्थर, अरबसे मूंगा, बुन्देलखण्डसे हीरा तथा अन्य पत्थर और बहुमूल्य मणियां सीलोन, तिब्बत और चीनसे मगायी गयीं। ताजमहलके भवन निर्माणमें २० हजार श्रमिक लगाये गये और १७ वर्षमें वह बनकर तैयार हुआ। समाधिको आरम्भमें सोनेके रेलिंगसे घेरा गया था, जिसमें अमूल्य मणियां जड़ी गयी थीं। १६४२ में उक्त घेरा हटा लिया गया था और उसके स्थानपर वह पर्दा लगाया गया था, जो आज तक विद्यमान है। अपने मनके मुताबिक बनानेके लिये बादशाहने इस स्मारकके निर्माणमें सर्वाधिक ध्यान दिया और तनमनसे उसीमें तल्लीन हो गये थे।

* ० *

वर्तमान ताजमहलका खाका किसने आरम्भमें तैयार किया था, यह प्रश्न अबतक हल नहीं हो सका। इटालियन वास्तुकलाकार द्वारा खाका तैयार किये गये यूरोपीय धारणा काफी लम्बे अर्सेसे विवादग्रस्त विषय बनी हुई है। इस धारणाका आधार मात्र एक वक्तव्य है, जिसकी पुष्टि अन्य सूत्रों द्वारा नहीं होती। फादर मैनरीक नामक एक स्पेनिश पादड़ी १६४० में आगरा आया था। उस समय ताजमहलका निर्माण: हो रहा था। ताजकी यूरोपियन शैलीका आधार एकमात्र उसी पादड़ीका वक्तव्य है, जिसका समर्थन अन्य कोई लेखक अथवा इतिहासकार नहीं करता। वर्तमान अनुसंधानोंके सिलसिलेमें एक पुस्तकका पता लगा है, जिससे रचाईका बहुत अंशोंमें उद्घाटन होता है। उक्त पुस्तकके अनुसार दिल्ली किलेके वास्तुकलाकार हमीद और अहमद थे।

अधिकांश आलोचक पूर्व एशियाकी कलासे पूर्ण रूपेण अभिज्ञ न होनेके कारण जल्दबाजीमें ऐसे लेख लिख डाले हैं, जो वास्तविक ध्येयको ही खो बैठे हैं। इस्लाम के कारण, जैसा कि यूरोपके लोग सोचते हैं, मुगल बादशाहोंने अपने स्मारकोंमें अपने व्यक्तित्वकी असाधारण छाप लगायी। अकबरकी कब्रमें आश्चर्यजनक व्यक्तित्व-महानता है। इतमादुद्दौलाके मकबरेमें भी विद्वानों और शिष्ट दरबारियोंको देखते हैं। लेकिन ताजने व्यक्तित्वके विचारको अन्य मुगल बादशाहोंसे बहुत आगे बढ़ाया है। यह कला में पूर्णविकसित व्यक्तित्वका प्रतीक है। जिन लोगोंने ताजमहलको देखा है, वे यह महसूस किये बिना नहीं रह सके हैं कि जिन कारणोंसे ताज विश्वके अन्यान्य भवनोंसे बिलकुल पृथक् है, उनका वर्णन या विश्लेषण करना सम्भव नहीं है। निरपेक्ष समालोचक अनभिज्ञतामें ही निर्माताकी मेधाकी प्रशंसा कर बैठते। अनेक आलोचनाएं बिलकुल अस्पष्ट हैं। जो लोग पूर्वकी विचारधाराके मर्मको समझते हैं, वे आलोचकोंकी आलोचनाओंको एक तरफ रखकर मुगलकालीन कलाकी इस आश्चर्यजनक सृष्टिको देखकर अपार आनन्दका अनुभव करते।

——

युद्धोत्तर चीन और अमेरिका

(लेखक—श्री वैद्यनाथ सिंह)

र्तमान महासमरका विकट अध्याय हो चला है। इसके अन्तिम परि- झांकी अब मिल सकती है। विजय सकी होगी, यह अटकलबाजी नहीं, । युद्धका कब अन्त होगा, ऐसी वाणी करना कठिन होते हुए भी निश्चित है कि धुरी राष्ट्रोंकी पराजय रहेगी। हिटलरकी धमकी, मुसो- की विकलवाणी और जापानी रेडियोके र प्रचार हमें धुरी राष्ट्रोंके भाग्यके में धोखा नहीं दे सकते। गुप्तास्त्र का हृदय भले ही लोमहर्षक बना दे, रक्षा नहीं कर सकता। यदि इनकी आशा कुछ गुप्तास्त्रोंपर टिकी हो, तो व इन्हें निराशा होगी।

स युद्धसे रूस और अमेरिका दोनों ाली राष्ट्रोंके रूपमें निकलेंगे। पर ही निश्चिततासे इङ्गलैंडके सम्बन्धमें हीं कहा जा सकता। पुरातन कट्टर यवादी होनेके कारण यह नयी यवादी मनोवृत्तिके विरुद्ध संघर्ष- । इस युद्धमें उसके उद्देश्य जो भी ों, पर जिन प्रिय वस्तुओंकी वह रक्षा चाहता है, वे शनैः शनैः उसके कम- ाथसे फिसलती जा रही हैं। जो अब सी हुई हैं, नये युगके प्रभावसे प्रभा- हो जाग्रत हो चली हैं। आत्मनिर्णयके मंजूर करानेके लिये सबकुछकी बाजी की तैयारी कर रही हैं और बहुत न है कि एक दिन पुरानी कड़ियोंको र बिखेर दें।

युद्धकालीन समस्याओंसे किसी अर्थमें ोटी युद्धोत्तर कालीन समस्याएं न । इन्हें हल करनेका भार विजयी राष्ट्रों र रूस और अमेरिकाके माथे पड़ेगा। म्बन्धित राष्ट्र या जनमतकी सहानु- और तत्परता उद्देश्य तक पहुंचनेके लिये ार्य होंगी। इस पुनर्निमाणके युगमें ाकी प्रसिद्धि और महत्ताका कारण औद्योगिक शक्ति रहेगी, जिसकी के बिना किसी भी मुक्त राष्ट्रके मिन्न आर्थिक ढांचेको खड़ा करनेमें की आशा नहीं की जा सकती। रूस सके दो कारण होंगे :—सर्वप्रथम तो विजयप्राप्तिका सर्वाधिक श्रेय उसकी सेनाको है, जिसे युद्धके बाद मिमतासे नहीं भुलाया जा सकेगा। बढ़ती हुई सर्वप्रियताका दूसरा उसकी सर्वाङ्गसुन्दर आर्थिक योज- है, जिनकी व्यावहारिकताके सम्बन्ध- किसीको सन्देह नहीं रह गया है। काको अपने वैभवसे जो स्थान प्राप्त न गा, उसे रूस अपने सार्वभौमिक न्तोंके बलपर प्राप्त करेगा—दुनियाकी जनता उससे आशा और प्रोत्साहनो र नये युगमें नये जीवनका आनन्द ले । प्रगतिशील शक्तियां आशाभरी से उसकी ओर देख रही हैं; उनकी र प्रतीक जो है वह।

विश्वशान्ति कायम करनेके लिये सभी र व्यक्ति इच्छुक होरहे हैं। युद्धके बाद किया जायगा, वही शांति-स्थापनाके न महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा। युद्धके बाद विश्वपर बेकारी और बीमारीका एक साथ हमला होगा। उस समय सबसे जटिल समस्या अन्न, वस्त्र और दवादारूकी होगी। इस परिस्थितिके मुकाबलेकी पहलेसे तैयारी करनी होगी। जहां महायुद्धसे कितने परिवार बर्बाद हो चुके रहेंगे, ऐसा न हो कि महायुद्धकी समाप्तिके बाद भी भीषण नर-संहार देखनेको मिले। परिस्थितिको काबूमें लानेका उत्तरदायित्व सोलह आने विजयी राष्ट्रोंपर होगा। शक्तिहीन जर्मनी, जापान और इटलीसे हम उस समय कुछ उम्मीद नहीं कर सकते। हिटलर और मुसोलिनीको युद्धके लिये दोषी ठहरानेसे भी काम न चलेगा। जिन्हें आज दुश्मनका मुल्क कह कर गोलेका निशाना बनाया जा रहा है, वहां भी नंगे-भूखे और मरीज मिलेंगे

अमेरिकाकी स्वातन्त्र्य घोषणा !

जिनकी समुचित व्यवस्था करनी पड़ेगी। शान्ति चाहनेवालोंके लिये यही उपयुक्त अवसर हाथ लगेगा, जब प्रेम और सद्व्यवहारके जरिये उनके हृदयकी घृणा और प्रतिशोधात्मक विचारोंका मिटाना आसान होगा।

प्रस्तुत लेखमें युद्धोत्तरकालीन योजनाओं और उनसे सम्बन्धित सम्पूर्ण विश्वकी समस्याओं तथा उनके समाधानका उल्लेख न कर सिर्फ चीनके पुनरुद्धारपर प्रकाश डाला जाता है। सिर्फ जापानकी पराजयसे ही सुदूरपूर्वमें अशान्तिका खतरा मिट जायगा, ऐसा समझना भूल होगा।

गत चौथाई शताब्दीके अनुभवोंसे हम इतना तो जरूर समझते हैं कि युद्ध-विरोधी किसी ठोस योजनाके अभावमें भीषणसे भीषण महासमरकी तैयारीके लिये १९ या २०साल पर्याप्त हैं। जापानी स्वभावसे ही युद्धप्रिय होते हैं; चीन अपनी शान्ति-प्रियताके लिये बदनाम हैं। यह सहजही साम्राज्यवादी जापान की महत्वाकांक्षाओंका अखाड़ा बन सकता है। अतः स्थायी शांतिकी योजना सफल बनानेके लिये दुर्बल चीनकी जगह शक्तिसम्पन्न चीनकी नितांत आवश्यकता होगी।

किसी भी देशकी उन्नति और समृद्धिके लिये आन्तरिक शान्तिकी आवश्यकता होती है। आन्तरिक शांति तब तक संभव नहीं जबतक एक सुदृढ़ और सगठित सरकारकी स्थापना न हो। चीनकी वर्त्तमान राजनीतिक अवस्थापर दृष्टिगत करनेपर हमें विश्रृंखलता नजर आती है। यद्यपि जापानी आक्रमणने यहांकी दो प्रमुख पार्टियों—कोमितांग और साम्यवादी—का संयुक्त मोर्चेके रूपमें कुछ अंश तक संगठित होनेको बाध्य किया है, तथापि एक गाड़ीके ये ऐसे दो पहिये हैं, जो भिन्न-भिन्न प्रेरणाके कारण विभिन्न लक्ष्य की ओर अग्रसर होनेकी चेष्टा करते हैं। उद्देश्यकी आंशिक समानता सफल प्रगतिमें बाधक हो रही है। अभी कुछ दिन पहले इनकी वास्तविक एकताके लिये कुछ प्रयत्न हुए हैं; पर दुर्भाग्यवश असफल साबित हुए। 'महान चीन' का स्वप्न देखनेके पूर्व इस फूट का अन्त करना आवश्यक होगा। इस विभाजित और विरोधी नीतिमें उलझनें सुलझनेके बजाय और भी पेचीदी होती जायेंगी। कौन कह सकता है, यही पारस्परिक कलह, जो इतनी आफतोंके सिरपर चक्कर काटनेके समय भी नहीं मिट सका, इस युद्धके बाद कहीं गृह-युद्धका रूप धारण करले। च्यांगकैशकको कम्यूनिस्ट विरोधी नीतिको रूस घातक समझता है। पर अमेरिकाको च्यांग उतने अप्रिय नहीं जंचते। रूस और अमेरिका, जिनपर दुनियाकी आशाएं (भिन्न-भिन्न कारणों से सही) लगी हैं, चीनके गृह-कलहकी संभावनाओंको अपने हस्तक्षेपसे मिटानेका अवश्य प्रयत्न करेंगे। वैसी हालतमें संयुक्त सरकारकी स्थापना होगी, और तब कहीं पुनर्निर्माणकी कोई योजना कार्यान्वित करनेका उपयुक्त अवसर उपलब्ध हो सकेगा। भारतकी तरह चीनभी कृषि प्रधान देश है राष्ट्रीय सरकारको सर्वप्रथम कृषिकी ओर ध्यानदेना होगा। अबतक आमतौरपर बहुत पुराने तरीकेसे ही वहां खती की जाती है। पैदावारकी औसतमें वृद्धि तथा पड़ती जमीनको आवाद करनेके लिये वैज्ञानिक ढंग अपनाये बगैर शीघ्रतासे उन्नतिकी आशा नहीं की जा सकती। कृषिकी ओर ध्यान देनेकी विशेष आवश्यकता इसलिये होगी, क्योंकि बने-बनाये कारखानोंका जहां अभाव है, वहांकी जनशक्तिको रोजी देनेका यह बढ़िया क्षेत्र है। इसके अतिरिक्त, किसी अन्य प्रकारके उद्योगके विकासके लिये जिन प्राकृतिक साधनोंकी आवश्यकताहैं, उनका चीन में सर्वथा अभाव है। अतः जरूरतसे अधिक खाद्यसामग्री पैदाकर इसके बदले अन्य देशोंसे मशीन या अन्य आवश्यक सामान बदले जा सकेंगे। चीनी सरकारको भारतकी भावी राष्ट्रीय सरकारकी तरह निरक्षरताका सामना करना पड़ेगा। चीनमें मुश्किलसे दस प्रतिशत लोग पढ़े-लिखे मिलेंगे। बिना इनकी शिक्षा-दीक्षाके राष्ट्रके उद्धारकी योजना शीघ्रतासे लागू नहीं की जा सकेगी। सुन्दरसे सुन्दर योजना भी योग्य व्यक्तियोंके अभावमें कभी-कभी बेकार हो जाती है। सैन्य-संगठन जैसे महत्वपूर्ण प्रश्नको हल करनेके लिये चीन जैसी आबादीवाले देशको जनशक्तिकी कमी तो नहीं हो सकती। पर अन्य आवश्यक साधनोंके अभावमें अपनी शक्ति गठित करनेमें उसे बहुत दिन लग जायेंगे। चीन जैसे पिछड़े देशको सम्हालनेमें कमसे कम २० सालकी आवश्यकता होगी। अपनी दिक्कतोंको हल करनेके लिये बहुत हद तक उसे परमुखापेक्षी ही रहना होगा! खासकर अमेरिकाकी सहायताके बिना उसकी सारी योजनाएं कितने दिनों तक खटाईमें पड़ी रहेंगी। जिस चीनने जापानी प्रवाहको रोककर मित्रोंकी इतनी सहायता की है, उसे भूलकर विशुद्ध व्यापारिक नीतिसे यदि अमेरिकाने काम लिया तो अनुचित होगा। अमेरिकाको उस समय तक चीनकी सहायता करनी चाहिये जबतक चीन पूर्ण स्वावलम्बी न हो जाय। इस बीचमें जापानकी ओरसे हरसमय सतर्क रहना होगा। चीनमें १० वर्ष तक रहकर वहांका व्यक्तिगत अनुभव प्राप्त करनेवाले अमेरिकन संवाददाता मि० डिमारी ब्रेसका कहना है कि जापानके पराजित हो जानेपर सुदूरपूर्वमें एक राजनीतिक शून्य स्थान तैयार होगा, जहां अपने स्वार्थोंकी रक्षा करनेके लिये विजयी मित्रराष्ट्रोंकी अधिकसे अधिक चेष्टाएं होंगी। इसलिये जापानकी पराजयके बाद प्रशांत महासागरी अञ्चलमें जो शांति होगी, वह बहुत अधिक व्यग्रता फैलानेवाली शांति होगी और उसका स्थायित्व तभी संभव है, जब सम्बन्धित विजयी मित्रराष्ट्रोंमें अधिकसे अधिक सद्भाव और धैर्य रहे। अमेरिकाको उच्चकोटि की राजनीतिज्ञता दिखलानी होगी और भूतकालमें शांति-स्थापनके सम्बन्धमें जो भूलें की गयी हैं, उनको दुहराना नहीं होगा।

—

कौन क्या कहता है

[का]र्यकर्ताओंको गांधीजीका परामर्श

[ग]त २९ मार्चको अखिल भारतीय [चर्खा] संघके ट्रस्टियोंके समक्ष भाषण देते [मह]ात्माजीने कहा कि भारतको सत्य [और] अहिंसाके जरिये स्वराज्य प्राप्त करना [औ]र तदुपरांत धर्मराज्य या रामराज्य [की] स्थापना करनी है। हमें रुकावट और [विर]ोधोंके बीच निर्भय होकर काम करना [है] और खादीका हर गांव और देशके [कोने]-कोनेमें प्रचार कर ग्रामवासियोंकी, [नैति]क, आर्थिक तथा समाजिक उन्नतिमें [सहाय]ता करनी है। यदि आपने कायरता दिख[ला]यी तो खादी और उसके उद्देश्य दोनोंकी [हत्य]ा हो जायगी। जीवन-मरण तो ईश्वरके [हाथ] है। अतः हिंसा द्वारा भय प्रदर्शन किये [जाने प]र अहिंसाको आप न छोड़ें। मैंने [मद्रास]में आपको स्वदेशी तक लाया यानी [मद्]रासे बम्बई पहुंचाया और उससे भी [आगे ब]ढ़कर खादी तक पहुंचा चुका। आज [ऐ]से अनुभवी कार्यकर्ताओंकी जरूरत है [जो ग्]रामोद्वारके कार्योंमें अपनी आहुति दे [सकें।] खादीकी प्रशंसा करते हुए महात्माजीने [ब]ताया कि यह तो सूर्यमण्डलके केंद्र-[बिन्]दु है। यह उस सूर्यकी तरह है, [जिसके] चारों ओर अन्यान्य ग्रह चक्कर [लगा]ते है। ग्रामोद्योगके सम्बन्धी सभी [उद्योग] इसके चारों ओर चक्कर काटेंगे। [सत्यक]ी असत्यपर जीत होती है और [अहिंस]ासे हिंसा पराजित होती है। अतः ठीक-[ठीक इस]का अनुसरण कीजिये। गांववालोंके [साथ] अपनत्व कायम कर उनकी दिक्कतोंको [दूर] कीजिये ताकि आप अपनेको सेवाके [योग्य] बना सकें।

ईसाई नेताके उद्‌गार

[अ]खिल भारतीय ईसाई सम्मेलनके [वार्षि]क अधिवेशनके अध्यक्ष मि० एम० [रहमान]ने अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए [कहा] कि ईसाई विभाजित भारत नहीं [चा]हते। हम चाहते है कि भारतके [सब स]म्प्रदाय एक राष्ट्रका निर्माण करें। [हमार]ी सर्वोच्च अभिलाषा यही है कि हिन्दू, [मुसल]मान तथा ईसाई भातृत्व भावनाके [साथ मि]लकर देशकी आजादीके लिये अवि-[रत] आन्दोलन करें। नेताओंकी नजरबन्दी-[के स]म्बन्धमें आपने कहा कि ऐसा करना [...] और उन्हें अविलम्ब बिनाशर्त रिहा [कर देना] चाहिये।

हम वायदोंसे ऊब चुके

अमेरिकाकी भारतीय स्वाधीनताकी राष्ट्रीय समितिके सेक्रेटरी डा० अनूपसिंहने अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि भारत अब स्वाधीनता प्राप्त करके ही रहेगा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं। ब्रिटेनने अपने झूठे वायदोंसे हमारा पेट भर दिया है। भारत अब ऊब चुका, उसे ऐसे वायदोंकी आवश्यकता नहीं जो कभी पूरी होनेको नहीं। उसे ठोस वस्तुकी आवश्यकता है। मुझे भय है, यदि उसकी मांग पूरी करनेमें देरी की गयी तो कहीं गांधीजीकी अहिंसा खतरेमें न पड़ जाय। भारत सरकार द्वारा मनोनीत सनफ्रांसिसको सम्मेलनके लिये भारतीय प्रतिनिधियोंके सम्बन्धमें आपने कहा कि ये जनताके प्रतिनिधि नहीं बल्कि भारत सरकारके प्रतिनिधि हैं, जो जनताकी ओरसे न बोलकर सरकारी पक्षका समर्थन करेंगे।

इंगलैंडको प्रायश्चित करना होगा

भारतके संशोधित अर्थ बिलका विरोध करते हुए केन्द्रीय असेम्बलीमें श्री भूलाभाई देसाईने कहा कि सिर्फ आत्मगौरव और और पुरानी नीतिका ख्याल रखते हुए ही हम इस बिलका विरोध नहीं कर रहे हैं, बल्कि खूब सोच-समझकर हमने ऐसी नीति अख्तियार की है। परिस्थितिका यही तकाजा है। आगे आपने ब्रिटेन समाचार समितिके उस समाचारका उल्लेख किया जिसमें कहा गया था कि 'बर्लिन धांय धांय जलकर अपने पापोंका प्रायश्चित कर रहा है।' यदि बर्लिनको जलकर प्रायश्चित करना पड़ता है तो निश्चय है कि साम्राज्य-निर्माण करनेवाले अनेक व्यक्तियोंको इससे भी अधिक प्रायश्चित करना पड़ेगा। इङ्गलैंड की स्वतन्त्रता अपहरण करनेकी चेष्टा कर बर्लिनने पाप किया, जिसका यह प्रायश्चित है, तो मैं यह भी कहनेका साहस करता हूं कि इङ्गलैण्डको भी ऐसे अनेक पापोंका प्रायश्चित करना होगा। अन्तमें आपने जोर डालते हुए कहा कि भारतीयों की यह इच्छा है कि भारतका शासन प्रबंध भारतीय प्रतिनिधियों द्वारा हो और शासन सूत्र हस्तान्तरित करनेका उपयुक्त अवसर आ गया है।

कांग्रेसी मिनिस्ट्रीकी संभावना नहीं

पत्रप्रतिनिधियोंको उत्तर देते हुए बम्बईके भूतपूर्व प्रधान मंत्री डा० बी० जी० खरने कहा कि हममें इतना अनुशासन और आत्मसम्मान अवश्य है कि वर्तमान स्थितिमें मन्त्रिमण्डलके गठनकी बात हम नहीं सोच सकते। यूनाइटेड प्रेसको उन्होंने बताया कि हमने महात्माजीसे रचनात्मक कार्यक्रमकी योजना और हिन्दुस्तानी तालिमी संघके सिवा किसी अन्य विषयपर बातचीत नहीं की। आपने आगे कहा कि बम्बईमें मन्त्रिमण्डलके गठनकी कोई संभवना नहीं हैं, और न हम इसकी कोशिश ही कर रहे हैं। सीमाप्रांतके मन्त्रिमण्डलका जहांतक प्रश्न है, वह बिल्कुल भिन्न परिस्थितिका परिणाम है। जबतक कार्यकारिणी समितिके सदस्य तथा प्रेसिडेंट जेलोंमें बन्द हैं तबतक अन्य प्रांतोंमें भी वैसा करनेका कोई सवाल नहीं उठता।

जर्मनीकी कमर टूट गयी

मित्र सेनाके कमाण्डर इन-चीफ जेनरल आइसेन होवरने एलान किया है कि जर्मनी की मुख्य रक्षापंक्ति अब भङ्ग हो चुकी। जर्मनोंमें अब ऐसी शक्ति नहीं रह गयी कि वे पूर्ववत सङ्गठित प्रतिरोध कर सकें। पर मित्र राष्ट्रोंको ऐसा भी न समझ लेना चाहिये कि बर्लिन तक वे दौड़कर पहुंच जायेंगे। आगे चलकर भी जोरदार संघर्ष हो, इसकी सम्भावना बिलकुल मिटी नहीं है। यह पूछनेपर कि पश्चिमी मोर्चेकी सेना और रूसी सेनामें कौन पहले बर्लिन पहुंचेगी, आपने बताया कि दूरी तो रूसियोंके पक्षमें है जिन्हें सिर्फ ३३ मील तय करनी है और हमें २५० मील। पर रूसियोंके विरुद्ध अधिकांश जर्मन सैन्य शक्ति खड़ी की गयी है और उन्हें अग्रसर होनेमें भीषण संग्राम करना पड़ेगा।

भारतका भविष्य

नेरोबी (केन्या) में जब रायटरने आगा खांसे 'भारतके भविष्य' के सम्बन्धमें प्रश्न किया तो खां साहबने यह विश्वास प्रकट किया कि भारतवासी ही स्वयं अपनी राजनीतिक कठिनाइयां हल कर सकते हैं। बाहर की कोई भी शक्ति इस पेचीदगीको नहीं सुलझा सकती। यह सुझाव कि युद्ध बन्द होनेके एक वर्ष बाद राजनीतिक दलोंके हाथमें शक्ति सौंपनेकी ब्रिटेन घोषणा कर दे, बशर्ते राजनीतिक दलोंमें समझौता हो जाय, और ऐसा न होनेपर स्वयं अपने ख्यालातोंके मुताबिक ब्रिटेन विधान तैयार करे, उतना बुरा नहीं है। पर अन्तमें भारत के लिये यह लज्जास्पद सिद्ध होगा। किसी राष्ट्रकी इच्छाके विपरीत उसपर बाहरसे कोई आदर्श नहीं लादा जा सकता। ब्रिटेनको ऐसी किसी भी कार्रवाईके बजाय आजकी तरह अपने हाथमें उत्तरदायित्व रखना कहीं सुविधाजनक मालूम होगा।

देशकी आशाओंके आधार युवक

कलकत्ता मारवाड़ी छात्र-निवास हालमें भाषण देते हुए साधु टी० एल० वास्वानीने, विशेष कर युवकोंके लिये दिये गये एक भाषणमें कहा कि हम युवकोंके सामने अपना मस्तिष्क इसलिये झुकाते हैं, क्योंकि वे ही भविष्यकी आशा हैं। इस सम्बन्धमें आपने एक जर्मन अध्यापकका उल्लेख किया, जो हर रोज कालेज पहुंचनेके साथही अपनी टोप उतार कर युवकोंके प्रति अपनी श्रद्धा प्रगट किया करता था। वास्वानीने कहा कि नवयुवक भविष्यका निर्माण करनेवाले हैं। उन्हें भारतीय भावनाओं और आदर्शों के प्रति सच्चा होना चाहिये। उन्होंने युवकोंको परामर्श दिया कि वे एक संयुक्त राष्ट्रका निर्माण करें। विभिन्न भाषाएं, रीति-रिवाज और धर्म देश-प्रेमकी भावनाके लिये रुकावट नहीं सिद्ध हो सकते। इस भिन्नताकी तहमें भी एकता और साम्य है।

आपने अनुरोध किया कि युवक कृत्रिमता और आडम्बरको त्याग कर सादगीको अपनायें क्योंकि 'सादगी' में ही 'शक्ति' निहित है। अन्तमें आपने कहा कि गरीबों को दान देकर हम उनसे कृतज्ञताकी उम्मीद करनेके बजाय उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। क्योंकि उन्होंने जीवनमें सेवा करनेका एक सुन्दर अवसर उपस्थित कर दिया। ऐसे व्यक्तियोंके कष्ट-निवारणके लिये युवकोंको सदैव प्रयत्नशील रहना चाहिये।

विश्व-शांतिके उपादान

पर्ल एस० बकने अपनी 'टेल दि पीपुल्स' नामक पुस्तकमें विश्व शांतिके सम्बन्धमें अपनी धारणा प्रकट की है कि ऐसा तभी संभव है, जब सम्पूर्ण मनुष्यजातिको समानता और सुरक्षाका सुअवसर हाथ लगे। इसमें सर्व प्रथम ऐसी योजना तैयार करनी है जिससे शोषण, भूख और अज्ञानका अन्त हो सके। जब मनुष्योंकी आवश्यकतायें पूरी होंगी, उन्हें सन्तुष्टि मिलेगी, तभी शांतिका आगमन होगा। आपने चीनके नामी शिक्षा प्रचारक डा० जेम्स० वाइ० के० येनके उस सिद्धान्तका प्रतिपादन किया है, जो यों है: जनता राष्ट्रकी नींव है। इस नींवके दृढ़ रहनेपर ही राष्ट्रको शांति नसीब होगी।

मिस पर्लबक

युद्धका सिंहावलोकन

—:::*:—

गत सप्ताहके युद्ध सिंहावलोकनके दूसरे ही दिन जर्मनीके पश्चिमी मोर्चेपर मित्र सेनाओंने लोअर राइन नदीको पार कर लिया और इस समय प्रथम अमेरिकन सेना राइनसे ६६ मीलसे अधिक पूर्व गिसेन नगर तक पहुंच गयी है। अब राइनको कई स्थानों पर पारकर १०० मीलकी लम्बाईमें उसपर अधिकार कर लिया गया है और फ्रैंकफर्ट, डुइसबर्ग, एसेन आदि अनेक जर्मन नगरोंपर मित्र सेनाओंका अधिकार हो गया है। राइन नदीको पार कर लेनेसे अब मित्रोंको बर्लिनके मार्गमें कोई बड़ी रुकावट नहीं रह गयी और माण्टगोमरीको यह विश्वास होने लगा है कि किसी भी समय यूरोपकी लड़ाईकी इतिश्री हो सकती है। उसकी सेनाओंकी तीव्र गतिमें वेस्टफेलियाके मैदानों में जर्मनोंकी ओरसे कोई बाधा नहीं पहुंचायी जा रही है। सच पूछा जाय, तो जर्मनीकी किलेबन्दी बिल्कुल भङ्ग-सी हो गयी है और सब कहीं जर्मन सैनिक पीछेकी ओर हटने लगे हैं। यद्यपि फील्ड मार्शल वान रुंडस्टेट के स्थानपर जेनरल केसलरिंगको पश्चिमी मोर्चेपर जर्मन सेनाओंका कमाण्डर इन चीफ नियुक्त किया गया है और जेनरल केसलरिंग प्रतिरोधात्मक युद्ध करनेमें जर्मन सेनापतियों में सर्वोच्च स्थान रखते हुए बताये जाते हैं, तथापि जान पड़ता है कि भागते हुए जर्मन सैनिकोंको एल्बनदीके पहले पैर अड़ाना सम्भव नहीं हो सकेगा।

जर्मन के पश्चिमी और पूर्वी दोनों ही मोर्चोंपर ब्रिटिश, अमेरिकन, कनाडियन और सोवियट सेनाओंमें बर्लिन पहुंचनेके लिये जो जबर्दस्त होड़-सी लगी है, उसको देखते हुए ब्रिटिश राजधानीमें यह निस्सन्देह सा समझा जाने लगा है कि यूरोपमें अब कोई दूसरी बड़े पैमानेपर लड़ाई होनेकी संभावना नहीं है। जर्मन स्थलसेनाओंको इस प्रकार छिन्न-भिन्न किया गया है कि उनका पुनर्सङ्गठन सम्भव हो सकेगा इसकी आशा बहुत कम है। पश्चिमी मोर्चेपर जेनरल पैटन और पूर्वी मोर्चेपर मार्शल जुकोवकी सेनाएं इस प्रकार तीव्र गतिसे बढ़ रही हैं कि बर्लिन के लिये सबसे अधिक खतरा उत्पन्न हो गया है और २९ मार्चके बर्नके एक तारके अनुसार जर्मन सरकार बर्लिनको खालीकर किसी अज्ञात स्थानको चली गयी है। गेस्टापो हेड क्वार्टर स्विस सीमा स्थित कोन्स्टैंसमें चला गया है। संसारका पांचवां शहर बर्लिन, जहां ४२॥ लाख लोग रहते थे, वीरान-सा हो गया है। जर्मन प्रचार मंत्री डा० गोबेल्सने अपने साप्ताहिक सिंहावलोकनमें कहा है कि इस युद्धमें हमने सब कुछ खो दिया है, लेकिन हमारा आत्म सम्मान बच गया है और उसकी रक्षाके लिये एकमात्र यही उपाय हमारे पास है कि हम अपना सर्वस्व वर्तमान युद्धको अर्पित कर दें। संसार में अपना शासन स्थापित करनेके लिये स्वप्न देखनेवाले जर्मन 'आर्य' आज अपनी पितृ भूमिमें पिट रहे हैं और उनकी राजधानी बर्लिनपर मित्र विमान बुरी तरह बमवर्षा कर तहस-नहस कर रहे हैं; यह कालचक्रकी प्रबलता या विधि विडम्बनाके सिवा और क्या कहा जा सकता है। इधर पश्चिमी जर्मनीमें जर्मन युद्ध प्रयासका मुख्य व्यवसायिक अञ्चल समझा जाता है, वह मित्रसेनाओंके घेरेमें पड़कर अवशिष्ट जर्मनीसे अलग किया जानेवाला है। इससे जर्मन युद्ध प्रयासको बहुत अधिक धक्का पहुंचेगा, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है, तथापि अबतक जर्मन जनता और सेनाका साहस पूर्ववत् दृढ़ है और इटालियन मोर्चेपर बन्दी बनाये गये एक जर्मन सैनिक अफसरने यहां तक कहा है कि हम जानते हैं कि मित्रराष्ट्रोंकी सेनाएं समस्त उत्तरी जर्मनीपर अधिकार कर लेंगी, लेकिन जर्मन भूमिपर जबतक एक भी जर्मन जीवित रहेगा, लड़ाई बराबर जारी रहेगी और जादूकी तरह इस समय नहीं तो, अन्तमें लड़ाईमें जर्मनी ही जीतेगा। साहस इसे कहते हैं। इसी जर्मन साहसको देखकर सारी युद्ध स्थिति अपने पक्षमें होनेपर भी मित्रराष्ट्रीय सेनापति जेनरल आइसनहोवर कहते हैं कि 'जर्मन क्या कर सकते हैं यह कहा नहीं जा सकता।'

जब उनसे यह प्रश्न किया गया कि बर्लिनमें पहले आप पहुंच रहे हैं या सोवियट सेनापति, तो उन्होंने कहा कि 'जहांतक दूरीका प्रश्न है, हम बर्लिनसे २॥ सौ मील और रूसी ३३ मील दूर रह गये हैं। इसलिये उनका ही पहले पहुंचना सम्भव है। लेकिन जब यह सोचते हैं कि जर्मनीकी जबर्दस्त शक्ति रूसियोंके सामने है तो हमारे सामने यह प्रश्न आता है कि रूसियोंको कठोर संग्राम करना होगा।' लेकिन जब हम यह सोचते हैं कि रूसियोंने जर्मनोंसे लोहा लेनेके लिये अपनी समस्त शक्ति एकत्र करनेकी चेष्टा की है और जर्मन सेनाएं ओडर नदी स्थित अपने पुराने प्रतिरोध अड्डोंको तेजीसे खाली करती जा रही हैं, फ्रूस्टरिनके उत्तर-पश्चिम हैगेनवार्ग और जेडन अंचलोंको जर्मन खाली कर गये हैं तथा क्रूस्टरिनपर सोवियट अधिकार हो जानेकी घोषणा जर्मन संवाद समिति तक कर चुकी है, तो यही कहना अधिक उचित जान पड़ता है कि सोवियट सेनाका लाल झण्डा बर्लिनपर पहले फहरायेगा। आस्ट्रियापर आक्रमण बिल्कुल अवश्यम्भावी हो गया है। टालबुखीनकी सेनाएंने जर्मन सीमापर पहुंचकर वीरन न्यूसटेडपर जबर्दस्त आक्रमण करनेके लिये तैयार हो चुकी हैं। बाल्टिक तट स्थित प्रसिद्ध जर्मन बन्दरगाह डेंजिग रूसी हाथमें पहुंच गया है। सोवियट सेनानी युद्धकी अवस्था को देखते हुए लड़ाई शीघ्र समाप्त करनेकी बात कहने लगे हैं।

सुदूर पूर्वमें जापानका सङ्कट बराबर बढ़ता ही जा रहा है। अमेरिकन उड़नकिले टोकियोपर पहुंच करके नये प्रकारके दाहक बमोंकी वर्षा करने लगे हैं। जापानी संवाद-समितिके अनुसार सम्राटके शासनमें ३ वर्षोंसे सहायता देनेवाला जापानी राजनीतिक दल भङ्ग कर दिया गया है और वर्तमान सङ्कटापन्न अवस्थाका मुकाबला करने के लिये सर्वदलीय राजनीतिक दलका सङ्गठन किया गया है जिसके प्रेसीडेण्ट जेनरल जीरो मिनामी नियुक्त किये गये हैं। जेनरल जीरो मिनामी जापानी सामरिक यन्त्रके वास्तविक प्रधान नेता हैं और १९३१ से ही अपने रणकौशलके लिये विशेषज्ञ समझे जाते हैं। अमेरिकन सेनाएं फिलिपाइन द्वीप समूहके छोटे-छोटे द्वीपोंपर लगातार अधिकार करती जा रही हैं। बर्माके सामने इतिहासमें अभूतपूर्व दुर्भिक्ष उपस्थित है। फसल नष्ट हो जानेके कारण सेचवानके २ करोड़ निवासियोंके सामने अन्न बिना मर-मिटनेका प्रश्न उपस्थित है। अगर उचित सहायता शीघ्र नहीं पहुंचायी गयी, तो स्थिति गंभीर हो जायगी। बर्माकी पुरानी राजधानी मांडलेको अपने अधिकार करनेके बाद चौदहवीं सेनाने मीकटिला स्थित जापानी प्रतिरोध और प्रत्याक्रमणको निश्चित रूपसे परास्त कर दिया है। अमेरिकन जंगी जहाज उन द्वीपोंपर गोलाबारी कर रहे हैं जो फारमोसा और जापानके बीचमें अवस्थित हैं। जापान (मुख्य) से ४०० मील दूर ओकीनावा द्वीपमें जा अमेरिकन सेना उतरी है। यह बराबर युद्ध-सञ्चालन है। कहनेका तात्पर्य यह है कि खतरा जापानके निकट ... बढ़ता जा रहा है। आगे क्या ... भविष्य बतायेगा।

अखिल विश्व ट्रेड यूनियन सम्मेलनमें भारतके प्रतिनिधि श्री सुधीन्द्र प्रामाणिक लन्दनमें ब्रिटिश ट्रेड यूनियनके एक नेतासे बातचीत कर रहे हैं।

जर्मनीके राकेट बम

(६ ठें पृष्ठका शेषांश)

जब पूंछके रास्ते बाहर भागती है, तो धक्केसे राकेट एक दम सीधे ऊपरको उठता है। अपनी उड़ानमें वी २, ६० ... की ऊंचाई पर आसमानमें चढ़ क... तोपके गोलेकी भांति वक्र मार्गका अ... करता हुआ अपने लक्ष्यपर गिरता है।

वी २ के इंजिनमें हाइड्रोजन-पर-आक्साइड और एल्कोहल ही ईंधनका ... देते हैं। इनके अतिरिक्त कैल्शियम-पर-मैनगेनेट और द्रव-आक्सीजन भी इसमें ... होती हैं। आरम्भमें द्रव-आक्सीजन ... एल्कोहल आपसकी रासायनिक ... गैस उत्पन्न करती हैं—यही गैस ज... वेगसे पीछेकी ओर भागती है तो ... धक्केसे राकेट वी २ आगेकी ओर ... है। एक बार विस्फोटन क्रिया आर... जानेपर ही हाइड्रोजन-पर-आक्साइड ... कैल्शियम-पर-मैनगेनेटके संयोगसे ... भरके लिये द्रव-आक्सीजन तैयार ... रहती है। इस प्रकार ईंधनके लिये ... ही ढेर-सी द्रव-आक्सीजन इंजिनमें ... आवश्यकता नहीं। हाइड्रोजन-पर-आक्साइड और कैल्शियम-पर-मैनगेनेट ... कुछ जगह भी कम घेरते हैं।

जिस वक्त राकेट फायर किये ... वे ६ सेकण्डके अन्दर ५॥ मीलकी ऊं... आसमानमें पहुंच जाते हैं। यहां धुं... रंगकी चमक उसके पृष्ठभागपर ... देती है। यह चमक द्रव-आक्सीजन ... एल्कोहलके जलनेसे उत्पन्न हुए तीव्र ... के कारण पैदा होती है।

आरम्भके दिनोंमें राकेटको फायर ... के लिये सीमेण्टके बने हुए खास प्लेट... की जरूरत हुआ करती थी, किन्तु ... इनकी डिजाइनमें सुधार करके इन्हें ... योग्य बना लिया गया है कि ये किसी ... के भूमिखण्ड परसे फायर किये जा ... हैं। राकेट वी २ की बाहरी खोल इस्पात ... मेनकी बनी होती है—भीतर उसे सम... के लिये अर्द्धवृत्ताकार शक्लमें इस्पात ... ढांचा लगा होता है।

उड़न बमोंके मुकाबलेमें वी २ ... क्षति पहुंचानेमें समर्थ हुए हैं—इसका ... कारण कदाचित इनकी तीव्रतम गति ... इनकी रफ्तार ध्वनिकी गतिसे अधिक ... के कारण इनके आक्रमणकी सूचना ... इंजिनोंकी ध्वनिसे नहीं मिल ... लक्ष्यपर गिर कर जब ये टकराकर ... करते हैं, तभी इनका पता चलता है।

कुछ लोगोंका कहना है कि वी ... के दिशानियंत्रणके लिये जर्मनोंने ... तरंगोंका प्रयोग किया है। रेडियो ... प्रभावित करके हेडक्वार्टर परसे ही ... के पतवारके ब्लेडको निश्चित दिशा... फिरा कर राकेटको निर्दिष्ट मार्ग... सकते हैं। किन्तु इस सम्बन्धमें ... रूपसे कुछ कहा नहीं जा सकता।

स्वदेश-वार्ता

...र महाराजकी दानप्रियता

...ौर महाराजने भारतीय इतिहास ...को भारतका एक विस्तृत इतिहासके ...तथा प्रकाशनके लिये २५ इजारका ...या है। ऐसी खबर है कि मराठा इति- ...साथ होलकर महाराजका नाम भी ...त रहेगा।

...माणका अभूतपूर्व रेकार्ड

...शुक्रवार ता० २३ मार्चको बम्बईमें ...बढ़कर १०३।१ डिग्री हो गया। ...वेधशालाने अपनी सौ सालकी ...में प्रथम बार इतना अधिक तापमाण ...ार्ड तैयार किया है।

...त सरकारका अर्थबिल रद्द

...२६ मार्चको केन्द्रीय असेम्बलीने ...विरुद्ध ५८ वोटोंसे भारत सरकारका ...ठुकरा दिया। ता० २७ मार्चको ...त रूपमें उक्त बिलके उपस्थित किये ...भी वह पास न हो सका।

...० भा० ग्रामोद्योग संघ

...खिल भारतीय ग्रामोद्योग संघके बोर्ड ...्रेनेजमेण्टने महात्माजीको पुनः अगले ...ों के लिये संघका अध्यक्ष निर्वाचित ...। प्रो० जे० सी० कुमारप्पा संघके ...ंगे। ऐसी खबर है कि सरकारी ...प्राप्त होते ही 'ग्रामोद्योग पत्रिका' के ...का निश्चय किया गया है।

...ङ्गालमें गवर्नरी शासन

...बुधवार, २८ मार्चको बङ्गाल असे- ...सरकार द्वारा पेश की गयी कृषिमद ...ी मांगको ९७ के मुकाबले १०७ वोटों ...कर नजीमुद्दीन मिनिष्ट्रीमें अपना ...ास प्रकट किया है। पर पुनः बृहस्पति ...असेम्बलीकी जब बैठक हुई, स्पीकर ...ी हक्रिम दे असेम्बलीको अनिश्चित ...लिये स्थगित कर दिया। आपका ...ा कि बुधवारकी पराजयके बाद ...रको कार्य करनेका वैधानिक ...र न रहा। बङ्गाल गवर्नरने इस ...की वैधानिक उपयोगितापर टीका- ...किये बगैर यह स्वीकार कर लिया ...ान्तीय शासनतन्त्र भङ्ग हो गया। ...भारतीय शासन-विधानकी ९३ ...अनुसार शासन-सूत्र अपने हाथमें ...है।

...ालको वस्त्र सप्लाई

...ोसियेटेड प्रेसको ज्ञात हुआ है कि ...रकारने बङ्गालके वस्त्र सङ्कटको कम ...के दृष्टसे दो सप्ताहके अन्दर ३० ...ज वस्त्र भेजनेका प्रबन्ध किया है। ...िये दस रुपयेके हिसाबसे प्रत्येक ...भेजनेका निश्चय किया गया है ...ब तक उस समय तक जारी रहेगा ...न्द्रीय टेक्सटाइल कमिश्नर मि० ...वेलासी बङ्गालका निरीक्षण कर ...ये परिवर्तनकी आवश्यकता न

मलेरिया और कुनैन

एक प्रश्नका उत्तर देते हुए मि० जे०डी० टीसनने गत २९ मार्चको केन्द्रीय असेम्बलीमें बताया कि सन १९३८-४३ के बीच लगभग ९० लाख, ७८ हजार, ४१८ व्यक्ति मलेरिया के शिकार हुए। एक अन्य प्रश्नके उत्तरमें आपने हाउसको सूचित किया कि युद्धके पूर्व कुनैनके उपयोगका सालाना औसत २ लाख १० हजार पौण्ड था, पर युद्धकालमें कुनैनकी जगह उपयुक्त वस्तुका सालाना औसत ९ लाख है।

मि० एल्महर्स्ट गांधीजीसे मिले

बङ्गाल सरकारके भूतपूर्व कृषि परामर्शदाता और विश्वभारतीके विख्यात हितैषी मि० एल० के० एल्महर्स्टने वर्धा पहुंचकर महात्माजीसे मुलाकात की। आश्रममें आप दो दिनों तक ठहरे और इस बीचमें दो बार महात्माजीसे मिले।

महात्माजी बम्बई पहुंचेंगे

ऐसी खबर है कि महात्मा गांधी कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टकी बैठकमें, जो आगामी १,२ और ३ अप्रैलको होने जा रही है, भाग लेनेके लिये बम्बई पधारेंगे। वहां आपका बिड़ला हाउसमें रहना होगा। महात्माजी हिन्दुस्तान मजदूर संघकी बैठक में भाग लेंगे, ऐसी उम्मीद है।

औरङ्गजेब खांमें अविश्वास

गत २१ मार्चकी एक बैठकमें सीमा। प्रांतीय मुस्लिम लीगने बड़ी गरमागरम बहसके बाद भूतपूर्व प्रधान मन्त्री सरदार औरङ्गजेबखांके नेतृत्वमें अविश्वासका प्रस्ताव पास किया। बैठकमें औरङ्गजेब खां और उनके दलके लोग भी उपस्थित थे। पर उक्त प्रस्ताव पास होनेके पूर्व ही औरङ्गजेब खां और उनके सहयोगी 'वाक आउट' कर गये।

अभियुक्तोंको फांसी

अस्थी और चेमूर केसके अभियुक्तोंके रिश्तेदारोंके पास नागपुर सेंट्रल जेलके अधिकारियोंने पत्र देकर सूचित किया है कि वे इन बन्दियोंसे आगामी ४ अप्रैलके पूर्व अन्तिम मुलाकात करलें। ऐसी खबर है कि अभियुक्तोंकी ओरसे जीवनदानके लिये कुछ दिन पूर्व सम्राटसे जो अपील की गयी थी, वह नामंजूर कर दी गयी।

जयप्रकाश बाबूसे मुलाकात

ऐसी खबर है कि कांग्रेस समाजवादी पार्टीके नेता श्री जयप्रकाश नारायणने यू० पी० के भूतपूर्व मन्त्री और प्रख्यात वकील डा० के० एन० काटजूसे मिलनेकी इच्छा प्रकट की है। डा० काटजू कस्तूरबा स्मारक कोष कमेटीकी बैठकमें शामिल होनेके लिये बम्बई जाते समय आगरेमें ठहर कर जयप्रकाश बाबूसे मिल लेंगे।

बिहारमें कांग्रेस मंत्रिमंडल होगा

बिहारमें कांग्रेस मन्त्रिमण्डलके गठनकी अफवाह जोरोंपर है। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि इस बार ४ की जगह ८ मंत्री रहेंगे। ऐसी खबर है कि इस सम्बन्धमें किसी मध्यस्थके जरिये बिहार गवर्नरसे बातचीत चल रही है।

श्रीइन्द्रजीतको प्राणदंडकी सजा

जौनपुरके एक कांग्रेसकर्मी श्री इन्द्रजीत पांड़ेको गत अगस्तके हलचलके समय एक खुफिया पुलिसकी हत्याके अभियोगमें प्राणदण्डकी सजा दी गयी है।

उड़ीसामें कांग्रेस मिनिस्ट्री ?

नयी दिल्लीका समाचार है कि उड़ीसा के भूतपूर्व पार्लमेण्टरी सेक्रेटरी श्री प्यारेशंकर राय उड़ीसामें संयुक्त मंत्रिमण्डलकी स्थापनाके सम्बन्धमें श्री भूलाभाईसे बातचीत करनेके लिये दिल्ली पधारे हैं। यह भी कहा जाता है कि वे भारत सरकारके गृह-सदस्यसे मिलकर राजबन्दियोंकी रिहाईके सम्बन्धमें भी बातचीत करेंगे।

नेताओंका तबादला

गत ३० मार्चकी रातको पंडित जवाहर लाल नेहरू, पंडित गोविन्द वल्लभ पन्त और आचार्य नरेन्द्रदेवको अहमदनगर फोर्टसे नैनी सेण्ट्रल जेल पहुंचाया गया। ऐसा खबर है कि एक-दो दिनोंके अन्दर ही उन्हें नैनी जेलसे किसी अन्य जेलमें भेज दिया जायगा।

आचार्य कृपलानीको कराची जेलमें रखा गया है। उन्हें स्पेशल क्लास दिया गया है। अपने घरसे भोजन मगाने तथा दोस्त तथा रिश्तेदारोंसे मिलनेकी भी सुविधा प्रदानकी गयी है। कराची आते समय हैदराबाद स्टेशनपर सिन्ध प्रांतीय कांग्रेस कमेटीके अध्यक्ष डा० गिडवानीसे उनकी मुलाकात हुई।

इस समय सिर्फ मौलाना आजाद, आसफअली, डा० पट्टाभि सीतारमैया, सरदार वल्लभ भाई पटेल और शङ्करराव अहमदनगर जेलमें रह गये। इन्हें भी यथाशीघ्र स्थानान्तरित कर दिया जायगा।

सर फ्रांसिस मूडीकी लन्दन यात्रा

मालूम हुआ है कि भारत सरकारके गृह-सदस्य सर फ्रांसिस मूडी शीघ्र ही इङ्गलैंडके लिये प्रस्थान करेंगे। संभव है, सर जान थार्न उनकी अनुपस्थितिमें कार्यभार संभालें। ऐसा अनुमान किया जाता है कि भारतीय समस्याके सम्बन्धमें सम्राटकी सरकारसे जो बातचीत लन्दनमें चल रही है, उसमें भाग लेनेके लिये ही आपका जाना हो रहा है।

पंतजी रिहा होंगे।

युक्त प्रान्तीय सरकार द्वारा प्रकाशित एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि सरकारने गोविन्द वल्लभ पंतको अहमदनगरसे युक्तप्रांत पहुंचते ही अस्वस्थताके कारण रिहा करनेका निश्चय किया है। रिहाईका कारण बताते हुये विज्ञप्तिमें कहा गया है कि ऐसा करनेका उद्देश्य यह है कि वे अपने आपरेशन के लिये इच्छानुसार डाक्टर और अस्पतालका चुनाव कर सकें।

कफन बिकने लगा

इलाहाबादकी खबर है कि स्थानीय कपड़ा बाजारमें कफन बिक्री करनेके अभियोगमें एक आदमीको गिरफ्तार किया है। उसके ऐसे दो दोस्त, जिन्होंने कफ़ फाड़कर कपड़ा निकालनेमें सहायता दी थी, अब तक फरार हैं।

मन्त्रियोंकी वेतन-वृद्धि

सिन्ध असेम्बलीने गत २८ मार्चको एक बिल पासकर असेम्बलीके मन्त्री, स्पीकर, डिपुटीस्पीकर, तथा सदस्योंकी तनख्वाह बढ़ा दी है। मन्त्री और स्पीकरका वेतन क्रमशः १ हजार ५ सौ और १ हजार २५० से बढ़कर प्रत्येकका २ हजार ५ सौकर दिया गया है। कांग्रेस पार्टीके जोरदार विरोधके बावजूद उक्त बिल ६ के मुकाबले २९ वोटोंसे पास हो गया। विरोधियोंका कहना था कि सदस्योंके वेतनमें शत प्रतिशत वृद्धि बिल्कुल अनुचित है, जबकि उन्होंने अपने नौकरोंको सिर्फ १० प्रतिशत मंहगाईका भत्ता दिया है। वोटिंगमें विरोधी हिन्दू और स्वतंत्र मुस्लिमदल तटस्थ रहे।

हिन्दी प्रेमियोंसे अनुरोध

दिल्ली प्रान्तीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन महन्त आनंद कौसल्यायनके सभापतित्वमें हुआ। सम्मेलनने एक प्रस्ताव द्वारा हिन्दीके प्रति डाक विभागकी उदासीनताकी निन्दा की और हिंदी प्रेमियोंसे अनुरोध किया कि वे पत्र वगैरहकी पता लिखनेमें हिन्दीका ही इस्तेमाल करें।

मि० जिन्नाकी असमर्थता

ओरियन्ट प्रेसको निश्चित तौरपर ऐसा समाचार मिला है कि अस्वस्थताके कारण मि० जिन्ना लीगके सालाना जलसेमें सम्मिलित न हो सकेंगे। ऐसी उम्मीद है कि जलसा अप्रैलके अन्त तक होगा।

हमारी डाक—

बंगरहट्टा (दरभंगा) के एक आदर्श और साहित्यप्रेमी स्व० नागेश्वर प्रसादजीके नामपर "नागेश्वर-स्मारक पुस्तकालय" स्थापित हुआ है। युक्त पुस्तकालयके संचालन के लिये एक वजसा कमेटीका गठन हुआ है, जिसने साहित्यिक संगठन और निरक्षता-निवारणको भी अपने कार्यक्रमका अंग माना है—श्री शारदाप्रसाद सिंह

—गत १६ मार्चका पुरवा, (उन्नाव)में हिन्दी प्रचारके निमित्त "हिन्दी साहित्य संघ"की संस्थापना की गयी है। संघ पत्र-सम्पादकों तथा हिन्दी प्रेमियोंसे अपनी सफलताके लिये शुभ कामनाओंकी आशा करता है—मन्त्री

—ऐसे आर्यसमाजी नौजवान, जो वैदिक धर्मकी शिक्षा प्राप्तकर धर्म और देशकी सेवा करना चाहते हैं, आचार्य दयानन्द उपदेशक विद्यालय गुरुदत्त भवन, लाहौरसे पत्र व्यवहार करें। उम्र १८ वर्षसे ज्यादा होनी चाहिये—स्वामी वेदानन्द।

—मुजफ्फरपुर, २७ मार्च। मुजफ्फरपुर जिला यादव सभाका चौथा अधिवेशन छपरे के श्री रघुवंश प्रसाद यादव बी० ए० की अध्यक्षतामें हुआ। जिसमें श्रीमती कस्तूरबा श्री महादेव देसाई तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियोंके निधनपर शोक प्रस्ताव पास किये गये। एक और प्रस्ताव द्वारा यादव समाजके लोगोंसे सामाजिक उन्नतिके लिये प्रोत्साहित किया गया। इस सभामें पाकिस्तान योजना और सिंध सरकारके सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगानेका घोर विरोध किया गया।—मंत्री

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झांकी

जापानी सेनाका विस्तार

टोकियो रेडियोने एलान किया है कि युद्धकी वर्तमान गम्भीर स्थितिको देखते हुए जापानी सैन्य मन्त्रिमण्डलके आदेशानुसार जापान, कोरिया, फारमूसा, मंचूरिया और चीनके सभी नौजवान, जिनकी उम्र सतरह सालसे ऊपर है, सेनामें भर्ती किये जा सकते हैं।

चीनमें जापानी अग्रगति

जापानियोंने पेपिंग-हांकाउ रेलवेके पश्चिम हुपेह और होनान प्रांतोंमें नया आक्रमण शुरू किया है। चीन स्थित अमेरिकन सदर मुकामकी एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि चौदहवें अमेरिकन हवाई सेनाने लाहोको हवाई अड्डा खाली कर दिया है, जो हन्काउसे २०० मील उत्तर-पश्चिम स्थित है। स्मरण रहे कि इसी इलाकेमें जापानियों का नया आक्रमण आरम्भ हुआ है।

जोरदार हवाई हमलेकी धमकी

अमेरिकन हवाई सेनाके कमाण्डर जेनरल हेनरी एच० आर्नोल्डने एक प्रेस कानफरेंसमें बताया है कि जर्मन उद्योगधन्धोंको नष्ट करने तथा सुदूरपूर्वका युद्ध शीघ्रतासे अन्त करनेके उद्देश्यसे हम अपने प्रत्येक हवाई जहाजका उपयोग करने जा रहे हैं। आपने भविष्यवाणी की कि आगामी छः महीनोंके अन्दर जापानपर हवाई हमलेकी रफ्तारको तिगुना बढ़ा दिया जायगा।

पांच बहनें एक साथ पैदा हुईं

न्यूयार्कका एक समाचार है कि वाशिंगटनकी अन्नाइ टर्नर नामकी एक ३६ वर्षीय महिलाने पांच कन्याओंको एक साथ जन्म दिया है। इनमें तीनकी हालत खराब बतायी जाती है। सिर्फ पांचवी ऐसी है, जिसके जीवित रहनेकी पूरी आशा है।

लार्ड वावेल और मि० एमरी

लार्ड वावेलकी लन्दन यात्राके सम्बन्ध में प्रश्न पूछे जानेपर भारत सचिव मि० एमरीने बताया कि मैं लार्ड वावेलसे हिन्दुस्तानके राजनीतिक तथा अन्यान्य विषयों पर बातचीत करनेकी आशा करता हूं। इस अवसरपर कैप्टन ग्रामन्स और मि० सोरेनसेनने भी प्रश्न पूछे। मि० गैलचर (साम्यवादी) के यह पूछनेपर कि क्या राजनीतिक बन्दियोंकी रिहाईके अलावा सनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें राजनीतिक नेताओंके भेजनेके प्रश्नपर भी विचार किया जायगा, भारत-सचिवने कहा, 'मेरे पहलेके उत्तरोंमें यह भी शामिल है।'

लायडजार्जका निधन

गत महायुद्धमें इङ्गलैंडकी आन बचानेवाला वीर सेनानी और सफल राजनीतिज्ञ अर्ल लायड जार्जका गत २६ मार्चको ८२ वर्षकी अवस्थामें देहावसान हो गया।

अर्जेन्टाइनाकी युद्ध-घोषणा

ब्यूनोसेरीजकी खबर है कि अर्जेन्टाइनाने गत २९ मार्चको धुरी राष्ट्रोंके खिलाफ युद्धका एलान किया है।

रूसी जेनरलकी मृत्यु

मास्को रेडियोने घोषणाकी है कि मिलिटरी एकेडेमीके प्रधान मार्शल शोपोशीकोव की बहुत दिनोंकी बीमारीके बाद, गत २६ मार्चको ६२वर्षकी अवस्थामें मृत्यु हो गयी। ये रूसके वयोवृद्ध नेताओंमें एक थे। सन् १९४२ की सैनिक सफलताके पीछे इन्हींको योजना थी, जिसने जर्मनोंको पीछे कदम हटानेको लाचार किया।

इङ्गलैंडपर हवाई हमला

कई सप्ताहके बाद पुनः सरकारी विज्ञप्ति में कबूल किया गया कि दुश्मनोंके हवाई हमलोंसे इङ्गलैंडके दक्षिणी अञ्चलमें क्षति हुई है।

युद्ध अपराधियोंके दंडका विधान

ब्रिटेनके परराष्ट्र सचिव मि० इडेनने कामन सभामें घोषणाकी है कि जर्मन अत्याचारके सम्बन्धमें की गयी मास्कोकी घोषणा के अनुसार प्रधान युद्ध अपराधियोंको मित्रराष्ट्रोंके सम्मिलित निर्णयके अनुसार दण्ड दिया जायगा। आपने हिटलरके सम्बन्धमें कहा कि उसे तो ब्रिटिश सरकार एक डबल गुस्ताख समझती है, जिसका मामला मास्को घोषणाके अन्तर्गत अवश्य आ जाता है।

ब्रिटेनकी खाद्य समस्या

रायटरका कहना है कि ब्रिटेनकी खाद्य समस्याके सम्बन्धमें अमेरिकाके अधिकारियों से बातचीत करनेके लिये उत्पादन विभागके ब्रिटिश मन्त्री कैप्टन आलिवर लीटेल्टन और कर्नल जे० जे० ल्यूलीन शीघ्र ही अमेरिका जायेंगे।

फिलिपाइन द्वीप पुंजकी सरकार टाकलोबनमें स्थापित हो रही है। नयी सरकारको सैनिक गार्ड आज आनर दे रहे हैं।

कोर्निगपर रूसी फौजका कब्जा

सोवियट जनता और सैनिकोंके नाम दिये गये आदेशमें गत २९ मार्चको मार्शल स्टालिनने कहा है कि रूसी सेना आस्ट्रिया की सीमापर पहुंच चुकी है।

ता० ३० मार्चके आदेशमें मार्शल स्टालिनने घोषणा की है कि रूसी फौजने बाल्टिक तटपर स्थित कोनिंगके प्रसिद्ध बन्दरगाहपर अधिकार कर लिया है।

बर्लिन खाली करनेकी नयी योजना

गत २८ मार्चको जर्मन समाचार समिति ने एलान किया है कि लगातार हवाई हमले के कारण बर्लिनसे नागरिकोंको हटानेका नया प्रबन्ध किया गया है।

चीन और अमेरिकाको आ...

चीनके समाचारपत्रोंमें इस ... का प्रकाशन बड़े जोरोंसे हो रहा ... सैनफ्रान्सिस्कोके सम्मेलनके बाद ... राष्ट्र सचिव मि० टी० वी० सुंग ... जाकर चीन और अमेरिकाके आ... पर वार्ता आरम्भ करेंगे।

जर्मनीकी योजना

एक जर्मन युद्धबन्दीने पांचवी ... प्रश्नकर्ताको बड़ी गम्भीरतासे कहा ... मित्रराष्ट्र सम्पूर्ण उत्तरी जर्मन ... दखल जमा लेंगे, फिर भी जर्मनी ... नहीं करेगा। युद्ध उस समय तक ... रहेगा जबतक एक भी जर्मन जीवि... उसने यह आशा प्रकट की कि ... ही हो, पर जर्मनीकी जीत निश्चि... जर्मन योजनाके सम्बन्धमें उसने ... सर्वप्रथम सेनाको दक्षिणी जर्मनी, ... और उत्तरी इटलीके पहाड़ी ... लिया जायगा और तत्पश्चात ... काल तक गुरिल्ला युद्ध जारी रखा ... उस सैनिकका कहना था कि ... दुर्घटनाओं तथा गुप्तासोंका जोरदा... शुरू किया जायगा। उसने यह भी ... बहुतसे नाजी अधिकृत देशोंमें आ... यातके साधनोंको छिन्न-भिन्न कर... युद्ध-संलग्न सेनाको आवश्यक ... अवगत रखनेका कार्य करेंगे।

युद्धका अन्त निकट

एक उदारदली उम्मीदवारके ... सभाकी सदस्यताके चुनावका समर्थ... हुए मि० चर्चिलने अपने एक पत्रमें ... कि विजय करीब है। आपने यह भी ... कि युद्ध सफल और शीघ्र समाप्ति ... ब्रिटिश जनताकी सहनशक्ति और युद्... सैनिकोंके निश्चल देशभक्तिको है।

घाव और रक्तदोष को दूर करें

जम्बक--आदर्श विषनाशक मलहम

कोई उपेक्षित घाव विषाक्त हो जा सकता है और उससे काफी दर्द और तकलीफ सहना पड़ता है। इस कष्टको आप आसानीके साथ घावपर जम्बक मलहम लगाकर दूर कर सकते हैं। जम्बकका गुणकारी और अमूल्य वनस्पति तेल आपके शरीरमें तत्क्षण प्रवेश कर जाता है। इससे दर्द दूर होता तथा सूजन व घाव आराम होता है। जम्बक विषनाशक है। रक्त दोष और घावके कीटाणुओंको यह नष्ट करता है। सूजनके गन्दे स्थानको जम्बक शीघ्र स्वच्छ करता और बगैर किसी चिन्हके घाव को भर देता है। जम्बक का व्यवहार कर कष्टोंको दूर करें। सभी दवा विक्रेताओंके यहां मिलता है। एजन्टस :—

मेसर्स स्मिथ स्टैनिष्ट्रीट एण्ड कं. लि. कलकत्ता

हमेशा जम्बक इस्तेमाल करें

ZAM-BUK

पशुचर्बी रहित

PERFUMED CASTOR OIL

...और सुगंध में अतुलनीय

...ल ड्रग एण्ड केमीकल वर्क्स

कलकत्ता

सफेद बाल काला !

...नहीं, हमारे आयुर्वेदिक ...(प्रमाणित) तैलसे बालोंका ...कर सफेद बाल जड़से काला हो ...है। यह तैल दिमागी ताकत और ...की रोशनीको बढ़ाता है। जिन्हें ...न हो वे दूना मूल्य वापसकी शर्त ...हैं। मूल्य २), बाल बहुत अधिक ...हो तो ४) का तैल मंगायें।

...सदानन्दराम सञ्जीवनी औषधालय

...नं० १०, पो० ...गंज, (गया)

मलेरिया और बुखारों पर अक्सीर और सस्ती इलाज

फीवरफेल

४२ टिकियाकी शीशी मूल्य १।।)

परशुराम ट्रेडिंग कम्पनी

प्रार्थना समाज, बम्बई नं० ४

भारत-विख्यात राजवैद्य कविराज—

श्रीप्रभाकर चट्टोपाध्याय एम.ए.

भूतपूर्व प्रिन्सिपल, कलकत्ता आयुर्वेद कालेज, द्वारा आविष्कृत

यक्ष्मारि

(सब तरहके यक्ष्माओंका प्रतिषेधक)

रोगका विवरण लिखनेसे व्यवस्था पत्र मुफ्त

१७२ नं० बहूबाजार स्ट्रीट, कलकत्ता। १

ए० एन० एस० की नर्सें कार्य पर

क्या आप यह मानती हैं कि
दया नारी का स्वाभाविक गुण है ?

हिन्दुस्तान के फौजी अस्पतालों में आजकल जो नर्सें रोगियों और घायलों की तीमारदारी कर रही हैं उन्हें 'दयामयी' की उपाधि दी जाती है; और यह उचित भी है। आग्जीलरी नर्सिङ्ग सर्विस (ए० एन० एस०) की सदस्याओं को सर्वश्रेष्ठ एवम् सम्मानपूर्ण कार्य करने का गौरव प्राप्त होता है। इसके द्वारा आप युद्ध-प्रयत्नों में सहायता पहुँचा सकती हैं!

युद्ध के पश्चात् ए० एन० एस० की नौकरी छोड़ने पर आप यदि चाहें तो सीधे शहरी क्षेत्र में जाकर स्वतंत्र रूपसे यह उपयोगी कार्य सँभाल सकती हैं, क्योंकि ए० एन० एस० में आपको बहुत अच्छी ट्रेनिंग दी जायगी और उच्चकोटि का अनुभव प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त जो डाक्टरी ज्ञान आप प्राप्त कर लेंगी वह भविष्य में पत्नी, माता एवम् सामाजिक कार्यकर्त्री की हैसियत से आपके बहुत काम आयेगा।

जनरल सर्विस में वेतन इस प्रकार मिलता है — (१) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट नहीं है—१०० रु० से १२५ रु० मासिक तक (२) जिनके पास नर्स का सर्टीफिकेट है—१२५ रु० से १७५ रु० मासिक तक। दोनों को मुफ्त में रहने की जगह, भोजन और ईंधन मिलता है।

कोई भी महिला जिसकी उम्र १७½ और ४५ वर्ष के बीच हो तथा जो ब्रिटिश प्रजा अथवा किसी भारतीय रियासत की प्रजा हो इस सर्विस में भरती हो सकती है। पूर्व योग्यता की आवश्यकता नहीं होती, किन्तु जिन महिलाओं को नर्स के काम का सिखुआ अनुभव है वे ऊंची श्रेणी पर भरती हो सकती हैं। नर्सों की देखभाल अच्छी तरह से की जाती है और जब तक कि वे स्वयं समुद्र पार न जाना चाहें उन्हें हिन्दुस्तान में ही ड्यूटी के लिए नियुक्त किया जाता है।

पूरे विवरण के लिए आज ही अपने क्षेत्र की लेडी सुपरिंटेण्डेण्ट, सेण्ट जान एम्बुलेन्स अथवा डाइरेक्टर जनरल, इण्डियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली को लिखिए।

a·n·s

आग्जीलरी नर्सिङ्ग सर्विस

महिलाओं के लिए सबसे अधिक सम्मानपूर्ण कार्य

AAA1200

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तामें सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

Regd. No. C. 2239

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—१५ | कलकत्ता अप्रेल ९, १९४५, Calcutta, APRIL. 9. 1945. | मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

'बेतार छुरी'

बिजली प्रवाह-कम्पनकी संख्या जब सिकण्डमें ९ लाखसे २०:लाख बार तक जाती है तो:कुछ उत्ताप उत्पन्न होताहै। उत्तापके फलस्वरूप शरीरका टिसूसमूह [illegible] हो जाता है। उत्तापके अधिक होनेसे टिसूसमूह नष्ट भी हो सकता है। [illegible] एक धातु फलकका संयोग [illegible] जाता और उसे रोगीके किसी [illegible] स्थान—पीठके निकट रखा [illegible]। दूसरा धातु फलक डाक्टरके हाथमें [illegible]। डाक्टर अपने हाथ वाला फलक [illegible] अनुसार इधर-उधर घुमाता है। [illegible] संबंध एक लम्बे तारके साथ होता [illegible] फलक चिकित्साकी अति सूक्ष्म [छु]री या 'सूई' होता है। इस छुरीको [अस्त्र]ोपचारके स्थानपर ले जानेसे स्थानीय [टिसूस]मूह अवश हो कण्ट्रोलसे बाहर हो [जाते] हैं और यदि इच्छा हो तो टिसूसमूह [नष्ट] भी किये जा सकते हैं। इसके फलस्वरूप नाड़ी काटे बिना रक्तपातकी सम्भावना नहीं होती। आपरेशनसे जो घाव हो जाता है वह शीघ्र ही सूख जाता है। यह सारी क्रिया डाक्टरके कण्ट्रोलमें होती है। मस्तिष्कके भीतर अति सूक्ष्म आपरेशन इसी 'बेतार छुरी' द्वारा किया जाता है और परीक्षासे यह विदित हुआ है कि इसकी उन्नति अथवा उत्कर्षता अस्त्रोपचार चिकित्सामें नये युगका आरम्भ करेगी।

१ मिनटमें ८०० गोलियां

मिनट-मिनटका हिसाब रखकर ही आज संसारमें काम हो रहा है। पृथ्वीके प्रारम्भसे लेकर आजतक दुनियामें समयका मूल्य इतना कभी नहीं बढ़ा था। अमेरिकाके 'बी २९' नामक संसारके सर्वश्रेष्ठ हवाई जहाजको बनाने और उसकी रूपरेखा तैयार करनेमें वैज्ञानिकोंसे लेकर कारखानेके मजदूरों तकको कुछ मिलकर ८० लाख घण्टे काम करना पड़ा है। हवाई जहाजकी चाल जहां सब हवाई जहाजोंसे तेज है, वहां उसमें नर-संहार करनेकी भी अद्भुत क्षमता है। इस हवाई जहाजके मशीनगनसे प्रति मिनट ८०० गोलियां छूटती है और यह काम यह बगैर विरामके घण्टों तक कर सकता है

ढाई हजार जाति

मनुष्य इतना अन्वेषक कैसे हो गया यह प्रश्न आज जोरोंसे उठ गया है। मनुष्यके पास आज संसारकी सारी वस्तुओंकी फेहरिस्त मौजूद है। संसारमें कितनी बूंद पानी है, यदि पता लगाया जाय तो कोई न कोई अवश्य इसका हिसाब लगाता मिलेगा। ऐसी स्थितिको ही हम मनुष्यके चरम उत्कर्षकी घड़ी कहते हैं। ऐसे ही धुनके पक्के कुछ व्यक्तियोंने यह पता लगाया है कि भारतमें ढाई हजार जातिके पक्षी हैं। प्रांतके हिसाबसे विभाजन करनेपर संयुक्त-प्रांतमें पक्षियोंकी सातसौ जातियां पायी गयी हैं।

यद्यपि अभी तक सब जातियोंका विशद विवरण प्राप्त नहीं हो सका है, तथापि यह आशा की जाती है कि वह दिन दूर नहीं है जिस दिन हमें भारतीय पक्षियोंका जाति गत विशद वर्णन प्राप्त हो जायगा।

समाचार पत्रोंकी अधिकाधिक स्वाधीनताके अन्वेषक अमेरिकन सम्पादक विश्व-यात्रा करने निकले हैं। गत २६ मार्चको ये दिल्ली पहुंचे थे।

अमेरिकामें 'छोटा पंजाब'

संयुक्तराष्ट्र अमेरिकामें एक छोटा पंजाब है, जिसमें लगभग २ हजार भारतीय किसान निवास करते हैं। ये किसान सिख और मुसलमान हैं और अधिकतर भारतके पंजाबके आदि निवासी हैं। अमेरिकाके प्रशांत-तट स्थित केलीफोर्नियामें ये रहते हैं और बड़े परिश्रमी कृषक तथा हरिभक्त हैं। अपने परिश्रमसे इन्होंने अपने नये प्रदेशको काफी समृद्ध बनाया है और इनकी ख्याति भी बहुत अधिक हो गयी है।

राकेट बम फेंकनेका खर्च

जर्मन राकेट बम—वी २ को फायर करनेमें जर्मनीको कितना खर्च करना पड़ता है, जिसका मित्रराष्ट्रोंने इसका भी पता लगा लिया है। एक वी २ को छोड़नेमें ३ टन अलकोहल खर्च होती है। यह ३ टन अलकोहल ३० टन आलूसे तैयार की जाती है और यह ३० टन आलू १९ हजार आबादीवाले एक नगरके एक सप्ताहके रेशनके बराबर होता है।

जर्मनीकी राइन नदीपर पार करनेकी मित्र चेष्टा। बेडेनमें तीसरी अमेरिकन सेनाके सैनिकोंने जर्मन गाड़ियोंपर अधिकार किया। (नीचे) ४ मार्चको ९ वीं अमेरिकन सेना जलके किनारेसे शत्रुको लक्ष्य बना रही है। (ऊपर दायें) ७ मार्चको राइन पार करनेवाला प्रथम अमेरिकन सेनाका पहला टैंक। (नीचे) राइन स्थित रेमाजेनका पुल नाजियों द्वारा नष्ट किये जानेके १० मिनिट पहले अमेरिकन सैनिक अधिकारमें आ गया।

चलती चक्की

समाचार है कि बम्बईके नागरिकों में महिला समाज कुकरोंसे अधिक प्रेम करता है।

—और सम्भवतः वे सब विदेशी नस्ल के ही होंगे।

* * *

कहा जाता है कि बम्बईकी एक महिला कुत्तोंपर ३००) प्रतिमास व्यय करती है।

—जीव-प्रेम और धनका सदुव्यय इसे ही कहते हैं।

* ० *

यदि ब्रिटेनकी स्वाधीनताका अपहरण करनेका प्रयत्न करनेके पापके लिये बर्लिनको अपनी शुद्धि करनी पड़ रही है तो ब्रिटेनको कई पापोंके लिये अपनी शुद्धि करनी पड़ेगी। —श्री भूलाभाई देसाई

—रमते रामके विचारसे श्री भूलाभाई भूल रहे हैं। एकपापसे शुद्धि सम्भव है पर जब वे अधिक हो जाते हैं तो शुद्धिसे परे हो जाजाते हैं।

* * *

गांधीजी सारे भारतको खादीसे ढंकनेकी योजनापर विचार कर रहे हैं।

—पर जो 'हाय कपड़ा' पुकारनेके आदी हो गये हैं वे कैसे मानेंगे ?

* * *

महात्माजीका कहना है कि जो सूत न कातें वे खादी न पहनें।

—फसली देशभक्तोंका तो अच्छा पिण्ड छूटा।

* * *

लार्ड वावेलने ब्रिटेन पहुंचकर एक संवाददाताके प्रश्न करनेपर कहा कि—भारतमें सब ठीक है।

—अपने राम भी उन्हीके शब्दोंमें कहते हैं कि "जंगला, जमा, बत्ती सब ठीक है।"

* * *

भारत सरकारकी स्थिति चांदमारीकी उस पुतलीके समान है जो निशानेबाजीके अभ्यासके लिये बनायी जाती है।

—मि० अब्दुल कयूम

—और निशानेबाजीका अभ्यास करनेवाले हैं असेम्बलीमें विरोधी दलके सदस्य।

* * *

जिन्ना साहबका कहना है कि पाकिस्तान हमारी मुट्ठीमें है।

—जरा मुट्ठी खोलकर तो देखिये, मन्त्रिमण्डलोंकी हारके बाद उड़ तो नहीं गया !

० ० ०

जापानी प्रधान मन्त्रीने हालमें ही एक भाषणमें कहा था कि शत्रु हमारा दरवाजा खट-खटा रहा है।

—सम्भवतः जापानी प्रधान मन्त्री पत्र नहीं पढ़ते। जिन्हें वे शत्रु कहते हैं कि वे संसार प्रसिद्ध मित्रराष्ट्र हैं।

० ० ०

छपा है कि मित्रराष्ट्रोंमें एक नया युद्ध छिड़ गया है कि वर्तमान युद्धके सन्धिपत्रपर किस देशमें हस्ताक्षर हों। सब देश अपनेको यह सौभाग्य देना चाहते हैं।

—रमते रामका तो विचार है कि किसीकी बात न मानी जाय और विजित देशके ही किसी नगरमें सन्धि हो।

—रमते राम।

ढेलफोरवा गोसाईं !

आप यह जानकर आश्चर्य करेंगे कि हमारे यहां केवल षटरस नैवेद्यका रसास्वादन करनेवाले ही देवता नहीं, ढेला-पत्थर खानेवाले भी देवता हैं। मेरे कहनेका अर्थ यह नहीं कि मैं कहावत वाले 'लातके देवता' की ओर संकेत करने बैठा हूं। यह सचमुच ढेला-पत्थर खानेवाले विचित्र देवताकी चर्चा है।

दरभंगा जिलान्तर्गत दलसिंह सराय-स्टेशनका नाम आपने सुना होगा। यहांसे, बस पाव भर, पूरब जानेपर मिट्टीका एक बड़ा टीला—रास्तेकी बाधा-रूपमें मिलेगा। आप अकारण उसके बारेमें जानना चाहेंगे और जिस किसीसे भी पूछेंगे वही, भक्ति-भावसे गद्गद् वाणीमें उत्तर देगा—'आप इन्हें टीला कहते हैं, सरकार !—ये तो देवता हैं, देवता ! मुंहमांगा-फल देनेवाले देवता !'

भङ्ग-स्तोत्र

करि विचार देखा मनमाहीं
बिना भङ्ग भलमनसी नाहीं।

* * *

केवट राम रजायछ पावा
तुरत दौड़ सिल लोढ़ा लावा।

* * *

भङ्ग घोंट कर विधिवत पाना
गरजा वज्राघात समाना।

० * ०

लंका निशिचर निकर निवासा
यहां कहां "पत्ती" कर बासा

* * *

भंग - मिर्च मेलि मुखमांही
जलधि लांघिगो अवरज नाहीं

* * *

बरसहि जलद भूमि नियराये
यथा नवहि कवि भंग छनाये

* * *

वर्षा विगत शरद ऋतु आई
अब तो भंग छनावहु भाई

—समदर्शी

वह मेरी उस ओरकी प्रथम यात्रा थी। एकतो दरभंगा डिस्ट्रिक्ट बोर्डकी नामी सड़क और उसपर इक्केकी सवारी ! स्टेशनका हाता पार करते ही, सड़ियल इक्केके अड़ियल टट्टू ठेमें अकड़ आ गयी। वह मूर्तिवत खड़ा हो गया। किसी भी तरह हिलनेका नाम न ले !

इक्कावान पसीना-पस्त हो गया कि, अचानक उसके चेहरेपर हर्ष थिरका। पीछे की ओर, दूरपर उड़ती हुई धूलको देखकर, उसने मुझे समझाया—'कोई बात नहीं, अभी तुरत हवासे होड़ लेने लगता है। पीछेसे जो गाड़ी आ रही है, उसमें घोड़ी जुती हुई है। घोड़ीको जरा आगे तो बढ़ जाने दीजिये सरकार, फिर देखिये—किस तरह इश्क में, घोड़ीके पीछे-पीछे दौड़ लगाने लग जाता हैं !' इक्कावान अपने आसनपर आ बैठा। मैंने पूछा—'क्या नाम है तुम्हारे घोड़ेका ?'

'मजनू !'—उसने उत्तर दिया। 'पार साल ही सोनपुरमें इसे खरीदा है, तीन कम पांच-बीसमें !'

पीछेवाली सवारी ज्योंही आगे बढ़ी कि इक्कावाला अपने घोड़ेकी दुम ऐंठकर कहने लगा—'चल बेटा, चल, एकदम जवान घोड़ी सामने है।'

घोड़ा सचमुच चल पड़ा। इश्कमें या विश्राम ले चुकनेके कारण, यह राम जानें। इक्कावाला चाबुक नचा-नचाकर बिरहा अलापने लगा—'इश्कमें लैला तुम्हारी…।'

हठात् उल्लेखित टीलेके समीप पहुंचते ही, 'हौ-बेटा, हौ।' कहता हुआ वह इक्केसे ऐसा कूदा जैसे कोई दुर्घटना हो गयी हो ! और अपनेमें घबराहटका अनुभव करनेके पूर्व ही मैंने उसे बगलके खेतमें पहुंचकर ढेले चुनते देखा ! तुरत वह चादरमें ढेले भर कर टीलेके समीप पहुंचा एवं ताक-ताककर टीलेको निशाना बनाने लगा। ढेले खत्म हो जानेपर, भाव-विभोर होकर उसने उस टीलेको प्रणाम किया और सन्तोषकी सांस लेता हुआ इक्केपर आ बैठा। "चलिये, सरकार ! देवता को 'नवेद' चढ़ा दिया, अब रास्तेमें कोई बाधा न होगी।"

मेरा आश्चर्य सीमा पार कर गया। इक्केवानने मेरे कहनेपर, कहानी आरम्भ की—'सरकार, इनका नाम 'ढेरफोरवा गोसाईं' है, अपने भक्तोंको मनचाही देते हैं। बीस-बीस कोस पैदल चलकर लोग इन्हें ढेला मारने आते हैं। इनका 'महातम' ही यह है कि इनके ऊपर जितने ढेले फोरिये, उतने ही खुश होंगे। दूध-पूत, सुहाग-भाग, दीवानी-फौजदारीकी जीत—कौन चीज दुनियामें है, जिसे गोसाईं बाबा नहीं देते ? हमारे गांवके छमन चौधरीको सरकार, आप क्या जानें; सब पंचोंने उनका हुक्का-पानी बन्द कर दिया था। चौधरीने इक्यावन ढेलेकी मनौती मानी। पंचोंका माथा फिर गया। चौधरी चादरमें इक्कावन ढेले लेकर मनौती उतारनेके लिये, ढोल-ढाकके साथ चले, तो नजदीक पहुंचते ही 'अर्जुन'के जैसा उन्हें मोह हो गया—'अरे चल, हम तो देवताको ढेले नहीं मारते !—हम तो 'सिरनी' चढ़ायेंगे, 'सिरनी !'

'सिर्फ गांववालोंने ही नहीं सरकार, 'परेमरी' स्कूलके गुरुजी भी मना करते रहे, चिट्ठीवाले मुंशीजी भी, उनके बड़े हाकिम तीन घड़ी तक 'लासवर' समझाते रहे। मगर चौधरीने एककी भी नहीं सुनी। उसने ढेले नहीं चलाये, पाव भर गुड़ चढ़ाया कि गोसाईं कोपकर बैठे ! उसी रातको खलिहानमें आग लग गयी। कुआं पट गया मगर आग मानने का नाम ही न लेती। अन्तमें चौधरीने इक्कावनकी जगह, एक-सौ इक्का-वन ढेलेकी मन्नत मानी, तब आग काबूमें आयी।'

इक्कावाला 'ढेलफोरवा गोसाईं' … खाकर सद्यःफल दानशीलताकी … पूर्ण कथाएं कह गया।

'तो क्या कोई पुजारी भी … यहां ?'—मैंने पूछा।

'पुजारी काहे रहेगा सरकार … ढेलेके सिवाय और कुछ चढ़ता … ढेलेसे उसका पेट थोड़े भरेगा !'

मुझे ढेला खानेवाले देवताकी … बारेमें जाननेकी चिन्ता हुई। जिस … भी पूछता वही कहता कि मैं … कृपाके फलका भोगी बन चुका … जानना चाहता कुछ और, लोग कहते … देवताके महात्म्यकी कहानी। और … देखा कि ढेला-प्रिय इस देवताका … एन्स' केवल मूढ़-समाजपर ही नहीं, … सुथरे घरोंमें भी, पूरी तौरपर है !

यह अन्धविश्वास नहीं। … मेरे स्वभावका एक अङ्ग बन चुकी है … लोक-साहित्यका संग्रह मुझे प्रिय … होता है। और सच पूछिये तो … भूत-दूत आदिका अन्धविश्वास … भण्डार है जिसमें लोक-साहित्यके … रत्न भरे पड़े हैं।

'ढेलफोरवा गोसाईं' के अवता… में मुझे जो कुछ भी पता चला … प्रकार है—

कहते हैं कि पचीस-छब्बीस … बात है, आज जिस जगह गोसाईं जी … तनकर खड़े हैं उस जगह दो-चार बा… ढेलेपर ढेले चढ़ा-चढ़ाकर पूजाका खेल … थे ! उधरसे छमतिया तेलिन गुजरी … बहुत दुखी थी। उसका पति पूरब … सौतके लम्बे-लम्बे केशसे उलझ गया … छमतिया देव-पित्रको मनाकर थक … थी। आतुरतावश उसने बालकोंसे … बालकोंने कहा कि हम पूजा कर रहे … हमलोगोंने पांच ढेले चढ़ाये तो गुरुजी … भेज-भेजकर हैरान हो गये, मगर पता … चला कि हमलोग कहां छिपे हुए हैं। … दस ढेले चढ़ा रहे हैं ! छमतिया … कुछ सोचकर बोली कि अच्छा, तुम्हारे … के देवता यदि मेरे मनकी बात पूरी … तो मैं भी पन्द्रह ढेले चढ़ाऊंगी !

और एक पखवारेके अन्दर ही … पति दुलारका दुलकी जाड़ा और … की पीलही लेकर आ गये !— … जाकर मनौती उतारी। पतिकी … भी उसने पचीस ढेलेका वचन दिया … मनौती मानकर अकलू साधने … में विजय पायी। तब तो गोसाईंजी … सर्वत्र फैलने लगी।

बिना लेख, फोटो और दोस्त … देवताका 'प्रोपेगण्डा' होने लगा … एक ढेलेके संग्रहसे आज देवता … पर्वतकी चोटीकी भांति तने खड़े …

—श्री …

हित बस जिनके मनमाहीं।
कहं जग दुलभ कछु नाहीं॥

राष्ट्रीय सप्ताह ।

...राजा दशरथने अपने प्राणाधिक प्रिय रामको अयोध्याका राजा बनानेकी ...की थी, राज्याभिषेक होनेके दिन ...होने तक अयोध्यावासियोंका उल्लास आनन्द रामको राजा देखनेके लिये ...लंघन करनेकी चेष्टा कर रहा था, अचानक यह दुःसंवाद उनके ...गूंज उठा कि रामचन्द्र चौदह वर्षके ...वासी बनाये गये। आजसे २६ वर्ष ...बिल्कुल ऐसी ही घटना भारतके संबंध ...टिश शासकवर्ग द्वारा अचानक घटित ...ी थी। वार्साईकी सन्धिके बाद ...की जनता और राजनीतिज्ञ, जिन्होंने ...को पराजित करनेके लिये अपना रक्त ...की तरह बहाया था, यह आशा कर ...कि ब्रिटिश अधिकारी शीघ्र ही भारत ...राज्य देनेकी घोषणा करेंगे और भारत ...अपने देशका शासन-सूत्रधार बनकर ...राज्य स्थापित करेंगे। लेकिन अचानक ...के नौकरशाहोंने १९१९ के अप्रेलमें ...सामने जालियांवाला बागका वह ...के दानवी काण्ड उपस्थित कर ...जिसको देखकर स्वयं हिंसाका दिल ...उठा होगा। पंजाबके गवर्नर और ...सुपरिण्टेण्डेण्ट माइकेल ओडायर और ...डायरने जालियांवाले बागकी सभाको ...ने के लिये जिस अमानुषिकताका ...किया, उसके कारण ये दोनों भारत-...की दृष्टिमें खूंखार जल्लादोंमें परि-...हुए। उक्त हत्याकाण्डमें जिन देश-...हत्यारोंकी निर्मम गोलियोंसे अपनी ...कोला तड़प-तड़पकर संवरण की उन ...को ताजा बनानेके लिये हम प्रति-...अप्रेलसे १३ अप्रेल तक राष्ट्रीय ...मनाते हैं और उन अमर शहीदोंकी ...पर अपनी हृदय-वाटिकाके कोमल ...की अञ्जलि चढ़ाते तथा यह प्रतिज्ञा ...कि जालियांवाले बागके शहीदोंने ...को प्राप्त करनेकी सच्चेष्टामें वीर-...ी थी, उसको पूरा करके ही दम ...प्रतिवर्ष हमारे राष्ट्रीय सप्ताह मनाने ...श्य और लक्ष्य है।

...ल ओडायर और जेनरल डायरके ...निर्मम हत्याकांडने देशके मर्मस्थल ...री चोट पहुंचायी है, वह तब तक ...नहीं हो सकती जबतक भारत अपनी ...साधनामें अन्तिम रूपसे वीरता ...सम्मानपूर्वक सफलता नहीं प्राप्त कर ...के कांडके बाद आज करीब एक ...शताब्दी देखते-देखते निकल गयी। ...अपनी स्वराज्य-साधनाके लक्ष्यके ...सा दिखलायी पड़ता है और कभी ...में कालेमें धकेल दिया जाता है। १९४२ की हमारी स्वराज्य-साधनाके सिलसिलेमें नौकरशाहीकी बौखलाहट इस सीमाको पहुंच गयी कि लोक-प्रिय राष्ट्रीय नेता बागी और देशद्रोहीकी भांति तुरन्त पकड़कर कारागृहमें तालेके अन्दर बन्द कर दिये गये और संसारके समस्त न्याय-प्रिय नेताओं और जनताके बार-बार चिल्लानेपर भी उनके कानोंपर कभी जूं नहीं रेंगती। वर्तमान महासमर विश्वके मानव-समाज के लिए स्वाधीनता प्राप्त कर विश्व-शांति स्थापित करनेकी चेष्टा-स्वरूप लड़ा जाना बताया जाता है। लेकिन इधर हालकी घटनाएं स्पष्टतः बतलाने लगी हैं कि यूरोपके राष्ट्रोंको भी, स्वाधीन बनानेके बहाने मित्रराष्ट्र अपने हाथकी कठपुतली ही बनाये रखना चाहते हैं। ऐसी हालतमें इस लड़ाईके बाद संसारमें युद्धोंका अन्त हो सकेगा यह आशा के विरुद्ध आशा करना ही कहलायेगा। भारतीय स्वाधीनताका चन्द्र तो अभी बड़े बड़े राहुओं और केतुओंकी दृष्टि-अञ्चलमें पड़ा हुआ है। इनसे कब मुक्ति प्राप्त होती है यह विचारणीय प्रश्न है।

उस दिन राष्ट्रके अपने ढङ्गके एकमात्र कर्णधार महात्मा गांधीने इसी राष्ट्रीय सप्ताहको मनानेके सम्बन्धमें देशवासियोंका पथ-प्रदर्शन करते हुए कहा कि मेरा ख्याल है कि देश साम्प्रदायिक एकता, खादी और स्वराज्यके निकट आजकी तरह कभी नहीं पहुंच सका था। हालांकि इस प्रगतिमें अनेक गलतियां और भूलेंकी गयी हैं'। यदि राष्ट्रके प्राणाधिक प्रिय सेनापतिकी बातें सत्य हैं और असत्य होनेका कोई कारण है ही नहीं, तो वास्तवमें देशवासियोंके लिये यह अत्यधिक उल्लासवर्द्धक है। हमने सदा इस सप्ताह को उक्त तीन उद्देश्योंको प्राप्त करनेके ध्येय से मनाया है और यद्यपि आज हमें ऐसा दृष्टिगोचर हो रहा है कि हमारा मंजिले-मकसूद हमसे दूर हो गया है, तथापि अपने सेनानी और सच्चे पथ-प्रदर्शकके शब्दोंमें हम उसके सबसे अधिक निकट पहुंच गये हैं। हां, हमसे भूलें—भयङ्कर भूलें काफी तादादमें अवश्य हुई हैं और अगर उन त्रुटियोंको दूर करते हुए हम अपने स्वातन्त्र्य मार्गपर बराबर अग्रसर होते चले गये, तो उससे एक नैसर्गिक उत्साह और प्रेरणा प्राप्त होती जायेगी।

मुसलिम लीगके स्वयंभू नेता कायदे आजम आज भी अपने पुराने खेलको ही खेलते हुए देखे जाते हैं और सर तेज बहादुर सप्रूकी समझौता समितिने लन्दन स्थित भारतके वायसरायको तार भेजकर अपना सुझाव पेश किया है, उसपर बुरी तरह बिगड़ पड़े हैं। किन्तु विभिन्न प्रान्तों में उनके पाकिस्तानने मुसलिम जनताकी आंखें खोल दी हैं और वह अच्छी तरह महसूस करने लगी है कि वास्तवमें उसका कल्याण पाकिस्तानमें होगा या हिन्दुस्तान में। ९० अथवा ९९ प्रतिशत मुसलिम आबादीवाले सीमाप्रान्तमें मुसलमानोंने डा० खां साहबके कांग्रेस मन्त्रिमण्डलका जिस उत्साहसे स्वागत किया है, उसको देखकर साम्राज्यवादी राजनेताओंको यह मालूम हुए बिना नहीं रह सका होगा कि साम्प्रदायिक एकताकी नींव भारतवासियोंके दिल व दिमागमें अधिकाधिक दृढ़ होती जाती है। केन्द्रीय असेम्बली, सिंध, आसाम और बंगालकी हालकी घटनाएं स्पष्ट संकेत कर रही हैं कि अवसरवादियोंकी दाल अब सचेत देशवासी नहीं गलने देंगे। इस दृष्टिसे हम साम्प्रदायिक एकताके सर्वाधिक निकट आज पहुंचे हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं मालूम होता।

स्वार्थी शासक और व्यापारीवर्ग तथा युद्धजन्य अवस्थाने देशमें सर्वत्र वस्त्र दुर्भिक्ष की अवस्था उत्पन्न कर रखी है। इस समय जनताकी एकमात्र आशा खद्दर ही दृष्टिगोचर हो रही है। आज यह महात्मा गांधी के शब्दोंमें ग्रामोद्योग रूपी १९ ग्रहोंके बीच सूर्यमण्डल-सा चमक रहा है। देशकी ग्रामीण जनताकी लज्जाका निवारण हाथके कते सूत से बुने गये कपड़े ही किसी अंशोंमें करनेमें समर्थ हो रहे हैं। मिलोंका उत्पादन तो एक प्रकारसे समस्त वस्त्र बाजारोंसे लुप्त-सा हो चला है। अनेक प्रान्तीय सरकारें भी खादी की उपयोगिताको महसूस करने लगी हैं और उसे प्रोत्साहन देनेकी चेष्टा भी करती हुई मालूम होती हैं; लेकिन जिस शासनप्रणालीका सारा ढांचा ही सड़ गया है, उसका एक अङ्ग क्या कर सकता है। कहावत कही जाती है कि एक चना भड़ नहीं फोड़ता। सरकारका स्टैण्डर्ड क्लाथ (मोटा कपड़ा) खादीकी नकल नहीं तो और क्या कहा जायेगा ? चूंकि इसका सम्बन्ध साम्राज्यवादी सत्ताके हिमायती लोगोंसे है, इसलिये इसको चरखा और करघापर आधारित न करके अरबों-खरबोंकी मिल-मशीनोंपर आश्रित किया गया है। यदि खद्दरको ग्राम्य उद्योगोंका केन्द्र मानकर महात्मा गांधी द्वारा निर्देशित १९ रचनात्मक कार्योंको सच्चे हृदयसे कार्यान्वित करनेके लिये हम तैयार हो जायें तो यह निस्सन्देह है कि हमको नौकरशाही और उसके हिमायती पूंजीपति व्यापारियोंका मुंह अपनी दैनिक उपयोगकी वस्तुओंको प्राप्त करनेमें नहीं जोहना पड़ेगा। यह वस्त्रसंकट, ऐसा लगता है कि हमें महात्माजीके रचनात्मक प्रोग्राम की ओर प्रेरित करनेके लिये ही उपस्थित हुआ है।

हमारी स्वराज्य-साधना सफलताके निकट इस अर्थमें पहुंच रही है कि सारा विश्व दिलसे चाह रहा है कि हम स्वाधीन कर दिये जायें। क्योंकि हम स्वतन्त्र होनेके सर्वथा योग्य और उपयुक्त हैं। हमारी स्वराज्य-साधनाके समर्थक स्वयं ब्रिटेनमें अनेक ईमानदार अंग्रेज उत्पन्न हो गये हैं। इसलिये मृत साम्राज्यवादके दकियानूसी लकीरके फकीर चाहे हमारे स्वराज्य-साधन में कितनी ही बाधाएं क्यों न पहुंचायें, हम एकदिन अवश्य स्वाधीन होकर रहेंगे। यह हमारा दृढ़ विचार और विश्वास है। हमारा विश्वास अवश्य फलदायक होगा, यदि हमने अपनी भूतकालीन भूलोंका मार्जन करते हुए अपने राष्ट्रीय त्योहारसे सच्ची प्रेरणा प्राप्त की। राष्ट्रीय कार्यकर्ताओंको चाहिये कि इस त्योहारकी पृष्ठभूमिपर प्रकाश डालते हुए इसे वर्तमान स्थितिके अनुरूप मनाते हुए लाखों-करोड़ों जनताका पथ-प्रदर्शन करें और उनके कष्टोंमें पूर्णरूपेण हाथ बंटायें।

खतरेकी घंटी

गत फरवरीमें जब याल्टा सम्मेलनमें जर्मनीको परास्त करने और भावी यूरोपकी शासन व्यवस्थाके सम्बन्धमें निर्णय किया गया था, तब जानबूझकर ब्रिटेन और अमेरिकाने सुदूर पूर्वकी समस्याएं किसी भावी सम्मेलनके लिये टाल दी थीं। उस समय सोवियट रूस, जिसके कन्धेपर ही मित्रराष्ट्रोंकी वर्तमान लड़ाईमें विजयका दारोमदार है, जापानके साथ तटस्थता सम्बन्धी समझौतेके कारण लड़ाई सम्बन्धी कोई वार्तालाप करनेमें असमर्थ था। इसलिये यह सोचा गया कि मित्र राष्ट्रोंका आगामी सम्मेलन किसी ऐसी तिथिको आयोजित किया जाये, जब सोवियट रूस भी जापानके साथ अपनी जिम्मेदारीसे फुरसतवाले। सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसकी तिथि इस विचारसे ही २५ अप्रैल नियुक्त की गयी थी। अब मालूम हुआ है कि सोवियट सरकारने जापानको सूचित कर दिया है कि १९४१ के अप्रैलमें जो संधि तटस्थताकी ५ वर्षके लिये की गयी थी, अब परिस्थितिमें अनेक परिवर्तन हो जानेके कारण उसका कोई महत्व नहीं रह गया है। इसलिये उक्त संधि को और अधिक दिन जारी न रखनेकी सूचना दी जाती है।

सोवियटकी इस सूचनाको प्राप्त कर जापानमें भीषण हलचल मची हुई होगी इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है। जापानके सूचना विभागके एक वक्ताकी बातोंसे कुछ ऐसा ही आभास भी मिलता है कि इस सूचनाने जापानके गर्म मनसूबोंपर सैकड़ों घड़े ठंडा जल उड़ेल दिया है और उसकी महत्वाकांक्षाएं सिकुड़कर मलाईकी बर्फ बनने लग गयी हैं। वक्ताका कहना है कि 'यद्यपि संधिका अन्त करनेकी सूचना रूसने दे दी है तथापि यह अभी एक वर्षतक जारी रहेगी।' लेकिन इतना तो स्पष्ट हो ही जाता है कि एक वर्षके बाद रूसके विचारमें जो भी उचित और आवश्यक जंचेगा, उसको किये बिना नहीं रहेगा। मित्र राष्ट्रीय देशोंमें इस सोवियट घोषणाको युद्ध घोषणाकी ओर प्रथम कदम बताया गया है। लेकिन रूस इतनी जल्दी जापानके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर देगा, ऐसी आशा करना खामख्याली होगी। जापानका व्यवहार भूतकालमें रूस के साथ सुन्दर और भद्रतापूर्ण नहीं रहा है, इसको सभी स्वीकार करेंगे। लेकिन संधिपत्रोंकी होलिका जलाये जानेवाले इस जमाने में भी सोवियटने अब तक अपने वायदोंका जिस ढङ्गसे पालन किया है, उसको दृष्टिगत रखते हुए यह कदापि नहीं कहा जा सकता कि सोवियट अब युद्धकी घोषणा करने जा ही रहा है।

समझौतेका अन्त करनेके लिये सूचना देते हुए सोवियट परराष्ट्र कमिस्सर मो० मोलोटोवने बिल्कुल उचित कहा है कि जिस स्थितिमें यह तटस्थताकी सन्धि की गयी थी, उससे आज स्थिति बिल्कुल बदली हुई है। सोवियट रूसके जानी दुश्मन जर्मनी से जापानका अब भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध चल रहा है। यद्यपि जापानने रूसके संकटपूर्ण दिनोंमें उसपर पूर्वसे आक्रमण

नहीं किया, तथापि युद्धमें जर्मनीको वह सहायता तो देता ही रहा है। इसलिये जापान के आक्रमण न करनेकी बातको दृष्टिगत रखते हुए यदि सोवियट रूस उसके भूतकालीन कारनामों को भुला देता है, तो यह उसकी अदूरदर्शिता ही कहलायगी। सोवियटके पास, वर्तमान युद्धमें रूस-जापान की तटस्थता सन्धि जापान द्वारा भंग किये जानेके कई प्रमाण हैं। इसलिये रूसकी यह सूचना बिलकुल उचित है। अगर अब भी जापान सम्भल जाता है और चीन को अकारण पहुंचायी गयी क्षतिकी पूर्ति करने तथा ईमानदारीपूर्वक अन्य देशोंके स्थल भागोंको वहांके निवासियोंकी इच्छाके अनुस्वेच्छासे स्वतन्त्र कर देता है तो कोई कारण नहीं कि सोवियट रूसको उसके विरुद्ध युद्धकी घोषणा करनी पड़े।

जापानमें काइसो मन्त्रिमण्डलके इस्तीफा देनेकी घटना भी सोवियट रूसके वर्तमान दृष्टिकोणसे ही सम्बन्ध रखती हुई मालूम होती है। इससे पता चल जाता है कि जापानकी घरेलू राजनीतिमें इस समय कितनी जबर्दस्त खलबली मच रही है। एडमिरल बैरन कुतारो सुजुकी के प्रधान मन्त्रित्व में जो नया, जापानी मन्त्रिमन्डल बनाया गया है, उसके सम्बन्ध में अमेरिकनों की धारणा है यह नर्म और उदार दली सरकार होगी और यह अपने प्रचारों द्वारा अमेरिकनों और उनके दिलदारोंमित्रोंके दिल में दर्द पैदा करनेमें समर्थ हो सकेगी। लेकिन अमेरिकनों की यह धारणा कहां तक ठीक उतरेगी, यह भविष्य ही बतायेगा। अब तककी सुदूरपूर्वकी घटनाएं जापानपर भविष्यमें आनेवाले भयंकर खतरोंकी घंटी ही समझी जानी चाहिये।

आखिर इतने नाराज क्यों ?—

सर तेज बहादुर सप्रू भारतके कानून-पण्डितोंमें अपना निराला स्थान रखते हैं और उनके कानूनी ज्ञानने ही शायद उन्हें कभी उग्र विचारवाले राजनीतिज्ञोंमें स्थान नहीं पाने दिया तथा जीवन भर वे उस साम्राज्यशाहीके समर्थक एवं भक्त बने रहे, जिसके शासनका इतिहास शोषण और दोहनका इतिहास है। अन्यायकी भी एक सीमा होती है और जब वह उसे पार करने लगता है तो नर्मदिल व्यक्तिकी भी आत्मा बगावत कर बैठती है। सर तेज बहादुर इधर ब्रिटिश शासनके जो कटुआलोचक हुए हैं, उससे उपर्युक्त सिद्धान्तका समर्थन हो जाता है। आज सर तेज अपनी कानूनी बुद्धिके प्रकाशमें स्वदेश सेवामें जिस प्रकार दिल व दिमागसे भिड़े हुए हैं, उसकी प्रशंसा सभी न्यायशील व्यक्ति करेंगे। देशके अन्दर असेंसे उपस्थित वैधानिक गत्यवरोधको मिटानेके लिये उन्होंने अभी उस दिन अपनी समझौता समितिके जो निर्णयको लार्ड वावेलके पास तार द्वारा भेजे हैं, उनमें कांग्रेसकी मांगसे अभी काफी कमी रह गयी है, लेकिन अगर ब्रिटिश राजनेता उनको स्वीकार कर लेते हैं तो बहुत आशा है कि कांग्रेस युद्ध कालमें १९३५ के विधानके अन्तर्गत शासन शकट सञ्चालित करनेमें सहयोग प्रदान करने लगेगी। लेकिन उन सुझावोंसे मि० मुहम्मद अली जिन्ना क्यों बौखला उठे हैं, और अपनी इस बौखलाहटसे भारतकी भलाईकी दिशामें कौन-सी बात उन्होंने सोच रखी है, यह बात समझमें नहीं आती। सर तेजका पहला सुझाव है कि सभी राजनीतिक बन्दी और नजरबन्द अविलम्ब मुक्त किये जायें। दूसरे सुझावके अनुसार शाही घोषणाके द्वारा भारतको स्वाधीन घोषित किया जाये और ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके अन्य उपनिवेशोंकी बराबरी का उसके साथ व्यवहार किया जाये, उस अवस्थामें भी, जब कि नया विधान कार्यान्वित करनेमें अभी देर हो। वैसी हालतमें १९३५ के विधानको कमसे कम आवश्यक परिवर्तन और संशोधन करके कार्यान्वित किया जाय। तीसरे सुझावमें कहा गया है कि अनेक प्रान्तोंमें भारत विधानकी ९३ वीं धाराके अनुसार घोषणाएं कर गवर्नरोंका जो शासन कायम किया गया है, उसको शीघ्र वापस ले लिया जाये और व्यवस्था-सभाओंको स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने दिया जाये। लोकप्रिय सरकारोंको फिरसे स्थापित होनेका मौका दिया जाये। ऐसी सरकारों का स्थापित करते समय बहुसंख्यक दलके प्रधान मन्त्रीको स्वतः चाहिये कि वे अपने मन्त्रिमण्डलमें ऐसे व्यक्तियोंको स्थान दें जो अपने तथा अन्य दलोंके विश्वासपात्र हों। चौथे सुझावमें यह सिफारिश की गयी है कि प्रान्तोंमें स्वायत्त शासनकी स्थापना के साथ-साथ केन्द्रमें वर्तमान एक्जीक्यूटिव कौंसिलके स्थानपर राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना की जाये। उपर्युक्त सुझावोंके सम्बन्धमें मि० जिन्नाको क्या आपत्ति है, यह बात स्पष्ट शब्दोंमें उन्हें बतलानी चाहिये। क्या वे राजनीतिक नेताओंकी शीघ्र मुक्ति नहीं चाहते? क्या वे भारतकी स्वाधीनताको प्राप्त करना नहीं चाहते? प्रान्तोंमें लोकप्रिय जिम्मेदार सरकारोंकी स्थापनासे उन्हें क्या चिढ़ है? क्या वे केन्द्रमें वर्तमान एक्जीक्यूटिव कौंसिलके स्थानपर लोकप्रिय राष्ट्रीय सरकार नहीं चाहते? उनकी मुसलिम लीगने तो केन्द्रीय असेम्बलीमें कांग्रेस पार्टीके साथ सहयोग करके वर्तमान एक्जीक्यूटिव कौंसिलको बिलकुल अयोग्य करार दे दिया है और उसको वेतन पानेका भी हक नहीं रहने दिया है। ऐसी दशामें यह साफ है कि वे केन्द्रमें दूसरी सरकार चाहते हैं। उसके सम्बन्धमें उनके दिमागमें जो रूपरेखा मौजूद हो उसको उपस्थित करें। केवल पाकिस्तान का ख्याली पुलाव पकाने और मुसलिम जनताके धार्मिक विचारोंसे अनुचित लाभ उठानेकी उनकी चेष्टा किसी प्रकार उचित नहीं कही जा सकती। ऐसी चेष्टा तो कायरों और धाग्बीरोंको ही शोभा दे सकती है जिनके न आगे कोई है और न पीछे।

फिर सुयोग मिला है—

१९३९ में ब्रिटिश साम्राज्यशाहोंके प्रतिनिधियोंकी मनमानीके कारण जब कांग्रेसने प्रान्तोंसे अपनी सरकारें वापस बुला लीं, उसके बाद देशके माथेपर विपत्तियोंके जो पहाड़ समय-समयपर टूटे हैं, उनसे सिरमें इतनी चोट आयी है जो कभी नहीं भूल सकेगी। सर स्टेफोर्ड क्रिप्सका भी बैरंग वापस लौट जाना देशके राजनीतिक इतिहासकी एक दुखदायी घटना थी, क्योंकि इससे ब्रिटेन और भारतके बीच कटुताकी खाई अधिकाधिक चौड़ी होती गयी और उस कटुताके परिणामस्वरूप ही १९४२ में देशव्यापी ज्वालामुखी फट पड़ा था। कहने का तात्पर्य यह है कि युद्धके गत ५-६ वर्षों में ब्रिटेनके व्यवहारसे देश इतना क्षुब्ध हो उठा कि उसका शासन कटुताकी सीमाको पार करने लगा। लेकिन अब जब कि युद्ध समाप्तिकी ओर बढ़ रहा है, फिर पूर्वावस्था प्राप्त होती जाती है। विभिन्न प्रान्तोंमें स्थापित अवसरवादी लोगोंकी सरकारें आंधीके सामने ताशके मकान साबित होने लगी हैं, कुछ लोकप्रिय नेताओंके जेलसे छूटकर आ जानेसे कुछ महीने पहलेका निराशावाद अब आशामें परिणत होता नजर आने लगा है। नौकरशाहीकी साम्राज्यवादी नीतिसे क्षुब्ध रहनेपरभी जनताके दारुण दुखोंसे कातर कांग्रेस कार्यकर्त्ता उसे हर तरहसे छल और छविधा पहुंचानेकी चेष्टा करने लगे हैं और यद्यपि अभी तक कांग्रेसको वैध नहीं घोषित किया गया है तथापि जनसेवा के विचारोंसे प्रेरित होकर सीमा प्रान्तमें कांग्रेस जनोंका मन्त्रिमण्डल बनाया गया है। नये मन्त्रिमण्डलने पदारूढ़ होते ही जो महत्वपूर्ण कार्य किया है, वह एक आदर्श-सा बन गया है और इसमें सन्देह नहीं कि अन्य प्रान्तोंके लिये नमूनेका काम करेगा। किन्तु अगर इससे सरकार यह ख्याल करने लगे कि पं० जवाहरलाल नेहरू, मौलाना अबुल कलाम आजाद डा० राजेन्द्र प्रसाद आदिको जेलोंमें रखनेपर भी प्रांतोंमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल स्थापित हो जायेंगे, तो यह उसकी खामख्याली होगी। इसमें सन्देह नहीं कि कांग्रेसजन यह महसूस करते हैं कि जिन अवस्थाओंमें कांग्रेस मन्त्रियोंको इस्तीफा देनेकेलिये कहा गया था, आजकी अवस्था बहुत अधिक बदल गयी है। युद्धजन्य अवस्थाओंने सर्वसाधारणके कष्टोंको पराकाष्ठापर पहुंचा दिया है। ऐसी दशामें अगर कोई बुद्धिमान सरकार हो तो बहुत सस्तेमें अधिकसे अधिक मूल्यवाला सौदा कर सकती है। सर तेजबहादुरके सुझावोंके अनुसार कार्य करनेसे ब्रिटेन भारतवासियों की सहानुभूति और सहयोग बहुत-कुछ अपने पक्षमें आकृष्ट कर सकती है। युद्धका अन्त ज्यों-ज्यों निकट आता है, अमेरिकाके बढ़ते हुए प्रभावोंको देखकर ब्रिटिश उपनिवेशोंका भी राग उसकी ओर बढ़ता जाता है। यदि यह स्थिति योंही जारी रहने दी गयी तो वर्तमान युद्धमें मित्रराष्ट्रोंके विजयी होनेपर भी ब्रिटेन प्रभाव शून्य हो जायेगा। इसलिये उसके लिये बुद्धिमानी और दूरदर्शिताकी बात तो यही होगी कि वह ४० करोड़ भारतीयोंका सहयोग अपनी उदार घोषणाओं के द्वारा प्राप्त करनेकी चेष्टा करें। कांग्रेस जैसी प्रभावशील लोकप्रिय भारतीय प्रतिनिधि संस्थाके साथ बहुत अन्याय हो चुका। अब उसका प्रतीकार करनेका समय आ गया है।

सामयिक चेतावनी—

सैनफ्रांसिस्कोके मित्र राष्ट्रीय ...में सुदूरपूर्वकी समस्याओंपर ... निर्णय निकट भविष्यमें ही ... वाला है। उक्त सम्मेलनमें ... विभिन्न राष्ट्रोंके प्रतिनिधि यह भी ... करेंगे कि स्थायी विश्वशान्तिकी ... का समाधान किस प्रकार होगा। ... रिकाके डम्बर्टन ओक्स सम्मेलन ... स्थायी विश्वशान्तिकी समस्याका ... धान करनेकी चेष्टाकी गयी थी ... सम्मेलनका निर्णय बहुत पहले ... समक्ष आ चुका है और उस ... विभिन्न दृष्टिकोणोंसे की गयी आ... भी समाचार पत्रोंके पाठकोंको ... हो चुकी हैं। उसमें क्या त्रुटियां हैं ... कारण विश्वशान्ति खतरे में ... समय पड़ सकती है, इस प्रश्नपर ... विचार करने नहीं बैठे हैं। य... काफी पुराना हो चुका है औ... सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें उन ... पुनः विचारकर उनका मार्जन ... जायगा। यहांतो अभी एक देश ... विश्वशान्तिकी स्थापना का ... प्रशान्त तटवर्ती देशोंकी आबादी ... जनसंख्याकी एक तिहाईके बरा... जबतक इनकी समस्याओंको सन्तो... ढङ्गसे हल करनेकी चेष्टा नहीं की ... उनके उचित अभाव-अभियोगों ... करने के लिये आरम्भमें भिन्न राष्ट्र... घोषित युद्धोद्देश्योंको वास्तवमें ... न्वित करनेकी चेष्टा नहीं की जाये... तक विश्वशान्ति संस्थापनकी ... करना दुराशा मात्र ही होगा। ... को लड़ाई यदि जापानके फौलादी ... से मुक्त कर प्रशांत तटवर्ती देशोंको ... देशोंके अधिकारमें रखनेके लि... जाती हो, तब तो विजय और मान... धीनताकी स्थापना की चर्चा ही ... देनी चाहिये और इससे वि... कदापि स्थापित नहीं हो सकती। ... एशिया वासी युरोप और अमेरि... उपनिवेश मालिकोंमें परिवर्तन मा... चाहते। वे चाहते हैं स्वभाव... पूर्ण अधिकार प्राप्त करना, ... वातावरणकी सृष्टि, जिसमें रंगभेद ... और उच्च-नीचका विचार परित्या... समस्त राष्ट्र दिलखोलकर एक सा... सकें। उस दिन अमेरिकाके ... नामक नगरमें भाषण करते हुए ... लक्ष्मी पण्डितने स्पष्ट तौरपर ... प्रकट किया कि यदि उप... समस्याओंका उचित समाधान नहीं ... समझना चाहिये कि तीसरे ... की तैयारी, अभीसे ही प्रशांत ... देशोंमें हो रही है। श्रीमती ... पण्डित एशियायी देशोंके ... की पूर्ण पंडिता हैं और उनके ... सत्य हैं। यदि सैन फ्रांसिस्को ... धोखा देनेकी ही चेष्टा की गयी, ... अबतककी परिस्थितियां बताती ... विश्वशान्तिकी प्राप्ति आकाश ... चयन ही सिद्ध होगी।

एक समय था, जब रूस आजका रूस न था। उस समय रूसकी जनता—किसान और मजदूर सामन्तवादी शासनकी चक्कीमें पिस रहे थे। ज़ारशाहीकी क्रूरता और अत्याचारोंके कारण सांस्कृतिक विकास और मानसिक उन्नतिके द्वार सदाके लिये अवरुद्ध थे। नवाबों और जमींदारोंके कोड़ोंको पशुओंकी भांति मूक बनकर सहनेवाले दास कब्रमें पैर फैलाने तक अन्यायकी गाड़ी खींचते जाते थे और उनकी कुमारियां विलासी नर-पशुओंकी वासना-तृप्तिके लिये ही जन्म लेती और मरती थीं। यही समय था जब कि पुश्किनका आविर्भाव हुआ।

किसान और मजदूरोंकी दुर्दशा और सामन्त-प्रथाकी भयङ्करताके इस युगमें मध्य-वर्गकी शिक्षित जनताके हृदयमें एक विद्रोहकी भावना उत्पन्न हो रही थी। यह वर्ग फ्रांसके प्रजातन्त्रके सिद्धान्तसे प्रेरित हो कर सामन्त-प्रथाके विनाशके प्रयत्नोंमें संलग्न था। पुश्किनने अपने आपको इस क्रांतिकारीवर्ग-के साथ जोड़ लिया। यही वर्ग था जिसके द्वारा 'दिसम्बरिस्ट मूवमेंट' (उच्च वर्गके लोगोंका आन्दोलन जो सामन्तशाही और ज़ारशाहीको खत्म करके जनताके हितोंके लिये चलाया गया था) सफलतापूर्वक चल रहा। पुश्किन उस समय इस वर्गके लोगों द्वारा संचालित आन्दोलनका कवि और नाटककार बन गया।

उस समय प्रजातन्त्रवादका पक्ष लेना शक्तिका जबर्दस्त कदम था। पुश्किनने उस दशाका वर्णन करते हुए अपने विषयमें लिखा है—"स्वतन्त्रताके एकाकी किसानकी भांति मैं तारोंके उदयके पहले ही अपने घर-को छोड़ देता था और अपने पवित्र और निर्दोष हाथोंसे दासतासे विजड़ित खेतोंमें जीवनका बीज बोता था......।" निस्सन्देह पुश्किन स्वतन्त्रताको एकाकी किसान था क्योंकि वह आन्दोलनके पहलेसे जीवित था और आन्दोलनके जमानेमें क्रांतिकारियोंकी प्रेरणाका मूल स्रोत था।

पुश्किन उच्च रूसी खानदानसे सम्बंधित और नीग्रो हाकिवालका वंशज था। अबीसीनियामें दास बनाकर टर्कीके सुलतानने पीटर दि ग्रेटको सौंपदिया था। पीटर उससे बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे पढ़ा-लिखा कर उच्च खानदानकी एक लड़कीसे उसकी शादी कर दी। पुश्किनने अपनी कहानी "पीटर दि ग्रेटका नीग्रो"में वंशका करुण परिचय दिया है।

उस समय अभिजात्य वर्गकी भाषा फ्रेंच थी। रूसी भाषाको लोग गंवारू और असभ्य समझते थे और शायद इसीलिये उसकी ओर उनका ध्यान भी नहीं जाता था। पुश्किनके जीवनमें यह बात नहीं थी। वह पीटर दि ग्रेटके यहां पला होनेपर भी रूसी भाषासे प्रेम करता था और उस समयके अन्य लोगोंसे कहीं अधिक अच्छी तरह रूसी भाषा पढ़, लिख या बोल सकता था। उसकी धाय अरीना रेडीनोथिना बचपनमें उसे लोक-कथाएं और लोक-गीत सुनाया करती थी। ये लोक-कथाएं और लोक-गीत सर्वसाधारणकी भाषामें होते थे। निर्वासित जीवनमें भी पुश्किनको यह अत्यन्त आकर्षक लगते थे।

पुश्किन रूसका युग-प्रवर्त्तक कवि

———:o:———

(लेखक—श्री पद्मसिंह शर्मा)

१४ दिसम्बर १८२५ को जब दिसम्बरिस्टमूवमेंटको दबा दिया गया, तो पुश्किनको ज़ारने उसीकी जमींदारीमें ही मिखाईवास्कोयमें निर्वासित कर दिया। इतना होनेपर भी उसने उस आंदोलनके जमानेमें जो कविताएं लिखीं, उन्होंने क्रांतिकारियोंपर गहरा प्रभाव डाला। निर्वासित जीवनमें ही पुश्किनने अपनी प्रसिद्ध कविता "यूजेना-वनजिन" और ऐतिहासिक नाटक "बोरिस गुडोनोव" लिखे। "बोरिस गुडोनोव"में जनता और सरकारके सङ्घर्षको आधार बनाया गया है। उसका सारांश यह है कि सरकार यदि मजबूत है तो इसमें सरकारका कोई हाथ नहीं उसकी मजबूती जनताके ऊपर निर्भर है। जनता यदि चाहे तो उसे देखते-देखते समाप्त कर सकती है।

"यूजेना वनजिन" कविताका 'टारिया-नाकापत्र' रूसकी हरएक बालक-बालिकाकी जबानपर रहता है। यहां तक कि चीनमें तो, जहां यह अत्यधिक प्रसिद्ध है, प्रत्येक प्रेमी युवक-युवतीके हृदयमें इसकी गूंज है। उसकी कुछ पंक्तियां ये हैं—

किसी दूसरेके लिये ?
यह कभी नहीं हो सकता।
मेरा यह हृदय केवल तुम्हारा है।
भाग्य-चक्रको संचालित करनेवाली उस
पवित्र शक्तिकी शपथ खाकर कहती हूं
कि यह हृदय तुम्हारा है।

अब तकका मेरा जीवन क्या है ? तुम्हारे आगमनकी एक अभिलाषा और कुछ नहीं। मुझे विश्वास है कि ईश्वरने तुम्हें मेरा रक्षक देवता बनाकर भेजा है और तुम मेरे मरने तक मेरी देख-भाल करोगे।

तुम मेरे स्वप्नोंमें आये थे, इसलिये मैं उस मुखको प्यार करती हूं, जिसे मैंनेकभी नहीं देखा;

तुम्हारी आंखोंकी मस्तीको पीनेसे पहले ही उन्होंने मेरे भीतर आश्चर्य और आकांक्षा उत्पन्न करदी;

और मेरी आशाने बहुत दिन तक तुम्हारा मधुर स्वर सुना था।

पुश्किन महा कवि था। उसे जनताके हृदयको जगाना था। इसलिये उसकी रचनाएं और कार्य जार शाहीकी नजरोंमें खटकते थे। परिणामस्वरूप पुश्किनको जिन्दगीभर तकलीफों और परेशानियोंका सामना करना पड़ा। उसे कई बार निर्वासित किया गया और कितनी ही बार कठोर दण्ड दिया गया। उसकी स्त्री अत्यन्त सुन्दरी होनेपर भी अधम प्रकृतिकी थी। जार और उसकी पुलिस पुश्किनसे घृणा करते थे और निरन्तर उसे गालियां दिया करते थे। आखिरकार पुश्किनको अपनी प्रतिष्ठा बचाने के लिये एक आदमीसे, जो उसकी स्त्रीका प्रेमी बताया जाता है, द्वन्द्वयुद्ध करना पड़ा। परिणामस्वरूप पुश्किनकी मृत्यु होगयी। पुश्किनकी मृत्युपर रूसमें ऐसा शोक मनाया गया जैसा उससे पहले और किसी महापुरुषकी मृत्युपर नहीं मनाया गया था—

"हमारी कविताका सूर्य अस्त हो गया है। पुश्किन मर गया......। प्रत्येक रूसीका हृदय घायल है। पुश्किन हमारा कवि! हमारा हर्ष !! हमारा राष्ट्रीय गौरव !!!" ये शब्द हैं जो एक समाचार पत्रोंने पुश्किनकी मृत्यु पर लिखे थे। एक दिनमें तीस हजार आदमी उसके शव दर्शनको आये और पश्चाताप करते चले गये। एक स्त्री उस समयका वर्णन करती हुई लिखती है—" तीन दिन तक जब तक उसका शव घरपर रहा, सब उम्रके आदमियोंकी भीड़ें दर्शनके लिये उमड़ती रहीं। स्त्रियां बुड्ढे, बच्चे विद्यार्थी, अछूत और यहां तककि रोगी भी रोते-बिलखते वहां मौजूद थे। इस दृश्यको देखते ही करुणाका समु उमड़ पड़ता था। लेकिन हमारे घरमें उसव बहादुरीपर किसीने भी शोक नहीं किया।

दिसम्बरके आन्दोलनके बादसे जनताव भावनाओंका यह पहला राजनीतिक प्रदर्श था, जो अपने महाकविकी मृत्युपर उस किया था। उस समयके साहित्यकारों जनताकी उन भावनाओंको व्यक्त किया है जारशाहीके भयके कारण साहित्य ही ऐस माध्यम था, जिसके द्वारा जनताकी भावनाओंको व्यक्त किया जा सकता था पुश्किन ऐसे जन-साहित्यकारोंमें प्रथम औ सबसे महान थे। ऐसे कलाकारकी मृत पर यदि ऐसा शोक हो तो आश्चर्य ह क्या है।

सेंट पीटर्सबर्गके जर्मन एजेंट लेबरमेनक कहना है—'यह भावनाएं राजधानीवे उच्च समाजकी अपेक्षा जनताके भीतर अधिव शक्तिशाली रूपमें व्याप्त थीं।......पुश्कि अधिक प्रसिद्ध था और निम्न वर्ग द्वार उसका आदर अन्य कलाकारोंसे कहीं अधिव था। पुश्किनकी मृत्युसे जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति होनी असम्भव है।'

लरमेंटोवने 'कविकी मृत्युपर' शीर्षव एक कविता लिखी थी, जिसकी हस्तलिखित प्रतियां हजारोंकी तादादमें बांटी गयीं। जनताके शोकका वार-पार न था और जार भयभीत था। उसने कविके शवको रातों-रात उठवा कर गड़वा दिया, जिससे जनता प्रदर्शन न कर सके। दाह-संस्कारके समय रिश्तेदारों और मित्रोंकी अपेक्षा हिजड़ोंकी संख्या अधिक थी। द्वन्द युद्ध और मृत्युकी खबरें भी न छपने दी गयीं। उसका नाटक 'लोभी नवाब' जो शीघ्र प्रकाशित होनेवाला था, नष्ट कर दिया गया। लरमेंटोवको उसकी कविताके लिये काकेशसमें निर्वासित कर दिया गया।

इतना होनेपर भी पुश्किन अब भी जनताके हृदयमें जीवित है और सोवियत यूनियनमें, जहां प्रत्येक स्त्री, पुरुष और बच्चा उससे परिचित है, उसकी भविष्यवाणी सच हो रही है—

'मेरा सब कुछ नष्ट नहीं होगा क्योंकि मेरे गीतोंमें नश्वर चीजोंसे अधिक अमर आत्मा निवास करती है;

जबतक पृथ्वीपर चन्द्रमाके नीचे एक भी कवि गाता है, मेरी कीर्ति अक्षुण्ण रहेगी।

युग-युग तक रूसमें सर्वत्र, उसकी सब-सब भाषाओंमें तातार, फिन्स, बंशाल्मिानी

प्रवेश निषेध, शोर मत करो !

प्रकृतिके अनोखे कार्य

लेखक—श्री ब्रजकिशोर वर्मा 'श्याम'

विश्वमें सबसे अद्भुत शक्ति प्रकृतिकी । वह जैसे योग्यता, गम्भीरता तथा विचित्रतासे, खोदने या ढोने, नष्ट करने या निर्माण करने, रूपान्तर करने या विभाजित करनेका कार्य सम्पादन करती है, वैसा मनुष्य नहीं कर सकता। यद्यपि इस कलामें हमारे आधुनिक इञ्जीनियरोंने बड़ी निपुणता प्राप्त कर ली है और अपनी विस्मय-जनक करतूतोंसे संसारको चकित भी कर दिया है, तथापि वे सब प्रकृतिके अत्यन्त अद्भुत व्यापारके सामने ऐसे तुच्छ प्रतीत होते हैं जैसे सूर्यके सामने दीपकका प्रकाश।

मनुष्यसे खोदनेका जो सबसे महानकार्य बन पड़ा है, वह पनामाकी नहर है। सौ वर्ष तक परीक्षा और तैयारी करने तथा उत्तमोत्तम आवश्यक पम्पोंका आविष्कार और बहु संख्यामें उनका निर्माण करनेके बाद इस महान कार्यका श्रीगणेश हुआ। इस कार्यमें लगभग एक करोड़ मनुष्य लगे थे, जिनमें ४० सहस्र एक ही समय काम करते थे। इन लोगोंने पम्पोंकी सहायतासे लगभग तीन सहस्र लाख टन मिट्टी खोद कर बाहर निकाली और दस करोड़ टनके करीब कङ्कड़ और मिट्टी नहरके बांध तथा उनकी तलीपर बिछाकर उसे मजबूत किया। इस प्रकार खोदने और भरनेके कार्यमें उन्हें दस वर्ष लग गये, तब जाकर वह नहर पूर्णतः तैयार हुई और अटलांटिक तथा प्रशांत महासागर, जो अनन्त कालसे एक दूसरेसे बिछुड़े हुए थे, मानवी-शक्तिकी सहायतासे आपसमें मिलने-जुलने लग गये।

परन्तु जब हम प्रकृतिके अनोखे कृत्योंपर विचार करते हैं, तब हमें पनामाकी नहर, जो मनुष्योंके उत्कृष्ट परिश्रमका फल है और जिसकी गणना संसारके आश्चर्यों में है, इतनी तुच्छ प्रतीत होती है कि उसे आश्चर्य-जनक कहते हमारे मनमें सङ्कोच होता है। पनामा नहरके बनानेमें जितनी मिट्टी दस वर्षमें खोदी गयी, उससे अधिक एक नदी वर्ष भरमें खोद डालती है। अमेरिकाकी मिसीसिपी नदी प्रति वर्ष चार हजार लाख टन मिट्टी खोदकर मेक्सिकोकी खाड़ीमें जमा करती है। इस हिसाबसे वह प्रति दस वर्षमें चालीस सहस्र लक्ष टन मिट्टी खोदकर ले जाती है। इससे भी अद्भुत कृत्य चीनकी पीत नदीका है। कहते हैं कि वह प्रति वर्ष आठ हजार चार सौ चालीस लक्ष टन अर्थात् प्रति दस वर्षमें चौरासी हजार चार सौ लाख टन मिट्टी खोद कर उदधिको अर्पण करती है।

अब देखना है कि ये नदियां जब दस वर्षमें इतना गजब ढाती हैं तब कई शताब्दियोंके अनन्तर इनसे खोदनेका कितना कार्य हो सकेगा। इस बातकी कल्पना अमेरिकाके कोलोरेडो नदीके विषयमें विचार करनेसे भली-भांति हो सकती है। एक पुस्तकमें लिखा है कि कोलोरेडो नदी चट्टानोंको तोड़ती-फोड़ती हुई इतनी गहराईमें बहती कि मानव दृष्टि उसे देख नहीं सकती। सूर्य-किरणें भी मध्याह्न कालके सिवा अन्य अवसरपर उसके जलका स्पर्श नहीं कर पातीं। वहां इतना अन्धकार रहता है कि किसी भी मनुष्यकी हिम्मत वहां जाने को नहीं होती। तो भी लोगोंने पता लगा लिया है कि कितने ही स्थानोंमें उसकी गहराई मील भरसे भी अधिक है।

यह तो हुई खोदनेकी बात। अब जरा ढोनेके सम्बन्धमें विचार करें और देखें कि इस कार्यमें प्रकृतिकी विचित्रता कहां तक है। प्रकृति जितना कुछ खोदती है, उसे ऐसी शान्तिसे ढो ले जाती है कि किसीको कुछ पता ही नहीं चलता। पर मनुष्योंका ऐसा हाल नहीं है जब उन्हें कभी एक स्थानसे दूसरे स्थानको बहुत-सा समान ले जाना होता है, तब उन्हें रेलकी सड़कें, मालकी गाड़ियां और सामान-उतारने चढ़ानेके लिये यंत्र बनवाना पड़ता है। इनके अतिरिक्त मजदूरोंका बड़ा भारी समूह भी एकत्र करना होता है। इतना करके भी वे बड़ी कठिनाइयों से बीस बाईस लाख टन सामान एक दिनमें लेजा पाते हैं। ऐसे अवसरपर शोर-गुलकी भी अधिकता रहती है। हेरो डोटसका कथन है कि पिरामिडका निर्माण करनेके पूर्व हजार गुलाम सड़क बनानेके कार्यमें दस वर्ष तक लगे थे, जिसमें दूर-दूरसे बड़े-बड़े पत्थरोंकी ढुलाई करनेमें सुभीता हो। इसके अनन्तर पिरामिड बनानेका काम प्रारंभ हुआ। इसमें भी लाखों गुलाम बीस वर्ष तक लगे रहे। इतने समयमें उनलोगोंने कठिन परिश्रम करके जितना पत्थर ढोया उसका वजन ४० लक्ष टनके लगभग होता है। इसी प्रकार चीनकी वृहद दीवार पन्द्रह सौ मील लम्बी, बीससे तीस फुट तक चौड़ी और पचीस फुट मोटी है। इञ्जीनियरोंका अनुमान है कि जब दीवार नयी थी तब उसमें तिरसठ हजार पांचसौलाख टन घनफुट सामग्री लगी थी, जिसका वजन लगभग दो-सौ पचास लाख टन होता है।

प्रकृतिके ढोनेके कार्यों और मनुष्यके ढोनेके कार्यमें आकाश और पातालका अन्तर है। मनुष्य-दल जितनी सामग्री वर्षोंमें ढोता है, प्रकृतिकी साधारण दासी उतनेको कुछ ही दिनोंमें ढो लेती है। कहा जाता है कि गंगा नदी वर्षा ऋतुमें, जिसमें १२२ दिन होते हैं, साठ हजार लाख घन फुट पदार्थ ढो ले जाती है, जिसका परिमाण ७५ पिरामिड या तीन हजार लाख टनके बराबर होता है। यहां यह बता देना उचित होगा कि प्रति घण्टा $\frac{1}{3}$ मीलके हिसाबसे बहनेवाली धारामें मिट्टी, इससे दुगुने गतिसे प्रवाहित होनेवाली धारामें रेत-कण, दो मीलकी गति की धारामें छोटे-मोटे कङ्कड़ और चार मीलकी गतिसे बहनेवाली धारामें नास-पातीके बराबर बड़े पत्थरको बहा ले जानेकी शक्ति रहती है।

मनुष्योंने लाखों टन मिट्टी और पत्थर लगाकर समुद्र तटपर जो बांध बनाये हैं, वे अत्यन्त आश्चर्यजनक हैं। उनमेंसे कितने बांध १ मीलसे भी अधिक लम्बाईके हैं। बांधोंकी दृढ़ता इसी एक बातसे भली-भांति लक्षित होती है कि उनमें कहीं चार और कहीं-कहीं टनसे भी अधिक वजनके पत्थर इस युक्तिसे जोड़े गये हैं कि उन्हें देखनेसे सहसा एकही पत्थरका भ्रम होता है। वास्तवमें उनके निर्माणकर्त्ता इञ्जीनियरोंकी बुद्धिमत्ता और कार्य-कुशलता तथा उनके सहायक कर्मचारियोंकी धीरता और साहस अत्यन्त प्रशंसनीय है। परन्तु जब तूफान आता है और समुद्र अपनी शक्ति दिखाता है तब मानवीय उद्योग निर्बल पड़ जाते हैं और वर्षोंका परिश्रम कुछ ही घंटोंमें पानीमें मिल जाता है।

आधुनिक महासमरमें तोपों और उनके गोलोंकी शक्तिका जो भयंकर समाचार पढ़ने-सुननेमें आता है उससे स्पष्ट होता है कि मशीनगन पांच छः सौ गोलियां एक घंटेमें दाग सकती हैं और जंगी जहाजकी नाशकारी तोप एक टनके वजनके १७०० गोलेको प्रति घंटाके हिसाबसे फेंक सकती है। परन्तु जब हम इन भयंकर तोपोंकी तुलना ज्वालामुखी पर्वतोंसे करते हैं जो प्रकृतिकी दीर्घकाय और महा भयंकर तोपें हैं, तो हमें अपनी तुच्छतापर, जिसे हमने श्रेष्ठताका स्वरूप दे रखा है, बड़ी हंसी आती है। ५०-६० वर्ष पूर्वकी बात है कि क्रोकेटोवाका ज्वालामुखी पर्वत, जो सुमात्रा और जावाके मुहानेपर स्थिर है, बड़े जोरसे भड़क पड़ा था। उसके भड़कनेसे वायुमंडलमें बड़ी बड़ी तरंगे उठने लगी थीं। ये तरंगे सात बार उत्पन्न हुईं और प्रतिबार संसार भरके बेरोमीटरमें अपना चिन्ह अङ्कित करती गयीं। धड़ाका भी इतने जोरका हुआ था कि उससे एक घनमील चट्टानका टुकड़ा; जो वजनमें साठ हजार लाख टनके बराबर होता है, कुछ ही घंटोंमें टूट पड़ा। पर्वतके मुंहसे भाफ, धुआं और धूल भी इतनी निकली कि उससे १८० मीलके घेरेमें दिनमें घोर अन्धकार छा गया। हाथ पसारे नहीं सूझता था। कहते हैं कि ये पदार्थ बीस मीलकी ऊंचाई तक आकाश-मंडलमें फौवारेके समान उड़ते थे, जिससे संसारका संपूर्ण वायुमंडल इन वस्तुओंसे परिपूर्ण हो गया। इस स्फोटनसे नाश भी बहुत हुआ। क्रोकेटोवा द्वीपका अर्द्ध-भाग वीरान हो गया और उसके जिस भाग में आध मील ऊंचाईका पर्वत था, वहां हजारों फुट गहराईका समुद्र बन गया। इस आपत्तिके समय सबसे विचित्र बात यह हुई कि पर्वतके स्फोटनका शब्द रॉड्रिग्ज़ टापूमें, जो वहांसे ९४ मील दूर है, इतने जोरसे सुनाई दिया कि लोग कुछ देर तक बधिरसे हो गये। वहांसे ९६९ मील दूरीके सिलोनके द्वीपमें वह शब्द इतना स्पष्ट सुन पड़ा कि अत्यन्त निकटके ज्वालामुखीका भड़ाका सुन पड़ता है। बोगारन द्वीपमें भी जो वहां से २२७८ मीलकी दूरीपर है, स्फोटनकी आवाज तोपकी आवाजके समान सुन पड़ी।

आधुनिक काममें बारूदसे चट्टानोंको तोड़-फोड़ कर उन्हें छिन्न-भिन्न करके मनुष्योंने अपनी बड़ी बहादुरी दिखायी। परन्तु विचार करनेसे पता चलता है कि इस कलामें मनुष्योंकी अपेक्षा प्रकृति बढ़ी-चढ़ी है। वह बड़ीसे बड़ी चट्टानको और बर्फकी सहयतासे इस प्रकार तोड़-फोड़ती है जैसे डिनामाइटके प्रयोगसे छोटे चट्टानके टुकड़े तोड़े-फोड़े जाते हैं। यही कारण है कि पर्वत निर्दिष्ट ऊंचाईसे अधिक ऊंचे नहीं हो पाये और हिमालय, आल्प्स तथा एण्डीज जैसी ऊंची पर्वतमालाओंके शिखरोंकी श्रृंखला ही शेष रह गयी। वृहत पर्वतश्रेणियोंके धरातलके ऊपर लाखों टन पत्थरके टुकड़े पड़े हुए हैं। उन्हें देखनेसे प्रकृतिकेकार्यका अनुमान भली-भांति हो सकता है।

इसमें सन्देह नहीं कि प्रकृति अनन्त कालसे अपना कार्य करती आ रही है, परन्तु उसकी सभी कारगुजारी गुप्त रीतिसे होती है। इससे हमें उनका कुछ पता नहीं लगता। कभी-कभी उसके कार्य प्रकट भी हो जाते हैं। तब हमें उसकी असीम शक्तिका अनुभव होता है।

स्लाव्स, हटैप्सके कास्सुक घुड़सवारों द्वारा मेरा यशगान होगा।

मेरे देशके छोटे-बड़े सभी आदमी मुझे चिरकाल तक याद करेंगे क्योंकि मैंने मनुष्य में मनुष्यके प्रति सद्भावना जगायी है, पतितों के प्रति करुणाका आह्वान किया है और इस दासताके युगमें स्वतन्त्रताके गीत गाये हैं।'

ऐसा कवि, जिसका विश्वास इतना दृढ़ हो और जो जनताके हृदयमें इतना गहरा स्थान बना चुका हो, अमर है और उसकी कीर्ति-कौमुदी कभी मन्द नहीं हो सकती।

—::—

७ घण्टेमें घर तैयार

बम्बईका समाचार है कि वहां कमसे कम २ लाख व्यक्ति स्थानाभावके कारण रातको सड़कोंपर सोते हैं। यूरोपके कितने देशोंमें भी आज यही हाल है। अन्तर केवल यह है कि भारतमें इसका कारण दरिद्रता है और यूरोपमें बमवर्षा। परन्तु वहां इसका इलाज सोचा जा रहा है। स्वीडनमें एक ऐसा घर तैयार किया गया है, जिसे १५ मजदूर ७ घण्टे में बना सकते हैं। गत ८ मार्चको स्टाकहोममें इस नये घर बनानेका प्रदर्शन हुआ, जिसमें वहांका ब्रिटिश दूत और अन्य अधिकारी भी मौजूद थे। इन घरोंके कई नमूने हैं और वे २ मंजिले भी हैं। दीवारें लकड़ीके तख्तों और गत्तोंसे बनायी जाती हैं। बीचमें खाली जगह होती, जिसे बुरादेसे भर दिया जाता है और उसपर गत्ता जमाया जाता है। एक घरपर १३ हजार ५०० रुपये खर्च आते हैं।

कहानी

महाकवि!

—:*:—

लेखक—श्री 'पवन'

मैं क्या नहीं हूं ? मैं महान हूं। मैं महाकवि हूं। मैं विश्वकवि हूं। सोचते-सोचते जरा ठीकसे सोचने लगा—क्या हर्ज है, एकबार महाकविके हौंसको आजमाकर देखूं कि मैं महाकवि बन सकता हूं अथवा नहीं।

उस वक्त मुझे जितनी कविताएं याद थीं, वे सब एकदम घटिया थीं। मैं चाहता था कि प्रथम बार जनताको ऐसी फड़कती कविता सुनाऊं कि वह भी समझे कि मैं कौन हूं। मेरे ही तरह एक कवि, जो कविके रूपमें पहले नहीं आये थे, प्लेटफार्मपर अपनी कड़कती हुई कविता सुनाकर पार-घाट लग गये; परन्तु मैंने ऐसी जल्दबाजी नहीं की। महाकविता करनेके लिये सबसे पहले मैंने रिहर्सल कर लेना उचित समझा। ऐसा समझकर चुपकेसे उठ खड़ा हुआ और सम्मेलनसे भागकर सीधे घर पहुंच गया। रास्ते में कसम खा ली थी कि अभीसे जो कुछ भी बोलूंगा, शुद्ध साहित्यिक ढङ्गसे, जिसमें कवित्व रहेगा और रहेगा विचित्र साहित्यिक पुट। मैंने उसी क्षणसे अपनेको असली महाकवि मान लिया।

घर आकर देखा कि नौकर राम घूस ओढ़े मेरी प्रतीक्षामें ऊंघ रहे हैं। मुझे आया देखकर उन्होंने पूछा—'मालिक सभा खतम हो गयी ?'

मैंने जैसा सङ्कल्प कर लिया था, शुद्ध साहित्यिक ढङ्गसे नमस्ते करते हुए कहा—'थोड़ी देरके लिये मैं आपके साहचर्यमें रहकर साहित्यिक रिहर्सल करना चाहता हूं। पुनः सम्मेलनमें लौट जाऊंगा। क्या आप अपना बहुमूल्य समय मुझे देंगे। प्रियवर गबड़ूजी, मैं आशा करता हूं कि आप सभ्यतापूर्वक मेरे निवेदनको स्वीकार कर लेंगे।

गबड़ूजीने व्याकरणका कोई ख्याल नहीं रखकर पूछा—"बाबू साहब, जर तो नहीं लग गया है ? मलरिया जरमें लोग खूब बकवास करते हैं। कहिये, अंगीठी सुलगा दूं ?"

मैंने सभ्यतापूर्वक कहा—"क्या कहते हैं, ज्वर ? जी नहीं। आजकल कवि सम्मेलन में जाना, कविता पाठ करनेमें नखरा करना, अपने मुंहसे अपनी प्रशंसा करना और हिन्दीमें अपनी दाल गलती न देखकर पांच बूंद हिन्दी रोशनाईके द्वारा रूसी साहित्य में गर्भाधान करना और ढिंढोरा पीटते फिरना कवि होने का लक्षण है। मेरी ओर देखिये, मैं हूं विश्वसाहित्यकार। शोरगुल करना और दंगा-फसाद मचाकर कवि-सम्मेलनोंको उभाड़ देना, साहित्यिक ज्वर है। ऐसे जीव महाकवि समझे जाते हैं। गबड़ूजी, मैं कहां तक कहूं ? मरनेपर भी अखबारवाले ईमानदारीके साथ मोटे-मोटे अक्षरोंमें महाकविका संस्मरण पेश करते हैं हुए लिखते हैं कि जगत्प्रसिद्ध समीक्षाकार, धुरन्धर समालोचक और प्रगतिशील साहित्यके जन्मदाता, रोमांसके प्रवाहमें मोमकी तरह पिघलनेवाले अमुक महाकवि सेप्टिक घावकी यन्त्रणा सहते हुए आज रूसी अस्पतालमें मर गये।

आप देखियेगा कि मेरी कविताएं, मेरा साहित्य कितना 'क्लासिकल' है। महाशय जी, फ्रांसके आर्नल्ड, मेकाले, रस्किन, कारडू, रेनन, तेन और स्यांतबोएवसे मैं किसी भी तरह कम नहीं हूं। दो अंगुल आगे जरूर हूं। मैं साफ देख रहा हूं कि आप मेरे उद्गारोंका सुन्दर विश्लेषण देखकर चकित होते जा रहे हैं। आपका मुंह लंगूरकी तरह फक हो गया है। आप अवाक् और किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर मेरी ओर टुकुर-टुकुर ताक रहे हैं। यह सब क्यों ? एक महाकवि अथवा विश्व-साहित्यकार या मेरे व्यक्तित्वकी श्रेष्ठ भावनाओं और परिमार्जित दृष्टिकोणके प्रभावसे आप अपनेको बिलकुल खो गये हैं। आपका अस्तित्व आपको स्वयं मालूम नहीं हो रहा है; परन्तु मैं अपनी मौलिक दृष्टिसे देख रहा हूं कि आप एक असभ्य मानवकी तरह घूस ओढ़े खड़े हैं।

आपको मानना पड़ेगा कि मैं साहित्य शिल्पी हूं। साहित्य क्षेत्रमें मेरा अपना स्थान है। किन्तु खेदके साथ कहना पड़ता है कि आप मेरी परिभाषा नहीं जानते हैं। अगर आपको खींचकर दो तमाचे रसीद कर दूं तो उससे आपको जो तकलीफ होगी, उस तकलीफकी भावाभिव्यक्तिमें साहित्यकी मौलिकता ढूंढ़ना मेरी परिभाषा है। समझ गये ?"

गबड़ूजीकी समझमें नहीं आया कि मैं क्या-क्या बक गया। उन्होंने अपनी अक्लके अनुसार समझ लिया कि सचमुच मैं मलेरिया ज्वरमें ही यह सब अण्ट-शण्ट उनके सामने बकता जा रहा हूं। उन्होंने झटपट अंगीठीमें आग भरकर सामने रख दी और ऊपरसे एक कंबल ओढ़ा दिया। बोले—'बुखार बहुत तेज है, सरकार !"

"नहीं, नहीं महाशयजी ! महाकवि अर्थात् विश्व-साहित्यकार वैयक्तिक आक्षेपों में ही बुखारकी तेज गर्मी देखा करते हैं, ऐसे नहीं, एक बार नहीं और पचहत्तर बार नहीं। आप अनुभवहीन हैं इसलिये कहते हैं, आपका बुखार तेज है। मगर मैं कहता हूं—महाकवि शांत्वतसुखोपभोगकी पराकाष्ठापर पहुंच कर इतमीनानसे अंगीठी ताप रहा है।"

अधिक घबड़ाकर गबड़ूजीने पूछा,—"कहिये तो डाक्टर बुला लाऊं ?"

मैंने छाती फुलाकर जेबसे फाउण्टेनपेन निकाल ली और सगर्व गबड़ूकी ओर देखा,—"कह कर नहीं, उत्तरदायित्वपूर्ण क्षेत्रमें अपना दखल जमानेके लिये ताल ठोक कर लिख सकता हूं—"सभापति महोदय, महाकवि श्री टमटम शर्माकी कविता होनी चाहिये। वे आकर मंचपर कविता पढ़ें।" और मैं जोशमें आकर कागजका एक रुक्का लिखकर गबड़ूके सामने फेंक दिया।

गबड़ूजीने समझा कि मैंने किसी दवाका नाम लिखकर उन्हें दवाखानेसे खरीद लानेका इशारा किया है। इसलिये उन्होंने रुक्का उठाकर कहा—"अभी दवा लिये आता हूं। मगर आप जरा होश सम्हालिये। अकेले छोड़कर कैसे जाऊं ?"

मैंने हुंसका कर कहा,—"अबे कुत्ते का

आशा

हे मेरी चिर जीवन-संगिनी ! हे मेरे जीवन आधार !
मेरी मौन व्यथाके आंसूके तुम हो प्रेरक साकार !
जीवनके अविराम युद्धके कुशल सारथी तूं सजनी !
विषम अवस्था, असफलताकी सची सङ्गिनी तूं सजनी !

इच्छाओंके उन्मादोंसे हृदय तरङ्गित जब होता ;
फलित न होते उन्हें देखकर यह जब जार-जार रोता।
आ झट उनके पास तभी तूं अमित तोष दे जाती हो ;
'तेरी इच्छित वस्तु मिलेगी' यह उनको समझाती हो।

तेरी आकृति बड़ी सलोनी पर है निष्ठुर अन्तस्तल।
उनके पास न गयी कभी जिनके जीवनका तूं सम्बल।
तेरी ओर जभी वे बढ़ते बाधाओंपर विजयी बन ;
तभी दूर जाती हो कर प्रत्यूहोंको और सघन।

मिलो नहीं हे प्रिय, इतनी तो दया बनाये रख मुझपर।
मिल जानेका लोभ दिखा बढ़ने तो दे जीवन-पथपर।
मिलना, आलिंगन करना ह जब पथ हो जाये विशेष।
उसी समय हम तुम मिल दोनों पायेंगे आनन्द विशेष।

—देवप्रसाद सिंह

बचा, गवड़ आ ! मैंने तुम्हें किसी दवाका नुस्खा नहीं दिया है। मूर्ख कहीं का, यह साहित्यिक नुस्खा है, जिससे भरी सभामें महाकवियोंकी खुशामदें होती हैं।"

गवड़ आको इस बार पूरा यकीन होगया कि मैं डबल मलेरियामें फंस गया हूं। उसने जबर्दस्ती मुझे उठाकर चारपाईपर दे पटका। मैंने कहा—मूर्ख कहींका, महाकवि कभी-कभी तुम्हारे जैसे मूर्खोंके चरित्रकी कविता करते-करते उसमें एक दो जगह अस्वाभाविकता लेही आते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्वकी रक्षा नहीं हो पाती और कभी-कभी आवेशमें आकर किसीको पीट भी देते हैं।' मैंने गवड़ुआको तीन-चार तमाचे रशीद किये। वह तिलमिला उठा, मगर मैं फटकारताही गया—'दूर हो जाओ मेरे सामनेसे। हमारे सूक्ष्मतम सैद्धान्तिक तत्वोंको समझनेके लिये तुम्हारे बापने तुम्हारी खोंपड़ीमें उत्कृष्ट मस्तिष्क नहीं पैदा किया। मैं जाता हूं। सम्मेलनमें इसी विषयपर कविता करूंगा और सिद्ध कर दूंगा कि महाकवि अपने गूढ़ विचारोंका पोषण और रक्षण चाहते हैं और सड़े दिमागवाली जनताका बायकाट करते हैं।

क्रोधावेशमें मैंने अंगीठीको फुटबालकी तरह एक ओर किक कर दिया और कम्बलको कोनेमें फेंककर सम्मेलनमें जा पहुंचा। उस समय बाहरसे आये हुए कवियोंकी कविता चल रही थी। भीड़ पहलेसे खूब जम गयी थी। जनता बड़े ध्यानसे कविताएं सुन रही थी। अभी मञ्चपर आकर बैठे दो मिनिट भी नहीं हुए थे कि सभापति महोदयने मेरी ओर घूमकर कहा,—"कविजी, जनता आपकी कविता सुननेके लिये आग्रह कर रही है।"

"क्यों महाशयजी, कैसे आग्रह कर रही ? जनता तो खामोश बैठी हुई है।"

'देखिये न !' सभापति महोदयने मेरा लिखा हुआ रुक्का मेरेसामने बढ़ा दिया तो मेरी विचित्र दशा हो गयी। मनमें आया कि आज गवड़ुआको बिना तलवारके घाट उतारे न छोड़ूंगा। कम्बख्त यहां तक पहुंच गया ! गुस्सेमें आकर मैंने सभापति महोदय से कह दिया—'मैं कविता पाठ न करता हूं, न करूंगा। क्षमा करें।'

मेरा आड़म्बर देखकर जनताका कौतूहल बढ़ा। जनता एक स्वरसे चिल्लाने लगी,—महाकविजीका कविता पाठ हो, जरूर हो। मुझे जनताका आग्रह देख कर बड़ी प्रसन्नता हो रही थी। परन्तु गवड़ुआका स्मरण होते ही क्रोधावेगमें उठ खड़ा हुआ। भावावेशके कारण मेरे मुंहसे निकल गया,—हरामजादाका बच्चे......!

मेरे मुंहसे यह निकलना था कि 'मारो-मारो' की आवाज बुलन्द करती हुई सम्मेलनमें उपस्थित जनता मुझपर आंधी-तूफान की तरह टूट पड़ी।

जान आफतमें फंसी हुई देखकर मैं शीघ्रतापूर्वक फर्शपर लेट गया और जनतो-जनार्दनकी टांगोंके बीचसे रेंग कर धोती सम्हालते हुए बाहर निकल आया। किसी प्रकार जान बच पायी, तो भगवानको लाख-लाख बार धन्यवाद देते हुए मैं सीधे घरकी ओर भागा।

बादमें मालूम हुआ कि जनता घोखेमें आकर आपसमें ही लड़ गयी। परिणाम स्वरूप सम्मेलनकी बहुत-सी वस्तुएं नष्ट हो गयीं। पैरोंके नीचे दब-दबकर न जाने कितने पीतलके गिलास चिपक गये। लाउड स्पीकर का माइक टूट गया और बेचारे कवियों और महाकवियोंकी जेबसे नोटबुक निकल-निकल कर उछल गयीं। कितनोंके सिर फूटे और कितने घायल हो गये।

ब्लैक मार्केटिंग

—:*:—

लेखक—डा० डी० एन० मधुकर, एम० डा० एस०

कहना चाहता। सरकारी कर्मचारीगण भी इनके आधे छप्परके मालिक हैं। मैं यह नहीं कहता कि सरकार इन्हें ऐसा करनेके लिये सिखाती है। यह खुद उनकी गुस्ताखी है। बाजारके हर व्यापारीके यहां इनकी पूजाका चन्दा बंधा हुआ है। धन्य हैं आप लोग! नमस्ते देवरूपाय!

इसमें सन्देह नहीं, व्यापारी लोग आपस में भी घपलोरी करते हैं। जिन मिलोंसे कपड़े लाये जाते हैं, वहां भी कुछ पूजा चढ़ानी पड़ती है। फिर एकके बाद अन्य पूजाएं शुरु हो जाती हैं। और, आखिरी पूजा चढ़ाकर जनता सवा सात रुपयेकी चीजें पन्द्रह रुपयेमें लाती हैं। मैं स्वयं इसका भुक्तभोगी हूं। काम तो किसी तरह रुकते नहीं। महंगी या सस्तीसे काम चलाना ही पड़ेगा। जनता तो लुट जानेके लिये है ही। लूटनेवाले लूटें इसे भर पेट। दिल खोलकर। गरीब जनता इसे रोक भी कैसे सकेगी?

किन किन चीजोंकी गिनती करायी जाय! सभी चीजोंकी कीमत तो गगन-चुम्बी हो रही है। अब आप किरासन तेल को ही ले लीजिये। देहातके आमलोगोंके लिये तो कूपनकी बला है। उसपर भी उसका मिलना मुहाल है। पर, सरकारी कर्मचारी, सेठ-साहूकार और उनके दलालोंके यहां उसकी नदी बहती है। रोजाना दीवाली मनाया करें वे लोग। कनस्टर-का-कनस्टर खरीद लें वे लोग। अगर आपके पास पैसे हैं, या कोई जरूरी काम ही आ पड़ा हो, आप उसी बाजारमें ब्लैक मार्केटिंगके जरिये, दस-बारह आने सेरके हिसाबसे जितना चाहें, तेल खरीद लें। क्या सरकार इन बातोंको नहीं जानती है? सरकारें क्षमा करें मुझे। मैं कटु सत्य कह रहा हूं। असत्य नहीं।

> ## गीत
>
> तूने नव संसार बसाया!
>
> चिर अज्ञात तूलिका लेकर
> रेखाओंमें रङ्गोंको भर
> तूने मेरे-पटपर सुन्दर स्वप्नोंका चित्र बनाया!
> तूने नव संसार बसाया!!
>
> रोम-रोममें जागा नन्दन
> अङ्ग-अङ्गमें छलकी सिहरन
> पारस-मणि! छूकर तूने श्रीहीन लौहको स्वर्ण बनाया!
> तूने नव संसार बसाया!!
>
> मेरा स्वर अब मेरा स्वर क्या?
> मेरा डर अब मेरा डर क्या?
> मेरी उर वीणापर तूने अपना नूतन गायन गाया!
> तूने नव संसार बसाया!!
>
> —श्री जितेन्द्रकुमार

अब, थोड़ी देर चीनीकी चासनीकी ओर हम लोग चलें। वहां भी बहार-ही-बहार है। आपकी जरूरतोंकी पूर्तिकी खातिर चीनी नहीं मिल सकती; पर आपके घरकी चीनी कलकत्तेके चोर बाजारोंमें आपके घरकी ही कुछ व्यापारी औरतें बेच आती हैं। ट्रेनमें उन्हें टिकट भी कटाना नहीं पड़ता। धर्म पुस्तक की सहायतासे सब जगह आप बेखटके वैतरणी पार हो जायेंगे। अपने बाजारकी, आठ आने सेरकी चीनी कलकत्तेमें सवा रुपये सेरके भावसे बेच लीजिये। कितना अच्छा रोजगार है। आप अपने बाजारोंमें चीनी खोज-कर हार बैठें। आपको हर्गिज चीनी नहीं मिल सकेगी, पर उपर्युक्त चोर व्यापारियों को भर पेट चीनी मिल जाती है। मिले क्यों नहीं। आपसे दुगुना-तिगुना दाम भी तो वे औरतें देती हैं। और प्रान्तोंकी बातें वहां वाले जानें; पर बिहारकी कुछ औरतें ऐसा निश्चित रूपसे कर रही हैं। कुछ मर्द भी उनके शामिल रहा करते हैं। इस महामारीसे लोगोंको बचानेके लिये क्या सरकारने आज तक कोई उपाय खोज निकाला है?

चावल वगैरह खाद्य वस्तुओंका भाव फिर भी बढ़ता जारहा है। जबसे विश्व-क्रान्ति शुरु हुई है, यही रफ्तार जारी है। युद्धसे सम्बन्ध रखनेवाले लोगोंको रेशन मिलता है कण्ट्रोल रेटमें। बाकी सभी किसान-मजदूर परेशान हाल हैं। भरपेट खाना भी नहीं मिल रहा है। कुछ लोगोंका वारण्ट लेकर हैजा-चेचक आदि आये; और वे इन झंझटोंसे सर्वदाके लिये मुक्त हो गये। पर उनके बाल-बच्चे उसी भूख की आगमें जल रहे हैं। मोटे-मोटे किसान और महाजन लोग अभी भी गल्ला दबाये बैठे हैं। उन्हें तो रुपयेमें सीधे तीन अठन्नियां चाहिये। सरकारने भी खाद्य सामग्रियोंका कण्ट्रोल किया है। इसमें सन्देह नहीं, वे सामान हमारे बहादुर सिपाहीगण खाते हैं। मगर सरकार हर एक चीजपर कण्ट्रोल नहीं करती, उसे आदमी भी तो नहीं मिलते। भूखकी महामारीने ही तो लोगोंको उस ओर भेजा है। इस महायुद्धमें चाहे जो विजयी हो, हिन्दुस्तान तो हर तरहसे बर्बाद होकर ही रहेगा। कण्ट्रोल देवने हमारा सोना लिया, चांदी ली, और गल्ले कपड़े भी लिये। हमारे अनेकों बहादुर लड़ाके बेमौत मौतके घाट उतरे, यह तो अलग ही।

इन महामारियोंसे हमारे मुल्कके गरीब लोग तभी त्राण पा सकते हैं जब सभी राजबन्दी कारामुक्त कर दिये जायं। उन्हें चलने-फिरने लिखने और बोलनेकी आजादी मिल सके। भारतीय राजनीतिक दलोंसे सरकार सहयोग करे, तभी ब्लैक मार्केटिङ्ग रूपी महामारीका अन्त हो सकेगा; अन्यथा नहीं। अकेली सरकार तो इस प्रयत्नमें कब की हार माने बैठा है। आगे उससे उम्मीद ही क्या की जाय। उसे इतनी फुर्सत भी कहां जो छोटी-छोटी बातोंपर ध्यान दिया करे। जिसका घर चूता है, वही अपना छप्पर छाता है। दूसरा नहीं। हिन्दुस्तान गुलाम मुल्क है। सरकारकी इसपर शोषण नीति काम करती है। फिर हमारी परवाह ही क्यों की जाय?

सारे मुल्कके लोग, हर घरके लोग ऐसी पूजा कर रहे हैं। व्याह-शादी, मरनी-हरनी रुक नहीं सकती। मौका आनेपर क्या किया जाय! किसी तरह इज्जत बचानी ही होती है। स्टण्डर्ड कलाथकी पावन कथा तो यह हुई। अब कण्ट्रोलकी कथा भी श्रवणगोचर कर लीजिये। मान लीजिये, दो सौ जोड़े धोती और साड़ियां आपके बाजारमें आयीं। उनमें सवा सौ चोरबाजारमें सेठजीने रख छोड़ा, और उनकी रसीद ऐरे-गैरे-नत्थू-खैरे के नामसे काटकर खुद अपनी तिजोरीके सञ्चित रुपये जमाकर दिये। आपको बता दिया गया, इतने कपड़े बिक गये। बाकी आप लोग जल्द लें। वरना उनका कसूर क्या। अब, चन्द पूंजीपति गिद्ध उसपर झपटे; और सभीके हिस्से तिकड़मसे मारा-धण नमोनमः कर गये। बाकी गरीब जनता मुंह ताकती रह गयी। बोलो धन-कुबेरोंकी जय! कण्ट्रोल भैयाकी जय! वाह रे इन्साफ! बाकी सवा सौ कपड़े भी आप चोरबाजारमें तीन का तेरह देकर खरीदिये। और उपाय ही क्या है। जीवनके जरूरी

—::—

समाज-चर्चा

विधवा-विवाह

——※——

लेखक—श्री विजम प्रसाद सिंह, विशारद

विधवा हिन्दू समाजकी सबसे निराधार प्राणी है। पतिके मानव-लीला संवरण करते ही पत्नीकी सारी आशाएं सती हो जाती हैं। चिन्ताकी चितापर बल भस्म होने लगता है और शोक-सरिता प्रबल वेगसे प्रवाहित होने लगती है। उसे संसार नीरस प्रतीत होता है।

सन १९२१ की मनुष्यगणनाके अनुसार इस देशमें बाल-विधवाओंकी संख्या लगभग अस्सी लाख है। यदि इनमें युवतियां भी शामिल कर दी जायें, तो प्रौढ़ विधवाएं लगभग दो करोड़ तक पहुंच जाती है। ये हमारी पुत्रियां और भगिनियां इस प्रलोभनमय संसारमें जैसा नैराश्यपूर्ण और सन्देहात्मक जीवन व्यतीत कर रही हैं, उसका हम यहांपर उल्लेख करके पाठकोंके हृदयमें ठेस लगाना नहीं चाहते। परमात्माने जिनको हृदय दिया है, वे स्वयं उसका अनुभव कर सकते हैं। संसारके जिस आमोद और प्रमोदके लिये हमारे देशके पचास और साठ वर्षके वृद्ध भी लार टपकाते हैं, दस और बारह वर्षकी कन्याएं, जिनके अभी दूधके दांत भी न टूटे, उसके अयोग्य सिद्ध की जाती हैं। जिस कामके वेगको विश्वामित्र और पराशर-जैसे तपस्वी महर्षि भी नहीं रोक सके, उसका मुकाबला करनेके लिये इन अबलाओंकी सेना खड़ी की जा रही है।

निस्सन्देह ब्रह्मचर्यका महात्म्य बहुत बड़ा है, किन्तु कोई वस्तु चाहे कैसी ही अच्छी क्यों न हो, बलपूर्वक या दबाव डालकर उसे किसीके गलेका हार बनाना, मेरी सम्मतिमें उस वस्तुके महत्वको नष्ट करना है। फिर यह कैसा अन्धेर है कि इस ब्रह्मचर्य की आवश्यकता उन पुरुषोंके लिये, जो अपनी संसार-यात्रा लगभग समाप्त कर चुके हैं, उतनी नहीं समझी जाती, जितनी उन अबोध बालिकाओंके लिये, जिनकी संसार-यात्रा अभी ठीकसे आरम्भ भी नहीं हुई है, समझी जाती है। साठ वर्षका वृद्ध, जिसपर मौत भी हंस रही है, ब्रह्मचर्यके अयोग्य समझा जाये और दस-बारह वर्षकी विधवा, जिससे मृत्यु भी आंख मोड़ लेती है, आजीवन ब्रह्मचर्य पालन करनेकेलिये बाध्य की जाय। यह कैसा अन्याय है? जिस देश या समाजमें यह अन्याय और अधर्म प्रचलित है और उसको धर्मका चोला पहनाया गया है, उसकी जितनी अवनति और अधोगति हो थोड़ी ही है।

प्राचीन कालमें विधवाएं अपने जीवन को व्यर्थ समझकर और अपने दुखोंसे इस जन्ममें निवृत्ति न देखकर सती हो जाती थीं और इस प्रकार उस प्राण-शोषक रोगसे, जो आजीवन इनको सताता था, छुटकारा पाती थीं। संसारमें उन्हें कोई दूसरा अधिकार तो था नहीं, केवल मरनेका था, उसे भी सरकारने छीन लिया। किन्तु इस विषयमें हम सरकारको दोष नहीं देना चाहते। क्योंकि कोई भी सहृदय सरकार ऐसे भीषण कांण्डको, जिसमें जीवित व्यक्ति निर्दयताके साथ जलाया जाये, अपनी आंखों से नहीं देख सकती। इसके अलावा प्रजाकी रक्षा करना तो सरकारका कर्त्तव्य भी है। इसलिये हम कह सकते हैं कि सरकारने सती जैसी अमानुषिक प्रथाको बन्दकर अपना कर्त्तव्य पालन किया है। हां, यदि इस प्रथाको रोक कर वह विधवा विवाहका कानून न बनाती तो उसे हम अवश्य दोषी कह सकते थे। किन्तु उसने १८५६ में विधवा विवाह का कानून पास कर दिया था।

अब हमारा सवाल यह होता है कि क्या लड़की आपसे कहने जाती है कि मेरी शादी कर दीजिये। कोई भी ऐसी लड़की न होगी, जो युवा होनेपर अपने अभिभावकोंसे शादीके लिये कहे; किन्तु ईश्वरने आपके पास इतनी बुद्धि दी है कि आप समझ जाते हैं कि अब यह लड़की युवा हो गयी है और इसकी शादी करना आवश्यक है। मान लीजिये दुर्भाग्यवश साल भरके बाद ही उसका पति मर जाता है, तो फिर आप उसी बुद्धिसे कैसे समझ लेते हैं कि वह आजीवन ब्रह्मचारिणी रहेगी।

इतिहासके पृष्ठोंको उलटनेसे पता चलता है कि प्राचीन कालमें भारतवर्षमें विधवा-विवाहकी प्रथा प्रचलित थी। अब हम आप के सामने कुछ ऐतिहासिक दृष्टान्त रखते हैं। नागराज ऐरावतने अपनी विधवा पुत्रीका विवाह अर्जुनके साथ किया था। यदि विधवा विवाह अधर्म और अशास्त्रीय होता, तो अर्जुन जो देवव्रत भीष्मके पौत्र, धर्मकी मर्यादा रखनेवाले श्रीकृष्णके सखा और धर्मावतार युधिष्ठिरके भ्राता थे, कदापि ऐसा करनेका साहस नहीं करता। इसके साथ ही साथ भगवान व्यास भी इरावानको अर्जुनका औरस पुत्र न लिखते।

दूसरा उदाहरण नल और दमयन्तीका है। इसपर शायद विधवा विवाहके विपक्षी यह कहें कि दमयन्तीके पुनः स्वयंवरकी घोषणा नलकी प्राप्तिकी एक चाल थी। यह तो ठीक ही है कि राजा भीमने स्वयंवर उसी उद्देश्यसे रचा था, किन्तु स्वयंवरका रचा जाना और अनेक राजाओंका यह जानते हुए कि यह दमयन्तीका दूसरा स्वयंवर है, सम्मिलित होना, इस बातको सिद्ध करता है कि उस समय भी विवाहिता स्त्रीके पुनर्विवाहकी प्रथा प्रचलित थी। यदि ऐसा करना धर्मके विरुद्ध होता तो राजा भीम ऐसे गर्हित और शास्त्रके विरुद्ध उपायको कभी काममें नहीं लाते और न राजा ऋतुपर्ण जैसे धर्मात्मा, जो मर्यादापुरुषोत्तम श्री रामचन्द्रजीके वंशज थे, इस स्वयंवरमें वर बननेकी आशासे आते।

तीसरा उदाहरण पतिव्रताओंमें शिरोमणि ताराका है, जिसने अङ्गद जैसे पुत्रके रहते हुए भी सुग्रीवके साथ विवाह किया। यदि पुनर्विवाह अवैध होता, तो क्या सुग्रीव आज हिन्दू समाजमें भक्त-शिरोमणि और तारा मुख्य पांच पतिव्रता स्त्रियोंमें एक मानी जाती?

सर्वसाधारण सर्वत्र अनुकरणशील होते हैं। उनकी दृष्टि सदा उदाहरणपर होती है। वे यह नहीं देखते कि हमको कहां जाना है और क्यों जाना है। लोगोंको जाता हुआ देखकर वे भी उनके पीछे हो लेते हैं। कोई कैसा ही अच्छा काम क्यों न हो, वे उसका अगुआ बनना नहीं चाहते। वे इस प्रकार कहते हैं—

न गणस्याग्रतो गच्छेत्सिद्धे कार्ये समं फलम्।
यदि कार्यविपत्तिः स्यान्मुखरस्तत्र हन्यते॥

प्रत्येक देशमें शिक्षित पुरुष ही समाजके आदर्श बने हैं, उन्होंने अपनी दृढ़ता, सहिष्णुता और आत्मत्यागसे गिरती हुई जातियों को ऊपर उठाया है। अतएव शिक्षितोंसे हमारी प्रार्थना है कि वे इस विषयपर अपना ध्यान आकृष्ट करें।

तोयामा—मौतका ठीकेदार

—:ऽः—

श्री पन्नालाल महतो 'हृदय'

हर व्यक्तिके जीनेका तरीका एक-सा नहीं होता। हर व्यक्तिके जीवनका एक ही ध्येय नहीं होता। यही वह विचित्रता है जिसकी बागडोर बूढ़े विधाताके हाथोंमें आज भी उसी शानके साथ सुशोभित है, जिस शानके साथ वह सृष्टिके प्रारम्भमें थी। मनुष्य संसारपर अधिकार कायम कर सका है। उसने विज्ञान द्वारा आकाश और पातालकी विचित्रताओंका रहस्य ढूंढ़ निकाला है, किन्तु वह अपने-आपको आज तक नहीं समझ पाया है। वह क्यों ऐसा करता है—यदि उससे पूछा जाय तो वह स्वयं नहीं बतला सकता कि मैं ऐसा क्यों करता हूं। देश और दुनियाके नामपर, संसारमें अन्याय और अत्याचारको सदा-सर्वदाके लिये कब्रमें दफना देनेके नामपर, ऐसे-ऐसे महाप्रभुओंके नाम आये हैं जिन्होंने अपने देशको, अपनी जातिको इसलिये युद्ध की भट्टीमें झोंक दिया है ताकि हमारा व्यापार चले, हमारे सौदे बिकें और हम [illegible]का सारा धन अपने पाकेटमें रख लें। [illegible] एक ऐसी मनोवृत्ति है जिसे आदर्शके मापदण्डसे नहीं मापा जा सकता। यह एक आवरणहीन सत्य है, जिसका नङ्गापन इतिहासके पृष्ठोंपर देखा जा चुका है और वर्तमानकी आंखोंमें जो क्रूरताके साथ चमक रहा है। दुनिया भले ही इसे बुरा कहे किन्तु अवसर आनेपर वह स्वयं वही करने लगती है जिसे वह हजार बार स्वयं बुरा कह चुकी है।

मनुष्य-जीवनसे यदि उसकी स्वाभाविक प्रवृत्तियोंको बाद दे दिया जाय तो फिर वह मनुष्य नहीं रह जाता। देवता भी उसे कैसे कहा जा सकता है जब कि प्रत्येक देवता अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियोंका ही गुलाम है। फिर हम मनुष्य तो देवताके बाद ही अपनी सत्ता मानते हैं। हिटलर मांस नहीं खाता, फिर भी नरसंहारका वह हामी है। [illegible] संसारकी स्वतन्त्रताके लिये श्वेत-[illegible]का परम पवित्र खून बहा रहे हैं फिर भारतको आजाद नहीं करना चाहते। [illegible] संसारमें शान्ति देखना चाहते हैं [illegible] भी वे फिलिपाइनको अशान्त ही रखना चाहते हैं। यही है मनुष्यकी वह स्वाभाविक-[illegible] जिसको मिटा देनेकी चेष्टा सृष्टिके प्रारम्भ ही की जा रही है, किन्तु उसको मिटानेवाले मिट गये पर वह आज भी अजर और अमर बनकर हमपर शासन कर रही है और हम गर्वके साथ उससे शोषित और [illegible] हो रहे हैं। तोयामा भी इन्हीं [illegible]का दास था। खून करना और [illegible] पैदा करते रहना उसके जीवनका [illegible] उद्देश्य था। एक दो दिन नहीं [illegible] चालीस साल तक वह जापानको [illegible] आतङ्कसे आतङ्कित किये रहा। उसके [illegible] उसके जितने भी विरोधी हुए—[illegible] उसने एक ही दवा दी—मौतकी [illegible] उसके विरोधी, जिसे वह [illegible] राहका कांटा समझता था—सदा-[illegible] लिये उसका पथ छोड़ देते थे। वह [illegible] प्यासा था, मौतका सौदागर था, [illegible] पोषक था और स्वयं था वह एक [illegible], दुर्बल कदका चार फटका जापानी, जिसकी जिन्दगीको सूखे पत्तोंकी तरह कुचलकर एक फूंकमें धूलकी तरह उड़ा दिया जा सकता था। फिर भी जापानकी सरकारसे लेकर जापानका बच्चा-बच्चा उसके नामसे कांप उठता था, थर्रा उठता था। सिंहके लिये एक 'बुलेट' काफी है किन्तु साहसके लिये......!

तोयामाका पूरा नाम मितसुरा तोयामा था। जापानका वह बिना ताजका बादशाह था। उसकी शक्ति, साहस और पराक्रमके सामने पूरा जापानी साम्राज्य अदबसे सिर झुकाता था और उसके उठे हुए वरद-हस्त-को देखकर वह सन्तोषकी सांस लेता था।

गीत

जिसका जीवन गंगा यमुना
सा निर्मल और पवित्र बना
जिसका जीवन अपने जीवन
पर भार बना बेकार बना।

जिसकी दुनिया आबाद नहीं
वह क्या जाने जीना क्या है
जिसकी आंखें कुछ झुकी नहीं
जाने क्या मधु पीना क्या है ?

जिसके जीवनकी आशाने
जाना है अस्त नहीं होना
जिसके जीवनको पग-पग पर
ठुकराता है जादू - टोना।

वह जान चुका हंसना रोना
वह जान चुका दुखको सहना
उसकी पीड़ा मुंह बन्द किये
उसका चुप रहना ही कहना।

—रामजी लाल महतो

अपने यौवन-कालमें ही तोयामाने अपने भावी-जीवनका कार्य-क्रम बना लिया था। उसके व्यक्तित्वसे प्रभावित होकर हजारों-हजार नवयुवक उसकी आज्ञाओंकी प्रतीक्षा किया करते थे। तोयामाकी आज्ञापर जूझ मरने-वाले जापानी नवयुवक आदर्श युवक माने जाते थे। तोयामाकी आज्ञा ईश्वरकी आज्ञासे भी पवित्र और निर्दोष मानी जाती थी। अधिकसे अधिक खून करना, देशको अपने नामसे आतङ्कित किये रहना तोयामा के जीवनका एकमात्र कर्त्तव्य था। तोयामा झुकना नहीं जानता था,टूट जाना पसंद करता था स्वदेश-भक्तिके नाम वह जनताको अपने लिये तैयारकरता था और इस रूपमेंवहजापानी साम्राज्यकी रूपरेखा अपने हाथोंसे तैयार करना चाहता था। नवयुवकोंकी भावुकतापर आदर्शवादका रङ्ग चढ़ाकर तोयामाने उन्हें अपना गुलाम बना लिया था। देशकी रीढ़ जिसके हाथमें हो, फिर उसे देशकी अन्य शक्तियोंकी क्या चिंता। मौतका सौदागर मौतकी चिन्ता नहीं करता, तलवारकी धार की परवाह नहीं करता, अन्याय और अत्याचारकी ओर दृष्टिपात नहीं करता। तोयामा मौतका सौदागर था जिसके सामने जिन्दगीके नन्हे-से बुलबुलेका कोई मूल्य नहीं था। दिखानेके लिये तोयामा नयी सभ्यता और नये आदर्शोंका हामी था और इसी बहाने वह अपनी क्रूर मनोवृत्तियोंको पूरा कर लिया करता था। हेडेकी तोजो जो जापान का अगुआ प्रधान मन्त्री था, तोयामाका विरोध करनेके नामपर कांप उठता था। १८९४ में चीन-जापान युद्ध और १९०४ में रूस-जापान युद्धकी स्थिति पैदा कर देने-वाला तोयामा ही था। अपने व्यापारकी उन्नतिके लिये, धनके आंकड़ोंकी संख्याको बढ़ानेके लिये तोयामाने जापानी मन्त्रिमंडल पर युद्ध करनेके लिये दबाव डाला और वह इस षड़यंत्रमें पूर्ण सफल हुआ। इन दो युद्धोंने तोयामाकी सम्पत्ति और व्यवसायको उन्नति की चरम सीमापर पहुंचा दिया। जापानके लाखों व्यक्ति युद्धमें काम आये, अरबों-खरबोंकी सम्पति स्वाहा हो गयी। किंतु तोयामाकी शक्ति और धन दिन-रात बढ़ने लगे। जापानने बहुत कुछ खोकर केवल तीन अक्षर 'विजय' प्राप्त किया; किन्तु तोयामाने जापानको, उसकी राजनीतिको और जापानकी उस शक्तिको अपना गुलाम बना लिया, जिसका नाम सुनकर सारे संसारपर शासन करनेका दावा करनेवाला यूरोप सहम उठता था। फिर तो तोयामाके आतङ्कका प्रभाव यहां तक बढ़ा कि जापानी डायटके सेक्रेटेरियटके बड़े-से-बड़े कर्मचारी तक सेक्रेटेरियटके बरामदेमें टहल नहीं पाते थे—इस कमरेसे उस कमरेमें जाते हुए किसी भी कर्मचारीको तोयामाके अनुचर छुरेसे मार दिया करते थे और पहरेदार भारतीय पुलिसोंकी तरह एबाउट टर्न लेकर खड़े रह जाते थे। किसका मजाल था जो तोयामाके अनुचरोंपर हाथ उठा दे, तोयामा के खिलाफ एक शब्द भी बोलदे। जापानकी जितनी भी गैरसरकारी संस्थाएं थीं, सभी आपसे आप टूट गयीं और जापानके हर शहर और हर गांवमें तोयामाके अनुचर हवाकी तरह घूमने लगे। तोयामाके विरुद्ध जो कोई भी कुछ बोलता पाया जाता, वह बेरहमीके साथ वहीं समाप्त कर दिया जाता।

प्रथम विश्व-युद्धके बाद जापानमें प्रजातंत्रात्मक शासन प्रणालीका नारा बुलन्द किया जाने लगा। जापानी सरकार अपनेको संसारकी सभ्यताके अनुरूप बना लेना चाहती थी। किन्तु तोयामा जापानको जापान रहने देना चाहता था। वह नहीं चाहता था कि हम संसारमें मिलकर संसार बन जायें। वह चाहता था—संसारसे अलग रहकर जापान—जापान बना रहे। शान्तिपूर्वक जब तोयामाके विचार कार्यरूपमें परिणत होनेसे दूर होते गये तो अचानक १९३० के एकदिन जापानके तत्कालीनप्रधानमंत्री हारा-गूची कार्यकालमें अपनी टेबिलपर काम करते समय मार डाले गये और ठीक उसके एक साल बाद जापानी सिपाहियोंने मंचूरिया पर धावा बोल दिया। १९३२ में मंचूरिया-युद्धको बन्द कर देनेकी चेष्टा करनेवाले जापानके प्रधानमन्त्री इनूकाई, अर्थमंत्री इनोई और मित्सुई हाउसके प्रधान बैरोन-तामूकादान गोलीसे उड़ा दिये गये। तोयामा इतनेसे ही संतुष्ट नहीं हुआ वरन सैनिक-वादके नामपर १९३९ में जापानने निरस्त्र चीनपर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण को अनुचित माननेवाले जापानी कैबिनेटके चार सदस्य गोलीसे उड़ा दिये गये और प्रधान मन्त्री धोखेसे बाल-बाल बच गये। प्रधानमन्त्रीके बजाय उनकी सूरत-शक्लसे मिलता-जुलता उनका साला तोयामाके आतङ्कवादी दलके बहादुरों द्वारा गोलीसे उड़ा दिया गया। जापानके उच्च न्यायालयमें जब इस कांडके विरुद्ध मुकदमा पेश हुआ तो न्यायाधीशनेसभी अभियुक्तोंको देशभक्त करार दे बेदाग छोड़ दिया। तोयामाका प्रताप सूर्य मध्याह्नमें चमक रहा था, फिर किसकीहिम्मत थी जो उसके विरुद्ध बोलनेका साहस करता।

तोयामा अपनी सफलताओंके कारण जापानका एकमात्र बेताजका बादशाह बन गया। वह जो चाहता था वही होता था। तोयामाकी आवाज जापानकी आवाज थी, तोयामाके विचार जापानके विचार थे और तोयामाकी इच्छा जापानकी इच्छा थी। इतना कुछ कर लेनेके बाद भी तोयामा के खूनकी प्यास न मिट सकी। मौतके सौदा-गरको किसीकी जिन्दगीकी परवाह नहीं। होताउसे संसारमें मौतका व्यापार करना था। तोयामाने खुलकर खेलनेके लिये एक योजनाका निर्माण किया। तोयामाकी इस योजनाका एक ही नारा था जो एक दिन सारे एशिया में फैल गया। वह नारा था—'एशिया एशियाइयोंका।' तोयामाका यह नारा काम कर गया। यह उसके जीवनका अन्तिम लक्ष्य था। तोयामाकी उम्र ९० के करीब पहुंच चुकी थी और वह सारे एशियाका धन अपने खाते में कर लेनेको व्याकुल हो रहा था। तोयामा ने जापानके तत्कालीन प्रधानमन्त्री कोनोई और गृह-मन्त्री हीरानुमाको इङ्गलैंड और अमेरिकाके विरुद्ध युद्ध-घोषणा करने की आज्ञा दी। गृह-मन्त्रीने तोयामाको ठंडे दिल समझाया कि जापानकी सारी शक्ति चीनके विरुद्ध लगी हुई है। अतः ऐसे समयमें युद्ध-घोषणा करना उचित नहीं है। तोयामा चोट खाये हुए सिंहकी तरह दहाड़ उठा और उसने तत्काल हीरानुमाको अपनी गोलीका

युद्धकालीन आविष्कार—बेली-पुल

——:*:——

वर्तमान महायुद्धमें बड़ीसे बड़ी नदीको भी बिना किसी विशेष कठिनाईके पार कर लिया गया है। शत्रु द्वारा पुलोंके ध्वस्त कर दियेजनेपर भी हम वेगवती नदियोंको पार कर गये हैं और उसका श्रेयब्रिटिश इञ्जीनियरों की उस प्रतिभाको है जिसके द्वारा प्रख्यात बेली नामक पुलोंका निर्माण हो सका है। हो सकता है कि भविष्यमें जहां नदियोंका पाट बहुत चौड़ा है और हजारों गजमें फैला हुआ है, वहां सेना उतारनेवाली नौकाओंका प्रयोग किया जाय, फिर भी कम चौड़ी नदियोंको पार करनेके लिये सम्भवतः बेली पुलोंका ही प्रयोग किया जाना अधिक उपयुक्त सिद्ध होगा। रूसी और अमेरिकन सेनाको इसका नक्शा दे दिया गया है।

युद्धके प्रारम्भमें वर्तमान सैनिक पुलोंपर से २० टनसे कुछ ही अधिक सामान ले जाया जा सकता था। पर भारी-भारी टैङ्कों और अन्य भीमकाय सैन्य सामग्रियोंके यातायात के लिये ऐसे नवीन पुलोंके आविष्कारकी आवश्यकता पड़ी, जिनसे विभिन्न भागोंको सरलतासे सैनिक स्थानान्तरित हो सकें।

ब्रिटेनके अन्धकारपूर्ण दिनोंमें, सन १९४० में प्रख्यात ब्रिटिश नागरिक इञ्जीनियर मि० डोनाल्ड कोल्मैन बेलीने एक ऐसे पुलका नक्शा तैयार किया, जिसकी सहायतासे आक्रमणात्मक कार्यवाहियां की जा सकें। केवल साढ़े चार मास बाद ही प्रयोगके रूपमें बनाये गये इस पुलपर परीक्षण आरम्भ हो गया।

बेली पुलकी विशेषताएं

बेली पुलकी ये विशेषताएं हैं कि उसके भाग अपेक्षाकृत हल्के हैं और एक दूसरेके स्थानपर प्रयोग किये जा सकते हैं। उसका एक विशेष भाग १० फुट लम्बा है और उसके १७ टुकड़े हैं। ९ अन्य भागोंसे इसका आधार बनाया जाता है। इस्पातकी एक कील द्वारा ही विभिन्न भागोंको सरलतासे जोड़ा जा सकता है। इसके भारीसेभारी भाग को केवल ३ आदमी ही उठा सकते हैं। आज ब्रिटेनके लाखों नर-नारी इन पुलोंके हजारों भागोंको तैयार कर रहे हैं।

सामानके वजनके अनुसार ही इस पुल की शक्तिमें भी वृद्धि की जा सकती है। यदि भारी सामान ले जाना हो तो पुलके दोनों ओर एक गाटरकी जगह तीन गाटर पास-पास रख दिये जाते हैं। गाटरोंको बेलनोंपर रखकर खाली जगहपर धकेल दिया जाता है और गाटरोंके वजनको सम्भालने और उन्हें टिकानेके लिये पुलके अगले भाग को ऊपर उठा लिया जाता है और पुलके दो भागोंको जोड़ दिया जाता है।

हल्के वजनके साज-सामानके लिये २०० फुट लंबाईके खाली स्थानपर पुल बनाया जा सकता है। अधिक लम्बाईके लिये पीपों का पुल बनाया जाता है। पीपोंके पुलमें प्रत्येक भाग नीचेसे कीलों द्वारा जोड़ दिया जाता है ;और ऊपरसे उन्हें खुला रखा जाता है। ताकि यदि किसी एक पीपेपर अधिक दबाव पड़े तो ऊपरके जड़ आपसमें मिल जायं और वजन समान रूपसे सारे पुलपर बंट जाय।

इसके निर्माणमें इतनी सरलता है कि यदि किसी भागको शत्रु नष्ट कर दे तो उसके स्थानपर पीपेका पुल बना दिया जा सकता है। हल्के यातायातके काम आने वाले पुलको बादमें अतिरिक्त भागोंको जोड़ कर भारी समानके लिये उपयुक्त बनाया जा सकता है।

सफरमैना दल इन पुलोंके विभिन्न भागोंको दिन और रात जोड़नेके अभ्यस्त हो गये हैं। अब तक सबसे बड़ा बेली पुल बर्मामें चिंदविन नदीपर बनाया गया। इटलीमें ढ़िगनी नदीके पार केवल ३६ घंटेमें ही एक पुल बनाया गया था।

उन पुलोंके द्वारा ही न्यूनिवि इटली, फ्रांस, बेल्जियम, हालैंड तथा बर्मामें महान सफलताएं प्राप्त की गयी हैं। सैन्याधिकारियोंने इनकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। युद्धोत्तर कालकी यातायात संबंधी सफलताओंको सुलझानेमें निश्चय ही ये महत्पूर्ण सिद्ध होंगे।

निशान बना दिया। हीराजुमा लोहेका वास्कट पहने हुए थे अतः वे मरनेसे बच गये और भाग खड़े हुए। प्रधानमन्त्री कानोईको तोयामाने बतलाया कि मेरी दूसरी गोली आपके इन्तजारमें है। प्रधानमन्त्री कोनोईने तत्काल ही पदत्याग कर दिया। तोयामाके खिलौने हिदेकी तोजोने मंत्रिमण्डलका गठन किया और सारे संसारने एक दिन आश्चर्यपूर्वक यह समाचार सुना कि पर्ल हार्बरपर जापानी हवाई जहाजोंने बगैर किसी सूचनाके निष्ठुर आक्रमण कर दिया। तबसे लेकर आजतक जापानके नौजवान देशके नामपर नहीं, वरन एक व्यक्ति की इच्छापर अपने प्राण उत्सर्ग कर रहे हैं। सारे संसारपर अपनी पाशविकताकी काली छाया डालनेवाला तोयामा अपनी तमाम इच्छाओंको पूर्ण करके भी जीवित रहनेकी इच्छाको पूर्ण नहीं कर सका। १९४४ ई० में ९० सालकी आयुमें कालके एक ही ठोकरने उसे उसकी लालसाओंके साथ उसे इस पारसे उस पार फेंक दिया।

बटनके शौकीन !

——::*::——

[लेखिका—श्रीमती कृष्णा देवी]

...बटन है तो एक अत्यन्त छोटी-सी वस्तु, ...इसकी उपयोगिताके सभी कायल हैं। ...रंक तक सभी किसी न किसी रूपमें ...अवश्य धारण करते हैं। राजाओंके ...सोने, हीरे, पन्ने आदि बहुमूल्य ...होते हैं और गरीबोंके महज ...सीप या कांचके। और कभी-कभी उसी ...जिसकी पोशाक बनी होती है। ...देशमें बटनका प्रचलन बहुत प्राचीन ...है। यही कारण है कि आजतक इसके ...प्रयुक्त किसी हिन्दी अथवा संस्कृत ...का पता नहीं चल सका है। कहते हैं ...चौदहवीं शताब्दीमें हमारे पूर्वपुरुषाओंने ...का उपयोग फ्रांसीसियोंसे सीखा था। ...बङ्गाली साहित्यकारोंने बटनपर अपनी ...की कलई देकर इसे 'बोताम' बना ...है अवश्य। हमारे पूर्वजोंकी ...कें कुछ ऐसी होती थीं, जिनमें वे बटन ...जगह कपड़ेकी बनी हुई गोल-गोल ...अथवा 'बन्द' (फीते) का उपयोग ...। आज भी अपनी प्राचीन परम्परा ...रक्षित रखनेवाले पुराने ख्यालके लोग ...पुरानी पोशाकोंका उपयोग करते हैं। ...विदेशी लोगोंके सम्पर्कमें आनेके बाद ...हमारे लिये वैसे ही अनिवार्य हो गया ...अन्य दैनिक उपयोगकी चीजें। बिना ...लगाये कोई पोशाक आज बन ही नहीं ...और यदि किसी सभ्य सभा-समितिमें ...खुले गलेका कुर्ता, कमीज अथवा कोट ...कर जायें तो आप सभ्यता-विहीन ...जायेंगे। आधुनिक सभ्यताके प्रशंसक ...का मखौल उड़ायेंगे और तरह-तरहकी ...आपको दी जायेंगी। जबतक आपका ...इतना ऊंचा न हो जायें कि मानव ...श्रद्धा-पात्र बन जाये, तबतक आप... ...के अनुकूल ही अपनी वेशभूषा ...होगी। उसके प्रतिकूल आचरण ...विरोध और उपहासका पात्र बनना ...।

...शौकीन महिला—पुराने सिक्कोंके बटन पहने हैं।

यद्यपि आज भी बटनोंकी किस्मों और कीमतोंका अनुमान लगाना मुश्किल है और उससे भी अधिक उसके शौकीनोंकापता तथापि सत्रहवीं शताब्दी यूरोपमें बटनोंकी शताब्दि कही जाये तो अत्युक्ति नहीं। सीप और कांचके ४-६ पैसेके बटनोंको अपने वक्षस्थल-पर सुशोभित करनेवाले साधारण भारतीयों को यह सुनकर शायद महान आश्चर्य होगा कि यूरोपमें एक ऐसा जमाना आया था, जब दो बटन ३६ सौ पौण्ड या ५२ हजार रुपयेको बिके थे। उन दिनों राजे-महराजे, सम्राट और सम्राज्ञियां तड़क-भड़क और शान-शौकतवाली पोशाकोंके लिये हीरे-जवाहरातके बटन खरीदती थीं और सच पूछा जाये तो बटन नहीं जवाहरात ही थे। अन्नके दाने-दानेके लिये तरसनेवाले प्रजा-जनकी दृष्टिके सामने ये बटन फजूलखर्चीका एक अक्षम्य उदाहरण उपस्थित करते थे, लेकिन राजाओंकी राजसी बुद्धिको समझाये कौन ?

फ्रांसके बादशाह चौदहवें लुईके सम्बन्ध में बटन-शौकीन होनेकी अनेक कहानियां प्रचलित हैं। इन कहानियोंका ऐतिहासिक आधार कितना दृढ़ है यह बतलाना तो मुश्किल है; लेकिन फ्रांसकी क्रान्तिमें यदि इन बटनोंपर की जानेवाली फजूलखर्चीका कुछ हाथ रहा हो, तो आश्चर्य नहीं। बटनका शौक लुई महाशयको इतना अधिक था कि लाखों पौंड उन्होंने उत्तमोत्तम बटन सेटोंके क्रय-संग्रहमें खर्च कर डाले थे। जिस प्रकार आजकलके वस्त्र-सङ्कटकालमें धोतियों और साड़ियोंका क्रय-विक्रय सनसनीदार बन रहा है—दाम बतलानेवाले हृदय-हीन व्यापारियोंके दिल और दिमागमें सनसनी भले ही न पैदा होती हो, लेकिन ग्राहकका दिमाग तो सन्न हो ही जाता है—उसी प्रकार चौदहवें लुईने १६८५ में बटनोंकी सन-सनीदार खरीद की थी। दो बटनोंका मूल्य उन्होंने ३६ सौ पौंड चुकाये थे। इसी प्रकार के ७५ बटनोंको खरीदनेमें उन्होंने २२ हजार पौण्डके खून कर डाले थे। इसे सोनेके सिक्कोंका खून—सनसनीदार खून नहीं कहा जायेगा तो और क्या कहा जायेगा ? एक दूसरे मौकेपर उन्होंने अपने वास्कोटके लिये ४ सौ पौंडके बटन खरीदे थे। ये कांच या सीपके नहीं, हीरेके बटन थे जो लुईके राजसी ठाट-बाटमें चार चांद तो लगा ही देते थे, और हष्टियोंसे बुरे भले ही हों।

आस्ट्रेलियन टर्फ क्लबके विख्यात जुआरी स्व० बारनी अलेनको भी बटनके मर्जने जोरोंसे दबा रखा था। रेसके मैदानमें पहुंचते ही जिस व्यक्तिकी ओर लाखों दर्शकों का ध्यान आकृष्ट न हो जाये, मिनिटोंमें लाखोंकी उसके बाजी मारनेसे फायदा क्या ? अलेनके दिमागमें यह विचार-धारा तीव्र वेगसे प्रवाहित हो रही थी। जिस पोशाक-को पहनकर वह रेसके मैदानमें जाता था, उसमें मुहरके बटन लगे थे।

आधुनिकतम ढङ्गके बटनोंका उपयोग करनेवाली नर्तकियां।

भारतके धन कुबेर हैदराबादके निजाम उसमान जब दरबार करने जाते हैं तो किम-खाबकी शेरवानी पहनते हैं, जिसमें मोतियों के बटन लगे होते हैं। यों निजामकी सम्पत्ति अरबों-खरबों की है, लेकिन वे अपना व्यक्ति-गत मासिक व्यय मात्र ६०) बतलाते हैं। फिर भी दरबार करनेकी शेरवानीमें लाखों रुपयोंके मोतियों और मणियोंके बटन लगाना फजूलखर्ची नहीं समझी जाती। यह है बटन-शौकका एक अनूठा उदाहरण। रजवाड़ों और धनपतियोंके बटन शौककी कहानियां यदि विस्तारपूर्वक लिखी जाये तो एक रोचक उपन्यास तैयार हो जा सकता है। लेकिन हमें तो उन गरीबों और मध्य श्रेणीके लोगोंकी भी खबर लेनी है, जो बटन के शौकीन नहीं, तो प्रेमी अवश्य हो गये हैं और बटनोंका ऐसा अजीबो गरीब उपयोग उनकी पोशाकोंमें दृष्टिगोचर होता है, जिसको देखकर हंसीका उद्रेक हुए बिना नहीं रहता। हमारे गांवमें एक मौनी बाबा रहते हैं, जो रहते हैं प्रायः अर्द्धनग्न-सा; लेकिन उनका कुर्ता है बिलकुल अजीब और जब कभी कुटी छोड़कर कुछ दिनोंके लिये बाहर जाते हैं तभी वह उनके दिव्य शरीर की शोभा बढ़ाता है। कुर्ता क्या है चिथड़ों का एक झूल समझिये। उनके विशालकाय शरीरपर वह उसी भांति लटकता रहता है जिस तरह हाथीके विराट शरीरपर झूल। उसमें कांचके बटनोंकी पंक्तियां इस प्रकार बनायी गयी हैं, कि दूरसे धारियां-सी मालूम होती हैं। हम यह तो नहीं बता सकतीं कि बाबाजीको उन बटन-पंक्तियोंसे क्यों विशेष आकर्षण है।

मोतियोंके बटन पहननेवाले निजाम उसमान

ऐसे मध्यश्रेणीके लोगोंकी संख्या भी कम नहीं है जो बटनके रूपमें पुराने बहुमूल्य सिक्कोंका उपयोग करते हैं, किसी शौकसे नहीं बल्कि उन्हें सुरक्षित रखनेके लिये। सिर्फ बाहरसे उसी प्रकारके कपड़ेसे ढके रहते हैं जिनसे कोट, कुर्ते बने होते और वे बटनका काम देते हैं। ऐसे उपयोगोंमें सुरक्षाकी मनोवृत्ति ही अधिक काम करती मालूम होती है।

यहां तक तो हमने बटनके शौकीनोंके चोचले बताये। अब जरा यह बता देना अप्रा-संगिक नहीं होगा कि बटनोंकी जातियां असंख्य, अगणित और अपार हैं। उनको बनानेके लिये व्यवहृत उपादान भी अपार हैं। बटनके साधारण उपादानोंको तो प्रायः सब लोग जानते होंगे। वे हैं कांच, सीप, विभिन्न धातुएं, हड्डी, सेलुल्वायड इत्यादि। उनके आकार-प्रकार भी विभिन्न हैं लेकिन प्रायः अधिकांश गोल होते हैं। किसी समय जर्मनीमें रक्तके बटन बनाये जाते थे। जान-वरोंके रक्तको जमाकर ठोस बना लिया जाता था और उससे विभिन्न प्रकारके रक्त बटन तैयार किये जाते थे। इन बटनोंका उपयोग उस समय परित्याग किया गया जब सेलुल्वायडके रंगबिरंगे बटन तैयार किये

रोचक कहानी—

नाविक

———**———

लेखक—श्री मदनमोहन मित्र 'विशारद'

'बेटा नरेन!'

बीड़ी छुलगाते हुए नरेनने उत्तर दिया—'हां दादा।'

'बेटा, आज मेलेका दिन है। आजका दिन बड़े भाग्यसे मिलता है। यदि गङ्गा-मैयाकी कृपा हुई तो तेरी दरिद्रता सदाके लिये दूर हो जायेगी! मेरा क्या? आज चल बसा या कल!'

'ऐसा क्यों कहते हो दादा! जो कहो करनेको तैयार हूं।' नरेनने बीड़ी फेंकते हुए कहा।

बुड्ढेने खांसते हुए छातीपर हाथ रख कहा—'हां बेटा, सच कह रहा हूं। हम नाविक हैं—मल्लाह हैं; पर हमारा मालिक मल्लाह पतवार नहीं उठा रहा है वरना यह जीवन-नैया पार न हो जाती? अनेक तूफान और बवण्डर सहकर जीवन-नौकाको सम्भाले रहा; पर अब वह जर्जरित हो गयी है। आज डूबी कल डूबी। इसीलिये कहता हूँ बेटा, उठा लो पतवार और छोड़ दो नैया! कलेवा तो कर लिया है न?'

'हां दादा, थोड़ा-सा अभी-अभी खाया है। अब यदि भूख लगी तो त्रिवेणी तटपर ही लेकर कुछ खा लूंगा।'

'अच्छा बेटा, जाओ—गङ्गा मैया तुम्हें अच्छा फल देंगी। मेरे हृदयका यह सच्चा उद्गार है।'

नरेनने बुड्ढेके पांव छुए और अपनी नैयापर आ बैठा। पलक मारते ही नौका भर गयी। एक बार—दो बार, नहीं चार बार नरेन घाटसे सङ्गम तक आया और गया। नरेनने कसम खा ली थी कि मैं बीसों बार यात्रियोंको लेकरघाटसे सङ्गमको जाऊंगा और नौकाकी सारी कीमत आज ही कमा लूंगा। पांचवीं बार वह आया। नौका भर गयी थी। पर एक यात्रीकी जगह खाली थी। नरेनने आवाज दी—'आइये, एक्सप्रेस छूट रही है। एक सवारी और चाहिये।' एक स्त्री आकर नौकामें बैठ गयी। नरेनने किराया मांगा। स्त्रीने आंचलसे पांच पैसे, जो पांच गांठोंमें बंधे थे, खोलकर नरेनके हाथमें रख दिया। नरेनने पैसे गिने और धौंस जमाते हुए कहा—'पांच आनेसे एक पाई कम न लूंगा।' स्त्रीने अपना पैसा वापस लिया और चुपचाप नौकासे उतर गयी, किन्तु एक-टक तृष्णापूर्ण आंखोंसे नरेनकी तरफ देखती रही। नरेनने भी उसकी ओर देखा, पर कुछ कह न सका। यात्रियोंके खीजनेपर नरेनने नौका खोल दी। यात्रियोंमेंसे एकने कहा—'अरे भई मल्लाह, ले ले उस गरीबनीको भी अपने साथ। तेरे सहारे वह भी गङ्गामें गोते लगायेगी, तुझे आशीर्वाद देगी। बड़ा पुण्य होगा।

नरेनने उत्तर दिया—'न महाराज, मुझे न चाहिये आशीर्वाद। इस तरह पुण्य कमाने लगूंगा तो नौका नहीं बिक जायेगी। यह त्रिवेणी तट (प्रयाग) है।'

नौका जलमें अठखेलियां करने लगी। पतवार छपाछप करके लहरोंमें डुबकियां लगाने लगे। नौकाके यात्री भगवत भजन करने लगे। सहसा किसीके गलेका मधुर स्वर नरेनके कानोंमें गूंज उठा—

'जा रही नौका अतलमें, थामले पतवार नाविक।'

नरेनके हाथसे पतवार छूट गया। उसने दृढ़ता पूर्वक पतवारको संभाला। नौका संगमपर पहुंची। यात्रियोंको अविलम्ब उतार कर नरेन फिर अपने स्थानको लौट आया। यात्रियोंका ध्यान नौकापर था, किन्तु नरेनका ध्यान उस गानेवालीकी ओर था उसकी नौका कब किनारे लगी—कब उसमें यात्री भर गये, इस बातका उसे पता न चला। सहसा एक यात्रीने कहा—'क्यों भई मल्लाह, सङ्गम न चलोगे क्या?'

नरेनका ध्यान भङ्ग हुआ। वह सजग होकर बोला—'आइये बैठिये।' इतनेमें ही उसे फिर सुनायी पड़ा, 'जा रही नौका अतलमें थाम ले पतवार नाविक।' नरेन साहस हीन-सा हो गया। उसने पतवार रख दिया और उठ खड़ा हुआ। यात्रियोंने कुछ पूछा, पर नरेन कुछ न सुन सका। उसने इतना ही कहा—

'माफ कीजिये, यह नौका न जायगी!' यात्री झुंझलाते हुए नौकासे उतर गये।

नरेनने नौका तो बांध दी और जा पहुंचा एक तख्तेके पास जहांपर एक स्त्री स्नान करके अपने फटे-चिथड़ेको सुखाते हुए तन्मयतापूर्वक गा रही थी। नरेन चुपचाप गाना सुनने लगा। स्त्रीने चिथड़ोंको सुखाया और उन्हें अपने शरीरपर लपेटकर एक ओर चल पड़ी। नरेन भी घाटसे उस स्त्रीके पीछे चल पड़ा। पर आगे बढ़कर जैसे ही उसने स्त्रीका चेहरा देखा, उसे एक जबर्दस्त घूंसा लगा। वह कुछ पूछना चाहता था, पर पूछ न सका। कारण, वह वही स्त्री थी, जिसे नरेनने अपनी नौकासे उतार दिया था। स्त्री गानेकी कड़ियोंको दुहराते हुए अपनी धुनमें चली गयी। और नरेन लुटा-सा—अनमना होकर घर लौट आया।

* * *

नरेन और इस स्त्रीकी प्रतिदिन भेंट होती। वे एक दूसरेको देखते, पर बोलनेका साहस न कर सकते थे। दिन आये और गये। नरेनने सोच लिया था कि अब यदि इसने नौकामें आना चाहा, तो वह मुफ्तमें ले जायगा। पर ऐसा अवसर ही न आया। एक दिन फिरसे मेलेकी धूम हुई। कुम्भका दूसरा स्नान था। त्रिवेणी क्षेत्रमें चांदी-सोना बरस रहा था। मल्लाहोंमें भी होड़ मची थी। नरेनकी आंखें आज यात्रियोंपर न होकर किसीकी खोजमें व्यस्त थी। किन्तु वह किसीसे उसके बारेमें पूछनेका साहस न कर सकता था और पूछे भी तो कैसे? किस नामसे? किस अधिकारसे? सहसा उसे एक बात ध्यानमें आयी। उसने एक तख्तेके पास जाकर एक बुड्ढी स्त्रीसे पूछा, जो ३-४ मूर्त्तियोंको रखे हुए बैठी थी। उसने कहा—

"माई जी, आप उस औरतको जानती हैं जो इसी तख्तेपर बैठकर गाया करती है—जा रही नौका अतलमें, थामले पतवार नाविक।'

उस बुड्ढी औरतने बिगड़ कर उत्तर दिया—'क्यों? तुझे उससे क्या मतलब?'

नरेनने विनम्र हो कहा—

'माई जी, मुझे उससे कुछ पाना है। वह एक दिन संगम गयी थी और आजके दिन पैसा देनेको कहा था।'

स्त्रीने उत्तर दिया—'अच्छा समझी, पर वह तो आज कल बीमार है।'

नरेन ने पूछा—'माता जी, क्या आप बतला सकेंगी कि वह कौन हैं और कहां रहती हैं?'

स्त्रीने कहना आरम्भ किया—

'अरे भइया, वह रीवा राज्यके एक बड़े रईसकी बेटी है। उसका नाम लता था। पर अब उसे लोग पगली कहते हैं।

उसका विवाह बहुत छुटपनमें हुआ था। विवाहके कुछ ही दिन बाद उसका पति आज ही कलके दिनोंमें गंगामें बह गया। होश संभालनेके समयसे ही वह बेचारी मिट्टी लपेटे—बाल बिखेरे—चिथड़ोंमें लिपटी हुई झूसीमें रहती है। यहां पर स्नान करने प्रतिदिन आती है, उसका दृढ़ विश्वास है कि एक-न-एक दिन गंगा मैया उसका सोहाग उसे लौटा देंगी। इस बार बीमार पड़ गयी है और मालूम होता है, बहुत बीमार पड़ गयी, नहीं तो यहां अवश्य आती। अच्छा है बेचारी मर भी जाय, तो कष्टसे छुटकारा तो पा जायेगी।'

* * *

आज जैसे ही नरेन भारी हृदय लेकर अपनी झोपड़ीमें घुसा, उसका हृदय कांप रहा था। बुड्ढेने खांसते हुए कहा—'आगये बेटा?'

'हां दादा।' नरेनने करुण [illegible] उत्तर दिया बुड्ढेने नरेनको पास [illegible] बुलाया और बोला—'बेटा अब [illegible] शरीर भारी हो रहा है। अब मेरे [illegible] आशा नहीं। जाओ वह सन्दूक लाओ।'

नरेनने उत्तर दिया—'कैसी [illegible] हो दादा।'

'सच कह रहा हूं बेटा। जा [illegible] सन्दूक ले आओ फिर मैं......' बु[illegible] न बोल सका और खांसने लगा [illegible] चुपचाप सन्दूक उठा लाया। बुड्ढेने [illegible] खोलकर कपड़ेकी तहसे एक डिब्बा [illegible] डिब्बेको खोलकर उसमेंसे एक [illegible] निकाली और नरेनके गलेमें डालकर [illegible]

'बेटा लो, यह तेरी धरोहर थी [illegible] आज सौंप रहा हूं।

नरेन हंसते हुए कहा—'दादा' आ[illegible] मजाक सूझ रहा है क्या? तावीज [illegible] पहनायी जाती है, या मुझ जैसे को!

बुड्ढेने सांस खींचकर कहा—[illegible] ही। पर बेटा तुम मेरे बच्चे नहीं हो।'

नरेनने खीज कर कहा—'दादा, [illegible] जानें कभी-कभी क्या बकने लगते हो।'

'नहीं बेटा, जाओ नहीं। आज [illegible] भी कह रहा हूं, अक्षरशः सत्य है। [illegible] तावीजका अपना इतिहास है। बेटा [illegible] सुनो, पर मुझसे घृणा न करना। आ[illegible] १९ वर्ष हुए मैंने तुम्हें झूंसीके [illegible] मृत अवस्थामें पाया था। मेरे कोई [illegible] न थी। अस्तु, मैं तुम्हें घर ले आया [illegible] स्त्रीने तुम्हारा पालन-पोषण [illegible] देखो ये तुम्हारे गहने और कपड़े हैं [illegible] तावीजको खोलकर देखो, तो तुम्हें [illegible] तस्वीरें मिलेंगी, जिनके नीचे कुछ [illegible] हुआ है।'

नरेनने उत्सुकतासे उसे बाहर ले[illegible] देखा। उसमें दो चित्र थे। जो वर-[illegible] प्रतीत होते थे। एक तस्वीर उसीसे [illegible] जुलती थी और दूसरी एक स्त्रीकी [illegible] तस्वीरोंके नीचे 'नवीन' और 'लता' [illegible] था। नरेनके सामने बुड्ढी स्त्रीकी [illegible] चित्रपटकी भांति आयी और फिर [illegible] हो गयी। उसने जिज्ञासु बनकर पूछा [illegible]

'हां दादा—फिर क्या हुआ?'

बुड्ढेने सांस खींचकर दम लेते हु[illegible] दिया—'फिर—फिर मैंने तुम्हें [illegible] खिलाया, बड़ा किया। अब मेरा [illegible] समय है, इसलिये मैंने उचित समझा [illegible] तुमसे सच बात बतला दूं। बस [illegible] बोला जाता बेटा। पानी...।'

नरेनने पानी दिया। बुड्ढेको [illegible] आयी और खांसते-खांसते आंखें उलट [illegible]

* * *

तीसरे दिन नरेन नौका लेकर [illegible] तटपर गया। कोई उसके कानमें [illegible] था, 'जा रही नौका अतलमें थामले [illegible] नाविक' और वह दृढ़ता पूर्वक पतवा[illegible] हुए था। त्रिवेणी तटपर आज कोई [illegible] स्वरमें उपर्युक्त कड़ियोंको गाता हु[illegible] सुना रहा है। नरेनने देखा, वह [illegible]

जाने लगे। शायद आप आश्चर्य करेंगे, लेकिन बात बिलकुल सत्य है। आजसे आधी शताब्दी पहले दूधके बटन बनते थे। दूधको सुखाकर एक ठोस पदार्थ बना लिया जाता था जिसको 'केसिन' कहते थे और केसिन से बटन मनमानी आकृतिके बना लिये जाते थे। इस प्रकारके बटनोंकी एक दिलचस्प कहानी है। एक बार लिवरपुलके गोदामोंमें दूधके बने बटनोंपर गणेशवाहनोंकी विशाल वाहिनियोंका ऐसा भीषण आक्रमण हुआ कि वहांकी बटन कम्पनियोंके होश ही ठिकाने लग गये।

फैशनके साथ-साथ बटन-निर्माण कलामें दिनो-दिन उन्नति होती जाती है और यह प्रगति कहां जाकर रुकेगी कोई नहीं बता सकता। युद्धोत्तर कालीन विश्वमें जब छल-शासिका साम्राज्य आयेगा, बटन-निर्माण-व्यवसाय एक आकर्षक उद्योग समझा जायेगा, इसमें सन्देह नहीं।

भारत अबभी अचेत है

गत ३ अप्रेल को विमूर दिवसके अवसर
वासी भीड़ की उपस्थिति का अनुमान
रंगटा हाउस, बम्बई, को महात्माजी
लिए प्रार्थनाका उपयुक्त स्थान चुना गया,
गत गांधी-जिन्ना वार्ता के समय
महात्माजी प्रार्थना किया करते थे। उपस्थित
की गतिविधि से उत्तेजित होकर
महात्माजी ने कहा कि यदि आप भारत के
न की बागडोर सम्भालना चाहते हैं तो
संयमी बनना पड़ेगा। यदि आप मुझसे
सुनना चाहते हैं तो कल भी मैं यहां
और जबतक बम्बईमें हूं, हर रोज
आता रहूंगा। आप मेरी सीखको कहां
हृदयङ्गम करते हैं और किस हद तक
स्वायत शासन के योग्य हैं उसे प्रत्यक्ष
देखनेका मुझे अवसर मिलेगा। प्रार्थना
महत्व और अनिवार्यता का उल्लेख करते
महात्माजी ने बताया कि मेरे लिये
को परित्याग करना मानो स्वातन्त्र्य
और सत्य तथा अहिंसा की प्राप्ति
प्रयत्नों से मुहमोंड़ना है। चारों तरफ
का बाजार गर्म है। शराबखोरी और
बाजी आम बात है। चालीस करोड़
गुलामी की जंजीरों से बन्धी है और
के महत्वको जरा भी नहीं समझती।
मैं इसीके लिये प्रार्थना करता आ
हूं। मैं ईश्वरको मानता हूं और अन्य
भी प्रार्थनाके औचित्यको स्वीकार
हैं क्योंकि वह मनुष्य मनुष्य नहीं
अपने श्रष्टा का गुणगान नहीं करता।

इस बार चुप न रह सका और
—'आइये इस नौका में।'
पर मेरे पास पैसे नहीं हैं, नाविक!'
'कोई चिन्ता नहीं, आइये बैठ जाइये।'
'नाविक! फिर नौकामें चढ़ाकर निरा श
है!'
लज्जित-सा हो गया। स्त्री नौका
लगाते पैरोंसे गयी, पर बैठते-बैठते
होने लगी। नरेनने पतवार रख
और उसे साहस देनेको बढ़ा। फिर स्त्री
कांपती हुई आवाजमें कहा—
नाविक, मुझे मत छुओ, मैं विधवा हूं
देरमें मैं स्वस्थ हो जाऊंगी।'
चुप न रह सका और बोला—
देवी, तुम विधवा नहीं, सधवा हो।
होशमें आओ। इस तावीजको
ो।'
चौंक पड़ी। आंखें खोल कर उसने
देखा—नवीनको देखा—गंगाको
की ओर देखा और खिलखिला।
उठी—'तो क्या गंगा माताने मेरी
सुन ली?'
नवीनने कहा—'हां लता, माताने
पुकार सुन ली। तुम्हारी तपस्या
हुई।'
अपने गलेकी तावीजको निकाला,
में टंकी हुई थी। और बोल उठी
मैं स्वप्न तो नहीं देख रही हूँ!
माताने सचमुच मेरा खोया सोहाग
दिया?'
एक बार नवीनको देखा और
में सिर रखकर बोली—
अब नौकासे न उतार देना—पत-
थामना।'

कौन क्या कहता है

चैंगकैशक फासिस्ट नहीं है

अमेरिका के चीन-स्थित राजदूत ब्रिगेडियर जनरल पैट्रिक ने वाशिंगटन में पत्रकारों के एक सम्मेलन में बताया है कि चीन में तबतक राजनीतिक एकीकरण असम्भव है जबतक साम्यवादियों की तरह हथियारबन्द दल मौजूद है। राष्ट्रीय सरकार की अवहेलना करने की इनमें प्रर्याप्त शक्ति है। आपने मार्शल चांगकैशक के सम्बन्ध कहा कि वे फासिस्ट नहीं है और इनकी इच्छा है कि जनहितैषी प्रतिनिधिक सरकार के हाथ अपनी सारी शक्ति सौंप दें। आपने चीनके प्रति रूसके रुख के सम्बन्ध में कहा कि गत मास्को सम्मेलन के बाद से यह पूर्ण सुधरा हुआ है पर मेरा अनुमान है कि भावी सनफ्रांसिस को सम्मेलन में इन दो देशों के प्रतिनिधियों में कुछ मतभेद रहेगा।

ब्रिटिश महिलाओंकी अपील

ब्रिटेनकी इकानवे महिलाओंने मि० चर्चिल, मि० एमरी और लार्ड वेवेलके पास भारतीय समस्याके समाधानके सम्बन्धमें एक अपील भेजी है उसमें कहा गया है कि भारतीय गतिरोध तथा राष्ट्रीय नेताओंकी नजरबन्दीका महत्व सुदूरपूर्वकी घटनाओं तथा भावी सनफ्रांसिस्को सम्मेलनके प्रकाशमें अत्यन्त बढ़ गया है। अखिल भारतीय महिला सम्मेलन द्वारा भेजीहुई जो खबरें मिली हैं उनसे यह स्पष्ट है कि भारतीय महिलाएं वर्तमान स्थिति तथा उसकी भावी प्रतिक्रियाके सम्बन्धमें बेतरह चिन्तित है। ऐसे महत्वपूर्ण अवसर पर जब युद्धोत्तरकालीन योजनाओंका निर्माण हो रहा है, हमें भारतीय महिलाओं की भावनाकी स्पष्ट अनुभूति होती है। अतः हम सम्राटकी सरकारसे उत्सुकतापूर्वक अपील करती हैं कि नेताओंको अविलम्ब रिहा कर दिया जाय ताकि वर्तमान गतिरोधका अन्त करनेके लिये उन्हें स्वतन्त्ररूपसे परामर्श करनेका अवसर मिले।

टण्डनजीके विचार

यू० पी० असेम्बलीके स्पीकर बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डनने ऐसोसियेटेड प्रेससे मुलाकात होनेपर समाचार पत्रोंमें प्रकाशित उन समाचारोंका खण्डन किया जिनमें कहा गया है कि यू० पी० में शीघ्र ही कांग्रेस मन्त्रिमण्डलकी स्थापना होने जा रही है। आपने कहा कि ये खबरें बिलकुल काल्पनिक हैं जिनमें सत्य-लेशमात्र भी का अंश नहीं। यह पूछनेपर कि क्या निकट भविष्यमें यू० पी० कांग्रेस असेम्बली पार्टीकी बैठक होनेकी सम्भावना है। आपने कहा है कि मुझे इसकी कोई आवश्यता नहीं प्रतीत होती और यदि इस तरहकी कोई जरूरत होगी तो असेम्बली पार्टीके नेता पंतजी, जो सौभाग्यसे जेलके बाहर आ गये हैं, इस सम्बन्धमें आवश्यक कार्रवाई करेंगे। मि० जिन्नाके ताजा वक्तव्यके सम्बन्धमें टण्डनजी ने कहा कि मुझे इससे कोई आश्चर्य नहीं होता। मि० जिन्नाका वक्तव्य उन्हींके अनुरूप है और जनता अच्छी तरह जानती हैं, इन्हें कौन-सा स्थान देना चाहिये।

उपनिवेश स्वतन्त्र हों

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने अपने एक भाषणके सिलसिलेमें कहा है कि यदि उपनिवेशोंकी समस्याका समाधान नहीं किया गया तो प्रशान्त महासागरमें अब एक तीसरे महायुद्धकी नींव डाली जायगी। आपने आगे चलकर बताया कि आधुनिक इतिहासमें सर्वप्रथम उपनिवेशोंपर विरोधी शक्तियोंका अधिकार स्थापित हुआ है। अतः ये उपनिवेश असन्तुष्ट होते जा रहे हैं। जापानी पंजेसे मुक्त किये जानेके बाद वे आसानीसे अपनी पुरानी विवशताकी स्थिति मंजूर नहीं कर लेंगे, बल्कि वे स्वतन्त्रताकी मांग करेंगे। इस तरह शासकोंके परिवर्तनसे वे ऊब चुके। जब तक युद्धके दरम्यान उत्पन्न कुछ नैतिक पहलुओंको कार्यरूपमें परिवर्तित नहीं किया जाता, विश्वकी एक तिहाई जनता के लिये स्वतन्त्रता असत्य और दुखांत नाटक सदृश ही रहेगी। सनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें भारतका प्रतिनिधित्व करनेवाले व्यक्तियोंके सम्बन्धमें आपने कहा कि भारतके सच्चे प्रतिनिधियोंके बदले भारतकी ओरसे बोलने के लिये ब्रिटिश उपाधिधारी मनोनीत किये गये हैं। भारतका वोट उन लोगोंके हाथोंमें है जो ब्रिटिश प्रभुओंकी आज्ञाके अनुसार उसका प्रयोग करेंगे। अन्तमें आपने कहा हैं कि भारतकी समस्या विश्वकी समस्याका अङ्ग है और उसे उचित स्थान मिलना चाहिये ताकि वह विश्वको अपनी सांस्कृति और विद्वताका दान दे सके।

हम दृष्टिकोण बदलें

अखिल भारतीय गीता मिशनके अध्यक्ष स्वामी अमरानन्द सरस्वती द्वारा आयोजित विश्वधर्म सम्मेलनमें भाषण देते हुए काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके वायस चांसलर सर एस० राधाकृष्णने कहा कि संसार जिन त्रुटियोंसे पीड़ित है, उनका एकमात्र उपचार है धर्मको नये दृष्टिकोणसे देखना। हमारी सभ्यता विनाशके तटपर पहुंच चुकी है। आज किसी युद्धमें पराजयके कारण नहीं, बल्कि हमारे हितकी दुहाई देकर ही भारतके टुकड़े-टुकड़े करनेका प्रस्ताव पेश किया जा रहा है। इसका कारण यह है कि धर्मके उचित अर्थको समझनेमें हम असमर्थ रहे। हमें अविश्वसनीय सिद्धान्त, अवैज्ञानिक सत्य तथा अनैतिहासिक विचारोंको स्वीकार करनेका उपदेश दिया गया। दूसरे शब्दोंमें यों कहा जाय कि एक दूसरेसे घृणा करनेकी शिक्षा देनेवाले तो अनेक मजहब मिले पर पारस्परिक प्रेमकी भावनाको जाग्रत करनेवाले एक भी नहीं। संसार अब भी समझले कि विभिन्न धर्मोंका सार सत्य और प्रेम ही है और इसी परिवर्तित दृष्टिकोणसे हमारा कल्याण है।

श्री के० एम० मुंशीका सुझाव

बम्बईकी कांग्रेसी वजारतके भूतपूर्व मंत्री श्री के० एम० मुन्शीने एसोसियेटेड प्रेससे अपनी मुलाकातमें यह आशा प्रकट की है कि ब्रिटिश सरकार शीघ्र ही राजनीतिक गतिरोध अन्त करने जा रही है। आपका मत है कि गतिरोध दूर करनेके सिलसिलेमें सन् १९३५ के विधानको सर्वप्रथम कार्यान्वित करना ही एक मात्र मार्ग है जो वर्तमान अवस्थामें सुलभ है। श्री मुंशीने आगे कहा है कि जर्मनीका सङ्गठित प्रतिरोध खतम हो चला है और निकट भविष्यमें ही भारत जापान-विरोधी संग्रामका विशाल अड्डा बन जायगा। इस परिस्थितिने ब्रिटेनको भारतीय गतिरोधका अन्त कर राष्ट्रीय भारतके साथ सहयोगका नूतन अध्याय प्रारम्भ करनेका अवसर प्रदान किया है। आपने दृढ़ निश्चयके साथ कहा कि जबतक स्वतन्त्र और संतुष्ट भारत ब्रिटेनके साथ सहयोग नहीं करता, ब्रिटेन एशियाके अन्तर्गत न तो अपनी स्थिति दृढ़कर सकेगा और न उसका अन्तर्राष्ट्रीय मञ्चपर विशेष महत्व ही रहेगा। बङ्गालका हवाला देते हुए आपने बताया कि सरकार अब प्रतिक्रियावादी मन्त्रिमण्डलको अपनी सहायताके बल जिन्दा रखना नहीं चाहती बल्कि वह चाहती है कि प्रान्तीयविधान अपनी स्वाभाविक गति अख्तियार करे।

पाकिस्तान खतरेमें

अखिल भारतीय मुस्लिम लीगके अध्यक्ष मि० जिन्नाने समाचार पत्रोंमें प्रकाशित अपने एक वक्तव्यमें लार्ड वावेलको भेजी गयी सप्रू समझौता कमेटीके केवलका उल्लेख करते हुए कहा है कि सरतेज बहादुर सप्रू और उनके सहयोगी कभी 'सर्वदल सम्मेलन' और कभी "निर्दल नेता सम्मेलन" का जामा पहनते हुए दीख पड़े हैं और अब 'समझौता समिति' के रूपमें नजर आ रहे हैं। वे सिर्फ कांग्रेसके हथकण्डे हैं और मि० गांधीके सुरमें सुर मिलाते रहे हैं। उनका यह गर्वीला तथा पाक दावा कि वे निष्पक्ष तथा स्वतन्त्र विचार रखनेवाले हैं, बिल्कुल मिथ्या है। उनकी पुरानी करतूतें और लार्ड वावेलके पास भेजा गया उनका मौजूदा प्रस्ताव इसका पक्का सबूत है। उसमें दो किस्मके सुझाव पेश किये गये हैं। उनमेंसे यदि एक भी कबूल कर लिया गया तो मुसलमानोंकी ख्वाहिश और पाकिस्तानकी कौमी मांग इन शतरंजी चालोंके कारण नेस्तनाबूत हो जायगी। मि० जिन्नाने इस बातपर बड़ा जोर डाला है कि यदि अखण्ड भारतको बुनियाद मानकर मौजूदा कानून-कायदमें कोई हेर-फेर किया गया तो मुस्लिम भारत उसे कभी भी कबूल नहीं कर सकता। भावी विधानके तैयार करनेके पहले यह जरूरी है कि पाकिस्तानके प्रश्नको हलकर लिया जाय। इसके खिलाफ कोई भी कार्रवाई भारतके दस करोड़ मुसलमानोंकी कुर्बानी और उनके साथ दगाबाजी करनेके बाद ही मुमकिन है। आपने ऐसी आशा प्रगट की है कि ब्रिटिश सरकार मुसलमानोंकी रक्षाके लिये किये गये वायदोंको निबाहेगी और अगर उसने नहीं निभाया तो जो जहरीली स्थिति पैदा होगी उसके लिये सरकारके सिवा और कोई जिम्मेवार न होगा।

युद्धका सिंहावलोकन

यूरोपमें जर्मनीकी लड़ाई पूर्वी और पश्चिमी दोनों युद्ध क्षेत्रोंपर पर्याप्त प्रचंडता से चल रही है। यद्यपि पूर्वमें जर्मनीकी राजधानी बर्लिनपर सीधा धावा अभीतक नहीं बोला गया है, तथापि हिटलरके गढ़ आस्ट्रियाकी राजधानी वायना तक रूसी सेना बड़ी तेजीसे बढ़ गयी है और अब वह शहर चारों ओरसे घेर लिया गया है। परन्तु इसीसे यह समझ बैठना हर्गिज ठीक न होगा कि वायनाका पतन आज-ही-कलमें हुआ जा रहा है। प्रसिद्ध रूसीपत्र 'प्रवदा' में एक सैनिक लेखकने लिखा है कि, "जर्मनीने पूर्वी युद्धक्षेत्रकी इस लड़ाईमें अपनी बची हुई रिजर्व सेनाको जुटा दिया है।" जब हम यह सोचते हैं कि हंगरीकी राजधानी बुडापेस्ट छः सप्ताह और ग्लोगाऊ सात सप्ताहतक लड़ता रहा, तबतो वायनाकी लड़ाई करनेमें मार्शल टालबुखिनको यदि महीनों लग जायें, तो कुछ आश्चर्य नहीं। कारण, यह एक प्रकट रहस्य है कि हिटलरने वायनाकी प्राणपणसे रक्षा करनेके लिए भारीसे भारी तैयारियां बहुत पहलेसे कर रखी हैं और रूसी भी उसपर विजय प्राप्त करना लोहेका चना चबाने समान समझते आये हैं। परन्तु रूसी सेना भी वैसेही दृढ़ निश्चयके साथ वायनामें पिल पड़ी है और उसकी गलियोंमें घमासान मच रहा हैं। ७ अप्रैलको वहांसे जो रिपोर्ट मास्को पहुंची हैं उनमें यह कहा गया है कि, "आगे बढ़ने वाली सोवियट सेनाएं देखरही हैं कि शहरकी एक एक इमारतको, किलेके रूपमें बदल दिया गया है।" जर्मन सेनापतिने तो इस सुरम्य नगरको हत्यागृह बना देनेका दृढ़ निश्चय प्रकट कर दिया है। इसीसे जर्मन नयी-नयी सेनाएं लामकी रक्षाके लिये झोंके दे रहे हैं और वायना रेडियोने वहांकी जनतासे अन्तिम रूपमें डटकर मोर्चा लेनेकी अपील की है। नगरके केन्द्रसे तीन मील दूरके मोएडलिंग स्थानपर एक-एक घरके लिये जर्मनों और रूसियोंके बीच विकराल संग्राम छिड़ा हुआ हुआ है। उधर मार्शल जुकोवके केन्द्रीय मोर्चेपर ओडर नदीके मध्यवर्ती भाग और बर्लिनके बीच भारी आकाश युद्ध हो रहे हैं। जर्मनोंने राजधानी बर्लिनकी रक्षाके लिये उसके चारों ओर जो हवाई जहाजोंके अड्डोंका जाल बिछा रखा है, वहां उन्होंने एक बहुत बड़ी संख्यामें हवाई जहाज एकत्र कर रखे हैं और वे सोवियट सेनाओंपर बमबाजी करनेके प्रयत्न करते रहे हैं।

पश्चिमी युद्धमोर्चेपर समूचे युद्ध क्षेत्रपर मित्र सेनाओंकी प्रगति जारी तो है, पर मार्केकी कोई बात इस सप्ताह नहीं हुई है। २ अप्रेलको 'मैंचेस्टर गार्जियन' के सैनिक सम्वाददाताने लिखा था कि हमारी रेल लाइनें राइन नदीके पश्चिममें है और जबतक वे वहीं रहेंगी भी, जब तक रेलके पुल उस नदीपर न बन जायेंगे। पर जेनरल पैटनके अग्रगामी दस्ते राइन नदीसे एक सौ तीस मीलसे भी आगे पहुंच चुके हैं। इतनी दूरी सड़कसे पार करना बहुत है। पश्चिमी जर्मनी पर कब्जा जमाना मोटरकी यात्रा नहीं है, यदि कोई प्रतिरोध न हो तो भी। मोटर, लोरियां और टैंक तो मिलनेवाले पेट्रोलके परिमाणके अनुसार ही आगे बढ़ सकेंगे और पेट्रोल अग्रगामी दस्तोंके पास हवाई जहाजों द्वारा पहुंचाना पड़ रहा है, यह बात सदा ध्यानमें रखनी चाहिये। फिर, यद्यपि कितने ही स्थानोंमें जर्मन प्रतिरोध समाप्त हो चुका है, तो भी सर्वत्र यही अवस्था नहीं है और कुछ भागोंमें अब भी गहरी लड़ाई हो रही है। जर्मन सेनाएं टुकड़ोंमें बंट रही है जरूर, लेकिन उनका सभी सम्बन्ध नहीं रह गया है और जहां कोई स्थानिक कमांडर सेना एकत्र कर डट जाता है, उसके प्रतिरोध जबर्दस्त होता है। जर्मनीका सुप्रसिद्ध औद्योगिक भू-भाग रूहर चारो ओरसे घेर लिया गया है पर उसके भीतर काफी सेना है जो प्रतिरोध काफी समय तक जारी रख सकती है। उत्तरी हालैंडका सम्बन्ध जर्मनीसे न रहनेपर भी वहां जो एक लाख जर्मन जवान हैं, वे बहुत समय तक लड़ाई जारी रख सकते हैं। इनका कड़ा प्रतिरोध अब तक जारी है। 'टाइमन' के सैनिक सम्वाददाताने ६ अप्रेलकी अपनी रिपोर्टमें कहा है कि, हालैंडमें क्या हो जा सकता है, यह अभीसे कहना सरल नहीं है। यद्यपि कनाडियन सम्वाददाता राए मुनरोने तो हालैण्डका उद्धार एक या दो सप्ताहमें होजानेकी बात कही है, किन्तु वहांपर जर्मनीकी निर्बलताका कोई लक्षण प्रकट नहीं हुआ है। देशमें जलमार्गोंकी कठिनाइयां अपार हैं और जर्मन उस भूभागमें बाढ़का विस्तार बहुत अधिक कर सकते हैं। जो हो, जेनरल पैटनकी सेना ऐसे स्थानतक पहुंच चुकी है, जहांसे बर्लिन कुल एक सौ तीस मील रह जाता है, लीपजिग पचहत्तर मील और रूसी जेनरल मार्शल कोनीवकी नीसे नदीकी अगली पांत कुछ ही मील और अधिक।

वैसे मित्रसेनाओंके प्रधान नायक जेनरल आइजेन हावरने कहा है कि युद्धका अन्त अधिक दूर नहीं है और स्वयं हिमलरके पत्र 'डास स्वार्ज कोर्स' ने भी ९ अप्रैलके अपने अग्रलेखमें यह लिखा है कि, 'युद्ध अब ऐसी अवस्थामें पहुंच गया है, जहांसे जर्मनीका पूर्ण पतन गिने हुए दिनों या सप्ताहोंमें ही हो जाता दिखाई पड़ता है।' परन्तु यह जर्मन पत्र लिखता है कि, "हम ऐसे मार्केकी अवस्थामें पहुंच गये हैं कि यह स्वीकार करने को लाचार होना पड़ता है कि हमें सेना-द्वारा हरा देना संभव है, किन्तु हमारा विश्वास अपने पक्षके धर्मपूर्ण होनेमें तनिक भी नहीं बदला है।" देखते हैं कि वैसे ही अन्त तक लड़ाई जारी रखनेके जर्मनोंके निश्चयमें भी कोई शिथिलता नहीं आयी है। गोएबेल्सने अपने पत्र 'डास रीख' के साप्ताहिक लेखमें लिखा है कि, "जर्मनीकी प्रधान नीति इतने लम्बे अर्से तक डटे रहनेकी होनी चाहिये जबतक कि वर्तमान समस्या मित्रराष्ट्रोंके लिये समाधानके अयोग्य न हो जाये। वर्तमान समस्या चाहे ऐसी ही बनी रहे या और बढ़ जाये, यह अन्तमें हमारे शत्रुओंको ले डूबेगी, बशर्ते कि हम उन्हें ऐसा अवसर न दें कि वे जर्मनीको लूटके मालकी तरह आपसमें बांटनेके द्वारा वे अपने मतभेदोंको थोड़ी देरके लिये भुला दें।... हमें सब प्रकारकी हानियां सहकर अन्ततक प्रतिरोध जारी रखना चाहिये।" जर्मनोंके ऐसे ही निश्चयके अनुसार कई दिन पहले जर्मन रेडियोने नाजी पार्टीके प्रधान कार्यालयके अध्यक्षकी ओरसे जर्मन जनताके नाम यह घोषणाकी थी कि, किसी भी जर्मनको स्वयं हिटलरकी आज्ञा मिले बिना अपनी नौकरी छोड़ने या अपना घर खाली कर देनेकी इजाजत नहीं है। वह घोषणा इस आशयकी थी—"१९१८ ई० के पतनके पश्चात नेशनल जर्मनोंने अपने अधिकारियों लिये लड़नेको अपना जीवन संकल्प कर दिया। अब प्रधान परीक्षाका समय आ उपस्थित हुआ है। अबसे आगेके लिये यह हुक्म है—जर्मनीके भीतर घुस आनेवाले शत्रुसे अत्यन्त दृढ़ निश्चय और निष्ठुरताके साथ पवित्र लड़ाई जारी रखा जाये। प्रदेशों के नाजी नेता गौलीटर और जिलोंके नेता क्रीजलीडर तथा अन्य राजनीतिक अथवा दूसरे दलोंके नेता अपनी अपनी सीमाके भीतर अवश्य लड़ें। 'करो या मरो। अब तो बस एक यही नारा हमारा होना चाहिये 'कार्य वा साधयापि शरीरंवा पातयामि'—विजय प्राप्त करगे या मर मिटेंगे।' तब इस प्रकारका संकल्प करनेवालोंसे मित्रराष्ट्र कभी आत्मसमर्पणकी आशा नहीं करते तो इसमें आश्चर्य ही क्या है?

एक ओर तो जर्मन मित्र राष्ट्रोंमें फूट पैदा होनेके दिनकी प्रतीक्षामें इस तरह लड़ाई जारी रखनेको तुले हैं और दूसरी ओर मित्र राष्ट्रोंमें फिरसे मतभेद काफी चिन्ताजनक रूपमें प्रकट हो रहे हैं। रूसने अपने मित्रोंसे यह प्रस्ताव किया कि पोलैण्डकी लुबलिन-वाली सरकारको भी सैनफ्रांसिस्को कान-फरेंसके लिये नियन्त्रित करना चाहिये और उनसे फौरन इसका जवाब मांगा है। ब्रिटेन और अमेरिकाने तुरन्त ही उसका प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया। भीतर ही भीतर मामलेको सुलझानेके लिये स्टेलिन, चर्चिल और रूजवेल्टके बीच चर्चा चल रही है, किंतु जब तक स्टेलिनकी बात मान लेनेको वे याल्टा कानफरेंसकी भांति फिर तैयार हो जायें, यह किसी भी अवस्थामें न सुलझ सकेगी। दक्षिण अमेरिकाके शायद अन्तिम राज्य अर्जेण्टाइनाने अभी कई दिन पहले धुरी राज्योंके विरुद्ध युद्धकी घोषणा की है। रूस उसे फेसिस्टोंका सहायक समझता है और अभी कुछ ही दिनों पहले तक यहां तक चर्चा थी कि हिटलर तथा अन्य नाजी नेता भागकर वहीं शरण लेंगे। इसीसे रूसी पत्र 'रेड स्टार' ने साफ लिख दिया है कि यदि अर्जेण्टाइनाको सैनफ्रांसिस्को कान-फरेंसमें स्थान दिया गया तो रूस उनका बायकाट करेगा। वैसे ऐसा प्रसङ्ग न ... अवस्थामें भी रूसने तो वाशिंगटन ... अपने राजदूतके नेतृत्वमें ही सोवियट ... निधि दल सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसमें ... का निश्चय किया है और परराष्ट्र ... मो० मोलोटोव या अन्य कोई ... अधिकारी वहां नहीं जा रहा है। खासकर अमेरिकामें यह सन्देह किया ... है कि रूस इस कानफरेंसको कोई महत्व नहीं दे रहा है। अन्य कई ... भी रूसका मतभेद उसके पश्चिमी ... जो प्रकट हुआ है, उससे जर्मनोंको ... फूट पड़नेकी संभावनासे प्रसन्नता होनी ... भाविक है। परंतु इसी समय रूसने जा... को वर्तमान तटस्थताकी संधिका ... करनेकी नोटिस दे दी है उससे ... मित्रराष्ट्रोंको रूसके सम्बन्धमें जो सं... उनमें कमी आ गयी है तोभी इस ... ही कोई परिणाम निकाल बैठना ठीक ... क्योंकि रूस—जापानकी सन्धि इसके ... भी अभी एक वर्ष तक बनीही ... पूर्वमें रूसके भी अनेक स्वार्थ हैं। ... जापानको नोटिस देनेसे वह उसके ... ही उसके शत्रुओं—ब्रिटेन और अमेरिका ... भी उनके सम्बन्धमें सुभीतेके साथ मोल ... कर सकेगा। कहा जाता है कि रूस-जापान ... विरुद्ध लड़ाई अवश्य छेड़ देगा, यदि ... उसकी सलाहके अनुसार आत्मसमर्पण ... देनेको व तैयार होगा। तब क्या ... ऐसा मूर्ख है, जो अपने साथ अभीतक ... सम्बन्ध बनाये रखने वाले रूसके मेलसे ... अधिक लाभ उठानेका प्रयत्न न करे ... यदि वह रूसके कहनेसे या स्वयं ही ... बीचमें डालकर लड़ाईका अन्त करा... चाहेगा, तो थोड़ीही कीमतमें बहुत ... रह सकता है, यह सभी सोच सकते ... उधर जर्मनीकी ओरसे पश्चिमी मित्रराष्ट्रों ... सन्धि करके पूर्वमें रूसके लड़ते रह... स्वतन्त्रता बनाये रखनेके लिए प्रयत्न होने ... इतनी अफवाहें उड़ा करती है कि कभी ... दिमाग चकराने लगता है और कुछ ... सूझता कि आगेचलकर क्या होनेवाला ... पूर्वी युद्धक्षेत्र अपनी पूरी सेना बनाये र... और पश्चिममें इसतरह स्थानपर ... खाली करते जानेकी जो नीति हिटलर ... लारहा है, वह भी परले सिरेकी ... और भेदनीतिका ही परिणाम है। ... द्वारा वह रूसको यह सन्देह करनेके ... तैयार करना चाहता है कि उसके पश्चिमी ... मित्रोंने जर्मनीसे कोई भीतरी समझौता ... रखा है। जब भेदनीतिका बाजार ... गरम है तब सोवियट रूसकी स्थिति ... विचित्र है उसके सम्बन्धमें तरह ... कल्पनाएं उठनी स्वभाविक है।

———

स्वदेश-वार्ता

...न्द्र बाबूसे मिलनेकी आज्ञा

ऐसी खबर है कि सरकारने भूतपूर्व अर्थ ... बाबू अनुग्रह नारायण सिंहको राजेन्द्र ...से मिलनेकी इजाजत दे दी है। ९ अप्रैल ... अनुग्रह बाबू उनसे जेलमें मुलाकात ...गी।

...जीसे टेलीफोनपर बातचीत

एसोसियेटेड प्रेसके एक समाचारमें कहा ...है कि गत ४ अप्रैलको श्री भूलाभाई ...ने गांधीजीसे टेलीफोनपर बातचीत की।

...शरतचन्द्र बोसका स्वास्थ्य

ऐसा समाचार मिला है कि श्री शरत-...बोस, जो इन दिनों नजरबन्द हैं, गत ...के अप्रैलसे ही ज्वरसे पीड़ित हैं। ...पुत्रके पास भेजे गये अपने एक पत्रमें ...ने लिखा है कि इधर कुछ दिनोंसे ज्वर ...प्रमाण अधिक रहा करता है।

...र प्रश्नोत्तरीके समय गत शुक्रवारको ...एस० के० चौधरीको केन्द्रीय असे-...में सूचित किया गया है कि श्री शरत-...बोस कौन्नूरमें नजरबन्द हैं और उनका ...स्थ्य संतोषजनक है। यह पूछे जानेपर ...या सरकार उन्हें बङ्गालके किसी जेलमें ...न्तरित करनेके औचित्यपर विचार करता ...हीं, या इस आशयका कोई प्रति-...त्र बङ्गाल सरकारकी ओरसे किया ...है, सरकारी वक्ताने नकारात्मक उत्तर ...।

नेताओंकी रिहाई

केन्द्रीय असेम्बलीमें इस बातकी जोरदार ...है कि सभी राजनीतिक नेता शीघ्रही ...येंगे। सरतेज बहादुर सप्रूका यह ...विषयमें सेनफ्रांसिस्कोके सम्मेलनके पूर्व ...ओंकी रिहाईका उल्लेख है, संभवतः ...शंका आधार है। पर संयमी प्रेक्षक ...हाईकी आशा नहीं करते।

...रपत्रोंके दफ्तरकी तलाशी

...किया विभागका पुलिसने बुधवार, ...अप्रैलको भारत रक्षा कानूनकी १२६ ...धाराके अन्तर्गत 'अमृतबाजार पत्रिका' ...स्तान स्टैण्डर्ड,' 'नेशनलिस्ट' और ...बाजार पत्रिका' के दफ्तरकी तलाशी ... राष्ट्रीय सप्ताहपर श्रीमती लावण्य ...का हस्त लिखित वक्तव्य तथा कांग्रेस ...की सहायक कोषके लिये इकत्रित ...चन्देको लेती गयी।

...सूबेके कांग्रेसी नजरबन्द

...सरकार द्वारा कांग्रेस नजर ...मामलेकी सामयिक पुनरावलोकनके ...कुछ बन्दियोंके रिहा होनेकी आशा ...अधिकारी क्षेत्रोंमें पूछताछ ...पता चला है कि कांग्रेसी एम० एल० ...रिहाईकी कोई सम्भावना नहीं है। ...बाद कांग्रेसमैनोंपर नियन्त्रण ...जारी किये जानेके प्रश्नकी ओर ...सरकारका ध्यान गया है और ऐसी ...है कि कुछ व्यक्तियोंपर पुनः प्रतिबन्ध ...या जायगा और कुछ प्रतिबन्ध मुक्त ...यंगे।

अष्टी और चिमूर दिवस

अष्टी और चिमूर दिवसके अवसरपर गत ४ अप्रैलकी रातको बम्बईमें एक जुलूस निकाला गया, जिसे पुलिसने साधारण लाठी चार्ज द्वारा तितर-बितर कर दिया। उक्त जुलूस कल्बादेवीसे रवाना होकर एक मील दूरस्थ फैनाहवादीकी ओर जा रही थी। रास्तेमें रोककर पुलिसने लोगोंसे जुलूस भंगकर देनेका अनुरोध किया। उन्हें अन्ततक अपनी टेकपर अड़ा हुआ जानकर पुलिसने लाठी चार्जका सहारा लिया।

समाचारपत्रोंके लिये अधिकार

केन्द्रीय असेम्बलीने मि० काजमीके उस बिलको प्रचारार्थ स्वीकार कर लिया है जिसमें समाचारपत्रोंके लिये, भारतीय व्यवस्थापिकाकी कार्रवाइयोंका ईमानदारीपूर्वक प्रकाशन करनेका अनियन्त्रित अधिकार मांगा गया है। अपने सूत्र प्रस्तावमें मि० काजिमीने कहा था कि बिलको सेलेक्ट कमेटीके जिम्मे सुपुर्द किया जाय। उक्त प्रस्तावपर दुबारे बहसके दौरानमें आपने श्री अनन्त सयानम आयङ्गरके संशोधनको कबूलकर जनमत निष्कर्षणके लिये आगामी १४ सितम्बर तक बिलके प्रचार किये जानेके निर्णयका स्वागत किया।

बङ्गाल गवर्नरसे मुलाकात

नजीमुद्दीन मन्त्रिमण्डलके पतनके बाद इधर प्रान्तके विभिन्न पार्टियोंके नेताओंसे गवर्नरने मुलाकात की है। गत २ अप्रेलको असेम्बलीके स्पीकर सैयद नौशर अली बङ्गालके गवर्नरसे मिले। बङ्गाल असेम्बलीके विरोधी दलके नेता, मि० ए० के फजलुल हकने गत ३ अप्रेलको मुलाकात की। ऐसा कहा जाता है कि अपनी बातचीतके सिलसिलेमें अपने विभिन्न दलोंकी संख्या-शक्तिके सम्बन्धमें भी विचार विमर्श किया। आफिसियल कांग्रेस पार्टीके नेता श्री किरण शङ्कर राय भी उसी दिन ४-३० बजे संध्या समय गवर्नरसे मिले। गत बृहस्पतिवार ५ अप्रेलको कृषक प्रजापार्टीके नेता मि० समसुद्दीन अहमद और हिन्दू सभाके नेता श्रीश्यामा प्रसाद मुखर्जीने भी गवर्नरसे मिले। गवर्नर और इन नेताओंकी मुलाकातका सम्बन्ध सम्भवतः नयी मिनिस्ट्रीके गठनसे है।

सर 'तेज' वायसरायसे मिले

नयी दिल्लीकी खबर है कि सर तेज-बहादुर सप्रूने गत ४ अप्रेलको वायसरायसे मुलाकात की। वार्तालापका विषय अबतक अज्ञात है।

जयप्रकाश बाबूका मुकदमा

ऐसी खबर है कि श्री जयप्रकाश नारायण के खिलाफ आगामी माहमें मुकदमेकी पेशी होगी। मुकदमेकी सुनवायी सेन्ट्रल जेल, (आगराके) के भीतर ही होगी, जहां आप नजरबन्द रखे गये हैं।

खाकसार नेताका पत्र

लखनऊके एक समाचारमें बताया गया है कि खाकसार नेता अलामा मशरिकीने महात्मा गांधीके नाम अपने एक पत्रमें गांधी-जिन्ना मिलनकी आवश्यकतापर प्रकाश डाला है। कहा जाता है कि उक्त पत्रमें अलामाने कहा है कि यदि महात्माजीने बम्बई पधारनेके अवसरपर हिन्दू-मुस्लिम ऐक्यकेलिये कोई व्यावहारिक कदम नहीं बढ़ाया तो १० हजार खाकसार सेवाग्राम पहुंचकर उनकी कुटियाके आगे अनशन आरम्भ करेंगे। ऐसा भी सुना जाता है कि खाकसार नेताने वायसरायको लन्दन यात्राके पूर्व ३ हजार शब्दोंका एक स्मृतिपत्र दिया है जिसमें भारतीय प्रतिरोधकी उल्लेख है। उक्त पत्रकी कापी वायसरायको एक्जीक्यूटिवके सदस्योंके पास भी भेजी गयी है।

हिन्दूकोड विरोधी सप्ताह

प्रस्तावित हिन्दू कोड-विरोधी अखिल भारतीय कमेटीने आगामी १३ से २० अप्रेल तक हिन्दू कोड-विरोधी सप्ताह मनानेका निश्चय किया है। उन दिनों सभाओंमें कोड विरोधी प्रस्ताव पास कर ऐसी सभाकी सूचना और उसमें पास प्रस्तावोंकी नकल भारत सरकारके कानून सदस्य, वायसराय और परिषद् विभागके पास भेज दिया जायेगा। विरोधी हिन्दुओंके हस्ताक्षर भी कराये जायेंगे। हररोज प्रभातफेरीकी आयोजन भी होगा और आगामी १९ अप्रेलको सामूहिक उपवास किया जायेगा।

अर्थ का सदुपयोग

दि बम्बई बुलियन एक्सचेंज ने कांग्रेस के जरिये चिमूर-अष्टी केस के प्राणदन्ड की सजा पाये हुए प्रत्येक अभियुक्त के नाम ५ हजार रुपये का दान दिया है जिसे वे अपने या अपने परिवार के उपयोग में ला सकते हैं। बुलियन एक्सचेंज ने महादेव देसाई स्मारक कोष को भी १० हजार रुपये का दान दिया है।

रफी अहमद किदवई अस्वस्थ

ऐसी रिपोर्ट है कि मि० रफी अहमद किदवई का वजन २० पौंड कम हो गया है। थोड़ी सी मिहनत से ही आप थक जाते और प्रायः ज्वर का हमला हो जाया करता है। सम्भव है स्वास्थ्य का ख्याल कर उन्हें शीघ्र मुक्त कर दिया जाय।

श्री विश्वनाथदास बम्बई पहुंचे

उड़ीसा के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्री विश्वनाथ दास महात्माजी से मिलने के लिये बम्बई पहुंचे हैं। एक मुलाकात में उन्होंने कहा है कि उड़ीसामें मन्त्रिमन्डल के पुनर्गठन की बात उस समय तक नहीं सोची जा सकती जबतक कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य जेलों में बन्द हैं।

वर्माजी पर दैवी-प्रहार

हिन्दी के सुप्रसिद्ध कवि और हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन के परीक्षा मन्त्री बाबू रामकुमार वर्मा के एकमात्र नवजात शिशु का देहावसान गत ३१ मार्च को दस बजे दिन में हो गया।

आसफ अली गुरुदासपुर जेलमें

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटी के सदस्य मि० आसफ अली को पुलिस की देख-रेख में फ्रांटियर मेल से आगरा लाया गया। शीघ्र ही एक पुलिस लारी में चढ़ाकर उन्हें गुरुदासपुर ले जाया गया, जहां वे नजरबन्द रखे जायेंगे।

अलामा मशरिकी

खाकसार नेता अलामा मशरिकी ने मि० चर्चिल, मि० एमरी और लार्ड वेवेल के पास एक केबल भेजकर कहा है कि हम एक ऐसा विधान तैयार कर रहे हैं जो भारत के सभी राजनीतिक दलों को मान्य होगा, और उसे ब्रिटिश सरकार के सामने चालू साल के अगस्त मास के पूर्व ही हम उपस्थित कर सकेंगे। अतः अभी जल्दीबाजी न की जाय।

श्रीमती उमादेवी गांधीजीसेमिलीं

श्रीमती उमादेवी नामकी एक पोलिश महिला, जिन्होंने कई वर्ष पहले हिन्दू धर्म स्वीकार कर लिया था और कुछ दिनों तक सेवाग्राम आश्रम में भी रह चुकी हैं, महात्माजी से बम्बई में मिलीं और उन्हें पोलैण्डकी ताजी घटनाओंसे अवगत कराया। अगले सप्ताह में फिर कभी वे महात्माजीसे मिलकर पोलेंडके सम्बन्धमें बातचीत करेंगी।

समझौता समिति के प्रस्ताव

यूनाइटेड प्रेस को समाचार मिला है कि अबतक समझौता समितिने केन्द्रीय तथा प्रांतीयके केबीनेट और व्यवस्थापिका के गठन, पाकिस्तान, भावी आर्थिक विकास, अल्पमत, अछूत इत्यादि विभिन्न विषयों पर १२ प्रस्ताव स्वीकार किये हैं। अपने अधिवेशन के दरम्यान कमेटी अन्य तीन चार प्रस्तावोंको पास करेगी, ऐसा सम्भव है। पाकिस्तान सम्बन्धी प्रस्ताव निर्विरोध पास हो गया। ऐसा सुना जाता है कि अपने प्रस्तावों को कमेटी वायसराय के पास भेजेगी।

मौ० आजादका तबादला स्थगित

ऐसोसियेटेड प्रेसको ज्ञात हुआ है कि चूंकि मौलाना आजादके तबादलेके प्रश्न पर बङ्गाल सरकार ने अबतक अन्तिम विचार नहीं किया है, अतः उनका तबदला फिलहाल स्थगित रहेगा सरदार बल्लभभाई पटेल और श्री शङ्करराव देव के सम्बन्ध में कहा जाता है कि वे शनिवार को सवेरे यरवदा जेल (पूना) ले जाय जायेंगे। डाक्टर पट्टाभि सीतारमैया को गत ५ अप्रैल को अहमदनगर फोर्ट जेल से त्रिचनापाली के लिये रवाना किया गया। स्टेशन पर आपको विदा करनेके लिए अनेक कांग्रेसमैन उपस्थित थे। आपका स्वास्थ्य अच्छा दीख पड़ा।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झाँकी

जापानी केबिनेटका त्यागपत्र

जापानी समाचार समितिकी रिपोर्ट है कि प्रधान मन्त्री जेनरल कोईसोने अपनी केबिनेटका इस्तीफा दाखिल कर दिया है। टोकियोकी एक सरकारी विज्ञप्तिमें कहा गया है कि स्थितिकी गंभीरताको दृष्टिगत रखते हुए केबिनेटने त्यागपत्र दिया है ताकि अत्यधिक शक्ति सम्पन्न शासन-यन्त्रका निर्माण हो सके।

डैंजिग पोलैंडमें मिलाया गया

लुबलिन रेडियोने गत शनिवार ता० ३१ मार्चको अस्थायी पोलिश सरकारकी उस फरमानका उल्लेख किया है जिसमें कहा गया है कि डांजिगके बन्दरगाहको पोलैंडमें मिला लिया गया।

कोरियो और फारमूसा

टोकियो रेडियोने जापानी सरकार की एक आज्ञाका उद्धरण दिया है जिसके अनुसार कोरिया और फारमूसाको जापान खासमें सम्मिलित कर लिया गया है।

सोवियट-जापानी-संधि रद्द

मास्को रेडियोने एलान किया है कि सोवियट-जापानी तटस्थता सन्धिको रद्द कर दिया गया। रूसी समाचारमें यह भी कहा गया है कि सोवियट सरकारने मास्को स्थित जापानी राजदूतको इसकी सूचना दे दी है, जिन्होंने वायदा किया है कि उक्त सूचना जापानी सरकारके पास भेज दी जायगी।

कट्टर प्रतिरोधका आह्वान

जर्मन समाचार समितिका कहना है कि दुश्मनों (मित्र राष्ट्रों) द्वारा अधिकृत जर्मन भू-भागमें जर्मन स्वतन्त्रताका आन्दोलन उठ खड़ा हुआ है। जर्मन जनता बड़ी उत्सुकता के साथ इन समाचारोंको छना करती है। उक्त समाचारमें आगे चलकर कहा गया है कि उनका संग्राम जर्मन जनताके लिये दुश्मनोंकी बढ़ती हुई फौजके विरुद्ध पहलेकी अपेक्षा अधिक जोरदार और कट्टर प्रतिरोध जारी रखनेका आह्वान है। दुश्मनोंको पता चल जायगा कि हमें घुटने टेकनेको बाध्य करना हंसी खेल नहीं।

संधिके लिये जापान प्रयत्नशील

सनफ्रांसिस्को सम्मेलनके लिये नियुक्त चीनी प्रतिनिधिके सलाहकार डा० वेलिंगटन कूने अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि जापान इस प्रयत्नमें लगा है कि जर्मन युद्ध की समाप्तिके पूर्व ही चीनसे समझौता हो जाय।

शरणार्थी मुसोलिनी

लन्दनके अनेक समाचार पत्रोंके रोम-स्थित संवाददाताओंका कहना है कि स्वीजरलैण्डकी सरकारने इटलीकी सरकारको सूचित किया है कि यदि मुसोलिनी हमारे देशमें संरक्षण चाहता है तो उसे राजनीतिक भगोड़ेकी तरह शरण नहीं दी जा सकती। अस्वस्थताके आधारपर यदि अर्जी दी गयी तो आश्रय मिल सकता है। संवाददाताओंका कहना है कि मुसोलिनीका स्वास्थ्य इन दिनों काफी गिरा हुआ है और वह पेटकी बीमारीसे पीड़ित है।

मुसोलिनीको भगा ले जानेवाला व्यक्ति

फ्रांसका पुलिस सरगर्मीसे स्कारफेस स्कोर्जेनी नामक उस व्यक्तिकी तलाश कर रही है जिसने हवाई जहाज द्वारा मुसोलिनीको गत १९४३ में भगानेका षड़यन्त्र रचा था। उक्त अभियुक्तकी गिरफ्तारी के लिये प्रकाशित सरकारी सूचनाओंपर जर्मन लिबासमें उसकी तस्वीर छपी है और उसमें लिखा है कि सम्भवतः वह अमेरिकन पोशाकमें कहीं न कहीं फ्रांसमें ही छिपा है।

रूसी सेना वियनामें प्रविष्ट

मास्को आनेवाली खबरोंसे ज्ञात हो रहा है कि वियनाका करीब-करीब अर्धभाग घिर गया है। मार्शल टोलबुखिनकी सेनायें वियनाको लगभग १५ मील लम्बे अर्धवृत्त से घेरती जा रही हैं। अनधिकृत खबरोंमें कहा जा रहा है कि दक्षिणी-पूर्वी अञ्चलमें वियना सड़कोंपर युद्ध आरम्भ हो गया है।

पोलिशयहूदी युद्धबंदियोंकासंकट

पोलिश टेलीग्राफ एजेन्सीकी खबर है कि ब्रिटिश एवं संयुक्त राष्ट्रकी सरकारसे पोलिश राजदूतोंने अनुरोध किया है कि वे जर्मनोंके हाथों बन्दी यहूदी वंशके पोलिशों बचावके लिये यथासाध्य प्रयास करें। अन्तर्राष्ट्रीय रेडक्रासने जर्मनीमें स्थित अपने डेलीगेटको हिदायत दी है कि वे जर्मन अधिकारियोंसे इस सम्बन्धमें स्पष्टीकरणके लिये कहें कि यहूदियोंके लिये खास मुहल्ला बनाकर, उसके सम्बन्धमें रक्षा विषयक क्या कार्रवाइयां की गयी हैं?

रूसीघोषणापरजापानी प्रतिक्रिया

सोवियट जापानी :तटस्थताकी सन्धिके अन्तकी घोषणा किये जानेके बाद ५ अप्रैल को जापानी समाचार समितिके वक्ताने सरकारी आलोचना का उल्लेख किया है। सरकारी आलोचनामें जापानकी ओरसे कहा गया है कि रूसी घोषणाके बाद ही वह सन्धि खत्म नहीं हो जाती। वह आगे एक वर्ष तक लागू रहेगी और दोनों राष्ट्र कम-से-कम एक साल तक और इसकी शर्तोंको निभानेके लिए बाध्य हैं।

स्पेन-जापान संघर्ष संभव

अत्यन्त विश्वसनीय सूत्रसे पता चला है कि स्पेनने आगामी कुछ दिनोंके अन्दर ही जापानसे राजनीतिक सम्बन्ध विच्छेदकर लेनेका निश्चय कर लिया है। ऐसा ज्ञात हुआ है कि जापानके खिलाफ युद्धमें वह सक्रिय रूपसे शामिल होना चाहता है तथा सुदूरपूर्वके युद्धके उपयोगके लिये अपने जहाजी अड्डोंको देनेको वह पूर्णरूपसे तैयार है।

सनफ्रांसिस्को कानफरेन्स

कहते हैं कि प्रेसिडेन्ट रूजवेल्टने सान फ्रांसिस्को कानफरेन्समें शामिल होनेवाले विदेशियोंके विरुद्ध प्रतिबन्ध लगा दिया है। प्रेसिडेन्टकी आज्ञाके अनुसार श्रीमती विजयालक्ष्मी पण्डित, श्री श्रीधरणी आदि भारतीयोंको कानफरेन्सके अवसरपर रेल द्वारा सन फ्रांसिस्को पहुंचनेमें:बाधा पहुंचेगी। इन्होंने टिकट पहलेसे रिजर्व करा रखे थे—पर आशंका है कि रिजर्वेशन कैंसेल कराना पड़े। यदि रेलसे इन्हें यात्रा नहीं करने दिया गया तो बसकी व्यवस्था करनी होगी। इस आज्ञाके खिलाफ चीन और हिन्दुस्तानसे लोग प्रतिवाद कर रहे हैं। हिन्दुस्तानसे जो प्रतिनिधि भेजे जा रहे हैं—उनकी अमेरिका स्थितके भारतीय कड़ी आलोचना कर रहे हैं।

राकेटका उपयोग

वर्मापर गश्ती दौरानसे वापस लौटनेके उपरान्त वैमानिकोंने बताया है कि एक मशीनगनकी चौकीपर आक्रमणके मुकाबलेमें जापानियोंने, मालूम हुआ है कि राकेट बमका उपयोग किया। एसोसियेटेड प्रेसके युद्ध संवाददाताका कहना है कि जापानियोंने वर्मामें राकेटका उपयोग किया है। विश्वास किया जाता है कि पाकोकूसे २० मील दक्षिण कावूमें जापानी आक्रमणका लक्ष्य दक्षिणसे चीनियोंको हटानेके लिये सुविधा प्रदान करनेका है।

जर्मनोंकी सन्धि-चेष्टा

स्टाकहोममें यह जोरदार अफवाह... जर्मन परराष्ट्र कार्यालयके व्यापार वि... एक सदस्य सर्क्लरने, जो गत सप्ताह... उपस्थित हैं, युद्ध विराम सन्धिकी... लिये ब्रिटिश राजदूतावाससे सम्पर्क... किया है। अभी तक इस अफवाहकी ... नहीं हुई है। ब्रिटिश दूतावासकी ... कोई टिप्पणी करनेसे इन्कार कर... गया है।

यू-बोटोंके हमलेकी आशं...

कैनेडियन जलसेनाके मन्त्री, मैकडोनाल्डने हाउस आफ कामन्स... बातकी चेतावनी दी है कि कैनेडाके... किनारेके आसपास बोटकी हरक... शुरु हो सकती हैं।

Regd No. C. 2229

नवकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१९, बम्बू [illegible]

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—१६ कलकत्ता अप्रैल १६, १९४५, Calcutta, APRIL, 16, 1945 मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

...सौ मन दूध देनेवाली गाय

...हालैंडमें एक ऐसी गायका पता चला ...सके सम्बन्धमें यह कहा जाता है कि ...वह २७ सौ मन दूध दे चुकी है। ...उम्र इस वक्त २० वर्ष है। यह गाय ...२० सेर घास खाती है। इसकी ...यां अब गाय हो चुकी हैं और वे ...ती हैं, किन्तु अपनी मा से अधिक ...ोको नहीं होता। कहते हैं कि ...ध बाहुल्यके लिये इस गायने ...ोनेका कप जीता है। इस गायके ...का अनुभव है कि भूमिके निकट ...ाले विमानों, मोटर गाड़ियों की ...र्व किसी भयावनी चीजसे, जिसे ...ाय डर जाती है, उसका दूध कम ...ा है।

अमेरिकामें चीनके राजदूत डा० वी वाव-मिंग सपत्नीक प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके चौथी बार राष्ट्रपति होनेके उपलक्षमें मनाये जानेवाले समारोहमें भाग ले रहे हैं। (यू० एस० फोटो)

...की ऊपरी सतहका अध्ययन

...के अन्तरिक्ष अनुसंधान विभागने ...सोंडे नामक एक विचित्र प्रकारका ...न्त्र निकाला है। इस यन्त्रसे हवाकी ...ालतका पता लग जाता है। ...सोंडेका वजन केवल कुछ औंस ...ा है। इसे हाइड्रोजन गैससे एक ...बांधकर ऊपर उड़ा देते हैं। वहांसे यह यन्त्र हवाके दबाव, तापमान और नमीके सम्बन्धमें संकेत भेजता है। स्थलपर एक यंत्र में वे संकेत स्वयं अङ्कित हो जाते हैं। इन संकेतोंको मौसम सम्बन्धी भविष्यवाणियां करने वाले विभिन्न केन्द्रोंको तार द्वारा भेज दिया जाता है। इनके द्वारा वे मौसम-पर प्रभाव डालने वाले भौतिक कारणोंको ठीक प्रकारसे जान लेते हैं और उसके परिवर्तनोंके सम्बन्धमें अनुमान लगा सकते हैं। वायुयानके चालकों, सिंचाईके इंजीनियरों, किसानों तथा साधारण जनताके लिये मौसम सम्बन्धी चेतावनियां जारी करने में इस जानकारीसे बड़ी सहायता प्राप्त होती है। भारतमें दो प्रकारके रेडियो सोंडे बनाये गये हैं। ये यन्त्र ८ से १० मील तककी ऊंचाईकी हवाके सम्बन्धमें संकेत देते हैं। कभी कभी ये यन्त्र बहुत ऊंचे पहुंच जाते हैं। दिल्लीके कार्यालयमें तैयार किया गया यन्त्र एकबार १८ मीलकी ऊंचाई तक पहुंच गया।

प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, जिनकी गत सप्ताह अचानक मृत्यु हो गयी।

फोटोग्राफीसे सिंचाईमें सहायता

सिंचाईके इंजीनियर जब पानी इकट्ठा करनेके लिये किसी तालाबके निर्माणका विचार करते हैं तो इसके लिये जो क्षेत्र चुना जाता है उसमें कितना पानी आ सकता है यह जानना अत्यन्त महत्व रखता है। अभीतक इसके लिये यह किया जाता रहा है कि थोड़ी-थोड़ी दूरपर सारे क्षेत्रके आर-पारके कुछ भाग लेकर उन्हें पृथक-पृथक मापकर औसत निकाल लिया जाता है। इस प्रणालीमें जहां कहीं सन्देह रह जाय, उसे दूर करनेके लिये सीधी फोटोग्राफीसे काम लिया जाता है। आकाशसे सीधे नीचेकी तस्वीर ली जाती है और पृथ्वीका प्रत्येक भाग दो चित्रोंमें आजाता है। जब इन चित्रोंको स्टीरियोस्कोप यन्त्रसे देखा जाता है तो दर्शकको ऐसा मालूम होता है कि वह एक ठोस प्रतिरूपको देख रहा है। इन दोनों चित्रोंको एक साथ नकशेमें जोड़ कर रखनेसे उस स्थलमें पानी भरनेकी वास्तविक शक्तिका पता लग जाता है। पहली प्रणालीकी तरह इसमें बहुत-सी बातोंको यों ही मान नहीं लेना पड़ता है। यह प्रणाली बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है।

सैन फ्रांसिस्को नगरका सिटी हाल। यहीं मित्रराष्ट्रीय विश्व-सुरक्षा सम्मेलन होनेवाला है।

चलती चक्की

उसदिन दिल्ली म्युनिसिपैलिटीकी बैठक में सदस्योंद्वारा प्रस्तावित अष्टी-चिमूरके अभियुक्तों सम्बन्धी दयाके प्रस्तावको कमेटी के अध्यक्ष डिप्टी कमिश्नर मि० बेलीने फाड़ दिया।

—युद्धके समय आप मृत्युको ही अधिक महत्व देने लगे होंगे।

० ० ०

रूस द्वारा जापानसे सन्धि तोड़ देनेकी घोषणा की गयी है।

—अमेरिका और ब्रिटेनमें मिठाई बांटनेका समय आगया है।

० ० ०

पारसियोंके सर्वश्रेष्ठ पुरोहित डा० डालाने कहा है कि पाकिस्तान सबके लिये महान अहितकर है।

—लेकिन मि० जिन्ना अपवाद हैं।

० ० ०

कहते है कि सिन्ध जाते समय आचार्य कृपलानीको बम्बईमें भूखा रखा गया।

—वहां खुराकबन्दी जो चालू है।

० ० ०

रूसकी मांग है कि सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें लुबलिनकी पोल सरकार भी बुलायी जाय।

—सब तरह मि० चर्चिलको ही कसौटी पर रखा जा रहा है।

० ० ०

बाराबंकीके डिप्टी कमिश्नरने जिलेकी अदालतोंमें हिन्दी लिपिमें कार्य करनेपर रोक लगा दी है।

—शायद मेकौलेका दूसरा अवतार हो गया।

० ० ०

उनका कहना है बाराबंकीमें हिन्दी लिपि लिखनेकी चाल नहीं रही।

फिर श्रीमानको रोक लगानेकी जरूरत कैसे पड़ी?

० ० ०

—केम्ब्रिज विश्वविद्यालयके छात्रोंने मांग की है कि सभी भारतीय नेता जेलोंसे मुक्त हों।

—ये विद्यार्थी अगर भारतमें होते तो पढ़ाईसे हाथ धोना पड़ता।

० ० ०

ज्ञात हुआ है कि शान्ति समारोह में सम्मिलित होनेके लिये १६ भारतीय नरेश विलायत आ रहे हैं।

—जी हां, दुनियाको प्राचीन भारतके ध्वंसावशेष देखनेको मिल जायंगे।

० ० ०

भारत सरकार सन् ४५-४६ के :वर्षमें देशमें वनस्पति: घीका १ लाख टन उत्पादन बढ़ानेकी योजना तैयार कर रही है।

—तब तो वासलेटी :घी खा-खाकर देशवासी वासलेटी साहित्यकी अच्छी बढ़ोतरी कर सकेंगे।

—रमतेराम

चावलके पौधे !

चम्पा और बेली। सौंदर्यकी दृष्टिसे दोनों श्यामल घन थीं और उम्रमें एक समान। यौवनके द्वार पर पहुंचे अभी अधिक समय नहीं बीता था। कुटाई, छंटाई, झाड़ू और चूल्हा, यही उनकी कला, विद्या-बुद्धि, जीवन एवं संसारकी पराकाष्ठा थी। दोनों ही दिलखोलकर एक दूसरेके काममें हाथ बंटाती। परिश्रम करनेके कारण उनका शरीर बिल्कुल चुस्त और दुरुस्त था।

गर्मीकी दोपहरी थी। चम्पा मूसल छोड़कर हांफती हुई, अपने ललाटका पसीना पोंछने लगी।

"बस, होगयी हिम्मत पस्त?"—बेली मुस्करायी।

"नहीं, हिम्मतकी इसमें कौन-सी बात है, आखिर!"

"तू कुछ दुनियादारी जाने बूझे जब तो! ओखलका परिश्रम हमलोगोंके गलेमें बे मतलब मढ़ा गया है!"

"बे-मतलब?"—बेली आश्चर्यित हुई—"तो क्या बिना मूसल चलाये ही, मुफ्तमें, मांड़ भात और नोनकी बहार लूटना चाहती है, तू?"

तंग करने लगी। चम्पा बोली—"नां, रे बाबा, ना! कहानी कोई मामूली चीज है? यह सबतो 'घरम-सासतर' की बात ठहरी!-और "घरमसासतर" की बात हम क्या जानें?—आज शामको तुम्हें धनिया काकी के पास ले चलूंगी। एक टांग तू लेना और एक मैं। पांव दबाने वालीपर धनिया काकी तुरत प्रसन्न हो जाती हैं!"

"कौन धनिया काकी, गोबराकी दादी? वह 'सासतर' जानती है?"—बेली अचरज करके बोली।

"और नहीं तो क्या, 'सासतर' जानने में वह एकही है।"

संध्या होतेही चम्पा और बेली धनिया काकीके पास पहुंचीं। धनिया काकी प्रसन्न तो तुरत हो गयी। किन्तु बोली कि आज शनीचर है। 'सासतर' की बात शनीचरको नहीं की जाती।

रविवार और सोमवारको भी कहानी की यात्रा न बनी। मंगलवारको धनिया काकी 'सासतर' कहने बैठी—

बात बिल्कुल सच और 'सासतरी' है कि पहले पौधेमें धानकी जगह चावल ही फुला करता था और अब उसके ऊपर जो खोल दीख पड़ती है—जिसके कारण चावल, धान होगया—लालची 'बाभन' के कारण ही। बात सतयुगकी है। एक सेठजीकी मृत्युपर एक बाभन देवता भोजन करने गये थे। भरपेट भोजन हो चुकनेके बाद लड्डू पर चार आनेसे डाक आरम्भ हुई। बाभन देवता दस रुपयेकी डाक जीत लेनेके बाद, डकारते हुए, घर चले। जाना उनका खेतकी क्यारीके बीचो-बीचसे हो रहा था—जहां चावलके पौधे लहलहा रहे थे! बाभन देवता रुक-रुककर, चावलके गुच्छे नोच-नोच कर फांकते हुए चले जा रहे थे कि, ऊपर आसमानसे भगवान्की नजर पड़ गयी। भगवान्को बड़ा गुस्सा आया कि इतरे बाभन, हत! इतना खा चुकनेपर भी तुम्हारा पेट नहीं भरा, तो अब नहीं भरेगा कभी तुम्हारा पेट—!'

ढकासोक्ति

मातु-पितहिं जनि सोच बस, करसि महीप किसोर।
बीबी-बच्चा साथ ले चलो सिनेमा ओर॥

० ० ०

चोर-बजारी भावसे हुई शहरमें लूट।
अरे तीन तेरह बने ज्यों घाटाके बूट॥

० ० ०

मोर प्राण प्रिय बन्धु दोऊ अहहिं कवनहिं देस।
विज्ञापन अरु लेख बिन, बन्द अखबार प्रेस॥

० ० ०

तब उठि भूप वशिष्ट कहं दीन्ह पत्रिका जाइ।
बूढ़े बाबा तुम करो अब तो तुरत सगाइ॥

० ० ०

सबके उर निर्भर हरष पूरित पुलक शरीर।
चीनी कर कोटा सबहिं लगे देन रघुबीर॥

० ० ०

मनहुं न आनिये अमरपति, आलोचकहिं अकाज।
अङ्ग-अङ्ग होगा प्रकट, कलकल, खुजली, खाज॥

—मुंशी ढकासलाल।

"तू नहीं जानती बेली, कि पहले पौधेमें धानकी जगह चावल ही फला करता था!"

"सच?··· तबतो बड़ा मजा आता होगा?"—बेलीने बात काटते हुए कहा।

"हां, ओखल क्या बला है इसे लोग जानते भी नहीं थे। लेकिन हायरे, लोभी 'बाभन···"

"ले, अब विचारे 'बाभन' देवताको क्यों कोसने लगी? जो कोई भी दोष हो बस, 'बाभन' के ही सिर।

"यहां जो कोई भी नहीं, बल्कि धान और चावलकी बात है और इस मामलेमें साराका-सारा दोष 'बाभन' की करतूतपर ही है···तुम्हें भला कहानी मालूम हो तब तो···!"

बेली, कहानी कहनेके लिये, चम्पाको

वावेल चले ग[ये]

वावेल चले गये!

वापस आयेंगे तो, लोक[…] अपने नामके आखिरी अक्षर[…] (T) लगाये आयंगे!

*

हमें मनमोदकका [...] खोलकर करना चाहिए। [...] नहीं हुआ तो न सही, [...] फल तो मिल ही जायेगा!

*

तोहफेमें हमारे लिये यदि [...] मोडलकी 'सेकेंड हैंड कार' को [...] लाये तो भरपूर पेट्रोलकी व्यवस्था [...] न, या बस गैस-प्लांटपर ही [...] पड़ेगा?

*

उमरखय्याम इवाइयात [...] रहे हैं—यदि नयी बोतलमें [...] शराब आयी तब?

*

सम्पादक बाबू सोच रहे [...] आदमके जमानेके पुराने 'मैट[...]' 'गेट अप' हुआ तब!

*

श्री राजगोपालाचारी [...] रोगीका पथ्य तो पुराना चावल [...] चाहिये।

*

उनके वापस आते ही मि[०] [...] तो अपनी मांग देखेंगे या लार्ड [...] जिन्नाकी अड़ती हुई टांग देखें[गे]

*

वापस आकर ज्योंही लो[...] खोलेंगे कि श्री सावरकर [...] 'हम भी साझीदारोंमें-से हैं [...] दारों में-से!"

*

लेकिन बात जब 'चले आं[...]' अगवानीके समय सबसे पहले [...] खन्नास हाथ मिलाना चा[...] वावेल भाई!—मेरा नाम [...] मुझसे मत करना बनियाई, बन[...] देसाई!

और अम्बेडकर कहेंगे—'अ[...] आये हो, बैठो, जरा जुड़ाओ [...] देर मुझे हालेदिल सुनाने में!'

*

लार्ड लिनलिथगो याद [...] पर ध्यान जाता है कि जो[...] मिलाई न हो!

*

उसी दिन अपने राम [...] गये थे। चार्ली डाक्टरके [...] था—बोया बीज करेले का, [...] पाये?

—श्री[...]

"तब क्या हुआ का[...] पूछी।

"तब जो हुआ सो हमारे [...] हमें ओखल-मूसल चलानेकी [...] सिर मोल लेनी पड़ी। भ[...] दिया कि जा, अबसे चावल [...] खोल पड़ जायगी, जिससे धा[...] मिहनत करनी पड़े!

—श्री[...]

...र हित बस जिनके मन माहीं।
...न कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

...नवताकी महान क्षति।

...जो आया वह जायगा, राजा रंक फकीर।'
...रका यह अटल सनातन नियम है। ...में आज तक कोई माईका ऐसा लाल ...हुआ, जो इसे टाल सके। इसलिये ...रिकाके राष्ट्रपति रूजवेल्ट आये और ...गये तो उन्होंने कोई नया काम नहीं ...। उनके मित्र सम्बन्धियों, उनसे अपने ...की सिद्धिकी आशा रखनेवाले लोगों- ...उनके इस महाप्रयाणसे अवश्य मर्मान्तक ...हुआ होगा, लेकिन इसको विश्वका ...नियम समझ कर बर्दाश्त करनेके सिवा ...चारा ही क्या है। राजा, रंक, फकीर ...भी इस पृथ्वी तलपर आये, आते हैं और ...गे, चले गये, चले जाते हैं और चले ...। यही यहांका व्यापार है। कोई इस ...रमें कुछ अर्जित करके जाता है, कोई ...अपनी पूंजीमेंसे कुछ खोकर जाता है। अमे... ...प्रेसीडेण्ट वैसे कच्चे व्यापारियोंमें ...थे, जो अपनी पूंजीमेंसे कुछ खोकर ...खाली हाथसे रवाना हो जाते हैं और ...बाजारके लोग और अन्य व्यापारी ...अपटुता, अनुभव हीनता और अयो... ...ताली बजाकर मजाक उड़ाते हैं। ...रूजवेल्टकी मृत्युसे आज सारा ...शोक-विह्वल हो उठा है, इसमें ...नहीं। मित्र राष्ट्रोंके लिये तो उनका ...अचानक देहावसान मानो अनभ्र बज्र- ...। चाहे उनका शत्रु हो या मित्र, जिस ...भी मानव कायाके अन्दर मानव- ...होगा, उसे इस दुःखद समाचारको ...हार्दिक दुख हुए बिना नहीं रहेगा। ...रेडियो भी इस कांडसे दुखी ही मालूम ...। मित्रराष्ट्रोंकी नौका तो मंझधार ...छोड़कर उन्होंने सर्वदाके लिये नाविक ...इस्तीफा दे दिया। ब्रिटेनके प्रधान ...मि० चर्चिल आज सर्वशक्ति सम्पन्न ...भी अपनेको निःसहाय महसूस करते ...

...प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट वास्तवमें उन अलभ्य ...ओंमें थे, जिनसे समय समयपर ...मानवताको इहलोक यात्रामें अमूल्य ...और उज्ज्वल पथदर्शन प्राप्त होता ...अमेरिकामें जन्म लेते हुए भी वे एक ...ीय व्यक्तित्व रखने वाले महापुरुष ...अपने बीच आज उन्हें न देखकर ...समाज अपनेको शोक-सन्तप्त अनुभव ...है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिकाने तो ...मृत्युमें अपना एक ऐसा जाज्वल्यमान ...नेता खो दिया, जिसके तेजके ...अन्य सभी नेता फीके दिखलायी ...। प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टका सार्वजनिक ...इतना लोकप्रिय था कि उनके सामने ...उनका जरा होड़ करनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी और जो कोई भी प्रति-द्वन्द्विताके अखाड़ेमें उनके सामने आया, बुरी तरह पराजित होकर लौटना पड़ा। उनकी लोकप्रियताका सबसे जबर्दस्त उदाहरण यह है कि अमेरिकन राष्ट्रपतियोंके इतिहासमें उन्होंने चारबार लगातार राष्ट्रपति की गद्दी जीतकर एक नया रेकार्ड कायम कर दिया। अपने १२ वर्षके गणतांत्रिक शासन:कालमें जिस उच्च कोटिकी राज-नीतिज्ञताके साथ उन्होंने राष्ट्रपतिके कार्यों का भार वहन किया है, वह उनकी असाधारण योग्यताका एक जोरदार सर्टिफिकेट है। मानवताके विकरालतम शत्रु नाजी और फासिस्टवाद जैसी दुर्दर्ष शक्तियोंसे इतना जबर्दस्त संघर्ष करने और सफलताके इतना निकट पहुंचने वाला दूसरा कोई प्रेसीडेण्ट अमेरिकाके राजनीतिक जीवनमें रंगमंचपर अभी तक नहीं आया। खेदके साथ कहना पड़ता है कि जिस समय अपने कठोर परिश्रम और अदम्य साहसके कार्योंका फल भोगनेका समय आया करालकालके रूढ़े हाथोंने उन्हें जबर्दस्ती दूर हटा दिया।

प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने प्रथमवार १९३३ में जब संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके शासनकी बागडोर संभाली थी तो उस समय अमेरिका विरोधाभासका अजीब रंगमंच बन रहा रहा था। एक तरफ तो लोग भूखों तड़प तड़पकर प्राण परित्याग कर रहे थे और एक तरफ 'पुरुष पुरातनकी वधू' के उपासक पूंजीपति गुलछर्रे उड़ा रहे थे। समाज विषमताओंका ऐसा मिश्रण बन गया था, कि सात्विक प्रवृत्तियां मनुष्य समाजसे अपना नाता तोड़ डालनेपर तुली बैठी थीं, क्षितिजपर फासिस्टवाद और नाजीवादके गजब ढाने वाले काले बादलोंका घनघोर जमाव हो रहा था। गणतंत्रकी नौका तानाशाही तूफानके प्रभाव क्षेत्रमें पहुंच चुकी थी, प्रगतिशील शक्तियोंको कुचल डालनेकी चेष्टा की जारही थी। इटली और जर्मनीमें मानवके जानी दुश्मनोंकी शक्ति बढ़ती देखकर मानवता किसी कोनेमें छिपने की चेष्टा करने लगी, किन्तु पनाह मिलना कठिन ही रहा। जर्मनी और इटलीकी क्या सारे विश्वमें शोषण और शासन करने की प्रवृत्ति जोरशोरसे बढ़ चली थी। एक प्रकारसे वैधानिकताके रूपमें अराजकताका साम्राज्य फैल रहा था। ऐसे समयमें अमेरिका वासियोंने फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट के आकर्षक व्यक्तित्वमें मानवता और गणतंत्रवादकी रक्षा करनेकी क्षमता देखी और उन्हें राष्ट्रपतिके पदपर आरूढ़ किया। प्रेसीडेण्टके हाथोंमें जिम्मेदारी तो बड़ी भारी दी गयी, लेकिन वे उसके सर्वथा योग्य और उपयुक्त सिद्ध हुए। अपनी दूरदर्शिता और दिव्य दृष्टिसे उन्होंने लाखों करोड़ों अमेरिकनोंको अपना अनुयायी बनाया और स्वार्थनिहित वर्गोंकी चुनौतीको स्वीकार करते हुए आगे कदम बढ़ाया। अमेरिकाके डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन दोनोंही दलोंमें प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके शत्रुओंकी कमी नहीं थी, लेकिन इसकी उन्होंने तनिक भी चिन्ता नहीं की और अन्तमें मानवता और गणतन्त्रके विरोधियोंको ठिकाने लगा कर ही दम लिया। अपने १२ वर्षके लम्बे शासनकालमें उन्होंने अपने देशके सबसे अधिक शोषित श्रमिकवर्गको अनेक सुविधाएं और अधिकार दिलानेकी चेष्टा की और उसे प्राप्त हुए भी। वर्तमान युद्धके दौरानमें अमेरिकामें श्रमिक अशांतिकी कई बार रिपोर्टें समाचार पत्रोंमें आयी हैं। एकबार तो ऐसा जान पड़ता था कि श्रमिक हड़ताल के कारण अमेरिकाका सारा युद्ध प्रयास ही रुक जायेगा। लेकिन कोयले और लोहेके कारखानोंपर सरकारने स्वयं अधिकार जमा कर काम बराबर जारी रखा। अमेरिकाके श्रमिकों सामने आज यह सवाल नहीं कि वे भूखों मरें। वे लड़ते और हड़ताल करते हैं तो अपने अधिकारोंके लिये, उदर-पोषणके लिये नहीं। दुनियांमें सभी जगह कम्यूनिस्ट पार्टियां कायम हैं, लेकिन अमेरिका इसका अपवाद है। इसका कारण यह है कि वहां कम्यूनिज्मके लिये श्रमिकोंमें आकर्षण ही नहीं है।

यह बिलकुल सत्य है कि प्रेसिडेण्ट रूज-वेल्टको कार्ल मार्क्स और उनके सिद्धान्तोंमें कोई आकर्षण नहीं था, लेकिन उनका शासन-काल फासिज्मके लिये बिलकुल अनुपयुक्त था। फासिस्टवादी उनको साम्यसे कम खतरनाक नहीं समझते थे। क्योंकि वे इतने उदार व्यक्ति थे कि मानवीय अधिकारों पर किसी प्रकारका अनुचित प्रहार बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। ऐतिहासिक अटलांटिक चार्टरकी घोषणा कर एवं कराकर मि० चर्चिल जैसे दकियानूसी साम्राज्यवादी नेता को लोकप्रिय बनानेका श्रेय प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके सिवा और किसीको नहीं दिया सकता। तेहरान और याल्टा सम्मेलनोंमें जो निर्णय किये गये और बादमें अधिकारी तौरपर उनकी जो घोषणाएं की गयीं हैं यदि उनको ईमानदारीके साथ कार्यान्वित किया जाये तो इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि भावी विश्व-व्यवस्थामें स्वर्गोपम सुख सुलभ होने लगे। लेकिन साम्राज्यवादी नेता पेंचमें पड़कर मधुर घोषणाएं भले ही कर दें, वे अपने स्वार्थोंको ही सर्वोच्च स्थान देंगे। आजतकका साम्राज्यवादी इतिहास यही बतलाता है। यह बड़ी खेदजनक बात है कि सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनके पहले ही, जिसमें भावी विश्व-व्यवस्थाके सम्बन्धमें विशदरूप से विचार होनेवाला है, मानवता और गणतन्त्रवादका महान समर्थक और नेता उठ गया। प्रेसीडेंट रूजवेल्टके उत्तराधिकारी हैरी ट्रूमेन युद्ध सञ्चालनके सम्बन्धमें किसी प्रकारका ढीली-ढाली नीतिसे काम नहीं लेने वाले हैं और सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनका कार्यक्रम भी स्थगित नहीं किया जायेगा। इससे स्पष्ट है कि जहां तक वर्तमान युद्धका सम्बन्ध है, प्रेसीडेंट रूजवेल्टके स्वर्गारोहण से कोई विशेष अड़चन नहीं आने दी जायेगी तथापि विश्व मानवताने उनकी मृत्युमें जो महान व्यक्तित्व खो दिया उसकी पूर्ति होनी कठिन है।

रिश्वतखोरीसे जिहाद—

भारतकी वर्तमान दयनीय अवस्थाके जितने भी कारण गिनाये जा सकते हैं उनमें एक महत्वपूर्ण स्थान रिश्वतखोरीको दिये बिना नहीं रहा जा सकता। पराधीनता संसारमें सबसे बड़ा अभिशाप है और उस पराधीनताकी एक लड़की घूंसखोरी है। स्वार्थका प्राबल्य इसका सबसे बड़ा सहायक है और दुर्भाग्यसे मनुष्यमें इस स्वार्थकी मात्रा बहुत अधिक विद्यमान होती, जिसपर नियन्त्रण रखनेके लिये सबसे प्रभावशाली अंकुश नैतिकता है। लेकिन पराधीन राष्ट्रों से शोषण और दोहनके कारण नैतिकता सर्वदा अपना पिण्ड छुड़ानेके लिये सचेष्ट रहती है। इसलिये परतन्त्र राष्ट्रोंमें स्वार्थ-परताकी भावना बहुत अधिक दृष्टिगोचर होती है। उस दशामें स्वार्थपरतासे मुक्तिका एक ही उपाय रह जाता है और वह है कानूनी शिकंजा। अगर कानूनका उपयोग करनेवाले सदाचारी और ईमानदार व्यक्ति हों तो स्वार्थियोंके खौफनाक पंजोंसे सर्व-साधारण जनताकी बहुत कुछ सुरक्षा हो सकती है। लेकिन ऐसे लोगोंकी संख्या बहुत कम मिलती है जो लक्ष्मीके ठनठनके सामने अपनेको संयमशील बनाये रखें। सरकारी दफ्तर और अफसर खासतौरसे घूंसखोरीके सहायक होते हैं और जनताकी परेशानी इसीलिये अत्यधिक बढ़ जाती है कि रक्षक ही भक्षक बनने लगते हैं। कांग्रेस सरकारें जिन दिनों प्रान्तोंका शासन अपने हाथोंमें लिये हुई थीं, उन दिनों जनताके सच्चे शुभचिन्तकोंने रिश्वतखोरीका बाजार बहुत कुछ अस्तित्वहीन-सा कर दिया था; किन्तु उनकी तूती बहुत दिनों तक नहीं बोलने दी गयी और उनके सामने ऐसी अवस्था उत्पन्न कर दी गयी जिसमें नाममात्रके मन्त्री बनकर जनताको धोखा देनेके सिवा और कुछ नहीं हो सकता था। इसलिये उन्होंने ऐसे पदोंका परित्याग ही अपने लिये श्रेयस्कर समझा। उनके मन्त्री पदसे अवकाश लेते ही स्वार्थियों को पदारूढ़ होने और मनमानी घरजानी करनेका मौका मिला। उसका परिणाम आज सर्वसाधारणके सामने है। लेकिन सीमाप्रांत में फिर कांग्रेसजनोंका मन्त्रिमण्डल बनाकर वयोवृद्ध डा० खां साहबने जनताकी सेवा करनेका बीड़ा उठाया है और उन्होंने घूंस-खोरीके बड़े-बड़े मामलोंका पता लगानेके लिये जजोंकी एक जांच कमेटी बनायी है, जिसके जिम्मे यह कार्य सुपुर्द हुआ है कि छोटेसे लेकर बड़े अफसरों तक, जो कोई भी घूंसखोरीकी बहती गङ्गामें हाथ धोनेकी चेष्टा करें, तो उसे कठोरसे कठोर दण्ड दिलाया जाये। हम डा० खां साहबके इस प्रयासकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए यह शुभकामना करते हैं कि वे अपने शासनकालमें ऐसी सफलता प्राप्त करें जो अन्य प्रान्तोंके लिये आदर्श उपस्थित करे और चाहे वहां कांग्रेसकी सरकारें स्थापित हों या अन्य किसी की, वे डा० खां साहबकी सरकारका अनुकरण करनेकी चेष्टा करें।

कांग्रेसकी नीति अपरिवर्तित—

देशकी एकमात्र सर्व श्रेष्ठ प्रतिनिधि संस्था, अखिल भारतीय कांग्रेस अपनी नीतिमें समयानुकूल परिवर्तन करनेमें नहीं चूकेगी, यदि उसको उपयुक्त अवसर मिलि

राज नेताओंकी ओरसे प्रदान किया जाये। लेकिन ब्रिटेनके दकियानूसी नेता समयके साथ चलनेका नाम नहीं लेते। ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मि० चर्चिल और भारतके भाग्य-विधाता मि० एमरीका अभी पुराना ही ग्रामोफोन रेकर्ड बज रहा है। समय कहांसे कहां आगया। युद्ध स्थितिमें अधिकसे अधिक परिवर्तन हो गया। जहां हिटलरकी दानवी सेना मास्कोसे २२ मीलकी दूरीपर रह गयी थी, वहां अब बर्लिन २८-३० मील रूसी सेनासे दूर रह गया है, लेकिन मि० एमरीका विचार अभी १९४२ का ही है। उनको भारत सम्बन्धी अपनी नीतिमें परिवर्तनकी अभी तक आवश्यकता नहीं महसूस होती। ऐसी दशामें कांग्रेसकी नीतिमें कोई परिवर्तन की आशा कैसे की जा सकती है। लेकिन ब्रिटिश शासनकी यह भी एक विचित्रता ही कही जायेगी कि उसके एक प्रान्तके गवर्नरके मन्त्री कांग्रेसजन बने हैं और अन्य प्रान्तोंमें कांग्रेस कमेटियां गैर-कानूनी और कांग्रेसजन बागी रहें। लोग कहते हैं कि हांड़ीके एक चावलको टटोल कर पता लगा लेते हैं कि समस्त हांड़ीका चावल पक गया है, लेकिन सीमाप्रांतकी शासन व्यवस्थाको देख और जानकर क्या कोई कह देनेकी क्षमता रखता है कि सब जगह ऐसी ही सरकारें हैं? ब्रिटिश कूटनीतिकी महिमा अपार है। यह सरकार ही बनिया सरकार है और बनियापन इसके सारे कार्योंमें झलकता है। इस युगमें बनिया नीतिको समझना साधारण बात नहीं है। सीमाप्रांतमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलकी स्थापना हो जानेसे लोगोंको यह सन्देह होने लगा था कि कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन तो नहीं हो गया। चूंकि कांग्रेसकी ओरसे साधिकार कुछ कहनेकी क्षमता रखनेवाले सारे नेता अबतक जेलोंकी कोठरियोंको आबाद कर रहे हैं, इसलिये उनके प्रश्नोंका अबतक स्पष्ट उत्तर मिलना कठिन हो गया था। लेकिन उस दिन कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्य डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष ने महात्मा गांधी और श्रीमती सरोजिनी नायडूसे लम्बे समय तक विचार-विमर्श करनेके बाद बम्बईसे जो वक्तव्य दिया है, उससे यह साफ हो गया है कि अभी तक कांग्रेसकी नीतिमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ। परिवर्तन हो भी और करे भी तो कौन? परिवर्तन करनेवालोंको तो अभी अपनी व्यक्तिगत साधारण स्वतन्त्रतासे भी वंचित कर रखा गया है। उन्होंने साफ शब्दोंमें बता दिया कि सीमाप्रान्तमें जा कांग्रेस मन्त्रिमण्डल गठित हुआ है अथवा केन्द्रीय असेम्बलीमें कांग्रेस पार्टीके नेता श्री भूलाभाई देसाईने वायसरायसे जो समझौता किया है, उसपर अबतक कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी बैठकमें पहले विचार नहीं कर लिया जायेगा, तब तक उसे कार्यान्वित करनेकी अनुमति कांग्रेस की ओरसे नहीं दी जायेगी। ऐसी दशामें अबतक कांग्रेस, सरकार द्वारा प्रतिबंधित है, तब तक कांग्रेसजन सारी कार्यवाही अपनी व्यक्तिगत, एक सीमाके अन्दर समष्टिगत अनुभव और निर्णयके अनुसार करते हैं एवं अखिल भारतीय कांग्रेसका उससे कोई ताल्लुक नहीं है।

प्रगतिशीलशक्तियोंकेलियेचुनौती

भारतकी स्वाधीनताका प्रश्न अब ब्रिटेन और भारतका घरेलू सवाल नहीं रह गया है, इस बातको एक नहीं अनेक बार विश्वके विभिन्न देशोंके न्यायी व्यक्ति डंकेकी चोट कह चुके हैं। इतनेपर भी अगर किसीकी समझमें न आये, तो यह उसकी बुद्धिकी बलिहारी है। भारत अपनी स्वाधीनता और स्वशासनके लिये कितना व्यग्र और विक्षिप्त हो उठा है, वह उसके बच्चे-बच्चेसे मालूम किया जा सकता है। जहां स्वाधीनताकी भावना प्रत्येक भारतीयके हृदयमें जोर-शोरसे हिलोरे लेने लगी हैं, वहां उसको रोकनेके लिये ब्रिटिश राजनेताओंकी बालूकी मेंड़ कभी सफल नहीं हो सकती। उल्टा उनकी निन्दा और हंसीका कारण बनती जाती हैं। कांग्रेस वर्किंग कमेटीके दो सदस्य सीमान्त गांधी और पं० गोविन्द-बल्लभ पंत अभी हालमें ही दो वर्षसे अधिक समय तक जेलमें रहनेके बाद छूटे हैं। पं० गोविन्द वल्लभ पन्तने उस दिन दिल्लीमें पत्रकारोंके समक्ष अपना वक्तव्य देते हुए कहा है कि 'हमारा दृढ़ विश्वास है कि हम शीघ्र ही स्वाधीन होंगे।' महात्मा गांधी भी कुछ अर्से पहले कह चुके हैं कि हम पहलेकी अपेक्षा स्वराज्य प्राप्तिके बहुत निकट पहुंच गये हैं। बम्बईके मातुंगामें उस दिन भाषण करते हुए सीमाप्रान्तके गांधी खां अब्दुल गफ्फार खांने कहा कि 'देशके विभिन्न सङ्कटोंका अन्त केवल राष्ट्रकी स्वाधीनता प्राप्त करनेसे ही होगा। हम स्वाधीन राष्ट्र बनकर ही अपनी गरीबी, विनाश और दुर्भिक्षका अन्त कर सकते हैं। देशकी सर्वोत्तम सेवा उसको मुक्त करना है।' कहनेकी आवश्यकता नहीं कि ये शब्द उन जिम्मेदार व्यक्तियोंके हैं, जिनमें जनता का अडिग विश्वास और प्रेम है और जो जनताके सच्चे प्रतिनिधि होनेका सगर्व दावा कर सकते हैं। इनकी बातोंपर ध्यान देकर यदि नौकरशाही सर फीरोज खां नून और सर रामस्वामी मुदालियर जैसे भड़ैत भांडोंके विरुद्ध वर्णनपर विश्वास करे तो यहः उसकी खामख्यालीके सिवा और कुछ नहीं कहा जायगा। भारतको और अधिक दिन पराधीन नहीं रखा जा सकता, यह ध्रुव सत्य है। अगर उसकी इच्छाके विरुद्ध उसे अपने अंगूठेके नीचे दाबे रखनेकी चेष्टा की गयी तो यह बिलकुल निश्चित है कि तीसरा विश्वव्यापी युद्ध शीघ्र ही होगा और मित्रराष्ट्रोंकी शाश्वत विश्व-शांतिकी समस्या अपरिमित कालके लिये खटाईमें पड़ जायेगी। ऐसी दशामें बुद्धिमानीका तकाजा तो यही है कि भारतको स्वाधीनता प्रदान कर तथा उसे अपनी बराबरीके राष्ट्रका पद देकर उसके अपार साधनों और जन-शक्तिसे स्वेच्छापूर्वक सहयोग कर लाभ उठानेकी चेष्टा की जाये।

नजरबन्दोंका स्थान परिवर्तन—

अहमदनगरके किलेमें कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके जिन सदस्योंको नजरबन्द किया गया था उनको सरकारने अपने-अपने प्रान्तोंमें परिवर्तन करनेका जो निश्चय किया था, उसके अनुसार अनेक नेताओंको तो उनके प्रान्तोंकी जेलोंमें पहुंचा दिया गया और उनको ले जाते समय अधिकारियोंका जो व्यवहार उनके साथ हुआ है या अपनी प्रांन्तीय जेलोंमें उन्हें अपने सम्बन्धियों और कुटुम्बियोंसे मिलनेकी जो सुविधाएं मिली हैं, उनको दृष्टिगत रखते हुए बहुतसे लोगोंको नयी-नयी आशाएं होने लगी हैं और कुछ लोगोंने यहां तक मत प्रकट किया है कि अप्रेलके अन्त तक भारतके वायसराय लार्ड वावेल वापस आयेंगे और अपने साथ डाउनिङ्ग स्ट्रीटमें रखी गयी भारतीय जेलोंके फाटकोंकी चाभी लेते आयेंगे। अगर वास्तवमें इस आशामें कुछ तथ्य हो तो इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि वावेल भारतके साथ-साथ मित्रराष्ट्रोंका बहुत बड़ा उपकार करेंगे। लेकिन अभी गत शुक्रवारको जब भारत सचिव मि० एमरीसे मि० सोरेंसनने पूछा तो उन्होंने सिर्फ यही उत्तर दिया कि लार्ड वावेल और ब्रिटिश सरकारसे भारतीय प्रतिनिधियोंने हालमें जो वार्तालाप किया है, उसपर बहुत ही सहानुभूतिपूर्वक विचार किया जा रहा है, लेकिन अब तक कांग्रेस नेताओंको मुक्त करनेके प्रश्नपर अन्तिम निर्णय नहीं किया जा सका है। जब मि० सोरेन्सनने यह कहा कि 'थोड़े-थोड़े करके राजनोतिक नजरबन्दोंको मुक्त करने सम्बन्धी सरकारी नीतिके बजाय अगर एक बार ही सबको मुक्त कर देनेकी नीति अख्तियार की जाये तो यह कार्य भविष्यमें लाभदायक घटना-विस्तारकी भूमिका होगी। इसलिये भारत सचिव क्या मुझे यह आश्वासन देंगे कि सभी नेता मुक्त कर दिये जायेंगे,' तो उन्होंने कहा कि 'अभी सारी स्थितिपर सावधानीके साथ वाद-विवाद किया जा रहा है।' हम जानते हैं कि मि० एमरीके चलते भारतीयोंको कोई भी सुविधा नहीं मिल सकती और विश्व शांति और मानव स्वातन्त्र्यसे उनका अर्थ साम्राज्यवादकी स्वाधीनता और साम्राज्यवादियों तथा पूंजीवादियोंके दिमागकी शान्ति है; इससे अधिक कुछ नहीं। लेकिन मि० एमरीको याद रहना चाहिये कि अब वे दिन गुजर गये जब खलील मियां फाख्ता उड़ाया करते थे। अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति हमारे अनुकूल आ रही है। हम अपने आदरणीय नेताओंको शीघ्र ही मुक्त पायेंगे इसमें सन्देह नहीं हैं। यह दूसरी बात है कि बङ्गालकी सरकार अभी तक हमारे राष्ट्रपतिको मुक्त करनेकी कौन कहे, अपने प्रांतकी जेलोंमें भी स्थान देनेके लिये तैयार नहीं हो रही है और इसीलिये भारत सरकारका निश्चय अधूरा कार्यान्वित होकर पड़ा हुआ है। अब बङ्गाल प्रांतकी जिम्मेदारी गवर्नरके हाथोंमें आ गयी, देखना है, मि० केसी क्या करते हैं?

सप्रू कमेटीकी सिफारिशें—

सर तेजबहादुर सप्रूके सभापतित्वमें निर्दल नेताओंकी जो समझौता कमेटी गठित हुई थी, उसका निर्णय प्रकाशित होनेके एक सप्ताह पहले ही सर तेजने उसका सारांश लन्दन स्थित भारतके वायसराय लार्ड वावेलके पास भेजा था, ताकि वे मि० एमरीके साथ उन सुझावोंपर बा[illegible] कर सकें। कुछ लोगोंका ख्याल है [illegible] कमेटीकी सिफारिशें भारतके भावी [illegible] का आधार स्वरूप होंगी। लेकिन [illegible] कोई बात नहीं। यह कमेटी देशके [illegible] वैधानिक गतिरोधको दूर करनेके [illegible] गठित की गयी थी और इसलिये [illegible] सुझाव अस्थायी ही है। गताङ्कमें सप्रू [illegible] संक्षिप्त सूची दी जा चुकी है, जो [illegible] गतिरोध दूर करनेके सम्बन्धमें [illegible] आवश्यक महसूस हुए हैं। यहां हम [illegible] कमेटीकी मुख्य बातोंमें संक्षेपमें [illegible] डालनेकी चेष्टा करेंगे। सबसे पहले [illegible] इस सुझावमें विधान निर्मात्री [illegible] गठनसे सम्बन्ध रखनेवाली है। इसमें [illegible] ने १६० सदस्योंको रखनेकी सिफारिश [illegible] है और हिन्दुओं तथा मुसलमानोंका [illegible] निधित्व आबादीमें महान अन्तर [illegible] भी बराबर-बराबर (५१-५१) [illegible] दलितवर्गोंके २० प्रतिनिधि रहेंगे। [illegible] सन्देह नहीं कि सर तेजने मुसल्मानों [illegible] सन्तुष्ट करनेके लिये ही ऐसी [illegible] बनायी है, लेकिन यह व्यवहारि[illegible] सकेगी इसमें बहुत अधिक सन्देह [illegible] देशके प्रगतिशील विचार वाले [illegible] इस योजनाको स्वीकार करनेमें [illegible] असमर्थ पायेंगे और फिर [illegible] उत्पन्न हो जायेगा। व्यवहारिक [illegible] सप्रू कमेटीकी योजना क्रिप्स प्रस्ताव[illegible] पीछे है। केन्द्रमें संघ शासन कायम [illegible] सम्बन्धमें कमेटीने दो रास्ते बता[illegible] पहला तरीका ब्रिटिश डोमिनियनों[illegible] सरकार गठित करनेका है, फर्क [illegible] रहेगा कि विभिन्न दलोंके प्रतिनिधि [illegible] संख्याके अनुसार व्यवस्थापिकामें [illegible] प्रधान मंत्री अथवा उप प्रधान मन्त्री [illegible] दलके एक साथ नहीं रह सकेंगे। [illegible] तरीका यह है कि मन्त्रिमण्डलमें सभी [illegible] प्रतिनिधि लिये जायेंगे और इनका [illegible] व्यवस्थापिकाके सम्मिलित अधि[illegible] किया जायेगा। प्रधान मन्त्री और उ[illegible] मंत्रीके स्थानपर प्रेसीडेंट और वायस[illegible] डेंट रहेंगे और इनका चुनाव मन्त्रिम[illegible] से व्यवस्थापिका सभा करेगी। यह [illegible] स्वीजरलैंड की है। केंद्रमें दो व्यवस्था[illegible] असेम्बली और कौंसिल होगी। [illegible] विभिन्न दलोंके प्रतिनिधित्वका व्या[illegible] हुए भी कुछ ऐसी बातें पेश[illegible] हैं, जिनसे साम्प्रदायिक एकता[illegible] उपस्थित हो सकती है। भारतकी [illegible] को कमेटीने देशकी उन्नति और [illegible] लिये अहितकर बताया है। यह [illegible] उचित बात कही गयी है। देशके [illegible] टुकड़े करनेसे पारस्परिक एकता[illegible] पर वैमनस्य और विरोध [illegible] जायगा और यह चीज वस्तुतः [illegible] सुरक्षाके लिये खतरनाक होगी। [illegible] सप्रू कमेटीके निर्णयोंके सम्बन्धमें [illegible] सकता है कि इसकी बातें भावी [illegible] निर्माणके लिये वादविवादका आधार [illegible] जा सकती हैं। इससे अधिक इन [illegible] को महत्व नहीं दिया जा सकता।

—

अमेरिका—एक नयी एशियाई शक्ति

—:o:—

(लेखक—श्री विश्वम्भरनाथ जिज्जा)

इस युद्धके बाद एशियाके लिये एकनया ...कार या संकट उपस्थित होगा संयुक्त अमेरिका! जापानी शक्तिके ह्रासके ... ब्रिटेन और सोवियट रूसके साथ ...रिका भी सुदूर-पूर्वमें सन्तुलनका एक ...ष निर्णायक हो जायगा। युद्धके पूर्व यह ...ने सोचा था कि पश्चिमी गोलार्द्धमें ...व अमेरिका, एक कठिन समस्याकी ...र पूर्वी गोलार्द्धमें सहसा इस बल और ...के साथ आ धमकेगा कि ब्रिटेन और रूस ...ते रह जायंगे।

प्रशान्त सागरमें पहले एशिया महाद्वीप-...निकट केवल फिलिपाइन द्वीप पुञ्ज ...रिकाके अधिकारमें था, किन्तु वहांसे ...शियाका भक्षण करनेके लिये उसे कोई ...ण या बहाना नहीं मिलता था। पर ...जापानकी पराजयके बाद प्रशांतके ...संख्यक छोटे-बड़े सभी द्वीप अमेरिकाके ...धिकार-क्षेत्रमें आ जायंगे। यह ठीक है ...चीनमें अनेक वर्षोंसे जापानियोंका युद्ध ...देख कर अमेरिका और ब्रिटेन दोनों ही ...कुढ़ते थे, पर अन्तर्राष्ट्रीय सौजन्यका ...न रखते हुए वे जापानसे युद्ध घोषणा ...में असमर्थ थे। अब तो आमशत्रु जापान ...हराना संयुक्त राष्ट्रोंका मुख्य ध्येय है, ...इस ध्येयकी पूर्तिके लिये अमेरिका ...सबसे ज्यादा तैयार है।

अमेरिकाकी अपार सैनिक शक्तियोंको ...में किसीको कोई भ्रम न होना ...चाहिये। सन १९१४ के बहुत पहलेसे ...अमेरिकाकी सैनिक शक्तियां संसारमें सर्व ...श्रेष्ठ नहीं तो किसी राष्ट्रसे घटकर भी ...नहीं थीं। १९१९ के बाद उसने अपनी ...स्थल और वायु शक्तियां इतनी अधिक ...बढ़ाली कि इस युद्धमें वह सचमुच अपूर्व ...वीरताके साथ हर तरफ लड़नेमें समर्थ हुआ ...है। सभी तरहके साधन और सामग्रियां-...लकड़ी, विविध धातु, तेल आदि ...उसके देशमें पर्याप्त हैं, इस कारण अस्त्रास्त्र ...आदिके लिये, जर्मनी या जापानकी तरह ...साधनोंकी प्राप्तिके निमित्त अन्य राष्ट्रों ...की ओर नहीं देखना पड़ता। उसने अपने ही ...साधन और साधनोंसे चुपचाप शान्ति ...काल में जो महान शक्ति तैयार की, वह ...संसारमें आज अद्वितीय है। ...प्रेसिडेंट रूजवेल्टने अपने देशको "लोकतन्त्र-...का शस्त्रागार" (आर्सेनल आफ डेमो-...क्रेसी) व्यर्थ ही नहीं घोषित किया था। ...कौन नहीं जानता कि युद्धमें ...मित्रोंके पक्षसे यदि अमेरिकन आता ...मित्रोंके लिये, विशेष कर ब्रिटेनके ...बहुत ही कटु होता और 'धुरी-...की विजय, न जाने क्या रंग दिखाती! ...आरम्भ होते ही जर्मनीने यूरोपमें ...सेनाने हर तरह विजयके बाद विजय ...की, इधर उत्तर अफ्रीकामें भी जर्मन-...इटालियन सेनाओंने ब्रिटेनके नाकों दम ...कर दिया था। ब्रिटेनके लिये केवल यूरोपमें ...ही नहीं, संसारके अन्य क्षेत्रोंमें भी जीवन-...मरणका प्रश्न उपस्थित था। उस समय ...ऐसी नाजुक हालत थी कि अंग्रेजोंको उत्तर ...अफ्रीकाकी रक्षाके लिये एकबार भारतसे ...फौजें भेजनी पड़ती, पर सुदूरपूर्व में जापानकी आशंकासे उन्हें फिर भारत बुला लेना पड़ता था। बर्मा और सिंगापुर के पतनका यहभी एक कारण है कि वहांकी बहुतेरी फौजें उत्तर अफ्रीका भेज दी गयी थीं। ऐसे कठिन समयमें अमेरिकाने सहसा आकर पश्चिम और पूर्व दोनों तरफ ब्रिटेनके हाथ मजबूत बनाये। जर्मनी सफलतापूर्वक अपना युद्ध चला रहा था, पर अत्यधिक सफलताके कारण उसका आत्मविश्वास अन्धा हो गया। और उसने एक विश्वास-घाती मित्रकी तरह अनाक्रमण-सन्धि भंगकर रूसपर जो हमला किया उससे स्वयं उसकी ही सैनिक शक्तियां दो मोर्चोंमें बंट गयीं। और रूससे अन्त तक उसे इतना लड़ना पड़ा कि उसकी सारी सैनिक शक्ति समाप्त हो गयी।

इधर जापानने इन्तजार करनेके बाद स्वयं ही पहले अमेरिकन अधिकृत टापू पर्लहार्बरपर हमला कर दिया। इसके बाद उसने ब्रिटिश अधिकृत टापुओं आदि पर भी धावा बोल दिया। जापानियोंने, यूरोपमें जर्मन सफलताओंकी तरह, पूर्वमें बड़ी तेजीके साथ सफलताएं प्राप्त कीं। फिलिपाइनसे अमेरिकनोंको हांगकांग, सिंगापुर, बरमा आदिसे अंग्रेजोंको, और चीनके पूर्वी तटके बन्दरगाहोंसे समस्त विदेशियोंको मार भगाया। प्रशान्त सागरमें एक छोरसे दूसरे छोर, उत्तरसे दक्षिण तक जापानी अधिकार और प्रभाव फैल गया। ब्रिटेन यूरोपीय युद्धमें फंसे रहनेके कारण जापानको रोकनेमें असमर्थ हो रहा था, और ऐसे कठिन समयमें अमेरिकाने अपनी नैतिक शक्ति भेजकर एक ओर ब्रिटेनको अनुगृहीत किया और दूसरी ओर जापानसे निपटनेका स्वर्ण अवसर पाया।

अमेरिकाके नये प्रेसिडेंट मि० ट्रूमेन

उसने ब्रिटेनको अपनी स्थल सेनाएं दीं जिन्होंने जर्मनोंसे लड़कर युद्धका पलड़ा पलट दिया और अपनी जलसेना उसने जापानसे लड़नेके लिये रखी, जो आज प्रशांत-में सर्वत्र जापानियोंको हरा रही है। पर अमेरिकाके लिये केवल इतना ही काफी नहीं है कि वह सागरमें जापानको हराये, वह उसे एशियाई मुख्य भूमि—चीनमें भी हराना चाहता है, क्योंकि जल, स्थल दोनों ही जगह उसे हरानेपर वह जापानी साम्राज्य का अधिकारी हो सकता है। इसलिये अमेरिका चीनमें भी जबर्दस्त जङ्गी तैयारियां करके वहां अपनी स्थिति और प्रभुता अभी से सुरक्षित रखनेके लिये प्रयत्नशील है। चीनमें अमेरिकन सैनिक सदरमुकाम है, अमेरिकन हवाई अड्डे हैं, जहांसे बड़े हवाई किले जापानी नगरों और टापुओंपर हवाई हमले करते हैं। चीनी फौजें अमेरिकन सैनिक अफसरोंके नेतृत्वमें हैं, और यह सब कुछ एक आमशत्रु जापानको हरानेके लिये हो रहा है।

कुछ वर्ष पूर्व 'रिव्यू आफ रिव्यूज' पत्र में एक मजेदार व्यङ्ग चित्र निकला था, जिसका यह भाव था—राजमहलके अधखुले द्वारसे चीनी नाजुक महिला झांक रही हैं और बाहर कवचधारी अमेरिकन जवान तलवार लटकाये खड़ा कह रहा है, हमारे उद्देश्य समान हैं। 'हमारे इरादे पवित्र हैं। शान्तिके नामपर द्वार खोल दो।' चीनका द्वार खुलवानेके लिये वे बहुत दिनोंसे मुन्तजिर रहे और द्वारखुलनेकी नीति जारी होनेपर जब वे एक बार भीतर घुस गये तो उन्होंने चीनमें जहां तहां अपने अधिकार और प्रभावके क्षेत्र कायम कर लिये। चीनी लोग विदेशी हाथोंके किसी भी लांछन या अपमानसे लज्जित नहीं होते। अंग्रेजों, अमेरिकनों आदि विदेशियोंने वहां असाधारण विशेषाधिकार प्राप्त कर लिये, और छहद व्यवसायी तथा शोषण नीतिके साथ उनकी अपनी ही अदालतें थीं। अब इस महायुद्धमें अपनी न्यायप्रियता और नेकनीयती दिखानेके लिये, या चीनको धोखा देनेके लिये, उन्होंने चीनसे एक नयी सन्धि की, जिसके अनुसार बड़ी शराफतके साथ उन्होंने वहांसे अपने विशेषाधिकार हटा लिये। इस तरह उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि चीनपर उनकी कोई कुदृष्टि नहीं है और वे साम्राज्यवादी बनकर अपना साम्राज्य बढ़ानेकी लिप्सा नहीं रखते।

अन्तर्राष्ट्रीय कूटनीतिमें 'गलत-सही, सच-झूठ' सब अपना है, सब चालें हवा हैं। हमारी कूटनीतिकी बढ़िया सफलतापर अन्य लोग भले ही हमें बुरे नामोंसे याद करें, पर 'सच-झूठ' की सफलतासे जब हमारा लाभ है तो हमें दूसरोंकी टीकाटिप्पणीकी परवाह नहीं। चीनपर अभी अधिकार करने का प्रश्न नहीं है, बल्कि जापानको वहांसे निकालना सबका ध्येय है। पर याद रहे कि जापानकी पराजयके बाद अमेरिका एशियामें एक नयी प्रबल महाशक्तिके रूपमें ऐसा सामने आयेगा कि उसके निवारणके लिये न तो चीनके पास पर्याप्त शक्ति होगी, न ब्रिटेन उससे झगड़ना पसन्द करेगा, और न सोवियट रूसके पास सुदूर-पूर्वमें ऐसी प्रबल नौ-सेना शक्ति है, जिससे वह अमेरिकन महत्वा-कांक्षाका सामना कर सके। अमेरिकाके जंगी जहाजोंका बेड़ा संसारमें सबसे बड़ा है, जिसे वह जापानसे लड़नेके लिये धीरे-धीरे प्रशान्त सागरमें लगा रहा है। इस बेड़ेके साथ उसकी वायु सेनाकी शक्ति भी बड़ी प्रचंड है। इस शक्तिका वास्तविक रूप सम-झनेके लिये हमें अमेरिकन नौ-सेनाके सेक्रे-टरी मि० जेम्स वी० फोरस्टालकी उस रिपोर्टको भी ध्यानमें रखना चाहिये जो उन्होंने हालही में राष्ट्रपति रूजवेल्टके समक्ष पेश की है, और उसमें कहा है—

"अमेरिकाकी नौ-सेना संसारमें इस समय सबसे बड़ी है और आगामी तीन वर्षों

में और भी अधिक जहाजोंको बनानेकी योजना कार्यान्वित हो रही है, जिससे युद्धमें शीघ्र विजय प्राप्त हो, और युद्धके बाद संसारके सागरोंपर अपना नियंत्रण रखनेमें सहायता मिले। समुद्री शक्ति विजयका आधार है। सन् १९४४ के अन्तमें अमेरिकन बेड़ेमें ११०८ जंगी जहाज, ६८१९१ अन्य श्रेणियोंके जहाज थे, और ३४००० वायुयान थे। उनमें ३६,२३,००० अफसर और सैनिक थे।"

तीन वर्षोंमें अमेरिकाको इससे अधिक जहाज बनानेकी क्यों आवश्यकता मालूम हुई? इस प्रश्न या कारणका उत्तर देते हुए फोरस्टाल, अपनी रिपोर्टमें कहते हैं—

'हम तब, क्यों सन् १९४५, १९४६ और १९४७ में अधिक जहाज बनाना चाहते हैं? हमें अपनी वह महान शक्ति अवश्य कायम रखनी और बढ़ानी चाहिये जिसके सहारे हम प्रायः एक साथ जापानियोंके विरुद्ध धावा बोलनेमें समर्थ हुए हैं। युद्धके उपरान्त अमेरिका तथा उसके मित्रराष्ट्रोंके पास ऐसे प्रबल बेड़े होने चाहिये जो संसारके सागरों पर नियंत्रण रख सकें। इस प्रकारकी समुद्री शक्ति कायम करना अन्तर्राष्ट्रीय सहकारिणी-के निमित्त बनायी गयी योजनाके प्रतिकूल न होगा, क्योंकि संसारकी शांतिके लिये हमारा भाग या सहयोग अवश्य ही तीन प्रकारका होना चाहिये: हम राष्ट्रोंके उस समूहमें शरीक हो सकें जिसका उद्देश्य शांति और न्यायपूर्ण ढङ्गसे संसारके मामलों को सुव्यवस्थित रूपसे चलानेका हो। आवश्यकता पड़नेपर हम सब उस विश्व-व्यवस्थाके लिये लड़नेको तैयार रहें जिसमें हमारे ढङ्गकी जीवन प्रणाली चल सके और यदि लड़ना ही पड़े तो हमारे पास लड़ाईके लिये शस्त्रास्त्र तैयार रहें। एक शक्तिशाली नौसेना ऐसा ही शस्त्र है और इसके बिना हमारा काम नहीं चल सकता।

'सन १९४० से रक्षा (याने युद्ध) के कार्यक्रमके लिये अमेरिकन नौसेनाके खर्चमें दस गुना अधिक वृद्धि हुई है, और गत चार वर्षोंसे कुल खर्च लगभग ६० अरब डालर (एक डालर लगभग तीन रुपयेका) हुआ है।' रिपोर्टके अन्तमें फोरस्टालने स्पष्ट शब्दोंमें यह सुना दिया—'नौसेनाका विस्तार ऐसी तेजीके साथ हुआ जैसा कि अमेरिकाके इतिहासमें, और निश्चय ही अन्य किसी भी राष्ट्रकी नौसेनाके इतिहास में कभी किसी समयमें भी नहीं हुआ था।'

इस रिपोर्ट या घोषणामें अमेरिकन सेक्रेटरीने सब बातें स्पष्ट रूपसे सुना दी हैं और साथ ही अपनी महत्वाकांक्षाको भी छिपाया नहीं है। अब ये चतुर कूटनीतिज्ञ युद्धको युद्ध नहीं बल्कि 'रक्षा' (डिफेन्स) कहते हैं, जिससे भोली जनता यह समझे कि वे तो आत्म रक्षाके लिये तैयारी करते हैं। युद्ध मन्त्रीको अब रक्षा मन्त्री कहा जाता है। उक्त रिपोर्टमें 'अमेरिका और उसके मित्रराष्ट्र' तथा 'हमारे ढङ्गकी जीवन प्रणाली' शब्द भी विशेष महत्व रखते हैं। मित्रराष्ट्रोंमें उसका सखा साथी ब्रिटेन है, और ब्रिटेन तथा उसके उपनिवेश भी नौ-सेना वृद्धिमें अमेरिकासे पीछे नहीं हैं।

हालमें भारतीय उद्योग धन्धों और व्यापार मण्डलोंके संघमें श्री गगन विहारी मेहताने भारतीय उद्योग-धन्धोंके ह्रासको दृष्टिमें रखकर आस्ट्रेलिया और कनाडा (ब्रिटिश उपनिवेशों) की औद्योगिक उन्नतिकी प्रशंसा करते हुए कहा, "आस्ट्रेलिया इस समय संसारमें जहाज बनाने वाला तीसरा देश है, और वायुयान बनाने तथा हवाई शिक्षा देने वाला चौथा देश है।" यानी, जहाज बनाने वाले दो बड़े देशों अमेरिका और ब्रिटेनके बाद, सोवियट रूस नहीं, बल्कि आस्ट्रेलिया है। इससे यह कुछ अनुमान किया जा सकता है कि आस्ट्रेलियामें इस समय कितने अधिक जहाज और वायुयान बन रहे हैं। अब रही "हमारे ढंगकी जीवन प्रणाली" वह एक घोर पूंजीवादी प्रणाली है; और यदि किसीने संसारके कल्याणके लिये उस अनिष्टकारी 'प्रणाली' पर प्रहार किया तो भी अमेरिका उसकी रक्षाके लिये लड़नेको तैयार रहेगा। क्या ये सब भावी शान्तिके लक्षण हैं?

अब प्रश्न यह है कि जर्मनी और जापान की पराजयके बाद, ऐसी असाधारण नौ सेना किन प्रतिद्वन्द्वियोंको ध्यानमें रखकर बनायी जा रही है? सच तो यह है कि इस युद्धके बाद अमेरिकन परराष्ट्र नीतिके लिये तीन विषय अत्यन्त ही गम्भीर चिन्ताके होंगे। पहला, प्रशान्तके साथ चीनमें भी अपने विस्तार और प्रभावकी स्थितिको सम्भालना। दूसरे, चीनके उसपार सोवियट रूस है, और उसकी लिप्सा तथा दृष्टिसे चीनको बचाना है। तीसरे, ब्रिटिश प्रतियोगिताके निवारण करनेका भी उसे ध्यान है। ब्रिटेनसे यद्यपि उसका घनिष्ट मैत्री भाव है, पर साम्राज्य-विस्तारकी प्रतिद्वन्द्वितामें मैत्रीका कचा तागा तुरन्त टूट सकता है। जर्मनी और ब्रिटेनमें तो खूनका रिश्ता रहा है। महारानी विक्टोरिया का पति एक जर्मन प्रिन्स था तोभी साम्राज्य विस्तारके लिये दोनों महत्वाकांक्षी देशोंका खूनी रिश्ता खूनी लड़ाईमें बदल गया। इसलिये यह नहीं समझना चाहिये कि भविष्यमें अमेरिका और ब्रिटेन कभी लड़ेंगे ही नहीं। साम्राज्य विस्तारकी प्रतिद्वन्द्विता और संघर्षमें आगे जो कुछ भी न हो जाय, थोड़ा है।

पर इस समय, जर्मनी और जापानके टूटनेके बाद, सोवियट रूस ही एक ऐसा प्रबल राष्ट्र रह गया, जिसके राजनीतिक और सामाजिक तंत्र बिल्कुल भिन्न हैं और जिसके समाजवादी सिद्धान्त पूंजीवादियोंसे मेल नहीं खाते। पश्चिमी यूरोपसे लेकर पूर्वी एशिया तक जगह-जगह सिद्धान्तों और उपदेशोंके झगड़ेके कारण ऐसे फैले हुए हैं कि उनपर इस समय वे भले ही चुप रहें, पर युद्धके बाद निश्चय ही खुलकर गर्जना करते हुए अपने विचार प्रकट करेंगे।

इस समय सोवियटसे एक असन्तोषका कारण यह भी है कि उसने जापानके विरुद्ध युद्ध घोषणा करनेकी कौन कहे, साइबेरियामें अमेरिकनोंको ऐसे जंगी हवाई अड्डे बनानेके लिये सुविधाएं भी न दीं जिनसे वे जापानको शीघ्र हरा सकते। चीनमें यद्यपि अमेरिकनोंके सैनिक और हवाई अड्डे कायम हो गये हैं, तो भी अमेरिकन सेनाओंकी संख्या वहां इतनी अधिक नहीं है कि वे जापानको तेजीके साथ हरा सकें; इसलिये जापानियोंको हरानेके लिये समुद्री मार्गसे नौसेनाके द्वारा चीनी तटपर भी अमेरिकन फौजें उतारनेका विचार किया जा रहा है। यदि ऐसा हुआ तो यह निश्चय है कि मार्शल चांग कुछ भी आपत्ति न करेंगे। किन्तु चीनमें आजकल साम्यवादी कम्यूनिस्टोंका भी जोर बढ़ा हुआ है, जिनसे चांग और रूजवेल्ट दोनों असन्तुष्ट हैं।

निर्बल, अशक्त चीनकी 'अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति' किस संसार या स्वप्नलोकमें 'ऊंची' है, यह अमेरिका ही जानता है। क्योंकि उस ऊंचाईके लिये भी वही जिम्मे-दार बनता है। पर चीनकी निर्बलता और निचाईसे इतना लाभ अमेरिकाको अवश्य हुआ कि 'युद्धकी आवश्यकताओंसे प्रबल अमेरिकन सेनाओंका चीनसे 'सम्पर्क' हो गया, जिससे चीनपर अमेरिकाका 'राज-नीतिक प्रभाव' पड़ना भी सहज हो गया। अमेरिका चीनमें राष्ट्रीय 'एकता' अवश्य चाहता है। इसकी नीयत साफ है। पर कम्यूनिस्ट विप्लव और गृह-युद्धकी आशङ्कासे भी वह चिन्तित है। चीनमें गृहयुद्ध होना मित्र राष्ट्रोंके स्वार्थोंके विरुद्ध है।' मित्र राष्ट्र एक अस्पष्ट संज्ञा है। यह कहना अधिक उचित है कि गृह-युद्ध अमेरिकन स्वार्थोंके विरुद्ध होगा। क्योंकि यदि सफल कम्यूनिस्ट क्रान्तिके बाद वहां समाज-वादी सोवियट तन्त्र स्थापित हो जाय, तो फिर एक अमेरिका तो क्या, किसी भी विदेशी राष्ट्रकी दाल चीनमें आसानीसे न गलेगी। कम्यूनिस्ट क्रान्तिसे वे जैसे चीनको, वैसे ही यूरोप और एशियाके अन्य देशोंको भी बचाना चाहते हैं, पर यह अभी देखना है कि युद्धसे टूटे हुए जर्जरित और ध्वस्त देश अपनी रक्षा और उन्नतिके लिये किन-किन 'वादों', सिद्धान्तों और आदर्शों को अपनाते हैं, और अमेरिका तथा ब्रिटेन सभी जगह अपने पूंजीवादी तथा दूसरोंका शोषण करनेवाले स्वार्थोंकी रक्षाके लिये क्या-क्या उलट-सीधे उपाय करते हैं?

चीनमें कम्यूनिस्ट सेनाओंपर यदि चांग की चुंगकिंग सरकारका 'नियन्त्रण' रहे तो इसमें अमेरिकाको आपत्ति नहीं, क्योंकि चुंगकिंगपर अमेरिकाका प्रभाव है, पर यदि कम्यूनिस्ट उसके हाथोंसे बाहर निकल गये, तो फिर चुंगकिंगकी मर्यादा गिर जायगी, जैसे उसकी मर्यादा गिरानेके लिये अमेरिका या ब्रिटेनने आज तक कुछ किया ही नहीं है! यदि केवल चीनी कम्यूनिस्ट ही होते तो 'मर्यादा' का प्रश्न ही न उठता, पर कठिनाई यह है कि कम्यूनिस्टोंकी पीठपर सोवियट रूस है। यह अमेरिकाके लिये बहुत ही अप्रिय तथा अवांछनीय स्थिति है और इसीलिये चीनी मर्यादाकी रक्षाके ध्यानमें अमेरिकाका दया और सहानुभूतिसे भरा हृदय उछल और उबल रहा है। पर आशङ्का इस बातकी है कि कम्यूनिस्ट कहीं बढ़कर मंचूरियापर न कब्जा कर लें। कम्यूनिस्टोंकी रोक थामके लिये अमेरिका ने यह उचित ही समझा कि उनकी मेल चुङ्गकिङ्गसे हो जाये, तब चीनमें पूर्ण स्वांग पूर्ण होगा और अमेरिकनोंको चुङ्ग-किङ्ग द्वारा कम्यूनिस्टोंको दुरुस्त करने... उन्हें अपने रङ्गमें रङ्ग लेनेका मौका मिले...

अमेरिकनोंको चीनमें कुछ बातें अनुकूल और कुछ प्रतिकूल दिखायी देती... पर सच तो यह है कि निर्बल चीनकी सन्दिग्ध स्थिति एशियाके सम्पूर्ण... के लिये बड़ी खतरनाक है। पूर्व... एक-एक देश परतन्त्र होते चले जा रहे... अरब, ईरान, अफगानिस्तान, भारत, ... श्याम और चीनकी शोचनीय दशा... इन्हीं दो राष्ट्रों, अमेरिका और ब्रिटेन... सब जगह प्रभुत्व या प्रभाव बढ़ा हुआ... और चीनमें यदि अमेरिकनोंका प्रभुत्व... हो गया तो फिर एशियाई स्वतन्त्रता... सूर्य न जाने कितने दीर्घकाल तक... अस्त हो जायगा।

अमेरिका अपनी एशियाई प्रभुता... विकट महत्वाकांक्षामें बाधक, जापानके... अब सोवियट रूसको पाता है, और... चीनी कम्यूनिस्ट आन्दोलनका आश्रय... समझ कर अभीसे वह सतर्क हो रहा... ब्रिटेनके विचार भी सोवियटके प्रति... अमेरिकासे कुछ भिन्न नहीं हैं, ... कम्यूनिस्टोंका विरोध करनेमें अमेरिका... ब्रिटेनके स्वार्थ समान हैं।

उधर सोवियट रूसकी दशा और... भी चिन्तासे खाली नहीं है। वह... चाहे जितना भी शक्तिशाली हो, पर... पूर्वमें उसकी सैनिक शक्ति न तो... और न सुविधाजनक स्थितिमें है। ... यहां एक जापानसे ही दबना पड़ा... जिसकी नौसेनाकी शक्ति संसारमें... श्रेणी की थी। पर अब सुदूर-पूर्वमें ... श्रेष्ठ शक्तियां उसके मुकाबलेमें रहेंगी... तो अमेरिकाकी ही नौसेना शक्ति... वर्षके भीतर संसारमें अद्वितीय हो ... दूसरे ब्रिटेन और आस्ट्रेलिया भी... जंगी जहाजों और विमानोंकी संख्या... बढ़ा रहे हैं। उनकी ये सब संयुक्त... निस्सन्देह सोवियटके लिये भयानक ... हैं। तीन वर्षके भीतर अमेरिकन ... बढ़ानेकी योजना केवल सोवियटके लिये... नहीं, बल्कि संसारके लिये एक ऐसी... है कि उसने सबको शस्त्रास्त्र बढ़ानेके... मजबूर कर दिया है। इसीलिये ... यह कहा गया है कि अमेरिका एक ... या संसार-संकटके रूपमें ऐसा सामने... कि केवल एशिया ही नहीं, बल्कि ... और सात सागर कांप उठेंगे।

—

कहानी—

केसोंकी कहानी वकीलकी जबानी

———:०:———

(लेखक—श्री रामचन्द्र "आंसू")

मुहल्लेके वकील सुरेश बाबू हैं तो बंगाली, लेकिन गैर बंगाली हिन्दुओंसे हार्दिक प्रेम रखते हैं। वे प्रेम क्यों रखते हैं, ऐसे ऊटपटांग प्रश्नपर आज तक मैंने विचार ही नहीं किया। और उनके प्रेमका प्रसाद ...इसलिये, जो मुकदमेकी मनोरंजक घटनाओंसे आपका मनोरंजन करने चला हूं मैं।

उस दिन उनके चौथे 'केस' की कहानी समाप्त हो रही थी, और मेरे लिखनेका प्रथम प्रयास प्रारम्भ हो चुका था। पहले केस या कहानी का नाम है—

बदल गयीं !

—वकील साहबकी हंसी उनकी बत्तीसी ...भेदकर निकल पड़ती है, जब उनके मुंहसे ...बरबस निकल पड़ता है—'बदल गयीं !'

और जब वकील साहबकी हंसीपर विराम आ जाता है, तब स्पष्ट दीख पड़ता है कि उनकी आंखोंमें आंसू छलक आये हैं; ...के प्रसन्न मुखड़ेपर एक विषादमयी छाया ...इधर-उधर तैरने लगी है। और उसी आलम ...भारतके दकियानूसी ख्यालोंकी नींव ...उखाड़ कर फेंक देनेके लिये उदाहरण सहित ...लम्बा भाषण दे डालते हैं। बात यह थी ...दो दुल्हे अपनी-अपनी दुलहिनोंके साथ ...पर सफर कर रहे थे। दुलहिनें बंडल ...बनी हुईं एक साथ बैठी थीं। यदि दोनों ...आपसमें बातें भी करतीं, तो एक 'शाही' ...का डालकर, हालांकि विदेशी आक्रमणों ...सबसे डब्बेमें अन्धकार भरा पड़ा था। ...दुल्हा साहब जब अपने गांवके स्टेशनपर ...उतरने लगे, तो जल्दीमें श्रीमतीजीको ...लिया......। लेकिन वह दुलहिन उनकी ...नहीं, बल्कि दूसरे दुल्हा साहबकी थी।

...परेशानी, पशेमानी, और हैरानीमें दुल्हा ...ने शहरके जजके पास दरख्वास्त दी कि ...पत्नी बदल गयी है! दूसरी ओरसे भी ...दरख्वास्त दी गयी थी। अन्तमें दोनोंकी ...के आगे साक्षी दी हुई पत्नियां मिलीं। ...सन्तुष्ट हुए, दोनों शांत हुए। मगर ...वकील साहब यह कहते कभी नहीं चूकते कि, '...रे घूंघट।'

* *

वकील साहबका दूसरा मुकदमा था ...मनोविज्ञानसे संबंध रखता है। और ...मनोवैज्ञानिक केसकी नींवपर वकील ...ने अपने उद्देश्यका महल खड़ा कर चुके ...कहानी सुनिये—

निगाहें झुकी रहीं

...चोरीका शिकार होकर या आदतसे ...मजबूर होकर मंगलाने 'गनपतिया मामा' ...के घरकी दीवारपर लोहेका रम्मा चला ...दिया।

...कहा जाता था कि महल्ले-टोलेवालोंके ...बीच गनपतिया मामा 'लाख पती' तो ...नहीं, 'हजार पती' से अधिक अवश्य ...थे और इसी कल्पनाके आधार ...पर ही मंगलाने मामाकी पक्की ...दीवारपर रम्मा चलाया था। लेकिन ...वह दीवारकी तरह कच्ची नहीं थीं। मंगला ...पकड़ा ही गया। बात यह हुई ...कि आकर मंगलाने ज्योंही घरमें ...झांका, त्योंही गनपतिया मामाने ...उसको रस्सीके एक छोरसे कसकर बांध दिया और दूसरे छोरको खम्भेसे बांध दिया। प्रातःकाल ही मंगला अमंगल मुंह लेकर थानेपर और तीसरे दिन कचहरीमें उपस्थित किया गया।

कचहरीके एक कठघरेमें गनपतिया मामा थी और दूसरेमें मंगला। वकीलोंकी बहस जोरपर थी। मंगलाके वकीलने बहसके बीचमें गनपतिया मामासे पूछा—'तुम्हारा कोई गवाह है?' और गनपतिया मामा जल गयी। मंगलाके पास आकर एक धौल जमाते हुए बोली—'घोल न रे भड़ुआ! जब चोरी करने गया था, तो गवाह क्यों नहीं ले गया था?' इसपर मंगलाकी गर्दन तक न हिली। निगाहें झुकीकी झुकी रहीं। गनपतिया मामाकी बातोंकी सचाईने उसे सीकचोंके अन्दर बन्द करवा दिया।

* * *

'युगोंसे पूज्य होकर भी नारी निर्बल और अशक्त है!' यह वाक्य सुरेश बाबूके मुंहसे अक्सर सुन लिया करता था। और सोचा करता था कि पूछूं, आखिर इसका अर्थ क्या है? क्योंकि अपने रामकी बुद्धिमें बिना आधारके बातका पैदा होना अनहोनी-सा जंचता है। लेकिन जबतक मैं पूछता, तबतक उन्होंने फरमा ही दिया। असल मतलब यह है कि सुरेश बाबूके हाथमें एक केस आया। केस सिर्फ इस बातपर मकड़ीका जाला बनता जा रहा था कि—

हमे भी हिस्सा दो

कहानी यह है कि एक'सुन्दरी' का एक 'खूबसूरत लाल' से प्रेम हो गया। पहले तो पसिंजर गतिसे, मगर फिर तूफान मेलकी गतिसे चलने लगा।' दिलकी बात आंखोंसे नहीं, जबानसे होने लगी थी। लेकिन मसल मशहूर है कि 'खास छिपाये ना छिपे, इश्क, मुश्क, खांसी,खुशी, खून औ मधु पान!':सो एक दिन अनाथ 'सुन्दरी' और 'खूबसूरत लाल' की प्रेम-कहानीका भेद 'सुन्दरी' के बाबापर प्रकट हो गया। फिर क्या था; आनन-फाननमें 'सुन्दरी' के विवाहकी व्यवस्था शुरू हो गयी। क्योंकि इज्जतका सवाल था। इस व्यवस्थाको 'सुन्दरी' ने देखा और 'खूबसूरतलाल' ने जाना।

और एक दिन दोनों दूसरे शहरकी हवा खारहे थे। इधर घरमें हाहाकार मचा था। खोजके लिये आदमी इधर-उधर दौड़ रहे थे। लेकिन पता न लगा, तो न सही। अखबारोंमें यह खबर इज्जतके ख्यालसे नहीं दी गयी। घरवालोंने देवता-देवियों की मनौतियां मानी और फिर संतोष कर लिया।

इधर 'सुन्दरी' और 'खूबसूरतलाल' के दिन मजेमें कटने लगे। परन्तु कुछही दिनोंके बाद सिनेमाके खलनायककी तरह एक 'षड़यंत्रीलाल' आ टपके। और अपनेको दोनोंके भेदोंका जानकार घोषितकर दोनों को अपने शिकंजेमें दबोच लिया। और अपनी कामुकताजन्य भावुकताके वशीभूत होकर 'सुन्दरी' के सौन्दर्यसे अनुचित लाभ उठाना चाहा। 'सुन्दरी' कातर हो उठी। वह रो उठी। सुखके आकाशमें जैसे एक बारगी दुखके बादल छा गये। विवश होकर उसने अपनेको 'षड़यंत्रीलालके' हाथोंमें सौंप दिया। मगर 'खूबसूरत लाल' से ऐसी हरकत नहीं देखी गयी। उसने दूसरे शहरकी तैयारी कर दी। लेकिन 'षड़यन्त्रीलाल' एकही छंटा हुआ था। उसने 'खूबसूरत लाल' को चेतावनी दी कि 'मैं पोल खोल दूंगा। मैं आधा हक रखता हूं!' और दोनोंमें हाथा-पाई शुरू हो गयी। हाथा-पाईके बीचमें ही 'षड़यन्त्रीलाल'ने दहाड़कर कहा कि देखता हूं-तुम कैसे उसको ले जाते हो? मैं उस सालीकी नाक काट लूंगा!'

उपर्युक्त बात सुनकर 'सुन्दरी' क्षुब्ध हो उठी। दोनोंको लड़ते-झगड़ते छोड़ थानेपर भागी। कुछ देरमें दोनों पुलिसके हाथमें थे और एक दिनके बाद कचहरीमें जजके सामने उपर्युक्त बातें बयान हो रही थीं।

बयान समाप्त हो जानेके बाद मुकदमा चला। तारीखें पड़ीं। आखिरमें फैसला दिया गया कि 'षड़यन्त्रीलाल' को ६ मासकी सख्त सजा और पांच बेंत लगाये जायें। 'खूबसूरतलाल' इसलिये छोड़ दिये गये कि 'सुन्दरी' उनको वरण कर चुकी थी।

× × ×

चौथे केसकी याद आते ही वकील साहबके अधरोंपर एक हलकी रेखा खिंचकर लोप हो जाती है। वकील साहब इस कहानीको सुनाते शरमाते भी हैं और मुस्कुराते भी। और बात भी सही है। जवानी और बुढ़ापाके सन्धिस्थलपर खड़े वकील साहब अपने मुंहसे कैसे कहें कि 'हाय कलेजवा!'

खैर, वकील साहब आपके सामने कहें या नहीं, लेकिन मेरे सामने तो कहते ही हैं। और मैं धृष्टता करके आपको सुनाता हूं; सुनिये—

हाय कलेजवा !

बात शहरके उस महल्लेकी है, जहां पण्डोंके 'शाही महल' गर्दन उठाये, नदीके दर्पणमें अपने रूपको निरखा करते हैं।

शाम हो रही थी। महल्लेकी औरतें पानी भरने आ रही थीं। पाससे ही एक मनचला भी लंगोटी डाटे, तेलसे शराबोर, जांघोंपर ताल देते आ गया; चूंकि इसकी आदत शामको नहानेकी थी। कुछ देर मोरकी भांति इधर-उधर आंख फड़फड़ाते रहा और अन्तमें एक कुमारिकापर उसने आवाज कस ही दी—हाय कलेजवा!

दूरपर कुमारिकाका पिता खड़ा सुन रहा

गीत

आज वर्षके प्रथम दिवसमें जीवनकी सब भूल भुला दें
नये सालकी नयी डालपर नव आशाके फूल फुला दें
जीवनके रग-रगमें यौवन—
के मधुमय उल्लास जगा दें
बरसोंके पतझड़:वनमें नव—
सौरभके मधुमास जगा दें
घनीभूत:जगके आंगनमें निज जीवनके दीप जला दें
आज पुरातन राग भुलाकर
नवयुगके नवगान बनाकर
स्वर्णिम इस मधुमय प्रभातमें
हिलमिल एक कंठसे गाकर
मानवके उरकी युग-युगकी आओ आकुल पीर छला दें
बीत नहीं पायी संध्या भी
दीप ज्योति यह म्लान पड़ रही
जीवनके सूने प्रकोष्ठमें
अंधियारी अनजान बढ़ रही
आओ जीवनके दीपकमें स्नेह और कुछ तूल मिला दें
जगके चिर प्यासे अधरोंको
हम प्रेमामृत आज पिला दें
दो दिलके टूटे तारोंको
आओ साथी आज मिलावें
हरे बांसका सेतु बनाकर सरिताके दो कूल मिला दें

—श्री तिलक

स्वर्गीय लायड जार्जके संस्मरण

—:*:—

लेखक—मेजर रिचार्ड लायड जार्ज

वर्तमान युद्धमें ब्रिटेनका नेतृत्व जिस प्रकार मि० चर्चिल कर रहे हैं उसी प्रकार गत महायुद्धमें उसके कर्णधार डेविड लायड जार्ज थे, जिनकी मृत्युका संवाद अभी हालमें समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हो चुका है। निम्न लेखमें ब्रिटेनके स्वर्गीय प्रधान मन्त्रीके कतिपय संस्मरण उनके ज्येष्ठ पुत्र मेजर रिचार्ड लायड जार्जने लिखे हैं।

यदि सम्पादकजीने मुझसे मेरे पिताके स्मरण वेल्श भाषामें पूछे होते तो कदाचित ...रा कार्य अधिक सुगम होता, क्योंकि मुझे ...पने स्वर्गीय पिताके जीवनकी जो सबसे ...नोरञ्जक घटनाएं अथवा कथन याद हैं ...नका वास्तविक रूप वेल्श भाषामें ही ...ष्ट किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त एक ...सरी बात यह है कि मैं पाठकोंको अपने ...पेताके जीवनकी मुख्य घटनाओंका वर्णनकरके ...रेशान नहीं करूंगा, क्योंकि उनके सम्बन्ध ...ं जितने ग्रन्थ लिखे जा चुके हैं उतने संभ...तः और किसी व्यक्तिके सम्बन्धमें नहीं लिखे गये हैं।

बचपनमें ही जीवन-संघर्ष

इतना कह देना पर्याप्त होगा कि उनका जन्म मैंचेस्टरमें सन १८६३ में हुआ था और बचपनमें पिताकी मृत्यु हो जानेके कारण उनका लालन-पालन उनके चाचा रिचार्ड लायडने केनीस्टुमडीमें किया था। बचपनमें ही उनके जीवनका संघर्ष आरम्भ हो गया था। बागके पास दीवारके सहारे एक गाड़ी झाड़का ढेर डाल गयी थी। डेविड और विलियम नामके दो बालकोंसे, जिनकी उम्र मेरे विचारसे क्रमशः १० और ८ रही होगी, झाड़ उठाकर बागमें फेंक आनेको कहा गया। विलियमको फावड़ा चलाना तो आता न था। वह उसे इधर-उधर चलाने लगा। अचानक उसका एक सिरा दूसरे बालक (मेरे पिता)की आंखके पास लगा। यदि फावड़ा आंखके थोड़ा और निकट पड़ता तो मेरे पिता जन्म भरके लिये काने हो गये होते।

न्यायाधीशको मुंहतोड़ उत्तर

शिक्षा समाप्त करके उन्होंने काउंटी अदालतमें वकालत आरम्भ कर दी। उन्होंने २१ वर्षकी अवस्थामें ही वकीली करनेकी उपाधि प्राप्त करली थी। उधर न्यायाधीश एक ऐसे सज्जन थे, जो अपने अज्ञानके कारण बुरी तरह बदनाम थे। परन्तु ज्ञानके अभाव को अपनी तड़क-भड़कसे पूरा करनेमें उन्होंने कुछ भी उठा न रखा था। एक दिन युवा वकीलने आते ही अपनी मेजपर कितनी ही पुस्तकें रख दीं।

न्यायाधीश चश्मा निकाल कर जरा गौरसे देखते हुए बोले—'मि० जार्ज, क्या आप ये सब पुस्तकें हमें पढ़कर सुनायेंगे ?'

'ऐसा करनेसे श्रीमान्‌की कोई हानि न होगी'—युवा वकीलने तुरन्त उत्तर दिया। लायड जार्जका मतलब यह था कि आप जैसे महामूर्खकी इससे ज्ञानवृद्धि नहीं होगी।

परन्तु यह नहीं समझा जाना चाहिये कि लायड जार्जने एक साधन-सम्पन्न तथा सफल वकीलके रूपमें जो ख्याति प्राप्त की थी, उसका आधार यह वाक्पटुता मात्र थी। उन्होंने अपने असाधारण अध्यवसाय द्वारा कानूनी ज्ञानका भंडार भर लिया था। इसके अतिरिक्त, उन्हें जो भी मुकदमा मिलता था उसमें पूरी लगनसे लग जाते थे।

पहले चुनावमें विजय

उन्होंने पहला निर्वाचन संघर्ष १८९० में किया। उस सीटपर अनुदार दलके एक प्रभावशाली सज्जन स्वीटनहम थे और उन्होंने वह स्थान उदार दल वालोंसे छीना था। अचानक १९ मार्च, १८९० में स्वीटनहमकी मृत्यु हो गयी। उदार दलमें से कोई भी इस निर्वाचन क्षेत्रमें चुनाव लड़नेके लिये तैयार न था। उन दिनों ग्लैडस्टन प्रधान मन्त्री थे और उनका उदार दल अधिक लोकप्रिय भी न था। अनुदार दलवालोंने एलिस नैनी नामक एक धनी व्यक्तिको खड़ा किया। उदार दलवालोंने एक अज्ञात युवक लायड जार्जको अपना उम्मीदवार चुना, जिसकी अवस्था केवल २७ वर्ष की थी।

इसपर सब तरफ बड़ा आश्चर्य किया गया। तब एक उदारपत्रने लिखा—"हमसे पूछा जाता है कि लायड जार्ज कौन हैं? इन्हें पार्लमेंटमें चुनावके लिये क्यों खड़ा किया गया है? हम तो इतना ही कहना पर्याप्त समझते हैं कि वे एलिस नैनीके विरोधी गुणोंवाला व्यक्ति हैं।"

१० अप्रैल को मत-गणनाके समय बड़ी विचित्र घटना घटी। पहले एलिस नैनीको निर्वाचित घोषित कर दिया गया। फिर एक कर्मचारी दौड़ता हुआ आया। उसके हाथ में लायड जार्जको दिये गये मतोंका एक बंडल था जो कहीं छिपा हुआ रह गया था। दूसरी मतगणनामें लायड जार्ज १८० मतोंके बहुमतसे विजयी हुए। इसके उपरान्त ५४ वर्षों तक लगातार इस निर्वाचन क्षेत्रसे पार्लमेंटके सदस्य चुने गये।

पिताजीके प्रथम निर्वाचनके समय मेरी अवस्था केवल १९ महीने की थी। उनके समर्थकोंका जुलूस शोर मचाता हुआ घरकी तरफ चला आ रहा था। मैं चुपचाप चारपाई पर पड़ासो रहा था। तबतक मेरे मस्तिष्कमें राजनीतिकी चिन्ताने प्रवेश नहीं किया था।

मेरी धाय शोरगुल सुनकर दौड़ गयी और जुलूसको हमारे फाटकसे ३०० गजकी दूरीपर यह कहकर रोक दिया—"क्या गुल-गपाड़ा मचा रहे हो—बच्चा जग जायगा।" इस प्रकार विजेताको मानवसमूह संचालित रथसे उतरकर पैदल घर वापस आना पड़ा। समर्थकोंका जोश भी ठण्ढा पड़ गया और वे अपने अपने घरोंको लौट गये। अपने पिताके स्वभावसे परिचित होनेके कारण मुझे यह जानकर तनिक भी आश्चर्य नहीं हुआ कि पार्लमेण्टमें अपना पहला विरोध उन्होंने अपने नेता ग्लेडस्टनका ही किया था। उनका सिद्धान्त था "सत्यके लिये यदि सम्पूर्ण संसारसे भी लड़ना पड़े तो चिन्ता नहीं।"

संघर्षपूर्ण और दुर्दमनीय

वे आरम्भसे ही संघर्षपूर्ण और दुर्द... मनीय थे। सबसे संकटपूर्ण वे तब ... होते थे, जब शक्तिहीन जान पड़ते थे।

जिन लोगोंने प्रसिद्ध घुड़दौड़ ... विल्डेको लड़तेहुए देखा है वे मेरा तात्पर्य ... भांति समझ जायंगे। एकबार मैंने ... को लड़ते समय देखा। अपने प्रतिद्वन्द्वी ... तुलनामें वह पीला और विवर्ण ... पड़ता था। मैं उसके लिये चिन्तित ... उठा; किन्तु परिणाम ज्ञात होनेपर ... चिन्ता व्यर्थ सिद्ध हुई। अजेय ... उसका मुख्य सहारा था। वही बात ... पिताके सम्बन्धमें कही जा सकती है।

बरमिंघममें उनपर क्या बीती ... जानते हैं। उस रात वे वहांसे ... निकलकर कैसे आये—इसे केवल ... परिवार वाले ही जानते हैं। मेरी ... रात भर उनकी प्रतीक्षा करती रहीं।

मेरे पिताकी राजनीतिक स... बहुत बड़ा हाथ उनकी वाक्पटुताका ... उनके प्रधान मन्त्री होनेसे समस्त ... वासियोंने अभूतपूर्व गौरवका अनुभव ... था और एक प्रकारसे उनके राष्ट्र... दृष्टिकोणमें ही परिवर्तन हो गया।

—

था। फिर क्या था। दोनों तरफसे वाक्य-युद्ध शुरू हुआ। मल्ल-युद्ध होते-होते बचा। और शास्त्र-युद्ध होनेके पहले ही न्याय-युद्ध यानी न्यायालयमें इसपर बहस शुरू हो गयी।

जज पूरा यूरोपियन था। उसकी समझ में यह बात नहीं अंट रही थी कि आखिर यह मुकदमा किस लिये चलाया गया है! वकीलोंसे बार-बार पूछता—'ह्वाट डज इट मीन—हाय कलेजवा ?'

इसके उत्तरमें वादीकेवकील समझाते कि 'मी लार्ड! इसके माने गाली है!' दूसरी ओरका वकील कहता—'सरकार! हमारे मुवक्किल (अपराधी) के कलेजेमें (हार्ट) दर्द हुआ, इसीलिये उसने कहा—'हाय कलेजवा!' किन्तु पहला वकील इसका जोरोंसे खण्डन कर रहा था—'मी लार्ड! यह एक तरहसे 'प्रोजमें गाली है!' लेकिन जज महाशय न समझ सके, तो न समझ सके। अपराधी रिहा कर दिया गया। किन्तु जज साहब आज भी कभी-कभी पूछ लेते — मिस्टर घरेश! ह्वाट डज इट मीन—हाय कलेजवा!' और घरेश बाबू इधर-उधरका उत्तर देकर मुस्करा देते हैं।

—

युद्धके अपराधी

—:*:—

लेखक—श्री सीताराम गोयल, एम० ए०

नाज़ी तानाशाह हरहिटलर

युद्धका अन्त अब बहुत दूर नहीं। शीघ्र …राष्ट्रोंके नेता जर्मनी और जापानका …निर्णीत करने बैठेंगे। सन्धिकी जो …राजित देशोंपर लादी जायेंगी, उनके …न्यायका वितण्डावाद, विश्वशान्तिका …न्त धारण और मानवताकी दुहाई …अनेक तर्क प्रस्तुत किये जायेंगे। स्व-…ही जनता आशावादी और विश्वासी …है और लम्बे चौड़े शब्दोंमें …कर हांक लगाने वाले नेतागण सदा …आंखोंमें धूल झोंकते आये हैं। …महायुद्धके पश्चात जो वंचना विश्वकी …जनताके साथ हुई, उसका साक्षी …दिनोंका इतिहास है और वर्तमान युद्धमें …होने वाले नेताओंकी प्रवृत्ति देखकर …बार भी सन्देहको पूरा स्थान …ना चाहिए। वे लोग किस प्रकार …तिक समस्याओंको अन्धेरेमें डालनेका …कर रहे हैं, इसका प्रमाण धुरीराष्ट्रोंके …किये जाने वाले अनर्गल प्रचारोंमें …है। जर्मनी और जापानके विरुद्ध …व्यवस्थित रूपसे उन्मुक्त घृणाकी …दी जा रही है, उसको पढ़-सुनकर …नहीं होता कि विजयोल्लासकी …में न्याय-निर्णयको अवसर मिल …।

…से जर्मनीको लेकर ही मित्रराष्ट्रोंके …र पत्रोंमें सर्वथा निर्मूल और असत्य …जा रही है। युद्धका सारा दोष उस …देकर लादकर ही विजेताओंको …नहीं हो सका, अतः अबतो समूचे …मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करके एक …से विक्षिप्त, असुर-वृत्ति और न जाने …क्या कहा जा रहा है। फील्डमार्शल …मरीके हालमें दिये गये एक वक्तव्यमें …अपने सैनिकोंको कठोर आदेश दिया …है कि अधिकृत क्षेत्रोंमें जर्मनीकी …जनतासे वे किसी प्रकारका सम्पर्क …करें और उसको जता कि जर्मन …कितने हेय, कितने घृणास्पद हैं। दूसरे …जर्मनोंको अस्पृश्य ठहराया गया है …उनको किसी प्रकारसे भी अपना समझने …पर घोर चेतावनी दी गयी है। …राष्ट्रको हिंसावृत्तिके संक्रामक रोगसे …कर उनसे दूर रहनेका आदेश दिया …। अब सोचने वाले समझ सकते हैं कि युद्धके पश्चात होने वाले न्याय-निर्णय और शान्ति-स्थापनामें जर्मनीके हिस्से क्या आयेगा।

जिन लोगोंने जर्मन इतिहास पढ़ा है और जर्मनीके दर्शन, साहित्यकला, विज्ञान इत्यादि क्षेत्रोंमें जिनकी पहुंच है, वे आसानी से इस बातको समझ सकते हैं कि जर्मनी देशमें विक्षिप्त असुर बसते हैं या अत्यन्त प्रतिभाशाली, कर्मप्रवीण, सच्चे मनुष्य। कोई भी ईमानदार विचारक इतने भारी असत्य आरोपकी गवाही नहीं दे सकेगा। नाजीवादकी छत्र-छायामें निस्सन्देह जर्मनीमें घोर कुकृत्य हुए हैं, और नाजी नेताओंसे प्रेरित होकर जर्मन सेनाने दूसरे देशोंमें निर्मम हत्याका ताण्डव भी किया है। पर यह अपराध तो नेतृत्वका है, जनताका नहीं। तानाशाहोंकी राज्य प्रणालीमें जनता को विवश, अबोध और उन्मत्त बना देनेकी असीम क्षमता रहती है। इसी प्रणालीके शिकंजेमें कसकर नाजीनेताओंने जर्मन राष्ट्रका इतिहास काला कर डाला। पर सदासे वह काला नहीं था, और कौन कह सकता है कि फिरसे उज्ज्वल होनेकी सामर्थ्य उसमें नहीं रह गयी है। फिर भला उस राष्ट्रके प्रति इतनी भयंकर घृणाकी प्रतारणा क्यों? फिर भला उस राष्ट्रको सर्व रूपेण क्षत-विक्षत करके पीस डालनेका यह षडयन्त्र कैसा? प्रतिहिंसाके नाते यह सब उचित हो सकता है, पर इस दृष्टिकोणसे यह न्याय और शान्तिकी गहन चर्चा कोरी बकवाद बनकर रह जाती है।

इसी प्रकार जापानके विषयमें भी कहा जा सकता है। माना कि जापानने जर्मनी की तरह सभ्यता, संस्कृतिके प्रासादमें उतनी ईंट नहीं लगायी, आधुनिकताका उदय होते ही वहां पूंजीवादकी साम्राज्य-लिप्सा विलमिलाने लगी और चीन जैसे निरपराध देशपर उसकी सेनाओंने अमानुषिक अत्याचार भी किये। पर यह सारा दोष तो उस राज्य-प्रणाली और समाज-व्यवस्था का है जिसके पंजोंमें स्वयं जापानकी जनता फंस गयी है। अपराधी है तो जापानके वे सामन्त और पूंजीपति जो अपने स्वार्थ और अपने ऐश्वर्य साधनका मार्ग साफ करनेके लिये जापानके करोड़ों लोगोंको पथ-भ्रष्ट कर रहे हैं। नेतृत्व ठीक हो तो जापान भी अन्य देशोंकी भांति शांतिसे रह सकता है। बहुतसे लोग नेतृत्वके उत्तरदायित्ववाली बात माननेसे इनकार कर देंगे। पर इतिहासपर दृष्टि डालनेसे जाना जा सकता है कि कोई इतने बड़े सत्यको सहजमें असत्य नहीं कह सकता।

थोड़ी देरके लिये हम मान लेते हैं कि केवल नेतृत्व ही नहीं, धुरी राष्ट्रोंकी प्रजा भी वास्तवमें नृशंस और क्रूर है। विश्व-

फासिस्ट तानाशाह सिन्योर मुसोलिनो

फील्ड मार्शल गोयरिंग

नियन्ताने विशेषतया इनको हिंसा और दुराचारका अभिशाप दिया है। पर यह बात मित्र राष्ट्रोंके समाचार पत्रोंने इतनी देरसे क्यों समझी? वर्तमान युद्धसे पूर्व ही जर्मनी और जापान निरपराधोंके रक्तमें अपने हाथ रङ्ग रहे थे। उनके नेता खुले शब्दोंमें युद्धका राग अलाप रहे थे और अपने-अपने देशोंमें समस्त विश्वकी शांति हड़प कर जानेकी योजना तैयार करनेमें लीन थे। उस समय तो एक-दोको छोड़कर अन्य ब्रिटिश और अमेरिकन समाचार पत्र उनके प्रति निन्दा और भर्त्सनाका प्रदर्शन नहीं कर सके। उन दिनोंका मौन आजका प्रलाप—भला इन दो परस्पर विरोधी बातों में कैसे सामञ्जस्य स्थापित किया जाये? कुछ रहस्य अवश्य प्रतीत होता है। उसे तभी समझा जा सकता है जब गत महायुद्ध के पश्चातसे लेकर वर्तमान युद्ध तक पूंजी-वादी राष्ट्रोंकी अन्तर्राष्ट्रीय क्रूर नीतिका अध्ययन किया जाये। उधर जो प्रमाण मिलते हैं उनके देखनेसे किसी भी इतिहास-कारका यह मत नहीं हो सकता कि युद्धका उत्तरदायित्व मित्र राष्ट्रोंपर न हो कर केवल धुरी राष्ट्रोंपर ही है।

पूंजीवादी वर्गोंकी जिस दुरभिसन्धि के परिणाम-स्वरूप वर्तमान युद्ध चला, उसका सूत्रपात हुआ रूसकी क्रान्तिके साथ। उस भीषण विस्फोटने जर्मनीके ऊपर पायी हुई पूंजीवादी राष्ट्रोंकी विजयको विफल-सा कर डाला। तुरन्त ही क्रान्तिको पराजित करनेकी योजना तैयार की गयी, सब ओर प्रतिक्रियाका समर्थन किया गया। परन्तु क्रान्ति होनेके पश्चात जर्मनीसे उलझनेमें मित्रराष्ट्रोंको एक साल लग गया। इस अवकाशमें क्रान्तिके नेताओंने अपनी जड़ जमा ली और लाल सेनाका सङ्गठन कर लिया। सन्धि होनेके पीछे पूंजीवादी राष्ट्र खुलकर तो रूसपर आक्रमण नहीं कर सके, परन्तु छिपे-छिपे उन्होंने रूसमें होनेवाले प्रतिक्रियात्मक विद्रोहका साथ दिया। क्रान्तिके पैर उखाड़नेमें वे लोग सफल न हो सके।

ठीक इसी समय साम्यवादकी शक्तियां इटली और जर्मनीके पूंजीवादका तख्ता उलटने लगीं। इन दोनों देशोंपर भी क्रान्ति की घटाएं घिर आयीं। किन्तु परिस्थिति के कारण, कुछ साम्यवादी नेतृत्वकी कम जोरीके कारण और कुछ रूसकी क्रान्तिसे जागे हुए पूंजीपतियोंके सङ्गठनके कारण, इन राष्ट्रोंमें क्रान्ति-कोपराजित होना पड़ा। इस पराजयका सबसे महत्वपूर्ण साधन था फासिस्टवादका उदय। मुसोलिनीने शासनकी बागडोर सम्भालते ही साम्यवादका गला घोंट दिया। पूंजीपतियोंको फिर आशाके दर्शन हुए। इसलिये उन दिनोंके मित्र-राष्ट्रीय समाचार पत्र एक स्वरसे मुसोलिनीका गुणगान कर रहे थे।

दिवालिया पूंजीवाद सभी देशोंमें फासिस्टवादका रूप साधारण कर रहा था। प्रतिक्रियाकी इन नयी शक्तियोंका सङ्गठन एवं उनका पोषण करके एक दिन रूसपर उनकी हिंसावृत्तिको ढील देदेना ही पूंजीवादी राष्ट्रोंका उद्देश्य बन चला। पिछले पचीस सालका इतिहास बता रहा है किस प्रकार पूंजीवादी देशोंने घोर अन्याय, घोर हिंसा और जघन्य बर्बरताको आश्रय और प्रोत्साहन दिया। एक-एक घटना इस बात की साक्षी है कि पूंजीवाद जर्मनी, जापान और इटली इत्यादि फासिस्ट शक्तियोंको एक दिन रूसपर चढ़ दौड़नेके लिये तैयार

फासिस्टवादके सहायक स्व० चेम्बर लेन

कर रहा था। उसको स्वप्नमें भी यह भय नहीं था कि इन बर्बर शक्तियोंसे स्वयं उसको भी लोहा लेना होगा। इसी कारण जब वर्तमान युद्ध छिड़ा तो ब्रिटेन और फ्रांसने अपने आपको बिल्कुल अप्रस्तुत पाया। जो षड़यन्त्र उसने रूसके विरुद्ध रचा था, विधिके विधानने सबसे पहले उसीको उसमें फंसा दिया।

फासिस्टवादकी खुली बर्बरताका इतिहास यों तो मुसोलिनीके उदयसे आरम्भ होता है। किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रमें उसका नग्न नृत्य पहले-पहल तब देखा गया, जब जापान मंचूरियाको निगल गया और किसीने उफ तक न किया। फिर नाजी पार्टीने सत्ता हथिया कर जर्मनीके जनतन्त्र की कपाल-क्रिया कर डाली। दो वर्ष पीछे स्पेनके प्रजातन्त्रका हत्याकाण्ड आरम्भ हुआ और उधर मुसोलिनीने निरपराध, शांतिमय अबीसीनियाको गलेके नीचे उतार लिया। अब हिटलरकी बारी थी, उसने भी राइनलैंड, आस्ट्रिया, जेकोस्लोवाकियाका सफाया करके पोलैंडपर आंख लगा ली। पूर्वमें जापान कभीका चीनपर आक्रमण कर चुका था और अपने लौह-यन्त्र से उस शक्तिहीन देशका प्राण लेता जा रहा था। यह सब हुआ, पर ब्रिटेन, फ्रांस और अमेरिकाकी सरकारोंने आंखें मींच लीं। भीतर आशा उदय हो रही थी, बाहर बोलने बर्तनेसे बात बिगड़नेका डर था। केवल चुप्पी साध कर ही नहीं, व्यापारके बहाने धुरी राष्ट्रोंको युद्धकी सामग्री देकर भी, पूंजीवादने अपने कर्त्तव्यका पालन किया। और बड़ी शीघ्रतासे फासिस्टवादका युद्ध-यन्त्र रूसको पीस डालनेके लिये उद्यत हो चला। इसी समय पोलैंडकी समस्याको जन्म दिया गया। अच्छा बहाना था रूससे खटक जानेका और पूंजीवादी राष्ट्रोंके प्रेसने हो-हल्ला मचाकर विषम वातावरण उत्पन्न कर डाला। पासा फेंका जा चुका था, रूसके चाल चलनेकी आशा थी। रूस चूक जाता तो पूंजीवादियोंके पौ बारह थे। बैठकर युद्धका तमाशा देखते और सन्धिके समय पंच बननेको दौड़ पड़ते। सोचा तो ऐसा ही था। पर हुआ कुछ और।

अन्त समयमें रूसने सब गुड़-गोबर कर दिया। स्टालिन कोई नावाकिफ तो था नहीं। उसने पूंजीवादी राष्ट्रोंकी दुरभिसन्धि को समझ लिया। अतः पोलैंडके मामलेपर रूसने वही रुख दिखाया जो ब्रिटेन और फ्रांसने जैकोस्लोवाकियाके प्रति दिखाया था। चुप्पी ही नहीं साधी, बल्कि आगे बढ़ कर जर्मनीके साथ अनाक्रमणकी सन्धि कर डाली। ब्रिटेन और फ्रांसको लेनेके देने पड़ गये। जनताकी मांग थी कि हिटलरको और प्रोत्साहन न दिया जाये, चेम्बरलेन और दलादियेने जो झूठे आश्वासन दिये थे, वे उनके गले आ पड़े। अनिच्छा रहते भी उनको जर्मनीसे लोहा लेना पड़ा।

यह है इस युद्धके कार्य-कारणका हिसाब। पीछेकी घटनाओंका ब्योरा देनेका इस समय प्रसंग नहीं है। केवल यही देखना था कि इस युद्धके अपराधी हैं वस्तुतः पूंजीवादी राष्ट्र, जिन्होंने इटली और जर्मनीमें फासिस्टवाद का पोषण किया, और चीनकी स्त्रियों और बालकोंपर गिराये जानेवाले बम बनानेके लिये जापानको करोड़ों टन लोहा और तेल दिया। जब दोष निर्णय हुआ तो दण्ड विधान स्पष्ट है। दण्ड मिलना चाहिये पूंजीवादी और साम्राज्यके पोषक प्रतिक्रियावादी नेतृत्वको, जो आज भी अपने आसनपर आसीन झूठी सफाई दे रहा है, और जो अब भी भारत, मध्यपूर्व तथा अन्य क्षेत्रोंमें अपने निरंकुश स्वार्थोंपर आंच नहीं आने देना चाहता। जर्मनी, इटली और जापानकी जनताने तो विवश होकर फासिस्टवादका प्रपीड़न झेला और पथ-भ्रष्ट होकर झूठे आदर्शोंके पीछे इतना भारी आत्मोत्सर्ग कर डाला। फासिस्टवादका नेतृत्व तो नष्ट हो ही चुका। उसका प्रश्न उठता नहीं। अब तो वास्तविक प्रश्न पूंजीवादी नेतृत्वके विनाशका है।

मुक्त-विहग

——:o:——

लेखक—श्री एन० किशोर "नीरज"

युवावस्थामें न जाने लोग कितने मधुर जाल बुना करते, हवामें अपने सुख, वैभवके विशाल महल बनाया और बिगाड़ा करते हैं। इसी सरस जीवनमें किसीके ऊपर अपना सर्वस्व न्योछावर कर देनेकी अथवा मर मिटनेकी भी मधुर कल्पनाएं किया करते हैं। लेकिन यह सुरूर शीराजी नशेकी तरह क्षणिक है। जवानीकी मादकतामें अक्सर लोग वह पागलपन कर बैठते हैं जो पीछे प्रायश्चित का कारण बन जाता है। यौवनकी अतृप्त पिपासा पीछे दुखदायिनी हो जाती है। सुन्दरता उसमें ईंधनका काम करती है।

कमलके पिता विशाल सम्पत्ति छोड़कर मरे थे। युवावस्थामें धनकी कमी न होनेके कारण उसने सुखोंको दोनों हाथोंसे लूटना आरम्भ कर दिया। वह उन्मुक्त वायुमें विचरण करता। प्रेमके मृदुल हिंडोलेमें डोलता, मृणालिनी उसके नयनोंकी ज्योति थी—सुखमय जीवनकी सङ्गिनी।

दिन बीतने लगे। कितनी ही मादकतापूर्ण वसन्त रात्रि आयीं और चांदनी बिखेर गयीं। ऊषा आती और उन दोनोंके ऊपर स्वर्ण-राशिकर बिखेर चली जाती। सावन आया और मलार गाकर हवाके पंखोंपर उड़ता चला गया।

सुख, विलास और ऐश्वर्य अपने-अपने वैभवको दिखलाने लगे। परिस्थितियोंने उलझनका जाल बिछाना आरम्भ कर दिया। जिस सुख-वैभवके लिये सांसारिक मानवता तरसती रहती है, वही वैभव एकदिन उदासी भी ला देती है। मृणालिनीकी जिन बातोंपर कमल मुग्ध था, उन्हींसे वह ऊब उठा। क्योंकि वैभवकी शीराजी खुमारी टूट चुकी थी—उसके वैभवपर शीतकी क्रूर दृष्टि पड़ गयी।

परिस्थितियोंने अपना रङ्ग बदला। प्रकृतिके मनोहर दृश्य अब उसे खलने लगे। उनमें प्रेमभरी लालसाओंका अभाव मृणालिनीको खटक रहा था। क्योंकि दरिद्रताके थपेड़ोंने उस नासमझ कमलको झंझटोंका सामना करनेके बिलकुल अयोग्य बना दिया था। बात-बातपर वह मृणालिनीको झिड़क दिया करता। मृणालिनी कमलके दुखोंको न सह सकी और उसने बिछावन पकड़ लिया। कमल भी दुखके आवेगको न सह सका—उसकी मृणालिनी जो अस्वस्थ थी।

एक दिन, जबकि सारी पृथ्वी श्वेत परिधान पहने शारदीयाके स्वागतकी तैयारीमें थी, मृणालिनीने अस्फुट स्वरोंमें कहा—'प्रिये, इन स्वतन्त्रता प्रेमी विहगों को छोड़ दो। प्रकृतिकी मुस्कानपर नृत्य करनेके लिये इन्हें बन्दी मत बनाओ। स्वतन्त्रता ही सभी प्राणीके जीवनका जन्मसिद्ध अधिकार है।'

मृणालिनीके मर्म भरे वाक्योंने कमल के लिये एक नवीन पहेलीको उत्पन्न कर दिया। सन्ध्या आयी और चली गयी। अमावस्याकी घनी अंधियारी चारों ओर छायी थी। दोपहर रात बीत चुकी थी। रोगिनीके मुंहसे एक लड़खड़ाती आवाज आयी—'प्रियतम, मैं भी मुक्त गगनमें विहगकी भांति विचरण करना चाहती हूं। चलो, इस छल-दम्भपूर्ण संसारसे ऊब गयी।' कमलने देखा—दीपक बुझनेके पहले एक तेज लौ दिखाकर बुझ गया।

समयकी गोदमें कई मास बीत गये। कमलके उस विशाल विलास-भवनमें भूतों का डेरा था।

× × ×

कमलके हृदयमें मृणालिनीके ये शब्द हिलोरें मार रहे थे—'प्रियतम! मैं भी मुक्त गगनमें विहगकी भांति विचरण करना चाहती हूं।'

कमल रायल एयर फोर्समें भर्ती हो गया। अपनी विलक्षण बुद्धिमता और कार्यकुशलताके द्वारा वायुयान संचालनमें प्रवीणता बहुत शीघ्र प्राप्त कर ली। उसका हृदय कहता—'मृणालिनी, मैं भी मुक्त गगनमें विचरण करूंगा।'

कमल वायुयानमें उड़ा चला जा रहा था। सारा विश्व उसे मनोहर, दिखायी पड़ रहा था। मेघोंके समूहका छेदन करता हुआ उसका वायुयान वायुमें उड़ रहा था। मनमें उमंग, हृदयमें उत्साह और असीम साहसके साथ कमल उड़ रहा था। आनन्दके उद्वेगमें ये कड़ियां उसके मुंहसे निकल रही थीं—

'मेघोंपर चढ़ कर प्रिया पास
प्रेमीकी व्याकुल आह चली......।'

अचानक घर्र-घर्र शब्द हुआ। वायुयान पृथ्वीपर गिरचकनाचूर हो गया—कमलके नश्वर शरीरका परित्याग कर प्रेमी आत्मा मृणालिनीकी खोजमें उड़ चली।

बापू

कौन है वह मुस्कराता ?
रक्त-रंजित क्रान्तिमें भी शान्तिके है गीत गाता।
हंस रहा तूफान सम्मुख, हंस रहा वह भी मनस्वी ;
सागरोंकी विकट लहरोंमें खड़ा निर्भय तपस्वी।
प्रलय झंझावात प्राचीमें प्रतीचीका भयङ्कर
जब बढ़ा गरजा गगनमें, कंप उठा तब विश्व थर-थर !
प्रलय - झंझावातको वीरान ही वीरान भाया ;
प्रलय-वीणापर किसीने नाशके ही राग गाया।
विश्वकी हर क्रान्तिमें ही रक्तकी सरिता बही है
और मानवता सदा सन्तप्त हो रोती रही है।
क्रान्तियां शत-शत हुईं तलवारका लेकर सहारा ;
रायफल, बन्दूक, बम, पिस्तौलका ही खेल सारा।
जननियोंके लाल लाखों लुट गये, आंसू बहातीं ;
प्राणपति खोकर युवतियां रुदनसे अम्बर कंपातीं।
देख मानवता-विकलता, स्वर्गसे वह कौन आता ?
कौन है वह मुस्कराता ?

शान्तिकी ले कान्ति अनुपम, क्रान्तिका सन्देश देता,
शान्तिकी ही क्रान्तिसे जन, विश्वका बनता विजेता।
चकित होकर विश्वने फिर शान्ति-संस्थापक निहारा ;
युग हंसा मनमें मुदित, नवयुग प्रवर्तक देख न्यारा।
बुद्धका वह त्याग सात्विक बढ़ गया कुछ और पाकर ;
कौन पैगम्बर उपस्थित कर रहा नव क्रान्ति आकर ?
कौन मृतकोंकी नसोंमें रक्तका सञ्चार करता ?
कौन सत्याग्रह - समरमें देशका है दुःख हरता ?
उधर गरजा गगनमें वह प्रबल दानवता भयङ्कर,
मनु मानवता विकल हो कंप उठी बस इधर थर-थर !
गगन गरजा गरजकर जब आंख यों तुमने उठायी ;
विश्वके प्रत्येक कणने वह तुम्हारी बात पायी।
जो कहा तुमने हिमलयने कहा सीना उठाकर ;
बहचले उनचास मारुत मन्त्र वह जगमें गुंजाकर।
कौन किसके मन्त्रको है विश्वका कण-कण सुनाता ?
कौन है वह मुस्कराता ?

जो कहा तुमने वही है, चञ्चला चपला दिखाती ;
असित मेघाछन्न नभमें तड़पकर वह चमक जाती।
सागरोंमें गिरी सरिताएं, उसीके गीत गातीं,
और जलपरियां मनोहर हैं उसीको गुनगुनातीं।
तुम बढ़े उनके नगरमें जिन्हें छूते लोग डरते ;
वेदनासे, मूक होकर, जो अकेले विकल मरते।
रोग-शय्यापर पड़ी थीं हाय कुल-वधुएं जहांपर ;
चीखते थे भूखसे व्याकुल जहां शिशु आंख मल मल।
और उन्नति-गिरि चढ़े जन पास भी उनके न आते ;
हाय, दानव बन गये थे आज जो मानव कहाते।
तुम बढ़े उनके नगरमें नीर नयनोंसे बहाते ;
'बन्धु प्यारे ! यह दशा हा !' कह उन्हें उरसे लगाते।
फूलसे मासूम बच्चोंको अहा ! शिशु बन खिलाया ;
पीड़ितोंको और पतितोंको अरे, तुमने जिलाया।
कौन युगका आज ईसा जो उन्हें उरसे लगाता ?
कौन है वह मुस्कराता ?

मन्त्र चर्खाका सिखाकर, स्वाभिमानी फिर बनाया ;
और खद्दरका कवच दे, विश्वमें उनको उठाया।
विश्वके विस्तृत गगनमें लग रहा नक्षत्र-मेला ;
शीघ्र प्राचीमें उगेगा, चन्द्र आयी शुभ्र वेला !
तुम हिमालयसे अटल हो, वृद्ध ओ मेरे तपस्वी !
चल बसीं 'बा' छोड़ तुमको बीचमें ही हा ! यशस्वी !
हाय 'मा बा' क्या गयीं मातृत्व ही जगसे सिधारा ;
दया, नय, वर त्यागकी प्रतिमा गयी बस छोड़ कारा ;
किस तरह 'बा' हाय अपने देशका अपमान सहतीं ?
पुत्र भी चुप हो गये जब किस तरह 'बा' हाय रहतीं ?
धन्य है वह देश जिसमें यों न वृद्धा मा सिधारी ;
नीच है वह देश जिसमें चल बसी मा यों दुखारी।
वज्रसे आहत पथिक फिर भी बढ़ा जाता दिखाता !
कौन है वह गुनगुनाता ?

आंखसे आंसू अरे कुछ, शीघ्र ही पर पोंछ डाले ;
देशके कल्याण हित बलिदान ये कितने निराले।
एक भारत ही नहीं संसार तुमको मानता है ;
बुद्ध, ईसा, राम-सा तुमको सभी जग जानता है।
विश्वकी आंखें तुम्हींपर लग रही हैं आज त्यागी !
कर रहा है शान्तिकी वह याचना, विश्वानुरागी !
रविसुतामें नीर जब तक, गगनमें जब तक सितारे ;
सूर्यमें है तेज, तब तक हों अमर बापू हमारे।
मुदित हो गाये हिमालय, वर विजयके गीत न्यारे।
टेम्ससे आवाज आये—'हों अमर बापू हमारे।'
एक स्वरमें कह उठे—"योरुप अहा ! बापू हमारा।
शान्तिका सन्देश दे, कृतकृत्य करता विश्व सारा।
विश्वका उत्थानका यह मार्ग है किसने दिखाया ?
रक्तका निर्झर मिटा, सुख-शान्तिका निर्झर बहाया।
कौन वह निज तेजसे जो विश्वको जगमग बनाता ?
कौन है वह मुस्कराता ?

—श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

देशी रियासतोंमें अर्थ-हीन राजभक्तिका ढकोसला एक ऐसी पहेली है, जिसे समझ पाना सर्व साधारणके लिये बहुत कठिन है। राजनीतिक क्षेत्रमें रियासती शासक, इस ढकोसलेका उपयोग खास-खास मौकोंपर एक दांवके रूपमें ही करते हैं। यहांकी जनताके पथ-प्रदर्शक नेता लोग इससे धोखा खाते रहते हैं। इसके सिवाय इसी 'ढकोसला-राजभक्ति' के सहारे, उन कीर्त्ति-लोलुप लोगोंकी सस्ती नेतागिरी भी निभ जाती है, जो त्याग और बलिदानसे किनारा-कशी करते रहकर भी, इस क्षेत्रसे अपना मतलब निकालते रहते हैं। इन लोगोंसे शासक वर्ग भी खुश रहता है, और इनके नेतृत्व की 'सलामती' चाहकर परोक्ष रूपसे इनकी जमातको बढ़ाते रहनेमें मददगार भी होता है। क्योंकि 'ढकोसला-राजभक्ति' का प्रतिपादन उन्हीं लोगोंके द्वारा होता है, जिनसे जनताके जीवन उठानेवाले अवसरोंको सहज ही खत्म कर दिया जाता है। राजनीतिक क्षेत्रोंमें उन लोगोंके साथ रहनेसे संभवतः किसी प्रकारके कोई खास बड़े त्याग या कष्टका मौका आनेकी सम्भावना नहीं रहती। इसलिये यहांके राजनीतिक क्षेत्रमें सस्ती नामवरीके इच्छुक लोग बड़ी तादादमें इनके साथ इकट्ठे हो जाते हैं और इस जमातका नाम 'कार्यकर्त्ता सङ्गठन' हो जाता है। त्याग और बलिदानकी भावना रखनेवाले कष्ट-सहिष्णु कार्यकर्त्ताओंकी संख्या हमेशा कम ही रहती है। इसलिये इस जमातके नामधारी कार्यकर्त्ताओंकी तुलनामें, कष्ट-भोगी कार्यकर्त्ता अल्पमतमें रह जाते हैं। परिणाम यह होता है कि राजनीतिक जीवनके तेजस्वी पुरुष अक्सर, इस जमातकी कारस्तानी से खत्म हो जाते हैं।

बेशक, इस जमातके द्वारा कुछ ऐसे दिखावटी कार्य अवश्य होते रहते हैं, जिनमें कोई कष्ट सहनका खतरा न हो और वे अखबारी प्रचारके लिये अधिकसे अधिक उपयुक्त हों। यह बात जरूरी है कि अल्पमतवाले ऐसे कार्यकर्त्ताओंको, जो इस जमातकी अवसर विशेषकी नीतिका खुला विरोध न करते हुए, अपना मन मसोस कर, इनके साथ चलते हों और जो अपना विशेष अस्तित्व भी रखते हों—उन्हें इस आचारके बदलेमें पद-प्रतिष्ठा दे दी जाया करती है। किसी सच्चे कार्यकर्त्ताके ऐसे दिखावेसे जनताको इस जमातकी कारस्तानियोंपर सन्देह करनेकी संभावना नहीं रहती। यद्यपि किसी सच्चे कार्यकर्त्ताका यह आचार भी जनताके साथ भारी धोखेबाजी है, तथापि मान-प्रतिष्ठा या रोटियोंकी भूखकी लाचारी ही यह सब कुछ कराती है! ढकोसला-राजभक्तिके सहारे ऐसी ही जमातके द्वारा एक ऐसी भूमिका तैयार होती हुई दिखायी दे रही है जो कहीं भविष्यमें, उत्तरदायी शासन के ध्येय वाली मांगको ब्रिटिश कूटनीतिज्ञोंके मतलबकी चीज न बना दे।

रियासती जनता, जबतक सही अर्थोंमें तात्विक राजभक्तिका ठीक मर्म समझकर उसपर अमल कर तेजस्वितासे अपने ध्येय-पर अग्रसर नहीं होगी, तबतक वह अपने उद्धारके मार्गपर नहीं पहुंच सकती। रिया-

रियासती दुनिया—

राजा और सच्ची राजभक्ति

—::*::—

(लेखक—श्री हजारीलाल जड़िया)

सबोंके राजनीतिक क्षेत्रमें रोड़े अटकानेके लिये जिस राजभक्तिको सामने खड़ा किया जाता है, उसे मैं राजभक्ति नहीं—बल्कि जनताके राजनीतिक जीवनकी हत्या करने वाला एक फरेबी दांव समझता हूं, लेकिन मैं सही अर्थोंमें तात्विक सिद्धान्तकी राजभक्तिका उपासक हूं, इसलिये अपने आपको कट्टर राजभक्त मानता हूं।

भारतीय राजभक्ति एक ऐसे महान आदर्श पर स्थापित है, जिसमें मानव समाजकी, सुख-समृद्धि संगठनकर्त्ताको मानवताके मूर्त रूपमें, समाजका प्रतिनिधि मानागया है। इसी प्रतिनिधित्वको राजा या नरेशके नामसे सम्बोधन करते हैं। किसी मनुष्यके पार्थिव शरीरका नाम राजा नहीं है, प्रत्युत उस तत्वका ही नाम राजा है, जो तत्व लोक-कल्याणकी सम्पूर्ण 'निधि' का सही अर्थोंमें प्रतिनिधित्व करता है। केवल 'राजा' विशेषसे अलंकृत किसी व्यक्तिके ऐश व आराम पर कुर्बान होनेका नाम राजभक्ति नहीं है। बल्कि सही अर्थमें उस तत्वकी आराधना और वफादारीका ही नाम राजभक्ति है, जिस तत्वका 'लोक कल्याणकारी' स्वरूप सिद्धान्त रूपसे, राजसत्ताके आदर्शोंमें व्याप्त है। और आजके जमानेमें इसका विकसित स्वरूप, जन सत्तात्मक संगठनोंमें प्रत्यक्ष मूर्त्तिमान् है। बहुत प्राचीन जमानेमें, उस कालकी बुद्धि विकासके अनुसार जिस मानव समाजने अपने कल्याणके लिये व्यक्ति रूपमें राजाका निर्माण किया था, उसी मानव समाजने अपने हजारों वर्षोंके अनुभवपूर्ण क्रम विकासके अनुसार आज अपने कल्याणके लिये, राजसत्ता धारण करने वाले, 'जनतंत्रात्मक-संगठनों' को जन्म दिया है। ऐसे संगठनोंको परिपूर्ण बनाकर, इनके लिये ईमानदार रहना, आस्था रखना और इनके आदेशोंका पालन करना आदि आचार इस युगकी सही अर्थों वाली क्रियात्मक राजभक्ति है। बेशक, हम भारतीयोंके हृदयमें राजाओंके स्वरूपकी प्राचीनताके लिये उसी प्रकारका आदर रहना चाहिए जिसप्रकार मन्दिर और मूर्तिके जरिये निराकार ईश्वर की 'भावनात्मक' मान्यता। ब्रिटिश साम्राज्य-संचालकोंकी मंशापर चलने वाली, देशी राज्योंकी नौकरशाही और उसके जनतामें फैले हुए एजेण्ट, साम, दाम, दण्ड और भेद आदि, कुटिल उपायोंके द्वारा, रियासती जनताको सही राजभक्तिसे दूर रखते हुए, उसी ढकोसले वाली मुर्दार राजभक्तिकी ओर हांके जारहे हैं, जिसका आराधनीय सैद्धान्तिक स्वरूप मर चुका है राजा सम्बन्धी मेरे इन विवेचनोंका मतलब देशी नरेशोंके व्यक्तित्वके प्रति किसी भी प्रकारके अनादरकी भावना नहीं है, बल्कि तात्विक रूपसे सिद्धान्तका प्रतिपादन और शासननीतिकी टीकाही मुख्य भाव है।

रियासती जनताने अपने नरेशोंकी छत्रछायामें उत्तरदायी शासन प्राप्तिको अपना ध्येय घोषित किया है। लेकिन गत पांच वर्षोंसे लेकर आजतककी स्थितिमें, ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी नीति, क्रिप्स साहब की गत योजनामें देशीनरेशोंके सम्बन्धमें प्रकट किये गये विचार, देशीनरेशोंकी स्वाधीन भारतके बजाय ब्रिटिश सम्राटसे सम्बन्ध रखने वाली मांग, रियासती शासकोंसे प्रभावित, तथा 'ढकोसला-राजभक्ति' के पोषक रियासती नेताओंकी उस जमानेकी चालें। इन सभी बातोंके गहरे अध्ययनसे यह साफ दिखाई दे रहा है कि उत्तरदायी शासन वाली मांगका ध्येय आगे चलकर ब्रिटिश कूटनीतिज्ञोंके उस दांवको सफल बनानेमें अग्रसर होगा, जिस दावके जरिये भारतीय स्वाधीनता देनेकी बातपर विचार करते समय, रियासती भूखण्डको समस्त भारतसे अलग रखकर, वे अपनी मांग पूरी करनेमें सफल होंगे या झमेला डाल सकेंगे। क्योंकि देशीनरेशोंकी मांग ब्रिटिश सम्राटसे है, और इनकी प्रजा इनकी ही छत्रछायामें उत्तरदायी शासनकी मांगको अपना ध्येय बनाये हुई है। ब्रिटेश साम्राज्यके स्वार्थोंको ध्यानमें रखने वाले उसके विधान-शास्त्रियों के सामने मामला साफ है कि रियासतोंमें राजा और प्रजा दोनों ही ब्रिटिश साम्राटकी छत्रछायामें रहना चाहते हैं, स्वाधीन भारत की नहीं। देशी राजाओंकी प्रजा स्वयं अपनी पुरानी राजभक्तिसे प्रेरित होकर ही यह सब कुछ कर रही है, उसकी भूमिका तैयार करने वाली जमातें यहांके राजनीतिक क्षेत्रमें बनही रही है।

वैसे तो सारा देश ही एक ... संकटकालसे गुजर रहा है। लेकिन ... जनता इस संकटको भोगते हुए इससे ... विपत्तिकी गहराईमें पड़ी हुई है; और ... हाथ, पैर, मुंह आदि बहुत ही ... जालकी मजबूत रस्सियोंसे जकड़े हुए ... और इसी अवस्थामें इसका भविष्य ... लुट रहा है। इससे, अखिल भारतीय ... यह शोर तो जरूर सुनायी दे रहा ... "भारत एक और अखण्ड है" लेकिन ... असली रूपमें कोई सहारा नहीं मिल ... है। देशीराज्योंकी प्रजामण्डल आदि ... नीतिक संस्थाएं, साधन सम्पन्न प्रति... शक्तियोंसे घिरी हुई हैं, कहीं-कहीं ... संस्थाओंमें परोक्ष रूपसे इसी ... आधिपत्य तक हो चुका है। ऐसी स्थि... भावी स्वाधीन भारतका विधान ... समय तक, ये संस्थाएं साम्राज्यवादी ... पर विजय पाकर रियासती जनताका ... कर सकेंगी, यह सर्वथा असंभव है।

ऐसी स्थितिमें, लोक परिषद, ... मण्डल आदि संस्थाओं और रियासतोंके ... ईमानदार और कष्टभोगी समस्त ... कर्त्ताओंके सामने मेरा यह सुझाव है ... 'जिस प्रकार देशी नरेशोंकी मांग ब्रिटिश ... ताजसे संबंध स्थापित करने की है, ... प्रकार रियासती जनताका ध्येय भी ... स्वाधीनता घोषित किया जाना होता ... और सच्ची राजभक्तिके तात्विक सिद्धान्त ... अपने उस 'सम्राट' की छत्रछायासे ... जोड़नेकी मांग करनी चाहिये, जो ... देशके जनतन्त्रात्मक संगठनकी बुनियाद ... कांग्रेसके रूपमें राष्ट्रीयताकी भारतीय ... प्रतिष्ठित है।' अतएव रियासती जनताका ... उद्धार कांग्रेससे वैधानिक संबंध जोड़नेसे ही हो सकेगा।

हम स्वतन्त्रता चाहते हैं, यही हमारा
है। हम चाहते हैं इन्सानकी तरह
बिताना, इसलिये मुजरिम करार दे
जाते हैं। हममेंसे बहुत भूखे और
हैं। कितनोंको अपने जीवनके अधिकांश
अधपेटा और अर्धनग्न रहकर गुजारना
है, इसलिये नहीं कि हमारी भूमि
हो गयी है, इसलिये नहीं कि हम
नहीं करते। इसकी जिम्मेदारी
स्वयम्भू ट्रस्टियोंपर है, जो हमें छोड़ना
चाहते। तरह-तरहके बहाने करते, हमारे
हितोंकी दुहाई देकर हमें अपने अंगूठेके
दावे रखना चाहते हैं। पर हम
चुके हैं, आंखें खुल चुकी हैं और
करवटें बदलनी शुरु की हैं। हमें पर-
रखनेवाली हिकमतोंका शीघ्र पर्दाफाश
। बहुत कुछ हो भी गया है।

इसलिये अब यह चिल्ल-पों मचा हुआ
लेकिन कोई सुनता भी है इन्हें और
वालोंमें कितने ऐसे हैं जो इनकी सफाई-
मानते हैं। आत्म-सन्तोषके लिये
ही चर्चिल कम्पनी दुनियाको
देनेके प्रयत्नोंसे बाज न आये, परन्तु
प्रयत्न विफल हो रहे हैं, इसका
अपेक्षा उसे ही अधिक ज्ञान है।
महायुद्धके प्रारम्भमें ब्रिटिश
ओंने भारतको इसकी अनुमति लिये
इस नरसंहारका साझीदार घोषितकर
। १९३५ के भारत विधानके अन्तर्गत
जनताके नुमाइन्दोंकी वजारतें चल
पर जल्दबाजी इतनी की गयी कि
अभिमत जाननेका भी प्रयत्न
गया। ऐसे महत्वपूर्ण प्रश्नपर इस
मनोवृत्तिने तरह-तरहके सन्देह
और इतना स्पष्ट होगया कि
इण्डियाएक्ट बिल्कुल खोखला है।
महत्वपूर्ण बात इस सम्बन्धमें यह
भारतीय कांग्रेस और उसकी नीतिको
समझनेमें भूलकी या जान बूझकर
करनी चाही। ब्रिटिश सरकारके
यह गलतफहमी कामकर रही थी
और अहिंसाको अपने कार्यक्रमका
अंग मानने वाली कांग्रेस हमारे
सिद्ध न हो सकेगी। खासकर
महात्मागांधीके नेतृत्वका भय था,
मौकेपर ब्रिटेनका ज्यादा-से-ज्यादा
समर्थन ही कर देनेके पक्षमें तैयार हो
। कारण कुछ भी हो, पर इतना
बाहिर हो गया कि ब्रिटेन
जमानेमें भारतीय समस्याको
रखकर अपनी सारी शक्ति
में व्यय करना चाहता था।
सचाईके मार्गकी अवहेलना ही इस
उसे लाभदायक प्रतीत होने
पर कांग्रेस कैसे चुप्पी धारण करती।
राष्ट्रका जीवन खतरेमें हो, वैसी
स्थितिमें मौन रहनेका अर्थ आत्म-
और क्या हो सकता था?
कर हाथ जोड़े हुए अपने प्रभुओं
करना भी एक राष्ट्रके लिये
ही है। कांग्रेसने परिस्थितिके
मांग पेश कर वही किया
इज्जत, और भारतकी न्यायपूर्ण
लिये शोभनीय था।

विश्व-शान्ति और पराधीन राष्ट्र

[लेखक—श्री वैद्यनाथ सिंह]

पर शोषितोंकी उचित मांगे शोषक वर्गके लिये खतरेकी सूचना होती हैं। दुनियाके जनमतको भारतीय समस्याके सम्बन्धमें अज्ञात रखनेकी आवश्यकता पहले की अपेक्षा अब अत्यधिक महसूस होने लगी। विदेशोंमें खासकर अमेरिकामें ब्रिटेन और भारतके खजानेसे लाखों रुपये पानीकी तरह बहाये जाने लगे। भारतवासियोंके उचित मांगको अनौचित्यके ढांचेमें ढालकर, उसकी विकृत और निर्जीव तस्वीर दुनियाके सामने उपस्थित करनेकी जी-तोड़ कोशिशें की जाने लगीं। रेडियो, प्रेस, प्लेटफार्म सभी एक स्वरसे भारतके खिलाफ अपनी सम्पूर्ण शक्तिसे प्रचार करने लग गये। पर इन प्रचारोंकी तहमें नैतिकता और राजनीतिज्ञताका दिवालियापन छिपा था। कांग्रेसके १९४२ के अगस्तवाले प्रस्तावके बाद इन प्रचारकोंको

मिस पर्लबक

सुन्दर मौका मिल गया। ब्रिटिश और अमेरिकन जनता जो अपने राष्ट्रीय जीवनके विकट अध्यायसे गुजर रही थी, आसानीसे इन पक्षपातपूर्ण प्रचारोंसे कुछ हद तक प्रभावित हो गयी। एक पक्षको जब सहसा मुखसे बोलनेकी सुविधा हो और दूसरे पक्षको जेलकी काली कोठरियोंमें बन्द कर दिया गया हो या उसकी आवाजको औरों तक पहुंचनेमें और भी विभिन्न रुकावटें डाल दी गयी हो, ऐसी स्थितिमें भला, एकतरफा बयानोंको सुनकर कोई सचा, दुरुस्त और निष्पक्ष राय कायम कैसे कर सकता है? पराजयपर पराजय और उस समय भारतके विरुद्ध ब्रिटिश एजेण्टोंका विष-वमन! आसान था विदेशियोंके दिलमें कुछ गलतफहमियां उत्पन्न कर देना। ऐसे समयमें भी न्यायप्रिय लोगोंने आसानीसे झूठे प्रचारकों की बातोंमें विश्वास नहीं कर लिया। उन्होंने ठण्डे दिमागसे वस्तुस्थितिको आंकने की कोशिश की।

इसी मौकेपर श्रीमती विजयलक्ष्मी जैसा व्यक्तित्व अमेरिका पहुंच गया। फिर असत्यका पक्ष लेनेवाले वेतन भोगी प्रचारक पत्रकार, व्याख्यानदाता और पर्चेबाजी करनेवालोंकी नानी मर गयी।

श्रीमती पण्डितका उद्देश्य यह रहा हो कि वे अमेरिका पहुंचकर ब्रिटिश प्रचारोंका खण्डन करें, ऐसा नहीं कहा जा सकता। क्योंकि वहां पहुंचनेके बाद भी उन्होंने साफ कहा था कि 'इन सस्ते प्रचारोंका खण्डन करने मैं नहीं आयी हूं।' पर भारतके खिलाफ फैलाये गये भ्रमात्मक प्रचारोंने उन्हें मजबूर किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके खिलाफ जैसी भद्दी और गन्दी बातें फैलायी गयी थीं और उनकी जो भयङ्कर प्रतिक्रिया अमेरिकनोंके दिमागपर होने लगी थी, उनका निराकरण करनेके लिये आवश्यक जान पड़ा कि सत्यको प्रकट किया जाय।

आखिर इन प्रचारोंके बावजूद मौन धारण कर लेनेसे भी तो कुछ गलत फहमियोंको ही प्रश्रय मिलनेका खतरा था। ब्रिटेन की ओरसे बराबर यह कहा जाता है कि यदि ब्रिटेन भारतसे अपना हाथ हटा लेता है तो उसके टुकड़े-टुकड़ेमें विभाजित हो जानेकी आशङ्का है। पर यदि लगभग दो शताब्दीके ब्रिटिश शासनका यही वरदान है तो हमें इसकी विशेष आवश्यकता नहीं रह गयी। ब्रिटिश प्रभुत्वके बावजूद जब हमारा इतना अधःपतन हो चुका है तो क्या गारण्टी है कि भविष्यमें उसकी उपस्थिति हिन्दुस्तानके विकासमें बाधक न होकर, सहायक सिद्ध होगी। सचाई तो यह है कि इस दुर्दशाकी सारी जिम्मेवारी ब्रिटेन पर ही है, इस सम्बन्धमें उसकी सारी सफाई विडम्बना मात्र है। सचाईको जिस काली चादरसे ढंक दिया गया था, वह चादर हट चुकी है, सभी ईमानदार व्यक्ति समझने लग गये हैं कि भारत बिलकुल निर्दोष है और उसकी मांग जायज और दुरुस्त है।

हर व्यक्ति अपने-आप प्रश्न करने लगा गया है—"यह युद्ध, यह भीषण बर्बादी आखिर किस लिये? यदि पुराने साम्राज्यों की रक्षा और नये साम्राज्योंका निर्माण ही इसका ध्येय है तो इस घृणास्पद सौदेके लिए इतनी कीमत चुकानेकी क्या आवश्यकता है? और यदि विश्वशांति इसका उद्देश्य है, तो तरह-तरहकी बहानेबाजी, दगाबाजी और मक्कारी क्यों? जिस मार्गने हमें इस अन्धेरी खाईमें पहुंचा दिया उसपर चलकर हम प्रकाशमें हरगिज नहीं पहुंच सकेंगे।"

इन प्रश्नोंका उत्तर स्पष्ट है—हमें मार्ग बदलना होगा, अपनी पुरानी घातक नीति त्यागनी होगी। जिसे इसयुद्धके कारण अधिक नुकसान उठाना पड़ा है, वह उतनीही अधिक गम्भीरतासे इन प्रश्नोंपर विचार करता है। उसकी परेशानी औरोंकी अपेक्षा अधिक है और ऐसा स्वभाविक भी है। क्योंकि यदि उसकी कुर्बानियोंकी राखपर सुन्दर इमारत न खड़ी की गयी तो सबसे ज्यादा उसेही पीड़ा भी तो होगी। जिन दुर्घटनाओं का अन्त करनेके लिये वह संघर्षकी ज्वालामें कूद पड़ा है, यदि उनकी पुनरावृत्ति न रुक सकी तो उसकी बलिदानका कोई अर्थ नहीं होगा।

श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित

विश्वकी सम्पूर्ण आबादीका पंचमांश होनेके नाते भारतको विश्वशांतिकी भावी योजनासे बहिष्कृत नहीं किया जा सकता। जिस विश्वशांतिकी सुन्दर कल्पनाको मूर्त करनेका प्रयास किया जा रहा है, इसमें भारतका एक खास महत्व है। अमेरिकन जनता इसे नहीं भूल सकती। पहले भारतके रुखका भ्रमात्मक ज्ञान होनेके कारण इसके प्रति उसकी जो भी क्षणिक धारणाएं बन गयी हों, पर अब निश्चित है कि गलतफहमियोंका जमाना बीत चुका। अब उनकी भारतीय मामलोंमें दिलचस्पी बढ़चली है। जिन्हें अबभी सचाईका ज्ञाननहीं या जो अबतक शांति स्थापनाका स्वांगमात्र कर रहे थे, श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डितके शब्दोंसे कुछ सबक अवश्य लेंगे। उस दिन अपने एक भाषणके सिलसिलेमें उन्होंने कहा है कि यदि उपनिवेशोंकी समस्याका समाधान नहीं किया गया, तो एक तीसरे महायुद्धकी नींव डाली जायगी। जिस साम्राज्यवादी मनोवृत्तिने इतनी जल्दी महासमरकी भयंकर लीला दुनियाके सामने प्रस्तुत कर दी, उससे शांतिकी उम्मीद करना मृग-मरीचिकासे प्यासकी तृप्तिकी आशा करना है। साम्राज्यवादके अस्तित्वके लिये उपनिवेश, शोषण और अन्यान्य सहकारी बुराइयोंका रहना आवश्यक है। अतः साम्राज्यवाद और शांति दोनों एक म्यानके दो तलवार-जैसी हैं। एकका अस्तित्व दूसरेके लिये घातक है। एकके रहते दूसरा असम्भव है। अतः शांतिकी स्थापना करने वालोंका दिमाग इस मसलेपर बड़ी तेजीसे सोचने लगा है, तो इसमें आश्चर्य ही क्या? जिन उपनिवेशोंको विरोधी साम्राज्यवादी शक्तियोंने पैरों तले रौंदा है क्या वे आसानीसे इस शर्मनाक हालतको बर्दाश्त करनेको बाध्य किये जा सकेंगे। कोई भी शक्ति उन्हें अब ज्यादा दिनों तक गुलामीकी जंजीरोंको फूलका माला समझनेका धोखा नहीं दे सकती। तभी तो श्रीमती पण्डितने कहा है, "जबतक युद्धके दरम्यान उत्पन्न कुछ नैतिक पहलुओं को कार्यरूपमें नहीं परिणत किया जाता, विश्वकी जनताके लिये स्वतन्त्रता केवल कहने सुननेकी चीज रहेगी।"

अमेरिकी जनता इन्हें अच्छी तरह सम-

रेडियोकी भारतीय विघातकनीति

—:*:—

लेखिका—श्रीमती द्रौपदी देवी ओझा

आधुनिक युगमें रेडियो प्रचारका एक नवीन उत्तम साधन है। यह ज्ञानका प्रसारक हो सकता है और जनताके नीरस जीवनको सरस बना सकता है। इसके सदुपयोग और दुरुपयोग दोनों ही हो सकते हैं। यह जाति को ऊंचा उठा सकता है और नीचे भी गिरा सकता है। इसकेलिये आवश्यक है कि रेडियो लोक-भाषाका व्यवहार करे। वह उस भाषा को अपनाये जो इस देशकी है। इस देशकी जल-वायु और यहांके संस्कारमें पली है, किन्तु भारतीय रेडियोने अपने जन्मकालसे ही इस बातकी उपेक्षा की है। सिनेमा और रेडियोकी भाषाकी यदि तुलना की जाय, तो मालूम हो जायगा कि सिनेमाने जन-भाषा को अपनाकर पैसा कमाया है, घाटा नहीं खाया है। किन्तु रेडियोने लोक-भाषाकी उपेक्षा करके न केवल अपनी उपयोगिता ही नष्ट कर दी है, बल्कि भारतीय राष्ट्रीयताको भी गहरा धक्का पहुंचाया है। इस देशकी लोक-भाषा हिन्दी है। हिन्दी ही इस देश-की राष्ट्रभाषा हो सकती है। इसका यह स्थान और कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती। यदि भारत अपने प्राचीन इतिहास, प्राचीन परम्पराओं और संस्कारोंको सर्वथा भूल जाय, त्याग दे और जिसमें उसके प्राचीन ज्ञान-विज्ञानकी निधि सुरक्षित है, उस संस्कृतको भूल जाय, तो यह सम्भव है कि हिन्दीके स्थानपर कोई दूसरी भाषा-राष्ट्रभाषाके आसनपर आसीन हो जाय, किन्तु जब तक संस्कृत जीवित है और संस्कृत से बल और जीवन पानेवाली प्रांतीय भाषाएं जीवित हैं, तब तक हिन्दीका स्थान कोई दूसरी भाषा नहीं ले सकती। इसलिये रेडियो इस देशपर, 'हिन्दुस्तानी' के नामसे जिस उर्दूको लाद रहा है, वह इस देशकी राष्ट्रभाषा कभी स्वप्नमें भी न बनेगी।

भारत आज पराधीन है। इसकी चेतना स्वाधीन नहीं है। इसलिये वह विदेशी मुहावरों, विदेशी शैली और विदेशी व्याकरण तथा विदेशी शब्दोंको रेडियोसे प्रचारित होनेपर सह लेता है। पर यदि भारतीय राष्ट्रीयता सजग और सावधान होती, तो वह इस देशमें विदेशी भावनाओं और विदेशी शब्दोंका इस प्रकार खुला प्रचार सहन न कर सकती और न वह इस देशके शब्दोंको अशुद्ध और विकृतरूपमें बोले जाते हुए सुन औरसहनकर सकती। यही कारण है कि भारतीय रेडियो हिन्दीकी बराबर उपेक्षा करता आया है और फिर भी वह फूल-फल रहा है। पर उसका हिन्दीके प्रति विरोध अब असह्य हो गया है। अतः उसकी वर्तमान नीतिका अब सङ्गठित विरोध हो रहा है।

अ० भा० रेडियो कहनेको अवश्य भारतीय है, पर इसके कार्यक्रम, इसके संगीत इसके नाटकों, और इसके गीतोंसे यह आभास तक नहीं मिलता कि यह भारतीय और राष्ट्रीय है। भारतीय रेडियो आज नाममात्रको भारतीय है। वह इस देशमें अरब और ईरानकी संस्कृतिका प्रचार करने में व्यस्त है। वह उर्दू कवियोंके पद सुनाता हुआ कभी नहीं थकता, किन्तु उनको तुलसी, सूर रहीम, कबीर, भारतेन्दु आदिके पदोंको सुनानेके लिये कभी अवकाश नहीं मिलता।

संयुक्त प्रान्तीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओरसे श्री रविशङ्कर शुक्ल द्वारा लिखित 'लैंग्वेज पॉलिसी आफ ए० आई० आर०' (अखिल भारतीय रेडियोकी भाषा विषयक नीति) नामक पुस्तक निकली है, जिसमें यह सप्रमाण सिद्ध किया गया है कि उर्दू भाषा के साथ-साथ मुसलिम संस्कृतिका भी प्रचार करना रेडियो-विभागकी नीति हो गयी है। सम्भवतः यही कारण है कि इस विभागमें मुसलमान भाइयोंका बोलबाला है। भूले-भटके जो हिन्दू आ जाते हैं, वे यदि उनके सांचेमें ढल गये चिपके रह जाते हैं, नहीं तो रास्ता नापते ही दिखाई देते हैं।

रेडियो जिस भाषाका प्रयोग कर रहा है, वह कोई भारतीय भाषा नहीं है, यह असन्दिग्ध है। वह यहांके अधिकांश निवासियोंकी बोल-चालकी भाषा नहीं है। वह भाषा ऐसी भी नहीं है, जिसको इस देशकी अधिकांश जनता समझती हो, या जिसका व्यवहार करती हो। रेडियो एक विदेशी भाषाका 'हिन्दुस्तानी' के नामसे प्रचार कर रहा है। उसकी भाषा क्रियाको छोड़कर विदेशी शब्दावलीसे पूर्ण होती है। रेडियोके सर्वोच्च अधिकारीको इस बातका गर्व है कि वे एक ऐसी भाषाका आविष्कार कर रहे हैं, जो भविष्यमें, कालान्तरमें इस देशकी राष्ट्र-भाषाका स्थान लेगी। मैकालेका स्वप्न सत्य सिद्ध नहीं हुआ। अङ्गरेजी इस देशकी भाषा नहीं बन सकी। शिक्षणालयों, न्यायालयों, कौंसिलों, कार्पोरेशनों और कम्पनियों, दफ्तरोंमें स्थान पाकर भी अङ्गरेजी लोक-भाषा नहीं बन सकी। सरकारने समझ लिया कि अङ्गरेजीका पौदा इस देशमें फूल-फल नहीं सकता। इसलिये अब उसकी जगह 'हिन्दुस्तानीके नामसे अरबी, फारसी, के मेलसे बनी भाषा इस देशके ऊपर थोपी जा रही है। रेडियो द्वारा इस भाषाका स्वीकार किया जाना इस बातका सूचक है कि रेडियो अराष्ट्रीय है। यह जिस भाषाका व्यवहार कर रहा है, वह इस देशके लोक-हृदयोंसे नहीं निकली और न लोक-कण्ठोंसे निकली है। लोक-भाषाकी उपेक्षा करके एक विदेशी भाषाको भारतका रेडियो ही आश्रय दे सकता है; किसी स्वाधीन देशका नहीं। इस देशकी संस्कृति और सभ्यताको व्यक्त करनेवाले शब्दोंको छोड़कर रेडियो अरब और फारसकी हवा और भूमिमें पले शब्दों को अपना रहा है, और इस देशपर हिन्दुस्तानीके नामसे जहां एक विदेशी भाषा और लिपि थोप रहा है, वहां विदेशी संस्कृति भी मढ़ रहा है। इस अवस्थामें रेडियोकी हिंदी-विरोधी नीति बदलनेके लिये हिन्दी-संसार में संगठित और व्यापक आन्दोलन हो रहा है। सम्मेलनने इस आन्दोलनका नेतृत्व ग्रहण किया है और इस आन्दोलनके संचालनके लिये एक कमेटी बना दी गयी है। इस आन्दोलनको सफल बनानेमें हरेक हिन्दी प्रेमी, प्रत्येक साहित्यिक-संस्था और भारतीय संस्कृतिका हरेक प्रेमी भाग ले रहा है।

हिन्दीके साहित्यकारों और हिन्दी भाषा-भाषियोंके रेडियोसे असहयोगके फलस्वरूप कुछ दिन पूर्व सरकारने रेडियो-परामर्शदात्री-समितिका जो स्वांग रचा था, वह भी पूरा स्वांग ही निकला। रेडियोकी बदली हुई भाषा-नीतिके सम्बधमें जो सरकारी विज्ञप्ति प्रकाशित हुई है, उससे परिवर्तन नहीं, बल्कि अपरिवर्तन ही और सुदृढ़ होकर सामने आया है। विज्ञप्तिसे पता चलता है कि रेडियोकी भाषा-नीति बिल्कुल गोल-मटोल रखी गयी है। 'सबसे आसान भाषा'की जो घोषणा हालहीमें की गयी है, वही पहले भी कही जाती थी। यह स्पष्ट किया गया है कि 'सबसे आसान भाषा'से सरकारका क्या तात्पर्य है। हिन्दुस्तानी शब्दोंके अभावमें 'संस्कृत' फारसी, अरबी, अंग्रेजी आदिसे शब्द लिए जानेकी बात कही गयी है, पर यह नहीं बताया गया है कि शब्दोंके चुनावमें इन भाषाओंका क्रम क्या रहेगा और उन शब्दों के प्रचलित अथवा भारतमें सबसे अधिक प्रचलित होनेकी कसौटी क्या होगी।

वास्तवमें रेडियोने इस बातमें कोई कसर नहीं उठा रखी है कि हिन्दीका अस्तित्व ही न रहे। हिन्दीकी सत्ताको स्वीकार करने को भी रेडियो तैयार नहीं दीखता। इसी कारण वह हिन्दीको गगन-वाणीपर नहीं आने देना चाहता। रेडियोकी इस घातक नीतिके विरुद्ध हिन्दीको अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिये और विश्वकी गगन-वाणियोंमें अपना उचित स्थान पानेके लिये यदि सम्मानसे जीना है और विश्वकी भाषाओं में उसको आदर पाना है, तो उसको अपना अधिकार स्थापित करना चाहिये, ताकि दुनिया भारतकी आत्म-पुकारको हिन्दीमें सुने और किसी विदेशी भाषामें न सुने।

——

सती है और तभी तो उस दिन पर्लबकने 'टेल दि पीपुल्स' नामक पुस्तकमें विश्वशांति के सम्बन्धमें अपनी धारणा प्रकट करते हुए कहा है, 'विश्वशांति उसी हालतमें संभव है, जब सम्पूर्ण मनुष्य जातिको समानता और सुरक्षाका सुअवसर मिले। हमें सर्वप्रथम ऐसी योजना तैयार करनी होगी जिससे शोषण, भूख और अज्ञानका अन्त हो सके। जब मनुष्योंकी आवश्यकताएं पूरी होंगी, उन्हें सन्तुष्टि मिलेगी और उसके बाद ही तो शांति संभव होगी।' क्या सचाईको झूठ साबित करनेवाले उसके खतरेका अन्दाज करते हुए अब भी अपनी नीति बदलेंगे?

——

भारतके भावी विधानके सम्बन्धमें सप्रू कमेटीकी जो सिफारिशें प्रकाशित हुई हैं, उनमें विधान निर्मातृ परिषद्में हिन्दू-मुसलमानोंको समान प्रतिनिधित्व देने तथा …सकर भारतकी एकता और सम्मिलित …वपर जोर डाला गया है। विधान निर्मातृ परिषदके गठनका ढांचा क्रिप्स योजनाके 'डी' अंशके संशोधित आधारपर …र किया गया है। इसके सदस्योंकी कुल संख्या १६० होगी, जिनका बटवारा इस प्रकार होगा: वाणिज्य-व्यवसाय, जमींदार …विश्वविद्यालय, मजदूर और महिलायें— …, हिन्दू (अछूतोंको छोड़कर) ५१, मुस्लिम ५१, अछूत २०, भारतीय ईसाई …, सिक्ख ८, कबीलेवाले और पिछड़ी जातियां ३, एंग्लो इण्डियन २, योरोपियन १ और अन्यान्य १। हिन्दू मुसलमानोंकी आबादीमें असमानता होते हुए भी साम्प्रदायिक एकताकी स्थापनाके उद्देश्यसे …ने सिफारिश की है। कि मुसलमानोंको हिन्दुओंके (अछूतको छोड़कर) बराबर प्रतिनिधित्व दिया जाना चाहिये। कोई भी …य तबतक मान्य नहीं समझा जायगा जब …उपस्थित और वोट देनेवाले सदस्योंमें तीन चौथाई सदस्य अपनी सम्मति न दें। सम्राट …सरकार विधान परिषदके जायज निर्णयों …आधारपर कार्य करेगी और आवश्यकता …और आवश्यक बहुमतके अभावमें स्वेच्छा कार्य करेगी। कमेटी मुस्लिम लीगके …ौर प्रस्तावके अलावा अन्य प्रस्तावों, …जी जिन्ना मिलनके प्रकाशित अंश तथा …जी और महात्मा गांधीके प्रस्तावोंपर …ी तरह विचार करनेके बाद इस निश्चय …हुंची है कि भारतका विभाजन अनुचित …र शान्ति तथा देशके क्रमिक विकास …बाधक है। अतः भारतकी राष्ट्रीय अखंडता अक्षुण्ण रखा जाय। विधानमें ऐसी …की गुंजायश रखनेकी सिफारिश की …, जिससे समय-समयपर देशी रियासतें समझौतेके आधारपर संघके यूनिटके …सम्मिलित हो सकें। पर संघ शासन …होना रियासतोंके सम्मिलित होने …पर आश्रित न रहे। ब्रिटिश भारतके …को सबमें सम्मिलित हो जानेके बाद …अलग होनेका अधिकार न रहेगा। कमेटी …बात जोर डाला है कि यदि ये सिफारिशें एक साथ नहीं मान ली गयीं तो …ओंको अधिकार रहेगा कि वह सिर्फ हिन्दू-मुसलमानोंके समान मताधिकारके …को ही न रद करें बल्कि साम्प्रदायिक …(कम्यूनल अवार्ड) की पुनरावृत्ति …ग कर सकते हैं।

…ा मशरिकीका अभिमत

खाकसार नेता अल्लामशरिकीने सप्रू कमेटीकी रिपोर्टकी टिप्पणी करते हुए कहा …पाकिस्तानके महत्वपूर्ण प्रश्नपर अच्छी …विचार नहीं किया गया। आपका …साथ कहना है कि स्वयं महात्मा …भी इस विषयपर कमेटीके विचारोंसे …त न होंगे। वास्तवमें यह प्रश्न इतनी …आगे बढ़ चुका है कि इसे दरकिनार कर …अनिष्ट है। इसकी जो भी अच्छाई-…ई उनका ख्याल न कर प्रचलित

कौन क्या कहता है

विचारधाराको दृष्टिगत रखते हुए इसपर गौर करना नितान्त आवश्यक है। फिर भी आपने कबूल किया कि कमेटीका यह सुझाव कि केन्द्रमें हिन्दू और मुस्लिम दोनोंको समान प्रतिनिधित्व दिया जाय, राजनीतिक विचारके मुस्लिम इलाकोंके विरोधके बावजूद, मुस्लिम जनतामें आमतौरपर सन्तोषकी भावना पैदा करेगा।

मिनिस्ट्रीकी चर्चा असामयिक है

कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्य और यू० पी०के भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, पंडित गोविन्द बल्लभ पन्त चन्द रोज पहले जेलसे छूटे हैं। आपने मिनिस्ट्रीके पुनर्गठनके सम्बन्धमें अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि मिनिस्ट्री बनाना एक बड़ी समस्याका अंग है और ऐसे समयमें जब वर्किंग कमेटीके सदस्य तथा असेम्बलीके सहकर्मी जेलोंमें बन्द हैं। हम पदग्रहणकी बात सोचनेमें असमर्थ हैं। उनकी रिहाईके बाद हमारा भावी कार्यक्रम हमारे परस्पर विचार-विनिमय पर निर्भर करेगा। आपने सप्रू कमेटीके सिफारिशोंकी टीका-टिप्पणीके सम्बन्धमें उस वक्त तक खामोश रहनेका इरादा जाहिर किया जबतक वे उसका अध्ययन और मनन नहीं कर लेते। अपने वक्तव्यके प्रारम्भमें ही पंडित पंतने बताया कि हम किसी अंशमें भी निराशावादिता और घबराहटसे परेशान नहीं हैं। स्वाधीनताकी प्रिय मंजिल तक पहुंचनेका हमारा विश्वास पूर्ववत दृढ़ और स्पष्ट है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हम शीघ्र ही स्वतंत्रताकी प्राप्ति करेंगे—क्षमा कीजिये इस कथनके लिये मुझे—आपमेंसे कितने जिस शीघ्रताकी कल्पना करते हैं उससे भी कहीं जल्दी! आपने इस बातपर खेद प्रगट किया कि वर्किंग कमेटीके अनेक व्याधिग्रस्त सहयोगी जेलोंमें पड़े हैं। आचार्य कृपलानीके साथ करांची लेजाते समय तथा मि० आसफअलीके साथ दिल्लीमें किये गये दुर्व्यवहारका हवाला देते हुए आपने कहा कि इस प्रकारका उत्पीड़न किसी दृष्टकोणसे लाभदायक नहीं; बल्कि इसके विपरीत यह अनावश्यक क्रोधका कारण बन जाता है।

मि० जिन्नाके दावे झूठ हैं

इण्डियन मुस्लिम मजलिसके सेक्रेटरी खां बहादुर शेख महम्मद जान एम० एल० सी० ने समझौता समितिकी रिपोर्टके सम्बन्धमें मत प्रकट करते हुए कहा है कि मि० जिन्नाने बड़े भद्दे और अनुचित ढङ्गसे सर तेजबहादुर सप्रू और उनके मित्रोंकी आलोचना की है, जिन्होंने सिर्फ कर्तव्यकी पवित्र भावनासे प्रेरित होकर राजनीतिक गतिरोधका अन्त करनेका प्रयास शुरु किया है। मि० जिन्नाका कहना है कि जिन दो सिफारिशोंको समझौता समितिने पेश किया है उनमेंसे एक पर भी अमल किया गया तो मुस्लिम भारतकी ख्वाहिश और पाकिस्तानकी कौमी मांग पर पाला पड़ जायगा। इससे तो यही जाहिर होता है कि वर्तमान शासन प्रणाली, जो हिन्दू-मुस्लिम दोनोंके लिये घातक हो रही है, जारी रहे, और मि० जिन्नाको इसकी कोई चिन्ता नहीं। आपने मि० जिन्नाके इस दावेका कि १० करोड़ मुसलमान उनके साथ हैं, खण्डन करते हुए कहा कि राष्ट्रीय मुसलमानोंके अतिरिक्त, जिन्होंने भारत-विभाजनके नारेका कभी समर्थन नहीं किया, स्वयं मुस्लिम लीगके अन्दर भी फूटके लक्षण दृष्टिगोचर होने लग गये हैं और मुस्लिम बहुमत प्रान्तोंने ही लीगकी राजनीतिसे ऊबकर उससे मुंह मोड़ लिया है।

सुधारके लिये आजादी अनिवार्य

मेटरनला हेल्थ सेन्टर (पिट्सबर्ग) में भाषण देते हुए श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित ने कहा है कि भारतकी समस्या उसी स्थिति में सुलझ सकती है जब देश स्वतन्त्र हो। जब तक अपने देशका शासनसूत्र जनताके हाथोंमें नहीं होता, किसी तरहका सुधार मुश्किल है। आपने यह उम्मीद प्रकट की कि भारतीय समस्याओंके सम्बन्धमें, विश्वकी जानकारी उनके समाधानमें सहायक सिद्ध होगा। पाश्चात्य और भारतीय शिक्षाका उल्लेख करते हुए आपने कहा कि दोनोंमें काफी अन्तर है। स्वायत्त शासनके लिये भारतीयोंके सामर्थ्यका समर्थन करते हुए आपने कहा कि कांग्रेस पार्टीने प्रारम्भसे वर्तमान तक जितनी भी सरकारें बनी हैं, उनकी अपेक्षा भारतके हितके लिये कहीं अधिक काम किया है। कांग्रेसकी नीतिपर प्रकाश डालते हुए आपने बताया कि संसारकी किसी भी संस्थाने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की तरह फासिस्टवाद और नाजीवादके प्रति स्पष्ट नीतिसे काम नहीं लिया है। कांग्रेस शुरूसे ही 'तानाशाही और स्वेच्छाचार पूर्ण शासनकी निन्दा करती आ रही है।

हम त्याग करनेको तैयार हों

खां अब्दुल गफ्फार खांने मातुंगाके राष्ट्रीय सप्ताह प्रदर्शिनीमें दिये गये अपने भाषणमें कहा है कि देशकी बहुमुखी पीड़ाओंके नाशका सिर्फ यही मार्ग है कि आजादी हासिल की जाय। स्वतन्त्र राष्ट्रका स्थान प्राप्त करनेके बाद ही हम अभाव, बर्बादी और दुर्भिक्षको रोक सकेंगे। आपने आगे चलकर कहा कि जो भूभाग प्राचीन कालमें सोनेका देश समझा जाता था, आज अन्नकी कमीका सामना कर रहा है। देशकी सबसे बड़ी सेवा यही हो सकती है कि उसे बन्धनोंसे मुक्त किया जाय और यदि हमें इसकी चाह है तो हमें कुर्बानियोंके लिये प्रस्तुत हो जाना चाहिये।

कांग्रेसकी नीतिमें परिवर्तन नहीं

कांग्रेस कार्यकारिणी समितिके सदस्य डा० प्रफुल्ल चन्द्र घोषने कहा है कि जबतक कांग्रेस कार्यकारिणी समिति और अन्य प्रांतीय कमेटियां अवैधानिक हैं, प्रत्येक कांग्रेसी चाहे वह वर्किङ्ग कमेटीका सदस्य ही क्यों न हो, जो कुछ भी कहता और करता है अपनी व्यक्तिगत हैसियतसे ही। मुझे, और वे अन्य व्यक्तियोंको ही कांग्रेसकी ओरसे बोलनेका अधिकार है। आपने आगे बताया कि कांग्रेस कर्मियोंके मस्तिष्कमें अनेक प्रश्न चक्कर काट रहे हैं, जिनमें देसाई-लायकराय वार्ता एक है। वार्तालापके विषयकी अच्छाई-बुराईपर मैं टिप्पणी नहीं कर सकता क्योंकि मुझे उसकी कतई जानकारी नहीं। पर इतना तो निश्चय है कि वर्किंग कमेटीके पूर्व निश्चयके बिना उनके प्रस्तावोंको, चाहे वे कितनाहुं सुन्दर क्यों न हों, असली रूप नहीं दिया जा सकता। सीमाप्रांतीय कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलके गठनके सम्बन्धमें आपने कहा कि वहांकी पार्लियामेण्टरी पार्टीने अपने प्रांतकी विशेष अवस्था देखकर उक्त निश्चय किया है। पर यह तो वर्किङ्ग कमेटी ही फैसला दे सकती है कि इस निश्चय पर पहुंचनेमें वहां वालोंने कहांतक बुद्धिमानी की है। आसामकी स्थितिके बारेमें आपने कहा कि उस प्रान्तमें कांग्रेसने खास शर्तों पर वर्तमान मन्त्रिमण्डलको अपना समर्थन देनेका वचन दिया है। अतः सीमाप्रांतकी घटनासे इसकी तुलना नहीं हो सकती। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीके सन् १९४२ के प्रस्तावपर प्रकाश डालते हुए आपने कहा कि उस प्रस्तावका लाजिमी नतीजा अहिंसात्मक संग्राम था, इसमें सन्देहकी गुञ्जायश नहीं। वर्तमान युद्धको लोक-युद्ध करार देने वाले कम्युनिस्टोंकी नीतिका हवाला देते हुए आपने बताया कि उनका यह नारा स्पष्टतः कांग्रेसकी घोषित नीति और असलियतके खिलाफ है। उनकी इस नीतिका कुछ भी कारण क्यों न हों, पर यह निर्विवाद है कि उन्होंने इस मामलेमें कांग्रेसकी मुखालिफतकी है। कोई भी संस्था अपनी तहमें ऐसे लोगोंको स्थान नहीं दे सकती, जिनके विचार इतने विलग हों।

युद्धका सिंहावलोकन

---*---

गत सप्ताह प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके अचानक देहावसानके कारण लोगोंको यह आशंका होने लगी थी कि हिटलरका भाग्य फिर जोर मारने लगा और 'अब डूबी तब डूबी' की लोकोक्ति चरितार्थ करनेवाली जर्मनीकी नौकाके नाविकको अब फिर दम लेनेकी फुरसत मिल जायेगी। लेकिन जहां तक युद्धका सम्बन्ध है, प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके उत्तराधिकारी मि० हैरी ट्रूमेनके शासनकालमें भी कोई असर नहीं आने दिया जायेगा और समस्त मोर्चोंपर वही युद्ध नीति लगातार अबाध गतिसे जारी रहेगी, जो स्वर्गीय प्रेसीडेंटके समयमें चालू थी। हैरी ट्रूमैनने राष्ट्रपतिकी गद्दीपर आरूढ़ होते ही जो सर्व-प्रथम घोषणा की है वह यह है कि 'संसारको विश्वास रखना चाहिये कि पूर्व तथा पश्चिम दोनों ही मोर्चोंपर हम अपनी सारी शक्ति लगाकर बराबर उस समयतक युद्ध जारी रखेंगे जब तक हमें स्वयं सफलता आकर वरण नहीं करेगी।" सैन फ्रांसिस्को कानफरेंसका आगामी २५ अप्रेलसे होनेवाला कार्यक्रम पूर्ववत रहेगा और ऐसी भी संभावना पायी जाती है कि मि० चर्चिल, मार्शल स्टालिन और हैरी ट्रूमेन शीघ्र ही किसी स्थानपर मिलेंगे। जहांतक जर्मनीकी अवस्थाका सम्बन्ध है अब बर्लिनके पतनकी बात कुछ दिनोंकी समझी जाती है। लन्दनमें विजयोत्सव मनानेकी सारी तैयारियां जोर-शोरसे होने लगी हैं। कुछ लोगोंका अनुमान है कि बर्लिनपर मित्र झण्डा फहरानेमें अब एक सप्ताहमें अधिक समय नहीं लगेगा और ज्योंही बर्लिन मित्रोंके कब्जेमें आयेगा, वे विजयोत्सवका आयोजन आरम्भ कर देंगे। लेकिन जर्मनोंका प्रतिरोध इतना शीघ्र समाप्त हो जायेगा ऐसा समझ बैठना आशाके प्रतिकूल आशा कहलायेगा। क्योंकि यद्यपि जर्मनोंकी विपत्ति अपनी पराकाष्ठापर पहुंच गयी है, तथापि वे अन्ततक हथियार डालनेके लिये तैयार नहीं मालूम होते। हिटलरका सारा अधिकार ग्रहण करनेवाले हिमलरने उस दिन जर्मनोंके नाम जो फर्मान जारी किया, उसमें जर्मनोंसे स्पष्ट तौरपर कहा गया कि जर्मन नगरोंकी रक्षा अन्तिम सांस तक की जाये और किसी भी नगरको अरक्षित छोड़कर वहांसे पीछे न हटा जाये। हिमलरकी बातें अब हिटलरकी घोषणाओं और फर्मानोंसे किसी प्रकार कम नहीं समझी जा सकतीं। क्योंकि हिमलरका इस समय वही स्थान हो रहा है, जो पहले हिटलरका था। गत १२ अप्रैलको लन्दनमें अधिकारी तौरपर यह रिपोर्ट भी दी गयी है कि हिमलरने वस्तुतः हिटलरके सारे अधिकारोंको ग्रहण कर उसको पर्देमें ढकेल दिया। गत सप्ताह सबसे अन्तमें जो दो फर्मान जारी किये गये हैं, उनपर हिटलरका नहीं, हिमलरका हस्ताक्षर है। पहलेमें जर्मन नगरोंका अन्तिम दमतक रक्षा करने और आत्म समर्पण न करनेका आदेश है और दूसरेमें जो, जर्मन हाई कमांडके अतिरिक्त कम्यूनिकके रूपमें था, जर्मन हाई कमांडकी नयी युद्ध नीतिका सारांश बताया गया है। जर्मन हाई कमाण्डकी नीतिका सारांश इस समय यही है कि पीछे एक कदम भी न हटाओ; जो जहां खड़ा है वहीं डटा रहे और अगर अन्तमें कोई और चारा न चले तो जहांसे हटा जाये, उस स्थानपर सर्वस्व स्वाहा की नीति पूर्णतया काममें लायी जाये। यही कारण है कि ऐसेन पर अधिकार करनेके समय क्रुप्स जैसे विशाल जर्मन लौह कारखानेको बहुत बुरी तरह नष्ट-भ्रष्ट मित्रोंने पाया। माण्टगोमरीके एक वक्तव्यसे भी पता चलता है कि जर्मनोंने कतिपय भूभागोंसे अपनी सेनाओंको न हटानेका पूर्ण दृढ़ताके साथ निश्चय किया है। जर्मन सैनिक सर्वस्व स्वाहाकी नीति किस प्रकार काममें ला रहे हैं इसका भी वर्णन माण्टगोमरीके शब्दोंमें सुनने लायक है। वे कहते हैं कि बर्बाद करनेका काम बहुत बड़े पैमानेपर हो रहा है। नदियोंपर स्थित बड़े छोटे पुल सब नष्ट-भ्रष्ट कर दिये गये हैं यही कारण है कि उत्तरी मोर्चेपर मित्र सेनाओंकी तीव्र प्रगति नहीं हो रही है। वास्तवमें जर्मन सेना इन कार्यों द्वारा अपने फूहरर हिटलरकी उस घोषणाका अक्षरशः पालन कर रहे हैं जिसमें कहा गया था कि मित्र सेनाके लोग जर्मनीके भीतर जब पहुंचेंगे तो उन्हें सर्वत्र मृत्यु, विनाश और भूखका ताण्डव ही दृष्टिगोचर होगा।

पश्चिमी मोर्चेकी सबसे अन्तिम रिपोर्टके अनुसार मित्र सेनाएं कठोपेनवर्ग नगरसे ६ मील भी कम दूर रह गयी है। यह एम्डेन और ब्रेमनके बीच वह स्थान है जहांसे केसलरिंगकी फौज वापस लौट गयी है। द्वितीय ब्रिटिश सेना अपने युद्ध क्षेत्रमें सर्वत्र आगे बढ़ रही है। फील्ड मार्शल मांटगोमरीके शब्दोंमें जर्मन पूर्णतया और बुरी तरह समाप्त हो चुके हैं और प्रत्येक मोर्चेपर उन्हें बुरी तरह पीछे हटनेके लिये बाध्य होना पड़ता है। पूर्वी यूरोपीय मोर्चेपर रूसकी सेनाने आस्ट्रियाके ऐतिहासिक नगर वायनापर अधिकार कर लिया। इस नगरपर अधिकारकर सोवियट सेनाने दक्षिणसे भी जर्मन किलेबंदी भङ्ग कर दी। इस नगरको अधिकारमें करनेमें १६ मार्चसे १३ अप्रेल तक १ लाख ३० हजार जर्मन सैनिक बन्दी बनाये गये हैं। वायनासे बर्नो जानेवाली रेलवे लाइनको भी रूसी सैनिकोंने भङ्ग कर दिया है। बर्नो जेकोस्लोवाकियाका दूसरा बड़ा शहर और मोराविया प्रान्तकी राजधानी है। इटालियन मोर्चेपर भी मित्र राष्ट्रोंका आक्रमण फिर जोर-शोरसे हो रहा है और ऐसा जान पड़ता है कि जर्मनीका गला एक साथ ही चारो ओरसे दबाकर उसका प्राणान्त किया जायेगा।

सुदूर पूर्वकी लड़ाईके सम्बन्धमें गत सप्ताहकी जो सबसे अन्तिम रिपोर्ट है, उससे मालूम होता है कि अमेरिकन सेना बोहल नामक द्वीपपर उतारी गयी और उसको अपने कब्जेमें कर लिया गया। फिलीपाइनकी ग्रीष्मकालीन राजधानी बेगुओंसे अमेरिकन ६ मील दूर रह गये हैं। ओकीनावा द्वीपमें जापानियोंके विरुद्ध अमेरिकन प्रत्याक्रमण जोर-शोरसे जारी है। जापानकी राजधानी टोकियोपर धुआंधार हवाई हमले लगातार हो रहे हैं। १४ अप्रेलको ४ सौ मित्र विमानोंने टोकियोके औद्योगिक केन्द्रोंपर भयङ्कर बमवर्षा की। भीषण अग्निकांड उपस्थित हो गया। जापानी समाचार समितिके अनुसार इस बमवर्षासे जापान सम्राटके राजप्रसादकी भी कुछ क्षति हुई है। जबसे जापानका नया मन्त्रिमण्डल बना है, जापानके सम्बन्ध तरह-तरहकी अफवाहें उड़ायी जाती हैं। कहते हैं कि एडमिरल सुजुकी शांति प्रस्ताव उपस्थित करनेवाले हैं। स्पेनने भी अन्तमें राजनीतिक सम्बन्ध भङ्ग कर दिया। बर्मामें १४ वीं सेनाकी प्रगति बराबर जारी है। शान रियासतमें बहुत बड़ी संख्यामें जापानी सैनिक घेरेमें रखे गये हैं। सब लोगोंकी आंखें सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनकी ओर लगी है। देखना है, उक्त सम्मेलन क्या निर्णय करता है।

——

स्वदेश-वार्ता

देसाई-वायसराय मिलन

केन्द्रीय असेम्बलीकी कांग्रेस पार्टीके श्री भूलाभाई देसाई गत १२ अप्रेलको वायसरायसे मिले। वार्तालाप आध घण्टे तक होती रही। मालूम हुआ है कि अपने चिमूर केसके बन्दियोंके सम्बन्धमें बातचीत की।

राजेन्द्र बाबू दमासे पीड़ित हैं

१२ अप्रेलको तीसरे पहर बाबू सत्यनारायण सिंहने डा० राजेन्द्र प्रसादसे मुलाकात की। यूनाइटेड प्रेसके प्रतिनिधि द्वारा बिहारमें मन्त्रि-मण्डल गठन सम्बन्धी वार्तालापके प्रश्नके उत्तरमें आपने कहा कि राजनीतिक विषयों पर वार्तालाप नहीं हुआ। राजेन्द्र बाबूने केन्द्रीय रिलीफ ट्रस्ट कोषसे रोग-ग्रस्त क्षेत्रोंके पीड़ितों तथा अग्निकाण्ड और अन्य विपत्तियोंसे क्षतिग्रस्त व्यक्तियोंकी आर्थिक सहायताका आदेश दिया है।

स्व० प्रेसीडेंट रूजवेल्टके प्रति

प्रेसीडेंट रूजवेल्टकी अचानक मृत्युपर वक्तव्य देते हुए श्रीमती सरोजनी नायडू ने कहा, 'हमारे बीचसे एक भाग्यवीर चला गया। सिर्फ उच्चपद और उस पदसे प्रतिष्ठाके परिणामस्वरूप नहीं, बल्कि अपने आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर चरित्र के कारण वे अनेक सहयोगी और सह-कर्मियोंसे बढ़-चढ़कर रहे। उनके उत्साह और साहस दोनों महान थे और यद्यपि कुछ वर्षोंसे उन्हें बाहरी पेचीदी परि-स्थितियोंके कारण व्यक्तिगत मनोभावोंको दबानेके लिये बाध्य होना पड़ा था, फिर भी अपने उद्देश्य और स्वाधीनताके आदर्श के प्रति वे सतत वफादार रहे।

मौलाना आजाद

'ओरियण्ट प्रेस' को मालूम हुआ है कि कांग्रेसके प्रेसीडेण्ट मौलाना अबुल कलाम आजादको अहमदनगर फोर्टसे स्थानान्तरित कर आगामी सप्ताहमें मिदनापुर पहुंचाया जायगा। ऐसी खबर है कि उन्हें किसी जेलमें नहीं रखा जायगा। एक प्राइवेट मकानमें उन्हें रखनेका प्रबन्ध किया जा रहा है। अहमदनगर जेलके कुछ कर्मचारियोंकी निगरानीमें उन्हें मिदनापुर लाया जायगा। ओरियण्ट प्रेसको यह भी खबर मिली है कि बंगाल सरकारने उनके तबादिलेके पक्षमें अपनी सम्मति जाहिर की है।

कांग्रेस और लीगकी समता कैसे?

केन्द्रीय असेम्बलीके स्पीकर बाबू पुरुषोत्तमदास टण्डनने मातृभाषाके राष्ट्रीय सप्ताह में भाषण देते हुए कहा है कि मुस्लिम लीगको कांग्रेसकी बराबरीका दर्जा देना उचित नहीं। आपने कुछ दलों द्वारा पेश किये गये उस प्रस्तावका विरोध किया जिसमें कहा गया है कि केन्द्रमें कांग्रेस और लीगको प्रतिनिधित्वका समान अधि-कार दिया जाय। आपका मत है कि ऐसा करनेसे कांग्रेसकी स्थिति साम्प्रदायिक दल-की तरह हो जायगी। कांग्रेस राष्ट्रीय संस्था है और इसका काम होगा अपनी मध्यस्थता के जरिये हिन्दू महासभा और लीग जैसी विरोधी साम्प्रदायिक संस्थाओंके मनो-मालिन्यको दूरकर समझौता कराना। कांग्रे-लीग-हिन्दू महासभाके परस्पर मिलनके फलस्वरूप एक त्रिगुटकी स्थापना भी संभव है।

गावोंसे छूआछूत मिट सकता है

महात्मागांधीने स्वर्गीय माता कस्तूर बा स्मारण ट्रस्टके तत्वाधानमें आयोजित बोरिवली महिला शिक्षण शिविरकी सदस्याओंके समक्ष भाषण दिया। एक प्रश्न के उत्तरमें आपने कहा कि यदि ग्रामीण चाहें तो छूआछूत का भेद-भाव गांवोंसे मिट सकता है। महात्माजीने यह परामर्श दिया कि पहले मेहतरोंके साथ छूआछूतका भेद मिटाने, उन्हें सफाई और स्वास्थ्य विज्ञान की शिक्षा देने तथा उनके साथ भोजन करनेसे ऐसा सम्भव है। आपने अन्तमें १२५ वर्ष तक जीवित रहनेकी अभिलाषा प्रगट करते हुए कहा कि सत्य और अहिंसाका पालन करके इतने दिनों तक जीवित रह सकता हूँ।

सर एस० राधाकृष्णन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके वायस चांसलर सरएस०राधाकृष्णनेगत बुधवार ११अप्रैलकोरात को कोलंबोके लिये रवाना हो गये। आप करीब दस दिनों तक सिलोनमें ठहरेंगे। धर्मलेख विद्यालयके पारितोषक वितरणोत्सवके अवसर पर आप अध्यक्षपद सुशोभित करेंगे। इसके अतिरिक्त कोलम्बोके टाउन हालमें एक सार्वजनिक सभामें भाषण देंगे। पुनः २२ अप्रैल तक मद्रास लौट आनेका आप विचार कर रहे हैं।

मि० एम० एन० रायकी आय

केन्द्रीय असेम्बलीमें गत बृहस्पतिवार १२ अप्रेलको मजदूर सदस्य डा० बी० आर० अम्बेदकरने श्री बद्रीदत्त पाण्डेको सूचित किया कि चालू सालके आय-व्ययकी फिहरिस्तमें लेबर फेडरेशनके मन्त्री मि० एम० एन० रायको प्रचार कार्यके लिये १३ हजार रुपया देना भी दाखिल है।

सरकारके नये अर्थ सदस्य

एक असाधारण भारतीय गजटमें बताया गया है कि गत १०अप्रेलको सर आर्चिबाल्ड रौलैन्डने अर्थ सदस्यका पद ग्रहण किया। ऐसी खबर है कि सर सुलतान अहमद वायसरायकी इक्जीक्यूटिव कौंसिलके उपाध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं।

विश्वभारतीकी उपाध्यक्षा

श्रीमती सरोजनी नायडू विश्वभारती की प्रबन्ध समितिकी गत बैठकमें विश्वशांति की उपाध्यक्षा नियुक्त की गयी है। महात्मा गांधी, डा० कासवेल्टकाट, डा० तायबीताव, सर मिरजा मुहम्मद इस्माइल, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, मि० लियोनार्ड के० एमहर्स्ट और सर सर्वपल्ली राधाकृष्णनके साथ प्रधान भी चुनी गयी हैं।

मौ० आजाद रिहा हों

पंजाब असेम्बलीके मुस्लिम लीग पार्टीके डिपुटी लीडर राजा गजनफार अली खां ने एक वक्तव्यमें कांग्रेसके प्रेसीडेण्ट मौलाना अबुल कलाम आजादकी रिहाई की जोरदार अपीलकी है। अपने वक्तव्यमें आपने कहा है कि पंजाबके मुसलमान उनके गिरते हुए स्वास्थ्यकी खबर सुनकर अत्यन्त व्याकुल हैं। राजनीतिक मतभेदके बावजूद सांस्कृतिक और मजहबी संसारमें हम उनके कायम हैं। अन्तमें आपने आशा प्रगट की है कि सरकार अवश्य उन्हें रिहा कर देगी।

कागज सप्लाइमें वृद्धि

गत २४ जनवरीकी सरकारी आज्ञा द्वारा कागजका उपयोग करने वाले जिन लोगोंने की सप्लाइमें १० प्रतिशत वृद्धिकी गयी थी, उनकी सप्लाइमें पुनः २० प्रतिशत वृद्धिकी भारत सरकारने घोषणाकी है।

पण्डित नेहरू और देव

पण्डित जवाहरलाल नेहरू और आचार्य नरेन्द्रदेवको इजात नगर सेन्ट्रल जेलमें रखा गया है। ऐसी खबर है कि नेहरूजी का स्वास्थ्य अच्छा है पर आचार्य नरेन्द्रदेव को भूख न लगनेकी शिकायत है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झाँकी

स्व० मि० रूजवेल्ट और हैरी ट्रूमैन

ह्वाइट हाउसकी घोषणा है कि अचानक मस्तिष्क फट जानेके कारण अमेरिकन प्रेसीडेण्ट मि० रूजवेल्टका १२ अप्रेलके तीसरे पहर वार्मस्प्रिङ्ग (जोर्जिया) में देहावसान हो गया। आपके अन्तिम शब्द थे, 'मेरे माथेमें भीषण पीड़ा है।' उनकी मृत्युके दस सेकेण्डके अन्दर ही रेडियो और तारके जरिये समूचे अमेरिकामें यह समाचार बिजलीकी तरह फैल गया। अपने पतिकी मृत्युका समाचार मिलनेपर श्रीमती रूजवेल्ट ने कहा, 'मैं अपने परिवारकी अपेक्षा अपने देश और विश्वके लिये अधिक दुखित हूं।' स्व० प्रे० रूजवेल्टके बाद हैरी ट्रूमैनने अमेरिकाके ३२ वें प्रेसीडेंटका पद सुशोभित किया है। अपनी घोषणामें नये प्रेसीडेंटने कहा है कि युद्ध पूर्वी-पश्चिमी मोर्चोंपर जोरोंसे संचालित होता रहेगा। मि० ट्रूमैन ने परराष्ट्र सचिव मि० एडवर्ड स्टेटेनियसको इस आशयका परामर्श दिया है कि सनफ्रांसिस्को सम्मेलन स्थगित नहीं हो।

टोकियो रेडियोका विशेष संगीत

प्रे० रूजवेल्टकी मृत्युका समाचार समाप्त करनेके बाद टोकियो रेडियोने कहा है, 'अब हम चन्द मिनटों तक इस महापुरुषकी याद में विशेष सङ्गीतका आयोजन कर रहे हैं।'

फिलीपाइनकी स्वतंत्रतामें विलम्ब

अमेरिकाके अधिकारी क्षेत्रोंका कहना है कि फिलीपाइन द्वीपपुञ्जको स्वतन्त्र घोषित करनेके उपयुक्त अवसरके सम्बन्धमें मतभेद उत्पन्न हो गया है। स्वदेश मन्त्री मि० हेरोल्ड आइक्सने सर्वप्रथम विरोधकी आवाज उठायी है, जिनका कहना है कि फिलीपाइनको फिलहाल स्वतन्त्र घोषित करनेसे उसका अपकार होगा क्योंकि भविष्यमें उसकी अनेक समस्याओंके समाधान के लिये अमेरिकाकी सहायता अनिवार्य है।

वायनाका पतन

गत १३ अप्रेलको मास्कोकी एक सरकारी घोषणामें बताया गया है कि वायना पर अधिकार स्थापित हो गया। यह सामरिक दृष्टिकोणसे एक महत्वपूर्ण अड्डा है, जहांसे दक्षिणी जर्मनीपर सैनिक कार्रवाई करनेमें सुविधा मिलनेकी उम्मीद है। लंदन से भेजे गये ए० प्रेसके एक समाचारमें बर्लिन रेडियोके उस समाचारका उद्धरण दिया गया है जिसमें बर्लिन रेडियोने मंजूर किया है कि जर्मन सेनाओंका आस्ट्रिया और जेकोस्लोवाकियासे पलायन शुरु हो गया।

जर्मनीका नया आविष्कार ?

"डेगोंस्नीथेटर" नामक समाचार पत्रने ओस्लोसे रिपोर्ट दी है कि पश्चिमी नारवेमें जलते हुए गजब गोले नजर आये हैं जिनसे ऐसा अनुमान किया जाता है कि जर्मन किसी नये किस्मके वी-बमका अनुसन्धान कर रहे हैं। वे जलते हुए गोले दक्षिणसे उत्तर की ओर वायुयानकी रफ्तारसे भी कहीं तेज गतिसे जाते दीख पड़े। ये इतने प्रखर थे कि सम्पूर्ण शहर दिनकी तरह दीप्तिमान हो गया। दूसरे किस्मके गोलेके गुजरते समय भीषण आवाज सुन पड़ी।

जे० डी गालेकी हत्याका षड़यन्त्र

पेरिसके एक समाचार पत्रमें जेनरल डी गालेकी हत्या करनेके षड़यंत्रका समाचार प्रकाशित हुआ है। उक्त समाचारपत्रका कहना है कि कुछ दिन पहले सरकारी पुलिस विभागको इस आशयकी सूचना प्राप्त हुई थी कि एक उच्च पदाधिकारी फ्रांसीसीकी हत्या करनेका प्रयत्न किया जा रहा है।

लार्ड वावेल शीघ्र लौटेंगे

लार्ड वावेलके लन्दन गये दो सप्ताहसे अधिक हो चले। उनकी बातचीतके सम्बन्धमें कहा जा रहा है कि वे सामरिक और राजनीतिक दृष्टिकोणसे अत्यन्त सफल रहे और हो सकता है वे अगले दो सप्ताहके अन्दर ही भारत लौट जायं। ऐसा कहा जाता है कि भारत सचिव और वायसराय के विचारान्तरकी रिपोर्ट में कोई तथ्य नहीं है। बर्मा मोर्चेपर ऐसी उल्लासजनक सफलता मिली है कि ह्वाइट हाउसको राजनीतिक बन्दियोंकी रिहाईकी सार्वजनिक मांगको पूरा करनेमें विशेष आनाकानी नहीं हो सकती।

अमेरिकन प्रेसीडेंट कार्यव्यस्त

अधिकृत तौरपर विदित हुआ है कि अमेरिकाके नये राष्ट्रपति आगामी सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनमें भाग न ले सकेंगे। फिर भी प्रेसीडेण्ट कानफरेन्सके प्रति अत्यधिक उत्साह प्रकट करते हैं और विश्वशांतिके लिये नये विश्व संघकी स्थापनाके पक्के पृष्ठपोषक हैं। सोमवार ता० १६ अप्रैलको आप अमेरिकन कांग्रेसके संयुक्त अधिवेशनमें अपनी परराष्ट्र नीतिका स्पष्टीकरण करेंगे। दूसरे दिन मंगलवारको आप सशस्त्र सेनाके नाम एक ब्राडकास्ट करेंगे।

स्पेन और जापान

स्पेनने जापानसे अपना कूटनीतिक सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। मेड्रिडके एक सरकारी वक्तव्यमें बताया गया है कि फिलिपाइनमें जापानियोंने कमसे कम १६२ स्पेनिश नागरिकोंकी हत्या, इनसे दुगुनोंको घायल तथा ८० प्रतिशत स्पेनिश संपतिको बर्बाद किया है।

मि० इडेन वाशिंगटन पहुंचे

रायटरके एक संवाद ने कहा गया है कि ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० एन्थोनी इडेन प्रेसीडेन्ट रूजवेल्टकी अन्त्येष्टि क्रियामें भाग लेनेके लिये विमान द्वारा वाशिंगटन पहुंचे हैं।

कुछ जानने योग्य बातें

चेरोडन नामक चोंचवाली मछली पोलिनेसियन समुद्रोंमें गिरने वाली नदियोंके मुंह पर पायी जाती है। जब कभी वह किसी मक्खी या अन्य कीड़ेको पानीके ऊपर लटकते हुए घासपर बैठे देखती है तो वह चुपके से उसके पास पहुंचती है और चोंचके नुकीले भागको छोड़ सारा शरीर वह पानीमें छिपाये रहती है। एकाएक लक्ष्य साध कर पानीका बूंद वह उस कीड़ेपर बन्दूककी गोलीके समान फेंकती है जिससे वह कीड़ा पानीमें आ गिरता है और मछलीके द्वारा खा लिया जाता है।

९२६, ३१९, ७८९, ४७३, ६८४, २१० संख्या को आप किसी भी संख्यासे गुणा कीजिये, गुणनफलमें उपर्युक्त अंक अवश्य आ जायंगे।

सीडिस नामक बालक अमेरिकाके चार आश्चर्यजनक व्यक्तियोंमेंसे एक था। हार्वर्ड विश्वविद्यालयके प्रो० बोरिस सीडिस उसके पिता थे। ६ मासकी आयुमें सीडिस वर्णमालाके अक्षर कण्ठाग्र कह सकता था। दो वर्षकी आयुमें पढ़-लिख सकता था ११ वर्षमें उाने हार्वर्ड विश्वविद्यालयसे मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली थी।

क्या आप जानते हैं!

एक सेर चावल या गेहूं ले जाने [illegible] १०० मील का रेल किराया १'२ [illegible] और एक सेर वजनकी एक जोड़ी [illegible] का रेल किराया १'६९ पाई।

कलकत्तासे मिर्जापुर और [illegible] कल्याण जानेवाली भारतकी सर्व प्रथम [illegible] १८५३ में बनकर तैयार हुई थी।

भारतमें बिजलीसे चलनेवाली रेलगाड़ी १९२५ में विक्टोरिया [illegible] (बम्बई) और कुर्लाके मध्य चलायी थी।

रेलवेकी अनाजकी दुकानोंसे [illegible] कर्मचारियोंको प्रति घण्टे ८,[illegible] खाद्य सामग्री दी जाती है। यदि [illegible] लें कि प्रत्येक कर्मचारीके [illegible] औसतन ५ सदस्य हैं, तो इसका [illegible] हुआ कि भारतकी समस्त जन संख्या [illegible] प्रतिशत भागकी जीविका भारतीय [illegible] पर आश्रित है।

बुखार व पेट दर्द के लिये

रजिस्टर्ड छाप

शाफी

REGD. **मिक्श्चर** सेवन करें

सब जगह मिलता है. नकलसे सावधान रहें

—: बनाने वाले :—

धी शाफी इन्डस्ट्रीयल वर्क्स. (स्था.१९०७)

प्रोप्रायटर :- पी.टी.पटेल

पायधुनी नाका. मुंबई.नं.3

मलेरिया और बुखारों पर

अक्सीर और सस्ती इलाज

फीवरफेल

४२ टिकियाकी शीशी मूल्य १।।।)

परशुराम ट्रेडिंग कम्पनी

प्रार्थना समाज, बम्बई नं० ४

यौवनसे पतिता युवतियोंके लिये

गर्भदाता पोस्ट१०) डा० १) भारत में ६० सालसे विख्यात

स्त्रियों की क्षीणता प्रदर मासिक दोष ल्यूकोरिया (सुजाक) मृतवत्सा गर्भपात आदि गुप्त रोगोंसे पतिता स्त्रियोंको पूर्ण यौवन एवं गर्भाधान के योग्य बनानेवाला अव्यर्थ महौषध है।

भारत भैषज्य भण्डार

नं० १०८, तुलापट्टी, कलकत्ता।

वाइनिन अमारा

खाने के पहले और बाद

कमज़ोरी, खोई हुई शक्ति, रक्तकी कमी आदिके रोगियोंको फिरसे स्वस्थ तथा सुखमय बनानेके लिये बाइनिन अमाराके व्यवहारकी आवश्यकता है। बुखार तथा अन्य बीमारियोंके उपरान्त रोगीको शीघ्र ही स्वस्थ बनानेके लिये बाइनिन अमारा अपूर्व ताकतकी औषधि है।

बनानेवाले

ऐलेन एण्ड हेनबरीज लि०

(इङ्गलेण्डमें संगठित)

क्लाइव बिल्डिंग कलकत्ता

BYNIN AMARA

कमज़ोरी के लिये

बाइनिन अमारा

CEYLON DESICCATED COCONUT

यह कम खर्चीला है और श्रेष्ठ है।

डेसीकेटेड कोकोनट व्यर्थ नहीं जाता

कार्क-लगी बोतल में यह काफ़ी समय तक रह सकता है और आवश्यकतानुसार आप इस्तेमाल में ला सकते हैं। हरेक पौंड डेसीकेटेड कोकोनट में तीन-चार अच्छी पकी गरियां होती हैं। याद रखिए साधारण नारियल से डेसीकेटेड नारियल श्रेष्ठ होता है; क्योंकि:

(१) जो गरियां डेसीकेटेड कोकोनट में इस्तेमाल में लाई जाती हैं, उनकी उपज और सेवी होती है और तोड़ने से पहले उसे पूरी तरह पकने दिया जाता है।

(२) कसने के पहिले गरियां रस और पोषक तत्वको पूरी तरह सोख लेती हैं—रस व्यर्थ नहीं जाता।

(३) एक पौंड डेसीकेटेड कोकोनट में उतने ही ताज़े नारियल से अधिक पोषक तत्व होते हैं—क्योंकि सुखाने से सिर्फ़ पानी ही अलग किया जाता है, रस नहीं।

नुस्खों, नमूनों और व्यापारिक विवरण के लिए लिखिए: सीलोन ट्रेड कमिश्नर फ़ोर इंडिया, सीलोन हाउस, ब्रूस स्ट्रीट, बम्बई। सीलोन कोकोनट बोर्ड से प्रचारित

आपके लिये सिलोन का सुखायाहुवा नारियल ही अच्छा है।

बचत के गुर
—देश के लिए!
—अपने लिए!

ग़रीबों की मदद के लिए, हम लोगों को इन दिनों थोड़ी चीज़ों से ही काम चला लेना होगा। कम ख़र्च करके आप उन लोगों के लिए सामान छोड़ते हैं जिन्हें इसकी वास्तव में आवश्यकता है। पैबन्द लगे हुए कालर या टीप लगे हुए जूते पहिनने में गर्व का अनुभव कीजिए। आजकल देश के प्रति आपका यही कर्तव्य है। सच तो यह है कि कमख़र्ची की ही आजकल क़दर है।

एक बात और भी ध्यान देने की है। पुरानी चीज़ों से काम चला लेने, हर रोज़ हर चीज़ की किफ़ायत करने से बचत होती है—इसका यह मतलब हुआ कि भाव गिरने पर ख़र्च करने को हाथ में ज़्यादा पैसे होंगे।

कमख़र्ची से संकट दूर कीजिए

१ दन्तमंजन किफ़ायत से ख़र्च कीजिए। पुराने ट्यूब रद्दी-भंडार (स्क्रैप डिपो) को दे दीजिए।

२ थोड़े सफ़र के लिए पैदल या साइकिल पर जाइए। एक एक आना बचाइए।

३ भोजन में कम प्रकार के खाने परोसिए।

४ लैम्प ठीक रखने से किरासिन कम जलता है।

५ नये ज़ेवर मत ख़रीदिए। आपको अपने पैसे बराबर मूल्य नहीं मिलता।

६ पेन्सिल, स्याही, काग़ज़ आदि कम ख़र्च कीजिए।

जिसके बिना काम चल जाय उसे मत ख़रीदिए

भारत-सरकार के सूचना तथा प्रचार-विभाग द्वारा प्रकाशित। AAA 3 HINDI

Regd No. C. 2229

...किशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१६, ...
सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—१७

कलकत्ता २३, अप्रैल, १९४५, Calcutta, APRIL. 23, 1945

मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

...फ्रांसिस्कोका सभा-भवन

...जैसे २५ अप्रेल सामने आते जाता ...ी हम सैनफ्रैंसिस्कोकी ओर ...हुए जाते हैं। बुरा न होगा यदि ...बार इस सभा भवनको कल्पनाकी ...देख लें जहां संसारका भाग्य निर्णय

...महारथी स्मारक भवन जहां सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलन होगा।

...है। सैनफ्रैंसिस्को संयुक्तराष्ट्रके ...तटपर बसा हुआ एक प्रमुख नगर ...जिस भवनमें सम्मेलनका :खुला ...होगा उसका नाम 'वार मेमो-...रियल ओपेरा हाउस' है। इसमें ३२८५ ...के बैठनेका स्थान है। सम्मेलनके ...जो छोटी-मोटी सभाएं या समि-...ति बैठकें होंगी वे इससे लगे हुए ...भवन में होंगी जहां ग्यारह सौ व्य-...क्तियोंके बैठनेकी जगह है। यह स्मृति-भवन ...सैनिकों तथा बहादुरोंकी स्मृतिमें ...जो पिछले महायुद्धमें वीरगतिको ...प्राप्त हुए थे। इससे लगा हुआ एक नाट्य-...शाला है जिसमें १३०० आदमियोंके बैठनेकी ...है। इस स्थानको बाहरसे आने-...वाले सम्मेलनके सदस्य और अखबारके प्रति-...निधियोंके लिये रख छोड़ा गया है। अधि-...वेशनकालमें अभ्यागतोंके भोजनके लिये ...घर बनानेमें अमेरिकन सरकारकी ...ओरसे काम आरम्भ हो गया है और अति-...थियोंको इसके लिये दूर जानेका कष्ट उठाना ...न पड़ेगा। स्मृति-भवन और सभा-भवन ...को साथ जोड़ देनेके लिये सोनेका पानी ...चढ़े खंभोंके छड़ोंकी दीवार खड़ी कर दी गयी है। इसी स्मृति-भवनके पहले तल्लेमें तार, टेलीफोन, रेडियो, समाचार समितिके सदस्यों तथा सिनेमाके प्रतिनिधियोंके बैठने तथा समाचार भेजने की विशेष व्यवस्था है। पहले तल्लेकी जमीनपर ७०० तथा छज्जोंपर ४०० आदमियोंके बैठनेकी व्यवस्था है। सैनफ्रांन्सिस्कोके सात बड़े-बड़े होटलोंमें २३०० आदमियोंके ठहरने की व्यवस्था की गयी है क्योंकि संयुक्तराष्ट्र भरमें सैनफ्रैंसिस्को ही वह जगह है जहां न्यू-यार्कके बाद बढ़ियासे बढ़िया होटल हैं।

आगसे ८१ करोड़ स्वाहा

भारतमें आगलगीका जोर गर्मीके दिनोंमें अधिक रहते है। इसका कारण छोटी-मोटी गलतियां हैं। बम्बईके

मधुसंचय

डाकयार्ड और कलकत्तेके मुंशीछत्ताका कांड असावधानीसे जलता हुआ सिगरेट फेंक देनेके ही कारण हुआ और उसके परिणामस्वरूप लाखों करोड़ोंकी सम्पति स्वाहा हुई तथा सैकड़ों व्यक्तियोंकी जानें गयीं। इन्हीं छोटी-मोटी गलतियोंके कारण १९३७ में अमेरिकामें ९ लाख २० हजार मकानोंमें आग लगी जिससे ८७ करोड़ रुपयोंकी हानि हुई। इस ८७ करोड़ में ५१ करोड़ रुपयेकी क्षति ९६ हजार ६ सौ स्थानों-पर असावधानीसे जलते हुए सिगरेट या बीड़ी फेंक देनेके कारण हुई। सचमुच छोटी-मोटी गलतियोंसे कितनी हानि हो सकती है इसका अन्दाजा इन आंकड़ोंसे लगाया जा सकता है।

अमेरिकाके राष्ट्रसचिव एडवर्ड स्टेटीनियसकी अध्यक्षतामें सम्मेलन होगा।

भवनके भीतरका दृश्य

बागबाजारके रसगुल्ले

रेडियो-टाक

—:*:—

(भगवान विष्णु और महर्षि नारद, साढ़े बाइस किलो मीटर से !)

भगवान् विष्णु—'कौन, नारद !--इतने दिनोंसे कहां थे नदारद ?'

नारद—'क्या बताऊं महाराज ! मेरा तो नाम और चेहरा दोनों ही बदनाम ठहरा। सरकारकी नजरोंमें, बिन ब्याहे ही मुझे भी दामाद बन जाना पड़ा। मैंने भी सोचा कि, चलो छुट्टी हुई ; आत्मकथा लिखनेके लिए इतमीनानकी जगह तो मिल गयी।'

भगवान् विष्णु—'मेरे दोस्तोंका क्या हाल है ?—मैं अवतार लेना चाहता हूं ?'

नारद—'अवतार' अरे हत् ! आड़े समय में भी कहीं अवतार लिया जाता है ?—अपने सिरपर नवग्रह बैठाना चाहते हैं क्या ? जमाना खराब है। अगर किसीका चीर बढ़ाने आइयेगा तो कण्ट्रोल वाले आपको सेठ समझ कर बुरी तरह पीछे पड़ जायेंगे। कहेंगे, इतना कपड़ा तुम्हारे पास आया कहां से ? कोटा दिखा नहीं तो चल, सट्टराल !—अन्न बांटियेगा तो गल्लाचोर समझे जाइयेगा।—धनका दान कीजियेगा तो चन्दावाले खोपड़ी चाट जायेंगे। कलयुग ठहरा न महाराज ! कीजियेगा उपकार और लगेगा हत्याका पाप। कमली तानकर चुपचाप पड़े रहिये। इसीमें कल्याण है !'

भगवान् विष्णु--'मेरे दोस्तोंका क्या हाल है ?'

नारद--'वे सबके सब बिल्कुल ठनठन गोपाल हैं !--रुपयेमें तीन अठन्नी !'

भगवान् विष्णु--'धर्मराज युधिष्ठिर क्या कर रहे हैं ?'

नारद--'वे...वे तो बहुत कुछ कर रहे हैं। लाखोंकी सम्पत्ति हो गयी है। मिलिटरीमें ठीकेदारी करते हैं ; खपड़ा बना-बनाकर सप्लाई किया करते हैं ?'

भ० विष्णु--'और गांडीवधारी अर्जुन ?'

नारद -'उन्होंने 'फारेन लीकर' की दूकान खोल रखी है !'

भ० विष्णु--'फारेन लीकर ?'

नारद—धत्तेरे की ! भगवान होकर जरा-सी अंग्रेजी भी नहीं समझते हैं आप ! तभी तो अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग आपको नम्बरी बुद्धू समझते हैं। कमसे कम यस, नो, वेरीगुड भी तो जानना ही चाहिये आपको। बारह आनेमें एक प्रति हिन्दी-अंग्रेजी-टीचर क्यों नहीं मंगा लेते ? 'फौरेन-लीकर'का माने होता है, विदेशी-शराब, समझे ?

भ० विष्णु—'अच्छा, भीम...?'

नारद—'इनका शेयर होल्डर है, अब्दुल करीम ! पहले बहुत दुबले हो गये थे किन्तु आलूका व्यापार शुरू करते ही मुटाकर भालू हो गए हैं !'

भ० विष्णु—'नकुल क्या करते हैं, नकुल ?,

नारद—'बेचारे सदाके सीधे सपाटे ठहरे !'—इस्ट इण्डिया रेलवेमें पेटमैनका काम करते हैं !'

भ० विष्णु—'सहदेव तो मजेमें हैं न ?'

नारद—'जी, हां, पांच छः अमेरिकन छोकरीके सहयोगसे उन्होंने 'हनीमून-होटल' खोल रखा है। आमदनी मजेकी हो रही है !'

भ० विष्णु—'अभिमन्यु तो सानन्द है?'

नारद—'कालेजी जो ठहरा, प्रेमका भूत सिर चढ़ कर नाचने लगा। विवाहके पहले ही प्रेमिका व 'होनेवाली' हो गयी तो पिंड छुड़ानेके लिये दनाकसे लड़ाईमें भरती हो गया। वहां,तोपकी नली साफ करनेका काम मिला है।'

भ० विष्णु—'अच्छा, द्रौपदीसे तो मुलाकात हुई होगी ?'

नारद -(सूखीसांस लेकर)—मुलाकात ...भला द्रौपदी से !--वह तो बाक्स-आफिस हीट हो गयी है--एक हफ्ते तक धक्के खानेपर भी टिकट नहीं मिल पाया---!'

नारद—'वे रायबहादुर बन गये हैं, राय बहादुर ! चोर—बाजारकी कृपासे अबतक ३० लाख बना चुके हैं फिर भी लोगोंको कपड़ेके लिये त्राहित्राहिनारायण करते देखकर मूंछमें घी लगा-लगा कर ताव फेरा करते हैं !"

भ० विष्णु---"दानवीर कर्णका क्या हाल है ?"

नारद—"उनका तो एकदम बुरा हवाल है ? इनकमटैक्सकी चोटसे बेचारेकी रीढ़ ही टूट गयी है !"

भ० विष्णु----"और, जयद्रथ ?"

नारद—"उन्होंने जबसे हुल्ला-डान्सकी पार्टी स्थापितकी है तबसे लोगोंसे सीधी तरह मिलते ही नहीं !"

भ० विष्णु----"शिल्पी जरासंधका कहीं पता है ?"

नारद----"जी, उनका विजीटिंग कार्ड मेरे पासमें ही है। वे मिलिटरी-इंजीनियरिंग सर्विसमें ओवरसीयरका काम करते हैं।"

भ० विष्णु—'गुरु द्रोण क्या कर रहे हैं ?'

नारद—'रायल-एयर-फोर्समें पायलट हैं, पायलट !'

भ० विष्णु—'भीष्म पितामह ?'

नारद—'उन्होंने स्तंभक-बटीका आविष्कार किया है। धुंआधार बिक्री हो रही है !!!'

भ० विष्णु—'धृतराष्ट्र कहां हैं ?'

नारद—'उन्होंने वनस्पति घी की सोल एजेन्सी ले रखी है। तेरह बनाते हैं तो तीन दान कर देते हैं सो धर्मराज बन रहे हैं !'

भ० विष्णु—'मामा, शकुनी ?'

नारद—'मामा अब भी मामा बने हुए हैं ! प्रकटमें हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तानकी आवाज लगाते हैं मगर पटाते हैं, पाकिस्तान की जड़ !'

भ० विष्णु—'दुर्योधनके बारेमें तो आपने कुछ नहीं कहा ?'

भ० विष्णु---"सिखंडी क्या कर रहा है ?"

नारद----"सिखंडी ! भरसक आप उस हिजड़ेके बारेमें पूछ रहे हैं जिसे एक नरेशके यहां 'अन्तःपुर इन्स्पेक्टर' का काम मिला है !"

भ० विष्णु---"अश्वत्थामाका कहीं पता है ?"

नारद---- 'उनसे तो रोज ही मुलाकात होती है ? कुछ दिन पहले आईस-क्रिमकी फेरी लगाया करते थे। मगर आज-कल हिन्दू कोडके विरोधमें, आंदोलन करते फिरते हैं ?---लेकिन याद आपको केवल महाभारतकी ही क्यों होरही है ?'

भ० विष्णु—'क्यों कि इस बार भी मैं कृष्ण बनकर ही अवतार लेना चाहता हूं !'

नारद—'तब तो सबसे पहले राधाके बारेमें पूछना चाहिये था ?'

भ० विष्णु—'नहीं, इसके प...
और सरस्वतीका हाल कहो !'

नारद—'कमला...! वे तो ...
एक दम भूल गयी हैं। चमक भी ...
कागजका रूप धारण कर ...
सरस्वती ?--सरस्वतीकी तो ...
पकाना चाहते हैं ! कहते हैं कि ...
अम्मी ! अब तुम्हें केवल हंसपर ...
नहीं कसनी होगी। एक साथ ही ...
मुर्गीपर चढ़ना होगा। तुम अब ...
बल्कि हिन्दुस्तानी हो !'

—श्री...

वचनामृत

झण्डा लाल उड़ा रहे प्रगतिशील बलवान।
बाँत हथौड़े सा लिये औ हंसुआसे कान॥

० ० ०

क्षमा बड़नको चाहिये छोटनको उतपात।
कहकर गांधीने दिया जड़ चर्चिलको लात॥

० ० ०

हिन्दीके आगे खड़ी हिन्दुस्तानी सौत।
अब तो सचमुच हो गयी ब्रह्मचर्यकी मौत॥

० ० ०

हिन्दू-कोड लगा गया है घर-घरमें आग।
'गुटका' परसे उठ गया कितनोंका अनुराग॥

० ० ०

वायु वेगसे हैं गये वावेल लन्दन ओर।
इधर नाचने लग गया है सप्रूका मोर॥

० ० ०

जबसे कपड़ेपर हुआ सरकारी कन्ट्रोल।
तबसे चर्खेका बढ़ा है दो पैसा मोल॥

—समदर्शी

चलती च...

दिल्लीकी अफवाह है कि ...
वावेल नवीन बोतलोंमें भरकर पु...
ला रहे हैं।

संभवतः इस विचारसे कि ...
अच्छी होती है।

×

बांकुड़ा का समाचार है कि ...
हजार स्त्री पुरुष और बच्चोंने ना...
पर नंगे घूमकर कपड़ेकी मांग की।

ब्रिटिश राज्यके सुखोंका ...
उदाहरण है।

*

बिहार सरकारका कहना है ...
तिरंगे झंडेपर लगा हुआ प्रतिब...
नहीं जा सकता।

आजकल दुनियामें म...
जमाना नहीं है।

×

कहते हैं कि पोलैंडके प्रश्नपर ...
में एकमत नहीं हैं।

—कहीं पोलैंड मित्रोंको ...
बना दे।

*

'मैं उस समय तक दम नहीं ...
तक सर सुलतान और उनकी शा...
को उनके पदोंसे पृथक नहीं किया ...

—गो...

—अब तो ऐसा दीखता है कि ...
खोलकर पीछे पड़ गया है।

*

ब्रिटेनकी ९९ अङ्गरेज महिलाओं...
की है कि भारतके राष्ट्रीय नेताओंको ...
किया जाय।

—चर्चिल एमरी कम्पनीके ...
कहीं ९९ के चक्करमें न पड़ जायें।

*

कहा जाता है कि सरकार ...
को रोमन लिपि सिखा रही है

—आखिरी वक्तमें क्या,
खाक मुसलमां होंगे !

...र हित बस जिनके मन माहीं ।
...न कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वशान्ति या अशान्ति ?

इतिहास यह बताता है कि कभी किसी ...में अजेय सेना नहीं हुई। नेपोलियनकी ...वा अजेय समझी जाती थी किन्तु अन्तमें ...से भी पराजयकी गोदमें शरण लेनी पड़ी। ...र्मनीके कैसरकी सेना गत महासमरमें ...जेय समझी गयी थी किन्तु उसे भी परा...का दुर्दिन देखना पड़ा। इस महायुद्धके ...रम्भमें हिटलरकी सेनाने भी अजेय और ...र्व शक्तिशालिनी होनेकी विश्वख्याति ...र्जित की। किन्तु आजकी घटनाएं यह ...बित कर रही हैं कि 'सब दिन होत न एक ...मान।' लाल सेनाकी प्रचण्ड मारसे नाजी ...विकल हो गयी, उसकी अजेयता और ...रताकी कहानियां आज किम्वदन्तियां ...त्र रह गयी हैं। परिणामस्वरूप यूरोपके ...का अन्त होनेकी निकट सम्भावना ...खकर मित्रराष्ट्रीय नेताओंने युद्धोत्तरकालकी ...स्याओंपर विचार करना आवश्यक और ...र्णीय समझा है। फलतः याल्टा सम्मेलनमें ...नायकोंने निश्चय किया कि २५ अप्रैलको ...नफ्रैंसिस्कोमें एक सम्मेलन किया जाये ...र विश्वशान्तिकी रक्षाके लिये एक अन्त...ष्ट्रीय संगठन बनानेके उद्देश्यसे इस सम्मे...लनमें उन राष्ट्रोंको ही आमन्त्रित किया ...ये जो मन-वचन और कर्मसे त्रिराष्ट्रोंका ...नेता मानते आये हैं और भविष्यमें मानते ...गे। अतः वह सम्मेलन २५ अप्रैलको सैन...फ्रैंसिस्कोमें होने जा रहा है और इसमें ...लगभग ४५ स्वतन्त्र, अर्द्ध स्वतन्त्र और ...न्त्र राष्ट्रोंके प्रतिनिधि भाग लेंगे।

सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलन करनेका जिस ...निश्चय किया गया था उस समयसे ...क कई ऐसी घटनाएं हो गयी हैं जिनकी ...न किसी रूपमें प्रतिक्रिया सम्मेलनपर ...इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। सर्वप्रथम ...शोचनीय घटना है अमेरिकाके तत्कालीन ...ष्ट्रपति रूजवेल्टकी अचानक मृत्यु। दूसरी ...का सम्बन्ध है रूसकी वैदेशिक राज...से। जापानके साथ जो तटस्थताकी ...थी रूसने उससे अपनेको मुक्त कर ...की सूचना जापानको दे दी है। इस ...के साथ-साथ जापानका मन्त्रिमण्डल ...गया और कोइसोकी जगह एडमिरल ...जापानके प्रधानमन्त्री बने तथा ...मन्त्रिमण्डलमें जेनरल तोगोने, जो ...रूस और अमेरिकामें जापानके राज...थे और तोजो मन्त्रिमण्डलमें परराष्ट्र ...थे, फिर परराष्ट्र सचिवका पदग्रहण ...है। इसके सिवा दूसरी महत्वपूर्ण ...यह है कि आशा की गयी थी कि सैन...सिस्को सम्मेलनके पहले ही लुबलिन ...रके स्थानपर पोलैंडकी एक नयी सर...गठित हो जायेगी जिसमें सभी पोलिश ...का प्रतिनिधित्व होगा और वही सरकार सैनफ्रैंसिस्कोके लिये अपने प्रतिनिधि भेजेगी। लेकिन यह नहीं हो सका। लुबलिन सरकारकी जो अब वार्सामें है तथा लन्दनी पोलसरकारके प्रतिनिधि किसी समझौतेपर नहीं पहुंच सके। उधर स्टालिन इस बातपर अड़े हुए हैं कि लुबलिन सरकारके प्रतिनिधि सैनफ्रैंसिस्कोको आमन्त्रित किये जायें। इधर ब्रिटेन और अमेरिका दोनों इसे माननेको तैयार नहीं है और मास्कोके इस सम्बन्धके दो-दो निवेदन अस्वीकार कर दिये गये हैं। देखना यह है कि अन्तमें इस रस्साकसीमें जीत किसकी होती है। एक और घटना महत्वपूर्ण है। पहले रूसने निश्चय किया था कि सैनफ्रैंनसिस्कोमें मो० मोलोटोव न भाग लेंगे। लेकिन अमेरिकाके नये प्रेसीडेण्ट हैरी ट्रूमैनके विशेष अनुरोधपर मार्शल स्टेलिन मो० मोलोटोवको सैनफ्रैंसिस्को भेजनेको राजी हो गये हैं। फलतः सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलनके पूर्व महान तीन राष्ट्रोंके परराष्ट्र सचिव मो० मोलोटोव, मि० एडवर्ड स्टेटीनीयस और मि० ईडेनका सम्मेलन होगा। इस सम्मेलनमें सम्भवतः सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलनके कार्यक्रमपर विचार होगा।

समय और स्थिति दोनों आज मित्र-राष्ट्रोंके अनुकूल है। इस तरहकी कल्पना और अनुमान किया जा रहा है कि सम्भवतः २५ अप्रैलको सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलनका उद्घाटन जर्मनीकी पूर्ण पराजयकी घोषणाके साथ होगा। यह सम्भव हो तो कोई आश्चर्य न होगा। किन्तु प्रश्न यह होता है कि क्या जर्मनीकी पराजयसे विश्वमें शांति स्थापना होगी। क्या विजेता राष्ट्रोंका उद्देश्य सचमुच अनीति, अन्याय और अत्याचारका अन्त करके संसारके नीति, न्याय और शान्ति स्थापित करनेका है। लेनिनने एक बार युद्धकी दो तरहकी संज्ञा बताते हुए कहा था कि एक लुण्ठनात्मक फलतः अन्यायपूर्ण युद्ध और दूसरा मुक्तिप्रदायक फलतः न्यायपूर्ण युद्ध होता है। स्टालिनने इस परिभाषाके आधारपर रूसके विरुद्ध हिटलरके आक्रमण कर देनेके बाद ६ नवम्बर १९४१ को कहा था कि 'जर्मन लुण्ठनात्मक युद्ध, अन्यायपूर्ण युद्ध कर रहे हैं। उनका उद्देश्य है दूसरे देशोंको अपने अधिकारमें करके उन देशोंके निवासियोंको परतन्त्र बनाना। इसीलिये ईमानदारीका तकाजा है कि संसारके सब ईमानदार लोग जर्मनोंको लुटेरा समझकर उनके खिलाफ हथियार उठायें।"

हम इस बातसे पूर्ण सहमत हैं कि जो व्यक्ति अथवा राष्ट्र दूसरे देशपर अधिकार करके वहांके रहनेवालोंको परतन्त्र बनाता है वह स्टेलिनके कथनानुसार लुटेरा है। किंतु मान लेनेके बाद प्रश्न यह उठता है कि क्या 'लुटेरा' की संज्ञा पानेवाला एकमात्र देश जर्मनी ही है। क्या ईमानदारीका तकाजा यह नहीं है कि दूसरे देशोंपर छल बलसे अधिकार जमाये बैठे रहनेवाले दूसरे देश भी,—हमारा मतलब है सर्वप्रथम ब्रिटेन से, फिर फ्रांस और हालैंडसे है,—लुटेरा घोषित किये जांय! और क्या ईमानदारीका तकाजा यह नहीं कहता कि स्टालिन आज इस सम्बन्धमें भारत, बर्मा, मध्यपूर्व, सुदूर पूर्वपर इन देशके निवासियों की इच्छाके प्रतिकूल उनकी दुर्बलताओंका नाजायज फायदा उठाकर उनपर अधिकार जमाये बैठे रहनेवाले अपने 'दोस्त' ब्रिटेनसे साफ-साफ कहें कि दोस्त तुम्हारा यह काम लुटेरोंका है। आज युद्ध स्थिति इस प्रकार की है कि स्टालिन यदि चाहें तो स्पष्टवादितासे काम ले सकते हैं। स्टालिनके ही शब्दोंको, जो उन्होंने हिटलरी जर्मनीके संबंध में कहा था, कुछ अनुकूल हेर-फेरके साथ हम ब्रिटेनके सम्बन्धमें रखकर अपनेको ईमानदार समझनेवाले स्टालिनसे कहते हैं कि 'क्या चर्चिलशाही ब्रिटेनको स्वतन्त्रता और लोकतन्त्रके लिये लड़ने वाला माना जा सकता है? नहीं, हरगिज नहीं। दरअसल चर्चिलशाही ब्रिटेन स्वतन्त्रता और लोकतन्त्रका जानी दुश्मन है क्योंकि पहले वह साम्राज्यवादी हैं फिर और कुछ। दर असल वह यल्ले दर्जेका पक्का प्रतिगामी हैं और काला मक्कार हैं जिसने हिन्दुस्तान एवं अपने शासनान्तर्गत अन्य देशोंका शोषण किया है, वहांके रहनेवालोंको प्राथमिक लोकतंत्रीय स्वतंत्रताओंसे वंचित रखा है। अपनी इन कालीकरतूतोंको दुनियाकी निगाहसे छिपानेके लिये हिन्दुस्तान जैसे देशमें ब्रिटेन फूटका बीज बोकर, फूटके वृक्षकी छवद छायाके नीचे ट्रस्टीका रूप धर कर आसन जमाये बैठा है। दरअसल बात तो यह है कि चर्चिलशाही ब्रिटेनकी रवैय्या हिन्दुस्तान और अन्य देशोंमें प्रतिक्रियाशील शासन व्यवस्थाका वैसा ही प्रतिरूप है जैसा जारके जमानेमें रूसमें था।' हमारी इन बातोंका समर्थन हिन्दुस्तानके तमाम दल अक्षरशः करते हैं। थोड़ेसे साम्राज्यवादी दलालोंको छोड़कर आज भारतमें ऐसा कोई नहीं है जो ब्रिटिश शासनका किसी रूपमें समर्थन करता हो। सैनफ्रांसिस्कोमें भारतका प्रतिनिधित्व करनेवाले भारतीय ब्रिटिश सरकारके रबर स्टाम्पमात्र हैं क्या इस बातको भी आज स्टालिन या उनके दूसरे साथी प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनको बतानेकी आवश्यकता है? तब क्या ईमानदारीका तकाजा यह नहीं है कि मार्शल स्टैलिन और प्रेसिडेंट ट्रूमैन,—यदि वे वस्तुतः चाहते हैं कि विश्वमें शान्ति, स्वतंत्रता और समानता हो, यदि वे चाहते हैं कि जिस युद्धके वे संचालक हैं लेनिनके शब्दोंमें उसको मुक्तिदाता युद्धकी संज्ञा दी जाये, तो—पहले वे अपने दोस्त ब्रिटेनसे कहें कि संसारको सूर्यका प्रकाश देनेका दावा करनेवाले हे मि० चर्चिल पहले अपने घरके अन्धेरेको दूर करो। यदि यह कहनेका साहस वे नहीं करते तो ईमानदारीकी संज्ञामें इन देशोंके कर्णधारोंको चोर चोर मौसेरे भाई कहा जायेगा, यह बतानेकी आवश्यकता शायद नहीं है।

यदि संसारका रूप वही रहा जो आज है केवल उसमें यत्र-तत्र कांट-छांट कर दी गयी तो विश्वशांतिकी आशा दुराशा मात्र है। तभी तो श्री भूलाभाई देसाईने उस दिन लाहौरमें पंजाब नागरिक स्वतन्त्रता सम्मेलनके अध्यक्षपदसे कहा था कि 'केवल शत्रुओंपर विजय पाना पर्याप्त नहीं है। सन्देह, भय, अज्ञानता और लोभपर, जिनके कारण इस प्रलयंकर युद्धकी स्थिति उत्पन्न हुई, विजय पानेके लिये पूर्ण शक्ति लगानी होगी। आज हम उस स्थितिमें पहुंच गये हैं जब असली सवाल हमारे सामने यह है कि जर्मनी और जापानकी पराजयके बाद संसारकी स्थिति क्या होगी? यदि पुरानी समस्याएं जैसीकी तैसी बनी रहीं तो लाखों मनुष्यों का बलिदान और अमित धनका विनाश व्यर्थ गया समझना चाहिये। असली समस्या है एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्रके शोषणसे मुक्ति।'

यह प्रश्न जितना विजेता राष्ट्रोंके अधीनस्थ देशोंसे सम्बन्ध रखता है उतनाही उन देशोंसे भी जो इस युद्धके फलस्वरूप विजित होंगे। तभी तो महात्मा गांधीने सैनफ्रांसिस्कोके सम्बन्धमें एक वक्तव्य देते हुए यह कहा है कि शान्तिमें न्याय होना चाहिये। उसका स्वरूप न दण्डात्मक हो न प्रति हिंसात्मक। जर्मनी और जापानका अपमान न किया जाये। सबलमें कभी प्रतिहिंसा नहीं होती। अतः शांतिका फल सबको समान मिलना चाहिये। इसके बाद उनको मित्रमें परिणत करनेका प्रयास होना चाहिये। अपने लोकतंत्रीय होनेका प्रमाण मित्रराष्ट्र इसकेसिवा अन्य किसी मार्गसे नहीं दे सकते।' किन्तु स्थिति इसके बिलकुल प्रतिकूल है। जिसके पास जो कुछ है उसे तो वह बनाये रखना चाहता ही है, इस युद्धके फलस्वरूप उसे बढ़ानेकी फिक्र भी उसे है। अतएव जबतक संसारमें यह असमानता रहेगी कि एकके पास संसारका आधासे अधिक हिस्सा और अन्योंकी आवश्यकता भी पूरी नहीं होती तबतक संसारमें शान्ति नहीं अशान्ति ही रहेगी और हम यह स्पष्ट देख रहे हैं कि सैनफ्रांसिस्को शान्तिका नहीं अशांतिका अग्रदूत बनने जा रहा है।

सोवियट नीतिमें परिवर्तन ?—

देशका निर्माण, उत्थान और पतन देशके नेताओंके अनुरूप ही हुआ करता है। नेता ही अपने देशके भाग्य-विधाता हुआ करते हैं। देशके नेता देशवासियोंको जिस मार्गपर चलनेको कहते हैं, इसीमें देशका हित मानकर, जनसाधारण उसी मार्गका अवलम्बन करते हैं। यह सहज और स्वाभाविक है। यदि नेताओंने उनको गलत रास्तेपर चलाया तो जिम्मेदारी नेताओंकी है। जर्मनी भी इसका अपवाद नहीं है। जो जर्मन जनता, खासकर जर्मन श्रमिक, एक दिन क्रांति और विप्लव, प्रगति और समाजवादके अग्रदूत समझे जाते थे और मार्क्स तथा लेनिन भी यह समझते थे कि विश्वमें जनक्रांतिका नेतृत्व जर्मन ही कर सकते हैं, यदि परिस्थितियोंने उन्हीं जर्मनोंको प्रगतिसे प्रतिक्रिया, समाजवादसे बर्बरताकी ओर ले जा पटका तो उनको 'गुण्डोंकी कौम' कहनेके पहले समालोचकोंको उन परिस्थितियोंकी समीक्षा करके इस बातका अनुसंधान करना चाहिये कि इस तरहकी स्थिति कैसे और क्यों पैदा हुई। यदि इस बातपर विचार किया जाता और समझनेकी कोशिश की जाती तो बात स्पष्ट समझमें आ जाती कि जर्मनोंको क्रूर और बर्बर बनानेकी जिम्मेदारी नाजी नेताओंसे कम तत्कालीन ब्रिटिश राजनेताओंकी नहीं है। जर्मन जनताके सामने समाजवाद और खास कर रूसके समाजवादका इतना घृणित और

वीभत्स स्वरूप उपस्थित किया गया था कि रूसके नामसे ही जर्मनोंको चिढ़ हो गयी थी। साम्राज्यवादी और पूंजीवादी ब्रिटिश नेता रूसके कम्यूनिस्टोंको तब भी और अब भी आज संकटके मित्र होते हुए भी, शठ और बर्बरके सिवा अन्य किसी मधुर सम्बोधनका अधिकारी नहीं समझते। ऐसी अवस्थामें ग्येते और शिलर, मैक्समूलर और मार्क्स तथा एङ्गेल्सको पैदा करनेवाली जर्मन जातिको 'लुटेरा' कहकर सम्बोधन करनेवाले रूसी प्रचारकोंने प्रगतिशीलताका कहां तक उपकार किया है यह हमारी समझ के तो बाहर है, शायद भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टीके हमारे 'साथी' समझते हों। अस्तु! रूसके कर्त्ताधर्त्ताओंको भी अब इतने लम्बे अर्सेके बाद यह बात समझमें आयी कि समग्र जर्मन राष्ट्रको 'गुण्डोंका दल' कहना प्रगति सूचक नहीं है। मास्कोके सरकारी पत्र 'प्रवदा' में रूसी कम्यूनिस्ट पार्टीके प्रचार विभागके अध्यक्ष मो० अलेक जेण्ड्रोवका एक लेख प्रकाशित हुआ है। इस लेखमें सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्रको गुण्डा बतानेके लिये इलिया एहरेन बर्गकी निन्दा और भर्त्सना की गयी है। इस लेखको कूटनीतिक अञ्चलों में बड़ा महत्त्व दिया जा रहा है और इसको सोवियटकी कूटनीतिमें नवीन परिवर्तनकी पूर्व सूचना बताया जा रहा है। हम भी ऐसा ही समझते हैं। यदि रूसको यूरोपमें अपना प्रभाव कायम रखना है तो उसे जर्मनोंकी सहानुभूति और सहयोग प्राप्त करना ही होगा। अबतक युद्धके दौरानमें इलिया एहरेन बर्ग जैसे प्रचारकोंने जर्मन जातिके विरुद्ध जो घृणा और विद्वेषका भाव फैलाया है उसीका यह परिणाम है कि जर्मन रूसियोंको अङ्गरेजों और अमेरिकनों-की अपेक्षा अधिक अपना जानी दुश्मन समझते हैं। यह भाव युद्धकालमें और बाद भी जर्मनी तथा समग्र यूरोपमें रूसके विरुद्ध प्रचार करनेमें साम्राज्यवादियोंका सबसे बड़ा सहायक सिद्ध होगा। शायद युद्ध-जीवनके संध्या कालमें रूसके कर्णधारोंकी समझमें यह बात आयी है और इसीसे वे जर्मनोंके प्रति अपना भाव बदलनेकी आवश्यकता महसूस करने लगे हैं। देर आये दुरुस्त आये।

प्रशान्तके द्वीप—

युद्ध समाप्तिके दिन जैसे-जैसे निकटतर आते जा रहे हैं ब्रिटेन और अमेरिकाके प्रचार विभागोंकी कार्यव्यस्तता उसी अनुपातसे बढ़ती जा रही है। दोनों प्रचार विभाग अपने-अपने विभिन्न साधनों द्वारा संसारको यह बतानेकी फिक्रमें हैं कि इस युद्धमें विजयका सर्वाधिक श्रेय उसीके देश-को है। जो मित्र-शक्तियोंका गर्व और गौरव तथा सम्मिलित प्रचेष्टा थी उसे अब अपना गर्व और गौरव तथा अपनी प्रचेष्टाका परि-णाम बतानेमें ब्रिटेन और अमेरिकाके प्रोपेगैण्डा और पबलिसिटी विभाग व्यस्त हैं। विजयकी लूटका बड़ा हिस्सा पानेका अधिकार वही प्राप्त कर सकता है, विजय लानेमें जिसका अधिक हाथ रहा है। ब्रिटेन और अमेरिकाके बीचमें यह बात निर्विवाद कही जा सकती है कि प्रशान्त और यूरोपके मोर्चोंमें सर्वत्र अमेरिकाकी ही प्रधानता देखी गयी है। यह देखते हुए अमेरिकनोंका समझना कि प्रशान्त अञ्चलमें जापानियोंसे मुक्त किये गये द्वीप अमेरिकाके नियन्त्रणमें आयेंगे स्वाभाविक ही है। सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलनमें यह प्रश्न अवश्य आयेगा, इसमें सन्देह नहीं। अब इन द्वीपोंपर किसका शासन होगा, शासनकी प्रणाली क्या होगी आदि बातें ऐसी हैं जो ब्रिटेन और अमे-रिका दोनों देशोंके राजनेताओंको परेशान कर रही होंगी। इस सम्बन्धमें अबतक किसी स्पष्ट नीतिकी घोषणा नहीं हुई। रूसकीकी दृष्टि इधर नहीं है, यह नहीं कहा जा सकता। किन्तु इस मामलेमें असली फरीकैन ब्रिटेन और अमेरिकाका ही है और लक्षणोंसे यह प्रतीत होता है कि यह प्रश्न दोनों देशोंके बीचमें तूल पकड़ेगा। आज ही से नहीं, बहुत दिनोंसे अमेरिकन राजनीतिज्ञोंकी दृष्टि प्रशान्तके द्वीपोंपर लगी है। उनका कहना है कि अमेरिकाकी सुरक्षाके लिये सामरिक दृष्टिसे इन द्वीपोंपर अमेरिकाका प्रत्यक्ष नियन्त्रण अत्यावश्यक है। बहुत दिनोंकी अपनी इस अभिलाषाको पूर्ण करनेका यही अवसर है। इस सम्बन्धमें अमेरिकन नौ-सेनाके प्रधान सेनापति एड-मिरल किङ्गने साफ ही कह दिया है कि "युद्धोत्तरकालमें बहुत बड़ा जहाजी बेड़ा तथा युद्धके दौरानमें जिन प्रशान्त द्वीपोंको हमने जीता है उनपर नियन्त्रण बनाये रखना अमेरिकाके लिये नितान्त आवश्यक है।" प्रशांत अञ्चलके अमेरिकन जहाजी बेड़ाके कमाण्डर इन चीफ एडमिरल निमिजने भी एडमिरल किङ्गके वक्तव्यका पूर्ण समर्थन करते हुए कहा है कि "युद्ध संचालन एवं भविष्यमें आत्मरक्षाके लिये इन द्वीपोंका बहुत बड़ा महत्व है। संयुक्तराज्य अमेरिका-के लिये इनका उतना ही महत्व है जितना हवाई द्वीपों का है।" इन दोनों वक्तव्योंसे ब्रिटेनके राज-नीतिक अञ्चलोंमें बड़ी परेशानी है। एडमिरल निमिजके वक्तव्यने तो तहलका ही मचा दिया । यह स्वाभा क भी है। ब्रिटिश विचार इनसे सर्वथा भिन्न है। अभी लन्दन में जो साम्राज्य सम्मेलन हुआ था उसमें व्यक्त किये गये विचारोंसे यह प्रतीत होता है कि अंगरेज चाहते हैं कि प्रशान्तके द्वीपोंपर शासन-नियन्त्रणके लिये एक पैसि-फिक एडवाइजरी कौंसिल बने और इन द्वीपोंका नियन्त्रण यह कौंसिल कैरीबियन द्वीपोंपर नियन्त्रणके लिये बनी ब्रिटिश-अमेरिकन कौंसिल की तरह करे। इस अवसरपर यदि प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट होते तो बहुत सम्भव था कि वे एक ऐसा मार्ग निकालते कि दोनों सन्तुष्ट हो जाते। यह समझा जाता है कि याल्टामें स्वर्गीय रूजवेल्टने यह प्रशान्तके द्वीपोंके नियन्त्रणके लिये एक अन्तर्देशीय कौंसिल बनानेका आ-श्वासन दिया था। पर आज स्थिति वह नहीं रह गयी। उधर आस्ट्रेलिया, फ्रांस और कनाडा यह चाहते हैं कि इस सम्बन्धमें पूर्व स्थिति बनी रहे अर्थात् राष्ट्र संघसे प्राप्त आदेशके बलपर जिन द्वीपोंपर इन देशोंका नियन्त्रण था वहां वैसी ही स्थिति रहे। लेकिन प्रश्न तो यह है कि क्या अमेरिकन याल्टावाले सुझाव और पूर्व स्थिति बनाये र नेके प्रस्तावको स्वीकार करेंगे?

हिन्दुस्तान डोमिनियन है—

जब कभी यह प्रश्न उठाया जाता है कि हिन्दुस्तानको अटलांटिक चार्टरके दायरेसे क्यों बाहर रखा जाता है तभी ब्रिटिश शासक और राजनेता यह कहा करते हैं कि हिन्दुस्तान जिस शासन प्रणालीके अन्तर्गत है उसमें उन सब बातोंका समावेश है जो अटलांटिक चार्टरमें हैं। अंगरेजोंका स्वार्थ इसीमें है कि वे बातें बनाकर जहांतक हो सके हिन्दुस्तानको स्वतन्त्रतासे दूर रखें। इसके लिये वे क्या नहीं करते। उनका ऐसा कहना और करना, उनके स्वार्थकी दृष्टिसे, स्वाभाविक है। किन्तु जब एक भारतीयको हम यह कहते सुनते हैं कि हिन्दुस्तान आज नामसे भले ही डोमिनियन न हो पर कामसे वह पूरा डोमिनियन बन गया है उस समय हमें मानों काठ मार जाता है। किन्तु एक क्षणभर बाद ही यह भाव मिट जाता है और हमारी दृष्टि इस कथनके तह तक पहुंच जाती है। इसके सिवा सर फिरोज खां नून जैसे व्यक्तियोंसे और आशा भी क्या की जा सकती है। जिस गवर्नर जेनरलकी कौंसिलके आप डिफेंस मेम्बर हैं उसके प्रति भारतीय व्यवस्थापिका परिषद एक नहीं दर्जनों बार अपना अविश्वास प्रकट कर चुकी है। अतः अपनी इस झेंपको मिटाने के लिये उन लोगोंके बीचमें जो अपने अपने देशके निर्वाचित प्रतिनिधि हैं और वे क्या कहें, झूठे स्वाभिमान और आत्म मर्यादाकी रक्षाके लिये। क्योंकि यदि वस्तुतः स्वाभि-मानका किंचित अंश भी उनमें होता तो वे साम्राज्य सम्मेलन और सैनफ्रांसिस्कोमें 'हंस मध्ये बको यथा' बननेको कभी तैयार ही नहीं होते। वे सब कुछ करने और कहनेको तैयार हैं, नेतृत्वके लिये। आवश्यक त्याग और तपस्याके बदले ऐसे लोग खुशामदको अपनी पूंजी बनाते हैं और इसी पूंजीके बलपर ये स्वयं मौज उड़ाते हैं। देशद्रोहियों के सींग और पूंछ नहीं हुआ करती। उनकी पहचान उनके कामोंसे होती है। जो व्यक्ति यह कह सकता है कि "मुझे यह कहते प्रसन्नता होती है कि ये चार अंगरेज (वायसरायके कौंसिलके अंगरेज सदस्योंसे मतलब है।) भारत और ब्रिटेनका प्रश्न विचारार्थ उपस्थित होनेपर उतना ही भार-तीय हैं जितना उस सरकारके अन्य भारतीय सदस्य" वह देशद्रोह करता है या देशप्रेम, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं रह जाती। और देखा जाये तो बात भी ठीक है। गव-र्नर जेनरलकी कौंसिलके भारतीय सदस्य जिस धातुके बने भारतीय हैं उनमें और अंगरेजोंमें लार्ड मेकालेके शब्दोंमें अन्तर सिर्फ रंगमात्रका है। ये काले हैं वे गोरे। अन्य सब बातोंमें वेशभूषा और शिक्षा-दीक्षा-के ख्यालसे उन दोनोंमें कोई अन्तर नहीं है। एक और अन्तर है। वह यह कि अंग्रेज अपने देशकी स्वतन्त्रताके लिये बड़ीसे बड़ी कीमतको तुच्छ समझता है जबकि ये हिन्दु-स्तानी साहब इस जगह दुम हिलाने लगते हैं। अवश्य ही कालेसाहब बननेके लिये ये भी बड़ीसे बड़ी कीमत तुच्छ समझते हैं और सो हम प्रत्यक्ष देख भी रहे हैं। भारतकी स्व-तन्त्रता जैसी वस्तुको ये बन्धक रखे हैं। इसी बहाने तो इन्हें लन्दन, वाशि... और सैनफ्रैंसिस्कोकी सैर करनेका ... सर और सौभाग्य प्राप्त होता है।

सर फिरोज खां नूनने इसी सिल... एक और रहस्य खोला है। हिन्दुस्तान ... से नहीं वर्षोंसे सावरेन नेशन (पूर्ण ... नैतिक अधिकार प्राप्त राष्ट्र) है। ... सावरेन नेशन आपकी दृष्टिमें वह ... राष्ट्र संघ जैसे संगठनका मूल सदस्य ... सकता है। आपने फरमाया है "राष्ट्र... मूल सदस्योंमें हिन्दुस्तान भी एक ... हम आशाभरी दृष्टिसे देख रहे हैं कि ... राष्ट्रसंघमें भी अथवा जो भी इसका ... रखा जाये, हमें मूल सदस्योंमें रखा ... अतः हम दरअसल एक सावरेन ... प्रतिनिधिकी तरह सैनफ्रैंसिस्को जा ... हमें इस बातकी पूरी आजादी है ... अपने देश और अपनी सरकारके ... जो श्रेयस्कर समझें वही करें।"

इस प्रश्नपर हमें इतना ही सर ... से पूछना है कि इस वक्तृताके बाद ... अपना चेहरा आईनामें देखा था?

सद्भावनाका प्रतिफल—

ब्रिटिश सामंतशाही बलवान है ... हम मानते हैं। किन्तु हम यह भी ... कि आज दिन उसके दिखाऊ बलका ... वह स्वयं नहीं वरन विशेषतर अमेरिका ... ऐसी स्थितिमें यदि वह हथेलीसे चांद ... का प्रयत्न करता है तो उसे हम क्या ... न्यायका भिन्न-भिन्न स्वरूप होते हु... उसका आधार एकही रहा है और ... उसके अमर-निर्माणका अमिट और ... परिणाम हुआ है। अमानुषिक ... भी एक हद है—उसकी एक सीमा है। ... से बाहर हो जानेपर उसका रूप विकृ... घिनौना हो उठता है। और यह बात ... की ब्रिटिश सामंतशाहीके बारेमें भी ... जा सकती है। राष्ट्रपति आजाद और सी... गांधी इसके दो प्रबल और प्रामाणिक ... हरण हैं। अगस्त उत्पात आरम्भ हो... पहले ही देशके नेता लावारिस माल... तरह अंग्रेजी-सामंतशाहीके कुलियों ... लापरवाहीसे जनताके बीचसे उठा लिये ... थे। उस समय सीमांत-गांधीके साथ ... कारी कर्मचारियों द्वारा जो व्यवहार ... गया था वह उन्हींके मुंहसे अब प्र... आया है। पुलिसने उनके साथ जो ... किया था उसके परिणामस्वरूप ... पसलीकी दो हड्डियां टूट गयी थीं। ... इसपर भी उन्हें 'सी' क्लासमें रखा ... और उनके लिये डाक्टरी तथा ... समुचित प्रबन्ध नहीं किया गया था। ... घटना राष्ट्रपति आजादसे सम्बन्ध रख... इकतीस महीने बाद एक सई आ... हुए अहमद नगरजेलका दरवाजा ... सरकारउन्हें बांकुड़ा जेल भेज रही थी ... पुरमें गाड़ी बदलते समय अखबार... साथ राष्ट्रपतिकी आंखोंके सामने ... विरोध करनेपर भी पुलिस अधिका... जो सभ्य व्यवहार किया है वह ... आंखोंमें उंगली गड़ा देने जैसा ... नवीन युगमें हमारी सद्भावनाका ... जिसरूपमें मिल रहा है वह भविष्यके ... की डोरमें एक और नयी गांठ डाल ...

विश्व-शान्तिपर महात्माजीके विचार

आगामी सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनपर महत्वपूर्ण वक्तव्य देते हुए महात्माजीने …कि सभी राष्ट्रों और जातियोंकी समता …युद्धकी उपादेयतामें अविश्वासके बिना …में सच्ची शान्ति नहीं स्थापित हो …। शान्तिके लिये भारतकी पूर्ण स्वा… अनिवार्य है, सिर्फ इसलिये नहीं कि …की पराधीनता साम्राज्यवादी शासनका नमूना है, बल्कि इस वजहसे भी कि यह …, प्राचीन और सांस्कृतिक देश गत २५ … सिर्फ सत्य और अहिंसाके बलपर स्वतन्त्रता संग्रामको सञ्चालित करता …है। भारतीय सैनिकोंने युद्धके …मोर्चोंपर अपनी वीरताका यथेष्ट … दिया है, जो किसी भी देशके सैनिक …ओंसे कम नहीं है । अतः यह कहकर …वासियोंमें रण-कौशलका अभाव है, अतःये …का प्रयोग कर रहे हैं, असत्य प्रमा…ता है। भारतकी स्वतन्त्रता अन्य …राष्ट्रोंके हृदयमें यह आशा उत्पन्न … कि उनकी भी आजादीके दिन सन्नि…। भारतको स्वतन्त्र घोषित करनेकी …री आवश्यकता है ।

…, न्यायपूर्ण हो और न्यायपूर्ण शांति …दंडात्मक होती है और न प्रतिशोधमूलक …जर्मनी और जापानको भी अपमानित …न किया जाय । शक्तिशाली … होते हैं। अतः शान्तिके हलका … हो। तत्पश्चात उन्हें मित्र … प्रयास किया जाय । मित्रराष्ट्रोंको …लोकतन्त्रप्रियताको प्रमाणित करनेका … उपयुक्त मार्ग नहीं है । सशस्त्र सैनिकों …के निशस्त्र किये गये राष्ट्रोंपर … शांति न लादी जाये । एक ओरसे …ण हो और दूसरी ओरसे शांतिकी …और इसकी शर्तोंको कार्यान्वित … अन्तर्राष्ट्रीय पुलिसका सङ्गठन …य। यह सङ्गठनकी आवश्यता इस… है कि वह शांतिका प्रतीक है बल्कि … त्रुटियोंके कारण उसका रहना …है।

सत्याग्रहके महत्त्वपर गांधीजी

… रविवार, १९ अप्रेलको रूंगटा …(बम्बई) में प्रार्थनाके समय महात्मा… जनसमूहके समक्ष एक संक्षिप्त …या। व्याख्यानके सिलसिलेमें एक … अपनी बातचीतका हवाला देते …जीने कहा कि उक्त मित्रने मुझसे …की परिभाषा पूछी थी क्योंकि …में सर्वसाधारणके बीच भ्रम व्याप्त …विचारसे भारतमें कोई गांधीजी हैं ही … मैं भी गांधीजी नहीं हूँ क्योंकि मैंने …सम्प्रदाय विशेषकी नींव नहीं डाली । …जीने कहा कि मैं मात्र एक सत्याग्रही …सत्याग्रही होनेकी वजहसे अहिंसक … अहिंसक बननेकी कोशिश कररहा …को ऐसा ही प्रयत्न करना चाहिये । …अधिकाकी घटनाओंका उल्लेख … गांधीजीने कहा कि यहां सत्याग्रहियोंका नगण्य अल्पमत था और परिस्थितियां हमारे बिलकुल विपरीत थी उस समय मैंने सत्याग्रहका नया मार्ग ढूंढ निकाला। अबतक मैं किसी पार्लमेंट या लोकलबोर्डका सदस्य तक नहीं हुआ। मैं समझता हूं कि वैधानिक मार्गके बजाय अहिंसात्मक असहयोग कहीं अधिक प्रभावशाली है। स्वराज्य और अन्य स्वतन्त्रता प्राप्त करनेतकका यहसाधन है। सत्याग्रहको मैंने सिर्फ नीतिके रूपमें नहीं बल्कि सिद्धान्त-स्वरूपमें अपनाया है। इसका पालन कर मैं ईश्वरका साक्षात्कार करनेकी आशा रखता हूं, फिर स्वराज्य प्राप्ति तो हंसी-खेल है, यदि सभी इसकी ओर ध्यान दें। मेरा सत्याग्रह मुझसे कहता है कि जो सत्याग्रहमें विश्वास रखनेके बजाय वैधानिक कार्यक्रममें विश्वास रखते हैं, उनके साथ कंधासे कंधा मिलाकर चलो।

आपने अन्तमें कहा कि मेरा कोई शत्रु नहीं। अङ्गरेज और अङ्गरेज अधिकारियोंसे भी मेरी शत्रुता नहीं। पर इसका अर्थ यह नहीं कि मैं उनके पीछे-पीछे चलूं। मेरा निजी मार्ग है। अधिकारियोंका काम है भारतकी सेवा करना। उन्हें शक्ति-संचय और शक्ति विस्तारकी धुन है और मुझे यह लगन है कि ईश्वरके नामपर सेवाकार्य करूं। मेरा विश्वास है कि मैं ईश्वर बराबर मेरी:पीठ पर हैं आर इस विश्वासके बलपर सम्पूर्ण विश्वके विरोधके सम्मुख मैं अकेला डटनेको प्रस्तुत हूं।

'गांधी-वायसराय पत्र व्यवहार'

'वायसरायसे गांधीजीका पत्र व्यवहार (१९४२-४४)' शीर्षक पुस्तककी प्रस्तावना में, जो गत १९ अप्रैलको प्रकाशित हुई है, महात्माजीने लिखा है कि युद्ध इस वर्ष या अगले वर्ष समाप्त होने जा रहा है। मित्रोंकी विजय होगी। पर यदि भारत और भारत सरीखे मुल्कोंके गुलाम रहते विजय प्राप्त की गयी तो वह नाममात्रकी विजय होगी। उसे तो निश्चित रूपसे वर्तमान महासमरसे भी अत्यधिक विनाशकारी विश्व-युद्धकी पूर्व सूचना ही समझिये।

सभी नेताओं और अपनी गिरफ्तारीके बादकी दो वर्षोंकी घटनाओंका विवरण मैंने विश्वसनीय प्रत्यक्ष दर्शियोंसे प्राप्त किया है और इस बीचमें एक भी ऐसी घटनाका उल्लेख मुझे नहीं मिला जिससे इस पुस्तकमें व्यक्त अपने विचारोंमें रद्दोबदल करनेकी मुझे प्रस्तावना लिखते समय (७ अप्रैल १९४४) आवश्यकता महसूस हुई।

भारतीय स्वातन्त्र्य संग्रामकी संक्षिप्त रूप-रेखा उपस्थित करते हुए महात्माजीने कहा कि सत्य और अहिंसा किसीकी सच्ची सहायताकी अवहेलना नहीं करते। यदि ब्रिटिश और अन्यान्य मित्रराष्ट्र भारतकी सहायता करें तब तो सोनेमें सुगन्ध है। उनकी इस नीतिसे मुक्ति अत्यन्त शीघ्रतापूर्वक मिल सकेगी। यदि वे सहायता न करें, तब भी विजय निश्चित है। सिर्फ अन्तर यही होगा कि पीड़ितकी पीड़ाकी अवधि अधिक लम्बी हो जायगी। उस दुख और समयकी हमें क्या परवाह है जिसे हमें आजादी प्राप्त करनेमें लगाना है।

प्रार्थनाका महत्त्व

अभी कुछ दिन पहले महात्मा गांधी बम्बई गयेहुए थे। महात्माजीनेबोरिवली शिक्षणशिविर केकार्य कर्त्ताओंको अनेक परामर्श दिये। अपने भाषणमें गांधीजीने कहा किसामूहिक प्रार्थना को दैनिक कार्यक्रमसे इसलिये निकाल दिया गया है ताकि कोई ऐसा न समझ ले कि इच्छाके विरुद्ध धर्मका बोझ उसपर लादा जा रहा है। मेरा जहां तक सम्बन्ध है, बिना अन्नके मैं कितने दिनों तक रह चुका हूं, पर प्रार्थना किये बिना एक दिन भी कल नहीं पड़ता। हमारे देशमें एकान्तमें जाकर प्रार्थना करनेकी प्रथा प्रचलित है पर सामूहिक प्रार्थना से मुंह चुरानेका कोई कारण नहीं। मनुष्य एक साथ खाते-पीते, हंसते-बोलते और काम करते हैं, फिर एक साथ मिलकर प्रार्थना क्यों नहीं सकते?

मैंने बार-बार कहा है कि एक पक्का अहिंसावादी सम्पूर्ण संसारके लिये काफी है। मैंने वैसी पूर्णता अबतक नहीं प्राप्त की है, पर जो कुछ भी हो सका हूं वह प्रार्थना के बदौलत ही। ईश्वर मनुष्यकी प्रार्थना और प्रशंसाका भूखा नहीं है। वह प्रेममय है और सब-कुछ बर्दाश्त करनेकी उसमें क्षमता हैं। फिर भी मनुष्योंको कम-से-कम कृतज्ञताके ख्यालसे भी ऐसा चाहिये कि वे अपने स्रष्टाका गुणगान करें।

भारतीय कायर हैं

श्रीमती मृदुला बेनके यह पूछनेपर कि राष्ट्रस्वरूप भारतमें कौन-कौन गुण-दोष हैं, महात्माजीने कहा है कि मेरी यह धारणा

यौवनकी अरुणाई !

मैं मनसे हूं रही तुम्हारी, तन हो गया पराया !

*   *   *

मानोगे, मैं जो कुछ कहती, ओ, जीवनके माली।
बिना तुम्हारे कौन करेगा, प्रिय मनकी रखवाली॥
भूल गये क्या प्राण! हाय, वे रातें लघु-रसवाली।
आज सोंचती मैंने खोया सब कुछ या है पाया॥

(२)

यह कैसा तूफान, अभी तो मैंने नौका खोली।
आम्र-मञ्जरित तरुके ऊपर हाय, कुहूकी बोली॥
आज व्यथित-मनमें है किसने, मेरे पीड़ा घोली।
मैं स्वतन्त्र हूं--प्राण! विवशतामें सीमित है काया॥

(३)

मैं तारोंके मदिर-हासकी प्रियतम बनी कहानी।
जो पतझड़के स्वप्न बनाती, स्वयं रही अनजानी॥
रुद्ध हो गया मेरा मानस, मूक हो गयी वाणी।
लगता—मन उमड़ा था मेरा, लेकिन बरस न पाया॥

(४)

तुम सुदीर्घ-राकासे भी हो सुन्दर प्रेम-प्रकाशी।
मैंने पाया आलिंगनमें सबकुछ हे, अविनाशी॥
मेरे लिये हृदय मक्का था, स्मित मथुरा-काशी।
आज किसीने कर डाली है, बन्दी मेरी छाया॥

(५)

तुम असीम-सरिताकी धारा, सीमित मेरे लोचन।
फिर बोलो! कैसे समेट लूं, हुआ पराया जीवन॥
आज मिलनकी मधुर-निशामें गीत न गाते चुम्बन।
मेरी सांसोंके कम्पनमें फैली विधिकी माया॥

(६)

कहां छिठा मैं तुम्हें प्रेमसे अपने मनमें पाई।
अभी-अभी तो बिखरी मेरे यौवनकी अरुणाई॥
कल तक सब कुछ रहा तुम्हारा, अब हो गई पराई।
टूट गई जब मनकी वीणा, गीत किसीने गाया॥

*   *   *

मैं मनसे हूं रही तुम्हारी, तन हो गया पराया।

—'मुकुल'

आजादीकी लड़ाईमें हम कांग्रेसके साथ

———:०:———

स्वामी सहजानन्द सरस्वतीके विचार

जिला किसान सम्मेलन शकूराबाद (गया) के दसवें अधिवेशनमें सभापति पदसे भाषण करते हुए स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने कहा :—

किसान सभाने अपने जन्मके दिनसे ही लड़ाइयां लड़ी हैं। या यों कहिये कि लड़ाई के ही दर्म्यान इसकी पैदाइश होकर यह फूली-फली है। इसलिये हम लड़ाइयोंसे घब-राते नहीं। बल्कि लड़ाइयां तो हमारी बढ़ती ताकतका सबूत हैं जो हमें मौका देती हैं कि लापर्वाह न रहके हम अपनेको संभालें और मुस्तैद रखें। हमारा हमेशा यही वसूल रहा है, सिद्धान्त रहा है। इस मामलेमें हमें किसी भी तरहका समझौता किसीसे भी नहीं करना है। अगर कोई यह कोशिश करे कि किसान सभा स्वतन्त्र संस्था न होकर किसीका पुछल्ला बने तो हम उससे लड़ेंगे। इसके लिये पहले भी लड़ चुके हैं। इसी तरह अगर कोई आदमी या संस्था किसानोंके राजनैतिक और आर्थिक हकोंपर हमला करे तो उससे भी हम लड़ेंगे, पहले भी लड़ते रहे हैं। यह पक्की बात हैं। बाकी मामलोंमें समझौता हो सकता है। इस ठोस सत्य और करारी जानकारीको हम भुला नहीं सकते। इसलिये किसान सभाके दुश्मनोंको यह बात याद रखनी होगी कि हम भूल भुलैयामें पड़नेवाले हैं नहीं।

किसान सभा और कांग्रेस

हमने हमेशा कहा है कि गुलामीके खिलाफ हमारे मुल्ककी सामूहिक बगावतका बाहरी रूप ही कांग्रेस है। वह हमारी आजादीकी भूख और लगनकी मूर्ति है। इसलिये जबतक आजादी नहीं मिलती उसका न सिर्फ कायम रहना, बल्कि मजबूत होना निहायत जरूरी है। भारतकी राष्ट्रीय और कौमियतकी जीती-जागती शकलके रूपमें कांग्रेसका बरकरार रहना हमारी आजादीके लिए जरूरी है। इसलिये जब मंत्रियोंके रूपमें गद्दीपर बैठनेकी बात कांग्रेसकी ओरसे सोची जाने लगी थी तो हमने मुखालिफतकी थी। क्योंकि हमें अन्देशा हुआ कि वह अपनी जगहसे गिर रही है, गिर जायगी। गुलाम देशमें शासक और हाकिम बनकर वह राष्ट्रीयताकी जीती-जागती मूर्त्ति हर्गिज रह नहीं सकती थी, रह नहीं सकी। इसलिये हमें मंत्रियोंसे लड़ना भी पड़ा। वे राष्ट्रवादी की जगह शासक बनकर जो आये। फिर भी न तो हमारी तकलीफ दूर कर सके और न अपने वादे ही पूरे कर पाये। गद्दीनशीन कांग्रेस से ऐसा होना गैरमुमकिन था। हम यही बात पहले कहते भी थे। मगर उनने सुनी नहीं।

मगर उससे पहले और खासकर आज तो कांग्रेस बनवासिनी थी और है। आज तो दर्दसे कहना पड़ता है कि जंगलकी खाक वह छानती फिरती है। आज वह राष्ट्रीयताकी असली मूर्त्तिके रूपमें हमारे सामने खड़ी है और दुश्मन उसे मिटानेपर तुला बैठा है। यदि वह मिट गयी तो आजादीके लिये हमारे मंसूबे खत्म हो जायंगे। अकेली किसान सभा या कोई भी पार्टी और सभा आजादी हासिल कर नहीं सकती। यह पक्की बात है। यह तो कांग्रेसके ही जरिये होनेवाला काम है। यही वजह है कि हम उसे कमजोर होने देना नहीं चाहते। यही वजह है कि हम नहीं चाहते कि मौजूदा हालतमें उसके लीडर गंदी और बदनाम गद्दी-पर बैठकर राष्ट्रीयताको कलंकित करें, उसपर धब्बा लगावें। क्योंकि तब तो वे हमें उनसे लड़नेको मजबूर भी करेंगे जैसा कि पहले किया था। हम जो कभी कांग्रेससे लड़ते और कभी उसका साथ देते हैं उसका भी यही मतलब है। आजादीकी लड़ाईमें हम हमेशा उसके साथ हैं और इतना तो साफ है कि इसमें हम उसके खिलाफ नहीं जा सकते, उसे कमजोर नहीं बना सकते। इसीलिये जब वह गद्दीनशीन बनती है तो उससे लड़-कर उसे बारबार अपने असली फर्जकी याद दिलाते हैं और कहते हैं कि गद्दीको भूलकर अपने आपको मजबूत करो और किसानोंके आंसू खुले दिलसे पोंछकर उनका दिल जीत लो। यही मौका है। हम आगे भी यही करेंगे। इसलिये जिनका ख्याल आज ऐसा है कि हम कांग्रेसकी चापलूसी कर रहे हैं उनने हमें न तो पहले पहचाना और न आज। चापलूसी तो हमने जानी ही नहीं। यदुनन्दन शर्माने सीखी ही नहीं। हम तो सीधे लड़ना और जीतना या मरना जानते हैं। किसान सभा और किसानोंको भी—कार्यकर्त्ताओंको भी—हमने सदा यही सिखाया है, शानसे लड़ना और हकके लिये मरना। हम यह भी मानते हैं कि मुल्कके ८० फी सदी किसान और किसान सेवक यदि हकके लिये संगठित रूपसे लड़ना और मरना सीख जायें तो कांग्रेसकी शान चमक उठे और उसकी ताकतके सामने कोई टिक न सके। हमारे जानते आजादी लेने का दूसरा रास्ता है भी नहीं, जबतक बखूबी संगठित किसान सभाके जरिये कांग्रेस शान-दार और अजेय, कभी न हार सकनेवाली, नहीं बना दी जाती।

किसानसभा और कम्युनिस्ट

बदकिस्मतीसे हमें हमेशा ही पार्टीवालों से लड़ाई करनी पड़ी है। जब तक उन्हें काम निकालना था और वे कमजोर थे चुपचाप पड़े रहे और दीमककी तरह किसान सभाको भीतर ही भीतर नीचे ऊपर चाटते रहे। जब हमें इसका पता चला तो उनसे लड़ना पड़ा। पहले यही हुआ और आज भी यही बात दुहरायी जा रही है। पार्टीवाले जाल-फरेब, धोखा-धड़ी, झूठ-सांच हर तरीकेसे भुलावेमें डालकर अपना काम बनाना जानते हैं। कम्युनिस्ट पार्टीका तो वसूल ही है कि सभी संस्थाओं और जमातोंमें चाहें जैसे हो घुस-कर उन्हें खोखली बनाओ और अपनेको मजबूत करो। पार्टीवालोंके लिये पार्टी पहले है और बाकी बातें तथा संस्थाएं पीछे। ऐसी हालतमें भला उनके साथ हमारी कब तक निभ सकती थी? जबतक हम उनके भुलावेमें रहे, उन्हें परख न सके, उनकी बातोंपर यकीन कर सके तभी तक साथ चल सके। सो भी गुजश्ता दो सालके भीतर हमें कई बार खूनके आठ-आठ आंसू रोने पड़े। हम चाहें कि किसान सभा मजबूत हो, वह चाहें कि पार्टी मजबूत हो। हम कहें कि यह जनताकी लड़ाई नहीं है, वह कहें कि खाम-खाह जनताकी लड़ाई है। हम कहें कि लड़ाई के मामलेमें हमें उदासीन रहना है—न तो इसकी तैयारीकी मुखालिफत करनी है और न इसमें मदद ही करनी है—वह कहें कि सारी ताकतसे मदद करनी है। हम कहें कि साम्राज्यवाद, पूंजीवाद और जमींदारी प्रथा से हमारा समझौता नहीं हो सकता, इसी-लिये इन तीनोंके खिलाफ नारे जरूर लगें। मगर ऐसा सुनते ही उनपर गोया पाला पड़ जाय और अगर कहीं दबी जबानसे मजबूरन उसने ये नारे लगाये भी तो फौरन प्रायश्चित करनेकी कोशिश की। क्योंकि उन्हें फिक्र है लड़ाईके लिये काफी अन्न और सामान पैदा करानेकी। उन्हें इस लड़ाईके जीतनेकी फिक्र जितनी है उतनी आजादीकी लड़ाईकी शायद ही हो। मगर हमें तो आजादीकी असल फिक्र है। वे मानते हैं कि फासिज्मके नाश और उसकी हारसे साम्राज्यवाद खुद खत्म हो जायगा। मगर हम ऐसा हर्गिज नहीं मानते। वे मानते हैं कि इस ... जमानेमें—क्योंकि वे लड़ाईको ... मानते हैं—किसान सभाका प्रधान ... एक ही है और वह है ज्यादेसे ज्यादा ... पैदा करवाना। बाकी काम इसीके ... है। मगर हम इसके लिये हर्गिज ... नहीं। क्योंकि जब तक किसान ... लक्ष्य और मकसद बदल न दिया ... तक तो आजादी हासिल करके हमारी ... जनताके हाथोंमें सारी ताकत और ... सूत्र सौंपना यही किसान सभाका ... काम है। हम कहते हैं कि पाकिस्तान ... अखण्ड हिन्दुस्तानका सवाल ... पेचीदा है। इसलिये इसे कांग्रेस ... संस्थाएं हल करें। मगर वे इसपर ... हैं। उनके लिये मुस्लिम लीग और ... जिन्नाका कहना सबसे बड़ा है और ... खिलाफ वे चूं न करके उसीकी ... करनेमें ही फख्र समझते हैं। मगर ... मानने करनेको तैयार नहीं। वे ... हिन्दुओंकी संस्था और महात्मा ... उसीका लीडर मानते और लिखते ... ऐसा खयाल लाते ही हमारे खूनमें ... जाती है। इसी तरहकी हजार ... फिर हमारी उनसे पटती कैसे? 'गां... का, चिल तहाँ पूतका सिरहाना!'

——

है कि भारतियोंके दोषका पलड़ा गुणके पलड़ेकी अपेक्षा अधिक झुका हुआ है। इतना सब कुछ होनेपर भी, भारतभूमिमें हमें जो शांति उपलब्ध होती है वह अन्यत्र दुर्लभ है। भारतका गुणगान करना मेरा काम नहीं। मैं तो उसकी त्रुटियोंका जोर-शोरसे प्रचार करता हूं और भारतीयोंकी जो सबसे बड़ी कमजोरी है वह है उनकीकायरता।

आज पुरुषोंके अन्दर नैतिकताका सताप जनक ह्रास हो रहा है। जो बहु-विवाहके विरोधमें वचनोंकी दरिद्रता नहीं प्रकट होने देते वे ही कार्यरूपमें इसकी अवहेलना करते देखे जाते हैं। स्त्रियां भी ऐसे पुरुषोंका अनु-शरण करने लग गयी हैं। ऐसी मनोवृत्ति स्त्री जातिके पतनका स्पष्ट चिह्न है।

बर्नार्ड शा द्वारा गांधीजीका समर्थन

प्रसिद्ध लेखक जार्ज बर्नार्ड शाने रायटर को बताया है कि सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन पर दिये गये महात्मा गांधीके भाषणसे मैं पूर्णतया सहमत हूं। जर्मनी और जापानको हरगिज शर्मिन्दा नहीं किया जाय। तथा शांति के फलोंका उचित और न्यायपूर्ण वितरण हो। हां, इन दोनों राष्ट्रोंको हथियार डालनी होगी। जर्मनी और जापानको पराजय कबूल करनी है, पर मेरे विचारसे सन्धिके रूपमें वैसा करना अच्छा है। मैं आशा करता हूं कि उन्हें भी विश्व सुरक्षा कौंसिल में स्थान दिया जायगा।

मि० पलब्रककी सामयिक चेतावनी

'वायस आफ इण्डिया' के मई अङ्कमें पर्ल-बकने लिखा है कि यदि सैनफ्रांसिस्को कानफरेन्सने भारतीय जनताकी मांगोंको स्वीकार नहीं किया तो इसे भविष्यके लिये अपशकुन ही समझिये। स्वतंत्र भारतकी बुनियादपर ही विश्वशांतिकी स्थापना संभव है।

कल्याणी

न मिटनेवाली भूख !

——:o:——

(लेखक—श्री फणीश्वरनाथ 'रेणु')

आठ बज रहे थे ; दीदी बिछौनेपर पड़ी चुपचाप टुकुर-टुकुर देख रही थी—छतकी ओर। उसके बाल तकियेपर बिखरे हुए थे, इधर-उधर लटक रहे थे। एक मोटी किताब, नीचे कम्बलके पास, औंधी मुंह गिरकर न जाने कबसे पड़ी हुई थी। बुधनीकी मां दबे पांव कमरेके पास आती थी और झांक कर चुपचाप लौट जाती थी। आठ बजे तक बिछौनेपर रोगिणीकी तरह चुपचाप पड़ा रहना, मौन साधे, दयनीय मुद्रा बनाकर टकटकी लगाकर देखते रहना आदि बातें कुछ ऐसे वातावरणकी सृष्टि कर रही थीं कि बुधनीकी मां कुछ पूछनेकी की हिम्मत नहीं कर सकी थी। बेचारी हाथमें झाड़ू लेकर बार-बार लौट आती थी। अन्तमें छोटी दीदी (मिस फ्लोरा) से जाकर वह बोली—'दीदीके का भेल है, अबले पड़ल बाड़ी। आखिर...'

'बड़ी मुश्किल है बुधनीकी मां। कलसे उनका यह हाल है। न खाती हैं, न पीती और कुछ बोलती भी तो नहीं। पूछनेपर कहती हैं कि कुछ हुआ ही नहीं है। ज्यादे पूछनेकी हिम्मत भी तो नहीं होती।'—मिस फ्लोराने बालोंमें कंघी चलाते-चलाते कहा।

'कहैले झाड़ू देवे ले ठाढ़ हई। तनी कहि...' बुधनीकी मा बात पूरी भी नहीं कर पायी थी कि दीदीकी प्रिय छात्री—एक किशोरी 'मदालसा' मुंह लटकाये, आकर खड़ी हो गयी और जिज्ञासु दृष्टिसे मिस फ्लोरा और बुधनीकी मांको देखने लगी। बुधनीकी मां खिलकर बोली—'ई तो लल्ली! चल त रानी! देख तोहर दीदीके का भेल है!'

मदालसा चुपचाप दीदीके कमरेमें दाखिल हुई। दीदी अपलक दृष्टिसे उसे देखती रही। बुधनीकी मां चौखटके पास खड़ी रही।

'दीदी!'—मदाने बहुत देर तक चुप रहनेके बाद पुकारा।

'हूं!'

'कैसा जी है दीदी?'

'हूं'—दीदीने बिना हिले-डुले ही उत्तर दिया।

बुधनीकी मांने पहले बरामदेपर एक-दो 'छप-छप' झाड़ू चलाया, फिर डरते-डरते कमरेमें आकर हल्के हाथों झाड़ू देने लगी। मदालसा, दीदीके टेबिलपर बिखरी किताबोंको सजाकर रखने लगी। कलेंडर की तारीख बदलकर, दिन भी बदल डाला —दीदी चुपचाप देख रही थी।

'क्यों आज सोमवार हो गया न?'—दीदीने चौंककर पूछा। मदालसा डरी, इस बार कैलेण्डरकी ओर देखकर वह बोली—'जी नहीं!'—वह दिन बदल रही थी कि फिर याद कर रुकी और बोली—'हां, आज सोमवार ही है। कल रविवार, आज सोमवार...!'

'सोमवार हो गया?'—दीदी उठकर बैठ गई, बोली—'तो बारात वाले चले गये, चार बजे भोर चल गैलन सब—' बुधनीकी मां झाड़ूके तिनकोंको सजाती हुई बोली।

दीदी डरते डरते—बिछौनेके पास वाली खिड़कीको जो स्कूलको ओर खुलती थी—खोलने लगी। खिड़की खोलकर उसने देखा—स्कूल खाली पड़ा है। दो दिनोंसे बन्द खिड़की जो खुली तो कमरेमें एक ताजी हवा आकर खेलने लगी। वह अङ्गड़ाई लेकर उठी, उसके चेहरेकी गम्भीरता तत्क्षण ही दूर हो गई। मदालसाके ओठोंपर भी मुस्कान-की एक सरल रेखा दौड़ गई, बुधनीकी मांको कुछ हिम्मत हुई, पूछ बैठी—'कैसन तबियत है दीदी?'

'अच्छी है,—तू जल्दीसे जाकर स्कूलके कमरोंको झार-बुहार दे। न हो तो फुलिया को भी बुला लेना। भगेलूसे कह दो गाड़ी पर आज सरजू जायगा। भगेलू क्लासोंमें बेंच सजाकर रखेगा। जाओ!'—कहती हुई वह तौलिया और साड़ी लेकर 'बाथ-रूम' की ओर चली। मदालसाने टोका—'दीदी!'

'क्या है री!'—दीदीने रुककर मुस्कराते हुए पूछा।

'आप नहीं गईं', इन्दु बहुत रोती थी, कहती थी—'दीदीसे भेंट नहीं हो सकी।' पेंसिल-कटरमें पेंसिल डालकर घुमाते हुए मदालसा बोली। दीदीने प्रत्युत्तरमें सिर्फ एक लम्बी निश्वास छोड़ दी।

'आप तो उसे उपहार देनेके लिए एक चित्र बना रही थी न?'

'बना तो रही थी, पर अधूरा ही रह गया। अच्छा भेज दूंगी,...मुझसे बड़ी भारी गलती हो गई मदा, जानेके दिन उससे मिल नहीं पाई।'—कहती हुई दीदी धीरे-धीरे चली गई।

मदा वहीं बैठकर दीदीका 'एलबम' देखने लगी।

(२)

श्रीमती उषा देवी उपाध्याय—उर्फ दीदीजी। शहरके गर्ल्स मि० ई० स्कूलकी प्रधानाध्यापिका। मझोले कद की, दुबली-पतली, सुन्दरी विधवा युवती। जिस दिनसे स्कूलमें प्रधानाध्यापिका होकर आई, स्कूल-की उन्नतिमें चार चांद लग गये। छात्राओं-की संख्या चौगुनी हो गई। परीक्षा फल सुन्दर होने लगा। स्कूलको हाई स्कूल बनानेकी चर्चा होने लगी। उस दुबली-पतली मृदुभाषिणी 'दीदी' की मीठी चपत जिस बालिकाने एक बार खा ली, वह उसकी चेरी हो गई। बालिकाओं और किशोरी छात्राओंकी बात तो दूर, अध्यापिकाएं भी उसके स्नेहकी भूखी रहतीं। बुधनीकी मां उसकी प्रायवेट-सेक्रेटरी थी। सदा प्रसन्न रहने वाली दीदीके ओठों पर मुस्कुराहट सदा खेलती रहती। वह कभी कभी सितार बजाकर मीराकी पदावली गा लेती थी, टेढ़ी-मेढ़ी रेखायें खींचकर कलापूर्ण चित्र भी बना लेती थी। विधवा थी, ओढ़ने-पहनने खाने-पीनेकी चीजोंमें सादगीके कड़े नियमों को मुस्तैदीसे पालती थी, लेकिन अन्य अध्यापिकायें, जो सधवा थीं वे भी उनकी सादगी पर फिदा थीं।

स्नान भोजन करके, दीदी अन्य अध्या-पिकाओंके साथ जब स्कूलमें दाखिल हुई तो बुधनीकी मां फुलियाको लेकर कमरोंमें झाड़ू दे रही थी और बड़बड़ा रही थी। भगेलू चुपचाप बेंचोंको उठा उठाकर अन्दर कर रहा था। दीदीको देखते ही बुधनीकी मां जोर जोरसे चिल्लाकर बोलने लगी—'छी छी! एक दिनमें सगरके [illegible] बिना देलन सब-राम राम...।'

दीदीने कमरेमें जाकर देखा—दीवालपर स्थान स्थान पर पानकी पीक पड़ी हुई थी। नीचे फर्शपर सिगरेटके अधजले टुकड़े, सिगरेट के खाली डब्बे और माचिसकी जली हुई लकड़ियां बिखरी हुई थीं। दीदीने किञ्चित नाक सिकोड़ते हुए कहा—'लो जल्दी साफ करो।'—कहकर वह आफिस खोलने चली। वह आफिस खोल ही रही थी कि उसकी आंखें, दीवाल पर लिखे सुन्दर अक्षरों पर अटक गयीं।

'उठ सजनी खोल किवाड़े, तेरे साजन आये दुआरे'

दूसरी जगह—'खिड़कियां तुम्हारी बन्द रहीं पर मैंने तुमको देख लिया।'

लाल अक्षरोंमें—'रानी [illegible] अध्यायन छोड़ो मेरे दिलका राज सम्भालो।'

नीले पेंसिलसे—'प्रेमकी [illegible] सजनि मुझको भी पढ़ा दो।'

पढ़ते पढ़ते दीदी तिलमिला उठी, आफिस खोलकर धम्मसे कुर्सी पर जा बैठी। उसके ओठोंपर कुछ घंटे पहले जो स्वाभाविक मुस्कुराहट लौट आयी थी वह विलीन हो गयी। वह उठी, फिर बैठ गई—एक कागज पर लिखने लगी—'चेयरमैनकी सेवामें' फिर न जाने क्या सोचकर कागजको फाड़ कर वह उठ खड़ी हुई।

'फ्लोरा!' दीदीने पुकारा।

फ्लोरा और उर्दू अध्यापिका [illegible] आई, दीदीकी गम्भीर मुद्राको देखकर अवाक खड़ी रही।

'क्या है दीदी?' फ्लोराने मौन भंग करते हुए पूछा।

दीदीने, बाहर आकर दोनोंको दीवाल की ओर दिखलाया। दोनोंने पढ़कर घृणा से मुंह विकृत कर लिया। सलमा बोली—'यह बारातियोंका काम है।'

'हूं' दीदीने कहा—'सभ्य बारातियोंने लिखा है।'

लड़कियां झुण्ड बांधकर मुस्कुराती हुए आ रही थीं। सरजू भी स्कूलकी गाड़ीपर लड़कियोंको लेकर आ गया था।

'प्रणाम दीदीजी, दीदी जी प्रणाम, प्रणाम—' कहकर, मुस्कुराती हुई लड़कियों की टोली ज्योंही स्कूलकी सीढ़ी पर पांव रखने लगती, दीदीकी गम्भीर वाणी उन सब एक साथ रुक पड़ती।

उसतक बाहर मैदानमें खड़ी रहो!'

दीदी तथा अध्यापिकाओंके चेहरे देखकर लड़कियां आपसमें कानाफूसी करने लगतीं—'देखो देखो! दीदीकी आंखें [illegible]!'

'ऐसा तो कभी नहीं—'

'समझी, समझी—', मंजु [illegible] कहती—'कोई बड़े आदमी मर गये हैं, फिर वही पांच मिनट चुप—'

'फ्लोरा! टेलकाल करके छुट्टी दे दो!' कहती हुई दीदी पुनः आफिसमें जा बैठी।

छुट्टी दे दी गयी। छात्राओंने बुधनीकी मांसे पूछा, मदालसासे दरयाफ्त किया पर कुछ भी पता नहीं चला।

दीदी अपने कमरेमें लौट आयी और बिछौने पर लेट गयी। उसके अन्दर एक आग सी जल रही थी, सिर फटा जा रहा था और रह रह कर प्यास लग रही थी।

(३)

शनिवारको, शहरके प्रतिष्ठित रईस श्री [illegible] प्रसादजीके यहां बारात आयी थी। उनकी एकमात्र पुत्री 'इन्दु' के शुभविवाहो-पलक्षमें [illegible] बारातियोंके ठहरनेका प्रबन्ध किया गया था। किन्तु [illegible] आदि साधारण-असाधारण और [illegible] की ओर [illegible] ध्यान भी नहीं गया था। सभ्य और सुसंस्कृत बारातियोंने जब 'जेनरल-बारातियों' के साथ रहना अस्वीकार कर दिया तो चेयरमैन साहबकी अनुमति लेकर 'गर्ल्स स्कूल' में ही ठहरनेका प्रबन्ध कर दिया गया था—सभ्य शिक्षित और सुसंस्कृत बारातियोंके लिए।

स्कूलके कम्पाउण्डमें ही अध्यापिकाओं-के 'क्वार्टर' थे। रविवारकी शामको अन्य अध्यापिकायें विवाह-उत्सव समारोहमें सम्मिलित होने चली गयी थीं। स्कूलकी ओर खुलनेवाली खिड़कीको बन्द करके दीदी अपने कमरेमें उसी अधूरे चित्रको पूरा कर रही थी। खिड़कीके उस पार—स्कूलमें सभ्य बारातियोंका भोजन-पान शेष हो चुका था। पत्तलोंपर कुत्तोंकी लड़ाई, भिखारी और भिखारिणोंकी करुण पुकारको सुनकर दीदीका ध्यान भंग हुआ। चित्र को अधूरा ही छोड़कर—वह न जाने क्या सोचने लगी थी। धीरे-धीरे कुत्तोंका भोंकना बन्द हुआ तो, भिखमंगोंने आपसमें लड़ाई शुरु कर दी थी। लड़ाई जब शान्त हुई तो एक छोटे शिशुके रोनेकी आवाज सुनाई पड़ी थी। दीदीने पहचान लिया था—अभागिन मृणालके [illegible] कोमल कण्ठस्वर को। 'ओ [illegible] [illegible] आसमर [illegible] लेल?'—मृणाल खाते-खाते बोल रही थी। 'मृणालके छोटेसे शिशुने जूठनका [illegible] छीन [illegible] कर दिया।'—दीदी कुछ आश्चर्यित हुई थी। दीदी मृणाल को जानती थी, उसे प्यार करती थी, कभी-कभी बुलाकर भर पेट भोजन कराती थी और उसके प्यारे बच्चेको गोदमें लेकर चमकाती भी थी। [illegible] मुखजीकी [illegible] शहरमें आयी थी

अब उसकी गोदी अथवा देहमें वह शिशु नहीं था। रोज शामको कुछ बासी रोटियां पाकर बदलेमें मृणालने दिया था, इस शहरको वहीं भोलाभाला शिशु...जो कड़वी तरकारी खाकर रो उठा था। मृणाल, बङ्गालके एक ग्रामके खुशहाल किसानकी पुत्री थी। तो, उस शामको बैठी बैठी दीदी बहुतसी बातें सोच रही थी—'कुत्ते, मनुष्य, मृणाल और उसके प्यारे बच्चेके संबंधमें न जाने क्या-क्या सोचते सोचते आराम कुर्सीपर थकी सी लेट गयी थी। स्कूलके बरामदेपर किसीने किसी सरोज नामक व्यक्तिको पुकार कर कहा था—'सरोज जी ! ओ ! सरोज जी, जरा इधर आइये।'

'क्या है ?' सरोज अथवा किसी दूसरे ने पूछा था।

'देखिये ! यहां की भिखारिनोंकी आंखोंमें भी एक अजीब जादू है।'—पुकारने वाले व्यक्तिने दिखलाया था। दीदीकी भौंहे जरा तन गयी थीं और कान सतर्क हो गये थे। देखनेवाले व्यक्तिने देखकर कहा था—'ओहो !...'जादू' मत कहिये, 'मद' कहिये मद !'

'अरे आप कवि ठहरे।' प्रथम व्यक्तिने संशोधनको स्वीकार कर लिया था। एक तीसरा आवाज सुनाई पड़ी थी—"अच्छा कवि जी ! कल्पना कीजिये तो, जहांकी सड़कोंपर ऐसी 'परियाँ' मारी फिरती हैं, 'खिड़कियां बन्द कर बैठनेवाली मलकायें कैसी होंगी ?'

इसपर जोरोंसे कहकहे लगे थे और वह व्यङ्ग, कहकहेके साथ, खिड़कीकी लकड़ियों-को छेदकर 'दीदी' के अन्तस्तलमें घुस गया था।

उसी रातको तीन बजे तक स्कूलके बरामदेपर 'अंगूरी बाई' नाचती रही थी। घुंघरूकी छमछमाहट, दर्दभरी आवाज और 'वाह ! वाह। क्या खूब !!' को सुनते-सुनते 'दीदी' तकियेमें मुंह छिपाकर रोई भी थी। दूसरे दिन भी वह यों ही बिछौनेपर निश्चेष्ट पड़ी रही थी। बिछौनेपरसे उठते ही उसका सिर चक्कर खाने लगता था। एक ही रातमें न जाने कितनी दुर्बलता आ गई थी। रविवारकी शामको ही अंगूरी बाई कूक पड़ी थी—'अंधेरिया है रात सजन...।'

'अरे भई ! नेकी और पूछ-पूछ...' साजनों-मेंसे एकने फरमाया था, शेष साजनोंने जबर्दस्त कहकहे लगाये थे।

'चुन चुन कलियां सेज बिछाई'

'—मजेदार......

कहकहोंके बवण्डरमें 'दीदी' ज्ञानशून्य हो गयी थी, अंगूरी बाई गाती ही रही थी।...सोमवारको 'रोल कांल' के बाद छुट्टी देकर जब वह लौटी थी तो उसके अन्दर आग-सी जल रही थी, सिर फटा जा रहा था और उसे रह रह कर प्यास लगती थी।

एक ही दिनमें बुखारने भीषणरूप धारण कर लिया। लेडी डाक्टर आयीं, नुस्खा देकर चली गयी और दवा होने लगी। मंगलवारको सुबहसे ही 'प्रलाप' के लक्षण दिखाई पड़ने लगे। वह बिछौनेपर चंचल हो रही थी और वह रह रह कुछ बड़बड़ाती भी थी। कभी-कभी चौंक कर पासमें बैठी मदालसाको उठकर पकड़ लेती थी और रो पड़ती थी—'मदा ! छिप जाओ बिट्टी मेरी...वह बीड़ी वाला...बीड़ी वाला !!...कहते कहते वह बेहोश होकर बिछौनेपर लुढ़क पड़ती थी।

हां, एक बीड़ीवालेको अक्सर 'मिस्ट्रेस क्वार्टरस' के पास आकर दिलमें दर्द पैदा हो जाया करता था और वह इलाहीसे उस दर्दको न मिटानेके लिये आरजू करता हुआ चला जाता था।

दीदी आंखें खोलकर इधर-उधर देखती, 'मदा, फलोरा, सलमा और बुधनीकी मा करुण नेत्रोंसे बैठी हुई है...'नहीं, वह खड़ी है मृणाल ; उसकी गोदीमें नन्हा शिशु है ! वह बीड़ीवाला !!...ऊंह-हूँ-हूँ !'

'दीदी !'—सलमा पुकारती।

दीदी आंखें फाड़े दीवालकी ओर देखती ही रहती—'मजेदार...पीली अंगूरी और वह गूंगी पगली...गर्भवती पगली हंस रही है 'हँह हँह उंहू हँह उऐं'...!!'

'हँह हँह उंहू हेह उऐं'—गूंगी-सी, दीदी भी हंस पड़ी।

'दीदी'—प्रायः रोती हुई फलोराने पुकारा। सलमाने सिरपर 'आइस-बैग' रखा और मदालसा पंखा झलने लगी। दीदी आंखें बन्द किये सोचने लगती। 'वह पगली गर्भवती है। उसपर भी बलात्कार किये गये। छीः छीः 'वार, वाइन एण्ड वीमेन—सुरा युद्ध और नारी' सत्यानाशिनी चीजें हैं।...उठ सजनी खोल किवाड़े ?' वह फिर चौंककर उठ बैठती, बड़बड़ा उठती—'खोल दो खिड़कियां...यां-यां।' बुधनीकी मां पकड़कर उसे लिटा देती।

'खिड़कियां तो खुली ही हुई हैं।'—सलमा कहती।

दीदी चुपचाप आंखें मूंदे रहती—'भरी सभामें द्रोपदी चीरहरण...उसकी करुण पुकार, उसे नङ्गी देखनेकी वासना...ओह !' आंखें मूंदे ही अपनी साड़ीके छोरको पकड़ लेती और चिल्ला उठती—'मैं नंगी हो जाऊंगी...मैं नंगी हो जाऊंगी-गीगी !!'

'दीदी'—फ्लोरा, मदा और सलमा तीनों प्रायः एक ही साथ पुकार उठती। दीदी घृणासे मुंह विकृत कर लेती।

भगेलू लेडी डाक्टरके यहां गया था, लौट कर आया तो चुपचाप खड़ा रहा। बहुत पूछनेपर भगेलूने कहा—'डाक्टरनी साहेब राजा रघुबीर सिंहके हियां जाते थे। हम जाकर बोले तो बोलिन कि...' वह चुप हो रहा।

'क्या बोली ?'—फलोराने डांटकर पूछा

'बोलिन कि जाकर अपना दीदीको दूसरा विवाह कर दो, सब ठीक हो जायगा।'

इधर बिछौनेपर पड़ी-पड़ी वह दीवाल की ओर एक टकसे देख रही थी—'स्कूल कम्पाउण्डमें वह मृणाल, नंगी अंगूरी और गूंगी पगली खड़ी है। चहारदीवारीके चारों ओर शहर भरके लोग—सभ्य-असभ्य, शिक्षित-अशिक्षित और गरीब-अमीर अपनी-अपनी भाषामें हल्ला मचा रहे हैं :—

'तनि हमरो देखेद आज सुरतिया पतली कमरिया...'

'तेरे दर पे खड़ा हूं कबसे...'

'उठ सजनी खोल किवाड़ें...'

'तिरछी नजरिया वाली रे !...'

'रे पालिया...'

'री बच्चेवाली छोरी...'

'घूंघट हटाके चांद-सा मुखड़ा...'

लोगोंकी भीड़ क्रमशः उत्तेजित हो रही है। सब फाटकपर धक्का दे रहे हैं। अंगूरी बाई आंचलसे अपनेको ढंक लेती है। मृणाल रो पड़ती है, उसकी गोदीका बच्चा छातीमें मुंह छिपाकर सिमट गया है। पगली हंस रही है-हँह ऐं उं अह् अह् हे-हे...; फाटक टूटनेको है। ओह...दीदी चौंक कर उठ बैठी। इस बार उसको देखकर मदा, फलोरा वगैरह घबड़ा गयी। दीदी अचानक बिछौनेपरसे उठकर भागी।

'दीदी ! दीदी !! दीदी...अरी रोको, पकड़ो...' सब पीछे-पीछे दौड़ी। वह 'हँह ढंह ओय अह् अह्' करके हंसती और भागती जा रही थी। फाटकके पास जाते-जाते दीवालसे टक्कर खाकर गिर पड़ी। जमीनपर रक्तकी धारा बह चली।

* * *

दीदी, अस्पतालमें अन्तिम घड़ियाँ गिन रही थी। 'एभरग्रीन रेस्ट्रां' में चाय पीने-वाले नौजवानोंको एक नया मसाला मिल गया। चायकी चुस्की लेते हुए एकने कहा—'अरुण ! तुमने कुछ सुना... हालत बड़ी नाजुक है यार !'

'आखिर ऐसा क्यों हुआ, कुछ पता चला ?'

'भई, आखिर वह भी अपने पास... रखती थी, किसीने छीनकर ... तोड़ डाला होगा, और क्या ?'

'सुना है कि बारातमें उसके कोई प्रेमी आये थे।'

'तब ठीक है'—एक कहानी लेखक जो अब तक चुपचाप बैठे हुए थे, बोले 'मैंने भी ऐसी ही कल्पना की थी।'

'हिं हिं ऐह हे हे ओय...' सामने सड़कपर गूंगी पगली जो शीघ्र भविष्यमें ही माता बननेवाली थी—खड़ी हंस रही थी। 'ऐह हँह हों...' हंसते पेटमें बल पड़ जानेकी मुद्रा... रही थी।

'अरी भाग, हट शैतान !'

'हँह ऐं'...वह प्रत्येक हंसीके एक विशेष जोर डालती हंसती ... गयी।

'सेन-फ्रैंसिस्को' जहां विश्वका भविष्य प्रतीक्षा कर रहा है !

प्रो० रंजन

१८ वीं शताब्दीका अन्तिम चरण था। ...रोपके साहसी-व्यक्ति अपने उत्साह और ...विश्वासका संबल लेकर भयंकर तूफानी ...गरोंके वक्षःस्थल पर अपनी साधन-शून्य ...काओं दुनियाकी खोजके लिये इधर-...उधर ले रहे थे। वह युग उपनिवेश-स्थापनका ...युग था। नई खोजोंका जमाना था। ...कोलम्बस और वास्कोडिगामाने समुद्री ...यात्राओंका मार्ग प्रशस्त कर दिया था। ...आज उनके चरण-चिन्हों पर चलकर यूरोपका ...प्रत्येक देश अपनी अपनी प्रभुताकी खोजमें ...चारों ओर भाग रहा था। इसी प्रकारके ...साहस, बलिदान एवं कष्टोंकी रोमांचकारी ...घटनाओंसे भरी हुई 'सेन-फ्रैंसिस्कोंकी खोज ...कहानी है।

सन् १७१६ का साल था। स्पेनके कुछ ...साहसी मल्लाहों और व्यक्तियोंका एकदल ...कैलीफोर्नियाके इस समुद्र-तटपर पहुंचा ...। इसी समुद्र-तट पर उन वीरोंने पहिले-...पहल चन्द-झोपड़ियोंके रूपमें इस नगरका ...शिलारोपण किया था—उस दिन किसे ...पता था कि झोपड़ियों'के अन्दरसे झांकती ...इस नगरकी रूप रेखा भावीके सुन्दरतम ...नगरकी नींवको अपनेमें छिपाये है। अपनी ...प्रतिष्ठाके उस दिनसे लेकर आजतक ...परिवर्तनकी कितनी गलियोंमेंसे होकर इस ...नगरको गुजरना पड़ा है। इसकी कथा बड़ी ...रोचक है। क्यों और कैसे—अतीतकी ...धूलि-गोदमें झांकती हुई वे झोपड़ियां ...आज गगन चुम्बी-भवनोंमें बदल गईं ? ...किसके किस सुनहले-स्पर्शने मिट्टीके इन ...घरोंको सोने-चांदीकी दीवारोंमें बदल दिया ! ...यहां तो मानव-कला चातुर्य अपने आकर्षक ...कलेवरको लेकर यहां एकत्रित हुई है। ...तो वह प्रशांतका 'पेरिस' है। सन् ...१८४८ में समुद्र तटके इन बिखरे घरोंमें ...उत्साहकी एक लहर दौड़ी-केलीफार्नियांके ...प्रदेशकी उपत्यका में लोगोंने चमकते ...स्वर्ण-किरणोंकी रेखायें देखीं। वे रेखायें ...शक्तिकोंके स्पर्शसे शीघ्र ही खानोंमें बदलने ...लगीं। फिर क्या था, देखते देखते दुनियांके ...कोने कोने से लोगोंके झुंड उधर दौड़ने लगे। ...सोनेकी प्रतियोगिताने थोड़े ही दिनोंमें ...अनेकों घर खड़े कर दिये। चार ...वर्षोंके थोड़े समयमें सेन-फ्रैंसिस्कोकी ...की आवादी २००० तक पहुंच गई। ...दुनियाके प्रत्येक राज्यसे, ऐशियासे, ...यूरोप एवं मध्य अमेरिकासे सोनेकी खोज ...करने वालोंका तांता लग गया। सभी ...अपने अपने अधिकारको मजबूत करने और ...जमानेमें जुट गये। प्रतियोगिताका ...व्यक्तियोंसे हटकर राष्ट्रीय और जातीय ...हो गया। विश्वकी अनेक जातियोंने यहां ...आकर अपना डेरा जमाना शुरू कर दिया। ...लोगोंने इस यज्ञमें बहुतोंको अपना बलिदान ...देना पड़ा। बहुतसे मार्गमें ही खत्म हो ...गये। पर अन्तमें यज्ञ सफल हुआ और हे ताओं ...को उसका भरपूर पुरस्कार मिल गया। ...सोनेकी राशि यहां पर इकट्ठी होने लगी।

खाड़ीके इस शहरमें सबसे पहिले जाकर बसने वाले 'रेड-इन्डियंस' थे। लेकिन सन् १७७६ में स्पेनके कुछ लोगोंने पहुंचकर अपना प्राधान्य और प्रभुत्व वहां जमाना शुरू कर दिया। और स्वतन्त्रताका एक 'घोषणा-पत्र' तैयार करके यह उद्घोषित किया कि यह स्थान स्पेनके कुछ दलोंने अपने मिशनके लिये कायम किया है। इसके बाद मेक्सिकन-शासनके अन्तर्गत सेन-फ्रैंसिस्कों एक वर्षतक केलीफोर्नियाका एक स्वतन्त्र गणतन्त्र बना रहा। जब केली-फोर्नियां संयुक्त राष्ट्रमें शामिल हुआ तो

इस शहरकी जन संख्या ५०००० हजार तक पहुंच चुकी थी। २० वर्ष बाद जब ट्रांस-कान्टीनेन्टल-रेलकी शुरूआत हुई तो इस शहरका सीधा संपर्क पूर्वसे भी स्थापित हो गया।

विभिन्न देशोंके इन व्यापारियोंकी 'धनलिप्सा' और विलास-प्रियताने इस शहरको बहुत दिनों तक अराजकता और अव्यवस्थाका केन्द्र बना रखा था। इसका लम्बा समुद्र-तट अपने अंचलमें अतीतकी बहुतसी बर्बर कहानियां अंकित किये हैं। परन्तु अपने इन काले दिनोंमें भी यह नगर सामाजिक; सांस्कृतिक एवं आर्थिक जीवन की सुन्दर बुनियाद डाल रहा था। स्कूल, पुस्तकालय एवं थियेटरोंकी बड़ी २ इमारतें खड़ी हो रहीं थीं। व्यापार और व्यवसायकी

ऊंची अट्टालिकायें बढ़ते हुए वैभवकी सूचना देने लगी थीं। दुनियाके आवागमनने समुद्रके इस दन्दानेदार किनारे पर एक 'बन्दरगाह' की स्थापना भी कर डाली। अन्तरराष्ट्रीय महत्वाने इसे प्रशांतका एक मुख्य पोर्ट बना दिया। मनोरंजन एवं दिलबहलावके उपकरणोंसे सारा शहर जगमगाने लगा।...लेकिन भाग्यके अंक पलटे। १९ अप्रेल सन् १९०६ को भयंकर भूकम्पने बढ़ती हुई इस प्रशांत नगरीको अपनी गोदमें लिटा लिया। आगकी ज्वालाओंने रहे सहे विनाशको पूरा कर

गोल्डेन गेट पुल जहां सैनफ्रैंसिस्को उपसागर प्रशान्त महासागरसे मिलता है

सम्मेलनमें भाग लेनेवाली एकमात्र महिला प्रतिनिधि

दिया। प्रकृतिके उस प्रकोपने, संहारके उस ताण्डव नृत्यने २५०००० मनुष्योंको बे घरबार कर दिया। ३० हजार घर जमीन मिल गये। विध्वंसकी इस राखके ऊपर सन् १९१९ में एक नये नगरकी नींव पड़ी और आजका सेनफ्रैंसिस्को इसी १९१९ वाले निर्माणका यौवन-चित्र है— आज वहां कला है, आश्चर्य है। सौंदर्य और वैभव है। रूप और रंग, साज और सामानकी इफरात के ऊपर वहां की दुनियां खड़ी है। दो सौ वर्ष पीछेके उन रेड-इन्डियंसके चिन्होंका आज तो वहां नामोनिशान भी नहीं है।

सन् १९२९ में अपने विकास और वृद्धि की हीरक-जयन्तीके महोत्सव पर एकबार यहांके घरों और बाजारोंमें उत्साह और उमंगकी गंगा बह उठी थी। सन् १९३९ में १ करोड़ १० लाख दर्शकोंकी भीड़ने वहां पर विश्वके आश्चर्य-जनक 'गोल्डेन-गेट' के दर्शनकर अपने नेत्रोंको सफल किया था। अद्भुत दृश्यों, प्राकृतिक-नजारों, मानवीय कला-अलंकृत एवं वैज्ञानिक साधनोंसे सम्पन्न यह नगर पहाड़ियोंकी चोटियों पर गर्वके साथ अपना सिर ऊंचा किये खड़ा है। सेन-फ्रैंसिस्को-खाड़ीका क्षेत्रफल ४०० वर्ग मील है। खाड़ीके दोनों ओर दूर तक घनी-बस्ती वाले गांव हैं। खाड़ीके मुहाने पर बना हुआ गोल्डेन-पुल संसारके झूलते हुए पुलोंमें सबसे बड़ा है। इसकी लम्बाई ८९०० फीट है।

सैनफ्रैंसिस्को उपसागर के तटस्थ नगर-भागका दृश्य

अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय — युद्धके पूर्व १७५ जहाजोंका एक बेड़ा सेन-फ्रें सिस्कोके बन्दरगाहमें अन्तर-तटवर्ती शहरों एवं अन्तर सामुद्रिक आवागमन और व्यापारमें लगे रहते थे। तट-वर्ती पहाड़ीके ऊपर खड़े होकर इन आने-जाने वाले जहाजोंकी गतिविधि देखनेमें बड़ी अपूर्व लगती है। एक अलग विभाग इनके गति विधिके कंट्रोलके लिये स्थापित किया गया है। तटपर फैले हुए घने कोहरेके बादल जहाजोंके लिये उतने ही भयंकर थे जितना कि यहां का नुकीला पथरीला किनारा। यह किनारा ही खाड़ी को प्रशांतसे अलग करता है। तूफान और भूकम्प इस खतरेको और भी अधिक गम्भीर बना देते थे, परन्तु आज नवीन वैज्ञानिक जहाजरानीने बन्दरगाहको सुरक्षित एवं उन्नत कर दिया है।

यहांका गोल्डेन-गेट पुल इञ्जीनियरिङ्ग का एक अद्भुत उदाहरण है। यह पुल गोल्डेन-गेट-नहरके सुदूर आखिरी समुद्री मुखपर स्थित है। इसकी बनावटमें ऐसी विशेषता है कि यह समुद्री तूफानोंके वेग, ज्वार-भाटाकी चोटों और भूकम्पोंके आघात को बड़ी आसानीसे बर्दाश्त कर लेता है। साथ ही साथ ४३ करोड़ पौण्डका वजन अपने ऊपर सम्भाल सकता है।

यहांका सारा खाड़ी-प्रदेश मछली और व्यवसायका एक प्रधान केन्द्र है। साधारण समयमें २००० आदमी इस व्यवसायमें रात-दिन जुटे रहते थे। समुद्रके किनारेपर लुहारों, मछुओं, बढ़इयों आदिका दृश्य बड़ा विचित्र लगता था।

सिविक-सेन्टर यहांकी वे प्रधान इमारतें हैं जहां शहरके नागरिक कार्यों, म्युनीसिपैल्टिी आदिके कार्य संचालनका काम होता है। कुछ रिजर्व सैनिक कैम्प नगरके प्रान्त भागमें फैले हुए हैं। 'प्रेसीडियो' सेनाका एक बड़ा केन्द्र और अस्पताल है।

सन १९३८ में इस शहरकी जन संख्या ७५०००० तक पहुंच गयी थी। जनसंख्याकी इस वृद्धिका कारण है यहांके बढ़ते हुए उद्योग धन्धोंके लिये बाहरसे आये हुए लोगोंका जमघट। मीलों लम्बे इसके समुद्र-तटपर हजारों लड़के तथा अन्य लोग दस्तकारी आदि भिन्न-भिन्न रोजगारोंमें लगे रहते हैं। आधुनिक नगर-प्रसार योजनामें, यहांके सभी निवासियोंको रहनेके लिये अच्छा स्थान मिल सके इसकी व्यवस्था की गयी है। नगर-निवासियोंकी सुख-सुविधाके लिये यहां ३७८ मील लम्बी ट्राम सर्विस और मोटर-बस सर्विसकी व्यवस्था है। जमीनके अन्दर शहरके प्रान्त भागोंको जानेवाली बिजलीकी रेलोंके जाल चारों ओर बिछे हैं। घूमनेवालों के लिये यहां बड़े अच्छे-अच्छे स्थान हैं।

जलवायु — यहांकी जलवायु सुअहिल है। शरद ऋतुमें वर्षा होती है। [illegible] कर अधिकांश [illegible] हुई सूर्यकी रश्मियोंसे प्रकाशित रहता है।

[illegible] — डेढ़ सौ वर्षोंसे भिन्न-भिन्न जातियोंने मेल और एकता के आधारपर यहां 'समन्वय-आत्मक सभ्यता'का विकास किया है। उनके सङ्गठित सहयोगके कारण यह शहर विकास के चरम-शिखरपर खड़ा है। एकता और मेल की इस जिन्दगीके बीच भी इन जातियोंने अपनी मौलिक सभ्यताको सुरक्षित रखा है। अपनी इन विशेषताओंके कारण प्रशान्तका यह 'पेरिस' पूर्वीय और पश्चिमी सभ्यताका मिलन-स्थल बन गया है। इस नगरमें रहनेवाले १० हजार फ्रेंच लोगोंको अपने फ्रेंच पुस्तकालयपर अभिमान है। इस पुस्तकालय की स्थापना सन १८७५ में हुई थी। संयुक्त राष्ट्रमें पुस्तकोंके व्यापक संग्रहकी दृष्टिसे यह अपने आप एक अद्वितीय संकलन है। यहांका 'चीन उपनगर' अपनी एशियाकी सभ्यता और रहन-सहनके लिये विख्यात है। इस उपनगरमें २० हजार चीनी अपने महाद्वीपसे बाहर रहते हैं। इस उपनगरके मध्यभागमें खड़ी हुई 'सन-यात' की प्रतिमा पूर्व और पश्चिमके मिलनका अनुपम प्रतीक है। सेन-फ्रें सिस्कोकी अतीत कथा बड़ी नाटकीय और रंग-बिरंगी है। उसकी समता अमेरिकाका दूसरा शहर नहीं कर सकता है। एक राष्ट्रीय-समुद्र-तटपर स्थित होनेके कारण ही आज वह पूर्वका सिंहद्वार और अमेरिकन महाद्वीपका पीठद्वार बन गया है। इन विशेषताओंके कारण ही इस नगरने इतना शीघ्र आशातीत उन्नति की है। और अपने इन्हीं साधनोंकी वजहसे इस शहरको सैन्य दृष्टिसे एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त हो गया है। आजके युद्धमें उत्पत्ति और वितरण का यह एक प्रधान केंद्र बन गया है। यहांसे संसारके सभी मोर्चोंपर युद्ध सामग्री भेजी जाती है।

सेन-फ्रेंसिस्को पश्चिमी तटका एक श्रेष्ठ सांस्कृतिक केन्द्र है। अपनी साहित्यिक परम्पराके लिये यह जगत-विख्यात है। अमेरिकाके प्रसिद्ध लेखकोंकी जन्मभूमि होनेका गौरव इसने प्राप्त किया है। यहांके 'बुहेमियन-क्लब' को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति-प्राप्त व्यक्तियोंके आतिथ्यका सौभाग्य कई बार प्राप्त हुआ है। सङ्गीत एवं कला अपने आधुनिक रूपमें यहां पल्लवित हुई हैं। संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाका सर्वोत्तम 'आरकेष्ट्रा' इसी नगरी की गोदमें शोभित है। यहांका लोकप्रसिद्ध अजायब घर संसारकी श्रेष्ठ कलाका अपूर्व संग्रहालय है। मोरक्को-यांड आपेराके रम्य-हालके भीतर दुनियाके अद्वितीय गायकोंके मनोहर कण्ठोंकी प्रतिध्वनि गूंज चुकी है।

सेनफ्रें सिस्कोके सुरम्य प्रांगणमें केलीफोर्निया विश्व-विद्यालयकी सुन्दर इमारत अपनी स्थापत्य कलाके नमूनेका एक श्रेष्ठ नमूना है। इस विश्वविद्यालयमें १० प्रतिशत से अधिक विदेशी विद्यार्थी हैं। ६० मीलकी परिधिमें तीन विश्वविद्यालय और एक टीचर्स कालेज यहांकी फैलती शिक्षाके जीते-जागते नमूने हैं। आधुनिक शिक्षा प्रणालीके नये-नये प्रयोगों आदिके कारण यहांके विश्व-विद्यालयोंको अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त है। आज तो उपयोगी कला और ललित कलाके अपूर्व विकासके लिये सेनफ्रें सिस्को अपना सानी नहीं रखता। अमेरिकन संगीत कला और कलाके टकनीककी इन दिनों जो नवीन अभिव्यक्ति हुई है, उसका प्रभाव यहांके जीवनमें स्पष्ट है।

अपनी इस वैभव गरिमाके बीच खड़े हुए 'युद्ध-स्मारक' ने दुनियाकी आंखें अपनी ओर खींच ली हैं। २५ अप्रेलको संसार के महान व्यक्ति इसमें इकट्ठे होकर डम्बरटन ओक्स योजना द्वारा प्रस्तावित सिद्धान्तों एवं अन्य आवश्यक विषयोंपर विचार करेंगे। ४५ भिन्न-भिन्न जातियोंका यह विशाल नगर आज आशा और उत्कण्ठासे उस दिनकी प्रतीक्षा कर रहा है। जब इसकी [illegible] पीड़ित मानवताको राहत और [illegible] खुशखबरी सुनायी जायगी! देखें, यह गंगा कितनोंके लिये [illegible] होती है।

"सदा सम्मान"...जब से यह महायुद्ध प्रारम्भ हुआ, भारतीय विमान-चालकों ने संसार को दिखा दिया है कि अवसर आने पर हिन्दुस्तान हवाबाजी में भी किसी से कम नहीं। हमारे योद्धाओं की वीरता तथा सफलता ने शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े का मस्तक ऊँचा कर दिया है, और इससे पता चलता है कि हमारा भविष्य बड़ा शानदार है।

आज, अधिकाधिक साहसी नवयुवकों को आमन्त्रित किया जा रहा है कि वे इस नवीन सैन्य संघटन में सम्मिलित होकर विमान-चालक बनें। शान्ति स्थापित होने पर उनका ज्ञान स्वयं उनके लिये बहुत लाभजनक सिद्ध होगा। उस समय भी, आज की भांति शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालकों का बड़ा सम्मान होगा। कोई भी भरती अफ़सर आपको आवेदन करने का नियम बता देगा।

डायरीके पन्ने

(लेखक—श्री अर्जुन बी० ए०)

"क्यों जी, यह कौन-सा रिसाला पढ़ा ?" मैंने कबाड़ीकी दुकानके समीप जाते हुए कहा।

"जी, यह तो 'चांद' का कहानी अंक है।"

"भई ! कोई मजेदार पुस्तक हो दिखाओ तो।"

'आप किस किस्मकी पुस्तक चाहते हैं, पुराना रिसाला हो, उपन्यास हो या कोई नाटक।'

'कोई भी हो, परन्तु अच्छी हो ! यह क्या है ?'

'यही कही है न आपने ?'

'हां, हां, यही !'

जी ! यह पुस्तक तो नहीं परन्तु कोई हाथकी लिखी हुई कापी-सी है, इसकी जिल्द, पहलेके और बादके कुछ पत्ते भी फट चुके हैं। रद्दीमें ले आया था, यह लिये।'

मैं बड़ी देर तक छानबीन करता रहा, कोई चीज दिलको न भाई, अन्ततः उसी कापीको चार पैसे देकर खरीद लिया। घर आया तो पढ़नेकी बड़ी कसक थी, पढ़ा, परन्तु मालूम न हो सका, किसने लिखा ? क्यों लिखा ? क्या परिणाम हुआ ? ईश्वर जाने।

* * *

… अक्टूबर

आकाशमें छुट पुटे बादल छाये हुए थे। न जाने क्यों दिल घबड़ा सा रहा था। आकाशके घिर जानेके कारण सूर्य भी छुप गया था। अभी "बाजारे हुस्न" के लगने में देर थी। हर कोई बनने संवरनेमें था। हर एकको अपनी दुकान जो सजानी थी। मैं दिलबहलावकी खातिर प्रियतम के प्रेम-पत्र आल्मारीसे निकालकर ले बैठी। मालूम नहीं कतने दिनोंके बाद इस पुस्तकको उठाया था, पर पढ़ न सकी। बी फिरोजा आयी, मुझे इस दशामें देखकर माथे पर बल चढ़ाते हुए कहने लगी, क्यों री ! इसी तरह बिगड़कर बैठी है, कुछ शामकी भी चिन्ता है या —————(पेज फटा हुआ था)

… अक्टूबर

न जाने यह कई दिनसे क्यों आदत हो गयी थी। हर समय उदासी, उदासी, और इससे गुजरना भी तो अच्छा नहीं है। इस विचारके आते ही उदासीके बादल कुछ क्षणोंके लिये लुप्त हो जाते परन्तु फिर उपस्थित हो जाते। सारा दिन लेटे लेटे या कमरेमें टहलते टहलते व्यतीत किया। सन्ध्या हो गयी। मुंह हाथ धोया पर विशेष उत्साह न था। बालोंमें कंघा करके पीछे से फीतेसे बांध दिया। पाउडर उखड़ चुकी थी। दिल चाहता था कोई काम न करूं। लेकिन आजीविका जो थी। पतली जारजटकी साड़ी पहन कर दीर्घकाय दर्पणके सामने देखा, बिना पाउडरके ही सुन्दर जच रही थी। मुझे इस प्रकार उदास देखकर बी फिरोजा खिची खिची सी फिरती थी, आती और दो चार बातें कर अपना अनमनापन प्रकट कर चली जाती। मैं विवश थी। यदि ग्राहक न आये तो इसमें मेरा क्या अपराध।

२८ अक्टूबर

कुर्सी पर बैठे बैठे १० बज गये परन्तु किसीने पर तक न मारा। क्या मेरा इतना भी मूल्य नहीं था कि कोई आयें और केवल सहरा कर चला जाय। यौवनमें इसी सुन्दरता पर न जाने कितने मर मिटे थे ! दिलफेंक युवकोंकी सतृष्ण निगाहें मेरे यौवन भरे, निखरे हुए मुख पर उठ जातीं, आंखों ही आंखोंमें प्रशंसा करती हुई आशा से धोखा खा जाती थीं। जमाना था जब मेरे यौवनकी कीमत पर हजारों नहीं तो सकड़ोंके जीवन अवश्य निछावर थे। जो मामूली इशारे पर अपना खून बहानेको उतारू रहते। स्कूल और कालिजके जमानेमें जब मैं कोई श्रृंगार तक न करती थी, तो भी हरएक राहगीरकी आंखें उठ जाती थी आज जब मैं अपने यौवनको खुलेबन्दों बेचने के लिये उद्यत हूं तो कोई खरीदार नहीं। बन संवर कर निकलती हूं तो कोई आंख तक नहीं उठाता। उस समय हर कोई सन्मान भरी दृष्टिसे देखता था। परन्तु आज मामूलीसे मामूली आदमी भी घृणाकी दृष्टिसे देखता है। जहां मेरा नाम सुनकर माला जपी जाती थी वहीं आज मेरे नामको सुनकर कोसा जाता है। सुन्दरताके ग्राहक मुझे अपनी वासनाके दृष्टिकोणसे देखते हैं। गहराई तक जाने वाले मुझे समाजसे प्रतिकार लेते हुए पाते हैं। वस्तुतः मैं समाजसे बदलाही तो ले रही थी। 'उन्होंने' ही तो मजबूर किया है। मैं भी तो समाज की शिकार थी। बदलेका विचार आते ही चेहरा लाल हो गया। मुट्ठियां भींच लीं। इतनेमें क्लाकने ग्यारह बजाये, मैं उठी और अपने भाग्यको कोसती हुई पलंग पर आकर लेट रही। प्रतिदिनकी डायरी लिखने लगी।

२ नवम्बर

दिवालीका दिन था, चहल पहल क्यों न होती। जो कोई भी आता संभलकर आता। आज हमारी चांदी थी, हम भी जो कुछ मुंहसे मांगतीं वह मान लेते। जोशसे तैयार हो रही थी, विचार था कि कोई मोटी मुर्गी फंसाऊंगी, बहुत दिनोंके अरमान निकाल लूंगी। नये नये रंगरूट जो घूम रहे थे, शायद मिलिटरीमें भी छुट्टी थी। अटारीमें खड़ी मैंने तिरछी दृष्टिसे एक सुन्दर युवककी ओर देखा, वह खिंचा चला आया। मैं भी अपनी जगह छोड़ उसको लेनेके लिये आगे बढ़ी। गोरा रंग, उभरी हुई छाती, भरी भरी जांघ, चौड़ा माथा, लम्बा कद मैं प्रसन्न थी। उसको सीढ़ियोंसे ही जा लिया। मुझे अपने स्वागतमें खड़ा देख वह भी लम्बे लम्बे डग भर कर बढ़ने लगा। उसको कमरेमें बिठा, गाने आदिके विषयमें पूछने लगी। संगीतमें दिलचस्पी न लेते हुए उसने शराबके लिये कहा। मैं हैरान रह गयी। सुन्दरता और उसके यौवन पर दया आयी। उसको यौवन यों यूंही लालपरीके हवाले किया जा रहा था। मुझे शराबसे घृणा थी परन्तु मुझे तो उसको प्रसन्न करना था। शराब मंगवाई। आधी बोतलके समाप्त हो जाने पर रोका परन्तु वह न रुका। वह मदमस्त हो जाना चाहता था, अपने गम भरे दिलको शायद भूल जाना चाहता था, गमोंको नहीं बल्कि इस बेवफा दुनियांको। उसने एक पैग मेरी ओर भी बढ़ाया। मैंने थोड़ासा पीकर शेष कन्धेकी सीधपर ले जाकर पीछेकी ओर उड़ेल दिया। बोतल समाप्त कर वह बदहोश हो चुका था। वह संसारको भूल चुका था। संसार को नहीं बल्कि अपनेको भी, अपनी मौजूदगी को भी। वह लड़खड़ा कर गलीचे पर गिर पड़ा। मैंने दो-एक पैग और पिलाकर बेहोश कर दिया। उसको वहीं लेटा छोड़कर अपने कमरेमें आकर सोनेकी तैयारी करने लगी। परन्तु इतने दिनोंसे डायरी नहीं लिखी थी। जरा लिखनेको जी कर रहा था। डायरी लिखने लगी।

६ नवम्बर

पड़ोसमें कोई नई बाई आयी थीं। सभी उसे देखने गयीं। सुना कि वह लाहौरसे आयी हैं। हर एककी कोशिश थी कि उससे परिचय हो। कई तो केवल उसको देखने, कई उससे नये ढंग सीखनेके लिये गयीं। काफी ठाठ जम रहा था। वह भी हर एकसे लपक कर मिल रही थीं। बातों बातोंमें मालूम हुआ कि बाई जोहराके यहां रात खूब महफिल जमी। जिस कारण सभी उसको खटकती हुई दृष्टिसे देख रही थीं। वहींपर उसने बताया, 'कि एक सेठ साहब, आधे सफेदबाल, आंखें बाहर निकली हुईं, गालोंपर लाली अवश्य है, बुढ़ापेके खंडर यौवनको फिरसे दुहरानेकी कोशिश कर रहे थे। कभी से लट्टू हैं और कई बार उनकी ओरसे विवाहका प्रस्ताव भी हो चुका है। परन्तु उसने इस प्रकार बांध रखा है कि न कुछ जाते बनता था, न कुछ आते। वह कभी सैंडल, कभी बढ़िया कम्बल, कभी नये सूट और कभी कोट सिलाकर दे जाते। सन्तान है, परन्तु विवाहकी धुन बुढ़ापेमें भी सता रही है। मैंने कई बार उनको टालनेकी कोशिश की, साफ-साफ भी कहा, सेठजी ! यदि विवाह हो जाय और इसके पश्चात आपकी श्रीमतीको मालूम हो जाय, तब ? मेरा जीवन नष्ट हो जायेगा, न इधरकी रहूंगी, न उधरकी। परन्तु वह अपने हठपर हैं। उन्होंने सम्पत्ति लिख देनेको कहा है। वही मित्रों सहित रात आये थे, कुछ राग-रंग हुआ था। सुनाओ ! तुम्हारा क्या हाल है ? आजकल कैसे बीत रही है ?'

'बहन जोहरा ! क्या कहूं, जीवन जर्जर हो चुका है। एक तो दिल मनायेसे नहीं मानता दूसरे बी फिरोजा है कि आये दिन कान खाये रहती हैं। हर समय छोड़कर चले जानेकी धमकी देती हैं, तुम्हीं बताओ इसमें मेरा क्या अपराध।'

इतनेमें बाहरसे किसीने जञ्जीर खटखटायी। शक हुआ कि फिरोजाने यहां भी पिण्ड न छोड़ा। लपककर जोहराने किवाड़ खोला तो एक अधेड़ आदमीको सामने खड़ा पाया। बड़े चावसे अन्दर लिवा लायी। वह मेरी उपस्थितिसे कुछ शर्मासे रहे थे, मुझे खटक गया कि बहन जोहरा, शायद इन्हींके विषयमें कह रही थीं। अवसरको भांपते हुए, फिर मिलनेके लिये कहकर उठ आयी। घर आकर डायरी लिखने लगी।

९ नवम्बर

हमारा जीवन भी कोई जीवन है। कोल्हूके बैलके समान जहांसे चलती हैं वहीं पर आकर रुकती हैं। प्रातः उठना, सन्ध्याके होते-होते बनना, रातको मुजाईमें बैठना और फिर निद्राकी गोदीमें चले जाना। जब पढ़ा करती थी उस समय कालेजके विद्यार्थियोंसे हंसी-ठट्ठा करना सभ्यता समझा जाता था। वही हंसी-ठट्ठा आज बेहयाईका मापदण्ड बन गया है और बुढ़ापे तक वही पागलपन समझा जायेगा। आज कालेजके विद्यार्थियोंकी पिकनिकपर जाना अपनी विगत स्मृतियोंको फिरसे दोहराना था। थकी हुई हूं फिर भी एकबार यौवनका नशा-सा आ गया है। पिकनिकमें एक सहयोगी न बन, नीच पात्र बनकर अभिनय करना था। जमाना था, कालेजकी अभिनयशालामें एक साथ काम करना गौरव समझा जाता था और आज काम करना तो एक तरफ रहा, बातचीत भी अपराधमें शामिल है। हमारा काम तो समाजसे बदला लेना है, उनको प्रसन्न करके विषका घूंट पिलाना है। दूध पीकर उन्हींको डसना है। आज कालेजकी यादका दिन था, दिलने चाहा थोड़ा-सा लिख डालूं। अब थकावटके कारण नींद आ रही है, फिर सही।

१० नवम्बर

'भई ! जिस कारण हम यहां आये पहले उसीको ही करना चाहिये।'—खां साहबके एक मित्रने मुझे सम्बोधित करते हुए कहा। 'वह कौनसी सेवा है, कृपा करके कहिये तो सही'—मैंने साजिन्दोंको साज ठीक करनेका इशारा करते हुए कहा। बजाय उनको कहने का अवसर देती, तबलापर हाथ पड़ चुका था। सारङ्गी बजने लगी। मैंने धीमे स्वरमें गाना आरम्भ किया। पथिकको सबसे ऊंची मंजिल दूरसे छोटी मालूम पड़ती है परन्तु समीप आते आते उसका रङ्गरूप बढ़ता जाता है, इसी प्रकार मेरी आवाजका चढ़ाव भी आरम्भ हुआ। खां साहबकी ओरसे शराबकी फरमाइश हुई, झट हाजिर कर दी गयी। ज्योंही मैंने गाना समाप्त किया, खां साहबने एकसौ रुपयेका नोट ईनाममें दिया। मेरा गाना, मेरी अदायें देखकर खां साहब प्रसन्न थे और आंखों ही आंखोंमें अपने मित्रोंकी सम्मति ले रहे थे। उनकी ओरसे सानुमतिका उत्तर देखते हुए मेरी ओर मुंह फेर कर कहा, 'हां ! मेरे यहां शादीका जल्सा है। शहरके बड़े-बड़े रईस वहां होंगे। एक बार धूम मचा दो, लोगों-की जबां पर कई महीनों तक चर्चा रहे कि

नवाब अरशाद खां के यहां भी कोई नाच हुआ था। एक बार रङ्ग जमा दो, जो कुछ कहो वह दूंगा।'

'ऐसा खां साहब ! शादी कब है ?'

'इस महीनेकी १९ तारीख को। एक हजार तक दे सकता हूं, मंजूर है।''

मैं मौका ताड़कर कह उठी 'खां साहब ! कुछ और भी, यह कम है।'

'अच्छा ! बारह सौ। महफिलका रङ्ग अगर जम गया तो खुश होकर 'लौटोगी।'

खां साहब उस दिन आदमी भेजनेका वायदा कर चले गये।

१६ नवम्बर

खां साहबके यहां शादी थी। प्रातः बिस्तर छोड़ कर बन संवर रही थी। बी फिरोजा बार-बार मेरे उत्साहवर्धनके साथ साथ कामको अच्छी तरह अञ्जाम देनेका उपदेश दे रही थीं ताकि ईनामके साथ नाम भी हो। स्नानागारसे वापस आकर पाउडर आदि लगाया। बालोंमें कंघी देने लगी। कई प्रकारके बाल बनाये परन्तु कोई भी बहुत देर तक स्थिर न रह सका। लगभग डेढ़ घण्टे लग गये और कंघी भी एक नयी अदासे दी गयी थी। होठोंको मोटे तौलियेसे खूब रगड़ा। होठ बिना रङ्गके ही लाल हो गये। गालोंपर थोड़ी-सी सुर्खी लगाकर कपड़े पहनने लगी। बड़ी देर तक माथापच्ची करती रही कि कौन-सी ड्रेस पहनी जाये। साड़ियां भी पहनी, परन्तु कोई न जंची आखिर सूट पहना। सिलवार छोटे पहुंचे वाली थी। नीचेसे क्रोमकी सफेद जूती। बार-बार दीर्घकाय दर्पणके सामने जाती। अपने आपपर ही आसक्त हो चली थी। बन संवर कर तैयार हुई ही थी कि खां साहब का आदमी आ गया। गई ! महफिल खूब जमी थी। चारों ओर तकिये लगे हुए थे। शहरके बड़े बड़े रईस, अफसर तकियेके सहारे बैठे शर्मसे लाल हुए पानीको समाप्त कर रहे थे। मेरे आनेकी पहले ही से चर्चा हो रही थी। मेरे पहुंचनेपर सनसनी-सी फैल गया। मैं मधुबाला बनी। मेहमान भी काफी आये हुए थे। वैसे भी जहां कहीं हम जैसीका आना हो तो लोग इकट्ठे हो जाया करते हैं और यहां तो खां साहबके लड़केका विवाह था। साज बजने लगे। साजिन्दोंको खास हिदायत थी। मैंने गानेके साथ साथ अदायें भी दिखायीं, नाचना आरम्भ किया, नाच क्या था ? महफिलको अमृत पिला दिया। न जाने अङ्गोंमें फुर्ती भी कैसे आ गयी। जिस ओर भी झुक जाती बिजलियां कौन्ध जातीं। मैं अपनी सारी कलायें दिखा देना चाहती थी कि कहां तक समाज के ठेकेदारों, बड़े-बड़े रईसों, कौमके सरपरस्तोंने हमें इस काम की अन्तिम सीमा तक पहुंचानेमें मदद की है। ज्योंही गाना समाप्त हुआ, खां साहबने एक अमूल्य हार पुरस्कार दिया। मैंने गर्दन आगेको झुका दी। खां साहब मेरा काम देखकर बेतरह प्रसन्न थे। घण्टा भरके नाचसे थककर चूर-चूर हो गयी परन्तु मशहूरीकी उमङ्ग अवश्य थी। खां साहबकी गजलकी फरमाईश को पूरा करनेकी कोशिश करने लगी। गाना शुरू किया—

'इश्क नहीं, जफा नहीं, दर्द नहीं, दवा नहीं, गमजा नहीं, अदा नहीं, मेरे नसीब क्या नहीं।'

खैर, काफी रात जा चुकी थी। इनाम भी मिला उसके साथ साथ मशहूरी भी। शेष रात वापस आयी, आते ही पलंगपर सो गयी। कब दिन हुआ मालूम नहीं। उठी, तो दोपहरके तीन बजे थे, मुंह धोकर लिखने बैठ गयी।

आखिर यह सुनहला दिन ही तो था।

१७ नवम्बर

मेरे यहां निमंत्रण था। सभी मेरी सफलतापर बधाई देने आयी थीं। खूब हंसी मजाक होता रहा। आवाजें कसी गयीं। दिल बहलाव और चाटुकारीके शब्द सुननेमें दिन बीत गया।

१९ नवम्बर

नयी विपत्ति मोल ली। जबसे जोहराके और फिर खां साहबके यहां गयी हूँ तबसे वही सेठ साहब बड़े बुरे पीछे पड़े हैं। जोहरा तो छूट गयी। उसको कुछ तो अफसोस है कि मुर्गी हाथ आयी हुई निकल गयी। लेकिन खुश भी है कि बूढ़े खूंसटसे छुटकारा तो मिला। वह हैं कि चौबीस घण्टे हुक्म बजा लानेके लिये उपस्थित रहते हैं। कई बार धमकी दी, गिड़गिड़ाई, खुशामद की। कहां मैं और कहां यह सेठ साहब—

२२ नवम्बर

आजकल तो इतना अवकाश ही नहीं मिलता कि कुछ आरामसे बैठकर लिख सकूं। खां साहबके यहां जाना क्या था, अपना विज्ञापन करना था। हर समय कोई न कोई आया जाया ही करता है। फिरोजा से कह रखा है कि कोई भी आये, कह दे कि वह घर पर नहीं। कहीं बाहर गयी हुई है। हृदयको कुछ शान्ति तो मिलेगी।

२४ नवम्बर

जबसे स्वप्नसे नींद उचाट हुई है, जी उदास है। तभीसे विचारोंने ऐसा वेग है कि दिल मनाये नहीं मानता, रिझाये नहीं रीझता। तुमने मुझे क्यों छेड़ा ? तेरी यादने मेरे गमके तारोंको हिला दिया। वह अपना बेसुरा राग निकालनेकी कोशिश कर रही हैं। क्या मालूम तुम कहां होगे। तुम्हींने मुझे शोहरत दिलवाई वरना मैं और यह शोहरत ? कभी न हो सकती थी। नहीं, नहीं—तुझे''तुझे क्यों गुनहगार बनाऊं, अपराधी तो मैं हूं, पाप तो स्वयं करूं और अपराधी तुझको बताऊं! कहांका न्याय है ? स्त्री के घायल हृदयका फैसला, कतई फैसला, नहीं, नहीं—कभी नहीं हो सकता। तुम निरपराधी हो। बदनामी मैंने ही कराई, कलंक का टीका मैंने ही लगवाया, आखिर लड़की ही थी न। तुम्हारा विचार तक न किया। अपमान होने दिया। तुम निर्दोष हो। संसारको न कह सकी, न दिखा सकी। आत्मा तो जवाब देती है। अब भी तुम मेरे सामने हो। शोहरत मैंने स्वयं ही ग्रहण की। परन्तु तुम और कहां यह हमारी झूठी दुनिया। मेरे लिए सब कुछ लुटा दिया। बदनाम हो गये। मां बापको मुंह न दिखा सके। मैंने तुम्हारी बदनामियोंसे अपनी शोहरतकी नींव डाली।

नहीं, नहीं ! मैं ही दोषी नहीं तुमभी हो। तुम्हीं ने तो मजबूर किया था। स्त्री कभी अपनी ताकतसे कम बात करनेपर उतारू नहीं होती। मैं सुला रही थी, तुमने ईंधन डाला। पर्देसे बाहर ले आये। मेरा साहस बढ़ गया। तुम चाहते थे कि धनवानोंकी तरह क्लबोंमें तुम्हारे साथ खेलूं, हंसू, कंधेसे कंधा मिलाकर चलूं, खुले बन्दों तुम्हारे मित्रोंसे मिलूं, डिनरखाने, सिनेमा देखने उनके साथ इकट्ठी जाऊं। तुम्हारी अक्लपर पत्थर पड़ चुके थे। तुम अमीरोंकी नकल करना चाहते थे। पांव नंगे हो जानेका विचार तक न आया। कहां धनवान और कहां निर्धन। मैं तो भारतीय कन्या थी। तुम ही तो पश्चिमी सभ्यताके हामी थे। मैंने कई बार तुम्हें तुम्हारी बात न माननेसे रुष्ट किया। स्त्री थी; पिघल गयी। धनवानोंकी नकल करके अपने आरामके जीवनमें कांटे बोये; ऊपर चढ़ा कर नीचेसे सीढ़ी खींचना चाहा। जल चुकी लकड़ी फिरसे लकड़ी नहीं बन सकती। पहले तो महफिल जमती रही, बादमें मेरी मामूली-सी फरमाइशपर घबड़ा जाते थे। झिड़कियों से काम लेना चाहा, परन्तु निष्फल ! प्यार से मनाना चाहा, परन्तु व्यर्थ ! तुम्हींने राह दिखायी अब स्वयं ही आंखें मीच लेनेको कहते हो। बहुत आगे बढ़ चुके, कदम कठिनतासे पीछे हट सकते थे। तुम घबड़ा गये। मेरा मुख तक न देखना चाहा। मुझे भी तो घर छोड़ना पड़ा है। मुझे भी तो समाजकी ठोकरोंका निशाना बनना पड़ा। आओ ! मेरे पास आओ, तुम्हें दिखा दूं कि मेरी कई बहनें इसी बेरमझीकी शिकार होकर आज फंसी तड़प रही हैं। उनके यहां तिलकधारी, बड़ी बड़ी दाढ़ीवाले, रईस, अफसर, जातिके नेता, शहरके लीडर, और छोटे दर्जे के लोग, दफ्तरोंके नौकर, और''और''

विद्यार्थी—कहां तक हमारे पांव चूमते, नाक रगड़ते हैं—मिन्नतें करते हैं। धक्के देकर बाहर निकाल दिये जाते हैं।

'क्या लाई हो बड़ी बी'

'कोई चिट्ठी आयी है'

'दिखाओ तो।' है ? तुमने, क्या किया ? कहां हो ? क्या कर रहे ? अच्छा ! अब उनकी चिट्ठी आयी ! किसी और दिन !

२७ नवम्बर

तुम्हारी चिट्ठी क्या मिली, ... काफी था। मेरी व्रणपट्टीके टांके खुल गये। तुम कबसे मेरी यादसे उतर ... स्त्री एक बार प्यार करती है, मैंने पहला प्यार दिया, परन्तु तुम ... समझ कर खेलते रहे। मेरी प्रार्थना ठुकरा दिया। अपनी आयुमें एक ... प्रेम किया पर वह भी असफल रहा। ...अबतक तुम जा चुके होगे दूर दूर जहांसे जाकर कोई वापस ... आता। मालूम होता है फिर मूर्छा ... लगी। ज्वर भी है लिखा नहीं जाता ... हो जानेपर फिर लिखूंगी!!

*

ज्यों-ज्यों डायरीकी तारीखें ... बढ़ रही थीं, मेरे हृदयमें उथल-पुथल मच रही थी, हाथ कांप रहे थे। यह आप बीती, डायरी नहीं थी बल्कि मेरी आत्माकी ... को लेखबद्ध किया गया था। मैं भी ... ही था। मुझसे भी एक ऐसा ... निकल चुका था। धनुषसे निकले हुए ... का क्या परिणाम हुआ होगा, ईश्वर ... मैं विचारोंके बहावमें न जाने कहां ... गया। होश आया तो देखा कि ... कई एक शब्द आंखोंसे निकले हुए ... मिट चुके थे।

———

संसारके रंगमंच पर अभिनीत होने वाले ...का प्रारम्भ हुए कितनी शताब्दियां ...र्षों और इसका अन्त कब, कितनी ...ब्दियोंके बाद होगा, कहना मुश्किल ... इसे निश्चित रूपसे हम दुखांत या ... नाटक की संज्ञा देनेका दुस्साहस ...हीं कर सकते। मंजिल बहुत दूर है। ...त्र विशेषकी पटुता और दक्षताका ...क सम्बन्ध है, उसका ज्ञान प्राप्त करना ...न नहीं। कुछ प्राप्त साधनोंके जरिये ...या अधूरी जानकारी प्राप्त कर हम ...री सम्मति देनेके लायक हो जाते हैं। ...ी जानते हैं, मानवको अमरता नहीं मिली और ऐसी अमरता किस काम की जो ...ा-शून्य हो। ऐसे चिरागका क्या ...स जिसके बराबर जलते रहने पर भी ...प्रकाश न हो। ऐसी आगका क्या ...न जो निस्तेज हो। और उसी तरह वह ..., जीवन ही क्या जिसमें उथल-पुथल ...उतार-चढ़ाव ही न हो। दुनिया ऐसे ही ...ओंकी याद रखती है जिन्होंने अपने ...ारिक, साम्प्रदायिक या सामाजिक ...के दायरेसे बाहर निकलकर सम्पूर्ण ...की भलाईके लिये अपने जीवनकी ...ुति दी है। किसी राष्ट्र, सम्प्रदाय, ..., परिवार, या माता-पिताको भी ...ही लोगोंको पाकर सर ऊंचा करनेका ...य प्राप्त होता है। ऐसे लोगोंकी विजय ...दुनिया हंसती हैं, उनके दुखमें वह रोती ...इसलिये कि उनकी विजय विश्वकी ... है और उनकी पराजय विश्वकी ... है। काल उनके नश्वर ...को हमारे बीचसे उठा ले जाता ... उनकी स्मृति, हमारे मस्तिष्कमें ...ा हरी-भरी रहती है। ऐसे ही महा-...में अमेरिकाके राष्ट्रपति फ्रैंकलिन ...रूजवेल्ट एक थे जो अपना सफल, ... अधूरा पार्ट अदाकर गत १३ अप्रेलके ...पहर सदाके लिये सो गये।

...का जन्म सन् १८८२ में न्यूयार्कके ...हाइड पार्कमें एक सम्पन्न परिवारमें ...था। आपके पिताका नाम जेम्स ...ट था। सन् १९०४ में हावर्ड कालेजसे ...होनेके बाद कोलम्बिया ला स्कूलमें ...का अध्ययन किया। तत्पश्चात ...ने न्यूयार्कमें वकालत शुरू की और तीन ...क वकालत करनेके बाद न्यूयार्क सिनेट ...स्य चुने जाने पर आपने वकालत छोड़ ...इसके तीन वर्षोंके बाद एक ही उछालमें ...नौसेना विभागके सहायक मन्त्रीके ...पर पहुंच गये। गत महासमरके समय ...कन नौसेनाका वही सहायक मन्त्री ...न महासमरके समय राष्ट्रपतिकी ...के जीवनके अन्तिम दिनों तक ...राष्ट्रकी नैयाको खेकर तूफानी समुद्रके ...से निकालकर किनारे ले आया। ...प्रथम सन् १९२० में आप डेमोक्रेटिक ...की ओरसे अमेरिकाके वायस प्रेसीडेण्ट ...चुनावमें खड़े हुए। पर रिपब्लिकन ...दवारकी जीत हुई। यह पराजय मानो ...भावी सफलताओंके लिये चुनौती थी। ...तारे और कार्यकुशलताके पुरस्कार ...में लगातार दो बार न्यूयार्क स्टेटके ...चुने गये। इसके बाद सन् १९३२ में

फ्रैंकलिन रूजवेल्ट

---**---

(लेखक—श्री वैद्यनाथ सिंह)

प्रेसीडेण्टके निर्वाचनमें आपने अपने प्रतिद्वन्द्वी भूतपूर्व प्रेसीडेण्ट मि० हूवरको ६९,००,००० वोटोंसे पराजित कर राष्ट्रके सर्वोच्च पदाधिकारीका स्थान प्राप्त किया। आप ही प्रथम अमेरिकन हैं जिन्होंने लगातार चार बार अमेरिकाके राष्ट्रपतिके चुनावमें सफलता हासिल कर वह रेकार्ड छोड़ा है जिसे शायद ही कोई दूसरा अमेरिकन भविष्यमें तोड़ सकेगा। राष्ट्रपतित्वके आरम्भिक कालमें अपने देशकी राजनीतिमें इन्हें अनेक कठिनाइयोंका सामना करना . .। इनके मार्गमें खासकर अमेरिकाके सुप्रीम कोर्टकी ओरसे अनेकों अड़चनें खड़ी की गयीं। सुप्रीम कोर्टने इनके अनेक सुधारों को अवैधानिक करार दे दिया। पर ज्यों-ज्यों अमेरिकन जनताका अपने प्रेसीडेन्टके नेतृत्वमें विश्वास बढ़ता गया, इनकी कठिनाइयां हल होती गयीं। कभी २ राष्ट्रने इन्हें समझनेमें देरी अवश्य की पर अपनी गलतियोंके समझ लेनेके बाद उसने संशोधन करनेमें विलम्ब नहीं किया। युद्धके पहले आपने कोशिशकी थी कि तटस्थता एक्टमें संशोधन किया जाय, पर उस समय उन्हें सफलता न मिली। पर वर्तमान महासमरकी घोषणाके तीन सप्ताहके बाद ही उनके उद्देश्य की पूर्ति हो गयी। अमेरिकन कांग्रेसके एक खास अधिवेशनमें उक्त एक्टमें आवश्यक सुधार कर दिये गये।

उनकी देशीय नीति कितनी सफल रही, और उनके नेतृत्वमें अमेरिकन जनताको कितना भरोसा और विश्वास था, इसका ठोस प्रमाण उनके लगातार चार-चार बार राष्ट्रपति चुने जानेसे बढ़कर और क्या हो सकता है। अपनी वैदेशिक नीतिके सिलसिलेमें वे बराबर शांतिके समर्थक और आक्रमण तथा युद्धके विरोधी रहे।

गत महायुद्धके बाद विश्वशांतिको स्थायित्व प्रदान करनेके उद्देश्यसे गठित राष्ट्र संघके आप समर्थकोंमेंसे थे। पर एक ईमानदार व्यक्तिकी तरह उन्हें पीछे चलकर यह मंजूर करनेमें भी हिचकिचाहट नहीं हुई कि संघ स्वर्गीय मि० विलसनके आदर्शों तक नहीं पहुंच सका। तबसे विश्वशांतिके लिये उनकी चिन्ता और भी बढ़ चली।

हम देखते हैं कि युद्धमें उन्होंने इस बात की जी-तोड़ कोशिश की कि युद्ध रोका जाय। गत १९३३ के दिसम्बरमें आपने एक विश्वशांतिकी योजनाकी घोषणा की जिसमें पुराने शस्त्रास्त्रोंको त्यागना, नयेका उत्पादन बन्द करना तथा किसी देशकी सशस्त्र सेनाको अपने देशसे होकर किसी अन्य देश पर हमला करनेकी सुविधा न प्रदान करना इत्यादि बातें शामिल थीं। पर घटनाचक्रने स्पष्ट कर दिया कि योरोपीय गगनमें युद्धके बादल मंड़राने लग गये हैं, जो सिर्फ गर्जन-तर्जनके बाद ही समाप्त न होंगे बल्कि वृष्टि होने ही वाली है। यद्यपि आपने स्पेनके गृह युद्धके मामलोंमें बहुत हदतक खामोशी अख्तियार की, पर अबीसिनीया पर इटलीके आक्रमणको रोकने की भरपूर जी-तोड़ चेष्टा की। जब म्यूनिक का अशुभ अध्याय आरम्भ हो रहा था, उन्होंने कहा था कि यदि कैनेडा पर आक्रमण हुआ, इस हालतमें अमेरिका हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ सकता।

सन् १९३९ के अप्रेलमें हिटलर और मुसोलिनीके पास रूजवेल्टने इस आशयका संवाद भेजा था कि एक सम्मेलन बुलाया जाय तथा १० वर्षोंके लिए सन्धि की जाय।

यद्यपि अमेरिकामें बहुत लोग ऐसे थे जिन्हें प्रेसीडेण्टकी यह वैदेशिक नीति पसन्द

हाइड पार्क (न्यूयार्क के सेंटजेम्स एपिसकोपल गिरजा घरके समीप स्थित भूखंड रूजवेल्टका अन्तिम विश्राम स्थल।

प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, जिनकी अचानक मृत्यु हो गयी।

नहीं थी। पर रूजवेल्ट यह अच्छी तरह समझते थे कि आजकी दुनियामें अपनी अलग खिचड़ी पकानेकी नीतिका परिणाम अच्छा नहीं हो सकता। विश्वके भाग्यके साथ अमेरिकाका भाग्य बंधा है। अतः उसकी रक्षाके लिये विश्वमें रोज-ब-रोज होनेवाली महत्वपूर्ण घटनाओंका अध्ययन और तत्पश्चात अपनी नीतिमें आवश्यक हेरफेर करना वांछनीय है। उन्हें यह समझनेमें देर नहीं लगी कि अमेरिकाका भला किसमें है।

युद्ध और उसकी भयङ्करताका पक्षा आगे चलकरपारखी राजनीतिक घटनाओंकी गतिका अनुभवी पर्यवेक्षक भलीभांति समझ गया कि अब विश्व शांति कायम रखना कोरे शब्दों से सम्भव नहीं है। शान्तिकी पुरानी योजना पूर्णरूपसे असफल हो चुकी। अब एक सांघातिक युद्धके उपरांत नयी शांति योजना को कार्यान्वित करना होगा। धुरी राष्ट्रों द्वारा रौंदे हुए सभी राष्ट्रोंके प्रति अमेरिका पहले ही अपनी सहानुभूति और सभी संभव साधनोंसे सहायताकी घोषणा कर चुका था। थोड़े समय तक तो ऐसा प्रतीत होने लगा, और ठीक ही कि अमेरिका बिना घोषणा किये ही जर्मनीके खिलाफ ब्रिटेनके साथ युद्धमें उतर चुका है। किंतु जुलाई १९४१ में आइसलैण्डमें अमेरिकन सेना भेजकर अङ्गरेज फौजको युद्धके दूसरे मोर्चेपर भेजनेका अवसर देकर यह सिद्ध कर दिया कि प्रत्यक्षरूपसे अमेरिका ब्रिटेनका सहायक है। अतः ७ दिसम्बर १९४१ को जापानियोंके पर्लहार्बर पर धावा बोल देनेसे दुनिया थोड़े समयके लिये आश्चर्यचकित भले हुई हो पर यह अनिवार्य था। घटनाचक्र जिस तेजीसे घूम रहा था उसका परिणाम यही होना था। और इस घटनासे ब्रिटेनकी जानमें जान आयी।

इटलीके आत्मसमर्पणकी घोषणाके बाद पहले-पहल तेहरानमें त्रिनायक कानफरेंस हुई। जिसमें प्रे० रूजवेल्टने भाग लिया। तेहरान कानफरेंसमें शामिल होनेके लिये जाते समय मार्गमें कैरोकी कानफरेंसमें उन्होंने भाग लिया जिसमें चर्चिल और मार्शल चांगकैशक उपस्थित थे। इस तेहरान कानफरेंसमें ही पश्चिमी यूरोपपर हमला करनेकी योजनापर विचार किया, जिसकी बहुत दिनोंसे रूसी मांग करते आ रहे थे। घटनाओंने यह

सैनफ्रांसिस्कोमें हिन्दुस्तानी भांड़

———:०:———

लेखक—श्री अष्टावक्र

प्राचीन कालमें राजा-महाराओं और नवाब बादशाहोंके दरबारोंमें विदूषक और भांड़ भी रहा करते थे। इनका काम हुआ करता था आपके अन्नदाताओंको अपने हास्य-परिहास और भड़ैती द्वारा प्रसन्न रखना। यह परिपाटी अब इस युगमें उठती-सी जा रही है। किन्तु परिपाटी पथी हमारे ब्रिटिश शासक अभी तक इस खुशामदी परिपाटीको किसीन किसी रूपमें कायम रखे हुए हैं।

पहले जमानेमें एक और परिपाटी थी। विजित विजेताको अन्य उपहारोंके साथ-अपने देशकी नर्तकियां भी उपहारमें दिया करता था। ब्रिटिश शासकोंने इसे भी जीवित बना रखा है। अन्तर इतना है कि अब भांड़ोंसे ही नर्तकीका कार्य भी निकाला जाता है।

सैनफ्रांसिस्कोमें एक बहुत बड़ा दरबार बैठेगा है। इस दरबारमें वर्तमान विश्व-युद्धके भावी विजेता (जिनके विजयी होनेमें अब कोई सन्देह नहीं कर सकता।) रूस, अमेरिका और ब्रिटेन सिंहासनारूढ़ होंगे और दरबारियोंके रूपमें अन्य देशोंके प्रतिनिधि भी जलसा देखनेको उपस्थित होंगे। हमारी भारत सरकारने मौका अच्छा देखकर इस दरबारमें हिन्दुस्तानी भांड़ोंको भेजा है संसार विजय करनेवालोंका मनोरञ्जन करनेके लिये। विश्वविजेताओंकी मर्यादा और प्रतिष्ठाका ध्यान रखकर भांड़ भी उसी स्तरके भेजे गये हैं। दरबारमें भांड़ किसी तरह की बेअदबी न कर बैठें इसलिये यह आवश्यक समझा गया कि दरबारके पहले उनका रिहर्सल देख लिया जाये। रिहर्सलके लिये साम्राज्य सम्मेलनका मंच उपयुक्त समझा गया। लन्दनमें इस सम्मेलनका आयोजन हुआ। हिन्दुस्तानी प्रमुख भांड़को भी इस बातकी आशङ्का थी कि कहीं अनफिट करार न दे दिया जाऊं तो विश्वविजेताओंका पाद-चुम्बन करनेके गौरवसे वञ्चित हो जाना पड़े। अतः जहां तक सम्भव था संयमसे काम लिया गया! मंचपर प्रवेश करके उसने देखा कि यहां सबके सब वे लोग हैं जो कोई अपनेको उपस्थित मण्डलीमें किसीसे छोटा नहीं समझता। झेंपते हुए पर आंख नचा, भौं मटकाकर उसने फरमायाः हें! हें! आप लोग यह न समझ बैठें कि हम शाही सरकारके तोहफे हैं, हमें तो हमारी मा-बाप सरकारने हिन्दुस्तानसे भेजा है।' इतना कह चुकनेपर उसकी कुछ-कुछ हिम्मत बढ़ी और इस हिम्मत बढ़नेके साथ-साथ उसका हाथ उसकी नकली मूंछोंकी तरफ बढ़ने लगा। इतनेमें पर्देके पीछेसे उसने अपने आकाको आंख तरेरे खड़ा देखा तो मुंह तक उठा हुआ हाथ धम्मसे, रेलवे सिंगलकी तरह नीचे झुक गया और फिर सम्भलकर वह बोला, मेरे सरकार, बात तो यह है, बात तो यह...कि हमारा मुल्क तो अभी तक आपके कदमोंपर झुक झुककर सलामियां बजानेमें ही अपना फखर समझता है लेकिन गुलामको गुस्ताखी माफ की जाये तो मैं यह जरूर कहूँगा कि हुजूरे आलाकी इतने दिनोंसे कदम बोसी करते-करते हम हिन्दुस्तानी अब डेमिनियाके मालिक बन बैठे हैं। ऐहें, मेरे सरकार, आप आंखें न गुरेरिये, इस गुस्ताखीके लिये ढील तो आपकी ही तरफसे हुई है। मगर मेरे मालिक आप इतमीनान रखें, डोमिनिया आपकी ही रहेगी। मेरे बूतेकी यह बात नहीं है कि डोमिनियाको मैं बशमें रख सकूं। सरकार नाम हमारा काम आपका। तब डर किस बातका। हम वही करेंगे जो मेरे सरकार चाहेंगे। लो, अब तो हुए राजी मेरे राजा।'

इतना कहकर कमर झुकाकर सात बार फरांसी सलाम दागते सामने मुंह किये पीछे कदम हटाते हुए पर्देके बाहर आये तो मि० एमरीने लपक कर बड़े प्यार से हाथ पकड़ कहा Excellant! Wonderful! Done Sir Firoz !!! (खूब! ... आपको तो कमाल हासिल है जनाब सर फिरोज खां नून।

———

साबित भी कर दिया है कि यह योजना कितनी कारगर साबित हुई और इसने लड़ाई की लम्बाई कितनी कम कर दी। त्रिनायकोंकी दूसरी महत्वपूर्ण कानफरेंस याल्टा या क्रीमिया कानफरेंसके नामसे मशहूर है, जहां जर्मनीके भाग्यका लिखित फैसला तैयार कर जर्मन जनता और उसके नेताओं को आगाह कर दिया गया कि अब युद्ध जर्मनोंके लिये व्यर्थकी बर्बादीके सिवा और कुछ नहीं हो सकता।

इस कानफरेंसके अवसरपर मित्रराष्ट्रोंकी एक दूसरी कानफरेंस सैनफ्रांसिस्कोमें बुलानेका निश्चय किया गया था, जहां विश्वशांतिके शिलान्यास समरोहमें प्रे० रूजवेल्ट एक महत्वपूर्ण पार्ट अदा करते। उक्त निश्चयपर पहुंचते समय किसीने कल्पना तक न की थी कि उस शुभ घड़ीके पहुंचनेके पहले ही नाटक का प्रमुख पात्र दुनियासे चलता बनेगा। सैनफ्रांसिस्को कानफरेंस बुलानेके निर्णयकी नियतिने अपने व्यंग मुस्कानसे अवहेलना की होगी, पर कौन समझ सकता है उसकी गतिको!

जब सारी दुनियाकी आंखें सैनफ्रांसिकोकी ओर लगी थीं, उस समय एक भयानक वज्र-सा प्रहार हुआ। रूजवेल्टके मनोरथ—नहीं, विश्वके मनोरथको गहरी ठेस लगी! विश्वको उनसे बहुत आशा थी, क्योंकि विश्वशांतिकी स्थापनाके लिये उनकी व्यग्रताने पीड़ित मानवताके दिलोंमें आशाकी ज्योति जगायी थी; यह दूसरी बात है कि इस पूंजीवादी संसारके रहते उनकी योजना किस हद तक सफल-असफल होती।

विश्वशान्तिकी इस कल्पना लिये वह शान्ति-दूत आज हाइडपार्कके सेण्टजेम्स एपिसकोपल गिरजाघरके समीप स्थित भू-खण्डके गर्भमें चिर समाधि लगाये पड़ा है और उसकी आत्मा किसी अज्ञात स्थानसे भावी सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनकी ओर तृषित नयनोंसे निहारती होगी!

———

[रा]मायणका लंकाकांड

'युद्धका अन्त कब' होगा, इसपर [वि]चार करते हुए गत सप्ताह हमने दो बातोंका उल्लेख खास तौरपर किया था। एक तो वाशिंगटन-स्थित रायटरके संवाददाताकी इस आशयकी रिपोर्ट थी कि आज रातको (१४ अप्रेल) यहांके सैनिक हल्कोंमें यह आशा की जा रही है कि किसी भी क्षण यह समाचार आ सकता है कि अंग्रेजी बोलनेवाले सैनिक ड्रेसडनके पूर्व किसी स्थानपर रूसी सैनिकोंके साथ सिगरेटका आदान-प्रदान कर रहे हैं और संकेतकी भाषामें उनसे वार्त्तालाप कर रहे हैं और दूसरी बात हमने यह लिखी थी कि अब यह निश्चितसा जान पड़ता है कि पूर्वमें बर्लिनके सामने पड़ी हुई मार्शल जुकोव और मार्शल कोनीवकी सेनाएं किसी भी क्षण बर्लिनकी ओर धावा बोल सकती हैं। इस शनिवार यानी [१४] अप्रेलके समाचारोंसे मालूम हुआ है [सो]वियट रूसकी सोलह सेनाएं जिनमें [प]न्द्रह लाख रूसी योद्धा हैं, एक साथ जर्मन राजधानी बर्लिनपर आक्रमण कर रही हैं। जर्मन संवाद-समितिकी रिपोर्टके अनुसार उस दिन बर्लिन शहरकी चारों ओर इन पांच मुख्य स्थलोंपर जर्मन सेनाएं अपनेसे अधिक उत्कृष्ट सोवियट सेनाओंसे घनघोर रक्षात्मक युद्ध करनेमें [व्य]स्त थीं—पहला स्थल बसाऊ बर्लिन शहर [की] सीमासे चार मील उत्तर-पूर्व, दूसरा [स्ट्रा]सबर्ग उस सीमासे दस मील पूर्व-उत्तर-पूर्व तीसरा, फुर्सटेनवाल्डी बारह मील दक्षिण-[पूर्व] फ्रैंकफर्ट रेलवेपर, चौथा कोएनिग्स-[वु]स्टरहासेन पांच मील दक्षिण-पश्चिम [है] और पांचवां स्थल जोसेनहैंजो बर्लिन-[की] सीमासे दस मील दक्षिण सेक्सनी [जाने]वाली प्रधान रेलवेपर स्थित है। परंतु [जर्म]न रेडियोने शनिवारकी रातमें यह [रिपो]र्ट दी थी कि सोवियट टैंक बर्लिन [श]हरके भीतर भयंकर प्रतिरोधके होते हुए [भी] घुसकर शहरसे उत्तर-पूर्वके पेंको-[वि]नेनसी भागमें पहुंच गये हैं, जो बर्लिन-[के] केन्द्रीय स्थानसे तीन मीलसे कुछ ही [अ]धिक है। इस तरह बर्लिनके लिये तीन [दि]शाओंसे केवल रूसी सेनाएं ही आक्र-[मण] कर रही हैं और पश्चिमकी मित्र [से]नाएं जर्मन राजधानीके निकट कहीं [भी] नहीं पहुंच सकी हैं। फिर भी शनि-[वार]को मास्कोमें बर्लिनपर आक्रमण करने-[वा]ली प्रधान सोवियट सेनाओंके सदरसे [मि]ली हुई खबरोंसे यह मालूम हुआ है कि [ज]र्मनीके दक्षिण किसी भागमें पश्चिमके [अ]मरीकन और पूर्वके सोवियट गश्ती [दस्ते]ओंके बीच केवल पचीस मीलका [अन्त]र रह गया है। दोनों ओरकी मित्र [सेना]ओंका हवाई मिलन तो कई भागोंमें [हो] चुका है और रूसी लाल सेनाके [वायु]यान-संचालक अपने मित्रोंके विमानों-की प्रथम झलक पा रहे हैं। हां, मास्को-स्थित रायटरके संवाददाताका तार है कि सोवियट सेनाके प्रधान मोर्चेपर पश्चिमी मित्र सेनाओंसे लाल सेनाका मिलाप होनेके लिये तैयारियां की जा रही हैं, जो निकट है। जर्मन ब्राडकास्टोंपर विश्वास किया जाये तब तो ड्रेसडन भागमें अमरीकन और रूसी सेनाओंके टोह लेनेवाले दलोंमें मिलाप हो चुका है, किन्तु मास्कोकी रिपोर्ट यह है कि मार्शल कोनीवकी सेनाएं ड्रेसडेनकी बाह्य रक्षा पंक्तिमें लड़ रही हैं और शहरके उत्तर सोवियटका हरावल (सेनाका अग्र भाग) लीपजिगसे आगे बढ़नेवाली अमरीकन सेनासे मिल जानेके निकट पहुंच रह है। जो हो, रायटरके स्पेशल संवाददाताका कहना है कि हो सकता है कि बर्लिनपर आक्रमण करनेवाली सेनाओंका प्रधान नायकत्व स्वयं मार्शल स्टेलिनने ग्रहण कर लिया हो। वे रूसकी लाल सेनाके प्रधान नायक तो हैं ही, इसलिये अन्तिम विजयके समय युद्धक्षेत्रमें भी अपनी सेनाका नेतृत्व करते हैं, तो सर्वथा उपयुक्त होगा और वे उस पेचीले समयमें वहां स्वयं नेतृत्व करनेको उपस्थित होंगे, जब पश्चिमकी मित्र सेनाओंसे मिलाप होगा। परन्तु हमें तो इस बातका विश्वास नहीं होता कि मार्शल स्टेलिन जैसा विचक्षण और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ वर्त्तमान परिस्थितियोंमें युद्धक्षेत्रपर स्वयं उपस्थित होनेका विचार करेगा, जब मित्रराष्ट्रोंके बीच खासकर पोलैंडके प्रश्नको लेकर इतना बड़ा वितंडावाद चल रहा है और हिटलर उनमें फूट पैदा करनेके लिये इस तरह भेदनीतिकी चाल चलता दिखाई पड़ता है।

जब युद्ध बर्लिनके भीतर पहुंच चुका है, तब एक बार फिर यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि वह क्या शीघ्र समाप्त होने जा रहा है? स्वयं मि० चर्चिल तो आज भी यह कह रहे हैं कि, "उस स्थितिके निकट पहुंचा जा रहा है, जब जर्मनोंको पूर्णतया जीत लिया जायेगा। जहांतक यूरोपका सम्बन्ध है, लम्बी यात्राका अन्त आ रहा है।" परन्तु जेनरल आइजन हावरके सैनिक आफिसके प्रधान जेनरल स्मिथने शनिवारको यह कहा है कि, "जर्मनीमें तुरन्त युद्ध समाप्त होनेकी आशा मैं नहीं दिला सकता।" साथ ही उन्होंने यह भी चेतावनी सुनायी है कि अभी बड़ी कड़ी लड़ाइयां लड़नी पड़ेंगी, जिनमें संभवतः भारी जन-हानि होगी। साथ ही जेनरल स्मिथने यह भी प्रकट किया है कि "अभीतक रूसियोंके साथ इस विषयकी कोई संयुक्त योजना नहीं निश्चित हुई है कि जर्मनीके विभिन्न भागोंका सफाया कौन करेगा।" हमारी समझसे तो जर्मनीकी लड़ाई अब हमारी रामायणका लंकाकांड कही जा सकती है और उसका अन्तिम निर्णय शीघ्र या कुछ देरमें हो जायेगा, यदि हिटलरकी मित्रोंमें फूट पैदा करनेकी चाल सफल न हो सकी तो।

जो पोलैण्ड इस युद्धका कारण बना था, वही इस समय मित्रराष्ट्रोंके मतभेदका बड़ा भारी कारण बन रहा है। लुबलिन रेडियोने यह घोषित कर दिया है कि शनिवारकी रातमें रूस और पोलैंडकी पारस्परिक सहायता और मित्रताकी सन्धिपर हस्ताक्षर हो गये हैं। लुबलिनवाली जो सरकार इस समय पोलैंडकी राजधानी वारसामें शासन कर रही है, लुबलिन रेडियो उसीकी ओरसे बोलता है, इससे तथा वैसे भी रूस और पोलैंडकी सन्धि होनेका यह समाचार सत्य ही मालूम होता है। इसके पहले यह खबर आ ही चुकी थी कि वारसा सरकारके नेता जब गुरुवारकी रात मास्को पहुंचे थे, तब रूसियोंकी ओरसे उनका असाधारण स्वागत किया गया था, जिससे लन्दनमें दोनों राज्योंकी सन्धि सन्निकट जान पड़ती थी। स्टेलिनने यह सन्धि पोलैंडकी ऐसी अस्थायी सरकारसे की है, जिसे रूस, जेकोस्लोवकिया और युगोस्लेवियाके सिवा न तो ब्रिटेन और अमरीका स्वीकार करते हैं और न अन्य मित्रराष्ट्र ही। याल्टा कानफरेंसमें चर्चिल, रूजवेल्ट और स्टेलिनमें यह ठहरी थी कि राष्ट्रीय एकताकी एक सरकार विस्तृत पैमानेपर संगठित की जाये और इसके लिये मो० मोलोटोव तथा मास्को-स्थित ब्रिटिश और अमरीकन राजदूतोंका एक कमीशन भी बनाया गया था। वह कमीशन जब वैसी कोई सरकार नहीं बना सका, तब स्टेलिनने ब्रिटेन और अमरीकासे पोलैण्डका प्रतिनिधित्व करनेके लिये सान फ्रांसिस्को कानफरेंसमें लुबलिनवाली पोलिश सरकारको निमंत्रित करनेका अनुरोध किया था। उसे ब्रिटेन और अमरीकाने तत्काल अस्वीकार कर दिया था। फिर भी एक बार और रूसने उस पोलिश सरकारको कानफरेंसमें निमंत्रित करनेका अनुरोध किया, जिसे अमरीकाने दूसरी बार भी अस्वीकार कर दिया, यद्यपि स्टेलिनने अमरीकाके नये राष्ट्रपति ट्रूमैनके कहते ही मो० मोलोटोवको सान फ्रांसिस्को कानफरेंसमें भेजना स्वीकार कर अपने सद्भावका एक अच्छा और सामयिक परिचय दे दिया था। तब अब जब रूसने अपने अन्य मित्रोंकी कुछ भी परवाह न कर लुबलिन वाली सरकारको ही पोलैंडकी सरकार मान उससे मित्रताकी सन्धि कर डाली, तो उसका अर्थ यह होता कि याल्टा कानफरेंसके निश्चयको अर्ध-चन्द्र दे दिया गया। वाशिंगटनमें तीनों बड़े मित्र-राष्ट्रोंके परराष्ट्र मन्त्रियोंकी कानफरेंस पोलडके प्रश्नको हल करनेमें लगी बतायी गयी थी। इस सन्धिके हो जानेसे तो यही प्रकट होता है कि या तो वह भी विफल हो गयी या स्टेलिनने उसके निश्चयकी राह देखनेकी कोई आवश्यकता नहीं समझी। इस तरह एक ओर तो पोलैंडके प्रश्नको लेकर स्टेलिनने रूसको खड़ा कर दिया है, जब कि इस प्रश्नपर अभीतक उनके दो बड़े मित्र राष्ट्र अमरीका और ब्रिटेन उनसे भिन्न दूसरी ओर खड़े देखे गये हैं।

तब सानफ्रांसिस्को कानफरेंससे किसी सुफलकी आशा अब कैसे की जा सकती है? स्टेलिनको तो जो कुछ करना था, कर चुके और उनके दोनों मित्रोंने उनका अनुरोध अस्वीकार किया था, उसका जवाब वे इस रूपमें दे चुके। अब देखना है कि ब्रिटेन अमरीका क्या करते हैं। इस भयकी कल्पना करते तो हृदय कांप उठता है कि इस युद्धका कारण बनने वाला पोलैंड अब स्वयं मित्रराष्ट्रोंके बीच एक नये झगड़ेका कारण बनता दिख रहा है, पर तथ्यपर पर्दा डालना न तो संभव है और न उससे कुछ लाभही हो सकता है अब या तो ब्रिटेन और अमरीका चुपचाप रूसके निश्चयके सामने झुककर शनिवार को मास्कोमें हुई रूस-पोलिश संधिको स्वीकार कर लें अथवा विजयके इतने निकट पहुंचनेके पश्चात् सोवियटसे विवाद छेड़कर हिटलरके मनकी करते हुए 'आये थे हरि भजनको, ओटन लगे कपास' की लोकोक्ति चरितार्थ करें। आपसमें फूटनेका जैसा भयंकर परिणाम हो सकता है, उसे देखते हुए तो कविकी यही उक्ति कदाचित स्मरण आयेगी —"योग यज्ञ फल समय जिमि, यतिहिं अविद्या नाश।" यदि ब्रिटेन और अमरीका रूसके इस कार्यको स्वीकार करनेको तैयार न होंगे, तो बहुत सम्भव है कि मो० मोलोटोव वाशिंगटनसे ही पिछले पांव वापस लौट जायें और सानफ्रांसिस्को कानफरेंसमें वे सम्मिलित ही न हों। पहले यह कहा भी तो जा चुका है कि यदि लुबलिन वाली पोलिश सरकारको कानफरेंसमें स्थान न दिया गया तो रूस उसका बायकाट करेगा। इस तरह मामला बड़ा बेढब हो गया है और अपने सुप्रसिद्ध कूटनीतिज्ञ पेपेनको अमरीकन सेनाका बन्दी बनानेका सामान कर हिटलर रूसके विरुद्ध पश्चिमी मित्रराष्ट्रोंके सामने एक भारी प्रलोभन उपस्थित कर ही चुका है। इसीसे तो अब तो सारे संसारका ध्यान पूर्व या पश्चिमके संग्रामकी घटनाओंकी अपेक्षा पोलैंडके विषयपर मित्रराष्ट्रोंके इस भयंकर मतभेदपर ही बरबस चला जायेगा। यह मतभेद बना रहनेपर भी यदि मोलोटोवके नेतृत्वमें रूसी प्रतिनिधि दल सानफ्रांसिस्को कानफरेंसमें भाग लेगा, तो वहां उसका मुख्य प्रयत्न स्टेलिनके पोलैंड विषयक कार्यका सभी मित्रराष्ट्रोंसे समर्थन करानाही होगा, यह कहनेकी तो कोई आवश्यकता ही नहीं जान पड़ती।

बोझ, उनकी पीड़ा और परेशानियोंका मुझे ज्ञान है और उनके साहस, पौरुष और अपने मित्र, मुल्क और आत्मबलमें उनके विश्वासों का पता है। आपमेंसे प्रत्येककी सहायता और सहयोग सामूहिकरक्षाके लियेअनिवार्य है

आपसे कहनेको तो बहुत कुछ है पर निर्माणकारी ऐतिहासिक अवसरपर अपने भावनाओंको व्यक्त करनेकी क्षमता मुझमें नहीं है।

कौन क्या कहता है

विजय लक्ष्मीका भाषण

हिप्रङ्गहेड (मिसौरी) में श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडितने करीब एक हजारसे अधिक उपस्थित लोगोंके समक्ष भाषण देते हुए कहा है कि शीघ्रतासे यदि कुछ नहीं किया गया तो भारत विश्वशांतिके मार्गमें एक प्रबल रुकावट सिद्ध होगा। इसके बजाय स्वतंत्र भारत आजकी अपेक्षा बृटेनका कहीं बढ़कर हितैषी और श्रेष्ट मित्र साबित होगा। यदि यूरोपीय युद्धमें भारतने सहयोग नहीं दिया तो कोई बात नहीं, पर जापानके विरुद्ध संचालित किये जानेवाले संग्राममें उसके सहयोगका विशेष महत्व है। इस युद्धमें हमारे धन-जन आदि साधनोंकी खास आवश्यकता होगी।

कांग्रेसकी जापान-विरोधी नीतिका उल्लेख करते हुए श्रीमती पंडितने कहा कि सन् १९३१में सारी दुनियाके अन्दर कांग्रेस ही एक संगठित संस्था थी जिसने जापानकी आक्रमणात्मक कार्यवाहीका प्रतिवाद किया था। उस समय ब्रिटेनके उपनिवेश मन्त्रीने कहा था कि जापानकी निन्दा करनेका यह अर्थ होगा कि मित्र और भारतमें हमारी नीति भी निन्दनीय है।

ब्रिटेनके विरोधोंके बावजूद भारतने जापानका बहिष्कार किया। दुर्भिक्ष पीड़ित भारतने स्पेनकी प्रजातंत्री सरकारके पास एक जहाज खाद्य सामग्री भेजी थी, जबकि इंगलैंड और अमेरिका फ्रैंकोंको रिझानेमें व्यस्त थे। भारत उस समय भी धुरी-विरोधी नीतिका अवलम्बन कर रहा था जब इङ्गलैंड धातु, रबर और अन्यान्य सहायता प्रदान कर जापानकी युद्ध नीतिका समर्थन कर रहा था। जब लड़ाई शुरु हुई तो एक सुन्दर विश्वके निर्माण तथा प्रजातंत्रकी विजयमें सहयोग देनेकी भारतने व्यग्रता प्रकट की पर इसने किसी ऐसे युद्धमें किसी तरहका सहयोग देनेसे साफ इन्कार कर दिया जो सिर्फ साम्राज्य और शोषणको आबाद रखने के लिये लड़ा जाय।

डा० गोबेल्सका भाषण

हिटलरके जन्म दिवसपर भाषण देते हुए नाजी प्रचार मन्त्री डा० गोबेल्सने कहा कि इस समय हम एक विशाल और दुखांत नाटकके अन्तिम अध्यायसे गुजर रहे हैं। आजकी तरह विकट परिस्थितिका पहले कभी नहीं सामना करना पड़ा था। जर्मन राष्ट्रको आत्मरक्षाके लिये इतनी आफतोंसे पहले कभी नहीं लड़ना पड़ा।

इस जर्मन बहादुर सम्मानित मनुष्यकी तरह अपने नेताका अनुसरण करें। विपत्तिमें कायरता नहीं दिखलायें। आत्मसमर्पणका सफेद झण्डा दिखलानेके बदले स्वस्तिका झण्डा फहराते रहें। हमारे दुश्मन हमें घायल भले कर दें, पर हमारे प्राण नहीं ले सकते। वे हमें धक्के देकर हिला-डुला दे सकते हैं, पर घुटने टेकनेको बाध्य नहीं कर सकते।

प्रो० लास्कीका सुझाव

हेराल्ड लास्कीने भारतीय गतिरोधका अन्त करनेके लिये एक सुझाव पेश किया है। वे अमृतसर दिवसके अवसरपर लंदनकी एक सभामें इसकी रूपरेखा उपस्थित करते, पर अस्वस्थताके कारण वैसा नहीं कर सके। इसके बाद उन्होंने एक वक्तव्य प्रकाशित कराया है उसमें कहा है मि० एमरीका तोतेकी तरह रट लगाना कि क्रिप्स प्रस्ताव ज्योंका त्यों है, निम्न श्रेणीकी राजनीतिज्ञताका द्योतक है। मुझसे भी कहीं बढ़कर उन्हें इस बातका पता है कि क्रिप्स योजनाके पर्देमें सरकार मि० जिन्नाको पाकिस्तानका स्वप्न देखने की सुविधा प्रदान करना चाहती है।

मैं इस पक्षमें हूं कि वायसरायकी कौंसिलको तत्काल राष्ट्रीय सरकारका रूप दे दिया जाय। मेरा विचार है कि कमाण्डर-इन-चीफके हाथमें युद्धके अन्ततक सैन्य-संचालनका भार रहे, जिन्हें आवश्यक सहायताका आश्वासन मिले। राष्ट्रीय सरकार अपनेको नेशनल असेम्बलीके प्रति उत्तरदायी समझे और एक छोटी सभा बुलाये जो गुप्तरूपसे भारतके नये विधानका मसविदा तैयार करे। मेरा यह ख्याल है कि मन्त्रिमण्डलमें अल्पमत और उनके यथोचित प्रतिनिधित्वके सम्बन्धमें उनसे आवश्यक परामर्श हो।

भारतीपत्रकारोंकीअमेरिकायात्रा

श्री शिवरमन (दीनमणि), श्री सबाविला (बम्बई क्रानिकल) और श्री अमृतलाल सेठ (जन्मभूमि) ने भारतीय पत्रकार सम्मे के प्रतिनिधिके रूपमें अमेरिकाके लिये प्रस्थान किया है।

प्र० हैरी ट्रूमैनका ब्राडकास्ट

ब्रिटेनके विभिन्न भागोंमें स्थित अमेरिकन सेनाके नाम ब्राडकास्ट करते हुए अमेरिकाके राष्ट्रपति हैरी ट्रूमैनने कहा है—जिस उद्देश्यने प्रे० रूजवेल्टको आकर्षित किया, वही हमें भी आह्वान कर रहा है। न उन्होंने कभी अपने कार्यमें ढिलाई की और न हम कभी करेंगे। सेनापतिकी मृत्यु पर जैसी कार्रवाई सैनिक करते हैं वैसा ही मैंने भूतपूर्व प्रेसीडेन्टकी मृत्युपर किया है। मेरा कर्तव्य और उत्तरदायित्व स्पष्ट है। अमेरिकन परम्पराको दृष्टिगत रखते हुए उनका पालन होगा। युद्ध संलग्न सैनिकोंके

स्वदेश-वार्ता

भा.कां.कमेटीकी सम्पत्तिवापस

... ११ अप्रैलको अखिल भारतीय ...स कमेटीका दफ्तर कितने महीनोंके ... खोला गया। कांग्रेस कमेटीके सामान ...हां रखे गये थे, प्रतिनिधिक असेम्बली ...मन्त्री श्री शालिगराम जयसवालको ... दिये गये।

...आजाद बांकुड़ा पहुंचाये गये

...राष्ट्रपति मौलाना आजाद अहमद नगर ...से स्थानान्तरित कर खड़गपुर होते हुए ...१४ अप्रैलको बांकुड़ा पहुंचाये गये। उनके ...स्थानान्तरित होनेकी खबर पाकर बङ्गालके ...कांग्रेसी नेता १९ अप्रैलको आपसे ...को हबड़ा स्टेशनपर पधारे थे, पर ...लोग वे प्रतीक्षा कर रहे थे, उसके ...पर उन्हें निराशा हुई। खड़गपुरमें ही ...को उस ट्रेनसे उतार लिया गया था, ...तीसरे पहर गोमो पैसेंजर द्वारा उन्हें ...के लिये रवाना किया गया। खड़गपुर ...लोगोंने फोटो लेनेकी कोशिश की पर ...के हस्तक्षेप और रुकावटोंके कारण ...कुछ फोटोग्राफरोंको सफलता मिल ...। पुलिसवालोंकी अवांछनीय हरकतोंसे ...मौलाना आजादने एक बार कड़ी ...दी और कहा कि यदि आपलोगोंकी ...हरकत जारी रही तो मैं यहांसे एक इञ्च ...हटूंगा और इसी जगह बैठ जाऊंगा ...ने इच्छानुसार फोटो ले सकेंगे। ...हुआ है कि राष्ट्रपति आजादको बांकुड़ा ...के एक बंगलेमें नजरबन्द रखा ...। आपके साथ अन्य पांच साधारण ...कैदी और जेल अधिकारियोंमें एक ...र, दो हेड वार्डर और नौ वार्डर ...जिला मजिस्ट्रेट जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट ...

...शहीद फुलेना प्रसाद"

"...शहीद फुलेना प्रसाद' शीर्षक एक ...भारत रक्षा विधानके अन्तर्गत जारी ...बिहार गवर्नरकी आज्ञा द्वारा जब्त ...कर लिया गया है।

...आसफअली रोग शय्यापर

...पी० का समाचार है कि कांग्रेस ...कमेटीके सदस्य मि० आसफअली, ...जो गुरदासपुर जेल (पंजाब) लाये ...बीमार हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है कि ...जिलेसे गुजर रहे थे, उसी समय ...कारण उनके रक्षकोंको चिन्ता होने ...और दवादारूका प्रबन्ध करना ...।

...शाहीकी धांधलीका नमूना

...दिल्लीमें स्वयं सीमान्त गांधी-...रहस्योद्घाटन किया है कि गिर-...पुलिसवालोंने उन्हें इतनी बुरी ...था कि उनकी दो पसलियां ...। उनके साथ व्यवहार तीसरी ...कैदियों जैसा किया जाता था और ...अनुचित सुविधासे भी वे वंचित ...।

मि० जिन्नाका तार

मि० एम० ए० जिन्नाने भारत सचिव मि० एमरी और लार्ड वावेलके पास एक तार भेजकर यह सूचित किया है कि मुस्लिम लीगकी रायके बिना भारतपर यदि कोई नया विधान लादनेकी कोशिश की गयी तो उसका मुस्लिम भारत विरोध करेगा।

महात्माजी द्वारा शोक प्रकाश

ऐसा ज्ञात हुआ है कि महात्मा गांधीने श्रीमती रूजवेल्टके पास उनके पतिकी मृत्यु-पर एक शोक संवाद भेजा है।

स्व० महादेव देशाईकी स्मृतिमें

श्रीमती सरोजनी नायडू, श्री भूलाभाई देसाई और अन्यान्य व्यक्तियोंके हस्ताक्षरके साथ स्वर्गीय महादेव देसाईके स्मारकके लिये २५ लाख रूपये इकट्ठा करनेकी अपील की गयी है। इस सम्बन्धमें महात्माजीसे मिलने-पर ऐसा ज्ञात हुआ है, उन्होंने बम्बई और गुजरातमें एक एक ट्रस्ट बनानेका परामर्श दिया है। इस योजनाके अन्तर्गत १० लाख रुपये गुजरातमें और बाकी १५ लाख रुपये महादेव देसाईकी आत्मकथा और सामा-जिक आध्यात्मशास्त्रपर महात्माजीके विचा-रोंके प्रकाशनमें व्यय करनेका विचार है।

धोतीके बदले साड़ीका उपयोग

गत बुधवार, १८ अप्रैलको बिहार सेक्रे-टेरियटका एक कर्मचारी साड़ी पहने हुए अपने दफ्तरमें उपस्थित हुआ। पूछनेपर उक्त व्यक्तिने वस्त्राभावका हवाला देते हुए कहा कि मेरे पास पहननेकी एक भी धोती नहीं बच रही है।

अन्तर्राष्ट्रीय जगत की झाँकी

रूसी सैनिक बर्लिनसे ४ मीलपर

जर्मन समाचार समितिने घोषित किया है कि रूसी सेनायें बर्लिनसे केवल चार मील दूर हैं। गत शनिवार २१ अप्रैलके तीसरे पहर दो बजे सोवियट भीमकाय तोपोंका प्रथम गोला बर्लिनके बीचमें गिरा।

चीनमें गृहयुद्धका खतरा

सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसके लिये नियुक्त चीनी प्रतिनिधि मण्डलके साम्यवादी सदस्य टुंग पी वूने रवाना होनेके पूर्व यह चेतावनी दी है कि चीनमें जापानियोंकी पराजयके पूर्व ही गृहयुद्धका खतरा उपस्थित हो गया है। हम सभी संयुक्त सरकारकी स्थापना चाहते हैं, जिसके बिना चीनमें शान्ति और स्वतन्त्रता दोनों दुर्लभ है।

स्पेनिश सरकारका निश्चय

स्पेनिस सरकारने इस निर्णयकी घोषणा की है कि किसी किस्मके जर्मन वायुयानको स्पेनके किसी भागमें उतरनेकी सुविधा नहीं दी जा सकती। इस निश्चयने जर्मनी और स्पेनकी मैत्रीके अन्तिम धागेको विच्छिन्न कर दिया है।

रूसी मांग नामंजूर

अमेरिकाके परराष्ट्र विभागकी ओरसे घोषणा की गयी है कि अमेरिकन सरकारने सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसमें पोलैण्डकी लुब्लिन सरकारकी प्रतिनिधित्वसम्बन्धी दूसरी रूसी मांगको नामंजूर कर दिया है।

उधार पट्टा कानूनका अवधि बढ़ी

तृतीय उधार-पट्टा कानूनपर हस्ताक्षर करते हुए अमेरिकाके नये प्रेसीडेण्ट ट्रूमैनने आश्वासन दिया है कि उधार-पट्टा कानून उस समय तक जीवित रहेगा जब तक जर्मनी और जापान बिना शर्त आत्मसमर्पण नहीं कर देंगे।

वान पेपेन गिरफ्तार

पेरिससे सरकारी तौरपर यह घोषणा की गयी है कि प्रमुख जर्मन कूटनीतिज्ञ वान पेपेन गत ११ अप्रेलको रूर अंचलमें अमेरिकन छतरी सेना द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया। वान पेपेनकी गिरफ्तारीके पूर्व उसका पुत्र कैप्टेन वान पेपेन गिरफ्तार हुआ जिसने अमेरिकन सैनिकोंको अपने पिताके गुप्त वासस्थानकी सूचना दी।

इंगलैंडमें भीषण विस्फोट

लन्दनके एक समाचारमें कहा गया है कि गत रविवारको सवेरे एक भीषण धड़ाका हुआ जिससे हेस्टिंग्सका दक्षिणी तट और इसका अड़ोस-पड़ोस बिलकुल हिल उठा। विस्फोटका कारण अज्ञात है। खिड़कियां टकराने लगीं और मकानात हिलने लगे। कहा जाता है कि अबतक युद्धकालकी अवधिमें इतना जोरदार विस्फोट कभी नहीं हुआ था।

टोकियोपर भीषण गोलाबारी

जापानी समाचार समितिने ऐलान किया है कि टोकियोपर भीषण गोलाबारीके कारण विदेशी राजनीतिज्ञोंने राजधानी छोड़कर कैरुई जावोको अपना निवासस्थान बनाया है।

फ्रिस्कोसम्मेलनमें रूसी प्रतिनिधि

सोवियट रूसने भावी सैन फ्रैन्सिस्को कानफरेंसके लिये मो० मोलोटोवके अतिरिक्त केन्द्रीय-सोवियटके चेयरमैन एम० कुजनट्सोव और स्टेट सोसायटी तथा होम ऐफेयर्सके पीपुल्स कमिश्नर एम० लेवेन्टलेवको अपना प्रतिनिधि नामजद किया है।

आयरलैंड और फ्रिस्को सम्मेलन

आयरलैंडकी सरकारने यह स्पष्टीकरण किया है कि अमेरिकाके परराष्ट्र सचिव मि० स्टेटीनियसने सैनफ्रैंसिस्को कानफरेंसमें पर्यवेक्षकोंके भेजनेकी अर्जी देनेवाले जिन तटस्थ राष्ट्रोंका हवाला दिया है, उनमें आयरलैंड नहीं है।

मेज़रिङ्ग टेप

स्पिरिट लेवल

जौन रैबोन एन्ड सन्स लि०

बरमिंघम

द्वारा प्रस्तुत

मेटलिक टेप	बाक्स वुड रूल
स्प्रिंग रूल और	स्टील रूल, स्टील
बगैर जंग स्टील टेप	टेप, स्पिरिट लेवल

मार्टिन एन्ड कं०

मेटल एन्ड सिमेण्ट सेल्स डिपार्टमेंट

कलकत्ता * नयी दिल्ली * लाहौर

दि बैंक आफ इण्डस्ट्रीज लिमिटेड

(सन् १९३४ में स्थापित)

२८ स्ट्रैण्ड रोड

फोन कलकत्ता ५८८३

राष्ट्रीय शिल्प और वाणिज्य की उन्नति के मूलमें देश के जनसाधारण का अर्थनैतिक सहयोग और सहानुभूति चाहिये। इसी सहयोग के लिये

—दि बैं क आ फ इण्ड स्ट्री ज लि मि टे ड—

सब प्रकारके बैंकिंग कारबार किये जाते हैं

आपकी किस्मतमें क्या लिखा है ?

अगर आप एक सालके अन्दर पेश आने वाले अच्छे बुरे हालातोंका समय पहले जानना चाहते हैं तो आज ही हमको सिर्फ एक पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूलका नाम लिख कर भेज दी जये। बस फिर हम ज्योतिष विद्याके हिसाबके आपके आनेवाले १२ मासका नफा नुकसान, किस तिजारतमें फायदा होगा किस तारीख कहां जाना ... कब मिलेगा, मुलाजमतमें तरक्की, तबादला, तनज्जुली, औरत और औलादका सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूरका सफर, मुकदमा और इम्तिहानमें सफलता, सगाई, शादी, जमीन व जायदादका सुख, किसी से नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारणसे धनका मिलना। सारांश तारीख कार्डसे लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातोंका खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आनेमें वी० पी०पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथमें बदकिस्मतीको खुश किस्मतीमें बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आने वाली मुश्किलोंको दूर किया जाय। सिर्फ एक बार की परीक्षा आपको बतला देगी कि हम ज्योतिष विद्याके कितने जानकार हैं। गलत साबित होनेपर कीमत वापिस

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम (V. C.) जालन्धर सिटी।

दरिद्रसे धनवान और धनवानसे धनकुबेर बननेका स्वप्न कौन नहीं देखता ?

इसके लिये ज्ञान और व्यक्तित्वकी परमावश्यकता है। इन्हींमें मनुष्य और उसके जीवनकी सफलता सन्निहित है। अतः आपके लिये यह बराबर स्मरण रखना अनिवार्य है कि ज्ञानका संबंध मस्तिष्कसे और व्यक्तित्वका सम्बन्ध केशोंसे है। इसलिये एक साथ ज्ञान और व्यक्तित्व प्राप्त करने के लिए—

डाबर आंवला केश तेल

(मनोरम गन्धयुक्त केश उपादान)

का

अपने नित्य व्यवहार की आवश्यक वस्तुओंमें स्थान दीजिये

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लिमिटेड, कलकत्ता

शाखायें : १-देवघर (बिहार), २-हाथरस (यू०पी०), ३-नागपुर (सो०पी०)

लिलि ब्रान्ड बार्ली

LILY BRAND BARLEY

FOR INFANTS & INVALIDS

THE LILY BISCUIT CO.

विशुद्धता और अच्छी कालिटी के कारण अस्पतालों में और सेना द्वारा व्यवहार किया जाता है। चिकित्सक गण इसकी सिफारिश करते हैं

बम्बई :: लिलि बिस्कुट कं० :: कलकत्ता

...किशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, ७४।१४, सम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तामें

...र हित बस जिनक मनमाहीं ।
...तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

...यागपत्रकी धमकी

——:*:——

लार्ड वावेलकी लन्दन यात्राके सम्बन्धमें ...तरहकी कल्पनाएं, अटकलबाजियां ...आशंकाएं प्रकट की जा चुकी हैं। ऐसा ... नहीं जाता जिस दिन समाचार

काम लेंगे। वे जानते हैं कि कांग्रेसका प्रभाव रहते हुए भारतमें अपनी साम्राज्यवादी चालोंको सफल बनानेमें जबर्दस्त ताकतसे टक्कर लेना पड़ेगा। अतः चर्चिल कभी कोई काम न करेंगे जो कांग्रेसका प्रभाव और प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला हो। लार्ड वावेल प्रगतिशील राजनीतिक गुटके हों या उदार वीर सैनिक मनोवृत्तिके हों, मि० चर्चिलके आगे उनकी नहीं चल सकती। व्यक्ति और व्यक्तित्वका प्रश्न व्यक्ति और व्यक्तित्वके बीचमें होता है। किन्तु जब सवाल व्यक्ति और राष्ट्रके बीचका होता है तब बड़ेसे बड़े व्यक्तिका बलिदान हो जाया करता है। आज मि० चर्चिलके सामने प्रश्न लार्ड वावेल के व्यक्तित्व और भारतके स्वार्थका नहीं है। ...के सामने तो ब्रिटिश साम्राज्य और

भारतका हित उतना ही हो सकता है जितने से ब्रिटेनके हितको कोई क्षति न पहुंचेगी। जो इससे अधिककी आशा रखते हैं वे दो गुटके व्यक्ति हैं। उनमेंसे एक तो वे हैं जो अति साधु स्वभावके आशावादी हैं। दूसरे वे हैं जो यह समझते हैं कि "कोउ नृप होहि हमें का हानि" यदि उनका स्वार्थ पूरा होता रहे। देशके हितके लिये ये दोनों तरहके व्यक्ति, अवांछनीय है। किन्तु जो यह समझते हैं कि लार्ड वावेल जैसे व्यक्ति तो आते जाते रहेंगे ही, ब्रिटिश शासनरथ भारतकी छातीपर अन्धाधुन्ध तबतक चलता रहेगा जबतक उसमें अपने पैरोंपर खड़े होनेकी ताकत न होगी, उनको चाहिये कि वे इन अगल-बगलके गली-कूचोंको छोड़ कर गांधीजीके बताये राजमार्गका अवलम्बन करें।

में सबसे बड़ी शक्ति न्याय है। उसी जबर्दस्त ताकतके सामने हम अपना शीश नत करेंगे अन्य किसीके सामने नहीं।" कितने सुन्दर शब्द हैं। अबतक हम बराबर रूजवेल्ट और चर्चिलके मुंहसे सुन्दरसे सुन्दर शब्द सुनते आये हैं। प्रेसीडेण्ट ट्रूमैनके इन शब्दोंकी सुन्दरता यदि उनसे अधिक नहीं तो कम भी नहीं है। पर बात तो यह है कि हमारी भूख शब्दोंसे शान्त नहीं होती। शब्दोंके अतिरिक्त कुछ ठोस भी होना चाहिये। इस तरह के शब्द नये नहीं है। प्रत्येक देश और काल के नीति, समाज और धर्मके शास्त्र ग्रन्थ इससे अधिक सुन्दर शब्दोंसे भरे पूरे हैं। फिर भी प्रत्येक देश और कालमें इन सुन्दर शब्दोंकी आड़में ही अन्यायको न्याय, अनीतिको नीति और अधर्मको धर्म, कार्यतः

मधुसंचय

यह है हिटलर !

हिटलरने मुसोलिनीको लिखा है: "...लोगोंके अस्तित्वका युद्ध पराकाष्ठाकी ...पर पहुंच गया है। विराट युद्ध सामग्री ...बोल्शेविज्मने चढ़ाई की है। उसके

बर्लिनका ब्राण्डेनबर्ग प्रवेश द्वार

...सैनिक जर्मनीमें विनाशकारी शक्ति-...मिल जानेके उद्देश्यसे सर्वस्वकी बाजी ...रहे हैं ताकि यूरोपमें जितना जल्द हो ...अराजकता और विश्वंखलताकी स्थिति ...कर दें। मौतसे लोहा लेनेकी भावना ...जर्मन एवं इसी तरहकी भावनासे ...अन्य सब लोग मिलकर इस ...और सांघातिक आक्रमणको ...अब भी क्षमता रखते हैं,—युद्ध ...ही भयङ्कर और कठोर क्यों न हो वे ...ऐतिहासिक क्षणमें, जब सदियोंके लिये ...भाग्यका निपटारा हो रहा है,अपनी ...और बेजोड़ बहादुरीसे युद्धकी ...देंगे।"

सूर्यकी देह वृद्धि

...तक हम जिन्हें देवता मान कर ...करते आ रहे हैं वही एक दिन दानव ...हम सबोंका (कल्याण(कर देंगे यह ...मालूम था। किन्तु अब यह बात ...रूपसे विदित हो चुकी है कि हमारे ...सूर्यका शरीर बुरी तरह बढ़ रहा है

और आजके ५ अरब साल बाद उनका शरीर इस बुरी तरह बढ़ जायगा कि यह साराका सारा विश्व उनसे ढक जायगा।

डा० जार्ज ए० गैमीने बताया है कि सूर्यका तापमान इस समय ४ करोड़ डिग्री सेंटीग्रेड है और आन्तरिक अग्निके कारण सूर्यका वाष्पीय (गैस पूरित) शरीर आगेकी ओर विकसित होता जा रहा है। प्रोफेसर महोदयका कहना है कि सूर्यके केन्द्रका तापमान करीब ४ करोड़ डिग्री है लेकिन सतह पर केवल ६००० डिग्री है। इस दृष्टिसे सूर्यका आकार प्रकार बढ़नेमें करीब पांच अरब वर्ष लग जायेंगे और तबतक यह इतना विशाल हो जायगा कि पृथ्वीको ही ढक लेगा।

बर्लिनमें रहेंगे

हिटलर बर्लिनमें हैं—इस संवादको गत सोमवारको फिर ब्राडकास्ट करते हुए जर्मन रेडियोके प्रधान राजनीतिक भाष्यकार कैप्टेन क्रीकने कहा कि सम्पूर्ण जर्मन जाति अपने फुहररको श्रद्धा और सम्मानकी दृष्टिसे देखती है। बर्लिनकी मुख्य युद्ध पंक्तिमें उनका सदर मुकाम है। वे शहरके बीचोबीच वहीं पर हैं जहां रूसियोंकी तोपें आग उगल रही हैं। लक्ष-लक्ष जर्मनोंकी दृष्टि बर्लिनपर है और उनमें सैनिक तथा राजनेता अडोल्फ हिटलरके उदाहरणसे नवजीवन और साहसका संचार हो रहा है। फुहररने स्वयं इस अवसरपर राजधानीमें रहनेका निश्चय किया है।

मित्र सेनाके प्रधान जेनरल आइजेन हावर अधिकृत दुर्ग ज्यूलिकसे प्रस्थान कर रहे हैं। यह दुर्ग रूर नदीके ऊपर है।

दो मित्र युद्ध संवाददाता गोयबेल्सके मकान के सामने जर्मनोंसे बातें कर रहे हैं

Regd No. C. 2229

विदित हुआ है कि पं० बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित अमर शहीद फुलेना-प्रसाद नामक पत्रिकाको बिहारके गवर्नरने जब्त कर लिया है।

सरकारको जिन्दोंसे भय था ही अब तो वह मरोंसे भी डरने लगी।

* * * *

पटनाके सरकारी दफ्तरमें एक साहब इसलिये अपनी श्रीमतीजीकी साड़ी पहनकर आये कि उनके पास धोतियां नहीं रहीं।

किसी दिन जोशमें आकर स्वयं बीमार होनेकी अवस्थामें वे कहीं अपनी श्रीमतीजी को ही दफ्तर न भेज दें।

* * * *

ब्रिटेनके उपचुनावोंसे ज्ञात होता है कि स्काटलैंड इङ्गलैंडके विरुद्ध है।

क्या ब्रिटेनमें भी मि० जिन्नाकी हवा पहुंच गयी।

* * * *

वेस्ट मिनस्टरमें काम करनेवाले महोदय यह अनुभव नहीं करते कि स्काटलैंड किस प्रकार इंगलैण्डसे निराश है।

—सर जानबोयद

बेचारा अनुभव न करनेकी पुरानी आदत से लाचार है। बुड्ढा तोता कहीं: राम राम पढ़ता है।

* * * *

एक साहबका दावा है कि साम्राज्यके नाशसे ही असली शान्ति स्थापित होगी।

अगर आपकी ही बात ठीक हो तो फिर मि० चर्चिलसे कह दिया जाय कि इस बुढ़ापे में इतनी दौड़ धूप बेकार है।

* * * *

भारतीय वाणिज्य शिष्ट मंडलका कहना है कि न्यूजीलैण्ड भारतको दूधकी बुकनी अधिक मात्रामें देगा।

सम्भवतः भारतके गोपालने कलियुगमें न्यूजीलैण्डमें जन्म ले लिया है।

* * * *

इस दिन केन्द्रीय असेम्बलीमें बताया गया कि अन्धेरा हो जानेपर दिल्ली नौज-वान स्त्रियोंके लिये बहुत खतरनाक हो जाती है।

मधुर अथका द्योतक है। इसी तरह पौने आठ, उनचालीस, छियासठ, निनानवे, अड़-तालीस, नौ-दो ग्यारह, नौ न छः-तेरह, चार सौ चौबीस, दो और छः, नौ, निनानवे आदिकी संख्या असंख्यरूपसे महावरेका रूप धारण कर चुकी है!

...लसिम भाड़ ... करें रही है!"

(५) "सत्तू साना जा चुका है मालिक।"

ऐसे गद्यकाव्य लखनऊमें अधिक पाये जाते हैं।

कनखी चलानेमें ही कला नहीं है। समझनेमें भी आर्टबाजी चाहिये! एक तरहकी नहीं होती। एक तरहकी तो एक तरहका अर्थ भी नहीं रखती-

(१) बाईं आंखको इस तरह कि दोनों पलकें आपसमें सटकर, ...का प्रयत्न करें। इसका अर्थ हुआ—... है न?", "तुम्हें उज्र तो नहीं?"

(२) अब उसी चीजको जरा और अर्थात् दोनों पलकें सटाकर नम्बर ... अपेक्षा और जोरसे दाबिये जिससे सिकुड़कर गोलगप्पा बन जाये तो होगा—"चलो न!" "अइहो मोरि ... भरे गगरी" आदि!

(३) नम्बर दोको और भी गाढ़ा ... इये जिससे गोलप्पापा और भी फूल जाये ... चेहरा खराब हो पड़े अर्थात् आधे ... दोनों ओठ सिकुड़ जायें और आंखका ... कोर काफी गड्ढा हो जाये! माने हुआ आप किसीको चिढ़ानेके लिये किसीसे ... रहे हैं कि रहे एक बार फिर चौंडेसे!

(४) आंखके बीचकी बरौनी बीचोंबीच से जरासा फड़क उठे! —समझना ... कि आप किसीको टटोल रहे हैं। स्थितिमें यदि नयनोंकी भाषासे उक्त ... या पाठिकाके मुखपर हंसीकी हल्की रेखा नाच जाये तो समझना चाहिये पौ बारह! मैदान बिलकुल साफ है!

(क) समय-समयपर इसका अर्थ ... देख लेगा तो!" "कोई आ रहा है!" ... सुन लेगा या सुन रहा है!" आदि भी है!

(ख) 'शी...' और 'चुप!' भी!

कनखियोंके अर्थका यदि एक ... बन जाये तो पुस्तक निस्सन्देह मोटी और प्रकाशक तथा लेखकको लोकर... मुक्त हृदयसे पुरस्कृत करेगा।

—...

वचनामृत

हैं अमेरिकाके हुए "सत्यपुरुष" सम्राट।
फिर भी खटमलसे भरा है दुनियाका खाट॥

* * *

रामचन्द्र वर्मा इधर उधर किशोरीदास।
हिन्दीका झोंटा पकड़ खींच रहे हैं पास॥

* * *

जिन्नाके खतसे हुए वावेल विफल प्रयास।
सचमुच ऐसे नरनके लिये चाहिये घास॥

* * *

नाजी मरतेजा रहे दांत निपोर निपोर।
लिये लुकाठी हाथ हैं स्टालिन कर्म कठोर॥

* * *

सर फिरोज हिमसेल्फ हैं रेंक रहे चुपचाप।
"हमें भरोसा आपका ही है माई बाप॥"

—समदर्शी

इसके लिये किसे धन्यवाद दिया जाय ब्रिटेनको या अमरीकाको।

* * * *

जलेबी हिन्दुस्वानियोंको और इटालि-यनोंको निकट सम्पर्कमें लानेमें सफल हुई है।

—श्री दुर्गादास

श्री भूलाभाईको चाहिये कि वर्किंग कम्पनीके सदस्योंके लिये एक टोकरा जलेबी भेजकर प्रयोग करें कि जलेबीका जाल कहां तक सफल होता है।

* * * *

जहां कहीं भी राजबन्दी कांग्रेस नेताओं के चित्र लेनेका प्रयास किया जाता है पुलिस वाले भारी अड़चनें डालनेका प्रयत्न करते हैं।

शायद उन्हें यह स्वर्धा हो कि उन बेचारोंकी कोई तसवीर क्यों नहीं खींचता।

—रमतेराम

अनोखा संस्करण

व्यवहारमें आनेवाली खाने-पीनेकी बहुत-सी चीजें भी मुहावरा बनकर भाषाके अन्दर अपना घोसला बना चुकी हैं।

"तुम्हारी आंखें हैं, या बटन?"

"ले, घुघनी!"

"नोच घास!"

"खा, भंटा!"

"चढ़ा खिचड़ी!"

"अब क्या चाहिये, पपालू?"

"दूध और खटाई!"

इसी तरह चुकन्दर, टमाटर, नेनुआ, सेम, केला, पपीता, बेर, कटहल प्याज आदि भी मुहावरोंके व्यवहारमें लाये जाते हैं।

...र हित बस जिनके मनमाहीं।
...तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

...यागपत्रकी धमकी

—:*:—

...लार्ड वावेलकी लन्दन यात्राके सम्बन्धमें ... तरहकी कल्पनाएं, अटकलवाजियां ... आशाएं प्रकट की जा चुकी हैं। ऐसा ... दिन नहीं जाता जिस दिन समाचार ... वावेल मिशनके सम्बन्धमें कोई नयी ... बात न रहती हो। किन्तु लन्दनके ... क्रानिकलके दिल्ली स्थित संवाददाता ... स्टुअर्ट गेल्डरने सबसे अधिक दिलचस्प ...का उद्घाटन किया है। मि० स्टुअर्ट ...रका पत्रकार जगतमें अपना विशिष्ट ...न है और राजनीति तथा सरकारी ...में सर्वत्र आपका अबाध प्रवेश है। ... बड़े बड़े आदमियोंसे मिलकर कुछ ... निकालनेकी उत्सुकता पत्र संवाददाता ... स्वाभाविक महत्वाकांक्षा होती है तो ...बड़े राजनेता भी इस तरहके संवाद-...दाताओंके सम्पर्कमें आनेके लिये भीतर ही ... लालायित रहते हैं जिनकी अन्तर्राष्ट्रीय ...ति है। अतः लार्ड वावेलकी लन्दन ...के सम्बन्धमें प्रकाशित अबतकके तमाम ...वोंसे अधिक महत्व मि० स्टुअर्ट गेल्डर ...स वक्तव्यको दिया जायेगा कि "लार्ड ... मि० चर्चिल और उनके मंत्रिमंडलको ...नेके लिये लन्दन गये हैं कि यदि कांग्रेस ... कमेटीके सदस्योंको मुक्त करने और ...र्तालाप आरम्भ करके गतिरोधको ... लिये आवश्यक कार्यवाही करनेका ...कार उनको न दिया जायेगा तो वे ...रायके पद पर बने रहनेको तैयार ...हैं।"

...वस्तुस्थितिको देखनेसे यह बात तो स्पष्ट ... लार्ड वावेल किसी साधारण कामके ...लन्दन नहीं गये। उनका इतने दिनों ...वहां बना रहना भी इस सन्देहको पुष्ट ...है कि ब्रिटिश हाई कमाण्ड और लार्ड ...के बीचमें मतभेद अवश्य है। यह मत-...शायद मिटता नहीं दिखायी दे रहा होगा ...लार्ड वावेलके लौटनेमें विलम्ब हो रहा ...यह भी सम्भव है कि ब्रिटिश सरकार ...नेकी गुंजाइश न समझ युद्ध स्थितिकी ...ताका बहाकर लार्ड वावेलको अन्यत्र ...था उनके स्थानपर नये वायसरायकी ...के प्रश्नपर विचार कर रही हो। यह ...इस सम्भव समर्थित हैं। किन्तु इस ...सम्भावना कम जान पड़ती है कि ...चिल लार्ड वावेलके पदत्यागकी ...नी अपनी नीतिसे टससे मस होंगे। ... यदि बने रहे,—हमारा मतलब ...की चुनावके बाद भी उनके राजनीतिक ...रहे,—तो भारतमें सब तरहसे कांग्रेसके ... और महत्वको धूलमें मिलानेको, यदि ...सका हो तो हिंसात्मक उपायोंसे भी, काम लेंगे। वे जानते हैं कि कांग्रेसका प्रभाव रहते हुए भारतमें अपनी साम्राज्यवादी चालोंको सफल बनानेमें जबर्दस्त ताकतसे टक्कर लेना पड़ेगा। अतः चर्चिल कभी कोई काम न करेंगे जो कांग्रेसका प्रभाव और प्रतिष्ठा बढ़ानेवाला हो। लार्ड वावेल प्रगतिशील राजनीतिक गुटके हों या उदार वीर सैनिक मनोवृत्तिके हों, मि० चर्चिलके आगे उनकी नहीं चल सकती। व्यक्ति और व्यक्तित्वका प्रश्न व्यक्ति और व्यक्तित्वके बीचमें होता है। किन्तु जब सवाल व्यक्ति और राष्ट्रके बीचका होता है तब बड़ेसे बड़े व्यक्तिका बलिदान हो जाया करता है। आज मि० चर्चिलके सामने प्रश्न लार्ड वावेल के व्यक्तित्व और भारतके स्वार्थका नहीं है। उनके सामने तो ब्रिटिश साम्राज्य और भारतके स्वार्थोंका प्रश्न है। अतः यदि लार्ड वावेल भारतमें ब्रिटिश साम्राज्यके हितकी दृष्टिसे इण्डिया आफिस द्वारा निर्धारित और संचालित नीतिके अनुसार काम करनेको प्रस्तुत न होंगे तो मि० चर्चिल और मि० एमरी उनका त्यागपत्र स्वीकार करनेमें जरा भी द्विधा न करेंगे। मि० एमरी और मि० चर्चिल 'दिया तले अंधेरा' के प्रतीक हैं। आज सम्पूर्ण संसारके भीतर जो विचार-संक्रान्ति उपस्थित है, वह इनको नहीं सूझती। क्योंकि इनकी दृष्टि तो लक्ष्यभेदीकी भांति अपने शिकारपर ही रहती है। अतः इनको अपने स्वार्थके सिवा और कुछ नहीं सूझता। ब्रिटिश राष्ट्र अभी इनकी आंखोंसे देखता है और इनके विवेक-ज्ञानसे सोचता और समझता है। जबतक इस तरह की स्थिति है तबतक ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंसे किसी तरहकी आशा नहीं की जा सकती। और जहांतक भारतका सवाल है उसे यह न भूल जाना चाहिये कि एक नहीं, दर्जनों लार्ड वावेलके त्यागपत्रोंसे भारतकी स्थितिमें तबतक अन्तर नहीं पड़ सकता जबतक लड़कर स्वतन्त्रता ले लेनेकी शक्ति भारत अर्जन नहीं कर लेता। शक्ति-अर्जन कोरी इच्छासे नहीं हो सकता। उसके लिये साधना और तपस्या दोनोंकी आवश्यकता है। त्याग और बलिदानकी भावना भी चाहिये। गांधीजीका रचनात्मक कार्यक्रम स्वतंत्रता प्राप्तिके लिये शक्ति अर्जनका अचूक नुसखा है। जो देशवासी सचमुच चाहते हैं परतंत्रताकी शृंखलाको काट कर स्वतंत्रताके विजयमालसे भारतमाताको सुशोभित करना उनको वैधानिक कार्यक्रमोंकी आकर्षक माया-मरीचिकासे दूर रहकर गांधीजीके मार्गका अनुसरण करना चाहिये। गांधीजीका कार्यक्रम है देशकी स्वतन्त्रताकी लड़ाईके लिये देशकी सम्पूर्ण शक्तियोंको एक केन्द्रीय नियन्त्रणमें संग्रथित कर लेना अर्थात् Total mobilization. जिस दिन हम देशको इस स्थितिमें पहुंचा देंगे उसी दिन स्वतन्त्रता हमारी मुट्ठीमें होकर ही रहेगी। इस वैधानिकतासे हमारी स्थितिमें कोई अन्तर पड़ेगा यह समझनेवाले ब्रिटिश स्वभाव और कूटनीतिसे कोरे हैं। ब्रिटिश साम्राज्यकी रक्षाके लिये ब्रिटेनको आज भारतकी जितनी आवश्यकता है उतनी शायद उसके इतिहासमें और कभी नहीं थी। अतः ब्रिटिश सरकारकी बागडोर चाहे जिस दलके हाथमें आये भारतका हित उतना ही हो सकता है जितनेसे ब्रिटेनके हितको कोई क्षति न पहुंचेगी। जो इससे अधिककी आशा रखते हैं वे दो गुटके व्यक्ति हैं। उनमेंसे एक तो वे हैं जो अति साधु स्वभावके आशावादी हैं। दूसरे वे हैं जो यह समझते हैं कि "कोऊ नृप होहि हमें का हानि" यदि उनका स्वार्थ पूरा होता रहे। देशके हितके लिये ये दोनों तरहके व्यक्ति, अवांछनीय है। किन्तु जो यह समझते हैं कि लार्ड वावेल जैसे व्यक्ति तो आते जाते रहेंगे ही, ब्रिटिश शासनरथ भारतकी छातीपर अन्धाधुन्ध तबतक चलता रहेगा जबतक उसमें अपने पैरोंपर खड़े होनेकी ताकत न होगी, उनको चाहिये कि वे इन अगल-बगलके गली-कूचोंको छोड़ कर गांधीजीके बताये राजमार्गका अवलम्बन करें। देशका हित इसीमें है।

विश्वशांति चर्चा—

याल्टा सम्मेलनके निश्चयानुसार सैनफ्रैंसिस्कोमें २५ अप्रेलको विश्वशान्ति सुरक्षा सम्मेलनका अधिवेशन आरम्भ हो गया। पोलैंडको छोड़कर बाकी सभी आमंत्रित देशोंके प्रतिनिधि प्रायः १३०० की संख्यामें सैन फ्रैंसिस्को पहुंचे हैं, बड़ी-बड़ी आशाओंके साथ। सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए संयुक्तराष्ट्र अमेरिकाके राष्ट्र सचिव मि० एडवर्ड स्टेटीनियसने कहा कि विश्वशान्तिका स्थायी महल खड़ा करनेके उद्देश्यमें अमेरिकाके निवासी अन्य राष्ट्रोंके साथ सुदृढ़ रूपसे बंधे हुए हैं" आगे चलकर आपने यह भी कहा कि संयुक्तराज्य अमेरिका युद्ध जीतनेवाले बड़े-बड़े राष्ट्रों एवं पराजयका सन्ताप और विनाश सहनेवाले छोटे-छोटे राष्ट्रोंसे भी बंधा हुआ है। मि० स्टेटीनियसके इस वक्तव्यपर टीका करनेकी शायद आवश्यकता नहीं है। बड़े-बड़े राष्ट्रोंके स्वार्थ छोटे-छोटे राष्ट्रोंके स्वार्थोंसे भिन्न हैं। अमेरिकाको दोनोंके स्वार्थोंका ध्यान रखना होगा। अतः यदि उसे छोटे राष्ट्रोंके प्रति बड़े राष्ट्रोंके स्वार्थोंके लिये कुछ अप्रिय कार्य करना पड़े तो छोटे राष्ट्र बुरा न मानें। क्योंकि अमेरिकाको दोनोंका साथ निभाना है। फिर युद्ध जीतनेमें जिसका हाथ है उसका मान तो सबको रखना ही चाहिये। यदि छोटे राष्ट्र इस कटु सत्यपर ध्यान न देंगे तो यह उनकी भूल होगी। प्रकृतिका नियम है कि छोटेको बड़ा हजम कर जाता है। बड़ी-बड़ी मछलियां छोटी मछलियोंको हजम कर जाती हैं। मि० स्टेटीनियसका यही संकेत है। यदि स्वेच्छासे वे इस नियमको मान लेंगे तो विश्वशान्ति कायम रखनेके लिये कानून ही पर्याप्त होगा। नहीं तो 'न्याय' के साथ दण्डका भी विधान है। सम्मेलनमें आये हुए प्रतिनिधियोंका स्वागत करते हुए राष्ट्रपति ट्रूमैनने वाशिंगटनसे जो वक्तव्य ब्राडकास्ट किया है उसमें उन्होंने कहा है कि "इस सम्मेलनका उद्देश्य शान्तिका सन्धिपत्र, जिस अर्थमें 'यह अबतक समझा जाता रहा है, तैयार करना नहीं है। हम यहां प्रदेशों, सीमाओं, नागरिकता और क्षतिपूर्तिके प्रश्नोंपर विचार करनेको एकत्र नहीं हुए हैं। सम्मेलन अपनी पूरी शक्ति और श्रम लगाकर शान्ति कायम रखनेके लिये एक वांछनीय संगठन बनायेगा। भूलोकमें सबसे बड़ी शक्ति न्याय है। उसी जबर्दस्त ताकतके सामने हम अपना शीश नत करेंगे अन्य किसीके सामने नहीं।" कितने सुन्दर शब्द हैं। अबतक हम बराबर रूजवेल्ट और चर्चिलके मुंहसे सुन्दरसे सुन्दर शब्द सुनते आये हैं। प्रेसीडेण्ट ट्रूमैनके इन शब्दोंकी सुन्दरता यदि उनसे अधिक नहीं तो कम भी नहीं है। पर बात तो यह है कि हमारी भूख शब्दोंसे शान्त नहीं होती। शब्दोंके अतिरिक्त कुछ ठोस भी होना चाहिये। इस तरहके शब्द नये नहीं है। प्रत्येक देश और कालके नीति, समाज और धर्मके शास्त्र ग्रन्थ इससे अधिक सुन्दर शब्दोंसे भरे पुरे हैं। फिर भी प्रत्येक देश और कालमें इन सुन्दर शब्दोंकी आडमें ही अन्यायको न्याय, अनीतिको नीति और अधर्मको धर्म, कार्यतः, दिखाया गया है। हमेशासे ही हम यह देखते आ रहे हैं कि "सबै सहायक सबल के, कोऊ न निबल सहाय।" और हमेशासे हम यह भी देखते आ रहे हैं कि सबलने दुर्बलको सताया है। दुर्बलको न्यायके नामपर सबलकी शक्तिके आगे अपना मान संभ्रम, हित-स्वार्थ सब कुछकी तिलाञ्जलि देनी पड़ी है। आज भी यही हो रहा है और अबतक ऐसा कोई संकेत नहीं मिलता जिससे हम यह समझ सकें कि यह सम्मेलन इसका अपवाद होगा। आज भी समाजकी यही व्यवस्था तो है कि एक तरफ कोटि-कोटि मनुष्य दाने-दानेके लिये बिलबिला रहे हैं, टुकड़ा भर वस्त्रके लिये तृषित नेत्रोंसे सजधजकर निकलनेवाले चन्द भाग्यवानोंकी ओर टकटकी लगाये हैं। आज भी मनुष्यका मनुष्य द्वारा, राष्ट्रका राष्ट्र द्वारा शोषण हो रहा है और इसी व्यवस्थाको कायम रखनेके लिये मित्रराष्ट्रोंके नेता कृतसंकल्प देखे जाते हैं। एटलाण्टिक चार्टर और भारतके सम्बन्धमें मि० चर्चिलका वक्तव्य, जापानियोंके चंगुलसे मुक्त होनेके बाद डच इस्ट इण्डीजके सम्बन्धमें हालैण्डकी महारानी विलहेलमिनाका वक्तव्य, सीरिया और लेबनानके सम्बंधमें जेनरल दिगालका वक्तव्य, मध्यपूर्वके देशोंके सम्बन्धमें ब्रिटेनकी नीति, जर्मनी, इटाली और अन्य पराजित राष्ट्रोंके सम्बन्धमें त्रिनायकोंकी घोषित नीतिके बने रहते क्या कभी प्रेसिडेंट ट्रूमैनकी यह इच्छा पूरी हो सकती है कि "हम यह निश्चय कर लें कि दूसरा युद्ध असम्भव है। हमें अपने देशके नौनिहालोंका बलिदान सिर्फ उन पागलोंको रोकनेके लिये बन्द करना चाहिये जो प्रति युगमें संसारपर विजय पानेके लिये मनसूबे बनाया करते हैं।" जब तक आधेसे अधिक संसार पर दो तीन छोटी छोटी शक्तियां अधिकार जमाये बैठी रहेंगी तबतक न दूसरा युद्ध असम्भव होगा और न हर युगमें पागलोंका पागलपन बन्द होगा। यदि विवेकशील और न्यायप्रिय व्यक्ति पागलपनसे बाज नहीं आ सकते तो पागल तो पागल ही ठहरे। उनका तो धर्म ही यह है। हम तो संसारमें बराबर यही होता देख रहे हैं कि अधिकांश व्यक्ति स्थितियोंके शिकार बनकर पागल हो गये हैं और उन स्थितियोंको उत्पन्न करनेकी जिम्मेवारी बराबर उनकी देखी गयी है जो दुनियाके सामने न्याय और समानता, शान्ति

और नीतिका पर्दा डालकर आते हैं और इस पर्देके भीतर घृणितसे घृणित व्यापार, अनाचार और अत्याचार करनेमें जरा भी संकोच नहीं करते। यह स्थिति जबतक रहेगी तबतक शान्ति और न्यायकी चर्चा व्यर्थ है।

सचाईकी कसौटी—

यूरोपका युद्ध समाप्त-प्राय है। नाजियों द्वारा ध्वस्त किये गये तथा मित्र सेनाओं द्वारा मुक्त किये गये यूरोपके छोटे-बड़े देशोंको अटलाण्टिक चार्टरकी व्यवस्थाके अनुसार, तीन महानके संरक्षणमें स्वतंत्रता प्राप्त होगी। मित्र सेनाओं द्वारा विजित देशोंको एक अवधि तक तीन महानके नियंत्रणमें रहना होगा। इसके बाद इस अवधि के भीतर जो जिस क्रमसे परीक्षामें उत्तीर्ण होता जायेगा उसे उसी क्रमसे संरक्षित स्वतन्त्रता मिलती जायेगी। पर एशियाकी स्थिति बिलकुल भिन्न है। न तो एशियाके लिये कोई चार्टर है और न ट्रस्टीके रूपमें बैठे हुए निरंकुश शासक अपना शासन ढीला करनेका ही कोई लक्षण दिखला रहे हैं। ऐसी स्थितिमें शान्तिकी कल्पना कैसे की जा सकती है। तभी तो श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडितको यह कहना पड़ा कि "मित्र राष्ट्रोंकी घोषणाकी कसौटीका स्थल एशिया है। शान्तिकी कोई योजना सफल नहीं हो सकती, यदि उसका आधार इस नवीन मनोभाव और संस्कारसे अनुप्राणित नहीं है कि सब देश और राष्ट्र एक समान हैं। धैर्य की एक सीमा होती है।" किसीके आश्वासनपर विश्वास तभीतक किया जा सकता है जबतक उसकी नीयतपर अविश्वास न हो। जहांतक भारत और ब्रिटिश सरकारका सम्बन्ध है, कोई भी ईमानदार भारतीय आज ब्रिटेनके आश्वासनको टालमटूलसे अधिक माननेको तैयार नहीं है। अतः इस वचन और आश्वासनपर अब जरा भी विश्वास नहीं रहा कि भविष्यमें सब ठीक हो जायेगा। अस्तु, श्रीमती पंडितका यह कहना बिलकुल सही है कि "धैर्यकी पराकाष्ठा हो गयी। स्वतंत्रता आज और अभी चाहिये।" इतना ही नहीं उन्होंने साम्राज्यवादियोंको सही चेतावनी दी है कि "पश्चिमी राष्ट्रोंके अधिकृत स्थानोंपर जापानियोंका अधिकार हो जानेसे श्वेत जातिकी [illegible]का ढकोसला अब नहीं चल सकता। जापानियोंके चंगुलसे मुक्त करनेके बाद यदि इन उपनिवेशोंपर फिर साम्राज्यवादी नियंत्रणकी कोई प्रणाली लादनेकी कोशिश की गयी तो उसे कभी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता और यह प्रश्न अनिवार्य रूपसे संघर्षकी सृष्टि करेगा।" लक्षणोंसे यह स्पष्ट दिखायी दे रहा है कि साम्राज्यवादी अपनी पूर्व स्थिति बनाये रखनेके लिये आतुर हैं और उनकी यह आतुरता ही तीसरे विश्वयुद्धका कारण बनेगी।

सोवियटका दावा—

प्रस्तावित विश्व सुरक्षा संगठनकी असेम्बलीमें तीन तीन वोट प्राप्त करनेकी मांग अमेरिका और रूस दोनोंने ही की थी। किन्तु बादमें अमेरिकाने अपनी मांग वापस ले ली पर रूसकी मांग अबतक बनी है और यह प्रतीत होता है कि ब्रिटेन और अमेरिकाके समर्थनसे उसकी यह मांग अन्य राष्ट्र भी मान लेंगे। सैनफ्रांसिस्कोमें पत्र प्रतिनिधियोंके बीचमें ब्रिटिश उप प्रधान मन्त्री मि० एटलीने कहा है कि विश्व सुरक्षा संगठनकी असेम्बलीमें तीन वोटोंकी रूसकी मांगका ब्रिटेन समर्थन करेगा। प्रस्ताव इस रूपमें है कि सोवियट यूनियन, श्वेत रूस और यूक्रेनके लिये पृथक-पृथक स्थान और वोट दिया जाये। इस सिलसिलेमें मि० एटलीने यह भी कहा है कि "शान्ति अविभाज्य है। उसे प्रादेशिक संगठनों और व्यवस्थाओंमें खण्ड-खण्ड नहीं किया जा सकता। हम यहां इस दावेके स[illegible] आये कि हम पूर्ण हैं बल्कि कठोर व्यवहारवादीकी हैसियतसे यहां आये हैं। अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा संगठनका रूप मात्र एक विश्व शास्त्रार्थ—सभाका न होना चाहिये। उसका स्वरूप तो कर्म करनेकी इच्छा रखनेवाली कौंसिलका होना चाहिये।" शायद इसीलिये मि० एटली उपनिवेशोंके सम्बन्धमें ट्रस्टी व्यवस्था कायम रखना चाहते हैं। अतएव यह स्वाभाविक है कि वे विश्व सुरक्षा कौंसिलको कर्म करनेकी इच्छा रखनेवाली संस्था बनाना चाहते हैं। अपनी ट्रस्टीशिप अनिच्छुक देशोंपर लादनेके लिये कर्म करनेकी आवश्यकता तो पड़ेगी ही। उस समय दूसरे बड़े देश उनकी इच्छाको कार्यमें परिणत करने देनेमें बाधक न हों ऐसी व्यवस्था आवश्यक है। इसीलिये कौंसिलमें रूसके तीन वोटोंकी मांगका उनको और उनके साथी अमेरिकाको भी समर्थन करनेके लिये बाध्य होना पड़ा हैं, इसलिये नहीं कि रूसकी मांगको उचित समझकर वे उसका समर्थन करते हैं। जो मार्ग अपने स्वार्थके लिये अनुकूल है, वह उचित हो या अनुचित, उसका समर्थन करना ही आजकलकी राजनीति है।

भारतके उद्योगधन्धे—

भावी औद्योगिक नीतिके सम्बन्धमें भारत सरकारने जो वक्तव्य दिया है वह अदूरदर्शिता और शरारतसे भरा है। भारतको उद्योगशील बनानेके सम्बन्धमें देशके सभी वर्ग चाहते हैं कि इस दिशामें बहुत बड़ा कदम उठानेकी आवश्यकता है। इस सम्बन्धमें विभिन्न योजनाएं हमारे सामने आ चुकी हैं। गांधीजीकी योजनाके अतिरिक्त अन्य सभी योजनाएं पूंजीवादी समाजके अस्तित्वका ध्यान रखकर बनायी गयी हैं। किन्तु एक बातपर सभी सहमत हैं कि कोई योजना बिना राष्ट्रीय सरकारके सफल नहीं हो सकती। संभवतः इसी सुझावसे प्रेरित होकर वर्तमान सरकारने भारतके औद्योगीकरणका समस्त उत्तरदायित्व अपने हाथोंमें रखनेका निश्चय किया है। एक तो इस सरकार पर जनताका विश्वास नहीं है उस पर भी यह विदेशी है। अतः समस्त उद्योग धन्धोंपर सरकारके नियन्त्रण रखनेके पीछे ब्रिटेनके हितोंके संरक्षणकी स्वार्थ-नीति है, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। यही कारण है कि श्री भूलाभाई देसाईने सरकारकी इस नीतिको शरारतभरी बताया है। यदि सरकारकी नीयत साफ होती और भारतके हितकी दृष्टिसे उसने इस योजनाको तैयार किया होता तो कोई कारण न था कि वह उस समय इसे प्रकाशमें क्यों न लाती। जब केन्द्रीय असेम्बलीका बजट अधिवेशन हो रहा था। उसे लोकमतका सामना करनेका साहस नहीं हुआ तभी असेम्बलीकी बैठक समाप्त हो जानेके बाद उसने अपनी विज्ञप्ति प्रकाशित की। इस तरह इस योजनाके अनुसार बहुतसे ऐसे काम, जिनके लिये तत्काल कानूनी स्वीकृति आवश्यक नहीं है, डी० आई० आर का सहारा लेकर बिना व्यवस्थापिकाका मत लिये ही आरम्भ कर दिये जायेंगे। श्री भूलाभाईने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि कुछ मामलोंमें तो सरकार अपने शासनाधिकारके बलसे ही काम करेगी। इस तरहके महत्वपूर्ण प्रश्नपर सरकारके ऐसी जल्दबाजी करनेका उद्देश्य इसके सिवा क्या हो सकता है कि वह यह सब केवल इस देशके हितके लिये नहीं बल्कि अपने सरके ऊपर बैठी रहनेवाली ब्रिटेनकी सरकारके हितके लिये कर रही है। ब्रिटेनके उदारदली पत्रोंने भी सरकारके इस कार्यकी कटु आलोचना की है। "मैञ्चेस्टर गार्जियन" भारत सरकारकी इस औद्योगिक नीतिपर अपने सम्पादकीय अग्रलेखमें कहता है कि "जो सरकार इतना अधिक अपने ऊपर ले लेती है अवश्य ही वह दुर्बल और त्रुटि पूर्ण है। भारत सरकारने तमाम प्राइवेट योजनाकारोंको यह कहकर अंगूठा दिखा दिया है कि देशका औद्योगीकरण सरकार स्वयं अपने हाथोंमें लेगी।" इसमें सन्देह नहीं कि धन और शक्ति तो कुछ मुट्ठीभर व्यक्तियोंके हाथोंमें केन्द्रित होना सर्वथा अवांछनीय है। किन्तु जब तक वर्तमान सरकार पूंजीवादी व्यवस्था पर स्थित है तब तक सम्पूर्ण धन और शक्तिका मुट्ठीभर हाथोंमें रहना या सरकारके हाथोंमें केन्द्रित होना एक ही बात है। इससे देशके जनसाधारणका कोई हित नहीं हो सकता। दूसरी बात यह भी तो है कि भारत सरकार भारतीय व्यवस्थापिकाके सामने उत्तरदायी न होनेके कारण इस बातकी क्या गारण्टी है कि भारतकी पूंजी और साधन भारतकी बेकारी दूर करनेमें ही लगेंगे? हमें इस बातकी पूरी आशंका और सन्देह है कि इस युद्धके कारण आर्थिक दृष्टिसे पूर्ण जर्जरित और विध्वस्त ब्रिटेनकी सहायतामें भारतकी पूंजी और साधनोंको लगानेके लिये ही सरकार यह चाल चल रही है। दूसरी बात भी इसकी तहमें है। और वह यह है कि युद्धोत्तरकालमें पूंजीवादी भारत अमेरिकासे किसी तरहका व्यवसाय सम्बन्ध स्थापित न कर सके इसलिये पहले ही से भारतके समस्त उद्योग-धन्धोंको अपने नियन्त्रणमें कर लेना ही ब्रिटिश सरकारने अच्छा समझा। इससे जहां एक तरफ भारतके ऊपर ब्रिटेनको सहारा देनेका भार लादा जायेगा वहीं ब्रिटेन भारतके ऋणको भी अब अपनी सुविधाके अनुसार चुकायेगा। भारतके व्यापारियों और उद्योगपतियोंको सरकारने अच्छा अंगूठा दिखाया है। सहयोग और समर्थनका अच्छा पुरस्कार दिया गया है। जहांतक शोषित वर्गोंका सम्बन्ध है उसे इस तरहके अन्यायोंका अन्त करनेके लिये ब्रिटिश और भारतीय पूंजी-पतियोंसे एक समान लड़ना पड़ेगा। यही कारण है ... का ध्यान एकमात्र स्वतंत्रताकी ... करनेकी तरफ लगा है। शोषित ... है कि जबतक वर्तमान भारत ... और देशी पूंजी-पतियोंकी छत्रछाया ... तक उसे टुकड़ोंपर ही सन्तोष करना ... इसीसे वह दासताकी इस तमाम ... तोड़ना अपना सर्व प्रथम कर्त्तव्य ... और इस कर्त्तव्यका पालन असेम्बलि... कौंसिलोंसे नहीं पूर्ण हो सकता। ... तो वर्तमान पूंजीवादको कुछ अधिक ... दिलानेमें सहायता भले मिल जाय ... किन्तु भारतके ४०कोटि दीन-दरिद्रों ... क्या हल करनेके लिये तो गांधीजीके ... क्रमके अनुसार सात लाख गांवों और ... को अपना रंगमंच बनाना पड़ेगा। ... देशी-विदेशी शोषणसे पीड़ित भारतको मुक्ति मिल सकती है।

कांग्रेसका पुनर्संगठन—

युक्त प्रांतीय असेम्बलीके स्पीकर ... नीय पुरुषोत्तम दास टण्डन जबसे जेल ... बाहर आये हैं अपने प्रान्तमें कांग्रेस ... को शक्तिशाली बनानेमें लगे हैं। ... वर्षोंकी घटनाओंके अनुभव और ... आप कांग्रेस सङ्गठनको इस तरह ... चाहते हैं कि उसके सदस्योंके भीतर ... स्वतन्त्रताके लिये सर्वस्व बलिदान ... भावना हो और जब कांग्रेस उनसे ... झण्डेके नीचे एकत्र होनेका आह्वान दे ... समस्त पारिवारिक, सामाजिक और ... पारिक बन्धनोंको तोड़कर आगे बढ़ें। ... समय उसके भीतर बहुतसे ऐसे व्यक्ति ... गये हैं जिनको सुविधावादीके सिवा ... कुछ नहीं कहा जा सकता। इस ... व्यक्तियोंसे कोई सङ्गठन सबल नहीं हो ... यह उनका कटु अनुभव है। इसी ... आधारपर उन्होंने बम्बईमें यूनाइटेड ... प्रतिनिधिको कांग्रेस पुनर्गठनकी ... योजनाके सम्बन्धमें एक वक्तव्य देते हुए ... है कि "कांग्रेस सङ्गठनको एक बा... लड़नेवाली मशीन बनानेकी आवश्यकता ... हमारे राजनीतिक जीवनमें सर्वाधिक ... श्यकता योजना Planning और ... शासनकी है। हमारा पहला काम ... को अधिक सशक्त और इस तरह ... प्रभावशाली बनानेका है। सफलताके ... सिद्धांत और कार्य दोनोंमें सामञ्जस्य ... ऐक्य आवश्यक है। देशमें फैले हुए ... राजनीतिक विचारोंको व्यक्त करनेका ... फार्म कांग्रेसको समझना ... सुन्दर शास्त्रार्थोंसे शक्ति नहीं बढ़ती। ... और कार्यशैलीमें साम्य और ऐक्य ... शक्ति बढ़ती है। कांग्रेस सङ्गठन ... व्यक्तियोंका ही नियन्त्रण होना ... जिनके मौलिक विचारोंमें साम्य है।"

टण्डनजीके इस वक्तव्यसे कोई ... नहीं हो सकता। कांग्रेस संगठनपर ... उन व्यक्तियोंका ही होना चाहिये ... कांग्रेसके उद्देश्य और सिद्धान्तके ... वचन और कर्मसे एक आवाज ... सर्वस्व बलिदान करनेको सदा प्रस्तुत ...

नेत्रकोना सम्मेलन पर एक दृष्टि

——:ः**ः:——

(श्री रमेश वर्मा)

एक समय था जब हमारे राष्ट्रीय [आन्]दोलनके अन्दर इस बातपर बहस चला [कर]ती थी कि कांग्रेससे बाहर किसानोंका [स्वत]न्त्र वर्ग संगठन हो अथवा नहीं, यद्यपि [राष्ट्री]य आन्दोलनके अन्दर विभिन्न वर्गोंके [स्वत]न्त्र संगठनको हमेशा स्वीकार किया [गय]ा था। कराची कांग्रेसमें (१९३१) मौलिक [अधि]कारोंके प्रस्तावमें सिद्धान्त रूपसे यह [बात] स्वीकार करली गयी थी। लखनऊ [कांग्रे]स(१९३६) में राष्ट्रपति पं० जवाहरलाल [ने] अपने भाषणमें कांग्रेसके अन्दर [विभि]न्न वर्ग संस्थाओंके प्रतिनिधित्वको [स्वीका]र किया था। यहींपर अखिल भार[तीय] किसान सभाका प्रथम अधिवेशन हुआ, [जिस]में जवाहरलालजी उपस्थित हुए। इसके [बाद ह]रिपुरा कांग्रेसके प्रस्तावमें (१९३७) [किसा]नोंके वर्ग-संगठनकी बात स्वीकार की [गयी], किन्तु फिर भी कांग्रेसके अन्दर एक [दल थ]ा जो किसानोंके पृथक स्वतन्त्र वर्ग-[संगठन]का विरोध करता रहा। विशेषकर [कांग्रेसी] मन्त्रिमण्डलके समयमें यह विरोध [और तीव्र] हो उठा। यद्यपि यह बात सच है कि [कांग्रे]सके अन्दर अधिकार-सम्पन्न और [जमींदा]र वर्गोंका एक दल है जो अपने वर्ग [स्वार्थ]से प्रेरित होकर किसान संगठनका [विरोध] करता है, लेकिन इसके अलावा भी [ऐसे ल]ोग हैं जिनका कांग्रेससे पृथक, किसानों [के स्वत]न्त्र संगठनके प्रति वास्तविक सन्देह [है। उन]का ख्याल है कि, यह मानते हुए भी [कि कि]सानोंका अपना एक वर्ग है, जब तक [हमारा] राष्ट्रीय आजादीका आन्दोलन जारी [है औ]र जब तक वह आंदोलन अपने लक्ष्य—[स्व]तन्त्रताको प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक [कि]सानोंका पृथक संगठन नहीं होना [चाहिये] और सब किसान एक ही राष्ट्रीय [झण्डेके] नीचे इकट्ठे रहने चाहिये; क्योंकि [एकता] ही सबसे बड़ी शक्ति है। देशकी [सारी] जनताका प्रतिनिधित्व करने [वाली कांग्रेस]के अलग किसान वर्गकी संस्था बन [जानेसे] कांग्रेसका क्या हाल होगा। [और फिर यदि किसान]ोंकी यह स्वतन्त्र वर्ग संस्था अपनी [अलग] राष्ट्रीय नीति तय करेगी, फिर [उस] राष्ट्रीय नीतिके पीछे कौनसी शक्ति [होगी]? संक्षेपमें इन लोगोंका कहना [है कि] देशमें कांग्रेस द्वारा संचालित एक [राष्ट्रीय] आन्दोलन की मौजूदा शकलमें [किसानों]के स्वतन्त्र वर्ग संगठनका अस्तित्व [सिद्धान्त]में स्वीकार नहीं किया जा सकता [वैसे ही जै]से कि अन्य वर्ग संगठन—मजदूर [आदि]।

[इसी] लिये देशमें किसानोंका एक अखिल [भारतीय] संगठन शुरू होनेपर इन लोगोंकी [ओरसे उ]सका तीव्र विरोध हुआ इसका [असर यहां]तक हुआ कि जो सिद्धान्तकी [रक्षा] और कांग्रेसकी निर्धारित नीति [के अनुसा]र किसानोंके स्वतन्त्र वर्ग संगठनका [विरोध न]हीं करते थे वे भी एक स्वतन्त्र [संस्था]के नेतृत्वमें किसानोंके बढ़ते हुए [आन्दोलन]को सशंक दृष्टिसे देखने लगे। यू० [पी० में] दो जगह पं० जवाहरलाल नेहरू [ने कि]सानोंके लाल झंडेका विरोध किया [और] राष्ट्रीय झण्डेके नीचे किसानोंको [रहने]की सलाह दी, यद्यपि किसान आन्दोलनमें लाल झण्डेके साथ राष्ट्रीय झंडा भी रहा है।

आजकी स्थिति

आज पहली हालत बदल गयी है। कांग्रेसजनमें आज यह बहस खत्म हो गयी कि किसानोंका अलग संगठन हो या नहीं हो। अब तो संगठनका स्वरूप सामने मौजूद है। यू० पी० कांग्रेस प्रतिनिधि असेम्बलीके अध्यक्ष बा० पुरुषोत्तमदास टण्डन तथा यू०पी० के अग्रणी कांग्रेस नेता बा०सम्पूर्णानंद किसानोंके स्वतन्त्र वर्ग-संगठनका पक्ष समर्थन करते हैं। हर प्रान्तके मौजूदा प्रान्तीय कांग्रेस-संगठनने किसानोंमें काम करनेके लिये पृथक कमेटियां बनाई हैं।

इसी कसौटी पर आज हमें अखिल भारतीय किसान सभाके आन्दोलन, उसकी निर्धारित नीति और स्वीकृत प्रस्तावोंको कसकर देखना है। आजका किसानोंका अखिल भारतीय संगठन हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन द्वारा स्वीकृत नीतिके अनुकूल है? वह किसी रूपमें कांग्रेसका विरोधी नहीं है? इस शंकाओंका समाधान हो जाता है तो फिर आज कांग्रेसजनको किसानोंके एक ही वर्ग-संगठन अखिल भारतीय किसान सभामें शामिल होनेमें क्या रुकावट रह जाती है?

नेत्रकोना किसान सम्मेलन

नेत्रकोनाका अखिल भारतीय किसान सभा अधिवेशन ही वह कसौटी हो सकता है, जिसका संकेत ऊपर किया गया है,क्योंकि (१) यह अधिवेशन किसान सभाके उन आन्दोलनों और कार्योंका निचोड़ या आखिरी रूप है जो किसान सभाने उस समय से किये, जबसे राष्ट्रीय आंदोलनके अन्दर कम्युनिस्ट लोग कांग्रेसजनसे अलग समझे जाने लगे या यों कहें कि किसान सभाकी तरफ भी कांग्रेसजन शंकाभरी दृष्टिसे देखने लगे। (२) स्वा०सहजानंद सरस्वती भी अपने आपको अखिल भारतीय किसान सभासे पृथक कर लेते हैं और किसान सभाका नेतृत्व केवल कम्युनिस्टोंके हाथमें रह जाता है।

उद्देश्य— नेत्रकोना सम्मेलनने किसान सभाका नया विधान स्वीकार किया, जिसमें किसान आन्दोलनका यह उद्देश्य बतलाया गया कि वह देशमें एक ऐसी राजनैतिक व्यवस्था कायम करना चाहती है जिसमें राज्यकी शक्ति आम जनताके हाथमें हो अर्थात् किसान सभा जहां अधिकार सम्पन्न वर्गके हाथमें राज्य शक्ति देनेके विरोधमें है वहां वह राज्य शक्तिके ऊपर एक ही वर्गका आधिपत्य स्वीकार न करके उसमें हिंदुस्तान के सर्व साधारणकी, जिसमें गरीब तबकोंके लोगोंका बहुमत है—शक्ति या उसकी निर्णयात्मक आवाज और मत स्वीकार करती है। कांग्रेसका घोषित उद्देश्य (कराची प्रस्ताव) यही है, गांधीजीका 'किसान मजदूर प्रजा राज्य' इससे भिन्न चीज नहीं है।

साधन—इस उद्देश्यके साधनके रूपमें किसान सभा किसानोंकी आये दिनोंकी तकलीफोंको दूर कराकर, उनकी मांगोंका आन्दोलन करके किसानोंका संगठन करती है और राष्ट्रीय आन्दोलनके साथ मिलकर स्वतन्त्रता प्राप्तिके लिये आगे बढ़ती है। राष्ट्रीय आंदोलनका उद्देश्य देशकी आजादी प्राप्त करना है, इसके लिये वह भी किसानोंके मांगोंको उठाता है और उनकी शिकायतोंको दूर करनेकी चेष्टा करता है ताकि किसान राष्ट्रीय आन्दोलनसे प्रभावित हों, अधिक मजबूत बनकर आन्दोलनमें शामिल हों। किसान सभा किसानोंकी आर्थिक मांगोंको लेकर, उनके आर्थिक-हित और मौजूदा चेतनाके आधारपर उनका सङ्गठन करके उन्हें राष्ट्रीय आन्दोलनके अन्दर लाती है। इस तरह राजनीतिक दृष्टिसे पिछड़े हुए वर्गों और हलकोंमें भी किसान सभा वहांकी देहाती जनताको उसके आर्थिक-हितके दरवाजेसे राजनीतिके मैदानमें लाती है।

राष्ट्रीय नीति—किसान सभाकी अपनी स्वतन्त्र राष्ट्रीय नीति है, लेकिन वह किसी हालतमें कांग्रेसकी विरोधी या प्रतिरोधी नहीं रही। यह कहनेकी आवश्यकता नहीं रह जाती कि किसान सभाने कांग्रेसके विरुद्ध कुछ भी नहीं किया और कांग्रेसकी फासिस्ट-विरोधी और प्रगतिशील शक्तियोंके साथ रहनेकी परम्पराका पालन किया।

इसी प्रकार युद्ध-प्रयत्नोंके प्रति किसान सभाकी जो नीति और रवैया रही है वह कांग्रेसके ही अनुकूल है। जो मुख्य एतराज है और जिसके बारेमें कांग्रेसजनको अभी सन्तोष नहीं है वह किसान सभाके मुख्य राजनीतिक नारोंके सम्बन्धमें है। किसान सभा राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना, राष्ट्रीय एकता और कांग्रेस-लीग एकाका नारा लगाती है। सभाके अन्दर वह जनता है जो कांग्रेस के प्रभावमें है, जैसे यू० पी० और बिहार। किसान सभाके अन्दर वे किसान हैं जो पाकिस्तानका समर्थन करते हैं, जैसे पूर्वी बङ्गालके मुसलमान किसान, दक्षिण भारत और पश्चिमी पञ्जाबके मुसलमान। भले ही वे सबके सब मुसलिम लीगके अन्दर न हों लेकिन पाकिस्तानका नारा मुसलमानोंका आम नारा बन गया है। इस हालतमें किसान सभा यदि पाकिस्तान या पाकिस्तान-विरोधी किसी नारेको अपनाती है और इस तरहकी नीति अख्त्यार करती है तो इससे दोमें से किसी एकसे उसे हाथ धोना पड़ेगा। जिसका मतलब होगा किसानोंमें फूट और किसान सभाकी शक्तिका टूट जाना। इसलिये किसान सभा पाकिस्तानसे अपनेको दूर रखकर केवल हिन्दू-मुसलिम एकाका नारा लगाती है। यह एका कैसे हो, यह बड़ी राजनीतिक संस्थाएं, कांग्रेस और मुसलिम लीग या दोनोंके नेता आपसमें मिलकर तय करें। राष्ट्रीय आन्दोलन अथवा कांग्रेसने अबतक जो किया है, वही किसान सभाके इस नारे के अन्दर है। हिन्दू-मुसलिम एका और मुसलिम लीगके साथ समझौता करनेका प्रयत्न यह कांग्रेसके कार्यक्रमके अन्दर रहा है। उसके लिये महात्माजी मुसलमानोंके आत्म-निर्णयकी घोषणा भी कर चुके हैं। बस, किसान सभा इससे आगे नहीं जाती। यह राष्ट्रीय-नीतिके अनुकूल ही है, इससे देश भर के किसानोंकी एकता अटूट रहती है, यह कम्युनिस्ट पार्टीका नारा नहीं है। नेत्रकोना के 'राजनीतिक प्रस्ताव' और 'किसान सभा और देशभक्तोंसे अपील' वाले प्रस्तावमें इन्हीं बातोंको स्पष्ट किया गया है।

यहां इस बातको बतला दिया जाय कि अबसे आठ वर्ष पहले कांग्रेसजनको किसान सभासे जो शिकायतें थीं वही आज मुसलिम लीगवालोंको पैदा हुई हैं यानी यह कि मुसलमानोंमें किसान सभाका असर बढ़नेसे लीगका असर कम होगा। कांग्रेसजन आज इस बातको छोड़ चुके हैं, पर मुसलिम लीग चूंकि राजनीतिके क्षेत्रमें कांग्रेससे पीछे आयी है, इसलिये उसे अभी ये शिकायतें बनी हुई हैं। जो असलियत तो यह है कि जहां किसान सभाका संगठन बढ़ा है वहां देहाती जनताकी राजनैतिक चेतना बढ़ी है और उससे किसान सभा और मुसलिम लीग दोनों मजबूत होती है।

जन सेवाके कार्य—

अब हम उन कार्योंको लेते हैं जो जनता के रोजमर्राके जीवनसे सम्बन्ध रखते हैं। सेवा और न्याय ये दो शब्द हमारे राष्ट्रीय आंदोलनके आधार रहे हैं। इनमें (१) हिंदू-मुसलिम एका। (२) पिछड़ी हुई और दलित जातियोंका उद्धार और (३)आर्थिक-साधनोंसे जनताकी सेवा; इन तीन कार्योंमें सारी बातें आ जाती हैं। हिन्दू-मुसलिम एकताकी बावत किसान सभा क्या कहती और क्या करती है, पिछले तीन वर्षोंमें उसने क्या अमली कार्य किये हैं, यह स्पष्ट हो चुका है। बङ्गाल-आसामको हदके पहाड़ी इलाकोंकी हजांग और दूसरी पहाड़ी कौमोंमें किसान सभाके प्रति अटूट प्रेम है। इनकी आर्थिक मांगोंकी लड़ाइयां किसान सभाने लड़ी हैं। नेत्रकोनामें हजांग जातिकी कुल एक लाख आबादीमेंसे साढ़े तीन हजार लोग अस्सी मीलसे चलकर शामिल हुए। इनमें ढाई हजार वालंटियर थे। परिवारके परिवार पैदल चलकर आये थे, जिनमें बूढ़ी माताएं, बच्चोंवाली औरतें और साठ वर्षके बूढ़े लोग थे। इस सम्मेलनके व्ययमें जो सत्तर हजार रुपयेसे ज्यादा होता है, आधेके करीब मैमनसिंह जिलेसे ही एकत्र हुआ और उसमें गरीब हजांग परिवारोंका बहुत बड़ा भाग है। शेष ज्यादातर वहांके मुसलमान किसानोंसे वसूल हुआ। कुछ स्वयंसेवकोंमें बड़ी तादाद मुसलमान किसानोंके लड़कोंकी थी। किसान सभाने इनके अन्दर सार्वजनिक सेवा-भावकी लगन पैदा की है।

आन्ध्र किसानोंका सङ्गठन दूसरे नम्बर का है। यहां पचपन फी सदी खेतिहर मजदूर हैं जो सब अछूत जातिके हैं। आन्ध्र किसान सभाकी यह रीढ़ हैं। यह अछूत खेतिहर मजदूर और वहांके मध्यम दर्जेके किसान

आज किसान सभाके अन्दर एक सङ्गठनमें गुंथे हुए हैं। तब कौन कहेगा कि ऐसे जटिल आर्थिक और सामाजिक मसलोंको हल करके किसान सभाने राष्ट्रकी वह सेवा नहीं की है, जिसके लिये कांग्रेस अबतक प्रयत्न करती रही है। कौन कहेगा कि किसान सभाने वह शक्ति निर्माण नहीं की है, जिससे राष्ट्रीय आजादी हासिल होगी। तामिलनाड, मलबार आदि और भी ऐसे प्रदेश हैं जहांका शोषित मानव-समाज आज जीवन और जागृतिके गीत गा रहा है।

रचनात्मक कार्य—

रचनात्मक कार्य हमारे राष्ट्रीय-आन्दोलनका एक अङ्ग रहा है। साधारण अवस्थासे लेकर विशेष अवस्थामें जब जहां जरूरत हुई कांग्रेसने जनसेवाका कार्य शुरु किया। पिछले वर्षोंमें देशकी क्या हालत रही? राजनीतिक हालतके साथ देशका आर्थिक ढांचा टूट गया। सारा देश बंगालके पथपर अग्रसर होने लगा। इस हालतमें किसान सभाने जो कुछ भी उनकी शक्ति थी उसके अनुसार अपने राष्ट्रीय आन्दोलनकी परम्पराको निभाया। नेत्रकोनाके तीन प्रस्ताव इन बातोंका परिचय देते हैं—(१) बङ्गालका पुनर्निर्माण (२) खाद्य समस्या और उसका हल (३) खेतीकी पैदावार बढ़ानेका आन्दोलन। इन प्रस्तावोंमें जहां साधारण अवस्थामें कांग्रेस द्वारा किये जानेवाले रचनात्मक कार्योंकी सारी बातें आ जाती हैं, वहां अन्न-सङ्कट, भूख, बीमारी और बंगालकी तबाहीको दूर करनेकी विशेष बातें भी शामिल हैं और उनपर विशेष जोर दिया गया है। नौकरशाहीकी नीति और निकम्मापन्न तथा मुनाफाखोरोंकी स्वार्थपूर्ण हरकतोंसे बर्बादी फैली। राष्ट्रके कर्णधार नेता जेलोंमें बंद थे, इस हालतमें किसान सभाने अपनी शक्ति भर कार्य किया। नौकरशाही की नीति और मुनाफाखोरोंकी चालोंका भंडाफोड़, नेताओंकी रिहाईका आन्दोलन, किसानोंसे कहना, तुम अन्नकी पैदावार बढ़ाओ, अन्नके मौजूदा भंडारका ठीक वितरण, अन्य आवश्यक वस्तुओंको जनता तक पहुंचानेका आन्दोलन, बंगालके लिये देश भरमें सहायता आन्दोलन, इन कार्योंको किसान सभा करती रही है। इसमें उसे सफलता भी मिली है। इस कालमें लाखों एकड़ नयी भूमि बङ्गाल, आन्ध्र, मलाबार और दूसरे सूबोंमें किसानोंके पासमें आयी है, सरकारी नौकरोंकी सख्तियोंसे किसानोंको बचाया है और अपने संगठनके बलपर सरकारसे किसानोंको सहूलियतें दिलाई हैं। देहातसे शहरकी गरीब जनताको अनाज भिजवानेका प्रबन्ध किया है और शहरसे देहातमें कपड़ा, नमक, तेल भेजनेमें आंशिक सफलतायें हासिल की हैं। बिहारको भूख और बीमारीके भंवरमें डूबनेसे बचानेके लिये साथ कामके लिये सहयोग स्थापित कर गांधीजी और राजेन्द्र बाबूके आदर्श और भावनाका पालन किया है। सबसे मुख्य बात तो किसान सभाके इस आन्दोलनमें रही है, वह है किसानोंको और देहातकी सारी जनताको स्वावलम्बी बनाना, अपनी तकलीफें दूर करनेका, खुद प्रयत्न करना, नौकरशाहीकी तरफ नहीं ताकना। विभिन्न वर्गोंके बीच एका और भाई-चारेका भाव बढ़ाना जो आपत्तिकालके लिये अनिवार्य है।

सचमुच वह मेरे लिए बहुत ही बुरी
...त थी जब मैंने वायसिकिल दुर्घटनासे
...की रक्षा की थी। बिल्कुल सिनेमेटिकल
...से पीछे पड़ गयी है, कम्बख्त ! बजाऊं चाहे
बजाऊं मगर गलेका ढोल बनकर सीधे
... जाना चाहती है।

...सो, ढोलकी पोल को, चोरबाजारी
...की भांति, छिपाते-छिपाते पसीने-पस्त
...ा रहता हूं। कहीं घरवाली कंट्रोलर
...हिवाकी नजर पड़ गयी तो बिना जिरहके
सजा बोल दी जायेगी।

विदेशी चिड़ियाखानेकी चिड़िया है,
...ी। सुन्दर किन्तु पर-कटी। और वह
...सी चिड़िया, इस देशी मुर्गेसे विलायती
... चाह रही है।

मैं उससे यह इच्छा प्रकट करता हूं कि
...तेकी छानवीन करनेसे तू मिस मेयो
...वा की कोई-न-कोई जरूर निकल आ
...ी है तो वह पसीना पोछने लग जाती
—'अरे हट्, मां-बेटेके रिश्तेको जब समाज
...नहीं देता तो दूरकी रिश्तेदारीकी
...वीन निरा 'बदरेशन' ही तो है ?'

मेरे विवाहित होनेके प्रश्नपर वह दृष्टि
...ना नहीं चाहती। कहती है, 'यह तो
...हिन्दुस्तानी पतियोंकी कमजोरी है।
...श्यकता ही तो आविष्कारकी जननी
...ी है।—तलाककी प्रथा क्यों नहीं प्रच-
... करते !'

कहती है कि न तो मैं तुम्हारे साथ कोई
...ाध ही कर रही हूं और न अन्याय।
...का नाम सेक्सुअल-अपील है। समाजने
...के लिये हमें पूरी स्वतन्त्रता दे रखी है।
...त्तम समाज वही है, जिसकी औरतें
...स किसी-से भी चाहें, सेक्सुअल-अपील
... सकती हैं !—तुम्हारे देशमें सेक्स, लज्जा
...चीज है और हमारे यहां गौरवकी वस्तु !
...से अपने मनमें ही दावकर संकुचित
...ना चाहते हो और हमारे यहांके बड़े-
विद्वान इसे उत्तरोत्तर उन्नत रूप देना,
कल्याणके लिये, अपना परमावश्यक
... समझते हैं। तुम्हारे यहांके अभिभावक
...ने साथ अपने घरकी बहू-बेटीको जहां
...न्दिर ले जानेमें भी हिचकते हैं वहां हमारे
...भिभावक नित्य नियमित रूपसे अपनी
...यों को सेक्स-इन्स्टीच्यूट ले जाया करते
। वहां नंगी-नंगी मूर्तियां होती हैं जिसके
... प्रत्यङ्गपर इशारे करते हुए हमारे अभि-
...क बारीक-बारीक बातें समझाते हैं।
...ो, सुनते जब शनैः शनैः हमारा शरीर
... हो जाता है, नसोंमें एक प्रकारकी सन-
...ी पैदा हो जाती है और आंखोंमें एक
...रका नशा उतर आता है तो अभिभावक
...ते हैं—'देख, इसीका नाम है सेक्स,
...ी !'

और तब, अभिभावक मुसकाती हुई
...की भांति खड़े रहते हैं। हम सागरकी
...लहरकी तरह उस ओर बढ़ जाती हैं
...ां सुन्दर पुरुष-समाज हमारी सेक्सुअल-
...ील सुननेके लिये, स्वागतमें हृदय बिछाये,
... रहता है !—यह रहा, हमारे तुम्हारे
...बोधका सीमाहीन व्यवधान !'

...सी मनोविज्ञान बघारती है। कहती
... है कि तुम्हारे मस्तिष्ककी मेजपर स्फूर्ति-
दायक चायकी प्याली बनकर पड़ी रहना चाहती हूं। और, तब मैं अपने मनमें यह सोचता हूँ कि चायमें स्फूर्ति देनेकी शक्ति तो अवश्य होती है किन्तु, चाय गर्म होनी चाहिये, ठंढ़ी नहीं !

इधर लेसी अत्यधिक चिन्तित रहने लग गयी है। कहती है कि उसके देशमें पतियोंका दुर्भिक्ष हो गया है। मेरी इच्छा होती है कि लेसीको कहूं कि वह यहांसे एक पति-सप्लाई ब्यूरो स्थापित करे किन्तु यातायात सम्बन्ध ठीक न रहनेके कारण मनकी मनमें ही रह जाया करती है।

वह पांच दफे शादी शुदा हो चुकी है और पंचकल्याणी हो चुकनेके बाद भी, अपने को कुमारी कहती है।

अब मेरा स्वभाव बहुत चिड़चिड़ा हो गया है। बड़ी रात गये घर वापस आया करता हूं। मेरे मुंहसे एक प्रकारकी बू निकलती रहती है और पत्नी समझती है कि इत्ती देर मुझे दफ्तरमें लग गयी है। वह नौकरी को कोसती हुई सिरहाने बैठ जाती है और व्यंजन करने लगती है। मस्तिष्कका चक्कर जरा थमता है, आखें खुलती हैं किन्तु मुख नहीं खुलता। वह भोली मेरी आंखोंकी लाली नहीं समझती। मेरे केशोंको शीतल अंगुलियोंसे सहलाती हुई कहती है—"धूपमें चलना होता है...आंखोंमें लाली छाई जा रही है, धूप-छांह चश्मा क्यों नहीं खरीद लेते।"

ज्योति-अन्वेषण

अन्धकारमें टटोल ढूंढ़ता प्रकाश मैं !
दीप है, परन्तु, लौ लगी नहीं;
ज्योतिके समीपसे जगी नहीं !
चाहता अनन्त गगन भेदकर विकास मैं !
दीप कहीं, और अमर ज्योति कहीं;
दीपकसे अग्नि-शिखा मिली नहीं !
फिर भी श्रम करता हूं जाता अभ्यास मैं !
माना, ये राहें हैं दुर्गम, पथरीली;
लेनी हैं सांसें सब, ठण्ढी जहरीली !
मृत्युसे रहा निकाल छिपा अमृत हास मैं !
आशा है, पाऊंगा ज्ञान यह;
होगा जब सफल कठिन
पर्वत-अभियान यह !
कोनेमें, दुबका-सा, भयसे
प्रकाशके, ममता-तम
जायेगा छिप-छिपकर
सहम-सहम !
जाऊंगा स्वयं ज्योतिका बन आकाश मैं !
अन्धकारमें टटोल ढूंढ़ता प्रकाश मैं !

—आरसी प्रसाद सिंह

कहानी

सिगरेटका धुंआ

(लेखक—श्री सुबोध मिश्र)

मैं चाहता हूं कि वह मुझसे घृणा करे ! किन्तु वह तो समवेदना प्रकट किया करती है।

मैंने अपनेको सम्भाला न हो ऐसी बात नहीं। किन्तु संभल-संभल कर भी संभल न पाया। लेसीकी समझमें जब कोई चारा नजर न आया तो मुझे कानूनकी धमकी देने लगी। उसके पास अन्तर्जातीय विवाहका नकली शर्तनामा था जिसके बलपर मुझे नालिशका भय दिखाया करती। कहती कि मैं दावा करूंगी, कि तुम्हारा मेरा सम्बन्ध दस वर्षों से चला आ रहा है ! बस, बदनामीसे बचने के लिये, मेरी नैतिक-निधि खो गयी ! बदनामीसे बचनेके लिये मुझे बुरा बनना पड़ा। मगर 'बदनामसे बुरा भला' कहावतके अनुसार, अपनी यह बुराई मुझे भली नहीं लग रही थी। मैं सोचता 'लोग क्या कहेंगे ?'

"लोग क्या कहेंगे ?" यही तो एक ऐसा हौवा है जो बड़े-से-बड़े निर्भीकको भी आत्म-भीरु बना डालता है ! मुझे कुलकी नाक जो रखनी थी !

और तब, अपनी स्थितिसे, मैंने स्पष्टतः यह अनुभव किया कि कुलकी नाक रखनेके लिए सुकर्म ही नहीं चाहिये, कुकर्म भी स्वीकार करना ही पड़ता है।

ऐसी दुरवस्थाके समय पत्नीका भोला-पन मुझे और भी पागल बना देता है !

कल जिस समय वापस आया, मेरी जेबमें एक्स एक्स रमकी बोतल थी। जेबसे उसे निकाल कर मेज पर रखा। इतना तो याद है किन्तु चारपाई पर कैसे जाकर सो गया यह जरा भी स्मरण नहीं। आंखें खुलीं तो उस समय भोर बुलानेके लिये घड़ी तीन बजा रही थी ! देखता क्या हूं कि वह बैठी पांव दबा रही थी ! मैं लेटा करके भी उसकी ओर ताक न सका और मेरी दृष्टि मेजपरकी बोतलकी लाल लेबिल पर जा जमी।

"मैं ही तो हूं तुम्हारे कष्टोंका मूल !" वह बोली—"मैं अगर नहीं होती तो अकेले पेटकी तुम्हें क्या चिन्ता थी...आज जो चिन्ता करते-करते तुम पागल बने जा रहे हो सो मेरी वजहसे ही तो...?"

मेरे आहत हृदय पर उस समय क्या बीती होगी उससे भगवान् दुश्मनकी भी रक्षा करें !

शराबकी बोतलको वह समझी अपने स्वामिनाथको औषधि ! दवाकी व्यवस्था करनेके लिये वह कई दिनोंसे प्रार्थना कर रही थी। आज उसके स्वामीने उसकी बात मान ली :—उसकी प्रसन्नताकी सीमा न रही।

बोतलकी तरफ मेरे एक टक देखनेका अर्थ वह समझी कि औषध-सेवनका समय हो गया है। उठी और एक हाथमें गिलास और दूसरे में बोतल लेकर सिरहाने बैठ गयी। मैं चुपचाप तमाशा देख रहा था। कुछ बोलता भला कैसे ? जान थी मगर बना हुआ था मैं मुर्दा।

वह कार्क खोलती हुई बोली, "अरे इस इसमें खुराक तो है नहीं; क्या खुराकका दाग बनानेमें भी कागजके अभावका रोना लग गया ?"

मेरे सामने वह दृश्य नाच गया ! लेसी कहती थी—"कार्क खोलते ही साकीकी मुसकानसे पीने वाला यदि नशेसे चुर न हो गया तो फिर साकी साकी नहीं !"

और यहां, कुल लक्ष्मी ढूंढ़ रही है, उसी शराबमें खुराक...!!

"यह खुराक वाली दवा नहीं है, हेम !"—मैंने क्या जाने कैसे कहा—"जितनी पी सके वही खुराक और उतना ही लाभ !"

वह ढालने लगी। मैं पीने लगा। लेकिन इस समय उसमें खारापन नहीं था। कंठको झन् कर देने वाली शक्ति नहीं थी ! त्रिवेणी के जलके समान शीतल, सुस्वादु एवं पवित्र प्रतीत हो रही थी, अंगूरकी बेटी ! क्यों, कैसे, आर्याकी सत संगतिसे ?

बोतल खाली हो गयी। साथ ही मेरी चेतना भी खाली हो गयी। मेरे चेहरे पर प्रसन्नता नाच गयी। मैं जोर-जोरसे हंसने लगा। वह समझी मैं स्वस्थ हो गया हूं। डाक्टरको धन्यवाद देने लगी। मैं बार-बार हंस रहा था और वह मेरी हंसीमें अपनी हंसी मिला रही थी। मुझे शराब हंसा रही थी और उसे पतिके आनन्दकी मदिरा दीवानी किये थी ! मेरी खुशी नर्कका अट्टहास बनी थी और उसकी मुसकान स्वर्गकी ज्योत्सना थी।

वह सुख दुखकी साथी जो ठहरी ! मैं हंस रहा हूं तो वह क्यों न हंसे भला ?

लेकिन थोड़ी देर बाद ही मेरी हंसीकी

दुनिया बदली और मैं रोने लगा। इच्छा हुई कि मैं उसके चरणों पर लोट जाऊं। मैं आंसूके घूंट पीता हुआ उससे बड़े कष्टसे आद्योपान्त सारी कहानी कह गया। रंज क्या होती, लड़ाई क्या ठानती बल्कि वह तो अपने मनमें, मुसका-मुसका कर निहाल होने लगी कि यह तो मैं उससे दिल्लगी कर रहा हूं। पति पर तो उसका सात जनमका अधिकार है। उससे भला उसके पतिको कौन छीन सकता है।

आखिर मैंने किसी तरह असलियतकी ओर उसका ध्यान आकर्षित किया। वह बोली "यदि वस्तुतः लेसीमें आपको सुख है तो उसे मैं सगी बहन समझ कर आदर करूंगी..."

"सुख कहां है, हेम, वह तो दुख है :— दुख...उसने मुझे कुछ ऐसे विचित्र बन्धनमें बांध रक्खा है कि मैं कहींका नहीं रहा! और, अब तो मैं एकदम ला-इलाज हो गया हूं, हेम, मेरी रानी!—उसे तो मैं सिर-आंखों पर उठाये फिरूंगा जिसके मन्त्रसे मेरा इस चुड़ैलसे पिंड छूटेगा।

हेम हुं करके रह गयी।

पांच बजे दफ्तरसे फुर्सत होती थी और साढ़े पांच तक उसके यहां पहुंच जाना आवश्यक था। किन्तु सात बज चुके थे और अभी फुर्सत मिलनेमें दो घंटेकी देर और थी। मन बहुत घबरा रहा था कि आज हो-न-हो वह मेरे घर पहुंच गई होगी।

फुर्सत पाते ही पहुंचा तो देखता क्या हूं कि खाली पिंजड़ा पड़ा है। चिड़िया कहीं उड़ गई है।—

घर आते समय मुझे त्रिभुवनकी सम्पदा प्राप्त कर लेनेके समान प्रसन्नता थी।

आते ही पत्नी बोली—'चुड़ैल उतर गई न सिरसे?'

'यहां आई थी क्या?'—मैंने आश्चर्यसे पूछा।

'हां, अपनी दवा कराने आई थी!'—पत्नीने दूर पड़े हुए झाड़ूकी ओर देखा।—'पहले तो मेरे मनमें हुआ कि आगतका अपमान करना पाप है फिर यह ध्यान आया कि सांप भी तो आगत बनकर आता है फिर उसका स्वागत लाठीसे क्यों किया जाता है?—झाड़ूसे तुरत उसकी अक्ल ठिकाने आ गई! कानून और माया सब भूल गई और बोली, 'नारे, बाबा, ना, मैं अभी तुरत बम्बेके लिये स्टार्ट करती हूं।'

थोड़े दिनोंके बाद मि० भावेका पत्र आया। उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की थी कि उन्हें लेसी नामक एक परम सुन्दर नव-यौवना मिल गई है!

मि० भावे मेरे सहपाठी थे। इन दिनों एक फिल्म कम्पनीमें अभिनेताका काम कर रहे थे। साइड हीरोके अभिनयमें उन्होंने कई चित्रोंमें अच्छी ख्याति प्राप्त की थी। पत्रमें उन्होंने लिखा था कि उनके इस लभ-मटरमें उनकी पत्नी नाजायज टांग अड़ा रही है। दिन रात लड़ती झगड़ती और हड़ताल-का अल्टीमेटम दिया करती हैं।

पत्नीने श्रीमती भावेके पास टूटा झाड़ू भेज देनेकी इच्छा प्रकट की और मैं परिस्थितिकी भयंकरता पर विचार करने लगा।

मैंने श्रीमती भावेका पक्ष लेते हुए, मि० भावे को एक पत्र लिखा। मि० भावे उत्तरमें हदसे ज्यादा बिगड़ गये। उन्होंने मेरे ऊपर यह दोषारोपण किया कि हो-न-हो मुझे उनकी पत्नीसे कोई गुप्त कनेक्शन है तभी तो मैं उनका पक्ष ले रहा हूं।

प्रत्युत्तरमें मैंने उन्हें आखिरी चेतावनी दी कि लेसी 'सीरियस' है। और यही मेरा आखिरी पत्र भी था।

एक वर्ष बीता। एक वर्षमें भावेके दम्पति जीवनपर क्या बीता, राम जाने। मि० भावेने लेसीके लिए अपनी पत्नीकी हत्या कर डाली। खून छिप गया। लेसीके साथ सिविल मैरेजका रस्म अदा हुआ। शर्तें उदार रखी गईं। किन्तु, अभी सुहाग की सेज भी बिछ न पाई थी कि लेसी उन्हें तलाक देकर एक इञ्जीनियरके साथ चली गई। तलाकका कारण केवल यही था कि मि० भावे जिस मोडलका सिगरेट पीते थे उसका धुंआ लेसीको अच्छा नहीं लगता था!

यूरोपमें फिर राजतन्त्र स्थापित होगा ?

(श्री नारायण प्रसाद सिनहा)

युद्धके परिणामस्वरूप संसारमें महान् [illegible] हुआ करते हैं और उसका सबसे [illegible] परिणाम शासनाधिकारका हस्ता- [illegible] होता है। युद्ध समाप्त होनेके बाद [illegible] राजा आजके भिखारी बन जाते हैं [illegible] उनके लिये अपने देशमें भी स्थान नहीं [illegible]ता। चिरकालसे ऐसा ही होता आया [illegible] प्रत्येक युद्धमें किसी न किसी शासक- [illegible] राजमुकुट भूलुण्ठित होता अवश्य देखा [illegible] है। किन्तु आशा कभी नहीं मरती। [illegible] शासक अपने शासनाधिकारको पुनः [illegible] करनेकी उत्कट अभिलाषा रखते और [illegible] लिये प्रयत्नशील रहते हैं। यूरोपकी [illegible] गद्दियोंके हकदारों और नकली दावे- [illegible] फिरसे अपना सिक्का जमानेका प्रयत्न [illegible] कर दिया है। आस्ट्रियाका काउण्ट, [illegible] इनान, पेरिसका काउण्ट—सभी [illegible] दावेका समर्थन करानेकी चेष्टामें [illegible]।

[illegible] प्रश्न यह उठता है कि यूरोप महा- [illegible] फिरसे राजतन्त्र कायम होने जा [illegible]। यूरोपमें राजतन्त्रकी फिरसे स्था- [illegible] प्रश्न वास्तवमें अत्यन्त जटिल है, [illegible] पाश्चात्य राष्ट्रोंकी अनिश्चित और शक्ति सम्बन्धी राजनीतिसे [illegible] स्पष्ट उत्तर नहीं मिलता। ब्रिटिश [illegible] मन्त्री मि॰ चर्चिल यूरोपके रिक्त [illegible] सिंहासनोंपर अपने प्रियपात्रोंको इस [illegible] आरूढ़ करनेके पक्षमें हैं कि उनकी [illegible] युद्धोत्तरकालमें कम्युनिज्मके [illegible] रोका जा सकेगा। विश्वके महान [illegible] उसका अपना विशेष स्थान है और [illegible] युद्धके पश्चात् उसका प्रभाव यूरोप [illegible] अधिक हो जायगा। ग्रेटब्रिटेनका [illegible] बढ़ते हुए प्रभावसे चिन्तत होना [illegible] है क्योंकि ब्रिटेन और रूसके [illegible] एक दूसरेके प्रतिकूल हैं। ब्रिटेन [illegible]वादी है तो रूस समाजवादी। [illegible] पूंजीपतियोंका है तो रूस किसान [illegible]। इस कारण ब्रिटेन और [illegible] सिद्धान्तोंमें कदापि सामञ्जस्य नहीं [illegible]। यूरोपकी जनता राजतन्त्र और [illegible] तंग आ चुकी है और यह बात [illegible] है कि वहांकी जनता समाजवादी [illegible] अधिक उत्तम समझेगी। [illegible] कालमें रूसके सिद्धान्तोंका सारे [illegible] प्रसार होनेकी आशंकासे ब्रिटिश [illegible] वर्ग अत्यन्त चिंतित हो रहे हैं और [illegible] अधिकारसे मुक्त देशोंमें पुनः [illegible] स्थापना करना चाहते हैं। [illegible] देशोंमें राजतन्त्रकी फिरसे स्थापना- [illegible] आसान नहीं, यद्यपि हालैण्ड, [illegible], नार्वे, लक्सेमवर्ग और स्वेडेनकी [illegible] स्थितिको देखनेसे पता चलता है कि [illegible] राजाओंके प्रति जनसाधारणकी श्रद्धा [illegible] प्रकार कम नहीं हुई। उन देशोंमें [illegible] कल्याणके हितके लिये श्रेष्ठ प्रमा- [illegible] है तथा राष्ट्रीय स्वाधीनताके [illegible] रूपमें सम्राटको सम्मान प्राप्त [illegible] ग्रेट ब्रिटेन और ब्रिटिश राष्ट्रमंडलके [illegible] देशोंमें भी राजसिंहासनको [illegible] अधिक महत्वपूर्ण सम्पत्ति समझा [illegible] है। इसका राष्ट्रीयकरण, ईश्वरीय अधिकारके प्रतीकके रूपमें परिवर्तित हो गया है जिसके जरिये सम्राटको स्वयं कानून बनानेका अधिकार मिल गया तथा वह वैधानिक स्वतन्त्रताका एक आधार स्तम्भ समझा जाने लगा है। ऐसा विश्वास किया जाने लगा है कि इस प्रकारके परिवर्तनमें यह निश्चितसी बात है कि वैधानिक राज- तन्त्र कायम होंगे और वह प्रणाली अब नहीं रह जायगी जिसके अनुसार किसी देशके शासकका समय समयपर चुनाव हुआ करता है।

गत मार्च १९४४ में ऐसी घोषणा की गयी थी कि पोट्सडम नामक स्थानपर एक राजतन्त्रवादी सम्मेलनकी स्थापना की गयी है और जर्मनीके भूतपूर्व युवराज विल्हेल्मको उसका अध्यक्ष बनाया गया है। उसी समय अनेक लोगोंको प्रथम बार पता चला कि युवराज विल्हेल्म अबतक जीवित है और उस राज सिंहासनपर फिरसे अधिकार करना चाहता है जिससे उसके पिताको हटा दिया गया था। जर्मनी काकैसर विल्हेम द्वितीय १९१८ में हथियार डालकर हालैंडके डूर्न नामक स्थानको :भाग गया और इसके साथ ही युद्ध तथा उसके राजत्वकालकी समाप्ति हो गयी। उसके बाद उसने फिरसे शासनसूत्र ग्रहण करनेकी कोई चेष्टा नहीं की। १९१८ से अपनी मृत्यु (१९४१) पर्यन्त उसने कुछ हो जर्मनोंसे मुलाकात की और कभी भी वह जनसाधारणके सामने उपस्थित न हुआ। सुनसान जंगलमें लकड़ी काटनेमें ही उसे सन्तोष होता था। कैसरका उत्तरा- धिकारी उसका पुत्र भूतपूर्व युवराज विल्हेल्म था। विल्हेल्मका जन्म १८८२ में हुआ था तथा उसके छः छोटे भाई और थे। विगत महायुद्धके बाद विल्हेम भी हालैण्ड भाग गया तथा प्रशा और जर्मनीके सिंहासनों पर अपने उत्तराधिकारको वहां उसने अस्वी- कार कर दिया। १९३९में जब उसकी हिटलर से मुलाकात हुई, उस समय तक वह अपनी अस्वीकृतिको भूल चुका था और जर्मन सिंहासनपर फिरसे आरूढ़ होनेके मंसूबे बांध रहा था। विल्हेल्मकी हिटलरके साथ यह मुलाकात निरुद्देश्य नहीं थी और वह जर्मनीके तानाशाह हिटलरसे सिर्फ मिलने ही नहीं, वरन वहांकी अवस्थाका भी निरीक्षण करने गया था। किन्तु नवम्बर १९३९ में हिटलरने विल्हेल्मको फिर बुलाया और एक नाजी समर्थक घोषणापत्र पर हस्ता- क्षर करनेका आदेश दिया। विल्हेल्मने बड़ी हिचकिचाहटके साथ यह बताते हुए उसपर हस्ताक्षर करनेसे इनकार किया कि उसके पिता कैसरने घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने की मनाही की थी। उसको तत्क्षण खुले- आम गिरफ्तार कर लिया गया और तबसे वह पोत्सडाममें प्रायः नजरबन्दकी अवस्थामें पड़ा है। यह बिलकुल असम्भव प्रतीत होता है कि वह फिरसे जर्मन सिंहासनपर आरूढ़ होनेकी चेष्टा न करेगा।

आस्ट्रियाके अन्तिम सम्राट और हंगरी के अन्तिम राजा चार्ल्स प्रथमका पुत्र और उत्तराधिकारी ओटोके फिरसे यूरोप पहुंच जानेकी हालही में खबर मिली थी। ओटो का जन्म २० नवम्बर १९१२ को हुआ था। गत १९३० से ही ओटो उस स्थानपर काम- याबी हासिल करनेकी चेष्टा कर रहा है, जहां उसका पिता नाकामयाब हुआ था। उसका दावा है कि सम्राट चार्ल्सने कभी भी राजसिंहासनका परित्याग नहीं किया। उसी वर्ष उसने राजसिंहासनपर पुनरारूढ़ होनेके अपने प्रयत्नोंके सम्बन्धमें फैली हुई अफवाहोंका खण्डन करते हुए कहा था कि हम कोई षड़यन्त्र नहीं कर रहे हैं और अनिच्छुक जनतापर जबर्दस्ती राजतन्त्र लादनेकी तनिक भी इच्छा नहीं रखते। १९३३ के जून महीनेमें सैनिक विद्रोहकी अफवाहें हंगरीमें फिर फैलने लगीं। ऐसा बताया जा रहा था कि होर्थी और मुसोलिनीने विद्रोही सैनिकोंका पक्ष ग्रहण करनेकी स्वीकृति दी थी। राजतन्त्र विरोधी दलने सहायताके लिये हिटलरसे अनुरोध किया। दो वर्ष बाद आस्ट्रियामें राजतन्त्रकी स्थापनाके लिये विराट प्रदर्शन हुए और राजकुमार स्टार हेमबर्गने भी उसमें भाग लिया। १९३७ के हेमन्तमें राजतन्त्रकी स्थापना की चेष्टाको सर्वाधिक निष्ठुर आघात उस समय लगा जब आस्ट्रियाकी भूतपूर्व साम्राज्ञी जिटाने इटलीके सम्राटको एक पत्र लिखकर इटलीकी सबसे छोटी राजकुमारी मेरिया पैरेसाके साथ ओटोके विवाहका प्रस्ताव किया। मुसो- लिनीने इसको अस्वीकार कर दिया। उस समय ओटो बेल्जियमके स्टूनोकर्जल किलेमें निर्वासित था। गत १९३८ के दिसम्बरमें वह यूरोपमें राजतन्त्रकी स्थापनाके लिये होनेवाले आन्दोलनको शुरुआतका निरीक्षण करने पेरिस पहुंचा। अगले नवम्बर महीनेमें उसकी जन्मतिथिके उपलक्षमें आस्ट्रियाके पहाड़ोंकी चोटियोंको आलोकित किया गया। हंगरीके अनेक गिरजाघरोंमें इस उपलक्षमें प्रार्थनाएं हुईं। इसके बाद ओटो १९४० के अप्रेल महीनेमें न्यूयार्क पहुंचा और अमेरि- कनोंका समर्थन प्राप्त करनेकी चेष्टा करने लगा। पिछले अगस्त महीनेमें उसने युक्तराष्ट्र की सेनामें योगदान करनेकी चेष्टा की किन्तु उसको अयोग्य और अवांछनीय समझकर सेनामें भर्ती नहीं किया गया। वाशिंगटनकी टेलिफोन डायरेक्टरीमें उसका परिचय इस प्रकार दिया गया था—'आस्ट्रिया-हंगरी, चांसलरीका ओटो।' ओटोने एक होटलके दो कमरोंमें अपनी 'चांसलरी' कायम की थी, अतएव स्टेट विभागने डायरेक्टरीसे इस परिचयको निकाल देनेका आदेश दिया। अब देखना यह है कि आस्ट्रिया-हंगरीके राजसिंहासन पर पुनरारूढ़ होनेकी ओटोकी चेष्टा कहां तक फलवती होती है।

स्पेनके अन्तिम राजा अलफांजो तेरहवें ने साम्राज्ञी विक्टोरियाकी एक पौत्री विक्टो- रिया यूजेनीका १९०६ में पाणिग्रहण किया था। अलफांजोने १९३१ तक शासन करनेके बाद राजगद्दी छोड़ दी और १९४१ में राज- गद्दीपर अपने दावेको भी अस्वीकार कर दिया। उसी समय उसने एक दस्तावेजपर हस्ताक्षर कर अपने पुत्र जुआनको आमन्त्रित किये जानेपर सिंहासनारूढ़ होनेका पूरा अधिकार प्रदान कर दिया। लन्दनके स्पेनी राजतंत्रवादियोंने १९३७ में राजतन्त्रकी स्थापनाके लिये एक आन्दोलन आरम्भ करनेकी योजना बनाई और उस आन्दोलन का सदरमुकाम स्पेनके बियारिज नामक स्थानपर कायम किया गया। स्पेनमें इसके लिये प्रचार करनेके निमित्त १० हजार पौंड की रकम लन्दनमें एकत्र की गयी। नाजी योजनाओंके सफल होनेके बाद राजतंत्रकी पुनः स्थापना कर स्पेनके राजसिंहासनपर जुआनको आरूढ़ करानेका हिटलरने आश्वा- सन दिया और उसको स्पेनका भावी नरेश घोषित किया था।

स्पेनके तानाशाह जेनरल फ्रांकोने स्पेन में फिरसे राजतन्त्रकी स्थापना करनेकी संभा- वनापर विचार करनेके लिये अगस्त १९४२ में जुआनको आमन्त्रित किया। जून १९४३ में जुआनने फ्रांकोको स्पेनकी तटस्थता नीति पर दृढ़ रहनेके लिये जोर दिया। कुछ ही महीने बाद अगस्त १९४३ में फ्रांको और जुआनमें मतभेद हो गया और उसने फ्रांको- पर जबर्दस्ती अधिकार ग्रहण करनेका अभि- योग लगाया। १९४४ के मार्च महीनेमें जुआनने स्पेनमें वैधानिक और उदार राज- तन्त्रकी स्थापना करनेकी अपनी आकांक्षाकी घोषणा की और स्पेनमें वापस पहुंचनेके बाद यथासम्भव शीघ्र स्वतन्त्र निर्वाचन करनेके लिये आदेश देनेका वचन दिया। जुआनने

सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन भवनका सभा मंच। यहीं पर पूर्ण अधिवेशन हो रहा है।

कहा कि यदि स्पेनकी जनता गणतन्त्रके पक्षमें अपना मत प्रकट करेगी तो वह तत्क्षण वहांसे वापस चला आयगा। जुथान आजकल अपनी पत्नी और बच्चोंके साथ स्वीजरलैंडमें लासेनसे जेनेवाको जानेवाली सड़कके किनारे एक छोटेसे मकानमें रहता है। उसकी उम्र करीब ३२ साल है और वह अत्यन्त भली प्रकृतिका व्यक्ति बताया जाता है। स्पेनके लन्दन स्थित राजदूत ड्यूक आव अलवाने इस वर्ष जुथानको 'हमारे राजा' कहकर सम्बोधित किया था। स्पेनमें पिछले वर्षसे राजतंत्रकी पुनः स्थापनाकी चेष्टा जोर शोरसे शुरु हो गयी है।

फ्रांसकी राजगद्दीके दावेदार भी कभी कभी प्रकाशमें आ रहे हैं। फ्रांसका अन्तिम सम्राट लुई फिलिप ७ अगस्त १८३० को 'परमात्माकी अनुकम्पा और जनताकी आकांक्षासे फ्रांसका सम्राट घोषित किया गया था। १८ वर्ष तक शासन करनेके बाद उसके खिलाफ १८४८ में पेरिसकी जनताने विद्रोह कर दिया और फिलिपने इंगलैण्डमें शरण ली। दो वर्ष बाद १८५० में उसकी मृत्यु हो गयी। ड्यूक डि गाइजका एकमात्र ३६ वर्षीय पुत्र हेनरी, काउन्ट डि-पेरिस इस समय फ्रांसकी राजगद्दीका दावेदार खड़ा हुआ है। १८८६ के एक कानूनके अनुसार फ्रांसकी गद्दियोंके दावेदारोंका पेरिसमें प्रवेश वर्जित है और हेनरीको पिछले अनेक वर्षोंसे फ्रांसमें प्रवेश करनेकी मनाही करदी गयी है। अपने पिताकी १९४० में मृत्युके पश्चात हेनरी अपना नाम फ्रांसका हेनरी पुष्ठ रख कर कुछ समय तक स्पेनी मोरक्कोमें रहा और उसके बाद ब्राजिल चला गया। १९४३ में पेतांने उसके खिलाफ जारी किये गये निर्वाचनके आदेशको वापस ले लिया और उसी वर्ष हेनरीने मोरक्कोसे अल्जियर्सकी यात्रा की। अधिकारियोंको हेनरीकी इस अप्रत्याशित यात्राकी तनिक भी खबर न थी और वह एक दिन अल्जियर्समें अचानक प्रकट हो गया। फ्रेंच पुलिसको शीघ्र ही उसकी उपस्थितिकी खबर मिल गयी, किन्तु पुलिसके पहुंचनेके पूर्व ही वह वहांसे रवाना हो गया।

ऐसा कहा जाता है कि राजतन्त्रीय तानाशाहों अथवा स्वेच्छारी नरेशोंके, जो ईश्वरीय अधिकारके बलपर हुकूमत करते हैं, शासन करनेके दिन अब समाप्त होनेको हैं। व्यक्तिगत शासनके लिये पैतृक अधिकारका दावा करनेवाले शाहजादे भविष्यमें अपनेको बेकार और अवांछनीय पायंगे क्योंकि उन्होंने सफल राजतन्त्रके रहस्यको नहीं सीखा है।

——

...मानव-समाजके इतिहास, विशेषतः ...आहकी संस्थाके इतिहासके अध्ययनसे ...पता चलता है कि नारी जातिको जितनी ...स्वाधीनता पूर्व युगोंमें थी उतनी अब नहीं। ...महाभारतमें उद्दालक ऋषिके पुत्र श्वेत केतुकी ...कथा है। एक समयकी बात है, कोई ...श्वेतकेतुकी माताको अपने साथ ले ...। इसपर श्वेतकेतुको बहुत क्रोध हो ...। वह उस ब्राह्मणसे लड़नेके लिये तैयार ...। परन्तु उद्दालक ऋषिने उसे यह कह ...रोक दिया कि बेटा, क्रोध मत करो; ...प्रकार गौएं बनमें स्वतन्त्र होती हैं ...प्रकार इस संसारमें सब स्त्रियां भी ...हैं। उनपर किसीका अधिकार नहीं। ...अपनी इच्छासे चाहे जिसके साथ रह ...हैं। यही सनातन धर्म है—

...कोपं कापीस्त्विमेषधर्मः सनातनः।
...वृतहि सर्वेषां वर्णा नामंगनाभुवि।
...गावः स्थितास्तान स्वे स्वे वर्णे तथाप्रजां

...कालमें कन्या उस स्त्रीको कहते थे जो ...एक पुरुषकी सम्पत्ति न बन गयी हो, ...अपने यौन सम्बन्धमें स्वतन्त्र हो। कुन्ती ...पाण्डुके साथ विवाह करनेके पहले ही ...को जन्म दिया था फिर भी वह कन्या ...कहलाती थी। इस कारणसे किसीने उसे ...नहीं ठहराया था। इसी प्रकार महा-...भारतमें द्रौपदीके पांच पति, जटिला गौतमी ...सात और मुनिकी पुत्री वाक्षीके दस पति ...का उल्लेख मिलता है—

...हि पुराणेऽपि जटिला नाम गौतमी।
...ध्यासितवती स्त्र धर्मभृतांवरा।
...मुनिजा वाक्षी तपोभिर्भावितात्मना।
...भूदश्भ्रातृनेकनाम्न: प्रचेतसः।

...परन्तु इससे किसीने द्रौपदी, वाक्षी या ...जटिला गौतमीको पतिता या व्यभिचारिणी ...समझा। कारण यह कि किसी बातका ...या बुरा समझा जाना था पर निर्भर ...है। हिन्दू समाजमें चाचाकी लड़कीसे ...करना बुरा समझा जाता है, क्योंकि ...उसकी प्रथाके विरुद्ध है, परन्तु मुस्लिम ...ईसाई समाजमें इसे कोई बुरा नहीं ...। मालूम होता है कि कालान्तरमें ...की उपर्युक्त स्वतन्त्रताका दुरुपयोग ...और समाजमें लड़ाई-झगड़े और ...उत्पन्न हो गयी। तब विवाहकी ...जारी हुई। पहले प्रबल और शक्तिशाली ...अनेक स्त्रियां रख लेता था। परन्तु ...समाजके विकासके साथ इस प्रथा-...बुरा समझा जाने लगा और एक ...लिये केवल एक स्त्री और एक स्त्रीके ...केवल एक पुरुषका विधान कर दिया ...। कारण यह कि बहु विवाहसे समाजमें ...फैलती थी। कुछ पुरुष क्वांरे रह ...थे और कुछ स्त्रियोंको वेश्या बनना ...था।

...कालान्तरमें धीरे-धीरे स्त्री पतिकी एक ...सम्पत्ति समझी जाने लगी। उसे वह ...सकता था, बेच सकता था, और क्रीत-...की भांति उससे काम ले सकता था। ...की सम्पत्तिपर उसका कोई भी अधिकार ...। वह केवल रोटी कपड़ा ले सकती थी। ...के अधिकारी उसके बेटे थे। इसलिये ...को दूसरेपर रहना होता था।

स्त्री जाति और हमारा समाज

—:*:—

(लेखक—श्री सन्तराम, बी० ए०)

वर्तमान युग स्वाधीनताका युग है, प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक राष्ट्र स्वाधीन रहना चाहता है। स्त्रियोंकी सैकड़ों-सहस्रों वर्षोंकी दासताको दूर करनेकी ओर भी लोगोंका ध्यान गया है। स्त्रियां स्वयं भी अपनी दासताको अनुभव करके इसे शीघ्रसे शीघ्र दूर करनेके लिये यत्न करने लगी हैं। फलतः समय-समयपर होनेवाले सुधारोंके अतिरिक्त प्रस्तावित हिन्दू कोडमें भी राव कमेटीने कई ऐसे सुधार सुझाये हैं जिनसे हिन्दू-समाजमें स्त्रीकी स्थिति पहलेसे अच्छी हो जानेकी आशा की जा सकती है।

प्रस्तावित हिन्दू कोडके अनुसार जो व्यक्ति बिना वसीयत किये मर जायगा उसकी सम्पत्तिके अधिकारी निम्नलिखित होंगे :—

(क) परिगणित उत्तराधिकारी यदि कोई हों जिनका उल्लेख खण्ड ५ में है; (ख) यदि कोई परिगणित उत्तराधिकारी न हों, तो मृत व्यक्तिके पिताके वंशमें सगोत्र, यदि कोई हों; (ग) यदि सगोत्र कोई न हो तो उसकी जातिकी दृष्टिसे सगोत्र, यदि कोई हो; (घ) यदि कोई जातिकी दृष्टिसे सगोत्र न हो, तो वे उत्तराधिकारी जिनका खण्ड १० में उल्लेख है, यदि कोई हो।

लेखक

खण्ड ५ में परिगणित उत्तराधिकारी ये हैं :—

श्रेणी १—निकट सम्बन्धी

(१) विधवा, पुत्र, बेटी, पहले मर चुके पुत्रका पुत्र, पहले मर चुके बेटका पोता इनको समकालीन उत्तराधिकारी कहा जाता है। (२) बेटीका बेटा (३) माता (४) पिता (५) भाई (पिताका बेटा) (६) भतीजा

श्रेणी २—दूसरे वंशज

(१) बेटेकी बेटी (२) बेटीकी बेटी (३) पोतीका बेटा (४) पोतेकी पुत्री (५) पोती की पुत्री (६) बेटीका पोता (७) बेटीकी पोती (८) दोहतीका बेटा (९) दोहतीकी बेटी।

श्रेणी ३—पिताके दूसरे वंशज

(१) भाईके लड़केका बेटा (२) बहन (३) बहनका बेटा (४) भाईकी लड़की (५) बहनकी बेटी।

श्रेणी ४—पिताकी माता, दादा और उसके वंशज।

(१) पिताकी माता (२) पिताका पिता (३) पिताका भाई (४) पिताके भाईका लड़का (५) पिताके भाईके बेटेका बेटा (६) पिताकी बहन (७) पिताकी बहनका बेटा

श्रेणी ५—दादाकी माता, दादाकी पिता और उसके वंशज।

(१) दादाकी माता (२) दादाका पिता (३) दादाका भाई (४) दादाके भाईका बेटा (५) दादाके भाईका पोता (६) दादाकी बहन (७) दादीकी बहनका लड़का।

श्रेणी ६—नानी, नाना और उसके वंशज।

(१) नानी (२) नाना (३) मामा (४) मामाका बेटा (५) मामाका पोता (६) मौसी (७) मौसीका पुत्र।

६—परिगणित उत्तराधिकारियोंमें उत्तराधिकारका क्रम इस प्रकार है :—

जिन उत्तराधिकारियोंका नाम एक श्रेणीमें है वे उनमें अच्छे समझे जायंगे जिनके नाम उसके बादकी श्रेणीमें दिये गये हैं, और प्रत्येक श्रेणीमें जिनके नाम एक ही जगह लिखे गये हैं वे उनसे अच्छे समझे जायंगे जिनके नाम उनके बाद किसी एक जगह दिये गये हैं। जिनके नाम एक ही जगह लिखे गये वे सब इकट्ठे लेंगे।

दृष्टान्त

(I) एक पुरुष बिना वसीयत किये मर जाता है, उसके पीछे उसकी विधवा पत्नी, बहन और उसका दादा रह जाते हैं। तब उसकी विधवा जिसका उल्लेख श्रेणी १ में है, उसकी बहनसे जिसका उल्लेख श्रेणी ३ में और दादासे जिसका उल्लेख श्रेणी ४ में है अधिक अच्छी हैं।

(II) मृत व्यक्तियोंके बचे हुए सम्बन्धी दो बेटियां और एक दोहता है। बेटियां जो श्रेणी १ की लिखित मद (१) के भीतर हैं वे बेटीके पुत्रसे अच्छी हैं जो उसी श्रेणीके लिखित मद (२) के भीतर है। और दोनों बेटियोंको इकट्ठा भाग मिलेगा।

(III) बचे हुए सम्बन्धीमें एक विधवा, दो बेटे, तीन बेटियां, दो पोते मृत बेटेसे और एक पड़पोता मृत पोतेका पुत्र है। वे सब श्रेणी १ की लिखित मद (१) के अन्तर्गत होनेसे सब एक साथ उत्तराधिकारी होंगे, इनमेंसे किसी एकको छोड़कर दूसरेको दाय-भाग नहीं मिलेगा।

समकालीन उत्तराधिकारियोंमें बांट-की रीति—जिस मनुष्यने कोई वसीयत नहीं की उसकी सम्पत्तिकी बांट श्रेणी १ की लिखित मद (१) के समकालीन उत्तराधिकारियोंमें नीचे लिखे नियमानुसार होगी।

(क) विधवा पत्नी, या यदि एकसे अधिक विधवा पत्नियां हों, सब विधवाओंको इकट्ठा मिलाकर एक भाग मिलेगा।

(ख) मृत व्यक्तिके प्रत्येक पुत्रको एक भाग मिलेगा, चाहे वह अपने पिताके साथ सम्मिलित था, या उससे अलग।

(ग) पुत्र, मृत पुत्रोंके पुत्र, मृत पौत्रोंके पुत्रोंको वही भाग मिलेगा जो उनके पिताको मिलता यदि वह वसीयत करनेवाले पिता या दादाकी मृत्युके समय जीवित होता।

(घ) वसीयत किये बिना मर जानेवाले पिताकी प्रत्येक पुत्रीको आधा भाग मिलेगा, चाहे वह विवाहिता, अविवाहिता या विधवा हो; धनी हो या निर्धन, उसके सन्तान हो या न हो।

दृष्टान्त

(१) बचे हुए सम्बन्धी तीन पुत्र, पहले मर चुके पुत्रसे पांच पोते, एक दूसरे पूर्व मृत पुत्रके पुत्रसे दो परपौत्र हैं। तब प्रत्येक पुत्रको सम्पत्तिका $\frac{१}{५}$ वां भाग प्रत्येक पोतेको $\frac{१}{२५}$ वां भाग और प्रत्येक परपौत्रको $\frac{१}{१०}$ वां भाग मिलेगा।

(२) केवल एक विधवा पत्नी या पुत्री बाकी हैं और कोई समकालीन उत्तराधिकारी नहीं। तब विधवा पत्नी या बेटी, जो भी हो, सारीकी सारी सम्पत्तिकी अधिकारिणी होगी।

(३) किसी मनुष्यके मरनेके पश्चात् उसकी दो विधवाएं, एक अलग हुआ पुत्र, दो न अलग हुए पुत्र, एक अविवाहिता पुत्री, दो विवाहिता पुत्रियां, एक विधवा पुत्री, और मर चुके पुत्रसे चार पोते रहते हैं। तब दो विधवाओंको इकट्ठा एक भाग, तीन पुत्रोंमेंसे प्रत्येकको एक एक भाग, चार पुत्रियोंमें से प्रत्येकको आधा-आधा भाग, और चार पोतोंको इकट्ठा एक भाग मिलेगा। इस प्रकार प्रत्येक विधवा सम्पत्तिका $\frac{१}{१४}$ वां भाग, प्रत्येक पुत्र $\frac{१}{७}$ वां भाग, प्रत्येक पुत्री $\frac{१}{१४}$ वां भाग, और प्रत्येक परपौत्र $\frac{१}{२८}$ वां भाग पायगा।

इस प्रस्तावित हिन्दू कोडके अनुसार, यदि किसी विधवाको अपने मृत पतिकी सारी सम्पत्ति मिल जाती है, तो उसे उस सम्पत्ति पर वैसा ही पूरा अधिकार होगा जैसे कि उसे उस दशामें होता यदि वह पुरुष होती। यदि कोई व्यक्ति वसीयत कर जाता है कि मेरी विधवाको पूरी जायदाद बेचनेका अधिकार नहीं होगा, वह अपने जीवनमें इसका उपभोग कर सकेगी, तो विधवा उस सम्पत्तिको किसी दूसरेको नहीं दे सकेगी। इसका कारण उसका स्त्री होना नहीं, वरन् उसके पतिकी वसीयत है। किसी स्त्रीके बिना वसीयत किये मर जानेपर उसके स्त्री-धनका बंटवारा उसके उत्तराधिकारियोंमें उसी प्रकार होगा जैसे किसी पुरुषकी सम्पत्तिका होता है। परन्तु खेतीकी भूमिपर यह बात लागू नहीं होती।

जो स्त्री अपने पतिके जीवन कालमें व्यभिचारिणी रही हो, उसे उसकी संपत्तिमें भाग नहीं मिलेगा, यदि उसके पतिने क्षमा न कर दिया हो। इसके लिये यह भी आवश्यक है कि किसी अदालतमें स्त्रीको असति स्वीकार किया हो। केवल किसीके असति कहनेसे ही वह संपत्तिसे वंचित न की जा सकेगी।

यदि कोई हिन्दू, स्त्री या पुरुष, ईसाई या मुसलमान हो जायगा, तो उसके बाद उत्पन्न होने वाले उसके बच्चे अपने हिन्दू

[सम्ब]न्धियोंकी संपत्तिके उत्तराधिकारी नहीं [हो]ने सकेंगे।

इस समय हिन्दू पति एक स्त्रीकी विद्यमानतामें दूसरी स्त्री कर सकता है, परन्तु स्त्री एक पतिके रहते दूसरा पति नहीं कर सकती। इससे अनेक पति-परित्यक्ता स्त्रियां [स]ड़ी सड़ रही हैं। उनके दुःखको दूर करनेके लिए प्रस्तावित हिन्दू कोडने निम्नलिखित अवस्थामें विवाह-विच्छेद अर्थात तलाककी अनुमति दी है —

(क) जिस समय तलाक लेनेके लिये डिस्ट्रिक्ट कोर्ट या हाइकोर्टमें आवेदन-पत्र दिया जाय यदि उससे ठीक पहले कमसे कम सात वर्षसे पति पागल हो और इलाज कराने [प]र भी वह चंगा न हो सकता हो।

(ख) उसको उत्कट प्रकारका कोढ़ हो जो अच्छा न हो सकता हो, और वह उस स्त्री [से] न हुआ हो, या

(ग) कोर्टमें तलाकके लिए आवेदन-पत्र [दे]नेके ठीक पहले पतिने बिना किसी उचित कारणके कम-से-कम सात वर्षसे स्त्रीको छोड़ [र]खा हो, या

(घ) कोई दूसरा धर्म ग्रहण करनेके कारण वह हिन्दू न रहा हो ; या

(ङ) आवेदन-पत्र देनेके ठीक पहले कम-[से] कम सात वर्षसे उसे कोई उपदंश-सम्बन्धी [र]ोग हो, जो उसे पत्नीसे न लगा हो, और [ज]िसके पत्नीको भी हो जानेका डर हो; या

(च) यदि पतिने कोई दूसरी स्त्री रखेल [क]े रूपमें रख छोड़ी हो।

डिस्ट्रिक्ट जज तलाककी जो डिग्री देगा [उ]सका समर्थन हाईकोर्टसे हो जाना आवश्यक है।

इस बिलपर लोकमत जाननेके लिये एक कमेटीने सारे देशका भ्रमण करके प्रसिद्ध व्यक्तियों और संस्थाओंकी सम्मतियां इकट्ठी की हैं। यह कमेटी अगस्तमें अपनी रिपोर्ट केन्द्रीय असेम्बलीमें पेश करेगी। इसमें कोई सन्देह नहीं कि बहुतसे कट्टर पंथियोंने इस बिलका विरोध किया है। उन्होंने अपढ़ स्त्रियों को भड़का कर हिन्दू ला कमेटीके विरुद्ध काली झण्डियोंसे प्रदर्शन कराये हैं। इन स्त्रियोंकी इस चेष्टाको देखकर अमेरिकामें नीग्रो लोगोंकी स्वाधीनताका इतिहास स्मरण हो आ जाता है। जब नीग्रो लोगोंकी स्वाधीनताके लिये अमेरिकाके कुछ सहृदय सज्जनोंने प्रयत्न किया तो स्वयं नीग्रो ही इस प्रयत्नके सबसे बड़े विरोधी थे। जैसे नीग्रो लोगोंको दासतासे प्रेम हो गया था वैसे ही हमारे देशकी साधारण स्त्रियोंको पराधीनतासे प्रेम हो गया है। परन्तु पढ़ी-लिखी स्त्रियोंकी सभी संस्थाओंने मुक्तकण्ठसे बिलका समर्थन किया है।

एक बात और भी देखनेमें आयी है। [ज]ो कट्टरपंथी लोग जात-पांत तोड़क विवाह का घोर विरोध किया करते थे, परन्तु इस समय वे उसे सहन कर रहे हैं। अब उनका सारा जोर पुत्रीको पिताकी संपत्तिमें भाग मिलने और विवाह-विच्छेदके विरुद्ध ही है, इस बिलमें भी लड़कीको लड़केके बराबर नहीं माना गया। उसे केवल अपने भाईसे आधा भाग दिया गया है। वह भाईके [...]

[...]कारिणी हो सकती है। जबतक पतिका आश्रय बना है तब तक उसे पतिकी संपत्तिमें न कोई अधिकार है और न हित। इसलिये हिन्दू स्त्रीको उत्तराधिकारमें तभी संपत्ति मिल सकती है जब उसका कोई भाई न हो, या वह विधवा हो जाय, और विधवा होनेकी दशामें भी उसका हित सीमित होता है। कोड बनानेवालोंकी सम्मतिमें लड़कीको पिताकी संपत्तिमें अधिक अच्छा अधिकार होना चाहिये, क्योंकि ससुरके बेटेको संपत्ति से वंचित कर देनेके संयोग बहुत अधिक हो सकते हैं और वह वसीयत द्वारा उसे संपत्तिसे वंचित कर सकता है।

इस समय यद्यपि विधवा अपनी कानून-सङ्गत आवश्यकताके लिये अपनी सम्पत्तिको बेच सकती है, परन्तु उसे उसका पूरा मोल नहीं मिलता। कारण यह कि जबतक उसके भावी उत्तराधिकारी बिक्रीमें सम्मिलित न हों खरीदारको कानून-सङ्गत आवश्यकताका निश्चय नहीं होता, इसलिए वह संपत्तिका पूरा दाम नहीं देता। परन्तु बहुतसी दशाओं में भावी उत्तराधिकारी तबतक सम्मिलित नहीं होते, जबतक कि उनको भी मोलमेंसे कुछ भाग नहीं दिया जाता। परिणाम यह है कि हिन्दू विधवा अपनी संपत्तिका पूरा मूल्य नहीं ले सकती। जर्मनी, फ्रांस, स्वीडेन, अमेरिका वरन चीनमें भी पुत्रीको पुत्रके समान ही पिताकी संपत्तिमें भाग मिलता है। फिर कोई कारण नहीं कि पुत्रीको समान भाग देनेसे हिन्दू-समाज ही क्यों नष्ट हो जायगा। यह कहना कि लड़कियोंको उत्तराधिकारमें संपत्ति मिलनेसे गुण्डे उनको भगा ले जायंगे,सर्वथा निराधार आशंका है। संसार बदल चुका है। दूसरे देशोंमें स्त्रियां प्रबंधके बड़े-बड़े काम कर रही हैं। वे कंपनियां चलाती हैं। वे वकील, डाक्टर, इंजीनियर, वायुयान चालक, मिनिस्टर तक हैं। क्या वे अपनी संपत्तिको ही संभाल न सकेंगी? स्त्रियोंके सम्बन्धमें ऐसा सन्देह अपनी मातृ शक्तिपर बड़ा भारी लाञ्छन है। पुरानी स्मृतियोंको लेकर ही पीटते रहनेसे काम नहीं चलेगा। सदा पीछेकी ओर देखते रहनेसे ही हम आगे नहीं बढ़ सकते। स्मृतियां भी समय-समयपर बदलती रही हैं। मुसलमानों और अङ्गरेजोंके राजत्वकालमें ही अपनी स्मृतियोंको अपनी आवश्यकताके अनुसार बदल डालनेकी हमारी क्षमता हमसे छिन गयी है। वैदिककालमें स्त्रीकी स्थिति अबकी अपेक्षा बहुत उत्तम थी। उसका पुरुष के बराबर पद था। इस पतनके कालमें तो वह पुरुषकी एक जंगम संपत्ति मात्र बन गयी है। जिस तलाकसे कट्टर पंथी इतना भड़कते हैं, उसकी अनुमति भी स्मृति इन शब्दोंमें देती है—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे च पतिते पतौ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते॥

फिर हिन्दू समाजमें केवल ब्राह्मण क्षत्रिय ही नहीं, तथाकथित छोटी जातिके लोग भी हैं। शिमला, कांगड़ा और कुछ आदि पहाड़ी प्रदेशोंमें हिन्दुओंकी अनेक जातियोंमें अब भी तलाककी प्रथा है। यह बिल सबके लिये है। परन्तु यह किसीको तलाक [...]

उठाना चाहता है वह उठाये,जो नहीं चाहता वह न उठाये।

कट्टर पंथियोंने किस समाज-सुधारका विरोध नहीं किया? सती और बाल्य-विवाह को रोकने और विधवा विवाहको वैध ठहरानेके लिए जब कानून बने थे, तब भी उन्होंने 'हिन्दू धर्म डूब जायगा' का गगनभेदी घोष किया था। वे कानून यदि इनके डरसे पास न होते तो आज समाजकी कितनी हानि होती। प्रस्तावित हिन्दू कोड चाहे उस समय पास भी न हो सके, परन्तु उसने समाजमें जो आन्दोलन और जागृति उत्पन्न कर दी है उससे मुझे तो विश्वास है कि यह अगले पांच वर्षमें, किसी दूसरे रूपमें पास होकर रहेगा। इसको सदा के लिये रोक देना कट्टरपंथियोंकी शक्तिसे बाहरकी बात है।

बर्लिन——जहां घमासान हो रहा है

(लेखक—प्रो० मयङ्क)

[illegible]नाजी सत्ताके केन्द्रस्थल बर्लिनमें घिरी [illegible]सेनाएं, जो सारे विश्वमें नाजी-[illegible]का प्रचार करनेके लिये अग्रसर हुई थीं [illegible]जो हिटलरके शब्दोंमें एक हजार वर्षों [illegible]ण्ण रहनेवाली थीं, अपने सर्वनाशकी [illegible] गिन रही हैं। जर्मन रीखकी राज-[illegible] बर्लिनके अधिकतर युद्ध कारखाने [illegible] सरकारी भवन इस समय खण्डहरके [illegible] विद्यमान हैं। बर्लिन नगर जो युद्धके [illegible] संसारका चतुर्थ सर्वश्रेष्ठ नगर था, आज [illegible]र बन रहा है। उसकी आलीशान [illegible]नों, सड़कों और फैक्टरियोंके भग्ना-[illegible] इस समय अपने पुराने गौरवकी याद [illegible] रहे हैं।

[illegible]रोप महादेशके सभी स्थानोंको मिलाने [illegible] सड़कों, रेल पथों और विमान मार्गों [illegible]न्द्रस्थल बर्लिन अब एक उजाड़ नगर [illegible]या है। जर्मन व्यवसाय, बैंकिंग कार-[illegible] और बड़े-बड़े उद्योगोंकी बर्लिनमें फिरसे [illegible]ना सम्भव नहीं। युद्धके पूर्व बर्लिनके [illegible]खानोंमें जर्मन रीखके कुल मजदूरोंमेंसे [illegible] प्रतिशत काम करते और रूर प्रदेशसे [illegible]यी गयी अधिकांश कच्ची धातुओं द्वारा [illegible]री वस्तुओंका निर्माण करते थे। उसके [illegible]रिक्त बर्लिन जर्मन शासनतन्त्रका [illegible] था और जर्मन साम्राज्यकी प्रथम [illegible]नी होनेके कारण यूरोपमें जर्मनोंकी [illegible] महत्वपूर्ण उन्नतिका वह प्रतीक [illegible]र्मन अधिकृत यूरोपकी धन-सम्पत्ति, [illegible] वस्तुओं और ललित कला सम्बन्धी [illegible] भण्डारोंसे बर्लिन नगर ठसाठस भर [illegible]। हिटलरको आशा थी कि सारे [illegible] अनन्त काल तक नाजी सत्ता कायम [illegible]और जर्मन राष्ट्रका समस्त मानव [illegible] प्रभाव स्थापित हो जायगा। [illegible]सकी आशा फलवती होकर भी [illegible] न रह सकी। जर्मन सभ्यता, संस्कृति, [illegible], शिल्प, वाणिज्य और शिक्षाका [illegible] बर्लिन अन्ततः मटियामेट हो ही [illegible]। बर्लिन नगर स्प्री नामक एक छोटी-[illegible] दोनों किनारेपर स्थित है। इस [illegible] एक हजार टन तकके स्टीमर और [illegible] भारी बजरें आसानीसे यातायात कर [illegible]हैं। लन्दनसे इसकी दूरी ६०० मील, [illegible] १९५ मील, स्टेटिनसे ८० मील, [illegible] सीमासे १०५ मील, आशेनसे [illegible] और राइन तटवर्ती कोवलेंजसे [illegible] मील है। १८७०-७१ के फ्रांस-प्रशा [illegible] बर्लिनकी कुल आबादी प्रायः ८ [illegible] थी। इसकी सड़कें अत्यन्त खराब और [illegible] तथा शहरकी नालियां सदैव गन्दी [illegible] थीं। राजधानीकी सफाईका कोई [illegible] प्रबन्ध नहीं था और उसकी सड़कें [illegible] और भी कष्टदायक बना देती [illegible] बर्लिनमें जर्मन सरकारका सदर [illegible] स्थापन होने तथा अन्तर्राष्ट्रीय रेलोंका [illegible] होनेके परिणामस्वरूप उसकी [illegible] १९०१ में बढ़कर २० लाख ३३ [illegible] गयी। सन १९३३ में बर्लिन

की आबादी ४२ लाख ३६ हजार ४१६ थी। युद्धारम्भके समय बर्लिन अपने ४३ लाख ३२ हजार २४२ अधिवासियोंके साथ संसार का लन्दन, न्यूयार्क और टोकियोके बाद चतुर्थ सर्वश्रेष्ठ शहर माना जाता था।

बर्लिन नगरका विकास अधिकांशमें यूरोपीय समतल भूमिकी नीची पहाड़ियोंकी श्रृंखलाओंके मध्यमें उसके स्थित रहनेपर निर्भर करता है। पहाड़ी घाटियोंके कारण एल्ब और ओडर नदियोंको नहरोंके द्वारा एक दूसरेसे तथा बर्लिनसे सम्बन्धित करनेमें सरलता हुई। भूमिके असमतल होनेके कारण सभी सड़कों और रेल पथोंको बर्लिनमें केंद्रित होना पड़ा और प्रधान रेलवे लाइनोंको परस्पर मिलानेके लिये वाह्य और आन्तरिक स्थानीय रेल मार्गोंका निर्माण करना आवश्यक हुआ। परवर्ती वर्षोंमें भूगर्भस्थित और भूमिके ऊपरसे चलनेवाली इलेक्ट्रिकल रेल गाड़ियोंका बर्लिनमें आवागमन आरम्भ हुआ तथा युद्धके पूर्व यूरोपके एक सर्वाधिक समुन्नत और सुव्यवस्थित नगर बर्लिनकी चौड़ी सड़कों पर दो तल्ला मोटर बसें और ट्राम गाड़ियां विशाल इमारतोंके मध्यसे आवागमन करने लग गयी थीं।

वर्तमान युद्धकालमें बर्लिन नगरके एक अत्यन्त महत्वपूर्ण सामरिक लक्ष्य स्थान होनेके कारण उसपर अति प्रचण्ड हवाई आक्रमण किये गये हैं। बर्लिनसे प्राप्त सबसे ताजी रिपोर्टमें कहा गया है कि वहांकी गलियों, सड़कों, रेलपथों, नालियों तथा फुटपाथोंकी अवस्था १८७० से भी बदतर है और सारा नगर काठके छोटे-छोटे मकानोंसे घिरा हुआ है। बर्लिनके अन्दर २३७ वर्गफीटसे अधिक विस्तृत स्थानपर ऐसे मकानों के निर्माण करनेकी पुलिसने मनाही कर दी है।

बर्लिन नगरके बीचसे स्प्री नदी दक्षिण पूर्वसे उत्तर पश्चिमकी ओर बहती है और बर्लिनकी दक्षिणी सीमा पर लैण्डवेहर नहर है। आसपासके चारलोटेनबर्ग, स्फूनबर्ग, न्यूकोल्न, विलमडोर्फ, लिस्टेनबर्ग और टेम्पलहोफ तथा नीदरबर्निमके इलाकोंको मिलाकर बर्लिन नगर २५ वर्गमीलके इलाकेसे ३३२ वर्गमीलके इलाकेमें विस्तृत हो गया है।

बर्लिनमें अनेक युद्ध कारखाने नाजी सेनाके लिये शस्त्रास्त्रों और अन्य युद्धोपकरणोंका निर्माण कर रहे है। बर्लिनके मध्य पश्चिमी इलाकेके स्पाण्डे और चारलोटेनबर्ग अंचलोंमें कई महत्वपूर्ण युद्ध कारखाने हैं। इनमें बिजलीके यन्त्र और तारका निर्माण करनेवाली सीमेन्स-शुकर्ट और सीमेन्सहाल्स की महान फैक्टरियां, वायरिश मोटर कारखाना, रेलवे इञ्जिनोंका आर्नस्टीन और कोपेल कारखाना तथा रेलवेकी अन्य आवश्यक वस्तुओंका निर्माण करनेवाले कारखाने भी शामिल हैं। इनके अतिरिक्त औषधियोंका निर्माण करनेवाला महान प्रतिष्ठान सेरिंजका कारखाना भी इसी क्षेत्रमें है। बर्लिनके द्वितीय और तृतीय सर्वश्रेष्ठ विद्युत शक्ति उत्पादन केन्द्र भी इसी इलाकेमें हैं। बर्लिनका सर्वश्रेष्ठ विद्युत शक्ति उत्पादन केन्द्र ट्रेप्टो-स्कूनेवीड जिलेमें नगरके मध्य भागके दक्षिण-पूर्वमें है। इस केन्द्रमें कोयले की धूलको जलाकर ३००,००० किलोवाटकी विद्युत शक्ति उत्पन्न की जाती है। इसके चतुर्दिक एलजेमीन एलेक्ट्रिसिट्स-गेसेलशोफ्ट और एक्मुलेटरेन-फेवरिक ए० जी० के कारखाने हैं, जहां अन्य वस्तुओंके अलावा सबमेरिनोंके लिये बैटरियोंका निर्माण किया जाता है। इनके अलावा हेंजेल और फाकउल्फ विमान कारखाने, अनेक रासायनिक कारखाने, इञ्जीनियरिंग कारखाने और धातु ढलाईके कारखाने भी इसी क्षेत्रमें हैं।

बर्लिनके उत्तर-पूर्वी टेजेल और रीनीकेनडोर्फ इलाकोंमें रीनमेटेल-बोरसिगका विराट कारखाना है जहां शस्त्रास्त्रों और उसीके डूसेलडोर्फ स्थित कारखानेमें निर्मित इस्पातसे रेलवे इञ्जिनोंका निर्माण किया जाता है। बर्लिनरमेशिनेनवो भी यहीं है जहां शस्त्रास्त्र और रेलवे इञ्जिन तैयार होता है। इसके अतिरिक्त गोवेल्सके सालेके प्रबंधमें ड्यूक-वेफेण्ड म्यूनीशंसवेब्रिकका कारखाना, वाष्प यन्त्रों, इलेक्ट्रिक मोटरों और गाड़ियों का निर्माण करनेवाला वर्गमैन कारखाना तथा डोर्नियर एवं हीनकेल विमान कारखाना भी इसी क्षेत्रमें है।

नगरके दक्षिणवर्ती पेरिनडोर्फ, टेम्पलहोफ और प्रिन्स इलाकोंमें डेमलर-बेंज कारखाने हैं जहां विमानोंके इञ्जिनों, मोटर और अन्य गाड़ियोंके इञ्जिनों और डीजेल मशीनोंका निर्माण होता है। इसके अतिरिक्त संवादके आवागमनके यंत्रोंका निर्माण करनेवाली जर्मनीकी सर्वश्रेष्ठ लोरेंज फैक्टरी, कम्पासरेंज फाइण्डर, अल्टीमीटर्स और अन्य यत्रोंको बनानेवाली अस्कानिया वर्क और युद्धोत्पादनमें संलग्न अनेक छोटे इञ्जीनियरिंग कारखाने इसी अञ्चलमें हैं। इसके साथ बर्लिनके चतुर्दिकके कारखाने और नगरके मध्य भागमें फैले हुए वस्त्र कारखाने बर्लिन को पैराशूट, महीनयन्त्र, बिजलीके यन्त्र और रेलवे इञ्जिनोंके उत्पादनके लिये जर्मन रीखका सर्वश्रेष्ठ केन्द्र बताते हैं। टैंकों, सामरिक गाड़ियों, हवाई जहाजों और उसके पुर्जों, चश्मेके सामान, सूक्ष्म यन्त्रों, मशीनों, टारपीडो, सुरंगों और बमों, रासायनिक द्रव्यों और औषधियोंके उत्पादनमें इस क्षेत्रकी तुलना किसी भी विशाल जर्मन औद्योगिक नगरसे की जा सकती है। बर्लिन नगरके उद्योगोंके महत्वका अनुमान इस बातसे आसानीसे लगाया जासकता है कि युद्धके पूर्व प्रति वर्ष ६० लाख टन कोयला बर्लिनके कारखानोंमें खर्च होता था।

मध्य यूरोपके सर्वश्रेष्ठ रेलवे केन्द्र बर्लिनसे १४ प्रधान रेलवे लाइनें निकलती हैं। यूरोप महादेशके सभी भागोंके साथ बर्लिनका सीधा रेलवे सम्बन्ध है। युद्धके पूर्व

बर्लिनका प्रसिद्ध कारखाना—"केबूलवर्क ओबर्सप्री" जहां ताम्बेकी ढलाई होती है।

बर्लिनके निकट, ब्रैंडेनबर्ग स्थित प्रसिद्ध कारखाना—"ओपेल वर्क्स"

बर्लिन द्वारा ३ करोड़ टन मालका प्रति वर्ष यातायात किया जाता था। इसका ८० प्रतिशत माल बर्लिन पहुंचता था और शेष २० प्रतिशत बर्लिनसे बाहर भेजा जाता था। बर्लिन आनेवाले मालका दो तिहाई भाग रेल द्वारा और एक तिहाई जलमार्ग द्वारा पहुंचता था। बर्लिनके बाहर जानेवाली बहुमूल्य वस्तुओंका ८० प्रतिशत रेल द्वारा और शेष २० प्रतिशत जल मार्ग द्वारा बाहर भेजा जाता था। बर्लिनके चतुर्दिक ७ विशाल बन्दरगाह हैं जहां स्टीमरोंपर माल चढ़ाया और उतारा जाता है। बर्लिनका सामुद्रिक बन्दरगाह स्टेटिन है। स्टेटिनको बर्लिनसे एक ६३मील लम्बी नहरसे मिलाया गया है और इसमें ६०० टनतकके मालवाही बजरे आवागमन कर सकते हैं। बर्लिनसे एक नहर पूरबकी ओर जाकर ओडर नदीसे मिलती है और फिर स्प्री तथा हेवेल नदियोंसे पश्चिमकी ओर गुजरती हुई एल्ब नदी और हेम्बर्गके महान बन्दरगाहपर मिल जाती है।

बर्लिनके पश्चिमी बन्दरगाहमें एक-एक हजार टनके ७० जहाजोंपर एक साथ माल चढ़ाया और उतारा जा सकता है। स्प्री नदीके उत्तरी किनारेपर स्थित बर्लिनके पूर्वीय बन्दरगाहसे युद्धके पूर्व प्रति वर्ष १ लाख टनसे अधिक मालका आवागमन होता था। इनके अतिरिक्त सात छोटे बन्दरगाह भी हैं जहांसे प्रति वर्ष हजारों टन मालका यातायात होता है। युद्धके पूर्व बर्लिन नगर हवाई यातायातका भी एक प्रमुख केन्द्र था। नगरके दक्षिणी भागमें स्थित टेम्पलहोफ हवाई अड्डेसे यूरोपके विभिन्न भागोंके बीच ९ हवाई मार्गोंपर विमानोंका आवागमन हुआ करता था।

जर्मन राजधानीके बीचोबीच १९८ फीट चौड़ी और प्रायः पौन मील लम्बी विख्यात सड़क अण्टरडेन लिण्डेन है। इसके दोनों ओर सरकारी दफ्तर, विश्वविद्यालय और अनेक अन्य प्रमुख इमारतें हैं। यह सड़क पूरबसे पश्चिमको टियरगार्टन पार्कके निकटस्थ ब्रेण्डेनबर्ग टावरसे पुराने शाही महलतक जाती है और इसीके समीप विख्यात आधुनिक गिरजा घर है। बर्लिनका विख्यात होटल आडलन भी, जो पहले उच्च नाजी अफसरों तथा बर्लिन आनेवाले क्विसलिंगों द्वारा व्यवहृत होता था, अण्टरडेन लिंडेनपर ही है। यहांसे कुछ दूर विल्हेमस्ट्रासमें जर्मनीका परराष्ट्र विभाग और हिटलरका सदर मुकाम है। इसके दक्षिण पश्चिममें पोत्सडाम रेलवे स्टेशनके समीप टियर गार्टनके उत्तरमें जर्मनीका युद्ध विभाग है तथा इसके दक्षिणमें विश्वविख्यात स्पोर्ट पैलेस है जहां हिटलरने अनेक बार विजयके उपलक्षमें भाषण किया था।

अण्टरडेन लिंडेनके दक्षिणमें राजधानीके सरकारी दफ्तर हैं, जो फिड्रिखस्टाटके नामसे विख्यात हैं और इसके बीचसे दो सीधी सड़कें गुजरती हैं। यह सड़क पोत्सडाम प्लेस और डोनहोफ प्लेसको मिलानेवाली लिपजिग स्ट्रास नामक सड़कसे मिल जाती है। फिड्रिखस्ट्रास नामक सड़क अण्टरडेन लिंडेनको पार करती हुई दो मीलतक जाती है और बर्लिन नगरका सर्वश्रेष्ठ व्यापारिक अञ्चल बनाती है। इनके अतिरिक्त बर्लिनकी प्रमुख सड़कोंमें कोएनिगस्ट्रास,कैसर विल्हेमस्ट्रास, विक्टोरियास्ट्रास, वेलव्यूस्ट्रास, करफ्रूस्टेनस्ट्रास और करफ्यूरस्टेनडमके नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

जर्मन विजेता सेनापति

सन् १९४१ का सितम्बर महीना था। जर्मन सैनिक सोवियट रूसकी राजधानी मास्कोके दरवाजे पर पहुंच चुके थे। दिन बदला और आज समाचारोंसे ज्ञात हो रहा है कि रूसी सेनायें सिर्फ अपनी पितृ भूमिसे जर्मनोंको खदेड़नेमें ही नहीं, बल्कि जर्मनीकी राजधानी बर्लिनकी रक्षा पंक्तिको तोड़कर भीतर घुसनेमें भी सफल हुई हैं। इस सफलताको किसी तरह आकस्मिक नहीं कहा जा सकता। विश्व युद्धकी जो बदली हुई रूपरेखा हमें देखनेमें आ रही है, उसकी वजह है लालसेनाका सुदृढ़ शक्ति, उसका कड़ा अनुशासन और अपने उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये प्रत्येक सैनिकका अदम्य उत्साह। उसकी तहमें भी रूसी सेनानायकोंकी दक्षता और बहादुरी है, जो अपनी कुशल रणनीतिसे दुश्मनोंकी चालोंको बेकार कर अपना सफल वार करनेमें समर्थ होते हैं।

रूसके प्रसिद्ध सेनानी—मार्शल जुकोव और कोनिव, जो बर्लिनके भीषण युद्धमें संलग्न हैं।

मार्शल जुकोव

रूसके सर्वेसर्वा मो० स्टालिनके सम्बंधमें कहा जाता है कि वे वक्तव्य बाहरसे सख्त परहेज कर अपनी सारी शक्ति कार्यमें लगाया करते हैं। यही सत्य अनेक रूसी जेनरलोंके सम्बन्धमें भी चरितार्थ होता है। और "सूर समर करनी करहिं" को चरितार्थ करने वालोंमें सर्वप्रथम हम सोवियट यूनियनके बहादुर मार्शल ग्रेगरी कौंसटेंटीनोविच जुकोवका उल्लेख करेंगे, जिन्होंने १९४१ में मास्कोसे जर्मन फौजोंको पीछे ढकेला। १९४२ में स्टालिनग्राडके घेरेको भंग किया और १९४३ में लेनिनग्राडको मुक्त कराया और १९४४ की समाप्ति तक जर्मनोंको बुरी तरह पीटकर कारपेथियन पर्वतमालाकी तराईमें पहुंचा दिया। मास्कोके रक्षा युद्धके सम्बधमें कहा जाता है कि एक समय उन्होंने अपने स्टाफकी एक बैठक बुलायी और चन्द अलफाजमें ही उनके अन्दर ऐसी जान डाल दी जिसका परिणाम दुनियाने आंखें खोलकर अच्छी तरह देखा। उनके शब्द थे, "अपने हाथ उठाओ और शपथ लो—मास्कोका कभी पतन नहीं होने देंगे।" तबसे सफलता पर सफलता प्राप्त कर रूसी वीर लड़ाकोंने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। जिस रेजेव नगरकी रक्षाके लिये हिटलरने अपने सैनिकोंके नाम दिये गये गुप्त आदेशमें कहा था कि "रेजेव पर खतरा उपस्थित होना आधे बर्लिनके पतनके समान है" और उस रेजेवपर फिरसे रूसी झण्डा फहरानेका श्रेय इसी कर्मनिष्ठ जेनरलको ही है।

इनका लम्बा कद, गठीला बदन, तेज आंखें मानो फौलादकी बनी हुईं और चेहरा बिल्कुल सिंह जैसा ओजपूर्ण है। इस समय उनकी उम्र लगभग ५० वर्ष है। फिर भी स्वास्थ्य काफी सुन्दर है और हररोज घोड़ेपर सवार होकर कम-से-कम १० मीलका चक्कर लगाये बिना वह चैन नहीं लेते। थकावटका उनमें नाम नहीं। बुखार तो शायद इनके निकट आनेसे डरता है।

मार्शल जुकोवने अपना सैनिक जीवन जारकी सेनामें प्रारम्भ किया था। पर रूसी क्रान्तिने इन्हें आकर्षित किया। क्रान्तिके समय आपने बोलशेविकोंका साथ दिया। लालसेनामें रहकर इन्होंने प्रसिद्ध सैनिक शिक्षक मिखेल फ्रून्जसे शिक्षा-दीक्षा पायी और तबसे बराबर लाल क्रान्तिकी सफलताकी रक्षाके लिये लालसेनाकी आप सेवा करते रहे। सन् १९३९ में जापानियोंने लाल सेनाकी सुदूर पूर्वमें शक्ति आजमानेके उद्देश्यसे कुछ ऐसी हरकतें कीं जिसने युद्धका रूप धारण कर लिया। पर मार्शल जुकोवकी टैंकोंने दुश्मनोंके दांत खट्टे कर दिये और शीघ्र ही जापानियोंकी ओरसे सन्धिका प्रस्ताव उपस्थित किया गया। इसी युद्धमें मार्शलने सर्वप्रथम ख्याति प्राप्त की। ये रूस पर जर्मन आक्रमणके समय चीनमें सोवियट सैनिक सलाहकार और चांग कैशकके परामर्शदाता थे।

सैनिक सफलताकी प्रधान कुञ्जी सख्त अनुशासन है। रूसी सेनामें इस किस्मके अनुशासनका प्राबल्य है, और इस सद्गुणके विकासमें जिन जेनरलोंका हाथ रहा है, उनमें मार्शल जुकोव भी एक हैं।

मार्शल जुकोवकी सफलताका कारण उनकी अद्भुत दूरदर्शिता है। रूस-जर्मन तटस्थता संधिके बाद भी वे पश्चिमी मोर्चेसे निश्चिन्त नहीं हुए थे। उन्हें इस बातकी आशंका थी कि कभी भी दुश्मन हमारी ओर अपनी कुदृष्टि डाल सकता है और तभी तो उन्होंने लापरवाहीके विरुद्ध चेतावनी देते हुए कहा था—"लालसेनाको पश्चिमी मोर्चेपर सदैव सतर्क रहना है, ताकि दुश्मनोंकी ... समय हम ऊंघते हुए नहीं पाये जायें। ... रण कौशलकी विशेषता उनके ही ... लीजिये "मैं एकके बाद दूसरी ... फाया करता हूं। सामनेसे कभी ... नहीं करता।" स्टालिनग्राडके ... नीतिसे जुकोवने एक विशाल जर्मन ... खात्मा किया था।

मार्शल कोनिव

रूसके दूसरे प्रमुख जेनरल इवान ... नोविच कोनिव हैं, जो रूसके ... चतुर जेनरलोंमें अपना खास स्थान ... हैं। युद्धके इतने लम्बे मोर्चेपर जहां ... आप पर भार सौंपा गया, आपने ... दिखाया। मैदान, दलदल, जंगल और ... सभी जगहोंमें यह सफल सैन्य सञ्चालन ... हो चुके हैं। हिटलर द्वारा रूसपर ... समय मार्शल कोनिव गोमेल मोर्चे ... पति थे। उस समय आपने अपनेको ... युद्ध संचालनका विशेषज्ञ प्रमाणित ... जब इन्हें स्थानान्तरित कर मास्को ... जिम्मेदारी दी गयी तब कैलिनीनका ... कार स्थापित किया। रेजेव तथा ... पर आक्रमण करते समय अपनी ... आवश्यकतानुसार विभिन्न मोर्चाओं ... शान्तिपूर्ण और असाधारण ढंगसे ... न्तरित करनेमें मार्शल कोनिवने ... बुद्धिका परिचय दिया है। १९४... दक्षिणी मोर्चेपर भेजा गया, जहांकी ... तिक अवस्था अब तकके सभी ... बिल्कुल भिन्न थी। फिर भी ... परिस्थितियोंके लायक अपनेको ... इन्होंने अपनी पुरानी विजयका ... रखा। दक्षिणी मोर्चेपर इनकी ... प्रारम्भ ओरेल, बीलोग्राड और ... होता है। पर १९४०-४४ की ... प्रत्याक्रमणने कोनिवको रूसी ... अगली कतारमें खड़ा कर दिया। ... केनीवमें घिरी दुश्मनकी सेनाका ... दक्षिणी युक्रेनके मार्गसे रूमानिया ... मार्ग साफ कर दिया।

अड़तालीस वर्षकी उम्रमें ... सेनाकी भीमकाय तोपोंकी दूसरी ... भर्ती हुए थे। गृह युद्धके समय ... शस्त्र सज्जित ट्रेनके कमाण्डर ... उनका चेहरा गंभीर, भौंहें घनी और ... ऊंचा है। आपका स्वभाव सरल है। ... प्रमुख रूसी जेनरलोंकी तरह उन्हें ... बोलनेकी आदत नहीं। कोनिवकी ... सम्बन्धमें कहा जाता है कि ... उनकी चालका पता जल्द नहीं ... युद्धमें प्रतिपक्षीकी गतिविधि ... जानकारी भी उसकी योजनाओं ... करनेके लिये काफी है। पर कोनिव ... रंजी चाल दुश्मनोंको भाव ... वे कोनिवसे जिस चालकी आशा ... उसके ठीक विपरीत चाल ... सभी तैयारियोंको निष्फल कर ... की रणनीतिकी सबसे बड़ी विशेषता ...

बर्लिनका रक्तस्नान

—):*:(—

जर्मनीकी राजधानी बर्लिनकी लड़ाई आरंभ हुए एक सप्ताहसे अधिक समय बीत चुका है। उसकी प्राणपनसे रक्षा करनेके लिये नाजी नेता किस तरह सचेष्ट थे, यह उनके वक्तव्यों और संदेशोंसे स्पष्ट हो जाता था। स्वीडिश सूत्रोंसे आनेवाले एक समाचारका आशय यह था कि यालटा कानफरेंसके समय मार्शल स्टेलिनने मेसर्स चर्चिल और रूज-वेल्टसे वादा किया था कि २५ अप्रेलको सानफ्रांसिस्को कानफरेंस आरंभ होनेके पहले ही रूसी सेना बर्लिनपर विजय पताका फहरा देगी। ऐसा नहीं हो सका है, आज तो इतना ही कहा जा सकता है। अब कहते हैं कि रूसी सेनानायक मई दिवस यानी १ मईके पहले बर्लिनपर पूरा अधिकार करनेकी आशा कर रहे हैं। यह पूरी होती है या नहीं, यह आज भी निश्चयपूर्वक कहना कठिन है। इस समय तो बर्लिनमें रक्तकी नदियां बह रही हैं और जर्मनोंका वह परम प्रिय नगर नाजी नेताओंकी कट्टरताके कारण ऐसी पूर्णताके साथ नष्ट होता जान पड़ता है, जिसकी कभी किसीने कल्पना भी नहीं की होगी। शहरकी सड़कोंपर और गलियों-में एक-एक घरके लिये रूसियों और जर्मनोंमें घमासान मचा हुआ है। लड़ाईवाली गलियोंकी भूलभुलैयामें पाठकोंको ले जाने-से कोई लाभ नहीं, क्योंकि उनकी बुद्धि चक-रा जायगी, इसलिये साधारण रूपमें इतना बता देना आवश्यक जान पड़ता है कि प्रायः सम्पूर्ण जर्मन राजधानी चारों ओरसे घिर गयी है और उसके बहुत बड़े हिस्सेपर रूसी सेनाका अधिकार भी हो चुका है, लेकिन युद्धकी विकरालता पूर्ववत् है। रात-दिनकी गोलाबारी तथा बमवर्षासे नगर ध्वस्त हो रहा है, लेकिन ध्वंसावशेषोंमें छिपकर जर्मन योद्धा लड़ रहे हैं। भूमि-के भीतर, भूमिके ऊपर आकाशमें तथा भूमिके तहखानों और खाइयोंमें सर्वत्र युद्ध हो रहा है। शहर मुर्दोंका शहर बन गया है। सड़कोंपर मरे हुए सैनिकोंकी लाशें पटी हैं। जगह जगह आग लगी हुई है और नगर धांय-धांय करके जल रहा है और ऐसा जान पड़ता है कि अभी कई दिनोंतक यह अग्नि बुझनेवाली नहीं है। सड़ी हुई लाशोंकी दुर्गन्धिसे जीवित लोगोंकी नाकें फट रही हैं और तरह-तरहकी बीमारियां फैलनेकी आशङ्का हो रही है। कहा गया है कि स्वयं हिटलरने बर्लिनकी लड़ाईका भार ग्रहण किया है और वही जर्मन सेनाओंका संचा-लन नगरके भीतर उपस्थित होकर कर रहा है। यह भी कहा गया है कि हिटलरने अन्ततक बर्लिनमें ही बने रहनेका संकल्प कर लिया है। परन्तु हमारी समझसे तो लड़ने-वाले योद्धाओं और राजधानीके निवासियों-का उत्साह बनाये रखने और बढ़ानेके लिये ही नाजी नेताओंका यह प्रचार है। जो जिस हिटलरके ऊपर ही जर्मनीकी सारी आशा लगी हुई है, वह युद्धक्षेत्रपर उपस्थित रहकर अपनेको खतरेमें कैसे डाल सकता है? जिस तरह मार्शल स्टेलिनके युद्धक्षेत्रपर लाल सेनाका संचालन करनेके समाचारपर हमें विश्वास नहीं हुआ था, वैसे ही हिटलरकी भी बर्लिनमें उपस्थिति असंभव प्रतीत होती है। फिर भी रूसी सेना राजधानीके भीतर बढ़ती हुई इस बातके लिये प्रयत्नशील बतायी गयी है कि यदि हिटलर नगरमें ही है, तो जर्मन प्रतिरोध समाप्त होनेपर उसे जीवित कैद कर लिया जाय। मैंगडेनबर्गमें प्रसिद्ध जर्मन आलो-चक डिटमरने गिरफ्तार होनेपर तो यह कहा है कि, 'युद्ध कई दिनोंके भीतरही समाप्त हो जायेगा और हिटलर बर्लिनमें मर जायेगा।' २४ अप्रेलको मास्कोके सरकारी पत्र 'इजवेस्टिया'ने भी लिखा था कि, "बर्लिनकी घड़ियां केवल गिनी-चुनी रह गयी हैं। वे युद्धकी प्रचंड दीप शिखामें मोमकी भांति गल रही हैं।"

'ग्लोब' के संवाददाताकी २७ अप्रेलकी रिपोर्टसे मालूम हुआ है कि बर्लिनका केंद्रीय भाग जल रहा है और कुछ भागोंमें लड़ाई अब जमीनके भीतर होने लगी है। जर्मन अपनी भूगर्भस्थित रेलवेको काममें लाकर रूसी सेनाके पश्चाद्भागमें गड़बड़ पैदा करने-को प्रयत्नशील हैं। रूसी स्थानोंके पीछे भू-गर्भस्थित एक रेलवे स्टेशनपर कब्जा करनेके लिये एक घंटेतक घुआंधार लड़ाई हुई थी। बर्लिनके भीतर कोई सामनेकी पांत नहीं है। रूसी हरावलके पीछे घमासान मच रहा है। रूसियोंका कहना है कि जर्मनोंने अपनी राजधानीकी किलेबन्दी बहुत अच्छी तरहसे की है। ध्वस्त भवनोंके खडहरोंमें भारी तोपें छिपाकर जर्मन गोले बरसा रहे हैं। जब रूसी टैंक उनके निकट पहुंचे, तभी उन्होंने घुआंधार गोलाबारी शुरू कर दी। उनके पास हाथसे फेंके जानेवाले बमगोले बहुतायत-से हैं और टैंक-तोड़क अस्त्रोंकी भी कमी नहीं है। २३ अप्रेलको हिटलरके हस्ताक्षरसे जो संदेश बर्लिनसे मुसोलिनीके पास भेजा गया था, उसमें कहा गया था कि, "हमारे अस्तित्वका संघर्ष अपनी चरम सीमाको पहुंच चुका है। बोलशेविक तथा यहूदी फौजोंने भारी संख्यामें शस्त्रास्त्रोंका प्रयोग-कर जर्मनीमें अपनी विनाशकारी शक्तियोंको संयुक्त करनेके लिये बाजी लगायी है और वे हमारे महाद्वीपको ध्वस्त करनेपर तुली हुई हैं। मृत्युका विफल करनेकी दृढ़ भावना-लेकर जर्मन तथा अन्य लोग जो कि इसी प्रकारकी भावनासे प्रेरित हैं, इस आक्र-मणको रोक देंगे, चाहे संघर्ष कितना ही भयङ्कर क्यों न हो। हम इस ऐतिहासिक अवसरपर जब आगामी कई शताब्दियोंके लिये यूरोपके भाग्यका निर्णय हो रहा है, अपनी बेजोड़ वीरतासे युद्धकी गतिको बदल देंगे।" हिटलर और नाजियोंकी ऐसी आशावादितापर संसारको आश्चर्य होना स्वाभाविक है, पर इससे तो केवल यही सम-झना ठीक होगा कि नाजी नेताओंने दममें दम रहनेतक मित्रसेनाओंसे लोहा लेते रहनेका दृढ़ निश्चय कर रखा है और वे अभीतक अपने शत्रुओंको आत्मसमर्पण नहीं कर रहे हैं। अवश्य, हिमलरने ब्रिटेन और अमरीकाको बिना शर्त आत्मसमर्पण करनेका प्रस्ताव अपनी ओरसे भेजा है और कहलाया है कि वह उसकी व्यवस्था करनेकी स्थितिमें है, किन्तु इन दोनों मित्रराष्ट्रोंने मंगलवारकी राततकका समय जवाब देनेके लिये जर्मनीको देते हुए साफ कह दिया कि ब्रिटेन और अमरीकाके साथ ही सोवियट रूसको भी आत्म-समर्पण करनेको तैयार होनेसे ही वह प्रस्ताव स्वीकार होगा। सान फ्रांसिस्कोमें शनिवारको एक उच्च अमरीकन अफसरने तो यहांतक कहा है कि जर्मन सरकारने बिना शर्त के मित्र-राष्ट्रोंको आत्मसमर्पण कर दिया है और किसी भी समय मित्रसेनाओंके सदरसे इसकी घोषणा होनेकी आशा की जाती है।

जो हो, जर्मनी २६ अप्रेलको उत्तरी और दक्षिणी दो भागोंमें विभक्त हो चुका है, क्योंकि लीपज़ीगसे उत्तर-पूर्वके तीस मील दूरके टोरगौकी नामक एक स्थानपर पश्चिमकी मित्रसेनाओं और पूर्वकी रूसी सेनाका मिलाप होनेकी घोषणा तीनों बड़ी राजधानियों—लन्दन, वाशिंगटन और मास्कोसे हो चुकी है। रूसके पर-राष्ट्र कमिसर मो० मोलोटोवने सानफ्रांसिस्कोमें पत्र-प्रतिनिधियोंसे यह कहा है—"मैं समझता हूं कि जर्मनीका प्रतिरोध समाप्तिके निकट है।" वैसे तो पश्चिमी युद्धक्षेत्रकी मित्र सेनाओंके प्रधान नायक जेनरल आइज़न हावरने महीनों पहले जर्मनीके केन्द्रीय भागमें पूर्व और पश्चिमकी मित्रसेनाओंका मिलाप होते ही जर्मनीकी हार निश्चित बतायी थी, पर वर्त्तमान शोच-नीय अवस्थाको प्राप्त होनेपर भी जर्मनीकी प्रतिरोधकी शक्ति अभी पूर्णतया नष्ट नहीं की जा सकी है और ऐसा कहा जाता है कि हिटलरने पूरे सौ डिवीजन सैनिक अपनी दक्षिणकी सुरक्षित बैवेरियाकी गढ़ीमें युद्धके सारे सामानोंसे लैस करके रख छोड़ा है और वैसे ही एक बड़ी भारी जर्मन सेना उत्तरके नार्वे देशमें भी बनी हुई है और इन दोनों ही मोर्चोंपर विजय लाभ करनेके बाद ही मित्र-सेनापति अपनेको विजयी कह सकेंगे। नाजी प्रचारकोंने बर्लिन और जेकोस्लोवाकियाकी राजधानी प्रेगकी रक्षा प्राणपनसे करनेका अटल संकल्प किया था। बर्लिनमें तो उनकी कट्टरताका परिचय भलीभांति मिल गया है और शीघ्र ही प्रेगकी भी बारी आनेवाली है। अब जब कि पूर्व और पश्चिमकी मित्र-सेनाएं मिल गयी हैं, तब आशा तो यही की जाती है कि जर्मनीपर उनका चाप बहुत बढ़ जायगा और केवल बर्लिनके ही भयंकर रक्तस्नानसे नहीं इति, यदि नाजियोंकी कट्टरता ऐसी ही बनी रही, तो जर्मनीकी लड़ाईका अन्त होनेके पहले अभी कितने ही स्थानोंपर भयंकर नरसंहार हो सकता है।

उत्तरी इटलीमें देशभक्त इटालियनों द्वारा भयंकर विद्रोह नाजियोंके विरुद्ध खड़ा होने और स्वयं मुसोलिनीके उनके द्वारा गिरफ्तार किये जानेका भी समाचार आया है। इटालियन मोर्चेपर भी मित्र सेनाको अब महत्वकी सफलताएं प्राप्त होनेके समाचार आ रहे हैं। सुदूर पूर्वमें जापानकी लड़ाई भी पूर्ववत् चल रही है। पर २४ अप्रेलको जापानी संवाद-समितिकी रिपोर्टमें कहा गया था कि, "जापानके पर-राष्ट्र मन्त्री शिगेनोरीने मंचूरिया, चीन, बर्मा, स्याम और फिलिपाइनके राजदूतोंके परिषद्में कहा है कि आज युद्धकी स्थिति अत्यन्त गंभीर हो गयी है, पर निर्णायक जीतका विश्वास भी प्रकट किया है। इस समय जापानी प्रत्येक कठिनाईको दूर करनेका प्रयत्न कर रहे हैं। वे अपनी युद्धशक्तिको दृढ़ कर रहे हैं और देशरक्षाके साधनोंको बढ़ा रहे हैं।" इस तरह जर्मनी और जापान दोनों ही जब ऐसी कठिन परिस्थितियोंमें पड़कर अन्तिम विजयकी आशा प्रकट करते देखे जाते हैं, तो साधारण जनोंको आश्चर्यचकित हो जाना पड़ता है पर उनकी अन्तिम आशा मित्रराष्ट्रोंकी फूटकी ओर ही लग रही है, इसलिये युद्धके इस पहलूकी ओर भी कुछ जान लेना आव-श्यक होगा। जो पोलैंडका प्रश्न अभीतक नहीं सुलझाया जा सका है, उसने सान फ्रांसिस्को कानफरेंसमें और भी विकट रूप धारण कर लिया है। कानफरेंसकी कार्य-कारिणी और पथ प्रदर्शक कमेटीमें सोवियट रूस और जेकोस्लोवकियाके प्रतिनिधियोंने वारसाकी लुबलिनवाली पोलिश सरकारको तत्काल कानफरेंसमें स्थान देनेका प्रस्ताव रखा था, पर वह अस्वीकृत हो गया है। उधर कानफरेंस तथा उसकी कार्यकारिणी और पथ प्रदर्शक कमेटीकी अध्यक्षताके प्रश्न-पर भी सोवियट रूसका ब्रिटेन और अम-रीकाके साथ मतभेद पैदा हो गया और मो० मोलोटोवने स्पष्ट कह दिया कि यदि उनका प्रस्ताव न माना जायगा, तो रूस कानफरेंसके संयोजकोंमेंसे अपना नाम हटा लेगा और अन्य इकतालीस राष्ट्रोंकी भांति ही उसमें भाग लेगा। बात यह है कि पहले ही दिनकी बैठकमें जब मि० एडेनने अमरी-कन स्टेट-सेक्रेटरी मि० स्टेटिनियसको कानफरेंस और कमेटीका स्थायी अध्यक्ष बनानेका प्रस्ताव रखा, तब मोलोटोवने खड़े होकर तुरन्त उसका विरोध करते हुए यह प्रस्ताव किया था कि कानफरेंसको निमंत्रित करनेवाले चारों राष्ट्रों—ब्रिटेन, अमरीका, रूस और चीनके प्रतिनिधि दलोंके अध्यक्ष बारी बारीसे अध्यक्षता करें। इसपर काम-चलाऊ समझौता हो गया है, तो भी सोवियट रूसके दृष्टिकोणमें उसके पश्चिमी मित्रोंके दृष्टिकोणसे कैसी भिन्नता है, यह स्पष्ट हो जाता है। जहांतक पोलैण्डका प्रश्न है, उसके सम्बन्धमें सानफ्रांसिस्को कानफरेंसकी गाड़ी न रुकने देनेके विचारसे यदि यालटा-कासा कोई निश्चय कर भी लिया गया तो, भी समझनेवालोंको यह विश्वास कदापि नहीं हो सकता कि यह प्रश्न इस तरह सुलझाया जा सकेगा, जिससे तीनों बड़े मित्र-राष्ट्रोंको पूर्णतया सन्तोष हो। स्पष्ट है कि सोवियट रूस तो पोलैण्डपर अपना पूर्ण प्रभाव रखना चाहता है और उसके दोनों मित्र ब्रिटेन और अमरीका उसे ऐसा न करने देकर स्वयं भी वहां दालभातमें मूसलचन्द बनना चाहते हैं। उनका ऐसा भाव रूसको कभी स्वीकार नहीं हो सकेगा, हमारा तो यही दृढ़ विश्वास है। इसीसे इन मित्रराष्ट्रोंके वर्त्तमान मतभेदसे उनके सभी मित्रों और हितैषियोंको तो भविष्यके सम्बन्धमें भारी चिन्ता और उनके शत्रुओंको

कौन क्या कहता है

पाकिस्तान अव्यावहारिक है

बंगप्रांतीय कृषक प्रजा कानफरेंसके ठवें अधिवेशनके अध्यक्ष पदसे भाषण देते ए मौलवी समसुद्दीन अहमद एम० एल०ए० कहा है—धार्मिक बुनियाद पर निर्मित ाष्ट्रीयताका आजकी दुनियामें कोई अर्थ हीं। इसलिये मैं मि० जिन्नाके दो राष्ट्रवाले सेद्धान्तको व्यर्थ समझता हूं। हम हिन्दू-मुसलमान भारत मांकी संतान हैं और हमारी ाष्ट्रीयता भारतकी अखण्डतापर अवलम्बित होगी। भारतीयोंका सौभाग्य है कि मि० जेन्नाके अनुयायी उनका साथ छोड़ रहे हैं। जाब, सिन्ध, आसाम, संयुक्तप्रांत और न्तमें बंगालकी घटनाओंसे स्पष्ट है कि ीगकी शक्तिका ह्रास हो रहा है।

भारतको टुकड़े-टुकड़े करने वालोंका दय साम्प्रदायिकतासे ओतप्रोत है। मैं ाकिस्तान और अखण्ड हिन्दुस्तान दोनों को नापसन्द करता हूं इसलिये कि इन दोनों आवाजोंकी ध्वनिमें साम्प्रदायिकता का विष व्याप्त है।

मि० जिन्ना या अन्य किसी मुसलमान की अपेक्षा अपने मजहबके प्रति मैं किसी मानेमें कम वफादार नहीं हूं पर विश्वकी घटनाओंका यह तकाजा है कि भारत अविभाजित और संगठित रहे। अतः मुसलमानों की एक विशिष्ट आबादीके हितोंको दृष्टिगत रखते हुए पाकिस्तानका विरोध करना मेरे लिये अनिवार्य हो जाता है। यह कहना कि अखण्ड भारतमें किसी साम्प्रदाय विशेष पर खतरा आ पड़ेगा, सर्वथा असत्य है। चीन और रूस हमारे सामने है, जहां विभिन्न सम्प्रदायके लोग साथ-साथ मजेमें रहते हैं। साम्प्रदायिक कट्टरताने उनकी आंखों पर परदा नहीं डाल दिया है। उनकी राष्ट्रीयताकी इमारत धार्मिक बुनियाद पर नहीं खड़ी की गयी है। बात तो यह है कि वर्तमान युगमें धर्मके आधारपर राष्ट्रका निर्माण नहीं हो सकता। यदि ऐसी बात होती तो मध्यपूर्वके सभी छोटे-बड़े इस्लामी सल्तनत एक राष्ट्रके रूपमें हमें दिखाई पड़ते। सारी बातोंपर विचार करनेके बाद मुझे मि० जिन्नाकी योजना निर्जीव मालूम होती है। हम हिन्दू मुसलमानों का एक राष्ट्र है और हमारा विश्वास है कि अविभाजित भारत पर ही हमारे उज्वल भविष्यकी मीनार खड़ी होगी।

सै० सम्मेलनसे शांतिकी आशा नहीं

श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्यायने राष्ट्रीय महिला कानफरेंसके समक्ष सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन पर भाषण देते हुए कहा कि कितने वर्षों तक विनाशकारी युद्ध लड़कर दुनियाने इससे मुक्ति पानेकी उत्सुकता प्रगटकी है। पर सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसमें कायम होनेवाली विश्व-सुरक्षा कौन्सिल हमें वांछित शांति नहीं दिला सकती, क्योंकि जैसा गांधीजीने कहा है, जबतक साम्राज्यवादका दुनियामें अस्तित्व है और भारत जैसे मुल्क गुलाम हैं तबतक शांतिके बजाय पुनः इससे भी भयंकर युद्धोंका क्रम जारी रहेगा। सैनफ्रांसिस्को कानफरेंससे शांतिकी आशा पूरी नहीं होने की। बड़ी-बड़ी शक्तियां विश्वको टुकड़े टुकड़े कर अपने प्रभावक्षेत्रका विस्तार करने जा रही हैं।

समान अधिकार प्राप्त करने और वर्तमान आर्थिक और सामाजिक विषमताको दूर करनेके लिये आवश्यक है कि समान सुविधा, अधिकार और न्यायके आधार पर एक नया आर्थिक ढांचा खड़ा किया जाय। उसी हालतमें आमजनताके लिये स्वतंत्रताका कुछ अर्थ होगा और विश्व-शांति स्थापित हो सकेगी।

पूरी प्रसन्नता होनी स्वाभाविक है। जब यह निश्चय है कि तीन बड़े मित्रोंका मतैक्य जैसे युद्धमें विजय प्राप्त करनेके लिये, वैसे ही युद्धोपरांत विश्वकी शान्ति और सुरक्षाके दृढ़ संगठनके लिये अनिवार्य रूपसे आवश्यक है, तब उसक उनके मतभेदका अन्त नहीं होता, विषयके सम्बन्धमें सब कुछ अनिश्चित हो रहेगा।

यूरोपका रक्षक, हिटलर

हिटलरने बर्लिनसे मुसोलिनीके पास गत सोमवार २३ अप्रेलको एक पत्र भेजा है। पत्रमें हिटलरने कहा है। "हमारे अस्तित्वका संग्राम अपनी चरम सीमापर पहुंच चुका है। हमारे महादेशको अशांतिके गर्तमें ढ़केलनेके लिये बोलशेविज्म और यहूदी ताकतें आपसी सम्पर्क स्थापित करनेके उद्देश्यसे सर्वस्वकी बाजी लगा रही हैं। फिर भी जर्मन राष्ट्र और उसके मित्र मौतको भी मातकर देनेवाली प्रतिरोधकी दृढ़ भावनासे प्रेरित होकर, इस ऐतिहासिक अवसरपर जब कई शताब्दियोंके लिये योरोपके भाग्यका फैसला होने जा रहा है, अपनी बेनजीर बहादुरीका परिचय दे दुश्मनोंकी प्रगतिको रोककर युद्धके प्रवाहको पल्ट देनेमें समर्थ होंगे।"

बर्लिनकी सुदृढ़ किलेबन्दी

बर्लिनके नागरिकोंके नाम दिये गये अपने भाषणमें जर्मन प्रचार मन्त्री डा० गोबेल्सने कहा है कि इधर कुछ सप्ताहके अन्दर बर्लिनकी रक्षाके लिये यथेष्ट तैयारियां कर ली गयी हैं। नगरको दुश्मनोंसे बचानेके लिये बेशुमार टैंक और अन्य अवरोधक साधन इकट्ठे कर लिये गये हैं। यदि किसी देशद्रोही ने अशांति फैलानेका प्रयत्न किया, सफेद झण्डे फहराकर प्रतिरोधात्मक मोर्चेको कमजोर करनेकी कोशिश की या किसी अन्य प्रकारकी कायरता दिखलायी तो उन्हें गिरफ्तार कर सदाके लिये निकम्मा बना दिया जायगा। बर्लिनके रक्षार्थ हम अपने साथियों के साथ यहीं डटे हैं और यहीं डटे रहेंगे।

किसानोंको स्वामीजीका परामर्श

बङ्गप्रांतीय कृषक प्रजा कानफरेंसका उद्घाटन करते हुए किसान सभाके वयोवृद्ध नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वतीने किसानों से अपने अस्तित्वकी रक्षाके लिये संगठित होनेकी जोरदार अपील करते हुए कहा:— किसान देशकी रीढ़ हैं, जो अपने श्रमसे अन्न पैदा कर जमींदार, महाजन और सरकारको अन्न देते हैं। पर वे स्वयं जीवन भर अधनग्न और अधपेटा रहते और बीमार पड़नेपर दवा के अभावमें असमय मृत्युके शिकार होते हैं। समय आ गया है जब कि किसान इनजमींदार, महाजन और साहूकारोंसे पूछे कि हमें बदलेमें तुम क्या देते हो? संतोषजनक उत्तर न मिलनेपर वे उन्हें साफ-साफ कह दें कि यदि तुम बदलेमें मेरी किसी तरहकी सहायता नहीं करते तो हम व्यर्थ क्यों दानवीर कर्ण बनें।

डा० महमूदका भाषण

सीमाप्रांतीय राजनीतिक सम्मेलनके अध्यक्षपदसे भाषण देते हुए बिहारके भूतपूर्व शिक्षामंत्री डा० सैयद महमूदने कहा कि खां साहबने सीमाप्रांतके गरीब किसान मजदूरोंके हितके उद्देश्यसे मन्त्रिमन्डलका गठन किया है। वे एक बहादुर व्यक्ति हैं। कांग्रेसके लिये मिनिस्ट्री कोई चीज नहीं है और जब वे देखेंगे कि इससे गरीबोंका भला करनेमें असमर्थ हैं तो अवश्य पद त्याग देंगे।

हिन्दू और मुसमानोंके सम्बन्धमें कहा जाता है कि वे दो भिन्न-भिन्न राष्ट्र हैं पर कई शताब्दियोंसे एक साथ रहते-रहते उनके बीच सामाजिक और सांस्कृतिक सम्पर्ककी स्थापना हो गयी है। उन्हें दो रूप देनेका प्रयत्न हुआ है पर इतिहास इसका साक्षी है कि मुगलोंके राजत्वकालमें भी हिन्दू-मुसलमान प्रेमपूर्वक रहते थे। लार्ड वावेलकी लंदन यात्राके सम्बंधमें डा० महमूदने कहा कि लॉर्ड वावेल और अन्य ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी यह भारी भूल होगी यदि वे भारतीय समस्याका संतोषजनक समाधान करनेमें असमर्थ रहे। भारत तो एक दिन स्वतन्त्र होकर ही रहेगा पर यदि भारतको स्वतन्त्रता नहीं दी गयी तो इस दूसरे महासमरके बीच ही तीसरे महासमरका बीजारोपन हुआ समझिये।

सीमाप्रांतीय राजनीतिक सम्मेलन

गत २२ अप्रेलके सबेरे सीमाप्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलनमें सर्व सम्मति द्वारा प्रस्ताव पास कर केन्द्रमें उत्तरदायी सरकार की स्थापना तथा राजनीतिक बन्दियोंकी अविलम्ब रिहाईकी मांग की गयी।

मि० आसफअलीके नाम पत्र

यू०प्रेसको पता चला है कि जिस चुनाव क्षेत्रसे खड़ा होकर मि० आसफअली दिल्ली म्यूनिसिपल्टीके सदस्य चुने गये थे, उसकी ओरसे मि० आसफअलीके पास एक पत्र भेजकर अनुरोध किया गया था कि वे पूर्ववत उस क्षेत्रके लोगोंका प्रतिनिधित्व करते रहें। पर उक्त पत्रको दिल्लीके चीफ कमिश्नर रोक रखा।

मिस पर्लबककी गंभीर चेता...

सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनके अवसर... भारतकी स्थितिके स्पष्टीकरण और इस ...न्धमें आवश्यक प्रचारके उद्देश्यसे प्रका... एक पर्चेमें मिस पर्ल बकने लिखा है:— ...के अन्दर एक अग्नि प्रज्वलित हो ... जिसे शांत नहीं किया जा सकता। हि...स्तानको स्वतन्त्रता दे दी जाय वरना ... अपने बाहु बलसे अपनी आजादी अ... हाथोंसे छीन लेगा। गत महासमरसे ... यट रूसका आविर्भाव हुआ और ... महासमरसे नूतन भारतके आवि... असंभावना नहीं, शांति और स्थिरता... ती तूफान और खून खराबियोंसे ही ...

स्वदेश-वार्ता

महादेव देसाईकी स्मृतिमें

राजकुमारी अमृतकौरने सामूहिक कताई ... एक हाल निर्माणके लिये ५ हजार, ... रु० १ आ० ६ पाईका दान दिया है। ... भारतीय चर्खा संघने उक्त दानको ... स्वीकार करनेके बाद अमृत ... रायसे सेवाग्रामके खादी विद्या- ... एक बड़े हालका नाम 'महादेवभाई ... रखा है।

सीलोन भारतीय कांग्रेस

सीलोन भारतीय कांग्रेसकी बैठक जो ... कर दी गयी थी, आगामी ११, १२ ... मईको होने जा रही है।

हिन्दू सभाका निश्चय

... खिल भारतीय हिन्दू महासभाके ... सेक्रेटरीने एक गश्ती चिट्ठी द्वारा ... शाखाओंको यह सूचना दी गयी है ... महासभाकी कार्यकारिणीने आगामी ... को 'स्वतन्त्रता दिवस' मनानेका ... किया है।

...राज दरभंगाकी उदारता

... सोसियेटेड प्रेसके एक समाचारमें कहा ... कि दरभंगा महाराजने अलीगढ़ ... सिटीके गत निरीक्षणके समय यूनिव- ... १० हजार रुपया दान स्वरूप दिया ...

डा० घोष अस्वस्थ

... कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्य डा० ... चन्द्र घोष बम्बईसे लौटनेके बाद अस्व- ... रहे हैं। उनका वजन ९८ पौंडसे घट ... हो गया है। इधर कुछ दिनोंसे वे ... की पीड़ासे परेशान हैं।

...सेम्बलीकी निर्वाचक सूची

... विश्वस्त सूत्रसे ज्ञात हुआ है कि संयुक्त ... केन्द्रीय असेम्बलीके आम निर्वाचन ... निर्वाचक सूची तैयार की जा रही ... से पता चला है कि सरकारने जिला ... अधिकारियोंके पास ऐसी हिदायतें भेजी ... इस सम्बन्धमें आवश्यक सुविधाका ... करें।

...शरत बोसकी रिहाईकी मांग

... असेम्बलीके विरोधी दलके नेता- ... ब्रिटेनकी पार्लमेंटके विरोधी दलके ... आर्थर ग्रीन वुडके पास एक तार ... अनुरोध किया है कि वे श्री शरत- ... बोसकी रिहाईपर जोर डालें, जो ... इन दिनों नजरबन्द रखे ... । तारमें रिहाईकी मांगका ... श्री बोसकी अस्वस्थता बताई गयी है, ... सन् १९४४की अप्रैलसे ही वे ज्वरसे ... हैं।

...ट्रेड यूनियन कानफरेंस

... कोटाके जिला मजिस्ट्रेटने राजा- ... यूनियन कौंसिलके जेनरल सेक्रेटरीको ... किया है कि आगामी १९-२० मईको ... प्रान्तीय ट्रेड यूनियन कानफरेंस करनेकी आज्ञा आपको नहीं प्रदान की गयी। टाउन ट्रेड यूनियन कांग्रेसके अध्यक्ष श्री बी० बी० नरसिम्हम एम० एल० ए० ने इस सम्बन्धमें प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारसे अनुमति देनेका अनुरोध किया है।

सरकारकी औद्योगिक नीति

भारत सरकारने भारतीय उद्योग-धंधोंके प्रति युद्धके पूर्व बरती जानेवाली सरकारी नीतिमें शनैः शनैः परिवर्तन कर भारतके औद्योगिक विकासके हेतु प्रत्यक्ष प्रोत्साहन और परिवर्द्धनकी नीति कार्यान्वित करनेकी घोषणा की हैं। देशके धन-जनका अधिकाधिक उपयोग, राष्ट्रीय सम्पत्तिकी वृद्धि, इन्दरतर रक्षात्मक तैयारियां और बेकारोंको रोजी देनेकी अच्छी और दृढ़ व्यवस्था प्रस्तावित औद्योगीकरणके प्रधान अङ्ग हैं। अपने मकसद तक पहुंचनेके लिये सरकार स्वयं औद्योगिक क्षेत्रमें पदार्पण करेगी, विभिन्न उद्योग धन्धोंको आवश्यक सहायता देगी और संतुलित तथा प्रादेशिक विकासको नियमित करनेके लिये उचित नियंत्रण स्थापित करेगी।

सेक्रेटरीकी वेतन-वृद्धि

खबर है कि सिंध प्रांतके मंत्रियोंकी कौंसिलकी एक बैठकमें यह निश्चय किया गया है कि पार्लमेंटरी सेक्रेटरीका वेतन ५ सौ रुपयेसे बढ़ाकर १ हजार कर दिया जाय। उक्त बैठकमें सरकारी कर्मचारियोंकी मंहगाई भत्तामें वृद्धिके प्रश्नपर भी विचार किया गया।

कलकत्ता कारपोरेशनके मेयर

गत शुक्रवार (२७ अप्रैल) को हिन्दू महासभाके उम्मीदवार श्री देवेन्द्र मुखर्जी कलकत्ताके मेयर तथा स्वतन्त्र मुस्लिम उम्मेदवार मौलवी शमसुलहक डिप्टी मेयर एक वर्ष (१९४५-४६) के लिये चुने गये हैं।

मद्रास कांग्रेस असेम्बली पार्टी

ऐसा ज्ञात हुआ है कि मद्रास असेम्बली के ३० कांग्रेसी सदस्योंने कांग्रेस असेम्बली पार्टीके कन्वेनर, श्री एम० भक्तवत्सलमके पास एक अर्जी भेज कर यह मांग की है कि देशकी राजनीतिक स्थिति पर विचार करने तथा पार्टीके लिये एक नेताके निर्वाचनार्थ पार्टीकी बैठक बुलायी जाय।

अर्जी पर जजोंके विभिन्न मत

प्राण दण्डकी सजा पाये हुए अष्टी-चिमूर केसके सात अपराधियोंकी ओरसे पेश की गयी हेबियस कार्पस अर्जी पर जस्टिस सर एम० बी० नियोगी और मि० जस्टिस सी० आर० हेमनने विभिन्न मत दिये हैं। सर एम० वी० नियोगीने दरख्वास्त मंजूर करली है पर मि० जस्टिस हेमनने उसे बर्खास्त कर दिया है। एक तीसरे जजके सामने अर्जी पर पुनः सुनवायी होगी।

सर आर०एफ० मुडी भारत लौटे

यू० प्रेसको मालूम हुआ है कि भारत सरकारके गृह सदस्य, सर आर० एफ० मुडी लन्दनकी यात्रा समाप्त कर भारत वापस आ गये।

डा० पट्टाभि सीतारमैया

ऐसा ज्ञात हुआ है कि कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्य डा० पट्टाभि सीतारमैयाने अपने कुटुम्बियोंको पत्र द्वारा सूचित किया है कि यद्यपि मैं पहलेकी अपेक्षा घरके अत्यधिक निकट (वेलोर जेलमें) आ गया हूँ फिर भी आप लोग मुझसे मिलनेका यत्न न करें। संभवतः उन्होंने अपने सहयोगियों द्वारा अहमदनगरमें किये गये एक पूर्व निर्णयके आधारपर ऐसा निश्चय किया है।

बांकुड़ामें मौ० आजाद

विश्वस्त रूपसे यह ज्ञात हुआ है कि इण्डियन नेशनल कांग्रेसके प्रेसीडेण्ट, मौलाना अबुल कलाम आजादके बांकुड़ा पहुंचनेके बादसे उनके स्वास्थ्यमें विशेष सुधार नहीं हुआ है। उन्हें सात-आठ दैनिक समाचार-पत्र दिये जाते हैं। खाने-पीनेके सम्बन्धमें कोई पाबन्दी नहीं है।

आशफअलीकी रिहाईकी मांग

एसोसियेटेड प्रेसके एक समाचारमें कहा गया है कि बहुसंख्यक कांग्रेसी, मुस्लिम लीगी, राष्ट्रीय मुसलमान, कम्युनिस्ट, ट्रेड यूनियनिस्ट, पत्रकार, अध्यापक और दूसरे तरहके लोगोंके हस्ताक्षरके साथ एक वक्तव्य प्रकाशित कर भारत सरकारसे मांग की गयी है कि वह अविलम्ब और बिना किसी शर्तके श्री आशफ अलीको रिहा कर दे।

भक्तिका भद्दा नमूना

ऐसी रिपोर्ट मिली है कि मुंगेर जिलेके किसी भक्तने देवघरके वैद्यनाथजीके मन्दिरमें गत २० अप्रैलको श्रृङ्गार पूजाके समय अपनी जिह्वा काटकर महादेव पर चढ़ा दी। कहा जाता है कि इस कीमती अर्घके समर्पण करनेके बाद वह बेहोशीकी हालतमें अस्पताल पहुंचाया गया, जहां उसकी हालत सुधर रही है।

जर्मन आत्मसमर्पणकी अफवाह निराधार—ट्रूमैन

बर्लिन मोर्चेपर हिटलर

जर्मन रेडियोने अपने एक एलानमें कहा है, "फुहररने इस अवसर पर बर्लिनमें कारहने निश्चय किया है। हम जर्मन जनता और सम्पूर्ण विश्वकी जानकारीके लिये इसकी घोषणा कर देना उचित समझते हैं।" मास्को रेडियोने एक जर्मन समाचारका हवाला देते हुए कहा है कि हिटलर बर्लिनमें है और बोलशेविक आक्रमणके विरुद्ध जर्मन सेनाका स्वयं संचालन कर रहा है।

"वायस आफ इण्डिया"

अमेरिका स्थित राष्ट्रीय विचारके भारतीयोंकी ओरसे प्रकाशित "वायस आफ इण्डिया" शीर्षक पत्रमें मिस पर्लबक, लुइस ब्रोमफील्ड, इमानुएल सेलर, इत्यादि प्रमुख व्यक्तियोंके लेख छपे हैं, जिसमें सबोंने एक स्वरसे इस तर्ककी आलोचना की है कि सेनफ्रांसिस्को सम्मेलनके सामने उपस्थित समस्याओंमें भारतका प्रश्न नहीं आता। उनका पूछना है कि "यदि भारतीय समस्या को सैनफ्रांसिस्कोमें नहीं सुलझाया जायगा तो और कौनसा अन्य उपयुक्त स्थान है इसके लिये ?"

वावेल द्वारा पदत्यागकी धमकी ?

न्यूज क्रानिकल भारत स्थित अपने संवाददाता, मि० स्टुअर्ट गेल्डरका एक संवाद प्रकाशित किया है जिसमें कहा गया है कि लार्ड वावेलकी लन्दन यात्राका उद्देश्य यह है कि वे मि० चर्चिलसे मिलकर अपने अधिकारमें ऐसा आवश्यक विस्तार चाहते हैं ताकि भारतीय नेताओंको रिहा कर गतिरोधके अन्तका मार्ग निकाल सकें अन्यथा वे पदत्याग करनेकी धमकी देंगे।

चीनके हताहत सैनिकोंकी संख्या

चीन सरकारके युद्धमंत्री चेंगचेनने अपने एक वक्तव्यमें कहा है कि चीन-जापान युद्धमें अबतक मृतक और घायल चीनी सैनिकोंकी संख्या ३ लाख है।

जेनरल फेडरिको गिरफ्तार

मुसोलिनीके भूतपूर्व युद्ध सचिव जेनरल फेडरिको वेल ट्रोसियोको फासिस्टोंको दण्ड देनेवाली कमिशनकी आज्ञाके अनुसार गिरफ्तार किया गया है। मन्त्रिपदपर कार्य करते समय उसने सम्पूर्ण सेनाका फासिस्ट बनानेके अनेकों प्रयत्न किये थे। रोटाके बाद सैनिक विभागका यह दूसरा व्यक्ति है जिसे फासिस्टोंका सहायक होनेके कारण कोर्टमें लाया गया है।

सोवियट मांगका ब्रिटिश समर्थन

ब्रिटेनके सहायक प्रधान मंत्री, मि०सी० आर० एटलीने, जो सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसके एक ब्रिटिश प्रतिनिधि भी हैं, प्रेस प्रतिनिधियोंको बताया है कि विश्व सुरक्षा कौंसिलमें तीन सीट सम्बन्धी रूसी मांगका ब्रिटेन समर्थन करेगा।

जर्मन आत्मसमर्पण ?

अफवाह निराधार है—ट्रूमैन

सैनफ्रैंसिस्को (शनिवार) एक उच्च अमेरिकन अधिकारीने बताया कि जर्मन सरकारने मित्रराष्ट्रोंके सामने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया। इस आशयकी घोषणा पश्चिमी मोर्चेके मित्र सदर मुकामसे आनेकी प्रतीक्षा प्रतिक्षण की जा रही है। उसने यह भी कहा कि समर्पणको कोई महत्व नहीं दिया जा रहा है।

(पहलेका समाचार)

लन्दन, २८ अप्रेल। सैनफ्रैंसिस्को स्थित रायटरके खास संवाददाताका कहना है कि ब्रिटेन और अमेरिकाके सामने बिना किसी शर्तके जर्मन आत्म-समर्पणकी गारण्टी देनेका हिमलरका संदेश ब्रिटिश और अमेरिकन

वाशिंगटन, शनिवार)। आज रातको राष्ट्रपति ट्रूमैनने बताया कि संधि संबन्धी अफवाहें निराधार हैं। रायटर

सरकारोंको दिया गया है, यह बात यहांके अधिकारी अफसरों द्वारा मि० ईडेन, मि० स्टेटीनियस और मो० मोलोटोवकी जानकारीके लिये भेजे गये समाचारसे मालूम हुई।

एक वक्तव्य निकालकर आज ब्रिटिश सरकारने बताया है कि बिना शर्त आत्मसमर्पणकी रिपोर्टोंके सम्बन्धमें उसे कोई जानकारी नहीं है। इस बातपर जोर दिया गया है कि तीनों महाशक्तियोंके बीच सम्पूर्ण ऐक्य है। रायटर

सैनफ्रांसिस्को सम्मेलन

सरकारी तौरपर घोषित किया गया है कि सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें मित्र राष्ट्रोंके बीच सम्मेलनकी अध्यक्षताके प्रश्नपर जो मतभेद उत्पन्न हो गया था, उस सम्बन्धमें समझौता हो गया। मोशियो मोलोटोव, मि० एडेनकी समझौता सम्बन्धी योजनाको स्वीकार करनेके लिये सहमत हो गये हैं।

आलोचकोंको रूसीपत्रका जवाब

रूसके प्रमुख पत्र —"वार एण्ड दी वर्किंग क्लास" ने पूर्वी यूरोपमें रूसी निति की आलोचना करनेवाले ब्रिटिश आलोचकोंको चुनौती दी है कि स्वयं ब्रिटेन, ग्रीस और अन्य उपनिवेशोंमें बरती जानेवाली अपनी नितिपर गौर करें। रूसकी नितिका स्पष्टीकरण करनेके बाद उक्त पत्रने लिखा है, "जो योरोपके भीतर प्रजातंत्रकी पुनर्स्थापनाके लिए बेचैन हैं' कृपाकर उपनिवेशोंकी ओर अपनी शक्तिका प्रवाह मोड़ें', जिन्हें प्रजातंत्र की गन्ध तक नहीं मिल सकी है।

गोयरिंगका पलायन

जर्मन रेडियोने गत बृहस्पतिवारकी रात्रिको कहा है कि गोयरिंगके अनुरोधपर, हिटलरने उसे जर्मन हवाई सेनाके नायकत्व से मुक्त कर दिया है। पर शुक्रवार गत २७ अप्रेलकी मास्को रेडियोकी एक रिपोर्ट है कि अपने बीबी, बच्चे और ५ लाख स्टर्लिंगकी कीमती वस्तुओंके साथ गोयरिंग वायुयानमें बैठकर किसी अज्ञात स्थानके लिये निकल गाया है।

एम० मोलोटोवकी धमकी

सोवियट परराष्ट्र कमिस्सार एम०मोलोटोवने संयुक्त राष्ट्रोंकी कानफरेंससे अपना समर्थन खींच लेनेकी धमकी दी हैं यदि ब्रिटेन, अमेरिका, सोवियट रूस और चीनके प्रतिनिधि मण्डलके नेताओं द्वारा कानफरेंसकी सम्मिलित अध्यक्षताके प्रस्तावको कानफरेंस की स्टीयरिंग कमेटीने मंजूर नहीं किया।

दक्षिणअञ्चलमेंनाजीसेनाकाजमाव

ब्रिटिश मोर्चेपर काम करनेवाले"डेलीमेल" के युद्धसम्वाददाता, एलानमूरहेडने अपने एक सम्वादमें यह उल्लेख किया है कि जर्मनीके दक्षिणी अञ्चलमें करीब १ सौ जर्मन डिविजन एकत्रित है।

लन्दन स्थित पोलिश सरकार

लन्दन स्थित पोलिश सरकारने गत २३ अप्रेलकी रातको प्रकाशित अपने एक वक्तव्य में सोवियट रूससे सन्धि करनेकी इच्छा प्रगट की है।

रूसीनीतिसेलंदनमेंघोरनिराशा

रूस और पोलैण्डकी नयी २० वर्षीय सन्धिसे इङ्गलैण्डमें घोर निराशा हुई है। आम तौरपर ऐसा सोचा जारहा है कि सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनके पूर्व ऐसा समझौता न होना चाहिये था, और खास कर जब लुबलीनकी सरकारको इङ्गलैंड और अमेरिका नहीं स्वीकार करते।

रूस और पोलैण्डके बीच सन्धि

लुबलिन रेडियोकी एक घोषणामें कहा गया है कि गत शनिवार २१ अप्रेलकी रात्रि में रूस और पोलैंडके बीच २० वर्षोंके लिये मित्रता और पारस्परिक सहायताकी संधि की गयी है। सन्धिकी शर्तोंके अनुसार दोनों राष्ट्र जर्मनीकी अन्तिम पराजय तक सभी संयुक्त राष्ट्रोंके साथ मिलकर सैनिक कार्रवाई करते रहेंगे। युद्धोपरान्त दोनों राष्ट्रों समानताके आधारपर प्रत्येककी उन्नतिके लिये परस्पर सहयोगका सिलसिला जारी रखेंगे।

मुसोलिनी पुनः कैदखानेमें

स्विस टेलिग्राफ एजेन्सीके एक संवादसे ज्ञात हुआ है कि फेलेन्जाके निकट इटालियन देशभक्तोंने मुसोलिनीको गिरफ्तार कर लिया है।

अमेरिकन-रूसी सेनाका [illegible]

अमेरिकन और रूसी सेना[illegible] लीपजिगके उत्तर-पूर्व, एल्ब-[illegible] स्थित पोरगैंड नामक स्थानपर [illegible] पित हो गया है। उक्त समाचार[illegible] करने वाले रेडियोने अपने समर्थन[illegible] टन, मास्को और लन्दनकी [illegible] विज्ञप्तियोंका उद्धरण पेश किया है।

उत्तरी इटलीमें भीषण [illegible]

रायटरके एक सम्वादमें [illegible] गया है कि प्रायः सम्पूर्ण उत्त[illegible] विद्रोहकी अग्नि भड़क उठी है। इटालियनोंने जर्मनीके विरुद्ध [illegible] कर दी है।

भारतीय जिच बना [illegible]

लन्दन स्थित भारतीय राजनी[illegible] में भारतीय गतिरोधके समा[illegible] आशा धूमिल पड़ने लगी है। उ[illegible] है कि भारतसे किसी तरहकी स[illegible] भविष्यमें संभावना रहनेपर मि[illegible] पार्लमेण्टके समक्ष प्रांतोंमें गवर्न[illegible] की अवधि बढ़ानेकी सिफारिश करते।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—१९ कलकत्ता ७, मई, १९४५, Calcutta, MAY. 7. 1945

मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

६० रुपया वार्षिक

दुनियामें कुछ बातें कहनेकी होती हैं और कुछ करनेकी। जो बोला जाता है वास्तवमें उसका शतांश ही किया जाता है। न्याय और शान्ति आजकी दुनियामें बोलने और रंग जमानेके लिये ऐसे दो शब्द हैं जिनसे छोटेसे छोटे और बड़ेसे बड़ेका काम चल जाता है। किन्तु यह कोई नहीं देखता कि जबतक दुनियामें असमानता बनी हुई है तबतक न्याय और शान्ति न तो व्यवहारिक हो सकती है और न मान्य। आज जब कि प्रत्येक देशके निवासियोंकी आय और व्यय बढ़ गयी है भारत अभीतक तुलसीदासके ही युगमें है। इसका पता इसी बातसे चलता है कि अमेरिकाके प्रत्येक व्यक्तिकी वार्षिक आय १६ सौ है और ब्रिटेनके प्रति व्यक्तिकी वार्षिक आय १ हजार है जब कि प्रति भारतीयकी वार्षिक आय महज ६०) रुपये है।

विस्फोटकी आवाज

बम्बईके डाकयार्डमें जब विस्फोट हुआ तो शहरके तमाम मकान हिल उठे थे। खिड़कियोंके शीशे टूट कर बिखर पड़े थे प्यालेसे चाय छलक पड़ी थी। किन्तु जब ज्वालामुखीका विस्फोट होता है तो उसकी आवाजसे क्या होता है, वह औरःभी भयंकर है। क्रोकोटोवाका ज्वालामुखी जब भड़का तो उसकी आवाज २२७२ मील दूर तक तोपकी आवाज जैसी सुनाई पड़ी थी। क्रोकोटोवासे ९४ मील दूर बसनेवाले लोगोंने जब इसकी आवाज सुनी तो वे घंटोंके लिये बहिरे हो गये थे। क्रोकोटोवासे ९७२ मील द्वीपपर रहनेवाले लोगोंको इस आवाजका पता दिशा था तथा जो २२७२ मीलकी दूरीपर थे उन्हें मालूम पड़ा जैसे दुश्मनकी अचानक चढ़ाई शुरू हो गयी हो। इससे जनकी जितनी हानि हुई उसका अन्दाज लगाया ही नहीं जा पाया किन्तु ज्वालामुखीसे इतने भाफ, धुंआ और धूल निकली कि दिनमें १८० मीलके घेरेमें घोर अन्धकार छा गया तथा ये आसमानमें ऊपर २० मीलतक चढ़ गये।

जर्मन प्रदेश पर लाल झण्डा फहरा रहा है।

❀ गिरधर-गिरा ✻

धर्म-धुरन्धर-धाम यह, यहां धर्म का ध्यान।
धर्म-प्राण अंगरेज की दुनिया करै बखान॥
दुनिया करै बखान, खर्च लाखन करि दीन्हो।
अमरीका मा जाय यज्ञ गिरजै रचि दीन्हो॥
बाजपेय सम यज्ञ लक्ष्मी बिजय बिधन्स्यो।
यह गिरधर कविराय सप एमरी जनु हंस्यो॥

—जगदेवानन्द,

सम्बन्ध-विच्छेद

लन्दनके ७३ वर्षीय कुंवारे जज सर अर्नेस्ट चार्ल्स ने हरहमकी सेशन अदालतमें कहा है कि ब्रिटेनमें कुछ ही दिनोंके भीतर विवाहितोंमें विवाह विच्छेदोंकी संख्या बढ़ जायगी। १९४३ में १० हजार विवाहितोंको तलाकका अधिकार दिया गया था परन्तु १९४४ में इससे अधिक संख्याको विवाह-विच्छेदका अधिकार दिया गया है।

हवासे चलनेवाली मोटर

कुछ दिनों पहले लकड़ीके बुरादेसे चलनेवाली मोटरकी बात सुननेको मिली थी। किन्तु अब हवासे चलनेवाली मोटरकी बात सुननेमें आ रही है। कैलीफोर्नियाके एक इञ्जीनियरने हवा द्वारा चलनेवाली एक मोटरका निर्माण किया है जो प्लसकेसमें रखी घड़ी जैसी देखनेमें सुन्दर लगती है। पेट्रोलकी जगह इस मोटरमें १५० पौण्ड दबाव की हवा भर देनेसे मोटर चलने लगती है। इस हवासे चलनेवाली मोटरमें स्पार्क प्लग, क्लच, कार्बुरेटर, स्टार्टर, पंखा या गियर बाक्स नहीं होता। इसमें कुछ तथा चमकते हुए कांटोंका डैश बोर्ड नहीं होता है। इस मोटरमें हवा भरनेके लिये एक छोटे इञ्जनकी जरूरत होती है जिसे चलानेके लिये तीन पाव तरल ब्युटेनकी आवश्यकता होती है। एक गैलन ब्युटेन तैयार करनेमें ६ आने पैसेका खर्च है और इस ६ आनेके खर्चसे मोटर साठ मील तक आसानीसे चल सकती है।

६ आने एकड़ जमीन

भारत सदियोंसे गुलाम रहा है फिर भी पूर्वमें इसकी जो मौलिक संस्कृति और शासन प्रणाली थी वह संसारमें अपने ढंगकी अनोखी थी। इतनी उन्नत शासन प्रणाली शायद न तो उस समय संसारमें अन्यत्र कहीं थी और न आगे कभी होगी। बहुत दिन पहले नहीं, १८५७ के लगभग तक भारतके ग्रामीण दंड विधानमें यह नियम था कि अपराधीको दंड स्वरूप जोतने बोनेके लिये गांवके पंचायतकी ओरसे जमीन दी जाती थी और बदलेमें उससे केवल मालगुजारी लिया जाता था जमीनका मूल्य ६आना था।

चलती चक्की

चीनमें अमेरिकनोंकी लूट; नैतिक पतन की पराकाष्ठाकी स्वीकृति ।—स्वीकारकर्त्ता ईसाई प्रचारक वाल्टर जुड ।

—जी हां, अब 'लूट और स्वीकृति' का पुराना ढङ्ग छोड़कर, 'लूट और अस्वीकृति' की प्रथा प्रचलित करनेका समय आ गया है ।

* * * *

ज्ञात हुआ है कि १ करोड़ २० लाखके वस्त्र अमेरिकासे भारत आ गये हैं ।

—हिन्दुस्तानी उद्योगपतियोंने चोरबाजारमें उनके स्वागतकी तैयारी कर ली है !

* * * *

लेकिन वहां जानेपर मुझे मालूम हुआ कि ब्रिटेन भारतको स्वाधीनता प्राप्त करानेमें सहायक होनेका इच्छुक है। अमेरिकामें झूठा प्रचार किया जाता है, अतः वहांकी (भारतकी) वस्तुस्थिति जानना आवश्यक है ।—केप्ट पिटर म्यूर

—आशा है बाजपेयी गिरजा शंकर इसका सदुपयोग करेंगे । साथ ही भारत सरकार, उपर्युक्त वचनोंके सुनहले पोस्टर, बाजपेयीके पास पहुंचानेमें देर न करे !

* * * *

चिर कुमारी मिस मेयोके विचारबन्धु मिस्टर म्यूरने हिन्दुस्तानमें १॥ हजार मील की यात्रा की, और "यह भारत है" पुस्तक लिखी । उपर्युक्त पवित्र विचार उसी पुस्तक में सुशोभित हैं ।

—केन्द्रीय असेम्बली के अखाड़ेमें, अभागी भारत सरकार एक दर्जनसे भी अधिक बार हार चुकी है । मगर यह है भारत !

* * * *

नरेशके नामपर दमन करनेवाली कौंसिल से असन्तोष आदिके कारण सिरोही नरेश गद्दी छोड़ेंगे ।

—बादशाहके नामपर जैसे मि० चर्चिल और एमरी जुल्म करते हैं, लेकिन गद्दी नहीं छोड़ते, वैसे ही आप भी बैठे रहिये ।

* * * *

बुद्धने अपने जीवनमें विश्वशांतिके लिये जो कुछ किया था, उसे २॥ हजार वर्ष बाद महात्मा गांधी फिर कर रहे हैं ।—कर्मवीर—सुन्दरलाल ।

—महात्मा गांधी आज जो कर रहे हैं, २॥ हजार वर्ष बाद उसे हिन्दुस्तानी करेंगे !

* * * *

हमें आशा करनी चाहिये कि अब यह नींव अधिक मजबूत होगी, ताकि समझौता हो जाय ।—सीमा प्रांतीय कांग्रेसी मंत्रिमंडल का स्वागत करते हुए मैंचेस्टर गार्जियन ।

—कैसा समझौता अङ्गरेज बहादुर—ब्रिटिश साम्राज्यके टुकड़े-टुकड़े करनेका समझौता ?

* * * *

पदग्रहणके उपलक्षमें श्री अणेने डा० खानको बधाईका तार भेजा ।—एक खबर

—क्योंकि आप पहलेसे ही पदग्रहण किये हुए हैं ! —रमतेराम

टट्टीमें शिकार

—:x:—

शान बढ़ाने या निभानेके लिये लोग अभिभावक द्वारा रखे गये अपने नाम का संशोधन, परिवर्द्धन भी किया करते हैं। जैसे—

वास्तविक नाम, पनारू प्रसाद। सुधार हुआ ।—'पी० प्रसाद।' गोबर प्रसाद—श्रीवास्तव लेकिन (सत्य क्या है, राम जानें) संशोधन हुआ—जी० पी० श्रीवास्तव। आदि।

इसी तरह धर्म बनाने या धर्म की लकीर निभानेके लिये कतिपय भोज्य वस्तुओं का भी सांकेतिक नामाकरण किया गया है। यथा—

जल सेम—मछली ।
सीतापति विहंगम—मुर्ग ।
सफेद आलू—अंडा ।
राम लड्डू—प्याज ।
श्री—लहसुन ।
भूमिकन्द—बकरे का मांस ।
स्वदेशी-पेय—मांड़
आकाश-फल—कबूतर
स्वीट पोटाटो—सकरकन्द ।
पिस्ता—भिगोया चना ।
विष्णु-भोग—छथनी ।
औषधि—शराब ।
इलायची दाना—मकईका भूंजा ।
पोलाव—खिचड़ी ।
नारायण-भोग—सत्तू ।
आकाशी—ताड़ी ।

पर्य्यायवाची

इस प्रकार महापुरुषों और महत्स्थानों के सांकेतिक नामकरण भी हुए हैं ।

बुड्ढा जवान—म० गांधी ।
लसफस कटहल—मि० जिन्ना ।
बिना टट्टू की सवारी—मि० बुखारी ।
वात, पित्त, कफ—जर्मनी, जापान और इटली ।
मर्दानी औरत—सरोजनी नायडू ।
औरताना मर्द—हिंदुस्तानीके हिमायती
घिसा रेकार्ड—राजगोपालाचारी की तहरीर ।
आज नकद कल उधार—सरकारी आश्वासन ।
आकाश दीप—स्वराज्य ।
आकाश फल—पाकिस्तान ।
सबकी भाभी—हिन्दुओंका अधिकार ।
रामगढ़िया बैंगन—भूलाभाई ।
टाइम बम—सावरकर ।
टामीगन—भाई परमानन्द ।
काठ बिलाड़ी—मिकाडो ।
लंगड़ा सियार—हिटलर
त्रिफलादि चूर्ण—मित्रराष्ट्र ।
१४४ मोल्ट—अम्बेडकर ।
घरकी मुर्गी—ब्याहता ।
तिलोत्तमा—कुतिया भी, यदि आपसे आंखें लड़ जायं ।
प्रेम-विशारद—फिल्म डाइरेक्टर ।
गधा—वैद्य ।
गिलहरी—सिनेमा स्टार ।
प्रेसके भूत—कम्पोजिटर ।
माइन आफ थैंक्स—सम्पादक ।
चतुर्भुज स्थान—मुजफ्फरपुर ।
सोनागांछी—कलकत्ता ।
नवाबी महल—लखनऊ ।
बुढ़ापेकी ठसक—दिल्ली ।
सावनके नजारे—कुम्भ मेला ।
राजरोग—अदाए-इश्क ।
फकीर—समाज ।
पुरानी लकीर—धर्म ।
मूर्खाधिराज—बाप, दादा ।
विद्वान्—मूर्खाधिराजके लड़के ।
दुखहरनी माईका फाटक—गया ।
पागलखाना—रांची ।

अपने-अपने स्थानकी कुछ खास खास चीजें भी अपनी प्रसिद्धिके कारण बोलचाल की भाषामें महावरेकी भांति आने लगी—

दिल्लीका लड्डू !—गयाका तिलकुट। बनारसी गोलगप्पा ।—लखनवी रेवड़ी। इलाहाबादी तरबूज! छपरिया सत्तू। मुजफ्फरपुरिया लीची । कलकतिया रसगुल्ला और राजभोग । नागपुरिया संतरा! ...निया, सोहन पापड़ी। हापड़का ... कन्नौजका इत्र । आगराका घांघरा। ...की साड़ी । रांचीका पपीता आदि ।

इसी तरहकी प्रसिद्धि कतिपय ... जन्तुओंको भी हुई है—

काठियावाड़ी टट्टू । भोजपुरिया ... बनारसी इक्का । विलायती मेम । ... भैंस । पञ्जाबी घोड़ा आदि, इत्यादि वगैरह ।

श्री "खुशदिल"

गीत

तुम ने गीत भर दिये मन में !
मेरे जीवन का तम हर कर
चिर उज्ज्वल आलोक दिया भर
उर-शतदल को बांधा तुमने स्नेह-रश्मियों के बन्धन में !
तुम ने गीत भर दिये मन में !
आंसू को कल-हास बनाया
पतझड़ को मधुमास बनाया
आशा के मृदु फूल खिलाये तुमने मेरे उर-उपवन में !
तुम ने गीत भर दिये मन में !
तुम ने जो संगीत सुना कर
दिये हृदय में मधुमय स्वर भर
कविता बन कर आज गूंजते वे ही मेरे कवि-जीवन में !
तुम ने गीत भर दिये मन में !

—श्री जितेन्द्रकुमार

पर हित बस जिनके मन माहीं।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

लाल ध्वजा फहराती है

——:*:——

हिटलर वीर गतिको प्राप्त हो गये। बर्लिनका पतन हो गया। जर्मनीकी राजधानी बर्लिन पर अब स्वस्तिकाके स्थान पर लाल ध्वजा फहराती है। समस्त संसार पर सर्व श्रेष्ठ जाति जर्मन' के आधिपत्यका स्वप्न मिट गया। अपने आगे संसारको हेय समझनेकी भूल और दूसरोंके स्वाभिमानको मिट्टीमें मिलाकर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करनेकी नाजी हाई कमाण्डकी महत्वाकांक्षा ने स्वतन्त्र जर्मनोंको परतन्त्र बना दिया। शक्तिके साथ विवेक और मानवत्वका संयोग न होनेसे ऐसा ही होता है। शक्ति सृजनके लिये होती है। उससे जब विनाशका काम लिया जाने लगता है तब वह एक दिन स्वयं शक्तिशालीका भी विनाश करती है। हिटलरने शक्ति प्राप्त की, अपने देशको शक्ति सम्पन्न बनाया। यदि वे उससे विनाशका काम न लेकर सृजनका काम लेते, संसारके पीड़ितोंको मुक्त करनेमें अपनी शक्ति लगाते तो आज संसारका स्वरूप कुछ दूसरा ही हुआ होता।

जो होना था हो गया। बर्लिन पर लाल सेनाने अधिकार कर लिया। अवश्य ही एक एक इञ्च भूमिके लिये लाल सेनाको घनघोर युद्ध करना पड़ा है। बर्लिनकी रक्षा करनेवाले सैनिकोंने नौ दिन हिटलरके आदेशमें घमासान किया, किन्तु मार्शल झुकोव और मार्शल कोनीवके प्रहारको वे सहन नहीं कर सके। हिटलरने कहा था कि युद्धके अन्तिम सप्ताहमें संसार चकित हो जायगा हमारे विनाशकारी अस्त्रोंका चमत्कार देखेगा। उन्होंने यह भी कहा था कि बर्लिन के दरवाजेपर पहुंचकर बोलशेविक रक्त गंगामें स्नान करके वापस लौट जायेंगे। किन्तु वे अपनी इस वाणीको वे सत्य सिद्ध नहीं कर सके।

बर्लिनपर आक्रमण करनेके पहले स्टालिनने इस अंचलका युद्ध-संचालन अपने हाथोंमें ले लिया था। लाल सेनाके जन्म-दिवसके उपलक्षमें स्टालिनने कहा था कि अब नाजी कुत्ते हमारी गतिको रोक नहीं सकेंगे और हम बर्लिनपर अधिकार करके ही रहेंगे। स्टालिनकी वाणी सत्य हुई।

हिटलरके उत्तराधिकारी एडमिरल डोनिज ने हिटलरकी वीर गतिका समाचार रेडियोसे ब्राडकास्ट करते हुए १ मईको यह कहा था कि "मेरा पहला काम जर्मन जातिको बोलशेविज्मके हाथों विनष्ट होनेसे बचाना है। केवल इसी कामके लिये युद्ध जारी रहेगा।" किन्तु युद्ध जारी रखना, आज जर्मनोंके वशकी बात नहीं रह गयी। यह एडमिरल डानिज भी खूब अच्छी तरह समझते हैं। यही कारण है कि उन्होंने ब्रिटेन और अमेरिकाके सामने चारा डाला है। वे सोचते हैं कि, यद्यपि अब इसकी जरा भी संभावना नहीं रह गयी, यदि अब भी किसी तरह ब्रिटेन और अमेरिकाकी रूससे खटक जाये तो वे इन मित्र राष्ट्रोंके संघर्षकी आड़में अपनेको बचा ले जा सकते हैं। इसीसे उन्होंने अपने ब्राडकास्टमें कहा है कि जबतक रूसका सामना करनेके मार्गमें ब्रिटेन और अमेरिका जर्मनीके बाधक बने रहेंगे जर्मन लड़ेंगे और ब्रिटेन तथा अमेरिकासे अपनी रक्षा के लिये लड़ेंगे। इसका साफ मतलब यह है कि जर्मनी ब्रिटेन और अमेरिकासे संधि करनेको तैयार है किंतु रूससे वह संधि नहीं कर सकता। इतना ही नहीं ब्रिटेन और अमेरिकामें वहांकी वर्तमान सरकारोंके खिलाफ असंतोष फैलानेके इरादेसे एडमिरल डोनिजने यह भी कहा है कि "ब्रिटिश और अमेरिकन अपने हितके लिये नहीं बल्कि बोलशेविज्म फैलानेके लिये लड़ रहे हैं।" डूबतेको तिनका सहारा वाली कहावत है। इस स्थितिमें मित्र शक्तियोंके भीतर लड़ाईके मैदानमें फूट डालनेकी जर्मन चेष्टा व्यर्थ है यह एडमिरल डोनिज भी बखूबी समझते होंगे। यही कारण है कि ब्रिटेन और अमेरिकाके सामने यह चारा डालनेके साथ साथ उन्होने जर्मन सैनिकों और जनतासे हिटलरकी दुहाई देकर उनके आदर्शोंके लिये अन्त तक लड़ते रहनेकी अपील की है।

प्रश्न यह है कि जो काम हिटलर, गोयरिंग; गोयबल, रिवनट्राप, हिमलर व जर्मनी के बड़े बड़े सेनापति नहीं कर सके उसे एडमिरल डोनिज किस बल पर करना चाहते हैं। बर्लिनपर लाल पताका फहरा रही है। इस संकटके समय वे नेता भी जर्मनोंकेबीचमें नहीं हैं जिनको देखकर जर्मन अपना रहा सहा साहस और धीरज बटोरनेकी, कमसे कम, चेष्टा तो करते ही। हिटलर मर गये। रुडोल्फ हेस बहुत दिनोंसे ब्रिटेनमें बन्दी हैं। गोयरिंग इस संकटके समय पहले ही चलते बने। हिमलर डेनमार्क या नारवेमें मारे मारे घूम रहे हैं। वहांसे उनके व्यर्थ संधि-प्रस्तावोंकी तरह तरहकी अफवाहोंने जर्मनों के साहसको बढ़ानेके बदले घटाया ही है। रिवनट्रापको हटा दिया गया या वे स्वयं हटाये यह तो नहीं मालूम हुआ पर उनका स्थान अज्ञात नाम जेनरल क्रोसिकने लिया है। शायद हिटलरकी मृत्युसे निराश हो गोयबलने आत्महत्या कर ली। वान पापेनने अपनेको अमेरिकनोंके हाथों बन्दी करा दिया। तीन जर्मन फील्ड मार्शल गिरफ्तार हो गये जिनमें जर्मनोंकी अन्तिम आशा रूनस्टेड भी थे। इटालीमें जर्मन सेनाओंने पूर्ण आत्मसमर्पण कर दिया। मि० चर्चिलने इस आशयकी घोषणा करते हुए बताया कि इतनी बड़ी संख्यामें इस युद्धके दौरानमें कहीं किसीने पहले आत्मसमर्पण नहीं किया था।

इस तरह जिधर दृष्टि डालो उधर ही जर्मनोंके सामने निराशा ही निराशा है। ऐसी स्थितिमें एडमिरल डोनिज बहुत दिनों तक जर्मन प्रतिरोध रख सकेंगे, यह सम्भव नहीं जान पड़ता। कुछ दिन पूर्व यह समाचार आया था कि हिटलरने बवेरियामें प्रायः एक सौ डिवीजन सेना संरक्षित कर रखी है। शायद यही जर्मनोंका अन्तिम सम्बल है। किन्तु परिस्थितियां अब बिलकुल जर्मनीका साथ नहीं दे रहीं। बर्लिनके पतनके बाद जर्मनोंका रहा सहा धैर्य और साहस भी यदि समाप्त हो जाये तो इसमें आश्चर्य क्या है। फिर साहसका चन्द्रोदय देनेवाला कोई वैद्य भी तो नहीं है जिसपर मरणासन्न रोगीको भरोसा हो और वह उसकी आशाके बलपर ही जी उठे। जर्मनी का सम्पूर्ण आत्मसमर्पण अब सुनिश्चित है। प्रश्न सिर्फ इतना है कि आज होगा या कल? देर दिनोंकी है या सप्ताहों की?

मुसोलिनीका अन्त—

इटालीके इतिहासमें मुसोलिनीका अन्त सर्वाधिक उल्लेखनीय घटना माना जायेगा। मिलानके लोगों ने पकड़ कर १० मिनिटके भीतर मुसोलिनीको गोलीका शिकार बना दिया। पर इतनेसे भी उन 'देशभक्तों' को सन्तोष नहीं हुआ। उन लोगोंने उनकी लाशपर थूककर अपने भीतर छिपी बैठी हुई कायरतापूर्ण बर्बरताका ही परिचय दिया। प्रश्न यह है कि इटाली के भाग्यमें अब क्या बदा है। वर्तमान युद्धने इटालीको सब तरहसे जर्जरित कर दिया है। दो वर्षके घनघोर युद्ध और नाजी शोषणने देशको मोहताज बना रखा था। इस समय जर्मनोंसे मुक्त कर मित्र शक्तियोंने अपने नियंत्रणमें इटालीको जकड़ रखा है। वहांकी प्रगतिशील शक्तियोंको बोतलबन्द कर दिया गया है। मुसोलिनीकी लाशपर थूक देनेवाले इस स्थितिको कैसे बर्दाश्त कर रहे हैं?

मतभेद बढ़ रहा है?—

सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनमें प्रतिदिन कुछ न कुछ गुल खिलता ही रहता है। यह स्पष्ट है कि रूसके साथ ब्रिटेन और अमेरिकाका मतभेद बढ़ रहा है। पोलैंडके मामलेमें रूसने देखा कि यूनान, युगोस्लाविया और जेकोस्लोवाकियाके सिवा कोई उसका साथी नहीं है। बाकी सब राष्ट्रोंने रूसके विरुद्ध वोट दिया। भविष्यमें भी जब कभी किसी प्रश्नपर मत लेनेकी आवश्यकता होगी तो उसका फल यही होगा, यह भी साफ है। अतः रूस आज सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें और कल वहां बने विश्व रक्षा संघमें बहुत दयनीय अल्पमतमें रहेगा, यह बिलकुल स्पष्ट हो गया है। यह स्वाभाविक ही है। अब परस्पर स्वार्थका संघर्ष है। और इस संघर्षमें रूसके सामने झुकनेका अर्थ है अपने स्वार्थका त्याग करना। किन्तु ब्रिटेन और अमेरिका इसके लिये कभी तैयार नहीं हो सकते। इसमें सन्देह नहीं कि स्थिति प्रतिदिन भयङ्कर होती जा रही है। ऐसी हालत में रूस क्या करेगा, यह प्रश्न अभीसे उठ खड़ा हुआ है। बहुत सम्भव है कि गत युद्ध के बाद जिस तरह ब्रिटेन और फ्रांसकी चालोंसे बेजार होकर अमेरिकाको राष्ट्रसंघ से हट जाना पड़ा था इस बार वही ब्रिटेन और अमेरिकाकी वजहसे रूसको करना पड़े।

बर्मायुद्ध समाप्त?—

तीन मईको मित्र सेनाएं सवेरे बर्माकी राजधानी रंगूनमें घुस गयीं। सम्राटने दक्षिण पूर्व एशिया कमाण्डके प्रधान सेनापति लार्ड माउण्ट बाटेनको जो बधाईका सन्देश भेजा है उससे तो साफ यह प्रतीत होता है कि रंगूनपर मित्रसेनाओंका अधिकार हो गया। सम्राटने लिखा है कि 'मैं आपको और सब को, जो दक्षिणपूर्व एशिया कमाण्डमें हैं, रंगूनपर अधिकार करनेमें प्राप्त सफलताके लिये बधाई भेजता हूं।" अतः अब एक तरह से बर्माका युद्ध समाप्त समझना चाहिये। किन्तु सङ्कटके दिन बीत गये यह तबतक नहीं समझा जा सकता जबतक जापानियोंको जो अभी गुप्त स्थानोंमें छिपे हैं बर्मासे बिलकुल निकाल नहीं दिया जायेगा। और जापानियोंको निकालनेका काम सहज नहीं है। फिर भी यह कहना ही पड़ेगा कि बर्मायुद्ध की समाप्तिका यह श्रीगणेश है। प्रायः ३८ महीने जापानियोंके अधिकारमें रहनेके बाद रंगून फिर अंगरेजोंके अधिकारमें आ गया। अब अगला कदम मलायाकी ओर बढ़ेगा। रंगूनपर अधिकार हो जानेके बाद सवाल तो यह उठता है कि बर्मियोंको क्या लाभ हुआ। बरबादी और तबाही, सर्वनाश और विध्वंस। तब उनके मालिक थे जापानी और अब फिर हो गये अंगरेज। बर्माकी दासताकी जञ्जीर ज्योंकी त्यों है।

गांधीजीका सर्कूलर—

विभिन्न प्रान्तोंमें कांग्रेस संघोंकी स्थापना हुई है। इनका स्वरूप सार्वजनिक नहीं कहा जा सकता। सब प्रान्तोंके संघोंमें साम्य भी नहीं है। जिस दलने संघ संगठन किया उसने उसका विधान इस प्रकार बनाया है कि अन्य दलवाले उसके भीतर न घुस सकें। किसी किसी प्रान्तमें, उदाहरणार्थ बंगालमें, एकसे अधिक कांग्रेसकर्मी संघ हैं। ऐसी अवस्थामें कांग्रेस कहांतक अपनी शक्तिको संगठित, केन्द्रित और नियंत्रित रख सकती है, यह प्रश्न दलबन्दीसे बाहर रहनेवाले कांग्रेस कर्मियोंको उद्विग्न कर रहा है। कर्मी संघोंकी रवैयासे यह संकेत साफ मिल रहा है कि कांग्रेसके कानूनी होनेपर एक बार कांग्रेसके भीतर दलबन्दी (PawerPolitics) का बाजार गर्म होगा। यह कांग्रेसकी प्रभाव-वृद्धिके लिये घातक है। इस तरहकी स्थितिमें यह स्वाभाविक ही है कि देशकी दृष्टि वांछनीय नेतृत्व और मार्ग प्रदर्शनके लिये गांधीजीकी तरफ जाये। इस सम्बन्धमें यूनाइटेड प्रेसको मालूम हुआ है कि गांधीजीने विभिन्न प्रान्तोंके कांग्रेस कर्मियोंके नाम एक सर्कूलर जारी करके उनको यह निर्देश दिया है कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी अनुपस्थितिमें प्रत्येक कांग्रेस कर्मी अपनेको कांग्रेस प्रेसिडेण्ट समझकर अपने विवेक और प्रेरणाके अनुसार, किन्तु अगस्त प्रस्तावका ध्यान रखकर, स्वतन्त्रता प्राप्तिके लिये काम करे। गांधीजीने प्रत्येक कांग्रेस कर्मीको कार्य-स्वतन्त्रता दी है। उसके सामने बंधन सिर्फ एक ही है और वह यह है कि उसके कार्यका दायरा बम्बई प्रस्तावके बाहर न जाये। यह

भी मालूम हुआ है कि गांधीजी नहीं चाहते कि कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी गैर :मौजूदगी में कोई कांग्रेस संघ कांग्रेसके नामपर काम करे। यह स्वाभाविक है। गांधीजी संसारके सबसे बड़े डेमाक्रेट हैं। तभी तो जेलसे निकलनेके बाद ही उन्होंने यह घोषणा की थी कि बम्बईमें कांग्रेसके जो सर्वाधिकार उनको प्राप्त हुए थे अब वे सब आपसे आप समाप्त हो गये। इसके प्रतिकूल कुछ कांग्रेस कर्मी कांग्रेसकी अनुपस्थितिमें कांग्रेसके सब अधिकार हड़प लेनेकी चेष्टामें हैं। वस्तुतः उनकी यह चेष्टा लोकतन्त्रीय भावनाके सर्वथा विरुद्ध है।

बहादुर पठान—

भारतीय स्वतन्त्रताके विरोधी बहुधा यह कहते सुने जाते हैं कि स्वतन्त्रता आंदोलनसे मुसलमानोंका कोई सम्बन्ध नहीं है। किन्तु जिन लोगोंने अभी आजादीके लिये फ्राण्टियरके पठानोंके उत्साह एवं त्याग और बलिदानको देखा है वे जानते और समझते हैं कि उक्त कथन कहां तक सत्य है। पिछले महीने जिन लोगोंने डा० सैयद महमूदकी अध्यक्षतामें फ्राण्टियर राजनीतिक सम्मेलन का अधिवेशन देखा है वे हमारे इस कथनका समर्थन करेंगे कि फ्रांण्टियरके पठानोंके भीतर देशकी आजादीकी लगन अन्य प्रांतके किसी सम्प्रदायसे कम नहीं है। खान अब्दुल गफ्फारखांके नेतृत्वने पठानोंके भीतर अदम्य उत्साहके साथ साथ अपूर्व अनुशासनकी भावना पैदा कर दी है जो अन्य प्रान्त वासियोंके लिये अनुकरणीय है। डा० महमूदने एक वक्तव्य द्वारा यह बताया है कि फ्राण्टियरमें हिन्दुओं और सिखोंको भी पठान कहा जाता है और वे भी गर्व के साथ अपनेको पठान कहते हैं। साम्प्रदायिकतावादी हिन्दुओं और सिखोंको फ्राण्टियरके अपने भाइयोंसे इस आदर्शको ग्रहण करना चाहिये। मेलकी बात तबतक व्यर्थ है जबतक हमारे भीतर एक दूसरेके भावोंका समादर करनेकी भावना न होगी। साम्प्रदायी नेता आज ठीक इसके विपरीत आचरण कर रहे हैं। वे अपने अपने अनुयायियोंके भीतर दूसरोंके प्रति घृणा और द्वेषका भाव पैदा कर रहे हैं। प्रकारान्तरसे वे ब्रिटिश सरकार का मतलब सिद्ध करनेमें सबसे बड़े सहायक हो रहे हैं, क्या यह बात उनकी समझमें नहीं आती?

उड़ीसाकी राजनीतिक स्थिति—

फ्राण्टियरमें कांग्रेस मन्त्रिमण्डलका संगठन हो जानेके बाद प्रायः सभी प्रान्तोंके सुविधावादी और वैधानिक कांग्रेसमैन अपने अपने प्रान्तमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बनानेके लिये आतुर हो उठे। उड़ीसा भी इस हवासे अपनेको बचा न सका। इधर बड़े जोरोंसे इस बातकी चर्चा होने लगी कि उड़ीसा प्रांतमें कांग्रेसी मन्त्रिमण्डल बनने जा रहा है। किन्तु उड़ीसाके कांग्रेस पार्टीके नेता श्री विश्वनाथ दासने इन सुविधावादियोंकी आशाओं पर पानी फेर दिया। आपने कई वक्तव्य निकाल कर प्रान्तको साफ साफ बता दिया कि जबतक नेता मुक्त होकर सत्याग्रहों और नेतृत्व करनेके लिये बाहर नहीं आ जाते तब तक कांग्रेस पदग्रहणकी बात मनमें भी नहीं ला सकती। गांधीजी स्वयं नहीं चाहते कि कांग्रेस इस तरहकी स्थिति में पदग्रहणकी तरफ झुके। इस तरहकी निराशा और पराजयवादी मनोवृत्ति निराशा और पराजयवादी मनोभावना का परिचायक है। देशको आज आवश्यकता इस बातकी है वह अपना ध्यान अन्य सब दिशाओंसे हटाकर सिर्फ मनोयोग पूर्वक गांधीजीके रचनात्मक कार्यक्रमको पूर्ण और सफल बनानेमें लगाये। उड़ीसामें इस समय पद ग्रहणकी चर्चाको असामयिक बतानेवाले दूसरे मतके कांग्रेसमैनोंका कथन है कि केन्द्रमें बिना राष्ट्रीय सरकारके कांग्रेस प्रांतोंमें मन्त्रिमण्डल बनाकर कांग्रेसी जनताका कोई वास्तविक हित नहीं कर सकती, वह मात् एक निरीक्षण करनेवाली सत्ता रहेगी। थोड़े से सुविधावादियोंके सिवा कोई सच्चा कांग्रेसमैन नहीं चाहता कि इस समय पदग्रहण किया जाये। कुछ स्वार्थी व्यक्ति इस प्रश्नको लेकर कांग्रेसके भीतर फूट पैदा करनेकी चेष्टामें हैं। आशा है कि उड़ीसा उनको मुंहतोड़ उत्तर देकर कांग्रेसको पदग्रहणके दलदलमें न पड़ने देगा।

भागलपुर जेलमें अनशन—

प्रायः चार सप्ताहसे कुछ राजबंदी भागलपुर कैम्प जेलमें अनशन कर रहे हैं। उनके अभाव-अभियोग क्या हैं, यह जनसाधारण को अभीतक नहीं मालूम हो सका। इसमें तो सन्देह ही नहीं है कि जीवनको खतरेमें डालनेके लिये राजबन्दियोंको तभी बाध्य होना पड़ा होगा जब अधिकारियोंने अपने दुराग्रहका परिचय दिया होगा। सहज ही कोई व्यक्ति अपने जीवनके साथ खेलवाड़ करना नहीं चाहता। सब तरफसे निराश होकर उसे इस अन्तिम उपायका आश्रय लेना पड़ता है। अधिकारी अपने दुराग्रह और राजमदके कारण इस तरहकी स्थिति उत्पन्न करनेमें अभ्यस्तसे हो गये हैं। समाचारोंसे ज्ञात होता है कि राजबन्दियोंके अभाव अभियोगोंको दूर करानेके लिये प्रान्तके कांग्रेसी नेता अधिकारियोंसे मिलकर चेष्टा कर रहे हैं। इसी प्रसङ्गमें बाबू अनुग्रह नारायण सिंहने राजबन्दियोंसे अनशन छोड़नेकी अपील भी की है। आपने अपनी अपीलके दौरानमें कहा है कि "मुझे यह जानकर बड़ा कष्ट हुआ कि भागलपुर कैम्प जेलमें अनशन अब भी जारी है। आज (३० अप्रेल) अनशनका २४ वां दिन है। मैं उनके अभाव अभियोगोंको समझने और इस तरहका वातावरण उत्पन्न करनेकी चेष्टा कर रहा हूँ कि उनके अभियोगोंको सरकार दूर करे। मैं एक बार अनशनकारी दोस्तोंसे अपील करता हूं कि वे अनशन बन्द करके मुझे उनके अभाव दूर करानेकी चेष्टा करनेका अवसर प्रदान करें।" मालूम हुआ है कि अनुग्रह बाबूका यह पत्र बंदियोंको जेलोंके इन्सपेक्टर जेनरलने दिया है। यूनाइटेड प्रेस के एक तारसे मालूम हुआ है कि अनशनकारियोंकी कुछ शिकायतें कमिश्नर और आई० जी० ने दूर कर दी हैं। ऐसी स्थितिमें हम आशा करते हैं कि भागलपुर जेल के अनशनकारी राजबन्दी उपवास छोड़ कर अनुग्रह बाबू और कैलाश बाबूको अधिकारियोंसे मिलकर उचित व्यवस्था करा सकनेका अवसर प्रदान करेंगे।

राजबन्दियोंके परिवार—

देशकी स्वतन्त्रताकी लड़ाई लड़नेवाले वीर सत्याग्रही सैनिकोंके प्रति भी समाजका कुछ कर्त्तव्य है। हर्षकी बात है कि इस ओर उसका ध्यान गया है और अगस्त १९४२ के जन-आन्दोलनके मैदानमें जो लोग मारे गये, नजरबन्द किये गये अर्थात् जिनको लम्बी सजाएं मिली हैं उनके परिवारोंका पोषण करनेके लिये केन्द्रीय आश्रम खोलनेकी एक योजना तैयार की गयी है। इस योजनापर गांधीजीकी स्वीकृति मिल गयी है। योजना का उद्देश्य यह प्रतीत होता है कि नजरबन्दों और राजनीतिक बन्दियोंकी पत्नियों और पुत्रियोंको इन केन्द्रीय आश्रमोंमें रखा जायेगा और उनको कस्तूरबा स्मारक ट्रस्ट द्वारा संचालित कामोंमें लगाया जायेगा। हम इस योजनाका स्वागत करते हैं। किंतु हम एक बातकी तरफ ध्यान आकृष्ट करना चाहते है कि इसके साथही राजनीतिक पीडितोंके नाबालिग पुत्रों अथवा इसी प्रकारके अन्य आत्मीयोंके, जो उनके आश्रित थे, तथा काम करने में अशक्त वृद्ध माता-पिताके पालन पोषणकी व्यवस्था भी की जानी चाहिये। चूंकि इस योजनाका सम्पर्क कस्तूरबा स्मारक ट्रस्टसे है अतः उनके सामने यह कठिनाई है कि वे इस ट्रस्टका धन बालकोंपर नहीं खर्च कर सकते। आशा है कि इस समस्याको हल करनेकी ओर भी ध्यान दिया जायेगा। स्वर्गीय महादेवभाई स्मारक कोषका इस दिशा में उपयोग किया जा सकता है। समाजका कर्त्तव्य केवल राजपीड़ितोंकी पत्नियों और पुत्रियोंकी व्यवस्था कर देने ही से समाप्त नहीं हो जाता। उनके पुत्रों तथा वृद्ध मातापिताके प्रति भी समाजका कर्त्तव्य है।

सर फिरोजकी बहक—

सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनमें भारत सरकार द्वारा नामजद होकर जानेवाले भारतीय प्रतिनिधि सर फीरोज खां नून इधर खूब बहक रहे हैं। सम्मेलनमें पहुंचनेके पहले आपने यह फतवा दे डाला कि नामसे औपनिवेशिक स्वायत्त प्राप्त न होते हुए भी भारत कार्यतः किसी डोमिनियनसे कम नहीं है। सैन फ्रांसिस्को पहुंचनेपर आपने गांधीजीको जापान समर्थक बतानेकी हिमाकत की। अब आपने एक नया शिगूफा छोड़ा है। आप कहते हैं कि गांधीजी अब समयके साथ चल सकने लायक नहीं रह गये। वे अति प्राचीन हैं। पंडित जवाहरलालजी उनके अच्छे उत्तराधिकारी होंगे। सर फिरोजको मालूम होना चाहिये कि समयसे पीछे गांधीजी नहीं हैं। सर फिरोजखां जैसे व्यक्ति उनके पैर पीछेसे खींचनेवाले यदि दुर्भाग्यसे हिन्दुस्तानमें न होते तो देश अबतक गांधीजीके नेतृत्वमें स्वतन्त्र हो गया होता और गांधीजी सचमुच रिटायर हो गये होते। गांधीजी नेतृत्वके भूखे नहीं हैं। देशको उनके नेतृत्व की आवश्यकता है इसीलिये वे नेता बने हैं। वे सर फिरोजकी तरह देशकी छातीपर नहीं चढ़े बैठे बल्कि देशवासियोंके हृदयमें उनका स्थान है। इसी दौरानमें सर फिरोजने यह भी कहा कि हम अपने देशवासियोंका नहीं किन्तु उनके विचारोंका प्रतिनिधित्व करते हैं। कितनी लगो बात है। यदि आप विचारोंका प्रतिनिधित्व करते होते तो देश आपका विरोध क्यों करता। देश आपका इसीलिये विरोध करता है कि आप उसका खाते हैं किन्तु प्रतिनिधित्व करते हैं ब्रिटेनका और भारतके सम्बन्धमें अंग्रेजों के विचारोंका। सर फिरोज चाहे जितना अंग्रेजी करें वे अपनी असलीयतपर पर्दा नहीं डाल सकते। रूसके परराष्ट्र सचिव मोलोटोवने तभी तो यह कहा कि "... आयगा जब स्वतंत्र भारत यहां होगा।" ... फिरोजके वक्तव्यका खोखलापन ... करनेके लिये मो० मोलोटोवका वक्तव्य काफी है।

महात्माजीकी बातें—

विश्वशान्ति चाहने वाले व्यक्ति ... महात्माजीकी बातोंकी उपेक्षा करते रहेंगे तबतक वे शान्ति-मरीचिकाके पीछे ... दौड़ते रहनेके सिवा कभी अपने लक्ष्य ... नहीं पहुंच सकते। गांधीजीने दो बातोंकी तरफ संसारका ध्यान आकृष्ट किया है। पहली बात तो यह है कि भारतको जबतक परतंत्र रखा जायेगा तबतक शान्ति ... नहीं है। दूसरी बात यह है कि शान्ति ... न्याय होना चाहिये। प्रतिहिंसा ... प्रतिशोधकी भावना न्याय नहीं करने ... प्रतिहिंसा सशक्तका भूषण नहीं है। इस ... को ध्यानमें रखकर विजेताओंको ... और जापानको अपमानित नहीं ... चाहिये। शान्तिका फल सबको ... रूपसे मिलना चाहिये। तभी शत्रुको ... परिणत किया जा सकता है। मित्रराष्ट्र ... मार्गका अवलम्बन करके अपनी लोकतंत्र... थताका प्रमाण दे सकते हैं। किन्तु गांधी... यह दर्शन सिद्धान्त त्याग और ... भाव पर अवलम्बित है। आज ... आध्यात्मिकताको, उसके पालन करने ... तपस्या है उससे घबराकर ढोंग कहते ... अतः यह सम्भव नहीं है कि वे गांधीजी... वाणीके मर्मको समझेंगे। उनके भीतर ... इतना प्रबल है कि उसके आगे गांधी... स्फटिक तुल्य वाणीको समझनेकी न ... उनमें, न इच्छा। अहमको त्यागकर ... उठनेके लिये जिस आध्यात्मिकताकी ... श्यकता है उससे पाश्चात्य राष्ट्र कोसों ... उनपर गांधीजीके इस उपदेशका ... प्रभाव हो सकता है। चर्चा तो करते ... विश्वशान्ति की, किन्तु दृष्टि इनकी ... अपने स्वार्थ पर ही लगी है। ... जिस तरह सिद्ध हो वही इनके लिये ... वही नीति है। अतः यह स्पष्ट है कि ... जीकी बातोंसे यह स्वार्थी संसार ... चित होगा जब भारतवर्ष स्वतंत्र ... विश्वकी राजनीतिको अपने दृष्टिकोण ... चित कर सकनेकी स्थितिमें होगा।

—x—

देहातकी बहनोंसे मेरी अपील

———:०*०:———

(डा० कैलाशनाथ काटजू)

माता कस्तूरबा गांधीको स्वर्गवासी हुए चौदह मास हुए। सारे देशने निश्चय किया कि उनकी स्मृतिमें एक राष्ट्रीय स्मारक कोष संग्रह किया जाय और उसको भारतकी देहातोंमें रहनेवाली स्त्रियों तथा लड़कियोंकी उन्नतिके काममें लगाया जाय। पहिले मांग तो ७५ लाखकी ही थी, परंतु माता कस्तूरबाकी याद, महात्मा गांधीजी के प्रति आदर तथा प्रेमने देश पर गहरा असर किया और अब तक १ करोड़ २८ लाख रुपये जमा हो गये। यह सब कोष महात्माजीकी सेवामें गांधी-जयन्ती दिवसके अवसर पर, गत २ अक्टूबरको भेंट किया गया। महात्माजीने बाजाब्ता कानूनी पत्र लिखकर इस कोषको श्रीमती कस्तूरबा गांधी कोष ट्रस्ट बना दिया और उसके तीस ट्रस्टी बनाये। सदर दफ्तर बम्बई है। शाखा हर प्रान्तमें है और हर जिलेमें जिला कमेटी बनेगी जिसके द्वारा गांव-गांवमें माता कस्तूरबाका नाम जीवित रखने के लिये ऐसा प्रबन्ध होगा कि गांवकी रहने वाली औरतों और लड़कियोंकी हर तरह सेवा हो, उनको दवा-दारू मिले, प्र वके समय और उसके पश्चात उनकी देखभाल हो, स्त्री-शिक्षाका प्रचार हो और चरखा तथा दूसरे ग्रामोद्योगोंसे उनकी आर्थिक स्थितिका सुधार हो, उनमें आपसमें प्रेम और संगठित रूपसे अपने गांव और घरकी सफाईका वे प्रबन्ध करें। इन सब कामोंके लिये आवश्यकता है धनसे अधिक काम करने वालोंकी। धन तो जमा हो जायगा। देशमें उदारता काफी है। काम अच्छा हो और सन्तोषजनक किया जाय तो मुझे सन्देह नहीं कि जितना धनका दरकार हो, मिल जायगा। आवश्यकता है इस पवित्र कामके करने वालोंकी। यह काम पुरुषोंका नहीं। स्त्रियोंकी भलाई और उन्नतिका काम स्त्रियोंको ही करना उचित है और उनको ही सफलता मिल सकती है। हमारी बहिनें, माताएं घोर अन्धकारमें पड़ी हैं। स्त्रियां ही उनके घरोंमें जाकर प्रेमभावसे उनको उजालेमें ला सकती हैं, और आपत्ति उत्पन्न कर सकती हैं, सूखी हुई हड्डियोंमें कुछ नयी ताजगी ला सकती हैं और उनमें नवजीवनका संचार कर सकती हैं। पुरुष भला यह काम कैसे कर सकते हैं! पुरुषोंकी तो वहां तक पहुंच भी नहीं है। स्त्रियोंमें भी शहरकी रहनेवाली इस भारी कामको नहीं उठा सकतीं! इसलिये तो आवश्यकता है स्त्री कार्यकर्ताओंकी, जो गांवोंमें ही जाकर बस जाय, वहां बैठे रहें, सर्दी, गर्मी, बरसात वहीं बितायें, अपनी गरीब बहिनोंके जीवनसे जीवनको मिला देवें। यह सब गांवोंकी रहनेवाली बहिनोंसे कहां हो सकता है और दस पांच ऐसी मिल भी जायं तो काम कब हो सकता है? हमको तो आवश्यकता है हजारों ऐसी स्त्रियोंकी जो अपने आपको देश-सेवा और ग्राम-सेवामें तन-मनसे निछावर कर दें, जो स्त्री-जाति की सेवाको ही भगवानकी सेवाका एक साधन समझें।

मैं पिछले सप्ताह बम्बई गया था। महात्माजीसे चार दिन भेंट करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ और अपने ट्रस्टी भाइयोंसे भी बातचीत हुई। बहिन मृदुला सारा भाईने, जो ट्रस्टकी संयोजक मंत्री हैं, इस कामको चलानेके लिये भारी पैमाने पर योजना बनायी है। यह निश्चय हुआ है कि महिलाओंको ग्राम-सुधार और स्त्री-सेवा आदि के काम करनेको ट्रेनिङ्ग दी जाय। हर प्रान्तमें ट्रेनिङ्ग कैम्प खोला जाय। ४-६ महीनेका कोर्स बनाया गया है। शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकारकी स्त्रियोंको शिक्षित करनेका प्रबन्ध किया जायगा। इस ट्रेनिङ्गमें काफी धन खर्च होगा। रहने और खाने पीनेका सब प्रबन्ध होगा। परंतु आशा यह है कि ट्रेनिङ्ग समाप्त होने पर बहिनें अपने गांवमें ही या किसी दूसरे गांवमें जाकर अपना जीवन बिताएं और वहांके स्त्री समाजकी हर तरहसे सेवा करें, वहां चरखा-संचालन आदि ग्राम उद्योग भी स्थापित करें जिससे उनकी और दूसरी बहिनोंकी आर्थिक स्थितिका सुधार हो। घरकी सफाई, बच्चोंकी देखभाल और स्त्री-शिक्षा प्रचार इत्यादि सभी काम वह अपने हाथमें लेवें आप करें और गांवमें महिला समाज स्थापित करके सङ्गठित रूपसे कामको पूरा करें।

मेरे मित्र कहते हैं कि ऐसी योग्य बहिनें तुमको गांवमें कहांसे मिलेंगी? मैं उत्तर देता हूं कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि देहातोंमें ऐसी महिलाओंकी कमी नहीं है। घर-घरमें ईश्वरकी कृपासे कांग्रेसका सन्देश जा चुका है। हजारों स्त्रियोंने देशके राजनीतिक क्षेत्रमें शानदार भाग लिया है, कष्ट उठाये हैं, जेल गयी हैं। लाखों स्त्रियां ऐसी हैं जिनके पति, पिता, पुत्र, देशके काममें तन, मन, धनसे लगे हैं। ये बहिनें अगर अवसर मिले तो, अपने स्त्री समाजकी उन्नतिके काममें क्या भाग नहीं लेंगी? अवश्य लेंगी; मगर कोई उनसे जाकर कहे तो सही। देशमें स्त्री-शिक्षा फैलती जाती है। बहुतसे गांवोंमें कन्या-पाठशालाएं स्थापित हैं। वहां अध्यापिकाएं हैं। उन्हें स्त्री-समाज की सेवाका यह बहुत अच्छा अवसर मिला है। वे इसमें भाग ले सकती हैं। शहरोंमें हर साल हजारों लड़कियां परीक्षाएं पास करके निकलती हैं। उनमेंसे बहुत सी गांवोंमें ब्याही जाती हैं। उनके हृदयोंमें क्या यह उत्साह, यह उमंग नहीं कि जो ज्वाला उन्होंने अपनी पाठशालाओंमें पायी है वे उसको अपने घरों के चारों तरफ गांवमें फैलाएं और अपने गांवको सुन्दर बनायें? मुझे पूरी आशा है कि बहुत सी महिलाएं तैयार होंगी, जो अपने गांवकी रहनेवाली बहिनोंकी हर तरह से सेवा करेंगी। उनकी सहायताके लिये हम हर जिलेमें कमेटियां बनायंगे। हर कमेटीमें स्त्री और पुरुष सदस्य होंगे। जिस गांवमें कस्तूरबा स्मारक कोषका काम आरम्भ होगा, वहां जिला कमेटी हर तरह सहायता करेगी। अगर खादी-आश्रम उस गांवमें स्थापित हो तो जिला-कमेटी, चरखा, रुई इत्यादि सस्ते दामसे दिलवायेगी, बना हुआ कपड़ा जो बच जायगा उसकी बिक्रीका प्रबन्ध करेगी। दूसरे ग्रामोद्योगोंके स्थापित करनेमें भी उचित सहायता देगी। स्त्री-शिक्षाके लिये किताब, कलम, दावात और जो कुछ खर्च पड़े उसमें हाथ बटायेगी, दवा-दारूके बक्स भी देगी और सबसे ज्यादा यह कि जिला कमेटीके सदस्य हर गांवमें अपना नाता सदा जीवित रखेंगे,—पत्र-व्यवहारसे, तथा गांवोंमें होनेवाले तिथि-त्योहार और दूसरे उत्सवोंमें सम्मिलित होकर भी।

मैं सदासे कहता आया हूं कि स्त्री और पुरुष एक गाड़ीके दो पहिये हैं। यदि दोनों बराबर न चलें, बराबर मजबूत न हों, तो हमारे घरकी गाड़ी, ठीक कैसे चल सकती है? देश का सुधार कैसे हो सकता है, जब तक कि हमारे घरोंका सुधार न हो? और घरका सुधार कैसे हो सकता है, जबतक गृहिणी जानकार और सुयोग्य न हो? देशकी स्वतन्त्रता अन्तमें निर्भर है स्त्रियोंकी स्वतंत्रता पर। यह बड़ा जबर्दस्त कार्य हम लोग उठा रहे हैं माता कस्तूरबाके नामपर। मैं भारत को देहातोंकी माताओं और बहिनोंसे नम्र प्रार्थना करता हूं कि आइये और यह काम अपने हाथमें लीजिये, इसे संभालिये और आगे बढ़ाइये।

मुझे आशा है कि मेरी प्रार्थना बहुतसी बहिनें स्वीकार करेंगी। जो इस सेवाके क्षेत्रमें आना चाहती हैं वे अपनी-अपनी सेवाओंकी बात जिला :कस्तूरबा कमेटीको सूचित करें ताकि जहां आवश्यक हो वहां-वहां ट्रेनिङ्गका प्रबंध किया जाये और उनके गांवोंमें काम आरंभ करनेकी योजना बनायी जाये।

यह मौजूदा विश्व-व्यापी युद्ध जो घोर हिंसा रूपसे संसारमें फैला हुआ है, उसमें हर देशकी औरतोंने सिद्ध कर दिया है कि वह किस आत्मशक्तिके साथ, किस धैर्यके साथ, अपने देशकी सेवा कर सकती हैं। हम भारतवर्षमें पवित्र अहिंसाके द्वारा, रचनात्मक कार्यक्रमके द्वारा, देशका, समाजका, उद्धार करना चाहते हैं। मैं इस कार्यक्रममें अपनी बहिनोंको सम्मिलित करना चाहता हूं। मुझे विश्वास है कि मेरी आशा सफल होगी।

—:०:—

अधार्मिक कौन?

——):*:(——

(सत्यनारायण शर्मा)

सम्पत्तिके इस अविवेकतापूर्ण असम विभाजनको नष्ट करके एक नूतन एवं स्वर्ण-किरणोज्वल सामाजिक व्यवस्थाकी स्थापना का प्रयास करनेवाले पुरुष-प्रवीरोंके मार्गमें जो अनेकानेक बाधाएं उपस्थित होती रहती हैं, उनमें उन व्यक्तियोंका हाथ भी कुछ कम महत्वपूर्ण नहीं जो धर्मके नामपर अधर्म एवं मूर्खताको अपने जीवनमें तो प्रश्रय दिये हुए हैं ही, साथ ही जो अन्य व्यक्तियोंके जीवन-गगनको भी अविवेकिताकी तम-श्यामल मेघमालाओंसे आक्रान्त कर देना चाहते हैं!

सद्धर्म समाजवादका शत्रु नहीं, आधार है। संसारके समस्त महामहिम आलोकदानी व्यक्तियोंने आवश्यकतासे अधिक सम्पत्ति रखनेका मुक्तस्वरसे विरोध किया है और धनलोलुपताको सर्वथा निन्दित एवं गर्हित विघोषित किया है। भारतवर्षके प्राचीन एकान्तनिवासी ऋषि इहलौकिक भोग-विलासके साधनोंके प्राचुर्यको सदैव सच्ची उन्नतिके प्रबल बाधकके रूपमें देखते रहे। मिश्र, यूनान, और अन्य प्राचीन सभ्यताओंके केन्द्रोंमें रहकर ज्ञानालोकका प्रसार करनेवाले महापुरुषोंने भी सदैव निरर्थक सम्पत्ति संचयको दुष्कर्म बतलाया है।

जेसस क्राइस्टने अत्यधिक सम्पत्ति रखनेवाले व्यक्तियोंको सदैव दयाका पात्र समझा है और कल्याणकामियोंको सन्मार्ग प्रदर्शित करते हुए स्पष्टतापूर्वक कह दिया है—'सूईके छेदसे ऊंटका निकल जाना संभव हो सकता है, किन्तु स्वर्गके द्वारसे पूंजीपति अन्दर प्रवेश नहीं कर सकते।'

यूरपके सन्तोंने सदैव आवश्यकतासे अधिक सम्पत्तिके संचयका विरोध किया है। निर्धन श्रमजीवियोंका रक्त-शोषण करते हुए नित्य नूतन महलोंका निर्माण करनेवाले पूंजीपतियोंको शाप देते हुए घोररूपसे एक महान् धार्मिक व्यक्तिने कहा था—'निरन्तर महलोंकी संख्याको विवर्धित करनेवालो, तुम्हारा अमंगल हो! क्या तुम यह सोचते हो कि इस पृथ्वीपर केवल तुम्हीं निवास करते हो!'

लाखों व्यक्तियोंको क्षुधा-प्रपीड़ित देखते हुए भी जो व्यक्ति अपने श्रमजीवी-शोणित-सिंचित महलोंमें हजारों मन अन्नके बोरे सड़ाते रहते हैं, वे जब समाजवादकी स्थापना करके मानव-जातिके जीवन-पथमें स्वर्गिक सुषमाका प्रसार करनेका प्रयास करनेवाले विद्रोही वीरोंको अधार्मिक विघोषित करनेकी धृष्टता करते हैं, उस समय धर्मके देवताके नेत्रोंमें आंसू अवश्य भर आते होंगे!

शरदकी हिम-शीतल यात्रामें लाखों जीवन-यात्रियोंको वस्त्राभावमें तड़पा-तड़पा कर मारनेवाले लक्षाधीश लाखों थान अपने महलोंमें छिपाकर रखते हुए जिस निर्लज्जता और नृशंसताका परिचय देते हैं, वह तो उनके लिये धर्मसम्मत हो गया और कंटकाकीर्ण मार्गमें नंगे पांवों मंजिलकी ओर कदम बढ़ानेवाले स्वदेशिक युवक-युवका बहू-

निर्दोष अधर्मका प्रतीक! गाज क्यों नहीं गिरती ऐसी बुद्धिपर!

जो व्यक्ति अपने आराध्य देवताके उपदेशोंके प्रतिकूल आचरण करता है और उन चारित्रिक दुर्बलताओंसे विमुक्त होनेकी चेष्टा भी नहीं करता, जिनके कारण उसे उनके प्रतिकूल आचरण करनेको विवश होना पड़ता है, वह अपने आराध्य देवताका शत्रु है!—उसका अपमान करता है! जगद्गुरु श्रीकृष्णने गीतामें जिस प्रकारके आचरणोंको जीवन-यात्राके लिये श्रेयस्कर बतलाया है, उनके विरुद्ध आचरण करते हुए भी अपनेको श्रीकृष्णका और श्रीकृष्णकी गीताका भक्त विघोषित करनेवाले क्या प्रवंचक नहीं हैं?

श्रीकृष्णके नामपर जेसस क्राइस्ट, मुहम्मद, बुद्ध प्रभृतिको अपशब्द कहनेवाले तो लाखों पूंजीपति मिल जायंगे और उनके अधर्मोपार्जित रुपयोंसे अपनी और अपने बच्चोंकी उदर-पूर्ति करनेवाले पुरोहित भी उनके अविवेकपूर्ण विचारोंका समर्थन करनेके लिए अपनी, क्षुद्र शक्तियोंका प्रदर्शन आरम्भ कर देंगे। किन्तु क्या किसीने इस प्रश्नपर भी विचार किया है कि श्रीकृष्णके उपदेशोंको किस प्रकार कार्यान्वित किया जा सकता है फलोंकी आशाका परित्याग कर के निष्काम भावसे कर्म करनेका जो आदेश जगद्गुरु श्रीकृष्णने दिया है, उसको कार्यान्वित तभी किया जा सकता है जबकि पूंजीवादका विनाश करके इस पृथ्वीपर समाजवादकी स्थापना हो जाय। अनित्य सुन्दर सामाजिक व्यवस्थाकी स्थापना होनेके उपरान्त ही गीतामें प्रतिपादित निष्काम कर्मयोगका अनुवर्त्तन अच्छी तरहसे हो सकेगा। जबतक पूंजीवादके दानवकी विषाक्त सांसमें मानव-समाज रहेगा, तबतक गीताके उपदेश केवल प्राभातिक पाठ तक ही सीमित रहेंगे,—इनसे श्रीकृष्णके प्रशंसक कोई लाभ नहीं उठा सकते!

वर्त्तमान सामाजिक व्यवस्था, जिसका आधार पूंजीवाद है, गीताकी सबसे बड़ी प्रतिरोधिका है। और पूंजीवादका पक्ष ग्रहण करके समाजवादियोंको अधार्मिक विघोषित करनेकी धृष्टता करनेवाले व्यक्ति गीता और श्रीकृष्ण दोनोंके शत्रु हैं!

यदि पूंजीपति अपनेको समुन्नत करना चाहते हैं और अपने अबतकके किये उन पापों का प्रायश्चित करना चाहते हैं, जिनको क्षमा करते हुए देवता भी सिहर उठेंगे, तो उन्हें समाजवादके उदित होते हुए अंशुमालिका सहर्ष स्वागत करते हुए उन युवकोंको सक्रिय सहयोग देना ही पड़ेगा जो मन्दिरोंमें जाकर घंटोंतक करताल लेकर नाचते और गाते तो नहीं हैं और न जिन्हें सद्धर्मसे सर्वथा अनभिज्ञ एवं अपठित कथावाचकोंके अभिनयको देखनेका ही समय है, किन्तु जो अपने प्राणों के बूंद बूंदके साथ उस दिनको इस पृथ्वीपर लानेकी चेष्टाओंमें संलग्न हैं, जबकि दुनियाका प्रत्येक व्यक्ति भोजन और वस्त्रकी चिन्ताओं से सर्वथा विमुक्त होकर कर्मके लिये कर्म करने में रत हो सकेगा?

उसी दिन अन्तरिक्षसे श्रीकृष्ण मुस्कराते हुए इस वसुधापर दृष्टिपात करेंगे और गीतामें किये गये परिश्रमको सार्थक समझेंगे।

सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन

—:○:○✱○:○:—

(हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा लिखित)

पोलैण्डके मामलेको लेकर सोवियट प्रतिनिधि मो० मोलोटोव सम्मेलनसे उठ कर चले गये। वार्साकी अस्थायी सरकारके प्रतिनिधित्वको स्वीकार करनेके प्रस्ताव पर यूनान, युगोस्लाविया, जेकोस्लोवाकियाके सिवा अन्य किसीने मोलोटोवका समर्थन नहीं किया। सम्मिलित राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंका भविष्यमें क्या रुख होगा, यह इसीसे स्पष्ट हो गया। तब मो० मोलोटोवका यह समझना कि यहां उनकी दाल नहीं गलनेकी, अतः सम्मेलनमें भाग लेनेसे क्या लाभ, उचित है। ब्रिटेन और अमेरिकाका प्रभाव तथा उनके पिट्ठुओंका वोट ही उलझनोंका भाग्य निर्णय करेगा, रूसकी एक नहीं चलने पायेगी। यह स्थिति सम्मेलनके भविष्यके लिये वांछनीय नहीं है। आमंत्रणकारी चार राष्ट्र ऐसी स्थितिमें कब तक एक सूत्रमें बंधे रह सकेंगे, यह एक प्रश्न है।

भारतका सवाल

सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें भाग लेनेके लिये जितने देशोंके प्रतिनिधि आये हैं भारत को छोड़कर अन्य किसी देशके प्रतिनिधियों के अधिकार पर सम्मेलनके बाहर आक्रमण नहीं किया गया और न इस तरहका प्रदर्शन ही हुआ कि ये अपने देशके प्रतिनिधि नहीं हैं। मो० मोलोटोवने भी सम्मेलनमें प्रकारान्तर से यही बात कही कि भारतीय प्रतिनिधियों पर देशका विश्वास नहीं है। पोलैण्डके प्रश्न पर मोलोटोवने कहा कि भारतसे आये हुए प्रतिनिधि उस देशका प्रतिनिधित्व करते हैं जो स्वतन्त्र नहीं है। फिर भी रूसने ब्रिटेनके इस अनुरोधको रखा कि "इन परिस्थितियों में" भारतको आमंत्रित किया जाये।

सम्मेलनमें उपस्थित प्रतिनिधियोंने उस समय बड़ी हर्षध्वनि की जब मोलोटोवने कहा कि "हमें विश्वास है कि समय आयेगा जब भारतकी वाणी सुनी जायेगी।" इनके वक्तव्यसे यह स्पष्ट है कि सर रामस्वामी, सर फिरोज खां और सर कृष्णमाचारीकी वाणी भारतकी नहीं बल्कि ब्रिटेनकी वाणी है।

बेसुरा राग

लन्दनमें बैठी पोलैंडकी भगोड़ी सरकार का बेसुरा राग अभीतक बन्द नहीं हुआ। या यों कहा जाय कि बन्द नहीं करने दिया गया। उसने एक मेमोरण्डम सम्मेलनको भेजा है कि "पोलैण्डकी कानूनी सरकार हम हैं पर हमें सम्मेलनमें आमन्त्रित नहीं किया गया। फिर भी पोलैंडकी तरफसे हम कुछ रचनात्मक सुझाव सम्मिलित राष्ट्रोंके सामने रखना चाहते हैं। बड़े और छोटे राष्ट्रोंकी असमानता प्राधान्यके आधारपर नहीं बल्कि उत्तरदायित्वके आधारपर मानी जानी चाहिये।

श्रीमती पंडितका शाही स्वागत

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितके यहां आनेपर उनका शाही स्वागत किया गया। मेयर और पुलिस कमिश्नरने उनकी सम्बर्द्धना की। जिस मोटरमें उनको बैठाया गया उसमें भारतीय तिरंगे झण्डेके साथ अमेरिकन झण्डा भी लगा था। जुलूसके साथ उनको होटल ले जाया गया। यहांकी तमाम भारतीय संस्थाओंने उनका स्वागत किया और थैली भेंट की। श्रीमती पंडितकी उपस्थितिसे यहां के भारतीयोंका उत्साह अवर्णनीय है।

धुरी उपनिवेशोंका प्रश्न

अबतक जो उपनिवेश धुरी राष्ट्रोंके नियन्त्रणमें थे उनके भविष्यपर विचार करने के लिये पांच महाराष्ट्र—ब्रिटेन, अमेरिका, रूस, चीन और फ्रांसका सम्मेलन होगा। इस सम्बन्धमें अमेरिकाका यह मत है कि ये उपनिवेश दो श्रेणीमें रखे जायं। पहली श्रेणी में तो सामरिक महत्ववाले द्वीप और भू-प्रदेश हैं जैसे गुआम तथा प्रशांतके अन्य द्वीप और दूसरी श्रेणीमें आर्थिक दृष्टिसे परतंत्र बना कर रखे गये ब्रिटिश उपनिवेश हैं। अमेरिका चाहता है कि सामरिक महत्वके प्रदेश उस शक्तिके पूर्ण अधिकारमें रहें जिसे अपनी राष्ट्रीय रक्षाके लिये उनकी आवश्यकता है। अन्य उपनिवेशोंपर अन्तर्राष्ट्रीय नियंत्रण बगैर ट्रस्टीके रखा जाये।

चार कमीशन, १२ कमेटियां

डमबर्टन ओक्स सम्मेलन द्वारा प्रकाशित योजनापर विचार करनेके लिये सम्मेलनने चार कमीशनों और १२ कमेटियोंकी नियुक्ति की है। फील्ड मार्शल स्मट्स, दक्षिण अफ्रीका यूनियनके प्रधान मन्त्री, एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो वार्साई सम्मेलनमें शामिल हुए थे। आपको सम्मेलनकी जेनरल असेम्बली कमेटीका अध्यक्ष नियुक्त किया गया है। आपने नवीन संसारकी ... करनेकी अपील की है। आपने कहा है ... ऐसी चेष्टा की जाये कि तृतीय विश्व... असम्भव हो जाये। यह हमी होने... सकते हैं। मानव जाति आज अपने ... संकट स्थलपर पहुंच गयी है। सैनिक ... पर्याप्त नहीं है। यह तो महत्तर ... का पूर्व भाग मात्र है।

कुछ बेसुरी बातें

—:*:—

श्री सीताराम गोयल एम० ए०

सितम्बर सन् १९३९ में युद्धकी घनघोर घटा घिर कर बरस पड़ी। भारतके सिंहासनपर उस समय लार्ड लिनलिथगो विराजमान थे। रणभेरी बजते ही, सितम्बरकी उस रातको उनकी शिराओंमें वीर रस उमड़ पड़ा। प्रातः उठ कर हाथ मुंह धोया, चाय पी और घोषणा कर दी कि जर्मनीकी युद्ध नीतिसे भारत अत्यन्त रुष्ट है, इसलिये मित्र राष्ट्र अन्तर्राष्ट्रीय न्याय और शान्तिकी रक्षामें भारतको अपना साथी समझें। चालीस करोड़ मनुष्योंको युद्धमें झोंकते उन्हें तनिक भी दुविधा न हुई, लेशमात्र भी अन्तर्द्वन्द्व न झेलना पड़ा। कर्त्तव्य-बुद्धिकी प्रेरणामें भला प्रश्नको स्थान कहां? पर भारतीय बेचारे कुछ भी न समझ सके। पूछने लगे कि यूरोपके अग्निकाण्डमें हमारी आहुति कैसी, हमें कुछ समझाया तो जाये। वायसराय महोदयको बड़ी हंसी आयी। कितनी मोटी अकल है इन काले आदमियोंकी, इतनीसी बात नहीं समझते कि यूरोपमें राष्ट्रीय आत्म-निर्णय और जनतन्त्रका दिवाला निकालनेके लिये नाजीवाद खड़ा हुआ है और इन भारतीयोंके निकट मानो कुछ हुआ ही नहीं। फिर कहते हैं कि हमें स्वराज्य चाहिये। स्वराज्यके योग्य ये लोग होते तो भला अंग्रेजोंको सात समुद्र पार करके भारतके शासनका भार क्यों लेना पड़ता। फिर अहसान मानना तो दूर रहा, जरासा काम पड़ते ही आगा पीछा करते हैं। कैसे हैं ये हिन्दुस्तानी।

फिर भी भारतीयोंकी धृष्टता नहीं मिटी। उनके निश्चयमें परिवर्तन नहीं हुआ। राष्ट्रीय आत्म-निर्णय, जनतन्त्रवाद—बातें तो सब ऊंची हैं, इन आदर्शोंके लिये लड़ना भी चाहिये। पर यह कैसे निश्चय हो कि इन्हीं आदर्शोंकी रक्षाके लिये ब्रिटेन रण-भूमिमें उतरा है। कमसे कम इतिहास तो इस बातका साक्षी नहीं देता। धरतीके ओर-छोर तक जो लोग अनेकों राष्ट्रोंका आत्म-निर्णय-अधिकार सदियोंसे डकारे बैठे हों, जिनके उग्र उत्पीड़नसे कोटिशः मनुष्य त्राहि-त्राहि कर रहे हों, उनके स्वरमें ये राजनैतिक आदर्शवादकी हांक कैसे विश्वसनीय हो। फिर यह बात भी नहीं कि इन आदर्शों पर पहली—सन १९३९ के सितम्बरमें कुठाराघात हुआ है। चीन, अबीसीनिया, स्पेन, आस्ट्रिया, चेकोस्लोवाकिया इत्यादि देशोंमें फासिस्ट-वादी लुटेरोंने खुलकर लूट-मार की; पर ब्रिटेन चुप रहा। इतने दिनोंसे क्यों उसकी आत्मा न जाग सकी।

हो सकता है कि अकस्मात ही ब्रिटेनका हृदय-परिवर्तन हो चला हो, क्या असम्भव है। पर उसका कुछ प्रमाण तो मिले। भारतमें इतने दिनोंसे राष्ट्रीय आत्मनिर्णय और जनतन्त्रका गला दबाया गया है। बीती सो बीती हम भूल जायंगे, परआज ब्रिटेन अपना सुधार करके ईमानदारीका परिचय दे। पर इधर तो सब कुछ उल्टा हो रहा। राष्ट्रीयताके नाते तो भारतकी सत्ता ही कुछ नहीं है, ब्रिटिश साम्राज्यके बाहर उसकी कोई पहचानता भी है इस ... यहां जनतन्त्रवाद; उसीकी रक्षा की ... इस देशके जन-प्रिय नेता थे; राज-नैतिक दल थे, धारासभाएं थीं, किसीसे तो पूछा होता, युद्ध-घोषणा जैसा महत्व-शाली निश्चय करनेमें जनताका मत तो लिया होता। पर ये सब तो दूर, चार-पांच सालसे प्रान्तीय स्वायत्त-शासनके नामसे जो ढकोसला बना रखा था उसकी भी अन्त्येष्टि कर डाली। हमें कैसे विश्वास हो, यदि सचमुच ही ब्रिटेन राष्ट्रीयता और जनतन्त्रका हिमायती बना है तो हमारी स्वतन्त्रता मान लेनेमें और हमारे नेताओंके हाथ शासन की बागडोर संभाल देनेमें यह आना-कानी, यह देर-दार क्यों। हम सहयोगसे मुंह नहीं मोड़ते, पर हमें विश्वास तो दिलाया जाय कि सहयोग वांछनीय है, और हमें मुक्त करके सहयोगका अवसर भी तो मिले।

सम्मुख स्पष्टीकरण हुए बगैर, वैसा आशा-विश्वास दिखानेका साहस नहीं होता। इसे बचपन कौन कहेगा, दूधका जला हुआ तो छाछको फूंक-फूंककर पीता ही है।

इन सब बातोंका एक ही उत्तर मिला—तुम सब असभ्य हो, बीती बातें दोहराते हो, समयकी चाल, इतिहासका परिवर्तन नहीं पहिचानते। अनुशासन या उत्तरदायित्वकी भी चेतना तुम्हें नहीं।

नेता बेचारे क्या करते, पर इरादा कर लिया कि इस प्रकार पंगु होकर तो सहयोग नहीं देंगे। उधर ब्रिटिश सरकार कभीकी उनको नेतृत्वसे पदच्युत कर चुकी थी। संसार भरमें ब्रिटेनका प्रेस, रेडियो और किरायेके प्रचारक गला फाड़-फाड़कर चिल्लाने लगे—

राह न रोको !

—:०*०:—

(२६ अप्रेलके 'देशदूत' में प्रकाशित श्रीमती सुमित्राकुमारी सिनहा की कविता पर।)

राह न रोको !
चली चलूंगी
पत्थर बांध डुबाऊं तुमको, उमड़ा सिन्धु अथाह न रोको !
निशि अंधियारी
सिर पर मेरे बोझा भारी, मजदूरी की चाह न रोको !
जो कुछ पाया
नम्बरवारी पास सभी हैं, गिनना शेष उछाह न रोको !
तूफानों से
खेल रही मैं अरमानों से, गति का वक्र प्रवाह न रोको !
जिसमें होकर
आते हैं सब लिये निबलता, बालों की मधु-छांह न रोको !
अंक न भरने
तुम्हें झुकाने निज चरणों पर, उठी हुई यह बांह न रोको !
राह न रोको

—समदर्शी

ब्रिटिश सरकारको न जाने क्यों ये सब बातें बेतुकी और बेमौका प्रतीत हुईं। युद्ध के समय भी भला ऐसी चर्चा की जाती है। ये सब काम तो फुर्सतके होते हैं, युद्धसे निबट लें फिर सुलझ लेंगे। वक्त देखना चाहिए, बचपन करना तो उचित नहीं।

पर राष्ट्रीय नेताओंको ये उपदेश जचे नहीं। पिछले महायुद्धमें तो हमने बचपन नहीं किया था। उदारताके साथ अपने धन-जनकी सहायता दी थी। उस समय तो कोई स्पष्टीकरण हमने मांगा नहीं, ब्रिटेनकी न्यायबुद्धिपर विश्वास किया था, सहायता का मूल्य पानेकी आशा की थी। पर मिला क्या—रौलेट एक्ट, जालियानवाला हत्याकाण्ड। अबकी बार तो पूरा प्रमाण मिले बिना, सारे संसार के

आज राष्ट्रीयता, जनतन्त्र, सभ्यता और संस्कृतिके जन्म-मरणका प्रश्न है और भारतके स्वयंमान्य नेता कहते हैं कि हमें कुछ मतलब ही नहीं। कैसे नालायक हैं ये लोग। पर अब उनकी पोल खुल गयी। भारतकी जनता जाग चली है, उसे ऐसे नेताओंकी साध नहीं। वे असहयोग करें, पर उनके किये होगा क्या। भारतका किसान, मजदूर, जमींदार, कारखानेदार—सब तो सरकारके साथ कंधा मिलाकर संसारके स्वातन्त्र्य युद्ध में सर्वस्व न्योछावर करनेको उद्यत हैं। बढ़े चलो, पिछड़नेवालोंकी चिन्ता व्यर्थ है।

बात भी ठीक थी। भूखे, बेकार, अनपढ़, भारतके ग्रामीण नौजवान लाखोंकी संख्यामें भरती हो रहे थे, पढ़े-लिखे, मध्यवित्त, नागरिक दफ्तरोंको भर रहे थे, यहांके राजा, नवाब, तालुकेदार राज्यभक्तिका अलभ्य अवसर पाकर अपने कोषोंका द्वार खोल रहे थे, और यहांके पूंजीपति दुगने-तिगुने दाम पाकर खुले दिलसे सब प्रकारके मालका सौदा कर रहे थे। नेताओंने असहयोग करने जैसी मूर्खता की, अपने कियेका फल पाया जेलोंमें दिन काटने लगे। सब ठीक चल रहा था।

पर इधरसे अभी फुर्सत मिली ही थी कि दुष्ट जापान चोट कर बैठा और ब्रिटिश सेनाएं बड़ी बहादुरीके साथ सिंगापुरसे आसामतक हट आयीं। भारतीय जनताकी नब्जपर हाथ रखकर देखा गया तो मामला और भी बेढब जान पड़ा। ये बेबस करोड़ों मनुष्य जापान के विरहसे पीड़ित हो रहे थे और मनही मन उन पीले प्रेमियोंकी बाट जोह रहे थे। ब्रिटिश सरकारको सहसा अपना पुराना राग बन्द करना पड़ा, लन्दनमें गहरी कानाफूसी हुई और एक दिन सुन पड़ा कि भारतका मुक्ति-सन्देश लेकर क्रिप्स आ रहे हैं। नेताओंको फिर उनकी मान्यता दी गयी, नयी दिल्लीमें उनका आवाहन हुआ और हफ्तों घुल-घुल कर बातें चली। नेता नेता थे, उनके बिना देशका सहयोग सम्भव नहीं, बलात्कार किया जा सकता है, या लालची, प्रतिक्रियात्मक, स्थापित स्वार्थोंसे चापलूसी करायी जा सकती है। मन ही मन ब्रिटिश नेतृत्व इस सत्यको जानता था, अब विवश होकर, व्यक्त, क्रियात्मक रूपसे स्वीकार करना पड़ा। अन्यथा नेताओंके साथ समझौतेकी उत्सुकताका अर्थ ही क्या हो सकता था।

पर समझौतेका स्वांग रचा गया था, शब्दोंके आडम्बरमें पुरानी नीतिका गुप्त अनुसरण था। सहयोगके आदानकी मांग थी, अधिकारोंके प्रदानकी तत्परता नहीं। देशके नेता तो समझौतेके लिये लालायित थे। विपद तो उनके राष्ट्रपर आयी थी, ब्रिटेनका क्या; बरमा छोड़ा, भारत भी छोड़ा जा सकता है। रहेंगे तो अपने स्वार्थ लेकर, अन्यथा यह सारी विडम्बना उठानेका मतलब क्या। न ब्रिटेन अपनेस्वार्थ छोड़नेको तैयार हुआ, न नेतागण झूठ मूंठमें बहकाये जा सके। समझौतेका प्रयत्न व्यर्थ रहा। ब्रिटेनका प्रचार-यन्त्र फिर अपना पुराना राग अलापने लगा। नेताओंको फिर पदच्युत करना पड़ा।

पर नेता अबकी बार हठकर बैठे और नेतृत्व छोड़नेसे इन्कार करने लगे। शत्रु द्वार पर खड़ा था, दिवालिया साम्राज्यशाहीके हाथों घरको कैसे छोड़ा जाय। किंतु यह तो अनधिकार चेष्टा रही न, देशका नेतृत्व तो सरकार कर रही थी, इन ऐरे-गैरोंका चोखना चिल्लाना कैसा। दमन-चक्र चला और रक्त-स्नान कराके पथ-भ्रष्टोंको सद्बुद्धि सिखानी पड़ी। ठीक इसी समय उत्तर अफ्रिकामें युद्ध का पासा पलट रहा था। पीछे जो हुआ उसे दोहराना निष्प्रयोजन है। आज ब्रिटेनमें विजयोल्लास मनानेकी तैयारियां हो रही हैं। सानफ्रांसिस्कोमें संसारके भविष्यका निर्माण करनेके लिये देश देशांतरके जन-मान्य नेता बैठे हैं। सभी अपने अपने हितोंकी रक्षा करनेमें तत्पर रहेंगे। पर भारतका प्रतिनिधित्व करने, इन चालीस करोड़ोंके हित-

...यनके लिये यहांसे भेजे गये हैं नौकरशाही अमूल्य रत्न जो ब्रिटिश सरकारके पढ़ाये मन्त्र रटनेमें अपना प्रतिद्वन्द्वी नहीं रखते। ...त भी ठीक है, भारतको राष्ट्र कहता कौन, वह तो ब्रिटिश साम्राज्यके ताजका उत्तम हीरा है। हीरेका प्रदर्शन होता है, विनिघित्वके क्या मानी।

शेष बचा भारतको कुछ मिलने मिलाने ...ा प्रश्न। सोचना होगा, भारतने युद्धमें सहयोग तो दिया नहीं, फिर ये मांगे कैसी? फिर भी ब्रिटेन बहुत उदार है, क्षमाशील ...ी, अपराध माफ कर देगा। परन्तु इन ...ताओंको तो देखो, अब भी बुद्धि ठिकाने ...हीं आयी, रोते गिड़गिड़ाते नहीं, पिछले पापोंका प्रायश्चित भी नहीं करते। ब्रिटेन ...ा कुछ दे भी तो कैसे। नेताओंकी आपसमें ...ी नहीं बनती। ये आपसमें समझौता कर ...ें तो कुछ गौर किया भी जाये।

संक्षेपमें यह है ब्रिटिश सरकारके भारत सम्बन्धी अलापका इतिहास। इस गायनमें अनेक स्वर है, अनेक उतार चढ़ाव और गाने-वाले भी सिद्ध कलाकार हैं। फिर भी परि-स्थितिवश जो बेहरा होना पड़ा उसीसे ...म कलाकारके अन्तरतमका असल उद्देश्य समझनेमें सहायता पा सकते हैं। ब्रिटेनकी युद्ध-कालीन भारतीय नीति केवल इन पांच-छः सालोंकी मनोवृत्तिका :दिग्दर्शन नहीं कराती, उसमें तो हमें अत्यंत प्रवीण साम्रा-ज्यशाहीके युगारूढ़ षडयन्त्रका रेखाचित्र मिलता है। दो बेमेल बातें देखिये।:

जिस समय भारतसे धन-जनकी सहा-यता लेनेका काम पड़ा तो नेताओंको ... कुचला कर सरकारने सीधा जनता ...े सम्बन्ध जोड़ा। प्रचार किया गया कि कुछ व्यर्थके आदमी जो कहें, पर वास्त-विक भारत तो युद्धमें पूरा सहयोग दे रहा है। सहयोग कहिये या बलात्कार—भारत ने धन-जन देनेमें कुछ कसर नहीं रख छोड़ी। इसके साक्षी हैं हमारे लाखों सैनिक और ब्रिटेनके सिर चढ़ा हुआ अरबों रुपया। बीच में हमने अन्नसङ्कट, अकाल, मरी और अन-न्य कष्ट सहे उनका लेखा न भी लिया जाये तो भी इस युद्धमें भारतका उत्सर्ग कुछ कम नहीं। निश्चय ही इस सबके बदले भारत कुछ आशायें रखता है। अब देनेका समय भी आ गया।

पर लेनेके समय जिन नेताओंका तिर-स्कार किया गया, जिनको एक ओर उठा कर रख दिया गया, देनेका समय आते ही न जाने क्यों उनको निकाला जा रहा है। सरकार कह रही है कि इन्होंने सहयोग कब दिया था, और अब भी आपसमें लड़ रहे हैं, ये हैं किस योग्य। हम कहते हैं कि नेताओं को इतने दिनों तक दूर रखा, आज भी दूर रखिये। आपका सम्बन्ध तो जनतासे है न और आपके कथनानुसार जनताने आपको पूरा सहयोग भी दिया है, तो बस उसी जनताको कुछ दे डालिये, बड़ी आशा है। बीचमें इन नेताओंको क्यों कोसते हो, ये नालायक हैं, आपसमें लड़ते हैं, पर आपके ही कथनानुसार ये तो भारतके प्रतिनिधि नहीं। छोड़िये इनकी बातें, जनता आपकी, आप जनताके, अटकाव कहां है, सोच-विचार कैसा

जनताके सहयोगका मूल्य चुका दीजिये। पर यह सीधी सी, उन्हीं शब्दोंमें कही गयी बात जानें क्यों ब्रिटिश सरकारकी तीव्र बुद्धि में समाती नहीं। हमारी तो अक्ल मोटी है, पर उन्हें खोपड़ी खुजलानेकी क्या आव-श्यकता। कोई पहेली नहीं, समस्या नहीं, कुछ उलझाना नहीं, विशेष समझना नहीं, बात साफ है, कुछ लाग-लपेट भी तो होः। फिर भी ब्रिटिश सरकारकी वही रट है—हम करें तो क्या करें, ये नेता भी मानें, न तो प्रायश्चित करते हैं न पारस्परिक समझौता। हम कहते हैं – नेताओंको भूले रहिये, उस दिन जनता और नेता आपके मतानुसार दो थे तो आज उनको एक समझ कर यह घोटाला क्यों कर रहे हैं। उत्तर मिलता है—मूर्ख हो तुम नेताके बिना जनता कैसी। हमारी समझमें तो कुछ आता नहीं। युद्ध-कालमें जो जनता नेताओंके बिना काम चला सकती है उसे शांतिके दिनोंमें क्या खाये जाता है। फिर आप जो हैं—उस दिन भी थे, आज भी हैं, जिन्ता काहे की। भाड़ में जायें ये नेतागण।

बात ऐसी-वैसी कुछ नहीं है। ब्रिटिश सरकार जानती है कि युद्धकालमें भारतसे जो धन-जन लिया गया है वह सहयोगसे नहीं, बलात्कारसे लिया गया है। वह यह भी समझती है कि नेता और जनता दो नहीं। जापान चढ़ आया था तो उसे इस सचाईका आभास भी देना पड़ा था, लाचार, बेबस होकर। पर उसके सामने प्रश्न तो है भारत में साम्राज्य-शाही बनाये रखनेका, भारतका अधिकार स्वीकारनेका तो नहीं न। तो फिर अपनी स्वार्थरक्षाके लिये जो कुछ स्वर बदलना पड़े, बेहरा भी होना पड़े, सब ठीक है। हारमाने, हिचकिचानेकी :कौन बात है, शरम-हयाकी बढायें :होवीं तो इतना भारी साम्राज्य कैसे बनता, कैसे चलता। • •

ब्रिटिश सरकारकी नीति अडिग है, अटल है। जबतक सम्भव हो सकेगा वह भारत परसे अपना पंजा हटायेगी नहीं।

यह सब असम्भव बनाना हमारा काम है। परन्तु उसके लिये हमें अधिक चेतन, अधिक अनुशासित और अधिक सक्रिय होना पड़ेगा। अब बातोंसे बात नहीं बनेगी, शरम दिखाना, हृदय परिवर्तनकी चेष्टा करना—ये सब पुराने शस्त्र हो चुके, बीती बातें।

कहानी

काया और माया

श्री छेदीलाल गुप्त

नित्यकी भांति उस दिन भी घरसे जब निकला तब बदली कुछ-कुछ थी। लेकिन चल ...ा था। कुछ ही दूर जानेपर मुझे बड़ी-बड़ी बूंदोंका सामना करना पड़ा और चार कदम ...नेपर बिल्कुल अपनेको तर-ब-तर पाया। ...सी हालतमें जानकीके बन्द दरवाजे पर ...ड़ा सोचता रहा कि क्या करूं? तब यही ...र पाया कि घर लौट जाऊं कि तब तक ...न्द दरवाजेके पल्लेपर अनायास ही हाथ ...ड़ा गया। जरासे इशारेसे ही दरवाजेका ...र्धों पल्ला खुल गया।

बाहर रिमझिम बारिस हो रही थी ...नकी विक्षिससी कांच पर पड़ी थी। ...मरेकी सारी खिड़कियां बन्द होनेकी ...जहसे कमरेमें अन्धकार उमड़-घुमड़ रहा ...। दरवाजा खुलते ही प्रकाशकी धुंधली ...ा उस कमरेमें छा गयी—देखा, जानकी ...ौकिक नायिकाके रूपमें बेपरवाहीके साथ ...ले खड़ी है और मैं एक पैर दरवाजेके ...र और एक भीतर किये ज्योंका त्यों ...ा रहा।

...ह बोली—'आप तो बड़े वैसे हैं, ...ाव दे देते।' पुनः जम्हाई ले, दरवाजे ...आकर उसने कहा—'अरे, आप तो भींग ...रे! ठहरिये आपके लिये कपड़ोंका बन्दो-...त कर आती हूं।'

...सके बाद आकर उसने आदेश दिया ...प इसमें कपड़े पड़े हैं आप बदल लें ...।

...विचित्र थी वह जानकी। केशवका ...से बड़ा भाता था। स्वयं भी तो वह ...ायिका थी—गोल मुखड़ा, कटीली बड़ी-...आंखें, बेतरह लालीसे परिपूर्ण गोल ...ल, सुडौल गठित शरीरका अंग-अंग।

...नकी रेखागणित पढ़ेगी मुझसे ऐसा ...ा गया था जब रमेन्द्रके द्वारा मेरा ...य जानकीसे हुआ था। पर मजबूरन ...व और बिहारीको पढ़ाना पड़ता ...खूब ख्याल है—एक दिन एतराज ...मुझसे कहा गया था कि—हजार ...र चुकी हूं कि केशवको पढ़ती हूं ...ती हूं। बिहारीको आप पढ़ाते हैं ...पढ़नेकी इच्छा करती है लेकिन आप ...इंगलिश समझाने लगते हैं।

...एक रविवारकी बात कही दूं।

...दिन वह जो रमेन्द्र, जो सौंदर्यसे खेलना ...है, कि जो अग्नि शिखासे लिपटना ...है, जो शायद जानकीसे प्रेम करता ...नकीसे नहीं, जानकीके सौंदर्यसे, उस ...जिसका इस संसारमें लुप्त होना ...है। उसने कभी प्रेमके देवतासे ...की चेष्टा नहीं थी, जिज्ञासु नहीं ...प्रेम क्या है?

...तो अवश्य ही उसे उत्तर मिलता ...किसी जानकी पर न्यौछावर हो ...री नहीं कहते, इतना क्षुद्र और ...प्रेमका नहीं है। प्रेम तो विराट ...प्रेम पत्थरकी प्रतिमामें नहीं, प्रेम ...वासनामें नहीं, प्रेम तो जीवी ...प्राणीसे किया जाता है—जानकीसे ...से प्रेम करने वाला इन्सान ही ...है—उससे ऊंचा...उससे बड़ा

तो वह आया। कहने लगा—'अच्छा, तुम तो आदमी हो, नहीं, नहीं देवता! संसारमें रहकर भी संसारसे दूर हो'-व्यंगसे हंसने लगा। बेतहासा आकर जमीनपर बिछे बिस्तरपर बैठ गया—'हां, तो देवता हो, भला बताओ प्रेमी तब क्या करे जब उसकी प्रेमी देवी उससे नाराज हो जाये अथवा जब उसकी प्रेमकी प्रतिमाको कोई और रिझा ले?'

और तब मैं व्यंगसे हंसना चाहता हूं लेकिन उसका एहसान मुझपर इतना है कि मैं हंस नहीं सकता, वह मुझ पर हंस सकता है।

मैंने कहा—आज तुम कैसी बातें कर रहे हो—तुम देवता हो, तुम इस संसारमें रह कर भी दूर हो मेरी समझमें कुछ नहीं आता, कौन प्रेमी और कौन प्रेमकी देवी?'

'यह तुम्हें जाननेकी जरूरत नहीं, कोई भी प्रेमी हो, प्रेमकी देवी हो। तुम तो यह बताओ प्रेम करनेकी लालसा तब भी क्यों उत्पन्न होती है जब कि विरहमें हजारों नवयुवक तड़पते हैं।'

मैं रमेन्द्रको कुछ नहीं कह सकता। आज तक जो कुछ कहा है उससे उपहास ही हाथ आया है। अतः चुप रहा। जिसका अर्थ उसने यह लगाया कि मैं मनुष्य नहीं, हृदय-हृदय नहीं।

पुनः उसीने कहा—'तुमको मालूम है, जानकीका विवाह निश्चित हो चुका। वह मुझसे दूर हट गयी, हटाली गयी और अब मैं तुमको बताने आया हूं कि जानकीने अपना प्रेम अमर नहीं रखा, जानकीने आत्म-हत्या करनेवालोंकी लिस्टमें एक और संख्या बढ़ायी।'

'नहीं, अभी तो चेष्टा भर है उसकी'—मैंने कहा—लेकिन तुम ऐसा नहीं कर सकते। तुम्हें जीना होगा जानकीसे अलग रहकर भी, एक उदाहरण होकर कि जानकी जैसी नारीके प्रेमके बगैर भी रमेन्द्र जैसा नवयुवक जी सकता है। रोटीके टुकड़ेके अभावमें फुट-पाथपर मरनेवालोंको देखकर उस दिन तुमने यह कहा था कि वैसे मनुष्यका मर जाना ही ठीक है जो केवल रोटीके लिये जीवित है। और आज तुम प्रेमके लिये मरोगे, तत्पर हो।'

रमेन्द्रके चेहरे पर सिकुड़न पड़ गयी, उसकी मांसपेशियां घृणासे सिकुड़ गयीं वह विरक्त-सा बोला—'तुम्हारी फिलासफी मेरी समझमें नहीं आती।'

मेरी फिलासफी रमेन्द्र समझ नहीं सकता। रमेन्द्रको समझनेकी जरूरत भी नहीं। मेरी फिलासफी तो उनके समझमें आयेगी जो युगके लिये जीते हैं। जो संसार के लिये जीते है—स्वार्थके लिये नहीं। जानकीके प्रेमके लिये नहीं।

ऐसा तर्क हाड़-मांसके पुतलोंमें नहीं हो सकता, असम्भव है। कहानीके नायक और नायिकामें आश्चर्यजनक नहीं, सम्भव भी है।

—२—

मैंने जोरसे पुकारा—'जानकी!'

'कहिये क्या कहते है?' उसने पास आकर कहा

मैं कहता हूं, रमेन्द्र तुमसे प्रेम करता है!

जानकी हसने लगी। कोई किसीसे प्रेम नहीं करता।'

'तो वह झूठ कहता है।'

'सच्चा ही कहता है, पर गलत है।'-बड़ा सीधा' सा उत्तर है। लेकिन उस सिधाई की छोर पर पहुंच कर वह कह रही है जिस सिधाईके आगे आंखे नहीं जाती—'स्वार्थसे प्रेम करता है अकेले रमेन्द्र नहीं, दुनिया।' कायाकी मायामें वह पड़ा है। अगर वह जानकीसे प्रेम करना जानता है तो क्यों नहीं मरनेवाली उन युवतियोंसे प्रेम करता जो रोटीके टुकड़ेके अभावमें सौन्दर्य खो चुकीं, अपनत्व खो चुकीं, खुदको खो रही हैं और जिनके तनपर मक्खियां भिन-भिना रही हैं'

जानकी सच कह रही है—यकीन नहीं होता।

उसने पुनः कहा—'यकीन नहीं होता। यकीन करना पड़ेगा, युगके साथ हमें चलना होगा। युगके साथ हम चल रहे हैं। प्रेमिका को नंगी देखने की अभिलाषा—प्रेमिककी अमर है और मैं भी तुम्हारी कहानीकी नायिका हूं, नंगी तो नहीं करोगे?'

मैंने कहा—'नहीं, जबरदस्ती नहीं करूंगा। पर तुम बताओ रमेन्द्र आत्महत्या करेगा केवल तुम्हारे लिये।'

यह आपकी गलती है। कहती रही हूं कि मेरे लिये नहीं, कायाकी उस मायाके लिये जिस मायाने उसे पागल बना दिया है। मैं तो प्रे हूं" प्रेरणा दे सकती हूं, प्रेरित कर सकती हूं कि वह आगे बढ़े प्रेमके उस पथपर जिस पथपर जानकीकी काया नहीं उसे मिलेगी। जिस पथपर वह जानकीसे नहीं प्रेम कर सकता, जिस पर वह चलकर मानवतासे प्रेम करेगा। लेकिन आपका नायक अगर साहसी नहीं तो मैं क्या कर सकती हूं।'

'तो तुम उसके लिये कुछ नहीं कर सकती, उसे बचा नहीं सकती?'

'इसका अर्थ यह कि मैं विवाहसे इन्कार कर दूं'—जानकी कह रही है, बीसवी सदीकी एक नारी, आश्चर्य—'अभी मैं जिस देशकी मिट्टी से निर्मित की गयी हूं, जिस देशके वातावरणमें मैं जीवित हूं उस देशकी ऐसी आज्ञा नहीं और फिर हम औरतोंका अस्तित्व ही क्या? सिवा इनके कि पथ-प्रदर्शकोंकी आज्ञाका पालन करनेके, उस वातावरणके अनुकूल हो कर जीनेमें जिस वातावरणमें मैं जीवित हूं।'

'तो वह भी जाये?'

'मैं कुछ नहीं जानती'

'मैं सब कुछ जानता हूं'—कमरेमें रमेन्द्र दाखिल हुआ। भयंकर चेहरा, बिखरे केश बड़ी-बड़ी रक्तिम आंखें। कहने लगा—'जरा बाहर जाकर देखो कौन खड़े हैं।'

मैं बाहर गया—देखा, एक मनुष्यकी टोली, नर-नारी, बूढ़े, जवान, बच्चे!

मैंने कहा—'नायक! यह क्या?'

'प्रेमके देवता! और क्या? समझ नहीं रहे हो, तुम्हारे देवता रोटीके भूखे हैं। इन्हें रोटी चाहिये—रूप नहीं, जानकी नहीं! रोटी दो, इनकी पूजा करो?'—रमेन्द्र आवेशमें आकर बोला, आज्ञा सूचक शब्दोंमें।

'पर मेरे पास उतनी रोटियां कहां?...'

'शब्द तो हैं?'—उसने बीचमें ही कहा। यह व्यंग कटु प्रतीत हो रहा है पर क्या करूं? चुप रहा। क्षणिक चुप्पीके बाद मैंने कहा 'शब्द जरूर हैं, पर कोरे शब्दसे काम नहीं चलेगा नायक! इनके सामने रोटी लाकर खाओ। इन्हें दिखाओ कि यही रोटी है जिसके लिये तुम तड़प रहे हो लेकिन दो मत फिर देखो ये क्या करते हैं?'

'क्या करेंगे, यह मैं जानता हूं। फुट-पाथपर कीड़ेकी तरह रेंगेंगे और शाम होते न होते मृत्युकी गोदमें सो जायेंगे।' वह चुप हुआ।

'नहीं—यह वही करेंगे जो आज तुम, रूढ़िके नामपर करने जा रहे हो—कुर्बानी! अपनी और उनकी, उस सभ्यताकी जो सभ्यता इनको इस ढांचेको पीठ पर लादनेके लिये मजबूर करती हैं—उस समाजके निर्माताओंकी।'

तभी दरवाजे पर खड़ा मुनुआने सम्बो-धन कर कहा—'आज पढ़ाने नहीं जाओगे!'

मेरी निगाह उसकी ओर उठ गयी जो मेरा भाई है, जो मेरी चिन्ता करता रहता है, जिसका दुनियामें मेरे सिवा कोई नहीं उसी मुनुआकी ओर। मैंने कहा—'नहीं, उसका विवाह हो गया, वह यहां नहीं है।'

अपने प्रति सदय पाकर वह पास आ खड़ा हुआ। पूछा—'रमेन्द्र दादा नहीं आते क्यों? बड़े अच्छे थे मुझे कहा था कि किताबें खरीदवा दूंगा।'

अब वे नहीं आयेंगे। कभी नहीं। अपने आपसे मैंने कह लिया, मुनुआसे नहीं।

लार्ड हार्डिङ्गकी सादगी

——):*:(——

श्री गोपालराम गहमरी।

बक्सर एक ऐतिहासिक स्थान है। पतित-पावनी गङ्गाके दाहिने किनारे काशी और पटनाके मध्यमें यह नगर बसा है। ऋषि विश्वामित्रकी यह तपोभूमि है। इसीके चरित्र वनमें मर्यादा पुरुषोत्तम अवधेश कुमार श्री रामचन्द्रने महर्षि विश्वामित्रसे धनुर्विद्या सीखी थी। इसका नाम पहले व्याघ्रसर था। अब अपभ्रंश होकर बक्सर हो गया है। जेनरल अक्टरलोनीकी लड़ाई यहीं हुई थी। उसके पहले हुमायूंने शूरवंश शेरशाहसे परास्त होकर गंगामें घोड़ा हेराया था और बीच धारामें डूबते हुए हुमायूं बादशाहको निजाम नामक व्यक्तिने अपने मशकपर सवार कराकर उन्हें बचाया था। पुरस्कार में उसने आध दिनकी राजगद्दी पायी और उसी थोड़ी मियादमें उसने चमड़ेका सिक्का चलाया था।

उसी बक्सरके लिये एक साल २३ दिसम्बरको सूर्य शुभ घड़ीमें उगे थे। सबेरेही से रेलवे स्टेशनकी तैयारी देखकर किसी बड़े उत्सवकी याद आ रही थी। जाड़ेका दिन होनेपर भी प्रातःकालसे ही स्टेशन पर खूब छिड़काव किया गया। प्लेटफार्म फूलों और बन्दनवारसे सजाया गया। बात यों हुई थी कि जब भारत प्रभु वाइसराय लार्ड हार्डिङ्गकी वह क्रिसमस स्पेशल दिल्लीसे कलकत्ते जाते समय लञ्चके लिये ठहरनेवाली थी, अप-डाउन प्लेटफार्म और मुसाफिरखाना तथा बाहर सामनेकी सड़कपर खूब सफाई, सजावट और स्वागतकी अच्छी तैयारी की गयी थी। कहीं कोई आस-पास ठहरने नहीं पाता था। पुलिसके सिपाही और सब-इन्स्पेक्टर बड़ी मुस्तैदीसे पहरा दे रहे थे।

इसी समय किसी ओरसे मुसाफिरखाने में कहारोंने एक पालकी ला धरी।

कहार सवारी रखकर अपने थके हुए कन्धोंको सीधा करके विश्राम पानेकी चेष्टा करने लगे थे कि माथेपर सुनहला झब्बा हिलाते, हाथमें चांदी मढ़ा बेत लपकपाते एक पुलिस सब इन्स्पेक्टर आते दीख पड़े। डरके मारे कहार जान लेकर भागे। सब इन्स्पेक्टरने मैदान खाली पाकर पालकी-पर बेतहाशा बेत बरसाना शुरू कर दिया। भीतरसे एक बूढ़ेकी आवाज आयी—"अरे हम हैं भैया अजोर तिवारी सरदार बहादुर सूबेदार मेजर। मारो मत हम लाट साहब के दर्शनको आये हैं।"

इतना सुननेपर तो सब इन्स्पेक्टर और कड़ककर जोशमें बोले—"अरे दूर हो यहांसे, यहां लाटसाहब आवें उनको भी हम ठहरने नहीं देंगे, सूबेदार मेजर तो क्या चीज हैं। हटाओ यहांसे पाल्की।"

दारोगाजीके हुक्मकी तामीली वहां कोई करनेवाला नहीं था। कहार तो डरके मारे गदहेकी सींग हो गये थे। भीतर बूढ़ा सीधा बैठ भी नहीं सकता था। पालकीसे बाहर आना तो उसको मोहाल था।

सिपाही जमादार दौड़ पड़े। भागते हुए कहारोंका पीछा करके उन्हें पकड़ ही लाये। उन्होंने कांधेपर फिर सवारी उठायी; बेतपर-बेत खाते हुए मुसाफिरखानेसे वे बाहर हुए।

अब तो सरदार बहादुर सूबेदार मेजर अंजोर तिवारी लाचार होकर दुरदुराये जानेपर बहुत दुःखी हुए। लेकिन कहारोंसे कानमें बोले—"अच्छा इस थानेदारको हम पीछे देखेंगे। तुम लोग नजर बचाकर किसी तरह हमको प्लाटफार्मकी उत्तरवाली चहारदीवारीके कोनेमें पश्चिम ओर बिठा दो।"

इसी समय वाइसरायकी स्पेशल इन-साइट हुई। गनगनाकर घण्टा बजाया गया। छोटे-बड़े सब अहलकार अपनी वर्दीमें दुरुस्त और चुस्त होकर ड्यूटीपर डट गये। कहारों ने कोनेकी चहारदीवारीपर अपने बूढ़े तिवारीजीको ले जाकर धीरेसे चढ़ा दिया।

बड़े लाटकी गाड़ी सरसराती हुई प्लेटफार्मके शेडमें भीतर आ खड़ी हुई।

उस समय बड़ी सनसनी फैली जब गाड़ी ठहरते ही वाइसराय लार्ड हार्डिङ्ग बिना कुछ किसीसे कहे झट प्लेटफार्मपर उतर पड़े। प्रोग्रामसे बाहर यह घटना देखकर सब स्वागत करनेवाले देशी-विदेशी अहलकारोंके तालू सूखने लगे। बात क्या हुई कुछ किसी की समझमें नहीं आया।

उधर लार्ड हार्डिङ्ग पांव पैदल लपकते हुए प्लेटफार्मकी उत्तरवाली चहारदीवारीके पश्चिम कोनेमें जा पहुंचे और उस कांखते हुए बूढ़ेको तपाकसे गोदमें उठा लिया और पापा-पापा करते हुए उसको अपनी गाड़ीमें ले गये। वहां बड़े सम्मानसे गलेमें तमगोंकी माला पहने बूढ़े वातग्रस्त अंजोर तिवारी सरदार सूबेदार मेजरको पास बिठाकर बातें करने लगे। बूढ़ा अपना सब अपमान और दुःख भूलकर खुशीके मारे हंस-हंसकर लार्ड हार्डिङ्गसे बातें करने लगा। बोला—"अरे हार्डिङ्ग! तुमने हमका दूर ही से पहचान लिया?"

ला० हा०—तुम हमको गोदमें खेलाया! हम पापा तुमको पहचानेगा नहीं! यह कैसी बात!"

बात यों हुई थी कि सूबेदार मेजर सरदार बहादुर पल्टनमें सम्मान प्राप्त अफसर थे जब बड़े लाटके पदपर इनके पिता लार्ड हार्डिङ्ग विराजमान थे। यह सन् १८४४ और १८४८ के मध्यकी बातें हैं। उन दिनों इनको अंजोर तिवारीने गोदमें लेकर खेलाया था और आप उनको पापा-पापा कहकर पुकारते थे। इस घटनाको चौसठ-पैंसठ वर्ष बीत गये थे।

अब अंजोर तिवारीकी वहां बड़ी खातिर होने लगी। वायसरायका स्पेशल प्रोग्राम ही बदल गया। गाड़ी बहुत देर तक लंचके बाद भी खड़ी रही।

अंजोर तिवारीका सम्मान देखकर देशी-विदेशी सब वहां दांतों उंगली दबाने लगे कि यह कौन आदमी है जो वायसरायको इस तरह पुकारता और स्वयम् वायसराय उसको पापा कह कर दुलार दिखला रहे हैं।

उस समय अंजोर तिवारीने वात्सल्य परायण वाइसरायसे कहा—"आज तो हार्डिङ्ग तुम्हारी पुलिसने हमको बहुत बेत मारा है। बड़ी बेइज्जती हमारी हुई है।"

इतना सुनते ही हार्डिङ्ग तो मानो आसमानसे गिरे। उसी दम फरमाया "कौन मारा हमारे पापाको। उसको हमारे सामने हाजिर करो।"

अब तो अहलकारोंको त्रिदोष हो गया। पुलिसवालोंमें बड़ी भगदड़ मची। स्टेशन मास्टरने पुकार कर कहा—"मुसाफिरखानेमें सब इन्स्पेक्टरकी ड्यूटी रही है। बुलाओ जल्दी।"

आराके सुपरिण्टेण्डेण्ट पुलिस साहब भी वहीं मौजूद थे। बड़ी दौड़ धूप हुई लेकिन जिसने मुसाफिरखानेमें सूबेदार बहादुरकी पालकी पर बेत बरसाये थे उसका तो पता ही नहीं लगा कि किस मांदमें जा छिपा।

जब लार्ड हार्डिङ्गने दोबारा पूछा—"हमारे पापाको बेत मारने वाला आया?" तब तो बड़ी आफत हुई किसीसे कुछ जवाब नहीं बना। अंजोर तिवारी महाराज ने विनतीसे कहा—"जाने दो हार्डिङ्ग, अब तुम्हारे दर्शन पाने पर हमारी सब बेइज्जती नष्ट हो गयी। हम अब बहुत खुश हैं। बेंतमारी देह पर नहीं हमारी पालकी पर पड़ी थीं। हमारी देह पर बेत लगे होते तब तो हम वहीं मर जाते। अब माफ कर दो उसको जाने दो।"

बात दरगुजर हो गयी। स्पेशल कई घंटे लेट होकर बक्सरसे रवाना हुई। उसके बाद तो तिवारीजीकी बड़ी मर्यादा बढ़ी। सबने बहुत सम्मान किया।

लार्ड हार्डिङ्गका वात्सल्य भाव हम सन् १९१९ में भी देख चुके थे। भारतवासियों पर उनका बड़ा स्नेह और बड़ा वात्सल्य व्यवहार था। शिमलामें एक उद्यानके खेल कूदमें वायसराय लार्ड हार्डिङ्ग पधारे थे। वहां उस समय कई राजा महाराजा और इंग्लिश चीफ आमन्त्रित होकर आये थे। शिमलाके बिलासपुर राजा सर विजयचन्द के० सी० आई० ई० के साथ हम भी उस उत्सवमें मौजूद थे। वायसराय महोदयसे २५ फीटकी दूरीपर राजा साहबके बगलमें हम भी वहां बैठे थे।

खेल-कूदके बाद एक मुसलमान भाई जादूगरके रूपमें वायसराय साहबके सामने पेश हुए। उन्होंने दो इञ्च व्यासका मोटा सूतका रस्सा एक हाथमें, दूसरेमें तेज चाकू लिये सामने आकर लार्ड हार्डिङ्ग महोदयको सलाम किया और बड़े अदबसे कहा 'हुजूर इस रस्सेको अपने हाथसे काट दें।'

बड़े लाटने मुस्कुराकर अपनी बगलमें कुर्सी पर बैठे जेनरल ओडायरकी ओर देखा। ओडायर साहब बहादुरने रस्सा अपने हाथमें लेकर उसी चाकूसे काट दिया।

जादूगरने वहीं सबके सामने कटे हुए दोनों छोर एकमें लगा दिये। कहा—"इसको तो काटा नहीं गया हुजूर, देख लेवें।"

वायसरायने दोनों टुकड़े खींचकर देखे। वहां बहुतोंने खींच-खांचकी लेकिन वह रस्सा ज्योंका त्यों अटूट रहा।

सब लोग जादूगर की करामात देखकर वाहवा करने लगे। वायसराय महोदय भी बहुत प्रसन्न हुए। अब जादूगरने ५२ ताशकी एक गड्डी फेट-फाटकर एक तख्ते पर रख... और कहा—हुजूर अपना ताश इसमें... याद फरमावें।"

फिर वायसराय महोदयने जेनरल ओडा... यरकी ओर देखा। उन्होंने कहा—... चुन लिया।" और वायसराय साहबके... कानमें कह दिया। और भी पन्द्रह... आदमियोंने अपने-अपने ताश चुन लि... महाराज बिलासपुरने भी अपना ताश... सबकी तरह उसी गड्डीमें रख दिया।

अब जादूगरने कुछ मंत्रसा पढ़कर... 'अच्छा छोटे लाट साहब (जेनरल ओडा...) का ताश उठो—

उसी दम गड्डीमें से पानका नहला... बाहर आ गया। सब लोग दंग रह... आये। इस तरह सबके ताशोंको ... पुकारा और बारी-बारीसे सब पत्ते ... बाहर आते गये। अन्तमें जादूगरने बड़े... ताशको पुकारा पर वह नहीं आया।

अब जादूगरने बड़े लाटसे विनती... "हुजूर आपका ताश कहता है कि ... के पुकारे बिना वह नहीं आवेगा।"

इसपर सब लोग हंस पड़े। ला... साहब भी हंसे और प्रसन्न होकर... ताशको पुकारना पसन्द और मंजूर... पुकार दिया।

उस समय बड़ी तालियां पीटी गयीं... उनका ताश गड्डीसे बाहर उछल ... गया। जादूगरको अच्छा इनाम दिया...

——

हिटलर और मुसोलिनी

———:**:———

— अखबारी —

एडोल्फ हिटलर

वीर उसे कहते हैं जो प्राणोंकी बाजी लगाकर असम्भवको सम्भव बना देनेका यत्न करता है भले ही वह उसमें सफल न हो। सफलता प्राप्त कर लेना मनुष्यके हाथ की बात नहीं है। उसका काम तो निरन्तर यत्न करते रहनेका है। तभी तो "कर्मण्येवाधिकारस्ते" गीताका ज्ञान आज प्रत्यक्ष हो रहा है। हम परिणाम नहीं जानते वरन परिणामकी कल्पना करके ही कार्य प्रारम्भ करते हैं। असीम साहस और अलौकिक शक्ति पर विश्वास रख कर जो आगे बढ़ता है वह ठोकरें खाकर गिर भी पड़ता है किन्तु जब वह चलता रहता है उसके प्रत्येक कदमको धरती चूम लेती है और उसकी प्रत्येक सांस हवा संसारके कोने-कोनेमें फैलाकर सांस लेनेवालोंको सांस दिया करती है। हवा उसके सामने थर्रा कर चलती है और घटायें झुक झुक कर उसकी बलैया लेती हैं जहां जहां वीरके चरण पड़ते जाते हैं।

विजेताओंके बजाय हारे हुए सिकन्दर और नेपोलियनका नाम दुनियाके जबानपर है कि वे वीर थे। समयके कठोर चक्रको अपने अनुकूल मोड़ लेनेमें उन्हें वह सफलता मिली थी, जिसे लोग असम्भव समझते थे। वर्तमान युगमें हिटलरका नाम भी अन्य सभी नामोंसे आगे बढ़ गया। हिटलर ऐसा महात्वाकांक्षी था जो दुनियाको अपने अधीन बनाकर रखना चाहता था। इसका जीवन आस्ट्रियाके हरे-भरे मैदानोंमें प्रारम्भ हुआ था और राजनीतिक कार्योंमें दिलचस्पी लेनेके कारण इसे वहांके शान्त वातावरणसे निकलकर विशाल जर्मनीमें आना पड़ा। तबका जर्मनी आजके जर्मनीसे भिन्न था किन्तु उसमें ओज और शक्ति उतनी ही थी जितनी कि आज है। हिटलरकी तीव्र आंखोंने इन विशेषताओंका-जर्मनी पहुंचते ही साक्षात्कारमें जान लिया था। उसने समझा था यदि जर्मनीकी शक्तिका और संगठन कर दिया जाय तो अवश्य ही यह इतनी सशक्त हो जायगी कि अपने प्रथम प्रहारमें दुनियाको भी दो टुकड़ोंमें विभक्त कर देगी। १९१४-१८ के युद्धने हिटलरके सामने सारी परिस्थिति साफ कर दी थी। उसके हृदयका आर्यरक्त खौल उठा पर उसे अवसर न मिला, भावनायें दबाये रहा। युद्ध समाप्त होनेपर वह जर्मन सेनामें गुप्तचर नियुक्त हो गया और इस रूपमें उसे कुछ करनेका अवसर मिला। उसे पता लगा कि इस समय म्युनिखमें "जर्मन मजदूर दल" नामक एक संस्था है जिसकी बैठकें सरायमें हुआ करती हैं। हिटलर इस दलका सातवां सदस्य बना और उसने इसके विकासके लिये प्राणपणसे चेष्टा की। हिटलरके हाथोंमें दलका काम आते ही उसमें अभूतपूर्व परिवर्तन हुआ और दलका नाम बदल कर "राष्ट्रीय समाजवादी जर्मन मजदूर दल" रख दिया गया। धीरे धीरे इस संस्थाका विकाश आश्चर्यजनक रूपसे हुआ और १९२३ में इसकी शक्ति यहां तक पहुंच गयी कि इसके बल पर हिटलर जर्मन सत्ता हस्तगत करनेका प्रयास कर बैठा। बात फूट गयी और हिटलर पकड़ा गया। पांच सालके लिये इसे बवेरियाके किले में बन्दी बनाकर रख दिया गया जहां इसने "माइन काम्फ" का निर्माण किया। १९२८ में हिटलरके राष्ट्रीय समाजवादी दलने चुनाव में भाग लिया किन्तु वह बुरी तरह असफल रहा। दलके सदस्योंको केवल ८ लाख वोट मिले जब कि इसके प्रतिद्वन्दीको करोड़ों वोट मिले। हिटलर इससे निराश नहीं हुआ। उसके आठ साथी राइखस्टागमें फिर भी पहुंच चुके थे। हिटलरके लिये १९३० वरदान बनकर आया। जर्मनीका अर्थ तन्त्र उस समय छिन्न-भिन्न हो रहा था और बूढ़े हिंडेनबर्गसे बड़े बड़े व्यापारी पूंजीपति घबराने लग गये थे। हिटलरने परिस्थितिको अपने अनुकूल बनानेके लिये पूंजीपतियोंको अपने साथ लिया और उन्हें आश्वासन दिया कि हिटलरशाहीमें वे सुखकी सांस लेंगे। इस सालके चुनावमें भी हिटलरको आशातीत सफलता मिली। उसके १०६ सदस्य रीखस्टागमें घुस गये थे। अपनेको अधिकसे अधिक लोकप्रिय बनानेके लिये हिटलरने यहूदियोंके विरुद्ध नारा बुलन्द किया। आर्यरक्त के नाम यहूदियोंके अन्यायका नारा इतना सफल हुआ जिसकी हिटलरको भी सम्भावना :नहीं थी। इससे हिटलरका साहस इतना बढ़ गया कि वह १० अप्रैल १९३२ को हिंडेनबर्गके मुकाबलेमें राष्ट्रपतिके लिये चुनावमें खड़ा हो गया और ४१ लाख वोट से हार गया। हिटलर इससे निराश नहीं हुआ वरन उसने उस समयके सबसे प्रभावशाली जेनरल श्लेशरके पूंजीवादी गुटमें फूट पैदा करनेकी कोशिश की और इसमें वह सफल हुआ। श्लेशरको मन्त्रिमण्डलसे पदच्युत कर दिया गया और ३० जनवरी १९३३ को हिटलर जर्मनीका चांसलर नियुक्त हुआ। उसके बाद जर्मनीका राइखस्टाग जलानेका आरोप साम्यवादियोंके मत्थे मढ़ कर हिटलरने जर्मनीसे साम्यवादको उखाड़ फेंका। सफलता हिटलरका मुंह ताकने लगी और इसके बाद हिटलरके हाथों विश्व विजय की रूपरेखा तैयार होने लगी। जेकोस्लोवाकिया और आस्ट्रिया को शान्तिपूर्वक जर्मनीमें सम्मिलित कर लेनेके बाद हिटलर के मदमत्त सिपाहियोंने १ सितम्बरको पोलैंड पर तूफानी धावा किया और उसके बाद एक-एक कर युरोपका सारा देश हिटलरके हाथोंमें आने लगा। रूसकी लड़ाईने हिटलर के सारे उत्साह पर पानी फेर दिया और वह हारते हारते बर्लिनकी लड़ामें मारा गया।

भूल मनुष्यसे ही होती है। अतः मनुष्य कुछ नहीं है ऐसा कहकर हम हिटलरके उस अतुलनीय साहस और उच्च महत्वाकांक्षाको नहीं दबा सकते जिसने दुनियाके सामने अपनेको एक ऐसा उदाहरण बना दिया है जिसपर आनेवाला प्रत्येक वीर युग अदबके साथ अपना सिर झुकायेगा।

बेनिटो मुसोलिनी

इतिहास साक्षी है और उसके पाठक इस बातके समर्थक हैं कि वीरताका उन्माद भले ही बुरा हो किन्तु वीर कभी बुरे नहीं होते। बेनिटो मुसोलिनी भी वैसा ही उन्मादी वीर था। नन्ही सी जान पर आसमानका बोझ उठा लेनेकी क्षमता दिखलाना मुसोलिनीके बायें हाथका खेल था। वह आगे देखता था पीछे लौटकर देखना उसे पसन्द नहीं था और अगर शायद उसे पीछे देखना पसन्द होता तो वह आगे बढ़नेकी कभी हिम्मत ही नहीं करता। मुसोलिनी इटलीका रहनेवाला था और उसे अपने उस रोम पर गर्व था जो यूरोपके अन्धकारमें कभी प्रकाशकी तरह जल उठा था। उसे अपने उस रोम पर गर्व था जहांके नीरोका नाम आज भी यूरोपको कंपा देता है। मुसोलिनी महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। वह सीमा विस्तार चाहता था। अपनी आंखोंसे एकको दुनिया में फैलते देख कर यदि उसने अपने पांव पसारनेकी कोशिश की तो भले ही जिनका जाता था वे उसे बदनाम करें किन्तु वह अपने देशके लिये वही करना चाहता था जो अन्य अपने देशके लिये कर चुके थे।

मुसोलिनीका बचपन जब गांवकी गलियोंमें खेलकर खो चुका तो उसके पैर शहरके फुटपाथों पर बढ़ चले और आंखें खेतकी मेड़ से हटकर महलोंकी रौनकदार खिड़कियोंसे आ टकरायी। यौवनका उमंग आंखोंमें नशा बनकर उतर चुका था और मुसोलिनीके पैर आगे बढ़नेको निकल ही चुके थे। समाजवादका नशा उसे उन दिनों अच्छा लगा और वह समाजवादी बन गया। इटली में समाजवादका कोई स्थान नहीं था। लाचार उसे १९०२ में इटलीसे भागना पड़ा और स्विटजरलैंडमें शरण लेनी पड़ी। मुसोलिनी भीरु नहीं था। अतः वह इन विपत्तियोंसे घबराता नहीं था वरन् वह उन्हें अपने भविष्य जीवनके लिये अपना अनुभव समझता था। वह जानता था कि यही कठिनाइयां जो आज हमारे मार्गमें रोड़े अटका रही हैं कल हमारे लिये फूल बन जायंगी और हमें प्रत्येक पग पर अपने सुवाससे तरो-ताजा रखेंगी। बदनाम हो जानेपर जैसे शराबीको शराबसे विशेष प्रेम हो जाता है वैसे ही एक बार राजनीतिक दुनियामें आकर और उसके बाद इटलीकी नीतिके प्रतिकूल होनेके कारण मुसोलिमी बदनाम हो जानेपर अपने विचारों और कार्यके प्रति विशेष मोहित हो गया और उसे इसीमें आनन्द आने लगा। इतना सब होनेपर भी मुसोलिनीका राजनैतिक जीवन एक सांचेमें ढ़ल नहीं सका था। अतः १९१४ ई० जैसे ही जर्मन युद्ध प्रारम्भ हुआ वह राष्ट्रवादी बन गया और अपने दल तथा विचारको सशक्त और प्रचारात्मक बनानेके लिये "पोपोलोद इटालिया" पत्र निकाल बैठा। अपने कुछ दिनोंके समाजवादी और राष्ट्रवादी जीवनमें मुसोलिनी प्रसिद्धि प्राप्त कर ही चुका था अतः अब उसके लिये यह आवश्यक हो गया था कि वह अपने सामने रचनात्मक कार्यक्रम रख कर उसे आगे बढ़ाये। तब तक वह इटलीके राजनीतिक शरीरका रग रग पहचान चुका था और वह जान गया था कि कहांकी चोट मार्मिक होगी। धीरे धीरे युरोपसे युद्धका बादल हटा और एक नये युगके प्रारम्भका श्री गणेश हुआ। तब तक मुसोलिनी अपने कटु अनुभवोंके आधार पर एक चतुर राजनीतिज्ञ बन चुका था। फलस्वरूप उसने अपने दलकी ओरसे चुनाव लड़नेका निश्चय किया और अवसरकी ताकमें बैठा रहा। पहली बार वह अपने प्रयासमें बुरी तरह असफल रहा। उसके उम्मीदवारोंको समस्त इटलीसे केवल मात्र चार हजार वोट मिले। अवसरवादी मुसोलिनी कराह कर चुप रहा किन्तु आगेके चुनावकी तैयारीके लिये वह प्राणपनसे प्रयत्न करता रहा। दूसरी बारके चुनावमें उसे वहांके स्वतन्त्रदली क्षेत्रोंका सहयोग प्राप्त हो गया और उसके दलके ३८ सदस्य पार्लमेंट के सदस्य बनाये गये। एक ओर जहां मुसोलिनीको इतनी सफलता मिली वहीं उसे दूसरी ओर करारी चोट भी लगी। उसके दलका कोई भी सदस्य मंत्रिमण्डलमें शरीक नहीं किया गया। मुसोलिनीके लिये यह अपमान असह्य हो उठा। फिर भी वह क्या करता—राजनीति जहां एक ओर सर्वस्वकी बाजी लगा देनेको उकसाती है वहीं दूसरी ओर वह सचमुच जुबान बन्द कर सहते रहनेकी आज्ञा भी देती है। मुसोलिनीको जब उसके सरव्याने यह समाचार सुनाया तो वह ठठाकर हंस पड़ा और बोला—नीरोको मरे बहुत दिन हो गये—अब इटली

"शिकार"

—*:*—

लेखक - दुखी प्रेमवासी (बारा)

मैंने कई दफा यह बात सोची कि इन्सानका जीवन क्या है,वहएक ढङ्गपर हमेशा रहता है, उसमें कोई तबदीली नहीं होती। अक्सर कहते सुना है कि जीवन बदलता भी है। एक मशहूर फिलासफरका कौल है कि इंसानकी जिन्दगीमें हर सात सालके बाद कोई न कोई तबदीली होती है, पर मुझे मेरे जीवनमें कोई तबदीली होते नहीं दीखायी दी।

होलीका मौका था। रमेशकी छुट्टी थी। खत आया कि वह भी आ रहा है। लिखता है कि देहातकी जिन्दगी बड़ी पुरलुत्फ होती है, शिकार खेलनेके लिये वह देहातमें चलेगा। वहीं कुछ दिनों समय कटेगा, शिकार होगा, पिकनिक होगा और कुदरतकी खुशनुमाइयोंसे लुत्फ उठाया जायेगा। बात सीधी-साधी सी थी। उसने लिखा मैंने पढ़ा। किसी किस्मका खयाल दिलमें नहीं आया। रमेश हुस्नपरस्त भी है और मैं भी! कुदरत ही जब हुस्न परस्त है तो मैं क्यों न हुस्न-परस्त बनूं—और इसी तरह रमेश भी।

गंगाके किनारे खेमा लग गया। गांव भी करीब था। वहांसे कुछ चीजें आ गयीं। हम दोनोंको खूब अच्छा लगा। सबेरे ही एक लड़की बर्तन साफ करनेके लिये आयी। उसके अल्हड़पन और जवानीको देखकर मैं चकित रह गया। कुदरत भी किस कदर हुस्नपरस्त है -कैसी अच्छी,—हसीन और भोली-भाली सी थी वह अल्हड़ जवानी!—बड़ी मगरूर और शोख! बर्तन साफ करके चलने लगी तो कहती है—

"क्या फूल भी लाऊं?

किसलिये?

पूजा नहीं कीजियेगा?

नहीं!

क्या आपके यहां पूजा नहीं की जाती?

नहीं!

तो आप कैसे हैं!

जैसे समझो!—अच्छा लेती आना।

और उसे जैसे नागवार सा मालूम हो। उसकी निगाहमें मैं हकीर सा मालूम दे रहा था। कुछ बड़बड़ाती चली गयी—"पूजातक नहीं करते! फिर फूलोंका क्या करेंगे! शामको वह तरह-तरहके फूल लिये आई और एक हार भी—रमेश शिकारको चला गया था।

मेरी साइकिल खेमामें रखी थी। तमाम धूलसे लतफत था, वह साईकिलके पास ही खड़ी थी। मैंने कहा—"तुम्हारा क्या नाम है?वह शरमा सी गयी—दोबारा मैंने कहा—बताओ मैं उस नामसे पुकारूंगा नहीं—क्यों कि मैंने दूसरा नाम तुम्हारे लिये तजवीज कर लिया है।

कौन सा?

देवी!

मैं तो देवी नहीं हूं—देवी तो पत्थरकी होती हैं।

तुम भी तो नहीं बोलती हो—जैसे पत्थरकी हो।और वह खिलखिलाकर हंस पड़ी और साइकिलके मडगार्डपर हिन्दीमें लिख दिया "किशोरी" और मेरी तरफ आंखसे इशारा कर दिया। मैंने उठकर देखा तो मडगार्डकी गर्दपर लिखा था 'किशोरी'।

सचमुच तुम किशोरी हो! मैंने फिर कहा—देवी!

फिर आपने देवी कहा।

अच्छा नहीं, किशोरी। कहांतक पढ़ी हो तुम।

चहारुम तक!

अच्छा!

जी हां!

उसकी मगरूर चौड़ी पेशानी ऊपरको उठ गयी।

(२)

फूल लायी हूं ले लीजिये!

मैं फूलोंका क्या करूंगा?

जो आप चाहें!

एक हार भी लायी हूं!

किसके लिये?

आप—और झेंप सी गयी!

अपने हाथोंसे पहना दो तो ले लूंगा।

उसके हसीन हाथ मुझे हार पहिना रहे थे।

मैंने वह हार उतार कर उसे पहिना दिया।

खूब ही हंसी।

मैंने उसे एक रुपया दिया।

उसने मुझे हार वापस करते हुए कहा"क्या इस हारकी कीमत आपने रुपये पैसे हीसे अन्दाजा?

हरगिज नहीं, किशोरी।

उसकी आंखें डबडबा आयीं। चेहरा सुर्ख हो गया और जल्दीसे डेरेके बाहर हो गयी। मेरा दिल धड़कने लगा—शायद किशोरी नाराज हो गयी थी।

रमेशको शिकारसे ज्यादा प्रेम था। मैंने कई दफा रमेशसे कहा कि किशोरी बड़ा अच्छा काम करती है, क्यों न उसे अपने साथ ले चला जाये। रमेशने बात टालसी दी। मुझे बड़ा अफसोस हुआ और जब मुझे उदास सा देखा तो कह दिया,हां--अच्छी तो है, भोली-भालीसी है, तभी आ गयो मगरूर और शोख लड़की—बाबूजी, आप रोज शिकार खेलते हैं?

हां!

एक दिन मुझे भी ले चलिये।

चलोगी किशोरी?

मेरा नाम आपको किसने बताया!

प्रेमवासी ने।

यह तो मुझे देवी कहते हैं।

मेरी आंखें एक मुजरिमकी तरह झुक गयीं।

रमेश उठकर खेमेके बाहर चला गया। मैंने उससे कहा—"किशोरी, तुम नासमझ हो और भोली-भाली भी।"

क्यों बाबूजी, क्या हुआ?

तुमने मेरा रखा हुआ नाम उन्हें क्यों बता दिया?

तो क्या बुराई की?

वह क्या ख्याल करेगा?

यही न कि किशोरी आपसे प्रेम करती है। और उसकी आंखें नीचे झुक गयीं।

(१४ वें पृष्ठ पर देखिये)

मैंने कई दफा यह बात सोची कि ... [see above]

को मुसोलिनी चाहिये। उसके साथी चुप हो गये पर मुसोलिनीकी आत्माको उनकी चुप्पीसे करारी ठेस लगी। १९२२ में इटली की स्थिति डांवाडोल हो गयी। समाजवादियोंका रंग उस समय गाढ़ा हो चुका था और वे समझ रहे थे कि इस बार बाजी हमारी है। किन्तु उन्हें तबतक यह पता नहीं था कि उनके ही दामनके नीचे राष्ट्रवादके रूपमें फासिस्टवादका सांप दूध पी-पीकर वह जहर संग्रह कर चुका है जिसकी एक ही बूंदसे समाजवादका सत्यानाश हो जायगा।

मुसोलिनी अवसरकी ताकमें था। उसके सामने इटलीकी १ लाख १९ हजार ७०० वर्गमील जमीन तथा ४ करोड़ ४० लाख जनसंख्या थी। मुसोलिनीके ४० हजार फासिस्ट अनुयायी उसके लिये जीने-मरनेको तैयार थे। इटलीकी शासन व्यवस्था सुधरती न देखकर मुसोलिनी नेपल्ससे रोमकी ओर रवाना हुआ और उसने वहां के शासकको उसके हाथ में शासन व्यवस्था हस्तान्तरित करनेका अनुरोध किया। मुसोलिनीके सामने तत्कालीन प्रधान मंत्रीकी सरकारने घुटने टेक दिये और इटलीके बादशाहने मुसोलिनीको इटलीका प्रधानमन्त्री करार कर दिया। मुसोलिनीको मुंह-मांगी मुराद मिल गयी और वह आसमानके तारोंको तोड़नेके लिये व्याकुल हो उठा। १९२२ में इटलीका शासन यन्त्र मुसोलिनीके हाथोंमें आया और उसने २५-२६ में सरकारको बलपूर्वक दबाकर उनके पार्लमेंटरी अधिकार रद्द कर दिये तथा उनके नेताओंको बुरी तरह अपदस्थ किया। फिर अफ्रीकाके अबीसिनिया और इरीट्रीया बलपूर्व इटली साम्राज्यके अन्तर्गत शामिल कर लिये गये और देखते-देखते युद्धका बादल गड़गड़ाकर सारे युरोपपर छा गया। इसके बाद फिर जो कुछ हुआ वह दुनियाके सामने है। मुसोलिनी अब इस संसारमें जीवित नहीं किन्तु उसका इतिहास जब आगे पढ़ा जायेगा तब अवश्य उस समय इतिहासके पाठक उन व्यक्तियोंके नामपर थूकेंगे जिन्होंने उस वीरके शवपर थूककर मानव मात्रका सिर लज्जासे झुका दिया है।

एक अध्ययन

दार्शनिक प्रवर डा० भगवानदास

(लें० पं० श्रीकान्तठाकुर, मलयपुर)

Where the western philosophy ends Eastern philosophy begins —Maxmuller.

मनीषि डा० भगवानदासजीके सम्बन्ध में कुछ लिखने का साहस करना स्वयं अपने को हास्यास्पद बनाना है। श्रद्धेय डा० साहब को संसार एक विख्यात दार्शनिक और प्रकाण्ड पंडितके रूपमें जानता, मानता और उनमें निष्ठा रखता है। पूर्वीय और पाश्चात्य दर्शनशास्त्रों में उनकी गहरी पैठ है—और इस दिशामें उनकी जैसी धारणा-शक्ति है कि भारतकी कौन कहे पश्चिमके विद्वान भी उनके प्रकाण्ड पाण्डित्यके सम्मुख नतमस्तक हैं। सतत् सरस्वतीकी साधनामें संलग्न, प्राचीन भारतीय दर्शन और शास्त्रोंके महार्णवका निरन्तर मंथन और अपने पुष्ट विचारोंका प्रतिपादन करते हुए दार्शनिक प्रवरने अपने अनेकों संस्कृत तथा अंग्रेजी ग्रन्थोंमें चिर-संचित ज्ञान-राशि संग्रहित कर रक्खी है—जिन्हें देखकर पश्चिमके विद्वानोंको उनकी मेधा-शक्तिका कायल होना पड़ा है। आपका भव्य मुखमण्डल, प्रशस्त ललाट, सघन लम्बी केश-राशि और घनी लम्बी दाढ़ी हमें प्राचीन महर्षियोंकी याद दिलाती है। अपनी वर्तमान अधोगतिमें भी, जबकि वाल्मीकि और व्यासका भारत आज अशिक्षा और कुसंस्कारमें आपादमस्तक डूबा हुआ है, प्राचीन भारतके गौरव-स्वरूप डा० साहब सरीखे मनीषिको पाकर आज भी भारत का मस्तक समुन्नत है।

समन्वय, सद्विचार और सुव्यवस्था का शुभ सन्देश देते हुए भगवानदासजी अपने जीवनकी पचहत्तर देहली लांघ चुके। उनका सुदीर्घ जीवन मानव-ज्ञानकी सूक्ष्मातिसूक्ष्म खोज और विवेचनामें ही व्यतीत होता रहा है। दर्शनके गम्भीर विचारों के अतिरिक्त दुनियांभरके तमाम "इज्म" का ऐसा गहरा अध्ययन उनका है कि उनके साथ बातचीत करनेवालोंको महान आश्चर्य होता है कि ऐसी धारणा शक्ति उनमें कहां से आयी। अति प्राचीन वेद, उपनिषद, वेदान्त, मीमांसा न्याय तथा संस्कृत-साहित्यसे लेकर शरीर-विज्ञान, आयुर्वेद मनो-विज्ञान तक पर उनका समान अधिकार है। राजनीति, अर्थशास्त्र, और इतिहासके विद्वान भी वह एक ही हैं। क्रांतियों के इतिहास, खासकर रूसी क्रान्तिके इतिहासमें उन्हें विशेष दिलचस्पी है। मार्क्स, फ्रायड और एंगेल्सके सिद्धान्तों के वह एकान्त शोधक हैं और सदा इनका तुलनात्मक अध्ययन करते हैं। इन सब विषयों में भी दर्शन जैसे शुष्क विषयको अपना लेना उनके जैसे प्रचण्ड मस्तिष्कका ही काम है। विद्वानोंका मत है कि मनुस्मृति का सर्वांगीन अध्ययन जैसा डा० साहबका है, वैसा वर्तमान युगमें दूसरोंका नहीं। मनुस्मृतिके अध्ययन करनेका अर्थ मनुके नामकी रट लगाना नहीं प्रत्युत् मानव-जीवनके लिये उसे उत्प्रेरक बनाना है। इतनी बात सही है कि उनकी आस्था भारतकी प्राचीन संस्कृति पर पूर्णरूपेण है। आजकी 'मशीन सभ्यता' और पश्चिमी शिक्षाका जादू इस मामलेमें डा० साहब पर नहीं चल सका। मनुस्मृतिमें वर्णित कार्य-पद्धतियां अथवा सांस्कृतिक विधानोंका पालन तथा शुद्ध आचरण करना उन्हें पसन्द है—कर्मकाण्डकी विधियां भी उनके यहां सुसम्पादित होती रही हैं।

अस्तु, भगवानदासजीके दार्शनिक विचार शंकरके दार्शनिक विचारोंसे मिलते-जुलतेसे हैं। "ब्रह्म सत्यम् जगन्मिथ्या" ही शंकरके दर्शनके आधार थे और श्रद्धेय भगवानदास-जीके दार्शनिक विचार भी शंकरके इसी सिद्धान्त पर आधारित हैं। भौतिक जगत मिथ्या है, नश्वर है, अनित्य है। हमारे ऊपर एक ऐसी शक्ति है, जिसके द्वारा ही यह विश्व-क्षत्र चालित है। उसे ही हम 'ईश्वर' की संज्ञा देते हैं। बाइबिल भी उसे सुप्रीम लार्ड (Supreme Lord) कहता है और कुरान अल्ला व अकबरकी रट लगाता है। इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन उन्होंने विस्तारसे अपने ग्रन्थोंमें किया है। यहां पर यह कहना अप्रासांगिक न होगा कि मनुस्मृतिके घोर अध्ययन तथा "आत्मा" और "अनात्मा" सम्बन्धी अपनी तर्क-शक्तिके सहारे डा० साहब इस सिद्धान्त पर पहुंचे हैं कि चातुर्वण्यकी आधार शिलापर ही मानव संघटन हो सकता है। "चातुर्वण्य मया सृष्टम् गुण कर्म विभागशः" इस भागवत् उक्तिका अर्थ भगवानदासजी यह लगाते हैं कि "माया" से सिर्फ यह नहीं समझ लिया जाय कि यह ईश्वरीय व्यवस्था हो गयी और इसमें किसी तरहका हस्तक्षेप करना उस नियन्ताका अपमान करना होगा। डा० साहबका कथन है कि "गुण कर्म विभागशः" कह कर तो भगवान कृष्णने स्वयं उलझी सुलझा दी। भगवानदासजी 'कर्मणा' पर अधिक जोर देते हैं 'जन्मना' पर नहीं। वास्तवमें भगवान दासजीका मत बुद्धिकी जिज्ञासा-प्रवृत्तिके सामने ठहरता भी है। जिन-जीवनका आध्यात्मिक संस्कार नहीं हुआ। 'जन्मना वर्ण" का दुष्परिणाम आज मानव-समाज प्रत्यक्ष भोग रहा है। राष्ट्रीय जन-गणनाके अनुसार ढाई हजारसे ऊपर जातियां हिन्दुओंमें हो गयी हैं। इन जात्युपजातियोंमें परस्पर स्नेह, सौहार्द तथा एक दूसरेके आड़े दिनोंमें काम आनेकी प्रवृत्तिका भला कैसे उदय हो सकता है। 'जन्मना-वर्ण' के अधिकारकी दुहाई देता हुआ इंगलैण्डका राजा जेम्स Divine Rights of the King का प्रलाप करता था। भारतकी मौजूदा राजनीतिमें पाकिस्तानके नाम पर जो तूफान उठना चाह रहा है—डा० साहब इसे 'जन्मना-वर्ण' का ही कुपरिणाम मानते हैं। हिन्दुओंने अपने समाजके सात-आठ करोड़ मनुष्योंको 'अछूत' और 'नापाक' कह कर अलग कर रखा तो यदि दूसरे लोग भी हिन्दू समाजको 'नापाकिस्तान' कहें और अपने लिये पाकिस्तान अलग करना चाहें तो क्या आश्चर्य। डा० साहबका यह विश्वास है कि 'कर्मणा वर्ण' की नीतिसे ये समस्याएं बात कहते सुलझ जायंगी।

लेखक

भगवानदासजीका दूसरा विषय विश्व धर्म (World-religion) और विश्व-व्यवस्था (World-order) है। यह विश्व-धर्म भिन्न-भिन्न भाषाओं, शब्दों, और संकेतोंमें विभिन्न जनवर्गों और देशोंमें लपेट रखा गया है, उन सब शब्दों और संकेतोंकी तुल्यार्थता को, वे सब देश और समूह पहचानते नहीं, और अहंकारवश अपनेही शब्दों और संकेतोंमें अभिनिवेश करते हैं। इन्हीं आवरणोंका दुष्परिणाम है कि आजका मौजूदा मानव-समाज, अधर्म, अन्याय, और पापके पथपर सरपट दौड़ लगा रहा है। कलह, विवाद और अनबनकी बन आयी है। इन प्रभेदोंका उन्मूलन डा०साहबके मतसे 'विश्व-धर्म' के रास्तेपर चलकर ही किया जा सकता है। आये दिन सर्वधर्म सम्मेलनकी चर्चा विदेशोंमें जोरपर है। 'थियोसाफिकल सोसाइटी, 'पार्लियामेण्ट आफ आल रिलीजन्स, 'वर्ल्ड कांग्रेस आफ फेथ' आदिकी शाखाएं तमाम विदेशोंमें फैली हुई हैं। समाजवादी नेता भी 'विश्व-व्यवस्था' की पुकार जोरोंसे मचा रहे हैं। पिछली क्रांतिके बाद रूसमें ऐसी समाज-व्यवस्था बनायी भी गयी है—और आज तो 'न्यूवर्ल्ड आर्डर' की पुकार तमाम है। इन विचारोंका संकलन डा० साहबके 'मानव धर्मसार' और 'सब-धर्मोंकी तात्त्विक एकता' (The essential Unity of all religions) नामक पुस्तकमें विशद रूपमें हैं। डा० साहब आजकी सर्वव्यापी 'अव्यवस्था और 'अहंवाद' (Individualism) की दवा 'विश्व-धर्म' और उससे अनुप्राणित 'विश्व-व्यवस्था' को ही सर्व मानव-लोक-कल्याणके लिये मानते हैं। भौतिकवाद (Matrialism) की उपासना में एकके बाद दूसरा महायुद्ध के कारण मनु-संततिका जो संहार हो रहा है—और 'विश्व-शान्ति' भङ्ग हो रही है—इसका निदान डा० साहबने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ—'विश्व-युद्ध और उसका एकमात्र औषध' 'विश्वधर्मसे अनुप्राणित विश्व-व्यवस्था'—(World war and Its only cure—World order and World religion) में सविस्तार लिखा है।

भगवानदासजीका दूसरा मुख्य विषय सब धर्मोंकी एकता रहा है। उनका कहना है कि मूलतः सभी धर्म एक है। प्रकारान्तरसे देश और समाजके संस्कारमें धर्मका रूप पृथक-पृथक हो जाता है। कोऽन्योऽस्ति सदृशो मया—मेरे समान दूसरा कौन है—मेरा ही मत सर्वोत्तम और पाक है—ऐसी ही विचारधाराओंमें धर्मकी धज्जियां बहायी जा रही हैं। धर्म तो मानव-मात्रका कल्याण चाहता है—फिर धर्मके पुनीत नामपर सर-फुड़ौवल और खून-खराबी देखकर डा० साहब अत्यन्त मर्माहत होते हैं। धर्मको पाशवी-शक्तिके प्रदर्शनका कुठारहस्त समझ लिया गया है, जो डा० साहबको कतई पसन्द नहीं। भारतमें भयङ्कर रूपमें फैले हुए साम्प्रदायिक वैमनस्यका मूल कारण भी वह धर्मोंकी विभिन्नता ही मानते हैं। सर्व धर्म समन्वयके तात्त्विक उहापोहमें आपने अपने जीवनका बहुत बड़ा अंश लगाया है। 'सर्व-धर्म' की राहपर चलकर आपका विश्वास है कि देश स्वराज्य हासिल कर सकता है।

पचहत्तर वर्षोंकी इस बुढ़ौतीमें—घोर अध्ययन-मननका क्रम जारी रखते हुए—ज्ञान-सिन्धुके अनमोलमोती, सम्पूर्ण मानवता की भलाईके लिये आप चुनते रहते हैं। विश्व बन्धुत्व (Cosmopolitanism) की भद्र-भावनाओंसे ओत-प्रोत आपके गम्भीर विचार-सागरकी थाह विद्वान मस्तिष्क ही ले सकता है। यह लिखते-लिखते भगवानदास जीका गम्भीर और आकर्षक व्यक्तित्व आंखों के आगे साकार हो उठा। आपके औदार्य-पूर्ण प्रशान्त व्यक्तित्वमें जहां भावुकताकी प्रशस्ति है—वहां शुष्क बुद्धिवाद भी आपके मानसमें सुस्थिर है—गम्भीर अध्ययन-मननकी तन्मयताके साथ बाल सुलभ स्वच्छन्द हास्य भी—प्राचीन संस्कृतिके प्रति अभिमान—किन्तु नवीनकी उपेक्षा भी नहीं। भारतके प्राचीन और अर्वाचीन दर्शन-शास्त्रोंका अपूर्व सम्मेलन आपके चरित्रमें मिलता है। ऐसा महापुरुष किसी भी देशके लिये गौरव है—ईश्वर करे मेरा यह गौरव चिरकाल तक बना रहे।

——

"शिकार"

(१२ वें पृष्ठसे आगे)

सचमुच किशोरी तुम मुझे प्यार करती हो ?

बाबूजी, प्यार किया नहीं जाता—हो जाता है।

तो क्या तुम्हें मुझसे प्रेम हो गया है ?

क्या आपका दिल आपको नहीं बताता है ?

पर किशोरी हम कैसे प्यार कर सकते हैं ?

क्यों बाबूजी ?--उसकी आंखें आंसू बहा रही थीं।

किशोरी। समाज बड़ी बुरी चीज है।

तो क्या मर्दोंको भी समाजसे डरना पड़ता है ? मैं तो समझती थी कि समाजका डर सिर्फ औरतोंको ही होता है और कुछ बुजदिले मर्दोंको। न कि आपकी तरह पढ़े लिखे मर्दोंको !

"अच्छा किशोरी तुम मेरे साथ चलना"

चलूंगी बाबूजी !

(३)

रमेश भैया खुश रहो !

आज मुझे मालूम हुआ कि जीवनमें तबदीलियां भी होती हैं। तुमसे मैंने शिकार-के कैम्पमें जिक्र किया था कि कैसी अच्छी और भोलीसी है किशोरी और तुमने बात टाल सी दी थी। अभी कल ही का जिक्र है मैं समाजसे डर गया था, दिल उदास सा था। मैंने कहा कब जाओगी किशोरी।

कहने लगी कहां बाबूजी ?

अपने घर !

मेरा घर कहां है बाबूजी ! और आंखोंसे आंसू बहाने लगी--क्या आप मुझे छोड़ देंगे ? जहां आप हुक्म देंगे चली जाऊंगी।

और मैं अपना कलेजा मसोस कर रह गया।

क्या तुम अब भी मुझे प्यार करती हो ? अपने मनसे आप इस सवालका जवाब पूछें।

मैं लाजवाब हो गया।

क्या बाबूजी आप समाजसे डर गये ?

नहीं तो किशोरी, मैं समाजका मर्दानगीसे मुकाबला करूंगा। मुझे समाज नहीं चाहिये। मुझे तुम्हारा जीवन सुधारना है। जीवनमें तबदीलियां होती हैं और आज मैं अपने जीवनमें भी तबदीली पा रहा हूं। इतमीनान है कि मैंने एक जान समाजकी दहकती हुई भट्टीमें जलनेसे बचाई। समाजके ठेकेदार मुझे बदचलन कहेंगे पर मुझे ऐसी बदचलनी ही में सन्तोष है जिससे कि मैं किसी अबलाकी जिन्दगी सुधार सकूं।

अब रमेश तुम समझ ही गये होगे मुझे। यकीन है कि जो कुछ मैंने किया है तुम उसे पसन्द करोगे। किशोरी तुम्हें बराबर याद करती है, अबकी दफा होलीमें आओ तो हम सब फिर उसी जगह शिकार खेलने चलेंगे। उस जगहका शिकार अच्छा होता है--है न यही बात ? किशोरी खत पढ़ रही है और मुस्करा रही है—याद है न, उसने अपना नाम साइकिलके मडगार्ड पर लिख कर बताया था—पर अब वह खूब लिख पढ़ गयी है और खूब शोख हो गयी है। तुम्हें हाथ जोड़ कर प्रणाम कह रही है।

तुम्हारा—प्रेमवासी

= हार-जीतका तमाशा । =

इस सप्ताह पश्चिमी युद्धक्षेत्रपर घटना-चक्र इतनी तेजीसे चला—और अभीतक वैसी ही तेजीसे चलता जा रहा है कि वहांपर दृष्टि ही नहीं जम पाती। गत सप्ताहके अंतमें जिस हिमलरके आत्मसमर्पणवाले प्रस्ताव-की इतनी अधिक चर्चा थी, वह अचानक ही न जाने कहां गुप्त हो गया। हिटलरने अन्त-तक बर्लिनमें रहकर रूसी सेनाओंसे युद्ध करने का जो संकल्प कर रखा था, वह जर्मन रेडियोके अनुसार वहां सैन्य-संचालन करते हुए प्राणोत्सर्ग करके उसने पूरा कर दिखाया है। प्रचारक प्रसिद्ध गोयबेल्सने मास्को रेडियोके अनुसार आत्मघात कर डाला। जर्मन हवाई-सेनाका प्रधानाध्यक्ष गोयरिंग तो इन बातोंसे पहले ही पदत्यागकर अन्तर्ध्यान हो गया था। अब बर्लिन पर सोवियट्की पताका फहरा रही है और वहांकी अवशिष्ट जर्मन सेनाने रूसियोंको आत्म-समर्पण कर दिया है। जब हम यह स्मरण करते हैं कि हिटलरने १९३९ई०के सितम्बरमें ही गोयरिंग-को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था और उसके बाद उस हर हेसको अपना उत्तरा-धिकारी नं० २ बनाया था, जो इंगलैण्डके किसी पागलखानेमें पड़ा हुआ है, तब मरनेके पहले हिटलरका जर्मन नौसेनाके प्रधान नायक एडमिरल डोनिजको अपने स्थानपर जर्मनीका नया फुहरर नियुक्त कर जाना कुछ भी आ-श्चर्यजनक नहीं मालूम पड़ता। डोनिजने यदि जर्मन राष्ट्रके नाम अपनी प्रथम घोषणा-में बोल्शेविक रूसियोंके विरूद्ध तो अन्ततक और ब्रिटेन तथा अमरीकाके भी विरूद्ध तब-तक युद्ध जारी रखनेकी बात कही थी, जबतक वे बोल्शेविकोंसे लड़नेमें जर्मनीके मार्गमें बाधक बनेंगे,' पर उनके फुहरर बननेके बाद ये दो ही बातें देखनेमें आयी हैं—एक तो हिटलरके साथी सभी प्रधान नाजी नेता रहस्यमय ढंगसे ओझल हो गये और दूसरे जर्मन सेनाएं पश्चिममें मित्रसेनाओंके सामने आत्मसमर्पण करती जा रही हैं केवल पूर्वमें जेकोस्लोवकिया और आस्ट्रियामें जर्मन रूसियोंसे अब भी कड़ी लड़ाईमें प्रवृत्त हैं, किन्तु मालूम हुआ है कि वहां भी बोहेमिया और मोराविया के जर्मन संरक्षित भूभागोंके जर्मनीसे मिलकर काम करनेवाले जेक और जर्मन कर्णधार राजधानी प्रेगसे इसलिये रवाना हो गये हैं, जिसमें अमरीकन सेनाके जनरल पेटनसे बात-चीत करके इस बातका समझौता करें कि जेकोस्लोवाकियाकी जर्मन सेना वहांसे हटाकर बवेरियामें भेज दी जाये। ये लोग प्रोटेक्टर कार्ल फ्रैंकके आदेशपर यह सब करते बताये जा रहे हैं। जेकोस्लोवकियाके इतने बड़े भागपर अधि-कार कर लेनेवाली रूसी सेनाको आत्मसमर्पण न कर जो जेकोस्लोवकियामें अभी कई दिनोंमें ही घुस सकनेवाली अमरीकन सेनासे जर्मन सेनाको निकाल ले जानेकी चेष्टा की जा रही है, वह जर्मन अधि-कारियोंकी उस नीतिके अनुसार ही है, जिससे उत्तरी इटालीकी जर्मन सेनाके कमांडरने वहांके मित्र सेनापतिको आत्म-समर्पणकर शस्त्रास्त्र समेत अपने दस लाख जर्मन जवानोंको उनके सुपुर्द कर दिया है और उत्तरी जर्मनीमें इसी तरह पांच लाख जर्मन सैनिकोंका आत्मसमर्पण हुआ है। जेनरल डेवर्स न जेनरल आइजन हावरको रिपोर्ट दी है दक्षिणी युद्धक्षेत्रपर लिंजके तीन मील दक्षिण-पश्चिम किर्चबर्गसे स्विस सीमा तक जर्मन सेनाने आत्मसमर्पण कर दिया जिससे वहां लड़ाई बन्द हो गयी है। आत्मसमर्पण करनेवाली सेनायं दोसे चार लाख तक जर्मन जवान होंगे। इटलीकी अपनी सफलतापर गर्व प्रकट हुए मि० चर्चिलने कामन सभामें यह कहा है—"इससे केवल यही नहीं हुआ कि एक अत्य-न्त उपयोगी विस्तृत भूभाग सुप्रीम कमांडर फील्ड मार्शल सर अलेक्जेंडरके हाथ आ गया है, बल्कि जितने अधिक जर्मनोंने यहां आत्मसमर्पण किया है, उतने समस्त युद्ध-कालमें पहले कभी एक साथ हाथ लगते कहीं नहीं देखे गये और यह उन अन्य घटनाओंके लिये अवश्य सहायक होगा, जिनकी हम प्रतीक्षा कर रहे हैं।" इनको जानबूझकर प्रकट नहीं किया गया है और यह वर्त्तमान हार-जीतके तमाशेको निस्सन्देह और भी अधिक रहस्यपूर्ण बनानेवाली बात है।

जब हम यह सोचते हैं कि जर्मनीको पूर्णतया पराजित कर देनेतक परस्पर सह-योगपूर्वक लड़ाई जारी रखने और पृथक् सन्धि न करनेके लिये ब्रिटेन, रूस और अमरीका आपसमें प्रतिज्ञाबद्ध हैं तथा उनकी यह भी प्रतिज्ञा है कि जबतक जर्मनीसे नाजियोंका प्रभाव पूर्णरूपसे नष्ट न कर डाला जायेगा, तब तक युद्ध जारी रखा जायेगा, तब समझमें नहीं आता कि इस समय जर्मनोंकी जो हार और पश्चिमी सेनाओंकी जो जीत हो रही है, इसे क्या समझा जाये। डोनिजने फुहरर होते ही पर-राष्ट्र मन्त्री रिबेनट्रापके स्थानपर किसी अज्ञातनामा व्यक्ति क्रोजिकको नियुक्त कर दिया है और इस तरह सभी प्रमुख नाजी नेता तिरोहित हो चुके हैं। मास्को रेडियोने हिटलर और गोएबेल्सके आत्महत्या कर लेनेकी जो बात कही है, वह गोएबेल्सके सहकारी फ्रिशकी बतायी हुई है, इसलिये रूसमें अभीतक इन नाजी नेताओंके मरनेकी रिपोर्टपर विश्वास नहीं किया जाता और ऐसा समझा जाता है कि गुप्त-वास द्वारा गुरिल्ला युद्ध जारी करनेके लिये ही ये सभी इस तरह रहस्यमय ढङ्गसे अन्तर्ध्यान हो गये हैं। इसी समय फ्रांससे यह समाचार मिला है कि हिटलरने अभी हालमें ही जापान सरकारसे हवाई जहाज द्वारा अपने जापान पहुंचने और वहां आश्रय ग्रहण करनेकी अनु-मति चाही थी, जिसमें वहींसे मित्र राज्योंके विरुद्ध लड़ाई जारी रखी जा सके, पर जापान ने यह कहकर उन्हें अनुमति देना अस्वीकार किया कि वैसा करके वह सोवियट रूसकी कोपाग्निको प्रज्वलित नहीं करना चाहता। मास्कोवाले और उनके रूसी कमांडर लोग तो तबतक हिटलरकी मृत्युके समाचारपर विश्वास करेंगे ही नहीं, जबतक उनकी लाश उन्हें न मिल जायेगी। बर्लिनकी चांसलरीमें लाश तलाश करनेमें रूसियोंने कोई कसर नहीं रखी, पर न तो हिटलरकी और न गोएबेल्सकी ही लाशका कोई पता चल पाया है। हिमलरके विषयमें यह प्रसिद्ध किया गया है कि वह गोताखोर जहाज द्वारा जापानके लिये रवाना हो चुका है।

पेरिसके २७ अप्रेलके तारमें कहा गया था कि बर्लिनके दक्षिणमें जर्मन फौजोंने रूसी और अमरीकन सेनाओंको विभाजित करती हुई अमरीकन सैन्य पंक्तिमें कुछ पर्चे बरसाये थे। इन पर्चोंमें यह कहा गया था कि अम-रीका और रूसका सम्बन्ध बिगड़ गया है और अमरीका रूसियोंको मार भगानेके लिये शीघ्र ही जर्मनीसे हाथ मिलानेवाला है। यह स्पष्ट ही अमरीकनों और जर्मनोंमें सद्भाव और अमरीकनोंके प्रति रूसियोंमें दुर्भावना पैदा करनेके उद्देश्यसे है। यह तो सभी जानते हैं कि हिटलरने बहुत दिन पहलेहीसे रूसके विरुद्ध ब्रिटेन और अमरीका को अपने पक्षमें करनेका प्रयत्न आरम्भ कर रखा था और आज जो जर्मन सेनाओं और रुण्डस्टेड जैसे प्रमुख जर्मन सेनापतिका आत्मसमर्पण ब्रिटिश और अमरीकन सेना-ओंके सामने ही हो रहा है तथा वान पैपन जैसा प्रसिद्ध जर्मन कूटनीतिज्ञ जान बूझकर मित्र सेनाओंका बन्दी बन गया है, ये सब काम उसी दिशामें और उसी लक्ष्यको सामने रखकर होते जान पड़ते हैं। तब किसी भी क्षण जर्मनीकी लड़ाईकी समाप्तिकी घोषणा होनेकी जो प्रतीक्षा एक सप्ताहसे की जा रहीहै, उसके प्रति कोई विशेष उत्साह तबतक कैसे हो सकता है, जबतक यह निश्चित न हो जाये कि जर्मनीकी इस हारका अर्थ वास्तवमें युद्धकी समाप्ति और शान्तिकी स्थापना होगा।

युद्धमें विजय लाभ करनेसे भी अधिक जीति हुई बाजीकी रक्षाके लिये प्रयत्नोंकी आवश्यकता खासकर ऐसी अवस्थामें हुआ करती है, जब विजय अनेक राष्ट्रोंके संयुक्त उद्योगोंका परिणाम हो और उस अवस्थामें तो और भी, जहां ब्रिटेन जैसे साम्राज्य-वादी, अमरीका जैसे पूंजीवादी और रूस जैसे साम्राज्यवाद और पूंजीवादके कट्टर विरोधी और सच्चे साम्यवादी राष्ट्रके पार-स्परिक सहयोगके फलस्वरूप उसकी उप-लब्धि संभव हो रही हो। हमारी समझसे तीन बड़े मित्रराष्ट्रोंकी मित्रता और घनिष्ट-ताके लिये अब बहुत कठिन परीक्षाकाल उप-स्थित है और जबतक वे इसमें पूर्ण सफलता-से उत्तीर्ण नहीं हो लेते, तबतक हार जीतका कुछ भी अर्थ नहीं। पोलैंडके प्रश्नपर रूसके साथ ब्रिटेन और अमरीकाका समझौता अभीतक नहीं हो सका और न उसके आगे ही होनेकी हमें कोई आशा दिखाई पड़ती है। आस्ट्रियामें जो अस्थायी सरकार रेनरने बनायी है, वह सोवियट सरकारकी स्वी-कृतिसे है, पर ब्रिटेन और अमरीकाने उसे स्वीकार करनेसे इनकार कर दिया है। सच तो यह है कि जैसे-जैसे युद्ध समाप्तिके निकट पहुंचता दिखाई पड़ा, ब्रिटेन और अमरीका का भाव सोवियट रूसके कामोंके प्रति अधिक कड़ा पड़ता गया है और अब अव-स्था यह है कि सोवियट रूस तो पूर्वी और मध्य यूरोपमें एकमात्र अपना ही प्रभाव स्थापित रखना चाहता है, जबकि ब्रिटेन और अमरीका वहां भी अपनी टांग अड़ानेकी आवश्यकता समझते हैं। दोनोंके आदर्श रूससे भिन्न हैं ही, इसलिये उनमें मतभेदका होना स्वाभाविक है, किंतु यदि किसी प्रकार ये अपने शत्रुओंको इससे लाभ उठाने देना चाहेंगे, तो उन सारे फलोंसे निश्चय ही वंचित हो जायेंगे, जिनकी आशा वर्त्त-मान युद्धमें विजय लाभ होनेसे वे करते दिखाई देते हैं।

इतना लिखनेके बाद सानफ्रांसिस्कोसे खबर आयी है कि मि० एडेन और मि० स्टेटिनियसने पोलैण्डके प्रश्नपर मो० मोलो-टोवसे बात जारी रखनेसे इनकार कर दिया है। कारण यह हुआ है जो सोलह पोल नेता मार्च के अन्तमें पोलैंडमें रूसी सैनिक अधि-कारीसे बात करने गये थे और लापता हो गये थे उनके विषयमें मोलोटोवने बताया है कि वे लाल सेनाके विरुद्ध कारवाईके कारण गिरफ्तार किये गये हैं। उधर जापान संवाद-समितिने प्रभावशाली पत्र'चूगुनिप्पन' के लेखको उद्धृत करते हुए जर्मनीकी ब्रिटेन और अमरीकाको आत्मसमर्पण करके रूससे लड़ाई जारी रखने और उसे ही प्रधान शत्रु समझनेकी नीतिसे चिन्ता प्रकट करते हुए कहा है कि "हमारा शत्रु ब्रिटेन और अमरीका हैं और कोई नहीं।"

पूर्वमें बर्माकी लड़ाईमें इस सप्ताह जापा-नियोंको भी गहरी हानि सहनी पड़ी है और रंगूनपर मित्र सेनाओंका अधिकार हो जाने-से सम्पूर्ण बर्माका जापानियोंके चंगुलसे शीघ्र उद्धार करनेकी आशा मित्रराष्ट्रोंको होनी स्वाभाविक है। १ मईको टोकियो रेडियोने यह तो स्वीकार किया था कि जर्मनीकी लड़ाईकी समाप्तिके निकट है, किन्तु उसका कहना यह था कि नाजियोंके आत्मसमर्पण-से प्रशान्तके युद्धपर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। नाजियोंके आत्मसमर्पणके फलस्वरूप आने-वाली घटनाओंपर पहले ही विचार कर हमने रक्षात्मक उपाय कर लिये हैं। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि जर्मनीकी लड़ाई समाप्त हो जानेके बाद पूर्वमें जापान एकदम अकेला पड़ जायेगा, किन्तु वैसे भी तो यूरोप की लड़ाईसे उसे अप्रत्यक्ष रूपमें ही सहायता मिलती थी, यानी ब्रिटिश और अमरीकन सेनाओंका बहुत बड़ा भाग यूरोपमें ही रखना पड़ा था, जिससे जापानके विरुद्ध अबतक मित्र सेनाओंकी बहुत ही कम जोर लग सका। परन्तु जिस ढङ्गसे यूरोपमें हार-जीतका एक तमाशा सा होता देखा जा रहा

स्वदेश वार्ता

सीमान्त गांधीका स्वास्थ्य

खां अब्दुल गफ्फारखांके सरदारयाब स्थित सदर मुकामसे पेशावर पहुंचनेवाली रिपोर्टोंसे ज्ञात हुआ है कि अब उनका स्वास्थ्य सुधर रहा है। वे पूर्ण विश्राम ले रहे हैं; दर्शकोंको मिलनेकी आज्ञा नहीं दी जाती।

सीलोन कांग्रेस स्थगित

यूनाइटेड प्रेसका समाचार है कि सीलोन कांग्रेसका अधिवेशन डा० महमूदके निश्चित तिथि पर उपस्थित न हो सकनेके कारण आगामी ११ मईके लिये स्थगित कर दिया गया है। आशा की जाती है कि यदि स्वास्थ्य अच्छा रहा तो वे ही इस अधिवेशनका समापतित्व करेंगे।

पंडित नेहरूकी तब्दीली

लखनऊके कांग्रेसी क्षेत्रोंमें प्राप्त समाचारोंसे पता चला है कि पंडित जवाहरलाल नेहरू और आचार्य नरेन्द्रदेव बरेली सेन्टल जेलसे स्थान्तरित कर संभवतः देहरादून जेल भेजे जायंगे।

फ्रिस्को पर गांधीजीका ताजा वक्तव्य

पूनाके प्रमुख दैनिक पत्र "लोक शक्ति" का कहना है कि महात्माजी भारतकी स्वतंत्रताके सम्बन्धमें सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनके लिये एक नया वक्तव्य तैयार करनेमें संलग्न हैं। उक्त पत्रका यह भी कहना है कि इस वक्तव्यमें भारतीय समस्या के विभिन्न पहलुओंसे सम्बन्धित विषयोंका विस्तृत उल्लेख रहेगा।

श्री मेहताबकी बिना शर्त रिहाई

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके भूतपूर्व सदस्य श्री हरेकृष्ण मेहताब, जिन्हें संभलपुर जेलमें नजरबन्द रखा गया था, पहली मईको मुक्त कर दिये गये। उनकी रिहाईके सम्बन्धमें प्रकाशित एक प्रेस विज्ञप्तिमें उड़ीसा सरकार ने कहा है कि श्री मेहताबको प्रांतीय और केन्द्रीय सरकारोंके बीच परस्पर विचार-विनिमयके बाद बिना शर्त रिहा किया गया है।

है, उसके विचारसे जापानको अवश्य यह सोचकर संतोष होना निश्चित है कि अभी काफी समयतक मित्रराष्ट्रोंको यहां भी युद्धके पश्चात् शांतिकी समस्याओंको सुलझानेमें ही काफी शक्ति लगानी पड़ेगी। साथ ही अभी वह यह भी सोच सकता है कि यदि उसके मित्र जर्मनोंका प्रयत्न किसी भी अंशतक वहां सफल हो गया और मित्रोंमें फूट पैदा हो गयी, तो उससे जर्मनी भले ही उतना लाभ न उठा पाये, पर जापानको तो पूरा लाभ उठानेका अवसर मिल सकता है। इस तरह युद्धमें हार-जीतके प्रश्नसे अधिक महत्वकी बातें सान फ्रांसिस्को और मित्रराष्ट्रोंकी राजधानियोंके भीतर हो रही हैं और उन्हींके परिणामपर भविष्य बहुत कुछ निर्भर होगा।

श्रीमती नायडूको पुत्र-शोक

श्रीमती सरोजनी नायडूके मझले पुत्र श्री रणधीरका गत ३० अप्रेलको बंगलोरमें स्वर्गवास हो गया।

कलकत्ता पुनः जगमगा उठा

बंगाल सरकारकी ओरसे प्रकाशित एक प्रेस विज्ञप्ति द्वारा जनताको सूचित किया गया है कि बंगाल प्रकाश नियन्त्रण आर्डरके अन्तर्गत मोटरगाड़ी, मकान और सड़कोंकी रोशनी पर लगाये गये प्रतिबन्ध १मईसे हटा लिये गये।

प्रिवी कौंसिलका फैसला

प्रिवी कौंसिलके न्याय विभागके समक्ष बंगाल हाईकोर्टके ३ जून, १९४३ के फैसले का फेडरल कोर्ट द्वारा अनुमोदनके खिलाफ सम्राटकी अपीलकी सुनवाई समाप्त हुई।

स्मरण रहे कि बंगाल हाईकोर्टका उक्त निर्णय शिवनाथ बनर्जी और नैनीगोपाल मजूमदार इत्यादि आठ प्रतिवादियोंकी ओरसे बंगाल सरकार द्वारा भारत रक्षा विधानकी २६ वीं धाराके अन्तर्गत उनकी नजरबन्दीके खिलाफ अपीलका परिणाम था। माननीय जजोंने एक मतसे शिवनाथ बनर्जी और नैनीगोपाल मजूमदारकी नजरबन्दीको अवैधानिक करार दिया है।

पोलिश प्रश्नपर वार्ता भंग

सन फ्रांसिस्को, ५ मई। ब्रिटिश तथा अमेरिकन सरकारने पोलिश प्रश्न पर रूससे वार्ता जारी रखना इनकार कर दिया। ब्रिटिश परराष्ट्र मन्त्री मि० स्टैटिनसने रूसी परराष्ट्र सचिव मो० मोलोटोव द्वारा यह कहे जाने पर कि सोलह पोलिश राजनीतिक नेताओंको, जो एक मास पूर्व गायब हो गये थे, रूसियोंने गिरफ्तार कर लिया पोलिश प्रश्नपर वार्ता जारी रखनेसे इनकार कर दिया। रायटर

दुर्भिक्ष कमिशनकी रिपोर्ट

पता चला है कि दुर्भिक्ष जांच कमिशनकी रिपोर्ट ८मईको प्रकाशित होगी। वुडहेड कमिशनकी रिपोर्टके प्रथमार्द्धपर भारत सरकार कोई प्रस्ताव या निर्णय न प्रकाशित करेगी क्योंकि इसका सम्बन्ध बीती बातोंसे है। भोजन और उसकी पौष्टिकतासे सम्बन्धित, रिपोर्टका बाकी हिस्सा इस महीनेके अन्त तक उपस्थित किया जायगा। अपनी लम्बी खाद्यनीति निर्धारित करनेके उद्देश्यसे भारत सरकार उसका परीक्षण करेगी।

कलकत्तेमें वस्त्र रेशनिंग

ऐसी आशा की जाती है कि कलकत्तेमें आगामी ७ मईसे वस्त्र वितरणकी अस्थाई व्यवस्था कार्यान्वित की जायगी। इस अवधिमें वितरणके लिये २ हजार गांठें उपलब्ध हो सकेंगी। सरकारी स्वीकृति प्राप्त वार्ड कमेटियों द्वारा दी गयी परमिट पेश करने पर अनुमोदित प्रतिष्ठानों में वस्त्र मिलेगा।

चिमूर-अष्टी केसके अपराधी

चिमूर-अष्टी हत्याकाण्डके अभियुक्तोंकी 'हैबियस कारपस' अर्जीपर विचार करनेवाले जज महोदय, मि० जस्टिस रेनौल्ड पोलकने मि० जस्टिस हेमनके समर्थनमें अपना मत प्रकट किया है। स्मरण रहे कि इसी पर मि० जस्टिस हेमन और सर एम० नियोगीने विभिन्न मत दिये थे।

मि० पोलककी उक्त सम्मतिके खिलाफ पेश की गयी अर्जीपर आगामी मईको मि० हेमन और सर एम० वी० के कोर्टमें विचार होगा।

कौन क्या कहता है

...फ्रिस्कोमें "स्वतंत्र भारत" की गूंज

सैनफ्रांसिस्को औडोटोरियममें "स्वतंत्र भारत" के प्रदर्शनके समय भाषण देते हुए श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने कहा है— राजनीतिक उपायों द्वारा सौदा पटाकर शांति और सुरक्षाकी व्यवस्था करनेका ...सिद्धांत दोषपूर्ण है। सर्वप्रथम हमें आंत...र्राष्ट्रीय न्याय और समानताकी आवश्यकता है। इस आधारपर ही स्थायी शांति और ...सुरक्षाकी योजना तैयार की जा सकती है। हिटलरवादकी भर्त्सना करना और ...दूसरी ओर नये हिटलरको पैदा करना, ...आजादीकी लम्बी-लम्बी बातें बनाना और ...ने ही संगी-साथियोंको ही उससे वंचित ...रखना कहांतक शोभनीय है। जिस क्रमिक ...स्वतन्त्रताके सम्बन्धमें बहुत कुछ सुन रही ... आखिर उसका फैसला कौन देगा? ...कोई राष्ट्र स्वायत्त शासनके सुयोग्य है ...या नहीं, इसका निर्णय कौन करेगा?

भारत इस सम्मेलनकी सफलताके लिये ...है जिसपर दुनियांकी आशायें टिकी हैं। ...न्याय और सद्व्यवहारके आधारपर निर्मित ...किसी भी संगठनमें सम्मिलित होकर भारत ...उल्लास और गौरवका अनुभव करेगा। पर ...वादोंसे पेट नहीं भरनेको। अमेरिकाको ...चाहिये कि भारत और अन्य गुलाम राष्ट्रोंके ...लिये वह स्वतन्त्रताकी मांग पेश करें।

...जर्मनीके नये फुहरर—एडमिरल डोयनित्ज

...सैनिकोंको नये फुहररका आदेश

हिटलरके उत्तराधिकारी, एडमिरल ...डोयनित्जने जर्मन सैनिकोंके नाम जारी ...किये गये एक आदेशमें कहा है—साथियों! ...फुहररकी मृत्यु हो गयी। बोलशेविज्मसे ...यूरोपको बचानेके प्रयत्नमें उन्होंने अपने ...प्राणकी बाजी लगा दी और अन्तमें बहादुर ...की मौत मरे! जर्मन इतिहासका सबश्रेष्ठ ...व्यक्ति दुनियांके रंगमंचसे विदा हो चुका। ...अगाध श्रद्धा और शोकके प्रदर्शनके ...लिये हम उनके सम्मानमें अपना झण्डा झुकाते हैं। फुहररने हमें अपनी जगहपर जर्मन स्टेटका ...अधिकारी और जर्मन सेनाका सुप्रीम ...कमाण्डर नियुक्त किया है। उक्त भारको ...स्वीकार कर हम बोलशेविज्मके विरुद्ध उस ...समय तक युद्ध जारी रहनेको दृढ़ प्रतिज्ञ हैं जब... तक पूर्वस्थित जर्मन सेना और पूर्वी जर्मनीके हजारों जर्मन परिवार गुलामी और सर्वनाशके खतरेसे मुक्त नहीं हो जाते। ब्रिटिश और अमेरिकनोंसे भी हमें उस हद तक और उतने समय तक संघर्ष करना पड़ेगा जहांतक और जबतक वे हमारे बोलशेविज्म विरोधी संग्राममें बाधक सिद्ध होते रहेंगे।

मैं आपसे अनुशासन और वफादारीकी मांग करता हूं। मेरे फरमानोंका निधड़क पालन करके ही अशांति, और कत्लेआमसे रक्षा संभव है। वे तो कायर और गद्दार हैं जो अपने कर्तव्य पालनमें सुस्ती दिखलाकर जर्मन महिलाओं और बच्चोंके लिये मौत और गुलामीका मार्ग प्रशस्त करते हैं।

जर्मन सैनिको! अपने कर्तव्यको पूरा करो। सम्पूर्ण जर्मन राष्ट्रका ही भाग्य दाव पर है!"

मार्शल मोलोटोवका भाषण

सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसकके समग्र अधिवेशनमें एक दोभाषियेकी सहायतासे भाषण करते हुए मार्शल मोलोटोवने निम्नलिखित घोषणा की—वर्तमान महासमरमें मित्रराष्ट्रोंके समान उद्देश्यके विरुद्ध अर्जेन्टाइनाका विशिष्ट स्थान रहा है। पर आज लैटिन अमेरिकाके कुछ देशोंका ख्याल है कि अर्जेन्टाइनामें बेहतर परिवर्तन हुए हैं। यदि उनका कथन सत्य है तो प्रतिनिधियोंको इस सत्य ही जानकारी प्राप्त करनेका अवसर प्रदान किया जाय न कि इस सम्बन्धमें कोई जल्दीबाजी की जाय।

जब अर्जेन्टाइनाके पापोंकी ओरसे आंखे बन्द कर लेना आवश्यक प्रतीत होता है फिर पोलैण्डके बलिदान और सेवाओंको हम क्यों भूल रहे हैं? यदि हम पोलैण्डकी अस्थायी सरकारको आमन्त्रणसे वञ्चित रख अर्जेन्टाइनाको वह सुविधा प्रदान करते हैं तो इस सम्मेलनकी प्रतिष्ठा पर आघात होगा।

भारतका हवाला देते हुए उन्होंने कहा— यद्यपि हमें अच्छी तरह मालूम है कि भारत पराधीन है फिर भी भारतीय प्रतिनिधि-मण्डल हमारे समक्ष उपस्थित है। हमने ब्रिटिश सरकारके अनुरोध पर इस सम्मेलन में गुलाम भारतके प्रतिनिधित्व (?) को स्वीकार कर लिया है। पर वह शुभ दिन अवश्य आयेगा जब स्वतंत्र भारतके प्रतिनिधि यहां होंगे।

मार्शल स्टालिनका सन्देश

मई दिवसके अवसरपर रूसी जनता और युद्ध संलग्न सैनिकोंके नाम दिये गये आदेश में मार्शल स्टालिनने कहा है कि लालसेना की असीम शक्तिने सोवियट प्रजातंत्रके अधिकारोंको पुनःप्राप्त किया है। गत तीन महीनों के भीतर ८ लाख जर्मन बन्दी बनाये गये हैं और लगभग १ लाख युद्धमें मारे गये हैं। यद्यपि मित्रराष्ट्र जर्मन जनताका विनाश नहीं चाहते पर फासिस्टवाद और जर्मन सैन्यवादका खात्मा कर अपनी क्षति अवश्य पूरी करेंगे। यदि जर्मन जनता मित्र राष्ट्रोंकी आज्ञाकारिणी रही तो उनका लेशमात्र भी अपकार नहीं होने दिया जायगा।

मार्शल स्टालिनने आगे चलकर कहा कि—जर्मनोंपर दवाव डालकर उन्हें दर्जनों डिवीजन सेना पूर्वी मोर्चेपर भेजनेको बाध्य कर हमने अपने मित्रोंको पश्चिमी मोर्चेपर सफल अभियानका सुअवसर प्रदान किया है। अब जर्मनी बिलकुल अकेला है। उसे सिर्फ जापानके सहायताकी आशा रह गयी है।

हिटलरके सहयोगी विभिन्न चालबाजियोंका सहारा लेकर मित्रराष्ट्रोंके बीच मतभेद उत्पन्न कर वर्तमान नैराश्यपूर्ण संघर्षसे बाहर निकलनेका मार्ग निकालना चाहते हैं पर उनकी सारी चालबाजियां बुरी तरह असफल होंगी।

मास्टर तारासिंहका भाषण

संयुक्त प्रांतीय सिख सम्मेलनके अध्यक्ष पदसे भाषण देते हुए मास्टर तारासिंहने कहा है—हमें यह स्वीकार करना होगा कि हिन्दु बहुमतके भयसे भारतके मुसलमान अखण्ड राष्ट्रीयताके सिद्धान्तको कबूल नहीं करेंगे। इन्हीं वजहोंसे सिख भी मुस्लिम बहुमतको स्वीकार नहीं कर सकते।

सप्रू कमेटीकी आलोचनाके साथ आपने अपना भाषण समाप्त किया।

अन्तर्राष्ट्रीय जगतकी झाँकी

जापान सन्धिके लिये इच्छुक

उच्चपदस्थ अधिकारियों द्वारा सैन-फांसिस्कोमें इस समाचारका समर्थन हो रहा है कि रूसके जरिये गत एक महीनेसे जापान मित्रोंसे सन्धि करनेकी जी-तोड़ चेष्टा कर रहा है। जापानके साथ सन्धिकी प्रस्तावित शर्तें यों बतायी जाती हैं,-१-जापान सिर्फ मुख्य जापान और फारमूसातक अपना हाथ-पाँव सीमित कर ले। (२) थोड़े समयके लिये अपने यहां मित्रोंके सैनिकोंको स्थान दे। (३) व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्विवासे बाज आये। कहा जाता है कि जापानने इन शर्तों-पर विचार करनेके लिये एक महीनेका समय मांगा है। पर मित्र राष्ट्र इतने दिनोंतक उसका विश्वास करनेको प्रस्तुत नहीं मालूम होते।

एडोल्फ हिटलरकी मृत्यु

कुछ दिनोंसे अनधिकृत तौरपर हिटलरके सम्बन्धमें तरह-तरहकी अफवाहें सुननेमें आ रही थीं—जबकि जर्मन रेडियोने एकाएक १ मईको घोषित किया कि मङ्गलवारको तीसरे पहर हिटलरकी मृत्यु हो गयी और उनकी जगह जर्मन नौ सेनाके भूतपूर्व कमाण्डर-इन-चीफ एडमिरल डोयनित्ज जर्मनीके तानाशाह नियुक्त हुए हैं।

मुसोलिनी गोलीका निशाना बना

इटलीके देशभक्तों द्वारा अधिकृत मिलान रेडियोने गत २९ अप्रेलको एलान किया है कि मुसोलिनी और उसके कुछ साथियोंकोदेश-भक्तोंकी आज्ञासे अनुसार गोलीसे उड़ा दिया गया।

स्मरण रहे कि दो दिन पूर्व इसी स्वतंत्र रेडियोने मिलान राष्ट्रोद्धारक कमेटीकी एक विज्ञप्तिकी घोषणा की थी जिसमें कहा गया था कि मुसोलिनीको ठेक कोमोके निकट नोसो नामक स्थानपर देशभक्तोंने गिरफ्तार कर लिया है।

फ्रैंको-विरोधी संगठन

पेरिस रेडियोकी रिपोर्ट है कि फ्रांस स्थित स्पेनके प्रजातन्त्रवादियोंने स्पेनिश रिपब्लिकन फेडरेशनकी स्थापना करनेका निश्चय किया है जिसमें फ्रैंको-विरोधी दलों के नेता संगठित होकर फ्रैंकोके विरुद्ध सुदृढ़ मोर्चा तैयार करेंगे।

आस्ट्रियाकी अस्थाई सरकार

गत २९ अप्रेलको एक रिपोर्टमें मास्को रेडियोने उल्लेख किया है कि चान्सलर कार्ल रेनरके नायकत्वमें आस्ट्रियाको अस्थाई सरकारका गठन हुआ है। डा० रेनर ही पर-राष्ट्र विभागका भी कार्यभार वहन करेंगे। वे सोशल डेमोक्रेट हैं और आस्ट्रियाकी इस प्रजातंत्री सरकारके स्वतन्त्र राष्ट्रीय कौंसिलके अध्यक्ष थे जिसका जर्मन अधिकार

इटलीमें जर्मन-आत्मसमर्पण

मित्रराष्ट्रोंके सदर मुकामसे प्रकाशित एक विशेष विज्ञप्ति द्वारा गत २ मईको घोषित किया गया है कि इटलीकी स्थल, जल और हवाई जर्मन सेनाने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया है। आत्मसमर्पणकी शर्तोंके मुताबिक १२ बजे दिनमें शत्रु सेनायें हथियार डाल देंगी।

मार्शल रण्डस्टेड बन्दी बने

सातवीं सेनाके साथ चलनेवाले रायटर के एक संवाददाताने सूचित किया है कि पश्चिमी मोर्चेके जर्मन सेनाके कमाण्डर-इन-चीफ, फील्ड मार्शल रण्डस्टेड को म्यूनिकसे २५ मील दक्षिण एक अस्पतालमें गिरफ्तार किया गया है।

बर्लिनपर रूसी अधिकार

गत ९ मईको मार्शल स्टालिनने एलान किया है कि बर्लिनपर रूसी सेनाओं पूर्ण अधिकार स्थापित हो गया।

गोमरी-डोयनित्ज मिलन

विश्वसनीय सूत्रोंसे ऐसी रिपोर्टें प्राप्त हुई हैं कि मार्शल माण्टगोमरी और जर्मनीके नये फुहरर, एडमिरल डोयनित्ज कील या ओवेर्न नामक स्थानपर मिल रहे हैं। इस संवादकी अबतक अधिकृत हलकों से पुष्टि न हो सकी है।

जर्मन सेनाका आत्मसमर्पण

फील्ड मार्शल माण्टगोमरीने जेनरल आइसेन होवरको सूचित किया है कि, हालैण्ड, उत्तरी-पश्चिमी जर्मनी और डेनमार्ककी सभी जर्मन सेनाने २१ वीं सेनाके हाथ आत्मसमर्पण कर दिया है। ५ मईके आठ बजे सवेरे आत्मसमर्पण कार्यरूपमें परिणत होनेको है।

लार्ड वावेल

रायटरके कूटनीतिक संवाददाताको अधिकृत तौरपर सूचित किया गयाहैकि लार्ड वावेलने भारत वापस जानेके लिये अबतक कोई विधि निश्चित नहीं की है। अतः उनकी वापिसी यात्राके सम्बन्धमें प्रकाशित रिपोर्टें सभी निराधार हैं।

जापानकी पराजय

जेनरलिस्मो चांगकैशकके भूतपूर्व सेक्रेटरी, कार्नल टामस चू ने एक वक्तव्यमें कहा है कि यदि रूसने उत्तरसे जापानपर चढ़ाई नहीं की तो जापानके पराजित करनेमें ३० महीने लग जायेंगे। रूसके आक्रमणसे जापान-विरोधी युद्धकी लम्बाई १९ महीने कम हो सकती है।

मि० एमरीका पुत्र गिरफ्तार

इटालियन देशभक्तों द्वारा अधिकृत मिलान रेडियोने अपनी एक रिपोर्टमें कहा है कि भारत सचिव मि० एमरीके पुत्र जान एमरीको इटालियन देशभक्तों द्वारा बन्दी

खानोंपर सरकारी अधिकार

प्रेसिडेंट ट्रूमैनने वर्तमान या सम्भावित हड़ताल या मजदूरोंकी अन्य हलचलोंके परिणामस्वरूप गृह सचिव हार्ट्लड आइक्सको एन्थ्रेसाइटकी खानोंको जब्त करनेका आदेश दिया है। गत १ मईसे ही १ लाख ७५ हजार मजदूरोंने पेन्सीलवानियामें काम बन्द कर दिया है।

ब्रिटेन और टर्कीमें समझौता

-ब्रिटेन और टर्कीके बीच गत ४ मईको ब्रिटेनके परराष्ट्र विभागके दफ्तरमें एक व्यापारिक समझौतेपर हस्ताक्षर किया गया।

आस्ट्रियाकी नयी सरकार

अमेरिकाके स्थानापन्न परराष्ट्र सचिव, मि० जासेफ सी०ग्रीउने अपनी घोषणामें कहा हैकि आस्ट्रियाकी वर्तमान सरकारको,जिसका रूस ने समर्थन किया है, अमेरिकन सरकार नहीं मंजूर करती। आपने आगे बताया है कि आस्ट्रियन मामलोंके सम्बन्धमें सोवियट सरकारसे आवश्यक परामर्श जारी है।

व्यापार समाचार

सोना चांदी

सोना पाटला ७४), गिन्नी ५०।), सोना हथौव ७५।, सोना तारा ७४॥), चांदी सील १२९॥)

चपड़ा

केमन छपरफाइन ७७), आर्डिनरी छपरफाइन ७५), स्टण्डर्ड वैन ७३), टी०एन० रेडी ७१), १२ परसेण्ट टी० एन० ७०), आई० टी० एन० ७०), नं० २ कुसमी ६४), बैसाखी ९३), लाक न्यू आसाम ४४),

हैसियन

४०"—८ औंस 'बी०' रेडी २२=) मई-जून २२≈) जुलाई-सितम्बर २१=) ४०"—१० औंस 'बी'—रेडी २७॥) मई-जून २७=) जुलाई-सितम्बर २६॥) बी० ट्विल्स २. पौण्ड—रेडी ६२॥) मई-जून ६१॥) जुलाई-सितम्बर ५९॥)। लिवरपुल रेडी ७०॥) मई-जून ७०) जुलाई-सितम्बर ६९॥)। डी० डब्ल्यू० फ्लावर्स—रेडी ७४) मई-जून ७३) जुलाई-सितम्बर ७१॥)

जूट बोरा हैसियन

वीट्वील खुला - ६२॥) ५४॥) ऊंचा ६२॥) ५४॥-) नीचा ६१।) ५८॥=) बन्द हुआ ६२-) ५८=)

जूट—खुला ७७॥) ऊंचा ७७॥=) नीचा ७७≡)॥। बन्द हुआ ७७)

गल्ला

काही बड़ा दाना यू० पी० १६) सेती यू० पी० १८॥) छोटनी यू० पी० १७॥) गज्बर यू० पी० १७॥) राई तोरा यू० पी० १९॥।) कजली यू० पी० १६) कजली सी० पी० १६) छोटनी पंजाब १७) राई पंजाब १६।-) सोरा पंजाब १६॥) राई सिन्ध १४॥) तोरा सिन्ध १९।) सेती सिन्ध १६) महुआ बीची १३॥) पोस्तादाना २८।) तिल सफेद १७) अरहर बिहार १०)अरहर बङ्गाल ९॥) चना मोकामा ९।) चना बङ्गाल ८॥)

१०॥) हरा ११) पैग ८) उड़द उर्दहरा १०) मूंग कानपुर ११) भिवानी १२।) दाल धोआ १६॥) पंजाब १२।) अरहर दालनं० १, हर दाल नं० २, १४) रेड़ी डब्ल्यु १४।) रेड़ी भागलपुर १४॥) पटना १०॥।) मसूरी छांटी १५॥) १०) खेसारी बङ्गाल ७॥-) बड़ा दाना खेसारी छोटा दाना ८॥) जौ मोटा ७) जौ पतला दाना ५) ज्वार ज्वार लाल ५) बाजरा काला ९॥) सफेद ४॥।) मोठ ९) ९॥) मकई ८॥)

विश्वामित्र

THE VISHWAMITRA

२८—२० कलकत्ता १४, मई, १९४५ Calcutta, MAY 14, 1945. मूल्य दो आना ; वार्षिक

युद्ध नेता

स्टालिन

चर्चिल

रूजवेल्ट

—* युद्ध विजेता *—

मार्शल जुकोव

फील्ड मार्शल माण्टगामरी

जेनरल आइसेन होवर

जर्मन मन्त्रीका जर्मन राष्ट्रको आह्वान

यूरोपीय युद्धकी पूर्णाहुति

मित्र राष्ट्रोंने ७ मईको सरकारी तौरसे यह घोषणा की कि जर्मनीने बिना शर्त आत्मसमर्पण कर दिया है। कई दिनोंसे जर्मनीके आत्मसमर्पणकी जो चर्चा चल रही थी, अन्तमें वह पूरी हुई और रीम्सके ७ मई के तारसे मालूम हुआ है कि जेनरल आइजेन हावरके सदरवाले कमरेमें आत्मसमर्पण-पत्रपर जर्मनीके सैनिक दफ्तरके नये अध्यक्ष जेनरल गुस्टाव जोडलने जर्मनीकी ओरसे सही की है। मित्रराष्ट्रोंकी ओरसे जर्मनी के बिना शर्त आत्मसमर्पणकी घोषणा सरकारी तौरपर होनेके पहले जर्मन फ्लैंसबर्ग रेडियोने यह घोषित किया था कि एडमिरल डोनिजने सभी लड़नेवाली जर्मन सेनाओंको बिना शर्त्त आत्मसमर्पणका आदेश दिया है। नये जर्मन परराष्ट्र मन्त्री क्रोजिकने जर्मन जनताको सम्बोधित कर आत्मसमर्पणका कारण बताते हुए कहा है कि युद्धको जारी रखनेसे व्यर्थ ही और खूनखराबी होगी। इस तरह कोई पौने छः वर्षके पश्चात् यूरोप का यह महायुद्ध समाप्त हो रहा है। इस युद्धाग्निकी पूर्णाहुतिके पहले जैसा भीषण नरसंहार हुआ है, उसकी पीड़ा तो वास्तवमें तब अनुभव होगी, जब लोग सोचने-विचारनेको बैठेंगे। जर्मनी और रूसके बीच ही सबसे भयङ्कर संग्राम हुए हैं, इसलिये इन्हींके सैनिक अत्यधिक संख्यामें हताहत हुए हैं—दोनोंके डेढ़-डेढ़ करोड़ सैनिक मारे गये हैं और न-जाने कितने अङ्गहीन हो चुके हैं। अमरीकाके हताहतोंकी संख्या भी लाखोंतक पहुंची है और यूरोपकी लड़ाईमें शायद सबसे कम सैनिक ब्रिटेनके मारे गये हैं, पर उसके उपनिवेशों और अधीन देशोंके सैनिकोंकी गणना करनेसे उसकी जनहानि भी काफी बड़ी मालूम पड़ेगी। पर युद्धके आरम्भसे ही जर्मनोंने इङ्गलैंडपर जैसी अंधाधुन्ध बमवर्षा की और पीछे 'वी' तथा 'राकेट' आदिके जैसे धुआंधार आक्रमण अभी थोड़े दिन पहले तक होते रहे, उनसे उसके नगरों, ग्रामों आदिकी भीषण बर्बादी हुई है, वह केवल रूसकी बर्बादीकी तुलनामें कम भीषण होगी। इधर पूर्वी जर्मनी और बर्लिनकी बर्बादी भी इस युद्धकी भीषणताका एक खास अध्याय होगी। सरकारी तौरपर आत्मसमर्पणकी घोषणाके पहले लन्दन, मास्को और वाशिंगटनके बीच रेडियो द्वारा खूब वार्तालाप चलता रहा है, इसलिये आशा है कि तीनों मित्रोंकी रायके अनुसार जर्मनीका आत्मसमर्पण हुआ है। जर्मनोंने सोवियट रूस एवं उसके पश्चिमी दोनों मित्रों के विरुद्ध सन्देह पैदा करनेके लिये पग पगपर प्रयत्न किया और लन्दनके कूटनीतिक हल्कोंका ख्याल है कि कुछ अंशतक रूसियों को पश्चिमकी घटनाओंके विषयमें बेचैन बनानेमें सफल भी हुए हैं। यूरोपमें युद्धकी पूर्णाहुति वास्तवमें तभी समझी जायेगी जब आत्मसमर्पणके ... की या अन्य किसी

(शेष ... कालममें)

लन्दन, ७ मई। जर्मन फ्लेन्सबर्ग रेडियोने आज यह रिपोर्ट दी है कि जर्मनीके नये फुहरर एडमिरल डोनिजने लड़नेवाली सभी जर्मन सेनाओंके बिना शर्त्त आत्मसमर्पणकी आज्ञा दी है। रेडियोने कहा—"यह जर्मन रेडियो है। अब हम रीकके मिनिस्टर काउण्ट वोन श्वेरिन क्रोजिकका जर्मन जनताके नाम व्याख्यान ब्राडकास्ट कर रहे हैं—जर्मन पुरुषो और नारियो, सशस्त्र सेनाओंके प्रधान कमांडरने आज ग्रैण्ड एडमिरल डोनिजके आदेशपर, सभी युद्धरत जर्मन सेनाओंके बिना शर्त्त आत्म-समर्पणकी घोषणा की है। युद्ध विषयक कार्योंकी व्यवस्थाके लिये नौ-सेनाके एडमिरल द्वारा नियुक्त रीक गवर्नमेण्टके प्रधान मिनिस्टरके नाते इतिहासके इस शोकपूर्ण क्षणमें मैं जर्मन राष्ट्रकी ओर देखता हूं। लगभग छः वर्षोंकी बेजोड़ कठोरताके वीरतापूर्ण संग्रामके पश्चात् जर्मनीको अपने शत्रुओंकी अत्यधिक शक्तियोंके सामने सिर झुकाना पड़ा है। युद्ध जारी रखनेका अर्थ केवल मूर्खतापूर्ण रक्तपात और निरर्थक छिन्न-भिन्नता होगा। जो गवर्नमेण्ट राष्ट्रके भविष्यके लिये अपने दायित्वको समझती है, उसे सभी भौतिक और शारीरिक शक्तियोंका पतन हो जानेपर शत्रुसे लड़ाई बन्द करनेकी मांग करनेके लिये लाचार होना पड़ा है।

"नौसेनाके एडमिरल और उनका समर्थन करनेवाली गवर्नमेण्टका युद्धमें भयङ्कर हानियां सहनेके बाद यह सर्वश्रेष्ठ कार्य है कि युद्धके अन्तिम चरणमें अपने देशके अधिकसे-अधिक आदमियोंकी जानें बचा लें। पूर्व और पश्चिममें जो तुरन्त और एक साथ ही युद्धका अन्त नहीं किया गया, उसका भी हेतु केवल यही समझना चाहिये। हम जर्मन राष्ट्र और उसकी रीककी अत्यन्त सङ्कटपूर्ण घड़ीमें इस युद्धमें मरे लोगोंके समक्ष गहरे आदरके साथ अपना सिर झुकाते हैं। उनके त्याग हमारे ऊपर बड़ेसे-बड़े कर्त्तव्य-भार छोड़ते हैं। सबसे अधिक हमारी सहानुभूति घायलों, शोकसन्तप्तों तथा उन सबोंकी ओर जाती है, जिनके ऊपर युद्धके प्रहार हुए हैं।

"हमारे शत्रुओं द्वारा जर्मन जनतापर जो शर्त्तें लादी जायेंगी, उनकी कठोरताके सम्बन्धमें किसीको किसी प्रकारके धोखेमें नहीं रहना चाहिये। हमें अपने भाग्यका सामना ठीकसे और बिना ननुनचके करना चाहिये। किसीको इसमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं हो सकता कि भविष्य हममेंसे प्रत्येकके लिये कठिन होगा और जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें हमसे त्याग करायेगा। हमें यह भार स्वीकार करना चाहिये और जो कर्त्तव्य-भार ग्रहण किया है, उसे निष्ठापूर्वक पालन करना चाहिये। लेकिन हमें हताश नहीं होना चाहिये और न चुपचाप ईश्वरेच्छापर अपनेको छोड़ देना चाहिये। एक बार फिर हमें अन्धकारमय भविष्यके बीच लम्बे डगसे मार्गपर चलना चाहिये। अतीतके पतनसे हमें एक वस्तु—ऐक्यकी रक्षा करनी चाहिये और उसे बनाये रखना चाहिये।

"हमारे राष्ट्रके भीतर न्याय प्रधान कानून और मार्गदर्शक सिद्धान्त होगा। हमें विभिन्न राष्ट्रोंके मध्य सभी सम्बन्धोंका आधार भी कानूनको ही मानना चाहिये।

"हमें इसे अवश्य स्वीकार करना चाहिये और अन्तःकरणसे इसकी प्रतिज्ञा करनी चाहिये। सन्धियोंका सम्मान करना हमारे लिये वैसा ही पवित्र होगा, जैसा कि हमारे राष्ट्रका यूरोपीय राष्ट्रमंडलमें उसके एक सदस्यकी भांति मिलनेका लक्ष्य। हम यूरोपीय राष्ट्रोंके इस परिवारसे यह चाहते हैं कि वह सभी मानवीय नैतिक और भौतिक शक्तियोंको इसलिये सङ्गठित करे, जिससे वे घाव भरे जायें, जो युद्ध द्वारा पैदा किये गये हैं। तभी हम यह आशा कर सकते हैं कि घृणाके इस वातावरणके स्थानपर, जो आज संसारभरमें जर्मनीको घेरे हुए है, राष्ट्रोंमें पुनः मेलकी भावना पैदा होगी, जिसके बिना संसार पुनः स्वस्थ नहीं हो सकता। तभी हम यह आशा कर सकते हैं कि हम पुनः स्वतन्त्रता लाभ करेंगे, जिसके बिना कोई राष्ट्र सह्य और मर्यादाका अस्तित्व नहीं रख सकता। आइये हम अपने राष्ट्रके भविष्यको अपने अन्तःतम और जर्मन आत्माकी सर्वोत्तम शक्तियोंके ध्यानमें लगायें, जिन्होंने संसारको टिकाऊ महान् कृतियां और मूल्यवान् वस्तुएं दी हैं।

"अपने राष्ट्रके वीरतापूर्ण संग्राममें अपने अभिमानके साथ आइये हम ईसाई पश्चिमी सभ्यताके संसारके एक राष्ट्रकी भांति ईमानदारीसे शांतिके कामकी वृद्धि करनेके अपने दृढ़ निश्चयको जोड़ दें, जो हमारे राष्ट्रकी सर्वोत्तम परम्परागत कथाओंके योग्य होगा। भगवान् हमारे उद्योगोंमें हमारा साथ न छोड़ें। परमात्मा हमारे महाकठिन कार्योंमें हमें आशीर्वाद दें।"

जर्मन आत्मसमर्पण

गत ४ मईकी रातको एक ... संवाददाताने ब्राडकास्ट करते हुए ... की कि फील्ड मार्शल मांटगोमरीके ... परके १० लाखसे अधिक जर्मनोंने ... समर्पण कर दिया। संवाददाताने ... कि १९१८ की सन्धिके बाद यह ... जर्मन आत्मसमर्पण था। गत ४ मईको ... समय ६ बज कर २५ मिनट पर ... द्वितीय सेना तथा कनाडियन प्रथम सेना ... सामना करने वाली जर्मन जल, स्थल ... वायु सेनाओंकी ओरसे जर्मन नौसेना ... कमांडर-इन-चीफ जेनरल एडमिरल ... फ्रायडबर्गने बिना शर्त आत्मसमर्पण ... हस्ताक्षर कर दिया। मित्र कमांडर इन-चीफ जेनरल आइसनहोवरकी ओरसे फील्ड मार्शल मांटगोमरीने हस्ताक्षर किया। हस्ताक्षर क्रिया एक ऐसे शिविरमें सम्पन्न हुई, ... इसी कार्यके लिये तैयार किया गया ... यह उस डोनिज सरकारके कायम ... बाद प्रथम जर्मन आत्मसमर्पण है, जो ... बरत रूपसे सोवियट सरकार तथा ... मित्रोंके सामने आत्मसमर्पण करना ... कार करती रही है। कहा जाता है ... जर्मनीकी ओरससे श्वेतकेतु दिखाने वाले ... जेनरलका नाम व्लुमेण्ट्रेट है।

जर्मन सैनिक अधिकारियोंने ... समर्पण करते हुए कहा कि रूसियोंके ... उन्हें बहुत चिन्ता हो रही है और ... वे ब्रिटिश तथा अमेरिकन सेनाके ... आत्मसमर्पण करना चाहते हैं। फील्ड ... मांटगोमरीने कहा कि चूंकि ये जर्मन ... रूसके विरुद्ध लड़ रही थीं, इसलिये ... रूसके सामने ही घुटने टेकने होंगे। यह ... जानेपर कि क्या जर्मन रूसके सामने ... समर्पण करनेको प्रस्तुत हैं, जर्मनोंने कहा ... नहीं।'

जब मांटगोमरीने आत्मसमर्पणकी ... सुना दीं तो एक-एक करके जर्मन ... धिकारियोंने सुलहनामेपर दस्तखत कर ... अन्तमें जेनरल मांटगोमरीने जेनरल ... होवरकी ओरसे हस्ताक्षर किया। इस ... कुल ५ मिनटमें यह कार्रवाई समाप्त हुई ...

एडमिरल डोनिट्ज़की घोषणाके ... स्वरूप यह सम्भव ज्ञात पड़ता है कि ... मार्शल अर्नेस्ट बानस्कोरनर जेकोस्... किया स्थित सैनिकोंको जनरल ... तृतीय सेनाके हाथ आत्मसमर्पण ... आदेश देंगे। रूसियोंके समक्ष जर्मन ... यार नहीं डालेंगे।

(पहले कालमका शेषांश)

बातसे सोवियट रूस और उसके ... मित्रोंमें फूट न पैदा हो, क्योंकि ... होनेका एकमात्र परिणाम और भी ... संहारकारी युद्धके रूपमें सामने आ ... है। परमात्मा अब भी सबोंको ... और वे फासिस्टवाद और नाजीवाद ... करनेके बाद उस घृणित साम्राज्यवाद ... अन्त उन्हीं हाथों कर डालें, जिसके ... ही संसारमें सदा युद्ध होते देखे गये हैं।

…र [हे]त बस जिनके मनमाहीं ।
[ति]न कहं जग दुलंभ कछु नाहीं ॥

अब, विजयके बाद ?

——:*:——

भारतीय विचार-धारा, मनोवृत्ति और …कार शेष संसारसे सदा भिन्न रहे हैं; …ज भी हैं। हमें इस बातसे प्रसन्नता है … यूरोपका युद्ध समाप्त हो गया, फासिस्ट- …का एक उद्दण्ड दुर्ग ध्वस्त हो गया । किंतु …के साथ ही एक महान राष्ट्रके पतनका …भी है। पाश्चात्य सभ्यताका यह अभि-…है। दूसरेको दबाकर, पराजित कर …की श्रेष्ठता और महानताका आतङ्क …ना उसका सहज स्वभाव और धर्म बन …है। जार, नेपोलियन और हिटलर उस …भाव-धर्मके विस्फोट हैं। चर्चिल, स्मट्स …डिगाल उसके सकीर्ण और संकुचित …नु भयङ्कर फुफकार हैं। इस सभ्यताके …भाव-धर्ममें जबतक आमूल परिवर्तन नहीं …गा, तबतक इस इतिहासकी पुनरावृत्ति …इससे भयङ्कर रूपमें होती रहेगी। इन …के विजयों और पराजयोंसे संसारका …य-परिवर्तन होगा, यह समझना भूल है।

महात्मा गांधीने श्रीमती रूजवेल्टके प्रति …दना प्रकाशके लिये जो संदेश भेजा था …उन्होंने स्पष्ट कहा है कि यह शांति इससे …के भयङ्कर युद्धका पूर्वाभास है। संदेशमें …उन्होंने कहा है कि "आपको मेरी विनम्र …वेदना और बधाई। बधाई इसलिये कि …के महान पतिकी मृत्यु कर्मक्षेत्रमें उस …समय हुई जब यह इस स्थितिमें पहुंच गया … मित्र विजय संदेहके परे हो गयी थी। …ने उनको उस शान्तिमें हिस्सा … असमानजनक हृदयसे बचा लिया जो … अधिक रक्त बहानेवाले युद्धकी पूर्व … बनने जा रही है।" यद्यपि अमेरि-… वाशिंगटन स्थित राष्ट्रसचिवने श्रीमती …की ओरसे गांधीजीके समवेदना-…के प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करते … कहा है कि श्रीमती रूजवेल्ट पूर्ण …करती हैं कि 'शांतिके स्वरूपके संबंध …के भय निराधार होंगे,' किन्तु हम …देख रहे हैं कि श्रीमती रूजवेल्टकी …भी निराधार साबित होगी। हमारे …के पुष्ट कारण हैं। जो मित्रराष्ट्र … विनाश साधनमें एकमत थे, विजय …बाद उनमें ही मतैक्य नहीं दिखायी … विजयके बाद शांतिके स्वरूपके … ब्रिटेन, अमेरिका और रूसमें मतैक्य … यह उस समय स्पष्टतर हो जाता … हम देखते हैं कि विजयोपलक्षमें … महान राष्ट्रोंके नेता एक सम्मिलित … नहीं दे सके। मि० चर्चिल और … ट्रूमैनने अपने-अपने राष्ट्रकी तरफ … वक्तव्य दिया है। मार्शल स्टालिन … चुप्पी साधे हुए हैं। इसका क्या कारण है ? क्या यह पृथक वक्तव्य देना और मार्शल स्टालिनका मौन साधन इस बातकी पुष्टि नहीं करता कि ये तीनों राष्ट्र विजयको 'जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरति देखी तिन तैसी' के अनुसार अपने-अपने दृष्टि-कोणसे शान्तिमें परिणत करना चाहते हैं ?

विजयके बाद पूंजीवादी+साम्राज्यवादी ब्रिटेन अपने वैध और अवैध तमाम स्वार्थों को कायम रखना चाहता है। व्यवसायवादी अमेरिका चाहता है कि विजयके फलस्वरूप राष्ट्रोंका पुनर्संगठन इस प्रकार हो कि उसके व्यावसायिक स्वार्थोंमें कोई बाधा न पहुंचे। भले ही इससे अन्य राष्ट्रोंका निजी विकास और उन्नति खतरेमें पड़े। अतः अपना औद्योगिक साम्राज्यवाद बनाये रखनेके लिये उसे ब्रिटेनके राजनीतिक और भौगोलिक साम्राज्यवादका समर्थन करना ही पड़ेगा। रूस इस स्थितिको कभी बर्दाश्त नहीं कर सकता। उसकी आर्थिक प्रणाली ब्रिटेन और अमेरिकाके आर्थिक सिद्धांतोंके भग्नावशेषपर स्थित है। पूंजीवादका गला घोंटकर समाजवादी आर्थिक सिद्धान्त कायम हुआ है। संसारके प्रायः सभी स्वतंत्र राष्ट्र, रूसको छोड़कर, पूंजीवादी व्यवस्थाके कायल हैं। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक है कि विश्वशांति सम्मेलन में रूसकी एक नहीं चलेगी। तब यदि रूस यह चाहता हो कि इस रक्त अर्जित विजयको वह अपनी स्थिति पुष्ट करनेके काममें लगाये और जिन-जिन देशोंको उसने अपने बाहुबलसे जीता है वहां पूंजीवाद और साम्राज्यवादको प्रोत्साहन देनेवाली व्यवस्थाको नष्ट-भ्रष्ट करके उनकी जगह समाजवादकी सहायक व्यवस्था प्रवर्तित हो तो यह बिलकुल स्वाभाविक है। मित्र राष्ट्र, कमसे कम ब्रिटेन, शक्ति रहते सहज ही रूसकी अभिलाषाको पूर्ण होने देंगे, यह सम्भव नहीं है। यही कारण है कि सैन फ्रैंसिस्कोसे प्रस्थान करते समय रूसके परराष्ट्र सचिव मो०मोलोटोवने ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० इडेन, अमेरिकाके राष्ट्र सचिव मि०स्टेटीनियस और चीनके परराष्ट्र सचिव डा० वेलिंगटन कू को यह बता दिया कि 'रूसके लिये युद्ध तबतक समाप्त न होगा जबतक संसारसे फासिज्म और अत्याचारकी तमाम शक्तियोंको निश्चिन्ह न कर दिया जायगा। मो०मोलोटोवका यह वक्तव्य रायटरको सोवियट प्रतिनिधि मण्डलके अन्तरंग सूत्रसे मालूम हुआ है। मो० मोलोटोवका यह वक्तव्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। और शान्तिके भावी स्वरूपके सम्बन्धमें प्रकट की गयी महात्मा गांधीकी आशङ्काको सोवियट प्रतिनिधि मण्डलके सदस्योंका यह कथन स्पष्ट साकार कर देता है कि "यद्यपि लाल सेना अभी कुछ समयतक यूरोपके प्रदेशोंकी रक्षाके काममें सम्पूर्णतया व्यस्त रहेगी तथापि किसी भी आकस्मिक घटनाका, उदाहरणार्थ उसके सुदूर पूर्वीय फ्रण्टियरोंपर सोवियट यूनियन की शान्ति और सुरक्षाको खतरा उत्पन्न करनेवाली घटनाका, सामना करनेके लिये वह पूर्ण तैयार है।"

स्थिति सचमुच बड़ी भयंकर है। सोवियट प्रतिनिधि मण्डलका यह वक्तव्य यद्यपि जापानको उद्देश्य करके दिया गया है किन्तु प्रकारान्तरसे ब्रिटेन और अमेरिकाको भी इस बातकी चेतावनी दी गयी है कि रूस अब भी दो मोर्चोंमें लड़नेकी क्षमता रखता है। यूरोपमें यदि रूसकी व्यवस्थामें किसीने हस्तक्षेप करनेकी चेष्टा की तो रूस उसे बर्दाश्त न करेगा। अधिकृत यूरोपके सम्बंधमें यालटामें जो समझौता हुआ था। रूस उस समझौतेको अपनी दृष्टिसे देखता है। यह पोलैंड और आस्ट्रियाके मामलेसे स्पष्ट है। इसी तरह जर्मनीके अधिकृत भागमें भी वह अपने दृष्टिकोणसे काम लेगा; यह समझा जा सकता है। इस मामलेमें वह किसीकी आपत्तिकी रंच मात्र परवाह करेगा, यह विश्वास नहीं होता। यूरोपके इस युद्धने यह बात साबित कर दी है कि रूस आज यूरोपकी सबसे जबर्दस्त फौजी ताकत है। अतः विजयका बड़ा हिस्सा वह लेगा। किसीकी बाधा माननेकी स्थितिमें वह नहीं है। बर्लिनमें शीघ्र जर्मन सरकार स्थापित करके जर्मनीको समाजवादी बना डालनेकी रूस चेष्टा करेगा। अन्य अंचलोंमें स्थापित मित्र राष्ट्रीय सरकारें या तो टुकुर-टुकुर देखा करेंगी या फिर 'युद्धं देहि' की स्थिति उत्पन्न होगी। पिछली बातकी ही संभावना अधिक है।

विजयका यह रूप यूरोपमें दिखायी दे रहा है। इधर, एशियायी और अफ्रीकन राष्ट्रों की स्थितिमें कोई परिवर्तन होगा, अभी तक ऐसा कोई संकेत नहीं मिला। अतः यह विजय परतन्त्र राष्ट्रोंके लिये कोई अर्थ नहीं रखती। प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनने अपने विजय-सन्देशमें इस बात पर प्रसन्नता प्रकट की है कि यूरोपमें सर्वत्र स्वतन्त्रताकी पताका फहरा रही है। हालांकि इस बातकी कोई गारण्टी नहीं है कि पुनः यह स्वतन्त्रताकी पताका युद्ध पताकाका रूप न धारण करेगी। इसके सिवा जिस भावनासे प्रेरित होकर स्वर्गीय प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने संसारके सामने चतुर्मुखी स्वतन्त्रताका मधुर स्वप्न उपस्थित किया था उस स्वप्नका क्या होगा ? प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनने तो अपने विजय सन्देशमें एशिया, अफ्रीका और प्रशान्त अंचलकी स्वतन्त्रताका नाम भी नहीं लिया। इधर, मि० चर्चिल, जो कुछ है उसे बनाये रखने और जो कुछ मिल जाय उसे हड़प बैठनेको तुले बैठे हैं। वह वे जानते हैं कि रूसकी प्रचण्ड सैनिक शक्तिके सामने यूरोपमें ब्रिटेनकी दाल न गलेगी। अतः ध्वस्त-विध्वस्त ब्रिटेनका आशा सम्बल ऐशिया और अफ्रीका ही है। यह जानते हुए भला प्रेसिडेण्ट ट्रूमैन अपने वक्तव्यमें एशिया और अफ्रीकाकी स्वतन्त्रताका जिक्र कैसे करते ? तब इस विजयसे अपनी स्थितिमें कोई अन्तर न होते देख भारतवर्ष एवं इस अंचल के अन्य देश कैसे विजयोल्लसित होते ? इस भावनाको श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितने कितने सुन्दर और सुस्पष्ट रूपमें उपस्थित किया है : "मित्र विजयका समारोह मनाने का एकमात्र उपयुक्त ढंग यह होना चाहिये कि यहां (सैन फ्रांसिस्कोमें) एकत्रित विश्व राजनेता ईमानदारीके साथ स्थायी शान्ति लानेका प्रयत्न करें। शान्ति तभी आयेगी जब अन्तर्राष्ट्रीय न्यायके सिद्धांतोंको स्वीकार … स्वतन्त्रता द्वारा कार्यान्वित किया जावेगा। यह भू-व्यापी युद्ध इस बातकी स्पष्ट शिक्षा देता है कि अब यह संसार अर्द्ध-स्वतन्त्र और अर्द्ध परतन्त्र नहीं रह सकता।" इस भू-व्यापी युद्धसे हमारे गौराङ्ग प्रभु शिक्षा ग्रहण करेंगे, इसकी आशा कम दिखायी देती है। किन्तु यह भी सत्य है कि अब यह संसार अर्द्ध-स्वतन्त्र और अर्द्ध-परतन्त्र नहीं रह सकता। ऐसी स्थितिमें इस विजयका अति भयंकर तृतीय महा युद्धकी पथ प्रदर्शिका बनना ही संभव और स्वाभाविक है। अतः अब विजयके बाद होगी तीसरे महायुद्धकी तैयारी

हिटलरकी मृत्युपर—

जबतक साधिकार यह घोषणा नहीं होती कि हिटलर जीवित हैं तबतक अधिकारी व्यक्ति एडमिरल डोनिजकी इस घोषणा को ही सत्य समझना पड़ेगा कि १ मईको हिटलर युद्ध संचालन करते हुए वीर गतिको प्राप्त हुए। शत्रुताका धर्म जीवित अवस्था तक ही पालन किया जाना चाहिये। यही मानव धर्म है। आयरलैण्डके स्वतंत्र चेता और निर्भीक प्रधान मन्त्री डि वेलरा भी इसी आदर्शको माननेवाले हैं। हिटलरकी मृत्युका समाचार सुननेपर डि वेलराने डबलिन स्थित जर्मन मिनिस्टरके यहां जाकर हिटलरकी मृत्युपर शोक प्रकट किया। कामन सभामें एक प्रश्नके उत्तरमें उप-उपनिवेश सचिव मि० इमरीस डेवीजने कहा कि 'ब्रिटिश सरकार डि वेलराके इस कार्यका प्रतिवाद नहीं करेगी। उनके इस कार्यके फलस्वरूप इस देशमें एवं सभी सम्मिलित राष्ट्रोंमें जो विश्वव्यापी रोषकी लहर उठी है उसे महसूस करनेको डि वेलराको यों ही छोड़ दिया जाना चाहिये।' ईसाई सभ्यताके पोषकोंके मुंहसे इस तरहके प्रश्नोत्तर शोभनीय नहीं। ईसा महाप्रभुने कहा है कि 'पापसे घृणा करो, पापीसे नहीं।' आज स्थिति बिलकुल भिन्न है। आज तो पापीसे घृणा की जाती है, पापसे नहीं।

ये देशभक्त व्यवसायी—

हमारे देशके पूंजीपति और उद्योगपति देशके प्रति कैसा आचरण कर रहे हैं यह महात्मा गांधीके इस वक्तव्यसे बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि "बड़े-बड़े व्यवसायी, पूंजीपति, उद्योगपति एवं अन्य लोग बोलते और लिखते हैं सरकारके विरुद्ध, किन्तु करते वही हैं जो सरकार चाहती है और इस तरहके आचरणसे वे लाभ भी उठाते हैं। हालांकि सरकारके ९९ प्रतिशत लाभके मुकाबले उनके हाथ पांच प्रतिशत ही पड़ता है।" इतने थोड़े शब्दोंमें भारतके व्यवसायी समाज का बिलकुल सच्चा और नग्न चित्र खींचकर महात्मा गांधीने रख दिया है। आगे चलकर अपने इसी वक्तव्यमें, जो भारतसे इंगलैण्ड और अमेरिका जानेवाले गैर सरकारी औद्योगिक शिष्ट मण्डलके सम्बन्धमें दिया गया है, गांधीजीने कहा है कि "इस स्थिति में उज्वल स्थल इतना ही है कि तमाम बड़े-बड़े व्यवसायी एक स्वरसे यह घोषणा करते हैं कि 'हिन्दुस्तान अपना भाग्य-निर्णय करनेके लिये ब्रिटिश एवं अन्य तमाम नियन्त्रणोंसे मुक्त स्वनिर्वाचित राष्ट्रीय सरकारसे …

मांगनेहीसे नहीं मिल जायेगी। स्वतन्त्रता तभी आयेगी जब सब स्वार्थ, बड़े हों या छोटे, उन टुकड़ोंको छोड़नेके लिये तैयार होंगे जो ब्रिटिश शासन रूपी भारतकी लूटमें अंगरेजोंके साथ हिस्सेदारीसे उनके सामने गिरते हैं। मौखिक प्रतिवादोंका इस समय तक कोई मूल्य नहीं है जब तक यह हिस्सेदारी बेरोक जारी है।" स्वराज्य और स्वतन्त्रताके सम्बन्धमें जबानी जमाखर्च करनेवाले भारतीय उद्योगपति और पूंजीपति यदि आज भारतकी लूटमें सिर्फ पांच प्रतिशत लाभके लिये अंगरेजोंका साथ दे सकते हैं तो लूटमें अधिक हिस्सा मिलनेका आश्वासन मिलते ही यह लूट जारी रखनेमें ये सहायक न होंगे, इस पर कोई मूर्ख ही विश्वास कर सकता है। इसीसे हमने गताङ्क में "भारतीय उद्योग धन्धे" शीर्षक अपनी टिप्पणीमें यह कहा था कि भारतको अपने देशी और विदेशी दोनों शोषकोंसे देशको मुक्त करनेके लिये तैयार होना चाहिये।

बिड़लाजीको गांधीजीका जवाब—

महात्मा गांधीके उक्त वक्तव्यको समाचार पत्रोंमें पढ़कर देशके पूंजीपति तिलमिला उठे। उनको विश्वास नहीं हुआ कि गांधीजी भी उन्हें देशको लूटनेवाले गरोहका टुटपुंजिया हिस्सेदार समझते हैं। अपने भ्रम निवारणार्थ श्री घनश्यामदास बिड़लाने गांधीजीको एक तार दिया। तारमें उन्होंने लिखा था कि मैं अत्यन्त मर्माहत हुआ हूं और यह विश्वास नहीं कर सका कि मेरी, टाटा और कस्तूर भाईकी सद्भावना पर, जिनको आप अच्छी तरह जानते हैं, आपने खुल्लमखुल्ला अविश्वास प्रकट किया है...बिना अच्छी तरह समझे-बूझे किसी मामलेमें आप अपनी राय नहीं देते। ऐसी अवस्थामें निश्चय ही आपके इस वक्तव्यका यह मतलब निकाला जायेगा कि आपने हमारी नीयतकी जोरदार निन्दा की है।" आशा है कि गांधीजीके उत्तरसे बिड़लाजी एवं उनके साथियोंकी भ्रान्ति दूर हो गयी होगी और वे इस उत्तरके प्रकाशमें अपनेको समझनेकी कोशिश करेंगे। गांधीजीने बिड़लाजीको लिखा : "इस तरहका वक्तव्य देनेकी आवश्यकता थी। यह जल्दबाजीमें प्रकट की गयी सम्मति नहीं है। वक्तव्यमें मेरे सदाके विचार व्यक्त किये गये हैं। बुभुक्षित और नग्न भारतके रूपमें तुम्हें मेरा आशीर्वाद और प्रार्थना।" धन्य हो गांधीजी!

महात्माजीकी प्रशंसा—

बर्नार्ड शा संसारके दार्शनिकोंमें अपनी निर्भीकता और खरी समालोचनाके लिये प्रसिद्ध हैं। सर फिरोज खां नूनके इस कथन पर कि गांधीजीकी राजनीति समयसे ५०वर्ष पीछे है बर्नार्ड शा ने कहा कि "उनके कार्य-कलापों और कौशलोंमें, अन्य तमाम कार्य-कौशलोंकी भांति, भूल और संशोधनकी गुञ्जाइश हो सकती है किन्तु उनकी रणनीति आज भी इतनी स्वस्थ और पुष्ट है जितनी ५० अथवा ५० लाख वर्ष पहले थी।" सर फिरोजके इस सुझावके जवाबमें कि गांधीजीको अपनेसे कम उम्रवालेके पक्षमें अब अवसर ग्रहण कर स्वाभाविक है सरकारी नहीं।" सर फिरोज खां के तीसरे सुझावके सम्बन्धमें कि कांग्रेस-पार्टीका नेतृत्व गांधीजीको पंडित नेहरूके हाथोंमें सौंप देना चाहिये बर्नार्ड शा आगबबूला हो गये। उन्होंने कहा कि महात्मा कोई चीज हस्तान्तरित नहीं कर सकते। नेतृत्व तम्बाकू की चिलम नहीं है जो एकसे दूसरेके हाथमें बढ़ायी जा सके। पंडित नेहरू जिनको इस समय अपमानपूर्ण और कायरता जन्य कारावास द्वारा असमर्थ और अक्षम बना रखा गया है, स्वयं बहुत विशिष्ट और प्रसिद्ध नेता हैं, जिनकी प्रभा किसी कदर गांधीजीसे कम नहीं हैं।" और यह कह कर अन्तमें अपने सहज स्वाभाविक ढंगसे बर्नार्ड शाने कहा— "किन्तु मुझे इन सब बातोंसे क्या मतलब। मैं तो भारतीय नहीं हूं।" इसमें सन्देह नहीं कि बर्नार्ड शाने भारतीय न होते हुए भी, भारतीयोंकी भावनाका प्रतिबिम्ब उतार कर रख दिया है जिसे शायद सर फिरोज खां नून जैसे दास्य मनोवृत्तिके भारतीय समझ भी नहीं सकते।

सिलसिला जारी है—

हिन्दुस्तानकी राजनीतिक स्थिति और पूर्वकी युद्ध स्थितिपर ब्रिटिश सरकारसे विचार परामर्शके लिये लार्ड वावेलको इङ्गलैण्ड गये हुए सात सप्ताह हो गये। अभीतक बातचीतका सिलसिला जारी है। प्राप्त समाचारोंसे पता चलता है कि लार्ड वावेल, सर स्टैफोर्ड क्रिप्स, लार्ड लिस्टोवेल, (उप भारत सचिव) और मि० एमरी भारतीय गतिरोध मिटानेके लिये कोई योजना बनाने में भूतकी तरह जूटे हुए हैं। योजना समाप्तप्राय और इस ढंगकी बतायी जाती है कि कमसे कम युद्धकालके लिये भारत उसे स्वीकार करेगा। इस सम्बन्धमें लेबर पार्टी भी प्रयत्नशील देखी जा रही है। उसका एक प्रतिनिधिदल, जिसमें मि० आर्थर ग्रीन उड भी रहेंगे, मि० एमरीसे मिलनेवाला है। यह दल इस बात-पर जोर देगा कि समझौतेके लिये भारतीय नेताओंसे फिर बातचीत आरम्भ करनी चाहिये। मि० एमरीने मि० ग्रीन उडको यह आश्वासन भी दिया है कि पार्लमेंटके इस अधिवेशनमें भारतके प्रश्नपर विचार प्रकट करनेकी सुविधा दी जायेगी। इस तरह अभी तक बातोंका सिलसिला जारी है। किन्तु किसी सूत्रसे आशाकी कोई झलक आती नहीं दिखायी देती।

सैन फ्रैंसिस्को—

श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितने एक मेमोरण्डम सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसको भेजा है। इसका आशय यह है कि जबतक हिन्दुस्तान को स्वतन्त्र घोषित करके साम्राज्यवादका अन्त न किया जायेगा तब तक शान्ति स्वप्न ही बनी रहेगी। एक दूसरे प्रसंगमें श्रीमती पंडितने दुनियाकी आंखोंमें अंगुली डालकर उसे दिखाया कि "अगर मनचूरिया पर जापानका कोई नैतिक अधिकार नहीं है, आक्रान्त देशोंपर जर्मनीका नहीं था तो हिन्दुस्तान पर ब्रिटेनका भी कोई नैतिक अधिकार नहीं है।" अन्य प्रसंगमें श्रीमती पंडितने कहा था कि असन्तुष्ट एशिया, जिसका ... लानेका "रक्षा और शान्तिका घोषणापत्र बनानेसे शान्ति और रक्षा नहीं होगी। शान्ति तो तब होगी जब प्रत्येक राष्ट्रमें वह प्रतिष्ठित दिखायी देगी। यदि शान्तिकी प्रतिष्ठा करनी है तो वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्यका अन्त करना होगा। यदि प्रत्येक राष्ट्र और व्यक्ति को स्वतन्त्रता नहीं मिलेगी तो इसकी कीमत तीसरे महायुद्धमें चुकानी होगी।" श्रीमती पंडितने यह भी कहा है कि औपनिवेशिक स्वराज्यके दिन लद गये। हमें यह स्वीकार नहीं है।" दरअसल पूर्ण स्वतन्त्रता ही शांतिकी कीमत है और जब तक संसारके महान शक्तिशाली राष्ट्र इस सहज सत्यको हृदयङ्गम न करेंगे तब तक संसार रक्त गंगाके स्नानसे बच नहीं सकता। यद्यपि सैनफ्रैंसिस्को सम्मेलनमें भारतका प्रश्न नहीं आया और उसके संयोजकोंने श्रीमती पंडित द्वारा दिये गये मेमोरण्डमको प्रतिनिधियोंके सामने उपस्थित करनेकी जिम्मेदारी लेनेमें, नियमकी दुहाई देकर, असमर्थता प्रकट की है, किन्तु इसमें सन्देह नहीं है कि भारतके प्रश्नको अन्तर्राष्ट्रीय महत्वके दर्जेमें खड़ा कर देनेमें श्रीमती पंडितको पूरी सफलता मिली है। यह बात इससे भी प्रमाणित होती है कि श्रीमती पंडितकी सभाओंमें सैनफ्रांसिस्कोके डेलिगेट काफी संख्यामें उपस्थित देखे गये। निस्सन्देह इस अवसरपर श्रीमती पंडितने जो कार्य किया है वह हमारे स्वतन्त्रता आन्दोलनके इतिहासमें सदा कृतज्ञताके साथ स्मरण किया जायेगा।

पोलैंडकी समस्या—

स्वार्थोंके बटवारेके समय ही मित्रताकी परख होती है। यूरोपका युद्ध समाप्त हो गया है किन्तु मित्र राष्ट्रोंके स्वार्थोंका युद्ध भयङ्कररूप धारण करता जा रहा है। ब्रिटिश सरकार और अमेरिकन सरकारने रूसके साथ पोलिश समस्यापर वार्तालाप करनेसे इनकार कर दिया है। इसका कारण यह बताया जाता है कि १६ पोलिश राजनीतिक नेता, जो सोवियट सैनिक अधिकारियोंसे पोलिश समस्यापर बातचीत करनेको पोलैंड गये थे, और जिनके लापता हो जानेका समाचार आया था, लालसेनाके विरुद्ध कार्यवाही करनेके लिये गिरफ्तार कर लिये गये हैं। यह समाचार मो० मोलोटोवसे पानेपर मि० ईडेनने उनको सूचित किया कि जबतक पोलिश नेताओंकी गिरफ्तारीके सम्बन्धमें रूस पूरी कैफियत नहीं देता तबतक ब्रिटिश और अमेरिकन सरकारें पोलैण्डके मामलेमें रूससे बातचीत नहीं कर सकतीं। सोवियट सरकारकी तरफसे अभीतक तो इस सम्बन्ध में कोई कैफियत नहीं दी गयी और शायद न भी दी जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है। इस तरह पोलैण्डका मामला बेढ़ब होता जा रहा है।

रक्तसे सना मुनाफा—

भारतको धर्मप्राण देश कहा जाता है। यहांके हिन्दू और मुसलमान प्रति दिन, एक नहीं अनेक बार, मन्दिरों और मसजिदोंमें जाकर घंटों ध्यानावस्थित होकर भगवानको स्मरण करते हैं। उन्हीं लोगोंके बीचमें हम ऐसे व्यक्तियोंको भी देखते हैं जिनकी दृष्टिमें मनुष्य जीवनकी कीमत कीट पतंगोंके ... भी नहीं है, जिनको ये चारा चुगाया ... हैं। भारत सरकार द्वारा नियुक्त ... जांच कमीशनने बंगालकी स्थिति पर ... रिपोर्टमें प्रकाश डाला है उसे पढ़ कर ... को भारतमें ब्रिटिश शासनकी ट्रस्टीशि... असली पता लग जायेगा। जहां तक ... और हमारे देशका सवाल है जांच कमी... रिपोर्टसे जो आश्चर्य चकित होनेकी ... ही नहीं है। क्योंकि हमने बराबर ... है कि यदि देशकी सरकार अपने कर्त... पालन करती तो न लाखों आदमि... जान जाती और न मुट्ठीभर आदमि... दीन दरिद्र बुभुक्षित जनसाधारणकी ... नाजायज फायदा उठाकर अपनी तिजो... जनता-जनार्दनके रक्तसे सने पैसोंसे ... अवसर मिलता। जांच कमीशनकी रि... अनुसार बंगाल दुर्भिक्षके कारण ... आदमी मरे और इस दौरानमें अन्न... सायसे, व्यापारियोंको १५० करोड़ ... रिक्त लाभ अर्थात् असली मुनाफेसे ... लाभ हुआ। इसका मतलब यह होता ... प्रति मौत पीछे १ हजार रुपया ... अतिरिक्त लाभ किया। कमीशनने ... रिपोर्टमें ऐसी स्थिति उत्पन्न ... जिम्मेदारी प्रान्तीय सरकार पर ... स्पष्ट शब्दोंमें यह कहा है कि यदि ... सरकार समय पर अपने कर्तव्यका ... करती तो इस तरहकी अवांछनीय ... पैदा होती। उस समयके वायसराय ... लिनलिथगो और भारत मन्त्री मि... पास इस अभियोगका क्या उत्तर है ...

ट्रस्टीशिपका सवाल—

सैन फ्रांसिस्कोमें पोलैण्डके ... मो० मोलोटोवने भारतका प्रश्न ... था। उन्होंने कहा कि "हम जा... भारत स्वतंत्र देश नहीं है फिर भी ... तियोंको देखकर हमने ब्रिटिश ... प्रस्तावको मान लिया और भारतको ... निधित्व स्वीकार कर लिया। ... आयेगा जब स्वतन्त्र भारतकी आ... सुनायी देगी।" उधर काहिरा ... पैदा की। इसके बाद जब मातहत ... शासनका रूप क्या हो, यह प्रश्न ... फिर मो० मोलोटोवने ब्रिटिश और ... कन ट्रस्टीशिपके प्रस्तावका विरोध ... "आपने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय ... कोणसे हमारा सर्व प्रथम कर्तव्य ... होना चाहिये कि जितना ... मातहत देश राष्ट्रीय स्वतन्त्रताका ... लम्बन करनेके योग्य बन जायें। ... शीघ्र सम्पन्न करनेके लिये ... का एक विशेष सङ्गठन कायम ... जो राष्ट्रोंके समानता और ... के सिद्धान्तोंको शीघ्रातिशीघ्र ... णत करानेकी दृष्टिसे काम ... प्रतीत होता है कि इस तरह ... बीचमें पोलैण्ड, आस्ट्रिया, ... भावी शासनके स्वरूप और ... भारतके प्रश्नके कारण भी ... जा रही है। मातहत और ... हितकी दृष्टिसे यही अच्छा है ... शीघ्र हो सैद्धान्तिक आधार ...

महायुद्ध की कहानी

ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मि० चेम्बरलैनकी तुष्टीकरण नीतिका परिणाम है कि संसारको महा-प्रलयका यह दृश्य देखना पड़ा है जिसकी स्मृति युग-युगान्तर तक लोगोंको त्रस्त और आतंकित करती रहेगी। १ सितम्बर १९३९ को जर्मन सैनिक पोलैण्डकी सीमाके भीतर घुस गये, नाजी हवाई जहाज पोलिश गगन पर मंडराने लगे और पोलोंपर जमीन और आकाशसे मौतकी वर्षा शुरू हो गयी।

हिटलर इस बातको भूल गया कि उसी वर्ष जनवरी महीनेमें उसने कहा था कि "युद्ध होगा, यह सिर्फ वे सोचते हैं जो युद्धके लिये लालायित हैं। मैं तो शान्तिके दीर्घ काल तक स्थायी रहनेकी बात सोचता हूं।" तीन वर्ष पहले भी हिटलरने ठीक यही कहा था कि "जर्मनी कभी यूरोपकी शान्ति भंग नहीं करेगा।"

किन्तु भीतर ही भीतर हिटलरके मनसूबे इन घोषणाओंके बिलकुल प्रतिकूल थे। समस्त यूरोपको वह पदाक्रान्त करना चाहता था। अपनी महत्वाकांक्षाको पूर्ण करनेके लिये उसने अनुकूल स्थिति और वातावरण की सृष्टि की। यही कारण है कि उसने संसारको तब तक अपने असली मनसूबोंका पता नहीं लगने दिया जब तक संसारकी सबसे प्रबलतम शक्तिसे लोहा लेने लायक उसने अपने राष्ट्रको नहीं बना लिया। मई १९३९ में उसने कहा था कि जर्मनी अन्धेकी तरह समझौतों और पैक्टोंको मानेगा और दिन प्रतिदिन उसके दोस्ताना ताल्लुकात बढ़ते जायेंगे। यह समझकर कि बोलशेविज्मके खतरेको भगानेके लिये जर्मनीका प्रबल और मजबूत होना आवश्यक है, राष्ट्रसंघके कर्ज-धार हिटलरकी युद्ध मशीनको तूफानी बनाने में बराबर सहायता पहुंचाते रहे। परिणाम वही हुआ जो होना चाहिये था। १ सितम्बर १९३९ को तमाम सन्धियों और समझौतोंकी छातीको रौंदते हुए जर्मन सेनाएं पोलैण्डमें घुस गयीं। इसके साथ साथ ब्रिटेन और फ्रांसने जर्मनीको यह अल्टीमेटम दिया कि यदि जर्मनी युद्धसे विरत न होगा तो वे इस कार्यको दोनों मित्र राष्ट्र पूर्व सन्धिका उल्लंघन समझेंगे और बाध्य होकर पोलैण्डकी रक्षामें उनको आना पड़ेगा। ३ सितम्बर प्रातःकाल ११ बजे तक इस अन्तिम पत्रके उत्तरकी अवधि रखी गयी थी। किन्तु इसका जवाब जर्मनीने ब्रिटिश जहाज "एथीनिया" को डुबा कर दिया। अतः ३ सितम्बरको ११ बजे मि० चैम्बरलेनने कामन सभामें जर्मनीके विरुद्ध युद्ध घोषणा की। उसी दिन तीसरे पहर ५ बजे फ्रांसने भी जर्मनीके विरुद्ध युद्ध घोषणा की। दूसरे दिन ४ सितम्बरको प्रथम फ्रेंच विज्ञप्ति में घोषणा की कि जल, स्थल और गगन-सेनाओंने अपना काम आरम्भ कर दिया। ७ सितम्बरको फ्रेंच सैनिक राइन और मोजेलके बीचके जर्मन प्रदेशमें घुस गये। १२ सितम्बरको मालूम हुआ कि ब्रिटिश अभियानकारी सेनाके अग्रगामी दस्ते फ्रांस पहुंच गये। पोलिश सरकार वार्सासे हटकर लुबलिन चली गयी।

रूस बढ़ा

१७ सितम्बरको बड़े सवेरे सोवियट सैनिक कई स्थानोंसे पोलैण्डकी सीमाके भीतर घुस गये। इसके साथ-साथ मास्को स्थित पोलिश राजदूतको यह सोवियट विज्ञप्ति दी गयी कि इस तरहकी स्थितिमें रूस पोलैण्डमें रहने वाले अपने सगे-सम्बंधी यूक्रेनियनों और श्वेत रूसियोंके प्रति उदासीन नहीं रह सकते। अपने इन भाइयोंको युद्धसे बचानेके लिये आवश्यक कार्यवाही की जायेगी। जर्मन और सोवियट सेनाएं ब्रेस्ट लिटोवस्कमें मिलीं। १७ सितम्बरको ही जर्मन सबमेरीनने ब्रिटिश विमानवाही पोत "करेजियस" को डुबाया।

२७ सितम्बरको नाजी परराष्ट्र सचिव मास्को गये। वहां पोलैण्डके बटवारे पर विचार हुआ। फलस्वरूप पोलैण्डका स्थायी रूसी-जर्मन सरहदोंमें बटवारा कर दिया गया। इस बटवारेके फलस्वरूप २ करोड़ आबादीका पोलिश प्रदेश सोवियटके हिस्से में आया। ९ अक्तूबरको उत्तर समुद्रमें जर्मन बम वर्षकोंने ब्रिटिश जंगी जहाजों पर कई बार बमबाजी की। उधर रूस बाल्टिक राज्योंकी तरफ बढ़ा। उसके सैनिक इस्टोनियामें घुस गये। १४ अक्तूबरको स्कापा फ्लोमें "रायल ओक" नामक युद्ध पोत डुबाया गया। मोसलेसे राइनके ९० मील लम्बे मोर्चेमें ८००००० जर्मन सैनिक आ डटे। १९ अक्तूबरको अङ्कारामें ब्रिटेन, फ्रांस और टर्कीने १५ वर्षके लिये परस्पर सहायता की सन्धि की।

फिनलैण्ड पर रूसका आक्रमण

जनवरी १९४० में रूसने फिनलैण्ड पर आक्रमण कर दिया। रूसको भय था कि जर्मनी किसी समय भी अनाक्रमण संधिकी उपेक्षा करके उसपर आक्रमण कर सकता है। अतः उसने फिनलैण्डसे कुछ सामरिक महत्व के बन्दरगाहोंको काममें लाने देनेको कहा। फिनलैण्डकी सरकारने इनकार किया। ब्रिटेन और फ्रांसने भी रूसके इस कार्यकी निन्दा की। इतना ही नहीं बल्कि, गुप्त तौर से फिनलैण्डकी सहायताके लिये युद्ध-सामग्री भी भेजी। लड़नेके लिये वालंटियर भी भेजे जानेकी बात थी किन्तु तब तक किस्सा ही खतम हो गया।

हवाई आक्रमणका आरम्भ

युद्धारम्भके प्रथम सप्ताहमें ही एक उल्लेखनीय घटना ब्रिटेनमें हुई। युद्ध-सचिव होरबेलिशाने इस्तीफा दे दिया और उनके स्थानपर आलिवर स्टानली नियुक्त हुए। आपने इस्तीफा देनेके बाद चेम्बरलेनकी सरकारपर अकर्मण्यताका भीषण आरोप किया। उधर युद्धकी स्थिति भयङ्कर हो उठी। जर्मनी ने अपनी हवाई ताकतसे काम लेना शुरू किया। उत्तर समुद्रके सम्मुखीय ७०० मील तक फैले हुए ब्रिटिश तटीय अड्डोंमें धुआंधार हवाई हमले होने लगे। इधर रूसके खिलाफ चारों तरफ मिथ्या प्रचार जोरोंपर हो रहा था। इस प्रचारके फलस्वरूप संसारने समझ रखा था कि रूसकी सामरिक शक्ति फिनलैण्डके सामने फक्क हो जाने की स्थितिमें है। किन्तु उसे आश्चर्य हुआ जब १२ मार्चको फिनिश प्रतिनिधि मंडलने मास्कोमें रूसके साथ मैत्रीकी संधि कर ली। फिनलैण्डने करेलियन इस्थमस, वाइबोर्ग, लैडोगा झीलके तट सोवियटको हैंगोमें जहाजी अड्डा कायम करनेके लिये दे दिया।

युद्धका विकराल रूप

अप्रेल १९४० का महीना मित्रराष्ट्रोंके लिये बहुत भयङ्कर और विकराल सिद्ध हुआ। ९ अप्रेलको जर्मन सेनाने नारवे और डेनमार्कपर आक्रमण किया। डेनमार्कने तो प्रतिरोध करनेकी हिम्मत भी नहीं की किंतु नारवे साहस बटोरकर एक बार सीना तान कर खड़ा हुआ। इसका कारण यह था कि उसकी पीठपर ब्रिटिश और फ्रेञ्च सेनाकी शक्ति थी। यहांपर इन दोनों महान राष्ट्रोंने मिलकर जर्मनीका सामना किया। युद्ध केवल स्थलतक ही सीमित नहीं रहा। स्कागेराकमें जल युद्ध भी ठना। विमानवाहिनीने भी इसमें भाग लिया। इस तरह छोटेसे राष्ट्र नारवेमें जल, स्थल और गगन युद्ध करके भी मित्रराष्ट्र नारवेकी रक्षा नहीं कर सके। जर्मनोंने नारवेकी राजधानी ओसलोपर, आस-पासके स्थानों और विभिन्न तटीय स्थलोंपर अधिकार कर लिया। इसके बदले जर्मनीको भारी समुद्री क्षति उठानी पड़ी। उसकी जल-शक्ति आधी घट गयी। इतनेपर भी अंग्रेजोंने १९ अप्रेलको नारविकको फिर दखल कर लिया और नारवेके कई स्थानोंपर ब्रिटिश अभियानकारी सेना उतर पड़ी। किन्तु लाभ नहीं हुआ। जर्मन प्रचण्डताके सामने ब्रिटिश सेना ठहर न सकी और २ मईको मि० चैम्बरलेनने घोषणा की कि ब्रिटिश सेना दक्षिणी नारवेसे वापस हटा ली गयी। युद्धारम्भके बादकी सब घटनाओंमें यह घटना अंग्रेजोंके लिये असह्य हो गयी और चैम्बरलेन सरकार की योग्यतापरसे जनताका विश्वास उठ गया। उधर १० मईको जर्मनीने हालैण्ड, बेलजियम और लक्सेमबर्गपर आक्रमण कर दिया। इसी दिन चैम्बरलेनकी जगह मि० चर्चिल प्रधान मन्त्री बने। १७ मईको जर्मनी ने बेलजियमकी राजधानी ब्रसेल्स और फौलादी किला एण्टवर्प भी ले लिया। १९ मईको जेनरल वेगां मित्र सेनाके प्रधान सेनापति बने। जर्मनोंने अब अपनी दृष्टि चैनेलके बन्दरगाहोंकी तरफ डाली। आरास और अमीन्स तक वे पहुंच गये। स्थिति बड़ी भयंकर हो गयी। २६ मईको जर्मन कैलेमें दाखिल हो गये।

डनकर्ककी घटना

जर्मनोंके पराक्रमके सामने ठहर न सकने के कारण बेलजियमके शाह लियोपोल्डने मन्त्रिमण्डलके सर्वसम्मत निर्णयके विरुद्ध आत्मसमर्पण कर दिया और उनकी सेनाने युद्ध बन्द कर दिया। इस तरह वहां उता गयी ब्रिटिश सेनाकी स्थिति बड़ी भय हो गयी। इस स्थलपर ब्रिटिश सेना जम फन्देमें पड़नेसे बच गयी और किसी तरह लाख ब्रिटिश सैनिकोंको डनकर्कसे निरा पार उतार दिया गया यह इस युद्धकी अति प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण घटना है। तरफसे बढ़ती हुइ जर्मन सेना भागती अंग्रेजी सेनासे सिर्फ सिर्फ पांच मील पी रह गयी थी। ब्रिटिश जल सेना इस समय काम आयी। छोटे-बड़े सभी प्रकार सैकड़ों जहाजों द्वारा ब्रिटिश सैनिकों डनकर्कसे विमानवाहिनीकी छत्रछाया उस पार उतारा गया।

फ्रांसका पतन

अब फ्रांसके बुरे दिन आये। जून महीना फ्रांसके लिये बड़ा अशुभ हुआ। इ महीनेमें फ्रांसकी सरकारने जर्मनीके साम आत्मसमर्पण कर दिया। ८ जूनको ६०मी लम्बे मोर्चेपर जर्मनोंने प्रचण्ड आक्रमण कि ११ जूनको जर्मन सीन नदीपर पहुंच गये दूसरे दिन रीमका पतन हो गया। १४ ज को जर्मन पेरिसमें दाखिल हुए। शहर विनाशसे बचानेके लिये फ्रेंच अधिकारियों अपनी सेनाको वहांसे हटा लिया और पे को खुला शहर घोषित कर दिया।

इटलीकी युद्ध घोषणा

मौका अच्छा देखकर २० जूनको इटा ने ब्रिटेन और फ्रांसके विरुद्ध युद्ध घोषण कर दी। उसी दिन मशहूर ब्रिटिश या वाहक 'ग्लोरियस' डुबाया गया। फ्रेंच सेन के पैर टिकते न देख रेनांके मन्त्रिमण्डल इस्तीफा दे दिया और उसके स्थान मार्श पेंताके नेतृत्वमें नयी सरकार बनी। जेनरल वेगां डिफेंस मिनिस्टर हुए। १७ जून मार्शल पेंताने घोषणा की कि लड़ाई ब करनेके सिवा फ्रांसके सामने कोई रास्ता नहीं है। ब्रिटिश सरकारके अनुरोधकी उपेक्ष करके युद्ध विराम संधिपत्रपर हस्ताक्षर ह गये। जेनरल दि गाल फ्रांससे निकल भा और लन्दन पहुंच गये। वहां स्वतन्त्र फ्रें कमेटीकी स्थापना करके आपने कहा कि पेंता सरकार बागी सरकार है।

जल और गगन युद्ध

अगस्त महीनेमें जर्मनोंने ब्रिटेनपर जब दस्त हवाई हमला शुरू किया। २ अगस्तको जर्मन विमानोंने आकर ब्रिटेनमें पर्चे गिराये इन पर्चोंमें अन्तिम बार हिटलरने ब्रिटेन विवेकसे अपील की थी। दूसरे सप्ताह धुआंधार आक्रमण हो रहे थे। १८ अगस्तको प्रथम बार लन्दनवासियोंने शहरसे विमान भेदी तोपोंकी गड़गड़ाहट सुनी। हवाई हमले की रफ्तार क्रमशः बढ़ती ही गयी। दिन भरमें ६ बार तक हवाई हमलोंकी चेतावनी दी गयी। दिन-रात हमले होते रहे। ११ सितम्बरको मि० चर्चिलने ब्राडकास्ट किया कि नारवेसे लेकर ब्रेस्टतक जर्मनोंने ब्रिटेन पर चढ़ाई करनेके लिये जबर्दस्त जहाजी बेड़ा

इकट्ठा कर रखा है। १९ अक्तूबरको सरकारी तौरपर घोषणा की गयी कि १६ सितम्बरको ..ही विमानवाहिनीने ब्रिटेनपर चढ़ाई करनेके जर्मन प्रयत्नको विफल कर दिया।

यू वोटका आतंक

अमेरिकासे ब्रिटेनको आनेवाली सप्लाई बन्द करनेकी नीयतसे अटलाण्टिकमें जर्मन यू बोटोंकी हरकतें शुरू हुईं। हिटलरका उद्देश्य था कि इस तरह ब्रिटिश जहाजी बेड़ा और सप्लाई लाने वाले व्यवसायी जहाजोंको जलमग्न करके ब्रिटेनकी सामरिक और खाद्य स्थितिको बिगाड़ कर वह घुटने टेक देनेके लिये ब्रिटेनको बाध्य कर सकेगा। किन्तु यू० वोट खतरा पैदा करनेकी सीमासे आगे नहीं बढ़ सके और शीघ्र ही इस खतरेको काबूमें कर लिया गया। फिर भी यू वोटकी हरकतें जारी रहीं।

इधर सोवियटके अल्टीमेटम देनेके कारण रूमानियाने वेसारेबिया और उत्तरी बुकोविनाका प्रदेश रूसको दे दिया। इसके सिवा रूमानिया ट्रानसिलवानियाका २० हजार वर्ग मीलका भू प्रदेश हंगरीको छोड़ देनेको बाध्य हुआ। इस वर्ष ब्रिटेनकी ऐसी नाजुक स्थिति हो गयी थी कि मि० चर्चिल कनाडा या अन्य स्थानसे जर्मनीके खिलाफ युद्ध जारी रखनेकी बात सोचने लगे थे। युद्ध स्थिति अनुकूल होनेपर बादमें मि० चर्चिलने १९४० की भीषणताका जिक्र करते हुए यह कहा था कि आज भी मैं यह सोच कर कांप उठता हूं कि यदि जर्मनी १९४० में ब्रिटेन पर चढ़ाई करके १०-१२ लाख जर्मन सैनिकोंका बलिदान कर देनेका साहस कर बैठता तो क्या हुआ होता।

१९४१ का वर्ष

इस वर्षके आरम्भमें भी लन्दन और अन्य बड़े-बड़े केन्द्रों पर बमबर्षा जारी रही। १ मार्चको बुल्गेरिया भी धुरी राष्ट्रोंके पक्षमें मिल गया। जर्मन सेनाएं डेन्यूब नदी पार करके वहां पहुंच गयीं। युगोस्लेवियाके तमाम फ्रण्टियरों पर सुसज्जित सैन्य खड़े थे। जर्मनीने ६ अप्रेलको युगोस्लेविया पर आक्रमण किया। यूनानपर भी उसने आक्रमण कर दिया। सेलोनिका पर अधिकार हो गया। ९ अप्रेलको उत्तर यूनान की ओर बढ़नेवाली जर्मन सेनाकी भिड़न्त ब्रिटिश सेनासे हुई। यूनान और युगोस्लेवियामें भयंकर युद्ध हुआ किन्तु अप्रेलकी समाप्तिके साथ-साथ यूनानका युद्ध भी समाप्त हो गया।

हेसकी ब्रिटेन यात्रा

इस समय एक बार फिर जर्मनीने ब्रिटेन से समझौता करनेके इरादेसे हेसको हवाई जहाजसे ब्रिटेन भेजा। १० मईको हेस स्काटलैण्डमें उतरा और गिरफ्तार कर लिया गया। जर्मनीकी यह चाल भी खाली गयी।

रूस पर आक्रमण

संभवतः रूस पर आक्रमण करनेके पूर्व ब्रिटेनसे सन्धि कर लेनेके इरादेसे ही हेसको भेजा गया था। किन्तु व्यर्थ मनोरथ होकर भी हिटलरने रूस पर आक्रमण करनेके अपने संकल्पको नहीं छोड़ा। २२ जून १९४१ को उसने रूस पर आक्रमण कर ही दिया। यह आक्रमण ही आगे चल कर हिटलरके साथ-साथ जर्मनीके पतनका कारण हुआ। आरम्भ में तो जिस तूफानी रफ्तारसे जर्मनी बढ़ा यही जान पड़ने लगा कि शेष यूरोपकी तरह रूस भी जर्मनीसे पराजित होगा। १९४१ के अन्त तक और ४२ के प्रारम्भ तक जर्मनीके वेगको रूस रोक सकनेमें असमर्थ रहा। यूक्रेन, श्वेत रूस पर जर्मनीका अधिकार हो गया। मास्को, लेनिनग्राड और स्टालिनग्राडके दरवाजे तक नाजी सेनाएं आ धमकीं। किन्तु इसी स्थलसे युद्ध-चक्र पलटा।

जापान भी कूद पड़ा

अपने यूरोपीय मित्रोंकी अबाधगतिको देख जापान भी अपनी साम्राज्य लिप्साको रोक नहीं सका और यही अच्छा अवसर समझकर उसने ७ दिसम्बर १९४१ को पर्लहारबर और सिङ्गापुरपर आक्रमण करके एक साथ ब्रिटेन और अमेरिकासे शत्रुता मोल ले ली। १९४२ के ग्रीष्मकालमें जर्मनी ने फिर रूसके खिलाफ अपना तूफानी आक्रमण किया। स्टालिनग्राडतक पहुंची हुई जर्मन सेनाएं नगरके चारों तरफ १६ महीने तक फरवरी १९४३ तक घेरा डाले पड़ी रहीं। १९४३ के जाड़ेमें रूसने प्रत्याक्रमण किया। जर्मनी ठहर नहीं सका। इस समय जो उसके पैर उखड़े तो फिर उखड़ते ही चले गये और फिर वह कहीं ठहर नहीं सका। अब बाजी रूसके हाथमें आ गयी। जर्मन-रूस युद्धका तीसरा पर्व यूक्रेन, श्वेतरूस और कुछ पोलैण्डके हिस्सेकी मुक्ति है। इस पर्वका दौरान ५ जुलाई १९४३ से मई १९४४ है।

(अपूर्ण)

हिन्दुस्तानका बंटवारा—एक दृष्टिकोण

(लेखक श्री छविनाथ पाण्डेय)

...के सदस्य ...वे लाटकी कार्यकारिणीके सदस्य सर फिरोज खां नूनने अलीगढ़ ...विश्वविद्यालयमें भाषण देते हुए कहा था कि ...हिन्दुस्तानकी सुख-समृद्धि और शान्तिके ...लिये यह आवश्यक है कि इसका बटवारा ...कर दिया जाय। इसके लिये आपने पांच ...क्षेत्र निर्धारित किया था। पञ्जाबके भूतपूर्व ...प्रधान मंत्री स्वर्गीय सर सिकन्दर हयातखां ...ने भी भारतका गतिरोध दूर करनेके लिये ...इसी तरहका सुझाव पेश किया था। मुस्लिम ...लीग तो इस पर तुली है कि भारतके उत्तर-...पश्चिमी तथा उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्वतन्त्र ...मुस्लिम राष्ट्र कायम कर दिये जायं। उधर ...मद्रासकी जस्टिस पार्टी (जिसका दूसरा नाम ...दक्षिण भारतीय उद्धार दल भी है) दक्षिणमें ...अलग द्राविड़ राष्ट्रकी मांग पेश कर रही ...है जो उत्तरी भारतसे एकदम स्वतन्त्र होगा। ...यह निर्विवाद सिद्ध है कि यदि इन मांगोंके ...आधार पर हिन्दुस्तानका बटवारा कर दिया ...गया तो इसकी भौगोलिक इकाई नष्ट हो ...जायगी और हिन्दुस्तानकी राष्ट्रीय एकता ...पर इसका बहुत गहरा असर पड़ेगा। इसकी ...एकता नष्ट हो जायगी और यह छोटे छोटे ...राष्ट्रोंमें छिन्न भिन्न हो जायगा।

यदि अनुसन्धान किया जाय तो स्पष्ट ...हो जायगा कि इस बिलगावका प्रथम सूत्र-...पात ब्रिटिश सरकारकी शासन सुधार नीति ...का ही परिणाम है। भिन्न भिन्न फिरकों ...और सम्प्रदायोंको अलग प्रतिनिधित्व देने-...की ब्रिटिश सरकारकी नीति ही इस ...बिलगावकी भावनाकी जड़ है। इसका प्रथम ...सूत्रपात मार्ले द्वारा शासन सुधारमें हुआ। ...लार्ड मार्लेने यह प्रत्यक्ष देखा कि यही एक ...साधन है जिससे भारतके भिन्न-भिन्न ...सम्प्रदायोंमें भेद डाला जा सकता है और इस ...नीतिके सहारे हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश ...शासन दृढ़ किया जा सकता है। इसलिये ...मार्ले-मिण्टो शासन सुधारमें उन्होंने इस ...की स्पष्ट घोषणा की कि भारतकी राज-...नीतिमें मुस्लिम समुदायका स्थान बहुत ही ...महत्वपूर्ण है और साथ ही इस सम्प्रदायने ...साम्राज्यकी अमूल्य सेवायें की हैं। इन ...सेवाओंके पुरस्कार स्वरूप यह उचित है ...कि ब्रिटिश सरकार इन्हें अलग प्रतिनिधित्व ...दे। यह काम पूरा करनेके बाद लार्ड मार्लेने ...अपनी डायरीमें लिखा :—आज हमने वह ...काम किया है जो लार्ड क्लाइव और डल-...हौसीकी नीतिको पुष्ट करता है और इससे ...पचास वर्ष तक हम निश्चिन्तता पूर्वक ... ... कर सकते हैं। अलग प्रति-...निधित्व प्रदान करनेकी जो दुर्नीति लार्ड ...मार्लेने कायम की उसकी पुनरावृत्ति तबसे ...बराबर होती चली आ रही है। उसके बाद ...भारतमें जितने सुधार हुए सबने उसे इसी ...प्रकार दोहराया और भेद नीतिको बढ़ाया। ...इतना ही नहीं भिन्न-भिन्न क्षेत्रोंमें भी ...इसका प्रचार किया और इस नीतिको ...बढ़ावा दिया। बल्कि भारतीयोंकी ओरसे ...जब कभी भिन्न भिन्न सम्प्रदायोंको एकताके ...सूत्रमें बांधनेके लिये यत्न किया गया तब ...उन भिन्न-भिन्न सम्प्रदायोंको विशेष ...अधिकारोंका प्रलोभन देकर उन्हें अलग हो ...जानेके लिये प्रोत्साहित किया गया और ...एकता स्थापित करनेके प्रयत्नोंको विफल कर दिया गया। माण्टफोर्ड शासन सुधार, साइमन कमीशनकी रिपोर्ट, ब्रिटिश प्रधान मंत्री का प्रतिनिधित्व निर्णय, १९३५ के शासन सुधार सभीका यही दृष्टिकोण रहा है। यदि पूनामें महात्मा गांधीने आमरण अनशनकी घोषणा न की होती तो अब तक भारतके हरिजन भी हिन्दुओंसे अलग कर दिये गये होते।

ब्रिटिश अधिकारियोंको—चाहे वे व्हाइट हालमें भाषण देते हों चाहे दिल्ली या शिमलामें—भारतके सम्बन्धमें जब कभी मुंह खोलनेका अवसर मिलता है तो इस बातकी चर्चा किये बिना वे नहीं रहते कि भारतीय मुसलमानोंकी संस्कृति हिन्दुओंसे एकदम भिन्न है, उनका राजनीतिक दृष्टि-कोण भी सर्वथा अलग है और दोनों सम्प्रदायोंके बीच इस तरहका भयानक मतभेद है जो कभी भी मेल मिलापके सूत्रमें नहीं बांधा जा सकता। दोनों जातियोंको एक दूसरेसे अलग रखनेके इस तरहके प्रयास तथा भारतीय मुसलमानोंके प्रति इस तरहके विशिष्ट व्यवहारका फल यह हुआ है कि भारतीय मुसलमान अलग राष्ट्रीयताका स्वप्न देखने लगे हैं। ब्रिटिश अधिकारियोंने यहांके भिन्न-भिन्न समुदायोंके दिलोंमें यह भाव भरनेका सतत यत्न किया है कि ये समुदाय भारतीय राष्ट्रीयताके अन्दर भिन्न-भिन्न फिरके नहीं हैं बल्कि प्रत्येककी अपनी अलग इकाई है, उनकी अलग स्वतन्त्र राष्ट्रीयता है और आत्म निर्णयके सिद्धान्तके आधारपर उन्हें अपना अलग स्वतन्त्र राष्ट्र कायम करनेका पूरा अधिकार है। पाकिस्तान और द्राविड़स्थानकी मांग तथा हिन्दुस्तानके बंटवारेकी अन्य अनेक योजनायें इसी नीति का परिणाम हैं।

इसी नीतिको आधारभूत मानकर मुस्लिम लीगने मुसलमानोंके लिये एक स्वतन्त्र राष्ट्र—पाकिस्तानके नामसे कायम करनेका स्वप्न देखा और १९४० के लीगके लाहोर वाले अधिवेशनमें हिन्दुस्तानको दो स्वतन्त्र राष्ट्रों—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में बांट देनेका प्रस्ताव किया। मुस्लिम लीग के नेता इस बिलगावकी नीतिके इतने कट्टर समर्थक हैं कि लीगके लाहोर वाले प्रस्ताव के शब्दोंका अक्षरशः पालन वे करना चाहते। एक शब्दका भी हेर-फेर उन्हें सह्य नहीं है। १९४४ में गांधी जिन्ना वार्ताके असफल होनेका यही प्रधान कारण है। मि० जिन्ना लाहोर वाले प्रस्तावके प्रत्येक शब्दको स्वीकार करवाना चाहते थे। हालांकि महात्मा गांधीने तत्वतः आत्म निर्णयके आधार पर स्वतन्त्र मुस्लिम राष्ट्रकी मांगको एक तरहसे कबूल कर लिया था।

इस तरह एक तरफ तो मि० जिन्ना और उनके हाथकी कठपुतली मुस्लिम लीग साम्प्रदायिक आधार पर हिन्दुस्तानका हिन्दू और मुस्लिम दो राष्ट्रोंमें बांटना चाहती है और दूसरी ओर मद्रासका जस्टिस दल है जो जातीय आधार पर दक्षिणमें द्राविड़ोंके लिये द्राविड़स्थान नामका स्वतन्त्र राष्ट्र कायम करना चाहता है। उन लोगोंके इस दावेका आधार यह कहा जाता है कि दक्षिणके द्राविड़ उत्तरके आर्योंसे एक दम भिन्न हैं। उनकी संस्कृति और सभ्यता आर्योंकी संस्कृति और सभ्यतासे बिल्कुल अलग है। कुछ इसी तरहका दावा अछूतोंके लिये डाक्टर अम्बेदकर भी पेश करते हैं। उनका कहना है कि जब तक अछूत सवर्ण हिन्दुओंसे सर्वथा अलग नहीं हो जायेंगे, तब तक उनकी उन्नति हो ही नहीं सकती। सवर्ण हिन्दुओंने सदियों तक अछूतोंके साथ जो अन्याय किया है उसका एकमात्र प्रति-कार यही है कि अछूत सवर्ण हिन्दुओंसे अलग हो जायं। इसके साथ ही साथ चौथी समस्या भारतीय नरेशोंकी है। ब्रिटिश छत्र-छायामें उन्होंने जिस निरंकुश अधिकारका इतने दिनों तक उपभोग किया है उसे सहसा त्यागकर वे भारतीय संघ-शासनमें शामिल होनेके लिये तैयार नहीं हैं। वे अपनी अलग और स्वतन्त्र इकाई रखना चाहते हैं।

सर फिरोज खां नूनके अनुसार हिन्दु-स्तानका बंटवारा निम्न प्रकारसे होना चाहिये—(१) आसाम और बंगाल (२) मध्यप्रान्त, संयुक्तप्रान्त और बिहार (३) मद्रास (द्राविड़स्तान) (४) बम्बई (महा-राष्ट्र) (५) पंजाब, बलूचिस्तान, सिन्ध तथा उत्तर पश्चिम सीमाप्रांत। सर फिरोज का यह भी प्रस्ताव है कि इन सबोंको मिलाकर एक संघ शासन कायम किया जाय जिसके अधीन रक्षा, चुंगी, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध, मुद्रा आदिकी व्यवस्था हो। लेकिन जो राष्ट्र इस संघके अधीन रहना स्वीकार न करे उसे अलग हो जानेका पूरा अधिकार हो और मतभेद दूर हो जाने पर उसे पुनः शामिल हो जानेका भी पूरा अधि-कार हो। यदि इसका मिलान मुस्लिम लीग की उस मांगसे किया जाय जो लाहोरवाले प्रस्तावमें निहित है तो स्पष्ट हो जायगा कि यह उस मांगका संशोधित संस्करण मात्र है। मानों लीगकी मांग पर सर फिरोजने यह संशोधन पेश कर दिया है।

सर फिरोजका यह वक्तव्य दो दृष्टियोंसे हानिकर और अव्यवहार्य है। पहली बात तो यह है कि कोई भी संघ-शासन तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि संघके अन्दर रहनेवाले राष्ट्रोंपर उसका अक्षुण्य और नियन्त्रित शासन नहीं हो। यूनानके प्राचीनतम संघ-शासनसे लेकर आधुनिक राष्ट्र-संघ (लीग आफ नेशन्स) तकका इतिहास यही बतलाता है। जिस सदुद्देश्य-को लेकर राष्ट्र संघकी स्थापना की गयी थी, उसकी सिद्धिमें वह असफल क्यों रहा? क्योंकि उसके हाथमें कोई अधिकार नहीं था जिसके द्वारा वह अपने निर्णयोंको मनवा सके। जिस राष्ट्रको राष्ट्र संघके निर्णय कबूल नहीं होते थे वह उसकी सद-स्यतासे अलग हो जाता था और इसका परिणाम वर्तमान यूरोपीय युद्ध हुआ। यही कम योगी सर फिरोजके प्रस्तावमें है। प्रत्येक राष्ट्रको अपनी स्वतन्त्र इकाई है और संघ-शासनके निर्णयसे असन्तुष्ट हो जानेपर उसे अलग हो जाने और इच्छानुसार पुनः प्रवेश की आज़ादी है। हिन्दुस्तानमें इस तरहके स्वतन्त्र छोटे छोटे राष्ट्रोंको कायम करना और उन्हें मिलाकर इस तरहका दुर्बल और नपुं-सक संघ शासन कायम करना, प्राचीन इतिहासकी घटनाओंसे सर्वथा आंख मूंद लेना तथा हिन्दुस्तानमें सदाके लिये अराज-कता कायम कर देनेके बराबर होगा। लाभकी सम्भावना नहीं है, हानि बहुत ज्यादा है।

बिलगावकी यह नीति अब केवल अख-बारी चर्चा नहीं रह गयी है। उसने उग्र रूप धारण कर लिया है और भारतके भावी शासन विधानके निर्माणके लिये एक प्रकार से यह आधारभूत हो रहा है। हिन्दू सभा-वालोंको छोड़कर प्रायः सभी विचारोंके लोग इस बातको किसी न किसी प्रकारसे स्वीकार करने लग गये हैं कि भारतकी राज-नीतिक समस्याको हल करनेके लिये किसी न किसी तरहका विभाजन अनिवार्य है। ब्रिटिश सरकारकी नीति इस सम्बन्धमें सदा अस्पष्ट रही है। अवसरवादितासे इसने पूरा लाभ उठाया है। बिलगावकी नीतिको सर-कारी समर्थन पहले पहल क्रिप्स योजनामें मिला। सर स्टाफर्ड क्रिप्स भारतके भावी शासन विधानके लिये जो प्रस्ताव लेकर आये थे उसमें यह स्पष्ट लिखा था कि भारत का कोई भी प्रान्त यदि भारतीय संघ शासन में रहना चाहेगा तो उसे स्वतन्त्र होनेका पूरा अधिकार होगा। देशी नरेशोंके बारेमें भी इस तरहकी बातें थीं कि यदि वे चाहें तो संघ शासनसे अलग रह सकते हैं। १९४४ में गांधी-जिन्ना वार्तामें प्रकारांतरसे महात्मा गांधीने बिलगावकी इस नीतिको स्वीकार कर लिया था। केवल सप्रू समितिकी ओरसे जो योजना प्रकाशित हुई है, उसमें इसका विरोध किया गया है। सम्मेलनने स्पष्ट शब्दोंमें लिखा है :—भारत अविभाज्य रहेगा। उसका विभाजन करना अन्यायपूर्ण होगा। यद्यपि अभीतक द्राविड़स्थान और अछूतस्तानकी मांगने वैसा उग्र रूप धारण नहीं किया है, जैसा उग्र रूप पाकिस्तानने धारण कर लिया है। लेकिन यदि बिलगाव का यह आन्दोलन इसी प्रकार चलता रहा तो एक दिन ये भी उसी तरह उग्र बन जायंगे जिस तरह स्वप्न लोकसे उतर कर लीगके पाकिस्तानने स्थूल रूप धारण कर लिया। क्रिप्सकी योजनाका अध्ययन करनेसे यह बात साफ हो जाती है कि या तो ब्रिटिश कैबिनेटने भारतकी भौगोलिक इकाई पर ध्यान ही नहीं दिया अथवा जान बूझकर भारतकी बढ़ती राष्ट्रीयताके लिये इसे प्रति-क्रिया स्वरूप सामने रख दिया। क्योंकि क्रिप्स योजनाके बाद भारतके दोनों वायस-रायोंने समय समय पर इस सम्बन्धमें अपने जो उद्गार प्रगट किये हैं वे इसीके द्योतक हैं। कभी उन्होंने मुसलमानोंको खुश करनेके लिये बिलगावका समर्थन किया है और कभी हिन्दू सभावालोंकी पीठ ठोंकनेके लिये भारतकी भौगोलिक इकाईकी दोहाई दी है।

भिन्न-भिन्न दलोंकी मांगोंके अनुसार यदि हिन्दुस्तानका बंटवारा कर दिया जाय तो इसमें इतने छोटे-छोटे राष्ट्र निकल आएंगे कि उनकी कल्पनासे ही निराशा होती है। इन छोटे-छोटे स्वतंत्र राष्ट्रोंमें बंट जानेपर इस देशकी क्या दशा होगी, इसका अनुमान सहजमें किया जा सकता है। उस विषम परिणामकी कल्पना करके ही देशकी भलाई चाहनेवाले इस बातके विरुद्ध हैं कि हिन्दुस्तानका किसी भी तरह बंटवारा किया जाय। इसी बातको दृष्टिपथमें रखकर सप्रू कमेटीने अल्पसंख्यकोंको अधिकसे अधिक सीटें देनेकी सिफारिश कर हिन्दुस्तानको बंटवारासे बचानेका यत्न किया है।

भौगोलिक दृष्टिसे हिन्दुस्तान एक राष्ट्र है। यातायातके सङ्गठनने इस इकाईको और भी दृढ़ तथा मजबूत बना दिया है। इसी भौगोलिक इकाईमें हिन्दुस्तानकी शक्ति निहित है और विश्वकी जो भावी रूपरेखा बननेवाली है उसमें यही इकाई हिन्दुस्तानके महत्वको स्थापित करनेमें सहायक होगी। विविधताके होते हुए भी इसकी भौगोलिक इकाईके कारण ही यह एक राष्ट्र माना जा सकता है। "गवर्नमेंट आफ इण्डिया" नामक अपनी पुस्तकमें स्वर्गीय सर राम्जे मेकडानल्डने लिखा है:—

बंगालकी खाड़ीसे लेकर कच्छ तक हिंदुस्तान एक राष्ट्र है। हिन्दुस्तानके मानचित्रपर दृष्टि डालनेसे ही प्रकट हो जाता है कि प्रकृतिने इसे एक साम्राज्यमें किस तरह गठित किया है। इसका विस्तार इस इकाईमें कोई बाधा नहीं उपस्थित करता। इसकी विभिन्नतामें भी एकता है। राजनीतिक और धार्मिक परम्पराने भी इसमें इकाईकी ही भावना जाग्रत की है। अपढ़ देहातियोंकी प्रार्थनायें और उनकी तीर्थ यात्रायें भी इसी बातको प्रमाणित करती हैं। आत्म-निर्णयके अधिकारकी धोखेकी टट्टीमें हिन्दुस्तानके बंटवारेकी जो मांग पेश की जा रही है वह इस एकताको सदाके लिये नष्ट कर देगी जिसे यहांके निवासियोंने सैकड़ों वर्षोंसे स्थापित किया है।

आत्मनिर्णयके सिद्धान्तके जन्मदाता स्वर्गीय राष्ट्रपति विल्सन थे। उनका उद्देश्य यह कभी नहीं था कि इस सिद्धांतकी दोहाई देकर राष्ट्रोंकी इकाई नष्ट कर दी जाय। उनका उद्देश्य कमजोर राष्ट्रोंके आक्रमणसे रक्षा करना मात्र था। उनका उद्देश्य यही था कि यदि कोई छोटा राष्ट्र किसी बलिष्ट राष्ट्रकी अधीनतामें रहना स्वीकार न करे तो उसे हक होगा कि आत्मनिर्णयके आधारपर वह उससे अलग होकर अपना प्रबंध वह आप करे। साम्राज्यवादियोंकी उपनिवेश लिप्सासे छोटे-छोटे राष्ट्रोंकी इकाईकी रक्षाके लिये उन्होंने इस सिद्धान्तका प्रचार किया था। भाषा, धर्म तथा अल्पसंख्यक होनेके आधारपर स्वभाग्य निर्णयके सिद्धान्तकी दोहाई देकर किसी भी राष्ट्रकी एकता नष्ट करनेके लिये उसके टुकड़े-टुकड़े करनेका प्रयास उस शुद्ध सिद्धांतका दुरुपयोग करना है। इस तरहकी विभिन्नता तो हर जगह मौजूद रहेगी, लेकिन इससे किसी भी राष्ट्रकी एकता नहीं नष्ट की जा सकती। यदि महाद्वीपोंके भिन्न-भिन्न स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी जांच की जाय तो पता लगेगा कि ऐसे बहुत कम राष्ट्र हैं जहां भिन्न-भिन्न जातियोंका निवास नहीं है। क्या अमरीका और इङ्गलैंडमें एक ही जाति बसती है? सोवियट संघमें तो जाति, भाषा और धर्मकी इतनी ज्यादा बहुलता है कि उसके सामने हिन्दुस्तानकी यह बहुलता कोई हस्ती नहीं रखती। लेकिन उनके आधारपर इन देशोंके विभाजनकी तो चर्चा नहीं की जा सकती। आर्योंका आक्रमण हिन्दुस्तानपर कभी हुआ होगा, यह इतिहासकी बहुत ही प्राचीन और संदिग्ध घटना है। आर्यों और द्राविड़ोंके बीच जो भेदभाव था वह न जाने कबका मिट चुका। मुसलमान आक्रमणकारीके रूपमें इस देशमें हजार साल पहले बाहरसे आये सही, लेकिन इस देशको उन्होंने इस तरह अपना लिया, दोनोंकी सभ्यता और संस्कृति आपसमें इस तरह घुल-मिल गयी कि दोनोंका भेद-भाव जाता रहा। हिन्दुस्तानमें बसनेवाली सभी जातियां आपसमें इस तरह घुल-मिल गयीं कि भेद-भावका कहीं पता नहीं रहा। आज बिलगावकी जो चर्चा सुननेमें आ रही है वह तो ब्रिटिश सत्ताके कारण राजनीतिक अधिकार प्राप्त करनेके लिये एक बहानामात्र है। इस तीसरी सत्ताके मिट जानेपर इस तरहकी चर्चा कहीं सुननेको भी नहीं मिल सकती।

यह युग सहिष्णुताका युग है। धार्मिक सहिष्णुताके अभावमें कोई भी राष्ट्र विकासकी ओर अग्रसर नहीं हो सकता। विश्वका कोना-कोना छान डालिये। कहीं ऐसा राष्ट्र नहीं मिलेगा जिसके निवासियोंमें धार्मिक विविधता न हो। सहिष्णुताकी भावना उन राष्ट्रोंमें इतने प्रबल वेगसे बढ़ रही है कि धार्मिक भेद-भाव धीरे-धीरे राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिसे अलग होते जा रहे हैं। यह कहना कि हिन्दू और मुसलमान एक दूसरेका गला घोटनेके लिये प्रतिदिन खड्गहस्त रहते हैं, सत्यका गला घोंटना है। हिन्दू और मुसलमानोंमें किस तरहकी अखण्ड एकता और मेल है, इसे जो देखना चाहते हैं वे देहातोंकी सैर करें और देखें कि धार्मिक विश्वास, आचार-विचार और रस्म-रेवाजोंमें विभिन्नता रहनेपर भी दोनों जातियां किस तरह आपसमें मिलकर रहती हैं, एक दूसरेकी किसतरह सहायता करती हैं और एक दूसरेके कितनी निकट हैं। बल्कि यह कहना गलत नहीं होगा कि यदि बिलगावकी नीतिका इसी तरह प्रचार होता रहा तो यह एकता नष्ट हो जायेगी और परस्पर संघर्षका जो वातावरण इससे उत्पन्न होगा वह दोनों जातियोंको नष्ट कर देगा। परस्पर कलह और द्वन्द्वकी भयानक आंधी उठ खड़ी होगी। यदि धार्मिक भेदभावको आत्मनिर्णयका आधार माना जाय तो क्या विश्वके पटपर राष्ट्र नामकी कोई वस्तु कभी कायम रह सकती है।

आत्मनिर्णयका सिद्धान्त दोधारी तलवारके समान है। इसका प्रयोग बड़ी सावधानीके साथ करना चाहिये। १९१४ के यूरोपीय महासमरके बाद इस सिद्धान्तके आधारपर यूरोपमें जो छोटे-छोटे स्वतंत्र राष्ट्र कायम किये गये उन्हें लेकर यूरोपमें जो गड़बड़ी हुई और अन्तमें समस्त विश्वको जिस भयङ्कर दावानलमें जलना पड़ा उसे भूल नहीं जाना चाहिये। वर्तमान विश्वव्यापी महासमर इस सिद्धान्तके गलत प्रयोगका ही फल है। यदि आत्मनिर्णयके सिद्धान्तकी आड़में जर्मनीका अङ्गभङ्ग करके छोटे-छोटे स्वतन्त्र राष्ट्रोंको नहीं कायम किया गया होता तो यह भयानक विस्फोट कभी न होता। ... वुएलने ठीक ही लिखा है:—

"इस बीसवीं सदीमें आत्मनिर्णयका सिद्धान्त बहुत जोर पकड़ता जा रहा।

(शेष १० वें पृष्ठपर)

कहानी

— दृष्टिकोण —

——:oo:——

(लेखक—श्री लक्ष्मीनाथ श्रीवास्तव)

मिसेज प्रसाद बिगड़ी हुई हैं। आज ...दिन हो गये धोबिन कपड़े लेकर नहीं आयी। प्रत्येक रविवारको कपड़े धोकर ले जाती है, पर अबकी बार रविवारकी कौन ... सोम, मंगल, बुध बीत गया; आज ...विवार है और उसका पता नहीं। ...ने नौकरको धोबिनके घर भेज रही हैं, ... जिस हालतमें हों धुले, बेधुले या ...सने हुए, वह लेता आवे। नौकर हटा ...ा कि धोबिन आ पहुंची। मंथर गज-...ते, मुस्काती हुई। नौकर चिल्ला उठा—...यी धोबिन! उसे सन्तोष और खुशी ...—एक अप्रिय कार्यसे छुटकारा मिला ...ी उसपर अहसान जतानेका सुयोग। ...ते बोला—मालकिन बहुत बिगड़ी हुई ...हो तबीयत खराब थी, और आंखोंमें ...नेकी चेष्टा करता हुआ वह धोबिनको ...हुआ मुस्कुरा पड़ा। मांसल-सुडौल ...गेहुंए रंग वाली धोबिन साफ़ ...बड़ी आकर्षक लगती है। नौकरकी ...ी निगाह उसपर बराबर पड़ती है, ...ता है मुस्कुरा पड़ता है पर मुयस्सर ...हीं होता। प्रतिदानमें एक निरीह ...ही मिलती है, नौकरके मुस्कानसे ...सका चित्त उतना ही अछूता रह जाता ...जलकी बूंदोंसे पुरइनके पत्ते। पर ...अपनी समझ है—अपने एकान्त तर्क ...अनुमानके सहारे वह इसी निष्कर्ष ...चा है कि किसी न किसी दिन वह ...काबूमें आ जायगी, नहीं तो उसके ...पर रोषका भाव क्यों नहीं दिख-...ता—धोबिनके आते-न-आते मिसेज ...सके गुबार उतारने लगीं—"तुम्हें ...धोनेका मन है कि नहीं सो बता? हम ...ई बनिया हैं जो गन्दे-फन्दे कपड़े ...रहेंगे? आयी है सत्ताइस दिन ...के लेकर..." आगे कुछ कहनेको ...था इससे क्रोधकी मुद्रा दिखाती ...लीं—तो धोबिन बोली—

"...इस तीन दिनोंकी देरी हुई है सर-...कार सो भी..." शायद इतनेसे ही काम ...गा, धोबिन रुक गयी। पर मिसेज ...रूखी-सी बोलीं—तीन दिन नहीं एक ...दिन, क्यों देरी होगी? तुम्हें पूरी धुलाई ...ती है, जब तब खाना मिलता है, फिर ...का मतलब है? टैमका कुछ ख्याल ...नहीं तो हिन्दुस्तानी बुद्धूपन है।

मिसेज प्रसाद टाइमको टैम, फाइन ...) को फैन कहती हैं। गलत सही ...लिख-पढ़ लेती हैं। प्रसाद साहबने ...कोशिश की कि उन्हें कुछ लिखा-...पर मिसेज प्रसादको वह नहीं ...कहती हैं—मर्दको कमाई किस ...औरतको तकलीफ ही उठानी ...पढ़ना-लिखना उनकी बुद्धिमें तक-...ता है। मायका ठेठ देहातमें है सही ...से बराबर शहरमें रहना होता है ...सभी योग्यता उन्होंने बाबुओंकी ...यहां आ-जा कर हासिल कर ली ...टूटी-फूटी हिन्दोस्तानी बोल लेती हैं। ...बाबू विचारशील आदमी हैं; शुरूमें ...पत्नीको सलीकेदारी और पठन-पाठन ...देनेकी बहुत कोशिश की पर

पतिकी वाणीके सम्मुख मिसेज अपने को भैंस ही साबित कर सकीं। उनकी समझ में यह किसी तरह नहीं आता कि जब साफ़ और डिज़ाइन वाले कपड़े वह पहनती ही हैं तो उनके शिक्षित सलीकेदार और अपटूडेट बननेमें बाकी क्या रहा। घरमें चीजें अस्त-व्यस्त बेतरतीब पड़ी रहती हैं सो दोष उनका नहीं, नौकरोंका है। जिस स्त्री का पति ढाई सौ रुपये तनख्वाह पाता हो वह काम थोड़े ही करेगी? हां, नारी स्वातंत्र्यकी पक्की समर्थक हैं और व्यवहारिक जीवनमें उसे यथा साध्य लानेकी कोशिश करती हैं। पतिसे बिना कहे सिनेमा चली जाती हैं, पति दफ्तरमें रहते हैं तो ढेरके ढेर कपड़े खरीद लाती हैं और उनसे जो मिलने आते हैं उनसे खुद भी दो टूक बातें कर लेती हैं।

धोबिन जानती है कि मालकिन बड़-बड़ानेमें बड़ी तेज़ हैं, बिना पूरी सफ़ाई दिये न जाने कितना बोलती जायंगी। अतएव धीरेसे माथेके ऊपर साड़ी खींचती हुई बोली—इसीसे नहीं आ सकी सरकार। दो दिनों तक बड़ी पीड़ामें रही। चलना-फिरना बन्द हो गया था—नहीं तो...। मिसेजने देखा माथेपर पट्टी बंधी हुई है, जरा नर्म हुईं—ऐं! क्या हुआ? कैसे चोट आयी?

—"जल्दीमें घरके दरवाजेसे बाहर हो रही थी सो चौखटमें जोरका धक्का लग गया, दरवाजा बहुत नीचा है।"—अनमनी-सी ठहर ठहर कर धोबिन बोली।

"मां झूठ बोल रही है, एक दम झूठ।—इसे तो बाबूने मारा था।"—मिसेज प्रसाद ने आश्चर्यसे और धोबिनने रोषसे बच्चेकी ओर ताका। सात-आठ सालका बच्चा है, धोबिन जब आती है उसे साथ लेती आती है। अकेले नहीं आती। प्रसाद बाबूसे कुछ कहना होता है, या उनसे धोनेके कपड़े मांगने होते हैं तो बच्चे ही को उनके समीप भेजकर आप जनानेमें ही रह जाती है।—मांके बयानको साफ झूठ बनाकर वह फिर अपनी पाकेटकी कौड़ियां गिननेमें व्यस्त हो गया। धोबिन झेंपी और बच्चेको डपटती हुई बोली—चुप उल्लू तुमसे कौन पूछता है। न जाना न सुना..."

मिसेज ताड़ गयीं।—"ऐं! धोबीने मारा था तुम्हें? सच्ची बताती क्यों नहीं?"

—"नहीं सरकार, मारेंगे क्यों. आप भी इस पाजी लड़केकी बातमें आ गयीं।

—"मैं इतनी बेवकूफ हूं रे, पलटे देती है! लड़का भला झूठ क्यों बोलेगा; पीटा था न पतिने?"

धोबिन कुछ बोली नहीं। मिसेज प्रसाद उत्तेजित हो उठीं—"यही सब हिन्दुस्तानको चौपट कर रहा है। औरत क्या है मर्दका गुलाम है। मार-पीटें, लतियावें, गाली दें पर औरत चूं तक नहीं कर सकती। दोष सोलहआना स्त्रियोंका है, सीधे गऊकी तरह मार खा लेंगी, न बोलना, न विरोध करना! तुझे क्या जरा भी शान नहीं? छी, छी! यही समझ तो स्त्रियोंका सत्यानाश कर रहा है। वे खुद अपनेको नीच बनाये हुए हैं। जरा भी हिम्मत नहीं। बोल तो मैं साहबसे कहती हूँ, किसी सिपाहीको हुकुम दें, चार झप्पड़ धोबी रामको लगेंगे और होश हो जायगा..."

"ना, ना सरकार! हटाइये इन बातोंको; अपने मर्द ही तो हैं। खीसमें हाथ छोड़ ही दिया तो क्या हुआ? मर्द-औरतमें यह सब होता ही रहता है।—अनमनी-सी धोबिन बोली जैसे उसे ये बातें बिलकुल अप्रिय लगती हों। पर मिसेजको वक्त काफी रहता है। बोलनेका मौका पाकर उसे सहज ही हाथसे जाने देना नहीं चाहतीं।

"हुंह! होता ही रहता है। तो खा लात! तुम स्त्रियां पात्र ही ऐसी हो कि मर्द लतियाते रहें। सहती जाओ! खुद मार खानेका शौक है तो इसमें दूसरेका क्या बिगड़ता है? बैल हैं बैल; बैलसे भी बदतर। छेड़नेपर बैल भी सींग चलाता है, तुम सब उससे भी गयी गुजरी हो।"

धोबिन बेचारी मुसीबतमें पड़ी है, कैसे इनसे पल्ला छुड़ाये। ये बातें उसे बिलकुल ही अच्छी नहीं लगतीं, जल्दी जाना भी चाहती हैं, घरपर बहुतसे काम पड़े हैं, इधर यह पिंड नहीं छोड़तीं। साहस बटोरकर किञ्चित रूखी हुई—"कपड़े मिला लीजिये सरकार! मेरे ले जानेवाले सब छंट गये हैं?

पर मिसेजको बोलनेमें जो लुत्फ आ रहा था उसे सहजमें जैसे खोना नहीं चाहतीं—"नहीं, नहीं धोबिन, तू मूर्खता मत कर! मुझे साहबसे कहने दे। बस एक ही बारमें टेकुएकी तरह सीधे हो जायेंगे। फिर तुझपर ताकनेकी भी हिम्मत नहीं पड़ेगी! राम राम! कैसी ना समझ है तू? मैं कहती हूं मेरे ही साहब हैं, मुझपर हाथ चलावें तो? है उनकी हिम्मत......?

धोबिनको जोरकी हंसी आयी, पर बलात् अपनेको रोका। फिर भी अपनी आंखोंकी एक तीव्र घृणामिश्रित उपेक्षाकी दृष्टि निक्षेप करनेसे नहीं रोक सकी। फिर मुस्कराती हुई, सकुचाती-सी बोल उठी—जाने भी दीजिये मालकिन! दो थप्पड़ मुझे मार ही दिया तो कौन मैं मर गयी? फिर अगर मारते हैं तो दुलार भी वही करते हैं। अपने मर्द ही तो हैं। ऐसे थोड़े मारते हैं? खीस चढ़ता है तभी मारते हैं—उस दिन उन्होंने अछता-पछता कर कुछ नहीं खाया और सारी रात मेरे सिरहाने बैठकर बिता दी। ऐसे रोज शराब पीते हैं उस दिन एक बूंद भी नहीं छुई। भला बताइये, मैं क्या खीस करूं उनपर?...हां लिखिये कपड़े,... जा बेटा! साहबसे धोनेवाले कपड़े मांग ला।...

स्नेहकी मनोहारिणी दीप्ति उसके मुख-पर उद्भासित हो उठी और एक सरल-सलज्ज बाला सी वह मिसेजकी ओर ताकती हुई मुस्कुरा उठी।

———

युग का मानव बोल रहा है!

——:o✻o:——

चांद हमारे जीवन-नभ का दुख बदली में डोल रहा है!
जग का रूप विहंसता लखकर तम में मार्ग टटोल रहा है!

जिस अभाव की ज्वाला में, सरिता स्वर-लहरी रुक जाती है,
निष्ठुर पतझड़ के हाथों में कोमल कलिका बिक जाती है,
सोयी पीर जगाने वाले पंछी उड़ कर थक जाते हैं,
मानव के अतृप्त सब वे क्षण आंसू पी-पी छक जाते हैं,

प्राण-सुमन उससे पीड़ित, क्या घन का बंधन खोल रहा है!
जग का रूप विहंसता लखकर तम में मार्ग टटोल रहा है!

एक किरण आशा की पाकर विरही दुख सहता जाता है,
आतप सहते स्नेही दीपक हंस-हंस कर जलता जाता है,
आंधी में भी निर्भय बादल सूने में चलता जाता है,
निर्झर पत्थर से टकरा कर भी आगे बढ़ता जाता है,

उजड़े जग के दग्ध-हृदय में क्या बसन्त रस घोल रहा है!
जग का सुख लौटा दे निर्मम! युगका मानव बोल रहा है!

—विन्ध्याचल प्रसाद गुप्त

…दुस्तानका बंटवारा—एक दृष्टिकोण

(८ वें पृष्ठसे आगे)

यदि इसके प्रयोगपर नियंत्रण नहीं रखा गया तो इससे विदव… शा न्त खतरेमें पड़ जायगी और संसारका कोई भी राष्ट्र अपनी ईकाई कायम नहीं रख सकेगा।" इसकी आड़में कोई भी अल्पमत बहुमतका विरोध करना आरम्भ कर देगा और एक दिन वह आयेगा जब इसका बहाना लेकर एक व्यक्ति भी कानूनकी अवज्ञा करने लगेगा।"

पाकिस्तानका समर्थन कभी-कभी यह कह कर भी किया जाता है कि समूचे हिन्दुस्तान का पुनः बटवारा भाषाके आधारपर होना चाहिये। लेकिन भाषाके आधारपर किसी देशका विभाजन एक बात है और स्वतन्त्र छोटे छोटे टुकड़ोंमें देशको बांट देना दूसरी बात है। भाषाके आधारपर देशके पुनः विभाजनसे न तो छोटे-छोटे राष्ट्रोंका ही उद्गम हो सकता है और न देशकी इकाई ही नष्ट हो सकती है। आत्मनिर्णयके सिद्धांतकी आड़में जो लोग उत्तर-पश्चिमी, उत्तर-पूर्वी और दक्षिणी स्वतंत्र राष्ट्र कायम करना चाहते हैं वे इस तरहकी सद्भावनासे प्रेरित होकर नहीं यह चाहते हैं। भाषाके आधार-पर यदि देशका बटवारा किया जाय तो इससे न तो देशकी भौगोलिक एकता ही नष्ट होगी और न देशकी प्रगतिमें कोई बाधा पहुंच सकती है बल्कि इससे देशका राजनीतिक विकासमें सहायता पहुंचेगी। लेकिन देशको हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और द्राविड़स्थानमें बांट देनेका फल यह होगा कि देश की भौगोलिक एकता नष्ट हो जायगी और इसकी राजनीतिक प्रतिष्ठाको गहरा धक्का लगेगा!

सामरिक और रक्षा दृष्टिसे इस तरह का बंटवारा और भी घातक सिद्ध होगा। छोटे-छोटे राष्ट्रोंके अस्तित्वकी बदौलत आज यूरोपको जिस समराग्निमें जलना पड़ रहा है, उससे कहीं भीषण ज्वालामें हिन्दुस्तान को जलना पड़ेगा। छोटे-छोटे राष्ट्रोंको हड़प जाना जितना आसान है, बड़े-बड़े राष्ट्रोंको हड़पना उतना ही कठिन है। हालैंड और बेल्जियमको हिटलर बातकी बातमें चट कर गया, लेकिन रूसने उसके छक्के छुड़ा दिये। इधर जापान सात सालोंसे चीनमें उलझा पड़ा है लेकिन हर तरहसे पिछड़े चीनको वह परास्त नहीं कर सका है। जापान हर तरहसे आधुनिक अस्त्र शस्त्रोंसे सुसज्जित है, चीनके पास इनका सर्वथा अभाव है। लेकिन चीनका भौगोलिक विस्तार और उसकी विराट आबादी जापानके लिये घातक सिद्ध हो रही है। चीन हारकर भी विजयी है। जापान जीतकर भी परास्त है। सदियोंसे सीमाप्रांतकी रक्षाका प्रश्न उलझन उपस्थित करता आ रहा है। शक्तिशाली ब्रिटिश सरकार भी वहां रक्षाका सुदृढ़ प्रबन्ध नहीं कर सकी है। सीमाप्रांतकी सीमा एक तरहसे अरक्षित ही है। हिन्दुस्तानकी इकाई नष्ट कर उसे छोटे-छोटे स्वतंत्र राष्ट्रोंमें बांट दिया जाय तो रक्षा-प्रश्न और कितना गम्भीर हो जायगा, यह सहज ही समझा जा सकता है। बाहरी आक्रमणका भय सदा बना रहेगा। इन आक्रमणों से देशकी रक्षाका कोई प्रबन्ध नहीं हो सकेगा। इस तरहके विभाजनसे हिन्दुस्तान के सुदृढ़ दुर्गको सदाके लिये ढहा देना होगा जिसकी इकाईकी रक्षा उत्तरमें हिमालय और पूरब-दक्षिण, पश्चिममें हिंद महासागर की दृढ़ भुजायें कर रही हैं। प्रकृतिने हिन्दू समाजको एक राष्ट्रके रूपमें जन्म दिया है। प्रकृतिके इस वरदानकी रक्षामें ही हिन्दुस्तान की महत्ता है। इसे नष्ट-भ्रष्ट करनेका कोई भी प्रयास अन्ततः देशके लिये तथा देशके निवासियोंके लिये घातक सिद्ध होता। इस इकाईकी रक्षासे ही किसी दिन हिन्दुस्तान संसारकी महा शक्तियोंमें स्थान पा सकेगा और संसारका अगुआ बन सकेगा। इस महा स्वप्नको स्थूल रूप देनेके लिये भारतकी इकाईकी रक्षा आवश्यक है।

——:*:——

बर्मा की हवाई लड़ाई

लेखक—पूर्णचन्द्र शर्मा

युरोपका युद्ध हिटलरकी मौतके साथ समाप्त हो चुका है और एशियाका युद्ध अपने लिये कब्र खोद रहा है। जापानका वह तूफानी आक्रमण समाप्त हो चुका है जिसके प्रभावमें एशियाके प्रत्येक देशकी हवा बिगड़ गयी थी और जापानियोंकी बन आयी थी। साम्राज्यवादी राष्ट्रोंका दिवाला निकल चुका था और बूढ़े राजनीतिज्ञ अपने पके बालों पर हाथ फेर कर अपनी सफेदीको नये युगके सामने शानके साथ फिर दिखा रहे हैं।

[photo]

जापानी हवाई जहाजोंसे झड़पके बाद भी घायल सिपाहियोंको सकुशल ले आने वाला ब्रिटिश उड़ाका अपने घायल हवाई जहाजको देख रहा है।

...पर जापानियोंका खतरा अतीतकी दुर्घटना मात्र बन चुका है और अब ...अपने पितृभूमिके बचावकी तैयारियां ...रहे हैं। १९३९ और ४२ इस १९४५ ...सामने दासकी तरह, अपराधीकी तरह ...झुकाये खड़े हैं और अपने पापका प्रायश्चित कर रहे हैं। ऐसे ही समय हठात ...के प्रतिकूल अखबारके मुख्य पृष्ठका ...अंश छोटे मोटी मोटी सुर्खियोंमें ...आया कि रंगूनका पतन हो गया। ...का पतन बर्माका पतन है। युद्धके नियमानुसार लड़ाईकी बारीकीमें महत्वके ...की लड़ाई निर्णयात्मक है और ...बर्माके पतनका प्रारम्भ रंगूनके ...हो चुका है। बर्मा महत्तर एशिया ...में वह स्थान रखता है जो ...की लड़ाईमें फ्रांस। भारत पर जापानियोंका खतरा उसी समयसे स्पष्ट और ...हो गया था जिस दिन बर्मासे ...की फौज सही सलामत पीछे भारतमें ...आयी थी। उस समय अंग्रेजों ...की सामरिक स्थिति युरोप और एशिया ...मोर्चोंमें बुरी तरह बिगड़ी हुई थी। ...राजनीतिज्ञोंकी दूरदर्शिता हताश हो ...थी और वे उस दिनकी बाट जोह रहे ...जिस दिन अंग्रेजोंका पराजय होने वाला था। अंग्रेज भी लड़ाईके प्रतिकूल स्वरूपसे घबरा चुके थे और वे भी यह कहने लग गये थे कि यदि हम इंगलैंडमें हार गये तो कनाडा जाकर वहींसे अपनी लड़ाई जारी रक्खेंगे।

भविष्यकी आहट कोई छन नहीं पाता और अचानक एक दिन कुछका कुछ हो जाता है। हठात अमेरिका युद्धके मैदानमें अपनी पूरी उत्पादन शक्तिके साथ आया और देखते देखते अंग्रेजोंके उखड़ते हुए पैर फिरसे लड़ाईके मैदानमें जमने लग गये। अंग्रेजोंका भविष्य उनके अनुकूल होते दिखाई पड़ने लगा। यह सन १९४२ से प्रारम्भ होता है जब जर्मन सिपाही मास्कोसे विफल मनोरथ वापस लौटने लगे थे। फिर तो युद्ध नीतिमें ऐसा परिवर्तन हुआ कि सभी आक्रमणकारी राष्ट्र अपने भविष्यकी कल्पनासे कांप उठे और वे लड़ाईकी बर्बादीसे अपने देशको सम्हालनेमें ही अधिक व्यग्र हो गये। यह लड़ाई जो पिछले सभी लड़ाइयोंसे क्रूरतामें बाजी मार ले गयी है पूरमपूर मशीन पर ही अपने अस्तित्वको जिलाये है। इस मशीनी लड़ाई का सबसे महत्वपूर्ण पुर्जा हवाई जहाज है। जल और थलकी सारी शक्ति तब तक बेकार है जब तक कि उसे हवाई शक्तिकी सहायता प्राप्त न हो। हवाई शक्ति इस युगकी लड़ाईकी सबसे बड़ी विशेषता रही है। आज जब कि लड़ाई अत्यन्त घने जंगलों और सकरी पहाड़ी घाटियोंमें होती है जहां जानेकी कल्पना मनुष्यने कभी भी न की होगी, हवाई जहाज ही एक ऐसा साधन है जिससे वैसी अवस्थामें लड़नेवाली सेनाओंको सब तरहकी सहायता दी जा सकती है और बर्माकी लड़ाईमें तो इसीकी प्रधानता है। अभी अभी उस दिन जब बगैर एक बुलेट खर्च किये ही अंग्रेजी सिपाहियोंने रंगूनमें प्रवेश किया तो पूर्वीय सेनाके सर्वोच्च सेनापति लार्ड माउण्ट बैटेनने रंगून विजयकी खुशीमें अपने सिपाहियोंके नाम संदेश देते हुए जो कुछ भी कहा था उसमें हवाबाजोंके नाम जो शब्द आये हैं उनसे आप-से-आप यह स्पष्ट हो जाता है कि बर्माकी लड़ाईमें हवाबाजोंका क्या स्थान और कितना महत्व था। लार्ड माउण्ट बैटेन ने कहा है :—आपकी लड़ाईने हमें विजयके उस स्तर तक पहुंचनेमें सहायता दी है जो हमारे लिये बहुत ही संकटपूर्ण था। आपने हमारे स्थल सिपाहियोंको वह मदद दी है जिसकी न तो हमको पहले सम्भावना थी और न आशा ही थी। हमारी आन्तरिक सैनिक व्यवस्थाको सुदृढ़ बनानेमें और उसे विजयके द्वार तक पहुंचानेमें आपने जो सहायता प्रदान की है वह बर्माकी लड़ाई के इतिहासमें एक उल्लेखनीय वस्तु होगी।

जिस हवाई लड़ाईकी चुने हुए शब्दोंमें लार्ड माउण्ट बैटेनने इतनी प्रसंशा की है यदि उसको हम एक बार शुरूसे अन्त तक देखने और समझनेकी चेष्टा करें तो वह बुरा न होगा। अन्य लड़ाइयोंकी तरह बर्माकी लड़ाई खुले हुए मैदानकी लड़ाई नहीं थी वरन यह तो सकरी घाटियों और घनघोर जंगलोंकी वह लड़ाई थी जहां मनुष्यके चरण लड़ाईके पहले कभी नहीं पड़े थे। ऐसे स्थानोंमें हवाई जहाज केवल लड़ाईके ही काममें नहीं आते थे वरन लड़नेवाले सिपाहियोंकी सारी जवाबदेही इन हवाई जहाजों पर ही आ पड़ती थी। घने जंगलोंमें जब कि कदम-कदमपर उन्हें मौतका सामना करना पड़ता था जिन्दगीके सारे साधन उन्हें इन हवाई जहाजोंसे ही प्राप्त होते थे। बर्माकी लड़ाईमें इसका विशेष महत्व रहा है। यों तो आजकी सभी लड़ाई इन हवाई जहाजों पर ही निर्भर है।

लड़ाईका सबसे पहला आक्रमण हवाईजहाजों द्वारा ही होता है। दुश्मनकी रक्षा व्यवस्था को बमबारी करके चूर्ण-विचूर्ण कर देनेके बाद ही स्थल सेनाका अभियान होता है। स्थल सेना तब तक आगे नहीं बढ़ती जब तक कि उसे हवाबाज द्वारा यह आश्वासन न प्राप्त हो जाता कि स्थल सेनाका लक्ष्य-स्थल साधारण दृष्टिसे इतना कमजोर हो चुका है कि अब उसपर आसानीसे अधिकार किया जा सकता है। बर्माकी लड़ाईमें हवाई जहाजों ने प्रकृतिके लम्बे-चौड़े जंगलों और पहाड़ी घाटियोंमें लड़नेवाली सेनाको हर तरहकी सम्भव और असम्भव सहायता पहुंचाकर उसने जापानियोंके सामने आज ऐसी परिस्थिति पैदा कर दी है कि वे बगैर खून-खराबीके रंगून छोड़ देनेके लिये बाध्य हो गये हैं। इसका एकमात्र कारण हवाई जहाजोंकी वह सतर्कता है जिसके सामने जापानी धोखा देनेकी स्थितिमें नहीं रह गये हैं। हवाई जहाजोंने बर्मा की चप्पे-चप्पे जमीन को छान कर जापानियोंके उन सारे रहस्यों को प्रकट कर दिया जिसके बलपर उनका युद्ध आगे बढ़नेको था। बर्माकी लड़ाई १९४३ में जोरोंसे हुई। आसामके जंगलोंकी सहायता लेकर जिस दिन जापानियोंने भारत पर आक्रमण किया था उसी दिनसे बर्माकी लड़ाईके केवल दो ही पहलू रह गये थे—हार या जीत। इस बाजीमें अंग्रेजोंके हाथ जीत आयी। भारतीय सीमासे जापानियोंको दूर खदेड़ देनेमें जिन सिपाहियोंने भाग लिया था उनके सामने सबसे बड़ा सवाल यह था कि घने जङ्गलोंमें उन्हें लड़नेवाले साथी और लड़नेके साधन कैसे मिलेंगे और इसे हवाई सेनाने पूरा कर दिया। जङ्गलके जिस भागमें भी ये सिपाही लड़ते रहे उनके सिरपर सदैव हवाई जहाज मंडराते रहते थे और छतरीधारी सैनिक उनके अगल-बगल आगे-पीछे उतरते रहते थे। आदमियोंके साथ-साथ लड़नेवाले सिपाहियोंके खाने-पीने तथा गोला-बारूद भी इन हवाई जहाजोंसे ही मिला करते थे। इन सब सामानोंको सही-सलामत उतार देनेमें उन हवाबाजोंकी दक्षता थी जो आसमानमें उड़नेकी विशेष शिक्षा प्राप्त किये रहते थे। खाने-पीने तथा गोला-बारूद जैसी तुलुक चीजोंको आसमानसे

[photo]

थेतकाकके पास शस्त्रास्त्रोंसे लदी जापानी रेलगाड़ी पर कितना सही निशाना बैठा है।

हवाई जहाजके दरवाजे पर अमेरिकन "किकर" लक्ष्य स्थान पर सामान फेंकनेकी तैयारीमें।

जमीनपर फेंकनेमें इस बातकी ये सतत साव-धानी रखते थे कि ये कहीं नष्ट न हो जांय। इसलिये उन्हें उसी तरहके उड़ान भरने होते थे जब जैसा परिस्थिति होती थी। गिरने-वाली चीजोंको इस मुलायमियतसे गिराया जाता था कि वे धमाकेके साथ जमीनमें न गिर कर आहिस्तेसे जमीनमें रखा जाती थीं। जहां हवाबाज इस तरह आसमानसे अंधा-धुंध आयुधोंकी वर्षा करते थे वहां उन्हें इस बातका भी ध्यान रखना पड़ता था कि वे कहीं लक्ष्य भ्रष्ट तो नहीं हो गये और इसके लिये उन्हें जो निर्धारित चिन्ह बता दिये जाते थे वे वहीं अपने सारे सामानोंको उतार देते थे। इस कार्यके लिये उन्हें अपने प्रधान-कार्यालयसे हवा द्वारा आदेश मिलते रहते। वे आसमानमें चाहे कहीं भी क्यों न उड़ते रहते थे उनका सम्पर्क अपने प्रधान कार्यालयसे बना ही रहता था। प्रत्येक क्षण वे अपने कार्योंका हवाला प्रधान कार्या-लयमें भेजते रहते थे और वहांसे उन्हें उचित सत्परामर्श सदैव मिलता रहता था। ऐसे अवसरोंपर बहुधा यह भी होता था कि हवा-बाज जब अपने लक्ष्यके स्थानोंपर पहुंचनेके बाद भी सामान गिरानेका वहांसे कोई इशारा नहीं पाते थे तो वे सीधे प्रधान कार्या-लयसे इसके विषयमें पूछताछ करते थे और उसे वहांसे सारी बातें बतलायी जाती थीं तथा उसे यह आदेश मिलता रहता था कि अब आगे उसे क्या करना है। कभी-कभी प्रधान कार्यालयकी बुद्धिमें भी जब कोई बात नहीं आती थी तो वह हवाबाजको उसी स्थानपर चक्कर काटते रहनेका आदेश देकर बड़े नक्शेकी सहायतासे उच्च अधिकारियोंके परामर्शके बाद फिर अन्तिम निर्णयसे हवा-बाजोंको परिचित कराते थे। ऐसे समय में हवाबाजोंको प्रतिक्षण सङ्कटका सामना करना पड़ता था। युद्धके ऐसे अवसरोंपर जबकि लड़ाईका स्थान प्रतिक्षण बदलता रहता था हवाबाजोंको अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। प्रधान कार्या-लयसे आदेश लेकर उड़नेवाले हवाबाज जब तक अपने लक्ष्य स्थानको पहुंचते थे तबतक ऐसा भी हो जाता था कि जापानी उस स्थानको छोड़कर पीछे हट जाते थे और वहां उनके अपने ही सिपाही होते थे। ऐसी स्थितिमें उन्हें प्रधान कार्यालयके ही आदेशों-पर निर्भर करना पड़ता था। नहीं तो वे मक्षिका स्थाने मक्षिका जैसा आदेशको मान कर काम कर डालते तो इससे अपने ही बमों और मशीनगनकी गोलियोंसे अपने ही सैनिकोंका विनाश होता। ऐसी स्थितिमें इन्हें प्रतिक्षण अपने प्रधान कार्यालयसे संबंध बनाये रखना पड़ता था और प्रधान कार्या-लयके आदेशोंपर ही उन्हें सारा काम करना पड़ता था।

भामोमें जापानियोंके भाग खड़े होनेकी खुशीमें अमेरिकन सेनाओंके सामने बर्मी युवतियां "तलवार नृत्य" का प्रदर्शन कर रही हैं।

लड़नेवाले सिपाहियोंके लिये जहां हवाई जहाजोंको इतना श्रम करना पड़ता था वहीं उन्हें घोड़ोंका घास-दाना भी देना पड़ता था। हवाबाजोंके लिये यह काम बड़ा कसालेका था। भामो और लाशियोके मध्यमें बर्मारोडके लिये होनेवाली लड़ाइयोंमें हवाबाजोंका यह काम बहुत जोर पकड़ गया था और उन्हें दिनमें तीन-तीन बार घोड़ोंको घास-दाना देना पड़ता था। घास-दाना देनेमें हवाबाजोंको इस बातकी भी सहूलियत नहीं थी कि वे पैराशूटके सहारे ही घास दाना आसमानसे नीचे गिराते वरन बगैर पैराशूटके सहारे उन्हें घास और दाना घोड़ोंके सामने गिराना पड़ता था। इसके लिये हवाबाजको गोताखोरी की सहायता लेनी पड़ती थी। वे एकदम जमीनके पास आकर घोड़ोंके सामने घास और दाना इस रूपमें छोड़ आते थे कि वे उनके मुंहके ही सामने पड़ते थे। इसके लिये हवाई जहाजसे सामान फेंकनेवाले मनुष्यका काम विशेष श्रमकर था। हवाई जहाजके दरवाजेपर दो आदमी खड़े होकर सामान फेंकनेवाले (Kicker) के सामने सामान रख देते थे और वह मशीनकी नाईं उन सामानोंको यथा स्थान पैरोंसे फुटबाल की तरह फेंकता जाता था। इसके लिये हवाई जहाजोंको उस स्थानका गोल चक्कर काटना पड़ता था और बार-बार उसी स्थान के ऊपर आना पड़ता था जिसके ठीक नीचे लक्ष्य स्थान पड़ता था। एक बार सामान फेंक कर हवाई जहाजके गोल चक्कर काटनेमें जितना समय लगता था उतने ही समयमें किकरको दूसरे किकके लिये तैयार हो जाना पड़ता था और यह इस आनन-फाननसे होता था जो वर्णनातीत है। घोड़ेके लिये घास-दाना और सिपाहियोंके लिये मुर्गी तथा अण्डे गिरानेमें हवाई जहाजोंको जमीनके ऊपर १५० से लेकर ३०० फीटकी ऊंचाईपर उड़ना पड़ता था। यह उड़ान बड़ा ही कष्टसाध्य और साहसिक था। बर्माकी लड़ाईमें हवाबाजोंने अपने उच्च अधिकारियोंको इस तरहकी योजना बनाकर दी थी जिसे उन लोगोंने स्वीकार कर लिया था और उसके बाद तो इन तरीकोंने बर्माकी लड़ाईका नक्शा ही बदल दिया। सचमुच यदि गह-राईसे देखा जाय तो इन्हीं हवाई बेड़ोंने बर्माकी उस पहाड़ी लड़ाईमें, जिसमें ब्रिटिश अंग्रेजी सिपाही अपने सहयोगियोंसे ... बर्माके पहाड़ोंके कारण एक दूसरेसे छूटे ... थे सम्पर्क स्थापित रखनेमें बहुत बड़ा काम किया है। स्थल सैनिकोंको इस समय ... हवाबाजोंसे ऐसी ऐसी सहायतायें प्राप्त थीं कि उनका वर्णन लेखमें नहीं वरन ... मोटे कई पुस्तकोंमें किया जा सकता है।

मांडालेकी लड़ाई जब चरम सीमा ... पहुंच चुकी थी और डफरिनके किलेके ... बाहर मैदानकी लड़ाइयोंमें भी आ... प्राण होमकर लड़ रहे थे, अंग्रेजी सिपाहियों के सामने घायलोंको ढोकर ले जानेकी ... चित्र समस्या थी। ऐसे अवसरपर हवाबाजों ने दिलेरीसे काम लेकर घायलोंको ... विचित्र साहसका परिचय दिया था। हवाबाजोंने प्रत्येक दिन युद्ध स्थलसे एक बार नहीं वरन पूरे १९ बारतक घायलोंको सकुशल ढोकर लानेमें अपनी हवाबाजी का वह शानदार परिचय दिया था जिसे ... अंग्रेज आश्चर्यके साथ याद करते हैं। ... नहीं इन हवाबाजोंने पीछे हटते हुए आगे ... सिपाहियोंपर भी इस बुरी तरह आक्रमण किया था कि जापानियोंको बाध्य होकर अपने सारे लड़ाईके सामान रास्तेमें ही ... देने पड़े थे जिसे इन हवाबाजोंने ... अपने दफ्तरमें पहुंचा दिया था। घायलोंको ढोनेके मामलेमें हवाबाजोंने इस साहस का परिचय दिया था कि वे अपने दो ... हवाई जहाजपर ७ घायलों और ... बन्दियोंको ढोकर ले आया करते थे। जापानी बराबर इस बातकी चेष्टामें रहते कि अंग्रेजी हवाबाज घायलोंको ढोकर ... जायं पर ये हवाबाज उनकी सारी आशाओं पर पानी फेरनेको तैयार हो चुके थे ... इन्होंने उसे कर भी दिखाया।

लक्ष्य स्थानोंके चित्र उतार लेनेमें ... हवाबाजोंने कमालका काम किया था ... में जापानके उन सारे सामरिक ... चित्र इन हवाबाजोंने अपने दिनरातके ... में उतार लिया था जिनपर जापानियोंको युद्ध कौशलको प्रचण्ड अभिमान था। ... ली नामक हवाबाज जब एक बार ...

(शेष १४वें पृष्ठपर)

जापानी पराजयकी खुशीमें भामों निवासी अमेरिकनोंके सामने बर्माके प्रसिद्ध बाधका प्रदर्शन कर रहे हैं।

मि० चेम्बरलेनकी ढुलमुल नीति और ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंकी अदूरदर्शिताने इस महायुद्धको जन्म देनेमें विशेष सहायता पहुंचायी। हिटलरको समझनेकी गलतीने युद्धके प्रारम्भके दिनोंमें वह बावेला मचा दिया था, जिसके परिणामस्वरूप संसार के सामने अंग्रेजोंकी राजनीतिज्ञता दीवालिया समझी जाने लगी थी। मि० चेम्बरलेन शुरुसे अन्तक हिटलरको मिलाकर शांति स्थापित करनेकी जो चेष्टा कर रहे थे वह उनका पत्थरपर घास उगानेका निरर्थक प्रयास था। दुख तो तब होता है जब कोई ऐसा व्यक्ति जिसपर संसारका विश्वास होता है गलती करते हुए भी अपनेको गलत नहीं मानता। और यही बात मि० चेम्बरलेनके भी विषयमें कही जा सकती है। हिटलरका अभ्युदय ही इस बातका प्रमाण था। वह युरोपसे अंग्रेजोंका हौवा खतम कर देना चाहता था। वह जानबूझकर जर्मनीका नेता इसीलिये बना था कि वार्साईके संधिको छिन्न-भिन्न करके वह युरोपमें एक ऐसी कुव्यवस्था पैदा कर दे जिसमें पड़कर ब्रिटेन अपनी सारी इज्जत और सारा विश्वास खो बैठे। और तब इस स्वर्ण अवसरसे लाभ उठाकर हिटलर—जर्मनीका भाग्यविधाता हिटलर सारे युरोपपर जर्मनीका झण्डा फहराता हुआ देखना चाहता था और वह युरोपके प्रत्येक घरमें स्वस्तिका झण्डाको फहराते देखना चाहता था। किन्तु इसके सर्वथा विपरीत बनियेकी तरह मि० चेम्बरलेन सौदा पटानेकी अनवरत चेष्टा कर रहे थे। वे नहीं जानते थे कि वे उसके सामने बनियापन दिखा रहे हैं जो लूटके धन को इससे नहीं वरन लाठीसे नापना चाहता था। म्युनिकके रेजीना होटलमें मक्खन लगे तोसोंके टुकड़ोंको चबा लेनेके बाद दलादिये और चेम्बरलेनने जिस अशेष शान्तिका आश्वासन युरोपवालोंको दिया था वह पहली ही बार बमोंको कड़कड़ाते हुए वज्रकी तरह उनके सिर टूट पड़ा। हिटलरसे मिलकर शांति स्थापित करनेवाले मि० चेम्बरलेनका नाजी नेताओंके सामने नैतिक पतन हो चुका था और इस स्थितिमें हिटलर जो कुछ भी चाह रहा था वह भी धीरे-धीरे इन दोनों महारथियों के सामने होता ही जा रहा था। जेकोस्लेवाकियाके सीमा निर्धारणका मसला तय हो जानेके बाद यह समझा जाने लगा था कि युद्धका खतरा युरोपसे हट गया है किंतु यह भ्रान्ति थी जिसका परिणाम विश्वयुद्ध के रूपमें उन्हें भोगना पड़ा जो युद्धके चढ़ाव-उतारसे दूर रहनेवाले सुख और शान्तिसे रूखी-सूखी रोटियां खाकर जीवन बितानेवाले नागरिक थे।

अपने जीवनकालमें हिटलर जो सुख और शान्ति युरोपमें देखना चाहता था वह चेम्बरलेन तथा दलादियेकी सहायतासे उसे मिलना कठिन नहीं था। हिटलर बुद्धिमान था। चेम्बरलेन तथा दलादिये द्वारा किये समझौतोंका आड़ लेकर वह युरोपमें अपने विस्तारका जितना फायदा उठाना चाहता था उठा रहा था और इस रूपमें वह अनुभव कर रहा था कि देखें इनके भीतर कितना दम है। अपनी पहली मुलाकातमें

युद्ध का पूर्वकाल

—:◌॰◌:—

— अखबारी —

चेम्बरलेनने म्युनिक पैक्टपर हस्ताक्षर करके हिटलरको यह समझनेका अवसर दिया कि वह इङ्गलैंडके बारेमें जो कुछ सोंच रहा था वह सत्य है। रेजिना होटलमें होनेवाले नाटक की समाप्तिके ६ महीनेके भीतर ही भीतर साराका सारा जेकोस्लेवाकिया जर्मन सेनाओं द्वारा नाप दिया गया और ठीक इस नाटकके सातवें दिन बाद लिथुआनिया का मेमेल प्रदेश जर्मन सेनाओं द्वारा लिथुआनियासे छीन लिया गया। सारा युरोप इस काण्डसे क्षुब्ध हो उठा। युरोपका नेतृत्व करनेवाले तबके मित्रराष्ट्र इङ्गलैण्ड और फ्रांस जर्मनीकी चालको भी नहीं समझ सके और वे इस धुनमें थे कि जबतक हम अधिक से अधिक बल संग्रह न कर ले जर्मनीको युद्धका अवसर न प्रदान करें। जर्मनी जान बूझकर युद्धके लिये तैयार हो चुका था और वह इस स्वर्ण अवसरको अपने

वर्तमान महायुद्धके प्रमुख अग्रगण्य नेता
स्व० चैम्बरलेन

हाथसे निकले जाने देनेको तैयार न था। तबतक ३१ मार्चको मि० चेम्बरलेनने कामन सभाकी बैठकमें घोषणा की कि हम मित्रराष्ट्रोंने पोलैंडको उसकी स्वतन्त्रता वापस करनेका आश्वासन दिया है। धुरी शक्तियोंपर चेम्बरलेनकी इस घोषणाका कोई असर नहीं पड़ा और ७ अप्रेल, ईसाइयोंके गुडफ्राइडेके दिन मुसोलिनीके सिपाहियोंने अलबानिया पर आक्रमण कर दिया और जोरोंके साथ देशके भीतर घुस गये। स्थितिकी भयंकरता ज्यों ज्यों स्पष्ट होने लगी त्यों त्यों अंग्रेजोंके सामने यह स्पष्ट होने लग गया कि अब उन्हें युद्ध या गुलामी दोमें से किसी एकको चुनना होगा। अतएव गुलामीसे युद्धको ही उन्होंने पसन्द किया और १३ अप्रेलको रूमानिया और यूनानको अंग्रेजी सरकारका आश्वासन मिला कि वे उसके साथ होने वाले प्रत्येक अन्यायके जी जानसे विरोधी हैं। युद्धकी स्थिति यद्यपि तब भी स्पष्ट न हो पायी थी फिर भी मि० चेम्बरलेनकी घोषणाके फलस्वरूप इंगलैंडमें आम सैनिक बहाली तैयारी शुरु हो गयी। जैसे ही इंगलैण्डमें यह कार्यवाही प्रारम्भ हुई वैसे ही हिटलरने १९३५ में अंग्रेजोंके साथ हुए समुद्री समझौतेको तोड़ देनेकी घोषणा कर दी और पोलैंडसे जर्मनीको डैंजिग वापस दे देनेकी मांग पेश कर दी। अंग्रेजी युद्धविशारद हिटलरकी चालके सामने लगातार मात खाते खाते ऐसी शक्तिको अपनी ओर आकृष्ट करनेको सोचने लग गये थे जो इनकी डूबी हुई राजनीतिक प्रतिष्ठाको बचा लेनेके लिये काफी हो। तब तक अंग्रेजोंके विचार इतने तीव्र नहीं हो सके थे कि वे शीघ्रसे शीघ्र अपने पक्षको शक्तिशाली बनानेमें जुट जाते। अन्तमें अंग्रेजोंकी ओरसे यह निश्चय किया गया कि अंग्रेजोंका एक युद्ध प्रतिनिधिमंडल रूस जाये और वहां जाकर रूससे समझौता करनेकी चेष्टा करे। काफी वाद-विवादके बाद अंग्रेज इस निर्णय पर पहुंचे। फिर भी अंग्रेज उस समय तक भी सतत सावधान नहीं हो सके थे और इसके फलस्वरूप बजाय लार्ड हेलिफेक्सके मि० विलियम स्ट्रैंग नामक एक अज्ञात व्यक्ति इंगलैंडसे मास्कोके लिये समुद्री राह से रवाना हुआ। अंग्रेजोंकी इस सुस्तीसे जर्मनोंने फायदा उठाया और जब तक अंग्रेजों का प्रतिनिधि मंडल रूसकी जमीनपर पहुंचने को था तब तक २१ अगस्तको सोवियट-जर्मन अनाक्रमण सन्धिकी घोषणा हो गयी और अंग्रेज चालबाजीकी इस करारी ठोकरको सहनेके लिये लाचार हो गये। सोवियटसे समझौता हो जानेके बाद हिटलरका यह विश्वास दृढ़ हो गया कि रूससे अब पोलैंडको कोई सहायता नहीं मिल सकती और इंगलैंड तथा फ्रांस चाहते हुए भी उचित समय पर जल या स्थल मार्गसे पोलैण्डकी कोई सहायता नहीं कर सकते अतएव युद्धको अपने पक्षके अनुकूल होते देख जहां हिटलरका दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ गया वहां मित्र राष्ट्रोंके सामने चिन्ताका समुद्र उमड़ पड़ा। अपनी खीस मिटानेके लिये २५ अगस्तको लन्दनमें पोलैंड और अंग्रेज सरकारकी एक सन्धि हुई और उसमें यह तय किया गया कि पोलैंडकी आजादीकी सारी जवाबदेही मित्र राष्ट्रोंके जिम्मे है। दुर्बल पोलैंडको उसके मानसिक उथल-पुथलसे बचानेके लिये इससे अच्छा और क्या किया जा सकता था। किन्तु इसके सर्वथा विपरीत हिटलर जल्दसे जल्द अपनी इच्छाओंको पूर्ण होते देखना चाहता था। २९ अगस्तको हिटलरने अंग्रेजी राजदूत हैंडरसनको एक खरीता देकर कहा कि वे हवाई जहाज द्वारा इंगलैंड जाकर जल्दसे जल्द इसका उत्तर लानेकी चेष्टा करें। शनिवारके दिन भर और रविवारके प्रातःकाल तक अंग्रेजी कैबिनेटकी सभा होती रही और जर्मनीको इसके परिणामकी जो सूचना दी गयी; उसमें लिखा था कि इंगलैंड और जर्मनीकी मित्रता और शांतिके प्रयास तभी तक कायम रह सकते हैं जब तक पोलैण्डपर जर्मनी आक्रमण नहीं करता। पोलैंण्ड पर आक्रमण कर देनेके बाद जर्मनोंसे अंग्रेजोंकी कोई मित्रता नहीं। इंगलैंडका राजनीतिक वातावरण भी गरम हो चुका था और अंग्रेज युद्धको अवश्यम्भावी मानने लग गये थे। इंगलैंडके अखबारोंने युद्धके विषयमें मतगणना लेनी शुरू करदी थी और परिणामस्वरूप जो आंकड़े उनके पास आने लगे थे वे युद्धको अवश्यम्भावी बता रहे थे। अखबारवालोंको जनताकी रूचिका पता लग चुका था और अब सरकारकी निश्चित रूचि की प्रतीक्षा की जा रही थी। इङ्गलैण्डके सुप्रसिद्ध अखबार टाइम्सने अंग्रेजी सरकार को बमबाजीके खतरेसे सावधान रहनेकी चेतावनी दी और फलस्वरूप बारह हजार गैलन चूनेकी सहायतासे सरकारी इमारतें पुतने लगी—जरूरी सामान लन्दनसे बाहर भेजे जाने लगे, बालूके बोरोंसे सरकारी इमारतोंकी रक्षाका प्रयत्न किया जाने लगा, और चार ही दिनके भीतर-भीतर १५ लाख शिशु, अन्धे और बूढ़ी मातायें लन्दनसे बाहर सुरक्षित स्थानोंमें भेज दी गयीं। पोप, राष्ट्रपति रूजवेल्ट तथा बेलजियम, हालैण्ड, डेनमार्क, फिनलैण्ड, नार्वे, स्वीडेन और लक्सेमबर्गकी ओरसे नीदरलैण्डकी साम्राज्ञी ने हिटलरसे शान्ति बनाये रखनेकी अपील की किन्तु ये सारे श्रम बेकार गये।

पोलैंडके मसलेको तय करनेकी पूरी कोशिश की जाने लगी क्योंकि कोई भी राष्ट्र युद्ध पसन्द नहीं करता था। हिटलरको जब युद्धकी विभीषिकाका वर्णन बतलाया गया तो उसने कहा—मैं ५० सालका हो गया हूं। पांच या ६ सालके भीतर ही भीतर मैं युद्ध समाप्त कर दूंगा। मैं इङ्गलैंडसे नहीं लड़ना चाहता किन्तु यदि वह इसके लिये तैयार है तो मैं पीछे कदम नहीं हटाऊंगा। २८ अगस्तको पोलैंडसे समझौता कर लेने सम्बन्धी अंग्रेजी प्रयासका जो उत्तर बर्लिनसे आया उसमे लिखा था—हम सीधे पोलैंडसे समझौता करना चाहते हैं। लन्दनको बीचमें रखकर किसी भी प्रकारके समझौतेको अपने लिये अपमानजनक समझते हैं। अंग्रेजोंके दिमागमें इस उत्तरका प्रत्येक शब्द जर्मन गोलीकी तरह प्रवेश कर गया और वे ऐसे किसी भी समझौतेके लिये तैयार नहीं हुए। पोलैंडके विदेश मन्त्री मि० लिपस्की बर्लिन जाकर समझौता करनेको तैयार न थे। उनका कहना था कि बर्लिनमें हम जिस समझौतेपर हस्ताक्षर करेंगे वह हमारे लिये अपमानजनक होगा। जर्मन पिस्तौलके सामने बैठकर वीर समझौता नहीं करता वरन यह तो कायरोंका काम है। ३० अगस्तको जर्मन विदेश मन्त्री वान रिबनट्रापने अंग्रेजी राजदूतको पोलैंडसे समझौता करनेका शर्तनामा जर्मन भाषामें धड़धड़ाते हुए पढ़कर सुना दिया और उसकी प्रतिलिपि देनेसे उन्होंने इन्कार किया। अंग्रेजी राजदूतको यह अपमान असह्य था। वह चुप्पी लगा गया और पोलैंडसे भी समझौतेकी कोई चेष्टा नहीं की गयी तथा जर्मनों की ओरसे समझौतेके लिये पोलैण्डको जो निर्धारित समय दिया गया था वह भी बीत चुका था। यह ३० अगस्तके संध्याकी बात थी और १ सितम्बरको उस समय युरोप की सबसे सशस्त्र यांत्रिक जर्मन सेनाने पोलैण्डपर तूफानी हमला कर दिया। इङ्गलैण्ड के मन्त्रिमण्डलने जर्मनोंके इस हमलेका

बर्माकी हवाई लड़ाई

(१२ वें पृष्ठसे आगे)

स्थलोंका चित्र लेने गया था लौटकर उसने सदर दफ्तरमें अपनी यात्राका जो हवाला दिया था उसमें उसने कहा था—"हमारी मशीनगनकी गोलियां जिस तेजीसे जापानियोंके सिरपर बरस रही थीं--ठीक उसी क्रम से हमारे केमरेका शटर चल रहा था। वृक्ष जितना ऊंचा उड़ान लेते हुए मैं जिस तेजीसे सारे दृश्योंको देख रहा था उसी तेजीसे हमारा केमरा उन सारे दृश्योंको अपने भीतर उतार रहा था। जैसे ही मेरा हवाई जहाज उस स्थलपर पहुंचा जहांसे तेलकी नली दूर-दूर तक गयी हुई थी, मैं प्राणका मोह छोड़कर नलीकी रक्षा करनेवाले सिपाहियोंपर मशीनगनके साथ बाजकी तरह टूट पड़ा और सारे उपलब्ध दृश्य मेरे केमरेमें उतर गये। जो दस-पांच जापानी सिपाही मौतके मुंहमें जानेसे बच चुके थे वे भागकर झाड़ियोंमें छिप गये और तब मैं निर्द्वन्द्व भावसे हवाई जहाजपर चक्कर काटता हुआ महत्वके चित्र उतारने लगा।" इन चित्रोंको उतारनेमें हवाबाजों को इस बातपर विशेष ध्यान देना पड़ता था कि चित्रोंका सिलसिलाका सिलसिला न टूट जाये। चित्रका सिलसिला टूट जानेपर फिर लक्ष्य स्थानपर जमकर न तो बमबारी ही की जा सकती थी और न उसपर पूर्णरूपेण अधिकार ही किया जा सकता था। कठिनाइयोंको हल करनेके लिये हवाबाजोंको उन सभी सम्भव उपायोंसे काम लेना पड़ता था जिनके द्वारा उनके चित्र लेनेके सभी अवरोध दूर हो जाते थे और इसके लिये तो कभी-कभी हवाबाजोंको एक ही स्थलपर मौतका सामना करते हुए घण्टों चक्कर काटना पड़ता था।

ये हवाबाज निरर्थक आसमानमें चक्कर काट काट कर दुश्मनके छिपे हुए सामरिक केन्द्रोंका पता लगाते थे। यह काम बड़े खतरेका हुआ करता था। फिर भी वे हवाबाज जो बर्माकी लड़ाइयोंमें काम कर रहे थे इसे इतना सहल बना दिया था कि आज रंगूनमें प्रवेश करते समय अंग्रेजी सिपाहियोंको एक भी जापानीका सामना नहीं करना पड़ा। सर्जेन्ट ली का काम लड़ाईके उन दौरानोंमें बड़ा ही महत्वपूर्ण था जब अंग्रेजों को जापानके प्रत्येक सामरिक स्थलके चित्रों की आवश्यकता थी। चित्रोंका महत्व इस बातके लिये था कि उससे दुश्मनके प्रत्येक उन गुप्त स्थानोंका पता लग जाता था जहां से दुश्मनोंके लड़नेवाले सिपाहियोंको आयुधों तथा खाने पीनेके अलावे अन्य ऐसी सहायता मिलती रहती थी जिससे उनका काम मोर्चों पर रुकने नहीं पाता था। सर्जेन्ट ली के सामने यही समस्या थी। एक बार जब काफी देर तक दुश्मनके सामरिक केन्द्रों पर चक्कर काटनेके बाद ली लौटा तो वह प्रसन्न नहीं था। किन्तु जब उसके द्वारा उतारे गये चित्र धो-धाकर बड़े बनाये गये तो उसमें कुछ ऐसे महत्वपूर्ण चित्र भी आ गये थे जिसका स्वयं सर्जेण्ट ली को भी पता न था। निरर्थकके हवाई दौड़ानमें जब उसका केमरा अपना काम कर रहा था उसमें शत्रुके उन स्थानोंके चित्र उतर आये थे जिसका कि अंग्रेजोंको पता भी नहीं था। ली के अन जानते आने वाले इन चित्रोंके कारण ली को हवाबाजीका सबसे बड़ा तमगा प्रदान किया गया जिसके लिये वह बहुत खुश हुआ। इन हवाबाजोंके काम भी आपसमें बटे हुए होते थे। एक दल जब दुश्मनोंके लक्ष्य स्थान पर छापा मारता था तो दूसरा दल उनकी रक्षा करता था और तीसरा दल उनसे आगे बढ़ कर भागने वाले जापानियों पर बमबाजी करके ऐसी कठिनाइयां पैदा कर देता था कि जापानी कुछ भी ले जा सकनेमें असमर्थ हो जाते थे। हवाबाजों की इस सक्रियतामें जैसा, कि मैं पहले ही बतला चुका हूँ उनके प्रधान कार्यालयका विशेष हाथ रहा करता था। वे क्षण पर क्षण आने वाली विपत्तियों और होनेवाली बातों पर प्रभाव बनाये रखनेके लिये हवाबाजोंको आदेश देते जाते थे और ये हवाबाज उसीके अनुसार अपना काम करते जाते थे। हां यह बात अवश्य थी कि प्रधान कार्यालयके सारे आदेशोंके बावजूद भी घटनास्थल पर उपस्थित रहनेवाले हवाबाजोंको अपनी ही प्रत्युत्पन्न मति पर अधिक भरोसा करना पड़ता था। प्रधान कार्यालयसे उन्हें केवलमात्र आदेश मिला करता था पर कार्य करनेका सारा दायित्व उन्हींके सिर पर रहा करता था। धीरे-धीरे ये हवाबाजों बर्माके जंगली और पहाड़ी हिस्सोंमें जम कर लड़ लेनेके बाद अन्य उन सभी सामरिक क्षेत्रोंमें लड़नेके लिये उपयुक्त सिद्ध हो चुके हैं जहां इस तरहकी पेचीली लड़ाइयां होंगी और जहां स्थलके सारे साधन लड़ने वालोंकी सहायता पहुंचानेमें असमर्थ होंगे।

विरोध करते हुए २४ घण्टेके भीतर जर्मन सिपाहियोंके पोलैंडकी सीमासे पीछे हटने का खरीता भेजा जिसका जर्मनोंकी ओरसे कोई उत्तर नहीं मिला और ३ सितम्बरको इङ्गलैंडने जर्मनोंके विरुद्ध युद्ध-घोषणा कर दी।

संसार का घटना चक्र

जर्मन आत्मसमर्पण

रीख मिनिस्टर काउण्ट वान कवेरिन क्रोजिकने जर्मनोंके नाम आत्मसमर्पणके बाद अपना संदेश ब्राडकास्ट करते हुए कहा है—"लगभग ६ वर्षों तक अद्वितीय कठिनाइयोंका सामना करते हुए युद्धरत रहकर अंतमें दुश्मनोंकी बेशुमार ताकतोंके आगे जर्मनोंने घुटने टेक दिये हैं। युद्ध जारी रखनेका नतीजा व्यर्थका खून खराबी और विनाशके सिवा और कुछ नहीं हो सकता। राष्ट्रके प्रति उत्तरदायित्वका खयाल करनेवाली सरकार सभी भौतिक शक्तियोंके विनाशके बाद शत्रुओंसे युद्धका अन्त करनेकी मांग करनेको बाध्य हुई है। इस बातसे बिल्कुल स्पष्ट है कि कैसी स्थितिमें हम आत्मसमर्पण करनेको तैयार हुए। हमारे सामने दो ही मार्ग रह गये थे। एक विरोधका और दूसरा हथियार डालकर आनेवाले बुरे दिनोंको किसी तरह झेलनेका। पहलेकी संभावनाके खतम होते ही दूसरेका अवलम्बन निश्चित था। सम्पूर्ण विश्वको लड़ाईमें झोंकनेवाले जर्मन नेता पहलेसे अच्छी तरह जानते थे कि पराभवका अर्थ उनके देशके लिये क्या होगा। रीख मिनिस्टरने अपने सन्देशमें उसी सत्यको स्पष्ट करनेकी कोशिश की है: हमारे शत्रु जर्मन राष्ट्र पर कैसी कठिनसे कठिन शर्तें लादेंगे इसके सम्बन्धमें किसीको भ्रम न होना चाहिये। हमें बिना जबान हिलाये इस परिस्थितिका स्वागत करना है। भविष्य हममेंसे प्रत्येकके लिये दुःखदायी होगा और जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें हमसे त्याग और बलिदानकी आहुति लेगा। इसमें सन्देहकी किसीको गुंजाइश नहीं। एक बार पुनः अन्धकारपूर्ण भविष्य पथ पर हम अग्रसर हों। पर पुराने गौरव और पतनके बीचसे भी हम अपनी आत्माको अक्षुण लिये निकलें।

जिस सफलतासे मित्र दलकोंमें विजयकी ओर बिजलीकी रफ्तारसे दौड़ पड़ी हैं। जर्मनीका घोर तिमिराछन्न आकाश आज कुछ दिनोंके बाद प्रलयंकारी बादलोंसे मुक्त हुआ है और एक पीढ़ीके अन्दर जर्मनीका गर्वोन्नत भाल लज्जा और ग्लानिसे दूसरी बार नत हो हाथ पसार कर भीख मांग रहा है। जिन जर्मन सेनानायकोंका एक शब्द निकलते-निकलते प्रलय मचा देता था, जिस जर्मन सेनाके अभियानसे दिग-दिगन्त हिल उठता था उसकी ओरसे उसका प्रतिनिधि पराजय पत्रपर हस्ताक्षर कर देनेके पहले दो शब्द उच्चारण करनेकी दुश्मनोंसे आज्ञा मांगता है! "मैं एक शब्द कहना चाहता हूं। मेरे हस्ताक्षरके साथ जर्मन-राष्ट्र और जर्मन सैनिक विजयी पक्षके हाथों सुपुर्द किये जाते हैं, चाहे इसका परिणाम जो हो उनके लिये। इस युद्धमें, जो पांच वर्षसे भी अधिक समय तक जारी रहा, उन्होंने किसी अन्य राष्ट्रकी अपेक्षा अधिक प्राप्त कर खो दिया है। मेरी आशा है कि विजेता हमारे साथ दया-पूर्ण व्यवहार करेंगे।" ये शब्द हैं जर्मन जेनरल जोडलके जिन्होंने रीम्सके एक कमरेमें बैठकर आत्मसमर्पणके सन्धि पत्र पर जर्मनीकी ओरसे हस्ताक्षर किया था।

नाजी जर्मनीके शव पर

सन्धिकी शर्तोंके अनुसार ७-८ अप्रेलकी रातको १२ बजते ही यूरोपीय युद्धके संहारी अध्यायकी समाप्ति हो गयी। अब जर्मनीकी सरकारी और गैर सरकारी सभी जायदादों पर मित्रोंका नियन्त्रण हो गया। इस बारकी सन्धि १९१८ की सन्धिसे बिल्कुल भिन्न होगी क्योंकि मित्रोंकी यह जबर्दस्त कोशिश होगी, जैसा उनके वक्ताओंने समय समय पर अपने ऐलानों द्वारा स्पष्ट भी कर दिया है कि जर्मनीके निम्नस्तरसे लेकर ऊपर तक व्याप्त सैनिक प्रवृत्तिका ही अन्त कर दिया जाय, उनके जीवनके रंग-ढंग और अन्य दृष्टिकोणोंमें ऐसे आवश्यक परिवर्तन किये जायं जो विश्व शांतिके हितमें वांछनीय हों। इस उद्देश्यकी प्राप्तिके लिये मित्रोंकी ओरसे एक "कन्ट्रोल कमीशन" नियुक्त कर उसके जिम्मे आवश्यक योजनाको कार्यान्वित करनेका भार सुपुर्द किया जायगा।

(काउण्ट वान क्रोजिक)

जर्मनीके नये भाग्यको गढ़नेका काम यही कमिशन समय-समय पर महान तीनके कर्णधारोंकी सलाह और सुझावके अनुसार करता रहेगा।

हिटलर और मुसोलिनी

साम्राज्य बनने-बिगड़नेका क्रम इतिहासके अधिकांश हिस्सेको छाये हुए है। साम्राज्योंके कितने निर्माता आये और चहल-पहलके बाद विश्वके कर्मक्षेत्रसे चलते बने। कितनोंने पुरानी इमारतोंको तोड़ा, नये बनाये और पुनः अपनी ही आंखोंके सामने उसकी एक-एक ईंटको धूल बनकर उड़ते हुए देखा। उनकी कल्पना साकार बनकर भी टिक न सकी; उनके अरमान पूरे होकर भी उसे पूरा करने को रुक न सके और अन्तमें विद्रोह, असंतोष और निराशाकी भीषण ज्वालाओंको लिये वे संसार सागरसे अज्ञात दिशाकी ओर चल दे।

विश्व साम्राज्यका स्वप्न देखनेवाले ऐसे दो योद्धा—मुसोलिनी और हिटलर आगे-पीछे स्वप्न देखते-देखते चल बसे और उनके अपने स्वप्न अधूरे रह गये।

युद्धकी प्रमुख घटनाएं

—):*:(—

१९३९

१ सितम्बर—जर्मनीने पोलैंडपर आक्रमण किया। ३ सितम्बर—फ्रांस और ब्रिटेन की युद्ध घोषणा। १७ सितम्बर—रूसका पोलैण्डमें प्रवेश। ३० नवम्बर—फिनलैण्ड-पर रूसका आक्रमण।

१९४०

१० मई—नाजियोंका हालैंड और बेलजियमपर आक्रमण। ३१ जून—ब्रिटिश सेनाओंका डनकर्कसे भागना। १० जून—युद्धमें इटलीका प्रवेश। १८ जून—फ्रांसका आत्मसमर्पण।

१९४१

२२ जून—रूसपर जर्मनीका आक्रमण। ७ दिसम्बर—पार्ल हारबरपर जापानका आक्रमण।

१९४२

१५ फरवर—सिंगापुरका आत्मसमर्पण। ७ मार्च—रंगून खाली कर दिया गया। ६ अप्रेल—भारत भूमिपर जापानी बमवर्षा।

१९४३

६ फरवरी—स्टालिनग्राडमें रूसकी विजय। ८ सितम्बर—इटालीका आत्मसमर्पण।

१९४४

२ जून—नारमण्डीमें मित्र सेनाओंकी चढ़ाई। १५ आगस्त—पेरिस उद्धार। ४ सितम्बर—फिनलैण्ड युद्धसे निकल जाता है। १९ अक्तूबर—मैकार्थरकी फिलिपाइन्स पर चढ़ाई। १९ नवम्बर—तृतीय अमेरिकन सेनाका जर्मन भूमिपर पदार्पण।

१९४५

२० जून—हंगरी समाप्त। ५ अप्रेल—जापानके साथ पैक्ट भङ्गकी सरकारी घोषणा। १२ अप्रेल—रूजवेल्टकी आकस्मिक मृत्यु। २५अप्रेल—सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन आरंभ। २९ अप्रेल—मुसोलिनीका वध। मई—हिटलरकी वीर गति। २ मई—बर्लिन पतनः। ३ मई—इटालीमें नाजियोंका आत्मसमर्पण। ४ मई—हालैण्ड, डेनमार्क और उत्तर-पश्चिम जर्मनीमें जर्मन सेनाका आत्मसमर्पण। ७ मई—यू बोटोंको युद्ध बन्द करनेका आदेश और जर्मन रेडियो द्वारा सम्पूर्ण आत्मसमर्पणकी घोषणा।

एडमिरल डोनित्स

पहली मईको हिटलरके उत्तराधिकारी नये जर्मन फुहरर, एडमिरल कार्ल डोयनित्स जैसा अज्ञात व्यक्ति दुनियाके सामने आया। यों शब्दों द्वारा हिटलरकी भावनाको ही व्यक्त करनेकी कोशिश वे करते दीख पड़े। पर वास्तविकता कुछ और ही थी। लगातार लगभग ६ वर्षोंके भीषण संग्रामके बाद और खासकर गत ढाई-तीन वर्षोंकी लगातार असफलताओंने जर्मन सेनाके हृदय को चूर्ण-विचूर्ण कर दिया था और अब लड़नेकी शक्ति रहते हुए भी जर्मन सेनामें युद्धको लम्बा करनेका धैर्य अवशेष न रहा था।

जर्मन सैनिकोंकी पराजयवादी मनोवृत्ति को देखकर ही जर्मन फौजी अफसरोंने अन्त में बिना शर्त आत्मसमर्पण करनेका निश्चय किया होगा। यह कहना कठिन है कि हिटलरके जीवित रहते जर्मन प्रतिरोधका इतनी शीघ्रतासे अन्त होता या नहीं। फिर भी जिस फुहररके नेतृत्वमें जर्मन सेनाने कितनी मंजिलें सफलतापूर्वक तय की थीं, कितने गढ़ फतह किये थे और फिर दुर्दिन आनेपर भी अपनी अलौकिक बहादुरीका परिचय दिया था, उसकी मृत्युसे उनके हृदयपर गहरा आघात पहुंचा होगा—ऐसा आघात जिसे बर्दाश्त करना उनके घायल और लगातार पराजयसे जर्जर हृदस्थलके लिये घातक सिद्ध हुआ।

यद्यपि जर्मनीका शासन-सूत्र संभालनेपर बोल्शेविक विरोधी जोशीले व्याख्यानों द्वारा एडमिरल डोनित्सने सैनिकोंके जोशको बनाये रखनेकी कोशिशें अवश्य कीं; पर व्यर्थ! उनके शब्दोंमें वह जोश नहीं, उनकी वाणीमें विद्रोह लानेकी वह उग्रता नहीं और न वर्साईके अपमानके लिये प्रतिशोध लेनेकी चढ़ती भावना ही। हिटलर उग्र राष्ट्रीयता का प्रतीक था, बदला चुकानेके लिये जगते हुए जीवित राष्ट्रका नेता था और एडमिरल उस ५६ सालके खूंखार चोरकी जगह पतनोन्मुख जर्मनीका नेतृत्व करनेके लिये मानो बूढ़ी बिल्लीकी तरह आ धमके।

यों तो कुछ दिन पूर्व हिमलर द्वारा जर्मनीके आत्मसमर्पणकी अफवाहें सुननेमें आयीं थीं। पर हिटलरकी मृत्युकी भविष्यवाणी करनेवाले हिमलरकी संधिवार्तामें चर्चा भी न सुनी गयी। जर्मनीके जीवनमें सङ्कटपूर्ण स्थितिमें उसका नेतृत्व करनेके लिये एडमिरल डोयनित्स आये और सात दिनोंके अन्दर-अन्दर सन्धिकी शर्तें तय कर ली।

जापानका खतरा

पश्चिममें जर्मनीकी पराजयके बाद अब ऐंग्लो-अमेरिकन सेनाओंका विशाल दल पूर्वमें जापानसे भिड़नेको शीघ्र ही प्रस्तुत होगा। क्योंकि जापानी खतरेको इङ्गलैंड और अमेरिका कम भीषण नहीं समझते। यद्यपि विजयके अवसर पर बत्तियां जलायी गयी हैं, गिरजाघरोंकी घण्टियां घनघनाती सुन पड़ी हैं और ईश्वरके प्रति यथेष्ठ कृतज्ञता प्रदर्शित की गयी है, पर हर समय "अति" से परहेज रखा गया है।

चर्चिल, ट्रूमैन या किसी अन्य वक्ताका भाषण उठाइये, कदम-कदमपर रुकावट, ठहराव और चेतावनीके भाव मिलेंगे। इसका खास कारण है पूर्वमें जापानकी प्रबल

संसार का घटना चक्र

ना। तब जर्मनीके उत्थानसे ब्रिटेनको पने घर और बाहर दोनोंका खतरा था। सीसे जर्मनीकी पराजयके बादके विजय-मारोहमें हमें उतनी उथल-पुथल नहीं नजर ावी। महासमरका प्रथमार्द्ध समाप्त हुआ ; पर आधी दूरी तो अभी तय करना ही । अस्तित्वकी रक्षा हो चुकी अब साम्रा-ज्यकी रक्षा करनी है।

युद्ध व्यय

नीचे तालिकामें यह दिखाया गया है के विभिन्न देशोंने युद्धमें कितना व्यय किया है। प्रत्येक देशके सामने दिये गये अंकोंके सामने करोड़ जोड़ कर पढ़ना चाहिये। इन अंकोंमें मार्च १९४४ तकका तो ठीक ठीक व्यय शामिल है और बादके समयका व्यय पिछले हिसाबके अनुपातके आधार पर है। इन अंकोंमें सिविल सप्लाई और युद्धके पूर्व रक्षा-व्यय नहीं शामिल है। भारतवर्षका रक्षा-व्यय ४९ करोड़ प्रति वर्षके हिसाबसे, जो युद्धके पूर्वका औसत खर्च है घटा कर दिया गया है।

देश	रकम (करोड़ोंमें)	कबतक
१. अमेरिका	११९९०९	३१दिस.१९४४
२. सोवियट रूस	२६९८६	३१मार्च१९४५
३. ब्रिटेन	२७७३६	,,
४. कनाडा	५५१२	,,
५. आस्ट्रेलिया	३०३८	,,
६. न्यूजीलैंड	६४२	,,
७. दक्षिण अफ्रीका	६०७	,,
८. हिन्दुस्तान	९८३	,,

हिन्दुस्तानमें ब्रिटेनका ३१ मार्च १९४५ तक युद्ध-व्यय १३५५ करोड़ रुपये हुआ। इस तरह हिंदुस्तानमें कुल युद्ध-व्यय २३३८करोड़ रुपये हुआ। हिन्दुस्तानका स्टर्लिंग पावना ब्रिटेनपर १४०० करोड़ है और इङ्गलैण्डने अपने हिस्सेके खर्चकी एक पाई भी अभीतक नहीं दी।

पूर्वी मोर्चा

पूर्वी मोर्चेपर हालकी सैनिक गति-विधि देखते हुए ऐसा प्रतीत होने लगा है कि जापानकी पराजय भी निश्चित है। बर्मासे जापानी प्रभुत्वका पूर्णरूपेण अन्त अबतक नह हो पाया है पर इसके लिये सिर्फ कुछ दिन ही यथेष्ट हैं। पर जापानी प्रतिरोध धीरे-धीरे तीव्र होता जा रहा है और पहलेकी तरह शीघ्रतासे मित्रोंको सफलता मिलनेकी तबतक आशा नहीं है जबतक पश्चिमी मोर्चे की विशाल सेनाएं इस मोर्चेपर नहीं पहुंचा दी जातीं।

जापानका दृढ़ संकल्प

जापानी वक्ताओंने इधर यह कोशिश की है कि रूसको अपनी ओरसे निश्चिन्त कर दिया जाय। जर्मनीकी ओरसे सिर्फ ब्रिटेन और अमेरिकाके समक्ष सन्धिके जर्मन प्रस्तावकी अफवाहें जब जोरोंपर थीं, जापानने इस प्रस्तावित सन्धिकी कटु आलोचना करके इसकी सद्भावना प्राप्त करनेका प्रयत्न किया कारीके बाद अब वे कहते सुने जाते हैं कि जर्मनीके उक्त निश्चयसे उनकी नीतिपर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

उनके इस कथनमें विश्वास करनेकी धृष्ठता न करके भी हम उनकी शक्ति आंकने में हल्कापन नहीं दिखला सकते। क्योंकि जहां एक ओर ब्रिटेन, अमेरिका और रूसको यूरोपीय युद्धमें गहरी क्षति उठानी पड़ी है, दूसरी ओर जापानके लिये डटकर लड़नेकी कहीं नौबत ही नहीं आयी। विजयकी लूट से उसका भाण्डार भरपूर है। अब उसकी शक्तिकी अग्नि परीक्षाका समय आया है। देखना है उसके सञ्चित साधन कबतक टिक सकते हैं।

मि० चर्चिलकी चिन्ता

विजय दिवसपर घोषित मि० चर्चिल और मि० ट्रूमैनके भाषणोंसे साफ-साफ जाहिर है कि वे जापानकी शक्तिको नगण्य समझनेकी गलती कदापि नहीं कर सकते। उस दिन मि० चर्चिलने कहा था—

एक खूंखार शत्रु धराशायी हो गया और हमारे फैसले और दयाकी प्रतीक्षा कर रहा है। पर क्रूरता और लोभसे पूर्ण दूसरा दुश्मन—जापान अभी ब्रिटिश साम्राज्यका अधिकांश दबाये बैठा है।

जापानका भविष्य

जर्मनीकी पराजयका प्रभाव जापानके साथ लड़े जानेवाले युद्धपर पड़े बिना नहीं रह सकता। फिर भी युद्ध जारी रखनेको जापानी दृढ़ सङ्कल्प हैं। और रूसने यदि इस युद्धमें तटस्थताकी नीति अख्तियार की, जिसकी बहुत संभावना है, तो जापानको पराजित करनेमें डेढ़-दो सालसे कम नहीं लगेंगे, ऐसा बहुतोंका अनुमान है। जापान को पराजित कर लेनेके बाद कहीं मित्र खुल कर विजय समारोह मना सकेंगे।

मार्शल स्टालिनकी स्पष्टोक्ति

पोलैण्डके १६ नेताओंकी गिरफ्तारीके सम्बन्धमें एक महत्वपूर्ण समाचार प्रचारित किया गया था कि रूसी अधिकारियोंको ओरसे इन नेताओंको राजनीतिक वार्तालाप के लिये आमंत्रित किया गया था। पर'न्यूज क्रानिकल'का एक संवाद है कि मार्शल स्टालिनने पोलिश गतिरोधके सम्बन्धमें प्रेसिडेंट ट्रूमैन और प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलके पास स्पष्टीकरण भेजकर गिरफ्तारीके सम्बन्धमें प्रचारित उक्त अफवाहका खण्डन किया है। देखना है पोलैंडकी गुत्थी कबतक सुलझती है।

हमारे नेता

योरोपीय महासमरके अन्त होनेसे चारों तरफ सरकारी क्षेत्रोंमें बड़ी चहल-पहल दृष्टिगोचर हो रही है। नाजीवाद, फासिस्टवाद या इसी तरहके अन्य वादोंका प्रतिनिधित्व करनेवाले एक दलका पराजय हुआ है, इससे खुशियां मनायी जायं, इससे हमारा विरोध भले न हो, पर नव जागरणके प्रतीक भारतके वर्षोंसे जेलोंमें बन्द रहनेकी स्थितिका अनुभव होते ही हम नाजीवाद और साम्राज्यवादके अन्तरको समझनेमें असमर्थ हो जाते हैं। क्या नाजी कैंपोंके कोलाहल और मर्माहत आवाजोंसे कम करुण हैं राष्ट्रपति मौलाना आजादके ये शब्द, जो अपने भतीजा मि० नुरुद्दीनके पत्रका उत्तर देते हुए उन्होंने लिखा है—"मुझसे मिलनेकी तुम्हारी उत्सुकता मैं महसूस करता हूं। पर मैं चाहता हूं कि इस सम्बन्धमें मेरे निश्चयका तुम अनुसरण करो।" ढ़ाई वर्षोंतक संसारसे बिलकुल विलग रखकर सरकारने उन्हें अपने कुटम्बियोंसे मिलनेकी सुविधा दी है। क्या सरकार सोचती थी कि काली कोठरियोंमें एकांत तपस्याकी सारी यातनायें देकर वह इन उन्नत मस्तकोंको नत कर लेगी? अपनी घृणित कोशिशोंकी व्यर्थताका अनुभव करनेके बाद ही शायद उसने अपनी भूल सुधारना चाहा। रखे वह अपनी सुविधा और "प्रीविलेज" को। हमें उसकी दयाकी आवश्यकता नहीं। भारतीय जिस दिन सबल होंगे, जेलोंकी दीवारें उनके नेताओंको उनसे अलग न रख सकेंगी!

देशका कोना-कोना मौलाना साहबके गिरते हुए स्वास्थ्यका समाचार पाकर [illegible] है। पर नौकरशाही जब यक्ष्मा जैसे [illegible] रोगोंसे पीड़ित साधारण श्रेणीके बन्दियोंको छोड़नेमें घबड़ाती है, तो इसीसे राष्ट्रपतिकी रिहाईके सम्बन्धमें उसकी चिन्ताका पता लगाना सरल है। अपनी अस्वस्थताके [illegible] रिहाईकी मांग राष्ट्रपति पसन्द नहीं [illegible] जैसा कि उनके पत्रसे प्रत्यक्ष है, "[illegible] सभी मित्र और कुटुम्बी भली भांति [illegible] रखें कि अस्वस्थताके कारण मेरी रिहाईके लिये प्रेस या व्यक्ति विशेषकी ओरसे की [illegible] मांग हमें बाहरकी अन्य घटनाओंकी [illegible] अधिक उद्विग्न करती है। ऐसी रिहाईकी कल्पना ही हमें बेचैन कर देती है।" [illegible] तरह ठोस और अजेय शक्तियोंको [illegible] का स्वप्न देखनेवाले क्या अब भी [illegible] दमन नीतिसे बाज आयेंगे।

—

प्रति मौत पीछे एक हजार अतिरिक्त लाभ

"बंगाल दुर्भिक्ष कालमें प्रति मौत पीछे एक हजार रुपये अतिरिक्त लाभ हुए।" अकाल जांच कमीशनने जो रिपोर्ट पेश की है उससे मालूम हुआ है कि दुर्भिक्षके फलस्वरूप १९ लाख आदमी मरे और अन्नके व्यापारियोंने १९ अरब रुपये अतिरिक्त लाभ किया। इस तरह प्रति मौत पीछे एक हजार लाभका औसत पड़ा।

साधारणतया प्रायः ४० लाख टन चावल और धान प्रति वर्ष बाजारमें आता और खप जाता। किन्तु १९४३ में कमसे कम उक्त अंकका पांच बटा छठा हिस्सा अर्थात् ३० लाख ७२ हजार टनकी खपत अवश्य हुई होगी। १९४२ और १९४३ के बाजार भावको तथा १९४३ में ठीक ठीक चुकाये गये दामोंके प्राप्त विवरणको देखते हुए यह स्पष्ट हो जाता है कि १९४२ से १९४३ में अनाजके दामोंके मुनाफेमें १९) रुपया प्रति मन मुनाफा बढ़ गया था। इस तरह दुर्भिक्ष कालमें प्रति मौत पीछे एक हजार रुपया अतिरिक्त लाभ किया गया।

अकाल कमेटीकी प्रकाशित रिपोर्टका ...ंश यों है:—

...न-मालकी इस भीषण बर्बादीके लिये ...प्रथम बङ्गाल सरकार जिम्मेदार है, ...के पास प्रांतके विभिन्न जिले और ...कमिश्नरियोंके अधिकारियोंने अपने-अपने ...ोंकी विकट स्थितिसे प्रांतीय सरकारको ...ही सूचित कर दिया था। फिर भी इस ...सम्बन्धमें कोई विस्तृत जानकारी प्राप्त ...का प्रयत्न नहीं किया गया और न ...वालों की तकलीफें दूर करनेके लिये अगस्त ...(१९४३) तक कोई सलाह या सुझाव ही उन्हें ...गया। दुर्भिक्षका खतरा अप्रेल और ... महीनोंमें ही मड़राने लगा था पर ...सरकारकी ओरसे "भण्डार भरा है" के नारे ...ओरसे बुलन्द किये जाते रहे। इस ...घोषणा द्वारा सरकारने अपनेको और ...ताको धोखा दिया। सत्यको झूठ साबित ...में, असलियतको पर्देमें ढकनेकी घृणा...ित कोशिशोंमें केन्द्रीय सरकारने भी ...ाल सरकारका साथ दिया और उसमें ... मिलाकर राग अलापा—"कोई कमी ...ी है।"

१९४३ के मार्च-अप्रेलमें मन्त्रिमण्डलमें ...वर्तन हुए पर जहां सर्वदली सरकारकी ...स्था द्वारा जनसाधारणके हृदयमें सर...ी नीति और कार्यवाहीके प्रति विश्वास ...न्न किया जाना चाहिये था, उसके ...ीत आचरण किया गया।

...भारत सरकार तो बहुत दिनों तक ...की सुनियोजित योजनाकी उपयोगिता ...नेमें भी असमर्थ रही और उसके ...में अन्नके स्थानान्तरित करनेकी ...की बात तब समझमें आयी जब काफी ...हो चुकी थी। केन्द्रीय सरकारकी दूसरी ...गलती, जिसकी जिम्मेदारीसे वह नहीं ...सकती यह थी कि पूर्वी अञ्चलमें सन् ...१९४३ में "संशोधित स्वतन्त्र व्यवसाय" की ...जगहमें "अनियन्त्रित मुक्त व्यवसाय" ...प्रणालीको स्थान दिया। सम्पूर्ण देशके ...लिये स्वच्छन्द व्यवसायकी नीति और भी ...घातक और अवांछनीय साबित हुई।

...परिस्थितिकी भयङ्करता यहां तक बढ़ ...कि प्रायः १९लाख नर-नारी, वृद्ध-बच्चे ...कालकवलित हुए—ऐसी दुर्घटनाके कारण ...के लिये वे किसी तरह जिम्मेदार नहीं ...।

...शुरूसे अबतक घटनापर विशद रूपसे ...विचार करनेके बाद कमेटी इस निर्णयपर ...पहुंची है कि बङ्गालमें दुर्भिक्ष होनेके निम्ना...लिखित कारण हैं:—

(१)१९४३ में बङ्गालकी आवश्यकता ...के अनुसार चावलकी यथेष्ठ आमदनी न हुई ...क्योंकि—(क) 'अमान' फसल मारी गयी ...और (ख) पुराने चावलका स्टाक भी बहुत ...कम रह गया था।

(२)—जितना चावल बङ्गाल पहुंच ...सकता था उसका अनुपातसे खरीददारोंके बीच ...वास्तविक और चावलके अत्यधिक

न हो सका। इसके दो कारण थे:—(क) खरीद-फरोख्त करनेवाली प्रणाली तात्कालिक विकट परिस्थितिके लिये बिल्कुल अनुपयुक्त थी और (ख) खासकर बङ्गाल सरकारने किसान, व्यापारी और भोक्ता समाजपर अनावश्यक नियन्त्रण रख परिस्थितिको गंभीरतर बननेमें परोक्ष रूपसे सहायता दी।

(३)—चावल और गेहूंकी सप्लाई जितनी साधारण समयमें बङ्गालके लिये आवश्यक थी, १९४२ के अन्त और १९४३ के प्रारम्भमें प्राप्त न हो सकी क्योंकि (क) चावल सप्लाई करनेवाला बर्मा जैसा महत्वपूर्ण क्षेत्र पहुंचके बाहर था और (ख) बचतवाले प्रान्तोंसे आवश्यक सप्लाईकी व्यवस्था करनेमें केन्द्रीय सरकारने अनावश्यक विलम्ब किया।

दुर्भिक्ष १९४३के जूनसे शुरू होकर इस वर्षके उत्तरार्द्ध में अपनी चरम सीमापर पहुंच गया। खेतिहरोंने अधिकतम मूल्यपर चावल बेच डाले और जो बचा उसे और अधिक कीमत मिलनेकी प्रतीक्षामें संचित कर रखे रहे। व्यवसायी उसे खरीदकर और अधिकसे अधिक मुनाफा लेकर बेचते रहे। भोक्ताओंमेंसे जिनके पास पैसे थे, उन्होंने अपनी आवश्यकताका ख्याल छोड़कर जितना बन पड़ा खरीदकर इकट्ठा कर लिया। इसका नतीजा यह हुआ कि कुछ लोगोंने अपरिमित मुनाफा किया और दूसरे अनियन्त्रित मूल्य वृद्धिके कारण आवश्यकता पूर्तिकी असमर्थतासे मौतके शिकार हुए।

अतः यह निश्चित है कि संकटके प्रारम्भ में ही उत्पादक, भोक्ता और व्यवसायियोंपर सख्त नियन्त्रण स्थापित कर इस विकट स्थितिको रोका जा सकता था। इन नियन्त्रण आदेशोंकी पूर्ण सफलता बहुत हद तक सार्वजनिक सहयोग और समर्थनपर निर्भर करती थी। दुर्भाग्यवश इसकी कमी थी और इसे प्राप्त करनेकी कोशिश भी नहीं की गयी।

भारतवर्ष अपनी आबादीकी आवश्यकता पूरी करनेके लिये यथेष्ट चावल नहीं पैदा करता, जो कमी खासकर बर्मासे पूरी की जाती थी। १९४२ में बर्मापर जापानी सत्ताकी स्थापना होनेके बाद जिन प्रान्तोंको चावलके लिये बर्मापर निर्भर रहना पड़ता था वे बङ्गालकी ओर मुड़े और बंगालसे

जापानके खिलाफ लड़े जानेवाले युद्धमें बंगाल युद्ध मोर्चेके अत्यधिक निकट होनेके कारण युद्ध स्थितिसे अन्य प्रान्तोंकी उपेक्षा अत्यधिक प्रभावित हुआ। १९४२में 'आमन' फसलके मारे जानेसे स्थिति और भी गंभीर हो गयी और यह निश्चित हो गया कि यदि नियन्त्रण न किया गया तो चावलकी कीमत इतनी बढ़ जायगी कि गरीब अपनी आवश्यकता पूरी करनेमें अपनेको सर्वथा असमर्थ पायेंगे। बंगाल सरकारको चाहिये था कि नियन्त्रण प्रणाली लागू करके समुचित मूल्यपर वितरणकी व्यवस्था करती ताकि दीन-दरिद्र अपनी जरूरत पूरी कर सकते। भारत सरकारको उचित था कि वहकिसी निर्धारित योजनानुसार किसी प्रान्तकी उपजकी बचत या बढ़ोतरी भाग अभावग्रस्त प्रान्तों या रियासतोंमें भेजनेका प्रबन्ध करती। पर दोनोंने अपने कर्तव्य-पालनमें आवश्यकतासे अधिक विलम्ब किया। खाद्य-सामग्रीकी कीमत इस तरह बढ़ी कि १९४२ के प्रथम कुछ महीनोंके मूल्यसे पांच-छः गुना अधिक हो गयी। मूल्यमें अभूतपूर्व वृद्धि दुर्भिक्षका द्वितीय मूलभूत कारण है। दुर्भिक्ष

श्रीमती पण्डितका अपूर्व सम्मान

कैलिफोर्नियाके गवर्नर अर्लवारेनने श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डितको अपने राज्यकी व्यवस्थापिका परिषद्के सामने भाषण करनेको आमन्त्रित किया है। श्रीमती पण्डितने उनके निमन्त्रणको सहर्ष स्वीकार किया है।

श्रीमती पण्डित प्रथम भारतीय हैं जिनको एक स्वतन्त्र राज्यकी व्यवस्थापिकाके सामने भाषण करनेको आमन्त्रित किया गया है।

को जो रूपरेखा हमारे सामने आयी, इसे समयपर सप्लाईकी दृढ़ व्यवस्था द्वारा परिवर्तित किया जा सकता था।

१९४३ से प्रारम्भसे ही कलक्टर और कमिश्नर जैसे उत्तरदायी सरकारी हाकिमों की ओरसे उनके क्षेत्रोंकी भीषण स्थितिके सम्बन्धमें प्रान्तीय सरकारको रिपोर्टें बराबर भेजी जाती रहीं पर जूनतक प्रान्तीय सरकारकी ओरसे कोई विस्तृत जानकारी प्राप्त करनेकी कोशिश न हुई और कष्ट निवारणके सबंधमें सलाह देते देते अगस्त भी बीत गया। उसपरतुर्रा यहकि दुर्भिक्षके आसन्न सङ्कटकेबाव-

अभाव नहीं है"के नारे बुलंद किये जाते रहे। अगस्तमें जो योजना बनी वह बढ़ती हुई विपत्तिको रोक न सकी, इसका कारण यह था कि यातायातका प्रबन्ध बिलकुल खेदजनक हो चला था। सितम्बर महीनेके अन्त तक दुर्भिक्षके लिये रिलीफ कमिश्नरकी नियुक्ति तक न की गयी। आर्थिक अभावकी ओटमें दुर्भिक्ष पीड़ितोंके लिये आवश्यक सुविधाका प्रबन्ध करनेमें विलम्ब किया गया।

ऐसी संकटापन्न स्थितिमें कोषकी कमीका हवाला देना कभी भी न्यायसंगत नहीं कहा जा सकता।

सरकार और उसकी मिनिस्ट्री एक ओर और दूसरी तरफ प्रान्तके विभिन्न दलोंके बीच सहयोगका पूर्ण अभाव था। दुर्भिक्षको रोकनेमें तथा दुर्भिक्ष जन्य विकट परिस्थितिका सामना करनेमें विक्षुब्ध राजनीतिक स्थिति जबर्दस्त बाधक सिद्ध हुई। १९४३ के अगस्ततक यह बिलकुल स्पष्ट हो गया था कि बङ्गाल सरकार दुर्भिक्षको रोकनेमें

नोबल पुरस्कार

चीनकी सरकारी सूचना विभागकी ओरसे प्रकाशित एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि नेशनल सेजवान यूनिवर्सिटीके विज्ञान कालेजके डाक्टर चाऊ हाउ-फूको केमिस्ट्री पर उनके अनुसंधानके लिये नोबल पुरस्कार दिया जायेगा। आप सर्वप्रथम चीनी विद्वान हैं जिन्हें ऐसा महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है। डा० चाउने फ्रांस और जर्मनी जाकर विज्ञानका अध्ययन किया था। स्वदेश वापिस जानेपर दस वर्षों तक राष्ट्रीय चेकियाङ्ग यूनिवर्सिटीमें प्रोफेसरी की। तदुपरान्त राष्ट्रीय सेजवान यूनिर्सिटीके साइन्स कालेजके डिन नियुक्त हुए। ब्रिटिश सरकारसे निमन्त्रण पाकर आप नये अनुसंधान के लिये १९४३ में इङ्गलैंड गये और गत फरवरीमें पुनः चीन लौटे हैं। इस सफलताके लिये डा० चाउको बधाई।

असमर्थ रही। मृतकोंकी संख्या बेतरह बढ़ रही थी और कितने ही अपना घर-द्वार छोड़कर भाग रहे थे। उस समय वैधानिक दृष्टिकोणसे न सही, मानवीय दृष्टिसे केन्द्रीय सरकारको भुक्खड़ोंके प्राणोंकी रक्षा करनेमें प्रान्तीय सरकारकी सहायताके लिये आगे बढ़ना चाहिये थी।

सरकारके अलावा नागरिकोंका एक हिस्सा भी अवश्य ही बदनामीका साझीदार है। इस विपत्तिके समय अतिरिक्त मुनाफेकी ओर लोगोंने विशेष ध्यान दिया जब कि ऐसे मुनाफेका अर्थ दूसरेके लिये मौत और बर्बादी थी। कितने तो काफी मौजसे दिन बिता रहे थे और अन्नके अभावमें कितनोंके जानके लाले पड़ रहे थे।

१८ समर

१९१८ से आज तक

गैलिसिया१९१८-१९,—पोल्स और यूक्रेन वाले पूर्वी गैलिसिया पर अधिकार स्थापित करनेको लड़े। दोनोंके हाथ कुछ न आया सिवा व्यर्थकी बर्बादीके और पूर्वी गैलिसिया पोलैण्डको दिया गया।

आयरलैंड, १९१९-२१—आयरलैंड में ब्रिटिश फौज, "ब्लैक एण्ड टैंस" और आयरलैंडकी प्रजातन्त्रवादी फौजके बीच दो वर्षों तक गोरिल्ला युद्ध होता रहा।

रूस,१९१९—लाल रूसने सफेद रूसियोंको पराजित किया।

मोरोक्को, १९१९-२२—मोरक्कोके पर्वतीय अंचलमें स्पेनिश युद्ध।

अरब, १९१९-२६—इब्न सऊद और शाह हुसेनके बीच लड़ाई हुई जिसके फलस्वरूप शाहकी गद्दी छिन गयी।

पोलैंड१९२०,—रूसने पोलैंड पर हमला किया और वारसाके पार्श्व तक पहुंच गये। आक्रमणकारियोंको जबर्दस्त मुकाबला करना पड़ा और गहरी क्षति भी उठानी पड़ी।

आर्मेनिया, १९२०—टर्कोंने आर्मेनिया के प्रजातन्त्र पर चढ़ाई की और रूससे सीधा यातायात स्थापित किया।

चीन,१९२०-२६—चीनकी सेना और वहांके सैनिक अफसरोंकी आपसी प्रतिद्वन्द्विताके कारण गृह युद्ध।

एशिया माइनर,१९२१-२२—यूनानियों ने एशिया माइनर पर आक्रमण किया पर अन्तमें टर्कोंने उन्हें बुरी तरह पराजित कर मार भगाया।

सीरिया, १९२५—फ्रांसीसी हुकूमतके खिलाफ बगावत।

दक्षिणी अमेरिका,१९२९-३२—बोलिविया और पेराग्वेमें एक लम्बा युद्ध।

चीन, १९२६-२८—कितनी ही घरेलू लड़ाइयोंके उपरांत अन्तमें रिपब्लिकन चीनकी स्थापना।

मंचूरिया, १९३१-३२—जापान द्वारा मंचूरिया पर आक्रमण और अधिकार।

चीन, १९३२—चीनी और जापानी सेनाओंके बीच शंघाईमें संघर्ष।

अबीसीनिया, १९३५-३६—इटलीका अबीसीनिया पर आक्रमण और अधिकार

स्पेन—१९३६-३९ स्पेनका गृह युद्ध, प्रजातंत्रवादी और फ्रैंकोंके बीच। फ्रैंको विजयी हुआ।

व्यापार समाचार

सोना चांदी

सोना पाटला ७४।), गिन्नी ५०), सोना हवीब ७५॥ , सोना तारा ७४॥।), चांदी सील १२७॥।)

चपड़ा

केमन छुपरफाइन ७७), आर्डिनरी छुपरफाइन ७५), स्टण्डर्ड वेन ७३), टी०एन० रेडी ७१), १२ परसेण्ट टी० एन० ७०), आई० टी० एन० ७८), नं० २ कुछमी ६४), बैशाखी ५३), लाक न्यू आसाम ४५।)

हैसियन

४०"—८ औंस 'बी०' मई २२=) जून २२≈) जुलाई-सितम्बर २२) अक्तूबर दि० २१॥।) ४०"—१० औंस 'बी'—मई २८) जून २७॥=) जुलाई-सितम्बर २७॥) बी० ट्विल्स २। पौण्ड—मई ६४॥) जून ६२॥) जुलाई-सितम्बर ६१॥)अक्तूबर दिसम्बर६०।=) हेवी सेस प्लेन मई ६६) जून ६५।) जुलाई सितम्बर ६४) लिवरपुल्स मई ७१॥) जुलाई सितम्बर ७०) अक्तूबर-दिसम्बर ६९) ए ट्विल्स मई ७९) जून ७८) डी० डब्ल्यू फ्लावर्स मई ७६॥।) जून ७५॥)।

जूट बोरा हैसियन

वीट्वील खुला—६४।≡) ६०॥।-) ऊंचा ६४।≡) ६१-) नीचा ६४=)। ६०॥=) बन्द हुआ ६४=) ३०॥=)

जूट—खुला ७५॥-) ऊंचा ७५॥।-)॥ नीचा ७५॥-) बन्द हुआ ७७॥।-)

गल्ला

छाही बढ़ा दाना यू० पी० १६) सेती यू० पी० १८॥) लोटनी यू० पी० १७॥) गब्बर यू० पी० १७॥) राई तोरा यू० पी० १५॥।) कजली यू० पी० १६) कजली सी० पी० १६) लोटनी पंजाब १७।) राई पंजाब १६।) तोरा पंजाब १६॥।) राई सिन्ध १४॥) तोरा सिन्ध १९-) सेती सिन्ध १६) सफेद १८) अरहर बिहार १०)अरहर बङ्गाल ९) चना मोकामा १०।) चना बङ्गाल ८॥) हरा १२) पैरा ७) ८) उर्दकाला ८) ८॥) उर्दहरा ९॥) ९॥।)मूंग कानपुर १२॥।)मूंग भिवानी १३) दाल घोआ १६॥।)

Regd No. C. 2223

विश्वामित्र

THE VISHWAMITRA

२८—२१ कलकत्ता २१, मई, १९४५ Calcutta, MAY, 21, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय
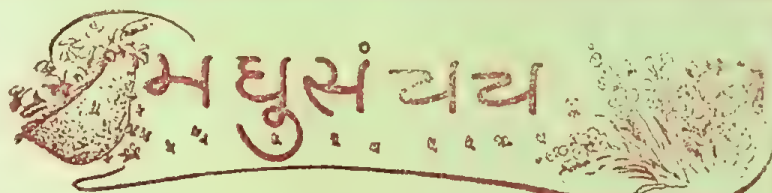
मार्शल टोल बुखिन

स्वप्न भी सच्चे होते हैं

...सने दार्शनिक संसारकी वस्तुओंकी ...ता और क्षणभंगुरताको देखकर जगत ...मिथ्या, स्वप्नवत् इत्यादि इसी तरहके ...क विशेषणोंसे सुशोभित करते हैं। ... दृष्टिमें स्वप्न और मिथ्याका समान ...। आम तौरपर स्वप्नकी सत्यतामें ...का विश्वास नहीं होता। पर कभी-...स्वप्न भी सत्य निकल आते हैं। एक ...बात है कि कपूरथलाके एक व्यक्तिने ...ति लगातार एक ही स्वप्न देखा। ...से मालूम हुआ शायद उससे किसी ...स्थानको खोदनेका कोई आदेश दे ...। तदनुकूल उसने एक मन्दिरकी सतह ...खोदी और उसके नीचे १९"×१२" का ...ताम्रपत्र मिला। उसपर संस्कृतमें खुदे लेख ...था कि वह १८५२ ई० से जमीनके ...दबा पड़ा था। उस ताम्रपत्रके निकट ...नारायणकी मूर्ति भी मिली।

विज्ञानकी करामात

...यों तो हर वस्तुके दो पहलू होते हैं पर, ...में इन दोनोंका विरोधाभास अत्यन्त ...स्पष्ट देखा जाता है। लगातार पांच ...वर्ष इसी विज्ञानने यूरोपमें खूनकी ...नदियोंकी सुन्दरसे-सुन्दर पिचकारी ...संहारकारियोंको दी। आज वही ...घायलोंकी मरहम-पट्टी करनेको दौड़ पड़ा है। अबतक तो लोग युद्धमें लगे थे, सफल युद्ध सञ्चालनके आगे किसी अन्य समस्याका कोई महत्व ही नहीं था। युद्धके निकट पड़नेवाले देशोंके सम्बन्धमें विशेष जानकारी प्राप्त करना भी कठिन था। पर अब निश्चित तौरपर ज्ञात हुआ है कि बराबर आधापेट या भूखे रहनेके कारण नीदरलैंडमें आज ८० हजार लोग ऐसे हैं, जो भोजन पचा भी नहीं सकते।

पर विज्ञानकी करामात है कि ऐसे लोगोंको भी अपने जीवनसे निराश होनेका कारण उपस्थित न होने दिया जायगा। एमीजेन नामक एक रासायनिक सत्वको विज्ञानने खोज निकाला है जो ऐसे क्षुधार्तोंके लिये उपयोगी सिद्ध होगा। यही सत्व अमेरिकासे हवाई यातायात द्वारा शीघ्रतासे नीदरलैण्ड पहुंचाया जा रहा है, ताकि ८० हजार जानें बचायी जा सकें।

३३ जर्मन आक्रमण

जर्मन आज पराजित हो चुके हैं, पर इतनी क्षति उठानेके बाद भी किसी अन्य महायुद्धकी तैयारी करनेसे जर्मन बाज न आयेंगे, यदि इसे रोकनेकी समुचित व्यवस्था न की गयी। गत महासमरकी समाप्तिके लगभग २० वर्ष बाद दूसरा महासमर देखनेको मिला है। जर्मनोंके गत डेढ़ हजार वर्षोंके इतिहाससे यही पता चलता है कि हार-पर-हार होते हुए भी जर्मन युद्धसे मुंह मोड़नेवाले नहीं हैं। वे कितने जिद्दी और कट्टर लड़ाके हैं इसका अन्दाजा नीचे लिखी तालिकासे लगाना आसान होगा : १०० वर्ष ईसासे पूर्व—तीन लाख जर्मनोंने फ्रांसपर धावा बोला। एक्सेन प्रान्तमें उनसे लोहा लिया और पराजित किये गये। ६० ईसासे वर्ष पूर्व—जर्मनोंने राइनके बायें तटपर आक्रमण किया। ४० वर्ष ईसासे पूर्व—२४ हजार जर्मनोंने फ्रांसके ऊरा प्रान्तपर हमला किया। ३४ वर्ष ईसासे पूर्व—४ लाख जर्मनोंने म्यूज तथा ओइज नदियोंके बीचके प्रदेशपर हमला किया।
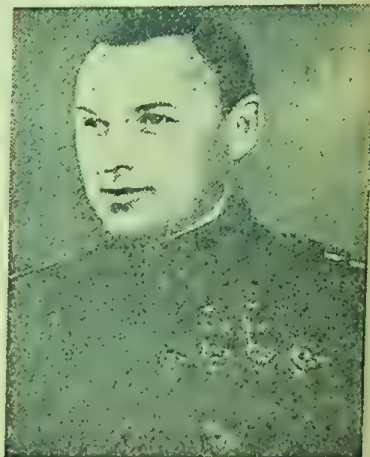
२२३ ई० सन्—फिर फ्रांसपर हमला, फिर पराजित हुए। फिर कसम खायी कि अब कभी हमला न करेंगे। २४३ ई० सन्—फिर आक्रमण, फिर पराजय, फिर कभी हमला न करनेकी कान पकड़ौवल। २४७ ई० सन्—राइन डेल्टेपर हमला। ३७ ई० सन्—उत्तरी-पूर्वी फ्रांसपर हमला। ३०१ ई० सन्—लेंकरीजपर आक्रमण, पराजय और फिर कभी हमला न करनेकी शपथ। ३५१ ई० सन्—राइनके बायें तटपर फिर अधिकार। २५५ ई० सन्—जर्मनों द्वारा लियंसकका विध्वस। ३६० ई० सन्—विसांकनपर आक्रमण। ३६४ ई० सन्—बेलजियम पर हमला और लूट-पाट। इसके बाद सन् ३६४ से सन् १९१४ के बीच ३३ बार जर्मनोंने आक्रमण किये। इस प्रकार प्रायः ५० वर्षपर एक आक्रमण।

मार्शल रोकोसोस्की

अब जापानकी बारी है

चलती चक्की

गुलाबोने सिताब से आकर कहा—"ले, अब तो खुशी मना; तुम्हारी सौत मर गयी !"

सिताबोने बाहरकी ओर झांक कर देखा। लोग अर्थी लिये चले जा रहे थे। बारातियोंके दौड़नेके कारण अर्थी पर पड़े मुर्देकी टांग हिल रही थी। "टांग जब हिल रही है तो फिर जिन्दा होनेमें क्या सन्देह ?" सिताबोको विश्वास न हुआ। वह सिर हिलाती हुई बोली—"ऊं हूं ! मोर मन ना पतिआय, सौतनके टांग दुहु हिलते जाय !"

हिटलरकी मृत्यु-संवादसे भी लोग ऐसी ही बात कह रहे हैं !

* * * *

लक्षण केवल पैदा लेनेमें ही नहीं मरनेमें भी देखे जाते है। राष्ट्रपति रूजवेल्टके मरते ही यूरोपीय युद्धका वारा-न्यारा हो गया ! भूत-प्रेत पर विश्वास करने वाले यह अटकल लगा रहे हैं कि राष्ट्रपति रूजवेल्ट मर कर भूत बने और हिटलर-मुसोलिनी आदिका गला घोंट डाला !

* * * *

छोटे मियाँ इसलिये परेशान थे कि उनकी पूंछ सौ गजकी थी। एक दिन वे अपनी पूंछमें लटपटा कर इतने जोरसे गिरे कि टें बोल गये !

बड़े मियां—हिटलरकी खिचड़ी निकल गयी। अब छोटे मियां—जापानी—शुभान-अल्ला कब तक बने रहते हैं, यही देखना है !

* * * *

विजयोत्सवके सिलसिलेमें दो स्कूली बच्चे आपसमें बतियाते चले आ रहे थे—"कल लाट साहबके यहां सब लोग मिठाई खाने जायंगे, हमें भी मास्टरजीके साथ जाना है...?"

"जनेऊ या मुण्डन तो नहीं है, लाट साहबके यहां ?"

"अरे नहीं, साहब लोग जनेऊ और मुण्डन नहीं करते। हिटलर मर गया है न, इसीकी खुशीमें मिठाई खिलाई जा रही है, जिस तरह हमारे दादाजीके मरने पर···"

"समझा ! लाट साहबके यहां हिटलरका श्राद्ध हो रहा है !—रोज-रोज लाट साहब हिटलरका श्राद्ध किया करें तब तो क्या कहने ! छुट्टी-की छुट्टी और रसगुल्ले-पर-रसगुल्ले !"

* * * *

क्या हिटलर सचमुच मर गया या यह उसकी एक बहानेबाजी है यह प्रश्न आज सर्वव्यापी हो गया है। दफ्तर या कालेजसे छुट्टीकी बहानेबाजीके सिलसिलेमें बुढ़िया दादी जब दस-दस दफे मर सकती है तो हिटलर जैसा चालबाज पचीस-पचास दफे क्यों नहीं मरेगा ?

* * * *

रामायण केवल रामायण ही नहीं। रामायणमें रामायणी जादू भी है और आज के दिन हमारे घाव पर वह चौपाई मरहमका काम कर रही है जिसका अर्थ होता है, किसीके नृप होनेसे क्या लाभ ? हम तो चेरीके चेरी ही है !

* * * *

मुसोलिनीके शव पर थूक फेंकी गयी। मगर यह कोई नयी बात न थी। मुर्दा देख नहीं सकता, थूक हो या फूल। उसके लिये दोनों बराबर ही ठहरा ! यह काम कुछ दिन पहले होना चाहिये था तो मुसोलिनीको अपने चेहरेकी उपयोगिता समझमें आ जाती !

* * * *

गोयबेल्सने आत्महत्या कर ली ! कोई बात नहीं। 'सोचे और समझे नहीं, बिन बूझेकी गौन; अन्धेको अन्धा मिला तो राह बतावे कौन ?'—जस करनी तस भोगहु ताता !

* * * *

स्टालिनको जर्मनीका आत्मसमर्पण क्यों नहीं रुचा ? वे जर्मन जातिको एकदम छू मंतर कर देना चाहते हैं, जिस तरह छुरेसे खोपड़ी साफ कर दी जाती है। लेकिन अपने रामके ख्यालसे एक-आध मन्दोदरीको अवश्य जीवित रहने देना चाहिए नहींतो यह विलाप कैसे होगा कि, "रहा न कोउ कुल रोवन हारा।

—खुशदिल

प्रलय यन्त्र

त्रेता युगमें सन्निपात ज्वरमें रोगी बेहोश था। घरवाले भी उसके जीनेकी सभी आशा छोड़ बैठे थे, लेकिन सांस चलती थी—और प्रलापमें अनेक प्रकारकी बातोंमें वह प्रायः कहा करता था—"एक प्रलय यन्त्र बनेगा, जिसका एक बटन दबाकर पापके शहरोंको उड़ा दिया जायेगा। लोग जब उससे पूछते रक्षा किसकी, कैसे होती है ? "वही जो सत्य, न्याय, समानताके लिये तराजूपर वजनी उतरेगा।" —उत्तर मिलता

(२)

आस-पासके वैद्य, डाक्टर हैरान थे, क्योंकि रोगी बेहोशीमें भी उचित उत्तर देता था और रोग घटनेका नाम ही न लेता था। एक वैद्यजी और बुलाये गये, इन्होंने अनेक औषधोपचार और पानीकी तरह अर्थ व्यय करके किसी तरह नैया पार लगी। पथ्यमें सेब, अनार, संतरा, आंवला और गर्म पानीने नाम कमाया। औषधिमें:—मकरध्वज और कस्तूरी [illegible] के रसमें खानेको मिला। [illegible] के अण्डेकी सफेदीवाला पानी [illegible] अत्यन्त लाभकर हुआ। रोगी [illegible] गया। ज्वर छूट गया और उसकी [illegible] यन्त्रकी कहानी लोगोंमें चलती रही [illegible] कहता वह बन गया होगा। [illegible] रोगीको ही यन्त्रका आविष्कारक [illegible] कर चुके थे।

(३)

पूर्व रोगी एक विद्वान व सत्य[illegible] सबके पूछनेपर वह यही कहता रहा [illegible] इस बातका नहीं जानता। वह अस[illegible] देता गया पर लोग उसे पक्का प्रलय[illegible] कारीगर मान बैठे। भला गुस[illegible] 'अपना गुप्तास्त्र' क्यों बताये।

(४)

साधु व्रतराय उस समयके राजा [illegible] रुपया उस इनाममें देनको कहा पर [illegible] चुप ! बिल्कुल नहीं, नहीं, नहीं [illegible] कुछ न बता सका ! राजाने उसे आज्ञा[illegible] कर रखा।

(५)

एक रात भूकम्प आया और [illegible] बरबाद हो गयी। राजमहल [illegible] टूट गया और उसने राजासे [illegible] अधर्मसे स्वतः प्रलय यन्त्र बन जाता [illegible] बनाने या बनवानेवाले दोनोंका नाश [illegible] है। देखो जब हमने पाप किया [illegible] हमें बीमार बना डाला और अब [illegible] बनवाने चले तो तुम्हारा राजमहल [illegible]

* *

राजाने तबसे प्रजाको सब [illegible] सौंप दिये और पूर्व रोगीको प्रधान [illegible] बनाया।

—ब्रम्हेश्वर शर्मा 'वि[illegible]'

विजय कैसी !

——:०✻०:——

निरर्थक सारे विजयोन्माद
जब तक जन मन बीच बसा है प्रतिहिंसा का भाव
जब तक अनियन्त्रित है जग के बीच बढ़ाव घटाव
न जब तक जाता प्रबल प्रमाद
निरर्थक सारे विजयोन्माद ॥
जब तक मानव के शोणित से तर होगी तलवार
तब तक है जगती तलपर यह जय प्रयास बेकार
न जब तक मिट जाता अवसाद
निरर्थक सारे विजयोन्माद ॥
जब तक अन्तर में ज्वाला है और सतह पर शान्ति
तब तक स्वप्न सुलह का केवल एक मात्र है भ्रान्ति
और झूठे सब वाद विवाद
निरर्थक सारे विजयोन्माद ॥
भले उड़ालें विजय पताका आज विश्व दरम्यान
किन्तु न तब तक शान्ति, कि जब तक शोषित हिन्दुस्तान
हो रहा है दिन दिन बरबाद
निरर्थक सारे विजयोन्माद ॥
जब तक धोखे की टट्टी से होता रहे शिकार
जब तक निर्मम लूट मार का खुला गर्म बाजार
व्यर्थ हैं सारे करुण निनाद
निरर्थक सारे विजयोन्माद ॥
मित्रों को मन्जूर अगर है दलितों का उत्कर्ष
सब से पहले मुक्त करें वे भूखा भारतवर्ष
अन्यथा दुर्लभ है आह्लाद
निरर्थक सारे विजयोन्माद ॥

"कामता" (बाक)

मैंने तुझको देखा प[illegible]

मैंने तुमको देखा पहले
होठों से चिपकाये प्याला !
झुकी हुई थीं पलकें,
जिसके पीछे थी आंखे गुलाल !
तेरी चितवन में जादू [illegible]
तेरी आंखों में है टो[illegible]
तूने जिसको स्पर्श क[illegible]
मिट्टी वह हो जाता [illegible]
तेरी चितवनमें मधु किरणें
रस भरने आती हैं प्रतिपल
हारे थके निराश्रय मानव मन को
जिससे मिलता है बल।
जीवनपथ दुस्तर है [illegible]
एकाकी चलना है [illegible]
आओ एक घड़ी भर [illegible]
बैठ कहीं: पर हम तुम [illegible]

श्री माधव प्रसाद [illegible]

...हित बस जिनके मन-माहीं ।
...कहुँ अग दुलभ कछु नाहीं ॥

...गुरू हो गया ?

—:*:—

...संसारमें यदि कृतज्ञता होती तो मित्रता ...होती। मित्रता होती तो प्रेम भी होता। ...होता तो त्याग और बलिदान भी ...। और यदि ये सब होते तो संसारको ...२५ या पचास वर्ष पर नर-संहारका ... नारकीय दृश्य न देखना पड़ता। ...४०, ४१ में ब्रिटेन और ४२ में ब्रिटेन ...अमेरिका दोनोंको जिस दुर्गति और ...उनका दयनीय दृश्य देखना पड़ा था ...आते ही वे यह भूल गये कि सोवियट ...की लाल सेनाके अदम्य साहस, निर्भी... और मुखोज्वल करनेवाले त्याग और ...उनका ही यह परिणाम है कि आज ...ब्रिटेन और अमेरिका छाती फुला कर ...में खड़े हो सकनेकी स्थितिमें पहुँच ...। आज फिर वही स्वार्थ-लोलुपता, ...और मदान्धता उनके पथ प्रदर्शक हैं। ...ब्रिटेन और अमेरिका तथा उनके पिट्ठ ...ताल ठोंक कर सैनफ्रैंसिस्कोके मैदानमें ...के स्थान पर :अन्याय, नीतिके स्थान ...अनीतिका झण्डा गाड़नेके लिये रूसके ...खड़े हैं। विजयका प्रकाश स्वार्थके ...कारमें डूब गया। यूरोपमें रूसका ...संसारके "बनियों" के हृदयमें शूल ...कर रहा है। यूरोपमें यदि रूसके इस ...को बना रहने दिया गया, तो निस्स... ...पूंजीवादका जनाजा निकलनेमें ...होगी। ब्रिटेनमें राष्ट्रीय सरकार ...कारण युद्धके दौरानमें चर्चिल जो कर ...साहस नहीं कर सके, और जिसकी ...हिटलरको इतनी बड़ी पराजयका ...सहन करना पड़ा, आज शान्ति-...करनेके लिये चर्चिल प्रस्तुत देखे ...हैं—रूसके साथ युद्ध। अमेरिकामें ...ग्राहक संख्या और लोकप्रियता ...वाले न्यूयार्कके राष्ट्रवादी पत्र "डेली-...ने अपने अग्रलेखमें संसारको ब्रिटिश ...की इस दुरभि-सन्धिसे आगाह करते ...है कि "ऐसा प्रतीत होता है कि ...टोरी (कट्टरपंथी पूंजीवादी और ...वादी) रूसके साथ युद्ध मोल लेने ...कर रहे हैं।" गत सप्ताहमें ब्राड-...की गयी ब्रिटिश प्रीमियर मि० ...वक्तृताकी समालोचनाके दौरानमें ...न्यूज' ने लिखा है कि "उससे यह ...निकलती है कि मानो यूरोपमें रूसका ...करनेके लिये मि० चर्चिल किसी ...बहाना बना कर युद्ध छेड़नेके मन-...रहे हैं।" पत्रने संयुक्त राज्य अमे-...वैदेशिक नीति संचालन करनेवालों ...देते हुए साफ शब्दोंमें बताया ...यूरोप अथवा एशियामें किस प्रकार की सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था कायम हो रही है, इससे हमारा कोई वास्ता नहीं है। सोवियट रूस यूरोप और चीनमें कम्युनिज्म (समष्टिवाद) फैलाता है तो इससे हमें क्या मतलब ? इसके लिये हमें रूससे लड़ाई मोल लेनेकी आवश्यकता नहीं है।" इसमें सन्देह नहीं है कि न्याय और नीतिके समर्थक और अपने सिद्धान्त पर सचाईके साथ अटल रहने वाले समाज, जाति और राष्ट्र "डेली न्यूज" के विचारों और नसीहतको मानना अपना कर्त्तव्य समझेंगे। किन्तु अमेरिका "डेली न्यूज" की नसीहत पर अमल करेगा या नहीं, इसमें सन्देहकी गुंजाइश है।

अमेरिकाकी वैदेशिक नीति जिन व्यक्तियोंके हाथमें है वे चर्चिल, ईडेन, हैलिफेक्स जैसे बाघ और धाकड़ कूटनीतिज्ञोंकी जोड़के नहीं । ब्रिटिश कूटनीतिके फन्देसे अमेरिकाको बचाये रखना ट्रूमैन और स्टेटीनियसके बूतेकी बात नहीं है। सचमुच इस अवसर पर स्वर्गीय रूजवेल्टका न रहना संसारके लिये, किन्तु खासकर अमेरिकाके लिये, बड़ा ही घातक हुआ है। चर्चिल जैसे यूरोपियन बाजके झपट्टे और डिगाल, बोनमी तथा डच राजनीतिज्ञों जैसे कौवोंके कांवकांवसे यूरोपकी विजयको शान्तिमें परिणत करनेके लिये जिस तेज, मनोबल और कूटनीतिकी आवश्यकता है उसका ट्रूमैन और स्टेटीनियसमें सर्वथा अभाव है। इस बातका परिचय उधारपट्टा कानूनके अन्तर्गत आगामी वर्षके लिये कार्यक्रम निर्धारणके सम्बन्धके प्राप्त समाचारोंसे स्पष्ट हो गया है। इस सिलसिलेमें रूसके प्रति जिस क्षुद्र मनोभावका परिचय दिया गया है वह अमेरिका जैसे एक महान राष्ट्रके लिये लज्जाजनक है।

अब तक अमेरिका रूसको जो उधारपट्टा सहायता दिया करता था वह यूरोप विजयकी घोषणाकी गूंज समाप्त भी न हो पायी थी कि बन्द कर दी गयी। इस रूपमें विजयी रूसको उसके शौर्य वीर्यके लिये ब्रिटेन और अमेरिकाने 'विक्टोरिया क्रास' या "लेडलज क्रास" प्रदान कर अपनी 'महानता' का परिचय दिया है। ऐसा क्यों हुआ ? अदूरदर्शी और स्वार्थी तथा मक्कार ऐंग्लो अमेरिकन राजनीतिज्ञ समझते हैं कि उनके इस तरहके क्षुद्र आचरणसे त्रस्त होकर सोवियट रूस सैनफ्रांसिस्कोमें उनकी राह चलने लगेगा, इच्छा या अनिच्छासे रूसको जापानके खिलाफ लड़ानेको मजबूर किया जा सकेगा। किन्तु इस बातकी सम्भावना कम है। हां, न्यूयार्कके 'डेली न्यूज' ने जो आशंका प्रकट की है वह भले ही सत्य हो जाये।

सैनफ्रांसिस्कोमें रूसने परतंत्र और अर्द्ध-स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रताका प्रश्न उठा कर उपनिवेशों (कालनियों) में ट्रस्टीगिरी और अधिकार प्राप्त (Mandatory) शासनके स्वरूपका पर्दाफाश करके ब्रिटेन और अमेरिकाकी दुरभि-सन्धिका नग्न चित्र सामने खड़ा कर दिया है। ये 'महान राष्ट्र' संसार पर अपनी पूंजीवादी और साम्राज्यवादी सत्ता कायम रखनेके लिये भांति भांतिकी कलाबाजियां खेल रहे हैं। यही कारण है कि ट्रस्टीगिरीके सम्बन्धमें रूस और चीनकी तरफसे पेश किये गये इस निर्दोष संशोधनको भी ब्रिटेन और अमेरिका स्वीकार नहीं कर सके कि नवीन विश्व संघको यह अधिकार रहना चाहिये कि वह किसी उपनिवेश अथवा प्रदेश पर किसी अधिकार प्राप्त राष्ट्र के शासनको यदि आवश्यक समझे तो बदल दे। अर्थात् यदि विश्व संघ यह महसूस करे कि नियन्त्रणकारी शक्ति प्राप्त शासन अधिकारका दुरुपयोग कर रही है तो वह अधिकार किसी अन्यको दिया जाना चाहिये। इसके साथ संशोधनका यह भी मंशा है कि किसी ट्रस्टीके मातहत रखे गये पराधीन देशको स्वतन्त्रता प्राप्त कराना ही इस प्रणालीका अन्तिम लक्ष्य घोषित किया जाना चाहिये। किन्तु ब्रिटेन और अमेरिका उस 'स्वतन्त्रता' शब्दसे ही चौंकते हैं जिसके लिये युद्ध लड़ा (?) गया था। रूसके इस संशोधनको मित्र राष्ट्र स्वीकार नहीं करेंगे। क्योंकि इसे स्वीकार करनेका अर्थ होता है कि तब अन्तर्राष्ट्रीय ट्रस्टी कौंसिलके तत्वावधानमें किसी भी महाशक्तिको यह देखनेका अधिकार हो गया कि अमुक अंचलमें ट्रस्टी प्रणाली, उद्देश्यके अनुकूल, ठीक ठीक काम कर रही है या नहीं। इसके साथ रूसकी यह मांग भी है कि अन्तर्राष्ट्रीय ट्रस्टी कौंसिल में सिर्फ वही राष्ट्र न हों जो ट्रस्टी हैं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा कौंसिलके वे स्थायी सदस्य भी उसमें रहें जो ट्रस्टी नहीं हैं, जैसे रूस और चीन। इसके साथ साथ रूसकी यह मांग भी है कि किसी प्रदेशका किसी राष्ट्रको ट्रस्टी बनाने या न बनानेका अधिकार विश्व सुरक्षा कौंसिलको होना चाहिये। स्पष्ट है कि यदि ट्रस्टी बननेवाले राष्ट्रोंकी नीयत ट्रस्टीका काम, अर्थात किसी उपनिवेशको सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिसे समुन्नत करके उसे स्वतन्त्र राष्ट्रोंके दर्जेमें पहुंचा देनेकी होती तो कोई कारण न था कि वे रूसके इस संशोधनका समर्थन न करते। किन्तु उद्देश्य तो नाजायज फायदा उठानेका है, स्वीकार कैसे करें।

अतः यह स्पष्ट है कि ब्रिटेन और अमेरिका एक पथके, एक दूसरे पथका पथिक है। कट्टर साम्राज्यवादी चर्चिल, अभी यूरोपके युद्धको समाप्त हुए १९ दिन भी नहीं हुए, इस तरहकी हरकतें कर रहे हैं कि फिर यूरोपमें महायुद्धकी आग भड़क उठे। पोलैण्ड और आस्ट्रियाका मामला तो खड़ा कर ही रखा गया है अब युगोस्लाबियाको भी उसीमें घसीट लिया गया है। जिस प्रदेशको जिस सेनाने जर्मनीसे मुक्त किया है, जबतक शान्ति सम्मेलनमें उसके सम्बन्धमें अन्तिम फैसला नहीं हो जाता तबतक, उसी सेनाका उस प्रदेशपर अधिकार रहता है। इस सहज प्रथाके अनुसार अपने बाहुबलसे इटालियन बन्दरगाह ट्रिस्टीपर अधिकार करनेवाली युगोस्लाव सेनासे ट्रिस्टी खाली कर देने और उसे ब्रिटिश फील्ड मार्शल अलेक्जेण्डरको सौंप देनेको कहना ब्रिटेन और अमेरिकाकी मनमानी और धांधली नहीं है तो क्या है ? मार्शल टीटोने इस आदेशका पालन न करके ब्रिटेन और अमेरिकाको बाधित करनेसे साफ इनकार कर दिया। ब्रिटिश जहाजी बेड़ा इस 'आदेश उलंघन' के लिये युगोस्लोवाकियाको सबक देनेके लिये प्रस्तुत दिखायी दे रहा है। उधर मार्शल टीटो भी किसी भी आकस्मिक घटनाका सामना करनेको तैयार हैं। अभीतक सोवियट रूस इस सम्बन्धमें बिलकुल मौन है। जानकार यह समझते हैं कि बिना रूसका सहारा पाये मार्शल टीटो कभी इतनी असाधारण स्थिति उत्पन्न करने का साहस न करते। पश्चिमी मित्रोंकी ओरसे दिये गये अल्टीमेटमकी जरा भी परवाह न कर मार्शल टीटोने ट्रिस्टी किसी हालतमें खाली न करनेका निश्चय कर लिया है। अवश्य ही यह दुराग्रह नहीं है बल्कि अधिकार और स्वाभिमानका प्रश्न है।

इस तरह यह स्पष्ट है कि रूस संसारके शोषितों, पीड़ितों और दलितोंका पक्ष लेकर आगे बढ़ रहा है। ब्रिटेन और शिखण्डी ट्रूमैनके नेतृत्वमें अमेरिका संसारमें शोषण, दोहन और परतन्त्रता बनाये रखनेके लिये कमर कस रहे हैं। एक तरफ क्रान्तिकारी दूसरी तरफ प्रतिक्रियाशील तथा स्वार्थी शक्तियां हैं। जर्मनयुद्धमें रूसकी विजयसे संसारकी क्रांतिकारी शक्तियोंको बल मिला है, साहस मिला है। वे सिर्फ इस प्रतीक्षामें हैं कि प्रतिक्रियाशील शक्तियोंपर प्रहार करने का उपयुक्त अवसर कब आता है। यदि मि० चर्चिल और उनके साथी यह समझते हों कि यही उपयुक्त अवसर है, लगे हाथों रूस एवं अन्य प्रगतिशील शक्तियोंसे भी निपट लिया जाये तो हम उनकी इस अदूरदर्शिताका सहर्ष स्वागत करेंगे।

बर्माकी स्वतंत्रता (?)—

मुक्त होकर भी बर्मा परतन्त्र है। नया मालिक चला गया, पुराना आ गया। पुराने मालिककी नीयत आज भी वही है जो पहले थी। विश्व स्वतन्त्रताके लिये लड़नेवाले (?) अमेरिकनों, अपने देशकी स्वतन्त्रता चाहनेवाले बर्मियों तथा अपने देशकी स्वतन्त्रतासे मतलब नहीं पर दूसरोंकी स्वतंत्रता की रक्षा करनेमें 'जान देनेवाले' भारतीयोंकी मददसे अंगरेज फिर बर्माके मालिक बन बैठे। चाहनेवाले (बर्मी) और जान देनेवाले (भारतीय) निराश न होने पायें इसलिये नीलाकाशमें स्वतन्त्रताका चांद दिखाया गया है। तीन मंजिलें पार करनेके बाद, यदि बर्मी कर सके तो, चांद बर्मियोंके हाथमें रखा मिलेगा। पहली मंजिल है गवर्नरी शासन। यह तीन सालतक रहेगा। दूसरी मंजिल है द्वैध शासन की। मालिक तब भी रहेगा गवर्नरपर स्वतन्त्र बननेकी योग्यता प्राप्त करनेके लिये कुछ अधिकार मिनिस्टरों को भी मिलेंगे। जब वे शासन कर सकनेके योग्य बन जायेंगे तब तीसरी मञ्जिलमें चलनेका समय आयेगा अर्थात् तब ब्रिटिश पार्लमेण्टके सामने यह सवाल आयेगा कि अब बर्मी इस योग्य हो गये हैं कि बर्माको पूर्ण स्वराज्यके पथपर अग्रसर किया जाये, वह भी कुछ बंधनोंके साथ। ये 'कुछ बंधन' क्या हैं अभी नहीं बताये गये। जब मौका आयेगा आप ही मालूम हो जायेगा, बर्मी और उनके

साथ-साथ 'जान देनेवाले' भारतीय भी अपनी स्वतन्त्रताके लिये, यदि उनमें सब्र हो तो, ताक्यामत प्रतीक्षा करते रहें। स्वतन्त्रता मिलेगी, यह कल्पना क्या कम आनन्ददायक है ?

केलिफोर्नियामें—

अमेरिकाके संयुक्त राज्योंके एक राज्य-सदस्य केलिफोर्नियाके गवर्नरने अपनी व्यवस्थापिका परिषदमें वक्तृता देनेके लिये आमन्त्रित करके श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडितका सम्मान बढ़ानेके साथ साथ विश्व शान्तिकी समस्या पर भारतीय दृष्टिकोणसे प्रकाश डालनेको जो एक सुन्दर अवसर दिया है उसके लिये हम भारतीय उनके कृतज्ञ हैं। श्रीमती पंडित ने अपने भाषण द्वारा संसारको बताया कि "अन्योन्याश्रयकी चर्चाके पहले हमें यह समझ लेना चाहिये कि स्वतन्त्रताके माध्यम से ही अन्योन्याश्रयकी स्थिति आ सकती है। स्वतन्त्रताका सिद्धान्त मान लेना ही पर्याप्त नहीं है। इस मान्यताको कार्यमें परिणत किया जाना चाहिये। अमेरिकनोंको यह महसूस करना चाहिये कि संसारके सुन्दर भविष्यके लिये यह आवश्यक है कि इन समस्याओंको यथार्थवादी दृष्टि और समझदारीके साथ देखा जाय।" आगे चलकर श्रीमती पंडितने एक वाक्यमें पीड़ित और परतन्त्र संसारका हृदय खोल कर रख दिया। उन्होंने कहा कि 'यह स्वतन्त्रता' वह वस्तु है जो आपको परम प्रिय है, जिसके लिये आप लड़े—वह वस्तु है जिसे वे लोग, जिन्होंने इसे प्राप्त नहीं किया, आपसे जो आज स्वतन्त्र हैं, अधिक प्रिय और कीमती समझते हैं। यदि भारत आज एक स्वतन्त्र देश होता तो वह बहुत बड़े पैमानेमें अपना प्रभाव और बल लगाकर रक्षा और स्थायी शान्तिसे पूर्ण विश्व-निर्माण करनेमें, जो सैनफ्रांसिस्कोमें उपस्थित राष्ट्रोंका लक्ष्य है, सहायक होता।" आशा है कि अमेरिका और सच्ची शान्ति चाहने वाले सभी राष्ट्र श्रीमती पंडितके इन महत्वपूर्ण शब्दों पर ईमानदारीके साथ विचार करेंगे।

व्यापारमें भेद नीति—

फूट डालो और शासन करोवाली ब्रिटिश नीतिसे ब्रिटिश स्वार्थों और ब्रिटिश साम्राज्यवादको सुरक्षित रखनेमें आशातीत सफलता मिली है। इस सफलताको स्थायी रखनेके इरादेसे ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ नित नये हथकण्डोंसे काम लेते रहते हैं। भारतके उद्योग धन्धोंके विस्तारके बहाने ब्रिटिश स्वार्थोंको भारतमें चिरस्थायी बनाये रखने के इरादेसे अभी हालहीमें भारत सरकारने जो आर्थिक योजना बनायी है उसमें भी साम्प्रदायिकताका विष-बीज रोपा गया है। इस तरह जीवनके प्रत्येक क्षेत्रमें,-सामाजिक, राजनीतिक और अब आर्थिक क्षेत्रमें भी हिन्दुओं और मुसलमानोंको परस्पर लड़ते रहनेका अमोघ मन्त्र दिया गया है। लंदनके पत्र 'न्यू स्टेट्समैन और नेशन' ने संक्षिप्त रूपमें प्रकाशित योजनाका स्वागत किया था। किन्तु बादमें जब उसे योजनाके सम्बन्धमें अन्य सब बातें मालूम हुईं तो "शासन करनेके लिये फूट डालना" शीर्षक अपने अग्रलेखमें पत्रने लिखा है "यह बात ठीक है कि उद्योग-विस्तार और विकास संघ केन्द्रसे नियन्त्रित होना चाहिये। किन्तु आर्थिक योजनाके क्षेत्रमें साम्प्रदायिक राजनीतिको लाकर भयंकर नयी बात की जा रही है। यह कहा गया है कि किसी एक सम्प्रदायके अनुचित और अवांछनीय प्राधान्य और प्रमुखताको रोकनेके लिये लैसंस देनेकी प्रणालीका व्यवहार किया जाना चाहिये। इसका अर्थ यह प्रतीत होता है कि मताधिकारके प्रश्नको रफा दफा करनेके लिये हिन्दुओं और मुसलमानोंके बीच ६० और ४० का जो नकली अनुपात रखा गया था वही अनुपात अब उद्योग धन्धेमें भी लाया जायेगा। दूसरे शब्दोंमें यह कहना चाहिये कि भविष्यमें हिन्दू और मुस्लिम फर्म या तो कदम-बकदम आगे बढ़ेंगे या कोई भी नहीं बढ़ने पायेगा। चूंकि हिन्दू मुसलमानों के मुकाबले एक पर तीन हैं और मुसलमानों का उद्योग धन्धेकी ओर कभी प्रेम पूर्ण झुकाव नहीं रहा, ऐसी हालतमें सामञ्जस्य लानेके इस बल-प्रयोगका अर्थ यह होगा कि उद्योग धन्धेका विस्तार प्रायः बिलकुल ही रुक जायेगा। यह योजना निस्सन्देह दोनों धर्मावलम्बियोंके संघर्ष और दलबन्दीको बढ़ाने वाली है। क्या जिसने इसे बनाया है उस नौकरशाहका यही उद्देश्य था ?" निस्सन्देह ! इसके सिवा और क्या हो सकता है।

अमेरिकासे व्यापार—

भारतके पूंजीपति और उद्योगपति अमेरिकाके साथ व्यापार सम्बन्ध बढ़ानेकी ओर अधिक झुके देखे जाते हैं। अमेरिकाकी ओर भारतका यह सहज झुकाव आंशिक रूपमें राजनीतिक कारणोंसे भी हो सकता है किन्तु मुख्यतया व्यापारिक हित-सुविधा ही इसका कारण है। ब्रिटिश पूंजीपति भारतीयोंकी इस प्रतिक्रियाको देखकर सशंकित हो उठे हैं। यही कारण है सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक नोबल पुरस्कार विजेता प्रो० ए० वी० हिल को ब्रिटिश व्यापारके क्षेत्रको सुदृढ़ करनेकी दृष्टिसे भारत भेजा गया था। प्रो० हिलने भारतीय व्यापारियोंको सलाह दी है कि उनका हित इसीमें है कि वे ब्रिटिश व्यापार के साथ अपना सम्बन्ध रखें और यह सम्बन्ध लाभकी दृष्टिसे बराबरीके आधार पर ही अर्थात पचास-पचास पर ही हो सकता है। इस नसीहतके साथ ही प्रो० हिलने धमकी भी दी: याद रहे कि यदि भारतीय व्यवसाई समाज इस नसीहत पर ध्यान न देगा तो ब्रिटिश व्यापारी समाज भी कुछ परोपकार करने तो बैठा नहीं है। वह अपने स्वार्थोंकी रक्षाके लिये जो उचित समझेगा करेगा ही। बात बिल्कुल ठीक है। परोपकारी वृत्ति न ब्रिटिश व्यापारियोंमें है, न भारतीय व्यापारियोंमें और न अमेरिकनोंमें ही है ! यह तो स्वार्थका मामला है। जिसको जिससे अधिक लाभ दिखायी देगा, उसीकी ओर वह झुकेगा। इस युद्धके कारण आपसे आप भारतमें अमेरिकन व्यापारकी वृद्धि और ब्रिटिश व्यापारका ह्रास हुआ है। पिछले तीन वर्षोंके भीतर, युद्धके पूर्व दिनों की अपेक्षा दस गुना अधिक असैनिक माल अमेरिकासे भारतमें आया है जब कि ब्रिटिश माल ९० प्रतिशत कम आया है। युद्धकालके इस अनुपातको युद्धोत्तर कालमें उत्तरोत्तर बढ़ानेके लिये भारतीय और अमेरिकन दोनों भीतर ही भीतर साठ गांठ कर रहे हैं। यह सौदा यदि पट गया तो भारतको इससे क्या लाभ होगा ? भारतके मुट्ठीभर व्यापारी अवश्य लाभ उठा सकते हैं किन्तु जन साधारणकी स्थिति तो वही बनी रहेगी। उसके शोषणका अन्त न ब्रिटेनके साथ व्यापारिक सम्बन्ध कायम करनेसे होगा और न अमेरिकाके साथ। आर्थिक शोषण तो तभी बंद होगा जब भारत स्वतन्त्र होगा और जनता की सरकार होगी। देशका सारा उद्योगधंधा देशकी वस्तुस्थितिको देखकर तदनुकूल, उस सरकारके नियन्त्रणमें होगा। भारतीय व्यापारी वर्ग यह नहीं चाहते। अतः वे अपने शोषणको बनाये रखनेके लिये ब्रिटेन और अमेरिका, दोनोंसे सौदा करेंगे।

कांग्रेसका धन जब्त—

भारत सरकारने अपनी मालकिन ब्रिटिश सरकारकी जीतकी खुशी जनता पर प्रहार करके प्रकट की है। खुशी जाहिर करनेके अपने-अपने ढङ्ग निराले हैं। नादिरशाहके सम्बन्धमें सुना जाता है कि एक बार वह घोड़े पर सवार चला जा रहा था। बीच रास्तेमें उसने एक शिशुको पड़ा देखा। निकट पहुंचकर उसने अपने भालेकी नोकसे उसे विद्ध कर एक किनारे रख दिया। नादिरशाहने अपने साथीसे कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि मासूम बच्चेको घोड़ोंकी टापोंसे रौंदे जानेसे बचा लिया। हमारी सरकारके भी खुशी प्रकट करनेके अपने निराले ढङ्ग हैं ! कुमिल्लाके जिला मजिस्ट्रेटने मित्र राष्ट्रोंकी विजय निश्चित समझ कर गत २६ अप्रेलसे २८ अप्रेलके बीचमें अखिल भारतीय चर्खा संघकी १॥ लाख रुपयेकी सम्पत्ति, जो बरकामतामें थी, नीलाम कर ली। यह सम्पत्ति अक्तूबर १९४२ में पुलिसने भारत रक्षा नियमके अनुसार अपने अधिकारमें कर ली थी। अब उपयुक्त मौका देख जिला मजिस्ट्रेटने उसे नीलाम कर दिया। उधर बम्बई सरकारने आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीके ७२ हजार रुपये, जो मेसर्स बच्छराज कम्पनीमें जमा थे, जब्त कर लिये।

मध्यप्रांतका स्वरूप—

युद्धका मौलिक स्वरूप जितना स्पष्ट भारतमें दिखलायी पड़ता है उतना शायद उन देशोंमें भी स्पष्ट नहीं हुआ है जो युद्धकी ज्वालामें पड़कर जल और तप चुके हैं। ९३ दफाका अमोघ शस्त्र गोरी सरकारके हाथों इतना क्रूर बन गया है कि उस जुएके नीचे जो-जो प्रान्त पड़े, सभीके छक्के-पंजे ढीले पड़ गये। बिहार, बङ्गाल, उड़ीसा और सीमाप्रांत तो आज उस दुर्दमनीय पाशविकताके साक्षी हैं जिसने प्रांतका सारा सौष्ठव छीनकर कंकालमात्र बना दिया है। प्रान्तकी यह असहाय अवस्था देखकर ही सर्वप्रथम डा० खांसाहबने अपने उत्तरदायित्वपर सीमाप्रांतमें सर्वदली मन्त्रिमण्डलका गठन कर जिस साहसका परिचय दिया है, वह सचमुचमें आज उनकी कठोर कर्मठताका प्रमा[...] चुका है। जहांतक जनताकी कठि[...] हल करनेका प्रश्न है, डा० खा भी प्र[...] यातकी कठिनाइयोंके सामने स्वयं[...] होंगे। सरकार द्वारा उत्पन्न कि[...] सामने परेशान अवश्य होते होंगे; कि[...] भी उनके अजेय साहस और जनता[...] उनकी दृढ़ सहानुभूति अवश्य ही [...] पहुंचा चुकी है—जहां वे जनता[...] समीप पहुंचकर उसके दिलके द्वा[...] हाथ फेर कर उसे राहतकी सांस दे[...] ऐसी स्थितिमें यदि मध्यप्रांतके कांग्रे[...] एल० ए० जो जेलोंसे बाहर हैं यदि [...] मन्त्रिमण्डल गठन करनेके उद्देश्यसे [...] मिलने महाबालेश्वर जा रहे हैं, क्या [...] कठिनाइयोंको हल करनेके लिये कार्य[...] है। सरकारी अड़ंगाके बावजूद भी [...] कम यह तो जान ही लेंगे कि ९३ [...] छायामें सरकारने जनताको किन-किन [...] नाइयोंमें डाल रखा है। हम मध्यप्रान्त[...] लिये किये जानेवाले इस प्रयासकी [...] चाहते हैं।

जापानका प्रश्न—

युरोपकी लड़ाई समाप्त होते ही [...] आप जापानी लड़ाई एक नये [...] पहुंच गयी है और यह प्रश्न सामने [...] हुआ है कि क्या रूस जापानके विरुद्ध [...] में भाग लेगा। जापान अभीतक एक [...] और सभी तरहके आधुनिक शस्त्रों[...] राष्ट्र है। ऐसी स्थितिमें जबतक [...] मोर्चोंपर लड़ाया नहीं जाता, एक ही [...] उसे शीघ्रसे शीघ्र परास्त कर देना [...] न होगा। युद्धको जितना लम्बा [...] जायगा रक्तपातके आंकड़े उसी और [...] जायगे। अतएव इन सारी परिस्थिति[...] हल करनेके लिये ब्रिटेन और अमेरि[...] चाहिये कि वे रूससे मिलकर मोर्चा [...] कर लें और एक साथ धावा बोल दें। [...] की शक्तिको छिन्न-भिन्न करनेका [...] आसान तरीका यही है। जैसा कि ज[...] रहनेवाले अंग्रेजोंके भूतपूर्व राजदूत [...] राबर्ट क्रेजीने कहा है कि एक ही [...] जापानसे होने वाली मित्रराष्ट्रोंकी ल[...] रूपरेखा उस समय बदल जायेगी [...] समय मित्रोंके साथ रूस भी [...] ओरसे जापानी युद्धमें कूद पड़ेगा। [...] रूस यदि अपने इसी कामके लिये हा[...] लाख सिपाहियों द्वारा मंचूरिया और [...] लियापर आक्रमण कर दे तथा अपनी [...] नौसेनाके साथ मित्रराष्ट्र चीनमें उतर [...] किन्तु क्या फ्रिस्को सम्मेलन और [...] सभामें मि० चर्चिलके दिये गये व[...] भाषण और प्रश्नोंके उत्तरके बाद भी [...] विश्वास किया जा सकता है कि [...] लड़नेके लिये मित्रराष्ट्र रूसका सहयो[...] करनेको इच्छुक होंगे। यदि मित्र[...] रूसको साथ न लेकर अपने ही बलपर [...] को परास्त करने का निश्चय कर [...] तो अवश्य ही जापानकी लड़ाई लम्बी [...] और युद्धस्थलके पास-पड़ोसवाले दे[...] दिनों तक लड़ाईकी आंचमें तपते रहें[...]

—

महायुद्ध की कहानी

(गताङ्क से आगे)

...स्टालिनग्राड और लेनिनग्राड

...जर्मनीके आक्रमण करनेके समय ...चिलने मैत्रीका हाथ बढाया। सर स्ट्रा... क्रिप्स रूस गये। वहां ब्रिटेन और रूस ...की सन्धि हो गयी। रूसियोंने संक... किया कि 'कार्यं वा साधयामि ...वा पातयामि'। उन्होंने अपने बड़े-बड़े ...कारखाने यूक्रेन, मास्को और स्टालिन... ...हटा कर यूराल प्रदेशमें ले गये। युवा... ...पुरुष, बच्चे सभी मन-वचन और कर्मसे ...देशकी रक्षामें लग गये। मास्कोके ...जब जर्मन सेनाएं पहुंची तो नाजियों ...था कि अब मामला फतह है। पर ...१९४१ को स्टालिनग्राडने घोषणा ...मास्कोमें जबतक एक आदमी रहेगा ...रक्षा करेगा। जेनरल (अबमार्शल) ...ने मास्कोकी रक्षाका भार दिया ...जर्मन समझते थे कि बड़े दिनोंतक ...की विजय होगी। मास्को चारों ...घिर गया। ६ दिसम्बरको स्थिति ...गम्भीर हो गयी। जुकोवने प्रचण्ड प्रत्या... ...किया, जिसकी तूफानी रफ्तार और ...से जर्मन इस तरह चकित हो गये ...वर्षके अन्त होते-होते स्थिति बिल्कुल ...गयी। रूसियोंने मास्कोके युद्धमें ...ज्वला विजय प्राप्त की। यहां पराजित ...हिटलरने १० जून १९४२ को नया ...खारकोवके अञ्चलमें शुरू किया। ...जर्मन सेनाएं डोन नदीपर पहुच ...सेवास्टोपल, वोरोशिलोग्राड और ...पर जर्मनोंका कब्जा हो गया। डोन ...कर जर्मन स्टालिनग्राड पहुंचे। ...जर्मनोंने सम्पूर्ण उत्तरी काकेशशपर ...। मोजदोक और नालचिकपर ...किया। जर्मन स्टालिनग्राडके ...मास्कोका सम्पर्क यूरालसे छिन्न- ...करना चाहते थे और पूर्वसे घेरा तथा ...कर मास्कोपर अधिकार कर लेना ...। किन्तु उनको निराश होना ...स्टालिनग्राडमें ही उनकी आक्रमणा... ...चूर्ण-विचूर्ण कर दी गयी और ...सैनिक पीछे हटनेके बाद रूसियोंने ...आरम्भ किया तो वे फिर ...आगेही बढ़ते गये और फिर कभी पैर ...गया। स्टालिनने नवम्बर १९४२ ...स्टालिनग्राड अंचलमें जर्मनोंपर ...आरंभ करनेका आदेश जारी किया। ...की सारी चेष्टाएं व्यर्थ हुईं। इस ...अपार विजयने युद्धके स्वरूपको बदल ...१९४३ के अन्तिम भागमें रूसी सेनाएं ...खदेड़ते हुए जून १९४१ वाले ...सीमाओंपर आ गयीं। स्टालिनग्राडके ...साथ लेनिनग्राडके ऐतिहासिक रक्षा ...उल्लेख आवश्यक है। लेनिनग्राड अगस्त ...से ही घिर गया था। सबसे महत्वकी ...है इसकी रक्षाका युद्ध स्टालिनग्राड ...सैनिकोंने नहीं बल्कि नागरिकोंने ...लेनिनग्रादका घेरा तीसरे साल ...रूसियोंके प्रचण्ड प्रत्याक्रमणसे टूटा।

अमेरिका यदि युद्धमें नहीं आया होता, जर्मनीने रूस पर आक्रमण करनेकी भूल न की होती तो क्या हुआ होता; इसकी चर्चा आज व्यर्थ है। जो हुआ, अब तो उसीका महत्व है। ब्रिटेनकी हालत साधारणतया जिस समय अति संकटापन्न और अंधकार-पूर्ण थी जेनरल आइसेन हावरके नेतृत्वमें ८ नम्बर १९४२ को अमेरिकन सेनाएं अलजीरिया और फ्रेञ्च मोरक्कोके कितने ही स्थानों पर उतर पड़ीं और आग बढ़ीं। एडमिरल डार्लाके आदेशसे अलजीरियोंने उसी दिन तीसरे पहर आत्मसमपर्ण कर दिया। उत्तरी अफ्रीकामें अमेरिकन सेनाके उतरनेको उस समय मित्र राजनेताओंने ठीक ही हिटलरके विनाशका आरम्भ कहा था। प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने बताया था कि इस अभियानका कार्यक्रम मि० चर्चिल और मार्शल स्टालिनकी जानकारीमें और दोनोंकी स्वीकृतिसे जुलाईमें ही बन चुका था। एडमिरल डार्लाके आदेश से उत्तरी अफ्रीकामें फ्रेञ्च प्रतिरोध समाप्त हो गया। यह देखकर जर्मनोंने आनन-फानन अनधिकृत फ्रांस पर कब्जा कर लिया और गगन मार्गसे साइलेसियन तटोंसे ट्यूनिसियाको सेना भेजी। मित्र सेनाएं ट्यूनिसियाकी ओर आगे बढ़ी। टूलनमें जर्मन सेनाके प्रवेश करनेके पूर्व ही भूमध्य सागरीय फ्रेञ्च जहाजी बेड़ा तोड़ डाला गया। माण्टगोमरी ने बेनगाजी पर दखल करके रोमेलका पीछा किया। नवम्बरके अन्तमें मित्र सेनाएं अलजीरियासे चतुर्भुजाकारमें पूर्वकी ओर बढ़ने लगीं। लिबिया स्थित रोमेलकी सेनाका शेष सेनासे सम्पर्क काट देनेका और बिजर्टा तथा ट्यूनिस पर अधिकार करनेका प्रयत्न किया जाने लगा। किंतु जर्मनोंने अपनी गगन वाहिनीके सहयोगसे ट्यूनिस, बिजर्टा और गाबेसके इर्द गिर्द प्रचण्ड प्रत्याक्रमण करके मित्र सेनाओंको खदेड़ दिया। ट्यूनिसियाका तटीय प्रदेश १९४३ के प्रथम दिन नाजी नियंत्रणमें था।

उधर माण्टगोमरीकी आठवीं पल्टन पूर्वसे रोमेलको लिबियाके मरु प्रदेशके उस पार साइरीनाइकासे ट्रिपोलिटान तक खदेड़ती गयी। अब यह स्पष्ट दिखायी देने लगा कि जर्मन इस अंचलमें अन्तिम युद्ध ट्यूनिसियामें लड़ना चाहते थे। माण्टगोमरी जर्मन प्रत्याक्रमण को विफल करके ट्रिपोलीकी ओर बढ़ी, जो मध्य भूमध्यसागरमें नाजियोंका सबसे बड़ा अड्डा था। २९ जनवरीको आठवीं पल्टन ट्यूनिसियाकी सीमा पार कर गयी। रोमेल पहले ही अपनी सेना हटाकर ट्यूनिसिया के गया था। अब आठवीं पल्टन ट्यूनिसियामें बढ़ने लगी। उत्तरी अफ्रीकाका सम्पूर्ण युद्ध संचालन जेनरल आइसेन हावरके हाथमें आया। आठवीं सेनाके जेनरल एलेकजेण्डर उनके सहायक हुए। रोमेलके पैर उखड़ते ही चले गये। सम्पूर्ण मित्रसेना ट्यूनिसियाके तीन सौ मील तटीय प्रांत पर छा गयी। ७ मईको ये मित्र सेनायें बिजर्टा और ट्यूनिसमें प्रवेश किया। ९० हजार धुरी सैनिक बन्दी बनाये गये। सिसिली भागनेकी उनकी चेष्टा असम्भव कर दी गयी। १३ मईको आश्चर्य चकित करनेवाला समाचार मिला कि चार नम्बर भारतीय पल्टनने धुरी सेनाओंके कमाण्डर इनचीफ वान आर्निमको बन्दी बना लिया है। इस तरह ६ मासके उत्तर अफ्रीकन युद्ध का अन्त हुआ और इस तरह भूमध्यसागर मित्र शक्तियोंके लिए निरापद खुल गया तथा सिसिली और इटालीमें मित्र सेनाके उतरनेका मार्ग खुल गया।

मुसोलिनीका इस्तीफा

जेनरल आइसेन हावरके नेतृत्वमें मित्र सेनाएं ६ सितम्बर १९४३ को सिसिलीमें उतर पड़ीं। चर्चिलने उस समय इसे तीसरा फ्रण्ट (मोर्चा) कहा था। सैन्य उतारनेके पहले मित्र विमानोंने धुआंधार अग्निवर्षा की थी। सिसिली खड़ा नहीं रह सका। खास इटालीपर चढ़ाई शुरु हुई। आश्चर्यकी बात यह हुई कि मुसोलिनीने इस्तीफा दे दिया और मार्शल बडोग्लियोने उनका स्थान ग्रहण किया और मुसोलिनीको गिरफ्तार कर लिया। किन्तु आनन-फानन जर्मनोंने इटालीके उत्तरी अर्द्धांशपर अधिकार कर लिया और जर्मन छतरी सेनाने अपूर्व साहसके साथ उस किलेपर चढ़ाई की जहां मुसोलिनी कैद था और उसे छुड़ा लिया। इस तरह तत्काल युद्ध समाप्तिकी आशा दूर हुई और इटाली रणक्षेत्र बन गया।

दूसरा मोर्चा

इधर जर्मनोंको रूससे निकाल कर, पोलैण्डपर अधिकार करके तूफानी सेनाने युद्धको जर्मन प्रदेश तक ले जानेका संकल्प कर लिया। पहले यह समझा जाता था कि रूसी लालसेना अपने प्रदेशको एवं सोवियट रूसकी रक्षाके लिये आवश्यक प्रदेशोंको निरापद करके आगे न बढ़ेगी। किन्तु जानकार यह समझते थे कि जर्मनीको अछूता छोड़ देनेका अर्थ होगा यूरोपमें समाजवादका द्वार बन्द हो जाना। तेहरानमें स्टालिन, रूजवेल्ट और चर्चिलके बीचमें यह तय हो गया था कि पश्चिमी यूरोपमें मित्र सेनाएं दूसरा मोर्चा खोलेंगी और पूर्वसे लाल सेना आगे बढ़ेगी। इसी निश्चयके अनुसार ६ जून १९४४ को मित्र सेनाएं जेनरल आइसेन हावरके नेतृत्वमें नारमण्डीमें उतरीं। इटालियन संग्राम सन्तोषजनक रूपमें चल रहा था। ४ जूनको मित्र सेनाएं रोममें घुसीं। नारमण्डीमें सैन्य उतारनेके बाद १७ जूनको शेरबोर्गको मित्र सेनाओंने घेर लिया। जुलाईके प्रथम सप्ताहमें नारमण्डीमें नया आक्रमण शुरु हुआ। १० जुलाईको कीन ले लिया गया। नारमण्डीमें ५४ हजार जर्मन सैनिकोंको बन्दी बनानेकी घोषणा की गयी।

हिटलर वधकी चेष्टा

२० जुलाईको जर्मनीके कुछ महत्वाकांक्षी सेनापतियोंने हिटलरके वधका कुचक्र किया, किन्तु वह बाल-बाल बच गया। उसे उड़ा देनेके लिये भयङ्कर विस्फोटकोंसे काम लिया गया था। इस घटनाको लेकर इस बातका खूब प्रचार किया गया कि भगवान स्वयं हिटलरके रक्षक हैं और यूरोपको रूसियोंके हाथोंसे उद्धार करनेका भार स्वयं भगवानने हिटलरपर सौंपा है। किन्तु बादकी घटनाओंने इस प्रचारके पैर उखाड़ दिये। जर्मन अधिकृत अञ्चल एक-एक करके मित्रोंके अधिकारमें आने लगे। २२ अगस्तको अमेरिकनोंने सीन नदीके वाम तटपर चढ़ाई की। इसके पूर्व चारट्रीस और ओरियन्सपर अधिकार हो चुका था। २३ अगस्तको बिना किसी प्रतिरोधके फ्रांसकी प्रतिरोधकारी सेनाने जेनरल कोनिगके नेतृत्वमें पेरिसका उद्धार किया। ठीक इसी समय मार्शलीज और टूलन भी मुक्त किये गये। रीम्स और रूएन भी मुक्त हुए। जर्मनोंको भागते दम न मिलती थी। ब्रिटिश सेनाने बेलजियमकी राजधानी ब्रुसेल्सको मुक्त किया। मित्र सेनाएं लक्समबर्गमें घुसीं। कनाडियनों और अमेरिकनोंने ८ सितम्बरको ओस्टेण्ड और लीजका दुर्ग जीत लिया। १० सितम्बरको लक्सेमबर्गपर अधिकार हो गया। मित्र सेनाएं हालैंडकी सीमामें घुसीं। १२ सितम्बरको लाहवरेमें जर्मन सेनाने हथियार डाल दिया। जर्मनीकी सीमामें प्रथम बार पदार्पण करनेके बाद मित्र विमानोंने सीगफ्रीड लाइनपर प्रचण्ड आक्रमण किया। ४ सितम्बरको आशेनसे अमेरिकन सैनिक एक मील रह गये थे। हालैण्डमें १७ सितम्बरको गगन मार्गसे मित्र सेना उतरी और कोलोन की तरफ बढ़ी। ब्रेस्ट और बूलानेने आत्मसमर्पण कर दिया। आर्नहीममें गगनसे उतारी गयी मित्र सेनाको प्रबल प्रतिरोध मिला। कनाडियन ३० सितम्बरको केलेमें दाखिल हुए।

फ्रांसका युद्ध समाप्त हो चुका और जर्मनी पर अधिकार करनेका युद्ध आरम्भ हुआ।

बर्लिनकी तरफ बढ़ चले

इस तरह यूरोपियन युद्धका अन्तिम पर्व पहुंच गया। सोवियट हाईकमाण्डने २३ जून १९४४ को अपना कदम जो उठाया, उसे देखते ही यह स्पष्ट प्रतीत हुआ कि बढ़ा हुआ यह कदम बर्लिन पहुंच कर ही रुकेगा। पहले महीनेमें ही आधा मैदान उन्होंने मार लिया। बर्लिन ३५० मील रह गया। यह बढ़ा हुआ कदम बेरोक-टोक आगे बढ़ता गया, इसलिये रूसने जो प्रचण्ड तैयारी की थी वह इस युद्धके इतिहासमें अपूर्व है। १०० से अधिक डिवीजन (अर्थात् प्रायः २ लाख सैनिक) लेकर रूस बढ़ा था। बर्लिन मोर्चे की लाल सेना १२ कमाण्डरोंके नेतृत्वमें थी। प्रत्येक कमाण्डर एक-एक अञ्चलका युद्ध सञ्चालन कर रहा था। सम्पूर्ण युद्ध संचालनका भार इस तरह अपने सुयोग्य १२ सेनापतियोंको सौंप कर सोवियट हाई कमाण्डने आस्ट्रिया, हङ्गरी और पोलैण्डकी दिशाओंसे जर्मनीपर चढ़ाईकी योजना तैयार की थी। जर्मनीने भी हङ्गरीमें आखिरी मोर्चा लिया। पहले तो ऐसा जान पड़ा कि कहीं यह भी स्टालिनग्राडके युद्धका रूप तो धारण न

करेगा ? संसारकी आंखें बुडापेस्टपर और उधर पश्चिमी मोर्चेमें आर्डेनीज अञ्चलपर लगी थीं जहां जर्मनोंने प्रचण्ड प्रत्याक्रमण करके मित्र शक्तियोंको जबर्दस्त धक्का दिया था। रूसी प्रगति बाल्कन प्रदेशसे बाल्टिककी ओर तहस-नहस करनेवाली रफ्तारसे जारी थी। जुकोवने एक झपाटेमें वार्सा ले लिया और सीधे वहांसे बर्लिनकी ओर बढ़े। अन्य रूसी कमाण्डरोंने अपने-अपने अञ्चलोंमें भी साथ-साथ आक्रमण किया। बर्लिनको लक्ष्य बनाकर आक्रमण आरम्भ करनेके १० दिन बाद लालसेना जर्मन भूमि-पर देखी गयी और कुछ दिन बाद पूर्व प्रशा जर्मनीसे कटा दिखायी दिया। इस तरह जर्मनीका बाल्टिक स्थित जहाजी बेड़ा भयङ्कर स्थितिमें पड़ गया।

फरवरीके आरम्भमें मार्शल जुकोव पोजननके पश्चिमसे जर्मन प्रदेशमें इतना भीतर घुस गये कि बर्लिन सिर्फ ४० मील रह गया। बर्लिनकी ओर जुकोवकी तूफानी रफ्तारका महत्व बढ़ गया पूर्वी प्रशामें मार्शल रोकोसोस्कीकी अपूर्व सफलताओंसे। इन सफलताओंने मार्शल जुकोवकी प्रगतिको और भयंकर बना दिया। इसमें सन्देह नहीं कि जुकोवके सैनिकोंसे जर्मनोंने कठिन मुकाबला किया, लेकिन वे उनकी प्रगतिको रोक नहीं सके। फ्रैंकफर्ट और कुस्टेरिजके उत्तर और दक्षिणसे कतरा कर निकल जानेके जुकोवके सफल प्रयासने स्थितिको और भयं-कर बना दिया। लाल सेनाके ओडर नदी पार कर जानेके बाद संसारने जर्मनीके भाग्य का फैसला समक्ष लिया और बर्लिनकी ओर बढ़ती हुई लाल सेनाकी प्रगतिके साथ साथ संसारकी आखें प्रति क्षण राह देख रही थीं कि जर्मनी कब आत्मसमर्पण करता है। यह तो पहलेहीसे स्पष्ट था कि नाजी हाई कमाण्ड के लाख प्रयत्न करने पर भी इस बार युद्ध विराम सन्धि (आर्मिस्टिस) न होगी और मित्रराष्ट्र तभी यूरोपमें युद्ध समाप्तिकी घोषणा करेंगे जब जर्मनी पूर्ण पराजय स्वी-कार कर लेनेके बाद स्वयं हथियार रख देगा। हुआ भी वही।

याल्टाका निश्चय

यह बात याल्टामें ही प्रेसीडेण्ट रूजवेल्ट, मार्शल स्टालिन और मि० चर्चिलके सम्मे-लनमें तय हो गयी थी कि जर्मनीके बिना शर्त सम्पूर्ण आत्मसमर्पणके बाद जर्मनी पृथक-पृथक क्षेत्रोंमें बांट दिया जायेगा और तीन महान राष्ट्रोंके साथ फ्रांसके हिस्सेमें भी एक क्षेत्र आयेगा। याल्टा सम्मेलनके बादके दो महीनेके भीतर ही डानजिग, डाइनिया और कोनिग्सबर्गपर लाल सेनाका अधिकार हो गया। इस तरह सम्पूर्ण पूर्व प्रशा और बाल्टिक तट रूसके नियन्त्रणमें आ गया। इधर इसी दौरानमें केन्द्रसे मार्शल कोनीव और आस्ट्रियामें वियेनाकी तरफ मार्शल टोलबुखिनकी सेनाओंकी प्रचण्ड प्रगतिने जर्मनीके घुटने टेकनेके दिनोंको अति सन्निकट पहुंचा दिया। पश्चिमकी ओरसे फील्ड मार्शल माण्टगोमरी और जेनरल हाजकी अमेरिकन सेनाएं राइन नदी पार कर बहुत आगे बढ़ गयीं। ऐसा प्रतीत होने लगा मानो पहले बर्लिन पहुंचनेके लिये पश्चिमकी मित्र सेनाओं और पूर्वकी लाल सेनाके बीचमें होड़ लगी हुई है। यद्यपि बात ऐसी नहीं थी। याल्टामें ही चर्चिल और रूजवेल्टको बर्लिन प्रवेश करनेके रूसी अधि-कारको नत मस्तक होकर मानना पड़ा था। इस तरह पश्चिम और पूर्व दोनों ओरसे पहुंची हुई सेनाएं बर्लिनके इतना अधिक समीप थीं कि बर्लिनकी रक्षा इस दुतरफा प्रहारसे असम्भव हो गयी थी।

सैनफ्रांसिस्को

संसार पर आधिपत्य स्थापित करनेके स्वप्नको बहुत कुछ पूरा कर चुकनेके बाद बर्लिनकी यह स्थिति होगी, शायद हिटलरने या उसके अन्य साथियोंने कभी कल्पना भी न की होगी। बर्लिन जब इस तरह दो चक्कियोंके पाटोंके बीच पड़ा हुआ था, विश्व-शान्ति रक्षाके लिये मित्र राष्ट्रों और उनके साथी राष्ट्रोंके प्रतिनिधि एक सुन्दर सुदृढ़ संगठन बनानेके लिये २९ अप्रेलको सैन-फ्रांसिस्को सम्मेलनमें एकत्र हुए। यद्यपि एकत्र हुए थे विश्व शान्तिकी रक्षाके लिये, किन्तु संघर्षका बीज पोलैण्ड की समस्या—साथ लेकर। कई दिन बाद ही लालसेनाने बर्लिन पर पूर्ण अधिकार कर लिया। बर्लिन पतनके साथ साथ रोकोसोस्कीकी सेनाने रोस्टोक और ब्रिटिश सेनाने हैम्बर्ग पर अधिकार किया। हैम्बर्गके समीप ब्रिटिश और रूसी सेनाओंका मिलान हुआ। इस समय तक पूर्वी मोर्चेसे बाल्टिक तक, उधर बर्लिनके दक्षिण-पश्चिम तक पश्चिमी मित्रों की प्रायः निर्विरोध प्रगतिसे सम्पूर्ण उत्तर जर्मनीका सम्पर्क तब तक अनधिकृत दक्षिण से बिलकुल कट गया।

हिटलरकी वीर गति

बर्लिनके पतनके साथ साथ हिटलरके आत्महत्या कर लेने और उत्तरी इटालीमें आततायी देश भक्तोंके हाथों मुसोलिनीकी हत्याकी अफवाहें फैल गयीं। रूसियोंने हिट-लरकी आत्महत्याकी अफवाहको जर्मनोंकी धूर्तता समझा। इसी समय हिमलरकी तरफ से पेश की गयी बिना शर्त आत्मसमर्पणकी शर्तोंको स्टालिनने स्वीकार नहीं किया यद्यपि ब्रिटिश और अमेरिकन अधिकारियों का झुकाव स्वीकार कर लेनेकी ओर था। १ मईको जर्मन रेडियोसे एडमिरल डोनिजने अपनेको हिटलरका उत्तराधिकारी घोषित करते हुए कहा कि हिटलर बर्लिन युद्धका संचालन करते हुए मारे गये। सम्पूर्ण जर्मन जाति कृतज्ञताके साथ अपने नेताके प्रति श्रद्धाञ्जलि अर्पित करती है। इस समय ऐसा मालूम हुआ कि पश्चिमी मित्रोंके सामने सर्वत्र सम्पूर्ण आत्मसमर्पण करते हुए डोनिज सरकार रूसके खिलाफ पूर्वमें युद्ध जारी रखेगी। पश्चिमी मित्र राष्ट्रोंके साथ युद्ध विराम सन्धि करनेकी सब चालें बेकार होते देख अन्तमें डोनिज सरकारने सम्पूर्ण आत्म-समर्पण कर दिया और रूसके खिलाफ भी युद्ध बन्द करनेकी घोषणा की। ७ मईको मित्र राष्ट्रोंकी ओरसे जेनरल आइसेन हावर ने जर्मनीके पूर्ण आत्मसमर्पणकी घोषणा की। इस तरह इसी शताब्दीमें यूरोपके दूसरे महायुद्धकी समाप्ति हुई।

———

रूस और जापान

विभिन्न राहोंके पथिक

(श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार)

अप्रेल १९४५ एशियाके इतिहासमें सदा [स्मर]णीय रहेगा। इसलिये नहीं कि रूसने [जा]पान-रूस तटस्थता पैक्टको रद्द कर दिया [ब]ल्कि इसलिये कि रूसने एशियाके भाग्य [निर्ण]यमें पूर्ण रूपसे भाग लेनेका निश्चय [किया]। एशियाके भाग्यका निश्चय संयुक्त-[राष्ट्र] अमेरीका, ब्रिटेन और चीन ही न [करें]गे, पर जिस मेज पर एशियाका भाग्य [निर्णय] करनेके लिये भावी परिषद बैठेगी [उस]में रूस अपने अधिकारसे सम्मिलित [होगा]। रूसके परराष्ट्र सचिव मो० मोलो-[टोव]ने इसी बातकी रूस-जापान तटस्थता [पैक्ट]को समाप्त करके घोषणा की है।

चार साल पहले

१३ अप्रेल १९४१ को जर्मनी द्वारा रूस [पर] आक्रमण करनेके लगभग दो मास पहले [जापान]के परराष्ट्र सचिव मि० मत्सुकाने [मास्को]के अन्दर रूस-जापान तटस्थता पैक्ट [पर दस्त]खत किये थे। रोम और बर्लिनमें इसका [स्वाग]त और अभिनन्दन किया गया था। [उस स]मय जापानके परराष्ट्र मंत्री ने गद्गद् [होकर] कहा था—अब दोनों राष्ट्र परस्पर [बा]हें डाल कर एक राह पर चलेंगे। पर [केवल] चार साल बाद रूसने घोषणा कर दी [कि] दोनोंका मार्ग पृथक-पृथक है। यह [कि] रूस और जापान अब एक मार्गके [पथिक] क्यों नहीं हो सकते? इस प्रश्नका [उत्तर दे]नेसे पहले तटस्थता पैक्टपर किन अव-[स्थाओं]में सन्धि की गयी थी और उससे [किसको ला]भ हुआ या हानि हुआ यह देख लेना [आवश्य]क है।

नोटिस नहीं—सन्धिका अन्त

[तट]स्थता पैक्टमें कहा गया था कि यह [सन्धि] पांच साल तक रहेगा और यदि कोई राष्ट्र [इसको] समाप्त करनेके लिये एक साल पहले [नोटिस] न देगा तो सन्धि पांच सालके वास्ते [और बढ़] जायगी। पर मो० मोलोटोवने एक [साल पहले] सन्धि अन्त करनेकी सूचना [दे दी] है। रूसने जापान पर अभियोग [लगाया] है कि जापान रूसके शत्रु जर्मनीकी [सहायता] करता रहा है। अतः जापान पहले [ही तट]स्थता पैक्टको तोड़ चुका है, इसलिये [इस अनु]पयोगी सन्धिको कायम रखना अब [आवश्यक न]हीं है। यह ठीक है कि यह अशोभन [और] विचित्र स्थिति थी कि रूस-जापानका [मित्र] था और इसके साथ वह ब्रिटेन और [अमरी]का भी मित्र था, जब कि ये दोनों [परस्पर ल]ड़ रहे थे। पर इस अशोभन और [विचित्र] परिस्थितिमें भी रूसने सन्धिको [निभाया। त]था वाशिंगटन, कैसाब्लैंका और [तेहरानमें] जापानको पराजित करनेके लिये [बनायी गयी] योजनाओंके विचारमें उसने भाग [नहीं ल]िया है। उसने जापान पर हमला [करनेके लि]ये अपने साइबेरियन अड्डे भी नहीं [दिये। प]र इसका यह अर्थ नहीं था कि [जापान] और रूसकी मैत्री गाढ़ी हो गयी [थी। इन] दोनोंके हित सम्बन्ध और स्वार्थों[में कोई] संघर्ष नहीं रहा था।

पुराना कारण

[य]ूरोपके रणक्षेत्रकी चिन्तासे मुक्त हो [कर या]ल्टा कानफरेंसमें उसने यह अनुभव [किया] कि यदि वह अब अपने मित्र राष्ट्रोंका जापान पर हमला करनेमें साथ नहीं देगा, तो वह एशियाके भाग्य निर्णय में भाग न ले सकेगा। इधर जापान आत्मरक्षा पर उतर आया है। उसको अपनी चमड़ी बचाना कठिन हो गया है। ओकीनावामें अमरीकी सेनाके उतरनेसे जापान अमरीकी सेनाके हमलेसे ३५० मील दूर रह गया है। जापानकी नौ सेना कमजोर होगयी है। उसकी हवाई सेना आत्म रक्षामें संलग्न है। जापान अब आक्रमण करनेकी स्थितिमें नहीं है। उससे रूसको अब किसी प्रकार भय नहीं रहा। साइबेरिया पर जापानी सेनाके हमलेके भयसे रूस निरापद है। फलतः रूसकी दृष्टिसे जापान पर आक्रमण करने, जापानी सैन्य शक्तिका विनाश करने का यही उपयुक्त अवसर है। रूसने इसको खोना उचित नहीं समझा और तटस्थता पैक्टका अन्त घोषित कर दिया। क्योंकि रूसकी दृष्टिमें अब उसकी कोई उपयोगिता नहीं रह गयी।

तटस्थता पैक्टपर दस्तखत करने वाले दोनों राष्ट्रोंने चार साल पहले स्वीकार किया कि वे आपसमें शान्तिपूर्ण और मैत्रीयुक्त सम्बन्ध रखेंगे और एक दूसरेके प्रादेशिक अखण्डता और अक्षुण्यताकी रक्षा करेंगे। यदि उन दोनोंमेंसे कोई एक या अधिक राष्ट्रों का सैनिक लक्ष्य बना, तो दूसरा तटस्थ रहेगा। जापान इस स्थितिसे बेखबर नहीं था। इस साल जनवरीमें एक जापानी आलोचकने कहा था कि ब्रिटेन और अमरीका अगले सप्ताहोंमें प्रशांत युद्धमें रूसका पूर्ण सहयोग प्राप्त करनेका यदि सम्भव न हुआ तो नैतिक सहयोग पाने की पूरी कोशिश करेंगे।

जापान और रूसके बीच मैत्री रहनेसे रूस और अमरीकाके बीच वैसा सौहार्द स्थापित नहीं हो रहा था जैसा कि युद्धको जल्दी समाप्त करनेके लिये आवश्यक था। दोनों एक दूसरेसे दूर थे। जपानने रूस पर हमला नहीं किया। पर उसने यह सन्धि रक्षाके ख्यालसे किया या रूसकी अजेय-शक्तिके भयसे यह कहना कठिन है। स्टालिनग्राडमें यदि रूस पराजित हो जाता तब भी क्या जापान साइबेरिया पर हमला नहीं करता, यह आज अनुमानका विषय ही रह गया है। रूसका अपना हित और स्वार्थ इस बातकी अपेक्षा रखता है कि जापानकी सामरिक शक्तिका शीघ्रसे शीघ्र विनाश हो जाय क्योंकि रूसके पूर्वीय प्रांत तभी शाश्वत भयसे मुक्त होंगे। जापानकी शीघ्र पराजय इसलिये भी रूसको अपेक्षित है, ताकि वह पुनर्निर्माणके कार्यको शीघ्र प्रारम्भ कर सके।

आकस्मिक नहीं हुआ

जापानके प्रति रूसी नीतिमें परिवर्तन अकस्मात नहीं होगा। नवम्बर १९४४ में जापानको मार्शल स्टालिनने आक्रान्ता राष्ट्र बताया था। स्टालिनकी यह घोषणा ही बता रही थी कि जापानके प्रति रूसका मनोभाव अब बदल गया है और तटस्थता पैक्ट अब रूसके मार्गमें सहायक न होकर बाधक सिद्ध हो रहा है।

सात मास पहले

इसके सात मास पहले भी इस बातका प्रमाण मिला था कि दोनों राष्ट्रोंके सम्बन्ध बिगड़ रहे हैं। यद्यपि २१ जनवरी १९४४ को जापानी परराष्ट्र मन्त्री शीजेमित्सुने जापानी डायटमें कहा था कि जापान और सोवियट रूस अत्यन्त निकट सम्पर्क बनाये हुए हैं और अनेक प्रस्तावित योजनाओं पर संधि-चर्चा चल रही है। पर बात ऐसी नहीं थी। जापानको आत्मरक्षाकी चिन्ता थी। वह रूससे लड़ाई छेड़नेकी स्थितिमें नहीं था। उत्तरीय सखालिनमें ४५ सालके वास्ते तेल और कोयलेकी रियायतको जापानने बगैर कोई झगड़ा किये छोड़ दिया। रूसका रवैया जापानके प्रति कड़ा हो रहा था। यह इसका प्रमाण था।

सखालिन

सखालिन द्वीप यद्यपि तसमानिया और सीलोनसे बड़ा है, पर जापान और रूसके बीच झगड़ा हुए बगैर इसका नाम कभी सुनाई नहीं देता। १८९७ में रूसी पहले-पहल इस द्वीपमें बसे और १८७५ से से १९०५ तक सारे द्वीप पर जारका अधिकार रहा। पोर्ट स्माउथ सन्धिके अनुसार द्वीपका एक भाग जापानको मिला। रूसमें गृह-युद्ध छिड़ने पर जापानने सारे द्वीप पर अधिकार कर लिया। १९२५ तक जापानने द्वीपको खाली नहीं किया। जापानने इस अर्सेमें द्वीपके उत्तरी भागमें कोयला और तेल उद्योगोंका विकास कर लिया था। अक्तूबर-दिसम्बर और मध्य मार्चसे अप्रैलतक यहांका मौसम ऐसा होता है कि तारके अलावा सोवियट अधिकारियों और द्वीपके अधिकारियोंके बीच किसी प्रकारका सम्बन्ध नहीं रहता। सुदूर पूर्वके इस रूसी प्रान्तमें सखालिन द्वीप के अलावा आर्कटिकसे लेकर व्लाडी वोस्टक तकका समुद्र तट और कमाचटका भी शामिल है। १९३९ में झगड़ा उत्पन्न हुआ। जापान ने घोषित किया कि रूस इन रियायतोंको रद्द करना चाहता है। उस साल अप्रेलमें जापानने रूसको एक खरीता भेजा और रूस पर सन्धि-चर्चामें बाधा डालनेका अभियोग लगाया। रूसने खरीतेको रद्द करके कहा कि उसका रियायतको रद्द करनेका कोई इरादा नहीं है। १३ अप्रैल १९४१ को तटस्थता पैक्ट पर सन्धि हुई और इस झगड़े पर परदा पड़ गया।

३० मार्च १९४४ को एक और सन्धि पर दस्तखत हुए और इसमें यह तय हुआ कि रियासतें रूसका वापस कर दी जायंगी और रियायतोंमें लगे जापानी अपने देशमें वापस बुला लिये जायेंगे। इस व्यावसायिक शर्तों पर ५०००० मैट्रिक टन पेट्रोल जापान को देगा। ४५ सालके वास्ते दी गयी जापानको रियायत २६ साल पहले समाप्त हो गयी। यही नहीं जापानके मछली करार में भी संरक्षणका प्रवेश हुआ और १९३६ के बादसे पहली बार परिवर्तन किया गया। जापानने माना कि कामचटका और ओलुटोरस्कीके तट पर मछली मारनेको मिली रियायतोंका लाभ उस समय तक जापानी न लेंगे, जब तक कि प्रशान्तमें लड़ाई समाप्त नहीं हो जाती। यद्यपि १९२८ में हुए मछली करारको पांच सालके लिये बढ़ा दिया गया। इस सन्धिसे जापानका विचार था कि रूस और जापानके मैत्री पूर्ण सम्बन्ध और दृढ़ हो गये हैं।

पर इजवस्ताका कहना था कि पश्चिममें रूसको मिली सफलताओंका जापानी युद्ध-प्रिय गुट पर प्रभाव पड़ा है। तटस्थता पैक्ट १९४१ में यह ठीक है कि कहा गया था कि इन दोनों प्रश्नों पर शीघ्र विचार होगा और इसका निश्चय किया जायगा, पर जापान ने तब तक अपने दिये वचनको पूरा नहीं किया थो। पर इजवस्ता' इससे सन्तुष्ट नहीं था। उसका कहना था कि इससे प्रशान्तमें रूस और उसके मित्रोंके बीच सम्बन्ध अच्छे हो जावेंगे।

सखालिनकी सामरिक स्थिति

रूसके ईशान तटसे परे और जापानके मुख्य द्वीपके वायव्यमें स्थित द्वीपका आधा उत्तरीय भाग सखालिन द्वीप है। तारतारी की खाड़ी रूसी भूमिको सखालिनसे अलग करती है और व्लाडी वोस्टक दक्षिणमें है। इसलिये जापानको सखालिनमें दी गयी रियायतोंका वापस छीनना सामरिक दृष्टिसे महत्वपूर्ण था और जापानके प्रति रूसके बदले मनोभावोंका सूचक था। इसके साथ उत्तरी सखालिनमें जापानी दूतावास बन्द हो गया और जापानके हाकोडाटे और कुर्झीसे सोवियट दूतावास उठ गया।

प्रभाव

तटस्थता पैक्टके अन्त हो जानेका जापान पर गहरा प्रभाव पड़ा है। जापानके लिये पश्चिममें तटस्थता पैक्ट पर्देका काम कर रहा था और जापानकी दक्षिण बाजू और पृष्ठभाग सुरक्षित था। जापान इसके कारण दक्षिण और पूर्वमें अपनी 'सहसमृद्धि' की योजनाका विस्तार करनेके लिये स्वतन्त्र था, क्योंकि जापान पर प्रभावशाली आक्रमण करनेके लिये साइबेरिया और चीन ही अच्छे अड्डे हो सकते हैं। इसलिये कोइसो मन्त्रीमण्डलका पतन यदि इस कारण हुआ हो तो कोई विस्मयकी बात नहीं है। सैपान पर अमेरीकाका अधिकार हो जाने पर जुलाई १९४३ में तोजो मन्त्रीमण्डलको पद-त्याग करना पड़ा था। कोइसो मन्त्रिमंडलको ९ मास मुसीबतोंमें ही गुजारने पड़े हैं। अमरीकाका विजय-रथ रुका नहीं है, बर्मा हाथसे निकल गया और जापानकी मुख्य भूमि और चीनकी लड़ाई निकट आई मालूम पड़ती है। इस अवस्थामें कोइसो मन्त्रिमण्डल तटस्थता पैक्टके अन्त होनेकी सूचनाका धक्का खाकर गिर गया हो, तो असम्भव नहीं है। अधिक

शक्तिशाली शासन प्रबन्धका मार्ग साफ करनेके लिये एडमिरल कानीनारो सुजुकीने शासनकी बागडोर ली है, जो कि १९२९ से अवकाश ग्रहण किये हुए थे। रूसका प्रशांतके क्षेत्रमें आना जापानके लिये नया संकट है और जापानी मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होना इसी बातका सूचक है।

तटस्थता एक्टका अन्त इस बातका सूचक है कि रूस प्रशान्त युद्धका एक तटस्थ दर्शक न रहेगा। यही कारण है कि अमरीकाके नये प्रेसीडेन्ट मि० हैरी ट्रूमैनने कहा है—रूस द्वारा तटस्थता पैक्टका अन्त कर देनेसे युद्ध पर्याप्त छोटा हो जायगा। मैं इससे प्रसन्न हूं जैसा कि प्रत्येक अमरीकी होगा। सैनिक कमेटीके अध्यक्ष सीनेटर एलबर्ट समर्सने कहा है—इसका निश्चयसे अर्थ है कि रूस जापानके विरुद्ध लड़ाईमें शामिल होगा। साइबेरियामें अमरीकी हवाई अड्डोंकी स्थापना देखी जा सकती है।

रूसका हित

ब्लोरवोस्टक सागर द्वारा प्रशांतमें रूसका हित सम्बन्ध है। जारकी प्रगतिमें जापानने बाधा दी और इस कारण १९०४-५ में रूस जापान लड़ाई हुई। रूस पराजित हुआ। रूसको डरियन बन्दरगाह और मन्चूरियामें महत्वपूर्ण उत्तर-दक्षिण रेलवे जपानको छोड़ना पड़ा। रूसमें गृहयुद्ध छिड़ने पर जापानने साइबेरिया पर आक्रमण किया। इसमें ब्रिटेन और अमरीका भी उसके साथी थे। १९२३ तक जापानी सेनाने ब्लाडीवास्टकको खाली नहीं किया।

३००० मील

रूसका बंदरगाह ब्लाडीवास्टक चारों ओरसे जापानी प्रदेशसे घिरा हुआ है। रूस एक एशियायी राष्ट्र है। उसका एशियायी साम्राज्य यूरपसे क्षेत्रफलमें दुगना है। रूसके साइबेरियन भूभागकी बाजू पर जापनी मंचूरिया है और उससे उसको खतरा। संयुक्त राष्ट्र और कनाडाके बीच जितनी लम्बी सीमा है उतनी ही लम्बी रूस और जापानके बीच सीमा है। इस तीन हजार लम्बी सीमाके एक ओर ४००० सोवियट दुर्ग बने हुए हैं और दूसरी ओर व्यापक सामरिक रेल-पथ पद्धति है, जैसी कि एशियामें दूसरी नहीं है। यह रेलवे पंखेके समान है और किसी भी स्थान पर किसी समय सेना भेजी जा सकती है।

क्वांटुन सेना

जापानकी शासिका वस्तुतः क्वांटुग सेना है। १सितम्बर १९३१ को जब जापानी सम्राट मछली पकड़नेमें व्यस्त थे क्वांटुग सेनाने मन्त्रिमण्डलको सूचना दिये बगैर मंचुरियामें लड़ाई आरम्भ कर दी। क्वांटुग सेनाकी यह परम्परा रही है कि वह चढ़ाई करनेके बाद उसकी इजाजत प्राप्त करती है।

२००० मुठभेड़ें

जापानने रूसके विरुद्ध अघोषित लड़ाई छेड़ दी। १९३१ में युवकनके जापानी सेनापतिने कहा था कि—'हमारी सूचीमें अगला नाम रूसका है। हम इस बातको कभी नहीं भूल सकते कि जापानके हृदयके पास ही रूसी बमवर्षक विमान ब्लाडीवोस्टकमें है। फलतः जापानने रूससे नोंक-झोंक शुरू कर दी। १९३१के बादसे दोनों ओरकी सेनाओंके बीच २००० से अधिक सशस्त्र मुठभेड़ें हुई और जापानने पहले आक्रमण किया। जुलाई १९३८ में जापानियोंने चांगकूफेंगकी सामरिक महत्वकी पहाड़ीको लेनेके लिये २० हजार सेना, तोपों, टैंकों और विमानों द्वारा हमला किया। जापानियोंने पहाड़ी हस्तगत कर ली। मगर उसको कायम रखना और बात थी। तीन सप्ताहकी भीषण लड़ाईमें एक जापानी डिवीजनका सफाया हो गया और पहाड़ीपर हंसिया-हथौड़ा अंकित पताका फहराने लगी। १९३९ में लोमनहनकी लड़ाई गर्मी भर जारी रही और १ लाख सेनाने इसमें भाग लिया तथा १८००० जापानी हताहत हुए। रूसी रक्षा-पंक्तिमें जापानी कमजोर स्थान टटोल रहे थे और उसमें विफल होने पर क्वांटुग सेनाने दक्षिणकी ओर कूच किया जो चीनकी विजयमें प्रवृत्त हुई। क्वांटुग सेना अब भी मंचूरियामें है और केवल कुछ डिवीजनें वहांसे नहीं हटायी गयी है। पर अब स`` यह नहीं है कि जापान कब आक्रम" करेगा, वरन यह है कि रूस अब ज, 'पर कब प्रहार करेगा?

सोवियट रूसकी तैयारी

सोवियट रूसकी यह नीति रही है कि अपने प्रबल शत्रुकी पहली चोट अपने ऊपर न आने दें। वह उससे तब लड़े जब वह थक जाय या उसकी शक्तिका अधिक भाग खतम हो जाय। जर्मनीके साथ उसने यही किया। जर्मनीसे सन्धि करके उसको पश्चिमी यूरोपपर पूरे वेगसे आक्रमण करनेके लिये छोड़ दिया। जर्मनीका वेग जब निकल गया, उसकी सेनाकी शान और तेजी कुन्द हो गयी, तब उसने आक्रमणको अपने ऊपर लिया और दो सालका लाभ लेकर इस अर्सेमें अपनी तैयारी कर ली। जर्मन आक्रमण यदि १९२९ में होता तो सीधा रूसपर होता। बाल्टिक देश, पोलैण्डका रूसी भाग और रूमानियाका रूस द्वारा लिया भाग—बुकोविना प्रान्त, जर्मन आक्रमणके प्रथम वेगको सहनेके लिये न होते। जापानके साथ भी इसने इसी नीतिको बरता। जापानको दक्षिणमें आगे बढ़नेके लिये छोड़ दिया और अपनी तैयारी जारी रखी।

१९२७ से रूस अपने एशियायी भू प्रदेशकी रक्षाके लिये रूसी राष्ट्रीय आमदनीका एक बड़ा भाग खर्च करने लगा। शक्तिशाली सुदूरपूर्वकी सेनाका निर्माण आरम्भ हुआ। टैंकों और विमानोंसे सुसज्जित यह सेना बनायी गयी। साइबेरियामें हथियार बनानेके कारखाने खोले गये। इस बातकी पूरी कोशिश की गयी कि सुदूर पूर्वकी रूसी सेना अपनी आवश्यक सामग्रीकी सप्लाईके लिये यूरोपियन रूसपर आश्रित न रहे।

एशियायी रूसको आबाद करने और उसका विकास करनेकी योजनाको जर्मनी द्वारा २२ जून १९४१ को हमला होनेपर जो बल मिला और उससे और अधिक विस्तारसे योजना पूरी हो गयी। जर्मन विजित रूसी मार्गोंसे लाखोंकी संख्यामें रूसी लोगोंको लाकर साइबेरियामें बसाया गया। बाहरके

(शेष १०वें पृष्ठपर)

कहानी

रखवाला

—:*:—

लें०—श्री फणीश्वरनाथ 'रेणु'

...ी व्यासी सभ्य दुनियासे दूर—बहुत ...हिमालयके पहाड़ी गांवका एक अञ्चल। ...-सा झोंपड़ा, पहाड़की ओटसे छन कर ...ी हुई सूर्यकी किरणोंमें छोटा सा सर- ...ा झोंपड़ा सोनेके झोपड़ेकी तरह चमक ...था। झोपड़ेके इर्द-गिर्द केले, नारंगी, ...गावीके दरख्त, फल-फूल और हरे-पीले ...से हरे हुए। झोपड़ेके सामने एक अमरूद ...खूंटेसे बंधा एक बछड़ा था। पेड़के ...बैठी वह, जंगली बेंतों और बांसकी ...पतली (तीलियों) से डोको बना रही ...प्यारा सा सुकुमार बच्चा गोदमें मीठी ...रहा था। किसी गीतकी 'कड़ी' को ...ाती हुई वह काम कर रही थी। उसके ...मशीनकी भांति चल रहे थे। बेतों और ...ओं को काटते-संभालते गुनगुनाहटका ...ी एक भी जाता, पर उसकी स्मृतियों ...न टूटते थे। हां, कभी कभी सामने ...ैली...धुंधली पहाड़ीकी ओर नजर ...देख लेती, देख लेती अपनी गोदमें ...ारे बच्चेको और पेड़में पके अमरूदों ...उसके मानस पट पर चलने वाले ...के सवाक चित्रपटके एकाध अस्फुट ...हर निकल पड़ते।

...'और यह अमरूदका पेड़ तो एकदम ...ा उस समय, अब तो फलने लगा है।' ...ी मन हिसाब लगा कर जोड़ती— ...।' और फिर अतीतकी स्मृतियां, ...के समान क्रमबद्ध चलने लगतीं— ...वर्ष बीत गये! अमरूदका छोटा-सा ...और महज अट्ठारह वर्षकी थी वह! ...का महीना,...ऐसी ही धीरे धीरे बहती ...ठण्डी हवा, इसी पेड़के पास खड़ी ...सजल नेत्रोंसे 'उनको' विदाई देती ...! पीठ पर 'डोको' लादे, सतरंगे ...कमरबंदसे 'खुकरी' को कमरसे बांधते ...ोंने कहा था—'रून्छस्? दुत ...म ल्यांइ यो डोको फरी रुपयां ...ल्यूंला; धीरज बहादूरको दुलहिन ...। तेस्को कानको झूमका, नाकको ...सम्मे कलकत्ता को नै कमाई हो; ...मा रुपयां तैयार हुंछ,...! (रोती ...पगली! मैं जल्दी ही 'डोको' भर ...कर लौटूंगा। धीरजबहादुरकी स्त्री ...ा न, उसके कानके झुमके, नाककी ...सब कलकत्तेकी कमाई ही तो है। ...ी रुपये बनते हैं आदि।')...

...ाठ वर्ष पहलेके—विदा वेलाके— ...-चुम्बनको याद कर उसका हृदय ...उठता, ओठ फड़कने लगते और ...बिजली दौड़ जाती।

...गांवका आवारा, लफंगा बलहादूर ...साथ जा रहा था। वह इसी पेड़के ...देख रही थी और वे दोनों सामने ...की ओर, धुंधली पहाड़ीकी छाया ...गये थे।' पेड़ पर तोता अमरूद ...पर हाथ उठाकर 'हिट्' कर उड़ा- ...स्मृतियोंका क्रम टूटते-टूटते फिर ...ा...'आठ वर्षों तक वह प्रति ...कुछ देर खड़ी होकर देखती रही ...उस धुंधली पहाड़ीकी छाया ...पर कोई नहीं आया था—कोई ...!...' खूंटेसे बंधा बछड़ा वां-वां करने लगता, गम्भीर निद्रामें सोये हुए बच्चेको बायें हाथसे कंधे या छाती पर चिपकाकर वह उठ खड़ी होती, बछड़ेको पुचकारती-दुलारती और कोमल घास खिलाती— 'अरे तुम्हें इतनी जल्दी भूख लग गयी?' कह कर प्यारसे एक मीठी चपत लगाकर, आसमानमें सूर्यकी ओर देखकर बड़बड़ा उठती— 'वेला ढलनेको है। सुबह ही बिना खाये गया है सो अभी तक नहीं लौटा। उसकी रोजकी यही आदतबुरी...।' कुनमुनाती हुई वह वहीं जाकर बैठ जाती और फिर स्मृतियोंके देशमें विचरण करने लगती।

'आठ वर्षों तक कोई न आया!...तीसरे साल...अगहन महीनेमें शामको जब वह आग सुलगा कर बाछाको सेंक रही थी कि 'चन्दू' की मांने आकर कहा था—'अरी पूनो! बलबहादूर कलकत्तेसे आया है, मांइलाके आंगनमें है।'—सुनते ही वह नवजात बाछाको ठिठुरते छोड़ कर दौड़ी थी मंइलाके यहां। मांइलाके यहां बूढ़े, बच्चे, लड़के, लड़कियां और गांव भरकी स्त्रियां बलबहादुरको घेरे खड़ी थीं। बीचमें बैठा था। वह भाग आयी थी, अपनी झोंपड़ीमें पड़ी-पड़ी वह लगातार कई दिनोंतक आंसू बहाती रही थी...।' उसकी आंखें डबडबा आयीं, वह उठ खड़ी हुई। जङ्गलकी ओर देख कर पुकारती—'ब...ह-ा- दु...र!! प्रत्युत्तरमें खूंटेसे बंधा बछड़ा 'बां-बां' करता और गोदीका बच्चा रो पड़ता। बच्चेको थपकियोंसे सुलाती वह फिर बैठ जाती और ताना-बाना बुनने लग जाती—'हां, वह हफ्तों पड़ी रही थी। और वह बलबहादुर! बलबहादूर कलकत्तेकी हैरत भरी कहानियां सुना रहा था।

...टरेम गाड़ी, मटर गाड़ी...हवैया जहाज...वगैरहकी अजीब अजीब बोलियां वह हंस हंस कर सगर्व सबको सुना रहा था। सब आश्चर्यके पुतले बने सुन रहे थे। अचरज भरी हंसी हंस रहे थे।...वह उसके पास न जा सकी थी। पिछवाड़ेमें ही खड़ी सब सुनती रही...........बलबहादुर ने कहा था......हिरण्यदाजू (हिरण्य भैया) पल्टन मा भरती भये......! सुनते ही वह कांप उठी थी, उसके सिरमें चक्कर आने लगा।

उसे कभी भी भला नहीं लगा था यह बलबहादुर! बचपनसे ही वह उसे जानती थी, उसे सैकड़ों बार गालियां दे चुकी थी। गांव की सभी लड़कियां उससे घृणा करती थीं। वह जङ्गलमें लड़कियोंको छेड़ता था...। लेकिन, उस दिन अपनेको समझा-बुझा कर जब वह बैठी थी, बैठी-बैठी गीतकी एक कड़ी गुनगुना रही थी...विमीत आयो लखन, दाज्यू लाय कहां छोड़े?' (तुम तो आये लक्ष्मण, पर भाईको कहां छोड़ आये?) कि उसने पिछवाड़ेसे गाकर उत्तर दिया था— 'दाज्यू त गये मृगा पछि, म आये सिम्रो रखवारे।' (भाई तो हिरणके पीछे गये, मैं तुम्हारी रखवाली करने आया हूँ)। उस दिन बलबहादुर उसे बड़ा अच्छा लगा था। वह उसको पकड़ लायी थी आंगनमें। घण्टों बैठकर कलकत्तेकी कहानियां सुनती रही थी। उसी दिनसे वह रोज शामको आकर कलकत्तेकी कहानी सुना जाता। उनकी (पूनोकी पतिकी) बुद्धिमानी और अपनी बेवकूफीकी दर्जनों ऐसी कहानियां कहता कि हंसते-हंसते पेटमें बल पड़ जाते।...किस तरह वह एक कम्पनीमें दरबान था, उसी कम्पनीका एक कुली भद्दे इशारेसे 'डुन्छ-डुन्छ दाजू' कह कर चिढ़ाया करता था, वह खूनका घूंट पीकर रह जाता था, जिस तरह उसने जाकर 'हिरण्य दाजू' से शिकायत कर दी और वे आकर उस कुलीको किस तरह 'खुरीख' निकाल कर मारने दौड़े और वह कुली किस तरह दुम दबाकर भागा-आदि बातें वह सविस्तार सुनाता। उसे बड़ी अच्छी लगती थी कलकत्तेकी कहानियां, कैसा देश है जहां बिना तेलकी बत्ती अपने आप-शाम होनेपर जल जाती है और सुबहको बुझ जाती है!!

बलबहादुर भी उसे अच्छा लगने लगा था। एक दिन वह बलबहादुरको पकड़ कर समझाने लगी थी—'बहादुर! तुम आवारागर्दी छोड़ो। घर बनाकर घरनी लाओ।'

'ऊंह! 'हो-हो-हो'—वह ठठा कर हंस पड़ा था—'भौजी! तुम भी कैसी हो! आवारागर्दी छोड़ कर घर तो बना सकता हूं, पर तेरे साथ रहना कौन लड़की पसन्द करेगी?'

'करेगी! तू आवारागर्दी तो छोड़।'

कुछ क्षण गम्भीर रहकर, वह मुस्कराते हुए बोला था—'अच्छा भाभी एक बात पूछूं?'

'पूछो'

'यदि आवारागर्दी छोड़ दूं तो तुम भी मेरे साथ.........।

'उंह! फटहा' कह कर उसके मुंहपर एक हल्की चपत लगाकर, वह मुस्कुराती हुई गाय खोलने चली गयी थी। बलबहादुरने उसके हाथसे जबर्दस्ती पगहिया ले ली थी— 'दो भौजी! मैं चरा लाता हूं।'

उसी दिनसे वह साथ ही रहने लगा। काम करनेमें तो वह भूत है भूत। जबतक न आकर हाथ पकड़ो, काम नहीं छोड़नेको।... 'आज तीन सालसे किसके खेतमें ऐसे फसल लगते हैं!' वह अपने खेतोंकी ओर देखती। लहलहाते पौधे, मनमोहक हरियाली...कितना सुन्दर!

'पू......नो! पू......नो...।' पासके

वे दिन स्वप्न बने

—:*:—

वे दिन स्वप्न बने, अब मुझको वे दिन स्वप्न बने
लगता एक कहानी जीवन
व्यथा भरा सा आकुल तन मन
मन का साथी है सूनापन
मधुर याद बन छाये मुझ पर, मेरे ही सपने।
वे दिन स्वप्न बने।

कितनी पागल मेरी आशा
प्राणों में भर रही दुराशा
मौन बनी नयनों की भाषा
मेरे सुख पर मंडरा आते, दुख के मेघ घने।
वे दिन स्वप्न बने।

सांस दूर नभ तक उड़ जाती
सजल वर्तिका जलती बाती
एक आश की किरण सहारे—
मैं प्रिय-पथ पर पलती जाती।
चरणों में गति, मति में आकुल साजन के सपने।
वे दिन स्वप्न बने।

सत्य कभी होगा सपना ही
हंस लेगा तब मन का राही
रहता है जो विकल सदा ही
मेरा स्नेह चला है देखो मुझको ही छलने।
वे दिन स्वप्न बने।

—कुमारी शैल रस्तोगी

विभिन्न राहोंके पथिक

(८ वें पृष्ठसे आगे)

लोगोंने रूसके इस फरमानका महत्व तनिक नहीं समझा। यूरोपियन रूससे निकाले गये नागरिक नये एशियाई घरोंमें स्थायी रूपसे आबाद किये जावेंगे। मास्कोने जनताको यह सोचनेके लिये विवश किया कि वे यूरोपियन रूसके अपने पुराने घरोंको लौटनेका विचार छोड़ दें। एशियायी रूसको बसाने और औद्योगिकरणकी योजनाका यह युक्तियुक्त परिणाम था। रूस अपने एशियायी भू प्रदेश की रक्षाके लिये सदासे सजग था। जापानी आतङ्कके नष्ट होनेपर अमेरिकाकी अपेक्षा रूसको अधिक लाभ होगा।

यूरोपकी लड़ाईमें भी

यूरोपके भीषण संग्राममें जूझते हुए भी रूस ने सुदूर-पूर्वकी प्राचीरको मजबूत बनानेका कार्य जारी रखा। ब्लाडी वोस्टोक, रिवेरा और नेपल्सकी याद दिलाता है। शीतऋतु में भी बन्दरगाहके हिममय रास्तेको खुला रखनेके लिये बर्फ तोड़क सदा व्यस्त रहते हैं। शहरकी आबादी ९ लाखसे अधिक है। पर इसकी आधी आबादी भूगर्भ व तहखानोंमें रहती है। विश्वके अन्दर भूगर्भमें व्यापक रूप में बसा यह एक ही शहर है। निम्न बंदरगाहके पीछेकी पहाड़ियां शहरकी गलियोंसे ढकी हैं और वे उच्चतर पहाड़ियां है। ये पहाड़ियां ब्लाडी वोस्टककी वास्तविक शक्ति को अपने अन्दर छिपाये हुये हैं। ये पहाड़ियां खोखली है। इनमें नीचे सीमेण्टसे बनी गुफाओंमें २९०००० रूसी सैनिक जापानी सेनासे लड़नेको उत्सुक हैं। विमान-टैंगर (गृह) १०० फीट जमीनके नीचे हैं और बमवर्षासे पूर्णतया सुरक्षित हैं। इस लड़ाईमें अनेक बार जमीनसे उड़कर आकाशमें पहुंचने से पहले ही विमानोंको नष्ट करके अनेक संग्राम जीते गये हैं। ब्लाडावोस्टकमें इसकी पुनरावृत्ति नहीं हो सकेगी।

अन्य पहाड़ोंके नीचे गोला-बारूदके गोदाम हैं। अन्योंमें सैकड़ों टैंक हैं। प्रशान्त या ट्रांससाइबेरियन रेलवे द्वारा मुरमांस्ककी राह आनेवाली ९ष्लाईसे वाल्ट भरे हुए हैं। शहरके अन्य भागोंमें इतना अन्न और मांस भरा हुआ है कि दो सालतक घिरी सेनाके वास्ते वह पर्याप्त है।

ब्लाडीवोस्टकका अर्थ है—पूर्वका विजेता। जापानसे यह ३०० मील दूर है। मंचूकोकी सीमासे ३० मील दूर है। जापान के सब शहर ब्लाडीवोस्टकसे ७०० मील वृत्तार्द्धमें है। फोर्ट्रेसया लिबरेटर विमानों की उड़ानकी यह आधी दूरी है। बी-२८ के के लिये तो यह और भी कम है। ब्लाडीवोस्टलसे उड़ा विमान अबाटा, के इस्पात प्लाण्ट, शियोनोसकी, कोबे, ओसाका, कीओरा, नागोया, योकोहामा और मोकिया होकर ब्लाडीवोस्टक १८०० मीलका चक्कर लगाकर लौट सकता है। जापान इस अवस्था में किसी एक स्थानमें अपनी सुरक्षा योजना को केन्द्रित नहीं कर सकेगा। जापान इस भयसे अवगत है अतः उसने कबूतरोंको संदेश लानेके लिये बड़ी संख्यामें पालना आरम्भ कर दिया है। तार, फोन और रेलका यातायात टूट जानेपर ये कबूतर सन्देश लाने-ले जानेके काममें आवेंगे।

नौसेना

रूसकी सुदूर-पूर्वकी अलग नौसेना है। यही कारण है जब अमेरीकासे रूसी जहाजोंमें प्रशान्तको पार करके युद्ध सामग्री और माल आने लगा था, और जापानने इसपर आपत्ति की थी तब रूस जर्मनीसे उलझे होनेपर भी जापानके इस विरोधसे विचलित नहीं हुआ था। रूसी नौसेनामें बड़े जंगी जहाज नहीं हैं, पर १०० टनके विनाशक संकीर्ण खाड़ीमें पंक्तिमें खड़े हुए रहते हैं। ये जहाज नये और बहुत तेज हैं। पवन वेधी टारपीडोंका एक बहुत बड़ा बेड़ा है। पर रूसी बेड़ेकी शक्ति पनडुब्बियोंमें है। १००से अधिक पनडुब्बियां ब्लाडीवोस्टकमें हैं। हालके सालोंमें रूसने २०० पनडुब्बियां बनायी है। ब्लाडीवोस्टक के चारों ओरके नौ अड्डोंमें शक्तिशाली रूसी फौज तैनात है। सुदूरपूर्वसे 'रेडबैनर आर्मी' कभी नहीं हटायी गयी। सोवियट सीमापर तैनात २९जापानी डिवीजनोंसे हर अवस्थामें वह बढ़ीचढ़ी हैं।

कब हमला करेगा ?

याल्टा परिषदके बादसे बहापोह हो रहा है कि रूस प्रशांतकी लड़ाईमें कब कूदेगा। क्योंकि रूस यदि जापानके विरुद्ध लड़ाईमें शामिल हो तो प्रशांतकी लड़ाई विल्र्ड प्राइसके मतानुसार चार साल जल्दी समाप्त हो सकती है। १९४१के तटस्थता पैक्ट के अन्त होनेसे कोई नाटकीय घटना घटेगी। रूस अभी प्रतीक्षा करेगा। चीनी ... तक अमरीकी सेना न उतर आवेगी, ... सेना मलाया और सुमात्रामें लड़ाई ... कर देगी, उससे पहले रूसकी 'रेड ... जापानपर हमला न करेगी और रूस ... उत्सुकतासे, पर धीरजके साथ प्रतीक्षा ...

जङ्गलसे कोई पुकारता। आवाज पहचान कर वह उत्तर देती—'आ...यी।' और गोदी में बच्चेको संभालते हुए वह जङ्गलकी ओर दौड़ती।

झाड़ीके पास आकर फिर पुकारती... 'किधर ?

'इधर-इधर।' झाड़ीके उस पारसे आवाज आती।

* * * *

बलबहादुर नवजात बछड़ेको पोंछ रहा था, पास ही गाय खड़ी थी। पूनोको देखते ही वह खिल पड़ा—'आओ, आओ! उजरी ने बचा दिया है। बाछी है बाछी!' पूनोकी गोदीमें बच्चा जग पड़ा था, बच्चेको बलबहादुरकी गोदीमें देते हुए उसने बछड़ेको बड़े प्यारसे चुमकारा, फिर बोली—'अब फरक न घर, खायेको पनि छै न (अब छोटो घर, खाये भी नहीं हो)।

'उंहूं...अलि पख न, अलि सुन न (जरा ठहरो न, जरा सुनो न) उसने गिड़गिड़ाते हुए कहा था। पूनोंकी आंखोंमें एक शरारत भरी लाली दौड़ गयी और ओठोंपर मुस्कान। वह बछड़ेको गोदमें उठाते हुए बोली थी—'उंहूं, चलो।'

'अलि सुन न...' बहादुर रोकता ही रहा, वह चल पड़ी।

दूधसे सफेद बछड़ेको गोदमें लेकर पूनो आगे-आगे भागी जाती थी, पीछे-पीछे सद्यःप्रसूता उजरी 'हुं, हुंक् हिबं हिबं' करती दौड़ी जाती थी। पास ही झरना कल-कल कर रहा था और डालियोंपर पक्षियोंका 'कोरस' गान शुरू हो गया था।...पूनो रुक-रुक कर पीछे भी देखती थी।...सबसे पीछे बलबहादुर...गोदमें बच्चे कोलिये, कंधेपर लट्ठ रखे, धीरे-धीरे विजयी वीरकी तरह झूमता आ रहा था। उसकी गोदीमें बच्चा रो रहा था और वह उसको अजीब लयमें गीत गाकर चुप करानेकी चेष्टा कर रहा था—'ओ। बाबू!...गोरीको बधेंबा मा, छैन रखवारा, चोरी भयो फलफूल...ओ बाबू!'

अब जापानकी बारी है

चारों तरफसे यही आवाज सुनायी दे रही है कि अब जापानकी बारी आयी। अमेरिकन प्रेसिडेंट ट्रूमैनने उस दिन अपने विजय सन्देशमें जर्मनीकी पराजयका उल्लेख करते हुए यह कहा कि पश्चिमी संसार, जहां पांच वर्षोंसे एवं उससे भी अधिक दिनोंसे लक्ष-लक्ष स्वतंत्रजन्म लेनेवालोंका शरीर बन्दी बना रखा गया था और उनका जीवन नष्ट-भ्रष्ट कर डाला गया था, अब कुचक्री एवं असत शक्तियोंसे मुक्त हो गयी। क्या प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनके इस वक्तव्यपर विश्वास किया जा सकता है? खैर, आगे चलिये। प्रेसिडेंट ट्रूमैन कहते हैं, पश्चिमकी तरह ही अब पूर्वमें भी लड़कर विजय प्राप्त करना है। सम्पूर्ण संसारको कुचाली शक्तियोंसे (क्या सचमुच?) मुक्त करना है उसी तरह जैसे आधा संसार मुक्त किया जा चुका है। जहांतक जापानको पराजित करनेका सवाल है हमें पूरा विश्वास है कि प्रेसिडेंट ट्रूमैनकी वाणी सत्य होगी, किन्तु संसारको कुचक्री शक्तियोंसे मुक्त करनेकी बात ट्रूमैनके मुंहसे सुनकर हंसी आती है।

कुचक्रियोंका साथ देनेवाला जब कुचक्रका अन्त करनेकी बात करता है तो कैसा तो लगता है। भारतमें कुचक्र बनाये रखनेवाले, बर्मामें कुचक्रका फिर जाल बिछाना शुरू करनेवाले, मध्यपूर्वमें कुचक्रका प्रभाव विस्तार करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाले और अब उसी मुक्त किये गये आधे पश्चिमी संसारमें आस्ट्रिया, पोलैण्ड, ट्रिस्टीकी समस्या खड़ी करके, रूसके खिलाफ बाल्टिक देशोंमें प्रचार आरम्भ करके नया कुचक्र चलानेवाले, जापानियोंकी मातहतीसे मुक्त किये गये प्रशान्त अंचलको स्वदेश रक्षाके लिये महत्त्वपूर्ण बताकर, तथा चीनको आपसमें बांट लेनेके लिये चांग कैशककी सरकारकी बुद्धि भ्रष्ट करनेवाले ब्रिटेन और उसके प्रधान सहायक अमेरिका जापानको पराजित करके उसके कुचक्रसे पूर्वको मुक्त करके सुदर्शन चक्रके रूपमें जो अपना कुचक्र चलानेकी तजवीज कर रहा हो ऐसे चक्रीको इस शोषित और पीड़ित संसारका हजार बार नमस्कार!!!

पश्चिमी मोर्चे पर तोपोंने आग उगलना बन्द कर दिया है। अशस्त्रोंकी झनझनाहट बन्द हो गयी है। जर्मनोंने घुटने टेक कर मित्रोंके हाथमें अपना, अपने देशका, अपनी जातिका भविष्य सौंप दिया है - स्वेच्छासे नहीं, लाचार होकर। छिट-फुट, इधर-उधर जो जर्मन टुकड़ियां आत्म समर्पणके आदेश का उल्लंघन कर प्रतिरोध जारी रखना चाहती हैं, उनकी टेक भंग कर फौरन उनकी ठौर ठिकाने लगानेके लिये रूसी सेनायें यत्नशील हैं यह सिर्फ चन्द घड़ियोंका मामला है।

पर जर्मन आत्मसमर्पणसे ही युद्धका अन्त हुआ न समझना चाहिये। पूर्वमें मित्र राष्ट्रोंका जर्मनीसे भी कट्टर और खतरनाक शत्रु जापान अब भी अपनी छाती तानकर खड़ा हुआ है।

यूरोप यद्यपि कहनेको थोड़े समयके लिये युद्धसे मुक्त हो गया है पर उसके परराष्ट्र सचिव श्री मोशियो मोलोटोवने तो यह स्पष्ट शब्दोंमें कह देनेकी आवश्यकता समझी है कि रूसके लिये युद्ध अभी समाप्त नहीं हुआ है। जब तक सम्पूर्ण विश्वसे फासिस्ट शक्तियोंका अन्त नहीं हो जाता, रूस शान्त नहीं बैठ सकता। विश्वकी फासिस्ट शक्तियोंमें जापान भी आ जाता है, इसमें सन्देह करनेकी गुंजायश नहीं रह गयी क्योंकि जापानके साथ रूसकी तटस्थता सन्धिको भंग करनेका निश्चय प्रकट करते हुए जापान पर जर्मनीको सहायता देनेका अभियोग रूसकी ओरसे लगाया जा चुका है। तब रूस जापान संघर्षकी संभावनाको हम नहीं टाल सकते। पर जब तक प्रत्यक्षसे प्रत्यक्ष रूपसे रूस जापान विरोधी युद्धमें नहीं कूदता, जापानके विरुद्ध लड़नेवाली तीन मुख्य ताकतें—अमेरिका, ब्रिटेन और चीन रह जाती हैं।

यूरोपीय युद्धकी समाप्तिके बाद अमेरिका और ब्रिटेन जापान पर चांप चढ़ानेकी अनुकूल स्थितिमें हो गये हैं। शीघ्र ही जापानको जल, स्थल और गगन सेनाके भीषण हमलेका स्वागत करनेको प्रस्तुत रहना पड़ेगा। जापानी वक्ताओंके वाद-विवादसे सभी संभावित हमलोंसे बचनेके लिये जापानकी रक्षात्मक तैयारियोंका आभास मिल रहा है। बर्मा और फिलीपाइनमें जापानियोंकी पराजयसे इधर स्पष्ट हो गया है कि बेशुमार मित्र ताकतोंके सामने उसे दबना पड़ा है और आज चीनको छोड़कर बाकी हर मोर्चों पर उसे रक्षात्मक रुख लेनेको बाध्य हो जाना पड़ा है। अभी जापानी आक्रमणकारी अभियानकी किसीका कोई निश्चित परिणाम नहीं दीखता।

जर्मन पराजय और इटलीके आत्म-समर्पणसे धुरी शक्ति कम हो गयी है। जापान अकेला पड़ गया है। अपने मित्रोंकी दुर्दशा से सबक लेकर जापान आत्मसमर्पण करे तो दोनों ही पक्ष अब अधिक खून-खराबीसे बच जायेंगे।

जापानियोंकी बुद्धिमानी इसीमें है कि समय रहते सन्धिका प्रस्ताव करें, वरना हिटलर और उसके नाजी मित्रोंकी तरह सम्पूर्ण देशको महानाशके खंदकमें ढकेल कर बादमें लाचार हो उसी कार्यको करना कहां तक बुद्धिमानी है। यदि उन्होंने अपनी जिद पर अड़े रहनेकी गलती की, तो इस गलतीका परिणाम निश्चित पराजयके सिवा और कुछ नहीं हो सकता। जापानी परराष्ट्र सचिव मत्सूकोका २७ मार्च १९४१ को बर्लिनमें स्वागत करते हुए जर्मनीके परराष्ट्र सचिव वान रिबनट्रापने कहा था, "हम सभी जानते हैं कि त्रिगुट सन्धिके रूपमें बंधी तीन बड़ी शक्तियों, तथा उनका साथ देने वाले अन्य राष्ट्रोंका भाग्य एक है। जर्मनी और इटलीके भाग्यमें जो लिखा है, वही जापानके भाग्यमें भी होगा।"

यदि इस जर्मन राजनेताके कथनको सत्य मान लिया जाय तो जर्मनी और इटलीके विनाशके बाद जापानका विनाश होना भी निश्चित मालूम होता है।

जापानके विरुद्ध प्रतिकूल परिस्थितियोंका जबर्दस्त जमाव हो रहा है। जापान आज अकेला है। जापानसे लड़नेको जो शक्तियां खड़ी हैं उन्हें पराजित करनेमें जापानी नेता असमर्थ हैं। जापानको कई मोर्चोंपर जो मुंहकी खानी पड़ी है उससे यही जाहिर होता है कि जापानी हवाई बेड़ा अपने साम्राज्यके हर मोर्चेपर स्थल सेनाको सामयिक सहायता पहुंचानेमें असमर्थ है। इतना ही क्यों, सैकड़ों अमेरिकन वायुयान स्वयं जापानके मुख्य नगरों और औद्योगिक केन्द्रोंपर विनाशका नजारा उपस्थित कर रहे हैं, पर इस मोर्चेपर भी जापानी हवाई शक्ति दुर्बल दीख पड़ती है। वर्तमान महासमरमें हवाई शक्तिका विशेष महत्व है और इसके अभावमें जबर्दस्त स्थल और जल सेना भी विजयकी आशा नहीं कर सकती। अगर जापानने हवाईमोर्चेपर अपनी कमजोरीका परिचय दिया या देनेको बाध्य किया गया तो उसका विनाश और भी सन्निकट ही समझना चाहिये।

कोरिया
टोकियो
ओसाका
कोबे
योकोहामा
नागासाकि
सिकोक
किउसु
जापान
अमामि
मिनसिगु
मुकी
ओकिनावा
बोनिन द्वीपपुञ्ज
फरमोसा
मियामि
पूर्वीचीन सागर
आइयोजिमा
फिलिपिन द्वीपपुञ्ज
मरियाना द्वीपपुञ्ज
मैनीला
प्रशान्त
गुयाम
मित्र सैनिक केन्द्र
माइल
0 २०० ४००
आसिल

ओकीनावापर चढ़ाई करनेवाली सेनाके कमाण्डर मेजर जेनरल शीलाट

इतना सब कुछ होते हुए भी जापानी शक्तिका नगण्य समझना भारी भूल है। एडमिरल चेस्टर निमीत्स, जिन्हें प्रशान्त सागरमें अमेरिकन नौ सेनाका कमाण्डर-इन-चीफ होनेके नाते जापानी शक्ति उसकी युद्ध-कला और कट्टरताके निकट सम्पर्कमें आनेका अवसर मिला है, यूरोपीय विजयपर अपना सन्देश ब्राडकास्ट करते हुए कहा था, "जापानी युद्धकी शीघ्र समाप्तिकी हम आशा नहीं करते।" योरोपीय युद्धमें जर्मनीकी इतनी जल्दी पराजयका श्रेय रूसी सेनाको है और २२ जून, १९४१ में रूसपर आक्रमण करनेकी भयङ्कर गलती यदि जर्मनीने न की होती तो क्या हुआ होता, यह नहीं कहा जा सकता।

अब आयी जापानकी बारी। इस युद्धमें रूसके तटस्थ रहनेसे सिर्फ अमेरिका और ब्रिटेन रह जाते हैं। जहां जर्मनीकी पराजयसे धुरी गुट कमजोर हो जाता है उसी तरह रूसके निकल जानेसे धुरी-विरोधी (अब जापान-विरोधी) शक्तिका पलड़ा भी तो ऊपर उठ गया। अमेरिका, ब्रिटेन और रूसके साथ रहनेपर जब जर्मनीको झुकानेमें इतना समय लगा तब जर्मनीकी तरह प्रबल शत्रु जापानको उस स्थितिमें पहुंचानेमें लम्बी लड़ाईकी संभावनाको कोई टाल नहीं सकता। तभी तो आज विजयके बीच भी हम उत्तरदायी व्यक्तियोंके मुंहसे सुन रहे हैं कि विश्व युद्धका प्रथम पर्व समाप्त हुआ है, दूसरा और अन्तिम अब भी बाकी है। यूरोपमें स्वतन्त्रताका झण्डा फहरा रहा है पर पूर्वमें अब भी युद्धके बादल उमड़-घुमड़कर बरस रहे हैं। उस दिन विजय दिवसकी घोषणामें प्रे० ट्रूमैनने कहा था—'युद्धका अन्त करनेके लिये हम कार्य करते रहें। हमें विजयका आधा हिस्सा ही प्राप्त हुआ है। पश्चिम स्वतन्त्र हो गया, पर पूर्व अब भी जापानियोंके अधीन है।'

पूर्व-पश्चिमके हिसाबसे युद्धका अर्ध भाग बीत चुका है, पर असलियत तो यह है कि अमेरिकाके लिये यह चतुर्थांशके ही बराबर है। अमेरिकाके लिये जर्मनीसे कहीं बढ़कर जापान खतरनाक है और इस खतरेके रहते अमेरिकाकी महत्त्वाकांक्षाओंकी पूर्ति सर्वदा संदिग्ध ही रहेगी। अतः यह कहना

वर्तमान युग संघर्षोंका युग है। शान्ति तथा व्यवस्थाकी स्थापनाके लिये अनवरत प्रयत्न किये जाने पर भी भविष्यमें अशांतिके चिन्ह ही दृष्टिगोचर हो रहे हैं। अशांतिका वास्तविक कारण यह है कि संसारकी सभी जातियोंमें पारस्परिक घृणा, द्वेष, विग्रह और कलहका विषाक्त वातावरण विद्यमान है, जिसके फलस्वरूप शान्ति स्थापना होना युद्धोत्तर कालमें भी सम्भव प्रतीत नहीं होता। युरोपके युद्धोंका मूल कारण वाहकन देशोंकी जातियोंका पारस्परिक

कि अमेरिकाके लिये महायुद्धका अत्यन्त महत्वपूर्ण अध्याय अब प्रारम्भ हो रहा है, कोई अतिशयोक्ति नहीं। तभी तो स्थितिकी गंभीरताको पूर्णतया समझते हुए प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनने अपनी घोषणासे कहा है :—"जिस कार्यकी अभी-अभी सानन्द समाप्ति हुई है, आगेका काम उससे किसी अर्थमें कम महत्वपूर्ण, कम आवश्यक और कम कठिन नहीं है।" आनेवाले महीनोंके लिये प्रेसिडेंटने एक ही सन्देश दिया है, वह है काम करनेका। लगातार परिश्रम का सतत प्रयत्न करते रहनेका।

जितनी जल्दी यथेष्ट तैयारी पूरी कर जापानके विरुद्ध बड़े पैमानेपर आक्रमणात्मक काररवाई की जायगी, युद्धका उतना ही शीघ्रतासे अन्त होगा। अधूरी तैयारीके साथ बढ़नेका नतीजा अधिकाधिक भौतिक क्षति और युद्धकी लम्बाईमें अनावश्यक वृद्धि के सिवा और कुछ नहीं हो सकता। इसीसे मित्रोंकी ओरसे जर्मन विजयके आनन्दको सीमित रख अपनी सारी शक्ति प्रशान्त मोर्चेपर विजय प्राप्त करनेकी दिशामें लगाने का निश्चय प्रकट किया जा रहा है। प्रशान्तकी विजयके साथ-साथ योरोपीय विजयका आनन्द उठानेका उनका इरादा प्रकट हो रहा है। क्योंकि जिनके नौनिहाल अब भी मौतसे जूझ रहे हों, खूनकी नदियोंमें नहा रहे हों या घायल बदन, खूनसे लथपथ भीषण संग्राममें रत हों, उस समय विजयका आनन्द कैसा? खैर, मित्रोंको तो पश्चिममें कुछ प्रकाश दीखने लगा है। पर हमें तो पूर्व-पश्चिम, हर दिशामें अन्धकार ही अन्धकार दीखता है और इच्छा होती है कि जार्जबर्नार्ड शाके इन शब्दोंकी प्रतिध्वनि बन कर गूंज उठूं—

'मैं इन मूर्खोंकी टोलीमें शामिल होना नहीं चाहता जो इस विजयके सम्बन्धमें व्यर्थ प्रचार कर रहे हैं और इसे ऐसे ढङ्गसे मना रहे हैं मानो प्रत्येक चीज समाप्त हो गयी जब कि वास्तवमें सम्पूर्ण यूरोपके सामने सबसे क्रूर काल सामने खड़ा है। कोई गम्भीर विचारक यूरोपके विनाश और फाकेकशीके समय आनन्द मनायें तो कैसे? लाखों भूखसे मर रहे हैं, जिनमें मासूम बच्चे भी हैं। विशाल शहर मलबेके ढेर बन गये हैं, विस्तृत भूप्रदेश मृतक और अपाहिजोंसे पटा हुआ है। बर्लिनका अग्निज्वालामें भस्मीभूत होना हमारी विजय घोषणाका कारण कैसे बन सकता है। शताब्दियोंकी संस्कृतिको नष्ट कर इसे विजयकी संज्ञा नहीं दी जा सकती।"

अमेरिकाकी नीग्रो-समस्या

—:o*o:—

(लेखक—श्री गौरीशंकर ओझा)

संघर्ष रहा है। वर्तमान युद्धका कारण भी जर्मन जातिका अपनेको सभी जातियोंसे श्रेष्ठ समझकर अन्य जातियों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करनेकी महत्वाकांक्षामें निहित था। फिलस्तीनका यहूदी-अरब कलह, अफ्रीक में काले-गोरेका भेद-भाव, भारतकी हिन्दू-मुस्लिम समस्या और अमेरिकामें अमेरिकन गोरों द्वारा काले नीग्रो लोगोंके प्रति असमान दुर्व्यवहार आज भी अपने उग्र रूपमें विद्यमान है। जब तक काली, गोरी और पीत जातियोंमें पारस्परिक रंग-भेदके कारण घृणा, द्वेष, शोषण तथा उत्कट स्वार्थ भावना जाग्रत रहेगी तब तक संसारमें स्थायी शान्तिका होना असम्भव ही है।

पूंजीवादी सभ्यताके फलस्वरूप जिस रंग-भेदकी उत्पत्ति हुई, उसमें सदियों तक मनुष्यने मनुष्यको पशुओंसे भी जघन्य अवस्थाओंमें रखा है। हब्शियोंके क्रय-विक्रयकी कहानी तो सभ्यता, क्या असभ्यताके इतिहासकी सबसे करुण और घृणित कलंक गाथा है। रंगीन जातियों पर होने वाले अत्याचारोंका यह एक विशेष अंग है, जिसने सदियों तक संसारमें दासता प्रथाका एक घृणित उदाहरण चालू रखा। अमेरिका और ब्रिटेनके अठारहवीं शताब्दीके इतिहास और साहित्यमें ऐसे प्रमाणोंकी कमी नहीं है, जो यह सिद्ध कर देते हैं कि कैसे-कैसे अनोखे तर्कों तथा युक्तियोंसे इस अमानवीय प्रणाली का समर्थन किया जाता रहा है। अठारहवीं शताब्दीमें गुलामोंकी खरीद-बिक्रीका व्यवसाय खूब जोर पर था और असहाय गुलाम स्वतंत्र राष्ट्रोंकी राष्ट्रीय सम्पत्ति समझे जाने लगे थे। कहा जाता है कि सन् १६८० से सन् १७०० ई० के बीच २० वर्षोंमें प्रायः ३ लाख गुलामों को अंग्रेजोंने अफ्रीकासे अमेरिका पहुंचाया। उस समय जो सन्धियां होती थीं, उनपर विचार करते समय राजनीतिक प्रश्नोंके साथ-साथ गुलामोंके क्रय-विक्रयके व्यवसाय का भी ध्यान रखा जाता था। यूट्रेटकी जो सन्धि सन् १७१३ में हुई थी, उसमें स्पेनसे इस अधिकारके ले लेनेके लिये इंग्लैण्डमें बहुत प्रसन्नता प्रदर्शित की गयी थी। सम्राट जार्ज तृतीयके लम्बे शासन कालमें ब्रिटेनका यह गुलाम-व्यापार अपनी पूर्ण उन्नतावस्था में था।

गुलामोंके क्रय-विक्रयके इस व्यवसायकी भयंकरता बतलाने वाले निम्न आंकड़े उल्लेखनीय हैं :—

सन् १६४० से १७८६ तक ब्रिटिश, अमेरिकन उपनिवेशोंमें २१ लाख गुलाम बिके।

सन् १७१७ और १७५६ के भीतर लगभग ३५ लाख गुलाम अमेरिकन उपनिवेशोंमें आये।

सन् १७५२ और १७६२ के भीतर केवल जमाइकामें ७१,११५ गुलाम पहुंचाये गये।

सन् १७७१ से सन् १८०० ई० तक प्रति वर्ष ७० हजार गुलाम अमेरिकन उपनिवेशों में पहुंचाये जाते थे। इस प्रकार १८॥ लाख के लगभग गुलाम अमेरिकन उपनिवेशोंमें पहुंचाये गये।

इस प्रकार गुलामोंका यह व्यवसाय विशाल पैमाने पर चलाया जाता था जिसमें अनेक राष्ट्रोंकी दिलचस्पी थी। आश्चर्य है कि बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों तथा विचारकोंने भी इस घृणित व्यापारको चालू रखा था और इसके निषेधके लिये होनेवाले प्रयत्नोंको नष्ट करनेके लिये युद्ध आरम्भ तक करनेकी चेष्टा की थी। ब्रिटेन और अमेरिकामें यह प्रश्न बहुत दिनों तक एक विकट रूपमें उपस्थित रहा।

सन् १७९० में तम्बाकू, चावल, रुई और नीलकी खेतीकी वृद्धि रुक गयी और तब गुलामोंकी संख्यामें भी कमी पड़ गयी। दक्षिण अमेरिकाने यह सोच कर कि अब उसे गुलामोंकी आवश्यकता नहीं है, सन् १८०८ ई० में दासोंके आयात पर प्रति[illegible] लगा दिया। रुईकी खेती उन दिनों [illegible] लोगोंने ही विशाल पैमानेपर सम्भव [illegible] दी थी और आज भी उनके कारण ही [illegible] यह रूप है।

वर्तमान युद्धमें अपनी युद्ध-साम[illegible] शस्त्रास्त्र-उत्पादन और सैनिक-शक्ति [illegible] समुद्री-शक्ति द्वारा अमेरिका प्रमु[illegible] भाग ले रहा है। मित्र राष्ट्रोंमें वह [illegible] माना जाता है। प्रजातन्त्रकी रक्षा [illegible] शान्ति-स्थापनाके लिये उसकी [illegible] वृद्धि करनेके लिये वह युद्धोत्तर विश्व[illegible] स्थामें प्रमुख भाग ले रहा है। मानव[illegible] के लिये वह उच्च सिद्धान्तोंका प्रतिपा[illegible] रहा है तथा और सभी स्वतन्त्र तथा प[illegible] देशोंकी जनताको समान अधिकार [illegible] स्वतंत्रता प्रदान करनेके लिये वह [illegible] बना रहा है, किन्तु सं० रा० अमेरिका[illegible] आज काले-गोरोंकी जो विकट समस्या [illegible] नीग्रो लोगोंके प्रति जो असमान [illegible] घृणित अत्याचार तथा अन्याय हो र[illegible]

(शेष १४ वें पृष्ठपर)

रूस, अमरीका और ब्रिटेनने मिल कर जर्मनीको चितकर दिया। नाजीवाद साथ-साथ वह अभागा देश भी मिट्टीमें मिल चुका है। हिटलरने जो दासत्व एक वर्षके लिये समस्त संसार पर लादनेका किया था, वही अभिशाप अपने देशके छोड़ कर वह मर मिटा। पचास वर्षोंमें देशने दो बार इतनी भारी पराजय हो उसके दुर्भाग्यका कोई कूल-किनारा नहीं। पर उधरकी कौन सोचता है। नेतागण तो अपना ही उन्माद नहीं संभाल हैं। अपने उल्लासमें उन्हें क्या पता कि कहां, कितनी लांछना, कितना अपमान करता हुआ उनकी विजय पर अश्रु बहा रहा है। जीवन-संघर्षके दृष्टिकोण हम इस उपेक्षाको अनुचित नहीं ठहरा । दीन, दुर्बल, पराजित, पददलितके सहानुभूति और समझ प्रदर्शन करनेका रहा हो, किन्तु सत्य तो संसारके इतिहासमें अवश्य ही नहीं रहा। शक्तिका खेल तमाशा है सब, उधरकी बाजी कर कोई अपने मन ही मन चाहे बड़ा, बाहर तो उसे उपेक्षा और परिहासके अतिरिक्त कुछ नहीं मिल सकता। व्यक्ति, और देशके इतिहासका पन्ना-पन्ना कठोर सत्यका साक्षी है।

तो फिर क्यों हमें इस विजय-दिवस जैसे मिथ्याचारके लिये बाध्य किया रहा है। ये पताकाएं, ये पैरेड, ये दीपावलियां, ये रंग-राग, नर्तन-गायन और स्तुति के निकट यह कृतज्ञता निवेदन रूसके शोभन है, अमरीका और ब्रिटेनके लिये। पर भारतमें यह स्वांग रचनेका कोई तो क्या कोई बहाना तक मिलना है। हमारी अनुभूतिमें उल्लास नहीं, नहीं, है तो केवल दुस्सह वेदना, पश्चाताप। हमारे विचारकी एक ही है—"हाय रे दुर्भाग्य! युद्धका स्वर्ण आया और चला गया, हम जैसे और परिणामस्वरूप सारा कष्ट, कर भी हम दासताके बन्धनोंको पाये और भविष्य भी कितना अंधिहै। ब्रिटेनकी साम्राज्यशाही आज भी त्यों हमारी कमर तोड़ रही है और कर तो अपना दिवाला पूरा करने जो कुछ वह करेगी, हम जानते

इस प्रकार सोचता है प्रत्येक भारत-। कोई साबित करके दिखाये कि की पराजयसे एक भी सच्चे हिन्दुको हर्ष हुआ है, या जापानकी होने पराजयके प्रति हममेंसे एकके भी मनमें था उत्कण्ठा है। कपोल कल्पित आदर्श हुए भारतके समाजवादी कुछ करें, चापलूस और खुशामदी भाग्य सराहा करें और सरकार किराये पर लिये हुए रेडियो और चाहे जिस स्वरमें चिल्लाया जो है वह किसी प्रकार छिपाये सकता और सत्य केवल एक है—दुःख और पश्चात्तापका ओर । फिर हम उत्सव मनायें तो कैसे, तो कैसे?

"उनका हास, हमारे आंसू"

—०:*:०—

(ले०—श्री सीताराम गोयल एम० ए०)

आज भारतकी ओर कोई आंख पसार कर तो देखे। इतना बृहत्, इतना व्यग्र स्थत कारागार क्या इतिहासमें कभी रहा होगा। फिर भी इन युग युगके बन्दियोंसे, पिसे और कुचले हुओंसे, नंगे भूखोंसे कहा जा रहा है कि विजयका राग गाओ। कितना भारी व्यंग है यह, कैसा भद्दा मजाक। विजय? किसकी विजय? हम तो शायद पहलेसे भी आज अधिक पराजित हैं, पहलेसे अधिक त्रस्त और संतप्त हैं। रूस जीता है जीते, अमेरिका जीता है हमें क्या, और जीता है ब्रिटेन—वही ब्रिटेन जो राहुकी तरह हमारी स्वतन्त्रताको ग्रसे बैठा है। यही तो सबसे अधिक दुःख है। विधाताके इसी विधान पर तो हमारे क्षोभकी सीमा नहीं। कृतज्ञता निवेदनकी कौन कहे।

हमारी दुर्दशा भी तो कोई सोचे समझे। जिन लोगोंने देशके लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया, जिनको लेकर आज भी हमारा कुछ अभिमान अवशिष्ट है, अरे वही देशके सच्चे प्रतिनिधि, जनताकी आवाजके संचालक, हमारे अपने, हमारे प्यारे, वही नेहरू और आजाद—मानवताकी प्रतिमूर्ति जेलकी कोठरियां आबाद कर रहे हैं और फासिस्टवादका जन्मदाता, हिमायती और पोषक ब्रिटेनकी साम्राज्य सत्ता आज उन्हीं समानता और स्वतन्त्रताके अग्रदूतोंको फासिस्टवादके सहायक और एजेण्ट ठहरा कर न्यायके सिंहासन पर दण्ड-विधान करने बैठी है और भारतका प्रतिनिधित्व करने उसके अधिकारोंकी रक्षा करने, उसके हित साधनके लिये शान्ति सम्मेलनमें गये हैं, मुदालियर और फिरोज खां नून जिनके अपने स्वार्थोंका कोई वारपार नहीं और देशके शत्रुओंकी चाकरी करते करते जिनकी मान, मर्यादा, शरम, हया जैसी कोई बला ही नहीं बच रही है। वाहरे बृटेन! रातको दिन और दिनको रात करके दिखानेकी दुस्साध्य साधना करनेका साहस कब किसको रहा होगा? पर तेरी जादूगरीने सब सम्भव बना दिया। इतनी घातक वंचनाके शिकार होकर हम किस मुंहसे विजय दिवस मनाने बैठें, कोई बताये तो?

कौन सुनता है हमारा दावा, कौन मानता है हमारे न्यायोचित अधिकार। हमने अपार धन-जन इस युद्धमें झोंका, अन्न संकट, वस्त्र संकट सब कुछ झेला, पर हमारे बलिदानका किसीको आभास तक नहीं। रूस लड़ा अपनी आत्मरक्षाके लिये, ब्रिटेन और अमेरिका लड़े अपने स्वार्थोंको बनाये रखनेके लिये, किन्तु हमें क्या मिला जो हमें इस युद्धके लिये इस तरह निचोड़ा गया। कोई उत्तर तो दे? और फिर किये करायेको इस तरह झुठला देनेके इस अथक प्रयासको कैसे समझा जाय। जिस किसीको आता है कह बहता है कि भारत सस्ता छूट गया, युद्धका बीभत्स ताण्डव तो इसने देखा नहीं। ब्रिटेन की दया और प्रेमके बिना भला यह कब सम्भव हो सकता था। भारतकी रक्षाका प्रबन्ध करते-करते चर्चिलकी नींद गयी, एमरीके बाल पक गये—और भारतको तो देखो, अहसान मानना तो दूर, विद्रोहपसे मुंह फुलाये बैठा है। कितना असभ्य, कितना कृतघ्न देश है। यही तो कहते हैं न हमारे जीवन-नायक, हमारे भाग्य-निर्माता। कनाडा, आस्ट्रेलिया, दक्षिण अफ्रिका और न्यूजीलैंडके बलिदानका मूल्य है क्योंकि इन देशोंके नेता जेलोंमें नहीं सड़ रहे हैं और एक सेरको एक मन बनानेके लिये शोर मचा सकते हैं। मूल्य नहीं है तो केवल भारतके बलिदानका क्योंकि वह मूक है, बन्दी है, निरुपाय है। ठीक है, सब ठीक है। अन्यथा पराधीनताके अभिशापका प्रमाण किस भांति मिलता।

भारत जैसा सस्ता छूटा है हम जानते हैं। केवल लांछना और अपमानको लेकर ही नहीं, धन-जनकी असंख्य आहुतिके नाते, जनताके संतापके नाते और हमारी अपनी पथ-भ्रष्टताके नाते इस युद्धकी महंगाईका हमारे पास कोई हिसाब किसी दिन जुट सकेगा, ऐसी आशा बहुत कम है। जिस समय एक धकेरका मूल्य बढ़ कर चालीस रुपये हो चला उस समय हमारे असंख्य नवयुवक पन्द्रह रुपयेमें अपने प्राण बेचते फिरे। किसी आदर्शके लिये वे मरते तो हमें सान्त्वना हो जाती। पर उन्हें तो निरक्षर, मूढ़ और अत्यन्त दरिद्र होनेके कारण यह सब करना पड़ा। बङ्गालके पन्द्रह लाख (सरकारी रिपोर्टोंके अनुसार, वैसे तो ५० लाखसे कम नहीं) मनुष्य दो दानोंके लिये बिलबिला कर चल बसे, सो इसलिये नहीं कि देशमें अनाजका अभाव था या यातायात के साधनोंकी कमी थी। जिस समय बङ्गाल में उत्पादित चावल आस्ट्रेलिया, ईरान और दक्षिण अफ्रीकामें बीस रुपये मन खाया जा रहा था उस समय इस अभागे प्रान्तके स्त्री-पुरुष और बालक बालिकाओंको सौ रुपये मनमें भी चावल नसीब नहीं हुआ। छिल्ली के लिये जहाज और रेलोंके वैगन कम नहीं हुए, पर भूखी जनताको अनाज पहुंचाना उनके लिये असम्भव रहा। हमारा बनाया कपड़ा चीनमें गया, ईरान, ईराक और मिस्रमें भी पहनाया गया, पर हमारे घरमें नारियोंको लाज बचानेके लिए आत्म-हत्या करनी पड़ी, हमारे मुर्दोंको कफन तक नहीं मिल सका। मलेरिया, चेचक और हैजा इत्यादि महामारियां बेरोक अपना खेल खेलती रहीं। नौकरशाही और व्यापारियोंने मिलकर चोर बाजारमें दिन-दहाड़े लूट-मार की। कितने ही विदेशी सैनिकोंने हमारी इज्जतपर हमला तक भी किया। शिक्षित और सभ्य वर्गोंको देश-द्रोह और पथ भ्रष्टताके अतिरिक्त मार्ग ही नहीं मिल पाया। साराका सारा राष्ट्र जिस प्रकार पंगु बनकर पिटता रहा, मूक रहकर मिट चला, उसका जोड़ मिलाकर कौन कहेगा कि हम सस्ते छूटे।

इससे तो सहस्रगुणा श्रेयस्कर होता यदि भारतमें भी युद्धाग्नि फैल गयी होती। महानाशका सन्देश लेकर आनेवाले टैंक यहांके कण-कणमें ज्वाला सुलगा देते, तोपें अनवरत आग बरसातीं, बमवर्षक उमड़-घुमड़ कर ताण्डव करते—ये सब तोड़-फोड़, सारा हंगामा, कायरता, कापुरुषता भरी, दम घोंट देनेवाली इस झूठी, प्रवञ्चक शान्तिके आडम्बरसे अधिक वांछनीय होते। उस ओर मुक्तिकी आशा थी, सम्भव था कि उस रक्तपातसे इस देशके सारे पाप धुल जाते, उस आगमें जलकर हम नवजीवन प्राप्त कर लेते। इस प्रकार निहत्थे, निरुपाय रह कर सिसकियोंका जीवन तो व्यतीत करना नहीं पड़ता, इन पुरातन रूढ़ियों और राजसमाजकी प्रणालियोंका दुर्वह भार तो नहीं ढोना पड़ता। समस्त संसारके लिये युद्ध क्रांतिका सन्देश लेकर आया, पर हमारे देशकी दुर्भेद्य दीवारोंको पार करके हमारे कानों तक वह नहीं पहुंच पाया। केवल हम ही आगे नहीं बढ़ सके, जहां थे वहीं पड़े रहे। इन आंकड़ों में कोई इस युद्धके उस मूल्यका हिसाब लगाये जो भारतको चुकाना पड़ा है, तब समझा जा सकेगा कि युद्ध हमें कितना मंहगा पड़ा है।

फिर भी यहां बदला कुछ नहीं। विदेशी साम्राज्यशाही उसी प्रकार शोषण कर रही है, उसके रंग विद्वेषका कोड़ा अब भी हमारी पीठ पर कड़ाकड़ पड़ रहा है। नौकरशाही आज भी हमारा शासनतन्त्र चलानेका हास्यास्पद, फिर भी करुण नाटक खेले जा रही है। सहस्रों राजा, नवाब, जमींदार, ताल्लुकेदार, जिनका स्थान वस्तुतः सभ्यता सस्कृतिके म्यूजियममें होना चाहिये, अब भी हमारे किसानोंको लूट खसोट कर रंगरेलियां मना रहे हैं और अपने परम्परागत, ईश्वरदत्त अधिकारोंकी याद दिलाते सांस नहीं लेते। अशिक्षित, असभ्य हमारे पूंजीपति और कारखानेदार मजदूरोंके रुधिरकी अन्तिम बूंद तक पी जानेके लिये मुंह फारे खड़े हैं। निरक्षर, मूढ़, प्रतारित जनता वेद-कुरानको लेकर, मन्दिर-मस्जिदको ले कर एक दूसरेका सिर फोड़नेको तैयार है। धर्म और संस्कृति के क्षेत्रमें धूर्त, मक्कार, सन्त, महन्तोंका, मुल्ला और मौलवियोंका एक छत्र राज्य है। राजनीतिक क्षेत्रमें जिन्ना जैसे कुरसी तोड़ोंका बोलबाला है, उन्हींका स्वर सबसे ऊपर हो कर हमें सुन पड़ता है। नौ दस करोड़ अछूतों को वर्णाश्रम-धर्मकी दुहाई दे कर पशुओंसे भी हीन अवस्थामें डुबाये रखनेवाले सवर्ण हिन्दुओंकी धर्मबुद्धिको तनिक भी बाधा नहीं दी जाती। जाने दीजिये हमारे नारीत्व की दुर्दशाको, हमारे कलाकारों और साहित्यकोंकी भुखमरीको—जीवनमें माधुर्य भरनेवालोंका नाम तो पीछे आयेगा। आज तो जीवनकी न्यूनतम, मौलिक आवश्यकताएं ही हम अपने असंख्योंके लिये नहीं जुटा पाते—भर पेट अन्न नहीं, तन ढांपनेको कपड़ा नहीं, वर्षा, आंधी, शीतसे बचनेके लिये घर-द्वार नहीं, शिक्षा नहीं, स्वास्थ्य नहीं। सम्मान, सानन्द जीवन यापनकी कौन कहेगा, जीवन धारण करने तकके साधन तो हमें

पर्याप्त नहीं। और यह सब इसलिये नहीं कि इस देशमें धन-धान्यकी, श्रम-संबलकी कमी है। हमारी धरती सोना उगलती है, खनिज और कृषि पदार्थोंकी विविधता और बाहुल्य का हिसाब नहीं। हमारे पर्वतों और जंगलों में, सरिता सागरोंमें, किसान मजदूरोंमें, सुख और शक्ति संचय करनेकी अपार क्षमता है। शासनयन्त्र और समाज व्यवस्था ठीक हो तो आज हम स्वर्गकी रचना कर सकते हैं, आज हम मानव जीवनको सुन्दर और सार्थक बना सकते हैं। किन्तु सब अरमान तड़प कर रह जाते हैं। स्वार्थी, हिंसक, नर-राक्षस सत्ताधारियोंका जुलूस निकलता रहता है, उनी समारोहसे, उसी धूम-धाम, आन-बानसे, और हम जहरकी घूंट पी कर, होंठ काट कर टुकर-टुकर यह सब देखा करते हैं। अरे इतना भीषण असन्तोष, इतनी बीभत्स अशान्ति और सबके ऊपर इतनी दुर्जय बेवसी, किस राष्ट्रके इतिहासमें रही होगी।

फिरभी हमसे कहा जा रहा है कि विजय दिवस मनाओ। हम कहते हैं कि हमारे लिये विजय दिवस अभी दूर है। रूस और ब्रिटेन तो मौतके मुंहसे निकले हैं, अमरीकाने शक्ति संचय और स्वार्थ रक्षा की है, उनका उत्सव मनाना अनुचित नहीं। पर हमारे युद्धकी इतिश्री अभी कैसे, अभी तो श्रीगणेश भी नहीं हो पाया है। अभी तो हम झोली पसारना, रिरियाना, गिड़गिड़ाना नहीं भूल पाये। अभी हममें स्वाभिमानकी आग और अपमानकी अनुभूति जागी ही कहां है। अन्यथा हमारे स्वरमें भी गान होता, हम भी घूम घूमकर ताली पीटते, नाचते, गाते। यह सब हमें आता है। हम शुष्क ज्ञानी नहीं। विरक्त सन्यासी नहीं। सीधे-सादे मनुष्य हैं। किन्तु कोई अवसर तो दो। कोई समय तो मिले। बे-मौका, बे-मतलब तो उपहास कराया नहीं जाता।

हां, हम उत्सव मनायेंगे, नाचें-गायेंगे एक दिन—उस दिन जब कि ब्रिटिश साम्राज्यकी सत्ता केवल इतिहासकी कहानी बनकर रह जायेगी। जिस दिन नौकरशाही का अस्तित्व मिट जायेगा। जब सामन्तों और पूंजीपतियोंको सिर छिपानेके लिये जगह नहीं मिल सकेगी। साम्प्रदायिकता और अस्पृश्यताका विष एक जातीयताका अमृत बन जायेगा—बस उसी दिन, उससे पहले नहीं। उस प्रतीक्षामें साधना कर सकते हैं, व्रत धारण कर सकते हैं, राग-रंग नहीं मचा सकते।

भारत किसी दिन जागेगा; हम जानते हैं। किसी दिन हम परस्परका भेद-भाव भुलाकर एक राष्ट्र, एक जाति होनेकी सूचना संसारको देंगे, किसी दिन हमारा किसान मजदूर अपने चिर-युगसे छिने हुए अधिकार प्राप्त कर लेगा। हमारी नारी विद्रोह करेगी, हमारा अछूत बिगड़ेगा। किन्तु केवल इतिहासके क्रमसे ही यह सब सम्भव नहीं, बैठे-बिठाये तो ये सब हो नहीं जायेगा। हमें वहां तक पहुंचनेके लिये अग्नि-परीक्षा देनी होगी अपना रक्त दान दे कर, कोई डरे, सिहरे, पर दूसरा कोई रास्ता नहीं। अन्यथा यह पहाड़ सा पाप चुकेगा कैसे?

अमेरिकाकी नीग्रो-समस्या

(१२ वें पृष्ठसे आगे)

उससे अमेरिकाकी दुरंगी नीतिका रहस्य छिपा नहीं रह जाता।

अफ्रीकासे लाये हुए उन असंख्य नीग्रो गुलामोंकी १ करोड़ ४० लाख सन्तानोंकी आज संयुक्त राष्ट्र अमेरिकामें कितनी दयनीय अवस्था है यह पुरानी समस्या होनेपर भी भावी विश्व-व्यवस्थामें एक नूतन रूप ग्रहण न करे, यह आश्चर्यका ही विषय होगा। कहनेके लिये नीग्रो, राष्ट्रपति लिंकन की सन् १८६३ की घोषणाके अनुसार स्वतंत्र हैं, किन्तु वास्तवमें वे अभी भी वर्ग-भेद और आर्थिक, सामाजिक तथा राजनीतिक प्रभेदोंके बुरी तरह शिकार हैं। दक्षिणी राज्योंमें तो उनके साथ खुले आम अमानुषिक व्यवहार किया जाता है। अमेरिकन नगरों और कस्बोंमें नीग्रो बस्ती उपभागमें ही होती है। जहां न प्रकाशका समुचित प्रबन्ध होता है और न स्वच्छताका। अन्य नागरिक सुविधाएं भी उनके क्षेत्रमें बड़ी ही सोचनीय अवस्थामें होती हैं। म्युनिसिपैलिटियोंको इन क्षेत्रोंकी उतनी परवा नहीं होती। रास्ते गन्दे और मकान मैले-कुचैले होते हैं, और उनका किराया नीग्रो लोगोंकी स्थितिकी दृष्टिसे अधिक होता है। गोरोंसे नीग्रो लोगोंके विरुद्ध जो पक्षपात पाया जाता है, उसीके कारण नीग्रो बस्तियां आवांछनीय क्षेत्र बनी हुई हैं। औरोंकी अपेक्षा नीग्रो लोगोंमें बीमारियां बहुत फैलती हैं और औरोंकी अपेक्षा उनकी मृत्यु-संख्याका औसत भी तिगुना है। इतनी अधिक मृत्यु-संख्या होनेपर भी नीग्रो लोगोंकी संख्या कम न होकर बढ़ रही है।

अपराध किसी भी समाजकी आर्थिक और नैतिक दुर्दशा प्रकट करता है। इस दृष्टि से गोरोंकी अपेक्षा नीग्रो लोगोंका स्थान पहला है। हत्या और मारपीट करनेके लिये नीग्रो लोगोंपर गोरोंकी अपेक्षा अधिक मामले चलते हैं और इनमें उन्हें सजा होती है, किन्तु इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि उन बिचारोंके पास इतना धन नहीं होता कि अपनी पैरवी कर सकें।

नागरिक तथा राजनीतिक अधिकारोंकी दृष्टिसे भी नीग्रो लोगोंकी स्थिति असमान है। १० राज्योंमें नीग्रो लोगोंको व्यावहारिक अर्थमें वोट देनेका अधिकार नहीं है। १९ राज्योंमें सार्वजनिक सवारियोंमें अलग घटिया दर्जेमें बैठनेके लिये उन्हें बाध्य किया जाता है और सार्वजनिक स्थानोंमें भी वे गोरोंके साथ नहीं उठ-बैठ सकते। १८ राज्योंमें नीग्रो लड़के गोरे बच्चोंके साथ बैठकर नहीं पढ़ सकते और उन्हें अन्य स्कूलों में जाना होता है। इन नीग्रो स्कूलोंके अध्यापक, सामग्री और गोरोंके स्कूलों जैसा प्रबन्ध अच्छा नहीं होता। दक्षिणके राज्योंमें नीग्रो लोगोंसे टैक्स तो लिया जाता है, किन्तु उन्हें अपने प्रतिनिधि चुननेका कोई अधिकार नहीं है। सन् १९३० से ३९ तक वहां गोरी भीड़ द्वारा १०८ नीग्रो मार डाले गये थे। उनका अपराध था किसी 'गोरे आदमीसे अपमानपूर्ण बात करना' या राजनीतिमें भाग लेना या सम्पन्न होना।

समृद्धि-कालमें नीग्रो लोगोंको कम वेतन की नीची नौकरियां ही दी जाती हैं। इस युद्धकालमें भी अधिकांश नौकरियोंमें ऐसा ही किया गया है। २० से ३० यूनियनें प्रकट रूपमें ऐसा कर रही हैं। नीग्रो लोगोंके लिये स्कूल, गिरजे, होटल, सिनेमा, रेलके डिब्बे आदि पृथक हैं। गरीबीके कारण उनका रहन-सहन भी नीचा है और शासनकी ओरसे उन्हें स्वास्थ्य-सम्बन्धी सुविधायें भी विशेष प्राप्त नहीं हैं।

अमेरिकामें वर्ण-विद्वेष बहुत गम्भीर है। यद्यपि विधानमें सब मनुष्य समान हैं, किंतु व्यवहारमें जायदाद और शिक्षा सम्बन्धी योग्यताओंका उपयोग इस प्रकार किया जाता है कि नीग्रो लोग बहुत बड़ी संख्यामें मताधिकारसे वंचित हो जाते हैं। अब्राहम लिंकनने जिस समय नीग्रो गुलामोंको मुक्त किया था, उस समय उनकी संख्या ४०लाख थी और अब उनकी संख्या १करोड़ ४० लाख है। अमेरिकामें इस विशाल संख्याने एक गंभीर अल्प-संख्यक प्रश्न रख छोड़ा है और यह संख्या तथा इस जातिके प्रति किये जानेवाले व्यवहार बताते हैं कि अमेरिकनों का यह दावा कितना भ्रमपूर्ण है कि वे सभी मनुष्योंको समान और स्वाधीन समझते हैं। कानूनकी दृष्टिमें नीग्रो स्वाधीन भले ही हो, किन्तु आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक दृष्टियोंसे आज भी वे स्वाधीन नहीं हैं।

इन भेद-भावों तथा असुविधाओंके होनेपर भी जब कहीं उन्हें सुअवसर मिले हैं, उन्होंने यथेष्ट उन्नतिशीलताका परिचय दिया है और प्रमाणित कर दिया है कि वे शारीरिक और बौद्धिक श्रम तथा योग्यतामें किसी गोरेसे कम नहीं हैं। प्रतियोगिताओंमें बराबर वे गोरोंको हराते हैं। उनमें बड़े-बड़े विद्वान, साहित्यकार तथा अन्वेषक भी हैं। डा० जार्ज वाशिंगटन कारवरकी शोधोंने दक्षिणी राज्योंमें कृषिको उन्नत करनेमें अभूतपूर्व सफलता पायी है। प्रसिद्ध नीग्रो कवि पाली मरे और पाल राबेसन, अपने मधुर संगीतसे संसारमें ख्याति प्राप्त करनेवाली नीग्रो गायिका जेमी जोन्स, विख्यात शिल्पकला-विशारद पाल विलियम्स तथा कलाकार बेनर एडवर्ड एलिङ्गटन, डब्ल्यू० सी० हैण्डी और कांट्रेल्टी मेरियन एण्डसन आदि जैसे रत्न जिस नीग्रो जातिने उत्पन्न किये हैं, उससे मालूम होता है कि आत्म-विकासके अवसरोंको नीग्रो लोगोंके लिये असम्भव बनाना गोरोंका नीग्रो जातिके प्रति कितना भीषण अन्याय और कितना क्रूर तथा कुत्सित व्यवसाय है।

अन्याय, शोषण और अत्याचारोंसे पीड़ित नीग्रो लोगोंमें अब अपने अधिकारोंके प्रति व्यापक सजगता आ गयी है। वे अमेरिकाके राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रोंमें अपना उचित स्थान प्राप्त करने के लिये कटिबद्ध हो गये हैं और अत्याचारों के विरुद्ध आन्दोलन कर रहे हैं। स्वर्गीय वेण्डल विल्कीने नीग्रो-समस्यापर अमेरिकाके 'कालियर्स मेगजीन' नामक पत्रमें उचित ही लिखा था कि—"अमेरिकामें जात व अल्प-संख्यकोंके साथ निष्पक्ष व्यवहार संसारमें स्थायी तथा न्याय-सम्मत शान्ति-स्थापना का आधार बनेगा; क्योंकि आज संसारमें इस बातपर बहुत जोर देकर समझाने... श्यकता नहीं है कि हम अपने देशमें ... करें उसका हमारी वैदेशिक नीतिपर ... होता है और बाहर हम जो कुछ ... उसका हमारी घरेलू नीतिपर प्रभाव ... है।"

आगे मि० विल्कीने लिखा था कि ... रिपब्लिकन तथा डमोक्रेटिक—दोनों ... अमेरिकन नीग्रो समस्याको वास्तविक ... हल करनेका प्रयत्न नहीं किया है। ... के राजनैतिक मञ्चोंने अपने कार्यक्रमोंमें ... लोगोंको जो वचन दिये हैं, वे बहुत ... हैं।"

अन्तमें वेण्डल विल्कीने लिखा कि—"युद्धने हमें सचेत कर दिया ... नीग्रो अल्प-संख्यकोंके प्रति हमारे ... तथा उन आदर्शोंके बीच, जिनके लिये ... युद्ध लड़ रहे हैं, कितना अन्तर है। ... लोगोंकी यह भावना है और इसे कौन ... कार कर सकता है कि यदि स्वतंत्रता ... के लिये उन्हें अपने गोरे साथियोंके ... मरनेका अधिकार है तो स्वतंत्रताके ... लिये भी अपने श्वेतांग साथियोंके साथ ... जीवित रहनेका अधिकार है।"

संसारका घटना चक्र

स्टालिनकी घोषणा—

गत १९ मईको मास्को रेडियोने मार्शल स्टालिनका यह वक्तव्य ब्राडकास्ट किया : पोलिश सरकारके पुनर्संगठनकी समस्या क्रीमियामें हुए निश्चयोंके आधार पर ही हल हो सकती है। इन निश्चयोंसे टससे मस होनेकी गुंजायश नहीं है। मेरी रायमें निम्नलिखित शर्तोंकी पूर्ति होनेसे मित्र राष्ट्रीय समझौते द्वारा पोलिश प्रश्नको हल कर सकते हैं : (१) अस्थायी पोलिश सरकार तभी पुनर्संगठित हो सकती है जब उसे राष्ट्रीय एकताकी प्रतीक भावी पोलिश सरकारका आधार और केन्द्र विन्दु माना जायेगा, उसी तरह जैसे युगोस्लावियामें मुक्तिकी राष्ट्रीय कौंसिलको सम्मिलित युगोस्लाव सरकारका आधार और केन्द्र माना गया था (२) बशर्ते कि इस तरहके पुनर्संगठनके परिणाम स्वरूप पोलैण्डमें जो सरकार बने वह सोवियट यूनियनके प्रति मैत्रीकी नीति रखे न कि सोवियट यूनियनके विरुद्ध घेरा डालने वाली नीति रखे। (३) बशर्ते कि अस्थायी पोलिश सरकारके पुनर्संगठनका प्रश्न उन पोलोंको साथ लेकर हल किया जाये जिनका इस समय पोलिश जनतासे सम्पर्क है और उनके सहयोगके बिना नहीं।

मार्शल स्टालिनने आगे चलकर कहा ...अग्रगामी विपथगामी काली करतूतोंके मशहूर जेनरल ओक्युलिकीके साथ जो ...पोलैण्डमें गिरफ्तार किये गये हैं, ...गिरफ्तारी और पोलिश सरकारके ...गठनसे कोई वास्ता नहीं है। ये भले ...इस कानूनके अनुसार गिरफ्तार ...गये हैं जिसका सम्बन्ध विपथगामियों ...पीठ पीछेकी हरकतोंसे सोवियट सेनाकी ...करनेसे है और यह कानून ठीक वैसा ...वैसा राज्यकी रक्षा करनेके लिये ...कानून है। यह गिरफ्तारी अस्थायी ...सरकार और सोवियट मिलिटरी ...की सहमतिसे सोवियट सैनिक अधि...यों द्वारा की गयी है। इसमें जरा भी ...नहीं है कि गिरफ्तार पोलोंको सोवि...अधिकारियोंके साथ विचार विनिमय ...के लिये आमन्त्रित किया गया था। ...सेनाको पीठ पीछेसे की जानेवाली ...बचाने वाले कानूनको तोड़नेवालोंसे ...अधिकारी विचार विनिमय नहीं ...और न करेंगे।"

मि० चर्चिलकी क्षमाशीलता

...यूरोपीय युद्धके समय मि० डी० वेलेरा ...नेतृत्वमें आयरलैण्डने जो तटस्थताकी ...अख्तियार की है इससे इङ्गलैंडको ...अवश्य ही अत्यन्त अप्रिय लगे हैं। ...दिन हिटलरकी मृत्युका समाचार ...आयरके प्रधानने जर्मन दूतावास ...कर अपनी हार्दिक पीड़ा और सम...प्रगट की। इस घटनाने मि०चर्चिलको ...ही खासतौरपर बेचैन किया होगा। ...विजय हासिल करनेके बाद वे ...ही ऐसी स्थितिमें आ गये हैं कि ...कम आयरलैण्डके प्रति अपने राष्ट्रके ...प्रकट करके संतुष्ट होवें। गत १३ ...ब्राडकास्ट किये गये अपने वक्तव्यमें ...मन्त्रीने कहा है:—

"हम लोगोंके लिये वह समय अत्यन्त ...था...इतिहासमें ऐसा कठिन समय ...ही कोई होगा।...उत्तरी आयरलैंड ...आपताके बिना हम पृथ्वीसे मिट गये ...इत्यादि।

...दरम्यान अमेरिकासे इङ्गलैण्डका ...यात अक्षुण रखनेके लिये अटलाण्टिक ...की सुरक्षाका अर्थ इङ्गलैण्डकी रक्षा ...जर्मन यू-बोटोंके प्रहारसे बचने तथा ...को कम करनेके लिये आवश्यक ...कि ब्रिटिशको आयरलैण्डमें कुछ बन्दरगाह ...वहां अड्डोंके उपयोगकी सुविधा मिले। ...वेलराने अपनी तटस्थताको इङ्गित ...ऐसी सुविधा देनेसे इन्कार करदिया। ...यूरोपीय युद्धकी सफलतासे संतुष्ट ...मि० चर्चिलने आयरकी तटस्थतासे ...आयरिश जातिके प्रति ब्रिटेनकी ...को अपने हृदयमें दफना लिया है। ...आयरलैण्डको सैकड़ों वर्षोतक गुलाम ...रखने वाले जो अपने प्रति आयरलैण्डवालों ...की घृणाका भाव भर छोड़ा है उसका ...हो तो!

ब्रिटिश साम्राज्यके हताहतोंकी संख्या

यद्यपि प्रथम महासमरकी अपेक्षा द्वितीय महायुद्धकी अवधि १७ महीने अधिक रही पर ब्रिटेनको गत महायुद्धमें पहलेकी अपेक्षा कम नर बलि देनी पड़ी है। युद्ध विभागकी ओरसे प्रकाशित तुलनात्मक आंकड़ोंसे ज्ञात होता है कि १९१४-१८ की लड़ाईमें ब्रिटिश साम्राज्यके ९०८३७१ सैनिक मरे और २०९०२१२ घायल हुए थे पर १९३९-४५ के युद्धमें मृतकोंकी संख्या ३०६९८४ और घायलोंकी ४२२४७६ है।

बर्माका शासन प्रबन्ध

बर्माकी भावी शासन प्रणाली पर सम्राट की सरकारकी ओरसे प्रकाशित सफेद पत्रमें कहा गया है कि चूंकि वर्तमान स्थितिमें बर्मामें युद्धके पूर्व प्रचलित विधानको लागू करना असंभव है, अतः १३९ वीं धाराके अन्तर्गत शासन-सूत्र गवर्नरके हाथमें रहेगा जिनका सम्राटकी सरकारसे सीधा सम्बन्ध रहेगा। चूंकि १९४२ में जारी की गयी घोषणाकी अवधि आगामी दिसम्बरमें समाप्त होने वाली है, उक्त घोषणाकी अवधि आगामी तीन वर्षों तक यानी ९ दिसम्बर १९४८ तकके लिये बढ़ानेका प्रस्ताव किया जायगा।

गवर्नरकी सहायताके लिये एक छोटीसी कार्यकारिणी भी विघटित करनेका सरकारका विचार है, जिसमें प्रकारांतरसे गैर सरकारी बर्मा वासियोंको भी दाखिल किया जायगा। बर्मी जनताके प्रतिनिधियोंकी ओरसे इस अवधिकी समाप्तिके बाद विधान प्रस्तुत किये जाने पर ब्रिटिश शासनके भीतर पूर्ण स्वायत्त शासन देनेकी सरकारने इच्छा प्रकट की है।

इस तरह बर्माका तीन-साढ़े तीन वर्षों तक गवर्नरी शासनके अन्दर रहना बिल्कुल निश्चित हो गया। जो निकट भविष्यमें पूर्ण स्वतन्त्रताकी आशा कर रहे थे, उन्हें इस घोषणासे अवश्य निराशा हुई होगी। दो-दो बार युद्धका मैदान बननेके कारण बर्माकी समस्याओंका हल इस शासनसे कहां तक हो सकेगा, इसमें सन्देह होना स्वाभाविक है। जिन्हें गवर्नरी शासनका अनुभव हो चुका है वे तो ऐसा ही सोचनेको बाध्य हैं।

ग्रीसमें नादिरशाही

कुछ दिन पहले यूनानके गृह युद्धने अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करली थी। ब्रिटेनके अनुचित हस्तक्षेपके बाद गृहयुद्धका अन्त हुआ। सन्धिकी शर्तोंको मानकर इ० ए० एम० ने हथियार डाल दिया। यह आशा थी कि इ० ए० एम० दलके जिन सदस्योंने गृहयुद्धमें भाग लिया है या बन्दी बनाये गये हैं, सभी मुक्त किये जायंगे और आपसी एकताको दृढ़ करनेके लिये अन्य आवश्यक कार्य करेंगे। पर उस दिन लन्दन स्थित यूनानी जहाजियोंके यूनियनके फेडरेशनके समक्ष भाषण देते हुए लार्ड स्टाबोलगीने कहा है कि यूनानमें ब्रिटेनने हथियारके बलपर तानाशाही कायम कर रखी है और ब्रिटिश सम्मान फासिस्ट मार्गका अनुशरण कर रहा है। उक्त वक्ताके कथनसे पता चला है कि अभी भी इ० ए० एम० के ५० हजार समर्थक अफ्रीकाके जगलमें स्थित नजरबन्द शिविरोंमें कैद हैं और ३५ हजार अटिकाके नजरबन्द कैंपमें हैं : ब्रिटिश हस्तक्षेपने जिन फासिस्ट परस्तोंके हाथमें शक्ति सौंप दी है वे ऐसे पादरी, अध्यापक, ट्रेड यूनियनके नेता और अन्य सिविल कर्मचारियोंको दण्डित कर रहे हैं, जिन्होंने एक समय जर्मनोंका जबर्दस्त प्रतिरोध किया था और अपनी भूमिसे अन्तमें उन्हें उखाड़ फेंका।

क्या इसी तानाशाहीकी स्थापना करनेके बाद मि० चर्चिलने गर्वसे कहा था कि यूनानकी जनताका मैंने बड़ा उपकार किया है। इसे उपकार कहें या अपकार!

जर्मनीका बन्दरबांट

अमेरिकाने फ्रांसके लिये जर्मनीका कुछ अधिकृत भाग खाली कर देनेका निश्चय किया है। प्रेसीडेण्ट ट्रूमैन, फ्रांसके परराष्ट्र सचिव एम० बिडोल्ट, अमेरिका स्थित फ्रांसीसी राजदूत मि० हेनरी बेनेट और अमेरिकाके स्थानापन्न सेक्रेटरी मि० जोसेफ ग्रीडकी सम्मिलित बैठकके बाद प्रेसीडेण्टका एक वक्तव्य प्रकाशित हुआ है जिससे उक्त संवादकी पुष्टि होती है। ऐसा जान पड़ता है कि याल्टा निर्णयोंके आधार पर ऐसी कार्रवाई की गयी है।

त्रिनायक सम्मेलन

गत १५ मईको पार्लमेण्टमें एक प्रश्नका उत्तर देते हुए मि० चर्चिलने आशा प्रकट की है कि निकट भविष्यमें ही त्रिनायक सम्मेलन होनेकी सम्भावना है। मि०चर्चिलने कहा है, "विजयी राष्ट्रोंके बीच इस लम्बे और खूंखार युद्धके बाद समझौता न होनेका परिणाम अशोभनीय होगा।" अमेरिकाके प्रेसीडेण्टने भी ऐसी आशा प्रकट की है कि भावी कार्यक्रमपर विचार करनेके लिये वे शीघ्र ही मार्शल स्टालिन और मि० चर्चिलसे मिलेंगे। पर इनके कथनसे ऐसा आभास मिलता है कि अबतक इस सम्बन्धमें कोई तिथि निश्चित नहीं की गयी है और सम्मेलन होगा भी तो निकट भविष्यमें ही, ऐसा भी ठीक-ठीक नहीं मालूम होता।

इस खूंखार युद्धके बाद विजयी राष्ट्रोंकी एकता विश्वशांतिके लिये अत्यावश्यक है, इसे कोई इन्कार नहीं कर सकता। पर चर्चिल साहब सिर्फ आवश्यकता तो महसूस करते हैं, पर उस आवश्यकताकी पूर्तिके लिये अनिवार्य शर्तोंको माननेसे इन्कार करते देखे जा रहे हैं, इससे उनकी सफलता में अभीसे आशङ्का हो तो इसमें आश्चर्य क्या?

चांग कैशकका चुनाव

चीनकी नेशनल पीपुल्स पार्टीने अपने छठवें अधिवेशनमें मार्शल चांग कैशकको पुनः कामिटांगका डायरेक्टर जेनरल निर्वाचित किया है। नेशनल कामिटांग कांग्रेसने साम्यवादियोंपर १९३७ के समझौतेकी अवहेलना कर अनुशासन भंग करनेका अभियोग लगाया है। उधर येनानमें होनेवाली सातवीं साम्यवादी कांग्रेसके समक्ष भाषण देते हुए साम्यवादी दलके नेता माओत्से तुंगने यह चेतावनी दी है कि यदि कामिटांगके शासनका अन्त कर सर्वदली सरकारकी स्थापना न हुई तो चीनमें गृहयुद्ध अनिवार्य है।

इसी साम्यवादी नेताके कथनसे ज्ञात होता है कि कामिटांगके अन्दर ऐसा दल है जो उस दिनकी ताकमें है जब जापानियोंको मित्र फौजें चीनके कुछ भागसे हटा देंगी और वे साम्यवादियोंके विरुद्ध जिहाद छेड़ देंगे। जेनरल लिस्मो चांग जिस दलका प्रतिनिधित्व करते हैं, उसमें ऐसे लोगोंका होना असंभव नहीं है।

साम्यवादी चीनकी शक्तिका अन्दाज सिर्फ इसीसे लगाया जा सकता है कि उसके पास ९ लाखसे अधिक स्थायी पल्टन और दो लाखसे कहीं ज्यादा वालंटियर हैं। उनकी शासन-व्यवस्था, सङ्गठन और अनुशासन भी अत्यन्त सराहनीय है। फिर अपने घरके ही इस सङ्गठित दलका सहयोग न प्राप्त कर उलटे उनसे तकरार मोल लेनेकी घातक नीतिका कुपरिणाम चीनके लिये अच्छा कैसे हो सकता है। चीनका प्रतिक्रियावादी दल इस सङ्कटकालमें भी राष्ट्रीय एकताको अपने स्वार्थोंके आगे बलिदान करता जा रहा है!

संसार का घटना चक्र

युगोस्लाव समस्या—

चोर कोतवालको डांटे कहावत चरितार्थ करते हुए ब्रिटिश फील्ड मार्शल अलेकजेण्डरने भूमध्यसागर स्थित मित्र सेनाओंके नाम एक खास संदेश ब्राडकास्ट किया है। इस संदेशमें फील्ड मार्शल फरमाते हैं कि "मार्शल टीटो अपने आचरणसे यह प्रत्यक्ष कर रहे हैं कि वे बल द्वारा अपना अधिकार स्थापित करना चाहते हैं। इस तरहकी हरकतोंको रोकनेके लिये ही तो हमें यह युद्ध लड़ना पड़ा है।......इन सिद्धान्तोंके अनुसार यह हमारा कर्त्तव्य है कि इस तरहके विवादग्रस्त प्रदेशोंको हम बतौर ट्रस्टी अपने अधिकारमें रखें, उस समय तक जबतक कि शान्ति सम्मेलनमें उनके सम्बन्धमें अन्तिम फैसला न हो जाये।"

भूमध्य सागरीय मित्र सेनाके नाम यह विशेष संदेश देनेका अर्थ यह हो सकता कि इन सेनाओंको संकेत दिया गया है कि अपने पवित्र कर्तव्य पालनके लिये वे अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित हो हथियार उठानेके हुक्मकी प्रतीक्षा करें। रणचण्डीका खप्पर अभी पूरा नहीं हुआ।

टीटो अपना अधिकार समझते हैं—

युगोस्लाव रेडियोने ट्रिस्टी आर पास पड़ोसके प्रदेशोंके सम्बन्धमें ब्रिटिश और अमेरिकन विज्ञप्तिके जवाबमें युगोस्लाव सरकारकी यह विज्ञप्ति ब्राडकास्ट की है, "जिस प्रदेशको युगोस्लाव सेनाने मुक्त किया है वहां रहनेका उसे अधिकार है।" विज्ञप्तिमें यह भी कहा गया है कि लोकतन्त्रीय संयुक्त युगोस्लावियाकी सरकारका ब्रिटिश और अमेरिकन सरकारकी विज्ञप्तिका यही जवाब है।

त्रिगुट सन्धिकी अन्त्येष्टि

जापानी समाचार समितिकी एक घोषणा से पता चलता है कि जापानी मन्त्रिमण्डलने परराष्ट्र सचिव मि० टोजो द्वारा जर्मनी और अन्य यूरोपीय राष्ट्रोंके साथ की गयी संधिके भंग करनेकी रिपोर्टका एक स्वरसे अनुमोदन किया है। जापानी परराष्ट्र विभाग की ओरसे एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर इस निश्चयका कारण यूरोपकी नयी घटनाओंको बताया गया है। पर इस सन्धिके भङ्ग करने या न करनेसे ही क्या बनने-बिगड़नेको है। नाजी जर्मनी और फासिस्ट इटली ही न रहा तो अब जापानकी सन्धि किससे रही और इस घोषणाका प्रभाव ही क्या हुआ? जिस तरह मुसोलिनीके शवपर थूक फेंककर कितनोंने फासिस्ट विरोधी नीतिका प्रभावशून्य प्रदर्शन किया था उससे अधिक मूल्य इस घोषणाका नहीं मालूम होता।

जिन्ना-एमरी पत्र-व्यवहार

कुछ दिन पूर्व "मातृभूमि"में मि० जिन्ना और एमरीके बीच गांधी-जिन्ना मिलनके पूर्व पत्र-व्यवहार होनेका संवाद प्रकाशित हुआ था, जिससे काफी सनसनी फैल गयी थी। इस पत्र-व्यवहारका समाचार पाकर स्वयं महात्मा गांधी अत्यन्त उद्विग्न हो गये थे। पर संतोषकी बात है कि मि० जिन्ना और भारत सचिव मि० एमरीकी ओरसे उक्त पत्रव्यवहारके समाचारका खण्डन किया गया है और तत्पश्चात् मातृभूमिके सम्पादक श्री चिमनलाल वाडीलाल शाहने मि० जिन्ना और मि० एमरीके खण्डनमें विश्वास रखते हुए उक्त समाचारके प्रकाशनके लिये क्षमा-याचना की है। श्री चिमनलालने जो मजबूर कर ऐसा आज रखा हो, कोई स्वीकार नहीं कर सकता। जिस सूत्रसे उक्त समाचार उन्हें प्राप्त हुआ प्रकारांतरसे अविश्वनीय प्रमाणित हो चुका है, पर प्राप्तिके समय उसकी सत्यतामें अविश्वास करनेका कोई प्रमाण न था, जैसा उन्होंने स्वयं स्पष्ट कर दिया है।

जापानका सन्धि-प्रस्ताव !

गत १९ दिनोंके अन्दर जापानकी ओर से सन्धिके प्रस्ताव पेश करनेके आधे दर्जन समाचार मिल चुके। सबसे ताजा प्रस्ताव रूसके जरिये जापानके कुछ उद्योगपतियोंने अमेरिका और ब्रिटेनके सामने रखा है, ऐसा कहा जाता है। पर मित्रोंने यह कह कर उसे रद्द कर दिया है कि बिना शर्त आत्मसमर्पणके अतिरिक्त अन्य किसी किस्मका प्रस्ताव उन्हें मंजूर नहीं हो सकता।

उक्त सन्धि प्रस्तावके समाचारका खंडन करते हुए टोकियोके एक आलोचकने अपने ब्राडकास्टमें इसे "प्रचार मात्र" बताया है। उस आलोचकका कहना है कि जर्मनी और अन्य यूरोपीय मित्रोंसे पुरानी सन्धियोंको भंग कर जापानने रूससे मित्रतापूर्ण व्यवहार रख कर ब्रिटेन और अमेरिकासे हर मोर्चे पर संघर्ष करनेकी स्पष्ट नीति अख्तियार की है।

किस तरह जर्मनीने अन्तिम संघर्षको जारी रख कर अपनी [illegible] परिचय दिया है, उसको देखते शीघ्रतासे विश्वास नहीं होता [illegible] शक्ति रहते जापान निकट भविष्य [illegible] कबूल करनेको प्रस्तुत होगा।

हककी हकीकत

एक बहुत बड़े राजनीतिज्ञ होते हुए भी बंगालके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मि० फजलुल-हक बंगालके बाहर अपना पैर नहीं फैला सके। इसका प्रधान कारण उनका वह उछल-कूदका स्वभाव है जो उन्हें एक जगह स्थिर रहकर काम करने नहीं देता। कुछ बोलकर अपनी गलती स्वीकार कर लेना उनके बांये हाथका खेल है जो एक महान व्यक्तित्वके लिये कतई शोभनीय नहीं है। बंगालके राजनीतिक क्षेत्रमें भी उन्होंने जो छीछालेदर मचा रखा था उसीका परिणाम यह हुआ कि सर नजी-मुद्दीनकी लीगी मिनिस्ट्री बङ्गालमें बनी और जनता भूख तथा वस्त्र बिना मरने और तड़पनेको बाध्य हुई। अपने अविवेकपूर्ण कार्योंके द्वारा ही मि० हक मुसलिम लीगसे निकाले गये थे और अब वे फिर मुसलिम लीगमें जानेकी चेष्टा कर रहे हैं। लाहौरमें उन्होंने अभी जो वक्तव्य दिया है उसमें मि० जिन्नाके साथ ३१ सालकी राज-नीतिक दोस्तीका हवाला देकर लीगके साथ अपनी घनिष्ठताका जो दावा किया है उसे उनकी निकृष्ट अवसरवादिताके सिवाय और कुछ भी कहनेको तैयार नहीं हैं। स्व-राज्यके लिये हिन्दू-मुसलिम एकताकी दुहाई देकर जनताकी भावुकतामें फिर अपने लिये स्थान बनानेकी उनकी चेष्टा भी हास्यास्पद है। मि० जिन्नासे मिल-कर आने विषयमें फैली हुई गलतफह-मियोंको मिटा देना चाहते हैं किन्तु यह सम्भव नहीं है जबतक कि वे गलती से बाज न आयें।

सेन फ्रांसिस्को सम्मेलन

सेन फ्रांसिस्को सम्मेलनके सामने उप-निवेशोंकी एक जटिल समस्या है, जिसे संतोष-प्रद ढंगसे सुलझाये बगैर शांति और सुरक्षा की सभी योजनायें विफल होंगी। इस सम्बन्धमें ब्रिटेनका रुख बिलकुल प्रतिक्रिया-वादी रहा है और अमेरिका अपनी गोल-मोल नीति द्वारा अबतक महत्वपूर्ण मामलोंमें ब्रिटेनका ही समर्थन करता आ रहा है। इस सम्बन्धमें रूसका एक संशोधन है जिसमें उपनिवेशोंके लिये एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय संग-ठनकी आवश्यकतापर जोर डाला गया है जो उपनिवेशोंको स्वातंत्र्य पथपर अग्र-सर होनेमें सहायक होगी। इधर चीनकी ओरसे इसी सम्बन्धमें एक संरक्षण योजना पेश की गयी है जिसमें परतन्त्र राष्ट्रोंका स्वतन्त्रताकी ओर क्रमिक विकास, (२) स्थानीय अधिकारोंकी गारण्टी, जिनमें स्थानीय धारा-सभाओंमें प्रति-निधित्वका अधिकार होना भी शामिल है; संरक्षण कार्यके नियमोंकी अवहेलना अन्तर्राष्ट्रीय समस्या समझा जाय इत्यादि बातोंका उल्लेख किया गया है। कहा जाता है कि चीन द्वारा प्रेषित योजनाका रूसी योजनाके साथ विचार होगा। लक्षणों से मालूम होता है कि एक ही साथ दोनोंको पेश करनेके बाद इनकी अस्वीकृति का फैसला भी सुनाया जानेको है।

श्री शरत बोसको रिहा करो

नेताओंके जेलोंमें बन्द हुए कितने दिन हो गये। कितनोंको बिना मामला चलाये जेलोंमें लगातार ढाई-तीन वर्षों तक रखनेकी निष्ठुरता प्रदर्शित करनेके बाद भी सरकार अपनी जिद पर अड़ियल घोड़ेकी तरह डटी है। उसे न तो इन नेताओं पर मामला चलानेका साहस होता और न इन्हें छोड़नेकी हिम्मत ही। ऐसे लोगोंको जो लगातार कई वर्षोंसे बीमार है, जेलोंमें रोक कर सरकार अपनी नृशंसताका भद्दा सबूत पेश कर रही है। श्री शरतचन्द्र बोसकी श्रेणीके नेता मुक्त होनेके लिये बेचैन होंगे, ऐसी बात नहीं। जेलकी काली कोठरियां उन्हें आतंकित कर उनके दिलमें घबड़ाहट नहीं पैदा कर सकीं। पर जनताकी लगा-तार मांग, उनकी लम्बी अस्वस्थतासे स्वा-भाविक चिन्ता और स्वयं सभ्य सरकार कहलानेका उसका दावा, इत्यादि ऐसी बातें हैं जिन पर ख्याल करते हुए उन्हें अविलम्ब मुक्त कर देना उचित जान पड़ता है। उस दिन कलकत्ता कार्पोरेशनने शरत बाबूकी अस्वस्थताके कारण उनकी रिहाईकी मांगका प्रस्ताव स्वीकार कर जनताके एक बड़े समूह की चिन्ताको व्यक्त किया है। देखना है सरकारके कान पर कब तक जूं रेंगती है।

विमानमें सांप घुस गया

"मैं लौट रहा हूं, मेरे विमानमें सांप घुस आया है।" यह संवाद जब शाही भारतीय विमान वाहिनीके हरीकेन चालक ने बेतार द्वारा शाही विमान वाहिनीके अड्डेको दिया वहां एक सनसनी-सी फैल गयी। आपरेटर रूमसे यह सूचना फ्लाइट कमाण्डरको पहुंचायी गयी। १० मिनटमें ही विमान अपने अड्डेपर मडराता दिखायी पड़ा। वह नीचे आया और चालक शीघ्रता से विमानके बाहर चला आया। फ्लाइट कमाण्डर सांपको मारनेके लिये घातक शस्त्र लिये खड़े थे।

सांप चार फुट लम्बा, पतला और हरे रंगका था। विमानके नियन्त्रक (कण्ट्रोल) से वह लिपटा हुआ था। कहा जाता है कि यह सांप आंखोंपर आक्रमण करता है। उसे मार डाला गया।

इस घटनाका वर्णन करते हुए चालकने कहा कि सांप चक्केके बीचसे या कैमरेके छिद्रसे घुस आया होगा। वह मेरे कन्धेपर चढ़ आया और उसके बाद छातीसे होकर दाहिने हाथपर चढ़ कर नीचे उतर गया और नियन्त्रक (कण्ट्रोल) से लिपट गया। वह मेरी ओर घूर-घूर कर देख, जिह्वा दांत दिखाने लगा। क्या करूं, यह निश्चय करनेमें एक-दो मिनट लग गये। बिना विमानको अड्डेपर उतारे गोली चलाकर उसे मारना सम्भव नहीं था। इसलिये कमा-ण्डिंग अफसरसे पूछा। लौटनेकी सम्मति तो मिली परन्तु अफसरने यह नहीं समझा कि विमानमें सांप है। उन्होंने सांपके अंग्रेजी शब्द "स्नेक" की जगह भ्रमसे 'लीक' शब्द सुना जिसका अर्थ होता है पेट्रोलका बाहर निकलना। अतः इस अड्डेपर अपने विमान को तबतक उड़ाते रहे, जबतक कि उन्होंने यह देख नहीं लिया कि मैं सकुशल उतर गया।

Regd No. C. 2229

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१५, बम्बू बल्ली स्ट्रीट, ... सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—२२ | कलकत्ता २८, मई, १९४५, | Calcutta, MAY. 28. 1945. | मूल्य दो आना : वार्षिक ८)

मधुसंचय

एक आविष्कार

दुश्मनके महत्वपूर्ण सामरिक केन्द्रोंपर ...र्षा करनेके लिये आवश्यक होता है कि ...न्दाज वायुयानोंके चालकोंको उस ...नकी विस्तृत जानकारी हो ताकि ...ाना सही और अचूक हो। इसके लिये ...श्यक है कि हवाई हमलेके पूर्व लक्ष्य ...का मानचित्र तैयार किया जाय। इस ...मके लिये खास किस्मके जहाजों ...निटका उपयोग होता है, जो तरह-...की कठिनाइयोंका सामना करते हुए ...लेनेका कार्य पूरा करते है। इधर ...िकाकी एयर टेकनिकल सर्विस कमानने ...रिक स्थानोंके अनुसन्धान और परीक्षण ...र लक्ष्य स्थानका अत्यन्त शीघ्रतासे ...उतारनेवाले एक जहाजका आविष्कार ...ा है।

...गोलाबारी करनेवाले बी० २९ में आव-...फेरके बाद उसे इस लायक बना ...गया है कि अन्य किसी प्रकारके वायु-...की अपेक्षा यह अधिक केमरा लेकर उड़ ...है। इस किस्मका प्रत्येक वायुयान ...नमें ५००० हजारसे अधिक प्लेटका ...र कर सकता है जो किसी साधारण ...के फिल्मके ७५०० लपेटके बराबर है। ...के औद्योगिक केन्द्रोंपर आज जो ...गोलाबारी हो रही वह फोटो लेने-...वायुयानोंकी सहायतासे ही संभव हो ...है।

विध्वस्त नगर कोलोनका दृश्य

जर्मनीके महान औद्योगिक नगर कोलोन पर अधिकार करनेवाले अमेरिकन टैंक।

"फाला" की जगह "मिकी"

स्वर्गीय प्रे० रूजवेल्टकी गद्दीको प्रे० ट्रूमैनने सुशोभित किया है। स्वर्गीय रूज-वेल्टके बाद आज ह्वाइट हाउसकी सारी चहल-पहल नये प्रेसीडेण्टके चारो ओर चक्कर काट रही है। नये प्रेसीडेण्टके परिवारमें "मिकी" नामका एक लाल रंगका शिकारी कुत्ता भी है, जिसे डेमाक्राटिक नेशनल कमेटी के अध्यक्ष राबर्ट इ० हैनेगेनने प्रेसीडेण्टकी पुत्री मार्गेरेटको उपहार स्वरूप दिया है। इस कुत्तेसे भूतपूर्व प्रेसीडेण्ट के प्रसिद्ध 'फाला' की याद सहसा हो आती है।

जर्मन रीक बैंकका सम्पूर्ण (रिजर्व) सोना, जर्मन तथा मित्र राष्ट्रोंके कागजी मुद्रा एवं अमूल्य कला निधियां इन बोरोंमें हैं जिनको बर्लिनसे हटा कर एक नमककी खानमें छिपा रखा गया था। ७ अप्रेल १९४५ को तीसरी अमेरिकन सेनाने इस निधिका पता लगाया। अधिकृत करेंसीमें २ अरब डालरके जर्मन मार्कके नोट हैं।

मच्छर-समेलन

(लेखक—श्री विजय प्रताप सिंह, 'विशारद')

कविता सुननेका मुझे बड़ा शौक है। कवि तो नहीं हूं, किन्तु कवि-हृदय अवश्य रखता हूं। लगभग आसपासके सभी कवि-सम्मेलनों में श्रोता बनकर अवश्य भाग लेता हूं। एकबार गोरखपुरके कवि-सम्मेलनमें भी जानेका सुअवसर प्राप्त हुआ था। कवि-सम्मेलनसे छुट्टी पानेपर ज्यों ही सोनेके लिये तैयार हुआ, त्योंही मच्छर-सम्मेलनका निमन्त्रण मिला। मैं अस्वीकार न कर सका, क्योंकि गोरखपुरके मच्छरोंकी सत्ता और महत्तासे मैं पहलेसे ही परिचित था। इनकी सत्ता और महत्ता, उस सत्ता और महत्ता से ऊंचा स्थान रखती है जो खटमलों को कलकत्तेमें प्राप्त है। उनकी वहांपर जमींदारी है, उनका निरंकुश शासन है। इनके विरोधमें कई जनरद आन्दोलन भी असफल रहे। कलकत्तेके खटमलोंका आधिपत्य भूमि और पातालमें ही है, किन्तु गोरखपुरके मच्छर आकाशसे वार करते हैं, पातालमें रहते हैं और भूमिके प्राणियोंसे मोर्चा लेते हैं।

मच्छरोंके जन्मके विषयमें कई दन्त-कथाएं हैं। ब्रह्मवर्त पुराणमें कहा गया है कि मच्छर राक्षसोंके स्वर हैं, जो सजीव हो उठे हैं। उस समय इन मच्छरोंके स्वरोंको सुनकर देवगण भी कांप उठते थे। उसी पुराणके एक अङ्कमें यह भी अङ्कित है कि मच्छर बलकासुरके आग्नेयास्त्रसे उत्पन्न हुए थे,जो बाद में अमृत वर्षाके कारण सप्राण हो उठे। कठोपनिषदमें तो इन्हें इन्द्रदेवका गुप्तास्त्र बतलाया गया है। शायद इन्हींकी सृष्टिके आधारपर जर्मनोंने चालकहीन विमान—'उड़नबम' बनाया है।

कुछ लोगोंका कहना है कि ये शूर्पणखा का आहसे उत्पन्न हुए हैं, शायद इसीसे ये सानुनासिक स्वरमें सदैव रुदन किया करते हैं और यथाशक्ति मनुष्यको तङ्ग करके अपनी इष्ट देवीका बदला चुकाते हैं।

कुछ इतिहासकारोंका कहना है कि ये रावणके दरबारके भाटों और कवियोंके वंशज हैं, जो राम-रावण युद्धके समय सूनी कन्दराओं, पोखरों और गन्दे तालाबोंमें जा छिपे थे। संस्कृतके कुछ विद्वानोंका कहना है कि मच्छर हमारे उस वर्गका प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनकी उपेक्षा महाराज विक्रमादित्यने लोलिम्बराजके कहनेपर की थी।

उपर्युक्त दन्त कथाओंको सोच ही रहा था कि एक मच्छर आया और लगा करुण स्वरमें विनती करने—"आप सो नहीं सकते। क्या आपको मेरी सत्ता नहीं मालूम है। पहले गोरखपुरमें मच्छरोंका ही राज्य था। बादमें नेपालकी तराईके गोरखोंने आकर यहां अपना अधिकार जमा लिया, तभीसे इसका नाम गोरखपुर पड़ा है। आपने कवि-सम्मेलनमें भाग लिया है, इसलिये मच्छर-सम्मेलनमें भी भाग लेना होगा।" इतनेमें ही तीन-चार मच्छर भन-भन-भन करते हुए आ गये और विनय नम्रताके स्वरमें कहने लगे—

"सोने देंगे आपको नहीं महाशय आज।
गोरखपुरमें तो सदासे है अपना राज।"

हम गोरखपुरके मच्छर हैं,
हम पाकिस्तानी अक्षर हैं,
रहते छिद्रोंके अन्दर हैं,
हम उड़नेवाले बन्दर हैं,

यह कहकर मच्छर-समुदाय मेरे कर्ण-कुहरमें अट्टहास करने लगे। मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उनमेंसे एक को एक थप्पड़ लगा भी दिया। अब तो सबोंकी मेरे प्रति आइडिया खराब हो गयी। एकने तो मेरी नाक को ही अपना लक्ष्य बनाया। मैंने नाक सिकोड़ ली। वह भी नाक चढ़ाकर बोला—'उठो नहीं तो नाक काट लूंगा।' इस बातको मैं सहन न कर सका। मैंने कहा—'नाक छोड़ दो नहीं तो नाकमें ही पहुंचा दूंगा।' फिर भी उन लोगोंका आक्रमण रुका नहीं। ऐसा प्रतीत होता था, मानो मित्रराष्ट्रोंके विमान जर्मनीके प्रमुख व्यवसायी केन्द्रोंपर आक्रमण करनेके लिये मंडरा रहे हों। एक बार तो उन लोगोंने छापा मार उसी दस्तों की तरह जबर्दस्त आक्रमण किया। परिस्थिति नाजुक हो गयी। तङ्ग आकर मैंने कई बार इस हवाई हमलेसे बचनेके लिये चादरका 'शेल्टर' लिया। अन्तमें विवश होकर इन मच्छरोंकी सत्ता मानकर मुझे मच्छर-सम्मेलनमें जाना ही पड़ा।

सम्मेलनमें पहुंचा तो कमरा भन-भन की आवाजसे गूंज रहा था। थोड़ी देर के बाद कार्यवाही प्रारम्भ हुई। कई सदस्यों के भाषण हुए। सभी लोगोंने मच्छर समुदायका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया कि गोरखपुरकी तरह अन्य स्थानोंमें भी मच्छरों की सत्ताका विकास होना चाहिये। अन्तमें सभापतिका भाषण हुआ। भाषण तो बहुत लम्बा, किन्तु उसका आशय इस प्रकार था—"मेरे प्रगतिशील मच्छर भाइयो, आप जिधर ही श्रवण डालिये, उधर ही 'स्तान' की मांग जोर पकड़ रही है। इसलिये मेरा विचार है कि गोरखपुरमें 'मच्छरिस्तान' की नींव डाली जाय।"

पथभ्रष्ट से

क्षुधित, वंचित, पददलित का, हाय, विजयोल्लास कैसा ?

मुक्तिपथ तेरा रुका, ढीले हुए तेरे न बन्धन,
शेष हो पाये न तेरे अश्रु, करुण-कलाप क्रन्दन
देश के इतिहास में गाथा वही अंकित पुरानी
हो भले जागा कहीं अन्यत्र स्वर्ण-विहान नूतन
मांग कर उत्सव मनाना, हाय रे परिहास कैसा ?

अटल सी आरूढ़ अब भी शीश पर साम्राज्यशाही
बेड़ियां पहने पड़े तेरे सभी बांके सिपाही
लांछना, अपमान का ढूंढे न मिल पाता किनारा:
क्या नहीं पर्याप्त तेरे पतन की इतनी गवाही
फिर बता यह शान्ति का, सन्तोष का, निश्वास कैसा ?

देख वह भोला कृषक सामन्त ने कितना सताया
देश-धन मजदूरको धनवन्त ने कितना ठगाया
पीस डाला अन्ततः अविराम नौकरशाहियों ने
अज्ञ मोमिन और धूर्त महन्त ने कितना भुलाया
फिर भला, इन रूढ़ियों में टिक रहा विश्वास कैसा ?

देख आंख पसार तुझ को समझता कोई न मानव
तृप्त हो पाये न अब तक चूस तेरा रक्त दानव
हड्डियां तेरी चचोड़ी जायंगी अब भी संभल जा
उठ अरे, भर दे दिशाओं में समर-हुंकार का रव
क्रान्त, करुणा, कल्पना का व्यर्थ भाव-विलास कैसा ?

साध कर उस होलिका की जो न कर पाये किनारा
फूंक दे प्रलयाग्नि बन अन्याय का निर्मम पसारा
युद्ध का आह्वान आया, शांति के संदेश मत सुन
जीर्ण, जर्जर, चिरपुरातन, को न मिल पाये सहारा
आज है पतझार की वेला, अरे ! मधुमास कैसा ?

—सीताराम गोयल एम० ए०

... जिनके मन-माहीं।
... दुर्लभ कछु नाहीं॥

...त और ब्रिटिश मजदूर दल

—:*:—

...श्री वेवेलको भारतसे गये दो महीनेसे ... हो गया। लक्षणोंसे यही प्रतीत ... कि उनको बैरंग वापस आना ...। उनकी यात्रासे न हमें आशा हुई ... और न अब उनके रिक्त हाथ शून्य दृष्टि ... आनेसे निराशा होगी। हम जानते ... कि मि० चर्चिल ढीले पड़ने वाले आदमी ...। हमें उनसे कोई आशा भी नहीं है। ... स्वतन्त्रताका जहां तक सवाल है ... अपने पैरों पर खड़े होनेकी अपनी शक्ति ... और अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिके दबाव पर ... करते हैं। भारतकी स्वतन्त्रताका ... यदि हमारे लिये अपने बल-पौरुषसे ... करनेका प्रश्न है तो दूसरी तरफ ...की तमाम प्रगतिशील शक्तियों और ... लिये यह कम महत्वपूर्ण नहीं है। ... विश्वशान्ति और सुरक्षाका प्रश्न ... नहीं हो सकता जब तक संसारके समस्त ... देश अपनी वर्तमान स्थितिसे ऊपर ... स्वतन्त्रता और समानताके दर्जे पर ... जायेंगे। इसीसे मो० मोलोटोवने ...सिस्कोमें यह खुलासा कर दिया कि ... प्रतिनिधि मण्डल अच्छी तरह ... महसूस करता है कि अन्तर्राष्ट्रीय सुरक्षा ... दृष्टिकोणसे सर्वप्रथम यह देखना हमारा ... है कि जितना जल्द हो सके परतन्त्र ... को इस योग्य बना दिया जाये कि वे ... स्वतन्त्रताके मार्ग पर चल निकलें।"

... नहीं कि सोवियट प्रतिनिधि ... मोलोटोवका विश्व राजनीतिके रंगमंच ... वही स्थान है जो एक दिन एण्टोनी ... (विश्वनेताका) था। अतः उनके इस ... बहुत बड़ा महत्व है। किन्तु उनका ... उदार वक्तव्य किसी परतन्त्र देशको ... स्वतन्त्र नहीं बना सकता जब तक ... वासी स्वयं अपनेको स्वतन्त्र ... लिये पूर्ण रूपेण सुसंगठित न होंगे। ... रूपमें भारतकी समस्या भारतीय ... है। यह बात दूसरी है कि विश्व ... रूपमें हम विश्वकी सहानुभूति ... नैतिक समर्थन प्राप्त कर सकें। यह भी ... विश्वकी नहीं।

...भारतकी स्वतन्त्रताके मार्गमें सबसे बड़ा ... ब्रिटेन है। यह बाधा दो रास्तेसे ही ... जा सकती है। पहला रास्ता है ...। दूसरा है सद्भाव और सदिच्छा ... यदि आगामी ५ जुलाईको होनेवाले ... निर्वाचनमें चर्चिलकी टोरी पार्टी ... विजय हुई तब तो निश्चित है कि संघर्ष ... भारत अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त नहीं ...। किन्तु यदि लेबर पार्टी और ... प्रगतिशील दलोंकी विजय हुई तो बहुत ... है कि संघर्ष टल जाये और भारत तथा ब्रिटेनके परस्पर सद्भाव एवं सदिच्छासे एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रगतिशील शक्तियोंकी प्रेरणा एवं सहयोगसे एक निश्चित अवधिके भीतर भारत पूर्ण स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी श्रेणीमें पहुंच जाये। यह तभी सम्भव है जब ब्रिटेन भारतकी स्वतन्त्रताके प्रश्न पर सौदा पटाने की नीतिको छोड़ कर ईमानदारीके साथ इस समस्या पर विचार करनेको प्रस्तुत होगा। इस सम्बन्धमें श्री भूलाभाई देसाईने भारतके मामलेको बिलकुल स्पष्ट रूपसे संसार और खासकर ब्रिटेनके सामने रखा है। "हम स्वतन्त्रताका सौदा नहीं करते। स्वतन्त्रता हमारे अधिकारकी माग है।" यह मांग यदि सीधे मिलेगी तो ठीक ही है नहीं तो हमें इसके लिये संघर्ष करना ही पड़ेगा। संघर्षसे हम डरते नहीं। महात्मा गांधीके नेतृत्वमें हम पिछले २५ वर्षोंसे राष्ट्रकी तमाम शक्तियोंको एक सङ्गठन सूत्रमें बांधकर अबतक संघर्ष ही करते आ रहे हैं और आज हम अपने लक्ष्यके बहुत निकट पहुंच गये हैं। ब्रिटेनका मजूरदल, यदि चाहता है कि भारतकी समस्या संघर्ष द्वारा नहीं, सद्भावना और सहयोगसे हल हो तो यह उसका कर्त्तव्य है कि वह स्थितिकी वास्तविकताको महसूस करके सही रास्तेपर अपना कदम बढ़ाये। अबतक युद्धके सङ्कटकालमें, जब ब्रिटिश राष्ट्रके जीवन और मरणका प्रश्न था, मि० चर्चिलकी सम्मिलित सरकारमें ईमानदारीके साथ सहयोग देकर मजूरदलने, युद्ध स्थितिके नामपर, चर्चिल सरकार द्वारा भारतमें की गयी काली करतूतोंको सहन ही नहीं बल्कि प्रकारान्तरसे उनका समर्थन भी किया है। हम मजदूर दलकी इस लाचारीको एक हदतक समझ सकते हैं।

अब जर्मनीके आत्मसमर्पण करते ही मजूर नेता चर्चिलके गरोहसे निकल आये हैं और अब उनसे लोहा लेनेको कमरकस्ता हो रहे हैं। मजूरदलके सभी प्रमुख नेताओंने यह स्पष्ट कह दिया है कि अब कंजरवेटिवों के साथ किसी तरहके सहयोगकी कोई संभावना नहीं है। मि० चर्चिलकी वैदेशिक, घरेलू और भारत तथा औपनिवेशिक नीति की सभीने कड़ीसे कड़ी आलोचना की है। पार्टीके गरम दलके नेता वि० वेवानने तो यहां तक कह डाला है कि हम यह निर्वाचन, सिर्फ पार्लमेण्टमें बहुमत प्राप्त करनेके लिये ही नहीं बल्कि टोरी पार्टीका सम्पूर्ण अस्तित्व मिटा डालनेको लड़ रहे हैं। किन्तु इतनेहीसे हम यह नहीं समझ सकते कि पिछले पांच साल के सम्मिलित शासनके दौरानमें जिस मजूर दलको भारतमें नग्न आतङ्कवाद और दमनमें ब्रिटिश टोरियोंका, युद्ध स्थितिकी दुहाई देकर, समर्थन करनेको बाध्य होना पड़ा था आगामी निर्वाचनमें उसके बहुमत प्राप्त होने हीसे भारतकी समस्या हल हो जायेगी।

भारतके सम्बन्धमें मजूर नेताओंके जितने वक्तव्य हमारे सामने आये हैं उनमें एक भी अबतकके घोषित ब्रिटिश नीतिकी चौहद्दीके बाहर नहीं गया। ऊपरसे देखनेमें तड़क-भड़ककी कमी नहीं है, किन्तु टटोलकर देखनेसे सार उतना ही निकलता है जितना क्रिप्सकी घोषणामें था। मि० अर्नेस्टि बेविनने कहा है कि "यदि हम निर्वाचनमें विजयी हुए तो हम इण्डिया आफिस बन्द कर देंगे और इस कारबारको डोमिनियन्स आफिसको स्थानान्तरित कर देंगे।" इस सम्बन्धमें श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितने ठीक ही कहा है कि "प्रतिक्रियाके केन्द्र स्थल इण्डिया आफिसको उठा देनेकी बात तो बहुत अच्छी है, किंतु स्वतन्त्रता बनाम सेल्फ गवर्नमेण्ट (स्वायत्त शासन) के प्रश्नपर ब्रिटिश मजूर दलको क्या कहना है, यह भी तो हम सुनें। भारतीय वैधानिक स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके लिये कृत संकल्प हैं, वर्तमान दमन कितने दिनतक रहता है यह तो प्रश्न ही नहीं है, जबतक भारत स्वतन्त्र न होगा शान्ति नहीं हो सकती। ब्रिटिश मजूर दलको चाहिये कि वह साहस और ईमानदारीके साथ इस महान अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नपर, जिसके साथ ब्रिटेनका सम्मान और एशियाकी शांति संबद्ध है, आत्मविवेचन करे।"

श्रीमती पंडितकी यह वाणी भारतकी वाणी है।

विस्फोट होगा एक दिन—

देशकी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक स्थिति भयंकरसे भयंकर रूप धारण करती जा रही है। ब्रिटिश संरक्षण प्राप्त स्वार्थी दल और व्यक्ति सभी क्षेत्रोंमें अपने-अपने स्वार्थोंको सुरक्षित रखनेके लिये ब्रिटिश सरकारकी जड़को मजबूत बनानेमें जरा द्विधा और इतस्ततः करते नहीं देखे जा रहे। मुट्ठी भर आदमियोंने ब्रिटिश सरकारकी मददसे देशमें प्रगतिके तमाम मार्गोंको रोक रखा है। ऊपर और बाहरकी स्थिति इस प्रकार है। किन्तु यह स्थिति वास्तविक नहीं है। इस स्थितिके फलस्वरूप दिखायी देनेवाली निराशाके लिये कोई कारण नहीं है। यदि हम इस स्थितिके नीचे और भीतर घुस कर देखें तो यह सहज ही पता चलेगा कि वर्तमान स्थितिका यह भयंकर स्वरूप जानबूझकर बना रखा गया है। दरअसल देशकी प्रगतिशील शक्तियां, देशकी स्वतन्त्रताके लिये बड़ासे बड़ा बलिदान करने वाली भावनायें आज पहलेसे कहीं अधिक पुष्ट और सबल हैं। नकली वातावरण तैयार करके विदेशी प्रभुओंकी सहायतासे गुलछर्रे उड़ानेकी चाल चलते रहनेवाले प्रतिक्रियावादी और संकीर्ण विचारवाले भारतीय राजनीतिज्ञ, अर्थनीतिज्ञ एवं उद्योगपति यह अच्छी तरह समझ रहे हैं कि देशभरमें फैली हुई विशृंखलता और कुव्यवस्था, भीतर ही भीतर असन्तोषकी धधकती हुई आगकी ज्वालाओं के एक बार बाहर फूट निकलते ही झुलस कर रह जायेगी। यही कारण है कि वे कर्मचंचल हो उठे हैं। भारतके हृदयमें वर्तमान सामाजिक और आर्थिक अन्याय और असमानताके विरुद्ध प्रचण्ड दावानल धधक रहा है, वे चाहते हैं कि जबतक और जैसे हो सके यह विस्फोट रोका जाये। भारतीय शिखण्डियोंमें यह सामर्थ्य नहीं है कि वे इसे रोक सकें। अब, ब्रिटिश नौकरशाहीकी ताकत के भी यह बाहर है। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और वस्तुस्थितिको समझनेवाले, यही कारण है कि, आशा भरी दृष्टिसे उस अवसरको सन्निकट आनेकी चेष्टा कर रहे हैं जब यह विस्फोट भारतके देशी और विदेशी कोढ़को जला कर नवनिर्माणका स्वर्ण प्रभात उपस्थित करनेमें सहायक होगा। कांग्रेस और कांग्रेसको प्रेरणा देनेवाले महात्मा गांधीके नेतृत्वमें देशकी तमाम प्रगतिशील शक्तियों को इस विस्फोटको सार्थक बनानेके लिये प्रस्तुत रहना चाहिये। कांग्रेसका रचनात्मक कार्यक्रम देशको उस अवसरके लिये प्रस्तुत करनेका अमोघ साधन और माध्यम है।

यह कैसे हो सकता है ?—

गत सप्ताह मंगलवारको इण्डिया लीग द्वारा आयोजित सम्मेलनमें लेबर पार्टीके उपाध्यक्ष प्रो० हेरोल्ड लास्कीने अपनी वक्तृताके दौरानमें बताया कि "भारत सचिव मि० एमरीने यह घोषणा की है कि ब्रिटिश सरकारको भारतीय समस्याके समाधानके लिये पाकिस्तान सम्पूर्णतया अस्वीकार्य है।" प्रो० लास्कीने यह भी बताया कि "मि० एमरीने यह वक्तव्य उस वार्तालापके दौरानमें दिया था जो गत सप्ताह मेरे और उनके बीचमें हुआ था। मेरे यह पूछने पर कि क्या आपने भारतके प्रतिनिधियोंसे यह बात कही है तो मि० एमरीने कहा कि नहीं, कहा तो नहीं क्योंकि यह कहना बहुत कठिन है।" प्रो० लास्कीकी यह घोषणा सुन कर मि० एमरीने तत्काल उसका खण्डन किया और कहा कि मैंने यह कभी नहीं कहा कि "भारतीय समस्याके समाधानके रूपमें पाकिस्तान ब्रिटिश सरकारको सम्पूर्णतया अस्वीकार्य है।" यह कैसे हो सकता है कि प्रो० लास्की जैसा प्रतिष्ठित और विद्वान व्यक्ति निराधार इतनी बड़ी बात कह बैठेगा। सत्यको न स्वीकार करना और सत्य पर पर्दा डाल देना मि० एमरीके बांये हाथका खेल है। यह खेल उनके लिये लाभप्रद है। इसी तरह खेल ही खेलमें उनके पूर्वज हिन्दुस्तान जैसा देश हजम कर गये और अब खेल ही खेलमें वे उसे सदा सर्वदा अपने हाथमें बनाये रखना चाहते हैं। खुल्लमखुल्ला सचमुच उनके लिये यह कहना बहुत कठिन है कि पाकिस्तान भारतीय समस्याका समाधान नहीं है। सवाल यह है कि यदि पाकिस्तान संपूर्णतया अस्वीकार्य नहीं है तो मेहरबानी करके यही क्यों नहीं कहते कि कितना अस्वीकार्य है और कितना स्वीकार्य है। किन्तु यह बातसाफ साफ वही कह सकता है जिसकी नीयत साफ है।

कांग्रेस कम्यूनिस्ट और लीग—

कम्यूनिस्टोंके दृष्टिकोणसे हिन्दू-मुस्लिम एकता और कांग्रेस-मुस्लिम लीग एकता एक ही वस्तु है। इन दोनोंमें जो मौलिक अंतर है उसे वे नहीं समझते या राजनीतिक कारणोंसे नहीं समझना चाहते। अभी हालहीमें जेलसे मुक्त हुए उड़ीसाके नेता तथा कांग्रेस वर्किंग कमेटीके एक सदस्य श्री हरेकृष्ण मेहताबने कम्यूनिस्टोंसे बातचीतके सिलसिलेमें कहा है—आशा तो नहीं है कि कम्यूनिस्ट उनके वक्तव्यसे जरा भी प्रभावित होंगे क्योंकि किसी बातमें कितना ही तथ्य क्यों न हो उनके लिये वह तभी तथ्य होगा जब उसपर पार्टीकी छाप बैठ जायगी—इस पर हिन्दू मुस्लिम एकता चाहने वालोंको गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिये। श्री

मेहतावने कहाकि कांग्रेस राष्ट्रीय औरमुस्लिम लीग साम्प्रदायिक है। राजनीतिक दृष्टिसे कांग्रेस क्रांतिकारी औरमुस्लिमलीग प्रतिक्रियावादी संगठन है। जब तक इन दो में से किसी एकके रूपमें दूसरेके अनुकूल परिवर्तन न होगा एकता असम्भव है...लीगके प्रतिगामी स्वरुपमें परिवर्तन होने पर ही कांग्रेस लीगका मेल सम्भव हो सकता है। राजनीतिक और क्रांतिकारी संस्थायें उदाहरणार्थ कांग्रेस और कम्यूनिस्ट पार्टी, मिल सकती हैं किन्तु राष्ट्रीय तथा क्रान्तिकारी और साम्प्रदायिक तथा प्रतिक्रियावादी संगठनका मेल संभव नहीं है।" श्री मेहताबका यह वक्तव्य स्वतः स्पष्ट है। व्याख्याकी आवश्यकता नहीं है। जैसा हम ऊपर कह आये हैं कम्यूनिस्टोंपर इस वक्तव्यका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। वे तो एक ढेलेमें दो शिकार मारना चाहते हैं। कांग्रेसको मुस्लिम लीगके समकक्ष मान कर उसके राजनीतिक, राष्ट्रीय और क्रांतिकारी महत्व और प्रभावको विनष्ट करके उसके स्थान पर अपना नेतृत्व देश पर लादना कम्यूनिस्टोंका ध्येय है। यह कोई बुरी बात नहीं है, सहज और स्वाभाविक है। बुरी बात यही है जिसकी तरफ श्री मेहतावने ध्यान आकर्षित किया है कि "कम्यूनिस्ट अपनी सम्पूर्ण भिन्न नीति और कार्यक्रमको कांग्रेसकी नीति और कार्यक्रम बताकर चलाना चाहते हैं।" जनतापर कांग्रेस का प्रभाव है। कम्यूनिस्ट यह जानते हैं। इतना साहस उनमें है नहीं कि वे खुल्लम खुल्ला कांग्रेसका विरोध करें। तब, अपनी उद्देश्य सिद्धिके लिये उनके सामने इस तरहके नाजायज हथकंडोंसे काम लेनेके सिवा दूसरा रास्ता ही क्या है ?

ब्रिटेनमें नया चुनाव—

चर्चिलने इस बातकी काफी चेष्टा की कि जापानका युद्ध जबतक समाप्त न हो जाये राष्ट्रीय सरकार बनी रहे। पर, लेबर पार्टी को वे इसके लिये किसी तरह राजी नहीं कर सके। यूरोपके युद्धकी समाप्ति निकट देख कर ही लेबरपार्टीने साधारण चुनावकी मांग गत वर्ष ही शुरू कर दी थी। इस वर्ष यूरोपका युद्ध समाप्त होनेके पूर्व मंत्रिमण्डल के सदस्य, आगामी चुनावको दृष्टिमें रख कर, एक दूसरी पार्टीपर प्रहार करने लगे। जर्मनीके आत्मसमर्पण करते ही लेबर पार्टीने यह बात बिलकुल स्पष्ट कर दी कि अब वह सरकारका उत्तरदायित्व बटानेको प्रस्तुत नहीं है। गत २१ मईको लेबरपार्टी कानफरेंस ने सर्वसम्मतिसे मि० चर्चिलके इस अनुरोध को अस्वीकृत कर दिया कि सम्मिलित सरकार कायम रखी जाये। कानफरेंसकी अध्यक्षा मिस विलकिन्सनने अपने भाषणमें यह स्पष्ट कह दिया कि युद्धोत्तरकालीन पुनर्निर्माणका महान कार्य हम अनुदार दलके साथ मिलकर नहीं कर सकतीं। विदेशी शक्तियोंके साथ ब्रिटेनके सम्पर्क, ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतिके साथ-साथ सामाजिक एवं आर्थिक पुनर्निर्माणकी नीतिको लेकर ब्रिटेनके प्रगतिशील और संरक्षणशील दलोंके बढ़ते हुए मतभेदको देखते हुए लेबर पार्टी कानफरेन्सने ठीक ही निश्चय किया है कि जापानी युद्धके अन्ततक सम्मिलित उत्तरदायित्व नहीं लिया जा सकता। ऐसी अवस्थामें इस मन्त्रिमण्डलको भंग करके नवीन चुनाव लड़नेके सिवा दूसरा रास्ता नहीं था। फलतः मि० चर्चिलने गत बुधवारको इस्तीफा दे दिया। चूंकि इस पार्लमेण्टमें मि० चर्चिलकी पार्टीका ही बहुमत है अतः सम्राटने उनका इस्तीफा स्वीकार करके फिर उनको ही नयी सरकार बनानेके लिये प्रधान मन्त्री नियुक्त कर दिया। यह पार्लमेण्ट १५ जूनको भंग हो जायेगी, इस आशयकी घोषणा कर दी गयी है। मि० चर्चिलके इस्तीफेसे राष्ट्रीय सरकार भङ्ग हो गयी। मङ्गलवारको पार्लमेण्टकी बैठक शुरू होनेतक संभवतः मि० चर्चिल अपनी नयी सरकार बना लेंगे। उधर तीनों प्रधान पार्टियां, कंजरवेटिव, लेबर और लिबरल, आगामी चुनावके लिये, जो संभवतः ५ जुलाईको होगा, तैयारी करनेमें लग गयी हैं। प्रायः २ हजार उम्मेदवार, ६४० सीटोंके लिये, लड़ेंगे। टोरी पार्टी (कंजरवेटिव) संभवतः कमसे कम पांच सौ सीटोंके लिये संघर्ष करेगी। लेबरपार्टी भी इतने ही उम्मेदवार खड़ा करेगी। लिबरलपार्टी, अधिक सङ्गठित नहीं है और पहलेसे वह चुनावके लिये तैयार भी नहीं है फिर भी उसके कमसे कम तीन सौ उम्मेदवार संघर्षमें उतरेंगे। इनके सिवा लिबरल, नेशनल, कम्यूनिष्ट, स्वतन्त्र लेबर पार्टी, कामनवेल्थ पार्टी और स्वतन्त्र दलके भी यत्र-तत्र उम्मेदवार खड़े होंगे। यद्यपि निर्वाचन परिणामके सम्बन्ध में अभी निश्चित रूपसे कुछ नहीं कहा जा सकता किन्तु यह बात अवश्य कही जा सकती है कि टोरी पार्टीको प्रगतिशील और सोशलिस्टोंसे जबर्दस्त टक्कर लेनी पड़ेगी। लेबरपार्टीको इस बातका पूर्ण विश्वास है कि वह टोरियोंको पछाड़ेगी। यदि दुर्भाग्यवश इस निर्वाचनमें लेबर पार्टी विजयी न हो सकी तो संसारमें एकबार फिर सत्तावादियों की तूती बोलेगी और जिस तीसरे विश्वयुद्ध की चर्चा अभीसे हो रही है वह अवश्यम्भावी हो जायेगा। ब्रिटेनके निर्वाचकोंपर इस समय बड़ा भारी उत्तरदायित्व है। ब्रिटेन प्रगतिका साथी है या प्रतिगामी शक्तियोंका, यह आगामी निर्वाचनसे स्पष्ट हो जायेगा।

वैदेशिक नीति—

संसार आज जो है, वही कल रहेगा या नहीं, यह नहीं कहा जा सकता। जिस रूस के साथ चर्चिलने जर्मनीके विनाशके लिये मैत्री सम्बन्ध स्थापित किया था, आज उसीसे वे बात-बातपर संघर्ष मोल ले रहे है। मि० चर्चिलकी यह नीति संसारके तमाम प्रगतिशील दलोंको चिन्तित और उद्विग्न कर रही है। मि० चर्चिलकी वैदेशिक नीति ब्रिटेनकी राष्ट्रीय सरकारके टूटनेका एक प्रधान कारण है। ब्रिटेनका आगामी चुनाव प्रधानतया मि० चर्चिल और उनकी टोरी पार्टीकी वर्तमान वैदेशिक और भारत नीति को समस्या बना कर लड़ा जायेगा, यह लेबरपार्टी कानफरेंसकी कार्यवाहीसे स्पष्ट प्रतीत होता है। इस्तीफा देनेवाली राष्ट्रीय सरकारके विमान उत्पादन सचिव सर स्टाफर्ड क्रिप्सने इसीसे कानफरेंसमें, यह बात बिलकुल स्पष्ट शब्दोंमें बता दी है कि "हम अपने महान बंधु रूसके साथ अनावश्यक झगड़ा करनेकी नीतिको बर्दाश्त नहीं कर सकते। यह देश फ्रैंको, हेलेनीजके शाह (यूनानके किंग जार्ज) और अन्य अर्द्ध फासिस्टोंका किसी रूपमें समर्थन नहीं कर सकता।" मि० चर्चिल और उनकी पार्टी इन तीनोंके ही हृदयसे समर्थक हैं। दर असल यह पिछले महायुद्धके बाद ब्रिटेनकी वैदेशिक नीतिका ही परिणाम है कि संसारको इस दूसरे महायुद्धका विनाशकारी दृश्य देखना पड़ा। इन दोनों महायुद्धोंके बीचके शांति कालमें ब्रिटेनने बराबर यूरोप, एशिया और अफ्रीकामें प्रतिगामी शक्तियोंको बढ़ाने और प्रगतिशील शक्तियोंको कुचलनेमें सहायता दी। यदि फिर उसीकी पुनरावृत्ति होने दी गयी तो तीसरा महायुद्ध कोई रोक नहीं सकता। इस तीसरे महायुद्धको रोकनेके लिये रूसके साथ ब्रिटेनका सद्भाव और मैत्री रहना आवश्यक है। इस अनिवार्य आवश्यकताको ब्रिटिश लेबर पार्टी भलीभांति महसूस कर रही है। इसीसे कानफरेन्समें डा० ह्यूग डैल्टनने, जो पिछली सरकारमें बोर्ड आफ ट्रेडके प्रेसिडेण्ट थे और यह समझा जाता है कि लेबर सरकारमें परराष्ट्र सचिवका पद इनको दिया जायगा,—इस बातपर जोर दिया है कि इस समय सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न तीसरे विश्व युद्धको रोकना है और यह स्मरण रखनेकी बात है कि हमारे और मास्को के पारस्परिक सम्बन्ध इस बातका निर्णय करेंगे कि तीसरा विश्व युद्ध रुक सकता है या नहीं। इस समय हमारे परस्परके सम्बंध सन्देहके बादलोंसे घिरे हुए हैं। इन सन्देहके बादलोंको, जो लन्दन और मास्को तथा यूरोपकी अधिकांश मुक्त की गयी राजधानियोंके बीचमें मंडरा रहे हैं, अन्य किसी सरकारकी अपेक्षा लेबर सरकार कहीं अधिक सुन्दर ढङ्गसे हटा सकती है। वास्तवमें डा० डैल्टनके इस कथनमें सत्यता है और विश्व शान्तिके लिये यह आवश्यक है कि ब्रिटेनकी सरकारकी बागडोर लेबर पार्टीके हाथोंमें आये। यदि ब्रिटिश मतदाताओंने युगकी इस मांगको न पहचाना और क्षणिक भावुकतामें आकर प्रतिगामी और संकीर्ण विचार रखनेवाले मि० चर्चिल एवं उनकी पार्टीकी तरफ वे बह गये तो तीसरे विश्व युद्धके लिये सर्वाधिक जिम्मेदार वे होंगे।

शत्रुसे संधि कैसी—

यूरोपमें अजेय मानी जानेवाली जर्मन सेनाने घुटने टेक दिये, सम्पूर्ण आत्मसमर्पण कर दिया। अब जापानकी बारी है, यह प्रतिध्वनि चारों ओर गूंज रही है। जब जर्मनी नहीं टिक सका तो जापान क्या टिकेगा। अब तो उसकी भलाई इसीमें है कि वह भी अपने साथीके पदचिह्नोंपर चले। नाहक अमेरिकनोंके साथ-साथ जापानियों का खून बहानेसे क्या लाभ ? हाट-बाट रास्ता घाट इसी तरहकी चर्चा जर्मनीके हथियार डालनेके बाद सुनी जाने लगी। इस चर्चाने उस समय और भी रंग पकड़ा जब एक दिन समाचार पत्रोंमें बड़े-बड़े अक्षरों में निकला "जापानका संधि प्रस्ताव।" ऐसा कहा गया था कि रूसको मध्यस्थ
कर जापानके सम्राट और बड़े-बड़े
रियोंकी ओरसे मित्र-राष्ट्रोंके सामने
प्रस्ताव रखा गया था, किन्तु ब्रिटेन
अमेरिका बिना शर्त सम्पूर्ण आत्मसमर्पण
कम किसी बातपर विचार करनेको
नहीं है। जापानने फौरन इस अफवाहका
किया। जापानी रेडियोने घोषणा की
'जापानकी ओरसे कोई सन्धि प्रस्ताव
हुआ। शत्रुके साथ संधिकी बात
नियोंके विचार और हृदयसे कोसों
असली लड़ाईका तो अभी आरम्भ
टोकियो भस्मीभूत हो गया है,
भी वही हालत है। इन शहरोंके गृह
व्यक्ति जापानकी सुदृढ़ परिवार
कारण आश्रय हीन नहीं हैं। यही
जब शत्रुका मुकाबला करनेके लिये,
अपनी असली शक्तिका परिचय देगा।
शासन सहायक संघका जन-स्वेच्छा
का सङ्गठन सहज करनेकी दृष्टिसे
दिया गया है। किन्तु मित्रदली प्रचारकों
इसकी उल्टी टीका की है।
आरम्भ करनेका इसे संकेत बताया
बात यह नहीं है'। इस संबंधमें रायटरका
समाचार कि दो करोड़ जापानी
को स्वदेशकी रक्षाके लिये फौजमें
किया गया है जापानी रेडियोका ही
करता है। अतः लक्षणोंसे यह प्रतीत
है कि पूर्वका युद्ध इस वर्ष समाप्त होता
दिखायी देता।

आगामी युद्ध रूसके विरुद्ध

यूरपके युद्धका स्वरूप बदल देने
जर्मनीकी अजेयताका मिथ्या दम्भ
देने वाला सोवियट रूस आज
पूंजीवादियों, साम्राज्यवादियों और
गामियोंकी आंखोंमें सबसे अधिक
है। संसारकी ये तमाम प्रगति
शक्तियां भीतर ही भीतर प्रगतिवादी
नेता सोवियट रूसके विरुद्ध भयंकरसे
षड़यन्त्र और मनसूबे बांध रही हैं।
दिन इस बातकी चर्चा सुननेको मिला
है कि आगामी युद्ध ब्रिटेन और अमेरिका
रूससे लड़ेंगे। सैनफ्रांसिस्कोमें सोवियट
प्रतिनिधियोंने संसारके दलित और
राष्ट्रोंके स्वार्थोंकी रक्षाके लिये जिस
कताका परिचय दिया है उससे स्वार्थी
और अधिक बौखला उठा है। औपनिवेशिक
नीति, ट्रस्टीगिरी और परतन्त्र राष्ट्रोंको
स्वतन्त्र करनेके सम्बन्धमें साम्राज्यवादियों
का विरोध करके सोवियट रूसने
दिया है कि वह संसारको अर्द्ध स्वतन्त्र
अर्द्ध परतन्त्र बनाये रखनेकी स्थितिका
दृस्त विरोधी है। ऐसी स्थितिमें
विरुद्ध प्रतिगामी शक्तियोंका संगठित
उससे लोहा लेना, यदि परिस्थिति
उनका साथ दिया तो, असम्भव या
भाविक नहीं है। वह युद्ध, यदि
होगा पूंजीवादी व्यवस्था और समाजवादी
व्यवस्थाके अस्तित्वकी रक्षाके लिये।

—

हिन्दी, उर्दू और एक राष्ट्रलिपि

(श्री पुरुषोत्तम दास टण्डन)

के कुछ समाचार पत्रोंने तथा मुसलिम ने माननीय श्री पुरुषोत्तमदास टण्डन को उर्दूका विरोधी कहा है। इस संबंधमें स्पष्ट करनेके लिये भारतके विशेष प्रतिनिधिने श्रद्धेय टंडनजीसे भेंट की। उनका इस बातकी ओर दिलाया गया कि अधिक विरोध इस बातपर हुआ है अपने भाषण देते हुए उन्होंने उर्दूको समय बादशाहोंकी लादी हुई भाषा । श्री टण्डनजीने नीचे लिखा हुआ दिया:—

उनका भाषण हिन्दीमें हुआ था। उससे ऊपर समय भाषणमें लगा था। दृष्टिसे अपने अन्तर्प्रान्तीय कामोंमें की ही भाषासे काम लेना चाहिये, अन्तर्प्रान्तीय भाषा हिन्दी ही हो सकती अंगरेजीका उपयोग हमारे लिये हानि- है—यह भाषणके एक अङ्गमें दिखाया । अन्तर्प्रान्तीय कामोंके लिये जब नी' की चर्चा करता हूं, तब उस शब्द ' निहित रहती है क्योंकि वह हिंदी एक रूप है। अंगरेजी जनताकी भाषा और स्वराज्य होनेपर वह देशमें नहीं यह बात कही गयी थी। अंगरेजी केवल शासनसे है। हमारे देश उसकी उत्पति नहीं है। वह एक लादी हुई वस्तु है। मैंने फारसीका दिया था और कहा था कि मुगल समय फारसी शासनकी भाषा थी। शासनके समाप्त होनेके बाद भी दिनों तक अंगरेजी शासनमें राज- रही, फिर भी उसे अपने स्थानसे हटना । क्योंकि उसकी उत्पत्ति जनताके नहीं हुई थी। वह ऊपरसे लाई हुई थी।

के सिलसिलेमें मैंने यह भी कहा कि जो इस समय देशमें हिन्दी प्रचलित फारसी, तुर्की, अरबी शब्दोंके बाजारू बोली पैदा हुई जो उर्दू । अंगरेजीमें रिपोर्ट करनेवाले ने कि जो बात अंगरेजीकी स्थिति फारसीके बारेमें कही गयी थी उसे के लिये समझ लिया। मुझे का ज्ञान इतना तो है कि मैं उर्दूको लादी हुई चीज नहीं कह सकता था। फारसीके लिये कही गयी थी। और उर्दूके सम्बन्धमें यह भी कहा कि हिन्दी हमारी भूमिसे निकली । उसीमें विदेशी शब्दोंके मिश्रण नाम उर्दू है, जो एक विशेष आव- पैदा हुई और विशेषकर दरबारोंमें और उसके आस-पास चली। देशी शैली और उर्दूकी मिश्रित शैली बनानेमें हिन्दू और मुसल्मान रहा है। एक ओर ऐसे ऊंचे कवि मुगल राज्यके समयमें ही जिन्होंने अपनी प्रतिभाके विकास जनताकी ठेठ देशी शैलीका सहारा दूसरी ओर ऐसे मुसलमान कवि फारसीका अधिक प्रभाव था जिन्होंने अपनी प्रतिभासे बाजारोंमें उर्दूको एक सुन्दर रूप दिया ढंगे पुरखोंकी कविता की। किन्तु इस भाषाके दृष्टिकोणमें विदेशीपन था और वह अपने संस्कारके लिये ईरान और अरब की संस्कृतिका सहारा लेती थी। इस प्रकार एक ओर हिन्दीकी पुरानी धारा चलती रही और उसके विकासका सम्बन्ध देशकी भूमिसे बराबर रहा और दूसरी ओर उर्दूकी धारा बढ़ी किन्तु उसके विकासके आदिमें हिन्दीका उसपर जो प्रभाव था वह घटता गया और विदेशी प्रभाव बढ़ गया।

भाषणमें मैंने यह भी कहा था कि राष्ट्रीय दृष्टिसे आवश्यकता यह है कि हिन्दी और उर्दू समीप आवें और राष्ट्रकी एक भाषाके रूपमें मिल जायं। संस्कृत और फारसी दोनों आर्य भाषाएं हैं, दोनों एक स्त्रोतसे निकली हैं और दोनोंका सुन्दर समन्वय हो सकता है। यह बात मैंने आगरा में प्रान्तीय हिंदी साहित्य सम्मेलनके सभापतिके पद से सन् १९२० में कही थी जब हिन्दू मुसलमान एकताके मसलेमें आजसे अधिक सफलता मिली थी। सन् १९२३ में जब मैं हिन्दी साहित्य-सम्मेलनका सभापति था, अपने लिखित भाषणमें भी मैंने यह बात दुहराई थी। आज भी मेरा वही दृष्टिकोण है। मैं बराबर यह सपना देखता हूँ कि प्रांतीय भाषाओंके रहते हुए भी देशमें एक राष्ट्र भाषा हो और एक राष्ट्रलिपी हो। मैं इस बातका पक्षपाती हूं कि देशकी सब लिपियोंका वैज्ञानिक दृष्टि से विश्लेपण किया जाय और एक वैज्ञानिक लिपी हमारे देशकी लिपियोंके भीतरसे बनाई जाय जिसे देशकी सब प्रांतीय भाषाएं भी अपने लिये स्वीकार करें। इस कामको पूरा करनेका रास्ता यह है कि हिन्दी और उर्दू लेखकोंके प्रतिनिधि इकट्ठे होकर भाषाके विषयमें कोई समन्वय स्थापित करें और उसे चलायें। लिपिके विषयमें उन लोगोंसे भी सहायता ली जाय जिन्होंने लिपिके प्रश्नका सब दृष्टिसे अध्ययन किया है। किन्तु यह बात तब हो सकती है जब हम रूढ़ियोंके दास न बनें और शुद्ध राष्ट्रीयता और जनताकी दृष्टिसे इन प्रश्नोंको देखें।

महात्मा गांधीने वर्धामें हालमें जो हिन्दुस्तानी सभा बुलाई थी उसने दो निश्चय किये। उनमेंसे इस निश्चयके सम्बन्धमें कि हिन्दी और उर्दूका समन्वय हो मैं महात्मा गांधीसे पूर्ण रीतिसे सहमत हूं। यह मेरा स्वयं पुराना मत रहा है। किन्तु दूसरे निश्चयके विषयमें, कि सब भारतवासी हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियां और लिपियां सीखें, मेरा मतभेद है। महात्मा गांधीजीसे सहमत होनेकी प्रबल इच्छा रखते हुए भी मेरी बुद्धि यह नहीं स्वीकार करती कि उनका यह प्रस्ताव व्यावहारिक है। मैं यह नहीं समझता कि मराठी, गुजराती बंगाली, उड़िया आदि प्रान्तीय भाषाओंके बोलने वाले हिन्दी और उर्दू दोनोंकी भिन्न शैलियां और लिपियां ग्रहण करनेको तैयार होंगे।

मेरी दृष्टिमें राष्ट्रीयताकी मांग केवल इतनी ही होनी चाहिये कि जो नागरी लिपिसे परिचित हों वे उसके द्वारा हिन्दी सीखें और जो फारसी लिपिसे परिचित हों वे उसके द्वारा उर्दू सीखें। साथ ही दोनों इस बातका प्रयत्न करें कि जिस शैलीको उन्होंने सीखा है उससे अलग दूसरी शैलीमें चलने वाले शब्दोंकी उन्हें साधारण जानकारी हो। साधारण नियम यही हो सकता है। हिन्दू और मुसलमान दोनोंमें इस प्रकारके पढ़े-लिखे लोगोंका होना उचित है जो दोनों शैलियों और लिपियोंको अच्छी तरह बरत सकें, किन्तु ऐसा साधारण नियम नहीं बनाया जा सकता।

जैसा मैंने बार-बार कहा है उत्तम बात तो यही है कि एक राष्ट्र भाषा और एक राष्ट्र लिपि हो। किन्तु जब तक राजनीतिक कारणोंसे या सामाजिक रूढ़िवादसे यह इच्छित बात नहीं होती तब तक यह आवश्यक है कि जहां हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियां चलती हैं हिन्दी और उर्दूमें कोई विरोधकी सूरत न खड़ी की जाय और दोनों को बराबरकी सुविधाएं दी जायं। प्रत्येक व्यक्तिको पूरा अधिकार हो कि वह अपने बच्चोंकी शिक्षा हिन्दीमें करावे या उर्दूमें, अपने नागरिक अधिकारों सम्बन्धी काम हिन्दीमें करे या उर्दूमें। इन दोनों शैलियों में काम करनेका शासनकी ओरसे पूरा प्रबन्ध हो। इसमें कुछ अधिक व्यय होगा। किन्तु उसे आवश्यक व्यय समझना चाहिये। ईमानदारीके साथ इस नीतिको चलानेमें हिन्दी और उर्दूके विरोधका कोई प्रश्न ही नहीं उठ सकता। जिन जिन कामोंमें शासन का सम्पर्क जनतासे होता है उनमें दोनों शैलियोंका बरतना अनिवार्य होना चाहिये। रेडियो विभागने हिन्दी शैलीको उचित स्थान न देकर अन्याय किया है। हिन्दी और उर्दू दोनोंके प्रेमियोंको इस अन्यायका विरोध करना चाहिये। मैंने इलाहाबादके प्रान्तीय सम्मेलनमें यह कहा था और उसे दुहराता हूं कि यदि उर्दू भापियोंके साथ अन्याय हो तो मेरा यह कर्तव्य होगा कि मैं उसका विरोध करूं। सब पहलुओंको देखकर आज राष्ट्रीय दृष्टिसे मुझे यही उचित लगता है कि हिन्दी और उर्दू दोनोंके कार्यकर्ता इस बात पर सहमत हों कि किसी शैलीके जानकारोंके साथ अन्याय न होगा। जिस व्यक्तिके लिए जो शैली समीप है और जिसे वह जानता है उसीमें उसको अपना काम करनेकी पूरी सुविधा दी जाय। अंगरेजी भापाका जो आक्रमण हमारी शिक्षा और साधारण कामों पर हो रहा है उसकी रोक थाम हिन्दी और उर्दू दोनोंके प्रेमी मिलकर ही कर सकते हैं।

कांग्रेसके विधानमें हिन्दी और उर्दूको स्थान मिले इसका प्रयत्न मैंने सन् १९१९ में अमृतसर कांग्रेसके समय आरम्भ किया था। सन् १९०९ में कानपुरमें मेरे प्रस्ताव पर उन लोगोंके बहुत विरोधके बाद जिन्हें अंगरेजी भापाका मोह था, हिन्दी और उर्दू को जगह मिली थी। दोनोंके लिये 'हिन्दुस्तानी' शब्दका प्रयोग मैंने अपने प्रस्तावमें किया था। उससे तात्पर्य था हिन्दी और उर्दू। हिन्दुस्तानी शब्दका वहां वही अर्थ था जिस अर्थमें हिन्दुस्तानी ऐकेडमी 'हिन्दुस्तानी' शब्दका प्रयोग करती आ रही है, अर्थात् हिन्दी और उर्दू। हिन्दुस्तानी ऐकेडमीने कोई नयी भापा बनानेका प्रयत्न नहीं किया किन्तु हिन्दी और उर्दू शैलियोंको अलग-अलग स्वीकार किया है। इसी प्रकार कांग्रेसके विधानमें हिन्दुस्तानी शब्दसे केवल यह मतलब था कि हिन्दी और उर्दू दोनों शैलियां अलग अलग बरती जायं।

इस विषयमें अंजुमन तरक्की-ए-उर्दूकी ओरसे निकलने वाले समाचार पत्र "हमारी जबान"ने अपने १६ मार्चकी संख्यामें कांग्रेस के विधानमें हिन्दुस्तानी शब्दके मतलब समझनेमें भूल की है। उसने यह समझा है कि कांग्रेसने मेरे प्रस्ताव पर हिन्दुस्तानी शब्द की एक परिभापा दी और वह यह कि जो भापा उत्तरी भारतके देहातोंके हिन्दू और मुसलमान बोलते हैं वह हिन्दुस्तानी है। वास्तवमें कांग्रेसने कोई भी परिभापा 'हिन्दुस्तानी' शब्दकी नहीं दी। उसके विधानमें केवल 'हिन्दुस्तानी' भापामें काम करनेकी बात कही गयी है।

इस प्रकार आजकी हालतमें जहां मैं इस बातका पक्षपाती हूं कि हिन्दी और उर्दू दोनोंको खुला अवसर हो और इनमेंसे किसीके ऊपर कोई मजबूरी न हो वहां मेरी

प्रथा की दासता

(लेखक—श्री सन्तराम बी० ए०)

सर हेनरी पेनका कहना है कि अनुन्नतिशील संस्थाएं व्यवहारकी परम्परागत विधियोंसे जितनी अधिक जकड़ी हुई हैं उतनी ही वे प्रगतिशील संस्थाओंसे भिन्न हैं। बर्बर मनुष्य प्रथाको नहीं तोड़ता। पाश्चात्य सभ्यताको जो विजय प्राप्त हुई है उसका मुख्य कारण उसका धर्मविषयक निषेधोंकी परीक्षा करनेका स्वभाव है। हमें निरन्तर अपनेको नूतनताके अनुकूल बनाना पड़ता है। मनुष्योंको ज्यों ही मौलिकताके महत्वमें संदेह उत्पन्न होता है वे झट उसे दबा देते हैं। परिणाम होता है अनुन्नतिशील समाज। ऐसे समाजमें नीरस एकरूपता उत्पन्न हो जाती है और व्यक्तित्वका समूचा भाव नष्ट हो जाता है। यह जानते हुए भी हममें जो लोग परम्परागत नीतिको छोड़कर नया मार्ग पकड़ते हैं उनको संदेहकी दृष्टिसे देखनेका स्वभाव बढ़ रहा है।

प्रचलित रीतिको छोड़ना मानो भाईकी हत्या करने जैसा कोई पाप है। वस्तुतः व्यवहारकी विशेष चिंतित विधियोंके सामने सिर झुकाना भौतिक सुख-समृद्धिका एक नियम सा हो गया है। हम प्रथाओंके दास हैं और अपनी बेड़ियोंसे प्यार करने लगे हैं।

जिस मत या व्यवहारका अभ्यास न हो वह भयावह होता है। इटालियन फासिस्ट लोग मुसोलिनीके विषयमें किसी प्रकारका संशय सहन नहीं कर सकते हैं और बोलशेविस्ट लोग कार्ल मार्क्सके कट्टरपंथसे इधर-उधर होनेकी अनुमति नहीं देते। अधिकांश कट्टरपंथी लोग गर्भ-निरोधकी संभावनाओंकी परीक्षा किये बिना ही बड़े कठोर शब्दोंमें इसकी निन्दा करते हैं। हम नवीन या अप्रत्याशितसे इतने आतङ्कित रहते हैं कि उनका स्वागत करना मौलिक पापका प्रमाण समझा जाता है। हमने मध्ययुगीन धर्मकी असहिष्णुताको निकालकर उसका स्थान राजनीतिक और आर्थिक विश्वास-सम्बन्धी असहिष्णुताको दे दिया है। दूसरों के प्रति अन्यायका स्वीकार वह मूल्य है जो हम अपनी रक्षाके लिते अदा करते हैं या अदा करनेके लिये तैयार हैं। जो लोग दुःख उठा रहे हैं उनके प्रति हम अपनी सहज समवेदनाको इसलिये दबाये रखते हैं, क्योंकि हमारे पड़ोसी ऐसा ही करते हैं।

कहा जाता है कि किसी नागरिकको अग्रगामी नेता होनेके लिये कहना वैसा ही है जैसे उसे किसी ऐसे साहसिक कार्य करने के लिये कहना, जिसका विफल होना अनिवार्य है। विद्रोहका मूल्य हुतात्माकी मृत्यु होता है, और हुतात्माकी मृत्युको भी अन्तिम पुरस्कारका कोई भरोसा नहीं रहता। जो मनुष्य किसी मतका जोरसे प्रचार करता है उसे इससे क्या लाभ होता है? वह तो धर्म-भावसे विवश होकर कार्य करता है, परन्तु साधारण लोगोंको उसका यह प्रचार एक प्रकारका अहंवाद या हठीलापन देख पड़ेगा। इतिहास साक्षी है कि मनुष्य-समाज सदासे अपने अग्रगामी पथदर्शकोंको सूलीपर चढ़ाते और विषका प्याला पिलाते आया है।

जड़त्वका बहाना सदा बहुत प्रबल बहाना रहा है। यह हमें इस योग्य बना देता है कि आकस्मिक विपत्तिके आसन्न भावके बिना अपनी छोटी सी लकीर बना सकें। अत्याचार जितना जनताको आलस्य-पर निर्भर करता है उतना किसी दूसरी बातपर नहीं। बुरा मालिक, असभ्य न्यायाधीश, भ्रष्ट राजपुरुष, इन सबका अधिकार केवल इसलिये बना रहता है क्योंकि उनको अतीतमें ललकारा नहीं गया। जो राष्ट्र उस सीमापर ध्यान देता है जिसके भीतर अधिकारको कार्य करना चाहिये केवल वही स्वतन्त्रताकी आशा कर सकता है। अन्यायी लोगोंकी प्रबलता केवल इसलिये हो जाती है क्योंकि वे निश्चेष्ट होनेका पाप कभी नहीं करते।

आपत्ति हो सकती है कि यह तो अराजकताका सिद्धान्त है। यदि मनुष्य इसलिये आज्ञाका उल्लंघन करेंगे, क्योंकि उनका विश्वास नहीं, तो, कहा जाता है, सामाजिक शान्तिका अन्त हो जायगा। हमें राज्यसे कांपते हुए और भयभीत भावसे व्यवहार करना चाहिये। हमारे लिये यह स्मरण रखना आवश्यक है कि राज्यके स्वभाव, इसकी जनश्रुतियां, इसके उद्देश्य अतीतकी परम्परागत विज्ञतासे उत्पन्न होते हैं।

शासन न्यायतः पर्याप्त आवश्यक है, परंतु इसके साम्राज्यकी कोई सीमा होनी चाहिये। किसी सामाजिक पद्धतिमें शान्तिकी उच्चतम वांछनीयताकी घोषणा करना ही पर्याप्त नहीं जबतक हम उन उद्देश्योंसे सन्तुष्ट न हों जिनके लिये शान्ति की जाती है। मनुष्य तबतक विद्रोह नहीं करते जबतक कोई अनिष्ट उनको विद्रोह करनेके लिये विवश नहीं करता। एक शब्दमें, अराजकता का भय तभी उत्पन्न होता है जब कोई मनुष्य-समूह अनुभव करने लगता है कि उनपर लादा हुआ कोई अपकार असह्य हो गया है।

जब हम कोई ऐसा अपकार देखें तो हमारा काम यह है कि हम उसे ललकारें ताकि कहीं अधिकार न्यायपर विजयी न हो जाय। कोई भी राज्य तबतक सुदृढ़ नहीं कहला सकता, जबतक उसकी जड़ उसकी प्रजाकी विवेकबुद्धिमें न जमी हो। प्रजाजनोंको तुच्छ समझना, उनके कार्योंको नैतिक अपकार मानना, अपनेको उससे कहीं अधिक हानि पहुंचाना है जितना कि वे उसे पहुंचा सकते हैं।

सामाजिक विधानकी बातोंमें कोई भी ईमानदारी तबतक सम्भव नहीं हो सकती जबतक कि आरम्भमें ही इस बातको स्वीकार न कर लिया जाय कि राजनीतिके क्षेत्र में संदेहको बहुत बड़ी गुन्जाइश दिये बिना वस्तुतः कोई भी श्रद्धा सम्भव नहीं हो सकती। आज एक भी ऐसा दृढ़ विश्वास या निश्चयता नहीं, जो भविष्यको अल्प एवं अपर्याप्त प्रतीत नहीं होगी। मतकी विभिन्नताका गवर्नमेण्ट द्वारा कठोर विरोध दूसरे शब्दोंमें युक्तिसंगत विचारको रोकना है। विचार, चाहे कितने ही मूर्खतापूर्ण क्यों न हों, कार्यक्रम, चाहे कितने ही आत्यन्तिक क्यों न हों, सदा किसी ऐसे अभावसे उत्पन्न होते हैं जिसे उनके व्याख्याता पूरा करनेका यत्न कर रहे हैं। विचारों और कार्यक्रमोंके लिये लोगोंको दण्ड देनेसे अभावोंका गला घोंटा नहीं जा सकता। जो गवर्नमेण्ट बुरे विचारोंसे लड़ती है वरन् उससे भी बढ़कर, जो गवर्नमेण्ट विद्रोहको भड़काती है, उसे प्रायः सदा अपने ही अन्तःकरणमें मुंह डालकर झांकनेकी आवश्यकता होती है।

स्वतन्त्रताका अर्थ है आत्म-व्यञ्जना और स्वतन्त्रताका रहस्य है साहस। जो मनुष्य उस बातके साथ सन्तुष्ट रहता है जिसे वह बुरा समझता है वह कभी स्वतन्त्र नहीं रह सकता। गवर्नमेण्टका काम प्रजाकी युक्तिसंगत अभिलाषाओंको पूरा करना, अथवा कमसे कम, उनकी पूर्ति सम्भव बनाना है।

जिन सिद्धान्तोंको आज हम आधारभूत समझ रहे उनमेंसे अधिकांश किसी समय या किसी जगह अनैतिक या विकट पाये जाते थे। इतिहास इस बातका साक्षी है कि सम्पत्ति, विवाह, धर्म, शिक्षा, इन सबके विषयमें हमारा मत बदलता रहा है, और भविष्यमें भी वह बदलेगा। हम लोगोंने अपने जीवनमें इनके सम्बन्धमें जो अनुभव प्राप्त किया है उस अनुभवकी सूचना देना हमारा कर्तव्य है। प्रथागत आचारके समर्थक सदा इस बातके लिये चिन्तित रहते हैं कि जिन विभिन्नताओंको वे पसन्द नहीं करते उनको कानूनके द्वारा बन्द करा दें। उनकी अविवेचनासे हमारी व्यर्थता मापी जाती है। उनकी आत्मव्यञ्जना हमारी अपनी आत्म व्यञ्जनाको दबानेसे संभव होती है। वस्तुतः शक्तिका यही अचल स्वरूप है। आज भारतमें नाना प्रकारके छोटे छोटे अत्याचार देख पड़ते हैं। उनमेंसे प्रत्येकका आधार यह है कि प्रजाको विश्वास करा दिया गया है कि जो आदेश उसे मिलते हैं उनका पालन करनेके सिवा उसके पास और कोई चारा नहीं। प्रजा इस बातको भूल गयी है कि अपनी स्वतन्त्रता पर आग्रह करनेकी शक्ति स्वयं उसके अपने हाथमें है। प्रजा अशक्त इसलिये है क्योंकि हनुमानके सदृश अपनी शक्तिका उसे ज्ञान नहीं। वर्णभेद, छूतछात, ऊंच-नीच, इत्यादिके नाम पर जो आज करोड़ों मनुष्योंको शूद्र और अस्पृश्य बना कर उनका शोषण और उत्पीड़न किया जा रहा है, यदि जनता-जनार्दन अपनी शक्तिका अनुभव कर सके तो क्या छः सात करोड़ सवर्ण, अठारह-बीस करोड़ अछूतों और शूद्रोंको दबा कर रख सकें? कल्प... और कर्मवादके पवित्र सिद्धान्तको ... कर परमात्माके करोड़ों अमृत पुत्रोंके ... यह बात बैठा दी गयी है कि शूद्र और ... बने रहनेमें ही तुम्हारा हित है, इस ... तुम अपने पूर्व जन्मके दुष्कर्मोंका फल ... कर अपने पापकी गठरी हलका कर रहे ... यदि अछूतोंके मनमेंसे यह भ्रम निकल ... तो कोई उनको अछूत न रख सके। यही ... राजनीतिक दासताकी है।

अनर्थ और अपमानके सामने ... झुकाने और अपनी पतित अवस्थासे ... रहनेके कारण, स्वाधीनताका इतना ... ह्रास हो चुका है कि अन्यायके विरुद्ध ... वाद करने वाला व्यक्ति आज दुर्लभ ... गया है। सार्वजनिक साहसिक कार्य ... से हिचकचानेसे ही अनावश्यक कष्ट ... हो रहा है।

यह मार्ग सड़ांदका है और विचारों... सड़ांदका परिणाम सदा स्वाधीनताका ... होता है। किसी भी राज्यमें स्वाधीनता ... तभी रह सकती है जब उन विषयोंको ... संशय और सन्देहकी दृष्टिसे देखती रहे ... पर कि गवर्नमेण्ट जोर देती है। सन्देह ... से ही मनुष्य जांच कर सकता है और ... करनेसे बुद्धिमान नयी बातका आविष्कार ... कर सकता है। हमें अपने लिये स्वाधीनता ... की आवश्यकता है। परन्तु हम स्वतन्त्र ... हो सकते हैं जब हम स्वतन्त्रतापर ... करें। किसी भी दूसरे व्यक्तिका ... हमारे लिये वैध शक्ति नहीं रख ... यदि वह हमारे अपने जीवनकी अर्थ... कताको प्रकट नहीं करता। कोई भी ... हमें स्वतन्त्र आध्यात्मिक प्राणियोंके ... सामान्य जीवनमें अपने जीवनको ... अपने व्यक्तित्वका त्याग करने ... आदर्शोंको स्वीकार करनेके उपयुक्त ... बना सकती जिनको हृदयमें हम ... समझते हैं। स्वस्थ भक्ति निष्क्रिय ... विनयी नहीं, वरन् सक्रिय एवं गुण ... विचार करने वाली होती है। जो भी ... दुर्बलता नैतिक कहलानेका ... रखती है उसका आधार उस उद्देश्यके ... सज्ञान मेल होता है जिसका हम ... करते हैं। इसके सिवा कोई भी दूसरी ... हमारा अपने आपके साथ विश्वास... और जब हम उस सत्यको जिसे हम ... हैं छोड़ देते हैं, तो उस विश्वासघात... सभ्यताके भविष्यके साथ भी विश्वास... करते हैं, कारण यह कि मुक्त विवेक... आदर्शको जाने वाले मार्ग पर ... पत्थर हैं।

आंतरिक भावना यह है कि देशमें ऐसी सद्बुद्धि दे कि और साम्प्रदायिकता और रूढ़िवादसे हम इतने ऊंचे उठें कि हिन्दी और उर्दू के समन्वयके प्रश्नको अपनी सद्भावनाओंसे हल कर सकें।

कहानी

'पुनर्मिलन'

———:**:———

(श्री लक्ष्मणदत्त भट्ट—रामनगर, नैनीताल)

...हाबाद स्टेशनपर पंजाब मेल खड़ी ...स्टेशनपर खासी भीड़ थी। बड़ी तेजी ...स भीड़से निकलती हुई एक युवती ...सके थ्रू डिब्बेके दरवाजेको खोल ...बड़ी लापरवाहीके साथ जा बैठी। ...ही उसने कितनी ही बार 'कुली-कुली' ...पुकारा पर कुली सामान रखकर ...हो गया था। "कैसे जाहिल होते ...होंगे" ऐसा कहते हुए वह अपने एटैची ...सिहराने लगा ऊपरकी ओर देखने ...। चाहती थी कि कोई बिजलीके पंखे ...दे। दूसरी बर्थपर अधलिटा एक ...जो इस युवतीके अन्दर आनेके समय ...अपने नाविलसे आंख हटा जबतब ...खियोंसे उसे देख लेता था, कुछ हिम्मत ...ही ऐंठा—"क्या मैं आपकी ...कर सकता हूं।" "ओह! थैंक ...आपको अगर तकलीफ न हो तो जरा ...का पंखा खोल दें। देखिये न, कैसे ...होते हैं ये कुली? सामान तक ठीक ...गया बेवकूफ! बिस्तर और ...ठीक ढंगसे बर्थपर लगा जाता, ऐसी ...उम्मीद करना ही बेकार है। बस ...ज्यादासे ज्यादा पैसे मिल जाने ...जैसे भी वह ऐंठ सकें—खुशामदसे या ...कर।" युवकने पंखा खोल दिया ...डिया उठाते हुए बोला "यदि आव- ...हो तो बिस्तर भी बर्थपर फैला दूं" ...और बेतकल्लुफ लड़कीने उस एक- ...परिचित युवकसे एक बार फिर लापर- ...कहना शुरू कर दिया—"जी, ...स्तर उठानेकी तकलीफ आप न करें। ...आपको कष्ट न हो तो क्या आप मेरी ...बिछा करना पसन्द करेंगे। मुझे कुछ ...आदत है कि लेटे-लेटे स्टेशनोंको देखने ...आनन्द आता है।" वाक्य पूरा ...होते युवकके उत्तरकी बाट देखे बिना ...वह दूसरी बर्थकी तरफ चल दी। ...बिना किसी उज्रके अपनी चीजें उठा- ...युवतीका सामान अपनी बर्थपर रख ...तब बोला—'आप लेटें आराम ...मुझे कुछ ऐसी आदत नहीं है।" इसके ...युवतीने एकदम चुप्पी साध ली। ...चलनेका समय निकट ही था ...एक बार फिर युवतीने युवकसे बड़ी ...कहा—"अगर आपको तकलीफ न ...वाला वेण्डरसे कहकर मेरे लिये एक ...आइसक्रीम और बर्फ मंगवा दीजि- ...कृपा होगी।" मन्त्रमुग्ध सा युवक ...गया और अपने ही हाथों बर्फका ...और आइसक्रीम लेकर लौटा। "थे ...क यू" कहकर युवतीने बोतलसे ...म गिलासमें उड़ेलकर पीना शुरू ...। गाड़ी सीटी देती हुई चल दी, ...अपनी बर्थपर जा बैठा। एक 'बाय' ...वह युवतीका सभी काम बड़ी तत्प- ...कर रहा था हालांकि दोनों एक ...बिल्कुल अपरिचित थे। ...स्टेशनतक गाड़ी तेजीके साथ चलती ...दोनोंमें इतनी देरतक कुछ भी बात- ...हुई। बर्थसे उठते समय युवकका ...नीचे छूट गया था जिसे उठाकर ...पढ़ना शुरू कर दिया और वह उसीमें

तल्लीन हो गई। आखिर अपनी बेचैनीको दूर करनेके विचारसे साहस कर युवकने, जो बहुत देरसे युवतीका परिचय पानेको उत्सुक था, पूछा—"क्या मैं आपसे यह मालूम कर सकता हूं कि आपका कहां जानेका इरादा है और आपका शुभ नाम..." बातको बीचसे ही काटते हुए युवती कहने लगी—"मैं...मैं कहां जाऊंगी, यही तो पूछते हैं न आप? समझ लीजिये कि लखनऊ तक ही जाऊंगी। हां, यदि उस वक्ततक इरादा बदल गया तो शायद कुछ और आगे भी चल पड़ूं समझे न, आप? जनाब मेरा नाम भी मालूम करना चाहते हैं? सच जानिये, इस तरहके प्रश्नोंसे मुझे बहुत ही चिढ़ है। अक्सर तो मैं ऐसी बातोंका उत्तर ही नहीं देती। हां पर...पर...क्योंकि आपने मेरी कुछ सहायता की है इसीलिये मुझे 'ना' कहते नहीं बनता। मुझे आनन्दी कहते हैं। शायद बातोंका सिलसिला जारी रखनेके लिये आप कुछ और भी पूछ बैठें। अजीब ही तरीका है हम लोगोंका। मुझे साफ-साफ कहनेके लिये मुआफ करेंगे आप। न जाने क्यों, इस देशके रहनेवाले हम सभी लोगोंको कुछ ऐसा मर्ज हो गया है कि कितने ही अपरिचित क्यों न हों, जहां एक दूसरेसे मिले नहीं कि दूसरोंकी प्राइवेट बातें जानने के लिये प्रश्नपर प्रश्न किये जाते हैं।" युवक परेशान था कि उसने ऐसा प्रश्न करनेकी क्यों इतनी बड़ी गलती कर डाली। वह शोख लड़की कहीं कुछ बेतुकी बातें न सुना डाले। वह इसी परेशानीमें था कि किस तरह उससे क्षमा मांगे कि युवतीने कहना शुरू कर दिया—"लीजिये सुनिये मेरे जीवनकी एक कहानी और एक ही बारमें अपनी उत्सुकता शान्त कर लीजिये आप। एक पढ़ी-लिखी युवती हूं मैं। अवस्था २९ वर्षके लगभग होगी। माता-पिताका साथ बचपन ही में छूट गया था। मुझे पालकर बड़ा किया एक दूरके रिश्तेकी बहिन ने। इतना उपकार तो उन्होंने बेशक किया और इसके लिये मैं उनकी ऋणी भी हूं पर इसके बाद मेरे ऊपर एक ऐसा अत्याचार किया उन्होंने जिससे कि मेरा जीवन अत्यन्त दुःखी हो गया। एकदम पुराने विचारोंके लोग थे ये मियां-बीबी। मुझसे सलाह लिये बिना ही उन्होंने मुझे एक बेहूदे व्यक्तिके सिर मढ़ दिया। मुझे तना भी अवसर न दिया कि एक बार मैं अपने पतिको देख भी लूं। मेरी उन बहिनको जो पति मिले थे वे एकदम बुद्धू थे। मियांकी मिचमिची आंखें थीं—रंग काला, शरीर खपची जैसा, कद एकदम बांस। अजीब उजबकसे लगते थे वह। उनके उपकारसे दबी हुई थी मैं। आजादीमें सांस नहीं लिया था उस वक्त तक। कुछ न कह सकी—जबान ही न खुली।" युवकने देखा—बोलते-बोलते वह एकदम चुप हो गयी। उसे अवसर मिला—बोला—

"मुझे क्षमा करें आप। मैं किसी तरह भी आपको कष्ट देना न चाहता था। मुझे खेद है कि मेरे कारण आपको अपनी अतीतकी दुःख भरी बातोंकी याद ताजा हो गयी है।" युवती फिर कहने लगी—"आप को मालूम है कि आजका हमारा समाज कैसी-कैसी काली करतूतोंके लिये जिम्मेदार है। किस तरह वह आये दिन मेरी जैसी लड़कियोंके जीवनको नीरस, दुःखी और असह्य बना रहा है। इस नयी रोशनीमें लड़कोंको हक है कि वह लड़कियोंकी परेड लगाकर मनचाही छांट लें पर लड़कीने उन्हें कहीं नापसन्द करके कबूल करनेसे इन्कार किया कि गजब। मेरा भी यही हाल हुआ। क्या कहूं उसके सम्बन्धमें जिससे मैं ब्याही गयी थी। एक अजीब प्राणी थे वे। मोटे होठ, नाक एकदम आगेको फैली हुई, कान चेहरेसे आगे निकले जाते थे, रंग काला नहीं तो उजला भी कैसे कहूं। आंखें गोल-गोल और पीला चेहरा, कद नाटा था। बस "जू" में रखनेकी चीज थे वे। हंसते तो मुखाकृति ऐसी हो जाती जैसे रो रहे हों। शिक्षा यों ही साधारण सी थी। विवाहके समय ही सहेलियोंने उनका खाका खींचकर मेरी वह चुटकियां लीं कि बस रोने के अलावा मेरा कुछ काम न रह गया था। बिना देखे ही उन महाशयसे मुझे घृणा हो चली और सुहागकी रातको मैंने ऐसा घूंघट खींचा कि जिससे वह मुख मुझे किसी तरह भी न दिखायी दे।" युवकने देखा कि यह सब कहते-कहते वह उत्तेजित हो चली थी। "उन्होंने मुझे अपनी ओर जितना भी आकर्षित करनेकी चेष्टा की उतनी ही मैं उनसे दूर भगी। उन्हें क्रोध आया—मैं कब परवाह करने लगी थी। उन्होंने खुशामद की—पर मैं न पिघली। आखिर थक कर धमकी देते हुए वह बाहर चले गये—एकदम निराश और ना उम्मीद। तब कहीं मैंने आरामकी सांस ली और सोनेकी तैयारी की। कुछ समय तक यों ही चलता रहा—इसके बाद मैं लौट आयी बहिनके घर। उन्होंने पत्र भेजकर सफलता पानी चाही पर सब व्यर्थ। कुछ वर्ष इसी तरह बीते, खींचा-तानी होती रही। आखिर एक दिन दृढ़ निश्चय करके मैंने अपनी बहिन और पतिको साफ-साफ लिख दिया कि भविष्यमें मैं अपने पतिसे कोई भी सम्बन्ध नहीं रखना चाहती। इन दिनोंमें काफी उधेड़-बुनमें ही रही। आखिर आज जा रही हूं ऐसे आदमीकी तलाशमें जिसके साथ सुखसे जीवन व्यतीत कर सकूं। अखबारोंमें विज्ञापन निकलवा चुकी हूं लखनऊ और प्रयागमें किसी होटलमें ठहरकर उनसे "इन्टरव्यू" करूंगी। मेरी कहानी आपने सुन ली। अब आप अपना निजी अनुभव सुनायें?" यह कहकर वह बर्थपर युवकसे उत्तर पानेकी प्रतीक्षामें लेट गयी।

युवतीका बनाव शृङ्गार आधुनिक ढङ्ग का था। नये फैशनसे उसने बाल संवारे थे। बिना आस्तीनका जम्फर उसकी गोल सुडोल भुजाओंकी सुन्दरताको बढ़ा रहा था। गलेमें था मोतियोंका हार, कानोंमें नये डिजाइनके लटकते हुए ऐनेमेल्ड एयरिंग्स। एक हाथमें रिस्टवाच थी और दूसरेमें काफी चूड़ियां। पैरोंमें सैण्डिल थी। बदन छरहरा कद न नाटा न लम्बा, रंग सांवला थी। आंखें काफी बड़ी-बड़ी थीं। वास्तवमें उसे बहुत सुन्दर तो नहीं कहा जा सकता पर उसके चेहरेमें एक गजबका आकर्षण था।

अपनी राम कहानी सुनानेमें यद्यपि युवकको काफी झिझक मालूम हो रही थी पर उस युवतीसे बातें करनेका लोभ भी वह कैसे संवरण कर सकता था। वह कहने लगा "मुझे पार्वतीनाथ कहते हैं। इसी वर्ष मुझे इतिहासमें 'डाक्टर' की डिग्री मिली है। मुझे प्रयाग विश्व विद्यालयने इतिहासका अध्यापक नियुक्त किया है और मैं आज वहीं जा रहा हूं।" कहते कहते वह रुका, उसने कुछ सोचा और फिर बोला—"मेरी भी आपसे किसी हद तक मिलती-जुलती कहानी है, पर क्या करूंगा उसे सुनाकर आपको। बड़ा ही कटु अनुभव है मेरा भी।" और वह रुका पर युवतीके आग्रह करने पर उसने यों कहना शुरू किया—"विवाहके समय मैं १० वीं कक्षामें पढ़ रहा था। मना करते रहने पर भी मेरी विधवा माताने न माना। लड़कीसे मेरा पहिला कोई परिचय न था। विवाहके बाद भी यों ही एक दो बार भले ही देख लिया हो। पर तबसे फिर कभी भी पति-पत्नीके रूपमें हम नहीं रह पाये। वह एक गंवार औरत थी आजकी दुनियासे एकदम अपरिचित। न वह पढ़ी लिखी ही थी और न उसे अपने बनाव शृङ्गारका ही तमीज था। वह इतना भी तो न जान पायी कि कौन कपड़ा किस तरह पहिना जाता है। पर्देमें तो वह हरदम बन्द रहती थी। ऐसी औरत पाकर मैं एकदम खिन्न हो गया। कालिज पहुंचकर मेरी दुनियां ही बदल गयी। अपने स्वप्नके संसारमें मैं अपनी पत्नीका जो खाका खींचा करता उसमें और इसमें जमीन आसमानका फर्क था। धीरे-धीरे मुझे उसकी ओरसे घृणा हो गयी और...और एक दिन आया जब मैंने उसे पत्र द्वारा इस बातकी सूचना दे दी कि उसका मेरा भविष्यमें कोई सम्बन्ध नहीं रह सकेगा। मैंने अब उसे आजाद कर दिया है ताकि अपने जैसे किसी बुद्धूके साथ वह अपना निर्वाह करले। मैं भी अपना मार्ग भविष्यमें ढूंढ लूंगा। मैंने अपना यह निश्चय बी० ए० क्लासमें पढ़ते समय कर लिया था यदि आप आज्ञा दें तो कह सकता हूँ कि आज हम दोनों—मैं और आप एक ही पथके पथिक हैं। मेरी लम्बी कहानीका यही संक्षिप्त वर्णन है।" युवक बड़े गौरसे युवतीकी ओर देखकर यह जानना चाहता था कि उसकी बातोंसे वह प्रभावित भी हुई या नहीं। वह उसकी सहानुभूति पानेको उत्सुक हो उठा, पर उसने देखा कि युवती बड़ी लापरवाहीसे बातें सुन रही थी और

उसके मुख पर उदासीनताके सिवा और किसी तरहके भाव न दिखायी पड़े।

युवककी अवस्था ३० वर्षके लगभग रही होगी। वह अंगरेजी ढङ्गके कपड़े पहिने हुए था। आंखों पर चश्मा था, दाढ़ी मूंछ साफ। रंग कुछ-कुछ सांवला, आंखें गोल, कद नाटा और शरीर गठीला। देखनेमें वह साधारणतया अच्छा ही लगता था। दोनों-की बातें यहां बन्द हो गयीं। युवतीको झपकी लग गयी। युवक एक टक उसकी ओर देखता रहा। समय इसी तरह बीत रहा था। गाड़ी अपनी तेज रफ्तारसे दौड़ी चली जा रही थी। उसे यह भी पता नहीं चला कि इस अवस्थामें बैठे-बैठे कितना समय निकल गया। यकायक 'लखनऊके लड्डू' 'लखनऊके पान' की आवाजने उसे चौंका दिया और तब उसे पता चला कि गाड़ी लखनऊके निकट पहुंच रही है। कुछ आराम करनेके विचारसे वह लेट गया पर इस ख्यालसे कि उस युवतीके साथ अब उसका थोड़ी देरका ही साथ और है, न जाने क्यों बेचैन हो उठा। नींद हवा हो गयी। वह यों ही अनमना पड़ा रहा। लखनऊ आया। गाड़ी ठहरी। उसका दिल धड़क रहा था। पर युवती सो रही थी। बार-बार इरादा करके भी वह उसे उठानेसे रुक जाता था। बिजलीके पंखेकी हवासे साड़ीका ऊपरका सिरा उसके वक्षस्थलसे उड़ कर एक तरफ जा पड़ा था और युवक चुपचाप और एक टक उसकी सुडौल बांहें और उभरे उरोजों को देख रहा था। काफी समय ठहर कर गाड़ी बढ़ चली। युवतीके स्वभावसे जितना बहुत वह अब तक परिचित हुआ था उसका ध्यान कर वह कुछ विचलित हुआ। सम्भव है वह उठ कर उसे फिर कहीं एक लेक्चर न दे डाले कि एक शिक्षित और सभ्य युवक होनेके नाते वह उसकी इतनी भी सहायता न कर सका कि उसे लखनऊ जगा देता—तब उसके पास क्या उत्तर होगा। सोचते-सोचते उसने यही निश्चय किया कि वह भी सोनेका बहाना करले और उसके उठने पर कह दे कि वह भी सोता ही रह गया। अब तो वह उसे प्रयाग तक अपने साथ ले जानेमें सफल हो सकेगा यह सोचकर वह कम प्रसन्न नहीं हुआ। लगभग एक घण्टे तक वह आंख मिचौनी खेलता रहा तब कहीं युवती घबराई हुई उठी। घड़ीमें समय देखा तो पता लगा कि लखनऊ पहुंचने का समय निकल चुका और वह बहुत आगे आ गयी है। उसने युवकको "देखिये! सुनिये तो जरा" कह कर उठानेकी चेष्टा की। युवक अंगड़ाई लेता हुआ उठा। युवतीने बड़ी परेशानी दिखाते हुए कहा—"देखिये तो, लखनऊ निकल गया और मैं सोती ही रह गयी। आप भी नहीं उठ पाये क्या? मेरा प्रोग्राम बिल्कुल 'अपसेट' हो गया है इस तरह। क्या करना चाहिये मुझे।" युवक बोला—"सचमुच बड़ा गड़बड़ हो गया। मेरी भी नींद नहीं खुली। बड़ा अफसोस है। पर आपका प्रयाग जानेका भी तो विचार था। तब पहले प्रयाग ही सही। लौटते समय लखनऊ उतर लीजियेगा।" बहुत कुछ कहने के बाद युवती तैयार हो गयी और प्रयाग ही जाना निश्चित रहा।

(२)

प्रयाग स्टेशन पर युवतीने निश्चित किया कि वह किसी होटलमें ठहरे पर युवक के बहुत आग्रह करने पर कुछ दिनके वास्ते उसके ही बंगले पर रहनेके लिये आखिरकार तैयार हो गयी।

युवकका बंगला बैंक रोड पर था। वहां से युनीवर्सिटी करीब ही है। बंगलेके आगे छोटी-छोटी क्यारियोंमें भिन्न-भिन्न प्रकार के पुष्प लगे हुए थे। एक दो ही दिनमें फर्नीचर और दूसरे सामानसे बंगला सुचारु रूपसे सज गया। दो कमरे युवतीके लिये रिजर्व कर दिये गये थे। इस तरह दोनोंको वहां रहते तीन चार दिन हो गये। इन दिनों युवती अब युवकसे बहुत अलग रहने लगी। सिर्फ चाय और खानेके समय ही दोनोंकी भेंट होती और कुछ कुछ बातें भी। युवतीने इससे अधिक मिलनेका युवकको अवसर ही नहीं दिया। एक दिन जब उसने जानेका प्रस्ताव किया तो युवक घबराया और उसने ऐसा अनुभव किया कि अगर वह उसे छोड़ कर चली गयी तो उसका वहां रहना कठिन ही नहीं असम्भव भी होगा। आज उसे यह मालूम हुआ कि वह दिन पर दिन उसके प्रेम पाशमें बंधता जा रहा था।

एक दिन

कालेजसे लौटने पर अपनी साइकिलसे कुछ सामान खोल कर वह सीधा कमरेमें चला गया—चायके कमरेमें जब युवती पहुंची तो देखती है कि टेबिल पर कुछ सुन्दर साड़ियां और शृङ्गारका सामान एवं कुछ पुस्तकें सजा कर रखी हुई हैं। उन्हें देखकर युवतीने कुछ मुस्कराते हुए पूछा—"क्या इन्हीं थोड़े दिनोंमें आप किसीसे आंख लड़ा बैठे हैं जनाब! क्या मैं समझ लूं कि यह स्थान छोड़नेसे पहिले ही मैं श्रीमतीजीको यहांका चार्ज दे सकूंगी। काफी दिन हो गये हैं मुझे। अब ज्यादा मैं रह नहीं सकूंगी। एक अपरिचित व्यक्तिके पास इतने दिन भी बहुत रह गयी हूं। कहिये, कब तक आ रही हैं वह? क्या विश्वविद्यालयमें ही कहीं पा लिया है उन्हें?" कुछ हिम्मत करके फिर भी हिचकिचाते हुए युवकने कहा—"जी... हां...आ...पकी कृपा होगी तो शीघ्र ही मुझे उन महिलाको जिन्हें इस थोड़ेसे समय में ही मैं अपना दिल दे बैठा हूं अपनी जीवन संगिनी बनानेका सौभाग्य प्राप्त हो सकेगा। पर इस कार्यकी सफलता आपकी सहायता और सहानुभूति पर ही निर्भर है। युवतीके होठों पर शैतानी भरी मुस्कराहट देखकर युवक अपनी सफलता पर प्रसन्न हुआ। युवतीने उत्तर दिया—"आप काफी पेचदार बातें कर सकते हैं इसका परिचय आपने आज ही दिया है। खूब अच्छी तरह समझ गयी मैं आपका मतलब" और कुछ सोचकर बोली—"पर आप विश्वास रखें मैं इतने सहजहीमें किसीसे नहीं फंसूंगी इस बार। अब तो मैं काफी छानबीन करके अपना कदम उठाऊंगी। और हां जनाब, आपका 'केस' तो 'कंसिडर' ही नहीं हो सकता? भला उम्मीदवारोंकी फहरिस्तमें कहीं आप का नाम भी है? जहां तक मैं जानती हूं आपने तो अभी तक "एप्लाई" भी नहीं किया है। अब तो मामला "टाइम बार्ड" हो गया है" ऐसा कहते कहते वह कहकहा लगाकर जोरोंसे हंस पड़ी।

(२)

एक शामको

युवक क्लबसे लौट रहा था। बगलमें रैकेट दबाये, मनही मन किसी उधेड़ बुनमें मस्त फिर भी साइकिलके पैडिल तेजीसे चलाता हुआ क्लबसे बंगलेको आ रहा था। बंगलेपर पहुंचते ही नौकरको साइकिल थमा और रैकेट दे वह और दिनकी भांति अपने कमरेमें न जा सीधा युवतीके कमरेमें गया। पर कमरा खाली पड़ा था। हां, पासके दूसरे कमरेसे किसीकी बातें सुन पड़ीं और कभी-कभी हंसनेकी भी आवाज आ रही थी। कान चौकन्ने हो गये। आशाका स्थान आशङ्काने लिया। यह कौन हो सकता है जिसके साथ युवती इतना हंस-हंस कर बातें कर रही हैं। बहुत ध्यान देकर भी जब वह बातें न सुन सका तब आहिस्ता-आहिस्ता, मानों पैरोंमें मन-मन भरकी बेड़ियां पड़ी हों, मेजकी तरफ बढ़ा। मेजपर डायरीकी ओर उसका ध्यान गया। हवासे डायरीके पन्ने, खुली पड़ी रहनेके कारण, फरफरा रहे थे। सहसा उसकी दृष्टि प्रियतम शब्दपर रुक गयी। पढ़ने लगा—प्रियतम! आश्चर्य है, इतने समय तक आपका कैसे इन्तजार करती रही। अब तो दो-एक दिन भी ठहरना भारी हो चला है इतने दिनतक दर्शन भी नहीं हुए पर मैंने सब सह लिया। अब आपसे रोज ही भेंट होती है, बातचीत भी, तब भी उतावलापन बढ़ता ही जाता है। रह-रह कर गले लगाना चाहती हूं चितचोर! पर कोई अदृष्ट हाथ रोक देता है। माके आनेका इन्तजार है। न जाने कब आती हैं वह। और हां प्रोफेसर तो बड़े मनचले निकले। कैसा आतुर है बेचारा। उसे क्या पता कि मेरा हृदय न जाने कब अपने प्रियतमका हो चुका है। न जाने कब बंध चुकी हूं प्रेम-सूत्रमें। बौना! चन्द्रको पानेकी आशामें पागल है। रात-दिन......

"प्रोफेसर आगे न पढ़ सका। आंखोंके आगे अंधेरा छा गया। उसने आज समझा कि जिस युवतीसे वह प्रेम करने चला था वह तो "शो रूम" में सजा कर बिक्रीके लिये रखा हुआ जापानी खिलौना मात्र है। बाजारू चीज। वह नहीं दे सकेगा उसकी कीमत। इस सजे सजाये आकर्षक शरीरमें विष भरी दिल लिये फिरती है। यह नारी! नारी नहीं तितली है। कैसे धोखेमें था अबतक।" घृणा और क्रोधसे उसका शरीर कांप उठा, हाथसे डायरी गिर पड़ी। डायरीके गिरनेकी आवाज होते ही चौंकी हुई वह युवती दूसरे कमरेसे दनादनके साथ उस कमरेमें आयी जहां प्रोफेसर खड़ा था और अभिमान भरे शब्दों में जोरसे बोली—"देखिये प्रोफेसर साहब, अपनी जबान खोलनेकी आप जरा भी चेष्टा न करें। मुझे यह मालूम करनेका हक है कि आप मेरे प्राइवेट कमरेमें बिना मेरी आज्ञा कैसे घुसे? क्यों आपने मेरी डायरीको, जो आपकी बेशरमी पर आपके सामने पड़ी हंस रही है, पढ़नेकी घृणित चेष्टा की। दूसरेको शिक्षा देनेवाले प्रोफेसर, तुम्हारी यह हरकत। मैं समझती हूं कि आपके मस्तिष्कमें जरूर यह प्रश्न चक्कर मारता होगा कि जिस स्त्रीको आप अपनी जीवन संगिनी बनानेका इरादा रखते थे उसका दूसरा 'प्रियतम' कौन? भला मुझे अधिकार था कि आपके बारेमें अपनी डायरी में कुछ भी लिखूं? पुरुष होनेके नाते प्राइवेट बातोंको जाननेका हक रखते हैं। यह भी आप जानना चाहते ही होंगे कि अपने कमरेमें मैं किससे हंस-हंस कर बातें कर रही थी। अबतक भी यदि आप नहीं समझ पाये तो आज आप कान खोल कर सुन लें कि मैं वह नारी नहीं हूं जिसे आप जैसे शिक्षित 'अबला' कहते हैं। समाज के रूढ़ीवादको पैरोंसे कुचल कर आगे बढ़ने वाली मुझ विद्रोही नारीको आप धोखा देनेकी व्यर्थ चेष्टा न करें। मैं अधिक बकबक कर अपना समय नष्ट करना नहीं चाहती। आप कृपा कर एकदम मेरे प्राइवेट कमरेसे बाहर हो जायें। शीघ्र ही। नौकर भेजकर मेरे लिये सवारीका आपको शीघ्र प्रबन्ध करना होगा ताकि मैं इस कब्रसे निकल कर खुली हवामें ही आजादीकी सांस ले सकूं। समझ गये आप, प्रोफेसर साहब!"

प्रोफेसर सिर झुकाये एक अपराधीके समान कमरेसे बाहर हो गये। अपने कमरेमें जाकर उन्होंने नौकरको पुकारा। पर उधर से कुछ उत्तर न मिला। हतबुद्धिसे वह दोनों हाथोंमें अपना सिर रखे कुर्सी पर बैठ गये। कुछ समय बाद नौकरने आकर उनके सामने मेज पर एक लिफाफा रख दिया। उसे तुरंत ही खोलकर उन्होंने पढ़ा—लिखा था—

"चि० पृथ्वी! मेरा प्यार। ठीक उसी दिन जब तुम घरसे प्रयागको चले थे मुझे एक पत्र आया था। लिखा था कि वह लड़की की तलाशमें वह प्रयागको जाने वाली है। उसने इस वर्ष बड़े अच्छे नम्बरोंसे एम० ए० पास किया है। बेटा! कोशिश करके उसे तलाश कर लेना और नौकरी के लिये रोकना। ठीक समझो तो अपने ही पास रख भी लेना। बहुत हो चुका अब। घरकी लक्ष्मी को यों नहीं ठुकराया जाता, पृथ्वी! मैं थोड़े ही दिनकी मेहमान हूं। यदि बहू देख मर सकी तो तुम भी पुण्यके भागी होगे। मानोगे मेरी यह बात? मान जाना बेटा। मा का यह अन्तिम आग्रह है। उसकी अन्तिम अभिलाषा है। हो सका तो मैं भी शीघ्र ही तुम्हारे पास पहुंचूंगी। सम्भव हुआ तो इस पत्रके साथ ही। मुझे निराश न करना, मेरे लाल!

मेरा प्यार और आशीष!

तुम्हारी स्नेहमयी

उसने पत्र पढ़ कर मेज पर रक्खा ही था कि कमरेमें मा को आते देखा। आते ही वह फौरन ही उठा और मा के चरण छू लिये। प्यारका हाथ बेटेके सिर पर रखते हुए मा ने उसे आशीष दिया और पूछा— "अभी अभी यहां कैसा शोर था पृथ्वी! एक स्त्रीकी आवाज सुन कर बाहर ही रुक गयी थी। कोई आया हुआ है क्या?" प्रोफेसर चुप था, उससे कुछ कहते ही न बनता था। मा ने फिर कहा—"मेरे साथ

बर्माका भविष्य—वैधानिक रूपरेखा

:०*०:

सम्राटकी सरकारने १७ मई १९४५ को बर्मामें वैधानिक सरकार पुनः स्थापित करने के सम्बन्धमें पार्लमेंटके आगे एक श्वेतपत्र उपस्थित किया है, जिसमें सरकारने इस सम्बन्धमें अपनी नीतिकी घोषणा करते हुए एक वक्तव्य दिया है, जो इस प्रकार है:—

"बर्मामें स्वराज्यका विकास करनेके सम्बन्धमें सम्राटकी सरकारकी सुनिश्चित नीतिकी घोषणा कितनी ही बार की जा चुकी है। हमारा उद्देश्य उस समयतक बर्मा की राजनीतिक उन्नतिमें सहायता प्रदान करना है और निरन्तर रहा है, जब तक कि वह पूर्ण स्वराज्यके उत्तरदायित्वका भार वहन करने और इस प्रकार स्वाधीनता प्राप्त उपनिवेशों तथा इस देशके समान पद प्राप्त करनेमें समर्थ न हो जाय।

पूर्ण स्वराज्यकी ओर बर्माकी प्रगतिसे जापानियोंके आक्रमण, देशपर लम्बी अवधि तक शत्रुके अधिकार और उसके प्रदेशोंमें जोरदार युद्ध होनेके कारण अनिवार्य रूपसे बाधा पड़ी है और इस दृष्टिसे वह कुछ पीछे की ओर ही हट गया है। इस कालके बीचमें बर्माको केवल सामग्री सम्बन्धी हानि ही नहीं उठानी पड़ी है बल्कि उसके आर्थिक और सामाजिक जीवनकी नींव भी चकनाचूर हो गयी है। निश्चय ही राजनीतिक भवन इसी नींवपर खड़ा रह सकता है और जबतक यह नींव एक बार पुनः सुदृढ़ नहीं हो जाती तबतक राजनीतिक संस्थाओंकी पुनः स्थापना नहीं की जा सकती, जो जापानी आक्रमणसे पहले काम कर रही थीं।

उदाहरणके लिये, कितने ही क्षेत्रोंसे जनताके हटा दिये जाने, उसके तितर-बितर हो जाने और शत्रुका अधिकार होनेपर साधारण जीवनमें उथल-पुथल हो जानेके कारण निर्वाचक सूचीमें पूर्ण परिवर्तन किया जाना और सम्भवतः आम चुनाव करनेसे पूर्व एक नवीन मताधिकार व्यवस्था निर्धारित किया जाना भी आवश्यक होगा। इसके अतिरिक्त, बर्मामें यातायात व्यवस्था पहलेकी तरह स्थापित किये बिना भी चुनाव होना असम्भव है।

देशमें फिरसे स्थिर अवस्था उत्पन्न करने, इमारतों, यातायातके साधनों और सार्वजनिक सेवाकार्योंको फिर ठीक करने और देशके जीवनाधार कृषि तथा अन्य आवश्यक उद्योगोंकी पुनः स्थापनाके लिये कठिन कार्य करना होगा। जबतक यह नहीं हो जायगा वह अवस्था उत्पन्न नहीं होगी जिसमें प्रजातन्त्र प्रणालीकी सरकारकी आवश्यकतायें पूरी हो सकें। ये आवश्यक कार्य गैरफौजी सरकारको तब तत्काल ही करने होंगे जब सैनिक कार्रवाईको देखते हुए देशके शासनकी बागडोर सैनिक अधिकारियोंके हाथसे उसके हाथोंमें सौंपी जा सकेगी। वर्तमान विध्वंसावस्थामें बर्माके आर्थिक साधनों द्वारा ये कार्य नहीं हो सकेंगे और इसलिये सम्राटकी सरकारको उसकी सहायता करनी पड़ेगी। परन्तु इस कार्यमें उसे बर्मी जनताके समस्त वर्गोंके सक्रिय सहयोग की आवश्यकता होगी और व्यावहारिक रूपमें जितनी ही पूर्णताके साथ यह सहायता दी जा सकेगी उतनी ही शीघ्रता पूर्वक बर्मा पुनः अपनी रुकी हुई वैधानिक उन्नतिके मार्गपर अग्रसर हो सकेगा।

जबतक पहली आवश्यक राजनीतिक कार्रवाई अर्थात् साधारण निर्वाचन करनेके लिये उपर्युक्त आधार पर्याप्त अच्छे ढंगसे स्थापित नहीं हो जायंगे, तबतक बर्मामें उस प्रकार की सरकारकी पुनः स्थापना सम्भव न होगी जैसी १९४१ में कार्य कर रही थी। इसलिये यह आवश्यक है कि जबतक १९३५ के कानूनके अनुसार देशका शासन नहीं चलाया जा सकेगा तबतक धारा १३९ का आश्रय जारी रखना चाहिये जिसके अन्तर्गत गवर्नर सम्राटकी सरकारके प्रति सीधा उत्तरदायी रहकर शासन प्रबन्ध चलाते हैं। चूंकि १९४२ में जारी की गयी घोषणा की अवधि आगामी दिसम्बरमें समाप्त हो जायगी इसलिये इसे तीन वर्ष अर्थात् ९ दिसम्बर १९४८ तकके लिये और बढ़ा देनेका विचार किया गया है।

पार्लमेंटसे इस विस्तारको केवल तीन वर्षके लिये स्वीकार करनेकी प्रार्थना की गयी है और यह आशा की जाती है कि यदि पहले न भी हो सका तो उस समय तक ऐसी स्थिति बन ही जायगी जिसमें आम निर्वाचन हो सकेगा और स्वाभाविक वैधानिक प्रणालीके अनुसार एक सरकारकी स्थापना हो सकेगा। किन्तु यद्यपि नियन्त्रित सरकार की यह प्रारंभिक अवधि अनिवार्य है फिर भी सम्राटकी सरकार इस बातके लिये उत्सुक है कि सरकारी कार्य वस्तुतः गवर्नरमें ही केन्द्रित न रहें अपितु गवर्नरको ऐसे महत्वपूर्ण साधन भी सुलभ हों जिनके द्वारा वे उन कार्योंको करनेमें बर्मियोंकी सहायता और परामर्श प्राप्त कर सकें और उसके पास ऐसी शक्ति हो जिसके द्वारा वह शासन तथा कानून निर्माणके कार्योंमें बर्मी जनमतके प्रतिनिधियोंसे सम्पर्क रख सकें। इसीलिये विचार किया गया है कि सपरिषद् आदेश द्वारा १३९ धाराके वर्तमान स्वरूपके अनुसार चलनेवाली शासन-व्यवस्थाको और भी उदार बनानेके लिये सुधार करनेके अधिकार ग्रहण किये जायं। यह निश्चय किया गया है कि इन प्रस्तावित अधिकारोंके अधीन शीघ्र ही एक शासन परिषद्की स्थापना की जायगी जो यद्यपि आरम्भमें छोटी और प्रधानतः सरकारी संगठन होगी फिर भी अवसर मिलते ही इसमें गैर सरकारी बर्मियोंको सम्मिलित करके इसका विस्तार किया जायगा। इस प्रकारकी परिषद् द्वारा स्वाभाविक वैधानिक प्रणालीकी स्थापना होने तक बर्मियोंको अपने देशकी आर्थिक व्यवस्थाको पुनः स्थापित करनेके शासन सम्बन्धी कार्यमें हाथ बंटानेका अवसर मिलेगा। हां, गवर्नरके निरीक्षण तथा नियन्त्रणके अधिकार उसी प्रकार स्थिर रहेंगे। यदि गवर्नर और एक छोटी अस्थायी धारा सभाके रूपमें स्थापित उसकी शासन परिषद् सिफारिश करेंगे तो सपरिषद् आदेश द्वारा काम करनेका इस प्रकारका अधिकार एक निश्चित अवस्थामें भी प्रयुक्त हो सकेगा। पार्लमेण्टकी स्वीकृति मिलने पर इन संगठनोंकी रचना और इनके अधिकार तथा इनके पारस्परिक सम्बन्धोंके विषयमें सपरिषद् आदेश द्वारा नियम बनाये जायेंगे।

सपरिषद् आदेश द्वारा जो ऐसी नयी और परीक्षात्मक संस्थाएं स्थापित होंगी उनका तात्कालिक उद्देश्य धारा १३९ के अन्तर्गत लागू किये जाने वाले शासनको समाप्त करना होगा, परन्तु जब उस धाराके संचालनकी समाप्तिका समय आ जायगा तो वे स्वभावतः स्वयं ही समाप्त हो जायेंगी। सम्राटकी सरकारकी यह आकांक्षा है कि जब परिस्थियां पुनः ऐसी हो जायगी कि निर्वाचन करना तथा धारा १३९ को समाप्त करना संभव जान पड़े तो विधानकी साधारण धारायें पुनः लागू हो जायेंगी। जब तक उन अस्थायी धाराओंको, जिन्हें बर्मियों ने स्वीकार किया है, उसमें सम्मिलित करके उनका संशोधन हो जाय। उस दशामें साधारण निर्वाचन हो सकेगा और एक धारा सभा बनायी जा सकेगी जिसे उन्हीं विषयों पर उसी मात्रामें अधिकार होगा, जो जापानी आक्रमणसे पूर्व उसके पास थे।

ज्योंही उस देशकी परिस्थितियां अनुकूल जान पड़ेंगी और १९३५ के विधानकी धाराओंके अनुसार सरकारकी पुनरस्थापना हो जायेगी, वैधानिक उन्नतिका दूसरा अध्याय प्रारंभ हो जायेगा, जिसमें पूर्ण स्वायत्त शासनकी प्राप्तिके लिये भूमि तैयार कर ली जायेगी। इसके साथ ही बर्माकी आर्थिक व्यवस्थाको पुनः उसी सीमा तक स्थापित करनेके लिये आवश्यक प्रयत्न जारी रहेंगे जिन्हें प्रथम साधारण निर्वाचनसे भी पूर्व प्राप्त कर लेना आवश्यक है। इसके अतिरिक्त आत्मनिर्भरताकी दिशामें उसकी आर्थिक स्थितिको उत्तरोत्तर उन्नत करनेका प्रयत्न जारी रहेगा।

सम्राटकी सरकारका अन्तिम उद्देश्य यह होगा कि बर्मी जनताके प्रतिनिधि विभिन्न दलोंके किसी समझौते पर पहुंचनेके बाद स्वयं एक ऐसा विधान तैयार करें जिसे वे बर्माके लिये उचित समझते हैं। इस विधान के तैयार करनेमें वे न केवल ब्रिटेनकी तरहके विधानका बल्कि विभिन्न प्रकारके अन्य विधानोंका भी ध्यान रखें।

इस विषयमें बर्मी प्रतिनिधियोंसे विचार और समझौता किया जायेगा कि इसके लिये कैसी संस्था होनी चाहिये। साथ ही ब्रिटिश सरकारसे उन विषयोंमें किये जाने वाले समझौतोंकी शर्तोंका भी विचार किया जायेगा जिसमें बर्मामें पूर्ण स्वराज्य स्थापित होनेपर उसकी जिम्मेदारियां जारी रहेंगी।

जब बर्माकी जनताके भली भांति नियुक्त किये गये प्रतिनिधि उस विषयका अध्ययन करने पर उसके बारेमें सहमत हो जायेंगे कि किस प्रकार शासन-विधान हस्ताक्षरकारियों के लिये अधिकसे अधिक उपयुक्त होगा तथा जब यह स्पष्ट हो जायगा कि प्रस्तावित

शासन विधानको बर्मामें इतना समर्थन प्राप्त है कि पार्लमेंटका उसे स्वीकृति प्रदान करना उचित होगा तब ब्रिटिश सरकार बर्माके प्रतिनिधियोंसे बातचीत प्रारम्भ कर देगी। इसका उद्देश्य ऐसे सन्तोषजनक समझौते करना होगा कि वह अपने आगे कर्तव्य पूरे कर सके और उसके द्वारा की गयी प्रमुख आर्थिक प्रगतिकी रक्षा हो ताकि जब आवश्यक शासन सम्बन्धी संगठन हो जाय और अन्य प्रबन्ध भी पूरे हो जायं तब बर्मामें तुरन्त ब्रिटिश राष्ट्र मण्डलके अन्तर्गत पूर्ण स्वराज्य स्थापित किया जा सके। परिगणित प्रदेशों, अर्थात शान राज्यों और बर्माकी पहाड़ी सीमाओंके, कबीली प्रदेशोंका शासन गवर्नरकी अधीनतामें स्थापित विशेष सरकारके हाथमें तब तक रहेगा जब तक उनके निवासी अपनी यह इच्छा व्यक्त न करेंगे कि उनके प्रदेश किसी उपयुक्त प्रकारसे खास बर्मामें मिला दिये जायं। इन परिगणित प्रदेशोंमें ऐसे लोग रहते हैं जिनकी भाषा, सामाजिक प्रथाएं और राजनीतिक प्रगति की मात्रा बर्माके मध्यवर्ती प्रदेशोंके लोगोंकी भाषा, सामाजिक प्रथाओं और राजनीतिक प्रगतिकी मात्रासे भिन्न हैं।

जर्मनी के नियन्त्रण की समस्याएं

श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

जर्मनीने हथियार डाल दिये। 'ड्वेर-...' ने अपनी पराजय स्वीकार कर ली। ...' ने आत्मसमर्पण कर दिया। ... पर नाजी स्वस्तिक पताकाकी जगह ... झण्डा फहरा रहा है। पर जर्मनीकी ... ही समस्याका अन्त नहीं हो गया। ... जर्मनी क्या २५-३० साल बाद ... लड़ाई छेड़ने लायक न हो जायगा? ... यह शक्ति न प्राप्त कर सके इसके ... क्या किया जाय?

१६१८ में जब लड़ाई समाप्त हुई थी, तब ... जानता था और राजनीतिज्ञ विश्वास ... थे कि अब कमसे कम सौ साल तक ... न होगी। मि० चर्चिलने कहा था— "... पीढ़ीको इस युद्धका परिणाम निकाल ... भार न उठाना पड़ेगा। शक्तिके इति-... में मानव जातिका ऐसा विस्फोट होने ... कोई उदाहरण नहीं है, जैसा कि जर्मन ... ही ज्वालामुखीके विस्फोटसे हुआ ... चार वर्ष तक जर्मनीने पांच महाद्वीपोंकी ... सेना जल, थल और नभमें केवल सामना ... नहीं किया वरन सफल न होने दिया। ... चार वर्ष उसकी शक्ति, उसके विज्ञान ... क्रोधको ठण्डा करनेहीमें लग गये और ... कार्यको पूरा करनेमें समस्त बड़े राष्ट्रों ... उसके विरुद्ध प्रयुक्त करना पड़ा। पचास ... तक अपरिमित साधन, असीम बलि-... समुद्री नाकेबन्दी उसके विरुद्ध सफल ... सकी। निश्चय ही इतिहासके लिये ... पर्याप्त है।"

... मानवको निराशा हुई। मगर आज ... बदली है। अनुभवने बता दिया है ... पराजित, थका मांदा जर्मनी कुछ ही ... पुनः दुनियाको चुनौती देने लायक हो ... है। इसलिये यूरोप और अमरीकाके ... राजनीतिज्ञ और विशेषज्ञ इस बातको सोचने ... हैं कि ऐसा कौनसा उपाय है, ... जर्मनीको नष्ट किया जा सके और ... फिर इतनी ताकत न प्राप्त कर सके ... दुनियामें पुनः संहार और विनाश लीला ... दे। क्योंकि फील्ड मार्शल स्मट्स ... जर्मन युद्ध-सामग्री उत्पादन मन्त्री ... का कहना है कि यदि तीसरा युद्ध ... सदीमें छिड़ा तो मानवता ही नष्ट ... जायगी, क्योंकि जो संहारक और विना-... वैज्ञानिक शस्त्रास्त्र इस लड़ाईमें नहीं ... गये हैं, वे अगली लड़ाईमें युद्ध छिड़ते ... प्रयोगमें बरते जायेंगे। इसलिये विचा-... युद्धको असम्भव बनानेकी योजना पर ... करनेके लिये सैनफ्रांसिस्को परिषदमें ... हैं।

अहिंसा

इस समस्याके अनेक पहलू हैं और इस ... दृष्टिसे विचार किया जा सकता ... महात्मा गांधीका कहना है कि अहिंसा ... नर-बलि और रक्त-गंगाका बहना रुक ... है। दुनिया मगर गांधीजीकी बात ... को मानने को तैयार नहीं है। उसको ... मनुष्य स्वभावके लिये असम्भव मालूम ... है। क्या मानवमेंसे पशुत्वका सर्वथा ... हो सकता है? क्या तामसिक वृत्तियों ... सर्वथा दमन और नाश सम्भव है? ... व्यावहारिक बुद्धि इस बातको नहीं मानती। इसलिये इस पर ज्यादा विचार करना भी व्यर्थ है। क्योंकि जो तत्व अभी मानवकी समझमें नहीं आया, जिस सिद्धांत का प्रतिपादक और आविष्कारक अभी परीक्षा ही कर रहा है और जो चीज अभी परीक्षण अवस्थामें है, उसको कैसे अपनाया जा सकता है?

साम्राज्यवाद

एक साधारण भारतीयसे पूछिये, जिसकी अमरीकामें आज श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित वाणी बनी हुई हैं—वह यह कहेगा कि जब तक भारतको स्वाधीनता नहीं मिल जाय और साम्राज्यवादका अन्त नहीं होगा, तब तक संसारसे लड़ाईका अन्त नहीं हो सकता। उनकी इस बातसे साधारणतः हरेक विचारक सहमत है। पर आज जिनके पास शक्ति है, जो मानव जातिके भाग्यका निर्णय कर रहे हैं वे इस बातको मानते हुए भी व्यवहारतः इसको नहीं मानते। वे आचार-व्यवहारमें यह मान कर चलते हैं 'वीर भोग्या वसुन्धरा।' वे 'मत्स्य न्याय' में विश्वास करते है। इसलिये शस्त्रास्त्रोंको वे घटानेके, सेनाकी शक्ति कम करनेके और शस्त्रास्त्रोंके बनानेके कारखानोंको बन्द करनेके पक्षमें नहीं हैं। यूरोप और अमरीका शक्तिके उपासक हैं और शक्तिमें विश्वास करते हैं। अतः वे शक्ति द्वारा ही जर्मनीको निःशस्त्र करके पंगु बना देना चाहते हैं। क्या वे इसमें सफल होंगे?

चार भागोंमें

जर्मनीको पंगु बनानेके लिये अनेक योजनायें प्रकाशित हुई हैं। याल्टा परिषदने उसकी एक रूप-रेखा भी उसके आधारपर बना ली है। इसका पहला भाग सैनिक शासन है। जर्मनीकी भौगोलिक सीमा भी कट जायगी। पूर्वीय प्रशिया और साइलेशिया जर्मनीसे अलग कर दिये जायेंगे। आस्ट्रिया भी उससे अलग कर दिया जायेगा। शेष जर्मनी चार भागोंमें विभक्त कर दिया जायगा। इनमें पूर्वमें रूस, वायव्यमें ब्रिटिश, नैऋत्य जर्मनीमें अमरीका और राइनलैण्डके प्रदेशमें फ्रांसकी सेनाका राज्य रहेगा। और इन विभिन्न सैनिक शासकोंके बीच एकीकरण करनेके लिये मित्र राष्ट्रोंकी एक सैनिक कौंसिल होगी, जिसका दफ्तर जर्मनीके किसी केन्द्रीय स्थानमें और बहुत सम्भव है, बर्लिनमें होगा। जर्मनीपर सैनिक शासन स्थापित करके जर्मनीके लिये सैनिक बल बढ़ाना असम्भव कर दिया जायगा।

दोहरी समस्या

यूरोप और अमरीकाके राजनीतिज्ञ इसपर जिस दृष्टिसे विचार करते हैं, वह सर्वथा भिन्न है। वे यह मानकर चलते हैं कि दुनियाको सभ्य बनानेका उनको ईश्वरीय आदेश मिला है, और इसके लिये कुछ देशों को पराधीन रहना चाहिये, जिससे वे मानव सभ्यताके उत्कर्षको बढ़ानेवाले आवश्यक और ऊंचे काम कर सकें। पर सभ्य बनाने का मिशन भी कुछ राष्ट्र अपनी बपौती माने हुए हैं। वे अपने इस अधिकारमें किसी और राष्ट्रकी दखलन्दाजी सहनेको तैयार नहीं हैं और न अपने समक्ष किसी चुनौती देनेवाला देखना चाहते हैं। जर्मनीने उनके इस कार्यमें बराबरीका दावा किया, पर उसको विफल कर दिया गया और आजका जर्मनी हमारे सामने है। जर्मनी पुनः यह दुस्साहस न कर सके, वह इस चैनमें विघ्न न डाल सके, उनकी बराबरीका दावा न कर सके और उनकी लूटमें सहभागी होने का दावा न करे, इसके लिये आवश्यक है कि जर्मनीको नपुंसक बना दिया जाय। इसलिये ब्रिटिश और अमेरिकाके राजनीतिज्ञोंके मनमें जर्मनीपर केवल सैनिक शासन करना ही पर्याप्त नहीं है। जर्मनी राजनीतिक क्षेत्रमें ही पश्चिमी मित्र राष्ट्रोंका प्रतिस्पर्द्धी नहीं है, बल्कि व्यापार, व्यवसाय और उद्योगके क्षेत्रमें भी उनका सफल प्रतियोगी है। जर्मनी जहां आत्म-विस्तार चाहता है, जर्मन साम्राज्यकी महत्वाकांक्षा रखता है, वहां वह दुनियाके बाजारको पार कर ब्रिटेन और अमेरिकाके समान ऊंचे स्टैण्डर्डका जीवन भी व्यतीत करना चाहता है। इसलिये आज मित्रराष्ट्र एक ऐसा अन्तर्राष्ट्रीय संघ चाहते हैं, जिसमें शक्तिका प्रयोग करके आक्रान्ता को ठण्डा करनेकी क्षमता हो। यदि दुनिया के बड़े और शक्तिशाली राष्ट्र इस एक बातमें एक राय हों, एक दिल हों, तो वे आशा कर सकते हैं कि जर्मनी और जापान कमसे कम सदीके लिये उनकी सुख-निद्रा भंग करने में समर्थ न होंगे और उनकी कार्रवाइयोंके कारण इनके सिर दर्द न होगा। पर किसी एक उपायपर क्या विश्वास किया जा सकता है? आर्डिनेंसके विशेषज्ञोंको इस ख्यालसे कि अधिक शक्तिका विस्फोटक बम समयसे पहले न फट जाय दो सुरक्षा उपायकी जरूरत होती है, क्या शान्ति स्थापनाके लिये मित्र राष्ट्र इससे कम सावधान रह सकते हैं? पुराना अनुभव बताता है कि पराजित राष्ट्र एक पीढ़ीके अन्दर पहला मौका मिलते ही युद्ध शुरू कर देता है। पराजय जन्य जख्म को भरनेका महात्मा गांधी द्वारा निर्दिष्ट और मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र द्वारा व्यवहृत उपाय मित्र राष्ट्रोंको पसन्द नहीं है। इस अवस्थामें क्या किया जाय? क्योंकि अगली लड़ाईकी घोषणा पीछे होगी और विमानोंके दल नगरों और कस्बोंको ध्वस्त पहले कर देंगे और बहुतसे नागरिक युद्ध-घोषणा सुननेसे पहले ही इह लीला समाप्त कर देंगे। इसलिये इसका क्या उपाय है? आजसे ३० साल बाद, जब कि आज उत्पन्न हुए बच्चे बड़े हो जायेंगे, कार्य-सूत्र अपने हाथमें ले लेंगे, कटुता और प्रतिशोधकी भावनाका बहुत अंशोंमें अन्त हो गया रहेगा। तब जर्मनी और जापान एक विशेष समस्या न होंगे और उस समय तक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन अपनी शक्ति और अपने सामर्थ्यके बलपर शान्तिकी गारण्टी देनेमें समर्थ होगा।

औद्योगिक पुनर्वितरण

भारतके समान यदि जर्मनीको निःशस्त्र करके हीनवीर्य और नपुंसक बनाना है, तो जर्मनीको भारतके समान ही खेतीहर देश बना देना चाहिये, जैसा कि संयुक्त राष्ट्रके अर्थसचिव मि० मार्गेन्थुने योजना बनायी है। जर्मनीका औद्योगिक बल नष्ट करना आवश्यक है, यदि मित्र राष्ट्र चाहते हैं कि जर्मनी निकट भविष्यमें उनको चुनौती देने का दुस्साहस न करे। यही नहीं यूरोपके उद्योगोंका अत्यधिक पुनर्वितरण करना होगा। जर्मनीके बहुतसे औद्योगिक प्लाण्ट आज ध्वस्त हो गये हैं। प्रश्न यह है कि उनमेंसे कितनोंको पुनः बनाने और चलानेकी इजाजत दी जाय। हवाई उड़ानका जहांतक सम्बन्ध है, जर्मनी और जापानको व्यवसायिक उद्देश्यसे भी विमान बनानेकी इजाजत न देनी चाहिये। मगर इसके लिये कन्वेन्शन द्वारा हवाई उड़ानका नियन्त्रण केवल काफी नहीं है। बुनियादी बात सम्पूर्ण औद्योगिक शक्ति है। पर मित्रराष्ट्रोंके राजनीतिज्ञों में यहां मतभेद है। कुछ इस विचारके हैं कि जर्मनीका आर्थिक जीवन छिन्न-भिन्न और अव्यवस्थित न करना चाहिये।

पर यह मान लेनेपर कि यूरोपमें इस शताब्दीमें तीसरा युद्ध न होने देनेके ख्यालसे जर्मनीका निःशस्त्रीकरण आवश्यक है, यह जरूरी हो जाता है कि जर्मनी औद्योगिक दृष्टिसे भी लड़ाई करनेकी अवस्थामें न रहे। निःशस्त्रीकरणका आर्थिक पहलू सरल नहीं है। विश्व शांतिके लिये अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रवाहका शांतिसे प्रवाहित होना आवश्यक है। पर युद्धको असम्भव बना देनेके लिये जर्मनीका प्रभावशाली निःशस्त्रीकरण आवश्यक है। इसके लिये आर्थिक संतुलनमें यदि नये सिरेसे परिवर्तन करना पड़े तो उसके लिये भी तैयार रहना चाहिये। परिवर्तित आधारपर यूरोपके आर्थिक जीवनको संगठित करनेके लिये तैयार रहना चाहिये। जर्मन-उद्योगोंके पुनर्निर्माणके अभावमें यूरोपमें अव्यवस्था और अराजकता एक दशकके लिये छा जायेगी, यह कहनेवालोंको इसपर सोचना चाहिये कि भावी तीसरे युद्धका छिड़ना ज्यादा खतरनाक और नुकसान देह है, या एक देशकी यूरोपकी अव्यवस्था अधिक भयावह और विनाशक है। इन दोनोंमेंसे जो कम बुरा हो, कम सङ्कटपूर्ण हो, वह हमें चुनना चाहिये।

कागजी नहीं

आर्थिक दृष्टिसे जर्मनीको हतवीर्य करने के लिये जो उपाय अमलमें लाये जावें वे प्रभावोत्पादक होने चाहिये; वे केवल कागजी न हों। स्वामित्व या प्रबन्धका परिवर्तन केवल कागजी न होना चाहिये। जर्मनीके जीवनमें ऐसे मौलिक और क्रान्तिकारी परिवर्तन करनेकी जरूरत है जो स्थायी हों और जिनको कोई डिक्टेटर थोड़े समय बाद बदल न सके। विदेशी स्वामित्व और प्रबन्ध डिक्टेटर अपने एक फर्मान द्वारा एक

क्षणमें रद्द कर सकता है। इसके लिये उसे केवल आंतरिक पुलिसका समर्थन पर्याप्त है। जर्मनीको अनेक हिस्सोंमें बांटना भी लाभप्रद नहीं है। क्योंकि कोई भी हिटलर सदृश शक्तिशाली व्यक्ति अन्तर्राष्ट्रीय सेनाकी कार्यवायी करने और उसके पहुंचनेसे पहले ही विभक्त भागोंको मिलाकर जर्मनीको उनसे युक्त कर सकता है।

जर्मनीको निर्वीर्य बनानेके लिये ऐसे परिवर्तन करने चाहिये जिनको बदलनेमें या रद्द करनेमें सालों लग जायें और वे परिवर्तन ही शान्तिकी गारण्टी हों। इस सम्बन्धमें मोल्टन और मारलियोंका सुझाव है कि जर्मनीकी विद्युत शक्तिका मुख्य स्रोत उसकी सीमासे परे रखना चाहिये। इससे जर्मनीके भावी औद्योगिक जीवनके मुख्य स्रोत पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण रहेगा और आर्थिक दृष्टिसे जर्मनी कमजोर भी न होगा। पर एकाकी उपायकी सफलतामें सन्देह है। क्योंकि लड़ाईमें एक चीज नहीं अपितु सम्पूर्ण औद्योगिक शक्ति देखी जाती है।

वास्तविक निशस्त्रीकरणके लिये जर्मन जीवनके विभिन्न पहलुओं पर चिर काल तक निरीक्षण रखनेकी जरूरत है। पर जर्मनीके आन्तरिक जीवनमें बहुत देर तक हस्तक्षेप करना भी वांछनीय नहीं है। इसका काल जितना थोड़ा हो, उतना ही अधिक अच्छा है। हमारे सामने जर्मनीके दो रूप हैं। एक १९१० का जर्मनी औद्योगिक शक्ति सम्पन्न है, पर उसपर विदेशी सेनाओंका शासन है। दूसरा जर्मनी औद्योगिक शक्तिसे निर्बल है, नवीन अवस्थाओंके अनुसार उसने अपना जीवन बना लिया है और विदेशी सेनाके शासनसे मुक्त है। प्रश्न यह है कि इन दोनोंमेंसे किस तरहका जर्मनी मित्र राष्ट्रोंको अधिक पसन्द है। सैनिक शक्तिके आधार पर किया गया जर्मनीका निशस्त्रीकरण अधिक उपयुक्त होगा या निम्न औद्योगिक शक्तियोंके आधार पर निहत्था किया गया जर्मनी कम भयावह होगा?

सैनिक शासन

कई साल तक जर्मनी पर सैनिक शासन रहेगा। सब जर्मन फैक्टरियां और औद्योगिक सुविधायें उसके नियंत्रणमें रहेंगी; यह मानी हुई बात है। मगर ज्यों ज्यों साल गुजरते जायेंगे, त्यों त्यों जर्मनीके निःशस्त्रीकरणकी समस्या सैनिक न रह कर, अधिकाधिक औद्योगिक और टेकनिकल होती जावेगी। इसका निरीक्षण और इसकी देख भाल सैनिक अधिकारी न कर सकेंगे। यह तो टेकनीशियन ही कर सकेंगे। इनका काम यह भी होगा कि जर्मनीकी जीवन धाराको नए प्रवाहमें प्रवाहित करें। जर्मनीकी युद्ध करनेकी शक्तिके विषयमें बराबर अन्तर्राष्ट्रीय संघको रिपोर्ट मिलनी चाहिये। जर्मनीकी औद्योगिक स्थिति और इसका शस्त्रीकरण पर प्रभाव, इस विषयमें भी रिपोर्टें दी जानी चाहिये। इसका काल ५ से १५ साल तक सम्भव है और इस अवधिमें अन्तर्राष्ट्रीय संगठन शक्तिशाली हो जायेगा। जर्मनीके आन्तरिक जीवनके सम्बन्धमें कठोर सैनिक शासनके बिना रिपोर्ट देना कठिन है। क्या इतने साल जर्मनी पर मित्रोंका सैनिक शासन रहना अनिवार्य मालूम होता है। जर्मनी इस काल में नयी टेकनीक निकाले, उसकी भी परीक्षा करनी चाहिये कि इसका युद्ध कालमें कितना उपयोग हो सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय देख-रेख चिरकाल तक रखना असम्भव है, जब तक कि जर्मनोंका इस कार्यमें सहयोग प्राप्त न किया जा सके। और यह तभी प्राप्त होगा जब जर्मनोंको यह विश्वास हो जायगा कि यह निरीक्षण और देख-रेख उनको नुकसान पहुंचानेके उद्देश्यसे नहीं, अपितु उनके और मानव समाजके हितके लिये की जा रही है। इसके लिये निरीक्षण और देख-रेखका कार्य करने वाले टेकनीशियनोंकी निष्ठा यदि अपने देशके प्रति न होकर अन्तर्राष्ट्रीय संघके प्रति हो, तो यह सम्भव है। क्या ऐसे व्यक्ति मिल सकेंगे जो अपने देशके प्रति निष्ठा न रखकर अन्तर्राष्ट्रीय संघके प्रति रखें?

शस्त्रीकरण कमीशन

स्थायी विश्व शांतिकी स्थापनाके लिये आवश्यक है कि अन्तराष्ट्रीय संघके शस्त्रीकरण कमीशनको इस बारमें सही-सही रिपोर्टें बराबर मिलती रहें कि किस देशमें किस परिमाणमें शास्त्रास्त्र तैयार हो रहे हैं। पर क्या स्वेच्छासे सब राष्ट्र इस प्रकारकी सूचना देना पसन्द करेंगे? क्या अन्तराष्ट्रीय संघ इतना शक्तिशाली होगा कि वह हरेक देशको ठीक ठीक सूचना देनेके लिये बाध्य कर सके?

इससे यह स्पष्ट है कि जर्मनीके हथियार डाल देनेसे ही शान्तिकी समस्या नहीं सुलझ गयी। जब तक देश शक्ति और राष्ट्र भक्तिका यूरोपके जीवनमें सर्वोच्च स्थान है, जब तक मानव समाजका एक वर्ग अन्तर्राष्ट्रीय संघके प्रति विशुद्धसे निष्ठावान नहीं होता और वह विश्व बन्धुत्वमें विश्वास नहीं करता, और सारे विश्वके समस्त देशोंमें नयी पीढ़ीको नये ढंगकी शिक्षा नहीं दी जायगी, तब तक जर्मनीको निःशस्त्र करने और उस पर सैनिक शासन स्थापित करने मात्रसे स्थायी शान्ति न होगी। दूसरे जर्मनीको भी सदाके लिये निर्बल बनाकर रखना असम्भव है। क्योंकि जो आज उसको सत्व शून्य और निर्वीर्य देखना चाहते हैं, उनहीमेंसे कल कोई उसको अपनी स्वार्थ सिद्धिके लिये उसको बलवान और शक्तिशाली बनाना पसन्द करे। इसलिये जर्मनीको निःशस्त्र बनानेके मार्गमें भी अनेक कठिनाइयां हैं और शान्तिका मार्ग आज भी पहलेके समान कण्टकाकीर्ण है।

क्रान्तियां

———०:*:०———

(मूल लेखक—अल्डूस हक्स्ले)

स्पैनीयर्ड ऐसे ही समझे जाते थे कि गुलाम जमीन की पैदाइश हैं, और उन्हें चाहे जैसा सर्फ किया जाय। लेकिन साधारण समयमें, जब कि गुलामोंकी संख्या परिमित रहती थी, गुलामोंके धनी अपनी इस सम्पत्तिके सम्बन्धमें कुछ अधिक चिंता रखते थे। उस समय एक गुलाम कमसे कम एक खच्चर या गदहेके समान समझा जाता था। उन्नीसवीं सदीके औद्योगिक व्यापारी उन विजेताओंकी भांति थे, जिनके हाथ एकदम एक बड़ा भारी गुलामोंका जत्था लग गया हो, जिसपर वे और कमायें। यंत्रोंने उत्पादन बढ़ाया; अबतक जो बंजर जमीन पड़ी थी, वह सहसा सस्ता खाना देने लगी; विदेशों से आयात द्वारा आनेवाले 'नाइट्रेट्स' (खाद्य-द्रव्य) घरके 'सप्लाई' को बढ़ाने लगे। इस कारणसे जनसंख्या बढ़ सकी, और जनसंख्या को एक बार मौका मिलते ही वह इतनी जल्दी बढ़ती है कि फिर बादमें, विशिष्ठ सीमापर पहुंचनेपर वह जल्दीसे कम होने लगती है। गयी सदीके उद्योगपति उस जमाने में जी रहे थे, जब कि जनसंख्या बहुत तेजीसे बढ़ रही थी। गुलामोंकी भरती बेहद मिलती थी। वे खर्चीले बढ़ते अपनी रहन-सहन रख सकते थे, और इस शानबानको और भी भड़कीला खर्चीला वे ऐसी अच्छी तबीयतसे बना सकते थे क्योंकि वे अपने दिल को सब तरहके मलालसे धो लेते कि यह तो भाई, प्रकृतिके ही लौह-नियम है जिसकी फौलादी जंगसे कौन बचा है, (और जिन नियमोंकी मुनादी इस कालके वैज्ञानिक भी देते थे) और ईसाई धर्मकी ओरसे भी यह आधार उन्हें था कि वेतनभोगी गुलाम किसी बेहतरीन दूसरी दुनियामें अपना हिस्सा, अपनी सेवाका सच्चा वरदान पा ही लेंगे। वेग बढ़ रहा था, और बड़ी तेजीसे इस वेतनभोगीसे मरते दमतक काम लिया जा रहा था; क्योंकि कुछेकोंके मरते ही और कुछ उनके रिक्त स्थानकी पूर्ति करनेके लिये सदा हाजिर रहते, एक प्रकारसे वे पूंजीपतियोंसे यह भीख मांगते कि 'हमसे मरते दमतक श्रम लो!' बिलकुल अधपेट, अपोषण-तलके वेतनपर काम करनेवाले इन गुलामोंकी कार्यशक्ति बहुत कम थी; मगर ये गुलाम इतने अधिक थे और इतने सस्ते मिलते थे कि गुणके अभावोंको वे धनी लोग निरी संख्यासे पूरा करा लेते थे।

औद्योगिक क्षेत्रकी यह दशा थी, जब मार्क्सने अपना वह ग्रंथराज लिखा जिसकी दुहाई बहुत दी जाती है, मगर जो सभी जगह बहुत कम पढ़ा गया है। यह 'प्रालितारियत,' मार्क्सके अनुसार, उसी प्रकार शोषित और संत्रस्त था, जैसे कि दास प्रथा-वाले प्राचीनकालमें विजित प्रजाका हाल था। मार्क्सके समकालीन इतिहासका सिद्धांत और भावी औद्योगिक विकासका सिद्धान्त इसी विशिष्ट 'प्रालितारियत' के हमेशा बने रहनेपर आश्रित था, जिससे कि मार्क्स परिचित था। उसने इस बातको सोचा ही नहीं कि इस 'प्रालितारियत' का एक दिन अस्तित्व ही नहीं रहेगा। उसकी दृष्टिसे यह वर्ग सदा ही इसी प्रकार शोषित और निपीड़ित होता रहेगा, जबतक कि क्रांति नहीं होती और उससे कम्यूनिस्ट शासन व्यवस्था नहीं कायम होती।

तथ्योंने उसकी बातोंको असिद्ध किया है। 'प्रालितारियत' जिस मानेमें मार्क्स समझता था, आज नहीं है—या, अगर इसे आप बहुत शीघ्रगामी निर्णय कहें तो वह नहीं-सा हो रहा है—अमेरीकामें, और उससे कम अंशमें औद्योगिक यूरोपमें। ज्यों-ज्यों औद्योगिक और भौतिक सभ्यताका विकास होता जाता है(यद्यपि औद्योगिक और भौतिक एक ही चीज नहीं) 'प्रालितारियत्' का यह परिवर्तन अधिक परिपूर्ण होते जाता है। सर्वाधिक औद्योगिक देशोंमें 'प्रोलेतेरियत' की हालत उतनी बुरी नहीं वह समृद्ध वर्ग है। और बुर्जुआ जीवनसे उसकी जीवनपद्धति मिलती-जुलती है। अब वह शिकार न रहकर, कुछ स्थानोंमें तो स्वयम शिकारी बन गये हैं।

इस परिवर्तनके कारण अनेक और विविध हैं। मानवात्माकी गहराईमें कुछ वह है जिसे हम 'न्यायकी मांग' कहकर बौद्धिक रूपसे प्रमाणित करते हैं। जीवन-व्यवहारमें एक प्रकारका समभाव आवश्यक है, ऐसी अस्पष्ट इच्छा ही वह मांग है उसीको हम समताकी पिपासा, न्यायकी भूख कहते हैं। हमारे भीतर जो समताकी भावना है उसे बाह्य-जगतमें समताका अभाव खटकता है। धीमे-धीमे समूहशः। यह भावना प्रतिक्रियाका रूप ले लेती है।

अनुवादक—प्रभाकर माचवे

——

युद्धरत मानव !

——:०*०:——

मानव रे! तू दानव कराल॥
बर्बर, उद्दण्ड, कटु दण्डपाणि, संघर्ष घोर ताण्डवित काल!
मानव रे! तू दानव कराल॥

तेरी भृकुटी में कालकूट, संहार ध्वंश अघटित विनाश।
दिशि दिशि मंडित महि रुण्ड मुण्ड, शत रक्त कुण्डले मृत्यु पाश।
अतिपात अनर्गल अति प्रचण्ड, भूखण्ड दग्ध महि, महाकाश।
संसृति सशंक, विध्वस्त विश्व, कुहराम चतुर्दिग, प्रलयभास।

निष्ठुर, निर्मम, पाषाण वक्ष, फुंकरित महाफणि वह्नि ज्वाल।
मानव रे! तू दानव कराल॥

तू महानाश, विकृत, विरूप, प्रतिशोध मूर्त्त महि महाभार।
रे रे नृशंस, निर्भीक, उग्र, रणमत्त रुद्र, दुर्दम अपार।
अत्रप प्रगल्भ कर अट्टहास, मर्दित अग जग खण्डराकार।
हुंकार अहर्निश महाघोष, विस्फोट प्रवर्षण द्वार-द्वार॥

उत्थलित उर्व्वि, डगमग गिरेन्द्र, प्रमथित मत्त वारिधि विशाल।
मानव रे! तू दानव कराल॥

—श्री राधेश्याम दीक्षित, 'साहित्यरत्न'

संसारका घटना चक्र

[युद्धका] अन्त कब और कैसे ?

[यु]द्धका अन्त कब और कैसे ? ... [ज]र्मन युद्धकी समाप्तिसे साधारण लोगों [के मन]में ऐसे भाव उत्पन्न होने लगे थे कि [युद्ध]का अन्त निकट है। युद्धके प्रारम्भ [में जन]तामें तरह-तरहकी आशायें बंधायी गयी [थीं और] आशाओंकी पूर्तिके लिये टकटकी [लगा]ये बैठे हैं। पर युद्धका अन्त हुआ नहीं [था]। जिनसे सुननेको मिला था कि [यह अ]न्तिम युद्ध है और इस युद्धमें विजय [का] अर्थ सदाके लिये युद्धका नामो-[निशा]न मिटना है, वे ही आज इस तरहका [प्रचा]र फैलाते नजर आते हैं जिसका परि-[णाम] अत्यन्त भीषण युद्धके सिवा और [कुछ] हो ही नहीं सकता। आखिर इस [का] कारण क्या है? क्या उनका अन्त [हो] गया? यदि नहीं तो फिर युद्धकी [पुनरा]वृत्तिको कौन रोक सकता है? वर्तमान [युद्ध]का दूसरा महात्वपूर्ण भाग अब [स]माप्त है और इसी समय आयरलैण्ड [के प्रधा]न मंत्री डी वेलेराका गर्जन कि [युद्ध]की अभी समाप्ति नहीं हुई है...युद्ध [अ]पने दूसरे पर्वमें प्रवेश कर रहा है [अ]पनी ओर ध्यान आकर्षित कर लेता। [उ]स दिन बम्बईमें भाषण देते हुए श्री [...] देसाईने भी तो कहा है—'यूरोपीय [युद्ध]की समाप्तिने विश्व व्यवस्थामें कोई परि-[वर्तन न]हीं लाय। लक्ष-लक्षमनुष्योंकी कुर्बानीके [बाद भी] साधारणजनतास्वतंत्रताके पुनीत लक्ष्यकी [ओर ए]क डग भी नहीं बढ़ सकी जिसके लिये [युद्ध ल]ड़ा गया है।" फिर युद्धका अन्त [न]िकट दीखता तो इसमें आश्चर्य क्या। [जो] ये कुर्बानियां हुई हैं वह मुख्यतः [साम्रा]ज्यवादियोंके इशारेपर। जनताके उद्धार [के लि]ये जननेतृत्वकी आवश्यकता होगी और [...]निर्माणात्मक युद्ध युद्धका सदाके लिये [अन्त] करनेमें समर्थ होगा।

इटालीके वामपंथी

रोमका एक समाचार है कि इटालीकी [कम्यून]िस्ट और सोसलिस्ट पार्टियोंने श्रमिक [वर्गक]ी पूर्ण एकता कायम करनेके लिये [अपनी श]क्ति एक सूत्रमें संगठित करनेका [निश्च]य किया है। कम्यूनिस्ट नेता पामीरो [टोग्लि]याटोने सोशलिस्ट नेता पेट्रो नेनीसे [...] करनेके बाद यह निर्णय किया है [कि ज]बतक नयी सरकारमें सोसलिस्टोंको [नहीं ल]िया जाता वे भी शामिल होनेको [तैयार न]हीं। सोशलिस्ट नेताने अपने एक [भाषणम]ें साफ-साफ कहा है कि मुख्य बात [यह ह]ै कि सोशलिस्ट और कम्यूनिस्टोंकी [एकता]के बिना कोई भी प्रजातंत्री नीति सफल [नहीं ह]ो सकती। क्या भारतकी समाजवादी [और सा]म्यवादी पार्टियां अपने जीवनम किसी [ऐसे] संगमकी कल्पना नहीं करती? [एक] दूसरेपर कीचड़ उछालनेकी अनि-[ति] और सही नीति द्वारा बीचमें मोटी [दी]वाल खड़ी करनेका प्रयास कहांतक [उचित] है उसे वे ही सोचें जब कि शोषित [जनता]के हितके लिये एक दिन उनका मिलना [अनिव]ार्य है।

बर्लिनमें पुनः चहल पहल

बर्लिन रेडियोने बर्लिनके नये मेयर आर्थर वर्नरकी एक घोषणाको ब्राडकास्ट किया है जिसमें मेयरने कहा है—"लाल सेनाके सैनिक कमाण्डकी रायसे बर्लिनका म्युनिसिपल शासन प्रबन्ध नये सिरेसे गठित हुआ है। मैंने लार्ड मेयरका कार्यभार स्वीकार किया है। मैं बर्लिनके निवासियोंसे नयी म्यूनिसिपल व्यवस्थाको सक्रिय सहयोग देनेका आह्वान करता हूं ताकि नगरमें पूर्व-वत स्थिति कायम हो सके और लाल सेना के कमाण्डके प्रति समुचित उत्तरदायित्वका पालन हो।" एक ताजे समाचारसे ज्ञात हुआ है कि युद्धके समय बर्लिन छोड़कर भाग जाने-वाले नागरिक बड़ी सख्यामें शहरकी ओर शीघ्रतासे लौट रहे हैं। शासन प्रबन्धकी सुविधाके लिये विभाजित बर्लिनके २० जिलोंमें अबतक २००,००० मनुष्योंका नाम बर्लिनके नागरिकके रूपमें दर्ज हो चुका है। बिजलीका प्रबन्ध कुछ ऐसे जिलोंमें हो चुका जो गोलाबारीसे बुरी तरह नष्ट भ्रष्ट नहीं हुए थे। बस, ट्राम और भूगर्भ स्थित रेलवेके कुछ भागोंमें चलने लगी है।

चर्चिल पुनः प्रधान मंत्री

प्रधान मंत्री मि० चर्चिलने गत २६ मई की रातमें अपनी नयी सरकारके मुख्य पदा-धिकारियोंके नामकी घोषणा की है। मि० चर्चिल प्रधान मंत्रीके पद पर बने रहे। उनके अतिरिक्त मि० एन्थोनी ईडेन, सर जान एण्ड-रसन, लार्ड बिवरबुक और एल० एस० एमरी क्रमशः परराष्ट्र सचिव, अर्थ सचिव, लार्ड प्रिवी सील और भारत मंत्रीका पद सुशोभित करेंगे। इस प्रकार राष्ट्रीय सरकारके अन्तके बाद एक बार पुनः ब्रिटेनका शासन सूत्र विशुद्ध टोरी सरकारके हाथमें आ गया जिसका सम्राटकी घोषणाके बाद १५ जूनको अन्त हो जायगा।

अमेरिका पर हवाई हमला

इस महायुद्धमें जिन राष्ट्रोंने भाग लिया है उन्हें हवाई हमलेके कारण धन-जन की गहरी क्षति उठानी पड़ी है। एक अमे-रिका ही ऐसा राष्ट्र है जिसके काफी सैनिक समरमें क्षेत्र तो अवश्य आये पर उसके शहर और नागरिकोंको हवाई हमलेके प्रचण्ड आक्रमणका दुर्दिन नहीं देखना पड़ा है। यों इने-गिने जापानी हवाई जहाजोंके द्वारा अमेरिकाके पश्चिमी तटपर गोलाबारीकी खबरें पहले मिल चुकी हैं पर बहुत दिनोंसे हवाई हमलेका कोई समाचार नहीं सुना गया था। इधर अमेरिकन स्थल और नौ सेनाकी ओरसे प्रकाशित एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि गत कई महीनोंसे अन्दर जापानियोंने अमेरिकाके पश्चिमी भागके जंगलोंमें आग लगानेके लिये कुछ ऐसे स्वयंचालक गुब्बारों-का प्रयोग किया है जो यत्र-तत्र गिरकर फट पड़ते हैं और उनमें भरे विस्फोटक द्रव्य निकट की चीजोंको क्षति पहुंचानेमें समर्थ होते हैं। इन हमलोंका समाचार अब तक गुप्त रखा गया था पर संभावित क्षतिसे बचनेके लिये रक्षात्मक तैयारी करनेके लिये ऐसी घोषणा आवश्यक समझी गयी है। जापान पर जब पांच-पांच सौ अमेरिकन वायुयनोंके हमलेकी इन दिनों खबरें सुननेमें आती हैं तो जापानका यह गुब्बारा बच्चोंका खिलौना सदृश प्रतीत होता है।

हिटलरी रीखका सितारा गुल

मित्र राष्ट्रोंके कंट्रोल कमिशनने फ्लेंसबर्ग पहुंचकर एक नाटकीय ढंगसे हिटलरी सल्त-नतके अन्तिम दुर्ग पर अधिकार स्थापित किया है, ऐसा रायटरके विशेष संवाददाताके एक तारसे अभी-अभी ज्ञात हुआ है। ६ मील वर्गाकार जर्मन अधिकृत अन्तिम भूभाग पर मित्रोंका अधिकार हो गया। जर्मन सरकार और हाई कमाण्डके सभी सदस्य मित्रोंके हाथमें युद्ध बन्दी हैं जिनमें डोनित्स और उनके अन्य सहकारी भी हैं।

फ्रिस्को सम्मेलन

सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनकी ट्रस्टीशिप कमेटीके सम्मुख ट्रस्टीशिपके लक्ष्यकी परि-भाषाको लेकर गतिरोधकी स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। प्रारंभमें चीनने प्रस्ताव किया था कि सभी शासित मुल्कोंको, जिनमें ब्रिटेनके उपनिवेश भी सम्मिलित हैं, पूर्ण स्वतन्त्रता प्रदान करना ट्रस्टका अन्तिम लक्ष्य होना चाहिये। पर साम्राज्यवादी ब्रिटेनके प्रतिनिधियोंको यह बात कैसे अच्छी लगती। ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डलने यह कर इसका विरोध किया कि कितने उपनिवेश ऐसे हैं जो ब्रिटिश राष्ट्र मण्डलसे सम्बन्ध तोड़ना पसन्द नहीं करते। ब्रिटिश प्रति-निधि मण्डलकी दूसरी दलील यह थी कि कितने उपनिवेश स्वतन्त्र घोषित किये जाने पर अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करनेमें असमर्थ साबित होंगे और अन्ततः किसी शक्तिशाली राष्ट्रके पंजेमें फंस जायेंगे। राय-टरके संवाददाताने गत २४ मईको एक समा-चार प्रेषित किया है जिसमें कहा गया है कि उक्त विषयके मुख्यांश पर महान पांचोंमें पूर्ण मतैक्य हो गया है। संवाददाताको इस मतैक्यका समाचार अधिकारी क्षेत्रोंसे ज्ञात हुवा है। हां सिर्फ इसके एक दो साधारण अंशों पर मास्कोके उत्तरकी प्रतीक्षा की जा रही है और ट्रस्टीशीपका सम्पूर्ण मसला दो दिनमें हल हो जानेको है। नये अधिकृत भूभागोंके सम्बन्धमें "स्वायत्त शासन" की जगह "स्वतंत्रता" शब्दका प्रयोग करनेके प्रश्न पर सभी एक मत हो गये हैं पर उप-निवेशोंकी जनताके लिये स्वतंत्रता को लक्ष्य नहीं घोषित किया गया है।

स्टालिनकी प्रशंसा

जापानको अच्छी तरह विश्वास है कि प्रशांत मोर्चेपर यदि रूसने उसके विरुद्ध लोहा लिया तो उसकी खैरियत नहीं। युद्धकी वर्त-मान स्थितिमें अपनी नीति निर्धारित करते समय रूसकी तस्वीर जापानी कूट-नीतिज्ञोंके सामने सदैव चक्कर काटती रहती हैं। वे इस प्रयत्नमें हैं कि रूसको प्रसन्न रखकर ब्रिटेन, अमेरिका और चीनसे खुलकर युद्ध किया जाय। जापानियोंने रूसको प्रसन्न करने के लिये जर्मनीको कोसा, यूरोपीय मित्रोंसे अपना सम्बन्ध तोड़ा और लगे हैं अब रूस की व्यवस्था और मार्शल स्टालिनकी तारीफ करने। उस दिन जापानी समाचार समितिने "टोकियो शिम्बून" में प्रकाशित टाडाशी शिगेमूरीके उस लेखका उद्धरण दिया है जिसमें उक्त लेखकने लिखा है कि "जापानके सम्मुख निराशाजनक स्थिति उत्पन्न हो गयी है पर रूसने जर्मनीसे लड़ते समय ऐसे खतरेसे निकलनेका मार्ग प्रदर्शित कर दिया है। प्रथम महायुद्धमें रूसी परा-जित राष्ट्र थे पर वे ही रूसी आज पंचायती प्रणालीके अन्तर्गत पूर्णरूपसे जागरूक हो चुके हैं।" इस अभूतपूर्व सफलताका श्रेय शिगे मूरीने मार्शल स्टालिनके योग्य नेतृत्वको दिया है। पर मार्शल स्टालिन प्रशंसाकी इन चाटुक्तियोंसे कहांतक प्रसन्न किये जा सकेंगे इसमें सन्देह है। फिर भी वास्तवि-कताके पक्के पारखी मोशियो स्टालिन निकट भविष्यमें ही जापानके खिलाफ युद्धमें कूदने जा रहे हैं, इसकी आशा करना भी समयसे बहुत पहलेकी बात न होगी।

जर्मन हाईकमाण्ड

जर्मन पराजयके बाद भी जर्मनीके नये फुहरर एडमिरल डोनित्स और डोनित्स सर-कारकी बातें सुनकर लोगोंको कुछ आश्चर्य होता है। जर्मनीका फ्लेन्सबर्ग रेडियो अभी भी ताजातरा जर्मन सरकार और जर्मन हाई-कमाण्डकी घोषणायें ब्राडकास्ट किया करता है। इस पेचीदी स्थितिसे तरह-तरहकी शङ्कायें होने लगी थीं। पर इधर पेरिसके एक समाचारमें कहा गया है कि जर्मन सर-कार और जर्मन हाई-कमाण्डके सभी सदस्य युद्धबन्दी बना लिये गये हैं। उन नजरबन्दोंमें ३०० ऊंचे पदस्थ कर्मचारी भी हैं। संभवतः मित्रराष्ट्र डोनित्स सरकारका जर्मन फौजों द्वारा हथियार डालने तथा आत्मसमर्पणकी कुछ शर्तोंका जर्मन सेना और जनता द्वारा पालन करवानेके लिये उपयोग कर रहे हैं।

मित्र फौजोंके सदर मुकामसे प्रकाशित एक विज्ञप्तिमें कहा गया है कि फ्लेन्सबर्ग स्थित जर्मन सैनिक दलके साथ मेजर जेनरल लौवेल रूक्सको जे० आइसन हावरका व्यक्तिगत प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है। उनके साथ-साथ एंग्लो-अमेरिकन प्रतिनिधियोंका एक दल रहेगा जिसे "जर्मन हाईकमाण्डके साथ सुप्रीम कमाण्डरकी कण्ट्रोल पार्टी" की संज्ञा दी गयी है। रूसी भी इसी तरहकी अपनी अलग पार्टी फ्लेन्सबर्ग भेज रहे हैं, जिनसे मिलकर कार्य करनेकी जेनरल रूक्स को हिदायत दी गयी है। इस कण्ट्रोल पार्टी का मुख्य उद्देश्य सुप्रीम कमाण्डके विचारों को जर्मन हाई-कमाण्डपर लादकर मित्र फौजों द्वारा अधिकृत जर्मन भूभागोंमें जर्मन फौजोंपर नियन्त्रणके लिये तदनुकूल कार्रवाई करनेमें जर्मन हाई कमांडका सहारा लेना है। इन उद्देश्योंकी पूर्ति होते ही एडमिरल डोनित्सकी स्थिति साधारण युद्धबन्दीकी तरह हो जायेगी क्योंकि उस वक्त वे किसी काम के नहीं रह जायंगे।

ब्रिटेनका आगामी चुनाव

मजदूर दल द्वारा सहयोग हटा लेने पर इङ्गलैण्डकी राष्ट्रीय सरकारका पांच वर्षोंके बाद अन्त हो गया। जिस मजदूर दलने जर्मन खतरेको दृष्टिगत कर चर्चिल का सहयोग देना आवश्यक समझा था, यूरोपमें विजय होते ही उसने अपनी नीतिमें परिवर्तन करना आवश्यक समझा। यूं तो यूनानके गृह युद्धमें हस्तक्षेपकी अनुचित ब्रिटिश नीतिसे ऊब कर वे अपने नेताओंको मन्त्रिमण्डलसे वापस लौटानेका जोरदार विचार प्रकट करते देखे जाते थे पर जर्मनीका खतरा टलते ही वे अपने विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेको तत्पर हो गये और ब्लैकपुल वाले सम्मेलनमें जापानी युद्ध तक राष्ट्रीय सरकारमें बने रहनेके मि० चर्चिलके अनुरोधको ठुकरा कर उन्हें यह महसूस करनेको लाचार किया कि "ऐसी सह्य स्थिति जिसमें हम एक साथ काम करते अब न रही।" अपना सहयोग अस्वीकार कर देनेके बाद मजदूर पार्टीने यह सुझाव दिया था कि आगामी हेमन्त तक चुनाव स्थगित रखा जाय। पर मि० चर्चिल इस बात पर तुले हुए मालूम पड़े कि येन-केन प्रकारेण जुलाईके भीतर ही चुनाव समाप्त कर लिया जाय। इस जल्दबाजीमें टोरी पार्टीका यह ख्याल है कि जर्मन विजयोल्लास के समय मि० चर्चिल और उनकी टोरी पार्टीको विजयका कारण समझते हुए जनता उनकी ओर ज्यादा झुकेगी। मि० चर्चिलकी इस चालका दूसरा कारण भी है कि अपने प्रतिद्वन्द्वियोंको तैयारीका मौका देना वे नहीं चाहते। इससे यह नहीं समझना चाहिये कि मजदूर दल इतने दिनोंसे बिल्कुल सोया पड़ा था और मि० चर्चिल उन्हें ऊंघता हुआ पायेंगे। ब्लैकपुल सम्मेलनकी अध्यक्षा कुमार विल्कीसनने अपने भाषणमें साफ-साफ कह दिया है कि यदि जुलाईके चुनावको स्थगित करनेके लिये अनुदार दली तैयार न हुए तो मजदूर दल उनकी चुनौती मंजूर करता है।

गत २३ मईका तीसरे पहर प्रधान मंत्री इस्तीफेको स्वीकार कर उन्हें सम्राटने पुनः मन्त्रिमण्डल गठित करनेका भार सौंपा है। उसी रातकी १० डाउनिंग स्ट्रीटकी एक घोषणासे यह भी ज्ञात हुआ है कि आगामी १५ जूनको पार्लमेण्ट भंग कर दी जायगी। इस बीचकी अवधि यानी लगभग तीन सप्ताह के लिये काम संभालनेवाली सरकारके निर्माणमें मि० चर्चिल अस्त-व्यस्त हैं और आशा की जाती है कि मि० चर्चिलकी इस नयी सरकारके सदस्योंका नाम शीघ्र ही घोषित किया जानेको है। विभिन्न चुनाव क्षेत्रोंसे अनुदार दल, मजदूर दल और उदार दलके क्रमशः ६००, ५०० और ३०० उम्मीदवारोंके खड़ा होनेकी आशा की जाती है। चुनावका संघर्ष अत्यन्त जोरदार रहेगा, और संभवतः ब्रिटिश पार्लमेण्टके जीवनकी यह अभूतपूर्व और अत्यन्त दिलचस्प घटना होगी।

लेवर पार्टी

इङ्गलैण्डका अनुदार दल अपनी दकियानूसी नीतिके चलते काफी ख्याति हासिल कर चुका है! इस चुनावमें एक दूसरा दल है लिबरल यानी उदार दल। इसकी शक्ति अनुदार दलके सामने टिकाऊ नहीं साबित हो सकती। इस दलको छोड़ कर सिर्फ मजदूर दल ही ऐसा बच जाता है जिसे टोरी दल से संघर्षमें विजय पानेकी आशा हो सकती है और इस दलके अन्य दो की अपेक्षाकृत प्रगतिशील होनेमें शंकाकी गुंजाइश नहीं है। इसकी परराष्ट्र नीति भारतकी सभी ख्वाहिशोंकी पूर्तिके लिये भले ही यथेष्ट न हो, पर उस दिशामें प्रगतिकी सहायका अवश्य होगी। मजदूर दलकी परराष्ट्र नीतिका उल्लेख करते हुए मजदूर पार्टीके प्रमुख नेता मि० इर्नेस्ट वेवीनने कहा है कि यदि चुनाव में हमारे दलकी जीत हुई तो हमारे दफ्तरके भारतीय विभागमें ताले लग जायेंगे। मि० वेवीनके वक्तव्यका बहुत अंश ऐसा भी है जिन्हें पढ़कर हमें सन्तोष नहीं हो सकता। पर भारतके साथ बरती जाने वाली मौजूदा नीतिके साथ इसकी तुलनात्मक समीक्षाके दृष्टिकोणसे हम इसे सन्तोषजनक न कह कर भी आशाजनक अवश्य कह सकते हैं।

आगामी ५ जुलाईसे चुनाव प्रारम्भ होकर १७ दिनोंमें समाप्त होगा और चुनाव का नतीजा २७ जुलाई तक दुनियाके सामने होगा। हमें उस दिन तक व्यग्रतापूर्ण प्रतीक्षा करनी है और देखना है विजय श्री किस दलको प्राप्त होती है।

नोवेल पुरस्कार विजेताकी दुर्दशा

चीनकी केन्द्रीय सरकारके "दि सेन्ट्रल डेली-न्यूज" ने चीनके प्रथम नोवेल पुरस्कार विजेता ४२-वर्षीय प्रो० चाउ हू चू की वर्तमान दशाका जो वर्णन प्रकाशित किया है वह सचमुच बड़ा दर्दनाक है। इस युद्धजनित स्थितिके शिकार प्रो० चाउ चीनके होवूआन नामक ग्राममें अपनी बीबी और छः बच्चोंके साथ एक टूटी झोपड़ीमें हवा और वर्षाको सहते हुए भूखे और अधपेटे रहकर अपनी दिनचर्या समाप्त कर रहे हैं। एक समय था जब चीनमें विद्वानोंको समाजके अन्य लोगोंकी अपेक्षा कहीं अधिक सम्मान प्राप्त था। उसी चीनका एक विद्वान देशके एक कोनेमें पड़ा है और उसकी कोई खबर लेनेवाला नहीं। उसकी प्रतिभा, उसका प्रकाश विश्वको आलोकित करके भी अपनी छोटी कुटियाको एक चिरागसे भी प्रकाशित नहीं कर सकता। सरस्वती और लक्ष्मीके बैरने विश्वकी उन्नतिमें कैसी भीषण रुकावट पैदा कर रखी है, उसका इससे भी अधिक प्रत्यक्ष प्रमाण होगा कोई दूसरा? जिसकी आवश्यकता सर्वोपरि है वही अभावमें दाने-दाने को मुहताज हो रहा है। जिसने ... को अनमोल रत्न प्रदान किया, भिखारीकी तरह पड़ा-पड़ा संसारके ... ओर टुकुर-टुकुर ताक रहा है—इसलिये कि उसे कोई हाथ उठाकर कुछ दे दे, ... दृष्टि तो अन्याय और पक्षपात ... देख कर बगावतकी आग उगलना ...

युद्ध मोर्चेपर

...र्मा आक्रमणके प्रथम अध्यायमें मित्रों ...ल्दी विजय हाथ लगी थी। पर अब ...सकी अप्रगतिके लिये काफी कीमत ...नी पड़ रही है। टांगूके पूर्व शान स्टेट ...ानियोंको रक्षात्मक युद्धके लिये उप- ...स्त जापानी फौजें डट गयी हैं और ...नियोंका जबर्दस्त प्रतिरोध कर रही ...त्रोंने बेसिन नदीकी धाराके प्रतिकूल ...की ओर बढ़कर बेसिन बन्दरगाह पर ...अधिकार कर लिया है। बर्माके इस ...पूर्ण बन्दरगाहको, जिसका नम्बर ...बाद है, जापानियोंने बिना युद्ध ...ही खाली कर दिया और मित्रोंको एक ...गोला नहीं दागना पड़ा।

...र इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है ...कि ऐसा जान पड़ता है कि मण्डाले- ...के हा:नके पश्चिम स्थित बर्माके ...को खाली कर जापानी फौजें इसके ...गमें हटना चाहती हैं।

...र चीनमें मित्रोंकी सफलताकी खबरें ...ली हैं। चीन समुद्रतटपर स्थित फोचूके ...गरपर मित्रोंने पुनः अधिकार कर लिया ...और इस विजयको अमेरिकामें अत्यन्त ...दिया गया है पर चीनकी केन्द्रीय ...र समितिने फोचूकी विकट भौगोलिक ...देखते हुए उसके महत्वके अतिरंजित ...को स्वीकार नहीं किया है।

...नके चुङ्किंगस्थितसंवाददाताको ऐसी ...ना हुई हैं जिनसे जापानियों द्वारा ...क्षिण-पूर्वी अञ्चलको खाली करनेकी ...का प्रकट होती है। दक्षिण-पूर्व चीन ...यह हालत है वहां उत्तर चीनमें जब- ...पानी जमाव और किलेबन्दियोंकी ...ें मिल रही है।

...न्य मोर्चेपर पिलिपाइन्समें ओकि- ...राजधानी नाहामें घमासान मचा ...ती नदीको दो जगहोंमें पार कर ...र करती हुई अमेरिकन सेनाके ...में नयी फौजें उतारी गयी हैं। पर ...और दलदलके कारण उन्हें टैंकोंके ...वंचित हो जाना पड़ा है। धुआं- ...बारीके बीच अमेरिकन फौजोंको ...पहुंचानेके लिये नदीपर पुलोंका ...ना है। जापानी वायुयान इस ...लेकर काफी हिस्सा ले रहे हैं और ...नाके निकटस्थ एक द्वीपपर घेरा ...री अमेरिकन फौजोंपर भीषण गोला- ...रहे हैं।

...जापानके औद्योगिक केन्द्रोंपर अमे- ...ी बेड़ोंका प्रचंड आक्रमण भी प्रारंभ ...है और भीषण क्षतिके बावजूद ...शक्तिके ह्रासका प्रत्यक्ष प्रमाण ...ीं मिलता। जापानको पूर्णरूपसे ...करनेके लिये ये हमले ही यथेष्ट ...सकते। कोई जापानी सर- ...सैनिक विशेष उस समय तक आत्म- ...र्पणको प्रस्तुत नहीं होगा जबतक ...जापान द्वीपपर या जापानी अधिकृत ...भूभागपर युद्ध करनेकी उसकी ...शक्तिका विनाश नहीं कर दिया

मणिरामपुर ट्रेन दुर्घटना

गत २१ मईकी रातमें लगभग १० बज कर ३० मिनटपर हवड़ा-बर्दवान कार्ड लाइन (ई० आई० आर०) पर मणिरामपुर स्टेशनके निकट भीषण ट्रेन दुर्घटना हो गयी जिसमें १२ की तत्क्षण मृत्यु हुई और करीब ६० घायल हुए। इन घायलोंमें हवड़ा जेनरल अस्पतालमें दो की मृत्युका समाचार भी ज्ञात हुआ है। अबतक इस दुर्घटनाके सम्बन्धमें जांच पड़ताल होना बाकी है पर इतना तो निश्चय है कि जिन अभागोंकी जानें गयीं उनके लिये वे जिम्मेदार नहीं, बल्कि दूसरे हैं। जिनकी लापरवाहीका यह दुष्परिणाम है उनके अभियोगोंकी ठीक-ठीक जांच हो और ऐसी दुर्घटनाओंकी पुनरावृत्ति को रोकनेका समुचित प्रबन्ध हो, यही हमारी मांग है।

कस्तूरबा स्मारक कोष

कस्तूर बा स्मारक कमेटीकी कार्य-कारिणी कमेटीने पांच दिनोंकी लम्बी बैठकके बाद गत २१ मईको अपना कार्यक्रम समाप्त किया है। कमेटीकी उक्त बैठक महाबालेश्वर में हुई है जहां महात्माजी इन दिनों ठहरे हुए हैं। कमेटीने गुजरातमें ग्रामोद्धारके कार्यको सुव्यवस्थित ढंगसे संचालित करनेके लिये ९८ हजार रुपयेकी अनुमति प्रदान की है जिस पर विधिवत ट्रस्टी बोर्ड द्वारा स्वीकृतिकी मुहर लगना आवश्यक होगा। प्रान्तके कार्यकर्ताओंको चार मासकी शिक्षा देनेके लिये शिक्षण-शिविरोंके उद्घाटन तथा व्ययके लिये २५ हजार रुपये देनेका निश्चय किया गया है। नेलोर जिलान्तर्गत पालापेडर ग्राममें लड़कियोंके लिये एक होस्टल और पाठशालाके संचालनार्थ ३६३० रुपये दिये गये हैं। अनन्तपुर जिलान्तर्गत पदभुदगर नामक बस्तीमें शिशुशालाकी स्थापनाके लिये ३८० रुपये प्रदान किये जानेकी बात है। कर्णुल जिलेके किसी ग्राममें एक शिशुशालाकी स्थापनाके लिये २२०६ रुपये स्वीकृत हुए हैं। इसी तरह प्रान्तके विभिन्न भागोंमें जनोपयोगी संस्थाओंकी स्थापना और उनकी देख-भाल और निरीक्षण आदिके लिये निश्चित रकम खर्च करनेकी योजना बनायी गयी है। किसी भी योजनाको कार्यान्वित करनेके लिये दक्ष कार्यकर्ताओंकी अत्यन्त आवश्यकता है और बहुधा योग्य कार्यकर्ताओंके अभावमें वांछित फलकी प्राप्ति नहीं होती। अतः कार्यकर्ताओं की शिक्षाका प्रबन्ध करना आवश्यक है। बा कोषकी कार्यकारिणीने इस आवश्यकता के महत्वको समझते हुए शिक्षण शिविरके लिये २५ हजार रुपयेकी स्वीकृति दी है। यदि निस्वार्थ और सुयोग्य कार्यकर्ता तैयार किये जा सके तो सफलता निश्चित है!

अष्टी-चिमूर मामलेके अभियुक्त

अष्टी और चिमूर हत्याकाण्डके अभियुक्तोंकी ओरसे नियुक्त सफाईके वकील मि० बी० जे० घेटको मध्यप्रान्त और बरारकी सरकारके न्याय विभागके मन्त्रीने सूचित किया है कि यदि लण्डनके सोलीसिटरके पास ७ जूनके पहले उक्त मामलेकी प्रिवी कौंसिलमें अपीलके लिये आवश्यक कागजात भेज दिये गये तो अभियुक्तोंकी फांसी स्थगित कर दी जायगी। यह समाचार इस अत्यन्त आशाजनक है। अब मामलेकी सफाईसे सम्बन्धित व्यक्तियों को पुनः एक बार अपनी मुस्तैदी दिखलानी है। सम्पूर्ण देश उनकी सफलताके लिये परमात्मासे प्रार्थना कर रहा है।

मि० आशफ अलीकी रिहाई

आखिर भारत सरकारको परमात्माने सद्बुद्धि दी। मि० आसफ अली रिहा कर दिये गये। उनकी रिहाईके सम्बन्धमें प्रकाशित सरकारी विज्ञप्तिसे ज्ञात होता है कि उनका स्वास्थ्य काफी गिर गया है और नजरबन्दीके जीवनमें उनके स्वास्थ्यमें सुधार की कोई आशा न देखकर सरकारने ऐसा निश्चय किया है। पर सरकारकी इस न्याय बुद्धिकी हम तभी खुल कर प्रशंसा कर सकते हैं जब कम-से-कम अन्य बन्दियोंकी रिहाई की भी घोषणा होती जो अपने जेल जीवन में तरह-तरहके घातक रोगोंके शिकार होरहे हैं। आज भी ऐसे लोगों की संख्या कम नहीं है जो यक्ष्मा जैसे रोगों से आक्रान्त हो अस्पतालकी खाट पर संगीनधारी पहरेदारोंके निरीक्षण और नियन्त्रणमें मौतका इन्तजार कर रहे हैं। जेलकी गन्दी कोठरियां, वहांका सीमित वातावरण और रोगियोंकी चिकित्साका दिखावटी इन्तजाम उनके जीवनके गिने हुए दिनोंको छांट-छांट कर कम करता जा रहा है, क्या सरकार इसे नहीं समझती? बीमारियोंसे आक्रान्त इन अस्थि पिंजरोंसे उसे कोई खतरा भी तो नहीं है। क्या हम आशा करें कि सरकार इनके जीवनका मूल्य समझते हुए खुली और स्वास्थ्यप्रद वायु सेवनका इन्हें मौका देगी।

ट्रिएस्टीका मसला

ट्रिए-टीका विवादग्रस्त प्रश्न सुलझता नहीं जान पड़ता है। ट्रिएस्टीकी सड़कोंपर युगोस्लाव सेनाके सामूहिक परेडका समाचार कई दिन पहले मिला था और शहरपर युगोस्लाव नियंत्रण पूर्ववत कायम है सिर्फ युगोस्लाव सेना द्वारा इसोन्जाके पूर्व स्थित पहाड़ी अञ्चलोंमें मित्रसेनाके प्रवेशको स्वीकार करना सम्बंधित समस्याके समाधानका कोई ठोस प्रमाण नहीं है। आठवीं सेनाके साथ चलनेवाले रायटरके विशेष सम्वाददाताने सूचित किया है कि ट्रिएस्टीकी समस्याके अस्थायी समाधानके लिये मार्शल टिटोने निश्चित प्रस्ताव उपस्थित किया है। इसके पूर्व लन्दन स्थित रायटरके कूटनीतिक सम्वाददाताका समाचार था कि ब्रिटिश, अमेरिकन और युगोस्लाव सरकारके बीच इस सम्बन्धमें वार्तालाप जारी है और इसके समाप्त होनेमें कुछ समय लगेगा। किसी काम चलाऊ समझौते से थोड़े समयके लिये इस मामलेको स्थगित भले कर दिया जाय पर इसका वास्तविक समाधान अभी निकट भविष्यमें नहीं होने जा रहा है ऐसा मालूम हो रहा है।

सीरिया और लेवाण्टकी समस्या

यद्यपि इस महायुद्धके साझीदारोंमें अधिकांश अपने साम्राज्यकी रक्षाके लिये युद्धकुण्डमें कूदे थे पर उन्हें अपनी असफलतासे घबराहट होने लगी है। इनका साम्राज्य अपनी पुरानी और कमजोर बुनियादपर खड़ा होनेमें असमर्थ है और वे जोंककी तरह लिपटकर उसकी रक्षा करना चाहते हैं। आजका फ्रांस साम्राज्यवादी जीवनके इसी जर्जर, युगसे गुजर रहा है। यद्यपि उसके भीतर ही भीतर ऐसी शक्तियां प्रबल हो गयी हैं जिनका उद्देश्य हर इन्सानके लिये काम और भरपेट अन्न प्राप्त करना है, पर फिर भी सतहपर अभी पुरानी मनोवृत्ति तैर रही है। जिस फ्रांसके सम्बन्धमें प्रकाशित समाचारोंसे ज्ञात होता है कि वहां वामपक्षियोंका प्रभुत्व खूब बढ़ गया है, उसी देशकी सेना आज सीरिया और लेवाण्टकी राष्ट्रीय सरकार और वहांके राष्ट्रीय आन्दोलनको कुचलनेमें लगी है। उस राष्ट्रीय सरकारकी राय या जानकारीके बिना ही फ्रांसीसी सेना वहां उतारी गयी है और कहा जाता है कि सुदूरपूर्वमें सामरिक प्रगति में सहायताके उद्देश्यसे ऐसा किया है। विरोध प्रदर्शनके लिये सर्वत्र हड़तालें जारी है। विद्यार्थियोंका दल सड़कोंपर परेड करता हुआ राष्ट्रीय सरकारके दफ्तरोंमें पहुंचकर राष्ट्रीय सेनामें भरती होनेकी अभिलाषा प्रकट कर रहा है ताकि फ्रांसीसी सेनाका सामना किया जा सके। उधर अलजियर्समें अरब स्वतन्त्रताका आन्दोलन जोर पकड़ रहा है। फ्रांसीसी अधिकारियोंने सेटीसे समुद्रतट तक २० मीलकी लम्बाईमें मार्शल ला जारी कर रखा है।

लगभग ६ हजार अरबोंके हताहत होने की खबरें मिल चुकी है। बस्तियोंपर हवाई जहाजोंसे गोलाबारीका समाचार भी सुना जा रहा है यद्यपि फ्रांसीसी सरकारका कहना है कि सिर्फ (आतङ्क पैदा करनेके उद्देश्यसे) प्रदर्शन करनेके लिये ही इन वायुयानोंका उपयोग हो रहा है।

सीरिया और लेवाण्टकी सरकारने अरब लीगसे सहायताकी मांग की है। सभी अरबी स्टेट इसस्थितिका गौरसे निरीक्षण कर रहे हैं। पर फ्रांस अपनी नीतिपर दृढ़ मालूम हो रहा है और निकट भविष्यमें किसी समझौतेकी आशा नहीं दीखती। किसी किस्मकी गलतफहमी पैदा न हो जाय, इस उद्देश्यसे दक्षिणी लेवाण्टसे ब्रिटिश फौजें हटा ली गयी हैं। पर बाकी हिस्सेमें वे पूर्ववत खड़ी-खड़ी तमाशा देख रही हैं। मित्र राष्ट्रोंके मौनावलम्बनसे ऐसा सन्देह हो रहा है कि फ्रांस की इस अनुचित कार्रवाईका वे निष्क्रिय समर्थन कर रहे हैं। याल्टा सम्मेलनके बाद प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलने कहा था कि ब्रिटेन इन दो प्रजातन्त्री राज्योंकी स्वतंत्रता का सम्मान करना चाहता है पर फ्रांसके लिये खास स्थान सुरक्षित रखनेके लिये भी वह अच्छी-से-अच्छी कोशिशें करेगा। इससे तो ब्रिटेनकी नीतिमें और भी सन्देह बढ़ जाता है। प्रधान मन्त्रीने यह भी आश्वासन दिया था कि पुनः सीरिया या लेवाण्टमें फ्रांसकी जड़ गाड़नेका उनका इरादा नहीं है, पर इन दो राज्योंकी स्वतन्त्रताका सम्मान और फ्रांसके लिये विशेष स्थान कायम रखनेका कार्य एक साथ ब्रिटेन किस तरह सम्पादित करता है वही देखना है।

व्यापार समाचार

—

गल्ला

लाही बड़ा दाना यू० पी० १६) सेती यू० पी० १८॥) लोटनी यू० पी० १७॥) गव्वर यू० पी० १७॥) राई तोरा यू० पी० १५॥।) कजली यू० पी० १६) कजली सी० पी० १६) लोटनी पंजाब १७) राई पंजाब १६।) तोरा पंजाब १६॥।) राई सिन्ध १४॥) तोरा सिन्ध १५॥) सेती सिन्ध १६) महुआ बीची १३।) पोस्ता दाना २२॥) तिल सफेद १८) अरहर बिहार ९।) अरहर बङ्गाल ९) चना मोकामा १०।)चना बङ्गाल ८) ८।) चना पंजाब ९) १०) मटर सफेद १२) काली १२) हरा १३) पैरा ७)८) उर्दकाला ९।) उर्दहरा ९॥) ९॥।) मूंग कानपुर १२) मूंग भिवानी १२।) दाल धोआ १६॥) मूंग पंजाब १२) अरहर दाल नं० १, १५) १६) अरहर दाल नं० २, ११) १३)रेढ़ी बी०एन० डब्ल्यु १४॥) रेढ़ी भागलपुर १४॥) मसूरी पटना ११) मसूरीछांटी १४) १५।) बङ्गाल ९।) खेसारी बङ्गाल ७) ७।) बड़ा दाना ८) खेसारी छोटा दाना ८) जौ मोटा दाना ६) जौ पतला दाना ४) ज्वार सफेद १०) ज्वार लाल ९) बाजरा काला ४॥) बाजरा सफेद ४॥।) मोठ ८॥) मकई ८) ।

सोना चांदी
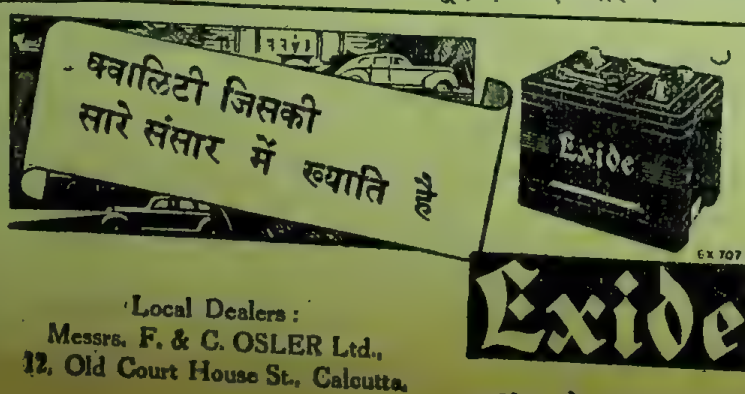
सोना पाटला ७५॥), गिन्नी ५०॥।), सोना तारा ७५॥।), चांदी तैयारी १३३॥।) चांदी वादा १३१॥।=)

कपड़ा

केमन सुपरफाइन ७७), आर्डिनरी सुपरफाइन ७५), स्टण्डर्ड वैन ७३), टी०एन० रेडी ७१), १२ परसेण्ट टी० एन० ७०), आई० टी० एन० ७०), नं० २ कुसमी ६४), बैसाखी ९३), डाक न्यू आसाम ४५।)

—

बिक्री

मुगमामें एक सौ बीघा कोयलेकी सालीड जमीन बिकाऊ है। जमीनके एक तरफ ३० फीट और दूसरे दो तरफ १०-१० फीट कोयलेका दावा है। उक्त जमीन रेलवे साइडिंगपर स्टेशनके समीप है। इच्छुक खरीदार पत्रव्यवहार करें:—

बी. ए. देशाई, कोल मर्चेण्ट
और कोलियरी एजेण्ट पो० आ० मुगमा (मानभूम) ई० आई० आर०।

विश्वमित्र
THE VISHWAMITRA
२८—२३ कलकत्ता ४, जून, १९४५, Calcutta, JUNE. 4, 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

हवाई फोटोका चमत्कार

प्रकृतिके सामने मनुष्यको किंकर्त्तव्य ...मूढ़ हो जाना पड़ता है किन्तु आजका ...य लाचारीके सामने हाथ पर हाथ धर ...बैठना पसन्द नहीं करता। वह लगातार ...कोशिशें करता है और हारते-हारते भी जीत ...जाता है। इसका कारण है उसकी सबल ...ता। पुल अथवा बांध बांधते या नहर ...निकालते समय नदीके किनारोंका सूक्ष्म ...निरीक्षण करना पड़ता है। पुलके लिये ऐसी ...जगह तजवीज करनी पड़ती है जो कम चौड़ी, ...गहरी और मजबूत चट्टानोंसे भरी हो, जहां ...किसी ओर पानी न जमा हो सके और न ...पानीका दबाव बढ़ सके। पर बांधके लिये ...ऐसी जगह चाहिये जहां पीछेकी ओर पानी ...का अधिकसे अधिक दबाव हो। इसे जानने ...के लिये समतल जमीनसे देखने पर कुछ भी ...पता नहीं चलता किन्तु वायुयान द्वारा ...आसमानसे देखनेमें सारी बातें एक ही ...में दिखलाई पड़ जाती हैं। अतः ऐसे ...कामोंके लिये अब वायुयान द्वारा चित्र ...लेकर ही सभी बातोंका पता लगा लिया ...जाता है और तब कहीं पुल, बांध या नहर ...आदिकी व्यवस्था की जाती है।

हवाई जहाजसे खेती

...वर्तमान युद्धके दरम्यान कितने ऐसे अद्भुत ...आविष्कार हुए हैं जिनमें अधिकांश शांति-...कालके लिये बिल्कुल अनुपयोगी सिद्ध होंगे। ...बड़े बड़े टैंकोंको ही लीजिये, सार्व-...जनिक पार्क सजानेके सिवा इनका ...और कौनसा उपयोग हो सकेगा! यह ...जान कर अत्यन्त खुशी होगी कि पेनि-...सिलवानियाके एक विशेषज्ञने विशालकाय ...हवाई जहाजोंको खेतोंमें बीज बोनेके लायक उप-...योगी बनानेका ढंग निकाला है, जिससे ये ...बेकार न होने दिये जायंगे और इस ...से समय, श्रम तथा अर्थकी बचत भी होगी। ...इस अनुसन्धानको देखते हुए इसकी ...कल्पना की जा सकती है कि एक दिन ...टिड्डियोंसे फसलकी रक्षा करनेमें इन वायु-...यानोंका सहारा लिया जायगा और बड़े-...बड़े मैदानोंकी रखवाली करनेके लिये ...थोड़ीसी तादाद काफी होंगे।

मधुसंचय
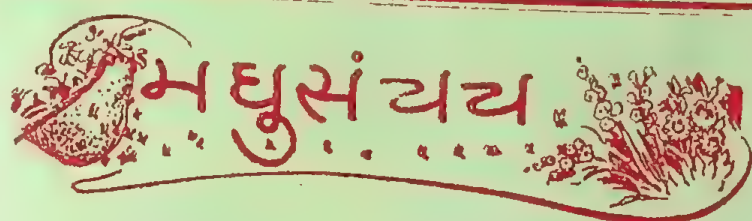
एक सी ६ बहनें

भारतीय सहायक दलमें सिंधी परिवारकी चार बहनें काम कर रही हैं। सिंधमें भर्ती होनेवाली ये प्रथम महिलायें हैं। रामचंदानी और वास्वानी विमान वायरलेस आपरेटर हैं, किलियन वास्वानी विमान सेनामें सामान-की असिस्टेंट हैं तथा दुर्गा वास्वानी साधा-रण क्लर्क हैं। ये लड़कियां एक ऐसे परिवार से आ रही हैं जो पुराने विचारोंके मानने वाले हैं। इनमें सबसे बड़ी लड़की की अवस्था २४ वर्ष है। दो छोटी बहनों ने भारतमें कहीं पर भी काम करनेका भार लिया है। ये चारो बहनें एक दूसरेसे काफी मिलती-जुलती हैं तथा खाकी वर्दीमें बहुत चुस्त और फुर्तीली मालूम होती हैं।

नाजीवाद और सैनिकवादसे सम्बन्ध रखनेवाली ये किताबें एचेन (जर्मनी) के स्कूलोंसे हटायी जा रही हैं—जहां अब अमेरिकन फौजी सरकार द्वारा डा० हेनरिच बेकरकी देखरेखमें नयी शिक्षा-योजना कार्यान्वित होने जा रही है।

मछलीके आकारकी लड़की

आगरेके तोताका तालाब मुहल्लेमें २३ अप्रैलके दिन अछूत स्त्रीके गर्भसे मछलीके आकारकी पुत्री उत्पन्न हुई। वह लगभग ३॥ घण्टे तक छटपटा कर मृत्युको प्राप्त हो गयी।

भाप द्वारा मिश्री बनाना

जिला नासिकके रावल गांवमें स्थित रावलगांव शूगर फार्म लि० में मिश्री अनु-संधान योजनाके अन्तर्गत किये गये परीक्षणों के फलस्वरूप भापका उपयोग करके मिश्री बनानेकी एक विशाल मशीन तैयार कर ली गयी है। पुरानी प्रणालीकी अपेक्षा नयी प्रणालीमें नीचे लिखी सुविधाएं हैं

(१) ईंधन कम खर्च होता है, (२) परिश्रम और समयकी बचत होती है; (३) अधिक मिश्री तैयार होती है, (४) तैयार मिश्री अच्छी किस्मकी होती है, (५) हानि कम होती है, (६) उत्पादन शक्ति बढ़ जाती है और (७) काम सरलतासे और निरन्तर चलता रहता है।

खादी बनाम अन्य ग्राम उद्योग

गांधीजीसे एक सज्जन कहते हैं—जैसे आपने खादीको कहा है ऐसे ही अन्य ग्राम-उद्योगके बारेमें कहिये।

गांधीजीका जवाब—खादी एक ही व्या-पक हाथ उद्योग है। दूसरे मैंने इसे सूर्यकी उपमा दी है, अन्य उद्योगोंको ग्रह की। सूर्य तो एक ही है, ग्रह अनेक हैं और नये मिलते जाते हैं।

आज तो इतना करो—कागज, चक्कीका आटा, हाथ छंटा चावल, घानीका तेल, जिंदा मक्खीसे शहद, मृत जानवरका चमड़ा और उसकी चीजें जो गांवोंमें बनती हैं, ग्राम छड़ी, ग्राम बुतांण, ताड़का गुड़ इत्यादि।

सच्ची बात तो यह है कि खेती तो देहातोंमें ही होती है। इसलिये अनाज और फल और उसमेंसे बनती चीजें भी देहाती हो सकती हैं। सारांश जब देहात समृद्ध होंगे तब शहर देहातपर निर्भर रहेंगे। समझो कि दुथपेस्ट शहरी है, दतुन देहाती है और बेहतर है। दुथ पाउडर शहरी; मसीन या खाक, या नमक देहाती। इसी तरह सब मन देहाती होगा। असंख्य चीजें देहाती मिलेंगी। (ग्राम उद्योग पत्रिका)

चलती चक्की

जानते हैं ?

निनानबे प्रतिशत सिनेमा आपरेटर काठीकी भांति दुबले-पतले और लम्बे होते हैं!

* * * *

पचहत्तर प्रतिशत क्लारियोनेट बजानेवाले भी दुबले होते हैं। मोटे अगर रहते हैं तो बजाना सीखनेके पहले। ज्यों-ज्यों निपुणता आती जाती है, मुटाई छीजती जाती है!

* * * *

भंडार सुपरिण्टेण्डेण्ट संयोगसे ही दुबला होता है। मोटर बसके ड्राइवरका दुबला होना आश्चर्यका विषय है।

* * * *

सत्तर प्रतिशत मैनेजर साहब ठिगने होते हैं और सत्तरमें पचासकी खोपड़ी गंजी होती है।

* * * *

साठ प्रतिशत गृह-कलहका आरम्भ भोजनकी थाली पर बैठनेके समय या भोजन के बहाने हुआ करता है।

* * * *

पचास प्रतिशत व्यक्ति लीवरकी तरह-तरहकी शिकायतोंसे पीड़ित इसलिये हैं कि छुटपनमें दुलारसे उन्हें दादी या नानी खुराकसे ज्यादा खिला दिया करती थीं।

* * *

धोखा-धड़ीका ही नाम दुनिया है और सबसे ज्यादा धोखा भगवान्‌को दिया जाता है!

* * * *

सुहागरात यदि शनीचरके दिन पड़ती है तो पति-पत्नीका जीवन सावन-भादो बना रहता है।

* * * *

निनानबे प्रतिशत संगीतज्ञों तथा संस्कृत-विज्ञोंकी हस्तलिपि अच्छी नहीं होती।

* * * *

नजर अधिकतर शामको ही लड़ा करती है, किन्तु, भरी दोपहरीको लड़नेवाली नजर चिरस्थायी होती है!

* * * *

यदि हिसाब बैठा कर देखा जाये तो, आदमी पीछे चावल, दाल और आटासे ज्यादा खर्च सब्जी और मसालेमें होता है!

* * * *

लगातार धक्के-पर-धक्के खाने पर भी जब सरकारी साड़ीका एक पल्ला भर ही हाथ आ सके तो "शान शौकत" की रक्षाके लिये आस-पासके लोगों और दूकानदारको यह सुना देना आवश्यक है कि इसे...इसे भला हमारे घरकी औरतें पहनेंगी?—इसे तो नौकरानीके लिये खरीद रहा हूं।

* * * *

रामनामा ओढ़ कर सोनेसे पाप-कर्म दुःस्वप्न बनकर परेशान नहीं किया करते और नींद मजेकी आती है!

* * * *

माघ महीनेमें कर्म काण्डीको केवल चंदन का टीका लगा लेने भरसे ही स्नानका फल मिल जाता है!

* * * *

किसी भी उपायसे जब नपुंसकताका निवारण न हो सके तो अपनेको बाल ब्रह्मचारीके नामसे घोषित कर देनेसे कल्याण होता है।

* * * *

छोटा नागपुरके जमींदार लोग 'लाला-साहब' कहलाते हैं। किन्तु इससे यह समझना भूल होगी कि रेड-इण्डियनोंकी तरह लाल या विलायती साहबोंकी भांति सफेद होते हैं। नजदीकसे देखने पर, वे हमारे आप के जैसे ही निरे काले हिन्दुस्तानी हैं।

—'खुशदिल।"

साहित्यकार और सिनेमा

(लेखक—श्री राधाकृष्ण)

इधर बहुत दिनोंसे अमृतलाल नागरको नहीं देखा। जमाना गुजर गया, वे बम्बईमें हैं और सिनेमामें कहानियां लिखते हैं। अबकी 'हंस' में प्रकाशित उनके एक लेखने मुझे आकर्षित किया। मध्यवर्गीय कलाकार और सिनेमा नामका उनका लेख हंसमें प्रकाशित हुआ है।

नागरजीने बड़ी तीव्रतासे इस बातका अनुभव किया है कि आधुनिक मध्यवर्गीय कलाकार सिनेमासे बहुत ही अधिक प्रभावित हैं। आपने यह भी लिखा है कि नौसिखिया लेखक सम्राट लेखकोंकी 'कार्बन कापी' है। हालांकि इसके लिये उन्होंने 'हिजमास्टर्स वायस' शब्दका व्यवहार किया है; मगर उस नामके पेटेंट लेबिलपर जिस जानवरकी तस्वीर छपी रहती है उस रूपमें मैं न कलाकारोंकी कल्पना कर सकता हूँ और न सोच ही सकता हूं। मगर सम्राट नामकी चीज तो स्वर्गीय प्रेमचन्द्र और पूजनीय पं० हरिऔध तकही खत्म है। अबका साहित्य-संसार अराजकवादकी दशासे गुजर रहा है। या, वैशाली में पहुंचकर जैसा फाहियानने देखा था, प्रत्येक व्यक्ति सम्राट है। जो भी हो, अमृतलाल नागरने एक नयी दिशाकी ओर संकेत किया है। यह बात साहित्यिकोंको एक बार विचारनेके लिये वाध्य करती है।

सिनेमाका कोई खेल तैयार होता है तो लाखों लोग उसे देखते हैं। किताबें न उतनी पढ़ी जाती हैं और न उसकी उतनी चर्चा ही चलती है। एक हजार प्रतियोंका संस्करण भी तीन-चार वर्षोंमें बिकता है। तीन-चार वर्षोंमें मुश्किलसे तीन-चार हजार लोग उसे पढ़ते होंगे। सिनेमा तो सस्ता भी है और चटकीला भी। उसमें कहानी है, अभिनय है और सुप्रसिद्ध मिसोंका रूप भी। इसी बातके आधारपर अगर कुछ मध्यवर्गीय कलाकार उड़ गये हों तो यह कोई अचम्भा नहीं। वे कलाकार यह नहीं सोचते कि वे सिनेमाका ही जहरीला प्रभाव दे रहे हैं, बल्कि उन्हें अभिमान है कि साहित्यको भी वे सिने के समानही चटकीला बना रहे हैं। वे हैं कि सिनेमाने जिस आकर्षणके द्वारा वर्गकी भावनाओंको आक्रान्त कर है उसी आकर्षणको साहित्यमें पैदा सिनेमाके प्रभावको जीत लिया साहित्यके प्रति वे ईमानदार हैं। हां, जरूर है कि वे ऊंचा चढ़कर नहीं सोचे मगर सभी लोग ऊंचा चढ़कर सोचा भी करते।

भगवतीचरण वर्मा एक समर्थ कला हैं। अब तो वे प्रोडक्शनके अध्यक्ष भी गये। जो उन्हें जानता है भलीभांति जानता है कि सिनेमामें होकर भी वे रचनाओंमें सिनेमासे प्रभावित नहीं हैं न होनेकी सम्भावना है। प्रेमचन्द सिनेमामें गये थे; मगर अपनी रचना उन्होंने सिनेमापर प्रभाव डालनेकी की थी, स्वयं वे ही सिनेमासे प्रभावित हो गये थे। इसलिये अगर कहें कि से अनुचर और सम्राटसे अदना तक सिनेमासे प्रभावित हैं, तो ऐसा कहने जरूरतसे ज्यादा कह देंगे।

एक दिन 'ज्वार-भाटा' देख रहा देखा कि दो बहनोंमें से छोटी बह पुरुषपर अनुरक्त होती है। दोनों कर मिलते हैं। कोई आदर्श प्रेम फिर उस युवककी शादी उसकी बड़ी तय हो गयी और छोटी बहनकी इच्छा नाएं उस युवकके द्वारा नहीं पुष्ट इसीलिये उसकी आस्था भगवान जाती है। मानो भगवानका एकमात्र काम है कि अगर किसी छोकरीकी किसी युवकपर चल गयी हो, तो वे छोकरीके लिये जुटा दिया करें। भगवानका मोल, महत्व और अस्ति भी नहीं। कोई एक बङ्गाली बाबू इस के लेखक और दिग्दर्शक थे। इस लिखनेमें उन्होंने पूरा जोर लगाया और अपने जानते देश और जनता बड़ी भारी चीज पेश की होगी। ऐसी त्वपूर्ण सिनेमाकी कहानीमें उन्होंने अस्तित्व कैसे सिद्ध किया है, वह भी के लायक चीज है। एक दिन बड़ी गर्भका बच्चा अटक जाता है। डाक्टर सा दे देते हैं। ऐसी अवस्थामें छोटी बहन भगवानकी प्रार्थना करने है और प्रार्थनामें जैसे-जैसे तन्म जाती है वैसे-वैसे बच्चा निकलता खैरियत है कि कहानी सुखान्त है। जान नहीं गयी, बच्चा भी पैदा हो ईश्वरका अस्तित्व भी सिद्ध हो साहित्यका एक अदनासे अदना ईश्वरके अस्तित्वको सिद्ध करनेके कहानी लिखेगा तो इससे बहुत चढ़कर लिखेगा।

आजके नवयुवकोंका चरित्र वैसा बनता दिखलायी देता है इसका साहित्य नहीं, सिनेमा है। साहि दिन इतना जनप्रिय हो उठेगा ऐसी शिकायत कभा उठ ही नहीं

—०—

कामना

——:०✻०:——

ज्योति नव जग में जगा दें मां! अमर बलिदान मेरे
सहज गर्वोन्नत झुकें मत शीश औ, अभिमान मेरे
प्रगति है जीवन, अगति ही तो मरण है इस धरा पर
प्रज्वलित हों चतुर्दिक में ये अनल के गान मेरे

नित्य बलि पर बलि दिये चलता रहूं सस्मित, निरंतर
अरुण पावन रक्त से हो आज प्राची में युगांतर

मरण का संगीत गाता लो प्रलय अविनाश आया
बद्ध बंधन में युगों से धरा का उल्लास छाया
दिशायें हैं शून्य, नभ में बादलों का विकट गर्जन
फिर तिमिर के पर्व में द्रुत तड़ित का कलहास आया

रजकणों के ढेर पर फिर से महल प्राचीर मेरी
उगें, बन शतखंड जाए टूट मा जंजीर तेरी

करूं असि की धार पर इतिहास का निर्माण नूतन
फूंक दूं इन खंडहरों की धूल में नव प्राण, जीवन
अमरता का पा मधुर वरदान कण-कण झूम जाए
तिमिर वेष्ठित क्षितिज पर जग के हंसू मार्तण्ड मैं बन

एक स्वर में मैं पुकारूं काल तीनो शक्ति दे वह
दूं बना पाषाण को भी देवता मा, भक्ति दे वह

—श्री उपेन्द्र

...हिं बस जिनके मनमाहीं।
...कहं अस दुर्लभ कछु नाहीं॥

...ह कैसी शान्ति !!

...या कैसी प्रगति है? इस तरहकी ...नाम! कदम पीछे न पड़े। बढ़े चलो, ...हो का नारा लग रहा है। हम कहते हैं ...विश्राम लो। जीवनका उद्देश्य सुख-...रहता है।" एच० जी० वेल्सकी ...नाली दुनिया' नामक रचनाके पात्र ...टोडा-पुलासका उक्त संवाद आजकी ...का एक चित्र उपस्थित कर देता है। ...टोडो पुलासके शब्दोंमें हम भी विश्व-...से पूछते हैं कि यह कैसी प्रगति, ...शान्ति है? शान्तिका मन्त्र उच्चारण ...ले, प्रगतिका राग अलापनेवाले, आगे ...चलेका नारा लगानेवालोंको जरा ...यह भी देखना चाहिये कि उनके ...आल-बगल, आमने-सामने शान्ति ...गति कैसा भयङ्कर रूप धारण कर ...। ऐसी शान्तिसे अशान्ति अच्छी, ...प्रगतिसे अ-प्रगति भली। कहीं शांतिके ...शोगोंको तोपों, बन्दूकों और बमोंसे ...रहा है तो कहीं शान्ति और व्य-...के नामपर हजारों व्यक्तियोंको बिना ...न्याय-विचारके सालोंसे जेलोंमें डाल ...है। ऐ शान्तिका राग अलापते हुए ...का बवण्डर उठानेवालों! जरा रुको ...सोचो? अपना दिल साफ है: या ...तुम्हारा अपना दिल साफ नहीं है। एक ...सन्देह और अविश्वासकी दृष्टिसे ...। सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनकी प्रति-...कार्यवाहीसे यह बात अच्छी तरह ...रही है कि संसारके तीन प्रधान ...टेन, अमेरिका और रूसमें परस्पर ...सन्देह है। अपनी मृत्युसे कुछ दिन पहले ...प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टने कांग्रेसमें कहा ..."बड़े होनेको समान स्तर प्राप्त ...लिये तीनों प्रधान राष्ट्रोंका प्रयास ...कानफरेन्समें सफल हुआ।...हम ...किये गये प्रदेशोंकी समस्याका ...करनेको कृतसंकल्प होकर मिले ...यह कहते हर्ष हो रहा है कि ...सबसे समझौता करके ही उठें,— ...समझौता! पोलैण्डकी समस्याका ...हमारे इस कथनका ज्वलन्त प्रमाण ...किन्तु हम आज क्या देख रहे हैं। ...प्रधान राष्ट्रोंके सत्प्रयासका ज्व-...उदाहरण पोलैण्ड, जिसकी समस्याके ...समाचारका हर्ष और आनन्द ...रूजवेल्ट इस दुनियासे चले गये, ...शान्तिके मार्गमें सबसे बड़ा रोड़ा ...रहा है। रोड़ा अटकानेवालोंमें पोलैंड ...की समस्याएं भी कम महत्वपूर्ण ...यूरोपमें आस्ट्रिया, ट्रिस्टी, रूमा-...निया, प्राग और जर्मनी तथा एशियामें सिरिया, लेबनान, इण्डोचीन, बर्मा, फिलस्तीन और हिन्दुस्तानकी समस्याएं कम नहीं है। क्रीमियामें इन समस्याओंके सम्बन्धमें गृहीत समान स्वर और सिद्धान्त कहां चले गये। याल्टा सम्मेलनके बाद मि० चर्चिल और मि० रूजवेल्टके दिये गये वक्तव्योंमें यदि वास्तविकता है तो क्या कारण है कि ये प्रश्न सुलझनेकी अपेक्षा अधिक उलझते चले जा रहे हैं। अवश्य इसके पीछे कोई रहस्य होना चाहिये।

रूसके सम्बन्धमें अमेरिकाके राष्ट्र सचिव मि० एडवर्ड स्टेटीनियसने उस दिन अधिक मुलायम और मेलमिलापकी भावना बढ़ानेवाला जो वक्तव्य ब्राडकास्ट किया है उसपर अमेरिकाके राजनीतिक अचलोंमें की गयी टीका-टिप्पणियोंके भीतर झांक कर देखनेसे इस रहस्यका कुछ कुछ उद्घाटन हो सकता है। मि० रूजवेल्टकी अचानक मृत्युसे रूसके विरुद्ध अमेरिकापर डोरे डालनेका काम धूर्तताकी कलामें प्रवीण मि० चर्चिल के लिये अपेक्षाकृत अधिक सहज-साध्य हो गया। मि० रूजवेल्टके रहते जो काम अमेरिकासे मि० चर्चिल नहीं करा सके वही ट्रूमैन और मि० स्टेटीनियससे सहज:ही कराया जा सकता है, यह समझ कर भला मि० चर्चिल कब चूकनेवाले थे। मि० स्टेटीनियस उनके दाव पर चढ़ गये थे, इस बात का समर्थन यूनाइटेड प्रेसका लन्दन स्थित संवादाता भी करता है। इस संवाददाताका कहना है कि अमेरिकाके राजनीतिक अंचल यह समझते हैं कि मि०ईडेनके झांसेमें आकर रूसके प्रति अमेरिकाने जो प्रतिकूल रुख पकड़ा था, जिससे अमेरिकन स्वार्थोंको कोई लाभ न पहुंचता, वह बदल रहा है-यह मि० स्टेटीनियसके इस वक्तव्यसे स्पष्ट है: "मैं यह बात, पूर्णतया स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि अमेरिकन वैदेशिक नीतिका मुख्य उद्देश्य उस युद्धकालीन सहयोग और संघबद्धताको मजबूत बनाना है जिसके कारण जर्मनीको पराजित किया जा सका। अपने समझौतेके स्वरूपको व्यापक बनाना और जिन मामलों में अबतक हम सहज समझौते पर नहीं पहुंच सके उनपर भी पहुंचना हमारा ध्येय है।" स्पष्टतः यह संकेत रूसके लिये है। ट्रूमैन और स्टेटीनियसकी समझमें यदि यह बात आ जाये, जैसे मि० रूजवेल्ट की समझमें आ गयी थी कि विश्व-शान्तिके लिये रूसके साथ मिलकर चलनेमें ही संसारका हित है तो ब्रिटेनका अमेरिका पर डोरे डालकर रूससे लड़ा देनेकी चाल व्यर्थ होगी। इस सम्बन्धमें विश्वख्याति प्राप्त पत्र प्रतिनिधि ड्रयू पियर्सनका यह कहना बहुत ही उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण है कि राजदूत डेवीज मि० चर्चिलसे कहेंगे कि वे अपनी रूस विरोधी नीति बन्द करें। ह्वाइट हाउस (अमेरिकन सरकार) के परामर्शदाता यह समझते हैं कि अमेरिका और रूसको परस्पर एक दूसरेसे भिड़ाये रखना मि० चर्चिलको पसन्द है। मि० डेवीजको यह भार दिया गया है कि वे मि० चर्चिलको यह समझा दें कि उनकी यह भिड़ानेकी नीति वाशिंगटनमें अच्छी नजरसे नहीं देखी जाती।

यह हर्षकी बात है कि अमेरिकाकी समझमें यह बात आने लगी है कि विश्व-शान्तिके लिये रूसके साथ सहयोग परमावश्यक है। इस नीतिका महत्व ब्रिटेन न समझता हो यह बात नहीं है। किन्तु पूंजीवादी ब्रिटेन और शेष ब्रिटेनके स्वार्थ भिन्न होनेके कारण आज उसकी स्थिति बड़ी विषम है। यूरोपमें रूसके साथ सहयोग करने का अर्थ ही है उस महादेशमें समाजवादकी व्यवस्थाको सर्वत्र प्रतिष्ठित करनेमें सहायता पहुंचाना। मि० चर्चिलका ब्रिटेन यह हरगिज नहीं चाहता। इस दृष्टिसे आगामी ब्रिटिश निर्वाचन अत्यन्त महत्व पूर्ण है। यूरोपमें रूसके साथ शान्तिपूर्वक सहयोगकी नीतिसे काम लिया जायेगा, या पद-पदपर दिखायी देने वाली संघर्षकी संभावना और आशंका मूर्तरूप धारण करेगी, इसका उत्तर ब्रिटिश निर्वाचन देगा। यदि इस निर्वाचन से पुनः मि० चर्चिल अपना बहुमत बना लेनेकी स्थितिमें रहेंगे तो फिर साम्राज्यवादी अकड़ नीतिका यूरोपमें एक बार कुछ दिनके लिये बोलबाला होगा। अन्तिम परिणाम क्या होगा, यह रूसकी शक्ति पर निर्भर है।

रूसपर देशकी नजर

हिन्दुस्तान जैसे देशमें, जहां भूख, पीड़ा, रोग, मृत्यु, अशिक्षा और कुसंस्कारने लोगों को अपनी मुट्ठीमें कर रखा है, साम्प्रदायिकता मानवताका गला घोंट रही है, धनजनकी हत्या कर रहा है, यदि देशवासियोंका ध्यान सोवियट रूसकी सफलताओंकी ओर बरबस खिंच जाता है तो कोई आश्चर्य नहीं। संसारमें जनतन्त्र स्थापित करनेका आदर्श किस तरह काममें परिणत किया जाता है इसका उदाहरण पोलैण्ड और युगोस्लाविया, आस्ट्रियामें स्थापित जनतन्त्रोंकी ओर दृष्टि डालनेसे मिल सकता है। जनतन्त्रके नामपर प्राणोत्सर्ग करनेवालोंपर राजतन्त्र और धनतन्त्र किस तरह लादा जा रहा है, इसका सुन्दर उदाहरण मि० चर्चिल और स्वतन्त्रताके लिये लड़नेवाली उनकी सरकारने यूनान, बेलजियम, इटली और बर्मामें, जेनरल डिगालने सीरिया, लेबनान और इण्डोचीनमें उपस्थित किया है। इन दो स्पष्ट पार्थक्योंके रहते यदि हमारे देशके जनसाधारण ही नहीं नेता भी ब्रिटेनकी तरफसे दृष्टि हटाकर उत्साह और प्रेरणा पानेके लिये रूसको देख रहे हैं तो क्या कोई आश्चर्य है! अभी कुछ दिन पहले चक्रवर्ती राजगोपालाचार्यने मद्रास छात्र सम्मेलनमें अपने भाषणके सिलसिलेमें छात्रों से कहा था कि "रूसके प्रति सहानुभूति रखने अथवा ऐसी किसी चीजके प्रति, जिसे तुम सही समझते हो, सहानुभूति रखनेके लिये जरा भी लज्जा या सङ्कोच प्रकट करनेकी आवश्यकता नहीं है।"

रूसमें होनेवाले आर्थिक और सामाजिक प्रयोगोंकी चर्चा करते हुए राजाजीने कहा था कि भारत इनको प्रशंसा और सहानुभूतिकी दृष्टिसे देखता है। "हमने रूस की योजनाको कार्यमें परिणत होते देखा है। हम रूसकी प्रणालीकी जब प्रशंसा करते हैं तो उसका अर्थ यह न समझना चाहिये कि हम उसके हिंसात्मक स्वरूपका समर्थन करते हैं।" रूसके आर्थिक और सामाजिक आदर्शों तथा सिद्धान्तोंको हम कैसे कार्यमें परिणत करेंगे यह हमारे सोचनेकी बात है। किसी कामको करनेके तरीके सबके एक नहीं होते। रूस और भारतके भी एक नहीं हो सकते। भारतकी अपनी सभ्यता और संस्कृति है। वह इतनी उदात्त हैं कि संसारकी किसी भी सर्वश्रेष्ठ प्रगतिशील प्रणालीसे आगे बढ़ सकती है। अतएव यह बात तो हैही कि हम कोई भी योजना, सामाजिक और आर्थिक सुधारको, लेकर आगे क्यों न चलें, उसका आधार तो सत्य, अहिंसा और प्रेम होगा ही। अब रह गयी व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी बात। कहा जाता है कि रूसी प्रणालीमें इसे कोई स्थान नहीं है, और इसके जवाबमें राजाजीने ठीक ही कहा है कि "सरकार द्वारा सगठन और पुनर्संस्कारकी योजनाओंको कार्यमें परिणत किये जानेका अर्थ ही है सब स्वतन्त्रताओंका अन्तर। भारत जैसे लम्बी आबादीवाले देशमें योजना तभी सफल हो सकेगी है जब स्टेट कठोरतासे काम लेगा और इस दिशामें सोवियट प्रणालीसे हमें कुछ सीखना चाहिये।" भारतीय संस्कृति भी समष्टिके लिये व्यष्टिके त्यागका निर्देश करती है। यह त्याग जब स्वेच्छासे नहीं होता तभी समाजको बाध्य होकर कठोरता धारण करनी पड़ती है। इस कठोरताको ही दूसरे शब्दोंमें अनुशासन कहा जाता है। स्वतन्त्रतामें यदि अनुशासन न हो तो वह उच्छृंखलताका उग्र रूप धारण करती है। भारतमें राजनीतिक स्वतन्त्रता न रहनेके कारण ही आज सभी क्षेत्रोंमें अराजकता और उच्छृङ्खलता फैली हुई है। परिणाम स्वरूप राजनीति और अर्थनीतिके क्षेत्रमें ही नहीं धर्म और समाजके क्षेत्रमें भी समष्टिका निरन्तर गला घोंटा जा रहा है। धर्मशास्त्र के ठेकेदार गो-रक्षा और गो-पालनको धर्म कहते हुए भी श्री सम्पूर्णानन्दजीके शब्दोंमें गोभक्षकोंको धर्मावतार कहते और गोभक्षी शासनकी नींवको सुदृढ़ बनाये रखनेको उसके अनुकूल व्यवस्था दे रहे हैं। इसलिये सत्यपर प्रतिष्ठित धर्म और नीति की रक्षाके लिये भी व्यक्तिगत स्वतन्त्रताके नामपर फैली हुई उच्छृङ्खलता और अराजकताको दबाना ही पड़ेगा। अतः रूसमें व्यक्तिगत स्वतन्त्रताका नाम मिट गया है कहकर जो लोग रूसके समष्टिवादका विरोध कर रहे हैं वे दरअसल व्यक्तिके लिये समाज, समाजके लिये व्यक्ति नहीं,—आदर्शको अपने निजी स्वार्थके निमित्त बनाये रखना चाहते हैं। इतिहास इस बातका साक्षी है। इङ्गलैंड इस आदर्शका पथप्रदर्शक है। इतिहाससे यदि हम यह सबक नहीं लेते और रूसकी प्रणालीको अपने देशकी स्थितिके अनुरूप ढालकर चलनेकी प्रेरणा नहीं लेते तो इतिहास पढ़नेसे क्या लाभ?

नेहरूजीका स्थान—

संसारके सभी निर्भीक और विचारवान व्यक्ति यह समझते और महसूस करते हैं कि पंडित जवाहरलाल नेहरूको सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें उपस्थित होना चाहिये था।

किन्तु ब्रिटिश सरकार ऐसा नहीं समझती। वह उनके लिये सर्वाधिक निरापद स्थान जेल समझती है। आस्ट्रेलियाके परराष्ट्र-सचिव डा० ईवाटने नेहरूजीको जेलमें बन्द रखनेकी नीतिपर हार्दिक खेद प्रकट करते हुए कहा कि "नेहरू महान पुरुष हैं। उनका इस कानफरेंसमें होना आवश्यक था। उनका महान व्यक्तित्व सबको छा लेता।" नेहरूजी आज जेलमें बैठे अपने साथियों के साथ सच्ची शान्तिके लिये आवश्यक भित्ति तैयार कर रहे हैं।

श्री आसफ अलीकी रिहाई—

ब्रिटिश नौकरशाहीने जब देख लिया कि श्री आसफ अली मृत्युके द्वारतक पहुंच गये हैं तब बिना शर्त उनको रिहा करनेकी उदारताका परिचय दिया है। यह है ईसाई उदारता। खैर देर आये दुरुस्त आये। देश की स्वतन्त्रताके लिये तिलतिल अपना बलिदान करनेवाले आसफअली जैसे महापुरुषों का उत्सर्ग व्यर्थ नहीं जा सकता। श्री आसफ अलीने ठीक ही कहा है कि "हम लोगोंने केवल भित्ति निर्माणका कार्य किया है और मैं यह बात पूर्ण विश्वासके साथ कह रहा हूँ कि भित्ति बहुत सुन्दरता और सचाई के साथ डाली जा चुकी है। हम लोगोंने अपने सत और सुन्दर उद्देश्यके लिये अपनी शक्तिभर पूर्ण प्रयास किया हैं। हमारी कोई बात गुप्त नहीं है। हम स्वतन्त्रता चाहते हैं, केवल अपने देशके लिये ही नहीं बल्कि समग्र दलित मानव जातिके लिये।" भगवान श्री आसफअलीको शीघ्र पूर्ण स्वस्थ करें यही हमारी कामना है।

ये देशभक्त व्यवसायी !!—

स्वार्थ सर्व प्रथम विवेकको हर लेता है। विवेकहीन मनुष्यसे न्याय और नीतिकी आशा नहीं की जा सकती। भारत सरकारके संरक्षणमें ब्रिटेन और अमेरिकाकी यात्राके लिये लंदन पहुंचनेवाला भारतीय उद्योगपतियोंका दल, जिसमें श्री घनश्यामदास बिड़ला, श्री नलिनीरञ्जन सरकार, श्री ए०डी० श्राफ और मि० जे० आर० डी० टाटा जैसे प्रमुख उद्योगपति हैं, इस बातका पुष्ट प्रमाण है। महात्मा गांधीके यह कहने पर भी कि, इस समय जब कांग्रेस वर्किंग कमेटी जेलमें बन्द है भारतीय उद्योगपतियोंका ब्रिटेन और अमेरिका जाकर भारतके भावी औद्योगीकरणके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी व्यवस्था पर बातचीत करना लज्जाजनक है, ये देशभक्त व्यवसायी अपने संकल्पसे नहीं डिगे और अपने ऐसे दुस्साहसपूर्ण आचरणसे इन्होंने यह सिद्ध दिया कि महात्माजीके व्यक्तित्व और प्रभावका ये तभीतक सम्मान कर सकते हैं जबतक वे इनके कार्यमें सहायक होते हैं। इनकी देशभक्तिका स्वरूप स्वयं गांधीजीने स्पष्ट कर दिया है। "ये भारतीय पूंजीवादी और उद्योगपति बोलते और लिखते तो हैं सरकारके विरुद्ध किन्तु करते वही हैं जो सरकार चाहती है।" गांधीजीकी इस स्पष्टोक्तिके बाद भी भारतीय उद्योगपतियोंका इस प्रकार लज्जाजनक और दुस्साहसपूर्ण आचरण, आजकी अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिके प्रकाशमें, बहुत बड़ा महत्व रखता है। यह आचरण एक बहुत बड़े खतरे और संकटकी सूचना देता है। फासिस्टवादी शक्ति जर्मनी और इटालीके पतन और समाजवादी शक्ति रूसकी विजयसे पूंजीवादी आतंक-त्रस्त हो उठे हैं। यूरोपमें समाजवादकी जैसी लहर उठ रही है उससे संसारभरके पूंजीवादी भयभीत हो गये हैं। ऐसी स्थितिमें पूंजीवादको समाजवादसे बचानेके लिये यह आवश्यक है कि संसारके समस्त पूंजीवादी-देश, जाति और रंगका भेदभाव भूलकर-एक सुदृढ़ गरोहबन्दी करें। भारतीय उद्योगपतियोंकी यह विदेश यात्रा इसी उद्देश्यसे हुई है। पूंजीवादी व्यवस्थाको सुरक्षित रखनेके लिये यह आवश्यक है कि प्रत्येक देशके पूंजीवादी अन्य देशके पूंजीवादियोंके स्वार्थोंकी रक्षा करनेमें सहायक हों। परस्पर एक दूसरेकी सहायता करके वे अपनी सहायता कर रहे हैं।

बगावतका झण्डा उठेगा—

विश्व शान्ति सम्मेलनका नाटक एक तरफ हो रहा है और दूसरी तरफ साम्राज्यवाद एवं गणतन्त्रके रूपमें बना हुआ फासिस्टवाद सीरिया और लेबनानमें अपना घृणित प्रदर्शन कर रहा है। इससे अधिक मक्कारी और क्या हो सकती है। सैनफ्रांसिस्कोमें अपने विदा भाषणमें श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितने इसीसे संसारको यह चेतावनी दी है कि साम्राज्यवादके बने रहते शान्ति नहीं हो सकती। आपने कहा है कि "यदि साम्राज्यवादका अन्त न किया गया तो यह सम्मेलन असफल होगा। एशिया निवासी, यदि उनको कोई गारण्टी न दी गयी तो, वे विद्रोह करेंगे! अब वे किसीकी दासता बर्दाश्त नहीं कर सकते, वह चाहे जापानी हो, ब्रिटिश हो, फ्रेंच हो या डच हो।" मध्य पूर्व और निकट पूर्वके सभी देश स्वतंत्रताके लिये व्यग्र और चंचल हो रहे हैं। अब वे एक क्षण भी इस अवांछनीय स्थितिमें रहना पसन्द नहीं करते। सिरिया और लेबनानकी घटनाएं इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। ईरान सरकारने ब्रिटिश, अमेरिकन और मास्कोकी सरकारोंसे अनुरोध किया है कि यूरोपमें युद्ध समाप्त हो गया है, अतः सरकारें अपनी अपनी सेनाओंको ईरानसे हटा लें। इस अनुरोधसे और श्रीमती पंडितके इस कथनसे भी कि "कानफरेंसमें मध्य पूर्व और निकट पूर्वसे आये हुए सब प्रतिनिधि सम्पूर्ण हृदयसे तत्काल स्वतन्त्रताके पक्षमें हैं और यदि विधि विधानकी बाधा न होती तो वे इस आशय का प्रस्ताव भी यहां लाते," इसी बातकी पुष्टि होती है। श्रीमती पंडितने स्वतन्त्रता और शान्तिके इन ठेकेदारोंसे पूछा है कि 'यूरोपमें फासिस्ट प्रणालीके अन्तका क्या अर्थ है, जब एशियामें ब्रिटिश साम्राज्यवाद के यमज भाइयोंको बने रहने दिया जा रहा है।" इस प्रश्नका उत्तर तभी मिल सकता है जब श्रीमती पंडितके एशिया शब्दोंमें, बगावतका झण्डा उठायेगा।

यूरोप कम्यूनिस्ट हो रहा है—

जिस यूरोपने पिछले ३५ वर्षोंके भीतर पूंजीवाद और साम्राज्यवादके चलते दो-दो महायुद्धोंका विनाशचक्र अपने वक्षस्थलपर चलते देखा है, यदि आज वह साम्राज्यवादी रूसकी सफलताओंसे आकृष्ट होकर अपना पूंजीवादी और साम्राज्यवादी स्वरूप बदल डालना चाहता हो, यदि इन दोनोंके घृणित सम्पर्क और समागमसे उत्पन्न फासिस्टवाद की जड़ोंको हिला देनेवाले सबल रूसके आदर्शोंसे अनुप्राणित होकर लाल बनने जा रहा हो तो इसमें आश्चर्यकी कौन बात है। आश्चर्यकी बात तो तब होगी जब इतना विध्वंस देखनेके बाद भी यूरोप अपनी छातीपर चढ़े बैठे पूंजीवाद और साम्राज्यवादके गलेमें विजयकी माला डाल देगा। अतः अमेरिकन कांग्रेस (पार्लमेण्ट) की एक सदस्या श्रीमती क्लेयर बूथ लूसको हम संसारको यह शुभ समाचार देनेके लिये कि 'यूरोपमें प्रत्येक देशकी सरकारका प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूपसे मास्को जैसा मन और विचार रखनेवाले शासक नियन्त्रण कर रहे हैं' उस दिन हृदयसे धन्यवाद और बधाई देंगे जिस दिन उनके इस समाचारकी साधिकार पुष्टि होगी। मिस मेयोकी सौत या सौतेली बहिन श्रीमती लूसकी नैतिकताका स्टैण्डर्ड क्या है, यह तो हम नहीं जानते, किन्तु इतना तो जानते ही हैं कि यदि 'समाजवादका यह अनैतिक स्वरूप' जिसे देखकर श्रीमती लूसकी 'नैतिकता' कांप उठी है, न होता तो स्वच्छन्दतासे यूरोपका भ्रमण करने और फिर विषवमन करनेके लिये सकुशल स्वदेश वापस आनेके दिन देखनेका सौभाग्य उनको शायद न प्राप्त होता। समाजवादके अनैतिक स्वरूपका ही यह परिणाम है कि आज श्रीमती लूस जैसे व्यक्तियोंको पूंजीवाद और साम्राज्यवादके मनमोहक 'नैतिक' स्वरूपके साथ मन बहलानेका फिर अवसर मिला है, अन्यथा उस "नैतिक स्वरूप" के सबसे बड़े ट्रस्टी मि० चर्चिल आज इङ्गलैंडमें चुनाव लड़नेकी तैयारी करते नहीं, कनाडा और दक्षिण अफ्रीकाके राहघाटोंका चक्कर लगाते देखे जाते। गरीबों का खून चूसनेवाले, श्रमिकोंको अर्द्ध बुभुक्षित और अर्द्धनग्न रखनेवालोंके मुंहसे नैतिकताकी चर्चा ७२ चूहे खाये बैठी असमर्थ बूढ़ी बिल्लीके मुंहके रामनाम चर्चाके समान लगती है।

हिन्दुस्तान पर दांत—

लाल सेना द्वारा हिटलरी सेनाकी दुर्जेयता और अजेयता नष्ट-भ्रष्ट हो जाने पर पांचो सवारोंमें नाम लिखाने वाले ब्रिटेन और अमेरिका मन ही मन तरह-तरहके मनसूबे बांधते रहते हैं। यदि किसी तरह लगे हाथों रूसी रीछको भी बन्दरोंके साथ नाक बन्द करके नचाया जा सकता? दोनोंके मुंहमें इस ख्यालसे पानी भर आता हैं। पर दूसरे ही क्षण स्टालिनके प्रकाण्ड और प्रचण्ड स्वरूपके साथ उनकी नारायणी सेनाका दृश्य सामने आते ही तालू और जिह्वा सूख जाती है, मूर्च्छाकी स्थिति आजाती है। इस स्थितिमें प्रलाप स्वाभाविक है। श्रीमती क्लेयर बूथ लूसकी भी कुछ कुछ ऐसी ही हालत हुई है। अभीतक इस तरहके अमेरिकनोंको इस बातकी उम्मीद थी कि हिन्दुस्तान पर पहलेहीसे आसन जमाये बैठे अपने चचा अंगरेजोंके साथ, इस युद्धके फलस्वरूप, उनके पैर भी हिन्दुस्तानमें जम जायंगे। यही कारण है कि चार स्व... की बात करने वाला, अभावसे पी... बात कहने वाला अमेरिका इस सम... कुल मूक और बधिर हो गया ज... और व्यवस्थाके नाम पर निरंकुश... रही थी, कानून और व्यवस्थाके नाम... शस्य श्यामला भारत भूमिके स... स्त्री, पुरुष दाने-दानेके लिये बिलख... कर राज पथसे लेकर अंधेरी गलि... शहरोंसे लेकर गांवोंमें प्राण दे रहे थे। हिन्दुस्तान पर दांत लगाये बैठा अमे... यदि भारतके निकट और शक्तिशाली ... सोवियट रूसकी प्रचण्ड शक्तिको दे... कांप उठता हो तो कोई आश्चर्य नहीं... ऐसी हालतमें यूरोपमें लालसेना और ... यह रूसकी प्रचण्ड शक्तिका प्रत्यक्ष ... करके आतंकत्रस्ता श्रीमती लूसका ... स्वप्न देखना कि "हिन्दुस्तानके ... बौद्धिक अपने निकट और प्रबल पड़ो... सोवियट यूनियनकी तरफ क्रान्तिके ... सीखनेके लिये टकटकी लगाये हैं और ... सम्बन्धमें रूससे उनको अधिकाधिक ... मिल भी रहा है" स्वाभाविक ही है। ... पर तो अमेरिकाका पहलेहीसे दांत है। ... यूरोपके साथ-साथ निकट पूर्वमें भी ... वादका दबदबा बढ़ते देख पूंजी... व्यवस्था थरथरा रही है।

युद्ध किसने जीता ?—

ब्रिटिश निर्वाचनके परिणामसे य... स्पष्ट हो जायेगी कि ब्रिटेन प्रगतिका ... है या प्रतिक्रियाका। हम यह जानते ... भारतकी मुक्ति भारतकी अपनी शक्ति ... संगठन पर निर्भर करती है। फिर ... चाहते हैं कि पार्लमेण्टके आगामी नि... मजदूर दल विजयी हो। मल्लयुद्धके ... मैदानमें अपरिचित दो पहलवानोंके ... ही उपस्थित दर्शक दो दलोंमें बंट ज... दोनोंकी हार जीतसे किसीका कुछ ... बिगड़ता नहीं फिर भी प्रत्येक दर्शक ... प्रिय पात्रकी विजयके लिये उत्सुकता ... उत्कण्ठासे प्रतीक्षा करने लगता है। ... का चढ़ाव उतार उसके चेहरे पर ... बिम्बित हो उठता है। हम पा... आगामी निर्वाचन-मल्लयुद्धमें मजदूर ... विजय इसलिये चाहते हैं कि मजदूर ... शान्ति और मेलके मार्गका समर्थ... संसारके शोषितों, दलितों और पी... प्रति उसे सहानुभूति है। इसके सिवा ... श्री राजगोपालाचार्यने कहा है, ... महत्वाकांक्षाओंके प्रति ब्रिटेनके ... दलोंकी अपेक्षा मजदूर दल कहीं ... सहानुभूति रखता है। राजाजीने ... की विजय कामना करते हुए, मद्रास ... जन-सभामें कहा है कि यह युद्ध ... नहीं जीता बल्कि प्राणोंका भय ... शत्रुओंके धुआंधार बमबार्डमेण्ट ... फैक्टरियोंमें काम करनेवाले ... जीता है। अतः अपने देशके ... संचालन करनेका अधिकार ... राजाजीकी इस बातसे कोई इनकार ... कर सकता। संसारके सभी प्रगतिशील ... विश्व शान्ति हितैषी लेबर पार्टीको ... देखना चाहेंगे।

कहानी की बात

(श्री शिवनारायण शर्मा "साहित्यभूषण")

का जगत विज्ञानका जगत है। कार्यके मूलमें कारणकी भावना छिपी तो परिभाषा देनेकी प्रणाली कोई नहीं। आदि कालसे ऋषि महर्षियोंने छोटी वस्तुओंकी भी परिभाषा दे है। यहां तक कि हृदयके मनोवेगों— इत्यादि तककी भी परिभाषा की है। फिर क्या कारण है कि छोटी की ही परिभाषा न दी जाय। और ही दी जाय तो क्यों कर लोग ने लगें। शिकागो विश्वविद्यालय पर व्याख्यान देते हुए एक बार ल्यू लिननेने कहा था—"कहानी पात्रके जीवनकी एक वह महत्वपूर्ण जिसकी संक्षेपमें नाटकीय ढङ्गसे जना की गयी हो।" इस परिभाषाका न करने पर प्रायः कहानीके सभी की प्राप्ति हमें हो जाती है। कहानीमें का स्थान सर्वोपरि है, किन्तु आज-कुछ अंग्रेज लेखक कथानकको गौण प्रदान करने लगे हैं। इसके बाद चित्रण और कथनोपकथनका स्थान है। किन्तु इन तीनोंमें चरित्र चित्रण ही सर्व श्रेष्ठ है इसे सभी साहि-मानते हैं। पर यदि पात्रोंका चरित्र-करनेके लिये कथनोपकथनका सहारा जाय तो सारे पात्र अस्तित्व हीन हो जायं। उन्हें न आगेकी सूझे न । कथनोपकथन उनके चरित्र पर डालता है। मार्ग प्रदर्शनका काम है। यही कारण है कि कहानीमें मूक लिये स्थान नहीं दिया जाता। दूसरी पर परिभाषामें जोर दी गयी है कहानीमें सूक्ष्मता और नाटकीय ढंग प्रयोग। यह प्रणाली कहानीके लिये उपयोगी है। यह कहानीके व्यक्तित्व हमारे सामने रखता है। सूक्ष्मता न कहानीकी मर्यादाका उल्लंघन होता

से अनभिज्ञ अनेक लोगोंकी दलील कहानी और उपन्यासमें कोई मौलिक नहीं। किन्तु ऐसा नहीं। दोनोंमें कुछ अवश्य है किन्तु इसका अभिप्राय यह समता उनके भेदका परिहार कर समताका भेद आरोपित करनेकी रखती है। यह तो अवश्य है कि उपन्यासकी ही औरस-जात है किन्तु अबसे यह अपने पितृ-गृहमें निवास करती। इसने नवीन कुलकी मर्यादा ली है। यद्यपि उपन्यास और कहानी ही मनुष्य जीवनकी आनुषंगिक कथा अपने रंगमें रंजित कर गद्यमें व्यक्त और इस दृष्टिसे दोनोंका आधार एक ही है तथापि इन दोनोंकी भिन्न समझी जाने लगी है। इन आकार भेद ही न रह कर रूप रंगकी हो गयी है और इस तरह कहानी-एक स्वतन्त्र सृष्टि हो गयी है। एक स्वतन्त्र कला-कृति बनानेका के प्रसिद्ध कहानी लेखक हाथवे ही नहीं, स्काट और डिकेन्सको है, यह अवश्य है कि प्रथम दो स्काट और डिकेंसकी कहानियोंका अधिक विकास कर एक स्वतन्त्र कला कोटि में ला रखा है। छोटी कहानियोंमें किसी एक प्रसंगको लेकर उसका मार्मिक झलक दिखा देनेका ही उद्देश्य निहित रहता है। वह जीवनका समय-सापेक्ष बहुमुखी चित्र अंकित न कर केवल एक क्षणमें घनीभूत हृदय दिखला देती है, पात्रके जीवनकी किसी एक महत्वपूर्ण घटनाकी अभिव्यक्ति करती है। इसमें उपन्यासकी भांति किसी पात्रके जीवन की विशद विवेचनाका स्थान नहीं रहता है। उपन्यास लेखक किसीके जीवनकी सर्वाङ्ग सुन्दर चतुर्दिक व्याख्या करनेका प्रयास करता है किन्तु कहानी लेखक जीवनकी विशद व्याख्यामें सफलता नहीं पाता वरन् जीवनकी किसी अत्यन्त महत्वशाली घटना को चुन लेता है।

वास्तविकतावादी उपन्यास प्रायः अपने में सम्पूर्ण होते हैं परन्तु कहानीमें सम्पूर्णताके स्थानपर लाक्षणिकताका प्रयोग अधिक श्रेयस्कर होता है। अतः कहानी और उपन्यास का प्रमुख भेद घटना निर्वाचन, उपेक्षा और गोपनीयता है। घटना-निर्वाचनमें कहानी-लेखकको बराबर सतर्क रहना चाहिये। क्योंकि कहानी उपन्यासकी तरह जीवनकी विशद व्याख्या नहीं करता, उसका सम्पूर्ण चित्र अङ्कित न कर, उसके एक विशेष अङ्ग-का प्रभावपूर्ण और लक्षणात्मक ढंगसे चित्रण करता है। कहानी लिखनेके पहले ही एक लक्ष्य निर्धारित रहता है जिसपर पहुंचनेके लिये विविध पात्रों एवं घटनाका प्रयोग किया जाता है।—इन पात्रों या घटनाओंकी कहानीमें कोई स्वतन्त्र सत्ता नहीं होती। ये केवल कहानीको उस लक्ष्यतक पहुंचानेके साधन मात्र होते हैं। किन्तु उपन्यासमें इनकी स्वतन्त्र सत्ता संभव हो सकती है। घटनाओंका अनिर्दिष्ट क्रम और कथाका स्वच्छन्द विकास किया जा सकता है। दूसरी बात यह है कि कहानीके बीचमें अन्तर्कथाओं की सृष्टि नहीं की जा सकती जब कि उपन्यास इसके लिये सर्वथा स्वतन्त्र है।—राजा—राधिका रमण सिंहका 'रामरहीम' तो जैसे दो कथाओंका संयोगमात्र है। यदि वेला और विजलीके चरित्रको एक दूसरेसे अलग कर दिया जाय तो शायद उपन्यासमें कोई त्रुटि नहीं आ सकती है और एक उपन्यासके बदले हम दो उपन्यासकी सृष्टि कर सकते हैं। अन्तर्कथाओंका तात्पर्य यह नहीं कि प्रधान घटना या कथासे उपकथा बिलकुल ही सम्बन्धित न हो। उपकथायें स्वतंत्र नहीं हो सकतीं। इनकी सृष्टि तो प्रधान घटनामें बल लानेके लिये ही की जाती है। राजाजीका उपन्यास इसके लिये सर्वथा दोषी है। इस कथनकी कोई उपेक्षा नहीं कर सकता।

श्री रामनारायण यादवेन्दु उपरोक्त कथनकी पुष्टि करते हुए अपनी 'कहानी-कला' शीर्षक पुस्तकमें लिखते हैं—"संक्षेपमें, आधुनिक कहानीकी सामग्री एक स्थिति है। कहानी, इस विषयमें, उपन्यास और सरल वर्णन, या कथा एवं उपाख्यान, जिससे इसका प्रादुर्भाव हुआ है, से सर्वथा भिन्न है। उपन्यासका सम्बन्ध जीवन-चरित्रोंसे है और सरल वर्णन एवं उपाख्यानका घटनाओं के रोचक तारतम्य से। परन्तु कहानी जिसे अंगरेजीमें 'शार्ट स्टोरी' कहते हैं, जीवन-इतिवृत्तोंको जिस ढंगसे हमारे सामने प्रस्तुत करती है वह उपाख्यान और उपन्यासके ढंग से सर्वथा भिन्न है। कहानीमें पात्रोंके जीवन को हम तीन रूपोंमें पाते हैं। एक पूर्व चिंतन द्वारा, दूसरे भावी निर्देश द्वारा और तीसरे प्रमुख संकटके प्रस्तुत द्वारा। कहानीमें घटनाओंके तारतम्यका प्रयोग एक निश्चित उद्देश्य द्वारा होता है जिससे एक स्थितिके प्रभाव की अभिव्यक्ति हो।"

बेंडर मेथ्यूने अपने 'कहानी दर्शन'में उपन्यास और कहानीमें प्रभावकी एकताको ही प्रमुख भेद माना है। कहानीका कथानक इतना सरल होता है कि उसमें उपभेदोंकी आवश्यकता ही नहीं होती।

उपन्यास ही की तरह कहानी और नाटकोंमें भी थोड़ी समता है। कहानी-चरित्र और गठनके विचारसे नाटकसे मिलती-जुलती है। साथ ही क्षेत्र और शैलीमें भी दोनोंसे घनिष्ट सम्पर्क है। कहानीमें प्रायः घटना-वैचित्र्यकी विशेषता होती है, मार्मिक दृश्योंका सरल रोचक अभिव्यञ्जन होता है। ये सभी गुण नाटकके हैं। विशेषकर कथोपकथन तो नाटकका प्रमुख अङ्ग है। नाटक इसके बिना खड़ा नहीं हो सकता। क्योंकि इसके बिना इसके पात्र सर्वथा मूक रहेंगे और मूक पात्रोंमें न तो स्वाभाविकता होती है, न सजीवता। कथोपकथन ही नाटक और कहानीके सम्बन्धका ज्वलन्त उदाहरण है।

कहानी और नाटककी शैलीमें भी पूरी समता है।—जिस प्रकार नाटककार अपनी स्थितिको थोड़ेसे ही प्रभावोत्पादक शब्दोंमें व्यक्त करना चाहता है ठीक उसी प्रकार कहानीकार भी अपने थोड़ेसे उपकरणोंको लेकर अपनी कलाका प्रदर्शन करनेमें प्रवृत्त होता है। कहानीकार बिना किसी भूमिका के अपने कार्यक्षेत्रमें लीन हो जाता है। नाटककारको भी भूमिकाका अवसर नहीं मिलता वह अपनी परिस्थितिमें गाम्भीर्यका समावेश करते हुए अग्रसर होता है और पाठकको अन्तिम स्थिति के लिये तत्पर करनेका प्रयत्न करता है।

यों तो जेम्स डब्ल्यू० लीनकी उपरोक्त परिभाषासे ही सारी शङ्कायें दूर हो जाती हैं, क्योंकि 'किसी पात्रके जीवनकी किसी विशेष घटनाकी नाटकीय अभिव्यञ्जना ही कला है।" यहां नाटकीय अभिव्यञ्जना ही सारी शङ्कायें दूर कर देता है। अतः बिना नाटकीय ढंगका अनुसरण किये कहानी सफल नहीं हो सकती। नाटकीय गुणोंके समावेश से इनके प्रभावमें प्रबलता आती है। हृदयपर गहरी छाप लगानेवाली रीतियोंका प्रयोग, पात्रोंके जीवनमें सङ्कट उपस्थित करना, स्थितिको प्रोत्साहन देना, कथोपकथनकी कलापूर्ण नाटकात्मक रचना, केवल एक ही समस्यापर मनोयोग, दृश्यका मर्मस्पर्शी चित्रण आदि चमत्कारपूर्ण कहानियोंके ही लक्षण हैं और यह विकसित रूप नाट्यकलाकी सहायताका ही परिचायक है। अतः इसे सिद्ध करनेकी आवश्यकता नहीं है कि कहानी का यह सुन्दर, सरल, रोचक एवं कलामय रूप बहुत अंशोंमें नाटकोंके द्वारा ही बन सका है। सच तो यह है कि यदि नाटकके ये सुन्दर उपकरण कहानियोंसे निकाल दिये जायें तो कहानी मनोरञ्जनका साधन न बनकर विरक्तिका साधन हो जाय।

यहांतक कहानी, नाटक एवं उपन्यासके विषयमें विचार प्रकट किया गया। समता और विभिन्नताको सामने रखा गया। किन्तु तुलनाकी एक वस्तु अभी भी बच रही है जिसे प्रायः अधिकतर लेखक अकारण ही छोड़ देते हैं। यह उपकरण हमारा गीति-काव्य है। कहानीकी कला गीत-कवितासे अधिक मात्रामें मिलती-जुलती होती है। दोनों ही व्यक्तिप्रधान सृष्टियां हैं। गीति-काव्यमें जिस प्रकार कवि एक ही भावनाको प्रश्रय देता है, उसी प्रकार कहानीकार भी कहानियोंमें भावनाकी एक ही धारा बहाता है। सभी दृश्योंको तो वह मतलब गांठनेकी सामग्रीके रूपमें लाता है। 'प्रसादजी' की 'स्वर्गके खण्डमें' शीर्षक कहानी प्राकृतिक दृश्यसे ही प्रारम्भ की गयी है। "वन्य कुसुमों की झालरें सुख-शीतल पवनसे विकंपित होकर चारों ओर झूम रही थीं।" 'प्रसादजी' का उद्देश्य पाठकोंके हृदयमें सौंदर्यकी अबाध धारा बहानेके सिवा कुछ नहीं है। वह पाठक को दृश्यके वर्णन द्वारा स्थितिके लिये तैयार करते हैं। कहानीकी तरह ही गीत-काव्यमें भी फालतू वस्तुओंका भी नितान्त अभाव रहता है। फलस्वरूप मार्मिकताका अत्यधिक समावेश हो जाता है जो कलाकी दृष्टिसे श्रेष्ठकोटिकी सामग्री हो जाती है।

अब कहानीके उपकरणोंकी ओर दृष्टि दौड़ाई जाय। एक ही लक्ष्य या भावकी अभिव्यक्ति करना कहानीकी सर्वप्रथम विशेषता है। पाश्चात्य देशोंमें पहले अमेरिका ही इसकी क्रीड़ास्थली थी। एडगर एलेन पो, हार्थन तथा ब्रेटहर्ट इसके प्रधान आचार्य हो चुके हैं। इनमें भी कहानीको अविकसित उपन्यास, नाटक इत्यादिके गर्भसे निकालने का श्रेय 'पो' को ही है। पोने ही सर्वप्रथम कहानीको उपन्यासोंसे भिन्न बताया तथा इसके उपकरणोंको निश्चित किया। पो ने एक स्थान पर लिखा है कि यदि कलाकार कुशल है तो वह पहले कहानीका घटना चक्र तैयार कर उसमें विचारोंकी शृंखला जोड़ देनेकी गलती कभी न करेगा। सबसे पहले वह एक लक्ष्यकी कल्पना करेगा और पुनः उसकी पूर्तिके लिये घटनाओंकी सृष्टि करेगा। वह अपने वस्तुओंको इस रूपमें सजावेगा कि अपने लक्ष्यके प्रभावको सफलता पूर्वक व्यंजित कर सके। यह सफल व्यंजना उसके पहले ही वाक्य पर निर्भर करता है। यदि कहानीकार पहले ही वाक्य

में प्रभाव जमानेमें सफल हो गया तो वह इसी प्रभावके बदौलत अपने लक्ष्य तक पहुंच जायेगा अन्यथा 'प्रथमे ग्रासे मक्षिका पातः' वाली कहानी चरितार्थ होगी और सारा गुड़ गोबर हो जायगा। अतः सारी कहानीमें एक भी ऐसा शब्द या वाक्य न आवे जो कहानीको प्रत्यक्ष या परोक्ष रूपमें निश्चित लक्ष्य तक पहुंचानेमें सहायक न हो। कलाकारका यह मुख्य उद्देश्य होना चाहिये और इसकी पूर्ति ही कहानीकी पूर्ति है।

कहानीका दूसरा उपकरण घटना और पात्र है। घटना और पात्रको समझनेके लिये हमें एक बार फिर नाटकीय उपकरणोंकी ओर ध्यान देना होगा। फ्रांसमें प्रचलित नाटक-संकलन सम्बन्धी विषयों पर विचार करनेसे मालूम होता है कि नाटकमें एक ही वस्तुका विन्यास एक ही स्थान पर तथा एक ही दिनमें होना चाहिये। वस्तु, स्थान और काल, इन तीनोंका समावेश कहानीमें भी किया गया और इसका नियम यह बना कि छोटी कहानी एक ही घटना, एक ही भाव, एक ही दृश्य और एक ही पात्रका चित्रण कर सकती है। यद्यपि इनका अक्षरशः पालन तो नहीं ही किया गया पर फिर भी इसमें कुछ परिवर्तन अवश्य हुए। आकर्षण उत्पन्न करनेवाली विविध नाटकीय सामग्रियोंकी योजना की गयी। नाटककी भांति कहानीको भी इस तरह सजाया जाने लगा कि नाटककी पांच सीढ़ियां कहानीमें प्रकट होने लगीं। जैसे क्रियाके बीचमें घटनाका उत्थान, पुनः चरमावस्था और फिर पतनकी लड़ी सजायी गयी और इसी प्रभावशाली घटना चक्रके अन्तर्गत पात्रोंका भी चित्रण किया गया। इस प्रकार घटना और पात्र एक दूसरे पर आधारित हो गये और इनके सम्मिलित उत्थान पतनके द्वारा कहानीमें नाटकीय-चमत्कार सन्निहित किया गया।

कहानीका तीसरा उपकरण कल्पना और भाव है। कल्पना साहित्यकारोंकी अमूल्य वस्तु रही है और इसीके बल पर वे आज तक अनुपम सौंदर्यकी सृष्टि करते रहे हैं। कहानीमें भी यह कल्पना अत्यावश्यक है। सरस कल्पनाके बिना कहानी निर्जीव हो जाती है। भावोंकी अभिव्यक्ति भी कहानीमें पूर्णरूपेण होनी चाहिये। क्योंकि कल्पनासे सौंदर्यकी सृष्टि होती है और भावसे आनन्दकी। दोनों ही शाश्वत वस्तुएं हैं और कहानीको स्थायी बनानेमें सहायता पहुंचाती हैं। पवनके स्पर्शसे सुमनकी पंखुड़ी खुल जाती है। कल्पनाके स्पर्शसे उसकी कला खिल जाती है।

चतुर्थ उपादान कहानीमें प्रेमका समावेश है। संसारके किसी भी देशका कथा साहित्य लिया जाय उसका श्रेष्ठ आधार प्रेम ही है। इसका तात्पर्य यह नहीं कि प्रेमके समावेशके बिना कहानी लिखी ही नहीं जा सकती बल्कि यह कि संसारकी अधिकतर कहानियां प्रेम पर ही आश्रित हैं। और सचमुचमें कहानियोंमें यदि प्रेमकी भावनाका समुचित रूपमें निर्वाह किया जाय तो वह सर्व श्रेष्ट कहानी होगी। प्रेम सत्य है। प्रेमसे ही आनन्दकी प्राप्ति हो सकती है। प्रेम कहानीका सर्वश्रेष्ट उपकरण है।

प्रेमसे मेरा तात्पर्य आजकी कहानियोंमें व्यंजित सस्ते रोमान्सोंसे नहीं हैं। जिनसे माया और मनोहर कहानियां जैसी एक दर्जन कूड़ा पत्रिकाओंकी फाइलें भरी रहती हैं। इन कहानियोंमें तो केवल वासना और लिप्साको प्रश्रय दिया जाता है। ये पत्र पत्रिकायें पाठकोंको मानस मैथुनकी सामग्री प्रस्तुत करती हैं। प्रेममें तो अशान्ति और असंयमकी गुंजायश ही नहीं। उसमें अनन्त आशा और अनूठी प्रतीक्षा रहती है। प्रेम कभी भी घटता बढ़ता नहीं। वह शिशु-हृदयके समान पवित्र होता है। आकाशके समान व्यापक और ज्योत्सनाके समान निर्मल होता है। सच्चे प्रेमसे दिव्य भावनाओंकी उत्पत्ति होती है। कहानीकार जब आत्माके सौन्दर्यको बाहरके सौन्दर्यसे एकाकार कर देता है तभी उसकी कुशलता प्रकट होती है। किसी सुन्दरीके मुख मंडलकी कांति, यौवनकी छटा, वक्षस्थलके उभार आदि ही सौंदर्य नहीं हैं, भक्ति, त्याग, दान आदि इससे अधिक सुन्दर, साथ ही महत्वपूर्ण हैं। सच्चा कहानीकार आन्तरिक सौन्दर्यको व्यंजित करनेके लिये ही बाहरी सौन्दर्यका सहारा लेता है। बाह्य सौंदर्य क्षणिक है, आन्तरिक सौंदर्य शाश्वत। प्रेम जो बाहरी सौंदर्य पर आधारित होता है, तो वह प्रेम ही नहीं है, अन्तर पर आधारित प्रेम अमर है।

सच्चे प्रेमका कहानियोंमें निर्वाह होना अत्युत्तम है। साहित्यमें प्रेमकी आवश्यकता है। साहित्य जीवनका चित्र है और प्रेम जीवनकी सार वस्तु है। अतः प्रेम कहानीका एकमात्र उपादान है।

कथानक भी कहानीकी खासी सामग्री है। कथानक लेखकके गाढ़े अनुभवकी उपज है। लेखक किसी भी परिस्थितिसे कथानक चुन सकता है। इसका क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत है। जीवनसे सम्बन्धित किसी भी वस्तु पर सुन्दर से सुन्दर कहानीकी सृष्टि की जा सकती है। समस्त संसारका कथा साहित्य इस बातकी पुष्टि करता है किन्तु फिर भी कल्पनात्मक तथा भावात्मक कहानियां अधिक रोचक होती हैं। जिस किसी कहानीमें भी किसी रहस्य या पहेलीको सुलझानेकी चेष्टाकी जाती है उसमें रोचकता और आकर्षणकी मात्रा बढ़ जाती है।

कुछ लोगोंका कहना है कि साहित्यमें वेदना तत्वका समावेश किये बिना आनंदकी कल्पना करना दुर्लभ है। बात वास्तवमें ठीक है। यदि वेदना न रहे तो जीवनमें आनन्द और माधुर्य रहें ही नहीं। हम दुखका अनुभव करते हैं, इसलिये हमें सुख अच्छा लगता है। यदि केवल सुख ही सुख रहे तो शायद मनुष्य दुःखके लिये लालायित हो उठे। वेदना बड़ी ही मोहक, सरल एवं सुन्दर होती है। शायद इसीलिये शैलीने एक बारगी कहा था—वे ही गीत सबसे अधिक प्रिय हैं जो वेदनामय भावोंसे ओतप्रोत हों।

दुख किसीको प्रिय नहीं किन्तु फिर भी इससे मुक्ति नहीं पायी जा सकती। लोग दुःखमें लिपटे हुए रहते हैं। सारा जीवन इसीके क्षेत्रमें व्यतीत कर देते हैं, फिर भी इसके नामसे घबराते हैं। कवि इसे वास्तविक रूपमें पहचानता है अतः वेदनाओंसे दूर होकर सुखकी सीमामें पांव रखना नहीं चाहता। आदि कवि वाल्मीकिके मुखसे भी सर्वप्रथम वेदनाकी ही मधुर मन्दाकिनी फूट निकली थी।

अन्तिम उपकरण कहानीमें हास्य रसका समावेश है। इसे लोगोंने हलका साहित्य माना है। बहुत लोगोंका तो विचार है कि कहानीका अर्थ मनोरंजन देना है। यदि मन बहलावकी सामग्री उचित मात्रामें कहानियोंमें न रही तो वह शायद कहानी नहीं हो सकी, कुछ और ही हो गयी। उपदेश देना तो [illegible] हेय मनोवृत्ति है। इसलिये यदि हास्य भी कहानियोंमें उचित मात्रामें निहित हो तो उत्तम है। यथार्थ जीवनमें भी हास्यका स्थान सर्वोत्तम है।

———

कहानी

मातृत्व का अभाव

——)::✲::(——

(लेखक—श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल')

नरेनकी ऐसी बातें सुन मैं झल्ला उठा। पारा चढ़ गया। मैंने घृणाकी हंसी हंसते हुए कहा—"नरेन! तुम्हें स्त्रियोंकी बुराई करते शर्म नहीं आती। नारीत्वका अपमान मेरा अपमान है। मैं इसे सहन नहीं कर सकता।"

"भाई! इसमें गुस्सा होनेकी कोई बात नहीं। यदि सच पूछिये तो आधुनिक स्त्रीमें नारीत्व है ही नहीं?"

"क्यों? इसका नारीत्व कहां चला गया?"

"उसका नारीत्व अतीतके गर्भमें विलीन हो गया।"

"मैं इसे नहीं मानता।"

"मत मानिये। इसमें झगड़ेकी कौन सी बात है?"

"झगड़ेकी बात ही नहीं। सरासर नारीत्वका अपमान करते हो और कहते हो झगड़ेकी कोई बात ही नहीं। भाई हमारे शास्त्रोंने भी कहा है— 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।'"

"मैं इसे मानता हूं, नारी हो तब न? आधुनिक तितलियोंको पूजनेसे पुजारीका पतन हो जाता है। उसके इंगितपर नाचने वाले मनुष्यकी अपनी कोई अलग हस्ती ही नहीं रह जाती। देखा नहीं मास्टर काशीनाथ अपनी नवयौवना पत्नीके इशारेपर अपनी मा की कितनी तौहीन करता है। उनकी भी कितनी खराब हालत है। रात-दिन अपनी स्त्रीके इंगितपर ही नाचते रहते हैं मास्टर साहब! केवल वे ही नहीं। मिसेज चन्द्रिकाप्रसादकी स्त्रीको ही ले लीजिये। मेरे सामनेकी बात है। उनका लड़का दो रसगुल्ले लिये फाटकके पास खड़ा था। भिखारिन उधरसे आयी। उसके छोटे लड़केने कर्नल साहबके लड़केसे रसगुल्ला मांगा। उसने अधखाया रसगुल्ला दे दिया। मिसेज चन्द्रिकाप्रसादने रसगुल्ला उसे देख लिया। वे एकदम दौड़ी बाहर आयीं। कलुआको बुलाया। सैकड़ों गालियां भिखारिनको दीं, और उसके हाथसे रसगुल्ला छिनवा कर अपने सामने फिंकवा दिया। बतलाइये, उस समय मातृत्व कहां गया? वह तो बच्चों-बच्चोंमें। उस भिखारिनके भोले बच्चेकी ... मिसेज चन्द्रिका प्रसादमें मातृत्व खोज ... फिर ईर्ष्या, द्वेष, डाह और जलन ... समझाना हमारी ये देवियां खूब ... प्रारम्भसे ही सास-बहू, ननद-भौजाई, देवरानी-जेठानी आदिकी लड़ाइयां होती आयी हैं, और शायद अनन्तकाल तक इनका अस्तित्व अक्षुण्ण रहेगा। हम ... डींग हांकते हैं, किन्तु सच पूछिये ... सभ्यतासे कोसों दूर हो गये ... सभ्यतामें धोखेबाजी, धूर्तता, ... स्वार्थपरताको विशेष स्थान ... भाई भाईका खून बहाये—बहन-... का जाये, मातृत्व, नारीत्व ... को कोई महत्व न दे, क्या यही सभ्यता है?"

"... ! यह तो मैं मानता हूं कि ... वास्तविक: उन्नति नहीं। ... सी बातोंकी कमी है। परंतु दुनियाके लिये कहां तक रोया जाय? फिर ऐसा कहकर तुम अपने विषयसे बहुत दूर जा रहे हो। यहां बात स्त्रियोंकी हो रही थी, पुरुषोंकी नहीं। मैं समझता हूं, स्त्रियां वास्तवमें दयाकी प्रतिमूर्तियां हैं। वे आदरकी ही नहीं वरन् पूजाकी भी अधिकारिणी हैं। उन्होंने हमें समय-समयपर सत्य, सहनशीलता, बलिदान और त्यागका संदेश दिया है। आज भी सीता, सावित्री और पद्मिनी जैसी देवियोंके कारण हमारा मस्तक ऊंचा हो जाता है। फिर नारी ही तो महापुरुषोंकी जननी है। सच पूछिये तो नारियोंने ही मानवता, देश और राष्ट्रका सच्चा उपकार किया है। संस्कृतिके ध्वस्त प्रासाद इन्होंने ही अपने कन्धोंपर रोक रखे हैं। ये महादेवी हैं। इनका अपमान ईश्वरका अपमान है।" —मैंने गर्वसे कहा।

"यह मैं मानता हूं, किन्तु वह जमाना चला गया। कल और आजकी नारीमें जमीन और आसमानका अन्तर है। हमारी इन रंगबिरंगी तितलियोंके बच्चे देशकी गुलामीकी जंजीरें १००० सालके लिये और मजबूत बना देंगे। खैर कुछ भी हो, यह तो आप मानेंगे ही कि आजकी नारीमें मातृत्व, नारीत्व तथा सतीत्वका एकदम नहीं तो बहुत अंशोंमें अभाव तो है ही।"

"नरेन! तुम यह नहीं कह सकते। मेरी स्त्री सत्यभामाको ही देखो। वह तो मेरे लड़केकी सौतेली मा है। कितना प्यार करती है! सुरेश तो उसीको अपनी मा समझता है। आज सुरेश चार सालका हो गया, किन्तु उसने कभी अपनी मा की याद नहीं की। अब मैं कैसे कहूं कि स्त्रियोंमें मातृत्वकी कमी है। मालूम पड़ता है रमेश! तुम्हारी स्त्रीमें ये सब सद्गुण हैं, तभी तुम स्त्रियोंके विरुद्ध इतना बोल रहे हो।"

"भैया! मैं विवाह करनेकी गलती कभी नहीं कर सकता। खैर इससे क्या, अपने-अपने विचार ही तो हैं।

(२)

वास्तवमें मैं बड़ा ही अभागा हूं। आज से कई साल पहले मैं पुष्पाको पाकर निहाल हो गया था। कितनी अच्छी थी वह। सुरेशको जन्म देनेके ८ ही रोज बाद वह स्वर्ग सिधारी। यों तो मैं दूसरा विवाह न करता किन्तु सुरेशके लालन-पालनके प्रश्नने मुझे विवाह करनेके लिये विवश कर दिया। भाग्यकी बात देखिये—सत्यभामा पुष्पा भी कहीं बढ़ कर निकली। नरेनके विचारानुसार तो सत्यभामाको सुरेशसे घृणा करनी चाहिये थी। किन्तु नहीं, उसके विशाल हृदयने महानताका परिचय दिया। सुरेश उसका प्राण बन गया और वह सुरेशकी प्राणप्यारी मा। विधाताको यह भी मंजूर न था। उसे भी भगवानने न रखा। सुरेशको बिलखता छोड़ वह भी भगवानके यहां चली गयी। यों तो मैं अपना तीसरा विवाह न करता, किन्तु कतिपय मित्रोंका आग्रह मैं न टाल सका। यदि सच पूछिये तो लड़की देख कर मेरी लार टपक पड़ी। गोरा बदन, लम्बा शरीर, मांसल अंग, चंद्रमा-सा चेहरा बड़ी-बड़ी आंखें और नागिनसी फुंकारती हुई लम्बी चोटी देख कर मैं ठगा-सा रह गया। जब वह जार्जेटकी प्याजी साड़ी पहन कर मेरे सामने आयी, तो फिर क्या पूछना! मैं धनी तो था ही। २० दिनके अन्दर ही विवाह हो गया। कुछ दिन तक तो अवश्य ही गुलछर्रे उड़े, किन्तु रसाभास होते देर न लगी।

मेरी नवयौवना पत्नी निवेदिता सुरेशको न चाहती थी। उसका उसपर हाथ भी बहुत चलने लगा। कई बार मेरे सामने ही उसने उसे पीटा। यदि मैं कुछ कहता तो वह मान-मंदिरकी महारानी बन जाती, फिर तो मैं उसे मनाते-मनाते परेशान हो जाता। मेरी दूसरी पत्नी सत्यभामा जब आयी थी तो उसने मेरी पहली स्त्री पुष्पाका फोटो जो मेरे सन्दूकमें पड़ा था, फ्रेम करा लिया था वह मेरे सिरहाने टंगा रहता था। निवेदिताने सत्यभामा तथा पुष्पा दोनोंके फोटो उतार डाले। जब मैं कुछ क्रुद्ध हुआ तो दूसरे दिन मुझे पता चला कि वे दोनों फोटो अग्निदेवके अर्पण कर दिये गये।

मेरे दुःखकी सीमा न रही, परन्तु चारा ही क्या था? बी० ए० पास लड़कीको डांटना-फटकारना भी तो सहल नहीं। मन मसोस कर रह जाता। घरसे बिरक्ति-सी होने लगी। जिस सुरेशको मैंने कभी उंगलीसे भी नहीं छुआ, उसेही एक दिन निवेदितासे निष्ठुरतापूर्वक पिटते देख मुझसे न रहा गया। मैंने आखिर कह ही दिया—"खबरदार! जो अब लड़केपर हाथ उठाया। अपनी साहिबी अपने मायकेमें ही दिखलाना।"

मेरी बात सुनकर वह आग-बबूला हो गयी और अकड़ कर बोली "गंवार क्या जाने मेरी साहिबी! न जाने किस गंवारके साथ मुझे पिताजीने बांध दिया। कहां कालेज की मस्ती भरी हवा और कहां यह दम घोटने वाला घरका वातावरण!

(३)

मैं किसी कामसे कानपुर गया था। चार दिन बाद जब घर लौटा तो दरवाजेपर ताला लटकता देखकर मैं घबरा गया। खुशकिस्मती से उस तालेकी एक चाभी मेरे कोटकी जेब में पड़ी थी। ताला खोलकर अंदर गया। देखा—घरका सब कीमती सामान लापता है। इतने हीमें मेरी दृष्टि कुएंमें लटकते हुये रस्से की ओर गयी। मैं कुएंकी जगतपर चढ़ गया। रस्सेको छोरी मैं सन्न रह गया। कोई मानो

मेरे प्रवाह

——०✲०——

मेरे प्रवाह तू चलता चल।
सोते, को स्वतः जगाता चल,
जगतों को राह बताता चल,
मरुथल में कमल खिलाता चल,
पानी में आग लगाता चल।
मेरे प्रवाह तू चलता चल॥
तूफानों में लहराता चल,
पाषाणों से टकराता चल।
गिर गिर कर पुनः उछलता चल,
तू कल-कल-कल-कल करता चल॥
मेरे प्रवाह तू चलता चल॥
कब बांध सकेंगे कूल तुझे,
तू निर्भय, तू पथ निर्माता?
तू है स्वतन्त्र, जीवन दाता,
जो जी में आए, करता चल
मेरे प्रवाह तू चलता चल।
पा प्रबल प्रेरणा तुझसे ही,
नभ से चल दीं घन की बूंदें,
तुझ से मिल ने, आखें मूंदें,
तू उन से हिलता, मिलता चल।
मेरे प्रवाह तू चलता चल॥

—'सुन्दर'

कवि का मनोविश्लेषण

श्री तेजनारायण लाल, काशी विद्यापीठ, बनारस)

कवि अपने जीवनके मूलतत्वोंकी अभि-
व्यक्ति काव्यमें करता है। काव्य उसके
हृदय-सागरका मंथन है—अमृत है, आत्मा
का दर्पण है। उसमें वह अपना ही रूप देखता
है, आनन्दित होता है, नाचता है, गाता है,
गुनगुनाता है और दूसरोंको भी अपनी
आनन्दानुभूति प्रदान करता है। सौंदर्य-
राशियोंको बटोरकर अपने अन्तरमयके घरमें
जमा करता है और वितरण भी करता है।
वह श्रोता-वक्ता दोनों बन जाता है क्योंकि
'पर' के बिना 'स्व' का, 'दृश्य' के बिना
द्रष्टा का बोध नहीं होता। वह अपनेसे बति-
याता है, प्रश्न पूछता है, चकित होता है,
...सुक सीखता है और आगे बढ़ता है। बाह्य
एवं अन्तर्जगतमें उसका सूक्ष्म मन घुसकर,
प्रत्येक:वस्तुके अन्तःकरण प्रवेश कर नवीन
चेतना एवं स्फूर्तिके द्वारा काव्यकी रचना
करता है। प्रकृतिकी सुन्दरतामें रमण करता
है और बुद्धिपर विजय प्राप्तकर प्रतिभाके
द्वारा कल्पना करता है—और करता है
अलौकिक सृष्टिका सृजन। वर्तमान पूर्ण-
तया तुष्टि प्रदान नहीं करता इसीसे वह
अतीत और आगतकी प्रखर कल्पना-शक्तियों
के द्वारा एक मूर्तरूप अपने सौष्ठव शब्दोंमें
ला खड़ा कर देता है और तब उसके
शब्द बोलते हैं। क्योंकि वह उन्हें अपने
प्राणोंसे सींचकर, अनुप्राणित कर पुनर्जीवित
करता है और हमारी सुप्त भावनाओं एवं
संस्कारोंकी ग्रन्थियोंको उपस्थित कर स्प-
न्दित कर देता है। सन्मार्गपर लाकर
कल्याणोन्मुख कर देता है। उद्दाम वासनाओं
की धाराको संयम एवं साधना-सागरमें
मिला देता है। अर्थात उसपरनियंत्रण करता है
उसकी भावाभिव्यञ्जनाएं,बहकने नहीं पाती।
काव्य तो उसकी सत्प्रवृत्तियोंका ही प्रतीक है।
उसमें उसकी उच्चतम कल्पनाएं, भावनाएं
अनुभूतियां परस्पर समन्वित होती हैं, गुम्फित
होती हैं और नवीन विचार एवं नवीन
संसारका निर्माण करता है वह। काव्य-
प्रतिभाके द्वारा हमें उन्मुक्त देशमें कुछ क्षण
विचरण कराकर स्वच्छन्द कर देता है।
हमें ब्रह्मानन्द प्राप्त होता है। यही है उसकी
काव्य-कला और जीवनकी शक्तियोंका उसमें
निरूपण। वह प्रेम-मिलनके ही नहीं, बल्कि
विरहके माधुर्य एवं वैचित्र्यके अनिर्वचनीय
आह्लादको उड़ेल कर मनपर सहिष्णुताकी
छाप डाल देता है, क्षुब्ध कर देता है।

कवि सामाजिक प्राणी है। वह समाज
में बसता है, खाता-पीता, सोता-जागता
है। वह उसका प्रधान अंग है। उसका रोना-
हंसना, सुख-दुःख समाजका ही रोना-हसना
है। वह इससे अलग कैसे हो सकता है?
शरीरसे प्राण अलग रह कर अपना अस्तित्व
नहीं रख सकता। कवि समाजका चित्रण,
प्रकृतिका निरीक्षण अपनी रचनामें करता
है। जिस जाति, देशसे उसे प्रेम होता है,
वह उसीकी गाथा गाया करता है। उसीके
यशोगानमें निरन्तर तल्लीन रहता है। क्यों-
कि परिस्थितियोंका प्रभाव तो किसी न
किसी रूपसे पड़ता ही है और स्वयं उसको
भी मनुष्य बनाता है। छोटी-छोटी घटनाएं,
जो हमारे जीवनमें आती हैं और हमें आंदो-
लित कर चली जाती है, वह उनका अद्भुत
रूप अपनी काव्य-कलामें चित्रित करता है,
सजाता है। सुन्दर एवं आकर्षक बना कर
हमारे मनको बरबस खींच लेता है। सब
प्राणियोंके अन्तरालमें उसके गीत प्रतिध्व-
नित होते हैं। और जो जितना ही चैतन्य
है, वह उतना ही उल्लासित एवं विकसित
होकर नाच उठता है। मुखसे 'वाह-वाह'
की ध्वनि फूट पड़ती है। इतना ही नहीं,
अव्यक्त जगतमें भी उसकी आत्मध्वनियां—
(कविताएं) आकृतियां बनाती हैं, 'स्वर-
चित्र' अङ्कित करती हैं। क्योंकि उसकी
कल्पनाएं स्थूल नहीं सूक्ष्म होती हैं, जो
सर्वव्यापक हैं। उसका अन्त क्यों कर
होगा? वह कवि है, समस्त मानवके ही
नहीं, अखिल विश्वके कण-क ,अणु-अणुके
रहस्यको जाननेवाला है—सूक्ष्मदर्शी है, युग
से आगे उठकर भविष्यवाणी करनेवाला
महान कलाकार एवं स्रष्टा। उसके काव्य-
गीतसे नर-नारी ही नहीं, सभी प्राणिगण
मोहित होते हैं, क्योंकि उसमें आकर्षण है,
चुम्बकत्व है।

उसका जीवन भी अजीब ढङ्गसे गतिशील
होता रहता है। न जाने कवि कौनसा सं-
स्कार (अपने माता-पिताकी देन) अपने अंदर
ले आता है और उसीका परिष्कार क्रमा-
नुसार बहिर्जगतकी परिस्थितियोंके अनु-
भवसे करता है। वासनाएं, कामनाएं उसमें
भी होती हैं और होती हैं सबसे अधिक।
लेकिन वह उसको संयमित ढंगसे रखता है,
उपयोग करता है। मनमें वासनाओंकी कलु-
षित धारणाएं रखकर सौंदर्यकी सूक्ष्मानुभूति
वह थोड़े ही कर सकता है। सात्विक सौंदर्य
का निचोड़ ही तो काव्य है जिसे पढ़
कर वह सन्तोषकी सांसें लिया करता है।
अपनी अहमन्यता भूल जाता है। अपने जीवन
की क्षति पूर्ति वह कलामें करता है। उसके
जीवनका मूलतत्व (सत्य) ही तो कला
है। और यही कला उसे ऊपर उठाती है।
वह जीवनसे भाग कैसे सकती है? उसका
सम्बन्ध तो चिरन्तन है क्योंकि कलामें तो
जीवनकी ही अनुपम चित्रलेखा रहती है।
उसी झांकी मिलती है। युग-जीवनके व्य-
ञ्जनमें सत्यका किञ्चिन्मात्र लवण डालकर
वह उसे नमकीन सत्यमय एवं रसमय
बना देता है।

काव्यसे उसके जीवनको वंचित करके
हम उसके मनकी गुत्थियोंको आखिर
सुलझा ही कैसे सकते है! क्योंकि मन ही तो
उसके अन्तर्जगतका संदेश वाहक है।
और मनकी तीव्र कल्पना ही उसे नाच
नचाती है, उसके सभी प्रेरणाओंका उत्स
प्रेम ही है। और वह प्रेमके विशाल आंगनमें
घूमता है, परिभ्रमण करता है। जीवन प्रेम-
मय है, आनन्दमय। इसीसे उसका काव्य
भी तो लोकानन्दके निमित्त है—मंगलकारी
एवं कर्म प्रवृत्तियोंकी ओर अग्रसर करने-
वाला अग्रदूत? जब वह किसी विशिष्ट
वस्तुके प्रति अपना चित्त लगाता है, जमाता
है, तब उसकी भावनाएं, चेतनाएं घनीभूत
होती हैं और रसका संचार होता है। यही
छनकर उसके हृदय-पात्रमें छन्दबद्ध होकर
कविताके रूपमें प्रवाहित होता है। गान-
प्राणोंसे फूट निकलते हैं। स्वर-लहरियां
आलोकित होती हैं। उसका हृदय आंखोंकी
राहसे जब कोई चुरा लेता है जब उसके
प्राणोंमें प्रेमकी अमरबेलि लहलहा उठती है,
फैलकर आच्छन्न हो जाती है, उसका जीवन-
सुमन जब फूलने-फलने लगता है तब तो प्रेम-
देवके हाथमें अपनेको बेच ही डालता है।
और ऐसा तो सभी प्रेमी करते ही हैं। तभी
तो वह कवि बन जाता है। प्रेमके बिना
कोरी तुकबन्दी करनेसे काव्य निष्प्राणित
एवं निस्पन्दित रह जाती है। उसमें रस
नहीं रहता है और न रहती है गति ही।
इसीसे किसीके हृदयके तारोंको, सुप्त भाव-
नाओंको झंकृत नहीं कर सकता, जगा नहीं
सकता। और वह कवि सफल नहीं हो सकता
सम्मेलनमें करतल ध्वनि और साधारण जनता
के भोले सुकुमार मनको वाक्चातुरीके द्वारा
नाम कमानेके ख्यालसे कोई व्यक्ति कवि
नहीं बन सकता और न वह अपना ही
जीवन मधुर बना सकता है। आजकल कवि-
योंकी भरमार ही नहीं, उनका प्रचार भी हो
रहा है। भले ही वे कविताकी परिभाषा
भी नहीं जानते हो। उनको कहीं न कहीं
आश्रय मिल ही जाता है। और मिलना
भी चाहिये, क्यों कि इस तरह प्रगति-
शीलता' भी संघर्षके मार्गसे गुजरकर प्रका-
शमें आयगी। प्रभावकी रमणीय शोभा
तावके कारण ही है।

यहतो स्वभाविकही हैकि जब बाढ़ आती
है तो छोटी और बड़ी नदियां समुद्रसे मिलने
के लिये उफनाती है, उठती है और प्रवाहित
होती है, कूलकछारों, पुलोंको तोड़ती हुई,
काटती हुई उद्दाम गतिसे। बस उसी तरह
साहित्य भी जब प्रौढ़ होने लगता है तो उसमें
नवीन जाग्रति होती है! नयी-नयी विचार
धाराएं आती हैं—उसे कोई शक्ति रोक नहीं
सकती। अतः हमें बनावटी काव्यकारोंसे
घबराना या ऊबना नहीं चाहिये।
आजका युग भी तो वास्तविक युग नहीं
है। क्योंकि आज तो कला और
प्रेम चांदीकी टुकड़ीपर बिक रहे हैं।
उसका मूल्याङ्कन हृदयसे नहीं हो रहा है,
बल्कि मुंह देखकर धनसे किया: जाता है।
असलमें कला ऐसे युगमें अब: कि
पूंजीका ही बोलबाला है— पनप: नहीं
सकती। फिर भी हमें इसको सत्य से
जीवनके यथार्थ अधिकारसे हटाना नहीं
है। भ्रमसे दूर करना है। अन्धकारमें इसकी
ज्योतिको द्योतित करना है। और सारे
कविका भी आज यही कर्तव्य है कि वह
अपनी कलामें ओजस्विता, प्रतिभा भरकर
लोगोंके मनको उन्नत कराये, फड़का दे,
मित एवं सुदृढ़ करे। तभी कोई भी राष्ट्र सच्चे
अर्थमें उन्मुक्त हो सकता है और समाज
जागरित हो सकती है। अन्यथा बाजारमें
बैगनकी तरह कला तो बिक ही रही है।

हमें देखना है कि कविके मन-विहंगके
पांखें कहां-कहां फड़फड़ा कर उड़ती जाती
हैं? सूर्यलोकमें, चन्द्र लोकमें या उससे भी
आगे अनन्तकी ओर जाती हैं या धरातल
ही फड़फड़ा कर, विवश होकर रह जाती
है। पेड़, पौधे, नदी, नाले, झरनार
कछारोंकी मरमर-खरखर, कलकल-छलछल
ध्वनिमें भी उसका मन विचरण करता है,
करता है, अठखेली एवं रंगरेली करता है
या भूखे, नंगे भिखमंगे, अतिदीन दुखियों
विधवाओंके करुणक्रन्दनको भी सुनता है।
गगन चुम्बी, अट्टालिकाओंपर ही उसका
टिकता है, मंडराता है। अथवा मधुशाला
मधुपाइयों, तितलियोंके नर्त्तन,गुंजन
में ही उसका मन रसपान करता है।
वह कवि क्या स्थूल क्या सूक्ष्म, क्या
क्या अरूप सभीमें अपना मन घुमाकर
उठ जाता है। अपनेको अमर करता है
हमें भी आलोक दे जाता है। अभी
उसका मन कण-कणमें निरूपित होता
ध्वनित होता है।

सी चीज उसमें बंधी कुएंमें लटक रही थी।
मैंने रस्सा खींचा। जरा देरमें ही वह भारी
लगनेवाली चीज बाहर आ गयी। मैं चौंक
पड़ा जब मैंने देखा—कि वह मेरे प्राणप्यारे
हरेराकी लाश है।

मैं चीख मारकर धड़ामसे जमीनपर
गिर पड़ा। उस समय मैं सोच रहा था—
'क्या वास्तवमें नारी इतनी.पतिता है?'

है। सालखातेमें वह काम … अहमदाबाद शहर छोटा-मोटा … सन् बयालीसकी भगदड़ मची … ट्राइक-सी हो गयी, वह अह- … छोड़कर यहां इस शहरमें आ गया। … बच्चा है, औरत है, तीन बच्चे हैं, … इस शहरमें अहमदाबादकी सी तड़क … और नहीं वह जीवन-संघर्ष। … सीधा-सच्चा आदमी है और शुरूमें … खातेमें पहिले बेचारेको बहुत … पड़ा। बड़ी मुश्किलसे कुछ 'दादा' … जेबें गर्म करनेके बाद उसे यह … मिली। अब महगाई वगैरह मिला- … बाबू मंगतराम बन गया है। … अच्छर पढ़नेका ज्ञान होनेके … और मजदूरोंसे अधिक तेज है। … अपनी मिलके अपने खातेका … मगर मंगतूकी यह अगवानी … फूटी आंख नहीं सुहाती। … गिरिधारी इसमें अपनी तौहीन सम- … उसे कोई नहीं पूंछता और सब … को ही महत्व देते हैं, पर मनही … गिरिधारी मंगतूसे जलता है। उससे … आपको बड़ा भी समझता है। … गिरिधारीका बाप शायद अहीर था, … मालिन थी। पर अब गिरिधारी … —यानी पंचम वर्ण है। खद्दर … कुछ पढ़-लिख भी सकता है। यह … गुण हैं मंगतूसे अपना बड़प्पन … के लिये। और सबसे बड़ी भारी … कि गिरिधारी इस शहरका … आदमी है। उसके हथकंडे पुराने हैं। … बाहर गांवका है, परदेशी … जाकर जो बात दुहराई जाती … कि मंगतू बलई है।

… दुनिया एक और ही किस्मकी … है। यहां आदमी आदमी नहीं … बन जाता है। जैसे कपड़ा बनाने … यन्त्र होते हैं, वैसे ही सिक्के … आदमी हैं। जो जितने अधिक … जेबकी ओर खींच कर ला सके, … बड़ा आदमी है। जिसकी जेब … है, उतना ही वह भला यानी … है। यहां भलाई-बुराई, बड़प्पन- … एकमात्र मापदण्ड है—कौन कितना … यह बात बिलकुल दूसरी है कि … कमाई कितनी और कैसे जाती … मिल कंपाउण्डसे बाहर लगे हुए … सट्टेवाले और लाटरी या रेस … कमाते हैं और मिलके काम- … सचमुच बचा कितना पाते … प्रश्न गौण हैं। क्योंकि पैसा … कमकरा है, उसे बटोर कर रखने … उन्होंने अपने मालिकोंको दे रखा … बाहिक किस्मके लोग हैं— … कोली, हब्शिया, घसकटे, बंजारे, … थे, आज मिल मजदूर हैं; … बननेकी एकमात्र इच्छा उनके … आदि प्रेरणा है। एकदम खूब … जैसे कोई 'हर्षातिरेक' से … जाता है; वैसी ही उस वर्गकी … जिन्दाबाद रहे—राम भला … कमाई काफी मिल जाती है।

मिलके अन्दरकी राजनीतिकी एक झलक—

मंगतू

—*:*—

(लेखक—श्री प्रभाकर माचवे)

गो रहन-सहन वही पुराना रहा है, उसमें कोई फर्क वैसे नहीं पड़ा है। तो मंगतू जब अहमदाबादसे आया तो वह अपने साथ कुछ पूर्व संचित अनुभव और राजनीतिक पक्षपात भी लेते आया। वह तो दुनिया को साफ दो हिस्सोंमें बंटी देखना चाहता था। एक चूसने वालोंकी, दूसरे चुसे जाने वालोंकी। वह अपने आपको दूसरे हिस्सेमें पाता था, अतः पहिले वालोंसे बहुत सतर्क रहता।

गिरधारीकी बात दूसरी है। वह कांग्रेस कमेटी वालोंसे भी कंधेसे कंधा रगड़ता नजर आता है। कभी-कभी मिल मालिक साहबके खास एजेन्टोंसे भी उसकी चुपके-चुपके गुफ्तगू हो जाती है। मजदूर तो उसके खिलाफ साफ कहते हैं कि यह रिश्वत खाता है और मालिकोंका जासूस है। सचाई तो खुदा जानता है। पेटकी आग बहुत बड़ी सचाई है। और उसके आगे धरम-करम, ईमान, नीति, मर्यादाएं सिर झुकाये खड़ी रह जाती हैं। गिरिधारी उस आगका एक बहुत बड़ा शिकार है। मंगतू भी वैसे गरीब है। पेटकी आग उसे नहीं सताती हो सो नहीं। पर वह उससे भी आगे बढ़ कर कुछ त्याग करनेकी क्षमता रखता है। मजदूर जमायतकी इन्कलाबी ताकतको वह पहिचानता है। उसने कुछ मजदूर नेताओंसे, जो अपनी आंखोंसे रूस देख आये थे, मजदूरोंका जहां स्वर्ग है उस सोवियटका बखान सुना है और इसीसे वह मजदूरोंमें अधिक प्रिय भी है।

अब मजदूर ऐसे लोग हैं जो जात-पांतको मानते हैं, छुआछूतको भी मानते हैं। क्योंकि उनके संस्कार अभी गंवारू हैं। बहुतसे उनमेंके जातीयवादी नीतिके भी हिमायती हैं, क्योंकि उनके मालिक भी बहुत कुछ हिन्दू-सभाई या वैसे हैं। और जहां हिन्दू सभाई होंगे, वहां उनकी प्रतिक्रियामें कट्टर मुस्लिमोंका होना कोई अचरजकी बात नहीं। यह हिन्दू सभाई भी मजेके जीव हैं—एक ओर तो वह अछूतोंको हिन्दू कह कर उन्हें विशेषाधिकार, शासनमें अलग सीटें, वोट वगैरह नहीं लेने देते, दूसरी ओर उनके राजनैतिक शिक्षण या उन्हें आर्थिक समता दिलानेका उनका कोई कार्यक्रम नहीं। अधिकसे अधिक यह हो जाता है कि इन्हें थोड़ा-बहुत मन्दिर-प्रवेश मिलने दो, होटल-प्रवेश मिलने दो, कूंआ-प्रवेश मिलने दो वगैरह-वगैरह। यानी जैसे कोई मालिक अपने दासोंको या नौकरोंको थोड़ी-बहुत बखशीश वार-त्यौहारपर बांट दे। यह सुधारवादी दृष्टिकोण अपमानास्पद है। इस में सवर्णोंकी अहंभावना, डिक्टेटरशिपकी सी बू साफ झलकती है। ऐसे उग्र विचार जब मंगतू कहता, गिरिधारीको मौका मिलता कि वह मंगतूको बदनाम करे कि "अरे यह मंगतू तो अम्बेडकरके दलित-समाजवाला है, उसे तो अंगरेजोंकी छत्र-छायामें अछूतिस्तान चाहिये। अरे वह तो लाल झण्डेवाला है। वह तो समाज ला-मजहब है, नास्तिक है, वह धर्मको मिट्टीमें गाड़ देगा।" इत्यादि

दोनोंके राजनैतिक दृष्टिकोणका मतभेद न भी बढ़ता; पर एक और घटना इसे बढ़ाने में बहुत सहायक थी। और वह घटना एक जीवित व्यक्तिके रूपमें थी। उसका नाम था अनीता। मिल मालिककी प्रथम पत्नीकी वह इकलौती लड़की, विलायतमें पढ़ी, साम्यवादी विचारोंकी, भारतमें लौटकर बापसे झगड़ कर अलग हुई, (मगर बापकी सहानुभूतिके कारण उनसे कभी-कदास पैसेकी मदद पाती जाती थी)—वह उसी शहरके लड़कियोंके कालेजमें अध्यापिका थी। और मंगतूवाले मजूर सङ्गठनमें बहुत दिलचस्पी लेती थी। बल्कि यह भी देखा गया कि वह मंगतू उस अनीताके साथ बलाइयोंके मुहल्लोंमें स्कूल और दवाखाने खुलवा रहा है। कलालीमें कभी न जानेकी शपथें मजदूरोंसे लिवा रहा है। और हर हफ्ते अनीता मजदूरोंको लड़ाईके हालतपर दिलचस्प, उन्हींकी जबानमें वर्णन तक सुना रही है, भाषण रूपमें। अनीताके पिता सनातन-महामण्डल, वर्णाश्रम, स्वराज्य संघ, अखण्ड भारत-समिति, प्रान्तीय हिन्दू महासभा और शहरके बड़े लक्ष्मी नारायण मंदिरके क्रमशः सभापति, दाता, सदस्य, मन्त्री और ट्रस्टी हैं। अनीतामें 'हिन्दुत्व' पूछो तो सिर्फ इतना ही बता है कि वह हिन्दुओंकी तरह साड़ी पहनती है (सो भी कभी-कभी, अक्सर वह पञ्जाबी कुर्त्ता-शलवार पहने रहती है।) और उसका नाम वैसा है—बाकी सब बातोंमें वह पूरी विश्वनागरिका है—यानी किसी प्रान्त, राष्ट्र, जाति या धर्मके सांचेमें वह नहीं ढाली जा सकती। गिरधारीको यह देखकर कि अनीता जैसी नेत्री इन मंगतूकी पार्टीमें जाय, बहुत बुरा मालूम पड़ता है—और इसी कारण वह प्रचार करता-फिरता है कि 'बिलायत जाकर इन जवान लड़कों-लड़कियोंकी मति मारी जाती है। अंग्रेजी शिक्षासे तो ये पूरे अंग्रेज ही बन जाते हैं) ये क्या जाने हमारे पुरखोंकी महत्ता। हमारी संस्कृति! अहा! हमारा धर्म? अहाहा!! हमारे वीर-पराक्रमी योद्धा—हमारे विक्रम-शिवा जी-प्रताप इत्यादि इत्यादि अहाहाहा!!!' वह जब इस प्रकारकी वक्तृता देता, मजदूर मनही मन हंसते। कुहनीसे पास बैठे हुए मजदूर साथीको ठकसाकर कहते—"क्यों देखा, 'हिज मास्टर्स वायस' कैसे बोल रहा है?' दूसरा कहता—"जान पड़ता है कि कठपुतलेको बहुत अच्छी तरह मालिकने रटाया है!!" तीसरा—"अब हम मजूर काफी जग गये हैं—मजहबकी यह अफीमवाली गोली हमें अब छला नहीं सकती।"

एक ओर जब गिरिधारी यों पुरानी बातें दुहरा कर मजदूरोंमें धर्म-प्रेम जगानेका प्रयत्न करता; दूसरी ओर मंगतू सीधे-साधे शब्दोंमें कहता—'साथियों! हमारा देश दुनियाके और देशोंसे कटा हुआ नहीं है। हिन्दुस्तानसे गत वर्ष कितनी जरूरी चीजें रूस भेजी गयीं! हमारी मिहनत-मजदूरी हम सिर्फ अपने लिये ही नहीं करते। मगर इससे दुनियाकी दूसरी आजादी पसन्द ताकतें, जनताकी ताकतें भी मदद पा रही हैं। ऐसे वक्त भला हमारा चुप बैठना, हमारी यह थोड़ी बहुत जो कुछ भी मदद है इसे भी रोक देना क्या यही हमारा फर्ज है?' लोग उसकी बातें सुनते और नया आत्म-विश्वासका संबल पाते। इस वातावरणकी बैकग्राउण्डपर अब आगे जो कहानी घटी उसे सुनिये।

उधर हमारे थैलीशाह मिलमालिक लोग दुहरी कैंचीमें फंसे थे। एक ओर तो वे मुनाफा खूब कमा रहे थे और इसलिये मंहगाई मजदूरोंको उन्हें देनी ही पड़ रही थी।

दूसरी ओर वे नहीं चाहते थे इस जङ्गका सहारा लेकर, यानी जंगमें सरकारका रेल, मिल आदिके कर्मचारियोंके प्रति प्रेमका बर्ताव और अङ्गरेज बहादुर और सोवियट रूसकी मैत्रीका सहारा लेकर, जो मजदूर-सभाका संगठन और उसकी संख्या बढ़ती जा रही थी वह बढ़े। क्योंकि मार्क्सवादके तर्कशास्त्रका अध्ययन न करनेपर भी पूंजीपति इतना बहुत आसानीसे समझ रहे थे कि संख्याका गुणमें परिवर्तन ऐतिहासिक आवश्यकता है। वह होकर रहेगा। दुनिया की बड़ीसे बड़ी हुकूमत आजतक उसे रोक नहीं सकी है। अतः इस चीजको दबानेके लिये उन्होंने एक बहुत ही चतुराईसे रचा हुआ जाल बिछाना शुरु किया। अनीताका कामरेड अब्दुलसे घनिष्ठ मेल-जोल था। इस बातको लेकर गिरिधारी द्वारा मजदूरोंमें यह गलतफहमी फैलाना शुरू कर दी—अरे तुम जानते नहीं, ये कामरेड लोग तुम सबको मुसलमान बना देंगे। देखते नहीं उनके अखबारोंमें पाकिस्तानको कितना महत्व दिया जाता है। वगैरह वगैरह

एक सभा हुई, जिसमें अनीताको पाकिस्तानके पेचीदा प्रश्नपर बोलनेके लिये कहा गया। अनीताने बतलाया कि यह पाकिस्तान अब कैसे निरा धार्मिक या जातीय नारा नहीं रह गया है, बल्कि उसमें राजनैतिक आकांक्षाओंका प्रतिबिम्ब है। अनीताने बतलाया कि मुसलमानोंके निकट इस शब्दसे वही अर्थ निकलता है, जो हिंदुओं को स्वराज्यसे प्राप्त होता है। पर लोग नहीं मानें। उन्होंने न सिर्फ सभामें हुल्लड़ किया पर अनीतापर अंडे फेंके और पत्थर बरसाने तक नौबत आ गयी। मंगतू एक नुकीले पत्थर और अनीताके बीचमें आ गया। वह लहूलुहान हो गया। जनताके गुस्सेका कोई अन्त नहीं होता। वह गुस्सा अन्धा होता है। और उसमें वे जो कुछ करते हैं ठीक ही कर रहे हैं ऐसा समझने लगते हैं। ठीक वही हालत उस जमायतकी हुई। मालिकोंका मन्त्र काम आ गया: मजदूरोंमें फूट पड़ गयी। मंगतू जख्मी हुआ। अनीताने उसकी दवा-दारू की। पाकिस्तान तो कहीं रहा,

श्मशान और कब्रस्तानकी [ओर जानेका मौका आ पहुंचा।

मिलकी दुनिया सचमुच एक अजीब दुनिया है। वैसे कहानी मंगतू को [लेकर शुरु की थी। पर मंगतू अकेला क्या, कहानीका नायक तो मिलका विश्व है। राजनीति तूफान की तरह आती है। यह छोटा-सा समुद्र खौल उठता है। फिर चुप हो जाता है। फिर नावें, जहाज, डंगी बेढ़े चलने लगते हैं। फिर कोई हलचल होती है—कुदरत से ज्यादा इन्सानही कई तूफान बरपा करता है। उन तूफानोंमें धर्मका मंथन हो जाता है। छूआछूतका मंथन हो जाता है। दासताका: मंथन हो जाता है। मंगतू उस कूर्म की पीठकी तरह है जिसपर युग-युगके शोषण का सुमेरु' लदा हुआ है, और शोषको गुण बना: कर देवासुरसंग्राम चल रहा है। दुनिया: अभी! भी उस संघर्षमेंसे गुजर रही है—पता नहीं अब अमृत निकलेगा या विष ?

अनीता अब्दुलकी शादीने तो कुहराम मचा दिया। अनीताके पिता, मिलमालिक ने पत्रमें वक्तव्य दिया कि अनीता उनकी पुत्री नहीं है, उसने पिताके आदर्शोंकी लुटिया डूबो दी है। मंगतू अब उस मिलमें नहीं रहा। अब शायद वह और कहीं चला गया है। पर: मंगतूके प्रश्न ज्योंके त्यों बने हुए हैं। गिरधारी तो अब भी मजेमें है। गुलछर्रे उड़ाता है:। धर्मके नामपर वह चोरी-चोरी सब वही कर्म करता है, जो एक गुण्डा करता हो। फिर भी वह भद्र पुरुष :बना समाजमें डोलता है। क्योंकि वह बलई नहीं है, साम्यवादी नहीं है। और अपने आपको सच्चा देशभक्त मानता है। देशभक्ति जैसी सस्ती और मंहगी चीज हमारे मुल्क में और नहीं।

[illegible]स प्रकार जर्मनी और इटालीकी परा-
[illegible]का सम्बन्ध यूरोपकी पुनर्व्यवस्थासे है,
[illegible] प्रकार जापानकी पराजयका सम्बन्ध
[illegible]की भावी व्यवस्थासे है। जर्मनीका पतन
[illegible]का है और अब मित्र-राष्ट्र अमेरिका तथा
[illegible]की समस्त शक्ति जापानको पराजित
[illegible] लिये केन्द्रित हो रही है। जर्मनीके
[illegible] जापानकी पराजयकी भी केवल सम्भा-
[illegible] ही नहीं, बल्कि मित्र-राष्ट्रों द्वारा अधि-
[illegible] बर्माका मुक्त किया जाना और फिली-
[illegible] तथा प्रशांत महासागर स्थित अनेक
[illegible] पर अमेरिकन सेनाओंके अभियानकी
[illegible]तासे जापानकी पराजय अनिवार्य हो
[illegible]है। केवल समयका ही प्रश्न रह जाता
[illegible] जापान भी इसे जान गया है और अब
[illegible]भी अपने युद्धको 'रक्षात्मक युद्ध' कहने
[illegible]है।

[illegible]यूरोपके युद्धके कारण भारतपर उतना
[illegible] प्रभाव नहीं पड़ा, जितना
[illegible]के युद्धके कारण। इसीलिये जर्मनीकी
[illegible]के बाद भारत पर युद्धका प्रभाव घटा
[illegible]। जापानको पराजित करनेमें भारतके
[illegible] २५ लाख मनुष्य सेनामें कार्य कर रहे
[illegible] असंख्या संख्यधन व्यय किया जा रहा
[illegible]सी प्रकार प्रशान्त क्षेत्र, चीन तथा बर्मा
[illegible] पर १५ लाखसे अधिक अमेरिकन
[illegible] लड़ रहे हैं। ब्रिटिश और आस्ट्रेलि-
[illegible]सेनाएं भी अधिक संख्यामें युद्ध-रत है।
[illegible] युद्धकी समाप्ति पर जापानको भी
[illegible]पराजित करनेके लिये अब दुगनी शक्ति
[illegible] लगानेका निश्चय मित्र-राष्ट्र प्रकट कर
[illegible]चुके हैं। इस युद्धका अन्त तो जापानकी
[illegible]से होगा ही, किन्तु इसके अन्तसे
[illegible]के पराधीन देशों तथा शत्रु-आक्रान्त
[illegible] भाग्यका मित्र-राष्ट्रों द्वारा क्या
[illegible] होगा, यह प्रश्न अब पहलेसे अधिक
[illegible] हो गया है। यदि वास्तवमें देखा
[illegible] यूरोपके देशोंकी राजनीतिक समस्या
[illegible] जटिल नहीं है, जितनी पूर्वीय देशोंकी।
[illegible] जापानको छोड़कर शेष सभी छोटे-बड़े
[illegible] या आंशिक रूपमें पराधीन हैं अथवा
[illegible] अमेरिका और पश्चिमके राष्ट्रोंका
[illegible] प्रभाव है। सम्पूर्ण स्वतंत्र या स्वा-
[illegible] राष्ट्र जैसी स्थिति अन्य राष्ट्रोंको
[illegible] है। भारत जैसा विशाल देश पूर्णतः
[illegible] और पद-दलित है। प्रशान्त महा-
[illegible] द्वीप-पुञ्ज जावा, सुमात्रा, बोर्नियो
[illegible]धीन नहीं हैं। बर्मा और इण्डोचीन
[illegible] यही स्थिति है। कोरिया, फार्मोसा
[illegible]चूरियाकी भी यही समस्या है। चीन
[illegible] भी युद्धके पूर्व तक विदेशी
[illegible] मुक्त नहीं थी। पूर्वके अधिकांश देश
[illegible] द्वारा आक्रान्त होनेके पूर्व भी परा-
[illegible] थे। प्रशान्त महासागरके असंख्य
[illegible]ओंकी समस्या भी कम जटिल नहीं
[illegible] प्रकार हम देखते हैं कि युद्धोत्तर-
[illegible] यूरोपके पुनर्निर्माणकी अपेक्षा
[illegible] युद्धोत्तर व्यवस्था तथा पुनर्नि-
[illegible] समस्या कहीं अधिक महत्वपूर्ण होगी
[illegible] तक इन सब देशोंमें स्थायी शांति
[illegible] व्यवस्थाकी स्थापना नहीं होती,
[illegible] विश्व-शान्तिका स्वप्न, स्वप्न ही
[illegible]गा।

पूर्वीय देशों की समस्या

———०:*:०———

(लेखक—श्री गौरीशङ्कर ओझा)

पूर्वीय देशोंकी समस्या पर विचार करने के प्रसङ्गमें सबसे पहले जापानका ही प्रश्न आता है। वास्तवमें वर्तमान युद्धका सूत्रपात सन् १९३१ में जापान द्वारा ही हुआ, जब कि उसने बलात् मंचूरिया पर आक्रमण करके उसे अपने अधिकारमें कर लिया। उस समय राष्ट्र-संघ, संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेन ने उसके इस बलात्कारमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया। इससे जापानका दुस्साहस बढ़ता गया और उसने क्रमशः चीनके एक-एक प्रदेश पर अधिकार करना आरम्भ किया। इतना ही नहीं, बल्कि ब्रिटेनकी ओरसे जापानके अनुकूल कुछ ऐसे कार्य भी हुए, जिनसे जापानकी आक्रमण-शील प्रवृत्तिको और भी प्रोत्साहन मिला। सम्भवतः जापानके प्रति ब्रिटेन और अमेरिकाकी इस तटस्थताको देखकर ही यूरोपके फासिस्ट राष्ट्रोंको भी अपनी साम्राज्य-विस्तार-लालसा चरितार्थ करनेका अवसर मिला, जिसका परिणाम आगे चल कर इस महायुद्धके रूपमें प्रकट हुआ। अतएव पूर्वीय देशोंमें शक्ति तथा सुव्यवस्था स्थापित करने के लिये मित्र-राष्ट्रोंको जापानकी पराजयके बाद उसकी साम्राज्य-विस्तार-लालसा तथा सैनिक-शक्तिको संकुचित कर उसकी सामरिक प्रवृत्तिको समूल नष्ट कर उस पर सम्पूर्ण नियन्त्रण रखना होगा। अवश्य ही यह सब जापानकी सम्पूर्ण पराजयके बाद ही सम्भव होगा, जो बिना शर्त आत्म-समर्पण द्वारा ही हो सकेगा। जापानकी समरवादिताको नष्ट करने तथा उसकी स्थल, जल और आकाश-सेनाको अत्यन्त परिमित करने में यह भी ध्यान रखना होगा कि जापानी सत्ताधारियोंके प्रति भले ही कठोर व्यवहार किया जाय, किन्तु प्रतिशोध तथा प्रतिहिंसा की भावनासे प्रेरित होकर समूची जापानी जनताके साथ इस प्रकारका व्यवहार न किया जाय जिससे समग्र जापानी जाति उसे अपना राष्ट्रीय अपमान समझे। निःशस्त्रीकरणके साथ-साथ जापानकी प्रादेशिक सीमाओंमें भी बहुत कुछ परिवर्तन होना अनिवार्य होगा।

अभी तक मित्र-राष्ट्र अमेरिका और ब्रिटेन तथा पूर्वके साम्राज्यवादी राष्ट्र फ्रांस और हालैण्डने जापान-अधिकृत सभी भू-भागोंके विषयमें कुछ भी स्पष्ट प्रकट नहीं किया है, फिलीपाइनको युद्धके बाद स्वतन्त्र करनेकी घोषणा अमेरिकाने उसी समय कर दी थी, जब वहां जापानका अमेरिकन अन्तिम प्रतिरोध कर रहे थे। इस घोषणाको स्वर्गीय राष्ट्रपति रूजवेल्टने फिलीपाइन पर अमेरिकन सेनाके अभियान-कालमें फिर दुहराया और पूर्व राष्ट्रपतिके निधनके पश्चात् वर्तमान राष्ट्रपति टू मेनने भी फिलीपाइनको स्वतन्त्र कर देनेका निश्चय ही प्रकट किया। वर्तमान फ्रांसके एकमात्र सर्वोच्च नेता जनरल डी गालके रुखसे भी यही जान पड़ता है कि जापानी युद्धके पश्चात् इण्डोचीन परसे जापानी अधिकार हटनेके बाद वह पूर्ववत ही फ्रेंच-साम्राज्यके शासनाधीन रहेगा।

डच साम्राज्यके जावा, सुमात्रा और बोर्नियो आदि विशाल द्वीप-समूहके विषय में मित्रराष्ट्रोंका निश्चय अभीतक प्रकट नहीं हुआ है, इससे सन्देह होता है कि उन्हें सम्भवतः हालैंडको फिर सौंप दिया जायगा और हो सकता है कि ब्रिटिश अथवा अमेरिकन सरकारों द्वारा उनपर नियन्त्रण रखा जाय, क्योंकि डच सरकार उनकी रक्षाके लिये अधिक शक्तिशाली प्रमाणित नहीं हुई थी। मंचूरिया और कोरिया जापानके पड़ोसी प्रदेश हैं। मंचूरिया चीनका भाग है, जिसे छीनकर जापानने वहां कठपुतली सरकार स्थापित कर उसे अपने साम्राज्यके अन्तर्गत कर लिया था। आशा की जाती है कि युद्धोत्तरकालमें उसे फिर चीनमें मिला दिया जायेगा।

कोरियाकी सीमा जहां सोवियट साइबेरियाकी भूमिको छूती है, वहां समुद्र उसे जापानसे अलग रखता है। कोरियाको जापानने अपने साम्राज्यमें सम्मिलित कर अपनी साम्राज्यवादी लिप्साको सर्वप्रथम प्रकट किया था। कोरियाकी संस्कृति जापानसे भी प्राचीन है और वहां स्वतंत्रता के लिये अबतक आन्दोलन जारी है, जिसे जापान पाशविक दमन द्वारा दबाता रहा है। स्वर्गीय प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने अपने एक पिछले वक्तव्यमें कहा था कि "जापानकी पराजयपर कोरियाकी स्वतन्त्रता निर्भर है।" इससे मालूम होता है कि युद्धके बाद कोरियाको स्वतन्त्र कर दिया जायगा।

चीनकी समस्या अब बहुत स्पष्ट हो गयी है। वह भी पूंजीवादी तथा साम्राज्यवादी पश्चिमी राष्ट्रोंके शोषणका स्थान रहा है और जो अमेरिका और ब्रिटेन उसके प्रति अब न्याय-भावना प्रदर्शित कर रहे हैं, जापान के युद्ध-प्रवृत्त होनेके पूर्व तक उसके प्रति अन्याय करते रहे हैं। यद्यपि जापानकी पराजयके बाद चीन एक स्वतन्त्र राष्ट्र होगा, किन्तु यह सन्देह किये जानेके यथेष्ठ कारण हैं कि अमेरिका और ब्रिटेन वहां अपना आर्थिक प्रभाव तो रखना ही चाहेंगे। स्वर्गीय प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टने एक भाषणमें यह प्रकट किया था कि—"मित्र राष्ट्रोंकी विजयके बाद प्रशान्त महासागरके द्वीप-समूहोंपर सुदूरपूर्व से अपना व्यापार अक्षुण्ण रखनेके लिये अमेरिकाको अपना नियन्त्रण रखना आवश्यक होगा।" यह स्पष्ट है कि ज्यों-ज्यों युद्धका अन्त मित्रपक्षके अनुकूल होता जा रहा है, त्यों-त्यों अमेरिका और ब्रिटेन अपनी पुरानी साम्राज्यवादी और पूंजीवादी भावनाको प्रकट करते जा रहे हैं।

भारतकी स्वतन्त्रताकी समस्या पूर्वकी सबसे बड़ी समस्या है। ४० करोड़ भारतीयों की स्वतन्त्रताके प्रश्नको ब्रिटिश सरकार अन्तर्राष्ट्रीय महत्व नहीं देना चाहती। इसे वह अपना घरू प्रश्न कहकर अमेरिका, रूस और चीनको हस्तक्षेप करनेसे अलग ही रखना चाहती है। अटलांटिक-चार्टर भारतके लिये लागू नहीं था। सिवा क्रिप्स-योजनाकी मृग-तृष्णाके, और कोई ठोस, सक्रिय और तात्कालिक आशाका रूप उसके सामने नहीं रखा गया है। क्रिप्स योजनाको भारतके प्रत्येक राजनीतिकदलने अस्वीकार्य समझा है। देशकी एकमात्र राजनैतिक प्रतिनिधि संस्था कांग्रेसकी युद्धकालमें स्वतन्त्र सरकारकी स्थापनाकी मांगको ठुकराकर ब्रिटिश सरकारने भारतपरसे अपने साम्राज्यवादी पंजे को किंचित् भी ढीला न करनेका ही निश्चय प्रकट किया है। अगस्त प्रस्तावकी ऐसिहासिक घटना और जनताको उत्तेजित करनेके बाद उसका कठोर दमन तथा यूरोपके युद्धके समाप्त हो जानेके बाद भी नजरबन्द नेताओंको न छोड़ना—इसके प्रमाण हैं कि पूंजीवादियों और साम्राज्यवादियोंके महान युद्धोद्देश्योंकी वास्तविकता क्या है? इस प्रकार ब्रिटिश सरकारकी भारतके राजनीतिक तथा साम्प्रदायिक दलोंमें मतभेद बनाये रखकर अपना शासन स्थापित किये रहनेकी नीति पूर्ववत जारी है। महात्मा-गांधीके शब्दोंमें—"ब्रिटिश सरकार भारतको पराधीन ही रखना चाहती है, वह सत्ता नहीं छोड़ना चाहती। यह स्पष्ट है कि ब्रिटिश सरकारकी चालीस करोड़ लोगोंपर जो सत्ता है, उसे वह तबतक स्थांतरित करनेको तैयार नहीं है, जबतक ये चालीस करोड़ लोग उसके हाथोंसे छीननेकी यथेष्ट शक्ति संचित नहीं कर लेते।" अतएव युद्धके बाद ब्रिटिश सरकार भारतको स्वतन्त्र कर देगी, इसकी कोई आशा नहीं की जा सकती। मार्शल च्यांग-काई शेकका भारतसे चीन जाते समयका यह वक्तव्य कि—"जबतक भारतको स्वतन्त्र नहीं कर दिया जाता, तबतक एशियामें शान्ति नहीं हो सकती" और अमेरिकाका यह जन-मत कि भारतको स्वाधीन कर देना चाहिये तथा हालहीमें सान फ्रांसिस्कोमें दिया गया सोवियट परराष्ट्र सचिव मोशिये मोलोटोवका भारत सम्बन्धी वक्तव्य, ब्रिटिश सरकारकी साम्राज्यवादी मनोवृत्तिको नहीं बदल सकते हैं।

विरोध होनेपर भी बर्माको पहले ही भारतसे अलग एक प्रान्त बना दिया गया था। जापानकी पराजयके बाद उसपर भी फिर ब्रिटिश प्रभुत्व स्थापित रखनेकी इच्छा हालहीमें प्रकट की जा चुकी है, जो अस्पष्ट होनेपर भी स्पष्ट है। हालहीमें मुक्त बर्मामें अस्थायी सैनिक शासनकी स्थापना की गयी है।

इस प्रकार मध्य-पूर्वके देशोंकी समस्या को अलग विषय समझते हुए, पूर्वीय देशोंको जापानकी पराजयके बाद मित्रराष्ट्र जिस स्थितिमें रखना चाहते हैं, उससे स्पष्ट है कि युद्धोत्तर विश्व-शान्तिकी आशा केवल एक कल्पना ही है, उसका क्रियात्मक रूप अब भी साम्राज्यवादी कूटनीतिसे सम्बद्ध है। एशियाके शोषित पराधीन देशोंको तो अपनी स्वाधीनता अपने स्वतन्त्रता-आन्दोलनों तथा बलिदानोंके बलपर ही साम्राज्यवादी सत्तासे प्राप्त करनी होगी।

———

किस चीजका आविष्कार कब और कैसे हुआ?

——:०*०:——

(लेखक—श्री ब्रजकिशोर बर्मा 'श्याम')

मध्य कालीन युग अथवा सुदूर अतीतके लोग ज्ञान-विज्ञानसे अनभिज्ञ थे, ऐसी धारणा बीसवीं सदीके कतिपय वैज्ञानिकों और जोशीले नवयुवकोंमें पायी जाती है— अवश्य ही उनकी यह धारणा संकुचित मनोवृत्तिपर अवलम्बित है। हम मानते हैं कि २० वीं सदीका वैज्ञानिक प्रकृतिका स्वामी बननेकी पूर्ण चेष्टा कर रहा है। प्रकृतिके अनेक गूढ़तम रहस्योंका उद्घाटन कर उसने प्रकृतिके अनेक गूढ़तम रहस्योंपर विजय भी प्राप्त कर ली है। किन्तु यह सोचना कि आधुनिक युगके ही विद्वान आविष्कार और अनुसंधान कर सकते हैं, भ्रमपूर्ण है। विज्ञानके विकास तथा मानव समाजके उत्थानके पिछले पृष्ठोंके उलटनेपर हमें उपर्युक्त धारणाकी निस्सारताका पता लग जाता है और बरबस हमें आश्चर्य-चकित होकर कहना पड़ता है—"विज्ञानके सम्बन्ध में अतीतकालके मानव-समाजको इतनी अधिक जानकारी प्राप्त थी!"

बटन

बटनका आविष्कार सभ्यताके उस प्रारम्भिक युगमें ही हो चुका था, जब मनुष्य पत्थरके सिवा और किसी धातुसे परिचित नहीं था। यह अनुमान किया जाता है कि एक दिन, शीतकालमें, जब तेज और तीखी हवा चली होगी, और प्रस्तर युगके किसी एक अपेक्षाकृत समझदार व्यक्तिका चमड़ेका लबादा उड़नेसे वह जाड़ेसे ठिठुरने लगा होगा, तो उसने चमड़ेकी बायीं ओर एक छेद बनाया होगा, और दाहिनी तरफका एक हिस्सा उस :छेदके भीतर डाल कर उसे बाहरकी ओर खींच लिया::होगा। इस प्रकार वह कुछ समय तक जाड़ेसे छुट्टी पा लिया होगा। पर उसके हिलने-डोलनेसे कुछ ही समयके बाद वह फिर खुल गया होगा। उस दिन उस प्रस्तर युगके बर्बर मनुष्योंने रातके समय अपनी गुफाके भीतरवाली आराम कोठरीमें लेटे-लेटे कोई ऐसी तरकीब सोचनी शुरू की होगी, जिससे उसका लबादा हवाके जोरसे न खुलने पावे। अन्तमें निश्चय ही उसे एक तरकीब सूझ गयी होगी। वह तरकीब यह थी—अपने भोजनमेंसे बची हड्डियोंसे उसने एक छोटी-सी खूंटी तैयार की और अपने लबादेकी दाहिनी ओर एक स्थानपर एक छोटेसे छेदके जरिये उस खूंटीको जमा दिया। उसके बाद बायीं तरफ वाले छेदके भीतर बटनकी तरह उस खूंटीको लगा दिया। तबसे उसका लबादा फिर कभी नहीं खुल पाया। इस प्रकार बटन का आविष्कार हुआ जिसका व्यवहार आज सभ्यताका चिन्ह समझा जाता है।

सेफ्टी पिन

'सेफ्टीपिन' का व्यवहार भी सभ्यताका चिन्ह समझा जाता है। पर वास्तवमें इस चिन्हका आविष्कार कास्य युगमें हो चुका था, जबकि मानव-जातिको लोहेके अस्तित्व का भी पता नहीं था। पुरातत्व वेत्ताओंने प्राचीन स्थानोंको खोद कर, उन पिनोंको खोद निकाला है। अति प्राचीन कालके वे पिन ठीक उसी तरह बने हुए थे, जिस रूपमें हम आज बाजारोंमें बिकते हुए देखते हैं।

चश्मा

प्राचीन बेबीलोनियामें, ईसासे कई हजार वर्ष पूर्व, स्फटिकके बने हुए 'लेन्स' चश्मेके बतौर काममें लाये जाते थे। उस चश्मेसे वे लोग ईंटोंके ऊपर खोदे गये अक्षरों द्वारा तैयार की गयी पुस्तकोंको पढ़ते थे। पर 'लैंसों' का उपयोग चश्मेके रूपमें पहले यूरोपमें सन् १२०० के करीब हुआ। उस चश्मेको कैथलिक सन्यासी प्राचीन पाण्डुलिपियोंको पढ़नेके काममें लाते थे। पर उन चश्मोंको ठीक तरहसे कानके सहारे लटकाने का ढंग उन लोगोंको मालूम नहीं था। वे डोरोंसे उसे बांधकर किसी तरह काम चलाते थे। सोलहवीं शताब्दीमें चश्मेका वह रूप ईजाद हुआ जो आजके चश्मेसे कुछ मिलता-जुलता था।

घड़ी

धूप घड़ियोंका प्रचलन भारतमें तथा अन्य देशोंमें बहुत प्राचीन कालसे रहा है। यूनान: के लोग जल घड़ीका भी प्रयोग करना जानते थे। बूंद-बूंद पर एक बर्तनसे पानी टपक कर दूसरे बर्तनमें गिरता था। इस सिद्धांतके आधार पर परिष्कृत रूपमें एक जल घड़ी तैयार की गयी थी, जो अलार्म घड़ीका भी काम देती थी। जिस पात्रमें बूंद-बूंद पानी गिरता, उसमें एक ट्यूब लगा हुआ था। पात्रमें एक निश्चत समय तक जब पानी चढ़ जाताथा, तब इस ट्यूबके रास्ते तेजीसे पानी निकल कर एक दूसरे पात्रमें पहुंचता था। इस क्रियामें दूसरे पात्रकी हवा एक संकीर्ण रास्तेसे वेगके साथ निकलती थी फलस्वरूप सीटी बज उठती थी।

लेकिन जिस प्रकारकी घड़ियोंका प्रचार आज घर-घरमें देखा जाता है, उसका नमूना पहले पहल सन् १२००के लगभग अरबके किसी एक आदमीने तैयार किया था, ऐसा कहा जाता है। ब्रिटेनमें सन् १५४० तक घड़ीका प्रचलन नहीं हुआ था। पर उसके कुछ समय बाद वहांके राजा रईसोंके यहां घड़ीका नमूना दिखाई देने लगा। पर वह नमूना केवल 'नमूना' ही था। क्योंकि उनमेंसे कोई भी घड़ी ठीक समय नहीं दे पाती थी। इंगलैण्डकी घड़ियां प्रायः जर्मनीसे भी आती थीं जिनके: सम्बन्धमें सोलहवीं शताब्दीके प्रायः अन्तमें शेक्सपियरने लिखा था,—यह जर्मन घड़ीकी तरह है, जिसकी मरम्मत चाहे कितनी ही क्यों न हो वह कभी ठीक समय नहीं देती।

पेंसिल

मध्य युगमें जर्मन सन्यासी अपनी पांडुलिपियोंको सजानेके लिये ग्राफाइट नामक एक विशेष धातुके टुकड़ेको काममें लाया करते थे। उस टुकड़ेसे वे अपनी पांडु-लिपिके चारों ओर लकीरें खींचते थे। बादमें एक सन्यासी ने सोचा कि उस टुकड़ेको हाथमें पकड़नेसे हाथ गंदा हो जाता है। इस लिये उसने यह तरकीब निकाली कि खोखली लकड़ीके भीतर ग्राफाइटके उस टुकड़ेको बिठा दिया जाय। और तब उससे लिखना शुरू किया जाय। इस प्रकार पेंसिलका आविष्कार हुआ। पर जिस रूपमें पेंसिल आज काममें लायी जा रही है उसका आविष्कार सन् १७९४ के पहिले नहीं हो पाया था।

दियासलाई

जिस पाकेट साईजकी दियासलाईको आज कल हम लोग काममें लाते हैं, उसका आविष्कार १०० सालसे पहले नहीं हुआ था। उसके पहले बड़े लम्बे आकारकी दियासलाइयां प्रचलित थीं। जब छोटे आकारकी दियासलाइयोंका आविष्कार हुआ तो प्रारंभमें बहुतसे लोगोंने उसका विरोध इस दलील पर किया था कि उनसे चोरों और बदमाशोंको अधिक सुविधा मिलेगी।

भोजन करनेका कांटा

सत्रहवीं शताब्दीके आरम्भ तक ब्रिटेन के लोग भोजनके :समय कांटेका प्रयोग नहीं जानते थे। कोर्वेट नामक एक व्यक्तिने जब पहले पहल इंगलैण्डमें उसका प्रचलन करना चाहा, तो लोगोंने उसका मजाक उड़ाना शुरू किया। उस समय तक अंग्रेज लोग भोजन करते समय कांटेकी [illegible] लियोंको ही काममें लाते थे और [illegible] खाना खाते थे जिस तरह भारत[illegible] खाते हैं। उस जमानेमें बच्चोंको [illegible] उद्देश्यसे जो पुस्तक लिखी जाती थी, [illegible] एकमें लिखा था कि बच्चोंको किस [illegible] भोजन करना चाहिये। उसमें लिखा [illegible] "मांसके टुकड़ेको केवल तीन [illegible] पकड़ा करो और उसे दोनों हाथों[illegible] कर मुंहमें डालनेकी आदत मत [illegible] इसी प्रकार एक दूसरी पुस्तकमें लिखा [illegible] "जिस हाथसे तुमने मांस खाया है [illegible] अपनी नाक न पोछा करो।"

इंगलैण्डकी आम जनतामें कांटे[illegible] सन् १७८० के पहले तक नहीं हो[illegible] यूरोपमें व्यापक रूपसे कांटेका प्र[illegible] १८४७ में हुआ, जब विख्यात जर्मन [illegible] अपने कारखानेमें कांटोंका सामुहिक [illegible] दन शुरु किया। तब कृष्ण मास[illegible] हितकारी समझा जाने लगा था। [illegible] अपना व्यवसाय आरम्भ करके इस [illegible] जर्मनने मानव-जातिके सामुहिक [illegible] उद्देश्यस विनाशकारी शस्त्रास्त्र बनाने [illegible] कर दिये।

कांटेसे नर मांस भक्षण

आज यूरोपके लोग उन लोगोंको [illegible] समझने लगे हैं, जो भोजनके समय [illegible]

लार्ड हार्डिङ्गपर बम और रेलवानकी डकैती

(लेखक—श्री गोपालराम गहमरी)

गवर्नमेण्ट रेलवे पुलिसके आगरा डिवीजनके चीफ अफसर हैं।

इतना परिचय पाने पर वेल्वी साहब से मेरी बातें आरम्भ हुईं।

मिस्टर वेल्वीने पहले ही मुसकराते हुए मुझसे साफ हिन्दीमें कहा—"सुना आप जासूस हैं लेकिन हमारे वायसराय लार्ड हार्डिङ्ग पर बम फेंका गया और आपने उसका पता नहीं लगाया।"

हमने तुरत जवाब दिया—"आपने मुझे याद कहां किया।"

मि० वे०—अच्छा अब मैं याद करता हूं आप पता लगाइये।

मैं—आपका हुक्म मैं सर पर लेता हूं। पहला मेरा प्रस्ताव यही है कि पुलिसमें जितने यूरोपियन हैं उनकी तलब बन्द करके आज ही हुक्म जारी कर दिया जाय कि जब तक वायसराय साहब पर बम फेंकनेवाले का पता नहीं लगे तब तक उन लोगोंकी तनख्वाह बन्द रहेगी।

अब तो वेल्वी साहब हंसकर बोले—"तो आप हमी लोगोंपर हाथ साफ करना चाहते हैं?"

मैं—आप चाहे न मानें लेकिन मैं खूब समझे बैठा हूं कि अपराधी आप ही लोगोंमें मौजूद हैं।

वेल्वी साहब मानो आसमानसे गिरे! बोले—"ऐसा समझनेकी वजह?"

मैं—पहली वजह तो यही है कि जब वायसराय बमसे घायल होकर हाथीके हौदे पर बेहोश होकर गिरे तभी लेडी हार्डिङ्गने बम्बईके गवर्नर सर जार्ज क्लार्कको टेलीग्राम दिया था उसमें लिखा था—

"ज्यों ही वायसराय बेहोश होकर गिरे उसी दम निशाना ठीक बैठते ही चांदनी चौक की बायीं ओरसे जोरकी आवाज आयी—"ब्रेवो" यह आवाज किसी यूरोपियनकी थी।

वेल्वी साहबने मेरी पीठ सहला कर कहा—"ओफ! आप बहुत याद रखते हैं। खैर यह तो बातकी बात है। मैं अब आपसे असल प्वाइण्ट पर आ रहा हूं। आप स्टेशन के बगलमें रहते हैं और यहांके रेल बाबू मुसाफिरों पर डाका डालते हैं आप इसकी कुछ खबरदारी नहीं करते।

मैं—नहीं साहब! इस समय तो यहांके बाबुओंमें कोई ऐसा नहीं है।

मि० वे०—क्यों लकरात उपाध्यायने इन्हीं साहबके खानसामा जङ्गबहादुरकी बीबीका सब जेवर छीन लिया और उसको पीटा है। मैं उसी रिपोर्ट पर तहकीकात करने यहां आकर कलसे सैलूनमें ठहरा हूं।

मैं—आपका आना तो मुझे मालूम नहीं था साहब! लेकिन साइडिङ्गमें आपका सैलून मैंने कल देखा था और इस गढ़ी हुई घटनाकी बात भी मुझे मालूम हो चुकी है।

मिस्टर वेल्वी मेरी बात पर भकचका गये। आश्चर्यित होकर उन्होंने पूछा—"यह गढ़ा हुआ मामला है?"

"बिल्कुल फिक्शन। जैसे किसी नावलिस्टका बनाया हुआ प्लॉट समझिये।"

मेरे इस जवाबपर तो वेल्वी साहबकी आंखें चढ़ गयीं। बोले—

"ओफ! आपने तो ऐसी बात कही जैसी कभी मैंने सुनी ही नहीं थी। तो क्या मेरा इतनी दूरका आना बिल्कुल यूजलेस हुआ?"

मैं—यह रिपोर्ट बिल्कुल बेबुनियाद है। यह साहब सीधे-सादे सज्जन आदमी हैं। इनका खानसामा बड़ा बदमाश, बड़ा फरेबी, बड़ा चालबाज है। वह जैसा नाच नचाता है वैसे यह नाचा करते हैं। यहांके जुलाहे और चमार-मेहतर जैसे अनेक साहबोंको भुलावा देकर अपना उल्लू सीधा किया करते हैं, वैसे ही वह भी किया करता है। आप लोगोंके यहां कोई शरीफ आदमी खानसामा या बेहरा-बावर्ची थोड़े होने आता है ऐसे झूठे और फरेबियोंसे ही तो आप लोग इस देशके भले आदमियोंको नापा करते हैं।

साहब मेरी बातपर कुछ झेंप गये। फिर कुछ रुककर बोले—"तो आखिर असल बात क्या है?"

मैं—असल बात यह कि यह खानसामा हमेशा बेटिकट रेलसे आया करता है। उन दिनों टी० टी० आई० नहीं नियत थे और साहबके दबावसे बाबुओंपर चाप भी चढ़ाया करता है। उपाध्यायजी तरह दे जाते थे लेकिन इस बार जब वह अपनी बीबी-बच्चे सहित रातके बेटिकट आया हुये तब उन्होंने पकड़ा है महसूल लेनेके लिये उन्होंने उसको कुछ देर रोका जरूर है इसीपर इसने सब मामला गढ़कर साहबसे कहा है। बस साहब ने डट कर रिपोर्ट लिख दी है। और मामला आपतक पहुंचा है।

मि० वे०—यह बात है! मैं तो समझता रहा कि इस स्टेशनमें कोई सब इन्स्पेक्टर जी० आर० पी० का तैनात करूं जिसमें मुसाफिरोंकी आफत हटे।

मैं—जी नहीं! ऐसा करनेसे तो मुसाफिरोंपर और आफत बढ़ेगी। क्योंकि बाबू लोगोंके साथमें उस सिपाहीका भी पैसा मुसाफिरोंसे वसूल होने लगेगा।

मि० वेल्वी—यह कैसे! हमारी समझमें नहीं आया!

मैं—सची बात कहनेके लिये मुझे मुआफ फरमाइयेगा। बाबू यहां कलकत्तेसे अनबुक्ड लगेज और बेटिकट छोटे बच्चे साथ लानेवालोंसे बहुत पैसा वसूल करते हैं यह गुन उपाध्यायजीमें भरपूर है। पुलिसका आदमी रहनेसे यह वसूली और बढ़ जायगी। ऐसे-वैसे बाबू लोग खजानेमें जमा करनेके बदले खा जाते हैं।

मि० वेल्वी—हां बाबुओंकी यह शिकायत तो हम जानते हैं।

मैं—वही बात यहां इस समय तीनों बाबुओंमें है। उपाध्यायजी इस काममें खूब एक्सपर्ट हैं। लेकिन इस केसमें वह बिलकुल बेकसूर हैं। सब बदमाशी खानसामाकी है। आप इनसे यह बात कहियेगा मत। इनको अपने खानसामापर बहुत विश्वास है। कहते हैं चालीस वर्षसे हम हिन्दुस्थानमें हैं ऐसा विश्वासी इण्डियन हमने कभी नहीं पाया।

बात यों हुई कि नील साहब कानके कुछ बहरे थे। हम लोग धीरे-धीरे बातें करते थे। उन्होंने वह सब बातें सुनी नहीं।

मैंने साहबसे कहा—नील साहबको धोखा इसने बहुत दिया है। साहब इसपर विश्वास करके कई बार गाजीपुर कचहरी जाकर गवाही भी दे आये हैं। एक बेगुनाह को इन्होंने बन्दूककी चोरी लगाकर कैद करा दिया है। खानसामाकी चालबाजी इनको कुछ भी मालूम नहीं है।

मि० वेल्वी—जब आपसे इनका इतना मेलमिलाप है तब असल बात इनको समझा कर ठीक रास्तेपर लाना चाहिये आपको।

मैं—हां अब मैं इनको समझा-बुझाकर असल बातका पता देकर तो रास्तेपर जरूर लाऊंगा। मैं बम्बईमें नौकरी करता था। थोड़े दिनहुए यहां आया हूं। अब मैं इनको सब बातें दिखा-बतला कर तब इन्हें रास्तेपर जरूर लाऊंगा।

मि० वेल्वीने पूछा—"बम्बईमें आप कौन नौकरी कर रहे थे?"

मैं—वहां जाहिरामें वेङ्कटेश्वर समाचार एक हिन्दी हफ्तावारी अखबारकी एडिटरी करता था लेकिन पुलिसके एक जासुस मि० डब्ल्यू० सी० जालिफ साहबका प्राइवेट इनफारमर था। एक खूनके मामलेका पता मैंने उनको बतलाया था।

मिस्टर वेल्वीने मुझसे उस खूनके मामले की बातें पूछीं। मैंने सब हाल उनसे कह दिया। वह खूनका संगीन मामला संस्मरण नं० ३ में दिया जायगा।

मि० वे०—तो आप राय दीजिये मैं इसमें क्या करूं।

मैं—आप तो ऐसा करें कि कुछ सिक्रेट रिपोर्ट करके इन तीनों बाबुओंको तीन जगह बदलवा देवें तो बस सब गड़बड़ दुरुस्त हो जायगा।

साहबने मेरी बातपर आल राइट कहा और सेलून लेकर दूसरे दिन गहमरसे चले गये। एक ही सप्ताहके बाद तीनों बाबू बदल दिये गये। और उनको इस रिमार्कके साथ हटाया गया कि वे गहमर फिर कभी न भेजे जावें।

संसारका घटना चक्र

'एशियायी बगावत करेंगे'

मनुष्य जाति अपनी दासतासे ऊब चुकी है। उसने अपने बन्धनोंको तोड़कर स्वतंत्रता प्राप्त करनेका दृढ़ निश्चय कर लिया है—ऐसी स्वतन्त्रता जो उसको अपने विकासके लिये अनुकूल अवसर प्रदान करे। आज हम एशियायियोंका क्या हाल है। हमारे विकासके सभी मार्ग अवरुद्ध हैं। हमारी गतिपर तरह-तरहकी पाबन्दियां हैं। इतना ही नहीं, हम गति हीनसे कर दिये गये हैं। इसका दुष्परिणाम विश्वको भी अप्रत्यक्ष रूपसे भुगतना पड़ रहा है और उन्हें तो प्रत्यक्ष रूपसे भुगतना पड़ेगा जो इस अन्यायके लिये जिम्मेदार हैं।

उस दिन सैनफ्रांसिस्कोमें २९ सौ की भीड़के सम्मुख भाषण देते हुए श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने कहा है कि "यह सम्मेलन (सैन फ्रांसिस्को सम्मेलन) उस समय तक असफल रहेगा जबतक साम्राज्यवाद नहीं मिटा दिया जाता। एशियावालोंको यदि निश्चित गारण्टी नहीं दी गयी तो वे बगावत कर उठेंगे। वे जापानी, ब्रिटिश, फ्रांसीसी या डच शक्तियोंकी बहुत गुलामी कर चुके हैं।" जब अधिक संघर्षसे चंदनमें भी आग उत्पन्न हो सकती है तो इस रूपमें उत्पीड़न, शोषण, अत्याचार और अन्यायके विरुद्ध एशियावासियोंके हृदयमें उत्पन्न होनेवाली क्रोध और घृणाकी भावना विप्लवके रूपमें किसी दिन फूट निकले तो इसमें आश्चर्य क्या?

इन दिनों इङ्गलैण्डमें चुनावका अवसर उपस्थित हो गया है। वहांकी लेबर पार्टी, जो टोरी दलसे जबर्दस्त प्रतिद्वन्द्विता कर रही है, भारतीय समस्याके प्रति कुछ विशेष दिलचस्पी लेनेकी उत्सुकता दिखलाती है, पर उसके उत्तरदायी नेताओंने जो घोषणाएं भारतके सम्बन्धमें इधर प्रकाशित करवायी हैं उनमें कोई तथ्य नहीं मालूम होता। इस सम्बन्धमें श्रीमती पंडितने कहा है कि "इङ्गलैण्डकी लेबर पार्टीके चुनावमें विजयी होने पर भारतके लिये उसका कोई महत्वपूर्ण परिणाम होनेकी आशा नहीं है।

लेबर पार्टीकी घोषणाएं अच्छी होते हुए भी अर्थ-शून्य हैं, क्योंकि वे सिर्फ औपनिवेशिक स्वराज्य ही देना चाहते हैं। यूरोपसे नाजीवादके मिटनेका क्या नतीजा हुआ यदि उसका सहोदर ब्रिटिश साम्राज्यवाद भारतमें बना रहने दिया जाय। हिटलरके जीवित रहनेपर उसे न्यायालयमें सफाई देने का अधिकार दिया जाता जब कि भारतके नेताओंको बिना मामला चलाये जेलोंमें बंद रखा जाता है।"

साम्राज्यवादी तो एशियाके संभावित विप्लवके कारणोंको दूर करनेके बदले उलटे उसकी नींव दृढ़ करते देखे जा रहे हैं। अपनी नीतिमें उन्होंने यदि समयके मुताबिक हेर-फेर नहीं किया तो एक दिन यह भावी विप्लव विस्फोट होकर ही रहेगा, और श्रीमती पंडितके कथनकी सत्यता प्रमाणित होनेके दिन इतिहाससे नहीं सीखनेवाले पुराने-पन्थियोंको पछतानेके सिवा और कुछ हाथ न लगेगा।

मि० आसफअलीका स्वास्थ्य

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्य मि० आसफ अली गुरुदासपुर जेलसे रिहा होनेके बाद गत २८ मईको दिल्ली पहुंचे हैं।

डाक्टरोंने आपके स्वास्थ्यकी परीक्षा लेनेके लिये उन्हें विलङ्गटन अस्पतालमें रखा है। स्वास्थ्यकी परीक्षा पांच दिनोंतक होती रहेगी। ऐसा ज्ञात होता है कि २८ की रातमें उन्हें बड़ी बेचैनी रही। सिविल सर्जन मि० हैसेटने, जो मि० आसफ अलीके स्वास्थ्यकी परीक्षा कर रहे हैं, कहा है कि सावधानीसे उनकी सेवा-शुश्रुषा करना आवश्यक है। आपका कहना है कि पेटका दर्द जिसकी उन्हें शिकायत है, अवश्य ही आंतकी गड़बड़ीका परिणाम है।

राष्ट्रीय नेताओंकी मुक्ति

लगभग दो महीनेके बाद लार्ड वावेल भारत लौट रहे हैं। सरकारी क्षेत्रोंसे वावेल साहबके उद्देश्यकी सफलताके सम्बन्धमें कुछ जानकारी प्राप्त होना कठिन है पर लन्दनके राजनीतिक क्षेत्रोंमें आमतौर पर ऐसी आशा की जा रही है कि वायसराय खाली हाथ भारत नहीं लौट रहे हैं। इस तरहकी आशा की जाती है कि उनके भारत पहुंचने पर कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सभी सदस्य शीघ्र ही मुक्त होंगे। लार्ड वावेलके प्रस्ताव, केबिनेटसे उनकी बातचीत और अन्तिम निर्णय पर अधिकारी क्षेत्रोंने पर्दा डाल रखा है पर यह स्पष्ट है कि भारतको इस सम्बन्धमें किसी घोषणाके लिये ज्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ेगा। लार्ड वेवेलके लौटने पर इस सम्बन्धमें आवश्यक घोषणा कीजबरदस्त आशा है।

शांतिनिकेतनमें गांधीजीकी दिलचस्पी

'विश्वभारती' के प्रिंसिपल अनिल कुमार चान्दाने गत २९ मईके सन्ध्या समय महात्माजीसे ४५ मिनट तक महाबालेश्वरमें बातचीत की। महात्माजीने विश्वभारतीके विभिन्न विभागों और खासकर एण्ड्रूज स्मारक योजनाके सम्बन्धमें पूछताछ की।

स्मरण रहे कि एण्ड्रूज स्मारक कोषके लिये महात्माजीने पांच लाख रुपये इकट्ठा किये थे जिसे ग्रामीणोंके लिये एक अस्पताल तथा विश्वभारतीमें एक अन्तर्राष्ट्रीय विभाग खोलनेके लिये व्यय किया जायगा। महात्माजीने मौका मिलनेपर शांतिनिकेतन पधारनेका वचन दिया है।

लेवालके अपहरणकी योजना

यह रिपोर्ट मिलने पर कि जे० डी० गालके देशभक्त लेवालके अपहरणकी योजना बना रहे हैं, बार्सेलोनाके किले पर जिसे माण्टज्वीच कहा जाता है, पहरेदारोंकी संख्या दुगनी करदी गयी है।

अधिकारी तौर पर लेवालको सुपुर्द करनेके लिये फ्रैंको अब भी तैयार नहीं है। जे० डी गालके प्रतिनिधिकी ओरसे जोरदार शब्दोंमें लेवालकी मांग किये जाने पर फ्रैंकोने कहा है कि फ्रांस या स्पेनमें कोई ऐसा विधान नहीं है जिसके आधारपर राजनीतिक शरणार्थियोंको निर्वासित किया जाय।

सिद्धान्त ही संस्थाके प्राण हैं

केन्द्रीय असेम्बलीके सदस्य सेठ गोविन्द दासने हिन्दुस्थान हेराल्डके दफ्तरमें पत्रकारोंके एक संगठित समूहसे मिलकर प्रसन्नता प्रकट करते हुए यह सम्मति जाहिर की कि प्रत्येक शहरमें पत्रकार संघकी स्थापना होनेसे बहुत अच्छे कार्य हो सकते हैं। मध्यप्रान्तमें मन्त्रिमण्डलके गठनके सम्बन्धमें आपने जिक्र किया—मेरी रायमें अष्टी और चिमूरका मामला मन्त्रिमण्डलसे बिलकुल सम्बन्ध नहीं रखता। सर्वप्रथम यही निश्चित नहीं कि मन्त्रिमण्डल उन सात अभियुक्तोंकी प्राण-रक्षा कर सकेगा। यदि खां बहादुरीकी पदवी त्यागनेके लिये अल्लाबख्सको बर्खास्त किया जा सका तो, कौन कह सकता है इस मामलेमें सी० पी० के गवर्नरका कौन-सा रुख रहेगा।

इसके बाद सिद्धान्तका प्रश्न आता है। जब तक १९३९ और १९४२ के प्रस्तावोंमें संशोधन नहीं कर दिये जाते, कांग्रेस सी० पी० या अन्य किसी प्रान्तमें पदग्रहण नहीं कर सकती। मेरी रायमें डा० खां साहबकी कार्यवाही उचित नहीं जंचती। वहां विशेष स्थिति उत्पन्न रही होगी। प्रत्येक प्रान्तमें ऐसी विशेषता संभव है, पर आवश्यकताओंके चलते सिद्धांतोंकी हत्या नहीं हो सकती। छोटी बड़ी कोई भी संस्था सिद्धान्तोंकी अवहेलना करके जीवित नहीं रह सकती।

यद्यपि परिस्थिति काफी बदल चुकी है पर जब तक वर्किंग कमेटीके सदस्य मुक्त नहीं कर दिये जाते, कांग्रेस कानूनी नहीं करार दी जाती, पदग्रहणकी संभावना नहीं है। कुछ लोग यह गलत सोचते हैं कि सरकारके रुखमें परिवर्तन हुए बगैर कांग्रेस अपना विचार नहीं बदलेगी। परिस्थितियोंके अनुसार कांग्रेसने अपने विचारोंमें परिवर्तन किये हैं। पर यह तो कांग्रेस ही कर सकती है। इसका कोई गिरोह या दल नीति परिवर्तन नहीं कर सकता।

अब्दुल गफ्फार खां

सरदारयाब स्थित लाल कुर्तीवालोंके शिक्षण शिविरसे इस आशयके समाचार मिले हैं कि अब खां साहब पूर्ण स्वस्थ हो गये और शिक्षण-शिविरकी कार्यवाहियोंमें खूब दिलचस्पी ले रहे हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है कि विभिन्न विषयोंके सम्बन्धमें प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त करने तथा परिवर्तित स्थितिको दृष्टिगत रखते हुए लाल वर्दी धारी संगठनका पुनर्गठन करनेके उद्देश्यसे वे प्रान्तका तूफानीदौरा करेंगे।

बर्माकी आन्तरिक स्थिति

सुप्रसिद्ध पत्रकार ड्रू पियर्सनने कहा है कि बर्मामें एथेन्स-सा स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जापानी अधिकारके समय जिन लोगोंने हथियार उठाये हैं उनकी सूची ब्रिटेनके हाथमें है और ब्रिटिश पुलिस विभाग उनके समर्पणकी मांग कर रही है। इन छापामारोंमें कुछने आत्मसमर्पण कर दिया है पर बाकी प्रतिरोध कर रहे हैं और यत्र-तत्र लड़ाई हो रही है।

मार्शल चांगका त्यागपत्र

मार्शल चांग कैशकने प्रधान मन्त्रीका पद त्याग दिया है और उनकी जगह मि० टी० वी० सुंग चीनके नये प्रधान मन्त्री नियुक्त हुए हैं। अर्थ मन्त्री डा० वुंग वेनहाउ मि० एच० एच० कुंगके उत्तराधिकारी उप-मन्त्री हुए हैं। कामिन्टांगकी केन्द्रीय कार्यकारिणीके प्रस्तावानुसार उपर्युक्त परिवर्तनकी घोषणा की गयी है। चुङ्किङ्गकी इस रिपोर्टसे कि मार्शल चांग कैशकने यनान कार्यकारिणीके अध्यक्ष-पदसे इस्तीफा दे दिया है, चीन सरकारकी बाहरी रूपरेखामें कोई हेर-फेर नहीं होता। मंचूरिया, हांगकांग और अन्य प्रादेशिक नाजुक समस्यायें निकट भविष्यमें उपस्थित होंगी और उन्हें दृष्टिगत रखते हुए ऐसा ख्याल किया जाता है कि इस साधारण परिवर्तनके बाद इन मामलोंके सुलझानेके लिये मार्शल चांगकी स्थिति दृढ़ हो गयी है। चीन सरकारके प्रधान और चीनी सेनाके सुप्रीम कमाण्डरके रूपमें उनकी शक्ति अक्षुण्ण है। जिस पदको उन्होंने त्याग दिया है वास्तवमें गत कई महीनोंसे मि० टी० वी० सुंग द्वारा ही सुशोभित हो रहा था और यनानके स्थानापन्न अध्यक्षके रूपमें वे विख्यात हो चले थे। मि० सुंगकी नयी नियुक्तिसे चीनके आर्थिक संकटको दूर करनेके प्रति उनका उत्तरदायित्व बढ़ जाता है। उनकी स्थिति मार्शल चांगकी अपेक्षा कम सुदृढ़ है, क्योंकि वे निरे बैंकर ठहरे। उन्हें चीनके व्यवसायी तथा पूंजीवादी वर्गका समर्थन और अमरीकी सरकारका विश्वास प्राप्त है। किन्तु सेना पर मि० सुंगका नहीं बल्कि मार्शल चांगका एकाधिपत्य है।

युद्धमें अमेरिकन हताहतोंकी संख्या

वाशिंगटनसे प्रेषित रायटरके एक तारमें कहा गया है कि युद्धमें अमेरिकन हताहतोंकी संख्या १० लाखसे अधिक है। युद्ध और नौ सेना विभागकी सबसे ताजी घोषणाके अनुसार कुल हताहत १,०००,८८७ हैं, जिनमें २२७,०९७ मृतक, ६०८४७८ घायल, लापता ६३,४९९ और १०४,८६१ युद्धबन्दियोंका कोई समाचार नहीं मिला है।

कलकत्ता कारपोरेशनकी मांग

गत बुधवार, ३० मईको कलकत्ता कारपोरेशनने एक प्रस्ताव पास कर सरकारसे मांग की है कि म्यूनिसिपल्टीके मजदूर और भङ्गियोंसे लेकर अन्य सभी कर्मचारियोंको जिन्हें ३०० रुपये मासिक तक वेतन मिलता है, हर छठे महीने प्रत्येकको एक जोड़ा धोती और एक जोड़ा साड़ी नियन्त्रित मूल्यपर दिया जाय।

वस्त्राभावके कारण उत्पन्न कर्मचारियोंके असंतोषको देखते हुए कारपोरेशनने उपर्युक्त अनुरोध किया है और प्रस्तावको कार्यान्वित करानेमें आवश्यक वितरणकी व्यवस्था करानेके लिये चीफ इक्जेक्यूटिव आफिसरसे प्रार्थना की है।

संसारका घटना चक्र

—:o*o:—

सीरिया और लेवाण्ट

फ्रांसीसी फौजोंकी नयी टुकड़ियोंके पहुं-
चनेसे सीरिया और लेवाण्टमें तनावकी
स्थिति उत्पन्न हो गयी थी। परिस्थितिकी
गंभीरताने विस्फोटका रूप धारण किया।
जब फ्रेंच सेनायें 'सिर्फ प्रदर्शन' कर रही
थी पर गत ३० मईकी रातको उन्होंने
दमास्कस पर बमवर्षा शुरू कर दी। सम्पूर्ण
देशमें दोनों दलोंमें संघर्ष होने लग गया है
दमास्कससे रायटरके संवाददाताने सूचित
किया है कि परिस्थिति पूर्ववत गंभीर है।
गोलीकाण्डमें कई ब्रिटिश आफीसरके
घायल होने तथा एककी मृत्युका समाचार
मिला है।

दमास्कससे १२० मील दूरस्थ स्थित
...के मेयरने ब्रिटिश सेनासे अपील की है
किसी तरह ४८ घण्टेके लिये युद्ध स्थगित
का प्रबन्ध किया जाय ताकि घायल
...कोंको स्थानान्तरित किया जा सके।
...के कथनसे यह भी ज्ञात होता है कि
...सेना वायुयान, तोप, टैंक और बख्तर-
बन्द गाड़ियोंका प्रयोग कर रही हैं और
...पर नृशंसतापूर्ण गोलाबारी जारी
...३० मईके सवेरेसे खूंखार और खूनी
...हो रहा है और १०० के मरने तथा
...के घायल होनेकी खबर है। डमास्कसमें
...सेनाने सीरियन पार्लमेण्ट भवनपर
...कर लिया है।

यद्यपि सीरियाकी राष्ट्रीय फौजके पास
...सामानका अभाव है पर ड्रूस नामक
...जातियोंने जो फ्रांसीसी सेनामें
...हुई थीं, अपने सेना नायकोंके साथ
...सीरियनोंके हाथ आत्मसमर्पण कर
...। इनकी संख्या लगभग १६ सौ से
...बतायी जाती है। देशभक्त लड़ाके
...इन सैनिकोंके हथियारोंका
...फ्रांसीसियोंके खिलाफ कर सकेंगे।

ब्रिटेनका हस्तक्षेप

...याकी 'अत्यन्त गम्भीर परिस्थिति'
...देते हुए ब्रिटेनके परराष्ट्र सचिव
...नी इडेनने कामन सभामें कहा है
...गवर्नमेण्ट इस निश्चय पर पहुंची
...अब तमाशबीन नहीं रह सकती।
...ने जेनरल डी-गालको सूचित
...है कि ब्रिटिश सरकारने इससे
...खून-खराबी रोकनेके उद्देश्यसे मध्य-
...कमाण्डर इन-चीफको इस मामलेमें
...करनेका आदेश दिया है। मि०
...ने डी गालके नाम अपने संदेशमें
...किया है कि फ्रेंच सेनाओंको युद्ध
...अपने बैरकोंमें शीघ्र चले जानेका
...दिया जाय ताकि ब्रिटिश और फ्रेंच
...बीच कोई अवांछनीय दुर्घटना न
...चर्चिलने सीरियाके स्थानापन्न
...श्री एम० जलाल मर्दन बे के पास
...कर सीरियन जनतासे शांत और
...रहनेका परामर्श दिया है।

अमेरिकाका रुख

...वाशिंगटनसे प्रकाशित एक घोषणा
...गया है कि लेवाण्टकी सम्पूर्ण स्थिति
...और अमेरिकाके स्टेट विभागके
विचाराधीन है। ऐसा ज्ञात हुआ है कि
लेवाण्टकी स्थितिके सम्बन्धमें प्रे० ट्रूमैन
प्रधान मन्त्री चर्चिलके सम्पर्कमें हैं।

अमेरिकाके स्थानापन्न परराष्ट्र सचिव
मि० जासेफ ग्रू ने एक प्रेस कानफरेंसमें कहा
है कि रक्तपात रोकनेके लिये बरती जाने-
वाली हस्तक्षेपकी ब्रिटिश नीतिका प्रे०
ट्रूमैनने अनुमोदन किया है। आपने आगे
कहा है कि गत २८ मईको अमरीकी सर-
कारने फ्रांस सरकारसे इस आशयका
अनुरोध किया था कि सीरिया और लेवाण्ट
के प्रति अपनी नीति पर वह पुनर्विचार करे
तथा स्पष्ट कर दे कि फ्रांस उनके साथ
स्वतन्त्र राष्ट्रके सदृश व्यवहार करना चाहता
है।

सीरिया स्थित ब्रिटिश सेना

ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० एन्थोनी
इडेनने कामन सभाको सूचित किया है कि
सीरियामें समझौता होते ही ब्रिटिश फौजें
सीरिया खाली कर देंगी।

मिश्रका प्रतिवाद

कैरोसे प्रेषित रायटरके एक तारसे पता
चला है कि मिश्र मन्त्रिमण्डलकी कौंसिल
ब्रिटिश, अमेरिकन, रूसी और फ्रांसकी
सरकारोंके पास फ्रांसीसी सेनाओंकी अनु-
चित कार्यवाहीके खिलाफ कठोर प्रतिवाद
भेज रही है।

सीरियाकी स्थितिमें सुधार

लन्दनके अधिकारी क्षेत्रोंसे इस संवाद
की पुष्टि हुई है कि लेवाण्ट स्थित फ्रेंच
कमाण्डर-इन-चीफने फ्रेंच सैनिकोंसे गोला-
बारी बन्द कर अपने बैरकोंमें लौट जानेका
आदेश दिया है। पेरिसके अधिकृत क्षेत्रोंका
कहना है कि सीरिया स्थित फ्रेंच सेनापति
को फ्रांसकी सरकारने समझौतेका रुख रखते
हुए सभी आवश्यक कार्रवाई करनेकी हिदा-
यत भेजी है। रायटरके विशेष संवाददाताने
सूचित किया है कि लगभग पांच दिनोंके
भीषण संग्रामके बाद संकटाच्छादित सीरिया
में गोलाबारी बन्द करनेका आदेश जारी
किया गया है और शांतिपूर्ण समझौतेका
मार्ग तैयार किया जा रहा है। लन्दनमें शीघ्र
ही समझौतेके लिये एक बैठक बुलानेका
प्रबन्ध किया जायगा, जिसमें जे० डी गालके
स्वयं भाग ले सकनेकी आशा है।

श्री सुभाष बोसका आदेश

किसी 'गुप्त स्थान' से सैनिकोंके नाम
जारी किये गये अपने विशेष आदेशमें
आजाद हिन्दुस्तानकी अस्थायी सरकारके
प्रधान श्री सुभाष बोसने कहा है, "भारतके
उद्धारमें मेरा विश्वास पूर्ववत है। इस कठिन
परिस्थितिमें मेरी यही आशा है कि अस्थायी
पराजयके बावजूद बहादुरकी तरह लड़ते
हुए अपने प्राण न्योछावर करो।" उक्त
समाचार बटाविया रेडियोने गत २६ मई
को अपने ब्राडकास्टमें सुनाया है। इधर कुछ
दिनोंसे सुभाष बाबूका सदर मुकाम बर्मामें
था पर लड़ाईका रुख देखते हुये "अपने
मन्त्रियों तथा उच्च पदाधिकारियोंकी सलाह
के अनुसार" उन्होंने अपना सदर मुकाम
बर्मासे हटा लिया है। टोकियो रेडियोके
एक समाचारसे ज्ञात होता है कि बर्मा छोड़ने
के बाद उनकी सरकारका सदर मुकाम बैंग-
काक में कायम हुआ है।

ईश वन्दना पर महात्माजी

पंचगनीके लिये प्रस्थान करनेके पूर्व
प्रार्थनाके समय उपस्थित एक खासी भीड़के
समक्ष प्रार्थनाके महत्व पर महात्माजी
ने एक भाषण दिया। महात्माजीने प्रार्थनापर
जोर डालनेका कारण स्पष्ट करते हुए कहा—
मैं एक महती शक्तिमें विश्वास रखता हूं।
जन्म कोई आकस्मिक घटना नहीं है। हर
आदमी अपने कर्मका फल पाता है। जीवन-
मरण ईश्वरके हाथ है। यदि हम दिन भर
ईश्वरकी स्तुति करें तो सर्वोत्तम है चूंकि यह
सम्भव नहीं है, हमें कमसे कम कुछ मिनटों
तक ही उनकी याद करनी चाहिये। विधिकी
विभिन्न अनुकम्पाके लिये उनके प्रति प्रत्येक
दिन यदि हम कृतज्ञता नहीं प्रकट करते
तो जीवनका कोई अर्थ ही नहीं रहा। बिना
अन्न खाये शरीर कुछ समय तक काम कर
सकता है पर हम प्रार्थनाको नहीं त्याग
सकते जो आत्माका खाद्य है। किसी व्यक्ति
विशेषसे भिक्षा मांगना अनुचित है पर ईश्वर
के आगे हाथ पसारनेमें लज्जाकी कौनसी
बात है।

ईरान सरकारका अनुरोध

ईरानने ब्रिटिश और अमेरिकन सरकारों
से अनुरोध किया है कि विदेशी फौजें फारस
से हटाली जायें। उपर्युक्त दो सरकारें इस
अनुरोध पर सहानुभूतिपूर्वक विचार कर
रही हैं। कूटनीतक क्षेत्रोंका कहना है कि
१९४२ की २९ जनवरीको फारस और मित्र-
राष्ट्रोंके बीच जो सन्धि हुई थी उसके अनु-
सार व्यवस्था की गयी थी कि हर जगह युद्ध
समाप्त हो जानेके ६ महीने बाद तक मित्र
सेनायें फारसमें रहेंगी। इससे साफ जाहिर
होता है कि जापानी युद्धकी समाप्तिके बाद
भी ६ महीने तक मित्र सेनायें रह सकती हैं पर
६ महीनेके भीतर नहीं हटाया जाना चाहिये,
ऐसा भी कहीं उल्लेख नहीं है। अतः सहा-
नुभूति पूर्ण ढंगसे फारसी सरकारके अनुरोध
पर विचार किया जा रहा है।

इटालीके लिबरलोंके कारनामें

इटालीके कम्यूनिस्ट और सोसलिस्ट एक ओर और दूसरी तरफ लिबरल पार्टियों के बीच संयुक्त मन्त्रिमंडलकी स्थापनाकी योजनाको लेकर वाद विवादने उग्र रूप धारण कर लिया है। सोसलिस्ट और कम्यूनिस्ट पार्टियोंने लिबरलोंपर उत्तरी इटालीमें सैनिक नियन्त्रणकी अवधि बढ़ाकर समाजिक सुधारोंकी प्रगति रोकनेके लिये उत्तरी इटाली में अराजकताकी स्थिति होनेका मिथ्यापूर्ण प्रचार करनेका आरोप लगाया है। वर्तमान बोनोमी सरकारमें शरीक रहने वाली इन दो पार्टियोंके अचानक मतभेदका कारण लिबरल पार्टीकी वे चिट्ठियां हैं जिनमें उत्तरी इटालीकी राष्ट्रोद्धारक कमेटीकी कार्रवाइयोंके सम्बन्धमें अन्य पार्टियोंसे जांचकी मांग की गयी है।

बङ्गाल प्रांतीय छात्र सम्मेलन

हिन्दुस्तानकी वर्तमान स्थिति कितनी गयी-बीती है, यह दिनके प्रकाशकी तरह प्रत्यक्ष है। भारतकी आजादीका सग्राम कितने उतार-चढ़ावके बाद आजकी स्थितिमें पहुंचा है फिर भी मंजिलका पता नहीं है। यों आजादी जैसी बहुमूल्य वस्तुकी उपलब्धिके लिये वेशकीमती मूल्य भी चुकाना पड़ता है और हमने आवश्यक कीमत अबतक नहीं चुकाया है पर हमारी सफलतामें विलम्बका सबसे बड़ा कारण स्वामी सहजानन्द सरस्वतीके शब्दोंमें "लड़की हुई राष्ट्रीयता" का अभाव है जो "विश्राम और पराजय" का नाम नहीं लेती और उस समय तक दुश्मनोंपर 'अथक प्रहार और लगातार गोलाबारी करती जाती है जबतक दुश्मन पराहत नहीं हो जाते।'

चूंकि ऐसे लम्बे संघर्षको अपनी कुर्बानियां देकर तरुण भारत ही संचालित कर सकता है, स्वामीजीने बङ्गाल प्रांतीय छात्र सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए विद्यार्थियोंसे अपील की है कि गुलामीके बचे-खुचे बंधनों को शीघ्रतासे काट कर वे उज्ज्वल भारतका निर्माण करें।

मिश्रमें ब्रिटेनका अनुचित हस्तक्षेप

ए० प्रेसके एक समाचारसे ज्ञात हुआ है कि किस तरह ४ फरवरी १९४२ को ब्रिटिश टैंक कैरोमें शाह फारुकके शाही महलके फाटकों पर पहुंचे और पहरेदारोंको बन्दी बना मनमानी ढंगसे मिश्री मन्त्रिमण्डलके गठनमें अनुचित हस्तक्षेप कर मित्रोंके अनुकूल मन्त्रिमण्डल गठित करवाया।

यह घटना मध्य पूर्वकी घटनाओं पर लगे प्रतिबन्धोंके कारण अब तक पूर्ण रूपसे कभी प्रकाशमें न आ सकी।

अब शाह फारुकने नहास पाशाको नयी सरकार गठित करनेको नियुक्त किया तब मिश्रके ब्रिटिश राजदूत सर माइल्स लिम्पसने शाह फारुकसे मिलकर इस नियुक्तिका विरोध किया क्योंकि नहास पाशा ब्रिटिश विरोधी नीतिके लिये विख्यात थे। नहासपाशाके बदले ब्रिटिश राजदूतने मेहर पाशाका नाम सुझावके रूपमें पेश किया जो अन्तमें प्रधान मन्त्री बनाये गये।

यूरोप 'लाल' होगा

साम्यवाद आज पूंजीवादी शक्तियोंके लिये एक चुनौती है, भयङ्कर खतरा है। अमरीकी पूंजीवाद और ब्रिटिश साम्राज्यवादके अन्तरतरमें जोरोंकी कंपकंपी है और इस कम्पनका कारण काल्पनिक नहीं, बिलकुल ठोस है। अमेरिकन कांग्रेसकी प्रमुख सदस्या, क्लेयर बूथ लूस जो इधर हालमें यूरोपकी यात्रा करके स्वदेश लौटी हैं, रेडियोपर भाषण देते हुए कहा है, "भारतका निराश विद्वत् समाज क्रांतिके लिये निर्देश प्राप्त करनेके लिये अपने शक्ति सम्पन्न पड़ोसी रूसकी तरफ अधिकाधिक झुक रहा है और उसे ऐसा सलाह-परामर्श अधिकाधिक प्राप्त भी हो रहा है। यूरोपकी प्रत्येक सरकार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे ऐसे शासकोंके अधीन है जिनपर मास्कोकी विचार धाराकी छाप है। इटाली और यूनानमें एंग्लो-अमेरिकन फौजोंके हटनेके बाद कम्यूनिस्टों द्वारा अधिकार हस्तगत कर लेनेकी भूमिका तैयार है। बेलजियम, हालैंड, फ्रांस और स्पेनमें कम्यूनिस्ट पार्टीकी आवाज तो जोरदार है ही। सुदूरपूर्वमें कम्यूनिस्ट आग जल रही है। हम संवोंको मालूम है कि वहां एक शक्तिशाली चीनी कम्यूनिस्ट पार्टी है जिसे उस समय महान सुअवसर हाथ लगेगा जब जापानके विरुद्ध रूसी सेनायें अभियान कर मचूरियाको मुक्त करने का संकल्प प्रकट करेंगी। मेक्सिको, मध्य अमेरिका और दक्षिणी अमेरिका कम्यूनिस्ट दलोंसे अच्छी तरह भरा पड़ा है।"

'यूरोपके एक छोरसे दूसरे छोरतक बढ़नेवाली साम्यवादी ज्वारकी अनैतिक प्रकृति' से लूस साहिबाकी सरकार भले ही घबड़ाये, मि० चर्चिल और उनकी सरकारका दिल भले ही कांपे पर इस बढ़ते हुए तूफानको वे रोक नहीं सकतीं। साम्राज्यवादकी देन है गरीबी, बेकारी, भूख, मौत, युद्ध और अशांति। फिर इतने दिनों तक कड़ुई घूंट पी लेनेके बाद यूरोप ही की क्यों, समूचे विश्वकी जनता उसे थूक देना चाहती है। उसके सम्मुख साम्यवादका एक नया मार्ग है जो उसके सभी रोगोंका उपचार कर उसे पूर्ण स्वास्थ्य लाभ करानेका आश्वासन दे रहा है—इतना ही क्यों, अपने आश्वासनकी सचाई, योजनाओंकी व्यावहारिकता और ईमानदारीका प्रबल प्रमाण भी दे चुका है वह। साम्राज्यवादमें कौन-सी इज्जत है जो लोग उसकी तरफ झुकेंगे।

व्यापार समाचार

सोना चांदी

सोना पाटला ७९), गिन्नी ९१), सोना तारा ७९।), इधीव ७९।।।) चांदी तैयारी १३२।।।)

चपड़ा

लेमन छपरफाइन ७७), आर्डिनरी छपरफाइन ७५), स्टण्डर्ड वेन ७३), टी०एन० रेडी ७१), १२ परसेण्ट टी० एन० ७०), आई० टी० एन० ७०), नं० २ कुसुमी ६४), वैशाखी ५३), लाक न्यू आसाम ४९।)

जूट बोरा हैसियन

वीट्वील खुला—५९।।।) ऊंचा ६०।=) नीचा ५९।।।) बन्द हुआ ६०।)

जूट—खुला ७४।-) ७४।-) ऊंचा ७५) ७४।।।=) नीचा ७४।-) ७४।-) बन्द हुआ ७४।।=)। ७४।।≡)।।

हैसियन

४०"—८ औंस 'बी०' रेडी २२=) जून २२) जुलाई-सितम्बर २१।।।) अक्तूबर दि० २१।।।) ४०"—७।। औंस 'बी'—रेडी २१।) जून २१=) जुलाई-सितम्बर २०।।=) अक्तू० दिसम्बर २०।।=) ४०-१० औंस बी०—रेडी २८) जून २७। जुलाई-सितम्बर २७।=) अक्तू० दिसम्बर २६।।=) बी० ट्विल्स २। पौण्ड—रेडी ६३।) जून ६३=) जुलाई-सितम्बर ६०।।।) अक्तूबर दिसम्बर ५९।।।) हेवी सेस ब्लेन रेडी ६५) जून ६५) जुलाई सितम्बर ६४) कार्न सक्स रेडी ६३) जून ६३) जुलाई सितम्बर ६२।।) लिवरपुल्स रेडी ६८।।) जुलाई सितम्बर ६८।।) जून ६८) ए ट्विल्स रेडी ७८) जून ७८) डी० डब्ल्यू फ्लावर्स रेडी ७४।।) जून ७४) जुलाई सितम्बर ७२।।) अक्तू दिसम्बर ७२)

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—२४ कलकत्ता ११, जून, १९४५, Calcutta, JUNE. 11, 1945 मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

ति मिनट साढ़े छ माइल

आदि कालसे लेकर आज तक भारतीयों ल चलनेका हिसाब घंटे कोस है विज्ञानने इसके सामने साइकिल, ा, :मोटर और रेलगाड़ी बना कर
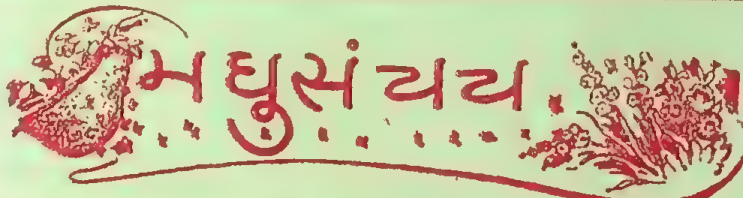
न टैंक-"लोकस्ट" अमेरिकाके प्रशांत तटपर स्थित कालिफोर्नियाके एक हवाई अड्डे वाही वायुयानके नीचे विशिष्ट रैंकमें लटकाया जा रहा है। युद्ध मोर्चोंपर आसानी के टैंकको वायुयानों द्वारा पहुंचाया जा सकता है। इस छोटेसे टैंकमें एक तोप, एक , तीन छोटे मशीनगन, आधे दर्जन हथगोले और ३ हजार बार तोप दागनेकी युद्ध रहती है। सन् १९४४ के जूनमें नारमण्डी पर हमलेके समय इन टैंकोंने अपनी उपयोगिताका पूरा परिचय दिया है।

े दिया है। अब युद्धने पिछले ोंकी मात फेरी है। इस बातका ेवल एक ही उदाहरणसे चल जायगा। से लन्दन ४ हजार ६०० मीलकी दूरी जिसे पिछले नवम्बर महीनेमें एक हवा- १६ घंटे ४६ मिनटमें तय किया था। दो बार तेल लेनेके लिये उसे रुकना ा था। किन्तु इसी जून महीनेमें एक वायुयानने इस दूरीको केवल १२ घंटे मिनटमें तय किया है जब कि वह केवल बाईस मिनटके लिये कैरोमें तेल लिये रुका। हिसाब लगाने पर उसके मिनट उड़नेकी चाल साढ़े ६ मीलसे अधिक है।

ुनाफा खोरोंकी संख्या

ात हुआ है कि गत वर्ष (१९४४) चालू साल (१९४५) के मई महीने तक कलकत्ता पुलिसके इनफोर्समेण्ट ब्रांचने अवैध सञ्चय, नाजायज मुनाफाखोरी और अन्य अभियोगोंमें, कलकत्ता और उसके आसपासके भागोंमें ९९०६ मामले चलाये हैं। उक्त अवधिमें ६,४३६ मामलोंमें अभि-युक्तोंको सजा दी गयी। अभियुक्तोंसे जुर्माने के रूपमें वसूल की गयी कुल रकम ९,३१७२ रु० है।

चूहोंसे मोटर दुर्घटना

कभी-कभी छोटी-छोटी चीजें भी बड़ी दुर्घटनाका कारण बन जाती हैं। कुछ दिन पहलेकी बात है इस्लिङ्गटन (लण्डन) के साउथ गेट रोडके एक सज्जन मि० बी० टर्नर अपनी श्रीमतीजीके साथ मोटरमें सवार हो बाहर निकले। मोटर बहुत दिनोंसे पेट्रोलके अभावमें रखी पड़ी थी; इसी बीचमें चूहोंने इसे अपना उपयुक्त निवास समझ कर मोटर गाड़ीके एक कोनेमें अपना बिल बना रखा था। गाड़ीके रवाना होनेके बाद मि० बी० टर्नरकी श्रीमतीजीके पैरोंमें किसी चीजका स्पर्श हुआ नीचे देखने पर उन्हें दो चूहे नजर आये। 'दादा दौड़ो' कह कर तो वे नहीं चिल्लाईं पर चूहोंके देखनेसे कुछ भय-भीत अवश्य हो गयीं और यकायक चीख उठीं। इस घबड़ाहटमें मि० टर्नर गाड़ीको नियन्त्रित नहीं रख सके और वह दीवालसे जाकर टकरा गयी। पती-पत्नी सख्त घायल और आतंकित अवस्थामें अस्पताल पहुंचाये गये।

नयी मच्छड़दानीका ईजाद

स्वास्थ्य विज्ञानके विद्यार्थी और पंडितों को मच्छड़ोंकी एक जटिल समस्या चिरकालसे परेशान कर रही है। देखनेमें छोटे होने पर भी ये मच्छड़ इतने खोटे और खतरनाक हैं कि इनकी हरकतोंके मारे प्रत्येक साल लाखों मनुष्य असामयिक मृत्युके शिकार होते हैं। कितने "मच्छड़ विरोधी आन्दोलन" और "मच्छड़ विरोधी सप्ताह या वर्ष" भी इनका विनाश न कर सके। कुछ भी हो, हम वैसे लोगोंकी प्रशंसा अवश्य करेंगे जो मलेरिया जैसे घातक रोगके कारण इन मच्छड़ोंके विनाशके लिये प्रयत्न करते हैं।

इधर कौर्नेल यूनिवर्सिटीके मेडिकल कालेजके प्रोफेसर डा० मौर्टिन सी० का-हुके कथनानुसार इस अंतर्राष्ट्रीय महामारी का अन्त करनेके लिये एक नये तरीकेका ईजाद हुआ है। इस नये आविष्कारकी दो प्रमुख विशेषतायें हैं—स्त्री जातिके मच्छड़ की आवाज तथा उसके प्रेम गीतका प्रत्युत्तर देनेकी नर जातिकी उत्कण्ठा। ये सारी बातें अत्यन्त साधारण होते हुए भी मच्छड़ विरोधी संग्रामकी अभूतपूर्व घटना हैं। इस नये आवि-ष्कारकी घटना बड़ी दिलचस्प है। सर्वप्रथम प्रमुख चार किस्मके स्त्री जातिके मच्छड़ बझाये गये। उन्हें कौर्नेल प्रयोगशालामें एक पिंजड़ेमें रखा गया।
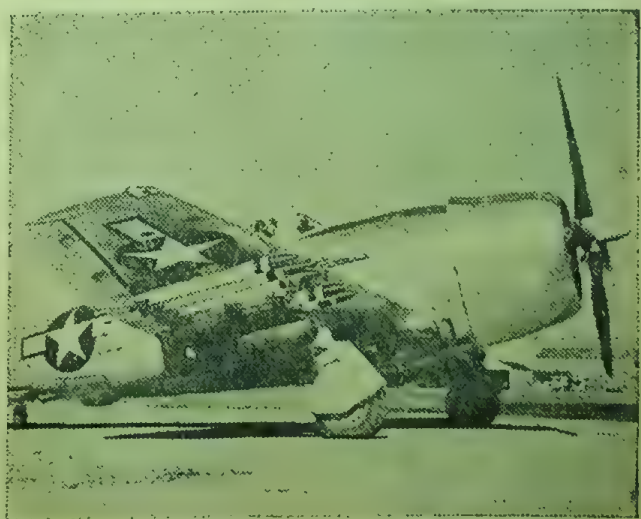
प्रस्तुत चित्र थण्डरबोल्टका नया माडेल है जो प्रति घण्टे ४९० मीलकी गतिसे भी अधिक की उड़ान ले १ हजार मीलके व्यासार्धमें चक्कर काट सकता है। एक साथ लड़ाकू, बमबाज और रक्षक वायुयानकी विशेषता इसे प्राप्त है। अपने परिवर्द्धित रूपमें पूर्वकी अपेक्षाकृत अधिक ऊंचाई पर भी यह पहलेसे तेज रफ्तार से उड़ सकता है। इसमें ५० केलिबरके आठ मशीनगन, द्रुतगामी १० राकेट और ५ सौ पौंडके दो बम फीट किये जा सकते हैं। इसे एक चालक द्वारा सञ्चालित किया जाता है

चलती चक्की

कलियुगकी महिमा है कि निर्जीव पदार्थ बोलता है; फोनोग्राफ, रेडियो आदिके साथ रुपया भी बोलता है। इसमें सन्देहकी गुंजाइश नहीं। असेम्बलीमें भी रुपयेके बोलनेकी चर्चा हुई थी। सब जगह रुपया ही बोलता है। असेम्बलीमें, पार्लियामेंटमें, मन्दिर, मस्जिद और गिरजाघर तकमें इसीकी आवाज सर्वोपरि है।

*　*　*　*

सब जगह रुपयेकी ही चलती है। कंट्रोल होनेपर भी चोरबाजार चलता है, बुकिंग बंद रहनेपर भी माल लदता है, कोटा न होनेपर परमिट मिलता है, सूतेकी सूरत न देखनेवालोंको भी कपड़ेका लायसन्स मिलता है, जगह न होनेपर भी टिकट मिलता है, ये सब गुण रुपयेमें ही है इस कारण रुपया बोलता है।

*　*　*　*

अगर आप भी बड़े आदमी होना चाहते हैं तो बढ़कर बोलनेवाले रुपयेके पीछे चलिये। रुपया आपको प्रत्येक आपदासे बचायेगा। चोरी, घूसखोरी, सीनाजोरी, अनाचार, अत्याचार, ब्लैक बाजार, लूटमार आदिमें लिप्त रहनेपर भी इसके मोहक रूपको देखकर ही लट्ठधारी, मठधारी, सत्ताधारी, पट्टाधारी, चोंगाधारी, हैटधारी, गेटाधारी आदि सभी आपके सहयोगी बननेकी लालसासे आपका आदर न करें तो (सर्वेगुणा कांचन माश्रयन्ती) प्राचीन वाक्य ही झूठा हो जाय।

*　*　*

लोग कहते हैं कि ब्लैक मार्केट धनलोलुप व्यापारियोंने बनाया। अरे बाबा, आवश्यकता आविष्कारकी जननी है। आवश्यकताने ही विश्वयुद्धको जन्म दिया, आवश्यकताने ही बङ्गालका अकाल किया, आवश्यकताने ही ब्लैक मार्केटको जन्म दिया, आवश्यकताने ही कानून और आर्डिनेन्सोंके बनानेका मार्ग प्रशस्त बनाया। इससे मानना पड़ता है कि आवश्यकता ही आविष्कारोंकी जननी है। यह आवश्यकता भी बोलनेवाले रुपयेकी ही है।

*　*　*　*

इस ब्रिटिश (नौकरशाहीकी) छत्रछायामें किसे बोलनेका अधिकार है? रुपया तो निर्जीव पदार्थ है। नौकरशाहीके चलते सजीव वाचाल मनुष्य तो नहीं बोल सकता पर रुपया विशेष बोलता है। इसी कारण इसको कारागारमें कैद किया गया है जिससे बोल न सके। बिगड़े दिमागवाले नेतारूपी मनुष्य बोलते थे उन्हें एकान्त घरोंमें बन्द कर दिया गया, कुछ पैसेवाले बोलते थे उन्हें राशन और कंट्रोलके शासनने तङ्ग कर दिया, गरीब बोलते थे उन्हें अन्न और वस्त्राभावने तङ्ग कर दिया; बोलनेवालोंमें केवल सत्ताधारी ही बचे हैं उनके पास दोहरा बल है सत्ता और रु...पया।

*　*　*　*

लोग कहते हैं कि इस विश्वयुद्धसे भारत ने अरबों रुपया कमाया ठीक है (सावनके अंधेको हरा ही नजर आता है) अगर सत्य को न छिपायें तो नौकरी पेशा और मजदूरों ने परिश्रमके सिवा क्या कमाया? अगर आठगुनी मजदूरी मिली तो १० गुना खर्च पाया। जिन्होंने कमाया उन्होंने नौकरों और गरीबोंके परिश्रमका लाभ निजमें उठाया। गरीबोंने क्या पाया, जिन्होंने अपना खून पानीकी तरह बहाया।

*　*　*　*

कितने ही लोग कहते हैं कि हमें यह मालूम नहीं था कि हमारे साथ यह बर्ताव होगा। नहीं तो हम ब्लैक मार्केट न करते। खैर अब भी समय है किन्तु यह श्मशान-वैराग्य कबतक ठहरेगा जबतक रास्ता नहीं दिखायी पड़ता है। जहां रास्ता मिला कि रिजर्व शब्द 'नहीं' का नारा बुलन्द होगा।

*　*　*　*

ना या नहीं शब्द कट होने पर भी इतना बड़ा हो गया है कि सबके दरवाजे और श्री मुखमें स्थान पा गया है: नौकरीके लिये आइये काम नहीं है, दुकानदारसे आवश्यकताकी चीज मांगिये नहीं है, गाड़ीमें जगह मांगिये नहीं है, घर भाड़ा चाहिये नहीं है कहां तक गिनायें ना और नहींका व्यापार भी सर्वोपरि है। फिर गवर्नमेंट को ही क्यों दोष दिया जाता है कि हम अधिकार मांगते हैं वह ना कह देती है।

"बनोखा"

'हुगली में'

—*:*—

(ले०—मि० आल्डस हक्सले)

मिट्टीके किनारों और उनपर उगे हुए वाड़के वृक्षों बीच हमारा जहाज समुद्रकी ओर बढ़ रहा है। किनारेपर बसे किसी गांव या किसी विशालकाय सफेद जूटमिलसे हम गुजर रहे हैं। डेल्टाके चौरस मैदानके ऊपर विस्तृत आकाश है। आकाशमें खूब शानदार बादल छाये हुए हैं। महीनोंतक लगातार गहरी नीलिमाके नीचे रहनेके बाद बादलों का यह दृश्य आनन्द और ताजगी देता है। मैं उन मुगलचित्रोंकी प्रेरणाओंको अब समझता हूं जिनमें बेगमों और बादशाहोंको बादलोंकी ओर देखते हुए अङ्कित किया गया है। भारतका सूखा मौसम मनुष्यको निर्दोष ऋतुकी नीरसतामें विश्रामके लिये आग्रहपूर्ण कर देता है। आखिर आनेवाला बरसात जब सम्भव कर देता है तब बादल-दर्शन निश्चय ही सुन्दर मनबहलावका साधन होता होगा और जब साथमें (जैसा कि चित्रोंमें है) शरबत हो और ... और बड़े फर्शीका धीमा-धीमा ...

ये मेघ भारतकी सीमाके पार ... दुनियाके दूत हैं। इन्हें देखकर ... प्रसन्नता प्रतीकात्मक है। क्योंकि ... हिन्दुस्तान छोड़नेसे मैं खुश हूं। ... पुराने मित्रोंसे मिला और नये ... बनाये।

मैंने यहां बहुत सी नयी और ... चीजें देखीं। बहुत सौन्दर्य, ... पाया।

बहुत सी बेढ़ंगी और हास्य... सुनी।

फिर भी मैं यहांसे जानेमें ... कारण सभी स्वार्थपूर्ण हैं।

आंखें जो नहीं देखतीं दिल ... नहीं दुखता।

मैं इसीलिये जा रहा हूं कि ... रोनेकी नहीं है।

क्योंकि हिन्दुस्तान मेरे आने ... भी देशसे नीचे गिरा जा रहा है। ...

यहां लोग धूल और बेवकूफी ... हैं, हवा नहीं।

वर्तमान असन्तोषजनक है।

भविष्य अन्धेरा और अनिश्चित ...

पश्चिमकी शक्तियोंका ... शताब्दीसे कुछ अधिक ही रहा है। ... पांच पुश्तकी शांति और उन्नति ... में भी देशने जरा भी तरक्की ... जहां यह गदरके वक्तमें था वहीं ... डिग्बी और कुछ दूसरे विद्वानोंके ... उन्होंने इसे और गरीब ही बना ...

किसी भी हालतमें निश्चय ... लाखों आदमी जिन्दगीभर ... खाकर जीते हैं। पुराने रीति ... अन्ध-विश्वास अब भी वैसे ही ...

डेढ़ सौ सालके पश्चिमी ... जूद भी दसमें नौ हिन्दुस्तानी लि... सकते। और दसवां जो पढ़ा-लिखा ... रेजोंसे घृणा करता है।

शिक्षित और राजनैतिक ... स्वराज्यके सिद्धान्तोंको मानने... हैं। पर उनकी मनोवृत्ति पूरी ... करीब जड़-मूलसे साम्राज्यवादी ...

वे कल्पनामें देशको परि... अनुसार उन्नतिशील देखना ... अधिकोंकी महत्वाकांक्षा है कि ... जिम्मेदारी और जोखिमके कार्य ... नौकरी मिल जाय।

तबतक बेकार श्रम, अनाव... नाइयों और फालतू दुःख-दर्दके ... ढ़ेर धैर्यपूर्वक ऊंचासे ऊंचा ... है। हजारों, लाखों पैदा होते हैं, ... रेंग कर जीते हैं—किस लिये! ... पूरब या पश्चिम, कहीं भी उत्तर ... मुश्किल है।

पर हिन्दुस्तानमें इस ... विचारपूर्ण उत्तर नहीं है, ... मान परिस्थिति के 'टर्म्स' में। ...

जहाज धाराके उतारकी ओर ... है। कल हम समुद्रमें रहेंगे।

(अनुवादक—श्री श्याम ...)

भीख

—:o*o:—

सहारा मुझे दो, सहारा मुझे दो

उषा की सुनहली किरण खो चुका मैं
तुम्हारे दिये ज्योति-कण खो चुका मैं
मिले कल्प मुझको विरह के, रुदन के
प्रिये! हास के आज क्षण खो चुका मैं

तिमिरमय गगन में विहंस दामिनी-सी
नयन-तारिके! ज्योति-तारा मुझे दो।
सहारा मुझे दो, सहारा मुझे दो॥

सुमन पन्थ के आज पाषाण बनते
झकोरे मलय के अनल बाण बनते
रहे ज्योति में जो सदा पास मेरे
तिमिर में वही आज अनजान बनते

मगर तुम तिमिरि में खिलो पूर्णिमा-सी
प्रिये! रूप की ज्योति-धारा मुझे दो
सहारा मुझे दो, सहारा मुझे दो॥

तरी आ रही, यामिनी रो रही है
गगन में तड़प दामिनी रो रही है
अरे! मांगती है तरी तीर अपना
सुमुखि! प्राण की रागिनी रो रही है

तिमिर ने किया कूल मेरा अपरिचित
प्रिये! यामिनी में किनारा मुझे दो।
सहारा मुझे दो, सहारा मुझे दो॥

—कुंवर बहादुर सिंह

र हित बस जिनके मन माहीं।
तिन् कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं॥

विश्वमित्र

वावेलकी योजना

—:०:—

आकाशकी तरइंया (तारा) लेने गये लौटे खेतकी तोरइयां लेकर, यह बात वावेलकी लन्दन यात्राके सम्बन्धमें ...तः लागू होती है। लार्ड वावेल निराश ...र लौटे हैं या पहलेसे अधिक बुद्धिमान? ...हाल वे वापस लौट आये। लौट ही नहीं ... बल्कि कुछ लेकर भी आये हैं। परदेशसे वापस आनेके समय खाली हाथ लौटने ...ला व्यक्ति भी बच्चोंके लिये खिलौना और मिठाई जरूर ले आता है। लार्ड वावेल ...पने "बच्चों" के लिये खिलौना लेकर ...हैं। लार्ड वावेलका मन रखनेके लिये ...चर्चिल और मि० एमरीने स्वयं खोज-...कर यह खिलौना निकाल दिया। उन ...होंने उसे झाड़ पोंछ कर उसमें झालर ...उनकी अपनी हाथसे टांकी है। लार्ड ...वेल अपने प्यारे बच्चे (वायसरायकी ...क्जीक्यूटिव कौंसिलके सदस्य) अभी ...खिलौनेसे अपना जी भर रहे हैं। उनका ...जी चुकने पर दूसरे बच्चोंको भी उससे ...खेलनेका मौका दिया जायेगा।

...तो, लार्ड वावेल साहब जो खिलौना ...लाये हैं उसके रूप-स्वरूपके सम्बन्धमें ...तरहकी कल्पना-जल्पना सुनाई पड़ ...है। कहा जाता है कि ब्रिटिश कैबिनेट ...इण्डिया कमेटीमें इस खिलौनेका रूप रंग ...वावेलकी उपस्थितिमें संवारा गया ...संवारनेका कार्य मि० एमरी, (पुराने ...रन्द) लार्ड साइमन (पुराने रंग-...) सर जान एण्डर्सन (पुराने निशाने...) और सर जेम्स ग्रिग (पुराने माया-...) आदि कुशल और प्रवीण धुरन्धरोंने ...एली, सर स्टैफोर्ड क्रिप्स और लार्ड ...वेलको अपने सामने बैठा कर किया

...सीधी-सी बात यह है कि जो योजना ...लार्ड वावेल वापस आये हैं, यद्यपि ...इस समय तक वह हमारे सामने नहीं ...लेकिन इससे यदि वे समझते हों कि भारत ...सन्तुष्ट किया जायेगा तो यह उनकी ...भूल है। पूर्ण स्वतन्त्रतासे कम देने वाली ...योजनाको भारत जब १९४२ में नहीं ...स्वीकार कर सका तो यह तो १९४५ है, ...इसे भला कौन मान सकता है। ...भारत तीन साल आगे बढ़ गयी है। सवाल ...अब देनेका नहीं। शासन सुधारोंके ...टुकड़ोंका युग बीत गया। यह बात ...सभी प्रगतिशील विचारक मानते ...जिन्होंने जिस दुनियाका नक्शा खींच ...था वह बहुत पुरानी हो गयी। उसे अब ...मिटाकर नया संसार कर नयी बनाने ...वालोंके लिये शब्दजाल फैलायें, उनके शब्द जालमें स्वाभिमान और आत्म सम्मानकी दुनियासे दूर रहने वाले सर फिरोज खां नून जैसे व्यक्ति ही आ सकते हैं, जिनको यह कहते लज्जा नहीं आयी कि "सैनफ्रांसिस्कोमें हिन्दुस्तानकी समस्या नहीं आयी और वह आ भी नहीं सकती थी क्योंकि हम लोग (' हम" शब्द पर जरा गौर कीजिये) वहां शान्तिके लिये एक विश्व संगठनकी सनद (चार्टर) तैयार कर रहे हैं। किसी एक देशकी घरेलू राजनीतिसे हम लोगोंका कोई वास्ता नहीं।" संसारकी शान्तिके लिये विश्व संगठन बनानेका स्वांग भरने और दम्भ करनेके पहले सर फिरोज खां नूनको चाहिये कि अपने रहनेके लिये झोपड़ा तो बना लें।

ब्रिटिश सरकार इस तरहकी गुलाम मनोवृत्तिवाले व्यक्तियोंको लेकर भारत पर अब अधिक दिन शासन करनेकी कल्पना छोड़ दे, इसीमें उसका, भारतका और विश्व का कल्याण है। हिन्दुस्तानमें इस छोरसे उस छोर तक अभाव, अशान्ति और असन्तोषकी जो आग सुलग रही है उसे लार्ड वावेलके हाथ भेजी गयी योजनासे नहीं शान्त किया जा सकता।

मालूम हुआ है कि १२ अथवा १३ जून के पहले लार्ड वावेलके प्रस्ताव प्रकाशमें न आयेंगे। फिर भी यत्र तत्र सूत्रसे उनके सम्बन्धमें जो ज्ञात हुआ है उससे उन लोगों को, जिनको भारतकी स्वतन्त्रतासे सच्चा प्रेम है किन्तु यह समझते हैं कि वह बिना उपयुक्त त्याग और बलिदानके ही, ब्रिटिश सरकारसे मिल जायेगी, अवश्य ही बड़ी निराशा हुई होगी। वायसरायके सर्वेसर्वा अधिकार पूर्ववत रहेंगे। मध्यकालीन सरकार बनानेके लिये एक एडहाक कमेटी बनायी जायेगी। इस कमेटीमें महात्मा गांधी, मि० जिन्ना, ११ प्रान्तोंके वर्तमान और भूतपूर्व प्रीमियर तथा केन्द्रीय असेम्बलीके पार्टी नेता आमन्त्रित किये जायेंगे। इस कमेटीके बैठनेके पूर्व, प्रस्ताव सरकारी तौरसे प्रकाशित हो जायंगे और विभिन्न पार्टियोंके नेता प्रस्तावोंके प्रति तथा एडहाक कमेटीमें भाग लेनेके सम्बन्धमें अपना रुख प्रकट कर देंगे। कहा जाता है कि इस कमेटीका काम इतना ही होगा कि वह नयी सरकारके सदस्योंका निर्वाचन मात्र करेगी, प्रस्तावोंके गुण अवगुण पर विचार करने, उन्हें स्वीकार या अस्वीकार करनेका अधिकार उसे न होगा। मि० चर्चिल जैसे तानाशाहसे इससे अधिककी आशा भी नहीं की जा सकती थी। किन्तु यह बात भी निश्चित समझी जानी चाहिये कि, महात्माजीकी तो बात ही नहीं है, जरा भी स्वाभिमान रखने वाला दल या व्यक्ति भी इसे स्वीकार नहीं कर सकता। यदि विजय मदसे मत्त ब्रिटिश सरकार आज इस स्थितिमें है कि वह यह कहनेकी हिम्मत कर सकती है कि 'तुम्हारे सामने ये प्रस्ताव हैं, जी चाहे लो जी चाहे न लो' तो हम उसे यह याद दिलाना चाहते हैं कि अभी बहुत दिन पहलेकी बात नहीं है जब अन्याय और अनीतिको न्याय और नीति कह कर संसार पर लादनेकी धृष्टता करने वाले हिटलरको पराजयके अपमानका कड़वा घूंट पीकर संसारसे विदा ग्रहण करने को वाध्य होना पड़ा। उसका विश्व-साम्राज्यका स्वप्न उसीके साथ चला गया।

हम यह जानते हैं कि नैतिकतासे शून्य चर्चिल जैसे व्यक्तियों पर इस तरहकी चेतावनियोंका कोई प्रभाव नहीं पड़ सकता। जीते हुए जुआरीकी-सी हालत आज मि० चर्चिलकी हो रही है। संयमहीन महत्वाकांक्षी व्यक्ति को जीत अन्धा बना देती है। उस समय उसे सर्वत्र जीत ही जीत नजर आती है। विजयान्धताने ही हिटलरको धराशायी बनाया। मि० चर्चिल भी इस समय वैसा ही स्वप्न देख रहे हैं। हिन्दुस्तान पर ही उनका यह सुख-स्वप्न और साम्राज्य विस्तारकी मधुर कल्पना अवलम्बित है। 'सुच्यग्रं न दास्यामि' के संकल्पसे डिगनेका अर्थ है पूंजीवाद और साम्राज्यवादके गढ़का ध्वंस। चर्चिल यह नहीं कर सकते। वे स्पष्ट देख रहे हैं कि सम्पूर्ण यूरोप और एशियाके बहुत बड़े हिस्सेमें महान सामाजिक विप्लवकी पूर्वस्थिति उग्र रूप धारण कर रही है। जिस तरह भी होगा इस विप्लवको रोकनेमें वे अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा देंगे। हिन्दुस्तानको वास्तविक राजनीतिक अधिकार हस्तान्तरित करनेका अर्थ होगा उस विप्लवको पूर्ण बनानेमें सहायता पहुंचाना। हिन्दुस्तानको अपने सम्पूर्ण अधिकारमें रख कर एवं आगामी निर्वाचनमें देशकी तमाम प्रतिक्रियाशील शक्तियोंकी सहायतासे विजय प्राप्त करके ही संसार व्यापी महान सामाजिक विप्लवको रोकनेकी चेष्टा की जा सकती है, यह बात मि० चर्चिल खूब समझते हैं। अतः भारतकी सहज और स्वाभाविक एवं उचित मांगको वे अपनी शक्ति रहते पूर्ण न होने देंगे।

हम चाहते हैं कि हमारे अतिशय आशावादी 'राष्ट्रीय नेता' इस वास्तविकताको समझकर लार्ड वावेल द्वारा लायी गयी योजनापर विचार करें। सहयोगकी भावना अच्छी बात है किन्तु तभी जब उसका आधार पूर्ण समानता और पूर्ण स्वतन्त्रता हो। इस स्तरसे उतर कर सहयोग करनेके लिये कदम बढ़ानेका अर्थ होगा स्वतन्त्रताके मार्गसे एक मंजिल पीछे हट आना।

उत्तर प्रत्युत्तर—

ब्रिटेनमें निर्वाचन संघर्षकी तैयारियां बड़े धूम-धामसे हो रही हैं। टोरी पार्टीकी तरफसे निर्वाचन प्रचार आरम्भ करते हुए मि० चर्चिलने अपने भाषणके दौरानमें दुतरफी दुलत्तियां झाड़ीं। लिबरल और लेबरपार्टी दोनोंपर ही प्रहार किये। लिबरल पार्टीके आचरणसे उनको इस बातका खेद है कि यद्यपि उनकी सरकार और लिबरल पार्टीके बीचमें कोई वैसा विशेष अन्तर नहीं है, जैसा सोशलिस्टोंसे है, फिर भी लिबरलोंने उनका साथ नहीं दिया। इसमें सन्देह नहीं कि दोनों, लिबरल और टोरी, पूंजीवादी व्यवस्थाको माननेवाले हैं किन्तु लिबरलोंका झुकाव सोशलिज्मकी तरफ अधिक है। उनका दृष्टिकोण अधिक व्यापक है, यह लिबरलदलकी बेवरिज योजनासे स्पष्ट है। इतना ही नहीं, इस युद्धकी विभीषिकासे उनके दृष्टिकोणमें अधिक प्रगतिशील परिवर्तन हुआ है। लिबरल दलके एक सैनिक उम्मेदवार ब्रिगेडियर एरिक डोर्मन स्मिथका कहना है कि सैनिकोंमें बहुत बड़ा परिवर्तन हुआ है। जिस समय वह अपने प्राण होम रहा था उसने राजनीतिक नेताओंको घरेलू मोर्चेको लूटते-खसोटते देखा है। उसकी आशाओं पर पानी पड़ गया। उसी निराशाने, क्योंकि उसने अपनी आशाओंको छली जाते देखा है, भयङ्कर क्रोधाग्नि प्रज्वलित की है। इसका परिणाम है "क्रुद्ध व्यक्तियोंका संघ।" युद्धमें प्राण देनेवाले सैनिक आज इस बातको समझ गये हैं कि वे किसके लिये लड़ रहे हैं। वह आज युद्धके मोर्चों पर प्राण दे रहे हैं और उधर उनके बालबच्चे कष्ट और यंत्रणाओंकी चक्कीमें पिस रहे हैं! स्वभावतः टोरी सरकारके खिलाफ उसके हृदयमें प्रतिहिंसाकी आग धधकेगी। वह धधक उठी है। टोरियोंके लिये साम्राज्य और साम्राज्य के सम्पूर्ण साधनोंको सुरक्षित रखनेके लिये मि० चर्चिल कमर कसे तैयार दिखायी दे रहे हैं। बोलनेमें पटु और प्रवीण चर्चिल अपने वाक्जालमें ब्रिटिश जनताको फिर फांसना चाहते हैं। यही कारण है कि वे समाजवादको विकृत और घृणितरूपमें ब्रिटिश जनताके सामने रखते हुए मि० चर्चिलने कहा है कि "यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि समाजवाद अविच्छिन्न रूपसे एक तन्त्रशाही (तानाशाही)के साथ एक ही तानेबानेमें जकड़ा हुआ है। समाजवाद केवल सम्पत्तिपर ही नहीं बल्कि स्वतन्त्रतापर भी चोट करता है।" बात तो सही है। मुट्ठीभर व्यक्तियोंकी सम्पत्ति और स्वतन्त्रतापर चोट करनेवाला समाजवाद मि० चर्चिल जैसे व्यक्तियोंकी आखोंकी नींद हराम कर रहा है। किन्तु उनको यह बात स्मरण रखनी चाहिये कि अब उनकी यह धोखेकी टट्टी बहुत दिनों तक नहीं खड़ी रह सकती। संसारके आखें हैं। उसने देखा है, जैसा लेबरपार्टीके नेता मि० एटलीने कहा है, कि "आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैण्डमें, जिनके निवासियोंने इस युद्धमें महान गौरव और कृतित्व प्राप्त किया है, तथा स्कैण्डिनेवियन देशोंमें वर्षोंसे समाजवादी सरकारें हैं, और उनके निवासी महान सुख और स्वच्छन्दताका जीवन व्यतीत कर रहे हैं। संसारमें इनसे अधिक स्वतन्त्र और लोकतन्त्रीय देश अन्य नहीं है।" जबतक संसारमें सम्पत्तिके आधारपर समाजकी प्रतिष्ठा होती रहेगी तबतक स्वतंत्रता और समानता सब धोखा है। मि० चर्चिल इस धोखेको बनाये रखना चाहते हैं। इसीसे समाजवादी व्यवस्था होनेपर गुप्त पुलिसके आतंकका मिथ्या त्रास वे सामने उपस्थित करते हैं। हिन्दुस्तानमें लोकतंत्र और व्यवस्थाके नाम पर इस गुप्त पुलिस विभागके बलपर आतंक जमाकर शासन करनेवाले चर्चिलको यह बात कहते शर्म आनी चाहिये थी। मि० एटलीने उनको याद दिलाया है कि "वे (चर्चिल) गुप्त पुलिसके खतरे और उसकी वजहसे अन्य तमाम बुराइयोंकी चर्चा करते समय भूल गये कि ये सब बातें तो प्रत्यक्ष रूपमें इसी देश में कार्ड लिबरलकी टोरी सरकारके जमानेमें देखी जा चुकी है, अब नेपोलियनसे यूरोपकी

रक्षा करनेवाले ब्रिटेन वासियोंको दमनका शिकार बनना पड़ा था।" दरअसल चर्चिल साहबको इन सब बातोंकी याद रखनेकी आवश्यकता क्या है। एक बात उनको याद है कि किस तरह साम्राज्य और उस साम्राज्यके मुट्ठीभर मालिकोंके स्वार्थों को सुरक्षित रखा जा सकता है। चर्चिल और उनके जैसे व्यक्ति जबतक यह बात न भूलेंगे तबतक संसारमें शान्ति नहीं हो सकती।

सर्वत्र गतिरोध !!—

आजकल सर्वत्र डेडलाक (गतिरोध) की स्थिति है। बात यह है कि डेडलाकका अन्त करनेको जो कुञ्जी बनायी जाती है, उसके बनाते समय इस बातका खास ध्यान रखा जाता है कि कुञ्जी घूमने लगे किन्तु लाक (ताला) ज्योंका त्यों बन्द रहे, जकड़ रहे। भारतवर्षकी राजनीतिक स्थितिका यही हाल है। सैनफ्रांसिस्को कानफरेंसका हश्र इससे भी अधिक है। इसका आरम्भ ही डेडलाकसे हुआ है। प्रतिदिन, यह डेडलाक, वह डेडलाक, यही सुननेमें आता है। सैनफ्रांसिस्को डेडलाककी स्थितिसे आगे नहीं बढ़ सका। अब समाचार आया है कि जर्मनीपर अधिकारके प्रश्नपर विचार करनेकी स्थिति भी डेडलाकसे होकर गुजर रही है। अमेरिकन पत्र-प्रतिनिधि ड्रू मिडलटनने यह समाचार भेजा है कि मित्र राष्ट्रीय नियंत्रण समिति (कण्ट्रोल कमेटी) की पहली बैठक ही अचानक भङ्ग हो गयी। पत्र प्रतिनिधिने बताया है कि जर्मनीकी पराजयपर चारों राष्ट्रोंके घोषणा-पत्रपर हस्ताक्षर हो जाते ही कण्ट्रोल कौंसिलकी बैठक समाप्त हो गयी। क्योंकि ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांसके सैनिक प्रतिनिधियोंको यह मालूम हुआ कि मार्शल जुकोवको घोषणा पत्रपर हस्ताक्षरसे अधिक कुछ करनेका अधिकार नहीं है और मार्शल जुकोव कण्ट्रोल कौंसिलके सङ्गठन अथवा उसकी कार्य प्रणाली आदि बातोंपर तबतक विचार करनेको तैयार नहीं हैं जबतक इससे सम्बन्ध रखनेवाली अन्य महत्वपूर्ण बातोंपर समझौता न हो जाये। बात भी ठीक है। मुख्य प्रश्न है अधिकृत अञ्चलोंकी सीमा का निर्द्धारण। जबतक यह प्रश्न हल नहीं हो जाता तबतक कण्ट्रोल कौंसिलका काम चालू नहीं हो सकता। मुख्य प्रश्न, ड्रू मिडलटनका कहना है, जो रूसियोंके दिमागमें चक्कर काट रहा है वह है ब्रिटेन और अमेरिकाकी सेनाएं। जबतक प्रस्तावित रूसी अंचलसे अमेरिकन सेनाएं नहीं हट जातीं तथा एल्बे नदीके पूर्व क्षेत्रसे ब्रिटिश सैनिकोंको नहीं हटा लिया जाता, मार्शल जुकोव किसी बातपर विचार करनेको तैयार नहीं हैं। इन सेनाओंका हटाना तबतक सम्भव नहीं है जबतक अधिकार-अञ्चलोंकी सीमाएं स्थिर नहीं हो जातीं। यह है डेडलाककी स्थिति। एक दूसरे अमेरिकन पत्र प्रतिनिधि, जोसेफ ग्रिगका कहना है कि उक्त घोषणा पत्रपर हस्ताक्षर करनेके पूर्व भी रुकावट खड़ी हो गयी थी। जेनरल आइसन हावरको यह सूचित किया गया था कि घोषणा पत्रकी १० वीं शर्तमें कुछ परिवर्तन आवश्यक है क्योंकि सोवियट रूस जापानको नाराज करना नहीं चाहता। इस शर्तके अनुसार जर्मनीके रूसी अञ्चलमें गिरफ्तार किये गये जापानियोंको पश्चिमी मित्रोंके हाथमें सौंप देना पड़ेगा। रूस इसमें ऐसा संशोधन चाहता था कि उसे यह काम न करना पड़े। अन्तमें काफी वादविवाद और टेलीफोन वार्ताओंके बाद यह तय हुआ कि घोषणा पत्रपर हस्ताक्षर करके काम आगे बढ़ाया जाये और रूस द्वारा उठायी गयी आपत्तिपर बादमें मित्रराष्ट्रोंकी सरकारें वार्तालाप करके मीमांसा कर लेंगी। यह थी आरम्भकी स्थिति। हस्ताक्षर तो हो गये लेकिन काम आगे नहीं बढ़ा।

डिगालको प्रत्युत्तर—

सीरिया और लेबनानके प्रश्नपर पत्र-प्रतिनिधियोंके एक सम्मेलनमें जेनरल डिगालने ब्रिटेनके खिलाफ यह अभियोग लगाया था कि लेवाण्टमें ब्रिटेनकी चेष्टासे ही फ्रांसके खिलाफ आन्दोलन उभड़ा है। इस अभियोगका खण्डन करते हुए मि० चर्चिलने कामन सभामें कहा कि बात ठीक इससे उलटी है। प्रश्नको नैतिक स्तरपर रख, एवं अपनेको नैतिकताका ठेकेदार सिद्ध करनेकी चेष्टा करते हुए चर्चिलने कहा कि इस युद्धमें किसीकी सम्पत्ति चुरानेका इरादा ब्रिटेनका नहीं है। लेवाण्टमें फ्रांसकी विशेष स्थितिको माननेका अर्थ यह नहीं है कि उस विशेष स्थितिको कार्यमें परिणत करनेका उत्तरदायित्व ब्रिटेनने लिया है। अवश्य ही वह मार्गमें रोड़े नहीं अटकायेगा। फ्रांस और ब्रिटेन दोनों साम्राज्यवादी देश हैं। मध्य-पूर्वमें दोनोंके स्वार्थ हैं। फिलस्तीन, ट्रांस-जोर्डानिया ब्रिटेनके शासनाधीन देश हैं। ऐसी स्थितिमें यह स्वाभाविक है कि ब्रिटेन फ्रांसके खिलाफ ऐसा कोई काम न करेगा जिसके फलस्वरूप फिलस्तीन और ट्रांस-जोर्डानियाका सवाल भी सामने खड़ा हो जाये। जेनरल डिगालने अपने वक्तव्यमें यह भी कहा था कि हम चाहते हैं कि सीरिया और लेबनानकेसाथ-साथ सम्पूर्ण मध्यपूर्वकी स्थितिपर विचार हो। ब्रिटेन नहीं चाहता कि इस तरहकी स्थिति उत्पन्न हो। इसीसे सीरिया और लेबनानमें फ्रांसके विशेषाधिकारको वह मानता है। अब यह फ्रांसका काम है कि ब्रिटेनकी तरह वह भी छलबलसे धीरे-धीरे हड़प जानेकी नीतिसे काम ले। उतावली दिखाना अच्छा नहीं। कोई काम ऐसा न करो कि संसारकी दृष्टि उस तरफ खिंच जाये, यही मि० चर्चिलके उत्तरका तत्व है।

यह अपराध है—

जीवनका श्रेष्ठ भाग पंडित जवहरलाल नेहरूने निरंकुश ब्रिटिश सरकारके कारागार में बिताया है। उनका अपराध है स्वतंत्रताके लुटेरोंके खिलाफ जन आन्दोलन करके केवल भारतसे ही नहीं अपितु सम्पूर्ण संसारसे स्वतन्त्रता अपहरण करनेवालोंकी गरोहबन्दी को मिटा डालना। कैम्ब्रिज निर्वाचन क्षेत्रसे पार्लमेण्टके निर्वाचनमें स्वतन्त्र रूपसे खड़े होने वाले सुप्रसिद्ध ब्रिटिश लेखक जे० बी० प्रीस्टलेने ठीक ही कहा है कि "पंडित नेहरू को कारागारमें रखना जुर्म है। वे हमारे समयके सर्वश्रेष्ठ सोशलिस्ट हैं और समाजवादी दुनियामें मार्शल स्टालिनके बाद उनका ही स्थान है।" पंडित नेहरूके प्रति इस तरहकी श्रद्धाञ्जलियां संसारके सर्वश्रेष्ठ मनीषी और विचारक आये दिन दिया करते हैं। उनकी प्रतिभा, मनोबल और नीतिज्ञानसे प्रभावित संसारके लिये उनका व्यक्तित्व यदि आनन्द और हर्षदायक है तो छल-बल और धूर्ततासे संसारका शोषण करनेकी चालें और तरकीबें सोचते रहनेवाले साम्राज्यवादी और पूंजीवादी उनके व्यक्तित्वसे बराबर त्रस्त रहते हैं। यही कारण है कि अपने स्वार्थों और साम्राज्यको निरापद बनाये रखनेके लिये वे कारागार ही नेहरूजीके लिये उपयुक्त स्थान समझते हैं। भारतवासियोंके लिये इससे अधिक लज्जाकी बात और क्या हो सकती है कि इतने दिनों के बाद भी वे अपने नेताओंको जेलोंसे मुक्त करा सकनेकी स्थिति न ला सके। भीख मांगनेसे दो चार दाने भले मिल जाय वह निधि नहीं मिल सकती जो जान बूझ कर हमसे छीन ली गयी है। मांगके पीछे बल चाहिये। राजनीतिक बन्दियोंकी रिहाईकी मांग करने वाले अपनी मांगका बलशाली बनानेके लिये तैयार नहीं हैं। सरकार पर दबाव डालना नहीं चाहते। यही कारण है कि इन भिखमंगोंकी मांग जेलोंमें बन्द नेताओंके हृदयमें शूलकी तरह विधती है, यह मौलाना आजादके पिछले एक वक्तव्यसे स्पष्ट है। हम तो समझते हैं कि जिस तरह पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओंको जेलोंमें बन्द कर रखना अपराध है वैसे ही अपनी मांगको बलशाली बनाये बिना नेताओं की रिहाईकी रट लगाना भी अपराध है।

गन्दी हरकतें—

इस विश्वयुद्धमें सोवियत रूस और लाल सेनाकी गौरव गरिमा मण्डित विजय पर भारतवासी मात्रको गर्व है, क्योंकि उसकी विजय जनताकी विजय है। सोवियत रूसका नाम आज श्रद्धा और सम्मानका भाव लोगोंके दिलोंमें पैदा करता है। इतना होने पर भी हमारे भारतीय कम्यूनिस्ट ठीक इसके विपरीत चित्र उपस्थित करते हैं। औसत भारतीय उनका नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ने लगते हैं। इसका क्या कारण है? समाजवादके प्रति वितृष्णा और अरुचि इसका कारण तो नहीं है? कदापि नहीं। औसत भारतीय समाजवादको आशा और विश्वास की दृष्टिसे देखता है। वह समझता है कि समाजको स्वार्थी सत्ताओंसे बचानेका यदि कोई मार्ग है तो वह समाजवाद ही है। फिर क्या कारण है कि भारतीय कम्यूनिस्ट हमारे समाजका अधिकाधिक घृणापात्र बनता जाता है। यह साधारण बात नहीं है। इसके पीछे अवश्य ही कोई गुरु-गम्भीर तथ्य है। यह तथ्य है कम्यूनिस्टोंकी राष्ट्रीयता विरोधी नीति। कोई व्यक्ति स्वभावतः कितना ही अच्छा क्यों न हो जनता उसे नहीं मानती यदि उसकी दृष्टि में वह राष्ट्रके हितोंके विपरीत काम करता है। भारतीय कम्यूनिस्ट इस समय कांग्रेसकी प्रतिष्ठाको लघु बनाने और अपना नेतृत्व स्थापित करनेके लिये वांछनीय अवांछनीय सभी तरहके हथकण्डोंसे काम ले रहे हैं। कांग्रेस-मुस्लिम लीगके मेलका नारा उनकी इसी कुत्सित भावनाका परिणाम है। ... तरहका मेल करानेके प्रयत्नके पीछे ... एक साम्प्रदायिक और हिंदू हितोंकी ... करनेवाली संस्था सिद्ध करनेकी ... उनको जनतामें अप्रिय बना दिया है। ... इन हरकतोंसे ये कम्यूनिस्ट समाज... सिद्धांतको जनतामें अप्रिय बनानेका ... अपराध कर रहे हैं। साम्प्रदायिक... समस्या हल करनेका जो रास्ता कम्यूनिस्टों... ने पकड़ा है उससे हिन्दुओंके प्रति मुस... मानोंके दिलोंमें और मुसलमानोंके प्रति हिन्दुओंके दिलोंमें घृणा और विद्वेषका भाव पैदा होता है। अच्छा हो कि ये कम्यू... निस्ट साम्प्रदायिकताका अन्त करनेकी ... चेष्टा छोड़कर साम्प्रदायिकता बढ़ाने ... फैलानेवाली जड़को काटनेकी तरफ ही ... ध्यान रखें। जनतामें ब्रिटिश शासनके ... तथा ब्रिटिश शासनको मजबूत बनाये ... वाले पूंजीपतियों, उद्योगपतियों और भी... दारोंके खिलाफ संगठित होनेकी ... पैदा करके ये अपने उसूल, समाजवाद... अधिक पुष्ट कर सकते हैं।

लोक युद्धपर प्रतिबंध—

युक्तप्रान्तकी निरंकुश नौकरशाही ... दिन अपने अविवेक और मनमानापनका ... चय दिया करती है। भारतकी रक्षाके ... जिस तरहकी मनमानी यह जाती इस ... देखनेमें आयी है अन्यत्र नहीं। अभी हाल... युक्तप्रांतीय सरकारने बम्बईसे निकले ... "पिपुल्स वार" तथा उसके हि... संस्करण "लोक युद्ध" और उर्दू संस्क... "कौमी जंग" पर यह प्रतिबंध लगा दि... कि जब तक दूसरा हुक्म न जारी किया ... तबतक उक्त तीनों पत्रोंका प्रान्तमें वि... अथवा उनमें प्रकाशित किसी चीजका ... रण या अनुवाद न किया जाये। ठाकुर ... सिंह गढ़वाला द्वारा लिखित "जब ... वाली सिपाहियोंने पठान सत्याग्रहियों ... गोली चलानेसे इनकार किया था" शी... लेख उक्त तीनों पत्रोंमें छपनेके कारण ... प्रतिबंध लगाया गया है। इस सम्बन्ध... माननीय पुरुषोत्तमदास टण्डनका यह क... बिलकुल सही है कि 'ऐतिहासिक तथ्यों... प्रकाशमें आनेसे रोकनेकी युक्तप्रांतीय स... की चेष्टाको बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं कहा ... सकता। घटना पेशावरकी है किंतु यह ... नीय है कि कहानी पर प्रतिबंध युक्तप्रान्... सरकारने लगाया है फ्रांटियरकी सर... नहीं।" यदि कानूनकी दृष्टिसे वह ... आपत्तिजनक समझा गया था तो यू... कारको पत्रके सम्पादक पर मामला ... चाहिये था। घटना आजसे १५ वर्ष ... है अतः वह एतिहासिक महत्वकी ... गयी है। जैसा टण्डनजीने कहा है एति... महत्वोंको पर्देकी ओटमें रखनेका ... सरासर निर्बुद्धिता पूर्ण है। यदि ... प्रान्तीय सरकार समझती है कि उक्... प्रकाशित करके पत्र सम्पादकने ... तोड़ा है तो उसे यह बात अदालत ... लानी चाहिये। यदि अदालत तक ... साहस उसमें नहीं है तो वह अपने ... पूर्ण आदेशको वापस लेकर, ... बादमें ही सही, परिचय दे।

...जो दशा भारतीय-विश्वविद्यालयों ...उसके विपरीत, प्राचीन भारतके ...विद्यालयोंमें प्रत्येक छात्र-विशेषकी ...हासे देख-भाल की जाती थी। ...की जीवनीसे पता चलता है कि ...विद्यापीठमें नौ हजार छात्रोंके ...हजार अध्यापक नियुक्त थे। इस ...अध्ययन क्रममें प्रति नौ लड़कों पर ...की परम्परा चलती थी। एक ...तीय शिला लेखसे पता चला है ...शताब्दीमें एन्नायरम्‌के 'वैदिक ...प्रत्येक अध्यापकके अन्तर्गत ...अधिक बीस विद्यार्थी रहा करते ...प्राचीन भारतके विश्व-विद्यालयोंमें ...छात्रोंकी व्यक्तिगत देख-रेख कर ...जिससे उच्च आदर्शोंसे पूर्ण जीवन- ...उन्हें प्रेरणा मिला करती थी। इस ...व्यवस्थाकी मुक्त कण्ठसे प्रशंसा ...ह्वेनसांगने कहा था—"मैं नालन्दा ...के आचार्योंके साथ इतना घुल ...था कि व्यक्तिगत रूपसे, उन सबों ...शिक्षायें पानेका मुझे सुअवसर ...और मैं अपने भाग्य पर फूला न ...यदि इन आचार्योंके निकट-सम्पर्क ...आया होता तो शायद बहुत-सी ...बातोंसे अनभिज्ञ रह जाता और ...कभी पूरी नहीं होती।

...प्रश्न' से यह गुत्थी आपसे ...जाती है कि प्राचीन भारतके ...अपने संरक्षणमें विकासोन्मुख छात्रों ...उत्तरदायित्वका थोड़ा भार अवश्य ...थे। इन शब्दोंमें अध्यापकोंके ...यह ग्रन्थ वर्णन करता है—"अपने ...रक्षाका (हर समय) वे प्रबन्ध ...उन्हें खाद्य-पदार्थोंकी उपजके विषय ...बातें बतायें। वे उन्हें उचित ...कार्यके करने न करनेका आदेश ...सलाहसे वे (:छात्र-गण:) भद्र ...साथ करें और ग्रामोंमें बेरोक- ...फिर कर, ग्रामीणोंसे मेल-जोल ...छात्रोंके साथ कभी भी वे निरर्थक ...। छात्रोंके दोषोंको क्षमादानसे ...प्रयत्न करें। छात्रोंके प्रति वे ...भाव न लायें, अध्ययनमें पक्षपात ...भी गुप्त या भेद-भाव रखनेकी ...करें। छात्रोंको स्नेहकी दृष्टिसे ...आवश्यकता पड़ने पर उनकी सहायता ...अज्ञानताके पथ पर जान-बूझ कर ...तो उनसे सम्बन्ध विच्छेद कर ...प्राचीन भारतमें, सत्यतः छात्रोंके ...आचार्यका महत्व, मित्र, दार्शनिक ...के सदृश सामान्य रूपसे होता ...आचार्योंसे छात्रोंका सम्बन्ध दिनों- ...होता जाता था। पर, यदि छात्र ...धर्मसे जान-बूझ कर च्युत होता था ...उसका साथ छोड़ देते थे।

...' में ऐसा वर्णन आया है कि ...उन्हें अधिकार प्राप्त था कि वे ...छात्रोंका साथ छोड़ दें यदि वे उन्हें ...प्रकारसे अयोग्य समझें। उच्च ...को बनाये रख कर, अध्यापकोंको ...की जाती रहती थी कि वे यथा- ...समय पाठ सिखावें, नहीं तो

"प्राचीन भारतका विश्व-विद्यालय-जीवन"

(लेखक—श्री मलिन्द्र)

छात्रोंके मध्यस्थ उनकी मान-मर्यादा कम जायेगी।

प्राचीन भारतमें, छात्रोंको आचार्य पहले से तैयार किया हुआ व्याख्यान नहीं देते थे। वे छात्रोंकी बौद्धिक जिज्ञासाको उकसानेका प्रयत्न करते थे और तब किसी विषय-विशेषकी सूक्ष्मताओंका स्पष्टीकरण कर डालते थे। छात्रोंको ठोस अध्ययन करना पड़ता था। फिर गंभीरता पूर्वक उन्हें मनन करना पड़ता था और परस्पर तर्क-वितर्कोपरान्त वे किसी एक निष्कर्ष पर पहुंचते थे जो अनुभूतिपूर्ण होता था। 'मनु' ने लिखा है कि 'विद्यार्थी चौथाई भाग आचार्यसे, चौथाई भाग अपने सहपाठियोंसे और बाकी अपने जीवनके अनुभवोंसे अध्ययन करता है।' चूंकि :आचार्योंकी कड़ी निगरानीमें छात्र रहते थे इसलिये अपना समय आलस्य पूर्वक वे न व्यतीत कर पाते थे। कम-जेहन छात्रों के प्रति अध्यापक अधिक ध्यान देते थे। केवल सिद्धान्तोंके सूत्र न बता कर वे छात्रों को मानसिक कार्य करनेकी भी आदत लगवाते थे। आलसी या सुस्त बालकोंको परोक्ष रूपसे उनका पूरा आलम्बन प्राप्त था। एक चीनी न्यायाचार्यने कहा है—दि टीचर्स डोगेड्ली परसेवर इन गिविंग इंस्ट्रक्शन टु दोज हू आर एडिक्टेड टू आइडलनेस...।

आधुनिक ढङ्गकी परीक्षायें, प्राचीन-भारतके विश्वविद्यालयोंमें नहीं होती थीं। नालन्दा और विक्रमशिलाके विद्यापीठोंमें पर्याप्त योग्यताकी परख हो लेनेपर, विद्यार्थियोंको महाविहारमें प्रविष्ट होनेकी अनुमति दी जाती थी। पर, उन दिनों जो परीक्षायें होती थीं वे आजकी तरह 'लिखित' न होकर 'मौखिक' होती थीं। अनुभवी-आचार्य स्वयं महाविहारके मुख्य द्वारपर खड़े हो, प्रवेशार्थीसे प्रश्न आदि करते थे जिनका संतोषजनक उत्तर दे लेनेपर ही उन्हें विद्यापीठमें स्थान दे दिया जाता था। यानचवांगका कथन है कि नालन्दाके द्वारपाल अन्य विद्यापीठोंकी अपेक्षा अधिक कड़े प्रश्न किया करते थे। "प्रवेशार्थीको नवीन एवं प्राचीन गौरव ग्रन्थोंका अध्ययन होना अनिवार्य था, चूंकि प्रायः प्रश्नोत्तर, विकट-शास्त्रार्थका रूप धारण कर लेते थे। प्रायः दसमें दो-एक ही, सफल हो पाते थे।"[1] इस प्रकार 'प्रवेशके पूर्व' जो परीक्षा होती थी वह प्रायः कठिन ही होती थी। पर, इसका उपयोग यह था कि प्रवेशार्थी-छात्रकी बुद्धि कितनी कुशाग्र है इसका परिचय सहजमें ही मिल जाये—।

एक बार, विद्यापीठमें प्रवेश कर जानेपर, छात्र, त्रैमासिक, अर्द्धवर्षीय, मासिक या वार्षिक परीक्षासे मुक्ति पा जाते थे। नया पाठ प्रारंभ करनेके पूर्व आचार्योंको उन्हें संतुष्ट कर देना पड़ता था कि पिछले-पाठ उन्हें स्मरण हैं। पिछले-पाठोंकी आचार्य के सम्मुख, मीमांसा कर लेनेपर ही उनका अध्ययन शेष हो जाता था।

भारतके प्राचीन विश्व विद्यालयोंमें सफलीभूत विद्यार्थियोंको दीक्षा देनेकी कोई प्रथा न थी। पर ऐतिहासिक तारानाथके मतानुसार विक्रमशिलाका विद्यापीठ विद्यार्थियोंको अधिकार-पत्र (डिप्लोमा) दिया करता था, विश्वविद्यालयके मुख्य अध्यक्षों की सभामें, अध्ययन शेष हो जानेपर! पाल राजा स्वयं अपने हाथों, अधिकार-पत्र वितरण करते थे जिनका आदर, विद्वानोंकी मण्डलीमें खूब होता था। समय-समयपर प्राचीन भारतमें जो साहित्यिक-शास्त्रार्थ होते रहे हैं—उनके विषयमें कुछेक लेखकोंने भूलसे 'परीक्षा' शब्दका व्यवहार कर दिया है। ऐसे अवसरोंपर विद्वानोंकी योग्यताकी सच्ची परख हो जाती थी। जिनका अध्ययन शेष हो चुकता था वे ही इन उत्सवोंमें भाग ले पाते थे। प्रतिद्वन्द्वियोंको, अपनी काव्योचित-भाषाके बलपर जो हरा देता था—विजयका सेहरा उसीके सर बांधा जाता था। उसे स्वर्ण आदिके अलावा चांदीकी मुद्रायें और अच्छे वस्त्राभूषण भी उपहार-स्वरूप दिये जाते थे और प्रायः उसकी जमीन का कर, छोड़ दिया जाता था।

डा० अल्तेकरने बड़े ही मनोरञ्जक ढंग से लिखा है—"प्राचीन भारतमें विद्यार्थियों को परीक्षाओंके नर्क-जालमें नहीं फंसना पड़ता था। वे किस्मतके सांड़ थे जिनपर आधुनिक छात्रोंको 'दिलजलारहक' हो सकता है। डिग्रीयोंके भारसे लदे आजके तथाकथित ग्रेजुएट-पशु पढ़-लिख कर सब कुछ भूल जानेमें ही गौरव समझते हैं। किस की हिम्मत जो उनसे उनकी योग्यतापर टीका-टिप्पणी भी करे। प्राचीन भारत के विद्यार्थी डिग्रीयोंके दामनमें मुंह नहीं छिपा सकते थे। उन्हें तो हर समय शास्त्रार्थ के लिये प्रस्तुत रहना पड़ता था चूंकि इसी की सफलतापर उनकी सारी योग्यता निर्भर करती थी और समाजमें वे आदरकी दृष्टिसे देखे जाते थे......।"[2]

भारतके आधुनिक विश्व-विद्यालयोंका यह परम्परागत नियम है कि विद्यार्थियों का चरित्र-गठन उनके बौद्धिक-विकाससे किया जाये—उनके दिमागी-दफ्तरमें समय की पाबन्दी, आज्ञाकारिता और भद्राचरण आदि गुणोंको नाम-मात्रके लिये ठूंस-ठांस कर। पर, नैतिक-शिक्षाका यहां कौन-सा साधन है उच्चादर्शों पर चलनेवाले, कितने अध्यापक हैं? तब भला उनके व्यक्तिगत-चरित्रका प्रभाव छात्रोंपर बढ़िया (?) क्यों न पड़े। यदि अध्यापकगण धूम्रपान करते हैं आधुनिक छात्रका यह धर्म है कि वह स्वयं उनकी नकल करता हुआ, समय पड़नेपर उन्हें ही सिगरेट प्रदान करे। ऐसे कई अध्यापकों (केवल स्कूलके ही नहीं, बरन कालेजों के भी) को मैं बहुत निकटसे जानता हूं जो वेश्याओंके कोठेपर अपने संग अपने छात्रोंको भी मिजाजके साथ ले जाते हैं। पर, प्राचीन भारतमें ये बातें कहां थीं? उस समय तो उनके आदर्श-चरित्रोंका ही प्रतिबिम्ब, छात्रोंपर पड़ता था। 'उच्च-शिक्षा' का यह प्रमुख उद्देश्य समझा जाता था 'स्नातकों' का चरित्र कैसा होना चाहिये इसका थोड़ा परिचय 'गोभिल-गृह-सूत्र' से भी हमें प्राप्त होता है। प्रत्येक परिस्थितिमें स्नातकोंसे आशा की जाती थी कि वे अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखें।" वर्षा हो रही हो, तब वे न दौड़ें। अपना पदत्राण हाथोंसे न ढ़ोयें, अपनेसे 'फल' संचित न करें। पेड़ोंपर न चढ़ें" आदि निषेध उपरोक्त सूत्रमें है। डा० विमान विहारी मजुमदारने लिखा है—"स्नातक यह समझते थे कि उनके वचनोंका सामयिक मोल भी है। अकारण 'मद' शब्द का वे व्यवहार नहीं कर सकते थे। किसीकी अतिशय प्रशंसा वे नहीं कर सकते थे। अफवाहोंसे वे परे रहा करते थे। काम, क्रोध, मोहसे दूर रहकर सत्य और अहिंसा के ताने-बानोंसे अपने जीवन-रूपी वस्त्रको वे बुना करते थे...।"[4]

'तैत्रेय-उपनिषद' में लिखा है कि किस प्रकार विश्वविद्यालयके 'कुलपति' दीक्षांत-भाषण (कान्वोकेशन-ऐड्रेस) दिया करते थे:—"सदा सत्य बोलो। कर्त्तव्यसे च्युत न हो। प्रतिदिन नियमपूर्वक (वेदका) अध्ययन करो। अपने आचार्यको गुरु-दक्षिणा देकर उनसे सम्बन्ध-विच्छेद न कर लो। असत्यसे दूर हटो। लाभप्रद वस्तुको अपनाओ। महान बननेके अवसर न खो।

अपनी मां, अपने पिता, अपने आचार्य, अपने पाहुन तकको ईश्वरकी भांति पूजो। ब्राह्मणोंको उच्च स्थान दो। दानमें विश्वास रखो......।"[5]

१—दे० मेरा लेख—'नालन्दा' सरस्वती—अप्रिल' ४५, पृष्ठ १७९-७८

२—अल्तेकर—"एजुकेशन इन ऐंशेंट इण्डिया"

३—गोभिल-गृह सूत्र (देखिये)।

४—वी० वी० मजुमदार— 'ऐंशेंट इण्डियन युनिवर्सिटीज'

५—देखिये—तैत्रेय उपनिषद।

आधुनिक शिक्षा और अन्तर्जातिय विवाह

— समाज की दो गंभीर समस्याएं —

(लेखक—श्री पद्मसिंह शर्मा)

आज हमारे देशमें राष्ट्रीय और सामाजिक जागृतिका आन्दोलन है। जीवनका कोई कोना ऐसा नहीं जहां हमें क्रांति और परिवर्तनके दर्शन नहीं होते हैं। शिक्षा सम्मेलनों, किसान-मजदूर कानफ्रेंसों, धार्मिक उत्सवों, समाजिक त्योहारों आदिमें व्याख्याता और लेखकोंको क्रांति और परिवर्तनका समर्थन करते देखा गया है। लेकिन हमारे समाजके स्तम्भोंके लाख प्रयत्न करने पर भी समाजमें कापुरुषता और कायरता घर करती जा रही है। हमारे युवक और युवतियोंकी दशा दिन-दिन दयनीय होती जा रही है। अशिक्षितों और ग्रामीणोंकी बात छोड़िये। वहां इन बातोंका कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन शिक्षितों और नागरिकों पर इसका जो प्रभाव पड़ता है और इसके जो परिणाम होते हैं वे अत्यन्त भयङ्कर हैं और समाजकी शक्तिका ह्रास कर रहे हैं।

सब ओरसे यह शिकायत सुनाई पड़ती है कि आजकलके लड़के-लड़कियां खराब हो गये हैं। उनमें नैतिक बल नहीं है। उनके चाल चलन ठीक नहीं हैं। उनमें अपने बड़ोंके प्रति सम्मान नहीं है, उन्हें अपने कुलकी लाजका ध्यान नहीं है, वे देशके प्रति कोई उदार दायित्व अनुभव नहीं करते। ये शिकायत ऐसी हैं जो वृद्धों तथा समझदारों द्वारा बराबर होती हैं। लेकिन संतापकी बात है कि वे इसके कारणोंकी ओर ध्यान नहीं देते। यदि ईमानदारीसे देखा जाय तो इसका उत्तरदायित्व हमारे समाजके ठेकेदारों पर है। वे यदि चाहें तो इस स्थितिसे मुक्ति मिल सकती है।

हम आधुनिक शिक्षाको इसका दोष देते हैं। हम कहते हैं कि फैशनने सारे देशको कंगाल बना दिया है, यदि आधुनिक शिक्षा न होती तो हमारे देशमें फैशनका जोर न होता और हमको ये दिन नहीं देखने पड़ते। हम आधुनिक शिक्षाके समर्थक नहीं है और उसके विदेशीपनकी घोर निन्दा करते हैं। लेकिन प्रश्न यह है कि फैशनके लिये उत्तरदायी कौन है? यदि मा बाप पैसा न गवाएं तो बच्चे फैशन नहीं कर सकते। हमारे बड़े-बूढ़े चाहते हैं कि हम चाहे जो कुछ करते रहें पर हमारी संतान कुछ न करें। यह असम्भव कल्पना है। हमारे बच्चोंको आरम्भसे ही हम लाड़-प्यारमें पालते हैं, उन्हें गुड़ियोंकी भांति सजा कर रखते हैं। कीमतीसे कीमती वस्त्र पहनाते हैं। मनमाने व्यवहारकी छूट देते हैं, अनुचित स्वतंत्रता देकर उनकी आदतें खराब करते हैं और जब वे बड़े होने पर फैशनकालीन वातावरणके अनुकूल जीवनमें स्वतंत्रता का प्रयोग करने योग्य होते हैं तो हम सशंकित हो उठते हैं। भयभीत हो जाते हैं। अपने बोये हुए बीजका फल काटना ही पड़ता है। इस सिद्धांतके अनुसार हमें अपने बच्चोंके प्रति किये बिगड़े प्यारका फल भोगना ही पड़ेगा।

इसी बचपनकी छूट और उचित वातावरणके अभावके कारण हमारे युवक और कुमारियोंमें उच्छृंखलता घर कर गयी है। किसी लताको उसके आरम्भमें आप जिस ओर चढ़ा देंगे चढ़ जायगी, बड़ी होकर उसे मोड़े तो वह टूट भले ही जाय दूसरी ओर नहीं चढ़ सकती। यदि आप उसे बांध कर रख देंगे तो इसीसे उसका विकास भी रुक जायगा। यही दशा समाजके भावी नागरिकोंकी हो रही है। आज उनकी स्वतंत्रताकी भावनाके दबकर कुंठित होनेके कारण उनकी शक्ति क्षीण हो रही है। उसका उपाय हमें स्वयं सोचना है, शिकायतें उसका हल नहीं है।

शिक्षासे मनुष्यके जीवनमें स्वतंत्र चेतना आती है। ढोंग और बन्धनोंके प्रति विद्रोह जगता है। मानव-मानवकी पारस्परिक सम्बन्धकी भावना उत्पन्न होती है। पढ़ते समय जो भावना उनके कोमल हृदयों पर दृढ़ हो जाती है वही सदाको बनी रहती हैं। या तो हमें शिक्षा ही न देकर अशिक्षित रखना चाहिये या यदि शिक्षा देनी है तो उत्पन्न होने वाली बातों पर हमें नाक भौं नहीं सिकोड़ना चाहिये।

शिक्षितोंके सामने दूसरी सबसे बड़ी समस्या आज विवाह सम्बन्धोंकी है। यह समस्या समाजका बड़ा अहित कर रही है। हमारे सामने कितने ही उदाहरण हैं। विवाह योग्य कुमारियोंके पिता कहते हैं—"लड़की बड़ी हो गयी है, कोई ठीक लड़का ही नहीं मिलता" और विवाह-योग्य लड़कोंके पिता कहते हैं—"लड़का शादीके लिये तो तैयार है, कोई उसकी रुचिकी लड़की ही नहीं मिलती।" इस खींच-तानमें लड़कियां आवश्यकतासे अधिक दिनोंतक कुवांरी रह जाती हैं और २९-३० वर्षकी उम्रतक शादियां नहीं होतीं। लड़कोंको पुरुषवर्गके होनेके कारण कोई कठिनाई नहीं होती यही बात नहीं है उन्हें भी इसी दिक्कतका सामना करना पड़ता है। गहराईमें जाकर देखें तो क्या यह स्थिति वांछनीय है और क्या पिताओंके कथन सत्य हैं? उत्तर बिलकुल नकारात्मक आता है। वस्तुतः इसका कारण हमारी समाज-व्यवस्था है। हम देखते यह हैं कि दिन-दिन शिक्षित-संस्कृत युवक-प्रवृत्तियोंकी संख्या बढ़ती चली जाती है और हम उसे देखते हुए भी नहीं देखते। योग्य लड़के-लड़कियोंकी कमी नहीं है पर वे अन्तर्जातीय विवाहोंके समर्थनमें ही मिल सकते हैं। यदि आज समाजमें अलग-अलग डेढ़ पाव आटेकी एकतापर रसोई बनानेवाली जातियां एक होमें मिलकर समस्याको सुलझाएं तो आसानीसे उसे सुलझाया जा सकता है। शिक्षित युवक और युवतियोंमें शत-प्रतिशत अन्तर्जातीय विवाहके समर्थनमें हैं पर समाजकी नाककी रक्षा करनेवाले इस ओरसे उदासीन हैं और नाकके रक्षणमें समाजके हाथ-पैरोंको काटने में अपनी शान समझते हैं।

प्रेमकी श्रृंखलाकी अटूट कड़ी: विवाह है। उसका सम्बन्ध मनसे है। शास्त्रोंमें बंधन और मोक्षका कारण मनको कहा गया है—"मन एव मनुष्याणां कारणं बन्ध मोक्षयो।" उसी मनसे प्रेमका सम्बन्ध है। उसके प्रतिकूल कोई कार्य होगा, तो कार्यसिद्धि नहीं हो सकती। वह समय अब नहीं है कि 'अंध-बधिर रोगी अति दीना' पतिका अपमान कर स्त्रीको नरक जाना पड़े। विज्ञानने नरक और स्वर्गके भेदको मिटा दिया है। सभ्यता कहाँकी कहीं पहुंच गयी है। मृत सत्यवानको जिन्दा करनेवाली सावित्रियां आज कम हैं और स्वर्ण प्रतिमा बनाकर अश्वमेध करनेवाले रामोंकी भी संख्या अधिक नहीं है। ऐसी स्थितिमें स्वतन्त्र प्रेमकी उच्छृङ्खल मनोवृत्तिको रोकनेका एकमात्र उपाय अन्तर्जातीय विवाह है।

इस तथ्यको न समझनेका परिणाम यह हो रहा है कि सौ में नब्बे कुमारियों और युवकोंको अनेक बीमारियोंने घेर रखा है। ऋषियोंकी संतानोंको राजरोग क्षयने इस बुरी तरह दबाया है कि भगवान ही रक्षक है। फैशन और शिक्षाकी बुराई करनेसे पहले हमें इस ओर देखना है। हमारा तो यह विश्वास है कि भारतवर्षकी स्वतन्त्रता और पूर्व गौरवकी पुनः प्राप्ति केवल समाजके इन कर्णधारों और भावी नागरिकोंकी भावनाओंको देखनेसे हो होगी। जिस कापुरुषता और कायरता तथा निर्बल[…] शिकायत करते हैं और धर्मके […] जिसे मिटाना चाहते हैं वह इस […] मिट सकती। यदि मिटनेवाली […] दिन-दिन अवनतिके दर्शन न हों। हम विवाह-सम्बन्ध के इस गंभीर […] को ध्यानसे देखें और इसका […] सोचें तो न हमारे देशकी […] शिक्षा हानि पहुंचा सकती है और […] फैशन ही जोर पकड़ सकती है। […] से प्रभावित युवक-युवतियोंको […] स्वतन्त्रता मिल जाय तो बहुत-सी […] कम हो जायं।

हम सबका कर्तव्य है कि हम इस […] पर सोचें और इसे समाजके कर्णधारों […] कानों तक पहुंचाएं।

—

"तो आप यह कहना चाहते हैं कि स्त्रियां मर्दोंकी दासी हैं—क्यों?"

"कहना क्या चाहता हूं, हैं हीं!"

उत्तर कुछ इस बेढंगे तरीकेसे दिया गया था कि कामिनी तिलमिला उठी। सुधीर भी अपनी भूलोंका अनुभव कर सिहर उठा। किन्तु तुरत ही कमजोरी खुल न जाये, इस ख्यालसे अपने मुंहको ऊपर उठा, उसमें बंधे धुएंके गुबारको आकाशकी ओर छोड़, एक एकको गूंथने लगा। धुएंका वह गुबार कुछ देरमें हवाके कलेजेमें समा गया। कुछ देर तक कामिनीको न बोलते देखकर सुधीरने कहा—"तो मैं जा रहा हूं!"

कामिनी सुधीरकी आंखों पर आंखकी शोखी डालते हुए बोली—"क्यों, बहुत जल्द चले? बैठिये न कुछ देर और!" और फिर वह मानों किसी चिन्तामें लीन हो गयी।

कामिनीकी लापरवाही और बे-वक्त की चिन्ताने सुधीरके हृदय पर एक गहरी चोट की। किन्तु चोटकी व्यथाको वह एक निःश्वाससे बाहर फेंकते हुए बोला—"क्षमा कीजियेगा, ठहर नहीं सकता मैं—देर हो रही है।" और वह कामिनीके बोलनेकी प्रतीक्षा किये बगैर ही चल पड़ा। वह अपने प्रति इतना लज्जित हो उठा था कि सिर उठाना भी उससे असह्य हो रहा था और शायद कामिनीके हृदयमें भी यही बातें प्रतिक्रिया उत्पन्न कर रही थीं। उसने बहुत देरके बाद जाते हुए सुधीरकी पीठ पर एक नजर डाली और अपने अन्तरकी व्यथामें खो गयी।

घड़ीकी घंटेवाली सूई सोलह बार बारह को पार करके सत्रहवीं बार पारकर रही थी। किंतु इस बीचमें सुधीरने एक बार भी कामिनीको अपनी सूरत नहीं दिखायी। कामिनी व्यथातुर थी। उसकी आठ दिनकी प्रतिदिन रास्तेकी ओर पड़ने वाली खिड़की खुली रही। वह अपनी छातीके भारसे हाथ की लम्बी काठकी चौखटको दाब कर राहकी ओर निहारा करती थी और अनुभव किया करती थी उस लहरको, जो उसके हृदयके किसी कोनेमें उठ कर अनायास बुझ जाया करती थी।

माता-पिताके प्यारसे वंचिता, कामिनी अपने बड़े भाई नागरके प्यारको पाकर ही जीवनका भार ढो रही थी। उसके जीवनमें जरा-सा दुःख भी आता तो माता-पिताकी दर्दपूर्ण याद शामिल होकर उसे बड़ा बना देती। आज भी उसकी कसक सीमा पार कर रही है। शायद इसका कारण सुधीरकी अनुपस्थिति और माता-पिताकी दर्दपूर्ण याद ही है।

* * *

कमरेके दरवाजे पर कदम रखते ही लज्जा ने सुधीरको अपनी गोदमें भर लिया। कुछ देर तक वह दरवाजेके समीप खड़ा सोचता रहा। सोचते-सोचते उसके पैर दरवाजेको पार कर गये और फिर अपनी झिझकको दूर करनेके लिये कामिनीको लक्ष्य करके, किन्तु खिड़कीसे बाहर देखते हुए बोल उठा—"आज वर्षा जरूर होगी!"

कहानी

स्त्रियां मर्दों की....!

—*:o:*—

लेखक—श्री रामचन्द्र "आंसू"

सुधीरको देखते ही कामिनीका हृदय प्रसन्नतासे भर गया। किन्तु वह प्रसन्नता को मन हीमें दबा कर बोली—"जी!" और पुनः दूसरे कमरेमें चली गयी। कामिनीका अनायास दूसरे कमरेमें चला जाना, सुधीर को खटका। वह तिलमिला उठा। एक साथ ही उसके मनमें कई बातें बिजलीकी तरह दौड़ गयीं—"वह क्यों गयी? हमसे रुष्ट है? क्यों? ऐसा क्यों हुआ?" सुधीरको छींक आ रही थी, मगर उसके हृदयके द्वन्द्वोंने उसकी छींकका गला घोंट दिया। वह कुछ और कहना चाह रहा था, किन्तु उसके मुंहसे निकल पड़ा—"मैं जा रहा हूं!"

कमरेसे लौटते हुए कामिनीने कहा—"क्यों, बैठिये न!"

"बैठनेका समय नहीं है!" सुधीर बोला। "अच्छा, तो जाइये!" लाचार कामिनी बोली।

सुधीर दर्दसे भर गया—"आह, कामिनी इतनी कठोर है कि एक बार और बैठनेको भी नहीं कहती! खैर।" उसने वेदनाको सहलाते हुए कहा—"सलाई है आपके पास?"

"शायद!" कामिनीने कहा। "यदि न हो, तो कोई हर्ज नहीं, मैं बाहर सिगरेट धरा लूंगा।" सुधीर बोला। "देखती हूँ!" और छिपी नजरोंसे एक बार सुधीरको देख कर कामिनी कमरेमें चली गयी। सुधीरकी चोर आंखोंसे कामिनीकी वह छिपी नजरें; उसमें उमड़ते-घुमड़ते स्नेहके बादल प्रेमका आभास छिपा न रह सका। उसका दिल मीठी पीड़ासे भर गया। अधरोंने कांप कर उस अन्तर-पीड़ाका स्वागत किया।

(२)

कामिनीके हृदयमें रह-रह कर ये बातें चक्कर काटा करती थीं कि "क्या हम औरतें मर्दोंकी दासी हैं?" और इसका समर्थन उसका विवेक करता। लेकिन वह इस सत्य को माननेके लिये कतई तैयार नहीं थी। उसके हृदयका अहम सारी शक्ति लगा कर पुकार उठता—"स्त्रियां मर्दोंकी दासी नहीं, बल्कि पुरुष स्त्रियोंका गुलाम है!" और कामिनी अंतर-प्रसन्नतासे भीग जाती। उसको ऐसा मालूम होता, जैसे सुधीर उसका क्रीतदास है—गुलाम! किन्तु ऐसी धारणासे कामिनी को तसल्ली मिली? बिल्कुल नहीं। उसको अपना अहम एक थोथा और घृणित सत्य-सा ज्ञात होता।

वह व्याकुल थी, कुछ हृदयकी कसकसे और कुछ जवानीके उभारसे। वह समझ नहीं पाती कि वह क्या करेगी। एक बार वह देखती अपने भाईके व्यस्त जीवनको और दूसरी बार उलझनमय अपनी जवानीको। उसको ऐसा लगता, जैसे उसके बहुत ही समीप कोई और वस्तु है, जिसे वह भूल रही है। नहीं, नहीं, मुस्कानेका प्रयत्न कर रही है।

सुधीरसे नागरकी हमेशा यह शिकायत रही है कि सुधीरने किसी दिन भी उससे जी भरकर बात-चीत नहीं की। आज भी कमरे में सुधीर पर नजर पड़ते ही उसने कहना शुरू किया—"यद्यपि तुम्हारी बातें बड़ी दिलचस्प होती हैं मिस्टर सुधीर! तथापि तुम्हारी एक बहुत बुरी आदत है कि तुम नारदकी तरह पांच मिनट एक जगह ठहरते ही नहीं।"

इसके उत्तरमें सुधीर केवल इतना कह कर मुसक पड़ा कि "शायद कन्वेसरोंकी किस्मतमें यही लिखा है।"

"यानी बिना आराम किये बायरोंके फेरमें दिन-रात चक्कर काटा करो!" नागरने कहा।

"और किस्मतसे किसी दिन छुट्टी मिल भी गयी, तो यह सोच कर सिर दर्द ले लेना पड़ता है कि फलां बायर किस विचारका है। उसे किस प्रकार खुश किया जा सकता है; उसको सबसे ज्यादा क्या पसन्द है। वह अपनी पत्नीको अधिक प्यार करता है या खुद को। वह कांग्रेसका हामी है या कम्यूनिस्ट दलका प्रशंसक। सबके अन्तमें यह कि वह चाहता क्या है।"

इन बातोंके कह जाने पर सुधीरको ऐसा लगा, जैसे वह एक ऐसा भेद व्यक्त न कर सका, जिसने उसके दिलमें इन्कलाब पैदा कर रखा है; जो जीवनकी सबसे बड़ी अनुभूति बनती जा रही है; जिसे वह भूलने पर भी नहीं भूल पाता है; जिसकी उपेक्षा अपने जीवनकी उपेक्षाके रूपमें वह देखता है। इन बातोंको सोचते ही उसकी दृष्टि दूर पर बैठी कामिनीके सौंदर्यसे टकरा गयी उसने सिर झुका लिया।

"तब तो भई, मैं यही कहूँगा, तुम्हारे अन्दर देवता है?" मुस्कुरा कर नागरने कहा।

"देव-दैत्य दोनों? सच बात तो यह है कि कन्वेसरको सर्वज्ञ होना चाहिए। हम देवलोककी बात भी करें और दैत्यलोककी भी। वह सुभाष बोसकी ओरसे बन्टो दलील पेश कर सके; और वक्त पड़ने पर महात्मा गांधी की ओरसे भी। वह 'साम्यवाद' की महानता भी बता सके और साम्राज्यवादकी अधिकार चेष्टाको भी सफल साबित कर सके। मतलब यह कि वह बायर को किसी भी तरह अपने मतका करके अपना सके।" अपने अनुभावों पर जोर देकर सुधीर एक दार्शनिककी भांति एक ही सांसमें सब कह गया।

अपनी हंसीको मुस्कुराहटका रूप देते हुए नागर बोला—"तब तो जनाब ईश्वरसे किसी बातमें कम हैं ही नहीं! हां, एक कमी जरूर है, सृष्टि-रचना नहीं कर सकते। फिर भी फिलासफीका दामन पकड़ कर यह भी साबित कर सकते हैं!"

सुधीर मुस्करा पड़ा। किन्तु तुरत ही उसकी मुस्कुराहट होठोंमें लोप हो गयी उसे इस बातचीतमें कामिनीका भाग न लेना खटक रहा था। लेकिन वह किसे कहता? हृदयमें ही पी गया। अन्तमें नागरकी बात खत्म होते ही सुधीरने कहा—"अच्छा, मुझे इजाजत दो!"

"बस!" नागरने ताज्जुबसे कहा। "बस ही है, आता रहूंगा।" और कामिनीके ऊपर एक छिपी दृष्टि डाल उत्तरकी प्रतीक्षा किये बगैर ही चला गया। नागर अंगड़ाई लेकर ईजी चेयर पर लुढ़क रहा।

(३)

सुधीरने आज पहली बार अनुभव किया, जैसे कामिनीके कमरेमें उससे जाया न जायगा। उसे ऐसा जान पड़ रहा था, जैसे उसके पैरोंमें रस्सी बांध कर उसे कोई पीछेकी ओर खींच रहा है। बड़े-बड़े घरोंमें बेधड़क घुस जाने वाला सुधीर, परिचित कमरेमें जाते सहम रहा है। उसने एक लम्बी सांस ली और कुछ देर तक कुछ सोचता रहा। और पुनः आवेगसे आगे बढ़ा। किन्तु कामिनीके कमरेके बीचोबीच जाते-जाते उसके पैरोंकी गति धीमी हो गयी थी। मानों अपराधी-सा कमरेके बीचमें जाकर वह खड़ा हो गया। सुधीरको देखते ही स्वागतके शब्द कामिनीके मुंहसे निकल पड़े—"आइये सुधीर बाबू!"

कामिनीके इन शब्दोंने सुधीरको भावुकताकी दुनियामें ला पटका। वह कुछ सोचने लगा। फिर कामिनीकी आवाज आयी—"बैठियेगा नहीं?"

सुधीर समीप स्थित ईजी चेयर पर बैठ गया। लेकिन भावुकता उसी तरह उसके मनमें प्रतिक्रिया कर रही थी। किन्तु व्यवहार कुशल सुधीर अधिक समय तक भावुकताकी धारामें न बह कर अपनी पांचों उंगलियोंको दूसरे हाथकी पांचो उंगलियों से बांधते हुए कहा—"मुझे क्षमा करेंगी कामिनी देवी?"

कामिनी चौंक उठी—"क्षमा?"

"हां! मैं भूल कर बैठा हूं!" सुधीरने सीधे-सादे ढङ्गसे कहा।

"तो पश्चाताप कीजिये!" कामिनीने चोट दी।

"पश्चाताप तो कर ही रहा हूं और शायद जीवन भर करता रहूंगा। मगर उस पश्चातापका अस्तित्व तभी है, जब आप मेरी बात मान लें।" सुधीरने कहा।

"कहना क्या चाहते हैं आप?" आश्चर्य के साथ, मगर स्वामीत्वको दर्शाते हुए कामिनी बोली।

"मैंने अपने 'ओल्ड बायर' को वाध्य किया है कि आज मेरी पत्नी आयी हैं, और आपको मेरे यहां होने वाली पार्टीमें शरीक होना होगा। मगर तुम तो जानती ही हो, मेरी पत्नी...। क्या तुम उनकी जगह...!" और कहते-कहते सुधीर शर्मसे गड़ गया।

तिर्छी नजरोंसे घूरते हुए मुस्करा कर कामिनी बोली—"सुधीर बाबू!"

छबीरको ऐसा मालूम हुआ, जैसे उन [illegible] च अक्षरोंने घूम कर उसके हृदयमें प्रश्न-चिन्हका रूप बना दिया हो। वह अपने [illegible]नाकुल नेत्रोंसे एक टक कामिनीको देखता [illegible]हा। कामिनी जोरसे आंचलके छोरको [illegible]गलियोंमें लपेट, मानों कमजोरियों पर [illegible]वेजय पाकर सस्मित बोली—"आज ही [illegible]नियाको दिखा देना चाहती हूं कि स्त्रियां [illegible]दोंकी गुलाम हैं ?

छबीर जैसे कट गया। न उठी उसकी [illegible]जर। हायरी शर्म! अन्ततः उसने शर्म पर [illegible]वेजय पाकर कहा—"शर्मिन्दा न करें कामिनी देवी! मेरे मनमें वैसी कोई बात नहीं है; जैसा कि आप सोच रही हैं। मेरा तो मतलब केवल यह था कि किसी तरह अपने नाराज बायरको खुश करूं और अपना बिजनेस चालू रखूं। और उनके खुश रखने का सरल उपाय मैंने यही समझा, जो आपसे कह चुका हूं। मुझे दुःख है कि ऐसा करके मैंने गलती की है!"

"तजवीज तो अच्छी है आपकी। एक तीरमें दो शिकार हो जायेंगे!"—कह कर कामिनी मुस्कुरा पड़ी।

"तो आपने मेरी बातको अस्वीकार किया?"—जैसे कामिनीकी बातोंको उसने न सुना हो, और वह बोला।

इस बार कुछ देरके लिये कामिनी रुकी और कुछ सोचने लगी। अन्तमें धीरेसे उसने कहा—"अच्छा, यदि मैं मान लूं, तो आप प्रसन्न होंगे?"

"अवश्य!" छबीर खिल उठा।

"लेकिन फिर वह दावा तो पेश न कर देंगे कि स्त्रियां मर्दोंकी दासी हैं?" कहते-कहते कामिनी मुस्कुरा उठी।

छबीरके गाल लाल हो उठे थे। वह सिर नीचा किये कुछ सोच रहा था। उसे सूझ ही नहीं रहा था कि वह क्या उत्तर दे। कामिनीने छबीरकी मनोदशाका अध्ययन करते हुए कहा—"बुरा न मानियेगा छबीर बाबू! मैंने जो कुछ कहा है, सत्य कहा है। और सत्य कटु होता है—कुरूप! सो तो शायद आप जानते ही होंगे।" और छबीर के बोलनेकी प्रतीक्षा किये बगैर कामिनी बोलती गयी—"खैर, आपने गलती कर ही दी है, तो मैं क्यों उसको तूल दूं। आप अपने दोस्तको शौकसे ले आयें, मगर भैया यहां न रहें तब।...और हां, आप यह न समझें कि मैं आपकी उपेक्षा कर रही हूं। आप पुरुष हैं, और आपका स्त्रियों पर चिर अधिकार है। किन्तु इस अधिकारको चिरायु करनेके लिये मर्दोंमें चाहिये सद्व्यवहार, प्यार और सहानुभूतिकी मात्रा। साथ ही औरतोंकी आवश्यकताओंको समझनेकी क्षमता।" और वह चुप हो रही। छबीरकी समझमें नहीं आ रहा था कि आज कामिनी एकाएक भावुक कैसे बन बैठी। वह सोचता रहा। शायद वह और सोचता। परंतु उसकी विचार-धारामें बाधा पड़ी। कामिनी कह रही थी: "आप बैठिये, मैं चाय बना कर लाती हूं।" और वह दूसरे कमरेमें चली गयी। छबीर अपनी विचार-धारामें पुनः डूबने-उतराने लगा। [illegible] उसकी विचार-धारा रुकी और उसकी नजर कमरेकी प्रत्येक वस्तुको स्पर्श करते हुए एक जगह रुक गयी। उस जगह कलम-दावात रखे थे, पासहीमें एक पैड भी। वहां जा कर कलमकी सहायतासे उसने कोरे कागज पर लिखना शुरू किया।

कामिनी!

किसीके जीवनमें, उसका सत्य कई बार प्रतिक्रिया करता है, किन्तु वह उसे एक ही बार पहचान पाता है। मेरे जीवनमें भी मेरा सत्य कई बार अतिक्रम कर चुका था, किन्तु उसे मैंने आज ही देख पाया है। दुःख है कि उस सत्यके जानतेही मेरी लज्जा मुझे यहां ठहरनेकी इजाजत नहीं दे रही है। मैं जा रहा हूं। हो सका तो कभी मिलूंगा मैं। समझता हूं, तुम मेरे संकेतोंको भली भांति नहीं समझ पाओगी। इसीलिये उसे भी स्पष्ट कर देना मैं उचित समझता हूं। मेरा सत्य है अभाव! भौतिक अभाव! जिसे हम 'पुरुष' 'दासी' समझ कर ठुकरा देते हैं। बुरा न मानना कामिनी!

विदा—
छबीर

पत्र लिखकर उसी तरह अपने ईजी चेयर पर रख कर छबीर जल्दीसे कमरेके बाहर निकल गया। वह अभी सदर दरवाजे पर पहुंच भी न पाया था कि कामिनी चायका कप लिये कमरेमें आ गयी। और छबीरकी जगह कागजका टुकड़ा देख कर वह चौंकी। और चायके कपको एक किनारे रख, पत्र उठा कर पढने लगी। पत्रकी अन्तिम पंक्ति पढ़ते-पढ़ते कामिनीको ऐसा मालूम हुआ जैसे उसका हृदय बैठा जा रहा है। वह अपनेको सम्हालनेका प्रयत्न करने लगी मगर सम्हाल न सकी। बैठ कर सोचने लगी उस पत्रका सत्य क्या उसके मनका सत्य नहीं है? क्या वह अपने अन्दर अभाव महसूस नहीं कर रही है? लेकिन क्यों? वह सोचती ही क्यों है? मगर नहीं, उसे सोचना पड़ता है। उसके हृदयकी एक कामना है। वह कामनाकी दासी है। और कामना है दासी, उस अभाव पूर्ति करने वाले की। यानी वह गुलाम है। पुरुष उसका स्वामी है। और ठीक यही विचार छबीरके भी हैं! कामिनी मर्माहत होकर हृदयकी कसकको टटोलने लगी।

जय रामायण भगवान्

(लेखक—श्री सुबोध मिश्र)

मजदूरोंका एक मुहल्ला है। मुहल्ले …बीच एक छोटीसी खपरैल है। यह …की अपनी दूकान है। यहां नोन … और तम्बाकू मिलती है। भिगोये … घुघनी, और पकौड़ी भी मिलती है, …लेके लिये उपयुक्त होती हैं।

…न मामूली नहीं है। कपड़ा धोनेका … भी मिलता है और करेरस सिगरेट भी। … जमानेमें भी पैसेमें दो खिल्ली पान! … खाने-पीनेकी चीजें ही नहीं, भूत, दूत … नजरकी दवा भी मिलती है।

…नका मालिक दुबला पतला और … कदका मनुष्य है, मानों किसी … कुर्ता पहना दिया गया हो। उसका … नाम लोग नहीं जानते। सब कोई … कह कर पुकारते हैं। मोदी सब … कर रहता है सो मुहल्लेकी गुदड़ी … समझा जाता है।

… बढ़िया आकर्षण तो यह है कि … पास ढोलक है। रातमें लपनी ढ़ाल … बाद जब हरियाली सूझने लगती है … लोग नित्य नियमित रूपसे आ … और दो-दो बजे रात तक, बिरहा … बारहमासा आदिकी धूम मच जाती … के तेल और पान-बीड़ीका इन्त- … मोदी अपनी ओरसे कर लिया करता … किसी-किसी रात, सब श्रोता रूपसे बैठ … और मोदी रामायण पढ़ता है। अर्थ … है। रमायण सबकी चीज है। अर्थ … में दिक्कत नहीं होती। कहीं-कहीं … भावार्थ नहीं निकलता है तो उस … गोसाईंजीका महावाक्य कह कर … दिया जाता है।

… अकेले नहीं है, मोदिआइन भी है। … चुके हैं और बाल सन! मगर मांगमें … चौड़ा सिन्दूर नाककी नोक तक। … जितनी लम्बी चौड़ी रेखा सुहा- … ती है उतने ही लम्बे चौड़े दिन तक … जीवित रहते हैं, यह वह मज- … को समझाया करती है।

…, बुद्धि और स्वभावको लेकर मोदी … दिआइन दोनों ही मुहल्लेके हीरो, … हो गये हैं।

… धर्म-कर्म और प्रभु केवल रामायण … समझते हैं। रामायणका मासपारायण … नित्य-नियमित रूपसे नहीं करते, पूजा … करते हैं। मोदिआइनका कंठस्वर … तीव है। यदा-कदा जब वह रामा- … बैठ जाती … तो सारा-का-सारा … गूंज उठता है।

… अपने हर कामके पीछे रामायण … देते हैं। हरेक चर्चामें रामायणका … रखते हैं और प्रत्येक दुख-सुखको … की इच्छा और रामायणकी कृपा … विश्वास करते हैं। वे सब कुछ … ही प्राप्त कर लेते हैं। और जो … प्राप्त करनेकी लालसा लगी हुई है … आज न, कल रामायण-भगवान … ही देंगे।

… दोनोंके बीच एक संतान चाहते … तथा विलासिताके रंगमंच पर … रूपसे नहीं, गरीबीका खिलौना … लिये, घरको स्वर्ग बनानेके लिये।

उठते-बैठते, वो अपनी हर सांसके पीछे दोनों जय रामायण-भगवानकी रट लगाया करते।

किन्तु जब ध्यान वयसकी ओर जाता तो मुंहसे आह निकल जाती। रामायण-भगवान उनकी मनोकामना पूरी जरूर करेंगे मगर इसके माने तो यह नहीं कि ये फिरसे जवान हो जायंगे!—फिर लड़का आयेगा कहांसे। बरस तो सकत. ८६।

पता चला कि पतिके कफनके पैसे नहीं जुटा सकनेके कारण सुमंगली अपनी गोदके बच्चेको तीन रुपयेमें पादरीके हाथ बेचने जा रही है।

मोदीने दौड़ कर सुमंगलीको पंचट किया नोट थम्हाया। सुमंगली पतिके शवके साथ श्मशान गयी और फिर किसीको पता न चला कि वह कहां चली गयी या उसी चिता में जल मरी।

एक दफे जूट-मिलके मजदूरोंको मालिककी किसी खुशियालीके अवसर पर, मुफ्त बायसकोप दिखाया गया था। मुहल्लेके मजदूर पकड़ कर मोदीको भी ले गये थे। खेलका नाम था, 'निर्मला!'

"हम और तुम और मुन्ना प्यारा, घरवा होगा स्वर्ग हमारा!" गीत मोदीके हृदयमें घर कर गया। वह देखते ही देखते फफक फफक कर रोने लगा। आंसूकी धारा ऐसी चल पड़ी कि खेल कुछ सूझे ही नहीं।

तभीसे उसने यह पक्का निश्चय कर लिया था कि तुलसी बाबाकी कृपासे और रामायण भगवानकी इच्छासे यदि उसका घर स्वर्ग बनेगा तो वह भी अपने लड़केका नाम मुन्ना ही रखेगा।

और मोदीने किया भी वही। मुन्ना लाड़-प्यारकी मधुर गोदमें पलने लगा। रामायणके पाठ, पूजामें कोई शिथिलता न आयी। अपितु श्री वृद्धि हो गयी। अब तो नित्य नियमित रूपसे रामायण भगवान पर छुहारा, बताशा, नारियल आदि चढ़ने लगे।

मोदीने निश्चय किया—चाहे जो हो, वह मुन्नाको सातवें क्लास तक जरूर पढ़ायेगा। मोदी उस जमानेका व्यक्ति था जब सातवां क्लास पास करके लोग वकील और हकीम बन जाते थे। उसे बदलती दुनियाकी बदली तसवीरका कोई ख्याल न था।

मुन्ना पांचवा क्लास पास कर गया। उमर उसकी तब दस बरसकी थी। मोदिआइन मोदीको समझाती—"देखो, हाकिम बनानेके फेरमें तुम कहीं मुन्नाको ज्यादा पढ़ाने न लगो; ज्यादा पढ़ने वाला पागल हो जाता है!"

और मोदी कहता—"अरे नहीं, सिर्फ दो बरस, और!"

पंडितजी हर सोमवारको आकर आसन जमाते। मोदिआइन पंखा झलने लगती और मुन्ना पंडितजीका पांव दबानेके लिये विवश किया जाता। पंडितजी लड़कियोंका हवाला ले-ले कर आते और मोदीको जल्दी-से-जल्दी घर बसा लेनेके लिये उभाड़नेका यत्न करते। किन्तु मोदी कहता कि नहीं; हाकिम बननेके बाद मुन्ना जैसा उचित समझेगा वैसा आप कर लेगा।

"मोदीका मुन्ना हाकिम होगा?" यह संवाद मुहल्लेमें कई प्रकारके अर्थोंका द्योतक हुआ।

मोदी हम लोगोंको मानता-दानता है लेकिन जब उसका लड़का हाकिम हो जायेगा तब मोदी नोन तेल आटाकी दूकान पर थोड़े ही बैठेगा? वह तो हाकिमका बाप हो जायेगा! और हम लोगोंके सिर पर रोज नयी आफत सवार रहेगी। हाकिमका विश्वास थोड़े करना चाहिये! सुन्दरका रसोई घर अब्दुलका पाखाना, कानूनके जोर पर, इसी लिये न बन गया कि अब्दुल हकिमका चपरासी था?

मुहल्ले वाले, मनही मन, मोदीसे जलने लगे। कुछ लोगोंने, इधर उधरका बहाना लगाकर, उसके यहांकी बैठक-उठक भी छोड़ दी!

डाह करना मनुष्यका स्वभाव हो गया है। किन्तु उसके चाहे कुछ होता है नहीं। मनुष्य अपनेको सब कुछ समझता है किन्तु सच तो यह है कि वह कर्त्ता—कर्ममेंसे कुछ भी नहीं है। कर्त्ता भी कोई और ही है और कर्म भी कोई और ही?

सातवें क्लासकी परीक्षाका एक पत्र भर कर मुन्ना घर आया और बीमार हो गया। बुखार बहुत जोर था और वृष्टि झमाझम होने लगी। घर चूता था। खिड़कीमें पल्ले नहीं थे। दरवाजे पर टाट टंगा था जो भींग गया था। वृष्टि हु-हु कर रही थी और पानीका झोंका मुन्नू पर आ रहा था। भोर होते-होते जोरोंकी आंधी आयी जो मेघको उड़ा ले गयी। मेघके साथ ही मुन्ना भी न जाने कहां उड़ कर चला गया! पड़ी रही उसकी निर्जीव काया!

जन्मजातकी अपेक्षा पालितके प्रति अधिक ममता होती है। दोनों पहाड़की चोटी परसे पातालमें आ गिरे। विधाताकी मतिके सामने वे हाय करके रह गये। रंककी एक न चली। राजाकी भी ऐसी स्थितिमें कुछ नहीं चलती!

लेकिन रामायणकी अर्चना उन्होंने अब भी नहीं छोड़ी। उनके सामने हरिश्चन्द्र और शैव्याका चित्र खिंचा था। वे समझते थे कि रामायण भगवान् उनकी परीक्षा ले रहे हैं। तो क्या, मुन्ना, जो जल कर खाक हो चुका, नदीकी कल-कल धारामें समा गया, रामायण भगवानकी कृपासे पुनः जीवित हो उठेगा?

यद्यपि वे पूरा बल लगाये रहते, फिर भी हिम्मतका बांध टूट आया करता।

वैशालीकी स्मृतिमें—

— एक —

वैशाली—
यह नगर अति श्रेष्ठ!
विश्वमें उपमा न जिसकी,
दीप्ति जब थी शुभ्र इसकी,
उस समय यह नगर था अति श्रेष्ठ!
थे अमित प्रासाद सुन्दर!
वह कला-कौशल मनोहर!
हो रहा आश्चर्य जगको आज भी अवशेषपर!
और, कितने ताल थे!
राज्यके आधीन वे थे!
स्वच्छ थे, आदर्श वे थे!
कह रहे कुछ पोखरे उनकी कहानी—
यह कि वे विशाल थे!
वाटिका सब ओर अनुपम!
—राज्य-उपवन वे अमित!
और गणिका आम्रपालीका सुखद आराम वह
थे तथागत भी टिके होकर अतिथि जिसके

*　*　*

कुछ भी नहीं वह आज!
हृदयमें स्मृतियां लिये उनकी अमित—
मौन है मिट्टी वहांको आज!
और—
पास ही बनिया-बसाढ़ ग्राम है!

— दो —

वह वज्जि-संघ!
विश्वका वह संघ-शासन प्रथम!
गणतंत्र वह आदर्श!
आज उसकी याद—
भर रही मनमें अमित उत्कर्ष!

*　*　*

आज जागा विश्वमें सुविचार—
हो सभीका एकसा अधिकार!
पर यहां—
ढ़ाई सहस्र वर्ष पूर्व—
था हमारा संघ!
उस समय अधिकांश जग—
वन्य-पशु-सा था बिताता दिवस!

*　*　*

संघमें—
थे सदस्य सहस्रों!
किन्तु—
एकसा अधिकार रखते थे सभी!
देख कर उनकी सभाको—
था तथागतने कहा 'आनन्द' से—
"वत्स, यह है देवताओंकी सभा"।
और, उस आदर्श पर—
संघ अपना गठित उनने था किया!

—शक्र

रामायण उनका सहारा था। वे दशरथ का विलाप वाले पृष्ठको पढ़नेसे लाचार हो गये थे। वहां उनकी हिम्मत बिखर जाती थी।

उनकी हिम्मत नहीं बैठी लेकिन दूकान एक दमसे बैठ गयी। अब खानेके लाले पड़ने लगे। एक वर्ष बीत गया।

८-६-४६ की संध्याको खूब जोरसे आंधी आयी। आठ बजे रातको मूसलाधार वृष्टि होने लगी। मुन्नाकी मृत्युकी रात भी इस तरह भयंकर बन कर आयी थी। और, यही मंगलका दिन भी तो था। शोक और भयसे दोनोंका टूटा हृदय और भी भहराने लगा। बाहर, दरवाजे पर, जो तीन दीवारकी कोठरी थी उसमें बकरी में-में करके रात्रिकी भयंकरतामें और भी गहराई उत्पन्न किये दे रही थी। मोदीकी हिम्मत फट गयी। उसने रामायणको उठा कर पटक दिया। मोदिआइन दौड़ कर पोथी उठा कर सीनेसे चिपकाती हुई बोली—"राम, राम, रामायणका निरादर!—हिन्दू होकर?"

"आदरकी भी एक हद होती है!"—मोदीने गहरी सांस ली।—"आज मुझे मेरा मुन्ना याद···"

"आज ही तो तुम्हें रामायण पढ़नी चाहिये!"

"पढ़नेसे मुन्ना जी उठेगा; क्यों?"

"जी तो नहीं उठेगा; मगर हिम्मत तो बंध जायेगी! और अगर रामायण-भगवान चाहें तो उनके लिये यह बात ही आखिर कितनी बड़ी है।"

वृष्टि और भी द्रुत हुई। मोदीने रामायण खोली—"जय, जय हे गिरिराज किशोरी...!"

कि, इतनेमें तीन दीवार वाले घरमें, जहां बकरी बंधी थी—नवजात शिशुके रोदन का स्वर हुआ! दोनों ही आश्चर्य चकित हो गये! वे स्वप्न तो नहीं देख रहे हैं। दो मैंसे एक बकरी द्विजोवा थी! मगर यह तो मनुष्यका रोदन है! तो क्या, रामायण भगवानकी कृपासे मुन्ना जीवित हो गया?

मोदी हाथमें चिराग लेकर आगे बढ़ा। पीछेसे कांधे पर हाथ रख कर मोदिआइन चली। कोठरीके सामने पहुंचते ही वे डरे। एक आकृति विशाल केशपुंज लिये बैठी थी। उसी समय हवाका झोंका आया और बत्ती बुझ गयी। इधर रुदन बढ़ता जा रहा था और उधर दियासलाई मिलती ही न थी।

बत्ती बड़ी देरके बाद जली। कई बार अपनी आंखें मींच-मींच कर उन्होंने निश्चय किया कि वे स्वप्न नहीं देख रहे हैं। जो कुछ भी देख रहे हैं वह वास्तविक दृश्य है। एक पगली, न जाने कहांसे आकर, खिलौने सा बच्चा प्रसूत किया है। अरे, यह तो लड़का है।

मोदिआइन आवश्यक शुश्रूषामें लग गयी। भोर होते ही पगली, गुदड़ आदिको भी छोड़ कर, न जाने कहां चली गयी।

तो क्या, सचमुच रामायण-भगवान्की कृपासे मुन्ना जीवित हो उठा?

कलचर (संस्कृति) की परिभाषा

(हिन्दुस्तानी कलचर सोसायटीकी पहली बैठकमें गवर्निंग बाडीके सदर डाक्टर भगवानदास का व्याख्यान)

ऊपरके सवालोंमें शायद कोई खास सिलसिला मालूम नहीं होता। उनके जवाब भी जैसे मुझे सूझे कुछ झिझकते हुए मैंने लिख दिये। ये सब जवाब नामुकम्मिल और अधूरे हैं और जैसा चाहिये साफ नहीं हैं। फिर भी हर जवाबमें कुछ न कुछ सचाई जरूर है। कलचरकी ऐसी क्या परिभाषा या तारीफ की जावे जो अधूरी न हो, जो मुकम्मिल हो, जिससे कलचर एक अलग साफ चीज दिखाई दे और जिसे अकल भी मान ले। अब हम पहले यह देखना चाहते हैं कि हिन्दुस्तानी जबानमें 'कलचर'के लिये ठीक शब्द क्या होना चाहिये? अङ्गरेजीमें 'सिविलीजेशन' और 'कलचर' इन दोनों शब्दोंका बिलकुल एक ही मतलब तो नहीं है, लेकिन फिर भी ये दोनों शब्द बहुत मिलते-जुलते हैं। मोटे तौरपर कहे जा सकता है कि कलचरसे आदमीकी अन्दरकी हालतका पता चलता है और 'सिविलीजेशन' उस अन्दरकी हालतकी बाहरी रूपरेखाको कहते हैं। 'कलचर्ड' और 'सिविलाइज्ड' इन दोनों शब्दोंको लोग आम तौरपर एक ही मानेमें इस्तेमाल करते हैं। हिन्दुस्तानीमें कलचरको कहेंगे—'शिष्टता', 'संस्कृति', 'तहजीब' या 'शाइस्तगी' और सिविलीजेशनको कहा जाता है—'सभ्यता', 'समुदाचार' 'तहजीब' या 'तौर तरीके'। इससे ज्यादा आसान शब्द जिन्हें सब समझते हैं—चाल, ढङ्ग, तरह—हैं, लेकिन इनसे पूरा मतलब नहीं निकल सकता। हम एक बात यह भी ध्यानमें रखें कि शायद सिविलीजेशन और सभ्यता दोनोंका निकास एक ही सा है, यानी 'सभा', 'सिविस' जमात, शहर। सिविलाइज्ड और सभ्य दोनोंके माने हैं—वह आदमी जो 'शहरी' कहलाने के या सभा सोसायटीमें बैठनेके काबिल हो। दूसरी तरफ 'कलचर' लैटिन शब्द 'कल्टस' से निकला है। कल्टसके माने है—'कृष'। जमीनपर खेती करना और आदमी के दिल और दिमागको कलचर करना दोनों एक हीसे काम है। दोनोंमें हल चलाना पड़ता है, जोतना पड़ता है, जमीन तैयार करनी होती है, मिट्टीको बारीक करना होता है और फिर अच्छे कीमती और काम के बीज उसमें बोने होते हैं। ये बीज माद्दी भौतिक, इखलाकी नैतिक और दिमागी, मानसिक, तीनों तरहके हो सकते हैं। बीज ऐसे होने चाहिये जिनसे जिस्म और रूह दोनोंको तन्दुरुस्ती देनेवाली जिस्मानी और रूहानी खूराक तैयार हो सके। संस्कृति, मांजना, इसका भी यही मतलब है। इन सब शब्दोंमें संस्कार करना, सुधारना फिरसे साफ करना, ज्यादा अच्छा बनाना, चमका कर सुन्दर रंग-रूप देना, ये सब बातें शामिल हैं। अङ्गरेजीकी डिक्शनरीमें कलचर और सिविलीजेशन दोनोंके अर्थोंमें 'रिफाइनमेंट' शब्द आता है जिसका मतलब है फिर-फिर साफ करना। इसलिये 'कलचर' का असली निचोड़ इसी बातमें होना चाहिये कि आदमीको उसके जीवनके सब पहलुओंमें मांजा और फिर साफ किया जाये। 'सिविलीजेशन' का मतलब वह सब ऊपरकी चीजें हैं जो इस तरहके मंजे हुए लोगोंकी कोई नेशन, कोई कौम या उनका कोई गिरोह अपने मिले-जुले जीवनके सब पहलुओंमें करता और दिखाता है। आदमी के अन्दर जो चीज दबी छिपी रहती है उसके बाहरके रूप फैलावका नाम ही 'सिविलीजेशन' है।

अब हमें यह देखना है कि आदमीके स्वभावके ये खास-खास पहलू कौनसे हैं और उनमेंसे किस-किसका मिली हुई कौमी जिन्दगीके किस-किस पहलूके साथ खास सम्बन्ध है? हमारे जीवनके तीन खास पहलू ये हैं—दिमाग यानी मस्तिष्क, कैरेक्टर या चरित्र, और जिस्म या शरीर। दिमागका सम्बन्ध ज्ञान, इल्मसे है, कैरेक्टर या चरित्र का इच्छा, ख्वाहिशसे, और जिस्मका क्रिया फेलसे। आदमीका दिमाग अच्छा मजबूत हो, कैरेक्टर अच्छा और मजबूत हो और जिस्म अच्छा और मजबूत हो तो इन्हीं तीनोंसे अच्छी और मजबूत कलचर बने। दिमागके अच्छेपनका मतलब यह है कि आदमीको बहुत सी और कामकी चीजें मालूम हो यानी उसके पास ज्ञानका अच्छा भण्डार हो, और वह बुराई और भलाईमें, नफे और नुकसानमें फरक कर सके और पहचान सके कि किस चीजमें उसका सच्चा नफा है और किसमें नुकसान। दिमागके मजबूत होनेका मतलब यह है कि आदमी सब तरहकी चीजोंको जल्दीसे समझ सके, उसकी याददाश्त अच्छी, पक्की हो और वह चीजोंका ठीक-ठीक फैसला कर सके। कैरेक्टर या चरित्रकी मजबूतीका मतलब यह है कि आदमी में इतनी हिम्मत हो कि वह जिन चीजोंको करना चाहे उन्हें करे और जिनसे बचना चाहे उनसे बच सके। कैरेक्टरके अच्छेपनका मतलब यह है कि आदमी अपनी तबियतको और अपने हाथ-पैरोंको नेक कामोंकी तरफ लगावे। इसका मतलब यह है कि खुदी यानी अपने निजी लाभकी इच्छा दबी रहे और सबके भलेकी इच्छा काम करे। जिस्म के अच्छे होनेका मतलब यह है कि हाथ-पैर और सब अङ्ग सुडौल हों और सूरत शक्ल प्यारी लगे। जिस्मकी मजबूतीका मतलब यह है कि बदनमें जान हो, बल-बूता हो, सख्ती हो, कड़ाई हो, बर्दाश्तकी ताकत हो, रग-पुट्ठे मजबूत हों, मनमें धीरज हो और आदमी सब काम तेजीसे और बिना लड़खड़ाये कर सके। जिस आदमीका जिस्म, जिसका कैरेक्टर और जिसका दिमाग तीनों इस तरहके हों वही पूरी तरह और ठीक-ठीक 'कलचर्ड' समझा जा सकता है। इसी तरह इतिहासमें जितनी बड़ी बड़ी सभ्यताएं, तहजीबें हुई हैं—जैसे बीती हुई सभ्यताओं में मिस्री, असुरी (असीरियन), बाबुली यूनानी, रोमन, मैक्सिकन और पेरूवियन जिन्दा सभ्यताओंमें चीनी, हिन्दुस्तानी यहूदी, ईरानी, अरब और आज कलकी यूरोपियन—इन सब सभ्यताओंके तीन खास पहलू हैं—(१) उनकी तालीमका एक खास ढङ्ग और ज्ञान, साइन्स और फिलासफी का अपना भण्डार; (२) हरेकका एक खास धर्म मजहब, सदाचार, इखलाक और रहन, सहनका एक खास तरीका, घरेलू जिन्दगी और समाजी जिन्दगीका एक खास ढङ्ग और इनके साथ ही साथ इनसे मिली-जुली चीजें—आर्ट, कला, चित्रकारी, संगतराशी गाना बजाना, शायरी, खास तरहकी मजहबी और दूसरी इमारतें बनाना, खेल तमाशे, छुट्टियें, त्योहार, जलसे, रीति रिवाज, मजहबी किताबें, मन्दिर, मसजिद, तीर्थ; (३) व्यापारी तिजारती, और राजकाजी कामोंके कुछ खास तरीके, खेती, उद्योग-धन्धे, व्यापार, सट्टा, बढ़-बढ़ कर दूसरे मुल्कोंमें अपनी बस्तियां बसाना, जङ्ग करना, एक राजाका राज, अमीरोंका राज, आम लोगोंका राज वगैरह।

अब कलचर और सिविलिजेशन यानी संस्कृति और सभ्यता दो चीजें हुईं और हर एकके तीन तीन पहलू। जितने सवाल जवाब हमने ऊपर लिखे हैं और जितने सवाल जवाब इस तरहके और लिखे जा सकते हैं वे सब इन्हीं दो में या इन्हीं छै में आ जाते हैं। इनसे हमें पता चल जाता है कि असली कलचर या असली सभ्यता क्या चीज है। असली कलचर आदमीके अन्दरकी नेकी, और बड़ाई है। और असली सिविलीजेशन या सभ्यता अन्दरकी नेकीका बाहरी फैलाव है।

जितनी बढ़िया कोई कलचर होगी उतने ही अच्छे ज्ञान, अच्छी ख्वाहिशों और अच्छे कामोंसे भरी हुई वह सभ्यता होगी जो उस कलचरका जिस्म और उसका रंग रूप है। इसी तरह बाहरकी सभ्यताका असर अन्दर की कलचर पर पड़ता रहेगा और दोनोंका मिलकर एक अच्छा सुन्दर, दायरा या चक्र बन जायगा, जो आदमीको नेकीकी तरफ ले जायगा।

मुझे डर है कि मेरी इन बातोंमें शब्दोंका आडम्बर दिखायी देगा, लेकिन अगर इनमें कुछ भी सचाई है तो मुझे मालूम होता है कि हमारी छोटीसी सोसायटी एक बहुत बड़ा लेकिन बहुत ही कीमती काम हाथमें ले रही है। यह सोसायटी एक हिन्दुस्तानी कलचर और हिन्दुस्तानी सिविलीजेशनका बीज बो रही है, उसकी नन्ही सी पौधे को रोप रही है। हमारी यह हिन्दुस्तानी कलचर और हिन्दुस्तानी सभ्यता सबसे पहले हिन्दुस्तान की पुरानी कलचर और अरब, ईरानकी कलचर, या दूसरे शब्दोंमें हिन्दू कलचर और मुसलिम कलचर, इन दोनोंके अच्छे-से-अच्छे और जरूरी पहलुओंको मिलानेकी कोशिश करेगी।

इस बीजमें अंकुर फूटें और यह पौध फूले फलें इसके लिये हमें अपने कामके तीन हिस्से करने होंगे।

१—सबसे पहले आम लोगोंको एकसा ज्ञानका भण्डार देनेके लिये—

(अ) कुछ नौजवानोंको इस तरह तैयार करना चाहिये कि वे एक हिन्दू और एक मुसलमान, दो-दो मिल मिलकर साथ साथ काम करें। दोनों में से हर एक संस्कृत भी जानता हो और फारसी भी, और अगर हो सके तो थोड़ी सी अरबी भी। इन लोगोंको खास तौर पर वेदान्त और तसव्वुफकी अच्छीसे अच्छी किताबें पढ़ लेनी चाहिये, और दोनों धर्मोंकी किताबोंके खास खास और कामके हिस्से जान लेने चाहिये। ये साथ-साथ मुल्कका दौरा करें, एक ही प्लेटफार्मसे और एक ही जलसेमें सब जगह साथ साथ लेक्चर दें।

(ब) हिन्दी और उर्दूके लिखने वालों को इस बातके लिये राजी करना चाहिये कि उनमेंसे हरएक संस्कृत और फारसी शब्दोंके करीब करीब पांच सौ जोड़े जैसे राजनीति, सियासत, सभ्यता तहजीब, इखलाकी नैतिक अच्छी तरह याद कर ले, और अपने लेखों और मजमूनोंमें हर जोड़ेके दोनों शब्दोंको साथ साथ काममें लावें। इस तरह उनके पढ़ने वाले भी बहुत जल्दी इन सब जोड़ों को जान जावेंगे। यह भी कोशिश करनी चाहिये कि उर्दूके लिखने वाले इजाफत का और हिन्दीके लिखने वाले समासोंका बहुत ही कम इस्तेमाल करें।

(स) देश भरमें अखबारोंके जो एडीटर इस नेक कामसे हमदर्दी रखते हों उनसे मदद ली जावे और हिन्दी और उर्दूके रोजाना, साप्ताहिक और माहवारी रिसालों पत्रिकाओंमें इस तरहके अच्छे-अच्छे लेख छपवाये जावें जैसे "विश्ववाणी" में बहुतसे निकलते रहते हैं, जो लोगोंको अच्छे भी लगें और जिनसे उन्हें इन चीजोंकी जानकारी भी हो।

(द) इस तरहकी चुनी हुई छोटी-छोटी किताबें निकाली जावें जिनमें हर किताबके अन्दर उर्दू लिखावट और नागरी लिखावट दोनोंमें ठीक वही जबान और वही शब्द हो। नागरी और उर्दू दोनों एक दूसरेके आमने-सामनेके पन्नोंपर हों। अङ्गरेजी और दूसरी यूरोपकी जबानोंमें बहुत सी इस तरहकी किताबें निकल चुकी हैं जिन्हें लोग आम तौरपर पसन्द करते हैं। उनमेंसे अच्छीसे अच्छी किताबोंके उङ्गपर हमारी किताबें भी निकल सकती हैं। इन किताबोंमें जितनी तरहकी जानकारी दी जा सके देनी चाहिये, खास तौरपर हिन्दुओं और मुसलमानोंका इतिहास देना चाहिये और थोड़ा सा इन्सानी कौम, मानव जाति का इतिहास भी देना चाहिये। इन किताबों में हिन्दुओं और मुसलमानोंके दोनों तरहके धार्मिक रीति-रिवाज और एतकाद विश्वास भी हों, एक वे जो जहरी समझे जाते हैं और दूसरे वे जो इतने जरूरी नहीं समझे जाते। इन किताबोंमें ऐसी किताबें भी होनी चाहिये जिनमें मोटे तौरपर लोगोंको यह बताया जावे कि रोजी कमानेके खास खास तरीके कौन से हैं और हर आदमी अपने लिये जीविका रोजगारका ठीक फैसला कैसे करें जिसमें उसे कामयाबी मिले।

इस तरह हम अपने देशके लोगोंमें अच्छे और मजबूत दिमाग तैयार कर सकेंगे जिनमें अच्छे और उपयोगी ज्ञानका भण्डार भरा हो। ये हमारी हिन्दुस्तानी कलचरके काम का एक तिहाई हिस्सा हुआ।

२—हमारे कामका दूसरा हिस्सा यह है—धर्म मजहब, इखलाक सदाचार, तौर तरीके, आर्ट कला, घरेलू जिन्दगी और समाजी जीवन, रोजेवत, दावतें ज्योनार, मेले तमाशे, त्योहार और छुट्टियां, सोगके दिन और खुशीके दिन, इन सबके बारेमें लोगोंके अन्दर एक सी उमंगें और एकसे आदर्श मयार पैदा किये जावें, इन उमंगोंके बढ़ाने और मजबूत करनेके लिये और लोगों को इन मेल मिलापकी चीजोंका शौक दिलानेके लिये उनमें इन चीजोंकी ठीक-ठीक जानकारी पैदा करनी और फैलानी होगी। हिन्दुओं और मुसलमानोंके ऐसे गिरोह जिनमें एक दूसरेसे पूरी हमदर्दी पैदा हो गयी है, जो एक दूसरेके पक्के दोस्त हैं और जो एक दूसरेको समझते हैं ऐसे मेलों, तमाशों और त्योहारोंके मौकोंपर जलसे करके, जुलूस निकाल कर और तरह तरहसे जनताके सामने मिसाल कायम करें। जितने आंदोलन, जितनी तहरीकें सत्य, अहिंसा, इन्साफ, परहेजगारी, पाकी, नेकी, समझदारी, हिम्मत, धीरज, सब्र और इसी तरहकी उन अच्छी-अच्छी चीजोंको फैलानेके लिये चलाई जाती हैं जिन्हें सब धर्म मजहबोंके लोग और सब तौर तरीकोंके मनानेवाले मानते और पसन्द करते हैं, ऐसे ही पाक चीजें खाना, पाक चीजें पीना, नशेकी सब चीजों से परहेज करना, इस तरहकी सब कोशिशें हमारे इस काममें बहुत मदद देंगी।

३—हमारे कामके दो हिस्से ऊपर बयान किये जा चुके हैं। हिन्दुस्तानी कलचरका तीसरा और आखिरी हिस्सा यह है कि इस तरहके धन्धों, दस्तकारियों, व्यापारों और तिजारतोंको जारी किया जावे और बढ़ाया जावे जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों हिस्सा लें और दोनों मिलकर काम करें। रचनात्मक या तामीरी कामकी जितनी कोशिशें हो रही हैं, जैसे मा और बच्चेके बचाव और भलाईके तरीके, गांवकी हालतको सुधारना, घरेलू धन्धे, खेतीके कामको तरक्की देना और उसकी पैदावारको बढ़ाना, जङ्गलोंकी हिफाजत, गांव और शहरोंकी सफाई, बीमारोंके इलाजके लिये जो तरह-तरहके तरीके चल पड़े हैं, उन सबको मिलाकर उससे फायदा उठाने की कोशिश, जानवरोंकी नसलको बढ़ाना, यह सब चीजें हमारी हिन्दुस्तानी कलचरको हर तरहसे मदद ही देंगी और उन कलचरके दूसरे हिस्सेको पूरा करेंगी, लेकिन शर्त इतनी ही है कि हिन्दू और मुसलमान दोनों मिल कर इनमें हिस्सा लें और हर काममें दोनोंका मेल बढ़ता चला जावे। हमारी सोसायटीको अपनी पूरी ताकतसे इस मेल जोलके बढ़ानेमें हर तरहकी मदद करनी चाहिये।

थोड़ेसेमें नयी हिन्दुस्तानी कलचरका बुनियादी काम यह होना चाहिये कि वह सब तरहके लोगों, सब तरहकी चीजों, जातियों, नसलों, धर्म मजहबों, तौर तरीकों, आचार विचारों और अलग अलग तबीयतों को मिलाकर उनमें एकता, मेल मिलाप और एक समन्वय पैदा करे और हर एकको अपनी अपनी जगह, अपने अपने वक्त पर और अपनी अपनी तरहसे काम करने, फलने फूलने और दूसरोंके लिये उपयोगी मुफीद साबित होनेका मौका दे।

अब मैं सारी बातको थोड़ेसे शब्दोंमें दुहराता हूं। हर सभ्यता, हर कलचरमें तीन बातें होती हैं-(अ) हर एकमें ज्ञानका, साइन्सका, विद्याका, भाषाका एक भंडार होता है जिसमें कुछ उसकी खास चीजें होती हैं और कुछ चीजें सबमें एकसी होती हैं हर कलचरके इस तरहके भंडारमें जड़ और चेतन, माद्दा और रूहके बेशुमार जहूरों और रंग रूपोंमेंसे कुछ एक दिखाई दे जाते हैं, (ब) हर कलचरको अपने अलग अलग काम पूरे करने होते हैं, हरेकके अलग अलग आदर्श मयार, अलग अलग उत्साह उमंगें, अलग-अलग जोश, अलग अलग हुनर और धंधे, अलग अलग आर्ट और कला, खेल तमाशे, इमारतें, शहर, पूजाके तरीके, और धर्म मजहब होते हैं। (स) हर कलचरके रहन-सहनके अपने तरीके होते हैं, राज काजके अपने ढंग, चाल चलन, लट्टा व्योपार, दूसरे देशोंमें जाकर बसना, दूसरे देशोंको जीतना और अपने अपने कारबारी ढंग होते हैं। जिस कलचरमें ये तीनों बातें जितनी अच्छी और ऊंची होंगी उतनी ही वह कलचर ऊंची और महान होगी। किसी भी कलचर में ज्ञानका भण्डार जितना ज्यादा होगा, उस भण्डारमें जितनी तरह तरहकी चीजें होंगी, वे सब चीजें जितनी सोच समझ कर होशियारी और समझके साथ जमा की गयी होंगी और लोगोंके आदर्श मयार, शौक, उनकी उमंगें, उनके भाव जितने सुन्दर, जितने पाक होंगे और भलाईके खयालसे भरे हुए होंगे, के रहन सहनके तरीके जितने उनके कारबार और व्यापार जितने और दुनियां भरके सब आदमियोंकी करने वाले होंगे उतनी ही वह सभ्यता बड़ी, महान, ऊंची, देर तक टिकने वाली होगी। सबसे सुन्दर और सबसे अच्छी होगी जिसने इस बातको समझ लिया इस पर अमल करना शुरू कर दिया दुनियाके सब आर्थिक यानी माली राजकाजी यानी सियासी झगड़ोंका एक ही इलाज है और वह यह है कि मानव समाजको दुनियाके सब आदमियों एक साइनटिफिक निजाम, एक वैज्ञानिक उनमें लाया जावे। सब साम्प्रदायिक फिरकाराना झगड़ोंकाभी आखीरमें इलाज है और वह उस मजहबे इन्सानियत उस मानव धर्मको कायम करना है अलग अलग धर्म मजहबोंकी जड़ की तहमें है, जो सबमें एक बराबर और जो इन सब अलग अलग धर्म को एक दूसरेसे मिलाता और उनको जोड़ता है। दुनियाकी वही कलचर अच्छी और ऊंची कलचर होगी धर्म मजहबोंकी बुनियादी एकतामें इन्सानोंके एक कुटुम्ब होनेमें विश्वास हो।

हमने ऊपर हिन्दू और मुसलमानों खास तौर पर बात कही है। लेकिन यह समझ लेना चाहिये कि और भी धर्म मजहब हिन्दुस्तानमें हैं उन सबके वालोंकी मददकी हमें जरूरत है और

वियना शहर

———०:*०:———

पुराने साम्राज्य की राजधानी

(लेखक—श्री दीनदयालु शास्त्री)

[आ]ज मध्य यूरोपके गौरव व प्राचीन [आ]स्ट्रियाई साम्राज्यकी राजधानी वियना [ज]र्मनोंके अधिकारमें है। मध्ययुगके [उस] विशाल साम्राज्यका केन्द्र वियना [ज]र्मन सेनाओंसे पददलित होगा इसकी [कल्प]ना इस शहरके निवासी कभी न [कर]ते होंगे किन्तु इतिहासमें सब कुछ संभव [है। इ]तिहास तो उठती व गिरती जातियोंके [पार]स्परिक संघर्षका दर्पण मात्र है। एक [जाति] आज उन्नत है अतः गर्वमें आकर [दूस]री जातिको दलनेमें आनन्द लेती है। [सम]य बीत जाता है, यह हीन जाति [ब]ड़ी होती है और कभी उन्नत व अब [हु]ई जातिसे अपने पुराने अपमानका [बदला ले]नेके लिये उसे सर्वथा रौंद डालती [है। इ]स प्रकार संसारमें जातियोंका उत्कर्ष [व अपक]र्ष सदा बना रहता है। मध्ययुगमें [ही] जर्मनोंने सदा पड़ोसी समाज लोगों [को सता]या है और उन्हें अपने पितृदेशको [छोड़ने]के लिये विवश किया है। पोलैण्ड, [रूस]ा व एशियाके इतिहासको पढ़िये। [तब] व आस्ट्रियाके जर्मन शासकों द्वारा [इन दे]शोंके स्लाव लोगोंपर हुए अत्याचार [पाठ]कका दिल दहला देते हैं। आस्ट्रिया [की रा]जधानी वियना इन शासकोंका आठ [सदिय]ोंसे केन्द्र था। आज रूसके रूपमें उठ [रहे स्ल]ाव लोगोंका ओज व तेज उस जर्मन [शक्ति]के केन्द्र बर्लिन व वियनाको ध्वंस कर [दे त]ो इसमें आश्चर्य न मानना चाहिये।

प्राचीन शहर

[वियन]ा, जो रूस द्वारा आक्रान्त यह [केवल] मध्ययुगका नहीं, प्राचीन कालका [है। य]ूरोपके बड़े शहरोंमें प्राचीनताकी [दृष्टिसे] यह विशेष स्थान रखता है। ईसाके [जन्मसे] बहुत काल पूर्व वियना विण्डो-[बोना न]ामसे मशहूर था। इसमें प्राचीन [सेल्ट ज]ातिके लोग आबाद थे और रोमके [लोगों]ने अपने पूर्वीय साम्राज्यकी रक्षाके [लिये य]हां फौजी छावनियां कायम की थीं। [आज भ]ी शहरके मध्यका एक टीला उस [जमान]ेकी याद कराता है जहां फौजी [छावनि]यां थीं। रोमके साम्राज्यके पतनके [बाद वि]ण्डोबोनाका कोई महत्व नहीं रहा [और भि]न्न-भिन्न सम्राट व अर्धाध्यक्ष इसे [लूटते] रहे। ईसाकी आठवीं सदीके अन्त-[में य]ूरोपके प्रसिद्ध सम्राट शार्लमानने [सेण्]ट पीटरके नामपर एक बड़े गिरजेका [निर्माण] किया था। इसके बाद जर्मनोंने [आक्रमण]कारियोंसे बचनेके लिये जब ओस्टमार्क (आस्ट्रिया) की स्थापनाकी तो वियनाका महत्व फिर बढ़ चला। प्राचीन ग्रन्थोंमें बारहवीं सदीमें वियनाका उल्लेख सिविटास नामसे किया गया है। ११३७ में हेनरी जसोमीरगटने इसे आस्ट्रियाकी राजधानी बनाया और प्राचीन दीवारोंसे बाहर ऐम हाफमें अदालत, गिरजे व नये बाजार बना कर इसकी उन्नति की। इन्ही दिनोंमें फिलिस्तीनको जानेवाले क्रूसेडरों (धार्मिक यात्री) के मार्गमें होनेके कारण वियना एक व्यापारिक व धार्मिक शहर बन गया।

सम्राटोंकी राजधानी

आस्ट्रियाके हैम्बर्ग वंशके सम्राटोंमें सर्व प्रथम ऐलबर्टने वियनाको अपने शासनका केन्द्र बनाया था। शुरूमें इस वंशके दो तीन सम्राटोंके शासनकालमें वियनामें प्लेग, आपसी झगड़े व लूटमारकी प्रबलता रही जिसके कारण इस शहरको काफी आर्थिक क्षति पहुंची। सन् १३६६ में हैप्सबर्ग राजा एडोल्फ चतुर्थने वियनामें विश्वविद्यालयकी स्थापना की। वियनाका यह विश्वविद्यालय आज संसारके सर्वोत्तम विश्वविद्यालयोंमें है और यहांके चिकित्सा विभागमें संसारके हर देशके विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करने आते हैं। एडोल्फके बाद वियना जर्मन दलबन्दी का केन्द्र रहा और इसके शासक कभी लिन्ज व कभी कीनर न्यूस्टायमें निवास करते रहे। सन् १५२९से १५२९ तक वियना शहरपर विजयी तुर्कोंकी सेनाने घेरा डाला था। इस घेरेमें वियनाकी जनताको बड़े कष्टोंका सामना करना पड़ा था। शहरके बाहरी मुहल्ले तुर्की फौजके डरसे खाली हो गये थे और मध्यवर्ती पुराने शहरमें लोगोंके जमघटके कारण बीमारी फैल चली थी। चार वर्षकी घेरा-घेरीके बाद तुर्क वापिस लौट गये और हैप्सबर्गके जर्मन सम्राट फर्डीनेण्ड द्वितीय स्थिर तौरपर वियनामें रहने लगे। इस कालमें वियनामें बड़ी उन्नति हुई। शहर में नये गिरजे, महल व बाजारोंका निर्माण हुआ और यह शहर मध्य यूरोपकी चहल-पहलका केन्द्र बन चला। इस बीच सन् १६८३ में तुर्कोंने पुनः वियनाका घेरा डाला! इस घेरेके समयमें ही वियनामें उन होटलों, प्रमोदगृहों व विश्रान्तिगृहोंका प्रारम्भ हुआ जिनके लिये वह आज भी विख्यात है। घेरेके इन कठिन दिनोंमें नागरिक घरोंमें न आरामसे रह पाते थे और न खा पाते थे। इस संकटसे बचनेके लिये ही इन सार्वजनिक होटलोंका सूत्रपात्र हुआ था। तुर्कोंके चले जानेके बाद वियनाके हाप्सबर्ग मुहल्लोंका सुधार किया गया। इसमें पुस्तकालय, पार्लमेंट भवन व राजप्रासादका नवीन ढंगसे परिष्कार किया गया। हाप्सबर्गके इस पुस्तकालयमें बारह लाखसे अधिक पुस्तकें, एक लाखके लगभग नक्शे व चालीस हजार हस्तलिखित ग्रन्थ विद्यमान हैं। इसी प्रदेश में कला व इतिहाससे सम्बन्ध रखनेवाले अद्भुतालय हैं और पड़ोसमें साम्राज्ञी मेरिया थेरेसाकी प्रतिमा है। हाप्सबर्गके अतिरिक्त अन्य प्राचीन मुहल्लोंका भी सुधार किया गया और शहरमें अनेक पार्क, उद्यान व मनोरंजनके अन्य साधन प्रस्तुत किये गये।

नैपोलियनके बाद

सन् १८१४-१५ में आस्ट्रियाकी राजधानी वियना शहरमें ही यूरपके राजनीतिज्ञोंकी मण्डली बैठी थी। इस मण्डलीमें ब्रिटेन, प्रशिया, आस्ट्रिया व रूसके प्रमुख राजनीतिज्ञोंने पराजित नेपोलियनके उत्तराधिकारी फ्रांसीसी शासकोंको यूरपका नवीन नक्शा पेश किया था। इस नक्शेके अनुसार आस्ट्रिया एक विशाल साम्राज्यके रूपमें प्रगट हुआ था। उसे वर्तमान जेकोस्लोवाकियाके अतिरिक्त गैलीशिया, वेनिस व अन्य प्रदेश मिले थे इसी वायनाकी कान्फरेंसने ही पहले पहल यूरपके नक्शेमें प्रशिया को प्रमुखता दी थी, जो प्रशिया आज सारे यूरोपको अपने संगठनके कारण अखर रहा रहा है। उन्नीसवीं सदीमें दो बार वियना निवासियोंको स्वयं अपने शासकोंसे लोहा लेना पड़ा था। यथार्थमें ये दिन आस्ट्रियामें क्रान्तिके दिन थे। वियनाके विद्यार्थियों, मजदूरों व बाजार वालोंने इन आंदोलनोंमें प्रमुख भाग लिया था। इन आन्दोलनोंके परिणामस्वरूप वियनाको स्वतन्त्र चुंगीका शासन प्राप्त हुआ था जिसके कारण वह समृद्ध, उन्नत व व्यापारी शहर बन सका। इस सदीके अन्तिम सम्राट फ्रांसिस जोजेफ को वियना बड़ा प्रिय था। इस सम्राटने शहरके सब प्राचीन भवनोंका पुनर्निर्माण ओपेरा, पार्लमेंट, विश्वविद्यालय तथा थियेटर सबको नवीन रूप प्राप्त हुआ और ये सब दिव्य भवन वियनाकी ख्यातिके कारण बने। बाहरी मुहल्ले व अंगूरोंके बगीचे शहरमें शामिल किये गये और शहरको यूरपके प्रधान शहरोंमें अग्रणी बना दिया गया।

पिछले युद्धके बाद

इन्हीं सम्राट फ्रांसिस जोजेफके शासन कालमें सन् १९१४-१८ का यूरपका युद्ध हुआ था। इस युद्धके बाद विशाल आस्ट्रियाई साम्राज्य तितर-बितर हो गया और उस साम्राज्यकी राजधानी केवल ६५ लाख आबादीके संकुचित आस्ट्रियाकी राजधानी रह गया। सन १९३९ में जर्मन चांसलर हिटलरने आस्ट्रियाको जर्मनीमें शामिल किया तो वियनाका रहा सहा गौरव भी समाप्त हो गया और वह एक प्रादेशिक शहर मात्र रह गया। सन् १९२१ से १९२८ तक वियनामें समाजवादी दल प्रबल था और चुंगीका शासन उस दलके हाथमें था। इस दलने शहरके घने मुहल्लोंको तोड़ कर नया रूप दिया और शहरकी लाखों मजदूर जनता के आरामके लिये सुन्दर मकान व मनोरंजन के अन्य सामान प्रस्तुत किये। यदि इस समाजवादी दलका प्रभुत्व कुछ दिन और वियनामें रहता तो वह शहर आम जनताके सुखकी दृष्टिसे संसारमें सर्वोपरि होता यह विशेषज्ञोंका कथन है, किन्तु हिटलरी शासन की दृष्टिसे अब वियनाकी व्यवस्था दूसरे ढंगकी है। एक तो वह किसी देशकी राजधानी नहीं रहा है तिस पर कोई खास उद्योगधन्धोंका केन्द्र भी वह नहीं है। फिर भी मध्य योरपका हृदय होनेके कारण वियना अब भी लाखों व्यक्तियोंके आकर्षणकी वस्तु है।

यूरोपका हृदय

यह शहर जिस स्थान पर बसा है वहां यूरोपकी प्रसिद्ध नदी डेन्यूब पहाड़ी प्रदेश को छोड़कर मैदानकी ओर सरकी है। शहर से कुछ पहिले उसकी दो-तीन धारायें हो गयी हैं। इनमेंसे एक धारा नहरके रूपमें वियनाके पड़ोसमें बहती है। शहरका अधिक भाग इस नहरके दायें तट पर अवस्थित है। यहां ही राजप्रासाद, विश्वविद्यालय, अद्भुतालय, नाटकघर व पुस्तकालय हैं। शहरका मध्यवर्ती भाग एक दम घना बसा हुआ है किन्तु पार्श्व खूब खुले रहते हैं। नहर व डैन्यूब नदीके मैदानी भागमें वियनाके व्यापारियोंका वास है, अधिकतर यहूदी भी इसी भागमें रहते हैं। किसी समयमें उनका जीवन काफी संकटमें था, आष्ट्रियाके शासन कालमें उन्हें चैन मिली और नाजी शासनमें वे पुनः भिन्न २ प्रतिबंधोंके शिकार हो गये हैं। नहर व डैन्यूब नदी दोनोंमें नावें भली प्रकार चल रहीं हैं अतः वायना जल मार्गकी दृष्टिसे बड़ा उपयोगी है। नदी पर नौ मील लम्बे पक्के घाट बने हैं इन घाटोंमें बड़े बड़े बजड़े आश्रय लेते हैं और जर्मनी व आष्ट्रियाका बना पक्का सामान कपड़ा, मशीनें, शीशेका सामान आदि ढोकर पूर्वी यूरोपके भिन्न-भिन्न देशों किंवा कालेसागरके बन्दरगाहोंमें पहुंचाते हैं। इस पक्के सामानके बदले रूमानिया, बलगरिया, हंगरीसे आने वाला अनाज भी इसी जल मार्गसे वियनामें पहुंचता है और जर्मनीको रवाना होता है। वियनाकी शान वे छोटे छोटे जहाज हैं जो रूस व रूमानियाका पेट्रोल भर लाते हैं। इस जल मार्गके अतिरिक्त यूरपका हृदय होनेके कारण वियना रेलोंका भी भारी केन्द्र है। इटली, फ्रांस व जर्मनीसे रूस, पोलैण्ड व बालकन देशोंको आनेवाली सब रेलोंका यह प्रमुख केन्द्र है यद्यपि हवाई दृष्टिसे वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं माना जाता।

भविष्य

वियना शहरकी आबादी बीस लाखके लगभग है। जर्मन प्रदेशमें होनेके कारण निवासी अधिकतर जर्मन नस्लके हैं किन्तु हंगरी, जेकोस्लोवाकिया व यूगोस्लाविया की सीमाके निकटमें होनेके कारण जेक, क्रोट व मगयार भी काफी संख्यामें यहां रहते हैं। अभी सन १९१८ तक ये सब लोग आस्ट्रिया किंवा वियनाके ही तो प्रजाजन थे। आज अपने पितृदेश आस्ट्रियासे पृथक हो गये हैं अतः वे वियनाके नागरिक होनेका गर्व तो नहीं करते किन्तु उसका मोह उन्हें

[हम स]बकी मेल मिलाप और प्रेम चाहते [हैं—]हिन्दू मुसलमानोंमें। हिन्दुस्तानी [क]ा यही आदर्श, यही प्यार हमारे [सामने र]हना चाहिये। जाहिर है कि इस [तक पहुंच]नेके लिये हमें बहुत लम्बा रास्ता [तय कर]ना पड़ेगा। लेकिन हम अभीसे इस [पर च]लना शुरू कर सकते हैं। अगर हम [कदम क]दम आगे बढ़ते रहे तो एक पड़ावसे [दूसरे पड़]ावके रूपमें अपनी मंजिलके ज्यादह [से ज्यादह] नजदीक पहुंचते ही जायगे। जरूरत [सिर्फ] इस बातकी है कि हमारा आदर्श, [हमारा] प्यार हमारी आंखोंसे किसी वक्त [ओझल] न होने पावे।

वहांसे विदा भी नहीं लेने देता। प्राचीन, मध्य व वर्तमान कालका यह ऐश्वर्यशाली शहर आज रूसी सेनाओंके अधिकारमें है। पहले भी उसने अनेक विदेशी सेनाओंके हमले देखे हैं किन्तु वह अक्षुण्ण बना रहा है। इतना तो अवश्य जान पड़ता है कि विजयी मित्र राष्ट्र जर्मन होते हुए भी उसे जर्मनीका अंग न रहने देंगे।

संसारका घटना चक्र

[अमे]रिकन पत्रों द्वारा जिन्नाकी [आ]लोचना

न्यूयार्कके उदार विचार रखनेवाले [सम]ाचार पत्र पी० एम० ने अपने अग्रलेखमें [सी]रियाकी ताजी घटनाओं और जेरुसलेमके [मु]फ्तीकी नजरबन्दीके प्रति मि० जिन्नाके [रुख]की आलोचना करते हुए कहा है, "मि० [जिन्ना] और अरब लीग फ्रेंच साम्राज्यकी [जगह] ब्रिटिश समर्थन प्राप्त अरब लीगके [साम्रा]ज्यकी स्थापना चाहते हैं। हिन्दुस्तान [की स्व]तन्त्रताका क्या होगा, मि० जिन्ना [इसक]ा उल्लेख नहीं करते? उनकी चुप्पी [ब्रिटेन]के प्रति उनकी फूटपरस्त नीतिपर पूरा [प्रकाश] डालती है।

मि० जिन्ना अपनी पाकिस्तानकी [मांग पे]श कर, फूट डालकर शासन करनेकी [ब्रिटि]श नीतिका समर्थन कर रहे हैं।

नजरबन्द डोयनित्स

[उ]च्चपदस्थ भूतपूर्व जर्मन अफसरोंके लिये [ए]क विशेष नजरबन्द शिविरमें (लेक-[डि]स्ट्रिक्टके आस-पास) डोयनित्सको लाने[की तै]यारी पूरी हो चुकी है, ऐसा ग्लोबकी [रिपो]र्टसे ज्ञात हुआ है। उसके साथ जर्मन [स्थल] सेनाका विख्यात सेनानायक कर्ट [स्टूडे]न्टके पहुंचनेकी भी आशा है, जो ब्रिटेन-[पर प्र]स्तावित जर्मन आक्रमणको योजनाका [संचाल]क था।

(४५०) की साड़ी

[बम्बई] की घटना है। ७ जूनको रोजाना [मजदू]री करने वाला एक महिला [साड़ी]की दूकानपर पहुंची। एक बेश-[कीमत]ी साड़ीका दाम पूछने पर दूकान-[दारने] उसे टालनेके ख्यालसे उस साड़ी[का मू]ल्य ४५०) बताकर मुंह फेर लिया। [पर] यह देखकर अत्यन्त आश्चर्यित हो [जाना] पड़ा जब खरीददारने एक-एककर ४५० [रुपयेके] नोट उसके सामने रख दिये। देखने-[वाले अ]वाक् रह गये और वह सारी लेकर [खु]शी घरके लिये रवाना हो गयी।

हिटलरकी लाश?

[प्रे]स प्रतिनिधि जोसेफ ग्रिग (जो जेन-[रल] आइसन होवरके साथ बर्लिन पहुंचे थे) [कहते ह]ैं कि नयी रीख चांसलरीके नीचे [स्थित] किलेबन्दियोंके मलवेकी सफाई [के] समय चार लाशें पायी गयी हैं। [जापा]नी ले उन लोगोंकी दांत और [अन्य] परीक्षा केबाद रूसियोंने चारमें [से] निश्चित तौरसे हिटलरकी लाश [बताया] है। रूसियोंने किसी तरहकी अधि-[कृत] [घोष]णा इस समय तक प्रकाशित करनेमें [अनि]च्छा प्रकट की है अबतक तिलमात्र भी [सन्दे]हकी गुन्जाइश है। डाक्टरी परीक्षा [से सिद्ध] हुआ है कि हिटलरकी मृत्यु से [पहले]। रूसकी ओरसे पहले ही इस आशय[के स]माचार प्रकाशित हो चुके हैं कि अपने [डाक्टर] द्वारा दिये गये विषकी सुई द्वारा ही [उसने] अपनी इहलीकालसमाप्त की।

फ्रांस सीमापर स्पेनिश सेनाका जमाव

लन्दनके एक पत्र, 'इवनिंग स्टैण्डर्ड' को मेड्रिडसे ऐसा समाचार मिला है कि स्पेनकी रिजर्व सेना जगह-जगह तैनात की जा रही है। इनमें अधिकांश पिरेनीजके पहाड़ी सिल-सिलेमें तैनात किये जा रहे हैं और कुछ लोगोंका अनुमान है कि फ्रांसके सामने खड़ी की गयी सेनाकी संख्या लगभग ५,००,००० है।

प्रत्येक वर्ष वसंत ऋतुमें कुछ रिजर्व सैनिकोंको अतिरिक्त शिक्षा दी जाती थी पर इस वर्ष इन सैनिकोंका अनुपात अन्य सालकी अपेक्षा कहीं अधिक बढ़ता जा रहा है।

वावेलकी योजना

लार्ड वावेल इङ्गलैंडसे कुछ प्रस्तावोंके साथ गत सप्ताह वापस आ गये। अभी तक उनके प्रस्ताव गुप्त रखे गये हैं और ऐसा समझा जाता है कि १३ जूनको सरकारी तौरसे वे प्रकाशित किये जायंगे। मालूम हुआ है कि प्रस्ताव और उनके सम्बन्धकी सरकारी घोषणा प्रान्तीय गवर्नरों और जिन प्रान्तोंमें मन्त्रिमण्डल हैं वहांके मिनिस्टरोंके पास भेज दी गयी है। इन प्रस्तावोंपर किसी तरहका विचार-विवाद नहीं हो सकता। इनको स्वीकृत समझ कर ही इनके अनुसार कार्य होगा। वायसराय एक एड-हाक कमेटी बना देंगे। इस कमेटीमें २९ सद-स्य होंगे। मध्यकालीन केन्द्रीय सरकार पुनर्संङ्गठित करनेके लिये नयी सरकारके सद-स्योंका चुनाव यह कमेटी करेगी। गैर सर-कारी सूत्रोंसे पता चला है कि इस कमेटीके २४ सदस्योंमें कांग्रेसके आठ, मुस्लिम लीगके छै, हिन्दू पांच और पांच अन्य सदस्य होंगे। वायसराय इस कमेटीके अध्यक्ष होंगे। कमेटीसे नाम उपस्थित करनेको कहा जायेगा। इन नामोंसे वायसराय अपनी नयी शासन समिति चुनेंगे। इस नयी शासन-समितिमें पांच हिन्दू, पांच मुसलमान, एक अछूत, एक सिख और एक पारसी रहेंगे।

फारस सरकारका पतन

फारस सरकारका, जिसके डा० इब्राहिम हाकिमी प्रधान थे, गत ४ जूनको पतन हो गया। सरकारमें विश्वासका प्रस्ताव पेश किये जानेपर ९९ उपस्थित डिपुटीजमें कुल २९ ने प्रस्तावका समर्थन किया, ७ ने विरोध किया और बाकी सभी तटस्थ रहे।

गत बुधवार, ३० मईको फारस सरकार ने ब्रिटिश, अमेरिकन और रूसी फौजोंके फारससे हटा लेनेका अनुरोध किया था। मालूम होता है, अधिकांश सदस्योंने सरकार की इस घोषणासे असन्तुष्ट होकर विश्वासके प्रस्तावपर तटस्थताका रुख अख्तियार किया, जिसकी वजहसे सरकारका पतन हुआ।

चीनके साम्यवादी नेताकोप्राणदंड

क्वांगसीके एक समाचार पत्र "चीन जी पाउ"ने इस आशयका समाचार प्रकाशित किया है कि क्वांगसी प्रांतके अधिकारियोंने चीनके कम्यूनिस्ट छापेमारोंके चार नेताओं को फांसी दे दी है। इन चारोंमें १९३७ में शंघाईके प्रतिरोधात्मक संग्राममें भाग लेने वाली १९ वीं सेनाके भूतपूर्व विख्यात सेनानी, जेनरल चांग येन भी हैं।

ऐसा कहा गया था कि केन्द्रीय सर-कारकी सेनाको ऐसे कागजात मिले थे जिनमें कम्यूनिस्ट नियन्त्रित सैनिक कार्रवाइयोंको बढ़ाने तथा कामिटांग सर-कारके विरुद्ध प्रचार तथा उसके नेताओं पर घूसखोरीके आरोपोंका उल्लेख था।

चीनकी कम्यूनिस्ट फौजसे भिड़ंत

चीनके युद्ध मन्त्री जेनरल चेंगने यह स्वीकार किया है कि सरकारी और कम्यू-निस्ट फौजोंके बीच गत कई महीनोंके भीतर यत्र-तत्र मुठभेड़ें हुई हैं। सरकारी फौजको इसकी सख्त हिदायत दी गयी है कि वे कम्यूनिस्ट फौजोंपर उस समय तक आक्रमण न करें जब तक उनपर हमले न किये जायं।

मुख्य जापानपर हमलेकी आशंका

टोकियोके समाचार पत्रोंने जापानको इस बातकी चेतावनी दी है कि जापानसे ३२९ मील दूर स्थित ओकिनोवाका संग्राम अत्यंत संकटपूर्ण स्थितिमें पहुंच गया है और जापानके मुख्य द्वीपपुञ्ज पर बड़े पैमाने पर हमला सन्निकट है। टोकियोके एक वक्ताने सम्भावित आक्रमणकी चेतावनी देते हुए जापानी जनताको विस्तृत हिदायतें दी हैं कि ऐसे हमलेके वक्त उन्हें क्या करना है। उक्त वक्ताने यह उम्मीद दिखाई है कि उत्पादनमें शीघ्रतासे वृद्धि करनेके बाद प्रत्येक पुरुष, स्त्री और बच्चेको निकटसे संग्राम करने वाले विशेष किस्मके शस्त्रसे सुसज्जित किया जायगा। प्रत्येक जापानीको युद्धके लिये प्रस्तुत रहनेका आह्वान करते हुए उक्त वक्ताने कहा है, "हम दुश्मनको अपने तट पर पैर रखनेके प्रयत्न करते समय ही खत्म कर दें।"

केन्द्रीय असेम्बली

विश्वस्त सूत्रसे ज्ञात हुआ है कि केन्द्रीय असेम्बलीकी अवधिमें पुनः वृद्धि की जा रही है। फिर भी इस निश्चयसे लार्ड वावेल की योजनामें कोई बाधा नहीं उपस्थित होगी।

सीरियाके साथ निष्ठुर अन्याय

ओरिएन्ट प्रेसके विशेष संवाददाताके एक प्रश्नके उत्तरमें महात्माजीने सीरियाकी संकटपूर्ण स्थितिपर अपना मत प्रकट किया है: मैंने जानबूझकर सीरिया और लेबाण्ट की स्थिति पर कुछ कहनेसे अपनेको रोका है, इसलिये नहीं कि औरोंकी अपेक्षा मुझे कम दुख हुआ है बल्कि मैं अपेक्षाकृत कहीं अधिक मर्माहत हूं। सीरियाके साथ अन्याय किया गया है, यह स्पष्ट और दैदीप्यमान है। हमें दुःख इस बातका है कि हमारे देशके मुसलमान बन्धुओंने खिलाफतसे जो सबक सीखा था उसे भूला दिया है और वे ऐसा अनुभव करते हैं कि सीरिया और लेबाण्ट वालोंके लिये वे साम्प्रदायिक ऐक्यके नाते न्यायकी प्रभावपूर्ण मांग कर सकते हैं। उदाहरण स्वरूप भार-तीय ईसाइयोंकी आवाजको लीजिये। अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें भारतीय ईसाइयोंकी जातीय आवाजका कोई मूल्य नहीं हो सकता खिलाफतके प्रश्नके हल करनेमें भारत एक प्रभावपूर्ण पार्ट अदा कर सकता था। पर विभाजित भारत, संसारके अन्य राष्ट्रोंके विचार पर कोई असर नहीं डाल सकता।

तथाकथित जापानी एजेंट

उड़ीसा सरकारकी एक प्रेस विज्ञप्तिमें कहा गया है कि गत १४ मार्च (१९४४) की रातमें एक जापानी पनडुब्बी द्वारा पुरीके समुद्र तटपर जापानी एजेन्ट उतारे गये: (१) डा० पवित्र मोहन राय, सेवरगांव, बङ्गाल; (२) ढाका जिला निवासी टुहीन मुखर्जी; (३) अलाउदीन नामक एक पंजाबी, जिसका जन्म मलायामें हुआ था और महेन्द्र सिंह, जिला होशियारपुर, (पंजाब)।

प्रेस विज्ञप्तिमें आगे कहा गया है कि डा० रायकी गिरफ्तारीमें सहायता देनेवाले खुफिया विभागके अफसरोंको युद्ध विभाग द्वारा २ सौसे १ हजार तक पुरस्कार दिया गया। पुरीके एक होटल मालिकको, जिसने उक्त गिरोहकी गिरफ्तारीमें आवश्यक सूचना द्वारा पुलिसकी सहायता की, ५ सौ रुपये दिये गये।

सीरिया और लेवाण्टकी समस्या

एक हालके संवादमें कहा गया है कि फ्रांसने लेवाण्टकी समस्या पर पांच बड़ों द्वारा विचार किये जानेका प्रस्ताव इङ्गलैण्ड के समक्ष उपस्थित किया है। रायटरको ऐसा ज्ञात हुआ है कि लंदनसे उत्तर मिलनेकी प्रतीक्षामें अन्य तीन सम्बन्धित शक्तियोंके समक्ष प्रस्ताव नहीं पेश किया गया है।

मिश्रकी राजधानी कैरोके अधिकृत अञ्चलोंका कहना है कि अरब लीग कौंसिल, जिसकी बैठक कैरोमें हो रही है किसी संधि वार्ताके पूर्व फ्रेंच सैनिकोंके हटा लिये जाने की मांग करेगी। ऐसा कहा जाता है कि सीरिया, लेबाण्ट और अरब लीग कौंसि-लके प्रतिनिधि लंदन वार्तामें सम्मिलित होंगे।

दमास्कसके पुनर्निर्माणके लिये अरबी मुल्क आर्थिक सहयोग देनेका प्रबन्ध करने जा रहे हैं।

पराजित जर्मनीका विभाजन

गत ५ जूनके तीसरे पहर चार महान राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंने जर्मन पराजय और सर्वाधिकार हस्तगत करनेकी ऐतिहासिक घोषणा पर बर्लिनमें हस्ताक्षर किये। मित्र कण्ट्रोल कमीशनकी घोषणाके अनुसार जर्मनीके तीसरे रीखका मंगलवार, ता० ५ जूनके दो बजे अन्त हो गया। जर्मनीसे आस्ट्रिया और सुडेटनलैंड अलग कर दिये गये हैं। जर्मनीके सभी सशस्त्र सैनिकोंका निरस्त्री-करण कर दिया गया और सभी सरकारी व्यक्ति युद्ध बन्दी समझे जायेंगे। उसके सभी जहाज, वायुयान, युद्ध सामग्री, कल-कारखाने, किलेबन्दियां, रसायनशाला और अनुसन्धान केन्द्र मित्रोंके हाथ सुपुर्द किये जायेंगे।

ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और रूसका क्रमशः जर्मनीके उत्तर-पश्चिमी, दक्षिण-पश्चिमी, पश्चिमी और पूर्वी इलाकोंपर अधिकार रहेगा। अब तक कोई ठोस विभाजन पंक्ति निश्चित नहीं की गयी है और भविष्यमें साधारण रद्दोबदलकी संभावना है।

गोयरिंगपर मामला

वार क्राइम्स कमीशनके अध्यक्ष लार्ड राइटने घोषणा की है कि कमिशनको राष्ट्रीय दफ्तर द्वारा एकत्रित सबूतोंसे ऐसे काफी प्रमाण मिले हैं जिनके आधारपर फील्ड मार्शल गोयरिंगको युद्ध अपराधीके रूपमें न्यायालयके सम्मुख उपस्थित किया जा सकेगा। लार्ड राइटने निश्चित रूपसे अभी यह बतलानेमें असमर्थता प्रकट की है कि गोयरिंगके मुकदमेकी सुनवायी राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय कोर्टके समक्ष होगी, क्योंकि वह प्रमुख युद्ध अपराधियोंकी श्रेणीमें आ जाता है।

निकट भविष्यमें त्रिनायक सम्मेलन

सीरियाके प्रश्नको सुलझानेके लिये प्रस्तावित पंचराष्ट्र सम्मेलनके सम्बन्धमें पूछे गये एक प्रश्नका उत्तर देते हुए राष्ट्रपति ट्रूमन ने एक पत्रकार सम्मेलनमें कहा है कि चूंकि आगे ४० दिनोंके अन्दर ही त्रिनायकोंकी बैठक होनेकी संभावना है, अतः पञ्चराष्ट्र सम्मेलनकी वांछनीयता नहीं प्रतीत होती। ह्वाइट हाउसके प्रेस सेक्रेटरी मि० चार्ल्स रौसने कहा है कि राष्ट्रपतिके उक्त कथनका यह अर्थ नहीं है कि अमेरिका ऐसे सम्मेलनमें सीरियाकी स्थितिपर बातचीत करना चाहता है जहां उस समस्यासे सम्बन्धित दल,—फ्रांस, सीरिया और लेबाण्ट उपस्थित न रहेंगे।

शासन समितिके मतभेद

कहा जाता है कि वायसरायकी वर्तमान शासन समितिके यूरोपियन सदस्य और सर महम्मद उसमानने वावेल-योजनाका समर्थन किया है किन्तु सर सुल्तान अहमद के नेतृत्वमें अन्य सदस्योंने इसका विरोध किया है। सर ज्वालाप्रसाद अपनी आपत्ति वापस ले लेंगे यदि वे देखेंगे कि इसके आधारपर राजनीतिक समझौता हो जानेकी सम्भावना है।

डी गालका मि० चर्चिलको उत्तर

अभी कुछ दिन हुए एक पत्रकार सम्मेलनमें सीरिया और लेवाण्टकी स्थितिपर वक्तव्य देते हुए जे० डी गालने इस दुर्घटना के लिये कुछ अंशोंमें ब्रिटेनको जिम्मेदार ठहराया था। गत ५ जूनको उक्त दोषारोपण के उत्तरमें मि० चर्चिलने पार्लमेण्टके समक्ष जे० डी गाल द्वारा लगाये गये आरोपोंका खण्डन करते हुए कहा है कि सत्य इसके बिलकुल विपरित है। हमने अशांति रोकने, गलतफहमियोंको दूर करने और दोनों सम्बन्धित दलोंको मिलानेके लिये यथाशक्ति प्रयत्न किया है।

इस युद्धमें ब्रिटेनने अपने दुश्मनोंके अतिरिक्त और किसीकी जायदाद हस्तगत करनेका प्रयत्न नहीं किया है और वह भी स्वार्थ-साधनके उद्देश्यसे नहीं। फ्रांसको यदि इस बातकी आशंका थी कि हम उसके अधिकारोंको हड़प लेना चाहते हैं तो हमारी इस घोषणासे कि किसी संतोषजनक व्यवस्थाके बाद ब्रिटिश फौजें हटा ली जायेंगी, वह दूर हो जानी चाहिये थी।

मि० चर्चिलके वक्तव्योंकी टिप्पणी

मि० चर्चिलके हालवाले वक्तव्योंकी आलोचना करते हुए न्यूयार्कके प्रमुख पत्र "दि न्यूयार्क डेली न्यूज"ने अपने अग्रलेखमें लिखा है कि मि० चर्चिलके ताजे वक्तव्य और निरुणोंसे आशंका होती है कि ब्रिटेन रूसके विरुद्ध खड़ा हो सकता है। इसी पत्रने यह चेतावनी दी है कि अमेरिका रूससे लड़नेकी गलती उस समय तक न करे जब तक स्वयं रूसकी ओरसे आक्रमणात्मक कार्यवाही न हो और यदि हमने रूसपर आक्रमण भी किया तो सफलताकी आशा नहीं है। नेपोलियनको विफल होना पड़ा और रूस फतह करनेकी हिटलरकी आशायें भी देखते-देखते धूलमें मिल गयीं।

रूसके लिये ३ वोटका गुप्त निश्चय

गत ७ जूनको एक मजदूर दली सदस्यके प्रश्नका उत्तर देते हुए प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलने पार्लमेंटमें यह रहस्योद्घाटन किया है कि याल्टा या तेहरान सम्मेलनमें सानफ्रांसिस्को सम्मेलनके लिये रूसके अतिरिक्त ह्वाइट रूस और यूक्रेनको सीट देनेके सिवा ब्रिटेनने और कोई गुप्त समझौता नहीं किया है।

इटालीके प्रधान मन्त्रीका इस्तीफा

गत कई दिनोंसे इटालीमें एक नया मंत्रिमण्डल गठित करनेके लिये वार्तालाप जारी है। विभिन्न दलोंके बीच सुदीर्घ वार्तालापके परिणामकी प्रतीक्षा न कर, सिगर बोनोमीने अपना त्याग पत्र पेश कर दिया है। फिर भी अपने मन्त्रिमण्डलके सदस्योंके अनुरोधपर नये मन्त्रियोंकी सूची तैयार होने तक अपने पदपर बने रहनेको सहमत हुए हैं।

प्रधान मंत्रीके लिये दो प्रमुख उम्मीदवारोंमें मुख्यतः सोशलिस्ट नेता पेट्रोनेन्टी तथा किश्चन डेमाक्रेटके मुखिया देल साहब की गैस्पेरीका नाम लिया जा रहा है।

...ाई-लियाकत योजनासे भिन्न

...वावेल योजना देसाई-लियाकत योजना ...स अर्थमें भिन्न है कि देसाई योजना ...ग्रेस और मुस्लिम लीगके समान प्रति-...निधित्वकी समर्थक है जब कि लार्ड वावेल ...योजनामें हिन्दुओं और मुसलमानोंका ...समान प्रतिनिधित्व स्वीकार किया गया ...है, पार्टीका प्रश्न गौण है।

...ग्रेसका दृष्टिकोण

...प्रस्तावित योजना पर कांग्रेस अंचल ...बिलकुल मौन हैं। वे किसी तरहका ...मत प्रकट करनेसे इनकार करते हैं। यह ...मानी हुई है कि सम्मानपूर्ण समझौता ...सहयोगके लिये गांधीजी सदा तैयार हैं। ...इन प्रस्तावोंमें समानाधिकार और ...स्वतंत्रताका तत्व होगा तो महात्माजी उन ...उचित विचार करेंगे, इसमें जरा भी ...नहीं है। जांच करनेसे पता चला है ...अभी तक महात्माजीके पास वायसराय ...उनसे कोई पत्र या विज्ञप्ति नहीं पहुंची

...नेता तथा साहित्यकार श्री दिनेशजीका देहान्त

...प्रतिभाशाली साहित्यकार, साप्ताहिक ...' के ट्रस्टी, ग्वालियर राज्य सार्व-...सभा (स्टेट कांग्रेस) की केन्द्रीय ...कारिणीके पूर्व सदस्य तथा जिला कमेटी ...अध्यक्ष श्री किरणविहारी दिनेशका ...बीमारीके बाद ता० ३१-४-४९ को ...को मृत्यु हो गयी। आपने अपनी ...श्रीमती क्रांतिदेवीके अतिरिक्त कोई ...अधिकारी नहीं छोड़ा है और अपने ...जीवनकालहीमें अपनी सम्पत्तिका ट्रस्ट बना ...। आपकी दुःखद मृत्युसे ग्वालियर ...राजनीतिक, सामाजिक और ...क क्षेत्रकी अपूरणीय क्षति हुई है।

...ओंकी रिहाई

...समझा जाता है कि वावेल योजना ...प्रकाशित होनेके साथ-साथ कांग्रेस ...कमेटीके सदस्योंकी रिहाईकी घोषणा ...। यद्यपि कांग्रेस नेताओंकी मुक्ति ...योजनाका अंग नहीं है किन्तु यह ...जाता है कि वातावरणको अधिक ...बनानेकी दृष्टिसे लार्ड वावेल नेताओं ...की घोषणा करेंगे और वर्किंग ...परसे प्रतिबन्ध भी उठा लिया ...। जेलमें बन्द वर्किंग कमेटीके आठ ...हैं: राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम ...पंडित जवाहरलाल नेहरू, डा० ...प्रसाद, सर्दार बल्लभ भाई पटेल, ...कृपलानी, डा० पट्टाभि सीतारमैय्या ...शंकरराव देव और आचार्य नरेन्द्र देव।

...एक अभेद्य गढ़

...समाचार समितिने गत शुक्र-...घोषणा किया है कि ओकिनावा ...द्वीपके आम्मा बीचोबीच स्थित ...पहाड़ीको, जहांसे चीन तटकी रक्षा ...एक विशाल अभेद्य किलेके रूपमें ...परिणत किया गया है।

संसारका घटना चक्र

:०*:०

विश्वको महात्माजीकी देन

अखिल भारतीय छात्र कांग्रेस द्वारा आयोजित नागरिकता कालेजके समक्ष "अहिंसाके सिद्धान्त द्वारा मनुष्यके नैतिक विकासमें कांग्रेस और महात्माजीकी देन" पर बोलते हुए सिन्ध प्रान्तके प्रमुख कांग्रेसी-नेता, श्री जयरामदास दौलतरामने कहा है कि महात्माजीका सत्याग्रह अस्त्र प्रारम्भमें दुर्बल प्रतीत होनेपर भी अन्ततः अत्यन्त शक्तिशाली प्रमाणित होगा। इण्डियन नेशनल कांग्रेसने इस प्रभावशाली अस्त्रको पीड़ितोंके हाथमें अपने पीड़कोंके विरुद्ध प्रयोग करनेके लिये दिया है। राष्ट्रीय कांग्रेसने इतिहासको यह अपूर्व धरोहर प्रदान किया है जिसके अहिंसक और अवरोधात्मक स्वरूपका प्रयोग खूनी जङ्गका अन्त करेगा।

सिन्ध प्रांतीय मुस्लिम लीग

गत ४ जूनको सिन्ध प्रान्तीय मुस्लिम लीगने दो घण्टेके दिलचस्प वादविवादके उपरांत एक प्रस्ताव पास कर आल इण्डिया मुस्लिम लीगके समक्ष यह मांग उपस्थित की है कि वर्तमान नीतिमें संशोधन कर असेम्बली की लीग पार्टीपर केन्द्रीय पार्लमेण्टरी बोर्डका नियन्त्रण प्रान्तीय लीगके हाथ हस्तांतरित किया जाय।

केन्द्रीय पार्लमेण्टरी बोर्ड द्वारा असेम्बली की लीग पार्टीकी गतिविधिको नियन्त्रित करनेकी मौजूदा नीतिको अव्यवहारिक तथा प्रान्तीय लीगकी कार्यवाहियोंमें अनुचित रुकावट समझा गया है, जिसकी वजहसे असेम्बली पार्टी और मन्त्रिमण्डलके कार्योंका निरीक्षण करनेके अधिकारसे उसे वञ्चित हो जाना पड़ता है।

आसाम कांग्रेस प्रतिबन्ध-मुक्त

आसाम सरकारकी ओरसे प्रकाशित विशेष विज्ञप्ति द्वारा सूचित किया गया है कि १९४२ के अगस्त, सितम्बर और अक्टूबर महीनोंमें जारी किये गये नियम, जिनका आसाम प्रांतीय कांग्रेस कमेटी और इसकी शाखा-प्रशाखाओंपर लगे प्रतिबन्धोंसे सम्बन्ध था, रद्द कर दिये गये हैं। आसाम कांग्रेस अब कानूनी हो गयी। स्मरण रहे कि आसाम सरकारका यह निश्चय सादुल्ला-बारदोलाई-चौधरी समझौतेका परिणाम है, जिससे मौजूदा संयुक्त मंत्रि-मण्डलका गठन संभव हो सका था।

अर्धनग्न स्त्री-पुरुषोंका जलूस

गत रविवारको २ हजार अर्ध-नग्न स्त्री-पुरुष जमालपुर (मैमनसिंह) की सड़कों पर परेड करते हुए निकले। जलूस स्थानीय एस० डी० ओसे मिला जिन्होंने यथासंभव शीघ्रतासे वस्त्र सप्लाई करनेका आश्वासन दिया है। कांग्रेस, हिन्दू सभा, मुस्लिम लीग और कम्यूनिस्ट पार्टीके तत्वावधानमें एक सभा हुई। सब-डिवीजनमें व्याप्त वस्त्रसंकट पर विभिन्न वक्ताओंके भाषण हुए और प्रत्येक व्यक्तिके लिये प्रतिवर्ष २५गज वस्त्रकी मांगका प्रस्ताव पासकर सभाकी कार्यवाही समाप्त की गयी।

मार्शल टीटोका दावा

यूगोस्लाव नेता मार्शल टीटोने सोलवेनीज जनताके नाम बेलग्रेड रेडियो पर ब्राडकास्ट करते हुए कहा है, "कैरीन्थिया हम लोगोंका है और उसके लिये हम संघर्ष करेंगे।" युगोस्लाविया आजाद हो गया। हमने ट्रिएस्टी और कैरिन्थियाको मुक्त किया है पर अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति ऐसी रही है कि हमने अपनी फौज हटा लेना उचित समझा है। सात मोर्चों पर फ्रोन्स, सर्ब, और सभी यूगोस्लाव जनता खड़ी है। हमारे सभी लड़ाके वहां डटे हैं और डटे रह कर उसकी रक्षा करेंगे।"

स्मरण रहे कि कैरीन्थिया आस्ट्रियाका एक प्रान्त है जिसपर इस समय फील्ड मार्शल अलेकजेण्डरके नियन्त्रणमें मित्र सैनिकोंका अधिकार है।

वुडहेड रिपोर्टपर श्रीमती पंडित

बङ्गाल दुर्भिक्षकी जांचके बाद प्रकाशित वुड हेड कमेटीकी रिपोर्टपर श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडितकी ओरसे प्रकाशित एक वक्तव्यमें कहा गया है कि इस रिपोर्टके बाद भारत सचिव मि० एमरीको ठीक उसी तरह सम्मानपूर्वक त्यागपत्र देकर अलग हो जाना चाहिये जिस तरह सन् १९१७ में मेसोपोटामिया रिपोर्टके प्रकाशनके बाद मि० आस्टिन चेम्बरलेनने किया था।

बङ्गालकी इस दुर्घटनाके लिये लार्ड लिनलिथगो व्यक्तिगत और सरकारी तौरपर जिम्मेदार हैं, जिसके फलस्वरूप १५ लाख व्यक्तियोंकी जानें गयीं। दुर्भिक्षके पूर्व ६ सङ्कटपूर्ण महीनोंमें उन्होंने अपनी कार्यकारिणी समितिके खाद्य विभागके सदस्यों तीन बार हेर-फेर किये। उस समय उन्होंने खाद्यविभागका सारा काम अपने जिम्मे रखा। अतः वायसराय लार्ड लिनलिथगो अपनी कार्यकारिणी समेत इस दुर्घटनाके लिये दोषी हैं। इसी कार्यकारिणी के दो सदस्य आज सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनमें सरकारका प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। वुड हेड कमीशनके स्पष्ट और सर्वसम्मत खोजोंके अनुसार, लार्ड लिनलिथगो और उनकी कार्यकारिणी अपनी अयोग्यताके लिये दण्डके पात्र हैं।

चिमूर-अष्टी केसके अपराधी

चिमूर-अष्टी मामलेकी अपीलके लिये सभी आवश्यक कागजात और परामर्श सफाई पक्षके वकीलने लन्दनकी प्रिवी कौंसिलमें भेज दिया है। मध्यप्रान्तकी सरकारने इन कागजातोंको हवाई डाकसे लन्दन भेजनेके लिये अन्तिम तारीख ७ जून, १९४४ निर्धारित किया था। मि० डी० एन० प्रिट अपीलकी आवश्यक कार्रवाई करने वाले हैं।

आजाद हिन्दकी सरकार

जापानी 'डोमी' समाचार समितिने सूचित किया है कि भारतकी स्वतन्त्र सरकारमें, जिसके प्रधान श्री सुभाषचन्द्र बोस हैं, कुछ परिवर्तन हुए हैं। यह आंशिक रद्दोबदल परराष्ट्र विभाग, सप्लाई, जन-शक्ति और प्रचार विभागमें किया गया है।

पंजाब मेल दुर्घटनाका मामला

इन दिनों पंजाब मेल दुर्घटनाके मामले की सुनवाई शाहाबादके दौरा जज, श्री टी० जी० एन० आयर आई० सी० एस० के इजलासमें हो रही है।

स्मरण रहे कि इसी मामलेके अभियुक्तों में दो मुखबिर निकल आये थे जिनके बयान लेने तथा अन्य प्रारम्भिक जांच पड़तालकी समाप्तिके बाद मजिस्ट्रेटने मामलेको सेशन सुपुर्द किया था।

पर मुखबिर प्रेमी आजादने माननीय जजके सामने अपने पहलेके बयानको असत्य स्वीकार करते हुए कहा है कि पुलिस द्वारा रुपये, रिवाल्वर तथा अन्य भौतिक सुख सामग्रियोंके आश्वासनके अतिरिक्त बुरी तरह सताये जानेके बाद मजबूर होकर मैंने पुलिसके इच्छानुसार मजिस्ट्रेटके सामने बयान दिया था।

गत ५ जूनको पुनः उसने इस षड्यन्त्रमें शामिल रहनेकी बात स्वीकारकी और अपनी स्वीकृतिकी पुनरावृत्ति करते हुए बताया कि किस तरह मणिसिंह और पी० के० आजाद नामक दो अभियुक्तोंके आदेशानुसार आध घण्टेके भीतर रेलके पेंच इत्यादि खोल दिये गये, किस तरह वे निकटके एक खेतसे ट्रेनकी प्रतीक्षा करने लगे और पुनः ट्रेन दुर्घटनाके बाद बचे हुए डब्बोंमें सैनिकोंकी उपस्थितिकी आशंकासे ट्रेन लूटनेकी अपनी योजना कार्यान्वित किये बिना ही भाग निकले।

बुधवार ता० ६ जूनको जिरहके समय एक बार फिर उसने नया उछाल लिया और किस तरह ट्रेन दुर्घटना हुई और कौन इसके लिये उत्तरदायी है इत्यादि बातोंसे अपनेको पूर्ण अपरिचित बताया।

—अमेरिकाके स्थानापन्न परराष्ट्र सचिव मि० जासेफ ग्रूने कहा है कि "संसार के किसी कोनेमें अमेरिकन और रूसी हितों के बीच संघर्ष नहीं है।" एक ही सांसमें आपने यह भी स्वीकार किया है कि जर्मनी और आस्ट्रियामें आयोजित मित्र सरकारकी स्थापना अबतक न हो सकी है। इसका

फ्रिस्कोके गतिरोधका अन्त

सवा घण्टेकी महत्वपूर्ण बैठकके उपरान्त 'पंच महानों' के बीच याल्टा सम्मेलनमें निश्चित वोटिंग फार्मूलेकी व्याख्याके प्रश्नपर पूर्ण और सर्वमान्य समझौता हो गया है। अमेरिकाके परराष्ट्र सचिव, मि० स्टेटिनियसके शब्दोंमें, "इस समझौतेके अनुसार कांसिलके सभी निश्चयोंपर कांसिलके स्थायी सदस्योंके मतैक्यके सिद्धान्तोंको स्वीकार किया गया है, फिर भी किसी तरहकी कार्रवाईके पूर्व कौंसिलके समक्ष मत प्रकट करने और वादविवादकी स्वतन्त्रता प्रदान करनेका आश्वासन दिया गया है।"

समझौतेकी शर्तोंके अनुसार कांसिलके सभी निश्चयों और शांतिपूर्ण समझौतेके निश्चयको कार्यान्वित करनेकी सभी कार्रवाइयोंमें कांसिलके स्थायी सदस्योंकी सर्वमान्यताकी आवश्यकता है, जैसा कि क्रीमियाके समझौतेमें प्रस्ताव किया गया था—हां, विचाराधीन झगड़ेसे सम्बन्धित सदस्यकी सम्मति आवश्यक नहीं समझी जायगी।

मतैक्यकी यह अनिवार्यता किसी राष्ट्र विशेष द्वारा कौंसिलके समक्ष किसी मामले को प्रस्तुत करनेके अधिकारपर लागू नहीं है और इस प्रकार उपस्थित किये गये विषयपर कांसिल द्वारा विचार और वादविवाद को कान्सिलका कोई एक सदस्य रोक नहीं सकता।

स्फुट समाचार

—):*:(—

—ज्ञात हुआ है कि दक्षिण-पूर्व चीनमें मार्शल चांग कैशक जापानी सेनाके विरुद्ध सफल प्रत्याक्रमणका निर्देश कर रहे हैं।

—रूसी समाचार पत्रोंने अमेरिकन कांग्रेसकी सदस्या मि० क्लेयर बूथलूसके इस कथनका कि भारतका विक्षुब्ध विद्वद् समाज प्रभावशाली पड़ोसी रूसकी तरफ झुक रहा है और निकट भविष्यमें भारत सोवियट यूनियनका एक अंग बन जायगा हवाला देते हुए कहा है कि मित्रोंकी एकताको नष्ट करनेका यह घृणित प्रयत्न है।

—मास्को स्थित टर्कीके राजदूत सलीम सार्पर रूस द्वारा १९२५ की सन्धिके भङ्ग किये जानेके बाद अपनी सरकारसे आवश्यक वार्ता करनेके लिये स्वदेश आये थे। आप पुनः मास्को पहुंचे हैं। मास्कोके कूटनीतिज्ञों का कहना है कि सार्परकी वापिसीका अर्थ स्पष्ट है कि टर्की रूससे सन्धि करनेके लिये नये-सिरेसे वार्ता आरम्भ करनेकी योजना प्रस्तुत करना चाहता है।

—सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनकी धीमी कार्यवाहीके कारण प्रे० ट्रूमैनकी सैनफ्रांस्किो यात्रा स्थगित कर दी गयी है। फिर भी सम्मेलनकी समाप्ति-क्रियाके समय आपके प्रस्थान करनेकी आशा है।

—जर्मन नजरबन्द शिविरसे मुक्त किये गये भारतीय सेनाके लगभग १६० वायसराय कमिशन प्राप्त अफसरोंने ग्लासगोसे आगे बढ़ना अस्वीकार कर दिया क्योंकि उन्हें यात्राकी कुछ आवश्यक सहूलियतें न दी गयी थीं।

व्यापार समाचार

सोना चांदी

सोना पाटला ७७), गिन्नी ९२॥), सोना तारा ७७।), इवीव ७७॥) चांदी १३४)

चपड़ा

लेमन सुपरफाइन ७७), आर्डिनरी सुपरफाइन ७५), स्टण्डर्ड वैन ७३), टी०एन० रेडी ७१), १२ परसेण्ट टी० एन० ७०), आई० टी० एन० ७०), नं० २ कुसमी ६४), बैशाखी ५३), लाक न्यू आसाम ४९।)

जूट बोरा हैसियन

वीट्वील खुला—६१=) ऊंचा ६१॥) नीचा ६१) बन्द हुआ ६१।=)

जूट—खुला ७४।-) ऊंचा ७४।-)॥ नीचा ७४।) बन्द हुआ ७४।)॥ सितम्बर खुला ७४॥=)॥ ऊंचा७४॥)॥ नीचा७४॥=)॥ बन्द हुआ ७४॥≡)॥

हैसियन

४०"—८ औंस 'बी०' रेडी २२=) जून २२=) जुलाई-सितम्बर २२) अक्तूबर दि० २१॥) ४०"—७॥ औंस 'बी'—रेडी २१) जून २१) जुलाई-सितम्बर २०॥=) अक्तू० दिसम्बर २०॥=) ४०-१० औंस बी०—रेडी २८) जून २८) जुलाई-सितम्बर २७॥) अक्तू० दिसम्बर २७) बी० ट्वील्स २। पौण्ड—रेडी ६९) जून ६४॥=) जुलाई-सितम्बर ६२=) अक्तूबर दिसम्बर ६०॥) हेवी सेस प्लेन रेडी ६९) जून ६९) जुलाई सितम्बर ६४) कार्न सक्स रेडी ६४) जून ६३॥) जुलाई सितम्बर ६३॥) लिवरपुल्स रेडी ७०) जून६९॥) जुलाई सितम्बर ६९) ए ट्विल्स रेडी ७९) जून ७९) जुलाई सितम्बर डी० डब्ल्यू फ्लावर्स रेडी ७५।) जून ७४॥) जुलाई सितम्बर ७३॥) अक्तू० दिसम्बर ७२॥)

गल्ला

लाही बड़ा दाना यू० पी० १६) सेती यू० पी० १८॥) लोटनी यू० पी० १७॥) गज्वर यू० पी० १७॥) राई तोरा यू० पी० १५॥) कजली यू० पी० १६) कजली सी० पी० १६) लोटनी पंजाब १७।) राई पंजाब १६।) तोरा पंजाब १६॥) राई सिन्ध १४॥) तोरा सिन्ध १५॥) सेती सिन्ध १६) महुआ बीची १३॥) पोस्ता दाना २७) तिल सफेद १८॥) अरहर बिहार १०)अरहर बङ्गाल ९॥) चना मोकामा ९)चना बङ्गाल ७॥) ८ चना पंजाब ९) ९॥) मटरसफेद १२) कालीमुखी१२) हरा १०) पैरा ७.उड़काला ८॥) उर्दहरा ८॥॥) मूंग कानपुर १२॥) मूंग भिवानी १३) दाल धोआ १७) १७॥) मूंग पंजाब १२॥) अरहर दाल नं० १, १५) १७) अरहर दाल नं० २, १३) १४)रेड़ी बी०एस० डब्ल्यु १४॥) रेड़ी भागलपुर १४॥) मसूरी पटना ११) मसूरी छांटी १४) १५।) बङ्गाल १०)खेसारी बङ्गाल ५॥) ६) बड़ादाना ७।) खेसारी छोटा दाना ७।) जौ मोटा दाना ६।) जौ पतला दाना ४) ज्वार सफेद ५।) बाजरा काला ४।) बाजरा सफेद ४॥) मोठ ९॥) मकई १०)

डाकघर

आदिम युगमें जब कि लिपिका आविष्कार नहीं हुआ था, मनुष्य अपने हृदयके विचारोंको विभिन्नचिह्नोंअथवा प्रतीकों द्वारा प्रकट कियाकरते थे। मित्र व संबंधियोंके यहां सन्देश भेजनेमें वे इन्हीं साधनोंसे काम लिया करते थे। ईसा मसीहसे पूर्व छठी शताब्दीमें लेखन कलाका विकास हुआ और परस्पर पत्र-व्यवहार भी होने लगे। उस समय पत्र भेजनेकी कोई व्यवस्थित प्रणाली न थी। डाकिया पैदल चल कर एक जगहसे दूसरी जगह पत्र पहुंचाया करता था।

* मेडिकल ग्रेजुएट्स *

युद्ध चल रहा है...

...और यह स्वाभाविक है कि इसमें सैनिक घायल होते हैं जिन्हें फिर से स्वस्थ बनाना आवश्यक है। आज सैकड़ों फ़ौजी डाक्टर अपने पेशे के अन्दर एक नई दिलचस्प चीज़ पा रहे हैं। सैनिकों की सेवा के द्वारा उन्हें इतना अच्छा अनुभव और ट्रेनिंग प्राप्त हो रही है जो साधारण प्रैक्टिस में आम तौर पर नहीं प्राप्त हो सकती थी। आई० ए० एम० सी० में काम करने के लिए मेडिकल ग्रेजुएटों की अत्यन्त आवश्यकता है। आपको अभी आवेदन करना चाहिए।

योग्यता—उम्मीदवारों के पास ऐसी सनद होनी चाहिए जिसकी रजिस्ट्री ब्रिटेन में हो सकती हो या ऐसी हिन्दुस्तानी सनद होनी चाहिए जो मेडिकल काउन्सिल आफ़ इंडिया द्वारा मंज़ूर की जाती हो। वे रजिस्टर्ड मेडिकल प्रेक्टिशनर जिनके पास डी० एम० ऐण्ड एस० (मद्रास), एल० एम० ऐण्ड एस० (स्टेट मेडिकल फ़ैकल्टी,पंजाब), एम० सी० पी० ऐण्ड एस० (बंबई), एम० एम०एफ० (बंगाल), एम० एस० एम० एफ० (यू० पी० / पंजाब) या एम० बी० बी० एस० (मैसूर और उसमानिया) की सनद या कोई स्वीकृत विदेशी सनद है, उन्हें भी लिया जा सकता है। उम्मीदवारों की तन्दुरुस्ती फ़ौजी ड्यूटी करने के काबिल होनी चाहिए और आम तौर पर उनकी उम्र ४५ साल से कम होनी चाहिए। निर्वाचित उम्मीदवारों की नियुक्ति आई० एम० एस० में करके तुरन्त ही आई० ए० एम० सी० में पुनः नियुक्ति कर दी जायगी। आई० एम० एस० अफ़सरों के सब अधिकार इन्हें प्राप्त होंगे।

तनख़्वाह—लेफ्टिनेण्ट के ओहदे पर ४५० रुपये माहवार से लेफ्टिनेण्ट कर्नल के ओहदे पर १२५० रुपये माहवार तक। स्वीकृत विशेषज्ञ (स्पेशलिस्ट) की हैसियत से नियुक्त होने पर मेजर का ऐक्टिंग (स्थानापन्न) ओहदा और तनख्वाह दी जाती है, और इसके अलावा १०० रुपये माहवार स्पेशलिस्ट की तनख्वाह मिलती है। ग्रेडेड स्पेशलिस्ट को ऐक्टिंग रैंक (स्थानापन्न ओहदा) दिये बिना १०० रु० माहवार स्पेशलिस्ट की तनख्वाह दी जाती है। विशेष नियुक्तियों के लिए ३० रुपये से २४० रुपये माहवार तक चार्ज या कमाण्ड की तनख्वाह। वर्दी का भत्ता, ७३२ रुपये। प्रथम नियुक्ति पर तनख्वाह का ऐडवान्स (पेशगी) ३०० रुपये तक। वर्तमान नियमों के अनुसार भत्ते। उम्मेदवार की तनख्वाह १५० रुपये से ४०० रुपये माहवार तक। सफ़र के एलाउन्स और छुट्टी की रियायतें हिन्दुस्तानी फ़ौज के दूसरे अफ़सरों की भांति। पहिले साल की सर्विस के लिए २००० रुपये या १००० रुपये की ग्रेच्युटी (यह इस बात पर निर्भर करती है कि अफ़सर ने अपनी बुनियादी डाक्टरी सनदें १ जनवरी १९४० से पहिले प्राप्त की हैं या बाद में), इसके बाद हर पूरे साल की नौकरी के लिए एक महीने की तनख्वाह। इंडियन मेडिकल सर्विस के नियमों के अनुसार अपाहिजों के लिए, परिवार के लिए तथा विधवा के लिए पेन्शनें और बच्चों की शिक्षा संबंधी एलाउन्स।

फ़ौजी नौकरी से लाभ—यह बात आम तौर पर मानी जाती है कि जो लोग आई० ए० एम० सी० में नये से नये औज़ारों और तरीक़ों से काम कर लेंगे, लड़ाई के बाद शहरी प्रैक्टिस में उन्हें बहुत लाभ पहुंचेगा।

पूरा विवरण प्राविन्शियल मेडिकल डिपार्टमेण्ट (सर्जन जनरल या इन्सपेक्टर जनरल आफ सिविल हास्पिटल्स) या डाइरेक्टर जनरल, इंडियन मेडिकल सर्विस, नई दिल्ली या आफिसर कमांडिंग, इंडियन मिलिटरी हास्पिटल्स या डाइरेक्टर आफ मेडिकल सर्विसेज़, जी० एच० क्यू०, नई दिल्ली से प्राप्त हो सकता है।

Indian Army Medical Corps

AAA 19

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—२९ कलकत्ता १८, जून, १९४५, Calcutta, JUNE. 18. 1945. मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मधुसंचय

मिट्टीकी करामात

…बिच्छू के कीड़ेके काटनेपर उस स्थानपर …ख मोटी मिट्टीकी पट्टी बांध देनेसे काटने …जलन तुरन्त जाती रहती है, और विषका …क्षीण हो जाता है। जले हुए स्थानपर …का लेप बड़ा आराम पहुंचाता है। …कैसी ही चोट हो, मांस निकल आया …यहांतक कि हड्डी दिखाई देती हो तो …चोटपर भी मिट्टी फायदा पहुंचाती है …घावको धीरे-धीरे इस तरह भर देती है …अच्छा हो जानेपर उसका चिह्न भी नहीं …है।

…के ज्वरोंमें पेडूमें मिट्टीका पलस्तर …वेगको कम करनेमें बड़ा सहायक होता …कब्जियत तथा आंवको मिट्टीकी पट्टी …आराम पहुंचाती है। क्षय रोगमें पेडू …छातीपर मिट्टीका लेप करनेसे बड़ी सेहत …ती है।

…जिन्हें सिर दर्दकी शिकायत बनी रहती …सोते समय माथे और पेडूपर मिट्टी का प्रयोग करके देखें, उन्हें मिट्टीका अपूर्व गुण देखकर आश्चर्य चकित हो जाना पड़ेगा। कैसा ही कठिन सिर दर्द क्यों न हो, मिट्टी के उपचारसे अवश्य शान्त हो जायेगा।

आंखोंके दर्दमें मिट्टी ऐसी शीतल और गुणदायक सिद्ध होती है कि उसका व्यवहार कर लेनेपर आंखोंमें डालनेवाली दवा इस्तेमाल करनेको कभी जी नहीं चाहता। इसके अतिरिक्त मिट्टी खुजली, दाद, फुन्सी आदि चर्म रोगके लिये भी अचूक औषधि है।

…ी जर्मन सेनाका पैगाम लेकर पराजित मुल्कोंकी छाती रौंदने वाली ये मोटर गाड़ियां …जर्मन सेनाके आत्मसमर्पणके बाद साल्जबर्गसे ६० मील पूर्व लेजेन, आस्ट्रियाके …पास तीसरी अमेरिकन सेनाके ८० वें पैदल डिवीजनमें परिणत कर दी गयीं। …चित्र रिम्स (फ्रांस) में जर्मनीकी ओरसे बिना शर्त आत्मसमर्पणकी शर्तों पर …र होने यानी हिटलरकी तीसरी रीखके अवसानके पांच दिन बाद गत १२ मई, १९४५ को लिया गया था।

मुमताज बेगमका "हुक्म"

पूनाके एक प्रोफेसर, श्री वी० डी० वर्मा के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक अन्वेषणसे इतिहासका एक अद्वितीय लेख—मुमताज बेगमका एक 'हुक्म'—दुनियाके सामने आया है। मुमताज बेगमके इस हुक्मनामेमें 'फरमान' की जगह 'हुक्म' शब्दका उल्लेख है, जिसकी ओर ऐतिहासिकोंका अबतक ध्यान नहीं गया था और अबतक शाही आदेशोंके लिये वे 'फरमान' शब्दका ही प्रयोग करते थे। मुमताज महलके हाथका लिखा हुआ यह पहला प्रमाणपत्र है जिसका ऐतिहासिकोंको पता चला है। प्रोफेसर साहबने इस लेखसे यह निष्कर्ष निकाला है कि रानी राजकीय मामलोंमें दिलचस्पी लेती थीं और उन्हें शासन प्रबन्धमें कुछ अधिकार प्राप्त थे क्योंकि ऊपर जिस 'हुक्म' का उल्लेख किया गया है उसके जरिये कानोजी नामक एक व्यक्तिको खानदेशके एक परगनेकी खोई हुई 'देशमुखी' पुनः प्राप्त हो सकी थी, जैसा कि उक्त 'हुक्म' से स्पष्ट है।

५००० वर्ष पहलेका प्राचीन शहर

आजसे दो वर्ष पहले अमेरिकन प्रो० आल ब्राइटने गेलीलीके एक अत्यन्त प्राचीन शहरका पता लगाया था। विद्वानोंका कहना था कि ईसासे दो हजार वर्ष पूर्व यह शहर मिश्र और दजला तथा फरात नदियोंके देशोंके बीच एक महत्वपूर्ण व्यावसायिक अड्डा था। परन्तु हालकी खुदाईसे पुरातत्ववेत्ताओंने अनुमान किया है कि ईसासे ३हजार वर्ष पूर्व यानी आजसे लगभग ५ हजार वर्ष पहले यह शहर उन्नतिकी चरम सीमापर पहुंच चुका था और इसका निर्माण-काल, यद्यपि अबतक अज्ञात है, अवश्य ही इससे भी कुछ दिन पूर्व ही रहा होगा। खुदाई करनेसे लेक टिबेरियसके दक्षिणी तटपर इसकी स्थिति निश्चित की गयी है। यह शहर 'बेथ इयरम' के नामसे प्रसिद्ध है और दमास्ससे अधिक प्राचीन नहीं तो कम-से-कम उसकी उम्रका तो अवश्य है। इसके नामका उल्लेख 'तालमुदी' साहित्यमें पाया जाता है।

गत ७ मई, को मित्र राष्ट्रोंके समक्ष जर्मनोंके घुटने टेकनेका समाचार पाकर जब कि न्यूयार्कके नागरिकोंके हृदयमें एक ओर आनन्दकी लहरें उठने लगी होंगी, वहां नागरिकों का एक समूह अपने दूसरे प्रबल शत्रु, जापानसे सफल संग्राम करनेका दृढ़ निश्चय लेकर अमेरिकन सेनामें भर्ती हो सैनिक अनुशासन पालन करनेकी शपथ ले रहा है।

चलती चक्की

पुच्छल बननेकी इच्छा रखनेवाले साहित्यिकोंके लिये एक ऐसी साहित्यिक-संस्थाकी स्थापना हो चुकी है, जो चार-पांच रुपयेके खर्चमें साहित्याचार्य, कवि पुंगव, महारथी, सम्राट् आदिकी साहित्यिक पूंछ प्रदान किया करती है ! यह संस्था साहित्यका उद्धार करके ही चैन लेगी। खातिर जमा रखिये, कैटलाग आपकी सेवामें आप ही आप पहुंच जायेगा।

* * * *

योग, तपके लिये जंगलोंकी हवा खाने की जरूरत नहीं। जंगलमें जाकर योगासन लगाइयेगा तो खुफिया विभाग वाले बुरी तरह पीछे पड़ जायेंगे। आप या तो डाकू नम्बर 'एक' समझे जायेंगे या 'मूवमेंट' के फरार !

मुनीश्वर, ऋषीश्वर या योगिराज बनना अब बिलकुल आसान हो गया है। चुटकी बजने भरकी देर नहीं लगती ! एक ऐसी उदार सभाकी स्थापना हो चुकी है जो ढाई-तीन रुपये प्रवेश शुल्क लेकर मुनीश्वर, ऋषीश्वर, योगिराज आदि उपाधियोंकी दुम दिया करती है !

* * * *

ब्लैक-मार्केट केवल व्यापारिक ही नहीं, साहित्यिक ब्लैक मार्केट भी मार्केकी चीज है ! और यहां धर-पकड़का खतरा है ही नहीं ! कवि-सम्मेलन बुलानेका आयोजन कीजिये, फिर देखिये कवियोंकी चोर बाजारी चाल। सेकेंड क्लास टिकट, फी बैठक इतना और फी छक उतना...आदिकी ऐसी अकड़ का सामना करना पड़ेगा कि क्या अकड़ेगी दिल्लीकी मुन्नन बाई ! जो मनमें आगया वही टी० ए० और डी० ए० ! कोई कन्ट्रोल नहीं। कंट्रोल हो भी कैसे ? कंट्रोल तो सरकारी चीज है। सरकार साहित्यिक सरकार थोड़े है जो साहित्यिक कंट्रोल होगा ?

* * * *

अमेरिकन प्रोफेसर डा०डेविसने भारत की वर्तमान स्थितिका वर्णन करते हुए कहा है कि अधनग्न अर्ध,बुभूक्षित भारतीय वस्तुतः कुत्ते-बिल्लीका जीवन बिता रहे हैं !

डेविस महोदय पिछले जन्ममें कवि पुंगव रहे होंगे, तभी तो इतनी दूरकी उपमा सूझी ! यह बताना भी डेविस महोदयका काम होना चाहिये था कि इन कुत्ते-बिल्लियोंका कौर छीनने वालेका क्या नाम होना चाहिये !

* * * *

सम्पादकजीकी मेज पर सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनकी चर्चा छिड़ी हुई थी और कम्पोजीटर प्रूफकी आशामें चुपचाप खड़ा था।

उपाध्यायजीने कहा—"सैनफ्रांसिस्कोमें 'तीन बड़े'की खूब बहार छनी !"

अस्वाभिक आश्चर्यके कारण कम्पोजीटर के मुंहसे आपही आप निकल पड़ा—"तो क्या, वहां भी यही बड़े बिकते हैं, मालिक !"

* * * *

मुर्दे अब दफनाये न जायेंगे। विज्ञान उन्हें तरह-तरहके उपयोगमें लाना चाहता है। मुर्देके अंग-प्रत्यंगको लेकर बहुत बड़ा 'बिजनेस' चल पड़ेगा। सर्वत्र मुर्देकी एक-से-एक दूकानें खुलेंगी, बैंकोंकी स्थापना होगी और बड़े-बड़े जहाजोंके जरिये मुर्देका आयात-निर्यात हुआ करेगा। मुर्दा, मुर्दा जीवित को नवजीवन दिया करेगा। मुर्देकी टांग काट कर लंगड़ेमें जोड़ दी जायगी, लंगड़ा पर्वतकी सैर करने लगेगा !—मुर्देकी जीभ काट ली जायेगी, गूंगा बोलने लगेगा ! अर्थात प्रत्येक बेकार अंग तथा इन्द्रियोंका मुर्देसे परिवर्तन किया जायेगा। अंधे तथा बेकार आंख वालों को मुर्देकी आंखें लगा कर अमेरिकन वैज्ञानिकोंने पूरी सफलता प्राप्त की है। अन्य प्रयोगकी भी परीक्षा की जा रही है। आंखों के संग्रहके लिये वहां उन्नीस 'नेत्र-संग्रहालयों' की स्थापना हुई है जो मुर्देकी आंखोंका संग्रह किया करते हैं। राष्ट्रपति रूजवेल्टके मुर्दे की ओर नेत्र-संग्रहालयोंका ध्यान क्यों नहीं गया यह आश्चर्यका विषय है ?

इस नवीनतम वैज्ञानिक देनके अनुसार मुर्देकी आंख जीवित अंधेकी आंख होकर देखनेका काम खूब करती हैं किन्तु कनखी-मटकीका काम किस पैमाने पर कर सकती हैं यह अभी प्रकट न हो पाया है।

* * * *

विज्ञान मनुष्यतामें पशुताका आरोप निश्चित तथा प्रमाणित रूपसे करना चाह रहा है। पशु वनस्पति खाता है और मनुष्य वनस्पति भी !

'मनुष्यकी काया और जानवरका दिल' वाली कहावत सत्य सिद्ध हो गयी। हृदय रोग पीड़ितोंका कलेजा निकाल कर पशुओं का कलेजा लगाया गया है और सफलता मिली है। इस तरह कलेजेकी फीटिंगसे मानव स्वभावका परिवर्तन किया जा सकेगा। नमक हराम नौकरको, कलेजेमें कुत्तेका दिल फिट करके, नमक हलाल बनाया जा सकेगा प्रेमकी दुनियाको अब कठोरताके आघातसे फुरसत मिल जायेगी। न तो 'दिल' बेदर्द हो सकता है अब और न सैहम ये पीर।—आपरेशन कराया, और जानवरका दिल फिट कर लिया कि छुट्टी मिल गयी !

—श्री "दुखिया"

गीत

(लेखक—श्री "दुःखी" सिरसा)

सुकुमार करों को ले करमें, पल, दो पल ही मुस्का पाया।
निशि ने था नव श्रृङ्गार किया।
शशि पर अपना सब वार दिया।
कुछ प्यार दिया, कुछ प्यार लिया।
जी भर कर देख न पायी थी, प्राची के हाथ क्षितिज पर से—
आलोक, लोक में था छाया।
सुकुमार करों को ले कर में, पल, दो पल ही मुस्का पाया॥
दो दिन जीवन के खेल खल।
दो दिन जीवन से हेल मेल।
सुख दुःख जीवन के हाथ झेल।
अन्तिम उच्छ्वासें उसने लीं, सौरभ से सुरभित कर कानन—
था कुसुम डाल पर मुरझाया।
सुकुमार करों को ले करमें, पल, दो पल ही मुस्का पाया॥
ऊषा का चुम्बन ले दिनकर।
हंसता आता था वसुधा : पर।
वह देख प्रतीची का अम्बर।
जीवन की अन्तिम लय साथी, अवसाद भरा अवसान देख—
था कवि का मानस भर आया।
सुकुमार करों को ले करमें, पल, दो पल ही मुस्का पाया॥
सपनों में साजन आए थे।
हम जी भर कर मुस्काए थे।
कुछ गीत प्रीत के गाए थे।
क्षण भर की बस वह दुनियां थी, अम्बर से टूट पड़े तारे—
मैं कर मल मल कर पछताया।
सुकुमार करों को ले करमें, पल, दो पल ही मुस्का पाया॥

ग्राम उद्योगकी सफलता कैसे हो !

(लेखक—महात्मा गांधी)

मैंने ग्रामउद्योगोंको खादीसे अलग करके उनको ग्रह कहा है और खादी अर्थात् चर्खा या चक्रको सूर्यकी उपमा दी है। सचमुच इस अलगपनका कारण नहीं है। खादी भी ग्राम उद्योग है फिर भी खादीका कुछ खास स्थान है और खादीने अपनी जगह ले ली तब तो हम दूसरे उद्योगोंकी बात कर सकें।

आज जो विचार करना है वह खादीकी खास जगह सिद्ध करनेके लिये नहीं है, लेकिन ये सब चीजें कैसे स्थायी बन सकें उसे ढूंढनेके लिये है।

एक मार्ग है मनुष्येतर शक्ति ... यन्त्र चलाकर एक जगह पर लोगों ... की चीजें बनाना और वह भी ... लोगोंकी मजदूरी लेकर ! इसका ... है कि धनिक वर्ग बढ़ता है और ... बढाना धर्मसा हो जाता है। सब ... अर्थात् सब मनुष्येत्तर शक्तियां राज ... आधीन की जाय तो भी मेरी नजर ... फर्क नहीं होता है। क्योंकि हाजत ... धर्म राजसत्ताके लेनेसे बदलेगा नहीं, ... दृढ़ बन सकता है। हाजतोंको बढ़ाने ... छोटे-छोटे धनिकोंके हाथमेंसे रा ... नामक बड़े धनिकके हाथमें आ ... उस सत्ताके काम पर लोगोंकी मुहर ... ऐसा ही इंग्लैंड, अमेरिकामें ... रूसको मैं जानबूझ कर छोड़ता हूं ... उसके कामका आरंभ ही हुआ है। ... तुलना करनेका साहस मैं नहीं करता ... आशा रखूंगा कि रूस कुछ अनोखी ... ही कर बतावेगा। लेकिन मुझे कहना ... कि मेरे दिलमें उसकी सही सफलता ... शक है। अर्थात् अगर सचमुच गरीब ... मात्रके हाथोंमें सब धन जायगा ... लोगोंकी मानसिक और व्यक्तिगत ... सुरक्षित होगी तो मैं उसे बड़ी ... समझूंगा। अहिंसाके बारेमें जो ... रखता हूं उसे बदलना होगा।

अब असली बात पर आता हूं। ... अमेरिकामें यांत्रिक-शक्तिका साम्रा ... इससे उलटा हिन्दुस्तानमें मनुष्य ... साम्राज्यके पुनरुद्धारकी निशानीका ... उद्योग हैं। दूसरे शब्दोंमें कहें तो ... की बात है। इसका अर्थ यह हुआ ... अंग्रेजी सभ्यतामें भौतिक शक्तिसे थोड़े ... दूसरों पर सत्ता चलाते हैं। हिन्दु ... चरखा संघ, ग्राम उद्योग संघ इत्यादि ... मनुष्यमात्रकी व्यक्तिगत शक्ति ... महत् कार्य करनेकी कोशिश की ... इस दृष्टिसे अंग्रेजी सभ्यताकी वृद्धि ... काम लगता है जब मनुष्यकी ... शक्ति बढ़ाना और उसे संगठित करना ... कठिन लगता है।

दूसरी ओरसे देखें तो कहा ... थोड़े मनुष्य भाफ इत्यादिके मार्फत ... पर साम्राज्य चलावें वह अन्तमें ... होगा और उनमें अनीति इत्यादि ... है। करोड़ों मनुष्योंकी शक्तिसे ... चलानेसे अनीति कम होती जाती ... व्यर्थताकी गुंजाइश ही नहीं रहती। ... हमारा आधार मनुष्य-शक्तिके साथ ... शक्ति है; उसमें ईश्वर-शक्तिका ... नहीं रखा जाता है। इसका सार ... ग्राम उद्योगके बारेमें हम अगर ... सच्ची मदद लेकर न बढ़ें तो ... है। अंग्रेजी रीतिमें सफलता ... वस्तुतः उसमें सिवा निष्फलताके ... नहीं है। उद्यम मात्र नष्ट हो जाता है ...

... हित बस जिनके मनमाहीं।
... कहं जग दुर्लभ कछु नाही ॥

हां या नहीं ?

—०*०—

भारतवर्षके वर्तमान राजनीतिक गति-... मिटानेके लिये ब्रिटिश सरकारके ... प्रस्तावोंकी घोषणा गत बृहस्पतिवारको ... वायसराय लार्ड वावेलने नयी ... रेडियो द्वारा ब्राडकास्ट की है। ... नवीन योजनाकी रूपरेखा वही है ... का आभास हम गताङ्कमें दे चुके हैं। ... घोषणाके साथ साल जेलोंमें बन्द कांग्रेस ... कमेटीके सदस्योंको तत्काल छोड़ ... हुक्म भी जारी किया गया है और वे ... दिये गये हैं।

... इन प्रस्तावोंका सम्पर्क केन्द्रमें एक ... शासन समिति (एक्जीक्यूटिव ...) के संगठनसे है। शासन विधानमें ... परिवर्तन नहीं होगा। इन प्रस्तावोंके ... गठित केन्द्रीय सरकार १९३५ के ... आफ इण्डिया एक्ट द्वारा प्रदत्त ... अधिकार-सीमाके बाहर नहीं जा ...। समितिके सभी सदस्य, वायसराय ... जंगी लाटको छोड़ कर, भारतीय होंगे। ... और अर्थ विभाग, जो अब तक अंगरेजों ... मातहत रहते आये हैं, अब भारतीयोंके ... रहेंगे। फौजी लाट युद्ध-सदस्यकी ... से समितिमें रहेंगे। वायसराय इस ... समितिके अध्यक्ष होंगे। इस तरह ... विभागको छोड़ कर बाकी सब विभाग ... भारतीयोंके मातहत आ जायेंगे। वायसराय ... वीटो (विशेषाधिकार) पहलेकी तरह ... सुरक्षित रहेगा। अवश्य ही वायसरायने ... बातका आश्वासन दिया है कि अकारण ... वीटोके अधिकारसे काम न लिया ...। परराष्ट्र विभाग भी, जो अब तक ... वायसरायके मातहत रहता आया है, ... एक भारतीय सदस्यके जिम्मे रखा ...। अवश्य ही उसका सम्बन्ध केवल ... भारतके मामलोंसे रहेगा। एक नयी ... की गयी है। डोमिनियनोंकी तरह ... हिन्दुस्तानमें भी एक ब्रिटिश हाई कमिश्नर ... जो हिन्दुस्तानमें ब्रिटेनके व्यावसा- ... और इसी तरहके अन्य स्वार्थोंका प्रति- ... करेगा। समितिमें हिन्दुस्तानके ... मुख्य सभी सम्प्रदायोंका प्रतिनिधित्व ...। संख्यामें सवर्ण हिन्दू और मुसल- ... बराबर रहेंगे। इस प्रस्तावित नयी ... के सदस्योंका चुनाव राजनीतिक ... से परामर्श करनेके बाद स्वयं वायस- ... करेंगे। नियमकी रक्षाके लिये सम्राटकी ... भी आवश्यक होगी।

... वायसराय द्वारा आमन्त्रित सलाहकार ... की बैठक २५ जूनसे आरम्भ होगी। ... २१ सदस्योंमें कांग्रेसके ९ मुस्लिम ..., गैर कांग्रेसी हिन्दू २, गैर लीगी ... १ तथा यूरोपियन, अछूत और सिख सम्प्रदायका एक-एक प्रतिनिधि है। यह बात उल्लेखनीय है कि हिन्दूमहासभाका एक भी प्रतिनिधि नहीं है। इन सदस्योंको वावेल योजनामें किसी तरहका संशोधन परिवर्तन करनेका अधिकार नहीं है। किन्तु यदि यह कानफरेंस सर्व सम्मतिसे कोई योजना वैधानिक समझौतेके सम्बन्धमें उपस्थित कर सके तो उसे ब्रिटिश सरकार सहर्ष स्वीकार करेगी, ऐसा एक सरकारी वक्तामे कहा है।

संक्षेपमें यह है कि ब्रिटिश सरकारके नये प्रस्तावोंका स्वरूप। इन प्रस्तावोंका सम्बन्ध केवल ब्रिटिश भारतके शासनसे हैं। नरेशों और सम्राटके प्रतिनिधिके बीचका सम्पर्क पूर्ववत रहेगा। उसमें किसी तरहका परिवर्तन न होगा। वायसरायने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि इस कामचलाऊ सरकारके संगठनसे अन्तिम वैधानिक समझौतेके मार्गमें किसी तरहकी रुकावट उपस्थित न होगी। उसके लिये मार्ग सदा खुला रहेगा। स्थायी समझौतेके मार्गको सहज और सरल बनानेके उद्देश्यसे ये प्रस्ताव देशकी विभिन्न पार्टियोंके सामने रखे गये हैं। इन प्रस्तावों पर विचार करने के समय वह बात याद आ जाती है जो महात्मा गांधीने कुछ दिन पहले कही थी। गांधीजीने कहा था कि वायसराय जो भी प्रस्ताव सामने लावें वह स्वतन्त्रताके आधार पर होना चाहिये। इन नवीन प्रस्तावोंका स्वतन्त्रतासे कोई सम्पर्क नहीं है। लार्ड वावेलने, शायद जानबूझ कर ही, पूर्ण स्वायत्त शासन शब्दका व्यवहार किया है। आपने कहा है कि ये प्रस्ताव देशको पूर्ण स्वायत्त शासनकी ओर अग्रसर करनेवाले हैं। कांग्रेसके नेतृत्वमें देश स्वायत्त शासन स्वीकार करनेकी स्थितिसे बहुत आगे बढ़ आया है। सैनफ्रैंसिस्कोमें स्वायत्त शासन (सेल्फ गवर्नमेंट) और स्वतन्त्रताके प्रश्न पर ब्रिटिश प्रतिनिधियोंने जो मनोभाव दिखाया है उससे यह स्पष्ट है कि ये दोनों शब्द पर्यायवाची नहीं है। अतः गांधीजीके उक्त वक्तव्यके अनुसार लार्ड वावेलके प्रस्तावोंमें, स्वतन्त्रताके दृष्टिकोणसे, हमारे लिये कोई आकर्षण नहीं है। फिर भी जब हम देखते हैं कि राजगोपालाचार्य और भूलाभाई देसाई जैसे नेता, मानो लेबर लीडर मि० एटलीके स्वरमें स्वर मिला कर, यह कह रहे हैं कि हमें अवसरसे लाभ उठाना चाहिये तो यह उचित और वांछनीय है कि हम यह देखें कि क्या सचमुच इन प्रस्तावोंसे लाभ उठाया जा सकता है। राजाजी कहते हैं कि इसमें सन्देह नहीं कि मोल तोल करने की हमारी शक्ति आज तीन वर्ष पूर्वकी अपेक्षा कम हो गयी मालूम पड़ रही है, किन्तु संसारके मामलोंमें भारतका महत्व अपना स्थायी स्थान रखता है। यदि नेता केन्द्र और प्रान्तोंमें भी शासन सूत्र अपने हाथमें लें तो जन हितका काम करनेकी सुविधा और अधिक बढ़ जायेगी। हम अकसर 'नहीं' कहा करते हैं इस बार कमसे कम पुराने ढर्रेको बदलनेकी खातिर ही 'हां' कह कर यह देखना चाहिये कि क्या होता है? हम दलदलमें फंसी हुई गाड़ीको बाहर निकाल ले आयेंगे। यदि हम उसे दलदलसे निकाल कर सख्त जमीन पर रख सकें तो बहुत बड़ा काम और लाभ होगा। उस हालतमें हम किसी न किसी तरह उसे ठीक रास्तेसे अपने मार्ग पर ले ही चलेंगे।

राजाजी आजकल कट्टर आशावादी हो गये हैं। क्रिप्स प्रस्ताव, जो स्पष्ट ही वावेल के प्रस्तावोंसे अधिक उदात्त थे, जिनका आधार राजनीतिक था, कांग्रेस अस्वीकार कर चुकी है। जिन बातोंको लेकर क्रिप्सके साथ कांग्रेसका वार्तालाप भंग हो गया था, वायसरायका वह विशेषाधिकार (वीटो) तथा रक्षाका उत्तरदायित्व हस्तान्तरित न करनेकी वह मनोवृत्ति वैसी ही बनी है। बल्कि उससे अधिक कठोर हो गयी है क्योंकि क्रिप्सके प्रस्तावोंमें रक्षासे सम्बन्ध रखने वाले बहुतसे असैनिक विभाग कौंसिल के भारतीय सदस्यको देनेकी बात थी। किन्तु इनमें वह भी नहीं है। तब राजाजी अवसरसे लाभ उठानेकी बात कहते हैं तो क्यों? तब १९४२ था अब १९४५ है। इन तीन वर्षोंके अन्तरने हिन्दुस्तान और ब्रिटेनकी स्थितिको बिलकुल बदल दिया है। इसका आभास राजाजीने अपने (ऊपर लिखे) वक्तव्यमें दिया है। इसके सिवा आज देशमें चारो तरफ अनाचार और अनीति फैली हुई है। ब्रिटिश नौकरशाही और स्वार्थ लोलुप भारतीय पूंजीपतियोंने मिलकर देशके जीवनके साथ निष्ठुर परिहास किया है। अतः राजाजी चाहते हैं कि वस्तुस्थितिको देख सुन कर काम किया जाना चाहिये। एक प्रयोग ही सही। इसमें सन्देह नहीं कि कांग्रेस वर्किंग कमेटी वस्तु स्थिति पर दृष्टि रख कर ही लार्ड वावेलके प्रस्तावों पर किसी निर्णय पर पहुंचेगी। इस तरहकी विकट स्थितिमें व्यक्तिगत रायको जरा भी महत्व नहीं दिया जा सकता। देना उचित भी नहीं है। कांग्रेस वर्किंग कमेटीके निर्णयकी देश और राष्ट्र उत्सुकताके साथ प्रतीक्षा कर रहा है। इसमें जरा भी सन्देह नहीं कि कांग्रेसका जो भी निर्णय होगा देश उसे स्वीकार करेगा।

स्वागत—

वायसरायकी घोषणाके अनुसार कांग्रेस वर्किंग कमेटीके शेष आठो सदस्य, राष्ट्रपति मौलाना आजाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू डा० राजेन्द्रप्रसाद, सर्दार वल्लभभाई पटेल, आचार्य कृपलानी, आचार्य नरेन्द्रदेव, डा० पट्टाभि सीतारमैया और श्री शंकरराव देव, जेलसे छोड़ दिये गये। जैसा श्रीमती पंडितने कहा है इन नेताओंको छोड़ कर ब्रिटिश सरकारने सही दिशामें कदम रखा है। अन्य राजबन्दियोंकी रिहाईके प्रश्नको वायसरायने प्रस्तावित नवसंगठित सरकारके ऊपर छोड़ा है। हम अपने मुक्त तपस्वी नेताओंका हृदयसे स्वागत करते हुए आशा करते हैं कि शेष राजबन्दी भी शीघ्र ही मुक्त होंगे।

रामराज्य—

कायदे आजम मि० जिन्नाकी सबसे बड़ी शिकायत यह है कि महात्मा गांधी अब भी भारतमें रामराज्यकी कल्पना करते हैं। शायद इसलामी हुकूमतका प्रतिद्वन्द्वी वे इस रामराज्यको समझते हैं क्योंकि उनकी आंखोंके सामने सदा इसलामी हुकूमतका चित्र घूमता रहता है। भारतवर्षके एक भागपर इसलामी हुकूमत कायम करनेके नशेने उनको असलीयतसे बहुत दूर फेंक दिया है। जब आदमी अपने दर्पणसे दूसरेको भी देखता है तब वह उसके असली स्वरूपके सम्बन्धमें कभी सही नतीजेपर नहीं पहुंच सकता। यही हाल मि० जिन्नाका है। वे अपने मनोकल्पित मुस्लिम राज्यकी तरह रामराज्यको भी देखते और समझते हैं। हकीकत यह नहीं है। गांधीजी इस सम्बन्ध में एक नहीं अनेक बार अपनी राय स्पष्टसे स्पष्टतर शब्दोंमें प्रकट कर चुके हैं। अभी हालमें "दो प्रश्न" शीर्षक एक लेखमें गांधीजीने फिर स्पष्ट शब्दोंमें बताया है कि रामराज्यसे उनका क्या तात्पर्य है। गांधीजी कहते हैं कि "धार्मिक दृष्टिसे रामराज्यको भूलोकपर ईश्वरका राजत्व कहा जा सकता है। राजनीतिक दृष्टिसे यह सम्पूर्ण लोकतंत्र है जिसमें सम्पन्न और निस्व, वर्ग, जाति अथवा धर्म अथवा लिंगभेदके आधारपर प्रतिष्ठित असमानताओंका नाम-निशान नहीं रह जाता। इसमें (रामराज्यमें) भूमि और राज्यपर जनताका अधिकार होता है, न्याय तत्काल और पूर्णतया सस्ता होता है। इसीसे रामराज्यमें पूजा, भाषण और लिखने (प्रेस) की स्वतन्त्रता है। यह सब इसलिये प्राप्त है कि यहां स्वेच्छासे स्वीकृत कानून और नैतिक संयमका शासन है।" गांधीजीने बताया है कि इस तरहका राज्य सत्य और अहिंसाके आधार पर ही चल सकता है। इस तरहके राज्यमें समुन्नत, सुखी और आत्मनिर्भर गांव और ग्राम्य-समाज होगा। हो सकता है कि यह स्वप्न हो जो कभी पूरा न हो। अपने इस स्वप्नको शीघ्र-से-शीघ्र उपाय द्वारा पूरा करनेका प्रयत्न करते हुए इस स्वप्नलोकमें रहनेमें ही गांधीजीका सुख मिलता है। एक बात सत्य है कि जब तक संसारकी बड़ी-बड़ी शक्तियां इस स्वप्नको पूरा करनेकी तरफ अपना ध्यान न देंगी तब तक संसारमें शान्ति स्थापित करनेका उनका प्रयास भी स्वप्नकी सीमासे आगे नहीं बढ़ सकता।

विजय पोल है—

ब्रिटिश पार्लमेण्टका निर्वाचन समीप है। सभी दल अपनी-अपनी तैयारी और पेशबन्दी करनेमें लगे हैं। निर्वाचन सम्बन्धी प्रचार और सभाएं हो रही हैं। अपने दलको जितानेके लिये दूसरे दलके खिलाफ तरह-तरहके अभियोग-आरोप मढ़े जा रहे हैं। यद्यपि निर्वाचन क्षेत्रमें प्रधान तीन दल हैं—कंजरवेटिव, लेबर और लिबरल,—किन्तु कांटेकी लड़ाई दो दलोंके बीचमें ही है। कंजरवेटिव और लेबर निर्वाचकोंके बहुमतको जीतनेके लिये तरह-तरहके पैतड़े बदल रहे हैं। इसी प्रसंगमें ब्रिटेनके मजदूर स्वतन्त्र दलके नेता मि० फ़ेनर ब्राकवेने भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलनकी ओरसे गांधीजीका सन्देश मांगा है। वह सन्देश चुनावके पहले मि० चर्चिलके निर्वाचन-क्षेत्रमें होनेवाली सभामें, जिसमें भारतकी समस्या को सामने

रखा जायेगा, सताया जायेगा। महात्मा गांधीके प्राइवेट सेक्रेटरी श्री प्यारेलालने गांधीजीका निम्नलिखित सन्देश भेजा है:— "भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन संसारकी एशियायी, नीग्रो तथा अन्य शोषित जातियों की स्वतन्त्रताका आन्दोलन है। पश्चिमी मोर्चेपर विजय तथा पूर्वकी आसन्न विजय, भारतकी स्वतन्त्रताको केन्द्रीय तथ्य माने बिना, ढोलमें पोल सिद्ध होगी। जो दल सम्पूर्णतया और सचाईके साथ इस उद्देश्यके लिये प्रयत्नशील होगा उसीकी विजयकी कामना की जा सकती है।"

विशेषाधिकारकी समस्या—

विश्वरक्षा सम्मेलनके पांच महान प्रतिनिधियोंने विशेषाधिकार समझौते (वीटोके प्रश्न) पर एक संयुक्त वक्तव्य दिया है। यह वक्तव्य कानफरेन्स कमेटीके सामने पेश किया गया था। वक्तव्यमें यह बताया गया है कि कौंसिलके निर्णयको कार्यमें परिणत करनेकी स्थिति और निर्णयमें पहुंचनेके पहले आवश्यक कार्यवाही, जांच-पड़ताल आदिकी स्थिति, ये दो तरहके काम सिक्यूरिटी कौंसिलके सामने उपस्थित होंगे। निर्णयको कार्यमें परिणत करनेके सम्बन्धमें पांचों स्थायी सदस्योंका मत आवश्यक होगा, किन्तु इसके साथ यह शर्त लगा दी गयी है कि झगड़ेमें संलग्न दलको वोट देनेका अधिकार न होगा। तात्पर्य यह है कि किसी निर्णयको तभी कार्यमें परिणत किया जा सकता है जब पांचों सदस्योंकी अथवा झगड़ेसे संलग्न पार्टीको बाद देकर शेष सदस्योंकी सम्मति होगी। विशुद्ध कार्यवाईके मामलेमें, अर्थात् कौंसिलके सामने अमुक झगड़ा लाया जावे या नहीं, उसकी जांच-पड़ताल हो या नहीं। एवं इससे सम्बन्ध रखनेवाली अन्य आवश्यक बातोंपर विचारके सम्बन्धमें विशेषाधिकार (वीटो) से काम न लिया जायेगा। इस सम्बन्धमें तो सिक्यूरिटी कौंसिलके सात सदस्योंका बहुमत ही निर्णायक होगा। वीटो इसपर लागू न होगा। पांच महानका यह निर्णय वीटो कमेटीने २ के विरुद्ध ३० वोटोंसे मान लिया है। १५ देशोंने किसी पक्षमें वोट नहीं दिया। आस्ट्रेलियाके प्रतिनिधि डा० इवाटने यह संशोधन उपस्थित किया था कि किसी आततायीके विरुद्ध युद्ध घोषणाके प्रश्नपर ही वीटो अधिकारका प्रयोग किया जाये। किन्तु यह संशोधन गिर गया। वीटो समझौताके समर्थनमें यह बात कही गयी है कि याल्टा फारमूलाके अनुसार पांच स्थायी सदस्य मनमानी नहीं कर सकते, क्योंकि कौन्सिलमें इनके किसी सर्वसम्मत निर्णयके साथ दो गैर स्थायी सदस्योंकी स्वीकृति आवश्यक है। दूसरे शब्दोंमें, पांच अस्थायी सदस्य यदि चाहें तो वीटोका प्रयोग कर सकते हैं। यह भी कहा गया है कि यह बात पहले हीसे कल्पना क्यों कर ली जाती है कि स्थायी सदस्य इच्छापूर्वक कौंसिलके किसी कार्यको न होने देनेके लिये विशेषाधिकारसे काम लेगा। यह तो समय ही बतायेगा कि छोटे-छोटे राष्ट्रोंकी इस शङ्काके लिये गुंजाइश थी या नहीं।

पेतांकी सफाई—

फ्रांसको जर्मनीके हाथोंमें सौंप देनेवाले मार्शल पेतां इस समय फोर्ट मोण्ट्रगमें कैद हैं। देशके साथ विश्वासघात करनेका अपराध उन्होंने नहीं किया, आज वे यह सिद्ध करना चाहते हैं। उनसे पूछनेपर उन्होंने कहा कि उस समय मैंने जो कुछ किया वह सब देश हिताय। उस समयकी परिस्थिति ही ऐसी थी। मैंने जो रास्ता ग्रहण किया था उसके सिवा अन्य मार्ग न था। स्वयं मि० चर्चिलने १९४० में सिर्फ युद्ध बन्द करनेकी बात ही नहीं बल्कि पृथक सन्धि करनेका भी समर्थन किया था। बहरहाल आर्मिस्टिस संधि नहीं है। अपनी सफाईमें पेतांने यह भी बताया है कि जेनरल वेगां, एडमिरल डार्लां और जेनरल जिरोको पाकर मित्र राष्ट्रोंने जो लाभ उठाया, यह सम्भव न होता यदि पेतां हृदयसे मित्र राष्ट्रोंके शत्रु होते। जर्मनोंको ऊपरसे सन्तुष्ट रखना आवश्यक था यही कारण है कि पेतांको जर्मनों की बात मानकर लवालको प्रीमियर नियुक्त करना पड़ा था। लवालको बीचमें रखकर पेतांको अपनी नीतिकी वास्तविक दिशा छिपाये रखनेमें सफलता मिली। अपनी सफाईमें ये बातें पेश करते हुए मार्शलने कहा है कि "मैंने जर्मनोंको आवश्यक और महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं दिया। मेरी नीति घुत्ता देनेकी थी। लावालको मुझे बर्दाश्त करना पड़ा क्योंकि यह रिआयत आवश्यक थी और वे स्वयं—यद्यपि वे यह नहीं जानते थे—फ्रांसके लिये लाभप्रद ही साबित हुए। १९४० में आर्मिस्टस करके मैंने हजारों सैनिकोंको बचाया और फ्रांसकी पोलैण्ड जैसी दुर्गति होनेसे रक्षा की।" यह है मार्शल पेतांकी सफाई जिसे आज लोग दण्डसे बचने का अच्छा बहाना समझेंगे। किन्तु यह बात तो माननी ही पड़ेगी कि मो० रेनांके अचानक उत्तरदायित्वसे हट जानेपर जिस स्थिति में मार्शल पेतांने फ्रांसकी बागडोर पकड़ी थी वह अत्यन्त भयङ्कर और अन्धकारपूर्ण थी। आत्मसमर्पण करनेके सिवा मार्शल पेतांके सामने दूसरा मार्ग न था। फ्रांसकी सैनिक और युद्ध सामग्री की स्थिति ऐसी थी कि विजयोन्मत्त हिटलरवाहिनीकी उस समय दुर्निवार गतिको रोक सकना फ्रांसकी शक्ति के बाहर था। इस दृष्टिसे मार्शल पेतांकी सफाई एक हदतक सही समझी जा सकती है।

बर्लिन फिर उठेगा—

चार हिस्सोंमें जर्मनीके बटवारेकी संयुक्त घोषणा हो गयी। घोषणा रूस, ब्रिटेन, अमेरिका और फ्रांसकी तरफसे क्रमशः मार्शल जुकोव, फील्ड मार्शल माण्टगोमरी, जेनरल आइसेन हावर और जेनरल देलेनके हस्ताक्षरोंसे हुई है। रूसके अधिकार में पूर्वका सम्पूर्ण हिस्सा, उत्तर पश्चिम ब्रिटेन, दक्षिण अमेरिका और पश्चिम फ्रांस के अधिकारमें रहेगा। मास्कोने इस बटवारे के सम्बन्धमें यह बात स्पष्ट कर दी है कि वर्तमान व्यवस्थाका यह अर्थ नहीं है कि जर्मनीको टुकड़े-टुकड़े करके उक्त चारों देशों ने अपनी-अपनी सरहदके भीतर डाल लिया है। इस प्रकारकी व्यवस्था करनेका कारण यह है कि जर्मनीमें ऐसी कोई केन्द्रीय शक्ति इस स्थितिमें नहीं थी कि वह शान्ति और व्यवस्था बनाये रख सकती अथवा विजयी राष्ट्रोंकी मांगोंको पूरा कर सकती। यही कारण है कि जर्मनीमें उक्त शक्ति और अधिकार चारों मित्र राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंके हाथोंमें रखा गया है। जर्मनीको विजेताओंने यह आश्वासन दिया है कि जर्मनीका अस्तित्व कायम रहेगा। इसके साथ-साथ मित्र शक्तियां जर्मनीको यह बताना चाहती हैं कि मानवताके प्रति उसने जो अपराध किया है उसका कैसे उसे प्रायश्चित्त करना चाहिये तथा कैसे फिर वह राष्ट्रमण्डलमें अपना पूर्व स्थान प्राप्त कर सकता है। जर्मनी के सम्बन्धमें रूसका रुख बिलकुल साफ है। जर्मनीसे नाजीवादका समूल सम्पूर्ण विनाश करके रूस जर्मनीको समाजवादी दिशामें अग्रसर करना चाहता है। जर्मनीकी जनतासे रूसका कोई द्वेष नहीं है। यह बात विजयी लाल सेनाके आचरण से बिलकुल स्पष्ट है। जर्मन लाल सेनाका इतना सुन्दर भद्रोचित और मानवोचित व्यवहार देख कर आश्चर्य चकित हो गये हैं। बर्लिनमें आज सामूहिक समारोहोंमें "बर्लिन फिर उठेगा" गीत गाया जा रहा है। लाल सेनाके अधिकारी भी इन संगीत समारोहोंमें शामिल होते और जर्मनोंके साथ मिल कर "बर्लिन फिर उठेगा" गाते हैं। इस तरहके सौजन्य और सहानुभूति पूर्ण व्यवहारने जर्मनोंके हृदयसे रूसके प्रति द्वेष और घृणाको हटा कर सम्मानका भाव पैदा करनेमें सहायता पहुंचायी है। यद्यपि अन्तिम अधिकार और नियन्त्रण सोवियट कमाण्डेण्टके हाथमें है किन्तु व्यवहारतः बर्लिनका शासन भार बर्लिनके चीफ बर्गो मास्टरके हाथमें है। इसका परिणाम भी सुन्दर दिखायी दे रहा है। शहरके पुनर्निर्माणका कार्य द्रुत गतिसे हो रहा है। जर्मन सब कामोंमें रूसको प्रेम पूर्वक सहयोग दे रहे हैं। इसमें सन्देह नहीं कि रूसकी यह सुन्दर नीति फल लायेगी और रूस द्वारा अधिकृत जर्मनी यदि शीघ्र ही लाल हो जाये तो कोई आश्चर्य नहीं है। इसीमें संसारका हित है।

मास्कोमें पोल नेता—

रूसी सैनिक अधिकारियों द्वारा पोलैंड के १६ नेताओंकी गिरफ्तारीको लेकर सैनफ्रैंसिस्कोमें मि० ईडेन और मि० स्टेटीनियसने सनसनीखेज स्थिति उत्पन्न कर दी थी। पोलैण्डकी समस्या पर मो० मोलोटोव से वार्तालाप करनेसे इनकार कर दिया था और यह कहा था कि इस सम्बन्धमें जब तक मास्को पूरी कैफियत न देगा ब्रिटिश और अमेरिकन सरकारें पोलैण्डके प्रश्न पर उससे वार्तालाप करनेमें असमर्थ हैं। अब समाचार आया है कि खास पोलैण्ड एवं विदेश स्थित १२ पोलिश नेता अस्थायी पोलिश सरकारके पुनर्संगठन पर वार्तालाप करनेको मास्को पहुंच गये हैं। वाशिंगटन, मास्को और लन्दनमें एक साथ इस आशय की घोषणा की गयी है कि "विचार परामर्शके लिये जो आमंत्रित किये गये [illegible] वर्तमान अस्थायी पोलिश सरकारके [illegible] तथा पोलैण्ड एवं विदेश स्थित अन्य [illegible] तन्त्रवादी नेता हैं। उल्लेखनीय [illegible] है कि लन्दनस्थ बनी हुई [illegible] अस्तित्व स्वीकार नहीं किया गया। [illegible] फ्रैंसिस्कोमें पोलिश प्रश्न पर [illegible] उत्पन्न होने पर मार्शल स्टालिन [illegible] वक्तव्य दिया था उसमें उन्होंने यह [illegible] कि पोलैण्डकी अस्थायी सरकार [illegible] लुबलिन सरकारके नामसे प्रसिद्ध है [illegible] बिन्दु मानकर ही याल्टाके [illegible] आधार पर नवीन सरकारके पुनर्संगठन [illegible] समस्या हल की जा सकती है। इस [illegible] हैं कि ब्रिटेन और अमेरिकाको अन्तमें [illegible] बात माननी पड़ी। उस समय इन [illegible] सरकारोंने जो अकड़ दिखायी थी कि [illegible] गिरफ्तार १६ पोल नेताओंके सम्बन्धमें पूरी कैफियत न दी जायेगी पोलैण्डके [illegible] पर किसी तरह की बातचीत [illegible] हो सकती वह छू मन्तर हो गयी [illegible] समाचार मिला है कि उक्त गिरफ्तार नेताओंकी आरम्भिक तहकीकात [illegible] हो गयी है और उसकी रिपोर्ट मास्को सुप्रीम फौजी ट्रिब्यूनलके पास भेज दी [illegible] है। शीघ्र ही विचार आरम्भ होगा। [illegible] पोलैण्डकी सरकारके पुनर्संगठन पर [illegible] आरम्भ होगा उधर रूसकी सर्वोच्च फौजी अदालतमें उक्त १६ नेताओंके [illegible] राधोंका विचार होगा। ब्रिटेन और [illegible] रिकाको अवश्य ही इस कैफियतसे [illegible] हो गया होगा!

तीसरे युद्धकी तैयारी—

युद्धमें और राजनीतिक क्षेत्रमें [illegible] वादी रूसकी उत्तरोत्तर विजयोंसे [illegible] तमाम प्रतिक्रियाशील शक्तियां [illegible] उठी हैं। प्रत्येक देश और राष्ट्रकी प्रग[illegible] शक्तियोंमें अद्भुत जन-जागरण देख [illegible] स्वार्थी सत्ताधारियोंका व्यग्र और [illegible] शील हो उठना सहज और स्वाभाविक [illegible] सदियों सहस्राब्दियोंसे राष्ट्रकी [illegible] सम्पत्ति और ऐश्वर्य पर एकाधिकार [illegible] बैठे रहनेवाले मुट्ठीभर सत्ताधारी, [illegible] रूसके खिलाफ खुली बगावतका प्र[illegible] रहे हैं। रूस और ब्रिटेन तथा रूस [illegible] अमेरिकाके मैत्री सम्बन्धको ये शान्ति[illegible] विषाक्त करने पर तुले हुए हैं। [illegible] पलने वाले ये स्वार्थी जानते हैं कि [illegible] के बीच यदि अधिक दिनों तक [illegible] बना रह गया तो यह निश्चित है कि [illegible] अस्तित्व विलुप्त हो जायेगा। [illegible] है कि ये खुल्लमखुल्ला और [illegible] तीसरे विश्व-युद्धके लिये उपाय [illegible] करनेमें लगे हुए हैं। अमेरिका और [illegible] इस तरहका संगठित प्रयत्न हो [illegible] है। अभी उस दिन मास्को रेडियो [illegible] रिकाके दो कांग्रेस सदस्योंकी इस [illegible] घृणित कार्यवाहियोंके लिये उन[illegible] आक्रमण करते हुए कहा है कि [illegible] क्लेयर बूथ ल्यूस और सिनेटर [illegible] जो कुछ कर रहे हैं उसका तात्पर्य [illegible] सिवा दूसरा हो ही नहीं सकता [illegible] सोवियट रूसके विरुद्ध युद्धारम्भ [illegible] अपील कर रहे हैं।" और रूसके [illegible] युद्धका अर्थ ही है तीसरा विश्व यु[illegible]

आधुनिक जर्मन साहित्यका भविष्य

(लेखक—श्री गौरीशङ्कर ओझा)

यूरोपके आधुनिक साहित्य-क्षेत्रमें [जिस] प्रकार फ्रेंच, अङ्गरेजी और रूसी [भाषा]ओंके साहित्य श्रेष्ठ माने जाते हैं, उसी [प्रका]र जर्मन साहित्य भी अपना विशेष [महत्व]पूर्ण स्थान रखता है। जर्मन साहित्य [की म]हत्ता और विकास यूरोपके राजनीतिक [इति]हाससे घनिष्ठ रूपसे सम्बद्ध फ्रेञ्च साहि[त्य] द्वारा प्रभावित होता रहा है। जर्मन [साहि]त्य केवल जर्मनीका ही नहीं है, बल्कि [स्विट्]जरलैण्ड, आस्ट्रिया तथा प्रशिया [आदि]के वे भाग भी उसमें सम्मिलित हैं, जो [जाति] और भाषाके कारण जर्मन संस्कृति, [कला] और साहित्यसे सर्वथा हिले-मिले हैं।

[अठ]ारहवीं शताब्दी तक जर्मन साहित्य [पर प्र]वीनवादका विशेष प्रभाव रहा। उस [समय ज]र्मन साहित्यकी ऐसी अवस्था नहीं [थी] जिसके विषयमें जर्मन जातिको [कुछ] अभिमान होता। उस समय [जर्मनी]में फ्रेंच साहित्य और संस्कृतिका पूर्ण [प्रभाव] था। उन्नीसवीं सदीमें लेसिंग, हर्डर, [गेटे औ]र शिलर आदि महान साहित्यकारों [ने नाट]क, उपन्यास, कहानी और काव्य-[रचनाओं] द्वारा जर्मन साहित्यका जो उत्थान [किया उ]सकी यह विशेषता थी कि वह उस [समय वि]श्व भरके साहित्यका स्वागत करनेके [लिये उत्सु]क था। यही कारण है कि पिछली [शताब्दि]योंसे जर्मन विद्वान और साहित्यकार [विश्वमें] महत्वपूर्ण स्थान पाते रहे हैं।

[उन्]नीसवीं शताब्दीके प्रारम्भमें जोहेन [पाल रि]शरकी रोमाण्टिक कहानियोंने सारे [जर्मन] साहित्यपर विशेष प्रभाव डाला। [यद्यपि] रिशटर अपनी कहानियोंके कारण [जर्मनीका] सबसे अधिक प्रसिद्ध जर्मन रोमा[ण्टिक क]हानीकार हुआ है तथापि उससे भी [अच्छी] रोमाण्टिक कहानियां टिएक,आरनिम, [ब्रेन्टानो], फोके, क्लेइस्ट और इमरमैनकी हैं। [इ]न कहानी-लेखकोंने अपनी जो [कहानियां] प्रस्तुत कीं, उनसे संसारका कहानी [साहित्य] उन्नत हुआ है और साथ ही [कहानी-]कलाका भी विकास हुआ। जर्मनी [में राज]नैतिक उतार-चढ़ाव के कारण [वहाँ क]था-साहित्य फ्रांस, इटली आदिकी [अपेक्षा अ]धिक रङ्ग-विरङ्गा और विविध [रूपमें] निरूपित है। सदियोंतक वहां ईसाके [समयकी क]हानियां और परम्पराओंका प्रभाव [रहा] और उस भावुकता तथा कल्पना [का प्रभाव] अबतक वहांके साहित्यकारोंमें [पाया जा] रहा है जिसका अन्य देशोंकी श्रेष्ठ [रचनाओं]में अभाव पाया जाता है। इसका [कारण ज]र्मन-मनोभाव है, जो फ्रांस, रूस [आदिकी त]रह भौतिक नहीं रहा है। जर्मन [साहित्यका]र चाहे जितने भौतिक विचार [प्रकट करे]ं, किन्तु उनमें भावुकता तथा [कल्पनाशी]लताका रंग अवश्य होगा।

[इस समय]के उपन्यासकारों गुस्टैव फ्रैटेग, [फाँ]न, वीलीबाल्ड एलेक्सीस, जेरके [औ]र हेसी आदि बहुत प्रसिद्ध हुए। [हेब]ल, पाल हेसी आदि नाटक-[कारों]ने भावर शीजकर अधिक विख्यात [हुए]।

[बीसवीं] शताब्दीके अंतमें जर्मन साहि[त्यमें] परिवर्तन होने लगा। जब यूरोपके अन्य देशोंमें यथार्थवादका आन्दोलन हुआ तो जर्मन साहित्य भी उससे प्रभावित हुए बिना न रह सका और नवयुवकोंमें एक क्रान्तिकारी साहित्य परिवर्तनका आविर्भाव हुआ। इस समय तक शोपेनहारके दार्शनिक सिद्धान्त विलुप्तप्राय हो गये थे और उनके स्थानपर उसके विद्वान शिष्य फ्रेडरिक विल्हेल्म नीत्शेके नवीन विलक्षण मौलिक सिद्धान्तोंका उनता प्रभाव पड़ने लगा था। नीत्शे एक बहुत उत्कृष्ट जर्मन कवि, गम्भीर विद्वान और प्रसिद्ध दार्शनिक हुआ है। नीत्शेने यूरोपके राजनैतिक और सामाजिक विचारों तथा आदर्शोंमें जितनी क्रांति उत्पन्न की, उतनी कदाचित ही अन्य किसी विचारकने की हो। नीत्शे शक्तिका उपासक था, भ्रातृभाव, अहिंसा, साधुता, समता—ये सब उसकी दृष्टिमें मानवी दुर्बलताके लक्षण हैं। वह कहता है—"मनुष्यको पुरातन शिक्षा मिली है कि वह पुण्यशील बने, किन्तु मैं शिक्षा देता हूँ कि मनुष्य, तुम पुण्यशील नहीं वीर्यशील बनो, साधु नहीं, महत् बनो!" नीत्शेने युद्धको संसारकी प्रगतिके लिये अत्यावश्यक बताया है। फलस्वरूप जर्मन अपनेको लोकोत्तर बनानेका प्रयत्न करने लगे। उन्हें विरोधोंका सामना करनेमें आनन्द मिलने लगा। नीत्शेका जीवन-काल सन १८४४ से १९०० ई० तक है।

इस नूतन साहित्यिक परिवर्तन के कारणोंमें नीत्शेके सिद्धान्त तथा विचारोंकी उत्कृष्ट शक्ति भी एक थी। इस समय जर्मन साहित्यमें यथार्थवादका आविर्भाव हुआ और कई साहित्यकारोंने अपनी रचनाओंमें यथार्थवादको अपनाया। उनमें एच० कानरेडी, के० ब्लेब्ट्री, मैकफर्सन, एच० हेर्ग, के० ऐलबर्ट और हरमैन सडरमैन मुख्य हैं। इस समयके साहित्यने यथार्थवादको अपनाया तो सही, किन्तु उसमें वह बात नहीं आ सकी जो फ्रांस और रूसके साहित्यमें विकसित हुई। जर्मन साहित्यमें यथार्थवाद का स्थिर और स्थायी रूप नहीं आ सका। आदर्शवाद से भरे हुए जर्मन मस्तिष्कके लिये फ्रांसका प्रतिनिविष्ट यथार्थवाद अनुकूल न था। जर्मन भाषा-भाषियोंका स्वाभाविक आदर्शप्रिय मस्तिष्क 'नग्नसत्य' प्रकट करनेकी बातको पूर्णरूपसे ग्रहण नहीं कर सका। कुछ समय बाद ही साहित्यका रुख मनोवैज्ञानिक भावनाकी ओर बदल गया; क्योंकि भौतिकवादमें जर्मन साहित्य बहुत कम विश्वास कर सका है। इस प्रकार देखा जाता है कि जर्मन साहित्यकार सदा ही अपने यथार्थवादके तार्किक परिणामतर पहुंचनेमें संकोच करते थे। सडरमैनके उपन्यास इस समयकी सर्वोत्कृष्ट रचनाएं हैं, किन्तु उनका यथार्थवाद अविरोधाभाव और साहसपर्श होन है। इस प्रकार जर्मन साहित्यकी प्रवृत्ति यथार्थवादको छोड़कर मनोविज्ञान सम्बन्धी तथा भावपूर्ण चित्रणकी ओर आकृष्ट हुई; क्योंकि ये बातें जर्मनीके वातावरणके अनुकूल थीं। यह प्रवृत्ति गुस्टैव फ्रेनसेनकी रचनाओंमें मिलती है तथा आगे चलकर और भी स्पष्ट रूपसे यह प्रवृत्ति हरमैन हेसी, एमिल स्ट्रोस, रुडोल्फ हूक और फ्रेडरिक हयूककी रचनाओंमें पायी जाती है।

बीसवीं सदीके जर्मन साहित्यमें एकबार फिर परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तनकी तैयारी सन् १८९०से ही हो रही थी। जिस समय जर्मन साहित्यमें यथार्थवादका दौर-दौरा था, उसी समय जर्मन साहित्यकी एक प्रवृत्ति एक्सप्रेशनिज्मकी ओर जा रही थी। यह एक्सप्रेशनिज्म यथार्थवादसे एक पृथक् और भिन्न वस्तु है। इसे अभिव्यक्तिवाद कहा जा सकता है। अभिव्यक्तिवाद एक आदर्शकी प्रतिष्ठा करता है और वह भौतिकवादमें विश्वास नहीं करता। अभिव्यक्तिवाद के साहित्यकारोंमें गुस्टव सैक, लिओनहार्ड फ्रैंक, फ्रेंज काफका, कैसीमीर एडिसड, क्लेबंड, मिनोना और ऐल्फ्रेड डोब्लिन प्रमुख हैं। इस प्रकार जर्मन साहित्यमें सन् १९१० से सन १९२० ई० तक अभिव्यक्तिवादकी प्रधानता रही। इस समयके साहित्यकारोंमें नोबुल पुरस्कार मिलनेके कारण विख्यात औपन्यासिक, नाटककार और कवि गर्हार्ट हाप्टमैनकी विशेष प्रसिद्धि हुई। इनके नाटकोंका आधुनिक जर्मन साहित्यमें विशेष स्थान है।

विगत युद्धके समय अनेक कवियों, नाटककारों और उपन्यास-लेखकोंने अपनी रचनाओंमें युद्धकी महिमाको महत्व दिया। उन्होंने साम्राज्यवादी युद्धको 'पितृ-भूमिकी रक्षाका युद्ध' बताया और जनता पर इसका प्रभाव डालनेका प्रबल प्रयत्न किया, किन्तु जब युद्धमें पराजित होनेके बाद जर्मनीमें निराशा और साहसहीनताने जोर पकड़ा, तब कुछ साहित्यकार रहस्यवादकी गोदमें आश्रय लेने लगे और कुछ युद्धका बीभत्स चित्र अंकित करने लगे। इन साहित्यकारों में युद्धका बीभत्स चित्र अंकित करनेवालोंमें रेमार्क बहुत प्रसिद्ध है। उसने अपने 'All Quiet on the Western Front' 'Road Block' आदि उपन्यासोंमें युद्धका बीभत्स रूप दिखलाया है। इनमें कोई आदर्श-विशेष नहीं पाया जाता, किन्तु यह अवश्य मानना पड़ेगा कि सर्व-साधारणमें युद्धके प्रति घृणा उत्पन्न करनेमें इस लेखककी रचनाओंने एक अन्तर्राष्ट्रीय महत्वका कार्य किया। यही कारण है कि नाजी जर्मनोंने इस लेखककी बातोंको 'पराजयके मनोभाव' बता कर इसकी निन्दा करनेका प्रयत्न किया।

सन् १९२० के बाद जर्मन साहित्यमें अभिव्यक्तिवादका जोर कम हुआ और उसके स्थान पर एक नवीन यथार्थवाद(Magianism) का प्रादुर्भाव हुआ। यह एक प्रकारसे यथार्थवाद और अभिव्यक्तिवादका मिश्रण है। इसका अभिप्राय कला और विज्ञानका सम्मिलित मिमांज कर भौतिक वस्तुओंको भी आध्यात्मिक आवरण देना है। इस वाद के साहित्यकारोंमें फ्रैंक थीइस ओटो फ्लेक, रुडेल्फ जी० बाइंडिंग, विल्हेम लेमैन, जोसेफ पान्टेन तथा ऐलबेंट शेफर आदि प्रसिद्ध हैं।

इस समयके विख्यात उपन्यासकार और कहानीकार थामसमैनको सन् १९२९ का साहित्यिक नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार उन्हें केवल उनके एक उपन्यास पर मिला था, जिसका नाम 'बुडेन ब्रूक्स' है। इससे जहां थामसमैनको अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हुई वहां जर्मन-साहित्यकी भी यूरोपमें प्रतिष्ठा वृद्धि हुई। थामसमैनके अतिरिक्त एमिल लुडविग, फ्रेडरिक बरघेल, मेक्स जिमेरिंग, अल्फ्रेड केर्र, हेनरिखमान, लिओन, फेशबैंगर, फ्रांज वरफेल, लिओनहार्ड फ्रैंक, फ्रेडरिक थोरबर्ग, अर्नेस्टवाल डिंगर, गुस्टो रेगलर, गुस्टाव रेगलर, बुशाम, ओसिट्स्की, लुडविग रेन, विली ब्रेडेल और हान्स मार्शल विस्ता आदि अनेक प्रगतिशील जर्मन कवि, औपन्यासिक, कहानी-लेखक, नाटककार और निबन्ध-लेखक प्रसिद्ध हुए। हिटलरके पूर्णरूपेण सत्तारूढ़ होनेके पहलेसे ही इनमेंसे अधिकांश साहित्यकार अपनी रचनाओं द्वारा साम्यवादका समर्थन करते रहे हैं, क्योंकि रूसी क्रान्तिके बादसे ही जर्मन साहित्यमें साहित्यकारोंका एक वर्ग अपनी कृतियोंमें साम्यवादका समर्थक था और सोवियट साहित्यकी सर्वश्रेष्ठ अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिके मूल कारणोंसे प्रभावित था।

सन् १९३३ में जर्मन पूंजीपतियों और प्रशियाके जंकरोंने हिटलरके हाथोंमें जर्मनी का शासन सौंप दिया। नाजीवाद पूंजीवाद का चरम बीभत्स रूप था, वह किसी भी प्रकारकी प्रगतिको सहन नहीं कर सकता था। अतः नाजीवादने उसे जड़ मूलसे नष्ट करनेकी चेष्टा की। हिटलरी शासनमें जर्मनीके प्रायः सभी कलाकारोंकी दुर्दशा हुई। कुछ मार डाले गये, कुछ कंसेन्ट्रेशन कैम्पोंमें घुल-घुल कर मरनेके लिये बन्द कर दिये गये और कुछको भागकर विदेशोंमें शरण लेनी पड़ी, किन्तु बाहर रह कर भी वे साहित्य-सृजन द्वारा अपना कर्तव्य पूरा करते रहे हैं। इस प्रकार संसारमें बुद्धिवादी वर्गके अति समीप जो चिन्तक समाज है, उसमेंसे आइन्स्टीन जैसे विश्व-विख्यात वैज्ञानिक और एमिल लुडविग तथा थामसमैन जैसे विश्व-हित-चिन्तक साहित्यकार मानवता-विरोधी तानाशाहीके शिकार बन गये। इन अनेक निर्वासित साहित्यकारोंको आर्थिक, मानसिक और शारीरिक सभी प्रकारकी कठिनाइयां उठानी पड़ रही हैं।

निरन्तर लगभग साढ़े पांच वर्षोंके जन-संहारके बाद नाजी जर्मनीका पतन हो गया और विश्व-विजयका स्वप्न देखनेवाले मानवताके शत्रु हिटलरका अन्त हो गया। हिटलरके शासन-कालमें जर्मन साहित्यका पतन उसीके द्वारा साहित्यकारोंके विचार-स्वातन्त्र्य-हरणके कारण हुआ। उसने सभी साहित्यकारोंको निर्वासित या नजरबन्द कर दिया और नाजीवादके समर्थक मानवता-विरोधी कुछ अप्रसिद्ध साहित्यकारों द्वारा जर्मन जातिको यहूदियों और साम्यवादसे

घृणा करना, जर्मन जातिकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन करना और संसारमें अपना साम्राज्य स्थापित करने और जर्मनोंको प्रेरणा तथा उत्साहित करनेका प्रचार उनकी रचनाओं द्वारा करवाया। इससे जर्मनीमें जर्मन साहित्यका नैतिक पतन ही नहीं हुआ, बल्कि उसकी स्वतन्त्र विचार-धाराकी प्रगतिमें बाधा हुई और उसकी उन्नति रुक गयी। यदि जर्मन साहित्यके भावी रूपका सृजन जारी रहा तो वह उन जर्मन साहित्य-कारों द्वारा ही, जो विदेशोंमें भाग कर शरण लिये हुए हैं। वे अपनी मातृभाषामें अपनी कृतियों द्वारा जर्मन साहित्यके भविष्यका रूप निर्धारण कर रहे हैं।

इन साहित्यकारोंमेंसे अधिकांश अमेरिकामें हैं और कुछ इंगलैण्ड तथा आस्ट्रेलियामें जर्मन होनेके कारण नजरबन्द कैम्पों में स्वतन्त्र जर्मन साहित्यका सृजन कर रहे हैं। इनमेंसे मेक्स जिमेरिंग इंग्लैण्डमें एक उपन्यास लिख रहा है, लुडविग विंडर भी वहीं उपन्यासोंकी रचना कर रहा है। फ्रेडरिक बरशेल कवि शिलरकी जीवनी और अल्फ्रेड केरं प्रगतिवादी कविताएं लिख रहा है। जेन पीटरसन, जिसकी 'My Street' नामक पुस्तकने इंग्लैण्डमें हलचल मचा दी थी और हान्स काले कनाडाके कैम्पमें युद्ध-विरोधी विचार-धाराओंका समर्थन करने वाले ग्रन्थ लिख रहे थे। प्रसिद्ध जर्मन लेखक लिओन फेशवैंगर 'फोर्टीन नावेल्स' नामक महत्वपूर्ण पुस्तक लिख रहा था, जिसमें उसके फ्रांससे अमेरिका भागनेका चित्रण है। विख्यात औपन्यासिक गुस्टाव रेगलर 'दि ग्रेट क्रसेड' नामक उपन्यास लिख रहा था। जर्मनोंके तरुण साहित्यकारोंमें रेगलरकी यथेष्ट प्रतिष्ठा है। फासिस्ट-विरोधी संयुक्त मोर्चेका यही संगठनकर्ता था। इसी प्रकार हेनरिखमानने 'फ्रेंच डे बुक' नामकी पुस्तक लिखी है और फ्रान्ज वरफेल निर्वासित लेखकोंके भाग्यको लेकर एक पुस्तक लिख रहा है। अल्फ्रेड, लियोनहर्ड फ्रेंक और फेडरिक थोरबर्ग हालीवुडमें फिल्म-कहानियां लिख रहे हैं। अर्नेस्ट वाल्ड डिगरने अमेरिकन जीवन-चित्रोंको लेकर अनेक यथार्थवादी कविताएं लिखी हैं। अन्ना मेगर्सका उपन्यास 'कंसेन्ट्रेशन कैम्पके सात अभागोंके अनेक दुर्भाग्य' एक करुण हृदय स्पर्शी रचना कही जाती है। बाइलैंड हर्जफील्डेने फ्रांसके पतन पर एक ऐसा नाटक लिखा है, जो विश्व-नाट्य साहित्यमें बेजोड़ माना जा सकेगा।

इनके अतिरिक्त 'युद्ध', 'युद्धके बाद' और 'बिना लड़े मृत्यु' नामक उपन्यासोंका लेखक लुडविग रेन, 'कारखाना' 'अग्नि-परीक्षा' और नवीन उपन्यास 'अनजान भाई' के रचयिता विली ब्रेडेल और छोटी छोटी कहानियोंका प्रसिद्ध लेखक तथा उपन्यासकार हान्स मार्शल विस्सा भी नाजीवाद-विरोधी होनेके कारण स्पेनके गृह-युद्धमें भाग लेने के बादसे ही विदेशोंमें आश्रय लिये हुए हैं।

प्रसिद्ध साम्यवादी कवि मुशामको नाजियोंने कन्सेन्ट्रेशन कैम्पमें ठूंस दिया और फिर बुरी तरह अत्याचार करके उसे मार डाला। इसी प्रकार प्रसिद्ध शांतिवादी लेखक ओसिएत्स्कीको, जिसे शान्तिका नोबेल पुरस्कार मिला था, नाजियोंने कन्सेन्ट्रेशन कैम्पमें फांसी दे दी। इनके अतिरिक्त अनेक साहित्यकारोंका पता भी नहीं चला कि उनका क्या हुआ और वे संसारमें जीवित भी हैं या नहीं।

इस प्रकार जर्मनीके अनेक साहित्यकार अनेक यातनाएं और विघ्न-बाधाएं सहन करते हुए भी विदेशोंमें रहकर जर्मन साहित्य में जो नवीन सृजन कर रहे हैं, उससे केवल जर्मन साहित्य ही नहीं बदल जायगा, बल्कि जर्मनी की सदियों की पुरानी हिंसक प्रवृत्ति भी मिट जायगी। जिस जर्मनीमें अब युद्धमें पराजित होने तथा नाजी सत्ता के समूलोन्मूलनके बाद मित्र-राष्ट्रों द्वारा परिवर्तन होगा, उस परिवर्तनको साम्यवाद का स्थायी रूप देनेका सूत्रपात तो विदेशों में निर्वासित जर्मन साहित्यकारों द्वारा रचे हुए साहित्यसे युद्धके पूर्व ही हो चुका था। इस साहित्यने केवल जर्मन साहित्य, जर्मन संस्कृति और कला तथा जर्मनीकी जनताके भविष्यको बहुत पहले ही निर्धारित कर दिया था। इस प्रकार नाजियोंकी पराजयसे जर्मन जातिको ही केवल मुक्ति नहीं मिली है, बल्कि जर्मन साहित्य भी अब मुक्त हो गया है और वे दिन अब अत्यन्त निकट आ गये हैं, जब जर्मन साहित्यके निर्वासित साहित्यकार फिर जर्मनी लौटेंगे और अपने साहित्य-सृजन द्वारा आत्मघाती जर्मनीको संसारमें एक आदर्श शान्तिवादी राष्ट्र बनने का प्रयत्न करेंगे।

विधवाओं का प्रश्न

———:⁘※○※⁘:———

(लेखक—श्री लक्ष्मीप्रसाद मिश्र)

विधवाओंका प्रश्न नया नहीं अपितु अति प्राचीन है! विधवाओंके करुण क्रन्दन से आज तो भारतके जन-जनका हृदय द्रवित हो उठा है! 'विधवा' नाम कानोंमें पड़ते ही उसका एक करुण चित्र आंखोंके आगे नाच उठता है! और फिर बाल-विधवा का चित्र तो और भी दयनीय है। तनिक विचारिये तो! चौदह वर्षकी प्रारम्भिक यौवनावस्था! काले या श्वेत वस्त्रमें लिपटी एक बेबस नारी! जो अपने अरमानों की समाधि पर नित्य ही अमंगलके दीपक संजोती रहती है। सूनापन या एकाकीपन ही जिसके जीवनका साथी है। समाज जिसकी चूड़ियां तुड़वा कर तथा जिसके सुन्दर वस्त्राभूषण उतरवा कर, उसे केवल अपने पतिके चिन्तन तथा ईश्वर भजन करनेका आदेश दे, और वही समाज परोक्ष रूपसे उसके साथ व्यभिचार करता रहे, इससे जघन्यतम पाप और कौनसा हो सकता है? जिस देशमें पुरुषोंको तो एक नहीं दस शादियां करनेका अधिकार समाज ने दे रखा है और स्त्रीके लिये केवल एक पतिकी पूजा, निष्ठा तथा पतिव्रत धर्मके पुनीत आदर्श पर चलनेको कहा जाय, यह बात कहां तक न्यायसंगत तथा तर्कयुक्त है, यह समझमें नहीं आता!

स्पष्ट है, कि सारे सामाजिक नियम पुरुषोंके रचे हुए हैं तथा उन्हें धार्मिक चोला पहना कर तथा ईश्वरका भय दिखा कर स्त्रियोंकी कमजोरियोंसे पुरुष समाजने काफी फायदा उठाया है। यहां पुरुष वर्गकी स्वार्थी तथा निरंकुश मनोवृत्तिका परिचय मिलता है। यहां कुछ लोग यह आक्षेप कर सकते हैं, कि "भाई यह स्त्रियोंकी वकालत क्यों? यह तो पुराना 'रोना' है।" मगर मैं उनसे स्पष्ट कह देना चाहता हूं कि पुरुष समाजके अत्याचारोंके कारण नारी जातिका जीवन ही रोदनमय बना हुआ है। यह एक कटु सत्य है। राष्ट्र कवि मैथिली शरणने इसी 'रोने' का चित्र केवल एक पंक्तिमें अंकित कर दिया है।

अबला जीवन हाय, तुम्हारी यही कहानी।
अंचल में है दूध; और आंखों में पानी॥

यह है नारीकी सजीव प्रतिमा! जिसके अन्तरालमें कितना हाहाकार भरा है। जिसके अन्तस्तलमें अभिलाषाएं घुट-घुट कर दम तोड़ रही हैं। जिसके हृदयमें भावनाओंका एक ज्वालामुखी "धांय-धांय" करके जल रहा है पर मुखसे वह उफ तक नहीं करती। जबान नहीं हिलाती! कितनी विवशता! कितनी परवशता! पुरुष समाज, निर्दयी पुरुष समाजने अपने स्वार्थके बंधनों में उसे कैसा जकड़ दिया है कि वह हिल-डुल भी नहीं सकती। एक जड़ पाषाण-प्रतिमाकी भांति उसका जीवन है। वह जिन्दा रहते हुए भी मुर्दाके तुल्य है! घरकी चहार-दीवारीमें उसका दम घुट रहा है। दिन भर चूल्हा-चक्कीके मारे उसे विश्राम नहीं। स्वच्छन्द वायुके उसे दर्शन नहीं होते। सास ननदके तानों तथा अत्याचारों के कारण दुर्लभ है, उसे प्यारके दो बोल किसीसे बोलना! बच्चे पैदा करनेकी मशीन उसे पुरुषोंने बना रखा है। ऐसी नारीके अंचलमें यदि दूध और आंखोंमें पानी है, तो कोई अत्युक्ति नहीं।

किंतु, आज हमें यह 'रोना' रोनेके लिये नहीं बैठना है! बल्कि इस रोदनको हास्यमें परिणत करके दिखाना है! नहीं तो नारी शताब्दियोंके लिये पतनके गड्ढे में जा गिरेगी। नारीके तीन स्वरूप हमारे सामने आते हैं। जननी, भार्या और सहोदरा! इन तीनों रूपोंको अपने-आपमें पूर्णतया विकासकी आवश्यकता है! और इस प्रकारसे जब नारी की पूर्ण उन्नति एवं विकास हो सकेगा, तब कोई कारण नहीं कि हमारा राष्ट्र अन्य प्रगतिशील राष्ट्रोंकी होड़में पिछड़ जाय! कहा भी है 'जिस देशमें स्त्रियोंका सम्मान होगा, वहां स्वर्गका निवास होगा!" अस्तु!

विधवाओंका प्रश्न त्याज्य नहीं है। परिवर्तन और घोर जीवन संघर्षकी घड़ियोंमें बैठकर जहां हम देशकी अन्य समस्याओंका हल निकाल लेते हैं; वहां इस प्रश्नको भी हल किया जा सकता है! आवश्यकता इस बातकी है, कि कुछ किया जाय! हम नित्य ही देखते हैं, सैकड़ों बाल विधवाएं ... से व्यभिचार-रत रहकर सैकड़ों भ्रूण ... कर डालती हैं। सैकड़ों विधवाएं ... आम व्यभिचार प्रवृत्त होकर अंतमें ... चली जाती हैं! और अनेकों अब भी ... व्यभिचार-रत हैं! तब ऐसी दशामें ... हमारा समाज उन्हें पुनर्विवाह या ... विवाहकी आज्ञा नहीं दे सकता ... विधवा विवाह कोई नयी चीज ... हमारे धर्मशास्त्रोंमें भी इसका उल्लेख ... गया है। फिर हम क्यों इस शुभ ... की धाराको रोककर विधवा विवाह ... राष्ट्रका कल्याण नहीं करते?

आवश्यकता इस बातकी है, कि ... विधवा बहिनोंको संगठित होकर ... युवकोंको भी एकसूत्रमें बंधकर ... तय करना है, कि विधवा वि... कोई हानि तो नहीं? यदि इस ... हमारे राष्ट्रका कल्याण ही है तो ... कोई शक्ति ऐसे पुनीत कार्यको ... नहीं सकती। हमें एक दूसरेको परस्पर ... और अटूट साहससे काम लेना होगा। ... हमारे धर्म व समाजके ठेकेदारों ... कार्यसे ठेस लगेगी, परन्तु कल ... कार्यकी प्रशंसा करेंगे। आवश्यकता ... बातकी है, कि हममें आत्मबल, दृढ़ ... तथा भावोंका परस्पर आदान-प्रदान ...

आज हम यह देखते हैं कि भारत ... प्रतिशत विधवाएं अपना जीवन ... अवस्थामें व्यतीत कर रही हैं। ... चालीस प्रतिशत तो वे बाल वि... जिनकी अवस्था १४ से ३० वर्ष ... हम उच्च तथा मध्य वर्गके व्यक्तियों ... निम्न वर्गके व्यक्ति चमार, कोरी, ... हंसखोर, डोम, नाई, धोबी आदि ... जिनके यहां विधवाओंकी कुछ व्यवस्था ... है। हम देखते हैं, कि उन नीच ... वाली जातियोंमें वास्तवमें जीवन ... हैं! जिनके यहां व्यभिचार गुप्त ... नहीं है। पर, शोक हम अपने झूठे ... अभिमानको हृदयसे लगाये बैठे हैं ... पर पाषाण रखे चुपचाप इन ... "अमुककी विधवा बहूको अमुक ... हम दशा जानते हुए भी इस ... नहीं कर सकते। अफसोस कितनी ... है हमारे समाजकी स्थिति, जिस ... अंग विधवा-रूपी कोढ़से गल ... वह उसका इलाज तक नहीं कर ... धिक्कार है ऐसे समाजको! ... यदि आर्य समाज या अन्य कोई ... बल प्रदान करती है, तो हमें ... उसका सहयोग लेकर पुनर्विवाह ... विधवाओंके प्रश्नको हल करें ... समाजकी उन्नतिका आधार ... चाहिये।

———

कहानी

बेजबान पांचे

—:*:—

(लेखक—श्री रा० वीलिनाथ)

यहां, इस संसारमें बेजबान पांचेकी मृत्युकी खबर किसीको नहीं है। 'पांचे कौन है, कहां रहा, कैसे रहा और कैसे मरा?' इन बातोंका भी किसीको ज्ञान नहीं है। यह भी कोई नहीं जानता कि उसकी मृत्यु किस तरह हुई? दिलकी धड़कन बन्द हो जानेसे, या बोझसे दबकर हड्डियोंके टूट जाने से या शरीरमें क्षयके लग जानेसे? या भूखों मरनेसे?

अगर एक घोड़ा रास्तेमें गिरकर मर गया होता तो घटनास्थलपर एकदम भीड़ लग गयी होती। शायद घोड़ेकी मृत्युकी खबर अखबारोंमें भी छपती। पर पांचे—उस गरीब पांचेकी कौन पूछता?

पांचे इस संसारमें मौन रहकर जिया और मौन होकर ही मरा। वह इस संसारमें छायाकी भांति अस्तित्व-हीन रहा और छायाही में लीन हो गया।

हां, वह छाया ही था, उसकी आकृति मनुष्य-सी हो गयी। कहा जाता है, उसमें मनुष्यका-दिल ही नहीं था। जो भी हो, उसकी मृत्युपर शोक या दुःख प्रकट करनेवाला मन-मनुष्यका मन—एक भी इस दुनियामें नहीं है। अगर इस संसारमें इतना कोलाहल न होता तो इस संसारके कान उसकी हड्डियोंके भारी बोझके कारण, टूट जाने की आवाज सुनते। अगर संसारमें इतनी व्यस्तता, इतना उतावलापन, इतने काम न होते तो कितने ही मनुष्योंकी दृष्टिमें, मनुष्यजन्म पाया हुआ वह पांचे, उतर गया होता। ज्योतिविहीन आंखें, अन्दर धसे हुए गाल, झुकी हुई पीठ, ये ही बेचारे पांचेकी पहिचान थी।

पांचेको अस्पताल पहुंचाया गया और एक कोनेमें एक खाटपर लिटा दिया गया। बहुत लोग उस जगहके लिये पहले हीसे तैयार थे और जितने उस जगहके वास्ते ज्यादा आतुर थे, उसको वह जगह—वह खाट मिल गयी और उस खाटके लिये उम्मेदवारोंकी संख्या बढ़ती ही गयी। मुर्दोंके कमरेसे उसे कब्रिस्तान ले जाया गया। वहां भी एक पग भूमिके लिये बड़ी स्पर्धा चल रही थी। किसी तरह वह दफनाया गया, पर खुदा जाने कब्रमें वह कितनी देर वह शान्तिके साथ रहा।

पांचेका जन्म इस संसारमें बिना किसी धूमधामके हुआ। उसने बिना किसी झंझट के अपना जीवन व्यतीत किया और बिना किसी तरहके ठाट-बाटके उसे दफना भी दिया गया।

पर परलोककी बात ऐसी नहीं थी। पांचेकी मृत्युकी खबरने बड़ी परेशानी पैदा कर दी। देवदूतोंने—बड़े-बड़े पंखोंवाले देवदूतोंने दुन्दुभी बजाकर इस खबरको फैलाया कि बेजबान पांचेकी मृत्यु हो गयी है। स्वर्गलोक भरमें इसकी बड़ी चर्चा थी। पांचेको देव-सभामें विराजनेका न्योता दिया गया। एक गंधर्व-बाला, खूब साज-शृंगार किये, आंखें मटकाती हुई, अपने बाहुओंको फैलाये हुए, मस्त हंसिनिकी भांति, पांचेका स्वागत करने चली। देवलोकमें सिर्फ इसी एक बातकी चर्चा थी —'पांचे—महान पांचे,' देवलोकको पधारनेवाले हैं। और देवलोककी वीथियां, तोरण वन्दनवार आदिसे सजायी गयीं। ईश्वरके कानोंमें भी यह बात जा पड़ी।

पिता इब्राहिम देवलोकके फाटकपर जाकर पांचेका स्वागत करनेके खड़े हो गये। उनके पुरातन कांतिमान मुखपर खुशी और मुस्कुराहट छायी हुई थी।

यह आवाज कहांसे आती है!

कुछ नहीं, पांचेके बठनेके लिये देवदूत स्वर्णासन लिये आ रहे हैं। यह उसीकी आवाज है। वह देखो, स्वर्ण-क्रीट। वह भी, अमूल्य जवाहरात-जड़ा हुआ। यह सब किसके लिये? यह सब उसी बेजबान पांचेके लिये ही हैं।

'यह सब अभी क्यों? अभी तो तहकीकात तक नहीं पूरी हुई! यह सब स्वागतके सामान अभी क्यों आये?' यह ईर्ष्या-जनित प्रश्न कुछ सिद्ध-पुरुषोंके मुंहसे निकल पड़े।

उत्तर देवदूतोंके मुंहसे अनायास निकल पड़ा, 'तहकीकात तो नामके वास्ते चलेगी। कोई देव-सभाका वकील भी, बेचारे बेजबान पांचेपर दोषारोपण नहीं कर सकता। पांचे तो सचमुच एक महान व्यक्ति है।'

कुछ देवदूत मधुर-गान करते हुए, पांचेको गोदमें लिये चल पड़े और उसका स्वागत करने लगे। कोई कहता कि पांचेके लिये एक अलग आसन तैयार किया जा रहा है। कोई कहता कि पांचेके लिये रत्न-जटित एक मुकुट बनवाया जा रहा है। कोई कहता है कि पांचे जैसी महान आत्मा कभी नहीं हुई और नहीं होगी। उस बेकसूरपर कोई भी दोष साबित नहीं हो सकता।

ये सारी बातें पांचेके कानोंमें पड़ीं। पर वह नीचेकी दुनियामें जैसा रहा, वैसा ही यहां भी गूंगा बना रहा। बोलनेकी हिम्मत नहीं हुई। उसको भ्रम हुआ कि यह या तो एक मीठा सपना है, या भूलसे मुझे यहां पकड़ लाया गया है।

उसने मृत्यु लोकमें रहते वक्त एक सपना देखा था कि वह अतुल धन-राशिका स्वामी हो गया है। उसके दरवाजेपर भिखारियों की भीड़ लगी हुई है। भिखारियोंको कुछ देनेके ख्यालसे हाथ उठाता है कि उसका सपना टूट जाता है और अपनेको भिखारियोंके बीच एक भिखारीके रूपमें पाता है।

लोग, वहां, भूलसे उससे बातें करने आ जाते थे। पर जब यह मालूम हुआ कि यह बेचारा पांचे है, तो घृणित भावसे उसको दुतकार कर चले जाते थे।

ऐसी-ऐसी बातें पांचेको याद आयी तो आंखें मूंदकर पत्थरकी तरह खड़ा रहा और सोचने लगा कि मुझ बदनसीबको यह कहां मिलेगा?

पांचेको अपनी आंखें खोलनेकी हिम्मत न हुई। क्योंकि उसको यह डर था कि आंखें खोलनेपर यह मीठा सपना टूट जायगा और विषैले सर्प और बिच्छुओंसे भरे भयङ्कर नरकका नजारा आंखोंमें फिर जायगा।

पांचेका शरीर 'थर-थर' कांपने लगा। उसके दिलकी धड़कन तेज हुई तो देवताओंके मुंहसे निकलनेवाले उन प्रशंसा-वाक्यों को वह सुन नहीं सका। देवदूतोंकी जय-जयकार उसके कानोंमें नहीं पड़ी। पिता इब्राहिमके आदर-सत्कार भरे वाक्योंका उत्तर तक नहीं दे सका। देव-न्यायाधीशके सामने खड़ा किया गया तो उनकी वन्दना करना तक भूल गया।

पांचे भयसे व्याकुल हो रहा था। उसकी समझ हीमें नहीं आया कि क्या किया जाय! देवोंकी उस अदालतकी फर्शको देखा तो उसका डर और कई गुना बढ़ गया। फर्श संगमरमरकी बनी और नवरत्न जड़ित थी। 'यह सारा सत्कार मेरे लिये है?' उसने अपने मनसे प्रश्न किया। मनने उत्तर दिया, 'यह तुम्हारे लिये नहीं होगा। किसी दूसरे पुण्यात्मा या योगीके लिये होगा। भूलसे अबतक तुम्हारा सत्कार किया जा रहा है। जब वह महात्मा आयेगा तब तुम ठुकरा दिये जाओगे। समझे? तो वह थर थर कांपने लगा।

पांचे इस बुरी हालतमें था ही कि न्यायाधीशने कहा—अब बेजबान पांचेका मुकदमा सुना जाय और वकीलके हाथमें दस्तावेजका एक पुलिंदा देकर कहा कि इसकी संक्षिप्त 'रिपोर्ट' सुनाइये।

यह सुनकर पांचेका सिर चकराने लगा; आंखें बेनूर होने लगीं। कान सुननेकी शक्ति खो बैठे। फिर भी उसके कानोंमें वकीलकी बातें पड़ने लगीं।

वकील कह रहे थे, 'पांचे सचमुच पांचे है। उसकी तुलना और किसी व्यक्तिसे नहीं की जा सकती।'

पांचे सोचने लगा कि वकील यह क्या कह रहे हैं?

वकीलकी बातोंको काटते हुए कहींसे एक आवाज आयी—उपमा आदि अलङ्कारों की यहां कोई आवश्यकता नहीं है।

वकीलने कहा कि मृत्युलोकके जीवनमें, पांचेने ईश्वर या मनुष्यजातिकी भी, कभी कोई शिकायत नहीं की। क्रोधकी चिनगारी उसकी आंखोंसे कभी नहीं निकली। अपनी स्वार्थ-सिद्धिके लिये उसने भगवानसे कभी कोई प्रार्थना नहीं की।

पांचेकी समझमें कुछ न आया। फिर वही परिचित आवाज उसके कानोंमें पड़ी "विस्तारकी कोई जरूरत नहीं।"

'परम योगी पोप भी पांचे जैसे सहनशील नहीं थे।'

सहनशीलता खोकर न्यायाधीश बोले। 'व्यर्थ समय बरबाद न किया जाय। जो कुछ हुआ, उसका वर्णन काफी है।'

'तेरह बरसकी उम्रमें उसकी माता मर गयी और उसके घरमें सौतेली मां आयी। वह विषधर नागिन थी, राक्षसी थी और...'

'हां, मेरी ही बातें शायद हो रही हैं।' पांचे विचार करता है।

'अन्य जनोंकी शिकायत न की जाय' यह वाक्य न्यायाधीशके मुंहसे निकला।

'...वह पांचेको पुरानी बासी और कीड़ों भरी रोटियां ही खानेको दिया करती थी और गोश्तके नामपर हड्डियां। खुद मक्खन और दूध उड़ाया करती थी।...'

'विषयसे परे जाते हैं, महाशय।'

...उसने पांचेको इतना कष्ट दिया कि उसका वर्णन करना असंभव नहीं तो कठिन है। पांचे उसके हाथों बुरी तरह पिटा करता था। फटे-पुराने कपड़े पहनकर जाड़ेमें ठिठुरता हुआ जङ्गलमेंसे उसके लिये लकड़ी बटोरा करता था। उसने उसके द्वारा बहुत कष्ट उठाये फिर भी अपने आपसे उसके विरुद्ध कभी कोई शिकायत नहीं की।

'पब्लिक प्रासिक्यूटर' ने 'पियक्कड़' कहा और ठहाकर हंस पड़े तो पांचेका शरीर केले के पत्तेकी तरह कांपने लगा।

वकील आगे कहने लगा, वह हमेशा अकेला ही रहा, स्कूलका मुंह नहीं देखा, जीवनमें साथी नहीं मिले। नया कपड़ा तक नहीं पहना। स्वतन्त्रता किस चिड़ियाका नाम है?'—वह नहीं जानता था।

'ये सब वर्णन अनावश्यक हैं।' न्यायाधीशने वकीलको बीचमें रोका।

'हां, पियक्कड़—उसके पियक्कड़ पिता' एक रातको, नशेमें चूर घर आये और पांचेको धक्का देकर घरसे बाहर निकाल दिया। बिना किसी तरहके विरोधके, वह घरसे चल पड़ा।......वह कई दिन भूखों तड़पता रहा पर किसीके सामने उसने अपना हाथ न फैलाया। आखिर तरह-तरहके कष्ट भोगते-भोगते वह एक शहरमें पहुंचा। वहां उसे बेकसूर एक रातके लिये जेलमें सड़ना पड़ा। किन्तु वहां भी उसने अपना दुखड़ा किसीसे न कहा। दूसरे दिन, जेलसे बाहर आनेपर, वह कामकी खोजमें निकल पड़ा। पर काम आसानीसे नहीं मिला। काम खोजनेके प्रयासमें बेचारेके कई दिन बीत गये। आखिर काम मिला। काम करते-करते बेचारा पसीनेसे लथ-पथ हो गया। हरारतसे बुखार चढ़ आया, उठनेका तान नहीं था, भूखकी कोई सीमा न रही। फिर भी उसने किसीसे कुछ नहीं कहा...।

उसको इसकी भी खबर नहीं कि कितने पैसेके लिये कितना काम करना चाहिये? नतीजा यह हुआ कि कम मजदूरीमें उसे हड्डीतोड़ मेहनत करनी पड़ी। एक आना देकर उससे एक रुपयेका काम लिया गया।

पांचे यह भी नहीं जानता था कि परिश्रम करनेके बाद उसे पारिश्रमिक लेनेका पूरा-पूरा हक है। काम लेनेवाला कहता कि कल आओ तो पैसा मिलेगा। पांचे 'अच्छा' कहकर चल देता। दूसरे दिन जाता तो फिर वही नाटकीय अभिनय होता। काम लेनेवाला वायदेपर वायदे करता, बेचारा पांचे अपना पारिश्रमिक, हकके साथ मांगना नहीं जानता था। पांचे भूखों मरना जानता था, पर किसीके आगे हाथ फैलाना नहीं

रानता था। काम लेनेवाला, मजदूरी न देकर या खोटा सिक्का देकर धोखा देता तो भी पांचोकी जबान न खुलती। हर-हमेशा आनन्द ही रहती—'

हां सचमुच मेरी ही तो बात चल रही है।' पांचो अपने मनमें सोचता।

पानी पीनेके बाद वकीलने कहना शुरू किया—हां एक बार पांचोके जीवनमें एक परिवर्तन हुआ। एक घोड़ा लगामकी परवाह न कर, धड़ाधड़ तेजीसे गाड़ी खींचते हुए दौड़ा जा रहा था। घोड़ा-गाड़ी और उसपर बैठे आदमी लुढ़कने ही को थे कि पांचेने अत्यन्त साहसके साथ, अपनी जानपर खेलकर घोड़ेको काबूमें कर लिया।

वह आदमी बड़ा धर्मात्मा था। उसने पांचोको अपना कोचवान बना लिया। सिर्फ यही नहीं, उसको एक बीबी भी दी और साथ ही साथ एक बच्चा भी प्रदान किया। यह सब हुआ फिर भी पांचो मुंह खोलकर किसीसे कोई बात नहीं कह सका।

'मेरी ही बात चल रही है।' पांचो गुनगुनाता है। देव-सभाको एक बार आंख भर देख लेनेकी उत्कंठा, उसको हुई। पर आंखें खोलनेका साहस उसको नहीं हुआ।

जब उसके उस मालिकका दिवाला निकल गया और पांचेको वेतन देनेसे इन्कार कर दिया तब भी पांचेने अपना मुंह नहीं खोला। पांचेका वह बच्चा, जब पन्द्रह बरस का हो गया तब उसने उसको घरसे निकाल बाहर कर दिया। पांचे चुपचाप घरसे चल दिया। उसके मुंहसे बच्चेके विरुद्ध कोई बात नहीं निकली।

उसी पुराने मालिकने एक बार पांचे पर जान-बूझकर या अनजानमें, गाड़ी चढ़ा दी और पांचेको लंगड़ा बना दिया। पुलिसने मुकदमेकी तहकीकात की। पर पांचेने उस मालिकके विरुद्ध कोई बात नहीं कही। जिससे वह मुकदमा खारिज कर दिया गया।

अस्पतालमें रोने-बिलखनेको तो जरूर आजादी दी जाती है। वहां भी पांचेने अपना मौन-व्रत भंग नहीं किया।

अस्पतालके डाक्टरोंने बिना बख्शीश लिये उसका इलाज करनेसे इन्कार कर दिया और नौकरोंने बदलनेके कपड़े देनेसे इन्कार कर दिया। फिर भी उसने उन लोगोंके विरुद्ध किसीसे कोई शिकायत तक नहीं की। सिर्फ इतना ही नहीं, जब उसको मौतका परवाना मिला और उसके प्राण-पखेरू छट पटाने लगे तब भी उसने एक आह तक न की। कहनेका तात्पर्य यह है कि पांचेने ईश्वर या मानव जाति किसीके विरुद्ध कभी भी कोई शिकायत नहीं की है।"

इतना कह कर वकील बैठ गये। अब भी पांचेके शरीरकी कंपकंपी कम नहीं हुई। अभी सरकारी वकीलकी बहस पूरी नहीं हुई है। पांचे मनमें सोच रहा था कि सरकारी वकील बहसमें कैसी-कैसी दलीलें पेश करेगा। पर पांचेकी स्मरण शक्ति दुर्बल थी। उसने कितना ही अपना दिमाग लड़ाया, पर अपने जीवनकी घटनाओंको यादमें नहीं ला सका।

तभी सरकारी वकील उठ खड़े हुए और गुरु गंभीर ध्वनिसे पुनः बहस शुरू की, 'भाइयो!' आगे बोल नहीं पाये, कंठावरोध हो गया।

फिर कुछ मृदु स्वरमें उन्होंने कहा, 'भाइयो!' मगर इस बार भी उनका गला रुंधगया।

थोड़ी देर बाद उन्होंने फिर कहना शुरू किया 'भाइयो, पांचेने अपने जीवनमें कभी मुंह नहीं खोला। इसलिये मैं भी उसके विषयमें अपना मुंह नहीं खोलूंगा।' यह कहकर वे आसन पर बैठ गये तो सभामें थोड़ी देरके लिये खामोशी छायी रही।

फिर कानोंमें मधुका वर्षण करता हुआ एक मृदु नवल स्वर गूंज उठा, 'पांचे, मेरा प्यारा बेटा पांचे, मेरा लाल, पांचे।'

पांचेने यह वाणी सुनी तो उसको अपनी स्वर्गीया माताकी याद—माताकी प्यार भरी वाणीकी याद आयी। उसको इस तरहकी प्यार भरी वाणी सुने बहुत साल गुजर गये थे उसका कलेजा पानी-पानी हो गया। देव-सभाको आंख भर देखना उसने चाहा। पर आंखें डबडबा आयीं और अश्रु बिंदुओंने वैसा होने न दिया। आज जीवनमें पहली ही बार पांचेकी आंखोंसे अश्रु बिंदु अब टपके हैं।

न्यायाधीशने कहा, 'बेटा पांचे, तुमने बड़ी-बड़ी मुसीबतें झेली हैं। दुनियामें तुम्हारे जैसा सहन-शील आदमी शायद ही है। तुमने इतने सारे कष्ट उठाये, पर चूं तक न किया।...इहलोक वाले तुम्हारी सहनशीलताकी महिमाको थोड़ा नहीं समझते। तुमने यह नहीं जाना कि केवल एक चीखमें दुनियाको अपनी ओर आकर्षित किया जा सकता है। तुमने अपनी कूवत पहचानी नहीं, इहलोक वालोंने तुम्हारी कदर करना नहीं सीखा। यहलोक तो एक झूठी दुनिया है। यहां परलोकमें—सत्यलोकमें तुमको—तुम्हारी उस सहनशीलताके लिये उचित पुरस्कार दिया जायगा।

"इस लोकमें तुम जो चाहो ले सकते हो। यहांके सभी सामान तुम्हारे ही हैं। तुम अपना मनमाना कर सकते हो। तुमको कोई नहीं रोकेगा। परलोक ही तुम्हारा है समझे?

पांचेने अत्यंत साहसपूर्वक आंखें खोलीं तो क्या देखता है कि लोकभरमें एकदम ज्योति ही ज्योति दीख पड़ती है। जहां देखो ज्योति चमक रही है। अविरल प्रकाशकी धारा बह रही है। देव सभामें उसका आसन न्यायाधीश, देवदूत, सभी और साराका सारा देवलोक ज्योतिर्मान है, मानो कोटि-कोट सूर्य मिलकर प्रकाश पुंज फैला रहे हैं। पांचेकी आंखें चौंधिया गयीं।

पांचेने नीची आंखोंसे पूछा, 'आपका यह कथन सचमुच सत्य है?'

न्यायाधीशने दृढ़ताके साथ उत्तर दिया 'हां सत्य ही है। शक करनेकी बात ही नहीं है। देवलोक ही तुम्हारा है। जो चाहो चुन लो, जब यहां साराका सारा तुम्हारा है, तब लेनेमें हिचकिचाहट क्यों।

तब अवश्य यह सत्य ही है? "पांचेने उसको दृढ़ता दिखाते हुए पूछा।"

'हां सत्य ही है, निश्चय ही है।' सब लोगोंने दृढ़तासे प्रत्युत्तर दिया।

पांचेने मुस्कुराते हुए कहा, 'मुझे नित्य प्रातःकाल मक्खनके साथ गरम गरम रोटी मिलनी चाहिये। बस इतना ही।"

इतना सुन न्यायाधीशकी सारी सभाने लज्जासे सिर झुका लिया। कुछ ही देर बाद इस सन्नाटेको चीरकर सरकारी वकीलके ठहाकेकी आवाज गूंज उठी।

नोट—जे० एल० परेसकी अंग्रेजीकी कहानी के आधारपर।

—

बुद्धदेवका जन्मस्थान-सिकलीगढ़ धरहरा

(लेखक—श्री नवरंग)

...इन प्रस्तरों, ईंटोंमें वाचालता ...ाश वे समर्थ होते उन शताब्दियोंका ...बतानेमें, तो वे उन गौरवमय घड़ि- ...ाल सुनाते हमें। आज कितने खण्ड- ...न्मों तथा गढ़ोंका भग्नावशेष आठ- ...हा रहा है अपने अतीत ...। ...विहास विलीन हो गया अतीतके ...! संरक्षण भी उसका नहीं :— ...पर जब दुनियां उसका शानी ...थी। वह हमारे पूर्वजोंके गौरवका ...हमारी उन्नतावस्थाका द्योतक। ...नहीं—न सही। पर वह कुछ ...है। और वह जो कुछ कहता ...भाषा उसे व्यक्त करनेमें समर्थ ...न तो शब्दोंकी योजनासे कुछ वाक्य ...कहता है हमें और न कहता है ...। लेकिन वह जो कुछ कहता है ...के कोनेमें पहुंचा देता है उसे। ...कहनेको होता कह डालता एक ...। वह सिद्धहस्त तीरन्दाज-सा ...का निशाना मारता है हमारे ...पर। निशाना चूकता भी कभी

...अरक्षित गढ़ोंमें एक है 'सिकली ...बिहारकी भागलपुर कमिश्नरीके ...पूर्णिया जिलामें वनमनखी स्टेशन ...रेलवे) से एक मील उत्तर यह अपने ...में हमें एक अपूर्व सन्देश दे रहा ...झांकी दिखा रही है उस गौरवपूर्ण ...यह गढ़ मीलोंमें फैला है। एक बड़े ...किलेका टूटा फूटा अवशेष अब ...है। जगह-जगह ऊंचे टीलोंकी ...। ईंटोंकी तो यह खान ही है। ...कितने करोड़ ईंटें इससे निकल ...। पहले यह जंगलोंसे भरा था, ...ने इसे आबाद कर अपने बसने ...के लायक बनाया है और इसीसे ...में विभाजित हो गया है। अपने ...में यह कई कोसों तक फैला रहा ...के पास ही और कितने ही विस्तृत ...नाम सुनाई पड़ता है। हो सकता है ...के अंग रहे हों।

...गढ़के अन्तर्गत एक स्तम्भ है। यों ...यह गेंहुएंका विकृत रूप ही मालूम ...पर दरअसल यह है सफेद प्रस्तर ...वर्षोंके शीत-धूप-वर्षा आदिके ...मटमैला हो चला है और जिस पर ...वगैरह रगड़ कर उसे गेहुएं-सा ...है। अब तो यह खुरदरा हो गया है ...होगा अवश्य ही काफी चिकना। ...कहीं-कहीं अब भी नसीब है। यह ...पश्चिमकी ओर झुकता पृथ्वी पर ...कोण बनाता है। इसकी मोटाई ...। झुके हुए ओरसे इसकी ऊंचाई ...और इसके विपरीत ओरसे ८॥ ...सम्पूर्ण नहीं बल्कि ऊपरसे टूटा ...भाग १४" तक आधा और ...। इसके ऊपरमें ४" व्यासका ...होगा, यह प्रस्तुत अंशके १४" ...देखनेसे पता चलता है। इससे ...बिल्कुल ठोस दिखाई पड़ता है। ...है, नीचे भी छिद्र था जिसमें कंकड़ आदि डालनेसे बहुत दूर तक उसके नीचे जाने और अन्तमें पानीमें किसी चीज के डालने-सी आवाज होती। कालान्तरमें लोगोंने बड़े-बड़े रोड़े डाल उसे बन्द कर दिया। पर देखनेसे ऐसा नहीं मालूम पड़ता, वह बिल्कुल ठोस नजर आता है। सुननेमें आया है कि इसके ऊपरका हिस्सा नेपालकी सीमाके पास किसी स्थान पर है। कोई उसे भी गड़ा बताता और कोई कहता यों ही पड़ा है। सच्ची बात क्या है पता नहीं चलता। अपने राम उसे देखनेके सौभाग्यसे वंचित ही रहे हैं।

इस स्तम्भको उखाड़नेकी भी कोशिश एक बार की गयी थी। यहां एक साहब नीलकी खेती करते थे। उन्होंने इसे उखाड़नेको सोचा। खुदाई की गयी। पानी आ निकला पर जड़का कहीं पता न चला। हाथीसे भी काम लिया गया पर सब कोशिशें व्यर्थ ही रहीं। हां, एक बड़े महत्वकी बात रही। कहा जाता है कि इस खुदाईमें एक सोनेका सिक्का और कुछ अर्घे (महादेवके अर्घे) प्राप्त हुए थे। सिक्के पर एक ओर शिवकी मूर्ति थी और दूसरी ओर शिवकी सवारी बछड़ेकी। खुदाईके कुछ दिनों बाद ही साहबकी मृत्यु हो गयी और मेम साहिबा शायद अपने देशको लौट गयी। पता नहीं सिक्का कहां गया और क्या हुआ।

सर्व साधारण इस स्तम्भको प्रह्लादके जीवनसे सम्बन्ध रखने वाला स्तम्भ (जिससे नरसिंह भगवान् अवतीर्ण हुए थे) बताते और इस गढ़को भी हिरण्यकश्यपुका ही मानते हैं।

स्तम्भके करीब ही एक गोलाकार टीला भी है। जिसके विषयमें प्रह्लाद जहां पढ़ता था उस चटसार (स्कूल) के होनेकी किंवदन्ती है। यहींसे एक आधे कोस पर धीमा नामक ग्राममें एक शिवालय है। कहा जाता है कि हिरण्यकश्यपु इन्हीं महादेवके अनन्य भक्त थे।

यह तो रहा यहांका वर्णन और सर्व साधारणकी धारणा। अब जरा यहांके प्राप्त की चीजोंकी ओर भी ध्यान दें—

(क) पहले यहांकी ईंटोंकी ही विशेषता को लें—ईंटे फर्मेकी नहीं। उनपर अंगुलियों के निशान पर्याप्त मात्रामें मिलते हैं। लम्बाई-चौड़ाई तो काफी ठीक पर है, परन्तु मोटाई अत्यधिक कम—यहां तक कि एक-सवा इञ्च मोटाईकी ईंटें अधिकतासे मिलती हैं। एक ईंट तो गजबकी ही प्राप्त हुई है। यह सिर्फ एक इञ्च चौड़ी और आध इञ्च मोटी है। लम्बाईकी ओरसे टूटी मालूम पड़ती—यों वह भी १ इञ्च ही है।

(ख) मिट्टीके बर्तन वगैरहके टुकड़े तो बड़ी संख्यामें मिलते हैं। तरह-तरहके विचित्र-विचित्र आकार-प्रकारके अनेकानेक ढांचोंकी मिट्टीकी चीजें अप्राप्य ही हैं। इनमें समान गोल चीजोंके टुकड़े अधिकांश देखनेमें आते हैं। इन मिट्टीकी चीजों पर नक्काशी भी है। मिट्टीका बना किसी चीजका एक त्रिभुजाकार टुकड़ा मिला है, जो अपने पूर्ण रूपमें किसी वृक्षके पत्तेके आकारका रहा होगा। इस पर क्रमसे सिलसिलेवार इस प्रकारकी खुदाई है जो देखनेमें बहुत अच्छी लगती और यह मालूम होता है कि यह सांचे पर तैयार किया गया होगा। मिट्टीके पात्रोंके कोई कोई टुकड़े तो स्लेटके रूपमें (काले रंगमें) परिणत हो चले हैं, जिनसे उनकी प्राचीनता का पता चलता है। मजबूतीका तो कहना ही क्या ?

(ग) मिट्टीके टुकड़े पर उभाड़ कर तैयार की गयी सुन्दर कलात्मक मूर्तियां भी मिलती हैं। एक छोटी-सी मूर्तिका टुकड़ा यहांके पहुंचे सन्त 'मेंही दास' जी को बाग लगवाने को खुदवाते समय मिला है। यह है तो सिर्फ २-३ इञ्च लम्बा-चौड़ा ही और वह भी सिर्फ मुखाकृति ही, फिर भी इसपरकी चित्रकारी देखनेसे ही पता चलता है कि यहां के बाशिन्दे मिट्टी पर खोद कर मूर्ति बनानेमें कितने निपुण थे। इस मूर्तिकी मुखाकृतिसे ही इसके बुद्धदेवकी प्रतिमा होनेका भास होता है। इसी प्रकारका एक और मूर्तिका टुकड़ा मिला है। जिसमें शरीरके किसी एक अंगका ही अस्पष्ट चित्र है। टूटा होनेके कारण कोई महत्वशील चित्रकारी तो नहीं दिखती, पर इन टुकड़ोंसे यह सूचित होता है कि यहांके पूर्व निवासी मिट्टी पर छोटे-छोटे कलात्मक चित्र बनानेमें बड़े पटु थे।

(घ) मिट्टीकी चीजोंकी अधिकता देख कर यह न ख्याल करना चाहिये कि पत्थरके कार्य यहां होते ही न थे। ऐसा होता तो इतना विशाल स्तम्भ कैसे बन पाता। हां, याद रहे प्रस्तर सभी सफेद ही मिलते हैं। प्रस्तरका मानव निर्मित ऐसा टुकड़ा मिला है, जिसे देखनेसे पता चलता है कि यह किसी छोटी मूर्तिका आधार हो। उसके एक स्थान पर अंगुली रखनेसे इतनी चिकनाहट मालूम पड़ती है मानो कि पालिश का ही काम हो। पर वास्तवमें पालिश है नहीं। पत्थरका एक और ऐसा टुकड़ा प्राप्त हुआ है जिसके दोनों ओर अंगुलियोंके चिन्ह खुदे हैं। यह शायद किसी पत्थर पर खुदी मूर्तिका अंश है।

४-५ वर्ष पहले यहां घूमते-घामते एक श्याम देशके बौद्ध भिक्षु आये थे। उन्होंने यहां परिभ्रमण तथा इसका निरीक्षण कर प्राचीन साहित्यके बल पर बताया कि यह भगवान बुद्धका जन्मस्थान है। यहां पहले पांच कोस अहातेका एक बड़ा शहर था। जिसके रक्षार्थ चारों ओर खाई थी। कहींसे आते हुए भगवान बुद्धके माता-पिताने यहीं डेरा डाला और संयोगवश यहीं बुद्ध देवजीका जन्म हो गया। वे बौद्ध भिक्षु यहां दो बार आये थे। पहली बार देख-सुन कर लौटनेके ४ महीने बाद फिर आये और यहांके कई स्थानोंके फोटो ले गये। उन्होंने कहा था कि ४ वर्ष बाद हम फिर आवेंगे। श्याम देशके राजाकी आज्ञा है कि यहां बुद्ध देवके जन्मस्थानकी स्मृतिमें एक मन्दिर बनवाया जाय। पर युद्धके कारण यह विचार विचार ही रह गया।

उपरोक्त दो विभिन्न धारणाओंसे यह

तू क्या देख रही है मुझको

तू क्या देख रही है मुझको,
बोल, बोल री, मेरी माया ?

मैं तो देख रहा तेरा सुख,
निरख रहा हूं मैं तेरा मुख,
तू ने यह क्या मेरे सन्मुख
छल प्रपंच का जाल बिछाया ?
बोल, बोल री, मेरी माया।

आखों में चुपचाप समा कर
मुझ को अपने पास बिठाकर,
अब क्या पूछ रही है मुझ से
किसने तुझको यहां बुलाया ?
बोल, बोल री, मेरी माया।

मैंने कब तुझको है छोड़ा ?
तूने कब मुझ से मुंह मोड़ा ?
पड़ी हुई क्यों मेरे पीछे
जैसे, तन के पीछे छाया !
बोल, बोल री, मेरी माया !

—श्री आरसीप्रसाद सिंह

अनुमान कर सकते हैं कि यह प्रह्लादके समय से ही एक बड़ा शहर रहा होगा और इसी शहरमें या इसके पास ही बुद्ध भगवानका जन्म हुआ होगा। चाहे यह किसीका भी जन्मस्थान हो, यह निर्विवाद है कि इसकी खुदाई की जाय तो यह भारतके इतिहासमें एक नयी क्रान्ति पैदा कर दे—प्राचीन भारत के धुंधले इतिहासको प्रचण्ड आलोकसे आलोकित कर दें।

मैं पुरातत्व विभाग तथा अन्वेषण कार्य-कारिणी समिति तथा इतिहासज्ञोंका ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं। अगर अभी इसकी खुदाई संभव न हो तो कमसे कम इसकी रक्षा अवश्य होनी चाहिये। अन्यथा इसकी बहुत सी सामग्रियां विनष्ट हो जायेंगी। इस पर खेती हो रही है। जिससे कुछनकुछ सामग्रियांसदा बाहर निकलकरविनष्ट होती जाती हैं इसकी रक्षा अत्यावश्यक है। आशा है, पुरातत्व विभाग तथा इतिहासज्ञ इस पर विशेष ध्यान देंगे।

आजाद हिन्द फौजकी हलचलोंके सम्ब-
... सेन्सरशिप उठ जानेसे, अखबारोंमें ... बारेमें पिछले दो तीन सप्ताहसे कुछ ...-मोटी खबरें छपती रही हैं, लेकिन उन ... तो अज्ञान मूलक हैं, कुछ तोड़-मरोड़ ... द्वेष वश गढ़ी गयी हैं। रंगूनके पतनके ... जो अखबारी प्रतिनिधि मौजूद थे, उन्हें ...के निवासियोंसे और आजाद हिन्द ...के लोगोंसे भी मिलनेमें कोई बाधा नहीं ... गयी थी। मैं भी उस वक्त वहां था और ... आजाद हिन्द फौजके सैनिकों तथा अफ-...से मिलने और गत ३ वर्षोंकी उनकी ...ओंके बारेमें परिचय प्राप्त करनेका अव-... मिला।

असली उद्देश्य

... प्राप्त समाचारोंके आधारपर यह कहा ... सकता है कि १९४२ के मध्यमें आजाद ... फौजका निर्माण हुआ हालांकि जापा-...के हाथमें मलाया और बर्माके आते ही ...तीय और फौजी तैयारियां आरम्भ हो ... थीं। हांगकांग, मलाया और बर्मामें ... भारतीय सेना बन्दी हुई थी उसके ...क अफसर आजाद हिन्द फौजके आधार ... और दक्षिण पूर्व एशियाके भारतीयोंसे ...की जन संख्या २० से ३० लाखके बीच ... इस फौजको सब सामान और रङ्गरूट देने ... लिये प्रेरित किया गया। मलाया और ...के पतनके बाद जापानियोंने भारतीयोंकी ...नुभूति हासिल करनेकी कोशिशें कीं। ... भारतीय युद्धबन्दी हुए थे उन्हें यद्यपि ...दार तारोंके घेरेमें रखा जाता था तथापि ...के साथ रियायती बर्ताव होता था और ...में काफी आजादी दी जाती थी। इसके ... ही पूर्वी एशियाके भारतीय नेताओं ... जापानियोंके बीच सियासी चर्चा भी ... रही थी। जापानका भारतीयोंकी ...नुभूति प्राप्त करनेका मुख्य हेतु यही हो ... था कि प्रचारके जरिये भारतमें ऐसा ...वरण तैयार किया जाय जिसमें भार-... जापानियोंका, आक्रमणके समय, अपने ...के रूपमें स्वागत करें। और इस आजाद ... फौजसे भारतपर आक्रमणके लिये ...यता ली जाय, भले ही वह अल्प मात्रा ...में न हो। मैं यह बताना चाहता हूं ... जापानी खुद यह नहीं चाहते थे कि ...द हिन्द फौजकी मदद बड़ी मात्रामें ...। तीसरी बात यह है कि जापानी मोल-...-बैंकाक रेल जैसी बड़ी-बड़ी तामीरोंके ... भारतीय मजदूर आसानीसे भर्ती करना ...ते थे। पूर्वी एशियाके भारतीय नेताओं ... जापानियोंके साथ मिल जानेका यही ... प्रतीत होता है कि "भारतीयोंकी ...मालकी सुरक्षा हो सके और ३ लाख ... हिन्द फौजके जरिये भारतीय स्व-...के लिये कोशिश की जा सके।" लेकिन ... एशियामें जापानियों तथा भारतीयोंकी ...तोंकी कामयाबी, हिटलर द्वारा मध्य-... मित्रराष्ट्रोंकी जीवन-धुरीको तोड़ने ... ईरानपर अधिकार कर लेनेपर निर्भर ... थी। जब स्टालिनग्राडने हिटलरकी ... ताकतको कुचल दिया तब जापानियों ...रतको जीतनेके हौसले ठण्डे हो गये और ...रतकी रक्षाका ख्वाब भूल गये। इसी

आजाद हिंद फौज,—निर्माण और कार्य

———):*०*:(———

(लेखक—श्री टी० जी० नारायण)

तरह जब पूर्वी एशियाके भारतीयोंने यह देखा कि जापान ३ लाख हिन्द फौजको शस्त्रोंसे सुसज्जित करनेको तैयार नहीं है और उनका विश्वास करना नहीं चाहते तब वे समझ गये कि जापानियोंके साथ मिलकर भारतकी आजादीके लिये लड़नेका कोई अर्थ नहीं।

सुभाष बोसका नेतृत्व

भारतीयोंका गुडविल मिसन टोकियो गया, बैंगकाकमें उनकी कांफ्रेंस हुई और उसके बाद सिंगापुरमें उनका सम्मेलन हुआ, और इन सब जगहोंमें जो निश्चय हुए उनके परिणामस्वरूप "भारतीय स्वतन्त्रता संघ" और "आजाद हिन्द फौज" का सङ्गठन करनेका निर्णय हुआ। तथा पूर्वी एशियाके जानो-मालकी सुरक्षाकी मांग की गयी। जब तक सुभाष बोस सामने नहीं आये और उन्होंने पूर्वी एशियाके नेतृत्वकी बागडोर न संभाली तबतक जापानके इस आन्दो-लनको प्रश्रय नहीं मिला। सुदूरपूर्वमें सुभाष बाबूके पहुंच जानेसे इस आंदोलनको दृढ़ता प्राप्त हुई और उसके बाद ३ लाखके बजाय ३० हजार आजाद हिन्द फौज रखना तय हुआ। उसे शस्त्रास्त्र देनेकी बात तो बहुत बादमें काफी विवादके बाद मंजूर की गयी। राइफलों, हल्के आटोमेटिक्स और कुछ भारी पहाड़ी तोपें तथा पैरेडके लिये कुछ सशस्त्र गाड़ियां, इस फौजको जापानि-योंसे मिलीं। बाकी सामान जैसे कपड़े और जूते कभी-कभी चोर बाजारसे खरीदने पड़ते थे।

यह साफ-साफ मालूम नहीं हो सका है कि आजाद हिन्द फौजकी संख्या क्या है। मगर अनुमान यह है कि ३० और ५० हजार के बीच आजाद हिन्द फौजकी सैनिक संख्या है। इनमेंसे कुछ तो युद्ध बन्दियोंमेंसे भर्ती किये गये, बाकी पूर्वी एशियाके भारतीयोंमेंसे लिये गये। यद्यपि यह कहा जाता है कि यह फौज स्वयंसेवक है; लेकिन यह कहना कठिन है कि इसमें कहांतक सचाई है। इस सेनामें भर्ती होनेके लिये अवश्य ही कई तरहके और अनेक प्रलोभन दिये गये होंगे। जिन युद्ध-बन्दियोंने आजाद हिन्द फौजमें शामिल होनेसे इन्कार किया उनके साथ होनेवाला कठोर व्यवहार, श्री सुभाषचन्द्र बोसकी आजाद हिन्दकी आर्जी हुकूमत द्वारा दिये गये आजादी, सुरक्षा और संरक्षण सम्बन्धी वायदे, और भारतकी आजादीके लिये प्रयत्न करनेकी संभावना शायद आजाद हिन्द फौज में भर्ती होनेके प्रमुख प्रलोभन थे। इसके अलावा यह भी कारण हो सकता है कि इधर भारतीय सेनामें अशिक्षितोंकी जो बड़ी तादादमें नयी भर्ती हुई (जैसा कि १९४०-४१ में मलायाको भेजी गयी भारतीय सेना थी।) वह सेना और जिसे पुरानी भारतीय सेना जैसी राजभक्ति प्राप्त करनेका अवसर नहीं मिला था, यह समझा जा सकता है कि उसमें बहुतसे आजाद हिन्द फौजमें भरती हो गये जब कि उन्हें अच्छी तनख्वाह और अच्छे व्यवहारके प्रलोभन दिये गये और खास तौरपर उस दशामें जब उन्होंने यह देखा कि आजाद हिंद फौजमें सभी अफसर भारतीय हैं। इसके साथ ही एक खास कारण आजाद हिन्दकी आर्जी हुकूमतकी स्थापना भी था जिसके द्वारा यह घोषणा की गयी थी कि पूर्वी एशियाके तमाम भार-तीय उसकी प्रजा हैं और उनके जानोमालके सम्बन्धमें उसे पूर्ण अधिकार प्राप्त है। इस कानूनी अधिकृत घोषणाके साथ इस सर-कारके लिये यह बिलकुल सम्भव था कि वह लोगोंको आजाद हिन्द फौजमें भर्ती होनेके लिये प्रेरित करे और आजाद हिन्द फौजके खर्चेकी पूर्तिके लिये पूर्व एशियाके भारतीयों की सम्पत्ति और आयके ऊपर कर लगाये।

जापानियोंसे मदद नहीं मिली

आजाद हिन्द फौजकी तरफसे यह कहा गया है कि आजाद हिन्द फौज केवल भार-तीय अफसरों द्वारा ही ट्रेण्ड की गयी है और उसे जापानियोंसे किसी किस्मकी मदद नहीं मिली। इसके अतिरिक्त वहां कोई साम्प्रदायिक भेदभाव नहीं है। सबका खाना-पीना एक साथ होता है और सबको हिन्दुस्तानीमें ट्रेनिंग दी जाती है। आजाद हिन्द फौजका अपना राष्ट्रीय गान है और "जय हिंद" उनकी सलामी है। इसके कुछ अफसर स्थायी भारतीय फौजसे आये हैं जो सेण्डहर्स्ट या देहरादूनके शिक्षण प्राप्त हैं और उन प्रतिष्ठित भारतीय परिवारोंमेंसे हैं जो अपनी राजभक्तिके लिये मशहूर हैं।

झांसीकी रानी रेजिमेण्ट

आजाद हिंद फौजमें एक रेजीमेण्ट स्त्रियों का भी है जिसमें स्त्रियां ही अफसर हैं। इसका नाम "झांसीकी रानी रेजिमेण्ट" है।

जहां तक मालूम हुआ है, आजाद हिन्द फौजके लिये मलाया और थाइलैंडमें दो-तीन आफीसर ट्रेनिंग कैम्प हैं। इसके अलावा और भी कई कैम्प फौजियोंकी ट्रेनिंगके लिये हैं।

आजाद हिंद फौजको कोई खास काम-याबी नहीं मिली। १९४४ के शुरूमें अरा-कान और मनीपुरमें वह लड़ी थी। उनमेंसे बहुतसे मरे, कुछ वापस भाग गये और कुछ टुकड़ियोंने आत्मसमर्पण कर दिया। जिस वक्त इम्फालका पतन हुआ, उस वक्त मैंने आत्मसमर्पण करने वाले आजाद हिंद फौज के सैनिकोंसे मुलाकात भी की। वे बहुत ही गंदी हालतमें भूखे और निरुत्साह दिखाई पड़े। ऐसा मालूम होता था कि उन्हें लड़नेके लिये विवश किया हो और उसके बाद उन्हें भोजन, वस्त्र तथा हथियारोंके लिये निराश्रित छोड़ दिया गया हो।

समर्पणकी ओर

आजाद हिंद फौजमें जापानियोंके साथ ...कर लड़ने और कामयाबी हासिल करने का जो ... ह था वह इम्फालकी पराजय के बाद काफूर हो गया और उसके बाद उनकी आत्मसमर्पणकी ही कहानी बाकी रह गयी। यह सही नहीं कि उनके पास लड़नेके साधन नहीं थे अथवा वे बच निकल नहीं सकते थे। जियावाड़ी, मागवे और रंगूनमें आजाद हिंद फौजके बहुतसे सैनिकोंने स्वेच्छासे आत्म समर्पण कर दिया। इनमें अफसर भी थे। जियावाड़ीमें ३००० आजाद हिन्द फौज थी जिसके भारतीय अफसर थे और १०० से कम दूसरे रैंकोंके भारतीय। रंगूनमें ७००० आजाद हिंद सैनिकोंने आत्मसमर्पण किया। इन्होंने जापानियोंके रंगून खाली कर भाग जानेके बाद एक हफ्ते तक, जब तक २९ वीं भारतीय सेना वहां न पहुंच गयी वहांकी रक्षा की थी। उनमेंसे अधिकांश जापानियोंकी क्रूरता, मूर्खता और अविश्वास से आजिज आ चुके थे, और ५ वर्षोंके प्रवाससे तंग आकर अपने घरोंको लौट जाने के इच्छुक थे। रंगूनसे जाते वक्त जापानियोंने आजाद हिन्द फौजके सैनिकोंको अपने साथ ले चलनेकी बहुत कोशिश की। जबर्दस्ती करनेका तो समय ही न था और न आजाद हिन्द फौज इतनी निःशस्त्र थी कि वह बलात्कार सहन करती। उसने जवाब दिया कि रंगूनके भारतियोंकी जानोमालकी रक्षा के लिये उनका वहां रहना जरूरी है और वे सब रह गये। इससे जाहिर है कि आजाद हिंद फौजका जापानियोंके बीच विशेष आकर्षण बाकी नहीं रहा था।

आत्मसमर्पण

रंगूनके पतनके बारेमें तरह-तरहकी बेसिर-पैरकी अफवाहें उड़ी हैं। एक अफवाह यह थी कि एक आस्ट्रेलियन युद्धबन्दीने रंगूनकी जेलसे निकल कर आजाद हिन्द फौजको हुक्म दिया कि वह हथियार रख दे। दरअसल आजाद हिन्द फौजने ही अङ्-चनें खड़ी करना उचित नहीं समझा। उन्होंने स्वेच्छासे आत्म समर्पण करनेका निश्चय किया और जेलसे सारे युद्ध बन्दी छोड़ दिये गये। यही नहीं, उन्होंने आक्रमण करनेवाली सेनाओंका स्वागत किया, उन्हें अपने राशनसे भोजन दिया, जहाजोंको खाली करनेमें मदद दी और जब तक २९ वीं फौज न पहुंच गयी, रंगूनकी सफाईकी। आजाद हिन्द फौजसे आत्मसमर्पण कर देने के बाद जब यह कहा गया कि आई. एन. ए. के बिल्ले उतार कर भारतीय सेनाके बिल्ले लगा लें ताकि गलतफहमी और संघर्ष न हो,

तब उन्होंने इसे स्वीकार किया । मैंने देखा कि आजाद हिन्द फौजमें सद्भाव और अनुशासन था । वे अपने अफसरोंकी मातहतीमें सड़क साफ करते, जहाज खाली करते और वह सारा काम करते थे जो उन्हें दिया जाता था । आजाद हिन्द फौजका अस्पताल एक स्कूलमें था और अपनी व्यवस्थाके लिये भारतके किसी भी फौजी अस्पतालका मुकाबला कर सकता था । वहांके डाक्टर सब भारतीय सेनाओंके डाक्टर थे और आजाद हिन्द फौजके अलावा नागरिकोंकी भी सुश्रूषा करते थे ।

आजाद हिंद फौजका भविष्य

जब मैं रंगूनमें था उस वक्त आजाद हिंद फौज गिरफ्तार नहीं हुई थी और न उस पर निगरानी ही थी । मगर वे लोग अपने भविष्यके बारेमें चिन्तित थे । उनके परिवार वालोंके लिये इस सम्बन्धमें: चिन्ता होनी आवश्यक है । मांडलेमें आत्मसमर्पण :करते वक्त उन्हें यह आश्वासन दिया गया था कि उनके साथ सद्व्यवहार किया जायगा और उन्हें संरक्षण मिलेगा । रंगूनमें बिना शर्त आत्मसमर्पण हुआ । उनका एक आफीसर, लेफ्टिनेंट कर्नल, बेंगलौर निवासी आई० एम० एस० था । उसने आत्मसमर्पणके वक्त यह संदेशा भेजा था कि उनके साथ युद्धबन्दियों जैसा व्यवहार होना चाहिये क्योंकि आजाद हिन्दकी आर्जी हुकूमतकी सेनाका सिपाही है जिसे सरकारने मान्यता दी थी । वह बात युद्धकी है, मगर इनके साथ जो भी न्याय हो उसमें रहमसे काम लिया जाना चाहिये । बर्मा-स्थित आजाद हिन्द फौजकी तरह जर्मनीमें रूसी सैनिकोंको न केवल रूसियोंके मुकाबले पर बल्कि अन्य मित्र राष्ट्रीय फौजोंसे भी लड़नेके लिये विवश किया गया था । इसी तरह आजाद फ्रेंच सेना अपने देशकी क़ानूनन बनी सरकारसे लड़ती रही जिसे फ्रांसके पतनके बाद अमरीकाने मान्यता दी थी । (आलोक)

——

कपड़ेकी सुरक्षा कैसे की जाये ?

(लेखक—सु श्री शान्तशीला "कौर" रांची)

…जमाना अब बहुत दूर जा चुका है …को भी नातवांई सुझती थी—"नातवां …हो हुस्का !" …शीका बहादुर शेर—शायर—आजके …ऐसी शायरीसे वाहवाही नहीं लूटेगा। …हो आज, जनता, पागलखानेके ओर …रसीद लिये ही पार्सल कर देगी। …मलसे भी छिल जानेवाली काया …नमारे सोच रही है कि आसानीसे …टाट भी मिल जावे तो वही …! तरह-तरहकी नायिकाओंके चित्रों …साड़ी और साड़ीकी विविध, …किनारीके विज्ञापनोंकी विडम्बना …। साड़ी और किनारीका प्रसंग …प्रलाप हो गया है आज, कफनके लिये …दार देख कर !

…की समस्या इतनी जटिल कभी …थी। ठीक है, हमारी आवश्यकता …तना विशाल रूप भी तो कभी नहीं …था। उन दिनों एक जोड़ा एक साल …छुट्टी देता था और अब ?—अब तो …दोपहर, सांझके लिये एक-एक स्पेशल …चाहिये। टहलनेके कपड़े, सोनेके कपड़े …कपड़े और उठकके कपड़े !—फैशनेबुल …हमारा आजका आधुनिक समाज ! …समस्याका कोई निदान न मिलने- …इस कठिन समयमें वस्त्रोंकी सुरक्षाका …महत्वका है। पहलेकी भांति जोड़ेपर …नहीं मिल पायेंगे। जो मिले हुए हैं …उन्हें जहांतक हो सके, दीर्घजीवी करने …का करें।

…तो, आपकी सेवामें इस सम्बन्धके कुछ …अर्पित करने बैठी हूं—

…कपड़ेमें कीड़े खूब लगते हैं। सबसे भय- …और नाशकारी कीड़ेका नाम है, धोबी ! …की आंच, कास्टिक और 'छियोराम, …से कपड़ेकी जान निकल जाती है। …ऐसे कपड़ोंकी रक्षा फिनाइलकी गोली …की टिकियासे नहीं हो सकती। …लिये चाहिये, साबुनकी टिकिया। …दाम ज्यादा लगे तो लगे, जहांतक हो …अच्छी किस्मका साबुन खरीदें। सस्ते …साबुनोंमें मिलावटकी कई ऐसी चीजें …हैं जो सूतको कमजोर कर देती हैं। …की मात्राका भी इनमें उचित और …क मांप नहीं।

…धोबीके हिसाबकी तुलनामें साबुनका …भी कम नहीं। किन्तु ऐसी युक्तियां हैं …द्वारा साबुनके खर्चेमें आधे आधकी …की जा सकती है, एक साबुनकी शक्तिको …किया जा सकता है।

…मान लीजिये कि आप एक धोती, एक …और एक चादर साबुनसे धोने जा रहे …इसमें जितना साबुन लगेगा उतनेमें ही …एक-एक सेट कपड़े साफ कर लिये …सकते हैं।

…आप अपने कपड़े शीतल जलमें भिगा- …कर बना छोड़िये। एक कठौतेमें चायकी …गर्म पानी उतना डालिए जितनेमें …सब कपड़े भींग जा सकें। कोई पचीस- …मिनिटतक बचकानी कपड़े गर्म पानीमें …पड़े रहने दीजिये और अपने कपड़े—जो शीतल पानीमें भिगाया पड़ा है—निचोड़ डालिये और साबुन लगाना आरम्भ कीजिये। साबुन कपड़ेमें हल्के हाथों लगाना चाहिये। ताकत आजमानेसे साबुन भी ज्यादा घिसते हैं और कपड़ेको क्षति भी पहुंचती है ! बचकानी कपड़ेका पानी निचोड़ कर फेंक दीजिये और पुनः उन्हें (बचकानी कपड़ोंको) कठौतमें डाल दीजिये। अब अपना एक कपड़ा जिसमें साबुन लगाया जा चुका है, आहिस्ते-आहिस्ते फींचिये और एक-एक चुल्लू पानी का फुहारा देते चलिये कि, जिससे फेन अच्छी तरह उठे। फेन जमा होता चले और आप उसे उठा-उठा कर कठौतेमें रखते चलें-जिसमें बचकानी कपड़े हैं। इस तरह जब काफी फेन उठ चुके, अपने दूसरे तीसरे कपड़े में साबुन लगाना आरम्भ करें और उनके फेन भी कठौतेमें दें।

बचकानी कपड़ेको फेनमें लपेटते हुए, कठौतेके अन्दर कोई पन्द्रह मिनिट तक फींचते रहें। तदनन्तर एक-एक करके कपड़ों को बाहर निकालें और स्वच्छ जलसे धो डालें।

इस प्रकार साबुनके फेनको जो योंही नष्ट कर दिया जाता है—उपयोगमें लाकर साबुनके खर्चमें आधे-आधकी बचत हो जाती।

साबुन और सुहागा

और, यदि इस आधे खर्चको और भी कम करना चाहें तो उसकी भी युक्ति है। साबुन के साथ सुहागाका प्रयोग कीजिये। एक बट्टी साबुनके पीछे एक धेलेका सुहागा लगेगा।

विधि—सुहागेको आगमें देकर लावा बना लें और चूर्ण कर डालें। कठौतेमें उतना स्वच्छ जल डालें जितनेमें एक कपड़ा भींग सके। उसमें सुहागेका चूर्ण मिला दें। लोसन तैयार हो गया !

साफ किये जानेवाले कपड़े एक-एक कर के क्रमशः लोसनमें डालिये और पांच मिनिट तक उसमें पड़ा रहनेके बाद निचोड़ लीजिये जिससे लोसन कठौतेमें ही रह जाये। तदनन्तर कपड़ेमें हल्के हाथों साबुन लगाना शुरू करें। इस तरह अन्यान्य कपड़ोंको भी उसी लोसनमें डुबाते चलें; पानीके समाप्त या मैलयुक्त हो जानेपर पुनः लोसन प्रस्तुत कर लें। इस प्रकार, कपड़ेको सुहागा-युक्त कर लेनेसे कपड़ेमें साबुनकी अधिक आवश्यकता न होगी। कपड़ोंको सुहागा-युक्त कर लेनेसे एक सेर साबुनसे चार सेरका काम हो सकेगा।

मात्रा—हर बड़े और छोटे कपड़ेमें क्रमशः अठन्नी और चवन्नी भर सुहागेका चूर्ण आवश्यक है। एक दफे अधिक मात्रामें सुहागेका चूर्ण बनाकर किसी डब्बे या चौड़े मुंहकी बोतलमें रख लेना चाहिये।

सुहागेके प्रयोगसे कपड़ेमें कोई क्षति नहीं पहुंचती अपितु एक प्रकारकी चचलता आ जाती है।

नोना पानी

सुहागेके लोसनके अनुसार उसी मात्रामें अलग नोना पानी अर्थात सेंधा नमक युक्त जल तैयार करके धौत-वस्त्र डुबा-डुबा कर निचोड़ लेनेसे अपेक्षाकृत दो-तीन दिन और अधिक साफ और चमकीले बने रहते हैं।

तेलका दाग

बचकानी कपड़ोंमें तेल आदिका मैल अधिक बैठ जाया करता है। फलालेनके कपड़े, मफलर और स्वेटरकी भी यही दशा हो सकती है। इनकी स्वच्छता तथा सुरक्षाके लिये पानीमें आवश्यकतानुसार साबुनको चाक-चाक करके डालें। साबुन जब गल जाय बरतनको नीचे उतारें और ठंडा होनेको छोड़ दें। जब देखें कि पानीमें चायकी तरह गर्मी रह गयी है तो उक्त कपड़ेको उसमें डाल दें और कोई पचीस मिनट पड़ा रहने दें। तदनन्तर कुछ देर तक उसे उसी पानीमें हौले-हौले फींचते रहनेके बाद शीतल जलका फुहारा देते हुए धो डालें। इस प्रकार तेल आदिका दाग चला जायेगा और स्वच्छता निखर पड़ेगी।

पीक और चित्ती

जो पान खानेके अभ्यस्त हैं उनके कपड़े पर लाख सावधान रहने पर भी पीकका दाग लग ही जाता है। और तब उस कपड़े को पेंशन दे देनी पड़ती है। पानकी पीकका दाग दूर करनेके लिये कागजी नीबू बड़े काम की चीज है। जहां दाग लगा हो वहां कागजी नीबूका फांक अच्छी तरह रगड़िये और तदनन्तर उसे सूख जाने दीजिये। सूख जाने पर साबुनसे धो डालिये। यदि दाग कुछ शेष रह जाये तो एक बार पुनः नीबूका प्रयोग कीजिये।

वर्षा कालमें ठीकसे नहीं सूख सकनेके कारण कपड़ेमें एक प्रकारका दाग लग जाता है, जिसे चित्ती कहते हैं। चित्तीसे कपड़ेको घुन और अनाजवाली दुश्मनागी है। चित्ती लग जाने पर कपड़ेको त्यागनेके सिवा और कोई चारा नहीं रहता।

किन्तु, चित्ती आसानीसे हटायी जा सकती है और वस्त्र पुनः अपना पूर्व रूप प्राप्त कर सकता है। जिस-जिस स्थान पर चित्ती लगी हो वहां उत्तम रूपसे साबुन लगाइये और फेनयुक्त स्थान पर पथल खड़ी (चौक) की बुकनी एक अठन्नी भर छिड़किये और रगड़िये। तदनन्तर उसे घास पर बिछा कर सूखने दीजिये। सूख जाने पर पुनः साबुनका प्रयोग कीजिये और सम्पूर्ण वस्त्र धो डालिये। यदि एक बारसे सम्पूर्णरूपेण चित्ती दूर न हो तो दोबारा साबुन और पथलखड़ीका प्रयोग कीजिये।

सोडा और वस्त्र

कपड़ा धोनेके सोडेमें कपड़े उबाल कर साफ किये जाते हैं। इस सिलसिलेमें कपड़ेको

गीत

—०✻०—

अपने मन में सुख-दुखमय सुधि-भार किसी का ले जाऊंगा !
कोमल अंगुलियों से छू कर
रोम-रोम में रसमय स्वर भर
किया किसी ने था मेरे
क्षण-क्षणको मुग्ध गीतिमय सुखकर
उर-वीणा में वह झंकृति - विस्तार किसी का ले जाऊंगा !
मधु-स्मित से कर अमृत-वर्षण
डाल स्नेह से भींगी चितवन
किया किसी ने था कण-कण को
सौरभ से सिंचित नन्दन - वन
अपने सूने अन्तर में वह प्यार किसी का ले जाऊंगा !
रेखाओं में उतर-उतर कर
शनैः शनैः स्पष्टतर हो कर
हो आया समूर्त था कोई
मेरे प्राण-मुकुर पर सुन्दर
अपने अन्तर - पट पर वह आकार किसी का ले जाऊंगा !
आंखों को दे स्वप्नों का धन
दिये किसी ने फिर आंसू-कण
लौटा कर सब सुख, बदले में
दिया वेदना - दान चिरन्तन
अपनी झोली में यह भी उपहार किसी का ले जाऊंगा !

—श्री जितेन्द्रकुमार

तेज़ आंच भी लगती है और पटक भी। यह प्रणाली कपड़ेकी अकाल मृत्युका कारण है। सोडेसे वस्त्र धोनेकी उचित प्रणाली यह है कि पर्याप्त पानी उबाला जाये। पानी जब खौलने लगे तो सोडा डाल दिया जाय और कपड़ोंको उसमें डाल कर पकाया न जाये बल्कि तुरत बर्तन नीचे उतार लिया जाये। थोड़ी-थोड़ी देर तक कपड़ोंको उलट-पुलट करते हुए आध घंटेतक पड़ा रहने दे। तदनंतर कपड़ोंको उसी पानीमें फींच कर निचोड़ लें और तब स्वच्छ-शीतल जलका फुहारा देते हुए धो डालें। पटकनेकी कोई आवश्यकता नहीं। इस प्रकार कपड़ेके सूत आंचके कारण झुलस न पायेंगे।

प्राकृतिक सोडा

दृष्टान्तने तो अब तक यही सिद्ध किया है कि वैज्ञानिक चीज़ोंका अभिप्राय विनाश ही है। प्राकृतिक सोडा वैज्ञानिक सोडेसे अधिक सुलभ और सुकार्य युक्त है। हां, नागरिक जीवनमें इसे प्राप्त करनेमें कुछ कठिनाई हो सकेगी किन्तु दुष्प्राप्य नहीं है, यह रेंड़ीके पौधे और इमलीकी लकड़ीका राख—ये हैं, दो प्रकारके प्राकृतिक सोडे। इनसे कपड़े—सोडेकी भांति ही साफ किये जाते हैं। स्वच्छता वैज्ञानिक सोडेसे विशेष होती है।

अण्डर वियर और लहंगा

फैशनने समय-समयके जिन पोशाकोंको पैदा किया है उनमें सोनेके कपड़े (स्लीपिंगशूट) और अंडरवियर तथा लंहगाका कायल होना आवश्यक है। कपड़ेको पहनकर सोनेसे ही उसकी जान निकलती है। पहनकर सोनेसे ही कपड़े मैले भी अधिक होते हैं। अतः सोनेके कपड़े पृथक हों तो और कपड़ों की रक्षा होती है। अण्डर वियर और लंहगा केवल अण्डर वियर और लंहगा ही नहीं हैं ये साड़ी और धोतीको आयुप्रदान करते हैं। इनके पहननेसे, बैठने-उठनेमें, साड़ी-धोतीपर ज़ोर नहीं पड़ता।

सुगंधित वस्त्र

कीड़ेसे रक्षा करनेके लिये सुगंधित द्रव्यों तथा फिनाइल एवं कपूरकी गोलियोंका प्रयोग किया जाता है। किन्तु इनसे कपड़ोंकी सुरक्षा होती है अनुभवने अबतक मुझे नहीं बतलाया। मैं समझती हूं कि कपड़ेको सुगंध तथा कीड़ोंसे बचानेका सबसे बढ़ियां, तरीका है—लवंगके चूर्णका प्रयोग। आवश्यकता भर लवंग सूखे तवापर भूनकर बारीक चूर्ण कर लिये जायें और बाक्समें छिड़ककर कपड़े रखे जायें। इस प्रकार कपड़ेमें जो सुगन्ध आयेगी वह मनोहारी एवं स्वास्थ्यकर होगी। कीड़े चाहे वे कैसे भी हों, कपड़ेके समीप नहीं आ सकते। ऊनी कपड़ेकी तहोंमें एक-एक चुटकी लवंगचूर्ण छिड़क देना आवश्यक है!

कपड़ेकी शिकन

धोनेके बाद कपड़ेमें एक प्रकारकी शिकन पड़ जाती है। किन्तु यदि कपड़े सूखने डालते समय अच्छी तरह झाड़ लिये जायें और तान कर सुखायें जायें तो शिकन नहीं पड़ती। और तह लगाकर रातभर तकियाके नीचे—जहां शयन किया जाये—रख छोड़नेसे आपही आप, शिकन दूर हो जाती है।

= ब्रिटिश सरकार की भारत नीति =

महात्माजीकी मर्मवाणी

महात्मा गांधीने, लार्ड वावेलकी घोषणा-... वक्तव्य दिया है : वायस-... विज्ञापकका ... ब्राडकास्टके विशुद्ध राजनीतिक पहलू-... इस समय कुछ कहना पसन्द नहीं ... क्योंकि अब कांग्रेस वर्किंग कमेटीके ... मुक्त हो गये हैं। मैं उनको अपनी ... दे सकता हूँ। कांग्रेसकी नीतिका ... स्थिर करना एवं साधिकार बोलने ... करनेका काम उनका है। ब्राडकास्ट ... मैंने तार द्वारा वायसरायका ध्यान ... किया कि कांग्रेसके मान्य प्रतिनिधि ... स्थिति मेरी नहीं है। यह कार्य तो ... प्रेसिडेण्टका है अथवा उस व्यक्तिका ... किसी खास मौकेपर कांग्रेसका प्रति-... करनेके लिये नियुक्त किया जाये। ... कई वर्षोंसे, जब आवश्यकता हुई है, ... हैसियतसे कांग्रेसके सलाहकारका ... किया है। कायदे आजम जिन्नाके ... वार्तालापमें भी मेरी यही स्थिति थी। ... सरकारके प्रति भी मैं भिन्न स्थिति ... सकता। वायसरायके ब्राडकास्टमें ... ऐसी बात है जो मेरे कानोंको बहुत ... लगी हैं और निश्चय ही प्रत्येक राज-... मना हिन्दूको उस बातने चोट पहुं-... होगी। मेरा मतलब सवर्ण हिन्दुओं ... है। यह मेरा दावा है कि ऐसा ... नहीं है, जो राजनीतिक भाषामें ... सवर्ण हिन्दू कहता है कांग्रेसकी तो ... नहीं है जो सम्पूर्ण भारतका प्रति-... करना चाहती है और राजनीतिक ... के लिये प्रयत्नशील है। क्या वीर ... डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी अथवा ... जैसे सवर्ण हिन्दुओंके प्रतिनिधि हैं? ... स्वयं सवर्ण हिन्दू होनेका दावा ... ? मैं समझता हूं नहीं। मैंने इस ... न उठाया होता यदि यह मैं न ... कि हिन्दुओंके राजनीतिक विचार ... चोट पहुंचानेवाला है।

... महात्माजीने कहा है कि प्रस्ता-... सम्मेलन बहुत कुछ कर सकता है, यदि ... राजनीतिक रास्तेसे अपना कदम ... तो।

...वित नेता सम्मेलनके लिये आमन्त्रित व्यक्ति

वायसरायकी ओरसे निम्नलिखित २१ ... को शिमलामें २५ तारीखको होनेवाले सम्मेलनमें शामिल होनेके लिये निम-... मिला है :—

१ महात्मा गांधी (राष्ट्रीय कांग्रेस) २ ... ए० जिन्ना (मुस्लिम लीग)

... केन्द्रीय असेम्बलीके पार्टी लीडर

३ श्री भूलाभाई देसाई (कांग्रेस) ४ ... नवाबजादा लियाकतअली खां (मुस्लिमलीग) ५ ... मन्मथनाथ बनर्जी (नेशनलिस्ट) ६ सर ... विल्किंसन (यूरोपियन ग्रूप)

... कौंसिल आफ स्टेटके पार्टी लीडर

७ श्री जी० एस० मोतीलाल (कांग्रेस) ८ ... हुसेन इमाम (मुस्लिम लीग)

(शेष ४ कालमके नीचे)

लार्ड वावेल द्वारा नये प्रस्तावोंकी घोषणा

केन्द्रीय शासन समितिका पुनर्संङ्गठन

रक्षाको छोड़ सब विभाग भारतीयोंके हाथमें

कांग्रेस नेता छूटे—प्रतिबन्ध हटा—२५ जूनको नेता सम्मेलन

गत बृहस्पतिवारको हिन्दुस्तानके वायसरायने वर्तमान राजनीतिक गतिरोध मिटानेके लिये ब्रिटिश सरकारके प्रस्तावोंकी घोषणा दिल्ली रेडियोसे ब्राडकास्ट की है। इन प्रस्तावोंका सम्बन्ध केन्द्रमें नवीन शासन समितिके संगठनसे है। यह व्यवस्था सिर्फ ब्रिटिश भारतके लिये है। नरेशों और सम्राटके प्रतिनिधिके सम्पर्क पूर्ववत् रहेंगे। इस व्यवस्थासे उसमें किसी तरहका परिवर्तन नहीं होगा।

कांग्रेस वर्किंग कमेटीके जो सदस्य जेलोंमें उस समय तक रह गये थे उनको तत्काल छोड़ देने और कांग्रेस परसे प्रतिबन्ध हटा लेनेका आदेश भी लार्ड वावेलने उक्त घोषणाके साथ जारी किया है। आठों नेता तदनुसार गत शुक्रवारको ३४ महीनेके बाद छोड़े गये। मुक्त नेताओंमें राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद, पंडित जवाहरलाल नेहरू, डा० राजेन्द्र प्रसाद, सर्दार बल्लभ भाई पटेल, आचार्य कृपलानी, आचार्य नरेन्द्रदेव, डा० पट्टाभि सीतारमैया और श्री शंकरराव देव हैं।

प्रस्तावित योजनाका स्वरूप इस प्रकार है : केन्द्रमें प्रस्तावित नवीन शासन समितिमें मुख्य-मुख्य सभी सम्प्रदायोंके प्रतिनिधि रहेंगे। सवर्ण हिन्दुओं और मुसल-मानोंके प्रतिनिधि संख्यामें समान होंगे। वायसराय और कमाण्डर इन चीफको छोड़कर शासन समितिके शेष सब सदस्य भारतीय होंगे। कमाण्डर इन चीफ युद्ध सदस्यकी हैसियतसे समितिके सदस्य रहेंगे। वायसराय समितिके अध्यक्ष होंगे। परराष्ट्र विभाग भी, जो अब तक वायसरायके मातहत है, भारतीय सदस्यके जिम्मे रखा जायेगा। प्रस्तावित योजनाके अनुसार प्रथम बार गृह और अर्थ विभाग भारतीयोंके मातहत आयेंगे। डोमि-नियनोंकी तरह भारतमें एक ब्रिटिश हाई कमिश्नर रहेगा। जो ब्रिटेनके व्यावसायिक एवं ऐसे ही अन्य स्वार्थोंका प्रतिनिधित्व करेगा। प्रस्तावित नयी शासन समिति वर्तमान विधानान्तर्गत ही कार्य करेगी। वायसरायका विशेषाधिकार पूर्ववत रहेगा। अवश्य ही लार्ड वावेलने आश्वासन दिया है कि यह विशेषाधिकार अकारण ही काममें न लाया जायेगा तथा ब्रिटेनके हितमें नहीं बल्कि हिन्दुस्तानके हितमें ही इसका प्रयोग होगा। नयी समितिके सदस्योंका चुनाव राजनीतिक नेताओंसे परामर्श करके स्वयं वायसराय करेंगे। अन्तिम स्वीकृति सम्राट देंगे।

प्रस्तावित नेता सम्मेलन

वायसरायने २१ नेताओंको, जिनमें महात्मा गांधी और मि० जिन्नाके अतिरिक्त प्रान्तोंके प्रधान मन्त्री, जहां गवर्नरी शासन है वहांके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री, केन्द्रीय असेम्बली और स्टेट कौंसिलके पार्टी नेता तथा अछूतों और सिखोंके एक एक प्रतिनिधि हैं, आमन्त्रित किया है। इन नेताओंका सम्मेलन वायसरायकी अध्यक्षतामें २५ जूनको वायस-राय भवन, शिमलामें होगा। यह नेता सम्मेलन प्रस्तावित नयी शासन समितिके संगठन पर विचार करेगी।

उक्त घोषणा करनेके बाद वायसरायने कहा है कि यदि नेता सम्मेलन सफल हुआ तो केन्द्रमें नयी शासन समिति बनानेके प्रश्न पर हम लोग सहमत हो सकेंगे। इस हालतमें मैं आशा करता हूं कि जिन प्रान्तोंमें दफा ९३ के अनुसार इस समय शासन हो रहा है वहां भी मन्त्रिमण्डल बनेंगे और ये मन्त्रिमण्डल सर्वदली होंगे। यदि सम्मेलन असफल हुआ तो जो स्थिति आज है वही बनी रहेगी। :वही शासनक्रम रहेगा। वायसरायने यह आश्वासन भी दिया है कि कामचलाऊ सरकारका संगठन अन्तिम वैधानिक समझौतेके मार्गमें बाधक नहीं होगा। वर्तमान प्रस्ताव स्थायी समाधानको सरल बनानेके उद्देश्यसे पेश किये गये हैं। इन प्रस्तावोंका उद्देश्य है भारतको पूर्ण स्वायत्त शासनकी ओर अग्रसर करना।

अन्य राजबन्दियोंकी मुक्ति

वायसरायने, यह घोषणा करनेके बाद कि कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्योंको तत्काल रिहा कर देनेका हुक्म जारी किया जा चुका है, कहा कि १९४२ के अगस्त उपद्रवके परि-णाम स्वरूप जो अन्य लोग बन्द हैं, उनको मुक्त करनेका निर्णय मैं अभी केन्द्रीय सरकार पर, अगर वह बनी, और प्रन्तीय सरकारों पर छोड़ता हूं। केन्द्रीय और प्रान्तीय व्यवस्था पिकाओंके नये चुनावके लिये उपयुक्त समयके सम्बन्धमें प्रस्तावित सम्मेलनमें विचार होगा। सदिच्छा और पारस्परिक विश्वासका वातावरण पैदा करनेकी अपील करते हुए वायसरायने कहा कि सबको कुछ न कुछ "जो हुआ सो हुआ, क्षमा करो और भूल जाओ" की नीतिसे काम लेनेकी आवश्यकता है।

नेहरूजीकी चेतावनी

जेलमुक्त पंडित जवाहरलाल नेहरूने लख-नऊमें एसोशियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिके मिलनेपर कहा है कि हिन्दुस्तानमें दिखायी पड़नेवाली अचलावस्थाके बावजूद भी इसमें जरा भी सन्देह मुझे नहीं है कि इन भयानक वर्षोंमें जिन स्थितियोंसे होकर हमारे देश-वासी गुजरे हैं उनका बड़ा जबर्दस्त प्रभाव उनपर पड़ा है। कुछ कहनेके पहले उनके सम्पर्कमें आना बहुत आवश्यक है। किन्तु इतना मैं जानता हूं कि चाहे जो परिवर्तन, भीतरी अथवा बाहरी हुए हों, मौलिक वस्तु-स्थिति और सिद्धांत वही हैं। हिंदुस्तानमें उस वस्तु स्थितिको अन्य राष्ट्रों और:जातियोंकी स्वतन्त्रता और सहयोगके एक विशाल वृत्तके अन्तर्गत भारतीय स्वतन्त्रता और मुक्तिके रूपमें ही देखा जा सकता है। इन दोनोंको एक दूसरेसे पृथक नहीं किया जा सकता। मैं यह जानता हूं कि उस दुनियामें जहां एक राष्ट्रका अन्य राष्ट्रपर आधिपत्य है भारतीय स्वतन्त्रता अपने पैरोंपर खड़ी नहीं रह सकती है। उसी तरह यह भी मैं जानता हूं कि किसी स्थायी विश्व-व्यवस्थाकी उस समय तक कल्पनाभी नहीं की जा सकती जबतक हिन्दुस्तानके ४०कोटि व्यक्ति वास्तव अर्थोंमें स्वतन्त्र न होंगे। भारतकी स्वतन्त्रता का अर्थ ऊपरके मुट्ठीभर लोगोंकी स्वतन्त्रता नहीं है :बल्कि ४० कोटि व्यक्तियोंकी लोकतन्त्रीय और आर्थिक स्वतन्त्रता तथा समानता है। हमारे लिये राजनीतिक और आर्थिक स्वतन्त्रता, अन्य प्रत्येक देशकी तरह, एक दूसरेके साथ अभिन्न रूपसे जुटी हुई हैं। बङ्गाल दुर्भिक्षकी भयानक घटना, महायुद्धमें घटनेवाली किसी घटनासे यदि अधिक नहीं तो लेशमात्र कम भयावह और रोमाञ्चकर नहीं है, हिन्दुस्तानमें ब्रिटिश शासनपर अन्तिम फैसला तो है ही, साथ ही उस आर्थिक व्यवस्थाकी मौतका परवाना है जो इस तरहकी दुर्घटनाओंकी जननी है।

(पहले कालमका शेषांश)

उन प्रांतोंके भूतपूर्व प्रधान मन्त्री जहां इस समय ९३ धाराके अनुसार गवर्नरी शासन है।

९ बी० जी० खेर (बम्बई) १० श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य (मद्रास) ११ पंडित गोविन्दबल्लभ पन्त (यू० पी०) १२ पंडित रविशंकर शुक्ल (सी०पी०) १३ श्री श्रीकृष्ण सिनहा (बिहार) १४ पार्लाकी मेडीके महाराज (उड़ीसा) १५, ख्वाजा सर नजीमुद्दीन (बङ्गाल)

उन प्रान्तोंके प्रधान मंत्री जहां मन्त्रि-मण्डल अधिकारारूढ़ है।

१६ सर महम्मद सादुल्ला (आसाम) १७ सर गुलाम हुसेन हिदायतुल्ला (सिन्ध) १८ मलिक खिजर हयात खां (पंजाब) १९, डा० खां साहब (सीमाप्रांत)

अन्य नेता

२०, राव बहादुर एन शिवराज (दलित वर्ग) २१, मास्टर तारासिंह (:सिक्ख)

संसारका घटना चक्र

कांग्रेस नेता रिहा हुए

राष्ट्रपति मौलाना अबुलकलाम आजाद ...के रामनिवास नजरबन्द शिविरसे ...ार, गत १५ जूनको रिहा कर दिये ...। अत्यधिक गर्मीके और दिनकी ...के थकानसे बचनेके लिये आपने रातकी ...से रवाना होनेका निश्चय किया और ...वारके सुबह ७ बजे हावड़ा स्टेशन पर ... वहां अपार भीड़ने राष्ट्रपतिका स्वागत ...।

...शुक्रवारके ८ बजे सवेरे पंडित जवाहर-...नेहरु और आचार्य नरेन्द्रदेव आल्मोड़ा ... जेलसे मुक्त हुए। जेलके फाटक पर ... जनताने आपका स्वागत किया। ...श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितके रखाली ...के लिये आप दोनों रवाना हो गये, ...दो-एक दिन उनके ठहरनेकी आशा है। ...जीका भावी कार्यक्रम अभी अनिश्चित ...

...सरदार बल्लभ भाई पटेल और शंकरराव ...उसी दिन यरवदा जेलसे ७-३० बजे ...मुक्त किये गये। सरदार पटेलने एसो-...टेड प्रेसके प्रतिनिधिके मिलने पर किसी ...का वक्तव्य देनेसे इन्कार किया जब तक ...की स्थितिका पूरा अध्ययन नहीं कर ...। श्री शंकररावके साथ आप पंचगनीके ...रवाना हो गये।

...राष्ट्रीय कांग्रेसके जेनरल ,सेक्रेटरी ...जे०बी० कृपलानीको शुक्रवारके सवेरे ...बजे करांची जेलसे रिहा किया गया। ...की फ्रेंच-कट दाढ़ीको देखकर किसी ...का भान होता था। आप अत्यन्त ...शील पड़े और जेलका चौखट पार ...एक छोटासा तिरंगाझण्डा फहराने ...और उसे डा० चौथराम गिडवानी ...की टोपीमें खोंस डाला।

...स्वास्थ्यके सम्बन्धमें प्रश्न किये जानेपर ...ए० प्रेसके प्रतिनिधिको बताया कि ...अतिरिक्त मोटाई या वजन थी ही ...से मुझे खोना पड़ता। आप शीघ्र ही ...के लिये प्रस्थान करनेका विचार कर ...

...वारके सुबह ७-३० बजे डा० राजेन्द्र ...को बांकीपुर जेलसे मुक्त किया गया। ...को आपका स्वास्थ्य पूर्वकी अपेक्षा ...है और राष्ट्रपतिका आदेश मिलने ...पर ही वर्किंग कमेटीकी आगामी ...में अवश्य भाग लेंगे।

...कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सदस्य डाक्टर ...सीतारमैयाको वेल्लूर जेलसे शुक्र-...सवेरे रिहा किया गया।

...कांग्रेस वर्किंग कमेटीके सभी सदस्य ...बाहर आ गये हैं और उम्मीद है कि ...जी वेवल योजनाकी सूचना ...पर राष्ट्रपति निकट भविष्यमें ही ...कमेटीकी एक बैठक बुलायेंगे।

तीसरे युद्धकी तैयारी

मास्को रेडियोके आलोचक मेजर इसाकोवने गत बुधवार, १३ जूनको अमेरिकन कांग्रेसके दो सदस्य, श्रीमती क्लेयर बूथ लूस और सिनेटर वर्टनके ह्वीलरकी कड़ी आलोचना की है। उक्त आलोचकने कहा है,—"वे जो कुछ भी कर रहे हैं वह रूसके विरुद्ध युद्ध ठाननेकी खुलेयाम अपीलके बराबर है। ऐसी कार्यवाहीको घिनौना और अशिष्ट कहना बहुत थोड़ा है। हम ऐसी दुरंगी शक्तियोंकी हरकतोंके प्रति उदासीन नहीं रह सकते जो खुलेयाम निर्लज्जतापूर्ण ढङ्गसे तीसरे विश्वयुद्धकी तैयारी करनेमें संलग्न हैं"

इन्हें सोवियट-विरोधी वातोन्मादसे पीड़ितकी संज्ञा देते हुए इसाकोव कहता है—"अमेरिकाके व्यवसाय विभागके मंत्री मि० वेलेसके इस कथनसे कि अमेरिका और रूसके पारस्परिक सद्भावनाओंको दूषित करनेवाले विश्वशांतिके दुश्मन है, हम रूसी पूर्णतया सहमत हैं"

जापानके प्रधान मंत्रीको सर्वाधिकार

जापानी रेडियोके ब्राडकास्टसे ज्ञात हुआ है कि जापानी पार्लमेंटने कुछ संशोधनके उपरान्त युद्धकालीन इमरजेन्सी बिलको स्वीकृत कर लिया है। हाउस आफ पीयर्सने भी उक्त बिलपर निर्विरोध अपनी स्वीकृतिकी मुहर लगा दी है। इस बिलके पास हो जानेसे प्रधान मन्त्री एडमिरल सुजुकी को शाही फरमानोंके जरिये जापानपर शासन करनेका सर्वाधिकार प्राप्त हो गया।

पोल सरकारका पुनर्गठन

देश-विदेशके बारह पोल नेता पोलैण्ड की स्थायी सरकार के पुनर्गठन पर मास्कोमें विचार कर रहे हैं। एक ही समय वाशिंगटन, मास्को और लन्दनसे किये गये ब्राडकास्टमें कहा गया है कि आमन्त्रित व्यक्तियोंमें पोलैण्डकी अस्थायी सरकारके सदस्यके अतिरिक्त पोलैंड और पोलैण्डके बाहर रहनेवाले अन्य प्रजातन्त्री नेतागण हैं। इन नेताओंको रूसके परराष्ट्र कमिस्सार मोशियो मोलोटोव, ब्रिटिश राजदूत सर ए० क्लार्क और अमेरिकन राजदूत मि० डब्ल्यू ए० हैरीमैनकी ओरसे आमन्त्रण मिला है जिन्हें तीन मित्र राष्ट्रोंने क्रीमियाके समझौतेके आधारपर परामर्श जारी करनेका अधिकार प्रदान किया है।

गिरफ्तार पोल नेता

मास्को रेडियोने गत १३ जूनको सूचित किया है कि १६ गिरफ्तार पोल नेताओंके मामलेके सम्बन्धमें प्रारम्भिक जांच पड़ताल समाप्त हो चुकी है और उनके मामलेको आवश्यक कार्यवाईके लिये सोवियट सरकार की सुप्रीम मिलिटरी ट्रिबनलके हवाले किया गया है। शीघ्र ही उनके मामलेकी सुनवाई होगी।

इटालीको मित्रराष्ट्रोंकी चेतावनी

रायटरका विशेष संवाददाता सेसिल स्प्रीग सूचित करता है कि इटालीके राजनीतिक संकटमें मित्रराष्ट्रोंने हस्तक्षेप कर यह चेतावनी देनेकी आवश्यकता समझी है कि कोई भी इटालीका नया मन्त्री क्यों न हो, उसे मित्र राष्ट्रोंके साथ उस समय तक "वैधानिक सन्धि" कायम रखनी होगी जबतक इटालियन जनता अपने देशकी भावी शासन-प्रणाली और सरकारकी रूप-रेखा निश्चित करनेकी स्थितिमें नहीं पहुंच जाती। सोसलिस्ट नेता, सिगनर पेट्रोनेनी द्वारा राजकुमार यूम्बर्टोके समक्ष यह विचार उपस्थित किये जानेपर कि यथाशीघ्र मैं राज्यतन्त्रकी जगह प्रजातन्त्रात्मक शासन-प्रणालीकी स्थापनाके लिये आन्दोलन करने जा रहा हूं, मित्र राष्ट्रीय कमिशनकी विज्ञप्तिके रूपमें यह सूचना प्रकाशित की गयी है कि इटालीके मंत्रियोंको उस संधिकी शर्तोंकी इज्जत करनी होगी, जिसके संशोधित स्वरूपको गत जनवरी महीनेमें इटालीने स्वीकार किया है।

युद्धकालमें जहाजोंका विनाश

ब्रिटिश नौ सेना विभागकी विज्ञप्तिसे ज्ञात होता है कि वर्तमान युद्धमें मित्र तथा तटस्थ राष्ट्रोंके कुल ४७७० तिजारती जहाज जलमग्न हुए, जिनका वजन २१,१४०,००० टन होता है। ब्रिटिश साम्राज्यके कुल ११,३८०,००० टनके २५७० जहाज बर्बाद हुए।

अमेरिकाके मैरिटाइम कमिशनके अध्यक्ष वायस-एडमिरल इमोरी एस० लैण्डने अपनी घोषणामें बताया है कि मुख्यतः युद्धजनित अवस्थाके कारण अमेरिकाके १५५४ जहाज नष्ट हुए हैं, जिनका वजन६,२२७,०७७टन है। क्षतिके ये आंकड़े सन् १९३९के पहले सितम्बर से लेकर ८ मई, १९४५ के अवधिके अंदरकी है। दुश्मनकी पनडुब्बियोंके हमलोंका हवाला देते हुए कहा गया है कि धुरी शक्ति की पनडुब्बियोंको प्रशान्त महासागरमें ४४ तथा हिन्दसागर और लालसागरमें २९ अमेरिकन तिजारती जहाजोंको डुबोनेमें सफलता मिली।

मित्रोंकी उक्त सूचनामें स्पष्ट कर दिया गया है कि इटालीके ९२ प्रान्तोंमें ४९ पर इटालियन सरकारका नियन्त्रण रहेगा। पर सभी सामरिक योजनाओं तथा जल, थल और गगन सेनाके मन्त्रियोंको नियुक्तिके विषयपर मित्र शक्तियोंके सलाह और स्वीकृति अनिवार्य समझी जायगी। बाकी प्रान्तोंमें मित्र फौजोंका पूर्ण नियन्त्र रहेगा।

कम्यूनिस्ट नेता सिगनर टोगलियाटीने यह स्पष्ट कर दिया है कि वे कोई ऐसी सरकारमें भाग नहीं लेंगे जिसके प्रधान पदपर सोशलिस्ट नेता सिगनर नेनी नहीं होंगे। सिगनर नेनी और लिबरल नेता, सिगनर डी गेसपरीने भी स्पष्ट कर दिया है कि वे नयी सरकारमें शामिल नहीं होने जा रहे हैं।

हिटलर जीवित है

१२ वीं मित्र सेनाके सदर मुकामसे यह रहस्योद्घाटन किया गया है कि एक गुप्त नाजी रेडियो स्टेशनका,जो वेसेनबर्गके निकट से ब्राडकास्ट किया करता है, दावा है कि हिटलर अब भी जीवित है और राष्ट्रोद्धारके एक नये युद्धमें जर्मन जनताका नेतृत्व करने के लिये पुनः प्रकट होगा। मित्र अफसरोंका ख्याल है कि इस कथनका प्रचारसे अधिक महत्व नहीं है और यदि हिटलरके जीवित होनेका समाचार सत्य भी हो, जैसा कि मुमकिन नहीं है, तो उक्त रेडियो स्टेशनके संचालकको इसकी खबर हो, यह संभव नहीं।

चीनके लिये वैधानिक सरकार

चीन सरकारके इन्फार्मेशन विभागके मंत्री डा०वांग शिहचेनने कहा है किकामिटांग की स्थायी कमेटीने चीनमें वैधानिक सरकार की स्थापनाके लिये नये उपायोंसे काम लेनेका निश्चय किया है। सर्वप्रथम कुछ महीनोंके अन्दर ही सम्पूर्ण स्वतन्त्र चीनके अन्तर्गत जिला जन राजनीतिक समिति (डिस्ट्रीक्ट पीपुल्स पालिटीकल कौंसिल) की स्थापना की जायगी। इसके अतिरिक्त आगामी अगस्त महीनेसे राष्ट्रीय सेनामें कामिटांगकी जितनी शाखायें हैं, हटा दी जायेंगी और उसी तरह राष्ट्रीय असेम्बलीकी बैठकके लिये निश्चित तिथि(१नवम्बर)के पूर्व चीनके सभी स्कूलोंसे कामिटांगकी शाखा का अन्त हो जायगा।

मि० स्टेटीनस त्यागपत्र देंगे ?

यद्यपि अधिकारी अञ्चलोंसे अबतक इस रिपोर्टकी पुष्टि नहीं हुई है कि अमेरिकन परराष्ट्र सचिव मि० स्टेटीनस सैनफ्रांसिस्को कानफरेन्सके बाद अपने पदसे इस्तीफा देंगे, पर पूर्ण जानकार क्षेत्रोंका कहना है कि संभवतः यह रिपोर्ट सच है और उनका स्थान साउथ कैरोलिनाके भूतपूर्व सीनेटर मि० जेम्स बाइरन्स ग्रहण करेंगे। मि०बाइरन्स स्वर्गीय राष्ट्रपति रूजवेल्टके प्रमुख सलाहकार थे और याल्टा कानफरेंसतक अमेरिकाकी परराष्ट्र नीति निश्चित करनेमें उनका बहुत हाथ रहा है।

रिबानट्राप हिरासतमें

२१ वीं सेनाके ग्रूप सदर मुकामके एक समाचारमें कहा गया है कि जर्मनीके भूतपूर्व परराष्ट्र सचिव वान रिबनट्रापको ब्रिटिश अधिकृत अञ्चलमें गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तारीके समय उसके पाससे तीन पत्र बरामद हुए जिनमें पहला मि० चर्चिल, दूसरा ब्रिटिश परराष्ट्र सचिव मि० ईडेन और तीसरा पत्र फील्ड मार्शल माण्टगोमरी के नाम थां।

रिबानट्रापका जन्म १८९६ में हुआ था और १९३८ में परराष्ट्र सचिवके पदपर उसकी नियुक्ति हुई। प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपसे नाजी शासनके प्रारम्भसे ही जर्मनीकी परराष्ट्र नीति पर उसका यथेष्ठ प्रभाव था।

ट्रिएस्टीसे युगोस्लाव सेनाएं हटीं

मार्शल टीटोकी फौजोंने ट्रिएस्टी खाली कर दिया है। १३ जूनकी रातसे सरकारी इमारतों पर अमेरिकन, ब्रिटिश और इटालियन निशान उड़ने लगे हैं। मार्शल टीटोके झन्डे उतार लिये गये हैं और युगोस्लाव देशभक्तों ने शान्तिपूर्ण ढंगसे शहर खाली कर नयी निर्धारित सीमासे पूर्वकी ओर जाकर अपना पड़ाव डाला है।

रायटरने सूचित किया है कि अर्ध रात्रि के समय कुछ प्रदर्शनकारी लाल कपड़े लेकर ट्रिएस्टीकी सड़कोंसे गुजरे और इमारतों पर फहराती हुई इटालियन पताकाओंको उतार कर जला डाला।

कितने भयभीत नागरिकोंने डरके मारे उनके पहुंचनेके पहले ही अपने मकानोंसे इन झण्डोंको उतार लिया और किवाड़ बन्द कर ली। अधिकारियोंने अबतक इसकी ओर अधिक गंभीर रुख अख्तियार नहीं किया है क्योंकि इस तरहकी कार्रवाइयोंमें भाग लेने वाले मुख्यतः उच्छृङ्खल युवक हैं, पर यदि ऐसी हरकतें शीघ्र बन्द न हुईं तो इसे रोकनेके लिये सख्त कार्रवाई की जायगी।

मध्यपूर्वकी समस्या

पेरिसके पूर्ण जानकार क्षेत्रोंसे रायटरको ऐसा ज्ञात हुआ है कि मध्यपूर्वकी समस्याको सुलझानेके लिये पञ्च राष्ट्रोंकी कानफरेन्स बुलानेके फ्रांसके अनुरोधका अमेरिकाने नकारात्मक उत्तर दिया है।

संतति उत्पन्न करनेमें प्रोत्साहन

वर्तमान युद्धमें इङ्गलैण्डकी जनशक्तिका भीषण ह्रास हुआ है। कितने सैनिक युद्धमोर्चेपर मारे गये और सैनिक आवश्यकतासे उत्पन्न कितने पतिकी अनिवार्य अनुपस्थिति के कारण भी संतति-उत्पत्तिका क्रम शिथिल पड़ गया। इस क्षति पूर्तिके लिये पति-पत्नीको एकसे अधिक संतान उत्पन्न करनेके लिये प्रोत्साहित करनेके उद्देश्यसे इधर पार्लमेण्टके समक्ष एक बिल उपस्थित किया गया है जिसके कानून बन जानेपर एकसे अधिक संतान होनेपर माता-पिताकोइर सप्ताह ९ शि०वेबी बोनस मिला करेगा। इस प्रकार प्रत्येक जन्म लेनेवाले शिशुके भत्तेमें ९ शि०की वृद्धिका क्रम जारी रहेगा। ब्रिटिश फौजमें काम करनेवालोंको पुराने भत्ते पूर्ववत मिलते रहेंगे और जिनकी प्रथम सन्तानको ११शि० ६ पे०भत्ता मिलता होगा उसकी दूसरी संतान १७ शि० ६ पे० प्रति सप्ताह भत्तेका हकदार होगी।

महात्माजीकी कुटियाके सामने धरना

अखिल भारतीय पाकिस्तान विरोधी संगठनके जेनरल सेक्रेटरी एल० जी० थाटेने घोषणा की है कि केवल योजनाके हिन्दू हितोंके लिये अनुचित और नुकसानदेह आशंकाको अपना समर्थन देनेसे महात्माजी को रोकनेके उद्देश्यसे रविवार ता० १७ जूनसे महात्माजीकी कुटियाके सामने अखिल भारतीय पाकिस्तान विरोधी दलकी ओरसे पंचगनीमें धरना देनेकी व्यवस्था की गयी है। मि० थाटे और अखिल भारतीय हिन्दू छात्र संघके मंत्रीने हिन्दुओं से इस आन्दोलनमें हाथ बटानेका अनुरोध किया है।

कम्यूनिस्ट पार्टीकी सदस्यतामें वृद्धि

मास्को रेडियोने एलान किया है कि रूसमें कम्यूनिस्ट पार्टीके सदस्योंकी संख्या ५७००००० हो गयी है जब कि १९४० में ये ३४००००० से कुछ ही अधिक रहे होंगे।

लेवाल फ्रांस लौटे

मास्को रेडियोके एक एलानमें कहा गया है कि लेवालको अन्तिम रूपसे फ्रांसके जिम्मे सौंप दिया गया। बिना किसी गड़बड़ और साज-सामानके ही लेवाल बोरडियो पहुंचे।

सैनिक आदेशमें आंशिक ढिलाई

लन्दनके एक प्रस कानफरेन्समें जेनरल आइजेन होवरने ऐलान किया है कि अमेरिकन अधिकृत जर्मनीमें जर्मनोंसे सम्पर्क न बढ़ानेके लिये अमेरिकनसैनिकोंके नाम जारी किये आदेशमें उस हदतक ढिलाई की गयी है जहांतक अत्यन्त छोटे-छोटे जर्मन बच्चोंका सम्बन्ध है।

Regd. No. C. 1229

"देश के दीप्तिमान नक्षत्र"—शाही हिन्दुस्तानी हवाई बेड़े के विमान-चालक का चिन्ह 'पंख' (विंग्स) मात्र ही नहीं, जिससे केवल इतना प्रकट होता है कि वह हवाई जहाज़ चला सकता है।

उसकी वास्तविक श्रेष्ठता उस सब से अधिक प्रशंसनीय गुण के कारण है जिसे साहस अथवा पराक्रम के नाम से पुकारते हैं।

इसके साथ उस बुद्धि को भी जोड़ दीजिए जिसका सबूत वह दे चुका है; उस कार्य के मूल्य एवम् गुरुता पर भी विचार कीजिए जिसे वह आजकल कर रहा है; और यह भी देखिए कि वह किस प्रकार अपने देश के और स्वयं अपने भावी हित की नींव डाल रहा है। तब आपको पता लग जायगा कि हिन्दुस्तान के होनहार सपूतों में सब से दीप्तिमान नक्षत्र वही है। भरती होने के नियम आप किसी भी भरती-अफसर से पूछ सकते हैं।

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—२७ कलकत्ता २, जुलाई, १९४५, Calcutta, JULY 2, 1945 मूल्य दो आना : वार्षिक ६)

मनुष्योंके जानी दुश्मन

संसारमें आधीसे अधिक मौतोंकी ...री कीट-पतंगोंपर है। मक्खियां हैजा ...ते हैं, मच्छड़ मलेरिया फैलाते हैं और ...तरह अन्य कीट-पतंग घातक रोगोंको ...कर उनका तेजीसे प्रचार और प्रसार ...हैं।

...नुष्योंके उपयोगकी अनेक सामग्रियों- ...ट करनेमें भी इनका हाथ रहता है और ...जो खाद्य सामग्री प्रति वर्ष सिर्फ ये ...पतंग नष्ट करते हैं उनसे लगभग ...,००,००० आदमियोंका पोषण संभव ...संसारमें पतंगोंकी २,५०,००० विभिन्न ...तियां वर्तमान हैं और केवल पिस्सुओंकी ... से अधिक किस्में बतायी जाती हैं। ...भारतवर्षमें प्रति वर्ष कीट-पतंगोंसे ...लों तथा जङ्गलोंकी जो क्षति होती है ...का मूल्य प्रायः २,००,००,००,००० रु० ...है।

...रोग फैलानेवाले कीड़ोंमें मलेरिया जैसे ...क रोगको फैलानेवाले मच्छड़ ही हैं, ... प्रति वर्ष लगभग ११,३०,००० ...मौतके मुंहमें जाते हैं और इन दिनों ... मृत्यु संख्यामें बेतरह वृद्धि ही नजर ...है।

...मनुष्यके लिये घातक रोगोंको उत्पन्न ...वालोंमें मक्खियोंका नाम विशेष ...नीय है। इसके सम्बन्धमें सबसे आ-...की बात तो यह है कि मक्खियोंका ...जोड़ा एक फसलमें प्रायः ५५,९८७२, ...,०० मक्खियोंको जन्म दे सकता है।

मुर्देका जीवित चमड़ा

प्रायः देखा जाता है कि गहरे घावके ...जानेके बाद शरीरके उस हिस्सेमें अ-...स्वाभाविकता और कुरूपता आ जाती है, ...विकसित वैज्ञानिक ढङ्गसे चिकित्सा नहीं ...। इसे रोकनेके लिये चिकित्साकालमें ...के शरीरसे या अन्य किसी जीवित ...के चमड़ेकी कुछ परत उतारकर ...बैठानेकी प्रणाली प्रचलित वर्तमान ...समयमें ... शाही गगनसेनाके प्लास्टिक ...के एक अफसर डी० एन० मैथूज-ने मृतकके चमड़ेकी परत उतारकर उसे सु-रक्षित रखनेका ढंग निकाला है। यदि निश्चित तापमानमें उसे रखा जाय तो कई सप्ताहोंतक उस चमड़ेमें अप्रत्यक्ष रूपसे जीवन रह सकता है और उसका प्रयोग पुरी तरह जले-झुलसे घावोंकी चिकित्सामें चेतना सून्य करनेवाली औषधि या किसी किस्मके सिवन या टांकेके बगैर ही किया जा सकता है। पुरानी प्रणालीके अन्तर्गत रोगियोंको जो तरह तरहकी भीषण यातनाएं सहनी पड़ती थीं, इस नये अनुसंधानसे उनका झमेला ही मिट गया है।

मधुसंचय

शिमलामें महात्मा गांधी राजकुमारी अमृत कौरके निवासस्थान 'मनोहर विला'को जा रहे हैं जहां आजकल आप अतिथि हैं। साथमें राजकुमारी और मालवीयजीके पुत्र श्री राधाकांत मालवीय हैं।

चार टिकियोंमें भर पेट भोजन

अमेरिकन वैज्ञानिक डा० हेनरी बोर्छक और उनके सहयोगियोंने डेढ़ वर्षके अनु-संधानके बाद ऐसी टिकिया तैयार की है जिसमें यथेष्ट संतुलित पौष्टिक तत्वोंके अलावा मनुष्योंकी रुचिको सन्तुष्ट करनेकी क्षमता भी मौजूद है। इस सम्मिश्रणमें सोया-बीनका बिना चाला हुआ आटा, आलू, गोभी, विलायती बैंगन और प्याजका हरा पौष्टिक अङ्ग है। इनके अतिरिक्त इसमें अन्य तरह तरहके विटामीन तथा शाक-सब्जियों के वे गुण हैं, जो पकानेके पहले उनमें पाये जाते हैं। इस सम्मिश्रणके साथ चौगुन जल मिलाकर, आध घण्टेतक उबालनेके बाद भर पेट भोजनके योग्य पदार्थ तैयार होता है। एक पौण्ड याने ऐसे आध सेर सम्मिश्रणसे दस आदमियोंका खाना बन सकता है और चार टिकिया एक आदमी के एक शामका पूर्ण भोजनका काम दे सकती है। इस खाद्य पदार्थका निर्यात खास कर यूरोपीय मुल्कोंके लिये हो रहा है और जब प्रचुर मात्रामें यूरोपमें भोजनकी आव-श्यकता न रह जायगी तो शौकीन अमेरिकन घरनी बिना अधिक कठिनाई उठाये शीघ्रतासे खाना तैयार कर सकेंगी।

चूहोंको दावत

चूहे चुपकेसे आकर हमारी खाद्य साम-ग्रियोंको नष्ट कर देते हैं तो हमें क्रोध आता है। फिर चूहोंको दावतकी बात सुनकर तो लोगोंके आश्चर्यका ठिकाना ही न रहेगा। पर सन्तोषकी बात यह है कि यह 'दावत' बिरादरी भोजके अवसरका नहीं है और न उन चूहोंके प्रति, गणेश-वाहन होनेके कारण, श्रद्धा-प्रदर्शनका कोई स्वरूप ही। रंगूनके चिड़ियाघरमें सेनाके वैज्ञानिकोंने चूहोंको 'दावत' देनेका प्रबन्ध इस उद्देश्यसे किया है कि चूहे किस खाद्यको कितना पसन्द करते है इसकी जानकारी हो सके। इस प्रयोगकी सफलतापर भारतीय सेनाके बहुतसे अन्नकी बचत हो सकती है। रंगूनमें ६ प्रकारके चूहे होते हैं। ये ६ किस्मके चूहे अलग-अलग ६ स्थानोंमें रखे गये हैं। प्रत्येक स्थानमें बांसकी बनी रकाबियोंमें तरह-तरहके नाज रखे गये हैं और इस प्रकार पता लगाया जा रहा है कि ये चूहे किस नाजको अधिक तेजीसे खाते हैं।

चलती चक्की

सामाजिक खटमिट्ठी

एक सम्पन्न स्वसुरजीके दुलरुआ दामाद यह कहकर रूठ गये कि हम अगर लेंगे तो बस, 'सेन-गुप्ता' धोती लेंगे वर्ना नंगे ही रहेंगे!

अन्ततोगत्वा स्वसुरजीको कई शहरोंकी धूल छाननी पड़ी और एक जगह, चोर बाजारसे, (१०६) में सेन-गुप्ताका एक जोड़ा मिला!

* * * *

बाल विवाह विरोधी आन्दोलन है किन्तु वृद्धोंको कबड्डी खेलनेके लिये मैदान एकदम साफ कर दिया गया है। प्रतिवर्ष काफी संख्यामें ऐसे-ऐसे बुड्ढे नौशा बनते हैं जिनकी पत्नी उनकी पर-पोतीसे भी कम उम्रकी हुआ करती हैं! इस बारकी लगनमें भी ऐसे शादियोंकी कमी नहीं रही।

* * * *

अन्न नहीं मिलता, वस्त्र नहीं मिलता फिर भी विवाहकी फसल जोरदार रही है। ढेरकी ढेर शादियां हुई हैं और मिठाइयोंकी बहार रही है। तिलक, दान, दहेज आदिमें भी, जमानेकी रफ्तारसे नाजायज मुनाफेका लोभ घुस आया है। वर रूपी बैलका दाम अठगुना अधिक हो गया है। इसमेंनतो कोई कन्ट्रोलही है और न कैशमेमो मांगनेका खतरा! इस सामाजिक चोर-बाजारी-आमदनीसे कई लोगोंने फैन्सी स्टोर और सपर-बारकी की स्थापना की है!

* * * *

एक प्रेमीने अपनी प्रेमिकाकी नाक इस लिये काट ली है कि वह उड़कर कहीं और जाना चाह रही थी! अब न बांस रहेगा और न बांसुरी बजेगी!

* * * *

लखनऊके लाल मुहल्लेमें एक ग्रेजुएट कन्याने अपने भावी वरको जयमाल आदि पहनानेके बाद विवाह मण्डपसे वेयरिंग वापस कर दिया। नौशाकी पतलूनकी जेबमें बड़ा भारी भेद छिपा हुआ था—

* * * *

कहा जाता है कि दूल्हा, जो ख्यालीगंज मुहल्लेका निवासी था, द्वारचारसे लेकर रातके दो बजेतक अपने दोनों हाथों को पतलूनकी जेबमें छिपाये रखता था और उन्हें कभी भी बाहर नहीं निकालता था। इस हरकतने लोगोंके मनमें शंका उत्पन्न कर दी और अन्तमें पुरोहितजीके द्वारा बड़े दूल्हेसे पुरोहितजीने अंजलिदानके लिये दोनों हाथोंको बाहर निकालनेका आग्रह किया। वरपक्षवालोंने इसपर आपत्ति की किन्तु पुरोहितजी अड़ गये और उन्होंने कहा कि जबतक इस वेदविहित विधिका पालन नहीं किया जाता तबतक विवाह ही न होगा। दूल्हेने जैसे ही अपने दोनों हाथ पतलूनकी जेबोंसे निकाले वैसे ही पुरोहित जी चौंककर चिल्ला उठे कि दूल्हेके दोनों हाथोंमें कुछ पांच ही उंगलियां हैं। जब लोगोंने देखा तो वास्तवमें दूल्हेके एक हाथ में कुल ३ और दूसरेमें केवल दो ही उंगलियां थीं।

—बुधविक

पेटके लिये

—:o:—

(पे)

"सरकार, इतनेमें क्या मिलेगा?"

"अबे, तेरा पैसा लेकर मैं कहीं भागा जा रहा हूं। कह दिया कल मिल जायगा। लेकिन नहीं..."

"सरकार मैं आपको थोड़े कुछ कह रहा हूं। तीन आनेमें आप जानते ही हैं कि इस महगीके जमानेमें खाने भरको कुछ न मिलेगा।"

"अबे, बेकारमें जबान मत लड़ा। एक बार मैंने कह दिया। तुम्हारे खानेका मैंने कुछ ठेका नहीं ले रखा है।"

ऊंचे स्वरमें लाल आंखें किये हुए बाबू जी बोले।

गङ्गादीन चुप हो गया। करता ही क्या? ज्यादा बोलता तो कदाचित बाबूजी का हाथ भी उठ जाता। सोचमें पड़ा हुआ, उसने अपने घरकी राह ली।

"तीन आनेका डेढ़ पाव आटा हुआ। कल भी चूल्हा नहीं जला था और आज? पूरी मजदूरी चार आने मिल जाती तो कुछ हो भी जाता। लेकिन......"

(ट)

"जाने कब यह लड़ाई खतम होगी। इस महंगीमें दोनों जूनकी कौन कहे एक जून भी पेट भरना दूभर है।"

"अब कलसे वहां मत काम करने जाना। दिन भर मर-मर कर काम करो और पैसा देनेमें यह किल्लत। जब पेट ही न भरेगा तब काम क्या होगा।"

"हां, करूं भी तो क्या करूं? अच्छा यह तो बताओ खाया किससे जायेगा! नोन तो है न? कहो तो गंजीका पाव तोड़ ले आऊं। उसीसे एक-एक रोटी खा लेंगे।"

"हां," कहकर गङ्गादीनकी घरवाली उठी चूल्हा जलानेके लिये और गङ्गादीन अपना फटा हुआ अंगोछा कन्धेपर रखकर चल खड़ा हुआ।

(के)

"अबे कौन गंजी, उखाड़ रहा है?"

गरज कर ठाकुर प्रताप बहादुर सिंहने कहा।

गङ्गादीन सहम गया; उसके हाथकी सारी तोड़ी हुई पत्तियां गिर पड़ीं।

"भइया, मैं गंजी नहीं उखाड़ रहा हूं। पत्तियां तोड़ रहा हूं। यह देख लो भैया। खानेको जी चहेगा तो भइयासे मांग न लूंगा? क्या भइया सेर-दो सेर गंजीके लिये इनकार कर देंगे?"

"अबे निकल तो पहले। खड़ा-खड़ा बातें बना रहा है। चोरी, ऊपरसे सीना जोरी। चलो आज तुम्हारी अच्छी तरह खबर ली जायगी।"

ठाकुरने कड़क कर कहा।

खेतके बाहर आते आते ठाकुरने गङ्गादीनको दो चार घूंसे और थप्पड़ जमा दिये।

"भइया—" आंखोंमें आंसू भर कर गङ्गादीन इतना ही कह पाया।

"भइया-बइया कुछ नहीं चल सीधे बाबू के पास।"

"मैं सच कह रहा हूं भइया।"

"अभी सच और झूठका पता लग जायगा।"

* * *

ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह अपनी दालानमें पलगपर बैठे हुक्का पी रहे थे। गांव के दो-चार और लोग भी बैठे हुए थे। ठाकुर साहब अपने बड़े लड़के रवीन्द्र बहादुर सिंह से किसी मुकदमेके बारेमें कुछ पूछ रहे थे। सन्तोषप्रद उत्तर न पाकर झुंझला उठते थे। ठाकुर प्रसिद्ध नारायण सिंह बड़े क्रोधी थे। गुस्सा इनकी नाकपर रहता था। जिसके ऊपर नाराज हो जाते उसकी सामत आ जाती। जो कुछ भी आगे पा जाते उसीसे मार बैठते। परिणामका ध्यान न रखते। इन्हींका जैसा स्वभाव इनके मझले लड़के प्रताप बहादुर सिंहका भी था।

आगे-आगे प्रताप बहादुर सिंह, पीछे-पीछे गङ्गादीन अपराधीकी भांति आया।

"बाबू, यह साला गंजी उखाड़ रहा था। वहां तो मैं पहुंच गया और देख लिया; नहीं तो......"

पहुंचते ही प्रताप बहादुर सिंहने कहा। बीचहीमें बात काट कर गङ्गादीन बोल उठा।

"नहीं सरकार, जवानी कसम पत्ती तोड़ रहा था। भला—"

ठाकुर प्रसिद्धनारायण झल्लाये हुए थे ही। इस घटनाने आगमें घीका काम किया।

"अबे सरकारके बच्चे, तुम्हारे बापने ही तो लगाया है जो पत्ती तोड़ रहे थे। ऐं, आंखोंमें धूल झोंकता है साला।"

पास ही एक मोटासा डण्डा रखा हुआ था; उसीको लेकर ठाकुर साहब जुट पड़े।

गंगादीन चिल्ला चिल्लाकर कह रहा था "मैं बेकसूर हूँ सरकार। मेरी भी सुन लीजिये। मुझे नाहक मार रहे हैं...।"

"साले तुम्हारी हड्डी हड्डी चूर कर दूंगा। बेकसूर हैं ये।"

इन्होंने किया भी वही। जो कुछ कसर बाकी था उसे इनके मझले लड़केने पूरी कर दी। यहांतक कि गङ्गादीन बेहोश हो गया। उसके हाथ पैर बेकार हो गये। माथेसे खून की धारा बह निकली।

ठाकुर साहबने हांफते हुए कहा, "अब मत मारो सालेको। अभी पुलिसके हाथमें दे देते तो बेटा छ महीनेके लिये चले जाते। जितना ही इन लोगोंके साथ रियायत करो, उतना ही बढ़ते जाते हैं। देखो, पंडित जी इसके मुंहपर पानी-वानी तो छिड़को। कहीं मर न जाय। अबे खदेरुआ पानी तो ला जरा।"

ठाकुर साहब घबड़ाए हुए थे।

उसके मुंहपर पानी छिड़का गया। थोड़ी देरमें वह होशमें आ गया। ठाकुर साहबके चार नौकरोंने उसे उठाकर उसके घर पहुंचा दिया।

* * *

(लि)

"भइया, भइया बेटवा हुआ। बोलो जल्दी हमें क्या देते हो भइया।"

"दूंगा तुम्हें सलोनी।"

"नहीं भइया वादा नहीं। बचा तुम्हीं पर पड़ा है। चेहरा-मोहरा सब कुछ तुम्हारी तरह है।"

गंगाकी खुशीकी सीमा न रही। कलकी चोटोंका सारा दर्द जाने कहां चला गया। उस भोले बालककी नाईं जो मिठाई पाकर अपने दर्दको भूल जाता है और रोना बन्द कर देता है; किन्तु दुःखोंकी विस्मृतिका अन्त मिठाईकी मिठासके अन्तके साथ ही हो जाता है।

"भइया कुछ पैसे दो दूध लाना है।"

सलोनीने आकर उसका सुख-स्वप्न भंग कर दिया। स्थितिके ज्ञानने उसे फिर उसी स्थानपर ला पटका जहांसे वह कुछ ही क्षणोंमें बहुत दूर सुख साम्राज्यमें चला गया था। उसने धीरेसे कहा—

"सलोनी, मेरे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। मैं जा भी कहीं नहीं सकता। तेरे पास कुछ हो तो—"

"मेरे पास एक रुपया है भइया। कल जो गुड़ बेचा था उसीका रखा है। सौरके लिए मसाला भी चाहिए। अच्छा, जो कुछ है मैं लिये आती हूं। फिर देखा जायगा।"

सलोनीका घर गङ्गादीनके घरके पास ही था। गांवके नाते वह गङ्गादीनकी बहिन लगती थी। सलोनी चली गयी। गङ्गादीन लेट गया। पीड़ा फिर होने लगी थी किन्तु कराहना बन्द हो गया था। उसमें पीड़ाको सहन करनेकी शक्ति आ गयी थी।

(ए)

आधीसे अधिक रात बीत चुकी थी। पीड़ाके कुछ कम हो जानेसे गंगादीनकी आंख लग गयी थी। पिछली सारी रात तो वह छटपटाता ही रहा था। एक क्षण भी नींद न आयी थी।

"भइया, भइया!"

सलोनीने आकर जगा दिया। वह घबड़ायी हुई आकर कहने लगी।

"भइया, भाभीके पेटमें बड़े जोरकी पीड़ा हो रही है। मैंने तेलकी मालिश भी बहुत की लेकिन कुछ फायदा नहीं हो रहा है। रह रहकर पीड़ाके मारे बेहोश हो जाती है। चार-पांच घण्टे रात और होगी। सबेरा हो जाये तो ज्ञानू काकीको बुला लाऊं। वह बड़ी होशियार हैं इन सब बातोंमें। मेरे जानमें तो सर्दीसे यह दर्द हो रहा है। सर्दी भी तो बहुत है।"

"कितनी देरसे हो रहा है।"

गङ्गादीनने अब पूछा। अभीतक वह भौचक्का-सा बैठा था।

"एक घण्टेसे ऊपर हो रहा है।" कहकर सलोनी चली गयी। गङ्गादीन माथेपर हाथ रखकर कुछ सोचने लगा।

इतनेमें सलोनी चीखती हुई दौड़ी आई। "भइया, भइया भाभी तो जाने कैसी हो गयीं। बोलती ही नहीं हैं।"

गङ्गा मूर्तिवत वहींका वहीं बैठा रह गया। सलोनीकी भाभीकी क्षणिक मूर्छाने चिर मूर्छाका रूप धारण कर लिया था। सलोनीने रोते हुए बच्चेको लाकर गङ्गादीन की गोदीमें डाल दिया। गङ्गादीनके आंसू उमड़ आये। बच्चा भी जोर-जोरसे रोने लगा। सलोनी अलग अपना सिर पीट-पीटकर रो रही थी।

सारा ग्राम निद्रामें निमग्न था। आकाशमें चन्द्रदेव बादलोंकी ओटमें अपना मुंह छिपाकर मानों नक्षत्रोंसे कह रहे थे : इस भूतलपर गरीब पेटके लिये दुःखी हुआ ही जन्म लेता है और जीवनके अन्त तक उसीके लिये रोता रहता है।

—श्री बिन्देश्वरी प्रसाद

...हित बस जिनके मनमाहीं ।
...कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

शिमला सम्मेलन

—०*०—

...धिकारी तौरसे यह घोषणा की गयी ...नेता सम्मेलनकी स्थगित बैठक शुक्र... फिर १४ जुलाई शनिवारके लिये ...कर दी गयी ताकि प्रतिनिधियोंको ...विचार परामर्श करनेका अवसर ...मालूम हुआ है कि सम्मेलन शिमला... ...होगा। किन कारणोंसे, किन कठि... ...नेता सम्मेलनकी बैठक स्थगित ...है, इन पंक्तियोंके लिखनेके समय ...स समाचारोंसे कुछ भी पता नहीं ...।

...सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए ...वेलने कहा था कि "हम लोगोंकी ...विज्ञता, बुद्धिमत्ता और सदिच्छाकी ...परीक्षा है, सिर्फ भारतकी आंखोंमें ही ...सारकी आंखोंमें। मैंने अपने ब्राड... ...कहा था कि 'भूल जाओ और माफ ...की नीतिसे सबको काम लेना ...। सबको पुरानी शत्रुता, राग-द्वेषके ...ऊपर उठकर, पार्टीबन्दी और जाति... ...भावोंके दलदलसे ऊपर उठकर भारत ...की बात—४० कोटि भारतीयोंके ...बात सोचनी चाहिये।" कांग्रेस ...कमेटीने इसी भावनासे प्रेरित होकर ...डेण्टको पूर्ण अधिकार प्रदानकर ...नोनीत प्रतिनिधियोंके साथ सम्मे... ...शामिल होनेकी अनुमति दी है। ...वैधानिक दृष्टिसे कांग्रेस सङ्गठनमें ...गांधीका कोई स्थान नहीं है उन्होंने ...को अपनी स्थिति समझाकर ...से अलग रहना ही उचित समझा। ...आजादने यह बात बिलकुल स्पष्ट ...की कि कांग्रेसका रुख रचनात्मक है ...क नहीं। फिर भी दुर्भाग्यकी बात ...नेता सम्मेलन, किसी निश्चित परि... ...नहीं पहुंच सका। सम्मेलनके सामने ...ठिनाइयां उपस्थित हुई हैं, और कौन ...स्थितिके लिये जिम्मेदार है, इसपर ...छ भी नहीं कहा जा सकता जबतक ...अधिकारी वक्तव्य हमारे सामने न ...किन्तु स्थिति नाजुक अवश्य हो गयी ...राष्ट्रपति आजादको कांग्रेस वर्किंग ...की बैठक शिमलामें तत्काल बुलानी ...। पण्डित जवाहरलाल नेहरूने ...साहबको तार द्वारा सूचित किया ...वर्किंग कमेटीकी बैठककी प्रतीक्षा ...ये। जल्दसे जल्द शिमला आ... ...।" नेहरू जीकी तरहही देशको ...पर पूर्ण विश्वास है। वे उलझनको ...के लिये जो कुछ करेंगे राष्ट्रीय ...उसका समर्थन करेगा। कांग्रेसके ...मान और राष्ट्रीयताकी मर्यादाका ...रखकर दूसरे दलोंको जहांतक ढील दी जा सकती है, राष्ट्रपति और वर्किंग कमेटी वहांतक ढील देंगे, किन्तु कहावत है कि ताली दोनों हाथोंसे बजती है। ढील देनेकी भी एक सीमा है। यदि दूसरे दल कांग्रेसकी राष्ट्रीय उदात्त भावनासे नाजायज फायदा उठाना चाहते है तो उनको कैसे सन्तुष्ट किया जा सकता है।

शान्तिका घोषणा-पत्र

पचास राष्ट्रोंके नेताओंने सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनमें विश्व सुरक्षा और शान्ति स्थापनके लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठन बनानेके सम्बन्धमें नौ सप्ताहके रोमाञ्चकारी विचार-विमर्शके बाद गत २५ जूनकी आधी रातके समय विश्व सुरक्षा योजना सम्बन्धी घोषणापत्रपर अपनी स्वीकृति दे दी दूसरे दिन उक्त घोषणा पत्रपर सम्मिलित राष्ट्रोंके प्रतिनिधियोंके हस्ताक्षर भी हो गये। यह घोषणा पत्र, जिसकी रूपरेखा अन्यत्र प्रकाशित है, संसारकी भावी शांतिका आधार बनेगा। आनेवाली दुनियाको युद्धके अभिशापसे बचाना, नर नारी और छोटे-बड़े सभी राष्ट्रोंके समान अधिकारको स्वीकार करना तथा न्याय और उत्तरदायित्वोंका सम्मान करना, शान्तिपूर्ण वैध उपायों तथा समझौतों द्वारा झगड़ोंको दूर करना एवं आततायीको दण्ड देना इस विश्व सुरक्षा संगठनका कर्तव्य और उत्तरदायित्व होगा। इस कर्त्तव्य और उत्तरदायित्वको प्रभावशाली ढङ्गसे पूर्ण किया जा सके, इस उद्देश्यसे इस विश्व सङ्गठनके मातहत एक अन्तर्राष्ट्रीय सेना रखनेकी व्यवस्था की गयी है। यह सङ्गठन सफल होगा या पुराने राष्ट्र सङ्घकी तरह यह भी महान नेताओंकी चालोंका शिकार होगा इसका उत्तर तो भविष्य ही देगा। किन्तु पंडित जवाहरलाल नेहरूके शब्दोंमें मूल समस्याओंका, जिनके द्वारा ही विश्व शांति और सुरक्षा लायी जा सकती है, समाधान नहीं हुआ। इसमें संदेह नहीं कि शांति और न्यायके आधारपर प्रतिष्ठित एक विश्व व्यवस्था स्थापित करनेकी प्रबल और व्यापक अभिलाषा सबमें देखी गयी है। "किन्तु", पंडितजी कहते हैं कि "कठिनाइयां बहुत बड़ी थीं और दुर्भाग्यकी बात है कि उनपर विजय नहीं प्राप्त की जा सकी।" कठिनाइयां क्यों नहीं मिटायी जा सकीं? पंडितजी कहते हैं कि "यह सत्य है कि आज वास्तविकताका यह तकाजा है कि महान शक्तियोंकी स्थितिको स्वीकार किया जाये, तथापि अन्य राष्ट्रोंकी स्थितिकी उपेक्षा भी—जैसी की गयी है--नहीं की जा सकती। महान् शक्तियोंकी प्रतिद्वन्द्विता बनी हुई दिखायी देती है और इसका परिणाम अनिवार्य रूपसे यही होगा कि छोटे-छोटे राष्ट्र किसी न किसी बड़ी शक्तिके साथ अपनी गरोहबन्दी करेंगे।"

यद्यपि कागजपर छोटे-बड़े राष्ट्रोंका समानाधिकार स्वीकार किया गया है किंतु दूसरे पर शासन करनेकी महत्वाकांक्षा बड़े-बड़े राष्ट्रोंमें बनी हुई है। यह बात उपनिवेशों और मातहत देशोंकी वर्तमान स्थिति मिटानेके सम्बन्धमें रूसने जो प्रस्ताव रखा था उसमें आये हुए 'स्वतन्त्रता' शब्दपर ब्रिटेन और अमरीकाने जो आपत्ति की थी उससे बिलकुल स्पष्ट है। अतएव नेहरूजीके शब्दोंमें बड़े-बड़े राष्ट्रोंकी यह मनोभावना जबतक बनी रहेगी तबतक संसारमें शांति नहीं हो सकती। "कालनियों और मातहत देशोंपर आधिपत्य जमाये रहनेकी यह इच्छा ही अशांति और संघर्षकी सृष्टि करेगी। क्योंकि उपनिवेश और मातहत देश भी स्वेच्छापूर्वक इस स्थितिके सामने घुटने नहीं टेकेंगे।" पंडित जवाहरलाल नेहरूके उक्त वक्तव्यको सामने रखकर जब हम सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनकी कार्यवाहियोंपर दृष्टि डालते हैं तो भविष्यके सम्बन्धमें घोषणापत्रके द्वारा दिखायी गयी आशा और विश्वासकी ज्योति क्षीण पड़ जाती है। इसमें सन्देह नहीं कि सही दिशामें कदम उठानेका कुछ प्रयत्न किया गया है किन्तु महान राष्ट्रोंके स्वार्थोंने उधर अधिक प्रगति नहीं होने दी। पांच महान् राष्ट्रोंके अधिकार, ट्रस्टीशिप, जेनरल असेम्बलीके अधिकार आदि प्रश्नोंपर कोई स्पष्ट निर्णय नहीं हो सका। इसका कारण यह है कि किसी प्रश्नपर सही निर्णय पहुंचनेकी अपेक्षा इस बातपर अधिक ध्यान रखा गया कि पांच महान्में कोई असन्तुष्ट न होने पाये। अतएव पचास राष्ट्रोंके स्वार्थोंके सामने पांच राष्ट्रोंके स्वार्थ ही घूम फिरकर सामने आ जाते थे। ऐसी स्थितिमें संसारकी शांति पांच महान् राष्ट्रोंकी स्वार्थ-श्रृङ्खलाके साथ जकड़ी हुई है।

सैनफ्रांसिस्को सम्मेलनके अन्तिम दिनके पूर्ण अधिवेशनमें भाषण करते हुए अमेरिकन राष्ट्रपति ट्रूमैनने कहा था कि:—"अत्याचारियोंको हटाना और स्वतंत्रतासे वंचित करनेवाले बन्दी गृहोंको नष्ट करना जितना सहज है इनको जन्म देनेवाले, बलशाली बनानेवाले विचारों और भावनाओंको मिटाना उतना सहज नहीं है। युद्ध क्षेत्रकी विजय आवश्यक और वांछनीय है किन्तु पर्याप्त नहीं है। सुशान्ति, स्थायी शान्तिके लिये आवश्यक है कि भूमण्डलके सुसभ्य मनुष्य गतदशाब्दीमें संसार भरमें व्याप्त की गयी, कुत्सित भावनाको मिटा डालनेके लिये कृत संकल्प हो जायें।" किन्तु गत दशाब्दीकी कुत्सित मनोभावना, (फासिज्म)को जन्म देनेवाली पूंजीवादी और साम्राज्यवादी भावना जबतक बनी रहेगी तबतक फाजिज्मके वर्तमान रूपको भलेही मिटा दिया जाये वह किसी न किसी रूपमें बना ही रहेगा।

प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनने यह ठीकही कहा है कि हमारे निर्णयात्मक कार्योंपर उन लोगोंकी आशाएं बंधी हुई हैं जिन्होंने इस युद्धमें अपना जीवन उत्सर्ग किया है, जो जीवित हैं और जो आगे जन्म लेंगे। यदि हम सफल न हुए तो हम लोगोंकी स्वतंत्रता और सुरक्षाके लिये जीवन बलिदान करने वालोंके प्रति हम विश्वासघात करेंगे। इसमें सन्देह नहीं कि प्रेसिडेण्ट ट्रूमैनकी यह सदिच्छा अभिनन्दनीय है। किन्तु क्या स्वतंत्रताके प्रश्नपर विचार करनेके समय हम उनके प्रति विश्वासघात नहीं कर चुके? अन्तर्राष्ट्रीय न्यायके सिद्धान्तोंकी चर्चा करना, उनकी घोषणा करना एक बात है और उनको कार्यमें परिणत करना दूसरी बात है। प्रस्तावित घोषणापत्रमें उल्लिखित उद्देश्य और सिद्धान्त, संसारके अर्द्ध-स्वतंत्र और अर्द्ध परतंत्र इन दो भागोंमें विभक्त रहते हुए, सफल होंगे, ऐसी आशा करना उचितसे उधिक है।

जेल मुक्तिपर बधाई—

संसारमें नौकरशाहोंको छोड़कर ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसे पंडित जवाहरलाल नेहरू एवं अन्य कांग्रेस नेताओंकी मुक्तिपर, जिनको बिना किसी विचारके प्रायः तीन सालतक देश प्रेमके अपराधके कारण जेलोंमें डाल रखा गया, प्रसन्नता न हुई हो। इस अवसरपर मार्शल चांग कैशक, सर स्टेफोर्ड क्रिप्स और स्वतन्त्र मजूर दलके सेक्रेटरी मि० फेनर ब्राकवेने पंडित जवाहरलाल नेहरूको बधाईका सन्देश भेजा है। मार्शलने अपने सन्देशमें लिखा है "जेलसे आपकी मुक्तिका संवाद पाकर मुझे अतीव प्रसन्नता हुई। पिछले कुछ दिनोंसे आपके लिये जो भारी चिन्ता थी अन्तमें वह दूर हुई। मादम चांग भी जो इस समय संयुक्त राज्य अमेरिकामें हैं, आपकी मुक्तिका समाचार सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुई हैं। आपका मित्र होनेके नाते आपके सुन्दर स्वास्थ्यकी कामनासे यह सन्देश आपको भेज रहा हूं।" यह सभी जानते हैं कि मार्शल चांग कैशकने, जब अवसर आया है, तभी कांग्रेस नेताओंको खासकर पंडित जवाहरलाल नेहरूको विश्वके ऐसे सङ्कटके समयमें जेलमें डाल रखनेकी ब्रिटिश नीतिको विश्व शान्तिके लिये अहितकर और अवांछनीय बताया है। सर स्टेफोर्डने, जो ब्रिटिश सरकारके एक सदस्यके नाते इतने दिनोंतक पंडितजी एवं अन्य कांग्रेस नेताओंको जेलमें डाल रखनेके अविचारके लिये आंशिकरूपसे जिम्मेदार हैं, अपने सन्देशमें कहा है कि "धन्यवाद है कि आप और आपके साथी एक बार फिर मुक्त हैं। इस बातकी जबर्दस्त आशा है कि रचनात्मक कार्यक्रमका नवीन युग आरम्भ होगा। पूर्ण सदिच्छा।" ब्रिटिश राष्ट्र एवं सरकारकी नेकनीयती तथा सद्भावनापर यह निर्भर है कि सर स्टेफोर्ड क्रिप्सकी सदिच्छा पूरी होगी या नहीं। मि०फेनर ब्राकवेने बधाई भेजते हुए भारतीय स्वतन्त्रता और अन्तर्राष्ट्रीय समाजवादकी स्थापनाके लिये अपने सहयोगका आश्वासन दिया है। फेनर ब्राकवे पार्लमेण्ट एवं बाहर हमेशा भारतकी स्वतन्त्रताके लिये लड़ते रहे हैं। इन लोगोंका सहयोग और आश्वासन इस बातका सबूत है कि भारतीय स्वतन्त्रताके लिये लड़नेवाली कांग्रेसके नेताओं एवं समर्थकोंको जेलोंमें डालकर ब्रिटिश सरकारने अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग और शान्तिके मार्गको अधिक कंटकाकीर्ण बनाया है।

नया संसार—

समाजका सामूहिकरूपसे समाजवादी सिद्धान्तों और नीतिके आधारपर संगठन एवं व्यक्तिकी अधिकसे अधिक स्वतन्त्रताको सुरक्षित रखना युगकी आवश्यकता है। यह बताते हुए कि नवीन विश्व व्यवस्थामें भारतका क्या हिस्सा होगा पंडित जवाहर

लाल नेहरूने कहा कि "मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि नवीन विश्व व्यवस्थाके आधारमें समाजवादका बहुत बड़ा हिस्सा होगा, तथापि मैं आशा करता हूं कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रताकी बहुत दूरतक रक्षा की जायेगी। जहांतक हिन्दुस्तानका सम्बन्ध है,मैं चाहता हूं कि,—इस बातका ध्यान रख कर कि संक्रान्तिकालमें और जो उथलपुथल तथा परिवर्तन हो रहे हैं उनके दौरानमें इस सामञ्जस्य और संगठनके लानेके मार्गमें बहुत सी कठिनाइयां आयेंगी,—इस तरहकी विश्व व्यवस्था लानेका प्रयत्न करनेवाले राष्ट्रोंके साथ हिन्दुस्तान सहयोग करे।" पंडितजीका यह स्पष्ट मत है कि विश्वमें तबतक शांति नहीं हो सकती जबतक देशोंके बीचमें राजनीतिक और आर्थिक संघर्ष बने रहेंगे। अतएव अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धोंको सु-नियन्त्रणमें लानेवाली विश्वसनीय एवं सम्माननीय अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाकी स्थापनाके लिये आवश्यक है कि देशोंके राजनीतिक और आर्थिक झगड़े जहांतक सम्भव हो मिटा डाले जायं। इस तरहकी व्यवस्था तभी स्थापित हो सकती है जब उसमें भाग लेनेवाले सब देश राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त होंगे एवं विदेशी दासता और दमनका भाव किसी देशमें न हो गा।

ये भारतीय कम्यूनिस्ट—

विदेशी कम्यूनिस्टोंकी नीतिपर चलनेवाले भारतीय कम्यूनिस्टोंने सदा राष्ट्र-विरोधी नीतिका अवलम्बन किया है। 'नवाबोंका साम्राज्य' नामक पुस्तकका रचयिता ब्रिटिश कम्यूनिस्ट विलियम इर्विन्सन जैसे विदेशी कम्यूनिस्टोंसे अनुप्रेरणा प्राप्त भारतीय कम्यूनिस्टोंने कांग्रेसके देश-पूज्य महात्मा गांधी, और पं० जवाहरलाल जैसे नेताओंको भारतके पूंजीवादियोंका दलालतक कहनेमें द्विधा नहीं की। देशकी वस्तु स्थितिपर इन्होंने कभी दृष्टि नहीं डाली। इसीसे उस दिन बम्बईके जिन्ना हालमें एक प्रेस कानफरेन्समें पण्डित जवाहरलाल नेहरूको इन भारतीय कम्यूनिस्टोंकी नीतिपर प्रकाश डालते हुए यह कहना पड़ा कि "मूल बात तो यह है कि कम्यूनिस्ट नीति उस देशकी स्थिति और दृष्टिकोणके अनुसार नहीं होती जहां वह काम में लायी जाती है बल्कि रूसकी वैदेशिक नीतिके अनुकूल और अनुरूप उसे स्थिर किया जाता है। रूससे एवं जो महान प्रगति उसने की है उससे मुझे पूर्ण सहानुभूति है। किन्तु कई दृष्टिकोणोंसे मैं यह नहीं समझता कि किसी राष्ट्रकी नीति रूसकी वैदेशिक नीतिसे बंधी रहनी चाहिये। साधारण प्रश्न यह है कि क्या उनकी नीति भारतके उद्देश्य के प्रति अहितकर हुई है।" राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएं जब किसी देशके सामने एक ही समयमें समान महत्वपूर्ण रूपसे आती हैं उस समय कोई देश राष्ट्रीय समस्याओंकी उपेक्षा करके अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नोंमें अपनेको उलझानेकी मूर्खता नहीं कर सकता। स्वयं रूसने ही सदा राष्ट्रीय समस्याओंको प्रथम स्थान दिया है। स्वतंत्र और परतन्त्रमें कुछ अन्तर तो होता ही है। शायद परतन्त्र होनेके कारण भारतीय कम्यूनिस्ट किसी प्रश्नपर स्वतन्त्र दृष्टिकोणसे विचार ही नहीं कर पाते। जब पण्डितजीसे यह कहा गया कि कम्यूनिस्ट कांग्रेस-लीग समझौते और कांग्रेस नेताओंकी रिहाईके लिये नारे लगाते रहे हैं तो उन्होंने कहा कि "हिन्दुस्तानमें कम्यूनिस्टोंने पिछले दो-तीन वर्षोंके दौरानमें अपने जीवनकालका सबसे महत्वपूर्ण अवसर खो दिया। हिन्दुस्तानके इतिहासके अत्यन्त महत्वपूर्ण कालमें, जब तटस्थ रहना भी कठिन था, वे दूसरे पक्षमें लद गये।" पण्डितजीके इस खरे सत्यका खण्डन कर सकनेमें असमर्थ कम्यूनिस्ट उन पर बेतरह बिगड़े हैं। माकूल जवाब न दे सकनेपर मनुष्यकी जो स्थिति होती है, अनर्गल प्रलाप करने की, वही कम्यूनिस्ट पार्टीके मन्त्री श्री पूर्णचन्द्र जोशीकी हुई है। आपने फरमाया है कि "एक तरफ तो वायसरायके सामने अगस्त आन्दोलनका कांग्रेस का उत्तरदायित्व अस्वीकार किया जाता है और दूसरी तरफ उसमें भाग न लेनेके लिये हमें देशभक्तिके दायरेसे अलग रखा जाता है।" ये कम्यूनिस्ट अपनी ही तरह दूसरोंको भी आत्मप्रवंचक समझते हैं। आन्दोलन तो नहीं छेड़ा गया था, छेड़नेका अवसर ही नहीं दिया गया; किन्तु राष्ट्रपर मदान्ध सरकारने ठोकर मारी थी। आघातपर प्रत्याघात करना आन्दोलनकी सीमामें नहीं आता। यह तो स्वाभिमानका तकाजा है। जिस तरह अन्य अवसरोंपर कांग्रेसका आन्दोलन आरम्भ होनेपर सरकार कानून और व्यवस्थाकी रक्षाके नामपर सत्याग्रहियोंपर प्रत्याघात करती रही है उसी तरह अगस्त १९४२ में और उसके बाद देशवासियोंने राष्ट्रके स्वाभिमानकी रक्षाके नामपर सरकारपर प्रत्याघात किया। अतः वे प्रणम्य हैं। वे उन क्रान्तिकारियोंसे, जिन्होंने लोक-युद्धके नामपर कांग्रेसमैनोंको पांचवाकालम कहकर सरकारके हाथ मजबूत बनाये, राष्ट्रक अपमान करनेवाली सत्ताका सामना करनेका साहस न दिखा सकनेवालों, किताब पढ़कर क्रान्तिका नारा लगानेवालोंसे कहीं बढ़े क्रान्तिकारी हैं। इनमें और कम्यूनिस्टोंमें क्या अन्तर है इस प्रश्नका लखनऊमें एक प्रेस कानफोन्समें आचार्य कृपलानीने बड़ा माकूल जवाब दिया है। आपने कहा कि कम्यूनिस्ट और कांग्रेसमें, :"अन्तर वही है जो एक आंख वाले : (काने) और दो आंखवाले पूर्ण स्वस्थ मनुष्यमें होता है।"

चीन अजब पहेली है—

इसमें सन्देह नहीं कि चीनकी सैनिक स्थिति इधर हालमें कुछ सुधरी है। किन्तु घरेलू समस्याएं ज्योंकी त्यों बनी हैं। कम्यूनिस्ट और कामिण्टांगके झगड़े पूर्ववत हैं। एक दूसरेको सन्देह, अविश्वास और भयकी आंखोंसे देखता है। चीनकी राजनीतिक स्थितिकी यह दुर्गति अत्यन्त शोचनीय है। मार्शल चांग कैशकके व्यक्तित्व और नेतृत्वका जहां तक प्रश्न है चीनमें ऐसा कोई दल नहीं है जो उनका सम्मान नहीं करता। इतना होनेपर भी चीनकी राजनीतिक समस्याको सुलझानेमें वे समर्थ नहीं हो रहे हैं इसका क्या कारण है? एक कहावत है कि अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता। मार्शल चांग कैशकके इर्द-गिर्द और उनकी सरकार में पुरानी दुनियाके क्रूर स्वार्थियोंका ऐसा जमघट है कि :उनकी दुरभिसन्धियों तथा कुत्सित मन्त्रणाओंके कारण मार्शल सही रास्तेपर कदम नहीं बढ़ा पाते। हमें भय और आशङ्का है कि मार्शल चांगकी यह दुर्बलता न सिर्फ उनके व्यक्तित्व और नेतृत्वके लिये खतरनाक सिद्ध होगी बल्कि संसारके लिये अहितकर होगी। सैनफ्रैंसिस्को कानफरेन्समें चीनी प्रतिनिधिमण्डलने जैसा लज्जाजनक प्रदर्शन किया है वह किसी से छिपा नहीं है। श्रीमती पण्डितने ठीक ही कहा है कि तीन महानको खुश करनेकी अत्यधिक दुश्चिन्ताके कारण चीनने सम्पूर्ण एशियाका नेतृत्व करनेका अवसर हाथसे निकल जाने दिया। एक एशियायीके नाते मैंने चीनसे साहसका परिचय देनेकी अधिक आशा की थी। सैनफ्रांसिस्कोमें आये हुए अन्य एशियायी प्रतिनिधियोंकी भी चीनी प्रतिनिधि मण्डलके सम्बन्धमें ऐसी ही धारणा है। चीनी प्रतिनिधि भारतीय पत्रकारोंसे दूर भागते थे। इसतरहके दब्बू और आत्माभिमानसे शून्य राजनेताओंका चीनमें जबतक बोलबाला रहेगा तबतक स्वतन्त्र होकर भी चीन किसी न किसी एक या तीनों महानोंका पुछल्ला ही बना रहेगा। वास्तवमें यह बड़े खेद और दुर्भाग्यकी बात है। चीनकी राजनीतिक समस्या इतनी महत्वपूर्ण है कि एशिया, प्रशान्त और संसारपर, एवं विश्वशान्तिपर उसका जबर्दस्त प्रभाव पड़ सकता है। किन्तु चीनकी सरकारमें जबतक यह पुरानी गुटबन्दी बनी रहेगी तबतक उससे किसी तरहकी आशा नहीं की जा सकती।

फ्रैंकोकी नयी चाल—

जेनरल फ्रैंको, युद्धस्थितिमें परिवर्तन देखनेके बादसे ही, रङ्ग बदल रहे हैं। ब्रिटेन और अमेरिकामें एक बड़ा प्रभावशाली दल है जो यूरोपके तमाम अप्रगतिशील संस्थाओं और संगठनोंको प्रत्यक्ष और परोक्ष रूपसे सहायता प्रदान करके उनको शक्तिशाली बनाये रखनेके लिये प्रयत्नशील है। मि० चर्चिल जैसे व्यक्तिके हृदयमें भी जेनरल फ्रैंकोके लिये स्थान है और समय-समय पर वे अपने इस भावको प्रकट भी कर चुके हैं। अपने इन सहायकों और समर्थकोंका हाथ मजबूत करनेके लिये स्पेनके तानाशाह ने अपने ऊपर लोकतन्त्रीय आवरण डाला है। स्पेनमें साधारण निर्वाचनकी चर्चा हो रही है। इस तरहके निर्वाचनोंका परिणाम क्या हो सकता है यह मुसोलिनाके इटाली और हिटलरकी जर्मनीमें अच्छी तरह देखा जा चुका है।

विश्वस्तसूत्रसे यह भी मालूम हुआ है कि जेनरल फ्रैंकोके ब्रिटिश दोस्त उनपर यह दबाव डाल रहे हैं कि ब्रिटेनके प्राचीन पंथियोंको अपने पक्षमें लानेके लिये स्पेनमें राजतन्त्रका स्वांग भरा जाना चाहिये। नाममात्रके लिये राजतन्त्रीय व्यवस्था स्थापित करके मि० चर्चिलको स्पेनका पूर्ण समर्थक बनाया जा सकता है। इस सम्बन्धमें लन्दनी डेली टेलीग्राफके मैड्रिड स्थित संवाददाताका कथन है कि "जेनरल फ्रैंको नेशनल कौंसिलकी १८ जुलाईको होनेवाली बैठकमें देशकी पुरानी कौंसिलको पुनर्जीवित करनेकी योजना उपस्थित करेंगे। यह कौंसिल प्रजातन्त्र स्थापित होनेके पू... अलफोंजोके जमानेमें थी। स्पेनमें प्र... क्रांति होनेपर १४ अप्रैल १९... शाह अलफोंजोंको प्रजाने निर्वासि... दिया था। बादमें स्पेनकी पार्लमे... घोषणा की थी कि अब भविष्य... प्रजातन्त्र राज होगा, राजवंशका... धिकार समाप्त किया जाता है। अल... फोंजों रोममें रहा और सन १९४१ ... मृत्यु हो गयी। प्रजातन्त्र अधिक ... स्थायी नहीं रह सका। १९३६ में ... फ्रैंकोने, जो उस समय स्पेनका ... सेनापति था, फौजी बगावत का ... को राज्यका पूर्ण अधिकारी घोषित ... १९३९ तक गृहयुद्ध जारी रहा और ... स्पेनमें फ्रैंकोका एकछत्र राज्य ... फिर राजतन्त्रका स्वांग खड़ा किया ... पुरानी कौंसिलको पुनरुज्जीवित कर... स्पेनमें पुनः शाही तन्त्र, यद्यपि ... बिना शाहके ही रहेगा, स्थापित ... होगा। आज एक तरफ सर्वत्र राज... अन्त किया जा रहा है दूसरी तरफ ... प्राचीन पंथियोंकी सहायतासे ... स्थापित करनेकी चेष्टा की जा रही।

सरके बदले सर—

जबतक संसारमें सरके बदले ... न्याय रहेगा तबतक शांति एक ... मनुष्य अभी इतना सम्पूर्ण नहीं हुआ ... न कभी हो सकता है कि वह इस ... दावा करे कि उसका फैसला ... अतः भूलसे न्यायके नामपर किसी... उड़ा देनेका फैसला देनेवाले न्या... भूलके लिये सरके बदले सर लेनेकी ... सिवा दूसरा कौन जिम्मेदार है! ... भूल सुधारी नहीं जा सकती और ... जिम्मेदारी किसी एक व्यक्तिकी ... सकती उसे बने रहने देना सभ्य ... लिये कहांतक शोभाप्रद है, यह ... है। सरके बदले सर लेनेकी नीति ... समझी जायगी। यही कारण है कि ... हितैषी एवं मनीषी व्यक्तियोंने प्राण... सजाको अमानवीय और बर्बरतापूर्ण ... उसका वर्जन करनेके लिये सब युगोंमें ... लन किया है और आज भी ... किन्तु इसके प्रतिकूल ऐसे लोग भी ... आये हैं और हैं भी जो इन्साफ ... अपराधीको उचित शिक्षा देनेके लिये ... शब्दोंमें अपनी भीषण प्रतिहिंसाकी ... हुई ज्वालाको शान्त करनेके लिये ... लोगोंकी प्रणालीका अवलम्बन ... भी द्विधा और सङ्कोच नहीं करते ... वे बर्बर,असभ्य कहकर उनसे घृणा ... संसारमें जबतक यह रवैया रहेगी ... बर्बरता भी रहेगी। जब सभ्य और ... भी बर्बरता छोड़नेमें असमर्थ हैं ... मुच असभ्य और बर्बर हैं उनसे ... ही कैसे की जा सकती है। अभी ... बड़े युद्धापराधियोंका विचार करने... नियुक्त अन्तर्राष्ट्रीय फौजी अदाल... रिकन सदस्य, जज जैक्सनने ऐसी ... वृत्तिका परिचय दिया है। आपने ... कि रिबनट्राप, गोयरिंग और अन्य ... युद्ध अपराधी यदि दोषी पाये ... प्रणालीके अनुसार उनकी ... चलायी जायेगी। रिबनट्राप, गोयरिंग ... को दण्ड दिया जाना चाहिये ... जर्मन तरीकेसे नहीं,सभ्य मानवीय ...

शिमला सम्मेलन के दृश्य

यीं ओर वायसरायके प्राइवेट टरी सर इवान जेंकिन्स और स प्रेसीडेंट तथा दाहिनी ओर जिन्ना, सिख नेता मास्टर तारा और पंजाबके प्रधान मंत्री मलिक र हयात खां वायसरायके उद्यानमें बातचीत कर रहे हैं।

राष्ट्रपतिका वायसराय द्वारा शिमला नेता सम्मेलनमें भाग लेनेके लिये वायसराय भवनमें पहुंचने पर लार्ड वावेल राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादका स्वागत कर रहे हैं।

विश्व शान्ति और सुरक्षा सनद

मित्र राष्ट्रोंकी सानफ्रांसिस्कोमें ६० दिनोंकी बैठकके बाद प्रस्तुत विश्वशांति सनदको अन्तिम स्वीकृतिकी मुहर लगानेके लिये मित्रराष्ट्रीय सम्मेलनके अन्तिम अधिवेशनमें पेश कर दिया गया। इस सनदकी १११ शर्तोंको १९ अध्यायोंमें विभाजित कर दिया गया है। इसकी प्रस्तावनामें युद्धको दूर रखनेके लिये संयुक्तरूपसे मानव अधिकारों और सुख-सुविधाओंको प्रदान करने, विश्वमें शांति और सुरक्षाकायम रखनेके लिये अपनी शक्तियोंको सङ्गठित करने और अन्तर्राष्ट्रीयदायित्व तथा कानूनके प्रति न्याय और सम्मान बनाये रखनेकी अवस्था कायम करनेके लिये मित्रराष्ट्रोंकी जनताका दृढ़ निश्चय घोषित किया गया है।

अध्याय १—उद्देश्य और सिद्धांत:—

इस विश्वसङ्गठनका नाम 'मित्रराष्ट्रीय' सङ्गठन रहेगा और यह अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति तथा सुरक्षाको शान्तिपूर्ण उपायों तथा आवश्यकता पड़नेपर बलप्रयोग द्वारा कायम रखनेका प्रयत्न करेगा। इसका उद्देश्य समस्त मानव जातिके समानाधिकारों तथा आत्म-निर्णयके सम्मानपर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय ऐक्यकी स्थापना भी होगा। विश्वव्यापी आर्थिक सामाजिक और सांस्कृतिक समस्याओंका समाधान करने और वर्ग, जाति भाषा अथवा धर्मके किसी भेदभावके बिना मानव अधिकारों तथा मूल स्वाधीनताओंके प्रति सम्मानको बढ़ानेमें यह अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग प्राप्त करनेका प्रयत्न करेगा।

इस सङ्गठनके सभी सदस्य, जो सर्वोच्च सत्ता प्राप्त और आपसमें समान हैं, प्रतिज्ञा करते हैं कि वे अपने झगड़ोंका शान्तिपूर्ण उपायों द्वारा निपटारा करेंगे और किसी देशकी राष्ट्रीय सीमापर खतरा उत्पन्न नहीं करेंगे। यह सङ्गठन स्वयं किसी देशपर आक्रमण नहीं करेगा किन्तु अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा कायम रखनेकी कार्यवाहीमें यह सिद्धान्त किसी प्रकार बाधक नहीं हो सकेगा।

अध्याय २—सदस्यता:— गैर सदस्य देश मित्रराष्ट्रोंमें शामिल हो सकते हैं अगर वे 'शान्ति प्रिय' हैं और सनदकी शर्तोंको स्वीकार करते तथा उनका पालन कर सकते हैं। इस प्रकारके देशोंको सुरक्षा कौंसिलकी सिफारिशपर साधारण असेम्बलीमें दाखिल किया जायगा।

कोई सदस्य, जिसके खिलाफ सुरक्षा कौंसिल द्वारा निषेधात्मक अथवा नियन्त्रणात्मक कार्यवाही की गयी हो, कौंसिल की सिफारिशपर असेम्बलीसे मुअत्तिल किया जा सकता है। कौंसिलकी सिफारिश पर सनद सिद्धान्तोंका बार-बार उल्लंघन करनेवाले किसी भी सदस्यको असेम्बलीसे निकाल बाहर किया जा सकता है।

अध्याय ३—अङ्ग:—मित्रराष्ट्रीय सङ्गठनके प्रमुख अङ्ग असेम्बली, सुरक्षा कौंसिल, न्याय अदालत और सेक्रेटरियट हैं। आवश्यकता पड़नेपर सहायक प्रतिष्ठानोंकी स्थापना भी की जायगी। संगठनकी सभी शाखाओंमें पुरुष और महिलाएं समान रूपसे भाग ले सकेंगी।

अध्याय ४—साधारण असेम्बली:— इसमें प्रत्येक सदस्य राष्ट्रके अधिकाधिक ५ प्रतिनिधि रह सकेंगे और प्रत्येक राष्ट्रको एक वोट देनेका अधिकार होगा। असेम्बली की बैठक प्रतिवर्ष हुआ करेगी किन्तु उसका विशेष अधिवेशन भी बुलाया जा सकेगा। सनदकी अधिकार सीमामें आनेवाले किसी विषयपर असेम्बली विचार कर उसके सम्बन्धमें सदस्य राष्ट्रों और सुरक्षा कौंसिलसे सिफारिश कर सकती है। कौंसिलके अनुरोधके बिना सुरक्षा कौंसिलके विचाराधीन किसी सुरक्षा सम्बन्धी विषयपर सिफारिश करनेका असेम्बलीको अधिकार नहीं है। अन्य कार्योंके अतिरिक्त असेम्बली निरस्त्रीकरण और शस्त्रास्त्र नियन्त्रणके सिद्धान्तों पर भी विचार कर सकती है। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शिक्षा और स्वास्थ्य सम्बन्धी क्षेत्रोंमें अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग कायम करनेके लिये अध्ययन कर सिफारिश पेश कर सकती है।

सुरक्षा कौन्सिलके अस्थायी सदस्यों, संरक्षण कौन्सिलके सदस्यों तथा सामाजिक और आर्थिक कौन्सिलके सभी सदस्योंका यह चुनाव करेगी तथा अन्तर्राष्ट्रीय अदालत के न्यायाधीशोंके चुनावमें भाग लेगी। विश्वसंगठनकी आर्थिक व्यवस्थाओंकी भी यह देख भाल करेगी। महत्वपूर्ण प्रश्नोंपर असेम्बलीका निर्णय बैठकमें उपस्थित दो तिहाई सदस्योंके बहुमतसे होगा और अन्य विषयों पर साधारण बहुमत ही पर्याप्त होगा।

अध्याय ५—सुरक्षा कौन्सिल :—मित्र राष्ट्रीय संगठनके इस अंगके कार्यका प्राथमिक दायित्व विश्व सुरक्षा और शांति को कायम रखना होगा। इस कौन्सिलमें ११ सदस्य होंगे जिनमें ५ स्थायी सदस्य-युक्तराष्ट्र, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, रूस और चीन रहेंगे। अन्य सदस्य दो वर्षोंके लिये शामिल किये जायंगे और उनके चुनावमें उनकी भौगोलिक स्थिति तथा विश्व सुरक्षा में उनके अवदान पर विशेष ध्यान रखा जायगा। कौन्सिलके निर्णय ७ सदस्योंके बहुमतसे हुआ करेंगे और महत्वपूर्ण विषयों पर सभी स्थायी सदस्योंकी स्वीकृति लेनी होगी। कौन्सिलकी इच्छाके अनुसार मित्र राष्ट्रोंका कोई सदस्य बिना वोटके कौन्सिलकी बैठकमें भाग ले सकेगा और किसी झगड़ेसे सम्बन्धित किसी गैर सदस्यको कौन्सिल द्वारा निर्धारित शर्तोंके अनुसार कौन्सिलके विचार विमर्शमें भाग लेनेके लिये आमन्त्रित किया जा सकेगा।

अध्याय ६—विवादोंका शान्तिपूर्ण समझौता:—विवादग्रस्त देशोंको आपसमें समझौता, जांच, मध्यस्थता, समझौताकेशर्तों, पंचायत, अदालती समझौता और क्षेत्रीय व्यवस्था द्वारा समझौता करना होगा। इस प्रकारकी कार्यवाहियोंके असफल होनेपर वे अपने मामलोंको सुरक्षा कौंसिलके समक्ष पेश कर सकते हैं। कौंसिल स्वयं भी शांति को खतरा पहुंचानेवाली किसी स्थिति या झगड़ेकी जांच कर सकती है और विवादग्रस्त पार्टियोंको शान्तिपूर्ण समझौतेके लिये कह सकती है। साथ ही संगठनका भी कोई सदस्य किसी झगड़ेकी ओर कौंसिल अथवा असेम्बलीका ध्यान आकृष्ट कर सकता है।

अध्याय ७—शान्ति भंगअथवा उसकी आशङ्का तथा आक्रमणके सम्बन्धमें कार्यवाही:—सुरक्षा कौंसिल, यह निर्णय करनेके बाद कि अमुक स्थिति शान्तिको खतरा पहुंचानेवाली साबित हो सकती है, स्थितिको संगीन होनेसे बचानेके लिये पार्टियोंको अस्थायी कार्यवाही करनेका आदेश दे सकती है। आवश्यकता पड़नेपर कौंसिल द्वारा सङ्गठनके सदस्योंको कूटनीतिक और आर्थिक सख्ती करने अथवा विरोध प्रदर्शन करने, घेरा डालने अथवा वायु, जल अथवा स्थल सेनाओंकी कार्यवाही आरम्भ करनेका आदेश दिया जा सकता है। सदस्य राष्ट्रों द्वारा कौंसिलको विशेष व्यवस्थाके अन्तर्गत सामरिक सहयोग और सुविधाएं तथा आवागमनके अधिकार प्रदान किये जायेंगे। कौंसिलकी सामरिक कार्यवाही की योजना सामरिक परामर्श समितिकी सहायतासे प्रस्तुत की जायगी और वह कमेटी कौंसिलके मतानुसार सेनाओंका सञ्चालन करेगी। कौंसिलकी स्वीकृति और क्षेत्रीय एजेन्सियोंकी सलाहसे कमेटी वहां क्षेत्रीय सैन्यदलोंकी स्थापना भी कर सकती है। कौंसिलके हस्तक्षेपके पूर्व सदस्य राष्ट्र किसी आक्रमणको अकेला अथवा सामूहिक रूपसे विफल बना सकते हैं।

अध्याय ८—क्षेत्रीय व्यवस्था:— क्षेत्रीय सुरक्षा एजेन्सियों और प्रणालियोंने प्रतिज्ञा की है कि सुरक्षा कौंसिलकी प्रेरणा के साथ वे स्थानीय झगड़ोंको शान्तिपूर्ण ढङ्गसे निपटानेकी पूरी चेष्टा करेंगी। इसके साथ ही सुरक्षा कौंसिल उपयुक्त अवसरोंपर कार्यवाही करनेमें क्षेत्रीय एजेन्सियोंका उपयोग करेगी। कोई क्षेत्रीय एजेन्सी अपनी इच्छाके अनुसार कुमुक भेजनेकी कार्यवाही नहीं कर सकती किन्तु इस युद्धके किसी शत्रु देश द्वारा फिरसे आक्रमण किये जानेपर उसके खिलाफ कुमुक भेजनेका उसको अधिकार होगा।

अध्याय ९—अन्तर्राष्ट्रीय सामाजिक और आर्थिक सहयोग:—सदस्य राष्ट्रोंने प्रतिज्ञा की है कि प्रस्तावनामें घोषित सुख सुविधा और मानवहितके उद्देश्योंकी पूर्ति करनेमें वे विश्वसंगठनके साथ अकेला अथवा सामूहिक रूपसे सहयोग प्रदान करेंगे। इन उद्देश्योंको कार्यान्वित करनेके लिये आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, शिक्षण और स्वास्थ्य सम्बन्धी विषयोंको निपटानेके लिये स्थापित विशिष्ट अन्तर्सरकारी एजेन्सियोंको आर्थिक और सामाजिक कौंसिल द्वारा निर्दिष्ट ... के जरिये विश्वसङ्गठनसे संबन्धित होगा।

इन क्षेत्रोंमें सङ्गठनकी कार्य... देखभाल असेम्बलीकी स्वीकृति द्वारा ... रत आर्थिक और सामाजिक ... करेगी।

अध्याय १०---आर्थिक और ... जिक कौंसिल:---इसमें १८ सदस्य ... और यह अपनी अधिकार-सीमाके ... पर अध्ययन कर रिपोर्ट देगी और ... म्बली, सङ्गठन सदस्यों तथा विशिष्ट ... न्सियोंके समक्ष सिफारिशें पेश ... अपने दायरेके विषयोंपर कौंसिल द्वारा ... म्बलीके समक्ष प्रस्ताव पेश किये जा ... हैं, साथ ही वह अन्तर्राष्ट्रीय कान्फ्रेंस ... आयोजन और आवश्यकतानुसार ... कमीशनकी स्थापना कर सकती है। ... अधिकार कमीशनको अन्तर्राष्ट्रीय ... कारपत्र प्रस्तुत करनेका भी वह ... सकती है। विशिष्ट एजेन्सियोंके ... संयोजककी हैसियतसे कौंसिल ... दलों और सङ्गठन सदस्योंसे ... और असेम्बलीकी सिफारिशोंको कार्य... करनेके लिये उनके द्वारा की गयी ... वाहीकी रिपोर्ट प्राप्त करेगी है। कौंसिल... बैठक आवश्यकतानुसार होगी और ... निर्णय बहुमतसे हो सकेगा।

अध्याय ११—पराधीन देशोंके ... में घोषणा:—पराधीन देशोंके निवासियों... हितोंके महत्वको स्वीकार करते ... देशोंमें शासन करनेवाले सभी सदस्... स्योंने प्रतिज्ञा की है कि [१] ... शासित देशोंकी जनताकी राज... सामाजिक, आर्थिक और शिक्षा ... उन्नति करायेंगे और दुर्व्यवहारोंसे उनकी ... करेंगे। [२] वहां स्वशासनको प्रश्रय ... देंगे, जनताकी राजनीतिक आकांक्षा... पूरा ख्याल रखेंगे और प्रत्येक देश... उसकी जनताकी खास परिस्थिति... उनकी उन्नतिके विभिन्न अध्यायों... सार उनको अपना स्वतन्त्र राज... सङ्गठन करनेमें सहायता देंगे। [३] ... की सुखसुविधाके लिये अन्वेषण ... कार्योंमें सहायता प्रदान करेंगे। ... विश्व सङ्गठनके सेक्रेटरी जेनरलको ... और वैधानिक सीमाओंके अ... अपने अधीन देशोंकी आर्थिक, सा... और शिक्षा सम्बन्धी अवस्थाके ... देंगे।

अध्याय १२---अन्तर्राष्ट्रीय ... क्षण प्रणाली:---पराधीन देशोंको ... के बाद संरक्षण प्रणालीके अन्त... जायगा। इस प्रणालीके अन्तर्गत ... आ सकते हैं जो संरक्षित हैं अथवा ... शत्रु देशोंसे अलग कर दिये गये हैं ... इलाके हैं जिनके संरक्षक देश स्वयं ... व्यवस्थाके अधीन उनको रखना ...

[शेष १६ वें पृष्ठपर देखिये

ब्लैक मार्केटके व्यापारी पकौड़ी साहकी विनोदपूर्ण कहानी—

कहानी

इन्साफ

(लेखक—श्रीविन्ध्याचल प्रसाद गुप्त)

पकौड़ी सावके दिमागके थरमामीटरमें पारा अन्तिम सीमापर पहुंच गया। भाड़की तरह गरम होकर बोले- "हटो, सिर मत खाओ !"

उनके इन शब्दोंने जादूका काम किया। दूकानके सामने जमी भीड़में खलबली मची। कई आवाजें एक साथ निकलीं—

"हमें चार नहीं तो दो धोतियां दे दो !"

"और हमें पांच साड़ियां नहीं तो एक साड़ी दे दीजिये !"

"दुहाई सावजीकी ! हमारी इज्जत रख लीजिये। कल हमारे घर शादी है और अभी एक धोतीतक नहीं मिली।"

पकौड़ी साव झल्ला उठे, "तो क्या मैं धोती बन जाऊं ?"

सामनेसे क्लौथ-इन्स्पेक्टर आते दिखाई दिये। पकौड़ी साहने झुककर प्रणाम करनेके बाद निवेदन किया "देखिये हुजूर ग्राहक किसी तरहसे नहीं मानते, सिरपर चढ़ते जा रहे हैं।"

इन्स्पेक्टर साहब ग्राहकोंसे बिगड़कर बोले, "चलो भागो यहांसे। कैसा गोलमाल मचा रखा है ? नहीं भागनेसे हम अभी पुलिसको बुलायेगा।"

कितने ग्राहक हैट देखकर और कितने पुलिसका नाम सुनकर वहांसे खिसकने लगे। थोड़ी देरमें भीड़ हट गयी। इन्स्पेक्टर साहबने पकौड़ी सावसे कहा, "हम आपकी दूकानकी जांच करेगा।"

पकौड़ी साव दांत दिखलाते हुए बोले, "आप मालिक हैं, दूकान आपकी है। चलिये देख लीजिये ! हम औरोंकी तरह छिपाकर नहीं रखते।"—और इन्स्पेक्टरके साथ दूकानके भीतर पैर रखते ही सौ रुपयेका नोट बढ़ाते हुए कहा, "इस महीनाका पुरस्कार।"

इन्स्पेक्टरने सिर हिलाते हुए कहा, "और वही एकसौ, मैंने गत मासमें क्या कहा था ?"

"याद है हुजूर, परन्तु इस मासमें नफा नहीं हुआ। हुजूर मालिक हैं।"

"तुम बहुत नफा करता है—हम खूब जानता है। अच्छा, इस बार हम रख लेता है। दूसरे महीनामें डेढ़ सौसे कम नहीं लेगा न ?"

"जी हां, हुजूर आप मालिक हैं।"

पश्चात् कुछ कपड़ोंको उलटने-पुलटनेके बाद पकौड़ी सावके स्टाक रजिस्टरपर दस्तखत बनाकर इन्सपेक्टर साहब चले गये।

कुछ समयके बाद ही, पकौड़ी सावके परिचित जमींदार आये। 'जय गोपाल' 'राम-राम'के बाद पकौड़ी सावने पूछा, "कहिये, कुशल तो है ?"

जमींदारने कहा, "आप लोगोंकी कृपा है। राम-इच्छासे इसी महीनेके बीच हमारी बिटियाकी शादी होने जा रही है। कल तिलकका दिन है। बारह हजार रुपये दहेजमें जायगा...।"

"बारह हजार ?" पकौड़ी सावने आंखें फाड़-फाड़कर देखते हुए कहा,

"जी हां। राम-इच्छासे लड़का साधारण घरका नहीं है और एम० ए० पास है।"

"और अपनी बिटिया कहां तक पढ़ी हैं ?"

जमींदारने सिर खुजलाते हुए कहा, "राम-इच्छासे हमारे खानदानमें लड़कियों को पढ़ाना शुभ नहीं माना जाता। हमारे बड़े भैयाकी लड़कीने 'कान्ता' मिडिल तक शिक्षा पायी। राम-इच्छासे परिणाम यह हुआ कि शादीके दूसरे महीने उसे विधवा बनना पड़ा। इसलिये फिर ऐसी गलती दुहरानेके लिये हम तैयार नहीं हुए।"

"आपकी बिटियाकी शादी है न ? जिसकी एक आंख......"

"हां, हां। परन्तु आपरेशन कराकर, पत्थरकी आंख लगवा दी है। राम-इच्छासे मुझे कई आवश्यक कार्य हैं। आप हमारी एक प्रार्थनाको स्वीकार कीजिये !

"आप एक नहीं—हजार कहिये। मैं आपका मुंह नहीं रोक सकता।"

"अच्छा, राम-इच्छासे हमें एक जोड़ा सेन गुप्ता धोती और एक महीन साड़ी..." पकौड़ी साव उनके मुंहसे बात छीन ले गये।

"बस-बस। यही छोड़कर और चाहे जो भी सेवा हो—बिना सङ्कोच किये ही कहिये। आप मालिक हैं।"

जमींदारकी आशा खटाईमें पड़ने लगी। उसका मुंह सूख गया। दूकानकी दीवारें उनकी आंखोंमें हिलती दिखाई पड़ीं। पकौड़ी सावका हाथ पकड़कर आजिजीसे बोले,"अब हाथ पकड़नेकी लाज रखिये।"

"यह मेरे वशसे बाहरकी बात है।"

"कहींसे ला दीजिये !"

"कहींसे क्या, वह तो हमारी दूकान में है, परन्तु उन्हें मैं अपने सालेके लिये ले आया हूं।"

"आप हमसे रुपये ले लीजिये।"—कहते हुए जमींदारने अपनी जेबसे एक सौ रुपयेका एक नोट निकालकर, पकौड़ी सावके आगे रख दिया।"

उसने सात बार 'राम'का नाम उच्चारण कर दुख प्रकट करते हुए कहा, "आप मुझे लोभी समझते हैं ? देना होगा तो बिना एक कौड़ी लाभ लिये भी दे सकता हूं। परन्तु सालेका भय लगता है। संसार कहता है, "सारी खुदाई एक तरफ—जोरूका भाई एक तरफ" फिर मैं संसारसे अलग नहीं।"

जमींदारने अन्तिम उपाय काममें लाने की ठानी।

"आप सारी दुनियाको छोड़िये और राम-सुग्रीवकी मित्रताको स्मरण कीजिये। सालेको मना लीजिये।" कहते हुए वह पकौड़ी सावका पांव छूनेको लपके।

"हां-हां-हां-हां" कहते हुए पकौड़ी साव ने उन्हें ऐसा करनेसे रोककर अपने साधुस्वभावका परिचय दिया।

अन्तमें इस वाक्-युद्धसे हार मानकर पकौड़ीसाव मनमें प्रसन्न, प्रकटमें मुंहलटकाये हुए कैश-मेमोपर लिखे मूल्य बीस रुपये बारह आनेके नीचे जमींदारसे हस्ताक्षर बनवाये और एक सौ रुपयेका नोट रखकर नौ रुपये बारह आनेकी धोती और दस रुपयेवाली एक साड़ीके साथ ९४) रुपये लौटा दिये।

पकौड़ीसावके उपकारका भारी बोझ लेकर, सन्तोषकी सांस लेते हुए जमींदार साहब विदा हुए।

* * *

दूसरे दिन + + + कचहरीमें पकौड़ीसाव कोई भूला हुआ नाम स्मरण कर रहे थे, "हां...आ...आ आपरेशन बङ्गला। हां, आपरेशन बङ्गला।"

पासमें ही एक नवयुवक सिनेमाके सचित्र विज्ञापनपर आंख गड़ाये खड़ा था। पकौड़ीसावने नम्रतापूर्वक उससे प्रश्न किया, "बबुआजी, आप आपरेशन बङ्गला जानते हैं ?"

नवयुवकका ध्यान भंग नहीं हुआ। वह सारे संसारको भूलकर विज्ञप्तिपर छपे अक्षरोंको पढ़ रहा था—"लाल हवेली...।"

पकौड़ी साव अपनी सफलतापर चिल्ला उठे, "लाल हवेली, में ?"

इस बार नवयुवकका ध्यान टूटा। उसने पकौड़ीसावको नखसे शिख तक देखकर कहा, "हां, लाल हवेलीमें 'सुरेन्द्र' के साथ नूरजहां हैं।"

वह उत्सुकताके साथ भर गये, "नूरजहां कौन ? वह गानेवाली ?"

नवयुवकने अपनी छातीपर हाथ रखते हुए कहा, "हां, भाई साहब, यों कहिये—स्वरकी रानी। 'खानदान' आपने देखा है ? वाह, कितना अच्छा गाती है ? सुनकर कलेजेपर सांप लोट जाता है।..." और नवयुवक अपने पास पकौड़ीसावके अतिरिक्त अन्य किसीको न देखकर गुनगुनाने लगा, "आंखोंमें दिल उतर गया..."

पकौड़ी सावको कोई भूली हुई घटना याद आ गयी। उनकी आकृतिका रंग गिरगिटकी तरह बदलने लगा। वह भाड़के चने की तरह भड़क कर बोले, "क्या खाक अच्छा गाती है। उसकी आवाज घोड़ेकी हिनहिनाहट जैसी है।"

नवयुवकको "उल्टा चोर कोतवालको डांटे" वाली नीति अच्छी न लगी। उसने आवेशमें भर कर बिना संकोच कह दिया, "घोंघा बसन्त ! तुम क्या जानो कि कोठेका आनन्द कैसा होता है। क्या जाने झुकनी के मजा—चाखम हलके जोतवैया।..."

इस अपमानसे पकौड़ीसावकी नाकपर पसीना आ गया। वह रंग बेरंग देख नवयुवकको बड़बड़ाते हुए वहीं छोड़ चुपकेसे दस कदम आगे खिसक गया।

परन्तु इसमें पकौड़ीसावका अपराध न था। घटना इस प्रकार है:—

"गांवके सभ्य लोगोंके विरोधको ठुकराते हुए उन्होंने अपने पुत्रके विवाहमें 'नूरजहां' नामकी एक वेश्याको आमन्त्रित किया था। शादीके बाद दूसरी रातको महफिलमें वह अपना कमाल दिखा रही थी, बारातियोंमें कई उससे गजल, दादरा, ठुमरी कौव्वालीकी फरमाइश कर अपनी आज्ञाकी पूर्ति होते देख प्रसन्नतासे गुब्बारेकी तरह फूल रहे थे। पकौड़ीसाव इस आनन्दसे वञ्चित रहना उचित न समझ, नूरजहांसे बोले, "जरा एक भैरवी तो सुनाओ !"

उनके इन शब्दोंने उपस्थित मण्डलीमें हास्यका रस उड़ेल दिया। नूरजहांने मुस्कुराते हुए कहा, "सावजी, यह भैरवीका समय नहीं है।"

अपनी आज्ञाकी अवहेलनासे क्रोधित होकर, पकौड़ीसाव बोले, "वाह, समय क्यों नहीं है ? गजल, दादराका समय है और 'भैरवी' का समय नहीं ? यह सब बहाना है। मैं उड़ती चिड़ियाको पहचानता हूं और तुम मुझे सिखा रही हो। अण्डा सिखावे बच्चाको— चें-चें मत कह।"

नूरजहांने विनयपूर्ण स्वरमें कहा, 'सावजी, भैरवी सुबहमें गाया जाता है।" पकौड़ीसावके मुंहमें लगाम कहां ? उनकी न रुकनेवाली जुबान कैंची बन रही थी।

"मैं 'एक' नहीं सुनूंगा। 'भैरवी' तुम्हें इस रातको गाना ही होगा।"

सभी लोग हंसते-हंसते लोट-पोट हो गये। नूरजहांने अपने समाजियोंसे कहा, "बन्दर क्या जाने अदरखका स्वाद।"

उस समय पकौड़ीसावके दिमागमें अच्छी तरह घुस गया—"रण्डी किसकी मीत।" तभीसे वह नूरजहांके नामसे चिढ़ते हैं। परन्तु उन्हें यह नहीं मालूम कि उनकी 'नूरजहां' लाल हवेलीवाली नूरजहां नहीं है।

"आपरेशन बंगला, के अनुसंधानमें वह दस बीस कदम और आगे बढ़े तब सामनेसे उनके परिचित एक वकील साहब आते दिखाई पड़े। वकील साहबका बुद्धिका लोहा, पकौड़ीसाव तीन महीने पहलेसे ही मान चुके थे। उनकी युक्तिसे ही कपिलदेवका चमारपर तेरहके बदले एक सौ तीस रुपयेकी डिग्री कराकर वसूल करनेमें समर्थ हुए थे। आज वही वकील साहब उनके सामने थे— इससे बढ़कर प्रसन्नताकी बात और क्या हो सकती थी ? उन्होंने आगे बढ़, लम्बा प्रणाम कर, प्रश्न किया, "आपरेशन बंगला किधर है ?"

वकील साहब कुछ सोचकर बोले, "आप अस्पताल जाना चाहते हैं ?"

"जी नहीं। कल चपरासी एक नोटिस देकर बोला—सेल टैक्सके हाकिम कल बही की जांच करेंगे।"

"समझ गया, इन्सपेक्शन बंगला।"

"हां ऽऽऽऽ इस्पेक्शन बंगला, किधर है ?"

वकील साहब उंगलीसे एक ओर संकेत करते हुए बोले, "वह देखिये, सामने कांटेसे घिरा हुआ...जहां एक काले रंगका छोटा सा बोर्ड लगा है ।..."

"बस-बस बूझ गया । आपका बेटा जिये ।" कहकर लपकते हुए पकौड़ीसाव बंगलामें पहुंचे । वहां अनेक व्यवसायी बही-खातेके साथ बैठे हुए हाकिमके आनेकी प्रतीक्षामें समयकी कड़ियां काट रहे थे ।

कई घण्टे गुजर गये परन्तु सेल टैक्सके आफिसरका दर्शन न हुआ । व्यवसायियोंमें असन्तोष फैलने लगा । एकने कहा, "नोटिस में १०॥ का समय है और तीन बज चुके हैं । हाकिमकी दृष्टिमें हमलोगोंके समयका कुछ भी मूल्य नहीं मालूम पड़ता । उन्हें नहीं मालूम कि हम लोग भी हाड़-मांसके बने हैं, हमको भी भूख और प्यास लगती है...।"

पकौड़ीसावकी अतड़ियां कुलबुला रही थीं । चलनेके समय जलपान करनेका इन्हें अवसर नहीं मिला था और बंगलाको इस भयसे नहीं छोड़ रहे थे : कि जलपान करनेके लिये जाते-आते घण्टों बीत जायेंगे; इस बीच कहीं हाकिमकी मोटर न आ जाय और सबसे पहले मेरी पुकार न हो जाय । इस समय भूखकी अग्नि प्रचण्ड होनेके कारण उनके मनका क्रोध भी उफन रहा था । उन्होंने नाक फुलाकर कहा, "यदि किसी वस्तुका मूल्य भूलसे भी एक पैसा अधिक हो तो निस्सन्देह बिना किरायेके मकान की हवा खाओ । और हम लोगोंका समय व्यर्थ जाय, भूखा रहनेपर बाध्य किया जाऊं फिर भी हमारी पुकारको कोई सुननेवाला नहीं । किस्सा वही कि "मीठा-मीठा गप-गप—कड़वा-कड़वा थू-थू ।"

दूसरेने कहा, "जिसकी लाठी उसकी भैंस ।"

उस दिन पकौड़ीसावको सेल टैक्स आफिसरके दर्शन न मिले । वह संध्याकी ट्रेनसे अपने गांवको लौट रहे थे । ट्रेनके डिब्बेमें उनके पास एक मौलवी साहब बैठे हुए अन्य यात्रीसे कह रहे थे:—

"सरकार ब्लैक मार्केटको दूर करनेके लिये पानीकी तरह रुपये बहा रही है । यह सब पब्लिककी सेवाके लिये । परन्तु लोग इतने बड़े बेवकूफ हैं कि मानते नहीं, एकके दो, तीन, चारतक दे आते हैं ।"

दूसरे यात्रीने कहा, "परन्तु मौलवी साहब, यदि चीजें आसानीसे मिल जातीं तो लोग पागल नहीं हैं जो अपने पैसे फेंक आते ।"

पकौड़ीसावने भी हांमें हां मिलाते हुए कहा, "यही तो मैं भी कहता हूं ।"

मौलवी साहबके उस्तादने बहसमें किसी से हार मानना नहीं सिखलाया था । अतः उन्होंने प्रत्युत्तरमें कहा, "लाहौल! बिला कुफ्र मैं कहता हूं—हमारी सरकारका इसमें कोई दोष नहीं । ऐसा इन्साफ पसन्द बादशाह हमें दुनियाके किसी कोनेमें नहीं मिल सकता । मिसाल सुनकर भी खातिर-जमा कर लीजिये ।"

और उन्होंने पकौड़ीसावकी ओर संकेत करते हुए, दोनों हाथोंको फैलाकर, कहा, "यह इतना मोटा है—६ मनसे भी अधिक, और मैं इतना (अंगुली दिखलाते हुए) पतला हूं—एक मनसे भी कम, परन्तु दोनों का महसूल बराबर । इससे साबित हो जाता है कि सरकारकी नजरोंमें सभी बराबर है । बतलाइये, कितना अच्छा इन्साफ है ?..."

पकौड़ीसाव इस जवाबसे लाजवाब होकर खिड़कीसे बाहरकी ओर झांकने लगे ।

—

महात्मा सनाई

(लेखक—श्री रामचन्द्र 'आंसू')

ईरानके सूफी महात्माओंके नाम जब आ जाते हैं, तब माथा श्रद्धासे झुक है। ईरानके सूफी कवियोंने हमारे भावुकताजन्य उत्तेजना भरनेका प्रयत्न है। वरन अपनी युगोंकी साधना एक ऐसी वस्तु प्रदान की है, जो हमको उन्नत बनाती रहेगी।

ईरानके सूफी कवियोंमेंसे 'सनाई' विषय बनाने जा रहा हूं। महा-'सनाई' ईरानके अग्रगण्य सूफी कवियों-जाते हैं। साहित्यिक दृष्टिकोणसे गणना प्रथम पंक्तिमें होती है। लेकिन भावनाओंकी विवेचना करनेपर, श्रेणी तीसरी हो जाता है। दार्श-की गहराई, जलालुद्दीन 'रूमी' 'मसनवी' में इनसे अधिक रूपमें पायी है। 'रूमी' को इनमें प्रथम पंक्ति है। लेकिन ईरानके अन्य कवियोंने इनसे अधिक काम निकाला है, वहां इन्होंने सीधे चोट की है। इसने 'चांद' छोड़कर 'चांदनी'की दार्शनिक व्याख्या की है, बल्कि प्रत्यक्षदर्शीकी भांति एक रूपमें अपनी अनुभूतियोंको प्रगट कर है।

लेकिन मेरी समझमें दार्शनिक भावोंके प्रगट करनेके लिये 'रूपक' बहुत आवश्यक है और शायद 'सनाई' ने प्रौढ़ दार्शनिक होनेके कारण ही रूपककी उपेक्षा की है। यह एक बात है कि 'सनाई' के काव्य-सौन्दर्यीकरणमें कहीं गांठ नहीं पड़ती।

'सनाई' मसनवी-कार और सूफी कवि हैं। 'सूफी कवि', जो 'मैं' और 'तू' में अन्तर ही नहीं समझता। केवल एक ही जिसका सर्वस्व है। तन और आत्मा है। और एक बात; जहां सूफी कवि ईश्वरको 'सर्वस्व' समझता है, पहुंचनेमें प्रयत्नशील रहे हैं। यहांके सम्प्रदायवालोंकी तरह रूढ़िवादी या घांघरा पहनकर नाचना उनके परम उद्देश्य नहीं था।

'सनाई' के जीवनकालमें कोई ऐसी घटना नहीं घटी, जैसी 'फिरदौसी' के घटी थी। मगर 'फिरदौसी' के जीवनकालकी भांति 'सनाई' का जीवन अवश्य था। ये पहले दर-बारी कवियोंमेंसे थे। शाहंशाहोंकी प्रशंसा में लिखना और उनका मन खुश करना इनका काम था। इसीसे जीविका चलती थी। एक दिन किसी 'लाये ख्वार' पियक्कड़ साकीसे कह रहा था कि 'प्याला उस खुशामद पसन्द शाहंशाहके नामपर दे, जो आंखोंपर खुशामदकी पट्टी बांधे चलता है।' और पहला प्याला पीकर पियक्कड़ने दूसरा प्याला 'सनाई' के नामपर मांगा; बोला—'एक प्याला उस सनाईके नामपर दे, जो दिन-रात शाहं-शाहोंकी खुशामदमें 'कसीदे' लिखा करता है।' इसपर साकीने कहा—'लेकिन 'सनाई' तो बड़ा अच्छा शायर है!' पीनेवालेने व्यंग से कहा—'मेरी साकी! उस बेवकूफने चन्द पैसोंके वास्ते कुछ कागजके टुकड़ोंपर लिख दिया है। वह इतना भी नहीं जानता कि वह किस लिये पैदा हुआ है। वह तो शह-ज़ादोंकी खुशामद करता है!' उपरोक्त बातें सुनकर 'सनाई'को हार्दिक चोट लगी। और उसी दिन उसने संसारका भ्रमण करना शुरू कर दिया। भ्रमणकालीन मसनवियां 'हदीका' में संग्रहीत हैं। वास्तवमें कहा जाये, तो इसी एक 'हदीका' ने 'सनाई' की ख्यातिको सूरजकी भांति दुनियाके कोने-कोनेमें बिखेर दिया है। इसके अलावा 'सनाई' ने और और भी किताबें लिखी हैं; जैसे—दीवान, हदीकुल हकीकत, तरीकुत हकीकत, गरीब-नामा, सैरुल इबारूल उलमद, इश्कनामा और इसके बाद सन् ११३१ ई० में 'सनाई' मृत्युकी गोदमें सदाके लिये सानन्द सो गये।

'सनाई' की कवितायें फारसीमें है और खूब है! लेकिन पद्य-बद्ध चीजोंका मजा गद्य-में नहीं आ सकता, और न फारसीके शेरों-का सरस अनुवाद पूर्णतः हिन्दीके दोहोंमें होना सम्भव है और न रुबाइयोंका चौपा-इयोंमें। इसीलिये मैंने 'सनाई' की फारसी कविताओंको उर्दूके शेरों और रुबाइयोंमें अनुवाद करना उचित समझा। मैं समझता हूं, इसमें मुझको और आपको दोनोंको आसानी है।

'सनाई' ने 'हदीका' में एक स्थानपर कहा है—

> इश्क मिल जाये, मिटा ले हस्ती।
> इल्मका हदसे गुजरना सस्ती॥
> जिसमें जज्बा तेरा, दिमाग तेरा;
> वो देगा तेरे वजूको पस्ती॥

'सनाई' ने इन चार पंक्तियोंमें कितनी गहरी भावनाको बांध दिया है। कहते हैं—यदि तुझको प्रेम प्राप्त हो गया है, तो अपने को उसमें डुबो दे। चेतनाका ज्ञान न रहने दे; क्योंकि वहां प्रेम नहीं। लेकिन तुरन्त ही उपदेश देते हैं कि सफलताका प्रचार करना भी एक भद्दी और अपमानजनक वास्तविकता है। फिर उस भक्तिका कोई मूल्य नहीं रह जाता इसलिये तू किसी बातकी चिन्ता न कर। मस्त रह। तूने जिसमें अपनेको खो दिया है, वह तेरे (उदू) दुश्मन यानी कलुषित भावनाकी चेष्टाओं को असफल बना देगा।'

दूसरी रुबाईमें कहा है:—

> यह जहां तो सूरते-पुर खार है।
> नकहते-गुलकी तरह तू यार है॥
> इश्कसे कोई तुझे पाता नहीं;
> जब तलक तुझमें भरा इनकार है॥

अर्थात—'हे ईश्वर! यह दुनिया तो कांटोंकी भांति कठोर और निर्दयी है। किंतु तू इसमें सुगन्धकी तरह हर जगह व्याप्त है, और प्रत्येकको सुवासित कर रहा है। लेकिन इतना होनेपर भी तुम्हारी सत्ताके मानने-वाले भी तुझको उस समयतक नहीं पा सकते, जबतक तुम्हारी इच्छा न हो।

और इसीकी पूर्तिके लिये ही शायद पुनः उन्होंने कहा है:—

> किस लिये रहबर तू दौड़ा जाये है।
> होश गायब है, कदम थर्राये है॥
> जब न मंजिलका पता ऐ दिल तुझे!
> जुस्तजू ऐ-यार में क्यों जाये है?

'ऐ पथिक! जब तुम्हारे होश ठिकाने नहीं हैं, चरण कांप रहे हैं, यानी हर हालत में तू जब असमर्थ है, तब फिर दौड़ा क्यों जा रहा है? अरे मूर्ख हृदय! जब तुझको उसके घरका पता नहीं है, तब उसकी खोज में व्यर्थ परेशान क्यों हैं?'

यहांपर महात्मा 'सनाई' ने ज्ञानकी उपेक्षा की है। उनका ख्याल था कि पर-मात्मा ज्ञानसे कदापि नहीं मिल सकता। वह तो अस्तित्वको खो देनेहीपर प्राप्त हो सकता है।

इसके बाद ही 'सनाई' ईश्वरके उन भक्तोंपर व्यङ्ग करते हैं, जो अपनेको पानी पी-पी कर ईश्वर-भक्त घोषित करते हैं, और दुनिया भरकी अभिलाषाओंको अपने छोटेसे हृदयकी कारामें बन्द किये रहते हैं, कहते हैं—

> खुदाके प्रेमीका दावा, औ'
> उसपर लाखों बन्धनमें?
> अगर तू उसका प्रेमी है,
> लगा क्यों 'बुत' के पूजनमें?
> न इक म्यानमें दो खंजर,
> न दिनसे रात मिल सकती।
> न रख दूजेकी ख्वाहिश,
> जब खुदाको रख लिया मनमें।

संक्षेपमें यह कि 'रे मूर्ख! तू उस नियन्ता के प्रेमी होनेका दावा क्यों करता है, जब तुम्हारे हृदयमें लाखों अभिलाषाएं कैद हैं। अगर तू उसका प्रेमी होना चाहता है, तो दुनियाकी झूठी और सौन्दर्यशील वस्तुओं-(प्रेमिका) को त्याग दे। अपनी काम-नाओंको पत्थरकी मूर्तियोंकी पूजासे क्यों उकसाता है? तुझे नहीं मालूम कि दो तल-वारें एक म्यानमें नहीं रहतीं। दिनसे रात नहीं मिल सकती! और इसी लिये कहता हूं कि तू दूसरी वस्तुओंकी इच्छाको छोड़ दे। सिर्फ उस नियन्ताको अपने मनके मंदिर में जगह दे।

कुछ और आगे बढ़कर लिखते हैं कि—

> हम मस्त हवाओंके चाहनेवाले
> कुछ शोले मिलें, तो रंज हो क्यों?

अर्थात हम सर्वव्यापी हवा (सर्व व्यापी ईश्वर) के चाहनेवाले है, यदि राहमें लू (सांसारिक विषमताएं) मिल जायें, तो हमको दुःख क्यों हो?

और फिर ईश्वरकी ओर संकेत करते हैं-

हे प्रभू!
तुम्हारे प्रेमियोंके पैरमें चुभते हैं जो कांटे,
उससे दुल्होंमें ढूंढ़े बसे, तो लाभ क्या होगा?

भावार्थ यह कि 'तुम्हारे ये चाहनेवाले नादान हैं, जो पैरोंमें शूल (सांसारिक विषमताओंके कांटे) चुभनेपर किसी नयी दुलहिन (नवयौवना) के हाथोंमें उसका रहस्य ढूंढ़ने लगते हैं। ऐसे मूर्ख, लाभ क्या उठा सकेंगे!!'

फिर मानवको लक्ष्य करके कहते हैं—

> जहांमें हर बरस तू,
> इक महल तैयार करता है।
> कि हर दिन तेरे दिलमें,
> आरजूएं मुस्कुराती हैं।
> मगर देखे कोई गहराइयोंसे,
> यह महल तेरा।
> कि उससे खण्डहरोंकी,
> हर समय दुर्गन्ध आती है।

❀ गीत ❀

हां, तेरा मन बहला देंगे
दर्द-भरे ये गीत हमारे।

— एक —

अन्तरमें दुखकी बदरी है,
नयनोंमें बरसाका पानी।
सुमनोंको धो-धोकर तेरे,
हित में हार पिरोता रानी?
हंस न सकें यदि, रो तो देंगे
चरणोंपर प्रसून ये प्यारे।
हां, तेरा मन बहला देंगे
दर्द-भरे ये गीत हमारे।

— दो —

तेरे विस्तृत अन्तर में
तस्वीर किसीकी उग आयेगी—
जब, जब इच्छायें आशा की
ज्योति लिये छितरा जायेंगी।
तब-तब कलियोंपर रो देंगे
ये भविष्य के भाव हिहारे।
हां, तेरा मन बहला देंगे
दर्द-भरे ये गीत हमारे।

तीन

इन्दु छोड़ जायेगा दूबोंपर
चुम्बनकी क्षणिक निशानी।
मूक रश्मियां हंस देंगी
कहकर आंसूकी करुण कहानी।
देंगे पोंछ सजनि उस क्षण ये
दृगसे गीले गाल तुम्हारे।
हां, बहला देंगे तेरा मन
दर्द-भरे ये गीत हमारे।

—श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह 'मधुर'

'ऐ नासमझ मानव ! तू अपनी अज्ञानतावश प्रत्येक वर्ष एक महल खड़ा करता है। हर दिन तुम्हारे हृदयमें एक नयी आशा सावन-भादोंकी दूबकी तरह उग आती है। मगर तू दार्शनिक दृष्टिसे देख, तुम्हारे इस महलसे खण्डहरोंकी दुर्गन्ध आ रही है।'

'सनाई' दार्शनिक भावनामें जैसे-जैसे खोते गये, वैसे-वैसे उनकी यह धारणा दृढ होती गयी कि 'परमानन्द' ही 'परमात्मा' है, जो पास होते हुए, भी दूर है। कहते हैं—

खुदको न समझ बन्दा, तू रूह है, तू जां है।
खुदको न घड़ा समझे, तू आब, जो रवां है।
हर चीज जुस्तजूसे मिल जाती है 'सनाई'
मिल जानेपर खुदाके, मिलनेकी चाहना है॥

अर्थात्—'तू मनुष्य है, इसलिये अपनेको छोटा मत समझ। मत समझ कि तू एक घड़ा है। तू तो पानी है, वह पानी, जो तूफानकी तरह दिनरात बह रहा है। तू सच-मुच परिश्रमी है। और इसीलिये कोशिश कर। क्योंकि कोशिशसे हरएक वस्तु मिल जाती है। किन्तु परमात्मन् ! तू कितना रहस्यमय है कि तुझे पाकर भी पानेकी इच्छा बनी रहती है !'

और अन्तमें 'सनाई' उन रङ्गीनियोंमें उड़नेवालोंको यह बताकर मौन हो जाते हैं कि—

आराइशे-हुस्नी-सी यह क्यों आराइयां हैं ?
हिम्मतकी जिसने मंजिल उसनेही पाइयां हैं।

'ओ कामिनियोंकी तरह बनाव'-शृङ्गार में सने हुए पौरुषत्व हीनों ! साहस करके आगे बढ़ो। क्योंकि जिसने हुस्न हल किया है, उसीने मंजिल पायी है।

———

क्या रूस और जापानके बीच ठनेगी ?

(लेखक—श्री अवनीन्द्र कुमार 'विद्यालंकार')

त्रिराष्ट्रोंके त्रिनायकोंकी कानफरेन्स ...होनेवाला है। ख्याल किया जाता है, ...में यूरोपियन देशोंकी समस्याओंके ...अलावा प्रशान्तकी रण-नीतिपर भी विचार ...होगा। जैसे एक समय तेहरान कानफरेन्सके ...बाद और पुनः याल्टा परिषदके बाद अम-...रीकी और ब्रिटिश पत्रों और राजनीतिज्ञोंने ...एक स्वरसे कहना आरम्भ कर दिया था कि ...तुर्की लड़ाईमें शामिल होगा तथा जर्मनीके ...विरुद्ध तुर्की द्वारा युद्ध घोषणा करनेमें कुछ ...दिनोंकी केवल देर है, उसी प्रकार आज ...अमरीका यह मान बैठा है कि रूस जापानके ...विरुद्ध जरूर लड़ाईमें कूदेगा। क्या रूस ...वस्तुतः जापानसे लड़ाई छेड़नेको उत्सुक है? ...क्या उसका हित जापानसे टकरा रहा है? ...क्या उसका हित इसमें है कि प्रशान्तमें ...जापानकी शक्तिका अन्त हो जाय? इन ...प्रश्नोंका उत्तर जाननेके लिये जरूरी है कि ...यदि रूस लड़ेगा तो किसके लिये वह तल-...वार उठायेगा? चीनके प्रधान मन्त्री डा० ...सुंग मास्को गये हैं और रूस और चीनके ...सम्बन्धोंको सुधारनेके विषयमें विचार-...विनिमय कर रहे हैं। इसलिये इस प्रश्नपर ...विचार करते हुए कि रूस जापानसे लड़ेगा ...या नहीं, जहां प्रशांत महासागरके अंदर रूस ...और मित्रराष्ट्रोंके स्वार्थोंके संघर्ष, तथा रूस ...और जापानके बीच कलहका विचार करना ...चाहिये, वहां रूस और चीनके सम्बन्धोंपर ...भी विचार करना चाहिये। इन तीन बातों ...पर विचार करनेके बाद ही इस निश्चयपर ...पहुंचा जा सकेगा कि रूस लड़ेगा या नहीं।

२००० मील सीमापर

रूस और जापानके बीच जब सन्धि हुई ...और मास्कोको जब जर्मन सेनाओंने ...घेरा था, तब भी २ हजार मील विस्तृत ...सीमाकी रक्षाके लिये सोवियटने दस ...लाख सेना तैनातकर रखी थी। अब यदि वह ...मित्रोंका साथ देकर जापानके विरुद्ध तल-...वार उठाये तो ३ हजार मील विशाल मोर्चे ...पर लड़ाई फैल जायगी। यह उत्त-...री कोरियासे शुरू होकर, मंचूरियाके ...उत्तरी ओर और मरुभूमिसे दूर तक, जहां ...बाहरी मंगोलियासे जापान द्वारा अधिकृत ...उत्तरीय चीनके जेहोल और चहर-...प्रान्त मिलते हैं, लड़ाई फैल जायगी। ...इससे पहले ही जापान २ हजार ...मील विस्तृत मोर्चेपर लड़ रहा है। एक ...५ हजार मील विस्तृत मोर्चेपर लड़ना ...जापानके लिये सम्भव नहोगा। इतने बड़े फैले ...मोर्चेके लिये जिस मात्रामें जन-शक्ति और ...रसद सामग्री, युद्ध-सामग्री और यातायात ...की आवश्यकता होगी, वह जापान न जुटा ...सकेगा। परन्तु प्रश्न तो यह है कि रूस ...किस कारणसे लड़ाईमें शरीक हो? यदि ...मित्रराष्ट्र ही जापानी शक्तिको नष्ट कर देते ...हैं तो यूरोपका विजयी रूस एशियामें भी ...मित्रराष्ट्रोंसे अधिक शक्तिशाली होगा, ...उसकी सेना भी ताजा दम होगी, और ...उसे चीनसे भयका कोई कारण न होगा, रूस मित्रराष्ट्रोंसे जो चाहेगा वह ले सकेगा। तब रूस 'सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे' की नीतिका अनुसरण क्यों न करे!

रूस और जापानका संघर्ष

१९ वीं सदीके अन्तिम चरणमें रूस और जापानके बीच संघर्ष शुरू हो गया था। जापानको जब अपनी शक्तिका भान हुआ और उसने पश्चिमी राष्ट्रोंका अनुकरण करके कमजोर चीनपर छापा मारा, लगभग उसी समय जारका रूस चीनको अङ्ग-भङ्ग करनेके लिये झपटा। अतः इन दोनोंके बीच संघर्ष प्रारम्भ हो गया। इस संघर्षका मुख्य क्षेत्र दक्षिण मंचूरिया, कोरिया और उत्तरीय चीन था। जापानी योजनाको विफल बनानेके लिये साइबेरियाके पार रूसने रेल-पथ बनाया। जापानने चीनको पराजित करके दक्षिण मंचूरियामें लियाओ-तुङ्ग प्रांत और फारमूसा द्वीप पट्टेपर लिया पर रूस और यूरोपियन शक्तियोंके दबावसे जापानको पुनः यह छोड़ना पड़ा। रूसने स्वतः लियाओतुङ्ग ले लिया और पोर्टआर्थर का बन्दरगाह बनाया। रूसने मंचूरियासे ब्लाडीवास्टकतकरेलवेलाइनबनाई और दक्षिण मचूरियामें हारबिनसे पोर्टआर्थर तक रेल चलायी। जङ्गलोंका ठेका लिया। १९०० में बक्सर विद्रोह होनेपर रूसने मंचुरिया अपने अधिकारमें ले लिया।

ब्रिटेनने जापानको दोस्त बनाया और उसको रूसके विरुद्ध अपना मोहरा बनाया। फलतः १९०४-५ में दोनोंमें लड़ाई हुई और रूस हार गया। इसके कारण सखालिन द्वीपका दक्षिणी आधा भाग, कोरियामें मिला लिया गया और अपनी विशेष स्थितिके कारण दक्षिणी मंचूरिया रूसको परित्याग करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। ट्रान्स साइबेरियन रेलवे बनाने के रूसके स्वप्नोंपर पाला पड़ गया।

रूस मगर निराश न हुआ। उसने चंगेज खां और कुबले खांके प्रदेश मंगोलिया की ओरनजर उठाई। मंगोलिया दो भागोंमें विभक्त है। एक बाहरी मंगोलिया और दूसरा आंतरिक मंगोलिया। आंतरिक मंगो-लियाकी अच्छी जमीनें चीनी किसानोंके पास है। १९०७मेंजापानने बाहरीमंगोलियाको रूसी प्रभाव क्षेत्रमें मान लिया। १९१२ में रूसने मंगोलियासे एक सन्धि द्वारा व्यापार व्यवसायकी विशेष सुविधायें प्राप्त की और अपना राजनीतिक और आर्थिक प्रभुत्व स्थापित कर लिया। प्रथम महायुद्ध छिड़ने पर रूसने जापानके विरुद्ध चीनसे सन्धिकी, पर उसपर १९१५ से पहले दस्तखत न हो सके। उस समय जापान अपना प्रसार कर रहा था। लड़ाई समाप्त होनेतक जापानने दक्षिण मंचूरियामें अपने पैर जमा लिये थे, और उत्तरीय मंचूरिया और आन्तरिक मंगोलियामें 'मैत्रीपूर्ण संरक्षण' का प्रसार कर लिया था। बाहरी मंगोलियाने इस परिधिके अन्दर आनेसे इनकार कर दिया। रूसी क्रान्तिका लाभ वे छोड़नेको तैयार नहीं थे। रूसी क्रान्तिको विफल बनाने और बोल्शेविज्मको कुचलनेके लिये ब्लाडी-वास्टकमें मित्र फौजोंने डेरा जमाया और ट्रांस साइबेरियन रेलवेके साथ साथ बैकल झीलतक वे फैल गये। परबोल्शेविक सेनाके आगे बढ़नेके साथ मित्र फौजोंके साथ जापानी भी लौट आये। रूसी साइबेरिया-की इस भीषण लड़ाईको भूले नहीं हैं और जापानियोंके प्रति बोल्शेविक रूसके मन में भी भाव अच्छा नहीं है।

१९३१ में मंचुरिया(मंचूको)पर जापान ने अधिकार कर लिया। रूसने चाइनीज इस्टर्न रेलवे भी जापानको बेच दी। पर बाहरी मंगोलियाकी ओरसे जापानको साव-धान कर दिया। १९३६ में रूसने बाहरी मंगोलियाके साथ पारस्परिक सहायताकी सन्धि की। एण्टी कमिण्टर्न पैक्टपर जापान के दस्तखत होनेसे रूस और जापानके संबंध और बिगड़ गये। १९३९ से पहले रूस और जापानके बीच अनेक अघोषित लड़ाइयां हुईं। जब हिटलर प्रेग ले रहा था, तब सुदूरपूर्वमें चीयूरनार-काण्ड हुआ और इसमें जापानियोंके अनुसार १८००० जापानी मारे गये। रूसने जापानसे युद्ध होनेके भयके कारण ही जर्मनीसे १९३९ में सन्धि की, जिससे दो मोर्चोंपर उसे एक साथ न लड़ना पड़े। जापानके साथ इन लड़ाइयोंका अन्त १९४१ में हुआ, जब जापान-रूस तटस्थता पैक्ट हुआ। पर स्टालिन-ग्राडकी विजयतक साइबेरियापर जापानी आक्रमणका हर समय भय बना हुआ था। जापान और रूसके सम्बन्ध इस समय भी अच्छे नहीं हैं। लड़ाई आरम्भ होनेके बादसे स्टालिन जापानी राजदूतसे कभी नहीं मिला। राजनीतिक समारोहोंमें जापानी निमन्त्रित नहीं किये गये।

जापानने १५ वर्षोंमें मंचुकोकी भारी आर्थिक उन्नति की है। लोहा, सोना, कोयला, मैंग्नीजके खानोंका विकास किया और कृषिकी उन्नति की है। मुक्दनको केन्द्र बनाकर हारबिनसे लेकर डेरेनतक औद्योगिक प्रदेश बना दिया गया। पर रूस भी चुप नहीं रहा है। उसने ट्रांस-साइबेरिया रेलवेके उत्तर एक और रेल पथ बना लिया। साइबेरियाका साम्राज्य आत्म निर्भर बना दिया गया है। सखालिनके तेल और कोयला भंडारका उपयोग किया गया है और कोमसो-मोलस्क, जैसे नये लोहा उद्योगके केन्द्र बना लिया हैं और पेट्रोपावलोस्क, ब्लाडीवोस्टक और सोवेस्काया गावान जैसे नौ अड्डोंको मजबूत बना लिया है।

रूस और चीनका सम्बन्ध

चीनकी सहायताके लिये रूस जापानसे लड़े, इसकी कल्पना की जा सकती है। पर चीन और रूसके सम्बन्ध ऐसे नहीं हैं, जो इस बातको माननेके लिये उत्साहित करें। मार्शल चांगकैशेक स्टालिनकी सहायतासे शक्तिमें आये। पर वे यह नहीं भूल सकते कि १९३३ में रूसने जब जापानके विरुद्ध चीनसे सन्धि करनेका प्रस्ताव किया तब मार्शल चांगने इन्कार कर दिया था। क्योंकि चीन समझता था कि मंचूकोपर उसने सोवियट यूनियनपर अधिकार करनेके लिये अधिकार किया है, चीनपर आक्रमण करनेके लिये नहीं। चार साल बाद जापानने चीनपर हमला किया। उस समय रूसने सन्धिका प्रस्ताव न करके चीनको कर्ज दिया और युद्ध सामग्री दी। उस समय चीनी कम्यु-निस्टों और चांगमें समझौता हो गया था। उस समयसे रूसी मदद केन्द्रीय चीनी गवर्न-मेण्टको मिली, कम्युनिस्ट पार्टीको नहीं।

१९४२ में जब जर्मन बोल्गाके तटपर पहुंचे हुए थे, तब चांग काईशेकने अपने दूत सन फोको मास्को इस मांगके साथ भेजा कि चीनी कम्युनिस्ट पार्टीका अन्त कर दिया जाय पर स्टालिनने इसको नहीं माना। चांगने कम्युनिस्ट पार्टीपर घेरा डालनेके लिये अपनी सर्वोत्तम फौज अलग कर दी। पर माउ से-तुङ्गकी येनानमें शक्ति बढ़ती गयी। इसका प्रभाव ८ करोड़ आबादीके प्रदेशपर है। चीनी कम्युनिस्ट सेना ५०००० से ७००००० हो गयी है और यह जापानकी ५९०००० फौजको बझाए हुए है।

मास्को अपनी सीमापर मित्र और अनुकूल गवर्नमेण्ट रखनेका पक्षपाती है। यदि चुङ्किङ्ग मास्कोके साथ समझौता करनेमें सफल न हुआ, तो रूस माउ से-तुङ्ग द्वारा सम्पूर्ण चीनपर अपना नियन्त्रण स्था-पित करनेकी कोशिश करेगा। इसलिये डा० सुङ्गके मास्को मिशनका इतना महत्व है।

मंगोल

मंगोलिया सोवियट रूसका मित्र है। मंगोलियन जर्मनोंसे भी इस लड़ाईमें लड़े हैं। मंगोलियामें सोवियट रूसके समान मंगोलियन पीपुल्स पार्टी एकमात्र वैध है। पर वहां कम्युनिस्ट नहीं है। मंगोल सेना रूसियोंकी देखरेखमें तैयार की गयी है और वे अच्छे लड़ाके और चालक होते हैं। १९३९ में जब जापानने बाहरी मंगोलियापर हमला किया था खालकिनकी लड़ाईमें जापानियोंपर विजय पानेमें पहले पहल मार्शल जुकोवने सैनिक ख्याति पायी थी।

सिंकियांग

बाह्य मंगोलियामें जहां सोवियटने अपना प्रभावक्षेत्र कायम किया है, वहां चीनी तुर्कि-स्तान या सिंकियांगको रूसने खाली कर दिया है। मंगोलिया और तिब्बतके बीच सिंकियांग एक बड़ा महत्वका है। सिंकियांग-की अधिकांश घरबाहा आबादी तुर्कोमन और कज्जाकोंकी है। पांच प्रतिशत केवल चीनी हैं। चीनके साथ इसका सदियोंसे सम्बन्ध है। पर रूसका प्रभाव बहुत ज्यादा है। १९३७ में जब जापानने चीनपर हमला किया था, तब रूसने एक छोटी-सी फौज

सिकियांगमें भेजी थी, जिससे जापानी सेना आन्तरिक मंगोलियासे हमला न कर सके। मार्शल चांगने भी यह बात मान ली थी। वह विवश थे। सिकियांगका गवर्नर शङ्गशिहसाई सोवियटका दोस्त था। रूसने वहां सलाहकार लाये और नये-नये उद्योग स्थापित किये। पर कम्युनिस्ट पार्टीको प्रचार करनेकी मनाही थी। मगर गवर्नर समेत बहुतसे अफसर कम्युनिस्ट थे। गवर्नरने कम्युनिस्ट पार्टीमें सम्मिलित होनेकी इच्छा प्रकट की थी। पर उसे कहा गया कि वह चीनी कम्युनिस्ट पार्टीमें सम्मिलित हो।

१९४२ में रूसी फौजें जर्मनीसे लड़ रही थीं, रूस यूरोपमें व्यस्त था, तब चांगने एक दूत भेजकर गवर्नर शङ्गको रूसी सेना सिकियांगसे बाहर निकालनेके लिये बाध्य किया। गवर्नर शङ्गका भाई इससे सहमत न हुआ। इसपर सम्पूर्ण परिवार जमा हुए और गवर्नरके इवछरने उनको आंगनमें शूट कर दिया। इसपर रूसी सेना हट गयी मगर चांगको इससे बड़ी निराशा हुई कि वह अपने साथ मैशीन और लड़ाईके सामान भी ले गयी।

रूसका स्वार्थ

चीन और जापानके साथ रूसका क्या सम्बन्ध है, यह इससे स्पष्ट है। पर इसके अतिरिक्त प्रशांतमें अमरीकासे वैमनस्य बढ़ाना स्टालिनको पसन्द नहीं है। एक इसी कारणसे रूस प्रशांत शांति परिषदमें भाग लेनेको उत्सुक है। एक यही कारण रूसके जापानके विरुद्ध तलवार उठानेके लिये काफी है। पर इसके अलावा अन्य कारण भी हैं। रूसकी सुरक्षा और आत्मरक्षाकी भावना भी अपेक्षा करती है कि वह जापान के साथ कई एक बातोंका निपटारा इसी समय कर ले। चीन, सोवियट और चीनकी सीमाके बीचके प्रदेशमें रूसका जितना स्वार्थ है, उससे प्रशांतमें रूसका स्वार्थ कम नहीं है।

१—सोवियट प्रशांततट जापानी द्वीपों से ढका हुआ है। सोवियट बन्दरगाह ब्लाडीवोस्टोक और सोवियट रूकाजाजानेके लिये रूसी जहाजोंको जापानी तोपोंके नीचेसे गुजरना पड़ता है।

२—सखालिन द्वीप और कुरलीज द्वीप समूह जापानके अधीन है और यह द्वीप की श्रृङ्खला रूसी सामुद्रिक प्रांतको घेरे हुए है। रूसको यह शूलके समान चुभता है। वह यह नहीं चाहता कि विदेशी नौशक्ति घरंगे डालकर और। इसमें पेट्रोलिंग कार्रवाई करके उसके बन्दरगाहोंको बन्द कर दे।

३—ब्लाडीवोस्टोक हिमयुक्त बन्दरगाह नहीं है। मगर मंचुरियाके डेरेन और पोर्ट आर्थर हैं। इनतक पहुंचनेके लिये ही जारने चीनी ईस्टर्न रेलवे बनायी थी, जो कि सोवियटने अनिच्छाके साथ जापानको दे दी। मंचुरियामें रूसका वही स्वार्थ है जो कि ईरानमें रूसका है। समुद्र-मार्ग पाना दोनों जगह जरूरी है।

४—कोरियामें रूसका गहरा स्वार्थ है जो कि जापानकी पराजयके बाद तेहरान निर्णयके अनुसार स्वाधीन देश होगा।

आत्मसमर्पण न करेगा

इस परिस्थितिमें प्रश्न उठता है—क्या जापान रूसकी मांगोंको चुपचाप मान लेगा जिससे रूस लड़ाईमें भाग न ले? सर राबर्ट क्रेगी, जापानमें ब्रिटेनके १९३७ से १९४१ तक राजदूत रहे हैं। आपका मत है कि जापानके शब्दकोषमें आत्मसमर्पण शब्द नहीं है। अबतककी लड़ाईने इस बातको सिद्ध कर दिया है। अबतक सबसे बड़ा जापानी सैनिकोंका दल जो पकड़ा गया है, वह ओकीनावामें १०० का था। इससे जापानी भावनाका पता लगता है। अमरीकी राजदूत मि० जोसेफ ग्रू ने अपनी पुस्तक 'जापानमें दस साल' में लिखा है कि जापानी सम्राट् और देशके लिये सहर्ष आत्मोत्सर्ग कर देंगे, पर विजित प्रदेशको जीवित रहते हुए न छोड़ेंगे। इसलिये यह आशा करना कि जापान रूसकी मांगोंको चुपचाप मान लेगा, ठीक न होगा।'

हां, जापान रूसको लड़ाईमें तटस्थ रखना चाहता है। शिगेनोरी तोगोका परराष्ट्र मन्त्री बनाया जाना यही सूचित करता है। शिगेनोरी तोगोने मास्कोमें राजदूत होते हुए रूस-जापान तटस्थता पैक्टको बनानेमें महत्वपूर्ण भाग लिया था। पर यदि लालसेनाने सारी शक्तियोंको समवेत करके हारबिनपर कूच करनेका इरादा कर किया, तो जापान रूसी हमलेकी प्रतीक्षा किये बगैर हमला कर देगा। यद्यपि इससे रूसी अड्डोंसे अमरीकन विमान हमला करने लगेंगे और टोकियो ६०० मील दूर होगा और जापान १००० मीलके दायरेमें आ जायगा। रूसी पनडुब्बियां, जिनकी संख्या १०० है—जापानी जहाजोंका मार्ग रोकेंगी। इससे जापानका भारी जापानी उद्योगक्षेत्रों और अन्नके स्रोत मंचूरिया और कोरियासे यातायात आगे बन्द हो जायगा।

रूससे युद्ध

रूस यदि जापानसे लड़ाई छेड़ दे तो जो एक महान स्थल-युद्ध आरम्भ हो जायगा। जापान इस अवस्थामें रूसी अड्डोंको प्राप्त करनेकी कोशिश करेगा जिससे लाल हवाई सेना उनका उपयोग न कर सके। संभवतःजापानी सेनाकी एक टुकड़ी साइबेरिया के आग्नेय कोणको अलग करनेके लिये भेजी जायगी। यह आज जापानी सागरपर अंगुली उठाये खड़ा है और इसके छोरपर ब्लाडीवोस्टोक है। रूसी रक्षा योजनाकी परीक्षा १९३८ में जापानने की थी, जब चुङ्कुफेङ्गमें लड़ाई हुई थी। आज भी मंचूकोंकी सीमा पर जापानी फौज तैनात है। जापानी सेना लाभजनक स्थितिमें है और वह रूसको दो भागोंमें विभक्त कर सकती है।

दूसरी जापानी सेना उत्तरीय मंचूरिया से ओखोटस्क सागरकी ओर जायगी। ६०० मीलकी दूरी पूरी करके जापानी फौज रूसी प्रदेशका एक बड़ा भाग अलग कर देने और ब्लाडीवोस्टोकके उत्तरमें स्थित कोड़ियों हवाई अड्डोंको रूसके हाथसे लेनेमें समर्थ हो जायगी।

तीसरी जापानी सेना सम्भवतः रूसी सखालिन द्वीप और कामाचटका लेनेके लिये कूच करेगी। सखालिनका रेल-पथ जापानके हाथमें है। रूस सखालिनके अड्डेसे जापान पर हमला कर सकता है। अतः रूसियोंको वहांसे निकालना जापानके लिये आवश्यक है। कामाचटका यदि जापान पहली झपटमें नहीं लेता तो अमरीकन सेना इस राहसे साइबेरियन बन्दरगाहोंतक पहुंचती रहेगी। इसके पहुंचनेका समुद्री मार्ग कामाचटका के दक्षिणी छोरपर है और जापानी अड्डे धरामुशीरोके बीचसे गुजरेगा। यदि रूस इनको अपने हाथमें रख सका तो मित्रराष्ट्र जल, थल और नभसे जापानके अस्तित्वतक को मिटा देनेवाला हमला करेंगे।

उस अवस्थामें बोनिन, वोलकानो, ओकीनावाके अड्डोंके साथ रूसी अड्डोंसे भी जापानपर भारी बमवर्षा होगी। लालसेना मंचूरियापर पश्चिम, उत्तर और पूर्वसे एक साथ तीन तरफा हमला करेगी जैसा कि उसने बर्लिनपर किया था। मंचूरियाकी पश्चिमी सीमापर ही नोमोनहन स्थित है जहां १९३९ में रूसी जापानसे तीन मासतक लड़े थे और २०००० जापानी मारे गये थे, यह प्रदेश पुनः रणक्षेत्र बन सकता है।

जापानपर हमला करनेका एक और मार्ग है। कुरली द्वीपोंपर ईशानसे, जापानी सखालिनपर उत्तरसे, फिलिपाइन, मैरिअना और अन्य द्वीपके अड्डोंसे एक साथ जापान पर चढ़ाई की जायगी।

स्टालिनकी नीति

यह ठीक है कि १९०५ की पराजयको रूस भूला नहीं है जब उसको पोर्ट आर्थर छोड़ना पड़ा था। जापानी आक्रमणकी आशङ्कासे ही रूसने ट्रांस-साइबेरियन रेलवे लाइन के उत्तरमें सीमासे खाबारोवस्क तक रेल-पथ बनाया है। पर स्टालिन की नीति अनावश्यक रूपसे लालसेनाकी शक्ति नष्ट करनेकी नहीं है। वह मित्र राष्ट्रोंकी मदद कर जापानको हरा कर जापानी विपत्तिका लाभ उठाकर अपनी मांगें एक भी रूसीका रक्त बहाए बगैर जापानसे पूरी करा सकता है। १९३९में रूसने यही यूरोपमें किया था। जापान भी एक साथ दो मोर्चोंपर नहीं लड़ना चाहता। वह लम्बी लड़ाई लड़कर मित्रराष्ट्रोंको थका देना चाहता है, जिससे वे थककर सन्धिकी बातचीत चलानेको बाध्य हों। रूस जापानको तङ्ग कर सकता है, त्रास दे सकता है। इससे तङ्ग होकर जापान रूसके विरुद्ध युद्ध घोषणा कर दे तो बात दूसरी है। मगर स्टालिन जापानके विरुद्ध तलवार पहले न उठायेगा।

जापानको सतानेका मार्ग

यद्यपि रूस अनुभव करता है कि लोपाटकी अन्तरीपके चारों ओर जब रूसी जहाज चक्कर लगाते हैं तो वे परामुशीरो और शुमशीर स्थित जापानी तोपोंकी मारके अन्दर होते हैं और एल्यूरियन द्वीपके अमरीकी विमानों का भय भी उनको रहता है। रूस इस स्थितिको नहीं सह सकता और इसका अन्त कर देना चाहता है। कुरली द्वीप समूह के उत्तरी भागपर जापानका अधिकार १८७५ में रूसने स्वीकार किया था। पूर्वीय एशियामें एकमात्र रूसकी नौशक्ति होगी। जापानकी जगह अमरीका ले ले यह रूस न सहेगा।

सोवियट रूस अपने उद्देश्यकी सिद्धि मांगों द्वारा कर सकता है—

१—सिकियांगकी राह बन्दूक और विमान अधिकाधिक मात्रामें भेजे।

२—उत्तरीय चीन और भीतरी मंगोलियामें लड़नेके लिये रूसी वालंटियरों की सेना भेजे।

३—रूसकी राह पश्चिमी चीनको अमरीका युद्ध सामग्रीको पहुंचने दे।

४—उत्तरीय चीन और मंचूरियामें गुरिल्ला फौजोंको प्रत्यक्ष रूपसे शस्त्रास्त्रकी सहायता दे।

चुंगकिङ्ग गवर्नमेंटमें जो इस समय परिवर्तन हुए हैं, वे यदि रूसके पसन्दके हुए तो रूस चुङ्ग गवर्नरको मदद देगा अन्यथा मदद न देगा। बल्गेरियामें जो हुआ है, उसकी पुनरावृत्ति यदि चीनमें हो तो कोई आश्चर्य की बात न होगी।

रूस इस प्रकार अपना रक्त बहाये बगैर जापानकी विपत्तिको अधिक बढ़ाकर जापानसे अपनी मांगें पूरी करा सकता है और चीनसे अमरीका और ब्रिटेन के प्रभावको मिटा भी सकता है। हमारा ख्याल है कि जापानके विरुद्ध रूस स्वयं युद्धकी घोषणा न करेगा।

———

युद्धके बादकी दुनिया !

(लेखक—प्रो० रञ्जन)

युद्ध के बीच जो चर्चायें चलती रहीं, सम्मेलनमें जो कुछ हुआ, अटलांटिक और Four Freedom चार प्रकार स्वतन्त्रताकी घोषणाने जो कुछ संसारके रखा—उससे चारों ओर एक भ्रम-गया है। कोई-कोई विचारक अपने 'नयी' जगतकी कल्पनामें मस्त हैं, तो ख्यालसे दुख-और अभाव नामकी चीज ही दुनियामें न रह जायगी। बहु-ख्याल है कि मित्रराष्ट्रोंकी विजय नहीं कि पृथ्वीपर 'स्वर्गका राज्य' । परन्तु अधिकांश लोग ऐसे हैं जिनके इन सारी घोषणाओं और शान्ति ओंके बावजूद भी एक ऐसीही दुनिया है जहां 'साम्राज्यवाद' अपनी शकलमें बैठा हुआ दिखलायी देगा। साम्राज्यवादका अर्थ केवल राजनैतिक-या राज्य वृद्धि ही नहीं है। आर्थिक-साम्राज्य भी होता है, और यह धनिकवर्गका प्रभाव अन्तमें अधिक जहरीला साबित है। यह ठीक है कि आज-कल सभी एक ऐसा वर्ग बढ़ता जा रहा है सच्ची मान्यता समानता और सार्व-स्वाधीनतामें है। जहां पूंजीपति सामन्तशाहीके लिये समाजव्यवस्थामें भी स्थान नहीं है लेकिन सवाल तो यह है कि ऐसे लोग हैं कितने ? फिर —पार्लियामेण्टके पिछले वर्षके इति-को देखनेसे यह मालूम पड़ता है कि जातिके तो खूनमें साम्राज्यवादी गया है। बड़े-बड़े उदरत्त और प्रगति-विचारोंके लोग प्रधानमन्त्रीके पदपर हुए, मजदूरों और उदत्त दलोंके उनका चुनाव हुआ लेकिन हिन्दु-या उपनिवेशोंका जहां सवाल आया के सिद्धान्त रह हो गये। श्रीयुत नाल्ड आदि प्रधान मन्त्री क्यां थे न्होंने समता और मानव स्वतन्त्रता क्रियात्मक रूपसे क्या किया ? र स्टेफर्ड क्रिप्स भी यों तो कट्टर वादी थे—या हैं राम जानें; पर उनके को हिन्दुस्तान देख ही चुका है। बात यह है कि सिद्धान्त वहीं तक है जहां तक वह कुर्बानी या त्यागकी करे। सिद्धान्तके लिये त्याग करने-कम होते हैं और दुर्भाग्यसे यूरोप साम्राज्यवादी देश इसी श्रेणीमें आते लैंड और फ्रांससे कोई यह कहे कि भूला रखो—उपनिवेशोंको स्वतन्त्र —फिर देखो और लोग भी आगे । मगर वहां इन बातोंका कोई असर यदि इङ्गलैंड साम्राज्यवादी न होता के लोग स्वतन्त्रता और समताके शासक होते तो—'I have not His Majesty's first to preside over the tion of the British Empire.' साम्राज्यका प्रधान मन्त्री इसलिये हूं कि साम्राज्य भंगकी किसी सभापति बनूं) दर्प और अहंकार ऐसे शब्द बोलनेवाले मि० चर्चिल फिर न दिखलायी देते—या वे फिर मामलेमें बड़े होनेका साहस ही न करते ? लेकिन हुआ क्या ? आजभी वे अपने क्षेत्रसे चुनेही जायेंगे। इङ्गलैण्ड पक्का व्यवहारवादी है। सिद्धान्तका मूल्य उन लोगोंके लिये सिर्फ चर्चाका विषय है अमल का नहीं। बहुतसे लोग यह सोचते थे कि यह युद्ध व्यक्तिगत संकीर्ण साम्राज्यवादीसे उन्हें सहयोगी अन्तर्राष्ट्रीय समतामें समभाव रखनेवाला बनायेगा। लेकिन यह हृदय परिवर्तन आज तक तो हुआ नहीं और न शायद आगे सम्भावना है। सभी मित्रराष्ट्रोंने आज तक किसी न किसी प्रकार अपनी स्ववृद्धि और स्वअधिकारकी नीतिका ही प्रदर्शन किया है। यह ठीक है कि उनके ऐसे बहुतसे कार्योंके पीछे कोई न कोई शर्त लगी है। या समयकी मजबूरी है। लेकिन फिर भी उनकी उस 'हड़प-नीति' में कोई अन्तर आज पड़ा है या आगे पड़ेगा इसमें बहुत ही सन्देह है। कहा तो बार-बार यही गया है कि वे सहयोगके रास्तेको अपनावेंगे। लेकिन अधिकांश मामलोंमें इस सहयोग-नीतिके बर्तने या व्यक्तिवादी नीतिके छोड़नेके प्रारम्भिक चिन्ह भी दिखलायी नहीं देते।

क्या ग्रेट ब्रिटेनने आजतक अपने किसी भी उपनिवेश या अधिकृत देशको जो आज शक्तिके द्वारा ही शासित हैं, स्वतन्त्र करनेका प्रस्ताव रखा है ? ऐसा शायद हममेंसे किसी ने भी नहीं पढ़ा होगा। हिन्दुस्तानियोंको आजतक स्वायत्त शासनकी आशा ही में लटकाया जा रहा है। बर्मामें स्वाधीनताके वायदे ही किये जा रहे हैं, चीनवालोंको भी यह विश्वास नहीं कि उन्हें हांग-कांग बिना उनके प्रयत्नोंके प्रेमपूर्वक लौटा दिया जायगा। ब्रिटेनके जो अधिकृत देश अफ्रीका या दुनियाके अन्य भागोंमें हैं उनके बारेमें भी अङ्गरेजोंका लोभ कम नहीं हुआ है। फ्रांस की नई सरकारके कारनामोंका एक नमूना सीरिया और लेबनानमें मिल ही चुका है—जहां दस हजार व्यक्तियोंको गोलीका शिकार इसलिये बना दिया गया कि वे अपने देशमें फ्रांसीसियोंका अधिकार नहीं देखना चाहते थे। क्या फ्रांसका यह कार्य उनको साम्राज्यवाद वृत्तिका द्योतक नहीं है ? हिन्दुस्तानमें पिछले वर्षोंमें जो नर-संहार और पशुताके नजारे सामने आये हैं वे आखिर क्या बताते हैं ? हिन्द-चीनको स्वतन्त्र कर देनेकी बात भी आजतक हमारे कानमें नहीं पड़ी है। पुर्तगाल, नीदरलैंड्स, और बेलजियम आदि देशोंने अपने उपनिवेशोंके सामने ऐसा कोई वायदा भी नहीं किया है या किया भी है तो वह प्रांतीय सुधारों और सामाजिक समता से आगे नहीं जाता। भले ही दिखानेके लिये "देशी लोग और कुत्तेका प्रवेश इस पार्कमें वर्जित है—" वाले साइन बोर्ड आज उस रूपमें लगे हुए दिखलायी न दें लेकिन दिलकी दुनियामें तो वे आज भी ज्योंके त्यों लटक रहे हैं। इसका प्रमाण तो अफ्रीकाका पेगिंग ऐक्ट आज मौजूद है। जहां रङ्ग-भेदके आधार पर हिन्दुस्तानियोंके सामानको जबर्दस्ती सड़कपर फेंकनेके समाचार तो पाठकोंने पढ़े ही होंगे। जावा और सुमात्राके द्वीपोंकी उस अतुल सम्पत्तिको वहींके रहनेवालोंके हाथमें लौटा देनेकी बात भी क्या किसीने पढ़ी है ? अथवा वहांके देशी मजदूरोंकी मजदूरीको ही काफी ऊंचा कर दिया जाय यह बात भी किसीने नहीं सुनी ! किस मित्र राष्ट्रने सचाईके साथ इसको सोचा है। ब्रिटेन, अमेरिका, फ्रांस और तो और रूस भी अपनी ताकतको बढ़ानेके फेरमें पड़ा है। क्या ऐसे मित्रराष्ट्रोंसे 'पृथ्वीपर स्वर्ग' लानेकी आशा की जा सकती है। अधिकार लिप्साके दलमें एक बन्धुत्वका राग अलापनेवाले देशपर भी उसका कुछ रङ्ग चढ़ जाता है। और यही कारण है कि प्रभावक्षेत्रके बहाने, ट्रस्टीशिप के बहाने मित्रराष्ट्र अपने अपने अधिकारको असीम बनानेके फेरमें पड़े हैं।

आज सोवियट रूसके सामने अपनी हद को मजबूत करनेकी चिन्ता है। उसके सामने आज युद्धोत्तरकालीन रूसी रक्षाका प्रश्न प्रधान है। आप उसके इस दृष्टिकोणकी तारीफ करें या निंदा यह अलग सवाल है परन्तु आप यह तो माननेसे इन्कार नहीं कर सकते कि वह भी फिनलैण्ड, पोलैण्ड, रूमानियां और बलगेरियाके शासनमें अपना विशेष स्थान चाहता है, यह किस मनोवृत्तिका रूपक है ? आज रूस जेकोस्लोवाकिया, हंगरी, टर्की, और ईरानमें भी काफी दिलचस्पी ले रहा है। साथ ही साथ पूर्वी समस्याओंके प्रति कम उदासीन नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि आज हम रूसके उस जमानेसे बहुत दूर निकल आये हैं जब उसने स्वेच्छासे ही क्रांतिके प्रारम्भमें दूसरे देशोंमें अपनी सारी सुविधाओं और अधिकारोंको छोड़ दिया था। क्या आज भी रूसके राजनीतिज्ञोंकी वैसी ही नीति है ?

दुनियाकी निगाहमें तो अमरीका भी किसी भी साम्राज्यवादी देशसे पीछे नहीं है। उसका प्रभाव धन और मालके पीछे-पीछे बढ़ रहा है। और आज भी बहुतसे देशोंमें अपने हवाई अड्डे और समुद्री अड्डे वह चाहता है। वहांके बहुतसे लोग शांति कालमें विशेष औद्योगिक सुविधाओंकी इच्छा रखते हैं। क्योंकि प्रतियोगितापूर्ण पूंजीवादमें यदि राजनीतिक शोषण शामिल है तो वह किसी भी देशमें साम्राज्यवादसे कम भयंकर नहीं है।

संक्षेपमें, हम आज देख रहे हैं कि जो भी ताकत कुछ करनेके योग्य है वह अपनी ताकतको दूसरोंकी हानिपर बढ़ाना चाहती है या वह उस ताकतसे किसी विशेष व्यवसात्मक सुविधाको कायम करना चाहती है। शांतिके स्थानपर न्याय और शांतिका शासन कायम करनेकी जिस नीतिकी आज चर्चा है उसका पालन किस प्रकार बड़े राष्ट्र कर रहे हैं यह बताना कठिन है। इसलिये संसारसे दिखावेके लिये अराजकताका लोभ भले ही हो गया हो या कुछ वर्ग विशेषतक ही सीमित हो गयी हो परन्तु तत्वतः अराजकताका आधार राष्ट्रीय साम्राज्यवाद आज भी ज्योंका त्यों कायम है।

उपरोक्त अवस्थाको देखते हुए किस राष्ट्रका यह कर्तव्य है कि वह आगे बढ़कर आर्थिक और राजनैतिक साम्राज्यवादके खिलाफ बगावत करे। दोनों साम्राज्यवादके एकसे ही हैं—चाहे वह राजनैतिक हो, चाहे आर्थिक। इसलिये जो देश किसी उद्देश्य विशेषको लेकर लड़ाईमें उतरे हैं, जिनके सामने अधिकार लोलुप देशोंके प्रतिरोधका ही मुख्य लक्ष्य था। उनको अब विशेष रूपसे सावधान रहनेकी जरूरत है कि कहीं न्याय और शांति-संरक्षणताके पर्देके भीतर उनके आर्थिक-साम्राज्यवादकी नींव तो नहीं डाली जा रही है। आज प्रत्येक प्रगतिशील अमेरिकनका यह कर्तव्य है कि वह इस बढ़ती हुई साम्राज्यवादकी मनोवृत्ति में लगाम लगा दे। किसी भी प्रदेश और किसी भी जगहके निवासियोंपर बाहरका कोई भी शासन न हो—चाहे वह सोनेकी हुकूमत ही क्यों न हो। ......अमरीका अपने दो महारत्नोंको खो चुकी है जिनके अंदर समानता और समताकी एक आग जलती थी। श्री विण्डेल विल्की और प्रेसीडेण्ट रूजवेल्टके अभावमें उस ज्योतिको उसी पवित्रताके साथ कौन जगाता है—यह देखना है ? प्रो० हेराल्ड लास्की जैसे विचारक इङ्गलैण्डमें कम हैं। वहां उनकी विचारधारापर फिरसे कितने लोग अमली तौरपर विश्वास करते हैं—यह तो हमें रोज बरोज मालूम पड़ता जा रहा है। क्योंकि जहांतक व्यवहारका सम्बन्ध है 'फ्रिस्को सम्मेलन' भी कोई आकर्षित निर्दोष शांति योजना दुनियाके सामने पेश नहीं कर सका है। जो कुछ वहां हुआ है, जिस शांति-घोषणा पत्रपर इतने राष्ट्रोंने हस्ताक्षर किये हैं क्या वह वास्तवमें इस विषैली विषमता को दूर कर सकेगा ? इसपर आज अपना मत कौन जाहिर करे। पर हां, देखनेसे ऐसा लगता है कि इसके आसार भी कुछ आशाजनक नहीं हैं। जिन दिनों समता और स्वतन्त्रताकी स्कीमें 'फ्रिस्को' में बनाई जा रही थीं उन्हीं दिनों फ्रांसकी बर्बरता सीरियामें अपना रौद्र रूप दिखला रही थी। किसी भी देशके आर्थिक पक्षपर किसी दूसरे देशको हावी नहीं होना चाहिये और न किसी प्रकारके अनावश्यक लगावका प्रदर्शन होना चाहिये जैसा कि कनाडा और आस्ट्रेलियामें ब्रिटिश साम्राज्यका है। व्यवसायके मामलेमें केवल अपनी अपनी साम्राज्य-सीमा या प्रभाव क्षेत्रको तरजीह देना भी एक प्रकारका अनैतिक पतन है। शान्तिकालमें भी लाखों-डालर प्रतिवर्ष इङ्गलैण्ड उन खर्चीले जहाजोंपर खर्च करता था जिनके द्वारा कि उसका सामान आधी दुनियाको पार कर [illegible] छोरपर पहुंचाया जाता था। आर्थिक विषमता, और पक्षपात कभी पैदा न हो इसके लिये यह जरूरी है कि अधिकतर सामान वहीं या वहांसे निकट तैयार होना चाहिये जहां उसकी खपत होती है।

अपने प्रभुत्व और साम्राज्य-लोभको न हटा सकनेवाले बहुतसे लोग यह कहेंगे कि

अभी बहुतसे देश ऐसे हैं जहांके मूल निवासी स्वशासनके योग्य नहीं हुए हैं और इस कथनकी पुष्टि इस आधारपर की जाती है कि यदि आज हम अपना संरक्षण या वरद-हस्त हटा लें तो कोई दूसरी ताकत उनपर कब्जा कर बैठेगी। लेकिन साम्राज्यवादियों की यह दलील बिल्कुल लचर है। क्योंकि प्रत्येक साम्राज्यवादी देश दूसरे देशके लोगों की अयोग्यताको हमेशा बढ़ाकर देखनेके ही आदी हो गये हैं। दूसरे ये शक्तियां स्वयं इरादतन लोगोंको शासन सम्बन्धी विषयोंमें योग्य होनेकी तालीमसे दूर रखती हैं या रोकती हैं। कोई भी मानव शास्त्रवेत्ता इस बातको माननेके लिये तैयार नहीं होगा कि शासनकी योग्यतामें कोई जाति वंशानुक्रमसे ही हेय होती है। तीसरे निवासियों की अयोग्यता साम्राज्यवाद या उपनिवेशवादके औचित्यको तो प्रकट नहीं करती। लार्ड आक्सनके यह शब्द कि—'अधिकार और स्वत्व व्यभिचारका पोषक होता है और असीम अधिकार तो सर्वांशमें गर्तकी ओर ले जाता है।" आज भी उनके यह शब्द उतने ही सच्चे हैं। संसारमें 'साम्राज्य' शासक और शान्ति दोनोंके लिये ही जहर होता है। दलीलका दूसरा पक्ष कि अधिकार हटानेसे कोई दूसरी ताकत आकर कब्जा कर लेगी—इसके बारेमें तो यही कहना है कि आज हम ऐसी दुनियाकी ओर जा रहे हैं जहां इस प्रकारके किसी भी कार्यका सम्मिलित प्रतिरोध किया जायगा।

अब सवाल यह उठता है कि साम्राज्यवादका अन्त हो कैसे? इसके उत्तरमें तो यही कहा जा सकता है कि इसके तीन ही रास्ते हैं। प्रथम तो ऐसे उपनिवेशोंकी सैनिक शक्तिको बढ़ाया जाय जिसके कि कारण साम्राज्यको अनवरत मगजपच्ची उन्हें स्वयं परेशान कर दे। दूसरा रास्ता यह है कि उपनिवेश या अधिकृत देशकी आर्थिक व्यवस्थामें ऐसा परिवर्तन किया जाय साम्राज्यको उस देशसे किसी प्रकारके आर्थिक लाभकी आशा ही न रहे। साम्राज्य लिप्साका सबसे प्रबल कारण आर्थिक लाभ ही होता है। इस व्यवस्थाके लिये गृहउद्योग, स्वदेशी प्रचार, आवश्यकताओंमें स्वावलम्बी होना, देशी पूंजी आदि ही ऐसे साधन हैं जिनके सहारे हम शासनकी कमसे कम दिलचस्पी अधिकृत देशपर छोड़ सकते हैं। यह अवस्था हो जानेपर शासक अधिक दिनोंतक टिक नहीं सकता। तीसरा रास्ता है साम्राज्यवादी देशोंमें प्रगतिशील दलोंका शक्तिमें आना। ऐसे सङ्गठनोंके हाथमें शासनकी बागडोर पहुंचे तो वे शायद रूढ़िवादी लोगोंकी नीतिपर न चलें।

जो कुछ भी हो आजकी परिस्थितिको यदि गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया जाय तो इस बातके समझनेमें अधिक देर न लगेगी कि अभी तो निकट भविष्यमें 'साम्राज्यवाद' अपनी किसी न किसी शक्लमें जमा हुआही दिखाई देता है। यूरोप तो आज भी इस बीमारीसे मुक्त नहीं हुआ है। दुनियामें सबसे अधिक साम्राज्यवादियोंका अड्डा यूरोप ही है। जबतक ये स्वेच्छासे, नैतिक बलके प्रभावसे या किसी अन्तर्राष्ट्रीय दबावसे अपने अधिकृत देशोंपरसे अपना सभी प्रकारका प्रभाव नहीं हटा लेते तबतक युद्धके बादकी दुनियाका चित्र पहलेसे कुछ भिन्न न होगा। प्रश्न तो यह है कि इन चन्द देशोंका रोग संसारके बहुत बड़े भागमें फैला हुआ है। इसके भाग्यके साथ अफ्रीका प्रशांत, हिन्दुस्तान, बर्मा, लङ्का और न मालूम ऐसे ही कितने देशोंका भाग्य जुड़ा हुआ है। ऐसी हालतमें शांति घोषणा या क्रिप्सको सम्मेलनसे किसी अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तनकी कल्पना करना गलत होगा। सम्मेलन और घोषणाओंसे दुनियाके वर्तमान स्वरूपमें कुछ अधिक फर्क नहीं पड़ता। इसलिये जरूरी चीज तो यह है कि आज देश-देशमें ऐसी विचार धारा जड़ जमाये जो इस मौजूदा स्थितिको मानवताका घोर शत्रु समझती हो। जरूरत इस बातकी है कि जनता जीवन और समाजके अधिक सुन्दर रूपको समझे और समझकर स्वयं इस बर्बरता-युगके अवशेषका सामना करे। सङ्गठित और जीवनके प्रति वैधानिक दृष्टिकोण ही इस रूढ़िवादी प्रथाका सबसे प्रबल शत्रु है। अतः इसके प्रचार और प्रसारसे ही दुनियाका रूप बदल सकता है। इस प्रकारके सम्मेलन कभी भी दुनियामें आमूल परिवर्तन नहीं कर सके हैं और न कर सकेंगे।

=शिमला नेता सम्मेलन स्थगित=

...की जिम्मेदारी मैं लेता हूं

—पं० नेहरू

...हाबादके पत्रकारोंकी एक सभामें ...न करते हुए पण्डित जवाहरलाल नेहरू- ...या कि "अगस्त उपद्रवोंके समय देशमें ...छ हुआ उस सबकी जिम्मेदारी व्यक्ति- ...पसे मैं लेता हूं। मैं इस उत्तरदायित्व- ...कर अलग खड़ा होना नहीं चाहता। ...यह कहना कि कांग्रेसने कोई आंदो- ...त्रा था दुराग्रहपूर्ण और सर्वथा ...है। नेताओंकी गिरफ्तारीके बाद ...छ हुआ सब आपसे आप। सचाई यह ...कांग्रेसने कोई हिदायत किसी आन्दो- ...लिये नहीं दी थी। यह घटनाओंसे ...और मैं यह कहनेमें जरा भी संकोच ...करता कि यदि कांग्रेसने नेताओंकी ...तारीके १० दिन पहले भी हिदायतें ...होती तो स्वेच्छाकृत आन्दोलनके फल- ...देशमें जो कुछ हुआ उससे कहीं जब- ...विद्रोह हुआ होता। इन उपद्रवोंको ...के लिये ब्रिटिश सरकारने जो दमन ...उसके लिये मैं उसे दोषी नहीं ठह- ...। किन्तु भारतीय पुलिस और ...र्मोंका नैतिक पतन देख कर मैं घृणासे ...हो गया हूं। आपने ही देशवासियोंके ...इन लोगोंने जैसा आचरण किया है ...नके भीतर जैसा अनाचार एवं घूस- ...फैली हुई है वह सभ्य समाजके ...विधानके लिये लज्जा और कलङ्क ...इसनैतिक अधःपतनका परिणाम यह ...है कि देशमें इन लोगोंका एक 'नया ...वर्ग' पैदा हो गया है और देशके ...यह एक समस्या है कि इस मैलको ...हाये।

...जो कुछ मैंने सुना है वह यह है कि ...के प्रायः प्रत्येक महकमेमें घूसखोरी ...अन्य अनाचार फैले हुए हैं! शायद ...थोड़ेही ऐसे मातहत जुडिशियलअफसर ...जिन्होंने अपनेको इससे अलग रखने ...कोशिश की है। अन्यथा सरकारका ...अङ्ग अनाचारी है।

...ने केमरा छीन लिया

...० प्रेसके एक संवादमें कहा गया है ...वायसरायसे मुलाकातके बाद लौटते ...गत २४ जूनको मार्गमें अनियन्त्रित ...की हरकतोंसे क्रुद्ध हो महात्मा- ...एक सिक्ख फोटोग्राफरका केमरा छीन ...और उसे तोड़नेकी कोशिश करने ...तदुपरान्त केमरेको अपने सेक्रेटरी ...प्यारेलालके हाथमें दे दिया। पर उक्त ...ग्राफरने अपना केमरा प्राप्त करनेका ...कोई प्रयत्न नहीं किया। इससे ...जी अनेकों बार महात्मा जी बेहिसाब ...लेनेका विरोध कर चुके हैं; खास- ...अत्यन्त निकटसे फोटो उतारनेके वे ...विरोधी हैं।

समझौतेका प्रयास सफल नहीं हुआ
जिन्ना साहब अपने आग्रहपर अड़े हैं
अलग अलग नामावली पेश की जायगी
सरकारका अन्तिम चुनाव लार्ड वावेलके हाथमें

मि० जिन्नाके दुराग्रहवश शिमला नेता सम्मेलन किसी समझौतेपर नहीं पहुंच सका और वायसरायने उसकी बैठक आगामी शनिवार १४ जुलाईके लिये स्थगित कर दी। आपने फरमाया कि हम समझौता चाहते हैं किन्तु यह कदापि माननेको तैयार नहीं है कि वायसरायकी कौंसिलके मुस्लिम सदस्योंको चुननेका अधिकार लीगके सिवा अन्य किसी संस्थाको है। कांग्रेसने इस अधिकारका दावा किया है। कांग्रेसकी तरह अन्य पार्टी अथवा पार्टियां भी इसी तरहका दावा पेश कर सकती हैं। सिद्धांततः और तथ्यतः हम यह बात माननेको तैयार नहीं हैं।

पृथक नामावली---मालूम हुआ है कि सम्मेलनके बाहर समझौताके लिये किये गये प्रयत्नोंको असफल हो जाते देख सम्मेलनमें उपस्थित प्रत्येक दलोंसे पृथक-पृथक अपनी नामावली वायसरायको देनेको कहा गया है। इन नामावलियोंके आधारपर वायसराय कौंसिलके सदस्योंका अन्तिम चुनाव स्वयं करेंगे। सरकारी तौरपर यह घोषणा की गयी है कि सम्मेलनकी बैठक शुक्रवारको सवेरे ११ बजे हुई और १४ जुलाईके लिये स्थगित हो गयी ताकि प्रतिनिधियोंको अच्छी तरह सलाह-मशविरा करनेका पूरा मौका मिले।

कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी बैठक---मौलाना अबुल कलाम आजादने घोषणा की है कि ३ जुलाईको तीसरे पहर २ बजे कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक शिमलामें होगी यह भी मालूम हुआ है कि कांग्रेस प्रेसिडेण्टने अत्यावश्यक सन्देश भेजकर पंडित जवाहर लाल नेहरूको फौरन शिमला बुलाया है। मुस्लिम लीगकी वर्किंग कमेटीकी बैठक भी बुलायी गयी है।

पृथक नामावली देनेकी विधि---कांग्रेस और मुस्लिम लीग दोनोंको अपनी अपनी पार्टीके आठसे १२ तक नाम पेश करनेकी अनुमति दी गयी है। अपनी पार्टीके अतिरिक्त भी ये अन्य नामोंका सुझाव दे सकते हैं। सम्मेलनमें भाग लेनेवाले अन्य दलोंको अपने-अपने दलके तीनसे चार नामके साथ अन्य नामोंकी भी सिफारिश करनेकी अनुमति दी गयी है।

ब्रिटिश लोकमत---बर्ट्रेण्ड रसेलने इस बातपर खेद प्रकट किया है कि प्रस्तावित एक्जीक्युटिव कौंसिलका चुनाव महती पार्टियोंके बदले लार्ड वावेलको करना होगा। मैं यह मान लेता हूं कि यदि ये समझौतेपर न पहुंचे तो हिन्दुओं और मुसलमानोंके सीटोंका वितरण लार्ड वावेल करेंगे। यदि ये लोग इस मामलेको अपने आप न सुलझा सके तो इसका बहुत बुरा असर पड़ेगा। यदि उनको लार्ड वावेलके निर्णयपर निर्भर करना पड़ा तो इससे बढ़कर खेदकी बात और क्या हो सकती है।

जिन्नाको अलग रखो---लेबर पार्टीके लार्ड स्ट्राबोलगीने कहा कि यह पहले हीसे मालूम था कि मि० जिन्नाके हलके कारण, जो अपनेको सर्वोपरि रखना चाहते हैं, कानफरेंसकी कार्यवाही पार नहीं लग सकती। यह देखकर मुझे प्रसन्नता हुई है कि लार्ड वावेल पराजय स्वीकार करनेको तैयार नहीं हैं। रक्षा विभागको छोड़कर सर्व भारतीय केबिनेटका निर्माण करनेका हम वादा कर चुके हैं। और सर्वोत्तम व्यक्तियोंको ही चुना जाना चाहिये। यदि मि० जिन्ना शामिल होनेको राजी न हों तो उनको अलग रखना ही अच्छा होगा।

बैठकका स्थगित करना अच्छा हुआ---जार्ज बर्नार्ड शाने कहा है कि बैठकको स्थगित कर देना मैं अच्छा समझता हूं। कांग्रेस नेताओंकी गिरफ्तारीको मैंने अत्याचार मूलक कार्य समझा है किन्तु लार्ड वावेलने उन सब बातोंको ठीक रास्तेपर ला दिया है। अच्छा होगा कि इस प्रसंगका उनपर ही छोड़ दिया जाय। मि० जिन्नाको समझौतेपर आना ही होगा।

दुनियाकी आखें मुस्लिम भारतपर---हैन कौंसिलकोसे डा० सैयद हुसेनने, जो भारतीय स्वतन्त्रताकी राष्ट्रीय कमेटीके अध्यक्ष हैं, एक वक्तव्य प्रेषित किया है जो भारतके मुसलमानोंके लिये ही नहीं बल्कि समस्त मुस्लिम संसारके लिये महत्वपूर्ण है। आपने कहा है कि सम्मिलित राष्ट्र सम्मेलनके अधिवेशनके दौरानमें पिछले आठ सप्ताहोंमें तमाम मुस्लिम राज्योंके महान नेताओं और राजनीतिज्ञोंसे मिलनेका मुझे अवसर मिला। उनकी बातचीतसे मुझे यह मालूम हुआ कि वे समझते हैं कि भारतीय मुसलमान भारतकी स्वतन्त्रताके मामलेमें अपनी पूरी ताकत नहीं लगा रहे हैं। अब समय आ गया है जब मुस्लिम भारतको अपने साथी देशवासियोंके साथ कंधेसे कंधा लगाकर आगे बढ़ना है। मुझे आशा है कि मि० जिन्ना अपने नेतृत्वकी मर्यादा रखेंगे। उनका आखें शिमलापर हैं और भारतके मुसलमानोंपर उससे कम नहीं हैं।

जिन्ना मुझे ले जा सकते हैं—गांधीजी

अमेरिकाके एसोसियेटेड प्रेसके प्रतिनिधि प्रेस्टन ग्रोवर शिमला नेता सम्मेलन की बैठक १४ जुलाईके लिये स्थगित हो जानेके बाद महात्मा गांधीसे उनके निवास स्थानपर मिले। महात्माजीने प्रेस्टन ग्रोवर से राष्ट्रीयताके आधारपर काम चलाऊ सरकार बनानेके प्रयासमें एकत्रित शिमला सम्मेलनके सम्बन्धमें कहा कि सम्मेलनका परिणाम अच्छा ही होगा, ऐसी मैं आशा और प्रार्थना करता हूं। मुलाकातमें गांधीने ये बातें कहीं—(१) जवाहरलाल नेहरू मेरे उत्तराधिकारी हैं। (२) कांग्रेस साम्प्रदायिक संस्था नहीं है और वह कभी जातीय संस्था हो नहीं सकती। (३) कांग्रेस ही एकमात्र ऐसी संस्था है जो राष्ट्रके लिये सोचती और करती है। (४) कांग्रेस इस सम्मेलनमें एक काम चलाऊ सरकार बनानेकी आशासे शामिल हुई है, और यह स्वतन्त्रताकी ओर पहला कदम होगा। (५) यदि मि० जिन्ना चाहते हैं कि सम्मेलनमें मैं भाग लूं तो वे मुझे ले जा सकते हैं। हम दोनों एक दूसरेके हाथमें हाथ डाले एक साथ आयेंगे। वे मुझे पर्वतपर चढ़नेमें सहारा देकर हृदयपर पड़नेवाले श्रमसे बचा सकते हैं। मि० जिन्नाके इस मनोभावका यह अर्थ होगा कि मतभेदों और रुकावटोंके बावजूद भी वे समझौता चाहते हैं। आप उनसे कहें कि यदि वे मुझे सम्मेलनमें ले आना चाहते हैं तो मैं बिलकुल तैयार हूं।

मि० प्रेस्टन ग्रोवरने गांधीजीसे कहा कि केवल जिन्ना ही नहीं बल्कि लार्ड वावेल, अधिकांश भारत और सम्मेलनके तमाम पर्यवेक्षक, यह जानते हुए भी कि आप कांग्रेसके सदस्य नहीं हैं, आपको ही कांग्रेसका प्रधान समझते हैं और यह भी समझते हैं कि बिना आपकी स्वीकृतिके समझौता नहीं हो सकता।

गांधीजीने जवाब दिया कि यह सही भी है और गलत भी है। यह धारणा इसलिये हो गयी है कि साधारणतया मेरी सलाह मान ली जाती है। किन्तु नियमतः और तत्त्वतः यह गलत है। सम्मेलन तो कानूनकी दृष्टिसे प्रतिनिधिस्वरूप है। अतः इसमें मेरा स्थान नहीं हो सकता। मि० प्रेस्टन ग्रोवरके यह आग्रह करनेपर कि कांग्रेसमें उन्हींकी चलती है, गांधीजीने कहा कि नहीं, बात ऐसी नहीं है। जब वे चाहें मुझे निकाल बाहर कर सकते हैं, मेरी राय पर पानी फेर सकते हैं। यदि मैं उनपर जबर्दस्ती लादनेकी कोशिश करूं तो एक बार मेरी चल जा सकती है। किन्तु मैं जानता हूं कि अधिकारसे चिपके रहनेकी चेष्टा करते ही मैं गिरूंगा और ऐसा गिरूंगा कि फिर कभी उठ न सकूंगा। यह मेरी आदतके खिलाफ है।

विश्व शांति और सुरक्षा सनद

[छ ठें पृष्ठका शेषांश]

इस प्रणालीका मूल उद्देश्य संरक्षित इलाकों की जनताको उन्नति और स्वाधीनताकी ओर अग्रसर करना है। इसका दूसरा उद्देश्य मानव अधिकारों और मूल स्वाधीनताके प्रति सम्मान भाव उत्पन्न करना और भेदभावका विनाश करना है। यह प्रणाली संरक्षित देशके शासनकी शर्तें निश्चित करनेके अलावा एकाधिक मित्र-राष्ट्रको संरक्षक देश नियुक्त करेगी।

अध्याय १३---संरक्षण कौंसिलः— इस कौंसिलमें संरक्षित देशोंमें शासन करने वाले राष्ट्रोंके समसंख्यक प्रतिनिधि रहेंगे साथ ही सुरक्षा कौंसिलके ५ स्थायी सदस्य होंगे। शासनाधिकारीकी रिपोर्ट पर यह कौंसिल विचार करेगी और अर्जियों को अधिकारियोंकी सलाहसे स्वीकार करेगी तथा उन इलाकोंके निरीक्षणकी व्यवस्था करेगी। कौंसिलकी प्रश्नावलियोंका प्रतिवर्ष संरक्षक देशोंको उत्तर देना होगा। कौंसिलका निर्णय बहुमतसे हुआ करेगा।

अध्याय १४---अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालयः---मित्रराष्ट्रीय सङ्गठनके सभी सदस्य इस न्यायालयके सदस्य होंगे। सुरक्षा कौंसिलकी सिफारिशपर असेम्बली द्वारा निर्धारित शर्तोंके अनुसार कोई गैर सदस्य भी इसमें शामिल हो सकता है। न्यायालय के निर्णयोंको माननेकी सभी मित्रराष्ट्रोंने प्रतिज्ञा की है। किसी निर्णयपर अपील सुननेका अधिकार सुरक्षा कौंसिलको होगा। असेम्बली और कौंसिल इससे सलाह मांग सकता है।

अध्याय १५—सेक्रेटेरियेट—मित्र-राष्ट्रोंकी व्यवस्था कार्यवाही सभी राष्ट्रीय दायित्वोंसे मुक्त सेक्रेटेरियेट द्वारा की जायगी और सुरक्षा कौंसिलकी सिफारिश पर असेम्बली द्वारा नियुक्त सेक्रेटरी जेनरल इसके प्रधान होंगे। इसको नियमानुसार कर्मचारियोंकी नियुक्तिका अधिकार होगा अपने कार्योंकी वार्षिक रिपोर्ट देनी होगी। विश्वशांति और सुरक्षाके लिये किसी खतरेकी ओर सुरक्षा कौंसिलका ध्यान भी यह आकृष्ट करायेगा।

अध्याय १६—विविध नियमः—सनद लागू होनेके बाद सदस्य राष्ट्रों द्वारा की गयी सभी सन्धियां सेक्रेटेरियेटमें रजिस्टर्ड और प्रकाशित होंगी। बिना रजिस्टर्ड सन्धियोंको मित्रराष्ट्रों द्वारा स्वीकार नहीं किया जायगा। किसी सदस्यके अन्तर्राष्ट्रीय दायित्वपर सनदसे कोई बाधा पहुंचेगी तो पुरानी व्यवस्था जारी रहेगी। संगठन और उसके कर्मचारियोंको सभी मित्र देशोंमें पूरी सुविधा और स्वाधीनता रहेगी।

अध्याय २७---अस्थायी सुरक्षा व्यवस्थाः---सनदके लागू होने और सुरक्षा कौंसिलके कार्यारम्भ करनेके पूर्व सुरक्षा कौंसिलके स्थायी सदस्य बननेवाले राष्ट्र शांति और सुरक्षा कायम रखनेके किसी कार्यके सम्बन्धमें परस्पर और आवश्यकता पड़नेपर अन्य राष्ट्रोंसे परामर्श करेंगे।

अध्याय १८---संशोधन---सनद में कोई संशोधन असेम्बलीके दो तिहाई वोटसे स्वीकृत और सुरक्षा कौंसिलके ५ स्थायी सदस्योंके साथ सङ्गठनके दो तिहाई वोटसे समर्थित होनेपर किया जायगा। असेम्बली के दो तिहाई और कौंसिलके ७ वोटसे सनदमें संशोधन करनेके लिये बैठक बुलायी जायगी।

अध्याय १९—स्वीकृति और हस्ताक्षरः—सुरक्षा कौंसिलके ५ स्थायी सदस्यों और अन्य हस्ताक्षरकारी देशोंकी सरकारों के बहुमतसे स्वीकृत होनेपर सनद लागू समझा जायगा। सनदकी चीनी, अङ्गरेजी, फ्रेंच, रूसी और स्पेनी लिपियोंका समान अर्थ होगा और यह युक्तराष्ट्रीय सरकारके पास रहेगा। अन्य हस्ताक्षरकारी देशोंकी सरकारोंके पास इसकी प्रमाणित प्रतिलिपियां भेज दी जायंगी।

संसारका घटना चक्र

रूसी लेखककी कलमसे...

रूसी लेखक एम० वी० मिखीवने अपने पर्यटन सम्बन्धी 'हम भारतसे गुजरे' शीर्षक लेखमें लिखा है, "जीवन पर्यन्त हमारे मस्तिष्कमें उन भुक्खड़ोंकी दर्दनाक याद ताजी रहेगी जिनका कलेजा धंसा था, जिनकी टांगें सूख कर छड़ीकी तरह पतली हो गयी थीं, जिनकी पसलियां चमड़ेसे चिपटी नजर आ रही थीं, विभिन्न रोगोंने जिन्हें अपना घर बनाकर पंगु और निकम्मा बना छोड़ा था।"

सन् १९४२ में कांग्रेसकी ऐतिहासिक बैठकका वर्णन करनेके पश्चात् मिखीव लिखते हैं कि हर सख्सकी जुबानसे यही आवाज निकलती थी, "हमें स्वतन्त्र करो—अङ्गरजो, भारत छोड़ दो।"

मिखीव लिखते हैं, "भारतमें मजदूर बहुत सस्ते हैं। रूसके दो मजदूरोंकी जो अपर्याप्त मजदूरी है, उतनेमें भारतमें कम-से-कम एक दर्जन मजदूर काममें लगाये जा सकते हैं।

आर्थिक विषमता तथा यातायातके क्षेत्रमें पक्षपातका उल्लेख करते हुए मिखीवने आगे कहा है, "भारतीय जनताके लिये ऐसी रेलगाड़ियां हैं जो प्रति घण्टे १५ मिलीमीटरसे अधिक नहीं दौड़तीं, पर गोरे साहबों के लिये स्पेशल एक्सप्रेस ट्रेन हैं जिनके प्रत्येक डब्बेमें स्नानागार और पंखोंकी सुन्दर और समुचित व्यवस्था की गयी है। यही है परियोंकी कहानीका भारत—धनी और निर्धन।"

डी वेलेरासे मुलाकात

दो प्रमुख भारतीय, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी मजलिसके अध्यक्ष श्री सुव्रत राय चौधरी और मजलिसके भूतपूर्व अध्यक्ष श्री दिलीप सेन, जो इङ्गलैण्डसे डब्लिनके लिये रवाना हो चुके हैं, आयरलैण्डके प्रेसीडेण्ट मि० डी वेलेरासे मिलकर, दुर्भिक्ष-पीड़ित बङ्गालके बाशिन्दोंकी आयरलैण्डकी सरकार ने जो सहायता की थी, उसके लिये भारतीय जनताकी ओरसे कृतज्ञता प्रकाशन करेंगे।

इटलीपर मित्र-नियंत्रण

भूमध्यसागरीय अञ्चलके डिपुटी सुप्रीम कमाण्डर जेनरल जासेफ टी मैकनार्नीने वाशिंगटनसे घोषित किया है कि बोलजानो और वेनेजिया-जुलियाको छोड़कर शेष सम्पूर्ण इटलीको आगामी सितम्बर तक इटलीकी सरकारके हवाले कर दिया जायगा। जहाज से उतरनेवाली सामग्रीके रक्षार्थ १६०० तथा वेनेजिया—जुलियाके लिये एक डिविजन सैनिकोंको छोड़कर सभी अमेरिकन सैनिक आगामी जनवरी तक हटा लिये जायेंगे। आपने बताया कि यूरोपीय अधिकृत अञ्चल कमानके आदेशान्तर्गत अमेरिकन गगन सेनाके ५००० सैनिक इटलीके विभिन्न भागोंमें रखे जायेंगे।

लेवाण्टमें पुनः अशान्ति

रायटरके विशेष संवाददाताके तारसे पता चला है कि गत सोमवारकी रातमें एलेप्पोमें एक ही समय दो स्थानोंमें गोलियां चलीं जिनसे दो ब्रिटिश सैनिकोंके घायल होनेकी भी खबर मिली है।

नौ बजे रातमें फ्रेञ्च सेनाओंने कमिश्नर के वासस्थानपर राइफल और मशीनगनोंसे गोले बरसाने शुरू किये। ब्रिटिश अधिकारियोंके अनुरोध और अविलम्ब गोलाबारी बन्द करनेके लिये फ्रेञ्च अधिकारियोंके आदेशके पश्चात् डेढ़ घण्टे तक फ्रेंच बैरकों से गोलियां छूटती रहीं।

यह दुर्घटना शान्त नहीं हो पायी थी कि आधे दर्जन सीरियनोंने एकजेमीलिई इलाकेमें फ्रेंच सप्लाई अड्डेपर गोलियां दागनी शुरू की। ब्रिटिश गश्ती सैनिकोंने जब गोलियां चलायीं तब सीरियन भाग खड़े हुए।

एलेप्पोकी दुर्घटनाके बाद वहांकी जनता में बेतरह उत्तेजना फैली और ३००० सीरियनोंने फ्रेंच सैनिकोंकी कार्यवाहीके विरोध में शहरकी सड़कोंपर विरोधी प्रदर्शन किये।

शाह ल्योपोल्ड किंकर्त्तव्य विमूढ़

शाह ल्योपोल्डके आस्ट्रिया स्थित निवासस्थानसे अधिकृत तौरपर ज्ञात हुआ है कि शाहने अबतक किसीको नयी सरकार गठित करनेका आदेश नहीं दिया है। यद्यपि शाहने कुछ दिन पहले बेल्जियमकी राजगद्दी का दावा त्यागनेमें नाहीं की थी, पर अंतिम रूपसे किसी फैसलेपर पहुंचनेके पूर्व वे बेलजियमकी स्थितिसे अपनेको पूर्ण अवगत कर लेना चाहते हैं।

यू० प्रेसके एक समाचारमें कहा गया है कि "लन्दन डेली हेराल्ड" को ब्रूसेल्ससे ऐसी रिपोर्ट मिली है कि बेलजियमके सोशलिस्टोंने शाहकी वापसीसे उत्पन्न राजनीतिक स्थितिका सामना करनेके लिये सम्पूर्ण देशमें आम हड़ताल घोषित करनेकी तैयारी कर रखी है। सोशलिस्ट पार्टीने गुप्त रेडियो स्टेशनोंका देशके हर हिस्सेमें जाल बिछा रखा है ताकि राजनीतिक उथल-पुथलके समय विभिन्न दलोंमें परस्पर सम्पर्क बना रहे और परिस्थितिके अनुकूल कार्य करनेके लिये पार्टीकी विभिन्न शाखाओंको आदेश देनेमें कठिनाइयोंका सामना न करना पड़े।

ब्रि० लेबर पार्टीकी भारत...

ब्रिटेनकी लेबर पार्टी अपने ...
नेतृत्वके अन्दर भारतके लिये ...
क्या करनेका विचार करती है, ...
वस्तु स्थितिको अच्छी तरह समझ...
संतुष्ट करनेके लिये उसके पास ...
नुस्खा है, इन सारी बातोंपर ...
सेक्रेटरी मि० मार्गन फिलिप्सके ...
पत्रसे काफी प्रकाश पड़ता है, जो ...
स्वराज्य हाउस (लंदन) के मंत्री...
है—हम आपको उस पत्रके लिये ...
देते हैं जिसके जरिये आपने सूचि...
कि चुनावमें आप वामपंथियोंकी ...
करनेका विचार कर रहे हैं और ...
सिलेमें भारतीय विचारोंको प्रद...
लिये पर्चोंका प्रकाशन तथा ...
आयोजन कर रहे हैं।

जहां तक सहायता सम्बन्धी ...
प्रस्तावका ताल्लुक है, हम यह सुझा...
देना चाहते हैं कि भारतकी वर्तमान ...
रुनी स्थितिको देखते हुए ब्रिटिश ...
प्रश्नमें भारतकी राजनीतिको हम ...
देना नहीं चाहते। चुनावकाल...
वावेल द्वारा प्रस्तुत योजनापर भार...
ओंको विचार करना है। वावेल ...
हमारी सम्मतिमें निहायत उत्तम ...
सम्भवतः उन योजनाओंमें सर्वश्रेष्ठ ...
फिलहाल उपस्थित करनेमें हम सम...
कुछ कहनेके बजाय हम उस समय त...
रहना पसन्द करेंगे जबतक इस प्र...
प्रति भारतीयोंकी प्रतिक्रिया ज्ञात ...
जाती।"

चर्चिलसे ट्रूमैनकी सहानुभूति...

विश्व विख्यात अमेरिकन पत्रका...
पियर्सनने यह रहस्योद्घाटन किया ...
राष्ट्रपति ट्रूमैनका रुख मि० चर्चिलके ...
बहुधा सहानुभूतिपूर्ण नहीं रहता।

अमेरिकन कांग्रेसके सदस्य प्रायः ...
पूर्ण निश्चिततासे यूनान, बेलजियम ...
इटालीके प्रति मि० चर्चिलकी नीति...
आलोचक रहे हैं और उन्हें सदैव इस ...
अनुभव होता रहा है कि संयुक्त राष्ट्...
रिका और रूसके बीच तनातनी पैदा ...
लिये शक्ति-संतुलनकी पुरानी ब्रिटिश ...
से चर्चिल काम ले रहे हैं।

ड्यूक आफ विण्डसर

लन्दनमें इस तरहके ताजे ...
फैले हैं कि निकट भविष्यमें ही ड्यूक ...
विण्डसर सम्राटके मातहत कोई ...
स्वीकार करेंगे। ऐसा कहा जाता ...
ड्यूकने अपने सम्मानके लायक किसी ...
पदपर कार्य करनेकी इच्छा प्रकट ...

इस सिलसिलेको पूर्ण जानकार...
का अनुमान है कि यहां आफ ...
कार्यकाल आगामी ग्रीष्म ऋतु...
होने जा रहा है और उसकी जगह ...
गवर्नर जेनरलके पद पर ड्यूककी ...
होगी।

खानमें काम करनेवाली स्त्रि... सुविधा

भारत सरकारके लेबर विभाग...
विज्ञप्तिमें कहा गया है कि खानमें ...
करनेवाली प्रत्येक स्त्रीको कामकी ...
बाद केन्द्रीय सरकारकी स्वीकृति ...
निश्चित परिमाणमें दूध मिला करेगा...

संसारका घटना चक्र

'विश्वमित्र' को राजेन्द्रबाबूका संदेश
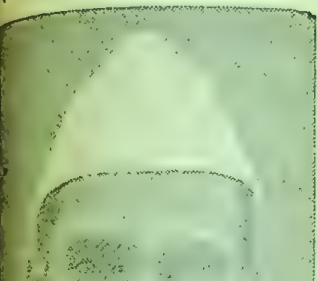
देशरत्न बाबू राजेन्द्र प्रसादजीने गत रविवारको 'विश्वमित्र' के ...-कार्यालयमें पधार कर कार्यालयका ...क्षण किया और जाते समय उन्होंने ...नता प्रकट करते हुए निम्न सन्देश ...:—

"हिन्दुस्तानमें 'विश्वमित्र' ... एक ऐसा हिन्दी-पत्र है जो ...के तीन प्रधान नगरोंसे प्रति-... एक-साथ ही प्रकाशित ...ता है और उसे इसमें सफ-... भी मिली है। भारतकी ...२६ करोड़ जनता तक ...दी-पत्र ही पहुंचते और ... जाते हैं। हिन्दी-पत्रोंपर ...की विचारधाराको बनाने ...र एक बहुत बड़े जानसमूह ... पथ-प्रदर्शन करनेकी बड़ी ...म्मेदारी है। 'विश्वमित्र' ने ...शा कांग्रेसका समर्थन किया ...और राष्ट्रीय संघषमें देशको ...गे बढ़ानेमें सहायक हुआ ... मुझे आशा है कि भविष्य ...मी 'विश्वमित्र' देशको ...ीनता तथा त्यागका संदेश ...नेमें अग्रसर रहेगा।"

(हस्ताक्षर)—राजेन्द्र प्रसाद
२४-६-४५

कांग्रेसका पुनर्संगठन हो

बम्बईके कांग्रेस कर्मियोंके समक्ष भाषण देते हुए सरदार बल्लभ भाई पटेलने कांग्रेसको पुर्नसङ्गठित कर ठोस बनानेकी आवश्यकतापर जोर डालते हुए कार्यकर्त्ताओंसे अनुरोध किया है कि शासनसूत्र ग्रहण करनेके पूर्व कार्यकर्त्ताओंको चाहिये कि अनैक्य तथा आपसी मतभेदोंको दफनाकर वे अपना सङ्गठन दृढ़ कर लें।

कांग्रेसके सरपर उत्तरदायित्वका वजनदार गट्टर है और इसके सामने अत्यन्त महत्वपूर्ण काम पड़े हैं। देशमें व्यभिचार और घूसखोरीका बोलबाला है और जनताके सामने अनगिनत समस्याएं उपस्थित हैं। यदि कांग्रेस उन्हें हल करना चाहती है तो उसे एक महान नैतिक सङ्गठनके रूपमें आगे बढ़ना होगा।

बङ्गालके दुर्भिक्षका उल्लेख करते हुए श्री पटेलने बताया—नेताओंकी गिरफ्तारीके बाद समाचारपत्रोंमें जितनी भी खबरें मैंने पढ़ीं या जो मुझे सुननेको मिली उन सबमें बङ्गाल दुर्भिक्ष और हजारों निर्दोष नर-नारियोंकी असामयिक मौतके समाचार सर्वाधिक उत्पीड़क थे।

यद्यपि अतीत की अनेक दुर्घटनाएं घूमिल पड़ गयी हैं पर बङ्गाल दुर्भिक्षकी स्मृति भारत कभी भूल नहीं सकता।

मोमिनोंकी मांग

बङ्गाल प्रांतीय मोमिन अन्सार कानफरेन्सके सेक्रेटरी मि० खालीलुर रहमानने गत शुक्रवारको लार्ड वावेलके पास निम्नलिखित तार भेजा है :—

"पांच करोड़ मोमिन लीगकी नीतिसे सहमत नहीं हैं। मि० जिन्ना उनका प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। अस्थायी सरकारमें मोमिन कानफरेंस प्रतिनिधित्वका दावा पेश करती है।"

उक्त टेलीग्रामकी प्रतियां मौलाना अबुल कलाम आजाद, मि० एम० ए० जिन्ना, डा० खान साहब, खिजिर हैयात खां और डा० पी० एन० बनर्जीके पास भेज दी गयी हैं।

राजबन्दियोंका अनशन भंग

सीलोनके समसमाज दल (चतुर्थ इण्टरनेशनलके सदस्य) के १२ नजरबन्द कैदियोंने, जो बडल्ला जेलमें नजरबन्द हैं, बिना शर्त अविलम्ब रिहाईकी मांग पूर्तिके लिये १९ जूनसे अनशन आरम्भ किया था। पर अधिकारियों द्वारा उनकी मांग पर विचार आरम्भ होने पर उनके निर्णयकी प्रतीक्षामें अनशन भंग करनेके लिये उन्हें राजी किया जा सका है।

नजरबंद पत्नीसे श्री कृपलानी मिले

अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेसके जेनरल सेक्रेटरी आचार्य जे० बी० कृपलानी बम्बईसे लौटते समय दिल्ली होते हुए लखनऊ पहुंचे और अपनी पत्नी, श्रीमती सुचिता कृपलानीसे मिले जो लखनऊ सेण्ट्रल जेलमें नजरबन्द रखी गयी हैं।

शिमला सम्मेलनमें वायसरायका भाषण

शिमलामें नेता सम्मेलन वायसराय भवनमें २५जूनके ११॥ बजे सवेरे प्रारम्भ हुआ महात्माजीको छोड़कर और सभी आमन्त्रित नेता सम्मेलनमें शामिल थे। वायसरायने सम्मेलनका उद्घाटन करते हुए सम्मेलनके समक्ष निम्नाशयका संक्षिप्त भाषण दिया—

इस महत्वपूर्ण सम्मेलनके पूर्व जिसका भारतके भाग्यपर भीषण प्रभाव पड़ेगा, मैं आप सबोंसे कुछ कहनेका आवश्यकता समझता हूं।

सर्वप्रथम मैं आप सबोंका स्वागत करता हूं जो अपने चरित्रबल और योग्यतासे अपनी पार्टी और प्रान्तोंके नेता बन चुके हैं। हिंदुस्तानके इतिहासके अत्यन्त सङ्कटपूर्ण अवसरपर मैंने उसे उन्नति, राजनीतिक स्वतंत्रता तथा महानताकी ओर अग्रसर करनेके कार्यमें परामर्श प्राप्तकरने लिये हिंदुस्तानके विभिन्न प्रान्तोंसे आमन्त्रित कर आपको बुलाया है। भारतके सामूहिक हितके लिये विस्तृत सहयोगकी भावनासे आप मेरी सहायता करें।

प्रस्तावित मसविदा कोई वैधानिक समझौता नहीं है और न भारतकी पेचीदी समस्याओंका अन्तिम रूपसे समाधान ही। इस योजनासे अन्तिम समझौतेमें कोई बाधा भी नहीं पड़ती। पर यदि यह सफल हुई तो मुझे आशा है कि इस सफलतासे समझौतेका मार्ग प्रशस्त होगा और समझौतेका शुभ दिन करीब आ पहुंचेगा।

सिर्फ भारतकी आंखोंमें ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण विश्वके सामने हम सबोंकी राजनीतिज्ञता, सद्बुद्धि और सदिच्छाकी परीक्षा हो रही है। मुझे आप भारतका सच्चा हितैषी मानें। विचारमें विश्वास, शब्दोंमें बुद्धिमत्ता, कार्यमें साहसिकता और जीवनमें सेवा यही हमारे सम्मेलनके सुन्दर पथ-प्रदर्शक बन सकते हैं।

श्री कनक दास गुप्ताका आदर्श

श्री एस० आर० दास गुप्ता (बैरिस्टर) के पुत्र और स्वर्गीय रायबहादुर श्री के० बी० दास गुप्ता कलकत्ताके भूतपूर्व चीफ प्रेसीडेन्सी मजिस्ट्रेटके पौत्र श्री कनक रंजन दास गुप्ताने, जिनकी उम्र १६ वर्ष है, कलकत्ता यूनिवर्सिटीकी मैट्रिक परीक्षामें सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। भूतपूर्व रायबहादुर भी सन १८९९ की तात्कालिक इण्ट्रेन्स परीक्षामें सर्वप्रथम आये थे।

चिमूर-अष्टि मामलेकी अपील

चिमूर-अष्टि केसके अभियुक्तोंकी ओरसे कार्य करनेवाली 'डिफेन्स कमेटी' के पास लन्दनके सालिसिटरने जो खबर भेजी है उसमें कहा गया है कि जुलाईके अन्तिम दो सप्ताहोंके भीतर किसी दिन इस मामलेकी सुनवायी प्रिवी कौंसिलके समक्ष प्रारम्भ होगी। इस सिलसिलेमें ऐसी खबर है कि सफाई पक्षके वकील श्री जे० जी० घेट सालिसिटरको सलाह-परामर्श देनेके उद्देश्यसे स्वयं इङ्गलैंडके लिये प्रस्थान करेंगे।

मौ० आजादकी बहनका देहांत

मौलाना अबुल कलाम आजादकी बहिन खादिजा बेगमका ९० वर्षकी अवस्थामें शुक्रवार, २९ जूनको अपने कलकत्तास्थित निवास स्थान पर देहान्त हो गया। खादिजा बेगम ऊंची श्रेणीकी धर्मिष्ठ महिला थीं और गत कई वर्षोंसे एकान्त जीवन व्यतीत कर रही थीं। दुःख है कि राष्ट्रपति जेलसे लौटनेपर अपनी बहनसे नहीं मिल सके क्योंकि बड़ी शीघ्रतासे बम्बईके लिये उन्हें रवाना होना पड़ा।

बजटमें ८॥ करोड़का सम्भावित घाटा

बंगाल गवर्नरने १९४५ के बंगाल फाइनान्स(सेलटैक्स)एमेण्डमेण्ट बिलको व्यवस्थापित घोषित किया है। इस बिलके लागू होनेसे सेलटैक्स (बिक्रीकर) २ पैसे प्रति रुपयेसे बढ़कर ३ पैसे हो गया। इस वृद्धिके कारण और उद्देश्यकी व्याख्याके सम्बन्धमें प्रकाशित सरकारी विज्ञप्तिमें कहा गया है कि १९४५-४६ की आमदनीके मालगुजारी मदमें ८॥ करोड़ रुपयेके घाटेका अनुमान है, जिस घाटेको सभी उचित साधनोंसे किसी तरह पूरा करना है।

मोशियो स्टालिनका सम्मान

मास्को रेडियोने ऐलान किया है कि मार्शल स्टालिनको पितृभूमिक रक्षार्थ भीषण संग्राममें सोवियट सशस्त्र सेनाके सङ्गठन और सफल नेतृत्वके लिये उन्हें "आर्डर आफ विक्टरी" की उपाधि प्रदान की गयी है।

मास्को रेडियोकी एक अन्य घोषणामें कहा गया है कि सुप्रीम सोवियटके आदेशानुसार मार्शल स्टालिनको जेनरलिस्मोका पद-प्रदान किया गया है। इस नये पदकी स्थापनाकी घोषणा इसकेपूर्वक एक सरकारी खरीतेमें की जा चुकी है।

जापानी 'होमगार्ड'

जापानी समाचार समितिने २५ जूनकी अपनी एक घोषणामें कहा है कि जापानी "होमगार्ड" को यह आदेश दिया गया है कि किसी हालतमें आत्मसमर्पण मत करो। पीपुल्स वालण्टियर कोरको सख्त हिदायत दी गयी है कि संग्राम कितना भी जोरदार क्यों हो, पर अपनी जगह न छोड़ो। आदेशमें यह भी कहा गया है कि वे कदापि जीवित बन्दी न बनें और न अपमानजनक मौत ही अङ्गीकार करें।

हालैण्डमें नयी सरकार

हालैण्डकी समाचार समितिने हेगसे ऐलान किया है कि हालैण्डके प्रतिरोधक दलके नेता प्रो० डब्ल्यू० एकेरमैरहार्नने हालैण्डमें नयी सरकारका गठन किया है। आप गत मई माससे ही नये मन्त्रिमण्डलके गठनके लिये प्रयत्नशील थे।

लेवाण्टके लिये फ्रांसका नया प्रस्ताव

ऐसा विश्वास किया जाता है कि फ्रांसकी ओरसे लेवाण्टकी समस्याको सुलझानेके लिये नया प्रस्ताव लेकर काउण्ट आस्ट्रोराग वेरुट पहुंचे हैं।

यद्यपि इस योजनाकी रूपरेखाके सम्बन्धमें अबतक कोई स्पष्ट विवरण प्रकट नहीं किया गया है पर फ्रांसीसी हलकोंका यह विश्वास है कि इस योजनाके परिणामस्वरूप परिस्थितिकी वर्तमान गम्भीरतामें अवश्य कमी हो जायगी।

काउण्ट ओस्ट्रोराग लेवाण्टके उपद्रवके प्रारम्भ होते ही वहांकी वस्तुस्थितिके सम्बन्धमें रिपोर्ट देनेके लिये पेरिस पहुंचे थे।

लेबनानके परराष्ट्र सचिव एम हेनरी फराऊं और सीरियाके परराष्ट्र सचिव जामील मर्दन वेरुट और दमास्कसके बीच सटोरा नामक स्थान पर, शुक्रवारके तीसरेपहर दोनों सरकारोंकी ओरसे फ्रेंच गवर्नमेण्टके समक्ष प्रस्तुत किये जानेवाले नोटको अन्तिम रूपसे संशोधित और परिवर्द्धित करनेके उद्देश्यसे इकट्ठे हुए।

जर्मनी धराशायी नहीं हुआ है

फील्ड मार्शल माण्टगोमरीने २१ वीं सेनाके सदर मुकाममें रायटरके संवाददाताको बताया कि जर्मनी धराशायी नहीं हुआ है बल्कि उसने सिर्फ घुटने टेके हैं। आगामी दो-तीन महीने कठिन, परीक्षात्मक सिद्ध होंगे। उक्त संवाददाता द्वारा जर्मनीके भविष्यके सम्बन्धमें प्रश्न किये जानेपर फील्ड मार्शलने बताया कि मित्रोंका उन लाखों जर्मन सैनिकोंकी कड़ी निगरानी करनी होगी जो जर्मन फौज भंग किये जानेके बाद इधर-उधर फैल जायेंगे। संभव है एस० एस० सेनाके सैनिकोंको बीस-बीस वर्षों तक जेलोंमें बन्द रखा जाय। जर्मन जेनरल स्टाफके सदस्योंके अनिश्चित काल तक जेलोंमें बन्द रखे जानेकी संभावना है ताकि षड्यन्त्र रचनेका उन्हें मौका न मिल सके।

जर्मनीके वामपन्थियोंका संयुक्त मोर्चा

बर्लिन रेडियोने घोषणा की है कि जर्मनीके दो प्रमुख वामपंथी दल—जर्मन सोशल डेमाक्रैट और कम्यूनिस्ट पार्टियोंने बर्लिनकी एक बैठकमें संयुक्त कमेटी बनानेका निश्चय किया है जिसकी सहायतासे दोनों पार्टियां भविष्यमें एक साथ काम कर सकेंगी। जर्मनीमें एक ऐसी सरकारकी स्थापना पर विचार किया जा रहा है जो भूतकालीन त्रुटियोंसे मुक्त पार्लामेण्टरी रिपब्लिक ढंगकी हो और श्रमिक वर्गके लिये सभी प्रजातंत्री अधिकारों और स्वतंत्रताकी सुरक्षा कर सके।

जर्मनीकी कम्यूनिस्ट पार्टीने अपनी घोषणामें जर्मनीमें तत्काल सोवियट प्रणालीको लागू करनेका विरोध करते हुए कहा है कि ऐसा मार्ग जर्मनीकी वर्तमान विकास-स्थितिके लिये सर्वथा अनुपयुक्त है।

मि० स्टेटिनसका त्याग-पत्र

राष्ट्रपति ट्रूमैनने २७ जूनकी रात्रिमें घोषणा की है कि मि० एडवर्ड स्टेटिनसने अमेरिकाके परराष्ट्र सचिवके पदसे त्याग-पत्र दाखिल कर दिया है। अब वे विश्व सुरक्षा कांसिलमें अमेरिकाका प्रतिनिधित्व करनेके अलावा सानफ्रांसिस्को सम्मेलन द्वारा गठित जेनरल असेम्बलीके लिये नियुक्त अमेरिकन प्रतिनिधि मण्डलकी अध्यक्षता करेंगे।

मि० स्टेटिनसने भू० पू० राष्ट्रपति प्रे० रूजवेल्टकी मृत्युके एक दिन बादही अपना त्याग पत्र दिया था पर राष्ट्रपति ट्रूमैनके अनुरोध पर अबतक अपने पद पर बने रहे।

रायटरका विशेष संवाददाता सूचित करता है कि अमेरिकामें ऐसी आमतौरपर ऐसी उम्मीद की जा रही है कि मि० स्टेटिनसकी जगह मि० जेम्स एफ़ बाइरंस अमेरिकाके परराष्ट्र सचिवका पद ग्रहण करेंगे।

पोलैण्डमें नयी सरकारका निर्माण

पोलिश रेडियोने बृहस्पतिवार, २८ जून की रात्रिमें एलान किया है कि पोलैण्डकी लुबलिन मन्त्रिमण्डलने त्याग पत्र दे दिया है। वर्तमान लुबलिन प्रधान मन्त्री एम एडवर्ड ओसोब्का मोरावस्की पर नया मन्त्रिमण्डल बनानेका कार्य भार सौंपा गया है। इस नयी सरकारमें व्लादीस्लाव गोमोला उपप्रधान मन्त्री हैं।

पोलैण्डकी लन्दन स्थित निर्वासित सरकारका दावा है कि सभी सशस्त्र पोलिश सेना उसके पक्षमें है और यद्यपि संसारकी सभी शक्तियां उसके वैधानिक अस्तित्वको अस्वीकार कर देंगी, फिर भी वह पोलैण्डकी कानूनी सरकार कहलानेका दम भरती रहेगी। सर्व प्रथम यह मंजूर करते हुए कि वारसाके गुटको ब्रिटेन और अमेरिकाकी स्वीकृति मिल जायगी, निर्वासित पोल सरकारकी एक सरकारी घोषणामें कहा गया है कि वारसाकी "नेशनल यूनिटी" सरकार कम्युनिस्ट और विदेशी एजेण्टोंकी स्वनिर्मित राजनीतिक गुटसे अधिक कुछ नहीं हैं।

चीनी कम्युनिस्टों द्वारा कौंसिलका बहिष्कार

चीनकी कम्युनिस्ट पार्टीने, जिसके छैः सदस्य चीनकी पीपुल्स पालिटीकल कौंसिल (चीनकी युद्धकालीन पार्लमेण्ट) में हैं, घोषणा की है कि कौंसिलकी आगामी बैठकमें, जो ७ जुलाईको होने जा रही है, कम्युनिस्ट पार्टी शामिल नहीं होगी।

कम्युनिस्ट पार्टीकी ओरसे यह शिकायत की गयी है कि युद्धकालके लिये किसी संयुक्त सरकारकी स्थापना नहीं की गयी है और कौंसिलके सदस्य सरकार द्वारा मनोनीत किये गये थे जब कि बाजाब्ता चुनाव द्वारा उनका निर्वाचन होना चाहिये था।

लुजोनका उद्धार

जेनरल मैकार्थरने फिलीपाइन द्वीप पुञ्जके लुजोन द्वीपकी उद्धारकी घोषणा करते हुए कहा है कि लुजोनके ८००,००० बाशिन्दोंको जापानी अधिकारसे पूर्णतया मुक्त कर लिया गया है।

लुजोनका संग्राम लगभग छै मास पूर्व प्रारम्भ हुआ जब कि अमेरिकन फौजें गत ९ जनवरीको लिंगायेनकी खाड़ीमें लुजोनके उत्तरी-पश्चिमी तटपर उतरी थीं। लुजोनको अब शीघ्रतासे जल-थल-गगन सेनाके प्रमुख अड्डेके रूपमें बदला जा रहा है जहांसे चीन तट और मुख्य जापान पर आक्रमण करनेवाली मित्र सेनाको सहायता दी जा सकेगी। इस युद्धमें १००,०००से अधिक जापानी मारे गये हैं और अमेरिकाके १५००० सैनिकोंके हताहत होनेकी खबर है।

जापानी समाचार समितिने कहा है कि जापानी वायुयानोंने सोमवारकी रातमें बोर्नियोंके पूर्वी तटपर बलिक पेपेनकी खाड़ीमें एक मित्र क्रूजरको डुबो दिया है और १०,००० टनके तेलवाही जहाजको जापानी पनडुब्बियोंने अपना निशाना बनाया।

व्यापार समाचार

गल्ला

लाही बड़ा दाना यू० पी० १६) यू० पी० १८।) लोटनी यू० पी० गब्बर यू० पी० १७॥) राई तोरा १५॥) कजली यू० पी० १६) कच्ची पी० १६) लोटनी पंजाब १७) राई १६।) तोरा पंजाब १६॥) राई १४॥) तोरा सिन्ध १५॥) तेवी सिन्ध महुआ बीची ११॥) पोस्ता दाना सफेद १९) अरहर बिहार ८।) अरहर ९) चना मोकामा १०) चना बङ्गाल चना पंजाब ११) मटरसफेद १४) मुखी १०) १५) हरा १२) मैंसा उर्द काला ९॥) ९॥) उर्द मूंग कानपुर १३=) मूंग मिर्जापुरी दाल धोआ १८।) मूंग पंजाब अरहर दाल नं० १, १८) २०) दाल नं० २, १२) १४) रेड़ी बी० डब्ल्यु ११॥) रेड़ी भागलपुर ११) पटना १०॥) मसूरी छांटी १४॥) ११) ९॥) खेसारी बङ्गाल ६) बड़ादाना खेसारी छोटा दाना ७) जौ मोटा ७) जौ पतला दाना ५) ज्वार सफेद १०)पुराना ९) बाजरा काला ४) सफेद ४॥) मोठ ७॥) मकई ७)

जूट बोरा हैसियन

वीट्वील खुला—६४-) ऊंचा नीचा ६४) बन्द हुआ ६४=)

जूट—खुला ७२=)॥ ऊंचा नीचा ७५=)॥ बन्द हुआ ७५॥=)

सोना चांदी

सोना ७८।=), गिन्नी ५२॥

सोना ७८॥=), चांदी १३३।)

झीन सीन गोल्ड टानिक पिल्स

दाम्पत्य सुखकी
अद्‌भुत कुञ्जी

व्यवहार कर अवश्य परीक्षा कीजिये

युवावस्थामें बलपौरुषहीन जीवन दुर्वह हो जाता है। सांसारिक सुखकी तृष्णा अतृप्त ही बनी रहती है। इस निराशामय जीवनके लिये प्रकृतिने जड़ी बूटियां बना रखी हैं—वह यही "झीनसीन" है। इसी झीनसीनको लेकर अन्य औषधियोंके साथ विशेषकर स्वर्णके संयोगसे ये झीनसीन गोल्ड टानिक पिल्स बनायी गयी हैं।

इनके सेवन से पुरुष-शक्ति बढ़ती है, जीवनमें ओज एवं स्फूर्ति आती है, स्वप्नदोष तुरत मिट जाता है, ढीली नसें मजबूत हो जाती हैं, शुक्रतारल्य प्रगाढ़ हो जाता है एवं नपुंसकता दूर हो जाती है। इस प्रकार मनुष्य सच्ची मर्दानगी प्राप्त कर अपना दाम्पत्य जीवन सुखमय बना सकता है। स्त्रियां इसके सेवनसे अनुपम लाभ उठा सकती हैं।

इस दवाकी उपकारिताके विषयमें डाक्टर, हकीम, वैद्य, रासायनिक, मजिस्ट्रेट आदि प्रख्यात सज्जनोंसे हजारों प्रमाण-पत्र मिल चुके हैं जो कि हमारे औफिसमें देखे जा सकते हैं। मूल्य फी शीशी रु० ५) डाकखर्च ।।≡) अलग।

सुस्व :—स्त्री-पुरुषों के उपयोगी सूचीपत्र अवश्य मुफ्त मंगाइये।

चाइनीज मेडिकल स्टोर (स्थापित १६३०)

डलहौसी स्क्वायर ईस्ट, कलकत्ता। (फोन—कल० ४५१७)

आफिस : २८, एपोलो स्ट्रीट, बम्बई, शाखाएं-नया बाजार - देहली व अहमदाबाद

AAA 290 Hindi.

चढ़ती हुई क़ीमतों को रोकिए

व्यर्थ खर्च न कीजिए

भविष्य के लिए इस समय रुपया बचाइए

इस समय रुपया लगाने की सब से अच्छी मदें हैं:—बीमा पालिसी, सहकारिता (कोआपरेटिव) समिति, बैंक और डाकखाने का सेविंग बैंक एकाउण्ट और सर्वश्रेष्ठ नेशनल सेविंग्स सर्टीफिकेट तथा सरकारी ऋण।

गवर्नमेण्ट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेण्ट द्वारा प्रकाशित।

होमियोपैथिक दवायें

पारिवारिक चिकित्सा व हैजेके बीमारीके वास्ते हिन्दी किताब डूापर सेगुनके लकड़ी का बक्स समेत १२, २४, ३०, ४८, ६०, ८४, १०४ मूल्य ४), ६), ७।।) १०) १२) १५।।) व २०) डाक खर्च अलग।

मजुमदार चौधरी एण्ड कम्पनी
९८ क्लाइव स्ट्रीट, कलकत्ता।

सफेद बाल काला!

खिजाबसे नहीं, हमारे आयुर्वेदिक केशसञ्जीवनी (सुगन्धित) तैलसे बालोंका पकना रुककर सफेद बाल जड़से काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आंखोंकी रोशनीको बढ़ाता है। जिन्हें विश्वास न हो वे दूना मूल्य वापसकी शर्त लिखा लें। मूल्य २), बाल बहुत अधिक पक गया हो तो ४) का तैल मंगावें।

श्री सदानन्दराम सञ्जीवनी औषधालय
नं० २०, पो० वारसलीगंज, (गया)

चाय शान्तिदायक है
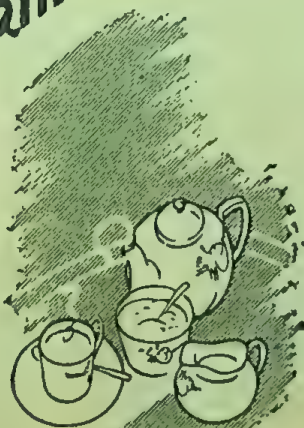
भारत का सबसे बढ़कर आराम देनेवाला पेय

★

इण्डियन टी मार्केट एक्सपेन्शन बोर्ड द्वारा प्रचारित

IN 107

फ़िल्मी-गाने!

हूबहू असली तर्जमें घर बैठे सीखना चाहें तो "फिल्म सङ्गीत" मंगाइये। अबतक ९ भाग प्रकाशित हो चुके हैं। प्रत्येक भाग में ७० फिल्मी गायनों की पूरी-पूरी स्वरलिपियां दी गयी हैं। मूल्य प्रतिभाग ३) डा० ।=)

मासिक पत्र "सङ्गीत" भी बराबर निकल रहा है, वार्षिक मू० ४=)

पता-संगीत कार्यालय, हाथरस-यू० पी०

नष्ट हुए दाम्पत्य सुख के लिये

जीवन

विहार तैल ५) डा० १।)। कृश-दुर्बलता, शिथिलता, नामर्दी आदि गुप्त रोगोंको नष्टकर शरीरको नयी ताकत और चेहरेको कान्तिवान बनाकर गार्हस्थिक सुख प्रदान करता है। सभी दवाएं मिलती हैं। एजेंट चाहिये।

भारत भैषज्य भण्डार

१०८, तुलापट्टी कलकत्ता।

स्थापना १६२६] जुकाम, सर्दी पर अक्सीर उपाय [र० नं० १८९६

आरोग्य १८६६ नीलगिरि तैल — वापरो —

सूरज छाप

खाण्डालेकर बंधू. बम्बई ४.

हैजा, मलेरिया, इन्फ्लुएञ्जा, प्लेग, टायफायड आदि बीमारियोंमें बचानेवाला। १ औंस शीशी ≈ आना, दर्जन ५।।≈), डा० ख० अलग।

युकलिप पेन, बाम तथा दादका मरहम हमारे कारखानेमें बनता है। एक बार इस्तेमाल कीजिये।

अत्यन्त शुद्ध!

ऐलेनबरीज़ के कैस्टर आयल अत्यन्त शुद्ध ही नहीं है बल्कि यह स्वाद तथा सुगंध रहित भी है। कब्जके लिये यह सर्वोत्तम औषधि है—बच्चों तथा युवकों दोनों के लिये उपयोगी है।

प्रस्तुतकर्ता—ऐलेन एण्ड हैनबरीज़ लि० (इंगलैण्डमें संगठित)
लाइव बिल्डिंग्स, कलकत्ता

Allenburys CASTOR OIL

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

८—२९ कलकत्ता १८, जुलाई, १९४५, Calcutta, JULY 18, 1945. मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

आविष्कार या हठ

न्त्रोंपर हिटलरका नाजायज विश्वास र्मन वैज्ञानिकोंका नये आवि- लिये असामयिक हठ और पन जर्मन पराजयके अनेक में खास स्थान रखता है । नये- नुसन्धानोंमें जर्मन वैज्ञानिक बुरी रहे। उनकी आंखें आगामी शता- स पारकी योजनाओंपर लगी थीं; की विन्ताने वर्तमानके प्रति उन्हें बेरवाह बना दिया कि मामला विगड़ गया ।

र्मन वैज्ञानिकोंका यह विश्वास था का उनका आविष्कार पूर्णताके हुंच गया है उनका राकेट एक बारगी मीलकी उड़ान भर सकेगा; उनका मुद्रके गर्भसे आसमानमें आग उग- र्ष होगा । जर्मन वैज्ञानिक सोच कि आगामी १९-२० वर्षोंके भीतर भसागरके आरपार राकेटकी सहा- गाल होनेकी योजना त्रे पूरी कर लस्वरूप उनका राकेट अभूतपूर्व आवागमनकी प्रणालीमें क्रान्ति- रिवर्तन ला दुनियाकी आंखोंमें त्पन्न कर देगा ।

वैज्ञनिकोंकी अपूर्ण योजनाओंमें भूप्रदेश और शहरोंको सूर्यकिरणके जलाकर स्वाहा बनानेकी उनकी विलक्षण सूझ और कल्पना-शक्तिका आकर्षक है । उक्त योजनाके अनुसार सकशक्तिको पृथ्वीसे ५ हजार मील पर, जहां पृथ्वीकी आकर्षणशक्ति होती है, दो मील बर्ग विशाल र केन्द्रीभूत कर उपयुक्त करनेका ।

न वैज्ञानिकोंके आविष्कार सम्ब- नेका दूसरा प्रमाण बॉल्टिकतट है वैमण्डी नामक स्थानपर ब्रिटिश विभागके अधिकारियोंको हाथ यह प्रस्तावित गुप्तास्त्र उड़ाकू रूपमें दुनियाका प्रकाश देखता । नाके अध्ययनसे ज्ञात होता है कि महत्वमें पंखियां लगाकर उसे समुद्री वायुयानकी तरह उड़ाका बनाया जाता और उन्हीं पंखियोंकी सहायतासे उक्त उड़ाकू यू-बोट समुद्रमें भी गोते लगा सकता। इस योजनाके साथ जो कुछ दूसरे कागजात बरामद हुए हैं उनमें लिखा है कि यह योजना करीब पन्द्रह वर्षोंमें पूरी होती। ऐसे धुरन्धर और खूंखार वैज्ञानिकोंका दल अब ब्रिटिश और अमेरिकन सरकारोंकी शरणमें रहकर अपनी योजनाओंको सफल देखनेको इच्छुक है ।

मधुसंचय
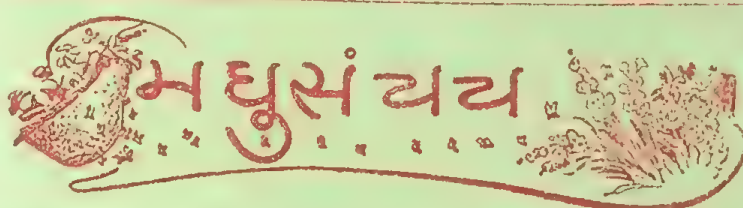
शिमलामें—महात्मा गांधीके साथ श्री राजगोपालाचार्य ।

हीरेकी उपयोगिता

हीरेकी उपयोगिता सौन्दर्य-क्षेत्र तक-ही सीमित नहीं है बल्कि कितने महत्व-पूर्ण उद्योग धन्धोंके लिये भी वे अनिवार्य हैं। हीरा कार्बनका विकसित स्वरूप है। खानसे निकलनेके बाद विभिन्न यान्त्रिक प्रक्रियाओंसे गुजर कर यह असली रत्न के रूपमें सामने आता है। कच्चे हीरेमें चमक नहीं होती और वह साधारण शीशेके टुकड़े की तरह मालूम होता है। हीरेकी चमक और भावी मूल्य हीरेकी कटाईकी सफाई पर निर्भर करता है। जितनीही सफाईसे हीरा काटा जायगा, उसपर पड़नेवाले प्रकाशकी किरणें उतनेही टेढ़े रूपमें प्रति-बिम्बित होंगी। चूंकि उसके सभी कटे हुए कोनोंसे जो प्रकाश भीतर जायगा वह किरणोंके टेढ़े होनेके कारण भीतर ही भीतर प्रतिबिम्बित होगा इसलिये उसकी चमक भी आंखोंमें चकाचौंध पैदा करनेवालीहोगी। इसके विपरीत,यदि उस हीरेके ही आकारके एक साधारणसे टुकड़ेको ठीक उसी तरह काटा जाय तो उससे वह चमक पैदा नहीं होगी। उसपर पड़नेवाला प्रकाश सीधे बाहर निकल जायगा, क्योंकि वह प्रकाश-की किरणोंको टेढ़े रूपमें प्रतिबिम्बित करने में असमर्थ है ।

कुछ हीरे ऐसे भी होते हैं जो अन्धेरेमें भी चमकते हैं । इसका कारण बिलकुल दूसरा है। इस प्रकारके हीरोंके भीतर इतने अधिक विद्युत्-कण होते हैं जो उसके भीतर नहीं समा पाते और बाहर निकलने की चेष्टा करते रहते हैं। उनकी इस क्रिया के फलस्वरूप उनसे निरन्तर प्रकाश निक-लता रहता है ।

हीरोंके छोटे-छोटे घड़ियों, बिजली के मीटरों तथा इसी प्रकारके दूसरे यंत्रों की गतिको नियमित करनेके काममें लाये जाते हैं । शीशे और पत्थरको काटनेके लिये भी हीरा काममें लाया जाता है। हीरा स्वयं हीरेको भी काटता है । संसार-में जितने भी धातु आजतक पाये गये हैं हीरा उन सबसे कड़ा होता है, इसलिये उद्योग-धन्धोंमें वह बड़े कामका सिद्ध होता{ ।

बालोंसे भी बारीक तारोंको खींचने के काममें भी हीरा काममें लाया जाता है। वे तार बिजलीकी बत्तियों और रेडियोके उपयोगमें लाये जाते हैं। हीरेका एक सांचा बनाया जाता है जिसके बीचमें एक बहुत ही सूक्ष्म छिद्र रहता है, उस छिद्र में बारीकसे बारीक तार खींचे जा सकते हैं ।

४४ बार रक्तदान देनेवाली महिला

शिकागोके एक सैनिककी ब्रिटिश पत्नी ने सन १९३७ से आजतक रोगियोंकी चिकित्साके लिये ४४ बार अपना रक्त दान-के रूपमें दिया है—इस दानकी औसत प्रति दो महीनेके उपरांत एक बार हुई ।

इस महादानके सिलसिलेमें उक्त महिलाने एक बार अमेरिकामें और तैंता-लीस बार इङ्गलैण्डमें अपना रक्त दिया है। इंगलैण्डके रक्त बैंकसे अमेरिकन बैंकोंकी तुलना करते हुए रक्त याचकको उस महिला-ने बताया है,"रक्त-दान स्वीकार करनेका आपका ढंग कहीं अधिक सुन्दर और सिल-सिलेवार है ।"

वायुयानकी गति प्रतिघंटे१ लाख मील

लाकहेड एयर क्रैफ्ट कारपोरेशनके चीफ इंजिनियर मि० हाल एल ही बार्डने कहा है कि अमेरिकामें लोग ऐसे वायुयानोंके निर्माणमें संलग्न हैं जिनकी गति प्रतिघंटे १ लाख मील होगी और जो आकाशमें सौ मीलकी ऊंचाईपर उड़ेंगे। आपके द्वारा ही "शूटिंग स्टार" नामक वायुयानका ढांचा प्रस्तुत किया गया है। आपने संवाददाताओं को यह भी बतलाया कि उपरोक्त वायुयान निर्माण सम्बन्धी सारी कठिनाइयां दूर हो गयी है और जो थोड़ी बहुत बच रही हैं उन्हें सुगमतासे दूर किया जा सकता है ।

विनोदात्मक सामयिक कहानी—

❋ चपरासी ❋

(लेखक—श्री सुबोध मिश्र)

साहबकी पूजासे पहले चपरासी पूज्य होता है। साहबका आपपर लाख अनुग्रह क्यों न रहे, चपरासी जबतक प्रसन्न नहीं, आपकी दाल गल-गल कर भी नहीं गल पायेगी। बखसीसकी दुअन्नी-चवन्नी साहब की खोपड़ीपर जादूका असर कर दिखाती है। साहब यदि एक अटेची हैं तो चपरासी उस अटेचीकी चाबी।

किन्तु, लाला चपातीलाल बखसीसके खर्चको एकदम नाजायज समझते थे। उनका आवागमन इन दिनों, विशेष रूपसे, डी० एस० ओ० साहबके यहां हुआ करता था क्योंकि लालाजी 'नम्बरी' व्यापारियोंमें-से थे।

चपरासियोंके ऊपर उन्होंने यह प्रभाव जमा रखा था कि वे यदि चाहें तो उनकी नौकरी तक खा-जा सकते हैं क्योंकि उन्हें साहबसे कुछ खास रिश्तेदारी है। उन्होंने साहबको अपनी मुट्ठीमेंकर रखा है। लड़ाईके पहले न तो यह ओहदा ही था और न साहब ही इतने बड़े हाकिम थे। सो, उस समय लाला चपातीलालके समधी, साहब को, उधार-खाते, रसद दिया करते थे!

रिश्तेदारीको साबुन तखिया बना कर लालाजी छुटके व्यापारियोंसे चोर-बाजारी मतलब गांठनेमें सफल होते थे और, अन्यान्य व्यापारियोंपर, कुछ विचित्र-सा 'इन्फ्लूएन्स' भी जम गया था। कण्ट्रोलकी बकलोल आंधीमें लालाजी जो कुछ भी बोलते वह साहबरूपी बाबाका प्रमाणित वाक्य हुआ करता। सिफारिशोंकी मदद मांगने वाले व्यापारियोंकी लालाजीके दरवाजेपर भीड़-सी लगी होती। अर्थहीन रिश्तेदारीके प्रभावके प्रचारसे लालाजीको 'सूंघने' का सर्वथा नवीन एवं सुरक्षित मार्ग निकल आया था।

चीनीका राशन हुआ। हर वार्डके लिये अलग-अलग दूकानें खोल दी गयीं। प्रतिवार्डके वितरित कार्डकी तौलके अनुसार दूकानदारोंको चीनीका कोटा मिला। दूसरेको जहां आठ-दस बस्तेपर ही सन्तोष करना पड़ा वहां लालाजीने तीन बस्तेका कोटा देखकर पौ-बारहकी आवाज लगायी। यह सब रिश्तेदारीका ही तो फल है?

मगर बात असलमें यह थी कि लालाजी की दूकान जिस वार्डमें पड़ती थी उसकी जन-संख्या औरोंकी अपेक्षा तिगुनी थी। किन्तु, इस बारीकीकी ओर किसीका भी ध्यान न गया। लालाजीका नक्कार बोलने लगा और अन्य व्यापारी तूती बनकर चुप-चाप निहारने लगे। कुछ लोगोंने साहबकी ईमानको कोसा और कुछने यह आह ली कि जमाना ही है लाग-भाग और पहुंच की।

लालाजी यदा-कदा साहबके बंगलेपर केवल सलाम बजानेके लिये ही आया करते थे। इतनेमें ही इस तरह पसीना-पस्त हो जाते थे कि जैसे नानी ही मर गयी हो। मगर साथियोंमें बोघे भरकी बातें बघाड़ा करते थे कि क्या नहीं कर सकता हूं मैं, आज?

लेकिन, करीमके कलेजेपर लालाजी सांपके जैसा लौटते थे। करीम सोचता कि चपरासी तो हमसे भी कुछ-न-कुछ घूंस ही ले सकता है, मगर यह चपाती लाल...।

घटखरेकी कतर-ब्योंत, डंडीकी कनखी तथा फेंट-फांट आदि विधियोंसे लालाजी रजिस्ट्रीशुदा चीनी भी चुपके-चुपके हलवाइयोंके हाथ बारह आने सेर बेचते रहे।

किरासन तेलकी बारीआयीतो लालाजी की लालचने एक और करवट ली। किरासन तेल, रिश्तेदार साहबकी कृपासे, उनके लिये बहती गङ्गाकी धाराके ऐसा पुण्य-युक्त कार्य करेगा जिसमें लालाजी गोते लगायेंगे और रुपयेकी तीन अठन्नी बन जायेगी।

भोरे-भोर साहबके बंगलेपर दाखिल हुए। तेलके कोटेके लिये आवेदनकी उस दिन आखिरी तारीख थी। रिश्तेदारीका प्रचार इतना बढ़ गया था कि आवेदन-पत्र लिखाने में कलई खुल जा सकती थी। स्वयं खाली डंडी पकड़ना ही जानते थे कलमका अस्तित्व रोकड़ लिखने भरको ही समझ पाये थे और मामला तो यहां रंगरेजीका ठहरा!

सलामसे बढ़कर साहबको आखिर चाहिये भी क्या? इतने दिनोंका सलाम बेकार नहीं जा सकता।

उस समय करीम ड्यूटीपर था। उसने सोचा कि आज गिलहरी रंग जरूर लायेगी।

लालाजीको उसने टका-सा जवाब दिया कि आज साहबसे मुलाकात नहीं हो सकती, तो लाला जी झिड़के। करीमने आकर कहा कि साहब अभी न्यूज देख रहे हैं।

थोड़ी देर बाद लालाजीने उसे पुनः जाकर साहबसे सलाम बोल आने कहा तो करीम ने खबर दी कि साहब अभी कोई फेहरिस्त तैयार करनेमें लगे हैं।

इसी तरह पांच-पांच मिनट पर लाला जी उत्सुकतावश करीमको तङ्ग करते रहे और करीम टाल-मटूल करता रहा। आखिरी दफे उसने आजिज होकर कहा कि साहब इस समय कमोट-रूममें हैं। लाला जी पन्द्रह मिनट पर फिर बोले। करीम सीधे कमोट वाले घरके दरवाजे पर पहुंच गया और बोला—"साहब...!" उत्तरमें खांसनेकी आवाज आयी और करीम सिट-पिटाया-सा लौटा।

लाला जी करीम पर बिगड़ गये कि हरामी कहीं का! तू मुझे बकमा[illegible] है!—मेरे नामसे भला साहबके[illegible] देर!!

करीम पुनः दरवाजे पर पहुं[illegible] किवाड़ खटखटाने लगा—"हुं[illegible] मालिक, वे खा-म-ख्वाह मेरी [illegible] रहे हैं! कहते हैं, साहबको, [illegible] से, जल्दी आने कहो!..."

इहाम्से किवाड़ खुला और [illegible] अण्डर वियर ठीक करते हुए [illegible] करके बैठककी ओर लपके। [illegible] रुख देखकर कुत्ते ने दो कदम आगे [illegible] स्वामि-भक्तिका परिचय दिया। [illegible] अभी एक बार भी अच्छी तरह [illegible] थे कि लाला जी दुम समेट कर भाग[illegible] कुत्ते ने बुरी तरह उनका पीछा [illegible] अपने मनमें हंसते-हंसते लोट-पोट [illegible] लालाजीकी चीनीकी लायसेन्स [illegible] गयी। दूकान पर कण्ट्रोली छाप [illegible] चोर-बाजारी ढोलकी बहुत सी [illegible] गयी और अब रिश्तेदारीकी [illegible] जी लाल पगड़ी वालोंकी काली [illegible] वाली हवेलीमें खिचड़ीका रसास्वाद[illegible] रहे हैं।

आशा-गीत

——::॰::——

मैं राजा तुम रानी!

आशे, मैं राजा तुम रानी!!

तुम कितनी सुन्दर लगती हो
जब मेरे मनमें पगती हो
जीवन-धन की चंचल-चपला
पर तुम पल-पल में ठगती हो
दूर-दूर भगती फिरती क्यों :?
लुक-छिप कर दीवानी!

आशे, मैं राजा तुम रानी!!

अब न रूठना नवल किशोरी
दूर न होना चोरी—चोरी
एक सहारा मुझे तुम्हारा
अबसे मत करना झकझोरी
तुम अपनी तो दुनिया अपनी
कौन कहे बेगानी!

आशे, मैं राजा तुम रानी!!

—'लाला' जगदलपुरी

चलती [illegible]

उनका निवेदन

ओ, मेरी पिक बैनी!
पड़ी सदा [illegible]
बन कर [illegible]
मान, मान, मत गाल फुला अब,
हांक प्रेम का [illegible]!
डूब गयी है [illegible]
खोज डाल [illegible]
इस सड़े बुढ़ापे में मैं,
तेरे बिन बना निमट्ठू!
आजा, आजा, [illegible]
ओ, मड़ियल, [illegible]
नानी-सी हो गयी उम्र है,
फिर भी तू गुल टैनी!
ओ, मेरी, [illegible]

उनकी चिट्ठी

मैं नया संसार का,
है प्रेम अप-टू-डेट!
मैं तुम्हारे दिल [illegible]
बनूं सिगरेट;
तुम नया हाकिम [illegible]
मैं बनूंगी, [illegible]
तुम सरौता बनो, तो मैं
सरौते की बेंट;
प्रेमका 'मिक्सचर' बना लूं
दो-दिलों को फेंट!
शर्त है मंजूर? 'मैरे[illegible]
नहीं तब '[illegible]
अजी, इस 'स्टार' [illegible]
बहुत 'कैण्डीडेट'
मैं नया संसार का,
है प्रेम अप-टू-डेट!

———

पुस्तकालयका महत्व

———*:o:*———

लेखक—श्री लक्ष्मीनारायण सिंह सुधांशु एम० ए०

पुस्तकालय हमारे समाजका वह विश्व-
...य है, जहां प्रत्यक्ष रूपमें अध्यापक
...क भी नहीं रहते, लेकिन विद्यार्थियोंके
...उसके अनेक पाठक होते हैं। अध्यापक
...न पुस्तकके लेखक या कवि स्वयं
...न करते हैं। इसी कारण यदि पुस्तकों
...ध्याय किया जाय तो किसी अध्या-
...माध्यमकी आवश्यकता नहीं होती।
...पुस्तकोंका महत्व कितना है, यह
...लतासे नहीं समझते। इसका कारण
...कि जीवनको हमने समझनेकी कभी
...ही नहीं की। हमारे धर्म-शास्त्रमें
...य धर्मका एक रूप माना गया है।
...यको तपकी संज्ञासे पुकारा गया है।
...प्रत्यक्ष कारण क्या है? अच्छे कर्ममें
...जीवनके संस्कारको उद्दीप्त करनेकी
...रहती है। वस्तुतः संस्कार कुछ ऐसी
...स्तु नहीं है जो ऊपरसे लादी-लदाई
...। संस्कार शरीरके रस-रक्त, जीवन
...प्राणके साथ सन्निहित है। स्वाध्याय
...हम अपने संस्कारोंको पुष्ट और
...त कर सकते हैं। चित्तमें अच्छे-बुरे
...संस्कार प्रसुप्त रहते हैं, जगानेपर वे
...त होते हैं। यदि अच्छे ग्रन्थोंका
...य किया जाय तो अच्छे संस्कारोंको
...प्राप्त होगी, और बुरे ग्रन्थोंसे हमारे
...कार विकसित होकर हमारे जीवनको
...त-मलिन कर देंगे। इसी कारण
...स्वाध्यायको तप कहा जाता है वहां
... ग्रन्थोंके स्वाध्यायसे ही तात्पर्य
...।

...के बुरे भाव या विचारका बुरा ही
...म होता है और अच्छेका अच्छा ही।
...सा नहीं हो तो बीज-अंकुर नियम
...हीं हो सकता। कुत्सित विचारसे
...था दुर्बलता, आलस्यसे असत्यता,
...ता, तथा द्वेष और निन्दाके भावसे
...को कष्ट दिया जाता है। सत्यता,
... पवित्रता, प्रसन्नताके विचारसे शरीर
... पौरुष तथा सौंदर्यकी झलक मिलती
...भाव या सद्विचारमें स्वभावतः
...सन्निहित है। इसकी सत्यता इसी
... प्रमाणित हो जाती है कि जिस
...के हृदयमें पवित्र भाव रहते हैं उसका
...ल दीप्तिमय झलकता है। सद्विचार
... स्फूर्ति और चेतना है जिससे रक्तका
...र भी बदल जाता है। बुरे विचारों
...व भी तदनुसार रक्तपर पड़ता और
... विषाक्त बना डालता है। कुछ लोग
...नते हैं कि जिनका मन पवित्र रहता
...ो शारीरिक क्लेश भी कम होता
...से शारीरिक रोग अप्रत्यक्ष रूपसे
...मानसिक दुर्भावोंके परिणाम होते
...ध्यात्मवादी तथा वैज्ञानिक इसकी
...के सम्बन्धमें अनेक प्रमाण दे सकते
...के मतोंकी बिना छान-बीन किये ही
...क जगतमें ऐसे अनेक दृष्टांत देखते
...साधारणतः उस कथनकी सत्यताको
...करते हैं। ईर्ष्या-द्वेष, निराशा-
...स-क्रोधसे मनुष्यका शारीरिक
... तथा सौंदर्य विनष्ट हो जाता है।
...था चिड़चिड़ेपनसे गालोंपर झुर्रियां
...ती हैं। शांत तपस्वी और दुर्दान्त

हत्यारा, दोनोंके मुखोंपर उनके हृदयके भाव स्पष्ट अङ्कित रहते हैं। स्वाध्यायके द्वारा हम अच्छे भाव तथा विचारोंको अपनाकर अपने मन-प्राणको सबल बना सकते हैं। यह विषय बहुत उपयोगी है, लेकिन हमारे जीवनकी प्रवृत्ति कुछ ऐसी है कि प्रत्येक उपयोगी वस्तुके प्रति वह आकर्षित नहीं होती। जब-तक हम प्रवृत्तिको सचेष्ट नहीं करते तबतक उस ओर वह अग्रसर ही नहीं होती। प्रयो-जनसे रुचि उत्पन्न करनेकी चेष्टा होती है और रुचिसे ही विषयका अवधान होता है। कुछ विषय जीवनमें ऐसे हैं जो हमारी प्राकृतिक रुचिके साथ सम्बन्ध रखते हैं, लेकिन अनेक विषय ऐसे हैं जो हमारे जीवन को परिपुष्ट करनेकी दृष्टिसे बड़े ही महत्व-पूर्ण हैं। उनकी ओर हमारी स्वाभाविक रुचि नहीं होती। हमें रुचिका अर्जन करना पड़ता है। रुचि संवेदनका ही एक अङ्ग है। जिस वस्तु या भावके साथ हमारी आत्म-भावनाका कुछ-न-कुछ सम्बन्ध रहता है उसके प्रति हमारी स्वाभाविक रुचि-सी हो जाती है। यदि हम इस तथ्यको स्वीकार करें कि स्वाध्यायसे जीवनका विकास सम्भव है तो स्वाध्यायके लिये स्वाभाविक रुचिके स्थान पर अर्जित रुचिसे भी काम चला सकते हैं। जिस वस्तुके साथ स्वार्थ तथा प्रयोजनका सम्बन्ध हो उसके प्रति रुचिको प्रेरणा मिल जाती है। आरम्भमें स्थूल वस्तुके प्रति ही हमारी रुचि जगती है, उसके बाद वह स्वभावतः सूक्ष्मके प्रति उन्मुख होने लगती है।

स्वाध्यायसे हमारे विचारमें तदनुकूल परिवर्तन होता है और विचारके बदलते ही संसारको देखनेका हमारा दृष्टिकोण भी बदल जाता है। दृष्टिकोणके बदलते ही, हमारे जीवनमें ऐसे अनेक परिवर्तन होने लगते हैं जो स्वाध्याय-प्रसूत कहे जा सकते हैं। कोई भी विचार अनन्तकालतक प्रच्छन्न नहीं रखा जा सकता, वह अत्यन्त सूक्ष्म रूपसे विकीर्ण होता ही है। मनुष्यका स्वभाव बन-कर उसके कार्य रूपमें वह प्रकट होता है। जीवनमें जब कभी हम किसी अच्छे या बुरे भावको ग्रहण करते हैं तब उसका कुछ न कुछ संस्कार हमारे चित्तपर पड़ ही जाता है। किसी बर्तनमें दूध डालकर फिर उसे फेंक दिया जाय तो उस बर्तनमें दूधका संस्कार बना ही रहेगा। भौतिक जगत्का यह सत्य मानसिक जगत्में भी उसी प्रकार सत्य है। किसी परिस्थितिके कारण जब कभी हमारे चित्तपर बुरे विचारोंका प्रभाव पड़ जाता तब उस प्रभावके अनुसार कुछ-न-कुछ बुरा कर्म करनेके लिये हमें बाध्य होना ही पड़ता है। हमें कुछ करना होता है तो भलाईके बदले किसीकी बुराई ही कर बैठते हैं। समाजमें ऐसे लोग भी हैं जो बहुत अभिमान के साथ यह कहा करते हैं कि भलाईके कारण ही उन्हें बुराई उठानी पड़ती है। वस्तुतः यह प्राकृतिक नियमके विपरीत है और इसी कारण असत्य है। जो प्राकृतिक है वही सत्य है। भौतिक जगत्में जो नियम हैं, आध्यात्मिक जगत्में वे असत्य नहीं हो जाते जबतक मनुष्य अपने हृदयसे सब प्रकारके कुत्सित विचारोंको निकाल नहीं देता तब-तक उसे यह कहनेका अधिकार ही क्या है कि अपने सद्विचारोंके कारण उसे दुःख उठाना पड़ रहा है? दुःख होता भी कैसे है? जब अपनी आन्तरिक स्थितिसे बाह्य स्थिति-का सामंजस्य नहीं होता तब हमें दुःख मालूम होता है। दुःख इस बातका सूचक है कि दुखी व्यक्ति स्वयं अपने और अपनी सत्ताके सिद्धांतके बीच व्यवधान रखे हुए है। सुखमें आन्तरिक तथा बाह्य स्थितियोंमें पूरा मेल बना रहता है। सुख-स्वास्थ्य और सौभाग्य इस बातके चिह्न हैं कि आन्तरिक तथा बाह्य स्थितियां एक-सी हैं और वह व्यक्ति अपनी बाह्य अवस्थाके साथ सहानुभूति रखता है। हम अपने जीवनमें सदैव प्रत्यक्ष सुखका अनु-भव नहीं करते, काल्पनिक सुख भी हमारे जीवनको ओतप्रोत किये रहता है ऐसे सुख का भी महत्व जीवनमें कम नहीं है, उसको नगण्य समझकर हम छोड़ नहीं सकते। प्रत्यक्ष सुखकी तरह काल्पनिक सुख भी हमारे शरीरकी स्नायुओंपर हितकर प्रभाव डालते हैं। काव्य साहित्यके स्वाध्यायसे ऐसा प्रभूत सुख अर्जित किया जा सकता है। प्रकृतिकी भिन्नताके कारण सुखकी प्रकृतिमें भी भेद माना जाता है। ऐसे अनेक मनुष्य मिलेंगे जिन्हें वीर-रसपूर्ण काव्यसे शिरमें दर्द हो जाता है पर किसी करुणापूर्ण काव्यको पढ़कर उनका हृदय आनन्दसे उद्वे-लित हो उठता है। ऐसे जन भी हमारे बीचमें कम नहीं हैं जो शृङ्गारिक प्रवृत्तियोंसे अधिक भयानक रसका ही आनन्द लेते हैं।

जगत् और जीवनके सम्बन्धको देखते हुए हमारे ऊपर जितने प्रतिबन्ध लगे हुए वे प्रत्यक्ष जीवनकी सरसताको कभी-कभी कम कर देते हैं। जीवनसे कभी ऊबकर, घबड़ाकर, हम भागना चाहते हैं, किन्तु जीवनकी परिधिसे बाहर हमें भागने-की क्षमता ही नहीं। गर्दनको हिला-डुला-कर फिर उसी जुएका भार लेना पड़ता है। इसे जीवनका संग्राम कहिये या द्वन्द्व। जीवनकी कठोर सत्यतासे हम भागकर कुछ ऐसे बन्धनहीन स्थानमें पहुंचनेकी चेष्टा करते हैं जहां हमें खुली सांस लेनेका अवसर मिल सके। काव्य-साहित्यके स्वाध्यायमें हम इस पलायन-वृत्तिको बहुत कुछ प्रश्रय दे सकते हैं। वस्तुतः यह पलायन जीवन-संग्रामके पराजयका पलायन नहीं है, प्रत्युत् शक्ति-सञ्चय करनेके लिये कुछ कालअवकाश-ग्रहण करना है। जीवनके द्वन्द्व या संघर्षसे बचनेके लिये जो विषयान्तरका मार्ग पकड़ा जाता है उसे आजकलकी समालोचना-पद्धतिमें पलायनवाद कहा जाता है। स्वा-स्थ्य सुधारके लिये लोग सुन्दर और स्वा-स्थ्यकर स्थानोंको जाते हैं, दिन-रात काम करते-करते कुछ दिन विश्राम या मनोरंजनके लिये भ्रमणमें कहीं बाहर निकल पड़ते हैं, इसी प्रकार मानसिक संघर्ष तथा द्वन्द्वसे कुछ क्षणके लिये अपना बचाव करनेके हेतु लोग काव्य साहित्यकी शरण लेते हैं। बड़े-बड़े नगरोंमें जहां जीवनका द्वन्द्व जितना जटिल है, जहां जीवन संग्रामसे थककर विश्राम तथा मनोरंजनकी इच्छा आग्रत होती है वहां मनोरंजनके भी भिन्न-भिन्न साधन रहते हैं। बड़े बड़े सिनेमा घर इसी पलायन-वृत्तिके पोषक माने जा सकते हैं। बाह्य जगत्के संघर्षसे पलायन कर कल्पना जगत या काव्य-साहित्यमें निर्द्वन्द्व होकर विचरण करना अपेक्षाकृत बहुत सरल है। कुछ दार्शनिक पलायनवादका विरोध करते हैं, पर कुछ समालोचक ऐसे भी हैं जो धर्म तथा दर्शनकी तर्क-फेनिल विशालताको इसी पलायनवादका परिणाम मानते हैं। पलायनवाद सदैव बुरा नहीं माना जा सकता। जीवनमें उसकी निश्चित आव-श्यकता है। उसका दुरुपयोग करना एक भिन्न बात है। यदि हम सारे काव्य-साहि-त्यको पलायनवादी मनोवृत्तिका ही परि-णाम मान लें तो वस्तुतः उसके साथ बड़ा अन्याय होगा। काव्य-साहित्यमें जीवनका जो गांभीर्य है वह पलायनवादके सम्बन्धमें अंशतः नष्ट हो जाता है। जो लोग केवल मनोरंजनके लिये काव्यादिका अध्ययन करते हैं वे मनोरंजनका वह तात्विक अर्थ नहीं समझते जिसका सम्बन्ध उसके साथ है। काव्य-साहित्यको मनोरंजन मात्रका साधन कहना उसके महत्वको हीन करना है। मनोरंजन जैसी हलकी चीज काव्यकी गुरुताको नहीं प्राप्त कर सकती है। काव्य-साहित्यके अध्ययनसे हमारा मनोरंजन अवश्य होता है, किन्तु मनोरंजनमात्र ही उसका साध्य नहीं रहता। यदि सत्काव्यका प्रभाव हम अपने चित्त पर अङ्कित करना नहीं चाहते तो काव्यादिका पठन-पाठन व्यर्थ ही समझना चाहिये। अन्य कई तरहके खेल-कूदोंसे या दूसरे दृश्योंसे हमारा मनोरंजन हो सकता है। काव्य-साहित्यका साफल्य और महत्व केवल इसी बातमें है कि वह जीवनके साध्यको प्राप्त करा देनेमें अधिकसे-अधिक सहायक हो। काव्य या कोई दूसरी कला स्वतः आनन्द या सौंदर्य से पूर्ण नहीं है, वह सौंदर्य तथा आनन्दके अनन्त भाण्डारकी ओर प्रेरणा तथा गति-के साधनस्वरूप हैं।' कोई काव्य केवल इसी कारण अच्छा नहीं माना जा सकता कि कुछ देरके लिये उससे पाठकका मनबहलाव हो जाता है, बल्कि काव्यका महत्व मनो-रंजनके साथ-साथ जीवनको स्फूर्ति और शक्तिसे पूर्ण बनानेमें योग देना है। जो काव्य हमें लोक-कल्याण या कम-से-कम आत्म-कल्याणमें सहायता देता हो वही सत्काव्य माना जा सकता है।

मनुष्यको केवल पापसे हटा देनेसेही जीवनका सुफल नहीं मिल सकता। पुण्यकी ओर आकर्षित होनेके लिये भी कोई मनो-रंजक चित्र चाहिये। मनुष्यकी आध्या-

(शेष १० वें पृष्ठ पर)

पर हित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

विश्वामित्र

सत्य नंगा हो गया

——):: :(——

प्रत्येक राष्ट्रके जीवनमें ऐसे विकट और सङ्कटपूर्ण अथच महत्वपूर्ण अवसर आते हैं जब साहसके साथ, सचाई और सरलताके साथ,—छल कपट और धूर्तताको तिलांजलि देकर,— दृढ़ता और एक निष्ठाके साथ, परस्परके मतमतांतरको उस समयके लिये भूलकर उनका सामना करना चाहिये। आज हमारे सामने ऐसी ही भयावह, विकट और जटिल स्थिति है। हमारे लिये तो यह जीवन मरणका प्रश्न है ही, संसारके लिये भी भारतकी वर्तमान स्थिति कम महत्वपूर्ण नहीं है। यह स्थिति आजकी मौजूदा पीढ़ीके लिये नहीं आनेवाली पीढ़ीके लिये भी महत्वपूर्ण है। सम्मान-स्वाभिमानपूर्वक स्वतन्त्र होकर हम रहना चाहते हैं या अपनी संकुचित और संकीर्ण घृणित मनोवृत्तिके कारण, अपने स्वार्थको सर्वोपरि रखनेके कारण पीढ़ियोंतक परतन्त्र रहकर अपमानका जीवन बिताना चाहते हैं, आज हमारे सामने ऐसा ही प्रसङ्ग और सङ्कटकाल उपस्थित है।

ऐसी स्थितिमें कोई भी विवेकशील और बुद्धिमान व्यक्ति अपने पूर्व-निश्चित आग्रह और बद्ध-धारणाके कारण देशका अहित साधन नहीं कर सकता। हम जब यह बात कहते हैं तब इस बातको अच्छी तरह ध्यानमें रखकर ही कहते हैं कि वर्षोंका मनोमालिन्य, परस्पर विरोधी स्वार्थ,—जिनके फलस्वरूप हिन्दू और मुसलमान एक दूसरेकी गर्दनपर छुरी चलाते नहीं हिचकते,—चुटकी बजाते ही काफूर नहीं हो जा सकते। हम यह भी जानते हैं कि राजनीति मानव जीवनमें अपना सर्वोच्च और सर्वाधिक प्रभावशाली स्थान रखती है। किंतु, हमारा कहना इतना ही है कि राजनीतिको,जो आज कलकी कपट दुनियामें आधार-भ्रष्ट हो गयी है, सत्य और न्यायसे दूर खसक गयी है, स्वयं मानवसे अधिक महत्व न दिया जाना चाहिये। मि० जिन्ना अपने आचरणसे, अपने कामोंसे यही परिचय दे रहे हैं कि उनके लिये कोटि-कोटि अन्न वस्त्र पीड़ित-त्रस्त मुसलमानोंके जीवनसे मुस्लिम लीगका राजनीतिक जीवन, दूसरे शब्दोंमें उनका अपना कर्तृत्व अथवा मुस्लिम भारतका फुहरर बननेकी उनकी दुर्दान्त अभिलाषा अधिक मूल्यवान और महत्वपूर्ण है।

शिमला सम्मेलनने एक बार फिर सत्यको नङ्गा कर दिया है। दुराग्रह और धूर्त नीतिकी फिर विजय हुई है। लार्ड वावेलकी तरह हम भी कहते हैं कि यह दुर्भाग्यकी बात है कि सम्मेलन असफल हो गया। किंतु अब प्रश्न तो यह उठता है कि इस असफलताके लिये कौन उत्तरदायी है? सम्मेलनका उद्घाटन करते समय लार्ड वावेलने सम्मेलनके नेताकी हैसियतसे उपस्थित सब दलोंसे अपील की थी कि वे अपने अपने साम्प्रदायिक स्तरसे, परस्पर राग द्वेषके स्तरसे ऊपर उठकर समस्त देश और देशके ४० कोटि निवासियोंके हितको सर्वोपरि रखकर सम्मेलनको सफल बनायें। कांग्रेसने यह बात सिद्ध कर दी है कि उसके सामने समस्त देशका हित है। वह अड़ंगा लगानेवाली संस्था नहीं है। लार्ड वावेलने भी प्रकारान्तरसे इस बातको स्वीकार किया है। यहांतक कि उन्होंने महात्मा गांधी और कांग्रेस प्रेसिडेण्ट दोनोंसे निजी तौरसे यह अपील की है कि सम्मेलनके दौरानमें आप लोगोंने सहयोगकी जो भावना दिखायी है वह आगे भी बनी रहे। महात्माजी और मौलाना साहबने ऐसा ही करनेका आश्वासन भी उनको दिया है। कांग्रेसके इस मनोभावसे यह बिलकुल स्पष्ट है कि वह प्रत्येक कार्य सम्पूर्ण देशके हितको दृष्टिगत रखकर ही करती है। ऐसी स्थितिमें जब सम्मेलनके असफल होनेकी घोषणा हम लार्ड वावेल द्वारा सुनते हैं तो फिर वही प्रश्न उठाया है कि इस असफलताके लिये कौन उत्तरदायी है।

प्रत्यक्ष रूपसे मि० जिन्ना इस असफलता के लिये जिम्मेदार समझे जा सकते हैं। किन्तु हम यह माननेको तैयार नहीं हैं। इस असफलताका सम्पूर्ण उत्तरदायित्व ब्रिटिश सरकारपर है। लार्ड वावेलने अपने वक्तव्य द्वारा यह स्पष्ट कर दिया था कि वर्तमान योजनाका सम्बन्ध भारतकी स्थायी वैधानिक समस्यासे जरा भी नहीं है। यह तो वर्तमान विधानके अन्तर्गत एक कामचलाऊ व्यवस्था है। ऐसी अवस्थामें किसी सम्प्रदाय या वर्ग विशेषके स्वार्थोंका प्रश्न ही नहीं उठता। यदि उठाया जाता है तो यही कहना पड़ेगा कि टोरी ब्रिटिश सरकार सदाकी भांति इस बार भी जानबूझकर भारतीयोंके भाग्यके साथ खेलवाड़ मात्र करना चाहती थी। इससे अधिक उसे कुछ अभीष्ट न था। संसारकी इस परिवर्तित अवस्थाका भी उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। अब भी वह अपनी धूर्तता और मक्कारीके बलपर नकली समस्याएं खड़ी करके मि० जिन्ना जैसे अहंवादी और दुराग्रही नेताओंके सहारे भारतपर शासन करनेपर तुली हुई है। कानफरेंसको भङ्ग करते समय लार्ड वावेल ने जो वक्तव्य दिया है, ये पंक्तियां लिखते समयतक, वह हमारे सामने नहीं है। किन्तु सम्मेलनके पिछले २० दिनोंकी कार्यवाहियोंके आधारपर हम यह समझ सकते हैं कि सम्मेलनकी असफलताके लिये उन्होंने परिस्थितियोंकी दुहाई ही दी होगी। इसके सिवा वह कह ही क्या सकते हैं। श्री राजगोपालाचार्यने इस सम्बन्धमें एसोसियेटेड प्रेसके प्रतिनिधिको वक्तव्य देते हुए ठीक ही कहा है कि लार्ड वावेलको सम्मेलन बुलानेकी योजनाका अर्थ हम लोगोंने गलत समझा। यदि हम यह समझते कि सम्मेलन बुलानेका तात्पर्य केवल मि० जिन्नाको राजी करना था और उनके राजी न होनेपर हम लोगोंको अपने अपने घरकी राह पकड़नी थी तो हम पहले ही लार्ड वावेलसे कह देते कि यह निष्फल आयोजन है।" बात ऐसी ही निकली। कांग्रेसका समझना गलत निकला। किन्तु कोई भी सच्चा और ईमानदार व्यक्ति लार्ड वावेलको या उनके उच्चाधिकारी मि० चर्चिलको बेईमान समझे बिना यही तात्पर्य निकालता जो कांग्रेस नेताओंने निकाला था। "आरम्भ हीसे यह स्पष्ट था कि मुस्लिम ममताका फारमूला, जो एकमात्र मुस्लिम लीग द्वारा मुसलमानोंके प्रतिनिधित्वसे बिलकुल भिन्न है, मि० जिन्नाको स्वीकार नहीं था। उनका दुराग्रह सर्वविदित था। हमने समझा था कि लार्ड वावेल इस योजनासे मि० जिन्नाके अलग हो जानेकी स्थितिका सामना करनेतकको प्रस्तुत हैं।" केवल कांग्रेस नेताओंने ही नहीं संसारने ऐसा ही समझा था। लार्ड वावेल यह अच्छी तरह जानते थे कि कांग्रेस और मुसलिम लीग सहमत नहीं हैं। यह जानकर भी जब उन्होंने सम्मेलनका आयोजन किया तो जैसा हम ऊपर कह आये हैं बिना उनकी नीयतपर अविश्वास किये यह समझा जा सकता था कि वे नयी सरकार बनानेको उत्सुक और व्यग्र हैं एवं इस कार्यमें उनके सामने जो बाधा आयेगी उसकी वे उपेक्षा करेंगे। सम्मेलनका नेता बननेकी उनकी घोषणासे भी यही ध्वनि निकलती थी। जिस बातकी आशा वे दूसरोंसे करते थे वही आशा उनसे भी यदि दूसरे करें तो ठीक ही है। उनको भी किसी एक वर्ग या सम्प्रदायके हितका या उसके असन्तुष्ट हो जानेका ख्याल न करके सम्पूर्ण देशके हितका ध्यान रख करके अपना निर्णय देना चाहिये था। किंतु यदि उनको यह अभीष्ट नहीं था तो उनसे यह प्रश्न किया जा सकता है कि मुसलमानोंको हिन्दुओंके बराबर प्रतिनिधित्व किस नीति और न्यायके आधारपर दिया जा रहा था। अवश्य ही हिन्दुओंके हितोंपर आघात करनेकी भावनासे नहीं बल्कि सम्पूर्ण देशके हितको दृष्टिमें रख कर ही तो यह किया जा रहा था। तब ऐसा ही "अन्याय" वह भी मुसलमानोंके खिलाफ नहीं बल्कि मुस्लिम लीगके खिलाफ करनेका समय आया तो वे सम्पूर्ण देश-हितकी बातको कैसे भूल गये? लन्दनके 'टाइम्स' ने भी मि० जिन्नाकी मांगको, 'ज्यादती' कहा है। न्यूयार्क टाइम्सने मि० जिन्नापर ही दोष मढ़ा है। 'वाशिंगटन पोस्ट' ने कहा है कि मि० जिन्ना वावेल योजनासे केवल अपनी पार्टीके लाभकी बात सोचते हैं। लन्दनकी इण्डियन मुस्लिम कमेटीने लार्ड वावेलको लिखा है कि "यह कमेटी ग्रेट ब्रिटेनके तमाम मुसलमानोंकी तरफसे मुस्लिम लीगके इस दावेका प्रतिवाद करती है कि प्रस्तावित एक्जीक्यूटिव कौंसिलमें सब मुसलमानोंको मनोनीत करनेका अधिकार एकमात्र लीगको है। भारतीय मुसलमान साम्प्रदायिक जिन्नाकी अपेक्षा राष्ट्रवादी आजादको पसन्द करेंगे।" ऐसी अवस्थामें मि० जिन्नाका बहाना सामने रहते हुए भी ब्रिटिश सरकार और लार्ड वावेल इस अभियोगसे अपनेको बचा नहीं सकते कि शिमला सम्मेलनकी असफलताका अन्तिम उत्तरदायित्व मि० जिन्नापर नहीं ब्रिटेन और उसके नेताओंपर है।

ब्रिटेनने एक बार फिर भारतका पर... योग, सदिच्छा और सद्भाव प्राप्त करने... सुन्दर अवसर हाथसे निकल जाने दिया... हमें लार्ड वावेलकी सचाईपर अविश्वास... है। किन्तु हम यह जानते हैं कि वे स्व... स्वतन्त्र नहीं हैं। उनकी कुंजी ऐंठनेवाले... उनके ऊपर दूसरे हैं। यही कारण है कि... मि० जिन्नाके सरासर दुराग्रहको देखते... और समझते हुए भी वे स्वतन्त्र और निर्भीक... मार्गका अवलम्बन नहीं कर सके। ... समय जैसे नेतृत्वकी उनसे आशा की जाती... थी वे नहीं कर सकते थे। ऐसी स्थितिमें... मुंह मोड़नेके सिवा उनके सामने दूसरा... मार्ग न रहा होगा, क्योंकि एक तरफ जिन्ना... के दुराग्रह और दूसरी तरफ इस स्थितिसे... लाभ उठानेकी ब्रिटिश सरकारकी इच्छा... फलस्वरूप वे कुछकर सकनेमें असमर्थ थे। ... उनकी इस लाचारीपर उनके साथ सहानुभूति... है। निस्सन्देह ब्रिटिश नेताओंकी दृष्टि किसी... बहुत बड़े शिकारपर है इसीसे वे अबतक इस... तरहकी चालोंसे बाज नहीं आते। किन्तु... उनको स्मरण रखना चाहिये कि उन्होंने... गलत कदम उठाया है। कांग्रेसके नेतृत्वमें... हिन्दुस्तान स्वतन्त्रताके लिये कृत संकल्प... और कोई ऐसी शक्ति नहीं है जो उसे डिगा... सके।

पंडित जवाहरलाल नेहरूने, शिमलामें... उनको दिये गये मानपत्रके उत्तरमें, ... और कांग्रेसकी नीतिका स्पष्ट संकेत कर... दिया है। उन्होंने कहा है कि "... सामने उपस्थित महती समस्याओंपर, ... अन्तर्राष्ट्रीय धरातलपर रखकर देखना... हल करना है,इस समय जो कुछ हमकर रहे... उसका कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता... जेलसे छूटनेके बाद ही हम लोग ऐसी स्थिति... में आ गये जिससे सहज बचाव न था किन्तु... संभव है कि अब उससे जल्दी छुट्टी मिल जाय... उनका यह संकेत शिमला सम्मेलनसे है... ब्रिटिश सरकारने यह स्थिति उत्पन्न की... थी और अब स्वयं वही उस स्थितिको... खतम कर रही है। अतः उत्तरदायित्व उसका... है। समयकी आवश्यकता और देशकी वर्त... मान दयनीय स्थितिको देखते हुए कांग्रेस... शिमला सम्मेलनमें शामिल हुई थी, किन्तु... जेलसे निकलनेके बाद प्रत्येक कांग्रेस नेताने... यह स्पष्ट कर दिया है कि स्वतन्त्रताका... आन्दोलन जारी है और वह लक्ष्यतक पहुंच... कर ही बन्द होगा। किन्तु शिमला सम्मेलन... में शामिल होकर, प्रस्तावित नवीन सरकार... के सङ्गठनमें हिस्सा लेनेको राजी होकर... तथा जापानको युद्धमें पराजित करने... सहयोग प्रदान करनेकी अपनी अभिलाषा... प्रकट करके कांग्रेसने मि० जिन्ना और... ब्रिटिश सरकार, दोनोंके असली स्वरूप... संसारके सामने उपस्थित करके सत्यको नंगा... कर दिया है।

...आयरलैण्ड प्रजातन्त्र है—

...हां तक ब्रिटिश पार्लमेण्ट और कानून ...सम्बन्ध है आयरलैण्ड ब्रिटिश कामन... के अन्तर्गत समझा जाता है। किन्तु ...लैण्डका आयरलैण्ड इस स्थितिको नहीं ...ता। वह अपनेको ब्रिटेनके संयुक्तराज्य ...सर्वथा स्वतन्त्र समझता और तद्... आचरण करता है। गत सप्ताह आय... पार्लमेण्टमें एक सदस्य मि० डिलनने ...जानना चाहा था कि क्या आयरलैण्ड ...तन्त्र है ? उन्होंने कहा कि, 'आयरलैण्ड ...तन्त्र है या नहीं यह कोई नहीं जानता।' ...के उत्तरमें मि० डिवेलराने कहा कि, ...मि० डिलन यही जानना चाहते हैं तो ...न लें कि देश प्रजातन्त्र है।" इसपर ...डिलनने पूछा कि 'ऐसा कब हुआ।" ...का कोई जवाब नहीं दिया गया। हम ...कह आये हैं कि ब्रिटिश कानूनकी ...से आयरलैण्ड ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत ...झा जाता है। डिवेलराने व्यवहारतः ...स्थितिपर हरताल फेर दी है। वास्त... स्थिति यह है कि सन् १९३२ में ...टिश पार्लमेण्टने आयरिश स्वतन्त्र राज्य ...न पास किया था। इसके अनुसार ...णी आयरलैण्डमें स्वतन्त्र राज्य (...ish Free state) स्थापित हो गया, ...नु नाममात्रके लिये। उत्तरी आयरलैण्ड ...ब भी मर्यादित स्वायत्त शासनाधिकार ...साथ ब्रिटिश सत्ताको स्वीकार करता है। ...तन्त्रवादियोंके नेता डिवेलराने नाम... आयरिश फ्रीस्टेटकी स्थितिको माननेसे ...कार किया और आयरिश स्वतन्त्र राज्य ...विरुद्ध विद्रोह खड़ा किया। सन् १९३२ ...आयरिश स्वतन्त्र राज्यके पार्लमेण्टमें ...ना फेल दलका बहुमत हो गया और ...सके नेता डिवेलरा, प्रधानमन्त्री चुने ...। इन्होंने अधिकार हाथमें आते ही ...विधानमें क्रान्तिकारी परिवर्तन ...किया। राजभक्तिकी शपथ लेना बन्द कर ...। गवर्नर जेनरलके अधिकार, जो ...िश सरकार द्वारा नियुक्त हुआ करता ...संकुचित और सीमित कर दिये ...। १९३७ में आयरलैण्डके लिये एक ...शासन विधान पूर्ण स्वाधीनताके ...आधारपर बनाया गया। इसपर लोकमत ...लिया गया और १ जुलाई १९३७ को ...प्रतिशतके बहुमतसे राष्ट्रने इस विधान ...समर्थन किया। २९ दिसम्बर १९३७ से ...विधानके अनुसार शासन होने लगा। ...नमें आयरलैण्डको पूर्ण स्वाधीन, ...पूर्ण अधिकारयुक्त प्रजातन्त्र कैथलिक ...घोषित किया गया है। आयरलैण्डकी ...तिरंगी राष्ट्रीय पताकाने यूनियन जैकका ...लिया। यूनियन जैक हटाया गया। ...(सम्राटकी सत्ता) का नाम उठ ...। गवर्नर जेनरलका पद हट गया। ...पतिका चुनाव होता है और वही राज्य ...प्रमुख शासक है। राष्ट्रपति पार्लमेण्टका ...अधिवेशन आमन्त्रित करता तथा उसे भंग ...है। वही कानूनोंपर स्वीकृति देता ...उन्हें जारी करता है। सेनाका प्रधान ...भी, अन्य स्वतन्त्र राष्ट्रोंकी भांति ...राष्ट्रपति ही होता है और क्षमा... अधिकार भी उसे है। ग्रेट ब्रिटेनने ...आयरलैण्डके इस विधानको स्वीकार किया है और न अस्वीकार ही। यह स्थिति आयरलैण्डकी है। अतः सच्चे अर्थोंमें और व्यवहारतः आयरलैण्ड डिवेलराके कथनानुसार प्रजातन्त्र है और यूरोपीय युद्धके समय तटस्थ रह कर तथा ब्रिटेन और अमेरिकाको अपने समुद्र प्रान्तीय अड्डोंका व्यवहार न करने देकर एवं जर्मनीके दूतावासको पूर्ववत बने रहने देकर आयरलैण्डने यह सिद्ध कर दिया है कि वह पूर्ण स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राष्ट्र है।

एक नया समझौता—

ब्राटिस्लावामें अभी उस दिन तमाम स्लाव राष्ट्रोंकी एक कांग्रेस हुई। यह समझा जाता है कि इस अधिवेशनका परिणाम बहुत सुन्दर होगा। परस्पर सहयोग और मैत्री सम्बन्ध रखनेके प्रश्नपर भी विचार हुआ। ऐसा समझा जाता है कि इस सम्मेलनके फलस्वरूप तमाम स्लाव राष्ट्रोंके बीचमें एक पारस्परिक सहयोग और मैत्रीका समझौता, प्रादेशिक आधार पर, कायम होगा। इस पैक्टमें शामिल होनेवाले देश कईभागोंमें बटे रहेंगे। पश्चिमी स्लाव-जेकोस्लोवाकिया और पोलैण्डकी आबादी ३ करोड़ ८० लाख है, दक्षिणी स्लाव युगोस्लोविया और बुलगेरियाकी आबादी २ करोड़ १० लाख और पूर्वी स्लाव यूरोपीय रूस, यूक्रेन और श्वेत रूसकी आबादी १४ करोड़ ६० लाख है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि य तमाम स्लाव राष्ट्र जिनकी कुल मिला कर जन संख्या २० करोड़ ५० लाख है अर्थात सम्पूर्ण यूरोपकी एक तिहाई आबादी है एक सूत्रमें बंध सकें और परस्पर एक दूसरेके स्वार्थोंकी रक्षा करनेकी दृष्टिकोण बना सकें तो यूरोपमें स्लाव राष्ट्र मण्डलका एक जबर्दस्त सङ्गठन अपना अलग स्थान बना सकेगा।

आस्ट्रिया, हंगरी और रूमानिया तीन ऐसे गैर स्लाव देश हैं जो दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वी स्लावोंके बीचमें पड़ते हैं। ये तीनों देश युगोस्लाविया और बुलगेरियाको उनके साथी स्लाव देश जेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड और रूससे अलग करते हैं। अतः पूर्वीय यूरोपके समझौतेमें इन तीनों—आस्ट्रिया, हङ्गरी और रूमानिया-देशोंका महत्वपूर्ण स्थान है। मार्शल स्टालिन चाहते हैं कि इन सब स्लाव और गैर स्लाव देशोंको मिलाकर एक जबर्दस्त मण्डल बनाया जाये। रूसके पश्चिमी मित्र-राष्ट्र खासकर ब्रिटेन अच्छी तरह जानता है कि इस राष्ट्र मण्डलके गठनसे यूरोपमें रूस बहुत जबर्दस्त ताकत हो जायगा। यही कारण है कि आस्ट्रिया, हङ्गरी, रूमानिया और बुलगेरियामें आये दिन ब्रिटेनका हस्तक्षेप होता रहता है।

स्पेनकी उधेड़बुन—

मि०चर्चिल दक्षिणी फ्रांसके हेण्डे नामक स्थानमें इस समय विश्राम ले रहे हैं ? कहा गया है कि त्रिनेतृ सम्मेलनमें भाग लेनेकेलिये मन और शरीर दोनोंको विश्राम देनेके इरादेसे मि० चर्चिलने इस स्थानको चुना है। किन्तु इस उद्देश्यके लिये स्थान निर्वाचनके पीछे इतनीही बात नहीं जान पड़ती। हमारा यह सन्देह उस समय और पुष्ट हो जाता है जब हम देखते हैं कि स्पेनके तानाशाह जेनरल फ्रैंको भी वहां पहुंचे हैं। यद्यपि एक ब्रिटिश सरकारी वक्ताने प्रत्यक्षतः यह आश्वासन दिया है कि मि० चर्चिल जेनरल फ्रैंकोंसे न मिले हैं—और न मिलनेका इरादा ही करते हैं। किन्तु कूटनीतिक भाषामें इस तरहके आश्वासनों और खण्डनों का कितना मूल्य होता है यह सभी जानते हैं। जेनरल फ्रैंकोंके प्रति मि० चर्चिलके हृदयमें सहानुभूति है यह सभी जानते हैं। ऐसी अवस्थामें यदि त्रिनेतृ सम्मेलनके पूर्व जेनरल फ्रैंकोंसे मिले हों तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। उधर फ्रैंकोंके मन्त्रिमण्डलमें कुछ अदल बदल होनेके समाचार भी आ रहे हैं। कहा जाता है कि अक्तूबरमें होनेवाले म्यूनिसिपल चुनाव सम्बन्धी म्यूनिसिपल बिल स्पेनिश कोरटेज (धारा सभा) द्वारा स्वीकृत हो जाते ही स्पेनिश मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन होगा। स्पेनके अर्थ सचिवके इस्तीफा दे देनेसे जेनरल फ्रैंकोंको मन्त्रिमण्डलमें परिवर्तन करनेका एक अच्छा अवसर मिल गया है। यद्यपि स्पष्ट कुछ मालूम नहीं होता किन्तु ऐसा जान पड़ता है कि जेनरल फ्रैंको इस उधेड़ बुनमें हैं कि किस तरह ब्रिटेनका संरक्षण प्राप्त किया जाय। अतः त्रिनेतृ सम्मेलनके पूर्व ही जेनरल फ्रैंको एक महत्वपूर्ण वक्तव्य देकर अपने पक्षमें वातावरण बनानेकी अन्तिम चेष्टा करेंगे, ऐसा समझा जा सकता है।

रूस-चीन समझौता वार्ता—

चीनके प्रीमियर डा० टी० वी० सूङ्ग रूस और चीनके प्रश्नोंपर जेनरलिस्मो जोसेफ स्टालिनसे विचार-विमर्श करनेके लिये मास्को पहुंचे हैं। अबतक डा० सूङ्गने मार्शल स्टालिनसे पांच बार बातचीत की है। युक्तराष्ट्रके मास्को स्थित राजदूतसे भी डा० सूङ्गने विचार-विमर्श किया है। मास्को में इन दिनों जो बातचीत हो रही है, उसका कुछ अच्छा परिणाम निकलनेकी सम्भावना जानकार हल्कोंमें प्रकट की जा रही है। रूस यद्यपि चीनकी कम्युनिस्ट सरकारके प्रति स्वाभाविक सहानुभूति रखता है, फिर भी ऐसा नहीं कहा जा सकता कि चुङ्गकिङ्ग और मास्कोके बीच कोई समझौता असम्भव है। सुदूरपूर्वमें रूसकी युद्धोत्तर स्थितिको ध्यानमें रखकर मार्शल स्टालिन चुङ्गकिङ्ग मास्को सम्बन्धको एक महत्वपूर्ण विषय समझेंगे और उसके मुताबिक कोई निर्णय करेंगे। ऐसा भी कहा जा सकता है कि आवश्यकता पड़नेपर मार्शल स्टालिन चीनी कम्युनिस्टोंसे कुछ बलिदान करनेका भी अनुरोध करेंगे। डा० सूङ्गने चीन सरकारकी अनुमति पाकर मार्शल स्टालिनसे बातचीत शुरू की है। मास्कोके चीनी और अन्य विदेशी कूटनीतिक क्षेत्र इस विचार-विमर्शसे आशाजनक परिणामकी सम्भावना प्रकट करते हैं। चीन और रूसके विचाराधीन प्रश्नमें युद्धोत्तर योजना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। चीनके विशाल उत्तर-पश्चिमी प्रदेशसिक्यांगकी औद्योगिक उन्नति भी उनकी बातचीतका एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। करीब १५ वर्ष पूर्व तुंगनके विद्रोहको दबाने के लिये चीनी गवर्नर शेङ्ग शिथाईने रूसियों की मदद ली थी। विद्रोह समाप्त हो जानेके बाद यद्यपि रूसी सेनाएं वहांसे हट गयीं किन्तु समस्त सिक्यांग प्रान्तकी अर्थनीति रूसियोंके हाथोंमें आ गयी। १९४२ में शेङ्ग का रूससे कुछ मतभेद हो गया और उसने चुङ्गकिङ्गसे सन्धि कर रूससे सम्बन्ध विच्छेद कर लिया। इस कारण सिक्यांगके व्यापार को बहुत बड़ा आघात पहुंचा क्योंकि वहां का सारा व्यापार तबतक रूसियोंके हाथोंमें ही था। सिक्यांगकी आर्थिक उन्नतिके लिये चीनने बहुत बड़ी योजना बना रखी है और प्रायः दो वर्ष पूर्व मार्शल चांग कैशकने सिक्यांग जाकर योजनाको कार्यान्वित कराने की चेष्टा की थी। किन्तु यह मानी हुई बात है कि रूसियोंकी सहायताके बिना इसको कार्यान्वित नहीं किया जा सकता। इसके साथ ही चीनकी राष्ट्रीय सरकार कम्युनिस्ट सेनाको भंग कर उसको चीनकी राष्ट्रीय सेनामें शामिल करनेकी चेष्टा कर रही है। किन्तु चीनी कम्युनिस्टोंने चीन सरकारके अनुरोधको नामंजूर कर दिया है जिससे चीनमें गृहयुद्ध अवश्यम्भावी हो गया है। कम्युनिस्टों और चीन सरकारमें समझौतेकी कोई आशा इस कारण नहीं की जा सकती कि दोनों अपनेको चीनकी सर्वोच्च शक्ति समझ रहे हैं। कम्युनिस्टोंके पक्षमें रूस और चुङ्गकिङ्गके पक्षमें युक्तराष्ट्र अमेरिका है। अतएव चीनके इस घरेलू झगड़ेके निपटानेके लिये चुङ्गकिङ्ग और मास्कोके बीच समझौता होनेकी सख्त जरूरत है। यद्यपि डा० सूङ्गकी मास्को यात्राके परिणाम स्वरूप कोई समझौता होनेकी बहुत कम सम्भावना दिख रही है, क्योंकि रूस कम्युनिस्टोंके स्वार्थोंकी बलि देकर कोई समझौता करनेको प्रस्तुत होगा, यह नहीं कहा जा सकता, तथापि मास्कोके कूटनीतिक हल्कोंमें इस विचार विमर्शसे कोई उत्तम परिणाम निकलनेकी आशा प्रकट की जा रही है और मार्शल स्टालिन भी रूस और चीनके सम्बन्धके प्रति विशेष दिलचस्पी दिखायी दे रहे हैं। डा० सूङ्गकी यात्रा सफल होनेपर जापानके खिलाफ चीनके युद्ध अधिक सरगर्मी आनेकी सम्भावना ... क्योंकि चीनकी आन्तरिक अवस्थामें ... के प्रभावसे अवश्य ही कुछ न कुछ सुधार होगा।

स्वामी सहजानन्द पर रोक—

अखिल-भारतीय किसान सभाके सभापति स्वामी सहजानन्द सरस्वतीके खिलाफ बिहार सरकारने नियन्त्रण और नजरबन्द आर्डिनेन्सके अन्तर्गत एक आदेश जारी कर जन सभाओंमें भाषण करने पर इस किस्म की रोक लगा दी है कि स्वामीजीने हालमें गया के एक किसान सम्मेलनमें भाषण करते हुए जमीन्दारोंके अत्याचारोंकी निन्दा की थी। बिहार सरकारकी यह कार्रवाई अत्यन्त खेदजनक है। स्वामी जी देश, किसानोंके हितोंके लिये लड़नेवाले इने गिने नेताओंमें हैं।ऐसी स्थितिमें उनके खिलाफ प्रतिबन्ध लगाकर सरकारने देशके किसानों की आवाजको बन्द कर देनेकी चेष्टा की है। किसानोंकी आज जैसी बुरी हालत है वह किसीसे छिपी नहीं और उनकी असल हालत और समस्याको देशके सामने रखनेके कारण बिहारकी गवर्नरी सरकारने स्वामी जी पर प्रतिबन्ध लगाकर सचमुच सत्यका गला घोंटा है। हम आशा करते हैं कि गणतन्त्र और सभ्यताकी दुहाई देनेवाली सरकार अपने इस निन्दनीय प्रतिबन्धको अविलम्ब उठा लेगी।

कहानी

परिचारिका

(लेखक--श्री व्रजराज शर्मा)

गजेन्द्रकी शादी हो चुकी थी। वह शादीको एक सामाजिक बन्धन मानता था। विवाहका अर्थ उसकी दृष्टिमें एक प्राचीन परिपाटीका पालन करना था। नववधूके नूपुर-रव से प्रायः उसका गृह गूंजता रहता था लेकिन उसका हृदय अपने घरसे दूर—बहुत दूर एक दूसरे ही गृहमें मंडलाता रहता था। एक बादलकी तरह वह गरजता था, बरसाता भी था और लालसाकी बिजली उसमें रह-रह कर चमक उठती थी।

उस रोज देखा था उसने सहरालमें अपनी एक सालीको। वह विधवा थी किंतु लावण्यतासे परिपूर्ण और अतुल वैभवकी स्वामिनी। उसकी चालमें मस्ती थी और परिधानमें वैभवका श्रृङ्गार। मोतियोंके उस अपूर्व चमत्कारने गजेन्द्रको अपनी ओर आकर्षित किया था या वैधव्यकी व्यथाने उसे वशीभूत किया था—यह गजेन्द्रके अतिरिक्त और कौन कह सकता है? सम्भव है दोनोंसे वह प्रभावान्वित हुआ हो। "मुर्गे-दिल क्यों न फंसे दाना भी हो व दाम भी हो।"

गजेन्द्र आज एक पत्र लिख रहा था। एक-एक कर उसने कितने ही पत्र लिखे और लिख कर फाड़ दिये। हां! उसमेंसे एक पत्र चुपचाप हवाके झोंकेसे उड़कर उसके टेबुलके नीचे छिप गया। वह पत्र लिखनेके ध्यानमें व्यस्त था और मौजूं मजमूनके अभावमें व्याकुल।

आखिर उसने यह लिखा—

"मेरी पुतली,

तुम्हारे बिना आंखें निष्प्रभ और ज्योतिहीन हैं।

मेरी गुड़िया,

तुम्हारे बिना प्राण शुष्क, नीरस और संज्ञाहीन है।

मेरी रानी—मेरे अन्तरतमकी रानी,

तुम्हारे बिना संसार सूना और अन्धकारमय है।

मेरी आराध्य देवी,

तुम्हारे बिना मन-मन्दिर एक श्मशान सा है।

हे जीवनलते!

तुम्हारे बिना जीवन एक असीम, अनन्त मरुभूमि है।

ऐ मेरे चांद!

मेरे तिमिराच्छन्न जीवनको आलोकित करो।

देवि!

जबसे आंखें चार हुईं—बेकरार हूं, एक जल-विहीन मीनकी भांति बेचैन हूं।

यह जीवन अब तुम्हारा है, इसे मारो या जिलाओ।

दर्शनका प्यासा—

अकिञ्चन गजेन्द्र

पुनश्च:—लौटती डाककी प्रतीक्षामें।

गजेन्द्रने इस पत्रको एक सुगन्धित लिफाफेमें रखा। उसपर पता लिखा और एक लम्बी सांस ली। अब वह चला डाकखानेकी ओर—डाकखाना वहांसे दूर था।

इधर नववधू उस कमरेमें आयी। उसकी नजर टेबुलके नीचे उस खतपर पड़ी जो हवाके झोंकेसे उड़कर वहां अभीतक छिपा पड़ा था। उसने उस पत्रको उठाया, उठाकर पढ़ा और पढ़कर एक ठण्डी सांस ली।

गजेन्द्र अब रोज अपने पत्रोत्तरकी आशा में डाकखाना तक दौड़ने लगा। डाक लौट कर आयी लेकिन पत्रोत्तर नहीं। गजेन्द्र व्याकुल होने लगा, क्रमशः विक्षिप्त भी। आखिर एक रोज डाकसे पत्रोत्तर भी पहुंचा। गजेन्द्रने धड़कते हुए हृदयसे उस लिफाफेको खोला और आंखें फाड़ कर पढ़ा—

"प्यारे गजेन्द्र,

पत्र मिला। थैंक्स! मैं पहाड़ जा रही हूं। अच्छा होता यदि तुम भी साथ चलते। विशेष मिलनेपर।

तुम्हारी साली

'मृणालिनी'।"

गजेन्द्र खुशीसे उछल पड़ा। देखते-देखते उसने अपना सारा सामान ठीक किया। फिर अपने नौकरोंके सर अपने सामानको लादा और स्टेशनके लिये रवाना हो गया।

गजेन्द्र अब राजसी ठाट-बाटके बीचमें पहुंचा। फर्श—फानूस, कारसानी मखमल, ईरानी और खुरासानी कालीन, कारचोबीके परदे, हाथी-घोड़ा, मोटर इत्यादिसे दरबार गुलजार था। नौकर-चाकर अपनी-अपनी जगहपर हमेशा तैनात थे। दासियां बनारसी पान, जर्दा, किमाम, सुवासित जल और इत्र लिये हाजिर थीं। गङ्गा यमुना विशाल हुक्का हावड़ा पुलकी याद दिलाता था। बिल्लौरकी दीवारें देखकर गजेन्द्रके हृदयमें लालसाओंका एक साम्राज्य ही स्थापित हो गया। अपनी कामनाओंके उस विषम प्रवाहमें वह जोरोंसे बह चला—उसका कहीं भी कोई कूल किनारा नहीं था।

यहां अनवरत हास्य था, रुदन अज्ञात। हंसीकी यह निर्झरणी अलौकिक थी किन्तु भौतिकताके आधारपर। न तो यहां भूतका कोई विचार था और न तो भविष्यकी चिन्ता। वर्तमानका लबालब प्याला निरन्तर छलकता रहता था। गजेन्द्र और मृणालिनीमें कुछ रोज तक तो केवल हंसी-मजाक ही रहा। फिर भाषा मूक हो गयी। संकेतोंसे ही भाव व्यक्त किये जाने लगे। और तब...मिले दोनोंके—अधर-अधर, नयनसे नयन, और प्राणसे प्राण। छलकने लगी यौवनकी मदिरा—भड़कने लगा यौवनका उन्माद।

इधर गजेन्द्रकी वह नव विवाहिता पत्नी अश्रुसे ओतप्रोत सोहागरातको करवटें बदल-बदलकर काट रही थी। सन्देहके सहस्र-सहस्र बिच्छू उसके हृदयको डंक मार रहे थे। दासी उसकी दुर्दशा देख स्तब्ध थी, समवेदना प्रकट करनेमें भी असमर्थ। गजेन्द्र लापता। दिनपर दिन यहां यों ही बीत रहे थे। आखिर एक रोज गजेन्द्र अपने घर पहुंचा। पहुंचते ही वह बटेरोंके कांकुओंका मुआइना करने लगा। बटेर फुदक रहे थे। वह अपने बटेरोंको लेने आया था और घरके मुतल्लिक नौकरोंको कुछ खास हिदायत देने।

रातमें खाना खानेके बाद जब वह अपनी महत्वाकांक्षाओंका स्वप्न देख रहा था तो सहसा उसकी स्त्री आकर उसके पैरोंसे लिपट गयी और सिसक-सिसककर रोने लगी। इस आकस्मिक आघातसे गजेन्द्र पहले तो कुछ हतप्रभ हो गया और फिर पैरोंसे ही उसने अपनी स्त्रीको जोरोंका एक धक्का दिया। वह दूर जा गिरी और गिरते ही चीख उठी। फिर वह उठकर घरसे बाहर निकलने लगी। गजेन्द्र एक मशीनकी तरह उठा और अपनी स्त्रीको पकड़कर घसीटने लगा। उसने एक कोठरीमें उसको बन्द कर दिया। उसकी समझमें एक तुच्छ स्त्रीका यह दुस्साहस एक अक्षम्य अपराध था। वह गरज उठा,—"यदि पड़ोसके लोग क्रन्दनके इस चीत्कारको सुन लें तो मेरी नाक कट जाय—सारी प्रतिष्ठा ही धूलमें मिल जाय।"

वह बड़बड़ाता हुआ बरामदेमें टहलने लगा टहलते-टहलते गम्भीर मुद्रासे वह एक कुर्सीपर जा बैठा। फिर खांसता हुआ उसने अपने दीवानको बुलाया और सपरिवार झाझा चलनेकी इच्छा प्रकट की। बस फिर क्या था? सामान बंधने लगा—स्टेशनकी तैयारी होने लगी। स्टेशन आया—ट्रेन भी आयी, और सभी ट्रेनमें गठरीकी तरह लद गये। निश्चित समयपर ट्रेन झाझा पहुंची और सभीके सभी ट्रेनसे उतर पड़े।

झाझा एक जङ्गली जगह है—यहां चारों तरफ जङ्गल ही जङ्गल है। इसी जङ्गलमें यहां कुछ बंगले भी हैं। एक वैसे ही बंगलेमें गजेन्द्र भी अपनी टोलीके साथ पहुंचा।

झाझाके जङ्गलोंमें कुछ गुण्डे, बदमाश छिपे रहते हैं। इनमेंसे कुछ गुण्डोंसे गजेन्द्रकी जान-पहचान थी। उसने उन गुण्डोंको बुलाया—बुलाकर कुछ गुप्त परामर्श किया। उन्हें दो हजारके सुनहले गहनोंका लालच दिया। उन आभूषणोंकी सुनहली चमकसे उनके मुंहमें पानी भर आया। किन्तु एक निस्सहाय नारी—एक असहाय अबलाके निरपराध "खून" से वे सिहर उठे। बार-बार ललचायी आंखोंसे उन्होंने उन गहनों को देखा। किन्तु एक सती साध्वीकी हत्या की कल्पनासे वे कांपने लगे। उन्होंने बहुतेरे कुकर्म अभीतक किये थे किन्तु ऐसा भयावह पातक कभी नहीं। उस पतिपरायणा नारीके देदीप्यमान मुखमण्डलके तेजके सामने वे नहीं ठहर सके। उन्होंने अपने अड्डेकी राह ली। गजेन्द्रके सामने जो समस्या उपस्थित थी वह हल नहीं हुई। थोड़ी देरके लिये वह चंचल हो उठा। फिर उसने अपने पथके कंटकको साफ करनेका दृढ़ निश्चय किया। एक भयावह संकल्पसे वह उन्मत्त हो उठा। आधी रातका ... उस घोर जङ्गलमें खूंखार ... चीत्कारके साथ मिलकर बहुत ही ... हो जाता है। गजेन्द्रने घड़ीको देखा ... बज रहे थे। वह उठा—एक ... घुसा। उसने अपनी स्त्रीको देखा ... रही थी। गजेन्द्र हंसा। उसकी ... वह छोटी-सी कोठरी भयभीत हो ... गजेन्द्र अपने बन्धनको काटकर ... सर्वथा मुक्त, स्वच्छन्द होनेको ... वह इसी अवसरकी प्रतीक्षामें था। ... बगलकी कोठरीसे दो लाठियोंको ... साथ बाहर निकाला और बड़ी सावधानी ... अपने वृद्ध दीवानको जगाकर कुछ ... किया। फिर वह अपनी उसी छोटी ... में घुसा। उसने अपनी स्त्रीको उसी ... देखा जिस तरह शिकारी देखता है ... शिकारको। उसने उस सोयी हुई रमणी ... गर्दनके नीचे एक लाठीको बहुत ही ... पूर्वक रखा और दूसरी लाठी गर्दनके ... वह उसी तरह अभीतक सो रही थी ... निश्चिन्त।

एक ओर गजेन्द्रने उन लाठियों ... दबाना शुरू किया और दूसरी ओर ... दीवानने। जब उसकी आंखें खुलीं ... दृष्टिसे देखा उसने गजेन्द्रको और वृद्ध ... को। उसने देखते ही समझ लिया ... बातोंको। वह गिड़गिड़ाने लगी ... उसकी घिग्घी बंध गयी। अपने दोनों हाथों ... को जोड़कर उसने प्रणाम किया गजेन्द्र ... उसकी आंखें पथराने लगीं। लाठियां ... और एक दूसरेके अत्यन्त समीप आ गयीं ...

गजेन्द्रने अपने वृद्ध दीवानकी सहायता ... से अपनी मृत स्त्रीको उठाया और ... ले गया। उसने उस निर्जन वन-प्रांतमें ... दिया अपनी स्त्रीके शवको जङ्गली ... वरोंके इन्साफके लिये। जब वह अपने ... में पहुंचा घड़ीमें तीन बज रहे थे। स्टेशन ... पांच बजे एक ट्रेन खुलती थी। स्टेशन ... समीप ही था। उसने दीवानके कान ... कुछ कहा। दीवानने एक नौकरको जगाकर ... सामान उसके सरपर लादा। गजेन्द्र ... स्टेशनको चला। उस अंधेरे सुनसान रास्ते ... पेड़के पत्तोंकी खड़खड़ाहटसे रह-रहकर ... चौंक उठता था, और फिर मृणालिनी ... मिलनकी आशामें विविध कल्पनाओं ... अट्टालिकाका निर्माण करता हुआ ... बावलासा लड़खड़ाता हुआ चलने ... था। अन्धकारके बाद प्रकाश होता है ... दुःखके बाद सुख। इसी धुनमें वह ... पहुंचा। ट्रेनमें देर थी।

वह वेटिङ्ग रूम और प्लेटफार्मका ... काटने लगा। वह मृणालिनीके प्रेममें ... हिलोड़ित हो रहा था। उसके ... क्षुब्धसागर उस झंझाके झकोरेसे ... हो रहा था। उस सागरके वासना ... उसका निजत्व, उसका अस्तित्व एक ... के समान लुप्त हो रहा था।

ट्रेन आयी। वह ट्रेनमें जा बैठा ... एक यन्त्रकी तरह। उसके हृदयमें ... ही ट्रेन चल रही थी। इस ट्रेनका तो ... एक महज मुसाफिर था लेकिन अपनी ... ट्रेनका ड्राइवर। इस ट्रेनको तो ...

स्टेशन-ही-स्टेशन पार करना था उसकी उस स्पेशल ट्रेनका एक ही था। आखिर आते-आते उसका स्टेशन भी आया जहां उसे उतरना था उतरा और एक टैक्सीमें बैठ गया, वहां पहुंचा जहां पहुंचना उसके की चरम सीमा थी, जहां पहुंचनेपर भी पहुंचनेकी इच्छा अथवा अव-शेष नहीं रह जाता था,—जहां पहुंचनेपर का समस्त अभाव पूर्णतामें परिणत हो था।

और तब चलने लगा जामपर-जाम, प्याला। फिर क्या था ? अल्लाह मजनूंको लैला ही नजर आने लगा। और गजेन्द्र दोनों वासनाके प्रवाहमें तीव्र गतिसे बह चले। सबेरे खानेसे निकलकर शहनाईकी मीठी-ध्वनि जब उनके कानोंतक पहुंचती की आंखें खुलतीं और खुलते ही चार थीं। फिर मादकताकी रंगरेलियोंमें का नग्ननृत्य प्रातःकालसे ही प्रारम्भ था।

कभी वह चौसर खेलते, और कभी शत-कभी वह चिड़ियोंको चुगाते, और देखते मछलियोंकी क्रीड़ा। बरसातके बरसात आयी। उनकी वासनाका ज्वार हो गया अपनी अबाध, अविराम । इसका अन्त तब हुआ जब मृणा-को गर्भकी आशङ्का हुई। गर्भका यह अधिकाधिक स्पष्ट होने लगा। आशङ्का विश्वासमें परिणत हुई।

वो विधवा थी। विधवाके पेटमें घोर पातक ! समाजको वह कैसे मुंह दिखायेगी ? उसकी महान उसके कुलकी प्रतिष्ठा, उसकी इस समय खतरेमें थी और था उस अज्ञात शिशुका जीवन। एक पेटसे निकलते ही उस शिशुको समाज हंसेगा, घृणासे कांप उठेगा, देगा। अभीतक तो वह समाज करती थी, उसकी दृष्टिमें समाज कठपुतली सा था। उसी तुच्छ उपहासको वह कैसे सहन करेगी ? प्रतिष्ठाके आवरणमें मातृत्वका स्थल एक पाषाण-खण्डकी तरह श्मशान-भूमिकी भांति भयावह ।

बीमार हो गयी। इलाजके लिये पहुंची। रुपया पानीकी तरह । डाक्टरोंने आसमान सरपर उठाया बढ़ता ही गया ज्यों-ज्यों दवा ।

पड़ गयीं सब तदबीरें न चलने काम किया।"

साथ जच्चाकी जान भी खतरेमें । डाक्टरोंने अन्तिम सांसतक जोर लेकिन सब बेकार हुआ। एक दर्द-साथ प्राण-पखेरू उड़ गये !

मैना निकल गयी पिंजड़े से पड़ी रही तस्वीर।"

पर आसमान फट पड़ा, उसके जमीन सरक गयी। उसके चारों अन्धकार ही अन्धकार हो गया।

क्या सोचा था—क्या हो गया ? उसके जीवनकी नौका अनायास ही नियतिके अज्ञात पथरीले चट्टानसे टकरा कर चूर्ण-विचूर्ण हो गयी। वह चिल्ला रहा था लेकिन सुनता कौन। मनस्तापसे वह भस्मी-भूत हो रहा था। इस विपरीत परिस्थिति में नींद और भूखने भी उसका साथ छोड़ दिया। दैवी दुर्घटनाके इस आकस्मिक प्रहारके लिये वह तैयार नहीं था। इस संसारमें उसने अपना एक अलग संसारही बसाया था—उसका वही संसार आज अक-स्मात उजड़ गया था। यह एक ऐसी बात थी जिसकी उसने कभी कल्पना भी नहीं की थी, जो उसके दिमागसे बाहरकी बात थी। आज वह बेबस था, लाचार था, निरु-पाय था, असहाय था। मानसिक पीड़ाओं-ने उसके शरीरको पछाड़ दिया। वह पछड़ गया। ज्वरसे छटपटाने लगा।

उस विशाल शहरमें अब वह निरुपाय था, कहीं भी कुछ ठौर-ठिकाना नहीं। सहसा अस्पतालका ध्यान आया। वह निकटवर्ती कारमाईकेल अस्पतालमें पहुंचा, वहीं एक शय्याकी शरणमें उसने अपना आत्म-सम-र्पण कर दिया। उसीकी तरह कितनेही रोगी वहां पड़े-पड़े कराह रहे थे। तरुण तपस्विनीकी तरह एक परिचारिका, जिसकी मुखाकृतिपर सेवा और त्यागकी एक स्पष्ट छाप थी. दौड़ती हुई शान्त चित्तसे उनकी अनवरत सुश्रूषामें तल्लीन थी।

साक्षात् दया और करुणाकी वही मूर्ति जब गजेन्द्रको दवा पिलाने आती तो मालूम होता जैसे स्वर्गकी कोई देवी पुण्य-का वितरण करने इस भूतलपर उतर आयी है। वह उसके मुख मण्डलकी आभाको देखता--देखता उसकी मनोहर कान्तिको, उसके नेत्रोंकी प्रभाको, और सबसे बढ़कर उसकी सेवाकी भावनाओंको। सेवा-भावकी वह गरिमा, वह दीप्ति अलौकिक थी। इसकी तहतक अभी पहुंचनेमें यद्यपि वह असमर्थ था फिर भी वह उत्तरोत्तर आक-र्षित हो रहा था। कमनीयताकी इस पुतली को शायद उसने पहले भी कभी देखा था। किन्तु कहां देखा था—कुछ याद नहीं।

एक रोज प्रातःकाल वह परिचारिका गजेन्द्रको स्पञ्ज कर रही थी। गजेन्द्र कुछ कौतूहल और उत्सुकतासे उस छविका अव-लोकन कर रहा था। सहसा उसने अस-मय ही उसके इस कठोर व्रत-धारणका कारण पूछा। परिचारिकाके अधरोंमें विषाद की एक क्षीण रेखा खिंच गयी। उसने योंही इस प्रश्नको टाल देना चाहा। किन्तु गजेन्द्र के विशेष आग्रहसे विवश होकर उसको कहना ही पड़ा। वह एक कुलीन और धनी वंशमें उत्पन्न हुई थी। उसका बचपन सुख-की छायामें व्यतीत हुआ था। जवान होने पर उसका विवाह हुआ किन्तु एक उद्धत, उच्छृंखल युवकके साथ। उस युवकने अपने प्रशस्त प्रेमके पथमें उसको एक कण्टक समझ कर एक जङ्गलमें फेंक दिया। उसने तो मार कर उसे जङ्गलमें फेंक दिया था किन्तु एक चरवाहेने उसकी प्राण-रक्षा की,—और वह भाग्य अथवा दुर्भाग्यके फल-स्वरूप अब इस अस्पतालमें परिचारिका थी। इसी प्रकार अब जीवनपर्यन्त वह रहेगी। इतना कह कर एक दीर्घ निश्वासके साथ उसने गजेन्द्रकी ओर देखा।

गजेन्द्र हांफ रहा था। तापमान तेज हो रहा था। उसके विवर्ण मुखमें आंखों-की गति भयङ्कर हो रही थी। वह बरग-लाने लगा,—"मैंने ही तुम्हारा वध किया था। लेकिन जिसके लिये ऐसा किया था वह भी तो अब नहीं है। कोई नहीं रहा—कोई नहीं। मैं भी नहीं रहूंगा। वह बच गयी......बच...गयी...जङ्गलसे निकल कर चली आयी। ओह ! कैसी अंधेरी रात थी, कैसा भयावह जङ्गल था। मैंने घोर कुकर्म किया। मेरे पापोंका प्रायश्चित्त... एं...हैं...हैं...हैं !"

परिचारिकाके सरसे पांवतक पसीना बह रहा था। इस आकस्मिक घटनासे वह विचलित हो रही थी। डाक्टरने आकर देखा और कहा कि मरीजका रोग उसकी मानसिक दुश्चिन्ताओंका परिणाम है, जिसकी उपयुक्त चिकित्सा वायु-परिवर्तनके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।

परिचारिकाने तुरतही एक दर्खास्त लिखकर मैट्रनको दिया। फिर वह अपने क्वार्टरमें गयी। वहांसे एक सूटकेस और होल्ड-आल लिये हुए बाहर निकली, फिर गजेन्द्रको एम्बुलेन्स कारमें लेकर स्टेशन चली।

चलते-चलते उसने एक दूसरी परिचा-रिकासे अपना रुमाल उड़ाते हुए कहा, "अल्मोड़ा पहुंचते ही पत्र लिखूंगी।"

शिमलामें नेताओंका सम्मेलन असफल

लीगका 'वीटो' अस्थायी सरकारके लिये बाधा
निकट भविष्यमें पुनः प्रयासकी संभावना
मुस्लिम लीगके रुख पर सारे संसारमें खेद

भारतके राजनीतिक गतिरोधका समाधान करने और युद्ध समाप्ति तक भारतमें एक अस्थायी राष्ट्रीय सरकारकी स्थापना करनेके निमित्त शिमलेमें वायसराय लार्ड वावेल द्वारा आमन्त्रित भारतीय नेताओंकी कानफरेन्स असफल हो गयी। डा० राजेन्द्रप्रसादको लार्ड वावेलने शुक्रवारके दिन सूचित किया कि यह खेदका विषय है कि कानफरेन्स असफल हो गयी। कहते हैं कि राजेन्द्र बाबूने वायसरायको कहा कि कांग्रेसकी ओरसे सहयोगके अभावके कारण कानफरेन्स असफल नहीं हुई। लार्ड वावेलने इसपर कहा कि कांग्रेसके दृष्टिकोणकी मैं प्रशंसा करता हूं किन्तु साथही यह खेदका विषय है कि कानफरेन्स सफल न हो सकी।

यद्यपि लार्ड वावेल द्वारा आयोजित कानफरेन्स असफल रही और इसके परिणाम स्वरूप निकट भविष्यमें राष्ट्रीय सरकारकी स्थापनाका सवाल पर्देकी ओटमें चला गया तथापि कांग्रेसी क्षेत्रोंका विश्वास है कि लार्ड वावेल और कांग्रेसके सर्वश्रेष्ठ नेताओंके बीच जो व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित हुआ है, उससे कुछ न कुछ परिणाम अवश्य ही निकलेगा। लार्ड वावेलने महात्मा गान्धी और राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादसे अनुरोध किया है कि कानफरेन्समें उन्होंने जिस प्रकार सहयोग दिया है उसी प्रकार अपना सहयोग बराबर देते रहें। महात्मा गान्धी और राष्ट्रपति आजाद—दोनों नेताओंने वायसरायको सहयोग देते रहनेका वचन दिया।

सम्मेलनकी असफलता पर यद्यपि व्यापक खेद प्रकट किया जा रहा है किन्तु कुछ अञ्चलोंका कहना है कि वर्तमान कानफरेन्सके असफल होनेके बावजूद निकट भविष्यमें लार्ड वावेल ऐसी चेष्टा करेंगे कि जहांसे कार्य समाप्त हुआ है वहांसे उसको फिर आरम्भ किया जाये। ऐसी सम्भावना है कि ब्रिटेनमें नयी सरकारका गठन हो जानेपर इस दिशामें फिरसे कदम बढ़ाया जायगा।

शनिवार दिनके १२॥ बजे शिमला सम्मेलनकी बैठक समाप्त हुई और सभी नेता वायसराय भवनसे बाहर निकल आये। राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादने पत्र प्रतिनिधियोंको सूचित किया कि शिमला कानफरेन्स समाप्त हो चुकी है। उन्होंने रविवारको प्रेस कानफरेन्समें अपना वक्तव्य देकर सम्मेलनके सम्बन्धमें सारी स्थिति स्पष्ट कर देनेका निश्चय किया।

पण्डित जवाहरलाल नेहरूने कानफरेन्स समाप्त होनेके बाद दिनके ३॥ बजे वायसरायसे मुलाकात की और शामके ७॥ बजे एक प्रेस कानफरेन्समें वक्तव्य दिया। राष्ट्रपति आजादने दिनके ४॥ बजे और लीग अध्यक्षने ९ बजे प्रेस कानफरेन्समें अपने वक्तव्य दिये। शिमला सम्मेलनकी समाप्तिकी घोषणा वायसराय द्वारा होनेपर विभिन्न पार्टीके नेताओंने अपने वक्तव्य दिये। राष्ट्रपति आजादने कहा कि यद्यपि यह सम्मेलन असफल रहा है फिर भी कांग्रेस देशके गतिरोधको दूर करनेमें सरकारका सदैव सहयोग करेगी। मि० जिन्ना, डा० पी० एन० बनर्जी, श्री शिवराव आदिने भी सरकारको इस दिशामें सहयोग देनेका आश्वासन दिया।

सम्मेलनकी समाप्तिके बाद लार्ड वावेलने अपने वक्तव्यमें बताया है मुस्लिम लीग तबतक नयी एक्जिक्यूटिव कौन्सिलमें शामिल होनेके लिये प्रस्तुत नहीं है, जबतक वह पांचो मुस्लिम सीटोंपर अपना उम्मेदवार नियुक्त न करा ले। मुस्लिम लीगकी इस नीतिके कारण समझौता नहीं हो सका और वायसरायने सम्मेलनको समाप्त कर दिया।

मुस्लिम लीगके इस रुखपर विदेशोंमें अत्यधिक खेद प्रकट किया जा रहा है। अमेरिका और ग्रेट ब्रिटेनके पत्रोंने मि० जिन्नाकी वर्तमान नीतिकी तीव्र आलोचना की है और उनको भारतकी वैधानिक प्रगतिमें रोड़े अटकानेवाला बताया है। बरमिंघम पोस्टने लिखा है कि कांग्रेसकी भूतकालीन नीति लीगके इस सन्देहके लिये जिम्मेदार है कि कांग्रेस द्वारा निर्वाचित मुसलमान कांग्रेसकी नीतिको मुस्लिम स्वार्थोंसे आगे रखेंगे। किन्तु ब्रिटेन और भारतमें इस कारण अत्यधिक खेद प्रकट किया जा रहा है कि मुस्लिम लीगने अपनी सूची पेश न कर लार्ड वावेलको अपने मन्त्रियोंका व्यापक आधारपर चुनाव नहीं करने दिया। इससे न केवल कांग्रेसके प्रति, वरन लार्ड वावेलकी शक्ति और सदिच्छाके प्रति भी अविश्वास प्रकट किया गया है।

वायसरायकी ओरसे पेश सूचीमें राष्ट्रवादी मुसलमानोंका नाम शामिल न रहने पर कांग्रेसका दृष्टिकोण बताते हुए राष्ट्रपति आजादने कहा कि कांग्रेस किसी भी ऐसी नीतिको स्वीकार नहीं कर सकती जिससे यह ध्वनि निकलती हो कि उसके द्वारा एकही सम्प्रदायका प्रतिनिधित्व होता है। कांग्रेसने राष्ट्रवादी मुसलमानोंके प्रतिनिधित्वके लिये निश्चित रूपसे निर्णय कर लिया है और उस निर्णयपर वह सर्वदा डटी रहेगी।

लार्ड वावेलका वक्तव्य

शिमला सम्मेलनकी असफलतापर वायसरायने खेद प्रकट करते हुए अपने भाषणमें कहा कि यद्यपि कानफरेन्सको फिलहाल भंग किया जा रहा है किन्तु अन्य उपायों द्वारा इसके उद्देश्यकी पूर्तिकी चेष्टा की जायगी। लार्ड वावेलने सभी आमन्त्रित नेताओंसे पार्टियोंमें कटुताकी भावना रोकनेकी अपील करते हुए कहा कि सम्मेलनकी असफलताका दोष किसी खास दलपर नहीं दिया जा सकता। कानफरेन्सके समक्ष एक्जीक्यूटिव कौंसिलकी कोई सूची पेश नहीं की गयी और न निर्वाचनके प्रश्नपर ही विचार हुआ। प्रान्तोंमें मन्त्रिमण्डलोंकी स्थापनाका प्रश्न उठाया गया लेकिन उसपर कोई निर्णय नहीं हुआ।

वायसरायने अपने भाषणमें कहा कि २९ जूनको कानफरेन्स इसलिये स्थगित की गयी थी जिससे अस्थायी सरकारकी स्थापनाके सम्बन्धमें समझौता हो सके। उन्होंने स्पष्ट कह दिया था कि कौंसिलके सदस्यों का अन्तिम चुनाव वह स्वयं करेंगे। उन्होंने विभिन्न दलोंसे सिर्फ कौंसिलके गठनपर एकमत होनेको कहा था। यूरोपियन दल और मुस्लिम लीगके सिवा सभी दलोंने अपनी सूची भेजी। इससे स्पष्ट था कि सभी दलोंके दावेको पूर्णतया स्वीकार नहीं किया जा सकता। मि० जिन्नाने उनके प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया और अपनी सूची नहीं भेजी। कानफरेन्स इसी कारण असफल हुआ और इसमें उनका (वायसरायका) ही दोष है। यह उनकी ही असफलता है। इस कारण सभी दलोंको आपसमें सौहार्द कायम रखना चाहिये।

आगे लार्ड वावेलने कहा कि देशके सामने इस समय जापानके खिलाफ सफलतापूर्वक युद्ध संचालन करनेका कार्य सर्वाधिक महत्व रखता है। युद्धोत्तर समस्याएं भी महत्वपूर्ण हैं और सरकार उनका समाधान करेगी। देशमें कानून और व्यवस्था कायम रखना होगा। वर्तमान समयमें गतिरोधके समाधानके लिये कोई नयी कार्यवाही सम्भव नहीं है। अस्थायी सरकारके लिये विभिन्न दलोंका सहयोग प्राप्त न हो सका अतएव वर्तमान व्यवस्था जारी रहेगी। कानफरेन्सकी असफलताके लिये उनको हार्दिक खेद है।

मि० जिन्नाकी दलील

मि० जिन्नाने कानफरेंसकी असफलताके दायित्वके सम्बन्धमें अन्य नेताओं द्वारा उठाये गये प्रश्नका उत्तर देते हुए कहा कि कांग्रेस और लीगने दो विभिन्न दृष्टिकोणोंसे समस्यापर विचार किया। पाकिस्तान और अखण्ड भारत एक दूसरेके प्रतिकूल हैं। मुस्लिम लीगने ब्रिटिश सरकारको सहयोग देनेके लिये हाथ बढ़ाया था। भारतके मुसलमान पाकिस्तानके लिये कटिबद्ध हैं। अगर सरकार एक घोषणा कर मुसलमानोंके स्वभाग्य निर्णयाधिकारकी गारण्टी दे देती और नयी सरकारमें लीगको अन्य सभी पार्टियोंके समान प्रतिनिधित्व दिया जाता तो लीग वावेल प्रस्तावोंपर विचार करनेके लिये प्रस्तुत थी।

[राष्ट्रप]ति आजादका वक्तव्य

[राष्ट्र]पति मौलाना अबुल कलाम आजाद[ने कहा] कि राजनीतिक गतिरोधके समा[धानके] लिये लार्ड वावेलके प्रयत्नोंकी मैं [मुक्त]कण्ठ प्रशंसा करता हूं। इसकी अस[फलताका] दायित्व वायसरायने अपने ऊपर [लेकर ब]ड़े ही साहसका परिचय दिया है। [वस्त]ुतः इसके लिये वायसराय नहीं [दूसरे] लोग जिम्मेदार हैं। अस्थायी [सरकारकी] शक्ति और गठनका प्रश्न उप[स्थित होने]पर वायसरायने सभी दलोंके [...]नेके लिये कानफरेन्सको स्थगित [किया] था किन्तु मुस्लिम लीगने नयी [कौंसिलमें] सभी मुस्लिम प्रतिनिधियोंको [नियुक्त] करनेका दावा किया। लीगका [यह दावा] निराधार और असमान्य था और [ऐ]सी स्थिति कदापि स्वीकार नहीं [की जा सकती] थी। कांग्रेस एक राष्ट्रीय सङ्ग[ठन है अ]तएव वह अपनेको हिन्दुओंका [संगठन] कहलाना बर्दाश्त नहीं कर सकती। [...]ओंकी तरह सुविधा और उत्तरदा[यित्वके ल]िये एक हिस्सा पानेका दावा [करनेका क]ांग्रेसको अधिकार है। यह बड़े [खेदक]ा विषय है कि अस्थायी सरकार[की स्थाप]नाके लिये लार्ड वावेलकी चेष्टा [सफल नह]ीं हुई। वायसरायने बार बार कहा [कि सभ]ी मुसलमानोंका प्रतिनिधित्व [करनेका ल]ीगका दावा स्वीकार नहीं किया [जा सकता]। अतएव यह स्पष्ट है कि कान[फरेन्सकी] असफलताके लिये कौन दोषी है। [...]के प्रश्न भारतकी प्रगतिके मार्ग[में बाधक] हुआ है। वायसरायको साम्प्र[दायिक सम]स्याके समाधानमें उतनाही भाग [लेना चाह]िये था जितना भारतीय दलोंको। [...]ब्रिटिश सरकार अपनेको इस प्रकार [...]विके दायित्वसे मुक्त नहीं रख [सकती। रा]ष्ट्रीय दलकी उपस्थिति पर वर्त[मान अवस]्थाकी उत्पत्तिका बहुत बड़ा दायि[त्व है। व]ायसरायका दृढ़ रुख, जो तर्क[...]र न्यायके सिद्धान्त पर आधारित [...] साम्प्रदायिक समस्याका समाधान कर [सकता है]। वायसरायकी वर्तमान ढिल[ाई ...]ठीक और समर्थन योग्य नहीं [...]हिचकिचाहट और निर्बलतासे समा[धान नहीं] निकल सकता। किन्तु मैं आश[ावादी] हूं। मैं वायसरायको [विश्वास द]िलाता हूं कि कांग्रेस सदैव इसी [प्रकार] सहयोग देती रहेगी। कानफरेन्स[का परिणा]म चाहे कुछ भी क्यों न हो, किंतु [वायसरायने] सदिच्छापूर्ण प्रयास किया है। [...] कठिनाइयां उत्पन्न हो गयी [...] वायसरायको उनसे हतोत्साह नहीं [होना] चाहिये।

[रा]जगोपालाचार्यको खेद

[श्री] राजगोपालाचार्यने सम्मेलनकी [असफलताप]र खेद प्रकट करते हुए इस बात[पर जोर द]िया कि किसी एक पार्टीके नक[ारात्मक रुख]के कारण वावेल योजनामें प्रस्ता[वित अस्थाय]ी सरकारकी स्थापनामें बाधा [नहीं पड़न]ी चाहिये।

पुस्तकालयको महत्व

(३ रे पृष्ठका शेषांश)

त्मिक क्षुधा अपनी तृप्ति चाहती है। केवल भीषण कष्ट, मरण तथा नरकके भयसे ही मनुष्यका जीवन सफल नहीं बनाया जा सकता। स्नेह, प्रेम, दया, करुणा, उत्साह आदिके आलम्बनके बिना उसकी उच्चतर वृत्तियां कैसे विकसित हो सकती हैं! सद्वृत्तियोंके पोषक तथा वृद्धिके लिये यदि काव्यमें कुछ आधार न हों तो उसकी उपयोगिता ही क्या! आदर्श चरित्रके अध्ययनसे जो सन्तोष, आनन्द तथा उत्साह मिलता है वह क्या व्यर्थ ही है? क्या जीवनके लिये उसका कुछ मुल्य नहीं आंका जा सकता? पापको बराबर देखते रहनेसे, उसकी सतत् कल्पनासे उसकी भीषणता नष्ट हो जाती है। साहचर्यका यह स्वाभाविक नियम है। पापकी भीषणताही मनुष्यको उससे दूर रख सकती है। जब भीषणता ही नष्ट हुई तब उससे विरत रहनेकी शक्ति भी मानो चली गयी। जीवनमें पापके आक्रमणकी यही अवस्था है। पापमें इतने प्रलोभन हैं कि मनुष्यको निर्बल पाते ही वे उन्हें पराभूत कर बैठते हैं। पुण्यकी शक्तिके बिना उनसे बचनेका कोई उपाय नहीं। पुण्यके सौन्दर्यमें जीवनको उन्नत करनेकी अपूर्व क्षमता है। यदि ऐसा नहीं रहे तो कवियोंकी आदर्श सृष्टिका प्रयोजन नहीं रह जाता। सत्साहित्यकी मर्यादा इसी में है कि वह जीवनको अधिकाधिक उन्नत तथा विशाल बनावे। जीवनको इस दृष्टिसे सबल तथा सम्पन्न बनानेका बहुत बड़ा उत्तरदायित्व पुस्तकालय पर है। वे समाजके गुरुकुल हैं। अच्छे पुस्तकालयोंका महत्व समाजमें स्थिर रहना ही चाहिये। सार्वजनिक पुस्तकालय, सार्वजनिक ध्येयकी पूर्तिके लिये रहें और पुस्तकोंके निजी संग्रह व्यक्तिकी कल्याण-साधनाके लिये। सार्वजनिक देव-मन्दिरके कारण गृह-देवताका महत्व कम नहीं हो जाता। अपने-अपने स्थान पर दोनोंही महत्व हैं।

आदर्शवाद भारतीय जीवनके सदा अनुकूल रहा है। उसके मूलमें ही भारतीय साहित्यका मूल दृष्टिकोण-ध्येय है। व्यक्ति कल्याण, समाज-कल्याण, विश्व-कल्याण ही भारतीय साहित्यका मूलमन्त्र है। ऐसी कल्याण-साधनाके पथ पर पुस्तकालय का जो महत्वपूर्ण कार्य है, वह स्पष्ट है। कुछ समालोचकोंका कहना है कि भारतीय साहित्यने भारतीय जीवनके स्वास्थ्यको पुष्ट रखनेका ध्येय तो रखा, किन्तु रोगको पहचाननेकी तरफ कुछ ध्यान नहीं दिया। निदानके बिना ही चिकित्सा पद्धति बनाई गयी। इसीके परिणाम स्वरूप समाजमें ऐसे कितने रोग हैं जिनकी चिकित्सा नहीं हो सकती। साहित्यको रोगसे बचने तथा उससे छुटकारा पाने, पाने दोनों ही ढंगकी चिकित्सा-पद्धतियां चलानी चाहिये। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि आदर्शवाद जीवनकी स्वाभाविक प्रवृत्तिके अनुकूल नहीं है। इस लिये यथार्थवादही साहित्यके अनुगमनका विषय हो सकता है। आदर्शवादकी कल्पना समाजने बनाई। वह प्रकृतिप्रदत्त नहीं। यदि इसी दृष्टिकोणसे यथार्थवाद तथा आदर्शवादकी कल्पना की जाय तो लोकमें अनेक अनर्थ सम्भावित हो सकते हैं। जीवनमें यदि सदैव प्रवृत्ति-पथका ही अनुसरण किया जाय और निवृत्तिको प्रकृतिविरुद्ध मानकर छोड़ दिया जाय तो समाजमें जीवनका जो रूप अभी दिखायी पड़ रहा है वह क्षणमात्रमें नष्ट-भ्रष्ट हो जायगा। हमारा अनुमान है कि आदर्शवाद तथा यथार्थवादके सम्बन्धमें इस प्रकारका विचार प्रकट करना उन्हीं लोगोंका काम है जो वस्तुतः उसका तात्विक अर्थ नहीं समझते। आदर्शवाद अति प्राकृत या अप्राकृत नहीं है। वह पूर्णतः प्राकृतिक है। उसका मूल मनुष्यकी वास्तविक स्थितिमें सन्निहित है, किसी अतीन्द्रिय क्षेत्रमें नहीं। इच्छाकी चेतनाका दिशा-निर्देश या लक्ष्य ही आदर्शके साथ सम्बन्ध रखता है। मनुष्यकी जो प्रकृति है उससे भिन्न उसका आदर्श नहीं हो सकता। मनुष्यके गुण तथा शक्तिके ऊपर ही आदर्शकी कल्पना निर्भर करती है। किसी वाह्य आदेशसे आदर्शका पालन नहीं हो सकता। उसमें मनुष्यकी अन्तः प्रकृति प्रतिबिंबित होती है। यही कारण है कि मनुष्यको जाननेका यह भी एक तरीका है कि उसके जीवनका आदर्श क्या है? आदर्शकी प्रकृतिसे मनुष्यकी प्रकृति जानी जा सकती है। मनुष्य अपनी प्रकृतिको एकान्त रूपसे परिवर्तित करनेमें जितना असमर्थ है उतना ही असमर्थ वह अपने आदर्शको बदलनेमें भी है। यदि प्रकृति बदली नहीं जा सकती तो आदर्श भी बदला नहीं जा सकता। प्रत्येक व्यक्तिका आदर्श उसका अपना आदर्श है। दूसरेके साथ उसका विनिमय नहीं हो सकता। प्रत्येक मनुष्य अपनी इच्छाको विकसित तथा प्रतिफलित देखना चाहता है और अपने आदर्शको प्राप्त करनेका प्रयत्न इसके सिवा और कुछ नहीं है। जिस भाव या शक्तिका संस्कार हमें नहीं है वैसे आदर्शको प्राप्त करनेकी इच्छा ही हमारे मनमें उत्पन्न नहीं हो सकती। इच्छाका चेतना-पुञ्जही आदर्श है। अपने जीवनकी नैतिक उत्कृष्टताकी भावना प्रशंसनीय है, किन्तु इस भावनाका उदय भी हमारी इच्छाही करती है। कोई भी बाह्य प्रभाव जबतक हमारी मूल प्रकृतिमें पूर्णतः सन्निहित नहीं हो जाता तबतक वह इच्छाका रूप धारण नहीं कर सकता, क्योंकि इच्छा सदैव हमारी प्रकृति के अनुसार ही उत्पन्न होती है। जो तद्गत नहीं है वह तज्जन्य भी नहीं हो सकता। जीवनको इस दृष्टिकोणसे देखनेपर साहित्यके सम्बन्धमें भी कुछ विचार परिवर्तन करना आवश्यक है। पुस्तकालयका यह भी अपना धर्म है कि जीवनको सबल तथा संयत बनानेके सम्बन्धमें ऐसे साहित्यका संचय करे जो उसके कर्तव्य-पालनमें सहायक हों।

---

* कूपन *

(लेखक—डा० डी० एन० मधुकर एम० डी० एस०)

कपड़ेकी समस्या दिन-ब-दिन खराब होती जा रही है, ज्यों-ज्यों लोग इसको सुलझानेका प्रयत्न कर रहे हैं। उलझानेवाले ज्यादा-से-ज्यादा अपने ही लोग हैं। सरकार और इस विश्वक्रान्तिके नामपर लोग क्या नहीं कर रहे हैं। इसके लिये लोग पाप तक कर रहे हैं। झूठ, पाप, छल फरेबके पर्देको आड़में धड़ाधड़ चूसवृत्ति बढ़ रही है। सत्य और ईमानको भी अभी ताकपर रख दिया है। गरीबों के घोंटे जा रहे हैं। कत्ले आम हो रहा है।

लोगोंने समझा था 'कूपन' एक अच्छी चीज होगी। जनताको कपड़े आदि ठीक मिल सकेंगे। परेशानियां नहीं होंगी। चोरबाजारका शिकार होना नहीं पड़ेगा; पर हो रहा है कुछ और। कोई तो ज्यादा-से-ज्यादा कपड़े अपनी कमीकी पूर्त्ति ही नहीं, बल्कि बेजा मुनाफाखोरी इकट्ठा कर रहा है, और नब्बे प्रतिशत अभी भी हाय-तौबा मचाये हुए हैं। इसके लिये दोषी कौन ?

अच्छा होगा, एक नजर हम लोग 'कूपन' काटनेवाले सेक्रेटरियों और उनके साथियोंकी ओर डालें। हमारे कुछ धनीमानी लोगों और सरकारी कर्मचारियोंने सेक्रेटरी इत्यादि बनाया, और वे लोग जनताके कपड़े और तेल वगैरहका प्रबन्ध 'कूपन' द्वारा करने लगे। इस पदको पाकर वे फूले नहीं समाये, और लगे मनमानी करने। "आप राज न खाये पान"—की कहावत चरितार्थ होने लग गयी। धड़ाधड़ 'कूपन' कटने लग गये। जाली आदमियोंके 'कूपन' काटनेवाले लोगोंने 'कूपन' थमा दिये, और कपड़े तुरन्त उनके घर पहुंचने लगे। हलवाहे-चरवाहोंके 'कूपन' कटते हैं; पर कपड़े जाते हैं मालिकोंके घरोंमें। कमाल है! आखिर यह अन्याय कबतक रह सकता था। अन्याय फूटकर निकला और उन महानुभावोंकी कलई खुलने लग गयी। इस बेजा हरकतसे अधिकांश गरीब जनता ऊब उठी, और बेकारकी नौबत होने लगी। अखबारोंमें रोज नयी-नयी शिकायतें छपने लगीं।

कुछ दूकानदारोंने भी मेम्बरोंको अपना मिलाया और जाली 'कूपन' काटकर उन कपड़ेको चोरबाजारमें बेचने लगे। आज भी गांठके-गांठ कपड़े पकड़े जाते हैं, पर 'उन चोरोंको क्या सजाएं होती हैं! कुछ नहीं! कुछ नहीं!! सभी दूकानदार क्लाथ इन्सपेक्टरोंको चांदी की डाकें मार कर भवसागर पार कर जाते हैं। क्या लार्ड वावेलकी सरकार इन हरकतोंको नहीं देखती ?

चोरबाजारीकी हवा शहरों छोटे-मोटे कसबों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आम लोगोंमें भी हवा फैल गयी है। अब तो हाली गंवार भी साड़ीकी धोतीका 'कूपन' लेकर कपड़ा मिल जाने पर उसे चोर-बाजार में बेचा करता है, क्योंकि सभी लोगों-को काफी कपड़े तो मिल नहीं रहे हैं। लोगोंकी जरूरतकी पूर्ति तो हो नहीं रही है। नियमानुसार सख्त जरूरत वालोंको कपड़े मिलने चाहिये, जिनकी ब्याह-शादी रुक रही हो या इज्जत ढकनेको बिलकुल कपड़े नहीं हों। पर, वैसा होता कहां है ? कुछ कपड़े तो तिकड़मसे 'कूपन' काटनेवालों ने हड़प लिये, कुछ हाकिम-हुक्कामोंने, और कुछ हमारे चोर बाजारी लोगोंने। जरूरत वाले लोग खटाईमें फूलने गये।

तिकड़मबाजोंको क्या-क्या कहा जाय, समझमें नहीं आता है। अक्ल हैरान हो जाती है। इनकी एजेन्सी चलती है, जनाब! आपका मकान चाहे जहां भी हो, आप इन्सान हों वा शैतान, पर गांठके पूरे हों। इन एजेण्टोंसे मिलकर सिटपिट कर लीजिये। कपड़े तो मिलेंगे ही। एजेण्ट आंखें फाड़े बाजारोंमें गिद्धकी तरह दीख पड़ेंगे। ये कोई लुच्चे-लबारे थोड़ेही होते हैं। होते हैं गांवों और शहरोंके कुछ भले-भले लोग। जो हमेशा दलाली ही किया करते हैं, और ऊपरसे तो नहीं, पर भीतरसे शैतानोंके मामा हुआ करते हैं। जात-बिरादर, समधी-सारे, नाना-नाती, बाबा-पोते, मामा-भंजे, चचेरे-मौसेरे चाहे कोई भी क्यों न हों आप, एक बार उनसे मिलिये, और अपनी गोटी लाल कर लीजिये। आप कहेंगेः—उन्हें इतने 'कूपन' मिलते कहां हैं ? क्या सभी 'कूपन' काटनेवाले बेईमान ही हैं ? जी हां, ये सभी चोर-चोर मौसेरे भाई हैं। ऐसे लोग अपने साथ बहुत-से गवारोंको रोजाना साथ लिये फिरते हैं, और बहाने बनाते हैंः इन गरीबोंको कभी कपड़े मिले ही नहीं। मैं इन्हें 'कूपन' दिलाने जा रहा हूं। आदि। 'कूपन' काटनेवाले भी तो सभी सत्यके ही अवतार हुआ करते हैं, क्योंकि उन्हें भी तो अपने-लोगोंको ज्यादा से ज्यादा कपड़े दिलाने हैं। तो ऐसी हालतमें मिल जाते हैं सभी गोद्दे एक साथ। और सबकी गोटियां तब लाल हो जाती है। जो बूड़े सो बूड़े। हम लोग सदाही बूड़ा करेंगे। ऐसोंकी खैरियत कहीं नहीं है।

और, अगर आप सुधारक विचारके हैं। आपने जरा भी उनकी कुछ टीका-टिप्पणी की, कि वे सभी कुत्ते आप पर टूट पड़ेंगे। उल्टे आपकोही चोर-ठग-लुच्चा-लबारा और सब कुछ बनना पड़ेगा।

मुंगेर जिलेके एक क्लोथ इन्सपेक्टरसे मेरी बात-चीत हुई। एक जमीन्दार घरके हैं वह। जबानकी सफाई राजपूतकी जैसी है। कपड़ेके मामलेमें वह मेरी राय जानने लगे। मैंने कहाः—जरूरत एवं योग्यताके मुताबिक लोगोंको सभी सामान मिलने चाहिये। कपड़ोंका वितरण मनुष्य गणनाके आधार पर होना चाहिये। तिकड़मबाजी बन्द होनी चाहिये। हाकिम-हुक्कामोंको हमारा हिस्सा कपड़ा नहीं हड़पना चाहिये। ठकुर सोहाती कारोबार बन्द होना चाहिये। आदि। वह बोलेः—मैं आपकी सभी बातें मानता हूं, पर योग्यताके मुताबिक आपने जो कहा उसका मैं विरोध करता हूं। गौर कीजिये, बाजारमें स्टैण्डर्ड क्लाथकी साड़ी एक भी नहीं हो, तो क्या जनरल क्लाथसे मील-मुसहरोंको कपड़े नहीं दिये जांय ? मैंने उन्हें समझायाः—हुजूर, स्टैण्डर्डकी सभी साड़ियां धोतियां सिर्फ गरीब लोगोंके ही लिये रखा जांय, जिसमें उन्हें कम पैसे लगें, और अच्छे कपड़े पैसे वालोंको दिये जांय, क्योंकि इनके खरीदनेकी कीमत उनके पास है। और अगर गरीब लोग खामख्वाह जेनरल क्लाथके ही कपड़े मांगें, तो उन्हें अवश्य दिया जाय; पर ऐसा नहीं हो कि 'कूपन' कटे गरीबोंके नामसे और पहरें अमीरोंकी बहू-बेटियां। मनमानीके विषयमें वह बोलेः—इसे कोई रोक नहीं सकता। यह जीव मात्रका स्वभाव है वह अपनी जातिके लिये कुछ न कुछ बेईमानी जरूर करेगा। मैंने उनकी इन बातोंका विरोध किया; और अन्यायको ज्यादा से-ज्यादा रोकनेकी प्रार्थना की। पर, वह अपनी ऐंठमें मेरा कुछ सुनने वाले थोड़ेही थे हालां कि उनकी पालिसी एकदम गलत थी। वह ऐसा इस लिये कह रहे थे चूंकि वह खुद भी जमींदार हैं, यद्यपि उनकी जमींदारी कबकी खतम हो चुकी है। सुना जाता है आप घूस भी खूब लिया करते हैं, तो क्यों न कहें ऐसा। 'कूपन' काटनेवालों

(शेष १८ वें पृष्ठ पर)

अमीर और गरीब

—:०*०:—

है अपनी अपनी राह अलग,
युग-युग से दोनों रहे पथिक
पर कोई उनमें नहीं सजग।

(१)

तटिनी-तटवाले मधुवन में
मादकता ले मधुऋतु आयी;
अपनी अनुपम आभा भरकर
स्वर्ण-परी सी वह मुस्कायी।
लगा पकड़ने एक वहां पर
उपवन की रंगीन तितलियां;
दब कठोर कञ्चन-हाथों से
नष्ट हुयीं कितनी ही कलियां।

इधर दूसरा खड़ा कूल पर
देख रहा कञ्चन की लीला;
कभी लहरियों को गिनता था
कभी देखता था नभ-नीला।
उधर काग टूटा बोतल का
और इधर धधकी वह ज्वाला;
उधर कामिनी, इधर नागिनी
बस अपनी-अपनी आह अलग

(२)

एक चाहता, कलियोंके ही
मधु पराग में मैं मिट जाऊं;
एक चाहता, दानवता की
दुनियामें मैं आग लगाऊं।
एक चाहता, धनपर हंस-हंस
कर दूं मैं ईमान निछावर।
एक चाहता, मानवता पर
कर दूं अपनी जान निछावर।

एक चाहता, शोषणको ही
मैं अपना व्यापार बना लूं
एक चाहता, हाड़ मांस पर
सोनेका संसार बना लूं।
एक चाहता, मारूं ठोकर
महा प्रलयके घन घहरा दूं
दोनोंका है संसार एक
पर अपनी-अपनी चाह अलग।
है अपनी-अपनी राह अलग।

—श्री गङ्गाप्रसाद 'कौशल'

सामरिक युद्धकी समाप्तिके पहले ही यूरोपमें एक दूसरी मोर्चेबन्दी भीतर ही भीतर बड़े जोर शोरसे हो रही थी और असली युद्धका मोर्चा समाप्त होते ही इस दूसरे मोर्चेने--कूटनीतिक मोर्चेने उसका स्थान ग्रहण कर लिया। फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेलजियम, पोलैण्ड, युगोस्लाविया, ग्रीस यूनान, आस्ट्रिया, हङ्गरी और जेकोस्लावियामें तीन महान सोवियट रूस, अमेरिका और ब्रिटेनके कूटनीतिक सेनानियोंके दांव पेंच चलने लगे। इस मोर्चेबन्दीमें अमेरिका उतना खुलकर सामने नहीं आया। उधार-पट्टाकी सहायता तकही उसने अपना कदम जाहिरा तौरपर बढ़ाया। रूस और ब्रिटेन यद्यपि ये एक दूसरेके सामने नहीं आये किन्तु इन दोनों महारथियोंने अपने-अपने पट्ठों और शागिर्दोंकी पीठ ठोंककरउन्हेंमैदान में उतारा। इस कूटनीतिक अखाड़ेकीकुश्तियां कहीं कहीं बराबर छुड़वा दी गयीं और कहीं कहीं चित पट तककी नौबत आ गयी। कुछ जमा जितने जोड़ोंका फैसला हो चुका है उनको देखते हुए अभी तक रूसके अखाड़े की ही जीत है।
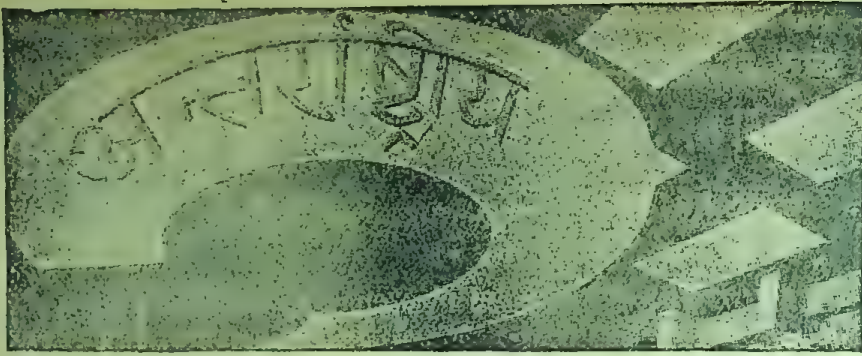
बर्लिन

जर्मनीके आत्म-समर्पण कर देनेके बाद चार भागोंमें उसे बांट दिया गया। अभी तक फ्रांस, ब्रिटेन, अमेरिका और रूसके हिस्सेके जर्मनीके फ्राण्टियरों और उन अञ्चलोंमें एक तरहकी शासन व्यवस्था रहे या उसका रूप क्या हो आदि प्रश्नों पैर कोई समझौता नहीं हो सका। इन सब महत्वपूर्ण प्रश्नोंका निर्णय आगामी त्रिनेतृ सम्मेलनके लिये रख छोड़ा गया है। किन्तु बर्लिन पर नियन्त्रणका प्रश्न इसी बीचमें तूल पकड़ बैठा। लाल सेनाने बर्लिन पर अधिकार किया था। किन्तु याल्टा सम्मेलनमें यह निश्चय हुआ था कि बर्लिन खास पर तीनों महान राष्ट्र, रूस, अमेरिका और ब्रिटेनका सम्मिलित नियन्त्रण रहेगा। किन्तु इसे तत्काल कार्यमें परिणत नहीं किया जा सका। बर्लिनमें सैनिक सरकार और विधि व्यवस्थाके विषय पर सोवियट और ब्रिटिश तथा अमेरिकन अधिकारियों-के बीचमें कुछ मतभेद उत्पन्न हुआ। उधर तबतक सोवियट अधिकारियोंने बर्लिनमें अपनी व्यवस्थाके अनुसार कार्य आरम्भ कर दिया। ब्रिटिश और अमेरिकन भाग-के बर्लिनमें रहनेवाले १६ लाख ५० हजार जर्मनोंके भोजनादिकी व्यवस्था भी रूसियों ने की। इस तरह इस समय नगरकी पूरी आबादी ३० लाखके भरण-पोषणका उत्तर-दायित्व मार्शल जुकोव पर है। यह बहुत बड़ा प्रश्न है। इनके जीवनके लिये आवश्यक और उपयोगी द्रव्योंकी व्यवस्थाका, प्रश्न तीन महान राष्ट्र नेताओंके समक्ष आगामी बैठकमें आयेगा।

एक समस्या हल हुई

इस बीच बर्लिनकी सैनिक सरकारके प्रश्नको लेकर जो गत्यवरोधकी स्थिति पैदा हो गयी थी, वह सुलझ गयी। चारों राष्ट्रों-के फौजी गवर्नरोंके सम्मेलनमें रास्तेकी सारी कठिनाइयां दूर हो गयीं। इस सम्मेलनके निश्चयानुसार गत बृहस्पतिवारसे ब्रिटिश और अमेरिकन अपने अपने अधिकृत अञ्चलकी फौजी सरकारका दायित्व अपने अपने हाथमें लेंगे। फौजी गवर्नरोंकी कौन्सिलने इस आशयकी घोषणा जारी की है कि ब्रिटिश और अमेरिकनोंके बर्लिन आनेके पूर्व जारी किये गये रूसी फरमान बदस्तूर रहेंगे।

इस फैसलेके अनुसार शहरके ब्रिटिश और अमेरिकन अधिकृत अञ्चलोंसे रूसी सैनिक हटा लिये जायंगे। केवल खाद्य भण्डारों और रेलवेकी रक्षाके लिये आवश्यक गार्ड रह जायंगे।

एक नया भण्डाफोड़

विख्यात अमेरिकन पत्रकार ड्रू पियर्सनने फिर एक सनसनी खेज भंडाफोड़ किया है। पियर्सनका कहना है कि आस्ट्रियाकी अस्थायी सरकारको स्वीकार करनेके सम्बन्धमें ब्रिटिश वैदेशिक विभागसे जो गुप्त आदेश पत्र भेजा गया था उसकी प्रतिलिपि उनके पास है। इस आदेश पत्रका उल्लेख करते हुए पियर्सनने बताया है कि "सैनफ्रैंसिस्कोसे रूस-विरोधी मनगढ़न्त कहानियोंके लिये मसाला जुटानेवाले कई ब्रिटिश और अमेरिकन कूटनीतिज्ञोंने प्रेसके कानोंमें यह बात डाली थी कि रूसी कार्ल रेनरको आस्ट्रियाका नया चांसलर बनाना चाहते थे। किन्तु यह पत्रकार अब ब्रिटिश वैदेशिक विभागके एक पत्र द्वारा यह सिद्ध करनेकी स्थितिमें है कि बात बिलकुल उलटी थी।" ड्रू पियर्सनके इस भण्डाफोड़से लन्दन और वाशिंगटनके कूटनीतिक अञ्चल बड़े परेशान हैं कि आखिर यह पत्र पियर्सनके हाथ कैसे लग गया।

यूनानमें ब्रिटिश राज ?

उक्त रहस्योद्घाटनके साथ साथ पियर्सन और एक पतेकी बात लाये हैं। इस भंडाफोड़से यह पता चलता है कि यूनानके सम्बन्धमें अंगरेजोंकी नीयत साफ नहीं है। संयुक्त राज्य अमेरिकाकी सीनेट कमेटीने सिफारिश की है कि प्रशान्त युद्धको सहायता पहुंचानेके लिये यह आवश्यक है कि उधार पट्टा व्यवस्थाके अन्तर्गत दिये गये शस्त्रास्त्र अमेरिकाको वापस कर दिये जायं। मि० पियर्सनका कहना है कि यूनानी आशा करते हैं कि इस सिफारिशके दायरेमें उधार पट्टा व्यवस्थाके अन्तर्गत दिये गये वे अमेरिकन टैंक भी शामिल होंगे जिनको लेकर अंगरेज एथेन्समें अब भी गश्त लगा रहे हैं। पियर्सन कहते हैं कि "मैं यह प्रकट करता हूं कि इस समय भी यूनानमें, जिसने विदेशी सैनिकोंको अपने देशके भीतर न घुसने देनेके लिये बहादुरीके साथ युद्ध किया, आज भी ७३ हजार अंगरेज सैनिक हैं। मैं यह बात भी प्रकट कर सकता हूं कि यूनान जब जर्मनोंके अधिकारमें था उस समय भी अधिकार रखनेवाली जर्मन सेनासे संख्यामें कहीं अधिक ब्रिटिश सेना है।" शायद पियर्सनको यह नहीं मालूम कि हाथीके खानेके दांत और तथा दिखानेके दांत और होते हैं।

बुलगेरियामें रूसकी किलेबन्दी

तुर्की और यूनानकी सरहदसे मिली हुई बुलगेरियाकी सरहदपर, मालूम हुआ है कि, रूस और बुलगेरिया दोनों मिल कर किलेबन्दी कर रहे हैं। बुलगेरिया स्थित कण्ट्रोल कमीशनके ब्रिटिश और अमेरिकन सदस्योंको बताया गया है कि यह किलेबन्दी बचावके लिये है। किलेबन्दीके साथ साथ ज्लेटग्राड और मेकजाजा स्थित बुलगेरियन हवाई अड्डोंको भी विस्तृत किया जा रहा है। यह काम भी रूस और बुलगेरियाके संयुक्त तत्वावधानमें हो रहा है। सैनिक पर्यवेक्षकोंका कहना है कि इन हवाई अड्डोंसे तुर्की और यूनान दोनोंके भूभागकी खबर ली जा सकती है। दूसरे सूत्रोंसे प्राप्त संवाद इस आशयका है कि यूनान सरकार बुलगेरियन सरहदकी ओर अपनी संख्या बढ़ा रही है और उधार अलबेनियाकी सरहदपर मार्शल टीटोके २० हजार सैनिक मुस्तैद हैं। खबर है कि समूचा अलबेनिया मार्शल टीटोकी सेनाके निकट नियंत्रणमें इस समय सैनिक हलचलोंका केन्द्र बना हुआ है और यह उड़ती खबर भी मिली है कि बुलगेरियन पोर्ट वार्ना और बरहासमें रूसी जहाजी यूनिट पहुंच गये हैं। सब समाचार किसी भयङ्कर अपशकुनका संकेत कर रहे हैं। क्या यह सम्भव है कि दर्रेदानियलके मसलेपर रूसके साथ तुर्कीका समझौता न हुआ तो तलवारोंसे फैसला करनेका रास्ता पकड़ा जायगा ?

रूसका आश्वासन

जर्मनोंके प्रति अपने सदय और सहानुभूति सूचक व्यवहार द्वारा सोवियट रूसने परिपाटी पंथी ब्रिटेन और अमेरिकाको आतङ्क-ग्रस्त कर दिया है। हुआ जीत लेने पर दिमागको जीतनेमें कठिनाई नहीं होती। अतः आतङ्क-ग्रस्त ब्रिटेन और अमेरिकाका यह सोचना सहज और स्वाभाविक है कि जर्मनीमें रूस जो सौजन्य और सौहार्द दिखा रहा है वह जर्मनीमें सोवियट प्रणाली स्थापित करनेकी पूर्व भूमिका है। सोवियट सरकारने अपने पश्चिमी मित्रराष्ट्रोंको आश्वासन दिया है कि रूस द्वारा अधिकृत जर्मनीमें तबतक सोवियट प्रणाली चलानेकी चेष्टा नहीं की जायगी जबतक जर्मनी ... मित्रोंका अधिकार रहेगा। कहावत है ... बातोंकी अपेक्षा कामोंसे अधिक ... परिचय प्राप्त होता है। पश्चिमी मित्र रा... की स्वतन्त्रता और समानताके सम्ब... लम्बी लम्बी बातें सुनते सुनते आ... दुनियाके कान भर गये हैं। अतः रूस-अ... कृत जर्मनीमें सोवियटका सुन्दर व्यव... और सदाचरण जर्मनोंको प्रभा... करेगा ही। यह प्रभाव जर्मनोंको ... सोवियट प्रणाली ग्रहण करनेको ... करेगा। पश्चिमी मित्रराष्ट्र क्या ... प्रतिकार कर सकते हैं ?

फ्रांसमें वैधानिक परिवर्तन

जेनरल डि गाल द्वारा उपस्थित कि... गये वैधानिक सुधारके प्रस्तावों पर वि... करनेके लिये फ्रेंच मन्त्रिमण्डलकी वि... बैठक हुई। मन्त्रिमण्डलने अपनी बैठकमें ... यह घोषणा की है कि सबको वोट देने... अधिकार है। इस सिद्धान्तके आधार ... फ्रेंच राष्ट्र एक राष्ट्रीय कंस्टीटूएण्ट असेम्ब... निर्वाचित करेगा। यह असेम्बली एक ... विधान तैयार करके राष्ट्रके सामने उपस्थि... करेगी। विधानपर लोकमत लिया जाय... स्वीकृत होनेपर उक्त विधानके अनु... फ्रांसकी शासन व्यवस्था होगी। अबत... फ्रांसका शासन १८७५ के प्रथम प्रजात... विधानके अनुसार होता आया है। ... अन्तर्गत दो व्यवस्थापिका परिषदें (... सभा और कामन सभाकी तरह) ... हैं। बड़ी व्यवस्थापिका, जैसा सर्वत्र ... है, प्रगतिके मार्गमें बराबर रोड़े अट... है। जेनरल डि गाल दो परिषदों ... व्यवस्था और १८७५ के विधानमें ... संशोधनके समर्थक हैं। वामपन्थी ... प्रतिरोध शक्तियां चाहती हैं कि ... अधिकार प्राप्त एक परिषदकी व्यवस्था ... १८७५ के विधानकी जगह सर्वथा ... विधान बने। अब इसका निर्णय ... लोकमत द्वारा करेगा।

नवीन पोलैण्ड

लन्दनी पोलोंकी टें-टें अभी समाप्त ... हुई। कहावत है रस्सी जल जाती है, ... नहीं जाती। पोलैण्डमें नयी सरकार ... गयी, संसारके सभी प्रमुख राष्ट्रोंने ... वैधानिक सत्ताको मान लिया। देश ... विदेशमें नयी सरकारका सिक्का बै... है। प्रीमियर मोरावस्कीकी नयी सरकार ... १९२१ के पोलिश विधानको अपना ... आधार माना है। पोलैण्डसे सरक... भागनेके समय १९३५ का विधान ... चालू था। वार्सा सरकारने पहले ही ... घोषित कर दिया था कि लोकतन्त्रीय ... नाते शून्य १९३५ का विधान हमें ... नहीं है। पहलेके (१९२१) विधानमें ... बातोंके सिवा निम्नलिखित अधिकारों ... उल्लेख है जो १९३५ के विधानमें नहीं ...

"कानूनके सामने सब नागरिक ... हैं। कानून द्वारा स्थापित शर्तोंकी मान... स्वीकार करनेवाला प्रत्येक व्यक्ति, ... किसी भेदभावके, सरकारी पदोंका ...

...क्षितः किन्न करोतिपापम्—

...युद्धके परिणाम-स्वरूप अनेक राजमुकुट ...लित हुए और हो रहे हैं। लाखों ...ियोंने युद्धमें अपने प्राणोंकी बलि ..., संसारके सभी युद्ध संलग्न देश तबाह ... किन्तु उनका नैतिक स्तर इतना ... नहीं हुआ, जितना कि आज भाग्य ...और खासकर बङ्गालका हो रहा है। ...में अकाल, महामारी, बाढ़ और ...के परिणामस्वरूप आधे करोड़ व्यक्ति ...के गाहमें समा गये। जो बचे वे आज ...स्तके लिये त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। ...के जमानेमें कितने पति अपनी पत्नि-..., माताएं अपनी प्यारी सन्तानोंको ...भाई अपनी बहनोंको छोड़नेके लिये ...त हुए। एक ओर इस दैवी-मानवी ...लीलासे हाहाकार मचा हुआ था तो ...ओर ऐश्वर्यशाली व्यक्ति मौजमें गुल-...ड़ा रहे थे। भूखसे तिलमिलाती हुई ...यां अपनी क्षुधा निवृत्तिके लिये तन ...को बाध्य हुई। हजारों गृहदेवियां और ... माताएं जाति-कुल-धर्मका परित्याग ...तालयोंमें मर गयीं। चटगांव जिलेके ... गांव उजाड़ हो गये। बुभुक्षितः किन्न ... पापम् वाली कहावत चरितार्थ हुई। ...न और पति और पुत्रोंको छोड़कर ...ों स्त्रियां भाग खड़ी हुईं किसी दूर ..., पापी पेटको भरनेके लिये दो मुट्ठी ...ानेकी आशासे। हमारे समाजके ...थित अगुआ उनकी सहायताके लिये ...ढ़े। दिनभर उनसे सड़कोंकी मरम्मत ... और रातमें रासलीला करते और ...बदले उनको देते कुछ आने पैसे और ...ढ़ पाव चावल। बेचारी उतनेसे ही ...होतीं। किन्तु वह इलाका युद्ध मोर्चे ...कुछ समीप था। सहस्रों सैनिक दिन ...यां भरे रहते थे। इतनी विशाल ...में नारियोंको देखकर उनके अन्दर ...का जाग्रत होना स्वाभाविक ही था। ...रिजन-विहीना नारियोंको पैसेकी जरू-... पेट भरने और तन ढंकनेके लिये। ... उनको मिले और खूब मिले। जो ...यीं और जिनके चेहरेपर कुछ भी ...था, उनकी बन आयी। युवतियां ...र दिन भर मिलिटरी ठेकेदारोंके ... काम करतीं और रातमें सैनिकोंकी ... सामग्री बनतीं। जो बूढ़ी थीं, वे ... किया करतीं। यह सब सैनिक ...नोंमें काम करनेवाली स्त्रियों तक ...सित न रहा वरन काक्सबाजार, चट-...दि शहरों और आसपासके देहातोंमें

...। पोलैण्डके प्रजातन्त्रकी सम्पूर्ण ...के निवासियोंके हाथमें है।"

...के विपरीत १९३९ के विधानमें ...को बड़ा बना दिया गया है। ...की सम्पूर्ण और अविभाज्य सत्ता ...के व्यक्तित्वमें सम्मिलित है।" वार्सा ...सरकार इस तरहके विधानको कैसे ...ती थी। अब शीघ्रही पोलैण्डमें, ...र्व मताधिकारके आधारपर शीघ्र ...दान-पत्र (बैलट) द्वारा निर्वाचन ...स बातकी घोषणा वार्सा सरकारने

समाज का अग्निकुण्ड

भी फैल गया। सैनिकगण किसी भी घरमें बेरोकटोक घुसने और औरतोंसे छेड़खानी करने लगे। ८-१० वर्षके अबोध बालक तक उनकी मंशाको भलीभांति समझते और उनके लिये स्त्रियोंकी व्यवस्था करते देखे गये। चटगांव और काक्सबाजारकी ऐसी ही अवस्था अबतक है। सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो चली है और गांवोंके पढ़े लिखे लोग सभी बातोंको समझते हुए भी मौन हैं। जिस देशकी नारियां कभी सीता-सावित्री हुआ करती थीं, उनका इतना अतःपतन देखकर हृदय क्षोभ और व्यथासे भर जाता है। बङ्गालके दूसरे स्थानोंकी यद्यपि ऐसी अवस्था नहीं है किन्तु इसमें सन्देह नहीं कि इस प्रान्तके सभी लोगोंका नैतिक मापदण्ड बहुत लचीला हो गया है। आये दिन ऐसी खबरें पढ़नेको मिलती हैं कि अमुककी पत्नी अथवा पुत्रीको अमुक मुसलमान भगा ले गया, अमुककी विधवा बहन अमुकके साथ चली गयी। इन सभी बातोंके पीछे एक कटु सत्य छिपा हुआ है। हमारे बङ्गाल प्रान्तमें अङ्गरेजोंने सर्वप्रथम पदार्पण किया। अंग्रेजी सभ्यताकी चका-चौंधसे ओतप्रोत बङ्गाल निवासियोंने अपनी प्राचीन व्यवस्थाका परित्याग कर श्वेतांगों की नकल आरम्भ की। बङ्गाल कृषिप्रधान देश है। अधिकतर लोग खेतिहर हैं जो अपनी पैदावारपर भरोसा करते हैं। अंग्रे-जोंकी नकल करनेको चाहिये पैसे और पैसों की बहुतायत उनके पास नहीं। फिर पैसेके बिना अङ्गरेजों जैसा ठाटबाट हो किस तरह सकता था। किरानी बाबू लोग जितना कमाते, उतनेमें सारे परिवारका गुजारा भी मुश्किलसे होता, फिर उस तड़क-भड़कके लिये पैसे लायें तो कहां से। स्त्रियां दिन रात फरमाइश किया करतीं और पुरुष बेचारे जी तोड़ परिश्रम करनेके बाद शामको जब घर लौटते तो कलह आरम्भ होता क्योंकि वे उनकीफरमाइशकी चीजें जुटा नहीं पाते थे। इस प्रकारके गृहकलह आज प्रायः सभी मध्यवर्ग बङ्गाली परिवारमें देखे जाते हैं। गृहदेवियां कहती हैं—मुझको बांदी बना रखा गया है। अमुक लड़की कितनी स्वा-धीन है। किसीके पैरों तले नहीं कुचली जाती। आदि-आदि। और इस 'स्वाधी-नता' की भावनासे प्रेरित होकर आज अनेकों देवियां गृहका परित्याग करती हुई देखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त ऐसी स्त्रि-योंको बहकानेवाले भी कम नहीं मिलते और उनको जहां जरा-सा प्रलोभन मिला कि उनके साथ निकल गयीं। आज बङ्गाली युवक ऐसी घटनाओंको अपनी आंखोंके सामने देखते और किसी प्रकारका विरोध प्रदर्शन न कर उसमें मजे लेते दिखते हैं। कलकत्ता शहर भी ऐसी घटनाओंसे अछूता नहीं बचा है। यहांकी अवस्था और जगहोंसे भिन्न है तथा यहां विभिन्न देशों और प्रान्तोंके लोग बसते हैं। फिर भी पुरुषों और स्त्रियोंके नैतिक पतनका परिचय यहां राह चलते मिल जाया करता है। इन दिनों कलकत्तेमें यह बताना अत्यन्त कठिन हो रहा है कि कौन महिला समाजके अन्दर की और कौन बाहर की हैं। ट्राम बसोंकी भीड़भाड़में स्त्रियां पुरुषोंको धक्के देती हुई चलती हैं और ऐसी कल्पना करती हैं मानो उनमें और पुरुषोंमें कोई अन्तर ही नहीं, अपितु वही श्रेष्ठ यौनवर्ग की हैं। हालहीमें स्थानीय एक समाचारपत्रमें एक महिलाका पत्र प्रकाशित हुआ है, जिसमें उस देवीने बताया है कि एक ट्राममें यात्रा करते समय उनको किस दुर्घटनाका सामना करना पड़ा। उन्होंने लिखा है कि ट्राममें चढ़नेके बाद उनको ऐसा प्रतीत हुआ मानो दर्जनों भुजाएं उनके सामनेके किसी विशेष अङ्गको स्पर्श करना चाहती हों। ट्राममें इतनी रेल-पेल हो गयी कि वह प्रायः पिस गयीं। ऐसी घटनाएं आज आमवाकया हो रही हैं। ट्राम बसके आसपास आजकल ऐसे दर्जनों व्यक्ति चक्कर लगाते देखे जाते हैं, जिनका दूसरा कोई काम नहीं, सिर्फ ट्रामसे चढ़ती या उतरती स्त्रीको एक बार धक्का दे देनेतक सीमित है। अकेली फुटपाथपर जाती हुई किसी युवतीके पीछे युवकोंका दौड़ना तो आजकी आम बात है। उक्त देवीजीने युवकों को बहुत भला बुरा कहते हुए उनको रंगा सियार बताया है। इसमें सन्देह नहीं कि देवीजीका कथन अनेक अंशोंमें सत्य है किन्तु इसमें दोष किसका है। अगर पुरुषों को ऐसी हरकतें करनेका पहलेसे:प्रोत्साहन नहीं दिया जाता तो उनमें वैसा करनेका कदापि साहस नहीं होता। ताली एक हाथ से कभी नहीं बजती। कलकत्तेमें आज दिन ऐसी घटनायें जो हुआ करती हैं उसको रोकनेके लिये पुरुषों और स्त्रियों—दोनोंको संयमी होना परमावश्यक है। जबतक हमारा नैतिक बल मजबूत नहीं होता तब-तक हम ऐसी ही लज्जाजनक स्थितियोंका मुकाबला करते रहेंगे। समाजके कर्णधारों को इस दिशामें अग्रसर होकर अपनी सभ्यता और संस्कृतिको पतनके गर्तमें गिरनेसे रोकना चाहिये, अन्यथा वह दिन दूर नहीं है जब हमारा बङ्गाली समाज इतनी गहराईमें गिर जायगा कि उसको फिरसे उठनेकी शक्ति नहीं होगी।

यह पैशाचिकता—

पुलिस एक ऐसी जमातका नाम है जो राज्यकी ओरसे प्रजाके रक्षार्थ, प्रजाकी असुविधाओं, दुःख, क्लेश, आसन्नसङ्कट से रक्षा करती है और यह देखती है कि राज्यशासन के विरुद्ध अशांति न होने पाये। जबतक देशमें देशकी सरकार थी पुलिसवाले अपने देशके लिये अपने कर्तव्यको कर्तव्य-शील बनकर अदा करते रहे। उन्हें भय था कि हमारे अन्यायकी कलई पलक मारते खुल सकती है और फलस्वरूप हमें सूली सेज सोनेकी आवश्यकता होगी। उस समय प्रजाके फरियादको राजा सुनता था और तदनुकूल कार्य भी करता था। पर आज हमारे यहां न तो अपनी सरकार है और न उसके उत्तरदायी कर्मचारी ही। सात समुद्र पारका रहनेवाला राजा क्या जाने कि उसकी प्रजा क्या है और वहांकी व्यव-स्था कैसी है। मोटी-मोटी रकम पानेवाले गोरे महाप्रभु भारतके शासनयन्त्रको चलाने के लिये भारत आकर धन कमाते हैं, मोटर पर चढ़ते हैं, नाच-रंग और शराबमें मस्त रहते हैं। वे कानून जानते हैं, न्याय नहीं। वे फैसला करते हैं, वस्तु स्थितिका निरीक्षण नहीं करते। वे हमसे अधिक हमारे खेत-खलिहानोंको देखते हैं, जङ्गलोंकी छानबीन करते हैं और लोहा, तांबा अभ्रककी ही चिन्ता करते हैं। ऐसे संचालक द्वारा संचा-लित शासन व्यवस्थाके मशीनकी आवाज भले ही लन्दनमें सही सुनाई पड़े पर भारतमें उसकी आवाज तो पैशाचिक हंसीसे भी अधिक खूंखार और तेज है। ये बनाये गये शासक, शासक मनोवृत्तिसे प्रभावित नहीं होते। इनमेंसे अधिकतर लोगोंको शासन करनेका शौक होता है। "यस सर" कहकर जो व्यक्ति इनके सामने खड़ा हो जाता है वही इनकी उदारताका अधिकारी होता है। इस अपरिपक्व मस्तिष्कके सहारे जिस शासनका घोड़ा सरपट दौड़ाया जा रहा है वह यदि बीच-बीचमें कुछ अकल्पनीय काम कर डाले तो उसमें क्या आश्चर्य। सवार ही बेवकूफ हों तो फिर घोड़ेका क्या दोष। किन्तु हम जिस घोड़ेकी चर्चा करने जा रहे हैं वह पशु नहीं बल्कि मनुष्य है। वह ऐसा मनुष्य है जिसकी पीठपर, ब्रिटिश शासनके तमाम कूड़े कचरे लदे हैं। यह मनुष्य ब्रिटिश भारतके अन्तर्गत पुलिस नामसे पुकारा जाता है और इसकी लाल मुरेठेकी असाधारण धूम है। वायसराय, बावन हजार पाते हैं लाट साहब आठ हजार पाते हैं पर ये केवल नकद-नकद २८ या ३० टके पाते हैं। तीस रुपये महीनेकी नौकरी करनेवाला पुलिस नामका यह शासक गोरे महाप्रभुओंकी ढीलके कारण अपनेको क्या समझता है यह बतलाया नहीं जा सकता।

सार्वजनिक रक्षा-व्यवस्थाका पूर्ण उत्तर-दायित्व इन्हीं पुलिसवालोंको है। खानगी अव्यवस्था मिटाना इन्हींका काम है और सेंधपर बैठे हुए चोरको पकड़ लेना इन्हींकी बहादुरीका परिणाम है। सामाजिक व्यवस्थाके लिये वायसरायकी शासन व्यवस्थाके सदृश और ये पुलिसमैन दोनों आवश्यक हैं। खानगी कामोंको महत्वहीन कह देना कोई महत्वपूर्ण बात नहीं है। अभी कुछ दिन पहले जबलपुरमें सागरके देहरी तहसीलकी सीधी महिलासे बयान लेनेके सिलसिलेमें पुलिस-वालोंने उसे इस बुरी तरह तङ्ग किया था कि वह आत्मघात कर बैठी। पुलिसवाले उस महिलाको उसके घरसे पकड़ लाये और अपने कैम्पमें लाकर उसे उसके पतिके विरुद्ध गवाही देनेको बाध्य किया। महिला इसके लिये तैयार नहीं हुई। और तब उसे इस

(शेष १७ वें पृष्ठ पर)

वस्त्र-सङ्कटका दायित्व किस पर ?

लेखक—श्री देवीदयाल चतुर्वेदी 'मस्त'

युद्ध जन्य अभिशापोंका परिणाम यों-तो संसारके प्रत्येक देशको किसी न किसी रूपमें भोगना ही पड़ रहा है, परन्तु इस अभागे देशमें—भाग्यहीन भारतमें इन अभिशापोंका ताण्डव अपनी चरम सीमापर पहुंच चुका है। खाद्य-सामग्रीके अभावमें, सिर्फ बंगालमें ही पन्द्रह लाख नर-नारियोंके तिल-तिल कर मर जानेकी दारुण कथाएं किसीसे छिपी नहीं है। अन्न सङ्कटके इस रोमांचकारी अध्यायकी अभी पूर्णतः समाप्ति भी शायद नहीं हुई कि इधर कुछ महीनोंसे देशव्यापी वस्त्र सङ्कटका चीत्कार भी अब हमारे कानोंके पर्दोंको फाड़ने लगा है; हमारे हृदयोंको झकझोरने लगा है और हमारे देश-की भयावह स्थितिका डङ्का पीट रहा है।

कफन भी नहीं

जिस देशमें कपड़ोंके अगणित कारखाने, रात-दिन वस्त्र तैयार करनेमें व्यस्त रहते हों, जिस देशमें कपासकी पैदावार यथेष्ट मात्रामें होती हो, उस देशके निवासियोंको कफन भी मयस्सर न हो, मरने पर मृत देहको लपेटने और उसकी अन्त्येष्टि करनेके लिये पांच गज कपड़ा भी उपलब्ध न हो, उस देशको अभागा नहीं, तो और क्या कहा जाये? और, यह सब जो हो रहा है, वह युद्धजन्य अभिशाप नहीं, तो और क्या है?

वस्त्र-सङ्कटकी स्थिति आज अन्न-सङ्कट से भी कहीं अधिक भयङ्कर हो उठी है। आज हमारे देशमें ऐसे उदाहरणोंकी कमी नहीं, जब जीवित मानवको अपने तनकी लाज ढांकनेके लिये गजभर कपड़ा भी प्राप्त नहीं हो सका और इस जीवनसे ऊबकर ही उसने आत्महत्याकर अपनी इहलीला ही समाप्त कर दी। हम मानते हैं कि आत्म-हत्या करनेवालोंकी यह नादानी है। उन्हें यह भी सोचना समझना चाहिये कि जब जीवित मानवके लिये गजभर कपड़ा मयस्सर नहीं, तब भला मरनेपर उनके-शवकी अन्त्येष्टिके लिये पांच गज कपड़ा कहां प्राप्त होगा? लेकिन हम यह भी मानते हैं कि परिस्थितियोंके घटाटोपमें, परिस्थितियोंकी असाधारण:विषमतामें, मानवका विवेक तनिक भी काम नहीं करता।

जीवित मानवको वस्त्र दिलाना उतना ही आवश्यक है, जितना कि मृत मानवको। जीवित मानवको वस्त्र दिये जानेका समुचित प्रबन्ध कर देनेपर आत्महत्याकी इस बढ़ती हुई रफ्तारमें निश्चितरूपसे कमी हो सकती है। कुछ लोगोंका खयाल है कि यह तभी सम्भव हो सकता है, जब मुनाफाखोरोंको गिनगिनकर पकड़ा जाये और इन मुनाफाखोर व्यापारियोंके पीछे रात-दिन खुफिया पुलिसको लगाकर यह पता लगाया जाये कि कपड़ेका स्टाक आखिर ये व्यापारी कहां छिपाकर रखते हैं। लेकिन इस मर्जकी यही एकमात्र दवा नहीं है। वस्त्र-सङ्कटके मूलभूत कारणोंपर जब हम विचार करते हैं, तब और भी अनेक कारण हमारे सामने ऐसे आते हैं, जिनके समक्ष यह कारण बहुत ही साधारण-सा रह जाता है। यद्यपि यह साधारण-सा कारण भी आज भयानक रूपमें जनसाधारणको परेशान कर रहा है।

दानवताकी पराकाष्ठा

यह कितनी निन्दनीय और दर्दनाक बात है कि एक व्यक्ति अपने किसी आत्मीय-को सदाके लिये खोकर, गीली आंखों और भरे हृदयसे, कपड़ेकी दूकानपर जाता और पांच गज कफन मांगता है। लेकिन मुनाफे-का लोभी दूकानदार कह देता है, कपड़ा है ही नहीं। यदि कपड़ा रहता भी है, तो दूसरी समस्या उस अभागे मानवके सामने खड़ी कर देता है—कह देता है कि सरकारी अधिकारीकी लिखित आज्ञा लानेपर ही कफन दिया जा सकेगा।

हम पूछते हैं कि इन व्यापारियोंके घरमें यदि किसीका निधन होता होगा, तो क्या किसी सरकारी अधिकारीकी आज्ञा लेकर ही ये उसकी अन्त्येष्टि करते होंगे? हरगिज नहीं! यह सब इनकी मक्कारी है, मुनाफा-खोरोंकी गर्हित भावना है और है दानवता-की पराकाष्ठा।

कहते हैं, मरनेके बाद भेदभावकी भावना मिट जाती है। मृत मानवके प्रति, उसके दुश्मनके हृदयमें भी एक बार समवेदनाका स्रोत फूट निकलता है। लेकिन आजकी भयावह स्थिति हम भारतीयोंको इतना पतित बना चुकी है कि किसीके घरमें शव रखा रहे, कोई आठ-आठ आंसू बहाता हुआ कफनके लिये गिड़गिड़ाता रहे, लेकिन इन मुनाफाखोरोंके पत्थर-हृदयोंमें सहानुभूति अथवा मानवताका तनिक भी [...] होता। और, किसी सरकारी अधिका[...] यहां किसीका निधन होनेपर, यही व्या[...] चुपचाप बढ़ियासे बढ़िया और अधि[...] अधिक कफन देनेमें कोई आनाकानी [...] करते—शायद कर ही नहीं सकते। [...] तो लिखित आज्ञाकी जरूरत रह जाती [...] न अन्य किसी बातकी। इस तरह ३) [...] रु० की धोतीका दाम ३०) रु० [...] देनेवाले धनवानोंको भी कोई परेशानी [...] होती!

इस अभागे देशमें—भाग्यहीन भा[...] आज यह बेबसी भी हमें देखनी थी! मरने[...] बाद भी भाग्यहीन भारतीयको, कफन[...] लिये सरकारी आज्ञा प्राप्त करनेकी विप[...] झेलनी थी। अमीरी और गरीबीके बी[...] भेदभावकी यह वज्र रेखा देखकर हमें अ[...] मुसीबतोंपर मरनेके बाद भी यह अप्र[...] शित पीड़ा सहनी थी।

दायित्व किसपर?

लेकिन युद्धजन्य इन अभिशापोंको [...] करनेका दायित्व है हमारी सरकारपर[...] सरकारी अधिकारियोंपर। बकौल सरका[...] अधिकारियोंके, उन्होंने इन अभिशापों[...] कम करनेकी दिशामें अपना कदम अ[...] उठाया है। लेकिन यह स्पष्ट है कि [...] कदम उठानेमें ही या तो कहीं त्रुटि [...] अथवा फिर उठाया हुआ कदम जिस शी[...] से लक्ष्य विन्दुपर गिरना चाहिये, वह [...] इस कदममें नहीं है।

सरकारी प्रयत्नोंकी सीमा अत्य[...] सीमित है। अन्न-सङ्कटको कम करनेके लि[...] भारतके नगर-नगरमें 'राशनिंग'की जो स[...] कारी व्यवस्था की गयी, वह कुछ अंशों[...] ही सफल कही जा सकती है। उसे [...] पूर्णतः सफल नहीं कह सकते। कारण, जि[...] नगरोंमें खाने-पीने अथवा अन्य दै[...] उपयोगी वस्तुओंपर 'राशनिंग' की व्यवस्[...] लागू हुई, उन नगरोंसे राशनिंगकी ये च[...] ही बाजारोंसे अचानक गायब होती [...] गयीं बाजारोंसे इन चीजोंको गायब करने[...] धूर्त्ततामें, हमारे देशमें ही मक्कार औ[...] मुनाफाखोर व्यक्तियोंका हाथ है। [...] मुनाफाखोरोंमें मुनाफेका लोभ इतनी भ[...] क्रूरतासे घर कर चुका है कि मानवता[...] उनमें नाम भी नहीं रह गया है।

लेकिन इन मुनाफाखोरोंसे भी [...] अधिक वस्त्र-सङ्कटके लिये उत्तरदायी [...] हमारी सरकार। वस्त्र-सङ्कटके मूल कार[...] का पता लगानेपर हमें ज्ञात होता है [...] बङ्गालके अन्न-सङ्कटकी भांति, इस वस्[...] सङ्कटके लिये भी सरकारी उदासीनता औ[...] शासकीय खामियां ही पूर्णरूपेण उत्तरदा[...] हैं। इसके साथ ही कण्ट्रोल सम्बन्धी [...] सफलता, अपर्याप्त वस्त्र-पूर्ति और बहुत [...] पैमानेपर व्यापारियों तथा धनवानों द्वा[...] वस्त्र खरीदकर एकत्र कर रखनेके फलस्व[...] 'चोर बाजार' भी कम जिम्मेवार नहीं है।

जन्मसिद्ध आवश्यकता

अन्नकी तरह वस्त्र भी मानवकी जन्म[...] सिद्ध आवश्यकताओंमेंसे एक है। [...] वस्त्रकी वास्तविक आवश्यकता किसी [...]

शिमला कानफरेन्स

किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे।
शिमला के अंचलके पट पर,
सौन्दर्य-सुधा ढुलकी जिस पर;
मां प्रकृति जहां शृङ्गार करे,
शिमलाकी सुषमा का जी भर।
है वहां आज किसके परिणयकी तैयारीका साज सखे!
किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे!
एकत्र जहां युग-परिवर्तक,
अग्रणी, सुधी, वय-वृद्ध-युवक
युवकोंकी अभिलाषा लेकर,
आजादी के परमोपासक।
ये आये आमंत्रित होकर, किसके परिणयके काज सखे।
किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे।
ये वेवेल के हैं अतिथि सभी,
गान्धी, पटेल औ पट्टाभि,
नेहरू, कृपलानी, राजाजी,
आजाद, पंत और सरोजिनी।
होटल, प्रासाद रिजर्व हुए, क्यों इनके हित यह आज सखे।
किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे।
जब ये कारा के बन्दी थे,
कल तक दिन कारामें बीते
ये आज हुए सम्मान-पात्र
सम्मान-सुधा प्याले पीते।
यह क्या अभिनय, मैं हूं विस्मित, है समझ न पड़ता आज सखे।
किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे।
परिणय-बन्धन या प्रणय-खेल?
या हिन्दू मुस्लिम हेलमेल?
यो आजादीके लिए हुआ—
यह आयोजन, यह रेलपेल?
परिणय किसका, आजादी का, शिमलाको जिस पर नाज सखे।
किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे।
सबकी आंखे हैं लगी हुई,
सबकी आकांक्षा जगी हुई;
शिमलामें क्या होनेवाला—
हैं, देख रही कुछ ठगी हुई।
स्वातंत्र्य-वधू वरनेके हित, क्या है समवेत समाज सखे।
किसका परिणय, किसका सुयोग, किसके संग होगा आज सखे।

—श्री गोपाल "दिनमणि"

...विभिन्न बातोंपर निर्भर करती है : ...आबहवा सम्बन्धी स्थिति, निवा-...की आदत आदि। फिर भी देशके ...सियों द्वारा वस्त्रोंका विपुल प्रयोग, ...साधारणकी उन्नतिका ही परिचायक है। विभिन्न देशोंमें प्रति व्यक्ति पीछे, सूती ...की आवश्यकता सन् १९२९ में निम्न ...थी:—

	वर्ग गज
...राज्य अमेरिका	६४.०
	३७.७
	३६.०
	३४.०
	३०.६
	३०.०
	२१.४
(मिस्र)	१७.१
	१८.७
	१६.७
	१६.१

...ति 'राष्ट्रीय योजना-समिति' बम्बईने ...भारतीयके लिये कमसे कम तीस गज ...के हिसाबसे यह आवश्यकता बत-...ई है, लेकिन उपर्युक्त आंकड़ोंसे यह ...बहुत ही भिन्न है।

बेहद कमी

...विषयक प्राप्त आंकड़ोंसे यह स्पष्ट ...ता है कि वस्त्र-स्थिति, दूसरे महा-...रम्भसे ही बदतर और क्षयकारी ...थी। आम तौरपर स्वदेशी वस्त्रों-...की आवश्यकताएं पूरी होती ...द्वारा प्रस्तुत वस्त्रोंसे भी इस ...की यथेष्ट पूर्त्ति होती है। इन ...के अलावे वस्त्र-पूर्त्तिका तीसरा ...विदेशोंसे वस्त्रोंका आयात। ...के साथ ही यह नहीं भुलाया ...कि भारतीय वस्त्रोंके निर्यातके ...आयातका (विदेशोंसे आनेवाले ...) कितना अंश हमारे उपयोगके ...पाता है, और भारतसे विदेशी ...पुनर्निर्यात कितना होता है।

...महायुद्धके फलस्वरूप वस्त्रोंके ...बेहद कमी हो गयी, लेकिन निर्यात ...सम्बन्ध है, आशातीत रूपमें ...पार कर गया। फिर, मिलोंमें ...वाले कपड़ेमें भी कोई खास वृद्धि ...करघों द्वारा तैयार वस्त्रका परि-...आंकड़े अप्राप्य हैं, पूर्ववत् ही ...प्रकार हम देखते हैं कि कपड़ेकी ...तरफसे बेहद कमी रही। ...सर्वे आफ बिजनेस कण्डीशन' ...निम्न आंकड़े दर्शनीय हैं, जो ...तैयार किया हुआ वस्त्रका ...निर्यात बतला रहे हैं:—

(संख्याएं दस लाख गजोंकी सूचक हैं)

	क तैयार वस्त्र	ख आयात	ग निर्यात	घ पुनर्निर्यात
	४०८४.३	५९०.८	२४१.३	१२.९
	४२६९.३	६४७.१	१७७.०	१९.७
	४०१२.४	५७९.१	२२१.३	१६.७
	४१६९.४	४४७.०	३९०.१	४३.९
	४४९३.६	१८१.९	७७२.९	८९.२
	४१०९.३	१३.१	८१९.०	१६.३
	४८७०.६	३.६	४६१.९	०.६

उपर्युक्त आंकड़ोंमें 'क' और 'ख' के योगमेंसे 'ग' और 'घ' को घटा देने पर नीचे लिखे आंकड़े रह जाते हैं, जो मिलों द्वारा तैयार किये गये वस्त्रके द्योतक हैं:—

(संख्याएं दस लाख गजोंकी द्योतक हैं)

सन्	तैयार वस्त्र
१९३७—३८	४४२१.३
१९३८—३९	४७२३.७
१९३९—४०	४३९३.५
१९४०—४१	४२८२.८
१९४१—४२	३८१७.४
१९४२—४३	३२८६.८
१९४३—४४	४४११.७

मिलों द्वारा प्रस्तुत किये गये वस्त्रके इन आंकड़ोंमें करघों द्वारा तैयार किये गये वस्त्रके आंकड़े जोड़ देने पर नीचे लिखे आंकड़े यह दर्शाते हैं कि सभी जरियोंसे कुल कितना वस्त्र उपलब्ध रहा। करघों द्वारा अनुमानतः १२०० (दस लाख गज) से १६०० (दस लाख गज) तक वस्त्र तैयार किया गया है, यद्यपि सम्भावना इससे भी अधिक की है। इन आंकड़ोंके साथ यह भी उल्लेखनीय है कि पिछले कुछ सालोंमें, नागरिकोंको दिये जानेवाले वस्त्र-में से ८५० (दस लाख गज) कपड़ा कम दिया गया है, क्योंकि यह ८५० का 'कोटा' फौजोंके लिये सुरक्षित रखा गया है।

सभी जरियोंसे प्राप्त होनेवाले कपड़ेके आंकड़े देखिये:—

सन्	१ कुल प्राप्ति (दस लाख गजोंमें)	२ अनुमानित जन संख्या (दस लाखोंमें)	३ प्रति व्यक्ति पीछे (गजोंमें)
१९३७—३८	५६२१.३	३७३.७	१५.०
१९३८—३९	५९२३.७	३७८.८	१५.७
१९३९—४०	५५५३.५	३८३.९	१४.४
१९४०—४१	५४८२.८	३८९.०	१४.०
१९४१—४२	५०१७.४	३९४.१	१०.२
१९४२—४३	४४८६.८	३९९.२	९.१
	८५०.० (कम होगा)		५.१
१९४३—४४	५६११.७	४०४.३	११.७
	८५०.० (कम होगा)		

इस प्रकार युद्धके प्रारम्भसे ही सभी जरियोंसे प्राप्त होनेवाले वस्त्रमें उल्लेखनीय कमी होने लगी थी। सन् १९४१—४२ में तो, युद्ध प्रारम्भ होनेवाले प्रथम वर्ष अर्थात् १९३८—३९ की तुलनामें प्राप्य वस्त्रका औसत सिर्फ ६८ प्रतिशत ही रहा। इस दशामें अर्थात एक-तिहाई कमी हो जानेके कारण ही यह वस्त्र-सङ्कट दिनोंदिन बढ़ता गया और आज कपड़ेके लिए देशव्यापी हाहाकार सुनायी पड़ने लगा।

वास्तविक रहस्य

लेकिन इन आंकड़ोंसे भी वास्तविक स्थिति स्पष्ट नहीं होती। कुछ ही दिनों पहले, श्री कृष्णराज ठाकरसी, चेयरमैन, टैक्सटाइल कण्ट्रोल बोर्डने बम्बईमें एक प्रेस कानफरेन्समें कहा था कि सभी जरियोंसे प्राप्त होनेवाले वस्त्रके कुल भागका एक बहुत बड़ा अंश नागरिकों तक पहुंचही नहीं पाया, क्योंकि उपलब्ध वस्त्रके कुल भागमें से अनुमानतः ७५०गांठ(दस लाख गज)कपड़ा (एक बार ये आंकड़े१०००तक पहुंच गये थे—) फौजोंको दिया गया था। इससे भी परे २,३०,००,००० पौण्ड सूत भी सरकार द्वारा लिया जा रहा है, जो लगभग दस करोड़ गज कपड़ेके बराबर होता है।

ऐसी हालतमें स्थितिका यथार्थ स्वरूप जाननेके लिये यह जरूरी है कि कुल प्राप्त होनेवाले वस्त्रके आंकड़ोंमेंसे उपर्युक्त आंकड़े कम कर दिये जायं, ताकि नागरिकों द्वारा व्यवहृत वस्त्रके वास्तविक आंकड़े उपलब्ध हो सकें। इस आधारपर नागरिकोंको प्राप्त होनेवाले कुल वस्त्रके आंकड़े सन् १९४२-४३ में सिर्फ ३६३७.१ [दस लाख] गज रह जाते हैं और सन् १९४३-४४ में ४७६१.७ [दस लाख] गज। प्रति व्यक्ति पीछे आनेवाली औसतमें इन आंकड़ोंको परिणित किये जानेपर इसका अर्थ होता है कि सन् १९४२-४३ में नागरिकोंको ९.१ गजसे अधिक, प्रति व्यक्ति पीछे वस्त्र नहीं मिला और सन् १९४३-४४ में यह औसत ११.७ गज रहा। इस प्रकार जहां १९३८-३९ में प्रति व्यक्तिका औसत १५.७ गज था, वही १९४२-४३ में ९.१ गज कर दिया गया अर्थात् ४० प्रतिशत कम !

सरकारने क्या किया ?

प्रश्न है कि इस बिगड़ती हुई स्थितिको सुधारनेके लिये हमारी सरकारने क्या किया ? आंकड़े इस बातके साक्षी हैं कि बजाय इसके कि अधिक वस्त्र-पूर्त्ति और उसके विभागकी कोई सुव्यवस्था की जाती और स्थितिमें कोई सुधार किया जाता, स्वयं सरकारने ही इस दिशामें कठिनाइयां खड़ी कर दीं और स्थितिको अपेक्षाकृत अधिक भयावह कर दिया।

ऊपर दिये गये आंकड़ोंसे प्रकट होता है यद्यपि वस्त्र-आयात युद्धारम्भसे ही लगातार कम होता रहा। [सन १९३८-३९ में जहां वस्त्र-आयात ६४७.१ (दस लाख) गज था, वहां १९४३-४४ में सिर्फ ३.६ (दस लाख) गज रह गया], फिर भी वस्त्र-निर्यातमें कोई कमी नहीं की गयी बल्कि हुआ यह कि अभी-अभी तक यह निर्यात अधिकाधिक ही होता रहा। कितने आश्चर्य और दुःखकी बात है कि सन् १९३८-३९ में निर्यात जहां १७७.० [दस लाख] गज हुआ, वही १९४२-४३ में ८१९.० [दस लाख] गजपर पहुंच गया अर्थात् ५०० प्रतिशत अधिक।

सरकारने इस सबका जो कारण बतलाया है, वह यह कि यह निर्यात हमारे एतद्विषयक बाजारको सुदृढ़ बनानेमें मदद करेगा और उद्योगपतियोंकी सलाहसे ही यह किया जा रहा है। परन्तु केन्द्रीय असेम्बलीमें श्री के० सी० नियोगीने जब इस में पैनी पूछताछ की, तो सर अजीजुल हक को यह स्वीकार करना ही पड़ा कि उद्योगपतियों आदिसे इस मामलेमें कोई सलाह नहीं ली गयी, और यह निर्यात सात समुन्दर पारसे आनेवाले हुक्मोंसे ही किया जा रहा है।

यह कैसी दर्दनाक कहानी है—कैसी विडम्बना कि जहांसे यह निर्यात किया जा रहा है, वहांकी स्थिति चाहे-जैसी भयावह रहे, लेकिन कपड़ेका निर्यात आवश्यक समझा जाये। बङ्गालके अन्न-सङ्कटके मूलमें जो कारण हैं, वही इस वस्त्र सङ्कटके लिये भी लागू हो रहे हैं।

मरणका खेल !

किसी भी देशके निवासियोंके साथ, शासकोंका यह रवैया—मरणका खेल—सर्वथा निन्दनीय ही कहा जायगा। लेकिन हमारी सरकार इस बातकी तनिक भी चिंता नहीं करना चाहती कि जिस देशपर वह शासन कर रही है, उसके निवासियोंका सुख-दुख तो दूर रहा,खाने-पहननेकी भी उसकी आवश्यकताओंको पूरा करना उसका कर्त्तव्य है। इस देशको—भारतको—गुलामोंका देश जो वह समझती है ! गुलामोंके भरण-पोषणकी उसे चिन्ता ही क्यों हो ? यह तो आनेवाला समय ही बतलायेगा कि इस प्रकारके अकाल और हाहाकारमय सङ्कट उत्पन्न करने और देशकी शांतिके साथ मरणका खेल खेले जानेपर, इतिहासके पृष्ठों में ऐसी सरकारको किन शब्दोंमें स्मरण किया जाता है। हम तो और तथ्योंके आधारपर आज सिर्फ इतना ही कह सकते हैं कि इस वस्त्र-सङ्कटका दायित्व हमारी सरकारपर ही है।

अब भी सरकार चाहे, तो इस कलङ्कको धो डालनेका प्रयत्न कर सकती है। भारतसे बाहर भेजे जानेवाले वस्त्रका निर्यात एकदम बन्द कर और विदेशी वस्त्रोंका आयात बढ़ाकर चन्द महीनोंमें ही वस्त्र-सङ्कटकी यह विभीषिका बहुत कुछ कम की जा सकती है। देखना है, इस दिशामें सरकार क्या करती है ?

———

❀ युद्धकी प्रगति ❀

मित्र राष्ट्रोंकी स्थल, जल और वायु-सेनाएं इस सप्ताह जापानके अधिकृत इलाकोंपर लगातार आक्रमण करती रहीं। इसके साथ ही जापानके प्रमुख नगरों, औद्योगिक केन्द्रों, बन्दरगाहों, तेल और रेल केन्द्रोंपर बमबाजीकर उन्हें महान क्षति पहुंचायी गयी गत सप्ताहमें मित्र सेनाओं और आलोच्य सप्ताहमें डच सेनाओंने दक्षिण पूर्वी बोर्नियो के बालिक पेपेन अड्डेपर उतर कर वस्तुतः समस्त दक्षिण पश्चिमी प्रशान्तको अपने अधिकारमें कर लिया। ओकीनावा और फिलिपाइनको जापानके खिलाफ आक्रमण करनेके सुदृढ़ अड्डेके रूपमें तीव्रगतिसे परिवर्तित किया जा रहा है। अमेरिकन बमबाजोंने जापानके शहरी औद्योगिक इलाकोंको सुविस्तृत क्षति पहुंचायी और टोकियो के आकाशपर अपनी श्रेष्ठता पूर्णतया स्थापित कर ली है। जापानके कोबे, ओसाका टोकियो आदि नगर बिलकुल मटियामेट हो गये हैं।

संसारके युद्ध इतिहासमें इन दिनों जापानियोंको मित्रराष्ट्रोंकी जल और वायु-सेनाओंके सर्वाधिक प्रचण्ड आघातोंको सहन करना पड़ रहा है। जापानको इससे स्पष्ट चेतावनी मिल रही है कि उसपर और भी महान विपत्तियोंका पहाड़ टूटनेवाला है। रियूक्यूमें समस्त मित्र स्थल और हवाई सेनाका संचालन भार जेनरल मैकार्थरपर सौंप दिया गया है, जो इस बातका द्योतक है कि खास जापानपर व्यापक मित्र अभियान शीघ्र ही आरम्भ होनेवाला है। टोकियो रेडियोने भी इस बातको स्वीकार किया है कि खास जापानपर मित्र आक्रमण आसन्न है।

धडूर्पूर्वके इस नाटकीय युद्धमें दो बातें सबसे अधिक उल्लेखनीय हैं। पहली बात यह है कि मित्र विमान जापानी नगरोंपर ताक-ताक कर बमबाजी कर रहे हैं, उनसे जापानी अपनी रक्षाकी कोई चेष्टा करते देखे नहीं जाते। दूसरी बात यह है कि अमेरिकन नौसेना नायकोंने नौसेना सम्बन्धी सभी प्रतिबन्धोंको यह कहकर उठा लिया है कि अब उनकी आवश्यकता नहीं रह गयी है। अमेरिकन जङ्गी बेड़ा जापानके समीप पहुंच गया है और जापानपर भीषण आघात कर रहा है। जापानके उत्तर ओखटस्क सागरमें प्रवेश कर एक अमेरिकन जङ्गी बेड़ेने पांच जापानी जहाजोंके एक काफिलेको जलमग्न कर दिया है।

प्रशान्तमें एक नया हवाई कमाण्ड जेनरल स्पाजके अधीन कायम किया गया है। जर्मनीको पराजित करनेमें जेनरल स्पाजकी हवाई सेनाने महत्वपूर्ण भाग लिया था। अब वे जापानके खिलाफ हवाई युद्धका संचालन कर रहे हैं। चीनी सेनाएं भी दक्षिणी चीनमें सफलता प्राप्त कर रही हैं। लेफ्टिनेण्ट जेनरल जार्ज स्ट्रेट मेयरको चीन में अमेरिकन हवाई सेनाका सेनापति नियुक्त किया गया है। पूर्वी बर्मामें बैंकाक—मौलमीन लाइन होकर सिङ्गापुरसे तथा फ्रेंच इण्डोचीनसे युद्धास्त्रों और अन्य उपकरणोंके आगमनसे ऐसा प्रकट होता है कि जापानी बर्मामें बड़ी लड़ाई लड़नेकी तैयारी कर रहे हैं। स्यांगकाशेपर जापानियोंने फिरसे अधिकार स्थापित कर लिया है। मौलमीनमें जापानियोंकी बहुत बड़ी सेना एकत्र है और पेगू योमामें घिरी हुई ७ हजार जापानी सेनाको मुक्त करनेके बाद वे अपने खोये हुए प्रदेशोंपर पुनराधिकार स्थापित करनेकी चेष्टा कर सकते हैं। हिन्द महासागरमें मित्र-राष्ट्रोंकी जबर्दस्त नौसेना एकत्र हुई है और किसी भी क्षण सिङ्गापुरपर आक्रमण किया जा सकता है। जापानी सैनिक जानपर खेलकर सिङ्गापुरकी रक्षा करनेको कटिबद्ध दिखायी दे रहे हैं। बर्मा तथा प्रशान्तके युद्धोंमें पिछले दिनों जापानियोंने मित्रोंका जिस प्रकारकी दृढ़तासे मुकाबला किया है, उसको देखते हुए ऐसा कहा जा सकता है कि जापानकी लड़ाई अबतककी लड़ाइयोंकी अपेक्षा अत्यधिक संहार और प्रचण्ड होगी।

अमेरिकनोंने जापानके खिलाफ युद्धमें एक नये हथियारका उपयोग आरम्भ किया है। यह एक नये ढङ्गका लड़ाकू विमान है। ऐसा कहा जाता है कि संसारके सभी विमानोंसे यह अधिक शक्ति रखता है। इसपर मात्र एक चालक रहता है और यह बहुत ऊंचे आकाशसे लक्ष्य पर सफल आक्रमण कर सकता है। यह २ हजार पौंड वजन तकके बमोंको लेकर ४२९ प्रति घण्टाकी रफ्तारसे उड़ता और समुद्रमें भी झपट्टा मारकर उतर सकता है।

पूर्वी बोर्नियोमें आस्ट्रेलियन और अमेरिकन फौजें तीव्र गतिसे अग्रसर हो रही हैं और वहांके प्रधान तैल क्षेत्र बालिकपेपेनके अधिकतर भाग पर उन्होंने कब्जा जमा लिया है। इस इलाकेके पश्चिममें डच इस्ट इण्डीजकी सेनाएं दो स्थानोंपर सफलता पूर्वक उतरी है। बोर्नियोंके सुविस्तृत समुद्र तटपर अब मित्र फौजोंका अधिकार हो गया है और आस्ट्रेलियन सेनाएं भीतरी मार्गोंपर दूर तक प्रवेश कर गयी हैं। सुमात्रा के उत्तरी तटके समीप सेबांगपर ब्रिटिश अभियानकारी सेनाने सफल आक्रमण किया है। यद्यपि इस सम्बन्धमें अबतक पूरी रिपोर्ट प्राप्त नहीं हो सकी है, किन्तु ऐसे आसार नजर आने लगे हैं कि शीघ्रही सुमात्रा पर भी मित्र राष्ट्रोंका जबर्दस्त आक्रमण आरम्भ होने जा रहा है।

हमारी डायरी

…लूटा माल मिश्रके बाजारोंमें

…लुटेरोंने अधिकृत रूसी अञ्चलोंमें …जो बर्बर नीति अख्तियार की …एक ऐतिहासिक सत्य है। इसी …माल—चांदी, सोना, हीरा, जवाह-…प्रकारेण मिश्रके बाजारोंमें …है और धड़ल्लेसे उसकी खरीद …रही है।

…सरकारका इस ओर ध्यान …हुआ है और व्यवसाय विभागके …इस आशयकी चेतावनी दी है कि …माल खरीद-फरोख्त करना गुनाह …ऐरे गैर कानूनी कार्योंसे सम्ब-…क्तियोंके लिये दण्डकी व्यवस्था है। …सी मालकी सूचना अधिकारियोंको …चाहिये ताकि रूसको उसकी …लौटा दी जाय।

…में अमरीकी कारखाने

…वादी सस्ते मजदूरोंकी तलाशमें …हैं ताकि कम खर्चमें मालका …बाजारकी प्रतिद्वन्द्वितामें टिक …मजूरोंकी बहुतायत और औद्योगिक …की न्यूनताने भारतीय मजदूरोंके …दर न्यूनतम स्तरपर रखा है …सस्ते मजदूर दुनियाके किसी …हिस्से मिलेंगे। इसी प्रलोभन …कर कितने देशी-विदेशी पूंजी-…तत्कालीन व्यापार-जगतमें होड़ …जानेके हो ख्वाब देख रहे हैं। …की जेनरल मोटर कारपोरेशनने …गाड़ियोंके उत्पादनके लिये …एक विशाल कारखाना खोला है, …यार्क हेराल्ड ट्रिब्यूनके कथनसे …गया है। सस्ते मजदूरोंके बलपर …प्रतिद्वन्द्विताकी तैयारीका इसे …ही समझिये।

(१३ वें पृष्ठ का शेषांश)

…लिये तैयार करनेमें पुलिसवालोंने …का अवलम्बन किया वह ऐसी …की मां बहन भी लज्जाके मारे …सकती। महिला जब इस अत्या-…करने पतिके विरुद्ध गवाही देनेको …हुई तो उसे छोड़ दिया गया। …लौटती हुई उस महिलाने रास्ते …पर होनेवाले अन्यायकी गुहार …उसका पति जो उसे रास्तेमें ही …की कहानी सुनकर कैम्पकी ओर …करने चला और वह गांव लौटनेके …आकर मर गयी। इस आत्म-…परायापने उसे जीवित रहनेतककी …दी। हम इस तरहके समाचारोंको …केवल धुन्धली आंखोंसे उन …और देखने लगते हैं। जो स्वयं …आने पर जिनके भीतर संसारको …देनेकी ज्वाला सन्निहित है।

महाकवि तुलसीदासके प्रति रूसियोंकी श्रद्धाञ्जलि

रूसी "एकेडेमी साइन्स" के २२० वें अधिवेशनकी एक विशेष सभामें विद्वत्समाजके सदस्य एलेक्जी वारान्निकोवने रूसी भाषामें अनूदित रामायणका परिचय देते हुए उस परिस्थितिपर प्रकाश डाला जिसके वशीभूत हो मध्यकालीन भारतीय कविकी इस महाकृतिको तीन वर्षोंके कठिन परिश्रम द्वारा अनुवाद करना पड़ा। विगत चार हजार वर्षोंमें पाये जानेवाले भारतीय साहित्यका परिचय देते हुए आपने महाकवि तुलसीदासकी जीवनीका विशद वर्णन किया। तत्कालीन भारतको एकताके सूत्रमें बांधना, यह उनकी, असाधारण प्रतिभा सम्पन्न एवं पाण्डित्यपूर्ण कृतियोंका महत् उद्देश्य एवं विशेषता है। रामायणके राम, यद्यपि निर्विकार अलौकिक शक्तियोंके साकार स्वरूप हैं फिर भी तुलसीदासने उन्हें एक महान राष्ट्रीय योद्धाके रूपमें उनकी लोकरञ्जनकारिणी शक्तियोंका ही वर्णन किया है। राम एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श पुरुष होते हुए भी, जीवनकी विभिन्न ऊंची नीची परिस्थितिमें अपने कर्तव्य पथपर सर्वदा दृढ़ एवं तत्पर थे। वास्तवमें तुलसीकृत रामायण भारतका सर्वश्रेष्ठ लोकप्रिय ग्रन्थ है। रामायणके अनुवाद करनेमें उन्हें जिन सिद्धान्तोंसे सहायता मिली है उसपर दृष्टिपात करते हुए एलेक्जी-वारान्निकोवने, अनूदित पुस्तकसे "लङ्का" काण्डके कुछ अंश पढ़ सुनाये। महाकवि तुलसीदासकी सर्वतोमुखी प्रतिभाका परिचय,जनता स्तब्ध एवं मन्त्रमुग्ध हो पुश्किन एवं टाल्सटायकी भाषामें सुनती रही।

खान मालिकों पर अनुचित दबाव

कलकत्ता हिन्दू व्यवसायी सङ्घके अध्यक्ष श्री हरिदास मजूमदार एम० एल० सी० ने महात्मा जी और पण्डित जवाहरलालको शिमला पतेसे निम्नाशयका तार भेजा है। गत ४ जुलाईको कोयलाकी खानोंमें नियन्त्रणके सिलसिलेमें जारी किये गये सरकारी आदेश द्वारा भारतीय मिल मालिकोंपर अनुचित दबाव डाला गया है। इसी तरहके आदेश कोयलेकी कमी और वस्त्र दुर्भिक्षके कारण हैं। कृपया आवश्यक कार्रवाई कीजिये क्योंकि आप इस समय सम्बन्धित अधिकारियोंके सम्पर्कमें हैं।

वस्त्राभावके कारण जनताके सामने लज्जानिवारणका प्रमुख प्रश्न उपस्थित है। इस सङ्कटसे इसे निकालनेका यही मार्ग हो सकता है कि उत्पादनमें सरकारकी ओरसे मिलोंको हर प्रकारकी आवश्य सुविधा दी जाय और तैयार मालका सुन्दर सुनियोजित ढङ्गसे वितरण हो। दोनोंही पक्ष अपने उत्तरदायित्वको समझ कर सहयोग पूर्ण नीतिसे काम लें, इसीकी नितान्त आवश्यकता है।

कूपन

(११ वें पृष्ठका शेषांश)

को एक रिज़र्व दूकान भी रहा करती है, जिसके कपड़े आम जनताको नसीब नहीं होते हैं। निस्सन्देह उसमें अच्छे-अच्छे कपड़े रहते होंगे। समाजके साथ कितनी बेअदबी है उन बेहूदों की जो ऐसी बुरी मन्त्रणासे समाजको मन्त्रणा दिया करते हैं। अमीरों, बदकारों, बेईमानों, घूसखोरों, बुरा होगातुम्हारा ! गरीबोंकीआहकीज्वाला में जल कर खाक हो जाओगे। सताली गरीबों को। पीस लो उन्हें। कल तुम्हारा भी खातमा होनेवाला है। तुम्हारी शान भी मिट्टीमें मिल जानेवाली है। मूर्खों, चेतो !

अजी, जनाब, क्या आप इन बातोंको नहीं जानते ? यह तो सार्वदेशिक समस्याएं हैं। हुजूर सेक्रेटरी और मेम्बरगण लोगोंसे अक्खज-अदावत सधाते हैं, बेगारी कराते हैं, तब कहीं एकाध गज कपड़ाका 'कूपन' मिलता है। मानों वे अपने बापकी कमाई दे रहे हों। कोई अपनी आबरू ढकनेको फिदा हो, और कोई उसकी फटेहालीपर मुसकुराता हो। वाह रे ! क्या गरीबोंकी इज्जत, इज्जत नहीं है ? उसे देखकर शैतानों की शोख आंखें मटक जाया करें। ऐसी आंखें फोड़ दी जायेंगी। अन्यायी हाथ काट दिये जायेंगे। भले मानसो, आप लोग "जार" को सोते-जागते याद किया करें। हां, 'जार' की मृत्युको जनता जनार्दन है। उन्हें सबकुछ करनेका हक है। उन्हें कोई भी शक्ति रोक नहीं सकती है। कभी रोक नहीं सकी है।

भारत सरकार आज रेशनिङ्ग :करने जा रही है। देखें कबतक होता है ? तब भी लोग अमनके चमनमें रह सकेंगे या नहीं, खुदा ही जानता है। जय हो, सेक्रेटरियों, मेम्बरों और लार्ड वावेलके हुकामों की !

शिमला सम्मेलन हो रहा है। यदि वहांके ठण्डे वातावरणमें भारतीय राजपरिषदमें परिवर्तनकी समस्या सुलझ सकी, और देशवालोंके हाथोंमें मुल्कका प्रबन्ध आ सका, तभी यह गतिरोध भी दूर हो सकेगा और भारतीयोंको खाने-कपड़े भी मिल सकेंगे।

———

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, क...

विश्वमित्र

THE VISHWAMITRA

२८—३० कलकत्ता २५, जुलाई, १९४५, Calcutta, JULY. 25, 1945. मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

स्पेनमें अग्नि वर्षा

तिको काबूमें लानेका मनुष्य प्रयत्न है। अपने प्रयासोंकी आंशिक सफ- वह हर्षोन्मत्त हो फूला नहीं पर द्रौपदीकी चीरकी तरह प्राकृ- योंका अन्त न होते देख अपने ानन्दके बाद स्तम्भित हो पुनः में मस्त हो जाता है। बीच- कृति अपने चमत्कारोंका एकाध मूना पेशकर मनुष्यकी लघुताके की असीमता खड़ी कर व्यंग छोड़नेसे बाज नहीं आती। स अग्नि वर्षाका जो एक समाचार प्राप्त हुआ है। ति-पहेलीको सुलझानेवाले के समक्ष नया 'चैलेंज' है और नके लिये बढ़िया खुराक ाचारका विवरण यों है: स्पेन रिन जिलेके किसी भागमें ी पहने एक महिला मैदानसे ी थी कि अचानक उसकी ाग लग गयी। सफेद पोशा- नेक व्यक्तियोंको इस आफ- ना करना पड़ा है। कितने लकर राखकी ढेर बन गये ऐसे खलिहानोंकी अधिकता ी बालोंपर सफेदीकी हुई ग्नि वर्षाने लोगोंका चकित कर दिया है। ऐसी दुर्घटना स समय होती है जब स्वच्छ ें सूर्य निर्विघ्न चमकते रहते ग्निकी विशेषता यह है कि छलांग मारकर एक स्थानसे ूसरा अचानक पहुंच जाती है और च बिलकुल अछूता रह जाता है। ान्त करनेके लिये प्रयत्नशील ारोंमें ही प्रकृतिके इस अग्नि- शिकार बनना पड़ा है और किसी 'देवताओंकी आग' बुझा प्राण दिये हैं।

मधुसंचय
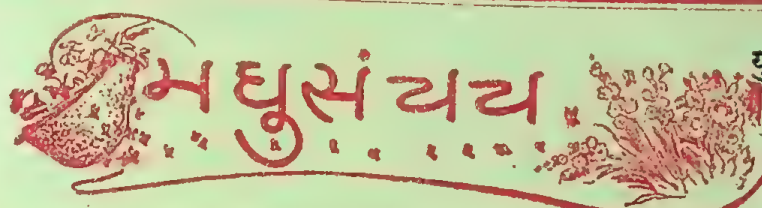
छोड़ चले सब संगी साथी नाव पड़ी मझधार।

वैज्ञानिकोंने इस अद्भुत घटनाके सम्ब- न्धमें अनुमान किया है कि सम्भवतः घटना- स्थलके निकटस्थ मैदानोंमें कहीं लोहा और चुम्बकका अंश मौजूद है जो समुद्री और सूर्यके प्रकाशके सम्मिश्रणसे किसी अज्ञात क्रिया द्वारा अग्नि उत्पत्तिका कारण बन जाता है। स्पेनमें गत ३ वर्षोंसे वृष्टिका अभाव रहा है और कुछ लोगोंका कहना है कि अभूतपूर्व अनावृष्टिका इस आश्चर्यजनक अग्निसे सम्बन्ध है।

लन्दनसे न्यूयार्क १४ मिनटमें

विज्ञानके नवं नतम आविष्कारोंसे हमारे यातायात सम्बन्धी प्रश्न बड़ी आसानीसे हल होते जा रहे हैं उस दिन अमेरिकन राकेट सोसाइटी के सेक्रेटरी, जेराडं पिन्डारीने यह घोषणा की है कि न्यूयार्कसे लन्दन जानेमें अब केवल १४ मिनट लगेंगे। राकेटोंकी गति प्रति घण्टे ७ हजार ९ सौ मील होगी।

युद्धमें भारतीयहताहतोंकी संख्या

इस महायुद्धमें ब्रिटिश साम्राज्या- न्तर्गत ३ सितम्बर १९३९ से ३१ मई १९४५ तक कुल हताहत व्यक्तियोंकी संख्या १,४२७,६३४, है।

इनमें ५३२,२३३ खो गये हैं, घायल हो गये हैं या मारे गये हैं।

गत १९१४-१८ के महायुद्धमें हताहतों की संख्या ३,४९०,९०७ थी जिनमें १,०८९,९१९ मारे गये थे।

इस महायुद्धमें भारतीय हताहतोंकी संख्या इस प्रकार है:—मृत २३,२९५ खोये हुए १२,२६४, घायल ६२,०६४, बन्दी ७९६९२ कुल १७७,३१५।

अन्यान्य राष्ट्रोंके हताहतों की संख्या:—संयुक्तराष्ट्र ७५० ३३८ कनाडा १०१,००८, आस्ट्रेलिया ९२,२११, न्यूजी- लैण्ड ३९,७८३ दक्षिणी अफ्रीका ३६,७६९, उपनिवेश ३६३७६।

चलती चक्की

'लोकयुद्ध' और "अभ्युदय" में होनेवाले लिखित झकझकको मद्दे नजर रखकर अभ्युदयके एक पुराने पाठकने "लोकयुद्ध" को कहा है:—

कोऊ अमीठी कहो तो कहो
हमें मीठी लगे सहारकी गारी।

भला यह तो बतलाइये कि यह 'राहुलजी' का वही पुराना रिश्ता है या कोई नया रिश्ता किया है।

* * *

पण्डित जवाहर लाल नेहरू घोड़ेपर चढ़कर शिमलामें वायसरायसे मुलाकात करने गये थे। — एक समाचार

मगर हाय रे जिन्ना! जिन्होंने पांच उंगलियोंका प्रश्न खड़ा कर कुल मजा ही किरकिरा कर दिया।

* * *

खबर है कि रूसमें संसारका सबसे ऊंचा भवन बनने जा रहा है जो ऊंचाईमें १३६५ फीट होगा जिसपर ३२८ फीटकी लेनिनकी प्रतिमा होगी तथा भवनके बीचो-बीच बने हालमें २६ हजार आदमी बैठ सकेंगे। — एक समाचार

तब तो यह अवश्य सैनफ्रैंसिस्कोको गोद ले सकेगा।

* * *

खबर है कि शिमलासे वापस लौटते हुए दिल्ली स्टेशनपर उपस्थित जनसमूहके सामने भाषण करते समय राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादको कुछ मुसलमानोंने धक्का देकर प्लेटफार्मपर गिरा देनेकी कोशिश की है।

* * *

जिन्ना तो उन्हें शिमलामें गिरानेकी कोशिश कर विफल हो ही गये थे फिर यह दिल्लीमें क्यों। मसल मशहूर है कि बड़े मियां तो बड़े मियां छोटे मियां सुभान अल्लाह!!

* * *

फूट पैदा करनेवालोंको झाड़ूसे बुहार फेकें! — पं० नेहरू

और जो आंगनमें बैर पैदा कर रहे हैं उन्हें?

* * *

जापानका कहना है कि यदि मित्रराष्ट्रों के टैंक जापान खासकी धरतीपर उतरनेका प्रयास करेंगे तो उन्हें दलदलमें फंसा दिया जायगा।

* * *

सुना था कि कामरूपमें मर्दोंको भेड़ बना दिया जाता है पर जापान मेशीनको फंसा लेता है। तब तो वह प्रयास अवश्य स्तुत्य है।

* * *

खबर है कि जबलपुरमें ऐसी वृष्टि हुई कि तीन घण्टेके पानीमें ही सड़क भर उठी और सैकड़ों मकान बैठ गये।

तब तो खूब छपाछप हुआ होगा।

* * *

पञ्जाबके प्रधानमन्त्री मलिक खिजर हयात खां खिवानाको जिन्नाने अर्ध मुस्लिम कहा है।

अब आधा हरि है तो फिर आधा हर होनेमें कोई सन्देह ही नहीं है।

* * *

बर्लिनके पोर्टस्डम नामक स्थानमें इस समय तीन बड़ोंकी जो सभा हो रही है उसके आसपास तमाम रूसी नवयुवतियां पहरा दे रही हैं। — एक समाचार

गोया कि विजेता इस बातको दिखलानेपर तुल गये हैं कि हमारे यहांके मर्द ही क्यों स्त्रियां भी योग्य हैं।

* * *

सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि व्यक्ति का व्यक्तिसे, व्यक्तिका सरकारसे, और एक सरकारका दूसरी सरकारसे क्या सम्बन्ध हो। — डा० राजेन्द्र प्रसाद।

वही जो जिन्नाका गांधीजीसे, फजलुल हकका पाकिस्तानसे और इंगलैण्डका अमेरिकासे।

* * *

ताजा समाचार है कि हिटलर, अपनी पत्नी इवाब्रानके साथ जो मर्दानी पोशाक में थी, अर्जेण्टाइना पहुंच गये हैं जहां पहलेसे उनके लिये सुरक्षित रहनेकी व्यवस्था स्वतंत्र जर्मनीकी ओरसे कर दी गयी थी।

मसल मशहूर है कि भ्रमका भूत दिनमें भी चैन नहीं लेने देता।

* * *

भंग हुआ शिमला सम्मेलन

जिन्नाका जिद् बड़ा जोर से
लगे पटकने पूंछ ढोर से
वावेलके हाथों से पगहा
छूटा 'वीटो' के हिलोर से
भगे लोग सब दन-दन
मेरे राम बोलते गान्धी
मौलाना आशा की आंधी
नेहरू आदाबर्ज कह थके
खोज खाज कर कोना साधी
लुढ़का घड़ा ठनन ठन।

'गुण्डोंसे सावधान' वाला सरकारी विज्ञापन अभी अभी कुछ ही दिनों पहलेतक सरकारकी ओरसे भारतके तमाम पत्रोंमें निकला करते थे किन्तु अब उनकी जगह 'कफनका कपड़ा लीजिये।' का विज्ञापन निकलना प्रारम्भ हो गया है।

बोलिये राम नाम सत्य है।

* * *

आजकल संसारकी सारी स्त्रियोंके सामने पति दुर्भिक्षका सवाल उपस्थित हुआ है!

तो क्यों नहीं भारतके बावन लाख सन्यासियों द्वारा इस प्लानके समाधान का पहला कदम उठाया जाय।

* * *

खबर है कि घरके झगड़ोंसे ऊबकर अमेरिका चली जानेवाली श्रीमती च्यांग काईशेक अब चीन वापस लौटकर नहीं आयेंगी।

तो क्या अब वह रूस जानेकी बात सोच रही हैं।

* * *

अमरीकी महिलायें अब साड़ियां पहनने लगी हैं। — एक खबर।

अब तो निश्चय ही बनारसी लहंगे मूल्यवान हो जायेंगे।

* * *

सुप्रसिद्ध लीगी पत्र 'डान' ने राष्ट्रपति आजादको देशद्रोही लार्ड हाहाकी उपाधि से विभूषित किया है क्योंकि वे पाकिस्तान विरोधी है।

पता नहीं 'डान' के दिमागमें डूबते हुए सूर्यकी तसवीर कहांसे घुस गयी है।

* * *

जय भक्त वत्सल

एक अलबेले मित्रकी अलबेली, मातृत्व प्राप्त करने जा रही थीं। मित्र महोदय कहते, 'मुन्ना आ रहा है'! श्रीमतीजीबात काटतीं, 'नहीं, मुन्नी आ रही है'।

जिद बंधी। दोनोंने हाथ-से-हाथ मिलाए। बाजी लग गई। शर्त यह हुई कि यदि मित्र महोदयकी बात सच निकलेगी तो अबसे श्रीमतीजी रात बीते घर वापस न आनेके कारण पति महाराजपर हड़ताल नहीं बोला करेंगी और यदि श्रीमतीकी 'विक्ट्री' हुई तो मित्र महोदय उन्हें सिनेमा थियेटर जाने एवं अन्य पुरुषोंसे बोलने-बतियानेमें बाधा नहीं पहुंचाया करेंगे।

दोनों ही अपनी विजयके हेतु भगवान् को गुहराने लगे—"जय, भक्तवत्सल!"

आखिरश वह समय आ गया जिसकी प्रतीक्षा थी। मेरी श्रीमतीजी जब मिजाजपुर्सीसे वापस आईं तो मैंने पूछा—"किसकी जीत हुई?"

वे मुसकाईं—"भक्तवत्सलने दोनोंका मन रख लिया। दोनों ही विजयी हुए। एक साथ ही मुन्ना भी आया और मुन्नी भी!"

मेरे मुंहसे आप-ही-आप निकल पड़ा—"जय भक्त वत्सल!"

अनुभवकी लड़ाई

नगरमें ऐसी अट्टालिकाओंकी कमी नहीं जिसके एक-एक कमरेके अन्दर एक-एक परिवार बसा होता है। एकमें, बिहार, दूसरेमें, युक्तप्रान्त, तीसरेमें मध्यप्रान्तीय बहार, तो चौथेमें एकदमसे गुजराती ठसक!—एक दफे समूची अट्टालिकाका भ्रमण कर लीजिये कि भूगोलका खासा और खुलासा ज्ञान होगया!

बिहत्तर नम्बरके कमरेमें ताशका अड्डा रात बीते तक जमा रहता। अड्डेकी चहलबाजीके साथ-साथ बीच-बीचमें अट्टहास और कोलाहलसे दूसरोंकी नींद बुरी तरह हराम होती, किन्तु अपने सुखके सामने दूसरेके दुख पर विचार कोई क्यों करे?

डेढ़ बजे रातको, ताश खेलते-खेलते वाद-विवादका रूप भयङ्कर हो उठा। अपनी चारपाईपर पड़े-पड़े यह न जाने क्यों मेरी धारणा बन गयी कि आज गुत्थम-गुत्थी भी होकर ही रहेगी। मैंने कान खड़े किये तो पता चला कि यह अनुभवकी लड़ाई हो रही है। खिलाड़ियोंमें कई प्रांतोंके साथी हैं और सब अपने-अपने प्रांतकी बात बघार रहे हैं। कोई कहता—इसे मानना पड़ेगा कि हमारे पटने और मुजफ्फरपुरसे बढ़कर मच्छड़ कहीं नहीं होता तो दूसरेकी ओरसे बात काटी जाती—"अजी, रहने दो तुम्हारा पटना और मुजफ्फरपुर जरा हमारे बनारसकी सैर करके तो देखो" आदि।

लेकिन निर्णय न हो सका और पटका-पटकीसे सिरफोड़ीकी नौबत आ गई।

अब फौजदारी चल रही है। देखें, जीत किसकी होती है!

सरस्वतीके पुजारी

अपनी कक्षामें पाठककी धाक एक ऐसी बनी हुई थी। दोस्त, दुश्मन सब यही कहते कि सरस्वतीका अनन्य भक्त अपने कालेजमें यदि कोई है तो, बस, पाठक!

पाठकजी अपनी हर सांसके साथ, जाप सरस्वती मैया करते, पढ़ने जब बैठा करते तो मेजपर जोरसे मुक्का मारते—"बस, [illegible] वर्ष या तो डिप्लोमा या आत्महत्या!"

पाठकजी गहरी सांस लेकर साथियोंसे कहते—"देखना, मैं सरस्वतीको साक्षात् प्राप्त करके ही चैन लूंगा। साधना क्या नहीं दे सकती है? "एम० ए०" मेरी साधना की पूर्णाहुति है।

और बात सच निकली। "एम० ए०" होते ही पाठकजीका विवाह सरस्वती नामक कन्यासे हो गया जिससे प्रेमका रिश्ता चला आ रहा था!

मुंहजरी किस्मत

पत्नी उन्हें समझाया करती कि [illegible] तरह वर्ग-पहेलीके पीछे पड़े रहनेसे [illegible] आटा गीला करनेके सिवा और कोई [illegible] न होगा पर वे माननेका नाम ही न [illegible] थे। उनका दावा था कि आज, न, [illegible] पौबारह जरूरी है!

और सचमुच उस दिन बहुत [illegible] हुई जिस दिन वे हाथमें समाचार पत्र [illegible] खुशीसे उछलते हुए आये और बोले—[illegible] क्या रही हो? अब किस्मत रिजाइन [illegible] आ रहा हूं। देखो, इस पेपरमें सही [illegible] (करेक्ट सोल्यूसन) छपा है। यह हू-ब-हू मेरा उत्तर है!—हू-ब-हू क्या, बिलकुल मेरा [illegible] मैं जीत गया! जीत गया! अब [illegible] चिट्ठी भी आ जायगी!

पत्नी तुरत चाय बनाकर ले आयी और वे चुस्की लेते हुए बोले—"रुपये कैसे मंगाये जायें? मनिआर्डर या वैंकसे? मनीआर्डर आनेसे चोरोंकी नजर लग जायगी और महाजन तंग करने लगेंगे। वैंकसे [illegible] हां, न!—अच्छा तो मैं अभी चिट्ठी लिख देता हूं।

उन्होंने चिट्ठ लिखनेके लिये टेबिलकी दराजसे राइटिंग पैड निकाला। खोलते ही उनकी पिलही चेतरह [illegible] उनके अन्दर एक बन्द लिफाफा [illegible] लिफाफेके अन्दर उनके द्वारा प्रस्तुत पहेलीका उत्तर था। उनके मुंहसे एक [illegible] निकली—'हायरी, मुंहजरी तकदीर [illegible] उत्तर तो मैं भेजना ही भूल गया था! [illegible] वही उत्तर है जैसा मैंने लिखा था!!

—श्री "[illegible]"

डा० भगवानदासजीको एक खुला पत्र

एक स्वस्थ, सुन्दर और पुष्ट राष्ट्रभाषाके निर्माणकी दृष्टिसे वर्तमान हिन्दी-हिन्दुस्तानी विवाद नितान्त वांछनीय और महत्वपूर्ण है। इसी दृष्टिसे हम विहारके लब्ध-प्रतिष्ठ साहित्यिक, कवि और आलोचक पंडित मोहनलाल महतोका खुला पत्र—आचार्य प्रवर श्रद्धेय डा० भगवानदासकी सेवामें—प्रकाशित कर रहे हैं। —स० वि०

...श्रीमान्,

...११ जूनके साप्ताहिक 'विश्वमित्र' में ...आपका वह भाषण बहुत ही दुःखके ...ला जिसे आपने तथाकथित हिन्दु-...में किया है। भारतमें विदेशियों और ...शियोंको लानेवालेको यदि 'जयचन्द' ...पुकारते हैं तो क्या मैं आपसे यह पूछूं ...संस्कृति और भारतीयताकी पवित्र ...हिन्दीके मन्दिरमें वर्जित शब्दोंको ...पूर्वक लानेवालोंको मैं क्या कहूं। ...ो तो भाषाके साथ द्रोह करना ही ...आप सत्यका साथ देते रहे हैं। न्याय ...भाषाका सीधा सम्बन्ध संस्कृतिसे है ...ोई भी जाति जिसका रोम राम ...नहीं हो चुका है ऐसे उपद्रवको ...ही कर सकती है। किसी जातिकी ...ाको मारनेके लिये सबसे पहले उसकी ...को रौंदा जाता है और बिना ...भाषाका अङ्ग भङ्ग किये यह सम्भव ...। आज पराजित जर्मनीपर अंग्रेजी ...के लादी गयी क्योंकि सदाके लिये ...नाश करना है। इतिहास कहता है ...के १२-१३ सौ सालसे औसत प्रत्येक ...उपर वह एक खतरनाक आक्रमणशील ...रूपमें सिर उठा रहा है। जर्मनी ...जीता गया पर मारा जायगा ...अस्त्रसे। आप एक विद्वान् पुरुष ...संस्कृतके चूड़ान्त पंडित हैं। ...आश्चर्य है कि आपने अपने भाषणमें ...शब्दोंका अनावश्यक प्रवेश सह ...संस्कृतकी छातीपर 'हिन्दुस्तानी' ...का समर्थन कर दिया किन्तु जिस ...हिन्दीको स्वर्गीय महावीर प्रसाद ...साथ आप लोगोंने जन्म दिया ...आज पराधीन भारतकी राष्ट्रीय ...उसका फलना फूलना नहीं सहा। ...ीकी हत्या की गयी तो भारतीय ...और किसी अंशतक संस्कृतका भी ...जायगा—इसके बाद हमारे पास ...के वर्ण संकरी संस्कृति जिसे 'कल-...ा जा रहा है। क्या मैं पूछूं कि ...ममता आपमें कैसे आयी? क्या ...और मानसिक विकासका यही ...परिणाम है? ऐसा तो नहीं होना ...!

...सन् १९३६ या ३७ की बात है। जब ...माननीय बाबू श्रीप्रकाशजीने लख-...के स्वागताध्यक्षके पदसे अपना ...तथाकथित हिन्दुस्तानी भाषामें दिया ...इन्हीं स्तम्भोंमें उसका यथाशक्ति ...किया था। मेरा ध्यान आपकी ...और मुझे विश्वास था कि 'सम-...विचारयुक्त ग्रन्थोंके प्रणेतासे मुझे ...प्राप्त होगा, किन्तु ८-९ साल ...भाषाको आज आत्महत्या करने-...पड़ी है!

...यह क्या किया!! अब हिन्दी ...के लिये किसे पुकारेगी? मैं ...शब्दोंमें इस तथ्यको स्पष्ट कर ...भारतमें जितनी बोलियां बोली ...उनमें संस्कृत कुलकी बोलियोंकी ...है। मराठी, बंगाली, तेलगू, तामिल, कन्नड़, मलायलम आदि भाषाओंके बोलनेवाले मुसलमानोंसे अधिक हैं—उन मुसलमानोंसे जो आपके युक्तप्रांत या पंजाबमें बसे हुए हैं और उनमेंसे शायद कुछ अरबी फारसी गर्भित भाषा भी बोला करते हैं। बंगाली या मद्रासी मुसलमान वहांकी संस्कृतगर्भित भाषाओंको ही अपनी भाषा मानते हैं। आज केवल यू० पी० और पंजाबके मुसलमानोंके लिये ही हिंदीका गला घोंटा जा रहा है। क्या आपने कभी यह सोचनेका कष्ट उठाया है कि यह गन्दी हिन्दुस्तानी मराठी, बंगाली आदिसे कितनी दूर जा पड़ेगी। क्या आप हिन्दी सीखनेकी उत्कट इच्छा रखनेवाले मद्रासियों या कन्नड़ोंको बल-पूर्वक अर्बी-फारसी पढ़ानेका अन्याय नहीं कर रहे हैं? वे या तो अर्बी-फारसी पढ़ें या हिन्दी पढ़नेकी अपनी उत्कट इच्छा का, विवश होकर परित्याग कर दें। हिन्दी की हत्या करके भी आप मुसलमानोंको रिझा नहीं सकेंगे—उन्होंने महात्माजीके "कोरे चेक" को भी ठुकराया है। वे उन हिन्दुओंसे दूर ही रहेंगे जिन्होंने सैकड़ों जातियों उप-जातियोंको पचा डाला। संस्कृत-गर्भित हिन्दी सारे भारतमें समझी जा सकती है, समझी जाती है। मैं गयाका पंडा हूं और हमारे यहां हिन्दू भारतके कोने कोनेके यात्री आते हैं। हम उनकी भाषा ओंको संस्कृतके उन शब्दोंके सहारे ही समझते हैं जो उनकी भाषामें भरे पड़े हैं और वे भी ऐसा ही करते हैं—अब आप यह चाहते हैं कि हम अर्बी-फारसीको माध्यम बनाकर अपना काम चलावें? जिस कामको सैकड़ों सालके इसलामी शासनने नहीं किया उसे आप स्वयं—अपने हाथोंसे पूरा कर डालना चाहते हैं? हमारे बिहार प्रांत में बादशाह 'राम और बेगम सीता'के व्यवहारसे जो अवांछनीय दशा पैदा हो गयी थी उससे सीधे हिन्दू संस्कृतिकी हत्या होती थी। क्या आप तथाकथित सांस्कृतिक ऐक्य के लिये हमारी संस्कृति तकको मिटाना पसन्द करेंगे? गीताके अनुसार "वर्णसङ्करी संस्कृति" पैदा करके आप देशका कल्याण कैसे करेंगे? यदि आप यह सोचते हों कि आपके इस बलिदानका कुछ सुन्दर फल होगा तो मुझे यह कहते हुए दुःख ही होता है कि आप ऐतिहासिक सत्यको एक छलांगमें पार करना चाहते हैं। हिन्दू और मुसलिम संस्कृतियोंको मिलाकर "सङ्कर भारतीय-संस्कृति" के रूपमें एक खतरनाक संस्कृति ढालनेका यह प्रयत्न बहुत ही भयावह प्रयत्न है। इतिहासमेंऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता कि दो जातियोंका सांस्कृतिक ऐक्य भाषा सम्बन्धी धींगाधींगीके आधारपर हुआ हो। आप अपने भाषणमें नामुकम्मिल, तहजीब, शाइस्तगी, मजमून, मकसद, सलाम, (नमस्कार या अभिवादन नहीं!) जजबा, माही, इखलाकी, कौमी, फेज, खुदी, शायरी, तसव्वुफ, हमदर्दी, माहवारी रिसाला, एतत'द, रोजा' परहेजगारी, पाकी, तामीरी, मुफीद, रुह, जहूर, सियासी, माली, मजहबे-इन्सानियत, मयारदायरा आदि आदि अनार्य शब्दोंका भले ही प्रयोग करें किन्तु ऐसी आशा न रखें कि (आपके ही भाषणमें आनेवाले अभागे संस्कृतके) इन शब्दोंको मुसलमान अपनी भाषामें घुसने देंगे जैसे—रचनात्मक, उपयोगी, चक्र आर्थिक, साम्प्रदायिक आदि!

एक बात और मेरी समझमें नहीं आयी। आपने संस्कृत शब्दोंके प्रतिकूल तो अस्त्रधारण किया है पर वह अंग्रेजीकी रक्षा करनेके लिये तो नहीं? अपने भाषणके लिये जिन संस्कृत शब्दोंके सरल (आपकी समझ से) अर्बी-फारसी शब्द आपको नहीं मिल सके उनकी जगहपर आपने अंग्रेजीको बिठला दिया है, किन्तु संस्कृतको निकालकर ही दम लिया। उदाहरण देता हूं—पब्लिक, सोसायटी, कलचर, आर्ट, साइंस, सिविक्स, फिलासफी, सिविलीजेशन आदि आदि। आपका एक वाक्य है—"यह सोसायटी हिन्दुस्तानी कलचर और हिन्दुस्तानी सिविलिजेशनका बीज बो रही है।"

क्या इस तरहकी सड़ी गली भाषाकी आशा कोई आप जैसे आचार्यकी लेखनीसे कर सकता है? मैंने मान लिया है, पराधीन भारतमें कुछ भी असम्भव नहीं है।

दिल्लीके रेडियोवालोंके प्रतिकूल जो आन्दोलन आज हो रहा है उसकी जड़पर आपके इस भाषणने कसकर प्रहार किया है और रेडियोवालोंको बल मिला है। मैं इन छोटी बातोंको महत्व नहीं दूंगा। किन्तु यह जानना चाहूँगा कि आपने भाषाका क्या आदर्श माना है। आपका यह कहना कि संस्कृत और फारसीके करीब करीब ७०० जोड़े.........याद करके हम अपने केलोंमें लिखा करें और हर जोड़ेके दोनों शब्दोंको काममें लावें। क्या आपने अपनी इस सम्मतिके हास्यास्पद परिणामकी ओर कभी ध्यान दिया? अपने इस भाषणमें आपने कुछ जोड़े भी उपस्थित किये हैं किन्तु जरा सोचिये तो आपके भाषणका रूप कैसा हो गया है। आप हमारे आचार्यपदपर हैं और आपका अनुकरण करके ही हम आज अपनेको पूर्ण बनानेका प्रयत्न कर रहे हैं। ऐरे-गैरे नत्थू-खैरे यदि बेतुकी बेतुकी हांकते हैं तो मैं चुप लगा जाता हूं किन्तु जब आचार्य-पदसे कुछ अनोखी सी बात कही जाती है तो उसके अवश्यम्भावी कुपरिणामको स्मरण करके हृदय व्यथित हो जाता है। मैं सादर निवेदन करता हूं, इस पत्रमें जो बातें लिखी गयी हैं उनका समाधान आप करनेका कष्ट करें। बहुतोंके हितका ध्यान तो आपको रखना ही होगा। क्या मैं नम्रता पूर्वक आपको, आपके गुरुतर उत्तरदायित्वकी याद दिला सकता हूं? मैं क्षमा किया जाऊं!

गया — चरणोंकी वन्दना करता हुआ
वशम्वद
मोहनलाल महतो

❀ गीत ❀

तुम पर कुछ अधिकार न मेरा !
सुखसे दिन तेरे जाते हैं
हरी-भरी दुनियां है तेरी
मेरे चारों ओर लगाती
उलझन ही अविरल है फेरी
पवन-पंख पर उड़नेवाला सुख
का है संसार न मेरा !
नहीं भूल कर तेरे जीवन-उपवन
में पतझड़ है जाता
जीर्ण पत्र, मुरझाये सुमनों
को मैं हंस कर गले लगाता
तुम्हें भुलानेवाला कोमल फूलों
का उपहार न मेरा !
तुम हंसती तारोंसे मिल कर
उनकी मधुर ज्योत्सना लेकर
चिर अभिशापित मानव-मन
की; सुख पाता मैं पीड़ा हरकर
हंसने और हंसाने वाला
तुम-सा है परिवार न मेरा !
तुम पर कुछ अधिकार न मेरा !

श्रीयुत रामनन्दन प्रसाद सिंह 'परिवार'

पर हित बस जिनके मनमाहीं ।
तिन कहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥

कौन जीतेगा ?

——):०:(——

विजेता राष्ट्र रूस, अमेरिका और ब्रिटेनके महानेता स्टालिन ट्रूमैन और चर्चिल बर्लिनसे १६ मील दूर पोट्सदममें उपस्थित समस्याओंपर विचार विनिमय कर रहे हैं। इसका प्रभाव विश्व समस्या पर पड़ना अनिवार्य है। पांच महीना पहले इन तीनों देशोंके महानेता क्रीमियान्तर्गत याल्टामें जर्मनीकी पराजय सम्बन्धी योजनाके साथ साथ विश्वशान्तिकी समस्यापर विचार करनेको उपस्थित हुए थे। उनकी वह योजना सफल हुई। जर्मनी पराजित हुआ। याल्टाके निश्चयानुसार ही सैन-फ्रैंसिस्कोमें विश्वशान्तिकी रक्षा करनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय सङ्गठनकी हवेली खड़ी कर दी गयी है। आज पोट्सदममें इस बातका विचार हो रहा है कि पराजित जर्मनीके साथ भविष्यमें कैसा आचरण किया जाय। इसके साथ साथ इस बातपर भी विचार होगा कि विश्वशान्तिकी योजना भविष्यमें कैसे कार्यान्वित की जाय। इस महानेता सम्मेलनकी सफलता असफलतापर संसारकी शान्ति अशान्तिका प्रश्न निर्भर है। विचार करनेवाले वे तीन आज नहीं हैं जो याल्टामें थे। क्रूर काल रूजवेल्टको इनके बीचसे उठा ले गया। रूजवेल्टके स्थानकी पूर्ति करनेवाले हैरी ट्रूमैन कूटनीतिक अखाड़ेके नये खेलाड़ी हैं। चर्चिल और स्टालिनसे उनका पहली बार पाला पड़ा है। कूटनीतिक दांवपेंचके दंगलमें इस बार ट्रूमैनको अपनी कला-बाजी दिखानी है।

इस परिवर्तनके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण बात है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। ब्रिटेनका साधारण निर्वाचन हो चुका है। उसका परिणाम अभी अन्धकारमें है। इसी सप्ताह इस बातका भी फैसला हो जायगा कि ब्रिटेनके नेतृत्वकी बागडोर चर्चिलके हाथमें ही रहेगी या मजूर दलके नेताके हाथमें जायेगी। ऐसी अवस्थामें मि० चर्चिल त्रिनेतृ सम्मेलनके आरम्भिक दिनोंमें निर्भीकता और दृढ़ताके साथ अपनी नीति शायद ही उपस्थित कर सकें, क्योंकि उनको सदा इस बातका ध्यान रखकर आगे कदम बढ़ाना पड़ता होगा कि ऐसा न हो सम्मेलन समाप्त होते-होते उनको अपना स्थान अपने पहलेके सहयोगी और आजके प्रतिद्वन्द्वी मि० एटलीको जो उनके साथ पोट्सदम में उपस्थित हैं सौंपनेकी स्थिति का सामना करना पड़े। स्टालिनके सामने इस तरहकी कोई अड़चनें नहीं हैं अतः वे अपने अन्य दोनों सहयोगियोंकी अपेक्षा अधिक सुरक्षित और सुविधाजनक स्थितिमें हैं।

अबतक प्राप्त समाचारोंसे कोई तथ्यकी बात नहीं निकलती। पोट्सदममें क्या हो रहा है, किसका दांव चल रहा है, कौन दब रहा है, कौन बढ़ रहा है इन सब बातोंपर जरा भी प्रकाश नहीं पड़ता। त्रिनेतृ सम्मेलन की कार्यवाहीको गुप्त रखते हुए इस ढङ्गसे वहांकी बातें संसारके सामने लायी जा रही हैं कि कोई यह न समझे कि वहां आपसमें किसी प्रश्नको लेकर आरम्भमें ही मतभेद उपस्थित हो गया है। ये नेता संसारको बताना चाहते हैं कि "हम शांति और मानव-कल्याणके लिये लड़ रहे हैं। हम दूसरेपर विजय प्राप्त करनेको नहीं लड़ते। हमारी दृष्टि आनेवाले संसार पर है, ऐसे संसारपर जहां सब लोग जीवनकी सुन्दरताका उपभोग करनेकी सुविधा और अवसर पायेंगे, न कि मात्र शीर्षस्थानीय मुट्ठीभर आदमी।" आदर्शकी बात कहते समय मनुष्य भावुकतामें बह जाता है। संसारकी कठोर वास्तविकता और व्यावहारिकतासे वह बहुत दूर हो जाता है। भावी संसारके सम्बन्धमें ऊपरके उद्धरणमें व्यक्त की गयी भावना प्रेसिडेंट ट्रूमैनके हृदयके सुन्दर उद्गार हैं। किन्तु इस भावनाको सत्यका ठोस रूप देनेके लिये जिन उपादानोंकी आवश्यकता है, क्या यह त्रिनेतृ सम्मेलन उनको प्राप्त करनेमें सफल होगा। सर्व प्रथम आवश्यकता भावी संसारके निर्माताओंके दृष्टिकोणमें साम्य की है। किन्तु जर्मनीकी भावी व्यवस्थाके सम्बन्धमें ही हम तीनोंमें विचार साम्य नहीं पाते। पहली मंजिल ही तीनों अपने अपने रास्तेसे तय करना चाहते हैं। हमारे सामने त्रिनेतृ सम्मेलनमें उपस्थित जर्मन समस्या ही है जिसपर हम इस समय कुछ विचार कर सकते हैं। रूस नहीं चाहता कि जर्मनीका अङ्गविच्छेद किया जाय। वह चाहता है कि राइन और ओडर नदियोंके बीचमें अर्थात पश्चिमसे पूर्वतक जर्मनी राजनीतिक दृष्टिसे एक रहे। ब्रिटिश और अमेरिकन नीति इससे ठीक विपरीत है। एक बार १९४४ में यूनान और युगोस्लावियाके मामलेमें मि० चर्चिलने कहा था कि "एक जगह हम शाह का समर्थन करते हैं, अन्यत्र कम्यूनिस्टका। हम किसीपर बलपूर्वक कोई खास विचारधारा लादना पसन्द नहीं करते।" वैसे ऊपरसे देखनेमें तो यह मि० चर्चिलकी अत्यन्त उदार नीति जान पड़ती है। किन्तु वास्तविकता यह नहीं है। यह उनकी सुविधावादिता और अवसरवादिताका ही परिचायक है। अपने स्वार्थको सर्वोपरि रख कर वे अपना कदम आगे बढ़ाते हैं। यह बात दूसरी है कि परिस्थितियोंसे लाचार होकर वे कम्यूनिस्टका भी समर्थन करें। १९४५ में उसी कम्यूनिस्ट युगोस्लावियाके सम्बन्धमें ट्रिस्टीके मामलेको लेकर उनके आचरणसे यह बात स्पष्ट हो जायगी कि दर असल वे अपने स्वार्थकेसिवा किसीके समर्थक नहीं हैं। यही कारण है कि वे नहीं चाहते कि बर्लिनमें केन्द्रीय सरकार हो। वे जर्मनी को पृथक-पृथक भागोंमें ही शासित होते देखना चाहते हैं। जर्मनीके भविष्यके सम्बन्धमें ब्रिटिश और अमेरिकन एकमत हैं।

हम रूसके इस मतके साथ सम्पूर्ण सहमत हैं कि यदि जर्मनीमें एक केन्द्रीय सरकार न रखी गयी तो जर्मनीको फिर स्वस्थ और सबल राष्ट्रके रूपमें शायद ही देखा जाय। रूसकी यूरोपमें बढ़ती हुई ताकत और यूरोप के प्रायः सभी देशोंमें [illegible] ओर लोगोंका अधिकाधिक झुकाव साम्राज्यवादी ब्रिटेनके लिये खतरेकी घंटी है। इस प्रभावको रोकनेके लिये यह आवश्यक है कि मध्य यूरोपपर ब्रिटेनका प्रत्यक्ष प्रभाव रहे। जर्मनीको विभक्त रखकर, अपने अपने अंचलमें अलग अलग सरकार बनाकर ही ब्रिटेन यूरोपमें अपनी भेदनीति चला सकता है। चतुर स्टालिन इसे खूब समझते हैं। अपने पश्चिमी मित्रोंकी इस चालको मात देनेके उद्देश्यसे ही वास्तविकतावादी स्टालिन जर्मनीमें भी आरम्भहीसे उसी नीतिसे काम ले रहे हैं, जो पोलैण्ड और युगोस्लावियाके सम्बन्धमें काममें लायी गयी थी। रूसी अधिकारी जर्मन जनताका विश्वास प्राप्त कर रहे हैं। सोवियट प्रतिनिधिने यह स्पष्ट कर दिया है कि उसके अञ्चलके जर्मनीका शासन स्वयं जर्मन करेंगे। वे चाहते हैं कि यही नीति सम्पूर्ण जर्मनीमें काममें लायी जाय। वे चाहते हैं कि अधिकारी शक्तियोंके तत्वावधानमें जर्मनीमें लोकतंत्रीय आधारपर राजनीतिक पार्टियां कायम की जायं और ये पार्टियां जर्मनीके सब भागोंमें अपने सदस्यों और शाखाओंपर नियंत्रण रखें। उन्होंने यह बातभी स्पष्ट कर दी है कि जर्मनीके सम्बन्धमें अबतक मित्र शक्तियों द्वारा जितनी अस्पष्ट और गोलमटोल घोषणाएं की गयी हैं उनको हटाकर सम्पूर्ण जर्मनीके सम्बन्धमें निश्चित और स्पष्ट नीतिकी घोषणा की जानी चाहिये। क्या तेहरान और याल्टाका विजयी स्टालिन पोट्सदममें परास्त होगा ?

समाधान—

पाकिस्तानसे साम्प्रदायिक समस्याका समाधान नहीं हो सकता। लीगका दावा है कि प्रत्येक मुसलमान पाकिस्तानी है। इसका अर्थ यह हुआ कि यदि पाकिस्तान हो गया तो हिन्दुस्तानमें रहनेवाला मुसलमान और पाकिस्तानमें रहनेवाला हिन्दू वहां विदेशी समझा जायगा। अतः जवाहरलालजी कहते हैं कि "इस व्यवस्थाके परिणामस्वरूप सात लाख ग्रामोंमें एक साथ रहनेवाले हिन्दू और मुसलमान पाकिस्तान की स्थापनासे साम्प्रदायिक समस्याको हल करनेकी अपेक्षा अधिक विकराल और कुरूप बना देंगे।" इसपर लंदनके "डेली वर्कर" के संवाददाताने कहा कि "मि० जिन्नाने मुझसे स्पष्ट तौरसे कहा है कि पाकिस्तान शतप्रतिशत आधुनिक और लोकतन्त्रीय राज्य होगा जिसमें जाति, धर्म और सम्प्रदायके कारण कोई प्रतिबन्ध न होगा और पाकिस्तानमें रहनेवाला प्रत्येक व्यक्ति पूर्ण और अबाध नागरिकताका उपभोग करेगा।" कांग्रेसका भी यही आदर्श है। यदि दोनोंका यही ध्येय है तो, पंडितजीने कहा, दोनों मिलकर सम्मिलित प्रयास क्यों नहीं करते ? जब यह प्रश्न उठाया गया कि मुसलमान हिन्दुओंसे डरते हैं। डरकी कोई ... है। [illegible] ...ज्ञानिक विकार है। ... सिद्ध विश्लेषण चिकित्सा प्रणाली ... भयको निर्मूल किया जा सकता है। ... [illegible] कि "कभी यह कहा ... है [illegible] सिपाही और बहादुर ... है और कभी यह कहा जाता है कि ... मान हिन्दू आधिपत्यसे भयभीत हैं ... बात है।" इसपर पंडितजीसे कहा ... 'मुसलमान हिन्दुओंकी ताकतसे नहीं, ... वोटोंसे डरते हैं।' पंडितजीने जवाब ... कि "आखिर वोट क्या है। वह ... का ही दुर्बल पर्यायवाची रूपान्तर है। ... आठ या नौ करोड़ मुसलमान हिन्दु... ताकतसे नहीं डरते तो, क्या वे हिन्दु... वोटोंसे डर सकते हैं।' वस्तुस्थिति यह ... आज हिन्दुस्तानमें प्रत्येक वस्तुको ... साम्प्रदायिक रंग रूप दे दिया गया ... यह बड़े ही दुर्भाग्यकी बात है। ... समाधानके लिये नेहरूजीके ... राजनीतिक लोकतन्त्र अथवा इससे ... अधिक आर्थिक लोकतन्त्र जिसका ... होता है, समाजवादको आधार ... पड़ेगा। साम्प्रदायिकता जब तक राज... का आधार रहेगा तब तक हम किसी ... नतीजे पर नहीं पहुंच सकते हैं। ... समस्याएं, एक दूसरे देशकी समस्या... साथ कुछ इस तरह जुड़ी हुई हैं ... अपनेको उनसे अलग रख कर किसी ... विचार नहीं कर सकते। इसके ... हमारे देशके नेता, संसारकी समस्या... दृष्टिगत रखनेको कौन कहे, देश... सम्पूर्ण समस्याओंको नहीं देखना ... अपनी डफली अपना राग अलाप... करके जब हम अपने देशकी सम्पूर्ण ... ओंको अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंकी पृष्ठ... पर रखकर देखेंगे तभी हम सही ... पर पहुंच सकते हैं।

पृथक निर्वाचन—

जब तक संभव हो हिंदुस्तानको ... अधिकारमें बनाये रखनेके लिये ... राजनीतिज्ञोंने फूटका सहारा लिया। ... सम्मत लोकतन्त्रीय सिद्धान्तों और ... को, निजी स्वार्थ साधनके लिये, ... राजनीतिज्ञोंने हिन्दुस्तानमें तिलांजलि ... धर्म और साम्प्रदायिकताको राज... स्थान दिया। इसीसे हिन्दुस्तानमें ... साम्प्रदायिकताके नामपर पृथक नि... प्रथा चलायी गयी। संसारमें सर्वत्र ... संख्यक जन समाज और सम्प्रदाय हैं ... अपने-अपने स्वार्थ हैं। किन्तु कहीं ... राष्ट्रमें धर्म और सम्प्रदायके नामपर ... को प्रतिनिधित्व नहीं दिया गया। ... स्तानमें यह फूटका बीज बोनेवाले ... शियोंने उलटा रास्ता पकड़ा। ... तन्त्रीय सरकारमें अल्पजन समाजके ... के संरक्षणकी समुचित और वांछनीय ... है। किन्तु हिन्दुस्तानकी बात ... है। यहां तो जमीन्दार, ताल्लुकेदार ... पूंजीपति भी संरक्षण चाहते हैं ... तरहकी बेहूदा बातें उस समय तक ... और महत्व पाती रहेंगी, जबतक ... ताकतका अस्तित्व बना हुआ है।

कि इस तीसरी ताकतको हटानेकी
कांग्रेसको छोड़ कर अन्य कोई पार्टी
करती। इसके विपरीत तीसरी पार्टी
दिये गये फूटके हथियार पर ये पार्टियां
जान रखा करती हैं। इस स्थितिके
प्रधान जिम्मेदार ब्रिटिश सरकार है।
को समझाया जाता है कि हिन्दुस्तान
भिन्न सम्प्रदायों और पार्टियोंमें मेल
वे आपसमें बराबर लड़ते-झगड़ते
। पंडित जवाहरलाल नेहरूके सामने
अनैक्यका जिक्र आया तो उन्होंने
कि "किसी अन्य देशमें पृथक निर्वा-
चन प्रणाली करके देख लीजिये, मैं गारण्टीके
सकता हूं, वहांकी स्थिति हिन्दुस्तानसे
बदतर होगी।"

...तिका मार्ग—

संसारके महान शक्तिशाली राष्ट्रोंके
आज सबसे बड़ा प्रश्न, सबसे बड़ी
यह है कि किस उपाय और संगठन
शान्तिका मार्ग निकाला जाय। डा०
प्रसादने इन विश्वविचारकों और
विद्वोंका ध्यान महात्मा गांधी द्वारा
बताये मार्गकी ओर खींचा है। बाई०
कृष्णमूर्तिकी एक नयी पुस्तकके प्राक्-
डा० राजेन्द्र प्रसादने कहा है कि
महात्मा गांधीने संसारके सामने एक
फिलासफी, (जीवन दर्शन) एक नयी
(Technique) और कार्यकी नवीन
उपस्थित की है। यह कोई निष्क्रिय
नहीं है बल्कि जबर्दस्त चुनौती है।
आज इसे स्वीकार न किया जाय
इसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।"
संसार जिस मार्गपर चलकर शांति
पर पहुंचनेका प्रयत्न करता आया
का आधार स्वार्थ-लिप्सा रहा है।
भौतिकवादी संसार अहमत्वकी परिधि
में ही चक्कर काटता रह गया है।
लिये कई महाशक्तियोंकी स्वार्थ-
जब परस्पर टकरा गयी हैं तभी
उत्पन्न समरानलमें संसार जलकर
हो गया है। अतः स्वार्थका
करना चाहिये, या हटाया जाना
भौतिकवादी दृष्टिकोण मिटाया जाना
। विश्वशान्तिका आधार विश्व-प्रेम
सकता है, प्रेममें स्वार्थका कोई स्थान
प्रेमकेलिये त्याग और तपस्या
बलिदान द्वारा सींचकर पुष्ट किया
है। अतएव डा० राजेन्द्र प्रसाद
कथन सर्वथा सत्य है कि आज
संसार महात्मा गांधीके नवीन
और सिद्धान्तको स्वीकार न
उसकी उपेक्षा नहीं की जा
आज न सही कल इसे उसी मार्ग
होगा तभी विश्वमें साकार शांति
।

...बन्दी—

सम्मेलनकी घोषणाके साथ लार्ड
कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सदस्योंकी
आदेश देते हुए कहा था कि अन्य
बन्दियोंकी मुक्तिके प्रश्नपर नवीन सर-
बनेगी तो, विचार करेगी। दुर्भाग्य
नहीं हो सका। मानवता और
राजनीतिज्ञता दोनोंका तकाजा है कि भारत
सरकार अविलम्ब समस्त राजबन्दियोंकी
मुक्तिका आदेश जारी करके राष्ट्रकी मांगको
पूरा करे। इस सम्बन्धमें राष्ट्रपति मौलाना
अबुल कलाम आजादकी वायसरायसे बात-
चीत भी हुई थी। हमें मालूम हुआ है कि
लार्ड वावेलने राष्ट्रपति एवं अन्य कांग्रेस
नेताओंको आश्वासन दिया था कि वे इस
प्रश्नपर सहानुभूति पूर्वक विचार करेंगे।
कहा जाता है कि तदनुसार तमाम प्रान्तीय
सरकारोंको इस सम्बन्धमें आवश्यक कार्य-
वाही करनेकी हिदायत दी गयी है। इस
हिदायतके अनुसार फिलहाल आल इण्डिया
कांग्रेस कमेटीके सदस्य, एवं अन्य कांग्रेसी
बन्दी, जो १९४२ के आन्दोलनके बादसे
नजरबन्द या कैद हैं और जिनपर हिंसाका
आरोप नहीं है, छोड़ दिये जायेंगे। यह भी
कहा जाता है कि वायसरायने प्रान्तीय
सरकारोंसे श्रीमती अरुणा आसफअली एवं
अन्य इसी तरहके फरारोंके मामलोंपर भी
विचार करनेको कहा है। आशा है कि इनके
साथ-साथ वायसराय कमसे कम मनुष्यताके
नामपर उन राजबन्दियोंकी मुक्तिके प्रश्नपर
भी सहानुभूतिपूर्वक विचार करेंगे जो वर्षों
से जेलोंमें बन्द हैं।

अनुशासनकी आवश्यकता—

अनुशासन पालन सैनिकोंका सर्वप्रथम
कर्तव्य है और किसी देशकी सेना तभी पूर्ण
संगठित और दृढ़ हो सकती है, जब वह
पूर्णतया अनुशासित हो। भारतीय स्वतंत्रता
संग्रामका अहिंसक सैनिक अगर जनसमूह है
तो उसका साधारण सैनिकोंकी अपेक्षा
अधिक अनुशासित होना आवश्यक है।
किंतु भारतीय स्वाधीनता संग्रामके सैनिक—
भारतीय जनसाधारणके कोलाहल, शोर गुल
और धक्कमधक्कीसे परेशान होकर महात्मा
गांधीको इस बार 'चोरकी तरह' कालका
से वर्धाकी यात्रा करनी पड़ी है। महात्मा
गांधीने कहा है कि जब मैं फ्रांटियर मेल
द्वारा बम्बईसे कालका जा रहा था तो
स्टेशनपर बेतरह प्रदर्शन हो रहे थे जिनके
कारण कई घातक दुर्घटनाएं होते होते बचीं।
उनके डब्बेके यात्रियोंको अत्यधिक दिक्कतें
उठानी पड़ीं और उन्होंने दो रातें जागकर
बितायीं। ऐसी हरकतोंसे हमारे नेताओंके
कार्योंमें तो बाधा पहुंचती ही है, साथ ही
कभी-कभी भीड़के कारण वे पिस भी जाते
हैं। महात्मा गांधीके शब्दोंमें ऐसी उन्मत्तता
स्वराज्यकी प्रस्तावना नहीं बन सकती और
यह अहिंसाका बोधक भी नहीं है। नेताओं
के स्वागतार्थ जनताका एकत्र होना वांछ-
नीय है, पर उन्हें शान्त और अनुशासित
रहना चाहिये। नेताओंके स्वागतार्थ एकत्र
होकर अनियमित प्रदर्शन करने वाला जन-
समूह यदि अपनेको स्वराज्यका अहिंसक-
सैनिक कहता है तो उसको साधारण सैनि-
कोंकी अपेक्षा अधिक नियमित और अनु-
शासित होना चाहिये। आशा है स्वयंसेवकों
के नेता महात्मा गांधीकी इस यात्रासे सबक
सीखकर हर जगह और हर हालतमें शांति-
पूर्ण प्रदर्शनका वातावरण तैयार करेंगे।

पाकिस्तान—

हिन्दू राज और मुस्लिम राजके रूपमें
भारतका भविष्य देखनेवाले अदूरदर्शी राज-
नीतिज्ञोंकी दृष्टि इस बीसवीं सदीके वैज्ञा-
निक युगमें भी पांचसौ वर्ष पूर्व मध्य युगकी
ओर है। वे अपने आगे पीछे अगल बगल
और सामने नहीं देखते। वर्तमान और
भविष्यको नहीं देखते। अतीत, जो कालके
घोर अन्धकारपूर्ण गर्तमें दबा पड़ा है उसे
निकालनेका प्रयत्न कर रहे हैं। पाकिस्तान
की मुस्लिम लीगकी मांग ऐसा ही कुप्रयत्न
है। आज दुनियांके सब राष्ट्र परस्पर सह-
योग और एकताकी भावनाको बढ़ानेमें लगे
हैं। ऐसी स्थितिमें मुस्लिम लीग अनैक्य
और जातीय विद्वेषके आधारपर राजनी-
तिक अधिकार प्राप्त करनेको कमर कस्ता
हो रही है। पंडित जवाहरलाल नेहरूने
पिछले सप्ताह लाहौरमें एक प्रेस कानफरेंसके
सिलसिलेमें ठीक ही कहा था कि "मुस्लिम
लीगका रास्ता अनैक्यका और मध्य-
युग कालीन है।" मध्ययुग-कालीनसे
पंडितजीका क्या मतलब है, यह पूछने
पर उन्होंने कहा कि "मध्य युग कालीन
दृष्टिसे मेरा मतलब यह है कि वे (मि०
जिन्ना) एक धार्मिक पार्टीको राजनीतिक
पार्टीके रूपमें चलाते हैं। मुस्लिम लीग एक
धार्मिक पार्टी है जिसकी सदस्यता एक गरोह
तक सीमित है। दूसरे उसके सदस्य नहीं हो
सकते।" पंडितजीने पाकिस्तानके विरोधमें
चार बातें कहीं। आपने कहा कि "हिन्दु-
स्तानके विभाजनसे पिछलगुआ राज्योंकी
सृष्टि होगी, जिनको अपने अस्तित्वके लिये
पड़ोसी बड़े राज्यकी कृपाका मुखापेक्षी होना
पड़ेगा। मैं हिन्दुस्तानमें दूसरा ईराक या
ईरान नहीं बनाना चाहता जिसे चुटकी बजाते
कोई बड़ी ताकत रौंद डाले। दूसरी बात
यह है कि पाकिस्तानसे साम्प्रदायिक
समस्या घटनेके बजाय बढ़ेगी। तीसरे, पाकि-
स्तानके रूपमें मुस्लिम लीग पंजाब और
बंगालको हिन्दू और मुस्लिम राज्योंमें
विभक्त करना चाहती है। दोनों प्रान्त एक
सांस्कृतिक इकाइयां हैं। स्वयं मुसलमान
अपने प्रान्तोंको इस तरह अंग भंग होते
देखना पसन्द करेंगे, मुझे सन्देह है। चौथी
बात यह है कि पाकिस्तान स्वयं मुसलमानों
के अपने हितोंका घातक है। वैसे जिन
अंचलोंमें मुसलमान अत्यधिक संख्यामें
रहते हैं, यदि वे हिन्दुस्तानसे अलग हो जाने
पर ही तुल जायंगे तो यह होकर ही रहेगा,
कोई शक्ति उनको रोक नहीं सकती।"

सैन फ्रांसिस्कोपर—

शिमलामें कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी
बैठकमें उपस्थित राष्ट्रीय समस्याके साथ-
साथ अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिपर भी विचार
हुआ। सैन फ्रांसिस्को सम्मेलनमें मित्रराष्ट्रों
द्वारा प्रस्तुत शांति घोषणापर वर्किङ्ग कमेटी
ने एक प्रस्ताव भी पास किया है। प्रस्तावमें
इस बातपर खेद प्रकट किया गया है कि
घोषणा-पत्रमें छोटे राष्ट्रोंकी स्थितिको
नगण्य और प्रभावहीन कर दिया गया है।
बड़े-बड़े राष्ट्र और शक्तियोंको इतना प्रभाव-
शाली बना दिया गया है कि वे कानूनकी
पहुंचके बाहर हो गये हैं। कमेटीकी रायमें
यह स्थिति अत्यन्त खेदजनक है। बली महा-
बली बन गया है, दुर्बल अतिदुर्बल। औप-
निवेशिक, मातहत और आदेश प्राप्त शास-
नान्तर्गत देशोंकी स्थितिमें कोई विशेष
महत्वपूर्ण परिवर्तन होगा, इसकी सम्भावना
कम है। इन देशोंकी स्वतन्त्रताके अधिकार
को स्पष्ट और पूर्णरूपसे स्वीकार किया
जाना चाहिये था। इन सब त्रुटियोंपर
प्रकाश डालते हुए शान्ति और सुरक्षा रखने
के लिये और समानाधिकार एवं राष्ट्रोंके
स्वभाग्य निर्णयके अधिकारके आधारपर
राष्ट्रोंके बीचमें मैत्रीभाव स्थापित करनेके
लिये एक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनके निर्माणकी
चेष्टाका कमेटीने स्वागत किया है। उसके
इस कार्यको अच्छा बताते हुए कमेटीने उसका
इस बातकी तरफ ध्यान आकृष्ट किया है कि
किसी भी विश्व-संगठनकी सफलताके लिये
आवश्यक है कि वह वर्तमानकी वास्तविक-
ताओंका सामना करे। सैनफ्रांसिस्कोमें
उपस्थित नामधारी भारतीय प्रतिनिधियोंके
सम्बन्धमें कमेटीका मत है कि अन्तर्राष्ट्रीय
सम्मेलनमें इस तरहका प्रतिनिधित्व भारत-
का अपमान और विदेशी राष्ट्रोंको भ्रान्त
करनेकी चेष्टा है।

मैथिलीशरण—

हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि
हमारे राष्ट्रकवि श्रद्धेय मैथिलीशरण गुप्तका
साठवां जन्मदिवस हीरक जयन्ती महोत्सवके
रूपमें मनानेका निश्चय बनारसके साहि-
त्यिकोंने किया है। हिन्दी साहित्य, समाज
और राष्ट्रको गुप्तजीसे जो अमूल्य और श्रेष्ठ
दान मिला है उसपर संसारका आज कोई
भी समुन्नत राष्ट्र, समाज और साहित्य गर्व
और गौरव कर सकता है। इस तरहकी
साहित्यिक महाविभूति, कर्मयोगी और
महात्माकी समुचित सम्वर्धना करना राष्ट्र
का पुण्य कर्तव्य है। यह महोत्सव आगामी
११ अगस्तको (उनके जन्म दिवस पर)
काशीमें मनाया जायगा। श्री सम्पूर्णानन्द-
जीके सभापतित्वमें काशीके साहित्यिकोंने
राष्ट्रकविके स्वस्त्ययन-अभिनन्दन, कविता
पाठ, संगीत, व्याख्यान, वनभोजन आदि
सुन्दर और आकर्षक कार्यक्रमके साथ
मैथिलीशरण हीरक जयन्ती महोत्सव मनाने
का स्तुत्य निश्चय किया है। इस अवसरकी
स्मृतिको स्थायित्व प्रदान करनेके लिये राष्ट्र
कविको एक थैली भेंट करनेका भी निश्चय
किया गया है। हम काशीके साहित्यिकों-
को उनके इस सत्प्रयासके लिये बधाई देते हैं
और देशके साहित्यिकों तथा धनीमानी
व्यक्तियोंसे आशा करते हैं कि वे इस महो-
त्सवको सफल बनानेमें मुक्त हृदयसे अपना
सहयोग प्रदान करेंगे। बाबू सम्पूर्णानन्दजी
राय कृष्णदास जैसे उपयोग कार्यकर्ताओंके
तत्वावधानमें हीरक जयन्ती 'महोत्सव राष्ट्र-
कविकी मर्यादा, प्रतिष्ठा और सम्मानके
अनुरूप ही होगा, हमें इसमें जरा भी सन्देह
नहीं है।

चुकिंगके प्रेमी

———*::*———

लेखक—श्री कुंजविहारी अवस्थी

यद्यपि हिन्दुस्तानके युद्धक्षेत्र बननेका अवसर नहीं आया, युद्धकी विभीषिकाओं और विध्वंसलीलाका चित्र भारतीयोंने अपनी आंखोंसे नहीं देखा फिर भी युद्धने मानव-जीवन कितना कठिन बना दिया है; शान्ति और सुखके साथ निश्चिन्ततापूर्वक पारिवारिक जीवन व्यतीत करना कितना कठिन और कष्टसाध्य हो गया है यह बात भारतीय अपने अनुभवसे ही भली प्रकार समझ सकते हैं। प्रस्तुत लेखमें चीनकी वर्तमान राजधानी चुंगकिंगके आजके जीवनका दिलचस्प चित्र आंका गया है। स्वतन्त्रता प्रेमी चीनी युवक युवतियां इस कठिन कालमें भी किस तरह हंसते हंसते सुन्दर भविष्यकी आशामें झेलते चले जा रहे हैं, पाठकोंको उसकी एक सुन्दर झांकी इस लेख द्वारा प्राप्त होगी। —स० वि०

चुंकिंगमें एक कहावत प्रचलित है, जिसका मतलब है, कि वहां बीबीकी अपेक्षा काम मिलना सरल है। और यदि बीबी भी किसी प्रकार आसानीसे मिल जाये, तो रहनेके लिये मकान मिलना कठिन है।

चीनकी वर्तमान युद्धकालीन राजधानी में, उपयुक्त कहावतसे प्रकट होता है, कि बीबी और मकान प्राप्त करनेकी समस्या कितनी जटिल हो गयी है। वहांके युवक-युवतियां परस्पर मिलते हैं, प्रेम सम्भाषण करते हैं, हृदय मिल जानेपर एक दूसरेके प्रेमसूत्रमें आबद्ध हो जाना चाहते हैं, किन्तु विवाहित जीवन व्यतीत करनेके लिये रहने का स्थान न मिलनेसे तड़पकर रह जाते हैं। राजधानीकी आबादी असाधारण रूपसे बढ़ गयी है। होटल, किरायेके मकान सभी भरे हुए हैं। कोशिश करनेपर भी कहीं जगह खाली नहीं मिलती। प्रेमी-प्रेमिकाएं उपयुक्त स्थानके अभावमें हंसी खुशीके दो क्षण व्यतीत करनेके लिये तरसकर रह जाते हैं। सार्वजनिक स्थानोंमें मिलना न मिलना बराबर है। पेट्रोलपर नियन्त्रण होनेसे मोटर-टैक्सियोंका भी प्रायः अभाव है। उन्हें भी किरायेपर लेकर प्रेमी-प्रेमिकाऐं एक साथ हवाखोरीके लिये कहीं नहीं जा सकते। सिनेमा घरोंमें भी दर्शकोंकी बेतहाशा भीड़ रहती है। शाम हुई, कि कारखानेके मजदूर, फौजी कर्मचारी और सिनेमाप्रिय साधारण जनता वहां इकट्ठी हो गयी। प्रेमी हृदय एकांतमें वहां भी मनोरंजन करनेसे वंचित रह जाते हैं। चुंकिंगके दो छोटे हरे-भरे पार्कोंमें ही अवकाशका समय व्यतीत करने का सोचा जाय, तो वहां भी फेरीवाले दूकानदारोंकी भीड़ भाड़के मारे मुसीबत है। पत्थरकी बेंचोंपर बैठनेका जी नहीं चाहता और जाड़ेके दिनोंमें तो वे बर्फसे भी अधिक ठण्डी हो जाती हैं। प्रेमी-प्रेमिकाओंके मनोविनोदके लिये इतनी बड़ी राजधानीमें हरेक जगह असुविधाएं हैं। एकांतवास कहीं ढूंढे नहीं मिलता। सिवाय इसके, कि पार्ककी उन्हीं ठण्डी और सख्त बेंचोंपर वे कभी कभी घण्टों गुजार देते हैं। पार्ककी भड़भड़से जब जी ऊब जाता है, तो ये प्रेमी हृदय चुंकिंगकी प्रसिद्ध विक्ट्री रोड पर ठण्डी सांसें लेते हुए टहलते नज़र आते हैं अथवा दूकानोंपर सौदा खरीदनेके बहाने खड़े हो जाते हैं।

चायके लिये किसी रेस्टुरेंटमें शरण लेना भी सरल नहीं। दो प्याले चायके लिये इस महंगाईमें औसत हैसियतके प्रेमीको अपने आधे दिनकी तनख्वाह खर्च कर देनी पड़ती है। लेकिन चुंकिंगकी अधिकांश समझदार प्रेमिकायें अपने भावी पति के नफा नुकसानका विचार करके उनकी जेबोंपर इस बेरहमीके साथ छुरी चलवाना पसन्द नहीं करतीं।

चुङ्किङ्गमें आबादीके लिहाजसे मकानों की इतनी कमी है, कि अधिकांश लोगोंको एक ही कमरेमें गुजर करनी पड़ती है। भीड़-भाड़ और विशाल परिवारके बीच जगहकी तङ्गीके कारण प्रेमी प्रेमिकाओंको एकान्तमें मिलना असम्भव हो जाता है। आबादीमें स्त्रियोंकी अपेक्षा पुरुषोंकी संख्या दुगनी है और उनमेंसे अधिकांश अविवाहित हैं। लेकिन इन दिक्कतोंके बावजूद भी पिछले ७ वर्षोंमें वहां अनेक विवाह हुए हैं और वहांके दैनिक पत्रोंमें विवाह सम्बन्धी विज्ञापनोंकी प्रायः भरमार रहती है। "राष्ट्रीय सङ्कटके दिनोंमें अत्यन्त सादगीके साथ वैवाहिक क्रियायें सम्पन्न हुई।" इन शब्दोंके साथ वहांके लोग सार्वजनिक रूपसे अपने विवाहकी घोषणा करते हैं।

युद्धके पूर्व चीनी युवक-युवतियोंका विवाह उनके अभिभावकोंकी इच्छानुसार होता था और वे ही इस प्रकारके सम्बन्ध निश्चित करते थे। अब भी वहांकी कुछ मातायें अपनी लड़कियोंका विवाह प्राचीन प्रथाके अनुसार करती हैं। किन्तु जो लड़कियां अब पढ़ लिख कर शिक्षित हो गयी हैं और नवीन प्रथाका अनुकरण करने लगी हैं वे अपनी पसन्दके अनुसार स्वयं वर ढूंढ़ लेती हैं। अधिकतर देखा गया है, कि एक ही दफ्तरमें काम करनेवाले युवक युवतियां प्रेमसूत्रमें आबद्ध हो जाती हैं। इसका कारण यह है, कि उन्हें एक दूसरेके सम्पर्कमें रहने तथा मनोभावों एवं रुचिको समझनेका काफी मौका मिलता है और इससे उनमें घनिष्टता भी शीघ्रतासे हो जाती है। चीनी युवकोंको भी अपनी जीवन-सङ्गिनी ढूंढ़ने और पसन्द करनेकी पूरी स्वतन्त्रता है। युद्धका वहांके पारिवारिक सङ्गठनपर गहरा प्रभाव पड़ा है। प्रत्येक व्यक्ति अपने वैवाहिक मामलेमें पूर्ण स्वतन्त्र है। परिवारकी उसे फिक्र नहीं।

(शेष १७ वें पृष्ठपर)

— रूस किस ओर ? —

———*:o:*———

(लेखक—श्री सत्यकाम)

इस युद्धने रूसको राजनीतिक, सामाजिक और सामरिक सभी दृष्टियोंसे आजके संसारमें एक प्रभावशाली नेताके स्थानपर बैठा दिया है। उसकी गतिविधि संसारकी चालको बदल देती है। यही कारण है कि आज समीक्षक और विचारक अपने अपने दृष्टिकोणसे रूस, उसकी विचारधारा और उसके नेतृत्वको देखने और समझनेका प्रयत्न कर रहे हैं। यह लेख भी ऐसा ही एक प्रयत्न है। —स० वि०

साम्यवादी रूसकी नीति प्रारम्भसे ही रहस्यमय रही है। उसके परीक्षणको सफल होता देख साम्राज्यवादी दुनिया कांप उठी है। इसीलिये ब्रिटेन और फासिस्ट लोग भी प्रारम्भसे ही उसका विरोध करते रहे, परन्तु इसपर भी आश्चर्य यह कि एक बार रूस फासिस्ट जर्मनीके साथ मिला और अब ब्रिटेनके साथ! स्वभावतः जिज्ञासा होती है कि ऐसा क्यों? और इसीको देखकर प्रायः जनसमुदाय आगामी युद्धके विषयमें सशङ्क हो उठता है।

हमें पहले रूसके प्रमुख स्वार्थोंको देखना होगा, उसके बाद ही हम वर्तमान स्थिति पर विचार करेंगे।

रूसके स्वार्थ

इस युद्धके प्रारम्भ होनेसे पहले तक रूसकी नीति अपने ही प्रदेशपर सन्तुष्ट रहने की थी। उसने कभी भी साम्राज्य-प्रसारके लिये उग्रता नहीं दिखायी। अतएव यूरोपकी 'शक्ति संतुलन नीति' में प्रायः उसकी उपेक्षा की जाती रही, परन्तु इस युद्धमें उतरनेपर अपनी हैसियतके अनुसार रूसने दांव करने प्रारम्भ किये।

१—पोलैण्डका जो आधा भाग जर्मनी के साथ बंटवारेमें उसे मिला था, रूसकी उसपर बहुत पहलेसे नजर थी। इस प्रान्तमें प्रायः रूसी लोगोंकी आबादी अधिक है। खनिज और उपजकी दृष्टिसे यह प्रांत महत्वपूर्ण है। यह प्रदेश लगभग कर्जन लाइनके साथ-साथ ही है और नयी पोलिश सरकारसे उसे यह प्रदेश समझौतेमें मिल गया है।

२—इससे ऊपर लेटेविया, लिथुआनिया और एस्टोनिया ये तीन प्रजातन्त्र हैं। ये राष्ट्र बहुत ही छोटे-छोटे हैं और इनमें रूसी आबादी भी पर्याप्त है। इनको हस्तगत करनेका मुख्य उद्देश्य साम्राज्य-लिप्सा नहीं अपितु बाल्टिकका खुला तट प्राप्त करना है, क्योंकि यहीं रूसको थोड़ा सामुद्रीय तट मिल सकता है। अतएव सोवियट संघमें शामिल हो जानेपर भी रूसने इनकी अन्दरूनी राजनीतिमें दखल नहीं दिया।

३—इनसे भी ऊपर फिनलैंण्डका वह प्रदेश तथा वे द्वीप आते हैं जिनके कारण सन् '४० में रूसने फिनलैण्डपर आक्रमण किया था। इनका केवल सामरिक दृष्टिसे महत्व है; और इनके मिल जानेपर बाल्टिक सागरसे होनेवाले आक्रमणोंके निरोधके अतिरिक्त इस सागरपर एकाधिपत्य होनेकी वजहसे उसका व्यापार भी खूब चमक उठेगा। इन प्रदेशोंके बदले उसने फिनलैण्ड को जमीन देना स्वीकार किया है।

४—पोलैण्डसे नीचे बाल्कन राष्ट्र प्रायः सभी राष्ट्र खनिजकी दृष्टिसे उपयोगी हैं। इनमें रूमानियाका 'बेसारबिया और बुकोविना' प्रान्त तथा बल्गेरिया के तटीय बन्दरगाहोंपर रूसकी दृष्टि है। बेसरबिया आदिको वह रूसी-बहुल होनेके कारण चाहता है तथा इन बन्दरगाहों को काला सागरका अधिकसे अधिक उपयोग तथा उसपर एकाधिपत्य स्थापित करनेके लिये चाहता है। बेसरबिया और बुकोविनाका प्रान्त इसे प्राप्त है।

५—मध्यपूर्वमें ईरान और ईराकके तैल क्षेत्र प्रसिद्ध हैं। 'काकेशस' के तैल क्षेत्रके साथ उपयुक्त तैल-क्षेत्र प्राप्त हो जानेसे रूस के पास बहुत अधिक तेल भण्डार हो जायेगा।

६—पूर्वमें—रूसके ऐसे प्रमुख स्वार्थ नहीं है कि उनके लिये वह लड़ाई मोल ले। वह मंगोलियामें जापानका प्रवेश नहीं चाहता, और जापान भी अनाक्रमण संधि तथा अपनी निस्सहायावस्थाको देखते हुए कभी भी उधर बढ़नेका प्रयास नहीं करेगा। दूसरा स्वार्थ उसका चीनमें है। वह कम्यूनिस्ट चीन तथा प्रजातन्त्र चीनमें समझौता इसलिये चाहता है कि चीनमें उसको अधिक से अधिक बाजार तथा संरक्षण प्राप्त हो सके। चीनमें उसकी कोई प्रादेशिक [illegible] नहीं है। रूसके लिये सौभाग्यका विषय है कि चीनके नव-प्रधान-सचिव डा० टी० वी० सूङ्ग मास्कोमें इस समस्याका कोई हल निकालनेके लिये गये हैं।

७—टुर्देदानियाल और बासफोरस की खाड़ियां भी रूसकी निगाहमें हैं। इनका झगड़ा बहुत पुराना है। रूसपर जब जर्मनी ने आक्रमण किया था उस समय प्रकट था कि उनके झगड़े और शङ्काका मूल ये दो प्रदेश थे। बाल्कन-प्रदेशके मामलेमें समझौता हो सकता था, पर टर्कीकी [illegible] तथा रक्षाके एकमात्र केन्द्र इन दो स्थानोंको देकर न तो जर्मनी अपना रोब ही [illegible] चाहता था और न अपने सिरपर कोई [illegible] आफत मोल ही लेना चाहता था। [illegible] हाथसे निकलते ही ब्रिटेन उधरसे आक्रमण कर सकता था। जर्मनीको प्रारम्भमें ही [illegible] दो मोर्चेपर लड़ना पड़ता।

आज उसने फिर यह प्रश्न उठाया [illegible] संसारकी वह सबसे बड़ी शक्ति है; ब्रिटेन [illegible] अमेरिका उसके विरुद्ध नहीं आ सकते [illegible] इस अवस्थामें टर्की निस्सहाय छूट जाता [illegible]

(शेष १८ वें पृष्ठपर)

एक मनोवैज्ञानिक विश्लेपण—

बालकके पालनके लिये मानसिक शुद्धिकी आवश्यकता

———*:)(:*———

लेखक—प्रो० लालजीराम शुक्ल

...की सेवा मनुष्यके जीवनको पवित्र ...है। काम, क्रोध और लोभ इन सभी ...ियोंका इससे शोध होता है। गृहस्थ ...यदि कोई लाभ है तो बालकोंकी ...है। चाहे अपने बालक हों या दूसरोंके ...सेवा करना महापुण्य है। इसलिये ...व्यक्तिको सन्तान नहीं होती, उसे यह ...सेवाका सौभाग्य नहीं होता। हम ...दृष्टान्त चाहते हैं कि जिस व्यक्ति- ...बालकोंके प्रति स्वाभाविक प्रेम नहीं ...उसे प्रकृति सन्तान देती ही नहीं। ...प्रेमका विनाशक है। अतएव जिस ...के मनमें लोभकी मात्रा अत्यधिक ...उसके सन्तान नहीं होती। काम और ...सन्तानके शरीर और मनके गठनपर ...प्रभाव अवश्य डालते हैं, पर जितना ...लोभका होता है उतना इन दूसरे ...विकारोंका नहीं होता। काम और ...स्थायी मनोविकार नहीं हैं। वे एक ...आते हैं और दूसरे क्षणमें चले जाते ...हैं। ये मनोभाव जब आते हैं पहचान ...जाते हैं। जब कोई व्यक्ति काम अथवा ...वशमें होकर अनुचित काम कर ...तो पीछे पछतावा है। वह उन ...विकारोंसे मुक्त होनेकी चेष्टा करता ...लोभ न तो पहचाना ही जाता है और ...से मुक्त होनेकी मनुष्य चेष्टा करता है। ...और क्रोध मनुष्यके बड़प्पनके कारण ...हैं, पर लोभसे धन संग्रह होता है ...से मनुष्य आजकलकी दुनियामें ...को प्राप्त कर लेता है।

...लोभ, ईर्ष्या, द्वेष आदि मनो- ...के उत्पादक हैं। लोभी मनुष्य बड़ा ...होता है। जहां लोभ होता है वहां ...की स्थिति सम्भव नहीं। प्रेमका ...ही सन्तानके जीवनका प्राण है। ...लोभी और कृपण मनुष्यके घर संतान ...होना अथवा जीना असम्भव हो ...देखा गया है कि अपने आप ...होकर बड़े बने लोगोंको या तो ...होती नहीं और यदि सन्तान होती ...वह मर जाती है। यह भी देखा ...कि जब धनी अथवा कृपण मनुष्य ...अपना मोह छोड़ देता है और ...उदारतापूर्वक दूसरोंकी सेवामें ...लगता है, तो सन्तान जीवित ...है। कितने ही सन्तानहीन ...प्रकार सन्तान प्राप्त कर लेते हैं। ...अनुभवमें देखा है कि एक गृहस्थके ...सन्तान नहीं थी। पति पत्नीकी अव- ...वर्षके लगभग हो चुकी थी। ...गरीब बालकको जो स्कूलमें ...अपने घरमें रख लिया। वे उसे ...रखते थे। दो सालके पश्चात वह ...घरसे दूसरी जगह चला गया, ...प्रेम उस बालकसे न छूटा। वे ...समयपर बुलाते ही रहते थे। कुछ ...उनको भी सन्तान होने लगी ...समय उन्हें पांच सन्तानें हैं।

...ध्यानमें रखना आवश्यक है ...तो यह मानसिक शुद्धि नहीं ...दूसरे लोगोंके बालकको घरमें ...की सेवासे होती है। दत्तक पुत्र सेवा भावसे नहीं रखा जाता, अपना नाम रखनेके लिये रखा जाता है। अपने मरनेके बाद धनकी रक्षा कौन करेगा, इस बुद्धिसे दत्तक पुत्र रखा जाता है। यहां पुत्रका पालन धनकी रक्षाके लिये और नाम रखनेके लिये किया जाता है। अतएव दत्तक पुत्रसे मनुष्य के लोभमें कमी नहीं होती। बहुतसे दत्तक पुत्र व्यभिचारी, क्रूरकर्मी और रोगी होते हैं इसका कारण उनके दत्तक माता-पिताका मानसिक वातावरण है।

कितने ही कंजूस लोगोंको अपनी संतान तो होती नहीं। यदि वे दूसरोंकी संतान अपने घरमें रख लें तो वह भी मर जाती है। अभी मेरे एक मित्रने अपने ऊपर बीती कथा सुनायी। उसका बड़ा लड़का हालहीमें मर गया। उन्होंने इस लड़केको अपने भाईके पास रख दिया था। मेरे मित्र गरीब हैं। उनको चार सन्तानें हैं। उनके भाई लखपति हैं पर सन्तान एक भी नहीं है। वे अपनी कमाईसे ही लखपति हुए हैं। वे दिनभर काम करते हैं तथा रोजगारमें बड़े चतुर हैं। मेरे मित्रने दूसरे लोगोंकी कहा-सुनीसे अपने बड़े लड़केको बड़े भाईके पास रख दिया। एक सालके भीतर ही वह लड़का मर गया। इस लड़केकी मृत्युका कोई मानसिक कारण हो सकता है—इस बातकी सम्भावना मेरे मित्रको न थी। उन्होंने अपना दूसरा लड़का उसके पास रख दिया। पर थोड़े ही दिन रहनेके पश्चात देखा गया कि इस बालकके चरित्रमें बहुत-सी बुराइयां पैदा हो गयीं, जो पहले उसमें न थीं। मैंने अपने मित्रको शीघ्र-से शीघ्र दूसरे लड़केको वापस लानेके लिये कहा। इस मित्रके द्वारा यह भी पता चला कि उनके भाईने अपने एक दूसरे सम्बन्धीकी एक लड़की भी रखी थी। वह लड़की भी साल भरके भीतर ही मर गयी।

पाठक एक मनोवैज्ञानिककी लेखनीसे इस प्रकारकी घटनाओंका वैज्ञानिक कारण प्रदर्शित होते देखकर आश्चर्य करेंगे। साधारण वैज्ञानिक ऊपर कहे गये विचारोंको प्रायः अन्ध विश्वासमात्र मानेंगे जनसाधारण में यह किंवदन्ती प्रचलित ही है कि बांझ व्यक्तिके पास अपनी सन्तान नहीं रखनी चाहिये। इस किंवदन्तीका आधार समाजके अनेक लोगोंका अनुभव है। इसकी सत्यता आज हम मनोवैज्ञानिक अनुसन्धानोंके द्वारा सिद्ध होते हुए पाते हैं। यहां एक दो उदाहरण देना उक्त सिद्धान्तकी पुष्टिके लिये आवश्यक होगा।

लेखक एक ऐसे बड़े धनी सेठको जानता है जिसके दो भाई और हैं। इस सेठके बड़े भाईने छोटे भाईके यहां नौकरी कर ली। सेठके मैनेजरका मासिक वेतन एक हजार रुपया था और बड़े भाईका वेतन डेढ़ सौ रुपया मासिक था। सेठने अपने छोटे भाईको भी अपने यहां नौकर रखना चाहा। यह छोटा भाई अपने सिरपर घीका पीपा रख कर गांव-गांव बेचता और इससे अपनी रोजी चलाता था। सेठके बारह सन्तानें हुईं, परन्तु दो वर्षसे अधिक कोई जीवित न रही। उनके बड़े भाईको एक भी सन्तान न हुई। छोटे भाईके तीन लड़कियां और दो लड़के हुए और सभी जीवित रहे। सेठने अपने छोटे भाईके छोटे लड़केको गोद ले लिया। बड़ा लड़का स्वस्थ रहा। पर छोटे लड़केको अब अनेक प्रकारकी बीमारी घेरने लगी। इस बालकको मैंने कभी आरोग्य नहीं पाया। सेठने इस बालककी शिक्षाके लिये अनेक प्रकारका प्रयत्न किया परन्तु वह सुशिक्षित न हो सका। सेठ स्वयं बड़े शिक्षा प्रेमी हैं। किन्तु उनके शिक्षा-प्रेमका उलटा ही प्रभाव बालकपर पड़ा। वे बालकको कठोर अनुशासनमें रखते जिससे उसके आचरणमें किसी प्रकारकी भ्रष्टता न आ जाय। उनके कठोर नियन्त्रणसे भ्रष्टता तो नहीं आयी किन्तु बीमारी आ गयी। सम्भव है जब यह बालक बीमारीसे मुक्त हो जाय तो वह आचरण-भ्रष्ट बने। अनुदार चित्त व्यक्तिके दत्तक पुत्रका जीवन प्रायः इसी प्रकारका होता है।

उपर्युक्त दृष्टान्तसे यह स्पष्ट है कि बालकोंके जीवनके लिये और उसके मानसिक विकासके लिये उन्हें पवित्र विचारोंके वातावरणमें रखनेकी आवश्यकता है। तो भी मनुष्यके विचार बड़े अनुदार रहते हैं। वह धनमें बाधा डालनेवाले व्यक्तियोंके प्रति अपने मनमें बहुत ही बुरी भावनाएं लाता है। वह ऊपरसे बड़ा ही सुशील हंसमुख होता है पर भीतरसे बड़ा कठोर-हृदय और क्रूर होता है। उसके मनमें प्रत्येक क्षण दूसरोंके विनाशके भाव उठा करते हैं। ये बुरे भाव उनके मनमें अनजाने ही प्रवेश कर जाते हैं जो व्यक्ति उनके पास रहते हैं। वे उस व्यक्तिके मनमें बड़ा उथल-पुथल मचा देते हैं। यदि किसी व्यक्तिका मन दृढ़ नहीं हुआ तो वे इस व्यक्तिका विनाश ही कर देते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिये कि हमारे प्रत्येक विचार चाहे वे उदार हों अथवा अनुदार अपने आस-पासके लोगोंपर प्रभाव डालते ही हैं। इस संसारकी सबसे मौलिक सेवा संसारके लोगोंके प्रति सद्भावना प्रदर्शित करते हैं। इसी तरह उनकी सबसे भारी क्षति दुर्भावनाओंको अपने मनमें लाकर करते हैं।

बालकका मन बड़ा ही निर्मल होता है। उसके मनमें दृढ़ता नहीं होती। अतएव जब किसी व्यक्तिके प्रबल विचार उसके अचेतन मनमें घुस जाते हैं तो वे उसकी बड़ी क्षति कर डालते हैं। यदि कोई व्यक्ति अपने शत्रुके विनाशके विचार मनमें ला रहा है और इसी बीच उसका बालक उसके समीप आये तो अज्ञात रूपसे उसके वे अभद्र विचार बालकके हृदयमें प्रवेश कर जाते हैं। इस कारण बालकका स्वास्थ्य नष्ट हो जाता है अथवा उसकी मृत्यु ही हो जाती है।

हमारी साधारण धारणा है कि बालक को बिना सिखाये कुछ भी नहीं आता। बालकके जीवनपर उन्हीं बातोंका प्रभाव पड़ता है, जिन्हें हम जानबूझकर उसके मनमें डालते हैं। पर हमारी यह धारणा भ्रमात्मक है। हम बालकके जीवनपर जितना जानबूझकर प्रभाव डालते हैं उससे कहीं अधिक प्रभाव हम उसके जीवनपर अनजाने डालते हैं। हम जो भी विचार मनमें लाते हैं, उनसे बालक प्रभावित होता है। यदि हमारे सब समयके विचार भले हैं, यदि हम सब समय दूसरेके ही कल्याणका चिन्तन करते हैं तो बालकोंका चरित्र स्वतः ही सुन्दर बन जाता है। प्रेम ही सब सद्गुणोंका मूल स्रोत है और घृणा सब दुर्गुणोंका। हमारी विश्व प्रेमकी भावनाएं बालकोंके हृदयमें स्थान कर लेती हैं और वे उसे अपने आप सदाचारी बना देती हैं।

जो व्यक्ति अपनी सन्तानको सुयोग्य बनाना चाहता है, उसे यह आवश्यक है कि वह कठोर परिश्रमसे पैसा कमाकर उनका लालन-पालन करे। दूसरेके धनकी आशा न करे। अपने बालकोंको दूसरोंके सहारे कभी न छोड़े। यदि कोई गरीब व्यक्ति अपने बालकको प्रेमके साथ पालता है और यदि ऐसे बालकको वह किसी कारणवश धनीसे धनीके घर थोड़े दिनके लिये रख दे जहां बालकको सब प्रकारके सुखकी सामग्री मिलती है तो भी वह बालक वहां रहना पसन्द न करेगा। बालक प्रेमका भूखा होता है। प्रेमकी भूख भोजनकी भूखसे भी प्रबल होती है। धनी घरमें बालककी केवल भौतिक भूख तृप्त हो सकती है। यही कारण है कि वह ऐसे घरको जेलखानेके समान मानता है। ऐसे घरमें रहनेपर पहले तो वह वहांसे भागनेकी चेष्टा करता है और जब वह इसमें समर्थ नहीं होता तो रोगका आश्रय लेता है। जो बालक इस प्रकारके वातावरणमें रहकर भी जी जाते हैं वह किसी न किसी प्रकारके बड़े चरित्र-दोषको पकड़ लेते हैं। देखा गया है कि दत्तक पुत्र यदि रोगी, क्रूरकर्मी, व्यभिचारी न हुआ तो वह निस्सन्तान अवश्य होता है। इस प्रकार की घटनाका प्रधान कारण बालकका दूषित मानसिक वातावरणमें पाला जाना है। किसी भी दीन व्यक्तिको अपनी सन्तानको, यदि प्यार करता है, अपने धनी सम्बन्धीके घर न रखना चाहिये। यदि यह सम्बन्धी निस्सन्तान है तो उसे और भी अधिक सावधान रहना चाहिये। इससे बालकके मर जानेका भय है। प्रत्येक व्यक्तिको अपने-आप ही बड़ी लगनके साथ अपने बालकोंका लालन-पालन करना चाहिये। इससे बालकोंका कल्याण होता है और अपना भी आत्मोद्धार होता है।

———

शिमला सम्मेलनपर विचार

(लेखक—सम्पादकाचार्य पं० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी)

शिमला सम्मेलनकी विफलतासे उन्हें तो कोई आश्चर्य न होना चाहिये जो भारतीय राजनीतिके घात-प्रतिघातसे अवगत हैं। परन्तु जो विचारे गरीब आदमी उसकी सफलताको अपने दुखदरिद्रके नाशका कारण समझ रहे थे, उन्हें आश्चर्य और नैराश्य होना स्वाभाविक है। भारतमें ब्रिटिश नीति का आधार ही भेद नीति divide and rule है। ४० वर्ष पहले इसका कार्यान्वित करना व्यक्तियोंके हाथमें था। इसलिये जब जैसा आदमी आता था, तब उसमें अन्तर प्रत्यन्तर पड़ जाते थे। परन्तु १९०६ से ब्रिटिश सरकारने स्वयं इसके सूत्र अपने हाथमें ले लिये हैं और तबसे हमारे देशमें साम्प्रदायिक मनोमालिन्य उग्रसे उग्रतर रूप धारण कर रहा है। इसीको ध्यानमें रखकर हमें शिमला सम्मेलनपर विचार करना चाहिये।

लार्ड कर्जन बड़ा दूरदर्शी शासक था। उसने यहांके बढ़ते हुए राजनीतिक आन्दोलनपर विचार किया तो उसे इसके लिये एक जहरमोहरेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। उसने देखा कि यह जहरमोहरा साम्प्रदायिकताके रूपमें ही मिल सकता है। बङ्गाल राजनीतिक आन्दोलनमें अग्रगण्य था और यहां पहले पहल समाचारपत्रोंका जन्म हुआ था और आन्दोलनके नेता तथा समाचारपत्रोंके सम्पादक हिन्दू ही थे, क्योंकि इन्होंने सबसे पहले पाश्चात्य शिक्षासे लाभ उठाया था। लार्डकर्जनने इनकाबल नष्टकरने को बङ्गालके दो टुकड़ेकरना विचारा, क्योंकि उसके मतसे कलकत्तेमें कुछ लोग जो निश्चय करते हैं, उसीका प्रचार मुफस्सिलमें करके उसे लोकमत प्रसिद्ध करते हैं। औरोंको मत प्रकट करने वा स्वतन्त्र मत स्थापन करनेका अवसर नहीं मिलता। इसलिये कलकत्ता जैसे हिन्दू मतका केन्द्र है, वैसे ही ढाका मुस्लिम मतका केन्द्र होगा यह सोच उसने आसामके साथ पूर्व बङ्गालको मिलाकर दूसरा प्रदेश बना दिया।

देशमें जागरण हो चला था, क्योंकि यह युग धर्म ही था। इस बङ्ग-भङ्गका विरोध बङ्गालने ही नहीं, सारे भारतने किया। पर मनस्वी लार्ड कर्जनपर इसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा और १६ अक्तूबर १९०५ को पूर्व बङ्गाल और आसामका नया प्रदेश बना दिया गया। बङ्गालने इसपर जो आन्दोलन किया, उससे शासकोंके दिल दहल गये। लार्ड कर्जनका लार्ड किचनरसे झगड़ा हो जानेके कारण लार्ड मिंटोको वायसरायका पद मिला। लार्ड मिंटोने देशके सभी राजा महाराजोंको लिखा कि हिन्दू मुसलमानोंके साथ आपकी नीति कैसी होती है। वर्तमान निजामके पूर्व निजाम साहबने लिखा कि मेरे यहां हिन्दू मुस्लिम सवाल नहीं है, मैं काबिलियत देखकर बड़े-से-बड़ा ओहदा लोगोंको देता हूं। उन दिनों महाराज कृष्णप्रसाद निजामके वजीरे आजम थे।

निर्वाचनमें कनजर्वेटिवोंको हरा कर लिबरलोंने सर हेनरी कैम्बेल-बैनरमैनकी अध्यक्षतामें अपनी सरकार बनायी थी। हमारे देशके कांग्रेसी नेता मना रहे थे कि भारतसचिवका पद मि० जान मोरले को मिले। वही हुआ मि० मोरले और लार्ड मिंटोने लार्ड कर्जनकी नीतिको अन्त तक पहुंचानेके लिये आगाखांकी अध्यक्षतामें एक मुस्लिम प्रतिनिधि मण्डलसे भेंट की और उसने मुसलमानोंके राजनीतिक महत्व, उनके स्वतन्त्र और विशेष अधिकारोंपर जोर दिया। लार्ड मिंटोका अभिप्राय भी यही था और इस मुस्लिम डेपुटेशनके परिणामस्वरूप मुस्लिम लीगका जन्म हुआ। यही वह जहरमोहरा था जिसकी खोज थी और जो तबसे आज तक बराबर कांग्रेसका जहर उतारनेके काममें आता है। ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने इस बार संयोगपर भरोसा न कर जमीनदारों और व्यापारियोंको भी मुसलमानोंकी तरह स्वतन्त्र मताधिकार देना निश्चय किया। एक कौन्सिल आव नोटेबल्स—जिसे 'केसरी' ने बड़े नालायकोंकी सभा कहा था—बनानेका विचार तो हुआ, पर बीचमें रोक दिया गया और १९०९ के गवर्नमेण्ट आव इण्डिया ऐक्टमें इन नये प्रस्तावोंका समावेश कर दिया गया।

१९१३ तक कांग्रेस इस स्वतन्त्र मताधिकारका विरोध करती रही और इस साल कराचीमें इसका समर्थन होते देख मि० चिन्तामणि आदि कांग्रेससे उठ भी आये थे, यद्यपि समर्थक भी माडरेट ही थे, क्योंकि उन्हींके हाथमें कांग्रेसकी बागडोर थी। १९१४ में बाबू भूपेन्द्रनाथ बसुके सभापतित्वमें मद्रासमें कांग्रेस हुई। उस समय श्री नारायणैयाके लड़के कृष्णमूर्तिके कारण मिसेज ऐनी बीसेंट कुछ अलोकप्रिय हो रही थीं। पर उन्होंने एक दैनिक और एक साप्ताहिक पत्र मद्राससे निकालना और कांग्रेसका समर्थन करना आरम्भ किया और कांग्रेसके आन्दोलनका इतिहास भी प्रकाशित किया। इस प्रकार खोयी हुई लोकप्रियता फिर प्राप्त कर ली।

१९१५ में मिसेज बीसेंटने कांग्रेसमें एक्सट्रीमिस्ट वा नेशनलिस्ट दलको लानेके लिये उसकी नियमावलीमें सुधार कराया और इस प्रकार १९१६ में लखनऊमें आठ साल बाद लोकमान्य तिलक और उनके अनुयायी कांग्रेसमें गये। इस बीचमें मुस्लिम लीगसे भी कुछ बातचीत चली और कांग्रेसके साथ उसका समझौता १९१६ में लखनऊमें हो गया। हिन्दू महासभाकी ओरसे दीवान साहब बी० पी० माधवरावने बा० सुरेन्द्रनाथ बनर्जी आदि कांग्रेस नेताओंसे कहा कि हिन्दू महासभा आपके इस समझौतेको नहीं मानती। पर उसकी गिनती उस समय किसीमें नहीं थी। वह समझौता हो गया और उस समयसे १९१९ की अमृतसर कांग्रेस तक कांग्रेस और मुस्लिम लीग की दांतकाटी रोटी रही।

पर १९२० में महात्मा गांधी कांग्रेसके नेता हुए और इन्होंने खिलाफत आन्दोलन को प्रगति देनेके लिये अपना असहयोग आंदोलन चलाया। अब तो जहां देखिये हिंदू मुसलमानोंमें मेल ही मेल दिखायी देने लगा ब्रिटिश राजनीतिज्ञोंने इसका काट क्या निकाला यह तो नहीं कहा जा सकता, क्योंकि पर्देके भीतर की बात है। पर १९२१ से हिन्दू मुसलमानोंके मतमुटावके लक्षण दिखने लगे। १९२१ में मलबारके मोपलोंने वहांके हिन्दुओंपर अत्याचार किये और १९२२ में पहला हिन्दू मुस्लिम दङ्गा मुलतानमें हुआ। मौलाना आजादकी प्रशंसामें यह कह देना चाहिये कि मुलतानके दंगेके लिये इन्होंने मुसलमानोंकी निन्दा की थी। पर इस समयसे १० साल तक देशमें इतने हिन्दू मुस्लिम दंगे हुए जितने पिछले १०० वर्षोंमें भी नहीं हुए थे, यद्यपि महात्मा गांधीने हिन्दू मुस्लिम ऐक्यपर जितना इन दिनों जोर दिया था, उतना पिछले १०० वर्षोंमें भी नहीं दिया गया था। इसी प्रसङ्गमें एक बात कह देना अनुचित न होगा कि १९२४ में लाहोरमें लाला लाजपतरायके मकानपर एक मीटिंगमें मौ० मुहम्मद अली मरहूमने कहा था कि जबतक मुसलमानोंको उनका प्राप्य न मिल जायगा, तबतक दंगे बन्द न होंगे।

१९१६ में समझौता हुआ था और १९२२ में (मोपलोंके अत्याचारोंको छोड़ देनेपर भी) पहला दङ्गा हुआ। क्या प्राप्य है यह नहीं बताया गया। मुस्तफा कमाल पाशा उर्फ कमाल अतातुर्कने खिलाफतका खात्मा करके खिलाफत आन्दोलनकी जड़ काट दी और इसलिये मि० जिन्नाकी मुस्लिम लीगको, जो अभी तक चुपचाप सो रही थी, बाहर निकल कर अपना अस्तित्व सिद्ध करनेका अवसर मिल गया। अब तो लीग कांग्रेसकी सहयोगिनी नहीं, उसकी सौत बन बैठी। १९२८ में साइमनकमीशन आया और कांग्रेसने उसका विरोध किया। इस विरोधमें अप्रत्यक्ष रूपसे माडरेट भी सम्मिलित थे, क्योंकि कमीशनमें कोई माडरेट भी मेम्बर नहीं रखा गया था। जहां तक आन्दोलन और उत्साह उत्पन्न करनेका प्रश्न था, वहां तक तो कमीशनके बहिष्कारका औचित्य स्वीकार किया जा सकता है। परन्तु राजनीतिज्ञतासे इसका समर्थन नहीं हो सकता। इसके तीन कारण हैं। एक तो यह कि जो ऐक्ट १९२९ या १९३० में बन जाता, वह १९३५ में बना, दूसरा यह कि साइमन कमीशनकी रिपोर्टपर जो ऐक्ट बनता, वह १९३५ के ऐक्टसे अच्छा होता और तीसरा यह कि देशमें जो साम्प्रदायिक कटुता गोलमेज कानफरेन्सों और तू-तू मैं मैंके कारण बढ़ी- वह न बढ़ती।

इतना लम्बा चौड़ा इतिहास सुनानेका प्रयोजन यही है कि जो कुछ हुआ और हो रहा है, वह आकस्मिक घटना नहीं है, टाइम टेबुलके अनुसार ही है। लार्ड वावेल को क्या इसका पता न था कि कांग्रेस और मुस्लिम लीगकी विचारधाराओंमें क्या अन्तर है? यदि था, तो दोनोंमें सामंजस्य स्था[illegible] करनेका निरर्थक प्रयत्न उन्होंने क्यों किया [illegible] क्या यह देखनेके लिये कि मि० जिन्ना [illegible] अपना पाकिस्तानी हठ हिन्दुओंकी [illegible] बरीपर आ जानेपर छोड़ देंगे या नहीं [illegible] यदि हां, तो यह तो एक दो चिट्ठियों [illegible] तारोंसे ही तय हो जाता। इसके लिये [illegible] तीय करदाताकी गाढ़ी कमाईके एक [illegible] रुपये क्यों नष्ट किये गये? अथवा क्या [illegible] मि० चर्चिलका निर्वाचनका हथकण्डा [illegible] (Election Stunt) था, जिसे [illegible] लेबर पार्टी उनकी भारतीय नीतिकी आलो[illegible] चनासे विरत रहे? यदि यह अन्तिम का[illegible] ही रहा हो, तो इसकी सिद्धि हो गयी [illegible] निर्वाचनका समय निकल गया और [illegible] चर्चिलकी भारतीय अवरोध-नीतिकी आलो[illegible] चना करनेका किसीको अवसर [illegible] मिला।

लार्ड वावेलने सम्मेलनकी विफलता[illegible] दोष अपने ऊपर ले लिया है। यदि उन[illegible] व्यक्तिगत दोष न भी हो, तो भी ब्रिटि[illegible] नीतिका दोष तो अवश्य ही है। लार्ड [illegible] हमने स्पष्ट ही अपने उस खरीतेमें [illegible] कैनेडाके शासन सुधारोंके सम्बन्धमें [illegible] लिख दिया था कि ब्रिटिश सरकारने [illegible] निवेशोंके लोगोंमें भेद उत्पन्न करने [illegible] उनमें मेल न होने देनेकी अपनी नीति [illegible] बना ली है। वह नीति भारतके लि[illegible] वह कैसे त्याग दें, जब मि० चर्चिल [illegible] जार्जके प्रधानमन्त्री साम्राज्यका टा[illegible] देनेके लिये नहीं हुए हैं? अवस्था[illegible] ऐसी उत्पन्न कर दी गयी है जिनमें [illegible] लोग अपनेको भारतके राष्ट्रीय पुरुष न [illegible] कर हिन्दू, मुसलमान, अछूत आदि [illegible] जिसमें लोग जनताके सुख-दुःख और [illegible] हितका विचार न करके अपनी [illegible] पार्टियोंके हितों और सिद्धान्तोंपर [illegible] रहें।

अब क्या होना चाहिये? कांग्रेस [illegible] मुस्लिम लीग दोनोंके अपने-अपने [illegible] संक्षेपमें कांग्रेस अपनेको राष्ट्रीय संस्था [illegible] लीग अपनेको प्रतिनिधि मुस्लिम [illegible] कहती है। दोनोंके दावोंपर आपत्ति [illegible] वालोंकी कमी नहीं है। सिद्धान्त[illegible] कांग्रेसका दावा ठीक है, पर वस्तुतः [illegible] बहुत अधिक है और यही बात मु[illegible] लीगके विषयमें भी कही जा सकती है [illegible] दावोंका निर्णायक निर्वाचन ही हो [illegible] है। यद्यपि इसमें झूठफरेब खूब [illegible] तथापि कोई दूसरा उपाय भी तो [illegible] दोनों निर्वाचन चाहते भी हैं और [illegible] नवम्बरतक निर्वाचन हो जानेसे [illegible] मार्ग स्पष्ट हो जायगा। जो मुस[illegible] मुस्लिम लीगका यह दावा कि व[illegible] मानोंकी प्रतिनिधि संस्था है, वहीं [illegible] उन्हें वोटोंसे यह सिद्ध करना चाहि[illegible] जो कांग्रेसको राष्ट्रीय संस्था नहीं [illegible] उन्हें अपने वोटोंका उपयोग अपने [illegible] पुष्टिमें करना चाहिये।

मुस्लिम लीगके पाकिस्तानका [illegible] भी मि० जिन्ना या महात्मा गांधीके [illegible]

(शेष ९ वें पेजके चौथे कालममें)

नया राष्ट्र-संघ

सफलताके कुछ आधार

लेखक—श्री दीनदयालु शास्त्री

सान फ्रांसिस्कोमें बैठक मित्र राष्ट्रों[illegible] जर्मनीके विरुद्ध युद्धमें शामिल होने[illegible] राष्ट्रोंने जो नवीन राष्ट्रसंघ बनानेकी [illegible] तैयार की है उसके अनुसार भविष्य [illegible] युद्धोंसे मुक्ति पा सकेगी, ऐसी [illegible] राय है। पिछले युद्ध [illegible] राष्ट्रपति विलसन द्वारा प्रस्तावित [illegible] से भी यही आशा की गयी थी [illegible] बीस वर्षके अनुभवने बतलाया कि [illegible] राष्ट्रसंघसे शान्ति स्थापनाकी आशा [illegible] व्यर्थ था। आजके बहुतसे राज[illegible] यह समझते हैं कि यदि पहले राष्ट्र[illegible] पास अन्तर्राष्ट्रीय सेना होती तो सम्भव है मंचूरिया, अबीसीनिया, [illegible] व जेकोस्लोवाकिया पर, जापान [illegible] व जर्मनी द्वारा हमला करने या [illegible] करनेकी नौबत ही न आती। यदि [illegible] मौका आ ही जाता तो अन्तर्राष्ट्रीय [illegible] आक्रामक राष्ट्रोंको सबक सिखा [illegible] थी। हम समझते हैं कि यथार्थ [illegible] युद्धोंका यह है कि संसारके कुछ [illegible] अधिक बड़े व शक्तिशाली हैं और बड़े भूमिभागोंके मालिक हैं। इन कुछके [illegible] अधिक राष्ट्र ऐसे हैं जो छोटे व [illegible] हैं। पिछले व वर्तमान राष्ट्रसंघमें [illegible] बड़े व छोटे राष्ट्रोंको समानताका दर्जा [illegible] भेदभाव किया गया है और छोटे [illegible] को बड़े राष्ट्रोंकी कृपा, दया व शक्ति [illegible] छोड़ दिया गया है। ऐसी हालतमें [illegible] राष्ट्रोंका यह समझ लेना कि हम सब [illegible] बहुत कुछ सामने रखता है और [illegible] बड़े राष्ट्रोंमें स्वार्थ भेदके कारण [illegible] मतभेद हो जाये तो संघर्ष अवश्य[illegible] हो जाता है। क्रियाशील संसारमें [illegible] ही युद्धका रूप धारण कर लेता [illegible] से मानव की उत्पत्ति हुई है वह सामूहिक मतभेद या संघर्षको युद्ध [illegible] निपटानेकी कोशिशमें रहा है। आज [illegible] वैज्ञानिक आधारके कारण अधिक [illegible] यानक व विनाशकारी हो रहे हैं। [illegible] दीर्घकालीनताने दयार्द्र मानवहृदयको [illegible] दिया है अतः किसी प्रकारसे युद्ध न [illegible] वह स्वभावतः सोचता है। सामू[illegible] संघर्षको सामूहिक शक्ति ही दबा [illegible] ऐसा तब सहजमें मनुष्य मान लेता [illegible] पिछले राष्ट्रसंघके निर्माणमें मानवकी [illegible] भावना काम कर रही थी और आज [illegible] राष्ट्रसंघकी कल्पनामें भी यही भावना [illegible] है। तो क्या सामूहिक शक्ति या [illegible] राष्ट्र संघकी अन्तर्राष्ट्रीय सेना इन [illegible] समाप्त कर देगी ऐसा हमें मान [illegible] चाहिये? हमारा स्पष्ट उत्तर है--'नहीं'।

राष्ट्रोंकी समानता

[illegible] विचारमें मानव की भांति [illegible] राष्ट्रोंकी समान सत्ता जबतक [illegible] नहीं होती तबतक ये युद्ध जारी [illegible] यह तो ठीक है कि हमारे वर्तमान [illegible] कुछ जातियोंकी संख्या या [illegible] अन्य जातियोंकी संख्या या [illegible] अधिक है अतःवे गणनाकी दृष्टि[illegible] जातियोंसे अधिक महत्वशाली [illegible] राष्ट्रसंघकी स्थापनाके समय प्रत्येक [illegible] संख्याके आधारपर नहीं अपितु इकाईके आधारपर प्रतिनिधित्व प्राप्त होना चाहिये। यदि ब्रिटेन, अमेरिका व रूसके से विशाल साम्राज्य व देश राष्ट्रसंघमें नारवे, साइबेरिया व अलबानिया जैसे दस, बारह व बीस लाख आबादीके देशोंके समान ही प्रतिनिधित्व पायेंगे तो यथार्थमें राष्ट्रोंकी पंचायतमें किसीका बोलबाला न होगा और सब देश परस्पर समभावसे मंत्रणा कर सकेंगे। उस हालतमें संसारके राष्ट्र बिना युद्धकी भावनाके परस्परकल्याण-की योजना बना सकेंगे। आज तो राष्ट्र-संघमें बड़े राष्ट्र अपनी अहमियत चाहते हैं और कार्य समितिमें अपना स्थिर प्रतिनि-धित्व चाहते हैं। उनका यह चाहना छोटे राष्ट्रोंको अखरता भी है किन्तु बेबस वे करही क्या सकते हैं। हां! इस अपमान भावके कारण छोटे बड़े राष्ट्रोंमें राग द्वेष तो पैदा होही जाता है जो यथार्थमें आगे जाकर युद्धका रूप धारण कर लेता है। मानवके स्वभावको देखतेहुएराष्ट्रोंमेंबड़ेछोटे का भाव बना रहना स्वाभाविक है किन्तु आदर्श यह होना चाहिये कि पंचायतमें सम भावना रहे और धन, शक्ति व संख्या-के आधारपर किसीको महत्व प्राप्त न हो। यदि ऐसा हो जाये तो संसारके राष्ट्र सच्ची शान्तिके उपासक बन सकते हैं, अन्यथा नहीं। हजारों नहीं लाखों वर्षोंकी तपस्या व साधनाके बाद मानवने वैयक्तिक समता व स्वतंत्रता प्राप्त की है। आजकी राष्ट्रीयता प्रत्येक मानवको समता व स्वतन्त्रता देना आवश्यक मानती है। जब मानवकी यह समता व स्वतन्त्रता राष्ट्रीयतासे आगे बढ़ कर अन्तर्राष्ट्रीयतामें पहुंचेगी और मानवकी भांति प्रत्येक राष्ट्र अपने वहां हर एक राष्ट्र-के साथ समता व स्वतन्त्रताकी भावना हृदयमें लायेगा तभी अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति स्थापित हो सकेगी यह हमें मानना चाहिये। यह समय कब आयेगा यह अभी कौन कह सकता है किन्तु पिछले व वर्तमान राष्ट्र संघकी कल्पना इसका सबूत है कि संसारका मानव इसे चाहता है और राष्ट्रीयताके नाते इसका परीक्षण भी करने लगा है। जब वह इस परीक्षणमें बनावटको त्यागदेगा, अपनेमें दूसरेमें छोटेमें बड़ेमें समता लायेगा तब हठात् राष्ट्रोंके संघर्ष युद्धका रूप धारण न करेंगे और तभी राष्ट्रसंघ संसारमें सच्ची शान्ति स्थापित कर सकेगा।

स्वतंत्रता

तो राष्ट्रसंघकी सफलताके लिये राष्ट्रोंमें समता होनी चाहिये यह बात स्पष्ट हो जाती है। इस समताके लिये प्रत्येक राष्ट्र-का स्वतन्त्र होना भी आवश्यक है। यह नहीं कि प्रत्येक राष्ट्र केवल राजनीतिक दृष्टिसे ही स्वतंत्र हो अपितु आर्थिक, सामाजिक व सैनिक दृष्टिसे भी उसकी स्वतंत्रता अनिवार्य है। पिछले राष्ट्रसंघकी सदस्यताके लिये राष्ट्रीय स्वतंत्रता आवश्यक मानी गयी थी यद्यपि कुछ अपवाद उसमें विद्यमान थे। इन अपवादोंके कारण राष्ट्रसंघके निर्णय वाजदफा एकांगी हो जाते थे। तबसे अबतक स[illegible] राष्ट्र की अपेक्षा आर्थिक बन्धनोंमें अधिक फंस गया है इस लिये आज बहुतसे देश या राष्ट्र-प्रत्यक्षतः राष्ट्रीय स्वतंत्रताका उपभोग करते हुए भी आर्थिक दृष्टिसे स्वतंत्र नहीं हैं। स्पष्ट है कि राष्ट्रसंघमें राष्ट्रीय-आर्थिक दासोंकी उपस्थिति उसके लाभके लिये नहीं हानिके लिये साधक है। ये दास अपने मालिकोंके सामने अपनी स्पष्ट राय रख सकेंगे ऐसा न मानना चाहिये और यदि कोई ऐसा मान लेता है तो वह राष्ट्र-संघ या विश्वकी भावी शान्तिके प्रति अन्याय करता है। हमारी रायमें सान-फ्रांसिस्कोके विश्व शान्ति सम्मेलनमें उप-स्थित पचास राष्ट्रोंमें बहुत कम ऐसे हैं जो राष्ट्रीय, आर्थिक व सैनिक चिन्तासे मुक्त हैं। अमेरिकाके २२, २३ राष्ट्रोंमेंसे पनामा, क्यूबा आदि अनेक राष्ट्र ऐसे हैं जो राष्ट्रीयताकी दृष्टिसे अमेरिकासे अलग नहीं माने जा सकते और फिर आर्थिक दृष्टिसे तो वे प्रायः सभी अमेरिकाके कर्जदार हैं या निजी व्यापारके लिये उसका मुंह देखते हैं। योरपके राष्ट्र प्रायः स्वतंत्र हैं। वे राष्ट्रीय व आर्थिक स्वतंत्रताके उपासक हैं किन्तु इस युद्धने स्पष्ट कर दिया है कि उनमेंसे अधिक देश सैनिक दृष्टिसे शून्य हैं। हां रूस और उनके दो साथी यूक्रेन तथा श्वेत रूस संपन्न और सबल राष्ट्र हैं किन्तु एक संघमें होनेके कारण अनेक नहीं एक हैं। अफ्रीकाके केवल चार देश सानफ्रां-सिस्कोमें शामिल थे। इनमेंसे मिश्र व एबी-सीनिया ब्रिटेनके व लाइबेरिया अमेरिकाके हाथमें हैं। केवल दक्षिण अफ्रीका स्वतन्त्र है किन्तु उसके अस्सी प्रतिशत यथार्थ निवासी हब्शी हैं और कोई राजनैतिक महत्व नहीं रखते,अतःस्वल्प गोरे अन्ययोरी-पीय राष्ट्रोंका सहारा चाहते हैं। एशियाके दस राष्ट्रोंमेंसे भारत, इराक व जोरडन ब्रिटेनके वशवर्ती हैं। सीरिया व लेब-नान फ्रांसके मुखापेक्षी हैं। ईरान अनेक झंझटोंमें फंसा है और फिलिपाइन बाव-जूद सद्भावनाके अमेरिकाका गुलाम है। रह जाते हैं चीन, टर्की व सौदी अरब, इन्हें प्रत्यक्षतः स्वतन्त्र कहा जा सकता है आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड नये देश हैं और अपनेमें स्वतन्त्र हैं किन्तु इनकी अल्पतर आबादियां इन्हें सदा किसी सबलका हाथ पकड़नेके लिये विवश करती हैं। इस प्रकार थोड़ेही सिंहावलोकनसे स्पष्ट हो जाता है कि नवीन राष्ट्रसंघके पचास देशोंमेंसे अधि-कांश अमेरिका, ब्रिटेन, रूस व फ्रांसके वशवर्ती हैं या हिमायती हैं। इन वशवर्ती राष्ट्रोंके समुदायमें संसारकी स्वतन्त्रता अक्षुण्ण रहेगी या राष्ट्रोंकी समानताका दावा स्वीकार किया जायेगा यह मानना भूल है। सानफ्रांसिस्कोके सम्मेलनमें पांच महाराष्ट्रोंके वीटोके सवालपर जो बहस और मगजपच्ची हुई थी वह इस बातका सबूत है कि बहुतसे छोटे राष्ट्र चाहते हुए भी वीटोके मामलेमें न तो बड़े राष्ट्रोंके सामने बोल सके और न तो वोट दे सके। जब प्रारम्भमें ही ऐसा है तो आगे जाकर ये छोटे राष्ट्र अपनी स्वतन्त्र राय दे सकेंगे ऐसा [illegible] मान सकते। इसलिये ही हमारा कहना है कि नवीन राष्ट्र संघ क्योंकि सब राष्ट्रोंकी प्रत्यक्ष व परोक्ष स्वतन्त्रता के आधारपर स्थापित नहीं है अतएव वह सब राष्ट्रोंके लिये समान रूपसे न्यायकारी नहीं हो सकता। और यदि हमारी यह स्थापना ठीक है तो वह राष्ट्रसंघ विश्व-शान्तिके पुण्य कार्यको भी ठीक ढंगसे नहीं अपना सकता।

साम्राज्यवादका नाश

राष्ट्रोंकी इस स्वतन्त्रताके साथ ही साम्राज्यवादका प्रश्न भी बड़ा गम्भीर है। राष्ट्रसंघमें प्रविष्ट अनेक राष्ट्र बड़ेबड़े साम्रा-ज्योंके मालिक हैं। विश्वशांतिकी नयी घोषणामें इन साम्राज्योंके अन्तर्गत गुलाम देशोंकी स्वतन्त्रताकी कोई व्यवस्था नहीं की गयी है। पिछले राष्ट्रसंघने विरोधियों-से हस्तगत प्रदेशोंके लिये कुछ देशोंको शासनादेशका अधिकार देनेका ढंग निकाला था। नवीन राष्ट्रसंघ इटलीके अनेक प्रदेशोंकी शासन व्यवस्था किस आधारपर करता है यह अभी प्रगट नहीं है किन्तु भिन्न भिन्न साम्राज्योंके अन्तर्गत अनेक गुलाम देशोंके लिये वह राष्ट्रसंघ एक ट्रस्टीशिप या साम्प्रदायिक जिम्मेदारीका ढंग करना चाहता है। इसके लिये वह उन गुलाम देशोंकी राय न लेगा, अपने आपही यह व्यवस्था कर देगा। स्पष्ट है कि इससे साम्राज्यवाद नष्ट नहीं होता, बना रहता है और साम्राज्यवादके रहते विश्वशांतिकी कल्पना करना दुखद स्वप्नके बराबर है।

बदला या न्याय

नवीन राष्ट्रसंघकी सफलताकी एक कसौटी यह भी है कि वह योरप व एशिया-के पराजित देशोंके साथ क्या बर्ताव करता है। वह जर्मनी व जापानको गुलाम बनाता है या स्वतंत्र बने रहने देता है। जापानका युद्ध अभी जारी है अतः इसके विषयमें अभी हम क्या कह सकते हैं किन्तु पराजित जर्मनीके साथ विजयी राष्ट्रजो बर्ताव कर रहे हैं उसमें बदलेकी भावना निहित है यह तो हर कोई कह सकता है। तो फिर क्या न्याय व बदला पर्यायवाची शब्द रहेंगे? यदि नहीं तो जर्मनीसे बदला लेनेवाले राष्ट्र संसारमें सच्ची शान्ति व न्यायकी दुहाई कैसे दे सकेंगे?

(८ वे पेजका शेषांस)

न छोड़ देना चाहिये। जब हम प्रजासत्ताकी दुहाई बात बातमें देते हैं, तब हमें क्या अधिकार है कि जिनसे पाकिस्तानका सम्बन्ध है, उसकी राय लिये बिना एक आदमी जिसका उससे कोई सम्बन्ध नहीं, लेनेवाला और ऐसा ही दूसरा देनेवाला बन जाय? जिन प्रदेशोंमें मि० जिन्नाके काल्प-निक पाकिस्तानकी स्थापना होनी है, उनके रहनेवालोंसे इस प्रश्नका निर्णय कराना चाहिये। यदि वे पाकिस्तान नहीं चाहते, तो सौ मुस्लिम लीगोंके प्रस्तावोंसे वह नहीं स्थापित हो सकता। पर यदि वे चाहते हैं, तो उसको कोई रोक नहीं सकता। प्रकारान्तरसे इसीसे मुस्लिम लीगके प्रति-निधित्वका भी निर्णय हो जायगा। पर इसके साथ ही उन मुसलमानोंको जो उसे प्रतिनिधि संस्था नहीं मानते, अपने संगठन और वोटों द्वारा इसे सिद्ध करना चाहिये। यह निर्वाचन या तो पाकिस्तान स्थापित करेगा या अखण्ड हिन्दुस्तानकी जड़ मजबूत करेगा।

कहानी

काली हथेली

—:o:—

लेखक—श्री छेदीलाल गुप्त

इस सुन्दर कहानीमें एक समस्या खड़ी की गयी है। क्या पाषाण-पूजा मानव पूजाके मार्गमें बाधक है ? उत्तर इतना सहज नहीं है। पाषाण पूजक और पाषाण-पूजा विरोधक दोनों एक दूसरेसे हिलमिलकर मानव पूजाको असम्भव बना रहे हैं। फिर भी यह प्रश्न ऐसा है जो आज प्रत्येक शिक्षित युवक और युवतीके हृदयको मथ रहा है। युग युगसे यह प्रश्न प्रश्न ही बना हुआ है, इसका उत्तर नहीं मिला। फिर भी निराश नहीं होना चाहिये।
जिन खोजा तिन पाइयां गहरे पानी पैठ। —स० वि०

थके मांदे रमेशने जब कमरेमें प्रवेश किया तब उसकी मां पूजापर बैठी थी। छोटी सी घण्टीकी टुनटुनाहट रमेशके कानोंको भेद कर हृदयमें उथल पुथल मचा रही थी। वह दरवाजेपर ही रुका ऐसे जैसे उसका पथ कोई रोककर खड़ा हो गया है। दूसरे कमरेसे रेवा निकली और बीचके कमरे को पारकर रसोई घरमें जानेके उपक्रममें असफल रह वह भी रमेशके सामने खड़ी हो गयी। उसकी आंखें करुणासे डबडबा आयीं। अधर कांपने लगे और कांपती आवाजमें ही वह बोली—'रुके कैसे ?'

'पथ रोककर खड़ी हो गयी हो और—' रमेश कहता कहता रुका।

'और क्या ?'

'कुछ नहीं'—कह रमेश मांके पास जा पहुंचा।

मां मूर्त्तिके सामने बैठी बायें हाथमें दीप-दान किये आरती उतार रही थी और साथ ही दाहिने हथेलीमें घण्टी दाबे सोये हुए देवताको जगा रही थी कि जागो, तुम्हारे सो जानेसे ही तो सब सो गये हैं। जागो देव !

अनियंत्रित जीवनको नियंत्रित करनेका प्रयास मां जितना करती है रमेश उतना-ही अपनेको बिखेरे दे रहा है।

रेवा भोजनकी थाली लाकर इधर उधर देखने लगी—कहां चले गये ?

'वह कहां चले गये।'—मैंही उलझी रही कि मांका ध्यान भंग हो गया। अधूरी पूजासे उठ खड़ी हुई—'क्यों,क्या हुआ रे !'

तब कहीं धीरे-धीरे रेवा पूजाके कमरे-में पहुंच कर बोली—'भोजन तैयार है।'

रमेश चुपचाप वहांसे चल कर भोजनकी थालीपर आ बैठा। पीछे पीछे मां और रेवा दोनों वहां उपस्थित हो गयीं। रमेश थाली-पर चुपचाप बैठाही रहा। अचानक जब मांने देखा कि रमेश खा नहीं रहा है, बोली—'अरे तुझे क्या हो गया है। खाता क्यों नहीं ?'

केवल रमेश एक 'ओः' शब्दके साथ पराठे तोड़नेके उपक्रममें लग गया।

'तू इतना क्या सोचा रहता है ? मैं नहीं समझ पा रही हूं ?'

'मैं स्वयं नहीं समझ पाता, तो तुम कैसे समझ सकोगी ?'—रमेश थालीसे उठ खड़ा हुआ।

मां जरा झुंझला कर बोली—'अरे बगैर खाये उठ खड़ा हो गया।'

'हां—' रमेश बोला—'बगैर खायेही उठ गया मां !'

रेवाकी आंखोंसे अविरल आंसू बह चला। सिसकनकी ध्वनि उसके अन्तरको पार कर कमरेमें फैलने लगी।

'देखा बेटा !'—मां रमेशके नजदीक जाकर बोली—'जी ठिकाने रख। इतना क्यों अपनेको बिखेरे रहता है।'

'मां, तुम जी ठिकाने रखनेकी बात कहती हो। मैं जान बूझ कर अपनेको अस्त-व्यस्त नहीं किये रहता......'

मांने बीचमें ही रोक लिया, वह जो कुछ कहना चाह रहा था, उसे वहीं छोड़ केवल एक उसांस लेकर रह गया।

'चल खा,'— प्यार मिश्रित डपटके साथ मांने कहा—'दुःख संसारमें किसपर नहीं आता। सदा थोड़ेही रहेगा।'

'आओ तुम भी खाओ'—रमेशने कहा।

'वाह रे' पूजा तो कर लेने दे।'—मां पूजा करने चली गयी।

रमेश पराठेका कौर निगलने लगा और उसे लगा कि वह मांसे अनवरत कह रहा है कि मां पत्थरकी मूर्त्तिकी पूजा करनेसे कोई लाभ नहीं—मनुष्यताकी पूजा होनी चाहिये जिसमें इस दुःखका नाश कर देने-की क्षमता है, जिसमें संसारको सुखी कर देनेकी शक्ति है। जबतक पत्थरकी मूर्त्तिकी पूजा करती रहेगी तबतक रेवा जैसी मूक नारी केवल आंसू बहाती रहेगी, तबतक रमेश जैसा तुम्हारा पट्ठा रोटीके टुकड़ेके लिये मुहताज रहेगा। तबतक तुम्हारे हजार कहने पर भी दुख नहीं टलेगा......

मैं चाहूं तो मांके द्वारा क्या एक संसारके द्वारा मनुष्यताकी पूजा करा सकता हूं। यह तो मेरे हाथकी बात है—लेकिन मेरे चाहनेसे ही क्या होता। इस लिये अब मैं मांको मार डालूं और रेवाको भी मृत्युकी गोदमें सुला दूं, केवल रमेशको जीवित रख कहानी आगे बढ़ाऊं—इस आधारपर कि वह अपना सब कुछ खोकर उन मनुष्योंकी आंखोंमें धूल झोंकता रहे जिनकी आंखें मनुष्यताको नहीं पहचानतीं—जिनकी आंखें वास्तविकताको नहीं देख पातीं।

नींदकी वजह आंखें झपने लगी हैं। अब आगे लिखा नहीं जाता-और कहानीकारकी आंखें झंप गयीं। वह बिस्तरपर लेट गया। तिपायी परकी मोमबत्ती अब बिल्कुल जल चुकी, अपना अस्तित्व खो चुकी तब जिन कागजके पन्नोंपर अधूरी कहानी लिखकर उसने रख छोड़ी थी, धांय-धांय जलने लगे—और कुछ क्षणमें वे राखकी ढेर हो गये।

पर कथाकारकी नींद नहीं टूटी,पृथ्वीकी निस्तब्धतामें वह भी निस्तब्ध पड़ा रहा।

रात प्रायः दो बजेका समय होगा।

चौराहे परकी नीमके नीचे बैठे कुत्ते 'भों-भों' कर उठे। सामनेके छतपर उल्लू की आवाज गूंज गयी—काली और निर्जन रात्रिमें किसीने दरवाजा खटखटाया......

कथाकार उठा और दरवाजा खोलकर लौट आया। साथही एक मनुष्य-ठठरी भी कमरेमें दाखिल हुई।

मनुष्यकी ठठरी—'मेरा परिचय जानना चाहते हो। मैं रेवा हूं !'

इन शब्दोंको सुनते ही कथाकार चौंक कर मुड़ा—

'घबराइये मत।मेरे ऊपरका वह साया—जिससे आप यानी इस दुनियाके निवासी मनुष्यको पहचानते हैं—उसे तो अब मैं खो चुकी हूं—मैं नहीं बल्कि आपने ही उसे जलाकर भस्म कर दिया है। सचमुच मनुष्य-का असली रूप यही है—मनुष्यताको पह-चाननेके लिये इसी रूपकी कल्पना करनी पड़ेगी।'

कथाकार ठठरीकी बातोंका अर्थ लगाने-के लिये गम्भीर हो गया और पुनः ही उसकी मस्तिष्क पर बनती-मिटती टेढ़ीमेढ़ी रेखासे यह साफ जाहिर हुआ कि वह सब कुछ समझ चुका है। कथाकार स्तम्भित होता जा रहा है वहपुनः कह उठा—'तो आप क्या चाहती हैं ? इतनी रातको मेरे कमरेमें...।'

'मैं जो चाहती हूं, वह तो आपके लिये बड़ा आसान है, और मैं रातको ही आ सकती थी क्योंकि दिनके प्रकाशमें तो आप नहीं रहते। रहते हैं स्वार्थ और अपने परायेमें भूले !!

'जरा साफ साफ सब कुछ कहिये ?—'

'आपने मुझे मूक किया था कलम-के द्वारा—रेवा कह कर सम्बोधित भी किया था। और आपने ही मुझे मार भी डाला है—केवल जीवित रखा है रमेशको; लेकिन आप शायद यह भूल गये कि बगैर नायिकाके कहानियां कोई नहीं पढ़ेगा फिर इस देशमें जिस देशमें जहां विलासि[illegible] की सामग्री नारी है,नारीका तन छोड़े [illegible] किसीको आनन्द नहीं आता।'—[illegible] को वह ठठरी चुप हुई—कथाकार [illegible] बैठा रहा। पुनः ठठरी कहने लगी—[illegible] ऐसी बात है तो क्यों नहीं आप भी [illegible] नारीको सामने खड़ा कर गुत्थी सुलझा [illegible] समाधान करें, रोगीको मीठी दवा [illegible] ही रोग मुक्त करें ...।

बीचमें ही रोककर कथाकार कह [illegible] 'देखिये, मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूं।'

'मुझे पहले बैठनेको तो कहिये,'—[illegible] वाली ठठरी बोली—फिर मैं आपको [illegible] कुछ समझा दूंगी।' और कहनेके सा[illegible] वह सामने बैठ गयी। 'जिस तरह [illegible] मुझे एक मूक नारी रेवाके [illegible] चित्रित किया था अब मुझे दूसरे रूपमें [illegible] दीजिये जैसे मैं बी० ए० पास कर चुकी [illegible] पिकनिकमें जाती हूं, प्रेमका नाटक [illegible] हूं, सभा और सोसाइटियोंमें भाग [illegible] हूं...पर रमेशको तो आप जीवित ही [illegible] चुके हैं......' वह कुछ सोचने लगी—[illegible] चौंक कर बोली—'रमेशको एक [illegible] वैज्ञानिक बना दीजिये, जो एक ऐसी [illegible] का आविष्कार कर सके, जिससे ताला[illegible] वे मछलियां जो अपनेसे कमजोर छोटी [illegible] लियोंको निगल जाती हैं—केवल [illegible] जीवित रखनेके लिये, नवनिर्माणमें [illegible] वजह बहुत बड़ी बाधा उपस्थित हो [illegible] है—उस तालाबमें दो बूंद दवा छोड़ [illegible] सबकी सब स्वयं ऐंठ कर मर [illegible] इससे क्या होगा जानते हैं ?'

और इस घुण्टीदार चिन्हको [illegible] वह ठठरी चुप हो गयी।

'जानता हूं'—एक गम्भीर स्वरमें [illegible] कारने कहा—अन्याय और अत्याचार [illegible] संसारसे लोप हो जायगा। लेकिन [illegible] जो कल्पना है ?'

ठठरी जोरसे हंस पड़ी—खिल [illegible] उठी।

कथाकारने सोयेमें करवट बदला। [illegible] में ही पड़ी तिपाईपर उसका हाथ जा [illegible] वह चौंककर उठ बैठा। कमरेमें सूर्यकी [illegible] किरणें तैर रही:थीं। रातको जो [illegible] टुकड़े मोमबत्ती अवशेष हो [illegible] कारण जल चुके थे वे उसकी [illegible] में जा लगे। हथेली काली हो [illegible] बिलकुल काली—जिसे वह केवल [illegible] देखता रहा। काली हथेलीमें धंधकती [illegible] नाच रही है। रमेश किसीकी हत्या [illegible] व्यस्त है और रेवा सौंदर्य प्रेमियोंमें [illegible] पुरुषकी इस छिछली मनोवृत्तिपर [illegible] खिलानेमें मशगुल है कि रूपके लोभी [illegible] तुम्हें असत्यसे लुभा कर सत्यके [illegible] करा दूं।

—————

भारतके प्राचीन राज्य

——*:)(:*——

लेखक—श्री मलिन्द

...काराच्छादित अतीतके गर्भमें, भारत ...तीय राज्य भले ही विलुप्त हो जायें, ...भारतके प्राचीन राज्योंके अस्तित्वमें ...की गुंजाइश नहीं है। लगभग ७०० ... वर्ष ईसासे पूर्व विरचित 'मनु...' नामक प्राचीन ग्रन्थमें हम प्राचीन ...का उल्लेख पाते हैं। जब, भारत पर ...दरका आक्रमण हुआ था, उस समय ...भारतमें प्राचीन राज्योंका अस्तित्व था ...प्रमाण हमें स्टार्बो जैसे ऐतिहासिकोंसे ...है। सबोंसे खोजपूर्ण ... मेगास्थ...नीज है जो मगध-पति चन्द्रगुप्त मौर्यके ...में सेल्यूकसका दूत बनकर आया था। ...मेगास्थनीजके ही वर्णनसे पता चलता ...चन्द्रगुप्त मौर्यके समयमें भारतमें ११८ ...राज्य थे। कोई-कोई तो मगधके ...विशाल एवं विस्तृत विस्तारके थे ...कोई-कोई बहुत ही छोटे थे। आधुनिक ...के एक छोटे जिलेसे अधिक बड़े साधा...रण प्राचीन भारतके राज्य नहीं होते थे।

शासनका ढंग

...भारतके प्राचीन राज्योंके शासककी ...स्थितिका पता सहजमें ही चल सकता है ...जब राजाकी पद-प्रतिष्ठाका ज्ञान प्राप्त ...हो, चूंकि शासकों (गवर्नमेन्ट) का महत्व ...होता था। राजाकी आज्ञा ही कानून-...का रूप धारण कर लेती थी और उसके ...हाथ थी कि वह चाहे जिस पदाधि-...कारीको नौकरीसे अलग कर दे या किसी ...से उसके शासनका अधिकार छीन ले। ...के विरुद्ध, जमीन-जायदादपर किसीका ...अधिकार नहीं होता था चूंकि राज्य ...की सम्पत्ति, सारी जमीन-जायदादका ...मालिक होता था और अपनी मर्जीसे ...नष्ट कर सकता था या राज्यको ...बना सकता था। किसीकी सम्मति ...की आवश्यकता न थी।

...राजाओंमें कुछेक ही योग्य होते थे जो ...शासन करते थे। किसी राज्यकी ...तभी अच्छी कही जा सकती है यदि ...योग्य शासक हो। पर, प्रायः ऐसी ...भारतके प्राचीन राज्योंमें नहीं होती ...कि पिताके मरनेके बाद सिंहासनका ...अधिकारी पुत्र होता था और तब यह संयोग ...हो जाती थी कि योग्य पिताका ...योग्य ही हो। इस प्रकार कोई ...नहीं था कि सदा शासक योग्य ही ...। मेगास्थनीजकी भारत-यात्राके वर्णनसे ...पता चलता है कि प्राचीन भारतमें ...अयोग्य शासकोंका अभाव न था। ...बात यह भी है कि जब सत्रहवीं और ...वीं सदीमें अंग्रेज भारत आये उन्होंने ...प्रायः सभी भारतीय राज्य अशक्त ...थे। आज भी अंग्रेजोंके शासना-...में भारतीय राज्योंका अस्तित्व है, ...राजाओंको कहनेके लिये तो काफी ...प्राप्त है पर वे अपनी मर्जीसे जनता या ...के लिये कुछ भी नहीं कर सकते हैं। ...सैनिक समय पड़ने पर उनके ही विरुद्ध ...बाध्य हैं।

राज सभा

...मनु संहिता' से शासकोंकी अन्य आव...श्यकताओंका अच्छा परिचय मिलता है। उक्त पुस्तकमें ऐसा उल्लेख है कि राजाको सात चतुर पुरुषोंकी एक सभा बनानी चाहिये जिसमें एक ब्राह्मण भी हो ताकि शासन-व्यवस्थामें उसे सहायता प्राप्त हो सके। इसी आधारपर हम ऐसा अनुमान लगा सकते हैं कि उपरोक्त सभा समूचे राज्यकी देख-रेख करती होगी और सभी महत्वपूर्ण घटनाओं की सूचना राजाको देती हुई उसे सम्मति देती होगी कि कैसे नियम बनाये जायें और किस प्रकार प्रजासे उन नियमोंका प्रतिपालन कराया जाये। राजा ही इन सभासदोंको नियुक्त करता था। योग्य राजा प्रायः अपने राज्यके भद्र पुरुषोंकी सम्मति लिया करता था भले ही वह सम्मति उसे ठीक न जंचे। और जो अयोग्य राजा होते थे उनकी सभाके चतुर पर नीति-ज्ञान हीन सदस्य सदा अपने मालिककी आज्ञाका सिरके बल पालन करते थे चूंकि अयोग्य राजासे ऐसी आशा ही नहीं की जा सकती है कि वह ऐसे व्यक्तियोंको नियुक्त करेगा जो उसके ही दुर्विचारोंका विरोध करें। जब राजा अयोग्य या अशक्त होता था, सभारूढ़ अपनी मर्जीसे राज्य पर शासन करते थे। फलतः सभी प्रकारसे राज्यकी बाग-डोर राजाके हाथसे निकल जाती थी। पर चतुर एवं नीतिज्ञ व्यक्तियोंकी सभा राज्य-की प्रतिष्ठाको दूर-दूर तक अपनी योग्यतासे फैला देती थी।

पंचायतोंका रूप

प्राचीन भारतके राज्योंके राजाकी पद-प्रतिष्ठा बहुत कुछ अंशोंमें ग्रामीण राज्योंके प्रमुख व्यक्ति (हेडमैन) से मिलती-जुलती है। साथही चतुर-व्यक्तियोंकी सभा, ग्रामीण सभाओं (पंचायत) से। भारतीय राज्योंके शासकोंमें कुछेक बातें हम नवीन पाते हैं जो प्रायः सभी बड़े देशोंके शासकोंमें पायी जाती है। ग्रामीण-राज्य प्रायः छोटे होते हैं इसलिये पंचायत एवं पञ्चके द्वारा उनका शासन-कार्य सहजमें ही हो जाता है। पर जब ग्रामीण-राज्य देशी राज्यों के रूपमें परिवर्तित हो गये, शासन भार, सभा और राजाके हाथसे निकल गया। आप पूछ सकते हैं कि ऐसा क्यों हुआ? चूंकि, घटनास्थल परही शासनका आंशिक कार्य योग्य व्यक्ति करने लगे इस लिये कि हर समय हर जगह पर, राजा एवं सभासद् चाहते हुए भी प्रस्तुत नहीं रह सकते थे। यथा, इस कष्ट-जन्य कार्यसे मुक्ति पानेके हेतु देशके विभिन्न स्थानोंमें, पदाधिकारी नियुक्त कर दिये गये जो राजाका प्रतिनिधित्व करते हुए, राजाकी अनुपस्थितिमें शासनकी बागडोर संभालते थे।

इस प्रकारकी प्रथाका प्रारम्भिक परिचय हमें मनु-संहिता' से यूं मिलता है—(राजाके प्रति कहा गया है)—"जिला संहत एक नगरका शासक वह नियुक्त करे, बीस नगरोंका, सौ नगरोंका और हजार नगरोंका भी शासक वही नियुक्त करे... प्रत्येक विशाल नगरमें सब-कुछकी देख-रेख के लिये एक निरीक्षक (सुपरिंटेंडेंट) वह नियुक्त करे जो अच्छे कुलका हो, शक्तिशाली हो, सितारोंमें चांद सा चमके।" वर्तमान् भारतके नगराध्यक्ष उप-प्रान्ताध्यक्ष (एस० डी० ओ०) जिलाधीश, एवं कमिश्नरोंमें हम अधिक समानता नहीं पाते हैं, परशासकका उद्देश्य एक है। आजके नगराध्यक्ष ही कलके राज्योंके राजा कहलाते थे। जब इस प्रथाकी स्थापना हो गयी एक नया बखेड़ा उठ खड़ा हुआ-कि जिला भरके पदाधिकारियोंकी कैसे देख-रेख की जाये और उनपर कैसे अधिकार बनाये रखा जाये? चन्द्रगुप्त मौर्यने निरीक्षक (इन्सपेक्टर) नियुक्त कर रखा था जो, उसके शासकोंके आचरणका निरीक्षण करते थे और उसके पास इस विषयमें गुप्त पत्र लिखा करते थे। भारतीय-राज्य बहुत बड़े नहीं होते थे इस लिये जिलाधीशोंपर राजा अपनी नजर रख पाता था पर जब राज्योंका रूप साम्राज्य-सा हो गया, राजाके लिए यह व्यापार कठिन लगाने लगा।

विचारणीय प्रश्न

शासन कार्य कहांतक भारतके प्राचीन राज्योंमें सफलता पूर्वक हो पाता था, यह एक विचारणीय प्रश्न है? यह मैं मानता हूं कि अधिक विस्तार हो पानेके कारण विदेशियोंके आक्रमणसे राज्यकी सुरक्षाका अच्छा प्रबन्ध था। पर साथही आक्रमणकारी सदा, दूर-दूरही नहीं रह पाते। जब अंग्रेज भारत आये, दक्षिण भारतमें बहुत से स्वतन्त्र राज्य थे पर वे प्राचीन कालके न थे और न प्राचीन राजाओंके वंशजही राज्य-सिंहासनोंपर आरूढ़ थे। सबके सब आक्रमणकारियोंके विकट जालमें कई बार बुरी तरह फंस चुके थे और नाममात्रके लिए सैनिक-शक्तिके बलपर कुछेक राजा राज्य कर रहे थे। उत्तरी भारतकी भी यही दशा थी, बल्कि इससे भी गयी-गुजरी! एक ओर हम पाते हैं कि छोटे-छोटे राज्योंको तहस नहस कर राज्य एवं साम्राज्य उन्नति करते जा रहे हैं और फिर युद्ध एवं विद्रोहके कारण फूट कर अपनी पूर्व दशाको प्राप्त हो रहे हैं तो दूसरी ओर हम स्पष्ट देखते हैं कि हिमालयकी घाटियोंसे होकर भारतमें हूणों, तातारों, पठानों, मुगलों और शकोंकी टोलियां भारतीय-राज्योंको आशक्त जानकर, उनपर अधिकार जमाने आ रही हैं।

११८ स्वतंत्र भारतीय राज्य

भारतीय-राज्योंकी रक्षाके प्रश्नपर हमने व्यक्तिगत रूपसे विचार किया है। यदि सभी राज्योंको मिलाकर सम्पूर्ण-एक भारत की रक्षाके प्रश्नपर, विचार किया जाये तो मेगास्थनीजके समयमें ११८ स्वतंत्र भारतीय राज्य थे जो परस्पर-युद्धमें प्रायः रत रहते थे। हिन्दुओंके बीचमें युद्ध, पाशविक प्रवृत्ति न समझा जाता था फिर भी इसके चलते सारे देशको धन-जनकी क्षति उठानी पड़ती थी और सुख-शांति-स्वच्छन्दता हो जाती थी।

न्यायाधिकरण

प्राचीन भारतमें, अनुशासन बनाये रखनेके नियम सर्वथा प्रभावशाली थे। देशके किसी भी कोनेमें जब अराजकता फैलती थी, तब उक्त जिलाकी सरकार, पदाधीशसे ऐसी आशा करती थी कि वह सजाके लिये दोषियोंको प्रस्तुत करे अन्यथा उसेही सजा दी जाती थी। आप कह सकते हैं कि ऐसे नियमोंमें न्यायकी कमी है चूंकि अराजकताके लिये कदापि, पदाधीश, दोषी नहीं ठहराया जा सकता है। पर, आपको जानना चाहिये कि एक समय, न केवल प्राचीन भारतमें ही अपितु समस्त संसारमें ऐसे नियम प्रचलित थे और आज भी चीनमें ऐसे नियमोंका अस्तित्व है। कठोर न्यायसे अधिक महत्व वे अनुशासनको देते थे और जब दोनोंकी बागडोर वे न सम्भाल सके तब केवल अनुशासनके बल वे जीते रहे। आप या हम उन प्राचीन पुरुषोंको उलाहना नहीं दे सकते हैं चूंकि वैसी दशामें न्याय सम्भव नहीं है यदि सर्वत्र अनुशासन-हीनता हो। इसीसे अन्यायको अनुशासनके धागेमें बांधनेमें पूर्व-पुरुषोंको काफी समय लगा।

किसी भी सरकारके लिये 'न्याय' की व्यवस्था (ऐडमिस्ट्रेशन आफ जस्टिस) सर्वाधिक कठिन कर्त्तव्योंमेंसे एक है। सो, यह जान कर हमें आश्चर्यान्वित न होना चाहिये कि प्राचीन भारतमें अति-न्यूनतः 'इसका' दिग्दर्शन होता था। अन्यान्य देशोंसे, कम कठोर होनेपर भी प्राचीन भारतके नियम हमें मार्मिक लगते हैं! एक ही प्रकारके नियमों द्वारा सबके साथ व्यवहार होते देखनेके हम आदी हो चुके हैं पर उन दिनों सैनिकों एवं पण्डितोंके साथ अधिक नर्मीका बर्ताव किया जाता था, बजाय निम्न वर्गके लोगोंके। इतना ही नहीं, कभी-कभी तो व्यक्तिगत-जीवन भी नियमोंके बन्धनमें बंधे होते थे। खाने-पीने, पहरने और उत्सव आदि मनानेतकका उन्हें स्वतन्त्र अधिकार प्राप्त न होता था। आज हम समझते हैं कि ये हमारी व्यक्तिगत बातें हैं और इनसे नियमका कोई सम्बन्ध नहीं। 'मनुसंहिता' को पढ़नेसे पता चलता है कि राज्य-पुरोहितकी सहायतासे व्यक्तिगत रूपेण राजा, न्याय कर सकता है या चतुर पुरोहितको यह अधिकार दे सकता है कि वह तीनेक पंच (असेसर) की सहायतासे न्याय करे। ग्रामीण राज्योंके ही सहज परीक्षा (ट्रायल) की प्रथा थी—ब्राह्मण नियमोंका उल्लेख करता था और पंच हां-में-हां मिलाते थे। राज्य-दरबारसे दूरस्थ जिलोंमें यथासम्भव पदाधिकारी राजाका पदग्रहणकर अपराधियोंको भी न्याय करनेका थोड़ा अधिकार दे देते थे।

समस्त संसारके राजा प्रजा-हितार्थ-कार्योंके लिये प्रसिद्धि प्राप्त हैं इसलिये भारतीय राजाओंकी प्रसिद्धि कोई विशेष मूल्य

(शेष १५ वें पृष्ठपर)

अन्तर्राष्ट्रीय

युद्धकी प्रगति—

खास जापानपर मित्र अभियान आरम्भ होनेकी घड़ी सन्निकट होती जा रही है। टोकियो रेडियोने जापानी जनताको सख्त चेतावनी दी है कि जापानके प्रमुख नगरोंपर मित्र बमबाजोंके हमले अधिकाधिक भीषण रूप धारण करते जा रहे हैं और ऐसी आशङ्का हो रही है कि मित्र राष्ट्र शीघ्र ही जापानपर सेना उतारनेकी चेष्टा करेंगे। इस सप्ताह विमानवाही जहाजों तथा ओकीनावाके हवाई अड्डोंसे उड़कर हजारों विमानोंने टोकियो, नागोया, योकोहामा आदि प्रमुख नगरोंपर इतनी भयंकर बमबाजी की है कि जापानी जनतामें आतङ्क व्याप्त हो गया है। जापानियोंके नैतिक बलमें कमी होनेके आसार भी नजर आने लगे हैं और इम्पीरियल बैंक आव जापानके मैनेजिंग डायरेक्टरने बताया है कि जनता अपनेको इतना अरक्षित समझने लगी है कि बैंकसे रकम निकालकर उसने अपने पास एकत्र करना आरम्भ कर दिया है। जापानमें आर्थिक सङ्कट की भी समस्या उत्पन्न हो गयी है, और इसी कारण सरकारने जनतासे शाही खजानेमें अधिकाधिक रकम जमा करनेका अनुरोध किया है। जापानमें युद्ध बन्द करनेकी आवाज जोरोंपर उठने लगी है और जापानी पूंजीपति युद्धको शीघ्र बन्द करनेके लिये मित्र राष्ट्रोंके पास सन्धि प्रस्ताव भेजनेकी तैयारीमें लगे हैं। ऐसी भी अफवाह सुनी गयी थी कि त्रिराष्ट्र सम्मेलनमें जेनरलिस्मो स्टालिन जापानका सन्धि प्रस्ताव पेश करनेके लिये लाये थे किन्तु इसका सरकारी तौरपर खण्डन किया गया है। फिर भी ऐसी सम्भावना प्रकट की जा रही है कि जापानके औद्योगिकोंकी युद्ध बन्द करनेकी चेष्टा और वहांके समर नेताओंका अन्तिम दमतक युद्ध जारी रखनेका संकल्प जापानमें गृह कलहकी सृष्टि करेगा। सुदूर पूर्वके युद्धकी स्थिति, आलोच्य सप्ताहमें यद्यपि जापानपर मित्र बमबाजोंके अधिकाधिक प्रचण्ड आक्रमण तक सीमित रही है, फिर भी बोर्नियो और जावापर छिटफुट आक्रमण किये गये हैं। ओकीनावाके समीप दो द्वीपोंपर अमेरिकनोंने कब्जा जमा लिया है और अनेक जापानी जहाजोंको जलमग्न और क्षतिग्रस्त किया है। बोर्नियोमें आस्ट्रेलियन फौजें सफलता पूर्वक अग्रसर हो रही हैं और बालिकपेपेन खाड़ीमें एक जापानी सामुद्रिक विमान अड्डे पर अधिकार जमा लिया है। फिलिपाइनके शेष तीन शहर भी अमेरिकनोंके अधिकारमें आ गये हैं और जापानी फौजोंका वहां सफाया किया जा रहा है। मिण्डानोमें मित्र सेनाएं फिरसे उतर गयी हैं और मेकासरमें आस्ट्रेलियनोंकी अग्रगति पूर्ववत जारी है। चीनी फौजोंने इण्डो चीनके सीमान्तवर्ती क्वांगटुंग प्रांतमें सुर्नाचाग नगर पर कब्जा जमा लिया है। दक्षिणी चीनके क्वांगसी प्रान्तमें भी चीनी फौजें सफल अग्रगति कर रही हैं और क्वीलिनकी बाहरी रक्षा पंक्तिमें प्रविष्ट हो गयी हैं।

बर्मामें तूफानके पहलेकी शान्ति भंग हो चुकी है और जापानी फौजोंने प्रत्याक्रमण आरम्भ कर दिया है। मावची रोड और टाया पर जापानी प्रचण्ड गोलाबारी कर रहे हैं किन्तु अबतक कोई जबर्दस्त मुठभेड़ नहीं हो पायी है। सितांग नदीके घुमावके समीप अपने सैनिक केन्द्रसे जापानी अपनी फौजोंको हटा रहे हैं। ऐसा अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्षा कालके आरम्भ होनेके साथ जापानी भी सितांग अंचलमें जबर्दस्त आक्रमण शुरू कर देंगे। पेगू और मिटक्योके समीप मित्र और जापानी फौजोंकी गश्ती हरकतोंमें फिर सरगर्मी आने लगी है और ऐसे आसार नजर आने लगे हैं कि उस अंचलकी घिरी हुई सेनाको निकालनेके लिये जापानी अन्तिम बार जबर्दस्त मोर्चा लेंगे।

युक्त राष्ट्रीय महिला सैन्य दलकी डायरेक्टर ओवेटा होबी, जिन्होंने पद त्याग कर 'टेक्साज पोस्ट' का फिरसे सम्पादन आरम्भ किया है।

इटलीने जापानके खिलाफ युद्ध घोषणा कर दी है और उसने मित्र राष्ट्रोंको बिना शर्त युद्धमें सहयोग देनेकी इच्छा प्रकट की है। इटलीका सम्पूर्ण जंगी बेड़ा अब जापानके खिलाफ युद्धमें उपयुक्त होगा, साथ ही इटालियन स्वयंसेवक भी जापानी युद्धमें सक्रिय भाग लेंगे।

रूस-चीन वार्ता—

चीनके प्रीमियर डा० टी० वी० सुंग मास्कोमें मार्शल स्टालिन तथा अन्य राजनेताओंसे परामर्श कर चुंगकिंग लौट गये। उनकी वार्ता पर कोई समझौता नहीं हो पाया है और डा० सुंग फिरसे बातचीत आरम्भ करनेके लिये मास्को पहुंचने वाले हैं। जेनरलिस्मो स्टालिनने त्रिनायक सम्मेलनके पूर्व ही किसी निश्चय पर पहुंचनेकी चेष्टा की थी किन्तु चुंगकिंगने मार्गमें बाधा पहुंचायी। मार्शल स्टालिन और डा० सुंगके बीच, ऐसा कहा जाता है, अत्यधिक महत्वपूर्ण विषय पर बातचीत हुई और उसमें विशेषतः मंचूरिया, बाहरी मंगोलिया तथा कोरियाकी भावी स्थितिपर विचार हुआ। मास्को वार्ता जब पूरे वेगसे चल रही थी उसी समय चीनी युद्ध सचिव जेनरल चेनचंग ने ऐलान किया कि चीन अपने उत्तर-पूर्वी प्रांतों और मंचूरियाको फिरसे अपने कब्जेमें करनेकी तैयारी कर रहा है। इसके परिणामस्वरूप डा० सुंग की वार्ता एकाएक रुक गयी और वह चुंगकिंग चले आये। इस समझौतामें विलम्ब होनेका परिणाम यह होगा कि सुदूर पूर्वके युद्धमें रूस सहयोग प्रदान कर सकेगा। डा० सुंग अगर चुंगकिंगके वातावरणको अपने अनुकूल बना सके तो रूससे समझौता हो जायगा और जापानको शीघ्र पराजित करना सम्भव होगा।

यूरोपमें विजय प्राप्त कर वापस आने पर जेनरल आइसेनहावरका न्यूयार्कके मेयर फियोरेलो एच० लागार्डिया द्वारा स्वागत

जापान सम्राटकी चिन्ता—

जापानके सम्राट हिरोहितोने डा० सुंगकी मास्को वार्ता तथा रूस जापान सम्बन्धके बारेमें परराष्ट्र सचिव तथा अन्य विशेषज्ञोंसे बातचीत की है। पोटसडमके त्रिराष्ट्र सम्मेलनके बारेमें भी सम्राटने जानना चाहा था। सम्राटकी आशङ्का है कि इसके परिणाम स्वरूप जापानके खिलाफ रूस युद्ध छेड़ देगा। जापानके समाचार पत्र 'असाही शिम्बुन' ने सुदूरपूर्वके युद्धके बारेमें रूसके रुखका जिक्र करते हुए बताया है कि रूस अवश्यही त्रिराष्ट्रोंके समान स्वार्थोंको ध्यानमें रख कर कार्य करेगा।

मार्शल पेतांका मामला—

विशी सरकारके भूतपूर्व प्रीमियर मार्शल पेतांके खिलाफ देशद्रोह करने और जर्मनोंको सहायता पहुंचानेके अभियोगमें पिछले अनेक सप्ताहोंसे मामला चल रहा है। इस मामलेमें फ्रेंच अदालतके इतिहासमें प्रथम बार ब्रिटिश परराष्ट्र विभागकी एक विज्ञप्तिको प्रमाणके रूपमें पेश किया गया... लन्दनमें एक विज्ञप्ति प्रकाशित कर... सरकारके भूतपूर्व राजदूत मो० हूं... की पुस्तकमें ब्रिटिश सरकारके... लगाये गये उस अभियोगका खण्डन... गया जिसमें कहा गया था कि... सरकारने १९४० में पेतां सरकारसे... एक गुप्त समझौता किया था। पहले... समझा गया था कि इस प्रकारके... झौतेकी रिपोर्ट मार्शल पेतांकी... सफाई देनेमें सहायक होगी, किन्तु... गासेकी ओरसे इस विज्ञप्तिका... साक्षीके रूपमें किया जायगा।... पेतां अपने पक्षकी सफाई देनेके लिये... हेलिफाक्स और अन्य किसी ब्रिटिश... नेतासे अनुरोध कर सकते हैं किन्तु... बातकी सम्भावना बहुत कम है कि... व्यक्ति उनके अनुरोधको स्वीकार करें...

'झांसीकी रानी' पलटन—

जापानियोंकी प्रेरणासे स्थापित... तीय राष्ट्रीय सेनाका 'झांसीकी रानी... दल' की सेनानायिका और सहायक... कैप्टेन (मिस) लक्ष्मीने ब्रिटिश... समक्ष आत्म समर्पण कर दिया है।... लक्ष्मी मद्रासके एक सुविख्यात परि... धनी और सुन्दरी युवती हैं। १९४... सिंगापुरमें डाक्टरी करती थीं। अने... महिलाओंके समान लक्ष्मी भी श्री... चन्द्रबोसके व्यक्तित्वके सामने झु... और उनकी ही प्रेरणासे उन्होंने... राष्ट्रीय सेनाके महिला सैन्य दलका... कर गदरके जमानेकी विख्यात... वीरांगना रानी लक्ष्मीबाईके नाम... सैन्य दलका नाम 'झांसीकी रानी'... रखा। उस दलमें ४०० से अधिक म... थीं और उनको शस्त्र चालनकी शि... गयी थी। बर्मामें जापानियोंकी... साथ वह सैन्य दल भी भङ्ग हो ग... कुमारी लक्ष्मी कलेवामें भारतीय सै... सेवा सुश्रुषा करने लगीं। पिछले... वह रंगूनमें ब्रिटिश सेनाको सहायता... रही हैं।

फ्रांसमें शासन सुधार—

जेनरल डी गॉलेने फ्रेंच विधान... वर्तन करनेकी जो योजना बनायी... परामर्श सभाके वैधानिक सुधार... जबर्दस्त विरोध किया है और... प्रस्तावका पुनर्विचारके लिये... दिया है। फ्रेंच परामर्श सभाके... के लोग उस कमीशनमें शामिल... उन्होंने सर्व सम्मतिसे प्रस्ताव... किया है। जेनरल डी गॉलेकी... मुताबिक यदि अक्तूबर मासमें फ्रेंच... निर्वाचित असेम्बलीका चुनाव... असेम्बली राष्ट्रपतिकी नियुक्ति... पतिको अपना मन्त्रिमण्डल बनाने... कार होगा और यह सरकार... महीने तक शासन करेगी। इस... विधान तैयार किया जायगा।... इस विरोधको मानने या न मानने... सरकारको पूर्ण अधिकार है,... कारका असेम्बलीके प्रति कोई... नहीं है किन्तु कमीशनके... नहीं मानना फ्रेंच सरकारके लिये... कठिन होगा।

और अन्ध विश्वास—

समाजमें अब तक इतनी अधिक अन्धविश्वास फैला हुआ है कि उसके स्वरूप आये दिन अनेक दुखद घट- समाचार पढ़नेको मिलता रहता भूत-प्रेत, जादू टोना, ओझा-ज्योतिषी हमारे समाजमें इतना जबर्दस्त कि उनके वशीभूत हो लोग अपने तककी बलि चढा देनेमें नहीं यद्यपि अन्धविश्वासका प्रभाव संसार सभी जातियोंपर कुछ न कुछ मात्रा है, लेकिन हमारा भारतीय समाज सबसे आगे है। अभी हालमें किसी स्थानमें एक बुढ़िया इस कारण कर दी गयी, कि लोग डायन होनेका सन्देह करते सप्ताह बीजापुरके रेजिडेंट मजि- अदालतमें पासके एक ग्रामीण व्यक्तियोंकी हत्या करनेके अभि- किया गया था। उसके खिलाफ यह लगाया गया था कि १८ अन्दर इस व्यक्तिने ५ व्यक्तियोंकी विभिन्न परिस्थितियोंमें कर डाली। बताया गया है कि वह व्यक्ति आचरणमें सन्देह किया करता इस कारण उनमें अक्सर कलह हुआ एक बार झगड़ा यहांतक बढ़ उसने अपनी पत्नीका गला दबोच हत्या कर डाली। उसकी पत्नी- और भाईने जब झगड़ेमें बीच बचाव की तो उसने उन लोगोंको डाला। उसके दबहरने कुछ दिनों- घटनाको सुनकर जब उसे भला- आरम्भ किया तो अभियुक्तने मारसे उसकी भी हत्या कर झगड़ोंके दौरानमें अभियुक्तकी पुत्री थी मौतका शिकार हो किन्तु उसके गांवमें ऐसी अफवाह है कि अभियुक्तने अपने इन पांचों हत्या एक फरार कैदीकी सलाह- उस फरारने अभियुक्तको बताया वह पांच व्यक्तियोंकी बलि तो उसके मकानमें छिपी हुई अतुल प्राप्त होगी और इसी अन्ध- कारण उसने पांच मानवोंकी डाली। इन हत्याकाण्डोंका सन्देह हो या अन्धविश्वास, घटनाएं आये दिन हमें पढ़ने मिलती है। समाजमें जबतक अन्धविश्वासका मूल कायम हमें न तो शान्ति मिल सकेगी, उसको अपने हृदयसे निकाल करही सुखी हो सकता है। साथ को भी चाहिये कि ऐसे अपराधोंके लिये इतना है कि उसकी पुनरावृत्ति करनेका साहस ही न हो।

खिलाफ अभियोग—

हमने पुलिसकी पैशाचिकता पेश करते हुए बताया था कि सरकारकी ओरसे प्रजामें कायम रखने, उत्पीड़नोंका अन्त सभी कष्टोंका निराकरण

समाज का अग्निकुण्ड

करनेके लिये किया गया है, किन्तु पुलिसवाले अपने मिथ्याभिमानके वशीभूत होकर जनताका अकारण कष्ट दिया करते हैं। सार्वजनिक रक्षा व्यवस्थाका दायित्व रखनेवाली पुलिस अपने कर्तव्यको भूलकर कभी कभी ऐसे कृत्य कर दिया करती है, जो सरकारके लिये कलंक और जनताके लिये घातक सिद्ध होते हैं। बुराइयों, चोरीडकैतियों, हत्याकाण्डों और अन्य अपराधों को रोकना, अपराधियोंका पता लगाकर कानूनके सामने पेश करना और पीड़ितोंकी रक्षा करना पुलिसवालोंका ही काम है। मगर वही पुलिस किसी क्षुद्र प्रलोभनमें पड़कर जब महान अपराधोंको दबा देती और अपराधियोंको सुर्खरू छोड़ देती है तो सचमुच उसके उज्वल नामको भयंकर कलङ्कका टीका लगता है। हालही में श्रीरामपुरके फर्स्ट क्लास मजिस्ट्रेटके सामने एक मामला पेश हुआ है, जिसमें सरकारी वकीलने पुलिसके खिलाफ संगीन आरोप लगाये हैं। गत २२ मार्चको सिंगुर थानेके आनन्दनगर ग्राममें कूंटी नदीके समीप एक २८ वर्षीया विधवा चारुबालाकी लाश पायी गयी। उसके शरीरपर दो कटे घाव थे। पुलिसने उसको आत्महत्याका मामला बता कर लाशको जला देनेकी आज्ञा दे दी किन्तु बादको जब गांववालोंने इसके खिलाफ शिकायत की तो मामलेकी जांच करनेकी आज्ञा दी गयी। जांचके बाद पता चला कि मृत स्त्री उस गांवके एक व्यक्तिके घर कुछ दिनोंके लिये अपने बीमार पुत्रके साथ ठहरी थी। उस व्यक्तिकी स्त्री और गांवके एक प्रभावशाली पण्डितकी, मृत विधवासे अनबन हो गयी थी। वह विधवा अत्यधिक खूबसूरत और जवान थी और वह पण्डित उससे अक्सर गन्दे मजाक किया करता था। इन हरकतोंसे ऊब कर जब वह विधवा एक दिन अपने पुत्रके साथ वहांसे रवाना होने लगी तो पण्डितने बीमार पुत्रके हितकी दुहाई देकर उसे कुछ दिन और वहीं रहनेको कहा। उसी एकको उसकी हत्या कर दी गयी। गांवके अनेक व्यक्तियोंने उसका चित्कार सुना और बादको उसकी लाश नदीके किनारे फेंक दी गयी। पुलिसको जब इसकी खबर दी गयी तो सिंगुर थानेका सब इन्सपेक्टर पी० बी० राय जांचके लिये पहुंचा। जांचके दौरानमें सब इन्सपेक्टरको कई बार वहांके यूनियन प्रेसिडेण्ट भीड़से बाहर बुला ले गये और लोगोंने उनको एकान्तमें सलाह करते हुए कई बार देखा। मृत विधवाके सम्बन्धियों और गांववालोंने बार बार इस बातपर जोर दिया कि लाशको डाक्टरी परीक्षाके लिये भेजा जाय किन्तु पुलिस इन्सपेक्टरने किसीकी बात पर ध्यान नहीं दिया और उसको आत्मघातका मामला बता कर दाह संस्कार करनेका हुक्म दे दिया। सरकारी वकीलने, वास्तविक प्रमाणको नष्ट कर घटनाकी झूठी रिपोर्ट देने और अपराधी को दण्डसे बचानेका अभियोग उस सबइन्सपेक्टर पर लगाया है। जो पुलिस तिलसे मामलेको बढ़ाकर ताड़का स्वरूप दे देती है, वही अगर इस प्रकार के संगीन मामलेको इतनी आसानीसे टाल देती है तो उसकी नीयत पर सन्देह होना स्वाभाविक ही कहा जा सकता है। जनताकी हित रक्षाके गुरुतर भारको वहन करनेवाली पुलिसकी यह मनोवृत्ति सचमुच खेदजनक है। यद्यपि यह मामला अबतक विचाराधीन है, अतएव इस सम्बन्धमें हम अपनी कोई राय नहीं दे सकते, किन्तु यदि इस मामलेको सचमुच ही पुलिसने किसी प्रलोभनके वशीभूत होकर दबा दिया है तो उसकी जितनी भी निन्दा की जाय, थोड़ी ही कही जायगी। न्यायाधीशको भी ऐसे मामलोंमें विशेष मनोयोग पूर्वक विचार कर निर्णय करना चाहिये और यदि इसमें पुलिसका दोष प्रमाणित हो तो उसे इतनी सख्त सजा मिलनी चाहिये कि पुलिसके खिलाफ दिनोदिन बढ़नेवाली बदनामीमें कमी हो तथा इस प्रकारका कार्य करनेवा उनमें फिर साहस न हो सके।

असहनीय अवस्था—

हर बातके लिये विदेशी सरकारको दोष देना अपनी कायर मनोवृत्तिका परिचय देना है। कोई तभी हमारे ऊपर अन्याय कर सकता है, जब हमारे भीतर दोषकी अणु भर भी मात्रा हो या हम ऐसी परिस्थितिमें हों जिसमें हमारे दिल और दिमाग पर गूंगेपन का पहरा हो। बगैर इन परिस्थितियोंके उन अवस्थाओंसे गुजरना एक असम्भव सी बात है। आज हम ऐसी स्थितिमें नहीं हैं कि हमारे उलझन और हमारी आन्तरिक समस्यायें हमारे द्वारा न हल हो सकें। बौद्धिक विकासमें और तदनुकूल आचरण करनेमें हम पहलेसे बहुत आगे बढ़ गये हैं। हमने अपनेको तथा आसपासके प्रतिकूल वातावरणको अपने अनुकूल बना लिया है। हम पहलेसे आज अधिक मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त कर चुके हैं। ऐसी स्थितिमें जो हमारी अपनी समस्या है उसपर हमें अवश्य नजर रखनी चाहिये। हमारी मानसिक स्थितिकी उन्नत या अवनत अवस्थाका पता हमारी साध्य समस्याओं द्वारा ही लग सकता है। ठीक यही बात भारतीय नारीके लिये भी उपयुक्त है। वे पहलेसे आज बहुत ज्यादा आगे बढ़ी हुई हैं। उनका कार्यक्षेत्र विस्तृत और व्यापक हो गया है। वे समानता चाहने लग गयी हैं और उनकी यह चाह साफ-साफ बतला रही है कि वे स्वभाग्य निर्णयके लिये तैयार हैं और अपनेको उसके लिये सभी तरहसे उपयुक्त पाती हैं। नारी जागरणका मंगलमय प्रभात पुष्ट होता हुआ अब दोपहर की ओर बढ़ रहा है। ऐसी स्थितिमें स्त्रियों को चाहिये कि कमसे कम वे अपनी स्थितियोंको देखें और उसके भीतर छिपी हुई बुराइयोंको रोकें। अपनी दृढ़ता और सबलताके बलपर उन्हें चाहिये कि वे अपनी समस्याओंको खुद हल करनेकी चेष्टा करें और इसके लिये उन्हें जिस तरहकी भी पुरुषोचित सहायताकी आवश्यकता पड़े पुरुषसे लें। ऐसी बात नहीं है कि इस रूपमें पुरुष समाज उनसे पीछा छुड़ा लेगा और वे अकेली मैदानमें छोड़ दी जायंगी।

पिछले महीनेकी घटना है। अहमदाबादमें श्रीमती हंसा मेहताकी अध्यक्षतामें एक महिला सम्मेलन हुआ। अन्य चर्चाओंके साथ यह चर्चा बहुत जोरदार रही कि इस समय अहमदाबादके आसपास तीन सौसे लेकर ५ सौ रुपये तकमें बेशुमार लड़कियां बिक रही हैं। अहमदाबादके भद्रकाली मन्दिरके निकट इसका मुख्य अड्डा है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस काममें स्त्रियोंका ही मुख्य हाथ है। कुछ स्त्रियां तो घर त्याग कर बाहर निकल आती हैं और फिर गुण्डोंके हाथमें पड़ जाती हैं। यह रोग धीरे धीरे बढ़ता जा रहा है और इसके लिये चीख पुकार भी मचायी जा रही है। अब यही समय है जब स्त्रियोंको आनन फानन मैदानमें कूद पड़ना चाहिये और इस निन्दाको नष्ट करके ही दम लेना चाहिये। यह तयशुदा बात है कि स्त्रियां इस कार्यको जितनी शीघ्रतासे कर डालेंगी, पुरुष नहीं कर पायगे। औरतोंके लिये सामाजिक सुधारका यह स्वर्ण अवसर है। उन्हें अब न चूकना चाहिये।

'यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते'—

संसारके कोने कोनेसे आज जब नारी जातिको समानाधिकार देने और उनका उचित सम्मान करनेकी आवाज उठायी जा रही है, उस समय हमारे समाजमें अब तक कुछ ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो बाहरसे नारियोंके समानाधिकार और स्वतन्त्रताका समर्थन करते किन्तु हृदयसे उनको चहारदीवारीमें बन्द रखनेकी चेष्टा करते हैं। कलकत्तेमें आजकल अक्सर ऐसी घटनाएं देखनेमें आती हैं, जिनसे उपर्युक्त विचारोंकी पुष्टि होती है। हालहीमें एक महिलाने कलकत्तेकी सड़कोंपर अपने कटु अनुभवोंका विवरण स्थानीय एक समाचार पत्रमें प्रकाशित कराया है। उसने लिखा है कि 'जब मैं ट्रामकी प्रतीक्षामें खड़ी थी, कुछ लोगोंने मुझपर छींटे कसे और मेरे शरीरसे भिड़नेकी चेष्टा की।' इस प्रकारकी घटनाएं किसी भी समय कलकत्तेमें देखी जा सकती हैं। राह चलती औरतोंपर छींटेकशी करना और सीटी बजाना आधुनिक कहे जानेवाले कुछ युवकों ने अपना कार्यक्रम बना रखा है। इस समय ऐसी अवस्था है कि भली हो या बुरी, सभी औरतोंको एक ही माप-दण्डसे उन्होंने देखना शुरू किया है। भारतके जो लोग किसी समय मातृ जातिका इतना आदर करते थे वही आज इतना नीचे उतर आए हैं कि किसी भी स्त्रीके साथ छेड़खानी करनेमें नहीं शरमाते। आज भले घरोंकी स्त्रियोंका राह चलना मुश्किल हो रहा है और यदि इस स्थितिको रोकनेकी चेष्टा न की गयी तो समाज पतनके गहरे गर्तमें गिर जायगा। हमारे युवकोंको मातृ जातिका उचित सम्मान करना और आत्म संयमी होना तथा उच्छृंखलताका परित्याग करना चाहिये।

चित्रोंका आधुनिक रूप

लेखक—श्री अनिरुद्ध

चित्रकला सीखनेके लिये परम-आवश्यकता इस बातकी है कि उसको सीखना प्रारम्भ कर दिया जाय। जिस प्रकार हिन्दी, बङ्गला या अङ्गरेजीके अक्षरोंका आकार बनाना सीखना आवश्यक है, उसी प्रकार हमारे दैनिक जीवनमें आनेवाले साधारण पदार्थोंके आकार खींचना सीखना नितान्त आवश्यक है। इसे सीखनेका प्रारम्भ जितना शीघ्र कर दिया जायेगा उतना ही अच्छा होगा। यह सोच लेना ठीक नहीं कि चूंकि हमने चित्रकलाका अभ्यास लुटपनकी अवस्थासे नहीं किया है इसलिये इसको सीखना कठिन कार्य है। वास्तवमें बात ऐसी नहीं है। चित्रकला सीखनेमें अवस्थाका कोई प्रश्न ही नहीं उठता। कोई भी व्यक्ति न तो इस विद्यामें पूर्णता प्राप्त कर सकता है और न प्रयत्न करनेपर असफल ही हो सकता है।

इच्छानुसार क्षेत्र

कोई भी पढ़ा लिखा व्यक्ति, जो जीवनकी अधिकांश उम्र किसी विशेष कार्यमें बिता कर अपना समय बहलानेका साधन ढूंढ़ना चाहता है, उसके लिये इस दिशामें काफी क्षेत्र है। स्कूलकी शिक्षा समाप्त कर चुकनेवाले किसी भी ऐसे विद्यार्थीको, जो किसी विशेष कार्यका प्रारम्भ करनेका अवसर खोज रहा हो, ऐसे व्यक्तिके लिये भी यहां काफी अवसर है। जो लोग जीवनमें एक लम्बे अरसेसे इस कलाको सीखनेकी हार्दिक इच्छा रखते रहे हों पर समयाभावके कारण या परिस्थितियोंकी प्रतिकूलताके कारण इसे न सीख सके हों वे भी अपने लिये इसमें यथोचित क्षेत्र प्राप्त कर सकते हैं।

चित्रकारोंकी श्रेणियां

चित्रकलामें दिलचस्पी लेनेवालोंको दो विभागोंमें बांटा जा सकता है। पहली श्रेणीमें रंगीन चित्रोंका निर्माण, मूर्त्तिनिर्माण या इसी प्रकारके और भी विषय आ सकते हैं। दूसरी श्रेणीमें वे लोग आते हैं जो चित्रकलाके जरिये धनोपार्जन भी करना चाहते हैं। इसमें अधिकांश कार्यका सम्बन्ध ऐसे कार्योंसे है जिनको प्रेसोंमें दिया जा सके।

जहां तक चित्रकलाकी सहायता लेकर धनोपार्जन करनेका प्रश्न है प्रेससे सम्बन्ध रखनेवाला कार्य करना ही श्रेयस्कर है। आजकलका समय इस प्रकारका है कि प्रेस सम्बन्धी चित्रकलाके विभागमें ही कार्य करके आर्थिक प्रश्न हल किया जा सकता है। जिस व्यक्तिमें मौलिक योग्यता है और उसके बलपर चित्रोंका निर्माण करके वह लोगोंको अपनी कृतियां प्रदान कर सकता है वह उतना ही सफल है।

पत्रकारकलासे सम्बन्ध

आधुनिक पत्रकारकला चित्रकलाके बिना अधूरी है। चित्रकलाकी सहायतासे पत्रकारकला वृद्धि कर रही है। आप किसी भी समाचार पत्रको उठाकर देखिये, उसमें आपको विज्ञापन अवश्य देखनेको मिलेंगे। यदि विज्ञापनसे सम्बन्ध रखनेवाला एक आकर्षक चित्र भी उसके साथ बना दिया जाये तो उस विज्ञापनपर दर्शकोंका स्वाभाविक आकर्षण होता है। विज्ञापनोंके सिवा कहानियोंमें भी आवश्यक चित्र तैयार किये जाते हैं। इसके सिवा समाचारपत्रोंमें कार्टूनकला अपना अलग स्थान रखती है। इसका महत्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

यदि रेलवे स्टेशनके किसी बुक-स्टालपर आप दृष्टिपात करें तो आपको चित्रकलाके महत्वका अनुमान बहुत थोड़े समयमें हो सकता है।

प्रेस सम्बन्धी चित्रोंमें और तिरंगे तैल चित्रोंमें यही अन्तर है कि तैल चित्रोंको तैयार करनेपर स्थायी चित्रकलाका कार्य हो जाता है और समाचारपत्रोंके लिये जो चित्र तैयार किये जाते हैं, वे अल्पकालके लिये होते हैं तथा प्रतिदिन नये चित्र बनाना आवश्यक है।

सामने दिये गये चित्रोंसे आपको पूर्ण रूपसे विदित हो जायगा कि चित्रकला सीखनेके लिये किसी विशेष मेहनतकी आवश्यकता नहीं है। स्वाभाविक पद्धति द्वारा, साधारण लाइनोंसे लगाकर लैण्डस्केप पेन्टिङ्ग, इमारतोंकी चित्रकला तथा अन्य प्रकारके सभी चित्र अच्छी तरह सीखे जा सकते हैं। ड्राइङ्ग सीखनेमें कोई जादू नहीं है, कोई ट्रिक भी नहीं है। यदि यथोचित रूपसे चित्रकला सिखायी जावे तो प्रत्येक व्यक्ति एक अच्छा चित्रकार बन सकता है। यह बात निर्विवाद रूपसे कही जा सकती है कि चित्रकारकी सफलता उसकी मौलिकतापर निर्भर रहा करती है। वर्तमानकालकी दुनिया तो मौलिक चित्रोंकी मांग ही करती है।

सारांशमें चित्रकला केवल रङ्गोंका कौतूहल मात्र ही नहीं है, और न वह कोई ऐसा विचित्र कार्य है जो लोगोंके लिये आश्चर्यका विषय हो, लेकिन वह एक ऐसा माध्यम अवश्य है जो सबके हृदयोंपर अपना प्रभाव जमा सकता है। यह केवल मनोरंजनका साधन नहीं है और न शान्तिकालमें लखपती लोगोंके लिये समय बहलानेका एक साधन ही है। यह तो आधुनिक समयमें जबकि समस्त विश्व अशान्तिके वातावरणसे घिरा हुआ है, हमारे लिये अपने दुखी विचारोंको हलका करनेमें सहायक हो सकती है। प्रत्येक स्त्री पुरुषको इसमें आत्मानन्द मिल सकता है।

प्रकाशकोंका ध्यान भी इस ओर आकर्षित किया जाना अनावश्यक न होगा। यदि वे चित्रकला विषयक पुस्तकोंका प्रकाशन सचित्र रूपमें करें और उसमें अन्तर्राष्ट्रीय आलोचना और समालोचनाका भी ... रखें तो लोगोंको इस विषयकी अधिक ... सामग्री उपलब्ध हो सकेगी। पश्चिमी देशों में तो विद्यार्थियोंके लुटपनसे ही इस बातका पता लगानेकी कोशिश की जाती है कि उसमें कौनसी कला प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूपमें विद्यमान है। रुचिके अनुकूल विद्यार्थियोंको प्रोत्साहन दिया जाता है इसलिये वहां प्रत्येक विषयके कुशल आ... कार अधिक मात्रामें पाये जाते हैं।

...रतके प्राचीन राज्य

(११ वें पृष्ठका शेषांश)

...रहती है। वे अपने और पदाधिका... के लिये भव्य-प्रासादका निर्माण ... थे, देवताओंके लिये सुन्दर मन्दिर, ... लिये नहर, अच्छी सड़कें, पुल, आदि। ... हितार्थ—चन्द्रगुप्त मार्यकी व्यवस्था ...ढ़िया थी। वर्तमान सरकारके दृष्टि- ... देखनेपर पता चलेगा कि उन दिनों ...धिकारी सौन्दर्य एवं ऐश्वर्यके सामान ... जनताका पैसा खुले हाथों खर्च ... और जनताकी उपयोगिताके प्रति ...ध्यान देते थे। प्रत्येक युगके विदेशी ...ने भारतीय राजाओंकी ऐश्वर्यलिप्सा ...-कण्ठसे आलोचना की है!

स्वास्थ्य और शिक्षा

...प्राचीनकालीन सरकारने कभी भी प्रजा ...स्वास्थ्यकी ओर ध्यान देना, अपना ...नहीं समझा और न शिक्षाके प्रसार ...ही वे कुछ प्रशंसीय कार्य कर सके। ...का विषय है कि प्राचीन भारतके राजाओंने धार्मिक वर्गोंकी शिक्षाके ...भी नहीं उठा रखा। प्राचीनकाल ...संसारके लोग शिक्षाको धार्मिक ...पढ़नेका साधन भर समझते थे, ...पुरोहित लोग ही। बौद्धोंके समयमें ...शिक्षा, निम्न-वर्गके लोगोंतक ...थी चूंकि उनका धर्म शिक्षाके ...र था। हिन्दू राजाओंके प्रिय पात्र ...कारण, ब्राह्मणोंको देशके, मनचाहे ...जीवन-यापनके लिये प्राप्त थे। आज ...भारतमें प्राचीन ब्राह्मणोंके वंशज सुखमय-जीवन यापन कर रहे हैं। सदासे ही चतुर व्यक्तियोंसे घिरे रहनेको भारतीय राजा इच्छुक रहे हैं, इसीलिये चन्द्रगुप्त विक्रमादित्यका दरबार आज भी प्रसिद्धिका विषय है चूंकि वहां नौ रत्न रहते थे जिनमें से एक कालिदास भी थे जिनके जादू भरे छन्दोंसे गुप्त-युगकी नयी ज्योतिकी सूचना मिलती है। भारतवर्षकी संस्कृतिका पूरा निचोड़ हम उनकी रचनाओंमें पाते हैं।

इस प्रकार कालिदासको हम गुप्त-युगीन कलाका पूरा प्रतिनिधि कह सकते हैं। उनकी सारी रचनाओंमें गुप्त-युगके आदर्शों की एक स्पष्ट झलक दीख पड़ती है। उनके नाटक 'अभिज्ञान-शाकुन्तल' की नायिका शकुन्तलाको जर्मन महाकवि गेटेने पृथ्वी और अन्तरिक्षकी माधुर्यका सार कहा है। गेटेने उसीसे प्रेरणा पाकर वर्तमान युगके यूरोपीय साहित्यमें एक नये ढङ्गके प्रेम और रसमय जीवन (रोमान्स) की धारा चला दी है।

भारतीय राजाओंकी मालगुजारी मुख्यतः जमीनके कर, और व्यावसायिक करोंसे प्राप्त होती थी। जब उन्हें धन की आवश्यकता पड़ती थी वे अपनी धनिक प्रजासे ऐसी आशा करते थे कि वे उन्हें उपहार-स्वरूप धन दें। भारतीय नियमों द्वारा देशकी सारी जमीन-जायदादका एकमात्र स्वामी—राजा ही समझा जाता था और कृषक उसके असामी-भर होते थे। समय-समयपर, लगानमें कमी-बेशी भी होती थी। धीरे-धीरे प्रजापर अनुचित दबाव डाला जाने लगा और रुपये बल-प्रयोगसे संग्रहित किये जाने लगे। इसीसे प्रजाकी सहानुभूति से आगे चलकर राजा वञ्चित हो गये और विदेशियोंके आक्रमण करनेपर, आत्म-समर्पणके सिवा कोई और मार्ग उन्हें न सूझा। बस !!

कुछ इधर उधर की

कौतुक बनारसी

कुछ दिन सानफ्रांसिस्कोमें नाटक हुआ। इसलिये कि दुनिया शान्तकी वीणा बजाये और ब्रिटेन अमेरिका और रूस अपने कानोंको पवित्र करें। कुछ दिन शिमलामें नाटक हुआ। इसलिये कि भारतीय नेता ऐसी स्वतन्त्रताकी ढोल बजायें जिसकी पोल ज्ञात ही न हो और लार्ड वावेल साथ-साथ एमरी भी मस्ती लें। लेकिन अपने रामके बाद कोई ऐसा ही अक्लका दुश्मन होगा जो न जानता हो कि इन नाटकोंका रट क्षेप कैसे हुआ। अपनेरामको अब इन नाटकोंपर विचार करते-करते बुखार तक आने लगा है।

* * *

अब अपनेरामको जीवनकी सारी चिन्ताओंको ताकपर रख देना पड़ेगा, इस चिन्ता के आगे कि ये नेता जो बाहर निकल आये हैं किस प्रकार फिर अपनी पूर्व स्थिति में आ जांय। यह तो हर कोई बिना जोर लगाये भी सोच सकता है कि एमरी साहब का निर्विघ्न व्यापार चलने देनेके लिये किसी नेताका बाहर फुदकना ठीक नहीं। कौन जाने कोई कुछ गालियां ही कहा बैठ।

* * *

जिन्दगीमें रस तभी है जब किसी बात को लेकर चख-चख रहे, संघर्ष रहे। हाथपर हाथ रखनेसे तो काई लग जानेका डर लगा रहता है। फिर जबतक किसी योजनाके पीछे रगड़ न हो, लीडरीकी गरमाहट न हो तो वह जोश क्या है बताशा है जो राजनीतिकी एक बूंद पड़ते ही गला जाता है। आप लोगोंको जानकर खुशी होगी कि अपने देशमें इस विशेषताकी रक्षा करनेके लिये जिन्ना साहबने औतार ले रखा है।

* * *

दुनियामें नेता तो होते ही हैं कुछ अंधा भी होते हैं। लियाकत अली जैसे नेता तकने भी कौतुकजीकी बातोंका समर्थन किया है। दूसरी बात, कुछ नेताके साथ-साथ 'जनता' में भी गिने जाते हैं। लेकिन आप लोगोंको सुनकर आश्चर्य होगा कि इनमें यह सब गुण तो हैं ही, अन्य अनेक गुण विराजते हैं। आप कभी कभी मुर्दोंकी पूजा तो करते ही हैं बालकोंकी भी मन भावपूर्वक कर लेते हैं। अपनी-अपनी विशेषता है।

* * *

लड़ाई जब खतम हो जायगी तो हिन्दुस्तानकी रहन-सहनका स्तर ऊंचा बनानेके लिये यह भी आवश्यक है कि कोई एक ऐसा कानून या आर्डिनेन्स बना दिया जाय जिससे सभी लोग कमसे कम कोट-पतलून-नेकटाई और हैट तो जरूर लगाने लगें। बिना इन चीजोंके हिन्दुस्तानी जचते नहीं।

* * *

बम्बईसे एक अखबार निकलता है। इसके कुछ लड़के जी-जान लगाकर इसे निकालते हैं। लड़के हैं तो क्या, लेकिन जानते बहुत कुछ हैं। गाली तो साहब इतनी मजेमें दे लेते हैं कि कोई भी सुनकर एक बार अपने कान बन्द कर ले। सो साहब, इन लड़कोंने इधर वाइके पं० पद्मकान्तजीको ऐसी मधुर-मधुर गालियां दी हैं कि एक बार तबीयत नाच उठती है। ऐसी गालियोंको सीखनेके लिये जहांतक अपनेराम अनुमान करते हैं, इन लोकयुद्धी बालकोंको औरतोंसे हाथ चमका-चमका कर बहुत कुछ सीखना पड़ता है। गाली देनेमें कभी कभी तो बहुत मजा आता है।

* * *

आखिर स्वामी सहजानन्दपर सरकारी माया फिर हो गयी। वह तो अपनेराम बहुत पहले ही कहते थे कि कम्यूनिस्टोंसे छेड़छाड़ करनेमें कभी-कभी बहुत नुकसान है और ऐसा वैसा नुकसान भी नहीं, पूरे देशका नुकसान। स्वामीजी जानते भी नहीं थे कि सरकार और कम्यूनिस्टोंमें कोई सम्बन्ध भी है।

* * *

अञ्जाम न जाने क्या होगा ?

इस राजनीति की लीलाका
परिणाम न जाने क्या होगा ?
कुछ अफसर हैं, कुछ लीडर हैं
कुछ मुरगे हैं, कुछ तीतर हैं
इस पालिटिकम के 'जंण्डर' में
कुछ 'कामन' हैं, कुछ 'न्यूटर' हैं
जब बेकारों की टोली है
तब काम न जाने क्या होगा ?
जब 'बुढ़िया' काबिल होती है
तब पदवी हासिल होती है
जब नीति दुरंगी चलती है
तब मटिंग महफिल होती है
खिदमत तो काफी हो जाती
'इल्हाम' न जाने क्या होगा ?
कुछ नेता निर्मल बने हुए
कुछ नेता हलचल बने हुए
सरकारी सुथरे बिस्तर पर
कुछ नेता खटमल बने हुए
लो, नाम डुबा अखबारों में,
उप-नाम न जाने क्या होगा ?
लो, जीवनको कार्टून कहो
लो, यौवन को मजमून कहो
शैतानी मुंहसे हाकिम के
लो, जो निकले कानून कहो
जब हाकिम है, छल-छद्मोंका
गोदाम न जाने क्या होगा ?

—कौतुक बनारसी

हिन्दीमें 'लोकयुद्ध' नामका अपने ढङ्ग का गाली मार्का एक पत्र निकलता अवश्य है, लेकिन अङ्गरेजीमें 'डान' की बराबरी करनेवाला अभी कोई नहीं। बात यह है कि हिन्दुस्तानकी समूची स्वतन्त्रता सच कहिये तो सिर्फ 'डान' और 'लोकयुद्ध' के पास ही है भी। इनको जिन्ना साहब और जोशीका वरदान उसी जनममें मिल जो गया था। पता नहीं, इन अखबारोंके सम्पादकोंको स्वर्गमें रखनेके लिये कैसी तैयारी हो रही होगी।

* * *

शिमलामें सम्मेलन हो गया। अब उदयपुरमें होगा। लेकिन फर्क इतना ही होगा कि उदयपुरमें केवल वे ही प्रस्ताव फिलहाल पास किये जायेंगे जिनसे जनता की आंखोंमें सिर्फ धूल झोंकनेकी ही गुंजायश हो। शिमलामें तो पत्थर तक आंखमें डालनेकी तैयारी हो रही थी लेकिन जिन्ना साहब सफल न हो सके।

बुर्किंगाके प्रेमी

(६९ पृष्ठका शेषांश)

एक समय था, जब चीनी विवाह बड़ी धूमके साथ सम्पन्न होते थे और उनकी तैयारियोंमें अनेक दिन लग जाते थे। विवाहके दिन वधू वरके यहां जलूसके साथ लायी जाती थी। जलूसमें पुराने ढङ्गके बाजे तथा घण्टे बजते थे और आतशबाजियां छुड़ायी जाती थीं।

आधुनिक कालीन विवाह गिर्जाघरों, होटलों अथवा दफ्तरके विश्रामगृहोंमें सम्पन्न होते हैं। न कोई जलूस निकलता है और न वधूके आवागमनके किसी प्रदर्शनकी ही प्रबन्ध होता है। वर-वधू अभिभावकों तथा उपस्थित मेहमानोंके सन्मुख एक दूसरेको झुककर अभिवादन करते हैं और बड़ोंका आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। विवाहके उपलक्षमें दावतें दी जाती हैं, किन्तु गिने चुने लोगोंको साधारण तरीकेसे। विवाहके लिये वर-वधूका परिचय करानेवाले पुरोहितकी आवश्यकता अब भी पड़ती है। कुछ विवाहोंके सम्पन्न करानेके लिये उस समय मजिस्ट्रेटकी उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती है।

मधुयामिनी (honey moon) मनानेकी प्रथा आधुनिक युद्धके दिनोंमें अनेक कठिनाइयोंके कारण शिथिल सी पड़ गयी है। नव दम्पति एक हफ्ते दो हफ्तेकी छुट्टी लेकर छोटी सी यात्रा कर लेते हैं और किसी नये स्थानमें जाकर रङ्गरेलियां मना लेते हैं। इस प्रकारकी प्रथा पहलेकी अपेक्षा अब वहां अधिक प्रचलित हो गयी है। फिर भी वर्तमान युद्धजन्य कठिनाइयोंके बीच वहांके नव विवाहित चीनी युवक-युवतियां सुख और आनन्दसे अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

रूस किस ओर ?

(६ ठें पृष्ठका शेषांश)

इस मामलेको त्रिनेता सम्मेलनके लिये टरका कर रूसने अपने पक्षमें बड़ी भारी सुविधा प्राप्त कर ली है।

उपर्युक्त समस्यायें कुछ उलझती सी प्रतीत होती हैं और इन सबका हल रूस के पक्षमें ही होगा—ऐसी आशा की जा सकती है। कहना न होगा यदि इसी प्रकार हुआ तो रूसके मुकाबलेमें दुनियांकी सब बड़ी २ ताकतें भी न ठहर सकेंगी।

एक चीज और,—युद्धकालमें टैंजियर स्पेनके अधिकृत हो गया था। पर अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस उसे फिर अन्तर्राष्ट्रीय स्थितिमें लाना चाहते थे, किन्तु यह स्वीकार होनेपर स्पष्ट ही ब्रिटेनका भूमध्य सागर पर एकाकी प्रभुत्व हो जाता। अतः रूसने इस अवसरको हाथसे न जाने देना उचित समझा और टैंजियरकी समस्यामें स्वयं भी भाग लेनेकी प्रार्थना की और अब वह भी टैंजियरके भाग्य-निर्णायकोंमें हो गया है।

इस प्रकार सर्वतोभावेन विजयी होकर और जर्मनीका सबसे बड़ा हिस्सा पाकर भी रूस मित्रराष्ट्रोंकी ओरसे जापानके विरुद्ध युद्धमें नहीं कूदा इसका क्या कारण है, समझमें नहीं आता।

रूस युद्धमें कूदेगा ?

१—इस चार सालकी भयङ्कर लड़ाईमें रूसका जितना नुकसान हुआ है—रूसी आधार पर—यदि सारे रूसी और जर्मन मजदूर भी पुनर्निर्माणके कार्य पर लगा दिये जायं तो वह ९ सालसे पूर्व पूर्ण नहीं हो सकता। इस निर्माण कार्यके लिये ही रूसको अपनी कुछ सेनाएं भी भङ्ग करनी पड़ी है। और इसके लिए शस्त्रास्त्र अपरिमित होते हुए भी लड़ना सर्वनाशको बुलाना मात्र होगा।

२—रूसका युद्ध सच्चे अर्थोंमें जनताका युद्ध है। उसने सेनाओं और शस्त्रास्त्रोंके बल पर युद्ध नहीं जीता, जनताके बलपर जीता है। मास्कोके पास तक हट जानेपर जर्मनीको पराजित करनेमें जनताका गुरिल्ला युद्ध ही एकमात्र सहायक था, और सबसे बड़ी चीज तो यह कि इतनी भीषण आपत्तियोंमें भी जनताका अपने नेताओं पर पूर्ण विश्वास रहा। आज जब जनता स्वयं युद्धसे ऊब चुकी है तब पुनर्निर्माणके बजाय सर्वनाशका महंगा सौदा करना कहांतक उचित है, यह रूसी अधिकारी स्वयं समझते हैं।

३—इस समय रूसकी सारी मांगे पूरी हो चुकी हैं। चीनकी समस्या उलझ सी रही है; अतः वह व्यर्थ ही अपनी दशवार्षिक अनाक्रमण सन्धिको जापानसे लड़कर न तोड़ेगा। चीनसे नवीन सन्धि हो जानेपर वह उसे शस्त्रास्त्रकी मदद तो जरूर देगा किन्तु स्वयं जूझना कभी पसन्द न करेगा।

४—ऐसी सम्भावना भी है कि शायद इतना नुकसान उठा कर भी रूस मित्रराष्ट्रोंके दूसरे मोर्चेके मुकाबिलेमें युद्धमें सीधा न कूदेगा। परन्तु, रूस यह भली प्रकार जानता है कि तीन सालके रोने पीटनेके बाद जब पतनोन्मुख रूस विजयी हो रहा था उस समय केवल रूसकी बढ़ती हुई बाढ़को रोकने तथा लूटमें माल बंटानेके लिये ही उन्होंने 'दूसरा मोर्चा' खोला था। अतएव वह युद्धमें कूद कर अपनी व्यर्थ सहानुभूति न दिखायेगा।

अमरीकाकी चिन्ता

इन्हीं बातोंको देख कर अमरीकाको चिन्ता होती जा रही है कि पूर्वका क्या होगा ? रूसके उपेक्षापूर्ण व्यवहारको देख कर वह उसे खुश करनेकी नीतिमें लग गया है। उसने समाजवाद विरोधी प्रचार सर्वथा रोक दिया है और वह दिन-रात रूससे अच्छे सम्बन्ध स्थापित करनेको उत्सुक है।

आजका रूस

रूसको अब किसी स्वार्थके लिये 'प्रार्थना' नहीं करनी पड़ती, उसकी मांगोंका बहुत कम विरोध होता है। अपनी बढ़ी हुई शक्तिको देख कर रूसकी साम्राज्यवादी बुद्धि जग पड़ी है। यद्यपि नव विजित प्रदेशोंमें वह स्वशासन दे देता है फिर भी अपने व्यापार आदिका ध्यान रखते हुए उन्हें स्वतन्त्र नहीं करना चाहता। उसकी आर्थिक मांगोंके साथ ही साथ प्रादेशिक मांगें भी बढ़ती जा रही हैं। साम्यवादी नीति केवल अन्दरूनी रूसके लिए रह गयी। 'थर्ड इन्टर नेशनल' तो पहले ही, सन् ४१ में टूट चुकी है। रूस स्थित आस्ट्रेलियन दूतके अनुसार तो रूसमें भी साम्यवाद नहीं रह गया। वहां भी फौजी तथा साधारण अधिकारियोंको सब वस्तुएं सुलभ हैं तथा गरीबोंको कुछ भी सुलभ नहीं। श्रेणी भेद पुनः जागृत हो रहा है। यदि ये बातें तथ्य न भी हों तो भी इसमें सन्देह नहीं कि रूस समाजवादी से साम्राज्यवादी होता जा रहा है। उसे अब अपने आदर्शोंके प्रति मोह नहीं है। जहां और जिसके साथ उसका स्वार्थ सिद्ध होगा, वहा उसकी गति है। यही कारण था कि विरोधी सिद्धान्त होते हुए भी उसने फासिस्ट जर्मनीके साथ सन्धि की ! बादमें, कट्टर विरोधी होते हुए भी केवल जर्मन-विरोधी होनेके कारण उसने ब्रिटेन और अमेरिका जैसे साम्राज्यवादी देशोंसे सहयोग लिया। और, साम्राज्यवादीका साथी ही कौन होता है ? उसके वायदोंका महत्व ही क्या होता है ? इस परिस्थिति में प्रश्न उठता है रूस किस ओरसे लड़ेगा ?

जापानकी ओरसे ?

रूसके प्रायः उपर्युक्त सभी स्वार्थ लगभग पूरे हो चुके हैं। पर फिर भी दो तीन निर्णायक प्रश्न बाकी हैं जैसे, अलप्पो (सीरिया) की मांग, ईरान और ईराकके तैल क्षेत्रोंकी मांग, दर्रे दानियालकी मांग तथा आस्ट्रियन सोशलिस्ट गवर्नमेण्ट स्वीकार करनेकी मांग। ये मांगें ऐसी नहीं है जिनके लिये रूसको मित्रोंका मुखापेक्षी रहना पड़े। अतः प्रश्न उठता है कि वह चीनी समस्याका हल करके क्या जापानकी ओरसे रणक्षेत्रमें कूदेगा ?

अभी स्पष्ट किया जा चुका है कि रूस लड़ाईमें न पड़ना पसन्द करेगा। पर फिर भी यदि वह इस सम्भावनाके अनुसार जापानकी ओरसे लड़े भी तो उसे ईराक, ईरान, सीरिया तथा टर्कीके अभिलषित प्रदेश पूरी तरहसे मिल जायेंगे। केवल पश्चिममें खतरा है। यद्यपि फ्रांस उसके साथ मिला हुआ है फिर भी ब्रिटेन और अमेरिका ऐसी हालतमें स्वयं न लड़ कर अपने-अपने प्रदेशस्थ जर्मनोंकोही शस्त्रास्त्रसे सज्जित कर देंगे और रूस वही भूल कर बैठेगा जो जर्मनीने की थी।

पर फिर भी ऐसी सम्भावना है अवश्य। रूसके पास सागरकानटके बराबर तथा नितान्त अनुपयोगी है। इस समय अमरीका और ब्रिटेनकी जलसेना संसारमें सबसे बड़ी है। ऐसी दशामें यदि जापान हार जाय तो सारे संसारमें केवल अमेरिकन या ब्रिटिश नौ सेना ही रह जायेगी और पूर्वमें 'सतुलन' न होनेके कारण तथा इन राष्ट्रोंसे सैद्धान्तिक मतभेदके कारण रूसको सदा ही आक्रमणका भय रहेगा। अतएव उपरोक्त आशङ्का की जाती है।

मित्रोंकी ओरसे ?

यदि रूसकी प्रादेशिक मांगें पूरी हो गयीं तो भी रूस जापानके विरुद्ध सक्रिय भाग नहीं लेगा। हां, आर्थिक सहायता तो अवश्य कर सकता है। वह अपने इन साथियोंके भाव बखूबी जानता है। वैसे तो त्रिनेता बर्लिन सम्मेलनमें इस बातका निर्णय हो जायगा—तथापि परिस्थितियां यही कह रही हैं कि रूस ब्रिटेनकी ओरसे लड़ कर अपने सिद्धान्तों, अपनी प्रजाकी शान्ति तथा पूर्वसे जापानी आक्रमणोंके सम्मुख अपने राष्ट्रको बलि न होने देगा।

वह जापानकी ओरसे न लड़े यह निश्चित हो सकता है, वह मित्रोंको आर्थिक सहयोग दे यह भी हो सकता है, किन्तु ब्रिटेनकी ओरसे लड़ेगा यह भी असम्भव है। होता क्या है, यह भावीके गर्भमें है।

Regd No. C. 2229

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वामित्र प्रेस, १४।१ ए, क्रम्मू ... स्ट्रीट, ... सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक
विश्वमित्र
THE WEEKLY VISHWAMITRA

—४८ कलकत्ता, १४ नवम्बर १९४५, Calcutta, NOVEMBER 14, 1945 मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

मधुसंचय

नया भीमकाय विमान

शान्ति कालमें हवाई यात्राके प्रसारकी ...ओं पर बहुत पहलेहीसे अमेरिकामें ...र होने लग गया था। सान डीगो (...लीफोर्निया) में एक हवाई सर्विसके वायुयान निर्माण करनेवाले कारखानों ...वक्त एक ऐसा वायुयान तैयार किया ...या है जिसमें बहुत सुविधाजनक ढंगसे मुसाफिर यात्रा कर सकेंगे। यदि इसे ...क यातायातके लिये उपयोगमें लाया ...तो एक साथ ४०० सैनिकोंको इसमें ...कर एक जगहसे दूसरी जगह ले जाया ...जायेगा। ६ इंजन इसमें लगे रहेंगे और ...शक्ति ५००० घोड़ोंके बराबर होगी। वायुयानकी लम्बाई १८६ फीटसे भी ...होगी और इस पर २६५००० पौण्ड लादा जा सकेगा। इतने विशाल वायु-...न आज तक पहले कभी निर्माण नहीं ...था। उक्त वायुयान द्वारा एक घण्टेमें ...मीलकी रफ्तारसे मंजिल तय किया सम्भव हो सकेगा।

...क स्तम्भोंसे स्वर्गकी ओर

...आकाशमें ऊंची उठी हुई कोई बड़ी ...र अपनी शान व सजधजसे आपका ...ह सकती है। उसके निर्माणके मूलमें ...इतिहास छिपा हुआ है, इसे देख कर ...उसकी भी स्मृति हो सकती है। ...इन दोनों बातोंके अलावा उसका ...और भी उपयोग हो सकता है—केवल ...ख लोगोंके लिये। और आप आश्चर्य ...गा कि वह है—आत्महत्या। अभी ...दिनों कलकत्ताके मैदानमें ओक्टर-...स्मारक-स्तम्भका भी कुछ ऐसा ही ...हुआ है। १५२ फीट ऊंचे स्तम्भ पर ...दो एक आदमी चढ़े और उन्होंने ...छलांग मार कर सीधे स्वर्गकी राह ...पकड़ी, सन् ४२ में यह स्तम्भ पुलिसने ...विभागको सौंपा था, लेकिन उक्त ...स्मारकके सीढ़ियोंके दरवाजेकी ...दी गयी और वह तबसे अब तक नहीं ...। इस बीच जो दुर्घटनायें इस ...जगह घटी हैं उन्हें देखते हुए ...इस स्तम्भ तक जानेके लिये इधर कुछ दिनोंसे साधारणतया जनता पर रोक लगा दी है। अब इसे देखने के लिये जिन व्यक्तियोंको अनुमति-पत्र मिल चुका होता है, वही लोग जा सकते हैं। हां, यह अलग बात है कि जिन व्यक्तियोंको इसपर चढ़नेके लिये 'पास' दिये जाते हैं, उन्हें भी यहांसे आत्महत्या करने अथवा किसी तरह स्वर्गका रास्ता नापनेकी इजाजत अब भी नहीं दी जाती।

(कोर्ट मार्शलके अध्यक्ष मेजर जनरल ए० बी० ब्लक्सलैंड)

भारतीय राष्ट्रीय सेनाकी रक्षा समितिके सदस्य (बायीं ओरसे) श्री भूलाभाई देसाई पण्डित नेहरू, डा० काटजू और श्री रघुनन्दन शरण।

बोरिये-बिस्तरमें बीबी

लगातार चार दिन तक एक अमेरिकन नाविक अपनी पत्नीको अनजाने अपने सामान के साथ जहाजमें तब तक बांधे रहा जब तक कि समुद्री बुखारने वहां इस बंधनसे छुट्टी पानेके लिये उस बेचारीको खुद ही विवश नहीं कर दिया।

उक्त अमेरिकन लड़कीने इस नाविकके साथ तब विवाह किया था जब कि वह सेनाके सदस्य के रूप में इंगलंण्डमें था। कुछ दिन बाद वह सेनासे निकाल कर अमेरिका भेज दिया गया, लेकिन एक व्यापारी बेड़ेपर उसने नौकरी कर ली और फिर वह अपनी पत्नीसे मिलनेके लिये इंगलैण्डके लिये चल पड़ा। उसकी पत्नी भी इस बीच उससे मिलनेके लिये आतुर थी अतः एक तरफ जब उसका पति इंगलैण्ड आते-जाते वक्त उसकी खोज कर रहा था, वहीं दूसरी तरफ एक दिन वह खुद भी एक जहाजमें छिप कर अमेरिकाके लिये रवाना हो गयी। लेकिन इत्तिफाककी बात है, रास्तेमें जब मल्लाहोंने किसी वक्त देखा कि उनके निर्जीव सामान में एक तरफ कोई सजीव प्रतिमा भी पंख फड़फड़ाती नजर आ रही है, तो यह स्वाभाविक ही था कि उनका ध्यान उस ओर आकर्षित होता।

सारे सामानके बीच पड़ी हुई लड़कीकी देह समुद्री बुखारसे गरम हो रही थी। जहाजके प्रधान मल्लाहने उसे उठाया। लड़कीने भी धीरे-धीरे अपनी आंख खोली। लेकिन दूसरे ही क्षण मल्लाहको यह समझते देर नहीं लगी कि खुद उसकी पत्नी ही इस वक्त उसकी बाहोंमें है—वह, जिसे खोजते-खोजते थक जानेके बाद वह वापस अमेरिका लौट रहा था। लड़कीने भी सब कुछ देखा, समझा और उसके गुलाबी ओठों पर मुस्कराहट खिल कर रह गयी।

सदियों पुरानी तश्तरियां

सिकन्दरियाके निकट सेरापियम नामक स्थानमें सिकन्दरिया म्यूनिसीपैल्टीके अजायब घर को सोना, चांदी, कांसा और कांच की दस तश्तरियां मिली हैं। सोनेकी तश्तरी पर यूनानी भाषाका शब्द अंकित है। पुरातत्वके वेत्ताओंका मत है कि यह प्टोलमी चतुर्थके कालकी हैं, जो प्टोलमी तृतीय और महारानी बारनानीसका पुत्र था। उसने यह तश्तरी हिपोक्रेटास देवताके मन्दिरमें चढ़ाई थी। यह भेंट राजाके एक स्वप्न देखनेके बाद उसके देशसे की गयी थी। जिस मंदिर में यह तश्तरी चढ़ायी गयी थी वह पोम्पीआईके उत्तरमें स्थित है।

कविता

:: राही ::

...ही भला किसी का मीत ?
...उमड़-गरज कर बादल छाए, चले गए सब रीत !
दो पल मोह की फुसफुस बातें
कल्प-कल्प तक बिछोह-रातें
पथिक यही क्या प्रीति की रीत ?
यदि जाना ही था ऐसे तो
आए थे इतने समीप क्यों ?
...आज विकल सुधि में कंप-कंप कर रह जाते ये गीत !
पलकों की भीगी रोमाली
आंखों ने निज छवि-निधि पाली
...फिर-फिर घिर-घिर कर आता है बीत गया जो अतीत !
और आज जब शीत......
...पथ पर बिखरे हैं पतझर के अमित पत्र ये पीत !
मैं चाहूं हूं प्रिय आ जाते
रोम-रोम पर यों छा जाते
...तो मैं हार-हार में समझ चलूं जीत मन चीत !
राही कब किस-किस का मीत !

—प्रो० प्रभाकर माचवे, एम० ए० साहित्यरत्न

अज्ञात-वेदना

न जाने भरी क्यों विकलता हृदय में
...में धवल चन्द्रमा मुसकराया।
...में नवल दीप भी जगमगाया।
...में सरल किन्तु उल्लास छाया।
बंधा हूं विपुल वेदना के वलय में।
न जाने भरी क्यों विकलता हृदय में।
...के खिले फूल भी चांदनी है।
...निशा ! आज मधुमय बनी है।
...तो मगर यह बड़ी अनमनी है।
न स्वर भर सका मैं प्रकृति-गीत लयमें।
न जाने भरी क्यों विकलता हृदय में।
...चन्द तो सिन्धु में ज्वार आया।
...ही हृदय में उमड़ प्यार आया।
...एक मैं, जो कि भव-भार पाया।
सभी हर्ष मय जब कि ऐसे समय में।
न जाने भरी क्यों विकलता हृदय में।

—श्री शील चतुर्वेदी

सिंधु में सांझ !

...या पतवार, हो गये आज शिथिल दोनों कर।
...रक्षा ! तुम्हीं पर मेरी नौका की गति निर्भर॥
रज्जु-रहित :पालना अमित लहरों पर डोल रहा है।
मुझे निगलने सिंधु-ज्वार मुख अपना खोल रहा है॥
...तरंगे आतीं सम्मुख गरज-गरज कर।
...रक्षा ! तुम्हीं पर मेरी नौका की गति निर्भर॥
...आग लग गयी है क्या देखो, दूर कहीं उस जल में।
...अरे सबक रवि को भी इसने दबा लिया है तल में॥
...मय, मैं निर्बल, लहरें चञ्चल नौका जर्जर।
...रक्षा ! तुम्हीं पर मेरी नौका की गति निर्भर॥

—श्री भरत व्यास

दिवाली

यह दिवाली कौन मनाये ?
दुख का तम है दूर दूर तक,
सुख की ज्योति कहीं हंसती है,
कब से भीगी दीप-शलाका,
निज फूटी किस्मत रोती है,
दीप पड़ा, पर साधन खाली,
सूखी बाती कौन जलाये ! यह०
अन्तर में कुछ पीर छिपाये,
गम के आंसू को पी पी कर,
खोया सा, जो खोज रहा हो,
अपने पथ पर मर मर जीकर,
असमय का श्रृंगार मनोहर,
इस मातम में कौन सजाये ! यह०
विद्युत-दीप जले कुछ घर में,
लेकर व्यंग-हास शोषण का
झोपड़ियों के दीप बुझे हैं,
हाहाकार छिपा मानव का,
उन लाखों की जलती ज्वाला,
दीप जला कर कौन बुझाये ! यह०
जहां दिवाली के बदले में,
नंगों का नर्तन होता हो,
जहां हास के कुछ महलों में,
भूखों का क्रन्दन पलता हो,
लेकर कोरा स्वांग वहां से
दिवाली का कौन मनाये ! यह०
मिटते जहां पतिंगे बन कर,
आजादी के दीवाने हों,
जलते जहां मिलन के पहले,
मूक निडर ये परवाने हों,
उन बिछुड़े की चिर समाधि पर
हंस कर आंसू कौन बहाये ? यह०

—श्री रणधीर साहित्यालंकार

मैं मिटता जाता हूं प्रति पल !

तारे छिप जाते अम्बर में,
लहरें मिट जाती सागर में,
वीणा के स्वर लय हो जाते,
जब मुक्त पवन की सर-सर में,
मैं भी चिन्ह मिटा कर अपने जग में लय हो जाता अविरल !
कुसुमों का दो क्षण का यौवन,
दो क्षण का भ्रमरों का गायन,
अब दो क्षण में ही स मित है,
जिनकी धड़कन का मधु कंपन,
दो क्षण को प्रिय का बंदी कर मैं भी थक जाता बन दुर्बल !
जिन तरुवर में फूल खिले थे,
पल्लव-दल जब झुक हिले थे,
रसमय हर डाली-डाली थी,
उस वैभव, मस्ती आन मिले थे,
पर सब झरते जाते हैं मैं झरता जाता मौन सरल !
दिन छिपता होता परिवर्तन,
निशि ढलती जाती है प्रति क्षण,
युग बीत रहे अपनी गति से
ले जीने का मूक प्रलोभन,
मैं भी अपनी गति पर स्थिर हो बढ़ता जाता आगे ही चल !
भू का कण कण हो क्षत-विक्षत,
सागर बन जाते हैं पर्वत,
गिरि बन जाते हैं सिन्धु गहन,
जग के अमिट नियम से आहत,
मैं भी अपने पथ से मिट कर रह जाता शबनम सा कोमल !

—श्री महेन्द्र बी० ए० विशारद

परहित बस जिनके मनमाही।
तिनकहं जग दुर्लभ कछु नाहीं।

वोट किसको ?

——:oo:——

केन्द्रीय व्यवस्थापिका परिषदका निर्वाचन हो रहा है और शीघ्र ही प्रान्तीय व्यवस्थापिका परिषदोंका भी निर्वाचन प्रारंभ हो जायगा। इस बारके लिये निर्वाचन पिछले निर्वाचनोंकी अपेक्षा अनेक दृष्टियोंसे अधिक महत्वपूर्ण है, इसलिये मतदाताओंपर अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर उत्तरदायित्व है और उन्हें सतर्कतापूर्वक काम लेनेकी आवश्यकता है। भारतके सम्बन्धमें ब्रिटिश सरकारने शिमला सम्मेलनकी विफलताके पश्चात जो घोषणा की है, उसके अनुसार भारतके भावी विधान-निर्माणके लिये विधान-निर्मात्री परिषद्‌के गठनकी सम्भावना है और व्यवस्थापिका परिषदोंके सदस्य उक्त विधान निर्मात्री परिषदमें महत्वपूर्ण भाग लेंगे, इसलिये भारतके भावी विधानमें दिलचस्पी रखनेवालों—भारतके भावी भाग्यनिर्माणमें सहयोग देनेवालों और भारतकी भावी कल्याण कामना रखनेवालोंपर यह उत्तरदायित्व आ गया है कि वे निर्वाचनोंमें सतर्कता, विवेक एवं देशभक्तिकी भावनासे काम लें और ऐसे व्यक्तियोंको ही अपना वोट देकर व्यवस्थापक निर्वाचन करनेमें सहयोग दें जिनके सिद्धान्तोंका आधार देशका कल्याण है, जिनकी नीति देश सेवाके आधारपर अवलम्बित है और जिन्होंने उक्त सिद्धांतों और उक्त नीतियोंको साहस, विवेक और त्याग से कार्यान्वित करनेकी क्षमता दिखलायी है।

निर्वाचन-क्षेत्रोंमें कांग्रेस, हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग तथा राष्ट्रवादी मुसलिम संस्थाएं उतरी हैं। हिन्दू महासभा एवं मुसलिम लीग साम्प्रदायिक संस्थाएं हैं जिनकी राजनीतिक 'महत्वाकांक्षाएं' देशमें साम्प्रदायिक शासनकी स्थापना और सरकारी नौकरियोंकी भिक्षा-याचना तक सीमित हैं। इन संस्थाओंके प्रतिनिधियोंसे कभी आशा नहीं करनी चाहिये कि वे कभी भी देशकी स्वाधीनताके लिये युद्ध करेंगे। क्यों कि स्पष्ट है कि वे सारे देशके लिये नहीं, मात्र अपने अपने सम्प्रदायों के लिये हैं, क्यों कि उनमें राजाओं, रायबहादुरों, राय साहबों एवं पूंजीपति सेठों, सरो, खां बहादुरों और खां साहबोंका ही प्राधान्य है और वही उक्त संस्थाओंका सूत्र-संचालन करते हैं। जनताके अधिकारोंसे वे घबराते हैं, जनताकी आर्थिक अवस्थाके सुधारसे वे घबराते हैं और जनता के अज्ञान पर ही उनका नेतृत्व है। युद्धकालीन परिस्थितिमें इन्होंने जनताको छलने और सरकारके कृपापात्र बने रहनेमें ही अपनी सारी शक्तियां लगायी हैं। ऐसेही लोगोंने प्रान्तोंमें गवर्नरी-शासनमें सहायता पहुंचायी है, उस समय देशके साथ विश्वासघात किया है जिस समय महात्मा गांधी मौलाना आजाद, सरदार पटेल एवं पंडित जवाहरलाल जैसे नेता और असंख्य कांग्रेस जन जेलके सीखचोंके अन्दर बन्द थे और उनकी अनुपस्थितिमें देश जिस समय भारी संकटोंसे गुजर रहा था। जिस समय देशमें चारों ओर लाठी प्रहार और गोलीकाण्ड हो रहा था, जिस समय मुट्ठी भर अन्नके लिये मासूम बच्चे लाखोंकी संख्यामें बलि हो रहे थे, जिस समय मातृ जातिकी लज्जा ढंकनेके लिये दो गज कपड़ेके लिये आर्तनाद हो रहा था और जिस समय लज्जा छिपानेके लिये दो हाथ कफनके अभावमें लाशोंको रातके घने अंधेरेमें श्मशान घाट पर पहुंचाया जा रहा था, उस समय ये राय बहादुर और राय साहब युक्त प्रान्तमें अत्याचारके प्रतीक सर मारिस हैलेटकी स्वर्ण-प्रतिमाकी स्थापनाका निर्लज्ज आयोजन करनेमें लगे थे, उस समय बंगालके ये हिन्दू मुस्लिम सेठ चोर बाजारोंमें जघन्य काण्डों द्वारा सोनेकी ईंटें एकत्र कर रहे थे। आज भी सारे देशमें जनताके दैन्यदारिद्रयका जो आर्तनाद सुनायी पड़ रहा है, आज भी अर्द्ध नग्नों पर गज भर कपड़ा मांगते समय जो लाठी प्रहार हो रहा है और आज भी सारे देशमें नर कंकालोंकी जो यह विशाल सेना दिखायी पड़ रही है। उसका मूल उत्तरदायित्व इन्हीं राय बहादुरों, इन्हीं खां बहादुरों और इन्हीं पूंजीपति सेठों पर है। अपने जघन्य काण्डों द्वारा ऐसे व्यक्तियोंने जनताके साथ और देशके साथ जैसा विश्वासघात किया है, वैसा शायद भारतके इतिहासमें और कभी नहीं हुआ और तब भी आज यही अर्थ-पिशाच और पद लोलुप जनताके सामने 'धर्म खतरेमें है'की आवाज लगा कर वोट मांगते समय तनिक लज्जित नहीं हो रहे हैं।

किन्तु जनता परिचित हो चुकी है ऐसे व्यक्तियों और ऐसे व्यक्तियोंके गिरोह से, जनता समझ चुकी है ऐसे गिरोहोंकी प्रवंचनाको और जनता जान चुकी है ऐसी संस्थाओंकी घातक नीतिको। यह साम्प्रदायिक संस्थाएं अपने मामूली स्वार्थोंकी पूर्तिके लिये देशको, देशकी जनताको—देशकी स्वाधीनता, आत्म सम्मान और गौरव को किसी समय भी बेच सकती है। विगत अगस्त आन्दोलनके समय इन्हीं साम्प्रदायिक संस्थाओंने जनताके साथविश्वासघात किया था, इसी मुस्लिम लीगने यहां आजादी के मार्गमें रोड़े अटकाये हैं और इसी हिन्दू महासभाके अध्यक्ष सावरकरने कितनी ही अपीलें निकाली थीं कि कस्तूर बा कोषतक में हिन्दू एक पैसा न दें। जिन संस्थाओंके चोटीके नेताओंके यह कारनामे हैं, उनके साधारण उम्मेदवारोंका क्या पूछना ? क्या कभी ये लोग भारतका हितचिन्तन कर सकेंगे ? ये लोग तो व्यवस्थापिका सभाओंमें भी जाकर सरकारकी पीठ ठोंकेंगे और विधान निर्मात्री परिषदमें भी ये सांप्रदायिक नेता 'हिन्दू राज' और'पाकिस्तान' का मल्लयुद्ध छेड़ कर विधान परिषदको भ्रष्ट और विफल कर देंगे। इसलिये मतदाताओंको सावधान और सतर्क हो जाना चाहिये। मतदाता अपना कर्तव्य पहचानते हैं, किन्तु उन्हें सतर्क और सावधान कर देना हमने अपना कर्तव्य समझा।

तो वे वोट किसको दें ? उत्तर स्पष्ट है कि उन उम्मेदवारोंको वे वोट दें जो अपनी वैयक्तिक स्वार्थ साधनाके लिये अपनी पद लोलुपताके लिये, अपने भाई बन्धुओंके लिये सरकारी ठीकों और नौकरियोंका जुगाड़ करनेके लिये परिषदोंमें नहीं जा रहे हैं। जो जा रहे है, देशभक्तिकी शपथ खाकर, देशकी स्वाधीनताका सिद्धांत लेकर और 'भारत छोड़ो'का दृढ़ निश्चय लेकर। ये कांग्रेस जन हैं जिन्होंने अपने अल्पकालीन मन्त्रि मण्डलों द्वारा जनता, किसानों और मजदूरोंका हित चिन्तन किया है, जिन्होंने जनताकी सेवा-व्रत अपनाया है और जिन्होंने गोलियोंका स्वागत करने के लिये सीना खोल दिया है। ये मौसमी नेता नहीं हैं जो जनताके अज्ञान पर पनपने और सरकारकी कृपा पर फूलते फलते हैं। अपने त्याग, अपने बलिदान और अपनी निस्पृह देश सेवासे कांग्रेसने देशमें स्थान और देशकी जनताकी श्रद्धा अर्जित की है और विदेशोंमें भारतकी प्रतिष्ठा और भारतीय जनताके आत्म सम्मानकी रक्षा की है। इस लिये मतदाताओंका पवित्र कर्तव्य है कांग्रेसजनों—केवल कांग्रेसी उम्मेदवारों को ही वोट देना। मतदाताओंको स्मरण रहे कि देशकी स्वाधीनताके लिये केवल कांग्रेसी उम्मेदवारही व्यवस्थापिका परिषदोंमें लड़ेंगे और वही सरकारकी प्रबल शक्तिसे मोर्चा ले सकेंगे। इस लिये कांग्रेसी उम्मेदवारोंके लिये प्रत्येक वोट देशकी स्वाधीनताके लिये है और उनके विरुद्ध प्रत्येक वोट देशकी पराधीनताके लिये है। सरकारका दावा है कि उसने १९४२ में ही कांग्रेसको कुचल कर समाप्त कर दिया है किन्तु हमें विश्वास है कि मतदाता एक स्वरसे कांग्रेसको वोट देकर उसे विजयी बना कर सरकारके उक्त दमन और दम्भका करारा उत्तर देंगे। यही उनके आत्म सम्मान, देशके आत्म सम्मान और भारतीय राष्ट्रीयता एवं भारतीय स्वाधीनताके आत्म सम्मानका तकाजा है। इस लिये वोटरो कांग्रेसको—केवल कांग्रेसको—एक मात्र कांग्रेसको वोट दो।

युद्ध या शान्ति ?

सेनफ्रान्सिसको सम्मेलनमें रूस, अमेरिका और ब्रिटेनमें मौलिक सिद्धान्तोंको लेकर जिस मतभेदकी झलक मिली थी, पोटस्डममें उक्त तीनों राष्ट्रोंकी महत्वाकांक्षाओंका जो द्वन्द्व हुआ था और लन्दन वैदेशिक-सचिव-सम्मेलनमें उनमें जो मल्लयुद्ध हुए थे, उनके आधार पर आशंका की जाने लगी थी कि महान् राष्ट्रत्रयके मौलिक सिद्धान्तोंके मतभेद और उनकी महत्वाकांक्षाओंका संघर्ष युद्धोत्तर कालीन विश्वके लिये मंगलकारी नहीं हो सकता और विश्व-शान्तिकी समस्या भावी आशंकाओंकी सम्भावनाओं से पूर्ण है।

और इस सप्ताह घटनेवाली घटनाएं उक्त आशंकाका समर्थन करती हैं। रूसके वैदेशिक सचिव मो० मोलोटोवने विगत ६ नवम्बरको लाल क्रान्तिकी २८ वी ... पर भाषण करते हुए अणु-बम सम्बन्धी ... रिकाकी उस नीतिको आलोचना की ... अनुसार प्रेसिडेण्ट हैरी ट्रूमन अणु ... रहस्योंको गुप्त और तत्सम्बन्धी ... पर एकाधिपत्य बनाये रखना चाहते ... मो० मोलोटोवने कहा कि, "युरो ... के विनाशके पश्चात् यूरोपके ... तानाशाही एवं अर्द्ध तानाशाही ... गणतन्त्रात्मक शासन प्रणालीकी ... हुई है अतः ऐसे देशोंकी सहायता ... चाहिये, न कि हस्तक्षेप।" मो० मो... का संकेत पोलैण्ड, बलगेरिया तथा ... की ओर है जिनकी सरकारोंपर ... रूसका प्रभाव है और जिन्हें ... अमेरिका स्वीकार नहीं करना चाहते ... बेविनने गत ७ नवम्बरको पार्लियामेंट ... आव कामन्समें ब्रिटेनकी वैदेशिक ... लेकर होनेवाली बहसके सिलसिले ... कि यूरोपके कितने ही राष्ट्रोंके साथ ... हासिक एवं सांस्कृतिक आधारों पर ... का घनिष्ट सम्पर्क है अतः ब्रिटेनको ... सम्बन्धमें बोलनेका हक है। स्पष्ट है ... सम्बन्धमें रूस और ब्रिटेनमें मतभेद ... अब तक ब्रिटेनके रूसकी कुछ भी ... करके रूसने उक्त अंचलोंमें अपनी ... नीतिका सञ्चालन किया है और ... सम्मेलनमें मि० बेविनने मो० मोलो... इस प्रगतिकी तुलना हिटलरी नीति ... जिसके प्रतिवादमें सम्मेलनका ... करनेकी धमकी देने पर मि० बेविनको ... टोवसे क्षमा-याचना तक करनी पड़ी। ... लन्दन-सम्मेलन अन्तमें विफल हुआ ... उसकी प्रतिक्रियाएं आज कितने ही ... दृष्टिगोचर हो रही हैं।

जिस समय ब्रिटिश वैदेशिक ... कामन्समें ब्रिटेनकी वैदेशिक नीतिका ... करण कर रहे थे उसी समय ... ब्रिटिश एवं फ्रेंच साम्राज्यवादके ... जिसकी अभिव्यक्ति दक्षिण-पूर्व ए... पराधीन देशोंमें हो रही है—प्रचार ... थे। रूस पिछले दिनोंसे पराधीन ... उपनिवेशोंकी महत्वाकांक्षाओंका ... करने लगा है और यह पूर्वमें ब्रिटिश ... ज्यवादी हितोंके विरुद्ध है। उधर ... नात्सी आक्रमणोंके फलस्वरूप एक ... ऐसा भी आया था जब कि यूरोप ... एक भी अंग्रेज सैनिक नहीं रह गया ... यूरोपमें शक्ति-सन्तुलनकी नीति जो ... वैदेशिक नीतिका शताब्दियों तक ... बनी रही है, समाप्त हो गयी है और ... भी यूरोपमें ब्रिटेन अपने खो दिये ... प्राप्त नहीं कर सका है, क्योंकि ... राष्ट्रोंकी विजय हुई, पर यूरोपमें ... श्रेणी और ब्रिटेन तृतीय श्रेणीके ... युद्धसे निकला। यूरोपमें नात्सीवादके ... जय प्रधानतः रूसी सैन्य बलके ... हुई अतः नात्सी मुक्त यूरोपीय ... का प्रभाव सहज ही स्थापित हुआ ... उधर पूर्वमें जापानकी पराजय ... सहयोगसे ही सम्भव हो सकी है ... के एशियाई साम्राज्यकी रक्षा ... सम्भव की और अन्तमें उसका ... है, इसलिये पूर्वमें भी ब्रिटेन ... गौरवकी रक्षा करनेमें असमर्थ रहा है ...

स्थितिमें ब्रिटेनकी छटपटाहट स्पष्ट यूरोपीय रंगमंच पर रूस उसे उतरन रहा है और एशियाई रंगमंच पर का प्रभुत्व है! यूरोपमें रूसी साम्य ब्रिटेनके लिये खतरेकी सम्भावनाएं शियामें अमेरिकन आर्थिक साम्रा ब्रिटेनके लिये एक चुनौती है। कुछ अञ्चलोंमें नीदरलैंड, फ्रांस टेनका गुट है, क्योंकि तीनों ही अपनी सम्मिलित मोर्चेसे अपने प्रभु- त्व बनाये रखना चाहते हैं, किन्तु ऐतिहासिक आधीन देशोंमें स्वाधीनता आन्दोलन चल रहा है। अतः युद्धोत्तर विश्वको शान्ति नहीं है।

रूस, अमेरिका एवं ब्रिटेनके ये पर- स्परिक मनोभाव और उनके मौलिक के मतभेद किस ओर संकेत कर युद्धकालीन मित्रराष्ट्रोंकी मैत्रीपर उसने हिरोशिमाके प्रहारके साथ दिया है और उनका पारस्परिक और उनकी प्रतिस्पर्धा आज अनु- विषय न रहकर वास्तविक तथ्योंके हुई है। इसका भावी परिणाम रहा है और विश्वशान्तिके सम्भावनाएं बन रही हैं? युद्ध हुआ किन्तु क्या शांतिकी होने जा रही है?

उसके रहस्योद्घाटनसे इन्कार नीतिपर रूसने अपना असन्तोष ही क्षोभ एवं सन्देह भी स्पष्ट प्रकट और उधर अमेरिका अपनी नीतिपर ब्रिटेनका उसे समर्थन प्राप्त है। उस दिन मि० चर्चिलने अणु बम अमेरिकन नीतिका समर्थन किया बेविनने रूसपर अभियोग लगाया मैं ब्रिटेनने सोवियट रूसको रहस्य बतलाये किन्तु रूसने कभी विश्वास नहीं किया और अपने अपने विचारसे उसने सदा गुप्त ही इस अणुबमके रहस्य जाननेका कैसे हो सकता है जबकि वह औरों-दूसरोंको नहीं बताना भी इसके शस्त्रागारको देखनेकी मिलेगी? नहीं तो राष्ट्रपति उसके रहस्य रूसको क्यों बत- मि० चर्चिलने कामन्समें कहा है। तो यह है कि ब्रिटेन रूसकी से शंकित है और मि० बेविनने रूसकी क्षेत्र-विस्तारकी मह- प्रति सन्देह प्रकट किया है और उक्त भाषणमें ब्रिटेनको किसी का सामना करनेके लिये तैयार रही है, क्योंकि 'अभी शान्ति नहीं आयी, आज भी हम युद्ध युद्धके अत्यन्त सन्निकट हैं।' मन्त्रिवर मि० बेविनके शब्द हैं। अमेरिकाकी स्थिति किस ओर है? राष्ट्रपतिने कांग्रेसको संदेश वयस्क अमेरिकनोंके लिये सैनिक शिक्षापर जोर दिया है रहनेकी आवश्यकता बत- विश्व सुरक्षा एवं शान्तिकी आशाओंकी विफलताके लिये घातक आशङ्काओंका बीज-वपन हो रहा है, सीरिया, ईराक, फिलस्तीन, मिस्र और स्पेनकी घरेलू जटिलताएं बढ़ रही हैं और उनकी सृष्टिमें दूसरे राष्ट्र अपनी स्वार्थरक्षा भावनाकी प्रेरणासे दिलचस्पी ले रहे हैं। इधर चीनमें गृहयुद्ध चल रहा है और इण्डो- चीन-इण्डोनेशियामें स्वाधीनताके आन्दोलन विशाल पैमानेपर ध्वंसात्मक साधनोंको लेकर चल रहे हैं।

यह सब स्थितियां हैं जो भावी विश्व और उसकी भावी योजनाओंके लिये भया- वनी सम्भावनाएं उत्पन्न कर रही हैं और संसार शीघ्रतापूर्वक सर्वनाशकी ओर बढ़ता जा रहा है।

टर्की सोवियट सन्धिका अन्त—

विगत ७ नवम्बरको २० वर्षीय टर्की- सोवियट सन्धिका अन्त हो गया जिसके आधार पर उक्त दोनों देशोंने तटस्थता एवं अनाक्रमणकी नीति स्वीकार की थी। गत जूनमें अङ्कारा स्थित सोवियट राजदूतने टर्कीके पास दो शर्तें भेजी थीं जिनके आधारपर रूसने टर्कीके साथ पुनः सन्धिका प्रस्ताव किया था किन्तु टर्की द्वारा वे शर्तें अस्वीकृत कर दी गयीं। उक्त शर्तोंमें रूसने टर्कीकी जल प्रणालियोंके विधान व्यवस्थामें सोवियट रूसके पक्षमें परिवर्तन करने तथा रूसके दो जिलों कार्स और अरदहनको जो १९२१ में टर्कीमें मिला दिये गये थे—पुनः रूसमें सम्मिलित कर देनेकी मांग की गयी थी। टर्की द्वारा उक्त शर्तोंकी अस्वीकृतिकी प्रतिक्रिया गत मार्चमें मास्कोके उस घोषणा में दिखायी पड़ी जिसमें बीस वर्षीय सन्धि की भर्त्सना की गयी थी। १९२२-२३ में लूसेनमें होनेवाले अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनमें टर्की की जल-प्रणालियोंको लेकर जो सन्धि शर्तें हुईं उनके अनुसार (१) दर्रे दानियालकी जल प्रणाली सभी राष्ट्रोंके लिये मुक्त कर दी गयी (२) जल प्रणालीके तटवर्ती अञ्चलोंको निरस्त्रीकृत कर दिया गया और (३) सभी राष्ट्रोंके रण-पोतोंके यातायातकी घोषणा कर दी गयी। उक्त जल प्रणालीको लेकर १९२० में होनेवाली सेवर्स-सन्धिको कमाल- पाशाने ठुकरा दिया था इसलिये लूसेन सम्मेलनमें वह प्रश्न उठाया गया और कमाल पाशा टर्कीकी स्थिति ऐसी सुदृढ़ तब तक नहीं बना सका था कि लूसेन-सन्धिकी शर्तें वह ठुकरा सके। फलतः टर्कीको वे शर्तें माननी पड़ीं। पर विवशता जनित उक्त शर्तोंके विरुद्ध टर्कीके मनोभाव बराबर बने रहे और २० जुलाई, १९३६ में माण्ट्रोमें जो सन्धि हुई उसके परिणामोंसे भी टर्की सन्तुष्ट नहीं हो सका। किन्तु यूरोपकी तत्कालीन परिस्थितिमें माण्ट्रो-सन्धिमें उसकी सुरक्षाके विरुद्ध कोई तात्कालिक सम्भावना नहीं थी इसलिये टर्की चुप रह गया। किन्तु फिर भी टर्कीने मनोभाव छिपाये नहीं। 'अङ्कारा' में प्रकाशित लेखमें कहा गया था, "दर्रेदानियालकी जल प्रणालीको लेकर जो विधान व्यवस्था की गयी है उसे कायम रखना राजनीतिक, सामरिक और न्यायकी दृष्टिसे असम्भव है। हम अपने देशकी सुरक्षा चाहते हैं और हमारी जल-प्रणालियों को लेकर सन्धि व्यवस्था है उसमें हमारी सुरक्षाकी कोई गारंटी नहीं है। एक राष्ट्रने जिसको सुरक्षाकी गारंटी राष्ट्रसंघके नामपर हमें दी थी, वह राष्ट्रसंघसे पृथक हो गया है। इटलीका भी रुख स्पष्ट हो चुका है अतः इंगलैण्ड, फ्रांस, इटली और जापानने सामू- हिक रूपसे सुरक्षाका जो वचन दिया था, उसे न्यायतः अब रद्द समझना चाहिये।' राष्ट्रसंघसे पृथक होनेवाला राष्ट्र रूस था जिसने राष्ट्रसंघमें टर्कीके दावेका प्रबल सम- र्थन किया था, किन्तु इधर रूस मध्य यूरोप एवं मध्य पूर्वमें जिस प्रकार अपना प्रभाव- क्षेत्र विस्तृत करता गया है, उसमें टर्कीके दर्रेदानियाल प्रणालीकी समस्या उसके लिये अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण होती गयी है और वह उसपर अपेक्षाकृत अधिक प्रभाव कायम करना चाहता है। रूस और ब्रिटेनके मनोभावोंमें पिछले दिनों जो पारस्परिक परिवर्तन आया है और टर्की तथा ब्रिटेनमें जैसी पारस्परिक सौहार्द भावना विकसित हुई है, उसकी प्रतिक्रिया भी टर्कीकी जल- प्रणालियोंपर अधिकाधिक प्रभाव रखनेकी आकांक्षाके रूपमें रूसमें हुई है। रूसकी महत्वाकांक्षा स्पष्ट है और उधर टर्कीके लिये दर्रेदानियाल, बासफोरस तथा मरमरा जलप्रणालियों एवं उसके तटवर्ती प्रदेशोंकी किलेबन्दी जीवन और मरणकी समस्या है। ऐसी स्थितिमें रूसी भावना तथा रूसी विचारकी आशङ्काभरी सम्भा- वनाएं टर्कीके सामने हैं। अमेरिकाने इस सम्बन्धमें अपना मन्तव्य स्पष्ट कर दिया है, रूसका मन्तव्य भी प्रायः स्पष्ट हो चुका है और ब्रिटेनके रुखकी प्रतीक्षा है, क्योंकि भूमध्य सागरकी कुंजी होनेके नाते ब्रिटिश साम्राज्यके हितोंके लिये दर्रेदानियालकी जलप्रणाली ब्रिटेनके लिये अत्यन्त महत्व- पूर्ण है।

फिलस्तीनकी अशान्तिका रहस्य—

फिलस्तीनमें फिर उपद्रव हो रहे हैं और गवर्नर गोर्टने त्यागपत्र दे दिया। प्रतिदिन सनसनीखेज समाचार फिलस्तीनसे आते हैं और निरन्तर होनेवाले उत्पातोंकी नयी आवृत्तियां कर जाते हैं। उधर 'सर्वनाशको प्यार करनेवाले ये अरब' ब्रिटिश राजनी- तिज्ञोंकी कूटनीतिक चालोंपर विक्षुब्ध हैं। यह घटनाएं बतलाती हैं फिलस्तीनमें इंगलैंड न तो यहूदियोंको सन्तुष्ट कर सका और न अरबोंको ही धोखा दे सका। फिल- स्तीनके इन उपद्रवोंका अर्थ क्या है? फिल- स्तीनके अरब यहूदी आन्दोलनके सम्बन्धमें कुछ वर्ष पूर्व जनेवासे प्रकाशित होनेवाले 'ला नेशन अरबाए' पत्रने ब्रिटेनका 'पाश- विक विश्वासघात' शीर्षक एक लेख लिखा था जिसमें कहा गया था कि, 'यों देखनेसे तो ऐसा मालूम होता है कि मानव- ताकी भावनासे ही प्रेरित होकर यहूदियोंके लिये बालफोरने उक्त घोषणा की थी किन्तु वस्तुतः बात इसके सर्वथा विपरीत है। वास्तवमें उक्त घोषणाका उद्देश्य था स्वार्थ साधन। अपने कुछ आर्थिक स्वार्थोंकी प्रेरणा एक जातिके कल्याणको विश्वासघातपूर्वक बेच देना। जबतक एक अंग्रेजके अपने स्वार्थों- पर आघात नहीं पहुंचता तबतक वह दूसरेकी क्षति करके अपनी उदारता सिद्ध करनेमें बड़ा बहादुर बनता है।' फिलस्तीनमें अरबों की क्षतिपर इंगलैंडने फिलस्तीनको अरबोंका राष्ट्रीय देश—नेशनल होम बना दिया। बालफोरने १९१७ ई० में घोषणा करते हुए कहा था कि, 'सम्राटकी सरकार फिलस्तीन को यहूदियोंका अपना वासस्थान बनानेकी बात स्वीकार करती है और इसकी पूर्तिके लिये वह अपनी सारी शक्ति लगा देगी। यह बात भलीभांति समझ ली गयी है कि इससे फिलस्तीनके गैर यहूदी सम्प्रदायोंके किसी नागरिक अथवा धार्मिक अधिकारको कोई क्षति नहीं पहुंचेगी।' मि० चर्चिलने भी १९२० में यही नीति दुहरायी थी। पेरिस शांति सम्मेलनमें अरबोंके प्रतिनिधि अमीर फैसलने यहूदी आन्दोलनके प्रति सहानुभूति दिखलायी थी और सहयोगकी कामना की थी। 'मैं जियोनिस्ट महत्वाकांक्षी यहूदियों की इस महत्वाकांक्षाको भी महसूस करता हूं।' अमीर फैसलने स्पष्ट कहा था, सभी देशोंसे प्रताड़ित होनेवाले यहूदियोंने १८८० में अपने लिये एक वासभूमिका आन्दोलन उठाया और १८९७ में वियनाके एक पत्र- कार थ्योडर हर्जकी अध्यक्षतामें 'यहूदियों की समस्या सुलझानेके लिये जो जियोनिस्ट कांग्रेस हुई उसमें 'निर्वासितोंके एकत्रीकरण' की आवाज उठायी गयी और उसकी सफ- लता सम्भवतः बालफोरकी घोषणामें हुई। फिलस्तीनकी भौगोलिक स्थितिका महत्व ब्रिटिश साम्राज्यके लिये महत्वपूर्ण है और ब्रिटेनने उसपर प्रभुत्व स्थापितकर पश्चिम एशिया तथा मध्यपूर्वकी राजनीतिका सूत्र अपने हाथमें रखे, उसकी इस साम्राज्यवादी भावनाका अरबोंने विरोध किया और उनके साथ यहूदियोंके गठबन्धनमें अरबोंको षड़- यन्त्रका सन्देह हुआ और विक्षुब्ध अरबोंने फिलस्तीनमें यहूदियोंकी शान्ति पूर्वक रहना असम्भव बना दिया। फलतः यहूदियोंके मनोभाव दोनोंही ओरसे बिगड़े। इंगलैण्ड उनकी रक्षा करनेमें असमर्थ हुआ क्योंकि मुस्लिम देशोंकी सङ्गठित शक्तिकी आशङ्कासे वह अरबोंको शक्ति द्वारा दबा कर यहूदियोंको सन्तुष्ट नहीं कर सका। जुलाई, १९२० में सर हर्बर्ट समुएल पहले हाई कमिश्नर होकर फिलस्तीन भेजे गये और दूसरे ही वर्ष जैफामें भीषण विद्रोह हुआ और लगभग तीन महीने तक मार्शल- लाकी स्थिति बनी रही। इसके बाद सन १९२२, २९, २९, ३३ और ३६ में विद्रोह हुए और आज फिर उन्हींकी आवृत्तियां हो रही हैं। पैलेस्टाइनकी समस्या आज अन्त- र्राष्ट्रीय समस्या हो रही है। आत्मीयताके नाते सारे मुस्लिम जगत, ब्रिटेन तथा अमे- रिकाकी उसमें दिलचस्पी है और ब्रिटिश साम्राज्यवादके विरोधी राष्ट्र भी उसमें कम दिलचस्पी नहीं लेते। पैलेस्टाइनके वर्तमान उपद्रवोंको लेकर प्रेसिडेंट ट्रूमैन और प्रधान मन्त्री एटलीमें डाकद्वारा पत्र व्यवहार हुए हैं और कहा जाता है कि दोनों एक दूसरेके दृष्टिकोण एवं योजनासे सहमत नहीं हैं। और जबतक ये विवाद चल रहे हैं और फिलस्तीनके विभिन्न भागोंमें विभाजित करनेकी योजनाएं चल रही हैं तबतक उपद्रव भी होते चल रहे हैं और हमारा ख्याल है कि जबतक अन्यान्य प्रबल राष्ट्र अपने राज- नीतिक एवं आर्थिक साम्राज्यवादके नाग- पाशसे फिलस्तीनको मुक्त नहीं कर देते तबतक ये उपद्रव अन्तिम रूपसे शान्त नहीं हो सकते और अरब तथा यहूदी जो वास्तवमें एकही 'सेमेटिक' जाति हैं, पारस्परिक सौहार्द, मैत्री और सहयोगके साथ मिल नहीं सकते।

संस्कृत साहित्यमें शरद् वर्णन

(साहित्याचार्य श्री सारङ्ग" शास्त्री)

सकल भाषा जननी देववाणी संस्कृत को हवाके पंख पर उड़नेवाले आधुनिक साहित्यिक 'मृतभाषा' कह कर भलेही क्षण भर उपहास कर लें, किन्तु यह मानना होगा कि यदि संस्कृत साहित्य विश्वसे हटा दिया जाय तो जगत साहित्यको प्रकाश से दूर रहेगा और आर्यावर्त भारत स्वर्गौरव संस्कृतिसे हीन ही नहीं लुप्तप्रायः हो जायेगा। यही कारण है, संसारके साहित्यादर्शमें कितने परिवर्तन हुए, किन्तु यही एक आर्य-भारती है जो हजारों वर्ष बीतने पर भी उसी प्रकार नव्य नूतन है। आज भी रसास्वादनमें आप कुछ भी प्राचीनता अनुभव नहीं कर सकते! मैं तो आजके प्रचलित साहित्यको 'पंचवर्षीय''दशवर्षीय' योजना कहता हूं। क्योंकि प्रगतिवादिता-की ओटमें साहित्यका नग्न नृत्य हो रहा है। भाषा-मात्र अहङ्कार हीन है। ठोस धीर साहित्यको मिलना कठिन सा हो गया है। मैं यह कहनेमें कोई संकोच नहीं करता कि अन्य भाषाओंके साहित्यको आप अधिकसे अधिक तीन बार-चार बार तक देख कर हटा सकते हैं, तो इस आर्य-गिरामें जन्मसे मरण पर्यन्त जितनी बार डुबकियां लगाइये उतनेही इसमें अनमोल हीरे पाइयेगा। यह ऐसी रमणीय सुधा है जिसे बार-बार पीते जाइये,पर तृप्ति कहां? यही तो रमणीयता है--

'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः'।

आज जब संस्कृत साहित्यकी उपेक्षा होते देखता हूं तो बरबस 'उल्लूपन'का यह श्लोक धैर्य बंधा देता है---

"यावद् भारतवर्षं स्यात् यावद् विंध्य-हिमाचलौ।

'यावद् गंगाच गोदाच तावदेवहि संस्कृतम्"।

अस्तु यों तो संस्कृत साहित्यके महाकवियोंने भिन्न-भिन्न ऋतुओं पर अपनी कलमही तोड़ दी है, किन्तु उनमें शरद्का स्थान भी कम महत्वपूर्ण नहीं! आइये, शरद् सुषमाका पर्यवलोकन कीजिये:—

'यह शरद्रूपी वधू, प्रसन्नमुख, उज्ज्वल वस्त्र, कमलरूपी नेत्र, हंस रूपी व्यजन लेकर मानो पृथ्वीके सेवार्थ पहुंची है। इसीको कविने यों कहा है।

"अथ प्रसन्नेन्दुमुखी सिताम्बरा,
समाययावुत्पल पत्रलोचना।
सपंकज श्रीरिव गांनिवेवितुं
सहंस बालव्यजना शरद्वधूः॥"

आदि कवि वाल्मीकिने भी शरद्का बड़ाही सरस वर्णन किया है—

शरद्के आजाने पर नदियोंके पुलिन (तट) धीरे-धीरे इस प्रकार दिखलायी पड़ रहे हैं जैसे नव संगमके समय लज्जावश कामिनियोंके वस्त्र शनैः—शनैः हटाये जायं!

"दर्शयन्ति शरन्नद्यः पुलिनानि शनैः शनैः।

नव सङ्गम सव्रीडा जघनानीव योषितः"।

संस्कृत-साहित्यमें महाकवि माघका भी महत्वपूर्ण स्थान है--इनके सम्बन्धमें यह श्लोक बड़ा प्रसिद्ध है—

"उपमा कालिदासस्य भारवेरर्थ गौरवम्।

दण्डिनः पद लालित्यं माघे सन्ति त्रयोगुणाः॥"

इनका भी शरद् वर्णन देखने योग्य है--

"समयही प्राणियोंके बलाबलका प्रतिपादन करता है, यही कहते हुए मानो शरद्में हंसोंने मधुरता धारण की और मोरोंने कर्कशता।" यह स्वाभाविक है कि शरद्में मोरके शब्द अप्रिय मालूम होते हैं। कविकी भाषा देखिए:---

"समय एव करोति बलाबलं प्रणिगदन्त इतीव शरीरिणाम्।

शरदि हंसरवाः परुषीकृत स्वर मयूरमयूरमणीयताम्"॥

और आगे सुनिये:---"हंसोंके शब्दसे मानो मोर हार गए, इसीसे उनके पंख गिर रहे हैं। क्योंकि शत्रु द्वारा किया गया तिरस्कार असह्य होता ही है। कितनी सुन्दर उत्प्रेक्षा है।" इनके रूपकका एक सुन्दर वर्णन देखिए:---

"स्मित सरोरुह नेत्र सरोजलामभि-र्बितां विहंग हंसद्विजम्।

अकलयन मुदितामिवसर्वतः सशरदं शरदन्तु रं ङ्गमुख म्"।

अर्थात् शरद् एक स्त्रीके समान है, सरोवरमें कमल रूपी नेत्र खिले हैं। श्वेत रंगके पंखों वाले हंसोंसे मानो आकाश हंस रहा है और दिशाओंके मुखोंमें कास-के फूल दांतोंकी शोभा दिखा रहे हैं।

संस्कृत साहित्य-रत्नाकरके महाकवि 'भट्टी' एक विशिष्ट अनमोल रत्न हैं। इनके 'भट्टी' काव्यकी रचना-चातुरी बड़ी मनोमोहक है।

शरद्के करुणापूर्ण वर्णनमें इनके सूक्ष्मकी बारीकी देखिये :---

"निशा तुषारैर्नयनाम्बु कल्पैः
पत्रान्त पर्या गलदच्छ बिन्दुः।
उपारु रोदेव नदत् पतङ्गः
कुमुद्वतीं तरद दिनादौ॥"

शरद्का प्रातः काल है। कुमुदिनी सूर्यके असह्य विरह-तापको न सह कर मुर्झा गयी है। पार्श्ववर्ती पड़ोसी वृक्ष उसके दयनीय दुःखको कैसे देखें? अतः अश्रु-तुल्य पत्तमें पड़े हुए हिम बिन्दुओंको अपने पत्र-प्रान्तोंसे टपका कर पक्षियोंके बहाने रो रहे हैं। देखा आपने, कितनी सुन्दर कल्पना है!

एक यह भी कल्पना देखिए:—

"सितार विन्द प्रचये कुलीनाः
संसक्त फेणषु च सैकतेषु।
कुन्दा वदाताः कलहंस मालाः
प्रतायिरे श्रोत्र सुखंर्निनादैः"॥

खिले हुए श्वेत कमलों और फेन संलग्न बालुका प्रदेशोंमें कुन्दके समान हंस बैठे हुए हैं। सर्वत्र चमकता है। अतः केवल उनके सुन्दर शब्द ही पहचाननेको प्रेरित कर रहे हैं।

इनके 'एकावली' अलङ्कारका भी एक निदर्शन कीजिये:—

"न तज्जलं यन्न सुचारु पंकजं
न पङ्कजं तद्यदलीन षट्पदम्।
न षट्पदोऽसौ, न जुगुञ्ज यः कलं,
न गुञ्जितं तन्नजहार यन्मनः"।

वह जल क्या, जिसमें सुन्दर कमल नहीं, वह कमल नहीं जिसमें भ्रमरावली लीन न हो, वे मधुप क्या, जिन्होंने मधुर गुंजन नहीं किया और वह गुंजन ही क्या, जिसने मनका हरण नहीं किया॥

एक अन्य कविने भी विभिन्न उपमाओं द्वारा शरद्का बड़ा सुन्दर श्रृङ्गार किया है:—

"हृद्याङ्गनेव विजहौघरि हृद्वहन्
वेदान्ती नागिव मत कुम्भिलीयमालीन्।
...प्रभा ...वति ...
...रेव मिवके किलनंलरेजे"।

ऋतु वर्णनमें कालीदासने स्वतन्त्र 'ऋतु संहार' नामसे पुस्तकका ही एक प्रणयन कर दिया है!

जिसमें,—"शरद् नव वधूकी भांति रम्य रूप लेकर आया है। श्वेत कास ही जिसका वस्त्र है। सुन्दर खिला हुआ कमल ही जिसका मुख है। उन्मत्त हंसके शब्द ही नूपुरका रम्यनाद है। पके हुए सुन्दर धानके रूपमें मानो उसकी गात्र-यष्टि है।

कविके शब्दोंमें:—"काशांशुका विकच पद्ममनोज्ञ वक्त्रा सोन्मादहंसरव नूपुरनाद रम्या। आपक्वशालि ललिता तनुगात्र-यष्टिः प्राप्ताशरन्नववधूरिव रम्यरूप।"

स्वाभाविक वर्णन शैली देखिये:--

"नष्टं धनुर्बलभिदो जलदोदरेषु सौदामिनी स्फुरति नाद्य वियत् पताका। धुन्वन्तिपक्ष पवनैर्नभोबलाकाः पश्यन्तिनोन्नत-मुखागगनं मयूराः" अर्थात, वह इन्द्रका धनुष कहां है, आकाशमें सौदामिनी की पताका कहां है। नभकी बलाकायें पक्ष पवन ले कहां उड़ती हैं, आकाशकी ओर मुख उठाये अब मयूर कहां दिखायी देते हैं? एक और श्लोकपर ध्यान दीजिये:--

"स्त्रीणां विधाय वदनेषु शशाङ्क लक्ष्मीं, हास्ये विशुद्ध वदने कुमुदाकरश्रीम्। बन्धूक कान्तिमधरेषु मनोहरेषु क्वपि प्रयाति सुभगा शरदागमश्री" ---स्त्रियोंके मुखमें चन्द्रमाकी शोभा रखकर, हास्यमें कुमुदकी शोभा दे, मनोहर अधरोंमें बन्धूक पुष्पकी कान्ति देकर सुन्दर शरद्की शोभा कहीं जा रही है।

......शरद् वर्णनमें महाकवि 'भारवि' कालिदाससे कुछ कम नहीं। किरातार्जुनीयमें, अर्जुन तपः साधनके लिये जा रहे हैं। शरद्की अनुपम शोभापर वे विस्मय विमुग्ध हो रहे हैं।

"निर्मल जलमें मछलियोंको देख अपनी प्रियाका दृष्टिविलास भूल गये। कमल-नेत्र उनने इसका सादृश्य देखा।"

क्या ही सुन्दर श्लोक है—"निरीक्ष्य माणा इव विस्मयाकुलैः पयोभिरुन्मीलित पद्मलोचनैः। हृत प्रिया दृष्टि-वि... विभ्रमा मनोऽस्य जहनुःशफरीविवृत्तय..."

और देखिये-'फेनोंसे युक्त बालुकाओं... पर किंजल्क व्याप्त है, देखकर ... का भ्रम हो रहा है, किन्तु पोखि... लियोंके चलनेसे जब केशर भिन्न-भि... जाते हैं, तभी अर्जुनकी यह शंका ... होती है।' कितना मार्मिक वर्णन है, ... के शब्दोंमें---

"तुतोद तस्य स्थलपद्मिनीगतं ... स्मविच्छिन्न फेन संततिः। अवाप्त ... विभेद मुचकैर्निवृत्त पाठीन पराहतं ...

वाल्मीकिकी भांति पुलिनोंका ... बड़े सुन्दर ढङ्गसे वर्णन किया है--... तानैरशिनस्य मन्थरंगतां हिमाची... कदम्बकैः। शरन्नदीनां पुलिनैः कुतू... हलं कूलैर्जघनैरिवादधौ।"

अर्थान्तरन्यास विभूषित ... श्लोक और भाव देखिये--"पतन्ति ... विशदाः पतत्रिणो धृतेन्द्र चाप... पंक्तयः। तथापि पुष्णाति नभः ... लस्य माहार्यमपेक्षते गुणम्।"

अब बलाकाएं आकाशमें नहीं ... मेघमाला भी अब कहां? इनके ... भी आकाश शोभाको धारण ... क्यों न हो, सुन्दर वस्तु आरोप ... अपेक्षा नहीं करता।

+ +

संस्कृत नाटक मुद्राराक्षस ... 'विशाखदत्तकी', जिनका समय ... द्वादश खृष्टाब्द बताया जाता ... चातुरी देखकर मन्त्र मुग्ध होना ... इनका शरद् वर्णन किसीसे कम नहीं ...

विविधाङ्कारोंसे परिपूरित ... युक्त श्लोकपर ध्यान दीजिये:-

"अपामुद्धृत्तानां निजमु... स्थिति पदं, दधत्याशालीनां ... सवि फले। मयूराणामुग्रं विषमि... मद महो, कृत कृत्स्नस्यायं विनय... स्य शरदा।"

--शरद् मानो उपदेशक बन... है, तभी तो वह उन्मार्ग प्रवृत्ति... मर्यादाकी शिक्षा देता है। प्रसूत... नम्रताका पाठ पढ़ाता है। अब ... मयूरोंके मदको हरण करता है।" ... सुन्दर क्या होगा? एक ओर देखि... मानो इस दूतीके समान है, ... अनेक दोषोंसे भिन्न और ... नायिकाको अनेक यत्नसे ...

अर्थात्, शरद्में नदियोंका ... प्रकार टूट गया है जैसे बुढ़ापेमें ... जल वैसे ही स्वच्छ है जैसे ... सिद्धान्त निर्मल होता है। ... प्रकाश उसी प्रकार विमल और ... है, जैसे सुन्दर युवतियोंका ... मोरोंका शब्द वैसही अप्रिय ... है, जैसे ब्राह्मणोंकी दीनवाणी ... दुगार कर्ण-कटु प्रतीत होते हैं। ...

अब कवि-कुल-गुरु कालिदास... उद्यानमें आकर शरद सौन्दर्य ... [कवि कालिदासकी रचना ...

(शेष ० वें पृष्ठपर)

पशु-पक्षी भी सम्मोहित होते हैं

---*:*---

(लेखक—श्री ब्रजकिशोर वर्मा श्याम)

पशु-पक्षियोंको सम्मोहित करनेकी ... भारतीय ऋषियोंको भली-भांति ... थी। इसी शक्तिके कारण वे भयानक ... निर्भय होकर विचरण करते थे। ... शक्तिके प्रभावसे वे आकाशमें उड़ती ... पर बांध देते थे, सांपको निस्तेज ... देते थे और बाघ-भालुओंको नींदमें ... देते थे। लेकिन आधुनिक वैज्ञानिक ... ऋषि-मुनियोंकी इस शक्तिको केवल ... कल्पित कथा ही नहीं समझते थे और ... यह धारणा थी कि मनुष्यकी भांति ... सम्मोहित नहीं हो सकते। लेकिन ... निश्चितरूपसे कहा जाने लगा है, ... वैज्ञानिकोंने इसे स्वीकार किया है, ... प्राणी यहांतक कि, एकदम छोटे-... जीव भी सम्मोहनके प्रभावसे प्रभावित ... जा सकते हैं।

शायद बहुतसे लोगोंने देखा होगा कि ... छोड़े तब किसी भारी खतरेमें पड़ जाते ... अचानक पीछेके बल गिर पड़ते हैं, तब ... बिल्कुल गतिहीन हो जाते हैं और उनसे ... भी जिसका नहीं जाता। स्नायु-शक्ति ... हीन हो जानेकी अवस्था सम्मोहन ... प्राप्त तन्मयावस्थासे बहुत कुछ मिलती ... है। यह अवस्था बहुत अधिक समय ... धारण हो जाती है। यह कृत्रिम रूपसे ... प्राप्त हो जाती है—जैसे पशु-पक्षियोंको ... कर या उन्हें किसी विचित्र अनुभवमें ... कर।

यह तन्मयावस्था, जिसमें पशु-पक्षियों ... अपने स्नायुओंके परिवर्तनपर कुछ भी ... अधिकार नहीं रह जाता, अनेक तरीकोंसे ... की जा सकती है। कहते हैं कि सम्मो-... प्रभाव पक्षियोंपर अधिक और शीघ्र ... पड़ता है तथा उस अवस्थामें वे ... दशाओंमें रख जा सकते हैं।

सम्मोहित करनेका सबसे पुराना ... वह है, जिसका पता जेसुइट पादरी ... किर्वरने लगाया था। पादरी साहब ... मुर्गोंको एक टेबुलपर रखते और उसे ... ऐसा पकड़ते कि वह थोड़ा भी हिल ... सके। और तब वे खल्लीके टुकड़ेसे ... आड़ी तिरछी रेखाएं शीघ्रतापूर्वक ... खींच देते। इस असाधारणसी क्रिया ... मुर्गेपर ऐसा प्रभाव पड़ता कि वह ... सम्मोहित हो जाता, और फिर तो ... जिस दशामें उलट पुलटकर रखा जा ... सकता है।

एक दूसरा आधुनिक तरीका और भी ... पशु-पक्षियोंके शरीरपर हल्के हल्के ... हाथ फेरनेसे भी वे सम्मोहित हो ... हैं। बहुत दिनोंतक लोगोंकी धारणा थी ... पशु-पक्षी केवल इन्हीं पुराने तरीकोंसे ... सम्मोहित किये जा सकते हैं। लोगोंका ... यह था कि आंखोंसे या शब्दों द्वारा ... सम्मोहित करनेका तरीका बहुत उन्नत ... है और पशुओं तथा विशेषकर ... जैसे निम्न कोटिके प्राणियोंपर ... असर नहीं पड़ सकता। लेकिन, अनेक ... के लगातार प्रयोगोंने अब सिद्ध ... दिया है कि निस्सन्देह पशु पक्षी भी ... तरीकोंसे सम्मोहित किये जा सकते ... जैसे मनुष्य किये जाते हैं।

मस्तिष्क वाले पशु उदाहरणार्थ शिम्पांजी शब्दोंके इशारेसे सम्मोहित किये जा सकते हैं, क्योंकि उनका मस्तिष्क इतना अधिक उन्नत रहता है कि उनके ज्ञानतन्तु की व्यवस्था सम्मोहक द्वारा दी गयी आज्ञा को ग्रहण कर सकती है। निम्न कोटिके अनुन्नत मस्तिष्कवाले पक्षी या पशु यद्यपि मुंहके इशारेको नहीं ग्रहण कर पाते, फिर भी वे आंखोंके संकेतसे ठीक उसी प्रकार सम्मोहित कर दिये जा सकते हैं।

हंगरीके प्रसिद्ध डाक्टर स्नायु विशेषज्ञ और सम्मोहकने इस ओर काफी छानबीन की है। पक्षियों, खासकर मुर्गोंपर आपने अनेक दिलचस्प सम्मोहक प्रयोग किये हैं। जिस ढंगसे मनुष्य सम्मोहित किये जाते हैं, ठीक उसी तरहसे पक्षियोंको सम्मोहित करनेमें आपने अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। आप जीवित मुर्गोंको केवल आंखोंकी सहायतासे पलकी मारमें थार इस तरह बेहस कर देते हैं कि जो चाहे उसे जिस तरह उलट-पलट दे।

सम्मोहित अवस्थामें पड़े मनुष्यके सम्पर्कसे भी पक्षी सम्मोहित हो जा सकते हैं। डाक्टर अरंडरने पहले एक स्त्रीको सम्मोहित किया, और बादमें उस स्त्रीके शरीरपर एक मुर्गेको रख दिया। मुर्गा भी तुरन्त उसी अवस्थामें हो गया।

सर्कसमें सिंह, बाघ आदि रक्तपिपासु जानवरोंका खेल दिखाने वाले कुछ मनुष्य सम्मोहनका भी सहारा लेते हैं। वे इन जानवरोंको सम्मोहित कर उनसे मनमाना काम करा लेते हैं। वे भयङ्कर और दैत्याकार पशु विरुद्धमें चूं तक भी नहीं करते। सिंहों और चीतोंके अद्भुत खेल दिखानेवालोंमें 'क्लाइड बिटी'का नाम बहुत प्रसिद्ध है। कहते हैं 'बिटी' की आंखोंमें जादू है, या दूसरे शब्दोंमें यों कहिये कि वह खूंख्वार जानवरोंको मंत्र मुग्ध कर लेता है। उसने स्वयं भी कई बार स्वीकार किया है कि वह अपनी बिल्लियोंको आंखों के वशमें कर लेता है। पैट्रिशिया योर्न नामक एक नवयुवकने भी सम्मोहन द्वारा खूंख्वार जानवरोंसे मनमाने खेल करानेमें काफी सफलता प्राप्त की है।

डाक्टर बांडफोर्ड बोहीने भी इस ओर अनेक प्रयोग किये हैं। कई बार तो उनके प्राणोंके भी लाले पड़ गये थे। एक घटनाका वर्णन करते हुए वे लिखते हैं—"एक बार मैं अफ्रीकाके जंगलोंमें घूम रहा था। मेरे पास कोई भी हथियार नहीं था। हां, समय पड़ने पर मेरी सहायता करनेके लिये भरा हुआ बन्दूक लिए नौकर मेरे पीछे पीछे आ रहे थे। अचानक नीचेकी ओर पानी पीती हुई एक सिंहनी दिखायी पड़ी। मैं आगे बढ़ता गया।...गुर्रा कर सिंहनी पीछेकी ओर मुड़ी।...मेरा हृदय जोर जोरसे धड़कने लगा। सिंहनी आंखसे आंख भिड़ाकर आगे बढ़ती ही गयी। सारा साहस बटोर कर सिंहनीकी आंखोंकी पुतलियोंसे अपनी आंखें भिड़ाता हुआ मैं भी आगे बढ़ा। सिंहनी धीरे धीरे मेरी ओर बढ़ रही थी और मैं उसकी ओर! मेरे नौकर घबराते गये थे। वे अब गोली मारना ही चाहते थे कि इतनेमें सिंहनी नीचेको झुकी। मैंने समझा कि बस अब वह मुझ पर झपटना ही चाहती है। लेकिन अचानक वह मुड़ कर द्रुतगतिसे भाग खड़ी हुई।...इस तरह मेरा पहला प्रयोग सफल हुआ।"

इसी प्रकार वे एक बार एक सिंहसे भी आंखें भिड़ाए हुए थे। सिंह थोड़ा दूर पर खड़ा था। अचानक एक बन्दर पेड़की डाल सहित नीचे आ गिरा। इस आकस्मिक आघातने बाडफर्डका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लिया। पल भर के लिये जहां उनका आंख सिंहकी आंखोंसे हटी कि बस सिंह झपटा! बाडफोर्डने अपनी जानकी आशा छोड़ दी, लेकिन ठीक इसी समय 'धांय-धांय'का शब्द हुआ और बाडफोर्डसे गजभरकी दूरीपर सिंह ढेर हो गया। नौकरोंने सिंहको झपटते ठीक समयपर देख लिया और उनके अपूर्व निशानेने उसका काम तमाम कर दिया।

(६ वें पृष्ठका शेषांश)

रिणी और मनोहारिणी है कि उसे बुद्धिमान बराबर सुननेकी इच्छा करते हैं।

'बाणभट्ट'ने कहा है—'निर्गतासुनवा-कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु।

प्रीतिर्मधुर' सान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते" ॥

अर्थात्, अर्थ नहीं जानते हुए भी केवल शब्द मात्रसे सघन सुगन्धियुक्त मकरन्द भरी मंजरीकी तरह कालिदासकी श्रेष्ठ कवितामें किसकी प्रीति नहीं होती?

अपने 'रघुवंश' महाकाव्यमें कालिदासने शरद् कालमें रघुकी दिग्विजय यात्रा बड़े सुन्दर ढंगसे की है।

"शरद् में इन्द्रने अपना धनुष छोड़ दिया और रघुने अपना धनुष धारण किया। लोकहितार्थ दोनोंने ही क्रम-क्रमसे अपने अपने धनुष धारण किए।" इसीको कविने कहा है—

'वार्षिकं संजहारेन्द्रो धनुर्जैत्रं रघुर्दधौ।
प्रजार्थं साधने तौ हि पर्यायोद्यत कार्मुकौ॥

इस प्रकार इनके विभिन्न श्लोक सचित्र, सरल और स्वाभाविकतासे भरे हुए हैं। एक बानगी लीजिए—

"इक्षुच्छायानिषादिन्यस्तस्य गोप्तुर्गुणोदयम्।
आकुमार कथोद्घातं शालिगोप्यो जगुर्यशः" ॥

"शरद् काल है। कृषक-बालायें ईखकी छायामें बैठ धानकी रखवाली कर रही हैं और उस रघुके आकुमार कृत्यों को अपने गीतोंमें गा रही हैं। एक और सुभाषित लीजिये:—"शरद् कालमें विकसित सप्तपर्ण-पुष्पोंके असहनीय आघ्राण कर रघुके हाथियोंने वन्य गजोंको मदधारी मन्द भाव कर असहनीय होनेके कारण सातों अंगोंसे मद गिराया। श्लोक देखिये—

"प्रसवैः सप्तपर्णानां मदगन्धिभिराहताः।
असूययेव तन्नागाः सप्तधैव प्रसुस्रुवुः" ।

पास पहुंचा देती है। उसी भांति यह गंगाको समुद्रके पासके पहुंचाती है। कविके शब्दोंमें "मन्तुवत्या कलुपिता वहुवल्लभस्य मार्गे कथंचिदवतार्य तनुभवन्तीम्। सर्वात्मना रति कथा चतुरेव दूती गंगां शरन्नयति सिन्धुपतिं प्रसन्नाम्।"

\+ \+ \+

अब अन्तमें किसी अन्य कविका सरल स्वाभाविक सुन्दर वर्णन देखिये—"क्वचित् तुशल्यैं राठया, क्वचन विकचैर्नीरज वनैः क्वचिदुन्मत्तोयैः क्वचिदपि रुतैः सारस कुलैः। क्वचित् व्योमा भोगैः सुनव शश-सूर्यप्रतिमवच्च रुचोक्तैः पुनां हरति बहु रूपा शरदियम्।"

अर्थात्—कहीं धान लहलहा रहे हैं, कहीं कमल खिले हुए हैं, कहीं स्वच्छ जल है, कहीं सरस पंछी बोल रहे हैं, कहीं चन्द्र बिम्बके समान निर्मल आकाशकी शोभा दीख पड़ती है। इस प्रकार अनेक रूपधारण करनेवाली यह शरद् ऋतु पुरुषोंके चित्त बरबस हरण करती है।

धन्य है, शरद् सुषमा! यह ऋतु इतनी जल्दी मिट जाती है कि इसे कम सहृदय देख पाते हैं। सबसे बड़ी विशेषता तो यह है कि इसके भूत भविष्य दोनों ही सुन्दर हैं। वसन्तको लोगोंने सुन्दर कहा है, पर उसका भविष्य बड़ा ही सन्तापदायी है। शरद्का भूतकाल तो सुन्दर है ही भविष्य 'हेमन्त' भी अतिशय सुन्दर है। भला, ऐसे शरत्को कौन नहीं पसन्द करेगा।

बधाई है शरद्का।

दीपावली

(लेखक—श्री विश्वनाथ मोर:)

कार्तिककी कमनीया अमाकी रात्रि अद्वितीय आभामयी दीपोंकी देदीप्यमान अवलियां, प्रस्फुटित पद्मासना पुण्यमयी लक्ष्मीकी लावण्य लालिमाकी लोक-लालसा परितृप्ति हित, विमल विश्वाससे अटल आराधना, पृथ्वीके स्पर्द्धापूर्वक वार्षिक प्रयाससे यों प्रतीत होती है कि मानो आजकी राका विहीन रजनीने तारिकाशोभित गगन मण्डल की शोभा धारण की है। हिमाचलकी स्पर्द्धासे उत्तरोत्तर वर्द्धमान विन्ध्याचल भलेही किसी कारणवश विफल हो गया हो, पर कार्तिकीय अमा शारदीय पूर्णिमाको परास्त करनेमें पूर्णरूपेण सफल रही है। पृथ्वीने अम्बरको सुधाकर-धारी समस्त दीपावलीकी आभा अपने हस्ततःही समेट रखी है। यह दिवस महान है—यह रजनी रत्नमई है—तमिस्रा नहीं ज्योत्स्ना है—अबला नहीं सबला है-अमा नहीं पूर्णिमा है-निराकारमें साकार है--सौन्दर्यका सदन है, भव्यताका भावपूर्ण भवन है—स्वतन्त्रता का सौध है, वीरत्वका वैभव है, मानवताका मन्त्र है और है नारायणकी नृत्य-लीलाके सर्वकामद कल्पवृक्षका कोर-कटाक्ष।

यही दिवस है जब श्री राम सिंहासनासीन हुए थे, मानवताने दानवता पर विजय पायी थी। यही दिवस है जब बालक, युवा, वृद्ध नरनारीको समरूपेण आनन्दका अनुभव हुआ था। यही दिवस है जब स्वाधीनताकी सत्ता पराधीनता पर लहरायी थी और विश्वने विस्मय विस्फारित विलोचनोंसे देखा था कि मातृत्वका सम्मान और इसका स्थान हम भारतीयोंके हृदयमें कितना ऊंचा है।

अवनीको अमरावतीमें परिणत करनेवाली आनन्दकी अलकापुरी बसानेवाली, मरुघटको मधुवनमें बदल देनेवाली दीपावली हमारा राष्ट्रीय पर्व, हमारा समाज सौन्दर्य, हमारी गौरव गरिमा है और है हमारे धर्मकी जागती समतामयी सत्ता। यहां आनन्द अठखेलियां करता है, विनोद वैभव बिखेरता है, शांति निःस्वर संगीत गाती है-उत्साह सुरभित करता है, हर्ष दृढ़ करता है और सारा संसार स्वर्ग हो उठता है।

पर आज कैसा विरोधाभास है ? आत्मा आतप्त है, प्राण परितप्त है, शरीर आकुल है, देह दीन है और आज इस पुण्य तिथिका भी हमें यही कहना पड़ता है—

थे हमारी वो दिवाली,

अब न वे बातें यहां ?

सजन कहो वे दिन कहां

हैं और वे रातें कहां ?

दासताजनित दरिद्रताका ताण्डव, क्षुधाका प्राबल्य, दानवताकी दुरवरोध चेष्टाएं, दुर्निवार दुर्भिक्षका दारुण विध्वंस सारे सारे सुख सौभाग्यका संहार कर रहे हैं। निरीहता पर नृशंसताका नर्त्तन, अधिकारका अत्याचार द्वारा मानमर्दन, नारी मानमर्यादाका, हमारी शांति तथा रक्षा, हमारी आकांक्षा एवं आनन्दका हरण कर रहा है। इसके अतिरिक्त अनाथोंका करुण चित्कार, आतुरोंकी आर्त-आवाज, बेकारोंका वैकल्य, एवं पूज्य पुरुष पुंगवोंका पक्षपातिपूर्ण परिताप, किसके हृदयको विदीर्ण नहीं करता ? आज इस विशाल विश्वमें, विशेष कर भारतवर्षमें कौन सहृदय व्यक्ति आनन्दित है, किसके हृदयमें सुख शान्ति है, कौन सोल्लास है ? अगर सुख शान्ति नहीं आनन्दोल्लास नहीं तो फिर दीवाली कैसी ?

सत्य तो यह है कि आज हमारा आनन्द, हमारा स्नेह, हमारा प्रेम, हमारी सहृदयता पुरुष प्रवरोंकी अकारण कष्ट यातनासे लुप्त प्रायः है। हम आनन्द ध्वनि नहीं कर सकते, पर जो कुछ भी है वह हमें करना पड़ता है, क्यों कि हम रूढ़ियोंके गुलाम हैं, सनातन संचालक हैं, पर वस्तुतः यह आत्म-प्रवंचना है। अमर सत्य तो यह है कि आन्तरिक प्रसन्नताके बिना बाह्य प्रसन्नता आडम्बर है प्रवंचना है।

हमारी विजयमें पराजय है; हमारे उल्लासमें परिहास है, हमारे हर्षमें विमर्ष है और है इस प्रकाश प्रदर्शनमें निविड़ निशाको आच्छन्न करनेकी कायरतापूर्ण कामना। हमारी साधना, हमारी पूजा जो हम सदियोंसे महामाया मातेश्वरी महालक्ष्मीके मृदुचरणों पर "या देवि सर्व भू तु लक्ष्मीरूपेण संस्थिता, नमस्तस्यै ३ नमो नमः, का अनवरत पाठ करते आये हैं उसमें परिवर्तनकी आवश्यकता है और उसमें परिवर्तन होगा ही। प्रकृति परिवर्तनशील है, परिवर्तनशीलता विकासकी द्योतिका है। अतएव हमें आज 'लक्ष्मी रूपेण संस्थिता'की मनोहर मूर्तिका विस्मरण कर 'क्रोध रूपेण संस्थिता' तथा सिद्धि रूपेण संस्थिताका मूल मन्त्र अपना होगा। चिर पददलित आज समस्त एशिया महाद्वीपमें अपूर्व दीपावलीका प्रकाश-पुंज अपने क्षुद्र किन्तु सम्मिलित शक्तिसे विश्व व्यथा विनाशकारी विनाशमें संलग्न है। चिर नवीन वेदना और क्रोधकी सजीव मूर्ति अमर अभिलाषी आज अपने देह दीप, सेवा-स्नेह, बलिदान बातीसे यथा राशि वितरण कर अन्धकारापहरण कर रहे हैं। यही दिव्य दिवाली है, विनोदपूर्ण दिवाली है, यह सत्यकी दिवाली है, हर्षकी दिवाली है, और है सर्वाभिलाषी आसन्नवर्ती राम-राज्यकी स्वर्णिम आभा। हम आदिगत ऐसीही दीपावलीका अपूर्व त्यौहार मनाते आये हैं और मनाते रहेंगे।

जहां दीप नहीं, जहां लुक तथा तैल नहीं वहां दीपावली ही क्या ? दीपक जलानेकी चेष्टासे प्रज्वलित दीपककी रक्षा चेष्टा अधिक श्रेयस्कर एवं सराहनीय होती है। दूरदर्शी प्रज्वलित दीपककी ज्योतिको ही विलोप कर विमुग्ध होते हैं और उसकी प्रशंसा करते हैं। परन्तु गूढ़दर्शी एवं तत्वदर्शी सज्जन दीपककी ज्योतिको सराहनेके अतिरिक्त उसकी कर्मण्यता, सहनशीलता, परोपकारिता एवं उसकी परोपकार प्रकृति जनित त्याग तथा तन्मयताकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं। उनकी प्रशंसामें समवेदना सम्मिलित सहानुभूति सर्वोपरि होती है। आज दीपावलीके शुभवसर पर हम भारतवासी कितने प्रज्वलित दीपोंका रक्षा प्रयास करते हैं ? हमारी तत्परताही हमारी समवेदना और सहानुभूतिकी द्योतिका होगी।

हम भारतीयोंका प्रत्येक पर्व कुछ ऐसे अमूल सिद्धान्तोंसे निर्मित है जो सहजही में बोधगम्य नहीं हो सकते। प्रत्येक त्यौहार या उत्सवके अवसर पर राष्ट्रीयताकी रक्षा चेष्टाके साथही समस्त प्रधान रसोंका समावेश किया गया है।

दीपावली द्यूत क्रीड़ा अथवा वैभव विश्लेषणार्थ आविर्भूत नहीं हुई, इसका आविर्भाव रामराज्यारोहण कालसे सम्बन्धित है। इसमें राष्ट्रीय शक्ति अन्तर्निहित है, देश प्रेम परिपूरित है और है वीरता एवं त्यागकी वैभवमयी पूजा प्रवृत्ति। जिस राष्ट्रमें वीरता एवं वीरोंकी पूजा नहीं होती उनको पुष्पांजलि प्रदान नहीं होता, उनकी समाधि पर दीपक नहीं जलते उनकी पुण्य स्मृतियां मानस भवनमें नहीं गूंजती, उस राष्ट्रका उत्थान असम्भव एवं पतन अवश्यम्भावी है। दीपावली हमें यही शिक्षा देती है और दीपावली हम इसी हेतु मनाते भी हैं। स्मरण रहे रामके सिंहासनासीन होने पर दीपावलियां आनन्द अथवा आतङ्कसे अनुरंजित नहीं की गयी थीं वरन वे की गयी थीं उन चिरस्मरणीय वीरोंकी पुण्यमय स्मृति में जिन्होंने सत्य और स्वत्वके निमित्त, देश और जातिके हेतु, धर्म एवं मातृत्वकी रक्षाके लिये अपने प्राण प्रसूनको अत्यन्त हर्षित समर्पण किये थे। क्या आज हमें यह बात स्मरण है ? नहीं, स्मृति चिरसुप्तिमें बैठ कर रोती है, तभी तो—

जागाकी जाज्वल्यमय ज्योति,

भारतकी भय हर भव्य पुकार !

जागती गणकी जर्जरता,

'श्याम' 'तमिस्रा'का उपचार।

जग नभ चन्द्र 'वीन' छिटकाकर,

धवल चान्दनीकी शुभधार।

कभी दिखायेगी दीपावलियोंका

सरस सुखद शृंगार।

देह दीप है, रक्त तैल है,

श्वास बना बाती साकार।

अमर अलौकिक लौ दिखला,

हरते हैं अन्ध तिमिर अपकार।

आज सौध छितीके भीतर,

जगमग करते दीप अपार।

मिथ्या दीप जलानेवालोंको है,

कोटि-कोटि धिक्कार॥

—*—

श्री भीषमलाल पंडित—भारत प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके सदस्य और बड़ाबाजार जिला कांग्रेस कमेटीके भूतपूर्व सभापति एवं कलकत्तेके प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता—जिनका देहावसान गत बुधवार ता० ७ नवम्बरको रातके १० बजे उदर वेदनाके कारण हो गया। परमात्मा आपकी दिवंगत आत्माको चिर शान्ति प्रदान करें।

अन्तर्राष्ट्रीय

[दा]र्दानियालपर अमेरिकाका रुख

[दा]र्दानियाल जल डमरूमध्य रूस और [टर्की]के लिये एक समस्याके रूपमें रहा है [औ]र उक्त दोनों देशोंके पारस्परिक सम्बन्ध [में यह] समस्या सदा महत्वपूर्ण स्थान रखती [चली] आयी है। मध्य यूरोपकी नाजी [प्रभुत]ासे मुक्तिके पश्चात उक्त क्षेत्रोंमें उस[का] प्रभाव बढ़ता गया है और दूसरे राष्ट्रोंके [लिये य]ह एक चिन्ताका विषय बन गया है। [... बा]ल्कन देशोंमें पिछले दिनों मोलोटोव [और ब]ेविनमें जो मल्लयुद्ध हुआ है, उसका [म]ूल कारण मध्य यूरोपमें रूसी प्रभाव [से उ]त्पन्न आशंकाएं हैं जिनसे ब्रिटेन [ग्रस्त] है। मध्य यूरोपकी राजनीतिमें [रूस]का आज प्रभावशाली हाथ है और [ब्रिटेन] तथा अमेरिकाकी इच्छाके प्रतिकूल [उ]क्त क्षेत्रोंमें वह बहुत कुछ करनेमें समर्थ [हुआ] है। उक्त जल डमरूमध्यको लेकर टर्की, [औ]र रूसकी दिलचस्पी है और पिछले [दि]नोंतक अनेक राजनीतिक जटिल[ता]ओंमें उक्त जल डमरूमध्यकी जटिलताएं [भ]ी हैं। इस सम्बन्धमें अमेरिकाके [अपनी] नीति स्पष्ट करते हुए एक स्मरण[-पत्र दि]या है जिसे टर्की स्थित अमेरिकन [राजदूत]ने टर्कीके परराष्ट्र सचिव हसन साका[को दि]या है। दर्रे दानियालको लेकर अमे[रिका]ने जो मन्तव्य प्रकट किया है उससे टर्की[को] सन्तोष हुआ है। गैर सरकारी [तौरपर] कहा गया है कि अमेरिकाने अपनी [नीति]का स्पष्टीकरण करते हुए कहा है कि [वह ऐ]से किसी भी कार्यका समर्थन करनेसे [इन्का]र कर देगा जिससे टर्की अथवा उसके [किस]ी भी क्षेत्रकी स्वाधीनताको आघात [पहुंचत]ा हो। टर्की और सोवियट रूसमें [हुई] मैत्री एवं अनाक्रमणात्मक सन्धि[की अव]धि समाप्त होनेको है। देखना है [कि] अमेरिकाकी प्रतिक्रिया कैसी [होती] है।

[विश्व]युवक सम्मेलन

[लन्]दनमें आलोच्य सप्ताहमें हुए विश्व [युवक स]म्मेलनमें रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, [फ्रांस,] चीन तथा अन्यान्य कितने ही राष्ट्रों[के युवकों]ने उक्त सम्मेलनमें शान्ति एवं गण[तन्त्रीय] शासन प्रणालीकी स्थापनाकी [...] मांगकी और पराधीन देशोंके साथ [सहानुभू]ति दिखलायी। स्वभाग्य निर्णयके [अधि]कारका समर्थन करते हुए तानाशाही [और सा]म्राज्यवादी नीतिका अखिल विश्व [युवक स]म्मेलनने विरोध किया। संसारका [भविष्य] युवकोंके हाथमें है और उक्त युवक [सम्मेलन य]दि वर्तमान विचारधाराका प्रति[निधित्व] करता है तो उसकी प्रगतिशीलता [में ही] भावी कल्याणकी आशा है। [...] आज एक विशाल जनसंख्या [साम्राज्यवा]दी फैसिज्मका शिकार हो रही [है। अ]भी कितने ही देशोंको नाममात्र[की स्वाधी]नता नहीं है और उनके स्वा[धीनता-यु]द्धका मुकाबिला प्रबल राष्ट्रोंका [...] युद्ध कर रहा है। पिछड़े हुए [...] देश इस प्रबल युद्धका मुकाबिला [करनेमें अस]मर्थ हैं। प्रगतिशील विचार[धाराके ...] देशोंमें कठोर साम्राज्यवादी [...] लेकर कायम हो रही हैं। ऐसी दशामें लन्दनके विश्वयुवक सम्मेलनकी प्रगतिशील विचारधारा स्वागत करने योग्य है।

उपनिवेशोंकी समस्या

हिन्द चीन और इण्डोनेशियाकी स्थिति का सिंहावलोकन करते हुए रूसीपत्र 'प्रवदा' ने औपनिवेशिक समस्याको शीघ्रतासे हल किये जानेकी आवश्यकतापर जोर डाला है—उसने लिखा है कि हमें प्रशान्त महासागरीय अंचलकी घटनाओंकी पूर्ण जानकारी नहीं है पर यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वे घटनायें औपनिवेशिक समस्याको अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिकी अगली कतारमें खड़ी कर रही हैं। आजादी पसन्द कौमोंने फासिस्टोंके खिलाफ जो लड़ाई लड़ी है उसका उपनिवेशोंकी जनतापर गहरा प्रभाव पड़ा है। शांति और आजादीकी लड़ाईमें प्रदर्शित वीरता और सैनफ्रांसिस्कोमें मित्रराष्ट्रोंके उद्देश्योंकी घोषणाने उपनिवेशोंकी जनतामें युद्धके पूर्वकी स्थितिमें परिवर्तनकी आशा जगायी। अधिकांश उपनिवेशोंकी आर्थिक स्थितिपर भी युद्धका गहरा असर पड़ा और रूढ़ीवाद वहांसे सदाके लिये मिट गया।

चांग कैशेककी चार शर्तें

कोमिटांगने गृह युद्धकी समाप्तिके लिये कम्यूनिस्टोंके सामने जो चार शर्तें रखी हैं उनके सम्बन्धमें कम्यूनिस्ट पार्टीके एक वक्ताने कहा है कि पहले सरकारी फौजें लड़ाई बन्द करें तो कम्यूनिस्ट भी वैसा करनेको तैयार हैं। केन्द्रीय सरकारको चाहिये कि जगह-जगह युद्ध बन्द करनेका आदेश न देकर सम्पूर्ण देशके लिये ऐसा आदेश दे। यदि सम्पूर्ण देशकी कोमिटांग सेनाको लड़ाई बन्द करनेको कहा गया तो कम्यूनिस्ट भी वैसाही करेंगे। कम्यूनिस्ट और कोमिटांगके बीच चुंकिंगमें जो समझौता हुआ था उसकी पहली शर्त है कि उभयपक्षके सेनाओंकी गतिविधि स्थगित कर दी जाय। दूसरी शर्त है कि आज जिस रेलवे लाइन पर आक्रमण जारी है उससे छः मील दूर अगल बगलकी कम्यूनिस्ट फौजें चली जायें। तीसरी शर्त है कि उस रेलवेसे सैनिक आवाजाहीके पूर्व कम्यूनिस्टोंसे विचार विमर्श कर लिया जायगा। चौथी शर्त यह है कि शान्ति रक्षा दल यातायातके साधनों को संगठित करे और प्रबन्ध समिति रेल पथकी स्थितिकी देखभाल कर इसकी रिपोर्ट पेश करें। जेनरलिस्मो चांग कैशेक नये प्रस्ताव उपस्थित कर कम्यूनिस्टोंकी शर्तें पूरी करनेकी दिशामें बहुत आगे बढ़े हैं। सबसे बड़ी रियायत जो चांग ने दी है उसका उल्लेख तीसरी शर्तमें है। चीन सरकारकी सबसे बड़ी आवश्यकता है उत्तरी चीन जानेके रेलपथको प्राप्त करना [...] इसे रोकनेके लिये कम्यूनिस्ट जापेमार दल प्रतीत होते हैं। यदि कोमिटांगको एक बार भी उत्तरी चीन और उक्त रेलवे पर अपना पंजा मजबूत करनेका मौका मिला तो कम्यूनिस्टोंका उस इलाकेकी राजनीतिपर बहुत कम असर रह जायगा, इसे कम्यूनिस्ट भली भांति समझ रहे हैं।

जर्मनोंका निष्कासन

आलोच्य सप्ताहमें पश्चिमी जर्मनीके निवासियोंको एक रूसी आज्ञा द्वारा हुक्म दिया गया है कि वे ४८ घण्टेके भीतर जर्मन अधिकृत रूसी इलाकेको छोड़ दें। इस निष्कासन आज्ञासे प्राय ९ लाख जर्मनोंको रूसी इलाका छोड़ना पड़ेगा। इन जर्मनोंको अवश्यही भाग कर अंग्रेजी इलाकेमें जाना पड़ेगा, जिससे भारी गड़बड़ी उठ खड़ी होगी। इस सम्बन्धमें बर्लिन स्थित रूसी प्रतिनिधियोंसे बातचीत शुरु कर दी गयी है। ब्रिटिश परराष्ट्र विभागने भी स्थितिके गम्भीर होनेके पूर्व ही मास्कोसे विचार विमर्श आरम्भ कर दिया है।

चीनमें गृहयुद्ध जारी

मंचूरियाकी सीमा पर उत्तरी नानकिंग से वहार तक उत्तर और दक्षिणमें चीनकी सरकारी तथा कम्यूनिस्ट फौजोंमें युद्ध जारी है। सरकारका अनुमान है कि लड़नेवाली कम्यूनिस्ट फौजके सैनिकोंकी संख्या३ लाख है, जो कि विभिन्न क्षेत्रोंमें युद्ध कर रहे हैं। चीन सरकारका अब भी दावा है कि वह अपनी रक्षाके लिये युद्ध कर रही है। यद्यपि एक अफसरने कहा है कि उत्तरी क्यांगसूमें वे कम्यूनिस्टोंका पीछा कर रहे हैं। कम्यूनिस्ट समाचार पत्र 'सिन वा किह पाओ'ने चीनी सरकारकी ओरसे कथित अमेरिकन हस्तक्षेपका उद्धरण देते हुए कहा है कि ये काररवाइयां स्वर्गीय राष्ट्रपति रूजवेल्टके आदर्श और राष्ट्रपति ट्रूमैनकी घोषित नीतिकी विरोधी है। यदि ये काररवाइयां रोकी न गयीं तो इनकी भयंकर प्रतिक्रिया होगी। चीन युद्धके समाचार संग्रह करनेमें संवाददाताओंको अत्यधिक कठिनाईका सामना पड़ता है। दोनों पक्षोंसे परस्पर विरोधी बातोंका प्रचार किया जाता है, जिनकी पुष्टि और खण्डनकी जानकारी प्राप्त करनेके लिये काफी श्रम करना पड़ता है। साथही यातायात आदिकी पूर्ण सुविधाएं आदि भी प्राप्त नहीं हैं।

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशियामें अबतक अशांति कायम है और बटाविया आदि नगरोंमें खूंखार युद्ध जारी है। डच सरकारने डा० सोकार्नोके सामने जो योजना समझौतेके लिये पेश की थी, किन्तु वह रद्द कर दी गयी। [...] साम्राज्यवादियोंने ऐसा प्रचार आरम्भ कर दिया है कि डा० स्टोकार्नोका इण्डोनेशियनों पर जरा भी प्रभाव नहीं रह गया है। ब्रिटिश सरकारने पण्डित जवाहरलाल नेहरूको जावा जानेकी अनुमति नहीं दी है। बटाविया नगर स्थित केमटसे राह अंचलमें लड़ाई पुनः आरम्भ हुई है। पांच सौसे अधिक सशस्त्र इण्डोनेशियन, अपनी सम्पूर्ण शक्ति केन्द्रित कर युद्ध कर रहे हैं। मित्र राष्ट्रीय टैंक घटनास्थल पर भेजे गये हैं, और आवश्यकतानुसार भारतीय सैनिकोंको सहयोग प्रदान करेंगे, जो वस्तु स्थितिका मुकाबला कर रहे हैं। केमटके उत्तरी भागमें शस्त्रसज्ज दस्तोंको नगर तक पहुंचनेके पूर्व रोकनेके उद्देश्यसे रास्ते पर रुकावट खड़ी कर दी गयी है। उग्रवादी इण्डोनेशियन बन्डोंगमें बहुत बड़ी तादादमें एकत्र हो रहे हैं। पता चला है कि नगरमें ६ इण्डोनेशियन डिवीजनोंके सदर मुकाम कायम किये गये हैं। मेगलैंगके निवासी दूरवर्ती ग्रामोंसे सशस्त्र इण्डोनेशियन सैनिकोंको एकत्र होते देख उत्तरोत्तर चिन्तित होते दिखायी पड़ रहे हैं। मेगलैंगके अनेक व्यक्ति नगर खाली कर रहे हैं। जावामें ब्रिटिश सेनाएं अबाधगतिसे पहुंचती जा रही है और ब्रिटिश सरकारने इण्डोनेशियनोंको आत्म समर्पण करनेकी अन्तिम चेतावनी दे दी है। ऐसा अनुमान है कि ब्रिटिश चेतावनीके अस्वीकृत होने पर ब्रिटिश सरकार जावाके खिलाफ युद्ध घोषणा कर देगी।

अमेरिकाकी परराष्ट्र नीति

राष्ट्रपति ट्रूमैनने अमेरिकाकी परराष्ट्र नीतिकी १२ शर्तोंको घोषित कर दिया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका अपना राज्य विस्तार अथवा स्वार्थ साधन करना नहीं चाहता। किसी भी देश पर आक्रमण करना अथवा कहीं भी शान्ति भंग करनेकी आकांक्षा अमेरिका नहीं रखता। शत्रु अधिकृत देशोंमें स्वशासन और सर्वोच्च सत्ता की पुनर्स्थापनामें उसका विश्वास है। जो जनता स्वशासन चाहती है उसको बिना किसी बाधाके अपनी सरकार चुननेके अधिकारका वह समर्थन करता है। पराजित शत्रु देशोंमें गणतन्त्रकी स्थापनामें अमेरिका मदद पहुंचायेगा। और किसी विदेशी शक्ति द्वारा किसी देशमें जबर्दस्ती स्थापित सरकारको स्वीकार नहीं करेगा। सभी देशोंको समुद्रों, नदियों और जलमार्गोंमें आवागमनकी स्वच्छन्दता रहेगी और मित्रराष्ट्र संगठनका सभी सदस्य राष्ट्र संसारके कच्चे माल पर समानाधिकार पायेगा। सारे संसारकी जनताको बोलने और लिखनेकी स्वच्छन्दता देना अमेरिकाका लक्ष्य रहेगा। संसारमें शान्ति स्थापित करनेके लिये शक्तिका उपयोग करनेमें अमेरिका कभी नहीं चूकेगा और अपने सभी लक्ष्योंको पूरा करनेकी अन्तिम इमदक चेष्टा करेगा।

कहानी

सौन्दर्यका अन्त

लेखक—श्री छेदीलाल गुप्त

हाथीके दांत खानेके और दिखानेके और'।

सो सिनहाजीकी भी यही हाल हुई कि जमीनपर सोना, सो भी बगैर बिस्तरके, होटलमें एक वक्त ही खाना बजट बनाकर, लेकिन सिद्धान्त छांटनेमें इतने उदार और इतने खर्चीले कि उन्हें कभी दुख नहीं हुआ। हिसाब भी नहीं लगाते—अनन्त पातकी है, पतित है। वह यह सब है धन होनेकी वजहसे। ऐसा कहना उनके स्वभावकी सरलता है। एड़ीसे ऊपरतक पंजामा और बगैर गंजीकी कमीज गन्दीसी, सरके अस्त-व्यस्त बड़े-बड़े गर्दनतक बाल यह तबके सिन्हाजी हैं जब कम उम्रमें ही एक बार गढ्ढेमें गिर जानेके बाद कीचड़से पुनर्जन्म उनका हुआ था और वह शरण लेनेके लिये प्रोफेसर प्रद्युम्नके पास अनन्तको मिले थे। और पहली मुलाकातमें ही उन्होंने सिन्हाकी लम्बी लेक्चर सुनी कि संसारमें कीचड़ ही कीचड़ है, संसारका प्रत्येक मनुष्य कीचड़की दलदलमें फंसा है कारण है रुपया, पैसा! भौतिकवादी संसारमें पैसोंका अधिक महत्व जो है।

प्रोफेसर प्रद्युम्नने अपनी पत्नीकी बातों का उल्लंघन कर उसे अपने नीचेवाला कमरा जो नमीसे भरा था रहनेके लिये दे दिया—साथ ही एक चटाई भी। सिन्हाजीकी जिन्दगीका पहिया सैधान्तिक धुरीपर किसी तरह चला जाता रहा है। अचानक एक दिन प्रोफेसर साहबने देखा कमरा खाली पड़ा है। पूछताछ किया। पता चला कि वह कई दिनसे लापता है। तबसे सिन्हा को लापता हुए फिर कोई पता नहीं चला। प्रोफेसर साहबने मान लिया कि उसने आत्महत्या कर ली होगी, क्योंकि वैसे मनुष्यका इस भौतिकवादी संसारमें विकास बड़ा असम्भव है।

प्रोफेसर साहबके द्वारा यह खबर पाकर अनन्त उतना ही खुश हुआ जितना दुखी प्रोफेसर साहब थे। प्रोफेसर साहबने अपने दुखका कारण बताया, कि संसारमें सिन्हा की तरह आदमी अगर प्रश्रय पा जाये तो अवश्य कर्मठताकी ज्योति जगमगा उठे।

और अनन्तने प्रोफेसर साहबकी इस सूझबूझका जिक्र रेखासे किया। खूब हंसा। रेखाने भी साथ दिया। और रेखा अनन्तकी इस बातपर और जोरसे हंसी कि अनन्तने अपने बापको भी मूर्ख बनाया।

'तुम भी अजीब हो'--रेखा बोली।

'अजीब क्या हूं'—अनन्त बोला—'बूढ़ा रुपैया तो अपनी छातीपर लादकर जमींदारी ले तो नहीं जायेगा।'

'यह तो सच है।'

'तो मौज मनानेमें रुकावट क्यों?' अनन्त कहने लगा—'मैंने क्या बुरा किया यह लिखकर कि एक शीट फूलस्केप पेपरका दाम ५०) ६० है। अगर ऐसा नहीं लिखता तो दो सौका मनीआर्डर कैसे आता?'

रेखा उठ खड़ी हुई, बोली—'चलो आज मेट्रोमें सिनेमा देखें। पिताजीसे मैं पूछ लूं।

रेखा प्रोफेसर साहबकी बेटी है। और अनन्तपर प्रोफेसर साहबका प्रगाढ़ प्रेम है।

———दो———

रातको अधिक देरसे अनन्तके लौटने-की बात बहुत पुरानी है पर सिन्हाके लिये यह बिलकुल नयी और आश्चर्यचकित होने लायक ही है, क्योंकि अनन्तसे, उसके ठाट बाटसे, उसके रहन-सहनसे अभी वह स्वयं अनभिज्ञ है।

अनन्त जब सीढ़ियोंपर चढ़ रहा था तब भी लाइब्रेरी रूमकी बत्ती जल रही थी। उसने अनुमानसे ही पुकारा—'सिनहा!'

और सीढ़ीके पास मि० सिनहा आकर खड़े हो गये—'इतनी राततक कहां रहते हो?' प्रश्नके साथ साथ वह सीढ़ियोंपर चढ़कर कहने लगा—'देखो, अनन्त, हमें नारीके शरीरका लोभ त्यागना होगा। यह जो रेखा है, कुछ नहीं है उसका सौन्दर्य केवल पतनकी ओर ले जानेमात्रका हेतु है। जब तुम सौन्दर्यके अन्तमें पहुंच जाओगे तब स्वयं समझ जाओगे। आज हमारी बातें कटु लगेंगी।'

अनन्त जोरसे हंसा—'पतन और पाप पर मैं तुमसे बहस नहीं करना चाहता, केवल इतना कहना चाहता हूं कि तुम जरा सफाईसे रहा करो। रेखा तुम्हारी तारीफ करती थी। तुम्हारे चले आनेका उसे बड़ा दुख है।'

और दोनों सीढ़ियोंको तयकर कमरेमें जा पहुंचे। कोट उतारकर उसने पीछे खड़े नौकरको थमा स्टूलपर पैर रख बूटका फीता खोलते खोलते फिर वह कहने लगा—'तुमको मैंने वहांसे लाया है केवल तुम्हें जिन्दगीके सुख और चैनसे परिचय करा देनेके लिये। मेरा पथ पतनका ही है लेकिन तुम क्यों उस ओर जाओगे, कैसा बचाया तुम्हें।'

'तुम्हारा उपकार मैं कभी नहीं भूलूंगा।'

--पुनः अनन्त जोरसे हंस पड़ा।

'विश्वास करो......।'

'अच्छा छोड़ो इन बातोंको' अनन्तने सिन्हाको बीचमें ही रोककर कहा—प्रतिमाके घर कल चायपर चलना है। याद रहे।' चेतावनी दे वह उछलके सोफेपर बैठ गया। तत्काल चौंककर कह उठा—'लेकिन तुम्हारा यह पाजामा और शर्ट वहां नहीं चलेगा......' यह कहते कहते रुका और बड़ीसी आलमारी खोल एक रेशमी सूट उसके सामने पटककर बोला—'पहनो तो इसे?'

मनन होनेपर भी सिनहाने सूट पहन लिया और बड़ेसे आइनेके सामने खड़े होकर अपनेको तजबीजने लगा—'ओह, कितना अच्छा लगता है सूटमें क्या शान है। सचमुच जानवरकी शक्ल भी सूट पहननेपर बदल जाये। मैं तो आदमी ही ठहरा।

'अबतुम आदमी दीखते हो'-दूसरे दिन चायके समय जब सिनहा सूट पहन अनन्तके सामने खड़ा हुआ तब अनन्त कह उठा—'वार्निंग, अब तुम आदमी दीखते हो। रेखा इस रूपमें तुम्हें देखकर बड़ी खुश होगी।'

'सच, हंसेगी'—एकही साथ दोनों शब्द सिनहाके मुंहसे निकले। क्षणमरमें ही उसके चेहरेपर हंसी और विषादकी रेखा दौड़ गयी। और कई दिनों बाद उसकी जबानपर केवल--रेखा, देखा, प्रतिमा-प्रेम जिन्दगी और मौज!

और सबके अन्तमें अनन्तकी वही चिर-परिचित हंसी-अट्टहास।

---------तीन---------

बड़ी-सी घड़ीने टनटन १२ बजाये--रातके बारह। अनन्तने देखा आज अभी तक सिनहा नहीं लौटा। नौकरको बुलाकर उसने पूछा कि कब गया है, अकेले गया है या और किसीके साथ?

नौकरने कहा कि टेलीफोनपर किसीसे बात कर वह शामके पहले बगैर चाय पिये ही चले गये और कई दिनोंसे बड़ी देरतक वह किसीसे फोनपर बातें करते रहते हैं। खूब हंस हंसकर, सांसें भरभरकर बातें करते हैं, ठीक आपही की तरह घण्टों बातें करते रहते हैं प्रेम-तुम बड़ी दूर हो फिर भी मैं तुम्हें देख पा रहा हूं---यही सब।

अनन्त जोरसे हंस पड़ा और लोप होती हुई हंसीके बाद अपने आप बोल उठा—'एक जानवर और बूढ़ा, मेरी जीत हुई, मैं जीता, मेरी जीत'--और पुनः वह हंसने लगा।

तभी सीढ़ियों पर किसीके पैरोंकी आहट उसे मिली। बाहर निकल उसने देखा—सिनहा आ रहा है। आतेही उसने अपने सामने खड़े अनन्तके कंधे पर जोरसे हाथ मार कर कहा—'आज बड़ा मजा आया। रेखा बड़ी अच्छी है। मुझे धमकाती है कि वह प्रोफेसर साहबको कह देगी कि मैं इसी संसारमें हूं। और मैंने कह दिया कि जब अनन्त मेरे साथ है तो मुझे कोई परवाह नहीं।'

'क्या बक रहे हो?' अनन्तने कंधे परसे उसका हाथ झटक दिया—सौन्दर्यके अन्तमें पाप है, पतन है, इसे भूल रहे हो। अब तुम्हारे जरिये कुछ काम निकलेगा।' पुनः वह जोरसे हंस पड़ा। एक भयङ्कर हंसी।

'तुम हंस रहे हो? तुम ऐसे क्यों हंसते हो?'

दोनों कमरेमें जा एक सोफे पर बैठ गये। अनन्तने कहा—'मैं हंसता हूं तुम जैसोंको देख कर' जो हाथ नहीं लगने पर अंगूरको खट्टा कहा करते हैं। इन बातोंको छोड़ो, तुम प्रतिमासे ब्याह करोगे?'

'प्रतिमासे'—सिनहा कुछ सोच कर बोला—'नहीं, रेखासे क्यों नहीं?'

'चुप रहो, इसी लिये मैंने तुम्हें संसारमें जीनेका अधिकारी बनाया। रेखा तुम जैसोंके पल्ले पड़नेवाली नहीं, जो अपने पैर पर खड़े नहीं रहते...'

'ओ,—'सिनहा बीचमें ही बोला—'अपने उपकारोंका बदला चाहते हो?'

'उपकार,'—अनन्त पूर्वकी भांति हंस पड़ा—'उपकार, दया, ममता, स्नेह-ये किताबी शब्द हैं, मनुष्यको महान्‌ बनानेवाले निरा ढोंग हैं। मैं किसी पर दया नहीं करता, किसी से स्नेह नहीं रखता, और न किसी पर मुझे ममता है।' वह चुप हुआ और सिनहा आश्चर्य चकित सा उसे घूरने लगा। इसके पूर्व उसने अनन्तको इस रूपमें नहीं देखा हो, सो बात नहीं, पहले परिचयमें ही उसने अनन्तको पहचान लिया था। पर अनन्तने उसे अपनी मुट्ठीमें जकड़ लिया। ... फिर आज सिनहाके सामने अपनेको ... कर रख दिया। अनन्त उठा, सोनेके ... चला गया और सिनहा रात भर ... पर पड़ा रहा। अनन्त बुरा नहीं, ... में कोई बुरा नहीं।

मेरे पतनका भागी कोई नहीं, मैं ... हूं—अब मैं जीना नहीं चाहता, पर ... क्यों? संसारमें सभी तो जीवित हैं ... अनंत भी तो। मुझे भी जीना ... आह!—उसके दिमागमें आज कैसा तूफान मचा है, मानो प्रलयका ... नजदीक आ गया है, रेखाका मोह ... छोड़ दे?

जब अनन्त सोकर उठा तब सिनहा वहां नहीं था। अखबारको उठा वह ... पीने बैठ गया—अचानक उसकी निगाह इस समाचार पर जा पड़ी---'प्रोफेसर प्र... के कोठीमें धड़ाका, वह चाय छोड़ प्रोफेसर साहबके यहां चला गया।

अचानक रातको तीन बज कर ... मिनट पर रेखाके कमरेकी खिड़की ... और रेखा चौंक कर उठ बैठी। उसके मुंह से एक आवाज निकली 'कौन है?'

'मैं हूं'--खिड़की पर एक मनुष्य ... कह रहा था--'रेखा, मैं हूं मैं।'

और रेखाको लगा जैसे वह अब ... नजदीक आता जा रहा है—बिलकुल ... उसके दोनों पंजे भयानकतासे उसकी ओर बढ़े आ रहे हैं और वह कहता जा रहा ... 'रेखा मैं हूं, आज तेरे सौन्दर्यका नाश ... हाथों सम्भव है, जिस सौन्दर्यने मुझे ... पथसे हटा दिया वह चीख कर बेहोश हो ... अचेत हो गिर गयी।

प्रोफेसर साहब दौड़े आये—'क्या ... क्या है?' और उसके साथ ही उनके ... बन्दूकका घोड़ा दब गया।

और इसके बाद सभीने देखा जमीन पर ... पड़ा है सिनहा।

रातकी इस घटनाको जब प्रोफेसर साहब अनन्तसे कह चुके तब एक ... के बाद बोले—'अनजानेमें मुझसे यह ... हो गया।'

अनन्तने कहा--'अच्छा ही हुआ ... अपने लक्ष्यको भूल जाता है, उसे ... अधिकार नहीं।'

रेखा चुप खड़ी थी। प्रोफेसर ... चिन्तित बैठे थे और अनन्त अपने ... हास्यसे अट्टहास रहा था, जिस ... डर कर सिनहाने उससे प्रश्न किया ... 'तुम ऐसे हंसते क्यों हो?'

समाज दर्पण

...ल बजाकर कुर्की !

...लियावास (मेवाड़) का एक समा... है कि चौथमल आलमचन्द सुराणा ...दो व्यक्ति फूलचन्द फतहलाल सुराणा ...ढोल बजाते हुए कुर्की ले गये। किन्तु ...की बेइज्जतीको सहन न कर सकनेके ...एक ही मासके भीतर फूलचन्दकी ...हो गयी।

...वाड़ ही क्यों, समस्त राजपूतानेके ...में रहनेवाली ग्रामीण जनताकी आर्थिक ...को देखते हुए रोजमर्राकी कुर्कियों ...बर्तनों फन्दे गुदड़ों तकके नीलामकी ...अब साधारणतया पुरानी पड़ गयी हैं। ...र किसी गरीबको कुछ कर्ज देता है, ...दुगुना मूल ब्याजके रूपमें लौट ही ...तो भी कर्जकी रकम एक अरसे तक ...की त्यों बनी ही रहती है और फिर ये ...कभी कभी तो पीढ़ियों तक चलते हैं ...अलग दो आदमियोंके परिवारोंको, ...योंको कर्जदारों और साहूकारोंकी ...बनाते हुए ! इतना ही नहीं, यदि ...र्जदारने थककर, हारकर आंख भी ऊंची ...सके लिये साहूकारके हाथमें राज्य... ...ती है। राज्य-दण्ड गरीबों और निर्बलों ...क्षा अथवा सहायता भले न कर सके, ...भी पैसेवालोंकी सेवा और सहायता ...सीके जरिये हर हालतमें हो ही सकती

...लेकिन कचहरियों व अदालतोंमें न्याय ...विनयके रूपमें होनेवाली इन सारी ...में सचाई कहां तक है ? रियासती ...अथवा जागीरदार गरीब जनताका ...करके मौज उड़ा रहे हैं। सदियोंसे ...पाने वाली आम जनताकी गरीबी पर ...देने अथवा उसके रहन-सहनके स्तर ...का उठानेके लिये कभी किसीका ध्यान ...नहीं जाता। उन्हें इतनी फुर्सत ही कहां ...अदालतोंका न्याय गरीबोंकी विवशता ...भी कुछ कम करता हो, ऐसी भी बात ...वह लाभ पहुंचाता है, केवल उनका ...तुलनात्मक दृष्टिकोणसे अधिक ...ी, पैसा जिनके पास है !

...याके इन्हीं पहरेदारोंसे हमें प्रश्न ...है। किसी गरीबकी विवशताओंका ...उठाते हुए यदि उसपर कुर्कीका हुकम ...है, यदि उसका घर द्वार, लोटा ...का नीलाम होता है वहांतक तो फिर ...की सीमा है। लेकिन क्या न्याय पैसे ...को इस बातकी भी इजाजत देता है ...सके अतिरिक्त गरीबोंकी इज्जत करे ...? क्या गरीबोंकी इज्जत और ...केवल चांदीके कुछ टुकड़ोंके मुकाबिले ...तौलकर तौला जा सकता है ?

...न्यायियतके भेषमें ये लोग जो खुद ही ...मानवताका खून इस तरह करनेपर उतार ...—आजके शासनकी न्यायप्रणालीमें ...नके लिये भी कोई दण्ड विधान है ? ...वस्तुतः जो समाजके बड़े अपराधी हैं, ...बारे प्रश्न करनेकी क्या अदालतके ...व्यवस्थित न्यायमें क्षमता है ? यदि ...तो यह कितने बड़े शर्मकी बात है !

...उपर्युक्त घटनाओं या दुर्घटनाके ...हुई ये सब चीजें सोचनेको बाध्य होना ही पड़ता है। एक आदमीपर कुर्की लेकर आना और वह भी बाजे गाजेके साथ ! मानवताका कितना बड़ा पतन है ! मानव की पशुताका कितना गन्दा प्रदर्शन है, वर्गभेदका कैसा ज्वलता उदाहरण है ?

न्यायके नामपर, हम मेवाड़ नरेशसे प्रार्थना करेंगे कि कि अपनी प्रजाके दुरवस्थाके इन उदाहरणोंको देखते हुए अब भी कुछ ध्यान दें। हम उत्सुकताके साथ इस बातकी प्रतीक्षा कर रहे हैं कि देखें एक आदमीकी इस तरह जान ले लेनेके बाद प्रकटमें अभियुक्तको क्या दण्ड दिया जा सकता है !

प्रेमिका या वेश्या

पिछले दिनों एसोसियेटेड प्रेसके द्वारा नयी दिल्लीसे प्राप्त एक समाचारमें बतलाया गया था कि कुछ अधगोरी छोकरियां अपने अमेरिकन प्रेमियोंके साथ संयुक्त राष्ट्र जानेके लिये पासपोर्ट प्राप्त करनेके प्रयत्नमें पागल हुई इधर उधर घूम रही हैं। कई लड़कियोंको सरकारने पासपोर्ट दे भी दिये हैं, लेकिन अब भी एक बड़ी संख्या उन लड़कियोंकी शेष रह गयी है जोकि पासपोर्ट न मिल सकनेके कारण उक्त अमेरिकन सैनिकोंके साथ उनके देश नहीं जा सकेंगी।

अनुत्तरदायित्वपूर्ण कार्य

बरेलीमें सैनिकोंके लिये रेस्ट हाउसके उद्घाटनके समय हालही में एक दिन वहां के स्थानीय कालेजकी कुर्सियां मंगवा ली गयीं और फल स्वरूप कुर्सियोंके अभावमें कालेज बन्द कर देना पड़ा। उक्त उद्घाटन समारोहके सदर स्वयं संयुक्त प्रान्तके गवर्नर सर मारिस हैलेट थे।

ऊपरसे देखने पर भले यह बात साधारण सी नजर आये, लेकिन किसी सैद्धांतिक दृष्टिसे देखने पर इसके अनौचित्यको सहज ही अनुभव न किया जा सकता हो, इसमें हमें सन्देह है। शहरके किसी तेली-तमोली, सद् गृहस्थ अथवा असद्गृहस्थके लड़केकी शादी पर भी, सम्भव है, किसी व्यक्तिको स्थानाभावके कारण दावतके लिये कालेजकी इमारत अथवा मैदान उपयुक्त जंचे। खुद कालेजके प्रोफेसरोंको भी कभी कोई ऐसी आवश्यकता महसूस हो सकती है। लेकिन ऐसी स्थितिमें यदि कोई आदमी कालेजकी इमारत अथवा वहांके फर्नीचरकी मांग करे तो कालेजके अधिकारी उसकी सहायता करें या न करें, उसे किसी न किसी तरह असुविधा पहुंचानेसे बचाकर बतलानेका रास्ता बता कर तो वे अवश्य फुरसत पाकर भागी बन सकते हैं।

लेकिन दूसरी तरफ चूंकि कालेजकी कुर्सियोंकी बहुत सरकारी अधिकारियोंको पड़ी, प्रान्तके गवर्नर साहबकी प्रधानता से होनेवाले जलसेमें उनकी मांग हुई, तो कालेज अधिकारी कैसे मना कर सकते थे ? कुर्सियां उत्सवके लिये, आनन्दके लिये भेज दी गयीं और विद्यार्थियोंने देखा कि उक्त महान (!) कार्यके सम्पादनके उपलक्ष्यमें ही जैसे उनको छुट्टी दे दी गयी है।

यहां पर हमें स्मरण आता है कि हमारे राष्ट्रीय आन्दोलनके दिनोंमें भी कई मौके ऐसे आये हैं जब कि निहत्थी जनता पर गोली चलने पर, देशके पूज्य नेताओंकी अकारण गिरफ्तारी पर अथवा इसी तरहके अनेक अन्य कारणों पर विरोध प्रदर्शनके रूपमें देशके नौजवानविद्यार्थियोंनेकेवल उस खास दिनके लिये अपनी पढ़ाईसे छुट्टी चाही, चाहा कि जुल्म और अत्याचारके विरुद्ध शान्तिपूर्ण प्रदर्शनके लिये,अपने हृदयकी व्यथाके उपचारके लिये उन्हें अवकाश मिले, राष्ट्रीयता और न्यायके तकाजे पर कालेज बन्द हो, लेकिन सरकारी कालेजोंमें उस समय उनकी इस आवाज पर, उचित मांग पर भी कभी ध्यान नहीं दिया गया ! एक नहीं, दो नहीं, ऐसे अनेक उदाहरण आज हम दे सकते हैं कि देशकी इस उठती हुई पीढ़ी पर सरकारी शक्तिने इस तरहकी मांग के अवसरों पर भी लाठियां बरसाईं, उनके दुखी दिलको सान्त्वना देनेका तो फिर प्रश्न ही कहां रहा ?

मौजके लिये, हंसनेके लिये वे उस वक्त छुट्टी नहीं चाहते थे ! फिर भी उन्हें वह नहीं दी जा सकी। और आज जब कि हैलट साहबकी प्रधानतामें केवल सैनिकोंके विश्राम-गृहके उदघाटनके समय लोगोंको जुड़ कर चाय पीनेकी इच्छा हुई तो कालेज की छुट्टी कर दी गयी।

कालेजके विद्यार्थियोंकी एक दिनकी पढ़ाईकी बनिस्पत क्या सैनिकोंकी दो घड़ी की गप-शप ज्यादह कीमती और जरूरी थी ? ऐसा क्यों हुआ,हम पूछना चाहते हैं। सिर्फ इसीलिये न, कि सरकारी पदाधिकारियोंकी इच्छा और आज्ञाके आगे उचित अथवा अनुचित, ठीक अथवा गलतका प्रश्न उठानेकी शक्ति (सरकारी दृष्टिकोणके अनुसार) लोगोंमें कम है ! यह जुर्म भी है शायद ! लेकिन जहां समाजमें अनुशासन और व्यवस्थाका प्रश्न है वहां क्या इसे सराहा जा सकता है ? हम समझते हैं कि इस किस्मके अनुत्तरदायित्वपूर्ण कार्योंकी जितनीभी भर्त्सना की जाय,वह थोड़ीही है

प्रहसन

समाचार-सम्पादक *

लें०—श्री उमाचरण पाण्डेय, 'त्रिदण्डी'

प्रहसनके पात्र :—मटरू मिश्र...एक दैनिक पत्रके समाचार-सम्पादक। भवेशजी ...मटरूके मित्र और सहकर्मी, कच्छपजी... एक लेखक, मटरूके बनारसी मित्र। राइट आनरेबुल...उप सम्पादक, चौधर सेठ... बासाका मालिक। पत्र संचालक, फोरमैन इत्यादि।

* प्रहसनके सभी पात्र काल्पनिक हैं... किसीको अटकल भिड़ानेकी और मुंह फाड़ कर लगाम लेनेकी जरा भी गुंजाइश नहीं।

(स्थान मटरूका डेरा, डेरेके एक कक्षमें दरी...दरीके ऊपर तोषक...तोषक पर ताजी धुली चादर बिछी है। तीन-चार मुलायम तकिये इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। एक चौकी पर संस्कृतकी बहुत-सी पुस्तकें पड़ी हैं, चौकी के नीचे दो बड़ी-बड़ी गठरियां चलमें धरी हैं। गठरियोंमें जन्मान्तरके पुलिन्दों-सी गोल-गोल कोई चीज बंधी है। बिस्तरके ऊपर एक तकिया पेटके नीचे दबाये, औंधे पड़े मटरू एक पुस्तक पढ़ रहे हैं, उनकी आंखोंसे चौधारे आंसू चल रहे हैं।)

(दरवाजा ठेल कर एक दुबला पतला, रूक्ष केश, चिर रोगीकी तरह विषण्ण-वदन, पीले अङ्ग वाला व्यक्ति भीतर घुस आता है। मटरू अपने आंसू छिपानेके लिये उसे रोंछनेका वृथा प्रयास करता है।]

मटरू—आहा, मित्र भवेशजी ? आइये, आइये। अच्छे समय पर आये। कच्छपजी आते ही होंगे। आज सेठवाको फांसा है... मजेदार बूटी छननेका तार है। क्या कहूं, यहां तो अच्छा गुलकन्द मिलता ही नहीं!

भवेश—कह गुरु ई रोवत काहे बाटम, हम देखत हई कि तोहरे दूनों अंखियनमें गंगा जमुना दूनों नदी हलकोरा मारैयहन। बाबम-बतावम—'ये कैसे बाल बिखरे हैं, ये सूरत क्यों बनी गमकी' हा हा हा हा !

मटरू—हो भाई तुम निरे बछियाके ताऊ, मौके बे मौकेकी जरा भी तमीज नहीं है तुम्हें, चुप रहो! इस समय मैं भावावेशके 'मूड' में हूं और तुम हा हा-ही-हीका बेढरा राग अलापने लगे।

भवेश—हम नाहीं जानत रहली गुरु कि तू अकेलेमें बैठल मन के गुलगुला पका-वत बाटम! बिआह-उआह कहीं पक्का हो गयल का ?

मटरू—मूर्खता तो तुमने जान पड़ता है कि शेखचिल्लीसे उधार मांग ली है भाई! आया न लालबुझक्कड़ी अटकल! लगे पेपर की उड़ाने !

भवेश—का ? बिआह के बात नाहीं सोचत हौअ गुरु ? राम-राम, हमसे बड़ा अपराध हो गयल। हम नाहीं जनली कि तूं बिमहवैके चिन्तामें बैठल रोवत हौअ!... (आंखें मटकाता और मुंह बिचकाता है।)

मटरू—अरे चौपट-वरण, मैं इस समय पढ़ा पढ़ा 'विकट-नितम्बा' का अध्ययन कर रहा था। उसके काव्यमें रसका ऐसा प्रौढ़ परिपाक हुआ है कि उससे प्रभावित हो मेरी आंखें बरबस नीर टपकाने लगीं . तुम क्या जानो मूर्खानन्द, मैं बहुत बड़े पण्डितका पुत्र हूं। संस्कृत पर मेरा खान्दानी एकाधि-कार है...जानते हो ? (अभिमानकी मुद्रा)

भवेश—ई न कह भैया, विकट नितम्बा ओर [illegible] बाद कराव देखम। तब्बै तअ हम कहीला कि तू आपन बिआह जल्दी कै लअ नाहीं त बिकट नितम्बा, पिच्छिल छाती, उन्नत उ...उ...सोचत-सोचत तअ तूं पागल हो जाब...जनल अ...अ...अ...अ ?

मटरू—सच पूछो तो भाई भवेश, जबसे तुम्हारी भाभी भवसागरके उस पार चली गयीं तबसे तो हमारा जीवन ही कतवार-सा बेकार हो गया है...उड़ता-उड़ता फिरता हूं क्या करूं, इन्हीं रस-ग्रन्थोंसे नीरस-जीवन को क्षण भर सरस बना लेता हूं।

भवेश—(चौकीके नीचे रखी दोनों गठरियोंकी ओर सतर्क दृष्टिसे देख कर) ई गठरीमें का बंधले हौअ गुरु ? गोल-गोल! (गठरीकी ओर हाथ बढ़ाता है)

मटरू—(झपट कर गठरी पर पट्ट लेट जाता है) नहीं-नहीं, यह वस्तु किसीके देखने योग्य नहीं है, तुम बड़े उजड्ड जान पड़ते हो भवेशजी। बिना पूछे किसीकी चीज पर हाथ लपकाना भी कोई सभ्यता है ? राम-राम, तुम इतना भी नहीं जानते !

भवेश—(हंस कर) अरे गुरु हम सब जानीला, बिना एके देखले तअ हम मनबे न करब...चाहे जैसे देखा-बअ !

मटरू—(बिगड़ कर) तुम निरे उल्लू हो भवेश, यह हमारी भावी धर्मपत्नी श्रीमती शारदा देवीकी फाइलें हैं...गगना मिलाने के निमित्त सहर्ष मेजी है इसे। इसका छूना पर-स्त्री पर हाथ लपकानेके समान निन्दनीय है...राम-राम, ऐसा जघन्य कर्म।

भवेश—(हंसता है) हा-हा-हा-हा... ही ही ही ही आ...हू हू हू हू...वाह गुरु, ई बहानेबाजी! भला एतना जनरचतुरिया एक मेहराल के केत हाई हो ? (गठरी छीन कर खोल डालता है, उसमेंसे लपेटा हुआ 'टेली प्रिण्टर' के कागजके पुलिन्दे-पचासों इधर उधर बिखर पड़ते हैं। क्रुद्ध मटरू कोनेमेंसे भरना धीग उठा कर भवेशको मारने दौड़ता है। भवेश हंसता हुआ कोठरीके चारों ओर चक्कर काटता...भागता है। मटरू गाली बकता...उसके पीछे-पीछे दौड़ता है।)

(कच्छपजीका प्रवेश)

कच्छपजी—(स्वगत:) अरे इस कोठरीमें तो जान पड़ता है जैसे बम्बईका दंगा हो रहा हो! (कोठरीके खुले द्वारमें धीरे-धीरे सिर डालकर झांकता है। मटरू कच्छपजीका मुण्डित मस्तक, कोटर गात, कौड़ी-सी आंखें देख, बड़े जोरसे चिल्ला उठता है।)

मटरू—भूत! भूत! अरे भवेश, भूत, देख-देख...भवेश भूत!

(भवेश भागना छोड़ दरवाजेकी ओर बढ़ता है, मटरू जल्दी-जल्दी टेली प्रिण्टरका कागज समेट गठरी बांधनेका प्रयत्न करता है, पुलिन्दा सरक-सरक जाता है और मटरू उसे सावेश उठा-उठा कर पटकता जाता है। (कच्छपजीका सशरीर कोठरीमें प्रवेश)

कच्छपजी—अरे भाई मटरू, यह क्या द्रविड़ प्राणायाम कर रहे हो ?...अरे, यह तो टेली प्रिण्टरके कागजोंका पुलिन्दा है, अरे इतना ? (आश्चर्य मुद्रा)

मटरू—(क्रोधसे) इतना है तो तुम्हारे बापका है ? तुम क्या नहीं जानते कि मैं समाचार-सम्पादक हूं! समाचार छांट लेनेके बाद बचे हुए कागजों पर मेरा ही अधिकार है कि किसी साले के ससुरेके चाचाके दामाद के भतीजेके मामाके ताऊ...

कच्छप—अरे रोको भी अपनी कतरनी सी जबानको...गालीमें तो तुमने मिस्टर जिन्नाको भी मात कर दिया! अरे भाई, कौन कहता है कि टेली प्रिण्टरके कागजों पर तुम्हारा अधिकार नहीं है। वह तो तुम्हारी बपौती है। लेकिन एक बात तो बताओ, क्या करोगे इतना सारा बटोर कर तुम, वह आफिसमें रहता तो 'स्लिप' बनाने का काम देता न ?

मटरू—हो तुम निरे चोंगा कच्छपजी, मैं पण्डित परिवारका जीव, लिखने पढ़नेका ही व्यवसाय तो होता है हमारे यहां। तीन महीनेकी नौकरीमें सात साल तक लिखनेकी आवश्यकता—घर भरको—पूरी न कर ली तो लानत है ऐसी नौकरीको। क्या कहूं! मैं तो ऐसा डूब कर पानी पीता हूं कि खुदा को भी पता न चले किन्तु क्या कहूं इस उल्लूके पट्ठे भवेशवाको...मारा इसने कि सब गुड़ गोबर कर दिया। (भवेशकी ओर मुड़कर) लो देखो बच्चू अपनी करनीका फल।

भवेश—(हंस कर) अरे गुरु, अब छोड़अ न ई पचड़ा, सांझ भइल आवत हौ अब राइट आनरेबुल अवते होइहैं। ऊपर चलअ...भांग-बांगके डौला होय, नाहीं त अन्दर लोग आय जइहैं तअ सब भण्डा-फोड़ होय जाई। जेके जानेके नाहीं तेहु जान जाई। कच्छप जी तअ अपने आदमी हयन, एन जान गइलेन तअ कौनो हरज नाहीं। राइट आनरेबुल जान जाई तअ सहर भरमें बैना बांट देई-ई !

मटरू—(कच्छपकी ओर मुड़ कर) मैं जनेऊ हाथमें लेकर कसम खाता हूं कि भवेश जितना बड़ा उल्लू है, कभी-कभी उतनीही अच्छी बात भी इसे सूझ जाती है। देखा न आपने इस अन्धेको, अंधेरेमें कैसी दूरकी सूझी है! (जीने पर किसीके चढ़नेकी आहट मिलती है) (सब चकमका उठते हैं।)

मटरू—अरे भाई जल्दी करो, भाग चलो सब लोग यहांसे-जान पड़ता है, राइट आनरेबुल आ रहे हैं। सब मामला ही बिग-ड़ना चाहता है (जल्दी-जल्दी गठरी बांध कर पूर्ववत चौकीके नीचे खसका कर दर-वाजा बन्द करते हैं।) (सबका प्रस्थान)

दृश्य-दूसरा

स्थान—मारवाड़ी बासेका ऊपरी छत, सामने दो मूंढ़ी सिल रखे मटरू मिश्र बैठे हैं। भवेश जी बादाम छीलते नजर आते हैं। कच्छप जी और राइट आनरेबुल एक टूटही चारपाई पर बैठे हैं। चौधर सेठ हाथमें केसरके रुईको कुप्पी लिये खड़े हैं। बाल्टीमें दूध, थालमें चीनी, पुड़ियामें मिर्च, मसाला, मुनक्का, इलाइची और एक बरियामें गुलकन्द रखा है।

चौधर-सेठ---पण्डित जी, केसरकी आप कोई चिन्ता न करें (हाथको कुप्पी दिखा कर) यह ऐसी चीज है जो लखनऊके नवाब वाजिद अलीके काममें आती थी-बड़े भाग्यसे यह इतनी सी मुझे मिल गयी है। और घोल-घालके तैयार हो जाने पर इस हाथकी सिर्फ दो तीन बून्दही पूरी बाल्टीके लिये काफी होगी, केसरकी सुगन्धमें दिमाग तर हो जायगा।

मटरू--(दांत चियारकर) आप कुबेर सेठ जी! इन्द्र आपके यहां पानी भरते हैं, पवन झाड़ू लगाते हैं...(हें हें हें हें) आप साक्षात् यम हैं, चित्रगुप्त आपके यहां रंधन करते हैं, विश्वकर्मा परोसते हैं (हें हें हें हें) आप उदार तो ऐसे हैं कि आपको देखते ही कर्ण समुद्रमें कूद पड़ते हैं, राजा दिलीप बगल झांकने लगते हैं ऐं ऐं ऐं ऐं हैं।

(हाथ जोड़ता है)

भवेशजी--अरे गुरु, सेठजी तअ कलयुग कैं कोंपर हौवन, जेउनै गारअ ओतनै देलन। देखतअ नाहीं, एनकर'बासा'हरदम चहचहायल करैं-ला! कइअ गुरु कच्छप ?

(कच्छप सिर हिलाता है)

सेठ--(अभिमानसे अकड़कर) अजी महाराज आप लोग बूटी छान लें, सेठानी अपने हाथसे तलकर प्याजकी पकौड़ियां खिलायेंगी। सेठानी जैसी पकौड़ियां तो कलकत्ते के नौचन्दीके मेलेमें भो नहीं बनती...

(भवेश जीभ निकालकर ओठ चाटने लगता है—एक बूंद लार छिले हुए बादाम पर टपक पड़ती है--वह चारों ओर देखता है कि किसीने देखा तो नहीं! राइट आनरेबुल मुस्कराता है—भवेश घबराता है।)

राइट आनरेबुल--अच्छा सेठजी, जाकर जल्दी पकौड़ियां बनवाइये। अधिक हों! (दोनों हाथसे अधिकका इशारा करता है) आप तो जानते हैं, मैं भंग नहीं पीता। बिना भंगके ही आपकी ढाई सेर पकौड़ियां मार दूंगा...इसीलिये तो कहता हूं, जरा ज्यादा बनवाइयेगा। आप तो जानते हैं, मैं पांच सेर टमाटर खा देता हूं! बिना भांग, बिना गांजा, बिना शराब, बिना अफीम, बिना नीरा, बिना आं...बिना आं...बिना आं...!

चौधर—अच्छा-अच्छा, आप चिन्ता न करें, मारें जितना मारते बने। (राइट आनरेबुल खानेको मारना कहा करते हैं, इसीसे सेठने भी उसी शब्दको दुहराया) मेरी सेठानी कच्ची नहीं हैं...उसने कितने मारनेवालोंको देखा है... (हर्ष प्रकट कर) खूब—आपका शब्द मैं वहां नहीं व्यक्त कर सकता—खूब खिलावेगी वह आपको। अच्छा मैं जरा उधरका भी प्रबन्ध देखूं।

(प्रस्थान)

भवेशजी—(मटरूसे) कह गुरु, सेठानी हाथे के पकौड़ी तू खाबअ! काहे, आज...

(शेष १६ वें पृष्ठपर)

लोकतंत्रवादी-जवाहर लाल नेहरू

---ooooo---

(लेखक—श्री अशोक मेहता)

भारतीय राजनीतिक क्षेत्रमें शायदही ऐसा नेता होगा जो महान संगठन-कर्ता हो। स्वर्गीय दादा भाई नौरोजीने बहुसंख्यक कार्योंके प्रसार हेतु ३० ... स्थापित कीं। तिलक, एनीबेसेंट महात्मा गान्धीने जितना लाभ अपने ... उठाया उतना ही निज-स्थापित ... भी। उनमेंसे प्रत्येक अपने समय पर कांग्रेसकी नीति निर्धारक ... किन्तु जवाहरलाल इस सङ्गठन कार्य-... उदासीन एक अपने ढंगके अकेले ही ... हैं।

... की यह उदासीनता कदाचित उनके ... लालन पालन तथा विकासके कारण ... और इसी लिये वे एकांत या संगठन ... रहते हैं। उनके जीवनमें एक खाद-... सी है और वे प्रत्येक समाजमें राजा-... चमकते हैं। वह स्वभावतः कहीं ... नहीं रहते हैं। अनजान हालतके ... और कड़वे वर्ष किसी भी मनुष्यको ... के लिये प्रेरित करते हैं, किन्तु ... समाजमें निश्चित स्थानऔरसम्मान ... उसके लिये यह अनावश्यक हो ... हैं।

... दूसरे व्यक्तियोंके मतानुसार जवा-... में सङ्गठन शक्ति नहीं और इस ... वह सुभाषबाबूकी बराबरी नहीं कर ... क्योंकि सुभाषबाबू बहुत बड़े सङ्गठन ... हैं। किन्तु यह सत्य नहीं। राष्ट्रीय ... अध्यक्षकी हैसियतसे उन्होंने उसमें ... जीवन फूंक दिया है। उनमें वह ... जिससे वह असमान दलोंमें भी ... भावना डाल सकते हैं। बहुतसे ... व्यक्ति हैं जो केवल पंडितजीकेही ... कार्य करना शुभ समझते हैं। नेश-... नल प्लानिंग कमेटी(राष्ट्रीय योजना संस्था) ... की हैसियतसे उन्होंने अपूर्व कार्य ... संगठन शक्तिका परिचय दिया ... उनको संगठन उदासीनता जान ... है।

... विचारके निश्चय अंशतः स्वाभा-... अंशतः दार्शनिक रहते हैं। ... तक वे सोशलिस्ट रहे हैं। उनका ... कि बिना समूहवादके भारतकी ... दूर नहीं हो सकती। किन्तु वे ... दोषोंको भी पूर्णतः जानते हैं। ... ब्लमने फ्रेंच सोशलिस्ट ... था:—

... उदारतावादकी मृत्यु हो ... तब उसकी कौन रक्षा करेगा? ... सामूहिक उत्पादन और ... बटवारेसे सहमत है। सामू-... की आवश्यकता युद्धके समय ... उसको अब भी कायम रखना ... भी राष्ट्र बिना इसके नहीं ... किन्तु साथही साथ हमें यह भी ... चाहिये कि साम्यवादने मनुष्यके ... गिरा नहीं दिया। बल्कि इसके ... व्यक्तित्वके बनाये रखने तथा ... पर जोर दिया जाता है। ... सिद्धान्त यह है कि सामू-... के साथ मनुष्यका व्यक्तित्व ... विकास बना रहे। 'सामा-जिक न्याय' का अर्थ है—पूंजीवादी वंशगत अधिकारोंका बहिष्कार तथा एक ऐसे समाज और आर्थिक व्यवस्थाका निर्माण करना जहां असमानताओंका अभाव हो। जहां प्रत्येक व्यक्तिको अपना वास्त-विक स्थान प्राप्त होता है, प्रत्येककी वृद्धि प्रतिभाका उचित उपयोग होता है और जिसके द्वारा वह अपनी शक्तियोंका सामू-हिक उत्पादनमें सदुपयोग कर सके तथा फलतः उसे अधिकसे अधिक लाभ उठा सके।

प्रत्येक व्यक्ति यह कहता है कि यह एक साधारण बात हो गयी है। किन्तु क्या साम्यवादका मूल तत्व यही नहीं। हम उस संश्लेपणमें सहायक हैं?

युवक-हृदय-सम्राट पं० जवाहरलाल नेहरू

'साम्यवादके तत्व' के प्रति जवाहर-लाल सदैव सतत जागरूक रहे हैं। वर्षों तक वे उस संश्लेपणकी दिशामें प्रयत्न करते रहे हैं। किन्तु वे ब्लमकी इस धारणासे कभी सहमत नहीं कि एक दल संश्लेषणका प्रति-निधित्व कर सकता है। दल और व्यक्तित्व में सदैव एक उलझन पूर्ण संघर्ष होता है और पंडित जीने दल पर अधिक जोर कभी नहीं दिया। सामूहिक जीवनने योरुपमें व्यक्तिवादको पूर्णतः पराजित कर दिया है। २०वर्षतक एरनष्ट टालर नामके एक मानव-वादी लेखकने एक नाटक लिख कर संघ मानवका, जो कि व्यक्तिवादका विरोधी है, प्रचार किया। जवाहरलाल इस दोषको जानते हैं। एक पूर्ण विकासवाले व्यक्ति-वादीकी हैसियतसे उन्होंने सदैव इस संघ मानवका, जो कि पतनका एक दिग्दर्शक है, विरोध किया है।

बहुतसे व्यक्तिवादी एक सीमाके पार-ही हो गये हैं और साम्यवादका पूर्ण विरोध कर रहे हैं। हिलेयर बेलेकने ३० वर्ष पूर्व इसके विरोधमें अपनी आवाज उठायी। प्रो० हेयकने अपनी हालकी एक किताबमें समूहवादको बिलकुल नष्ट करनेका प्रयत्न किया है। उन्होंने उसे विनाशका मार्ग कहा है। इन लेखकोंके सम्मुख संघवादकी समस्या आती ही नहीं, क्योंकि वे पूर्णतः इसे घातक समझते हैं।

भावुक आदर्शवादी आल्डस हक्सले सरीखे व्यक्ति आधुनिक विकासोंसे ऊब कर विश्व संघर्षोंसे दूर रहना चाहते हैं। जवा-हरलाल उनके विचारोंकी कद्र करते हुए भी उनके इस एकांत वाससे सहमत नहीं। वह प्रधानतः कार्यवादी हैं। जैसा उन्होंने स्वयं एक बार कहा था कि वह 'तूफानोंके बीच' में रहना पसन्द करते हैं।

हमारा ख्याल है कि वह आजके नये समाजवादीसे अवश्य सहमत होंगे जो समाजवादमें प्रजातान्त्रिक भाव पैदा करना चाहते हैं जैसे संघ साम्यवाद। यदि उनका कभी भारतमें इस वादके प्रसारका मौका मिला तो वे अवश्य इसे 'राष्ट्रीय-करण' के बन्धनसे ढीला कर इसमें प्रजातां-त्रिक तत्व ग्रहण करेंगे। ये बन्धन स्वयं पंडितजीके विचारानुसार समस्याकी तह तक नहीं पहुंच पाते। वह उदासीन और असंबद्ध नेतृत्व पर विश्वास करते हैं।

इसीलिये वह अपने अनुसरण करनेवालों तथा नेतृत्वमें संघ दलके बंधनका विरोध करते हैं। वह एक मानवीय आधारपर उनका सम्बन्ध चाहते हैं। मनुष्योंपर उनका प्रभाव अत्यन्त चमत्कारिक है।

श्री यूसुफअलीने अपनी स्वाभाविक विशे-षताके साथ सीधे शब्दोंमें पंडितजीसे कहा था "आप इतने एकान्तप्रिय हैं कि आपका कोई मित्र नहीं।" पंडितजीने उनकी ओर आश्चर्यसे देखा और फिर धीरे धीरे कहा "मैं अपना हृदय जनताके सामने खोलना पसन्द करता हूं।" यह है उनका जनताके प्रति व्यवहारका भरोसा। एक मित्रकी तरह वे एक मित्रसे मिलते हैं। उनमें कोई वक्तृता शक्तिकी तड़क भड़क नहीं किन्तु वह सादगी और स्पष्टताका प्रदर्शन करते हैं। जिसका अन्य बहुतसे राजनीतिज्ञोंमें अभाव है। अपने श्रोताओंके हृदयमें वे उच्च भाव-नाओंको पैदा करते हैं। वह उसको एक उदासीन दर्शककी तरह नहीं बना देते किन्तु प्रत्येक व्यक्तिके हृदयमें पहुंचानेका प्रयत्न करते, उसकी भावनाओंको, जीवनतन्त्रोंको अधिक प्रतिध्वनित करते हैं। वह शक्ति पर विश्वास नहीं करते। वह हमेशा नये मनुष्योंको उच्च कार्योंमें उपयोग करनेपर जोर देते हैं। उन्होंने अपने प्रांतके किसी भी व्यक्तिको कांग्रेसकी शक्तिको हस्तगत करनेमें रोका है। वह स्वयं अपनेपर भी अविश्वास करते हैं जबकि उनकी शक्ति अधिक बढ़ती नजर आती है। सन ३६ के माडर्न रिव्यूमें चिनार नामसे प्रकाशित एक लेखसे उनका हास्य और ऊंचे राजनीतिक विचार स्पष्ट हैं।

कांग्रेसके लिये चुनाव जीतनेमें पं० जवा-हर लालको विशेष आनंद आता है, किन्तु वह स्वयं किसी भी संगठन या मन्त्रीपर आक्षेप नहीं करते। वह व्यक्तिवादकी रक्षा करते हुए मनुष्यके व्यक्तित्वके पूर्ण विकासके पक्षपाती हैं। किसीने एक बार जवाहरलालके बारेमें भविष्यवाणी करते हुए कहा था कि ये एक दिन ट्राटस्की बन जायेंगे वे सिर्फ मुस्कराये थे। शायद वह यह विचार कर रहे थे कि ट्राटस्कीने जीवनका अन्त एक असन्तोषपूर्ण ढङ्गसे किया। क्योंकि उसे आदर्शवाद तथा जनतापर चमत्कारिक प्रभावसे ही सन्तोष न था किन्तु उसे वे संघ शक्तिमें शामिल करना चाहते थे। जिससे स्टेलिनका प्रादुर्भाव हुआ। जवा-हरलालजी इस प्रकारकी शक्तिकी सहायता न लेकर ट्राटस्कीके भाग्यसे ही नहीं बच गये बल्कि भारतमें एक स्टेलिनका जन्म भी अस-म्भव कर दिया है। पं० जवाहरलालका नेतृत्व मानववादपर आधारित है। वह एक आदमीकी तरह प्रत्येक व्यक्तिसे मिलते हैं। प्रत्येकके हृदयमें वह एक ज्वाला जला देते हैं। समूहवादका खतरा इस समय कम हो जाता है जबकि वह इस प्रकारका नेतृत्वसे परिचालित होता है। हमारे पूर्वजों इसीलिये आध्यात्मिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओंको अलग अलग रखा।

जवाहरलाल एक बहुत बड़े प्रजातन्त्र-वादी हैं। और वह यह इसलिये हैं कि उन्हें आर्थर केसलर्सका यह विचार कि एक योगी और साधारण व्यक्तिमें अन्तर है, अनावश्यक ही नहीं किन्तु अस्वाभाविक ज्ञात होता है। पण्डित नेहरूकी वर्षगांठके अवसरपर आज (१४ नवम्बर) हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह उन्हें दीर्घजीवन प्रदान करें।

आजाद हिन्दकी आजाद हिन्द फौज

(कैप्टेन गुरुबक्श सिंह ढिल्लन)

(कैप्टेन शाहनवाज)

कविता

आज़ाद हिन्द फौज के आज़ाद सिपाही !

(ले०—श्री सम्पतिराय भटनागर)

तुम मुस्करा उठे कि लगी जब जिगर में आग !
दुश्मन के साथ खेलते रहे लहू की फाग !
पल-पल पै मौत की जहां आती थीं घटायें !
छेड़ा था तुमने तब वहीं पै जिन्दगी का राग !!
तुमने सुनी थी मुल्क की दुख से भरी पुकार !
चाहा था किनारा हो, इस पार या उस पार !!

०　०　०　०

कांटों की राह चल पड़ीं छिलती जवानियां !
पीछे को सिर्फ छोड़ीं अपनी निशानियां !
बढ़-बढ़ के तवारीख में लिखते चले गये !
कुर्बानियों की खून से भीगी कहानियां !!
तुमने किया बुलन्द जो 'जय हिन्द' का नारा !
भूलेंगे नहीं हम कभी एहसान तुम्हारा !

०　०　०　०

तुम सांस-सांस में लिये तूफान का असर
हंस-हंस के रहे चलते बगावत की राह पर !
चाहा कि तोड़ दें ये गुलामी की कड़ियां !
पायें किसी तरह कोई मौका कहां मगर !!
बिजली की कड़क ले के, बवण्डर से तुम चले !
लहरों में गरजते से, समुन्दर से तुम चले !!

०　०　०　०

इज्जत से तुम्हें करते हैं सब याद, सिपाही !
आजाद हिन्द फौज के आजाद सिपाही !!

आजाद हिन्द फौजकी 'झांसीकी रानी पल्टन' की कमाण्डर कुमारी लक्ष्मीबाई स्वामीनाथन्।

(कैप्टेन पी० के० सहगल)

आजाद हिन्द फौजके वीरोंके विचारका एक दृश्य—लाल-किलेमें आजाद हिन्द फौजके तीन अफसरोंका विचार करने वाले सैनिक न्यायाधीशोंके मध्यमें ट्रिब्यूनलके प्रेसिडेन्ट मेजर जनरल ब्लाक्सलैण्ड बैठे हैं।

आज़ाद हिन्द फ़ौजके वीरोंका विचार—अदालतके कमरेके भीतर सफ़ाई-पक्षके वकीलोंका एक दृश्य। (बायेंसे दाहिने) कुंवर सर दिलीप सिंह, पं० नेहरू, सर तेजबहादुर सप्रू श्री भूलाभाई देसाई, श्री आसफ़ अली और डा० के. एन. काटजू।

कैप्टेन लक्ष्मीके साथ श्रीयुत बोस 'झांसीकी रानी पल्टन' का निरीक्षण कर रहे हैं।

हिन्द फ़ौजके अफ़सरोंके साथ श्री सुभाषचन्द्र बोस सैनिकोंका निरीक्षण कर रहे हैं।

ONE GOAL-INDEPENDENCE

श्री सुभाषचन्द्र बोस सलामी ले रहे हैं। बायीं ओर जनरल तोजो और अन्य सैनिक हैं।

बायेंसे दाहिने—कप्तान सहगलकी बहनें, श्रीमती माथुर और श्रीमती डिक्सन।

पण्डित कुलमें तोहार जनम, अउर तू पकौड़ी खावत कहारिनके हाथ कै! तेल कै! राम-राम !:

मटरू—हो तुम पूरे बकलोल मिश्र भवेश, कच्छपजी ठीक कहते हैं कि तुम "साक्षात पशु पुच्छ विषाण हीनः" हो—मरदे आदमी, जब तुम बाजारमें तेली कलवारके हाथका पकाया 'छोले-गरम' गरम खाते हो तो एक नारीके हाथकी पकौड़ी खानेमें यह अनारीपन कैसा? मैं मानता हूं कि वह सुरैतिन है, यह भी जानता हूं कि वह कहारिन है... फिर भी वह है तो तुम्हारी मातृ-जातिकी ही! नारी!! देवी!!!

भवेशजी—(बांहें चढ़ाकर) कच्छपवा सरवा हम्मै पशु बनावैला? ऊ दुसाध हौ। जानैलअ ऊ गयामें 'विकरा' के पिण्डा उठावत रहल...ओके हम का समझीं?

कच्छप—(चारपाईसे कूद, भवेशकी गर्दन पकड़कर) कहो बच्चू, हमने तुम्हें क्या कहा? पशु बनाता है तुम्हें तुम्हारा बाप, मटरू, और गाली देते हो तुम मुझे?

(दोनों लड़कर दूधकी बाल्टीपर गिरते हैं। दूध सिलपर गिरकर अधपिसी भांगको बहा देता है। मटरूका मुंह और सारा शरीर दूधके छींटेसे सफेद हो जाता है। वह भवेश और कच्छप दोनोंको कोड़ा लेकर मारने चलता है। राइट आनरेबुल बीच-बचाव करता है।)

(सबका प्रस्थान)

तृतीय-दृश्य

(स्थान—अखबारका दफ्तर, सातो उप सम्पादक अपनी अपनी कुर्सियोंपर डटे कार्यरत हैं। समाचार सम्पादक श्री मटरू मिश्र आते हैं...आते ही वे टेलीप्रिण्टरके पास चले जाते हैं। उसमें लगा हुआ कागज फाड़कर लपेटते और अपनी मेजके दराजमें रख देते हैं...अन्य दैनिक पत्रोंकी कटिंग लेकर कम्पोजके लिये भेज देते हैं। सिगरेट सुलगाते हैं और अपने सहकर्मियोंसे सगर्व कहते हैं...।)

मटरू— छोड़ो भी यार, क्या तेलीके बैलकी तरह जुते हो? दे दो सरकारी विज्ञप्तियां...आफिसमें आकर थोड़ा मौज भी करना चाहिये कि हर वक्त काम...काम... काम...! निष्काममें जो आनंद है वह काममें नहीं। सुनो एक मजेकी बात बताता हूं। कल कुएंपर स्नान करनेके समय सौभाग्यसे हाथमें रस्सी घड़ा लिये कौसिलिया 'दाई' आ गयी। विरागअली (जालौनके आवसराज) की कुकड़ीकी तरह चिटखती रहती ...वह तितलीकी तरह उड़ा करती है।—क्यों भवेश, है न ठीक?...मेरी उसकी आंखें चार होते ही हंस दिया मैंने। उफ, कुछ मत पूछिये, गजब हो गया...क्यों भवेश?

भवेश—(बिगड़कर) तुहऊं गुरु पूरा बकलोल होवअ, ई कुल खानगी बातकै इहां कवन काम होवै?

(मटरू चुप हो जाता है)

राइट आनरेबुल—कहिये कहिये पंडितजी, बड़ा मजा आ रहा है आपकी बातोंमें।

(मटरू आंखें तरेर-गम्भीर मुख बनाकर नेवलकी ओर संकेत करता है)।

राइट आनरेबुल—नहीं-नहीं, कुछ हर्ज

❋ समाचार-सम्पादक ❋

——o:❋:o——

(१२ वें पृष्ठका शेषांश)

नहीं...आप तो जानते ही हैं कि भवेशजी सदा हलवेमें बालू डाल दिया करते हैं-सारा रस किरकिरा हो जाया करता है इनके कारण! इनकी रोनी सूरतकी ओर तो देखें आप जरा। हां, तब फिर?

मटरू—(भवेशसे) देखो भाई, हमारा दोष मत देना! अब मैं कह डालता हूं सब बात! हां, मेरा हंसना था कि वह छनछना उठी वह तेलमें पड़े बैंगनकी तरह—लगी मेरे तीन पुरुषोंका श्राद्ध करने। मैंने समझा ये सब चोचले हैं--पकड़ लिया उसके हाथसे रस्सी और घड़ा। बड़े प्रेमसे, विगलित होकर मैंने कहा उससे--'प्रेयसि, तुम्हारे कोमल सुकुमार हाथोंमें छाले पड़ जायंगे, लाओ मैं तुम्हारा घड़ा भर देता हूं'। वह और बिगड़ी मेरे ऊपर। लपककर अपना चप्पल उठाया और एक-दो-तीन-चार! वह आनन्द आया मानो पुष्पवृष्टि हो रही है।

राइट आनरेबुल--हा-हा-हा-हा पुष्प-वृष्टि! अरे मटरू महाराज, पुष्पवृष्टि? पुष्प-पुष्प-यानी पुष्पकी वृष्टि! पुष्पकी?

भवेश--सचौं तू आन्हर बुल होवअ यार, भला एममें हंसैकै कवन बात बाटै? हमरे मित्र मटरू बेचारे के त खोपड़ी गंजी होय गइल-अउर तोहरे मुहें फुलझड़ी छूटै, लगल! ई कवन भलमंसी हो?

राइट आनरेबुल—(मुस्कराकर) भल-मन्सी चाहे कतई न हो लेकिन मजा आ गया है दोस्त इस समय मटरूकी बातोंमें-वाह! पुष्पवृष्ट! (मटरूसे) हां पण्डितजी, फिर क्या हुआ?

मटरू—(खोपड़ी खुजलाता है) फिर?--फिर क्या हुआ?—फिरकी बात न पूछें आप तभी अच्छा है। जब वह लगी धमकाने कि देखो मैं जाकर अपनी अम्मांसे तुम्हारी सारी शैतानी कह देती हूं न,...तब तो मेरी सारी मस्ती सिकुड़कर सोंठ हो गयी। झट मैं उसके आलक्तरञ्जित चरणोंपर अपनी खल्वाट खोपड़ी रख, लगा मुक्का फाड़कर रोने,—कान पकड़कर मैंने उसके सम्मुख प्रतिज्ञा भी कर डाली कि इस बार तुम मुझे क्षमा कर दो—आजसे तुम मेरी माताके तुल्य हो!

रा० आनरेबल--अजी वाह पण्डितजी, एकदम माता? माताके तुल्य! हा हा हा हा (हंसता है) (सातो सम्पादक अट्टहास करते हैं)।

(सञ्चालकका प्रवेश)

(सब सम्पादक जोंक-सा सिमिट जाते हैं।)

सञ्चालक--(साश्चर्य) आप लोग यह क्या करते हैं? यह आफिस है या कल-वरिया? खेद! शत शत खेद!

मटरू----महाशय, एलिस्ट्रेटेड वीकलीमें एक समाचार छपा है कि अमेरिकाकी एक षोड़सी युवतीको गृद्ध अपने घोंसलेमें उठा ले गया। यही पढ़कर हमलोग हंस पड़े थे और तो कोई बात नहीं है।

सञ्चालक--(बिगड़कर) चुप रहो मटरू, तुम बड़े नालायक हो। मैं वगेरहसे बाहर

खड़ा, शरारत भरी तुम्हारी सारी बातें सुन रहा हूं। एक दैनिक पत्रका सम्पादक और उसके यह आचरण! शर्मकी बात है, शेम! (अन्य सम्पादकोंकी ओर घूमकर) आई सी इसमें मैं आप लोगोंका उतना दोष नहीं पाता जितना इस कामचोर मटरूआका है। थोड़ी देर पहले जब मैं आया था तब आप सभी अपने काममें दत्तचित्त थे। मटरूकी कारस्तानी मैं कई रोजसे देख रहा हूं—यह ऐसे जिम्मेदार पदके योग्य कदापि नहीं है। (मटरूकी ओर घूमकर) लाओ तो जी, आजका टेलीप्रिण्टरसे आया हुआ समाचार तो मैं देखूं—कौन कौनसे समाचार आपने छांटे हैं।

(फोरमैनका प्रवेश)

फोरमैन—(स्वतः) क्या कहूँ जबसे ये मटरू पण्डित आये, तबसे मैटर मिलनेमें बहुत गड़बड़ी होने लगी है। एक बज गया... तीन बजे डाक निकल जानी चाहिये... अभी चार कालम रंगनेको पड़े हैं और मटरू महाराज अपनी मटरगश्तीमें...(संचालकको) खड़ा देख चुप हो जाता है।)

संचालक--(फोरमैनसे) क्यों ... क्या है?

फोरमैन--कुछ नहीं साहब, कापी... लिये आया हूं। कम्पोजीटर हाथपर हाथ धरे बैठे हैं और ...!

संचालक----अभी कितना मैटर ... रहा है।

फोरमैन-यही कोई चार-पांच कालम मैटर हो तो काम चल जायगा। ... तो अखबारोंकी कतरन और सरकारी विज्ञप्तियोंसे भर दिया गया, ये चार कालम ...

(मटरू हाथ जोड़, दांत निपोड़कर फोरमैन से चुप रहनेका संकेत करता है।)

(संचालक उसकी वह मुद्रा देख लेता है)

संचालक--(सरोष मटरूसे) ... लाइये आजके टेलीप्रिण्टरसे आये सब ...

...ती हैं...आप बकर-बकर मेरा मुंह क्या
...ते हैं! (स्वतः) यह बात क्या है?
...मुद्रा) में किसी भी सम्पादकके
...टेलीप्रिण्टरका एक भी कतरन नहीं
...हमेशा तो मशीन खटखटाती रहती

...दीनभावसे सबकी ओर ताकता है।)
...संचालक और बिगड़ता है। राइट
...उठकर मटरूकी मेजको दराजमेंसे
...के कागजोंका लपेटा हुआ मोटासा
...निकालकर संचालकके सम्मुख धर
...है। संचालक बिगड़ता है...मटरू
...बिल्लीकी तरह सिकुड़ जाता है।)
...लक—(सब सम्पादकोंसे) यह बंडल
...क्यों रखा गया? (बंडल खोलता
...ता है) 'ओ, आई सी...' इतना
...न्यूज!' (भवेशसे) बोलते क्यों
...तुम लोग! (भवेश सिर खुजलाता
...बार-बार आंखें उठा उठाकर कभी
...कभी मटरूका मुंह निहारता है।)
...(स्वतः)का करीं, अब तअ बतबहीके
...तअ नाहीं, भुखायल भेड़ियाकी
...लकवा कहसन हमरी ओर गुरेरत-
...जात बाय जना खाई डाली!
...भवेश अब सब सची बात!!!
...)का बताई महोदय, "कहां तअ
...आप, नाहीं तअ आपके कुत्ता
...मरु निसिरके तअ राजे कै है
...हो...महिन्न से तअ ई रोज टेली
...कुछ कागजवे अपने डेरापर उठाय
...हुए बबुआ बांधके घरे धेले हयेन
...चाहे भरसाईंमें जाय लेकिन
...जनमाओ लिखें धरे कागद
...ही...!
...लक—क्या मटरू इसी तरह प्रति-
...उठा ले जाते हैं?
...—अरे कागदवे नाहीं साहेब,
...फोण्टेनपेन है झटक ले गइलेन,
...चोरायके बनारस है भेज
...दावो, निब, होल्डर, पेंसिल,
...तअ कौनो गिनतियै नाहीं! अब
...गिनाईं—मेज सफा करेके झाड़न
...धरासो कै जुतओतक तअ है
...—आफिसभर एनकर करनी
...मन रही अखबार तअ अबही
...है।
...—ओ, आई सी—इतने गुण हैं
...—"जौं नहिं दण्ड करौं खल
...होइ श्रुति मारग मोरा"--अभी
...करता हूं। जाव, भागो तुम
...देकर निकालता है) उसकी
..., दावात, पेंड, रूल, अखबार
...सारेका उसके ऊपर फेंकता है)
...रहकर बाहर निकलते हैं)।
...धीरे धीरे परदा गिरता है)

नहीं....!

——:*:——

लेo—श्री इकराम सागरी

आजकल किसी भी चलते हुए राह-गीरसे प्रश्न कीजिये, क्यों भाई कहां जा रहे हो? आपको फौरन यही उत्तर मिलेगा---'कहीं नहीं।' किसी भी कार्य करते मनुष्य से पूछिये, क्यों भाई क्या कर रहे हो? कुछ नहीं। आप कितना भी प्रयत्न क्यों न करें पर आपको साहस न होगा कि आप उसके आगे कोई प्रश्न कर सकें। आपके सारे प्रश्नोंके उत्तर इन्हीं दो शब्दोंमें हल हो जायंगे। "कहीं नहीं!" "कुछ नहीं!"

परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि कहीं नहीं और कुछ भी नहीं। बात अपने स्थान पर है और यह कुछ तो भी नहीं। यह अवश्य मानना पड़ेगा कि ये आजकलके पेटेण्ट प्रयोगोंमेंसे हैं। कुछ मनुष्य तो भले ही इनका प्रयोग करते हैं और कुछ बेकार बतंगड़ बरकानेके लिये, कोई गोल माल उत्तर न दे यही कह देना बेहतर समझते हैं—'कुछ नहीं' और बातका वहीं अन्त हो जाता है।

आजकलके व्यस्त जीवनमें जब कि समय को भी आगे बढ़ाना पड़ा, बातोंको घटानेकी आवश्यकता आ पड़ी। व्यर्थकी बकवादसे बचकर ठोस कार्यकी ओर ध्यान देनेके लिये ये रामबाण औषधियां सिद्ध हो सकीं।

परन्तु यही नहीं और इतना ही नहीं! धीरे धीरे यह बीसवीं शताब्दी भी आयी। सभ्यताका सूर्य सवा नेजे पर पहुंचा। जनता के अधिकारोंके लिये संसार तड़प उठा। बादशाहीका धीरे-धीरे अन्त होना प्रारम्भ हुआ और डिमोक्रेसीकी तूती बोलने लगी। दूसरा महायुद्ध हुआ और मित्र राष्ट्रोंने 'संसारकी स्वतन्त्रता और शान्तिके लिये' शंख फूंका। महायुद्ध का अन्त हुआ! परंतु विश्व शान्ति और स्वतन्त्रताका कहां?—'कहीं नहीं!' संसारके सारे सिद्धान्त केवल अपने उल्लू सीधे करनेके लिये हैं। चलती ही का नाम गाड़ी है।

सर क्रिप्स आये—केवल योजना हुई—चर्चिलके बाद लेबर पार्टी आयी—विविध प्रकारकी योजनायें हुईं—परन्तु भारतकी स्वतन्त्रता...?—"अभी नहीं!"

शिमलाकी चोटी पर कुछ दिनों तक भारतके भाग्यका निर्णय होता रहा। चालीस करोड़ जनताके अस्सी करोड़ नेत्र पर्वतकी चोटी पर आ गड़े। समय खिलाड़ीने फिर अपनी डुग-डुगी बजायी। तमाशेने एक नया रूप धारण किया। चालीस करोड़ मस्तिष्क चुनावके जालमें मकड़ीके सदृश उलझ गये। जोरोंके साथ चुनाव लड़नेकी तैयारियां प्रारम्भ हो गयीं। उस देशमें जहां कि एक मनुष्यकी औसत आय छः पैसे प्रति दिन है—भरनाकी संख्यामें चुनाव फण्ड तैयार किया जा रहा है और देखते देखते वे अस्सी करोड़ कर मुजदण्ड फड़काते हुए दंगलमें आ कूदेंगे। परन्तु क्या भारत स्वतन्त्र हो जावेगा?—"शायद फिर भी नहीं!"

अब तक कि भारतवासी कांधेसे कांधा लगा कर आजादीके संग्राममें नहीं कूदते—या तो भारत टुकड़े-टुकड़े हो जायगा या परतन्त्रताकी बेड़ियोंमें बुरी तरहसे जकड़ा रहेगा। स्वतन्त्रताके नाम पर— —कुछ भी नहीं!!!

दो हमें वोट

दो हमें वोट, हम खड़े हुए।
अपनी इज्जत खो कर, देखो,
कर जोड़, द्वार पर अड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥

जितने नेता हैं कांग्रेसी।
सब चिल्लाते देसी देसी॥
दिन भर चरखा कतवाएंगे।
मोटा-झोटा पहनायेंगे।
वे हैं गंवार खेती-चद्दरके चक्करमें ही पड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ १॥

हम अपना जैसा सूट-बूट।
ला देंगे, लेना सभी लूट॥
हों भले उतारे हुए कोट।
पर बाबू बननेमें न खोट॥
हम देंगे वायल, टुइल, चिकन,
अति सुन्दर बूटे जड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ २॥

कांग्रेसी सब दिन रहे जेल।
झेले हैं नाना दुःख झेल॥
सब कहते किसको गए भूल।
चरखा-करघा में रहे झूल॥
वे दुखी तुम्हें क्या सुख देंगे,
उनके दिमाग हैं सड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ ३॥

है अपना सब साहबी ठाठ।
अकड़े रहते ज्यों बड़े लाट॥
हर अफसर से हम रखें मेल।
फिर जाते कैसे कहो जेल॥
खिलअत, करेब, चालाकीसे,
देखो हम कितने बड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ ४॥

बेतुका राग यह आजादी।
चिल्ला कर कर दी बरबादी॥
बस्त्रान्न बिना सब बेकल हैं।
ये उनकी करनी के फल हैं॥
अकड़ाओ मत, हम केक और
बिसकुट लेकर हैं खड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ ५॥

बढ़िया पहनो, बढ़िया खाओ।
ड्रामा, टाकीमें नित जाओ॥
सर, लार्ड, कमिश्नर भी हो लो।
पर अंग्रेजोंकी जय बोलो॥
खाकी के बैंगन बने रहो,
मत खोदो मुर्दे गड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ ६॥

क्यों देश-देश चिल्लाते हो?
बोलो इससे क्या पाते हो?
यदि स्वर्ग सुखो तो सुखी सभी।
मत भूलो प्यारा मन्त्र कभी॥
घर को सलाम बकवाने को,
बस पिले अगर तुम कड़े हुए।
दो हमें वोट, हम खड़े हुए॥ ७॥

तुमने कुछ उत्तर नहीं दिया।
कांग्रेस-विजय क्या ठान लिया?
या खुदा! न तू ने रहम किया।
मैंने गुनाह बेकार किया॥
अच्छा भाई! दो वोट उन्हें,
जो देश पुकारे खड़े हुए।
नाहकमें ही हम खड़े हुए॥

—श्री कमलेश्वर पाण्डेय, एम०ए० बी०टी०

चलती चक्की

भूतपूर्व प्रधान मन्त्री मि० चर्चिलका कामन सभामें सुरीला राग।

—एक शीर्षक।

गाना तो अच्छा जानते होंगे मिस्टर चर्चिल, इसमें शक नहीं। लेकिन यार लोगों के लिये कामन सभा भी महफिलके रूपमें बदल सकती है, यह जरूर अचम्भेकी बात है।

° ° °

कायदे आजम परेशान हैं कि लीगकी कमजोरियोंको मतदाताओंकी दृष्टिसे कैसे ओझल किया जा सकता है।

—एक सम्पादकीय।

अपनी कमजोरियों पर पर्दा डालना भी नहीं आता? मि० जिन्नाको चाहिये कि कम्युनिस्टोंसे इसका पाठ पढ़ लें।

° ° °

टारेन्ट्रेट (आस्ट्रेलिया) को लोग पतियोंका स्वर्ग कहते हैं क्योंकि वहां विवाहित पुरुषोंका ही प्राधान्य है।

—एक समाचार

लेकिन अविवाहितोंको तो अवश्य इस बात पर एतराज होगा?

* * *

ब्रिटिश साम्राज्यवादकी दीवार अब ढहना ही चाहती है।

—एक सम्पादकीय

लेकिन समाचारको पूर्णता तो तब प्राप्त होती जब कि यह भी बताया जाता कि उसके साथ-साथ दब कर किस-किसको जीवन्मुक्त होनेका सौभाग्य प्राप्त होता है।

* * *

'व्हीइट हाउस' से श्रीमती ट्रूमैनके नाम एक खुली चिट्ठी भेजी गयी है जिसमें कहा गया है कि वे जातीय समताके सिद्धान्तका सिर्फ मौखिक समर्थन ही करती हैं।

—एक समाचार।

लेकिन सन्तोषके लिये यह भी क्या कम है?

* * *

अंग्रेजी हकूमत ही बिल्कुल गैरकानूनी है।

—पं० सुन्दरलाल।

मुकदमा न चलाया जाय इसके विरुद्ध?

* * *

परमाणु बम चलानेवालोंको फांसीकी सजा दी जाय।

—श्री शरत्चन्द्र बोस।

फांसीके बजाय दुनियासे निर्वासन ज्यादह अच्छा रहेगा।

* * *

महाशक्तियां दूसरे महायुद्धके बीज बो रही हैं।

—एक शीर्षक।

किसानोंके किसी नये और वैज्ञानिक तरीकेका आविष्कार हुआ होगा।

* * *

कलकत्ताकी पुलिस कमिश्नरकी एक विज्ञप्तिमें बतलाया गया है कि जेलोंमें गुण्डों और पुराने अपराधियोंको धीरे धीरे छोड़े जानेसे नगरमें पाकेटमारीकी शिकायतें बढ़ रही हैं।

जायद जेलसे मुक्तिके प्रति विरोध प्रदर्शनके रूपमें यह कार्यवाही सामने आ रही है। पुलिस और जेल अधिकारियोंको उक्त आन्दोलनकारियोंसे यथोचित समझौता कर लेना चाहिये।

* * *

ब्रिटेनमें भ्रष्टाचारकी लहर।

—एक शीर्षक।

लेकिन सदाचारके तूफानमें भी तो खतरा रहता है!

* * *

हालमें जो कई हत्याकाण्ड ब्रिटेनमें हुए हैं, उनकी छानबीन करनेपर पुलिसको ऐसे महत्वपूर्ण भेदोंका पता चला है जिनसे ज्ञात होता है कि इन काण्डोंसे कितने ही अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त बदमाश सम्बन्धित हैं।

इन प्रख्यात और महान पुरुषोंको पुलिस मानपत्र क्यों नहीं भेंट करती? परस्पर सम्बन्धोंको दृढ़ बनानेमें इससे मदद मिल सकती है!

* * *

प्रथम सरकारी गवाह लेफ्टिनेण्ट डी० सी० नागका रंग एकदम काला है।

—एक समाचार।

और दिल?

Regd No. C. 2229

नवलकिशोर सिंह द्वारा मित्रमित्र प्रेस, १४१२ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्ता में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक

विश्वमित्र

THE WEEKLY VISHWAMITRA.

२८—४७ कलकत्ता, २१ नवम्बर १९४५, Calcutta, NOVEMBER 21, 1945 मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

...न चालनका नया रेकार्ड

...प्टेन विली विलसनने जेट संचालित ...यानपर चार बार उड़कर ६०२ प्रति घण्टे ...का रेकार्ड कायम किया है और पिछला ...ड तोड़ दिया है। पहली बार वे ६०० ...दूसरी बार वे ३०२ मील, तीसरी ...६१२ मील और चौथी बार ६१३ मील ...घण्टेकी चालसे उड़े। अब कुछ विशिष्ट ...रोंके सम्मुख इससे भी तीव्र गतिमें ...न चालनका प्रयत्न किया जानेवाला ...र्युक्त विमानमें रोल्स रायस इंजिन ...लगा है जो संसारमें सबसे शक्तिशाली ...है। इस विमानकी बनावट साधा-...विमानकी भांति ही है। इसमें तोपें ...चारका तार नहीं है। ब्रिटिश वायु ...लिये बड़ी संख्यामें इस प्रकारके ...न बनाये जा रहे हैं।

...की खानमें ग्रामोफोन रेकार्ड

...र्मनीके हियरफोर्ड इलाकेके लोगोंका ...ना है कि जर्मनीकी एक नमककी ...में जो सरकारी ग्रामोफोन रेकार्ड प्राप्त ...इसमें हिटलर और चैम्बरलेनकी पर-...बातचीतके रेकार्ड भी हैं। यदि यह ...ही है तो निश्चय ही जिस कमरेमें ...त हुई थी वहां रेकार्ड तैयार करनेके ...यन्त्रोंसे ही लगे हुए थे। इस संग्रहको ...में इसलिये रखा गया था कि न्यूर-...मुकदमेमें इसे प्रमाणके रूपमें पेश ...जा सके। किन्तु इन रेकार्डोंकी प्रमा-...सिद्ध होना कठिन है। अतः इनके ...में कानूनी कठिनाई है, अस्तु इनके ...की संभावना अब नहीं रह गयी है। ...रेडियो विभागके पास धातुके बने हुए ...ग्रामोफोनके रेकार्ड तैयार करनेके ...। ब्रिटिश अधिकारियोंने बहुतसे ...रेकार्ड बनाये हैं और खुफिया ...के अफसरोंके सामने इन्हें बजाया जा ...ताकि वे बोलियोंकी पहचान कर ...इन सांचोंको जर्मनोंने जानबूझकर ...इसलिये फेंक दिया था कि वे गल ...न्तु आर्द्रताकी कमीके कारण वे नष्ट ...न गये।

मधुसंचय
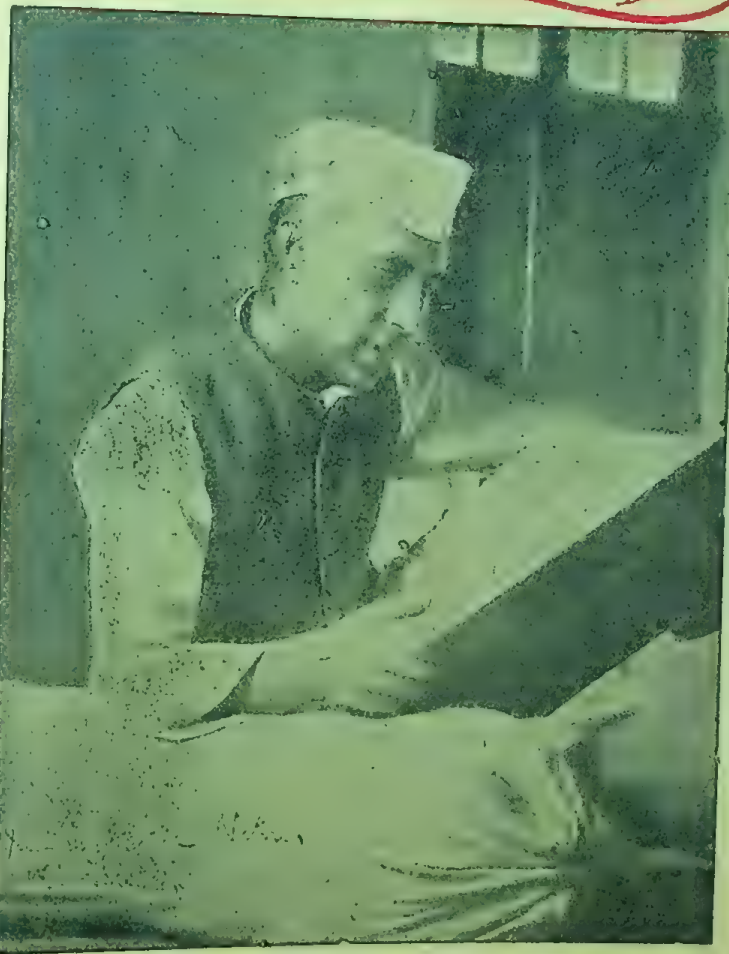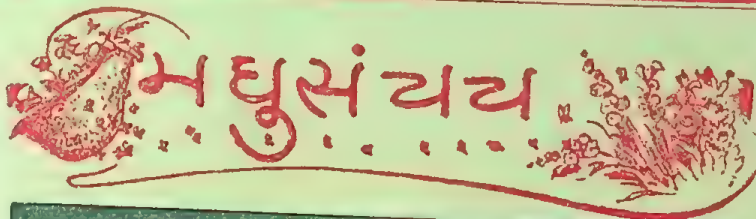
पण्डित जवाहरलाल नेहरू—जिनकी ५७ वीं वर्षगांठ गत १४ नवम्बर को सारे भारत और विदेशोंमें बड़े समारोहके साथ मनायी गयी।

स्वयं अपने श्राद्धमें शरीक

आराका एक समाचार है कि सोन नदी पर स्थित एक गांवका मछुआ मृत घोषित हो जानेके उपरान्त अकस्मात् अपने ही श्राद्धमें विस्मय-जनक ढंगसे आकर प्रकट हो गया। कहा जाता है कि अभी कुछ पूर्व सोन नदीमें धारमें बहकर आते हुए शहतीरों को पकड़ते समय अकस्मात बाढ़ आ जानेसे कई मछुओंके साथ ही वह तीव्र जलधारा में बह गया और कई दिन तक न मिलने पर मृत घोषित कर दिया गया।

किन्तु वास्तवमें वह मरा नहीं था और एक शहतीर पकड़ कर कई दिन तक जीवन और मृत्युके बीच झूलता हुआ नदीमें बहता रहा। काफी दूर पहुंचनेपर एक जगह मछुओंने उसे बचा लिया। उसके रक्षक भी शुरूमें उसे लकड़ी पर बैठा भूत समझ कर डरने लगे थे।

जब वह अपने गांवमें पहुंचा तो उसे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि उसकी श्राद्ध-क्रिया सम्पन्न हो रही है और बिरादरी भोजकी तैयारियां हो रही हैं। किन्तु उसके पहुंचनेपर सब तैयारियां बन्दकर दी गयीं और मृत-भोजन खुशीकी दावतमें परिणत हो गया।

संसारका सबसे बड़ा वायुयान

ब्राबेजोन नामक एक विशालकाय यात्री-वाहक वायुयान बनानेके लिये योजना तैयार हो गयी है। यह वायुयान अटलांटिक महासागरके आरपार यात्रियोंको ले जाया करेगा। ब्राबेजोन वायुयान संसारका सबसे बड़ा यात्री-वाहक वायुयान होगा। इसके विशाल आकारके सम्बन्धमें इस प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है कि आधे पैमानेपर बनी हुई इसके पंखोंकी मेहराबपूर्ण आकारके लंकास्टर किस्मके बमवर्षककी मेहराबसे भी बड़ी है। उक्त वायुयानका ढांचा आध इंच मोटे फौलादी तारोंसे जमीनमें बंधा हुआ है ताकि वह ऊपर न उठ जाय। इसके अगले भागमें दरवाजे, रोशनदान आदि बने हुए हैं। वायुयानके अगले भागके ऊपरी गुम्बजमें १६ पौण्ड प्रति वर्गइंच दबावतक हवा भर दी गयी किन्तु यह अति दृढ़ होते हुए भी फट गया और इससे इतना भयङ्कर शब्द हुआ कि तबसे इस भागको 'एटम बम' कहकर सम्बो-धित करने लगे हैं। उक्त वायुयानपर आंधी तूफान, आदिके प्रभावोंका परीक्षण और तत्सम्बन्धी कठिनाइयोंको दूर करनेका प्रबन्ध भी किया गया है।

गुप्त स्वर्ण भण्डार

आइलैंडर जहाजके कप्तान मेक्स स्टैण्टन इस वक्त मेलबोर्नमें हैं और कोकोस द्वीपमें गुप्त स्वर्ण भण्डारकी खोज करनेमें दत्तचित्त हैं। कहा जाता है कि उक्त भण्डारमें दो करोड़ पौण्डका सोना है। इस स्वर्ण भण्डार को खोज करनेके लिये वे १९३४ में पहला प्रयत्न कर चुके हैं। आपका कथन है कि लगभग ९० वर्ष पूर्व मोरगन नामक एक कप्तानको दस वर्षकी खोजके बाद यह भण्डार मिल गया था। वह इसमेंसे थोड़ा सा सोना लेकर लौट गये। मोरगनके मरने के बाद पता बतानेवाला नक्शा दो चीनी मल्लाहोंके हाथ लग गया। मोरगनने यह नक्शा अपने खूनसे तैयार किया था। एक चीनी मल्लाहको छुरा मार दिया गया और दूसरेने यह नक्शा लकी नामक कप्तान को भेज दिया। लकीने बड़ा परिश्रम किया लेकिन भण्डार न मिला। अन्तमें निराश होकर उसने नक्शा मेक्स स्टैण्टनके हाथ बेच दिया। स्टैण्टन दक्षिण ध्रुवकी खोज करने वाले सर डगलस मासनके साथ गया था।

कविता

गीत

मौन चले जाते हैं।
सोने का संसार लिये ये
प्यासे मन का प्यार लिये ये
दो बूंद सनेह दान में दीपक मौन जले जाते हैं।
राह पथिक को कौन बताये
चाह शलभ की कौन पुराये
खिलते फूल नित्य उपवन में वह भी मौन मले जाते हैं।
सुख का उठते मेला देखा
दुख का लगा झमेला देखा
देखो जीवन के चिर चंचल छन, ये मौन ढले जाते हैं।
देखो मौन चले जाते हैं।

—श्री बच्चूलाल बैधिया

कामना

सजन ! घन बन गगन छाऊं
जल रही ज्वाला बिरह की
एक यह मेरे हृदय में,
चमक जो रह रह उठेगी
दामिनी बन नभ निलय में
कम यदि हो सके दुःख, गरज कर तब बरस जाऊं
सजन ! घन बन गगन छाऊं
जगत का कण कण तुम्हें ही
ढूंढ़ कर है आज हारा
आश भर कर किन्तु उर में
है अटल ध्रुव का सितारा !
के विस्तृत हृदय में, यदि झलक भी देख पाऊं
सजन ! घन बन गगन छाऊं
आज मेरी साधना के
तार भी सब टूटते हैं,
पर अभागे प्राण मेरे
क्यों नहीं अब छूटते हैं
नहीं तो दो घड़ी भर, तपन मनकी ही मिटाऊं
सजन ! घन घन गगन छाऊं

—श्री रमेशचन्द्र निगम 'आरसी'

शबनम

है जीवन क्षण-प्रति क्षण—
निश - दिन की कसक कहानी से
जलता हिय सरस जवानी से
उठ आह निकल कर सूने में
बन जाती नभतल में जल कण
है जीवन क्षण - प्रतिक्षण
प्रिय - विरह - व्यथा के आंसू आ
आंखें निर्झरणी से बह जा
बन बाष्प रहे इन आंखों से
करने को केवल प्रिय - दर्शन
है जीवन क्षण - प्रतिक्षण—
विमल अश्रुओं के सागर से
तरुण सरस जीवन के घर से
हो आते बरबस नयन सजल
प्रिय उर में फिर आकुल चिन्तन
है जीवन क्षण - प्रतिक्षण
चिर-अमर मिलन के प्यार लिये
के भार हृदय अभिसार लिये
वह विरह - पथों में आता गिर
करता है चम चम ये शबनम
है जीवन क्षण - प्रतिक्षण—

—श्री रामोजी 'नन्हे'

गीत

तुम हंस दो, मरु में फूल उगा लूंगा मैं।
तम - तोयधि में तिरती नयनों की नैया
मीठी सुधि बन आयी भीनी पुरवैया
सुनहले स्वप्न से भरी हमारी पुतली
उड़ जाय न तेरी छवि की चंचल तितली
लघु अश्रु - दीप में छिपी हुई चिनगी को
तुम छू दो, जीवन - ज्योति जगा लूंगा मैं।

○ ○ ○ ○ ○

यह कौन पुलक - पीड़ा से भरी कपोती
मेरे मन - वन में चुपके - चुपके रोती
प्राणों के झूले पर बन कर परिछाईं
कल्पना दूर की आज उतर कर आयी
मेरे नत मस्तक पर अपना कोमल कर
तुम धर दो ! अपने गले लगा लूंगा मैं।

○ ○ ○ ○ ○

सांसों से छिल कर अन्तर्वीणा टूटी
खो गई शून्य में सरल तान जो फूटी
सुकुमार हृदय के घायल अरमानों को
अब कौन सुलाए ? कविता कवि से रूठी
मधुमय चुम्बन से मेरे मौन अधर को
तुम ढंक दो, कुछ गुन - गुन कर गा लूंगा मैं !

—श्री बदरीदास 'विधुर'

दिया क्यों मिटने का वरदान ?

(१)

प्रतिपल उर्वर होते लोचन,
घिर आते पलकों में सावन;
किस "निर्मम" की सुधिमें होते—
बेसुध तन - मन — प्राण !
दिया क्यों मिटने का वरदान ?

(२)

किसकी मधु-स्मृतिमें यह जीवन,
घुल-घुल कर बनते चिर नूतन;
कौन आज धीरे से उर में—
आता छिप अनजान ?
दिया क्यों मिटने का वरदान ?

(३)

इस असीम-ज्वाला में भी घुल,
दग्ध न होते अन्तर-बिह्वल;
मांग रहे शत्-शत् ज्वालोंसे—
शीतलता का दान !
दिया क्यों मिटने का वरदान ?

(४)

आ न कभी तुम मेरे सम्मुख,
जलने में ही है अनन्त - सुख;
भय है, हो जाये न कहीं—
इस चिर सुख का अवसान !
दिया क्यों मिटने का वरदान ?

(५)

जल-जल कर जीना सीखा है,
मिट कर कौन, किसे देखा है ?
तू न मुझे देना, इस "मधुमय—
—ज्वाला" से परित्राण !
दिया क्यों मिटने का वरदान ?

—श्री जयदेव प्रसाद अम्बष्ट "मधुकर"

परहित बस जिनके मनमाही ।
तिनकहं जग दुर्लभ कछु नाहीं ।

विद्रोही नेता जवाहर

——:०○:——

"जब अन्य सब अधिकार छिन जाते हैं तब मानव जातिके पास एकमात्र पूर्ण अधिकार जो रह जाता है वह है विद्रोहका अधिकार।" पण्डित जवाहरलाल नेहरूने अपने इस अधिकार-अस्त्रका प्रयोग केवल अपने लिये नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्षके लिये एक बहादुर योद्धा, एक धीर गम्भीर राजनीतिज्ञ और एक स्वाभिमानी नागरिककी भांति निरन्तर अबाध गतिसे पिछले पचीस वर्षोंसे करते चले जा रहे हैं। समयकी प्रगति के साथ-साथ उनके इस अस्त्रकी चोट भी गहरी होती जा रही है। परतन्त्र भारतवर्ष को स्वतन्त्र करनेके लिये विद्रोह उनमें साकार है और सजीव हो उठा है। लाहौर कांग्रेस अधिवेशनमें इन्होंने अध्यक्ष पदसे यह वज्र घोषणा की था कि 'हिंसा खराब है किन्तु गुलामी उससे अधिक खराब है।" उनकी यह वाणी जब अगस्त आन्दोलनमें चरितार्थ हो उठी, तो जेलसे निकलने वालों में ये पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने १९४२ की घटनाओंकी जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और इस आन्दोलनमें लेनेवालोंकी भूरि भूरि प्रशंसा करते हुए उनके प्रति श्रद्धा और सम्मानका भाव प्रकट किया। "प्रत्येक भारतीयका, जो गुलाम है, विद्रोह करना और जबतक वह स्वतन्त्र न हो जाय विद्रोह जारी रखना उसका कर्त्तव्य है। जिस राष्ट्र पर दूसरे देशने अपना आधिपत्य जमा रखा है उसे चाहिये कि वह उस देशके खिलाफ विद्रोह करे। मैं विद्रोह शब्दका व्यवहार खूब सोच समझकर कर रहा हूं।" ये शब्द पंडित जवाहरलाल नेहरूके। उनके हृदयमें विदेशी दासताके खिलाफ आग धधक रही है और इस आगको शान्त करनेके लिये विद्रोहही उनका एकमात्र साधन है। इसीसे वे कहते हैं कि आज हमारे लिये दो झण्डे हैं। एक झण्डा है स्वतन्त्रताका और दूसरा झण्डा है ब्रिटिश दासताका। जो हमारे साथ नहीं हैं वे हमारे दुश्मनके साथी हैं। उसके साथ उनकी कभी पट नहीं सकती। देशमें, जबतक देश परतन्त्र है, वे केवल दो पार्टियां मानते हैं। वे कहते हैं कि परतन्त्र देशमें स्वतन्त्रताके लिये लड़नेवालों अर्थात् कांग्रेस और देशको गुलाम बनाये रखनेवालों अर्थात ब्रिटिश सरकारके सिवा तीसरी पार्टीको स्थान नहीं है। स्वतन्त्रताके लिये लड़नेवालोंकी जमातके नेता महात्मा गान्धीके नेतृत्वमें, यही कारण है कि गांधी जीके अनेक विचारोंसे मतभेद होते हुए भी, पण्डित जवाहरलाल एक [illegible] सेनापतिकी भांति प्रत्येक स्वतन्त्रता संग्राम में देशको अधिकाधिक अपने लक्ष्यके निकट ले जा सके हैं। और स्वतन्त्रताके प्रश्नको सर्वाधिक महत्व देनेवाले पण्डित जवाहर लाल नेहरू उससे सम्बन्धित अन्य तमाम प्रश्नोंपर प्रकाश डालते हुए जनसाधारण और खासकर कार्यकर्ताओंका समाजकी वर्तमान विषमताओंकी ओर ध्यान आकर्षित करते रहते हैं। वे यह जानते हैं कि देशको, स्वतन्त्र हो जानेपर भी एक बहुत बड़ी ताकतसे लोहा लेना पड़ेगा। उस दिन के लिये वे देशको बराबर सचेत करते रहते हैं। स्वतंत्रताके मार्गमें आगे बढ़ते रहते हुए भी, उसके मार्गके बाधक और जनसाधारण के शोषकवर्ग पूंजीपतियों तथा सामन्तोंको वे अपनी दृष्टिसे ओझल नहीं होने देते। वे जानते हैं, सिर्फ जानते ही नहीं समय समय पर बराबर यह बात कहते हैं कि स्वतन्त्र राष्ट्रीय सरकारके सामने कैफियत देनेके लिये ये बुलाये जायेंगे। किन्तु आज गृहयुद्ध या वर्गयुद्ध आरम्भ करनेका अर्थ है ब्रिटिश सरकारकी हुकूमतको मुहलत देना। पण्डितजी यह नहीं चाहते। कोई भी देशका सच्चा हितैषी यह नहीं चाहेगा।

पण्डित जीका निर्भीक नेतृत्व देशके लिये सौभाग्य है। आज उनकी लोकप्रियता और ख्यातिका यही कारण है। सार्वजनिक जीवनमें आतेही पंडित जवाहरलाल नेहरू सूर्यकी भांति क्यों प्रकाशमान हो उठे और दिन प्रति दिन उनकी कीर्ति पताका देशकी सीमाओंको लांघकर सारे संसारमें कैसे फहरा उठी? इस प्रश्नका उत्तर पानेके लिये पंडित जवाहरलाल नेहरूके सैनिक, राजनीतिक और मानवीय जीवन पर दृष्टि डालना आवश्यक है। ऐसा करनेसे पता चलेगा कि उनमें एक आदर्श राजनेताके तमाम गुण भरे हुए हैं। सत्य नियम, निष्ठा, दृढ़ता, धैर्य, मृदु स्वभावके साथ साथ विद्या बुद्धि, ज्ञान, विवेक और विवेचना शक्ति। इन सब गुणोंको कार्यमें परिणत करनेके लिये आवश्यक और वांछनीय साहस एवं आत्म बल ये सारे गुण पण्डितजी में साकार वर्तमान हैं। यही कारण है कि उनकी धाक देशमें ही नहीं विदेशमें भी जम गयी है। अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नोंको पण्डित जी अपनी सूक्ष्म दृष्टि और कुशाग्र बुद्धिसे जितना सम्यक रूपेण समझते हैं, उतना बिरलाही समझता होगा। यही कारण है कि परतन्त्र देशके नेता होते हुए भी अन्तर्राष्ट्रीय जगतमें पण्डित जवाहरलालका वही स्थान है जो इने गिने विश्वकर्णधारोंका है।

महात्मा गान्धीके शब्दोंमें जवाहरलाल मानवोंमें रत्न हैं। उन्हें धारण करने वाली भूमि भाग्य शालिनी है। उस व्यवस्थामें कोई मौलिक त्रुटि है जिसमें ऐसे लोगोंका कैदी होनेके सिवा कोई उपयोग नहीं। हम उनकी ५६ वीं वर्षगांठके उपलक्षमें उनको अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हुए भगवानसे प्रार्थना करते हैं कि पण्डित जी [illegible] वर्ष तक जीवित रह कर भारतवर्षका ही [illegible] विश्वका नेतृत्व करें।

डि गालका इस्तीफा

फ्रांसमें राजनीतिक संकट उपस्थित हो गया। ऐसा प्रतीत होता है कि यह फ्रांसकी परम्परा बन गयी है। युद्धके पूर्व १० वर्षों के भीतर प्रति छठे महीने एक नयी सरकारके बनने और बिगड़नेका दृश्य भी हम देख चुके हैं। युद्धोपरान्त अभी उस दिन गत अक्तूबर में, विधान बनानेवाली परिषद्के संगठनके प्रश्न पर जो साधारण चुनाव लड़ा गया था उसमें तीन पार्टियोंकी प्रधानता स्थापित हुई है। १५१ कम्यूनिस्ट, १४२ जनवादी ईसाई और १३९ सोशलिस्ट पार्टीके सदस्य चुने गये हैं। १२४ अन्य कई पार्टीके सदस्य हैं। इस तरह अकेली सबसे बड़ी पार्टी कम्यूनिस्टोंकी है। ३० सप्ताहके भीतर नया शासन विधान बन जाना चाहिये। इस परिषद्की पहली बैठकमें अस्थायी सरकार का प्रधान जेनरल डिगालको चुना गया। विधान बनानेवालों परिषद्का चुनाव हो जानेके बाद परिषद्का अधिवेशन आरम्भ होनेके पूर्व डि गालने यह विचार प्रकट किया था कि "फ्रांसकी सरकारके संगठन और संचालनकी जिम्मेदारी मैं उस समय तक लेनेको तैयार नहीं हूं जबतक निश्चित बहुमत मेरे पीछे न होगा और मुझे यह आश्वासन न मिलेगा कि युद्धके पूर्वकी सरकारोंको हर समय अपने अस्तित्वके लिये जिस खतरेका सामना करना पड़ता था मेरी सरकार उससे मुक्त रहेगी।" गत १३ नवम्बरको परिषद्के प्रथम अधिवेशनमें ५५५ वोटोंसे जेनरल डि गाल अस्थायी सरकारके प्रधान चुने गये। सिर्फ एक सदस्य ने वोट नहीं दिया। इस तरह प्रधान निर्वाचित होनेके बाद डि गालने सरकार बनाने का प्रयत्न आरम्भ किया, तो उनके सामने कठिनाइयां आयीं या यों कहना चाहिये कि उन्होंने स्वयं कठिनाइयोंकी सृष्टि की। परिषद्में सबसे बड़ी अकेली पार्टी होनेके नाते कम्यूनिस्ट पार्टीकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। कम्यूनिस्ट पार्टीकी यह मांग सर्वथा उचित है कि तीन मुख्य मन्त्रिपदोंमें—वैदेशिक, युद्ध और गृह विभागमें—एक पद उसकी पार्टीको मिलना चाहिये। जेनरल डि गाल इसके लिये तैयार नहीं हैं। उनका कहना है कि वे इन तीन विभागोंमें एक भी कम्यूनिस्ट सदस्यके अन्तर्गत नहीं रख सकते। वे यह कहते हैं कि जब तक कम्यूनिस्ट पार्टी इस बातका अधिक स्पष्ट और सुनिश्चित प्रमाण नहीं उपस्थित करती कि उनकी वैदेशिक नीतिका आधार विशुद्ध राष्ट्रीयवादी है और मास्कोसे अनुप्राणित नहीं है तब तक युद्ध अथवा वैदेशिक विभाग एक कम्यूनिस्टके हाथोंमें सौंपना फ्रांसके हितके लिये घातक है। जब पिछले निर्वाचनमें कम्यूनिस्ट सबसे अधिक संख्यामें चुने गये तब जहां तक राष्ट्रोंका सम्बन्ध है उसने अपने हितोंको कम्यूनिस्टोंके हाथोंमें पूर्ण सुरक्षित और निरापद समझनेका फैसला दे दिया है। ऐसी हालतमें राष्ट्रके इस स्पष्ट निर्णयके सामने रहते हुए कम्यूनिस्टोंके प्रति डि गाल का यह आचरण सर्वथा निन्दनीय और [illegible] पूर्ण उपेक्षा करनेवाला समझा जायगा।

सिरिया और लेबनान एवं फ्रेंच इण्डो-चीनके सम्बन्धमें हम देख चुके हैं कि जेनरल डि गाल किसी कट्टरसे कट्टर साम्राज्यवादीसे कम खतरनाक नहीं है। आज फ्रेंच उपनि-वेशों और मातहत देशोंमें स्वतन्त्रताके लिये जो विप्लवकारी आन्दोलन चल रहे हैं उनको देखते हुए कट्टर साम्राज्यवादी डि गाल यह हरगिज नहीं चाह सकते कि वैदेशिक अथवा युद्ध विभाग किसी कम्यूनिस्ट मिनि-स्टरके मातहत रहे। फ्रांसके साम्राज्यको बनाये रखने और दूसरे देशोंको गुलाम बनाये रखनेके लिये यह आवश्यक है कि ये दोनों विभाग किसी साम्राज्यवाद पोषकके हाथोंमें रहें। अतएव फ्रांसके राष्ट्रीय हितोंके लिये नहीं साम्राज्यवादी हितोंकी दृष्टिसे डि गालने जानबूझकर राजनीतिक संकटकी स्थिति उत्पन्न की है। इस अवांछनीय स्थितिके लिये डि गालकी साम्राज्य लिप्सा जिम्मेदार है। कम्यूनिस्ट पार्टीने मंत्रिमण्डल के तीन प्रमुख विभागोंमेंसे एकके लिये अपना आग्रह बताकर ठीक ही किया है। परिणामस्वरूप जेनरल डि गालने नवीन सरकारके संगठनका प्रयास बन्द कर उसके अध्यक्ष पदसे इस्तीफा दे दिया है।

अब स्थिति यह है कि यदि सोशलिस्ट पार्टी कम्यूनिस्टोंके साथ सहयोग करे तो नवीन सरकार वामपंथी होगी, [illegible] जनवादी ईसाइयोंसे वह हाथ मिलायेगी [illegible] दक्षिण पंथी सरकार बनेगी। डि गाल [illegible] में ब्रिटेनके साथ हाथ मिलाकर [illegible] खिलाफ मोर्चेबन्दी कायम करना चाहते [illegible] स्वभावतः कम्यूनिस्ट पार्टी इस गुटबन्दी [illegible] विरोध करेगी। यूरोप और विश्वकी शान्ति [illegible] लिये यह आवश्यक भी है। साम्राज्यवादी नीति विश्वशान्तिके मार्गमें सबसे बड़ी [illegible] है। विश्व शान्तिकी चर्चाके साथ-साथ साम्राज्यवादका पोषक और संरक्षक [illegible] परले दर्जेका मक्कार है। डि गाल भी [illegible] लोगोंमें हैं। बहरलाल जो भी हो इस [illegible] सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है [illegible] राजनीतिक संकटकी भूमिकाके साथ आरम्भ होनेवाला फ्रांसका यह नवीन युद्धो-त्तरकालीन अध्याय फ्रांसको किधर ले जायेगा प्रगतिकी ओर या प्रतिक्रियाकी ओर [illegible] आनेवाली घटनाएं इस प्रश्नका उत्तर देंगी।

काले और गोरे—

लन्दनके 'डेली हेराल्ड' पत्रमें हैनेन [illegible] करने एक सनसनीखेज घटनाकी [illegible] दी है। उसने 'दो विक्टोरिया क्रास [illegible] व्यक्तियोंका अपमान' शीर्षक संवाद [illegible] गंत लिखा है कि—दो सिख अफसर, [illegible] सम्राटने वीरत्वपूर्ण कार्योंके लिये [illegible] पुरस्कार—विक्टोरिया क्राससे [illegible] विभूषित किया था, उस दिन [illegible] स्ट्रीटकी एक रेस्तरांमें गये और अपने [illegible] दो जगहें चाहीं, लेकिन रेस्तरांके प्रधान [illegible] सामाने, जो एक इटालियन था, [illegible] कर उनको स्थान देनेसे इनकार कर [illegible] कि 'हम इन व्यक्तियोंकी खिदमत नहीं [illegible] यह सुन कर दोनों सिख अफसर [illegible] चले गये।' यदि भारतमें [illegible]

...के साथ ऐसा बर्ताव किया गया होता तो उसका क्या नतीजा होता, इस बातकी आसानीसे कल्पना की जा सकती है । मि० ...र अथवा 'डेली हेराल्ड' कांग्रेसके ...पत्री या कांग्रेसी पत्र नहीं है, जो पुरानी ...गत और राजनीतिक कटुताकी भावना ...प्रेरित होकर ऐसी रिपोर्टको प्रचारित ...है। भारतीयोंके मनमें गोरोंके प्रति ...की भावनामें वृद्धि होनेका कारण क्या ...इस बातको सभी विवेकी व्यक्ति आसानी समझ सकते हैं। भारतीयोंके साथ ...दुर्व्यवहार किया जाता है, यदि ठीक ...अनुपातसे भारतीय जनता भी बदला ...ठान ले तो महान अनर्थ हो सकता ...देशांतोंकी इसी जातिगत विद्वेषकी ...भावनाने संसारमें महायुद्धोंकी सृष्टि ...है। भारतीय अपना अधिकार चाहते ...किसीसे विद्वेष रखना नहीं चाहते । ...गोरोंको चेतावनी दे देना चाहते हैं कि ...रतवर्ष और ऐसे अपमानोंको बर्दाश्त ...कर सकेगा और यदि अंग्रेज अपनी ...वृत्ति नहीं बदलेंगे तो भारतवर्षके साथ ...सम्बन्धमें सदाके लिये एक गहरी ...उत्पन्न हो जायगी ।

अणु शक्तिपर समझौता—

...युक्तराष्ट्र अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन और ...के बीच वाशिंगटनमें ६ दिनोंकी ...बातचीतके बाद 'मानव हितके लिये ...शक्तिका उपयोग और भावी नियन्त्रणके ...में समझौता' हो गया है । राष्ट्रपति ..., प्रीमियर एटली और प्रीमियर ...ने किंगने समझौता पत्रपर हस्ताक्षर ...के बाद घोषणा की है कि अणु शक्ति ...ज्ञान और उपयोगिता विश्वभरके लिये ...होना चाहिये, किन्तु अणु बमके ...को तभी व्यक्त किया जा सकता है, ...दूसरे राष्ट्र भी अपने गुप्त रहस्योंको ...कर दें । अमेरिका, ब्रिटेन और कनाडा ...घोषणामें दूसरे राष्ट्रों और खासकर ...की नीयतके प्रति आशङ्काकी भावना ...है और पिछले दिनों ब्रिटिश राज- ...ज्ञोंने रूसके प्रति जो यह अभियोग ...था कि उसने उनके भेदोंको जान ...भी अपने भेदोंको व्यक्त नहीं किया, ...इसी प्रकारकी संदिग्ध भावना उस ...में भी है । 'न्यूयार्क टाइम्स'ने लिखा ...अणु शक्तिके रहस्योंको मित्रराष्ट्रीय ...के समक्ष व्यक्त कर देनेके लिये राष्ट्र- ...मैन, मि० एटली और मि० मैकेंजी ...राजी हैं, बशर्ते रूस भी अपने रहस्यों ...के सामने व्यक्त कर दे । यदि रूस ...पास किसी रहस्यका होना अस्वी- ...करें तो वे क्या करेंगे और यदि वे भी ...रहस्योंकी घोषणा करते हुए अपनी ...को आंशिकरूपसे गुप्त रखें तो रूस क्या ...? मित्रराष्ट्रोंके अन्दर इस प्रकारका ...भाव अत्यन्त घातक है । रूस और ...अमेरिकाके बीच मतभेदकी खाई ...चौड़ी हो चुकी है कि पारस्परिक ...को छोड़कर सभी अपनी अपनी शक्ति ...में लगे हुए हैं । 'इजवेस्तिया'ने लिखा ... बमकी खोजका कार्य तेजीसे सम्पन्न होता जा रहा है और मृत्यु किरणके आविष्कारमें भी काफी सफलता मिल चुकी है । आज मित्रराष्ट्रोंके बीच अधिकाधिक विनाशकारी अस्त्रोंके निर्माण की जो होड़ लगी हुई है वह मानवजातिके भविष्यको अन्धकारमय ही बनाती है ।

कपड़ेका कण्ट्रोल—

अभी हाल तक सभी लोग इस बात पर एकमत थे कि देशमें भीषण वस्त्र संकट उपस्थित है, यद्यपि सरकार इस सङ्कटको 'अकाल' नहीं कहना चाहती थी। भूतपूर्व टेक्सटाइल कमिश्नर मि० वेलोडीने बंगाल के दौरेके समय कहा था कि वस्त्राभाव कुछ अंशोंमें मौजूद हैं, लेकिन वितरणकी गड़बड़ीके कारण इतना अधिक सङ्कट उत्पन्न हुआ है। टेक्सटाइल कण्ट्रोल बोर्ड और केन्द्रीय सरकारने सभी प्रान्तोंको कोटाके अनुसार कपड़ा दे दिया था, अतएव वितरणकी गड़बड़ीका सारा दोष प्रान्तीय सरकारों पर पड़ा। जहां तक वस्त्रके कण्ट्रोल का सवाल है, इस बातको आसानीसे समझा जा सकता है कि छिपाये हुए मालको बाजार में लानेके कारण बीचमें कुछ दिनों तक इसमें सफलता मिली थी, लेकिन उसके समाप्त होते ही फिरसे सङ्कट उत्पन्न हो गया। बम्बईके मिल मालिक संघके वक्तव्योंमें ऐलान किया गया है कि कपड़ेकी मिलोंने युद्ध कालमें पहलेकी अपेक्षा अधिक वस्त्रोंका निर्माण किया है, लेकिन हम जानते हैं कि वस्त्र उद्योगने साधारण जनताकी भलाईके लिये कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं किया। कण्ट्रोलके पहले कपड़ेके लिये जनता को जितनी मुसीबतोंका सामना करना पड़ता था, अब कण्ट्रोल होनेपर उससे भी अधिक मुश्किलोंका उन्हें सामना करना पड़ रहा है। अतएव कपड़ेके कण्ट्रोलका अन्त होनेसे जनताको कुछ सुविधा होती किन्तु डिप्टी टेक्सटाइल कमिश्नरने कहा है कि वस्त्र सङ्कट अभी बहुत दिनों तक रहेगा अतएव अगले पांच वर्षों तक वस्त्र उत्पादन और वितरण पर नियन्त्रण रखना जरूरी होगा। श्री कृष्णराज ठाकरसीने कहा था कि अगले वर्षके आरम्भसे कण्ट्रोल हटा लेना सम्भव होगा, किन्तु टेक्सटाइल कमिश्नरके वक्तव्यसे जनताकी निराशा और बढ़ जायगी। वस्त्र उद्योग और सरकार बीच वस्त्र सङ्कट कायम रहने सम्बन्धी मतभेदसे जनताको कोई मतलब नहीं है। उसको तो तन ढंकनेके लिये कपड़े चाहिये —कम खर्च और बाला नशीं।

आगसे मत खेलो—

आजाद हिन्द फौज दिवस देश भरमें मनाया गया। आजाद हिन्द फौजके प्रति देशवासियोंका कैसा मनोभाव है वह उस दिन होने वाली सभाओं, जुलूसों और प्रभातफेरियोंने स्पष्ट कर दिया। छात्रोंने भी जगह जगह नारे लगाये कि आजाद हिन्द फौजको छोड़ दो, लाल किला छोड़ दो। उनके प्रदर्शन सभी जगह शान्ति पूर्ण हुए लेकिन युक्त प्रान्तकी नौकरशाही और पंजाबकी नौकरशाहीको छात्रोंके प्रदर्शन फूटी आंखों भी भले नहीं लगे। लिहाजा उक्त प्रान्तोंमें खुल कर लाठी चार्ज किया गया। प्राप्त संवादोंसे पता चलता है कि लाहौरमें पुलिसके लाठी प्रहारका निशाना दस, ग्यारह वर्षकी लड़कियां तक बनी हैं। कुछ घायल लड़कियोंकी उम्र तो ८ ही वर्ष की बतायी जाती है। एक छात्र नेताको बेरहमीके साथ पीटा गया और प्यास लगने पर पीनेको पानी भी नहीं दिया गया। लखनऊमें निहत्थे युवकों पर शहरमें कई जगह लाठी चार्ज किया गया। यह भी पता चला है कि जब भीड़ नहीं हटी तो घुड़सवार पुलिससे काम लिया गया। पुलिसके इस अमानुषिक व्यवहारसे उक्त स्थानोंमें बड़ी उत्तेजना फैल गयी है। यदि पुलिसने तनिक भी बुद्धिसे काम लिया होता तो शायद स्थिति इस प्रकारकी नहीं हो जाती। छोटे छोटे बालक और बालिकाओंके प्रदर्शनोंसे लाहौर और लखनऊसे ब्रिटिश साम्राज्यका पाया नहीं उखड़ा जा रहा था कि वहांके पुलिसके अधिकारियोंने साधारण शिष्टाचारको भुला कर जघन्यताका परिचय दिया। क्या उन प्रान्तोंकी सरकारें सोचती ऐसे दमनसे जनताकी भावनाओंको कुचल दिया जायगा? यदि वे ऐसा सोचती हैं तो यह उनकी हिमाकत है। जो सरकारें अबोध बालिकाओं पर लाठी चार्ज करनेकी अनुमति देती हो उसकी जितनी भर्त्सना की जाय थोड़ी है। हम उक्त प्रान्तोंकी सरकारोंसे केवल यह कहना चाहते हैं कि वे इस प्रकारके कार्य कर आगसे न खेलें।

प्रो० जयचन्द्र विद्यालङ्कार

प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालङ्कार इतिहास के माने हुए विद्वान हैं। उनकी खोजों और पुस्तकोंकी सर्वत्र प्रशंसा हुई है। जबसे भारतीय इतिहास परिषद्की स्थापना हुई है तबसे आप भारतके प्रामाणिक इतिहासके सम्पादनमें लगे थे। लेकिन सन् १९४२ में सरकारने उन्हें गिरफ्तारकर पंजाबके कैम्बेलपुर जेलमें नजरबन्द कर दिया। बहुत दिनों तक तो आपका पता ही नहीं चला कि कहां रखा गया है। इधर जबसे राजनीतिक बंदियोंकी रिहाई हुई है तो आशा तो चली थी कि विद्यालङ्कारजीको भी रिहा कर दिया जायगा। लेकिन पता चला है कि रिहा करनेके बजाय उनकी नजरबन्दीकी अवधि बढ़ा दी गयी है। इस भांति अवधि बढ़ाये जानेपर श्रीमती सरोजिनी नायडूने क्षोभ प्रकट किया है और सरकारसे अपील की है कि प्रो० विद्यालङ्कारको शीघ्रातिशीघ्र रिहा कर देना चाहिये। सचमुच प्रो० विद्यालङ्कार जैसे सांस्कृतिक कार्य करनेवाले व्यक्तिको बिना मामला चलाये जेलमें बन्द रखना सरासर अन्याय है। उनका ऐसा कौनसा अपराध है जो सरकार आज जब अन्य बन्दियोंको छोड़ रही है तब प्रो० विद्यालंकारकी नजरबन्दीकी अवधि बढ़ा रही है। हम सरकारसे केवल यह कहना चाहते इस प्रकार सांस्कृतिक कार्योंमें बाधा देनेका फल अच्छा नहीं होगा। सरकारको प्रो० विद्यालङ्कारको रिहा कर समझदारीका परिचय देना चाहिये।

सुपौलपर प्रकृतिका कोप—

बिहारमें कुछ ऐसी नदियां है जिनमें प्रत्येक वर्ष बाढ़ आती है और गरीब किसानोंकी खेतोंमें लहराती हुई आशा—फसल अपने साथ लिये चली जाती है। भागलपुर जिलेमें कोसी नदी है उसकी बाढ़से प्रत्येक वर्ष सुपौल आदि इलाकोंके लोग तबाह हो जाते हैं। कहते हैं इधर कुछ वर्षोंसे बाढ़का आना कम-सा हो गया था और किसान अपनी खेतीबारीमें चैनसे लग गये थे लेकिन इस वर्ष एकाएक फिर बाढ़ आ जानेसे सब फसल बरबाद हो गयी, घर नष्ट हो गये। लोग महीनोंतक मचानोंपर रहे। बाढ़का प्रकोप शांत हो गया लेकिन आज भी कुछ स्थानोंकी वैसी ही हालत है। सरकारकी ओरसे बाढ़ पीड़ित क्षेत्रोंमें सहायता कार्य किया गया लेकिन वह वैसे ही था जैसे अन्य सरकारी काम होते हैं। कई गांवोंमें सहायता पहुंची भी न कि सरकारने वह काम ही बन्द कर दिया। एक तो जनता वैसे ही अन्न और वस्त्र के लिये तड़प रही थी और अब बीमारियोंके कारण बिना मौत मर रही है। मलेरिया दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। कई स्थानों पर हैजा भी फैल रहा है। गांव गांवके लोग सैकड़ोंकी संख्यामें बीमारियोंके शिकार हो रहे हैं। बंगालके अकालमें यह बात प्रत्यक्ष देखी गयी है कि अन्न बिना जितने लोग मरे उनसे कम ऐसी भयानक बीमारियोंसे नहीं मरे। अतः बिहारके सार्वजनिक कर्मियों तथा देशकी लोकोपकारी संस्थाओंको सुपौलकी स्थिति जांच कर शीघ्रातिशीघ्र सहायता कार्यकी व्यवस्था करनी चाहिये। सरकारसे सहायताके लिये कहना हम अरण्यरोदन समझते हैं। सरकारका कार्य जनताकी जान बचाना नहीं, उसका शोषण करना है—वर्ना वह अब तक सुपौलकी पीड़ित जनताकी रक्षाके लिये कुछ न कुछ करती।

ब्लैक मारकेट

अलबर्ट कृष्ण अली

माफ करें, मैं अपने बापका नाम नहीं बता सकता और अगर यह कह भी दूं कि मेरे बापको रायबहादुरका खिताब मिला था, तो अपने दादाका नाम तो किसी भी हालतमें न बताऊंगा। उनका नाम इस चुनावके जमानेमें बताना खान्दानके प्रति घनघोर अन्याय समझता हूं।

बस आप इतना ही जान लीजिये कि मैं कौन हूं।

आजसे कुछ दिन पहलेकी बात है। आर्ट पेपर पर मेरे बच्चेने काले रंगकी बौछार कर दी। यह कुकर्म इन दिनों यदि आपके यहां होता तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि उस बच्चेको आप चर्चिलकी तरह 'गेट आउट' कर देते और साथ-साथ अपनी अन्दरूनी ताकतकी भी आजमाइश कर लेते। लेकिन मैंने वैसा नहीं किया।

उन दिनों अखिल राष्ट्रीय चित्रकलाकी प्रदर्शिनी कलकत्तेमें हो रही थी। एक चित्रको देखकर निपुणसे निपुण चित्रकला विशेषज्ञोंकी हेकड़ी भूल गयी।

एकने कहा—"यह मोहेंजोदड़ोके पहलेकी सभ्यताका प्रतीक है।"

दार्शनिक चित्रकारीके जर्मन विशेषज्ञने कहा, "नहीं, नहीं। यह मृत्युका चित्र है।"

भारतीय विशेषज्ञने गंभीर मुद्रा बनाकर कहा, "किन्तु मृत्युमें प्रकाशकी ज्योतिरश्मि वांछनीय है। मृत्यु तो आत्माके उन्नयन-मार्गका उन्मुक्त द्वार है। हां सूक्ष्म और स्थूल शरीरमें मरणका ऐसा कृष्ण वर्ण श्लाघ्य है। मेरी सम्मतिमें यह दुर्भाग्यका चित्र है।"

अमरीकन द्रष्टाने अपनी राय दी, "किन्तु भई! दुर्भाग्यमें कम्पन और स्पंदनका भाव अपेक्षित है। यह दुर्भाग्य नहीं, ब्लैक मार्केट है।"

विलायती चित्रकला पारंगतने कहा—"इससे तो अधिक संकेत ब्लैक आउटका है।"

मतलब यह कि परिषद जब कुछ भी राय स्थिर न कर सकी, तो अच्छा यही समझा गया कि पुरस्कार उस रहस्यात्मक चित्रकारके नाम घोषित कर दिया जाय।

फिर तो पुरस्कार मेरे मत्थे बांध दिया गया और मुझसे यह निवेदन किया गया कि चित्रकला पर कुछ बातें कहूं, और अन्तर्राष्ट्रीय चित्र-कला समितिका गण्यमान्य सदस्य बनूं।

चन्द बातें ही मैंने बतायीं। मैंने उन लोगोंको समझाया कि मानव दो हैं, प्रकृत और आध्यात्मिक। प्रकृत मानव ठोस है, आध्यात्मिक सूक्ष्मसे भी सूक्ष्मतर। प्रकृत मानवकी कला स्थूल वस्तुओं द्वारा निर्मित स्थूल वस्तुओंको संकेत है। प्रकृत मानवकी चित्रकारीमें आप रंगोंकी अल्हड़ उलट फेरसे द्रष्टाके प्रकृत मानवको चमत्कृत कर देते हैं। अध्यात्म मानवको छू भी नहीं लेता। अस्त-व्यस्त रेखाओंको खींच लिया, भड़कीले रंगोंकी पच्चीकारी की, हाथमें एटम बम भरा दिया। प्रकृत मानवका शुद्ध सनातन सत्य सामने खड़ा हो गया। स्त्रीका चित्र बना दिया, उसकी अंगुलियोंमें, नस-नसमें, केश-केशमें, कपड़ेके थर्र-थर्रमें अस्त-व्यस्त कंपन भर दिया, विरहका शाश्वत संकेत समक्ष हो आया।

किन्तु 'अध्यात्म' का गोचर प्रत्यक्षीकरण भूतवादी दर्शनसे कुछ ऊपरकी वस्तु है। इसमें अध्यात्मका संकेत, सार्वभौम सनातन सत्यका संकेत अपेक्षणीय है। मैटरके अन्तरमें जो स्पिरिटका चिरन्तन तथ्य निहित है, आपको उसी स्पिरिटका चित्र खचित करना है। पेण्टिङ्गका नवीनतम रूप इसी ओर विकास पायेगा।"

इतना बोल लेनेके उपरान्त मैंने देखा कि यद्यपि मेरी आत्मामें अखण्ड शान्ति और पूर्ण निर्लेपका भाव है किन्तु मेरा सारा शरीर बगैरह शीतके आक्रमणके भी पचास बरस पुरानी 'फोर्ड कार' की तरह कांप रहा है, अतएव मैंने शीघ्रतासे यह कहा कि "अध्यात्म चित्र मानुषिक प्रयाससे नहीं बनता, क्योंकि अध्यात्म अध्यात्म द्वारा ही प्राप्य है, स्थूल चेष्टा द्वारा नहीं। अनुभूति द्वारा प्रेरित प्रयास भी स्थूलका प्रयास, सूक्ष्मकी ओर है। अध्यात्म-चित्र अध्यात्म द्वारा ही स्वयमेव सर्जित हो उठता है। जैसे मेरा चित्र मेरे बच्चोंके काले रंग उलट देनेसे बन गया। मैंने तो सिर्फ उस गीले आर्ट पेपर पर एक और आर्ट पेपर रख दिया और उन दोनोंके ऊपर अध्यात्म बच्चेको स्थापित कर दिया। फिर देखता हूँ तो ऊपरके वजनसे काला रंग बड़े कौशलसे इधरसे उधर सारे स्वच्छ आर्ट पेपरकी पृष्ठ भूमिमें नये-नये किनारोंको काट कर फैल गया है। जैसे आपने इसे देखकर इसको कई नाम दिया, उसी तरह मैंने भी इसके कई नाम चुने। किन्तु अभी अभी अध्यात्म द्वारा जो नाम उद्भूत हो रहा है वह उसका बिल्कुल नया नाम है। वह है "नाम-रूपात्मक-जगत।" सच कहूं, मैं अपने आपको इस नामके लिये चूम लेना चाह रहा हूं, यदि आप वैसा न कर सकें।"

संक्षेपमें कहूं तो कहूंगा कि मैं प्रशंसित हो उठा। पत्र-पत्रिकाओंमें साबुन, क्रीम, बीमारियोंकी दवाओं आदिके विज्ञापन मेरे नामसे ही छपने लगे। वर्ष-गांठ पर होनोलूलू, नागर्कूं, किलमनजारो और फोन्टानामारियो तकसे तार द्वारा बधाइयां आने लगीं। कई होलीउडकी अभिनेत्रियोंने मेरा फोटो मांगा और ऐसी-ऐसी चिट्ठियां भी लिखीं जैसे मैं अविवाहित अथवा प्रेमहीन पशु होऊं। खबर ऐसी भी उड़ने लगी कि एटम बमके आविष्कर्ताको नोबुल प्राइज शांति और ज्ञानवर्धनके लिये मिला और विज्ञानके लिये नोबुल प्राइज मुझे ही मिला।

के ऊपर लिखी सारी बातोंके सिलसिलेमें एक कहानी कह दूं तो मैं आपके समक्ष झूठा साबित न होऊं। एक दिन अहके सबह एक फटेहाल आदमी इन्स्पेक्टर साहबके सामने आये और बोले, "इंस्पेक्टर साहब! लुट गया, लुट गया।"

इंस्पेक्टर साहब अपनी डायरी लिख रहे थे। आंखें जरा ऊपर उठा कर बोले, "क्या हुआ?"

"चोरी! इंस्पेक्टर साहब! चोरी!" उन्होंने कहा, "और चोरी जब मैं जागता था तभी।" "कैसे चोरी हुई?" लिखते-लिखते उन्होंने पूछा।

"चोर घुस पड़ा। हाथमें लाठी, बगलमें छुपी टार्च। मैंने उसे खाटसे देखा। एक बक्स उठा कर ले गया। मैंने कहा, जाने दो, ले जाओ, कपड़ेका बक्स है, कोई हर्ज नहीं। लेकिन फिर आओगे तो मारूंगा। और चोर फिर आ घुसा। मैंने देखा कि इस बार वह किरासन तेल वाला बक्स ले जा रहा है। मैंने कहा—खैर, इसे भी ले जाओ, कोई बात नहीं। लेकिन अबकी आओगे तो ठीक नहीं समझूंगा, हां! लेकिन चोर फिर आ गया।"

"तब?" इंस्पेक्टर साहबने जरा गौर किया और पूछा।

"तब, इस बार उसने बर्तनोंके बक्सको उठाया। मैंने कहा—"लेजा, लेजा, लेकिन इसके बाद अगर आयेगा तो मैं ईश्वर कसम टांगें तोड़ दूंगा।" लेकिन वह बदतमीज चोर न माना। वह फिर आ घुसा। उसने गहनेके बक्सको उठाया। मैं मारे गुस्सेके हांफने लगा। मैंने कहा, देखो यह अन्याय कर रहे हो। एक भले आदमीको इस तरह लूटना अच्छा नहीं। खैर, जाओ गहने फिर बन जायेंगे लेकिन अगर नगद पर हाथ सफा किया तो मैं पिस्तौल चला दूंगा। देख लो, मेरे माथेके नीचे भरा हुआ पिस्तौल है।"

"अच्छा, फिर?" इंस्पेक्टर साहबने ताज्जुब करते हुए पूछा।

"फिर, वह साला फिर आ गया और नकद रुपयोंका बक्स उठा ले गया। मैं लुट गया, इंस्पेक्टर साहब, लुट गया!" उन्होंने माथे पर हाथ रख कर कहा।

लेकिन इंस्पेक्टर साहबने जिज्ञासु भावसे कहा—"मैं यह नहीं समझ सका कि आप चोरसे इतना बोलते गये, उसे डांटते गये और वह चुपचाप चोरी किस तरह करता गया?"

उन्होंने कहा—"आपने नहीं समझा? मैं उससे जो बोलता गया और उसे जो डांटता गया वह तो अपने मनमें करता गया।"

बस, ठीक उसी तरह मैंने अपने मनमें ही ऊपर वर्णित सारी घटनायें घटायी हैं। आध्यात्मिक सत्य न है! महत्वाकांक्षा मनकी वस्तु है ही।

ऐसे प्रकृत रूपमें मैं एक मनुष्य हूं। कूची, रंग, कागज वगैरहकी जरूरत आध्यात्मिक आवश्यकताएं हैं, भोजन आदिकी परवाह मेरे प्राकृतिक मानवको है।

सच कहूं तो आप कृपा कर इसे किन्तु दूसरेसे कभी भी न कहें। मैं जानता हूं, आप न कहेंगे। तो सच बात यह है आज तक बीस साल हो गये चित्रकारी लेकिन एक चित्र भी बिका नहीं। कई टरोंमें ड्राप सीन रंगे, लेकिन उन्होंने शराब पिला दी। दाम वे दे न सके। पूछ सकते हैं कि ऐसी हालतमें मैं मार्केटसे चीजें कैसे खरीद लेता हूं अपना तथा परिवारका पेट कैसे पालता इसका जवाब यह है कि मैं सिद्धान्तसे काम लेता हूं। विषको शमन करता हूं, कांटेको कांटेसे ही बाहर करता हूं। मतलब यह कि मैं मार्केट करता हूं, वस्तुओंके बाजारमें प्रेमके बाजारमें।

इस बाजारमें ब्लैक मार्केट तरीका कौशलसे, अभ्याससे और मालूम हो जावेगा। क्योंकि सभी की तरह यह भी एक कला है।

लड़ाईकी मंहगी और अकाल, कण्ट्रोल डिपार्टमेंटका कण्ट्रोल और उससे ब्लैक मार्केटका जन्म, मेरे इस तरह छा गया जैसे हिटलरके त्रय रूस, अमेरिका, ब्रिटेन। हो गये, दोस्तोंने मिलिटरी दोस्ती की और नोटके पुलिन्दोंको रखनेके बजाय बोरेमें कसकर तौल रखना शुरू किया। पावभर चावल पाव भर नोटतक हो गया।

उधर मैं अपने स्टुडियोमें आध्यात्मिक चित्र बनानेमें तल्लीन चित्र तो कलाकारकी हैसियत लेता लेकिन चित्र खाकर प्रकृति क्षुधा शांत करना असम्भव था। अनायास कूंचीको दबाते दबाते डिया' आ उपस्थित हुआ। याद आजसे पांच वर्ष पहले मेरी किस विह्वल आतुरतासे अपना प्रेम समर्पित किया था। उस प्रेममें उद्दाम यौवन था, उत्सर्गकी कैसी थी, प्राणोंका कैसा ज्योतिर्मय स्पन्द और उसीको आज मैं भूखों तड़पा स्वप्नोंके सारे महल आज ढूह हो क्यों न उसके काव्यमय प्रेमपत्रों उठाया जाय।...बस, मैंने कूंचीको फेंक दिया और ट्रंककी सारी अन्दरसे अनामिकाके सारे प्रेमपत्र लिये।

अब सोचा कि इस ब्लैक पात्र किसे बनाऊं। कई अप्राप्य नाम आये किन्तु वे सब ऐसे लिये संगीत रुपयोंकी ठनठनाहटमें, नोटोंके 'एक,दो,तीन' करनेमें, के अथवा स्टाक एक्सचेंजके जीवन हिसाब-किताबकी एकाएक नकचोंधरलालकी नकचोंधरलाल, धनी, पूर्ण युवा, अविवाहित।

यह बात नहीं कि पिता हास्यरसके लेखक काकूकेके नाममें भी हास्यका

(शेष १० वें पृष्ठ पर)

परमाणु शक्ति रहस्य

——:**:——

(ले०—श्री कालीशङ्कर अवस्थी)

इस विषयमें दो मत नहीं हो सकते कि ...त ब्रह्माण्डके कण कणमें हमारे ही ...दृश असंख्य सौर-मण्डल—अर्थात् ...एक सूर्य तथा उसके चारों ओर ...अपनी कक्षाओंमें घूमते हुए नाना ...ग्रह—अवस्थित हैं। दूसरे शब्दोंमें ...कह सकते हैं कि पृथ्वीका प्रत्येक ...परमाणु अपना निजी सौर-जगत ...। श्रुतिके अनुकूल होते हुए ...निर्विवाद सत्य है।

...हमारा हृदय हर्षसे प्रफुल्लित हो जाता ...में इस बातका स्मरण होता है कि ...पूर्वजोंने भी सामयिक सभ्यता एवं ...के विकासके क्षेत्रमें प्रमुख भाग ...था। आज स्कूलों और कालेजोंमें ...जाता है कि यह पृथ्वी द्व्यणुक ...अणुओंकी संघटनाका परिणाम है: ठीक ...हमारे ऋषियों और मुनियोंने ...वर्ष पूर्व ही लिख रखी थी—यह ...अत्यन्त ही सूक्ष्म कणोंसे बना है जो ...और अविनाशी हैं। प्रत्येक कण... ...एक एक संसार स्थित है।

...अठारहवीं शताब्दीके अंग्रेजी एवं ...यूरोपके इतिहासमें भी यह सिद्धान्त ...रेखाका संकलन कर रहा था। ...वैज्ञानिक मस्तिष्क परमाणुओंकी ...उनकी पार्थिव तथा रासायनिक ...की खोजमें भिड़े हुए थे। उन्हीं ...वैज्ञानिकों द्वारा नाना दृढ़ तर्कोंके ...के संघर्षके फलस्वरूप यह निश्चित ...

...यावत् पदार्थ अविनाशी हैं। यह ...द्वारा संघटित हैं। वे द्व्यणुक (Mole...cules) प्रकृतिमें अपनी स्वतन्त्र ...रह सकते हैं। परन्तु द्व्यणुक और भी ...सूक्ष्म भागोंमें विभाजित किये जा ...तथा इस प्रकार विभाजित भागही ...(Atom) कहलाते हैं। परमाणु ...प्रकृतिमें अपनी स्वतन्त्र सत्ता नहीं ...फिर भी रासायनिक प्रक्रियाओंमें ...स्वतन्त्रता पूर्वक भाग ले सकता है। ...अतिरिक्त विविध पदार्थोंके परमाणु ...भिन्न गुणोंसे युक्त होते हैं परन्तु ...पदार्थके असंख्य परमाणु समान धर्म ...के होते हैं। अन्ततः एक परमाणु ...अभेद्य है।

...यपि, इन वैज्ञानिकोंने जो बालकी ...निकालनेमें तत्पर थे, इस बातका ...किया कि परमाणुको और भी सूक्ष्म ...तोड़ा जाय। धनात्मक विद्युत (Positive Charge) द्वारा प्रस्तुत (...) नामक किरणोंकी बुलेटसे ...शक्ति साधारण गोलीसे करोड़ों गुनी ...थी, प्रहार किया गया। परन्तु दुर्भा-...परिस्थितिके अनुसार किरणें कहीं तो ...गयीं, कहीं कुण्ठित हो गयीं अथवा ...मार्गमें वक्र होकर लक्ष्यभ्रंश हो ...और इस प्रकार वह दृढ़ तथा अभेद्य ...दुर्ग अटूट ही बना रहा।

...पर भी वैज्ञानिक अपने लक्ष्य-भेद ...रहे और आज हम देखते हैं कि ...उस दृढ़ दुर्गको तोड़ कर ही दम ...इस नवीन आविष्कृतिके अनन्तर वे सभी पुरानी धारणायें निर्मूल हो गयीं। आधुनिक परीक्षणोंके अनुसार यह सिद्ध हुआ कि परमाणु (Atom) विद्युत्की दो ऋण एवं धनात्मक शक्तियों (Negative and Positive Charges) द्वारा संघटित है। प्रत्येक परमाणु-गत अनेक ऋण विद्युत कण (Ele ons) केन्द्रस्थ एक ही धनात्मक विद्युत कण (Proton) के चारों ओर चक्कर लगाया करते हैं। एक परमाणुमें ऋणात्मक विद्युत कणों (Electrons) की संख्या पूर्णतया नियत है, तथा केन्द्रस्थ धनात्मक विद्युत कण (Proton) ही सम्पूर्ण परमाणु (Atom) के गुरुत्वका दायी है। अतः एक ही तत्वके परमाणुओंके गुरुत्वमें विषमता सिद्ध हुई। यह सफलतापूर्वक सिद्ध किया जा चुका है कि एकही तत्व क्लोरीन (Chlorine) के दो परमाणुओंका गुरुत्व ३५ और ३७ है। इसी सिद्धान्त पर परमाणुओंका आंशिक गुरुत्व निर्भर करता है।

परन्तु और भी आश्चर्यकी बात यह है कि परमाणुमें ऋणात्मक विद्युतकण (Electrons) अपनी अपनी कक्षामें भी स्थिर नहीं रहते वरन् वे एक कक्षासे दूसरी कक्षामें उछलते कूदते रहते हैं और इसीके फलस्वरूप हमें प्रकाश प्राप्त होता है।

प्रत्येक पदार्थके ऋणात्मक विद्युत कणों की संख्याको घटा या बढ़ा कर उसे विभिन्न पदार्थोंमें परिवर्तित किया जा सकेगा। उदाहरण स्वरूप अलूमीनियम (Aluminium) में दो (Electrons) कम कर देनेसे हाइड्रोजिन तथा तीन (Electrons) कम कर देनेसे हीलियम बनते देखा गया है।

कहते हैं कि किसी समयमें एक राजा को यह आकांक्षा हुई कि वह जो कुछ स्पर्श करे वह सोना हो जाय। इसी धारणाको लेकर वह अनेक वैज्ञानिकोंसे परामर्श करता रहा। कुछ दिन पीछे एक सन्यासी द्वारा उसका अभिमत पूरा हुआ और वह जो कुछ छूता था वह सोना हो जाता था। इस कथाके मूलमें उपर्युक्त वैज्ञानिक तथ्य ही निहित है। राजाके देहसे निकलते हुए अमूर्त अथवा प्राणमें मिली हुई प्रचण्ड इच्छा शक्ति द्वारा प्रत्येक पदार्थके (Electrons) ऋण विद्युत कण घट या बढ़ जाते थे और वह पदार्थ उसी सिद्धान्तके अनुसार सोना हो जाता था।

अभी कुछ दिन हुए जापानके एक वैज्ञानिकने पारेसे सोना बनानेका प्रयत्न किया था, परन्तु इस भयानक परीक्षणमें वह बिचारा विद्युतकी भीषण शक्ति द्वारा निहत हुआ। लेकिन उसकी परख नलीमें स्वर्णके कुछ कण देखे गये थे। यद्यपि इस परीक्षणका फल बहुतही तुच्छ प्रतीत होता है फिर भी एक दिन वह आनेवाला है जब कि सारे संसारका तमाम लोहा सोनेमें परिवर्तित हो जायगा। जिधर देखेंगे स्वर्ण ही स्वर्ण दिखायी देगा—वह स्वर्ण, जो संसारकी बड़ी बड़ी लड़ाइयोंका मूल कारण हो रहा है। परन्तु वह युग जितनी ही देरमें आये उतना ही अच्छा है, क्योंकि इससे संसारके तमाम कार्य ही अवरुद्ध हो जायेंगे।

परन्तु इस ओर वैज्ञानिकोंका ध्यान आकर्षित नहीं हुआ। उन्होंने परमाणुकी विनाशकारी शक्तिका पता लगाया। हम पहले बता आये हैं कि एक परमाणुमें पांच या सात (Electrons) ऋण विद्युत-कण एक केन्द्रस्थ धन विद्युत कणके चारों ओर चक्कर लगाया करते हैं। चक्कर लगानेकी यह गति १८६२०० मील प्रति सेकेंड है। इस भीषण गतिको यदि हठात् किसी अन्य सूक्ष्म शक्ति द्वारा रोक दिया जाय तो कितना बड़ा विस्फोट हो सकता है इसके बारेमें कुछ कहना व्यर्थ है, क्योंकि उसके दृश्यके लिये जापानके हिरोशिमा एवं नागासाकी जैसे महान नगरोंके ध्वंसावशेष साक्षी हैं। सन् १९३९ में जर्मन वैज्ञानिक यह कहने लगे थे कि एक छोटे जलमें इतनी अधिक शक्ति सन्निहित है कि सारे संसार को उससे ध्वस्त किया जा सकेगा। उस समय संसार इसे कल्पना मानता था परन्तु एक आउन्स यूरेनियमके कुछ परमाणुओंने कितना भयानक कार्य किया है यह आप देखही चुके हैं।

साधारण मोटरगाड़ी अपनी पूर्णगतिसे चलती हुई यदि किसी बिजलीके खम्भे आदि से टकरा जाती है तो कितना भीषण विस्फोट होता है। यहां मोटरकी गति मात्र ४०-६० मील प्रति घण्टा होती है। इस गतिकी अपेक्षा (Electrons)की गति कितनी अधिक है। वैज्ञानिकोंने इसी गतिको विस्फोटके लिये चुना। यहां तक सभी लोग समझते थे। परन्तु जर्मन वैज्ञानिकने यह खोज की कि यूरेनियमके अनेक परमाणुओंमें जिसका गुरुत्व १३९ था वह एक विशेष रासायनिक पदार्थके परमाणुओंके सम्मिश्रण मात्रसे टूट कर विनाशकारी विस्फोट पैदा कर सकता है। इसी सिद्धान्तके आधार पर (Atom Bomb)अणुबमका निर्माण हुआ। अब दूसरा मिश्रण करनेवाला पदार्थ ही अणु बमका रहस्य है?

अब एक ओर संसारकी विशालता, महानता तथा जटिलताकी ओर दृष्टिपात करिये तथा दूसरी ओर परमाणुकी सूक्ष्मताकी ओर ध्यान दीजिये एवं परमाणुसे भी सूक्ष्म उसके अन्तरमें (Electrons) हैं। ईश्वरही जानता है कि विशाल ग्रह उपग्रहोंमें तथा इन सूक्ष्म परमाणुओंके गर्भमें अवस्थित (Electrons) में भी जीवधारियों की सृष्टि विद्यमान है अथवा नहीं। परन्तु अमेरिकाके सबसे ताजे आविष्कारके अनुसार केवल (Eleetrons) से ही विशालकाय वायुयानोंको भीषण गतिसे परिचालित किया जा सकेगा।

यद्यपि हम विद्युतके इन अणुओंको किसी प्रकार भी भौतिक रूपसे अनुभव नहीं कर सकते फिर भी इन (Electrons) का अस्तित्व है। इससे भी जटिल समस्या "उसे" समझनेकी है जो इन अणुओंसे भी सूक्ष्म है तथा इन विराट सौर मण्डलोंसे भी महान् है, जिसकी प्रेरणासे ही विपुल विश्वोंकी गति मिलती है तथा जिससे हम सभी प्राणी ओतप्रोत हैं।

एशियाका नेता—पण्डित जवाहरलाल नेहरू

लेखक—डा० सत्यपाल चौधरी, एम० ए०, पी० एच-डी०

"वीरत्वमें जवाहरलालके मुकाबले दूसरा कोई नहीं आ सकता। उनका देश प्रेम अतुलनीय है। कुछ लोग उनको रुक्ष और उग्र कहते हैं, किन्तु वर्तमान कालमें यह एक और महान गुण है। यदि उनमें एक श्रेष्ठ योद्धाके समान दृढ़ता और अक्खड़पन है तो उनमें राजनीतिक विवेचना भी मौजूद है। वह सच्चे अनुशासन प्रेमी हैं।...वह संगमर्मरकी तरह पवित्र और सच्चे हैं...राष्ट्र उनके हाथोंमें सुरक्षित है। —महात्मा गांधी।

"...पंडित नेहरू संसारके सबसे बड़े लोकतन्त्रवादी हैं। गांधीजी पहले भारतकी बाबत सोचते हैं और नेहरूजी सबसे पहले सारे संसारकी बाबत। वह संसारके सभी राष्ट्रोंके साथ भारतके लिये समानताका अधिकार चाहते हैं। भारतीय स्वाधीनताके साथ-साथ वे संसारके सभी देशोंकी पारस्परिक निर्भरताके समर्थक हैं। नेहरूजीने पीड़ित एवं प्रताड़ित मानवताके उद्धारका प्रयास किया और उत्तम मानवी सिद्धान्तोंका सर्वश्रेष्ठ ढङ्गसे प्रतिपादन किया है।" —रिचार्ड जे० वाल्स।

"...पण्डित जवाहरलाल एक उल्लेखनीय मानव हैं।...संसारके सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियोंमें महात्मा गांधीके बाद नेहरूजीका ही नाम आता है। ...हिटलर या मुसोलिनी जैसे नेताओंकी अपेक्षा नेहरूजीका व्यक्तित्व बहुत ऊंचा है। उनकी राजनीतिक दृढ़ता अभेद्य तथा अचल है। उनको अपने मार्गसे कोई ताकत नहीं डिगा सकती।...बेशक नेहरूजी संसारके अद्वितीय व्यक्ति हैं।" —जान गुन्थर

अगस्त १९४२ में भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलनके आरम्भ होनेके पूर्व ही राष्ट्रके समस्त नेताओंकी गिरफ्तारीके बाद देशभरमें जो क्रोध और विदेशी शासकोंके खिलाफ कटुताकी भावना व्याप्त हुई थी, उसको गोरे शासकोंने आधुनिक शस्त्रास्त्रोंके प्रयोगसे और निरस्त्र जनता पर अमानुषिक अत्याचार कर दबानेकी चेष्टा की और इसमें ब्रिटिश नौकरशाहोंको कुछ समयके लिये थोड़ी सफलता भी मिली और नेताओंके कारावरुद्ध रहने तथा कोई सच्चा पथ प्रदर्शनकारी नहीं मिलनेके कारण जनसाधारणमें निराशाकी भावना व्याप्त हो गयी। दूसरी ओर कम्युनिष्ट पार्टी और अन्य सरकार-समर्थक संस्थाओंने जनताको बरगलाना आरम्भ किया, उनमें फूट डालकर अपना प्रभुत्व स्थापित करनेकी चेष्टा की। देशभक्तों, आजादीके लिये प्राणोंकी बलि चढ़ानेवाले वीरोंको फासिष्ट समर्थक और देशद्रोही कहकर जनताको गुमराह करनेकी चेष्टा की गयी। सतारा, बलिया, आजमगढ़, भागलपुर, चम्पारन आदि स्थानोंमें इतना अधिक आतंक छा गया कि लोग खद्दर और गांधी टोपी पहननेसे भी भयभीत होने लगे। ब्रिटिश नौकरशाहोंने जनता पर इतने जुल्म किये कि किसी भी सभ्य देशका सिर उनको सुनकर शर्मसे झुक जायगा। दमनपीड़न और निराशाके साथ-साथ कम्युनिष्टोंके मिथ्या प्रचारोंसे जनता गुमराह हो गयी, उसकी अवस्था अगाध अशान्त महासागरमें पड़ी एक लघु नौका-सी हो रही थी।

प्रायः तीन वर्षों तक यही अवस्था रही, देश आशाभरी दृष्टिसे जेलोंकी ओर देखता रहा कि उसके प्रिय नेता निकलकर उसका पथ प्रदर्शन करें। महात्मा गांधी सर्वप्रथम कारामुक्त हुए, सारे देशकी दृष्टि उनपर जम गयी। एक छोरसे दूसरे छोर तक सभी ओरसे यही प्रश्न किये जाने लगे—'हमने जो किया, क्या वह ठीक था?' महात्मा गांधी ठहरे अहिंसाके प्रतीक, वह हिंसक कार्योंका किस प्रकार समर्थन कर सकते थे। फिर भी उन्होंने जो कुछ कहा, उससे जनता थोड़ी बहुत आश्वस्त तो जरूर हुई, लेकिन उसको मन मांगी मुराद नहीं मिली। महात्मा गांधीके बाद धीरे-धीरे दूसरे नेता भी कारामुक्त होते गये मगर १९४२ के स्वातंत्र्य आन्दोलनकी जिम्मेदारी किसीने भी अपने ऊपर नहीं ली।

अन्तमें देशकी इच्छा पूरी हुई, पण्डित जवाहरलाल नेहरू जेलसे मुक्त हुए। आते ही उन्होंने कहा—'१९४२ और उसके बाद देशमें जो कुछ हुआ, उन सबकी जिम्मेदारी मैं अपने ऊपर लेता हूं।' जिन देशभक्तोंको अबतक गद्दार, फासिस्ट समर्थक आदि कह कर जनताको गुमराह किया जाता था, उनको जवाहरलालजीने भारतीय स्वातंत्र्य आन्दोलनका श्रेय दिलाने का अवसर दिया। अगस्त आन्दोलनमें मृत व्यक्तियोंको शहीद कहते हुए उनके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्रीमती अरुणा आसफ अली तथा अन्य फरार व्यक्तियोंके वीरत्वकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनको हार्दिक बधाई दी। देशमें फिरसे नयी शक्ति, नवजीवन आ गया। पण्डित नेहरूने अगस्त आन्दोलनके सम्बन्धमें कहा कि १९४२ में जिस मानवीय बाढ़ और भूकम्पने भारतको एक छोरसे दूसरे छोर तक आन्दोलित किया था, उससे यह प्रमाणित हो गया है कि भारतीय जनता ब्रिटिश शासनको बर्दाश्त नहीं कर सकती। सरकारके कठोर दमनके बावजूद जनताके उत्साहमें तनिक भी कमी नहीं हुई है। जनताके साहस और धैर्यको कुछ दिनोंके लिये दबानेमें सरकारको सफलता मिली थी, पर अब जनतामें फिरसे नया जीवन और नया साहस आ गया है। उन वीरोंकी मैं हार्दिक प्रशंसा करता हूं, जिन्होंने १०-१५ दिनोंके लिये अंग्रेजोंको निकाल कर जनताका राज्य स्थापित किया था। सरकार हम पर फिरसे इस कारण विजय प्राप्त कर सकी क्योंकि हम बिल्कुल निरस्त्र थे।

पण्डित नेहरूने इसके बाद अकाल, मुनाफाखोरी, चुनाव, हिन्दू मुस्लिम समस्या, आजाद हिन्द फौज आदि सभी विषयोंमें भारतका नेतृत्व किया। बंगालके अकालके सम्बन्धमें उन्होंने कहा कि विदेशी शासनसे जब तक हम मुक्त नहीं होते तबतक हमें ऐसी ही और इससे भी बढ़कर विपत्तियोंका मुकाबला करना पड़ेगा। मुनाफाखोरोंको चेतावनी देते हुए उन्होंने जो कहा, उससे देशके तमाम मुनाफाखोरों और चोर बाजारियोंका हृदय आतंकसे भर गया। उन्होंने कहा कि ऐसे नृशंस समाजद्रोहियोंको मृत्यु पर्यन्त फांसीपर लटका देना उचित है। कम्युनिस्टोंकी हरकतोंकी ओर जब पं० जवाहरलालका ध्यान आकृष्ट हुआ तो उन्होंने कम्युनिस्टोंकी देशघातक नीति और चालबाजोंकी तीव्र निन्दा करते हुए उनको देशद्रोही बताया और कहा कि जब देश अपने जीवन-मरणके युद्धमें संलग्न था, उस समय कम्युनिस्टोंने देशके साथ विश्वासघात कर दूसरे पक्षका समर्थन और सहयोग किया था। पण्डित नेहरूके इस वक्तव्यसे कम्युनिस्ट एकदम बौखला उठे लेकिन जनता कम्युनिस्टोंके मिथ्या प्रचारोंमें पड़कर गुमराह होनेसे बच गयी।

कांग्रेसका 'भारत छोड़ो' नारा अब 'एशिया छोड़ो' नारेमें परिवर्तित हो चुका है। सुदूरपूर्वके इण्डोचीन, इण्डोनेशिया, मलाया आदि स्थानोंमें स्वाधीनताका जो संग्राम छिड़ा हुआ है, उसका नेता और प्रेरणा शक्ति वस्तुतः भारत ही है और भारतको इसकी प्रेरणा पं० जवाहरलाल एवं नेताजी सुभाषचन्द्र बोससे मिली है। भारतको आजाद करनेकी हार्दिक आकांक्षासे प्रेरित होकर सुभाष बाबूने जापानियोंकी मददसे भारतीय राष्ट्रीय सेनाकी स्थापनाकी थी और भारतके कुछ स्थानोंको आजाद करनेमें भी उस सेनाको सफलता मिली थी, लेकिन अनेक प्रकारकी कठिनाइयोंके कारण सुभाष बाबू अपने लक्ष्यमें सफल नहीं हो सके। भारतसे सुभाष बाबूके अचानक अन्तर्ध्यान होनेके बाद सरकार और देशके भी कुछ लोगोंने उनको बदनाम करनेकी चेष्टा की। कम्युनिष्टोंने तो उनको जापानकी कठपुतली और गद्दार आदि अपमानजनक शब्दोंसे सम्बोधित किया और सुभाष बाबूको मौतकी सजा देनेकेलिये भीवे सरकारको सलाह देने लगे। कांग्रेसने भी शुरूमें सुभाष बाबूके कार्यको गलत बताया किन्तु पं० नेहरूने बाहर निकलते ही श्री सुभाष बाबूके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनको भारतीय स्वाधीनता संग्रामका वीर सेनापति कहा। इसके बाद तो सारे देशमें एक नयी भावना, एक नया जोश पैदा हो गया। जिन्होंने कभी सुभाष बाबूको देशघाती कहनेकी धृष्टता की थी, वही उनका नाम आदरके साथ लेने लगे और 'आजाद हिन्द' 'आजाद हिन्द फौज' तथा नेताजी सुभाषचन्द्रका नाम बड़े आदर और ...
तथा गौरवका अनुभव करने लगे। ...
नेहरूके ही नेतृत्वका परिणाम है ...
देश आज एक स्वरसे भारतीय राष्ट्रीय ...
की मुक्तिकी मांग कर रहा है और ...
तत्वावधानमें आजाद हिन्द फौज ...
की पैरवी करनेके लिये रक्षा समिति ...
की गयी है।
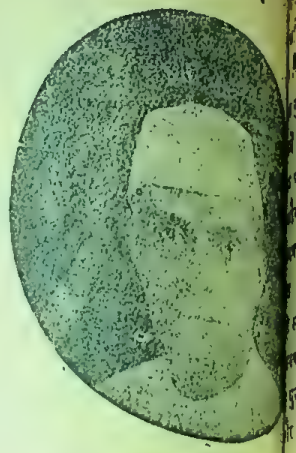
पण्डित नेहरूने जिधर दृष्टि ...
ही नवजीवन आ गया। ...
ओर सारे विश्वका ध्यान ...
नेहरूने ही आकृष्ट किया। ...
प्रजातन्त्रके नेता डा० सुकर्णो ...
निरीक्षण करनेके लिये जब ...
आमन्त्रित किया तो ब्रिटिश सरकार ...
सरकारके पैरोंके नीचेसे जमीन ...
लगी। उसने सोचा कि पंडित नेहरूकी ...
यात्रासे वहांके स्वातंत्र्य आंदोलन ...
मिलेगा और ब्रिटिश सरकारका ...
वहां अपनी सत्ता फिरसे कायम ...
नहीं हो सकेगा। इसी आशंकासे ...
ब्रिटिश सरकारने पं० नेहरूको ...
की अनुमति नहीं दी। फिर ...
नेहरूकी आवाजसे संसारके सभी ...
वादियोंके सिंहासन हिल उठे। ...
में भारतीय सेनाके उपयोगके ...
नेहरूने ब्रिटिश सरकारको सलाह ...
दी और नेपाल सरकारको भी ...
जावासे वापस बुला लेनेका अनुरोध ...
पंडित नेहरूकी चेतावनीका ब्रिटिश ...
पर प्रत्यक्ष रूपसे कुछ असर ...
हो लेकिन पिछले कुछ दिनोंसे ...
गिरफ्तारीकी अफवाह तथा ...
तीय डिवीजनको हटानेकी घोषणा ...
होता है कि पण्डित नेहरूने ब्रिटिश ...
की साम्राज्यवादी नीतिकी ...
है।

चनावके सम्बन्धमें पण्डित ...
कि 'हमारी आजादीकी भूख ...
लड़नेसे शान्त नहीं हो सकती ...
भारतीयका कर्तव्य है कि जबतक ...
न हो जाये तबतक ...
शासित देशोंको शासकके ...
करना ही चाहिये। हमारी ...
स्वरूप दिनोंदिन अधिक ...
रहा है, क्रान्तिके मार्गसे ..."

...वर्ड् शत्रु" से अपने "अधिकारों
...के लिये मित्र राष्ट्रोंने एक साथ
...कर उसका मुकाबिला किया।
...शत्रु' अब विनष्ट हो चुका है
...कार'—प्रत्येक राष्ट्रके अधिकार
...रोधी सिद्ध हो रहे हैं।
...युद्ध कोई सैद्धान्तिक युद्ध न था।
...बढ़ती हुई शक्तिशाली सैन्य
...वाद तथा परस्पर विरोधी अधि-
...मांगोंका परिणाम मात्र था।
...मानना पड़ेगा कि सिद्धान्तोंका
...महत्वपूर्ण हाथ इस युद्धमें रहा
...सकता है कि आगामी युद्धमें भी
...योग हो।

...युद्धमें सबसे शक्तिशाली देश अमे-
...हस रहे हैं और आज वही सबसे
...। दूसरे अन्य छोटे बड़े राष्ट्रोंका
...जिनमें ब्रिटेन भी है, गौण है। और
...रिक नाटकमें उनका कार्य बहुत ही

...युद्धके फलस्वरूप अमेरिकामें उत्पा-
...का बहुत ही अधिक विकास हुआ
...आज अमेरिकाके सम्मुख बेकारी
...जनित सामाजिक संघर्षकी बहुत
...या उपस्थित है। इसके लिये आव-
...अमेरिकाके अपने मालकी खपत
...बाहरके बाजार ढूंढ़ने पड़ेंगे!
...मेरिका पर व्यापारिक विजय
...पश्चात् भी अमेरिकाकी इस
...समाधान नहीं हुआ। इसलिये
...बाजारोंकी तलाश यदि संभव
...न्तिपूर्ण तरीकोंसे यदि आवश्यक
...क शक्तिसे करनी होगी। यह
...के पूंजीवादकी रक्षाके लिये
...। इससे हम अमेरिकाकी यूरोप
...या पर आक्रामक नीति समझ

...राजनीतिक उद्देश्य मुख्यतः दो
...अपनी सीमाओंकी बाहरी आक्र-
...तथा (२) अपने लिये सामु-
...प्राप्त करना। जिससे कि वह
...अमेरिकन नौ शक्तिके बंधनमें

...में विचलित नहीं कर सकता।
...चुनाव लड़ना तय किया है तो
...का अपमान कोई भी बर्दाश्त
...सकता। कांग्रेसके खिलाफ मत
...ब्रिटिश शासनकी जंजीरोंमें
...कड़ना है।' लीगके सम्बन्धमें
...'कहा है कि चुनावमें हम जीतें
...लीगके साथ हमारा कभी
...हो सकता।' पण्डित नेहरूने
...आजादीके मार्गमें बहुत दूर तक
...या है और महात्मा गांधीके
...पण्डित नेहरूके हाथोंमें भारतवर्ष
...है।' स्वतन्त्र भारतके भावी
...जवाहरलाल नेहरूका हार्दिक
...करते हुए हम परमात्मासे प्रार्थना
...वह उन्हें दीर्घायु करे, जिससे
...भी आजाद होकर विश्वका
...।

कांग्रेस तथा एशियाई स्वतन्त्रता

———:०✽०:———

लेखक—श्री अमियनाथ बोस

(एशिया आज जितना जागरूक और अपनी स्वतन्त्रताके लिये उत्सुक है, उतना कभी नहीं रहा। भारतवर्षका नाम आज परधीन जातियों के नेतृत्वके लिये बार-बार लिया जाता है। इस लेखमें प्रसिद्ध लेखक श्री बोसने मौजूदा राजनीतिक अवस्थाको अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणसे समझाया है। —सं०)

न रह सके। इन दोनों उद्देश्योंके द्वारा रूसके भिन्न भिन्न राजनैतिक कार्य समझमें आ सकते हैं—जैसे उसकी भूमध्य सागर और ईरानकी खाड़ी तथा दरेदानियाल पर प्रभुत्वकी इच्छा, पश्चिमी सरहदों पर कम्यूनिष्ट-प्रभुत्व वाली सरकारकी स्थापना का प्रोत्साहन, ईरान और तुर्की पर मैत्री-पूर्ण सरकारकी स्थापनाकी इच्छा, पोर्ट आर्थर पर पुनः अधिकार तथा चीनको पूर्णतः अमेरिकन अधिकारमें जानेसे रोकना (रूस-चीन सन्धिका वास्तविक अर्थ यही है) आदि आदि।

यह स्पष्ट है कि रूस कभी नहीं चाहता कि ईरान विरोधी-शक्तिके प्रभुत्वमें किसी प्रकार भी रहे, क्योंकि बाकूके तेलके क्षेत्र उस देशसे दूर फेंके जाने वाले बमोंकी कार्य-शक्तिके अन्तर्गत आ जाते हैं।

ईरानके प्रश्नसे ब्रिटेनकी मध्यपूर्वमें क्या अवस्था होगी, यह प्रश्न खड़ा हो जाता है। इससे उसके पूर्वीय साम्राज्य पर भी असर पड़ता है। मेरा विश्वास है कि मध्य-पूर्वमें अपनी शक्तिका प्रसार रूसकी निश्चित राजनीति और वह इसे अमेरिका और ब्रिटेनकी नाराजगीके बावजूद भी न छोड़ेगा और मेरा यह भी विश्वास है कि इस प्रश्न पर अमेरिका रूससे युद्ध करनेको प्रस्तुत न होगा, वह इसलिये नहीं कि लड़नेके लिये पर्याप्त कारण नहीं बल्कि इसलिये कि कोई भी राष्ट्र अभी युद्धके लिये सैनिक शक्तिसे पूर्ण नहीं। पिछले महायुद्धमें लड़नेवाले सैनिक थक चुके हैं और वे हालमें कोई दूसरा युद्ध नहीं लड़ सकते किंतु आनेवाली सन्तानें तो दूसरा युद्ध चला सकेंगी। अतः स्पष्ट है कि दूसरा युद्ध १९५६ के पूर्व नहीं चल सकता और यह भी निश्चित है कि अमेरिका इस वांछित समयको खरीदनेके लिये मध्य-पूर्वका बलिदान कर देगा।

ईरानकी खाड़ीकी ओर सोवियटके बढ़ाव से ब्रिटेनकी भारत और पूर्वीय देशोंकी नीति पर अवश्य असर पड़ेगा। इससे उसकी तमाम राजनीतिक चालें बेकार हो सकती हैं। यह भी संभव है कि ऐसी हालतमें ब्रिटेन भारतकी समस्याका समाधान करनेका प्रयत्न करे। स्पष्ट है कि इस प्रकारकी अन्तर्राष्ट्रीय अवस्थाओंसे विकासके फल-स्वरूप कदाचित हमें ब्रिटेनके हाथोंसे राज-नीतिक शक्ति प्राप्त करनेका अवसर प्राप्त हो सके। परन्तु हम इसी दशामें सफल हो सकते हैं जब कि राष्ट्रीय कांग्रेस पूर्ण रूपेण शक्तिशाली हो, तथा इसे बहुसंख्यक जनता का समर्थन एवं राष्ट्रके चुने हुए प्रतिनि-धियोंका, जो कि राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने और शासन प्रबन्ध करनेकी योग्यता रखते हों, सहयोग प्राप्त हो। विद्रोहके समय केवल एक सुसंगठित दल ही जिसे योग्य तथा समुचित नेतृत्व प्राप्त हो और जनताका समर्थन मिले, वही अनिच्छुक हाथोंसे शक्ति ले सकता है।

किन्तु यदि ब्रिटेनकी मौजूदा राजनी-तिक अवस्थाके बावजूद भी हम शासन शक्ति प्राप्त न कर सके तो फिर हमें एक अखिल राष्ट्रीय युद्धके लिये प्रस्तुत रहना चाहिये और बहुत संभव है कि हमारा यह स्वतन्त्रता संघर्ष उसी समय हो जब कि आगामी महायुद्ध। मेरे मतसे आगामी महायुद्ध दस वर्षोंमें ही होगा। इस युद्धमें अंग्रेज-अमेरिकन शक्तियां एशियायी जनता के विरुद्ध युद्ध करेंगी। और इनकी अपार सैनिक शक्तिका प्रयोग एशियाई राष्ट्रोंके स्वतन्त्रता आन्दोलनके विरुद्ध किया जायगा। ऐसी दशामें हमारी सुसंगठित जन शक्ति ही इसका समुचित प्रत्युत्तर होगी, तथा उसे गोरे साम्राज्यवादका सामना करनेके लिये तमाम एशियाके राष्ट्रोंका संगठन आवश्यक होगा। हम भारतीय अहिंसात्मक ढंगसे लड़ेंगे किन्तु दूसरे राष्ट्र कदाचित सैनिक शक्तिका प्रयोग वांछनीय समझेंगे। किन्तु यह युद्ध किसी भी प्रकारका क्यों न हो इसका सबसे आवश्यक कार्य होगा कि एक केन्द्रीय संगठनका निर्माण जो कि एक साथ पूरे एशियामें आन्दोलनका परिचालन कर सके और तभी हम गोरोंके प्रभुत्वके विरुद्ध लड़ सकते हैं।

इसी प्रकारके संगठन पर भारतीय स्वतन्त्रता निर्भर रहेगी। अतएव हमारा सर्वप्रथम उद्देश्य है 'एशियाई संगठन'। दुर्भाग्यकी बात है कि हमारे पथमें 'च्यांग काई शेक सरकार' सबसे बड़ा रोड़ा बन रही है। अभी हालमें एक अमेरिकन संवाद समितिको एक मुलाकातमें जेनरलिस्मो च्यांग ने कहा कि कुछ खास खास उद्योगों, जैसे यातायातके साधन इत्यादि, को छोड़ कर अन्य सब औद्योगिक क्षेत्रोंमें चुंगकिंग सरकार व्यक्तिगत उद्योगोंको प्रोत्साहन देगी। उन्होंने यह भी स्पष्ट कि इस औद्योगिक विकासमें अमेरिकन सम्पत्ति ठीक चीनी सम्पत्तिकी तरह समझी जायगी और उसे किसी भी प्रकारकी हानि न होने दी जायगी। इस कार्यके द्वारा मार्शल च्यांगने चीनी व्यापार और उद्योगको अमेरिकन सम्पत्ति और पूंजीवादके हाथोंमें सौंप देनेका वादा किया है। यदि यह नीति जारी रखी गयी तो स्पष्टतः चीनमें एक अमेरिकन पांचवा दस्ता कायम हो जायगा जो एशियामें अमेरिकन पूंजीवादको बनाये रखने तथा एशियाई स्वतन्त्रता युद्धको असफल बनानेका पूर्ण प्रयत्न करेगा।

जो कुछ मैंने ऊपर कहा है उससे स्पष्ट है कि चीन एशियाका नेतृत्व नहीं कर सकता। यह नेतृत्व केवल भारत और राष्ट्रीय कांग्रेस ही कर सकती है। किन्तु इसके लिये आवश्यक होगा कि कांग्रेस एक 'दल' बने न कि भिन्न-भिन्न विचारोंके प्रसारका साधन। इसका सिद्धान्त एक होना चाहिये तथा केवल एक सुसंगठित नेतृत्व। तभी यह एशियाई स्वतन्त्रताके परिचालनका केन्द्र बन सकती है। हमारे सामने मुख्यतः तीन महत्वपूर्ण कार्य हैं :—

(१) कांग्रेसमें अधिकसे अधिक भार-तीय मुसलमानोंको लाकर इसे वास्तविक अर्थोंमें भारतकी प्रतिनिधि संस्था बनाना।

(२) एक सामाजिक आर्थिक कार्य-क्रमका निर्माण—जो कि सभीको स्वीकार्य हो तथा उसके आधार पर कांग्रेसके विभिन्न दलोंका पूर्ण संगठन।

(३) कांग्रेसके नेतृत्वमें मजदूरों, किसानों और विद्यार्थियोंका संगठन जिससे अवसर आनेपर पूर्ण रूपसे विद्रोह प्रारम्भ किया जा सके।

मेरी रायमें यह कार्यक्रम समाजवादी ढङ्गका होना चाहिये। यह आवश्यक नहीं कि यह समाजवादी ढङ्ग 'मार्क्सवादी' हो या इस प्रकारका असत्य समाजवाद हो जिसका कि प्रचार गद्दार भारतीय कम्यूनिष्ट कर रहे हैं। किन्तु यह समाजवाद आधुनिक विज्ञान और हमारे देश वासियोंकी प्रतिभा पर आधारित हो।

एशियाई स्वतन्त्रताके लिये हमें प्रयत्न-शील रहना चाहिये। हमें कांग्रेस और महात्मा गांधीका नेतृत्व स्वीकार करना चाहिये। हमें आशा है कि गांधीजी उस महान कार्यको अवश्य पूर्ण करेंगे जिसे कि दस-पात-सेन और नेताजी सुभाषचन्द्र बोस अपूर्ण छोड़ गये हैं।

———

ब्लैक मार्केट

(६ वें पृष्ठका शेषांश)

हो। पिता प्रदत्त नाम तो इनका था सुन्दरलाल लेकिन पिता प्रदत्त यह सुनाम सिनेमा स्टारोंकी वास्तविक उम्रकी तरह, खान्दानी कम्बेकी तरह, श्रीमतीजीसे सुनी फटकारकी तरह गुम ही रहता था।

बात असल यह थी कि बचपनमें स्वनामधन्य सुन्दरलाल मेरे साथ ही एक मास्टरके यहां पढ़ने आता था। एक रात कुण्डीकी आवाज सुनकर मास्टर साहब अपनी अनुरक्ता, सद्यः परिणीता, साष्टांग दण्डनीया पूज्या पत्नी जीकी बातें सुननेके लिये नचिकेतासे भी अधिक विह्वल हो उठे। जाते वक्त उन्होंने अनुवादके लिये दो पंक्तियां दे दीं। कहा, जल्द बनाओ।

घड़ीके समयसे तो वे दो घण्टे तेरह मिनट बाद लौटे लेकिन आते ही पूछ दिया 'क्यों सुन्दरलाल! क्या बनाया, पढ़।'

सुन्दरने सुनाया, 'कविता और कोकशास्त्र एक टुकड़ा खड़ा है। एक हमारे अन्दर आदमीके सिरकी आवाज है दूसरा पूछता है कि बाहर क्या चाहिये। कवि आत्मापर चढ़ाई कर देता है, कोकशास्त्री महा शरीर चाहता है। कवि कोकशास्त्रीपर भकचोंघर हो जाता है।'

अनुवाद सुनकर मास्टर साहबने उसकी कापी और खोपड़ीकी क्या दशा की, सो मैं नहीं कहूंगा। लेकिन उसका नाक मोटर की स्टीयरिंगकी तरह घुमाकर कहा, 'भकचोंघर नहीं रे, नकचोंघर कह, नकचोंघर।'

उसी रातकी पुण्य वेलामें, शिक्षा स्थान की पुण्यभूमिमें उनका यह नकचोंघर नामका सम्पूर्ण संस्कार सम्पादित हो गया। फिर तो इन्होंने पढ़ने लिखनेसे किनारा काटा और व्यवसायमें प्रविष्ट हुए। पहले इन्हें इस नामसे पुकारनेपर झुंझलाहटका दौरा हो आता था, अब तो अहिंसकरूपसे इन्होंने इसे स्वीकार भी कर लिया है। कई हजारका बीमा भी इसी नामसे चल रहा है।

ऐसे तो सूरत श्री ठाकुरलालजीकी भी एक ही है, किन्तु न जाने क्यों और किस अलङ्कारका प्रयोग कर लोग उन्हें खूबसूरत कहते हैं। और श्री नकचोंघरलालकी भी एक ही सूरत है, फिर भी लोग इन्हें खूबसूरत कहनेकी कल्पना भी नहीं कर सकते, उल्टे यह कहते हैं कि इन्हें सूरत ही नहीं। यह अलबत्ता कि इनका रंग विशुद्ध भारतीय था। ऐसा अखण्ड काला कि हम भारतीय दरिद्रोंको तो छोड़िये, एक इब्शीने इन्हें बगलमें बैठाकर अंग्रेजी सिनेमा हालके अन्दर चिल्लाकर पूछा, 'ओ, गोरे अंगरेज!' अब कहो कि अगर हम अपने साफ रंगपर नाज करें तो गैरकानूनी काम तो न होगा?

सूई साबके सपुत्र दर्शन साबकी कहानी आपने सुनी होगी। सूई साब आगत निमंत्रित ब्राह्मणों और अन्य उपस्थित सज्जनोंकी पत्तलोंपर सूईसे ही देते थे। उनके देहावसान के उपरान्त उनके सुयोग्य पुत्रने अपने परम पूज्य पिताके वार्षिक श्राद्धके अवसरपर सभी अभ्यागतोंके बैठ जानेपर घीका दर्शनमात्र करा दिया। 'घी देखिये, घी देखिये!' और घृतपात्र दो छलांगमें आंगन पारकर जहांसे निकला था वहीं प्रविष्ट हो गया। इन्हीं इतिहास प्रसिद्ध महापुरुषोंकी तीसरी पीढ़ी में स्वनामधन्य नकचोंघरलालका जन्म हुआ था।

इस महासमर, कण्ट्रोल और अकालमें कहा जाता है कि उन्होंने रुपये और नाम अच्छे कमाये। लक्ष्मी उनके पास कई हजार बोरोंमें अच्छी तरह कसकर बंधी हुई थी। लेकिन हाय! गृहलक्ष्मी अभी भी नहीं। प्रेम हृदयमें उमड़ रहा था किन्तु कोई सूर्य-चांद नहीं जो उस सागरकी गहराईमें शोषण एवं उद्वेलनकर उसमें जीवनकी हलचल भर दे।

इन्हीं नकचोंघरलालके यहां मैं एक सेर आटेके लिये गया था तो उन्होंने कहा कि आटा तो एक रत्ती भी नहीं। चार-पांच दिनोंके बाद आओ तो कोशिश करूं। चार पांच दिनों बाद मैं आटा लाने नहीं गया। मैंने अनामिकाका प्रथम प्रेमपत्र उठाया। वह कुछ इस प्रकार था—

"प्रिय, प्राणोंके प्राण!

न जाने क्यों आपको जबसे देखा है, मन-प्राणोंमें विह्वलता समा गयी है। आप जैसे विख्यात महापुरुषके विराट हृदयतलमें यदि इस दासीको एक निम्न स्थान भी प्राप्त हो जाय तो जीवन ललित एवं कवित्वमय हो उठे। मेरे अन्तर प्रदेशमें जो व्याकुल उन्माद आपकी स्मृति मात्रसे उठ आता है, क्या उसका प्रतिकार आपके कर पद्मोंके कोमल-स्पर्श द्वारा प्रार्थनीय नहीं?

आपकी तृष्णातुरा
एक दासी।"

मैंने उसकी तारीख, पता नाम वगैरह ब्लेडसे उड़ा डाला और छः पैसेके लिफाफेमें श्री नकचोंघरलालके पतासे भेज दिया। तदुपरांत दो तीन दिनोंके बाद मैं उसकी दूकानसे गुजरा तो उन्होंने पुकारा, 'अरे भुसुण्ड! जरा सुनो।' मैं ठहर गया। उसने तुरन्त दूकान बन्द की। कहा—'चलो, सिनेमा!' फिर तो नाश्ता कराया, सिनेमा दिखाया और पावभर सूजी मुझे दी। लेकिन प्रेमपत्रका जिक्र उसने न किया।

चार दिनोंके बाद मैंने दूसरा पत्र निकाला। उसकी भी कुछ कपालक्रिया कर ली और फिर उसे नकचोंघरलालके यहां प्रेषित किया। तीन सप्ताहतक प्रत्येक सप्ताह वैसी चिट्ठी भेजी। चौथे सप्ताहमें खूनकी चिट्ठी लिख दी। यह देखनेके लिये कि खूनकी चिट्ठीका क्या प्रभाव पड़ा, मैं उसकी दूकानमें गया। मालूम हुआ, वह कई दिनोंसे दूकान बन्दकर अन्दर पड़ा हुआ है। मैंने नौकरसे अपना नाम कहला भेजा। उसने तुरन्त बुलाया। अन्दर जाकर क्या देखता हूं कि लालाजी साक्षात् मजनूका पार्ट करनेके लिये तैयार बैठे हैं। पूछा—बीमार हैं?' उसने कहा, 'हां! बड़ी बुरी बीमारी है।" उसका गला गद्गद् हो उठा।

'डाक्टर बुलाया था?' मैंने पूछा।

'डाक्टरसे यह बीमारी नहीं अच्छी होती।' उसने रुंधे गलेसे कहा, 'यह ऐसी बीमारी है कि क्या कहूं कहते भी नहीं बनता...'

मैंने कहा, 'कोई गुप्त रोग है? फिर भी शर्म मत कीजिये...'

वह रो उठा—'मुझसे एक लड़की प्रेम कर रही है, उसने खूनसे, अपने खूनसे, एक चिट्ठी लिखी है। उसने मुझसे आज रातको झीलके पास दक्षिण तरफ बुलाया है।'

मैंने कहा 'तो उठिये! शीघ्र स्नान कीजिये, वस्त्र बदलिये और शाम हो चली है, निकल पड़िये। खूनकी चिट्ठीका अर्थ है वास्तविक प्रेम। उससे जरूर भेंट कीजिये। उन्हें समझाइये कि ऐसा वे न करें।' इस तरह ढाढस बंधानेपर वे उठे। मैं भी चल पड़ा।

उसी रातको झीलके दक्षिण पार्श्वमें आप खड़े रहते तो वहां दो मूर्तियोंको निम्न वार्तालाप करते सुनते—

'तो अबसे खूनसे न लिखियेगा न? कहिये।'

'आप पहले यह कहिये कि आप सच्चे रहेंगे। ऊफ! आज अगर भुसुण्ड न रहते तो मेरी शादी अवश्य हो जाती, इसीलिये तो मैंने खूनसे आखिरी चिट्ठी लिख दी थी।'

'भुसुण्ड कौन? वही चित्रकार? उसने क्या किया?'

'उन्होंने ही तो शादीकी बातचीतमें तिलकके बारेमें लड़ाई शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि वह खूसट जो मुझे देखने आया था, बिगड़कर चला गया।'

'भुसुण्डसे आपका परिचय है क्या?'

'नहीं, परिचय नहीं। सम्बन्ध है। इन्होंने मेरी प्राणरक्षा भी एक बार की है।'

'वह कौन होता है आपका?'

'दूरके भाई हैं।'

'अच्छा! अच्छा। समय गया। वह तो मेरा बचपनका दोस्त है। तो प्रिये! मुख तो दिखाओ।'

'नहीं, मुख अभी नहीं दिखाऊंगी। मैंने प्रतिज्ञा की है कि जब आपके साथ देवताओंके सामने शादी कर लूंगी तभी मुंह दिखलाऊंगी।'

'यह तो होगी ही। अब हाथ बढ़ाओ।'

अन्धकारमें काली ओढ़नीके अन्दरसे एक गोरा-गोरा हाथ बाहर निकल आया। भाव विह्वलतामें प्रणयके आराध्यदेवने उस पर एक अमूल्य चुम्बन स्थापित किया और नगद एक सौ रुपये।

'तो मैं अब जाऊं?'

'ठहरिये, आपके पैर पूज लूं।' काली ओढ़नी पैरोंपर झुक गयी। हाथ ज्यों ही पैरके स्पर्श किये, आराध्यदेव कंपनाधीर हो उठे। फिर अंदर्नासे सिसकियां आयीं— 'आप जा रहे हैं! ऊफ! कैसे रहूंगी!'

'न रोइये! न रोइये! मैं तो फिर आऊंगा ही। चिट्ठी जरूर लिखेंगे। और मैं भुसुण्डसे भेंट करता ही रहूंगा।'

'उनसे कहेंगे मत!'

'ना, ना, ऐसा भी कर सकता हूं।'

और फिर नकचोंघरलाल चले गये।

मैंने काली ओढ़नी बगलमें दबायी। रुपयोंका पुलिन्दा पाकिटमें और चुड़ियां कागजमें लपेट झीलके पानीमें डुबो आया।

फिर तो कलकत्तेमें मौजसे एक साल गुजार दिया। चिट्ठियां उसी तरह जारी रखीं। जब देखा कि नकचोंघरलालके पास अभी काफी हैं तो प्रेमिकाके नामसे लिखा कि मैं दिल्ली जा रही हूं। पूज्य भ्राताजीको कष्ट न होने पाये, वहांसे आकर हमलोग शादी कर लेंगे।

और कुछ दिनोंतक मेरे दोनों हाथ घीमें रहते। बड़े बड़े अफसर जो खा नहीं सकते उन मोहनभोगों, मलाईकरी और रबड़ीका स्वाद मुझे फीका-फीका लगता, इस तरह खानेको मिलने लगा।

यही है प्रेमके बाजारमें ब्लैक मार्केट। कलकत्तेमें इसे मैं आजमा चुका हूं। नकचोंघरलालको वहीं छोड़ बनारस जा रहा हूं ताकि वहां भी इसे काममें ला दूं। फिर दिल्ली। तदुपरांत बम्बई। इस तरह महंगीका जमाना गुजार देनेके लिये काफी बड़े-बड़े नये नये शहर हैं। प्रेमिकाके क्षुधातुर काफी प्रेमी लोग भी हैं। इस बाजारमें ब्लैक मार्केट करनेसे पकड़े जानेके बाद खूब हंसना चाहिये। पाठक मेरे दोस्त ही हो, यह याद रहे।

अन्तर्राष्ट्रीय

[इण्डो]नेशिया

[इ]ण्डोनेशियाका स्वातन्त्र्य संग्राम तीव्र [हो]ता रहा है। ब्रिटिश सैनिकोंके जल, [स्थल] और हवाई आक्रमणोंका इण्डोनेशियन [प्र]तिरोध कर रहे हैं। इस सप्ताह इण्डोने-[शिय]ने भी टैंक और मार्टर आदिका [प्रयो]ग प्रारम्भ कर दिया है। ब्रिटिश [सेना]की सहायताको भारतीय सेना भी [है]। सुरावायाके आधेसे अधिक भाग [पर] सेनाओंने अधिकार कर लिया है। […]वित इण्डोनेशियन रिपब्लिक मन्त्रि-[मण्डल]की ओरसे रक्तपातको रोकनेके लिये [प्र]यास भी किया जा रहा है। एक [प्र]तिनिधि मण्डल इस सिलसिलेमें डा० वान […]मिल रहा है। सु-तान शहरिर नव […] रिपब्लिक मन्त्रिमण्डलमें प्रधान [मन्त्री] हैं। ब्रिटिश सेनाकी कार्रवाइयोंके [विरोधमें] संसारमें गणतन्त्रवाद और शान्ति […] रखनेका ठेका लेनेवाले अन्य राष्ट्र [रू]स और अमेरिकाने लड़ाकू पुरू भी [कर] रखा है। ब्रिटेन और फ्रांस, जो [अन्तरा]ष्ट्रीय शांति सङ्घटनके प्रमुख सदस्य [हैं], शान्ति और गणतन्त्रवादको पैरों [तले कुचल र]हा रहे हैं। भारतने इण्डोनेशियामें […] रक्तपातके खिलाफ अपनी आवाज [उठाई] है और पश्चिम बङ्गालके [नगरोंसे] भारतीय नाविकोंने जावा जानेवाले [जहाजों]पर शस्त्रास्त्र नहीं लादनेका अनुरोध [किया है]। इण्डोनेशिया जिन्दाबाद, इण्डा-[नेशिय]न इन्कलाब जिन्दाबाद।

[परमा]णु बमका रहस्य—

[वाशिंगटनमें] गत ६ दिनोंके लम्बे विचार-विमर्श [के बाद प्रे]० ट्रूमैन, ब्रिटिश प्रधानमन्त्री [श्री एट]ली० और कनाडाके प्रधानमन्त्री [श्री किङ्]गने परमाणु बमके बारेमें एक [घोषणापत्र प]र हस्ताक्षर कर दिये। इस सबंध [में तीनोंने] मिलकर जो घोषणा प्रकाशित [की है उस]में बतलाया गया है कि विज्ञानके [इस आ]विष्कारके बारेमें अन्य देशोंको [जानकारी] दी जाती, लेकिन उस स्थिति […]का हमेशाके लिये यह बना रह[ता] है कि इसका सदुपयोग करनेकी [यो]ग्यता न आवे या न आवे [य]दि किसी राष्ट्रने इसका उपयोग [विनाश]ात्मक कार्यके लिये कर लेना [तो] एक बहुत बड़ी अशान्ति और [खत]रेसे संसारके सामने आ सकता [है, वा]ञ्छनीय तनिक भी नहीं है। एक [बार] रहस्यका उद्घाटन कर देनेके [बाद इ]स बातकी गारण्टी मिलना तो [अस]म्भव है कि कोई राष्ट्र उससे [दूसरों]को नुकसान पहुंचाकर अनुचित [लाभ उ]ठाना न चाहेगा। इसीलिये यही [उचि]त व आवश्यक समझा गया है [कि परमाण]ु बमके रहस्यको गुप्त ही रखा [जाय और] उसके विस्तृत विवरणको प्रकाश[ित न किय]ा जाय।

[पैलेस्टा]इनके लिये योजना—

[पैलेस्टा]इनमें अरबों व यहूदियोंका [झगड़ा] अभी पहले जैसा ही चल रहा [है। ब्रि]टेनके वैदेशिक मन्त्री मि० अर्नेस्ट [बेविनने] हाल ही में जो वक्तव्य दिया है,

जो प्रस्ताव पेश किये हैं, उनसे यहूदियोंको सन्तोष नहीं हुआ है। पैलेस्टाइनमें प्रति मास १५०० यहूदियोंके प्रवेश करनेकी जो इजाजत दी जा रही है, यह संख्या उन्हें बहुत कम लगती है। श्री बेविनने समस्याके हलके लिये एंग्लो-संयुक्तराष्ट्र ट्रस्टीशिपकी ओर भी इशारा किया है।

ब्रिटिश प्रधानमन्त्री एटलीने प्रे० ट्रूमैनने एक पत्रके दौरानमें बतलाया है कि पैलेस्टाइनमें यहूदियोंके प्रवेशके सम्बन्धमें उनके जो विचार पहले थे, वही अब भी हैं। वे एक लाख यहूदियोंके पैलेस्टाइन प्रवेश के पक्षमें हैं।

पैलेस्टाइनमें कई स्थानोंपर यहूदी प्रदर्शन और हड़तालें आदि कर रहे हैं। काहिराके राजनीतिक क्षेत्रोंका अनुमान है कि ये लोग किसी वक्त भी उपद्रव पैदा कर सकते हैं। इसी सिलसिलेमें पुलिसको कहीं-कहीं गोलियांतक चलानी पड़ी हैं। यहूदियोंके अपने प्रयत्न जारी हैं और दूसरी तरफ उनके पैलेस्टाइन प्रवेशके विरुद्ध अरब अपनी कार्यवाहियोंमें लगे हैं।

चीनका गृह युद्ध

आलोच्य सप्ताहमें चुङ्किङ्गमें प्रारम्भ होनेवाली समझौतेकी वार्ताकी ओर यद्यपि सरकारी और कम्युनिस्ट सेनाओंका ध्यान है, फिर भी युद्ध अपनी गतिसे जा रहा है। कम्युनिस्टोंने चीनी रेलवे लाइन को क्षति पहुंचाते हुए यातायातमें एक बड़ी असुविधा पैदा कर दी है भीतरी मंगोलिया में भयङ्कर युद्ध जारी है।

चीन और रूसके बीच मंचूरियामें चीनी फौजोंके प्रवेश तथा अन्य सम्बन्धित विषयों पर समझौतेकी बातचीतमें कठिनाई पेश हो रही है, यद्यपि वार्ता अभी जारी है और समझौतेका यथासम्भव प्रयत्न किया जा रहा है।

चीनकी राष्ट्रीय कांग्रेसकी बैठक १२ नवम्बरको होनेवाली थी, किन्तु वह आगामी ५ मई १९४६ तक स्थगित कर दी गयी है।

जापान पर नियन्त्रण

संयुक्त राष्ट्रके सेक्रेटरी आफ स्टेट श्री जेम्स बीरन्सने इस बातको फिरसे स्पष्ट किया है कि बर्लिनकी ही तरह जापान पर भी चार शक्तियोंकी एक कन्ट्रोल कौंसिल की स्थापना पर रूसने दुबारा जोर दिया है। इसके सम्बन्धमें तथा सुदूरपूर्वके सलाहकार कमीशनके प्रश्न पर अभी मास्कोसे कोई समझौता नहीं हो पाया है। वैसे समझौतेकी तथा किसी एक निश्चय पर पहुंचनेकी बात रूसके साथ अब भी चल रही है।

इस सम्बन्धमें संयुक्त राष्ट्र अब भी चारों शक्तियोंकी एक कण्ट्रोल कौन्सिलकी स्थापनाके पक्षमें है। जनरल मैक आर्थर-को इसमें पूरा अधिकार रहेगा, यों ब्रिटेन, रूस और चीनके प्रतिनिधि भी उन्हें सलाह देते रहेंगे। संयुक्त राष्ट्र यही चाहता है चार शक्तियोंके कण्ट्रोल कमीशनके प्रश्नके अतिरिक्त और भी कुछ समस्याओं पर अभी विचार होना शेष है और तबतक सुदूरपूर्वके सलाहकार कमीशनकी बैठक जारी रहेगी।

हालहीमें मास्कोसे जो पत्र-व्यवहार हुआ है, उसमें मो० मोलोटोवने एक पत्रमें इस बातकी स्पष्ट मांग जाहिर कर दी है कि टोकियोमें बर्लिनकी तरह की ही एक कण्ट्रोल कौन्सिल कायम होनी चाहिये, किसी और ढंगसे नहीं।

जापानमें स्वतन्त्र चुनाव

जापानी पार्लमेण्टका अठारह दिनका अधिवेशन आगामी २७ नवम्बरसे प्रारम्भ हो रहा है। इसमें चुनाव सम्बन्धी कानून दोहराने और अगले वर्ष आम चुनावकी तैयारीके सम्बन्धमें पार्लमेण्ट मङ्ग करने आदि प्रश्नों पर विचार होगा। मन्त्रि-मण्डलने सरकारी नौकरियोंमें भी सुधारकी स्वीकृति प्रदान की है। प्रधान मन्त्री बैरन किजुरो शिदेहाराके सहायकोंने बतलाया है कि अभी हालमें प्रधान मित्र राष्ट्रीय कमाण्डर जनरल डगलस मैकार्थरके साथ वार्तालापके दौरानमें प्रधान मन्त्रीने वादा किया कि बिना किसी हस्तक्षेपके स्वतन्त्र चुनाव हो …। जापानके सम्पूर्ण इतिहासमें यह प्रथम स्वतन्त्र निर्वाचन होगा।

सूडानकी समस्या

काहिरामें इधर बड़े पैमाने पर ब्रिटिश विरोधी प्रदर्शनोंके समाचार सुननेको मिले हैं। वाफदिस्ट वक्ताओंने मिल कर इस बातकी मांग की कि ब्रिटिश फौजें अविलम्ब सूडान खाली करें। एक वक्ताने इसी सिलसिलेमें कहा—"अंग्रेज केवल प्रत्याक्रमणकारी सेनासे भग जा सकते हैं। सूडानको पुनः प्राप्त करनेके लिए आइये, हम अपना खून दें।"

नहसपाशाने कहा—"हम या तो सूडान पर अधिकार करेंगे अथवा संघर्षमें अपने प्राण होम देंगे।" प्रदर्शनोंमें कांतिके नारे बुलन्द किये गये जब कि सरकारने पुलिसको यह आज्ञा दे दी थी यदि कोई विशेष उपद्रव सामने आवे तो गोली तक चला दी जाय।

हिरोहितोके पद त्यागका प्रश्न

टोकियोमें लार्ड सभाके चीफ सेक्रेटरी जिरोकोयामाशीने एक भेंटके दौरानमें बतलाया कि कुछ कम्युनिस्ट चाहते हैं कि सम्राट हिरोहितो गद्दी छोड़ें किन्तु उनकी संख्या बहुत कम है। इस लिये नये विधान के बन जानेके बाद भी बहुमतका जहां प्रश्न रहेगा, वहां समस्या पर दुबारा विचार किये जाने पर भी यह सम्भव नहीं हो सकेगा।

ट्रूमैन एटली मिलन

वाशिंगटनमें इस सप्ताहमें ट्रूमैन और ब्रिटिश प्रधान मन्त्री एटलीमें कई आवश्यक विषयों पर विचार-विमर्श हुआ है। इस अवसर पर महासेनापति स्टालिन और मार्शल च्यांग काई शेकके भी वहां पहुंचनेकी अटकलबाजियां लोग लगा रहे थे, किन्तु वे असत्य ही प्रमाणित हुईं। कनाडाके प्रधान मन्त्री मैकेंजी किङ्ग उपस्थित थे।

अपने तथा मैकेंजी किङ्गके सम्मानमें आयोजित एक भोजके अवसरपर भाषण करते हुए मि० एटलीने कहा कि वर्तमान बातोंके समय सभीको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये कि आज हमारा सबसे प्रधान कार्य समान जनताके लिये विश्व नीति निर्धारण के निमित्त प्रयत्न करना और उपाय ढूंढ़ निकालना है।

ब्रिटिश साम्राज्यकी परराष्ट्र नीतिकी प्रशंसा करते हुए प्रे० ट्रूमैनने कहा कि अमेरिका भी ठीक इसी तरह अपनी पर-राष्ट्र नीति निर्धारित करता जो किसी राजनीतिक दलकी नहीं, बल्कि आम जनताकी नीति होगी।

मि० एटलीने अन्तमें फिर इस बात पर जोर दिया कि हमारी पर-राष्ट्र-नीति ऐसी होनी चाहिये जो कि जनताके स्वार्थ और हितोंके अनुरूप हो।

यूगोस्लावियाके चुनाव

यद्यपि विभिन्न प्रान्तोंके अन्तिम चुनाव परिणाममें अभी कुछ विलम्ब है, फिर भी जैसी स्थिति सामने आ रही है और उसने जो वातावरण पैदा किया है, उसके अनुसार यह बहुत स्पष्ट हो चुका है कि मार्शल टिटो के दलको बहुमत प्राप्त हुआ है।

कोरियाका गुप्त आन्दोलन

लगभग ४० वर्षोंसे आन्दोलनमें प्रवृत्त कोरियाका एक गुप्त संगठन इधर 'जनताका दल' नामसे प्रकाशमें आ गया है। कोरियाके प्रतिरोध आन्दोलनके नेता ल्यूह यून हा ङ्ग इस दलकी बागडोर सम्भाले हुए हैं। एक अरसे तक इन्हें जापानी जेलोंमें बन्द तक रहना पड़ा था। अब इनके दलको समाजवादी प्रजातन्त्रवादी, कम्युनिस्ट और उदार दली सभी दलों व व्यक्तियोंका सहयोग प्राप्त है।

कहानी

पिछली याद

—*—

ले०—श्री श्रीराम शर्माराम

एकाएक जो रज्जोकी आँख खुली, तो देखा, क्षितिज पर तारे टूट रहे थे, वह निस्तेज हो डूबते आ रहे थे। दूर पर दिखते और चमकते हुए एक तारेको देख कर उसने नितान्त विषण्ण और दीन भावमें कहा—'हाय, राम! यह आज दिखाना था...उसे आज भी—!

उसी समय रज्जोने अपने उस स्वप्नको भूल, उसके मूक जीवनकी ओर देखा। उसी ओर देखते हुए उसने अपने उस यौवन भरे जीवनकी स्मृतियोंमें अपनेको लगा दिया। उसने देखा कि वह वही रज्जो है,—राजकुमारी, जो सुन्दर है, नारीकी ममतामयी प्रेरणासे विभूषित है और उस यौवनकी दहलीज पर खड़ी हुई जैसे प्रतीक्षामें है कि आये,—कोई उसके समीप आये! वह जो एक अक्षत और रसभरी कली सा अपने उस मदभरे जीवनकी वाटिकामें आ गयी, तो सचमुच हां, वह अपनी सहेलियों, पड़ोसिनोंसे यह अनायास ही सीख गयी कि जीवन यह नहीं...वह है! वह हमारे पास है। वह तुममें नहीं है। तुम्हारा जीवन अभी शून्य है...वह अभी किसी मदमाते, गुनगुनाते भौंरेके मधुर-स्वरके सुननेसे वञ्चित है।

लेकिन वह कैसा स्वर है, उसमें कितनी मादकता है, मानो इसकी कल्पनामें ही रज्जोने सुख माना। और जैसे अज्ञात रूप से वह किसीकी प्रतीक्षामें है. अपने इन्हीं मनोभावोंमें उसने अपने आपको लगा दिया।

और कैसा संयोग था कि तभी उस रज्जोमें जिस आकांक्षा और प्रेरणाका बीज फूट आया था, उसीके साथ, उसने देखा कि पड़ोसका रामबाबू जाने क्या कुछ लिये उसकी ओर देखता है। उससे कुछ कहता है—कहना चाहता है वह!

किन्तु रज्जोको यह सब अच्छा न लगा, न लगता था। आरम्भमें सचमुच ही, उसे यह एक दिन भी रोचक और अनुभूतिपूर्ण नहीं लगा। परन्तु वह रामबाबू जैसे निश्चय ही कुछ चाहता था। वह रज्जोके द्वार पर आता, उसके समीपसे भी निकल जाता, लेकिन ऐसा सुयोग वह एक दिन भी नहीं पा सका कि रज्जोसे कुछ कह जाये—अपने मनकी बात सुना जाय। उसके बाद वह जो उत्तर दे, उसे भी सुन जाये।

इसी बीच अकस्मात एक दिन रज्जो इस रामबाबूकी बहिनके साथ उसके घर गयी। वह जिस द्वारसे गयी उसके सामने ही एक कमरेमें रामबाबू बैठा दिखायी दिया। वह किसी काममें लगा है, यह भी रज्जोने देख लिया।

उसी समय रामबाबूकी बहिन सरलाने बताया कि उसका भाई चित्रकार है...कलाकार।

रज्जोने यह सुना तो जैसे अनसुना कर दिया। उसे जितनी देर अपनी उस सखीके घर बैठना था और बातें करना था वह सब कर, जब लौटना पड़ा तो उसने न रामबाबूके कमरेकी ओर देखा और नहीं उसे देखनेके स्वयं अपनेमें किसी इच्छाका आभास ही मिला।

इस प्रकार उस रज्जो और रामबाबूके बीचमें दिन आये और चले गये। सरला और रज्जोकी घनिष्टता दिन-दिन बढ़ती गयी, परन्तु उससे बेचारे रामबाबूको अपनी समस्या सुलझानेमें कोई सहायता नहीं मिली।

सदाकी तरह रज्जो जब एक दिन रामबाबूकी बहिनके साथ उसके घर गयी थी, तब उसी दिन बहन द्वारा प्रेरित हुई वह रामबाबूकी चित्रशालामें पहुंच गयी और उनके निर्मित चित्रोंको देखनेमें लग गयी। वे सभी चित्र कला और अनुभूतिके प्रतीक थे। उनमें कुछ पक्षियोंके नाच और कुछ स्त्री-पुरुषके प्रेमाभिनयके नमूने प्रदर्शित किये गये थे। चित्रोंको दिखा कर बहिनने पूछा—क्यों रज्जो, तुझे पसन्द आये, ये चित्र? यह देख, कितना सरल और भावुक है कबूतरोंका जोड़ा! ये अपनी दुनियामें लीन हैं...ये...।

"ऊंह! तू तो बस यही देखती है, सरला! भला बात भी हो, कुछ! उस दिन पिता जी कहते थे—प्रेम नशा है...जवानीका उन्माद! जबतक यौवन है, यह नशा भी है। दोनोंका साथ-साथ चलना है—और चले जाना है। यह सब तो पेट भरेके चोचले हैं, बहना! क्यों तुम्हारे भाई साहबको और कोई काम नहीं!"

उसी समय उन दोनोंने देखा कि द्वार पर रामबाबू खड़ा है और सम्भवतः उनकी बातें सुन चुका है। यह देख, रज्जोने माथेमें बल डाल कर कहा—'अच्छा, अब मैं जाऊंगी, सरला!' और तत्क्षणाही, जिस द्वार पर रामबाबू खड़ा था, उसीके पाससे निकल उसने अपने घरका रास्ता लिया।

रामबाबू कमरेमें चला गया। वह जिस गर्वसे भर कर अपने चित्रोंकी दुनियामें बसा था और उसीको श्रेष्ठ समझता था, इसी क्षण उसे मालूम हुआ कि उसका समझना झूठ था...थोथा प्रलाप!

किन्तु उस रज्जोने जिस उदण्ड भावको लिये उसके चित्रोंको तिरस्कृत किया और उसकी अनुभूतिको पैरोंसे कुचलनेका प्रयत्न किया, वह सचमुच ही, भावनाओंकी दुनियामें बसनेवाले उस रामबाबूके लिये मृत्युसे भी बढ़ कर था। जिस फूलकी सुन्दरता और सुवासनाने उसे मोहित किया, उसीमें कांटे देख कर वह हतप्रभ रह गया। और उस फूलसे तो उसे क्या कहना था, वह अपने आप पर ही लज्जित तथा क्षुब्ध बन गया। अपनी नीयत पर उसे इतना खेद हुआ कि बरबस उसका रोम-रोम आत्मग्लानिसे भर गया। वह तो सहृदयका पुजारी था। रज्जोकी आंखोंमें वह जिस सौन्दर्यको देखता उसमें नारीकी अनुभूति, प्रेम और त्यागकी साधनाकी कल्पना करता था। उसे वह सृष्टिका सौन्दर्य मानता और जगतके पिताका जितना भी आशीष उसने मानवके लिये समझा था, उसका एकत्र समूह वह रज्जोकी आंखोंमें देखता था।

परन्तु जब उसने सर्वथा विपरीत पाया, तो उस भावुक और सौन्दर्यके पुजारी रामबाबूका मन क्षत-विक्षत हो गया। उसने रज्जोकी तरफ देखना छोड़ दिया। उस ओरका जाना भी बन्द कर दिया।

और रज्जो है, जो अब यौवनकी दहलीज पर ऐसे टिक गयी है कि जैसे वही उसकी ठौर है...उसका आदि और अन्त!...

कितने दिन हो गए, दिन क्या महीनों हो गये, रज्जो न सरलाके घर गयी और न वह ही उसके पास आयी है। यह तो उसने सुना कि रामबाबू बीमार हो गया और वायु परिवर्तन करके पहाड़से लौट आया है।

एक दिन उसकी एक और साथिनने कहा—'अरी, रज्जो तूने भी सुना, सरला का भाई स्वस्थ नहीं हुआ। वह बाहरसे आकर भी बिस्तर पर पड़ा है।'

यह सुन कर रज्जोने सीधे स्वभावसे कह दिया—हां, सुना तो।'

सखीने कहा—'सरला बेचारीका एक भाई है, इतना भला और होनहार। मुहल्ले में वह सभीका भला है। क्या मजाल जो किसीकी ओर भी उसने आंख उठा कर देखा हो। अपने रास्ते आना और अपने रास्ते जाना उसका स्वभाव रहा है।

सखी चली गयी। वह जितना भी रामबाबूके विषयमें कह गयी, जैसे वह रज्जोके मनके प्रतिकूल कह गयी। वह बात पर अटकी हुई अपने आप बोली—यह रामबाबू...जैसे शैतानकी आंख! यही तो है वह जो आते जाते घूरता...आंखें फाड़-फाड़ कर निहारता था! बड़ा आया कहींका कलाकार! ऊंह! ऐसे जाने कितने हैं दुनियामें बीमार! इसका ठीक है क्या! कोई मरे—कोई जिए, मैंने ठेका लिया है, इसका!...

लेकिन न जाने किस प्रेरणा, इच्छा और अनुभूतिसे प्रेरित होकर रज्जो उस दिन कई बार रामबाबूके प्रदन पर आयी और आती गयी। वह संध्या होते-होते सरलाके घर भी पहुंच गयी। सरला उस समय भाईके पास बैठी थी। वह पलंग पर पड़े हुए भाईको उसीके निर्मित चित्रोंका ऐलबम दिखा रही थी।

उसी समय कमरेके द्वार पर खड़ी हो, उसने सुना, रामबाबू अपने एक पक्षियोंके मिलनको देख कर, बहिनसे कह रहा था—सरला बहिन, यह है जीवन! मैं आज तक इसी कल्पनाकी पूजा करता रहा। जानती हो, यह जगत इसी अनुभूतिमें बंधा है, जगत पिता भी। मेरी इस साधनाको जिसने भी थोथा और बेकार कहा है, वह मेरा और जगतका ही शत्रु नहीं, उसने स्वयं अपनेको भी अपना शत्रु बना लिया है।

उसी समय रज्जोने पुकारा—सरला...

'रज्जो, आ, बहिन! आ।'

रज्जो आगे बढ़ गयी। वह सरलाके पास जाकर बैठ गयी।

तभी रामबाबूने कहा—अच्छा सरला, अब इन चित्रोंको रख दो। हां, अब ... दो।

यह सुन रज्जोने जैसे अपने स्वभावके विपरीत होकर कहा 'तो क्या मेरे आनेसे बाधा हुई? कहो तो, मैं लौट जाऊं, सरला।'

राम बाबूने कहा—यह बात नहीं, ... यह नहीं।'

सरलाने कहा—"हां, ऐसा कुछ नहीं, रज्जो! तू बैठ। मैं पानी पीकर आती हूं।" वह चली गयी।

उस समय रामबाबूने कहा—'तुम चित्रोंको पसन्द नहीं करती हो, राजकुमारी। इनकी आत्मा और उसकी अनुभूतिको भी नहीं मानती हो। ... मैंने इतना कहा।'

राजकुमारीने कहा—आप दुर्बल हो गये हैं...आप...।

"हां, राजकुमारी, मैं दुर्बल हो गया हूं, मैं... ।"

राजकुमारीने कहा—'मेरे लिये ... सेवा बताइये।'

यह सुन रामबाबूने मुसकराकर कहा, "राजकुमारी, सेवा बतायी नहीं जाती, पायी जाती है। फिर भी मैं कहूं तुम्हारे जीवनमें जितनी रूक्षता और कठिनता ... हो गयी है, उसे दूर कर दो। वह ... जीवन बिगाड़ती है। जगतके स्वामीने जिस शुभाशीषसे अलंकृत किया है ... उपादेयताको सार्थक करो इस ... अन्धेरेमें प्रकाश करो, राजकुमारी ...

राजकुमारीने अपना सिर झुका लिया।

रामबाबूने फिर कहा—मैं ... कलात्मक हूं राजकुमारी! मैं तुम्हें ... छीननेके लिये आज क्या कभी भी ... नहीं रहा हूं। मैं तो पूजक हूं...

राजकुमारीकी आंखें भर आयीं ... वह जमीनपर गिरने लगी थीं।

उसी समय राम बाबूने कहा— ... देखती हो राजकुमारी, दीपक अब ... है। अब वह अपनी सीमापर आ ... इसके जीवनकी निरन्तरसे जलती ... हवाकी थपकी पड़ रही है...तेल ... है और बेचारी बाती अकेली ... है, जल रही है। यह अपना ... पानेके लिये सभी अनुष्ठानोंको ... रही है राजकुमारी! यही जीवन ... की यही अनुभूति है।

'रामबाबू—!'

'तुम रोती हो राजकुमारी! ... सच, आज यह साधक धन्य हुआ ... अपनी पूजामें सफल हुआ।'

उसी समय उसने द्वारपर ... देखा और कहा—'अरी, सरला! ... कहांकी। सोचती है, वह भला ... कोई ख्याल रखता है।'

(शेषांश १७ वें पृष्ठपर)

समाजद्रोही

...युद्ध समाप्त हो गया, लेकिन युद्धस्थिति ...बाकी है और इसी कारण जन...को युद्धकालसे बढ़कर वर्तमान ...कठिनाइयोंका सामना करना पड़ ...। कपड़ेका अकाल युद्ध समाप्तिकाल ...कितना कुछ था और उससे जनताको ...मुसीबतोंका सामना करना पड़ ..., उससे बढ़कर मुसीबत आज कपड़े ...हो जानेके बाद लोगोंको उठानी ...है। आज रेशन दूकानोंमें जैसा ...जनसाधारणको दिया जा रहा है, ...किसी कामका नहीं। धोती या साड़ी ...भी दूकानमें नहीं मिल सकती जो ...नीचे किसी तरह आ सके और यदि ...मिल भी जाये तो लम्बाईमें एक ...कम। दूकानदारसे इस बातकी ...करें तो वह कुत्तेकी तरह दुत्कार ...और यदि उसमें कुछ शराफत हुई तो ...कि हैण्डलिंग एजेण्टसे हमें यही माल ...है। अभी हालमें कलकत्तेकी एक ...दूकानपर रेशनका कपड़ा खरीदनेका ...मौका मिला। वहां जो धोतियां ...साड़ियां थीं, उनको धारण करनेके ...भी आदमी शायद ही प्रस्तुत ...किन दूकानदार किसीसे सीधे मुंह ...नहीं करता था। उनका कहना ...हमारे पास यही माल है, लेना है तो ...नहीं तो निकल जाओ।' हमने जब ...दारसे इस बातकी चर्चा की तो उसने ...दिया—महाशय, जो माल हम दे रहे ...को लेनेके लिये बाध्य है। नहीं ...जायंगे कहां।' कुछ ही देर बाद ...परिस्थितिमें ही एक शरीफजादे वहां ...उतरे। उनको भी कपड़ा खरीदना ...दूकानदारने उनके साथ फुस फुस ...करनेके उपरान्त उनको जो कपड़े दिये, ...हम दङ्ग रह गये। एक ओर तो ...कहा जाता है कि अच्छे कपड़े नहीं ...दूसरी ओर फुस फुस बातें कर ऊपर ...ऊपर अच्छेसे अच्छा कपड़ा दिया ...। इन समाज द्रोहियोंने ही बंगाल ...लाख मानवोंको मौतके घाट ...वस्त्र सङ्कट उत्पन्न किया और ...अपनी पेट मोटी करते रहे। सर...इस सम्बन्धमें कोई अनुरोध करना ...यह जानते हुए भी हम उससे अनु...ते हैं कपड़ा दूकानदारोंकी इस ...को वह रोके और जनताको जरूरत ...र कपड़ा देनेका प्रयत्न करे। साथ ...दूकानदारोंको भी चेतावनी दे देना ...कि समाज उनके इन समाजद्रोही ...को कदापि नहीं भूलेगा और समय ...उनसे ऐसा बदला लेगा जिसको वे ...पीढ़ियोंतक नहीं भुला सकेंगे।

विवाह बन्द हो

...विवाहके खिलाफ होने वाले ...के बावजूद हमारे समाजमें यह ...तक कायम है। आज बाल विवाह ...बतावें, इसकी जरूरत नहीं। बाल ...समाजका कितना ज्यादा नुकसान ...इसके बारेमें काफी बताया जा चुका है। इसपर भी ऐसी प्रथाका जोर पकड़ना पूर्णतया अवांछनीय है। उड़ीसाके बरगढ़ नामक स्थानसे अभी हालमें दो बाल-विवाह की खबर मिली है। आये दिन इस प्रकार कितने ही बाल विवाह होते हैं। समाजके धनिकोंके पास जिस प्रकार युद्धकालमें धनकी अभिवृद्धि हुई उसी प्रकार उसके व्यय करने का सदुपयोग नहीं हुआ, यहां तक कि उस धनके कारण अपनी ही सन्तानोंका अहित किया जाने लगा। उड़ीसामें समाज-सुधारके नाते बरगढ़का विशिष्ट स्थान है। हमें यह जानकर तो और भी अधिक आश्चर्य होता है कि बरगढ़की युवक संस्थायें, तरुण सेना-दल, हिन्दी छात्रसंघके सदस्य इस कुरीतिका विरोध करनेसे चुप हैं। हम आशा करते हैं कि भावी समाजके कर्णधार हमारे युवक इस विषय पर ध्यान देंगे और इस कुरीतिका समूल विनाश करके ही दम लेंगे।

समाज दर्पण

घृणित प्रयास

आजाद हिन्द फौज आजादीके दीवानोंका संगठन है। इसमें छूई जाति भेद, ढोंग आडम्बरोंको स्थान नहीं। और न आजाद हिन्द फौजने अखण्ड और स्वतः भारतके ही लिये यह युद्ध ठाना था। वह भारतको गुलामी के बन्धनोंसे रिहा करने और अपने देशमें अपना राज्य स्थापित करने चली थी। साम्राज्यवादका मुकाबिला आसान नहीं—यह आजाद फौजके संस्थापक जानते थे इसलिये उन्होंने एक ही झण्डेके नीचे आजादके दीवानोंका संगठन किया। उस संगठनमें हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी और क्रिस्तान सभी शामिल हुए। एक साथ खाना पीना एक साथ मरना यही था उनका ध्येय। सत्य और ईमानदारीका रास्ता होनेके कारण उन्हें सफलता भी मिली। भारतके जिस हिस्सेमें उन्होंने पैर जमाये वहां सबसे पहले तिरंगा झण्डा फहराया एक मुसलमान कैप्टन शाहनवाजने। कैप्टन सहगल और लेफ्टिनेण्ट ढिल्लन आदि उसके आजादीके दीवाने साथी हैं।

आज इन आजादीके दीवानोंके ऊपर साम्राज्यवादी सरकारकी अदालतमें मुकदमा चल रहा है। उसकी आलोचना करनेकी अभी आवश्यकता नहीं। हम तो सिर्फ यह कहना चाहते हैं कि जिन आजादके दीवानों ने अपना सब कुछ निछावर कर आजादीको महत्व दिया उसीके अन्दर हमारे मुस्लिम लीगी भाई साम्प्रदायिकताका बीज बोना चाहते हैं।

आजाद हिन्द फौजमें बहुतसे मुसलमान हैं अतः उनके प्रति लीगकी सहानुभूति होना स्वाभाविक है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि लीग आजाद हिन्द फौजमें भी 'पाकिस्तान' स्थापित करे। कैप्टन शाहनवाजका मुकदमा शुरू होनेके पहले उनके परिवार वालोंने मुकदमा लड़नेका इरादा प्रकट किया था। लेकिन उन्होंने साफ लिख दिया कि जब कांग्रेस लड़नेकी तैयारी कर रही है तो आपको क्यों चिन्ता है। हमें यह भी पता चला है कि शाहनवाजके पास लीग का आवेदन भी गया था लेकिन उन्होंने कोरा उत्तर दिया। जब लाल किलेमें पेशी हो रही थी, जब आजाद हिन्द फौज डिफेंस कमेटीके लोग अपने कार्यमें व्यस्त थे तब लीगी भाई बैठकर चाय पी रहे थे और इस ताकमें थे कि शाहनवाजको मौका पाकर लीगका मन्त्र सुना दें। लेकिन अन्तमें उन्हें निराश ही होना पड़ा। जबलपुर, शिवरगाछा जहां कहीं आजाद फौजके सैनिक बन्दी हैं वहां लीगी पहुंच पहुंच कर अपना विषैला प्रचार कर रहे हैं। लीग और कांग्रेसमें राजनीतिक मतभेद है लेकिन आजादीके दीवानोंके प्राण बचानेमें मतभेद कैसे ?

पं० जवाहरलाल नेहरूके नेतृत्वमें जो डिफेंस कमेटी बनी है वह सार्वजनिक है। यदि लीग अपनी मदद देना चाहे और उस कमेटीके साथ मिलकर काम करना चाहे तो वे लोग अवश्य पसन्द करेंगे। लेकिन लीग वालोंको इतनी नैतिक साहस कहां कि इस महत्वपूर्ण कार्यमें भी कांग्रेसके साथ कन्धा से कन्धा मिला कर काम करें! मानवताके नाम पर लीगके हाई कमाण्डको चाहिये वह आजाद हिन्द फौजके सैनिकोंके भीतर साम्प्रदायिकताका विष फैलाना बन्द कर दे क्योंकि लीगको इस कार्यमें सफलता तो मिलेगी नहीं उलटे इतिहासके पन्नोंमें लिखा जायगा—'लीगका घृणित प्रयास'।

अत्याचारकी पराकाष्ठा

अपनेको न्यायी और गणतन्त्री कहनेवाली सरकारने पुलिस विभागकी स्थापना जिस उद्देश्यसे की है उसके बारेमें हम इस स्तम्भमें कई बार लिख चुके हैं लेकिन यह विभाग क्या सचमुच ही अपने कर्तव्य पर दृढ़ है? आजकल प्रायः सभी सरकारी विभागोंमें कुछ न कुछ दोष अवश्य आ गये हैं, लेकिन सबसे अधिक दूषित वातावरण किसी विभागका है तो वह पुलिस विभाग है। पुलिसवाले अपने अधिकारके मदमें मत्त होकर जैसे अत्याचार कर रहे हैं, उनको देख सुन कर किसी भी मनुष्यका हृदय घृणा से भर जाता है। पुलिसका प्रधान दायित्व सामाजिक बुराइयोंको दूर करनेका है, किंतु वह उनको दूर करनेके बदले उनको प्रश्रय देती और निरीह व्यक्तियों पर अत्याचार करती है। उदाहरण स्वरूप हम कलकत्तेको लें। यहांकी सड़कों पर फेरीवालोंको बैठने की इजाजत नहीं, मगर जहां कहीं भी देखा जाय, सड़कोंके दोनों किनारे फेरीवालोंकी टोकरियों और खोमचोंसे भरे पड़े मिलेंगे। पुलिस उन्हें नहीं पकड़ती, उनको कुछ नहीं कहती। यह तो ऐसे व्यक्तियोंको स्थायी है, जिससे उनका कुछ स्वार्थ साधन नहीं होता। कलकत्तेसे वेश्यालय हटा दिये गये हैं, ऐसी घोषणा सरकारने कर रखी है। लेकिन उसके बदले अब चलते फिरते वेश्यालय कायम होने लगे हैं। जिन स्थानोंसे वेश्याओंको 'हटा दिया' गया है, वहां अबतक वे मौजूद हैं। पुलिस इसको भलीभांति जानती है, मगर उनके खिलाफ कोई कार-रवाई नहीं होती। वह तो गरीब दुखियों को सतानेमें ही अपनी पद मर्यादा समझती है। पुलिस विभागको चाहिये कि समय रहते वे अपने गन्दे आचरणोंका परित्याग करें अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब यह सारा विभाग समाज द्रोहके अभियोगमें जनताकी अदालतमें पेश किया जायगा।

यह गुण्डापन क्यों ?

अभी उस दिन कलकत्तेमें राष्ट्रपति मौलाना आजादके प्राइवेट सेक्रेटरी श्री अजमल खां ने 'इस्लाममें गणतन्त्र' पर भाषण देते हुए कहा कि "इस्लामकी बुनियाद गणतन्त्रके ऊपर रखी गयी है। उसने अपने जन्म कालमें ही रोमन और पर्सियन साम्राज्योंसे मोर्चा लिया था। यदि इस्लाम की नींव गणतन्त्र पर नहीं होती तो वह इतनी जल्दी न फैलता और न शक्तिशाली साम्राज्योंका मुकाबला ही न कर पाता। इस्लामने दूसरे धर्मोंको न तो हेय दृष्टिसे देखा और न उन पर आक्षेप करनेका उपदेश ही दिया है। मुहम्मद साहबके ३२ वर्ष बाद मुसलमानोंने खलीफोंको शासन कार्य चलानेके लिये चुना। लेकिन गणतन्त्रकी यह भावना मुसलमानोंमें अधिक दिनों तक नहीं रही। राजतन्त्र और राजा का कुछदी सदियों बाद जन्म हुआ। इस कथनका जिक्र करनेका हमारा मतलब सिर्फ यह है कि भारतके अधिकांश मुसलमान इस्लामके गणतन्त्रवादी सिद्धान्तसे बहुत दूर है। वन्दे ! साम्प्रदायिकतामें हमारा विश्वास नहीं है। भारतके हिन्दू मुसलमानोंमें हम कुछ विशेष भेद नहीं मानते। लेकिन जब इस्लाम खतरेमें है जैसे नारे लगानेवाले कुछ मुसलमान भाइयोंको अपने धर्म भाई—खाकसार अहरार और जमीयत उलेमाओंकी सभामें उपद्रव करते देखते हैं तो दुःख होता है। अभी हालहीमें कलकत्तेके दैनिक 'रोजाना हिन्द' के सम्पादक आ. मलीहाबादीके ऊपर कुछ गुण्डोंने अचानक हमला कर इस्लामकी रक्षा करनी चाही। जो धर्म स्वतन्त्र पूर्वक अपना मन्तव्य प्रकट करनेकी इजाजत नहीं देता वह संसारमें कभी जीवित नहीं रह सकता। फिर इस्लाम तो ऐसी शिक्षा कभी नहीं देता वह तो मानवता और स्वतन्त्र विचारों का पोषक है। फिर इस गुण्डेपनका परिचय क्यों।

चलती चक्की

आज़ाद हिन्द फौजके महिला सैन्य दलके साथ श्री सुभाषचन्द्र बोस

कलकत्तेमें विद्यार्थियों द्वारा आयोजित एक जुलूसपर लाठी चार्ज करते वक्त पुलिसवालोंने एक प्रेस फोटोग्राफरका कैमरा छीन लिया।

—एक समाचार।

बड़ी गलती की। मुफ्तमें फोटो खिंचवानेसे भी वंचित रह गये!

° ° °

मध्य भारतकी कई देशी रियासतोंमें एक डकैतोंकी टोली लूटमार मचाती है जिसकी संचालिका एक अतीव सुन्दरी, कुशल घुड़सवार तथा दक्ष निशानेबाज १८ वर्षीया लड़की है।

—एक समाचार।

मालूम होता है कि खूबसूरत लड़कियों को सिर्फ किसीके दिलपर ही डाका डाल लेनेसे सन्तोष नहीं हो जाता...!

• • •

"भारत छोड़ो" के नारेपर ही समझौता सम्भव।

—पं० नेहरू।

लेकिन मेहमानोंके साथ कहीं यह ज्यादती तो नहीं हो जायगी?

° • °

ब्रिटेन और भारतके बीच रेडियोफोनका सम्बन्ध कायम किया जा रहा है।

—एक समाचार।

इसलिये कि भारत छोड़नेके बाद भी अंग्रेज प्रेमिकायें अपने प्रिय भारतीयोंसे सम्बन्धित रह सकें!

• • •

बनारसमें सिविल मार्शलका कार्यकाल समाप्त।

—एक शीर्षक।

बेचारोंको अपनी प्रेमिकाओंपर रौब गालिब करनेका अब कोई नया तरीका तरीका खोजना पड़ेगा!

• • •

हैदराबाद रियासतके महिला सम्मेलन में औरतोंने एक प्रस्ताव पास करके इस बातकी मांग की है कि लड़कियोंके विवाह की कमसे कम उम्र १६ वर्ष कानून द्वारा निर्धारित कर दी जाय।

—एक समाचार।

और अधिकसे अधिक...साठ, सत्तर?

• • •

ब्रिटिश सरकार विज्ञानकी सामग्री बनानेवाले उद्योगोंमें पूंजी लगानेका नियंत्रण करनेके उद्देश्यसे एक बिल बना रही है।

—एक समाचार।

बुढ़ापेमें लोगोंको यही कुछ सूझा करता है!

• • •

कलकत्तेमें बहरोंका एक सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है।

—एक समाचार।

संगीतका भी उनके लिये विशेष प्रबंध किया जाना चाहिये।

+ + +

ब्रिटेनको ऋण देनेमें अमेरिकाकी हिचकिचाहट।

—एक शीर्षक।

साहूकी साख उठ रही है क्या?

° • °

इस सत्यको अस्वीकार नहीं किया जा सकता कि आज कई हिन्दू सभाई नेता अपने हृदय-मंथनमें लगे हुए हैं।

—श्री सावरकर

लेकिन इससे अमृत निकल रहा है या विष?

° ° °

विश्व युवक सम्मेलनका स्थायी केन्द्रीय कार्यालय पेरिसमें रहेगा।

—एक समाचार।

जवानोंके लिये जगह तो अच्छी है।

° ° °

स्वाधीनताके किले पर चढ़ना आसान नहीं है।

—सेठ गोविन्ददास।

सीढ़ी लगाकर चढ़ना पड़ता है?

° • •

गिरता हुआ साम्राज्यवाद यदि अपनी रक्षाके लिये बौखला उठे तो इसमें क्या आश्चर्य है?

—एक सम्पादकीय।

आश्चर्यकी बात नहीं साहब, यह तो मनोरंजनका मसला है।

+ + +

शहरमें आसानीसे कपड़े नहीं मिलते।

—एक शीर्षक।

कपड़े पानेके लिये भी आजकल हथकण्डेकी जरूरत होती है।

• • •

लाहौरकी लड़कियां आजकल हर तरह की राजनीतिमें बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने लगी हैं।

—एक सम्पादकीय।

हर तरहकी राजनीतिसे आपका मतलब?

• • •

ढाक के बदले टके मिले!

—एक शीर्षक।

शुभ्रावना तो सुन्दर रहा!

• • •

वायसरायके स्टाफके सूचनाधिकारी श्री बोरकरने मंगलवारको कलकत्तेमें वहांके स्थानीय पत्रकारोंको वायसरायके साथ प्रीतिभोजके लिये आमन्त्रित किया, लेकिन पत्रकारोंके वहां पहुंचने पर आपने क्षमा-याचना करते हुए उन्हें कोरा लौटा दिया।

—एक समाचार।

कोरा लौटा देना तो वस्तुतः बुरा ही हुआ। न होता, कमसे कम पानीकी पिचकारी कर चार-चार बताशे ही उनके हाथ थमा देते।

रूसी भालू!

—**—

ये हैं रूसी भालू भैया!

(१)

अब तो भण्डा फूटा, भैया!
पंजा है इनका टूटा, भैया!
वे दिन बीत गये जब इनके
थे ये खूब कमालू, भैया!
ये हैं रूसी भालू, भैया!

(२)

इनकी रूसी आंखें, भैया!
(इनको निकली पांखें, भैया!)
'बोस' देखके दुश्मन दिखते,
आंख नहीं, है आलू, भैया!
ये हैं रूसी भालू, भैया!

(३)

लोग दुधारी इनकी गैया
काम सधेगा जिससे भैया!
क्यों न आज फिर यह देखें
मूड़-फुड़ौवल चालू भैया!

हे०—श्री

सिनेमा-जगतकी हलचल

—०:※:०—

पर्यवेक्षक—श्री नटराज

अन्तर्राष्ट्रीय वितरण संस्था

इधर एक अरसेसे इस बातकी ओर फिल्म निर्माताओंका ध्यान अधिक आकर्षित हो रहा है कि विभिन्न देशोंमें बने फिल्मके प्रदर्शनकी शृंखलाओंको जोड़नेके लिये सभी देशोंका एक विश्व-संघटन कायम किया जाय।

उक्त संघटनके सम्बन्धमें सुझाव देनेका श्रेय अमेरिकाकी एक सुप्रसिद्ध चित्र-वितरक संस्था मेसर्स लोएस इनकार्पोरेटेडको है। उक्त संस्थाने न्यूयार्कमें "एम० जी० एम० इण्टरनेशनल फिल्म्स कार्पोरेशन" नामसे एक अन्तर्राष्ट्रीय चित्र वितरण संस्था स्थापित करनेका निश्चय किया है।

उक्त प्रस्तावित संस्थाके सम्बन्धमें जबतक कोई विस्तृत विवरण नहीं प्राप्त हो जाता, तबतक, यह तो ठीक है कि उसके भविष्य अथवा उसकी सफलताके सम्बन्धमें अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता। फिर भी, पूर्वके फिल्म निर्माताओं और अमेरिकाके फिल्म निर्माताओंका अबतक जो केवल दूर दूरका सम्बन्ध रहा है, उसकी दूरी एक सीमातक इसके द्वारा कम हो सकेगी, इतना तो निश्चित ही है। फिल्मोंके वैदेशिक व्यापारको इससे अवश्य ही काफी प्रोत्साहन मिल सकता। मेसर्स लोएस इनकार्पोरेटेडका यह भी दावा है कि नयी प्रस्तावित वितरण संस्थाकी स्थापनामें उनके अपने स्वार्थकी भावना इतनी अधिक काम नहीं कर रही जितनी कि यह भावना, कि फिल्म निर्माताओंके परस्पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध फिल्म व्यवसायकी उन्नतिके लिये बहुत आवश्यक हैं और जरूरत इस बातकी भी है कि विभिन्न देशोंमें प्रस्तुत हुई फिल्मोंके लिये बाजार भी विस्तृत हों।

इस दिशामें भारतीय फिल्म निर्माताओंको भी पर्याप्त लाभकी उम्मीद हो सकती है। पिछले दिनों जो भारतीय फिल्में अमेरिका आदि देशोंमें दिखायी गयी हैं, उनमें 'पड़ोसी' और ज्ञानेश्वर' आदिको जितना ज्यादा पसन्द किया गया है, उसे देखते हुए आशाकी किरणें न प्रकट होती हों ऐसी बात तो नहीं है। ऐसी स्थितिमें कोई कारण नहीं दिखायी देता कि अच्छी और ऊंची भारतीय फिल्में अमेरिकामें अपने लिये आवश्यक बाजार नहीं बना पायेंगी। भारतीय फिल्म-निर्माता इस सम्बन्धमें इन दिनों काफी ध्यान दे रहे हैं और अमेरिकाकी उक्त प्रस्तावित अन्तर्राष्ट्रीय वितरण संस्थाकी हलचलों व प्रगतिके सम्बन्धमें जानकारी प्राप्त करनेकी प्रतीक्षामें हैं, उसके लिये उत्सुक हैं।

स्टूडियोजसे सैनिक हटें

पिछले दिनों सरकारने युद्धकी आवश्यकताके अनुसार कलकत्ताके कई फिल्म स्टूडियो खाली करवा लिये थे और उन्हें सैनिकोंके रहनेके लिये प्रयुक्त किया जाने लगा था। अब युद्ध समाप्त हो गया है लेकिन उनमें अब भी सैनिक वास कर रहे हैं। युद्धकालमें भी एक साथ अनेक स्टूडियोजपर इस तरह सरकारी कब्जा हो जानेसे कलकत्तेके फिल्म निर्माताओंको बहुत परेशानी महसूस करनी पड़ी थी, लेकिन अब तो वह और भी अधिक बढ़ गयी है जबकि शीघ्र ही निर्मित होनेवाले चित्रोंकी संख्या युद्धकालमें निर्मित हुए चित्रोंकी अपेक्षा कहीं बढ़ गयी है, उन्हें बनानेके लिये विस्तृत स्थानकी आवश्यकता है और सरकार अब भी सैनिक उद्योगके लिए स्थायी रूपसे लिये हुए स्टूडियोजको फिर भी खाली नहीं करा रही है।

स्टूडियोजके मालिक और कई फिल्म निर्माता इस सम्बन्धमें सरकारी पदाधिकारियोंके साथ पत्र व्यवहार कर रहे हैं। युद्ध समाप्त हो जानेपर भी इन स्टूडियोज पर अबतक सरकारी कब्जा बना रहना कितना अनुचित है, सम्बन्धित अधिकारियोंको यह अनुभव करना चाहिये।

प्रकाश पिक्चर्सके आगामी चित्र

प्रकाश पिक्चर्सका नया सामाजिक चित्र 'हमारा संसार' प्रदर्शनकी प्रतीक्षामें है। एक देहातके पारिवारिक जीवनका इसमें चित्रण है। जीवन, रंजना और उमाकान्त आदिने चित्रकी प्रमुख भूमिकाओंमें काम किया है और चित्र निर्देशन किया है श्री शान्तिकुमारने।

विक्रमादित्य

प्रकाशका ऐतिहासिक चित्र 'विक्रमादित्य' जहां जहां भी प्रदर्शित हुआ है, वहां अधिक पसन्द किया गया है। यह भी पता चलता है कि बाक्स-आफिसकी दृष्टिसे भी उक्त चित्रने अपना अलग रेकार्ड कायम किया है।

नयी मां निर्माण गृहमें

के० के० परमारके निर्देशनमें प्रकाश पिक्चर्सका दूसरा नया सामाजिक चित्र "नयी मां" निर्माण-गृहमें तेजी पर है। कहानीका सम्बन्ध सौतेली मांके शासनमें उत्पन्न हुई पारिवारिक समस्याओंसे है। चित्रकी प्रमुख भूमिकामें जीवन, रंजना, देवी माधुरी, एन० कबीर और राजकुमारी शुक्ला आदि काम कर रही हैं।

'घूंघट' का मुहूर्त

गत सप्ताहको प्रकाश स्टूडियोजमें एक नये चित्र 'घूंघट' का मुहूर्त किया गया। विस्तृत विवरण प्राप्त होना अभी बाकी है।

ध्रुव कुमार

नव वर्षके नजदीक पहुंचते पहुंचते प्रकाश पिक्चर्सने अपने जिस नये चित्रकी घोषणा की है, वह है—'ध्रुव कुमार'। भक्त ध्रुवके जीवन संघर्षका इसमें चित्रण होगा।

बरुआ आर्ट प्रोडक्शन्स

कलकत्तामें नव संस्थापित फिल्म कंपनी 'बरुआ आर्ट प्रोडक्शन्स' ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया है। इसका आगामी चित्र 'सबार उपरे मानुष सत्य' बंगलामें होगा जिसकी कहानी नरेश्वर भट्टाचार्यने लिखी है। चित्रका निर्देशन ललित भट्टाचार्य और संगीत निर्देशन पंचू बोस करेंगे।

पहाड़ी सन्याल कलकत्ताको

न्यू थियेटर्सके ख्याति प्राप्त कलाकार पहाड़ी सन्याल, बम्बईमें अपने कण्ट्राक्टको पूरा करके शीघ्र ही कलकत्ता लौट आने वाले हैं। निर्देशक हेमचन्द्र द्वारा दो भाषाओं बंगला और हिन्दीमें बनाये जाने वाले एक चित्रकी प्रमुख भूमिकामें यह काम करेंगे।

'अजन्ता'—

काली फिल्म स्टूडियोमें साधना बोस प्रोडक्शन्सका 'अजन्ता' नामक चित्र तेजीसे बनाया जा रहा है। बौद्ध कालकी एक कहानीके आधार पर उक्त चित्रका निर्माण हो रहा है। रवि बाबूका "अभिसार" नामक गीत इसमें बहुत सुन्दर ढङ्गसे रखा गया है।

चित्रकी प्रधान भूमिकामें स्वयं साधना बोस और साहुमोदक उतर रहे हैं। चित्रका संगीत निर्देशन तिमिर बरनने किया है।

—अमर पिक्चर्सकी नवीन कृति 'रत्नावली' का निर्माण सुरेन्द्र देसाईके निर्देशनमें और जोरसे जारी है। भूमिकामें रत्नमाला, माया बनर्जी, ऊषा और सुरेन्द्र हैं।

—आचार्य आर्ट प्रोडक्शनका '...' प्रदर्शनके लिये तैयार है।

—निर्माता और निर्देशक विनायक... नया चित्र 'सुभद्रा' तैयार हो गया... भूमिकामें शांता आप्टे, प्रेम अदीब ... ईश्वरलाल हैं। इसके प्रस्तुत कर्ता प्र... पिक्चर्स हैं।

—विख्यात गायिका खुर्शीदने रणजी... सम्बन्ध विच्छेद कर लिया है। अब... जयन्त देसाईके 'जहांगीर' की नायि... बनेंगी।

—'साउण्ड' के सम्पादक श्री ... एक नयी फिल्म कम्पनी खोली है और... सरकारसे आजाद हिन्द फौज सम्बन्धी... का निर्माण करनेकी अनुमति मांगी है।
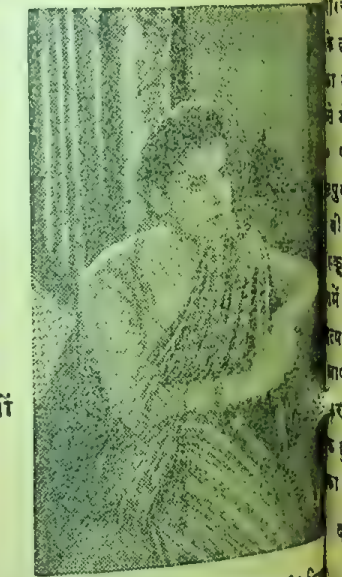
एसोसियेटेड पिक्चर्सके 'अमीरी' चि...
रमोला

अमर पिक्चर्सके नवतम चित्र '...
मायाबनर्जी

बिहारका एक तरुण शिक्षाप्रेमी

——:०****:०——

(लेखक – प्रो० माहेश्वरी सिंह 'महेश')

उस दिन अखबारमें पढ़ा—जगदम्बा [बाबूका] देहान्त हो गया; पढ़कर कलेजा [मुंहको] आ गया। कुछ ही दिन पहले खबर [मिली] थी— वे स्वस्थ हो रहे हैं और शीघ्र [अच्छे] होनेवाले हैं। मैं प्रसन्न था। बहुत दिनों [बाद] उनसे भेंट होनेवाली थी। किन्तु [परमा]त्माने यह क्या किया? वे चले गये [और] छोड़ गये अपनी याद बिहारने एक [सच्चा] शिक्षा-प्रेमी खो दिया, भागलपुरने [अपना] एक महान नागरिक खो दिया और [उनके] परिवार वालोंने......मत [पूछिये]।

[ज]गदम्बा बाबूका जन्म एक प्रतिष्ठित [...] कुलमें हुआ था। अभी वे कुछ [...]के ही थे। लेकिन इतने कम समयमेंही [उन्हों]ने अपनेप्रान्त अपने बाहर अपने गांव एवं [...] विशाल जन-समूहको अपनी योग्यता, [...]ता, सरलता और मानवतासे मुग्धकर [दिया] था। उनके व्यक्तित्वकी छाप अमिट [...]।

[ज]गदम्बा बाबू प्रारम्भसे ही प्रतिभा-[शाली] थे। स्कूल कालेज जहां कहीं भी रहे, [उन्हों]ने अपनी तीव्र बुद्धि एवं प्रखर प्रतिभा [का प]रिचय दिया। सदा उनका स्थान प्रथम [...] छात्रोंमें बना रहा। प्रायः आप छात्र[वृत्ति]का उपभोग करते रहे। मुंगेर जिला [स्कू]लसे मैट्रिक, वहींके डी० जे० कालेजसे [आई०] ए० एवं टी० एन० जे० कालेज [भाग]लपुरसे बी० ए० की परीक्षा पास की। [...] बी० ई० डी० पटना ट्रेनिंग कालेजसे [...] स्कूलोंमें शिक्षक रहते हुए बीमारीकी [अवस्था]में भी एम० ए० की परीक्षा हिन्दी [विष]यमें आपने बड़ी योग्यतासे पास की। [आ]प बहुत कम उम्रमें ही बी० ई० डी० [हो]कर सरकारी स्कूलके शिक्षक पदपर [नियुक्त] हुए और आपने अपने अद्भुत शिक्षण[कला]का परिचय दिया।

दानशीलता जगदम्बा बाबूका एक विशेष गुण था। उनका यह दान विद्या और द्रव्य दोनोंका होता था।

शिक्षणका काम तो यों ही कठिन है। खासकर स्कूलका शिक्षण तो और भी कठिन है। वहांके लिये किसी भी शिक्षकके लिये एक चलता फिरता ज्ञान-कोष बननेके सिवा कोई चारा नहीं। उसे सब विषयोंका ज्ञाता होना ही पड़ेगा। जगदम्बा बाबू एक सफल शिक्षक थे—यह पता चलता है उनके उस ज्ञानसे जो उन्हें प्राप्त था। स्कूलके सभी विषयोंपर वे अधिकार रखते थे एवं उसका सफल उपयोग भी करते थे। जहां कहीं भी रहे, उनके विद्यार्थी उनके ज्ञान एवं ज्ञानदान प्रणालीके कायल रहे।

किन्तु इससे बढ़कर जगदम्बा बाबू एक आदर्श एवं अनुकरणीय मनुष्य थे। आप सरलता और सादगीके अवतार थे। व्यसन किसी प्रकारका छू तक न गया था। मित व्ययिता आपके स्वभावका एक विशेष गुण था गांव या शहर हो लोग उन्हें आपसी बातों में एक न्यायकर्त्ताकी तरह उनका मुंह जोहते थे। गांव और परिवारमें आपकी कद्र लोगों के लिये अभिमान और ईर्षाकी वस्तु थी। इसका कारण था—आपका अति साधु स्वभाव। बूढ़ेसे लेकर बच्चे तक अपनोंसे लेकर बेगानों तक सभी आपको बेतरह चाहते और बड़ा प्रेम रखते थे।

जगदम्बा बाबु एक सफल साहित्यिक थे। आपने हिन्दी साहित्यकी उन्नतिके लिए एक योजना बनायी थी, जिसके प्रकाशन और व्यवहारसे एक बड़ी कमीकी पूर्ति होती किन्तु मनकी मन ही रह गयी।

लोग कहते हैं जिनको यहां चाहते हैं, उनको वहां भी शायद इसीलिये आप इतनी शीघ्रतासे जाते रहे। परमात्मा आपको शान्ति दें।

आपके जीवन और वंश इतिहाससे सम्बन्धित एक स्मृति-ग्रन्थके प्रकाशनकी व्यवस्था की जा रही है जिसमें आपका पूरा परिचय होगा।

———

पिछली याद

(१२ वें पृष्ठका शेषांश)

'नहीं, भैया! मैं तुम्हें जानती नहीं क्या, मैं अपने भैयाको पहचानती नहीं क्या? आज इस रज्जोने भी पहचान लिया —आज इसने भी निकटसे देख लिया, मेरा भैया!'

लेकिन उस समय रज्जोने सिर नहीं उठाया। उसने सरलाकी ओर भी नहीं देख पाया। उसने खड़े होकर कहा—'सरला बहिन अब जाऊंगी। मैं कल फिर आऊंगी।'

'राजकुमारी तुम आओगी?'

'हां, रामबाबू, मैं जरूर आऊंगी।

'अच्छा, अच्छा, जरूर।'

रज्जो चली गयी। किन्तु राम बाबूको उस रातमें जो अवस्था बिगड़ी, वो वह सुधर नहीं सकी। उसकी जीवनलीला उसी रातमें समाप्त हो गयी।

प्रातः होते ही रज्जोने सुना, तो जैसे उसके हाथमें आया हुआ कोई सुन्दर और सरल पंछी पल मारते में उड़ गया। उसे एकाएक सभी कुछ हीन और उजाड़ दिखायी देने लगा। उसके बाद ही उसने सरलासे यह भी सुन लिया कि उसके भाईने अन्तिम वाक्य कहा था—जो हुआ, सो हुआ। अब नमस्ते।

उस समय रज्जोने बरबस ही अपने मुंहको झुका लिया और अपनी उन भर आयी आंखोंको टप-टप जमीनपर टपका दिया था।

सचमुच उसे लगा कि दूर देशका मुसाफिर था, वह जो रातके बाद प्रातः होते ही अपनी डगरपर बढ़ गया था—बेचारा रामबाबू।

\+ \+ \+

रज्जोके सामने फिर वर्तमान आ गया —उसका जीवन। दूसरे पलंगपर सोये और उस समय जागते हुए उसके पतिने उसकी ओर देखकर कहा—'अरी रज्जो—राजकुमारी क्या हुआ? क्या याद आया? कोई स्वप्न देखा?

रज्जोने अपनी उन रोती हुई हिचकियों को रोकनेकी चेष्टा करके भी असफल हो, प्रसन्न हुए भावसे कहा—'कुछ नहीं—कुछ भी नहीं।'

क्षितिजपर तारे नहीं थे। वे एक एककर मिट गये थे। लोप हो गये थे।

Regd No. C. 2229

कमलकिशोर मिश्र द्वारा विश्वामित्र प्रेस, १४।१ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तामें सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक
विश्वमित्र
THE WEEKLY VISHWAMITRA

८—४८ कलकत्ता, २५ नवम्बर १९४५, Calcutta, NOVEMBER 25, 1945 मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

वधुओंका व्यापार

युद्धके सिलसिलेमें अमेरिकाके सैनिकों
अपने देशसे अन्य देशोंमें जाना पड़ा
फ्रांस, इङ्गलैंड, चीन आदि देशोंमें
रिकाके कई सैनिकोंने विवाह भी कर
है। लेकिन वे अपनी वधुओंको कई
वोंसे लौटते वक्त अपने साथ देशमें नहीं
सके। अब सुना है कि अनेक देशके
ने ऐसा दल बनाया है जो यूरोपसे
कर अटलांटिकके पार अमेरिकामें वधु-
ओंको पहुंचाया करता है। एक वधुको
कर अमेरिका पहुंचानेके लिये यह दल
पौण्डसे लेकर ९०० पौण्डतक लेता है।
व फ्रांसमें प्रतीक्षा करनेवाली वधुओंसे
दलके लोग चुपचाप कहते हैं कि यदि
रकम दिलाओ तो तुमको तुम्हारे
के यहां पहुंचा दिया जायगा। इसी
र वे लोग अमेरिकामें पतियोंसे कहते
क्या आप अपनी पत्नी यहां बुलाना
हैं। यदि हां, तो हमें इतना धन दो
हम उसे लानेका प्रबन्ध कर देंगे।" अमे-
में ऐसी बाहरसे आनेवाली वधुओंकी
मारी शुरू हो गयी है। अभी हालहीमें
प्रकार अमेरिका पहुंचायी गयी एक
पकड़ी गयी है। यह २२ वर्षीय कुमारी
री ब्रूअ है जो वृस्टलमें नर्सका काम
ती थी। १८ महीने पूर्व इसने जान
ब्या नामक एक अमेरिकन सैनिकसे
विवाह कर लिया था। इसे जहाजमें छिपाकर
सप्ताह पूर्व न्यूयार्कमें पहुंचायागया था।

पेड़के लिये ३६ वर्ष मुकदमा

किशनगढ़ स्टेटमें नव निर्मित प्रिवी
कौंसिलने एक बड़े ही दिलचस्प मुकदमेका
फैसला किया है। यह मुकदमा ३६ वर्षोंसे
चलता था। मुकदमा सिर्फ इस बातपर
हुआ था कि छोटे उदयपुर और काव-
ता गांवकी सीमापर एक पेड़ काट लिया
गया था। बस, कार्यवाईके महत्व और
उदयपुरवालोंमें मुकदमा शुरू हो गया।
अबतक चलता रहा। जिस पेड़के
मुकदमा चला था वह लकड़ीकी
भार्में आज भी थानेमें सुरक्षित है।
है कि इस मुकदमेको चलानेवाले नौ
स्वर्ग सिधार चुके हैं।

मधुसंचय

कांचका वायुयान

अमेरिकामें कांचका वायुयान बनाने का प्रयास किया जारहा है। यदि इस प्रयासमें सफलता मिल गयी तो कांचका वायुयान ऐसा नहीं होगा जिसे पत्थर मारकर ही तोड़ दिया जाय। वह इतना मजबूत होगा कि २९ फीटकी दूरीसे मारी जाने वाली गोलीका भी उसपर कोई असर होगा बल्कि गोली उचटकर अलग जा गिरेगी। उस वायुयानका कांच सामान्य कांचसे भिन्न होगा। कुछ दिनों पहले ऐसा एक वायुयान परीक्षाके तौरपर बनाया गया था। इस वायुयानके निर्माताओंका कथन है कि उनके वायुयानका कांच वायुयान बनानेके अलुमीनियमसे पचास गुणा अधिक मजबूत और वजनमें एक तिहाई होगा। उन्होंने यह भी दिखाया है कि धातुकी अपेक्षा कांचसे वायुयान सरलतासे बनाये जा सकते हैं। एक पूरा पंखा एक साथ ढाला जा सकेगा। इस वायुयानकी चाल साधारण वायुयानसे १० से लेकर २० मील प्रति घण्टे तक बढ़ जायेगी।

इस वायुयानका ढांचा कांचकी परतोंसे बनाया जायगा। बाहरी परतें कपड़ेमें कांचके रेशे बुनकर चिपकायी जायंगी। इनके बीचमें कोई हल्का पदार्थ भरा जायगा। इस प्रकार एक इंच मोटी कांचकी चादर बन जायगी। और इन चादरोंको चिपकाकर ढांचा बनाया जायगा। कांचके कपड़ेकी एक विशेषता यह भी होगी कि रेडियोकी सहायतासे चलनेवाले चालकहीन वायुयान बनाना इससे आसान हो जायगा।

इण्डोनेशिया प्रजातन्त्रके राष्ट्रपति
डा० सुकर्ण

आलू-टमाटर एक साथ

बहुत दिनों बाद एक मालीका सपना साकार हुआ है। उसे एक ऐसे पौधेको उपजाने में सफलता मिल गयी है—जो टमाटर और आलूके पौधेको कलमकर एक साथ उपजाया गया था। कहते हैं कि मालीने एक खेतमें आलू बो दिये और जब वे कुछ बड़े हो गये तो उसने उनके धड़को काटकर उनमें टमाटरके पौधे कलम कर दिये। सावधानीसे पानी देनेपर पौधे बढ़ने लगे। और वे पौधे लगभग तीन फीट ऊंचे हो गये और उनमें आलू भी अच्छे हुए और टमाटर भी बड़े बड़े हुए! इस मालीका नाम मि० सिडी मूर है और वह लाइकनमें पार्को का माली है।

रेडियो द्वारा रंगीन चित्र

ब्रिटेनके अनुसन्धानकारियोंने ध्वनि तथा चित्र टेलीविजनके अनुसंधानमें सफलता प्राप्त की है। उन्होंने ध्वनि तथा चित्रके भेजने तथा ग्रहण करनेके लिये पृथक-पृथक यन्त्रोंकी आवश्यकताका अन्त कर दिया है। अब दोनों एक साथ एक ही तरंग गतिरह उसी प्रकार काम करेंगे जैसे सिनेमामें ध्वनि और चित्र साथ साथ चलते हैं। कहा जाता है कि इस अनुसन्धान के फलस्वरूप टेलीविजन-ग्राहक यंत्रोंमें उन्नति होगी तथा वे सस्ते भी होंगे, तथा यदि सभी रेडियो रखनेवाले टेलीविजन रखने लगे, तो लागतमें ३ करोड़ पौंडकी बचत होगी। इसके द्वारा रंगीन चित्र भी आ सकेंगे। इसके अनुसन्धानकारी वैमिब्ज के रेडियो अनुसन्धान विभागके प्रधान भौतिक विज्ञानवेत्ता मि० डी० टी० लासन हैं।

कविता

: हंसते चल :

चलना ही है तो हंसते चल !

…ो अनल हिन, मल हस्त स्वयं दुलकाये लोचन-जल हिम गल।

क्यों आज पन्थ पर बैठे
मानव के लोचन गीले
मानस के बन्दी दुख के
क्यों बंधन आज न ढीले ?

…लना ही यदि इष्ट तुम्हें तो दीप्तिमान की छवि पर जल !
चलना ही है तो हंसते चल !!

नव कुसुम अमर तरु के हम
आये हैं विश्व सजाने
परिमल में लेकर ज्वाला
कांटों को आज जलाने

…धन टूटें, कांटे चीलें, जग सरस अबन्ध, न हो विह्वल !
चलना ही है तो हंसते चल !!

ले चन्द्रहास हाथों में
आंखों में तेज दिये जा
साहस को आज जगा कर
अनयी को ध्वस किये जा

तीक्ष्ण भानु इस काल, पुनः चमकेगा शशि शीतल, निर्मल !
चलता ही है तो हंसते चल !!

—श्री वैद्यनाथ प्रसाद सिंह

जागरण

(१)
…ने को हैं नभ के तारे
…े को हैं सपने सारे
…को हैं दिनकर प्यारे
… आंख न लगने पायेगी

(२)
तममें :अभिलाषा पली-पली
विकसित आशाकी कली-कली
कहती जीवन की गली-गली
अब आंख न लगने पायेगी

(३)
…-जीवन की आशा चंचल
…-जीवन में आशा विह्वल
…-जीवन से आशा उज्ज्वल
… आंख न लगने पायेगी

(४)
आकुल-अन्तर का करुण-गीत
प्रति पल बनता जाता अतीत
नव-युग-विहान ही अमर-मीत
अब आंख न लगने पायेगी

(५)
…ी की रातें ? दूर-दूर
…ों की बातें ? दूर-दूर
…ों के :सपने ? दूर-दूर
… आंख न लगने पायेगी

(६)
वह हरा-हरा संसार लुटा
वह भरा-भरा बाजार लुटा
सोने का ही आधार लुटा
अब आंख न लगने पायेगी

(७)
…ो कंकालों की बस्ती
… उनके नयनों में मस्ती ?
…ी गलियां, रोती बस्ती !
… आंख न लगने पायेगी

(८)
तूफान उठा हुंकार उठी
दुखियों की करुण-पुकार उठी
जनता जगको ललकार उठी
अब आंख न लगने पायेगी

(९)
…ी प्रभात-फेरी महान
…ा फिर से जागरण-गान
…े भारत के नौ जवान
… आंख न लगने पायेगी

(१०)
अब अमर-मुक्ति-प्रण ठान लिया
मानव-जीवन पहचान लिया
स्वातंत्र्य दिवससे जान लिया
अब आंख न लगने पायेगी

—श्री वीरेन्द्रकुमार मिश्र, ग्वालियर

प्रकाश-अन्वेषण

वह ज्योति कहां, मेरा प्रकाश ? हो कैसे जग का तिमिर नाश ?
हम हुए तुम्हीं से थे प्रबुद्ध, शुचि सरल सनेही शुद्ध बुद्ध,
आलोक प्रखर मेरा तुम थे, पर आज हुए तुम कहां रुद्ध ?
हूं भूल भूल चल रहा राह, कुछ ओर-छोर कुछ है न थाह,
है अमित भ्रांति नहीं शमित भ्रांति, कैसे हो उरका न्यून दाह
हे स्वतन्त्रते, तेरा प्रणयी, मानव का वह सेवक विनयी,
एकान्त साधनों में रत हो, क्या सोच रहा कुछ बात नयी ?
होगा वह कितना ठौर पूत, है जहां बंधा भारत-सपूत ?
वैभव दिया तन अर्पण करने वाला 'सम' का अग्रदूत।
तन को तेरे कैसी पीड़ा करते जब प्राणों से क्रीड़ा
अविचार-परायणको क्यों हो निज कुत्सित कर्मों पर व्रीड़ा।
कारा वह मथुरा पूत धाम, है राम तुम्हारा अमर नाम,
मेरी काशी होगी वह ही, धरते पग तुम जिस ठौर ठाम।
नवयुग के हे नायक नूतन ! क्या बांध सके कारा-बंधन ?
रवि-रश्मि बादलों से घिर, भू पर करती नर्तन परिवर्तन।
उठती है रह रह यही आश; वह ज्योति, कहां मेरा प्रकाश ?

— श्री 'विमल' बिहारी

गीत

मुस्कान चाहता हूं !
अभिशाप लो तुम्हारे वरदान चाहता हूं ॥
जो आज सामने है वह खल रहा निरन्तर,
है दूर जो कि मुझसे वह छल रहा निरन्तर,
अनजान आज उसकी पहिचान चाहता हूं। मुस्कान० ॥
है दर्द बढ़ा जाता कितनी दवा करूं मैं,
बेचैन हूं जलन से कितनी हवा करूं मैं,
बीमार हूं, दवा है अनुपान चाहता हूं। मुस्कान० ॥
कब रात रे, कटेगी दिनकर कहां लुका है ?
सुन्दर - विहान मेरा तम - जालमें रुका है,
आजाद पंछियों की मैं तान चाहता हूँ। मुस्कान० ॥

—श्री लाला जगदलपुरी

निर्मम से

(१)
निकट होकर भी कहो अब
दूर होते जा रहे क्यों ?
प्राण में घुलमिल चुके फिर
प्यार खोते जा रहे क्यों ?

(२)
आज जीवन में निराशा
औ उदासी छा रही है।
देख लो पीड़ा हृदय की
मूक गति बतला रही है ॥
फूल तज कर शूल निर्मम
चुन पिरोते जा रहे क्यों ?

(३)
जो सहज संगी बने तो
यह बिछुड़ना आज कैसा ?
देख जीवन - पथ अकेला
सज रहे यह साज कैसा ?
स्नेह खोकर बीज विषका
आज बोते जा रहे क्यों ?

(४)
देख लो जी भर नयन का
गूथता हूं आज मोती,
क्योंकि उसमें ही तुम्हारी
पुलक प्रिय तस्वीर सोती ॥
जागरण में, स्वप्न बन तू
आज सोते जा रहे क्यों ?

(५)
राह में कुछ दूर चल कर
एक दिन फिर भी मिलोगे।
इस कटीली डार ही में
फूल बनकर तुम खिलोगे ॥
आज सावन-घन दृगों में
तुम संजोते जा रहे क्यों ?

(६)
फूल की कंजीर कोमल
तोड़ना कितना कठिन है ?
मधुप से प्रिय सीख लेकर
क्यों हृदय-दर्पण मलिन है ?
भूल अपने आप को यों
अधिक खोते जा रहे क्यों ?

—श्री चौहान शास्त्री

"कदम-कदम बढ़ाये जा ?"

आजाद हिन्द फौजने देशमें नवीन स्फूर्ति, साहस और जीवन फूंक दिया है इसका ज्वलन्त उदाहरण गत बुधवारको कलकत्तेके छात्रोंमें देखा गया। सरकारका दमन, उसकी लाठियां और गोलियां आजादीके मार्ग पर 'कदम कदम बढ़ाये जा' गीत गाकर चलनेवाले बलिदानी वीरोंकी प्रगतिको नहीं रोक सकतीं, यदि यह बात अब भी ब्रिटिश साम्राज्यवादियोंकी समझमें आ जाये तो देशके नौनिहालोंका अनर्थक रक्त बहनेसे बच जाय। किन्तु सत्ता और स्वार्थ मदसे उन्मत्त सरकार कभी पिछली घटनाओंसे सबक नहीं सीखती, यह बात १९४२के बाद उस दिन फिर छात्रोंके शब्दोंमें "कलकत्तेमें दूसरा जालियानवाला बाग कांड" उपउपस्थित करके बंगाल सरकारने बता दिया है। विदेशी शासनके विरुद्ध उठे हुए प्रचण्ड असन्तोष और विद्रोहकी भावनाको दबानेके लिये निरंकुश सत्ताएं सदा सर्वदा और सर्वत्र एक ही अस्त्रका अवलम्बन करती हैं और वह है पाशविक दमन। बंगाल सरकार उसका अपवाद नहीं है।

अन्यत्र प्रकाशित विवरणसे यह बात भलीभांति प्रकट होगी कि छात्रोंकी भावुकता—जिससे ब्रिटिश साम्राज्यवादका तख्ता तत्काल उलट जानेकी आशंका नहीं थी—विदेशी नौकरशाहोंको इतनी अप्रिय लगी कि दुधमुंहे बच्चोंकी छातियों को गोलीका निशाना बनानेमें भी उन्हें जरा हिचकिचाहट या द्विधा नहीं हुई। यदि छात्रोंका दल दलहौजी स्क्वायरतक चला जाता तो आसमान जमीनपर न फट पड़ता। ब्रिटेनका साम्राज्य ध्वस्त न हो जाता। किन्तु मदमत्त शक्तियां वास्तविकताको नहीं देखा करतीं। वे अपनी शान (प्रेस्टिज) को किशोर बालकोंके रक्तसे अधिक कीमती समझते हैं। बंगाल सरकारके अधिकारियों के दुराग्रह और छोटे-छोटे बच्चोंकी भावुकताके बीचमें जो संघर्ष उपस्थित हो गया था—यदि अधिकारी जरा विवेकसे काम लेते तो—उसके फलस्वरूप तीन-चार दिनतक कलकत्तेमें जो अराजकता फैली रही उसकी नौबत न आती।

छात्रोंने अद्भुत साहस और दृढ़ संकल्पका परिचय दिया। सरकारको इसका जवाब विवेक और नीतिसे देना चाहिये था। उसके ऐसा न करनेका परिणाम यह हुआ कि पुलिस द्वारा उत्पन्न की गयी भयानक और सनसनीखेज स्थितिसे कुछ व्यक्तियोंने नाजायज फायदा उठाया। यह समझ कर कि इस प्रसंगमें जो कुछ होगा उसकी जिम्मेदारी कांग्रेस और छात्रों पर सहज ही मढ़ दी जायगी, कुछ हुल्लड़बाजोंने अपना रंग दिखाया। कांग्रेस नेतृत्वको बदनाम करनेकी ताकमें रहनेवाली जमातें कुछ लोगों और शहरके विभिन्न भागोंमें फौजी लारियां जला कर अनावश्यक आतङ्ककी सृष्टि की। किंतु कांग्रेस नेताओंने दो दिनके भीतर ही स्थिति को काबूमें करके हुल्लड़बाजों द्वारा भड़कायी गयी अवांछनीय स्थितिको शान्त किया।

इस सम्बन्धमें हम सरकारको जोरदार शब्दोंमें यह बता देना चाहते हैं कि इस सम्पूर्ण स्थितिके लिये जिम्मेदार और जवाबदेह गत बुधवारको घटनास्थलमें उपस्थित पुलिस अधिकारी हैं। यह आकस्मिक घटना नहीं है। मदुरा, लखनऊ और लाहौरकी घटनाओंकी पुनरावृत्ति कलकत्तेमें जान बूझ कर की गयी। यह उसकेलिये लज्जाकी बात है। इस लज्जाजनक काण्डकी सार्वजनिक जांच देशकी मांग है। सरकारको चाहिये कि वह अविलम्ब जांच कमेटी नियुक्त करके अपराधियोंके प्रति उचित कार्यवाही करे। दूसरी बात उसे यह स्मरण रखनी चाहिये कि आजाद हिन्द फौजके प्रति जनसाधारणमें बढ़ते हुए प्रेम और सम्मान तथा ब्रिटिश सत्ताके खिलाफ बढ़ते हुए विद्रोहकी प्रचण्ड भावनाको रोकनेका रास्ता यह नहीं है।

अन्तमें दो शब्द छात्रोंसे। उत्साह, साहस और जोश जीवनके लक्षण हैं। हम उनके इन गुणोंका अभिनन्दन करते हैं। किन्तु ये सब गुण बिना अनुशासन और संगठनके नदीकी विनाशकारी बाढ़के समान राष्ट्रके लिये नुकसानदेह हैं। आशा है कि पण्डित जवाहरलाल नेहरूके इन शब्दोंको, जिनको वे बराबर कहते रहते हैं, छात्र अपने हृदयमें स्थान देकर कांग्रेसके संगठन और अनुशासनके अन्तर्गत रहकर अपनेको स्वतन्त्रता संग्रामके सच्चे सैनिक बनाकर "कदम कदम बढ़ाये जा" गाते हुए "जिन्दगी है कौमकी कौमपर लुटाये जा" आदर्शको चरितार्थ करेंगे।

ज्योतिर्मयी !!—

कलकत्तेमें निहत्थे छात्रोंके ऊपर होनेवाले गोलीकाण्डसे उत्पन्न उत्तेजनापूर्ण स्थितिमें प्रसिद्ध देश सेविका ज्योतिर्मयी गांगुलीकी मृत्यु एक बड़ी ही दुःखद घटना है। ज्योतिर्मयी गांगुली बंगालकी उन इनी गिनी महिलाओंमेंसे एक थीं जिन्होंने शिक्षा और देश सेवाका व्रत लिया और उसका आजीवन बड़ी सचाई और ईमानदारीसे पालन किया। कांग्रेसके कार्योंमें वे सदैव आगे रहती थीं। सत्याग्रह आंदोलनमें कई बार जेल भी गयीं थीं। छात्र आंदोलनमें उनकी बड़ी रुचि थी और वे छात्रोंके सदैव साथ रहती थीं। गत सप्ताह बुधवारको पुलिसने छात्रोंके जुलूसपर गोलियां चलायीं जिससे बड़ा अशान्त वातावरण उत्पन्न हो गया। जब छात्रोंके ऊपर होनेवाले हमलेकी खबर ज्योतिर्मयी गांगुलीको मिली तो वे अविलम्ब घटनास्थलपर पहुंचीं। उन्होंने छात्रोंको धैर्य धारण करने और अनुशासनबद्ध होकर साम्राज्यवादका मुकाबला करने की सलाह दी। उस समय कौन जानता था कि छात्रोंको ऐसा आश्वासन देनेवाली ज्योतिर्मयी गांगुली कुछ ही क्षणोंकी मेहमान हैं। वे दिन भर छात्रोंके साथ रहीं और जगह-जगह जाकर उन्होंने उत्तेजित छात्रों को शांत रहनेके लिये समझाया। शामको जब प्रथम शहीद श्री रामेश्वर बनर्जीका शव केवड़ातल्ला श्मशान घाट पर अन्त्येष्टि क्रियाके लिये गया तो वे उस शहीदके प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने जा रही थीं कि अचानक हाजरा रोड और रसा रोडके मोड़पर उनकी मोटरमें एक फौजी लारीका जोरका धक्का लगा और उनके सिरमें भयानक चोट आ गयी। अस्पतालमें जाकर थोड़ी देर बाद उनकी मृत्यु हो गयी। उनकी मृत्युके संवादसे सारे नगरमें सनसनी फैल गयी। उनकी शव यात्राके साथ हजारों हिन्दू मुसलिम छात्र और अन्य कांग्रेसकर्मी एकत्र हुए थे। ज्योतिर्मयी गांगुलीकी मृत्युसे छात्रोंकी एक सच्ची शुभचिन्तिका उठ गयी। हम परमात्मासे प्रार्थना करते हैं कि वह स्वर्गीय आत्माको शांति प्रदान करे।

स्वतन्त्रता या परतन्त्रता ?—

हमारे पड़ोसी बर्माकी स्थितिपर वास्तविक प्रकाश डालनेवाले समाचारोंका इतना अभाव है कि यह समझना बड़ा कठिन है कि इस समय वहां क्या हो रहा है। बर्माके लोकमतकी उपेक्षा करके वहां जो नयी सरकार बनी है और बर्माके गवर्नर सर रेजीनाल्ड डोरमनस्मिथने उसके बनानेमें जिस तरहकी मनमानी की है वह इस बातका ज्वलन्त उदाहरण है कि ब्रिटिश सरकार अपने मातहत देशोंमें जो थोड़ा-बहुत अधिकार हस्तान्तरित करनेका स्वांग रचा करती है वह भी ऐसे ही व्यक्तियोंको देना पसन्द करती है जो अङ्गरेज अधिकारियोंके पिट्ठू बन सकते हैं। ढोंग और पाखण्डको अपने पशुबल द्वारा लोकतन्त्रोंका रूप देनेमें परम पटु ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ साम्राज्यवादके फैले हुए जालको जरा भी सिकुड़ा हुआ नहीं देखना चाहते। १८ अक्तूबरको सर रेजीनाल्ड डोरमनस्मिथने दम्भपूर्ण ढङ्गसे कहा था कि "बर्माका स्वातन्त्र्य संग्राम समाप्त हो गया।" किन्तु बर्माका बच्चा-बच्चा जानता है कि जापानियोंके चंगुलसे मुक्त हो जाने और कठपुतली सरकार बन जानेसे भी बर्मा की स्थिति वही है जो पहले थी। वह अब भी परतन्त्र है और उसे अपनी महत्वाकांक्षाओंके अनुरूप कार्य करनेकी स्वच्छन्दता तबतक नहीं मिल सकती जबतक उसकी छातीपर ब्रिटिश शासन बैठा है। कितना बड़ा यह दम्भ और ढोंग है। बर्मामें ब्रिटिश शासनकी पुनर्स्थापनाको यह कहना कि "स्वतन्त्रताके लिये बर्माका युद्ध समाप्त हो गया" संसारके साथ-साथ भोलेभाले बर्मावासियोंको धोखा देनेके सिवा और क्या हो सकता है ? किन्तु उनके भुलावेमें बर्मानिवासी नहीं आये, यह बात बर्माके गवर्नर की जो शाही सवारी रंगूनमें निकली थी उसको देखनेसे स्पष्ट हो गयी। लन्दनके "टाइम्स" पत्रके रंगूनस्थित संवाददाताने लिखा है कि जिस मार्गसे होकर बर्माके गवर्नरकी शाही सवारी निकली थी उसमें एकत्रित दर्शनार्थी जनसमूहमें एक भी बर्मी नहीं था।" इससे यह स्पष्ट है कि बर्मी लोग ब्रिटिश शासनको किस दृष्टिसे देखते [illegible] हैं। बर्माका जननेता यू आंग सानके नेतृत्वमें [illegible] बर्माकी जनताने घोषणा की है कि "[illegible] गवर्नर नहीं चाहिये, हमें बर्मियोंका [illegible] चाहिये ब्रिटिश बर्मा नहीं; निर्वाचन [illegible] जनताकी सरकार स्थापित करो।" [illegible] वाक्योंसे सहज ही समझा जा सकता है कि [illegible] 'बर्माका स्वातन्त्र्य युद्ध समाप्त हो गया [illegible] या आरम्भ होनेवाला है। आंगसानके [illegible] शब्द कि "जापानियोंके विरुद्ध हमने [illegible] प्रतिरोध आन्दोलन और युद्ध संगठित किया [illegible] था और हमीने अङ्गरेजोंसे भी मोर्चा लिया [illegible] था" बताते हैं कि बर्मामें वर्तमान ब्रिटिश [illegible] शासनके खिलाफ कितना जबर्दस्त असन्तोष [illegible] है। परतन्त्रताको स्वतन्त्रता बताकर [illegible] मियोंपर लादनेकी ब्रिटिश चेष्टा ही ब्रिटिश [illegible] शासनकी जड़को मिटानेमें सहायक सिद्ध [illegible] होगी, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है। [illegible] किसी राष्ट्रको इस तरह धोखा देकर गुलाम [illegible] रखनेके दिन चले गये।

व्यवस्था बदलेगी !—

परमाणु बमके आविष्कारने संसारको [illegible] त्रस्त कर रखा है। इसके नियन्त्रण [illegible] रहस्यको गुप्त रखने अथवा प्रकट करने [illegible] सम्बन्धमें मित्र राष्ट्रोंमें काफी मतभेद [illegible] ब्रिटेन और अमेरिकाका एक मत है, [illegible] उससे विपरीत। प्रश्न परमाणु बमके [illegible] नियन्त्रण अथवा उसका रहस्य अन्य [illegible] पर प्रकट कर देनेका नहीं है। प्रश्न तो [illegible] भौतिक विनाशकारी परमाणु बमका [illegible] है बल्कि छोटे छोटे राष्ट्रोंकी स्वतन्त्रता [illegible] दबा कर अपने स्वार्थके लिये उनपर [illegible] पत्य जमाये रखनेकी महत्वाकांक्षा [illegible] माणु बमको नियन्त्रणमें लानेकी है। [illegible] महासमर (१९१४-१८) के बाद निरस्त्रीकरण [illegible] करण और घातक अस्त्रोंके आविष्कार [illegible] रोक लगानेके कितने ही प्रयास किये [illegible] किन्तु एकके बाद एक सभी प्रयत्न व्यर्थ [illegible] गये और इस दूसरे महासमरमें भांति-भांति [illegible] प्राण संहारक शस्त्रास्त्रोंका आविष्कार [illegible] और प्रयोग हुआ और यदि यह वर्तमान [illegible] व्यवस्था बनी रही तो परमाणु बमसे [illegible] भयंकर और क्षण मात्रमें संसारका [illegible] कर सकनेकी क्षमता रखनेवाले शस्त्रास्त्रोंका [illegible] आविष्कार होगा। अतएव संसारके [illegible] धार समझे जाने वाले या अपनी [illegible] कांक्षाओंके कारण पशु बलके सहारे [illegible] बन बैठने वाले राष्ट्र जबतक अपनी [illegible] रवैय्याको न बदलेंगे तबतक परमाणु [illegible] नियन्त्रण रखने या रोक लगानेकी [illegible] व्यर्थ है। कामन सभामें उस दिन [illegible] प्रश्नों पर बहस आरम्भ करते हुए [illegible] प्रधान मन्त्री मि० एटलीने कहा है कि [illegible] सभ्यता, संस्कृतिको बचाये रखना [illegible] प्रथम और द्वितीय महासमरोंकी पुनरावृत्ति [illegible] बन्द होनी चाहिये।" आपने आगे [illegible] यह भी कहा है कि "राष्ट्रोंके आपसी [illegible] से सिर्फ परमाणु बमका अस्तित्व [illegible] की बात मैं नहीं सोचता बल्कि [illegible] की उस व्यवस्थाको मिटानेकी बात [illegible] मस्तिष्कमें है जिसके चलते विनाश [illegible] के हाथोंमें इस तरहके भयंकर [illegible]

[इण्ड]ोनेशिया

[ज]ावाके मध्यवर्ती नगर सेमरांगकी [स्थि]ति चिन्ताजनक हो गयी है। एक इण्डो[नेशि]यन ब्राडकास्टने अंगरेजोंके विरुद्ध युद्ध [घोषि]त की है और राष्ट्रवादियोंसे सेमरांग [के] लड़ाकू राष्ट्रवादियोंको सहायता [पहुंचा]नेकी अपील की है। ब्रिटिश सेनाएं [...] अशांत क्षेत्रमें तेजीसे सफायेकी कार्य[वाही] कर रही हैं। इण्डोनेशियन गवर्नर [गिर]फ्तार कर लिया गया है। इण्डोनेशियन [ब्राडका]स्टमें आम विद्रोहकी धमकी देते हुए [कहा] गया है कि शांतिकी यह अन्तिम रात्रि [है, हम] या तो अंगरेजोंको मार डालेंगे या [उन्हें देश]के बाहर खदेड़ देंगे। इससे जावामें [गृहयु]द्धकी सम्भावना बढ़ गयी है। इससे [इण्डोने]शियन नवयुवकोंके उस निश्चयका [पता चल]ता है जिसके द्वारा वे सेमरांगके मह[त्वपूर्ण] नगरपर अधिकार करना चाहते थे। [...]र्ती क्षेत्रोंमें इण्डोनेशियन सेना जापा[नियों]से छीने गये शस्त्रास्त्रोंसे भलीभांति [सुसज्जित है]।

[...]ते। ऐसी हड़ताल कलकत्तेमें बहुत [...] नहीं देखी गयी थी। छात्रोंमें [...], कम्यूनिस्ट, लीग, हिन्दू सभा और [...]रों—सबने मिलकर एक कमेटी बना [...]ने उत्तेजित जनताको शान्त करने [...]गेकी कार्यवाहीपर विचार करनेका [...]। कांग्रेसकी ओरसे जनताको सही [...]नेका अथक प्रयास किया गया लेकिन [...] विभिन्न भागोंमें उत्तेजित जनता[...] ही प्रदर्शन आरम्भ कर दिया। [...] अधिकारियोंने कलकत्तेके सभी [...] पुलिसको हटा लिया था अतएव [...]पर नियन्त्रण करनेका भार भी [...] ही पड़ा। सैनिक लारियोंकी [...] रफ्तारके कारण कई व्यक्तियोंकी [...] और कई घायल हुए। श्रीमती [...]ी गांगुली भी एक फौजी लारीकी [...]ा गयीं और अस्पतालमें उनकी [...] गयी। अतः उत्तेजित हो जनताने [...] गाड़ियोंमें आग लगा दी। इसके [...]क भी मोटरोंमें सवार हो समस्त [...]यों की बौछार करते रहे जिसके [...]स्वरूप शुक्रवारको ९ व्यक्तियोंकी [...] और ९६ घायल हुए। बङ्गाल [...] कांग्रेस और बड़ाबाजार, दक्षिण [...] केन्द्रीय कलकत्ता जिला कांग्रेस [...]के कार्यकर्त्ता समस्त दिन जनताको [...]रनेमें व्यस्त रहे। कारपोरेशन [...]योंकी हड़तालके कारण शहरमें [...]लना बन्द हो गया और इससे [...] और भी कष्ट हुआ। इधर ही रेल[...] आवागमन भी दिन भर रुका [...]किन कांग्रेस नेताओंकी सफाईसे [...]न्त हो गयी और शनिवारका [...] पूर्ण शान्त वातावरणमें हुआ। [...] फिरसे साधारण स्थिति आ गयी [...] अपने कामोंमें लग गये, किन्तु [...] गोलीसे मृत व्यक्तियोंकी याद [...]स्थितिपर सदैव रहेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय

मंचूरियाके भविष्यपर वार्ता

चीनी केन्द्रीय सरकारकी सेनाएं शीघ्र ही फारमूसाके पश्चिमी तटपर उतरेंगी। फारमूसा चीनके तटके समीप एक घनी द्वीप है जिसे चीनने १८९९ में जापानको दे दिया था। द्वीपके पश्चिमी भागमें लगभग ६० लाख चीनी हैं जिनका प्रमुख कारबार चीनी है। २० से अधिक चीनी उद्योग केन्द्र एक दिनमें ३०००० टन चीनी तैयार करते हैं। यहां अनेक प्रकारके खनिज पदार्थ भी पाये जाते हैं। विश्वकी तीन राजधानियों चुङ्किंग, मास्को तथा वाशिंगटनमें मंचूरिया के सम्बन्धमें बातचीत चल रही है। चुङ्किङमें परराष्ट्र सचिव मि० वांग शी चीह (मार्शल चांगके प्रतिनिधि) वाशिंगटनमें रूसी राजदूत मि० अपोलोन पेट्रोवसे प्रायः प्रतिदिन बातचीत कर रहे हैं। चीनी दूत मि० वी० वाओमिंग अमरीकी मन्त्री मि० जेम्स बायरन तथा रूसी राजदूतसे बातचीत कर रहे हैं। मास्कोस्थित चीनी राजदूत मोशिये मोलोटोवसे भी मिल रहा है। उपपरराष्ट्रमन्त्री डा० लिऊकाईने कहा है कि मंचूरियाके रूस अधिकृत क्षेत्रोंपर चीनी सरकारी सेनाओंके अधिकारके लिये मास्को तथा चुङ्किङमें बातचीत चल रही है।

ब्रिटेनको ऋण

अमेरिकाने एक नयी योजना ऋणके सम्बन्धमें समुद्री तार द्वारा लन्दन भेजी है। ऋण सम्बन्धी वार्ताको सफलताके साथ समाप्त करनेका यह अन्तिम प्रयास बताया जाता है। किन्तु इस योजना पर भी दोनों राष्ट्र एक मत हो सकेंगे, इसमें सन्देह है। ब्रिटेन ४९५० करोड़ डालर मांगता है किन्तु अमेरिका केवल ४०० करोड़ डालर कर्ज देना चाहता है। इस कर्जमें उन वस्तुओंका भी मूल्य सम्मिलित होगा जो कि विजय दिवसके बाद ब्रिटेनको दी गयी हैं। यह ऋण किस तरह और कब चुकाया जा सकेगा, इस सम्बन्धमें भी ब्रिटेन और अमेरिकामें अभी मतभेद है।

चीनमें गृह संघर्ष जारी

चीनमें कम्युनिष्ट और कुओमिनतांग सेनाओंके बीच भीषण संघर्ष अबतक जारी है। भीतरी मंगोलियाके पावतोव नामक स्थान पर राष्ट्रवादी दुर्ग पर कम्युनिस्टोंने अधिकार कर लिया है। राष्ट्रवादी सेनाएं भी कुछ क्षेत्रोंमें बढ़ रही हैं और मंचूरियाके प्रवेश द्वार हैंकान पर चीनकी विशाल दीवारसे होकर अधिकार कर लिया गया है। कम्युनिस्टोंका कथन है कि यह चीन का गृह युद्ध नहीं वरन चीनी जनताके खिलाफ अमेरिकन फौजोंका युद्ध है। चीनमें शान्ति स्थापनाके सभी प्रयास अबतक विफल हो चुके हैं।

फ्रांसमें नया मन्त्रिमण्डल

जेनरल डी गालने लम्बे मतभेद और विचार-विमर्शके बाद एक संयुक्त दलीय मन्त्रिमण्डलकी स्थापनाकी घोषणा कर दी है। प्रधान मन्त्री होनेके साथ-साथ वे स्वयं इसमें राष्ट्रीय सुरक्षा मन्त्री भी रहेंगे।

जेनरल डी गालके अतिरिक्त उक्त मंत्रिमण्डलमें २१ मन्त्री और हैं। वहांके तीनों प्रमुख दल कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और प्रगतिशील कैथालिक्स दलमेंसे पांच पांच सदस्य प्रत्येकके इसमें लिये गये हैं। दो सदस्य प्रजातन्त्रीय समाजवादी प्रतिरोधी दलके, एक रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टीमेंसे एक सदस्य नरमदली प्रजातन्त्रीय दलमेंसे और दो निर्दल सदस्य इसमें सम्मिलित किये गये हैं।

फारसमें गृह संघर्ष

उत्तर पश्चिमी फारसके अजरबेजान प्रान्तमें मिनेह नामक स्थानपर आलोच्य सप्ताहमें भीषण युद्ध आरम्भ हो गया है! अजरबेजानकी राजधानी तेबरीजमें भी युद्ध जारी है। ईरानी सेनापतिने शक्तिके उपयोग द्वारा युद्धको दबानेकी धमकी दी है। फारसी पत्रोंने इस उपद्रवका कारण विदेशी शक्तियोंकी उपस्थिति बतलाया है। फारस का एक प्रतिनिधिमण्डल रूस जाकर फारस में उत्पन्न गम्भीर स्थितिपर विचार करेगा!

महान त्रयका सम्भावित सम्मेलन

लन्दनमें वैदेशिक सम्मेलनके स्थगित हो जानेके बादसे जो समस्यायें अभीतक उलझी रह गयी हैं, उन्हें शीघ्र सुलझानेकी आवश्यकता अनुभव करते हुए, ऐसा समझा जाता है कि महान त्रय सम्मिलन फिरसे हो। प्रेसीडेण्ट ट्रूमैनने निश्चय किया है कि महान त्रयकी बैठक अमेरिकामें होनी चाहिये। ऐसा समझा जाता है कि इस सम्मेलनमें सभी प्रस्तुत समस्यायें हल हो जायेंगी। मि० एटली तो इसमें सम्मिलित होंगे ही, जनरलिस्सिमो स्टालिन किसी भी समय छुट्टीसे वापस आ सकते हैं। यह देखते हुए राजनीतिक पर्यवेक्षक ब्रिटिश-अमेरिकन-रशियन मामलेमें प्रगतिकी शीघ्र आशा कर रहे हैं। महान त्रयके सामने ४ प्रमुख समस्यायें हैं। परमाणु बमपर तीनों राष्ट्रोंका संयुक्त निर्णय, जापान का नियन्त्रण तथा शान्ति समझौते आदिके प्रश्नपर विचार होना है। यद्यपि तीन राष्ट्रोंने परमाणु बमके सम्बन्धमें जो निर्णय किया है, उसकी प्रतिक्रिया रूसमें सरकारी तौरपर व्यक्त नहीं की गयी है। त्रिनायक सम्मेलनमें ही यह सामने आयेगी। जापान के सम्बन्धमें रूसका रुख यह है कि जर्मन पराजयमें रूसका प्रमुख हाथ रहा है परन्तु जर्मनीके नियन्त्रणमें सभी राष्ट्रोंको समानाधिकार प्राप्त है उसी प्रकार जापानके नियन्त्रणमें भी भी रूसको पूरा भाग मिलना चाहिये। वैदेशिक मन्त्रियोंका भी एक सम्मेलन होनेकी सम्भावना है परन्तु यह सम्मेलन महान त्रय सम्मेलनके बाद होगा।

सरकारके विरुद्ध निन्दा प्रस्ताव

पहलेकी चर्चिल सरकारके समयके भूतपूर्व मन्त्रिगणकी एक बैठकने निर्णय किया गया है कि आगामी सप्ताह मि० विन्स्टन चर्चिलके नेतृत्वमें अनुदारदलीय विरोधी दल ब्रिटिश मजदूर सरकारके विरुद्ध निन्दा का प्रस्ताव उपस्थित करे। उक्त प्रस्तावमें मजदूर सरकारकी राष्ट्रीयकरण कार्यक्रमकी अक्षमता, फिजूल खर्ची, गृह-निर्माण तथा सैन्य विघटन आदि प्रश्नोंको लेकर आलोचना की जायगी। अगस्तमें कार्य-भार ग्रहण करनेके बाद मजदूर सरकार पर यह पहला निन्दा-प्रस्ताव होगा।

फ्रांसमें नयी सरकार

फ्रांसमें कम्युनिस्टोंके विरोधके कारण कुछ समयके लिये वहां जो गतिरोध उत्पन्न हो गया था और जिसके परिणामस्वरूप जेनरल डि गौलने पदत्याग कर दिया था, उसका समाधान फ्रेंच विधान निर्मात्री समितिके निर्णयके पश्चात हो गया। समितिने जेनरल डि गौलेसे अनुरोध किया कि वे अपनी अधीनतामें एक संयुक्त सरकार की स्थापना करें और जेनरल डि गौलने २१ सदस्योंका एक मन्त्रिमण्डल कायम कर लिया। इस मन्त्रिमण्डलमें ५ कम्युनिस्ट, ५ सोशलिस्ट, ५ प्रगतिशील कैथोलिक, २ रिपब्लिकन सोशलिस्ट, १ रेडिकल सोशलिस्ट, १ माडरेट रिपब्लिकन और २ निर्दल सदस्य हैं। जेनरल डि गौलने स्वयं प्रधान मन्त्री और रक्षामन्त्रीका कार्यभार ग्रहण किया है। फ्रांसकी इस संयुक्त सरकारको सभी प्रमुख दलोंका पूर्ण सहयोग प्राप्त है और ऐसी आशा है कि यह सरकार अपने देशका शासन सकुशल कर सकेगी।

डच फौजें हटायी गयीं

स्वतन्त्र इण्डोनेशियाको फिरसे गुलाम बनानेके लिये साम्राज्यवादियों द्वारा वहां अपनी पूर्व घोषित नीतिका उल्लंघनकर जिस प्रकार शक्तिका उपयोग किया जा रहा है, उसके खिलाफ इण्डोनेशियन देशभक्त भी प्राणोंकी बाजी लगाकर युद्ध कर रहे हैं। बटाविया, सेमरांग, मेगलेंग आदि नगरोंमें कई सप्ताहोंतक खूंखार युद्ध होनेके बाद डच और अम्बोनी फौजोंको अब वहांसे हटा लिया गया है। ब्रिटिश सरकारने डच सत्ता की फिरसे स्थापना करना अपना एक महत्वपूर्ण दायित्व घोषित किया था और इण्डोनेशियापर फिरसे अधिकार करनेके लिये ब्रिटिश और भारतीय सेनाओंको भेजा था, लेकिन भारतीय नेताओं और जनताके तीव्र प्रतिवादके कारण अब भारतीय सेना की कुछ टुकड़ियोंको वहांसे हटा लिया गया गया है। ब्रिटिश सरकारके कार्योंके खिलाफ जावामें अत्यधिक क्षोभ प्रकट किया जा रहा है और वहां इतने रक्तपातका प्रधान उत्तरदायी ब्रिटेनको ठहराया जा रहा है। जावाकी स्थिति इस समय इतनी खतरनाक हो चुकी है कि यदि कोई विवेकपूर्ण कार्रवाही अतिशीघ्र नहीं की गयी तो सारे एशियामें अंग्रेजोंके खिलाफ अत्यन्त उग्र भावना व्याप्त हो जायगी।

गोदावरीकी हंसी

श्री. रा. वीलीनाथम्

सन्ध्याका समय था। दिनकर सौभाग्यवतियोंकी भांति, शरीरमें लाल-सिंदूर लगा कर गोदावरी नदीके पवित्र-पुनीत जलमें स्नान करने जा रहा था। खगगण अपने घोंसलेकी तरफ उड़ने लगे थे। चौपाये अपने अपने निवास स्थानको लौट रहे थे। परिश्रमी मजदूर दिन भरके अथक परिश्रमसे छुट्टी पाकर, शहरके कोलाहल और शोर-गुलसे बचते हुए, अपनी थकान उतारनेके लिये, अपने अपने निवास स्थानकी तरफ कदम बढ़ा रहे थे। शहरके सभ्य समाज-संघ और क्लबमें, भीड़ मक्खियों की तरह जमा हो गयी। शहरियोंमेंसे एक-मैं, गोदावरीके किनारे किनारे हवाखोरी के लिये जा रहा था।

बहुत दूर तक शहरी हवा ही बह रही थी। एक जगह पर दो सेठ खड़े, इंगलैण्ड-की तरफ बहनेवाले स्वर्ण-प्रवाहके बारेमें बातें कर रहे थे। एक दूसरी जगह कालेजके कुछ छात्र अपने जापानी रेशमके पायजामे और 'पोलो कालर शर्ट' पर मुग्ध होकर तारीफके पुल बांध रहे थे।

और कुछ आगे बढ़ा तो शहरकी हवा का बहना बन्द हो गया और गांवकी हवा-का बहना प्रारम्भ हो गया। गोदावरीसे निकल कर, किनारेके वृक्षोंके गले लग कर हवा बह रही थी। पेड़ोंके हरे हरे पत्ते शामके मन्द-मारुतमें, हिंडोलेसे झूलते हुए नजर आते थे। शहरी मोटरोंकी धूल न लगनेसे, वे स्वच्छ थे। नदीके दोनों किनारे घने पेड़-पौधे उगे हुए थे। उन पेड़-पौधोंके मध्य, छोटी वयसकी तीन सलोनी लड़कियां खेल रही थीं। उनके पैरोंमें चप्पल थे। शहरकी लड़कियोंकी तरह, उनके पैरोंमें मखमलकी जूते शोभित नहीं थे। जूते उनके पैरोंकी शोभा नहीं बढ़ा रहे थे, बल्कि उनके पद पद्म, चप्पलोंकी शोभा बढ़ा रहे थे। उनकी पोशाक जापानी रेशमकी नहीं थी, बल्कि हिन्दुस्तानके बने मोटे सादे कपड़ोंकी ही थी। मेरी आंखें सभ्य नारी-मणियोंकी सजावट देखनेकी ही अभ्यस्त थीं। पर उस दिन लड़कियोंके उस सादे लिबासहीमें मैंने उनका सच्चा सौन्दर्य देखा। कृत्रिमता और प्रकृतिका भेद तभी मैं जान पाया। उनका सौन्दर्य शहरकी लड़कियों-की तरह 'पाउडर' 'लिपस्टिक' वगैरहकी मदद नहीं चाहता था। उनकी सजावटमें जापान या इंगलैण्डकी बू नहीं लगी थी। नदी-तटके पलाश-पुष्पकी तरह उनका लावण्य प्रकृतिका ही आश्रित था। प्राकृतिक सौन्दर्यसे सुशोभित उन घने वृक्षोंके मध्य वे प्रकृति-सुन्दरियां क्या कर रही थीं? हां, पेड़ोंकी डालियों पर बैठी चिड़ियोंके मधुर-गानको सुन कर उनके कण्ठोंने भी रागको गुनगुनाना शुरू कर दिया! और गोदावरी-की तरंगें, उनके स्वर पर ताल देने लगीं। पर उनके गानोंका रसास्वादन करनेके योग्य कान, सभ्य जनोंमें कहां थे!

दिनकर आकाशके करीब नदीमें डूब गया था। चूल्हा जलाने लायक लकड़ी सूखे पत्ते वगैरह टोकरीमें भरकर, वे तीनों लड़-कियां घरको रवाना हुईं। मुझे रास्तेमें देखा तो खूंखार जानवरोंके पंजेसे बच कर भागनेकी कोशिश करनेवाली हिरनियोंके समान, वे तीनों लड़कियां तेजीसे कदम बढ़ाने लगीं। अगर मैं अंग्रेजी सभ्यताहीमें पला होता तो उनको 'पशु' कह कर ताना मारता। पर जरा गौर करने पर विदित हुआ कि मैं ही 'पशु' हूं। क्योंकि वे असली पौधेके खिले सच्चे फूल थे और मैं नकली पौधेके कागजका फूल था।

मैंने भी पीछा करनेके विचारसे अपने पांव तेज किये। संक्रांति निकट थी। इस लिये वे लड़कियां संक्रांतिके अवसरका गाना गाते हुये चल रही थीं। गाना श्रवण करने की लालसा पैदा हुई तो समीप पहुंच गया। मेरा समीप जाना था कि उन लोगोंने गाना बन्द कर दिया और मुझे घूर-घूर कर ताकने लगी अतः मैंने अपनी चाल धीमी कर दी।

ग्वाल-बालक गाय-बैल, भैंस आदिको लेकर गांवकी ओर लौट रहे थे। मैंने उन लोगोंसे प्रश्न किया कि ये सब आप लोगों-की ही हैं? शायद इस विचित्र प्रश्नने उन लोगोंको अचरजमें डाल दिया। उन्होंने सिर हिलाते हुए उत्तर दिया कि हमारी ही तो है। कई स्त्री-पुरुष शहरसे सामान खरीद कर टोकरियोंमें रखे, सिर पर ढोते हुए, गांवको लौट रहे थे। कई एकके सिर पर खाली टोकरियां थीं। उन टोकरियोंमें गांव की चीजें शहरमें बिकने जाया करती थीं। प्रत्येक किसी न किसी कामसे ही शहर जाया करता था। उस वक्त, उस नदीके किनारे, पढ़ा लिखा व निष्काम व्यक्ति सिर्फ मैं ही था।

वे तीनों लड़कियां तरह तरहकी बातों-में लगी हुई थीं और गांवकी तरफ अग्रसर हो रही थीं। मैं भी उनका पीछा कर रहा था। कभी मेरी दृष्टि उन सुन्दरियोंकी गर्दन पर पड़ती, कभी उनकी दृष्टिसे मिल जाती। कभी अस्त होनेवाले स्वर्ण-मय सूरजकी झलकमें मेरी आंखें उलझ जातीं। थोड़ी देरमें हम गांवमें पहुंच गये। गायें अम्मां पुकारती हुई अपने बछड़ोंकी खोजमें तेजीसे घरकी राह ले रही थीं। और वे किशोरियां भी अपने घरमें पदार्पण कर रही थीं।

दिन-भरके अथक परिश्रमके बाद अपनी अपनी मजदूरी लेकर, मां-बाप थके हुए, घरमें कदम रख रहे थे। लड़कियां जो लक-ड़ियां ले आई थीं, उससे चूल्हा जलाया गया और खाना पकना शुरू हुआ। उसी दिनका कमाया धन-धान और उसी दिनकी इकट्ठी की गयी लकड़ी उसी दिन काम आयीं! कल उन लड़कियोंको लकड़ी लाने, और मां बापको धन-धान कमाने बाहर जाना पड़ेगा! उनमें और चिड़ियोंमें कोई भेद नजर नहीं आता। उन दोनोंको अपने सृष्टि कर्ता पर पूरा-पूरा विश्वास है। आप किसी चिड़ियासे जाकर पूछिये कि 'तुम रोज रोज खानेकी चीजोंकी तलाशमें व्यर्थ क्यों कष्ट उठाती हो? कम-से कम एक हफ्तेके लिये तो सही, एक ही दिनमें खाना क्यों इकट्ठा कर नहीं रखती? तो वह यही जवाब देगी कि इस दुनियाको जिस शक्तिने रचा है, वह सकल जीवोंके लिये, जितना चाहिये, उतनाही अन्न रोज तैयार करती है। हम एक ही दिनमें चार पांच दिनोंके वास्ते इकट्ठा कर रखें तो बाकी जीव भूखों मर जायेंगे न? इसी लिये हम इकट्ठा नहीं करतीं।

इस जवाबका तात्पर्य—तत्व, मुझ जैसे सभ्य और शिक्षित व्यक्तियोंकी समझहीमें नहीं आता या असर नहीं करता।

सूरजके अस्त होते ही अंधेरा छा गया और ग्रामवासी भोजनादिसे निवृत्त होकर सोनेका उपक्रम करने लगे। मैं गोदावरीके किनारे किनारे नगरकी तरफ रवाना हुआ! रास्तेके पेड़ भी ऊंघने लगे और पेड़ों पर घोंसला बना कर निवास करनेवाले पक्षी भी प्रगाढ़ निद्रामें निमग्न हो गये। जल प्रवाहके मीठे स्वरोंका आनन्द लेता हुआ शहरमें प्रवेश किया तो क्या देखता हूं कि शहरी अभी घरका ख्याल हो नहीं कर रहे हैं।

नागरिक-जीवनके मेरे मनमें घृणा-सी पैदा हुई और उस गांवमें जाकर रहनेकी तीव्र अभिलाषा होने लगी। ख्याल आया कि प्रति दिन ग्वालोंके साथ गाय चराने जाता और किसी घने वृक्षकी छाया में बैठ कर प्रकृति-माताका प्यार पाता, तो जीवन आनन्दसे बीतता। गोदावरीका जल पान करके प्रकृति-माताकी गोदमें लोटूंगा, या उन किशोरियोंके साथ हाथमें टोकरी लिये, देशी जूते पहन कर, घने पेड़-पौधोंके बीच लकड़ी जमा करता फिरूंगा। उन किशोरियोंके स्वरसे स्वर मिला कर मैं भी मस्त होकर गाऊंगा। चिड़ियोंका मधुर गीत हम लोगोंका साथ देगा, और गोदावरीकी कलकल ध्वनि तालका काम देगी। हां, एक दिक्कत सामने है, मैं तो वास्तवमें ऊपरी सभ्यता—कृत्रिमतामें पला और बढ़ा हूं। मुझ जैसे कृत्रिमताके वातावरणमें पले व्यक्तियोंको वे किशोरियां पास पहुंचने देंगी क्या? कहा जाता है कि आदमीके हाथ पली चिड़िया भी अपनी जमातसे बहिष्कृत की जाती है। तो वे किशोरियां मुझे अपनी जमातमें शामिल होने कैसे देंगी?

अब, और भी वह इच्छा—उस गांवमें जाकर निवास करनेकी—अभिलाषा तीव्रतर होती गयी। लेकिन साथही साथ यह भी विचार आया कि मैं उस जीवनके योग्य नहीं हूं। मेरे हाथ सख्तसे सख्त काम करने के आदी न थे। मेरे पैर ऊबड़-खाबड़ भूमि पर चलनेके अभ्यस्त नहीं थे। कीचड़ और दलदल भरे रास्ते पर—या खेतकी मेड़ों पर जानेको सकुचानेवाले थे, मेरे पांव। धूप और सरदीको बर्दाश्त करना, मेरे शरीरने सीखा न था। मैं हमेशा तकलीफसे बचने का ही रास्ता ढूंढ रहा था। मेरे पैर जमीन पर पड़नेके पहलेही, व्याधिके कीटाणुओंको आकर्षित कर लेनेकी कला, हूबहू सीखे थे। मेरे हाथ मोटी मोटी किताबें उठा सकते थे, पर एक छोटा पत्थर उठानेमें असमर्थ थे। मैं तो अपढ़ नहीं था—जो कुछ मिला उससे तृप्त हो जाना चाहता था। मैं तो अपनी विद्याके बलसे इस दुनियाको ही खरीद लेना चाहता था।

हां, लेकिन, फिर भी मैंने अपने मनमें कर लिया और निश्चय कर लिया कि उन लोगोंको पढ़ना-लिखना सिखाऊंगा, उससे जो आमदनी होगी—उससे जिन्दगी बसर करूंगा। ग्रामवासियोंके सुख-दुखमें मैं भी भाग लूंगा। मैं शक्ति भर उनकी मदद करूंगा तो वे ऋणी बन जायेंगे और आभार मानेंगे। मैं उनकी उस कृतज्ञताके द्वारा भलाइयां प्राप्त करूंगा।

फिर सोचा, यह क्या मनमें... छिः उनको लिखना-पढ़ना सिखा... पैसेसे पेट पालनेमें कौन-सी बड़ाई—बड़ी सेवा—है? मेरी जीविकाका भार बेचारे ग्रामवासी क्यों उठावें! ... चाहता हूं कि ये ग्रामवासी मेरे ... जायें। धिक्कार है मेरी इस ... को! क्या, मजदूर—नौकर ... को, अपना ऋणी बनानेके ... काम करता है? लकड़ी बटोरनेवाली किशोरियां अपने मां-बापसे कृतज्ञता की आशा रखती हैं? गाय भैंस आदि इस मानव समूहसे प्रत्युपकार देखती हैं? तब मैं—पढ़ना लिखा... नेवाला मैं—क्यों इन ग्राम... प्रत्युपकारकी आशा रखता हूं!

आखिर, कल्पनाने दुबारा ... बदली। क्यों न कुछ दिन यहां रहनेके बाद एक छोटा-सा घर ... और लकड़ी बटोरनेवाली उन ... से किसी एकके साथ शादी कर ... गांवमें गृहस्थी बसा लूं।

(शेषांश १८ वें पृष्ठपर)

विचारशील बनिये

——:०***:०——

(लेखक—श्री लक्ष्मीनाथ श्रीवास्तव)

यदि आप अपने किसी मित्रको यह सलाह दें कि वह विचारनेकी आदत डाले, छोटोंको आशीर्वाद देते समय बड़े-बूढ़े—'चिरायु हो, दीर्घायु हो !' इत्यादि न कह कर यदि सिर्फ यह कहें कि—'विचारवान बनो' तो उपरोक्त मित्र और आशीर्वादका पात्र दोनों ही कहने वालेके प्रति एक प्रकार की मौन उपेक्षाका भाव दर्शायेंगे—'अच्छी सलाह दी ! हुं मानो मुझे विचार करनेकी शक्ति ही नहीं।' पर वास्तवमें इस नेक सलाहकी खिल्ली अधिकतर लोग इसी कारण उड़ायेंगे क्योंकि उनमें विचार शक्ति का अभाव ... विचारवान होते तो समझते कि इस समाचारका मूल्य क्या है। मनुष्यकी मनुष्यता तो विचारवान् बननेमें है, पर उसने इसे ही त्याग दिया है। हम महसूस करते हैं, चिन्ता करते हैं, माथापच्ची करते हैं पर विचार नहीं करते। हालांकि अपनी गलतीसे इन्हीं मनो विकारोंको विचार करना समझते हैं। और जिसे विचार कहना चाहिये उसे यदि करते भी हैं तो नहीं ही के बराबर। यही वजह है कि हमारा जीवन इतना दुखमय, बोझिल और सारहीन-सा लगता है। अपनी मूल भित्तिको खोकर प्राणी क्या, वस्तु मात्र ही अस्थिर हो जाती है। इसीलिये मनुष्य आजीवन व्यर्थ की परेशानियोंमें पड़कर छटपटाते रहते हैं। इसी भावनाको दृष्टिकोणमें रखते बर्नार्ड शाने कहा है कि ईश्वरको आखिर मानवो-तर प्राणियोंकी सृष्टि करनी होगी। मनुष्य सृष्टिकर्ताके कार्यको पूरा नहीं कर रहा। सृष्टिने जिस आशासे उसका निर्माण किया था उससे नहीं बन पड़ रहा है। वह सदा अपनेको अयोग्य सिद्ध करता जा रहा है।

वास्तवमें देखा जाय तो आजके युगमें मानव जातिको सबसे बढ़कर जिस बातकी आवश्यकता है वह है विचारवान बननेकी। यही कारण है कि एक तरफ तो विज्ञान और साहित्य इत्यादिकी उन्नति चरम सीमाकी ओर चली जा रही है दूसरी ओर उसी अनुपातमें दुख, अशान्ति, संघर्ष एवं अत्याचार का ताण्डव नृत्य हो रहा है। दुनियां बेचैन है और बार-बार लगता है जैसे अपार संघर्षों में अपनेको स्वयं सन्निविष्ट कर मानव समाज रसातलमें पहुंच कर ही दम लेगा।

अंगरेजीकी कहावत सत्यमें किसी कहानीसे भी अधिक विचित्रता है। (Truth is stranger than fiction) इस सम्बन्धमें पूर्णरूपेण लागू होती है। मनुष्य मात्रमें विवेक शक्ति अपेक्षित है, तथा वह अपनेको विवेकशील समझता भी है, पर वास्तवमें वह इससे कोसों दूर है, बल्कि विचारशीलतामें उसने पशु जातिकी भी कान काट ली है। प्रत्येक धर्ममें उपासनाको दैनिक जीवनका प्रधान कर्तव्य माना गया है। उसका तात्पर्य भी यही है कि प्रत्येक मनुष्य नियमित रूपसे आत्म चिन्तन एवं आत्म विश्लेषण किया करे। प्राचीन विद्वानोंने जीवनमें इसकी अनिवार्य आवश्यकता अनुभव कर ही इसे सबके लिये उपयोगी विधान बनाया था। आजके मनोवैज्ञानिक आत्म-विश्लेषण तथा आत्म शक्ति जैसे शब्दोंका नामकरण कर अपनी मौलिकता पर गर्व करते हैं पर उन्हें और बहुत लोगोंको नहीं मालूम कि ये चीजें उतनी ही पुरानी हैं जितना हमारा धर्म। पूजा या उपासना सफल नागरिक बननेकी ट्रेनिंग (आत्म दीक्षा) है। यह निश्चित है कि जो नित्य नियम पूर्वक (पर वास्तवमें) आत्म चिंतन अथवा आत्म विश्लेषण करेगा उसका जीवन निरन्तर आनन्दमय संतुलित एवं शांतिमय बनता जायगा। उसकी आत्मशक्ति भी प्रबलतर होती जायग। तथा वही सच्चे अर्थोंमें मनुष्य कहलानेका अधिकारी होगा। इसीलिये शास्त्रोंमें कहा गया है—

"तरवो हपि हि जीवन्ति
जीवन्ति मृग पक्षिणः
सजीवति मनोयस्य
मननेन हि जीवति"

अर्थात् जीते तो पेड़ पौधे, पशु, पक्षी सभी हैं। पर वास्तवमें वही जीता है जिसका मन मनन द्वारा जीता है। यहां मननका तात्पर्य आत्म चिन्तन एवं आत्म विश्लेषण ही है।

नित्य नियमित रूपसे आत्म चिन्तन एवं आत्म विश्लेषण करनेका अभ्यास कीजिये। पर ध्यान रहे कि यह कार्य ऐसे समय पर होना चाहिये जब आप बिल्कुल निश्चिन्त हों। 'माया', 'ब्रह्म' और 'विराट' जैसे दुरूह विषयोंको लेकर माथापच्ची करने की जरूरत नहीं। जीवन और जगतसे सम्बंध रखनेवाले विषयों पर विचार कीजिये। आजका दिन आपने किस प्रकार बिताया? दैनिक जीवनके विभिन्न कार्योंमें, व्यवहारों में आपने न्याय, निर्भयता, औचित्य एवं मर्यादाका पालन किया अथवा नहीं? जिस प्रकार अभिनय समाप्त हो जानेपर अभिनेता अपने अभिनयके गुण दोषोंपर निष्पक्ष होकर विचार करता है, उसी भावसे अपने दैनिक जीवनपर दृष्टिपात किया करें, सबसे बढ़कर इस बातपर कि अपने सिद्धान्तों एवं विचारोंके अनुसार आपने कार्य किया या नहीं? क्योंकि—'आप क्या करते हैं?'—यह प्रश्न उतना महत्वपूर्ण नहीं नहीं जितना यह कि आप उसे 'किस तरीके से करते हैं?' यानी मनुष्यताके मापदण्डसे आपका कार्य या व्यवहार गौरवमय तथा केन्द्रित हुआ या नहीं? मान लीजिये आप किसी दफ्तरके कर्मचारी हैं और किसी बातको लेकर अफसरसे कहासुनी हो गयी। इस घटनाकी प्रतिक्रिया आपपर अनेक प्रकारकी हो सकती है। आप नौकरी का ख्याल करते हुए अपने दिमागको परेशान कर सकते हैं, नाना प्रकारकी संदिग्ध भावनाओंके शिकार होते हुए कर्तव्य विहीन नौकाकी तरह चिन्तासागरमें व्यर्थ के चक्कर लगा सकते हैं पर उस समस्यापर कोई निश्चित कार्यक्रम तैयार नहीं कर सकते। इसके विपरीत यदि आपमें विचार-शक्ति है, आपने आत्म विश्लेषण करनेका साधन किया है तो शान्त, स्थिरचित्तसे उसपर विचार करते हुए आगे लिये तदनुकूल कोई निश्चित कार्यक्रम बनायेंगे। वह सोच निकालेंगे कि वैसी परिस्थितिमें आपको क्या करना चाहिये।

जो व्यक्ति विचारशील हैं वह जो कुछ करेगा सोच समझकर करेगा आतुरतामें आकर कोई काम सहसा नहीं कर बैठेगा। यदि किसी कठिनाई अथवा आपत्तिमें पड़ भी गया तो विचलित नहीं होगा। जीवनकी कटुताओं, वैषम्योंके बीच भी अडिग, स्थिर तथा शान्त रहेगा। न दुखमें घबड़ा उठेगा, न सुख प्राप्त होनेपर अपने सौभाग्य सफलताका दुरुपयोग करेगा। जिसने विचारने की साधना नहीं की, वह किसी भी समस्याको लेकर जल्दी किसी निष्कर्षपर नहीं पहुंच सकता। संदिग्ध भावनाओंमें ही उसका चित्त चक्कर लगाता रहेगा। यदि कोई महत्वपूर्ण कार्य करना है तो बार-बार अनिश्चित रूपसे यह सोचते हुए भी कि उसे करें या न करें, वह किसी निश्चित निष्कर्षपर नहीं पहुंच सकता। इस प्रकारके मनुष्यजीवनके संघर्षोंमें बार बार फेल होगा, खुशी और चैन उसे नहीं प्राप्त होंगे—बरट्रेण्ड रसेलके विचार इस सम्बन्धमें पठनीय हैं। उन्होंने लिखा है—"यह सोचकर चकित हो जाना पड़ता है कि साधना द्वारा अपने मस्तिष्कको सुव्यवस्थित बनाकर कितनी प्रसन्नता एवं कार्यकुशलता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकारके मस्तिष्क-वाला व्यक्ति किसी विषयको लेकर अधूरी तरह विचार करते हुए बराबर माथा-पच्ची नहीं किया करता, बल्कि उपयुक्त समयपर पूरी तरह विचार करता है। यदि कोई विकट समस्या उपस्थित है और निश्चित रूपसे कुछ तय करनेके लिये माथापच्चीकी सम्भावना है तो एक काम कीजिये—अनुकूल और प्रतिकूल, दोनों तरफकी बातें इकट्ठी कर लीजिये और अच्छी तरह सोच समझकर अपना रास्ता तय कर लीजिये, फिर एक बार तय करके दुबारा उसीपर तबतक मत सोचिये, जबतक उस सम्बन्धमें कोई नयी बात सामने नहीं आये। असमंजसकी अवस्थासे बढ़कर व्यर्थ और थकाने वाली वस्तु दूसरी है ही नहीं।

सबसे बड़ी बात यह है कि विचारशीलताके सहारे ही जीवनका वास्तविक आनन्द उठाया जा सकता है। विचारशक्ति हीन व्यक्तिका सुख भोग वैसा ही जैसा किसी क्षुधार्त व्यक्तिका स्वादहीन भोजन पा जाना।—उसकी भूख मिट जायगी, पेट भर जायगा पर भोजनका वास्तविक आनन्द नहीं मिलेगा। यदि आप विचारशील नहीं हैं तो जीवनमें प्राप्त सुख और आनन्द नहीं मिलेगा। यदि आप विचारशील हैं तो जीवनमें प्राप्त सुख और आनन्दका उपभोग और भी परिष्कृत, सुन्दर एवं स्पृहणीय रूपमें करेंगे। साधारण सुखकी अवस्थामें में भी आपको परमानन्दकी अनुभूति होगी तथा जीवनकी कठिनाइयों और दुखोंको उनके औसतमात्रसे बहुत हलके रूपमें महसूस करेंगे। शास्त्रोंमें इसी हेतु विवेककी इतनी महिमा गायी गयी है और बार-बार कहा गया है कि—'अपने आपको पहचानो!' जो स्वयं अपने आपको नहीं पहचानता वह दूसरोंको अथवा सृष्टि और तत्वोंको क्या पहचानेगा। अपनेको पहचान कर ही संसारको वास्तविक रूपसे पहचाना जा सकता है।

———

भारतीय फिल्म उद्योग और राष्ट्रीयता

लेखक—श्री नटराज

भारतका सिनेमा उद्योग पिछली दो दशाब्दियोंके अन्दर इतना उन्नत हो चुका है कि उसको राष्ट्रीय उद्योग कहना अत्युक्ति नहीं समझनी चाहिये। लेकिन हमें इस बातको नहीं भूल जाना चाहिये कि सिनेमा उद्योगने अब तक ऐसी कोई भी उल्लेखनीय कार्यवाही नहीं की है, जिससे इस बातका जरा भी प्रमाण मिल सके कि हमारे सिनेमा उद्योगमें भी कुछ राष्ट्रीय चेतना आ गयी है। राष्ट्रकी राजनीतिक आकांक्षाओं और गतिविधियोंसे विमुख रहकर कोई भी उद्योग अपनेको 'राष्ट्रीय' नहीं कह सकता और भारत जैसे देशमें राजनीतिक क्षेत्रसे पृथक रह कर भी अपने लिये राष्ट्रीय स्थितिका दावा करना एक बड़ी बहानेबाजी कही जा सकती है। भारतकी स्वाधीनताका प्रश्न आज हमारे सामने सबसे प्रमुख है, देशकी सारी गतिविधियां स्वाधीनता प्राप्तिको अपना एकमात्र लक्ष्य मान कर परिचालित हो रही हैं। ऐसी हालतमें सिनेमा उद्योग, जो अपनेको राष्ट्रीय उद्योग कहनेका दावा करता है, राजनीतिक चेतनासे यदि शून्य हो तो हम ऐसा कहेंगे कि जनताको गुमराह करनेके लिये इस उद्योगने राष्ट्रीय जामा पहननेकी चेष्टा की है।

भारतकी ४० करोड़ जनता आजादीके लिये एक स्वरसे आवाज उठा रही है, लेकिन हमें तो ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे फिल्म निर्माताओंके कानोंमें अब तक वह आवाज नहीं पहुंच सकी है। भारतीय स्वाधीनताके अन्तिम संग्रामके लिये अब रंगमंच तैयार हो चुका है, हमारे देशवासियोंके सामने अपनी चिरवांछित राष्ट्रीय आकांक्षाओंकी पूर्ति करनेका स्वर्णिम अवसर उपस्थित है और भारतको आजाद करनेकी महान चेष्टा जब कि जारी है, उस समय हमारे देशके फिल्म जनसाधारणके अन्दर नवीन चेतना और स्फूर्ति भरनेमें बहुत महत्वपूर्ण सहायता पहुंचा सकते हैं। जनसाधारणमें जागृति उत्पन्न करनेमें फिल्मोंके द्वारा जितना महान कार्य हो सकता है उतना अन्य किसी साधनसे नहीं। फिल्म उद्योगके कर्णधारोंका यह भी पहला कर्तव्य होना चाहिये कि वे अपने फिल्मोंको विदेशी सभ्यता और संस्कृतिसे प्रभावित होनेसे रोकें।

इस समय सारे देशकी नजरें आजाद हिन्द फौजके मामलेकी ओर केन्द्रित हैं। सारे देशकी जबान पर आजाद हिन्द फौज है और अनन्त काल तक रहेगी। भारतवर्ष अपनी वीर सन्तानोंके कृतित्वों पर आज असीम गर्व और गौरव अनुभव कर रहा है। आजाद हिन्द फौजकी स्थापना कर अपनी मातृभूमिको विदेशी शासकोंकी जंजीरोंसे मुक्त करनेके लिये जिन वीरोंने प्रचण्ड लड़ाइयां लड़ी हैं, उनके प्रति सारा देश श्रद्धा प्रकट कर रहा है। सारे देशने एक स्वरसे आजाद हिन्द फौजके सभी सैनिकों और नायकोंकी मुक्तिकी मांग की है, लेकिन लाल किलेके नाटकका यवनिका पतन अब तक नहीं हो पाया है। ब्रिटिश न्यायके नामपर लाल किलेके अन्दर फरेबका महान नाटक जारी है। आजाद हिन्द फौज रक्षा कोषमें मदद देकर भारतीय सिनेमा उद्योग राष्ट्रकी बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। भारतीयों द्वारा परिचालित सिनेमागृहोंकी एक दिन

विख्यात नर्तकी 'सितारा'

की आमदनी भी आजाद हिन्द फौज रक्षा समितिके कार्यमें भी बहुत अधिक सहायक हो सकती है। जिस महान राष्ट्रीय उद्देश्य को लेकर रक्षा समिति गठित की गयी है, उसमें सहायता प्रदान करना प्रत्येक भारतीय का कर्तव्य है और सिनेमा उद्योगका, जो जनसाधारणके पृष्ठ पोषणसे ही इतनी उन्नति कर रहा है, जनता और राष्ट्रके प्रति पहला कर्तव्य यह है कि भारतके स्वातंत्र्य संग्रामके इतिहासमें एक गौरवपूर्ण अध्यायको जोड़नेवाले आजाद हिन्द फौजके वीर सैनिकोंके सम्मान और गौरवकी रक्षा करनेके लिये वह राष्ट्रका साथ दे। भारतकी राष्ट्रीय सेना की रक्षाके लिये 'जय हिन्द सप्ताह' मनाकर कोष संग्रह करनेका हम भारतके प्रत्येक निर्माता, प्रदर्शक और वितरकसे आग्रह करते हैं।

छमियां

प्रतिमादास गुप्त प्रोडक्सनकी नवीन कृति 'छमियां' स्थानीय सेंट्रल और पार्क शो सिनेमामें पिछले सप्ताहसे प्रदर्शित हो रही है। भूमिकाओंमें बेगम पारा, प्रतिमादास गुप्त, आरिफ, डेविड, अजूरी और दीक्षितने अच्छा काम किया है। बेगम पारा छमियांकी भूमिकाको अच्छी तरह निबाह ले गयी है, लेकिन निर्देशनका दोष कहीं-कहीं खल जाता है। अजूरीके नृत्य काफी अच्छे हैं, संगीत भी मधुर हैं। सारांश यह कि 'छमियां' दर्शकोंका साधारण मनोरंजन अच्छी तरह करती है।

'कल्पना'

मद्रासके जेमिनी स्टूडियोमें उदयशंकर की 'कल्पना' का तीव्र गतिसे निर्माण हो रहा है। 'कल्पना' के गाने हिन्दी जगतके ख्यातनामा कविवर सुमित्रानन्दन पन्तने लिखे हैं और संगीत निर्देशक श्री विष्णुदास शिराली इन दिनों 'कल्पना' के गानोंको अधिक रोचक बनानेमें व्यस्त हैं। शिराली साहबने भारतके सभी भागोंसे बड़े बड़े संगीतज्ञोंको एकत्र किया है, जिनमें पूनाके पं० विनायक राव पटवर्द्धन भी एक हैं। मृदंगवादक मामा फन्सालकर और प्रो० गोविन्द राव एवं विख्यात संगीतज्ञ एस० वी० जोशी, रामभाऊ अष्टेकर और अली अकबर खांका भी इनमें सहयोग प्राप्त है। मालूम होता है कि श्री उदयशंकर अपनी 'कल्पना' में श्रेष्ठ नृत्यके साथ ही श्रेष्ठ संगीत देनेके लिये कटिबद्ध हैं।

आश्चर्यजनक अफवाह

कलकत्तेके सिनेमा क्षेत्रोंमें इस बातकी अफवाह जोरों पर फैली हुई है कि एक विख्यात अभिनेत्रीने, जो करीब दो वर्ष पूर्व समाजमें अपना स्थान कायम करनेके लिये एक सम्भ्रान्त व्यक्तिके साथ विवाहके बंधन में बन्ध गयी थी, फिरसे 'स्वतन्त्र' होनेकी इच्छासे अपने वकीलकी मारफत अदालतमें तलाककी अर्जी पेश की है। उसके विवाहके समाचारसे भी कलकत्तेमें काफी सनसनी रही और आश्चर्य प्रकट किया गया था। तलाककी खबर भी यहां एक सनसनीकी सृष्टि करेगी, इसमें सन्देह नहीं. लेकिन इस अभिनेत्रीको मनोवांछित 'स्वतन्त्रता' जरूर मिल जायगी। रही उसकी सामाजिक स्थितिकी बात, सो समय आने पर स्वयं प्रकट हो जायगी।

निर्देशक शान्ताराम

हालहीमें बम्बईमें हुए अखिल भारतीय कांग्रेसके अधिवेशनमें अपने खर्चसे पण्डालके मुख्य द्वारका निर्माण कर राजकमल कला-मन्दिर और श्री शान्तारामने देश और जनताकी प्रशंसा एवं कृतज्ञता अर्जित की थी। कांग्रेस अधिवेशनमें शामिल लाखों व्यक्तियों पर श्री शान्तारामके उस कलापूर्ण निर्माणका गहरा प्रभाव था। 'राजकमल' की नवीन कृति 'डा० कोटनीस' दो भाषाओं अंग्रेजी और हिन्दीमें प्रदर्शनके लिये तैयार है। श्री शान्ताराम और उनकी पत्नी जय[illegible] ने इस चित्रमें नायक और नायिकाकी भूमि[illegible] में काम किया है।

देविका रानीका कार्यक्रम

ऐसी खबर मिली है कि देविका रानी जो अपने रूसी पतिके साथ आजकल मधु[illegible] रजनी मना रही हैं, शीघ्र ही अपने पतिके सहयोगसे बम्बईमें एक एकेडमी स्थापि[illegible] करेंगी। यह भी सम्भव है कि देविका रानी फिरसे फिल्म निर्माण कार्य आरम्भ करें क्योंकि इस क्षेत्रमें उनकी स्वाभाविक [illegible] भी है।

बम्बई टाकीज

बम्बई टाकीजके संस्थापक हिमांशुराय देहावसानके बादसे ही इस कम्पनीके प्रबन्ध में बड़ी गड़बड़ी चलने लगी थी। रायसाहब चुन्नीलालके निकल जानेके बाद कम्पनीके प्रबन्धका सारा भार श्रीमती देविकारानी पर पड़ा, किन्तु अनेक प्रकारके अन्दरूनी कारणोंसे उन्हें बम्बई टाकीजको चलानेमें पूरी सफलता नहीं मिली। अब देविका रानीने सम्बन्ध विच्छेद कर लेनेके परि[illegible] स्वरूप सिनेमा क्षेत्रमें बम्बई टाकीजके भवि[illegible] के सम्बन्धमें तरह तरहकी अटकलें लगायी जा रही हैं। इस समय उसके कर्ता धर्ता [illegible] शिराजअली हकीम हैं। ऐसा ख्याल कि[illegible] जा रहा है कि मि० शिराज अलीके प्रब[illegible] बम्बई टाकीज आशातीत उन्नति क[illegible] और भारतीय सिनेमा उद्योगको [illegible] प्रथम स्थान दिला सकेगा।

—बम्बई टाकीजने घोषणा की है कि उसके आगामी चित्रका दिग्दर्शन श्री [illegible] बोस करेंगे। स्टूडियोके प्रधान मि० [illegible] अली हकीमने कृष्णचन्द्रकी एक कहानी [illegible] की है। इसका नाम फिलहाल 'अंध[illegible] पति' रखा गया है।

—निर्देशक अमिय चक्रवर्तीने [illegible] से प्रभात फिल्म कं० के साथ गठबन्धन [illegible] लिया है। प्रभातके आगामी चित्रोंके [illegible] वर्ष दो सामाजिक चित्रोंका निर्देशन [illegible] श्री चक्रवर्तीको दिया गया है!

—'छमिया' की सफलतासे उत्सा[illegible] होकर प्रतिमादास गुप्तने तीन नये फिल्म 'कनीज', 'पहल' और 'दर्शन' की घोषणा कर दी है। बेगम पारा इन सभी चित्रोंमें नायिकाकी भूमिकामें उतरेंगी।

चलती चक्की

…आज़ादी और प्रजातन्त्रके वादे झूठे …त हुए। —एक शीर्षक।

प्रेमिकाओंके वादे भी इतने ही असत्य सिद्ध हुआ करते हैं।

* *

मित्रराष्ट्रोंने दुनियाको धोखा दिया। —प्रो० हेराल्ड लास्की।

मित्र नहीं तो क्या। फिर दुश्मन किसी-को धोखा देने जायेंगे ?

* * *

पराधीन देशमें देश भक्तोंका भाग्य सदा …रहता है। —एक सम्पादकीय।

जी हां, बड़ा मजा आता होगा …!

* * *

…अजमेरमें विद्यार्थियोंने जोशमें आकर …स्कूलोंके दरवाजोंके कांच वगैरह तोड़ …डाले हैं। —एक समाचार।

तोड़फोड़ आन्दोलनमें इन्हें गिरफ्तार …न कर लिया जाय ?

* * *

…न्यूयार्ककी भारतीय स्वातन्त्र्य राष्ट्रीय …ने ब्रिटेनके प्रधान मन्त्रीके नाम …ला पत्र छाप कर बतलाया है कि …सरकारने पहली सरकारकी नीति …सिद्धान्तोंमें कोई हेरफेर नहीं किया है। …किन इसमें बुराई क्या है ? कुलकी …मर्यादाओंको कायम रखना प्रत्येक …उत्तराधिकारीका कर्तव्य भी तो है !

* *

…त होता है कि पंजाबकी यूनिय-…निस्ट पार्टी भी ब्रिटिश शासनके अन्तर्गत …क हिन्दू सखीकी भांति अपना भी …र देगी। —एक सम्पादकीय।

…तो ठीक है। लेकिन यार लोग …शानी शुरू कर रहे हैं, वह …है, सचमुच ! ऐसा नहीं होना …

* *

…स सरकारने प्रांतके शिक्षा-नियमों …धन करके यह व्यवस्था की है …ओंको लड़कियोंके स्कूलमें दाखिल …की छूट होगी।

…न ये लड़के तब स्कूली किताबें …कुछ और ?

\+ \+

…हिन्दुस्तानका जर्रा-जर्रा पाकिस्तान —पं० गोविन्द वल्लभ पन्त।

…रा साहबका ये कहीं मजाक तो … रहे हैं ?

° °

…स्तानके समान रहस्यमय पदार्थ …है ? —एक सम्पादकीय।

…णु बमको भूल गये आप ?

° °

…में भी छात्र-छात्राओं पर लाठी —एक शीर्षक।
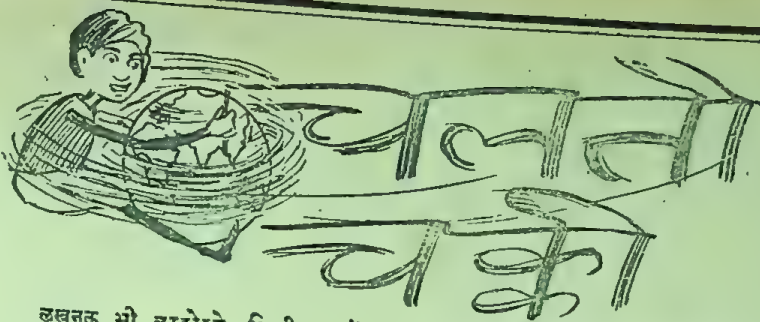
लखनऊ भी लाहोरसे किसी बातमें कम क्यों रहता !

° ° °

मि० एटली जब अमेरीके हवामें उला-पने लगते हैं तो भारतीयोंको निराशा होती है। एक सम्पादकीय।

अगर स्वप्नमें कोई खराबी है तो उसे छरीला बनानेके लिये उन्हें दवाईकी गोलियां खाना शुरू कर देना चाहिये।

° ° °

जापानमें अमेरिका अपनी टांग ऊपर रखना चाह रहा है। —एक शीर्षक।

और सिर नीचेको ?......स्वास्थ्यके लिए शीर्षासन करना चाहता होगा !

° ° °

अमेरिकाने चीनको १००० टैंक दिये। —एक समाचार।

अमेरिकावाले चीनियोंको आपसमें कहीं लड़ते तो नहीं रखना चाहते हैं ?

° ° °

बनारसमें चूड़ी-संघकी बैठक। —एक शीर्षक।

शायद पुरुषोंको भी चूड़ी पहनाने के प्रश्न पर विचार करनेके लिये इसका आयो-जन हुआ होगा।

° °

विश्व-शान्तिकी रक्षाके लिये संयुक्त राष्ट्र यूरोपकी आवश्यकता है। —श्री चर्चिल।

बेशक, और उससे भी अधिक आवश्यकता है आपके नेतृत्व की।

° ° °

रंगूनमें कम्यूनिस्टोंने एक लड़केको सिर्फ इसलिए पाट दिया, क्योंकि वह आजाद हिन्द फौजके नारे लगा रहा था। —एक समाचार।

उनके गौरवके अनुकूल ही है यह घटना !

° ° °

मैंने अंग्रेजोंकी कोई मदद नहीं की। —डॉ० कर्नल लक्ष्मी।

कोई बात नहीं। मदद की होती तो भी पुरस्कारकी उम्मीद थोड़े ही की जाती थी !

° ° °

कलकत्तेमें निहत्थी जनता पर कायरता पूर्ण गोली-वर्षा। —एक शीर्षक।

निहत्थों पर वीरतापूर्ण आक्रमण करनेसे पुलिसके गौरवको बट्टा जो लग जाता !

\+ \+ \+

पाकिस्तानका अर्थ है मुर्दोंका प्रदेश। —श्री कौशल बस्मानी।

लेकिन अगर यह सच है तब तो पाकि-स्तानियों को यह बतला देने पर भी कोई लाभ होगा ! अक्लकी किसी बातकी उनसे आशा की जा सकेगी, इसमें हमें सन्देह है !

* * *

चन्दा किसे देना चाहिये ? —एक शीर्षक।

उसको जो सार्वजनिक उपयोगके नाम पर गुपचुप उन पैसोंको अकेलेही हजम कर सकता हो !

* * *

लाहौरके लाठी चार्ज पर पंजाबके गृह मन्त्रीने खेद प्रकट किया है। —एक समाचार।

इससे स्पष्ट होता है कि वे शिष्टाचार को मानते जरूर हैं। यह अलग बात है कि वह सिर्फ ऊपरी ही हो, और कुछ नहीं।

* * *

उत्तरी फारससे, जहां पर बलवा मच गया है, सनसनी पूर्ण खबरें प्राप्त हुई हैं। —एक समाचार।

सनसनीखेज नहीं तो क्या किसी बलवे से शान्ति-पूर्ण खबरें भी आ सकती हैं ?

* * *

भारतके प्रधान सेनापति नहीं चाहते कि आजाद हिन्द फौजके आदमियोंके साथ बुरा बर्ताव हो। —एक समाचार।

सच तो यह होता अगर वे कहते कि उनके साथ कोई बुरा बर्ताव हुआ ही कब है ?

° ° °

जनता पहलेसे बहुत अधिक बलवान हो गयी है। —श्रीमती विजय।

पुलिसके डण्डे खा-खाकर ?

° ° °

भारत-प्रवासी कुछ गोरे पत्रकारोंको मक्खन रोटी अच्छी नहीं लगती। —एक सम्पादकीय।

तो फिर उन्हें मक्काकी रोटी और बैंगनका भुरता खिला कर देखना चाहिये।

° ° °

लखनऊ जेलके राजनीतिक बन्दियोंके सम्बन्धमें भारत सरकारको भी ठीक जान-कारी नहीं है। —श्री मोहनलाल सक्सेना।

यह तो उसकी योग्यताका प्रमाण है !

* * *

ईदके अवसर पर श्री जिन्नाने मुसल-मानोंको जो बधाईके पत्र भेजे हैं उनमें हिन्दुस्तानके नक्शेका वह भाग, जो उनके प्रस्तावित पाकिस्तानके अन्तर्गत आता है, हरे रंगसे रंगा गया है। किन्तु इसमें चूं-कि संयुक्त प्रान्त सम्मिलित नहीं है, यह देख कर प्रान्तके कम पढ़े-लिखे मुसलमान घबरा रहे हैं। वे कहते हैं कि जब हमारे सूबेमें पाकिस्तान कायम ही नहीं होगा और हिन्दुओंका राज्य होगा, तब पाकि-स्तानके लिये लड़नेसे फायदा ही क्या होगा ? —एक समाचार।

इन लोगोंकी अक्ल पर जिन्ना साहब-को तरस आना चाहिये अथवा हमें जिन्ना साहब पर—इस बात पर लीगकी कार्य-कारिणीमें विचार होना चाहिये।

° ° °

ये प्रथ बनाये कबतक ? —एक शीर्षक।

सिर्फ तबतक, जबतक कि ये फलप्रद साबित होती रहें। और क्या !

° ° °

काले मल्लाह गोरोंके समान तनख्वाह पायेंगे। —एक समाचार।

गोरोंको इसके विरुद्ध सत्याग्रह करना चाहिये !

° ° °

कराचीमें हिन्दुस्तानी शाही हवाई बेड़ेके सदस्योंको अधिकारियोंने एक नया हुकम जारी करके हिदायत दी है कि वे किसी सियासी जमात, राजनीतिक संस्था-को चन्दा न दें। —एक समाचार।

सैनिकोंको सिर्फ किफायतसारीकी सीख देनेके उद्देश्यसे ऐसा किया गया होगा !

° ° °

शैलीकी विशिष्टता

—:o:—

(लेखक—श्री वैजनाथ खेतान)

शैलीका सम्बन्ध अभिव्यक्ति प्रणालीसे है और साहित्यका सम्बन्ध अनुभूति से। अनुभूति शून्य साहित्यकी परिधि गणितके आंकड़ोंमें ही सीमित रहेगी, जिसकी विशिष्टता दो-दो औरचार बता देनेमें ही केन्द्रित है। पर अनुभूति भी तभी प्रभावोत्पादक होगी जब कि शैलीका सौन्दर्य उसके पास होगा। प्रसंगवश यह भी उल्लेख कर दिया जाय तो अत्युक्ति न होगी कि मनुष्यकी स्वभावगत विशेषताओंमें यह एक विशेषता है कि वह अपने विचारों पर सौन्दर्यका चिरनवीन आवरण डालना चाहता है। इसमें वह जितना ही उत्तीर्ण होगा, उतना ही उसके अन्दरका कलाकार सफलीभूत होगा। परन्तु अभिव्यंजनाको ही सब कुछ मान लिया जाय यह उचित नहीं। अभिव्यंजना तो साधन है, साध्य कुछ और है। उस साध्यको सत्यकी संज्ञा दी जाती है। सत्य अपनी एकतामें शाश्वत है, सौन्दर्य अपनी अनेकतामें अलौकिक। उस शाश्वत सत्यकी अभिव्यक्ति किस ढंगसे हो, इसे ही अभिव्यंजना प्रणाली कहते हैं, परन्तु कभी-कभी इसी अभिव्यंजनावादके फेरेमें बेकार ही वस्तु निगूढ़ हो जाती है और इससे अर्थका अनर्थ हो जाता है। छायावाद इसी कारण अधिक दिनों तक नहीं टिक सका कि उसकी मूल रूपरेखा गौण हो गयी और उसका सम्बन्ध अमूर्तको मूर्त रूप देनेमें, सूक्ष्मकी ओर केवल उठने और व्यर्थका रहस्यात्मक [illegible] ही शेष होकर रहा। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि साध्यके साथ-साथ साधनका भी कितना महत्व है। दोनोंकी स्थिति पृथ्वीके दो गोलार्द्धोंके समान है जो मिलकर भूगोलको पूर्णता देते हैं।

साहित्यके अंग-उपांगोंकी आचार्योंने विशद विश्लेषणात्मक विवेचना की है। साहित्य-दर्पणमें 'वाक्यं रसात्मकं काव्यं' द्वारा रसात्मक वाक्यको ही काव्य कहा गया है। रस गंगाधरके अनुसार रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् ही सब कुछ है। 'इदमुत्तममतिशयिनि व्यंग्ये वाच्याद्ध्वनिर्बुधैः कथितः' के द्वारा ध्वनि काव्यका सर्वश्रेष्ठ गुण बतलाया गया है। पर सच पूछा जाय तो अलंकार, रीति, ध्वनि, शब्द, अनुप्रास, यमक आदि तो भिन्न-भिन्न शैलियां हैं जो रमणीय, आकर्षक एवं प्रभावोत्पादक रूपसे वाक्शक्तिके समस्त सरस तत्वोंकी अभिव्यक्तिमें अभिनव तथा उचित शक्तिका संचार करते हैं। कोई अलंकारको प्रधानता देता है, कोई ध्वनि को। कोई केवल तत्सम शब्दोंको ही अपनी कलात्मक कृतिमें व्यवहृत करता है। इस तरह भिन्न-भिन्न लेखकोंकी व्यक्तिगत शैलियां भिन्न-भिन्न हो जाती है।

हिन्दीकी एक जातीय शैली भी है जिसका संगठन अंगरेजी वाङ्मयकी स्पष्ट भाव व्यंजकता, [illegible]की सरसता और मधुरता, मराठीकी गम्भीरता और उर्दू गद्यके प्रवाहको लेकर हुआ है। पर इससे यह नहीं समझना चाहिये कि हिन्दी-साहित्यमें प्रत्येक लेखकके शैलीकी यही निर्दिष्ट विशेषता है। अगर ऐसा होता तो भारतेन्दु युगसे आजके युगकी शैली बिलकुल भिन्न न हुई होती। शैलीमें भी दो उत्थान हुए हैं, एक बालकृष्ण भट्टके समय, दूसरा जयशंकर प्रसादके समय। कुछेक आलोचकोंकी दृष्टिमें बालकृष्ण भट्ट ही हिन्दी साहित्यमें पहले निबन्ध लेखक हैं। उनकी शैलीमें खरी-खरी बात कह देनेकी अभिरुचि विशेष परिलक्षित होती है पर कहीं कहीं उनके चिड़चिड़े स्वभावका आभास भी उनकी कलाकृतिमें मिल जाता है। पर 'प्रसाद' जीकी शैली काव्यके बहुत कुछ पासकी वस्तु हो गयी है। उसमें गद्य गीतोंकी तरह प्रतीकोंकी योजना, सूक्ष्मका विश्लेषण और भावानात्मक विचार धाराओंका प्राबल्य रहता है। ऐसी शैलीको लोग भावनात्मक शैली कहा करते हैं। भावनात्मक शैलीके भी दो रूप हैं, एकको धारा रूप कहते हैं, दूसरेको तरंग रूप। धारारूपमें एकही भाव धारा प्रारम्भसे अन्तसे चलती है परन्तु तरंग शैलीमें विभिन्न भा[illegible] जिस प्रकार समुद्रमें एक [illegible] एक लहरें उठती रहती हैं।

शैलीका एक और भी भेद है जिसे समास शैली और व्यास शैली कहते है। समास शैलीमें बहुत-सी बातोंको कुछमें कहा जाता है और व्यास शैलीमें बहुत-सी बातोंको कह कर कुछ कहा जाता है। कोई-कोई समास शैलीको सूत्र शैली- भी कहते हैं। यह हिन्दी साहित्यके लिये दुर्भाग्यकी बात है कि समास शैलीके लेखक हिन्दी-साहित्यमें बिलकुल नगण्यसे हुए। हिन्दी साहित्यको आज भी ऐसे साहित्यिकोंकी आवश्यकता है जो घनीभूत विचारोंसे साहित्यका भंडार भर सकें। विचारात्मक निबन्धोंकी कमी हिन्दीमें बहुत खल रही है।

इन निबन्धोंमें भी दो पद्धतियां दृष्टिगत होती है। एक आगमन दूसरी निगमन-पहलीमें दृष्टान्तों और प्रमाणोंसे होता हुआ लेखक सिद्धान्त पर पहुंचता है और दूसरीमें सिद्धान्तके स्पष्टीकरणके लिये उदाहरणोंके संकलन पर दृष्टि रहती है। आचार्य रामचन्द्र शुक्लके निबन्ध दूसरी पद्धति पर लिखे गये हैं।

अन्तमें मैं यह कह देना उचित समझता हूं कि शैलीकी विभिन्नताके कारणही कलाकार विशेषकी कृति हमें आकर्षित करती है, अन्यथा उसमें एकरसता हो जाती जिससे हम सब ऊब जाते।

Regd No. C. 2229

नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वामित्र प्रेस, १४१९ ए, शम्भू चटर्जी स्ट्रीट, कलकत्तामें सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक

विश्वमित्र

THE WEEKLY VISHWAMITRA

१८—४९ कलकत्ता, ५ दिसम्बर १९४५, Calcutta, DECEMBER 5, 1945 मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

मधुसंचय

उड़नेवाली मोटर

रिकाके वैज्ञानिकोंने एक ऐसी मोटर विष्कार किया है जो प्रचण्ड वायुमें व गतिसे उड़ सकेगी। इस मोटर- 'रोड प्लेन' अर्थात् 'पथयान' रखा । वह साधारण गाड़ियोंकी तरह ही सके आगे पीछे तथा छायें खिड़- । इसमें दो आगे और एक पीछे पहिये हैं जिनपर भारी रबड़के हैं। इस मोटरमें पंख और पूंछ जिन्हें आवश्यकतानुसार अलग भी सकता है। एक गियर द्वारा उस- चलाया जाता है। इस मोटरमें लेकर नजदीकके हवाई-अड्डे तक ा है और वहांसे उसके पंखे खोल- जहाजकी तरह उड़ सकता है। यह पता नहीं चला है कि आकाश उसके पंख बदले जा सकते हैं या स मोटरके बाजारमें आते ही सायमें एक अभूतपूर्व घटना घटने- ावना की जा रही है।

स्त्री द्वारा सन्तानोत्पत्ति

ोर्ड फ्लाह शेरमैन नामक एक लड़कीका जन्म उसकी मांके मर मिनट बाद हुआ है। लड़की र स्वस्थ है। जब बत्तीस वर्षीया क शेरमैनकी लकवाकी बीमारी मृत्यु हो गयी तब उक्त आपरेशन द्वारा पेटसे निकाला के समय उसका वजन चार पौंड था। उक्त लड़कीको आपरेशन निकालनेवाले फौजी डाक्टर कैप्टन ने बताया है कि लड़की स्वस्थ उसके शरीरमें उसकी मांके कारण कीटाणु विकसित नहीं हुए तो वह ड़ेगी।

स्टरमें भी इसी भांति अल्पकाल रक्त घातक बीमारीसे देहान्त ा। चार मिनटके बाद उसके पेट- रेशन करके बच्चा निकाला गया।

१० वर्षों तक पुरुषके वेशमें

ीस वर्षीया स्त्री दस वर्षोंसे भी ोतक पुरुषकी भांति रही और उसने हालहीमें एक अठारह वर्षीया किशोरी से विवाह किया है। वह एक फैक्टरीमें काम करती है और इसी फैक्टरीमें उसकी पत्नी भी काम करती है। फैक्टरीमें काम करनेवाले अन्य व्यक्तियोंको उस- का रहस्य ज्ञात नहीं हो सका है। इस विचित्र महिलाने फौजमें भी भर्ती होना चाहा था लेकिन निराश होना पड़ा। इधर जब वह विवाहकी दरख्वास्त लेकर रजिस्ट्रारके पास गयी तो उसका रहस्योद्घाटन हुआ और उसने अपना स्त्री होना स्वीकार किया। वह अपनी 'पत्नी'के साथ इन दिनों सानन्द रहती है और फैक्टरीमें काम भी कर रही है। पुरुष भेषमें रहनेका कारण पूछनेपर उसने बताया कि स्त्रीके रूपमें रहकर कोई काम मिलना उसके लिये सम्भव नहीं हुआ। दो बार उसकी नौकरी छट गयी क्योंकि उसका शारीरिक गठन और चेहरा देखकर साथ काम करनेवाली स्त्रियां उसको स्त्री भेषधारी पुरुष समझा करती थीं अतएव उसने पुरुषके भेषमें ही रहनेका निश्चय किया। वह स्त्री इन दिनों आस्ट्रेलियाके सिडनी नगरके एक कारखानेमें अपनी 'पत्नी' के साथ काम कर रही है।

६ वर्ष बाद महात्मा गांधी फिर कलकत्तेमें

८००० हजार वर्ष पूर्वकी सभ्यता

भिन्नराष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलनमें ईराकके प्रधान प्रतिनिधि डा० नाजी अल असीलने ऐसी पुरानी पुरातत्व संबंधी वस्तुएं मिलने का सनसनीपूर्ण समाचार लाया था जिनसे सिद्ध होता है कि इतिहास वेत्ताओंके अनु- मानसे भी २००० वर्ष पूर्व मनुष्य सभ्यता- पूर्वक रहनेका ढङ्ग जान गया था।

युद्धकालमें ईराकी पुरातत्व वेत्ताओं ने एक ऐसे समाज के प्रमाण खोद निकाले हैं जो ६-७ हजार वर्ष पूर्व भली प्रकार बनाये घरोंमें रहता था और छन्द रखौआरों तथा पात्रोंका प्रयोग करता था। ये वस्तुएं वहांसे ४०० मील उत्तर हसूनामें मिली हैं।

हसूनामें मिले हुए बर्तनोंके टुकड़ोंका चीनी मिट्टीके विशषज्ञ अध्ययन कर रहे हैं। ये बर्तन ईसासे ६००० वर्ष पूर्व उपयोगमें लाये गये थे।

अन्धे देख सकेंगे

प्रोफेसर जार्ज वाल्ड हरवर्डने ऐसी विद्युत रश्मियोंका पता लगा लिया है, जिनके कारण अब अन्धे भी देख सकेंगे। उक्त प्रोफेसरके आंखके रोगी अब विद्युत रश्मियोंके प्रकाशके सहारे चक्षु परीक्षा करनेके नक्शेको ऊपरसे नीचे तक आसानीसे पढ़ सकते हैं। प्रोफेसर वाल्ड अपनी इस खोजका परिणाम शीघ्र ही वैज्ञानिकोंके समक्ष प्रदर्शित करनेवाले हैं।

बिजलीका कम्बल

साधारण बिजलीके एक इंजीनियरने एक ऐसे कम्बलकी खोज करनेमें सफलता प्राप्त की है जो स्वाभाविक रूपसे कमरेके घटते बढ़ते तापमानके अनुसार गर्म रहेगा। हवाबाजोंकी पोशाकके लिये बिजलीके इस कम्बलकी खोज की गयी है। इस कम्बलके कपड़ेमें पचास प्रतिशत ऊन और पचीस प्रतिशत रेशे तथा पचीस प्रतिशत सूत है।

स्व० रूजवेल्टका स्टाम्प संग्रह

अमेरिकाके स्वर्गीय प्रेसिडेण्ट रूजवेल्ट के निवासस्थान हाइड पार्क न्यूयार्कमें सत्तरह बक्स स्टाम्प और अलबम मिले हैं। स्वर्गीय प्रेसिडेण्ट रूजवेल्टको स्टाम्प संग्रह करनेका बड़ा शौक था। रूजवेल्टने अपने वसीयतनामेमें उक्त संग्रहका कोई जिक्र नहीं किया है लिहाजा वह संग्रह आगामी वर्षमें किसी समय नीलाम किया जायगा। उसकी कीमत एक लाख डालर बतायी जाती है।

विश्वका द्रुततम विमान

शाही वायु सेना और नौ :सेनाकी विमान वाहिनीने विश्वके द्रुत तम वायुयान डी हैविलैण्ड जेट चालित वामपायरका उप- योग आरम्भ कर दिया है। यद्यपि उसकी वास्तविक चाल एक गुप्त रहस्य है लेकिन तो भी यह पता चला है कि उसकी चाल प्रति घण्टा पांच सौ मीलसे भी अधिक है। यह वायुयान बहुत ही तेजीसे गतिमान हो जाता है और पृथ्वीपर उतरनेके समय इसकी गति अपेक्षाकृत धीमी हो जाती है। यह वायुयान ४९ हजार फीटसे ५० हजार फीट की ऊंचाई तक उड़ सकता है। जहाजू वायु- यानोंमें यह सबसे अच्छा प्रमाणित हुआ है। जिसमें एक वामपायर जहाजू विमान ५०० मील प्रति घण्टाकी गतिसे उड़ रहा है।

कविता

*** स्तवन ***

त्याग शील उस 'देश रत्न' को बार-बार मेरा वन्दन है !
कर्म वीर योद्धा निश्चल जो,
सत्यव्रती रहता प्रतिपल जो,
उस प्रतिभा के शुचि प्रदीप को, अर्पित मेरा तन-मन-धन है !
बापू के उस धीर भक्त को,
कष्ट काय देशानुरक्त को,
दिव्य-देव जन-मन मोहक को, सादर मेरा अभिनन्दन है !
स्वतन्त्रता का अग्र दूत प्रिय,
भारत जननी का सपूत प्रिय,
तोड़ रहा जो युग से सारी मानवता के बन्धन है !
अमिट प्यार नयनों में लेकर,
मानवता को जीवन देकर,
सांस-सांस में करता जाता स्वतन्त्रता का नव पूजन है !
कोटि-कोटि जन-जन का प्यारा,
दुखी दीन का एक सहारा,
उस 'प्रसाद' गौरव-प्रतीक को सविनय हृदय-सुमन अर्पण है !
बार-बार मेरा वन्दन है !

—श्री आचार्य 'सारंग' शास्त्री

मैं सब दिन ऐसा नहीं रहा

मेरे भी कोई था अपना
पलकों में स्वर्णिम-सा सपना
उर में रसती थी रसवन्ती, सब दिन करुणा में नहीं बहा
मैं सब दिन ऐसा नहीं रहा ।
अन्तर में राग छिपाए था
अन्तर में आग छिपाए था
इतिहास विकलता का लेकिन, मेरे आंसू ने बोल कहा
मैं सब दिन ऐसा नहीं रहा ।
कलियों-सा कोमल मेरा तन
कलियों-सा मधुमय मेरा मन
प्राणों में अमिट लिए आशा, अब तक जीवन का भार सहा
मैं सब दिन ऐसा नहीं रहा ।

—श्री लीलाधर "दुःखी"

:: कल्पना ::

मेरा एक अलग संसार
इसकी गली-गली में मुखरित, समता की झंकार
यहां पर नहीं स्वार्थ का राज्य
सरसता है मानव का साज
शिशु के सरल सहज स्मित का
यहां मिलता सबका वरदान ॥ १ ॥
यहां रहता है चिर-संयोग
नहीं है यहां विरह का शोक
यहां पर नहीं क्षुधा का ताप
यहां पर नहीं मृत्यु-अभिशाप ॥ २ ॥
यहां पर नहीं लालसा उद्दाम
यहां पर नहीं द्वंद का काम
यहां मन रहता निर्विकार
यहां विस्मृत सब पीड़ा-भार ॥ ३ ॥
यह है चिर-अनन्त का ध्यान
नहीं अड़ जग-जीवन का साथ
यहां पर हैं सब एकाकार
यही है साम का संसार ॥ ४ ॥
[illegible] को सुगम स्वर्ग का द्वार
मेरा एक अलग संसार ।

—सुश्री प्रभा श्रीखण्डे

कड़खा !

उठ-उठ नर रे ! कायर मत बन !
डरता क्या झंझावात देख ?
नर, देख…देख…, उत्पात देख,
ऐंठे पर वांत सदृश तू तन—
उठ-उठ नर रे, कायर मत बन !
तू मदन-दहन-हर का त्रिनेत्र,
तू दान, ज्ञान, विज्ञान क्षेत्र,
करना न कहीं पथ परिवर्त्तन—
उठ-उठ नर रे, कायर मत बन !
तुम दावानल के दीर्घ ज्वलन,
तुम दीप्त अशनि के रौद्र स्खलन,
तुम नवयुग के उत्थान-पतन—
उठ-उठ नर रे, कायर मत बन !
संघर्ष, कर्ष, उत्कर्ष तुम्हीं
तुम हो अमर्ष, आदर्श तुम्हीं
झुकना फिर क्या जाओ तुम तन—
उठ-उठ नर रे, कायर मत बन !

—श्री 'त्रिदण्डी'

विस्फोट-यन्त्र

आओ, आओ विस्फोट-यन्त्र !
फूंको संसृति में नाश-मन्त्र
पार्वती-शंभु का मचे नृत्य
स्रष्टा, पालक फिर करें कृत्य
दानव, दुश्मन हों भस्मसात्
हो शीघ्र प्रकाशित घोर रात
शंकर-ललाट को कर विशाल
कर दो समुपस्थित स्वर्ण-काल
सर्वोपरि-युग का हो विहान
सुर-सरिता में सब करें स्नान
निर्धनता जग से करे कूच
लक्ष्मी भर दे फिर भाव ऊंच
दानव-शिक्षा को कर विनष्ट
आये सरस्वती हरे कष्ट
लक्षित हो हरिहर-स्वर्ग-क्षेत्र
मानव-उर पावे ज्ञान-नेत्र
भारत-निसर्ग का कर अभाव
कर दे प्रकाश में विश्व-गात
नन्दन-उद्यान-प्रसून-प्राप्त
हो स्वदेश में सुख-सिन्धु व्याप्त
हो चतुर्वेद-अध्ययन-उदय
भारत विशाल के फिर समक्ष
वासना, नीचता भगे आज
सुर रक्खें भारत-स्वत्व-लाज

—श्री विजयनारायण मिश्र 'प्रशान्त'

परहित बस जिनके मनमाही।
तिनकहजग दुर्लभ कछु नाहीं।

युद्ध अनिवार्य क्यों?

——oo——

१९४५ समाप्त हो रहा है। अमेरिकाकी वैदेशिक नीतिसे असंतुष्ट होकर उपसचिवके पदसे इस्तीफा देनेवाले मि० समनर वेलीजने १९४५ आरम्भ होनेके चार दिन पूर्व लिखा था: "१९४५ का प्रभात आसन्न है। अमेरिकन राष्ट्रके सामने जो भविष्य है वह आज जितना अनिश्चित और काला प्रतीत हो रहा है उतना युद्धारम्भ होनेके बाद कभी नहीं प्रतीत हुआ। आज हमारे सैनिक शीघ्रसे शीघ्र अन्तिम विजय प्राप्त करनेके लिये महानसे महान बलिदान कर रहे हैं। किन्तु जिन उद्देश्योंके लिये वे लड़ रहे हैं वे तीन वर्ष पहले जितना स्पष्ट और निश्चित रूपमें हमारे सामने थे आज उतना नहीं रह गये। तीन बड़े मित्रोंके बीचमें मनोमालिन्य आज अधिक सुस्पष्ट और व्यापक रूपमें बढ़ता जा रहा है। यदि यह मनोमालिन्य न मिटा, यदि अमेरिका, ब्रिटेन और रूसके बीचमें नीति साम्य और उद्देश्य साम्य न स्थापित हो सका तो पुष्ट और स्वस्थ अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाकी स्थापना तो दूरकी बात है स्थायी शान्ति और सुरक्षाके सपने भी न हो सकेंगे।"

वर्ष आरम्भ होनेके पूर्व कही गयी ये बातें वर्ष समाप्त होनेके पहले ही अक्षरशः सत्य सिद्ध हो रही हैं। जिन दिशाओंसे होकर तीनों बड़े राष्ट्र, युद्धान्तके पूर्वसे ही चलने लगे वे शान्तिकी ओर ले जानेवाली नहीं हैं। वे तो संघर्षकी दिशाएं हैं। २९ जुलाई १९४३ को प्रेसिडेन्ट रूजवेल्टके भारत स्थित निजी प्रतिनिधि विलियम फिलिप्सने भारतके सम्बन्धमें लिखा था: "एशियाई राष्ट्र घृणाकी दृष्टिसे इस युद्धको फासिस्ट और साम्राज्यवादियोंका युद्ध मानते हैं।" विलियम फिलिप्सने अपने इसी लेखमें यह भी बताया था कि एशियाइयोंके इस सन्देहको, आशङ्काको कैसे मिटाया जा सकता है। उन्होंने लिखा था कि भारतके प्रति सद्भावना से पूर्ण मित्रतामनोभाव इस वर्तमान राजनीतिक वातावरणको बदल सकता है। इसी तरह यदि जापानी सेना द्वारा विजित और अधिकृत उपनिवेशोंको यह आशा दिलायी जा सके कि उनको फिर पुराने मालिकोंकी गुलामीके बन्धनमें न जकड़ा जायेगा तो इससे सब लोगोंको इस बातका विश्वास होगा कि यह युद्ध अपनी अपनी राजनीतिक शक्ति और प्रभावके लिये नहीं बल्कि मुंहसे जो कहा जाता है सचमुच उसीके लिये अर्थात संसार को परतन्त्रता और शोषणसे मुक्त करनेके लिये ही लड़ा जा रहा है।

आज हम देख रहे हैं कि मि० समनर वेलीज और विलियम फिलिप्सने जो आशङ्काएं प्रकट की थीं अक्षर अक्षर वे सही निकलीं। जहां तक पिछले युद्धके सम्बन्धमें हमारे रुखकी बातका सम्बन्ध है हमारे राष्ट्रीय नेताओं और हमारी राष्ट्रीय महासभाने साफ साफ यह कह दिया था कि इस युद्धके फल स्वरूप परतन्त्र राष्ट्रोंका भविष्य पूर्ववत रहेगा। अगस्त १९४२ का प्रस्ताव इसी बातको ध्यानमें रख कर पास किया गया था। श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डितने एक नहीं अनेक बार अमेरिकन राष्ट्रपति और राजनेताओंको यह चेतावनी दी है कि जबतक संसार अर्द्ध स्वतन्त्र और अर्द्ध परतन्त्र भागोंमें बटा रहेगा तबतक संसारमें शान्ति और प्रेमकी स्थापना की कल्पना स्वप्न लोककी ही बात रहेगी। पण्डित जवाहरलाल नेहरूने ब्रिटिश नेताओंको खास कर और साधारणतया सभी प्रमुख स्वतन्त्र राष्ट्रोंके नेताओंको गम्भीर चेतावनी दी है कि अब सम्पूर्ण एशियाई राष्ट्रोंके स्वतन्त्रता आन्दोलनोंका सामना साम्राज्यवादी शक्तियां, परमाणु बम जैसे संहारक अस्त्रोंसे सम्पन्न और सुसज्जित होते हुए भी नहीं कर सकती। एशियाके ऊपर यूरोपके आधिपत्यका अन्त होगा। तभी तो सर्दार वल्लभभाई पटेल भारत छोड़ो के नारेकी जगह एशिया छोड़ोका नारा लगा रहे हैं।

यदि एक तरफ एशियाई राष्ट्र विदेशी दासतासे मुक्ति पानेके लिये कृत संकल्प होकर सर पर शहादतकी कफनी बांध चुके हैं तो दूसरी तरफ ब्रिटिश नेतृत्वमें यूरोपियन साम्राज्यवादी शक्तियां दानवी रूप धारण करके अपना घृणित खेल इन्डोनेशिया इन्डोचीन, मलाया, बर्मा और हिन्दुस्थानमें खेल रही हैं। दक्षिण पूर्व एशियासे नजर जब मध्यपूर्व पर पड़ती है तो वहां भी कुछ कुछ ऐसी ही बातें दिखायी देती हैं। मिस्र, ईरान, ईराक, फिलस्तीन, सिरिया, लेबनन और अरेबिया पर यूरोपियन शक्तियोंका जितना प्रभाव और आधिपत्य है उसे अधिकाधिक दृढ़ और पुष्ट रूपसे जमाये रखनेके लिये जिस तरहकी घृणित चालें चली जा रही हैं वे किसी भी सभ्य और सुसंस्कृत राष्ट्रके लिये लज्जा और कलंकका विषय है।

सवाल यह उठता है कि इस तरहकी स्थितिके लिये कौन जिम्मेदार है? अभी हालतक चीनमें अमेरिकाका राजदूतत्व करनेवाले मेजर जेनरल हर्लीने इसका जवाब दिया है। उन्होंने कहा है कि "अमेरिकाने सुदूरपूर्वमें युद्धकी समाप्ति की हैरवार वहांमें सामग्री देकर तथा हमारी सम्पूर्ण प्रतिष्ठा और मर्यादाको लोकतंत्रको कुचलनेका साधन बना कर।" साम्राज्यवादी शक्तोंको प्रोत्साहन देनेवाला पूंजीवादी अमेरिका ही इस स्थितिके लिये जिम्मेदार है और तीसरे युद्धकी स्थिति पुनः पैदा करनेके लिये, इच्छासे हो या अनिच्छासे, अमेरिका ही सबसे बड़ा अपराधी समझा जायगा। यदि जिन उद्देश्यों और सिद्धान्तोंकी रक्षा एवं स्थापना करनेकी बात कह कर यह युद्ध लड़ा गया था युद्धोत्तरकालमें उनको कार्यमें परिणत करनेके लिये अमेरिका ईमानदारीके साथ आगे बढ़ता तो ब्रिटेन जो इस युद्धके परिणाम स्वरूप तीसरी कोटिकी शक्ति रह गया है अपने छुटभैयोंको लेकर कभी ऐसा नङ्गा नाच करनेकी हिम्मत न करता जैसा वह भारत तथा सुदूरपूर्व एवं मध्य पूर्वमें कर रहा है। दर असल अमेरिका भी स्वार्थके कारण अपने आदर्श और सिद्धान्तसे च्युत हो गया है। चीन, जापान और प्रशान्त अंचलमें वह अपने उद्योग धंधेके लिये जो लपलपाती हुई लंबी सड़ी देख रहा है उसे काटनेके प्रलोभनको वह रोक नहीं सका। यही कारण है कि युद्ध समाप्तिके आरम्भ होते तीन महानोंके बीचमें वही मतभेद, जो युद्धके पहले घृणितरूपमें था, फिर परिवर्तितरूपमें खड़ा हो गया। यद्यपि इसपर मैत्री एवं समान उद्देश्यसे प्रेरित काम करनेका झीना पर्दा डालनेकी कोशिश की गयी किन्तु सब बेकार। और अब तो दूर दूर भागने लगे हैं। इस प्रसङ्गमें अमेरिका जिसे मध्यस्थ होकर अपने प्रभावसे विश्वशान्तिके लिये ब्रिटेन और रूसको निकट पहुंचानेका प्रयत्न करना चाहिये था धीरे धीरे ब्रिटेनके अधिक समीप सरकने लगा। दोनोंके अपने अपने स्वार्थ जो थे। अमेरिका अपनी क्षमता और योग्यतासे इस स्थितिमें है कि उससे स्वार्थका त्याग करनेकी आशा की जा सकती थी। किन्तु जब वही नहीं कर सका तो ब्रिटेनसे, जो सरसे पैरतक काला है, आशा करनेवाला कोई मूर्ख ही होगा। ऐसी परिस्थितिमें तीसरा महायुद्ध अनिवार्य है और इसके लिये अमेरिकाही जिम्मेदार होगा।

कलकत्ता फिर तीर्थक्षेत्र—

प्राचीनकालमें ऋषि मुनि जिन स्थानोंमें गम्भीर समस्याओंपर विचार करनेके हेतु एकत्र हुआ करते थे आज भी वे तीर्थस्थान कहकर पुकारे जाते हैं। ठीक यही बात कांग्रेसके नेताओंके संबंधमें है। ये अपने विचार परामर्श और मन्त्रणाके लिये जब जिस स्थानको चुनते हैं तब वही तीर्थक्षेत्र बन जाता है। आज प्रायः पांच वर्षके बाद कलकत्ताको फिर तीर्थक्षेत्र बननेका सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस कालके तपस्वी ऋषि मुनि देश विदेशके सामने उपस्थित कठिन तथा विकट समस्याओंपर विचार करनेके लिये कलकत्तेमें आ रहे हैं। सर्वप्रथम इस युगके मन्त्र द्रष्टा, तपस्वी कर्मयोगी महात्मा गान्धीका, मासके प्रथम दिवस, कलकत्तेमें पदार्पण हुआ है। कलकत्ता नगरी धन्य धन्य हो गयी। हमारे शास्त्रीय आचार्योंने महात्माओंके दर्शनसे ही अपनेको कृतकृत्य हुआ माना है। यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम ऐसे महात्माको अपने बीचमें पाकर भी, उसके सम्पर्कमें आकर भी अधिकसे अधिक लाभ नहीं उठा सकते। इतने दुनियादार हम हो गये हैं। ६ दिसम्बरसे कलकत्तेमें कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी बैठक होगी। इस सिलसिलेमें भारतभरके तपस्वी नेता यहां इकट्ठा होंगे। इस तरह आनेवाले ये दस बारह दिन कलकत्तावासियोंके लिये सर्वाधिक सौभाग्यके दिन हैं। हम कलकत्तावासियों के साथ मिलकर इन महान् तपस्वी नेताओं का सादर स्वागत—अभिनन्दन करते हैं। साथ साथ आशा करते हैं अपने देशवासियों से कि वे अपने इन प्रिय नेताओंके बताये मार्गपर चलनेको अपनेको पूर्ण प्रस्तुत करेंगे।

तभी वे अपने नेताओंपर गर्व और गौरव करनेके अधिकारी बन सकते हैं। यह अधिकार पाना सहज नहीं है। इसके लिये उनको अपने स्वार्थोंकी एक निश्चित सीमा बांधनी होगी। दुनियादारीसे ऊपर उठना होगा। ऐसा करके ही वे भारतके सच्चे नेताओंका सच्चा स्वागत और अभिनन्दन कर सकते हैं।

एक और राजतन्त्र विदा—

गत बृहस्पतिवारको संसारसे एक और राजतन्त्र विदा हो गया। युगोस्लाविया[illegible] नवीन निर्वाचनके फलस्वरूप बनी युगोस्ला[illegible] विधान निर्मातृ परिषदने नियमानुसार [illegible] देशमें प्रजातन्त्रकी घोषणा कर दी है। [illegible] तरह युगोस्लावियाके दूसरे किङ्ग पीटर[illegible] ११ मासकी हुकूमत समाप्त हो गयी। [illegible] सम्बन्धकी घोषणामें प्रजातन्त्रके स्व[illegible] समझाते हुए कहा गया है कि यह प्रजात[illegible] समग्र जनताका राज्य होगा जिसकी [illegible] कारका सञ्चलन प्रजातन्त्रीय ढंगसे कि[illegible] जायगा। समाज समान व्यक्तियोंका [illegible] जिन्होंने पूर्णरूपेण युगोस्लावियाके साथ [illegible] एक रहनेकी इच्छा प्रकट की है। घोषणा[illegible] यह बात भी कही गयी है कि राजशाहीका हमेशाके लिए अन्त कर दिया गया। [illegible] पीटर अपने वंशावतंशोंके साथ सदाके [illegible] उन तमाम अधिकारोंसे वंचित कर [illegible] गये, जो पहले कारा जार्जेविश राजवं[illegible] प्राप्त थे। पिछले निर्वाचनमें मार्शल टीटो[illegible] सरकारको बेशुमार वोट मिले हैं। [illegible] लोगोंने निर्वाचनमें जनतासे राजशाही [illegible] करनेके प्रश्नपर अपनी सम्मति देनेकी [illegible] की थी। निर्वाचकोंने इस प्रश्नपर राज[illegible] का अन्त करनेके पक्षमें मत देकर मा[illegible] टीटोके हाथ और भी मजबूत कर दि[illegible] इस समय शाह पीटर ब्रिटेनके अतिथि[illegible] पर, विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि वि[illegible] निर्मात्री परिषदके निर्णयपर ब्रिटेन [illegible] आपत्ति न खड़ा करेगा।

युद्धमें हताहत—

उस दिन कामन सभामें ब्रिटिश प्र[illegible] मन्त्री मि० एटलीने एक प्रश्नके [illegible] बताया कि पिछले सम्पूर्ण युद्धके दौ[illegible] अर्थात् ३ सितम्बर १९३९ से १४ [illegible] १९४५ तक १ लाख ७९ हजार १३५ [illegible] तीन हताहत हुए हैं जिनमें २४ हजा[illegible] मरे हैं। इसी कालमें सम्पूर्ण ब्रिटिश [illegible] ज्यके हताहतोंकी संख्या मि० एटलीने [illegible] लाख ४६ हजार २९ बतायी है। स्मरण[illegible] कि इनमें मरनेवाले तिहाईसे अधिक [illegible] हैं। इस संख्याके साथ बंगालके अका[illegible] एक वर्षके भीतर मरनेवाले ३५ लाख [illegible] भारतीयोंकी संख्याकी तुलना की [illegible] इस अकालके कारण कितने ही [illegible] बारके परिवार नाना प्रकारकी [illegible] व्याधियोंसे जो बरबादसे हो गये हैं [illegible] गिनती ही नहीं है। इस अवस्थाके लि[illegible] शासन और अधिकारी जिम्मेदार हैं [illegible] तुलनामें, [illegible] दृष्टिसे, को जानेवाले [illegible] पराधियोंका अपराध क्या नगण्य नहीं[illegible]

अब और नहीं—

ब्रिटेनके कूटनीतिज्ञ और राजनेता[illegible] चालबाजमें चतुरसे चतुर शिकारको [illegible] संसार-प्रसिद्ध हैं। जब-जब साम्रा[illegible] संकट आया है तभी ब्रिटिश नेता अपनी[illegible] पटुताके भरोसे ही बड़ेसे बड़े संकटोंसे [illegible] परीक्षाओंसे अपने साम्राज्यको साफ [illegible] कर निकाल लाये हैं। इतना ही नहीं [illegible] अपनी धाक भी जमायी है। [illegible]

का यह सहारा; यह कौशल अन्य तमाम ओंसे अधिक सहायक और सफल सिद्ध है। लन्दनमें अभी हालमें जब पंच राष्ट्र सचिव सम्मेलन, मो० मोलोटोवके, ओं द्वारा बिछाये गये जालमें, फंसनेको र न होनेके कारण असफल हो गया तो समय इस बातकी चर्चा शुरू हो गयी ब फिर एक बार तीन महान मिलेंगे तब सब ठीक हो जायगा। किन्तु टिश कूटनीतिज्ञ भी मन ही मन बात खूब समझते होंगे कि यह काम कठिन है। पिछले युद्धमें जब रूस शामिल नहीं हुआ था तब तक न नेताओंके सम्मेलनोंमें बाजी हमेशा के हाथमें ही रही पर यही बात तेह-याल्टा और पोट्सडमके सम्बन्धमें नहीं जा सकती। स्टालिनने ब्रिटिश चाक-को छिन्न-भिन्न करके अपनी कूटनी-ता और निर्भीकताका जो परिचय दिया संसारमें ब्रिटेनकी जो धाक थी वह गयी और वस्तुतः स्टालिनकी ही सर्वत्र हुई। फिर भी जिस अस्त्रके ब्रिटेन सदा विजयी होता आया है ही दो तीन बारकी करारी पराजयोंके बाद भी उसपर उसकी आस्थाका बना स्वाभाविक है। इसी भरोसे लन्दन रूसकी असफलताके बाद भी ब्रिटेन छोड़ना नहीं चाहता। किन्तु इस बार सिडेण्ट ट्रू मैनके इस वक्तव्यसे कि "मैं और तीन महान सम्मेलनोंकी आव-ता नहीं समझता।" —अवश्य ही:जब-निराशा होगी। इन सम्मेलनोंमें यद्यपि का मन्त्र रूस पर काम नहीं कर सका अमेरिका पर अवश्य चला है और ष्ट्रीय जगतमें अमेरिकाकी कूटनीतिक ाको बट्टा लगा है। चीन स्थित अमे-राजदूत मेजर जेनरल हर्लीने अपने स्तीफा देते समय जो वक्तव्य दिया है भी यही सिद्ध होता है कि ब्रिटेनने काको बराबर बुत्ता देकर अपना उल्लू किया है और दोनों बार अमेरिकाको के लिये युद्ध लड़ना पड़ा। इन बात र अमेरिकामें इस समय जैसी गरमा-स चल रही है उसे देखते हुए प्रेसि-मैन, जो बाक बितण्डावादमें अपने ाधिकारियोंको अपेक्षा अधिक कच्चे हैं, तका साहस नहीं कर सके कि फिर रकी स्थिति पैदा करके कटु आलो-शिकार बनें। इसीसे आपको यह पड़ा है कि "अन्तर्राष्ट्रीय जटिलताओं ानेका काम राष्ट्र संघके संगठन पर र देना चाहिये।" आपने यह भी कि "पुराना राष्ट्र संघ अत्यधिक ोंसे ही चौपट हो गया।" वास्तवमें ति ब्रिटेनके लिये बड़ी ही असुविधा । इसके मुकाबिले अमेरिकाको भिड़ा ी हालतमें ही ब्रिटेन अपने स्वार्थों ा कर सकता है यह बात वह खूब ता है। अब देखना है कि ब्रिटेन रूपी ी परिस्थितिमें किस करवट बैठता है।

निन्दनीय है—

ईरानके उत्तरी प्रांत अजरबैजानका विकट रूप धारण करता जा रहा है। ी राजधानी तेहरानकी ओर विद्रोही रहे हैं। रूसी फौज उनकी मदद कर । विद्रोहियोंको रोकनेके लिये भेजी सरकारी फौजको अजरबैजानकी ओर रूसी सेना नहीं बढ़ने देती। ईरान सरकार की इस सम्बन्धकी अपीलको रूसने ठुकरा दिया है। मजा यह कि इस समय 'ईरानमें अमेरिका, ब्रिटेन और रूस तीनोंकी सेनाएं उपस्थित हैं। जापानके आत्मसमर्पण करनेके बादसे ही ईरान सरकार तीनों महान् राष्ट्रों से अपनी-अपनी सेनाओंको ईरानसे हटा ले जानेकी अपील कर रही है, किन्तु दुर्बलकी कौन सुनता है। अमेरिकन सरकारने ईरान स्थित अमेरिकन सैनिक अधिकारियोंको जनवरी १९४६ तक ईरानसे अमेरिकन सैनिकोंको हटा लेनेका आदेश दिया है और ब्रिटिश तथा सोवियट सरकारोंसे भी ऐसा ही करनेका अनुरोध किया है। किन्तु ब्रिटेन और रूसपर इस अनुरोधकी अनुकूल प्रति-क्रिया नहीं हुई। अंगरेजी हलकोंमें इस सम्बन्धकी चर्चासे यह प्रतीत होता है कि वे इस घटनाको अधिक महत्व नहीं देना चाहते। उनका कहना है कि यदि बाहरी हस्तक्षेप न हो तो इस सम्बन्धमें विशेष आशङ्काकी बात नहीं है। इस घटनाको स्थानीय महत्वसे अधिक विशेषता नहीं दी जा सकती। इससे बढ़कर मक्कारीकी बात और क्या हो सकती है? रूस ईरान सर-कारके विरुद्ध अजरबैजानी विद्रोहियोंकी प्रत्यक्ष मदद कर रहा है फिर भी अभीतक बाहरी हस्तक्षेप होनेकी बात ब्रिटेनकी समझमें ही नहीं आ रही है। वास्तविकता यह है कि जो ब्रिटिश सरकार इण्डोनेशिया और फ्रेंच इण्डोचीनमें शांति और व्यवस्थाके नामपर हस्तक्षेप कर रही है और डच तथा फ्रेंच सरकारोंकी मदद कर रही है, उसमें यह नैतिक बल कहांसे आये कि वह सोवियट सरकारसे कहे कि तुम्हारा यह काम १९४३ की तेहरान घोषणाके विरुद्ध हो रहा है। अजर बैजान प्रान्तकी स्वायत्त शासनकी मांगको हम अनुचित नहीं समझते। यह सहज स्वा-भाविक मांग है। किन्तु इसे मनवानेका ढङ्ग अवांछनीय है। वैदेशिक हस्तक्षेप, भले ही उद्देश्य कितना ही अच्छा क्यों न हो, यदि होता रहेगा तो जबतक संसारमें विभिन्न व्यवस्थाएं और प्रणालियां वर्तमान हैं, वे अपनी अपनी व्यवस्था कायम रखनेके लिये दुर्बल राष्ट्रोंपर इसी तरह नाजायज दबाव डालकर वहां अशांतिकी सृष्टि करती रहेंगी, जैसे दक्षिण पूर्व एशियामें ब्रिटेन कर रहा है। यह मौलिक सिद्धांतकी बात है! यदि हिन्द चीन और इण्डोनेशियाके घरेलू मामलोंमें ब्रिटेनका हस्तक्षेप निन्दनीय है तो ईरानमें सोवियट सरकारका हस्तक्षेप भी उतना ही निन्दनीय समझा जायगा।

कहां है लोकतन्त्र ?

चीन स्थित अमेरिकन राजदूत मेजर जेनरल हर्लीने अपने पदसे इस्तीफा देते हुए जो वक्तव्य दिया है वह उनसे लोक-तन्त्रकी दुहाई देनेवाले राष्ट्रोंके नेताओंकी असलीयत पर पड़े हुए पर्देको टूक टूक कर देनेवाला है। आजतक इतने उच्च-पदस्थ अधिकारी व्यक्तिके मुंहसे ऐसा तीखा देने वाला वक्तव्य सामने नहीं आया। आपकी बातोंसे अमेरिकाकी वैदेशिक नीतिका भण्ड स्वरूप बिलकुल नंगा हो गया है। चीनमें दो प्रकारकी शक्तियां काम कर रही हैं। इन दोनों शक्तियोंको अमेरिकाके पेशेवर वैदेशिक राजनीतिज्ञ भीतरही भीतर प्रोत्साहन दे रहे हैं ताकि वहां राष्ट्रीय एकता स्थापित न हो सके। ऊपर कही गयी दो प्रकारकी शक्तियोंसे मेजर हर्लीका मतलब है चीनके कम्यूनिस्टों और साम्राज्यवादी गुटसे। इन दोनों गुटोंको अमेरिकाके कूट नीतिज्ञोंसे चीनके हितके सर्वथा विरुद्ध प्रोत्साहन मिल रहा है। मेजर हर्लीने कहा है कि अमेरिकन कूटनीतिज्ञ बराबर चीनी कम्यूनिस्टोंको यह कह कर भड़काते रहे हैं कि "चीनकी राष्ट्रीय सरकारको विनाश-से बचानेके मेरे प्रयत्नको संयुक्त राज्य अमे-रिकाकी नीतिका समर्थन नहीं प्राप्त है।" मेजर हर्लीका यह कथन बिलकुल सही है कि अमेरिकाकी वैदेशिक नीतिकी यह विशेषता है कि अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें बरा-बर घोषित नीतिके प्रतिकूल आचरण किया गया है। उदाहरणार्थ हम लोगोंने अटलां-टिक चार्टरके सिद्धान्तों पर लोकतन्त्रको अपना लक्ष्य मान कर युद्ध आरम्भ किया था। युद्धमें हमारा साथ देनेवाले सहयो-गियोंने उस समय लोकतंत्रके सिद्धान्तोंके प्रति लम्बी चौड़ी डींग हांकी थी। किन्तु परिणाम क्या हुआ? मेजर हर्लीके कथना-नुसार दोनों विश्वयुद्धोंमें ब्रिटेनने अमेरिका को बेवकूफ बनाया और अब तीसरे महा-युद्धकी तैयारी है। अमेरिकन वैदेशिक नीतिकी कमजोरीका परिणाम है कि अमे-रिकाको दो दो महायुद्धोंमें भाग लेना पड़ा और अब तीसरेकी बारी है। और यह सब क्यों? मेजर हर्लीके कथनानुसार इसका कारण यह है कि ब्रिटेनकी औपनिवेशिक बराबर अमेरिकाको बुत्ता दिया है। औप-निवेशिक साम्राज्यवादी गुटोंने बराबर अमेरिकाको अपने स्वार्थोंके लिये चूसा है। यही कारण है कि इन दोनों युद्धोंमें विजयी होकर भी, मेजर हर्ली कहते हैं, "हम दोनों बार उन सिद्धान्तोंकी जड़ नहीं जमा सके जिनकी रक्षा करनेकी बात कह कर हमने युद्ध किया। इसका कारण यह है कि जिन लोगोंके हाथोंमें अमेरिकाकी वैदेशिक नीतिका सूत्र था वे स्वयं एकमत न थे। उनमें परस्पर विरोध था। फल स्वरूप बरा-बर हम उन राष्ट्रोंके शिकार हुए हैं जो हमसे माली सहायता पानेके लिये गला फाड़ फाड़ कर हमारे आदर्शों और सिद्धा-न्तोंके प्रति अपनी जबानी सहानुभूति दर्शानेमें एक दूसरेसे आगे रहनेका दम भरते है।" अमेरिकाका प्रधान बन्धु ब्रिटेन लोक-तंत्रका कितना बड़ा समर्थक है,मेजर हर्लीने अपने इस वक्तव्य द्वारा बिलकुल साफ कर दिया है। चाहे जितने बड़े सिद्धान्तों और महान आदर्शोंकी बात कह कर युद्ध लड़े गये हों किन्तु इसमें जरा भी सन्देह नहीं है कि ब्रिटेनका उद्देश्य अपने औपनिवेशिक साम्राज्यकी रक्षा करनेके सिवा और कुछ नहीं रहा है। पहले युद्धसे यह स्पष्ट हो गया था और अब इस दूसरे युद्धसे भी यही स्पष्ट हो रहा है। लोकतन्त्र तो ब्रिटेनके लिए, वैदेशिक मामलोंमें, सदा एक बहाना रहा है।

नेताजी रूस गये थे—

सिंगापुरसे प्रकाशित होनेवाले 'आजाद हिन्द' समाचार पत्रमें एक बड़ा ही दिलचस्प समाचार छपा था। उसका उल्लेख आजाद हिन्द फौजके साथ काम करनेवाली ४६ वीं मोब इन वर्कशाप कम्पनीके श्री गोविन्दराव शिंदेने किया है। आपने अपने वक्तव्य-में बताया है कि बर्मासे नेताजीकी ६ सप्ताहकी अनुपस्थितिका कारण यह था कि उन दिनों वे रूस गये थे। वहांसे वापस आनेपर स्वयं सुभाष बाबूने अफसरोंकी सभामें बोलते हुए यह स्वीकार किया था कि मैं रूस गया था। श्री गोविन्दरावने यह भी बताया है कि मलायामें सुभास बाबूके पहुंचते ही भारतीय बन्दियोंके साथ जापानियोंका जो दुर्व्यवहार हो रहा था, वह बन्द हो गया। नेताजीकी कठिन दिनचर्याका वर्णन करते हुए शिंदे साहबने बताया है कि दिन और रात भर वे काममें लगे रहते थे। मात्र दो घण्टे ४० मिनट सोते थे। अमेरिका, ब्रिटेन, चीन और हालैण्डके विरुद्ध युद्ध घोषणा करनेके बाद तो वे सिर्फ दो घण्टे ही सोने लगे। जो लोग सुभास बाबूकी सङ्गठनात्मक शक्तिसे परिचित हैं वे जानते हैं कि इस दिशामें उनकी अद्भुत क्षमता थी। झांसी रानी पल्टन और बाल-सेनाका उनका सङ्गठन अपूर्व था। मोलमीन के निकट रानी झांसी पल्टनने, जिसके पास हथियारोंमें मात्र बन्दूक थी, मित्र शक्तियों की विविध शस्त्रास्त्र सम्पन्न वाहिनीसे १९ घण्टेतक युद्ध करके मित्र सैनिकोंकी प्रगति को रोक रखा था। उसके इस बहादुरीके कामसे दुश्मन भी दङ्ग रह गये और उन्हें यह स्वीकार करना पड़ा कि महिला पल्टन केवल एक दिखावा नहीं बल्कि सच्चे अर्थमें रणकुशल वाहिनी है।

कलकत्ते में गोलीकाण्ड—

कलकत्तेमें छात्रोंके शान्तिपूर्ण जुलूस पर पुलिसके गोली वर्षणके सम्बन्धमें बंगाल सरकारकी ओरसे जो विज्ञप्ति प्रकाशित की गयी है, उसमें सरकारने पुलिसके अनुचित कार्यों पर पर्दा डालनेका प्रयास किया है। विज्ञप्तिमें कहा गया है कि 'राजनीतिक नेताओंकी अपीलपर छात्रोंने सभाका आयो-जन किया' किन्तु श्री शरतचन्द्र बोसने इसका खण्डन करते हुए कहा है कि— 'बंगालके किसी नेताने छात्रोंसे ऐसी अपील नहीं की।' छात्रोंकी सभा और जलूसका आयोजन छात्र संगठनों द्वारा किया गया था और वैसा करनेका उन्हें पूरा अधिकार था। बंगाल गवर्नरने २१ नवम्बरकी रातमें एक व्यक्तिसे बातें कीं जिसने उन्हें बताया कि उसको नेताओंसे गुप्त आदेश मिला था। शरत बाबूने चित्तरंजनमें भाषण करते हुए पुलिसपर गम्भीर आरोप लगाये हैं। उन्होंने कहा है कि 'पुलिसवालोंने ही कुछ उत्पा-तियोंको पहलेसे ईंट पत्थर फेंकनेके लिये तैयार कर रखा था। इसी सिलसिलेमें उन्होंने यह भी कहा है कि पुलिस पर ईंट पत्थर फेंक कर छात्रोंके शान्तिपूर्ण जुलूसपर गोली चलवानेका कुछ उत्पातियोंने पहलेसे षड्यन्त्र कर रखा था। धर्मतल्ला स्ट्रीटके मकानोंकी छतोंपर ईंट पत्थरोंका पहलेसे एकत्र रहना इसका प्रमाण है। कम्युनिष्ट पार्टीको यह बात तीरकी तरह लगी है और उसके सेक्रेटरीने एक वक्तव्यमें कहा है कि छात्रों और पुलिसके बीच संघर्ष करानेमें कम्युनिष्टोंका जरा भी हाथ नहीं था। कम्युनिष्ट सेक्रेटरीकी बातक हम अक्षरशः सत्य माननेको तैयार हैं, लेकिन सत्य तो सिर पर चढ़कर बोलता है। अपने वक्तव्यमें कम्युनिष्ट सेक्रेटरीने, शायद गलतीसे, यह भी कह दिया है कि 'अगस्त आन्दोलनको देशभक्तोंका वीरत्वपूर्ण कार्य कहकर गौरवा-न्वित होनेवाले व्यक्ति कलकत्ते के संघर्षको जब उत्पातियोंका कार्य कहते हैं तो आश्चर्य होता है। मतलब यह कि कलकत्ते में उत्पा-तियों द्वारा जो कुछ किया गया उसको आप उचित कहना चाहते हैं। प्रत्यक्षतः उसे उचित मानते हैं। यही बात है न?

युग-धर्म

——:०:——

(लेखक—श्री पुरुषोत्तमदास कटल, बी० ए०

संसारमें पांच समाज हैं—जड़-समाज, मानवसमाज दैत्य-समाज,पशु-समाज और देव-समाज। जड़-समाजमें चेतनतत्वकी कमी है। पशु समाज,भोजन,नींद,मैथुन और भयमें ही अपना सब कुछ समझता है, दैत्य-समाज की सबसे बड़ी विशेषता दूसरोंका भक्षण करना है। आजके संसारमें शोषकोंकी गिनती इसीमें की जायेगी। मानव समाज इन तीनोंसे ऊंचा है, इसका कारण उसमें सभ्यताका समावेश है,उसे सभ्य पशु समाज इसी लिये कहा जाता है कि जब वह सभ्यता को छोड़ कर विवेकहीन और स्वार्थी हो जाता है तो वह पशु बन जाता है। जहांतक वह 'हम भले, आप भले' की लकीरका फकीर है, उससे संसारको कोई लाभ नहीं हो सकता। लेकिन जहां वह आत्माके प्रति जागरुक होकर कुछ त्याग करने लगता है, वहां वह संस्कृत मानव समाजमें गिना जाने लगता है। मानवका मूल उद्देश्य विकसितसे विकसिततर होना है। देवसमाज मानव समाजसे उत्तम इस लिये कहा जाता है कि वह अपने विकासको भूल कर पर-हित चिन्तनमें लग जाता है। इसी लिये वह वन्दनीय है। देव समाज अलौकिक ही नहीं, संसारमें भी मिलता है। स्वयं मनुष्य जब अपना व्यक्तिगत विकास छोड़ कर त्याग करने लगता है तो वह देवसमाज-में गिना जा सकता है। विश्व वंद्य 'बापू' की गिनती ऐसे ही समाजमें की जायेगी। ऐसी महान आत्मा मानव-समाजका युगों-युगों तक पथ-प्रदर्शन करती है, स्वर्गमें रहने वाले देवता तक उसे देख कर गद्गद् होने लगते हैं क्योंकि उनके समाजमें भी इन्द्रके समान पाशविक वृत्तिवाले और अहिल्याके सतीत्वको हरनेवाले व्यक्ति मौजूद हैं। जो मानव-समाजमें ही रह कर देवत्वको प्राप्त हो जायें वह धन्य है। हमारी नयी पीढ़ीको उनके बताये हुए मार्ग पर चल कर ही अपना कर्त्तव्य करना है।

प्रायः सभी देशोंमें इस पीढ़ीको राष्ट्र-का वास्तविक धन कहा गया है। यदि यह अवाक है तो उस देशको गरीबही कहा जायेगा। देशकी स्वतन्त्रता या परतन्त्रता भी इस पीढ़ीके मार्गमें सुगमता या कठिनाई लानेवाली सिद्ध होती है। यदि इस पीढ़ी-वाले व्यक्ति नवयुवक अकर्मण्य हुए तो वे देशको अधोगति पर पहुंचा देते हैं। पर समाजका स्तर (ऊंचा या नीचा) इन युवकोंके निर्माणके लिये जिम्मेवार है, इस बातसे कोई इन्कार न करेगा। ठीक कहना तो यह होगा कि बिना समाजके युवक नहीं बढ़ सकते और न बिना युवकके समाज; वे एक दूसरेकी स्थिति पर निर्भर हैं, क्यों-कि माता-पिता तथा उनके आसपासके वातावरणके अच्छा होनेसे युवकके अच्छे होनेमें सहायता मिलती है। इस लिये समाजकी किसी किसी कुरीतियोंको बदलने में कुछ समय तो लगता ही है, नवयुवक उसे एकाएक तो सुधार ही नहीं सकता। उसके लिये उसे एक वातावरण तैयार करनेकी आवश्यकता होती है, कुछ अनुगामी या साथी तैयार करने पड़ते हैं। यदि वह उनका सहयोग प्राप्त नहीं कर लेता है तो उसकी शक्ति क्षीण रहती है, और उसे समाजसे 'उच्छृंखल'होनेका खिताब मिलता है,सो अलग,क्योंकि सभी उसअकेलेसेसभ्यता और संस्कृतिके उजाड़ डालनेकी आशंका करने लग जाते हैं।

जो लोग युवककी अकेली शक्तिको तिलकको पहाड़ बना देने योग्य कहते हैं, वे अतिशयोक्तिके दोषी हैं, क्योंकि क्षणिक जोशमें कुछ कर डालनेकी डींग कुछ और है और कुछ कर गुजरनेका श्रेय कुछ और! ऐसा कहा भी गया है कि गरजनेवाले बादल बहुधा बरसा नहीं करते। पर अधिकतर देखा यही जाता है कि नवयुवक-गण स्टेज पर तो लम्बे लम्बे भाषण दे जाते है,लेकिन कर्मक्षेत्रमें आनेमें मुंह छिपाते फिरते हैं।

पाश्चात्य सभ्यताके पीछे पागल होकर हमारे युवकोंमें भी ये दुगुण आ गये हैं। विदेशी युवकोंके साहसकी तारीफ करते नहीं अघाते, लेकिन जब त्याग और साहस करनेका अवसर आता है तो किनाराकशी कर जाते हैं। अपने वृद्धोंके प्रति उदासीन रहकर एक ही दिनमें सब कुछ कर डालनेका स्वप्न देखनेवाले युवकोंकी कमी हमारे यहां नहीं है। उनकी क्रियाशीलतामें स्थायित्व नहीं रहता, इसलिये वे आगे भी नहीं बढ़ सकते। उनकी दशा क्षुद्र नदी जैसी रहती है। गम्भीरतासे तो कोसों दूर रहते हैं। उनके क्षणिक उत्साहमें जो विवेचना शक्तिकी कमी है, जो समय असमय और अच्छे बुरे के प्रति समान भाव है, उससे उनकी कल्पना को 'कलपना' ही पड़ता है। समाजसे सहसा विद्रोहकर वे रूस जैसी क्रांति किया चाहते हैं उन्हें परिस्थितियोंका कुछ भी ध्यान नहीं है। पर, एकके बाद एक सुधार कार्य जितनी सुगमतासे हो सकता है उतना एक ही बारमें तो नहीं! उनके एक ही बार सब कुछ करनेके आसमानी खयालमें बाहरी प्रदर्शनका आडम्बर भले ही हो, ठोस कार्य लगनके साथ करनेका चाव नहींके बराबर मिलेगा। एक दिनमें बार-बार विचारोंके घात-प्रतिघात सहनेवाले युवक ध्येयकी एकताको बहुत कम सोचते हैं। इसीलिये आवश्यकता है वे निःस्वार्थ होकर और लक्ष्यपर दृढ़ होकर, सङ्गठित रूपसे काम करें, यही उनका धर्म है और युगका तकाजा।

ऐसे बूढ़ोंकी हमारे यहां कमी नहीं है जिनमें विचारोंकी तरुणायी उम्रके साथ साथ बढ़ती गयी है, उदाहरणके लिये हम महात्मा गांधीको ले सकते हैं। हिंसात्मक क्रान्तिके हामी और ऊपरसे प्रगतिशीलता बतलानेवाले युवक, मौकेपर दुम दबाकर जहां भाग जाते हैं वहां ये सत्तहत्तर वर्षके वयोवृद्ध, हिमालयकी तरह अचल खड़े रहते हैं। हमें आज उन जैसा हृदय, प्रत्येक नव-युवकको बनाते देखना है। क्योंकि करना कुछ और बात है और डींग हांकना कुछ और। बिना किसी स्वार्थके बाधाओंकी ऊंची-नीची घाटियोंको पार करके समाज को उच्चस्थल पर पहुंचाना, हमारे प्रत्येक युवकका कर्त्तव्य होना चाहिये। नहीं तो, हम आज जिन्हें राष्ट्रके धन पुकारने जा रहे हैं उनके दिल बूढ़े हैं और लगन ठंढी पड़ गयी है, वे समाजमें कूड़ा कर्कटके समान हैं। देशको उनसे कोई लाभ नहीं हो सकता, दिशा-भ्रममें पड़े हुए वे समाजकी नकेल जरा भी नहीं घुमा सकते। वतनकी अमानत जब उनके पास रखी जा रही है तो किस तरह वे उसे खयानतसे बचायंगे? इसलिये यह आवश्यक ही नहीं, अत्यन्त आवश्यक है कि युवक कुछ करनेके पहले अपनी और अपने समाजकी स्थिति तथा अपने उद्देश्यको भली-भांति समझ लें।

हमारा देश और समाज दो महायुद्धोंके हाहाकार पूर्ण संकटोंसे निकल रहा है। उसका पुनर्निर्माण जरूरी है, जिसके लिये युवकोंको आगे आना अत्यन्त आवश्यक हो गया है। लेकिन युवक वैसे ही चाहिये जो धुनके पक्के हों, जिनको अपना स्वार्थ उतना जरूरी न हो जितना कि देश और समाजका विकास जरूरी है। जब समाज शोषणकी मार खा-खाकर विशृंखल होगया हो, तब यह लज्जाकी बात है कि नवयुवक अपनी मस्तीमें भूले-से रहे। रामके युगमें रावण था, आज भी हमारे युगमें रावण हैं, उसको विजित करनेके लिये एक क्रांतिकी आवश्यकता है—रूस जैसी क्रांति नहीं—क्योंकि वह जरा-सी गुञ्जाइश पाकर अपना रास्ता भूल गया है और साम्राज्यवादी बनकर अपने विश्व-व्यापी किन्तु कल्पित-मंगल उद्देश्यको विस्मृत कर चुका है। मुम-किन है कि वह हमारे देशको ही अपने पंजे-में किसी दिन कर ले और उसे बल्कानके देशोंके समान मजबूर करे। इसलिये उससे सावधान रहकर, अपने समाजके भिनभिनाते हुए नावदानोंको साफ करते हुए हमें अहिंसात्मक क्रान्तिके लिये तैयारी करनी है। जो शोषणकी चक्की हमारे समाजको पीसे डाल रही है, उसे उलट फेंकना है। १८५७ की गदर हिंसाके कारण असफल हो गयी; अहिंसात्मक तरीकोंसे हमें जन-जनके अन्दर ऐसे भाव उत्पन्न करना है जिससे इस बार सफलता ही मिले। हमारी आपसी फूट, छोटे बड़ेकी खाई और छुआछूतकी बीमारी इतनी ज्यादा बढ़ गयी है कि जिस-को हटाये बिना हम विकासोन्मुखी कभी नहीं हो सकते। अछूतोंके लिये मंदिर तो खुलवाये ही जायें लेकिन हमारे हृदय-मंदिर भी उनके लिये खुल जावें तभी हम उनको अपना सकते हैं। हमने प्राचीन कालमें बाहरसे आये हुए शक-हूणोंको इतना ज्यादा अपनाया कि वे आज जाट बनकर हमारे ही समाजके अङ्ग हो गये हैं। लेकिन यह बड़े दुःखकी बात है कि हम अपने मुसलमान भाइयोंको अच्छी तरह नहीं अपना सके। भले ही हम पं० जवाहरलाल नेहरूके शब्दों में मुस्लिम लीगको न अपनावें लेकिन हमें मुस्लिम कौमको अपने समाजका एक अङ्ग बनाना है। हम उसको अपना कर अधर्मी नहीं होंगे। शक-हूणको अपनाया तबतक हम अधर्मी नहीं बने, फिर आजकी बदली हुई परिस्थितिमें कैसे अधर्मी बन सकते हैं। प्राचीन कालके व्यास और मनु, महामना मालवीय और गांधीजीके रूपमें हमारे सामने खड़े होकर हमें यही करनेको कह रहे हैं। हमारे बूढ़े अगर इन्हें नहीं अपना सके तो हम युवक उन्हें अपनायेंगे। युगके साथ पैगम्बर बदलते हैं, उनके बदलनेसे धर्ममें परिष्कार होता जाता है; आज हमारा धर्म भारतीय हो गया है और उसके पैगम्बर हैं महात्मा गांधी—वे हिन्दू और मुसलमानों दोनोंके पैगम्बर हैं—वे उस धर्मके पैगम्बर हैं जिसका पालन कर हमारा देश आजाद होने जा रहा है। अपने दकियानूसीपन छोड़कर क्यों न हम उसी मार्गपर चलें जिस पर हमारे पैगम्बर चल रहे हैं—हमारे युगके अवतार चल रहे हैं। हमारे पंडितों और मौलवियोंकी दी हुई दवा आज पुरानी पड़ गयी है,उसपर कई सौ वर्षोंकी गर्द चढ़ गयी है, यहां हमारा मर्ज भी दिनपर दिन बढ़ता ही गया है। उसके लिये एक कड़वी दवा हमारा पैगम्बर दे रहा है। मर्ज कड़वी दवा से ही जाया करता है। हमें चाहिये कि हम उस दवाको पीकर अपने दिलोदिमाग तरो-ताजे कर लें, अपने दिलके बुढ़ापेको भगा दें और शरीर और मस्तिष्कसे तरु-णायी पा लें। तभी हमारा युवक होना सार्थक है; हमारा युग-धर्म तभी सफल हो सकेगा। उसको पाये बिना हम सबके सब काफिर हैं।

———

ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलके देशोंमें भारतीयोंके ... जैसा व्यवहार हो रहा है, उससे इस ... को और भी बल मिलता है कि भारती- ... को अपना स्वातन्त्र्य संग्राम अन्त तक ... रखना चाहिये और औपनिवेशिक ... राज्य लेकर ब्रिटिश राष्ट्रमण्डलका सदस्य ... रहनेको कदापि प्रस्तुत नहीं होना ... हिये। ब्रिटिश उपनिवेशोंमें भारतीयोंको ... लांछित और अपमानित होना पड़ ... है, उतना संसारके किसी भी देशमें ... । दक्षिण अफ्रीकामें भारतीयोंके साथ ... बुरा व्यवहार हो रहा है। भारतीयों ... स्थिति वहां सबसे अधिक खराब है और ... मार्शल स्मट्स तथा मि० एफ० एस० ... किसी भी हालतमें हिटलर अथवा ... लिनीसे अच्छे नहीं कहे जा सकते क्योंकि ... अफ्रीकाके लोग भारतीयोंको ठीक ... प्रकारको यातनाएं दे रहे हैं, जिस ... जर्मनोंने यहूदियोंको दी थीं।

ब्रिटेनके प्रायः सभी राजनीतिक दलोंके ... राजनीतिज्ञों द्वारा भारतीयोंको ... दी जा रही है कि वे तथाकथित ... 'राष्ट्रमण्डलके अन्तर्गत ही रहें। वे ... ... योंको पूर्ण स्वाधीनता न देकर औप- ... स्वराज्य देनेका समर्थन कर रहे ... किन्तु उनको इस बातका तनिक भी ... नहीं है कि भारतवासी 'राष्ट्र मण्डल' ... कितना बुरा ख्याल रखते हैं। ... 'राष्ट्रमण्डल' ब्रिटिश साम्राज्यका ... और गौरवपूर्ण नाममात्र है, और ... काली जातियोंको समानताका दर्जा ... दिया गया है। ब्रिटिश साम्राज्यमें ... और साम्प्रदायिक संकीर्णता जितनी ... मात्रामें विद्यमान है, उतनी संसारके ... किसी भी देशमें नहीं। भारतीयोंको ... नीतिका सबसे अधिक शिकार होना ... । लन्दनके अनेक होटल में अत्यधिक ... भारतीयोंको भी प्रवेश नहीं करने ... जाता है। भारतीयोंको सेनामें योगदान ... लिये बाध्य किया गया है, किन्तु ... उनके साथ अत्यन्त अपमानजनक ... किया गया है। हालहीमें एक भार- ... सैनिकको इसलिये फौजी अदालतमें पेश ... गया था कि उसने अपनी छुट्टीके ... पत्र पर पुलिसकी स्वीकृति लेनेसे ... किया था। युद्धके पूर्व भारतीयोंको ... सेना या सरकारी कार्योंमें भर्ती भी ... किया जाता था।

... नाडा तथा आस्ट्रेलियाने ऐसे कानून ... कर दिये हैं, जिसके अनुसार इन उप- ... में भारतीयोंके प्रवेश पर प्रतिबन्ध ... है, यद्यपि एक आस्ट्रेलियन आज- ... बंगालका गवर्नर है। गोरे चमड़ेवालोंकी ... लिये भारतीय अपने प्राणोंकी बलि ... देते हैं, लेकिन वे गोरे चमड़ेवाले उन ... के साथ बुरासे बुरा बर्ताव करनेमें ... हिचकते। हमारा भारतीय नाविक ... जानको खतरेमें डालकर ब्रिटेन और ... उपनिवेशोंकी जनताके लिये भोजन ... लेकिन उनको भी गुलामोंसे बदतर ... रखा जाता है। किन्तु अंग्रेजोंद्वारा ... और स्वतन्त्रताके स्तम्भके ... जानेवाले जेनरल स्मटसके अधी-

ब्रिटिश साम्राज्यमें भारत का स्थान

लेखक—डा० धनीराम प्रेम

नस्थ दक्षिणी अफ्रीकामें भारतीयोंको इस रंगभेद नीतिका जितना अधिक शिकार होना पड़ रहा है, उतना कहीं भी नहीं। स्मट्स और उनके गोरे भाइयोंके लिये दक्षिणी अफ्रीकाको—वस्तुतः सारे अफ्रीकाको सुरक्षित बनानेमें हजारों भारतीयोंने अपना खून बहाया है लेकिन उसके पुरस्कार स्वरूप भारतीयोंके हाथ लगा है अपमान और प्रताड़ना।

नेटालमें गोरोंको जब यह मालूम हुआ कि गन्नेकी खेतीसे उनको अत्यधिक लाभ हो सकता है, तो उन्होंने अनुभवी मजदूरोंकी तलाश शुरू की और स्वभावतः उनकी दृष्टि भारतकी ओर आकर्षित हुई। ब्रिटिश गवर्नर जेनरलने भारतमें सस्ते मजदूरोंको भर्ती करनेमें पूरी सहायता दी। भारतमें मजदूरोंको भर्ती करनेमें उन गोरोंके दलालोंने अत्यंत घृणित प्रणाली अख्तियार की। स्त्रियों और बालकोंको उनके गृहोंसे झूठे प्रलोभन देकर भगा लाया गया और बातनामेपर उनके अंगूठेका निशान जबर्दस्ती ले लिया गया। इसके बाद उनको भेड़ बकरियोंके समान जहाजोंमें भर कर दक्षिणी अफ्रीका भेज दिया गया और वहां पहुंचनेके पूर्व तक वे लोग यह नहीं जान सके कि उन्हें कहां और किसलिये ले जाया जा रहा है।

इस प्रकार १८६० ई०से गोरे खेतिहारोंके गुलामोंकी हैसियतसे भारतीयोंका दक्षिण अफ्रीकामें आगमन आरम्भ हुआ। भारतीयोंको वेतनके रूपमें प्रति मास १० शिलिंग मिला करते थे। उनको रहनेके लिये संकीर्ण और गन्दी कोठरियां मिली थीं तथा आजादी नाम मात्रको नहीं थी। मामूली अपराधके लिये भी उनको निष्ठुरतापूर्वक पीटा जाता था और स्त्रियां तो गोरे ओवरसियरोंकी सदैव दया की पात्री थीं। उनके साथ सभी प्रकारके अत्याचार किये जाते थे तथा जब वे ओवरसियर शराबके नशेमें चूर होते थे तो उन स्त्रियोंके सतीत्वके साथ बीभत्स अनाचार किया करते थे। पूर्वी अफ्रीकामें भारतीयोंको रेल पथोंका निर्माण करनेके लिये ले जाया गया था। आजकल वहां भारतीयोंकी संख्या गोरोंकी अपेक्षा दुगुनी है लेकिन सभी अधिकार गोरोंके ही हाथोंमें सुरक्षित हैं।

दक्षिण अफ्रीकाके भारतीय श्रमिक अत्यन्त परिश्रमी और मितव्ययी थे। वहां काम करनेकी ५ वर्षोंकी अवधि समाप्त हो जानेके बाद उनमेंसे अनेक भारतीयोंने जमीन खरीद ली, मकान बनवा लिये और कोई व्यवसाय आरम्भ कर दिया। वहांके गोरोंको भारतीयोंका यह कार्य बड़ा ही खटका और इसको रोकनेके लिये १८९६ ई० में गोरोंने एक कानून लागूकर ऐसी व्यवस्था कर दी कि कामकी अवधि समाप्त हो जानेके बाद दूसरी अवधिके लिये फिरसे शर्त-बन्दी की जा सकती है और यदि कोई भारतीय इसको अस्वीकार करेगा तो अपनी आमदनीका आधा भाग पोल टैक्सके रूपमें उसे चुकाना पड़ेगा। भारतीयोंको हमेशा गुलामी करनेके लिये बाध्य करनेके ख्यालसे ही यह कानून बनाया गया था। जो भारतीय वहां स्वतन्त्र नागरिकोंकी तरह बस गये थे, उनको सभी प्रकारसे उत्पीड़ित किया गया। डरबनको उन्होंने ही एक समृद्ध नगर बनाया था, लेकिन उनको झोपड़ियों और गन्दी बस्तियोंमें रहनेके लिये बाध्य किया गया। इस समय भी डरबन कारपोरेशनके २९०० भारतीय कर्मचारियोंको दक्षिण अफ्रीकाके एक सबसे गन्दे मुहल्लेमें बाध्य होकर रहना पड़ रहा है। म्युनिसिपालिटीके मेडिकल अफसरने ने उनकी झोपड़ियोंको 'मानव आवासके अयोग्य' करार दे दिया है, फिर भी चौथाई एकड़ भूमिपर ६० व्यक्तियोंको ठूंस ठूंसकर रखा गया है और इसी कारण उनकी आबादीके द्वादशांशकी प्रति वर्ष मृत्यु हो जाया करती है। साथ ही भारतीय श्रमिकों और व्यवसायियोंको सभी प्रकारके घृणित वर्ण-विरोधी कानूनोंका शिकार बनाया गया है। रातके ९ बजेके बाद वे आम-सड़कोंपर चल नहीं सकते और अनुमति पत्रके बिना उन्हें एक स्थानसे दूसरे स्थानको जानेकी भी इजाजत नहीं है। रेलगाड़ियों और ट्रामोंमें भी उनके साथ अस्पृश्य जैसा बर्ताव किया जाता और उनके लिये पृथक स्थान बना रहता है। पार्कोंमें भारतीयोंको घूमनेकी इजाजत नहीं है और फुट पाथोंपर भी वे चल नहीं सकते। इसके साथ ही उनको अनेक प्रकारकी गालियों, अपमानों और मारपीटका शिकार होना पड़ता है।

महात्मा गान्धी जब सर्व प्रथम दक्षिण अफ्रीका गये तो वहांके गोरोंने उनका अप-मान करनेके लिये 'कुली बैरिस्टरके' नामसे सम्बोधित किया। उनको रेलगाड़ीके पहले दर्जेसे जबर्दस्ती बाहर ढकेल दिया गया हालांकि उन्होंने पहले दर्जेका टिकट ले रखा था। भारतीयोंके साथ समान व्यवहारकी मांग करनेके कारण कई बार उनको बुरी तरह पीटा गया और अदालतमें वकालत शुरू करनेके लिये जब उन्होंने अपनी अर्जी पेश की तो गोरे वकीलोंने उनका तीव्र विरोध किया। महात्मा गान्धीके वीरत्वपूर्ण प्रयत्नोंके परिणाम स्वरूप दक्षिण अफ्रीकाके प्रवासी भारतीयोंके लिये समानाधिकार प्राप्त करनेका आन्दोलन चलानेके उद्देश्यसे नेटाल भारतीय कांग्रेसकी स्थापना हुई और उसके आन्दोलनोंके परिणाम स्वरूप सरकारने पोल टैक्सको २५ पौण्डसे घटाकर ३ पौण्ड कर दिया। बोअर युद्ध आरम्भ होनेपर महात्मा गान्धी तथा अन्य भारतीयोंने सरकारको पूरी सहायता पहुंचायी। किंतु युद्ध समाप्त होनेके बाद सरकारने सदाकी भांति इस बार भी उनकी सेवाओंको भुला दिया और भारतीयोंपर पहलेकी अपेक्षा अधिकाधिक अत्याचार किये जाने लगे। बोअर युद्ध आरम्भ करनेके लिये ब्रिटेनकी ओरसे जो बहाने बनाये गये थे, उनमें एक यह भी था कि बोअरोंने ब्रिटिश भारतीय प्रजाजनोंके साथ अत्यन्त बुरा बर्ताव किया था। किन्तु ब्रिटेनके शासनमें वहां वर्णभेद और भी बढ़ा और इसको दूर करनेके लिये महात्मा गान्धीने अहिंसा आन्दोलनका सर्वप्रथम प्रयोग दक्षिण अफ्रीकामें ही किया। हजारों भारतीय जेलोंमें भर गये। अन्तमें दक्षिण अफ्रीकाकी सरकारको अपने कानूनोंमें संशोधन करनेके लिये बाध्य होना पड़ा। इसके बाद १९१४ में अनिवार्य श्रमिक भर्ती की प्रथा भी स्थगित हो गयी।

दक्षिण अफ्रीकाकी वर्णभेद नीतिका वहांके सभी राजनीतिक दलों द्वारा समर्थन किया गया है। एफ० एस० मालनने एक बार कहा था कि 'समानताका सिद्धान्त दक्षिण अफ्रीकाकी संस्कृति नहीं है।' वहां की राष्ट्रीय पार्टीके एक वक्तव्यमें कहा गया था कि श्वेत जातियोंको हर हालतमें पूर्ण संरक्षण मिलना चाहिये। सामाजिक भेदोंका रहना अत्यन्त आवश्यक है। स्वयं फील्ड मार्शल स्मट्सने एक मुलाकातमें कहा था कि यूरोपियनों और गैर यूरोपियनोंके लिये पृथक निवासस्थान अनिवार्य है। यद्यपि डरबन शहरमें हजारों भारतीय काम करते और रहते हैं, फिर भी स्मट्सने कहा है कि "मैं डरबनको एक यूरोपियन नगर बनाना चाहता हूं।" दक्षिणी अफ्रीकामें जीवनके सभी अध्यायोंमें यह वर्णभेद व्याप्त है। सिनेमा-थियेटरोंमें भारतीयोंको जानेकी अनुमति नहीं है और सरकसोंमें उनके लिये अलग स्थान रहता है। फुटबाल और क्रिकेटके खेलोंमें काले लोग गोरोंके साथ शामिल नहीं हो सकते। पुस्तकालयों और अन्य साधारण स्थानोंका द्वार भी काले लोगोंके लिये सदैव बन्द रहता है। रेलवे ट्रेनों, ट्रामगाड़ियां, सांस्कृतिक संस्थाओं और गिरजाघरोंमें भी यह वर्णभेद व्याप्त है। सम्भ्रान्त भारतीयोंको यूरोपियन मेहतर तक अपमानित कर देता है। भारतके एजेंट जेनरलतक वहां इसी प्रकार अपमानित किये जाते हैं। इसी वर्णभेदके कारण सरकारी स्वास्थ्य एवं शिक्षा विभागोंसे भारतीय पूरा लाभ नहीं उठा सकते। सरकारी करोंका बहुत बड़ा भाग भारतीयोंसे मिलता है किन्तु उस रकमका उपयोग यूरोपियनों और उनके मुहल्लोंके हितमें किया जाता है। गैर यूरोपियनोंके लिये यूरोपियन होटलोंमें भी स्थान नहीं। काले और गोरेके यौन सम्पर्कपर भी कानूनी प्रतिबन्ध है। यूरोपियनों द्वारा असवर्ण विवाहका घोर विरोध किया जाता है, क्योंकि उनका विश्वास है कि 'परमात्माने उनको सफेद चमड़ा खास उद्देश्यसे दिया है।'

दक्षिण अफ्रीकामें यूरोपियनों और गैर यूरोपियनोंके साथ न्याय भी समान रूपसे नहीं किया जाता। यदि किसी यूरोपियनके खिलाफ किसी गैर यूरोपियनपर कोई जुर्म करनेका अभियोग हो तो उस जूरीगण यूरोपियन अभियुक्तको कदापि दण्ड देनेको प्रस्तुत नहीं होंगे। गैर यूरोपियनको जूरी होनेका अधिकार नहीं है। यदि कोई काला

(शेष १७ वें पृष्ठपर)

एक शब्द चित्र—

हमारे राष्ट्र के ये कर्णधार

'लेखक—श्रीयुक्त अगियाबैतालजी'

मौलाना आजाद

दाढ़ी जितनी मजेदार, छटी हुई मूछें भी उतनी ही चुस्त और दुरुस्त। देखकर दिल फड़क उठे। चेहरा जिस शानका है मिजाज उससे कम शान नहीं रखता। शेरवानीको वह न तो कभी खराब होने पाती है और न टोपीका सिलसिला ही गड़बड़ाने पाता है। दिमाग जितना भरा पूरा है जेब उससे किसी भी हालतमें कम नहीं है। दिमागमें अगर दो नये शब्द आते हैं तो पाकेटमेंकी संख्या भी जरूरही बढ़ जाती है। हमारी राष्ट्रीय महासभाके पति न पदसे कमजोर है न पानीसे। दोनोंके दोनों एक दूसरेसे बढ़चढ़कर हैं। क्या मजाल जो दिल और दिमागको कभी दकियानूसी मला छू ले। तभी तो उनकी लम्बी सफरकी सवारी जमीनपर नहीं चलती वरन् हवामें उड़ती चलती है। जूतेकी नोक मानो भारतकी जमीनको कुरेद कुरेदकर पूछती चलती है कि बताओ तुम्हारे सीनेमें कहां दर्द है। उम्र जितना पुराना पड़ चुका है हविस उतनी ही नयी है। जिन्दगी जितनी घिस चुकी है रवानीमें उतनी ही चोखी है। बलाकी बातचीत और गजबका मुस्कराना। आंखें जिधर उठ जाती हैं उधरकी हजारों हजार आंखें आपकी ओर हो जाती हैं। तावका तवा भी कम गरम नहीं रहता। उससे जो चीज छू जाती है उसकी सर्दी ही बढ़ जाती है। कहते हैं एक बार आप डा० अन्सारीके बंगलेमें ठाठके साथ ठहरे हुए थे। किसीने कह दिया—मुफ्तका रहना और खाना फिर भला दिल खोलकर क्यों न रहा जाय। बातकी लहरने आपके दिलके करारको तोड़ दिया। नवाबी मिजाज इस शोखीके सामने तमतमा उठा। शान ही नहीं तो फिर गुमान कैसा। हुक्मकी हवा मुंहसे निकली और एक बंगला किरायेपर ले लिया गया। साल भरतक उसमें केवल इसलिये ताला बन्द रहा कि कहनेवाला आंखें खोलकर भी भर देखे कि आजाद मुफ्तके मौजका मुहताज नहीं—वरन् पासमें पैसे रखता है और दिमागमें दुनियादारी भी लिये चलता है। चुड़ियादार पाजामा जितना चुस्त है दिलका खयाल भी उतना ही दुरुस्त है। दलका पताका जितनी ऊंचाईपर उठकर फहराता है उनका जज्बा उससे किसी भी हालतमें कम नहीं है। आपको आजकल केवल एक ही नशेका शौक है और वह है आजादीका नशा। देश सेवाका प्याला उससे आपके हाथोंमें आया है आप उसे बराबर होठोंसे लगाये हैं।

जवाहरलाल नेहरू

चुड़ियादार पाजामा, पंजाबी कुरता, खद्दरी, खानेकी तरह सफेद गान्धी टोपी और फानुसी चमकके घेरेमें जो गौर वर्ण शरीर घिरा है उसे जवाहरलाल नेहरू कहते हैं। यद्यपि बाल पक गये हैं पर शरीर से पचपनका बूढ़ा नहीं हो पाया है। आंखें जितनी तेज हैं जीभ भी उतनी ही पैनी है। पैर जितने तेज हैं पढ़े चाल भी उतने ही तेज हैं। दिल अगर उछलता रहता है तो दिमाग भी कम नहीं दनदनाता। काश्मीरी सेब जितना लाल है आपका गाल उससे कम लाल नहीं है। कलम जितनी तेजीसे चलती है कदम भी उतनी ही फुर्तीसे उठते हैं। हिम्मत हिमालयकी तरह अचल है तो हविस भी हरिनसी कुलांचें भरनेवाली है। लाखों लाख आदमियोंकी भीड़ एक तरफ और आपकी आवाज एक तरफ। गोलीकी तरह बातका निशाना कभी चूकने नहीं पाता। आनन्द भवनका यह मूर्तिमान आनन्द देशकी आंखोंकी मलयता है—बूढ़े भारतके हाथमें टेककी लकड़ी है। रोब शेर की तरह खौफनाक होते हुए भी दिल दरियाकी तरह है। जिस खूबीसे यह एक दिन में दर्जनों सभाओंमें भाषण किया करते हैं उसी तरह जेलके अपने तनहाईके दिन जिल्द के जिल्द किताबोंको खतम करनेमें बिता देते हैं। क्या मजाल जो उन्हें एक भी तरफ से कच्चा ठहरा दिया जाय। चारों कोनेसे चाहे जहांसे भी ठोक पीटकर देखा जाय हिस्सा बराबर ही मिलेगा किसी तरफ कोई कोना छोटा या बड़ा नहीं हो सकता। स्वभावमें इन्हें कलयुगका परशुराम कहा जाय तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी। काम चाहे जितना भी सामने आ जाय मुंहपर शिकनकी शिनाख्त नहीं होती। चोटीके नेताओंमें एक यही शख्स हैं जिसने लाठियों की चोट उस समय अपने सीनेपर बरदाश्त की थी जिस समय इनके पैर मखमलपर चला करते थे और मिजाज मौजके दरियावमें डूबा उतराया करता था। भीतर और बाहर दोनों इतना सख्त है कि उससे टकरा कर सितमका सीना भी सन्नाटेमें आ चुका है। शौकके नाम केवल सिगरेट पिया करते हैं। शायद इसलिये कि सूखे धुएंके बादलसे आंखें धुंधली हो जाती हैं पर भरती नहीं। राजनीतिका राजा होते हुए भी कविताकी कली आपके शौककी विशेष वस्तु है। कार्लमार्क्सके कोलतारी धुंएसे आपके दिमागकी हवा नहीं बिगड़ी क्या यही ताज्जुब खयालोंका हद नहीं हो जाता। वंश के गौरवका इतना बड़ा खयाल कि कमलाकी मृत्युके बाद शादीके शौकको ही इस्तीफा दे दिया। न जाने अभीतक उसकी याद क्यों नहीं भूल सके जबकि विलायतमें पूरे यूरोपीय हैं। आपकी चालपर मुहब्बत का असर होता है, बातसे मुर्दे दिलोंमें भी जोश पैदा हो जाता है। भाषणमें ऐसी गजबकी शोखी है कि सन्नाटा भी एक बार चीखकर आपकी आवाजको हजारों हजार गलेसे दुहरा देता है। प्रत्येक शब्दमें बोलनेवालेके दिलका जोर इस बात का सबूत बनकर लोगोंके कानोंसे टकराता है कि उसके दिलमें दृढ़ताका चट्टान जमकर बैठा हुआ है जिसे जुल्मका तोप किसी तरह तोड़ नहीं सकता। लोग जेल जाकर बीमार पड़ते हैं और जेलसे बाहर आकर डाक्टरोंकी दवा खाते हैं पर यह जेल जाकर किताबोंका कचूमर निकाला करते हैं और जेलसे बाहर आकर साम्राज्यवादके कोट गढ़पर हमला बोलकर अपनी शक्ति आजमाया करते हैं। यह भारतका वह जौहर है जिसे जुल्मका जोर कभी डिगा नहीं सका। किस्मतकी बद्दुआ इसके सामने शर्मिन्दा होकर बेपानी हो जाती है। यह हमारे इस आगारके कुर्बानियोंके जौहरका वह नूर है जिसके आबसे भारतकी तस्वीर हमेशा बराबर साफ रहती है कभी गन्दी नहीं होने पाती। हमारी इस वर्तमान लड़ाईका यह वह सेनापति है जिसके हाथमें राष्ट्रीय झण्डेका डण्डा अजर और अमर हो गया है।

राजेन्द्र बाबू

उलझी हुई खिचड़िया मूछोंको गुम्बारने अपना मेहमान बना लिया है। नाक ठीक वैसी ही है जैसे कड़ाहीसे निकाली गयी पकौड़ी। बदनका कोई भी कपड़ा चुस्त दुरुस्त नहीं। सभी अव्यवस्थित और बेतरतीब। जूतेका पालिश न जाने कब उड़ गया है फिर भी उसका कोई ख्याल नहीं। मुंछी कुलके कलमदानकी तरह पुराने पुरजोर शरीरमें धर्मका हीरा लिये तपे गुणका इन्हें पता संस्कार का

न होगा। दिमाग जिस जोरसे विचारों को निकालनेमें मजबूत है शरीर उतना ही ढिल्ला दुलढा है। सदाकत-आश्रम की सादगीका प्रतीक है। पटनाका शायद ही एक ऐसा न होगा जिसपर आपके मोटरकी सवारी न निकली हो। ईमानकी सीधा होते हुए भी सत्यकी तरह साफ इनकी खास खूबी है। दमेका दौर शरीर पर जिस जोरसे होता है देहाका भी जरूरत पड़ने पर आप उसी जोरसे हैं। जीभ जरा चटपटी अवश्य है। यह सेनामीसे ब्रिटिश साम्राज्यवाद पर जाती है उसी चाहसे आमके रसको चखती है। डाक्टरोंके लाख मना करने पर भी आपसे आमका अपनापा कभी न छूटा। सादगी इतनी कि कोई भी दमेके जोरदार दौरेमें भी सदाकत आश्रममें मिल सकता है और घंटों आपके सेहतको परेशान कर सकता है। फिर भी आप ऊबते नहीं। हांफते-हांफते सवालोंका जवाब दिये जाते हैं। क्या मजाल कि कोई आपके पाससे निराश होकर जाय। चन्दा लेनेवालोंमें आपका अन्दाज निराला है। टके पैसे इकट्ठा कर देखते देखते बातकी बातमें लाख और करोड़ में परिवर्तित कर देते हैं। गांधीके प्रति आपकी सिधाईको इतना सीधा रखा है कि उसपर वहमकी एक भी बूंद नहीं पाती सरक कर जमीनमें मिल जाती है। दिमाग जितना ऊंचा है ठीक उतनी ही नीची है। भारतके ... में ये बिहारी-संस्करणके नामसे हैं। फिर भी मुंशी मुंशी ही तो आपने अपने लिये कागज और कलम सब कुछ मान लिया है। स्वागत ... मानमें लिखी हुई मनों चीजें सदाकत आश्रमके कमरोंमें बोरोंमें बन्द पड़ी हैं चूहे और दीमक निश्चिन्त होकर चरते हैं। इन दिनों आप भारतकी ... के विनाशमें देशवासियोंको अपना ... की अपील कर रहे हैं। विश्वास है यह मांग व्यर्थ न जायगी।

सरदार पटेल

गांधी युगके लौह संस्करण और गुजरातके नाथ हैं। बाहरसे देखनेमें चेहरा सख्त है भीतरसे दिल भी उतना ही है। घुटे सिर और गोल चेहरे पर तरह नाक ऐसी लगती है जैसे अरघे में शंकरका कोढ़ा रूप। अनुशासन सख्त और गांधीजीका यह दाहिना हाथ इतना मजबूत है कि इसकी मुट्ठीमें पड़कर साम्राज्यवादका दिल चपटा हो गया है। वाणीमें इतना ओज कि श्रोताओंके कानके पर्दे पर इनके शब्दकी चोट हथौड़ी की तरह पड़ती है। सिरपर मोती तौलिया रखकर जब यह धूपमें चलते हैं तो सूर्यकी तेज किरणें भी ठण्डी पड़ जाती हैं। कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्डकी नींव पर यह चट्टानकी तरह ऐसे जमा दिये गये हैं जैसे हिमालयके सिर पर गौरीशंकर। दिल गुफाकी तरह विशाल और भयंकर है। बाजकी-सी पैनी आंखें देखकर दुश्मनका कलेजा भी पत्तेकी तरह कांप उठता है। इनके फौलादी हाथोंमें पड़कर कलम वज्रकी तरह कागजको कुरेद कर रख देती है। इनकी न को हां में बदल देना बहुत बड़े दिलका काम है। गांधीवाद की लकीरपर चलनेवाला यह फकीर तपे हुए सूर्यकी-सी तेजी रखता है। दमनकी आंचमें अनेक बार तपाये जानेके बाद भी यह तपे-हुए तांबेकी तरह न पिघलनेवाला धातु ही सिद्ध हुआ है। ब्रिटिश साम्राज्यवाद आज तक इसी अचम्भेमें है कि आखिर यह बना किस धातुका है। गांधीजीका दाहिना हाथ होते हुए भी यह मुलायम नहीं वज्रकी तरह इतना कठोर क्यों है यह आश्चर्यकी बात है।

डा० पट्टाभि सीतारमैया

महाराष्ट्रके ये शिवाजी नहीं वरन रामदास हैं। लम्बा और छरहरा बदनमें सांवरा रंग खूब खिलता है उसपर गलेमें चादर हमेशा डाले रहते हैं। बोलते समय विषयके प्रत्येक पहलूका पोस्टमार्टम कर डालना इनकी खास विशेषता है। कांग्रेसका पूरा इतिहास इन्हें कण्ठस्थ है और जो सबसे बड़ी खूबी इनमें है वह है जिस जगहका ये वर्णन करते हैं उसके आसपासके गांव और रेलवे स्टेशन तकका नाम धड़ल्लेके साथ गिना देंगे। क्या मजाल जो उसके बीचके किसी भी स्थान या स्टेशन का नाम गलत हो जाय। मूंछें बड़ी बड़ी और माथेके जो थोड़े बहुत बाल लापता होनेसे बच गये हैं माथेकी नोकपर तक बेतरतीब खड़े रहते हैं जिसकी इन्हें कोई चिन्ता ही नहीं है।

नरेन्द्र देव

दुबला पतला साधारण कदका यह आदमी भी गजबकी तेजी रखता है। दमेसे हांफते रहते हुए भी दमसे बड़ा मजबूत है। क्या मजाल कि कोई काम इनके सामने आ जाय और वह इनके हाथोंमें पत्थर न बन जाय। कुर्तेके कमसे कम दो बटन और सदरीका सारा बटन खुले रहना इनके पहिरावेकी एक खास खूबी है। बोलते समय रुकना और सोचते समय ठहरना इनकी एक खास आदत है। देखनेमें ये भोलेभाले और निश्छलसे प्रतीत होते हैं। ग्रामीण जीवनका इन्हें प्रतिरूप कहा जाय तो कोई अत्युक्ति न होगी।

शंकरराव देव

शरीरकी पुष्ट लम्बाईमें छोटा यह शख्स जब किसानोंमें भाषण करनेको खड़ा हो जाता है तो सभामें आकाशकी-सी निर्जनता छा जाती है। बौद्ध भिक्षुकी तरह वेश बनाए यह गांवोंमें दिन-रात घूमा करता है और किसानोंके बीचमें कांग्रेसका सन्देश सुनाया करता है। संक्षेपमें इनकी लम्बाई जितनी छोटी है अपने प्रचार का दायरा भी उतना ही लंबा। जन नायक होते हुए भी ये जन सेवक बने रहना अधिक पसंद करते हैं।

डा० प्रफुल्लचन्द्र घोस

सफेद कुरता, बंगाली कटके जूते और हाथमें छाता लिये डा० घोसको कोई भी कलकत्तेकी लम्बी चौड़ी सड़कोंपर आरामसे घूमते हुए देख सकता है। साधारण बंगाली परिवारके एक मामूली व्यक्तिकी तरह इनका जीवन अपनी सादगीके लिये अति प्रसिद्ध है। बंगालके ग्रामीण जीवनका प्रतिरूप कह कर इन्हें पुकारना बुरा न होगा। अपनेको कछुएके सिरकी तरह छिपाये रखना इन्हें विशेष प्रिय है। सादगी, लोकप्रियताके साथ विशेष कायल होते हुए भी दिमागसे किसी भी हालतमें कमजोर नहीं हैं।

सूती वस्त्रका अभाव कब दूर होगा ?

(लेखक—श्री युगल किशोर गुप्त, एम० ए०, बी० एल०)

गत ४ वर्षोंसे भारतवर्षमें सूती वस्त्र की समस्या अत्यन्त गहन हो उठी है । विदेशी शासनके अभिशापके फलस्वरूप आरम्भमें तो भारतकी केन्द्रीय तथा प्रांतीय सरकारोंने सेनाकी आवश्यकताओंका ही ध्यान रखा और नागरिक तथा साधारण जनताको उसकी फूटी किस्मतपर छोड़ दिया । अब जर्मनी तथा जापानके परास्त हो जानेके पश्चात् यह आशा की जाती थी कि भारतमें सूती वस्त्रका अभाव बहुत कम हो जायेगा परन्तु हमें दुखके साथ कहना पड़ता है कि विभिन्न आर्थिक तत्वों का विश्लेषण करनेके पश्चात् हम इसी निष्कर्षपर पहुंचते हैं कि कमसे कम आगामी ५ वर्षोंतक वस्त्रका अभाव भारतमें बना ही रहेगा । गत ६ वर्षोंके सूती कपड़ेके उत्पादन की ओर देखिये—

उत्पादन

वर्ष	(लाख गजोंमें)
अप्रैल १९३९ से मार्च १९४० तक	४०१.२
„ १९४० „ १९४१ तक	४२६.९
„ १९४१ „ १९४२ तक	४४९.३
„ १९४२ „ १९४३ तक	४१०.९
„ १९४३ „ १९४४ तक	४८७
„ १९४४ „ १९४५ तक	४६९.५

उपर्युक्त आंकड़ोंसे देखते हैं कि अभी समाप्त हुए १९४४-४५ में कपड़ेके उत्पादन की मात्रासे इसके पूर्ववर्ती वर्षके मुकाबले १७॥ लाख गजकी कमी हो गयी । इसके कई कारण हैं । प्रथम तो गत ६ वर्षोंतक निरन्तर मशीनें चालू रखनेसे उनके पुर्जे घिस गये हैं और सुचारुरूपसे काम नहीं कर सकते और दुःखकी बात तो यह है कि ब्रिटेनसे सूती वस्त्रकी मशीनरी या उसके पुर्जे भी नहीं आ सके । और अभी भविष्यमें भी अबाध रूपसे आनेकी सम्भावना नहीं है । उपर्युक्त आंकड़ोंसे यह भी स्पष्ट है कि गत ६ वर्षोंमें युद्धजनित अवसर प्राप्त होनेपर भी भारतका स्वदेशी वस्त्र उद्योग विशेष रूपसे उन्नति नहीं कर सका । उसके उत्पादनमें वृद्धिकी मात्रा प्रति वर्ष २॥ प्रतिशतसे २२ प्रतिशत तक सीमित रही । यदि भारतीय सूती वस्त्र उद्योगने व्यवस्थित रूपसे विकासकी ओर ध्यान दिया होता तो वस्त्रके उत्पादनकी मात्रा आसानीसे दुगुनी हो सकती थी । इस कार्यके लिये भारतमें ही दीर्घ सूती रूईके उत्पादन, सूत कातने तथा बुननेवाली मशीनों के कल पुर्जे इत्यादि बनानेका प्रबन्ध किया गया होता । भारतने सूती वस्त्रके व्यवसायमें ब्रिटेनका अनुकरण किया है और अधिकतर मशीनें ब्रिटेनसे ही आया करती हैं । ब्रिटेनकी मशीनें अमेरिकाके मुकाबलेमें दकियानूसी हो गयी हैं और अब समय आ गया है कि भविष्यमें भारतीय उद्योगपति यदि सूती वस्त्रकी नयी मिलें स्थापित करना चाहें तो उन्हें अपनी मशीनरी प्रथम संयुक्तराष्ट्र अमेरिकासे मंगवानी चाहिये और तदुपरांत अन्वेषणकी सुविधा प्रदान करते हुए इस बातकी ओर ध्यान देना चाहिये कि शीघ्रातिशीघ्र मशीनरी भारतमें ही बन सके ।

आयात

अब इन्हीं ६ वर्षोंमें सूती वस्त्रके आयात की ओर ध्यान दीजिये—

वर्ष	आयात (लाख गजोंमें)
अप्रैल १९३९ से मार्च १९४० तक	५७.९
„ १९४० „ १९४१ तक	४४.७
„ १९४१ „ १९४२ तक	१८.१
„ १९४२ „ १९४३ तक	१.३
„ १९४३ „ १९४४ तक	.३
„ १९४४ „ १९४५ तक	.५

इनका अध्ययन करनेपर यह स्पष्ट है कि गत महायुद्धके पूर्वसे ही सूती वस्त्रका आयात भारतीय उत्पादनका केवल १४ प्रतिशत था । ब्रिटेन और जापान दोनों ही हमारे प्रमुख सप्लायर थे । युद्धारम्भ होते ही ब्रिटेन तो अपनी सेनाकी आवश्यकताओंकी पूर्तिमें संलग्न हो गया और जापान को महीन वस्त्रकी सप्लाईमें भारतीय बाजार का पूरा-पूरा अधिकार-सा मिल गया । परन्तु जुलाई १९४१ में जापानकी जितनी सम्पत्ति भारतमें थी वह अचल कर दी गयी जिसके फलस्वरूप जापानसे व्यापारिक सम्बन्ध टूट-सा गया । और जब दिसम्बर १९४१ में जापान एक शत्रु राष्ट्र बन गया तो सभी आयात तथा निर्यात बन्द हो गये । केवल नाममात्रके लिये सूती कपड़ेका आयात ब्रिटेन तथा अमेरिकासे जारी रहा । इस प्रकार जहां सन् १९३९-४० के मुकाबले में सन् १९४४-४५ में उत्पादनमें केवल १७ प्रतिशत वृद्धि हुई वहां इन ६ वर्षोंमें आयात में सन् १९३९-४० के भारतीय उत्पादनकी मात्रासे १४ प्रतिशतकी कमी हो गयी । इस प्रकार सन् १९३९-४० में जितना कपड़ा भारतीय जनताको उपलब्ध था सन् १९४४-४५ में उससे ३ प्रतिशत अधिक कपड़ा प्राप्य रहता अगर भारतमें उत्पादित या विदेशसे मंगाये वस्त्रोंका निर्यात नहीं हुआ होता—

वर्ष	भारतीय वस्त्रका निर्यात (लाख गजोंमें)	विदेशसे आयातका पुनर्निर्यात
अप्रैल १९३९ से मार्च १९४० तक	२२.१	१.६
„ १९४० „ १९४१ तक	३९	४.३
„ १९४१ „ १९४२ तक	७७.२	८.५
„ १९४२ „ १९४३ तक	८१.९	१६
„ १९४३ „ १९४४ तक	४६.२	नगण्य
„ १९४४ „ १९४५ तक	३१.४	„

इस प्रकार जहां सन् १९३९-४० में सूती वस्त्रके उत्पादन और आयातकी मात्रामेंसे निर्यात तथा पुनर्निर्यातकी मात्रा घटा देनेके बाद भारतीय जनताके उपयोगार्थ वस्त्रकी मात्रा ४३९.४ लाख गज थी, वहां सन् १९४४-४५ में वह ४२९.६ लाख गज रह गयी । इस प्रकार सन् १९३९-४० की अपेक्षा १९४४-४५ में कपड़ेकी मात्रामें विशेष कमी नहीं आयी परन्तु भारत तथा प्रान्तीय सरकारोंके वितरण व्यवस्थाकी खामियों, ब्लैक मार्केटवालोंकी करतूतों, इन पांच वर्षोंकी जनसंख्यामें वृद्धि (जो कमसे कम २ करोड़ अवश्य होगी), युद्धजनित कार्य करनेके अवसरसे बेकारीकी कमी तथा साधारण जनताकी क्रयशक्तिमें वृद्धि-इन सभी कारणोंसे वस्त्रकी कमी अत्यन्त खटक रही है ।

यदि भारत सरकार कपड़ेका भारतसे निर्यात बन्द भी कर दे फिर भी अवस्थामें विशेष परिवर्तन नहीं होगा जबतक वितरणकी व्यवस्था न सुधरेगी। परन्तु आवश्यकता इस बातकी है कि केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारें कपड़ेके वितरणमें ईमानदारी तथा तत्परतासे काम लें । नागरिक तथा देहाती जनता दोनोंकी आवश्यकताओं का ध्यान रखना होगा और जहां तक सम्भव हो सभी नगरोंमें राशनिंगका प्रबन्ध करना होगा ।

निकट भविष्यमें कपड़ेके अभावके दूर होनेके कुछ लक्षण अवश्य नजर आते हैं । प्रथम तो स्टर्लिङ्ग पावनेकी अदायगीके रूपमें ब्रिटेन भारतको काफी कपड़ा निर्यात करेगा । चाहे ब्रिटेनके निवासी अर्धनग्न ही क्यों न हो जायें तथा यूरोपमें भी अपना पैर जमानेकी कोशिश क्यों न करें परन्तु यदि स्टर्लिङ्ग पावनेको अदा करनेकी उनकी नीयत है तो प्रत्येक वर्ष ब्रिटेनको १ अरब रुपयेकी वस्तुएं निर्यात करनी होंगी जिनमें लंकाशायरका कपड़ा,कपड़ेकी मिलोंके लिये मशीनरी तथा लोहा और इस्पात होंगे । दूसरे इस समय ब्रिटेनके विशेषज्ञ अमेरिकामें ऋण लेनेकी शर्तें तय कर रहे हैं और शीघ्रही उनका कुछ सन्तोषप्रद फल निकलेगा और भारतको भी संयुक्त राष्ट्र अमेरिकासे मशीनरी इत्यादि मंगानेमें सुविधा होगी—इनमें कपड़ेकी मिलोंकी मशीनरी भी होगी । इस प्रकार भारतमें अन्य कई नयी मिलोंके खुलनेकी सम्भावना है ।

तृतीय—भारतीय सेनाका विघटन होनेके कारण करीब२० लाख सैनिक बेकार होंगे । भारत तथा प्रान्तीय सरकारें उनके लिये नौकरी दिलवानेकी चेष्टा करेंगी । इस लिये भारतीय मिलोंको मजदूरोंकी जो कमी खटकती है वह दूर हो जायेगी और मांगसे मजदूरोंकी संख्या अधिक होनेके कारण इन्हें मजदूरी भी कम देनी पड़ेगी । इस लिये कपड़ेके मूल्यमें भी कमी होगी ।

चतुर्थ—जर्मनी तथा जापानके परास्त हो जानेके कारण अब सेनाके लिये भारत सरकारको कपड़ा खरीदनेकी ही आवश्यकता न रहेगी.इस लिये बढ़िया कपड़ेका जो विशिष्ट भाग सरकारके लिये रिजर्व रहता था वह जनताको बिक्री किया जा सकेगा ।

पंचम—युद्धजनित कठिनाइयोंसे भारतीय मिलोंको विदेशी रूईकी कमी अनुभव हो रही थी वह अब दूर हो जायेगी और वस्त्रके उत्पादनमें वृद्धि होगी ।

परन्तु, कपड़ेके उत्पादनमें वृद्धि होनेके बावजूद अभाव बने रहनेकी आशङ्का इस लिये है कि जापानके परास्त हो जानेसे भारतको अफ्रीका तथा सुदूरपूर्वमें कपड़ा बेचनेमें सुविधा हो जायेगी । इस लिये भय यह है कि जापानके पुनः शक्तिशाली होनेसे पूर्व ही इन बाजारों पर अपना अधिकार जमानेके लिये भारतके मिल मालिक भारत सरकारके सहयोगसे चीन,बर्मा,मलाया,और अफ्रीकाको कपड़ा निर्यात करनेमें लालच दिखलायें तथा भारतीय जनताकी मांगोंकी अवहेलना करें । ऐसी दशामें जनताका कर्त्तव्य होगा कि प्रस्तुत भारत सरकार या आगामी राष्ट्रीय सरकार पर अपना प्रभाव डाल कर इस बातका प्रबन्ध करे कि भारतीय वस्त्र कहीं और भेजनेके पूर्व देशके गरीबोंको सस्ते दामों पर कपड़ा मुहैया किया जाये ।

सौभाग्य

—※—

(ले०—श्री शिवनाथ दुबे 'साहित्यरत्न'

"अलख जगानेवाले योगियोंका क्या ? आज यहां, कल वहां ? हमें जाने दें" योगिन बोली।

"आप सरीखी योगिनके दर्शन मैंने अपने जीवनमें आज ही किये हैं। आपकी आकृतिमें आकर्षण है, विचित्र प्रभाव है। चरणोंमें नमस्कार करता हूं"—हिगुवरगढ़ राजकुमार धीरेन्द्रने कहा।

"भगवान वरण करनेवाले हैं, सर्वत्र विराजमान हैं, अस्थि-रक्त-मांस-निर्मित शरीरको नमस्कार करना ठीक नहीं।" वीणा उठाती तथा जानेका उपक्रम करती हुई योगिनीने कहा।

राजकुमार अधीर हो रहे थे। योगिन अवस्था अधिकसे अधिक सोलह वर्षकी थी। अंग अंगमें यौवन फूट पड़ा है। शरीरमें विचित्र कान्ति है। तिसपर विभूति, मानो साक्षात तपस्विनी उमा प्रतीत होती थी। राजकुमारके हाथ स्वतः जुट गये। उनके मुखसे निकल पड़ा—"देवि ! अपराध क्षमा हो। आपके मुखारविन्दसे कुछ सुननेको जी चाहता है।

योगिन अनुनय न टाल सकी। उसी उपवनमें जिसके निकट राजकुमारसे भेंट हो रही थी, हरी हरी दूर्वाओं पर दोनों बैठ गये। योगिनने प्रथम वीणा बजाना आरम्भ किया। धीरेन्द्रने ऐसी वीणा कभी न सुनी थी। योगिनकी पतली अंगुलियां वीणाके तारों पर थिरक रही थीं। तार झनझना रहे थे। उनसे जो स्वर-लहरियां निकलीं, उनसे राजकुमार बेसुध-सा हो गया। वृक्ष मस्तीसे झूमने लगा। समीरके मधुर प्रवाहमें बेला और गुलाबके पुष्प झूम रहे थे। दूसरी ओर राजकुमारका मन-मयूर नृत्य कर रहा था। वह चकोरकी भांति योगिनके चन्द्रमुख की ओर एकटक देख रहा था।

योगिनने गाना आरम्भ किया। उसके गानेका यह अर्थ था—"मैंने अपने जीवन-धनको प्राप्त करनेके लिये वैभव तथा सुखका त्याग कर योगिनका वेष धारण किया है। रास्तेकी भयंकर बाधाओंकी चिन्ता नहीं। प्राणधनको पानेके लिये मैं हंसती हुई प्राणोंकी बाजी लगा सकती हूं। मेरा प्रयत्न सफल दीख रहा है। उनकी एक झांकी पा चुकी हूं—हृदयमें जो आनन्द प्राप्त हुआ है, वह वर्णन नहीं हो सकता। वे भी कुछ कुछ हमें चाहने लगे हैं। उनसे हमारी प्रार्थना है—वे हमें अपनेसे कभी अलग न करें। मैं प्रेममें मस्त होकर उनके तनमें, मनमें, यहां तक कि रोम-रोममें समा जाऊंगी। हमारा और उनका अलग-अलग अस्तित्व नहीं रह जायगा। हम दोनों एक हो जायंगे। बस, जीवन सफल हो जायगा।

संगीत बन्द हुआ। राजकुमार विकल हो उठे। उन्होंने योगिनको रोकनेकी चेष्टा की, परन्तु "रमता योगी और बहता पानी" कहीं रुकता है कहती हुई योगिन उठ खड़ी हुई और एक ओर चल पड़ी। उसके कंधेपर मधुर तान द्वारा आनन्द-लहरियां उत्पन्न कर मन-मस्त कर देनेवाली वीणा थी। कुछ दूर आगे जानेके बाद योगिनने पीछे मुड़कर तिरछे नेत्रोंसे देखा ! राजकुमार एकटक उसकी ओर देख रहे हैं। उसको समझते देर न लगी कि उनकी आत्मा योगिनके लिये छटपटा रही है, पर योगिन न रुकी न रुकी। उदास चित्त मनपर एक भार लिये राजकुमार महलमें पधारे।

\+ \+ \+

"हम क्षत्रिय हैं। हमारे प्राण तलवारकी धार पर थमते हैं। वीरोंके सम्मुख इन अमूल्य तथा अलभ्य प्राणोंको हंसते-हंसते त्याग देनेमें ही अपने जीवनकी सफलता मानते हैं। यद्यपि रणधीरसिंह हमसे द्वेष रखते हैं, फिर भी वे हमारे पूज्य हैं। हमसे बड़े हैं। विशेषकर ऐसी परिस्थितिमें जब किसी विदेशीका आक्रमण होना चाहता है, हम अपनेको संभाल नहीं सकते। उनकी सहायताके लिये ही नहीं, अपितु अपने कर्तव्य पालनके लिये मैं सहर्ष समरमें भाग लूंगा ! मसऊदके छक्के छुड़ा दूंगा। या तो उसके रक्तसे अपने खड्गकी तृषा शान्त करूंगा या वहींसे स्वर्ग सिधारूंगा।" कुंवर धीरेन्द्रने कहा।

"राजकुमारी आपसे यही आशा है। उन्होंने मौखिक प्रार्थना करनेके लिये भी कहा है। यदि आज्ञा दें, तो सुनाऊं ?" दूतने कहा।

"क्षत्रिय प्रति क्षण अबलाओंकी पुकार सुननेके लिये उद्यत रहते हैं। दीन-दुखियोंके आर्त नाद सुननेके लिये ही उनके कान खड़े रहते हैं। तुम निस्संकोच कहो।"

"श्रीमान् ! बड़े संकोचके साथ राजकुमारी शीलाने कहा है कि "इसी वर्ष इसी माहमें उनके विवाहकी बात-चीत हो रही है। मसऊद भयंकर राक्षस तुल्य है। मानवके रूपमें दानव है। हमारे सौंदर्यकी प्रशंसा सुनकर उसके मुंहमें पानी भर आया है। वह इस पाप-कर्मके लिये हमारा किला ही नहीं, प्रत्युत सर्वनाश करनेमें यथाशक्ति कुछ उठा नहीं रखेगा। उसकी शक्ति अतुल है। हमारा राज्य छोटा है, और पारस्परिक फूट भयंकर है। इस समय पूर्वकी बातों पर विचार करनेसे बारी-बारी सबकी पराजय होगी। विदेशियोंके चरण-चुम्बनमें ही समय व्यतीत होगा। प्राचीन समयमें हमारे और आपके परिवारसे प्रेममय सम्बन्ध था। इसीके फलस्वरूप हमारे हेतमपुरसे लेकर हिगुवर गढ़के किले तक पृथ्वीके नीचे नीचे प्रशस्त पथ बना है। इन बातोंकी स्मृति इसलिये दिलाती हूं कि आप कल सूर्योदयके पूर्व ही हमारे छोटेसे दुर्गकी रक्षा करनेके लिये आ जायं। पिता मृत्यु शय्यापर पड़े हैं, नहीं तो आपसे सहायताकी प्रार्थना न करती" दूतने कहा।

राजकुमारने कहा—"हमसे कोई सहायता मांगे, न मांगे, धर्मपर तनिक भी आघात पहुंचते ही उसकी रक्षा करना, अधर्मीको दण्ड देना हमारा प्रधान कर्तव्य हो जाता है। तुम जाकर राजकुमारीसे कह देना हमारे शरीरमें प्राण रहते वैरी आपका कुछ नहीं कर सकेंगे।

दूत द्रुतगामी अश्वपर सवार हो शीघ्रता से चल पड़ा।

\+ \+ \+

अर्द्ध रात्रि ! चारों ओर शान्तिका वातावरण था। ऐसे समयमें हिगुवरगढ़के राजकुमार धीरेन्द्रसिंहजी अपने आठ सौ सैनिकोंके साथ हेतमपुर दुर्गकी ओर जा रहे थे। हिगुवर गढ़से हेतमपुर मात्र चार मीलकी दूरीपर है। पहुंचने देर नहीं लगी।

धीरेन्द्रके सभी सैनिक पराक्रमी, रण-कुशल तथा शत्रुओंको लज्जित करनेमें दक्ष थे, उन्हें मसऊदके रण चातुर्य तथा छल-कपटसे काम लेनेकी विधि पूर्णतया विदित थी। मसऊद जहां कहीं आक्रमण करता सुरभियोंका एक वृहत् समूह एकत्रित कर लेता था युद्धमें उनके पीछेसे अपने शत्रुओं पर आक्रमण करता था। आर्य पुत्र गायको माता समझनेके कारण अपने बाणोंकी वर्षा नहीं कर पाते थे। मसऊद अपना काम बना लेता था।

कुंवर धीरेन्द्रने अपने सैनिकोंको चार टुकड़ियोंमें बांटकर हेतमपुर किलेके चारों ओर छिपा दिया और स्वयं शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित हो शत्रुओंको शीघ्र पराजित करनेके लिये बड़ी सतर्कता तथा सावधानीसे इधर-उधर घूम घूम कर देखने लगे।

प्रातःकाल होते ही सम्भवतः दो सहस्र सैनिकोंके साथ मसऊद आ पहुंचा। उसके आगे वही सुरभि-समुदाय था। राजपूत पूर्वसे ही सतर्क थे। मसऊदको चारों ओरसे घेर लिया। मसऊद घबरा गया। पर वह बड़ा साहसी था। उसके साथी वीर तथा उसके आदेशपर मर मिटने वाले थे। भयंकर युद्ध छिड़ा। वीर राजपूत भूखे सिंहके सदृश यवनों पर टूट पड़े। रक्तकी धारा बह चली। डेढ़ हजार यवन सैनिकोंके नर-मुण्ड पृथ्वीपर लोट रहे। पांच सौ राजपूत काम आये।

मध्याह्न हो चुका था। भगवान भुवन भास्कर अग्नि बाणोंकी वर्षा कर रहे थे। इधर वीर राजपूत अपने तीखे शरोंसे मसऊद के सैनिकोंको विकल कर दिये थे। कुंवर धीरेन्द्र सिंहके अङ्ग-प्रत्यङ्ग बाणोंसे विन्ध गये थे, फिर भी वे शत्रुओंका बुरी तरह नाश कर रहे थे। उन्हें अपने घावोंकी तनिक चिन्ता नहीं थी। जिस प्रकार सिंह भेड़ोंके समूहका संहार करता है, ठीक उसी प्रकार वे शत्रुओंको परलोक पहुंचानेमें संलग्न थे। अधिक देर हो जानेसे कुछ थक भी गये थे, पर उनके युद्धकी तत्परतामें रंच मात्र भी न्यूनता नहीं आयी थी।

अकस्मात उनका सामना मसऊदसे हो गया। कुंवर तड़प उठे—उन्होंने कहा नरा-धम ! आज तेरे शोणितसे अपनी चण्डीकी तृषा शान्त करूंगा, मसऊद विषधर भुजंग की भांति क्रुद्ध हो उठा। दोनों परस्पर भिड़ गये। धीरेन्द्रके सामने मसऊदकी एक न चली। देखते देखते कुंवरने उसका सिर धड़से अलग कर दिया। यवनोंमें हाहाकार मच उठा। बचेखुचे यवन सैनिक भाग चले परन्तु मसऊदका एक प्राणप्रिय सहायक नीरू यह बर्दाश्त नहीं कर सका।

मसऊदका मस्तक कुंवर धीरेन्द्रसिंह अपने भालेको नोंकपर नचा रहे थे। इसी बीच नीरूने जिसे कोई भी मुसलमान नहीं कह सकता था, उसकी वेश भूषा हिन्दुओं की थी। अपनी तीखी कटार निकालकर धीरेन्द्रके कलेजेमें घुसेड़ देना चाहा कि एक षोड़श वर्षीय युवकने जो धीरेन्द्रके पीछे पीछे युद्धके समयसे लगा था एक ही हाथमें उसका मस्तक उतार लिया और देखते ही देखते वह धराशायी हो गया।

कुंवरने कृतज्ञता प्रकट करते हुए कहा—'हमारे प्राणोंकी रक्षा करनेवाले वीर आप कौन हैं ?'

उत्तर मिला—जिसकी रक्षाके लिये आप अपने दुर्लभ प्राण हथेलीपर रखकर तलवारोंसे खेल रहे हैं, वही हेतमपुर महा-राजकी कुमारी शीला।

कुंवर चकित हो गये। साथ ही प्रसन्नतासे उनका हृदय भर गया। युद्ध समाप्त हुआ। यवन बुरी तरह पराजित हुए।

राजकुमार हमारी शीलाकी ओर देख रहे थे। शीला नतमस्तक खड़ी थी।

* * *

"जगत् प्रभुकी साक्षी देकर आपने पिता जीको आश्वासन दिया था कि मैं शीलाको किसी प्रकार दुखी नहीं रखूंगा। यह हमारी जीवनसंगिनी रहेगी। पर आज मैं देखती हूं कि आप अपने मनकी बातें गुप्त गुप्त रखनेकी चेष्टा कर रहे हैं। क्या आपके वचन ऐसे ही होते हैं ?" शीलाने कहा।

'हृदयेश्वरी शीला ! इस कथनके पूर्व तुम्हें यह विचार कर लेना चाहिये कि राजपूतोंके वचन प्राणोंसे भी बढ़कर होते हैं। तुम हमारी जीवन-संगिनी नहीं हमारे प्राणोंकी आधार हो, मैं तुमसे कौनसी बात छिपा रहा हूं, हमें कुछ पता नहीं।' महाराज धीरेन्द्रने कहा।

'बहुत ठीक ! आप क्या छिपा रहे हैं, आपको स्वयं कुछ पता नहीं। मैं देखती हूं आप प्रतिदिन चिन्तित रहते हैं। आपका शरीर भी दुर्बल हो गया है। इसका कारण समझमें नहीं आता।'

महाराजने कहा—'शीला ! यह तो तुम सच कहती हो। तुम हमारी अर्द्धांगिनी हो, तुमसे कुछ नहीं छिपा सकता। कुछ दिन पूर्व जब मैंने तुम्हें देखा भी न था, तब प्रातः कालका समय था, उपवनके निकट मैं टहल रहा था। इसी बीचमें एक योगिन रास्ता पकड़े आ रही थी। वह अत्यन्त सुन्दरी थी। गौर शरीरपर झलकते हुए यौवन और उसपर लगी विभूति अपार शोभा दे रही थी। मैंने आग्रहपूर्वक उसको बुलवाया। उसके पास वीणा थी। योगिनने उसे बजाया और एक गीत भी गाया। मैं

(शेष १८ वें पृष्ठपर)

जय हिन्द

दिल्ली चलो'

देश की आवाज़

आज देश का कोना-कोना
गूंज रहा है—नारों से,
क्रूर फिरङ्गी के निर्दय-
जुल्मों से, अत्याचारों से।
वसुन्धरा के कण-कण से
नदियों की निर्मल धारों से
आवाज निकलती सागर की
लहरों से नभ के तारों से।

निश्चय ही दुश्मन को घर से दूर हटायेंगे हम आज।
नहीं छूटते अगर हमारे ढीलन, सहगल, शाहनवाज ॥

कब्रों से मुर्दों की हड्डी
मरघटसे उनकी खोपड़ियां,
गोलीके बने शिकार जहां-
वे अश्रु बहाती झोंपड़ियां।
'दिल्ली-चलो' 'चलो-दिल्ली'
के नारों से गुंजार उठी।
'आगे बढ़जा', 'बढ़जा आगे,
गा गा कर ललकार उठी।

निश्चय ही दुश्मन को घर से दूर हटायेंगे हम आज।
नहीं छूटते अगर हमारे ढिलन, सहगल, शाहनवाज ॥

सिंगापुर की पुण्य-भूमि
आजाद-हिंदका जन्मस्थान,
बर्मा की वह वीर मही
था जहां हुआ इसका उत्थान
जहां तिरङ्गा झंडा फहराया
था पहिले ··· ससम्मान
उसी कोहिमाकी घाटी में
गूंज रहा है अब तक गान।

निश्चय ही दुश्मन को घरसे दूर हटायेंगे हम आज।
नहीं छूटते अगर हमारे ढीलन, सहगल, शाहनवाज ॥

आज किसानों को खेतों में
मजदूरों को मीलों में
चैन नहीं है राजबंदियों-
को पलभर भी जेलों में।
मंदिर-मस्जिद-गिरजाघर से
सिक्खों के गुरुद्वारों से,
निकल रही आवाज गली-
से, सड़कों से, बाजारों से।

निश्चय ही दुश्मन को घर से दूर हटायेंगे हम आज
नहीं छूटते अगर हमारे ढीलन, सहगल, शाहनवाज ॥

मातायें अरु बहने भी
अपनी प्यारी औलाद लिये,
झांसी वाली रानी की
निज उरमें अविकल याद लिये।
देश प्रेम का प्याला भर-भर
सब को आज पिलाती हैं।
'कैप्टन लक्ष्मी' का संदेशा
इन शब्दों में गाती हैं।

निश्चय ही दुश्मन को घर से दूर हटायेंगे हम आज।
नहीं छूटते अगर हमारे ढीलन, सहगल, शाहनवाज ॥

विप्लवकारी नौजवान क्या-
मुर्दे दिल भी बोल उठे,
पत्थर दिल भी राष्ट्र प्रेमियों-
की सेवा में डोल उठे।
दुधमुंहे बच्चे, मा की-
गोदी से यही पुकार रहे।
मरने वाले बूढ़े भी -
बिस्तर से हैं हुङ्कार रहे।

निश्चय ही दुश्मन को घर से दूर हटायेंगे हम आज।
नहीं छूटते अगर हमारे ढीलन, सहगल, शाहनवाज

फौजों से सैनिक, स्कूलों-
कालेजों से पाठक वृन्द,
गला फाड़कर बलो रहे हैं
'जय-जय हिंद हमारा हिंद'

जीर्ण गुलामी को सदियों से
निज सीने पर तौल रहा,
उस बूढ़े भारत का लोहू
आज रोष से खौल रहा।

निश्चय ही दुश्मनको घर से दूर हटायेंगे हम आज। नहीं छूटते अगर हमारे ढीलन, सहगल, शाहनवाज ॥

—श्री "आजाद"

अन्तर्राष्ट्रीय

इण्डोनेशिया

इण्डोनेशियाका स्वातन्त्र्य संग्राम साम्राज्यवादियोंके अन्यायपूर्ण शक्ति प्रयोग के बावजूद तीव्र गतिसे जारी है। ब्रिटिश और भारतीय फौजें इण्डोनेशियनोंके खिलाफ आधुनिक युगके सभी शस्त्रास्त्रोंका प्रयोग कर रही हैं लेकिन स्वतन्त्रताभिलाषी इण्डोनेशियन देशभक्त अचल हैं। संसारके सभी स्वतन्त्रता समर्थक ब्रिटेनकी अन्याय-पूर्ण नीतिकी निन्दा कर रहे हैं, लेकिन ब्रिटिश सरकारने अपने कार्योंको उचित बत-लाया है। गत सप्ताह पार्लमेण्टमें ब्रिटिश वैदेशमन्त्री मि० बेविनने कहा है कि हमारी सेनाएं वहां जापानियोंको निरस्त्र करने, युद्धबन्दियोंको मुक्त कर स्वदेश वापस भेजने और डच शासनकी फिरसे स्था-पना करनेके लिये मौजूद हैं। रूसकी ओरसे ब्रिटिश हस्तक्षेप नीतिका तीव्र प्रतिवाद किया गया है। मास्को रेडियोने कहा है कि जापानकी पराजयके बाद इण्डोनेशिया की जनताने तेहरान, याल्टा और सान-फ्रांसिस्कोके सिद्धान्तोंके अनुसार कार्यारंभ किया और राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त करनेके लिये सिर उठाया है। लेकिन इन सारी बातोंके बावजूद ब्रिटिश फौजें अपनी साम्रा-ज्यवादी नीतिके अनुसार गणतन्त्र और स्वतन्त्रताके तथाकथित सिद्धान्तोंको तलाक देकर इण्डोनेशियनोंको गुलाम बनानेके लिये कटिबद्ध है। जावाकी राजधानी बटावियामें प्रचण्ड युद्ध जारी है और बैण्डुंगमें ब्रिटिश विमान प्रचण्ड बमबाजी कर रहे हैं। सौरा-बायापर ब्रिटिश फौजोंने पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया है और इण्डोनेशियन देशभक्त दक्षिणकी ओर हटते जा रहे हैं। लेकिन वहांका संघर्ष जितना अधिक होता जा रहा है, उतनी ही अधिक घृणा गोरोंके प्रति इण्डोनेशियनोंमें बढ़ रही है। इसीलिये जकार्ताके एक प्रमुख पादरीने अन्तर्रा-ष्ट्रीय रेडक्राससे अपील की है कि वहांसे गोरोंको शीघ्र हटानेकी व्यवस्था की जाय अन्यथा वहां एक भी यूरोपियन जीता नहीं बच सकेगा।

ईरानमें अशान्ति

उत्तरी ईरानके अजरबेजान प्रान्तमें विद्रोह अबतक जारी है और विद्रोही दल तेहरानकी ओर अग्रसर हो रहे हैं। ईरान-सरकारने विद्रोहियोंको दबानेके लिये फौजें भेजी थीं, उनको रूसियोंने वापस लौटा दिया! आलोच्य सप्ताहमें ईरान सरकारने एक प्रतिनिधि मण्डल रूस भेजकर उत्तरी ईरानकी अशान्तिको दूर करनेके लिये रूस सरकारसे अनुरोध किया लेकिन रूसने बिल्कुल कोरा जवाब देकर उन्हें भी लौटा दिया। रूसने कहा कि यदि ईरानी फौजें अजरबेजानकी ओर अग्र-सर होंगी तो और अधिक खून खराबी होगी। रूसियोंने ईरान सरकारको इस बातकी धमकी भी दी है कि अगर वह नाग-रिक अशान्तिको दबानेका प्रयत्न करेगी तो रूस और भी अधिक संख्यामें अपनी सेना वहां भेजेगा। उत्तरी ईरानमें करीब ६० हजार रूसी सैनिक हैं और हालमें कुछ और सैनिक पहुंचे हैं। ईरानके कुछ अखबारोंने लिखा है कि उत्तरी ईरानमें रूसने गुप्त रूपसे तेलके अनेक कारखानोंकी स्थापना कर रखी है और इसी कारण उस अंचलमें ईरान सरकारके सैनिकोंको वह जाने देना नहीं चाहता। रूसकी इस हस्तक्षेप नीति-से उसकी नीयतके प्रति सन्देह की मात्रामें अत्यधिक वृद्धि हो रही है और अनेक अंशों में ईरानकी स्वतन्त्रता पर खतरा उपस्थित हो गया है।

त्रिराष्ट्र नेताओंकी बैठक

पिछले सप्ताहमें ऐसी सम्भावना प्रकट की गयी थी कि त्रिराष्ट्र नेताओंका एक सम्मेलन शीघ्र ही बुलाया जायगा, किन्तु आलोच्य सप्ताहमें राष्ट्रपति ट्रूमैनने ऐलान कर दिया कि त्रिराष्ट्र नेताओंके मिलनकी अब कोई आवश्यकता नहीं रह गयी है और अन्तर्राष्ट्रीय विवादोंको दूर करनेका कार्य मित्रराष्ट्रीय संगठन द्वारा किया जाना उचित है। जर्मनीमें मित्रराष्ट्रीय नियन्त्रण कौन्सल के सम्बन्धमें जो विवाद खड़ा हुआ है, उसका समाधान भी मित्रराष्ट्रीय संगठन ही करेगा। जर्मनीपर नियन्त्रण सम्बन्धी पोटस-डमके समझौतेमें परिवर्तन करनेके बारेमें युक्तराष्ट्र अमेरिका अन्य मित्रराष्ट्रोंसे परा-मर्श कर रहा है। राष्ट्रपति ट्रूमैनने यह भी कहा कि चीनके सम्बन्धमें अमेरिका अपनी नीतिमें किसी प्रकार परिवर्तन करनेके लिये प्रस्तुत नहीं है।

यूगोस्लावियामें गणतन्त्र

यूगोस्लावियामें जब रूसियोंकी संर-क्षतामें अस्थायी सरकारकी स्थापना की गयी थी, उसी समय इस बातका अनुमान लगाया गया था कि वहांसे राजतन्त्रको उखाड़ फेंका जायगा। हालहीमें यूगोस्ला-वियाकी विधान निर्मातृ सभाकी एक बैठक बेलग्रेडमें हुई, जिसमें यूगोस्लावियाको प्रजातन्त्र घोषित कर देनेका निश्चय किया गया। साथ ही वहांके राजा पीटर तथा राज्योत्तराधिकारी परिवारके लोगोंको सभी अधिकारोंसे च्युत कर देनेका भी निश्चय हुआ।

मार्शल स्टालिन

ज्ञात हुआ है कि मार्शल स्टालिन निकट भविष्यमें ही ब्रिटेन व अमेरिकाको एक कड़ी 'फटकार' देनेवाले हैं। कहा गया है कि मार्शल स्टालिन अब मास्को लौट आये हैं या शीघ्र ही लौटनेवाले हैं। विश्वास किया जाता है कि आप रूसकी विदेश-नीति के विषयमें एक महत्वपूर्ण घोषणा करेंगे और उसमें परमाणु बमपर एटली, ट्रूमैन व मैकेंजी किंगके आपसी समझौतेकी विशेष रूपसे चर्चा करेंगे। मार्शल स्टालिन समझौते और पश्चिमी मित्रराष्ट्रीय नीतिके विषयमें कुछ सख्त शब्द कहेंगे एवं सौदेके लिये कड़ी शर्तें रखेंगे। लन्दनमें इस बातकी बड़ी कोशिश की जा रही है कि किसी तरह पश्चिमी देशों व रूसके बीच उत्पन्न हुआ गतिरोध दूर हो जाय। अनुमान है कि यदि मि० हैरी हॉपकिन्सके स्वास्थ्यने इजाजत दी तो आप शीघ्र ही एक बार फिर राष्ट्र-पति ट्रूमैनके व्यक्तिगत प्रतिनिधिके रूपमें मास्को जायेंगे और स्टालिनसे परामर्श करेंगे।

ब्रिटिश सरकारमें अविश्वास

आलोच्य सप्ताहमें ब्रिटेनकी कन्जर्वेटिव पार्टीने मजदूर सरकारके विरुद्ध निन्दाका प्रस्ताव पेश किया। प्रस्ताव विरोधी पार्टी के नेता मि० चर्चिलके नाममें था। प्रस्ताव इस प्रकार था—'यह कामन सभा इस बातपर चिन्ता प्रकट करती है कि सरकार अपने प्राथमिक कर्तव्यकी उपेक्षा कर रही है जो पूरी शक्तिसे शीघ्रताके साथ युद्धो-द्योगोंको शान्तिकालीन उद्योगोंमें परिवर्तित करना मकानकी व्यवस्था करना, युद्धकार्यों से लोगोंको हटाकर गृहउद्योगोंमें शीघ्रता-पूर्वक लगाना तथा राष्ट्रीय व्यय कम करना है, तथा इस बातकी निन्दा करती है कि सरकारके मन्त्री जो समाजवादी विचारोंके हैं, राष्ट्र हितके विरुद्ध राष्ट्रीयकरणकी लम्बी योजनाओंमें संलग्न हैं जिससे सम्पूर्ण औद्योगिक एवं आर्थिक जगतमें अनिश्चितता आ गयी है। राष्ट्रकी मांग तो इस समय भोजन, काम एवं घरकी है।" इस प्रस्ताव पर आगामी सप्ताह पार्लमेण्टमें बहस की जायगी और उसी समय ब्रिटिश सरकारके खिलाफ कंजर्वेटिव दलवाले अविश्वासका प्रस्ताव भी पेश करेंगे। ब्रिटेनकी मजदूर सरकार अपने खिलाफ किसी भी प्रस्तावका मुकाबला करनेके लिये पूर्णतया प्रस्तुत है।

भारतीय फिल्म और आलोचक

लेखक—श्री दुर्गेश्वर झा, बी० ए० (आनर्स)

साहित्यिक समालोचना करना आसान काम नहीं है। लेकिन लोगों ने इसको बड़ा आसान काम समझ रखा है। समालोचना लिखनेके बाद वे बड़े खुश होते हैं। लेकिन सच बात तो यह है कि वे कमाल दिखानेके बजाय खुद अपनी कमजोरी दिखा कर मजाकके पात्र बन जाते हैं। कुछ वर्ष पहले मुझे यह सोच कर बड़ा आश्चर्य होता था कि विश्व कवि टैगोर अपनी किताबोंकी भूमिका मि० यीट्सबे क्यों लिखाते हैं? क्या उन्हें अपने देशमें कोई लेखक नहीं मिलता? ठीक इसी तरह मैं महात्मा गांधीके बारेमें भी सोचता था और मुझे देख कर आश्चर्य होता था कि फ्रांसके रोम्यांरोलां-की भांति उनके लिये काम करनेवाले भारतमें क्यों नहीं हैं? सत्य कभी कभी अप्रिय होता है। यही बात उपर्युक्त उदाहरणोंसे जाहिर होती है। हम लोगोंको इस बातकी आवश्यकता महसूस होनी चाहिये कि हम अपने देशकी प्रतिभाओंको ऊपर उठायें। हमारे देशमें समालोचकोंकी कमी नहीं। यहां बहुतसे समालोचक हैं लेकिन चन्द लोग छोड़कर बाकीके सम्बन्धमें उनका दृष्टिकोण हास्यास्पद है। इस लिये अधिकतर उनका निर्णय गलत साबित होता है। इसका असल कारण है हमारे समालोचकोंमें विवेक और संतुलन-की कमी।

फिल्म-समालोचना वस्तुतः साहित्यिक समालोचना है। यदि इसमें गुणोंका अभाव हो तो दूसरी अच्छी हो ही नहीं सकती। हिन्दुस्तानमें साहित्यिक समालोचना करनेका काम उन लोगोंके हाथमें रहता है जिनके पास विश्वविद्यालयकी डिग्रियोंकी कमी न हो। ऐसे समालोचक एक किताब उठाते हैं और इधर उधर पन्ने उलट कर अपने विचार प्रकट कर देते हैं। वे किताबकी छपाई, सफाई, कागज और मुखपृष्ठ पर अधिक ध्यान देते हैं।

हम यहां फिल्म समालोचकोंके बारेमें कुछ कहना चाहते हैं। फिल्मी दुनियामें समालोचकोंकी संख्या कम नहीं है। प्रत्येक फिल्म समालोचक अपनेको देवदूत समझता है। वह केवल इतनी-सी बात जानता है कि उसे लोगोंको उपदेश देना है, उपदेश लेना नहीं। मंझधारमें पार करनेवाले तैराकके लिये आवश्यक है कि वह पहले तैरना अच्छी तरह सीख ले। मतलब यह कि प्रत्येक कार्य करनेके पहले शिक्षाकी आवश्यकता होती है। लेकिन फिल्म समालोचक उन लोगोंमें से हैं, जो यह सोचते हैं कि हमें कुछ सीखनेकी आवश्यकता नहीं।

अब सवाल यह है कि नियमानुसार फिल्म समालोचक कौन हो सकता है। समालोचकोंमें अधिकतर अखबार नवीस ही क्यों होते हैं? क्या कारण है कि प्रत्येक पत्रकार अपनेको इस कार्यके लिये उपयुक्त समझता है? लेकिन इसमें सब दोष पत्रकारोंका ही नहीं। अक्सर फिल्म समालोचकको कहानी, संवाद, संगीत, दृश्यावलि आदि पर विचार करना पड़ता है। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी आलोचनामें काफी गलतियां रह जाती हैं। कुछ दिनों पहले मैंने एक अंग्रेजी साप्ताहिक पत्रमें हिन्दी फिल्मोंकी समालोचना पढ़ी। वह ठीक इसी तरह की थी जिसका वर्णन मैं ऊपर कर चुका हूं। मैं पहले ही कह चुका हूं कि प्रत्येक फिल्म समालोचक अपनेको आलिम-फाजिल समझता है। उनका काम केवल

सिटी सिनेमामें प्रदर्शित हिन्दुस्तान चित्रकृत 'शरारत' में माया बनर्जी

प्रत्येक फिल्मकी झूठी तारीफ करना या भर्त्सना करना होता है। 'तारामती' की समालोचना करते हुए एक समालोचकने लिखा था यह फिल्म रोचक नहीं है। हां, धार्मिक लोगोंके लिये यह रोचक एवं अच्छी साबित हो सकती है।' ठीक ऐसे ही एक समालोचकने 'राम राज्य' की समालोचना करते हुए लिखा था कि 'इस फिल्ममें प्रसिद्ध होनेके कोई भी तत्व नहीं है। अगर यह चित्र प्रसिद्ध होगा तो महज इस लिये कि इसमें रामसीताका चरित्र चित्रण है।' यह हो सकता है कि उक्त चित्रोंमें तारीफके लायक कुछ न हो लेकिन हम यहां जो कहना चाहते हैं वह यह है कि इन समालोचकोंकी भावना हिन्दी फिल्मोंके प्रति अच्छी नहीं है। क्या हिन्दी फिल्में अच्छी होती ही नहीं? क्या इनमें केवल गलतियां और ईर्ष्या पैदा करने वाली बातें ही होती हैं। ऐसे समालोचक महोदयोंका यह ख्याल होता है कि हालीवुडकी सभी फिल्में अच्छी होती हैं। लेकिन उन्हें वास्तविकताका ज्ञान नहीं है। यह बात सच है कि साधारण ब्रिटिश चित्रसे हालीवुडके चित्र अच्छे होते हैं। इस सम्बन्धमें एक बात सदैव स्मरण रखने लायक है कि हालीवुड वगैरह अपने अच्छेसे अच्छे चित्रोंको बाहर भेजते हैं। अतः हमारे इन समालोचकोंको उनकी गलतियां देखनेका मौका ही नहीं मिलता। अतः हिन्दी चित्रोंकी हमें 'भारतीय स्तर' से जांच करनी पड़ेगी। इस लिये भारतीय फिल्म समालोचकोंको अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा। क्यों कि हिन्दी फिल्मोंकी भर्त्सना करनेका अर्थ समस्त भारतीय फिल्म उद्योगकी भर्त्सना करना है। भारतीय फिल्म उद्योगने विद्यापति, देवदास, आदमी, पड़ोसी, राजा, औरत, रोटी, अमरज्योति, रामराज्य, कुंवाराबाप, भरत मिलाप और रामशास्त्री जैसी उच्च कोटिकी फिल्में निर्मित की हैं। हमारे कथनका आशय यह नहीं है कि हिन्दी फिल्मोंकी बुराइयां सामने न लायी जायं। अवश्य लायी जांय, लेकिन विवेचनाके साथ। जिन समालोचकोंको स्टूडियो, कैमरा, कहानी और सीनरियोंके साथ साथ शूटिंग, फिल्म सम्बन्धी अन्य बातोंकी जानकारी न हो उनसे कदापि समालोचनाएं न लिखायी जाय। फिल्म उच्चकोटिका उद्योग और कला है। अतः इसकी समालोचनाके लिये अधिकारी व्यक्तियोंकी जरूरत है।

सिनेमा-संसारकी हलचल—

'रतन' की रजत जयन्ती

विनोद पिक्चर्स द्वारा निर्मित 'रतन' एक सामाजिक किन्तु, दुःखान्त चित्र है। चित्रका निर्देशन श्री एम० सादिकने किया है और मुख्यांशमें स्वर्णलता, करन दीवान, वास्ती तथा मंजुला हैं। इसमें आद्योपांत प्रेमका दिग्दर्शन कराया गया है। गाने बड़े ही मधुर और समयानुकूल हैं, निर्देशन भी कहीं कहीं बहुतही उच्चकोटिका है। चित्रमें आजके समाजका यथार्थ चित्रण किया गया है और दो प्रेमियोंके मिलनमें सामाजिक बाधाओंके कारण नायकका प्राणान्त हो जाता है। स्थानीय 'पैरामाउण्ट' सिनेमामें यह फिल्म रजत जयन्ती सप्ताहमें प्रदर्शित हो रहा है।

'शरारत'

हिन्दुस्थान चित्रकी हास परिहासपूर्ण कृति 'शरारत' अपने ढङ्गका एक अनोखा चित्र है। प्रसिद्ध कलाकार श्री किशोर साहूने इसका निर्देशन और मुख्य भूमिकामें अभिनय किया है। उन्होंने इसको 'राजा' के समान समस्या मूलक बनानेका प्रयास नहीं किया वरन 'महज दो घड़ीकी मौज' के सिद्धान्तको सामने रख कर इसका निर्माण किया है। इसमें उन्हें सफलता भी मिली है। 'शरारत' के संवाद बड़े ही मजेदार हैं, कमराउण्डरका काम हास्यरसकी दृष्टिसे अच्छा हुआ है। प्रतिमादास गु... और माया बनर्जीने अपनी अपनी भूमि... काओंको सफलता पूर्वक निबाहा है। सभी दृष्टियोंसे 'शरारत' मनोरंजक चि... होते हुए भी—श्री किशोर साहूसे जैसी उम्मीद की जानी चाहिये, उतनी ऊंचाई... का चित्र नहीं है।

'नम्बर प्लीज'

आप प्रतिदिन सैकड़ों बार टेलीफोन रिसीवरको उठा कर उसके द्वारा अपने कारबारका बहुत बड़ा भाग पूरा करते होंगे लेकिन इस विराट सङ्गठनके सारे कार्यों... अनभिज्ञ ही होंगे। इनफारमेशन फि... आव इण्डियाने टेलीफोनके सम्बन्धमें ए... चित्रका निर्माण किया है, जिसका नाम है—"नम्बर प्लीज।" कलकत्ता और ... के एक्सचेंजोंके ट्रांसफार्मरों, स्विच बोर्ड... आटोमेटिक एक्सचेंज और ट्रंक टेलीफोन... के कार्योंका इसमें सुन्दर ढंगसे चित्रण किया गया है। भारतके अनेक स्थानों... इसका प्रदर्शन होने जा रहा है।

—निर्देशक हेमचन्द्र किसी बंगला चित्रका हिन्दी संस्करण तैयार करने... चेष्टामें हैं।

—इन्द्रपुरीमें नीरेन लाहिड़ी 'मजनू लैला' का हिन्दी संस्करण तैयार करते रहे हैं। मुख्य भूमिकायें काननदेवी, ... नटवर, देवी मुखर्जी, हीरालाल आदि...

—इन्द्रपुरीमें पांचोटियाका 'खुश ...' समाप्त हो चुका है।

—ज्योतिष बनर्जी शीघ्र ही एक ... पिया चित्र शुरू करेंगे।

—एम० पी० प्रोडक्शनने कानन... छवि बिश्वासकी जोड़ी लेकर 'मैं और ...' बनाना शुरू कर दिया है। अपूर्व मित्र ... रेक्शन कर रहे हैं। इस चित्रके संवाद ... नटवरने लिखे हैं।

—काली फिल्ममें 'अजन्ता' ... सती चन्द्र वर्माकी कहानीके आधार... तैयारकी जा रही है। साधना बोस ... भूमिकामें रहेंगी।

—राधा फिल्म स्टूडियोमें 'पूर्ण... एक रात' हिन्दीमें निर्देशक श्री ... रहे हैं। कौशल्या और नारंग एक... करेंगे।

—चित्रा प्रोडक्शनके नवीन चित्र ... में अजमल बेग और कनिका ... हुआ है। निर्माता रतनलाल ... द्वारा भारतीय सिनेमा आकाश... तारिका—इनायतको पेश कर रहे हैं और ... गान श्री शंकर मेहता कर रहे हैं... निर्देशन श्री मनोज।

—निर्माता आर० डी० ...

रमते राम कभी-कभी छेड़खानी क्यों देते हैं ?

—एक सम्पादकीय।

किसी किसीको देखकर यूं ही जी हो ता है, इसलिये !

० ० ०

मि० एटली बतलायें कि ब्रिटिश सरकार ते कब विदा लेगी।

—पं० नेहरू

अभी बतलाते हैं। पहले जरा किसी ज्योतिषीसे पूछ कर मुहूर्त निकलवा

० ० ०

अनेक निर्वाचन क्षेत्रोंमें हिन्दू सभाके द्वारोंकी जमानतें तक जब्त हो हैं।

—एक समाचार।

तो क्या हुआ ? चुनाव लड़नेका उनका तो कमसे कम पूरा हो ही गया।

० ० ०

विश्वस्त सूत्रसे पता चला है कि कल- की हालकी घटनाओं पर भारत मंत्री पैथिक लारेंस वक्तव्य प्रकाशित करेंगे।

—एक समाचार।

मालूम होता है कि मि० एमरीकी तरह हिन्दुस्तानमें लोकप्रिय होनेमें कोई कसर बाकी न रखेंगे।

० ० ०

गोत अंग्रेजोंका हौसला एक खतौना है।

—एक सम्पादकीय।

लेकिन खिलौने प्रायः कच्चे होते हैं, सरकार जानती है या नहीं ?

० ० ०

मि० जिन्नाको सरकारसे ६ लाख रुपया मदद मिलती है।

—एक शीर्षक।

लाख...? काश, एम० एन० राय मान होते !

० ० ०

सीमाप्रान्तके प्रीमियर डा० खान साहब वक्तव्यके दौरानमें कहा है कि कोई ज्यादा दिन मुल्क गुलाम नहीं रह ।

—एक समाचार।

लेकिन इससे क्या ? आजाद होकर कि जिन्दा दिल आदमियोंको मनके छुटकारा मिल जाता हो, ऐसी बात ! !

० ० ०

बावीवमें यहूदियोंने दो ब्रिटिश थाने दिये।

—एक समाचार।

भारतके सन् ४२ के तोड़-फोड़ आंदो- को इन लोगोंने शिक्षा नहीं ली है ?

\+ + +

लिस मुफ्त सवारी न करे !

—एक शीर्षक।

ी' प्रदर्शनके लिये तैयार है। अल- रमोला इसमें प्रधान नायिकाकी में उतरी है। तस्वारकी आगामी टूटे सपने' कलकत्तेके काली फिल्म्स में प्रस्तुत हो रही है। रमोलाने भी सुन्दर काम किया है।

भारतके प्रथम श्रेणीके डायरेक्टर देवकी इस समय श्री लक्ष्मीदास आनन्दके चित्र 'कृष्ण लीला' का निर्देशन कर देवकी बाबूने न्यू टाकीज लि० के मुख्तारके साथ भी एक कण्ट्राक्ट है और 'कृष्ण लीला' की समाप्ति वह न्यू टाकीजके एक चित्रका निर्दे- गे। श्रीमती कानन देवी सम्भवतः नायिकाकी भूमिकामें उतरेंगी।

चलती चक्की

ठीक है, लेकिन समझ लीजिये, पुलिस का पैसा पचाना आसान नहीं होगा !

* * *

कलकत्तेके गोलीकाण्डकी जांच आव- श्यक।

—एक शीर्षक।

बशर्ते कि कोई आंच न आये सरकार और सरकारी पदाधिकारियों पर !

० ० ०

पाकिस्तानी अमरमत हमारा विश्वास करें।

—श्री जिन्ना।

पहले इसके लिये रिश्वत तो दे दीजिये लेकिन !

० ० ०

साम्राज्यवादकी कुश्ती लौ।

—एक शीर्षक।

बेशक, कितनी प्यारी लग रही है आखिरी वक्त !

* * *

आजाद हिन्द फौजके मुकदमेमें सरकारी पक्षके एक गवाहने स्वीकार कर लिया कि उसे क्या गवाही देनी होगी, यह सब कुछ उसे पहलेहीसे रटा दिया गया था।

—एक समाचार।

ऐसे कच्चे आदमीको गवाहीके लिये कैसे खड़ा कर दिया गया ? अभियोग पक्षके वकीलोंको शायद पूरा पैसा नहीं दिया गया है...तभी !

* * *

रेडिकल डेमोक्रेटिक पार्टीके जनरल सेक्रेटरीने पंडित जवाहरलाल नेहरूको सलाह दी है कि वे अपने विचारोंको अमली जामा पहनावें।

—एक समाचार।

पहले दिल्लीमें सलवारोंकी सलवटें तो गिन लीजिये साहब, जामेकी बात तो अब कुछ पुरानी पड़ गयी है !

० ० ०

जावाके दो इण्डोनेशियन रेडियो स्टेशनों पर अंग्रेजी वायुयानोंकी बमवर्षा।

—एक शीर्षक।

वहांके डायरेक्टरोंने छबीली अंग्रेज लड़कियोंके गाने ब्राडकास्ट करनेसे इनकार कर दिया होगा।

* * *

कानपुरमें चुनाव—प्रचारमें लीगियोंने ईंट-पत्थर फेंके।

—एक समाचार

और नहीं तो क्या उनसे फूल बरसाये जानेकी आशा की जा सकती थी ?

० ० ०

मध्यप्रांतके एक हिन्दी निकमें ६ कालमके एक शीर्षकमें लिखा गया है— "कलकत्तेके 'दंगे' में १४ मृत और १२९ घायल।"

—एक समाचार।

कलकत्तेमें गोलीकाण्ड हुआ था या दंगा, इसे हमसे अधिक उक्त पत्रके सम्पा- दकजी जानते होंगे। लेकिन हमें कमसे कम यह जाननेकी तो उत्सुकता हो ही सकती है

ये सम्पादकजी अभी सीधे अमेरिकासे आ रहे हैं या इंगलैण्डसे ?

* * *

"किसको वोट दोगे" शीर्षक एक समा- चार प्रकाशित करने पर 'नागपुर टाइम्स' की साढ़े तीन हजार रुपयेकी जमानत जब्त की गयी।

—एक समाचार।

वोट देनेका निश्चय करते वक्त यार लोगोंने सरकारी दफ्तरमें बैठे बैठे तय कर लिया होगा कि उसके बदलेमें यदि कमसे- कम ३५ सौ रुपया भी मार लिया जाय तो क्या अनुचित है !

* * *

बेल्सन और औसविट्जकी जेलोंमें किये गये अत्याचारोंके सिलसिलेमें हुई पेशीमें जोसेफ क्रेमर अपराधी प्रमाणित हो गया है।

—एक समाचार।

लेकिन लाहौर किले अथवा लाल किलेके अधिकारियोंके लिये ऐसा खतरा थोड़े ही पैदा हो सकता है !

* + +

भूल जाओ और क्षमा करो की अपील करनेवाले लार्ड वावेल उस समय लखनऊमें सर मारिस हैलेटकी पीठ थपथपा रहे थे जब उनकी पुलिस निःशस्त्र छात्र छात्राओं पर लाठियोंकी बौछार कर रही थी।

—एक समाचार।

अगर सिर्फ ऐसा ही नहीं करते रहते तो और क्या करते ? क्षमा करो और भूल जाओके अपने सिद्धान्तको त्याग कर वे इसमें किसीका साथ थोड़े ही दे सकते थे ?

* * *

एक कविजी लिखते हैं—
प्रेयसिके कोमल अधरोंमें,..................
प्रियतमकी प्रेम-भावना का
निश्चल अविचल स्वागत देखा !
मैंने जीवनमें क्या देखा !!

—स्वतन्त्र।

और कविजी आप अकेलेमें सब कुछ सिर्फ देखते चले गये ?......आपकी उदासीके कारण पर हमें हमदर्दी है ! सच मानियेगा।

* * *

योगीमें एक गीत लिखते हुए एक कविजी लिखते हैं—
तुम हाथ मत मलो, जवान, हाथ मत मलो।

लेकिन ऐसा न करें तो फिर क्या कोई छीना-झपटी करने लगें ?

* * *

संसार (साप्ताहिक) में पंडित श्याम- नारायण पाण्डेयने हालमें एक कविता लिखी है—डर्दू बहरमें, डर्दू छन्दमें।

—एक समाचार।

मालूम होता है कि वे एक बार और देव-पुरस्कार पानेकी इच्छा रखते हैं !

* * *

पटना विश्व-विद्यालयकी सिनेटकी एक बैठकमें इस प्रश्न पर बहस हुई कि संस्कृत, अरबी, फारसी आदिको मेट्रिक परीक्षाके अनिवार्य विषयोंमें कैसे स्थान दिया जाय।

—एक समाचार।

उन्हें इस बातपर भी विचार-विमर्श करना चाहिये था कि प्राइमरी स्कूलोंमें फ्रेंच और लेटिनकी शिक्षा भी क्यों न अनिवार्य बना दी जाय !

* * *

एक साहब पूछते हैं कि संसार साप्ता- हिकके २२ नवम्बरके अंकमें जिन दो ख्यात साहित्यिकों, कवियोंकी कविताओं में छन्द दोष हैं, उनके नाम क्या हैं।

हम इन सज्जनोंको बैरंग सलाह देते हैं कि वे यह प्रश्न संसार सम्पादकसे ही पूछें तो शायद उन्हें ठीक जवाब मिल सकता है !

* * *

अमेरिकाकी आम जनता साधारणतया यह समझती है कि जो भी व्यक्ति हिन्दु- स्तानमें रहता है, वह हिन्दू है। वे यहां तक सोचते हैं कि मि० जिन्ना भी हिन्दू हैं जो कि भारतीय मुसलमानोंके दावेका समर्थन करते हैं।

—एक विदेशी संवाददाता।

अमेरिकामें भारत सरकारका प्रचार— विभाग निष्क्रिय नहीं है-और वह पैसा भी हलालका ही खाता है, यह बात इससे प्रमा- णित होती है। ठीक है !

० ० ०

कटकमें कई कम्युनिस्ट उम्मीदवारोंकी जमानतें जब्त हो गयीं।

—एक समाचार।

कोई हर्ज नहीं। चन्देको छोड़कर उनकी अपनी जेबका पैसा उसमें था ही कितना जो उनको फिक्र होती !

* * *

एक देवीजी लिखती हैं—यह विरहकी दुसह बेला, जेठकी भारी दुपहरी !

खूब ! मिलनेका समय,तो बहुत उपयुक्त चुना गया है !

० ० ०

उधार पर लाउडस्पीकरोंकी लाल पल्टन जुटाकर भी कम्युनिस्ट चुनाव संग्राम सर न कर सके।

—एक सम्पादकीय।

लेकिन अगर वे अब उन लाउडस्पीकरों का किराया देनेसे इनकार कर दें तो फिर उन्हें कोई खास नुकसान बाकी नहीं रह जायगा ?

० ० ०

सरकारको गाली देना भले ही जायज और क्षम्य हो, लेकिन पुलिसको गाली देना नहीं।

—एक विचार-बिन्दु।

जी हां ठीक उसी तरह जिस तरह एक शिकारी शेरको मार सकता है, लेकिन मक्खी मारना निस्सन्देह उसके लिये भी आसान नहीं !

\+ + +

—रमते राम।

समाज दर्पण

ज्यादती बन्द हो

कांग्रेसके नेतागण जब जेलोंमें बन्द थे, तब किस प्रकार लोगोंसे अधिकारियोंने जबदस्ती चन्देकी रकमें वसूल कीं और उसके लिये किस प्रकारके निन्दनीय उपायोंका अवलम्बन किया गया था, वह अब लोगोंसे छिपा नहीं है, किन्तु अब भी, युद्ध समाप्त हो जानेके पश्चात् अति उत्साही पुलिस अफसर विजयोत्सवके नामपर चन्दा वसूल करनेके लिये अपने पुराने हथकण्डोंसे काम ले रहे हैं। यह जानकर सम्भवतः लोगोंको आश्चर्य होगा। संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीके प्रधानमन्त्री पण्डित केशवदेव मालवीयने अभी हालमें ही विभिन्न जिलोंका दौरा करके लौटनेके पश्चात् जो वक्तव्य प्रकाशित कराया है, उसमें वे कहते हैं—'प्रत्येक जिलेमें मुझे गैरकानूनी ढङ्गसे, बलपूर्वक तथाकथित विजय चन्दा वसूल किये जानेकी रिपोर्ट मिली। गाजीपुरसे आयी हुई रिपोर्टसे पता चलता है कि वहांके थानोंके इन्स्पेक्टर बेचारे सीधे-साधे अपढ़ ग्रामीणोंसे यह चन्दा वसूल करनेके लिये उनपर तरह तरहके अत्याचार कर रहे हैं।' अपने वक्तव्यमें आपने पुलिस अधिकारियोंके सम्बन्धमें जो कुछ कहा है उसकी सत्यतामें सन्देह करनेका कोई कारण नहीं हो सकता। हम देशके उच्चाधिकारियोंसे जानना चाहते हैं कि इस प्रकारका अत्याचार कबतक चलता रहेगा? क्या अब भी वे पुलिस अधिकारियोंके इन जुल्मोंको रोकना अपना कर्तव्य नहीं समझेंगे?

अनुकरणीय विधवा-विवाह

सामाजिक क्षेत्रमें केवल समाज सुधारकोंके प्रयत्नोंके कारण ही नहीं, प्रत्युत कानून द्वारा भी विधवा विवाह व्यवस्थाविहित कर दिया गया है और विधवा विवाह कानूनकी दृष्टिमें भी अब नाजायज नहीं रह गया है, फिर भी धर्मकी झूठी दुहाई देनेवाले रूढ़िवादी विधवा विवाहका विरोध करते हैं। समाजमें तरह तरहके अनाचारोंको ये रूढ़िवादी बुरा नहीं मानते और समाजको सर्वनाश रसातलकी ओर घसीटनेवाली कितनी ही कुप्रथाओं एवं प्रवंचनाओंको भी ये रूढ़िवादी प्रश्रय दे सकते हैं, किन्तु विधान विहित विधवा विवाहका ये विरोध करते हैं। किन्तु समाजके नव जागरणके सामने रूढ़िवादियोंका परम्परागत विरोध ढीला पड़ता जा रहा है और विधवा विवाहोंकी आवश्यकता सभीने महसूस की है और उनकी संख्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है। हिन्दू जातिके कल्याणके लिये विधवा विवाहकी आवश्यकता है और धार्मिक दृष्टिकोणसे भी हमें इसमें कोई अनौचित्य नहीं दिखायी पड़ता, इसलिये हम इसके समर्थक हैं और इस क्षेत्रमें आगे बढ़नेवालोंकी सराहना करते हैं। इसलिये हमें जानकर प्रसन्नता हुई कि वारसलीगंज (गया) में मारवाड़ी समाजके एक लक्षाधीश परिवारमें एक बाल विधवाका शुभ विवाह हुआ है। मेसर्स शिवकरण दास दुलीचन्द फर्मके मालिक सेठ किशनलालजी जालान लड़कीके पिता हैं और जयपुर राज्यके निवासी श्री मोहनलाल अग्रवालके साथ यह विवाह सम्पन्न हुआ है। लड़कीके चाचा श्री सोहनलाल जालानने इस शुभ कार्यमें अनुकरणीय नैतिक साहस दिखाया है, जिसके कारण यह शुभ कार्य सम्पन्न हो सका। श्री मोहनलाल अग्रवालने भी अपने साहससे युवकोंके लिये अनुकरणीय पथ-प्रदर्शन किया है। मारवाड़ी समाजमें एक और बाल-विधवाका विवाह हालहीमें जलपाईगुड़ीके लक्षाधीश डागा परिवारमें हुआ है। उक्त परिवारके २९ वर्षीय श्री गौरीशंकर डागाने बाल-विधवा श्रीमती दुर्गादेवी माहेश्वरीके साथ विवाह कर समाजमें एक आदर्श उपस्थित किया है। इस विवाहमें मारवाड़ी समाजके अनेक प्रमुख कार्यकर्ताओं और नेताओंका सहयोग प्राप्त हुआ है। अतएव दोनों पक्षोंके परिवार अपने ऐसे नैतिक साहसके लिये बधाईके पात्र हैं। हमें आशा है कि इस विवाहसे मारवाड़ी समाजमें नैतिक साहसकी वृद्धि होगी और अन्यान्य बाल विधवाओंके दुर्भाग्य निवारणके लिये समाज समुचित साहस एवं नैतिक बल प्राप्त करेगा।

घृणा कौन फैलाता है?

गत सप्ताह इसी स्तम्भमें हमने चर्चा की थी कि दो सिख अफसरोंको, जिन्हें सम्राटने स्वयं विक्टोरिया क्राससे विभूषित किया था, लन्दनके एक रेस्तरामें इस लिये अपमानित किया गया, क्यों कि उनके चमड़ेका रंग गोरा नहीं था। रेस्तरांके प्रधान खानसामा—एक इटालियनने यह कह कर उनको अन्दर जाने नहीं दिया कि 'हम हबशियकी खिदमत नहीं करते।' युद्धमें अपने प्राणोंकी बलि चढ़ानेवाले भारतीय सैनिकोंके दिमाग पर इस घटनाका क्या असर पड़ा होगा, अंग्रेज इस बातको भली भांति महसूस कर सकते हैं। ठीक इसी प्रकारकी एक दूसरी घटना कलकत्तेसे सिर्फ १० मील दूर बैरकपुरमें अभी हालमें हुई है और इसमें सबसे मजाकी बात तो यह है कि इस घटनाकी रिपोर्ट हमें लन्दनसे मिली है। वह रिपोर्ट इस प्रकार है—"लन्दनके ईस्ट एण्डमें भारतीय श्रमिक संघकी एक सभामें २० नवम्बरको संघके सभापति चौधरी अकबर अलीने कहा कि ब्रिटिश महिला ट्रान्सपोर्ट सर्विसकी कुछ सदस्याएं बैरकपुरके एक नाचघरसे इस कारण बाहर निकाल दी गयीं कि वहां कुछ भारतीय महिलाएं भी उपस्थित थीं। चौधरी अकबरअलीने अपने भाषणमें इन ब्रिटिश औरतोंको अविलम्ब वापस बुलानेकी मांग की।' लन्दनके 'न्यूज क्रानिकल'ने इसी समाचारको कुछ अधिक विवरणके साथ प्रकाशित किया है। उदाहरणार्थ उपर्युक्त नाच सैनिकों द्वारा आयोजित हुआ था और उक्त भारतीय महिलाएं महिला सहायक दलकी सदस्याएं थीं। रायल आर्मी मेडिकल कोरके जेनरल कुरसेटजी की पुत्री भी वहां मौजूद थी। भारत सरकारसे इस घटनाके सम्बन्धमें जवाब तलब किया गया है और उसका जवाब किसी भी रूपमें क्यों न मिले, किन्तु भारतका कोई भी व्यक्ति ऐसी घटनाओं पर किसी प्रकारका आश्चर्य नहीं प्रकट करेगा। वर्ण और जाति भेदकी ऐसी घटनाएं भूतकालमें भी बराबर होती रही हैं और भविष्यमें भी तबतक जारी रहेंगी, जबतक गोरे नर और नारियां अपने सफेद चमड़ेको परमात्माका महान वरदान और अपनेको काले लोगोंसे श्रेष्ठ समझती रहेंगी। पिछले दिनों कुछ गोरे पत्रों और पत्रकारोंने कांग्रेस नेताओं पर अंग्रेजोंके खिलाफ घृणा भाव फैलानेका अभियोग लगाया है। किन्तु वे यह भूल जाते हैं कि यह घृणाकी भावना भारतीयोंने नहीं वरन खुद उन्होंने ही फैलायी है और अबतक उसी भावनासे प्रेरित होकर कार्य कर रहे हैं। गोरोंको समय रहते अपनी इस हीन मनोवृत्तिका परित्याग करना चाहिये, अन्यथा, सिर्फ भारतमें ही नहीं वरन सारे एशिया महादेशमें इन दिनों जो विद्रोही शक्तियां कार्य कर रही हैं, उसको देखते हुए हम ऐसा कहनेको बाध्य हैं कि वह दिन दूर नहीं है जब सारे महादेशसे गोरोंको दूधकी मक्खीकी तरह निकाल फेंक दिया जायगा।

ब्रिटिश साम्राज्यमें भारत का स्थान

(७ वें पृष्ठका शेषांश)

मी किसी यूरोपियनके खिलाफ साक्षी है तो उसको झूठा करार दिया जाता र गोरे अभियुक्तकी बात सच मानी है। यूरोपियन और गैर यूरोपियनको न अपराधके लिये समान दण्ड नहीं जाता। एक गैर यूरोपियनको किसी पियनकी हत्या करनेपर फांसीकी सजा ाती है, लेकिन किसी गैर यूरोपियनके र यूरोपियनको मामूली जुर्मानेकी सजा छोड़ दिया जाता है। दक्षिण अफ्रीका ोरी पुलिस भी काले लोगोंपर कम वार नहीं करती। भारतीयोंको कदम र गोरी पुलिसकी यातनाओं और नोंका शिकार होना पड़ता है।

न्तरीय प्रान्तके म्युनिसिपल निर्वा- सिवा भारतीयोंको कहीं भी मता- र प्राप्त नहीं है। यूनियन और अन्य में भारतीयोंको स्थानीय, प्रान्तीय केन्द्रीय व्यवस्थापिकाओंमें प्रति- त्व करनेका अधिकार नहीं है। वर्षों प्रवास नियन्त्रण कानून लागू कर यूनि- भारतीयोंका प्रवेश निषिद्ध कर दिया ा। एक प्रांतसे दूसरे प्रांतमें स्वतंत्रता- आवागमन करना भी भारतीयोंके मुश्किल है। ओरंज फ्री स्टेटमें उनके ी मनाही है। ट्रांसवालमें भारतीय सकते हैं लेकिन भूमि या जायदाद नहीं सकते। १९२४ में स्मट्स सर- श्रेणी क्षेत्र कानून पेश किया, जिसके र शहरी क्षेत्रोंमें भारतीयोंको यूरो- मुहल्लोंसे अलग कर दिया गया। सर- नौकरियोंमें भारतीयोंको ऊंचा पद िया जाता और वृद्धावस्थामें पेंशन ा अन्धेपनके लिये सरकारी सहायता भी उनको अधिकार नहीं है। गैर ोंको ट्रेड यूनियनका सदस्य नहीं जाता। विश्व ट्रेड यूनियन कांग्रेस काले आदमीको ट्रेड यूनियनका प्रति- करनेकी अनुमति सरकारने नहीं र यूरोपियन ट्रेड यूनियनको सरकार र नहीं करती। गैर यूरोपियनोंको ी अपेक्षाकृत कम मिलता है। उनको कारीगर बननेसे रोका जाता है और ादि सरकारी उद्योगोंमें उनको काम ने दिया जाता।

१९३९ में जब भारतीय सैनिकगण की हिफाजत करनेमें अपने प्राणोंका कर रहे थे, उसी समय एक और पास हुआ। इस कानूनके मुताबिक ोंको ट्रांसवालमें व्यापार करनेकी कर दी गयी। १९४३ में नेटालमें ोंपर और भी जबर्दस्त आघात किया यूनियन सरकारने पेगिंग ऐक्ट जारी ालमें ३ वर्षोंकी अवधिके लिये यूरो- ो कोई सम्पत्ति खरीदनेकी मनाही । इसके साथही किसी मकानको लिये लेनेपर भी प्रतिबंध लगा दिया। उत्तका नेटालमें ही नहीं, बल्कि सारे भारतमें भी तीव्र विरोध किया गया। नेटाल भारतीय कांग्रेस और जेनरल स्मट्सके बीच एक कानफरेन्स हुई और उसमें यह निश्चय किया गया कि इस कानूनको रद्द कर दिया जायगा, लेकिन नेटालकी प्रान्तीय कौंसिलमें इस विधानको लागू कर दिया जायगा जिससे ३ यूरोपियनों और २ भारतीयोंकी एक संयुक्त बोर्डकी स्थापना नेटालके म्युनि- सिपल इलाकेमें भारतीयोंको रहनेके लिये लाइसेंस देनेके निमित्त की जायगी। इस समझौतेमें निश्चय हुआ कि यूरोपियन मुहल्लेमें भारतीय रह नहीं सकते, लेकिन यूरोपियनोंको भाड़ेपर देनेके लिये मकान या जमीन खरीद सकते हैं। यूरोपियनोंने इसका घोर विरोध किया और उनके भीषण दबाव के कारण स्मट्सने घोषणा करदी कि पेगिंग ऐक्ट जारी रहेगा। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्यके एक प्रमुख कर्णधार फील्डमार्शल स्मट्सने अपने समझौतेको स्वयं ही ठुकरा दिया है। मेरा तो अपना विचार यह है कि ब्रिटिश साम्राज्यमें रहकर घी खानेकी अपेक्षा स्वाधीन रेगिस्तानमें रहकर बालू फांकना हजार गुना बेहतर है। भारतीय जबतक पूर्ण स्वाधीन नहीं हो जाते तबतक उन्हें ऐसे ही नहीं, इनसे भी बढ़कर अपमान- जनक स्थितियोंका मुकाबला करना पड़ेगा।

सौभाग्य

---*---

(११ वें पृष्ठका शेषांश)

बेसुध हो गया था। हमारी आंखें उसकी तलाश करती हैं। एक बार पुनः उसे देखनेके लिये आकुल हूं, पर वह कहीं नहीं दीखती। उसने कहा था—"रमता योगी बहता पानी अच्छा होता है"। अब उसके दर्शन नहीं होंगे।"

"स्वामीकी चिन्ता दूर करनी पत्नीका कर्तव्य होता है। आप यहीं ठहरें, मैं अभी आती हूं।"

थोड़ी देरमें धीरेन्द्रसिंहके सामने वही योगिन उपस्थित हो गयी।

वही वीणा वही मोहन स्वरूप! धीरेन्द्र सिंहकी प्रसन्नताकी सीमा न रही। वीणा सुनी और गीत भी।

चकित होकर धीरेन्द्रने कहा—'शीला!'

शीला हंस पड़ी। 'इतनी दूर कैसे चली आयी?'

'जिसकी जिसे चाह होती है, उसके लिये वह सात समुद्र पारकर रहकर भी निकट ही है। मैंने आपकी प्रशंसा सुनकर आपके दर्शनके लिये योगिनका वेष बनाया था, रणमें भी वीरता देखी।

'ऐसी पत्नी पाकर मैं धन्य हो गया।' कहते हुए धीरेन्द्र सिंहने शीलाको अपने अङ्कमें भर लिया। आप सरीखे पतिको पाना क्या कम सौभाग्यको बात है?' कहती हुई शीलाने अपना सिर उनके विशाल वक्षस्थलपर रख दिया।

———

Regd No. C. 2229

देवव्रत मिश्र द्वारा सम्पादित और नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्व मित्र प्रेस कलकत्तामें मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक

विश्वमित्र

THE WEEKLY VISHWAMITRA

२८—५८] कलकत्ता दिसम्बर १२ १९४५. Calcutta, DECEMBER 12, 1945 [मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

मार्च १९४५ के बाद प्रथमबार कलकत्ता आनेपर हवड़ा स्टेशनपर लिया गया पंडित जवाहरलाल नेहरूका चित्र

कविता

"मैं कलाकार बन जाऊं"

मैं कलाकार बन जाऊं
अपने सूने हृदय जगत में — नव संसार बसाऊं
मैं कलाकार बन जाऊं।
जीवन में आभास नहीं है, वाणी में उल्लास नहीं है,
वीणा के बिखरे तारों में, सरस रागिनी गाऊं ॥

*   *   *   *

यह कल्पित संसार नहीं है, इसमें सीमित प्यार नहीं है,
भाव तूलिका के प्रसून पर, मादक माल सजाऊं ॥

*   *   *   *

मानस में इतिहास नहीं है, इन चित्रों में हास नहीं है।
आज सुनहले स्वप्न-लोक में, जीवन-ज्योति जगाऊं ॥

*   *   *   *

कलिका गुन गुन गीत नहीं है, सुख दुखका संगीत नहीं है।
कलित-कामना के कानन में, मन्द-मन्द मुसकाऊं ॥

*   *   *   *

इस जीवन में सार नहीं है, स्वर सोये झंकार नहीं है।
किन्तु लालसा की रेखा पर, क्षितिज के छोर मिलाऊं ॥

—कुमारी पुष्पा सक्सेना "पुष्प"

आशा !

तुम ज्योतिर्मय कौन ? आज मम,
अन्तर तल, उद्वेलित करती,
धीरे धीरे धीरे।
अमर है शुचि सरल वाले ?
हास की परिभाष पाले।
शोभती मणि माल सी सखि।
मानवी के अश्रु टाले।
जन जनित अस्तित्व तेरा।
'हाय' छवि तू 'आह' घेरा।
धर अधर की अनुप उज्वल,
विजय का सुरभित सवेरा।
विपदों की नव प्रभाती।
अवनित जीवन जगाती।
हंस विहंस रस सरस देती,
शुष्क पथ की स्नेह बाती।
वाद का अनुवाद करते।
कर सकूंगा नर बसाते ?
हे हृदय की राज रानी।
तुम दशा मयि अमर आशे।
जीवन की जय कौन ? आज मम,
हहराती अवि, मानस तट के,
धीरे धीरे धीरे।

—श्री नारायणलाल 'परमार

लो बीन संभालो आज प्रिये

मैं तलछट पीकर आया हूं—
लो बीन संभालो आज प्रिये।
सारी हत्यारी ममतायें—
इस निखिल विश्व का करुण-गान।
यौवन-पीड़ित मानव-मनके—
आंसू से भीगा प्रेम-ज्ञान।
मैं महा प्रलय के निकट खड़ा
जीवन सरजन करने वाला—
समरस हैं मेरे नयनों में
जग के ऊंचे-नीचे विधान ॥
लुट जाये मेरा नव-यौवन
लुट जाय ब्रह्म का राज प्रिये।
मैं तलछट पीकर आया हूं
लो बीन संभालो आज प्रिये ॥
मैं चूम चला सारे जग को—
मैं लहर-लहर पर लहराया।
मैंने श्मशान में भी तो—
मानव प्राणी को है दफनाया ॥
मैं मदिरालय में झूम-झूम—
सौ-सौ प्याले पीनेवाला।
जब प्रलय नृत्य का साज बजा
मैं ही था पहले मुसकाया ॥
इन भिखमंगों की टोली में
अपने सिर पर है ताज प्रिये।
मैं तलछट पीकर आया हूं
लो बीन संभालो आज प्रिये ॥
मैं दशो दिशाओं के वक्षस्थल—
से वाधित वैरागी हूं।
जग कामिनियों से घिरा हुआ
अविचल यौवन का त्यागी हूं ॥
मदिरालय में मेरे साकी ने
मुझे दिये हैं विष प्याले
मानव-शव की सौगन्ध मुझे
मैं भोगी हूं मैं रागी हूं ॥
मैं क्षणिक विश्व के ऊपर हूं
किस की करती हो लाज प्रिये।
मैं तलछट पीकर आया हूं
लो बीन संभालो आज प्रिये ॥

—श्री रामअवतार अग्निहोत्री

आदेश

मत कहु, हम कुछ कर न सकेंगे हम हैं साधक सिद्ध समाज।
गरल सुधा सम कर सकते हैं है अतीत गौरव का ज्ञान ॥
धर्म धुरन्धर नीति निपुण थे देते सदा दया का दान।
सानुकूल हम सदा रहे थे था हमको गरिमा का ध्यान ॥
छिपकर हम थे जगतीतल के कभी न हमने किया निरास।
स्वयं जनों को शरणागत में रक्खा सब दिन अपने पास ॥
परिजन पुरजन सदा सुखों से करते रहते यापन काल।
रिक्त कोष को पूर्ण किया था रक्खा जग को नित प्रति पाल ॥
षट् ऋतुओं का ज्ञान हमें था नवरस का था विधिवत ज्ञान।
दत्तचित्त हो किया प्रकाशित जग में गुण-गौरव विज्ञान ॥

— श्री मुरलीधर नारायण प्रसाद बी० ए० विशारद

परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिनकहूँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।

पर्देके पीछे

हमारा देश आज असाधारण परिस्थितियोंसे होकर गुजर रहा है। देशमें यदि एक तरफ अन्न वस्त्रका अभाव है, प्राकृतिक प्रकोपोंका जोर है, महामारियोंका दबदबा है तो दूसरी तरफ राजनीतिक विस्फोटके तमाम तत्व एकत्र होकर परमाणु बमसे अधिक भयंकर स्वरूप धारण करते जा रहे हैं। "जयहिन्द" और "दिल्ली चलो" का पलीता विस्फोटकी बत्तीका काम दे रहा है। आजादी हासिल करनेके लिये उठाया गया कदम दिन प्रतिदिन तेज होता जा रहा है। आजाद हिन्द फौजके सैनिक अधिकारियोंके विरुद्ध चलाये जानेवाले मामलों और आजाद हिन्द फौजके प्रति सहानुभूति प्रकट करनेवाले प्रदर्शनों उत्पन्न भयकर स्थिति विदेशी शासनके विरुद्ध दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए असन्तोषकी आगमें घीका काम कर रही है। लोगोंके भीतर फैलाहुआ असंतोष अब दबाये दबनेकी स्थितिको पार कर गया है। और पार कर जानेकी बात भी है। कलतक दासताकी जड़ निद्रामें सोते रहनेवाले पड़ोसी छोटे-छोटे राष्ट्र जबरन भारतसे स्वतन्त्रताकी प्रेरणा और चेतना पाकर दासताके बंधनकी लोह शृंखलाओंको छिन्न भिन्नकर आततायी शक्तिके खिलाफ सर्वस्व होम देनेका संकल्प लेकर वीरता और साहसके साथ खुला सीना तानकर खड़े हुए हैं तब भला इतना विशाल देश भारतवर्ष अधिक दिनों-तक गुलामीके अभिशापको कैसे बर्दाश्त कर सकता है। करेंगे या मरेंगे! गांधीजीका यह मन्त्र आज भारतवासीके हृदयके भीतर जबर्दस्त उथल पुथल मचा रहा है। बच्चेसे लेकर बूढ़ातक, नर-नारी, युवक युवती सभी जय हिन्द और दिल्ली चलोंके नारे लगाकर मतवाले हो रहे हैं। ये मतवाले जिस दिन झूमकर उठेंगे और मस्तानी चालसे कदम कदमपर जय हिन्द और दिल्ली चलो प्रतिध्वनित करते हुए आगे बढ़ेंगे उस दिनकी कल्पना ब्रिटिश शासकों और कूटनीतिज्ञोंको व्यग्र, अशान्त और भयाकुल बना रही है।

यही कारण है कि कलकत्तेमें कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीके सम्बन्धमें समागत नेताओंसे मिलकर बङ्गालके गवर्नर मि० के० सी० गाम्बी-वावेल मिलनके लिये पृष्ठभूमि तैयार करनेमें लगे हुए हैं। ब्रिटिश कूटनीतिज्ञ यह बात भली प्रकार जानते हैं कि भारतमें उठने वाले बवण्डरको शान्त कर सकनेकी क्षमता कांग्रेसको छोड़कर अन्य किसीमें नहीं है। यही कारण है कि पिछले सप्ताह चार दिनतक मि० केसी महात्मा गांधीसे तथा गत शुक्रवारको राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजाद, पण्डित नेहरू और सर्दार पटेलसे मिले और घण्टोंतक बातचीत की। कलकत्ता आते ही वायसराय भी कांग्रेस नेताओंसे मिलेंगे। पर्देके पीछे सात दिनसे क्या हो रहा है, जाननेको ४० करोड़ भारतवासी आकुल हैं। इस सम्बन्धमें निकाली गयी सरकारी विज्ञप्तियोंसे जनता की ज्ञान पिपासा घटनेको कौन कहे और अधिक तीव्र हो उठी है। 'मित्रतापूर्ण बातचीत हुई', यही सरकारी विज्ञप्तियोंका मर्म है। मुलाकात करके गवर्नर भवनसे बाहर आनेपर पत्र प्रतिनिधिके यह पूछनेपर कि 'मंजिल कितनी दूर रह गयी' मौलाना साहबके यह कहनेसे कि "वह नजदीक रह गयी है" लोगोंकी उत्सुकता एवं व्यग्रता और अधिक बढ़ गयी है। इन पहेलियोंसे प्यास बुझनेके बजाय लोगोंके दिलोंमें तरह तरहकी भावनाएं उठ रही हैं।

हमें अपने नेताओंपर विश्वास है, हम जानते हैं कि वे हमें कभी गलत रास्तेपर न ले जायेंगे। यह भी हम जानते हैं कि जिस दिन वे समझेंगे कि ये वार्तालाप देशकी स्वतन्त्रताको पीछे ढकेलनेमें सहायक होंगे उसी दिन वे इनको दूरसे सलाम कर देंगे। किन्तु यह जानते हुए भी, हम समझते हैं कि जिस वार्तालापसे देशके ४० कोटि निवासियोंका भविष्य बंधा हुआ है उसके सम्बन्धमें, कमसे कम उसकी गतिविधिके सम्बन्धमें, देशको सम्पूर्ण अन्धकारमें रखना उचित नहीं है। प्रकाश चाहिये। जनताको यह मालूम होना चाहिये, क्योंकि अबोध होते हुए भी राष्ट्रवादी भारत इतना निर्बोध नहीं है कि वह यह न समझ सकता हो कि, उसे किस दिशामें जाना है। वार्तालापका आधार क्या है, यह जाननेकी हमारी मांग कांग्रेस नेताओंको उनके कार्यमें अतिरिक्त बल पहुंचाने एवं अधिक दिनों तक जीवन मरणसे सम्बन्ध रखनेवाली बातोंसे कोटि कोटि जनताके अपरिचित रहनेके फल स्वरूप उत्पन्न की जानेवाली आशङ्काओंको मिटानेकी भावनासे अनुप्राणित है। इस दृष्टिकोणसे, पर्देके पीछे क्या हो रहा है, पूछनेका हमें अधिकार है। हमें आशा है कि इस सम्बन्धमें हमें अपने नेताओंसे अवश्य प्रकाश मिलेगा।

वही रोग—

आजके युगकी यह आवश्यकता है कि भारतको स्वतंत्र होना चाहिये। सब तरहके बन्धनोंसे मुक्त भारत विश्वशांतिके लिये आवश्यक है। विश्व शांतिकी बातें करनेवाले यदि इस बातको नहीं महसूस करते, यदि अबतक उनकी समझमें यह बात नहीं आयी कि विश्वका नेतृत्व जिन लोगोंके हाथमें है वे असफल हो चुके हैं और शांति स्थापनके लिये अब किसी दूसरे मार्गकी आवश्यकता है तो न आयें, किन्तु हम उनसे यह बता देना चाहते हैं कि संसारको शांतिके मार्ग पर भारतके सिवा और कोई नहीं ले आ सकता और यह तभी हो सकता है जब भारत स्वतन्त्र होगा। साथही हम यह भी बता देना चाहते हैं कि जिन स्थितियों और प्रणालियोंने भारत भूमिको परतंत्र बना रखा है, हम उनको अब नहीं रहने देंगे और मि० आसफअलीके शब्दोंमें हम अब अपने घरके स्वयं मालिक बनेंगे। उस दिन ब्रिटिश पार्लामेण्टकी लार्ड सभामें भारत सचिव पेथिक लारेन्स और कामन सभामें हर्बर्ट मारिसनने भारत सम्बन्धी अपनी नीति और निकट योजना पर जो प्रकाश डाला है वह नितान्त असन्तोष प्रद है। अभीतक वे ब्रिटिश नीतिके सम्बन्धमें भारतमें उत्पन्न सही सन्देह और अविश्वास दूर करनेके लिये एक पार्लमेण्टरी प्रतिनिधि मण्डल भेजनेकी ही बात सोच रहे हैं। उनको यह मालूम होना चाहिये कि शिकायत और मलाल तथा स्पष्टीकरणके दिन चले गये। हमें स्वतन्त्रता चाहिये, पूरी और बिना किसी शर्तोंसे जकड़ी हुई; अतः आप यह बताइये कि इस सम्बन्धमें ब्रिटिश मजूर दलकी नीति क्या हैं। एक दूसरेको हम बहुत समझ चुके हैं। अब इस तरहकी टालमटूलसे काम नहीं चलनेका। अब तो हमने यह तय कर लिया है कि हम अपने घरके मालिक खुद बनेंगे और आज जो अपनेको हमारा मालिक कहते फिरते हैं उनके भी हम मालिक बनेंगे। ब्रिटिश मजूर सरकारको यह समझ लेना चाहिये कि हमारी आज यह स्थिति और संकल्प है। हम इससे रंच भर टससे मस नहीं होना चाहते, भले ही इसके लिये हमें रक्त गंगामें स्नान क्यों न करना पड़े। हम जानते हैं कि वर्तमान ब्रिटिश सरकार जो भारतके मामलेमें वही नीति बरत रही है जो चर्चिल सरकारकी थी, हमारे सङ्कल्पको पूरा न होने देनेको अपनी तमाम पाशविक शक्तिसे हमारे आन्दोलनको कुचलनेमें जरा भी द्विधा न करेगी। पर हम उसकी गोलियों और बमोंके भयसे अपने सङ्कल्पसे विचलित नहीं हो सकते यह बात उसे भी समझ लेना चाहिये। हम अब अपनी मंजिल पर पहुंच कर ही रुकेंगे भलेही इसके लिये हमें कितना ही बड़ासे बड़ा बलिदान क्यों न करना पड़े। ब्रिटिश सरकार यह समझ ले कि हम बड़ेसे बड़े बलिदानके लिये तैयार हैं क्योंकि हम जानते हैं कि इसके बिना कभी किसी देशको स्वतन्त्रता नहीं मिली। यह समझ कर वह प्रतिनिधि मण्डल आदि भारत भेजनेकी बात छोड़ कर अपनी सही नीति स्थिर करे तभी भारत और ब्रिटेन दोनों तथा सम्पूर्ण विश्वका हित है।

कहां है हिन्दू महासभा !—

हम एक नहीं अनेक बार यह बात कह चुके हैं कि कांग्रेसकी प्रतिद्वन्द्वितामें राजनीतिक क्षेत्रमें प्रवेश करके हिन्दू महासभाने बहुत बड़ी गलती की। केन्द्रीय असेम्बलीके हालके निर्वाचनोंसे यह सिद्ध हो गया कि देशमें उसका क्या स्थान और सम्मान है। बंगाल, पंजाब और महाराष्ट्र हिन्दू महासभाके गढ़ समझे जाते थे। किन्तु इन प्रान्तोंमें क्या महासभा कांग्रेसके मुकाबले एक भी सीट ले सकी? युक्तप्रांतमें तो कांग्रेसके मुकाबले हिन्दू महासभाको उंगलियोंपर गिने जाने लायक वोट भी नहीं मिले। हमारे सुपरिचित, सुप्रसिद्ध पत्रकार, कवि और साहित्यिक पंडित बालकृष्ण शर्मा नवीनको जहां १७ हजारसे अधिक वोट मिले वहां उनके प्रतिद्वन्द्वीको मात्र ७५ और पंडित गोविन्द मालवीयके महासभा वाले प्रतिद्वन्द्वीको—जिसे प्रतिद्वन्द्वी कहना प्रतिद्वन्द्वी शब्दका अपमान करना है—हमें [illegible] २३ वोट मिले। अपने सैनिकोंकी यह दुर्गति देखकर हिन्दू महासभाके सिपहसालार डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जीने निर्वाचन लड़नेका इरादा त्याग कर सचमुच बुद्धिमानीका काम किया है। अपने सरदारको [illegible] हारते देख यदि उनके अनुयायी श्री देवेन्द्रनाथ मुखर्जी (मेयर कलकत्ता) और [illegible] बंकिमचन्द्र मुखर्जीने क्रमशः प्रेसिडेंसी डिवीजनमें श्री शशाङ्क शेखर सान्याल तथा [illegible] वान डिवीजनमें श्री देवेन्द्रलाल खांसे मुकाबला लड़नेका इरादा छोड़ दिया तो इसमें कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। वास्तवमें समय [illegible] गतिको पहचानने और घटनाओंके [illegible] छिपे अपने भविष्यको देख सकनेवाली [illegible] की प्रशंसा ही की जायेगी। आशा है [illegible] बंगालसे केन्द्रीय असेम्बलीके अन्य निर्वाचन क्षेत्रोंमें कांग्रेसकी प्रतियोगिता करनेवाले महासभावादी भी अपने नेता श्यामाप्रसाद मुखर्जी तथा अपने साथियों द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलकर [illegible] परेशानी और पराजयके अपमानसे अपनेको बचायेंगे। इन निर्वाचनोंसे यह स्पष्ट हो गया है कि हिन्दू महासभाका कोई राजनीतिक अस्तित्व नहीं है और [illegible] दृष्टिमें तो वह लिबरल पार्टीकी [illegible] चुकी है। अतः मरी बन्दरियाकी तरह [illegible] सभाको सीनेसे चिपटाये रहनेसे कोई [illegible] नहीं है। हमें यह देखकर खेद होता है [illegible] इस संगठनमें बहुतसे ऐसे व्यक्ति भी [illegible] से फंस गये हैं, जिनकी शक्ति, योग्यता [illegible] सेवाओंकी देश कदर करना चाहता [illegible] उनका स्थान हिन्दू महासभामें नहीं [illegible] देशकी स्वतन्त्रताके लिये लड़नेवाली [illegible] संस्था कांग्रेसमें होना चाहिये। [illegible] कि डा० श्यामाप्रसाद मुखर्जी एवं [illegible] जैसे अन्य व्यक्ति हमारे इस निवेदन [illegible] ध्यान देंगे।

'राष्ट्रीय दुर्घटना'—

ब्रिटेनमें पिछले साधारण निर्वाचनमें मजूरदलकी जबर्दस्त जीत, और टोरी [illegible] हारको मि० चर्चिलने 'राष्ट्रीय दुर्घटना' बताया है। लोकतन्त्रका यह 'पुजारी' [illegible] मतका कैसा सम्मान करता है, [illegible] उक्त वक्तव्यसे अच्छी तरह समझा जा [illegible] है। इस दुर्घटनासे मि० चर्चिलका [illegible] और उसके भीतर आसन जमाये [illegible] तानाशाह तिलमिलाकर रह गया है। [illegible] मिलाहटका भाव मिटनेके बाद [illegible] पराजयको विजयमें बदलनेके [illegible] चर्चिल आज खड़ गहस्व हो रहे [illegible] वे राष्ट्रको शतधा विछिन्न करके [illegible] हो गये हैं। वर्ग-प्रेम राष्ट्र-प्रेमसे [illegible] हुआ। जनताकी इच्छाको कुचलनेका [illegible] यन्त्र आरम्भ हो रहा है। मि० [illegible] सबका मत पसन्द नहीं है, सबको [illegible] चर्चिलका मत पसन्द होना चाहिये।

लोकतन्त्र समझते हैं और इसीसे अत्य-
धिक लोकमतसे बनी मजदूर सरकारके
खिलाफ, जिसे बने अभी पांच महीना भी
नहीं हुए, मि० चर्चिलकी पार्टी कामन सभा
में अविश्वासका प्रस्ताव लेकर उपस्थित
हुई। सरकारके खिलाफ प्रस्तावमें और
विरोधी दलके वक्ताओंके भाषणोंमें सेनाके
विघटन, गृह तथा बड़े बड़े उद्योगधन्धोंकी
आर्थिक स्थिति जैसी समस्याओंकी उपेक्षा
करनेके अभियोग लगाये गये हैं। मि० लिट-
ल्टनने अविश्वासका प्रस्ताव पेश करते हुए
कहा कि "राष्ट्रीयकरण और सार्वजनिक स्वा-
मित्वमें मैं ट्रेड यूनियन आन्दोलनके लिये
खतरा देखता हूं।" उनकी इस बातपर
सरकारके समर्थकोंने बड़े जोरका ठहाका
लगाया। बात भी ठहाका लगानेकी है।
जिस पार्टीकी सरकारने बराबर ट्रेड यूनियन
आन्दोलनको कुचला है उसके सदस्यके मुखसे
इस तरहकी ममत्वपूर्ण बातें सुनकर किसे
बरबस हंसी न आयेगी। टोरी पार्टीके लीडर
मि० चर्चिलने इस प्रस्तावपर बोलते हुए हारे
जुआरी जैसे व्यक्तिका परिचय दिया।
...न नेताओंपर ब्रिटिश जनताने अपना पूर्ण
विश्वास प्रकटकर राष्ट्रका उत्तरदायित्व
सौंपा है उनको पांच महीने पूरे होते न होते
यह कहना बौखलाहट नहीं तो और क्या
है कि "ये खलबली मचानेवाले, उपद्रव
करनेवाले हैं। मैं समझता था कि सर्वप्रथम
जिम्मेदार मिनिस्टर सब दलोंका अधिकसे
अधिक सहयोग प्राप्त करने तथा सब तरह-
के राष्ट्रीय कामोंमें एकता लानेकी चेष्टा
करेंगे।" किन्तु ऐसा समझनेका कोई कारण
न था। यदि उनको यही बात स्वीकार
थी तो राष्ट्रीय कार्यक्रम लेकर सर्वदली
सरकार बनानेका प्रश्नपर निर्वाचन लड़ने
के प्रस्तावको मजूर पार्टी क्यों ठुकरा देती।
...दलने यह बात महसूस की और देशने
...का समर्थन किया कि अब समय आ गया
...राष्ट्रको सभी मामलोंमें भिन्न रास्ता
...ना चाहिये। जीवनसे सम्बन्ध रखने-
...वाली बातों तथा वैदेशिक सम्पर्कके मामलेमें
...पार्टीके नेतृत्वमें देशको जिधर चलाया
...था उसका कटुसे कटु अनुभव पो
...के बाद सरकारी नीतिमें क्रान्तिकारी
...वर्तन देखनेकी इच्छाको ब्रिटिश निर्वा-
...ने प्रकाशके समान स्पष्ट प्रकट कर
...है। उन प्रतिगामी तत्वोंके साथ सह-
...करनेका अर्थ लोकमतकी उपेक्षा करनेके
...और क्या हो सकता था। मजूर दलने
...मतको शनैः शनैः कार्यमें परिणत करने
...और कदम बढ़ाया है। टोरी दल जानता
...यह इसके अर्थात् पूंजीवादी वर्गके
...का मार्ग है। यही कारण है कि
...चर्चिल "ग्रेट ब्रिटेनको सोशलिस्ट स्टेट-
...परिणत करनेके प्रयासमें व्यापक राजनी-
...तिक संघर्ष, संकट और सर्वनाश" देख रहे
...असल बात तो यह है कि पूंजीवादके
...सर्वनाशको ही वे राष्ट्रका सर्वनाश समझते
...विरोधी पक्षकी बातोंका जवाब देते हुए
...लार्ड किप्सने ठीक ही कहा है कि
...अविश्वासका प्रस्ताव सरकारके
...नहीं है बल्कि उन निर्वाचकोंके
...है जिन्होंने सरकारको चुना है।"

रोटीकी लड़ाई—

मनुष्यके साथ मनुष्यने इस सभ्य कहे जानेवाले वैज्ञानिक युगमें जितना अन्याय और अत्याचार किया है पहले वैसा कभी नहीं हुआ। आजके जमानेमें मनुष्यको पशुसे भी हीन समझ लिया गया है। समाजका ऐसा पतन कभी नहीं हुआ था। किन्तु मनुष्यको अब अधिक दिन पशुवत जीवन बिताना पसन्द नहीं है। मनुष्योंके अधिकारोंसे वंचित करनेवाले समाजके विरुद्ध, यही कारण है, आज सर्वत्र असन्तोष और विद्रोहकी लहर फैल रही है। जनसाधारण को भूखों मार कर, नंगा बनाकर, अस्वस्थ और अशिक्षित रख कर अपने निजी स्वार्थके लिये उनको शोषित करते रहना ही आजका युगधर्म बन गया है। देशके कानून और अधिकारी इस युग धर्मके सहायक हैं। यही कारण है कि इस समय प्रायः सर्वत्र मालिक के खिलाफ नौकर कमर कस कर खड़े हो रहे हैं। सर्वत्र रोटीकी लड़ाई भीषण रूप धारण कर रही है। जर्मनी और जापान जैसे प्रबल शत्रुओंको जिनके बल पर पछाड़ा गया है ब्रिटेन और अमेरिका आज अपने उन्हीं श्रमिकोंको भूल गये हैं। आज भी इन देशोंमें थोड़ेसे मुट्ठीभर लोगोंको ही राष्ट्र, और उनकी आवश्यकताएं राष्ट्रकी आवश्यकताएं समझी जाती हैं। फलतः श्रमिकोंमें असन्तोषकी भावनाका उद्रेक सहज स्वाभाविक है। इन देशोंके मजूर सर्वग्रासी पेट रखनेवाले पूंजीपतियोंके खिलाफ संगठित मोर्चाबन्दी कर रहे हैं। अपने एकमात्र माहू हथियार 'हड़ताल' का प्रयोग करना उन्होंने शुरू कर दिया है। हिन्दुस्तानमें भी रोटीकी लड़ाई छिड़ गयी है। इस मुल्कमें रोटी सबसे महंगी है। ऐसे लोगोंकी संख्या बहुत कम है, जिनको दोनों वक्त चिकनी चुपड़ी रोटी और दाल तरकारी नसीब होती है। जो थोड़ेसे लोग सुबह शाम दोनों जून पेट भर कर, सूखी ही सही, रोटी पा जाते हैं वे अपनेको परम भाग्यशाली समझते हैं। अतः आश्चर्य क्या है यदि यह रोटीकी लड़ाई धीरे-धीरे विकराल रूप धारण करती जा रही है। आश्चर्य तो यह है कि अभी तक विस्फोट क्यों नहीं हुआ। किन्तु अब इसके लक्षण स्पष्टतर होने लगे हैं। क्योंकि आलीशान महलोंमें रहनेवालोंको अब पृथ्वी पर अपने सिवा दूसरे मनुष्य दिखायी ही नहीं देते। उनका पेट बढ़ते-बढ़ते तहखाने से भी अधिक गहरा हो गया है। किन्तु ये अभी निर्भय हैं। देश पर हुकूमत करनेवाली विदेशी सत्ताका बल इनको मदान्ध बनाये हुए है। ये जानते हैं कि विदेशी सत्ताकी जड़ोंको मजबूत बनाये रखने वालोंकी सरकार अवश्य मदद करेगी। वह कर भी रही है। पर एक बात उनको न भूल जाना चाहिये कि उन्हों जिसने "बैंक" का सहारा लिए है वह स्वयं अब जर्जर हो जाने वाली है और अब इसमें अधिक देर नहीं है। अतएव बुद्धिमानीका तकाजा यही कहता है कि वे अपने कोढ़ बन गये पेटको संकुचित करें अन्यथा एक दिन वह आने वाला है जब आजके रोटीकी लड़ाई लड़ने वालोंको नहीं, बल्कि उनको—उन तोंद धारियोंको—रोटियोंके लाले पड़ जायेंगे।

रेलवे हड़ताल—

आजके समाज और जमानेके लिये रेलवे की उपयोगिता स्वयम् प्रकट है। जीवनके लिये तमाम आवश्यक पदार्थोंको एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुंचानेका रेलवेही आज प्रधान साधन है। ऐसी परिस्थितिमें रेलवे की हड़तालकी आशंका साधारण मनुष्यसे लेकर सम्पूर्ण समाजकी चिन्ताका विषय है। किन्तु हमारी सरकारके निश्चयके कारण ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न होनेवाली है। आल इण्डिया रेलवे फेडरेशनके उप-सभापति श्री कल्याण सुन्दरम् समझते हैं कि रेलवे कर्मचारियोंकी सर्व व्यापक हड़ताल अनिवार्य है। रोटीकी लड़ाई लड़नेवालोंका यह अन्तिम अस्त्र है। इसका प्रयोग करनेको वे बाध्य किये जाते हैं। रेलवे विभागोंमें काम करनेवाले ढाई लाख कर्मचारियोंको जवाब देनेके सरकारी फैसले के कारण ही इस तरहकी स्थिति उत्पन्न हो गयी है। रेलवे बोर्ड यदि इस समस्या को सन्तोषप्रद ढंगसे हल करनेको तैयार हो तो यह स्थिति टल सकती है, किन्तु बोर्डने रेलवे कर्मचारी संघको जो उत्तर दिया है वह सम्पूर्ण असन्तोषप्रद और मामलेको खटाईमें डाल रखने वाला है। यदि इस बीच कोई काम चलाऊ समझौता नहीं हुआ तो रेलवे हड़तालके फलस्वरूप उत्पन्न भीषण और भयंकर स्थितिकी सारी जिम्मेदारी रेलवे बोर्ड पर होगी। फेडरेशनकी ओरसे इस अप्रिय स्थितिको रोकनेके लिये कई सुझाव बोर्ड के सामने रखे गये हैं। फेडरेशनका कहना है कि काम करनेके घण्टे कम करके, प्रति वर्ष प्रत्येक कर्मचारीको एक महीनेकी सवेतन छुट्टी देकर कण्ट्राक्टरों को जो काम दे रखा गया है उसे रेलवे बोर्ड स्वयं अपने हाथमें ले, इंजिन डब्बों एवं पटरियां विदेशसे इम्पोर्ट न करके यहीं रेलवे वर्कशापोंमें बनाये तथा इसी तरहके और बहुतसे काम करके रेलवे बोर्ड छटनीकी समस्याको हल करे। इन सब बातोंकी तरफ तथा वेतनके प्रश्न पर यदि रेलवे बोर्डने बुद्धिमानीके साथ विचार न किया तो हड़ताल अनिवार्य है, यह फेडरेशनके रुखसे स्पष्ट है।

रणक्षेत्रमें सुभाष—

आजाद हिन्द फौजके सैनिकोंका यह विश्वास है कि 'नेता जी' सुभाषचन्द्र बोस जीवित हैं। नजरबन्द कैम्पसे छूट कर आनेवाले तमाम सैनिकोंका यह विश्वास है कि वे एक दिन अवश्य लौट आयेंगे। उनका कहना है कि नेता जीकी "मृत्यु-कहानी" पर आजाद हिन्द फौजकी बालसनाका पांच वर्षका बालक भी विश्वास न करेगा।" नेता जीकी बातें करते करते आजाद सैनिकोंका मुखमण्डल अपूर्व प्रभासे मण्डित हो जाता है। वे अपूर्व गर्व और गौरवका अनुभव करते हैं। इन लोगोंकी जबानी रणक्षेत्रमें सुभाषबाबूके स्वयं युद्ध संचालन करनेका वर्णन बड़ाही प्रभावोत्पादक मालूम पड़ता है। कहते हैं कि सुभाषबाबू हमेशा अपनी फौजी पोशाकमें रहते थे। पीठ पर थैलेमें बराबर दस दिनका राशन रहता था। कमरमें लटकती हुई तलवारके ऊपर बंधी पिस्तौलके साथ वे निकलते थे। उनके मन्त्री सदा उनके साथ रहते थे। ऐसा था वह शार्दूल जिसके लिये आजाद-हिन्द फौजका प्रत्येक सिपाही रणक्षेत्रमें प्राण देना अपना गौरव समझता था। ऐसे नररत्नको विदेशी सरकारने और कुछ एजेण्ट और क्रान्तिकारी ढोंगी अब भी जापानियोंके हाथका कठपुतला बतानेके घृणित प्रयत्नसे बाज नहीं आते। इनको यह बात समझ लेनी चाहिये कि उनकी यह कोशिश सूर्य पर थूकनेके समान है।

'नवीन' जीकी शानदार विजय—

हिन्दी जगतके विख्यात पत्रकार और कवि पं० बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' केन्द्रीय लेजिस्लेटिव असेम्बलीके लिये युक्त प्रान्तके 'सात शहर' गैर मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्रसे कांग्रेसके टिकट पर सदस्य निर्वाचित किये गये है, यह जान कर हमें हार्दिक प्रसन्नता हुई है। नवीन जीके प्रतिद्वन्द्वी श्री मोहनलाल अग्रवाल केवल बुरी तरह पराजितही नहीं हुए वरन उनकी जमानत भी जब्त हो गयी है। निर्वाचनमें नवीन जीको १७ हजार ७९८ वोट मिले और उनके प्रतिद्वन्द्वीको मात्र ७९ और इस प्रकार युक्त प्रान्तके सात शहरी क्षेत्रोंके गैर मुस्लिम निर्वाचकोंने अपने प्रतिनिधिके रूपमें नवीन जीको चुन कर एक मौन देशसेवी और श्रेष्ठ पत्रकारका उचित सम्मान किया है। नवीनजीने शुरूसे ही देश और साहित्यकी सेवा की है, उन्होंने कभी भी ख्याति प्राप्त करनेकी इच्छासे कार्य नहीं किया। हिन्दीके सफल पत्रकार, त्यागी देशभक्त और श्रेष्ठ कवि श्री नवीन जी कांग्रेसके टिकट पर निर्वाचित हुए है, इसके लिये हमें हार्दिक आनन्द है और हम उन्हें बधाई देते हैं।

सिन्धपर दैवी प्रकोप—

करांचीके बेटी बन्दरतक १०० मील लम्बे समुद्र तटवर्ती अञ्चलमें हाल हीमें जो भीषण भूकम्प और ज्वार आया था, उसके परिणामस्वरूप ४ हजारसे अधिक व्यक्तियों की मृत्यु हुई, अनेक गांव बह गये और ४ हजारसे अधिक व्यक्ति गृहविहीन हो गये है। सारा भारत इस दुःखद घटनाके कारण दुःखी है और पीड़ितोंके प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की जा रही है। इस भयङ्कर विनाशलीलाका विवरण बड़ा ही हृदयद्रावक है। बताया गया है कि करांचीसे १८० मील की दूरीपर अरब सागरमें दो आग्नेय चट्टानों के फट जानेके कारण भूकम्प हुआ और समुद्रकी ४० फीट ऊंची लहरोंने सारे समुद्र तटको जलप्लावित कर दिया। अरब सागर में ये दोनों आग्नेय चट्टानें दो छोटे टापुओंके रूपमें समुद्र तलसे ३० फीट ऊपर निकल आयी हैं और उनसे अबतक धुआं और तरल द्रव्य निकल रहा है। सिन्धके इतने निकट दो ज्वालामुखियोंके प्रकट होनेसे अब ऐसी आशङ्का हो रही है कि यहां अक्सर भूकम्प हुआ करेंगे। भूकम्प और ज्वारसे पीड़ित व्यक्तियोंको अविलम्ब सहायता पहुंचानेकी आवश्यकता अनिवार्य है। हम आशा करते हैं कि सरकार और जनता दोनों इस विनाशलीलाकी भयङ्करताको महसूस करेंगी और पीड़ितोंकी सहायता करनेके लिये अपने हाथ अविलम्ब आगे बढ़ायेंगी।

तीन साम्राज्योंका संघर्ष स्थल-फिलस्तीन

(लेखक—श्री अवनीन्द्रकुमार विद्यालङ्कार)

तीसरे महायुद्धकी जहां भूमिका लिखी जा रही है, और जहां रूसी ब्रिटिश और अमेरिका साम्राज्योंका संघर्ष हो रहा है, उनमें एक स्थान फिलस्तीन भी है। ट्रूमैनने ब्रिटिश प्रधान मन्त्री मि० एटलीको पत्र द्वारा इस बात पर जोर देकर कि एक लाख यहूदियोंको फिलस्तीनमें बसने जानेके लिये परवाना दिया जाय, अरब यहूदी संघर्षको और अधिक तीव्र बना दिया है और आज फिलस्तीनके अन्दर तूफान आनेसे पहलेकी शान्ति है। ब्रिटिश फौजें वहां शान्ति स्थापित करनेके लिये पहुंच गयी हैं ! लड़ाई समाप्त हो गयी पर वहां युद्धकी घटा छायी हुई है और किसी भी समय अरब यहूदी संघर्ष भड़क सकता है।

यहूदियोंका विश्वास है कि फिलस्तीन मधु-दूधका देश है। पर वस्तुतः यह बात नहीं है। सालके दस मासोंमें यह देश सूखा और बंजर पड़ा रहता है। केवल दो मासोंमें वहां कुछ हरियाली नजर आती है। कड़ी मेहनतसे केवल फसल पैदा की जा सकती है। खैबरघाटीके पहाड़के समान इसके सूखे पहाड़ हैं। यह एक छोटा सा देश है। ब्रिटेनको जब इसका शासनादेश दिया गया तब ट्रांसजोर्डन इससे अलग कर दिया गया, यद्यपि ये दोनों देश आस्ट्रिया-हंगरीके समान एक हैं। भारतके रावी या पंजाब प्रान्तके कांगड़ा जिलेके समान इसका आकार है। पर भौगोलिक और सामरिक व्यूह रचनाकी दृष्टिसे इसकी स्थिति बहुत अधिक महत्वपूर्ण है। यह पूर्वीय भूमध्यसागरके तटपर है। व्यवसायिक दृष्टिसे यह यूरोपियन इलाकेमें है। यूरोप और पीछेके अरब देशोंका स्थित औद्योगिक दृष्टिसे विकासोन्मुख अरब देशोंके बीचमें फिलस्तीन है। अरब देश नवीन आर्थिक युगमें प्रवेश कर रहे हैं। एक यहूदी विशेषज्ञका ख्याल है कि फिलस्तीन निकट भविष्यमें ४ कोटि जनोंकी सेवा करेगा और दूर भविष्यमें ४० कोटि लोगोंके हित द्वारा होगा। भविष्यमें फिलस्तीनका आर्थिक दृष्टिसे महत्व कृषि देश होनेके कारण नहीं, बल्कि औद्योगिक दृष्टिसे होगा और यह बहुत कुछ इस बात पर निर्भर है कि फिलस्तीनका उसके साथ जुड़े देशोंका सम्बन्ध क्या होता है। अरब देशोंकी समृद्धि आर्थिक शक्तियों और फिलस्तीन और उसके पड़ोसमें केन्द्रित गोदामों और व्यवसायिक मार्गों पर निर्भर है। फिलस्तीनके बन्दरगाहों सड़कों और हवाई अड्डों पर सबकी नजर है, क्योंकि ये भूमध्य सागर तक पहुंचते हैं। इसलिये क्षेत्र फलमें छोटा होने पर भी भौगोलिक और सामरिक दृष्टिसे यह महत्वपूर्ण है।

पील कमीशनकी रिपोर्टके अनुसार इसकी आबादी पन्द्रह लाखसे भी कम है। इसमें ९ लाख मुसलमान अरब, ४ लाख यहूदी और १ लाख ईसाई थे। इसकी राजधानी और तीर्थ स्थान जेरुसेलमकी आबादी १२५००० है। अन्य बड़े शहर हैफा, जो कि महत्वपूर्ण हवाई और सामुद्रिक बन्दरगाह है, इसकी आबादी ९०००० हजार है। तेल अबीब ४० मील पाछे एक छोटा सा कस्बा था। आज यह जेरुसेलम का मुकाबला करता है। पुरीके समान यह भी रेतके टीलोंके बीचमें बसा हुआ था। पुराना अरब बन्दरगाह जाफा है जिसकी आबादी ७० हजार है।

यहूदी और अरब एक नस्ल-सेमेटिकके हैं। इनके धर्मोंमें भी पर्याप्त समानता है। इनकी भाषा हीब्रू है। यह होते हुए भी आज दोनों एक दूसरेका गर्दन उतारनेको तैयार हैं।

यहूदियोंकी जन्मभूमि

भारतके हरिजनोंके समान तो नहीं, यहूदी यूरोपके अन्दर सबसे अधिक सताये हुए लोग हैं। इनका अपना कोई देश नहीं हैं। पर ये सारे संसारमें फैले हुए हैं। दुनियाके ये बैंकर हैं और आइन्स्टीन सदृश वैज्ञानिकों और मि० हैराल्ड लास्की सदृश राजनीतिज्ञ विद्वान और आन्दोलनकारी उत्पन्न करनेकी क्षमता रखते हैं। पर इनकी अपना कोई देश नहीं है।

दरिद्र और उपेक्षित होने पर भी अरब लोग फिलस्तीनको अपना देश मानते हैं, और उस पर गर्व करते हैं, जहां कि सदियोंसे वे और उनके पूर्वज रहते आये हैं, और जहां कि उनकी कब्रें बनी हुई हैं। अरब तुर्की साम्राज्यकी दासतासे मुक्ति चाहते थे और यहूदी फिलस्तीन लौटना चाहते थे। चतुर अंग्रेजोंने इन दोनों इच्छाओंसे लाभ उठाया और हारकीबाजोंको जीतमें बदलनेके लिये इनको अपना सहायक बनाया।

नवम्बर १९१७ को पहली बार ब्रिटेनने इस बातको अधिकृत और सरकारी रूपसे स्वीकार किया कि फिलस्तीनमें यहूदी 'राष्ट्रीय घर, बनाया जाय। बाल्फोरने 'ब्रिटिश ज्यूरी'के प्रमुखको लिखा कि फिलस्तीनमें यहूदी 'नेशनल होम' बनानेके विचार के ब्रिटिश सरकार अनुकूल है और इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिये सर्वोत्तम प्रयत्न करेगी और सुविधा प्रदान करेगी पर यह स्पष्ट रूपसे समझ लेना चाहिये कि फिलस्तीनकी गैर-यहूदी समाजके नागरिक और धार्मिक अधिकारों या यहूदी किसी अन्य देशमें जो अधिकार और राजनीतिक स्थिति रखते हैं, उनको हानि पहुंचानेका कोई कार्य न किया जायगा। २४ जुलाई १९२२ को जब राष्ट्र संघने ब्रिटेनको फिलस्तीनका शासनादेश दिया, तब बाल्फोर्ड घोषणा का भी उसमें समावेश किया गया और अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिसे इस बातको माना गया कि फिलस्तीनमें यहूदियोंको बसाया जायगा। पर यह ध्यान रखना चाहिये कि ब्रिटेनने अपनेको इस बातसे वचनबद्ध कभी नहीं किया कि फिलस्तीनमें यहूदियोंका स्वयंका राज्य स्थापित करनेमें मदद और सुविधा प्रदान करेगी।

यहूदियोंकी मांग किस अवस्थामें ब्रिटेन ने स्वीकार की थी, इस पर तात्कालिक प्रधान मन्त्री लार्ड लायड जार्जने पील कमीशनके सामने गवाही देते हुए प्रकाश डला था, आपने कहा था बाल्फोर घोषणा का मूल कारण प्रचारात्मक था। रूमानिया कुचल दिया गया था। रूसी सेना हतोत्साह हो गयी थी। फ्रेंच सेना बड़े परिमाणमें आक्रमण करनेमें असमर्थ थी। कैपोरेटोमें इटालियनोंको भारी पराजय मिली थी। जर्मन पनडुब्बियोंने लाखों टन ब्रिटिश जहाज डुबो दिये थे। अमरीकी डिवीजन उस समय तक मोर्चे पर नहीं पहुंची थी। यहूदियोंने वचन दिया था कि यदि मित्र राष्ट्र फिलस्तीनको यहूदियोंका 'राष्ट्रीय घर' बनानेमें मदद देनेका वचन दें जो मित्रोंको समस्त यहूदियोंकी सहानुभूति प्राप्त होगी और उन्होंने अपने वचनका पालन किया।

पर इससे पहले ही तुर्कीको हरानेके लिये १९१५ में सर हेनरी मैकमेहनने मक्काके शरीफसे सन्धि-चर्चा चलायी थी और अरबोंको स्वाधीनताका वचन दिया था। अरब लोग फिलस्तीनको उसमें शामिल करते थे। हेजाज क्रान्ति १९१५ के होनेसे पहले अरब विश्वास करते थे कि स्वाधीन अरब राज्यमें फिलस्तीन सम्मिलित होगा। बाल्फोर घोषणाके समय ब्रिटिश गवर्नमेण्ट आशा करती थी कि अरबोंका विरोध कालान्तरमें समाप्त हो जायगा। अरब प्रदेशों को परस्पर विभक्त करनेके लिये मित्र राष्ट्रोंने जो योजना बनायी थी, और जिसको रूसने १९१७ में प्रकाशित कर दिया था, जिसमें फिलस्तीनको अलग राज्य बनानेकी बात कही गयी थी, उसको अरबों से छिपाया गया और उसके प्रकाशित होने पर जब स्पष्टीकरण मांगा तब अमीरको मित्र राष्ट्रोंने दुश्मनका प्रचारक बताया। इन परिस्थितियोंमें फिलस्तीनका शासनादेश १९२२ में ब्रिटेनको मिला। उस समय फिलस्तीनमें आबादी इस प्रकार थी:— ५८९००० मुसलमान, ८३००० यहूदी और ७१००० ईसाई।

अरब और यहूदी इन दो विभिन्न और विरोधी भावोंको मिलानेका प्रयत्न कभी नहीं किये गये। फलतः इनके बीच संघर्ष फिलस्तीनपर शासनादेश स्थापित होनेसे पहले ही आरम्भ हो गया और स्थितिकी जांचके लिये कमीशन भेजे गये। इस सम्बन्धमें पहला श्वेतपत्र ३ जून १९२२ को प्रकाशित हुआ। इस समयतक शासनादेशकी स्वीकृति नहीं मिली थी, यह ध्यान देने योग्य बात है। फिलस्तीनकी अवस्थाकी जांचके लिये १९२९ में 'शा कमीशन' गया। इसके बाद १ अक्तूबर १९३० में पैसफील्ड श्वेतपत्र प्रकाशित हुआ और इस बिना पर कि जमीन उपलब्ध नहीं है, यहूदियोंके प्रवास का नियमन करनेकी कोशिश की गयी। ब्रिटिश हाई कमिश्नर छः मास बाद इसकी संख्या निश्चित करता था कि कितने यहूदियोंको फिलस्तीनमें आनेका परवाना दिया जाय, और जब इसके निश्चयका समय आता था, दोनों पक्षोंमें तीव्र संघर्ष होता था। अरब यहूदियोंको आने [illegible] देना चाहते थे और यहूदी अधिकसे अधिक संख्यामें वहां यहूदियोंको बसानेका [illegible] करते थे। १९३६ में लार्ड पीलकी [illegible] क्षतामें दंगोंके कारण उत्पन्न परिस्थिति पर विचार करनेके लिये कमीशन [illegible] गया। पील कमीशनने फिलस्तीनमें [illegible] और दंगा होनेका कारण बताया [illegible] यूरोपमें उत्पीड़न और सताये जानेके [illegible] भारी संख्यामें यहूदी फिलस्तीनमें [illegible] आये हैं और अरबोंको भय है कि फिल[illegible]स्तीन पर यहूदियोंका प्रभुत्व स्थापि[illegible] जायगा। इस लिये कमीशनने सिफा[illegible] की कि फिलस्तीनको तीन हिस्सोंमें [illegible] दिया जाय। १—यहूदी राज्य [illegible] समुद्र तट, २—अरब राज्य-मुख्य[illegible] भाग ट्रांस जोर्डनको मिलाकर [illegible] प्रदेश और ३—शासना देश:जिसमें [illegible] नजरथ और बेथलहमको सम्मिलि[illegible] गया और जेरुसेलमसे जाफातक [illegible] भी इसमें शामिल किया गया। [illegible] निश्चय करनेके लिये और एक [illegible] भेजा गया और अपनी रिपोर्ट १९[illegible] उसने बताया कि इस प्रकारका [illegible] असम्भव है। फरवरी १९३९ में दोनों [illegible] लियोंके नेताओंकी एक कानफ्रेन्स [illegible] बुलायी गयी। इन दोनों पक्षोंने [illegible] प्रस्तावको माननेसे इन्कार कर [illegible] इस पर मई १९३९ में ब्रिटिश [illegible] ने अपनी नीति घोषित करते हुए [illegible] पत्र प्रकाशित किया। वर्तमान [illegible] नीतिका यही आधार है।

(शेष १८ वें पृष्ठपर),

मनुष्यकी आवश्यकताएं

———**::**———

(ले०—श्री वैद्यनाथ सिंह)

मनुष्यको अपने जीवनसे प्रेम है। पर वह ऐसी जिन्दगी पसन्द करता है जिसमें स्वाद हो, रस हो, छल हो। स्वादपूर्ण जीवनकी खास खास शर्तें हैं। इन्हीं शर्तोंकी पूर्तिके लिये वह सतत प्रयत्न करता रहता है। मनुष्य पशुसे है, सर्वश्रेष्ठ अतः उसकी आवश्यकताएं भूख और मैथुनतक ही सीमित नहीं। मनुष्य इनसे भी ऊपरकी चीज चाहता है क्योंकि मनुष्यताका खास स्तर है जो पशुता और देवत्वके बीचकी वस्तु है। इस उच्च स्तरतक पहुंचनेके लिये पशुवृत्तिको दबाना और नियन्त्रित करना आवश्यक है, साथ ही संयोग और अनुकूल वातावरणकी आवश्यकता भी कम महत्व नहीं रखती। परिवार, समाज और सरकारका गठन मनुष्यने अपने विकासके हेतु जरूरी समझा है। जब इन्हें अपने अभीष्ट उद्देश्यकी सिद्धिमें वह बाधक समझता है, उसके हृदयमें असन्तोषकी आग भड़कती है और इन्हें तोड़फोड़कर वह नयेका निर्माण करता है। चूंकि उसका मंजिल अभी भी उससे दूर है, वह बनाने बिगाड़नेका क्रम अभी भी जारी है। पुरानी सामाजिक और शासन पद्धतियोंका स्थान नयी ग्रहण करती जाती है। इस शान्तिकी खोजमें वह बहुत भटक चुका है, उसके पैरोंमें थकान है पर फिर भी वह चल रहा है इसलिये कि वहांतक पहुंचकर ही वह अपने असली स्वरूपका दर्शन कर सकता है। मार्गमें रुकनेका अर्थ उसकी असफलता और पराजय है जिसे वह अपने स्वभावके कारण स्वीकार करनेको प्रस्तुत नहीं।

सभ्यताके विकासके साथ मनुष्यकी आवश्यकतायें काफी बढ़ चुकी हैं और उनकी पूर्तिके लिये भी विज्ञानने अनेक साधन इकट्ठे कर छोड़े हैं। इनके साथ श्रम विभाजनका अनिवार्य सम्बन्ध होनेके कारण मनुष्यको अपनी जरूरतोंकी पूर्तिके लिये औरोंका भरोसा करना पड़ता है। इस आवश्यकताजनित परवशताने पारस्परिक सहयोगका विस्तृत क्षेत्र तैयार कर दिया है। समाजके अन्दर अपनेको मिला देनेमें ही व्यक्तिने अपना हित समझा है। ऐसा करके वह अपने अस्तित्वको बिलकुल मिटा नहीं देता। इस सम्मिलनकी विशेषता यह है कि प्रत्यक्ष विलगावके बावजूद संघर्षकी मात्रा कम और सहयोगकी अधिकाधिक आकृष्ट हो जाती है।

समाज और व्यक्तिका अविच्छिन्न सम्बंध है। समाजका व्यक्तित्वके विकासमें उसकी हाथ है और स्वयं किसी समाजके स्वरूपको स्थिर करनेमें उस समाजके सदस्योंका सहयोग और देन निर्णायक सिद्ध होता है। मुलतः में समाज व्यक्तित्वका स्रष्टा है, और समाजपर व्यक्तित्वकी छाप है। ये दोनों अन्योन्याश्रित से हैं।

मानवीय चरित्रको समझनेके लिये मनुष्यकी इन आवश्यकताओंको जानना जरूरी है जो उसके स्वभावका अंग है। सम्पूर्ण मानवजातिका मस्तिष्क और भावावस्था उसके सोचने तथा भावावेशमें आनेकी रीति समान है। आमतौरपर काम करनेकी प्रेरणा सबोंमें एक-सी है पर सम्पादनका ढंग भिन्न भिन्न है। जो कुछ भी बाह्य असमानता नजर आती है उसका कारण परिस्थितियां हैं क्योंकि संस्कृतिका निर्माण परिस्थितियोंके साथ सन्धि-विग्रहके परिणाम स्वरूप होता है।

मानव जाति जिस सिद्धान्तको स्वीकार करती आ रही है और जिसे आज भी स्वीकारकर वह कार्य करती है वह यह है कि मनुष्योंके सभी कार्योंका लक्ष्य अधिकसे अधिक लोगोंके लिये सुख सुविधा प्राप्त करना है और जरूरतोंकी पूर्तिसे सुखकी प्राप्ति होती है तथा उनकी पूर्तिके लिये समाजके प्रत्येक अङ्गका स्वाभाविक गतिसे कार्य रत रहना आवश्यक है।

मनुष्यकी आवश्यकताएं दो किस्मकी हैं। पहली भौतिक जिनकी पूर्तिके बिना हमारा जीवन या कार्य करना दुस्तर है। इसके अन्दर भोजन, आराम, शयन, रहनेका प्रबन्ध, दवादारूकी समुचित व्यवस्था, मानसिक और शारीरिक मनबहलाव इत्यादि शामिल हैं। पर मनुष्य सिर्फ जीवित या कार्यशील रहनेसे ही सन्तुष्ट नहीं हो सकता। उसके कार्योंका उद्देश्य सिर्फ कार्य करना ही नहीं है बल्कि उनके जरिये वह आत्मदर्शनकी अपनी पिपासा तृप्त करना चाहता है।

मनुष्यके लिये बाह्य सङ्कटोंसे सुरक्षाकी गारण्टीका भी बहुत महत्व है। इस सुरक्षाके अन्तर्गत शारीरिक, सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा तीनों दाखिल है। मनुष्य अपने भाग्यका एकमात्र विधायक नहीं हुआ करता। जीवनमें अनेक ऐसे अवसर उपस्थित होते हैं जब बाह्य परिस्थितियोंकी श्रेष्ठता स्वीकार करनी पड़ती है। जबकि वैज्ञानिक चिकित्सा पद्धतिमें अभूतपूर्व विकास हुआ है पर जीवनकी पेचीदगी और संघर्षकी बढ़तीके कारण तरह तरहके नये रोगोंकी सृष्टि भी हुई है और हमारा विकसित ज्ञान इस होड़में पीछे पड़ गया है।

पर व्याधियोंकी वृद्धिसे जितना वह परेशान नहीं उससे कहीं अधिक चिंता और परेशानी उसे वर्तमान आर्थिक विषमताके कारण है। आधुनिक आर्थिक प्रणालीसे मनुष्यके जीवनक्रमकी अनिश्चितता और भी बढ़ गयी है। न मालूम कब आर्थिक कठिनाइयोंका पहाड़ टूट पड़ेगा उसके सिर पर, इस चिंताने उसकी आधी जान ले ली है। वर्तमान पूंजीवादी प्रणालीमें किसी व्यक्तिकी आय परिश्रमके अनुपातमें नहीं हुआ करती। बल्कि उसकी आयको निश्चित करनेवाली ऐसी शक्तियां हैं जिन्हें हाथ उठाकर छूनेकी कोशिश करके भी वह नहीं छू पाता। इस अनिश्चितताने करोड़ोंकी शांति अपहृत कर ली है, उन्हें दरिद्र बना दिया है, और उनके कार्य कौशल, प्रतिभा और आत्मसम्मानकी भावनाको कुण्ठित और अन्ततः नष्ट कर डाला है। सम्पत्ति और सुअवसरके असमान बंटवारेने समाजके अन्दर दो असमान दलको जन्म दिया है। व्यक्तिगत सफलता, शक्ति और ख्याति उन साधनोंके बलपर प्राप्त की जा रही हैं जिनपर दरअसल सबोंका समान अधिकार है। ऐसी सफलताओंका प्रयोग सामूहिक हितमें न होकर अर्थ संचयके लिये किया जाता है जिसका स्पष्ट अर्थ बहुमतका अल्पमत द्वारा शोषण है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है और उसकी व्यक्तिगत सफलतामें भी समाजका बड़ा हाथ है। समाजमें रहनेकी वजहसे उसमें समाजके अन्दर ख्याति, औरोंका विश्वास, प्यार और सम्मान आदि प्राप्त करनेकी लालसा होती है। वह चाहता है कि सामाजिक कार्योंमें वह बराबरीकी हैसियतसे अपना सहयोग दे सके। पर समाजमें प्रचलित वर्तमान आर्थिक असमानताके कारण इन इच्छाओंकी पूर्तिके लिये सहज प्रारम्भिक सुअवसरोंका मिल सकना भी दुर्लभ है। जीवनका प्रारम्भ ही लघुताकी जहरीली और आत्मघाती भावनासे ओतप्रोत वातावरणमें होता है—उनकी महत्वाकांक्षायें कुचल जाती हैं और उनके विकासका मार्ग संकीर्ण ही नहीं पूर्ण रूपसे अवरुद्ध हो जाता है।

ज्ञान और प्राकृतिक सामर्थ्य और मनोवृत्तियोंकी बाकायदा तरक्की और वृद्धि मनुष्यकी दूसरी मौलिक आवश्यकता है। ज्ञानके प्रयोगसे अन्य आवश्यकता पूर्तिका जरिया ढूंढ़ निकालना सम्भव है। रचनात्मक प्रेरणा और सौन्दर्यके सामर्थ्यकी उपासना मनुष्यकी दो अत्यन्त महत्वपूर्ण और सार्थक आंतरिक शक्तियां हैं। पर अधिकाधिक संग्रहकी ही जिस व्यवस्थाकी बुनियाद है वहां नियतीको प्रधानता मिली हुई है, गुण स्वभावतः गौण ही है।

जैसा ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, मनुष्य अपनी आवश्यकताओंको दल या समूहमें रह कर पूरी कर सकता है। सहकारिताकी मनोभावना दिन-ब-दिन विस्तृत और बलवती होती जा रही है। मानव जाति अपने शैशव कालमें छोटी-छोटी टुकड़ियोंमें विभाजित थी, पर धीरे-धीरे वह बड़ी टुकड़ियोंमें बंट गयी और आज उसने जबर्दस्त राष्ट्रीय संगठन तैयार कर लिया है। अब तो ऐसे भविष्यकी कल्पना की जाने लगी है कि राष्ट्रीय कटुता और द्वेषको मिटा कर एक अन्तर्राष्ट्रीय संघका निर्माण होगा, और सम्पूर्ण मनुष्य जाति एकताके धागेमें स्वेच्छासे आबद्ध हो जायगी। इससे हम ऐसा कदापि न समझें कि मनुष्यके 'अहम्भाव'का पूर्ण विनाश हो गया है। बात ऐसी है कि अपने इतने लम्बे जीवनमें मनुष्यने इस सत्यको भलीभांति महसूस किया है कि स्वत्वकी रक्षा और विकासके लिये सहकारिताका जीवन अनिवार्य है। मनुष्यकी एकान्त पसन्द प्रवृत्तियां समयके दौड़से दब गयी हैं, विनष्ट नहीं हुई हैं। अतः समाजकी नींवको दृढ़ करनेके लिये आवश्यक है कि व्यक्तिगत आकांक्षाओं और सामूहिक स्वार्थोंके बीच स्थायी समझौतेकी स्थिति तैयार की जाय। समाजहितका कोई अर्थ नहीं होता यदि समाजके अधिकांशको उससे वंचित रहना पड़े। अतः इस प्रश्न पर सामूहिक दृष्टिकोणसे विचार करनेका महत्व और भी बढ़ जाता है। आधुनिक युगके निर्मम व्यक्तिवाद और प्रतिद्वन्द्विताने सामूहिक और सङ्गठित कार्यकी महत्ता और भी प्रमाणित कर दी है क्योंकि चन्द लोगोंने बहुतोंके अधिकार हड़प लिया है और उन्हें पीस रहे हैं। नतीजा यह है कि महायुद्ध, आर्थिक सङ्कट, युद्ध और विद्वेषकी पथरीली घाटियोंमें भटक भटकके संसार महानाशके तट पर आ पहुंचा है। इनी-गिनी जगहोंमें जहां सहकारिताके महत्वकी परीक्षा की गयी है पूरी उतरी है। उत्पादन, वितरण, गृहनिर्माण, यातायात या इसी तरहके जितने क्षेत्र हैं, सबमें इस नये प्रयोगसे आशाजनक सफलता उपलब्ध हुई है।

मनुष्य स्वतन्त्रता चाहता है। कुछ लोग जीवनका आलोचनात्मक और गहरा अध्ययन न होनेके कारण भ्रमवश स्वतन्त्रता और समाज द्वारा नियन्त्रित जीवनमें सामंजस्य नहीं देख पाते। पर ध्यान पूर्वक देखनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि किसी नियमित और अनुशासित समाजमें ही पूर्ण स्वतन्त्रताकी उपलब्धि सम्भव है। स्वतन्त्रता मनुष्यके गुणोंके विकासके लिये उपयुक्त अवसर प्रदान करती है ताकि अपनी प्रतिभाका पूर्ण विकास कर वह सन्तोष और सुखका अनुभव कर सके। दो व्यक्तियोंकी 'स्वतन्त्रता'में जब कभी भिड़न्त हो, साधारणतया यही समझना ठीक है कि दोनोंमें या उनमें एक अपनी स्वतन्त्र सीमाका अतिक्रमण कर रहा है। इसी तरहकी अशोभनीय घटनाओंकी आवृत्ति होने पर समुचित दण्ड व्यवस्थाकी आवश्यकता होता है। यही कारण है कि नियन्त्रण और नियमबद्धता स्वतन्त्रताके आवश्यक अङ्ग माने गये हैं। स्वतन्त्रतासे यदि ये दोनों निकाल ले तो जो कुछ बचा होगा वह अराजकताका ही अर्थ सूचक होगा।

आजके सामाजिक ढांचेमें क्रांतिकारी परिवर्तनकी आवश्यकताको सभी महसूस कर रहे हैं। जिस भावी समाजकी कल्पना की जा रही है उसमें जन्मजात विशेष अधिकारोंका कोई मूल्य न रहेगा। वह समाज गुणकी कद्र करेगा, और उनकी सेवाओंका उचित मूल्य बदलेमें देगा।

———

कलकत्ते के पिछले सात दिन

(एक विहंगम दृष्टि)

(प्रार्थनामें गांधीजी)

आगमनके पहले

कांग्रेसके नेताओंके जेलसे छूटनेके बाद से ही यह आशा की जा रही थी कि वे एक बार बंगाल अवश्य आयेंगे और आकर बंगालके इन सतप्त प्राणियों और उजड़े हुए परिवारोंको अवश्य शान्ति देंगे जो अकाल और दमन दोनोंके क्रूर आक्रमणोंके बाद भी किसी तरह जीवित हैं। बार बार 'हां' और 'न'में आनेवाले समाचारोंके कारण बङ्गालका हृदय झूलेकी तरह इधर उधर डोलता रहा। पं० नेहरूको इतनी फुर्सत नहीं थी कि वे एक क्षणको भी समय निकाल कर बङ्गाल आ सकते। उनकी आत्मा अवश्य ही इसके लिये तड़पती रही पर कर्त्तव्यका बोझ उन्हें दबाये रहा। हमारे गांधीबाबाके लिये भी बङ्गाल तड़प रहा था पर राजनीतिक परिस्थिति कुछ इस तरहसे उलझ गयी थी कि वे लाख प्रयत्न करके भी अपनेको बङ्गाल यात्राके उपयुक्त नहीं बना सके थे। नवम्बरके प्रथम सप्ताहमें ही उनके बङ्गाल आनेकी बात थी किंतु बादमें यह समाचार आया कि वे दिसम्बरके प्रथम सप्ताहमें आ रहे हैं। बङ्गालका आकुल मन इस समाचारको सुनकर आश्वस्त हुआ।

बङ्गालकी जनता और नेता ही न केवल यह बात सोच रहे थे वरन् कांग्रेसके नेता भी यह सोच रहे थे कि उन्हें बङ्गाल अवश्य आना चाहिये और इसके लिये वे भी प्रयत्नशील थे। वे किसी विशेष अवसरकी ताकमें थे। चुनावकी चहल-पहलका जोर बढ़ रहा था एवं बदलती हुई राजनीतिक घटनाओंने यह आवश्यक कर दिया था कि कांग्रेसके सभी नेता एक जगह बैठकर भविष्यकी ओर देखें और उसके लिये देशकी गतिविधिको सुनियन्त्रित एवं सुनिश्चित करें। प्रान्तीय धारासभाओंके लिये उम्मीदवारोंकी नामजदगीके लिये कांग्रेस पार्लमेंटरी बोर्डकी बैठक भी, जितनी आवश्यक थी उतना ही आवश्यक था कार्यकारिणी समितिका मिलना। निश्चय किया गया कि दोनोंकी बैठकें कलकत्तेमें ही हों ताकि एक पंथ दो काज हो जाय।

(प्रातः भ्रमणमें गांधीजी)

कलकत्तेकी तैयारियां

धन और जनसे यह भरा पूरा नगर अपने नेताओंके स्वागतकी तैयारीके लिये पागलसा हो उठा। पूरेके पूरे नगरको संवार देनेके लिये जनता पागल हो उठी। नित्य नयी नयी अफवाहों और खबरोंसे कलकत्तेका कोना-कोना भर उठा। सभाओंका भी जोर बढ़ गया। नित्य सभाएं होने लगीं और लोगोंको यह समझाया जाने लगा कि वे शान्तिपूर्वक अनुशासित सैनिककी तरह अपने नेताओंका स्वागत करें तथा किसी भी तरहके उपद्रव को न होने दें। आजाद-हिन्द-फौज, कस्तूरबा कोष, हरिजन फण्ड एवं कमला नेहरू अस्पतालके लिये फण्ड इकट्ठे किये जानेकी तैयारियां शुरू हुई और इसके लिये जिस संस्थाने जैसा चाहा अपने लिये प्रोग्राम बनाया। सहयोगकी भावना जनताके हृदयमें एक बार फिर जाग उठी और वह बन्धुत्वकी भावनासे चंचल हो उठी। मकानकी खिड़की, छज्जे, दरवाजे तथा दूकानोंके ऊपर मनोमुग्धकारिणी राष्ट्रीय पताकाएं लगायी गयीं एवं कुर्ते और कोटकी जेब एवं बांहपर तिरंगे झण्डेके छोटे छोटे बिल्ले लटका दिये गये। उत्साहका उमड़ा समुद्र जनसागर से मिलकर इस तरह एकाकार हो गया जैसे सागरसे महानद मिलकर एकाकार हो जाता है। चायखाना और काफी हाउस तो राजनीतिके अच्छे खासे अखाड़े बन गये। जहां देखिये वहीं गर्मागर्म बातचीतका दौर-दौरा चल रहा है। प्रत्येक व्यक्ति अपनेको पटेल या जवाहरलालसे कम माननेको तैयार नजर नहीं आता।

(बोस परिवारके साथ पं० नेहरू)

नवम्बरका आखरी सप्ताह

इस सप्ताहमें चहल पहल अपनी चरम सीमाको पहुंच गयी। फिरसे एक बार शान्त समुद्रसे अचानक उठ पड़नेवाली तूफानी लहरोंकी तरह गान्धी टोपी दिखलाई पड़ा। धोती और कुरतेकी परवाह न कर लोगबाग गान्धी टोपीपर टूट पड़े। प्रभातफेरी और स्वयंसेवकोंकी क़वायद का जोर बढ़ गया। जय-हिन्द और वन्देमातरमका नारा इस सीमाको पहुंच गया कि घरके भीतर रहकर खेलने कूदनेवाले बच्चोंके लिये यह एक नया खेल हो गया। जिसे देखिये वही गान्धी टोपी लगाये चन्दे की बही लिये इधर उधर दौड़ता नजर आ रहा है। कोई कह रहा है—गान्धीजीको इतना चाहिये, कोई कह रहा है—जवाहरलालजीको इतना चाहिये, और कोई कह रहा है कि उन्हें इतना चाहिये—यह शोर-गुल राह चलतोंके कानोंमें अनायास ही प्रविष्ट कर जाने लगा और अनजान लोग भी इन सारी हलचलोंसे आपसे आप परिचित होने लग गये। कौन नेता किस तारीखको कितने बजे रेलसे या वायुयानसे आ रहे हैं जनताने कण्ठस्थ कर लिया था और जो इस विद्यासे अनभिज्ञ रहा वह साथियोंमें मजाकका कारण बन गया।

३० नवम्बर

उत्साह व्यक्त करनेका यह आखिरी दिन था क्योंकि दूसरे ही दिन गान्धीजी कलकत्ता आ रहे थे। प्रतीक्षाकी सफलताका उत्साह समाप्त होनेवाला था और लोगबाग उसकी इस आखिरी रातको बड़े मजेमें दर्दके साथ काट रहे थे। समाचार पत्रोंने पहले ही जनताको आगाह कर दिया था कि गान्धीजी कलकत्ताके हवड़ा स्टेशन पर न उतरकर किसी पिछले स्टेशनपर उतार लिये जायेंगे। सर्वसाधारण जनताको इससे बड़ी निराशा हुई।

१ दिसम्बर

आज प्रातःकाल प्रभातफेरीका विशेष जोर रहा। जाग्रतिको जगाये रखनेके लिये यह अच्छी चीज है। सबसे विचित्र बात तो यह थी कि पञ्जाबके जितने "सरदारों" लोगोंकी टैक्सियां चल रही थी उनपर राष्ट्रीय झण्डा फहरा रहा था और कोई भी टैक्सी 'खाली' नहीं थी। सभी पहलेसे ही शौकीनों एवं नीम नेताओं द्वारा रिजर्व करा ली गयी थी। अखबारके दफ्तरमें टेलीफोनकी घण्टियां मिनट मिनटपर घनघना उठती थी और प्रश्न किये जाते थे—गान्धीजी किस समय सोदपुर पहुंच रहे हैं। जनताकी भीड़से गान्धीजीको बचा लेनेके लिये बी० एन० रेलवेके मौरीग्राम स्टेशनपर ही गान्धीजी ट्रेनसे उतार लिये गये। यद्यपि यह प्रोग्राम एकदम गुप्त रखा गया था फिर भी हजारों हजारकी संख्यामें जनता वहां उपस्थित थी। मौरीग्रामके रास्ते जब इनकी गाड़ी सोदपुरकी ओर जा रही थी अचानक एक मिलिटरी गाड़ी टकराते-टकराते बच गयी।

(सोदपुरमें चुरुट लिये शरत बाबू)

मानव सेवाका लक्ष्य

संध्या समय सोदपुरमें प्रार्थनाके उ[illegible] रान्त उपस्थित जन समूहके सामने बोल[illegible] हुए गांधीजीने कहा—जेलसे मुक्त होने[illegible] बाद ही मेरी इच्छा बंगाल आनेकी [illegible] ताकि अकाल पीड़ित इस महान प्रान्त[illegible] निवासियोंकी सेवा कर उन्हें ढाढस बं[illegible] सकूं। किन्तु स्वास्थ्य, देशकी परिस्थि[illegible] एवं सरदार पटेलके अनुरोधको मैं नहीं ट[illegible] सका। मैं नहीं चाहता था कि भ्रमण[illegible] समय मेरे ऊपर सरकारी रुकावटें लगें [illegible] बाध्य होकर मुझे सत्याग्रह करना प[illegible] आज मैं स्वेच्छापूर्वक प्रान्तका परिभ्र[illegible] कर सकता हूं। मैं आज बंगालमें चुन[illegible] आन्दोलनके सिलसिलेमें नहीं आया[illegible] मैं तो यहां कुछ समय तक रहकर एवं[illegible] कर आपकी सेवा करने आया हूं।"

उस दिन सोदपुरमें पुलिस और स्व[illegible] सेवकोंकी कड़ाई होते हुए भी भीड़ [illegible] रही थी और कलकत्तेके सियालदह स्टे[illegible]

(चिन्ता-निमग्न आसफ अली)

...इस बुरी तरह भीड़ थी कि ट्रेन उन्हें ...नहीं पा रही थी। इसी दिन आसामके ...पूर्व प्रधान मन्त्री श्री बारदोलाईसे ...उनके आसामके दौरेके सिलसिलेमें बात-...चीत की।

सरकारी भद्रता

सोदपुर आश्रमके सामनेसे ही मिलिटरी ...गाड़ियां दिन भर दौड़ा करती थीं जिसे ...बंगाल सरकारने बन्द करवा दिया और ...ऊपर इसके लिये पहरा बैठा दिया गया। ...इससे वहांका वातावरण शान्त हो ...गया।

केसी अध्याय

शनिवार १ दिसम्बरको जैसे ही गांधी-...जी प्रार्थनासे मुक्त हुए वैसे ही बंगाल गव-...र्नरका उन्हें निमन्त्रण मिला जिसे गांधीजी ...ने स्वीकार कर लिया और उस दिनसे गांधी ...केसी वार्ता शुरू हो गयी। उस दिनसे लेकर ...लगातार चार दिन तक गांधी-केसी मिलन ...चलता रहा।

२ दिसम्बर

गांधी अध्यायके समाप्त हो जानेके बाद ...पार्लियामेण्टरी बोर्ड और वर्किंग कमेटीके ...अध्यायका जोरदार हिस्सा बाकी बच गया ...। पार्लियामेण्टरी बोर्डकी बैठक ४ दिस-...म्बरसे होनेवाली थी अतएव उसके चेयर-...मैन और—मेम्बर सरदार पटेल, नेहरू, ...आजाद, पं० पंत, आसफ अली और राजेन्द्र ...बाबू जैसे नेताओंके आगमनकी हलचल ...होने लगी थी। राजेन्द्र बाबूकी बीमारीका ...समाचार आ चुका था। अन्यान्य नेताओं ...के आगमनकी तिथियां भी जनता जान ...गयी थी। पंजाबका मसला भी पार्लिया-...मेण्टरी बोर्डके सामने आने वाला था इस-...लिये पंजाबके नेता भी यहां आ रहे थे। ...पंजाब असेम्बलीकी कांग्रेस पार्टीके डिप्टी ...लीडर चौधरी किशन गोपालदास एवं देव-...राज सेठी आज कलकत्ता पधारे। आचार्य ...कृपलानी इसके पहले ही कलकत्ता आ चुके ...थे और वे शान्तिनिकेतनकी सैरमें थे। ...दूसरी बार गांधी-केसी मुलाकात ठीक ...बजे शुरू हुई और रातके आठ बजे खत्म ...हुई। पिछले दिनोंकी भांति आज भी सिया-...लदहसे सोदपुर जानेके लिये जन समूह उमड़ ...पड़ा था। सियालदहकी आखिरी ट्रेन ४-४० ...पर जानेवाली जनताको दर्शन देनेके लिये ...गांधीजीको प्रार्थनाके बाद दुबारा बाहर ...आना पड़ा। हरिजन फण्डके लिये गांधीजीका ...पांच रुपये हस्ताक्षरका व्यापार भी जोरोंसे ...रहा। आज आसफ अली, कृपलानी और ...सुचेता भी कलकत्ता आये।

३ दिसम्बर

आज क्रमशः आजाद और पटेल विमान ...द्वारा ११ और ४ बजे कलकत्ता आये। ...आगमनके समयकी निश्चित सूचना न होने ...के कारण भी हवाई अड्डोंपर स्वागतार्थ ...जनताकी काफी भीड़ थी। राजेन्द्र ...बाबूकी ६१ वीं वर्षगांठ होनेके कारण ...आज विशेष चहल-पहल रही एवं कई ...सभाएं भी हुईं। बाहरसे आये हुए नेताओं ...ने इन सभाओंका सभापतित्व किया। ...स्थानीय पत्रोंमें लगातार तीन दिनके ...गांधी-केसी मिलनके परिणाम स्वरूप यह विचार उत्पन्न होने लग गया था कि इसका अन्त गांधी वावेल मिलनके रूपमें होगा। यह अफवाह आज जोरोंसे चारों ओर फैल रही थी और प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वतन्त्र विचारको ही सम्भव और सत्य बतलानेकी कोशिश कर रहा था। गांधीजी की प्रार्थनामें पूर्ववत ही भीड़ रही। आज गांधी-केसी मुलाकातका तीसरा दिन था। सोमवार होनेके कारण गांधीजीका मौन दिवस था अतएव वे केवल श्रोता बने रहे और बीच-बीचमें लिख कर अपने विचार केसी साहबके सामने रखते रहे।

संध्या पांच बजे श्रद्धानन्द पार्कमें आजाद-हिन्द फौजके लिये एक सभा हुई जिसमें श्रीआसफअली बोले। दोपहरमें आचार्य कृपलानी और मौलाना आजादमें कार्य-कारिणी-समितिमें आनेवाले मसलोंके विषय में बातचीत होती रही। आज पं०धनजय राम-दास दौलतराम, डा० चैतराम गिडवानी आदि नेता आये। उनके अलावे पंजाबके मसलेको लेकर मि० केदारनाथ सहगल, मि० अब्दुल गनी, लाला भीमसेन सचर श्रीमती सरलादेवी, मौलाना दाऊद गजनवी एवं डा० गोपीचन्द भार्गव आये। आज विश्वस्त सूत्रसे यह ज्ञात हो गया कि डा० राजेन्द्रप्रसाद बीमारीके कारण किसी भी तरह कलकत्ता आनेमें असमर्थ हैं।

४ दिसम्बर

"कल जवाहरलाल आ रहे हैं" की चर्चा आज जोरोंपर थी। अन्य नेताओंके आनेसे जो थोड़ी बहुत चहल पहल दिखलायी पड़ रही थी वह इस शोरगुलसे एकदम दब गयी थी। प्रातःकाल प्रभातफेरी एवं दिनमें नोटिसबाजीका दौरदौरा जोरों पर था। स्वयंसेवकोंकी कवायद आज जरा मशक्कतीहुए जुलूस निकालनेकी तैयारीकी धूमधाम अलग थी। नगर कांग्रेस कमेटी और जिला कांग्रेस कमेटीके पर्चे मिनट मिनट पर लोगों के हाथोंमें दिये जा रहे थे और उन्हें बड़ीसे बड़ी तादादमें हवड़ा स्टेशन पर एकत्रित होनेको कहा जा रहा था।

किसी उठे हुए भारी भरकम मलको अचानक बैठ जाते हुए आपने देखा है। यदि देखा है तो ठीक इसके बादही आपके सामने उसी तरहका दृश्य आरहा है। संध्या ४बजे जब सभी कार्यकर्त्ता सीने और मोढ़ेपर तिरंगा बैज लगाये मुस्कराते हुए टहल रहे थे जवाहरलालजीका तार आया। मैं जुलूस नहीं चाहता। सबके हंसते हुए चेहरे पर न जाने कहांकी एक उदासी फैल गयी। दिन भर तक हड्डी चूर मेहनत करनेवाले स्वयंसेवकोंको तो मानों झांई मार गया किन्तु उन्हें उत्साहित रखनेके लिये कहा गया कि उदास न हो कल स्टेशन पर उनको देखभाल करनी है।

संध्या समयकी गाड़ीसे श्री हरेकृष्ण मेहताब एवं डा० पट्टाभि सीतारमैया आये। गान्धीजीकी प्रार्थनामें पूर्ववत भीड़ रही। आज संध्या समय केसी-गांधी वार्ता-का सिलसिला लम्बे समयतक चला। आजकी सरकारी विज्ञप्तिमें बतलाया गया कि बात-चीत मैत्री पूर्ण वातावरणमें हुई एवं उसमें बंगालका ही मसला प्रधान रहा। सवा तीन बजे कांग्रेस पार्लियामेण्टरी बोर्डकी बैठक शुरू हुई जिसमें आसाम, सिन्ध और पंजाबके चुनावमें कांग्रेस टिकट पर खड़े होनेवालोंका मसला पेश था। सिन्धका सवाल आजका विषय रहा और इसके लिये खूब गर्मागर्म बहसके बाद १८ नामोंकी घोषणा की गयी और बकियेके लिये दूसरा दिन निश्चित किया गया।

५ दिसम्बर

आज प्रातः कालसे ही प्रत्येक सड़क पर हवड़ा जानेवालोंकी भीड़ थो। ट्राम और बसमें जगह पाना असम्भव था। जानेवाले आदमियोंसे सड़क एक दम भरी हुई थी। चूंकि जुलूसकी मनाहीकी बात सर्वसाधारणको विशेष रूपसे मालूम नहीं हो सका था इस लिये सड़कों मकानों और दूकानों पर तिरंगे झंडेका बहार देखते ही बन पड़ रहा था। हरिसन रोडका प्रत्येक मकान और दूकान झण्डेसे लदा था। देखते देखते ९ बजे तक स्टेशनसे लेकर पुल के नीचे स्ट्राण्ड रोड और हरिसन रोड पर तीन चार लाख आदमियोंकी भीड़ एकत्र हो गयी। गाड़ी आयी किन्तु प्लेटफार्म पर भीड़ इतनी भरी हुई थी कि उनमें पण्डितजी को उतरने भरका स्थान नहीं था। ट्रेनके डब्बेके ऊपर, रेलिंग पर तथा सभी ऊंचे और नीचे स्थानों पर जनता जमी हुई थी। अनेकानेक छल और कलके बाद पंडितजी अदृश्य होकर मोटर पर आ सके। ९ बजेसे लेकर पूरे ग्यारह बजे तक लगातार दो घण्टेके श्रमके बाद पंडितजीकी गाड़ी पुलके नीचे स्ट्रांड रोड पर आई। पुलपरकी जनताने पंडितजीकी गाड़ी पर रुपयोंकी धुंआधार वर्षा की जो आजाद-हिन्द-फौजके रिलीफ कार्यके लिये रख लिये गये। उस दिन आपका कार्यक्रम बड़ा व्यस्त रहा। कालीघाट स्थित गुरुद्वारेमें आजाद-हिंद फौजके छूटे हुए सिपाहियोंका आपने निरीक्षण किया एवं सोदपुरमें गांधीजीसे मिले।

मेरा सलाम !!

बंगालके लिये प्रेसमें संवाद देते हुए पंडितजीने कहा—"साढ़े तीन साल बाद बंगाल आगमन पर मैं उन शहीदोंको सलाम करता हूं जो भूख या अकाल, पुलिस या सैनिक परिस्थिति या सरकारके हाथों मारे गये। साथ ही साथ आजादीकी प्रबल भावनासे ओतप्रोत नवयुवकोंके इस जीवित बंगालको भी मेरा सलाम।"

गांधीजीने आज विशेष सर्दीका अनुभव किया एवं डा०विधानचन्द्रराय और डाक्टर मावरने आपके शरीरको परीक्षा की। गांधीजी आज भी नियमित रूपसे प्रार्थनामें सम्मिलित हुए। आज गान्धी केसी वार्ता नहीं हुई। संध्या समय प्रार्थनामें शरीक होनेवाली भीड़ जब सोदपुर स्टेशनपर गाड़ीकी प्रतीक्षामें खड़ी थी भीड़को दबा कर आती हुई ट्रेनसे १ व्यक्तिकी मृत्यु हो गयी एवं तीन घायल हो गये। आज रेलवेवालोंने कलसे एक स्पेशल ट्रेनकी व्यवस्था करनेकी घोषणा की।

कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्डकी बैठक मौलाना आजादके निवासस्थान पर ९ बजे प्रातः शुरू हुई। आसामका सवाल सबसे पहले उसके सामने रखा गया। गोपीनाथ बारदोलाई और बसन्तकुमार लाहिड़ीके बयान सुन लेनेके बाद बोर्डकी ओरसे आसामके लिये ४९ आदमियोंका नाम घोषित किया गया। इसके अलावे पंजाब और सीमाप्रान्तका भी सवाल सामने आया जिस पर पंजाबके नेताओंमें आपसमें गर्मागरम बहस और झड़प हुई। आजकी इस बैठकका दृश्य बड़ा दिलचस्प एवं उत्साह-प्रद रहा। काफी बहस मुबाहसेके बाद भी पंजाबका मसला आज तय नहीं हो पाया और कलके लिये रख दिया गया।

आज संध्याकी गाड़ीसे सरोजनी नायडू एवं सीमाप्रांतके गांधी खान अब्दुल गफ्फार खां आये।

६ दिसम्बर

कई कारणोंसे कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक आज न हो सकी और वह कलके लिये स्थगित कर दी गयी। कांग्रेस पार्लियामेंटरी बोर्डकी बैठक मौलाना आजादके निवास-स्थान पर हुई और उसमें पंजाबके मसलेको हल किया गया। असेम्बलीके उम्मीद-वारोंकी नामावली तैयार कर ली गयी किन्तु वह अकाली पार्टीसे बात-चीत कर लेनेके बाद ही प्रकाशित करनेके लिये छोड़ दी गयी। पंजाबके मामलेको लेकर बहस मुबाहसेमें काफी गरमागरमी रही। सोदपुरमें गांधीजीकी प्रार्थनाके समय भीड़ जोरदार रही। यह सम्वाद देहलीके सरकारी क्षेत्रसे प्रेस वालोंको दिया गया कि ९ दिसम्बरको वायसराय जब कलकत्तेमें होंगे गांधीजीसे अवश्य मुलाकात करेंगे। गांधीजीका स्वास्थ्य अन्य दिनोंकी अपेक्षा आज कुछ अच्छा रहा। आज गांधीजीकी प्रार्थनामें पं० नेहरू और सीमान्तके गांधी भी सम्मिलित हुए।

७ दिसम्बर

आज कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक २ बजेसे मौलाना आजादके निवासस्थान पर प्रारम्भ हुई। पौने दो बजे महात्मा गांधी भी वहां पहुंचे और दो घण्टे तक रहे। जनता की एक बहुत बड़ी भीड़ मौलाना आजाद के निवासस्थान पर अपने प्रिय नेताओंके दर्शनके लिये खड़ी थी। वर्किंग कमेटीने आज केवल आजाद-हिन्द-फौज तथा चुनाव को ही अपने सामने चर्चाका विषय रखा। साढ़े पांच बजे वर्किंग कमेटीकी मीटिंग खत्म हुई और पौने ६ में मौलाना आजाद, सरदार पटेल और पं० नेहरू बंगाल गवर्नर से मिलनेके लिये रवाना हो गये। मि० केसीके साथ इन तीनोंकी पौने दो घंटे तक बातचीत हुई। अनुमान किया जाता है कि इनकी बातचीतका मुख्य विषय भावी गांधी-वावेल मिलन था। सोदपुरमें गांधीजीकी प्रार्थना शान्तिपूर्वक हुई और उसमें पूर्ववत भीड़ रही।

इण्डोनेशियाका शासन-विधान

———*::*———

(लेखक—श्री अमृतलाल यादव)

इन्डोनेशियाकी 'राष्ट्रीय विधान निर्मात्री परिषद्' का अधिवेशन घटेवियामें हुआ जिसमें मंत्रिमंडलमें विश्वासका प्रस्ताव पास किया गया । इन्डोनेशियाको स्वतन्त्र प्रजातन्त्र घोषित किया जाय या डच साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य भोगी राज्य माना जाय इस प्रश्नका निर्णय शस्त्र बलपर होना बाकी है । इन्डोनेशियाका वर्तमान शासन विधान बड़ा ही दिलचस्प है । शासन-विधान निम्न प्रकार है:—

अध्याय पहला—सरकारका स्वरूप

भाग पहला—(१) इण्डोनेशियाका शासन संघात्मक है (२) उसकी प्रभुता का निवास जनतामें है जो जनप्रतिनिधियों द्वारा इण्डोनेशियाकी सुप्रीम कौन्सिलमें प्रकट होती है, इस सुप्रीम कौन्सिलका नाम वहांकी भाषामें 'मजेलिस पर्मोट्मजावारतन रजत' जिसका अंग्रेजीमें संक्षेपमें एम०पी० आर० नाम है । आगे हम इसको इसी संक्षिप्त नामसे पुकारेंगे ।

दूसरा अध्याय एम० पी० आर०
(सुप्रीम कौंसिल)

भाग दूसरा—(१) यह एम० पी० आर० यानी सुप्रीम कौंसिल डी० पी० आर० (छोटी सभा) के सदस्योंसे बनायी जायगी जो वहांकी भाषामें 'दिवा परवाकिलन रजत' कहलाती है । इस डी० पी० आर० का सङ्गठन शासन विधानमें वर्णित तरीकेसे विभिन्न जातियोंके समूहों एवं विभिन्न भागोंके प्रतिनिधियों द्वारा किया जायगा (अर्थात् यहांकी पार्लमेण्टके भी इंगलैण्डकी पार्लमेण्टकी तरह दो भाग होंगे पहलेको सर्वसाधारणकी सभा यानी डी० पी० आर० सर्वसाधारणकी कौंसिल कहेंगे और बड़ी सभाको 'सुप्रीम कौंसिल' कहेंगे, छोटी सभाके सदस्य बड़ी सभाका निर्णय करेंगे और छोटी सभामें जनताके प्रतिनिधि होंगे—अनु० । (२) इस सुप्रीम कौंसिलकी मीटिंग राजधानीमें एक बार अवश्य होगी । (३) इस सुप्रीम कौंसिलमें उपस्थित किये गये प्रस्तावोंका निर्णय बहुमतसे होगा । (४) यह सुप्रीम कौंसिल कानूनोंका संशोधन और राज्यकी नीतिमें भी संशोधन कर सकेगी ।

अध्याय तीसरा—कार्यकारिणीके अधिकार (शासनाधिकार)

भाग तीसरा—(१) प्रेसीडेण्टके कार्यकारिणी सम्बन्धी अधिकारों यानी शासनाधिकारोंका वर्णन शासन विधानमें किया गया है । (२) वह अपने कार्यमें वाइस-प्रेसीडेंटकी सहायता लेगा । (३) सुप्रीम कौन्सिलकी स्वीकृतिसे प्रसीडेण्टको कानून बनानेका अधिकार है । (४) प्रेसीडेण्ट इस बातका विशेष ध्यान रखता है कि सरकारी विभागोंमें कानूनका भलीभांति पालन किया गया है या नहीं ।

भाग चौथा—(१) प्रेसीडेण्ट इण्डोनेशियाका निवासी ही होना चाहिये । (२) प्रेसीडेंट और वाइस प्रेसीडेंटका निर्वाचन सुप्रीम कौन्सिलमें मेम्बरोंके बहुमतसे किया गया है ।

भाग पांचवां—(१) प्रेसीडेण्ट और वाइस प्रेसीडेंटका निर्वाचन ५ सालके लिये किया गया है और वे दुबारा चुने जा सकते हैं ।

भाग छठवां—(१) प्रेसीडेण्टकी अनुपस्थिति त्यागपत्र या मृत्यु हो जानेपर उसकी निश्चित अवधितक वाइस प्रेसीडेंट इसके स्थानपर काम करेगा ।

भाग सातवां—(१) कार्यभार ग्रहण करनेके पूर्व प्रेसीडेंटको सुप्रीम कौन्सिल और सर्वसाधारणकी कौन्सिल दोनों कौंसिल के सामने निम्नलिखित शपथ ग्रहण करनी पड़ती है:—"हम, प्रेसीडेण्ट और वाइस प्रेसीडण्ट यह वादा करते हैं कि यथासम्भव हम अपने कर्तव्यका भली भांति पालन करेंगे और सब कानूनों और नियमोंके अनुसार जनता और देशकी सेवा करेंगे ।"

भाग आठवां—(१) जल, स्थल और हवाई सेनापर प्रेसीडेण्टका सर्वोच्च अधिकार है ।

भाग नवां—(१) सुप्रीम कौन्सिल की स्वीकृतिसे प्रेसीडेण्ट दूसरे देशोंसे युद्ध, सन्धि और शर्तें कर सकता है ।

भाग दसवां—(१) प्रेसीडेण्टको मार्शल ला घोषित करनेका अधिकार है ।

भाग ग्यारहवां—(१) प्रेसीडेण्ट राजदूतोंको नियुक्त कर सकता है । (२) प्रेसीडेण्ट राजदूतोंका स्वागत करता है ।

भाग बारहवां—(१) प्रेसीडेण्टको 'क्षमा करनेका अधिकार है ।

भाग तेरहवां—(१) प्रेसीडेण्टको उपाधि वितरणका अधिकार है ।

अध्याय चौथा—डी० पी० आर०
(छोटी सभा)

भाग चौदहवां—डी० पी० आर० (छोटी सभा) का निर्माण कानूनके अनुसार हुआ है । (२) इस सभाको सरकारसे प्रश्न पूछनेका और प्रस्ताव करनेका अधिकार है ।

अध्याय पांचवा—मन्त्रिमण्डल

भाग पन्द्रहवां—(१) मन्त्रिमण्डल प्रेसीडेण्टकी सहायता (शासन कार्यमें) करता है । (२) मन्त्रियोंकी नियुक्ति और पदच्युतिका अधिकार प्रेसीडेण्टको है । (३) मन्त्री लोग अपने विभागोंका खुद निर्माण करते हैं ।

अध्याय छठवां—स्थानीय स्वराज्य

भाग सोलहवां—(१) इण्डोनेशिया शासन विधानके अनुसार छोटे और बड़े प्रान्तोंमें विभक्त है और ये प्रांत स्थानीय परिस्थिति एवं राज्यकी नीतिको ध्यानमें रखते हुए स्वशासनका उपभोग करते हैं ।

अध्याय सातवां—डी० पी० आर०

भाग सत्रहवां—(१) डी०पी० आर० (छोटी सभा) की सालमें एक बार बैठक होती है । (२) डी० पी० आर० (छोटी सभा) का कानूनके अनुसार निर्माण होता है ।

भाग अठारहवां—(१) हरएक कानून की स्वीकृति डी०पी० आर० (छोटी सभा) से मिलनी चाहिये । (२) यदि डी० पी० आर० (छोटी सभा) किसी कानूनको अस्वीकार कर दे तो वह फिर उपस्थित नहीं किया जा सकता ।

भाग उन्नीसवां—(१) छोटी सभाके सदस्योंको कानून सम्बन्धी प्रस्ताव करनेका अधिकार है । (२) यदि छोटी सभा द्वारा कोई कानून सम्बन्धी प्रस्ताव स्वीकृत हो जाय और उसे प्रेसीडेण्ट स्वीकार न करे तो वह फिर उपस्थित नहीं किया जाता ।

भाग बीसवां—(१) असाधारण परिस्थितिमें प्रेसीडेण्टको स्वयं कानून बनानेका अधिकार है । (२) ये कानून पहले छोटी सभा द्वारा स्वीकृत होने चाहिये अन्यथा वापिस लेने पड़ते हैं ।

अध्याय आठवां—अर्थ विभाग

भाग इक्कीसवां—(१) राज्यका बजट हर साल पास किया जाता है, यदि राज्य के बजटको छोटी सभा अस्वीकार कर दे तो पिछले सालके बजट अनुसार काम होता है । (२) सब सरकारी खर्च कानून द्वारा निश्चित हैं । (३) मुद्रा नीति कानून द्वारा निश्चित है । (४) विशेष अधिकारियोंकी एक समिति अर्थनीतिका नियन्त्रण करती है, उसे छोटी सभाको अपनी रिपोर्ट देनी पड़ती है ।

अध्याय नौवां—न्याय विभाग

भाग बाईसवां—(१) न्याय सम्बन्धी कानून सभायें और उसकी सब शाखायें कानून द्वारा निश्चित हैं ।

भाग तेईसवां—(१) जजोंकी नियुक्ति और पदच्युत कानून द्वारा निश्चित है ।

अध्याय दसवां—नागरिकता

भाग चौबीसवां—(१) कानूनन वे ही नागरिक माने जाते हैं जो इण्डोनेशियाके निवासी या वहांकी नागरिकता प्राप्त किये हुए हों । (२) नागरिकोंके अधिकार शासन विधानमें निश्चित हैं ।

भाग पचीसवां—(१) सब नागरिकों के न्याय और राजनीतिक अधिकारोंका समान रूपसे उपयोग करते हुए राज्यके प्रति वफादार रहते हैं । (२) हर नागरिकको मानव जीवनको सुचारुरूपसे चलानेकी सुविधायें प्रदान की जाती हैं ।

भाग छब्बीसवां—(१) लेखन, भाषण, सभा करने और विचार प्रकट करनेकी स्वतन्त्रताका शासन विधानमें समावेश है ।

अध्याय ग्यारहवां—धर्म

भाग सत्ताइसवां—(१) सर्वशक्तिमान प्रभुकी सेवाके आधारपर राज्यको मौलिक सिद्धान्त निर्धारित है । (२) हर नागरिक को अपना धर्म पसन्द करनेकी स्वतन्त्रता है ।

अध्याय बारहवां—देश-रक्षा

भाग अट्ठाइसवां—(१) हरएक नागरिकसे देशकी रक्षामें भाग लेनेकी अपेक्षा रक्खी जाती है । (२) देश रक्षाका शासन विधानमें वर्णन है ।

अध्याय तेरहवां—शिक्षा

भाग उन्तीसवां—(१) हर नागरिक को शिक्षा प्राप्त करनेका अधिकार है । (२) शिक्षा पद्धति शासन विधान द्वारा निश्चित है ।

भाग तीसवां—(१) सरकार इण्डोनेशियाकी राष्ट्रीय संस्कृतिको बढ़ाती है ।

अध्याय चौदहवां—समाज सेवा कार्य

भाग इक्तीसवां—(१) आर्थिक ढांचा सम्मिलित और पारस्परिक सहयोग पर निर्भर है । (२) महत्वपूर्ण कारखानों एवं जनोपयोगी उद्योगधन्धोंका राष्ट्रीयकरण किया जायगा । (३) भूमि, जल और प्राकृतिक साधन राज्यकी सम्पत्ति हैं जिनका उपयोग जनता अपने सुख और सुविधाके लिए करती है ।

भाग बत्तीसवां—(१) गरीब और पिछड़े हुए अनाथ बालकोंकी रक्षा राज्य द्वारा की जाती है ।

अध्याय पन्द्रहवां—झण्डा और भाषा

भाग तेतीसवां—(१) इण्डोनेशिया का झण्डा लाल और सफेद है ।

भाग पैंतीसवां—(१) बड़ी सभा (सुप्रीम कौन्सिल)के दो तिहाई सदस्य मिल कर शासन विधानमें संशोधन करनेका प्रस्ताव कर सकते हैं । (२) उपस्थित सदस्योंके तिहाई बहुमतसे शासन विधानमें संशोधन करनेवाला प्रस्ताव स्वीकार किया जायगा ।

पूरक १

भाग पहला—(१) इण्डोनेशियाकी प्रीपेरेटरी कमेटी इण्डोनेशियन सरकारको शासन व्यवस्थामें निमन्त्रण करती है ।

भाग दूसरा—(१) तमाम सरकारी संस्थाएं और कानून शासन विधानके अनुसार जबतक दूसरे नहीं बनाये जायं, अमलमें आते रहेंगे ।

भाग तीसरा—(१) प्रथम प्रेसिडेण्ट और वाइस प्रेसिडेण्ट इण्डोनेशियाकी स्वतंत्र प्रीपेरेटरी कमेटी द्वारा चुने जाते हैं, छोटी सभा और बड़ी सभाके बननेके पहले प्रेसीडेण्टको शासन करनेके अधिकार हैं और इस कार्यमें उसको राष्ट्रीय समितिसे सहायता मिलती है ।

पूरक २

भाग पहला पूर्वी एशियाके युद्धकी समाप्तिके छः माह बाद प्रेसिडेण्टको शासन विधान लागू कर देना चाहिये ।

भाग दूसरा—बड़ी सभाकी स्थापनाके छः माह बाद उसका अधिवेशन शासन विधानको निश्चित करनेके लिये होना चाहिये +।

+(अंग्रेजी पत्र 'नेशनल हेराल्ड' लखनऊ जिल्द नं० १ ता० ३० नवम्बर सन १९४५ से अनुवादित ।)

देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद

(लेखक—श्री राधाकृष्ण शर्मा बी० काम० बी० एल०)

बिवाबाके दरबारसे अपनी नौकरी पूरी र अब उत्थ पानेके लिये राजेन्द्र बाबूको रवीपर भेजा गया तो अवश्य ही नौकरी रनेके बदले इन्हें वकीलके रूपमें सत्य, हिंसा और सेवा मिली। कायस्थ कुलमें न्म लेनेके बाद उनका जन्मसिद्ध अधिकार वानी उनके भाग्यके साथ लगी ही रही। रबारके दीवान न बनकर देशके दीवान बन े और सारेके सारे दरबारको उन्होंने ेज किया।

भारतमें बिहारका स्थान किसी भी ेसे बड़े तीर्थस्थानसे बड़ा रहा है। संसार सबसे बड़ा सत्य और अहिंसाके पुजारी वान बुद्धको ज्ञान प्राप्त इसी प्रांतमें हुआ और जैन धर्म जो अहिंसाका नग्न स्व- है यहींसे फूल फलकर आगे बढ़ा था। े बड़े तीर्थस्थानमें पैदा होनेके बाद ये उसी पथके पथिक बने और अपनेको ग और तपस्याकी आंचमें तपाने लगे।

पढ़नेकी प्रतिभा इनकी अद्वितीय थी। े छात्र जीवनमें ये एम० ए० की क्षामें फर्स्ट क्लास फर्स्ट आये और ते देखते वकील बननेकी अपेक्षा प्रोफेसर ेरे। प्रतिभाने आपको उसी समय इतना र बना दिया था कि छात्र जीवनमें ही े बड़े नेताका ध्यान आपकी ओर आकृष्ट े लग गया था। बंगालके १९०५ के ीय आन्दोलन और बंग-भङ्ग आन्दोलन बहुत ही नजदीकसे देख लेनेके बाद के भीतर उठती हुई राष्ट्रीय भावनाका र हाहाकारकर आन्दोलित हो उठा। ागमें देश सेवाकी भावना जमकर ली और धीरे-धीरे वह अपना विस्तार ट करने लगा।

शरीर जितना लम्बा और भरापूरा है ानकी दयासे आपकी बुद्धि भी उतनी शाल है। लटकी हुई बड़ी बड़ी मूंछोंके मोटे मोटे होठोंपर मुस्कान नाच नाच यह बतलाती रहती है कि मेरे पीछे ा साहस और अदम्य उत्साहका वह १९१० ई० में सर्वप्रथम स्व० गोखलेका को निमन्त्रण मिला कि आप "सर्वेण्ट ऑफ इण्डिया सोसायटी" में शरीक हो ये। उस समय आप भारतमें होनेवाले आन्दोलनका नेतृत्व कर रहे थे और ी सक्रियतासे आन्दोलनको बढ़कर दे रहे थे। राजेन्द्र बाबूको अपनी ापर विश्वास था और इस आंदोलनके में इन्हें कुछ करनेका प्रथम बार अवसर ा जिसमें वे पूर्ण सफल रहे। उनके आत्म- ासको इससे शक्ति मिली और वे आगे बढ़ चले।

राजेन्द्र बाबूके सार्वजनिक जीवनका ारम्भ १९१७ से होता है। बिहारका ा आन्दोलन चला और उसमें वे गांधी के साथ साथ विजयपथ बढ़ते रहे और रूपमें इन्हें अपनी सम्पूर्ण कर्मठताका रिचय देनेका अवसर मिला। इस तरह ेन्द्र बाबू देशकी जनताकी आंखोंके आगे गये और वे जनताके मन मन्दिरके ा बन गये। निलहोंपर अंग्रेजोंकी हुकू- अपनी चरम सीमाको पहुंच गयी थी र उनकी नादिरशाहीके वे गरीब बुरी तरह शिकार हो गये थे। उनके जीवनका प्रश्न उनके हाथोंसे छूटकर उन चन्द गोरोंके हाथोंमें चला गया था जो बुरी तरह उनपर अत्याचारके कोड़े लगाकर उनका आखिरी बूंद तक रक्त चूस रहे थे। उनके इस कष्टका निवारण करना आवश्यक ही नहीं वरन् मनुष्यमात्रका धर्म हो गया था। कष्ट जब चरम सीमाको पहुंच जाता है तब पीड़ितकी ओर सहानुभूतिसे देखनेके लिये नीतिका सहारा नहीं लिया जाता। वह दयाका पात्र हो जाता है और उसे भेदभाव रहित होकर मदद देनेका नाम ही धर्म है। भारतीय विचारधाराको प्रभावित करनेवाली यह भावना विशुद्ध भारतीय है और प्रत्येक भारतीय इससे प्रभावित होकर उसीके अनु- रूप कार्य करनेको बाधित हुआ है।

लोहा पारससे छूते ही जैसे सोना बन जाता है वैसे ही गांधीजीके संपर्कमें आते ही राजेन्द्र बाबू सोनेकी नाईं चमक उठे। रोटी कमानेके पेशेको लात मारकर सार्वजनिक क्षेत्रमें सदा सर्वदाके लिये दृढ़ प्रतिज्ञ होकर आनेका यह आपका पहला अवसर था जो बादमें चलकर देशके लिये आवश्यक हो गया है।

प्रत्येक देशमें दो तरहके नेता होते हैं—एक तो वे जो बड़े नेताके साथ रह कर नेता बने रहते हैं और बादमें वे अपने भीतर अपने व्यक्तित्वको संजोकर उसका प्रयोग करते हैं। ऐसे नेताके भीतर तूफानी वेग नहीं होता। वे दिये हुए महलको हिला सकते हैं। अपने बाहुबलके भरोसे वे गढ़ नहीं तोड़ पाते। ये पूरक होते हैं पूर्ण नहीं होते। भारतमें इस तरहके पूर्ण नेताओंमें केवल चारही व्यक्तिके नाम लिये जा सकते हैं—जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, राजेन्द्रबाबू और खान अब्दुल गफ्फार खां। ये जीवन्त प्राणी हैं। ये वे चिराग हैं जिनसे दूसरे चिराग जला करते हैं। इनमें वह ओज है जिसके प्रभावसे इनके आस पास ही नहीं वरन दूर दूरके मानव प्रभावित हुआ करते है। जवाहरलालके बाद यदि देशकी आंखें किसीकी ओर जाकर रुकती तो वह सौम्यमूर्ति राजेन्द्रबाबू ही है। राजेन्द्रबाबूके प्रबल उत्साह और त्यागने बिहारके रगरगमें नवजीवनका संचार कर दिया है। जेल जाना और छूट कर आतेही देश सेवामें व्यस्त हो जाना मानो आपके जीवनका दैनिक कर्म हो गया है। अपनी लगातार की कुर्बानियोंके द्वारा आपने बिहार के सामने एक अकाट्य आदर्श रख दिया और देशकी आवाजके साथ साथ बिहारकी आवाज सबसे आगे सुनायी पड़ने लगी। यह बात नहीं कि आपने सिर्फ अपने प्रांतकी जागृति के लिये कोई भी कोरकसर उठा नहीं रखा। आज भी इनकी सांस सांससे न केवल बिहारके लिये वरन सारे पीड़ित भारतके लिये दर्दकी आवाज निकलती रहती है।

गान्धी जीकी सत्य और अहिंसाकी नीतिको बहुतोंने देश पर अंग्रेजोंके किये गये दमनकी भयंकरताको देख कर छोड़ दिया। मानव विज्ञानके अनुसार पाशविक काण्ड देख कर या तो मनुष्य कायर हो जाता है या लपक कर तलवारकी मूठ पकड़ लेता है। अंग्रेजोंके दमन चक्रने भारतके सामने जलियांवाला बाग आदि जो दृश्य दिखलाये उसके चलते लोगोंकी प्रति- हिंसा आग उठी और वे गांधीको कोसने लग गये थे। बिहार दमनका प्रबल क्षेत्र था अतएव यह स्वाभाविक था कि दमनचक्रकी निरंकुशताको देख कर नेताओंकी बुद्धि बहक जाती और वे कुंवरसिंहका आदर्श अपना लेनेको तैयार हुए होते किन्तु राजेन्द्रबाबूके धैर्यने उन्हें सत्य और अहिंसाके पथसे विचलित नहीं किया। वे बापूके साथ अपने उसी पुराने आसन पर डटे रहे और आज वे वन्दनीय बन गये। जिन जिन लोगोंने अहिंसाको त्याग कर हिंसाको अपनाया था वे भी आज सच्चे दिलसे उसके लिये पश्चाताप प्रकट कर रहे हैं। राजेन्द्रबाबूकी दूरदर्शिताका यह छोटा सा उदाहरण है।

१९३२-३४ और ३९ में तीन तीन बार राष्ट्रीय महासभाके सभापति बन कर आपने जिस साहसका परिचय दिया है वह अवर्णनीय है। अपने स्वास्थ्य और तन्दुरुस्तीके लिये वे कामोंसे अधिक सक

हैं। बिहार भूकम्प भारतीय इतिहासकी एक चिरस्मरणीय घटना है। उस समय आप जेलमें थे। भूकम्पने बिहारके साहसकी नींव हिला दी थी। सरकारी नौकरोंसे जब काम चलता नजर नहीं आया तो सरकारने उन्हें बीमार करार देकर जेलसे छोड़ दिया। आपने दिन रात जिस लगनसे उन दिनों बिहारकी सेवा की वह संसारके इतिहासके सेवा-अध्यायका एक गौरवमय पृष्ठ है। दिन और रातकी परवाह न कर दमेसे परेशान रहते हुए भी माघकी सर्द रातमें काम करते रहे। जिसके भीतरसे आपका अगाध धैर्य और अपराजित साहस झांक रहा था। उन दिनों आपका कार्य इतना बढ़ गया था कि उसके लिये सहानुभूति या प्रशंसा प्रकट करना स्वयं दोनोंको लज्जित करना है।

कर्म प्रधान जीवनके पीछे जबतक विवेकी मस्तिष्क नहीं होता उसे उचित नियन्त्रण नहीं मिलता। कर्मवीर योद्धाके लिये विवेक वह थाती है जिसके चूक जानेका मतलब होता है गुड़का गोबर। राजेन्द्र बाबूका विवेक उनके चिर शान्त मस्तिष्कका बहुत ही उलझा हुआ निवासी है। गान्धीजीके परख सामने आकर राजेन्द्र बाबू उनके द्वारा पहचान ही नहीं लिये गये वरन् वे ग्रहण भी कर लिये गये। आज गांधीवादकी नींवके वे जो चट्टान बनकर और अमर बनकर बैठ गया है और जिसपर उस महलका बहुत कुछ दारोमदार है वह राजेन्द्र बाबू हैं। गान्धीजी भी उन्हें दिलसे ही नहीं वरन् दिमागसे जानते और मानते हैं। कांग्रेस कार्यकारिणी समितिके तो राजेन्द्र बाबू अचल और अक्षेय पूंजी हैं। जब जब भी कांग्रेसके सामने उलझनकी घड़ियां आयी हैं राजेन्द्र बाबू न केवल उचित सलाहकार ही रहे हैं वरन् उस परिस्थितिको आदिसे अन्ततक सम्हालनेमें उनका पूरा हाथ रहा है। ठण्डे दिल और दिमागसे सोचना तथा समझना आपकी सबसे बड़ी विशेषता है। कोई भी मसला आपके सामने चाहे जैसी मानसिक परिस्थितिमें आ जाये आप पलक मारते ही उसे तदनुरूप परिवर्तन कर देते हैं। यह एक असाधारण बात है।

बापूके जितने भार सोचनेकी चीजों

(शेष १४ वें पृष्ठपर)

देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसादके प्रति

हे देशरत्न, हे वीतराग, माता के पद के अनुरागी।
हे मस्तकाम-तेरी पद-रज पा, पूर्ण काम हम बड़भागी।
हे विदेह है देह तुम्हारी, कोटि-कोटि जनता को अर्पण।
बन अशोक तुम शोक मिटाने, फिर आए क्या धरणी के धन?
मूर्तिमान गौतम की करुणा! अहो अहिंसा जिनवर की तुम।
चन्द्रगुप्त के बल-विक्रम हे, वैशाली के वैभव अनुपम।
उजड़े बिहार के नन्दन-वन, निर्धन माता के गौरव-धन!
कोटि-कोटि जनता करती लो, आज तुम्हारा पूजन-अर्चन!!

—श्री शंकर

चुनावके नगाड़े बज रहे हैं, विभिन्न पार्टियां मदानमें हैं—कांग्रेस, मुसलिम लीग, हिन्दू महासभा, कम्युनिस्ट और कई स्थानीय दल। जनताको अपने प्रजातांत्रिक अधिकारोंके उपभोग करनेका अवसर है। युद्धसे और युद्धके बाद देश देशान्तरोंमें पैदा हुई जन-जागृतिकी लहर भारतको अछूता कैसे रख सकती है? साम्राज्यशाहीके दिन लद चुके और औपनिवेशिक गुलामीके रूपमें जहां-जहां उसके भग्नावशेष दिखायी देते हैं, वे फ्रांससे प्रशान्त द्वीपों तक फैले हुये इस प्रचण्ड भूचालमें ढह जायेंगे, भारतका चुनाव आंदोलन इस जन जागृतिका एक भाग बन रहा है। लाखोंकी संख्यामें जनता रोज मीटिंगों और प्रदर्शनोंमें भाग लेती है। उसकी राजनैतिक चेतना जाग रही है। जिन बड़े बड़े मुद्दोंको लेकर चुनाव लड़ा जा रहा है वे चित्रपटकी तरह उसके सामने आये हैं। भारत छोड़ो, पाकिस्तान, अखण्ड हिन्दुस्तान, कांग्रेस लीग एकता और राष्ट्रीय सरकार, ये नारे उसके कानोंमें गूंजते हैं और इनके पीछे जो मसले और तत्व छिपे हुए हैं, उनपर विचार कर वह अपनी राय स्थिर करती है। जाहिर है उसकी राय किसी एक मसलेके पक्षमें और दूसरे मसलेके खिलाफ होगी अर्थात् जनता अपने अलग अलग कैम्पोंमें विभक्त है। बड़े राजनैतिक मसलों पर वह अपने ढंगसे राय देगी।

लेकिन आर्थिक मामलोंका जहां तक सम्बन्ध है, इस विभिन्नतामें भी वह एक है। देहातका किसान जिसके सामने स्वराज्य जैसी सर्वतोभावेन चीज बार-बार आती रही है, लगानके बोझमें कमी, कर्जसे छुटकारा, सामन्तशाहीके जुल्मोंसे निस्तार, इसी रूपमें उसने इस चीजको देखा है। खेतोंमें जाइये और अल्लादीन और मातादीन दोनोंसे अलग अलग बातें करिये। दोनोंका एक जवाब होगा, वह जमींदारी जुल्मके विरुद्ध वोट देगा, वह बेदखली, नजराना, हरी बेगार और पुलिसकी ज्यादतियोंके खिलाफ वोट देगा और उसे अपनी राय देगा जो उसके कपड़ोंके संकटको हल करे, उसकी भुखमरी मिटाये और चारों ओरकी लूटसे उसकी रक्षा करे। इसीमें उसका पाकिस्तान है इसीमें अखण्ड भारत है, 'भारत छोड़ो' को भी वह इसी रूपमें देखता है। राजनीतिके मन्दिरमें वह अपनी आर्थिक मांगोंके इसी द्वारसे प्रवेश करता है। कांग्रेसको वह वोट देगा क्योंकि कांग्रेस ने उसके इन सवालोंको अबतक उठाया है।

आज देहातोंमें बड़ी-बड़ी मीटिंगोंमें जहां वह शामिल होता है, वहां उसकी निगाह वक्ताके मुंहकी ओर लग जाती है। वह देखता रहता है कि कब भाषण कर्ताके मुखसे वे शब्द निकलते हैं जिनमें कहा गया हो—किसानोंको अब उनकी जमीनसे बेदखल नहीं किया जायगा, वह जमीनका मालिक बनेगा। पिछली बार जब प्रान्तीय असेम्बलियोंका चुनाव लड़ा गया था, तब उसने ये शब्द सुने थे—किसानोंको जमीन पर मौरूसी हक मिलने चाहिये। उसके ऊपरसे बेगार और नाजायज टैक्स हटने चाहिये, उसका बकाया लगान माफ हो और कर्जमें छूट दी जाय।

आगामी चुनाव और किसान

जमींदारी प्रथा मिटानी चाहिये

——:o:——

लेखक—श्री रमेश बर्मा

इन नारोंका असर यह हुआ था कि एक दिन पोलिंग पर जाकर यू० पी० के किसानोंने अपने सूबेके तालुकेदारी शासन का अन्त कर दिया। जमींदारों, नवाबों और तालुकेदारोंने मिलकर 'एग्रीकल्चरर्स' पार्टी' के नामसे चुनाव जीतनेके लिये जो धोखेकी टट्टी खड़ी की थी, सारे सूबेमें उसका सफाया हो गया। सामन्तशाहोंकी लखनऊकी मौरूसी गद्दियां छूट गयीं और उनकी जगह जाकर बैठ गये खद्दरधारी जिनको किसानोंने अपने वोटसे चुना था। तबसे अब तक किसान जमींदार वर्गसे तीव्र घृणा करता है। एक बार चुनावमें वोट देकर उसने जो संगठन बना लिया, जिस शक्तिका उसने परिचय दिया, उससे यू० पी० का जमींदार वर्ग फिर चुनाव लड़नेका साहस नहीं करता। इस बार कहींसे भी नहीं सुना जा रहा कि कोई जमींदार कांग्रेसके मुकाबिलेमें आ रहा है। बल्कि उल्टे जहां तहां वे कांग्रेस उम्मीदवारके पक्षमें कोशिश कर रहे हैं।

लड़ाईके दौरेमें जमीन्दारोंने क्या किया

कांग्रेस मन्त्रिमण्डलोंके जमानेमें किसानोंको उनकी जमीन पर मौरूसी अधिकार देनेके जो कानून बने थे, उनका जमींदार वर्गकी ओरसे संगठित विरोध किया गया। अवधके तालुकेदारों और नवाबोंने यह कह कर कि ब्रिटिश सरकारसे उसकी सीधी सन्धियां हैं और सन १८५७ के गदर के बाद उनकी सेवाओंके फल स्वरूप हैलेटके पूर्वजोंने उन्हें जो हक दिये थे, उसके अनुसार वे अपनी किसान रिआयाके वैसे ही मालिक हैं जैसे कोई गद्दीधारी राजा। यू० पी० की खेतीकी कुल जमीनका पन्द्रहसे बीस फीसदी भाग इन जमींदारोंकी सीमाके अन्दर था जिस पर किसानको कभी मौरूसी हक नहीं मिल सकते। कांग्रेस मन्त्रिमण्डलने नया कानून बना कर प्रत्येक जमींदारको केवल पचास एकड़ भूमि रखनेका अधिकार दिया था और बाकी जमीन पर किसानोंके मौरूसी हक घोषित कर दिये थे। सब तरहकी कानूनी कार्यवाही कर लेने पर भी जब जमींदार किसानोंको उनके अधिकारसे वंचित नहीं कर सके तो उन्होंने अन्य उपायोंका अवलम्बन किया और कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलके हटतेही उसके बनाये हुए कानूनका दिवाला निकाल दिया। यू० पी० टैनेन्सी ऐक्ट जिन परिस्थितियोंमें बनाया गया, उसमें वह अधिक प्रगतिशील नहीं रह सका। कानूनकी रचना करनेवाले वही सनातनी बाध आई० सी० एस० थे जिन्होंने कांग्रेस मन्त्रिमण्डलकी हिदायतों और सिफारिशोंको स्वीकार करते हुए उसके अन्दर इतने दावपेंच और उलझाव रख दिये थेकि कोईजनताका मंत्रिमण्डलही उससे किसानोंका भला करा सकता था, गवर्नरी शासनमें उससे जमींदारोंका भला होता था और वही हुआ।

भूमिमें जहां उसके जोतनेवाले काश्तकारोंको मौरूसी हक दिये गये वहां उसमें यह शर्त रखी गयी कि इसका अमल इस तरह से होगा कि सरकार जमींदारोंकी पचास एकड़ भूमि अलग कर देगी और बची हुई भूमि पर किसान मौरूसी हो जायंगे। अब यह स्थानीय हाकिमों-कलक्टर या डिप्टी कलक्टरकी मर्जीका सवाल रह गया। उन्होंने उस जमीनकी हदबन्दी अबतक नहीं की है। जमींदार स्वयं हदबन्दी कराने क्यों लगे और किसान हदबन्दी कराये तो उसे पटवारीके कागजातकी कुछ नकल, गवाह, जमींदारके खिलाफ मुकदमा वगैरहः पहाड़ जैसा बोझ उठाना पड़े और जबतक एक जमींदारके कुल शिकमी काश्तकार अलग अलग ऐसा न करें तबतक जमींदारके हिस्सेकी हदबन्दी होही नहीं सकती जिसमें भी पटवारी जमींदारका गुर्गा होता है। नतीजा यह हुआ कि मौरूसी हक मिलना दूर सन १९४५ तक विभिन्न दफाओंके अन्दर प्रान्त भरमें सवा लाख एकड़ जमीनसे किसान बेदखल हुए। बेदखलियोंका यह सिलसिला जारी है। यह सिर्फ एक मिसाल है। दफा १६३में (लगान न देने पर सन १९४२ में ९३४४९ एकड़ जमीनकी बेदखलियां हुईं। यह याद रहे इस दफाके अन्दर कानूनमें लगान न देनेकी बेदखलियोंकी रोक थाम की गयी थी। हिन्दुस्तान भरमें बदनाम दफा १७१ में सन १९४२ की बेदखलियोंका जोड़ ३१४९४ एकड़ है और सन १९३९ से ही जबसे नये एक्टकी शुरूआत होती है, इस दफाका प्रहार जारी रहा है। स्थानाभावसे हम और बातोंको यहां नहीं दे सकते। हरी, बेगार वगैरह जो कांग्रेसी मन्त्रिमण्डलने नाजायज और कानूनी जुर्म करार दी थी, उनका जोर इस कालमें और बढ़ गया। गैर कानूनी नज़राना तो इतना वसूल किया गया कि, उसकी रकम जमीनकी असली कीमतसे भी आगे बढ़ जाती है—एक एक बीघाके लिये पांच सौ रुपये और एक हजार रुपये तक।

इसके अतिरिक्त अकाल, अन्न और कपड़ेकी मुसीबत, महामारी, सामूहिक जुर्माने और युद्ध कर्ज वगैरह जोंकोंकी तरह किसान जनताके शरीरसे चिपटेही रहे हैं अत्यन्त क्रूरताके ढंगका शोषण और दूसरी विपत्तियोंके वज्र प्रहार। इनसे देहातके किसानका आजका जीवन मृत प्राय हो रहा है। इन्हीं कारणोंसे जमींदार किसान में, किसान, जमींदार और खेतिहर मजदूर में, किसान-किसानमें और हर वर्ग और श्रेणीके लोगोंके बीच भीषण संघर्ष और द्वंद्व है। आर्थिक जीवन नष्ट हो रहा है, सामाजिक जीवनके बन्धन टूट रहे हैं और नैतिक पतन फैल रहा है।

यह तसवीर एक प्रान्तकी है। लेकिन और प्रान्तोंकी हालत इससे अच्छी नहीं। पंजाबमेंजहांका किसान खुशहाल कहा जाता है,सर्वहारा बन रहा है। बंगालका चित्र अलग ही है, जहां लार्ड कार्नवालिस चलायी हुई स्थायी भूमि व्यवस्थाको देनेके लिये खुद सरकारी कमेटी (फ्लाउडन कमीशन)सिफारिश करता है। क्रान्तिकी ये बुनियादें हैं। राजनीति लक्ष्यको प्राप्त करनेके लिये भी आज हो गया है कि देशके इस सबसे बड़े रक्षा की जाय। दिल्ली मार्चकी याबी भी इसी बड़ी भारी शक्ति निर्भर है।

जमींदारी प्रथाका बोझ हटाया जा

जमींदारी प्रथाको नष्ट करना हमारे लक्ष्यका एक साधन है। सन के चुनावमें कांग्रेसकी अभूतपूर्व विजय इन्हीं किसानोंके बल पर हुई और कांग्रेस घोषणा पत्रमें किसान वर्गकी तात्कालिक मांगोंके सम्बन्धमें एक आर्थिक प्रोग्राम रखा गया था। इस बारके घोषणा पत्र जहां राजनैतिक बातें बहुत महत्वपूर्ण ढंग रखी गयी हैं वहां उसका आर्थिक केवल एक संकेतके रूपमें सामने आता प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओंके चुनाव पहले यदि कांग्रेस दूसरा घोषणा पत्र निकालेगी तो उसके लिये सवाल उठा क्या उसमें जमींदारी प्रथाको नष्ट करने कार्यक्रम होगा? पं० जवाहरलाल नेहरू इन्हीं दिनोंके अपने एक वक्तव्यमें जमींदारी प्रथाको खत्म करनेकी बात कही है। पी० में कितनेही प्रमुख कांग्रेस जन इस आन्दोलन भी कर रहे हैं। जमीन्दारी प्रथा को नष्ट करने और मुनाफाखोरोंको देनेके पं० जवाहरलाल नेहरूके वक्त बातको स्पष्ट कर रहे हैं कि ये लोग राष्ट्रीय शक्तिके साथ नहीं हो सके विदेशी शक्तिके सहायक हैं, जैसा पिछले तीन चार वर्षोंके अन्दर स्पष्ट रूपमें देख चुके हैं। कांग्रेसका भारी देख आज ये उल्टे घूम कर कांग्रेस समर्थन या कांग्रेस उम्मीदवारकी करने लगें तो इसमें आश्चर्य क्या! स्थायी स्वार्थोंकी रक्षा इसी बातमें देखते हैं। लेकिन किसान इससे है, उसके दिलमें धुकधुकी और में शक पैदा होते हैं। जमींदारों मदद चुनावमें कांग्रेसकी ताकत नहीं बल्कि इस रूपसे राजनैतिक तौर पर भयंकर शक्लमें हमारे सामने आते हैं।

अब सवाल यह है कि राष्ट्रीय लनके लिये यह व्यवहारिक और चीज होगी कि वह जमींदारी प्रथाको करनेका नारा दे? क्या किसान राजनीतिक क्रान्तिसे पहले समझ यदि शब्दोंके फेरमें न पड़ा जाय और स्थितिको देखकर शब्दोंके व्यावहारिक लगाये जायें तो इस चुनावके बाद पिका सभाओंके सामने सबसे कार्यक्रम देशकी भूमि व्यवस्थामें परिवर्तन कर देना है। विदेशी हुकूमत रोड़े नहीं अटका सकती और इस को पूराकर हम देहातके आर्थिक

फारसकी संगीन स्थिति

रूसने फारससे अपनी सेना हटानेसे
कार कर दिया है और पहली जनवरी
सेना हटा लेनेके लिये अमेरिकाने
अनुरोध किया था, उसे रूसने अस्वी-
र कर दिया है। जापानी पराजयके ६
हीनेके भीतर १९४२ की एंग्लो-सोवियट-
नियन सन्धिकी शर्तोंके अनुसार मित्र
क्तियोंको २ मार्च १९४६ तक अपनी
नाएं हटानी चाहिये, और अमेरिकाने
पने अनुरोधोंके अनुसार पहली जनवरी
क अपनी सेना हटा लेनेका निश्चय किया
किन्तु रूसने इसके विपरीत निश्चय
या और ब्रिटेनने अभी तक अमेरिकाके
नुरोध पत्रका कोई उत्तर नहीं भेजा है।
बीचमें फारसकी स्थिति और भयावह
है। फारसके मन्त्रिमण्डलमें अजरबैजान-
राजनीतिक एवं आर्थिक महत्वाकां-
ओंको लेकर मतभेद चल रहे हैं, और
प्रतीत होता है मन्त्रिमण्डल पर ऐसे
गोंका प्रभाव काम कर रहा है जो स्थिति
रूसी दृष्टिकोणसे देखते हैं। अतः फारस
तेल क्षेत्रोंको लेकर ब्रिटेन और रूसके
युद्धमें ईरानके राजनीतिज्ञोंका भी टकर

पलट कर सकते हैं। देशकी एक बहुत
पिछड़ी शक्तिको ऊपर लाकर राष्ट्रीय
ोंको बहुत मजबूत कर सकते हैं। चुनाव-
कामयाबी ही तो हमारे लिये सबसे बड़ी
नहीं है। चुनावके बाद क्या होगा यह
अनिश्चित है। यदि वैधानिक तरीके
अपनायें तब भी हमें देशके आर्थिक
को ढालना होगा और अगर साम्राज्य-
अड़ंगोंको मिटानेके लिये आगे बढ़ें
भी देशकी सबसे बड़ी शक्तिको लेकर
ना होगा। हर हालतमें किसानके जीवन
बदौली लाना हमारे लिये अचूक अवसर
अनिवार्य काम है।

आखिर जमीदारी प्रथाकी क्या सामा-
उपयोगिता है? फिर समाज 'अजा-
गलस्तन' इस निरर्थक चीजको अपने
क्यों लटकाये रहे। लाखों और
ों रुपयोंको हर साल वसूल और पानी
जमीदारवर्ग समाजकी उन्नतिके
क्या करता है? समाजकी इस सम्पत्ति
उपयोग वह जिस ढंगसे करता है, उससे
ाजिक और राष्ट्रीय पापकी वृद्धि होती
यू० पी० में हर साल किसानोंके सत्रह
ड़ रुपये वसूलकर उसमेंसे सात करोड़
ारके खजानेमें जाता है और दस करोड़
न्दारोंकी जेबमें। केवल एक हजार
न्दार पूरे प्रान्तकी जमीनके साठ फी
हिस्सेके मालिक बने हुए हैं। चालीस
सदी भाग पांच करोड़ किसान जनताके
आता है, उसमें १२ लाख छोटे बड़े
ार हैं। फी किसान जमीनका औस-
ो बीघेके करीब पड़ता है। चन्द लोगों
और शानके लिये पूरे समाजको नर्क
ा भोगनी पड़ती है। हर विचारशील
को इसपर गम्भीरतासे सोचना
ये। केवल जोश और नारोंका यह
ल नहीं है। इस सवालकी एक व्यवहा-
योजना बन सकती है, जिसे राष्ट्र स्वी-
कर सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय

पड़ना अवश्यम्भावी हो रहा है। अजरबै-
जानकी आन्तरिक स्थितिके प्रति रूसी
विचारोंकी ही सहानुभूति नहीं दिखायी
पड़ रही है, ईरानके भी राजनीतिक क्षेत्रों
में फारसके प्रतिगामी शासनके कटु आलो-
चक हैं और अजरबैजानकी महत्वाकांक्षाओंके
प्रति उनकी सहानुभूति है। ऐसी स्थिति-
में फारसकी परिस्थिति जटिल ही होती जा
रही है और अबतक घटनाओंका जो रुख
रहा है उसका झुकाव ब्रिटेनकी अपेक्षा रूस
की ओर ही अधिक दिखायी पड़ रहा है।
एक ओर फारसमें आन्तरिक अशान्तियां
बढ़ रही है और दूसरी ओर बाहरी कूटनी-
तिक चालें चली जा रही हैं अतः फारसकी
उलझनें शीघ्र समाप्त हो सकेंगी, इसकी
आशा नहीं दिखायी पड़ती।

युद्ध अपराधीके रूपमें कारावद्ध फिलिपाइन
का विजेता "मनीलाका शेर" जापानी
सेनापति जेनरल यामाशिता।

जेनरल पैट्रिक हरलेका इस्तीफा

चीनमें अमेरिकाके राजदूत मेजर जेन-
रल पैट्रिक हरलेने इस्तीफा दे दिया और
उनके स्थान पर जेनरल जार्ज मार्शलको
नियुक्त किया गया है। मेजर हरलेने इस्तीफा
देनेका बाद एक सनसनीखेज वक्तव्य देकर
अमेरिकन सरकार पर यह अभियोग लगाया
कि उधार पट्टेकी सहायता देकर तथा प्रजा-
तन्त्रको बदनाम करनेके लिये अपनी सम्पूर्ण
सम्पत्ति लगा कर युक्त राष्ट्रने बहूपूर्वकी
लड़ाईमें विजय पायी तथा साम्राज्यवाद
और कम्युनिस्टवादको प्रोत्साहित किया
है। अमेरिकाके परराष्ट्र विभागने चीनके
कम्युनिस्टोंका साथ दिया और साम्राज्य-
वादियोंने चीनको विभाजित रखनेकी नीति
से मार्शल चांगकाई शेकको सभी प्रकारकी
सहायता पहुंचायी। अमेरिकाकी ओरसे
बराबर यही कहा गया कि चीनकी सरकार
को पतनसे बचानेका जो वे प्रयत्न कर रहे
हैं वह सरकारी नीति नहीं है। हमने यह
लड़ाई प्रजातन्त्रकी स्थापनाके लिये एवं
अटलांटिक चार्टरकी शर्तोंके अनुसार लड़ी
और प्रजातन्त्रका खूब समर्थन किया लेकिन
अब तीसरी लड़ाईका सूत्रपात हो रहा है।
इसका सारा दायित्व अमेरिकाकी विदेश
नीति पर ही है क्योंकि अमेरिका कम्यु
निस्ट साम्राज्यशाहीके विरोधमें औपनि-
वेशिक साम्राज्यशाहीका साथ दे रहा है।
इस तीसरी लड़ाईमें न तो प्रजातन्त्रकी
रक्षा हो सकेगी और न स्थापना ही। अमे-
रिका निश्चित रूपसे साम्राज्यवादी गुटका
समर्थन करता है और उसके स्टेट विभाग
द्वारा चीनी कम्युनिस्टोंको प्रोत्साहित
किया जा रहा है, जिसके परिणाम स्वरूप
संसारमें तीसरा युद्ध छिड़ कर ही रहेगा।

मिश्रमें फिर सङ्कट—

सूडानके लिये मिश्रने अपनी मांग पिछले
दिनों ब्रिटेनसे की थी और अब बताया गया
है कि मिश्रमें राजनीतिक गतिरोध अव-
श्यम्भावी हो जायगा यदि ब्रिटेनने मिश्र
की मांगें स्वीकार नहीं कर लीं। मिश्रने
अपने प्रधान मन्त्रीके द्वारा ब्रिटेनके वैदे-
शिक सचिव मि० बेविनके पास एक अनु-
रोध पत्र भेजनेका निश्चय किया है जिसमें
मिश्रकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओंको
ब्रिटेन द्वारा स्वीकार किये जानेका अनुरोध
किया गया है और कहा गया है कि ब्रिटेन
सूडानको पुनः मिश्रके साथ मिला दे और
मिश्रसे ब्रिटिश फौज तुरत हटा ली जाय।
नहस पाशा तथा उनके वफ्द दलके विरुद्ध
जिन लोगोंने साजिशें की थीं, वे भी अब
महसूस करने लगे हैं कि वफ्द दलकी नीति
ही मिश्रके भावी भाग्यके अनुकूल थी और
नहस पाशाने विदेशी प्रभावके विरोधमें जो
नीति अपनायी थी, वही मिश्रके लिये उप-
युक्त थी। वफ्द-दलने मिश्रमें ब्रिटेनकी
साम्राज्यवादी नीतिका सदाही विरोध
किया था और स्वदेशकी स्वाधीनताके
लिये वह सब तरहका बलिदान चढ़ानेको
तैयार था। इस लिये ब्रिटिश कूटनीतिज्ञों-
की भेद-नीतिने मिश्रमें भी अपने हथकण्डे
फैलाये और मिश्रके 'राजभक्तों'के साथ
साजिशें कीं। किन्तु मिश्रका लोकमत
वफ्द दलके साथ था। अतः निर्वाचनोंमें
उसे कोई पराजित नहीं कर सकता था।
इस लिये वफ्द दलको हटानेके लिये अनि-
यमित एवं आपत्तिजनक उपायोंका अवल-
म्बन किया गया। किन्तु वफ्द दलकी
नीतिका ही अवलम्बन करनेमें मिश्रके दूसरे
दलवाले भी स्वदेश कल्याण समझते हैं और
उन्होंने अपनी उक्त संयुक्त मांगें रखी हैं।
फारस और फिलस्तीनके बाद अब मिश्रने
भी ब्रिटेनकी वैदेशिक नीतिका विरोध
करना शुरु किया है। इस प्रकार मध्य-
पूर्वका एक पूरा गुट ही ब्रिटेन विरोधी हो
रहा है।

कहानी

पाकिस्तान

---:o:---
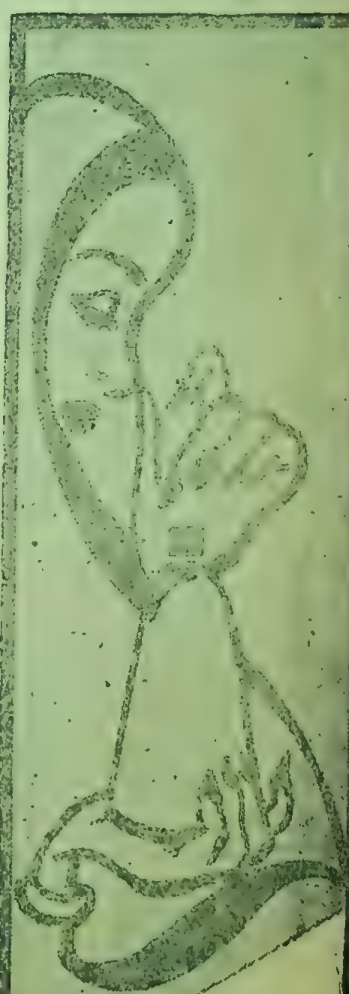
ले०—श्री आदित्य

अमीनाकी मां इतने सवेरे जाग जायेगी इसका मुझे गुमान भी न था। इसलिये अकबका कर उठ बैठा और जी कड़ा करके बरपा होनेवाली मुसीबतके लिये कमर कसने लगा।

अभी जमीन—आसमानके कुलाबे मिलाकर अन्दाज लगा ही रहा था कि अमीनाकी मांने रोनी आवाजमें कहा—"कुछ खबर भी है, आज आखिरी दिन है!"

"आखिरी दिन है! धोतियां तो मैं रामकी दूकानसे परसों ही ले आया हूं।"

"अजी कपड़ा जाय भाड़में, तुम्हारी याददाश्त ऐसी न होती तो मुझे यह दिन देखना पड़ता कि गलेमें एक हुमेल भी नहीं।"

फर वही हुमेलकी बात शुरू की। मैं पूछता हूं कि माजरा क्या है?"

"माजरा क्या है? अपने पड़ोसी हाजी साहब भी आज सुबह चार बजे ही चले गये।"

"हाजी साहब सुबह चले गये और सुभान मियां रात आ गये इन सब बातोंसे मतलब, असल बात क्या है, वही कहो न?"

"हां, तुम्हें दीन दुनियांसे क्या मतलब क्योंकि मरना तो मुझे है।"

"देखो सुबह सुबह अगर तुमने मरनेकी बात उठायी तो मैं बरदाश्त न कर सकूंगा।"

"हां, बरदाश्त तुम क्यों करोगे—बरदाश्त तो मैं करूंगी क्योंकि बांदी बननेका सरखत लिख दिया है।"

"सरखत जाय चूल्हेमें, मैं पूछता हूं कि असल बात क्या है?"

"याद नहीं आज ९ अगस्त १९६२ है और पाकिस्तान जानेकी मुफ्ती गाड़ी आज के बाद फिर न मिलेगी। आज जानेसे हिन्दुस्तानकी सरकार एक हजारका चेक भी देगी। लेकिन आज न गये तो सब हड़प।"

अमीनाकी मां की इस बातने "एटम बम" का काम किया। मैं हड़बड़ा कर पलंग के नीचे कूदा तो पासकी मेज उलट गयी और उस परके सोफियाने गुलदस्ते जमीन पर गिर कर टूक टूक हो गये। अमीनाकी मां अगर मौके पर मुझे पकड़ न लेती तो मेरे सामनेके दो दांत जरूर गायब हो जाते। खैरियत, अमीनाके अब्बाके दांत बच गये और वे अब भी कफसे उन्हें आइनेमें देख सकते हैं।

\+ \+ \+

शामको अमीना, अमीनाकी मां और अमीनाके अब्बा स्टेशन पहुंच और पाकिस्तान जानेकी मुफ्ती स्पेशल-ट्रेन पकड़ी। ट्रेनमें अधिक भीड़ न थी क्योंकि जिनको जाना था, वे पहले ही जा चुके थे। पाकिस्तानी सरकारने लोभ भी कम न दिया था, उसने ऐलान कर दिया था कि जो भी मुसलमान हिन्दुस्तानसे पाकिस्तान आयेगा उसे चार सौगातें दी जायेंगी। चारों सौगातें बड़े बड़े पोस्टरोंमें इस प्रकार छपी हुई थीं:—

पाकिस्तानके हर शख्सको क्या मिलेगा?

१—एक पक्का मकान।

२—नकद पांच हजार रुपये।

३—दो बीबियां।

४—एक मशीनगन।

नोट:—हर बच्चेकी आमद पर पाकिस्तानकी सरकार मां-बापको एक हजार रुपये इनाम देगी।

इन्हीं पोस्टरोंको पढ़कर अमीनाकी मां ने बहुत कह सुन कर अमीनाके अब्बाको हिन्दुस्तान छोड़ने पर राजी कर लिया था लेकिन अपनी मशहूर याददाश्तकी वजहसे अमीनाके अब्बा इस अहम बातको भूले रहे।

* * *

तीसरे दिन रात ९ बजे ट्रेन पाकिस्तानकी सरहद पर पहुंची और हर एक डिब्बेके सामने एक एक पुलिस अफसर और कई सिपाही खड़े हो गये। अमीनाकी मां पुलिसको देखकर घबड़ा गयी लेकिन अमीनाके अब्बाने ढाढ़स बंधा कर कहा कि पाकिस्तानमें कोई चोर-बदमाश न आ जाय इसी लिये यह इन्तजाम है। किन्तु पुलिस अफसर जिस कड़ाईसे इनकी ओर घूर रहा था उससे अमीनाके अब्बाका भी दिल दहल उठा। हिम्मत करके आपने पूछा, "क्या हमें यहीं उतरना होगा?"

अफसरने इनकी बातका कोई जवाब तो दिया ही नहीं किन्तु कड़े शब्दोंमें सिपाहियोंको हुकम दिया, "इन्हें यहीं उतार लो और थाने ले चलो।"

अमीनाके अब्बा बहुत रोये पीटे और मिन्नतें कीं पर उनकी एक न सुनी गयी और उन्हें थाने पहुंचाया ही गया। थानेमें एक बड़े अफसरने उन्हें सामने खड़ा करके जिरह शुरू की और अमीनाकी मांकी ओर इशारा करके पूछा, "यह तुम्हारी कौन है?"

अमीनाके अब्बाने थरथर कांपते हुए जवाब दिया, "मेरी बीबी।"

"कभी नहीं, मुसलमान औरत साड़ी नहीं पहनती।"

अमीनाके अब्बाने सफाई देते हुए कहा "हम बंगाली मुसलमान हैं और हमारी औरतें साड़ी ही पहना करती हैं।"

"ठीक—पर यहां धोखा नहीं चल सकता क्यों कि मैं यह भी जानना चाहूंगा कि तुम्हारे दाढ़ी क्यों नहीं है?"

"मैंने तो कभी दाढ़ी नहीं रखी इस जमानेमें मुसलमानोंमेंसे बहुतेरे दाढ़ी नहीं रखते—मि० जिन्ना भी तो—"

"चुप नापाक। तू जासूस है और हमारे पाकिस्तानका भेद लेने आया है। तुझे फांसीकी सजा दी जाती है। सिपाहियों इसे फौरन फांसी पर लटका दो।"

अमीनाके अब्बाने दलील देकर समझानेकी बेहद कोशिश की पर सब बेकार और सिपाही उन्हें घसीट ले चले। फांसीके तख्तेके पास उनके गलेमें रस्सी डाल गयी। अमीनाके अब्बा पसीने पसीने हो गये और उनके गलेसे आवाज तक न निकल रही थी।

अचानक आंख खुल गयी और अमीनाके अब्बाने अपनेको बिस्तर पर पाया और जानमें जान आयी। इस घटनाके बाद अमीनाके अब्बा बिलकुल बदल गये और जहां वे पाकिस्तानके लिये लड़ने मरनेके लिये तैयार रहते थे वहां वे उसके नाम पर हजारों गालियां सुनाने लगे।

देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद

(११ वें पृष्ठका शेषांश)

कला आपके हाथों बिक गयी है। उसपर सादगीने तो सोनेमें सुहागका काम कर दिया है। सादगी इतनी सादी है कि उसे देखकर दर्शकोंको कभी कभी ईर्ष्या होने लगती है। शानका नामो निशान नहीं। सदाकत आश्रमका दरवाजा प्रत्येक दर्शनार्थीके लिये सर्वदा खुला रहता है। आपके राज्यमें रोक-टोकका कोई प्रश्न नहीं पैदा होता। बुद्धिमानीमें भी आपकी योग्यता प्रशंसनीय है। सैद्धान्तिक मतभेद होते हुए भी आप किसीसे व्यक्तिगत विरोध करनेके पक्षमें नहीं हैं। आजतक देशके किसी भी कोनेसे यह आवाज उठती हुई नहीं सुनायी पड़ी है कि राजेन्द्र बाबू किसी के विरोधी हैं या उनका कोई विरोधी है। मन, वचन और कर्मकी यह समानता आपके ही भीतर पायी जाती है।

देशके भाग्यविधाता होते हुए भी आप गांधीवादके बिहारी संस्करण कहे जाते हैं। आपका प्रधान कार्यक्षेत्र बिहार ही रहा और बिहारकी मिट्टीमें आपने नवजीवनका बीज डाल दिया है। यों भारतके इतिहासमें बिहारका स्थान बहुत ही गौरवमय रहा है तथा आजादीकी लड़ाईमें १८५७ से लेकर १९४२ तक वह न केवल प्रमुख भाग लेता आ रहा है वरन् सर्वश्रेष्ठ भी है। नवजीवनका यह स्रोत बिहारकी भूमिको फाड़कर राजेन्द्र बाबूकी सेवा और त्यागके बलपर ही आज सारे प्रान्तमें फैल गयी है। बिहारकी उर्वरा भूमिमें जागृतिके जितने भी बीज बो दिये गये सबके सब हजारों हजारकी संख्यामें फैल गये हैं। सरकारी दमनकी गोलियोंने निरपराध और मासूमोंके खून अमीनपर गिराकर बिहारकी जमीनको इतना उर्वर बना दिया है कि उस धरतीसे प्रत्येक क्षण आग पैदा करनेकी शक्ति हो गयी है।

आज राजेन्द्र बाबू बिहार और भारतकी सीमाको लांघकर अखण्ड मानवताकी श्रेणीमें जा बैठे हैं। उन्हें देश और प्रान्तकी सीमा बांधकर नहीं रख सकती। अपने कर्मोंसे अपनी महानताको इतना उन्नत और महान बनानेवाले इस परम त्यागी तपस्वी नेताके जीवन आलोकसे आज सारा संसार प्रकाशित हो रहा है किन्तु ब्रिटेन अपनेको इस प्रकाशसे वंचित कर निशाचर बननेकी न जाने क्यों इच्छा रखता है।

समाज दर्पण

बेटा तुम कहां हो !

यह एक ऐसा हेडिंग है जो नित्यप्रति अखबारोंमें विज्ञापनके रूपमें देखनेको मिलता है। अत्यन्त करुण भाषाका प्रयोग कर इस विज्ञापनको इतना करुणाजनक बना दिया जाता है कि यदि सचमुचमें 'बेटा' कहीं पढ़ता होगा तो अवश्य ही उसकी आंखोंसे दो बूंद आंसू कुछ क्षणोंके लिये अवश्य निकल पड़ते होंगे। यह तो मानी हुई बात है कि विज्ञापन कारण नहीं होता बरन परिणाम होता है। इसके पीछे जो घटना छिपी होती है वह बहुत ही भद्दी एवं रहस्य पूर्ण होती है। बाप बेटेका जन्मके बाद इस लाड़ प्यारसे पालन करता है कि बजाय बननेके वह बिगड़ने लग जाता है। अपनी स्थिति और अपनी मर्यादाके प्रतिकूल बेटेके लिये सब कुछ न्योछावर करनेकी अदम्य लालसाका भाव बेटे पर अनुचित रूपमें पड़ता है और वह उससे नाजायज फायदा उठा लेना चाहता है जो स्वाभाविक भी है। बचपनमें उसके जिदको प्रश्रय दिया जाता है। वह जो कहता है उसे ही पूरा किया जाता है या उसे नये-नये शौकसे परिचित कराया जाता है। बचपनकी डाली गयी ये आदतें उसकी उम्रके साथ बढ़ी होती हैं तो ये बड़ा भयानक रूप प्रकट करती हैं। मोहान्ध होकर पिता जो कुछ करता यदि वह स्थिर होकर उसपर विचार करे तो अवश्य ही वह भविष्यके उस कष्टसे जो उसे उस समय होता जब वह बूढ़ा हो जाता है और उसके सहनेकी शक्ति क्षीण हो जाती है छुटकारा पा जाय। बेटेको राजकुमारकी तरह रखनेकी लालसा प्रत्येक पिताके हृदयमें अनलकी तरह धधकती रहती है। यह है पर यह भी सत्य है कि यदि उस लालसाकी पूर्ति नियन्त्रित रूपमें नहीं की गयी तो वह आगे चलकर इतना खतरनाक हो जाता है कि फिर बापको विज्ञापन निकालनेकी जरूरत पड़ती है और समाजमें वह …की पदवीसे विभूषित होता है।

इन सारी परिस्थितियोंको मद्देनजर रखते हुए दोष पुत्रको नहीं वरन पिताको दिया जा सकता है। अतएव जो पिता अपने पुत्रको बरबाद कर चुके हैं वे …पाके पात्र बन गये हैं किन्तु जो भावी … हैं उन्हें अवश्य ही अपने पुत्रके लालन …की क्रियाको नियंत्रित सीमाके भीतर … चाहिये ताकि वे अपने पुत्रको आदमी … सकें।

…गियोंकी गुण्डागिरी

…ये दिन देशके विभिन्न स्थानोंसे …म लीगके समर्थकोंकी गुण्डागीरीके …र आते रहते हैं। आगरामें केन्द्रीय …लीके शहरी मुस्लिम निर्वाचन क्षेत्रके …के अवसरपर दंग-फसाद हुआ, दुकानें … गयीं, कालेजके कम्पाउण्ड घुसकर कालेज …र्थियोंको पीटा गया, होस्टलमें रहने…का नगद रुपया और अन्य चीजें लूटी … और होस्टलके एक नौकरकी हत्या तक …की गयी। बंगालसे भी लीगके समर्थकों …की अनुचित हरकतोंकी खबरें आरही …। …में बंगाल असेम्बलीके स्पीकर मि० नौशेरअलीके साथ एक चुनाव सभासे मार-पीट करनेकी कोशिश की गयी। केन्द्रीय असेम्बलीके स्वतन्त्र उम्मीदवार सर अब्दुल हलीम गजनवीने शिकायतकी है कि जमालपुरमें उनकी गाड़ीपर पत्थर फेंके गये और नन्दिना रेलवे स्टेशनपर लीगी प्रदर्शनकारियोंने उनके रेलके डिब्बेपर ईंट और पत्थर फेंके। बंगालके भूतपूर्व प्रधान मंत्री मि० फजलुलहक जब गजनवी साहबके समर्थनमें चुनाव-प्रचार करने मैमनसिंहसे नेत्रकोना जा रहे थे तो रास्तेमें लीगी समर्थकोंने हमला करके उनकी पार्टीकी दो बसोंको नुकसान पहुंचाया और उनके ड्राइवरोंके सख्त चोट आयी। स्वयं मि० हकपर पत्थरों और धूलकी वर्षा की गयी और उन्होंने भागकर एक हिंदू जमींदारके घरमें शरण ली। बंगालकी इन घटनाओंकी ओर वायसराय और बंगाल गवर्नरका ध्यान आकर्षित किया गया है। मजेकी बात यह है कि इन उपद्रवोंके समय अमन और व्यवस्थाकी ठेकेदार पुलिस या तो अपनी असमर्थता प्रकट करती है या उदासीन दर्शक बन जाती है। प्रत्येक समझदार आदमी इस गुण्डागीरीकी निंदा करेगा। लीगके भड़कानेवाले भाषणों और लेखोंका ही यह अवांछनीय परिणाम हो रहा है। यह देशके सार्वजनिक जीवनको घसीटकर निकृष्टतम सतहपर ले जाना है यह लीगके जिम्मेदार नेताओंके गंभीरतापूर्वक सोचनेका विषय है कि उनके अनुयायियों द्वारा इन फासिष्ट तरीकोंका इस्तेमाल स्वयं कहां तक उनके हितमें होगा।

स्त्रीका दान

बात बहुत ही सनसनीखेज है और उसके पीछे छिपा रहस्य भी कम दुखदायी और दर्दनाक नहीं है। घटना काशीकी है। शायद वहांके पंडे यात्रियोंसे कहते हैं कि तुम अपनी पत्नीको भी यहां दान कर सकते हो और मूल्य देकर उसे फिर खरीद भी सकते हो। शास्त्रोंमें इसपर क्या विचार किया गया है यह बहुत लम्बी और दूरकी दलील है जिसे हठमार पण्डे कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे या उस पर ध्यान न देंगे। धर्मके इस स्वरूप परिवर्तनके पीछे पैसा कमानेकी लालसा है। यात्रियोंसे अधिकसे अधिक पैसा वसूल करनेके लिये यह तिकड़मका बाजार फैलाया गया है। स्त्री दान करनेकी बात यात्रियोंको बहुत ही सीधे और सरल रूपमें समझायी जाती होगी और वे गांव गंवईके आदमी बहुत ही जल्द इस चालबाजीमें आ जाते होंगे और पत्नीका दान कर बैठते होंगे। इस बातपर पंडाजीकी ओरसे मोल तोलकी अजगरी बात चीत शुरू होती होगी और यात्रीकी कमरके "होंड़े"का सारा पैसा एक एक कर झाड़ लिया जाता होगा। यह पैसा अकेले पंडाजीके ही घरमें नहीं जाता होगा वरन कोतवालीमें भी जरूर जाता होगा। इस स्थितिमें जो गरीब पड़ जाता होगा उस पर क्या बीतती होगी यह केवलमात्र सोचा जा सकता है समझा नहीं जा सकता। पत्नीको फिरसे पानेके लिये कोई भी व्यक्ति जानकी बाजी लगा दे सकता है फिर वह अगर मेहनतकी कमाईका पाई-पाई पण्डाजीके सामने गिन देता है तो क्या बुरा करता है। मनकी व्यग्रतासे मुक्त होनेके लिये जब मनुष्य खून कर सकता है तो क्या वह पैसे नहीं दे सकता। पंडाजीकी इस हरकतको धर्मके पृष्ठ या श्लोक नहीं रोक सकते रोक सकता है तो केवल वह लाल मुरेठा जिसके मुंहमें गाली हाथमें डण्डा और दिमागमें कानूनका फन्दा होता है। अन्यायके पैसे पाते हुए भी वह शुरू कर अन्यायका समर्थन नहीं कर सकता। इस लिये जबतक दो चार ऐसे मुकदमे अदालतमें नहीं पहुंच जाते स्त्री दान करनेका फतवा नष्ट नहीं हो सकता। भविष्यमें उन धार्मिक व्यक्तियोंको जो इसे धर्मके प्रतिकूल समझते हैं चाहिये कि वे इसके ताकमें लगे रहें और सुअवसर आते ही उसे पुलिस और कचहरी तक ले जायं तभी यह काण्ड बन्द हो सकता है वरना पुलिसका नाजायज सहयोग पाकर यह दिनों दिन फूलता फलता रहेगा।

शान्तिस्थापनामें नारी

युद्धके परिणामस्वरूप जो भीषण विनाशलीलाएं हुआ करती हैं, उनमें सबसे अधिक क्षति नारियोंको ही पहुंचती है। द्वितीय महायुद्धमें लाखों नारियां विधवाएं बनीं, हजारोंके पुत्र और भाई निहत हुए, हजारों स्त्रियां अपना सतीत्व खोकर दर-दरकी ठोकरें खानेको बाध्य हुईं और हजारों युद्धजनित कष्टोंका शिकार बनीं। इसलिये विश्वमें युद्धकी पुनरावृत्ति रोकनेका दायित्व नारी समाजपर बहुत ह. । अभी हालमें पेरिसमें अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन हुआ है, जिसमें भारत सहित ४१ राष्ट्रोंकी महिला प्रतिनिधियोंने योगदान किया। सम्मेलनकी अध्यक्षाने संसारकी समस्त नारियोंसे अनुरोध किया कि विश्व-शान्ति और गणतन्त्रकी स्थापना करनेके लिये उनको पूरा प्रयत्न करना चाहिये। युद्धमें अपने प्राणोंकी बलि चढ़ानेवाले पुरुषोंने नारी समाजपर इस कार्यका बहुत बड़ा दायित्व डाल दिया है अतएव समस्त संसारकी नारियोंको संगठित होकर ऐसा प्रयत्न करना चाहिये कि फिरसे युद्धकी पुनरावृत्ति न हो। सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रमें महिलाओंके कार्य बहुत प्रभावशाली साबित हो सकते हैं किन्तु अपने इस लक्ष्यको पूरा करनेके लिये नारियोंको अत्यधिक प्रयत्नशील और सुसंगठित होना होगा।

अनुचित सुविधा

साधारणतः ऐसा होता है कि मोटर बसों, ट्रामों आदिमें पुलिसवाले बिना किराया चुकाये यात्रा करते हैं और कभी कभी अपने साथ दो चार साथियों तथा मामलेके गवाहोंको भी गाड़ीमें चढ़ा लिया करते हैं। युक्तप्रान्तीय सरकारके पुलिस विभागके सदर मुकामसे सभी पुलिसवालोंके नाम एक गश्ती चिट्ठी जारी की गयी है, जिसमें कहा गया है कि कोई भी पुलिस अफसर बिना किराया दिये किसी गाड़ीसे यात्रा नहीं कर सकता और उन्हें ऐसी सुविधा भी नहीं मिलनी चाहिये क्योंकि सरकार उनके आवागमनका खर्च देता है। युक्तप्रांतके पुलिस विभागका यह आदेश सराहनीय है और हम आशा करते हैं कि अन्य प्रांतीय सरकारें भी ऐसी व्यवस्था करेंगी जिससे पुलिसवाले किसी प्रकारकी अनुचित सुविधा नहीं उठा सकें।

विवाहोंपर प्रतिबन्ध

रियासतोंमें शासकोंकी स्वेच्छाचारिताको देखकर कभी-कभी क्रोधके बदले हंसी आ जाती है। इन अधिकार मदांध मनुष्यों (?) को आज द्वितीय विश्वव्यापी युद्धके बाद भी २० सदी पहलेकी नीतिका अनुसरण करनेमें हिचक नहीं होती। कैसे कहा जाय कि इनमें विचारशक्ति और विवेक है। मोटर और हवाई जहाजपर चढ़ेंगे, रेस और विलायती शराब पीयेंगे लेकिन जब अपनी प्रजाके साथ व्यवहार करना होता है, जिसकी खूनकी कमायी छीनकर वे शासक बने बैठे हैं तो फिर वही २० सदी पहलेका फितूर उनपर छा जाता है। प्रजाके साथ व्यवहार, राजनीतिक एवं सामाजिक अवसरोंपर, वे विवेकरहित ढङ्गसे करेंगे, चलासे उसमें मनुष्यताका आभास मात्र न रहा हो। जन्म दिवस, राज्यारोहण दिवस, निधन तिथि आदि खास अवसरोंपर प्रजाको विशेष प्रकारसे समारोह करने या शोक मनानेको बाध्य करना तो साधारण बात है। ब्याह शादीके लिये प्रजासे जबरन धन वसूल करना तो रोजमर्राकी बात है लेकिन आश्चर्य तो तब होता है जब यह आज्ञा की जाये कि जब राजा साहब खाना खाने बैठें तो प्रजा न खाये, स्नान करते हों तो प्रजा स्नान न करे। इसी प्रकारका एक समाचार मिला है कि किसी पहाड़ी राजाने यह घोषित किया है कि जबतक राजकुमारीका विवाह न हो जाये राज्यमें कोई विवाह न करे और राजकुमारीके विवाहके लिये धन दे। दूसरी आज्ञा तो अजीब नहीं मालूम होती जबकि विजय समारोहके लिये भारतमें ब्रिटिश सरकारके एजेण्टोंने भी जबरन चन्दा वसूल किया है लेकिन जबतक कोई व्यक्ति विवाह न करे इसके लिये तो उनकी निन्दा करना अन्धेको दीपक दिखाना है। इसके प्रतिवादमें तो इतना ही कहना पर्याप्त है, परमात्मा इन्हें सुबुद्धि दे—इनकी आंखें खुलें।

अभिनेता और निर्देशक-विनायक

लेखक—श्री मुकुन्ददेवनारायण सिंह, बी० ए०

अपने बाहुबलसे एक मामूली स्कूल मास्टरसे उच्च कोटिका निर्माता बन जाना कोई मामूली बात नहीं। विनायकका जन्म गरीब माता पिताके घरमें हुआ था। ९ वर्षकी अवस्थामें इनके पिताका देहान्त हो गया। विनायककी प्रतिभा देखकर उनकी बुद्धिमती माताने उस नाजुक अवस्थामें भी जहां तक बन पड़ा उन्हें अच्छी शिक्षा दी। बी० ए० के बाद अपने जीवन निर्वाहके लिये बीस रुपये मासिक पर एक शिक्षककी जगह मिली। तत्पश्चात विनायकके बड़े भाईश्री बाबूराव पेंढारकर उन्हें सुविख्यात निर्देशक श्री शान्तारामके पास ले गये। शांतारामने देखा कि विनायकमें केवल एक स्कूलके बच्चों

निर्देशक—श्री विनायक

को ही नहीं अपितु इस पददलित देशके सभी बच्चोंको शिक्षा देनेकी लगन और योग्यता है। विनायकको मौका दिया गया और २७ वर्षकी अवस्थामें प्रभातके साथ अपना सम्बन्ध स्थापित कर वे शान्तारामके पक्का चेला बन गये।

कुछ वर्षों तक विनायकने शान्तारामके अधीन कलाकार, सहकारी दिग्दर्शक और टेक्नीशियनके रूपमें कार्य किया और इस प्रकार चित्र निर्माण सम्बन्धी प्रत्येक विवरणसे वे अवगत हो गये। अपने ऊपर पूरा विश्वास रख कर विनायक 'कोल्हापुर सिनेटोन' में सम्मिलित हुए और महाराष्ट्रके प्रथम सामाजिक चित्र 'आरफंस आफ सोसायटी' का निर्माण किया।

बाबूराव पेंढारकर तथा केमरा मैन श्री पी० एस० नायककी साझेदारीमें विनायकने १९३६ में 'हंस पिक्चर्स' की स्थापना की और कई चित्रोंका निर्माण किया। इन्होंने "छाया," "धर्मवीर," "प्रेमवीर," "ज्वाला," "ब्रह्मचारी," "देवता," "ब्राण्डी की बोतल," तथा "घरकी रानी," जैसे सुधारक चित्रोंका निर्माण किया जिनकी जरूरत भारतको अत्यधिक थी। इनमें "ब्रह्मचारी," "ब्रांडी की बोतल," और "घरकी रानी" चित्र बहुत सफल सिद्ध हुए और इन चित्रों द्वारा विनायकके उद्देश्य और आकांक्षाकी पूर्ति बहुत हद तक हुई।

इसके बाद 'हंस पिक्चर्स' एक लिमिटेड संस्थाके रूपमें परिवर्तित कर दिया गया जिसका नाम "नवयुग चित्रपट लिमिटेड" रखा गया और विनायक इसके मैनेजिंग एजेण्टोंमेंसे एक थे। इस संस्थाका प्रथम चित्र मराठी भाषामें "हन्ट फार ए हसबैन्ड" अर्थात् 'पतिकी तलाश' था। नन्दा द्वारा इसका पंजाबी रूपान्तर "कुरमई" ने उत्तर भारतमें लगातार चलने वाले पिछले सभी चित्रोंका रेकार्ड तोड़ दिया।

सन् १९४२ विश्वके इतिहासमें एक हलचलका समय माना जाता है और इसी वर्ष विनायकने अपनी निजी संस्था 'प्रफुल्ल पिक्चर्स' की स्थापना की, जिसका तृतीय वार्षिकोत्सव हालहीमें सेठ चन्दूलाल शाहके सभापतित्वमें राजकमल कला मन्दिरमें मनाया गया था। इस समय विनायक महाभारत कालीन चित्र 'सुभद्रा' बनानेमें उलझे हुए हैं और इस चित्रका कार्य द्रुतगतिसे चल रहा है।

फिल्मी दुनियांकी खबरें—

सनसनी खेज घटना

लाहौरके एक प्रमुख सिनेमा पत्रने शोरे पिक्चर्सकी आउट डोर शूटिंगके सम्बन्धमें बड़ा ही सनसनीखेज रहस्योद्घाटन किया है। यह घटना ऐसी है, जिसको पढ़कर सिनेमा उद्योगसे दिलचस्पी अथवा सहानुभूति रखनेवाले सभी व्यक्ति अत्यन्त क्षुब्ध होंगे। कहा जाता है कि गत जून मासमें निर्देशक रूपकुमार शोरे, ध्वनि इंजिनियर कपूर, मिस मनोरमा और उसका पिता डेनियल, मिस जमुर्रद और उसकी माता शोरे पिक्चर्सके एक चित्रकी आउटडोर शूटिंगके लिये काश्मीर गयी थीं। काश्मीर में यह पार्टी एक सुरम्य होटलमें ठहरी और आउटडोर शूटिंगके बदले उसका कार्यक्रम सुरा-सुन्दरी तक सीमित रहा। मिस मनोरमाके पिताने जब इस सम्बन्धमें प्रतिवाद करना चाहा तो उसे निकाल बाहर कर दिया गया। मि० डेनियलने जो वक्तव्य दिया है, वह वास्तवमें बड़ा ही दुखद है। मि० डेनियलने कहा है कि शोरे पिक्चर्स वालोंने उसकी पुत्री मनोरमाको उससे अलग कर दिया है। आउटडोर शूटिंगके नामपर काश्मीरमें जो घटनाएं हुई हैं वे अत्यन्त अनैतिक और अशिष्ट थीं।' आगे मि० डेनियलने कहा है कि 'मैं अपने अनुभवोंसे ऐसा कह सकता हूं कि सिनेमा उद्योगमें समाजकी भद्र महिलाओंको कभी नहीं प्रवेश करना चाहिये और मैं दूसरे लोगोंसे भी अनुरोध करूंगा कि वे अपनी लड़कियोंको सिनेमा क्षेत्रमें प्रवेश नहीं करने दें। शोरे पिक्चर्सके खिलाफ मि० डेनियलने जो अभियोग लगाये हैं, वह समस्त भारतीय सिनेमा उद्योगके लिये एक कलंककी बात है। भारतीय सिनेमा उद्योग आज इतना उन्नत हो चुका है कि सम्भ्रान्त कुलकी युवतियां इसमें बिना किसी हिचकिचाहटके अब योगदान करने लगी हैं, लेकिन इस घटनासे भद्र महिलाओंको इस क्षेत्रमें आने से हिचकिचाहट होगी। बड़े ही दुःखका विषय है कि उत्तर भारतके किसी भी एसोसियेशनने इस ओर ध्यान नहीं दिया है। हम आशा करते हैं कि शोरे पिक्चर्स इस विषय पर शीघ्र ही प्रकाश डालेगा।

श्रीमती कानन देवी, जो आजकल तीन फिल्मोंकी तीन विभिन्न भूमिकाओंमें कार्य कर रही हैं।

भारतमें रंगीन चित्र

भारतमें शीघ्र ही रंगीन चित्रोंका निर्माण आरम्भ होगा और १९४६ में भारत के अन्दर प्रथम रंगीन चित्र प्रस्तुत हो जायगा। अबतक हमें यह पता नहीं चल सका है कि यह बात कहांतक सम्भव है क्योंकि कुछ दिन पहले हमने सुना था कि अमेरिकासे रंगीन चित्र निर्माणके कुछ विशेषज्ञ भारत आये हैं और वे भारतमें रंगीन चित्रोंके निर्माणके लिये भारतीय निर्माताओं की मदद करेंगे लेकिन उनकी शर्तें इतनी कड़ी थीं कि किसीको उनके साथ का[म] करनेका साहस नहीं हुआ। इसका प्रधान कारण यह है कि रंगीन चित्रोंके निर्माण[की] प्रक्रियापर अमेरिकाके एक सिण्डीकेट[का] एकाधिकार है और वह सिण्डीकेट ही रंगीन चित्रोंका निर्माण करता तथा आवश्यक सामान भाड़ेपर देता है। इस मदमें व[ह] बहुत अधिक पारिश्रमिक लेता है, साथ ही लाभपर हिस्सा भी लेता है। मालूम हुआ है कि भारतमें भी एक ऐसे ही सिण्डीकेटकी स्थापना की जा रही है और रणजीतके सेठ चन्दूलाल शाह उसके प्रधान कर्णधार होंगे। हमें आशा है कि यह सिण्डीकेट भारतीय चित्रोंको रंगीन स्वरूप प्रदान करनेमें शीघ्र सफल होगा।

° ° °

प्रोड्यूसर साधना बोसने स्थानीय ... काली फिल्ममें गत सप्ताहसे 'अजना ...' नामक फिल्मकी शूटिंग आरम्भ कर दी ... जिसमें शाहू मोदक तथा श्रीमती बोस ... हैं। इनके अलावा अन्य अनेक पात्र-पात्री ...

\+ \+ \+

डाइरेक्टर अपूर्व मित्र इसी मास[के] मध्यतक अपना सुन्दर अर्द्धांग पाकर '...' हो जायेंगे। आशा है कि जीवन ... इनका यह नवीन यद्यपि वास्तविक ... नय सफल होगा।

\+ \+ \+

द्रुतगतिसे अग्रसर हो रहा है। ... लिये कमलदास गुप्त तथा आर्ट डाइ[रेक्टर] ... बाबूराय भी उनके साथ हैं। फिल्म ... वान कृष्णकी दिव्य बाललीलाके 'भग[वान]' ... निर्मित हो रहा है और देवकीबालाका ... उसे एक सजीव एवं भव्य चित्र बनाने ... इसमें किसे सन्देह हो सकता है। परंतु ... और कानन प्रधान भूमिकामें हैं और ... दलका दल अन्य कलाकारोंका है। ... गीतों तथा रंगभरे नृत्योंसे एक बार ... वृन्दावनकी 'लीला' का दृश्य सामने ... सम्पर्कमें रहनेवालोंका यह पूर्ण विश्वास ...

\+ \+

सुना जाता है कि फिल्मिस्तान ... रहा है और पतझड़के बाद बहार ... लेकिन इण्डिया फिल्म लिमिटेड ... जो कि एक बहुत बड़ा कारपोरेशन ... ऐसी खबर है कि यह बहार आयी ... बार महंने बाद। चमनके माली ... रायबहादुर चुन्नीलाल मैनेजिंग डाइरेक्टर ... बहार आने पर चमनका मजा लेनेवाले ... फूलने कानमें धीरेसे कहा कि इस ... परिवर्तनमें कपूरचन्द लिमिटेडका हाथ ...

चलतो चक्को

पंजाब मुस्लिम लीगके एक दलने मि० जिन्नासे मांग की है कि लीगपर कम्युनिस्ट छा रहे हैं अतः इनको लीगसे निकाला जाय।

—एक समाचार।

बेचारे! लीगके साथ भी इनकी कोई जगह सुरक्षित नहीं रहेगी क्या?

० ० ०

दिल्लीका एक समाचार है कि वहांकी कम्युनिस्ट पार्टीने भी आजाद हिन्द फौजके लिये चन्दा इकट्ठा किया।

—एक समाचार।

'देशद्रोहियों'के साथ सहानुभूति प्रदर्शित करनेकी यह गलती आज ये 'देशभक्त' कैसे करने लगे

० ० ०

पैर छूनेके बदले लोग मेरी बात मानना सीखें।

—महात्मा गांधी।

लेकिन यही तो मुश्किल है!

० ० ०

क्या तृतीय महायुद्ध प्रारम्भ होकर ही रहेगा?

—एक शीर्षक।

बैठे बिठाये कुछ हलचल तो रहेगी। क्या हर्ज है?

० ० ०

इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ साइन्सके डाइरेक्टर श्री ज्ञानेन्द्र घोषने मद्रासमें भाषण देते हुए कहा है कि भारतके जीवनस्तरको ऊंचा उठानेके लिये वैज्ञानिक अनुसन्धानों व आविष्कारोंकी बहुत आवश्यकता है।

—एक समाचार।

जी हां, आवश्यकता है तो, परमाणु बम अनुसन्धानोंकी?

० ० ०

इण्डोनेशियामें ब्रिटेनकी चालें निन्दनीय हैं।

—एक शीर्षक

किसी अन्य जगह वे स्तुत्य भी हैं क्या?

* * *

अमेरिकन राष्ट्रके सामने जो भविष्य आज जितना काला प्रतीत हो रहा उतना युद्धारम्भ होनेके बाद कभी नहीं था।

—मि० हमनरवेलस।

तो क्या हुआ? सफेदी करवा देनेसे नहीं हो जायगा?

० ०

अस्वस्थताके कारण डा० श्यामा प्रसाद चुनाव नहीं लड़ेंगे।

—एक समाचार।

चुनावमें हार जानेकी अपेक्षा यह ज्यादा सम्मानपूर्ण ढङ्ग है!

० ० ०

हिटलरकी प्रस्तर-मूर्ति लन्दनमें ६॥ रुपयेमें खरीदी गयी।

—एक समाचार।

कोई बात नहीं। चर्चिल साहबकी भी साढ़े छैः छैः रुपयेमें तो बिकी ही है।

* *

एक सुन्दर युवतीने उक्त मूर्तिको ८२९ रुपयेमें खरीदना चाहा था। उसने पत्रकारोंको बतलाया कि मैं इसे भावुकतावश खरीदना चाहती थी।

भावुकता.........और वह भी सिर्फ हिटलरकी प्रस्तर मूर्तिके साथ? किसी और को चुना होता तो कुछ बात थी!

* * *

युद्ध समाप्तिके बादकी घटनाओंसे प्रतीत होता है कि बहुत ही शीघ्र समस्त संसारमें नहीं तो कमसे कम एशियामें तीन बड़ी शक्तियोंका नाम 'तीन बड़े लुटेरे' पड़ जायगा।

—एक सम्पादकीय।

नाम नहीं साहब, यह तो उपनाम होगा उनका!

० ० ०

सन् '४२ की गड़बड़के वक्त लूटपाटमें हिस्सा लेनेके अभियोगमें आजमगढ़के एक डिप्टी कलक्टर और एक पुलिस इन्स्पेक्टर पर मुकदमा चलाया जा रहा है।

बहती गंगामें हाथ धोते वक्त भी चूक गये गरीब! कच्चे खिलाड़ी थे!

* * *

समाजवाद पनडुब्बियोंसे भी अधिक विनाशक है।

—श्री चर्चिल।

आपको इससे अभी कुछ और खतरा है क्या?

० ० ०

महात्मा गांधी और बंगालके गवर्नर केसीमें बार बार मुलाकातें हो रही हैं।

—एक समाचार

गांधीजी इनकी योग्यतापर बहुत मुग्ध मालूम देते हैं!

* * *

ऐसा समझा जाता है कि वायसराय लार्ड वावेल भी कलकत्तेमें गांधीजीसे मिलेंगे।

—एक समाचार।

ये भी कुछ नाम कमाना चाहते हैं क्या?

* * *

ब्रिटेनके कूटनीतिक और राजनेता अपने वाक्-जालमें चतुरसे चतुर शिकारको फंसानेमें संसार प्रसिद्ध हैं।

—एक सम्पादकीय।

अपनी प्रेमिकायें फंसानेके लिये नये-प्रेमियोंको भी इसका 'गुर' जान लेनेका सद्प्रयत्न करना चाहिये!

* * *

देखना है कि ब्रिटेनरूपी ऊंट ऐसी परिस्थितिमें किस करवट बैठता है।

—एक सम्पादकीय।

और अगर वह सिर्फ खड़ा ही रह गया तो?

* + +

अपने हृदयमें आग धधकती रखो!

—मौलाना आजाद।

कुछ मनचले नौजवान दबी जुबानसे वास्तव पूछना चाहते है—आग...प्रेमकी या कोई और?

* * *

आजाद हिन्द फौजके मुकदमेमें सरकारी गवाहोंके परस्पर विरोधी बयान।

—एक शीर्षक।

बहुत सी रटाई हुई बातोंको भी ये लोग बार-बार भूल जाते हैं?

* * *

मौजूदा परिस्थिति पर अनुमान लगाते हुए कुछ पत्रोंने लिखा है कि बंगाल सरकार द्वारा कुछ नये महत्वपूर्ण निश्चय किये जानेकी सम्भावना है।

कलकत्ताके बाहर भी कहीं गोली चलानेका निश्चय होना है क्या?

* * *

—रमते राम।

तीन साम्राज्योंका संघर्ष स्थल-फिलस्तीन

—oo—

(६ वें पृष्ठका शेषांश)

मई १९३९ में श्वेतपत्रमें घोषणा की गयी कि दस सालका संयुक्तकाल बीतनेके बाद फिलस्तीन स्वाधीन हो जायेगा। स्वाधीन फिलस्तीन ब्रिटेनसे सन्धि करेगा और उसमें यहूदी 'राष्ट्रीय घर' के अधिकार का संरक्षण किया जायगा। पांच सालतक प्रति वर्ष १०००० यहूदी फिलस्तीनमें बसाये जायेंगे और इनके अतिरिक्त २५००० शरणार्थी यहूदी बसाये जायेंगे। ७५००० यहूदियोंके बस जानेके बाद अरबोंकी सहमति के बिना और यहूदी न बसाये जायेंगे। १९१९ में फिलस्तीनकी आबादी ५८००० यहूदी और ६४२००० अरब थे—अर्थात् १० प्रतिशत यहूदी थे। १९४० में वे एक तिहाई हो गये। पांच सालकी अवधि ३१ मई १९४४ को समाप्त हो गयी। १९३९ के बाद से ४४००० यहूदी फिलस्तीन आ चुके हैं और ३१००० और यहां बसाये जानेका कोटा अभी बाकी है।

उपर्युक्त विवरणसे स्पष्ट है कि ब्रिटेन दोनों जातियोंको लड़ाकर अपना चौधरीपन कायम रखनेको समर्थ रहा। भारतको जानेवाले ब्रिटिश मार्गमें फिलस्तीन पड़ता है और यह जल, थल और नभ सेनाका एक महत्वपूर्ण अड्डा है। इराकसे तेल पाइप लाइन, जो साम्राज्य शरीरका मर्मस्थल है—फिलस्तीन होकर हैफा पहुंचती है। सामरिक महत्वके अतिरिक्त इस लड़ाईसे पहले २०० लाख पौण्ड ब्रिटिश पूंजी फिलस्तीनमें लगी हुई थी और अमरीकाकी १०० लाख पौंड पूंजी लगी हुई थी। इराक पेट्रोलियम कम्पनी, जिसमें एंग्लो-पर्शियन आयल और शेलका हित भी है—क्या हैफा में विशाल तेल भण्डार और तेल शुद्ध करने का रिफाइनरी है। मृत सागरके पोटास भण्डारका उपयोग करनेके लिये ब्रिटिश पोटाश कम्पनी लिमिटेड है। पैलेस्टाइन इलेक्ट्रिक कार्पोरेशन, २८५००००० पौण्डकी पूंजीसे ब्रिटिश सरकार द्वारा रियायतें देकर स्थापित की गयी है। इंगलैण्डकी विभिन्न बीमा कम्पनियोंने फिलस्तीनमें इमारतें बनानेके उद्योगमें १७५००० पौण्ड पूंजी लगा रखी है।

यहूदियोंने ३२०००० एकड़ जमीनको आधुनिकसे आधुनिक साधनोंद्वारा जोतकर वीरान बीयाबानसे फिलस्तीनको गुलजार बना दिया। वे पांच-पांच, छः छः फसलें उतारते हैं। वैज्ञानिक पद्धतिसे पशुओंका पालन करके दस गुना दूध उनका कर दिया। अनेक अरबोंने यहूदियोंका अनुकरण किया है। जहां जहां अरबोंने यहूदियोंकी नकलकर खेती शुरू की है वहां वहां अरबोंकी आबादी बढ़ी है। यहूदियोंके आनेसे फिलस्तीनका फलोंका व्यवसाय बहुत बढ़ गया है। १९१८ में ६०० एकड़में सन्तरोंका बाग था, अब ३२५०० एकड़में है। १९३० में सन्तरों और अंगूरका १०००९०० सन्दूकों का निर्यात हुआ था, जबकि १९३६-३७ में वह संख्या बढ़कर ११०००००० हो गयी। यहूदियोंने ९५०००००० पौण्ड पूंजी फिलस्तीनमें लगायी है, २०००००००० उद्योगोंमें शेष खेतीबारीमें। फिलस्तीनके करोंकी आमदनीका ६० प्रतिशत यहूदी देते हैं। तेल अवीव आज फिलस्तीनका सबसे बड़ा शहर है और दुनियाके लिये एक अजीब मिशाल है। यहूदियोंकी बुद्धि चातुर्य और परिश्रम का यह परिणाम है। कभी यह स्थान वीरान था। आज वहां स्वर्गपुरी तेल अवीव बसा हुआ है। दूसरा शहर नया जेरूसेलम है, जहां ७०००० यहूदी बसे हुए हैं। यहूदियोंने सैकड़ों फैक्टरियां और कारखाने स्थापित किये हैं। जोरडन घाटीसे विद्युत शक्ति उत्पन्न करने और नहरें बनानेमें उन्होंने अपना पैसा खर्च किया है। इस समृद्धिके कारण १९२० से ४० के बीच अरबोंकी आबादी ६५०००० से बढ़कर १०००००० हो गयी है और अरब जिलों से यहूदी जिलोंमें अधिक मजदूरी पानेके लालच दे आ बसे हैं। अरबोंकी मृत्युका प्रमाण ३३ प्रतिशत १९२०-४० के बीच घट गया है। हीब्रू भाषा आज तेल अबीबके दूकानदारोंकी भाषा है। मलेरियाका अन्त कर दिया गया है है। होसार अस्पताल १००० डालरसे बनाया गया है जहां अच्छे अच्छे डाक्टर इलाज करते हैं।

१९५० में एक ब्रिटिश कमीशनकी जांच के अनुसार गांवोंमें ६९४० परिवार भूमि विहीन थे और शेषके पास औसतन जमीन १८ एकड़ जमीन थी जबकि जीवनयापनके लिये ३० एकड़ जमीन चाहिये। फिलस्तीनकी अशान्तिका मुख्य कारण इदेह रिपोर्टके अनुसार गरीबी है। एक गवाहने कहा था कि फिलस्तीनमें भारतके समान सबसे अधिक गम्भीर समस्या जमीनकी भूख है।

१० लाख वर्गमीलसे अधिकमें एक अरब राज्य स्थापित किया गया है, जिसमें इराक, सीरिया, ट्रान्सजोर्डन, और सौदी अरेबिया है। इन प्रदेशमें आबादीकी कमी है, अविकसित है और सदियोंतक बढ़ी अरब आबादीको बसानेके लिये काफी जगह है। १०००० वर्गमीलमें यहूदी राज्यको स्थापित करनेसे, जिसको अमीर फैजलने स्वीकार कर लिया था—अरबोंको कोई हानि न होगी और अरब यहूदियोंमें कोई बाधा न पहुंचेगी। यूरोपकी समस्याको सुलझानेके विचारसे भी फिलस्तीनमें यहूदियोंका राज्य स्थापित होने देना चाहिये। यूरोपके कंधेपर पड़े भारी भारको दूर करने और नैतिक आत्म सम्मानको ऊंचा करनेके लिये भी आवश्यक है।

मगर अंग्रेज फिलस्तीन छोड़ नहीं सकते। इसलिये यहूदियोंकी आकांक्षा पूरी नहीं हो सकती। अमरीका सौदी अरेबिया को नाराज नहीं कर सकता, जहांकि वह अरबों डालर पूंजी लगा रहा है, क्योंकि फिलस्तीनके प्रश्नको उसने अपनी इज्जतका सवाल कर लिया है। हरएक अरब सरदार और राजा खिलाफतकी खाली गद्दीपर अपनेको आसीन देखना चाहता है। फिलस्तीन ब्रिटेन को वायदे था, इसलिये बालफोर घोषणा की गयी थी। आज वह पूंजी लगानेमें अमरीकासे प्रतियोगिता कर नहीं सकता। सैनिक शक्तिका इस्तेमाल करनेसे ३० करोड़ मुसलमानोंकी नाराजगी उसको सहन करनी पड़ेगी और उनके असन्तोषमें ब्रिटिश साम्राज्यके छिन्न-भिन्न होनेका भय है। सोवियट रूसका आदर्श भी अरबोंको प्रेरणा दे रहा है और उसका प्रभाव बढ़ रहा है। इसको ब्रिटेन अरबोंकी स्वाधीनताका तरफदार होकर ही रोक सकता है। सीरिया और लेबनानसे उसने अरबोंका साथ देकर फ्रेंचोंको बोरिया बिस्तर बांधनेके लिये बाध्य किया है। रूसका तुर्की और ईरानपर भारी दबाव पड़ रहा है और वह शीघ्र ही भारत और अरबकी ओर भी छापा मारेगा। इन दोनोंके दबावमें ब्रिटेनका अधिक अरब आन्दोलन है। इसलिये ब्रिटेन फिलस्तीनको छोड़ नहीं सकता। इसके छोड़नेसे उसका साम्राज्य खतरेमें पड़ जायेगा।

यहूदियोंका औद्योगिक और टेक्निकल वृद्धि और कौशलसे भी ब्रिटेनको भय है। मध्यपूर्वका बाजार ब्रिटेन अपने लिये सुरक्षित रखना चाहता है। यदि यहूदी राज्य फिलस्तीनमें स्थापित हो गया, तो इस प्रदेशमें नवीन नवीन उद्योग स्थापित हो जायेंगे और ब्रिटिश मालके लिये मध्यपूर्व का बाजार बन्द हो जायगा। अरबोंकी प्रतिक्रिय प्रकार उद्योगधन्धोंकी प्रगतिसे उदासीन और निराश रहा है, उसी प्रकार वह अब अरब प्रदेशको भी कृषि प्रधान अविकसित देखना चाहता है और यहूदियोंके धन, उनकी बुद्धि, प्रतिभा, कारीगरी और परिश्रमसे वंचित रखना चाहते हैं। ब्रिटेनका राजनीतिक आर्थिक साम्राज्य दोनों यहूदियोंको स्वीकार करनेसे खतरेमें है, अतः आज अधिक अरबका पक्षपाती और तरफदार है।

—

Regd No. C. 2229

मृत्युलोक में अमृत !

पहले जमाने में शत्रु को पराजित करनेके लिये शारीरिक बल प्राप्त करना जरूरी था और उसके लिये बल-वर्द्धक रसौषधियों का सेवन करने की प्रथा थी। यहां तक कि देवताओंने भी दैत्योंको पराजित करनेके लिए अमृत पान किया। आप भी यदि अपूर्व बलशाली और शक्ति सम्पन्न होना चाहते हैं तो उच्चकोटि का प्रामाणिक

डाबर द्राक्षासव

जिसे मृत्युलोकमें अमृतका स्थान दे सकते हैं—सेवन कीजिये।

— मुफ्त मंगाइये —

कार्यालय द्वारा निर्माण होनेवाली अन्य उच्चकोटिकी आयुर्वेदिक तथा पेटेण्ट दवा और शृंगार सामग्रियोंकी पूरी जानकारीके लिए पत्र लिखकर बृहत् सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लिमिटेड

पो० ब० नं० ५५४, कलकत्ता।

अस्थायी प्रधान कार्यालय—बैद्यनाथ देवघर (एस० पी०)

शीतकालमें

रासायनिक और वाजीकरण दवा श्री कामदेव योग

का सेवन कर बलपौरुष एवं मजबूत व टिकाऊ शक्ति बढ़ाकर विवाहित सुखोंका आनन्द मनाइये। यह वह दवा है कि जिसकी तलाश गरीब, अमीर, परहेजी या बद परहेजी कामी पुरुष वृद्ध हों या युवा आदि सभी करते हैं। मूल्य १५) बदनमें मालिश, अव्वा ५) डा० १)

भारत भैषज्य भण्डार

१०८, तुलापट्टी, कलकत्ता।

लिलि ब्रान्ड बार्ली

LILY BRAND BARLEY
FOR INFANTS & INVALIDS
THE LILY BISCUIT CO.

विशुद्धता और अच्छी कालिटी के कारण अस्पतालों में और सेना द्वारा व्यवहार किया जाता है। चिकित्सक गण इसकी सिफारिश करते हैं

बम्बई :: लिलि बिस्कुट कं० :: कलकत्ता

३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

सन् १९५९-६१

के बारे में आवश्यक विवरण

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११२ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

अब ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन (१९५९-६१) वैसी ही बहुत अच्छी शर्तों पर आगामी सूचना तक मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा खरीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बंबई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी खज़ाने से खरीद लें।

ब्याज ३ फ़ी सदी सालाना के हिसाब से, इनकम टैक्स काटने के बाद, साल में दो बार १५ अगस्त और १५ फर्वरी को आपको घर बैठे पहुँच जाया करेगा।

इस ऋण में आप जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं।

आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ऋण की असल रक़म १५ अगस्त, १९५९ के बाद, किन्तु १५ अगस्त, १९६१ से पहले पहले वापस मिल जायगी।

आपकी पूँजी आपको हर समय वापस मिल सकती है, क्योंकि यह लोन मार्केट में आसानी से बेचा जा सकता है। अभी आवेदन कीजिए।

ऋण के जिन खरीदारों पर इनकम-टैक्स लागू नहीं होता अथवा कम दर पर लागू होता है, वे टैक्स का रुपया वापस ले सकते हैं।

रुपया बचाइए और ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन १९५९-६१ में लगाइए.

गवर्नमेन्ट आफ इंडिया के आदेश से प्रचारित।

देवदत्त मिश्र द्वारा सम्पादित और नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस कलकत्तामें मुद्रित और प्रकाशित।

साप्ताहिक विश्वमित्र

THE WEEKLY VISHWAMITRA

२८—५१] कलकत्ता दिसम्बर १९ १९४५, Calcutta, DECEMBER 19 1945 [मूल्य एक आना : वार्षिक ४)

पण्डित नेहरू अपने दौहित्रके साथ

कविता

"जय हिन्द"

हमारे स्वर स्वर में 'जय हिन्द'
हमारे भावों का अरविन्द,
यही 'जय हिन्द' यही 'जय हिंन्द'।

जीवन के मृदु उर्मिल क्षण में,
अरुण उषा के करुण राग में
विकसित पुलकित पद्म समान
प्रसरित सौरभ सा उन्माद—

प्रवाहित होता पुलक अनन्द–
अमर कविता में जैसे छन्द,
यही 'जय हिन्द' यही 'जय हिन्द'।

मानस सागर के उद्वेलन में
नव भावों के आलोडन में
मृदु आशा के कलरव स्वर में
जीवन के प्रतिक्षण प्रतिपल में

गुंजन करता है 'जय हिन्द'
जय 'जय हिन्द' जय 'जय हिन्द'।

—सुश्री सुशीला वहाल विदुषी आनर्स

तुम जवान हो

कमान - तीर हाथ लो, स्वदेश पीर मेट दो।
उतुंग शैल - राट पर चढ़े चलो, चढ़े चलो
कि शूलपूर्ण बाट पर बढ़े चलो, बढ़े चलो
जवान, नौजवान तुम, रुको नहीं, झुको नहीं
नया स्ववृत्त एक तुम गढ़े चलो, गढ़े चलो

अशेष रोक - टोक से रुकी नहीं जवानियां
बढ़े चलो कि तेज हो, रुकावटें ही मेट दो!
कमान - तीर हाथ लो, स्वदेश पीर मेट दो!

(२)

अमाप ताप है बढ़ा, स्वदेश बाग सूखता
यों हो रहा उजाड़ है कि कोकिला भी लापता
"जवान बागबान तुम, अशेष रक्त सींच दो
पुनः हरा-भरा करो!" स्वदेश यों पुकारता

नितांत सो चुके, उठो! नितांत खो चुके, उठो!
जवान, शक्ति नाप लो, अशेष पीर मेट दो!
कमान - तीर हाथ लो, स्वदेश पीर मेट दो!

(३)

महान तुम जहान में अमूल्य हैं कहानियां
अमूल्य हैं अपार आत्म त्याग की कहानियां
जवान, नौजवान तुम, न हाथ, हाथ पर धरो
करो कि दान रक्त का, रगों भरी रवानियां

बनो अजर; बनो अमर! अनंत मुण्ड मालिनी
स्वतन्त्रता की देवि को स्व मुण्ड माल भेंट दो!
कमान - तीर हाथ लो, स्वदेश-पीर मेट दो!

—श्री शंकर

गीत

हार ही जब हो चुकी है,
जीत की फिर याद क्यों?

चिर-विदा की उस घड़ी में,
था मिला उपहास ही!
दूर की अनुभूति थी,
पाकर तुम्हें भी पास ही!

जोड़ पाता ही नहीं,
टूटे हृदय के तार को!
चाह कर भी ले न पाता,
प्यार के आभार को!

रागिनी निस्पन्द है जब,
गीत की फिर याद क्यों?
हार ही जब हो चुकी है
जीत की फिर याद क्यों?

'दुःख का आधार केवल
है प्रणय की साधना!'
जान कर भी बन्द कर—
पाया न तब - आराधना!

गा उठे उर - वल्लकी के
सङ्ग मेरे प्राण भी!
किंतु मम आराध्य प्रतिमा
रह गयी पाषाण ही!

प्रार्थना सुनते न 'पत्थर'
फिर विकल फरियाद क्यों?
हार ही जब हो चुकी है
जीत की फिर याद क्यों?

—श्री 'संध्या-प्रदीप'

कहानी

यदि यही अनुरोध है तो, लो सुनो कह दूं कहानी।
प्रणय के मृदु अंक में पल, जन्म उस शिशु ने लिया था।
मृदु करों से थपकियां दे, जननि ने पालन किया था।
मधुर चुम्बन, मधुर स्पन्दन, बालपन का मधुर गाना।
मधुर कोमल धूलि धूसर, चपलता का क्या ठिकाना?
देख कर वह स्नेह दृग में, न आता हर्ष - पानी।
यदि यही अनुरोध है तो, लो सुनो कह दूं कहानी ॥ १ ॥

मधुर शैशव पार कर जब, बाल यौवन क्षेत्र - आया।
भावना से पूर्ण उसने, एक नूतन जगत पाया।
चपल मारुत के झकोरों से हुआ घायल पुलक - तन।
स्वच्छ उसके उर - उदधि में, ज्वार आया चपल यौवन।
प्रणय के उस क्षेत्र में फिर, बढ़ चली उसकी जवानी।
यदि यही अनुरोध है तो, लो सुनो कह दूं कहानी ॥ २ ॥

अन्त जब उस क्षेत्र का भी, युवक के नजदीक आया।
हो उठा वह पूर्ण स्तम्भित, देख कर निज क्षीण काया।
मधुर शैशव, मधुर यौवन, जा छिपे थे दूर अवसित।
क्षीण आंखों से निहारा, वृद्ध सम्मुख था उपस्थित।
युवक डर से रो पड़ा, वह मृदु जवानी थी बिरानी।
यदि यही अनुरोध है तो लो हुई मेरी कहानी ॥ ३ ॥

—श्री गजानन प्रसाद वर्मा

मानवताका मोल नहीं है

(१)

उनकी मेहनत का फल पा कर, तुमने सुन्दर साज सजाये।
उनके कंकालों पर तुमने, ऊंचे - ऊंचे महल बनाये ॥
किसे सुनायें करुण कहानी, दानवता ही बोल रही है।
चुप रह मानव इस जगती में, मानवता का मोल नहीं है ॥

(२)

तुम्हें प्राप्त खानेको मेवा, उन्हें नहीं मक्की के दाने।
पेट पालने के खातिर वे, आज तुम्हारे हाथ बिकाने ॥
भूखों की भीषण हुंकारें, युग की आंखें खोल रही हैं।
चुप रह मानव इस जगती में, मानवता का मोल नहीं है।

(३)

तुम खसखस में - बैठे, भीनी - भीनी खुशबू लेते।
पर वे भारी गरमी में भी, दिन भर मेहनत करते रहते ॥
दुखियों की आह उसासें, न्याय तुम्हारा तोल रही हैं।
चुप रह मानव इस जगती में, मानवता का मोल नहीं है ॥

(४)

तुम शाल दुशालोंमें भी ठिठुरो, उन्हें न मिलता कम्मल काला।
नहीं स्वच्छ जल उनको मिलता, मस्त रहो तुम पी कर हाला ॥
अरे डरो अत्याचारों से अब तो, धरणी डोल रही है।
चुप रह मानव इस जगती में, मानवता का मोल नहीं है ॥

—श्री अमृतलाल यादव, विशारद

परहित बस जिनके मनमाहीं।
तिनकहजग दुर्लभ कछु नाहीं।

हा, कौशिकजी !

—o::o—

हम यह समाचार पाकर स्तब्ध रह गये कि हमारे कौशिकजी—पंडित विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिकजी—हमसे सदाके लिये विदा हो गये। हिन्दी जगतके लिये यह कितना मर्मान्तक समाचार है! कौशिकजीकी हिन्दी की सेवाओंपर प्रकाश डालनेके लिये एक पूरा ग्रन्थ लिख कर भी यह नहीं कहा जा सकेगा कि सब कुछ लिख गया।

हम इस समय अधिक न कहकर इतना ही कहेंगे कि हिंदी साहित्यके लिये कौशिकजीका व्यक्तित्व एक विराट संस्था बन गया था। न जाने कितने नवीन कहानीकार उनसे प्रेरणा और पथ प्रदर्शन प्राप्त करके आज हिन्दीकी वाटिकाको संवार सिंगार रहे हैं। इस तरह के महारथीके निधनसे न केवल हिंदी जगत की ही बल्कि भारतके कहानीकार समाज की जो क्षति हुई है शीघ्र उसकी पूर्ति संभव नहीं दिखती। भगवान कौशिकजीकी दिवंगत आत्माको शांति और उनके शोक संतप्त परिवारको यह असह्य वियोग सहने की शक्ति प्रदान करें।

कांग्रेसका दृष्टिकोण।

राष्ट्रपति मौलाना अबुल कलाम आजादके शब्दोंमें कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीका पांच दिनका अधिवेशन 'कांग्रेसके अहिंसा सिद्धान्तपर सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास करके गत मंगलवारको समाप्त हो गया। इस अधिवेशनमें कितने ही महत्वपूर्ण प्रश्न और समस्याओंपर वर्किङ्ग कमेटी को अपना निर्णय देना था। देशकी दृष्टि उसकी तरफ लगी हुई थी। आजाद हिन्द फौज, कम्यूनिस्ट और अहिंसाके सिद्धांतके साथ साथ आनेवाले प्रान्तीय निर्वाचनोंके सम्बन्धमें कांग्रेसने अपनी नीति स्पष्टसे स्पष्टरूपमें घोषित कर दी है।

देशमें चारों तरफ अशांति और असंतोष, तथा शस्त्रबल द्वारा लोकमत और लोकरुचिको दबा रखनेकी ब्रिटिश नीतिके विरुद्ध जो भयङ्कर बवण्डर उठ रहा है उसे समझनेकी कोशिश न करके ब्रिटिश अधिकारी प्रकारान्तरसे कांग्रेसपर यह इल्जाम लगाते देखे गये हैं कि आजाद हिन्द फौजकी प्रशंसा करके कांग्रेस हिंसाको प्रोत्साहन दे रही है। भारत सचिव लार्ड पेथिक लारेन्सने शायद इसी भ्रान्त धारणाके वश पार्लमेण्टकी लार्ड सभामें ब्रिटिश सरकारकी भारत नीतिपर वक्तव्य देते हुए यह धमकी दी है कि हिन्दुस्थानमें कानून और व्यवस्थाकी रक्षाके लिये आवश्यकता पड़नेपर सभी प्राप्त उपायोंसे काम लिया जायेगा। भारत सचिव यह वक्तव्य देते समय स्थितिकी गहराईतक पहुंचनेकी कोशिश करते तो वे यह समझ सकते थे कि हिंसाको प्रोत्साहन कांग्रेसने न कभी दिया है और न भविष्यमें देगी। वस्तुतः हिंसाको सबसे अधिक प्रोत्साहन सरकारके अविवेकी अधिकारियों द्वारा दिया जा रहा है जो जनताके वैध मनोभावोंके प्रदर्शनोंसे ब्रिटिश साम्राज्यवादकी जड़ोंको हिलते देख और समझकर फौरन पाशविक दमनपर उतर आते हैं। अतः शान्ति और व्यवस्थाकी रक्षाके लिये यदि किसीपर लगाम कसी जानी चाहिये तो वे भारत सरकारके विवेकशून्य अफसर ही हैं।

वास्तविकता यह होते हुए भी कांग्रेसने यह उचित समझा कि जनसाधारणको फिर एक बार बता दिया जाय कि कांग्रेस आज भी अपने अहिंसाके सिद्धान्तपर अटल है ताकि जनसाधारण यह बात भली भांति समझ लें कि आजादीकी लड़ाई हमको अहिंसात्मक उपायोंसे ही लड़ना है।

आजाद हिन्द फौजके प्रति कांग्रेसकी नीतिके कारण ही जानबूझकर कुछ कांग्रेस विरोधी शक्तियोंने देश और विदेशमें कांग्रेस को बदनाम करनेके कुत्सित अभिप्रायसे यह मिथ्या प्रचार करना शुरू कर दिया है कि कांग्रेसका अहिंसा सिद्धान्त केवल दिखानेके लिये है। दरअसल भीतर ही भीतर वह हिंसाकी समर्थक है। अतः कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीने यह बात स्पष्ट कर दी है कि "आजाद हिन्द फौजके सदस्योंके प्रति प्रदर्शित सहानुभूतिका यह अर्थ न लगाया जाय कि कांग्रेस शान्तिपूर्ण, वैध और अहिंसात्मक साधनोंसे पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करनेकी नीतिसे जरा भी अलग हटी है।' इसीसे राष्ट्रपति मौलाना आजादने अपने वक्तव्यमें कहा है कि अहिंसात्मक सिद्धान्तपर वर्किङ्ग कमेटीका स्वीकृत प्रस्ताव सर्वाधिक महत्वपूर्ण है।

यह बात सही है कि कांग्रेस अपने लक्ष्य तक पहुंचनेके लिये आत्मसम्मानको बनाये रखकर जहांतक सम्भव है पहले समझौतेके मार्गको पसन्द करती है। किन्तु इसके साथ ही साथ वह हर समय संघर्षके लिये अपनेको तैयार भी करती रहती है। ऐसी स्थितिमें कांग्रेसके भीतर कठोर अनुशासन और दृढ़ संगठनका रहना सर्वथा आवश्यक और वांछनीय है। कम्यूनिस्टोंने अपने आचरणके द्वारा सदा कांग्रेसके संगठन और अनुशासनकी अवज्ञा की है और जनताके भीतर बराबर वे कांग्रेसकी प्रतिष्ठा घटानेका घृणित प्रयत्न करते रहते हैं। कोई भी शक्तिशाली संगठन अपनी जड़को कुतरनेवाली शक्तिको उस स्थान पर कभी नहीं रहने दे सकता जहांसे उसका कुत्सित कार्य आसानी हो सकता है। इस पर भी कांग्रेसने कम्युनिस्टोंको अपने आचरण सुधारने और कुकर्मोंका प्रायश्चित करनेका अवसर दिया। किन्तु ऐसा न करके उल्टे कम्यूनिस्ट कांग्रेस को ही नसीहत देनेकी हिमाकत करते हुए कहते हैं कि आपकी नीति गलत है, आप हमारी नीति पर चलिये। ऐसी अवस्थामें बाध्य होकर वर्किङ्ग कमेटीको यह निर्णय करना पड़ा कि कांग्रेसमें किसी पद पर कम्यूनिस्ट न चुने जांय।

कांग्रेसके सामने आज एकही सवाल है और वह है स्वतंत्रता हासिल करनेका। देशकी राजनीतिक स्वतंत्रतासे ही अन्य तमाम स्वतंत्रताएं प्राप्त होंगी, यह बात कांग्रेस बार बार देशके सामने जोरदार शब्दोंमें रखती रही है। इसी ध्येयको सामने रख कर कांग्रेसने व्यवस्थापिकाओं का चुनाव लड़नेका निश्चय किया है। इसके साथही कांग्रेसने अपने मेनिफेस्टोमें यह स्पष्ट कर दिया है कि "चुनाव तो आनेवाली बड़ी बड़ी बातोंके लिये एक छोटी सी परीक्षा है। आशा है कि जो लोग भारतकी स्वतंत्रताके अभिलाषी और इच्छुक हैं वे इस परीक्षाका सामना शक्ति और विश्वासके साथ करेंगे तथा हम लोगोंकी कल्पनामें जिस स्वतन्त्र भारतका नक्शा है उसकी तरफ सब लोग एक साथ मिल कर आगे बढ़ेंगे।"

कांग्रेस जिन वैधानिक अधिकारोंके लिये लड़ रही है उसकी रूपरेखा, जैसी मेनिफेस्टोमें दी गयी है, अन्यत्र प्रकाशित है। उसे पढ़नेसे यह स्पष्ट हो जायेगा कि कांग्रेस द्वारा परिकल्पित स्वतंत्र भारतमें सबको लोकतंत्रीय सामाजिक समानता प्राप्त होगी। भारतका प्रत्येक नागरिक, पुरुष हो अथवा नारी, समानाधिकार और सुविधाएं प्राप्त करेगा। संक्षेपमें इतना ही कहना अलम् होगा कि कांग्रेस भारतवर्षमें किसान मजदूर प्रजा राज कायम करना चाहती है। देशकी आर्थिक प्रणाली और भू व्यवस्थाको इस भांति पुनर्संगठित किया जायेगा कि एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्तिका एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्गका शोषण असम्भव हो जायेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय मामलेमें भी कांग्रेसका रुख स्पष्ट है। वह स्वतन्त्र राष्ट्रोंके विश्व संघकी समर्थक है। पड़ोसी राष्ट्रोंके साथ सहयोग और मैत्री सम्बंध रखते हुए हिंदुस्तान हमेशा विश्व शांति और सहयोगकी भावनासे अपनी नीति स्थिर करेगा। इसी तरह यह दूसरे तमाम परतन्त्र राष्ट्रोंको स्वतन्त्रता प्राप्त करनेमें पूर्ण सहयोग प्रदान करेगा क्योंकि उसका यह विश्वास है कि जबतक संसारसे साम्राज्यवादका अंत न होगा और सभी देश स्वतंत्र न होंगे तबतक विश्वमें शांति न हो सकती।

अमेरिकासे कर्ज—

अन्तमें ब्रिटेनको अमेरिकासे कर्ज मिल ही गया। किन्तु जिन शर्तों पर यह कर्ज देनेको अमेरिका तैयार हुआ है उनको देखनेसे यह स्पष्ट हो जाता है कि अमेरिका की दृष्टिमें ब्रिटेनका कितना सम्मान और साख है। अमेरिकन ऋणके सम्बन्धमें ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिकाके बीचमें जो समझौता हुआ है उसे स्वीकारार्थ कामन सभामें उपस्थित करते हुए ब्रिटिश अर्थ सचिवने जो दर्दभरी आह की है उससे पंडित जवाहरलाल नेहरूके इस कथनका पूर्ण समर्थन होता है कि "इस समय संसार में दो ही महान शक्तिशाली राष्ट्र हैं—रूस और अमेरिका। ब्रिटेन तो अब तीसरे दर्जेकी ताकत रह गया है।" यद्यपि मजदूर दली लार्ड स्ट्राबोलगीने पंडितजीके इन शब्दोंका दबी जबानसे प्रतिवाद किया था किन्तु अर्थ सचिव डा० ह्यू डाल्टनके ये शब्द कि "कर्जका यह जबर्दस्त बोझ, जो युद्धके फलस्वरूप हम अपने सर पर लादे आ रहे हैं, हम इस देशके रहने वालोंने समान उद्देश्यके लिये जो तकलीफें और मुसीबतें बर्दाश्त की हैं, उनका यह अजीब पुरस्कार है। यह विचित्र विडम्बनापूर्ण पुरस्कार है जिसपर आनेवाले ऐतिहासिक ही तीखी टिप्पणी करेंगे"—यह सिद्ध कर देते हैं कि अब ब्रिटेनमें वह ताकत नहीं रह गयी कि वह महान राष्ट्रोंसे अपनी बात मनवा सके। युद्ध समाप्त होते ही कर्जे की बात शुरू हुई थी और इस दरम्यान अमेरिकाके कड़े रुखके कारण कई बार ऐसा लगा कि वार्तालाप भंग हो जायेगा। लेकिन गर्जमन्द बावला होता है। ब्रिटेन [illegible] स्थितिमें नहीं है कि वह अमेरिकाकी [illegible] शर्तोंका जवाब सीना तान कर दे सके। ब्रिटेनने बहुत मिन्नतें कीं, गिड़गिड़ाया कि कमसे कम ब्याज माफ़ कर दिया जाय। किन्तु अमेरिकाने इसका क्या जवाब दिया? यह कहा गया कि [illegible] देशमें जाकर बातें कीजिये, "यह [illegible] व्यापारिक राजनीति नहीं है। कांग्रेस [illegible] इस तरहके समझौतेको स्वीकार न करेगी [illegible] अन्तमें झख मारकर ब्रिटेनको ब्याज [illegible] ४ अरब ४० करोड़ डालर कर्ज लेनेकी [illegible] स्वीकार करनी पड़ी। इतना ही नहीं [illegible] प्रतिबन्ध भी लगा दिया गया है कि अमेरिका से कर्जमें प्राप्त धन द्वारा स्टर्लिंग संचय [illegible] अपने महाजनोंका पुराना ऋण ब्रिटेन [illegible] चुका सकता। ब्रिटेनकी दयनीय स्थिति [illegible] यह नक्शा है। किन्तु ब्रिटेन आज अमेरिका से झगड़ा नहीं मोल ले सकता। [illegible] अमेरिकाकी शर्तों पर कर्ज लेना पड़ रहा [illegible] कन्जरवेटिव पार्टी इस मामलेमें कोई जिम्मेदारी नहीं ले रही। मि० चर्चिलने [illegible] सरकार पर कस कर आक्रमण किया [illegible] सारा दोष मजूर पार्टी और उसके [illegible] वादी प्रचारका बताया है। मि० चर्चिल [illegible] कहना है कि अमेरिका जो आज ब्रिटेन प्रति इतना दृढ़ और कठोर व्यवहार [illegible] रहा है इसका कारण यह है कि मजूर [illegible] कारके अधिकारमें आनेसे ब्रिटेन [illegible] अमेरिका परस्पर एक दूसरेसे अधिक [illegible] हट गये हैं। मि० चर्चिलकी बातोंसे [illegible] स्पष्ट झलकता है कि अमेरिका [illegible] ब्रिटेनसे इसीलिये असन्तुष्ट है कि [illegible] का झुकाव साम्यवादकी ओर है। [illegible] शान्तिकी कामना करनेवाले लोक[illegible] अमेरिकाका ब्रिटेनके प्रति यह [illegible] लज्जाकी बात है। मि० चर्चिलकी [illegible] उत्तर देते हुए परराष्ट्र सचिव मि० [illegible] कहा कि 'यदि कंजरवेटिव पार्टी इस [illegible] तटस्थ रहना चाहती है तो रहे, हमें [illegible] परवाह नहीं है। दो टूक फैसला [illegible] है। मि० चर्चिल इस बातसे [illegible] कि इस दो टूक फैसलेके बल पर [illegible] से युद्ध पर्यन्त हमारी नाव कभी [illegible] और वही देशका अब भी हमारी [illegible]

जायेगा। असलियत यह है कि ऋणके बिना हमारा काम नहीं चल सकता और हम आज इस स्थितिमें नहीं हैं कि अपनी बातें दूसरोंसे मनवा सकें।" मि० बेविन यदि इस कटु सत्यको महसूस करके अब भी अपने साम्यवादी सिद्धान्तोंके अनुरूप अपनी राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय नीति स्थिर करें एवं साम्राज्यका अन्त करनेकी दिशामें अपना कदम आगे बढ़ायें तो वे देखेंगे कि फिर वह दिन आवेगा जब सम्पन्न होते हुए भी अमेरिकाको ब्रिटेनके साथ आना पड़ेगा।

रेलवे संघर्ष—

पिछले अक्तूबर महीनेमें एक संवाद एजेन्सीने यह प्रकाशित किया था कि रेलवे विभाग प्रायः डेढ़ लाख कर्मचारियोंको बरखास्त करना चाहता है। यद्यपि यह घोषणा सरकारी सौरसे नहीं की गयी थी किन्तु जिस प्रसंगमें इसकी चर्चा की गयी थी उससे यह ध्वनि निकलती थी कि बरखास्त किये जाने वाले कर्मचारियोंकी संख्याका पता अर्द्ध सरकारी सूत्रसे प्राप्त हुआ है। किन्तु जब सप्ताहों तक सरकारी तौरसे इस प्रचारका खण्डन नहीं किया गया तो यह समझा गया कि सचमुच रेलवे विभाग ऐसा ही करने जा रहा है। इस धारणाके दृढ़ होते ही रेलवे कर्मचारियोंमें आतंक फैला और उनके फेडरेशनने उत्पन्न होनेवाली स्थिति पर विचार करके रेलवे बोर्डको चेतावनी दी कि इस तरहके आर्थिक संकटके समय यदि उसने एक भी कर्मचारीको बरखास्त किया तो विवश होकर फेडरेशनको सार्वजनिक रेलवे हड़तालकी घोषणा करनी पड़ेगी। फेडरेशन नहीं चाहता कि इस मामलेको लेकर अप्रिय स्थिति उपस्थित हो क्योंकि रेलवे हड़तालकी प्रतिक्रिया सम्पूर्ण देश पर होगी और यातायातके इस साधनके ठप्प हो जानेसे सभी प्रान्तोंमें अन्न और वस्त्रके लिये हाहाकार मचेगा प्रान्तोंमें दुर्भिक्षकी भी स्थिति आ सकती है। फेडरेशनने जब यह चेतावनी दी, आश्चर्यकी बात है, तब रेलवे बोर्डकी निद्रा भङ्ग हुई। सप्ताहों बाद मानो जाग कर रेलवे कानफरेन्स एसोसिएशनके वार्षिक अधिवेशनमें वार ट्रांसपोर्ट मेम्बर एडवर्ड बेन्थलने जो वक्तृता दी और उसके बाद जो सरकारी विज्ञप्ति निकली उसमें बताया गया कि बरखास्त किये जानेवाले कर्मचारियोंकी संख्या डेढ़ लाख नहीं सिर्फ आठ हजार है। इस विज्ञप्तिसे यह संशय कुछ आश्चर्य- जनक और रहस्योत्पादक प्रतीत होता है। इसी बीचमें रेलवे कर्मचारी नेता श्री वी० वी० गिरिने जो एक वक्तव्य दिया है उससे स्पष्ट है कि इस सम्भावित संघर्षका खतरा सिर्फ कल्पनाकी ही नहीं है। हम पहले ही यह बता चुके हैं कि फेडरेशनकी ओरसे इस अप्रिय स्थितिको रोकने के लिये कुछ सुन्दर सुझाव उपस्थित किये गये थे। किन्तु रेलवे चीफ कमिश्नरकी ओरसे निकाली गयी विज्ञप्तिमें इन सुझावों की ओर ध्यान जानेका कोई उल्लेख नहीं है। इससे तो यही जान पड़ता है कि रेलवे विभाग इस सम्बन्धमें जो निश्चय कर चुका है उससे वह टससे मस नहीं होना चाहता। इस तरहकी स्थितिमें जब देशमें राजनीतिक, औद्योगिक एवं आर्थिक स्थिति अत्यन्त असन्तोषपूर्ण है रेलवे हड़तालकी स्थिति उत्पन्न करने देना भारतीयोंके जीवनके साथ खिलवाड़ करना है। यह निस्सन्देह कहा जा सकता है कि ऐसे अशांत राजनीतिक वातावरणमें रेलवे बोर्ड यदि रेलवे फेडरेशनके साथ किसी समझौते पर न पहुंच सकेगा तो सम्पूर्ण देशमें अराजकता, उपद्रव यहां तक कि जान माल पर खतरा उपस्थित करनेकी जिम्मेदारी भारत सरकार पर होगी। इस तरहकी स्थितिमें दोनों पक्ष विवेक और सद्बुद्धिसे काम लें तो अब भी हड़तालकी घोषणा करनेका दिन टल सकता है।

कांग्रेस विधानमें संशोधन—

कांग्रेस कार्य समितिने एक उपसमितिकी स्थापना कांग्रेसके विधानमें संशोधन सम्बन्धी प्रस्तावोंको प्रस्तुत करनेके लिये की है। इस उपसमितिने कुछ प्रस्तावोंकी रूपरेखा तैयार कर ली है और इन्हें कार्यसमितिकी अगली बैठकमें पेश किया जायगा। प्रस्तावोंमें सर्व प्रमुख कांग्रेसकी प्राथमिक सदस्यतासे सम्बन्धित है। इसके अनुसार वही व्यक्ति कांग्रेसका प्राथमिक सदस्य हो सकेगा, जो महात्मा गांधीके रचनात्मक कार्यक्रमकी १४ शर्तोंको कार्यान्वित करने में संलग्न होनेका प्रमाणपत्र पेश कर सकेगा। १९३४ में भी इसी प्रकारका एक प्रस्ताव आया था कि उन लोगोंको ही कांग्रेसकी प्राथमिक सदस्यता दी जाये, जो सूत कातते हों, मगर कांग्रेसी सोशलिस्टोंके विरोधके कारण गांधीजी की सलाहसे उस प्रस्तावको हटा लिया गया। कांग्रेस विधानमें संशोधनका यह प्रस्ताव इस कारण समर्थन योग्य है कि आज कांग्रेसको देशके विशाल बहुमतका समर्थन प्राप्त है और निकट भविष्यमें ही कांग्रेसके हाथोंमें शासनकी बागडोर आनेवाली है। ऐसी हालतमें कांग्रेसको तपे तपाये और उसके रचनात्मक कार्योंको पूरा करनेवाले कार्यकर्ताओंकी जरूरत है। किन्तु, इसके बावजूद कांग्रेसका और भी लोकप्रिय संस्था बनानेके लिये इस बातकी जरूरत है कि प्रत्येक व्यक्तिको उसका सदस्य बनने का अधिकार हो। इसकी प्राथमिक सदस्यता पर किसी प्रकारका प्रतिबन्ध लगाना कांग्रेस जैसी जनतन्त्री संस्थाके लिये उचित नहीं होगा। हम आशा करते हैं कि कांग्रेस हाईकमाण्ड इन बातों पर अच्छी तरह गौर कर कोई आखिरी फैसला करेगा।

कौन सही है ?

अरब सागरमें आनेवाले पहाड़ोंके छूट पड़नेके कारण सिन्धमें गत २८ नवम्बरको जो भीषण ज्वार और भूकम्प आया था, उसके सम्बन्धमें अधिकारी सूत्रोंसे सम्बन्ध पूरा विवरण नहीं मिल सका है। सिन्ध प्रांतीय कांग्रेसके सेक्रेटरीने क्षतिग्रस्त इलाकोंका निरीक्षण कर बताया कि करीब चार हजार व्यक्तियोंकी मृत्यु हुई है। सिन्ध सरकारके चीफ सेक्रेटरीने इस संख्याको निराधार बताया और कहा कि प्राथमिक खबरोंके अनुसार २०० व्यक्तियोंकी मृत्युका अनुमान है, साथही बहुसंख्यक व्यक्ति निराश्रित हो गये हैं। सिन्धके कांग्रेस सेक्रेटरी और चीफ सेक्रेटरीके आंकड़ोंमें आसमान जमीनका अन्तर है, लेकिन ४० फीट ऊंचे ज्वारसे सैकड़ों वर्ग मील भूमि जब कि जल प्लावित हुई थी, उसमें सिर्फ २०० व्यक्तियोंकी मृत्यु होनेकी खबर पर विश्वास करना बहुत मुश्किल है। बलूचिस्तानके एक उच्च अफसरने जो आंकड़े दिये हैं, उससे कांग्रेसकी रिपोर्ट करीब करीब मिलती है। ऐसी हालतमें किसकी रिपोर्ट ठीक मानी जाये, कांग्रेसकी या सिंध सरकार की ?

हिन्दू महासभा छोड़ेंगे—

केन्द्रीय असेम्बलीके निर्वाचनोंमें हिन्दू महासभाकी जैसी दुर्गति हुई है उसे देखते हुए यदि हिन्दू महासभाके सदस्य और नेता अपने राजनीतिक भविष्यके सम्बन्धमें चिन्तित और उद्विग्न हो उठे हों तो कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। हमने गत अंकमें महासभाके नेताओंका, खासकर डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जीका ध्यान इस ओर आकर्षित किया था कि वे राजनीतिक क्षेत्रसे महासभाको अलग कर लें और कांग्रेस संगठनमें योगदान दें। विभिन्न प्रान्तोंके हिन्दू महासभावादी नेता भी इसी दिशामें सोचने लगे हैं और उनमेंसे बहुतोंने तो महासभाको छोड़कर कांग्रेसमें योगदान भी किया है जिनमें हिन्दू महासभाके उप-सभापति डा० वरदाराजलू नायडूका नाम विशेष उल्लेखनीय है। इसी प्रसंगमें यह बात भी सुनी गयी है कि स्वयं डा० श्यामाप्रसाद मुकर्जी भी कांग्रेसमें योगदान करनेके प्रश्न पर विचार कर रहे हैं। यह अफवाह उस समय अधिक पुष्ट और प्रामाणिक मालूम पड़ने लगी जब हिन्दू महासभाकी कार्यसमितिने पिछले सप्ताह डा० मुकर्जीकी अस्वस्थताके कारण उनकी जगह श्री भोपटकरको वर्किंग प्रेसिडेन्ट बना और महासभाका कार्यालय कलकत्तेसे पूना ले जानेका निश्चय किया। सर्दार पटेल, पंडित जवाहरलाल नेहरू, पंडित गोविन्दवल्लभ पन्त आदिके डा० मुकर्जीसे मिलने और एकान्तमें बातचीत करने तथा महात्मा गांधीका संदेश पहुंचानेसे और भी यह बात पुष्ट हो गयी कि डा० मुकर्जी हिन्दू महासभाकी असहयोगिता और कांग्रेसमें भाग लेनेकी सामयिक मांग पर अवश्य ही गम्भीरता पूर्वक विचार कर रहे हैं।

पलामू काण्ड—

कानूनके अन्तर्गत शासन और व्यवस्था कायम रखनेके सम्बन्धमें आजकलके सरकारी अधिकारी किस तरह स्वयं कानूनको अपने पैरों तले रौंदकर नादिरशाही करते हैं, भारतवर्षमें इस तरहके उदाहरणोंका अभाव नहीं है। किन्तु प्रायः देखा जाता है कि इस प्रकारकी मनमानी करनेवाले हाकिम और हुक्काम फौजदारी कानूनकी दफा १९७ का आश्रय पाकर बराबर कानूनकी गिरफ्त में आनेसे बच जाया करते हैं। ऐसा ही एक सनसनीखेज मामला पटना हाईकोर्टमें मि० जस्टिस शियरर और मि० जस्टिस पाण्डेके सामने आया। मामला इस प्रकार बताया जाता है कि पटना स्कूलके कुछ विद्यार्थियों को, एक हाकिमके खिलाफ शरारत और उपद्रव करने का अभियोग लगाकर, पलामूके डिप्टी कमिश्नरके सामने पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट मि० ट्रेंजरने बड़ी बेरहमीके साथ पीटा था। विद्यार्थियोंने जब पलामूके सब डिवीजनल अफसरकी अदालतमें उक्त दो अफसरोंके खिलाफ मामला दायर किया तो उनकी दरखास्त यह कहकर खारिज कर दी गयी कि फौजदारी जाब्ताकी दफा १९७ के अनुसार सरकारकी स्वीकृतिके बिना उनके खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जा सकती। इसी हुक्मके विरुद्ध हाईकोर्टमें अपील की गयी थी। फौजदारी जाब्ताके अनुसार उक्त अफसर संरक्षण प्राप्त करनेके अधिकारी हैं या नहीं, इस प्रश्नपर दोनों जजोंमें मतभेद हो गया। तीसरे जज द्वारा इसका निर्णय होगा। मि० जस्टिस शियरर ने अफसरोंको संरक्षणका अधिकारी बताते हुए अपने फैसलेमें यह बात स्वीकार की है कि डिप्टी कमिश्नरका आचरण बहुत ही आपत्तिजनक था, तथापि उन्होंने उक्त अफसरोंको संरक्षणका अधिकारी बताया है क्योंकि उनकी दृष्टिमें उस समय डिप्टी कमिश्नर सरकारी कर्तव्यका पालन कर रहे थे। मि० पाण्डे इस रायसे सहमत नहीं हो सके और उन्होंने दरखास्तको स्वीकार करते हुए मामलेकी जांच की जानेका हुक्म दिया। उन्होंने फैसलेमें यह कहा है कि लड़कोंको अपने बरामदेपर अपनी मौजूदगीमें दण्डित देखनेकी इच्छाको किसी मजिस्ट्रेटके कर्तव्य पालनके अन्तर्गत समझना कठिनसा लगता है। उनकी रायमें "यह कार्य इतना बर्बरतापूर्ण और असाधारण है कि कोई भी विवेकबुद्धि रखनेवाला व्यक्ति इस तरहके कार्यमें जिला मजिस्ट्रेटके कर्तव्यके अन्तर्गत आनेवाले कार्योंकी समताका जरा भी आभास नहीं देख सकता। इस तरहकी विकृत भावुकता जिसका प्रदर्शन अत्यन्त निर्ममभावसे किया गया हो, किसी भी विवेक बुद्धि रखनेवाले व्यक्तिको शायद ही, यह भी मुश्किल, यह समझने को प्रभावित कर सके कि वह अपने सरकारी कर्तव्यका पालन कर रहा था।" चूंकि यह मामला अभी विचाराधीन है इसलिये मि० जस्टिस शियररके फैसलेपर हम हाईकोर्टके तीसरे जजका फैसला हो जानेपर अपने विचार प्रकट करेंगे।

पर्देके पीछे—

एसोसिएटेड प्रेसके राजनीतिक संवाददाताने बंगाल गवर्नर मि० केसी और हिन्दुस्तानके गवर्नर जेनरल लार्ड वावेलके साथ हुई कांग्रेस नेताओंकी बातचीतके सम्बन्धमें ये बातें उड़ायी हैं। उसका कहना है कि कांग्रेस नेताओंने सरकारको यह आश्वासन दिया है कि कांग्रेस निकट भविष्यमें कोई प्रत्यक्ष कार्यवाही आरम्भ करने नहीं जा रही। उसने यह भी कहा है कि ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस नेताओं और ब्रिटिश सरकारके मध्य किसी प्रतिनिधिके बीचमें एक तरहकी युद्ध विराम सन्धि हो गयी है। इस पत्रने ही हमने पिछले सप्ताह इसके पीछे संकेत करते अपनेमें यह लिखा था कि ऐसेके पीछे कांग्रेस नेताओं और ब्रिटिश प्रतिनिधियोंके बीचमें जो बातें हो रही हैं उनकी गतिविधि के सम्बन्धमें जनताको अन्धकारमें रखना उचित नहीं है। नेताओंकी ओरसे कोई प्रकाश न डाले जानेकी स्थितिमें न जाने फायदा उठाकर उक्त संवाद समितिने सत्याग्रहको गुमराह करनेकी कोशिश की है। कांग्रेस नेताओंने जेलसे छूटनेके बाद बराबर इस बात पर जोर दिया है कि हमारी आजादीकी लड़ाई बराबर जारी है और यह तभी बन्द होगी जब देश स्वतन्त्र होगा। आज भी वही स्थिति है। दोनों पक्षमें एक दूसरेपर वार करनेको बेचैनी कम नहीं है। अतः हम उपरमें जरा भी तथ्य नहीं है कि कांग्रेसने ब्रिटिश सरकारके साथ कोई सस्ता समझौता कर लिया है।

"उत्तरी ईरानमें जनताका विद्रोह"

———*———

(लेखक—श्री ललित, बी० ए०)

पिछले बीस-बाइस दिनोंसे उत्तरी ईरान [के] अजरबेजान प्रान्तसे विद्रोहके समाचार [आ] रहे हैं। यह समाचार अधिकतर यहांके [प]त्रोंमें ब्रिटिश ब्राडकास्टिंग कारपोरेशन (बी० बी० सी०) और ब्रिटिश संवाद [ए]जेन्सी "रायटर" द्वारा ही प्रेषित किये [ज]ाते हैं। ईरानके बारेमें इन समाचारोंसे [इ]स बार यह स्पष्ट हो गया है कि मिथ्या [प्र]चार साम्राज्यवादी "रायटर" किस तरह [झू]ठे अतिशयोक्तिपूर्ण, भ्रामक, झूठे और [ग]न्दे समाचार भेज कर सोवियट रूस पर [आ]रोप लगाता है तथा दुनियाकी जनता [क]ो अंधेरेमें डाल कर रूस विरोधी आन्दो[ल]न और प्रचार फैलाता है।

इस देशकी साधारण जनताको बाहरी दुनिया और विदेशोंका हाल यहांके समाचार पत्रों द्वारा ही मालूम होते हैं। ईरानके इस विद्रोहकी कहानी पिछले पन्द्रह नवम्बरसे प्रारम्भ होती है, जिस दिन पहली बार यहांकी साधारण जनताको इसकी सूचना मिली। रायटरके संवाददाताने उस दिन तेहरान (ईरानकी राजधानी) से वहांके एक पत्र "कानून" का हवाला देते हुए लिखा कि, "जबसे फारसमें लाल सेनाने प्रवेश किया है, उत्तरमें सोवियट अधिकारियोंने "त्रिदलीय समझौते" को भंग कर फारसके सुरक्षा-अधिकारियोंको तंग किया है और आंतरिक स्थितिकी आवश्यकताओंके अनुरूप रक्षात्मक फौजोंको रखनेके लिये फारस सरकारको आज्ञा नहीं दी।"—(हिन्दुस्तान, १९ नवम्बर) इसके अतिरिक्त वह (लाल सेना) उत्तरी इलाकोंकी विद्रोही पार्टियोंको (यानी प्रजातन्त्रीय दलोंको) बढ़ावा दे रही है, जिसके फल स्वरूप कारस अधिकारी तथा देशभक्त पुरुष, जो स्थितिको बरदाश्त नहीं कर सकते, उन इलाकोंको छोड़ कर जा रहे हैं या रूसी अधिकारियों द्वारा निकाले जा रहे हैं।

इस प्रकार रायटरने प्रारम्भसे ही रूस विरोधी भूमिका बांधनी शुरू की और यह इशारा दिया कि उत्तरी ईरानमें विद्रोह होनेवाला है और उसमें रूसका हाथ है। इसके पांच दिन बादही बीस नवम्बरको एकदमसे यह सनसनी पूर्ण समाचार आया कि उत्तरी ईरानमें लड़ाई प्रारम्भ हो गयी है, ईरानी फौजें अजरबेजानमें घिर गयी हैं और तार टेलीफोनका सम्बन्ध कट गया है। दूसरे दिन समाचार आया कि ईरानमें प्रजातन्त्रीय दलका खुला विद्रोह जोरोंपर है, तीन नगरोंकी सरकारी सेनाएं घिर गयी हैं और बागी फौजोंने तेहरानकी ओर कूच कर दिया है। इसके बाद एक दो दिन तक लड़ाईके समाचार तो नहीं आए लेकिन यह समाचार आये कि विद्रोहको रोकनेके लिये ईरानी पार्लियामेण्टने जो दो पल्टनें ईरानी फौजकी भेजी थीं वे रूसी सैनिक अधिकारियों द्वारा रोक ली गयी हैं, ईरानके सशस्त्र विद्रोहमें रूसका हाथ है और सरकारको तेहरान छोड़ कर दक्षिणकी ओर जाना होगा। साथही यह भी खबर आयी कि ईरानी सैनिक अधिकारी फौजोंको आनेजानेकी इजाजत लेनेके लिये रूसी सदर मुकाम गए हुए हैं। इसके दूसरे दिन अचानक एक रहस्योद्घाटन किया गया कि उत्तरी अजरबेजानमें यात्रियों तथा फौजोंको जानेसे रूसी अधिकारी इस लिये रोक रहे हैं कि वे उन तेल कारखानों को छिपाना चाहते हैं जो ईरान सरकारकी जानकारी और आज्ञाके बिना शाही और तब्रिजमें खड़े किये गये हैं। दो दिन बाद पिछली खबरको खण्डित करती हुई यह खबर आई कि ईरानी सरकारने कोई प्रतिनिधि मण्डल रूसी अधिकारियोंके पास नहीं भेजा है और रूस उत्तरी ईरानकी राष्ट्रीय कांग्रेस की उस मांगका समर्थन करता है जिसमें अजरबेजानमें प्रजातन्त्र स्थापित करनेकी मांग है। इतने दिनोंके बाद फिर जैसे "रायटर" सोकर जागा और उसने लड़ाई का समाचार भेजा कि विद्रोही फौजें राजधानीकी ओर तेजीसे बढ़ रही है और एक अन्य रेलवे स्टेशन पर कब्जा भी कर लिया है। लेकिन दूसरेही दिन समाचार आया कि विद्रोही फौजोंने अपना रुख बदल दिया है और वे तेहरानकी ओर नहीं जा रही हैं। इसी बीच एक बार यह भी समाचार आया था कि अजरबेजानमें लड़ाई शान्त है।

यह है रायटर द्वारा प्रेषित समाचारोंका नमूना। एक साधारण पाठक इन परस्पर विरोधी, अतिशयोक्तिपूर्ण समाचारों को पढ़ कर भ्रममें पड़ जाता है और उसे वास्तविक परिस्थिति विदित नहीं होने पाती। जनता इन्हें पढ़ कर असमंजसमें पड़ जाती है कि आखिर बात क्या है? विद्रोहकी गतिविधि तथा रूसी हस्तक्षेपके बारेमें यह अत्यन्त भ्रामक समाचार हैं। अब आइये जरा वास्तविक परिस्थिति पर विचार करें।

अजरबेजान एक ऐसा प्रान्त है जो दो भागोंमें विभक्त हैं और दो विभिन्न देशोंके अधिकारमें है। इसका एक भाग उत्तरी ईरानमें है और दूसरा दक्षिणी रूसमें। इसके पूर्वमें कैस्पियन सागर है और पश्चिममें तुर्की। यह एक पहाड़ी प्रदेश है और अरासिस नदी द्वारा दो भागोंमें विभक्त है। इस नदीके उत्तरका भाग रूसके अधिकारमें है और दक्षिणका ईरानके। यह नदीही इन दोनोंके बीचकी सीमा है। इस नदीकी घाटी और मैदान अत्यधिक उपजाऊ हैं। यहां कपास, जौ और मक्का अधिक पैदा होती है तथा खनिज पदार्थोंमें तेल, लोहा सोना और तांबा प्रमुख हैं। फारस प्रदेशका यही हिस्सा अधिक अच्छा है। आजकल सम्पूर्ण अजरबेजान प्रान्तकी तीन चौथाई आबादी, लगभग तीस लाख रूसी अजरबेजानमें हैं और बाकी लगभग दस लाख ईरानके उत्तर में। तेलका व्यापार यहां प्रमुख है। इस प्रदेशकी जनता शेष ईरानसे बिलकुल भिन्न है। उनकी अपनी अलग भाषा, बोली, रीति रिवाज और संस्कृति है। वे तुर्की बोली बोलते हैं।

उत्तरी ईरानका विद्रोह तथा आजकल की घटनाएं वहांकी जनताकी जागृतिका परिणाम है और साथही ईरानकी प्रतिक्रियावादी, प्रजातंत्र विरोधी और ब्रिटेन पक्षी सरकारकी नीतिका फल। इसमें वहांके अंग्रेज तेल-कम्पनियोंके पूंजीपति-साम्राज्यवादी मालिक, जमींदार, तथा ईरान सरकारका मौजूदा मंत्रिमण्डल, जिसमें सईद जियाउद्दीनकी ताकतका बोलबाला है, का हाथ है। सईद जियाउद्दीन सन १९२० के जमानेमें ईरानके प्रधान मंत्री थे और तभी वे रजाशाह (ईरानके बादशाह) द्वारा अपनी ब्रिटिश-पक्षी तथा सोवियट विरोधी नीतिके कारण देशसे निकाल दिये गये थे। लेकिन सन १९४२ में अंग्रेजों द्वारा वे फिर ईरानमें वापस बुला लिये गये और आजकल वे मन्त्रिमण्डलमें हैं। सईद जिया तथा उनके आजकलके मन्त्रिमण्डलोंके सदस्य एंग्लो-ईरानी तेल कम्पनियोंके सीधे एजेण्ट हैं, और आजकल ईरानकी पार्लमेण्ट "मजलिस"के प्रधान मन्त्री श्रीयुत हकीमी है।

उत्तरी ईरानकी जनताका विद्रोह वहांकी इसी प्रतिक्रियावादी, प्रजातन्त्र विरोधी तथा ब्रिटेन-पक्षी सरकार, उनके अधिकारियों औरसामन्तशाही जमीन्दारोंके विरुद्ध है। यह विद्रोह उस पिछड़ी, पिसी हुई और अर्ध-गुलाम जनताकी आजादी, स्व-शासन, प्रजातन्त्र और उन्नतिकी मांग का प्रतीक है। अजरबेजानकी जनता अपने प्रान्तमें अपनी आजादी और अपना शासन चाहती है, न कि वह ईरानसे अलग होना चाहती है, जैसा कि रायटरके झूठे समाचारोंसे विदित होता था। इसी लिये सोवियट रूसने इस स्वायत्त-शासन और प्रजातन्त्रकी मांगका पूर्ण समर्थन किया है, न कि रूस यह चाहता है कि अजरबेजान उत्तरी ईरानसे अलग हो जाय और रूसमें सम्मिलित हो जाय, जैसा कि रायटरके समाचारोंने भ्रम फैलाया था। इसी लिये रूसने ईरानी सरकार द्वारा भेजी गई फौजोंको रोक लिया है, क्योंकि रूसके रहते हुए जनताके इस आन्दोलनको नहीं कुचला जा सकता, न जनताका दमन किया जा सकता है, न जनताका खून बहाया जा सकता है।

इस विद्रोहका इतना भीषण रूप धारण कर लेनेके दो प्रमुख कारण हैं—उसमें एक कारण सोवियट रूसका उत्तरी ईरानकी जनता पर प्रभाव है। जैसा कि मैं पहले लिख चुका हूं कि अजरबेजान प्रान्तके दो हिस्से हैं—उत्तरका हिस्सा रूसके क्षेत्रमें हैं और दक्षिणका ईरानके क्षेत्रमें। रूस की महान "अक्तूबर क्रान्ति" के पहले इस सम्पूर्ण प्रान्तके दोनों हिस्से बहुत पिछड़े हुए और अर्ध गुलाम परिस्थितिमें थे। लेकिन अक्तूबर क्रान्तिकी सफलतासे रूसमें जनताका यानी वहांके पद-दलित गरीब मजदूर किसानोंका राज्य कायम हुआ और जारशाहीका समूल नाश हुआ। इस क्रान्तिके बाद सम्पूर्ण रूसके साथही साथ रूसी अजरबेजानने भी अचानक आश्चर्यपूर्ण उन्नति करनी शुरू की। अक्तूबर क्रान्तिके पहले रूसी अजरबेजानमें केवल दो अखबार निकलते थे और कुल बारह इंजीनियर थे। लेकिन अब वहां सौ अखबार निकलने लगे थे, तीन हजार इंजीनियर हो गये थे और शिक्षा पचीसगुनी [बढ़] गयी थी। साथही उद्योग धन्धोंने उन्नति की थी, वहांकी पैदावार बढ़ गयी थी और वैज्ञानिक ढङ्गसे सामूहिक खेती प्रारम्भ हो गयी थी।

लेकिन जैसी अभूतपूर्व उन्नति रूसी अजरबेजानकी हुई उसकी एक अंश भी ईरानी अजरबेजानमें न हुई। उत्तरी अजरबेजान रूसकी संरक्षतामें एक समृद्धिशाली देश बन गया लेकिन दक्षिणी अजरबेजान ईरानकी संरक्षतामें जहांका तहां पिछड़ा पड़ा रहा। जब उसने देखा कि उसके दूसरे सगे भाई इतने आगे बढ़ गए हैं और इतनी अच्छी हालतमें हैं, तो उसके दिल में भी वैसा ही बनने और रहनेकी इच्छा जागृत हुई। ईरानी अजरबेजानने भी उन्नति करनी चाही। यह इच्छा ही उत्तरी ईरान की जनताकी जागृतिका कारण बनी और यही जागृति ही इस विद्रोहका एक कारण है। अब उत्तरी ईरानकी जनता पिछड़ी पिसी हुई और जमीन्दारोंकी गुलाम बनकर नहीं रह सकती।

अजरबेजान प्रान्तही उत्तरी ईरानकी जनताकी जागृतिका गढ़ है। यहींसे [इ]स [देश]भरमें जागृतिकी लहर फैली, जिसका नेतृत्व अजरबेजानने ही किया। यहींसे सबसे पहले प्रजातन्त्र और स्वशासनकी मांग [उठी] जनताका सामूहिक संगठित आन्दोलन [यहीं] से उठना शुरू हुआ। इसे देख कर [illegible] अंग्रेज तेल व्यापारी प्रतिक्रियावादी [जमी]न्दार तथा उनके ईरानी एजेण्ट, जो [मन्त्रि]मण्डलमें थे, सशंकित हुए क्योंकि [ये] शक्तियां जनताकी जागृति नहीं देख सकतीं [क्योंकि] उससे उनके स्वार्थ मिटते हैं। जैसा [कि] प्रजातन्त्र विरोधी और साम्राज्यवादी [सर]कारकी नीति होती है कि वे जनताकी जागृति और आन्दोलनको कुचलनेकी कोशिश करती है पर वह जागृति [और] आन्दोलन उतना ही आगे बढ़ता है [जैसा] कि अपने देशकी हालतसे स्पष्ट है) [illegible] ईरानकी, सरकारने भी उत्तरी [illegible] साथ किया। लेकिन उत्तरी [illegible] प्रजातन्त्र और स्वशासनकी मांग [illegible] आगे बढ़ती गई और इस हद तक [illegible] कि उसने मौजूदा रूप धारण कर [लिया] [illegible] क्रान्ति दबानेसे क्रान्ति उभरती है। [illegible] कार जितनाही जनताके आन्दोलनको [illegible] कुचलनेका प्रयत्न करती है उतनाही [illegible] उन पनपते हैं फिर दमनके कारण [illegible] रूप धारण कर लेते हैं।... इस तरह [illegible] सरकार और फौजी अधिकारियोंका [illegible] इस विद्रोहका दूसरा प्रमुख कारण [illegible] जिसके पीछे ब्रिटेन-ईरानी-अंग्रेज [illegible] लड़ाईके दौरानमें अब रूसकी [illegible]

उत्तरी ईरानके अजरबेजान प्रान्तमें आई तो वहां एक नई ज्योति और जागृतकी लहर फैल गयी। बहुतसे प्रतिक्रियावादी अजरबेजान छोड़ छोड़ कर भागने लगे— ...कार दूर हो जाता है, और नये-नये राजनैतिक प्रजातन्त्रीय दल बनने लगे। इनमें "तूदे पार्टी" और "अजरबेजानका प्रजातंत्रीय दल" दो प्रमुख थे। लेकिन सम्पूर्ण ईरानमें सरकारकी वही पुरानी नीति बनी रही। इसके विरोधमें अभी पिछली बीस नवम्बरको ताब्रिज (अजरबेजानकी राजधानी) में अजरबेजानकी सब राजनैतिक पार्टियोंकी एक सम्मिलित "राष्ट्रीय कांग्रेस" की सभा हुई जिसमें मांग की गयी कि उत्तरी ईरानमें प्रजातंत्र स्थापित हो। उसके प्रस्तावमें कहा गया—'अजरबेजानमें राष्ट्रीयता, भाषा, रीति रिवाज सब मौजूद हैं, अतः हमको अधिकार है कि फारसकी अखण्डता और स्वाधीनता कायम रखते हुए हम यहां स्वशासन और प्रजातंत्रकी मांग करें। अपनी मांगोंको सामने रखते हुए हमारा उद्देश्य कदापि नहीं है कि हम फारसका विभाजन करें या फारसकी वर्त्तमान सीमाओंमें कुछ अन्तर करें। अजरबेजान फारसमें राष्ट्रीय सरकारके रूपमें प्रजातन्त्रवादी राज्यकी मांग करता है। हम राष्ट्रीय असेम्बलीमें अपने प्रतिनिधि भेजेंगे और केन्द्रीय सरकारके सामाजिक संचालनमें भाग लेंगे।"—इस राष्ट्रीय कांग्रेसकी सभामें अजरबेजान भरसे सात सौ प्रतिनिधि आये थे।

इस विद्रोहका उल्लेख करते हुए सोवियट सरकारके मुखपत्र 'इजवेस्तिया' ने निम्नलिखित रिपोर्ट छापी है—"ईरानका यह विद्रोह प्रतिक्रियावादी जमींदारोंकी सरकार पुलिस और प्रजातन्त्री आन्दोलन समर्थकोंमें मतदानके मामलेपर प्रारम्भ हुआ है। चुनावोंमें शहरी व देहाती दोनों लोग बढ़बढ़कर भाग ले रहे हैं। ... ईरानमें ज्यादातर आबादी अजरबेजान लोगोंकी है, जिन्हें न तो अबतक अपनी भाषाके स्कूल खोलनेकी इजाजत है न अपनी पुस्तकें और पत्र प्रकाशित करनेकी अनुमति है। किसान, मजदूर, छोटे व्यापार, अफसर तथा वकील सब प्रजातंत्रीय आन्दोलनके हामी हैं और यह आंदोलन प्रतिदिन अधिकाधिक लोकप्रिय होता जा रहा है। प्रजातन्त्री नेता ईरान सरकारके अधीन प्रजातन्त्रकी मांग कर रहे हैं। स्थानीय अधिकारियोंने आन्दोलनको दबानेके लिये हिंसात्मक उपायोंका प्रयोग किया है। इस कार्यमें प्रतिक्रियावादी जमींदार उनका साथ दे रहे हैं। मुकाबला कड़ा हो रहा है।"

इस तरहसे यह स्पष्ट हो गया है कि ... द्वारा प्रेषित समाचार नितान्त ...चार, झूठे और अतिशयोक्तिपूर्ण हैं। ... रूस अपने तेलके कारखानोंको ... चाहता है न उसकी फौजें तेहरान की ओर जा रही हैं या गयी थीं। न किसी ... कब्जा हुआ है। न इस विद्रोहमें ... हाथ है। हां, रूसने उत्तरी ईरानकी जनताकी मांगका समर्थन अवश्य किया है जो कि हर स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र प्रेमी देश करेगा। इस मांग और आन्दोलनको कुचलनेके लिये जो अतिरिक्त ईरानी फौजें उत्तरकी ओर जा रही थीं उन्हें भी रूसने इसलिये रोक है कि जितनी फौजें उत्तरी ईरानमें हैं उतनी ही शान्ति और व्यवस्था कायम रखनेके लिये पर्याप्त हैं। ज्यादा फौजें भेजनेसे विद्रोह बढ़ेगा। रूस ईरानका बंटवारा नहीं चाहता जैसा मोलोटोवके एलान, इजवेस्तियाकी रिपोर्ट और स्वयं राष्ट्रीय कांग्रेसके प्रस्तावसे स्पष्ट है। यह सब साम्राज्यवादी समाचार एजेन्सीका रूस-विरोधी झूठा प्रचार है।

जो हो, ईरानमें जनता और प्रजातन्त्र दोनों साथ जाग रहे हैं। हम लोगोंको देखना है कि क्या होगा ? और क्या वास्तविक परिस्थिति है ? आज इन सब घटनाओंसे स्पष्ट है कि दुनियाकी जनता अब स्वतन्त्र रहना चाहती है, वह अपना राज्य और अपनी उन्नति चाहती है। फासिस्टवादके बाद यह साम्राज्यवादके अन्तिम दिन हैं। दुनियाकी जनता उसे मिटानेके लिये आज उठ खड़ी हुई है।

प्रारम्भिक विकासका महत्व

लेखक—श्री "अनिरुद्ध"

मानव जीवनमें यश प्राप्तिके इच्छुक, जीवन पर्यन्त किसी न किसी ऐसे कार्यको करनेमें व्यस्त रहते हैं जो साधारण कार्यों की अपेक्षा विशेष महत्वका होता है। अपने अविश्रान्त परिश्रमके फल-स्वरूप मनुष्यको शारीरिक तथा आर्थिक सुख स्वभावतः ही प्राप्त हो जाते हैं, लेकिन यश प्राप्तिके सम्बन्धमें यह आवश्यक नहीं।

क्या कारण है कि प्रत्येक व्यक्तियके मस्तिष्ककी वृद्धिके रूपमें असमानता दिखाई देती है। कुछ लोग पुरुषार्थी होते हैं, कुछ लोग नहीं होते। कुछ लोग जन्मसे ही समाजका नेतृत्व करनेमें अपनी शक्ति लगाते हैं दूसरे लोग उनके अनुयायी बनकर ही सन्तोष प्राप्त करते देखे जाते हैं। कुछ लोग प्रत्येक व्यवहार कार्यमें ईमानदारीका बहुत महत्व देते हैं, कुछ लोगोंके हृदयोंमें ईमानदारी कोई विशेष स्थान नहीं रखती।

इसके अतिरिक्त हम यह भी देखते हैं कि किसी किसी मनुष्यमें किसी विशेष प्रवृत्तिका समावेश अपेक्षाकृत अधिकाधिक रूपमें देखा जाता है जिसे हम ईश्वरीय देनके नामसे पुकारने लगते हैं। उस ईश्वर-दत्त प्रतिभाके बल पर उस व्यक्तिके द्वारा देशके तथा विदेशोंके लोगोंको उन्नति मार्गका दिग्दर्शन कराया जाता है। कभी कभी इसके विपरीत भी, ऐसे प्रतिभावाले व्यक्तियोंका, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर ऐसा प्रभाव पड़ता है जो उनके सुखी जीवन पर आघातका स्वरूप होता है।

हमारे देशके चालीस करोड़ निवासियों के भाग्य-चक्रकी रेखा, सुख-मय बने इसके लिये महात्मा गान्धी अपने अन्य सैनिकोंके साथ स्वतन्त्रता-युद्धमें कुशलता पूर्वक संग्राम करनेमें संलग्न हैं।

उन्हें न केवल भारत वर्षमें शान्ति स्थापित करनेका कार्य है, बल्कि वे विश्व-शांति स्थापित करनेके लिये अपना जीवन अर्पित करनेके लिये उद्यत हैं। पाश्चात्य देशोंमें जो हृदयको दहला देने वाला युद्ध-जनित अशान्तिका, वातावरण उपस्थित हुआ है, वह भी कुछ ऐसे ही नर-संहार और रक्तकी नदियां देखकर प्रसन्न होनेवाले व्यक्तियोंके मस्तिष्क और उनके आदेशोंका प्रतिफल है।

व्यक्तियोंके इस प्रकार असमान तथा एक दूसरेसे विपरीत मस्तिष्कोंके अस्तित्व के सम्बन्धमें विज्ञानसे हमें कोई सन्तोषजनक उत्तर मिलनेका अवसर नहीं मिला, लेकिन कुछ अमेरिकन अनुसन्धान सम्बन्धी प्रयोगशालाओंके अधिकारियोंने इस दिशा में सन्तोषजनक कार्य किया है। कुछ महत्वपूर्ण प्रयोग करनेके पश्चात् इस सिद्धान्त पर मनोवैज्ञानिक लोग पहुंचते हैं कि प्रतिभावान मस्तिष्क होनेके लिये यह अत्यन्त आवश्यक है। जो प्रतिभा बालकके माता पिताके मस्तिष्कमें होगी, उसका अधिकांश असर उसके मस्तिष्क पर होगा। जीवनके प्रारम्भमें बालकोंके आसपास जो वातावरण उपस्थित होगा उसका असर उनके हृदयों पर अवश्य पड़ेगा।

प्रतिभावान बालकके मस्तिष्कके विकास के लिये यह आवश्यक है कि उनकी शिक्षा और शारीरिक उन्नतिका कार्य कुशल व्यक्तियोंके हाथोंमें ही सौंपा जाय। बालकों के मस्तिष्कमें जो ईश्वर-दत्त प्रतिभा रहती है वह विकासके पथ पर अवश्य अग्रसर होगी, पर यदि मार्ग प्रदर्शक सफल व्यक्ति न हुआ और उन बालकोंके सम्मुख अनुचित वातावरण रखा गया तो उसका असर विपरीत दिशामें होगा। यहां तक देखा गया है कि गरीब घरानोंमें पैदा हुए बालकोंको उचित तरीकोंसे शिक्षित करके उन्हें उन्नत मार्गका प्रदर्शन करनेके फल-स्वरूप सन्तोषजनक फल मिला। इसके विपरीत कुलीन एवं शिक्षित वातावरणमें पैदा हुए बालकों को उस वातावरणसे अलग कर देने पर उनका शिक्षा सम्बन्धी विकास तथा व्यवहार कुशलताकी प्रतिभा असन्तोषजनक सिद्ध हुई।

मनोवैज्ञानिकोंने इस सम्बन्धमें जो अनुसन्धान किये हैं उनके बल पर उनका कहना है कि असाधारण प्रतिभावान व्यक्तिकी प्रतिभाका पता तो बहुत थोड़े समयमें लग जाता है। उनकी स्मरण शक्ति मानसिक विचार, उनका दैनिक कार्यक्रम किसी समस्याको हल करनेका ढङ्ग, साधारणतः अपने ढङ्गका अनोखा हुआ करता है। इस प्रकारके सैकड़ों प्रयोग किये जानेके पश्चात असाधारण प्रतिभावानोंको मनोवैज्ञानिकोंने एक अलग श्रेणीमें रखा है। उनकी प्रतिभाके अनुसार उनके क्रममें तो मनोवैज्ञानिकोंका आपसी मतभेद है, लेकिन उच्च श्रेणीमें उनकी गणना करनेके सम्बन्धमें ऐसी कोई बात नहीं है। इसमें संदेह नहीं कि बाल्यावस्थामें जिस योग्यताकी झांकी मिलती है आगे चल कर उसी प्रकारका जीवन बिताते हुए उन्हें देखा जाता है।

अन्तमें हम इस सिद्धान्त पर पहुंचते हैं कि बालकोंके मस्तिष्क और शारीरिक विकासके लिये यह आवश्यक है कि उनको यथाशक्ति उचित तरीकोंसे शिक्षित किया जाय और उनके सामने प्रारम्भसे ही शिक्षित वातावरण रखा जाय तो उनकी उन्नति अवश्य होगी।

कलकत्ते में दिल्ली चलने का ऐलान

———*::*———

(एक विहंगम दृष्टि)

८ दिसम्बर

जैसे जैसे नेताओंकी उपस्थितिके दिन व्यतीत होते जा रहे थे बजाय ठण्डा पड़ने के जनताका उत्साह दिनों दिन बढ़ता ही जा रहा है। दिमागका सारा कल पुर्जा जैसे एक बारगी ही इस बुरी तरह चक्कर खा गया हो कि वह स्थिर नहीं हो पाता। इस तरह दिमागको चंचल रहनेका शायद अबतक ऐसा कभी अवसर नहीं मिला है। प्रत्येक व्यक्तिके दिमागका बोझ बढ़ गया है और वह अपने आपसे इस बुरी तरह उलझ गया है कि उसे अन्य किसीकी भी चिन्ता नहीं रह गयी है। सर्वहारा हो या कक्षाधीन कुली हो या मजदूर सभीके सामने देश और देशकी समस्या आकर खड़ी हो गयी है। जो सुबह रामनामके अलावा किसी भी वस्तुकी कल्पना भी नहीं करते थे वे भी पहले सुबह दरवाजे पर खड़े हाकरोंको पुकारते नजर आने लगे। कलकत्तेकी यह जाग्रति नगरमें सागर और प्यालेमें तूफानकी तरह बलबला कर भर उठी। सचमुचमें पहले यह बात समझमें नहीं आती थी और बाहियात सी मालूम पड़ती थी कि कांग्रेसके नेता इतने दूर दूर जाकर बैठकें क्यों किया करते हैं एवं आने जानेमें इतने पैसे बेकारमें क्यों खर्च कर दिया करते हैं। किन्तु अब यह बात स्पष्ट ही नहीं वरन प्रत्यक्ष हो चली कि इन बैठकों का क्या महत्व है और क्यों दूर दूर जाकर बैठकें हुआ करती हैं। बैठकोंका प्रत्यक्ष प्रभाव जनताके दिमागी इन्कलाबके रूपमें हो जाता है। न जाने यहांका जोश दिमागके कोने कोनेमें उमड़ पड़ता है और वह प्राण जनताको इस जोरसे झकझोर डालता है कि उसका एक तरहसे संशोधन हो जाता है। उसके भीतरके तमाम अराष्ट्रीय वस्तुएं आपसे आप धुल जाती हैं और वह पूर्ण राष्ट्रीय ज्योतिसे भर जाता है। इतने बड़े महान कार्यके लिये यदि इतना थोड़ा कुछ कांग्रेसके नेताओंको करना पड़ता है तो न तो वह अपव्ययके ही प्रकारमें आता और न उसे फिजूलका कार्य ही कहा जा सकता।

आजका दिन कलकत्तेके लिये एक चिरस्मरणीय दिन रहा। आज दिन यहां यह अफवाह जोरों पर रही कि गांधी-वावेल मिलन अवश्यम्भावी है। गांधी वावेलकी इस मुलाकातको बड़ा महत्व दिया जा रहा था। हालहीके भारत सचिवके भारत सम्बन्धी भाषण एवं लन्दनके पार्लियामेण्ट से भारतके मसलेकी जांच करनेके लिये आनेवाले डेपुटेशनको मद्देनजर रख करही लोग गांधी-वावेल मिलनकी चर्चा कर रहे थे।

आज कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी बैठकका दूसरा दिन था। आज बहुत बड़े बड़े मसले पर विचार किया गया और उन्हें एक सुनियोजित रूप दिया गया। वर्किङ्ग कमेटीकी ओरसे पं० जवाहरलाल नेहरूको बर्मा और मलाया भेजना तय हुआ ताकि वे वहां जाकर भारतीयोंकी दशा देखें और उन्हें सहायता दें। सरदार पटेलके सभापतित्वमें आजाद हिन्द फौज जांच और सहायक समितिकी स्थापना हुई एवं अन्य बहुतसे चुनाव सम्बन्धी झगड़ोंको तय किया गया। चुनाव सम्बन्धी कार्योंके लिये पं० जवाहरलालको दक्षिण भारत, पं० पंतको पंजाब एवं श्रीआसफअलीको उत्तर पश्चिमी सीमा प्रान्तका दौरा सुपुर्द किया गया ताकि वहां कांग्रेस सदस्योंके आपसके मतभेद आसानीसे निपटाए जा सकें। आज दिन चुनाव घोषणा पत्रके विषयमें किसी निश्चय पर नहीं पहुंचा गया अतएव यह मसला दूसरे दिनके लिये छोड़ दिया गया।

भाषण

आज पूराका पूरा शहर एक तरहसे आन्दोलित हो उठा। देशप्रिय पार्कका नाम घर घरसे सुनायी देने लगा। आज वहां आजाद-हिन्द-फौज दिवसके उपलक्षमें पं० नेहरू और सरदार पटेलका भाषण जो होनेवाला था। इस भाषणके नामपर मानों पार्कका भाग्य जग गया। महीनों पहलेसे ही पार्क सजाया जा रहा था। पार्क सजाने के लिये इंजीनियरसे नक्शे बनवाये गये थे और नक्शेके अनुसार बैठनेवाले लोगोंके लिये स्थान बनवाये गये थे। पार्ककी सजावट, स्वयंसेवकोंकी व्यवस्था और कार्यकर्त्ताओं की तैयारी की परीक्षाका आज अन्तिम दिन था। प्राथमिक चिकित्साके केन्द्र, पानीशाला, आदिका पूर्ण प्रबन्ध था। फिर भी प्रबन्ध कर्त्ताओंको इस बातका अनुमान नहीं था कि भीड़ कितनी होगी। कलकत्तेकी बड़ीसे बड़ी सभाओंमें होनेवाली भीड़को मद्देनजर रख कर ही सारी तैयारी की गयी थी किन्तु उन्हें शायद उस समय तक यह मालूम न था कि दुनिया अपनी गतिको बदल चुकी है और उस गतिका अनुमान जिसे न होगा वह धोखा खायगा। यही बात आज सभाके संयोजकोंके सामने सही उतरी।

बारह बजे दिनको सभास्थलमें करीब साठ हजार आदमी इकट्ठे हो चुके थे। यह तूफान आनेके पहलेकी शान्ति थी। एक बजेसे ट्रामों और बसोंमें इतनी भीड़ भरी रहने लगी कि किसीके लिये भी एक इञ्च जगह पाना मुश्किल ही नहीं असम्भव हो गया। दो और तीन बजते बजते शहर की अधिकतर दुकानें बन्द हो गयी और सड़कें निर्जनसा हो गयीं। इस समय तक ट्रामोंकी छत पर साहस करके लोग बैठने लग गये थे। मोटरके आगे और पिछले हिस्सेकी जितनी जगहको जनता प्राप्त कर सकती थी, प्राप्त कर गयी। ट्राम और बस स्टैण्डके नजदीक एक अच्छा खासा मेला जमा हो गया। ट्राम और बसकी प्रतीक्षामें खड़े खड़े लोगोंका जब धैर्य टूटने लग गया तो चरण बाबूके भरोसे जय यात्रा शुरू हो गयी। जिस सड़क पर भी नजर चली जाती नागरिकों एवं भिन्न भिन्न संस्थाओंकी लम्बी कतार झण्डे और नारे के साथ आगे बढ़ती हुई नजर आती थी। ठीक ६ बजे तक देशप्रिय पार्कके चारों ओर प्रत्येक मकान और वृक्ष पर जहां भी तिल रखनेकी जगह थी नरमुण्डही नरमुण्ड नजर आने लगा। कार्यकर्त्ताओंका अनुमान था कि भीड़ दो लाखसे अधिक नहीं होगी किन्तु वह पांच लाखसे ऊपर पहुंच गयी। दो लाख आदमियोंकी व्यवस्थासे पांच लाख से अधिक आदमियोंको सम्हाला नहीं जा सकता, यह बात उस दिन प्रत्यक्ष हो उठी। अभी नेताओंके आगमनमें विलम्ब था। सहसा गगनभेदी नारेके साथ पं० नेहरू, सरदार पटेल और शरतबोस मञ्च पर दिखलायी पड़े। पांच लाख आदमियोंके सम्मिलित कण्ठसे "जय हिन्द" "वन्देमातरम" का नारा निकल कर आकाश में गूंज उठा। सारा आसमान इस क्रान्तिकारी नारेसे भर गया। तेज शरीर जवाहरलाल इधर उधर घूम घूमकर भीड़को देखने लगे। सरदार पटेलकी आंखें तो मानों भीड़ पर जाकर चिपक गयीं।

पं० नेहरू डा० विधानचन्द्र राय एवं इन्दिरा गांधीके साथ

बङ्गालकी आवाज

उपस्थित जनसमूहको लक्ष्यकर पण्डित नेहरूने कहा—इस बार बङ्गाल आनेमें मैं झिझकका अनुभव कर रहा था। बङ्गालकी आवाज हमें अहमदनगर किलेमें ही सुनायी पड़ी थी किन्तु उस समय हम बन्दी थे अत: एवं लाचार थे।

उफ़ ! ऐसी भीड़

सरदार पटेल जब बोलनेको खड़े हुए तो साश्चर्यसे भीड़की ओर देखकर बोले—आज तक अपने जीवनमें मैंने ऐसी भीड़ कभी नहीं देखी। इस विशाल जनसमूहको देखकर मुझे भान पड़ता है जैसे हमारे नेताजीका ही यह सार्वजनिक रूप हो। इस एकत्रित भीड़के लिये यदि कोई भी धन्यवादका पात्र है तो वह नेताजी ही है।"

लाउड स्पीकरके प्रबन्धका विस्तार इतना बढ़ गया एवं भीड़ इतनी दूरतक फैली हुई थी कि ध्वनि विस्तारक यन्त्र भी बेकार हो गया। आवाज जितनी दूरतक फैल सकती थी भीड़ उससे भी अधिक दूरतक फैली थी। इसका परिणाम यह हुआ कि जनता अपने नेताओंके भाषण सुननेमें असमर्थ रही। लाचार पंडित नेहरूने अपना भाषण बन्द कर दिया एवं पटेल कुछ देरतक बोलते रहे। बेशुमार भीड़ एकत्र हुई और फिर अनियन्त्रित ढङ्गसे इधर-उधर फैल गयी। इस नर-समुद्रमें जो दबे सो दबे ही रह गये। शुक्र यही हुआ कि किसीकी जान न गयी। भीड़का अन्दाजा इसीसे लगाया जा सकता है कि ७ बजे समाप्त हो जानेवाली सभाके दर्शक रात ग्यारह बजेतक घर लौटे। नेताओंने आंख पसारकर एक बार फिर इस बातको देखा कि आज उनकी आवाज सुननेके लिये जनता कितनी व्यग्र है।

सन्ध्या समय सोदपुरमें गान्धीजीकी प्रार्थनामें वैसी ही भीड़ रही। सियालदह स्टेशनसे सोदपुरकी ओर जितनी गाड़ियां गयी सभी खचाखच भरी हुई थीं। गान्धीजीका हस्ताक्षर व्यापार एवं हरिजन-फण्डका कार्य भी पिछले ही दिनोंकी भांति चलता रहा।

९ दिसम्बर

आज दिनभर गांधी-वावेल मिलनकी चर्चा जोरोंकी रही। लार्ड वावेल दो दिन पूर्व कलकत्ता आ गये थे और पुलिसकी बन्दोबस्त एवं उच्च सरकारी कर्मचारियोंकी दौड़धूपके कारण सर्वसाधारण भी आसानीसे जान गये थे कि हमारे वायसराय कलकत्तेमें उपस्थित हैं। राजनीतिक अटकलबाजोंकी कलाबाजियां आज देखते ही बनती थी। ऐसा मालूम पड़ता था कि भारतमें आजकलमें ही कोई बहुत बड़ी घटना घटनेवाली है—मानों स्वाधीनताकी पहली सीढ़ीपर कल भारत अवश्य पग देगा। आशान्वित भविष्यकी कल्पना करते अपनेको थोड़ी देरके लिये प्रसन्न कर लेना मनुष्यकी कितनी बड़ी दुर्बलता

है। काश, वह इससे मुक्त हो पाता। यह दुर्बलता उसकी सफलताके मार्गका वह रोड़ा है जो उसकी प्रगतिको ठेस तो नहीं लगाती वरन् कुछ देरके लिये पंगु बना देती है। जब-रन बनायी गयी प्रसन्नता जब विकृत चिह्न होती है तो उसका प्रभाव उसके मस्तिष्क पर कुछ ऐसा बुरा पड़ता है कि वह किंकर्त-व्यविमूढ़ बनकर अपने आपको बेकार बना देता है।

आज भी कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी बैठक अन्य दिनोंकी तरह मौलाना अबुल कलाम आजादके निवासस्थानपर ही हुई। कांग्रेसका चुनाव सम्बन्धी घोषणापत्रका मसविदा आज तयार कर लिया गया किन्तु वह प्रेसवालों को नहीं दिया गया क्योंकि घोषणापत्रके सम्बन्धमें गान्धीजीका अन्तिम निर्णय नहीं लिया गया था। कर्णाटक प्रान्तीय कांग्रेस कमेटीका दफ्तर धारवारसे हुबली बदल दिया गया एवं उड़ीसाके गंजाम और कोरापुट जिलेके कार्यक्षेत्रके झगड़े और सिंहभूम (बिहार) के चक्रधरपुरकी समस्या को सुलझानेका भार श्री शंकरराव देवके कंधेपर डाल दिया गया।

मौलाना आजादके निवास स्थानपर आज कांग्रेस वर्किङ्ग कमेटीकी बैठक प्रारम्भ होनेके पहलेही जेसोरके झिकार गाछा कैम्प से आये हुए आजाद-हिन्द-फौजके सिपा-हियोंने बैठकमें सम्मिलित होनेवाले सभी नेताओंको जय हिन्दकी सलामी दी। पं० नेहरूने दलके नेतासे हाथ मिलाया और उसके बाद ही वे बहुविलतालके अनुरूप उनके सभापति खान अब्दुल समद खांसे बातचीत करनेमें संलग्न हो गये। मौलाना आजादने आजाद हिन्द फौजके सिपाहियों के समक्ष कुछ देरतक भाषण किया और उनके साहसकी भूरि भूरि प्रशंसा की।

चूंकि दूसरे दिन सोमवारको गांधीजी-लार्ड वावेलसे मिलना था अतएव आज उनका मौन दिवस रहा। सोदपुरमें दर्शनार्थियोंकी भीड़ आज अन्य दिनोंकी अपेक्षा सदासे भी अधिक थी। संध्या ४-२० पर सियालदहसे जो गाड़ी केवलमात्र सोदपुरके लिये स्पेशल ट्रेनके रूपमें जाती थी वह तिरंगे झण्डोंसे सजी हुई थी एवं इंजिनपर लोगोंकी भीड़ थी। इंजिनके ड्राइवरको अपनेका हिस्सा दिखलायी पड़नेके लिये पुलिसकी मदद लेनी पड़ी तब कहीं जाकर गाड़ी सियालदहसे आगे बढ़ सकी। सोदपुर में गान्धीजीका हस्ताक्षर-व्यापार एवं हरि-जनफण्डका कार्य पूर्ववत चलता रहा।

बड़ाबाजार

"कल जवाहरलालका भाषण होनेवाला है"—आज बड़ाबाजारकी हलचलका प्रधान विषय था। बड़ाबाजारकी चहल पहल आज अन्य दिनोंकी अपेक्षा बहुत ज्यादा बढ़ गयी थी। बूढ़ेसे लेकर बच्चे तक कुछ अजीब शान से और बोलते नजर आ रहे थे। मारवाड़ियोंकी मानो आज बड़ाबाजारपर सौ जान निछावर थी। बड़ाबाजार-कांग्रेस-कमेटीका बैज लगाये जितने आदमी घूम रहे थे अपनेको किसी भी आफिसरसे कम नहीं समझ रहे थे। खेंगरापट्टीके मैदानका नक्शा तो आज सावन ही बदल गया था। जहां दिन रात कुत्तें और गद्दे लोटा करते थे वहां आज सजावटकी बहार थी। सच-मुच उत्साह जब अवस्थाकी सीमाको पार कर जाता है तो मनुष्यके लिये कुछ भी असं-भव नहीं रह जाता। वह तारे तोड़नेको कौन कहे चांदको भी अपने हाथका टार्च बना सकता है।

आज यादवपुर इंजीनियरिंग कालेजमें पण्डित नेहरूका दीक्षान्त भाषण हुआ।

१० दिसम्बर

बड़ा बाजारमें पंडित नेहरूजीके भाषण की चर्चा जंगली आगकी तरह पूरे जोशो-खरोशके साथ फैल रही थी। स्वयंसेवकों की टोलियां प्रातः कालसे ही खेंगरापट्टीकी ओर जाती हुई नजर आ रही थीं एवं दर्श-नार्थी भी स्थानका मुआइना करनेके लिये उसी ओर जाते दिखलायी पड़रहे थे। दो बजेसे ही जनता मैदानमें जमा होने लग गयी थी और पांच बजते बजते आसपासके लेकर दूर दूर तकके तमाम मकान नरमुण्डसे आच्छादित हो चुके थे। जनता बेचैनीसे अपने नेताके प्रियदर्शनोंकी प्रतीक्षा कर रही थी। रह रह कर लाखों लाख आकुल कंठों से "जय-हिन्द" और 'वन्देमातरम' का नारा निकल कर आकाशको कंपा रहा था। ठीक सवा ६ बजे पंडित जवाहरलाल नेहरू आये। पके हुए बालोंके पीछे बचपनको भी मात कर देनेवाली उनकी चंचलता देखते ही बन रही थी। पलक मारते वे मंच पर आ पहुंचे और देखते देखते उन्होंने सारी उपस्थितिको सन्तुष्ट कर दिया। मौन जैसी निस्तब्धताके बीच बोलते हुए आपने कहा:—"देशकी नब्ज आज इतनी तेज चल रही है कि ऐसा मालूम होता है जैसे थर्मा-मीटर फूट पड़ेगा फिर भी हमें खूब सोच समझ कर चलना है। अपने दिलमें आग और दिमागमें बर्फ लेकर ही हम कोई काम सफलता पूर्वक कर सकते हैं।"

भाषणोंकी लड़ाई

"कांग्रेस पर प्रहार करनेका सरकारी तरीका अब बदल गया है। एक जमाना था जब कांग्रेसको बुरा भला सब कुछ कहा जाता था और इसे ही वे उचित और मर्या-दित समझते थे। किन्तु युद्धके बाद जो दिमागी इन्कलाब हुआ है उसने भारतमें अंग्रेजी रवैयेको भी बदल दिया।"

एसोसियेटेड चेम्बर आफ कामर्समें भाषण करते हुए वायसरायने अपनेको भारतका हितैषी बतलाते हुए कहा कि 'भारत छोड़ो' का नारा अलऊाद्दीनका वह चिराग नहीं है जो अकस्मात ही सब कुछ बदल दे। कांग्रेसके 'भारत-छोड़ो' नारेके महत्वको कम करनेके लिये वायसरायकी यह चालाकी शायद अब कभी सफल नहीं हो सकती।

वर्किङ्ग कमेटी

प्रातः काल वर्किंग कमेटीकी बैठक मौलाना आजादके निवास स्थान पर हुई और दोपहरको सोदपुरके गांधी आश्रममें। आज आचार्य कृपलानी अस्वस्थ होनेके कारण प्रातःकालकी बैठकमें शरीक नहीं हो सके किन्तु वे दोपहरकी बैठकमें शरीक हुए। आज यह निश्चय हुआ कि कांग्रेसका वार्षिक अधिवेशन अप्रेलके प्रथम सप्ताहमें दिल्लीमें हो।

गांधी-वावेल-मिलन

दो बजे दिनमें गांधीजीका मौनव्रत खत्म हुआ एवं संध्याकी प्रार्थनामें शान्त मनसे शरीक हुए। भीड़ पूर्ववत् ही थी। इधर जिस समय खेंगरापट्टीके मैदानमें पं० जवाहरलाल नेहरू उपस्थित जन समूह-को यह बतला रहे थे कि देशकी नब्ज इतनी तेज चल रही है कि थर्मामीटर टूट जानेका डर है उसी समय गांधीजी वावेलको सत्य और अहिंसाके आगे रख कर अपने तेजसे उन्हें प्रभावित करना चाह रहे थे। गांधी वावेल मुलाकात केवल ५० मिनटके लिये हुई और उसके बाद वे घण्टों तक लेफ्टिनेण्ट जेनरल सर आर्थर स्मिथके साथ बातचीत करते रहे।

११ दिसम्बर

आज वर्किङ्ग कमेटीकी बैठकका आखिरी दिन था। इन पांच दिनोंके बीचमें समिति-की नौ महत्वपूर्ण बैठकें हुईं। सात मौलाना आजादके निवास स्थान पर एवं दो सोद-पुरमें। कुल तीन बैठकोंमें गांधी जी शरीक हुए। आजकी बैठकमें आजाद हिन्द फौज-के सिपाहियोंकी बहादुरीकी प्रशंसा की गयी एवं कलकत्तेमें छात्रोंके जुलूस पर पुलिस और सैनिकों द्वारा गोली चलाये जाने के अनुचित कांडके लिये निष्पक्ष जांचकी मांग की गयी। कम्युनिस्टोंको सफाई देने-का जो अवसर दिया गया था उसके लिये उन लोगोंका जवाब आ गया था। उनकी सफाई चूंकि कोई अर्थ नहीं रखती थी इस लिये निर्णय किया गया कि कांग्रेस के भीतर उन्हें कोई भी दायित्व पूर्ण पद न दिया जाय।

संध्या समय गांधीजीकी प्रार्थनामें पूर्व-वत भीड़ रही। इसके अलावा साइंस कालेजमें पं० नेहरूका भाषण हुआ एवं वे कलकत्ता स्टाक एक्सचेंजमें गये जहां उन्हें एक लाखकी थैली भेंट की गयी।

१२ दिसम्बर

वर्किङ्ग कमेटीकी बैठक समाप्त हो जानेके बाद नेताओंके सामने कोई निश्चित कार्य-क्रम नहीं था मगर महिलाओंकी सभामें श्रीमती सरोजिनी नायडूका भाषण हुआ एवं संध्या समय गान्धीजी प्रार्थनामें पूर्व-वत ही भीड़ रही। आज गांधीजीने मौलाना आजादसे बङ्गालके दौरेके सम्बन्धमें बातचीत की। इनके अलावा आज गान्धीजीसे मिलनेवालोंमें पं० पन्त, डा० प्रफुल्ल घोष, नलिनीरंजन सरकार, और डा० राधा-कुमुद मुकर्जीका नाम विशेष उल्लेखनीय है। बङ्गाल सरकारके कुछ वस्त्र-विभाग एवं खाद्य-विभागके आई० सी० एस० आफि-सर भी गान्धीजीसे मिले। आज सन्ध्या समयकी गाड़ीसे पं० नेहरूने आसामके लिये प्रस्थान किया।

१३ दिसम्बर

आज मंगलका दूसरा दिन था। नेता-ओंके आगमनके बादसे जो एक खासी चहल पहल पैदा हो गयी थी वह धीरे-धीरे शान्त हो रही थी। अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटीका दफ्तर आज यहांसे प्रयागराजके लिये रवाना हो गया। सरदार पटेल और श्रीमती सरोजिनी नायडू दोनों आज शांति निकेतन गये। धीरे धीरे सारा शहर पूर्वा-वस्थामें एक थकान लिये लौटा आने लगा। उत्साहकी लहर और मानसिक कार्य-भारसे हठात मुक्ति मिल जानेके बाद मन और शरीरकी जो अवस्था होती है ठीक उसी अवस्थाका सामना कलकत्तेको करना पड़ा। मोटरोंपर लगे हुए अधिकतर तिरंगे झण्डे लुप्त हो गये एवं मोड़ और सीनेपर लटकनेवाले बिल्ले भी दिखलायी नहीं पड़ रहे। गान्धी टोपीकी जो बहार दिखलायी पड़ गयी थी वह भी कम होती जाने लगी।

सन्ध्या समय सोदपुरमें गान्धीजीकी प्रार्थना पूर्ववत हो हुई एवं दर्शनार्थियोंकी भी वैसी ही भीड़ रही।

———

राधा

श्री सीताराम तिवारी, सागर

"आः सिर्फ छे पैसे ही मिले" दीर्घ निश्वास छोड़ते हुए राधाने अपने आप कहा। "कल दिवाली है इससे बाजारमें काफी चहल पहल रहेगी तो शायद कुछ ज्यादा पैसे मिल जायेंगे।" "बाबूजी! भूखी, प्यासी, लाचार, अभागिनीको एक पैसा जो दे उसका भी भला और जो न दे उसका भी भला" कल्लू सेठके होटलके सामनेवाले बिजलीके खम्भेसे टिककर फटी-पुरानी, मैली, लाल धोतीका छोर फैलाकर वह बैठ गयी। उसके रूखे काले केश बिखरे हुए थे। उम्र बीस सालके लगभग होगी। शरीर सुन्दर गठा हुआ था। चेहरेसे यौवनकी कांति और पवित्रता झलक रही थी, परन्तु समयने पल्टा खाया था। भूख और गरीबीकी दर्दभरी आवाजसे, अपनी जैसी स्थिति समझकर, गरीब राहगीरोंका हृदय पिघल उठता था, राधाकी गरीबी और विवशतापर वे तरसकर जो कुछ बनता था, राधाकी झोलीमें डाल देते थे। परन्तु इनके विपरीत धनवान राहगीर उपहासकी हंसी हंसते हुए, "यह ढोंग है" यह कहकर मुंह फेर लेते थे। और कुछ मनचले गुण्डे राधाके यौवनको देखकर अपने चंचल मनकी कुवासनाओंको बेलगाम कर डालते थे।

"लो यह दो आने हैं।" शम्भू सेठने राधाकी झोलीमें डालते हुए कहा।

"बाबूजी! तुम्हारे लाल दिन दूने रात चौगुने फलें फूलें।" राधाने पतली आवाजमें नम्रतासे कहा। राधाकी पतली आवाज सुनकर शम्भूके हृदयमें कुवासनाओंका एक तूफानसा आ गया। सेठजीने राधाको सिरसे लेकर पैरतक देखा। उनका मन राधाकी ओर खिंच गया। कितनी भोली भाली और सुन्दर है! भिखारिन होते हुए भी चेहरेसे कितनी मादकता झलक रही है!... घरमें श्यामूकी मांको तपेदिक हो गया है इससे वह भी अब कुछ दिनकी समझो, नौकरानी की भी जरूरत है।...शम्भू सेठ मुग्ध हो गये और हृदयका बांध टूटकर बह चला।

"कहां रहती हो?" सेठजीने उत्सुकतासे पूछा।

"बाबूजी! कोई ठिकाना नहीं। भला अभागिन भिखारिनके लिये भी कोई रहनेकी जगह भी है?" एक दीर्घ निःश्वास छोड़ते हुए राधाने कहा।

"तब भी, तेरा घर कहां है? साथी भी कोई है या तू अकेली है?" सेठजीने बड़ी उत्सुकतासे पूछा।

"बाबूजी! इस अभागिनकी कहानी बहुत बड़ी है। उसे सुनकर आप क्या करेंगे?" राधाने कातर स्वरसे कहा।

"तब भी कुछ।" सेठजीने कहा।

बाबूजी! टूटा फूटा छोटासा मेरा घर कैलाशपुरीमें था। हमारे पतिदेव खेती-किसानी करके जीविका चलाया करते थे। गांवके मालगुजार रामसिंहने अपने एक मुकदमेमें उनसे झूठी गवाही देनेको कहा तो उन्होंने झूठी गवाही देनेसे इनकार कर दिया, इसपर रामसिंहने चिढ़कर हमारा घर बर्बाद कर दिया और रामसिंहने तथा उसके नौकरोंने उनको ऐसा मारा पीटा कि...और बाबूजी! ...रामसिंहका इतनेपर भी कलेजा ठंडा न हुआ तो उसने हमारा सतीत्व नष्ट करना चाहा और अत्याचार करनेपर उतारू हो गये। रामसिंहके अत्याचारोंसे ऊबकर मैंने यह सोचा कि भीख मांगकर या मजदूरी करके अपना पेट भर लूंगी, परन्तु मैं अब इस गांवमें नहीं रहूंगी और यहां वहां भटकते भटकते इस शहरमें आ पहुंची। वह तो मुझे छोड़कर चले गये पर मुझ अभागिनको कहीं भी ठौर नहीं है। यह कहते कहते राधाके नेत्रोंसे आंसुओंकी धार बह निकली और कण्ठ रुंध गया।

"अच्छा तो तुम हमारे घरका काम करोगी?" सेठजीने उत्सुकतासे पूछा।

"हां बाबू..!" राधाने आश्चर्ययुक्त विस्फारित नेत्र करके कहा।

"मैं अभी कामसे आ रहा हूं। स्टेशनके पीछे जो पीला-पीला-सा बंगला है, वही हमारा बंगला है। सेठजीका बंगला पूछ लेना, हर कोई बता देगा। तुम कल सुबह आ जाना। जरूर आ जाना। ऐं, जरूर?" यह कहते हुए सेठजी चले गये।

सेठजी मन ही मनमें अधिक प्रसन्न थे, प्रेम सागरमें गोता लगा रहे थे। हृदय अच्छे और बुरे विचारोंका केन्द्र बन गया था। सागरकी लहरों जैसा सेठजीका हृदय उछल रहा था। रातका एक-एक क्षण सौ वर्ष जैसा बीत रहा था। किसी तरह स्वप्नोंकी गंगामें बहते बहते सुबह हो गया।

शरद ऋतु थी। पूर्णिमाका दिन था। आज चन्द्रमा भी पूर्ण यौवनपर था। गगन मण्डल तारोंसे जगमगा रहा था। कुछ इने-गिने प्राणियोंको छोड़कर परमात्माके इन अमूल्य रत्नोंकी जगमगाहटको देखनेके लिये कौन स्थिरचित्त होकर प्रकाशमें बैठ सकता है? परन्तु उन इने गिने प्राणियोंमेंसे राधा भी एक थी। नीमके वृक्षके नीचे बैठी-बैठी आकाशके अमूल्य रत्नोंकी जगमगाहट देखकर राधा मन ही मन कह उठी कि "कभी हम भी अपने पतिदेवकी छायामें इसी तरह जगमगा रहे थे।" राधा ध्यानमग्न थी कि अचानक ही सिपाहीकी सीटी बजी और राधाका ध्यान टूट गया। वह वही फटी-पुरानी, लाल धोतीसे लिपटकर लेट गयी। "सुबह ही तो सेठजीके यहां जाना है। क्या काम देंगे? क्या तनख्वाह देंगे? सेठानी हैं या नहीं! कैसा स्वभाव होगा?" इत्यादि सोचते सोचते राधाकी झपकी लग गयी।

अभी अच्छी तरहसे सवेरा नहीं हुआ था। प्रातःकालके सूर्य भगवानके आगमनकी सूचना देनेवाली लालिमाकी किंचित क्षीण रेखाएं प्राची दिशासे दृष्टिगोचर हो रहीं थीं। पक्षियोंके कोलाहलसे और रास्तेमें चलनेवाले टांगा-गाड़ी आदिकी खड़-खड़ाहटसे राधाकी झपकी टूट गयी। "मुझे सुबह ही तो सेठजीने बुलाया था।" राधाने अपने मनमें कहा।

स्टेशनके पीछे एक पीला पीला बड़ा ही सुन्दर बंगला बना हुआ है। बंगलेके सामने एक बड़ा-सा बगीचा है, जिसमें गुलाब, चम्पा, चमेली आदि फूलोंके पौधे लगे हुए हैं। इन फूलोंकी सुगंध प्रातःकालकी मन्द मन्द वायुमें बह रही है। बड़ा ही सुहावना मालूम पड़ता है। राधा भी सुगन्धित मन्द मन्द वायुके हलके झकोरोंसे प्रफुल्लित हो उठी। राधाने एक बार भरपूर निगाहसे बंगलेकी ओर देखा और फिर अपनी ओर देखकर कुछ लज्जित सी हो गयी।

"क्या सेठजीका यही बंगला होगा!" राधा अपने मनमें कहा।

"चल चल, आगे देख। सुबहसे भीख मांगने आ गयी। जैसे यहां कोई सदावर्त लगी हो?"

फाटकपर एक भिखारिनको खड़ी देखकर सेठजीके नौकर भोंदूने कहा।

"नहीं बाबूजी! मुझे कुछ नहीं चाहिये, मुझे तो सेठजीने सुबह अपने बंगलेपर बुलाया था मजदूरी करनेके लिये।" राधाने नम्रतापूर्वक कहा।

"क्या है रे भोंदू?" सेठजीने पूछा।

"कुछ नहीं सरकार, यह मंगती आ खड़ी है सवेरे सवेरे। और...वह कहती है कि......!" भोंदूने चौंकते हुए कहा।

"अच्छा कहा है, यहीं बुला ला।" सेठजीने उत्सुकतासे कहा।

राधाने एक बार सेठजीकी ओर और फिर अपनी ओर देखा। "आपने मुझे सुबह बुलाया था घरका काम करनेके लिये।" राधाने नम्रतासे कहा।

"हां बुलाया था। अच्छा हुआ तुम आ गईं। हम तुम्हारी बाट ही देख रहे थे। श्याम बच्चा है, इसकी सेवा-सुश्रूषा करनी है और मालकिनको मदद देनी है क्योंकि उनकी तबियत ठीक नहीं रहती है। सब कुछ तुम अपनी जिम्मेदारी पर समझो। खाना-पीना, कपड़ा-लत्ता सब मिलेगा और जो कुछ तनख्वाह मांगोगी वह भी मिलेगी। तुम्हारा नाम क्या है?" सेठजीने कुछ मुस्कराते हुए कहा।

"राधा"। राधाने नीची निगाह करके कहा।

राधा! सेठजीके मनमें एक धक्का सा लगा और वे विचार मग्न हो गये।

राधा अब घरका सब काम-धाम करने लगी। सेठानीजी बीमार थीं इससे घरकी सारी जिम्मेदारी राधाके ऊपर ही आ पड़ी। राधा अब अच्छी अच्छी चीजें खाने-पीने लगी और अच्छी अच्छी साड़ियां पहिनने लगी। घूरेके भी दिन फिरते हैं, सो अब राधाके भी दिन फिर गये। अब राधा का यौवन और भी खिल गया। राधा बड़ी ही सुन्दर लगने लगी। राधाको देखते ही सेठजीके मुंहमें पानी आ जाता था और मन ही मन कह उठते थे कि "राधा थी तो भिखारिन, परन्तु कितनी भोली-भाली जवान तथा सुन्दर है, काश...! परन्तु दुनिया क्या कहेगी कि एक भिखारिनके साथ और वह एक लखपति सेठ :...!"

दिन बीते। शरद ऋतु है। आज दिवाली है और वही पूर्णिमाका चन्द्रका पूर्ण यौवन पर है। गगनमण्डल तारोंसे जगमगा रहा और सेठजीका बंगला दिवालीके दियों से जगमगा रहा है। सेठजी कमरेमें बैठे धन-दौलतको तिजोरियोंमें भर रहे हैं। इतनेमें ही राधाके मधुर गानेकी आवाज सुनाई पड़ी और वह अपने मनमें सोचने लगे कि "राधाको भी इस कमरेमें ले आऊं! धन-राशिको देखकर वह शायद...!"

सेठजीका मन कामातुर हो उठा और वासनाओंके सागरमें बहने लगा। जिस तरह धीरे-धीरे सांझ पर रातके रंग चढ़ते और फिर धीरे धीरे रातके रंगमें चांदनीकी किरणें प्रकट होती हैं वैसी ही दशा सेठजीके मनकी थी। "राधा! राधा!!" जरा यहां तो आना! सेठजीने वासना भरे स्वरमें कहा।

काली और चमकदार किनारीकी साड़ीमें राधाका चन्द्रमा जैसा पूर्ण यौवन फूट फूटकर निकल रहा था अंगोंपर चांदनी सी छिटक रही थी उसके अंग अंगमें अदभुत लावण्य प्रकाश पा रहा था। चन्द्रमासे जितनी किरणें फूटती हैं उससे अधिक रसके निर्झर राधाके शरीरसे आज फूट रहे थे।

क्षितिजपारसे भी धीर, गम्भीर गर्जन होनेपर मयूर जैसे उत्कण्ठित होता है वैसे ही सेठजी राधाको देखकर उत्कण्ठित थे। "राधा! तुम आज कितनी सुन्दर लग रही हो। आज तुम्हारा यौवन कुसुम कली जैसा प्रस्फुटित हो गया है। मालकिनके भी दिन नजदीक हैं, यदि... यह सम्पूर्ण धन राशि तुम्हारी है।" राधाके ऊपर मुग्ध होकर सेठजीने कहा।

"नहीं बाबूजी! यदि यही करना था तो उसी गांवके मालगुजार रामसिंहको ... कर क्यों भीख मांगती। मैं अपने स्वर्गीय पतिके सिवाय...।" राधाने कातर कहा।

"नहीं राधा प्यारी! अब तुम हमारी आशाओं पर पानी मत फेरो, हम तो भूखे हैं। तुम तबसे हमारे हृदयमें ... हो जब हमने तुमको दो आने दिये थे। आजहीका दिन था, याद है?" सेठजीने कहा।

"हां बाबूजी! परन्तु मैं एक ...

(शेष १८ वें पृष्ठपर)

दक्षिण भारतमें हिन्दीका प्रचार

(प्रेषक—श्री सत्यनारायण)

आगामी वर्ष जनवरीमें दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाकी रजत-जयन्ती सभाके संस्थापक व अध्यक्ष महात्मा गान्धीकी अध्यक्षतामें मनायी जा रही है। सभाने इस अवसरपर अपने कार्यका विस्तार करने और उसके सङ्गठनको मजबूत बनानेके लिये कुछ नयी आयोजनायें प्रारम्भ करनेका निश्चय किया है। इसमें पांच लाख रुपया व्यय होगा। इसके लिये श्री राजगोपालाचार्य, डा० पट्टाभि सीतारमैया, के० श्रीनिवासन, श्री रामेश्वर जाजोदिया, के० मासिम, श्री जगन्नाथदास, श्री एस० पार्थसारथी और श्री सत्यनारायणने एक संयुक्त वक्तव्यमें देशके उदार राष्ट्र-प्रेमियोंसे अपील की है कि वे इन आयोजनाओंकी पूर्तिके लिये अपनी शक्तिभर सभाको मदद करें! सभाके अबतकके कार्यविवरणका संक्षेप और प्रस्तावित योजनाओंकी जानकारी नीचे दी जा रही है।

—सम्पादक

दक्षिण भारत प्रचार हिन्दी सभाकी नींव सन् १९१८ में विश्ववन्द्य महात्मा गांधीके हाथों पड़ी और इस कार्यका श्रीगणेश श्री देवदास गान्धीने किया। सभाके प्रयत्नके फलस्वरूप ही आज दक्षिण भारतकी स्थिति यह है कि वहांकी जनताके लोकप्रिय शब्दोंमें कांग्रेस शब्दके बाद हिन्दी प्रचारका ही नम्बर आ सकता है। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाने बरहमपुरसे लेकर पश्चिममें गोआतक, कन्याकुमारीसे लेकर हैदराबादतक प्रायः सभी प्रमुख स्थानोंमें हिन्दीका बीज बोया है।

आजतक करीब २,५०० ऐसे स्थान हैं जहांपर हिन्दी प्रचारकोंने कार्य शुरु किया है। आज इस क्षेत्रमें करीब १६०० कार्यकर्ता लगनके साथ कार्य कर रहे हैं। ५०,००० से ज्यादा विद्यार्थियोंकी संख्या है। करीब १० लाख लोगोंने हिन्दीसे परिचय प्राप्त किया है। हर साल करीब २० हजार विद्यार्थी हिन्दीके इम्तिहान दे रहे हैं। इनकीसंख्या अबतक १,९७,९९९ होचुकी है।

सभाके केन्द्र कार्यालयके अलावा, जहां एक सौसे ज्यादा कार्यकर्ता काम कर रहे हैं, दक्षिण भारतके चारों प्रान्तोंमें अर्थात् तामिल, आन्ध्र केरल व कर्नाटकमें—चार प्रान्तीय कार्यालय हैं जो क्रमशः त्रिचनापल्ली, बेजवाड़ा, एरनाकुलम व धारवाड़में हैं। सभाकी देखरेखमें इस वक्त २,५०० केन्द्र हैं जहांपर हिन्दी प्रचारक वर्ग चलाकर हिन्दीका प्रचार कर रहे हैं।

सभाकी परीक्षाओंने दक्षिणमें हिन्दीके प्रति बहुत बड़ा उत्साह पैदा किया है। परीक्षाओंके प्रति साधारणतया जो स्वाभाविक डर रहती है उसके विपरीत हिन्दी परीक्षाओंके लिये एक नया जोश पैदा हुआ है।

सभाकी सारी छपाईका कार्य सभाकी निजी प्रेसमें होता है। यह प्रेस 'हिन्दी प्रचार प्रेस' कहलाता है। अबतक इस प्रेस की उन्नतिमें ६०,००० हजारसे अधिक रुपये लग चुके हैं। प्रकाशन विभागके जरिये करीब ५०० किस्मकी पुस्तकोंकी २०,००,००० प्रतियां १२ लाख रुपया मूल्यकी वितरण की जा चुकी हैं।

सभाने अपने निरन्तर प्रचार तथा आन्दोलनसे एक और सफलता प्राप्त की है वह यह है कि दक्षिण भारतकी सभी युनिवर्सिटियों अर्थात मद्रास, आन्ध्र, मैसूर और तिरुवांकुरने हिन्दीको स्थान दिया है। इन युनिवर्सिटियोंके इन्टर, बी० ए०, एम० ए०, और प्राच्य विद्या उपाधि-परीक्षाओंमें भी हिन्दीको स्थान मिला है। मद्रास, मैसूर, बम्बई, तिरुवांकुर और कोचीन सरकारोंने अपने हाई स्कूलोंकी परीक्षाओंमें हिन्दीको स्थान दिया है।

युनिवर्सिटियोंकी तथा सरकारकी परीक्षाओंमें हिन्दी लेकर प्रतिवर्ष सैकड़ों विद्यार्थी बैठते हैं। हिन्दी पढ़ानेवाली युनिवर्सिटियों तथा सरकारी महकमोंमें भी सभाके सहयोगकी मांग रहती है।

हिन्दी प्रचारके लिये केन्द्र कार्यालयने अबतक लगभग १९ लाख रुपये खर्च किये हैं। इस वक्त हिन्दी प्रचार सभाका वार्षिक खर्च करीब डेढ़ लाख रुपया है। यह सारा खर्च किसी न किसी रूपमें दक्षिण भारत-हिन्दी प्रेमी, सभाको देते रहते हैं। यह सारा आन्दोलन अर्थ-शक्ति, कार्य-शक्ति तथा मनुष्य शक्तिकी दृष्टिसे पूर्णतया दक्षिण भारतका है। इससे इस आन्दोलनकी लोकप्रियता और दक्षिण भारतीयोंकी हिन्दीके प्रति आत्मीयता साफ जाहिर होती है।

आरम्भसे अबतकका व्यय

सन	कुल
१९४३ तक	रु० १३,९६,१९४
१९४४	,, १,२४,७७७
	रु० १५,२०,९७१

सभाका कार्य शुरु हुए आज २७ वर्ष पूरे हो रहे हैं। वास्तवमें १९४३ में ही रजत-जयन्ती मनानी चाहिये थी। लेकिन कुछ खास परिस्थितियोंके कारण वह नहीं मनायी जा सकी। अब यह निश्चय हो गया है कि आगामी जनवरी मासमें रजत-जयन्ती मनायी जाय। सभाके संस्थापक तथा अध्यक्ष महात्मा गान्धीजीने जयंती उत्सवके अवसर पर अध्यक्ष होना स्वीकार किया है।

सभाने इस अवसर पर अपने कार्यका विस्तार करने और उसके सङ्गठनको मजबूत बनानेके लिये निम्न नयी आयोजनाएं आरम्भ करनेका निश्चय किया है।

(१) चूंकि हिन्दी दक्षिणमें एक नयी भाषा है वह बोलचालकी भाषा नहीं है इस लिये यह जरूरी है कि अच्छे पैमाने पर साहित्य छपा कर लोगोंके पास पहुंचाया जाय।

इसके प्रबन्ध, मुद्रण व प्रकाशनमें कुल पचास हजार रुपयेकी जरूरत पड़ेगी।

(२) हिन्दी प्रचारकी सफलताका अन्तिम संकेत लाखोंकी तादादमें हिन्दी पत्र-पत्रिकाओंका प्रचार है। इसके लिये दस हजार रुपये जरूरी हैं।

(३) दक्षिणकी भाषाओंमें बहुत ही पुराना और उच्च साहित्य भरा पड़ा है। उसका परिचय राष्ट्रभाषाके जरिये हिन्दुस्तानके सब प्रान्तोंको देना सभा अपना कर्तव्य मानती है। यह काम छोटे पैमाने पर शुरु भी हो चुका है। पन्द्रह हजार रुपयेकी निधि इसके लिये जरूरी है।

(४) एक ऐसे कोषका प्रकाशित होना बहुत जरूरी है जिसमें हिन्दीके साथ साथ दक्षिणकी भाषाओंके शब्द भी हों, जिससे भाषा सिखोंको भिन्न भिन्न भाषाओंके पारस्परिक सम्बन्धका बोध हो। इस कार्य को सम्पन्न करनेके लिये पचीस हजार रुपये की आवश्यकता होगी।

(५) दक्षिण भारतके हिन्दी प्रचारकों और विद्यार्थियोंकी संख्या दिन पर दिन बढ़ती जा रही है, लेकिन हिन्दुस्तानीके योग्य विद्वानोंके साथ उनका सम्बन्ध बनाये रखनेका कोई तरीका नहीं है।

इसके लिये मुख्य केन्द्रोंमें अच्छे योग्य विद्वानोंको नियुक्त करना जरूरी है। शुरूमें यदि १० ही ऐसे कार्यकर्ता नियुक्त किये जायं तो भी हर साल पन्द्रह हजार रुपयेकी आवश्यकता पड़ेगी। इसी काम पर सभाका सारा भविष्य निर्भर है। इसके लिये कुल एक लाख रुपयेकी जरूरत है।

(६) उत्तर और दक्षिणके साहित्यका पारस्परिक विनिमय भी जरूरी है। इस लिये जल्दी ही देहलीमें एक ऐसा सांस्कृतिक केन्द्र खोलनेकी योजना है जहां कार्यकर्ता दल भेजा जायगा। इसके लिये एक लाख रुपयेकी जरूरत होगी।

(७) करीब दस सालसे प्रान्तीय सभाएं सुसंगठित रूपसे काम कर रही हैं। उनका अपना-अपना निजी मकान बना लेना आवश्यक है ताकि वे सांस्कृतिक अभिवृद्धि के केन्द्र बन सकें। इसके लिये एक लाख रुपयेकी जरूरत होगी।

(८) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभाके भवनमें एक मेहमान-घर बनाना जरूरी हो गया है। एक अच्छा सा मकान बनानेके लिये पचीस हजार रुपयेकी आवश्यकता होगी।

(९) मद्रासमें एक बृहत पुस्तकालय की जरूरत है, जिसमें हिन्दी और उर्दूके अलावा दक्षिणकी भाषाओंके भी अच्छे साहित्यकी पुस्तकें हों। पुस्तकालयके लिये एक भवन बनवाना और एक वृहत पुस्तकालयका संगठन करना भी सभाकी एक आकांक्षा है। इस कामके लिये कमसे कम पचास हजार रुपयेकी जरूरत पड़ेगी।

(१०) सभाका काम बहुत बढ़ गया है। अब उसके प्रधान कार्यालयका भवन भी काफी नहीं है इस लिये आजके भवनको दुमंजिला कर देनेकी आयोजना है। इसके लिये पचीस हजार रुपये आवश्यक हैं।

इस तरह उपर्युक्त दस आयोजनाओंके लिये कुल पांच लाख रुपयेकी आवश्यकता पड़ेगी। देशके उदार राष्ट्र-प्रेमियोंको चाहिये कि इन आयोजनाओंकी पूर्तिके लिये अपनी शक्ति भर सभाकी मदद करें। अगर कोई दाता किसी खास आयोजनाके लिये दान देना चाहें तो दे सकते हैं। वह दान उनकी इच्छाके अनुसार उस आयोजनामें लगाया जायगा।

महात्माजीका संदेश

संरक्षकोंका यह निवेदन मैं पढ़ गया हूं। मुझे पसन्द है। मेरी आशा है कि जिस रुपयेकी मांग इसमें की गयी है वह सबके सब लोगोंकी तरफसे मिल जायंगे। दक्षिण प्रांतमें राष्ट्रभाषाके लिये बहुत काम हुआ है, ऐसा मेरा विश्वास है और भविष्यमें उससे भी अधिक होगा, ऐसी मेरी उम्मीद है। लेकिन जो पैसे मिलनेवाले हैं उसका उपयोग राष्ट्रभाषाका जो अर्थ मैंने बताया है उस अर्थकी सिद्धिके लिये होगा, ऐसा समझकर लोग पैसा दें। राष्ट्रभाषाका अर्थ जसे निवेदनमें बताया है वैसे हिन्दी और उर्दू शैली नागरी या उर्दू लिपिमें लिखी जानेवाली भाषा है। इसका अर्थ यह होता है कि सिर्फ हिन्दी, जो देवनागरीमें लिखी जाय उसे राष्ट्रभाषा नहीं कह सकते, न सिर्फ फारसी या उर्दू लिपिमें लिखी जाय उसको। जब हम राष्ट्रभाषा जाननेवाले उसे दोनों लिपिमें लिख सकेंगे और दोनों शैलीमें बोल सकेंगे तब ही उसमेंसे सच्ची हिन्दुस्तानी भाषा होगी। आज भी ऐसी भाषा, ऐसी हिन्दुस्तानी, लाखों हिन्दू-मुसलमान उत्तरमें बोलते हैं, इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वह हिन्दुस्तानी आज लिखे पढ़े उत्तरके लोग बोलते हैं ऐसा नहीं कहा जा सकता है। हमारी कम-नसीबीसे ऐसे ही चलता रहेगा तो चलेगा, लेकिन हमारी इच्छा तो होनी चाहिये कि यह कम-नसीबी चली जायगी और जल्दीसे जल्दी मिट जायगी। हिन्दुस्तानी प्रचार का यही मतलब हो सकता है। इसलिये दक्षिण भारतमें जो प्रचार कार्य चल रहा है उसका झुकाव दोनों लिपियोंको साथ-साथ चलानेकी तरफ और दोनों शैलियोंके प्रचारकी तरफ होगा। यही मतलब सन् १९२५ ई० में जो प्रस्ताव कांग्रेसने किया, उसका है। वह प्रस्ताव यह था :—

कांग्रेसकी यह सभा प्रस्ताव पास करती है कि कांग्रेस, अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी और वर्किंग कमेटीकी कार्रवाई आम तौर पर हिन्दुस्तानीमें चलेगी। अगर कोई वक्ता हिन्दुस्तानी न जानता हो तो दूसरी आवश्यकता पड़ने पर अंग्रेजी या प्रान्तीय भाषा इस्तेमाल की जा सकती है।

प्रान्तीय कमेटियोंकी कार्रवाई आम तौर पर प्रान्तीय भाषाओंमें चलेगी। हिन्दुस्तानी भी इस्तेमाल की जा सकती है।

—मो० क० गांधी

इण्डोनेशिया

जावासे आलोच्य सप्ताहमें 'प्राप्त खबरों' द्वारा वहांकी स्थिति पर यद्यपि पूरा प्रकाश नहीं पड़ सका है, फिर भी ब्रिटिश और भारतीय सेनाएं वहांके देशभक्तोंका बुरी तरह दमन कर रही हैं। बोर्नियोमें भी स्वाधीनताका संग्राम आरम्भ हो चुका है और आन्दोलकोंको दबानेके लिये सेनाएं भेजी गयी हैं। जावाके बटाविया नगर पर ब्रिटिश और भारतीय सेनाओंका पूर्ण अधिकार हो गया है, लेकिन द्वीपके अन्य भागोंमें खूंखार युद्ध जारी है। डच सरकारने करीब ४० हजार सैनिकोंको इण्डोनेशियामें भेजनेका निश्चय किया है। इस बातको ध्यानमें रख कर इण्डोनेशियाके राष्ट्रीय नेता सोएकार्नोने ब्रिटिश और डच सरकारोंको चेतावनी दी है कि यदि इण्डोनेशियामें अधिक जोर जबर्दस्ती की गयी तो जहर खिलाकर उनकी हत्या कर दी जायगी। इण्डोनेशियनों पर आलोच्य सप्ताहमें कई बार भीषण बमबाजी भी की गयी है। ब्रिटिश सरकारने वहांकी समस्याका समाधान करनेके लिये गोलमेज परिषद् बुलानेका सुझाव रखा है। ईस्ट इण्डीजके सम्बन्धमें डच सरकारने अपनी नीतिकी घोषणा करते हुए कहा है कि सरकार इण्डोनेशियनोंकी आकांक्षाओंकी पूर्ति सभी वैध उपायोंसे करनेके लिये सदैव प्रस्तुत है। इण्डोनेशियन नेताओंने अब तक डच अथवा ब्रिटिश सरकारके किसी भी प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया है और पूर्ण स्वाधीनताके लिये वे कटिबद्ध है।

इण्डो चीनमें 'शान्ति'

इण्डो चीनके स्वातन्त्र्य आन्दोलनको ब्रिटिश, भारतीय और फ्रेंच सेनाओंने बल प्रयोग कर दबा दिया है और ऐसा बताया जाता है कि वहां फिरसे 'शान्ति' स्थापित हो चुकी है, लेकिन अनाममें अब तक संघर्ष जारी है। अनामियोंको दबानेके लिये गत सप्ताह ब्रिटिश वायुयानोंका उपयोग किया गया। ब्रिटिश और भारतीय सेनाएं अगले मासमें इण्डो चीनसे वापस बुला ली जायंगी और फ्रेंच शासन फिरसे वहां कायम हो जायगा। इण्डो चीनकी जनताकी स्वतंत्रता की आकांक्षाओंको [illegible] साम्राज्यवादी शक्तियोंने दबानेमें सफलता प्राप्त कर ली है।

चीनका गृहयुद्ध

चीन सरकार और कम्युनिस्टोंके बीच जारी गृह संघर्ष अब तक समाप्त नहीं हो पाया है। शांसी प्रान्तमें कम्युनिस्ट सेनाएं भयानक युद्ध संलग्न हैं और चीन सरकारकी सेनाएं यत्र तत्र उनसे युद्ध कर रही हैं। रूस और चीन सरकारके बीच एक समझौता जो पिछले पखवारेमें हुआ था, उसके अनुसार चीनी सेनाएं मुकदन शहरमें प्रवेश करने लगी हैं। मञ्चूरियाकी राजधानी चांगचुनमें भी चीनी सेनाओंका प्रवेश आरम्भ हो गया है। कम्युनिस्टोंने इन सेनाओंका कहीं भी प्रतिरोध नहीं किया है। चीनमें गृह संघर्ष को बढ़ानेका दोषारोपण अमेरिका पर किया गया है और इस कारण राष्ट्रपति ट्रूमैन शीघ्र ही चीनके सम्बन्धमें अमेरिकन सरकारकी नीतिको स्पष्ट करनेके लिये एक वक्तव्य देने वाले हैं।

अन्तर्राष्ट्रीय

परराष्ट्र मन्त्री सम्मेलन

मास्कोमें आलोच्य सप्ताहमें रूस, ब्रिटेन और अमेरिकाके परराष्ट्र मन्त्रियोंका सम्मेलन आरम्भ हो गया। उनके विचार विमर्श के मुख्य विषय परमाणु सम्बन्धी रहस्य हैं। जापान पर नियन्त्रण और शान्ति सम्बन्धी समझौताके अतिरिक्त सुदूर पूर्वके अन्य देशोंकी समस्याओं पर भी विचार किया जा रहा है। साथ ही फारसकी स्थिति, चीनके गृहयुद्ध पर विश्वकी प्रतिक्रिया और यूरोपीय शान्ति सन्धियोंको कार्यान्वित करनेकी योजनाएं भी विचार किया जाने वाला है। फ्रांसको अबतक इस सम्मेलनमें शामिल नहीं किया गया है, लेकिन उसके सम्बन्धका कोई प्रश्न उठने पर उससे परामर्श कर लिया जायगा। त्रिराष्ट्र मन्त्री सम्मेलनमें भाग लेनेके लिये फारसने भी अपनी इच्छा जाहिर की थी और उसने दावा किया था कि त्रिराष्ट्र सन्धिकी शर्तोंके अनुसार उसमें भाग लेनेका उसको पूरा अधिकार है। फारसके प्रधान मन्त्री और परराष्ट्र मन्त्री आलोच्य सप्ताहमें मास्कोके लिये रवाना हो गये हैं।

फारसकी स्थिति पर विचार

फारसके अजरबैजान प्रान्तमें यद्यपि शान्ति कायम हो चुकी है, लेकिन वहां अब तक फारस सरकारके ६ हजार सैनिक घिरे हुए हैं। रूसकी सरकारने विद्रोहियोंको दबानेके लिये और सेनाएं भेजनेकी फारस सरकारको अनुमति नहीं दी है और अपनी सेनाओंको भी हटानेसे इनकार कर दिया है। ब्रिटेन और अमेरिकाने भी इसी कारण अपनी सेनाओंको फारससे हटानेका कार्यक्रम स्थगित कर दिया है। फारसके प्रधान मन्त्री और परराष्ट्र मन्त्री इस सम्बन्धमें रूस सरकारसे बातचीत करनेके लिये मास्को गये हैं। अजरबैजानके गवर्नरसे अमेरिकन दूतावासके सेक्रेटरीने हाल्हीमें मुलाकात कर वहांकी समस्याओंके सम्बन्धमें बातचीत की है। फारसके ब्रिटिश राजदूत भी परराष्ट्र मन्त्री सम्मेलनके समक्ष फारसकी स्थितिको रखनेके लिये मास्कोको रवाना हो गये हैं। फारसकी समस्या आज एक जटिल अन्तर्राष्ट्रीय समस्या बन रही है और मित्रराष्ट्रोंके ऐक्य पर इस कारण खतरा सा उपस्थित होता नजर आ रहा है।

स्याममें ब्रिटिश चाल—

ब्रिटेनने हालहीमें स्यामसे कुछ नयी मांगें की हैं, साथ ही फ्रांसके साथ सीमा सम्बन्धी समझौता वार्तामें स्यामका प्रतिनिधित्व करनेकी इच्छा जाहिर की है। ब्रिटेन और स्यामके बीच शान्ति सम्बन्धी समझौता वार्ता अबतक जारी है और ब्रिटेनने सन्धिमें भारतको भी स्थान देनेका प्रस्ताव रखा है। ब्रिटेनका यह भी प्रस्ताव है कि जबतक मित्र राष्ट्रीय संघमें स्यामको स्थान नहीं मिलता तब तक वह ब्रिटिश शासनमें रहे, स्यामकी सभी बैंकों, व्यापारिक संस्थाओं, वैदेशिक विनिमय और व्यापारिक यातायातों पर ब्रिटेनका नियन्त्रण रहे, संसारसे अन्नाभावके दूर होने तक स्याम का सम्पूर्ण अधिक चावल ब्रिटेनको दे दिया जाये, स्यामके समाचार पत्रों, रेडियो, टेलीफोन और टेलिग्राफ पर ब्रिटेनका सेंसर शिप जारी रहे तथा ७ दिसम्बर १९४१ के पहले की सभी सन्धियोंको माननेके लिये स्याम प्रस्तुत हो। इसके अतिरिक्त स्यामसे कुछ और मांगें भी की गयी हैं किन्तु वे इतनी कड़ी हैं कि स्याम सरकारके सभी सदस्योंने एक साथ इस्तीफा दे देनेकी धमकी दी है।

लेवाण्ट सम्बन्धी समझौता

ब्रिटेनके परराष्ट्र सचिव मि० बेविनने गत सप्ताह पार्लमेण्टमें घोषणा किया कि लेवाण्ट अंचलसे ब्रिटिश और फ्रेंच फौजोंके हटानेके सम्बन्धमें ब्रिटेन और फ्रांसके बीच समझौता हो गया है। सीरिया, लेबनान और निकट पूर्वके सम्बन्धमें भी दोनों देशोंके बीच समझौता हुआ है। इसके अनुसार निकट पूर्वमें ब्रिटिश और फ्रेंच नीतिमें एैक्य होगा ताकि आपसमें कोई संघर्ष न हो, सीरियासे भी ब्रिटिश और फ्रेंच फौजें साथ-साथ हटायी जायंगी और आपसमें एक दूसरेके स्वार्थों पर किसी प्रकारका आघात नहीं किया जायगा।

अमेरिका में श्रमिक हड़ताल

अमेरिकामें कई महीनोंसे श्रमिकोंकी हड़ताल जारी है। आलोच्य सप्ताहमें इस्पात कारखानेके ७ लाख मजदूरोंने भी हड़ताल करनेका निश्चय किया है। अब तक ६ लाख मजदूर हड़ताल पर हैं और जेनरल मोटर कारखानेके सवा लाख मजदूरोंकी हड़ताल एक माससे जारी है। मजदूरोंकी मांगों पर विचार करनेके लिये राष्ट्रपति ट्रूमैनने एक कमेटी कायम की है और आदेश दिया है कि जांचकी कार्यवाही २० दिनोंके अन्दर समाप्त हो जानी चाहिये। मजदूरोंकी मांग है कि उनके वेतनमें दो डालर प्रति दिनके हिसाब से वृद्धि की जाये। यदि उनकी मांगें स्वीकृत नहीं हुई तो वे आगामी १४ जनवरीसे हड़ताल आरम्भ कर देंगे।

कांग्रेस का चुनाव घोषणा पत्र

कांग्रेसने अपना निर्वाचन घोषणा पत्र प्रकाशित कर दिया है। जिन आदर्शोंको लेकर कांग्रेसने लोकप्रियता लाभ की है, उनके अनुकूल ही निर्वाचनका घोषणा पत्र भी उसने प्रकाशित किया है। निर्वाचनोंमें कांग्रेस द्वारा साधारण विषयों, व्यक्ति विशेषों और साम्प्रदायिक भावनाओंको कोई महत्व नहीं दिया जायगा और इसके लिये कांग्रेसने अपनी मूल नीतिका फिरसे स्पष्टीकरण करते हुए घोषणा पत्रमें कहा है कि "इस मौके पर हमारे लिये एक ही बात मुख्य है और वह है मातृ भूमिकी स्वतन्त्रता तथा इसी स्वतन्त्रताके आधार पर जनताको अन्य स्वतन्त्रताएं प्राप्त होंगी। भारतकी जनताने कितनी ही बार स्वतन्त्रताके प्रतिज्ञापत्रको दुहराया, किन्तु उस प्रतिज्ञाको कार्यरूपमें परिणत करना अबतक बाकी है। हमारी आजादी हमें अपनी ओर बुला रही है और वह समय आ गया है जब कि हमें अपनी प्रतिज्ञाको पूरा करना ही होगा।'

कांग्रेसने निर्वाचकोंका केवल स्वाधीनताके मार्गमें सहायक होनेके लिये लड़ना स्वीकार किया है। कांग्रेस कभी पद लिप्सा के चक्करमें नहीं पड़ी, उसने स्वेच्छापूर्वक शूलोंका मार्ग अपनाया है, उसका एकमात्र लक्ष्य है मातृभूमिकी स्वाधीनता और उसका एक साधन मात्र है निर्वाचन। इसलिये चुनावके घोषणापत्रमें कहा गया है कि निर्वाचन तो हमारे लिये एक परीक्षामात्र और किसी भावी महान कार्यके लिये तैयारी है। अतः हम सभीको, जो स्वतन्त्रता की लालसा रखते हैं, इस परीक्षाका विश्वास और शक्तिके साथ सामना करना चाहिये और इस परीक्षामें उत्तीर्ण होकर इस बात का प्रमाण उपस्थित करना चाहिये कि मातृ भूमिकी स्वतन्त्रताका स्वप्न चरितार्थ करनेके लिये पूरी तरह तैयार हैं।

भारतको एक स्वतन्त्र प्रजातान्त्रिक राष्ट्र बनानेका घोषणापत्रमें पूर्वाभास किया गया है। इसके विधानमें सभी नागरिकोंको पूरा अधिकार और स्वतन्त्रता रहेगी। राष्ट्रीय विधानके लिये कांग्रेसने संघ योजना का समर्थन किया और संघके विभिन्न प्रान्तोंको स्वेच्छापूर्वक उसमें सम्मिलित होनेका अधिकार दिया है। प्रत्येक प्रांतकी व्यवस्थापिका सभाओंका चुनाव बालिग मताधिकारके आधार पर होगा और देशके सभी पिछड़े हुए तथा दलित वर्गके लोगोंके विकास तथा हिफाजतके लिये राजकी ओरसे आवश्यक व्यवस्था की जायगी। अन्तर्राष्ट्रीय मामलोंमें कांग्रेसका उद्देश्य स्वतंत्र राष्ट्रोंका विश्व संघ स्थापित करना है। जब तक ऐसे संघकी स्थापना नहीं होगी, भारतवर्ष सभी राष्ट्रों और खासकर अपने पड़ोसी राष्ट्र के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करेगा। सुदूर पूर्व, दक्षिण पूर्व एशिया तथा पश्चिमी एशियाके साथ भारत का हजारों वर्षोंसे व्यापारिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध रहा है और स्वतन्त्रता प्राप्त करनेके बाद भारतवर्ष इन सम्बन्धोंको अविकल स्थापित करेगा। भारतने अपना स्वातंत्र्य संग्राम सदैव अहिंसाके आधारपर संचालित किया है और भविष्यमें भी वह अपनी ताकत विश्वशान्ति और सहयोगकी दिशामें लगायेगा क्योंकि अन्य सभी गुलाम देशों तथा जनताकी स्वाधीनता और साम्राज्यवादके विनाशके आधार पर ही विश्व शान्तिकी स्थापना की जा सकती है।

इस प्रकार कांग्रेसने अपने निर्वाचन घोषणापत्रमें केवल स्वदेशकी स्वाधीनता की समस्या पर ही प्रकाश नहीं डाला है, बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओंपर भी अपनी नीति का स्पष्टीकरण किया है। संघ योजनाका समर्थन कर और विभिन्न प्रान्तोंको संघमें स्वेच्छापूर्वक सम्मिलित होनेका अधिकार देकर कांग्रेसने आत्म निर्णयके अधिकारको स्वीकार कर लिया है। कांग्रेसने बालिग मताधिकार प्रदान करनेकी भी घोषणा की है और इस प्रकार उसकी योजनामें सभी सम्प्रदायों और सभी नागरिकोंकी राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक स्वाधीनताकी घोषणा की गयी है। इसके साथ ही सभी लोगोंको सभी क्षेत्रोंमें विकास के लिये पूर्ण अवसर प्रदान किये गये हैं। संघ योजना द्वारा कांग्रेस राष्ट्रकी सार्वभौम सत्ताको अक्षुण्ण बनाये रखना चाहती है और उसके किसी अंग पर किसी प्रकारका दबाव भी डालना नहीं चाहती।

कांग्रेसने साम्राज्यवादी देशोंकी भांति स्वदेशके लिये अलग तथा अन्य देशोंके लिये अलग नीति नहीं बनायी। समानताके आधार पर संसारके सभी राष्ट्रोंके एक संघका उसने समर्थन किया है। अपने घोषणा पत्रमें कांग्रेसने इस बातको स्पष्ट कर दिया है कि उक्त राष्ट्रसंघकी स्थापना होने पर ही विश्वकी सुरक्षा और विश्वशान्तिकी स्थापना हो सकेगी। अपनी स्वाधीनताके साथ कांग्रेसने अन्य पराधीन देशोंकी स्वाधीनताका भी समर्थन किया है। उसने स्पष्ट रूपसे घोषित कर दिया है कि सभी पराधीनोंकी स्वाधीनता और साम्राज्यवाद के विनाशके बिना न तो राष्ट्रोंका पारस्परिक सहयोग सम्भव है और न विश्वशांति की समस्याओंका ही समाधान हो सकता है। कांग्रेसको न तो अपनी पराधीनता और शोषण स्वीकार है और न वह दूसरे देशोंकी पराधीनता और शोषणको पसन्द करती है। कांग्रेसने अपनी अहिंसा नीतिको फिरसे स्पष्ट कर दिया है। घोषणा पत्रमें कांग्रेस द्वारा स्पष्ट रूपसे घोषित किया गया है कि हिंसासे संसारमें शान्ति और सामूहिक सहयोगकी स्थापना नहीं हो सकती। कांग्रेसने इस प्रकार अपनी राष्ट्रीयताका अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोणके आधार पर रखा है और अपने राष्ट्रकी सुरक्षाके साथ साथ उसे मानवताके प्रश्नोंका भी पूरा ध्यान है।

अपनी आर्थिक नीतिका स्पष्टीकरण करते हुए कांग्रेसके घोषणा पत्रमें कहा गया है कि जनताके दुःख दैन्यका निवारण और उनको जीवनके आर्थिक धरातलको ऊंचा उठाना ही कांग्रेसका मुख्य उद्देश्य है। भारतको आर्थिक और सामाजिक दोनों दृष्टियोंसे राजनीतिक स्वतन्त्रता होनी चाहिये। भारतकी सर्व प्रमुख और अत्यधिक महत्वपूर्ण समस्या निर्धनताके अभिशापोंको मिटाना तथा जनताके रहन सहन को उन्नत बनाना है। इसके लिये वाणिज्य व्यवसाय और गृह शिल्पके विकास तथा प्रोत्साहनके अतिरिक्त बुनियादी उद्योग धन्धों, रेल, यातायात, खान आदिके राष्ट्रीयकरण अथवा उन्हें राष्ट्रीय नियन्त्रणमें लेनेकी आवश्यकता है। विनिमय, जहाजरानी, बीमा और बैंकोंको भी राष्ट्रीय हितों के अनुसार नियन्त्रित करनेका घोषणा पत्रमें उल्लेख किया गया है। प्रचुर प्राकृतिक साधनोंके रहते हुए भी इस देशको आर्थिक मामलोंमें परावलम्बी रहना पड़ता है। अतः इस समस्याका निवारण किये बिना देशकी दीनताका निवारण नहीं किया जा सकता। इसके लिये इस कृषि प्रधान देशमें खेतीकी समस्याओंको भी वैज्ञानिक रूपसे हल करना होगा और कांग्रेसके चुनाव घोषणा पत्रमें उसका भी उल्लेख किया गया है।

घोषणा पत्रमें कांग्रेसने सभी भारतीयों के लिये १२ मौलिक अधिकारोंको घोषित किया है जिसके अनुसार भारतके प्रत्येक नागरिकको विचार और भाषण स्वातंत्र्य रहेगा और उनको शान्तिपूर्वक तथा शस्त्र रहित होकर किसी भी वैधानिक और नैतिक संगठनमें भाग लेनेका अधिकार होगा। प्रत्येक नागरिकको अपने धर्मानुसार आचरण करनेकी स्वतन्त्रता रहेगी, बशर्ते उससे व्यवस्था और नैतिकताको आघात नहीं पहुंचे। अल्पसंख्यक जातियोंकी संस्कृति सभ्यता और लिपिकी विभिन्न क्षेत्रोंमें रक्षा की जायगी। कानूनी दृष्टिमें सभी नागरिकोंका समान रूपसे देखा जायगा और धर्म, वर्ण, जाति और योन सम्बन्धी भेद नहीं रखा जायगा। किसी भी पुरुष अथवा स्त्रीको उसकी जाति, धर्म और वर्णके कारण किसी सरकारी नौकरी, पद, व्यापार, अथवा अन्य किसी कार्यके अयोग्य नहीं समझा जायगा। राज अथवा स्थानीय धनसे निर्मित अथवा साधारण उपयोगके लिये प्रदत्त किसी भी कूप, तालाब, सड़क, स्कूल और साधारण स्थान पर सभी नागरिकोंका समान अधिकार रहेगा। सभी नागरिकोंको कानूनके अनुसार शस्त्र रखने का अधिकार होगा। किसी भी व्यक्ति आजादी, निवासस्थान और सम्पत्ति कानूनी तरीकेके अलावा अन्य प्रकार जब्त या अपहृत नहीं किया जा सकता।

धार्मिक मामलोंमें राजकी ओर सदैव तटस्थ नीति अख्तियार की जायगी। सभी बालिग भारतीयोंको मताधिकार प्राप्त होगा। अनिवार्य और निःशुल्क बुनियादी तालीमकी व्यवस्था राजकी ओरसे की जायगी। सभी नागरिकोंको सारे भारतमें स्वच्छन्दतापूर्वक आवागमन करने, बसने और कोई कारबार करनेकी स्वतन्त्रता रहेगी और उनका समान अधिकार प्राप्त होगा। दलित और अल्पसंख्यक लोगोंके आवश्यक विकास और उन्नतिके लिये राजकी ओरसे व्यवस्था की जायगी।

कांग्रेसने इस प्रकार देशको पूर्ण स्वाधीनताके लक्ष्य तक पहुंचानेके लिये निर्वाचनमें भाग लेनेका निश्चय किया है और सारे देशके निर्वाचकोंसे अनुरोध किया है कि आगामी निर्वाचनोंमें वे सभी प्रकार कांग्रेसके उम्मीदवारोंका समर्थन करें और इस महत्वपूर्ण समयमें कांग्रेसका साथ दें। अगस्त १९४२ को कांग्रेसने एक प्रस्ताव पास किया था जो तबसे सारे देशके इतिहासमें प्रसिद्धि पा चुका है। कांग्रेस अबतक अपनी उन मांगों और चुनौतीपर डटी हुई है। कांग्रेसने उसी प्रस्तावके आधारपर चुनाव लड़नेका निश्चय किया है और कांग्रेस का चुनाव नारा भी वही होगा।

इस प्रकार कांग्रेस कार्यसमिति द्वारा प्रकाशित निर्वाचन घोषणापत्र राष्ट्रकी प्रायः सभी राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय प्रमुख समस्याओंपर उचित एवं संतुलित विचार व्यक्त करता है और इस सम्बन्धमें वह राष्ट्रवादी भारतके लोकमत एवं प्रगतिशील विचार धाराका प्रतिनिधित्व करता है। देश इसे स्वीकार करेगा, इसमें सन्देह नहीं। घोषणा पत्र ८ अगस्त १९४२ के आल इण्डिया कांग्रेस कमेटीके प्रसिद्ध प्रस्तावकी नीतिके आधारपर ही अवलम्बित है और कांग्रेसके उद्देश्योंके अनुकूल ही है। आशा है राष्ट्र इसे स्वीकारकर और कांग्रेसी उम्मेदवारोंको निर्वाचितकर, कांग्रेसकी लक्ष्यपूर्तिमें सहायक होगा।

भारतीय सिनेमा और देशकी आवाज

—:*०*:—

लेखक—श्री प्रतापचन्द्र राय चौधरी

भारतीय सिनेमा व्यवसाय आज काफी उन्नत हो चुका है। इस व्यवसायमें आज करोड़ों रुपयेकी पूंजी लगी हुई है, और इसको राष्ट्रका एक प्रमुख व्यवसाय समझा जाने लगा है। किन्तु इससे हमको क्या लाभ हुआ है, इस विषयपर जब हम विचार करते हैं तो हमें बड़ी निराशा होती है। हमारे सिनेमा उद्योगने राष्ट्रको दी हैं सस्ती प्रेम कहानियां, रोमांसकी प्रेरणा और कैशनप्रियता। सस्ती भावुकता द्वारा निर्देशक अपने निम्न श्रेणीके दर्शकों द्वारा ही वाहवाही लूट रहे हैं। अधिकांश चित्रोंमें मौलिकता और नयी सूझका सर्वथा अभाव है। प्रगतिशील चित्र तो निर्माता बनाते नहीं। वे केवल रोमांटिक वातावरणमें रहते हैं जहां सिर्फ सुरा और प्याले हैं। प्रेमी तथा प्रेमिकाके स्वप्नकी दुनिया है। स्वर्ग का मजा है जिससे राष्ट्रका कोई हित नहीं होता। मगर कुछ इने-गिने निर्देशकोंको हम दे कभी नहीं भूलते जिन्होंने कुछ कलात्मक चित्र हमें प्रदान किये हैं। इनमें बरुआ, शान्ताराम, महबूब, देवकी बोस, विजयभट्ट, सोहराब मोदीके नाम आते हैं। किन्तु इनकी कृतियां भारत जैसे विशाल महादेशमें 'ऊंटके मुंहमें जीरा' वाली कहावतको ही चरितार्थ करती हैं।

अभीतक भारतीय सिनेमा व्यवसाय और देशोंकी तरह उन्नत नहीं हो सका है। सिनेमाकी कलाको कोई ठोस और उज्ज्वल रूप प्रदान अभीतक किसी निर्देशक अथवा कलाकारने नहीं दिया है। इसकी स्थिति आज पहलेसे अवश्य ही अच्छी है, किन्तु आज इसकी स्थिति ऐसी होनी चाहिये थी कि हमारी राष्ट्रीय आकांक्षाओं तथा तेजी के साथ अग्रसर होनेवाले भारतके आन्दोलनोंके अनुरूप अथवा अनुकूल यहां चित्र तैयार होते। भारतीय फिल्मोंकी दशाका अवलोकन करते हुए हमें मानना ही पड़ता है कि भारतीय फिल्मोंमें मौलिक तथा गम्भीर विचारधाराका अधिकतर अभाव ही दृष्टिगोचर होता है। उनमें संसारके तात्कालिक उतार-चढ़ावके बारेमें कोई जानकारी करानेकी प्रवृत्ति नहीं रहती। दूसरे देशोंके फिल्मोंमें मौलिक विचारोंको अधिकता है, पर भारतीय फिल्मोंके बारेमें कोई विचारशील निरीक्षक अथवा आलोचक यह स्वीकार किये बिना नहीं रह सकता है कि 'भारतीय फिल्म निर्माता चाहे और जिस किसी भी बातके लिये गर्व कर सकते हैं लेकिन वे इस बातका गर्व कदापि नहीं कर सकते कि वे आधुनिक संसारकी विचारधाराओंके वास्तविक रूप फिल्मोंमें लानेमें अन्य देशोंके मुकाबलेमें खड़े हो सकते हैं। वस्तुतः कुछ इने-गिने फिल्मोंको छोड़कर शेष फिल्मोंकी अधिकतर दुर्दशा ही होती देखी गयी है।

यद्यपि फिल्मोंका ऐसा होना चाहिये कि वे अपने सामने देशके समस्त सांस्कृतिक और कलापूर्ण पहलुओंको ध्यानमें रखें और राष्ट्र निर्माणके समस्त कार्योंमें बड़ी कुशलता के साथ उनका उपयोग करें। किन्तु इसे जोरसे सभी कहाते हैं।

सिनेमाने देशके मन मस्तिष्कपर अपना अधिकार जमा लिया है। आज सिनेमा व्यवसाय अपनी सफलताके शिखिरपर खड़ा विजयकी दुन्दुभी बजा रहा है। यह व्यवसाय इतनी उन्नतिशील अवस्था में होकर भी देशको अच्छे विचारोंसे ओत-प्रोत नहीं कर सका। आज कुविचारों तथा सस्ती भावुकताके साथ कामोत्तेजनाका यह बीज बो रहा है। पेरिसकी तरह देशमें हाव, भाव, कटाक्ष, क्रीम, पाउडरका प्रचार कर इसने युवकोंके मानसिक धरातलको इतना गिरा दिया है जिसकी हद नहीं। इन दिनों वेश-भूषा, पहिरावा, मूंछ, सिरके बाल, जूते, बातचीतका तरीका, चलने-फिरनेका ढंग, सभीमें सिनेमाकी नकल होती है। बड़े बड़े शहरों और कस्बोंमें, स्कूलके छात्र तथा छात्राओंको हम इस धारामें बहते हुए पाते

एसोसियेटेड पिक्चर्सकी नवतम कृति 'अमीरी' में रमोला

हैं। उनके कमरे सिनेमाके अभिनेता और अभिनेत्रियोंके चित्रसे सजे सजाये पाये जाते हैं। युवकोंमें हमेशा सिनेमाकी ही चर्चा होती रहती है। जिस प्रकार फिल्ममें युवक और युवतियोंके प्रेम-प्रदर्शन होते हैं उसी तरह ये भी अपने जीवनमें उसी प्रकारका प्रेम उतारनेकी व्याकुल रहते हैं। जब हम देखते हैं कि सिनेमाका प्रभाव इतना जोरों पर है तो क्यों नहीं कलात्मक चित्रोंको प्रस्तुत करें इसके द्वारा देशका कल्याण किया जाय; किन्तु इस ओर तो डाइरेक्टर ध्यान नहीं देते। निर्देशकोंको गिरी हुई जातिको, अन्धकारमें पड़े हुए इतिहासको प्रकाशमें लाकर राष्ट्रके हितैषी और कलाकार होनेका अधिकारी बनना चाहिये। आज तक उन्होंने जो कुछ चित्र निर्माण किया है उनका जनता पर क्या प्रभाव पड़ा है? भारतीय जनताके आदर्श तथा उनकी भावनाको ऊंचे उठाने का उत्तरदायित्व कुछ निर्देशकों पर भी है। जिन निर्देशकोंने ऐतिहासिक, पौराणिक चित्रोंका उच्छृङ्खलतासे अपमान किया है उन्हें नहीं भूलना चाहिये उन्हीं लोगोंने गलत रास्ता दिखानेका पाप किया है। भारतीय सिनेमा व्यवसाय प्रारम्भिक इतिहास बताता है कि जब भारतमें फिल्मोंका बनना प्रारम्भ हुआ तो पौराणिक चित्रोंने श्रेष्ठ स्थान पाया, और जनताने उन्हें काफी पैसा दिया, किन्तु जनताको क्या मिला? अभी तक जनताकी कमजोरीसे मनमाना लाभ उठाया जा रहा है।

भारतीय फिल्म निर्माताओंको समयके साथ चलना चाहिये और देश आज जिस वातावरणसे गुजर रहना है, उसका अपनी कृतियोंमें उन्हें समावेश करना चाहिये। हम मानते हैं कि सिनेमाका प्रधान उद्देश्य मनोरंजन है, किन्तु मनोरंजनके साथ-साथ अगर जनताको [illegible] दिखाया जा सका [illegible] योगकी कोई हानि नहीं वरन लाभ ही होगा।

'घर'

सनराइज पिक्चर्सकी नवतम कृति 'घर' में भारतीय विधवाओंकी दशाका चित्रण किया गया तथा उनकी सामाजिक स्थितिकी विवेचना की गयी है। 'घर' का कथानक बड़ाही उत्तम और प्रगतिवादी है। जमुना, मलिना और नवाबने इसकी मुख्य भूमिकाओंमें कार्य किया है। श्री बी० एम० व्यासका निर्देशन भी सभी दृष्टियोंसे सफल रहा है। 'घर' आजकल स्थानीय वीणा सिनेमामें प्रदर्शित हो रहा है।

फिल्मी दुनियांकी खबरें—

—आलोच्य सप्ताहमें फिल्मी दुनियांकी सर्वतोल्लेखनीय खबरोंमें निर्देशक फणि मजुमदार और विख्यात सिनेमा अभिनेत्री श्रीमती मणिका देसाईका विवाह है। पिछले पखवारेमें उनकी शादी बम्बईमें समारोह-पूर्वक हुई। यद्यपि फणि-मणिका प्रणय काफी देरसे आरम्भ हुआ, लेकिन उसका अन्त विवाहके रूपमें हुआ और उनके प्रणय-सम्बंध पर काफी अर्सेसे पड़ा हुआ पर्दा हट गया।

—कलकत्तेमें एक नयी फिल्म वितरण संस्था टाइम पिक्चर्स लिमिटेडके नामसे स्थापित हुई है। उनका प्रथम चित्र है महाराष्ट्र फिल्म कृत देवदासी, जिसमें मणिका देसाई नायिकाकी भूमिकामें उतरी हैं।

—हालीउडकी पैरामाउण्ट फिल्म कंपनी इन दिनों 'कलकत्ता' का निर्माण कर रही है, जिसमें आज जानकके समयके कलकत्तेका चित्रण होगा। भूमिकामें कुछ भारतीयोंको भी लिया गया है। भारत सम्बन्धी विषयों पर वहांके एक प्रमुख भारतीयसे परामर्श लिया जा रहा है। अतः हमें आशा है कि इस बार कोई करीम जनेऊ और चुटियाके साथ नहीं दिखायी पड़ेगा।

—'दस बजे' और 'तारामती' के सफल निर्देशक श्री राजा नेने शीघ्र ही 'जय हिन्द' का निर्माण आरम्भ करने जा रहे हैं। कलाकारोंका चुनाव अबतक नहीं हो पाया है।

अभिनेत्री लीला देसाई

—नव संस्थापित फिल्म कम्पनी 'कला चित्र प्रोडक्शन' ने 'सती महानन्दा' के निर्माण की घोषणा की है। इस चित्रका निर्माण हिन्दी और मराठी भाषाओंमें होगा।

—मालूम हुआ है कि निर्देशक शैलजानन्दने एक फिल्म कम्पनी शैलजानन्द प्रोडक्शनके नामसे खोली है। शैलजानन्द स्वयं श्रेष्ठ कहानीकार और निर्देशक हैं। ऐसा समझा जाता है कि वह शीघ्र ही अपनी किसी कहानीको फिल्मी रूप देंगे।

—प्रकाशका नया सामाजिक चित्र 'हमारा संसार' प्रदर्शनके लिये तैयार है। जीवन, उमाकान्त, सुमति गुप्ते और राजकुमारी शुक्लने इसमें अभिनय किया है। प्रकाशका दूसरा सामाजिक चित्र 'नयी मां' का निर्माण श्री परमारके निर्देशनमें तेजीसे हो रहा रहा है।

—एक लम्बे अर्सेसे [illegible] विख्यात अभिनेत्री दुर्गा खोटे शीघ्र ही [illegible] फिल्मके मुगल-ए-आजममें आ रही हैं। नरगिस और वीणाका भी सहयोग है।

—अमेरिकन हवाई सेनामें दो वर्षों तक तोपचीका काम करनेके बाद विख्यात भारतीय अभिनेता साबू फिरसे हालीउड [illegible] गया है। मेरिया माण्टेजके साथ [illegible] वह 'टैंजियर' नामक एक जासूसी फि[illegible] काम कर रहा है। साबूका पापा [illegible] मैसूर महाराजके २०० हाथियोंका [illegible] पत है।

—मिनर्वा मूवीटोनका नवीन [illegible] 'साथी' का निर्माण कार्य समाप्त हो [illegible] है। मुख्यांशमें मेहताब और इस्माइल [illegible]

—प्रभातकी नवतम कृति '[illegible] रानी' इस सप्ताह प्रदर्शित हो गयी। [illegible] खोटे, मणिका और सप्रू इसकी [illegible] भूमिकाओंमें आये हैं। 'हम एक हैं' [illegible] शक सन्तोषीने नायककी भूमिका [illegible] चेतन आनन्दके छोटे भाईको [illegible] 'गोकुल' का निर्माण शीघ्र ही आरम्भ [illegible] जा रहा है।

—शालीमार पिक्चर्स द्वारा इन [illegible] तीन चित्रोंका एक साथ निर्माण हो [illegible] है। 'पृथ्वीराज संयोगिता' का [illegible] 'पन्ना' के नजम नकवी कर रहे हैं [illegible] मुख्यांशमें हैं नीना और पृथ्वीराज। [illegible] में नीनाकी मुख्य भूमिका है और '[illegible] कृष्ण' का निर्माण भी शीघ्र ही [illegible] होने जा रहा है। भारत भूषण और [illegible] क्रमशः राधा और कृष्णकी भूमिका [illegible] करेंगी।

समाज दर्पण

महिलाओंका शासन

अमृतसरमें हालहीमें एक वाक्-प्रतियोगिता हुई जिसका विषय :था—"यदि महिलाओंका शासन हो, तो...!" उक्त प्रतियोगितामें वहांके स्थानीय कालेजकी छात्राओंने भाग लिया।

यह तो रही केवल वाक्-प्रतियोगिताकी बात। लेकिन हमें ज्यादह ध्यान तो उस विचारकी ओर देना है जो इसके मूलमें काम कर रहा है।

आजकी नारी पुरुषसे किसी भी बातमें कम रहना नहीं चाहती। वह चाहती है कि समाजमें उसका वही दर्जा हो जोकि आज पुरुषोंका है। वह चाहती है कि उसे जीनेके लिये उतनी ही शक्ति और स्वतन्त्रता प्राप्त हो जितनी कि पुरुषको प्राप्त है। किसी भी दृष्टिकोणसे उसकी यह मांग अनुचित करार नहीं दी जा सकती।

लेकिन समाजमें जहां स्त्री और पुरुष का अलग-अलग प्रश्न हमारे सामने आता है, वहां पारिवारिक समस्यापर भी हमारा ध्यान गये बिना नहीं रह सकता। यह ठीक है कि समाजकी व्यवस्थाको कायम रखनेके लिये स्त्री व पुरुष दोनोंका पारस्परिक सहयोग अपेक्षित है। दोनोंकी असमानताके लिये कोई भी ठोस आधार उपस्थित नहीं किया जा सकता। लेकिन क्या यह मान लेना किसी भी स्थितिमें उचित कहा जा सकता है कि जीवनके एक ही रास्तेमें स्त्री और पुरुष दोनोंका कार्य-क्षेत्र एक ही है। उसमें कुछ अन्तर है।

उदाहरणके तौरपर यदि पुरुषका कार्य धनोपार्जन है तो स्त्रीका कार्य उसके व्ययके उचित सम्पादनमें भाग लेना है। दोनों कार्योंमें थोड़ासा विभेद होते हुए भी, उनका लक्ष्य और उद्देश्य एक ही है, यह बात बतानेकी आवश्यकता नहीं। योग्यताकी दोनों कार्मोंमें आवश्यकता पड़ती है—समान।

किन्तु आजके नारी-जागरणके आन्दोलनको जो प्रेरणा पश्चिमसे मिल :रही है, उसकी धूल-धक्कड़में, ऐसा पता चलता है कि तथ्यपर कुछ आवरण-सा पड़ता जा रहा है। नारी जहां ऐसी स्थितिमें स्वयंको भूल रही है, वहां ठीक तरीकेसे पुरुषको पहचाननेमें भी वह भूल करती जा रही है। यह खतरा है, जिसे महसूस करते हुए भी महसूस न करनेका अभिनय किया जाय तो गलत होगा।

स्त्रीको अधिकार चाहिये, समानता चाहिये, प्रगतिका खुला मार्ग चाहिये—सब ठीक है। लेकिन पुरुषके सहयोग और सद्भावनासे ही उसे अधिक सफलता प्राप्त होगी।

समयका तकाजा है कि समाजके नवनिर्माणके समय स्त्री और पुरुष एक :दूसरेके लिये लाभदायक और उपयोगी तत्वोंका अधिकसे अधिक उपयोग कर सकें, परस्पर सन्देह, विरोध :अथवा अविश्वास जितना जल्दी नष्ट किया जाय, उतना अच्छा। एक क्षेत्रमें यदि पुरुषका सम्मान है तो दूसरेमें नारीका। :तराजूके ये पलड़े हैं।

और अधिक व्यापक प्रश्न है पारिवारिक व्यवस्थाओंको :नहीं है, स्त्री और पुरुष दो किनारे हैं—एकके बिना किसी दूसरेका कोई अस्तित्व नहीं।

महलोंमें तिरंगा झण्डा

राजपूतानेकी एक रियासतसे प्राप्त एक समाचारके अनुसार वहांपर हालहीमें जनताने जब आजाद हिन्द फौज दिवस मनाया तो जहां नगर भरमें लट्ठबन्द पुलिसका दल चक्कर काटता रहा वहां लोगोंने बड़े आश्चर्यके साथ यह भी देखा कि महलोंके सदर दरवाजे पर भी एक बड़ी संख्यामें ... ...

किसीने उत्सुकतावश उनमें से किसी एकसे प्रश्न कर दिया—"आखिर यह नयापन आज क्यों?" और उसने बड़ी सरलतासे उत्तर दिया—"कुछ लोगोंने आज महलोंमें तिरङ्गा झण्डा फहरानेका चुपके चुपके निश्चय किया है, उन्हें रोकनेके लिये...!"

हमें ठीक नहीं मालूम कि इस 'चुपके चुपके निश्चय'को रोकनेके लिये, जिसका वस्तुतः कोई आधार भी देखनेमें नहीं आया, इतनी विपुल तैयारियोंके लिये खुद यहांके महाराजाने आज्ञा दी अथवा किसी अन्य पदाधिकारीने, फिर भी, जितना विवरण प्राप्त हुआ है, उसके आधार पर हम यह नहीं समझ पाते कि राज्यके पदाधिकारियोंकी किसी विवशता पर हमें दया आनी चाहिये अथवा पागलपन पर हंसी!

तिरंगा झण्डा समस्त भारतकी राष्ट्रीयताका प्रतीक है। आज जब कि देश अपनी आजादीके द्वार पर खड़ा है, तब वह दिन दूर नहीं जब कि कुटियोंसे लेकर बड़ेसे बड़े महलों तक हमारी राष्ट्रीयताका यह निशान, हमारे स्वाधीनता प्रेम और संस्कृतिका यह प्रतीक—तिरङ्गा झण्डा शान से फहरायेगा! भावी भारतमें रियासतों का अस्तित्व स्वतंत्र भारतके सद्भाव पर ही निर्भर करेगा। कौन कह सकता है कि रजवाड़ों और रावलों पर तब तिरङ्गा नहीं उड़ेगा?

कलकी होनेवाली सचाईसे यदि कोई आज कतरा कर निकलना चाहता हो, उस पर अस्थायी तौर पर आवरण डाल देनेकी पक्की करनेमें मजा लेना चाहता हो तो, ऐसी हास्यास्पद हरकत पर क्या कहा जाय, यह हम नहीं समझ पाते। समय रहते यदि इन देशी नरेशोंकी आंख खुल जायें तो अच्छा है!

भारतके प्रति कृतज्ञ!

बुलडाना (बरार) के डिप्टी कमिश्नर मि॰ रोलेने मलकापुरकी एक महती सभामें भाषण देते हुए कहा—"अब समय बहुत बदल गया है। मैं यहां शासन नहीं, सेवा करने आया हूं। आज भारत यह मांग कर रहा है कि हम चले जायें। यह मांग न्यायोचित है। जहां तक मेरा प्रश्न है, यदि मैं आपकी सेवा नहीं कर सका तो अवश्य "भारत छोड़ दूंगा।" बेशक, पहले हममेंसे कुछ लोगोंने उद्दण्डता पूर्वक व्यवहार किया है, लेकिन समयने हमें दूसरा सबक सिखाया है। अब किसीको उद्दण्ड नहीं होना चाहिये। मैं आपकी मांगका पूरा समर्थन करता हूं। मेरे पास सभी आ सकते हैं और आपकी सहायताके लिये जो कुछ भी मुझसे होगा, मैं करूंगा।

जितना सत्कार हमारा यहां किया जाता है, उतना अन्य किसी देशमें नहीं होता। भारतके हम चिर कृतज्ञ हैं और बने रहेंगे।"

उपर्युक्त वक्तव्य पर कोई टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। ये एक ऐसे अंग्रेज अफसरके शब्द हैं, स्पष्टतया जिसका हृदय साफ है। "भारत छोड़ो" में हमारी शत्रुता :ब्रिटिश साम्राज्यवादसे है, अंग्रेज जातिसे :नहीं, यह कोई बतलानेकी बात नहीं। "भारत छोड़ो" के औचित्यको समझना किसी भी निष्पक्ष अंग्रेजके लिये कठिन नहीं फिर भी हमें सन्देह है कि हमारे यहांके अन्य ब्रिटिश अफसर भी :वस्तुस्थितिको इसी चश्मेसे देखनेका कष्ट करना पसन्द करेंगे!

सिन्धमें सत्यार्थ प्रकाश

सिंधके प्रधानमन्त्री, कुछ अन्य मंत्रियों तथा वहांके कुछ अन्य उच्च पदाधिकारियों :ने वादा किया था कि सिंधमें सत्यार्थ प्रकाशपर लगाया गया प्रतिबन्ध हटा लिया जायगा, लेकिन उस वादेको अभीतक पूरा नहीं किया गया है। अखिल भारतीय सत्यार्थ प्रकाश रक्षा समितिने इसपर विचार करते हुए इसी सप्ताह एक प्रस्ताव पास किया है। प्रस्तावमें स्थितिका स्पष्टीकरण करते हुए तथा पूर्व निश्चयको दोहराते हुए कहा गया है कि कोई वजह नहीं मालूम पड़ती कि सत्याग्रह न शुरू किया जाय। वर्तमान सिंध सरकारका जैसा रुख है उसे देखते हुए आर्यसमाजके लिये सत्याग्रह आवश्यक है।

किन्तु असेम्बलीके चुनावके कारण फिलहाल वह सत्याग्रह स्थगित रखा जा रहा है। रक्षा समितिने आर्यसमाजी संस्थाओं को :सूचना दी है कि उन्हें कुछ दिन अभी और ठहर जाना चाहिये। समितिने यह भी कहा है कि इस तरह हम कमजोर नहीं होंगे बल्कि हमारी शक्ति बढ़ेगी।

हमें आश्चर्य होता है कि एक अर्सेके बाद भी अभीतक सिंध सरकार अपनी हठधर्मीको आसानीसे त्यागनेको तैयार नहीं है। जो अनुचित है, उसका समर्थन किसी भी पक्षसे नहीं किया जा सकता। देशके सभी गण्यमान्य नेताओं द्वारा सिंध सरकार द्वारा इस भूलका संशोधन कर लिये जाने पर जोर दिया जा चुका है।

और अब तो बल्कि, जबकि :इस प्रसंग को लेकर सत्याग्रह करनेका आर्यसमाजने समाजने भी बुद्धिमानीसे कुछ कालतक लिये स्थगित करनेका निश्चय किया है तो सिंध सरकारको और भी एक अवसर प्राप्त हो गया है—कुछ सोचनेके लिये, विचारनेके लिये। बुद्धिमानी तो उसकी इसी बातमें होगी कि इस बीच वह सत्यार्थ प्रकाशपर लगाया गया अनुचित प्रतिबंध उठा ले अन्यथा यदि सत्याग्रहका अप्रिय प्रसंग अनिवार्य हो रहा और उसके बाद हो यदि सिन्धके मन्त्रिमण्डलको झुकना पड़ा—जैसा कि स्पष्टतया होना ही है—तो इस ... कुछ गौरव प्राप्त हो जायगा, ऐसी कोई ... समझमें नहीं आती। बेहतर है यदि सिन्ध सरकार ... ठीक ही रास्ता चुने और संघर्षकी आगमें तपनेके लिये आर्यसमाजियों को मजबूर न करे।

केवल स्वार्थ और प्रचार

हालहीमें सीमान्त गांधी खान अब्दुल गफ्फारखांने एसोशियेटेड प्रेस आफ अमेरिकाके प्रतिनिधि जोसिफ गुडविनसे एक भेंटके दौरानमें सीमान्तके जंगली कबाइलियोंके सम्बन्धमें कहा कि ये लोग बहुत भद्र व्यक्ति हैं और केवल उनकी गरीबीही उन्हें दूसरोंसे लड़नेके लिये विवश करती है। यह अफसाना सुनाया जाता है कि इन कबाइलियोंकी उद्दण्डताने ब्रिटिश सरकारको सीमा पर भारी सेना नियुक्त रखने पर विवश कर रखा है। यह चीज ब्रिटिश सेना के लिये उत्तर भारतमें सेनाकी लामबन्दीके लिए केवल बहाना है। वह इस क्षेत्रको अपनी आजमाइशी लड़ाइयोंके लिये प्रयुक्त करती है।

खान अब्दुल गफ्फार खां विदेशी पत्रकारों द्वारा लिखी गयी कबाइलियोंकी कहानियों पर खूब हंसे। अपने स्वार्थके लिये दूसरोंको बलिदानका बकरा बनाना सरकारके लिये कितना आसान है? मजाक तो यह कि उस पर भी लिखनेका कोई काम नहीं और :मिथ्या प्रचारका बोलबाला।

सीमान्त गांधीने अपने :वक्तव्यके अन्तमें बतलाया कि यदि सरकार मुझे कबाइलियोंके लिये प्राइमरी स्कूल खोलने और चिकित्सा अथवा औषधि-सम्बन्धी सहायता करनेकी आज्ञा दे तो बहुत कुछ किया जा सकता है।

किन्तु इन लोगोंकी गरीबी और अशिक्षासे सरकारको अनुचित लाभ उठाने का अवसर प्राप्त होता रहता है तो फिर उससे यह आशा कहां रखी जा सकती है कि वह खान अब्दुल गफ्फार खांकी उक्त उक्तियों पर ध्यान देगा? ... देगी!

चलते चक्को

ब्रिटेन और उसके राजनीतिज्ञ भारत को अहिंसाका उपदेश दें, यह कुछ बेतुकासा लगता है।

—एक सम्पादकीय।

उपदेश गद्यमें होता है, इसलिये बेतुका तो होगा ही। हां, अगर वह पद्यमें होता तो उस वक्त जरूर तुकका प्रश्न पैदा हो सकता था।

° ° °

लखनऊ जेलसे छूटते वक्त आजाद हिन्द फौजके ४० सैनिकोंने जब "दिल्ली चलो" का नारा लगाया, तो उनसे उनके कम्बल छीन लिये गये।

—एक समाचार।

जेल अधिकारियोंने ठीक ही सोचा होगा कि कम्बल छीन लिये जानेके बाद सर्दीमें कैसे ये लोग दिल्ली जा सकेंगे?

* * *

ब्रिटिश सरकारका खयाल है कि औपनिवेशिक स्वराज्य प्राप्त कर लेनेके बाद भी भारतीय अपनी इच्छानुसार ब्रिटिश कामनवेल्थके साथ रहना पसन्द करेंगे।

—मि० मौरीसन।

चोली-दामनका साथ एकदम छूट जाना आसान थोड़े ही है!

° ° °

पूनाका एक समाचार है कि कोल्हापुर के निकट वेलंवेड कैम्पमें जितने पोल शरणार्थी हैं, वे अपने देश जानेको तैयार नहीं हैं।

इनका जानेसे इनकार करना उचित भी है। ये लोग जहां पोल पायेंगे, वहीं तो रहेंगे!

° ° °

गुजरात (पञ्जाब) जेलमें सब राजनीतिक बन्दी बीमार।

—एक शीर्षक।

बीमार होनेको नहीं तो क्या बन्दियोंने अपना स्वास्थ्य सुधारनेके लिये इस स्थान को चुना था?

* * *

बम्बईकी एक सौन्दर्यशालिनी कुमारी अपने निवास स्थानके निकट रहनेवाले प्रेमीको चक्का देती रही और ९ हजारके जोहके हजम कर गयी।

—एक समाचार।

पवित्र प्रेम इसीको कहते हैं!

° ° °

कांग्रेसके सम्बन्धमें सरकारका सन्देह दूर।

—एक शीर्षक।

सन्देह भले दूर हो गया हो, लेकिन उसकी मिजाज तो अभी बाकी है!

* * *

ब्रिटिश शासनकालमें संयुक्त प्रान्तके किसी गवर्नरकी विदाई इतनी समारोहहीन नहीं हुई जितनी सर मारिस हैलेटकी।

—एक सम्पादकीय।

हैलेट-साहबने स्वयं इस सादगीको पसंद किया होगा! बिछुड़ते वक्त जब हृदय व्यथित होता है तो उस समय खुशीके समारोह उचित भी कहां कहे जा सकते हैं?

\+ \+ \+

मजदूर दलके प्रतिनिधि भारतका दौरा करेंगे।

—एक समाचार।

सैरके लि. ब्रिटेनमें अच्छी जगहोंकी कमी हो गयी है क्या?

* * *

कांग्रेस कार्यसमितिने अपना अहिंसा विषयक प्रस्ताव पुनः पास किया है।
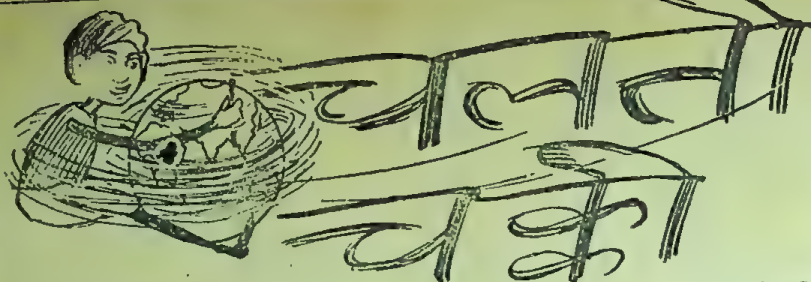
हम समझते हैं कि सरकारको अब बिलकुल निश्चिन्त हो जाना चाहिये!

° °

सरकारी कब्जेके समय लाहौरके ब्रेडलाहालको चूंकि गेहूंका स्टाक रखनेके लिये ३६ महीने तक प्रयुक्त किया गया, इस लिये पंजाब सरकारको नोटिस दिया गया है कि ५००) मासिकके हिसाबसे या तो सरकार १८ हजार रुपया उसके किरायेके रूपमें दे दे अन्यथा मामला अदालतमें जायेगा।

—एक समाचार।

खूब! हिन्दुस्तानियोंकी ज्यादती बढ़ती ही जा रही है! कल जब अंग्रेज भारतको खुशी-खुशी आजादी प्रदान करके विलायत लौटने लगें तो कहीं उनसे यह न पूछ लिया जाय कि जनाब, भारतमें इतने दिन रहने और शासन करनेका भी किराया तो थोड़ा बहुत देते जाइये!

* * *

भारत सरकारके उद्योग तथा नागरिक रसद विभागने एक विज्ञप्ति प्रकाशित करके घड़ियों व फाउण्टेन पेनोंकी कीमतोंपरसे कण्ट्रोल हटा लिया है।

—एक समाचार

प्रेमियों द्वारा किसीको भेटमें दी जानेवाली यही दो प्रमुख वस्तुएं थीं। इसी लिये सरकारने सोचा होगा कि अनुचित तौर पर इनका बाजारसे गायब रहना ठीक नहीं है।

* * *

वैज्ञानिक इस बातकी आशा कर रहे हैं कि वे एक आश्चर्य पूर्ण हिसाब-किताब करनेवाली मशीन बनायेंगे जो सोच भी सकेगी।

—एक समाचार।

लोगोंको खटकता है कि 'गर्ल एकाउण्टेण्ट्स'से इन्हें सन्तोष क्यों नहीं हो पाया!

° ° °

कहा जाता है कि कांग्रेस नेताओंने बंगाल गवर्नर मि० केसी तथा महात्मा गान्धीने वायसराय लार्ड वावेल और मि० केसीसे मुलाकातके समय सरकारको आश्वासन दिया है कि निकट भविष्यमें सीधी कार्यवाही करनेका कांग्रेसका कोई विचार नहीं है।

—एक समाचार।

सीधी न सही, टेढ़ सही, लेकिन घूम फिर कर करनेका भी अब तो एक ही निकलेगा! सरकारको यह समझ लेना चाहिये!

* * *

अमेरिकन पत्रोंमें प्रकाशित हुआ है कि मैक्सिकोके शान्त ज्वाला मुखी पर्वत में नाकेटा मेरिडाकी तलहटीमें १०० फीट ऊंचा एक दैत्य है जिसका चेहरा चमकता है।

अमेरिकामें दैत्य भी पैदा होने लगे! अंग्रेजोंको सम्हल कर रहना चाहिये।

° ° °

बम्बईमें भारत सरकारके हाई कमिश्नर श्री जमनादास मेहताने बतलाया कि इस वक्त भारतमें लगभग १८ लाख मजदूरोंके बेकार होनेका खतरा है।

—एक समाचार।

ताश और शतरंज खेल कर अपनी बेकारीका वक्त आरामसे काटा जा सकता है। सरकारको चाहिये कि काम मिलने तक इन लोगोंमें ताशके पत्ते और शतरंजकी बाजमें मुफ्त बंटवानेका शीघ्र प्रबन्ध कर दे।

° ° °

जो भारतीय साधारण अंग्रेजके खिलाफ नहीं है, उसे भी सरकारकी धमकियां खिलाफ बनाये बिना नहीं छोड़ेगी।

—एक सम्पादकीय।

सरकारकी मजाक पर भी भारतवासी गम्भीर होकर सोचने लगे हैं?

* \+

ऐसा पता चला है कि जापानी शासन की रूपरेखा नयी दिल्लीसे तैयार की जा रही है।

—एक समाचार।

जापानी खिलौनोंकी ही तरह जापानी
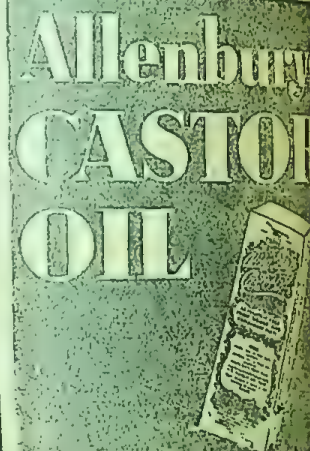
...शासनक भी कोई कच्चा इमारत खड़ी करनेका तो इरादा मित्रोंका नहीं है ?

*　　*　　*

हमें अपने दिलमें आग और दिमागमें बर्फ रख कर चलना चाहिये।

—पं० नेहरू।

ठीक तो है। लेकिन सरकार सरलतासे पूछना चाहती है कि सर्दियोंमें अगर कहीं बर्फ न मिले तो...?

° ° °

अमेरिकासे प्राप्त ऋण द्वारा मजदूर सरकारकी प्रतिष्ठामें वृद्धि।

—एक शीर्षक।

अगर यह सच है तो उधार करके घी पीनेवालोंको इससे कुछ शिक्षा अवश्य मिल सकती है।

*　　*　　*

मुझे जेलसे कोई प्रेम नहीं है।

—पंडित नेहरू।

लेकिन ब्रिटिश सरकारके अनुसार ...ओंको तो आपसे कुछ खिंचाव है!

*　　*　　*

खबर है कि कानपुरके गुटड़िया हैलेट ...रवाजके एक डाक्टर साहबके बंगलेमें ...कर चोर बहुतसे सोने चांदीके बर्तन उठा ले गये।

डा० साहबको अफसोस है कि उनके चोरी करके चोर दवाइयोंकी शीशियां नहीं ले गये! सोना-चांदी तो उन्हें ...ी औरके यहां भी मिल सकता था!

*　　*　　*

समाचार है कि बनारसमें शीघ्र ही एक ...स्थ्य-प्रद... ...र्शनी... जा रही है।

भारतमें स्वास्थ्य प्रदर्शनी आजकल जरूर एक नयी चीज होगी। इसके बजाय यदि जगह जगह अस्वास्थ्य प्रदर्शनियोंका आयोजन किया जाया करे तो उनमें ज्यादह रौनक देखनेको मिल सकती है!

° ° °

'भारत छोड़ो' का नारा कोई विलक्षण पैदा नहीं करता।

—लार्ड वावेल।

आप कर सकते हैं, यही क्या कम है?

*　　*　　*

धर्म न तो पाजामा है और न तो धोती ही।

—पं० सुन्दरलाल।

तो फिर पतलून जरूर होगा!

° ° °

संयुक्तप्रान्तके गांवोंमें भी बिजली लगाये जानेकी योजनायें बन रही हैं।

—एक समाचार।

लोगोंके दिलोंमें बिजली कम रहने लगी है क्या?

° ° °

सेंसर बोर्ड राष्ट्रीय नेताओंके चित्रोंको तो काट देता है किन्तु 'जोबनके उभार' वाले गानोंपर उसे कोई आपत्ति नहीं होती।

—एक सिनेमा समालोचक।

आपत्ति होती तो जरूर है, लेकिन फिर झिझक हो जाती है कि बोर्डको कहीं कोई दकियानूस न समझे!

*　　*　　*

राधा

(१० वें पृष्ठका शेषांश)

भिखारिन और आप एक लखपति सेठ, नहीं। इस धन-राशिके लिये मैं अपना सतीत्व नष्ट नहीं करना चाहती हूं, मैं अभीतक पवित्र हूं और पवित्र ही रहूंगी।" राधाने साहसपूर्वक कहा ! "राधा ! तुम्हारी सुन्दरता और जवानी मेरी नस-नसमें समा रही है। तुम मुझे ठुकराओ मत। तुम भिखारिन नहीं, बल्कि इस धन-राशिकी पूर्ण मालकिन हो राधा...आओ राधा...।" और इस पापी सेठने राधाको अपने बाहुपाशमें जकड़ लिया और आध घण्टे बाद वह वहीं उसे छोड़कर चला गया।

ज्वालामें, अनुतापकी धधकती आगमें, कि पृथ्वी फटती तो वह वहीं समा जाती।

सेठजीके लड़के दमामूके लिये जो बहुत दिनोंके लिये अफीम रखी थी, राधा उस सब अफीमको खा गयी और अपने कमरेका दरवाजा बन्द करके सो गयी।

सबह हुआ। सूर्यकी किरणें बिखरीं। प्रभातफेरियोंने वन्देमातरम गीत गाया। पक्षी कोलाहल मचाने लगे। धूप काफी चढ़ गयी। परन्तु राधाका अभीतक कोई पता नहीं था।

सेठजी सशंकित हो उठे, ज्योंही सेठजी ने राधाके कमरेका दरवाजा खोला तो राधाको मरणासन्न अवस्थामें पाया।

'...तो यह सम्पूर्ण धनराशि तुम्हारी ही है।' राधाके ऊपर मुग्ध हो सेठजीने कहा।

राधा फूट-फूटकर रो रही थी, उसने लम्बी सांस लेकर कहा कि "वाह री दुनिया ! गरीबों, अनाथोंके लिये कहीं भी जगह नहीं। जहां भी वे जाते हैं वहां ही उनको बेइज्जती होती है और पूंजीपतियोंसे बुरी तरह ठुकराये जाते हैं। ऐसे कितने ही लख-पति, हर दिन ही कितनी बेचारी गरीब अबलाओंको धनका लालच देकर उनका सतीत्व नष्ट करते होंगे। महान पाप, विश्वासघात।"

सेठजीने आज अपनी धन-राशिके बल पर मेरा सतीत्व नष्ट कर दिया, यह घोर अन्याय, विश्वासघात ! उस दिन यह पापी कहांसे दो आने देनेको पहुंचा था। ईश्वर क्या कहेगा ? हमारे स्वर्गवासी पतिदेवकी आत्मा क्या कहेगी ? कहांसे मैं इस पापीके यहां नौकरी करने आयी ? इससे तो भीख भली थी। मेरा सतीत्व नष्ट हो गया। अब मैं इस जगतमें जीने योग्य नहीं रही।" जब वह जल रही थी पश्चातापकी प्रचण्ड

सेठजी विस्मत होकर आंखें फाड़कर राधाके मुखको देखते ही रह गये जब कुछ ही क्षणमें राधाका जीवनदीप सदाके लिये बुझ गया।

केशरञ्जन

प्रति दिन स्नान के समय लगाने से आपको ठण्डक मिलेगी। १) रु० प्रति शीशी।

मस्तिष्क ठण्डा रखिये

अशोकारिष्ट

औरतों के लिये अचूक दवा है और उनकी सब बीमारी को दूर करेगा।

कविराज एन. एन. सेन एण्ड कम्पनी लि०
१८।१, लोअर चितपुर रोड, कलकत्ता।

कुंवर आयुर्वेदिक फार्मेसी कानपुर का

वेदना निग्रह रस

एक मात्रा खाते ही शिर दर्द, जुकाम मय हरारत, मौसमी बुखार व मलेरिया को दूर करता है।

अपने शहर के दुकानदार से पूछें।

सुधासिंधु-बालसुधा

सुप्रख्यात निजी पेटेण्ट तथा शुद्ध आयुर्वेदिक औषधियोंके निर्माता

सुख संचारक कम्पनी, लि०,

सुख संचारक बिल्डिंग, सुख संचारक पोस्ट आफिस,

मथुरा

युक्त प्रांत में

अपने ढंग का एकमात्र विश्वसनीय विशालकाय कार्यालय

हमारी विशेषताएं

१—हमारा निजी ५५ वर्षीय अनुभव।
२—औषधें वैद्य का ऊंचे से ऊंची उपाधि प्राप्त विशेषज्ञ और अनुभवी वैद्यराज, उपवैद्यराजके निरीक्षण में निर्माण होती हैं।
३—अप्राप्य व दुष्प्राप्य खनिज एवं वनौषधियों के प्राप्त करनेके संगठित साधन।
४—कड़ी, गठीली वनस्पतियोंके चूर्ण विचूर्ण करने, गोलियां, टिकियां बनाने व कार्क फिट करने और अन्य विभिन्न कार्यों के लिये आधुनिक पद्धति की मशीनें।
५—औषधियों का अधिक परिमाण में तैयार करने तथा इकट्ठा सामान मंगाने के कारण सस्ती और सर्वोत्तम तैयार होना।

विशेष विवरण के लिये वृहत सूचीपत्र मुफ्त मंगइये

---

३ घण्टेमें यौवन-लाभ

रेजुवेन्टा—इतना शक्तिशाली औषधि है कि सेवनके ३ घंटेके बाद ही शिथिल मांसपेशियां सुदृढ़ होकर जीर्ण शरीरमें भी यौवनका संचार हो जायगा। जीवनकी आशा आकांक्षा एवं कामनाकी पुनर्प्राप्तिके लिए इसके प्रमुख साधन यौवनको संजीवित कीजिए एवं अटूट रखिये। रेजुवेन्टाका सेवन कर निश्चिन्त हो जाइये। नारीकी उदासीनतामें भी विशेष लाभप्रद। मूल्य २॥) प्रति शीशी-पैकिंग, पोस्टेज अलग। पत्र व्यवहार अंग्रेजीमें करें। **जय केमिकल वर्क्स**, पोस्ट बक्स १००१३, कलकत्ता।

शीतकालमें

रासायनिक और बाजीकरण दवा **श्री कामदेव योग**

का सेवन कर बलपौरुष एवं मजबूत व टिकाऊ शक्ति बढ़ाकर विवाहित सुखोंका आनन्द मनाइये। यह वही दवा है कि जिसको तलाश गरीब, अमीर, परहेजी या बद परहेजी कामी पुरुष वृद्ध हों या युवा आदि सभी करते हैं। मूल्य १५) बदनमें मालिश, अलग ५) डा० १)

भारत भैषज्य भण्डार

१०८, तुलापट्टी, कलकत्ता।

आपकी किस्मत में क्या लिखा है ?

अगर आप एक साल के अन्दर पेश आनेवाले अच्छे बुरे हालातोंको समय से पहले जानना चाहते हैं तो आज ही हम को सिर्फ पोस्टकार्ड पर अपना पूरा पता और किसी फूलका नाम लिखकर भेज दीजिये। बस फिर हम ज्योतिष विद्या के हिसाबसे आपके आनेवाले १२ मासका नफा नुकसान, किस तिजारतमें फायदा होगा, किस जरिये से रुपया मिलेगा, रोजगार कब मिलेगा, मुलाजमत में तरक्की, तबादला, तनख्वाह, औरत और औलादका सुख, तन्दुरुस्ती, बीमारी, दूरका सफर, मुकदमा और इम्तिहानमें सफलता, सगाई, शादी, जमीन व जायदादका सुख, किसीसे नया मेल या नफा, सट्टा, लाटरी या किसी अज्ञात कारण से धनका मिलना। सारांश तारीख कार्डसे लेकर एक साल तक होनेवाली कुल बातोंका खुलासा यानी माहवारी वर्षफल बनाकर सिर्फ एक रुपया चार आनेमें वी० पी०:पी० द्वारा भेज देंगे। डाक खर्च अलग होगा। साथमें बदकिस्मतीको खुश किस्मतीमें बदलने का उपाय भी लिखा जायगा ताकि आने वाली मुश्किलोंको दूर किया जाय। सिर्फ एक बारकी परीक्षा आपको पता देगी कि हम ज्योतिष विद्या के कितने जानकार हैं। गलत साबित होने पर कीमत वापिस।

श्री स्वामी सत्यनारायण ज्योतिष आश्रम (V. W. जलंधर सिटी

For Debility, General Bodily Weakness and Ill-health

शिथिलता, शारीरिक निर्बलता और कमजोरी के लिये

अत्यधिक आहार-विहारके फलस्वरूप उत्पन्न होने वाली क्षीणता को दूर कर स्वस्थ और सबल बनानेमें ऐंजियर्स एमल्सन तेजवर्धक टानिक का काम देती है। असाध्य बीमारी के बाद इसके सेवन से शरीर सबल व पुष्ट होता है।

ऐंजियर्स एमल्सन में पशु तेल नहीं है और इसे प्रस्तुत करते समय हाथ से छुआ नहीं जाता। अतएव सभी जाति-धर्म के लोग इसका सेवन कर सकते हैं।

ANGIER'S EMULSION

मृत्युलोक में अमृत !

पहले जमाने में शत्रु को पराजित करनेके लिये शारीरिक बल प्राप्त करना जरूरी था और उसके लिये बल-वर्द्धक रसौषधियों का सेवन करने की प्रथा थी। यहां तक कि देवताओंने भी दैत्योंको पराजित करनेके लिए अमृत पान किया। आप भी यदि अपूर्व बलशाली और शक्ति सम्पन्न होना चाहते हैं तो उच्चकोटि का प्रामाणिक

डाबर द्राक्षासव

जिसे मृत्युलोकमें अमृतका स्थान दे सकते हैं—सेवन कीजिये।

— मुफ्त मंगाइये —

कार्यालय द्वारा निर्माण होनेवाली अन्य उच्चकोटिकी आयुर्वेदिक तथा पेटेण्ट दवा और शृंगार सामग्रियोंकी पूरी जानकारीके लिए पत्र लिखकर बृहत् सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये।

डाबर (डा० एस० के० बर्म्मन) लिमिटेड

पो० ब० नं० ५५४, कलकत्ता।

अस्थायी प्रधान कार्यालय—वैद्यनाथ देवघर (एस० पी०)

लिलि ब्रान्ड बार्ली

विशुद्धता और अच्छी क्वालिटी के कारण अस्पतालों में और सेना द्वारा व्यवहार किया जाता है। चिकित्सक गण इसकी सिफारिश करते हैं

बम्बई :: लिलि बिस्कुट कं० :: कलकत्ता

यह बच्चे के चर्म को ठण्डा और खुजली से मुक्त रखेगा

बच्चे के चर्मको मुलायम रखनेके लिये केवल क्यूटीक्यूरा टालकम पाउडर Cuticura Talcum Powder का उपयोग कीजिये।

क्यूटीक्यूरा टालकम पाउडर

CUTICURA TALCUM POWDER

No. 3

इसकी ज़मानत हिन्दुस्तान की दौलत

पहला ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन (१९५७) फर्वरी, सन् १९४५ में बंद कर दिया गया था और ११ महीने के भीतर इस ऋण में ११३ करोड़ से अधिक रुपया लगाया गया था।

इतने कम समय में इतनी बड़ी रकम का लगाया जाना सर्व... साधारण का और इस बात का सबूत है कि सरकारी ऋणों में जनता का बड़ा विश्वास है। ३ फ़ी सदी सेकेण्ड विक्टरी लोन भी उन्हीं अच्छी शर्तों पर जारी किया गया है, अर्थात ब्याज साल में दो बार इनकम टैक्स काटने के बाद आपको घर बैठे पहुँचता रहेगा। १५ अगस्त, सन् १९५९ के बाद और १५ अगस्त, सन् १९६१ से पहले पहले असल रकम दे वापस दिये जाने का ज़िम्मा लिया जाता है। जितनी रक़म चाहें लगायें, कोई प्रतिबन्ध नहीं। आपकी पूँजी पूर्णतया सुरक्षित रहेगी। ज़रूरत पर जब चाहें मार्केट में बेच कर नक़द रक़म प्राप्त कर सकते हैं; और इनकम टैक्स अगर लागू न हो अथवा कम शरह पर लागू हो, तो वापस मिल जायगा। ३ फ़ी सदी विक्टरी लोन में रक़म लगाने से क़ीमतों को कम करने में सहायता मिलेगी। इसके अलावा आपकी बचत की रक़म नुक़सान के ख़तरे से सुरक्षित हो जायगी और आपको अच्छा ब्याज मिलता रहेगा।

यह ऋण आप अपने बैंक द्वारा ख़रीद सकते हैं जो सब प्रबन्ध कर देगा; अथवा चाहें तो बम्बई, कलकत्ता, मद्रास, दिल्ली और कानपुर में रिज़र्व बैंक आफ़ इंडिया से या दूसरे स्थानों पर इम्पीरियल बैंक आफ़ इंडिया की शाखाओं या किसी सरकारी ख़ज़ाने से ख़रीद लें।

AAA 323 ...

रुपया बचाइए और ३ फ़ी सदी

सेकेण्ड विक्टरी लोन

१९५९-६१ में लगाइए

गवर्नमेंट आफ इण्डिया के फाइनेन्स डिपार्टमेंट द्वारा

देवदत्त मिश्र द्वारा सम्पादित और नवलकिशोर सिंह द्वारा विश्वमित्र प्रेस कलकत्तामें